PĀIA-SADDA-MAHAṆṆAVO

A COMPREHENSIVE PRAKRIT HINDI DICTIONARY
with Sanskrit equivalents, quotations
AND
complete references.

---:o:---

Vol. III.

---:o:---

BY

PANDIT HARGOVIND DAS T. SHETH, Nyaya-Vyakarana-tirtha,

Lecturer in Prakrit, Calcutta University.



CALCUTTA

--- o ---

FIRST EDITION.

---:o:---

---.o---

1925

Printed by GANESH PERSHAD, at the Shri Raja Ram Press, 20, Armanian Street,
and Published by Pandit HARGOVIND DAS T. SHETH, 26, Zakariah Street, Calcutta.

प्रमाणग्रन्थों (रेफरन्सेज़) की सूची का कोष्ठपत्र ।

कृत ।	ग्रन्थ का नाम ।	संस्करण आदि ।	जिसके अंक दिये गये हैं वह ।
ज्झ	= अध्यात्ममतपरीक्षा	१ भीमसिंह माणक, संवत् १९३३ ...	गाथा
		२ जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर ..	,,
ात्म	= आत्मसंबोधकुलक	†हस्तलिखित	,,
ात्महि	= आत्महितोपदेशकुलक	,,	,,
ात्मानु	= आत्मानुशास्तिकुलक	,, ...	,,
त्त	= उत्तराध्ययन सूत्र	‡३ हस्तलिखित ...	अध्ययन, गाथा
पपं	= उपदेशपंचाशिका	†हस्तलिखित ...	गाथा
वकु	= उपदेशकुलक	,, ...	,,
म्म ५	= कर्मग्रन्थ पाँचवाँ	२ भावनगर जैनधर्म प्रसारक सभा, संवत् १९६८	,,
म्म ६	= कर्मग्रन्थ छठवाँ	,,	,,
र्पूर	= कर्पूरचरित (भाण)	गायकवाड़ ओरिएन्टल सिरिज़, नं. ८. १९१८	पृष्ठ
कर्म	= कर्मकुलक	†हस्तलिखित ...	गाथा
रात	= किरातार्जुनीय (व्यायोग)	गायकवाड़ ओरिएन्टल् सिरिज़, नं ८. १९१८ ...	पृष्ठ
लक	= कुलकसंग्रह	जैन श्रेयस्कर मंडल, म्हेसाणा. १९१४	,,
	= खामणाकुलक	†हस्तलिखित ...	गाथा
च्छा	= गच्छाचारपयन्नो	१ चंदुलाल मोहोलाल कोठारी, अहमदाबाद, संवत् १९८०	अधिकार०
		२ शेठ जमनाभाई भगूभाई, अहमदाबाद. १९२४ ...	,,
चेइय	= चेइयवंदणमहाभास	जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर. संवत् १९७७	गाथा
जीवस	= जीवसमासप्रकरण	†हस्तलिखित ...	,,
तंदु	= तंदुवेयालियपयन्नो	२ दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई. १९२२ ..	पत्र
त्रि	= त्रिपुरदाह (डिम)	गायकवाड ओरिएन्टल् सिरिज़, नं ८. १९१८	पृष्ठ
देवेन्द्र	= देवेन्द्रनरकेन्द्रप्रकरण	जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर. १९२२ ...	गाथा
द्रव्य	= द्रव्यसंग्रह	जैन-ग्रन्थ-रत्नाकर-कार्यालय, बम्बई. १९०६ ...	,,
धम्मो	= धम्मोवएसकुलक	†हस्तलिखित ..	,,
धर्मवि	= धर्मविधिप्रकरण सटीक	जेसगभाई छोटालाल सुतरीया, अहमदाबाद. १९२४	पत्र
धर्मसं	= धर्मसंग्रहणी	दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई. १९१६–१८	गाथा
धात्वा	= प्राकृतधात्वादेश	एसियाटिक सोसाइटी ओफ बेंगाल, १९२४ ..	पृष्ठ
निसा	= निशाविरामकुलक	†हस्तलिखित ...	गाथा
पव	= प्रवचनसारोद्धार	२ दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, १९२२—२५ .	+द्वार
पार्थ	= पार्थपराक्रम	गायकवाड ओरिएन्टल् सिरिज़, नं० ४. १९१७	पृष्ठ
पिंड	= पिण्डनिर्युक्ति	२ दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई. १९२२ ...	गाथा
पिंडभा	= पिंडनिर्युक्तिभाष्य	,, ...	,,

---

† श्रद्धेय श्रीयुत केशवलालभाई प्रेमचंद मोदी, बी. ए., एल्. एल्. बी. से प्राप्त ।

‡ सुखबोधा-नामक प्राकृत-बहुल टीका से विभूषित यह उत्तराध्ययन सूत्र की हस्तलिखित प्रति आचार्य श्री विजयमेघसूरिजी के भंडार से श्रद्धेय श्रीयुत के. प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त हुई थी, इस प्रति के पत्र १८६ हैं ।

+ द्वार-प्रारम्भ के पूर्व के प्रस्ताव के लिए 'पव' के बाद केवल गाथा के अंक दिए गए है ।

संकेत ।		ग्रन्थ का नाम ।	संस्करण आदि ।		जिसके अंक दिये गये हैं वह
प्रवि	=	प्रव्रज्याविधानकुलक	†हस्तलिखित		गाथा
प्राकृ	=	प्राकृतसर्वस्व (मार्कण्डेयकृत)	विभ्भागापटम्		पृष्ठ
भवि	=	भविसयत्तकहा	*२ गायकवाड़ ओरिएन्टल् सिरिज़, १९२३	...	
मंगल	=	मंगलकुलक	†हस्तलिखित	...	गाथा
मन	=	मनोनिग्रहभावना	„	...	„
मोह	=	मोहराजपराजय	गायकवाड़ ओरिएन्टल् सिरिज़, नं. ९, १९१८		पृष्ठ
यति	=	यतिशिक्षापंचाशिका	†हस्तलिखित	...	गाथा
रत्न	=	रत्नत्रयकुलक	„	...	„
रुक्मि	=	रुक्मिणीहरण (ईहामृग)	गायकवाड़ ओरिएन्टल् सिरिज़, नं० ८, १९१८		पृष्ठ
वि	=	विषयत्यागोपदेशकुलक	†हस्तलिखित	...	गाथा
विचार	=	विचारसारप्रकरण	आगमोदय समिति, वम्बई, १९२३	...	„
श्रावक	=	श्रावकप्रज्ञप्ति	श्रीयुत केशवलाल प्रेमचंद संपादित, १९०५	...	गाथा
श्रु	=	श्रुतास्वाद	†हस्तलिखित		„
सबोध	=	संबोधप्रकरण	जैन-ग्रन्थ-प्रकाशक सभा, अहमदाबाद, १९१६	...	पत्र
संवे	=	संवेगचूलिकाकुलक	†हस्तलिखित	...	गाथा
संवेग	=	संवेगमंजरी	„	...	„
सट्टि	=	सट्ठिसयपयरण सटीक	सत्यविजय जैन ग्रन्थमाला, नं० ६, अहमदाबाद, १९२५		„
समु	=	समुद्रमथन (समवकार)	गायकवाड़ ओरिएन्टल् सिरिज़, नं० ८, १९१८		पृष्ठ
सम्मत्त	=	सम्यक्त्वसप्तति सटीक	दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, वम्बई, १९१६	...	पत्र
सम्यक्त्वो	=	सम्यक्त्वोत्पादविधिकुलक	†हस्तलिखित	...	गाथा
सा	=	सामान्यगुणोपदेशकुलक	„	...	„
सिक्खा	=	शिक्षाशतक	„	...	[illegible]
सिरि	=	सिरिसिरिवालकहा	दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, वम्बई १९२३	..	„
सुख	=	सुखबोधा टीका (उत्तराध्ययनस्य)	‡हस्तलिखित	...	ध्ययन, गाथ
सूअनि	=	सूत्रकृतांगनिर्युक्ति	१ आगमोदय समिति, बम्बई, संवत १९७३	...	गाथा
			२ भीमसिंह माणक, बम्बई, संवत १९३६	...	„
हम्मीर	=	हम्मीरमदमर्दन	गायकवाड ओरिएन्टल् सिरिज़, नं १०, १९२०		पृष्ठ
हास्य	=	हास्यचूडामणि (प्रहसन)	„		„
हि	=	हितोपदेशकुलक	†हस्तलिखित	...	गाथा
हित	=	हितोपदेशसारकुलक	„		

---

† श्रद्धेय श्रीयुत के० प्रे० मोदी से प्राप्त ।

‡ देखो 'उत्त' के नीचे की टिप्पनी ।

प

प पुं [**प**] १ ओष्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष ; (प्राप)। २ पाप-त्याग ; " पत्ति य पाववज्जणे " (आवम)।

प अ [**प्र**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ प्रकर्ष ; जैसे— ' पओस ' (से २, ११)। २ प्रारम्भ ; जैसे— ' पणमिअ ', ' पकरेइ ' (जं १ ; भग १,१)। ३ उत्पत्ति ; ४ ख्याति, प्रसिद्धि ; ५ व्यवहार ; ६ चारों ओर से ; (निचू १ ; हे २, २१७)। ७ प्रस्रवण, मूत्र , (विसे ७८१)। ८ फिर फिर , (निचू ३ ; १७)। ६ गुजरा हुआ, विनष्ट ; जैसे—' पाउअ ' ; (ठा ४, २—पत्र २१३ टी)।

प° वि [**प्राच्**] पूर्व तर्फ स्थित ; (भवि)।

पअंगम पु [**प्लवङ्गम**] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

पअंघ पुं [**प्रजङ्घ**] राक्षस-विशेष ; (से १२, ८३)।

पइ पुं [**पति**] १ धव, भर्ता ; (पाअ ; गा १५६ ; कप्प)। २ मालिक ; ३ रक्षक ; जैसे—' भूवई, ', ' तिअसगणवई ' ' नरवइ ' (सुपा ३६ ; अजि १७ ; १६)। ४ श्रेष्ठ, उत्तम ; जैसे— ' धरणिधरवई ' (अजि १७)। °**घर** न [°**गृह**] ससुराल ; (षड्)। °**वया**, °**व्वया** स्त्री [°**व्रता**] पति-सेवा-परायण स्त्री, कुलवती स्त्री ; (गा ४१७ ; सुर ६, ६७)। °**हर** देखो °**घर** ; (हे १, ४)।

पइ देखो **पडि** ; (ठा २, १ ; काल ; उत्तर २१)।

पइअ वि [**दे**] १ भर्त्सित, तिरस्कृत ; २ न. पहिया, रथ-चक्र ; (दे ६, ६४)।

पइइ देखो **पगइ**=प्रकृति ; (से २, ४५)।

पइउं देखो **पय**=पच्।

पइउवचरण न [**प्रत्युपचरण**] प्रत्युपचार, प्रति-सेवा, (रंभा)।

पइऊल देखो **पडिकूल** ; (नाट—विक्र ४५)।

पइंवया देखो **पइ-वया** ; (णाया १, १६—पत्र २०४)।

पइक (अप) देखो **पाइक्क** ; (पिंग)।

पइकिदि देखो **पडिकिदि** ; (नाट—शकु ११६)।

पइक्क देखो **पाइक्क** ; (पिंग ; पि १६४)।

पइगिइ देखो **पडिकिदि** ; (स ६२५)।

पइच्छन्न पु [**प्रतिच्छन्न**] भूत-विशेष ; (राज)।

पइज्ज (अप) वि [**पतित**] गिरा हुआ, (पिंग)।

पइज्ज (अप) वि [**प्राप्त**] मिला हुआ, लब्ध ; (पिंग)।

पइज्जा देखो **पइण्णा** ; (भवि ; मण)।

पइट्ठ वि [**दे**] १ जिसने रस को जाना हो वह ; २ विरल ; ३ पुं. मार्ग, रास्ता ; (दे ६, ६६)।

पइट्ठ पु [**प्रतिष्ठ**] भगवान् सुपार्श्वनाथ के पिता का नाम ; (सम १५०)।

पइट्ठ वि [**प्रविष्ट**] जिसने प्रवेश किया हो वह ; (स४२६)।

पइट्ठवण देखो **पइट्ठावण** ; (राज)।

पइट्ठा स्त्री [**प्रतिष्ठा**] १ आदर, सम्मान ; २ कीर्ति, यश ; ३ व्यवस्था ; (हे १, २०६)। ४ स्थापना, संस्थापन ; (णंदि)। ५ अवस्थान, स्थिति ; (पंचा ८)। ६ मूर्ति में ईश्वर के गुणों का आरोपण ; " जिणबिंबाण पइट्ठं कइया वि हु आइसंतस्स " (सुर १६, १३)। ७ आश्रय, आधार , (औप)।

पइट्ठाण न [**प्रतिष्ठान**] १ स्थिति, अवस्थान ; " काऊण पइट्ठाणं रमणिज्जे एत्थ अच्छामो " (पउम ४२, २७ ; ठा ६)। २ आधार, आश्रय ; (भग)। ३ महल आदि की नींव ; (पव १४८)। ४ नगर-विशेष; (आक २१)।

पइट्ठाण न [**दे**] नगर, शहर ; (दे ६, २६)।

पइट्ठावक } **पइट्ठावग** } देखो **पइट्ठावय** ; (णाया १, १६; राज)।

पइट्ठावण न [**प्रतिष्ठापन**] १ संस्थापन ; (पंचा ८)। २ व्यवस्थापन ; (पंचा ७)।

पइट्ठावय वि [**प्रतिष्ठापक**] प्रतिष्ठा करने वाला ; (औप ; पि २२०)।

पइट्ठाविय वि [**प्रतिष्ठापित**] संस्थापित; (स ६२ ; ७०५)।

पइट्ठिय वि [**प्रतिष्ठित**] १ स्थित, अवस्थित ; (उवा)। २ आश्रित ; " रयणायरतीरपइट्ठियाण पुरिसाण जं च दालिद्दं " (प्रासू ७०) । ३ व्यवस्थित , (आचा २, १, ७)। ४ गौरवान्वित ; (हे १, ३८)।

पइण्ण वि [**दे**] विपुल, विस्तृत ; (दे ६, ७)।

पइण्ण वि [**प्रतीर्ण**] प्रकर्ष से तीर्ण ; (आचा)।

पइण्ण } **पइण्णग** } वि [**प्रकीर्ण, °क**] १ विक्षिप्त, फेंका हुआ ; " रत्थापइण्णणअणुप्पला तुमं सा पडिच्छए एंतं" (गा १४०)। २ अनेक प्रकार से मिश्रित ; (पंचृ)। ३ बिखरा हुआ ; (ठा ६)। ४ विस्तारित ; (बृह १)। ५ न. ग्रन्थ-विशेष, तीर्थंकर-देव के सामान्य शिष्य ने बनाया हुआ ग्रन्थ ; (णंदि)। °**कहा** स्त्री [°**कथा**] उत्सर्ग, सामान्य नियम . " उस्सग्गो पइण्णकहा भण्णइ अववाओ

निच्छयाकल भणमइ " (निच ४)। नव पुं [नवन्] नवनवांकसंख्या ; (पंचा १४)।

पइण्णा स्त्री [प्रतिज्ञा] १ प्रण, शपथ : (नाट—मालती १०६)। २ नियम ; (औप ; पंचा १८)। ३ न्याय-शास्त्र-प्रसिद्ध अनुमान-प्रमाण का एक अवयव, साध्य धर्म का निर्देश ; (सुनि १)।

पइण्णाद (शौ) वि [प्रतिज्ञात] जिसकी प्रतिज्ञा की गई हो वह ; (मा १४)।

पइत्त देखो **पउत्त**=प्रवृत्त ; (भवि)।

पइत्त वि [प्रदीप्त] जला हुआ, प्रज्वलित ; (स १४, ४३)।

पइत्त देखो **पवित्त**=पवित्र ; (गुण ७४)।

पइदि (शौ) देखो **पगइ** ; (नाट—मृच्छ ६१)।

पइदिण न [प्रतिदिन] हर रोज ; (पाअ)।

पइद्धि वि [प्रतिदिग्ध] लिप्त ; (सुअ १, ५, १)।

पइदियह न [प्रतिदिवस] प्रतिदिन, हर रोज ; (सुर १, ४०)।

पइनियय वि [प्रतिनियत] मुकर्रर किया हुआ, नियुक्त किया हुआ ; (श्रावक)।

पइन्न } देखो **पइण्ण** ; (उव ; भवि ; था २)।
पइन्नग }

पइन्ना देखो **पइण्णा** ; (सुर १, १)।

पइप्प देखो **पलिव्व** । वकृ **पइप्पमाण** ; (मा ४१६)।

पइप्पईय न [प्रतिप्रतीक] प्रत्यंग, हर अंग ; (रंभा)।

पइभय वि [प्रतिभय] प्रत्येक प्राणी को भय उपजाने वाला ; (गाया १, २ ; पण्ह १, १ ; औप)।

पइभा स्त्री [प्रतिभा] बुद्धि-विशेष, प्रत्युत्पन्न-मतित्व ; (पुष्फ ३३१)।

पइमुह वि [प्रतिमुख] संमुख ; (उप ३८८)।

पइरिक्क वि [दे. प्रतिरिक्त] १ शून्य, खाली ; (दे ६, ७१ ; से २, १४)। २ विशाल, विस्तीर्ण ; (दे ६, ७१)। ३ तुच्छ, हलका ; (से १, ४८)। ४ प्रचुर, विपुल ; (ओघ २४६ —पत्र १०३)। ५ नितान्त, अत्यन्त ; " पइरिक्कसुहाए मणाणुकूलाए विहारभूमीए " (कप्प)। ६ न. एकान्त स्थान, विजन स्थान, निर्जन जगह ; (दे ६, ७१ ; स २३४ ; ७४६ ; गा ८८ ; उप २६३)।

[illegible] (अप) देखो **पढम** ; (पि ४४९)।

पइल्लाइया स्त्री [प्रतिल्लादिका] [illegible] ; (राज)।

पइल्ल पुं [दे. पल्लिक] १ [illegible], [illegible] ; (झा २, ३)। २ [illegible], [illegible] ; ([illegible] २, ५)।

पइव पुं [प्रतिव] [illegible] ; (राज)।

पइवग्गि न [प्रतिवर्ग] [illegible] ; (पि २३०?)।

पइवाइ वि [प्रतिवादिन्] प्रतिवादी, [illegible] ; ([illegible] २४८८)।

पइविसिट्ठ वि [प्रतिविशिष्ट] [illegible], विशिष्ट ; (उत्त)।

पइविसेस पुं [प्रतिविशेष] [illegible], भेद, [illegible] ; (विसे ४९)।

पइस देखो **पविस** । [illegible] ; (भवि)। [illegible] ; (हे १, ४६ टि)। [illegible] ; (भवि)। वकृ **पइसंत** ; (भवि)। कृ— **पइसियव्व** ; ([illegible] २३४)।

पइसमय न [प्रतिसमय] १ [illegible], [illegible] ; (पि २३०)।

पइसर देखो **पविस** । [illegible] ; (भवि)।

पइसार [illegible] [प्र[illegible]वेशय] [illegible] ; (भवि)।

पइसारिय वि [प्रवेशित] [illegible] " पइसारिआ स [illegible] " (सम्म ; भवि)।

पइहंठ पुं [दे] [illegible], [illegible] ; (दे ६, १४)।

पइहा सक [प्रति + हा] [illegible] । संकृ **पइहिऊण** ; (उप)।

पई देखो **पइ**=पति ; (पउ ; हे १, ४ ; गुण १, १३६)।

पईण वि [प्रतीन] १ [illegible]। २ [illegible]। ३ प्रसिद्ध, विख्यात ; (विसे ७०२)।

पईअ न [प्रतीक] अंग, अवयव ; (रंभा)।

पईइ स्त्री [प्रतीति] १ विश्वास। २ प्रसिद्धि ; (राज)।

पईव देखो **पलीव** । पईवेइ ; (भग)।

पईव पुं [प्रदीप] दीपक, दिया ; (पाअ ; ठा ९)।

पईव वि [प्रतीप] १ प्रतिकूल ; (हे १, २०६)। २ पुं. शत्रु, दुश्मन ; (ठा [illegible] ; हे १, २३१)।

पईस (अप) देखो **पइस** । पईसइ ; (भवि)।

पउ (अप) वि [पतित] गिरा हुआ ; (पिंग)।

पउअ पु [**दे**] दिन, दिवस ; (दे ६, ५) ।
पउअ न [**प्रयुत**] संख्या-विशेष, 'प्रयुताङ्ग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (इक ; ठा २, ४) ।
पउअंग न [**प्रयुताङ्ग**] संख्या-विशेष, 'अयुत' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा २, ४) ।
पउंज सक [**प्र+युज्**] १ जोड़ना, युक्त करना । २ उच्चारण करना । ३ प्रवृत्त करना । ४ प्रेरणा करना । ५ व्यवहार करना । ६ करना । पउंजइ ; (महा ; भवि ; पि ५०७) । पउंजंति ; (कप्प) । वकृ— **पउंजंत, पउंजमाण** ; (ओप ; पउम ३५, ३६) । कवकृ—**पउज्जमाण** ; (प्रयौ २३) । कृ—**पउंजिअव्व, पउज्ज**; (पण्ह २, ३ ; उप ७२८ टी ; विसे ३३८४), **पउद्दव्व** (अप) ; (कुमा) ।
पउंजग वि [**प्रयोजक**] प्रेरक, प्रेरणा करने वाला ; (पंचव १) ।
पउंजण वि [**प्रयोजन**] प्रयोग करने वाला ; (पउम १४, २०) । देखो **पओअण** ।
पउंजणया } स्त्री [**प्रयोजना**] प्रयोग ; (ओघ ११४),
पउंजणा } "दुक्खं कीरइ कव्वं, कव्वम्मि कए पउंजणा दुक्खं" (वज्जा २) ।
पउंजिअ वि [**प्रयुक्त**] जिसका प्रयोग किया गया हो वह, (सुपा १४० ; ४४७) ।
पउंजित्तु वि [**प्रयोक्तृ**] प्रवृत्ति करने वाला ; (ठा ५,१) ।
पउंजित्तु वि [**प्रयोजयितृ**] प्रवृत्ति कराने वाला ; (ठा ५, १) ।
पउज्ज } देखो **पउंज** ।
पउज्जमाण }
पउट्ट अ [**परिवृत्य**] मर कर । °**परिहार** पु [°**परिहार**] मर कर फिर उसी शरीर में उत्पन्न होकर उस शरीर का परिभोग करना ; "एवं खलु गोसाला ! वणस्सइ-काइयाओ पउट्टपरिहारं परिहरंति" (भग १५—पत्र ६६७) ।
पउट्ट वि [**परिवर्त**] १ परिवर्त, मर कर फिर उसी शरीर में उत्पन्न होना ; २ परिवर्त-वाद ; "एस णं गोयमा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स पउट्टे" (भग १५—पत्र ६६७) ।
पउट्ठ वि [**प्रवृष्ट**] बरसा हुआ ; (हे १,१३१) ।
पउट्ठ पुं [**प्रकोष्ठ**] हाथ का पहुँचा, कलाई और केहुनी के बीच का भाग ; (पण्ह १, ४—पत्र ७८ ; कप्प; कुमा) ।
पउट्ठ वि [**प्रजुष्ट**] १ विशेष सेवित ; २ न. अति उच्छिष्ट ; (चंड) ।
पउट्ठ वि [**प्रद्विष्ट**] द्वेष-युक्त ; "तो मा पउट्ठचित्तो" (सुपा ४७५) ।
पउढ न [**दे**] १ गृह, घर , २ पु. घर का पश्चिम प्रदेश ; (दे ६, ४) ।
पउण पुं [**दे**] १ व्रण-प्ररोह ; २ नियम-विशेष ; (दे ६, ६५) ।
पउण वि [**प्रगुण**] १ पटु, निर्दोष ; "कह मच्चरणविहाणा जायइ पउणिंदियाणंपि" (सुपा ४७२ ; महा) । २ तय्यार ; (दंस ३) ।
पउणाड पुं [**प्रपुनाट**] वृक्ष-विशेष, पसाड का पेड़, चकवड़ ; (दे ५, ५ टि) ।
पउत्त अक [**प्र+वृत्**] प्रवृत्ति करना । कृ—**पउत्तिदव्व** (शौ) ; (नाट—शकु ८७) ।
पउत्त वि [**प्रयुक्त**] जिसका प्रयोग किया गया हो वह ; (महा ; भवि) । २ न. प्रयोग ; (गाया १, १) ।
पउत्त न [**प्रतोत्र**] प्रतोद, प्राजन, पैना ; (दसा १०) ।
पउत्त वि [**प्रवृत्त**] जिसने प्रवृत्ति की हो वह ; (उवा) ।
पउत्ति स्त्री [**प्रवृत्ति**] १ प्रवर्तन ; (भग १५) । २ समाचार, वृत्तान्त ; (पाअ ; सुर २, ४८ ; ३, ८४) । ३ कार्य, काज । °**वाउय** वि [°**व्यापृत**] कार्य में लगा हुआ ; (औप) ।
पउत्ति स्त्री [**प्रयुक्ति**] बात, हकीकत ; (उप पृ ३२८ , राज) ।
पउत्तिदव्व देखो **पउत्त**=प्र+वृत् ।
पउत्थ न [**दे**] १ गृह, घर ; (दे ६, ६६) । २ वि. प्रोषित, प्रवास में गया हुआ ; "एहिइ सोवि पउत्थो अहं अ कुप्पेज्ज सोवि अणुणेज्ज" (गा १७ ; ६६७ ; हेका ३० , पउम १७, ३ ; वज्जा ७६ ; विवे १३२ ; उव , ठ ६, ६६ ; भवि) । °**वइया** स्त्री [°**पतिका**] जिसका पति देशान्तर गया हो वह स्त्री ; (ओघ ४१३ ; सुपा ५०८) ।
पउद्दव्व देखो **पउंज** ।
पउप्पय देखो **पओप्पय** ; (भग ११, ११ टी) ।
पउप्पय देखो **पओप्पय**=प्रपौत्रिक ; (भग ११,११ टी) ।
पउम न [**पद्म**] १ सूर्य-विकासी कमल ; (हे २, ११२; पण्ह १, ३ ; कप्प ; औप ; प्रासू ११३) । २ देव- (सम ३३ ३ संख्या-विशेष,

'पद्मांग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा २, ४ ; इक)। ४ गन्ध-द्रव्य-विशेष ; (औप , जीव ३)। ५ सुधर्मा सभा का एक सिंहासन ; (णाया २)। ६ दिन का नववाँ मुहूर्त ; (जो २)। ७ दक्षिण-रुचक-पर्वत का एक शिखर , (ठा ८)। ८ राजा रामचन्द्र, सीता-पति ; (पउम १, ५: २५, ८)। ९ आठवाँ बलदेव, श्रीकृष्ण के बड़े भाई ; १० इस अवसर्पिणीकाल में उत्पन्न नववाँ चक्रवर्ती राजा, राजा पद्मोत्तर का पुत्र ; (पउम ५, १५३ ; १५४)। ११ एक राजा का नाम ; (उप ६४८ टी)। १२ माल्यवन्नामक पर्वत का अधिष्ठाता देव ; (ठा २, ३)। १३ भरतक्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी में उत्पन्न होनेवाला आठवाँ चक्रवर्ती राजा ; (सम १५४)। १४ भरतक्षेत्र का भावी आठवाँ बलदेव ; (सम १५४)। १५ चक्रवर्ती राजा का निधि, जो रोग-नाशक सुन्दर वस्त्रों की पूर्ति करता है ; (उप ९८६ टी)। १६ राजा श्रेणिक का एक पौत्र ; (निर २, १)। १७ एक जैन मुनि का नाम ; (कप्प)। १८ एक ह्रद ; (कप्प)। १९ पद्म-वृक्ष का अधिष्ठाता देव ; (ठा २, ३)। २० महापद्म-नामक जिन-देव के पास दीक्षा लेने वाला एक राजा, एक भावी राजर्षि ; (ठा ८)। °**गुम्म** न [°**गुल्म**] १ आठवें देवलोक में स्थित एक देव-विमान का नाम ; (सम ३५)। २ प्रथम देवलोक में स्थित एक देव-विमान का नाम ; (महा)। ३ पुं. राजा श्रेणिक का एक पौत्र ; (निर २, १)। ४ एक भावी राजर्षि, महापद्म-नामक जिन-देव के पास दीक्षा लेनेवाला एक राजा ; (ठा ८)। °**चरिय** न [°**चरित**] १ राजा रामचन्द्र की जीवनी—चरित ; २ प्राकृत भाषा का एक प्राचीन ग्रन्थ, जैन रामायण ; (पउम ११८, १२१)। °**णाभ** पुं [°**नाभ**] १ वासुदेव, विष्णु ; (पउम ४०, १)। २ आगामी उत्सर्पिणी-काल में भरतक्षेत्र में होने वाले प्रथम जिन-देव का नाम ; (पव ४६)। ३ कपिल-वासुदेव के एक माण्डलिक राजा का नाम ; (णाया १, १६—पत्र २१३)। °**दल** न [°**दल**] कमल-पत्र ; (प्रासू)। °**द्दह** पुं [°**द्रह**] विविध प्रकार के कमलो से परिपूर्ण एक महान् ह्रद का नाम ; (सम १०४ ; कप्प ; पउम १०२, ३०)। °**द्धय** पु [°**ध्वज**] एक भावी राजर्षि, जो महापद्म-नामक जिन-देव के पास दीक्षा लेगा ; (ठा ८)। °**नाह** देखो °**णाभ** ; (उप ६४८ टी)। °**पुर** न [°**पुर**] एक दाक्षिणात्य नगर, जो आजकल 'नासिक' नाम से प्रसिद्ध है ; (राज)। °**प्पभ** पुं [°**प्रभ**] इस अवसर्पिणी-काल में उत्पन्न षष्ठ जिन-देव का नाम ; (कप्प)। °**प्पभा** स्त्री [°**प्रभा**] एक पुष्करिणी का नाम ; (इक)। °**प्पह** देखो °**प्पभ** ; (ठा ५, १ ; सम ४३ ; पडि)। °**भद्द** पुं [°**भद्र**] राजा श्रेणिक का एक पौत्र ; (निर २, १)। °**मालि** पुं [°**मालिन्**] विद्याधर-वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ५, ४२)। °**मुह** देखो **पउमाणण** ; (षड्)। °**रह** पुं [°**रथ**] १ विद्याधर-वंश का एक राजा ; (पउम ५, ४३)। २ मथुरा नगरी के राजा जयसेन का पुत्र ; (महा)। °**राय** पुं [°**राग**] रक्त-वर्ण मणि-विशेष ; (पि १३६ ; १६६)। °**राय** पुं [°**राज**] धातकीखण्ड की अपरकंका नगरी का एक राजा, जिसने द्रौपदी का अपहरण किया था; (ठा १०)। °**रुक्ख** पुं [°**वृक्ष**] १ उत्तर-कुरु क्षेत्र में स्थित एक वृक्ष ; (ठा २, ३)। २ वृक्ष-सदृश बड़ा कमल ; (जीव ३)। °**लया** स्त्री [°**लता**] १ कमलिनी, पद्मिनी ; (जीव ३ ; भग ; कप्प) । २ कमल के आकार वाली वल्ली ; (णाया १,१)। °**वडिंसय**, °**वडेंसय** न [°**ावतंसक**] पद्मावती-देवी का सौधर्म-नामक देवलोक में स्थित एक विमान ; (राज ; णाया २—पत्र २५३)। °**वरवेइया** स्त्री [°**वरवेदिका**] १ कमलों की श्रेष्ठ वेदिका ; (भग)। २ जम्बूद्वीप की जगती के ऊपर रही हुई देवों की एक भोग-भूमि ; (जीव ३)। °**वूह** पुं [°**व्यूह**] सैन्य की पद्माकार रचना ; (पण्ह १, ३)। °**सर** पुं [°**सरस्**] कमलों से युक्त सरोवर ; (णाया १, १ ; कप्प ; महा)। °**सिरी** स्त्री [°**श्री**] १ अष्टम चक्रवर्ती सुभूमि-राज की पटरानी, (सम १५२)। २ एक स्त्री का नाम ; (कुमा)। °**सेण** पुं [°**सेन**] १ राजा श्रेणिक के एक पौत्र का नाम, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी ; (निर १, २)। २ नागकुमार-जातीय एक देव का नाम ; (दीव)। °**सेहर** पुं [°**शेखर**] पृथ्वीपुर नगर के एक राजा का नाम ; (धम्म ७)। °**ागर** पु [°**ाकर**] १ कमलों का समूह ; २ सरोवर ; (उप १३३ टी)। °**ासण** न [°**ासन**] पद्माकार आसन ; (जं १)।

पउमा स्त्री [**पद्मा**] १ बीसवें तीर्थंकर श्रीमुनिसुव्रतस्वामी की माता का नाम , (सम १५१)। २ सौधर्म देवलोक के इन्द्र की एक पटरानी का नाम ; (ठा ८—पत्र ४२६ ; पउम १०२, १५९)। ३ भीम-नामक राक्षसेन्द्र की एक पटरानी ; (ठा ४,

१—पत्र २०४)। ४ एक विद्याधर-कन्या का नाम ; (पउम ६,२४) । ५ रावण की एक पत्नी ; (पउम ७४, १०) ६ लक्ष्मी ; (राज) । ७ वनस्पति-विशेष ; (पराग १ — पत्र ३६) । ८ चौदहवें तीर्थंकर श्रीअनन्तनाथ की मुख्य शिष्या का नाम ; (पव ६) । ९ सुदर्शना-जम्बू की उत्तर दिशा में स्थित एक पुष्करिणी ; (इक) । १० दूसरे बलदेव और वासुदेव की माता का नाम ; ११ लेश्या-विशेष ; (राज) ।

पउमाड पु [**दे**] वृक्ष-विशेष, पमाड का पेड़, चकवड ; (दे ५, ५) ।

पउमाणण पु [**पद्मानन**] एक राजा का नाम ; (उप १०३१ टी) ।

पउमाभ पुं [**पद्माभ**] षष्ठ तीर्थंकर का नाम ; (पउम १,२) ।

पउमार [**दे**] देखो **पउमाड** ; (दे ५, ५ टि) ।

पउमावई स्त्री [**पद्मावती**] १ जम्बूद्वीप के सुमेरु पर्वत के पूर्व तरफ के रुचक पर्वत पर रहने वाली एक दिक्कुमारी-देवी ; (ठा ८) । २ भगवान् पार्श्वनाथ की शासन-देवी, जो नागराज धरणेन्द्र की पटरानी है ; (संति १०) । ३ श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम ; (अंत १५) । ४ भीम-नामक राक्षसेन्द्र की एक पटरानी ; (भग १०, ५) । ५ शक्रेन्द्र की एक पटरानी ; (णाया २—पत्र २५३) । ६ चम्पेश्वर राजा दधिवाहन की एक स्त्री का नाम ; (आव ४) । ७ राजा कूणिक की एक पत्नी ; (भग ७, ९) । ८ अयोध्या के राजा हरिसिंह की एक पत्नी ; (धम्म ८) । ९ तेतलिपुर के राजा कनककेतु की पत्नी ; (दंस १) । १० कौशाम्बी नगरी के राजा शतानीक के पुत्र उदयन की पत्नी ; (विपा १, ५) । ११ शैलकपुर के राजा शैलक की पत्नी , (णाया १, ५) । १२ राजा कूणिक के पुत्र काल-कुमार की भार्या का नाम ; १३ राजा महाबल की भार्या का नाम ; (निर १, १; ५ ; पि १३९) । १४ बीसवें तीर्थंकर श्रीमुनिसुव्रत-स्वामी की माता का नाम ; (पव ११) । १५ पुण्डरीकिणी नगरी के राजा महापद्म की पटरानी ; (आचू १) । १६ रम्य-नामक विजय की राजधानी ; (जं ४) ।

पउमावत्ती (अप) स्त्री [**पद्मावती**] छन्द-विशेष ; (पिंग) ।

पउमिणी स्त्री [**पद्मिनी**] १ कमलिनी, कमल-लता, (कप्प ; सुपा १५५) । २ एक श्रेष्ठी की स्त्री का नाम ; (उप ७२८ टी) ।

पउमुत्तर पुं [**पद्मोत्तर**] १ नववें चक्रवर्ती श्रीमहापद्म-राज के पिता का नाम ; (सम १५२) । २ मन्दर पर्वत के भद्रशाल वन का एक दिग्हस्ती पर्वत , (इक) ।

पउमुत्तरा स्त्री [**पद्मोत्तरा**] एक प्रकार की सक्कर ; (णाया १, १७—पत्र २२९ ; पराग १७) ।

पउर वि [**प्रचुर**] प्रभूत, बहुत ; (हे १, १८० ; कुमा ; सुर ४, ७४) ।

पउर वि [**पौर**] १ पुर-संबन्धी, नगर से संबन्ध रखने वाला . २ नगर में रहने वाला ; (हे १, १६२) ।

पउरव पुं [**पौरव**] पुरु-नामक चन्द्र-वंशीय नृप का पुत्र; (संक्षि ६) ।

पउराण (अप) देखो **पुराण** ; (भवि) ।

पउरिस } पुंन [**पौरुष**] पुरुषत्व, पुरुषार्थ ; (हे १, १११ ;
पउरुस } १६२) । " पउरुसं " (प्राप्र), " पउरुसं " (संक्षि ६) ।

पउल सक [**पच्**] पकाना । पउलइ ; (हे ४, ९० ; ढ ६, २९) ।

पउलण न [**पचन**] पकाना, पाक ; (पण्ह १, १) ।

पउलिअ वि [**पक्व**] पका हुआ ; (पाअ) ।

पउलिअ वि [**प्रज्वलित**] दग्ध, जला हुआ ; (उवा) ।

पउल्ल देखो **पउल** । पउल्लइ ; (षड् ; हे ४, ९० टि) ।

पउल्ल वि [**पक्व**] पका हुआ, (पंचा १) ।

पउविय वि [**प्रकुपित**] विशेष कुपित, क्रुद्ध ; (महा) ।

पउस सक [**प्र + द्विष्**] द्वेष करना । पउसेज्जा, (ओघ २५ भा)।

पउसय वि [**दे**] देश-विशेष में उत्पन्न । स्त्री—**°सिया** ; (औप) ।

पउस्स देखो **पउस** । पउस्ससि ; (कुप्र ३७७) । वकृ— **पउस्संत, पउस्समाण** ; (राज ; अंत २२) । संकृ— **पउस्सिऊण** , (स ५१३) ।

पउहण (अप) देखो **पवहण** , (भवि) ।

पऊढ न [**दे**] गृह, घर ; (दे ६, ४) ।

पए अ [**प्राक्**] पहले, पूर्व ; " तित्थगरवयणकरणे आयरिआणं कयं पए होइ " (ओघ ४७ भा), " जइ पुण वियालपत्ता पए व पत्ता उवस्सयं न लभे " (ओघ १९८) ।

पएणियार पु [**प्रैणीचार**] व्याध की एक जाति, जो हरिणो को पकडने के लिए हरिणी-समूह को चराते एवं पालते हैं ; (पण्ह १, १—पत्र १४) ।

पएर पुं [**दे**] १ वृति-विवर, वाड़ का छिद्र ; २ मार्ग, रास्ता; ३ कंठदीनार-नामक भूषण-विशेष ; ४ गले का छिद्र ; ५ दीन-नाद, आर्त-स्वर ; ६ वि. दुःशील, दुराचारी ; (दे ६, ६७)।

पएस पुं [**दे**] प्रातिवेश्मिक, पड़ौसी ; (दे ६, ३)।

पएस पु [**प्रदेश**] १ जिसका विभाग न हो सके ऐसा सूक्ष्म अवयव ; (ठा १, १)। २ कर्म-दल का संचय ; (नव ३१)। ३ स्थान, जगह ; (कुमा ६, ५६)। ४ देश का एक भाग, प्रान्त ; (कुमा ६)। ५ परिमाण-विशेष; निरंश-अवयव-परिमित माप ; ६ छोटा भाग ; ७ परमाणु ; ८ द्व्यणुक ; ९ त्र्यणुक, तीन परमाणुओं का समूह ; (राज)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] कर्म-विशेष, प्रदेश-रूप कर्म ; (भग)। °**ग्ग** न [°**ग्र**] कर्मों के दलिकों का परिमाण , (भग)। °**घण** वि [°**घन**] निविड प्रदेश ; (औप) । °**णाम** न [°**नामन्**] कर्म-विशेष ; (ठा ६) । °**णाम** पुं [°**नाम**] कर्म-द्रव्यों का परिणाम ; (ठा ६)। °**बंध** पुं [°**बन्ध**] कर्म-दलों का आत्म-प्रदेशों के साथ संबन्धन ; (सम ९)। °**संकम** पु [°**संक्रम**] कर्म-द्रव्यों को भिन्न स्वभाव-वाले कर्मों के रूप में परिणत करना ; (ठा ४, २)।

पएसण न [**प्रदेशन**] उपदेश ; " पएसणयं णाम उवएसो " (आचू १)।

पएसय त्रि [**प्रदेशक**] उपदेशक, प्रदर्शक ; " सिद्धिपहपए-सए वंदे" (विसे १०२५)।

पएसि पुं [**प्रदेशिन्**] स्वनाम-ख्यात एक राजा, जो श्री पार्श्वनाथ भगवान् के केशि-नामक गणधर से प्रबुद्ध हुआ था ; (राय ; कुप्र १४५ ; श्रा ६)।

पएसिणी स्त्री [**दे**] पड़ौस में रहने वाली स्त्री ; (दे ६, ३ टी)।

पएसिणी स्त्री [**प्रदेशिनी**] अंगुष्ठ के पास की उंगली, तर्जनी ; (ओघ ३६०)।

पएसिय देखो **पदेसिय** ; (राज)।

पओअ देखो **पओग** ; (हे १, २४५ ; अभि ९ ; सण ; पि ८५)।

पओअण न [**प्रयोजन**] १ हेतु, निमित्त, कारण ; (सूत्र १, १२) । २ कार्य, काम ; ३ मतलब ; (महा ; उत्त २३ ; स्वप्न ४८)।

पओइद (शौ) वि [**प्रयोजित**] जिसका प्रयोग कराया गया हो वह ; (नाट—विक्र १०२)।

पओग पुं [**प्रयोग**] १ शब्द-योजना , (भास ६३)। २ जीव का व्यापार, चेतन का प्रयत्न ; "उप्पाओ दुविगप्पो पओग-जणिओ य विस्ससा चेव" (सम्म १५ ; ठा ३, १ ; सम्म १२९ ; स ५२४)। ३ प्रेरणा ; (ओ १४)। ४ उपाय ; (आचू १)। ५ जीव के प्रयत्न में कारण-भूत मन आदि ; (ठा ३, ३) । ६ वाद-विवाद, शास्त्रार्थ ; (दसा ४)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] मन आदि की चेष्टा से आत्म-प्रदेशों के साथ बँधने वाला कर्म ; (राज)। °**करण** न [°**करण**] जीव के व्यापार द्वारा होने वाला किसी वस्तु का निर्माण ; " होइ उ एगो जीववावारो तेण जं विणिम्माणं पओगकरणं तयं बहुहा" (विसे)। °**किरिया** स्त्री [°**क्रिया**] मन आदि की चेष्टा ; (ठा ३, ३)। °**फड्डय** न [°**स्पर्धक**] मन आदि के व्यापार-स्थान की वृद्धि-द्वारा कर्म-परमाणुओं में बढ़ने वाला रस; (कम्मप २३)। °**बंध** पुं [°**बन्ध**] जीव-प्रयत्न द्वारा होने वाला बन्धन ; (भग १८, ३)। °**मइ** स्त्री [°**मति**] वाद-विषयक परिज्ञान ; (दसा ४)। °**संपया** स्त्री [°**संपत्**] आचार्य का वाद-विषयक सामर्थ्य ; (ठा ८)। °**सा** अ [**प्रयोगेण**] जीव-प्रयत्न से ; (पि ३६४)।

पओट्ठ देखो **पउट्ठ** = प्रकोष्ठ ; (प्राप्र ; औप ; पि ८४) ।

पओत्त न [**प्रतोत्र**] प्रतोद, प्राजन-यष्टि, पैना । °**धर** पु [°**धर**] बैल गाड़ी हाँकने वाला, बहलवान ; (णाया१,१)।

पओद पुं [**प्रतोद**] ऊपर देखो ; (औप)।

पओप्पय पुं [**प्रपौत्रक**] १ प्रपौत्र, पौत्र का पुत्र ; २ प्रशिष्य का शिष्य ; " तेणं कालेणं तेणं समएणं विमलस्स अरहओ पओप्पए धम्मघोसे नामं अणगारे " (भग ११, ११—पत्र ५४८)।

पओप्पय पु [**दे. प्रपौत्रिक**] १ वंश-परम्परा ; २ शिष्य-संतति, शिष्य-संतान ; (भग ११, ११—पत्र ५४८ टी)।

पओल पुं [**पटोल**] पटोल, परवर, परोरा ; (पण्ण १)।

पओली स्त्री [**प्रतोली**] १ नगर के भीतर का रास्ता ; (अणु)। २ नगर का दरवाजा ; " गोउरं पओली य " (पाअ ; सुपा२९१ ; श्रा १२ , उप पृ ८५ ; भवि) ।

पओवट्ठाव देखो **पज्जवत्थाव** । पओवट्ठावेहि ; (पि २८४)।

पओवाह पुं [**पयोवाह**] मेघ, बादल ; (पउम ८, ४९ ; से १, २४ ; सुर २, ८५)।

पओस पु [**दे. प्रद्वेष**] प्रद्वे१, प्रकृष्ट द्वेष ; (ठा १० ; अंत , राय ; आव ४ ; सुर १५, ५८ ; पुप्फ ४६५ ; कम्म १ ; महानि ४ ; कुप्र १० ; स ६६६)।

पओस पुंन [**प्रदोष**] १ सन्ध्याकाल, दिन और रात्रि का सन्धि-काल, (से १, ३४ ; कुमा)। २ वि. प्रभूत दोषों से युक्त ; (से २, ११)।
पओहण (अप) देखो **पवहण** ; (भवि)।
पओहर पु [**पयोधर**] १ स्तन, थन ; (पाअ ; से १, २४ ; गउड ; सुर २, ८५)। २ मेघ, बादल ; (वज्जा १००)। ३ छन्द-विशेष ; (पिंग)।
पंक पुंन [**पङ्क**] १ कर्दम, कादा, कीच ; " धम्ममिलं पि नो लग्गं पंकंव गयणंगणे" (श्रा २८ ; हे १, ३० ; ४, ३५७ ; प्रासू २५), " सुलइ व पंके " (वज्जा १३४)। २ पाप, (सूअ २, २)। ३ असंयम, इन्द्रिय वगैरः का अ-निग्रह ; (निचू १)। °**आवलिआ** स्त्री [°**ावलिका**] छन्द-विशेष, (पिंग)। °**प्पभा** स्त्री [**प्रभा**] चौथी नरक-भूमि ; (ठा ७ : इक)। °**वहुल** वि [°**बहुल**] १ कर्दम-प्रचुर ; (सम ६०)। २ पाप-प्रचुर ; (सूअ २, २)। ३ रत्नप्रभा-नामक नरक-भूमि का प्रथम काण्ड ; (जीव ३)। °**य** न [°**ज**] कमल, पद्म ; (हे ३, २६ ; गउड ; कुमा)। °**वई** स्त्री [°**वती**] नदी-विशेष ; (ठा २, ३—पत्र ८०)।
पंका स्त्री [**पङ्का**] चतुर्थ नरक-भूमि ; (इक ; कम्म ३,५)।
पंकावई स्त्री [**पङ्कावती**] पुष्कल-नामक विजय के पश्चिम तरफ की एक नदी ; (इक ; जं ४)।
पंकिय वि [**पङ्कित**] पंक-युक्त, कीच वाला; (भग ६, ३ ; भवि)।
पंकिल वि [**पङ्किल**] कर्दम वाला ; (श्रा २८ ; गा ७६६ ; कप्पू ; कुप्र १८७)।
पंकेरुह न [**पङ्केरुह**] कमल, पद्म ; (कप्पू ; कुप्र १४१)।
पंख पुस्त्री [**पक्ष**] १ पख, पाँखि, पक्ष ; (पि ७४ ; राय ; पउम ११, ११८ ; श्रा १४)। २ पनरह दिन, पखवाडा ; (गज)। °**ासण** न [°**ासन**] आसन-विशेष ; (राय)।
पंखि पुस्त्री [**पक्षिन्**] पंखी, चिड़िया, पत्ती ; (श्रा १४)। स्त्री—°**णी** ; (पि ७४)।
पंखुडिआ } स्त्री [**दे**] पख, पत्र ; (कुप्र २६; दे ६, ८)।
पंखुडी }
पंग सक [**ग्रह्**] ग्रहण करना। पंगइ ; (हे ४, २०६)।
पंगण न [**प्राङ्गण**] आँगन ; (कुप्र २५०)।
पंगु वि [**पङ्गु**] पाद-विकल, खञ्ज, खोड़ा ; (पाअ ; वि ३८०; पिंग)।
पंगुर सक [**प्रा + वृ**] ढकना, आच्छादन करना। पंगुरइ ; (भवि)। संकृ—**पंगुरिवि** ; (भवि)।
पंगुरण न [**प्रावरण**] वस्त्र, कपड़ा ; (हे १, १७५ ; कुमा ; गा ७८२)।
पंगुल वि [**पङ्गुल**] देखो **पंगु**; (विपा १, १, स ७५,पाअ)।
पंच त्रि. ब. [**पञ्चन्**] पाँच, ५ ;(हे ३, १२३ ; कप्प ; कुमा)। °**उल** न [°**कुल**] पंचायत ; (स २२२)। °**उलिय** पुं [°**कुलिक**] पंचायत में बैठ कर विचार करने वाला ; (स २२२)। °**कत्तिय** पुं [°**कृत्तिक**] भगवान् कुन्थुनाथ, जिनके पाँचों कल्याणक कृत्तिका नक्षत्र में हुए थे ; (ठा ५, १)। °**कप्प** पु [°**कल्प**] श्रीभद्रबाहुस्वामि-कृत एक प्राचीन ग्रन्थ का नाम ; (पंचभा)। °**कल्लाणय** न [**कल्याणक**] १ तीर्थंकर का च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान और निर्वाण ; २ काम्पिल्यपुर, जहां तेरहवें जिन-देव श्रीविमलनाथ के पाँचो कल्याणक हुए थे ; (ती २४)। ३ तप-विशेष, (जीत)। °**कोट्ठग** वि [°**कोष्ठक**] १ पाँच कोष्ठों से युक्त ; २ पुं. पुरुष ; (तंदु)। °**गव्व** न [°**गव्य**] गौ के ये पाँच पदार्थ—दही, दूध, घृत, गोमय और मूत्र, पंचगव्य ; (कप्पू)। °**गाह** न [°**गाथ**] गाथा-छन्द-वाले पाँच पद्य ; (कस)। °**गुण** वि [°**गुण**] पाँच-गुना ; (ठा ५, ३)। °**चित्त** पुं [°**चित्र**] षष्ठ जिन-देव श्रीपद्मप्रभ, जिनके पाँचो कल्याणक चित्रा नक्षत्र में हुए थे ; (ठा ५, १ ; कप्प)। °**जाम** न [°**याम**] १ अहिंसा, सत्य, अ-चौर्य, ब्रह्मचर्य और त्याग ये पाँच महाव्रत ; २ वि. जिसमें इन पाँच महाव्रतो का निरूपण हो वह ; (ठा ६)। °**णउइ** स्त्री [°**नवति**] पंचानवे, ६५ ; (काल)। °**णउय** वि [°**नवत**] ६५ वाँ ; (काल)। °**तालीस** (अप) स्त्रीन [°**चत्वारिंशत्**] पैंतालीस, ४५ ; (पिंग ; पि ४४५)। °**तित्थी** स्त्री [°**तीर्थी**] पाँच तीर्थों का समुदाय ; (धर्म २)। °**तीसइम** वि [°**त्रिंशत्तम**] पैंतीसवाँ, ३५ वाँ ; (पगग ३५)। °**दस** त्रि. ब. [°**दशन्**] पनरह, १५ ; (कप्पू)। °**दसम** वि [°**दशम**] पनरहवाँ, १५ वाँ ; (गाया १, १)। °**दसी** स्त्री [°**दशी**] १ पनरहवी, १५ वी, (विसे ५७६)। २ पूर्णिमा ; ३ अमावास्या ; (सुज्ज १०)। °**दसुत्तरसय** वि [°**दशोत्तरशततम**] एक सौ पनरहवाँ, ११५ वाँ, (पउम ११५, २४)। °**नउइ** देखो °**णउइ** ; (पि ४४७)। °**नाणि** वि [°**ज्ञानिन्**] मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यव और

केवल इन पाँचों ज्ञानों से युक्त, सर्वज्ञ; (सम्म ६६)। °पव्वी स्त्री [°पर्वी] मास की दो अष्टमी, दो चतुर्दशी और शुक्र पंचमी ये पाँच तिथियाँ ; (रयण २६) । °पुव्वासाढ पु [°पूर्वाषाढ] दशवें जिन-देव श्रीशीतलनाथ, जिनके पाँचों कल्याणक पूर्वाषाढा नक्षत्र में हुए थे ; (ठा ५, १) । °पूस पुं [°पुष्य] पनरहवें जिन-देव श्रीधर्मनाथ ; (ठा ५, १)। °बाण पुं [°बाण] काम-देव ; (सुर ४, २४६ ; कुमा) । °भूय न [°भूत] पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये पाँच पदार्थ ; (सूअ १, १, १) । °भूयवाइ वि [°भूतवादिन्] आत्म आदि पदार्थों को न मान कर केवल पाँच भूतों को ही मानने वाला, नास्तिक ; (सूअ १, १, १) । °महव्वइय वि [°महाव्रतिक] पाँच महाव्रतों वाला ; (सूअ २, ७) । °महव्वय न [°महाव्रत] हिंसा, असत्य, चोरी, मैथुन, और परिग्रह का सर्वथा परित्याग ; (पगह २, ५)। °महाभूय न [°महाभूत] पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये पाँच पदार्थ ; (विसे) । °मुट्ठिय वि [°मुष्टिक] पाँच मुष्टिओं का, पाँच मुष्टिओं से पूर्ण किया जाता (लोच) ; (णाया १, १: कप्प ; महा) । °मुह पुं [°मुख] सिंह, पंचानन; (उप १०३१ टी) । °यसी देखो °दसी ; (पउम ६६, १४) । °रत्त, °राय पुं [°रात्र] पाँच रात ; (मा ४३ ; पगह २, ५—पत्र १४६) । °रासिय न [°राशिक] गणित-विशेष ; (ठा ४, ३) । °रूविय वि [°रूपिक] पाँच प्रकार के वर्ण वाला ; (ठा ४, ४) । °वत्थुग न [°वस्तुक] आचार्य हरिभद्रसूरि-रचित ग्रन्थ-विशेष ; (पंचव १, १) । °वरिस वि [°वर्ष] पाँच वर्ष की अवस्था वाला ; (सुर २, ७३) । °विह वि [°विध] पाँच प्रकार का ; (अणु) । °वीसइम वि [°विंशतितम] पचीसवाँ ; (पउम २५, २६) । °संगह पु [°संग्रह] आचार्य श्रीहरिभद्रसूरि-कृत एक जैन ग्रन्थ ; (पंच १) । °संवच्छरिय वि [°सांवत्सरिक] पाँच वर्ष परिमाण वाला, पाँच वर्ष की आयु वाला ; (सम ७५) । °सट्ठ वि [°षष्ट] पैंसठवाँ, ६५वाँ ; (पउम ६५, ९१) । °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] पैंसठ, ६५ ; (कप्प) । °समिय वि [°समित] पाँच समितिओं का पालन करने वाला : (सं ८) । °सर पु [°शर] काम-देव ; (पाअ ; सुर २, ६३ ; सुपा ६० ; रंभा) । °सीस पुं [°शीर्ष] देव-विशेष ; (दीव) । °सुण्ण न [°शून्य] पाँच प्राणि-वध-स्थान ; (सूअ १, १, ४) । °सुत्तग न [°सूत्रक] आचार्य-श्रीहरिभद्रसूरि निर्मित एक जैन ग्रन्थ ; (पसू १) । °सेल, °सेलग, °सेलय पुं [°शैल, °क] लवणोदधि में स्थित और पाँच पर्वतों से विभूषित एक छोटा द्वीप ; (महा ; बृह ४) । °सोगंधिअ वि [°सौगन्धिक] इलायची, लवंग, कपूर, कक्कोल और जातिफल इन पाँच सुगन्धित वस्तुओं से संस्कृत ; "नन्नत्थ पंचसोगंधिएणं तंबोलेणं, अवसेस-मुह-वासविहिं पच्चक्खामि " (उवा) । °हत्तर वि [°सप्तत] पचहत्तरवाँ, ७५ वाँ ; (पउम ७५, ८६) । °हत्तरि स्त्री [°सप्तति] १ संख्या-विशेष, ७५ ; २ जिनकी संख्या पचहत्तर हो वे ; (पि २६४ ; कप्प) । °हत्थुत्तर पुं [°हस्तोत्तर] भगवान् महावीर, जिनके पाँचों कल्याणक उत्तरफाल्गुनी-नक्षत्र में हुए थे ; (कप्प) । °उह पु [°युध] कामदेव ; (सण) । °णउइ स्त्री [°नवति] १ संख्या-विशेष, पंचानवे, ९५ ; २ जिनकी संख्या पंचानवे हो वे ; (सम ९७ ; पउम २०, १०३ ; पि ४४०) । °णउय वि [°नवत] पंचानवाँ, ९५ वाँ; (पउम ९५, ९९) । °णण पुं [°नन] सिंह, गजेन्द्र ; (सुपा १७६ ; भवि) । °णुव्वइय वि [°णुव्रतिक] हिंसा, असत्य, चोरी, मैथुन और परिग्रह का आंशिक त्याग वाला ; (उवा ; औप ; णाया १, १२) । °त्थाम देखो °जाम ; (बृह ६) । °ास स्त्रीन [°शत्] १ संख्या-विशेष, पचास, ५० ; २ जिनकी संख्या पचास हो वे ; " पंचासं अज्जियासा-हस्सीओ " (सम ७०) । °ासग न [°शक] आचार्य श्रीहरिभद्रसूरि-कृत एक जैन ग्रन्थ ; (पंचा) । °ासीइ स्त्री [°शीति] १ संख्या-विशेष, अस्सी और पाँच, ८५ , २ जिनकी संख्या पचासी हो वे ; (सम ९२ ; पि ४४६) । °ासीइम वि [°शीतितम] पचासीवाँ, ८५ वाँ ; (पउम ८५, ३१ ; कप्प ; पि ४४९) ।

पंचअण्ण देखो **पंचजण्ण** ; (गउड) ।

पंचंग न [**पञ्चाङ्ग**] १ दो हाथ, दो जानू और मस्तक ये पाँच शरीरावयव ; २ वि. पूर्वोक्त पाँच अंग वाला ; (प्रणाम आदि) " पंचंगं करिय ताहे पणिवायं " (सुर ४, ६८) ।

पंचंगुलि पुं [**दे**] एरण्ड-वृक्ष, रेंडी का गाछ ; (दे ६, १७) ।

पंचंगुलि पुं [**पञ्चाङ्गुलि**] हस्त, हाथ ; (णाया १, १ ; कप्प) ।

पंचंगुलिआ स्त्री [**पञ्चाङ्गुलिका**] वल्ली-विशेष ; (पगण १—पत्र ३३) ।

पंचग न [**पञ्चक**] पाँच का समूह ; (आचा) ।

पंचजण्ण पु [**पाञ्चजन्य**] श्रीकृष्ण का शंख ; (काप्र ८६२ ; गा ६७४) ।

पंचत्त } न [**पञ्चत्व**] १ पाँचपन, पञ्चत्वपना ; (सुर १, ५) । २ मरण मौत ; (सुर १, ५ ; मण ; उप पृ १२५) ।
पंचत्तण

पंचपुल पुन [**दे**] मत्स्य-बन्धन विशेष, मछली पकड़ने की जाल-विशेष ; (विपा १, ८—पत्र ८५ टि) ।

पंचम वि [**पञ्चम**] १ पाँचवाँ ; (उवा) । २ स्वर-विशेष ; (ठा ७) । °**धारा** स्त्री [°**धारा**] अश्व की एक तरह की गति ; (महा) ।

पंचमासिअ वि [**पाञ्चमासिक**] १ पाँच मास की उम्र का ; २ पाँच मास में पूर्ण होने वाला (अभिग्रह आदि) ; स्त्री—°**आ** ; (सम २१) ।

पंचमिय वि [**पाञ्चमिक**] पाँचवाँ, पंचम ; (ओघ ६-१) ।

पंचमी स्त्री [**पञ्चमी**] १ पाँचवी ; (प्रामा) । २ तिथि-विशेष, पंचमी तिथि; (सम २६ ; श्रा २८) । ३ व्याकरण-प्रसिद्ध अपादान विभक्ति ; (अणु) ।

पंचयन्न देखो **पञ्चजण्ण** ; (गाया १, १६ ; सुपा २६४) ।

पंचलोइआ स्त्री [**पञ्चलौकिका**] भुजपरिसर्प-विशेष, हाथ से चलने वाले सर्प-जातीय प्राणी की एक जाति; (जीव २) ।

पंचवडी स्त्री [**पञ्चवटी**] पाँच वट-वृक्ष वाला एक स्थान, जहां श्रीरामचन्द्रजी ने अपने वनवास के समय आवास किया था, इस स्थान का अस्तित्व कई लोग 'नासिक' नगर के पास गोदावरी नदी के किनारे मानते है, जब कि आधुनिक गवेषक लोग बस्तर रजवाड़े के दक्षिणी छोर पर, गोदावरी के किनारे, इसका होना सिद्ध करते है , (उत्तर ८१) ।

पंचाल पुं ब [**पञ्चाल, पाञ्चाल**] १ देश-विशेष , पञ्जाब देश ; (गाया १, ८ ; महा ; पगण १) । २ पु. पञ्जाब देश का राजा , (भवि) । ३ छन्द-विशेष , (पिंग)।

पंचालिआ स्त्री [**पञ्चालिका**] पुतली, काष्ठादि-निर्मित छोटी प्रतिमा ; (कप्पू) ।

पंचालिआ स्त्री [**पाञ्चालिका**] १ द्रुपद-राज की कन्या, द्रौपदी ; (वेणी १५८) । २ गान का एक भेद ; (कप्पू) ।

पंचावण्ण } स्त्रीन [**दे. पञ्चपञ्चाशत्**] १ संख्या-विशेष, पचपन, ५५ ; २ जिनकी संख्या पचपन हो वे , (हे २, १७४ , दे २, २७ , दे २, २७ टि) ।
पंचावन्न

पंचावन्न वि [**दे. पञ्चपञ्चाश**] पचपनवाँ ; (पउम ५५, ६१) ।

पंचिंदिय } वि [**पञ्चेन्द्रिय**] १ वह जीव जिसको त्वचा, जीभ, नाक, आँख और कान ये पाँचो इन्द्रियाँ हों ; (पगण १ ; कप्प ; जीव १ , भवि) । २ न त्वचा आदि पाँच इन्द्रियाँ ; (धर्म ३) ।
पंचिंदिय

पंचुंबर स्त्रीन [**पञ्चोदुम्बर**] वट, पीपल, उदुम्बर, प्लक्ष और काकोदुम्बरी का फल ; (भवि) । स्त्री —°**री** , (श्रा २०) ।

पंचुत्तरसय वि [**पञ्चोत्तरशततम**] एक सौ पाँचवाँ, १०५वाँ , (पउम १०५, ११५) ।

पंचेडिय वि [**दे**] विनाशित ; " जेण लोयस्स लोहत्तण फेडियं दुक्कदप्पदप्पं च पंचेडियं " (भवि) ।

पंचेसु पुं [**पञ्चेषु**] कामदेव, कंदर्प ; (कप्पू ; रंभा) ।

पंछि पु [**पक्षिन्**] पक्षी, पंखी, पखेरू, चिड़िया ; (उप १०३१ टी) ।

पंजर न [**पञ्जर**] पिंजरा, पिंजड़ा ; (गउड ; कप्पू , अच्चु २) ।

पंजरिय वि [**पञ्जरित**] पिंजरे में बंद किया हुआ , (गउड) ।

पंजल वि [**प्राञ्जल**] सरल, सीधा, ऋजु , (सुपा ३६४ ; वज्जा ३०) ।

पंजलि पुंस्त्री [**प्राञ्जलि**] प्रणाम करने के लिए जोड़ा हुआ कर-संपुट, हस्त-न्यास-विशेष, संयुक्त कर-द्वय ; (उवा) । °**उड** पुं [°**पुट**] अञ्जलि-पुट, संयुक्त कर-द्वय ; (सम १५१ , औप) । °**उड,** °**कड** वि [**कृतप्राञ्जलि**] जिसने प्रणाम के लिए हाथ जोड़ा हो वह ; (भग ; औप) ।

पंड वि [**पाण्ड्य**] देश-विशेष में उत्पन्न । स्त्री—°**डी** , " पंडीणं गंडवालीपुलअणचवला " (कप्पू) ।

पंड } पुं [**पण्ड,** °**क**] १ नपुंसक, क्लीव , (ओघ ४६७ ; सम १५ ; पात्र) । २ न मेरु पर्वत का एक वन ; (ठा २,३ ; इक) ।
पंडग
पंडय

पंडय देखो **पंडव** ; (हे १, ७०) ।

पंडर पुं [**पाण्डर**] १ क्षीरवर-नामक द्वीप का अधिष्ठाता देव ; (राज) । २ श्वेत वर्ण, सफेद रंग ; ३ वि श्वेत-

वर्ण वाला, सफद ; (कप्प)। °भिक्खु पुं [°भिक्षु] श्वेताम्बर जैन संप्रदाय का मुनि ; (स ५५२)।

पंडर देखो **पंडुर** ; (स्वप्न ७१)।

पंडरंग पुं [**दे**] रुद्र, महादेव, शिव , (दे ६, २३)।

पंडरंगु पुं [**दे**] ग्रामेश, गाँव का अधिपति ; (षड्)।

पंडरिय देखो **पंडुरिअ** ; (भवि)।

पंडव पुं [**पाण्डव**] राजा पाण्डु का पुत्र—१ युधिष्ठिर, २ भीम, ३ अर्जुन, ४ सहदेव और ५ नकुल ; (णाया १, १६ ; उप ६४८ टी)।

पंडविअ वि [**दे**] जलार्द्र, पानी से भीजा हुआ ; (दे ६, २०)।

पंडिअ वि [**पण्डित**] १ विद्वान्, शास्त्रों के मर्म को जानने वाला, बुद्धिमान्, तत्त्वज्ञ , "कामज्झया गणिया होत्था बावत्तरीकलापंडिया" (विवा १, २ ; प्रासू ७४ ; १२६)। २ संयत, साधु ; (सूअ १, ८, ६)। °**मरण** न [°**मरण**] साधु का मरण, शुभ मरण-विशेष ; (भग ; पञ्च ४६)। °**माण** वि [°**म्मन्य**] विद्याभिमानी, निज को पण्डित मानने वाला, दुर्विदग्ध ; (ओघ २७ भा)। °**माणि** वि [°**मानिन्**] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (पउम १०५, २१ ; उप १३४ टी)। °**वीरिअ** न [°**वीर्य**] संयत का आत्म-बल ; (भग)।

पंडिच्च } न [**पाण्डित्य**] पण्डिताई, विद्वत्ता, वैदुष्य ,
पंडित्त } (उव ; सुर १२, ६८ ; सुपा २६ ; रंभा ; सं ५७)।

पंडी देखो **पंड**=पाण्ड्य।

पंडीअ (अप) देखो **पंडिअ** ; (पिंग)।

पंडु पुं [**पाण्डु**] १ नृप-विशेष, पाण्डवों का पिता , (उप ६४८ टी ; सुपा २७०)। २ रोग-विशेष, पाण्डु-रोग ; (जं १)। ३ वर्ण-विशेष, शुक्ल और पीत वर्ण ; ४ श्वेत वर्ण ; ५ वि. शुक्ल और पीत वर्ण वाला , (कप्प, गउड)। ६ सफेद, श्वेत ; "सेअं सिअं वलक्खं अवदायं पंडु धवलं च" (पाअ ; गउड)। ७ शिला-विशेष, पाण्डु-कम्बला-नामक शिला , (ज ४ ; इक)। °**कंबलसिला** स्त्री [°**कम्बलशिला**] मेरु पर्वत के पाण्डक वन के दक्षिण छोर पर स्थित एक शिला, जिस पर जिन-देवों का जन्माभिषेक किया जाता है; (जं ४)। °**कंबला** स्त्री [°**कम्बला**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (ठा २, ३)। °**तणय** पुं [°**तनय**] पाण्डुराज का पुत्र, पाण्डव ; (गउड ४८५)। °**भद्द** पुं [°**भद्र**] एक जैन मुनि ,जो आर्य संभूतिविजय के शिष्य थे ; (कप्प)। °**मट्टिया**, °**मत्तिया** स्त्री [°**मृत्तिका**] एक प्रकार की सफेद मिट्टी ; (जीव १ ; पण्ण १—पत्र २५)। °**महुरा** स्त्री [°**मथुरा**] स्वनाम-ख्यात एक नगरी, पाण्डवों ने बनाई हुई भारतवर्ष के दक्षिण तरफ की एक नगरी का नाम ; (णाया १, १६—पत्र २२५ ; अंत)। °**राय** पुं [°**राज**] राजा पाण्डु, पाण्डवों का पिता ; (णाया १, १६)। °**सुय** पुं [°**सुत**] पाण्डव ; (उप ६४८ टी)। °**सेण** पुं [°**सेन**] पाण्डवों का द्रौपदी से उत्पन्न एक पुत्र ; (णाया १, १६ ; उप ६४८ टी)।

पंडुइय वि [**पाण्डुकित**] १ श्वेत रंग का किया हुआ ; (णाया १, १—पत्र २८)।

पंडुग } पुं [**पाण्डुक**] १ चक्रवर्ती का धान्यों की पूर्ति
पंडुय } करने वाला एक निधि ; (राज ; ठा २, १—पत्र ४४ ; उप ६८६ टी)। २ सर्प की एक जाति ; (आवू १)। ३ न. मेरु पर्वत पर स्थित एक वन, पाण्डक-वन ; (सम ६६)।

पंडुर पुं [**पाण्डुर**] १ श्वेत वर्ण, सफेद रंग ; २ पीत-मिश्रित श्वेत वर्ण ; ३ वि. सफेद वर्ण वाला ; ४ श्वेत-मिश्रित पीत वर्ण वाला ; (कप्प ; उव ; से ८, ४६)। °**ज्जा** स्त्री [°**र्या**] एक जैन साध्वी का नाम ; (आवम)। °**त्थिय** पुं [°**स्थिक**] एक गाँव का नाम ; (आचू १)।

पंडुरग } पुं [**पाण्डुरक**] १ शिव-भक्त संन्यासिओं की
पंडुरय } एक जाति ; (णाया १, १५—पत्र १६३)। २ देखो **पंडुर** ; "केसा पंडुरया हवंति ते" (उत्त ३)।

पंडुरिअ } वि [**पाण्डुरित**] पाण्डुर वर्ण वाला बना
पंडुल्लइय } हुआ ; (गा ३८८ ; विवा १, २—पत्र २७)।

पंत वि [**प्रान्त**] १ अन्त-वर्ती, अन्तिम ; (भग ६, ३३)। २ अशोभन, असुन्दर ; (आचा ; ओघ १७ भा)। ३ इन्द्रियों का अननुकूल, इन्द्रिय-प्रतिकूल ; (पण्ह २, ५)। ४ अभद्र, असभ्य, अशिष्ट ; (ओघ ३६ टी)। ५ अपशद, नीच, दुष्ट , (णाया १, ८)। ६ दरिद्र, निर्धन ; (ओघ ६१)। ७ जीर्ण, फटा-टूटा ; "पंतवत्थ—" (बृह २)। ८ व्यापन्न, विनष्ट ; "णिम्भावचणगमाई अंत, पंत च होइ वावन्नं" (बृह १ ; आचा)। ६ नीरस, सूखा ; (उत्त ८)। १० भुक्तावशिष्ट, खा लेने पर बचा हुआ ; ११ पर्युषित, बासी ; (णाया १, ५—पत्र १११)। °**कुल** न [°**कुल**] नीच कुल, जघन्य जाति ;

(ठा ८)। °चर वि [°चर] नीरस आहार की खोज करने वाला तपस्वी ; (पगह २, १)। °जीवि वि [°जीविन्] नीरस आहार से शरीर-निर्वाह करने वाला ; (ठा ५, १)। °हार वि [°हार] लूखा-सूखा आहार करने वाला ; (ठा ५, १)।

पंति स्त्री [पङ्क्ति] १ पंक्ति, श्रेणी ; (हे १, २५ ; कुमा ; कप्प); २ सेना-विशेष, जिसमें एक हाथी, एक रथ, तीन घोड़े और पाँच पदाती हों ऐसी सेना ; (पउम ५६, ४)।

पंति स्त्री [दे] वेणी, केश-रचना ; (दे ६, २)।

पंतिय स्त्रीन [पङ्क्ति] पंक्ति, श्रेणी ; " सराणि वा सरपंतियाणि वा सरसरपंतियाणि वा " (आचा २, ३, ३, २)। स्त्री—" पंतियाओ " (अणु)।

पंथ पु [पन्थ, पथिन्] मार्ग, रास्ता ; " पंथं किर देसित्ता " (हे १, ८८), " पंथम्मि पहपरिब्भट्ठ " (सुपा ५५० ; हेका ५४ ; प्रासू १७३)।

पंथ पुं [पान्थ] पथिक, मुसाफिर ; (हे १, ३० ; अच्चु ७४)। °कुट्टण न [°कुट्टन] मार-पीट कर मुसाफिरों को लूटना ; (णाया १, १८)। °कोट्ट पुं [°कुट्ट] वही अर्थ ; (विपा १, १—पत्र ११)। °कोट्टि स्त्री [°कुट्टि] वही अर्थ ; "से चोरसेणावई गामघायं वा जाव पंथकोट्टिं वा काउं वच्चति " (णाया १, १८)।

पंथग पुं [पान्थक] एक जैन मुनि ; (णाया १, ५ ; धम्म ९ टी)।

पंथाण देखो **पंथ**=पन्थ, पथिन् ; " पंथज्झाणे पंथाणज्झाणे " (आउ ११)।

पंथिअ पुं [पन्थिक, पथिक] मुसाफिर, पान्थ ; " पथिअ णं एत्थ संथर " (काप्र १५८ ; महा ; कुमा ; णाया १, ८ ; वज्जा ६० ; १५८)।

पंथुच्छुहणी स्त्री [दे] श्वशुर-गृह से पहली वार आनीत स्त्री ; (दे ६, ३५)।

पंपुअ वि [दे] दीर्घ, लम्बा , (दे ६, १२)।

पंफुल्ल वि [प्रफुल्ल] विकसित ; (पिंग)।

पंफुलिअ वि [दे] गवेषित, जिसकी खोज की गई हो वह ; (दे ६, १७)।

पंस सक [पांसय्] मलिन करना। पसेई ; (विसे ३०५२)।

पंसण वि [पांसन] कलङ्कित करने वाला, दूषण लगाने वाला ; (हे १, ७० ; सुपा ३४५)।

पंसु पुं [पांसु, पांशु] धूली, रज, रेणु ; (हे १, २६ ; पाअ ; आचा)। °कीलिय, °क्कीलिय वि [°क्रीडित] जिसके साथ बचपन में पांशु-क्रीडा की गई हो वह, बचपन का दोस्त ; (महा ; सण)। °पिसाय पुंस्त्री [°पिशाच] जो रेणु-लिप्त होने के कारण पिशाच के तुल्य मालूम पड़ता हो वह ; (उत्त १२)। °मूलिय पु [°मूलिक] विद्याधर, मनुष्य-विशेष ; (राज)।

पंसु पुं [पशु] कुठार ; (हे १, २६)।

पंसु देखो **पसु** ; (षड्)।

पंसुल पुं [दे] १ कोकिल, कोयल , २ जार, उपपति ; (दे ६, ६६)। ३ वि रुद्ध, रोका हुआ ; (षड्)।

पंसुल पुं [पांसुल] १ पुंश्चल, परस्त्री-लम्पट ; (गा ५१० ; ५९९)। २ वि धूलि-युक्त ; (गउड)।

पंसुला स्त्री [पांसुला] कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री ; (कुमा)।

पंसुलिअ वि [पांसुलित] धूलि-युक्त किया हुआ ; " पंसुलिअकरेण " (गउड)।

पंसुलिआ स्त्री [दे. पांशुलिका] पार्श्व की हड्डी ; (पत्र २५३)।

पंसुली स्त्री [पांसुली] कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री ; (पाअ ; सुर १५, २ ; हे २, १७९)।

पकंथ देखो **पगंथ** ; (आचा १, ६, २)।

पकंथग पुं [प्रकन्थक] अश्व-विशेष ; (ठा ४, ३—पत्र २४८)।

पकंप पुं [प्रकम्प] कम्प, काँपना ; (आव ४)।

पकंपण न [प्रकम्पन] ऊपर देखो ; (सुपा ६५१)।

पकंपिअ वि [प्रकम्पित] प्रकम्प-युक्त, काँपा हुआ ; (आव २)।

पकंपिर वि [प्रकम्पितृ] काँपने वाला ; (उप पृ १३२)। स्त्री—°री ; (रंभा)।

पकड्ढ देखो **पगड्ढ** । कवक्र—**पकड्ढिज्जमाण** ; (औप)।

पकड्ढ वि [प्रकृष्ट] १ प्रकर्ष-युक्त ; २ खींचा हुआ ; (औप)।

पकड्ढण न [प्रकर्षण] आकर्षण, खींचाव; (निचू २०)।

पकत्थ सक [प्र+कत्थ्] श्लाघा करना, प्रशंसा करना। पकत्थइ ; (सूअ १, ४, १, १९ ; पि ५४३)।

पकप्प अक [प्र+क्लृप्] १ काम में आना, उपयोग में आना। २ काटना, छेदना। कृ—**पकप्प** ; (ठा ५, १—पत्र ३००)। देखो **पगप्प**=प्र+क्लृप्।

पकप्प सक [प्र+कल्पय्] १ करना, बनाना। २ संकल्प करना। "वासं वयं वित्तिं पकप्पयामो" (सूअ २, ६, ५२)।

पकप्प पुं [प्रकल्प] १ उत्कृष्ट आचार, उत्तम आचरण ; (ठा ४, ३)। २ अपवाद, बाधक नियम ; (उप ६७७ टी ; निचू १)। ३ अध्ययन-विशेष 'आचाराग' सूत्र का एक अध्ययन, ४ व्यवस्थापन ; "अट्ठावीसविहे आयारपकप्पे" (सम २८)। ५ कल्पना ; ६ प्ररूपणा ; ७ विच्छेद, प्रकृष्ट छेदन ; (निचू १)। ८ जैन साधुओं का एक प्रकार का आचार, स्थविर-कल्प ; (पंचभा)। ९ एक महाग्रह, ज्योतिष देव-विशेष ; (सुज्ज २०)। °**गंथ** पुं [°ग्रन्थ] एक जैन प्राचीन ग्रन्थ, 'निशीथ' सूत्र ; (जीव १)। °**जइ** पु [°यति] 'निशीथ' अध्ययन का जानकार साधु ; "धम्मो जिणपन्नत्तो पकप्पजइणा कहेयव्वो" (धर्म १)। °**धर** वि [°धर] 'निशीथ' अध्ययन का जानकार, (निचू २०)। देखो **पगप्प**=प्रकल्प।

पकप्पणा स्त्री [प्रकल्पना] प्ररूपणा, व्याख्या ; "पन्नवणा त्ति वा पकप्पणा त्ति वा एगट्ठा" (निचू १)।

पकप्पिअ वि [प्रकल्पित] १ संकल्पित ; (द २)। २ निर्मित ; (महा)। ३ न, पूर्वोपार्जित द्रव्य ; "ण सो अत्थि पकप्पियं" (सूअ १, ३, ३, ४)। देखो **पगप्पिअ**।

पकय वि [प्रकृत] प्रवृत्त, कार्य में लगा हुआ ; (उप ६२०)।

पकर सक [प्र+कृ] १ करने का प्रारम्भ करना। २ प्रकर्ष से करना। ३ करना। पकरेइ, पकरंति, पकरेंति ; (भग , पि ५०६)। वकृ—**पकरेमाण**, (भग)। संकृ—**पकरित्ता** ; (भग)।

पकर देखो **पयर**=प्रकर ; (नाट—वेणी ७२)।

पकरणया स्त्री [प्रकरणता] करण, कृति ; (भग)।

पकहिअ वि [प्रकथित] जिसने कहने का प्रारम्भ किया हो वह ; (उप १०३१ टी ; वसु)।

पकाम न [प्रकाम] १ अत्यर्थ, अत्यन्त , (गाया १, १, महा ; नाट—शकु २७)। २ पु. प्रकृष्ट अभिलाष ; (भग ७, ७)।

पकाव (अप) सक [पच्] पकाना। पकावउ ; (पिंग ; पि ४५४)।

पकास देखो **पयास**=प्रकाश ; (पिंग)।

पकिट्ठ देखो **पगिट्ठ** ; (गउ)।

पकिण्ण वि [प्रकीर्ण] १ उप्त, बोया हुआ ; २ दत्त, दिया हुआ ; "जहिं पकिण्णा (न्ना) विरुहंति पुण्णा" (उत्त १२, १३)। देखो **पइण्ण**=प्रकीर्ण।

पकिदि (शौ) देखो **पइइ**=प्रकृति ; (स्वप्न ६० ; अभि ६५)।

पकिन्न देखो **पकिण्ण** ; (उत्त १२, १३)।

पकुण देखो **पकर**=प्र+कृ। पकुणइ ; (कम्म १, ६०)।

पकुप्प अक [प्र+कुप्] क्रोध करना। पकुप्पंति ; (महानि ४)।

पकुप्पित (चूपै) वि [प्रकुपित] क्रुद्ध, कुपित ; (हे ४, ३२६)।

पकुविअ ऊपर देखो ; (महानि ४)।

पकुव्व सक [प्र+कृ, प्र+कुर्व्] १ करने का प्रारम्भ करना। २ प्रकर्ष से करना। ३ करना। पकुव्वइ ; (पि ५०८)। वकृ - **पकुव्वमाण** ; (सुर १६, २४ ; पि ५०८)।

पकुव्वि वि [प्रकारिन्, प्रकुर्विन्] १ करने वाला, कर्ता। २ पु. प्रायश्चित्त देकर शुद्धि करने में समर्थ गुरु ; (द्र ४६ ; ठा ८ ; पुप्फ ३५६)।

पकूविअ वि [प्रकूजित] ऊंचे स्वर से चिल्लाया हुआ ; (उप पृ ३३३)।

पकोट्ठ देखो **पओट्ठ** ; (गउ)।

पकोव पु [प्रकोप] गुस्सा, क्रोध ; (धा १४)।

पक्क वि [पक्व] पका हुआ ; (हे १, ४७ ; २, ७९ ; पाअ)।

पक्क वि [दे] १ दृप्त, गर्वित ; २ समर्थ, पक्का, पहुँचा हुआ ; (दे ६, ६४ ; पाअ)।

पक्कंत वि [प्रक्रान्त] प्रस्तुत, प्रकृत ; (कुमा २७)।

पक्कग्गाह पुं [दे] १ मकर, मगरमच्छ ; (दे ६, २३)। २ पानी में बसने वाला सिंहाकार जल-जन्तु ; (से ५, ४७)।

पक्कण वि [**दे**] १ अ-सहन, अ-सहिष्णु ; २ समर्थ, शक्त ; (दे ६, ६६)। ३ पुं. चाण्डाल ; (सं ६३)। ४ एक अनार्य देश; ५ पुस्त्री. अनार्य देश-विशेष में रहने वाली एक मनुष्य-जाति . (औप ; राज); स्त्री—°**णी** ; (णाया १, १ ; औप ; इक)। ६ पुं. एक नीच जाति का घर, शवर-गृह ; (पंरा ५२)। °**उल** न [°**कुल**] १ चाण्डाल का घर , (बृह ३)। २ एक गर्हित कुल ; "पक्कणउले वसंतो सउणी इयरोवि गरहिओ होइ" (आव ३)।

पक्कणि वि [**दे**] १ अतिशय शोभमान, खूब शोभता हुआ ; २ भग्न, भाँगा हुआ ; ३ प्रियंवद, प्रिय-भाषी ; (दे ६, ६५)।

पक्कणिय पुस्त्री [**दे**] एक अनार्य देश में रहने वाली मनुष्य-जाति ; (पण्ह १, १—पत्र १४ ; इक)।

पक्कन्न न [**पक्वान्न**] केवल घी में बनी हुई वस्तु, मिठाई आदि , (सुपा ३८७)।

पक्कम सक [**प्र + क्रम्**] प्रकर्ष से समर्थ होना। पक्कमइ ; (भग १५—पत्र ६७८)।

पक्कम पुं [**प्रक्रम**] प्रस्ताव, प्रसंग ; (सुपा ३७४)।

पक्कल वि [**दे**] १ समर्थ, शक्त ; (हे २, १७४ ; पाअ ; सुर ११, १०४ ; वज्जा ३४)। २ दर्प-युक्त, गर्वित ; (सुर ११, १०४ ; गा ११८)। ३ प्रौढ ; "चत्तारि पक्कल-वइल्ला" (गा ८१२ ; पि ४३६)।

पक्कस देखो **वक्कस** ; (आचा)।

पक्कसावअ पुं [**दे**] १ शरभ ; २ व्याघ्र , (दे ६, ७५)।

पक्काइय वि [**पक्वीकृत**] पकाया हुआ ; "पक्काइयमाउ-लिंगसारिच्छा" (वज्जा ६२)।

पक्किर सक [**प्र + कॄ**] फेंकना। वकृ—"छारं च धूलिं च कयवरं च उवरिं **पक्किरमाणा**—"(णाया १, २)।

पक्कीलिय वि [**प्रक्रीडित**] जिसने क्रीड़ा का प्रारम्भ किया हो वह ; (णाया १, १ ; कप्प)।

पक्केल्लय वि [**पक्व**] पका हुआ ; (उवा)।

पक्ख पुं [**पक्ष**] १ पाख, पखवारा, आधा महीना, पन्द्रह दिन-रात ; (ठा २, ४— पत्र ८६ ; कुमा)। २ शुक्ल और कृष्ण पक्ष, उजेला और अँधेरा पाख ; (जीव २ ; हे २, १०६)। ३ पार्श्व, पाँजर, कन्धा के नीचे का भाग ; ४ पक्षियों का अवयव-विशेष, पख, पर, पतत्र ; (कुमा)। ५ तर्क-शास्त्र-प्रसिद्ध अनुमान-प्रमाण का एक अवयव, साध्य वाली वस्तु ; (विसे २८२४)। ६ तरफ, ओर ; ७ जत्था, दल, टोली ; ८ मित्र, सखा ; ९ शरीर का आधा भाग ; १० तरफदार , ११ तीर का पंख ; (हे २, १४७)। १२ तरफदारी ; (वव १)। °**ग** वि [°**ग**] पक्ष-गामी, पक्ष-पर्यन्त स्थायी ; (कम्म १, १८)। °**पिंड** पुन [°**पिण्ड**] आसन-विशेष—१ जानु और जाँघ पर वस्त्र बाँध कर बैठना ; २ दोनों हाथों से शरीर का बन्धन कर बैठना ; (उत्त १, १६)। °**य** पुं [°**क**] पंखा, तालवृन्त ; (कप्प)। °**वंत** वि [°**वत्**] तरफदारी वाला ; (वव १)। °**वाइल्ल** वि [°**पातिन्**] पक्षपात करने वाला, तरफदारी करने वाला ; (उप ७२८ टी , धम्म १ टी)। °**वाद** पु [°**पात**] तरफदारी ; (उप ६७० ; स्वप्न ४५)। °**वादि** (शौ) देखो °**वाइल्ल** ; (नाट—विक्र २ ; मालती ६५)। °**वाय** देखो °**वाद** ; (सुपा २०६ ; ३६३)। °**वाय** पुं [°**वाद**] पक्ष-संबन्धी विवाद ; (उप पृ ३१२)। °**वाह** पु [°**वाह**] वेदिका का एक देश-विशेष , (जं १)। °**वडिअ** वि [°**पतित**] पक्षपाती ; (हे ४, ४०१)। °**वाइया** स्त्री [°**वापिका**] होम-विशेष , (स ७५७)।

पक्खंत न [**पक्षान्त**] अन्यतर इन्द्रिय-जात ; "अन्नयर इंदियजायं पक्खंतं भण्णइ" (निचू ६)।

पक्खंतर न [**पक्षान्तर**] अन्य पक्ष, भिन्न पक्ष, दूसरा पक्ष ; (नाट— महावी २५)।

पक्खंद सक [**प्र + स्कन्द्**] १ आक्रमण करना। २ दौड कर गिरना। ३ अध्यवसाय करना। "पक्खंदे जलियं जोइं धूमकेउं दुरासयं" (राज)। "अगणिं व पक्खंद पयंगसेणा" (उत्त १२, २७)।

पक्खंदण न [**प्रस्कन्दन**] १ आक्रमण ; २ अध्यवसाय। ३ दौड कर गिरना , (निचू ११)।

पक्खज्जमाण वि [**प्रखाद्यमान**] जो खाया जाता हो वह , (सूअ १, ५, २)।

पक्खडिअ वि [**दे**] प्रस्फुरित, विजृम्भित, समुत्पन्न ; "पक्खडिए सिहिपडिित्थिरे विरहे" (दे ६, २०)।

पक्खर सक [**सं + नाहय्**] सनद्ध करना, अश्व को कवच से सज्जित करना। पक्खरेह ; (सुपा २८८)। संकृ—**पक्खरिअ** ; (पिंग)।

पक्खर न [दे] पाखर, अश्व-संनाह, घोड़े का कवच ; (कुप्र ४४६, पिंग)।

पक्खरा स्त्री [दे] पाखर, अश्व-संनाह ; (दे ६, १०)। "ओसारिअपक्खरे" (विपा १, २)।

पक्खरिअ वि [संनद्ध] कवचित, संनद्ध, कवच से सज्जित, (अश्व) ; (सुपा ५०२ ; कुप्र १२० ; भवि)।

पक्खल अक [प्र + स्खल्]. गिरना, पडना, स्खलित होना। पक्खलइ ; (कस)। वकृ— **पक्खलंत, पक्खलमाण** ; (दस ५, १ ; पि ३०६ ; नाट—मृच्छ १७ ; वृह ६)।

पक्खाउज्ज न [पक्षातोद्य] पखाउज, पखावज, एक प्रकार का वाजा ; (कप्पू)।

पक्खाय वि [प्रख्यात] प्रसिद्ध, विश्रुत ; (प्रारू)।

पक्खारिण पु [प्रक्षारिण] १ अनार्य-देश विशेष ; २ पुंस्त्री. उस देश का निवासी मनुष्य ; स्त्री— °णी ; (राय)।

पक्खाल सक [प्र + क्षालय्] पखारना, शुद्ध करना, धोना। कवकृ—**पक्खालिज्जमाण** ; (गाया १, ५)। संकृ— **पक्खालिअ, पक्खालिऊण** ; (नाट—चैत ४० ; महा)।

पक्खालण न [प्रक्षालन] पखारना, धोना ; (स ५२ ; औप)।

पक्खालिअ वि [प्रक्षालित] पखारा हुआ, धोया हुआ ; (औप ; भवि)।

पक्खासण न [पक्ष्यासन] आसन-विशेष, जिसके नीचे अनेक प्रकार के पक्षिओं का चित्र हो ऐसा आसन ; (जीव ३)।

पक्खि पुस्त्री [पक्षिन्] पाखी, पक्षी ; (ठा ४, ४ ; आचा ; सुपा ५६२)। स्त्री— °णी ; (श्रा १४)। °**बिराल** पुस्त्री [°बिराल] पक्षि-विशेष ; (भग १३, ६)। स्त्री — °ली, (जीव १)। °**राय** पु [°राज] गरुड़ ; (सुपा २१०)। नीचे देखो।

पक्खिअ पुस्त्री [पक्षिक] १ ऊपर देखो, (श्रा २८)। २ वि. पक्षपाती, तरफदारी करने वाला, "तप्पक्खिओ पुणो अण्णो" (श्रा १२)।

पक्खिअ वि [पाक्षिक] १ पाख में होने वाला ; २ पक्ष से संवन्ध रखने वाला, अर्ध मास-संवन्धी ; (कप्प, धर्म २)। ३ न. पर्व-विशेष, चतुर्दशी ; (लहुअ १६ ; द ४५)। °**पक्खिअ** पुं [°पक्षिक] नपुसक-विशेष, जिसको एक पाख में तीव्र विषयाभिलाष होता हो और एक पक्ष में अल्प, ऐसा नपुसक ; (पुष्फ १२७)।

पक्खिकायण न [पाक्षिकायन] गोत्र-विशेष जो कौशिक गोत्र की एक शाखा है ; (ठा ७)।

पक्खिण देखो **पक्खि** ; "जह पक्खिणाण गरुडो" (पउम १४, १०४)।

पक्खिणी देखो **पक्खि**।

पक्खित्त वि [प्रक्षिप्त] फेंका हुआ ; (महा ; पि १८१)।

पक्खिप्प } देखो **पक्खिव**।
पक्खिप्पमाण }

पक्खिव सक [प्र + क्षिप्] १ फेंकना, फेंक देना। २ छोड़ना, त्यागना। ३ डालना। पक्खिवइ ; (महा ; कप्प)। पक्खिवह, पक्खिवेज्जा ; (आचा २, ३, २, ३)। कवकृ — **पक्खिप्पमाण** ; (गाया १, ८ — पत्र १२६ ; १४७)। संकृ—**पक्खिविऊण, पक्खिप्प** ; (महा ; सूअ १, ५, १ ; पि ३१६) कृ—**पक्खिवेयव्व** ; (उप ६४८ टी)। प्रयो —वकृ —**पक्खिवावेमाण** ; (गाया १, १२)।

पक्खीण वि [प्रक्षीण] अत्यन्त क्षीण ; "अहं पक्खीण-विभवो" (महा)।

पक्खुडिअ वि [प्रखण्डित] खण्डित, अ-संपूर्ण ; (सुपा ११६)।

पक्खुब्भ अक [प्र + क्षुभ्] १ क्षोभ पाना ; २ वृद्ध होना, वढ़ना। वकृ—**पक्खुब्भंत** ; (से २, २४)।

पक्खुब्भंत देखो **पक्खोभ**।

पक्खुभिय वि [प्रक्षुभित] क्षोभ-प्राप्त ; प्रक्षुब्ध ; (औप)।

पक्खेव } पुं [प्रक्षेप, °क] १ क्षेपण, फेंकना ;
पक्खेवग } "वहिया पोग्गलपक्खेवे" (उवा)। २ पूर्ति करने वाला द्रव्य, पूर्ति के लिये पीछे से डाली जाती वस्तु ; "अपक्खेवगस्स पक्खेवं दलयइ" (गाया १, १५ — पत्र १९३)।

पक्खेवण न [प्रक्षेपण] क्षेपण, प्रक्षेप ; (औप)।

पक्खेवय देखो **पक्खेवग** ; (वृह १)।

पक्खोड सक [वि + कोशय्] १ खोलना। २ फैलाना। पक्खोडइ ; (हे ४, ४२)। संकृ—**पक्खोडिऊण** ; (सुपा ३३८)।

पक्खोड सक [शद्] १ कँपाना ; २ झाड़ कर गिराना। पक्खोडइ ; (हे ४, १३०)। संकृ—**पक्खोडिय** ; (उप ५८४)।

पक्खोड सक [प्र+छादय्] ढकना, आच्छादन करना। संकृ—**पक्खोडिय**; (उप ६८४)।
पक्खोडण न [°शदन] धूनन, कँपाना; (कुमा)।
पक्खोडिअ वि [शदित] निर्झाटित, झाड कर गिराया हुआ; (दे ६, २७; पाअ)।
पक्खोडिय देखो **पक्खोड** = शद्, प्र+छादय्।
पक्खोभ सक [प्र+क्षोभय्] क्षुब्ध करना, क्षोभ उत्पन्न कर हिला देना। कवकृ—**पक्खुब्भंत**; (से २, २४)।
पक्खोलण न [शदन] १ स्खलित होने वाला; २ रुष्ट होने वाला; (राज)।
पखल वि [प्रखर] प्रचण्ड, तीव्र; (प्राप्र)।
पगइ स्त्री [प्रकृति] १ प्रकृति, स्वभाव; (भग; कम्म १, २; सुर १४, ६६; सुपा ११०)। २ प्रकृत अर्थ, प्रस्तुत अर्थ; "पडिसेहदुगं पगइं गमेइ" (विसे २५०२)। ३ प्राकृत लोक, साधारण जन-समूह; "दिन्नमुद्धारे बहुदव्वं पगईणं" (सुपा ५६७)। ४ कुम्भकार आदि अठारह मनुष्य-जातियाँ; "अट्ठारसपगइब्भंतराण को सो न जो एइ" (आक १२)। ५ कर्मों का भेद; (सम ६)। ६ सत्व, रज और तम की साम्यावस्था; ७ बलदेव के एक पुत्र का नाम; (राज)। °**बंध** पुं [°बन्ध] कर्म-पुद्गलों में भिन्न भिन्न शक्तिओं का पैदा होना; (कम्म १, २)। देखो **पगडि**।
पगंठ पुं [प्रकण्ठ] १ पीठ-विशेष; २ अन्त का अवनत प्रदेश; (जीव ३)।
पगंथ सक [प्र+कथय्] निन्दा करना। "अलियं पगं-(कं)थे अदुवा पगं(कं)थे" (आचा)।
पगड वि [प्रकट] व्यक्त, खुला; (पि २१६)
पगड वि [प्रकृत] प्रविहित, विनिर्मित, (उत्त १३)।
पगडण न [प्रकटन] प्रकाश करना, खुला करना; (णंदि)।
पगडि स्त्री [प्रकृति] १ भेद, प्रकार; (भग)। २—देखो **पगइ**; (सम ४६; सुर १४, ६८)।
पगडीकय वि [प्रकटीकृत] व्यक्त किया हुआ; (सुपा १८१)।
पगड्ड सक [प्र+कृष्] खींचना। कवकृ—**पगड्ढिज्जमाण**; (विपा १, १)।
पगप्प देखो **पकप्प** = प्र+कल्पय्। संकृ—**पगप्पएत्ता**; (सूअ २, ६, ३७)।
पगप्प देखो **पकप्प** = प्र+क्लृप्; (सूअ १, ८, ५)।
पगप्प पु [प्रकल्प] १ उत्पन्न होने वाला, प्रादुर्भूत होने वाला; "बहुगुणप्पगप्पाइं कुज्जा अत्तसमाहिए" (सूअ १, ३, ३, १६)। देखो **पकप्प**=प्रकल्प; (आचा)।
पगप्पिअ वि [प्रकल्पित] प्ररूपित, कथित, "ण उ एयाहिं दिट्ठीहिं पुव्वमासि पगप्पियं" (सूअ १, ३, ३, १६)। देखो **पकप्पिअ**।
पगप्पित्तु वि [प्रकल्पयितृ, प्रकर्तयितृ] काटने वाला, कतरने वाला; "हंता छेत्ता पगिब्भ(प्पि)त्ता आय-सायाणुगामिणो" (सूअ १, ८, ५)।
पगब्भ अक [प्र+गल्भ्] १ धृष्टता करना, धृष्ट होना; २ समर्थ होना। पगब्भेइ, पगब्भई; (आचा; सूअ १, २, २, २१, १, २, ३, १०; उत्त ५, ७)।
पगब्भ वि [प्रगल्भ] धृष्ट, धीठ; (पउम ३३, ६६)। २ समर्थ; (उप २६४ टी)।
पगब्भ न [प्रागल्भ्य] धृष्टता, धीठाई; "पगब्भि पाणे बहुणांतिवाती" (सूअ १, ७, ८)।
पगब्भा स्त्री [प्रगल्भा] भगवान् पार्श्वनाथ की एक शिष्या; (आवम)।
पगब्भिअ वि [प्रगल्भित] धृष्टता-युक्त; (सूअ १, १, १, १३; १, २, ३, ४)।
पगय वि [प्रकृत] प्रस्तुत, अधिकृत; (विसे ८३३; उप ४७६)।
पगय वि [प्रगत] १ प्राप्त; (राज)। २ जिसने गमन करने का प्रारम्भ किया हो वह, "मुणिणो वि जहाभिमयं पगया पगएण कज्जेण" (सुपा २३५)। ३ न. प्रस्ताव, अधिकार; (सूअ १, ११; १५)।
पगय न [दे] पग, पाँव, पैर; "एत्थंतरम्मि लग्गो चंडमारुओ। तेण भग्गो तुरयपगयमग्गो" (महा)।
पगर पुं [प्रकर] समूह, राशि; (सुपा ६५५)।
पगरण न [प्रकरण] १ अधिकार, प्रस्ताव; २ ग्रन्थ-खण्ड-विशेष, ग्रन्थांश-विशेष; (विसे १११५)। ३ किसी एक विषय को लेकर बनाया हुआ छोटा ग्रन्थ; (उव)।
पगरिस पुं [प्रकर्ष] १ उत्कर्ष, श्रेष्ठता; (सुपा १०६)। २ आधिक्य, अतिशय; (सुर ४, १६६)।
पगरिसण न [प्रकर्षण] ऊपर देखो; (यति १६)।
पगल अक [प्र+गल्] झरना, टपकना। वकृ—**पगलंत**; (विपा १, ७; महा)।

पगहिय वि [**प्रगृहीत**] ग्रहण किया हुआ, उपात्त ; (सुर ३, १६९) ।

पगाइय वि [**प्रगीत**] जिसने गाने का प्रारम्भ किया हो वह ; " पगाइयाइं मंगलमंतेउराइं " (स ७३६) ।

पगाढ वि [**प्रगाढ**] अत्यन्त गाढ ; (विपा १, १ ; सुपा ५३०) ।

पगाम देखो **पकाम** ; (आचा ; श्रा १४ ; सुर ३, ८७ ; कुप्र ३१५) ।

पगार पुं [**प्रकार**] १ भेद ; (आचू १) । २ रीति : " एएण पगारेण सव्वं दव्वं दवाविओ " (महा) । ३ आदि, वगैरः, प्रभृति ; (सूअ १, १३) ।

पगास देखो **पयास**=प्र+काशय् । वकृ—**पगासंत** ; (महा) ।

पगास पुं [**प्रकाश**] १ प्रभा, दीप्ति, चमक ; (गाया १, १), " एगं महं नीलुप्पलगवलगुलियअयसिकुसुमप्पगासं असिं सुरधारं गहाय " (उवा) । २ प्रसिद्धि, ख्याति ; (सूअ १, ६) । ३ आविर्भाव, प्रादुर्भाव ; ४ उद्द्योत, आतप ; (राज) । ५ क्रोध, गुस्सा ; " छन्नं च पसंस णो करे न य उक्कोस पगास माहणे " (सूअ १, २, २६) । ६ वि प्रकट, व्यक्त ; (निचू १) ।

पगासग देखो **पगासय** ; (राज) ।

पगासण देखो **पयासण** ; (औप) ।

पगासणया स्त्री [**प्रकाशनता**] प्रकाश, आलोक ; (ओघ ५५०) ।

पगासय वि [**प्रकाशक**] प्रकाश करने वाला ; (विसे ११५५) ।

पगासिय वि [**प्रकाशित**] उद्द्योतित, दीप्त ; "से सूरियस्स अब्भुग्गमेणं मग्गं वियाणाइ पगासियंसि " (सूअ १, १४, १२) ।

पगिज्झिय देखो **पगिण्ह** ; (कस ; औप ; पि ५९१) ।

पगिट्ठ वि [**प्रकृष्ट**] १ प्रधान, मुख्य ; (सुपा ७७) । २ उत्तम, श्रेष्ठ ; (कुप्र २० ; सुपा २२६) ।

पगिण्ह सक [**प्र+ग्रह्**] १ ग्रहण करना । २ उठाना । ३ धारण करना । ४ करना । संकृ—**पगिण्हित्ता, पगिण्हित्ताणं, पगिज्झिय** ; (पि ५८२ ; ५८३ ; औप ; आचा २,३,४, १; कस) ।

पगीअ वि [**प्रगीत**] १ गाया हुआ ; (पउम ३७, ४८) । २ जिसका गीत गाया गया हो वह ; (उप २११ टी) ।

पगुण देखो **पउण** ; (सूअ १, १, २) ।

पगुणीकर सक [**प्रगुणी+कृ**] प्रगुण करना, तय्यार करना, सज्ज करना । कवकृ—**पगुणीकीरंत**; (सुर १३, ३१) ।

पगे अ [**प्रगे**] सुबह, प्रभात काल ; (सुर ७,७८ ; कुप्र १५५) ।

पग्ग सक [**ग्रह्**] ग्रहण करना । पग्गइ ; (षड्) ।

पग्गह पुं [**प्रग्रह**] १ उपधि, उपकरण ; (ओघ ६६६) । २ लगाम ; (से ६, २७ ; १२, ६६) । ३ पशुओं को नाक में लगाई जाती डोरी, नाक की रस्सी, नाथ ; ४ पशुओं को बाँधने की डोरी, रस्सी ; (गाया १, ३ ; उवा) । ५ नायक, मुखिया ; (ठा १) । ६ ग्रहण, उपादान ; ७ योजन, जोड़ना ; " अंजलिपग्गहेणं " (भग) ।

पग्गहिअ वि [**प्रगृहीत**] १ अभ्युपगत, सम्यक् स्वीकृत ; (अनु ३) । २ प्रकर्ष से गृहीत ; (भग ; औप) । ३ उठाया हुआ ; (धर्म ३ ; ठा ६) ।

पग्गहिय वि [**प्रग्रहिक**] ऊपर देखो ; (उवा) ।

पग्गिम } (अप) अ [**प्रायस्**] प्रायः, बहुधा ; (षड् ;
पग्गिम्ब } हे ४, ४१४ ; कुमा) ।

पग्गेज्ज पुं [**दे**] निकर, समूह ; (दे ६, १५) ।

पघंस सक [**प्र+घृष्**] फिर फिर घिसना । पघंसेज्ज ; (निचू १७) । प्रयो—वकृ—**पघंसावंत** ; (निचू १७) ।

पघंसण न [**प्रघर्षण**] पुनः पुनः घर्षण ; " एक्कं दिणं आघंसणं, दिणे दिणे पघंसणं " (निचू ३) ।

पघोल अक [**प्र+घूर्णय्**] मिलना, संगत होना । वकृ— " कंठपघोलंतपंचमुग्गारो " (कुप्र २२६) ।

पघोस पुं [**प्रघोष**] उच्चैः शब्द-प्रकाश, उद्घोषणा ; (भवि) ।

पघोसिय वि [**प्रघोषित**] घोषित किया हुआ, उच्च स्वर से प्रकाशित किया हुआ ; (भवि) ।

पच सक [**पच्**] पकाना । पचइ, पचए, पचंति ; पचसि, पचसे, पचह, पचत्थ ; पचामि, पचामो, पचामु, पचाम, पचिमो, पचिमु ; (संक्षि ३० ; पि ४३६ ; ४५५) । कवकृ—**पच्चमाण** ; "नरए नेरइयाणं अहोनिसिं पच्चमाणाणं " (सुर १४, ४६ ; सुपा ३२८) ।

पच (अप) देखो **पंच** । °**आलीस,** °**तालीस** स्त्रीन [°**चत्वारिंशत्**] १ संख्या-विशेष, पैंतालीस , ४५ ; २ पैंतालीस संख्या जिनकी हो वे ; (पि २७३ ; ४४५ ; पिंग) ।

पच्चंकमणग न [**प्रचङ्क्रमण, °क**] पाँव से चलना ; (औप)।

पच्चंकमावण न [**प्रचङ्क्रमण**] पाँव से संचारण, पाँव से चलाना ; (औप १०५ टि)।

पच्चंड देखो **पयंड** ; (वव ८)।

पच्चलिय देखो **पयलिय**=प्रचलित ; (औप)।

पच्चाल सक [**प्र+चालय्**] अतिशय चलाना, खूब चलाना। वकृ—**पच्चालेमाण** ; (भग १७, १)।

पच्चिय वि [**प्रचित**] समृद्ध ; (स्वप्न ६६)।

पच्चीस (अप) स्त्रीन [**पञ्चविंशति**] १ पचीस, संख्या-विशेष, वीस और पाँच, २५ ; २ जिनकी संख्या पचीस हो वे ; (पिंग ; पि २७३)।

पच्चुन्निय वि [**प्रचूर्णित**] चूर चूर किया हुआ ; (सुर २, ८७)।

पच्चेलिम वि [**पचेलिम**] पक्व, पका हुआ ; " सइमहुर-पच्चेलिमफलेहिं " (सुपा ८३)।

पच्चोइअ वि [**प्रचोदित**] प्रेरित ; (सूअ १, २, ३)।

पच्चइय वि [**प्रत्ययिक**] १ विश्वासी, विश्वास वाला ; (गाया १, १२)। २ ज्ञान वाला, प्रत्यय वाला ; ३ न. श्रुत-ज्ञान, आगम-ज्ञान ; (विसे २१३६)।

पच्चइय वि [**प्रत्ययित**] विश्वास वाला, विश्वस्त ; (महा ; सुर १६, १६६)।

पच्चइय वि [**प्रात्ययिक**] प्रत्यय से उत्पन्न, प्रतीति से संजात ; (ठा ३, ३—पत्र १५१)।

पच्चंग न [**प्रत्यङ्ग**] हर एक अवयव ; (गुण १५; कप्पू)।

पच्चंगिरा स्त्री [**प्रत्यङ्गिरा**] विद्या-देवी विशेष ; " ईसिविय-संतवयणा पभणइ पच्चंगिरा अहं विज्जा " (सुपा ३०६)।

पच्चंत पुं [**प्रत्यन्त**] १ अनार्य देश ; (प्रयौ १६)। २ वि. समीपस्थ देश, सन्निकृष्ट प्रान्त भाग ; (सुर २, २००)।

पच्चंतिय वि [**प्रत्यन्तिक**] समीप-देश में स्थित ; (उप २११ टी)।

पच्चंतिय वि [**प्रात्यन्तिक**] प्रत्यन्त देश से आया हुआ ; (धम्म ८ टी)।

पच्चक्ख न [**प्रत्यक्ष**] १ इन्द्रिय आदि की सहायता के विना ही उत्पन्न होने वाला ज्ञान ; (विसे ८६)। २ इन्द्रियों से उत्पन्न होने वाला ज्ञान ; (ठा ४, ३)। ३ वि. प्रत्यक्ष ज्ञान का विषय ; " पच्चक्खा अणंगा एगा तरुणा महाभागा " (सुर ३, १७१)।

पच्चक्ख } सक [**प्रत्या+ख्या**] त्याग करना, त्याग
पच्चक्खा } करने का नियम करना। पच्चक्खाइ ; (भग)। वकृ—**पच्चक्खमाण, पच्चक्खाएमाण** , (पि ५६१; उवा)। संकृ—**पच्चक्खाइत्ता** ; (पि ५८२)। कृ—**पच्चक्खेय** ; (आव ६)।

पच्चक्खाण न [**प्रत्याख्यान**] १ परित्याग करने की प्रतिज्ञा ; (भग , उवा)। २ जैन ग्रन्थांश-विशेष, नववाँ पूर्व-ग्रन्थ ; (सम २६)। ३ सर्व सावद्य कर्मों से निवृत्ति , (कम्म १, १७)। **°वरण** पु [**°वरण**] कषाय-विशेष, सावद्य-विरति का प्रतिबन्धक कषाय-आदि , (कम्म १, १७)।

पच्चक्खाणि वि [**प्रत्याख्यानिन्**] त्याग की प्रतिज्ञा करने वाला ; (भग ६, ४)।

पच्चक्खाणी स्त्री [**प्रत्याख्यानी**] भाषा-विशेष, प्रतिषेध-वचन , (भग १०, ३)।

पच्चक्खाय वि [**प्रत्याख्यात**] त्यक्त, छोड़ दिया हुआ; (गाया १, १ , भग ; कप्प)।

पच्चक्खायय वि [**प्रत्याख्यायक**] त्याग करने वाला , " भत्तपच्चक्खायए " (भग १४, ७)।

पच्चक्खाव सक [**प्रत्या+ख्यापय्**] त्याग कराना, किसी विषय का त्याग करने की प्रतिज्ञा कराना। वकृ— **पच्चक्खावित** ; (आव ६)।

पच्चक्खि वि [**प्रत्यक्षिन्**] प्रत्यक्ष ज्ञान वाला , (वव १)।

पच्चक्खिय देखो **पच्चक्खाय** ; (सुपा ६३४)।

पच्चक्खीकर सक [**प्रत्यक्षी+कृ**] प्रत्यक्ष करना, साक्षात् करना। भवि—**पच्चक्खीकरिस्सं** ; (अभि १८८)।

पच्चक्खीकिद (शौ) वि [**प्रत्यक्षीकृत**] प्रत्यक्ष किया हुआ, साक्षात् जाना हुआ , (पि ४६)।

पच्चक्खीभू अक [**प्रत्यक्षी+भू**] प्रत्यक्ष होना, साक्षात् होना। संकृ—**पच्चक्खीभूय** , (आवम)।

पच्चक्खेय देखो **पच्चक्खा**।

पच्चग्ग वि [**प्रत्यग्र**] १ प्रधान, मुख्य ; (स ३४)। २ श्रेष्ठ, सुन्दर ; (उप ८८६ टी , सुर १०, १५३)। ३ नवीन, नया ; (पाअ)।

पच्चच्छिम देखो **पच्चत्थिम** ; (राज ; ठा २, ३—पत्र ७६)।

पच्चच्छिमा देखो **पच्चत्थिमा** ; (राज)।

पच्चच्छिमिल्ल वि [**पाश्चात्य**] पश्चिम दिशा में उत्पन्न, पश्चिम-दिशा-सम्बन्धी ; (सम ६६ , पि ३६५) ।

पच्चच्छिमुत्तरा देखो **पच्चत्थिमुत्तरा** ; (राज) ।

पच्चड अक [**क्षर्**] झरना, टपकना । पच्चडइ; (हे ४, १७३) । वकृ—**पच्चडमाण** ; (कुमा) ।

पच्चड्ड सक [**गम्**] जाना, गमन करना । पच्चड्डइ, (हे ४, १६२) ।

पच्चड्डिअ वि [**क्षरित**] झरा हुआ, टपका हुआ ; (हे २, १७४) ।

पच्चड्डिया स्त्री [**दे. प्रत्यड्डिका**] मल्लों का एक प्रकार का करण ; (विसे ३३५७) ।

पच्चणीय वि [**प्रत्यनीक**] विरोधी, प्रतिपक्षी, दुश्मन ; (उप १४६ टी ; सुपा ३०७) ।

पच्चणुभव सक [**प्रत्यनु + भू**] अनुभव करना । वकृ—**पच्चणुभवमाण** ; (गाया १, २) ।

पच्चत्त वि [**प्रत्यक्त**] जिसका त्याग करने का प्रारम्भ किया गया हो वह ; (उप ८२८) ।

पच्चत्तर न [**दे**] चाटु, खुशामद ; (दे ६, २१) ।

पच्चत्थरण न [**प्रत्यास्तरण**] बिछौना ; (पि २८५) । देखो **पल्हत्थरण** ।

पच्चत्थि वि [**प्रत्यर्थिन्**] प्रतिपक्षी, विरोधी, दुश्मन ; (उप १०३१ टी ; पाअ ; कुप्र १४१) ।

पच्चत्थिम वि [**पाश्चात्य, पश्चिम**] १ पश्चिम दिशा तरफ का ; २ न. पश्चिम दिशा ; "पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दे जोयणसाहस्सियं खेत्तं जाणइ, पासइ ; एवं दक्खिणेणं, पच्चत्थिमेणं" (उवा ; भग ; आचा ; ठा २, ३) ।

पच्चत्थिमा स्त्री [**पश्चिमा**] पश्चिम दिशा; (ठा १०—पत्र ४७८ ; आचा) ।

पच्चत्थिमिल्ल वि [**पाश्चात्य**] पश्चिम दिशा का ; (विपा १, ७ ; पि ५६५ ; ६०२) ।

पच्चत्थिमुत्तरा स्त्री [**पश्चिमोत्तरा**] पश्चिमोत्तर दिशा, वायव्य कोण ; (ठा १०—पत्र ४७८) ।

पच्चत्थुय वि [**प्रत्यास्तृत**] आच्छादित, ढका हुआ ; (पउम ६४, ६६; जीव ३) । २ बिछाया हुआ, (उप ६४८ टी) ।

पच्चद्ध न [**पश्चार्ध**] पिछला आधा, उत्तरार्ध; (गउड) ।

पच्चद्धचक्कवट्टि पुं [**प्रत्यर्धचक्रवर्तिन्**] वासुदेव का प्रतिपक्षी राजा, प्रतिवासुदेव ; (ती ३) ।

पच्चप्पण न [**प्रत्यर्पण**] वापिस देना ; (विसे ३०५७) ।

पच्चप्पिण सक [**प्रति + अर्पय्**] १ वापिस देना, लौटाना । २ सौंपे हुए कार्य को करके निवेदन करना । पच्चप्पिणइ ; (कप्प) । कर्म—पच्चप्पिणिज्जइ ; (पि ५५७) । वकृ—**पच्चप्पिणमाण** ; (ठा ५, २—पत्र ३११) । संकृ—**पच्चप्पिणित्ता** ; (पि ५५७) ।

पच्चबलोक्क वि [**दे**] आसक्त-चित्त, तल्लीन-मनस्क ; (दे ६, ३४) ।

पच्चभास पुं [**प्रत्याभास**] निगमन, प्रत्युच्चारण ; (विसे २६३२) ।

पच्चभिआण देखो **पच्चभिजाण** । पच्चभिआणादि (शौ), (पि १७० ; ५१०) ।

पच्चभिआणिद (शौ) देखो **पच्चभिजाणिअ**, (पि५६५) ।

पच्चभिजाण सक [**प्रत्यभि + ज्ञा**] पहिचानना, पहिचान लेना । पच्चभिजाणइ ; (महा)। वकृ —**पच्चभिजाणमाण** ; (गाया १, १६) । संकृ —**पच्चभिजाणिऊण**; (महा) ।

पच्चभिजाणिअ वि [**प्रत्यभिज्ञात**] पहिचाना हुआ ; (स ३६०) ।

पच्चभिणाण न [**प्रत्यभिज्ञान**] पहिचान; (स ३१२ ; नाट—शकु ८४) ।

पच्चभिन्नाय देखो **पच्चभिजाणिअ** ; (स १०० ; सुर ६, ७६ ; महा) ।

पच्चमाण देखो **पच=पच्** ।

पच्चय पुं [**प्रत्यय**] १ प्रतीति, ज्ञान, बोध , (उव ; ठा १; विसे २१४०) । २ निर्णय, निश्चय ; (विसे २१३२) । ३ हेतु, कारण ; (ठा २, ४) । ४ शपथ, विश्वास उत्पन्न करने के लिए किया या कराया जाता तप्त-माष आदि का चर्वण वगैरः ; (विसे २१३१) । ५ ज्ञान का कारण ; ६ ज्ञान का विषय, ज्ञेय पदार्थ ; (राज) । ७ प्रत्यय-जनक, प्रतीति का उत्पादक ; (विसे २१३१ ; आवम) । ८ विश्वास, श्रद्धा ; ९ शब्द, आवाज ; १० छिद्र, विवर ; ११ आधार, आश्रय ; १२ व्याकरण-प्रसिद्ध प्रकृति में लगता शब्द-विशेष ; (हे २, १३) ।

पच्चल वि [**दे**] १ पक्का, समर्थ, पहुँचा हुआ ; (दे ६, ६९ ; सुपा ३४ ; सुर १, १४ ; कुप्र ६९ , पाअ) । २ अ-सहन, अ-सहिष्णु ; (दे ६, ६९) ।

पच्चलिउ } (अप) अ [**प्रत्युत**] वैपरीत्य , वरञ्च,
पच्चल्लिउ } वरन् ; (हे ४, ४२०) ।

पच्चवणद (शौ) वि [**प्रत्यवनत**] नमा हुआ , "एस मं कोवि पच्चवणदसिरोहरं उच्छुं विअ तिगण(?)भंगं करेदि" (अभि २२४) ।

पच्चवत्थय वि [**प्रत्यवस्तृत**] १ बिछाया हुआ ; २ आच्छादित ; (आवम) ।

पच्चवत्थाण न [**प्रत्यवस्थान**] १ शङ्का-परिहार, समाधान ; (विसे १००७) । २ प्रतिवचन , खण्डन ; (बृह १)।

पच्चवर न [**दे**] मुसल, एक प्रकार की मोटी लकड़ी जिससे चावल आदि अन्न कूटे जाते हैं ; (दे ६, १५) ।

पच्चवाय पु [**प्रत्यवाय**] १ बाधा, विघ्न, व्याघात, (णाया १, ६ ; महा ; स २०६) । २ दोष, दूषण ; (पउम ६५, १२ ; अच्चु ७० ; ओघ २४) । ३ पाप ; "बहुपच्चवायभरिओ गिहवासो" (सुपा १६२) । ४ दुःख, पीडा ; (कुप्र ५५२) ।

पच्चवेक्खिद (शौ) वि [**प्रत्यवेक्षित**] निरीक्षित ; (नाट—शकु १३०) ।

पच्चह न [**प्रत्यह**] हररोज, प्रतिदिन ; (अभि ६०) ।

पच्चहिजाण } देखो **पच्चभिजाण** । पच्चहिजाणेदि ; (पि
पच्चहियाण } ५१०) । पच्चहियाणइ ; (स ४२) । संकृ—**पच्चहियाणिऊण** ; (स ४४०) ।

पच्चा स्त्री [**दे**] तृण-विशेष, बल्वज ; (ठा ५, ३) । °**पिच्चियय** न [**दे**] बल्वज तृण की कूटी हुई छाल का बना हुआ रजोहरण—जैन साधु का एक उपकरण ; (ठा ५, ३—पत्र ३३८) ।

पच्चा देखो **पच्छा** ; (प्रयौ ३६ ; नाट—रत्ना ७) ।

पच्चाअच्छ सक [**प्रत्या + गम्**] पीछे लौटना, वापिस आना । पच्चाअच्छइ ; (षड्) ।

पच्चाअद (शौ) देखो **पच्चागय** ; (प्रयौ २५) ।

पच्चाइक्ख देखो **पच्चक्ख**=प्रत्या + ख्या । पच्चाइक्खामि; (आचा २, १५, ५, १) । भवि—पच्चाइक्खिस्सामि; (पि ५२६) । वकृ—**पच्चाइक्खमाण** , (पि ४६२) ।

पच्चाएस पुन [**प्रत्यादेश**] दृष्टान्त, निदर्शन, उदाहरण ; "पच्चाएसोव्व धम्मनिरयाणं" (स ३५ ; उव ; कुप्र ५०) , "पच्चाएसं दिट्ठंतं" (पाअ) । देखो **पच्चादेस** ।

पच्चागय वि [**प्रत्यागत**] १ वापिस आया हुआ , (गा ६३३ ; दे १, ३१ ; महा) । २ न प्रत्यागमन ; (ठा ६—पत्र ३६५) ।

पच्चाचक्ख सक [**प्रत्या + चक्ष्**] परित्याग करना । हेकृ—**पच्चाचक्खिदुं** (शौ) ; (पि ४६६ ; ५७४) ।

पच्चाणयण न [**प्रत्यानयन**] वापिस ले आना; (मुद्रा २७०)।

पच्चाणि° } सक [**प्रत्या + णी**] वापिस ले आना । कवकृ—
पच्चाणी } **पच्चाणिज्जंत** ; (से ११, १३५) ।

पच्चाणीद (शौ) वि [**प्रत्यानीत**] वापिस लाया हुआ ; (पि ८१ ; नाट—विक्र १०) ।

पच्चाथरण न [**प्रत्यास्तरण**] सामने होकर लड़ना; (राज)।

पच्चादिट्ठ वि [**प्रत्यादिष्ट**] निरस्त, निराकृत; (पि १४५; मृच्छ ६) ।

पच्चादेस पुं [**प्रत्यादेश**] निराकरण ; (अभि ७२ ; १७८ ; नाट—विक्र ३) । देखो **पच्चाएस** ।

पच्चापड अक [**प्रत्या + पत्**] वापिस आना, लौट कर आ पड़ना । वकृ—"अग्गपडिहयपुणरविपच्चापडंतचंचलमिरिइकवयं ; (औप) ।

पच्चामित्त पुन [**प्रत्यमित्र**] अमित्र, दुश्मन ; (णाया १, २—पत्र ८७ ; औप) ।

पच्चाय सक [**प्रति + आयय्**] १ प्रतीति कराना । २ विश्वास कराना । पच्चाअइ ; (गा ७१२) । पच्चाएमो ; (स ३२४) ।

पच्चाय° देखो **पच्चाया** ।

पच्चायण न [**प्रत्यायन**] ज्ञान कराना, प्रतीति-जनन ; (विसे २१३६) ।

पच्चायय वि [**प्रत्यायक**] १ निर्णय-जनक ; २ विश्वास-जनक , (विक्र ११३) ।

पच्चाया अक [**प्रत्या + जन्**] उत्पन्न होना, जन्म लेना । पच्चायंति ; (औप)। भवि—पच्चायाहिइ ; (औप; पि ५२७)।

पच्चाया अक [**प्रत्या + या**] ऊपर देखो । पच्चायंति ; (पि ५२७) ।

पच्चायाइ स्त्री [**प्रत्याजाति, प्रत्यायाति**] उत्पत्ति, जन्म-ग्रहण ; (ठा ३, ३—पत्र १४४) ।

पच्चायाय वि [**प्रत्यायात**] उत्पन्न ; (भग) ।

पच्चार सक [**उपा + लम्भ्**] उपालम्भ देना, उलहना देना । पच्चारइ, पच्चारति , (हे ४, १५६ ; कुमा) ।

पच्चारण न [**उपालम्भन**] प्रतिभेद ; (पाअ) ।

पच्चारिय वि [**उपालब्ध**] जिसको उलहना दिया गया हो वह , (भवि) ।

पच्चालिय वि [दे. प्रत्यार्दित] आर्द्र किया हुआ, गीला किया हुआ ; "पच्चालिया य से अहिययरं वाहसलिलेण दिट्ठी" (स ३०८) ।

पच्चालीढ न [प्रत्यालीढ] वाम पाद को पीछे हटा कर और दक्षिण पाँव को आगे रख कर खड़े रहने वाले धानुष्क की स्थिति ; (वव १) ।

पच्चावरण्ह पु [प्रत्यापराह्ण] मध्याह्न के वाद का समय, तीसरा पहर ; (विपा १, ३ टि , पि ३३०) ।

पच्चासण्ण वि [प्रत्यासन्न] समीप में स्थित , (विसे २६३१) ।

पच्चासत्ति स्त्री [प्रत्यासत्ति] समीपता, सामीप्य ; (मुद्रा १६१) ।

पच्चासन्न देखो **पच्चासण्ण** "निच्च पच्चासन्नो परिसक्कइ सव्वओ मच्चू" (उप ६ टी) ।

पच्चासा स्त्री [प्रत्याशा] १ आकाङ्क्षा, वाञ्छा, अभिलाषा, २ निराशा के वाद की आशा ; (स ३६८) । ३ लोभ, लालच , (उप पृ ७६) ।

पच्चासि वि [प्रत्याशिन्] वान्त वस्तु का भक्षण करने वाला ; (आचा) ।

पच्चिम देखो **पच्छिम** ; (पिंग ; पि ३०१) ।

पच्चुअ (दे) देखो **पच्चुहिअ** ; (दे ६, २५) ।

पच्चुआर देखो **पच्चुवयार**, (चारु ३६; नाट—मृच्छ५७)।

पच्चुग्गच्छणया स्त्री [प्रत्युद्गमनता] अभिमुख गमन ; (भग १४, ३) ।

पच्चुच्चार पु [प्रत्युच्चार] अनुवाद, अनुभाषण , (स १८४) ।

पच्चुच्छुहणी स्त्री [दे] नूतन सुरा, ताजा दारू, (दे २,३५)।

पच्चुज्जीविअ वि [प्रत्युज्जीवित] पुनर्जीवित , (गा ६३१ ; कुप्र ३१) ।

पच्चुट्ठिअ वि [प्रत्युत्थित] जो सामने खड़ा हुआ हो वह , (सुर १, १३४) ।

पच्चुण्णम अक [प्रत्युद् + नम्] थोड़ा ऊँचा होना । पच्चुण्णमइ ; (कप्प) । संकृ—पच्चुण्णमित्ता ; (कप्प ; औप) ।

पच्चुत्त वि [प्रत्युप्त] फिर से वोया हुआ , (दे ७, ७७; गा ६१५) ।

पच्चुत्तर सक [प्रत्यव + तृ] नीचे आना । पच्चुत्तरइ , (पि ४४७) । संकृ—**पच्चुत्तरित्ता** ; (राज) ।

पच्चुत्तर न [प्रत्युत्तर] जवाव, उत्तर ; (श्रा १२ ; सुपा २१ ; १०४) ।

पच्चुत्थ वि [दे] प्रत्युप्त, फिर से वोया हुआ ; (दे ६,१३)।

पच्चुत्थय } वि [प्रत्यवस्तृत] आच्छादित ; (गाया १,
पच्चुत्थुय } १—पत्र १३, २० ; कप्प) ।

पच्चुद्धरिअ वि [दे] संमुखागत, सामने आया हुआ ; (दे ६, २४) ।

पच्चुद्धार पुं [दे] संमुख आगमन , (दे ६, २४) ।

पच्चुप्पण्ण } वि [प्रत्युत्पन्न] वर्तमान-काल-संबन्धी ;
पच्चुप्पन्न } (पि ५१६ ; भग ; गाया १, ८ ; सम्म १०३) । °**नय** पु [°**नय**] वर्तमान वस्तु को ही मानने वाला पक्ष, निश्चय नय ; (विसे ३१६१) ।

पच्चुप्फलिअ वि [प्रत्युत्फलित] वापिस आया हुआ ; (से १४, ८१) ।

पच्चुरस न [प्रत्युरस] हृदय के सामने ; (राज) ।

पच्चुवकार देखो **पच्चुवयार** ; (नाट— मृच्छ २५५)

पच्चुवगच्छ सक [प्रत्युप + गम्] सामने जाना । पच्चुवगच्छइ ; (भग) ।

पच्चुवगार } पु [प्रत्युपकार] उपकार के वदले उपकार;
पच्चुवयार } (ठा ४, ४ ; पउम ४६, ३६ ; स ४४० ; प्रासु) ।

पच्चुवयारि वि [प्रत्युपकारिन्] प्रत्युपकार करने वाला , (सुपा ५६५) ।

पच्चुवेक्ख सक [प्रत्युप + ईक्ष्] निरीक्षण करना । पच्चुवेक्खइ ; (औप) । संकृ —**पच्चुवेक्खित्ता** ; (औप)।

पच्चुवेक्खिय वि [प्रत्युपेक्षित] अवलोकित, निरीक्षित (स ४४१) ।

पच्चुहिअ वि [दे] प्रस्नुत, प्रक्षरित ; (दे ६, २५) ।

पच्चूढ न [दे] थाल, थार, भोजन करने का पात्र, बड़ी थाली ; (दे ६, १२) ।

पच्चूस [दे] देखो **पच्चूह**=(दे) , "किंडएहिं पयत्तेणवि छाइज्जइ कह णु पच्चूसो ?" (सुर ३, १३४) ।

पच्चूस } पु [प्रत्यूष] प्रभात काल ; (हे २, १४ ;
पच्चूह } गाया १, १ ; गा ६०४) ।

पच्चूह पुन [प्रत्यूह] विघ्न, अन्तराय; (पाअ; कुप्र ५२) ।

पच्चूह पु [दे] सूर्य, रवि ; (दे ६, ५ ; गा ६०४ ; पाअ) ।

पच्चेअ न [प्रत्येक] प्रत्येक, हर एक ; (षड्) ।

पच्चेड न [**दे**] मुसल ; (दे ६, १५)।
पच्चेल्लिउ (अप) देखो **पच्चल्लिउ** ; (भवि)।
पच्चोगिल सक [**प्रत्यव+गिल्**] आस्वादन करना। वकृ—**पच्चोगिलमाण** ; (कस ५, १०)
पच्चोणामिणी स्त्री [**प्रत्यवनामिनी**] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से वृक्ष आदि फल देने के लिए स्वयं नीचे नमते हैं ; (उप पृ १५५)।
पच्चोणिवत्त वि [**प्रत्यवनिवृत्त**] ऊँचा उछल कर नीचे गिरा हुआ ; (पगह १, ३—पत्र ४५)।
पच्चोणिवय अक [**प्रत्यवनि+पत्**] उछल कर नीचे गिरना। वकृ—**पच्चोणिवयंत** ; (औप)।
पच्चोणी [**दे**] देखो **पच्चोवणी** ; (स २०५, ३०२, सुपा ६१ ; २२४ ; २७६)।
पच्चोयड न [**दे**] १ तट के समीप का ऊँचा प्रदेश ; (जीव ३)। २ आच्छादित, (राय)।
पच्चोयर सक [**प्रत्यव+तॄ**] नीचे उतरना। पच्चोयरइ ; (आचा २, १५, २८)। संकृ—**पच्चोयरित्ता** ; (आचा २, १५, २८)।
पच्चोरुभ } सक [**प्रत्यव+रुह्**] नीचे उतरना। पच्चो-
पच्चोरुह } रुभइ; (णाया १, १)। पच्चोरुहइ; (कप्प)। संकृ—**पच्चोरुहित्ता** ; (कप्प)।
पच्चोवणिअ वि [**दे**] संमुख आया हुआ ; (दे ६, २४)।
पच्चोवणी स्त्री [**दे**] संमुख आगमन ; (दे ६, २४)।
पच्चोसक्क अक [**प्रत्यव+ष्वष्क्**] १ नीचे उतरना। २ पीछे हटना। पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कंति ; (उवा ; पि ३०२ ; भग)। संकृ—**पच्चोसक्कित्ता** ; (उवा ; भग)।
पच्छ सक [**प्र+अर्थय्**] प्रार्थना करना। कवकृ—**पच्छिज्जमाण** ; (कप्प ; औप)।
पच्छ वि [**पथ्य**] १ रोगी का हितकारी आहार, (हे २, २१ ; प्राप्र ; कुमा ; स ७२४ ; सुपा ५७६)। २ हितकारक, हितकारी, "पच्छा वाया" (णाया १, ११—पत्र १७१)।
पच्छ न [**पश्चात्**] १ चरम, शेष, (चद १)। २ पीछे, पृष्ठ भाग ; ३ पश्चिम दिशा ; "पुव्वेण सणं पच्छेण वंजुला दाहिणेण वडविडओ" (वज्जा ६६)। °**ओ** अ [°**तस्**] पीछे, पृष्ठ की ओर ; "हत्थी वेगेण पच्छओ लग्गो" (महा), "वहइ व महीअलभरिओ णोल्लेइ व पच्छओ धरेइ व पुरओ" (से १०, ३०), "तो चेडयाओ तक्खणमाणावेऊण पच्छओ बाहुं बद्धं दंसइ" (सुपा २२१)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] १ अनन्तर का कर्म, बाद की क्रिया, २ यतिओं की भिक्षा का एक दोष, दातृ-कर्तृक दान देने के बाद की पात्र को साफ करने आदि क्रिया ; (ओघ ५१६)। °**त्ताअ** पुं [°**ताप**] अनुताप; (वज्जा १४२)। °**द्ध** न [°**अर्ध**] पीछला आधा, उत्तरार्ध; (गउड ; महा)। °**वत्थुक्क** न [°**वास्तुक**] पीछला घर, घर का पीछला हिस्सा ; (पगह २, ४—पत्र १३०)। °**यावि** पुं [°**ताप**] पश्चात्ताप, अनुताप ; (आवम)। देखो **पच्छा**=पश्चात्।
पच्छइ } (अप) अ [**पश्चात्**] ऊपर देखो ; (हे ४,४२०,
पच्छए } षड् ; भवि)। °**ताव** पु [°**ताप**] अनुताप, अनुशय ; (कुमा)।
पच्छंद सक [**गम्**] जाना, गमन करना। पच्छंदइ ; (हे ४, १६२)।
पच्छंदि वि [**गन्तृ**] गमन करने वाला ; (कुमा)।
पच्छंभाग पुं [**पश्चाद्भाग**] १ दिवस का पीछला भाग ; (राज)। २ पुन. नक्षत्र-विशेष, चन्द्र पृष्ठ देकर जिसका भोग करता है वह नक्षत्र ; (ठा ६)।
पच्छण स्त्रीन [**प्रतक्षण**] त्वक् का बारीक विदारण, चाकू आदि से पतली छाल निकालना; "तच्छणेहि य पच्छणेहि य" (विपा १, १), "तच्छणाहि य पच्छणाहि य", (णाया १, १३)।
पच्छण्ण वि [**प्रच्छन्न**] गुप्त, अप्रकट ; (गा १८३); °**पइ** पुं [°**पति**] जार, उपपति ; (सूअ १, ४, १)।
पच्छद देखो **पच्छय** ; (औप)।
पच्छदण न [**प्रच्छदन**] आस्तरण, शय्या के ऊपर का आच्छादन-वस्त्र ; "सुप्पच्छणाए सय्याए णिद्दं ण लभामि" (स्वप्न ६०)।
पच्छन्न देखो **पच्छण्ण** ; (उव ; सुर २, १८४)।
पच्छय पु [**प्रच्छद**] वस्त्र-विशेष, दुपट्टा, पिछौरी ; (णाया १, १६)।
पच्छलिउ (अप) देखो **पच्चलिउ** ; (षड्)।
पच्छा अ [**पश्चात्**] १ अनन्तर, बाद, पीछे ; (सुर २, २४४; पाअ; प्रासू ५७), "पच्छा तस्स विवागे रुअंति कलुणं महादुक्खा" (प्रासू १२६)। २ परलोक, परजन्म ; "पच्छा कडुअविवागा" (राज)। ३ पीछला भाग, पृष्ठ, ४ चरम, शेष ; (हे २, २१)। ५ पश्चिम दिशा ;

(गाया १, ११)। °**उत्त** वि [°**आयुक्त**] जिसका आयोजन पीछे से किया गया हो वह ; (कप्प)। °**कड** पु [°**कृत**] साधुपन को छोडकर फिर गृहस्थ बना हुआ ; (द्र ५० ; बृह १)। °**कम्म** देखो **पच्छ-कम्म** ; (पि ११२)। °**णिवाइ** देखो °**निवाइ** ; (राज)। °**णुताव** पुं [°**अनुताप**] पश्चात्ताप, अनुताप ; "पच्छाणुतावेण सुभज्झवसाणेण" (आवम)। °**णुपुव्वी** स्त्री [°**आनुपूर्वी**] उलटा क्रम ; (अणु ; कम्म ४, ४३)। °**ताव** पुं [°**ताप**] अनुताप ; (आव ४)। °**ताविय** वि [°**तापिक**] पश्चात्ताप वाला, (पगह २, ३)। °**निवाइ** वि [°**निपातिन्**] १ पीछे से गिर जाने वाला ; २ चारित्र ग्रहण कर बाद में उससे च्युत होने वाला ; (आचा)। °**भाग** पु [°**भाग**] पीछला हिस्सा ; (गाया १, १)। °**मुह** वि [°**मुख**] पराङ्मुख, जिसने मुँह पीछे की तरफ फेर लिया हो वह ; (श्रा १२)। °**यव**, °**याव** देखो °**ताव**, (पउम ६५, ६६ ; सुर १५, १४५ ; सुपा १२१ ; महा)। °**यावि** वि [°**तापिन्**] पश्चात्ताप करने वाला ; (उप ७२८ टी)। °**वाय** पु [°**वात**] पश्चिम दिशा का पवन ; २ पीछे का पवन ; (गाया १, ११)। °**संखडि** स्त्री [**दे. संस्कृति**] १ पीछला संस्कार ; २ मरण के उपलक्ष्य में ज्ञाति वगैरः प्रभूत मनुष्यों के लिए पकायी जाती रसोई ; (आचा २, १, ३, २)। °**संथव** पु [°**संस्तव**] १ पीछला संवन्ध, स्त्री, पुत्री वगैरः का संवन्ध ; २ जैन मुनिओं के लिए भिक्षा का एक दोष, श्वशुर आदि पक्ष में अच्छी भिक्षा मिलने की लालच से पहले भिक्षार्थ जाना ; (ठा ३, ४)। °**संथुय** वि [°**संस्तुत**] पीछले संवन्ध से परिचित; (आचा २, १, ४, ५)। °**हुत्त** वि [°**दे**] पीछे की तरफ का ; "थलमत्थयम्मि पच्छाहुत्ताइं पयाइंतीए दट्ठूण" (सुपा २८१)।

पच्छा स्त्री [**पथ्या**] हर्र, हरीतकी ; (हें २, २१)।

पच्छाअ सक [**प्र+छादय्**] १ ढकना। २ छिपाना। वकृ—**पच्छाअंत** ; (से ६, ४६ ; ११,६)। कृ—**पच्छाइज्ज** ; (वसु)।

पच्छाअ वि [**प्रच्छाय**] प्रचुर छाया वाला ; (अभि ३६)।

पच्छाइअ वि [**प्रच्छादित**] १ ढका हुआ, आच्छादित ; २ छिपाया हुआ ; (पाअ ; भवि)।

पच्छाइज्ज देखो **पच्छाअ**=प्र+छादय्।

पच्छाग पुं [**प्रच्छादक**] पात्र बाँधने का कपड़ा ; (ओघ २६५ भा)।

पच्छाडिद (शौ) वि [**प्रक्षालित**] धोया हुआ; (नाट — मृच्छ २५५)।

पच्छाणिअ (दे) देखो **पच्चोवणिअ** ; (षड्)।

पच्छादो (शौ) देखो **पच्छा** =पश्चात् ; (पि ६६)।

पच्छायण न [**पथ्यदन**] पाथेय, रास्ते में खाने का भोजन; "वहणं कारियं पच्छायणस्स भारियं" (महा)।

पच्छायण न [**प्रच्छादन**] १ आच्छादन, ढकना ; २ वि. आच्छादन करने वाला। °**या** स्त्री [°**ता**] आच्छादन ; "परगुणपच्छायणया" (उव)।

पच्छाल देखो **पक्खाल**। पच्छालेइ ; (काल)।

पच्छि स्त्री [**दे**] पिटिका, पटारी, वेत्रादि-रचित भाजन-विशेष ; (दे ६, १)। °**पिडय** न [°**पिटक**] 'पच्छी' रूप पिटारी ; (भग ७, ८ टी—पत्र ३१३)।

पच्छि (अप) देखो **पच्छइ** ; (हे ४, ३८८)।

पच्छिज्जमाण देखो **पच्छ** =प्र+अर्थय्।

पच्छित्त न [**प्रायश्चित्त**] १ पाप की शुद्धि करने वाला कर्म, पाप का क्षय करने वाला कर्म ; (उव ; सुपा ३६६ ; द्र ५२)। २ मन को शुद्ध करने वाला कर्म ; (पंचा १६, ३)।

पच्छित्ति वि [**प्रायश्चित्तिन्**] प्रायश्चित का भागी, दोषी, (उप ३७६)।

पच्छिम न [**पश्चिम**] १ पश्चिम दिशा ; (उवा ७४ टि)। २ वि. पश्चिम दिशा का, पाश्चात्य ; (महा ; हे २, २१ ; प्राप्र)। ३ पीछला, बाद का ; "दियसस्स पच्छिमे भाए" (कप्प)। ४ अन्तिम, चरम ; "पुरिमपच्छिमगाणं तित्थगराण" (सम ४४)। °**द्ध** न [°**र्ध**] उत्तरार्ध, उत्तरी आधा हिस्सा ; (महा ; ठा २, ३—पत्र ८१)। °**सेल** पु [°**शैल**] अस्ताचल पर्वत ; (गउड)।

पच्छिमा स्त्री [**पश्चिमा**] पश्चिम दिशा ; (कुमा ; महा)।

पच्छिमिल्ल वि [**पाश्चात्य**] पीछे से उत्पन्न, पीछे का ; (विसे १७६५)।

पच्छिल (अप) देखो **पच्छिम** ; (भवि)।

पच्छिल्ल, **पच्छिल्लय** वि [**पश्चिम, पाश्चात्य**] १ पश्चिम दिशा का ; २ पीछला, पृष्ठ-वर्ती ; (पि ५६५ ; ५६५ टि ४)।

पच्छुत्ताविअ (अप) वि [**पश्चात्तापित**] जिसको पश्चात्ताप हुआ हो वह, (भवि)।

पच्छेकम्म देखो **पच्छ-कम्म** ; (हे १, ७६)।

पच्छेणय न [**दे**] पाथेय, रास्ते में निर्वाह करने की भोजन-सामग्री ; (दे ६, २४)।

पच्छोववण्णग } वि [**पश्चादुपपन्न**] पीछेसे उत्पन्न ;
पच्छोववन्नक } (भग)।

पजंप सक [**प्र+जल्प्**] बोलना, कहना। पजंपह ; (पि २६६)।

पजंपावण न [**प्रजल्पन**] बोलाना, कथन कराना ; (औप ; पि २६६)।

पजंपिअ वि [**प्रजल्पित**] कथित, उक्त ; (गा ६४६)।

पजणण न [**प्रजनन**] लिङ्ग, पुरुष-चिन्ह, (विसे २५७६ टी ; ओघ ७२२)।

पजल अक [**प्र+ज्वल्**] १ विशेष जलना, अतिशय दग्ध होना। २ चमकना। वकृ—**पजलंत** ; (भवि)।

पजलिर वि [**प्रज्वलितृ**] अत्यन्त जलने वाला ; "सिय-उज्झाणानलपजलिरकम्मकंतारधूमलइउव्व" (सुपा १)।

पजह सक [**प्र+हा**] त्याग करना। पजहामि ; (पि ५००)। कृ—**पजहियव्व** ; (आचा)।

पजाला स्त्री [**प्रज्वाला**] अग्नि-शिखा, (कुप्र ११७)।

पजुत्त देखो **पउत्त**=प्रयुक्त ; (चड)।

पज्ज सक [**पायय्**] पिलाना, पान कराना। पज्जेइ ; (विपा १, ६)। कवकृ—"तण्हाइया ते तउ तंब तत्त पज्जिज्जमाणाट्टतरं रसंति" (सूअ १, ५, १, २५)। कृ—**पज्जेयव्व** ; (भत ४०)।

पज्ज न [**पद्य**] छन्दो-बद्ध वाक्य ; (ठा ४, ४—पत्र २८७)।

पज्ज न [**पाद्य**] पाद-प्रक्षालन जल; "अग्घं च पज्ज च गहाय" (णाया १, १६—पत्र २०६)।

पज्ज देखो **पज्जत्त**, (दं ३३ ; कम्म ३, ७)।

पज्जंत पु [**पर्यन्त**] अन्त सीमा, प्रान्त भाग ; (हे १, ५८ ; २, ६५ ; सुर ४, २१६)।

पज्जण न [**दे**] पान, पोना ; (दे ६, ११)।

पज्जण न [**पायन**] पिलाना, पान कराना, (भग १४, ७)।

पज्जण्ण पुं [**पर्जन्य**] मेघ, वादल ; (भग १४, २ ; नाट—पृच्छ १७५)। देखो **पज्जन्न**।

पज्जतर वि [**दे**] दलित, विदारित ; (षड्)।

पज्जत्त वि [**पर्याप्त**] १ 'पर्याप्ति' से युक्त, 'पर्याप्ति' वाला ; (ठा २, १ ; पण्ह १, १ ; कम्म १, ४६)। २ समर्थ, शक्तिमान् ; ३ लब्ध, प्राप्त ; ४ काफी, यथेष्ट, उतना जितने से काम चल जाय ; ५ न. तृप्ति; ६ सामर्थ्य, ७ निवारण ; ८ योग्यता ; (हे २, २४ ; प्राप्र)। ६ कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव अपनी २ 'पर्याप्तिओं' से युक्त होता है वह कर्म ; (कम्म १, २६)। °**णाम**, °**नाम** न [°**नामन्**] अनन्तर उक्त कर्म-विशेष ; (राज ; सम ६७)।

पज्जत्तर [**दे**] देखो **पज्जतर**, (षड्—पत्र २१०)।

पज्जत्ति स्त्री [**पर्याप्ति**] १ शक्ति, सामर्थ्य ; (सूअ १, १, ४)। २ जीव की वह शक्ति, जिसके द्वारा पुद्गलों को ग्रहण करने तथा उनको आहार, शरीर आदि के रूप में बदल देने का काम होता है, जीव की पुद्गलों का ग्रहण करने तथा परिणमाने की शक्ति ; (भग, कम्म १, ४६ ; नव ४ ; दं ४)। ३ प्राप्ति, पूर्ण प्राप्ति ; (दे ५, ६२)। ४ तृप्ति ; "पियदंस-णाधणजीवियाण को लहइ पज्जत्तिं ?". (उप ७६८ टी)।

पज्जन्न पुं [**पर्जन्य**] मेघ-विशेष, जिसके एक वार वरसने से भूमि में एक हजार वर्ष तक चिक्कनता रहती है ; "पज्जु-(?ज्ज)न्ने णं महामेहे एगे णं वासेणं दस वाससयाइं भावेति" (ठा ४, ४—पत्र २७०)।

पज्जय पुं [**दे, प्रार्यक**] प्रपितामह, पितामह का पिता; (भग ६, ३, दस ७ ; सुर १, १७४ ; २२०)।

पज्जय पु [**पर्यय**] १ श्रुत-ज्ञान का एक भेद, उत्पत्ति के प्रथम समय में सूक्ष्म-निगोद के लब्धि-अपर्याप्त जीव को जो कुश्रुत का अंश होता है उससे दूसरे समय में ज्ञान का जितना अंश बढ़ता है वह श्रुतज्ञान ; (कम्म १, ७)। २—देखो **पज्जाय**, (सम्म १०३ ; णंदि ; विसे ४७८ ; ४८८, ४६० ; ४६१)। °**समास** पु [°**समास**] श्रुतज्ञान का एक भेद, अनन्तर उक्त पर्यय-श्रुत का समुदाय; (कम्म १,७)।

पज्जयण न [**पर्ययन**] निश्चय, अवधारण ; (विसे ८३)।

पज्जर सक [**कथय्**] कहना, वोलना। पज्जरइ, पज्जर, (हे ४, २ ; दे ६, २६ ; कुमा)।

पज्जरय पुं [**प्रजरक**] रत्नप्रभा-नामक नरक-पृथिवी का एक नरकावास ; (ठा ६—पत्र ३६५)। °**मज्झ** पु [°**मध्य**] एक नरकावास ; (ठा ६—पत्र ३६७ टी)। °**ावट्ट** पु [°**ावर्त**] नरकावास-विशेष ; (ठा ६)। °**ावसिट्ठ** पुं [°**ावशिष्ट**] एक नरकावास, नरक-स्थान-विशेष ; (ठा ६)।

पज्जल देखो **पजल**। पज्जलेइ, (महा)। वकृ—**पज्जलंत**; (कप्प)।

पज्जलण वि [**प्रज्वलन**] जलाने वाला; (ठा ४, १)।

पज्जलिय वि [**प्रज्वलित**] १ जलाया हुआ, दग्ध, (महा)। २ खूब चमकने वाला, देदीप्यमान; (गच्छ २)।

पज्जलिर वि [**प्रज्वलितृ**] १ जलने वाला; २ खूब चमकने वाला; (सुपा ६३८; सण)।

पज्जव पुं [**पर्यव**] १ परिच्छेद, निर्णय; (विसे ८३, आवम)। २ देखो **पज्जाय**; (आचा; भग; विसे २७५२, सम्म ३२)। °**कसिण** न [°**कृत्स्न**] चतुर्दश पूर्व-ग्रन्थ तक का ज्ञान, श्रुतज्ञान-विशेष; (पंचभा)। °**जाय** वि [°**जात**] १ भिन्न अवस्था को प्राप्त; (पण्ह २, ५)। २ ज्ञान आदि गुणों वाला; (ठा १)। ३ न. विषयोपभोग का अनुष्ठान; (आचा)। °**जाय** वि [°**यात**] ज्ञान-प्राप्त; (ठा १)। °**ट्ठिय** पुं [°**स्थित**, °**र्थिक**, °**स्तिक**] नय-विशेष, द्रव्य को छोड़ कर केवल पर्यायों को ही मुख्य मानने वाला पक्ष; (सम्म ६)। °**णय**, °**नय** पुं [°**नय**] वही अनन्तर उक्त अर्थ; (राज; विसे ७५), "उप्पज्जंति वयंति अ भावा नियमेण पज्जवनयस्स" (सम्म ११)।

पज्जवण न [**पर्यवन**] परिच्छेद, निश्चय; (विसे ८३)।

पज्जवत्थाव सक [**पर्यव+स्थापय्**] १ अच्छी अवस्था में रखना। २ विरोध करना। ३ प्रतिपक्ष के साथ वाद करना। पज्जवत्थावेदु (शौ); (मा ३६)। पज्जवत्थावेहि; (पि ५५१)।

पज्जवसाण न [**पर्यवसान**] अन्त, अवसान; (भग)।

पज्जवसिअ न [**पर्यवसित**] अवसान, अन्त; "अपज्जवसिए लोए" (आचा)।

पज्जा देखो **पण्णा**; (हे २, ८३)।

पज्जा स्त्री [**पद्या**] मार्ग, रास्ता; "भेअं च पडुच्च समा भावाणं पन्नवणपज्जा" (सम्म १५७; दे ६, १; कुप्र १७६)।

पज्जा स्त्री [**दे**] निःश्रेणि, सीढ़ी; (दे ६, १)।

पज्जा स्त्री [**पर्याय**] अधिकार, प्रबन्ध-भेद; (दे ६, १; पाअ)।

पज्जा देखो **पया**; "अगणिज्जंति नासे विज्जा दंडिज्जंती नासे पज्जा" (प्रासू ६६)।

पज्जाअर पुं [**प्रजागर**] जागरण, निद्रा का अभाव; (अभि ६६)।

पज्जाउल वि [**पर्याकुल**] विशेष आकुल, व्याकुल; (स ७२; ६७३; हे ४, २६६)।

पज्जाभाय सक [**पर्या+भाजय्**] भाग करना। संकृ—**पज्जाभाइत्ता**; (राज)।

पज्जाय पुं [**पर्याय**] १ समान अर्थ का वाचक शब्द; (विसे २५)। २ पूर्ण प्राप्ति; (विसे ८३)। ३ पदार्थ-धर्म, वस्तु-गुण; ४ पदार्थ का सूक्ष्म या स्थूल रूपान्तर; (विसे ३२१; ४७६; ४८०; ४८१; ४८२; ४८३; ठा १; १०)। ५ क्रम, परिपाटी; (णाया १, १)। ६ प्रकार, भेद; (आवम)। ७ अवसर; ८ निर्माण; (हे २, २४)। देखो **पज्जय** तथा **पज्जव**।

पज्जाल सक [**प्र+ज्वालय्**] जलाना, सुलगाना। पज्जालइ; (भवि)। संकृ—**पज्जालिअ**, **पज्जालिऊण**; (दस ५, १, महा)।

पज्जालण न [**प्रज्वालन**] सुलगाना; (उप ५६७ टी)।

पज्जालिअ वि [**प्रज्वालित**] जलाया हुआ, सुलगाया हुआ; (सुपा १५१; प्रासू १८)।

पज्जिआ स्त्री [**दे. प्रार्यिका**] १ माता की मातामही; २ पीता की मातामही; (दस ७; हे ३, ४१)।

पज्जिज्जमाण देखो **पज्ज**=पायय्।

पज्जुट्ठ वि [**पर्युष्ट**] फड़फड़ाया हुआ (?); "भिउडी ण कआ, कडुअं णालविअं, अहरअं ण पज्जुट्ठं" (गा ६२१)।

पज्जुच्छुअ वि [**पर्युत्सुक**] अति उत्सुक; (नाट)।

पज्जुणसर न [**दे**] ऊख के तुल्य एक प्रकार का तृण; (दे ६, ३२)।

पज्जुण्ण पुं [**प्रद्युम्न**] १ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम; (अंत)। २ कामदेव; (कुमा)। ३ वैष्णव शास्त्र में प्रतिपादित चतुर्व्यूह रूप विष्णु का एक अंश; (हे २,४२)। ४ एक जैन मुनि; (निवू १)। देखो **पज्जुन्न**।

पज्जुत्त वि [**प्रयुक्त**] जटित, खचित; "माणिक्कपज्जुत्तकणयकडयसणाहेहिं" (स ३१२), "दिव्वखग्गचामरपज्जुत्तकुडंतरालाइं" (स ५६; भवि)। देखो **पउत्त**।

पज्जुदास पुं [**पर्युदास**] निषेध, प्रतिषेध; (विसे १८३)।

पज्जुन्न देखो **पज्जुण्ण**; (णाया १, ५; अंत १४; कुप्र १८; सुपा ३२)। ५ वि. धनी, श्रीमन्त, प्रभूत धन वाला; "पज्जुन्नओवि पडिपुन्नसयलंगो" (सुपा ३२)।

पज्जुवट्ठा सक [**पर्युप+स्था**] उपस्थित होना। हेकृ—**पज्जुवट्ठादुं** (शौ); (नाट—वेणी २५)।

पज्जुवट्ठिय वि [**पर्युपस्थित**] उपस्थित, तत्पर, (उत्त १८, ४५)।

पज्जुवास सक [**पर्युप+आस्**] सेवा करना, भक्ति करना। पज्जुवासइ, पज्जुवासंति ; (उत्त ; भग)। वकृ—**पज्जुवासमाण** ; (णाया १, १ ; २)। कवकृ—**पज्जुवासिज्जमाण**, (सुपा ३७८)। संकृ—**पज्जुवासित्ता** ; (भग)। कृ—**पज्जुवासणिज्ज**, (णाया १, १ ; औप)।

पज्जुवासण न [**पर्युपासन**] सेवा, भक्ति, उपासना ; (भग, स ११६, उप ३५७ टी ; अभि ३८)।

पज्जुवासणया, **पज्जुवासणा** स्त्री [**पर्युपासना**] ऊपर देखो ; (ठा ३, ३ ; भग ; णाया १, १३ ; औप)।

पज्जुवासय वि [**पर्युपासक**] सेवा करने वाला, (काल)।

पज्जुसणा स्त्री [**पर्युषणा**] देखो **पज्जोसवणा** ; " परिवसणा पज्जुसणा पज्जोसवणा य वासवासो य " (निचू १०)।

पज्जुस्सुअ, **पज्जूसुअ** वि [**पर्युत्सुक**] अति उत्सुक, विशेष उत्कण्ठित ; (अभि १०९ ; पि ३२७ ए)।

पज्जोअ पुं [**प्रद्योत**] १ प्रकाश, उद्योत। २ उज्जयिनी नगरी का एक राजा ; (उव)। °**गर** वि [°**कर**] प्रकाश-कर्ता ; (सम १ ; कप्प ; औप)।

पज्जोइय वि [**प्रद्योतित**] प्रकाशित ; (उप ७२८ टी)।

पज्जोयण पुं [**प्रद्योतन**] एक जैन आचार्य ; (राज)।

पज्जोसव अक [**परि+वस्**] १ वास करना, रहना। २ जैनागम-प्रोक्त पर्युषणा-पर्व मनाना। पज्जोसवेइ, पज्जोसविंति, पज्जोसवेंति ; (कप्प)। वकृ—**पज्जोसवंत**, **पज्जोसवेमाण** ; (निचू १० ; कप्प)। हेकृ—**पज्जोसवित्तए**, **पज्जोसवेत्तए** ; (कप्प, कस)।

पज्जोसवणा स्त्री [**पर्युषणा**] १ एक ही स्थान में वर्षा-काल व्यतीत करना ; (ठा १० ; कप्प)। २ वर्षा-काल ; (निचू १०)। ३ पर्व-विशेष, भाद्रपद के आठ दिनों का एक प्रसिद्ध जैन पर्व ; "काराविआ अमारिं पज्जोसवणाईसु तिहीसु" (मुणि १०९०० ; सुर १६, १६१)। °**कप्प** पुं [°**कल्प**] पर्युषणा में करने योग्य शास्त्र-विहित आचार, वर्षाकल्प; (ठा५,२)।

पज्जोसवणा स्त्री [**पर्योसवना**, **पर्युपशमना**] ऊपर देखो ; (ठा १०— पत्र ५०६)।

पज्जोसविय वि [**पर्युषित**] स्थित, रहा हुआ ; (कप्प)।

पज्झंझ अक [**प्र+झञ्झ्**] शब्द करना, आवाज करना। वकृ—**पज्झंझमाण** ; (राज)।

पज्झट्टिआ स्त्री [**पज्झट्टिका**] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

पज्झर अक [**क्षर्**, **प्र+क्षर्**] झरना, टपकना। पज्झरइ ; (हे ४, १७३)।

पज्झर पुं [**प्रक्षर**] प्रवाह-विशेष ; (पराण २)।

पज्झरण न [**प्रक्षरण**] टपकना ; (वज्जा १०८)।

पज्झरिअ वि [**प्रक्षरित**] टपका हुआ ; (पाअ, कुमा, महा ; संक्षि १५)।

पज्झल देखो **पज्झर**=क्षर्। पज्झलइ ; (पिंग)।

पज्झलिआ देखो **पज्झट्टिआ**, (पिंग)।

पज्झाय वि [**प्रध्यात**] चिन्तित, (अणु)।

पज्झुत्त वि [**दे**] खचित, जड़ित, जडा हुआ; (पाअ)। देखो **पज्जुत्त**।

पटउडी स्त्री [**पटकुटी**] तंबू, वस्त्र-गृह, कपड़कोट; (सुर १३, ९)।

पटल देखो **पडल**=पटल ; (कुमा)।

पटह देखो **पडह** ; (प्रति १०)।

पटिमा (पै. चूपै) देखो **पडिमा** ; (पड् ; पि १९१)।

पट्ट सक [**पा**] पीना, पान करना। पट्टइ ; (हे ४, १०)। भूका—पट्टीअ ; (कुमा)।

पट्ट पुं [**पट्ट**] १ पहनने का कपडा ; "पट्टो वि होइ इक्को देहपमाणेण सो य भइयव्वो" (वृह ३ ; ओघ ३४)। २ रथ्या, मुहल्ला ; "तेणवि मालियपट्टे गंतूण करे कया माला" (सुपा ३७३)। ३ पाषाण आदि का तख्ता, फलक, "मणिसिलापट्टअसणाहो माहवीमंडवो" (अभि २००), "पिअंगुसिलापट्टए उवविट्ठा" (स्वप्न ५२), " पट्टसंठियपसत्थवित्थिण्णपिहुलसोणीओ" (जीव ३)। ४ ललाट पर से बँधी जाती एक प्रकार की पगड़ी ; "तप्पभिइं पट्टबद्धा रायाणो। जाया पुव्वं मउडबद्धा आसी" (महा)। ५ पट्टा, चकनामा, किसी प्रकार का अधिकार-पत्र ; (कुप्र ११ ; जं ३)। ६ रेशम ; ७ पाट, सन; (गा ५२० , कप्पू)। ८ रेशमी कपड़ा; ९ सन का कपड़ा, (कप्प ; औप)। १० सिंहासन, गद्दी, पाट ; (कुप्र २८ ; सुपा २८५)। १२ कलावत्तू ; (राज)। १३ पट्टी, फोड़ा आदि पर बाँधा जाता लम्बा वस्त्रांश, पाटा ; "चउरंगुलपमाणपट्टवंधेण सिरिवच्छालंकियं छाइयं वच्छत्थलं" (महा ; विपा १, १)। १३ शाक-विशेष; (सुज्ज २०)।

°इल्ल पुं [°वत्] पटेल, गाँव का मुखी ; (जं ३) °उडी स्त्री [°कुटी] तंबू, वस्त्र-गृह ; (सुर १३, १५७)। °करि पुं [°करिन्] प्रधान हस्ती ; (सुपा ३७३)। °कार पु [°कार] तन्तुवाय, वस्त्र बुनने वाला ; (पण्ण १)। °वासिआ स्त्री [°वासिता] एक शिरो-भूषण ; (दे ४, ४३)। °साला स्त्री [°शाला] उपाश्रय, जैन मुनि को रहने का स्थान ; (सुपा २८५)। °सुत्त न [°सूत्र] रेशमी सूता; (आवम)। °हत्थि पुं [°हस्तिन्] प्रधान हाथी ; (सुपा ३७२)।

पट्टइल } पुं [दे] पटेल, गाँव का मुखिया ; (सुपा २७३;
पट्टइल्ल } ३६१)।

पट्टंसुअ न [**पट्टांशुक**] १ रशमी वस्त्र , २ सन का वस्त्र ; (गा ५२० ; कप्पू)।

पट्टग देखो **पट्ट** ; (कस)।

पट्टण न [**पत्तन**] नगर, शहर ; (भग ; औप , प्राप्र; कुमा)।

पट्टय देखो **पट्ट**; (उवा ; णाया १, १६)।

पट्टाढा स्त्री [दे] पट्टा, घोड़े की पेटी, कसन ; "छोडिया पट्टाढा, ऊसारियं पल्लाणं" (महा ; सुख १८, ३७)।

पट्टिय वि [**पट्टिक**] पट्टे पर दिया जाता गाँव वगैरः ; "पुव्विं पट्टियगामम्मि तुट्टदव्वत्थं पट्टइलो नरवालो पुव्विं जो आसि गुत्तीए खित्तो" (सुपा २७३)।

पट्टिया स्त्री [**पट्टिका**] १ छोटा तख्ता, पाटी ; "चित्तपट्टिया" (सुर १, ८८)। २—देखो **पट्टी**, "सरासणपट्टिआ" (राज—ज ३)।

पट्टिस पु [**दे. पट्टिश**] प्रहरण-विशेष, एक प्रकार का हथियार ; (पगह १, १ ; पउम ८, ४५)।

पट्टी स्त्री [**पट्टी**] १ धनुर्यष्टि ; २ हस्तपट्टिका, हाथ पर की पट्टी ; "उप्पीडियसरासणपट्टिए" (विपा १, १—पत्र २४)।

पट्टुया स्त्री [**दे**] पाद-प्रहार, लात ; गुजराती में 'पाटू' ; "सिरिवच्छो गोणेणं तहाहओ पट्टुयाए हिययम्मि" (सुपा २३७)। देखो—**पड्डुआ**।

पट्टुहिअ न [**दे**] कलुषित जल, "पट्टुहियं जाण कलुसजलं" (पाअ)।

पट्ठ वि [**प्रष्ठ**] १ अग्र-गामी, अग्रसर ; (णाया १, १—पत्र १६)। २ कुशल, निपुण ; ३ प्रधान, मुखिया ; (औप ; राज)।

पट्ठ वि [**स्पृष्ट**] जिसका स्पर्श किया गया हो वह ; (औप)।

पट्ठ न [**पृष्ठ**] १ पीठ, शरीर के पीछे का भाग ; (णाया १, ६ ; कुमा)। २ तल, ऊपर का भाग ; "तलिमं पट्ठं च तलं" (पाअ)। °चर वि [°चर] अनुयायी, अनुगामी ; (कुमा)।

पट्ठ वि [**पृष्ट**] १ जिसको पूछा गया हो वह। २ न. प्रश्न, सवाल ; 'छव्विहे पट्ठे पण्णत्ते" (ठा ६—पत्र ३७५)।

पट्ठव सक [**प्र+स्थापय्**] १ प्रस्थान कराना, भेजना। २ प्रवृत्ति कराना। ३ प्रारम्भ करना। ४ प्रकर्ष से स्थापन करना। ५ प्रायश्चित देना। पट्ठवइ ; (हे ४, ३७)। भूका—पट्ठवइंसु ; (कप्प)। कृ—**पट्ठवियव्व** ; (कस; सुपा ६२७)।

पट्ठवण न [**प्रस्थापन**] १ प्रकृष्ट स्थापन ; २ प्रारम्भ ; "इमं पुण पट्ठवणं पडुच्च" (अणु)।

पट्ठवणा स्त्री [**प्रस्थापना**] १ प्रकृष्ट स्थापना। २ प्रायश्चित-प्रदान ; "दुविहा पट्ठवणा खलु" (वव १)।

पट्ठवय वि [**प्रस्थापक**] १ प्रवर्तक, प्रवृत्ति कराने वाला; (णाया १, १—पत्र ६३)। २ प्रारम्भ करने वाला ; (विसे ६२७)।

पट्ठविअ वि [**प्रस्थापित**] भेजा हुआ; (पाअ ; कुमा)। २ प्रवर्तित ; (निचू २०)। ३ स्थिर किया हुआ ; (भग १२, ४)। ४ प्रकर्ष से स्थापित, व्यवस्थापित; (पण्ण २१)।

पट्ठविआ } स्त्री [**प्रस्थापिता**] प्रायश्चित-विशेष, अनेक
पट्ठविया } प्रायश्चित्तों में जिसका पहले प्रारम्भ किया जाय वह ; (ठा ५, २ ; निचू २०)।

पट्ठाअ देखो **पट्ठाव**। वकृ—**पट्ठाएंत** ; (गा ४४०)।

पट्ठाण न [**प्रस्थान**] प्रयाण ; (सुपा १४२)।

पट्ठाव देखो **पट्ठव**। पट्ठावइ , (हे ४, ३७)। पट्ठावेइ ; (पि ५५३)।

पट्ठाविअ देखो **पट्ठविअ** ; (हे ४, १६ ; कुमा ; पि ३०६)।

पट्ठि स्त्री देखो **पट्ठ=पृष्ठ** ; (गउड ; सण)। °**मंस** न [°**मांस**] पीठ का मांस ; (पण्ह १, २)।

पट्ठिअ वि [**प्रस्थित**] जिसने प्रस्थान किया हो वह, प्रयात ; (दे ४, १६ ; ओघ ८१ भा ; सुपा ७८)।

पट्ठिअ वि [**दे**] अलंकृत, विभूषित ; (षड्)।

पट्ठिउकाम वि [**प्रस्थातुकाम**] प्रयाण का इच्छुक ; (श्रा १४)।

पट्ठिसंग न [**दे**] ककुद, बैल के कंधे का कुब्बड़ ; (दे ६, २३)।

पट्टी देखो **पट्टि** ; (महा ; काल)।

पठ देखो **पढ** । पठदि (शौ) ; (नाट—मृच्छ १४०)। पठंति ; (पिंग)। कर्म—पठाविअइ ; (पि ३०६; ५५१)।

पठग देखो **पाढग** ; (कप्प)।

पड अक [**पत्**] पड़ना, गिरना। पडइ ; (उव ; पि २१८ ; २४४)। वकृ—**पडंत, पडमाण,** (गा २६४; महा ; भवि ; वृह ६)। संकृ—**पडिअ** , (नाट—शकु ६७)। कृ—**पडणीअ** ; (काल)।

पड पु [**पट**] वस्त्र, कपड़ा ; (औप ; उत ; स्वप्न ८५ ; स ३२६ ; गा १८)। °**कार** देखो °**गार** ; (राज)। °**कुडी** स्त्री [°**कुटी**]तंबू, वस्त्र-गृह , (दे ६, ६ ; ती ३)। °**गार** पुं [°**कार**] तन्तुवाय, कपड़ा बुनने वाला ; (पराह १, २—पत्र २८)। °**बुद्धि** वि [°**बुद्धि**]प्रभूत सूत्रार्थों को ग्रहण करने में समर्थ बुद्धि वाला ; (औप)। °**मंडव** पु [°**मण्डप**] तंबू, वस्त्र-मण्डप ; (आक)। °**मा** वि [°**वत्**] पट वाला, वस्त्र वाला ; (षड्)। °**वास** पु [°**वास**] वस्त्र में डाला जाता कुंकुम-चूर्ण आदि सुगन्धित पदार्थ ; (गउड , स ७३८)। °**साडय** पु [°**शाटक**] १ वस्त्र, कपड़ा , २ धोती, पहनने का लम्बा वस्त्र ; (भग ६, ३३)। ३ धोती और दुपट्टा , (णाया १, १—पत्र ५३)।

पडंचा स्त्री [**दे प्रत्यञ्चा**] ज्या, धनुष का चिल्ला , (दे ६, १४ ; पाअ)।

पडंसुअ देखो **पडिंसुद** ; (पि ११५)।

पडंसुआ स्त्री [**प्रतिश्रुत्**] १ प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि ; (हे १, ८८)। २ प्रतिज्ञा ; (कुमा)।

पडंसुआ स्त्री [**दे**] ज्या, धनुष का चिल्ला ; (दे ६, १४)।

पडच्चर पुं [**दे**] साला जैसा विदूषक आदि; (दे ६,२५)।

पडच्चर पुं [**पटच्चर**] चोर, तस्कर; (नाट—मृच्छ १३८)।

पडज्झमाण देखो **पडह**=प्र+दह् ।

पडण न [**पतन**] पात, गिरना ; (णाया १, १ , प्रासू१०१)।

पडणीअ वि [**प्रत्यनीक**] विरोधी, प्रतिपक्षी, वैरी ; (स ४६६)।

पडणीअ देखो **पड**=पत् ।

पडम देखो **पढम** ; (पि १०४ ; नाट—शकु ६८)।

पडल न [**पटल**] १ समूह, संघात, वृन्द ; (कुमा)। २ जैन साधुओं का एक उपकरण, भिक्षा के समय पात्र पर ढका जाता वस्त्र-खण्ड ; (पराह २, ५—पत्र १४८)।

पडल न [**दे**] नीव्र, नरिया, मिट्टी का बना हुआ एक प्रकार का खपड़ा जिससे मकान छाये जाते हैं ; (दे ६, ५ ; पाअ)।

पडलग } स्त्रीन [**दे पटलक**] गठरी, गाँठ ; गुजराती में
पडलय } 'पोटलु' 'पोटली' ; "पुप्फपडलगहत्थाओ" (णाया १, ८)। स्त्री—°**लिगा,** °**लिया** ; (स २१३ ;सुपा ६)।

पडवा स्त्री [**दे**] पट-कुटी, पट-मण्डप, वस्त्र-गृह, (दे ६, ६)।

पडह सक [**प्र+दह्**] जलाना, दग्ध करना। कवकृ—**पडज्झमाण** ; (पराह १, २)।

पडह पुं [**पटह**] वाद्य-विशेष, ढोल ; (औप ; णादि ; महा)।

पडहत्थ वि [**दे**] पूर्ण, भरा हुआ , (स १८०)।

पडहिय पु [**पाटहिक**] ढोल बजाने वाला, ढोली ; (पउम ४८, ८६)।

पडहिया स्त्री [**पटहिका**] छोटा ढोल ; (सुर ३, ११५)।

पडाअ देखो **पलाय**=परा+अय्। कृ—**पडाइअव्व** ; (से १४, १२)।

पडाइअ वि [**पलायित**] जिसने पलायन किया हो वह, भागा हुआ ; (से १५, १५)।

पडाइअव्व देखो **पडाअ** ।

पडाइया स्त्री [**पताकिका**] छोटी पताका, अन्तर-पताका ; (कुप्र १४५)।

पडाग पुं [**पटाक, पताक**] पताका, ध्वजा ; (कप्प ; औप)।

पडागा } स्त्री [**पताका**] ध्वजा, ध्वज ; (महा ; पाअ ;
पडाया } हे १, २०६ ; प्राप्र ; गउड)। °**इपडाग** पुं [°**तिपताक**] १ मत्स्य की एक जाति; (विपा १, ८—पत्र ८३)। २ पताका के ऊपर की पताका ; (औप)। °**हरण** न [°**हरण**] विजय-प्राप्ति ; (संथा)।

पडायाण देखो **पल्लाण** ; (हे १, २५२)।

पडायाणिय वि [**पर्याणित**] जिस पर पर्याण बाँधा गया हो वह ; (कुमा २, ६३)।

पडाली स्त्री [**दे**] १ पङ्क्ति, श्रेणी ; (दे ६, ६)। २ घर के ऊपर की चटाई आदि की कच्ची छत ; (वव ७)।

पडास देखो **पलास** ; (नाट—मृच्छ २४३)।

पडि अ [**प्रति**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ विरोध, जैसे—'पडिवक्ख', 'पडिवासुदेव' (गउड; पउम २०, २०२)। २ विशेष, विशिष्टता ; जैसे—'पडिमंजरिवडिंसय' (औप)। ३ वीप्सा, व्याप्ति , जैसे—'पडिदुवार', 'पडिपेल्लण' ; (पराह

१, ३; से ६, ३२)। ४ वापिस, पीछे; जैसे—'पडिगय' (विपा १, १; भग, सुर १, १४६)। ५ आभिमुख्य, संमुखता; जैसे—'पडिविरइ', 'पडिवद्ध' (पराह २, २; गउड)। ६ प्रतिदान, बदला; जैसे—'पडिदेइ' (विसे ३२४१)। ७ फिर से; जैसे—'पडिपडिय', 'पडिवविय' (साधं ६४; दे ६, १३)। ८ प्रतिनिधिपन; जैसे—'पडिच्छंद' (उव ७२८ टी)। ९ प्रतिषेध, निषेध, जैसे—'पडियाइक्खिय' (भग; सम ५६)। १० प्रतिकूलता, विपरीतपन; जैसे—'पडिवंथ' (स २, ४६)। ११ स्वभाव; जैसे—'पडिचाइ' (ठा २, १)। १२ सामीप्य, निकटता; जैसे—'पडिवेसिअ' (सुपा ५५२)। १३ आधिक्य, अतिशय, जैसे—'पडियाणंद' (ओप)। १४ सादृश्य, तुल्यता, जैसे—'पडिइद' (पउम १०५, १११)। १५ लघुता, छोटाई, जैसे—'पडिदुवार' (कप्प, पराण २)। १६ प्रशस्तता, श्लाघा; जैसे—'पडिरूव' (जीव ३)। १७ साप्रतिकता, वर्तमानता, (ठा ३, ४—पत्र १५८)। १८ निरर्थक भी इसका प्रयोग होता है, जैसे—'पडिइंद' (पउम १०५, ६), 'पडिउच्चारेयव्व' (भग)।

पडि देखो **परि**; (से ४, ५०; ५, १६; ६६; अत ७)।

पडिअ वि [दे] विघटित, वियुक्त; (दे ६, १२)।

पडिअ वि [पतित] १ गिरा हुआ; (गा ११; प्रासू ५; १०१)। २ जिसने चलने का प्रारम्भ किया हो वह, "आगयमग्गेण य पडिओ" (वसु)।

पडिअ देखो **पड**=पत्।

पडिअंकिअ वि [प्रत्यङ्कित] १ विभूषित; २ उपलक्षित; "बहुवण्णबुसिणपंकि पडियंकिओ" (भवि)।

पडिअंतअ पुं [दे] कर्मकर, नौकर; (दे ६, ३२)।

पडिअग्ग सक [अनु+व्रज्] अनुसरण करना, पीछे जाना। पडिअग्गइ; (हे ४, १०७; षड्)।

पडिअग्ग सक [प्रति+जागृ] १ सम्हालना। २ सेवा करना, भक्ति करना। ३ शुश्रूषा करना। "वच्छ! पडियग्गेहि मखिमोत्तियाइयं सारदव्वं" (स २८८), पडियग्गह; (स ५४८)।

पडिअग्गिअ वि [दे] १ परिभुक्त, जिसका परिभोग किया गया हो वह; २ जिसको बधाई दी गई हो वह; ३ पालित, रक्षित, (दे ६, ७४)।

पडिअग्गिअ वि [अनुव्रजित] अनुसृत; (दे ६, ७४)।

पडिअग्गिअ वि [प्रतिजागृत] भक्ति से आदृत; (स २१)।

पडिअग्गिर वि [अनुव्रजित] अनुसरण करने को आदत वाला, (कुमा)।

पडिअज्झअ पुं [दे] उपाध्याय, विद्या-दाता गुरु; (दे ६, ३१)।

पडिअट्टलिअ वि [दे] घृष्ट, घिसा हुआ; (से ६, ३१)।

पडिअत्त देखो **परि+वत्त**=परि+वृत्। संकृ—**पडिअत्तिअ**; (नाट)।

पडिअत्तण न [परिवर्तन] फेरफार; (से ५, ६६)।

पडिअमित्त पुं [प्रत्यमित्र] मित्र-शत्रु, मित्र होकर पीछे से जो शत्रु हुआ हो वह, (राज)।

पडिअम्मिय वि [प्रतिकर्मित] मण्डित, विभूषित; (दे ६, ३५)।

पडिअर सक [प्रति+चर्] १ बिमार की सेवा करना। २ आदर करना। ३ निरीक्षण करना। ४ परिहार करना। संकृ—**पडियरिऊण**; (निचू १)।

पडिअर सक [प्रति+कृ] १ बदला चुकाना। २ इलाज करना। ३ स्वीकार करना। हेकृ—**पडिकाउं**; (गा ३२०)। संकृ—"तहत्ति **पडिकाऊण** ठाविओ एसो" (कुप्र ४०)।

पडिअर पुं [दे] चुल्ली-मूल, चुल्हे का मूल भाग; (दे ६, १७)।

पडिअर पुं [परिकर] परिवार; "पडियरि(? र)त्थो पुरिसो व्व नियत्तो तेहिं चेव पएहिं नलो" (कुप्र ५७)।

पडिअरग वि [प्रतिचारक] सेवा-शुश्रूषा करने वाला; (निचू १; वव १)।

पडिअरण न [प्रतिचरण] सेवा, शुश्रूषा; (ओघ ३६ भा; श्रा १; सुपा २६)।

पडिअरणा स्त्री [प्रतिचरणा] १ बिमार की सेवा-शुश्रूषा; (ओघ ८३)। २ भक्ति, आदर, सत्कार; (उप १३६ टी)। ३ आलोचना, निरीक्षण; (ओघ ८३)। ४ प्रतिक्रमण; पाप-कर्म से निवृत्ति; ५ सत्-कार्य में प्रवृत्ति; (आव ४)।

पडिअलि वि [दे] त्वरित, वेग-युक्त; (दे ६, २८)।

पडिआगय वि [प्रत्यागत] १ वापिस आया हुआ, लौटा हुआ; (पउम १६, २६)। २ न. प्रत्यागमन, वापिस आना; (आचू १)।

पडिआर पुं [प्रतिकार] १ चिकित्सा, उपाय, इलाज; (आव ४; कुमा)। २ बदला, शोध; (आचा)। ३ पूर्वाचरित कर्म का अनुभव; (सूअ १, ३, १, ६)।

पडिआर पुं [**प्रत्याकार**] तलवार की म्यान ; (दे २, ५; स २१५), "न एक्कम्मि पडियारे दोन्नि करवालाइं मायति" (महा) ।

पडिआर पुं [**प्रतिचार**] सेवा-शुश्रूषा ; (णाया १, १३— पत्र १७६) ।

पडिआरय वि [**प्रतिचारक**] सेवा-शुश्रूषा करने वाला ; (णाया १, १३ टी—पत्र १८१) । स्त्री—°**रिया** ; (णाया १, १—पत्र २८) ।

पडिआरि वि [**प्रतिचारिन्**] ऊपर देखो ; (वव १) ।

पडिइ सक [**प्रति+इ**] पीछे लौटना, वापिस आना । वकृ—**पडिइंत** ; (उप ५६७ टी) । हेकृ—**पडिएत्तए** ; (कस) ।

पडिइ स्त्री [**पतिति**] पतन, पात ; (वव ५) ।

पडिइंद पु [**प्रतीन्द्र**] १ इन्द्र, देव-राज ; (पउम १०५, ६) । २ इन्द्र का सामानिक-देव, इन्द्र के तुल्य वैभव वाला देव ; (पउम १०५, १११) । ३ वानर-वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ६, १५२) ।

पडिइंधण न [**प्रतीन्धन**] अस्त्र-विशेष, इन्धनास्त्र का प्रतिपक्षी अस्त्र ; (पउम ७१, ६४) ।

पडिइक्क देखो **पडिक्क** ; (आचा) ।

पडिउंचण न [**दे**] अपकार का वदला ; (पउम ११, ३८; ४४, १६) ।

पडिउंवण न [**परिचुम्बन**] संगम, सयोग ; (से २, २७)।

पडिउच्चार सक [**प्रत्युत्+चारय्**] उच्चारण करना, बोलना ; (भग ; उवा) ।

पडिउट्ठिअ वि [**प्रत्युत्थित**] जो फिर से खडा हुआ हो वह; (से १५, ८० ; पउम ६१, ४०) ।

पडिउण्ण देखो **परिउण्ण** , (से ५, १६) ।

पडिउत्तर न [**प्रत्युत्तर**] जवाव, उत्तर , (सुर २, १५८ ; भवि) ।

पडिउत्तरण न [**प्रत्युत्तरण**] पार जाना, पार उतरना ; (निचू १) ।

पडिउत्ति स्त्री [**दे**] खबर, समाचार , "अम्मापियरस्स कुसलपडिउत्ती ससिणेहं परिपुट्ठा" (महा) ।

पडिउत्थ वि [**पर्युषित**] संपूर्ण रूप से अवस्थित ; (से ४, ५०) ।

पडिउद्ध वि [**प्रतिबुद्ध**] १ जागृत, जगा हुआ , (से १२, २२) । २ प्रकाश-युक्त ; "जलणिहिविहपडिउद्धं आअण्णाअड्ढिअं विअंभइ व धणु" (से ५, २७) ।

पडिउवयार पुं [**प्रत्युपकार**] उपकार का वदला, प्रतिफल, (पउम ४८, ७२ ; सुपा ११५) ।

पडिउस्सस अक [**प्रत्युत्+श्वस्**] पुनर्जीवित होना, फिर से जीना । वकृ—**पडिउस्ससंत** ; (से ६, १२)।

पडिऊल देखो **पडिकूल** ; (अच्चु ८० ; से ३, ३५) ।

पडिएत्तए देखो **पडिइ** ।

पडिएल्लिअ वि [**दे**] कृतार्थ, कृत-कृत्य ; (दे ६, ३२) ।

पडिंसुआ देखो **पडंसुआ**=प्रतिश्रुत् ; (औप) ।

पडिंसुद वि [**प्रतिश्रुत**] अंगीकृत, स्वीकृत , (प्राप्र ; पि ११५) ।

पडिकंटय वि [**प्रतिकण्टक**] प्रतिस्पर्धी ; (राय)।

पडिकंत देखो **पडिक्कंत** ; (उप २२० टी) ।

पडिकत्तु वि [**प्रतिकर्तृ**] इलाज करने वाला , (ठा ४, ४) ।

पडिकप्प सक [**प्रति+कृप्**] १ सजाना, सजावट करना । "खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! कूणियस्स रण्णो भिंभिसारपुत्तस्स आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेहि" (औप), पडिकप्पेइ ; (औप) ।

पडिकप्पिअ वि [**प्रतिक्लृप्त**] सजाया हुआ ; (विपा १, २—पत्र २३ ; महा ; औप) ।

पडिकम देखो **पडिक्कम** । कृ—"पडिकमण पडिकमओ **पडिकमिअव्वं** च आणुपुव्वीए" (आनि ४) ।

पडिकमय देखो **पडिक्कमय** ; (आनि ४) ।

पडिकम्म न [**प्रतिकर्मन्, परिकर्मन्**] देखो **परिकम्म** , (औप ; सण) ।

पडिकय वि [**प्रतिकृत**] १ जिसका वदला चुकाया गया हो वह ; २ न. प्रतिकार, वदला ; (ठा ४, ४) ।

पडिकाउं } देखो **पडिअर**=प्रति+कृ ।
पडिकाऊण }

पडिकामणा देखो **पडिक्कामणा** ; (ओघभा ३६ टी) ।

पडिकिदि स्त्री [**प्रतिकृति**] १ प्रतिकार, इलाज ; २ वदला ; (दे ६, १६) । ३ प्रतिबिम्ब, मूर्ति ; (अभि १६६) ।

पडिकिरिया स्त्री [**प्रतिक्रिया**] प्रतीकार, वदला ; "कयपडिकिरिया" (औप) ।

पडिकुट्ठ } वि [प्रतिकुष्ट] १ निषिद्ध, प्रतिषिद्ध ;
पडिकुट्ठिल्लग } (ओघ ४०३ ; पञ्च ८ ; सुपा २०७)। "पडिकुट्ठिल्लगदिवसे वज्जेज्जा अट्ठमिं च नवमिं च" (वत्र १)। २ प्रतिकूल ; (स २७०)। "अन्नोन्नं पडिकुट्ठा दोन्निवि एए असव्वाया" (सम्म १५३)।

पडिकूड देखो **पडिकूल**=प्रतिकूल ; (सुर ११, २०१)।

पडिकूल सक [प्रतिकूलय्] प्रतिकूल आचरण करना। वकृ—"पडिकूलतस्स मज्झ जिण-वयणं" (सुपा २०७, २०६)। कृ—**पडिकूलेयव्व** ; (कुप्र २४२)।

पडिकूल वि [प्रतिकूल] १ विपरीत, उलटा, (उत्त १२)। २ अनिष्ट, अनभिमत ; (आचा)। ३ विरोधी, विपक्ष ; (हे २, ६७)।

पडिकूलिय वि [प्रतिकूलित] प्रतिकूल किया हुआ ; (गज)।

पडिकूवग पु [प्रतिकूपक] कूप के समीप का छोटा कूप ; (स १००)।

पडिकेसव पु [प्रतिकेशव] वासुदेव का प्रतिपक्षी राजा, प्रतिवासुदेव ; (पउम २०, २०४)।

पडिक्क न [प्रत्येक] प्रत्येक, हरएक ; (आचा)।

पडिक्कंत वि [प्रतिक्रान्त] पीछे हटा हुआ, निवृत्त; (उवा ; पगह २, १ ; श्रा ४३ ; सं १०६)।

पडिक्कम अक [प्रति+क्रम्] निवृत्त होना, पीछे हटना। पडिक्कमइ ; (उव , महा)। पडिक्कमे ; (श्रा ३ ; ५ ; पच १२)। हेकृ—**पडिक्कमिउं, पडिक्कमित्तए** ; (धर्म २ ; कस ; ठा २, १)। संकृ—**पडिक्कमित्ता** ; (आचा २, १५)। कृ—**पडिक्कंतव्व, पडिक्कमियव्व** ; (आवम ; ओघ ८००)।

पडिक्कमण न [प्रतिक्रमण] १ निवृत्ति, व्यावर्तन ; २ प्रमाद-वश शुभ योग से गिर कर अशुभ योग को प्राप्त करने के बाद फिर से शुभ योग को प्राप्त करना ; ३ अशुभ व्यापार से निवृत्त होकर उत्तरोत्तर शुद्ध योग में वर्तन ; (पगह २, १ ; औप ; चउ ५ ; पडि)। ४ मिथ्या-दुष्कृत-प्रदान, किए हुए पाप का पश्चात्ताप ; (ठा १०)। ५ जैन साधु और गृहस्थों का सुबह और शाम को करने का एक आवश्यक अनुष्ठान ; (श्रा ४८)।

पडिक्कमय वि [प्रतिक्रामक] प्रतिक्रमण करने वाला ; "जीवो उ पडिक्कमओ असुहाणं पावकम्मजोगाणं" (आनि ४)।

पडिक्कमिउं देखो **पडिक्कम**। °**काम** वि [°काम] प्रतिक्रमण करने की इच्छा वाला ; (णाया १, ५)।

पडिक्कय पुं [दे] प्रतिक्रिया, प्रतीकार ; (दे ६, १६)।

पडिक्कामणा स्त्री [प्रतिक्रमणा] देखो **पडिक्कमण** ; (ओघ ३६ भा)।

पडिक्कूल देखो **पडिकूल** ; (हे २, ६७ ; षड्)।

पडिक्ख सक [प्रति+ईक्ष्] १ प्रतीक्षा करना, बाट देखना, बाट जोहना। २ अक स्थिति करना। पडिक्खइ ; (षड् ; महा)। वकृ—**पडिक्खंत** , (पउम ५, ७२)।

पडिक्खअ वि [प्रतीक्षक] प्रतीक्षा करने वाला , बाट जोहने वाला , (गा ५५७ अ)।

पडिक्खंभ पु [प्रतिस्तम्भ] अर्गला, आगल ; (से ६, ३३)।

पडिक्खण न [प्रतीक्षण] प्रतीक्षा बाट , (दे १,३४,कुमा)।

पडिक्खर वि [दे] १ क्रूर, निर्दय , (दे ६. २५)। २ प्रतिकूल , (षड्)।

पडिक्खल अक [प्रति+स्खल्] १ हटना। २ गिरना। ३ रुकना। ४ सक रोकना। वकृ—**पडिक्खलंत** ; (भवि)।

पडिक्खलण न [प्रतिस्खलन] १ पतन , २ अवरोध ; (आवम)।

पडिक्खलिअ वि [प्रतिस्खलित] १ परावृत, पीछे हटा हुआ ; (से १, ७)। २ रुका हुआ , (से १, ७ ; भवि)। देखो **पडिखलिअ**।

पडिक्खाविअ वि [प्रतीक्षित] १ स्थापित ; २ कृत ; "विस्मालिअ संसारे जेण पडिक्खाविआ समयसत्था" (कुमा)।

पडिक्खिअ वि [प्रतीक्षित] जिसको प्रतीक्षा की गई हो वह ; (दे ८, १३)।

पडिक्खित्त वि [परिक्षिप्त] विस्तारित ; (अंत ७)।

पडिखंध न [दे] १ जल-वहन, जल भरने का दृति आदि पात्र ; २ जलवाह, मेघ ; (दे ६, २८)।

पडिखंधी स्त्री [दे] ऊपर देखो ; (द ६, २८)।

पडिखद्ध वि [दे] हत, मारा हुआ(?); "किमेइणा सुगह-पाएण पडिखद्धेण" (महा)।

पडिखल देखो **पडिक्खल** ; (भवि)। कर्म—पडिखलियइ ; (कुप्र २०५)।

पडिखलिअ वि [प्रतिस्खलित] १ रुका हुआ ; (भवि)। २ रोका हुआ ; "सहसा ततो पडिखलिओ अंगरक्खेण" (सुपा ५२७)। देखो **पडिक्खलिअ**।

पडिखिज्ज अक [**परि+खिद्**] खिन्न होना, क्लान्त होना। पडिखिज्जदि (शौ); (नाट—मालती ३१)।

पडिगमण न [**प्रतिगमन**] व्यावर्तन, पीछे लौटना; (वव १०)।

पडिगय पुं [**प्रतिगज**] प्रतिपक्षी हाथी; (गउड)।

पडिगय पुं [**प्रतिगत**] पीछे लौटा हुआ, वापिस गया हुआ; (विपा १, १; भग; औप; महा; सुर १, १४६)।

पडिगह देखो **पडिग्गह**; (दे ४, ३१)।

पडिगाह सक [**प्रति+ग्रह्**] ग्रहण करना, स्वीकार करना। पडिगाहइ; (भवि)। पडिगाह, पडिगाहेहि; (कप्प)। संकृ—**पडिगाहिया, पडिगाहित्ता, पडिगाहेत्ता**; (कप्प; आचा २, १, ३, ३)। हेकृ—**पडिगाहित्तए**; (कप्प)।

पडिगाहग वि [**प्रतिग्राहक**] ग्रहण करने वाला; (णाया १, १—पत्र ५३; उप पृ २६३)।

पडिगाहिय वि [**प्रतिगृहीत**] लिया हुआ, उपात्त; (सुपा १४३)।

पडिग्गह पुं [**पतद्ग्रह, प्रतिग्रह**] १ पात्र, भाजन; (पण्ह २, ५; औप; ओघ ३६; २५१; दे ५, ४८; कप्प)। २ कर्म-प्रकृति विशेष, वह प्रकृति जिसमें दूसरी प्रकृति का कर्म-दल परिणत होता है; (कम्मप)। °**धारि** वि [°**धारिन्**] पात्र रखने वाला; (कप्प)।

पडिग्गहिअ वि [**प्रतिग्रहिन्, पतद्ग्रहिन्**] पात्र वाला; "समणे भगवं महावीरे संवच्छर साहियं मासं जाव चीवरधारी होत्था, तेण परं अचेलए पाणिपडिग्गहिए" (कप्प)।

पडिग्गहिद (शौ) वि [**प्रतिगृहीत, परिगृहीत**] स्वीकृत; (नाट—मृच्छ ११०; रत्ना १२)।

पडिग्गाह देखो **पडिगाह**। पडिग्गाहेइ; (उवा)। संकृ—**पडिग्गाहेत्ता**; (उवा)। हेकृ—**पडिग्गाहेत्तए**; (कस; औप)।

पडिग्गाह सक [**प्रति+ग्राहय्**] ग्रहण कराना। कृ—**पडिग्गाहिदव्व** (शौ); (नाट)।

पडिग्गाहय वि [**प्रतिग्राहक**] प्रत्यादाता, वापिस लेने वाला; (दे ७, ५६)।

पडिघाय पुं [**प्रतिघात**] १ नाश, विनाश; २ निराकरण, निरसन; " दुक्खपडिघायहेउं " (आचा; सुर ७, २३४)।

पडिघायग वि [**प्रतिघातक**] प्रतिघात करने वाला; (उप २६४ टी)।

पडिघोलिर वि [**प्रतिघूर्णितृ**] डोलने वाला, हिलने वाला; (से ६, ५१)।

पडिचंद पुं [**प्रतिचन्द्र**] द्वितीय चन्द्र, जो उत्पात आदि का सूचक है; (अणु)।

पडिचक्क न [**प्रतिचक्र**] अनुरूप चक्र—समुदाय; (राज)। देखो **पडियक्क**=प्रतिचक्र।

पडिचर देखो **पडिअर**=प्रति+चर्। संकृ—**पडिचरिय**; (दस ६, ३)। कृ—"संजमो **पडिचरियव्वो**" (आव ४)।

पडिचरग पुं [**प्रतिचरक**] जासूस, चर पुरुष; (बृह १)।

पडिचरणा देखो **पडिअरणा**; (राज)।

पडिचार पुं [**प्रतिचार**] कला-विशेष;—१ ग्रह आदि की गति का परिज्ञान; २ रोगी की सेवा-शुश्रूषा का ज्ञान; (जं २; औप; स ६०३)।

पडिचारय पुंस्त्री [**प्रतिचारक**] नौकर, कर्मकर। स्त्री—°**रिया**; (सुपा ३०४)।

पडिचोइज्जमाण देखो **परिचोय**।

पडिचोइय वि [**प्रतिचोदित**] १ प्रेरित; (उप पृ ३६४)। २ प्रतिभणित, जिसको उत्तर दिया गया हो वह; (पउम ४४, ४६)।

पडिचोएत्तु वि [**प्रतिचोदयितृ**] प्रेरक; (ठा ३, ३)।

पडिचोय सक [**प्रति+चोदय्**] प्रेरणा करना। पडिचोएंति; (भग १५)। कवकृ—**पडिचोइज्जमाण**; (भग १५—पत्र ६७६)।

पडिचोयणा स्त्री [**प्रतिचोदना**] प्रेरणा; (ठा ३, ३; भग १५—पत्र ६७६)।

पडिच्चारग देखो **पडिचारय**; (उप ६८६ टी)।

पडिच्छ देखो **पडिक्ख**। वकृ—**पडिच्छंत**, "अहिसेयरिणं **पडिच्छमाणो** चिट्ठइ" (उव; स १२५; महा)। कृ—**पडिच्छियव्व**, (महा)।

पडिच्छ सक [**प्रति+इष्**] ग्रहण करना। पडिच्छइ, पडिच्छति; (कप्प; सुपा ३६)। वकृ—**पडिच्छमाण, पडिच्छेमाण**; (औप, कप्प; णाया १, १)। संकृ—**पडिच्छइत्ता, पडिच्छिअ, पडिच्छिउं, पडिच्छिऊण**, (कप्प, अभि १८५; सुपा ८७, निवृ २०)। हेकृ—**पडिच्छिउं**, (सुपा ७२)। कृ—**पडिच्छियव्व**, (सुपा १२५; सुर ४, १८६)। प्रयो—कर्म—**पडिच्छावीअदि** (शौ); (पि ५५२; नाट); वकृ—**पडिच्छावेमाण**; (कप्प)।

पडिच्छंद पुंन [प्रतिच्छन्द] १ मूर्ति, प्रतिबिम्ब ; (उप ७२८ टी ; स १६१, ६०६)। २ तुल्य, समान ; (से ८, ४६)। °किय वि [°कृत] समान किया हुआ ; (कुमा)।

पडिच्छंद पुं [दे] मुख, मुँह ; (दे ६, २४)।

पडिच्छग वि [प्रत्येषक] ग्रहण करने वाला ; (निचू ११)।

पडिच्छण न [प्रतीक्षण] प्रतीक्षा, बाट ; (दस ३७८)।

पडिच्छण न [प्रत्येषण] १ ग्रहण, आदान ; २ उत्पादन, विनिवारण ; "कुलिसपडिच्छणजोग्गा पन्था कइया मलिहमन" (गउड)।

पडिच्छणा [प्रत्येषणा] ग्रहण, आदान ; (निचू ११)।

पडिच्छण्ण } वि [प्रतिच्छन्न] आच्छादित, ढका हुआ ;
पडिच्छन्न } (गाथा १, १—पत्र १२ ; कप्प)।

पडिच्छय पुं [दे] समय, काल ; (दे ६, १६)।

पडिच्छय देखो पडिच्छग ; (औप)।

पडिच्छयण न [प्रतिच्छदन] देखो पडिच्छायण; (गाथा)।

पडिच्छा स्त्री [प्रतीच्छा] ग्रहण, अंगीकार ; (धर्म ३३ ; सुग)।

पडिच्छायण न [प्रतिच्छादन] आच्छादन करना, प्रच्छदन-पट ; "हिरिपडिच्छायण च णो संचाएमि अहियासित्तए" (आचा, गाथा १, १—पत्र १५ टी)।

पडिच्छाया स्त्री [प्रतिच्छाया] प्रतिबिम्ब ; (उप ६६३ टी)।

पडिच्छाविमाण देखो पडिच्छ=प्रति + इष्।

पडिच्छिअ वि [प्रतीष्ट, प्रतीप्सित] १ गृहीत, स्वीकृत ; (स ७, ५४ ; उवा ; औप, सुपा ८४)। २ विशेष रूप से वाञ्छित ; (भग)।

पडिच्छिअ देखो पडिच्छ=प्रति + इष्।

पडिच्छिआ स्त्री [दे] १ प्रतिहारी, २ चिरकाल से व्याई हुई भैंस ; (दे ६, २१)।

पडिच्छिउं }
पडिच्छिऊण } देखो पडिच्छ=प्रति + इष्।
पडिच्छियव्व }

पडिच्छिर वि [प्रतीक्षितृ] प्रतीक्षा करने वाला ; (वज्जा ३६)।

पडिच्छिर वि [दे] सदृश, समान ; (हे २, १७४)।

पडिछंद देखो पडिच्छंद ; "वटियं नियपडिछंद" (उप ७२८ टी)।

पडिछा स्त्री [प्रतीक्षा] प्रतीक्षण, बाट ; (ओघ १७५)।

पडिजंप सक [प्रति + जल्प्] [illegible] देना। पडिजंपइ ; ([illegible])।

पडिजग्ग देखो पडिजागर=प्रति + जागृ। पडिजग्गइ ; (कुप्र ३)।

पडिजग्गय वि [प्रतिजागरक] सेवा-शुश्रूषा करने वाला ; (उप ७६८ टी)।

पडिजग्गिय वि [प्रतिजागृत] जिसकी सेवा-शुश्रूषा की गई हो वह ; (सुर ११, २०)।

पडिजागर सक [प्रति + जागृ] १ सेवा-शुश्रूषा करना। २ [illegible] करना। पडिजागरेइ ; ([illegible])। वकृ—पडिजागरमाण ; (विपा १, १ ; [illegible] ; [illegible])।

पडिजागर पुं [प्रतिजागर] १ सेवा-शुश्रूषा ; २ निरीक्षण, "[illegible]" ([illegible])।

पडिजागरण न [प्रतिजागरण] ऊपर देखो ; ([illegible])।

पडिजागरिय देखो पडिजग्गिय ; ([illegible])।

पडिजुवइ स्त्री [प्रतियुवति] १ [illegible] युवति ; २ सपत्नी ; ([illegible])।

पडिजोग पुं [प्रतियोग] [illegible] योग, [illegible] ; ([illegible])।

पडिट्ठ वि [पटिष्ठ] [illegible] ; (सुर १, १३५ ; १३, ६६)।

पडिट्ठविअ वि [परिस्थापित] संस्थापित ; (से ५, ५२)।

पडिट्ठविअ वि [प्रतिष्ठापित] जिसकी प्रतिष्ठा की गई हो वह ; (सम्मत्त १४)।

पडिट्ठा देखो पइट्ठा ; (नाट—मालती ७०)।

पडिट्ठाव सक [प्रति + स्थापय्] प्रतिष्ठित करना। पडिट्ठावेमि ; (पि २२० ; ५५३)।

पडिट्ठाविअ देखो पइट्ठाविय ; (नाट—वेणी ११२)।

पडिट्ठाविद (शौ) देखो पइट्ठाविय ; (अभि १८७)।

पडिट्ठिय देखो पइट्ठिय ; (षड् ; पि २२०)।

पडिण देखो पडीण ; (पि ८२ ; ९६)।

पडिणव वि [प्रतिनव] नया, नूतन ; "कुसुमाउलिपडिणवसाहारं सिरितरुणाईं" (सिरि २६)।

पडिणिअंसण न [दे] रात में पहनने का वस्त्र ; (दे ६, ३६)।

पडिणिअत्त अक [प्रतिनि + वृत्] पीछे लौटना, पीछे वापिस जाना। पडिणिअत्तइ ; (औप)। वकृ—पडिणिअत्तंत, पडिणिअत्तमाण ; (से १३, ७५ ; नाट—मालती २६)। संकृ—पडिणियत्तित्ता ; (औप)।

पडिणिअत्त } वि [**प्रतिनिवृत्त**] पीछे लौटा हुआ ; (गा
पडिणिउत्त } ६८ अ ; विपा १, ५ ; उवा , से १, २६ ; अभि १२४)।

पडिणिक्खम अक [**प्रतिनिर्+क्रम्**] बाहर निकलना। पडिणिक्खमइ ; (उवा) । संकृ—**पडिणिक्खमित्ता** ; (उवा)।

पडिणिग्गच्छ अक [**प्रतिनिर्+गम्**] बाहर निकलना। पडिणिग्गच्छइ ; (उवा)। संकृ—**पडिणिग्गच्छित्ता** ; (उवा)।

पडिणिभ वि [**प्रतिनिभ**]१ सदृश, तुल्य ; २ हेतु-विशेष, वादी की प्रतिज्ञा का खंडन करने के लिए प्रतिवादी की तरफ से प्रयुक्त समान हेतु—युक्ति ; (ठा ४, ३)।

पडिणिवत्त देखो **पडिणिअत्त**=प्रतिनि+वृत्। वकृ—**पडिणिवत्तमाण** : (नाट—रत्ना ५४)।

पडिणिवत्त देखो **पडिणिअत्त**=प्रतिनिवृत्त ; (काल)।

पडिणिविट्ठ वि [**प्रतिनिविष्ट**] द्विष्ट, द्वेष-युक्त ; (पगह १, १—पत्र ७)।

पडिणिवुत्त देखो **पडिणिअत्त**=प्रतिनि+वृत्। वकृ—**पडिणिवुत्तमाण** ; (वेणी २३)।

पडिणिवुत्त देखो **पडिणिअत्त**=प्रतिनिवृत्त ; (अभि ११८)।

पडिणिवेस देखो **पडिनिवेस** ; (राज)।

पडिणिव्वत्त देखो **पडिणिअत्त**=प्रतिनि+वृत्। वकृ—**पडिणिव्वत्तंत** , (हेका ३३२)।

पडिणिसंत वि [**प्रतिनिश्रान्त**] १ विश्रान्त ; २ निलीन ; (गाया १, ४—पत्र ६७)।

पडिणीय न [**प्रत्यनीक**] १ प्रतिसैन्य, प्रतिपक्ष की सेना ; (भग ८, ८)। २ वि प्रतिकूल, विपक्षी, विपरीत आचरण करने वाला ; (भग ८, ८; णाया १, २ ; सम्म १६३ ; औप ; ओघ ६३:; द्र ३३)।

पडिण्णत्त वि [**प्रतिज्ञप्त**] उक्त, कथित , " जस्स णं भिक्खुस्स अयं पगप्पे ; अह च खलु पडिण्ण(न्न)तो अपडिण्ण(न्न)तेहिं " (आचा १, ८, ५, ४)।

पडिण्णा देखो **पइण्णा**; (स्वप्न २०७ ; सूअ १,२,२,२०)।

पडिण्णाद देखो **पइण्णाद** : (पि २७६; ५६५ ; नाट—मालवि १२)।

पडितंत वि [**प्रतितन्त्र**] स्व-शास्त्र ही में प्रसिद्ध अर्थ , " जो खलु सतंतसिद्धो न य परतंतेसु सो उ पडितंतो " (बृह१)।

पडितप्प सक [**प्रतितर्पय्**] भोजनादि से तृप्त करना। पडितप्पह ; (ओघ ५३५)।

पडितप्पिय वि [**प्रतितर्पित**] भोजन आदि से तृप्त किया हुआ ; (वव १)।

पडितुट्ठ देखो **परितुट्ठ**; (नाट—मृच्छ ८१)।

पडितुल्ल वि [**प्रतितुल्य**] समान, सदृश ; (पउम ५, १४६)।

पडित्त देखो **पलित्त**=प्रदीप्त ; (से १, ५ ; ५, ८७)।

पडित्ताण देखो **परित्ताण**; (नाट—शकु १४)।

पडित्थिर वि [दे] समान, सदृश ; (दे ६, २०) ।

पडित्थिर वि [**परिस्थिर**] स्थिर ; " गुप्पंतपडित्थिरे " (से २, ४)।

पडिदंड पुं [**प्रतिदण्ड**] मुख्य दण्ड के समान दूसरा दण्ड ; " सपडिदंडेणं धरिज्जमाणेणं आयवत्तेणं विरायंते " (औप)।

पडिदंस सक [**प्रति+दर्शय्**] दिखलाना। पडिदंसेइ ; (भग , उवा)। संकृ—**पडिदंसेत्ता** ; (उवा)।

पडिदा सक [**प्रति+दा**] पीछे देना, दान का बदला देना। **पडिदेइ** ; (विसे ३२४१)। कृ—**पडिदायव्व**; (कस)।

पडिदाण न [**प्रतिदान**] दान के बदले में दान ; " दाणपडिदाणउचियं " (उप ५६७ टी)।

पडिदिसा } स्त्री [**प्रतिदिश्**] विदिशा, विदिक् ; (राज;
पडिदिसि } पि ४१३)।

पडिदुगंछि वि [**प्रतिजुगुप्सिन्**] १ निन्दा करने वाला ; २ परिहार करने वाला ; " सीओदगपडिदुगंछिणो " (सूअ १, २, २, २०)।

पडिदुवार न [**प्रतिद्वार**] १ हर एक द्वार ; (पगह १,३)। २ छोटा द्वार ; (कप्प ; पगण २)।

पडिनमुक्कार पु [**प्रतिनमस्कार**] नमस्कार के बदले में नमस्कार—प्रणाम ; (रंभा)।

पडिनिक्खंत वि [**प्रतिनिष्क्रान्त**] बाहर निकला हुआ ; (णाया १, १३)।

पडिनिक्खम देखो **पडिणिक्खम**। पडिनिक्खमइ ; (कप्प)। संकृ—**पडिनिक्खमित्ता** ; (कप्प ; भग) ।

पडिनिग्गच्छ देखो **पडिणिग्गच्छ**। पडिनिग्गच्छइ ; (उवा)। पडिनिग्गच्छंति ; (भग)। संकृ—**पडिनिग्गच्छित्ता** ; (उवा , पि ५८२)।

पडिनिभ देखो **पडिणिभ** ; (दसनि १)।

पडिनियत्त देखो **पडिणिअत्त**=प्रतिनि+वृत्। पडिनियत्तइ ; (महा)। हेकृ—**पडिनियत्तए**; (कप्प)।

पडिनियत्त देखो **पडिणिअत्त**=प्रतिनिवृत्त ; (णाया १,१४, महा)।

पडिनिवेस पुं [**प्रतिनिवेश**] १ आग्रह, कदाग्रह ; (पच्च ६)। २ गाढ अनुशय ; (विसे २२६६)।

पडिनिसिद्ध वि [**प्रतिनिषिद्ध**] निवारित ; (उप पृ ३३३)।

पडिन्नत्त देखो **पडिण्णत्त** ; (आचा १, ८, ५, ४)।

पडिन्नव सक [**प्रति+ज्ञपय्**] कहना। संकृ—**पडिन्नवित्ता** ; (कप्प)।

पडिन्ना देखो **पडिण्णा** ; (आचा)।

पडिपंथ पुं [**प्रतिपथ**] १ उलटा मार्ग, विपरीत मार्ग ; २ प्रतिकूलता ; (सूअ १, ३, १, ६)।

पडिपंथि वि [**प्रतिपन्थिन्**] प्रतिकूल, विरोधी , " अप्पेगे पडिभासति पडिपथियमागता " (सूअ १, ३, १, ६)।

पडिपक्ख देखो **पडिवक्ख** ; (ओघ १३)।

पडिपडिय वि [**प्रतिपतित**] फिर से गिरा हुआ ; " सत्था सिवत्थिणो चालियावि पडिपडिया भवारणे " (सार्ध ६४)।

पडिपत्ति } देखो **पडिवत्ति** , (नाट—चैत ३४ , सत्ति ६)
पडिपद्दि }

पडिपह पु [**प्रतिपथ**] १ उन्मार्ग, विपरीत रास्ता , (स १४७ ; पि ३६६ ए)। २ न. अभिमुख, संमुख ; (सूअ २, २, ३१ टी)।

पडिपहिअ वि [**प्रातिपथिक**] संमुख आने वाला ; (सूअ २, २, २८)।

पडिपाअ सक [**प्रति+पादय्**] प्रतिपादन करना, कथन करना। कृ—**पडिपाअणीअ** , (नाट—शकु ६५)।

पडिपाय पु [**प्रतिपाद**] मुख्य पाद को सहायता पहुँचाने वाला पाद ; (राय)।

पडिपाहुड न [**प्रतिप्राभृत**] बदले की भेंट; (सुपा १४५)।

पडिपिंडिअ वि [**दे**] प्रवृद्ध, बढ़ा हुआ ; (दे ६, ३४)।

पडिपिल्ल सक [**प्रति+क्षिप्, प्रतिप्र+ईरय्**] प्रेरणा करना। पडिपिल्लइ ; (भवि)।

पडिपिल्लण न [**प्रतिप्रेरण**] १ प्रेरणा ; (सुर १५, १४१)। २ ढक्कन, पिधान ; ३ वि. प्रेरणा करने वाला ; " दीवसिहापडिपिल्लणमल्ले मिल्लंति नीसासे " (कुप्र १३१)।

पडिपिहा देखो **पडिपेहा**। संकृ—**पडिपिहित्ता**; (पि ५८२)।

पडिपीलण न [**प्रतिपीडन**] विशेष पीडन, अधिक दबाव ; (गउड)।

पडिपुच्छ सक [**प्रति+प्रच्छ्**] १ पृच्छा करना, पूछना। २ फिर से पूछना। ३ प्रश्न का जवाब देना। पडिपुच्छइ ; (उव)। वकृ—**पडिपुच्छमाण** ; (कप्प)। कृ—**पडिपुच्छणिज्ज, पडिपुच्छणीय** ; (उवा ; णाया १, १; राय)।

पडिपुच्छण न [**प्रतिप्रच्छन**] नीचे देखो ; (भग ; उवा)।

पडिपुच्छणया } स्त्री [**प्रतिप्रच्छना**] १ पूछना, पृच्छा ; २ फिर से पृच्छा; (उत्त २९, २०; औप)। ३ उत्तर, प्रश्न का जवाब ; (बृह ४ ; उप पृ ३९८)।
पडिपुच्छणा }

पडिपुच्छणिज्ज } देखो **पडिपुच्छ**।
पडिपुच्छणीय }

पडिपुच्छा स्त्री [**प्रतिपृच्छा**] देखो **पडिपुच्छणा**; (पंचा २ , वव २ ; बृह १)।

पडिपुच्छिअ वि [**प्रतिपृष्ट**] जिससे प्रश्न किया गया हो वह ; (गा २८९)।

पडिपुज्जिय वि [**प्रतिपूजित**] पूजित, अर्चित ; " वंदणवरकणगकलससुविणिम्मियपडिपुजि(? पुज्जि, पूइ)' यसरसपउमसोहंतदारभाए " (णाया १, १—पत्र १२)।

पडिपुण्ण देखो **पडिपुन्न** ; (उवा ; पि २१८)।

पडिपुत्त पुं [**प्रतिपुत्र**] प्रपुत्र, पुत्र का पुत्र ; " अंकनिवेसियनियनियपुत्तयपडिपुत्तनत्तपुत्तीयं " (सुपा ६)। देखो **पडिपोत्तय**।

पडिपुन्न वि [**प्रतिपूर्ण**] परिपूर्ण, संपूर्ण ; (णाया १,१ ; सुर ३, १८ ; ११४)।

पडिपूइय देखो **पडिपुज्जिय** , (राज)।

पडिपूयग } वि [**प्रतिपूजक**] पूजा करने वाला ; (राज; सम ५१)।
पडिपूयय }

पडिपूरिय वि [**प्रतिपूरित**] पूर्ण किया हुआ , (पउम १००, ५० , ११५, ७)।

पडिपेल्लण देखो **पडिपिल्लण** , (गउड ; से ६, ३२)।

पडिपेल्लण न [**परिप्रेरण**] देखो **पडिपिल्लण**; (से २, २४)।

पडिपेल्लिय वि [**प्रतिप्रेरित**] प्रेरित, जिसको प्रेरणा की गई हो वह ; (सुर १५, १८० ; महा)।

पडिपेहा सक [**प्रतिपि+धा**] ढकना, आच्छादन करना। संकृ—**पडिपेहित्ता** ; (सूअ २, २, ५१)।

पडिपोत्तय पुं [**प्रतिपुत्रक**] नप्ता, कन्या का पुत्र, लड़की का लड़का ; (सुपा १९२)। देखो **पडिपुत्तय**।
पडिप्पह देखो **पडिपह** ; (उप ७२८ टी)।
पडिप्फद्धि वि [**प्रतिस्पर्धिन्**] स्पर्धा करने वाला ; (हे १, ४४ ; २, ५३ ; प्राप्र ; संक्षि १६)।
पडिप्फलणा स्त्री [**प्रतिफलना**] १ स्खलना ; २ संक्रमण; " पडिसद्दपडिप्फलणावज्जिरनीसेससुरवंटं " (सुपा ८७)।
पडिप्फलिअ } वि [**प्रतिफलित**] १ प्रतिबिम्बित, संक्रान्त,
पडिफलिअ } (से १५, ३१ ; दे १, २७)। २ स्खलित ; (पाअ)।
पडिबंध सक [**प्रति+बन्ध्**] रोकना, अटकाना। पडिबंधइ ; (पि ५१३)। कृ—**पडिबंधेयव्व** ; (वसु)।
पडिबंध पुं [**प्रतिबन्ध**] १ रुकावट ; (उवा ; कप्प)। २ विघ्न, अन्तराय ; (उप ८८७)। ३ अत्यादर, बहुमान , (उप ७७६ ; उत्तर १४६)। ४ स्नेह, प्रीति, राग ; (ठा ६ ; पंचा १७)। ५ आसक्ति, अभिष्वङ्ग ; (णाया १, ५ ; कप्प)। ६ वेष्टन ; (सूअ १, ३, २)।
पडिबंधअ } वि [**प्रतिबन्धक**] प्रतिबन्ध करने वाला,
पडिबंधग } रोकने वाला ; (अभि २५३ , उप ६४५)।
पडिबंधण न [**प्रतिबन्धन**] प्रतिबन्ध, रुकावट , (पि २१८)।
पडिबंधेयव्व देखो **पडिबंध**=प्रति+बन्ध्।
पडिबद्ध वि [**प्रतिबद्ध**]१ रोका हुआ, संरुद्ध ; " वायुरिव अप्पडिबद्धे " (कप्प ; पण्ह १, ३)। २ उपजनित, उत्पादित ; (गउड १८२)। ३ संसक्त, संबद्ध, संलग्न ; " सरिआण तरंगियपंकवडलपडिवद्धवालुयामसिणा........ पुलिणवित्थारा " (गउड ; कुप्र ११५ ; उवा)। ४ सामने बँधा हुआ, " पडिबद्धं नवर तुमे नरिंदचक्कं पयाववियडंपि" (गउड)। ५ व्यवस्थित ; (पंचा १३)। ६ वेष्टित; (गउड)। ७ समीप में स्थित , " तं चेव य सागरियं जस्स अदूरे स पडिबद्धो " (वृह १)।
पडिबाह सक [**प्रति+बाध्**] रोकना। हेकृ—**पडिबाहिदुं** (शौ) ; (नाट—महावी ९९)।
पडिबाहिर वि [**प्रतिबाह्य**] अनधिकारी, अयोग्य; (सम ५०)।
पडिबिंब न [**प्रतिबिम्ब**] १ परछाँही, प्रतिच्छाया ; (सुपा २६६)। २ प्रतिमा, प्रतिमूर्ति ; (पाअ ; प्रासा)।
पडिबिंबिअ वि [**प्रतिबिम्बित**] जिसका प्रतिबिम्ब पड़ा हो वह , (कुमा)।
पडिबुज्झ अक [**प्रति+बुध्**] १ बोध पाना। २ जागृत होना। पडिबुज्झइ ; (उवा)। वकृ—**पडिबुज्झंत**, **पडिबुज्झमाण** ; (कप्प)।
पडिबुज्झणया } स्त्री [**प्रतिबोधना**] १ बोध, समझ ;
पडिबुज्झणा } २ जागृति ; (स १५६ ; औप)।
पडिबुद्ध वि [**प्रतिबुद्ध**] १ बोध-प्राप्त , (प्रासू १३५ ; उव)। २ जागृत , (णाया १, १)। ३ न प्रतिबोध; (आचा)। ४ पुं एक राजा का नाम ; (णाया १, ८)।
पडिबूहणया स्त्री [**प्रतिबृंहणा**] उपचय, पुष्टि , (सूअ २, २, ८)।
पडिबोध देखो **पडिबोह**=प्रतिबोध ; (नाट —मालती ५६)।
पडिबोधिअ देखो **पडिबोहिय** , (अभि ५६)।
पडिबोह सक [**प्रति+बोधय्**] १ जगाना। २ बोध देना, समझाना, ज्ञान प्राप्त कराना। पडिबोहेइ ; (कप्प ; महा)। कवकृ—**पडिबोहिज्जंत** ; (अभि ५६)। संकृ—**पडिबोहिअ** , (नाट—मालती १३६)। हेकृ—**पडिबोहिउं** , (महा)। कृ—**पडिबोहियव्व** , (स ७०७)।
पडिबोह पु [**प्रतिबोध**] १ बोध, समझ ; २. जागृति, जागरण ; (गउड ; पि १७१)।
पडिबोहग वि [**प्रतिबोधक**] १ बोध देने वाला; २ जगाने वाला , (विसे २४७ टी)।
पडिबोहण न [**प्रतिबोधन**] देखो **पडिबोह**=प्रतिबोध ; (काल ; स ७०८)।
पडिबोहि वि [**प्रतिबोधिन्**] प्रतिबोध प्राप्त करने वाला ; (आचा २, ३, १, ८)।
पडिबोहिय वि [**प्रतिबोधित**] जिसको प्रतिबोध किया गया हो वह , (णाया १, १ ; काल)।
पडिभंग पु [**प्रतिभङ्ग**] भङ्ग, विनाश ; (से ५, १६)।
पडिभंज अक [**प्रति+भञ्ज्**] भाँगना, टूटना। हेकृ—**पडिभंजिउं** ; (वव ४)।
पडिभंड न [**प्रतिभाण्ड**] एक वस्तु को बेच कर उसके बदले में खरीदी जाती चीज ; (स २०५ , सुर ९, १५८)।
पडिभंस सक [**प्रति+भ्रंशय्**] भ्रष्ट करना, च्युत करना। " पंथाओ य पडिभंसइ " (स ३९३)।
पडिभग्ग वि [**प्रतिभग्न**] भागा हुआ, पलायित , (ओघ ५३३)।

पडिभड पुं [**प्रतिभट**] प्रतिपक्षी योद्धा ; (से १३, ७२ ; आरा ५६ ; भवि)।

पडिभण सक [**प्रति+भण्**] उत्तर देना, जवाव देना। पडिभणइ ; (महा ; उवा , सुपा २१५), पडिभणामि; (महानि ४)।

पडिभणिअ वि [**प्रतिभणित**] प्रत्युत्तरित, जिसका उत्तर दिया गया हो वह ; (महा ; सुपा ६०)।

पडिभम सक [**प्रति, परि+भ्रम्**] घूमना, पर्यटन करना। संकृ—" कत्थइ कडुआविय गयह पति **पडिभमिय** सुहडसीसई दलंति " (भवि)।

पडिभमिय वि [**प्रतिभ्रान्त, परिभ्रान्त**] घूमा हुआ ; (भवि)।

पडिभय न [**प्रतिभय**] भय, डर ; (पउम ७३, १२)।

पडिभा अक [**प्रतिभा**] मालूम होना। पडिभादि (शौ); (नाट—रत्ना ३)।

पडिभाग पुं [**प्रतिभाग**] १ अंश, भाग; (भग २५, ७)। २ प्रतिबिम्ब ; (राज)।

पडिभास अक [**प्रति+भास्**] मालूम होना। पडिभासदि (शौ); (नाट—मृच्छ १४१)।

पडिभास सक [**प्रति+भाष्**] १ उत्तर देना। २ बोलना, कहना। " अप्पेगे पडिभासंति " (सूअ १, ३, १, ६)।

पडिभिण्ण वि [**प्रतिभिन्न**] संबद्ध, संलग्न ; (से ४, ५)।

पडिभू पुं [**प्रतिभू**] जामिनदार, मनौतिया ; (नाट—चैत ७५)।

पडिभेअ पु [**दे. प्रतिभेद**] उपालम्भ ; " पडिभेओ पच्चारणं " (पाअ)।

पडिभोइ वि [**प्रतिभोगिन्**] परिभोग करने वाला; "अकाल-पडिभोईणि " (आचा २, ३, १, ८ ; पि ४०५)।

पडिम° देखो **पडिमा**। **°ट्ठाइ** वि [**°स्थायिन्**] १ कायोत्सर्ग में रहने वाला ; २ नियम-विशेष में स्थित ; (पराह २, १—पत्र १०० ; ठा ५, १—पत्र २६६)।

पडिमल्ल पुं [**प्रतिमल्ल**] प्रतिपक्षी मल्ल ; (भवि)।

पडिमा स्त्री [**प्रतिमा**] १ मूर्ति, प्रतिबिम्ब ; " जिणपडिमादंसणेण पडिबुद्धं " (दसनि १ ; पाअ ; गा १ ; ११४)। २ कायोत्सर्ग ; ३ जैन-शास्त्रोक्त नियम-विशेष ; (पराह २,१; सम १६ ; ठा २, ३; ५, १)। **°गिह** न [**°गृह**] मन्दिर ; (निचू १२)। देखो **पडिम°**।

पडिमाण न [**प्रतिमान**] जिससे सुवर्ण आदि का तौल किया जाता है वह रत्ती, मासा आदि परिमाण ; (अणु)।

पडिमि } सक [**प्रति+मा**] १ तौल करना, माप करना। **पडिमिण** } २ गिनती करना। कर्म—पडिमिणिज्जइ; (अणु)। कवकृ—**पडिमिज्जमाण** ; (राज)।

पडिमुंच सक [**प्रति+मुच्**] छोड़ना। हेकृ—**पडिमुंचिउं**; (से १४, २)।

पडिमुंडणा स्त्री [**प्रतिमुण्डना**] निषेध, निवारण ; (बृह १)।

पडिमुक्क वि [**प्रतिमुक्त**] छोड़ा हुआ ; (से ३, १२)।

पडिमोअणा स्त्री [**प्रतिमोचना**] छूटकारा ; (से १,४६)।

पडिमोक्खण न [**प्रतिमोचन**] छूटकारा ; (स ४१)।

पडिमोयग वि [**प्रतिमोचक**] छूटकारा करने वाला ; (राज)।

पडिमोयण देखो **पडिमोक्खण** ; (औप)।

पडियक्क देखो **पडिक्क** ; (आचा)।

पडियक्क न [**प्रतिचक्र**] युद्ध-कला विशेष ; " तेण पुत्तो विव निप्फाइतो ईसत्थे पडियक्के जन्तमुक्के य अन्नासुवि कलासु " (महा)।

पडियच्च देखो **पत्तिअ**=प्रति+इ।

पडिया स्त्री [**प्रतिज्ञा**] १ उद्देश ; " पिंडवायपडियाए " (कस ; आचा)। २ अभिप्राय; (ठा ५, २—पत्र ३१४)।

पडिया स्त्री [**पटिका**] वस्त्र-विशेष ;
" सुपमाणा य सुसुत्ता, बहुलवा तह य कोमला सिसिरे।
कत्तो पुरणेहि विणा, वेसा पडियव्व संपडइ " (वज्जा ११६)।

पडियाइक्ख सक [**प्रत्या+ख्या**] त्याग करना। पडियाइक्खे ; (पि १६६)।

पडियाइक्खिय वि [**प्रत्याख्यात**] त्यक्त, परित्यक्त ; (ठा २, १ ; भग ; उवा ; कस ; विपा १, १ ; औप)।

पडियाणय न [**दे. पर्याणक**] पर्याण के नीचे दिया जाता चर्म आदि का एक उपकरण ; (णाया १, १७—पत्र २३०)।

पडियाणंद पु [**प्रत्यानन्द**] विशेष आनन्द, प्रभूत आह्लाद; (औप)।

पडियाणय न [**दे. पटतानक, पर्याणक**] पर्याण के नीचे रखा जाता वस्त्र आदि का एक घुडसवारी का उपकरण ; (णाया १, १७—पत्र २३२ टी)।

पडिर वि [**पतितृ**] गिरने वाला , (कुमा)।

पडिरअ देखो **पडिरव** ; (गा ५५ अ ; से ७, १६)।

पडिरंजिअ वि [**दे**] भग्न, टूटा हुआ ; (दे ६, ३२) ।
पडिरक्खिय वि [**प्रतिरक्षित**] जिसकी रक्षा की गई हो वह ; (भवि) ।
पडिरव पु [**प्रतिरव**] प्रतिध्वनि, प्रतिशब्द ; (गउड ; गा ५५ ; सुर १, २४४) ।
पडिराय पु [**प्रतिराग**] लाली, रक्तपन ;
" उव्वहइ दइयगहियाहरोट्ठझिज्जंतरोसपडिराय ।
पाणोसरंतमइरं व फलिहचसयं इमा वयणं " (गउड) ।
पडिरिग्गअ [**दे**] देखो **पडिरंजिअ** ; (षड्) ।
पडिरु अक [**प्रति + रु**] प्रतिध्वनि करना , प्रतिशब्द करना । वकृ—**पडिरुअंत** ; (से १२, ६ ; पि ४७३) ।
पडिरुंध } सक [**प्रति + रुध्**] १ रोकना, अटकाना ।
पडिरुंभ } २ व्याप्त करना । पडिरुंभइ ; (से ८, ३६) । वकृ—**पडिरुंधंत** ; (से ११, ५) ।
पडिरुद्ध वि [**प्रतिरुद्ध**] रोका हुआ, अटकाया हुआ; (सुपा ८५ , वज्जा ५०) ।
पडिरूअ } वि [**प्रतिरूप**] १ रम्य, सुन्दर, चारु, मनोहर ;
पडिरूव } (सम १३७ ; उवा ; औप) । २ रूपवान्, प्रशस्त रूप वाला, श्रेष्ठ आकृति वाला ; (औप) । ३ असाधारण रूप वाला , ४ नूतन रूप वाला ; (जीव ३) । ५ योग्य, उचित ; (स ८७ , भग १५ ; दस ६, १) । ६ सदृश, समान ; (णाया १, १—पत्त ६१) । ७ समान रूप वाला, सदृश आकार वाला , (उत्त २६, ४२) । ८ न. प्रतिबिम्ब, प्रतिमूर्ति , " कइयावि चित्तफलए कइया वि पडम्मि तस्स पडिरूवं लिहिऊण " (सुर ११, २३८ ; राय) । ६ समान रूप, समान आकृति ; " तुम्हपडिरूवधारिं पासइ विज्जाहरसुदाढं " (सुपा २६८) । १० पुं इन्द्र-विशेष , भूत-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र, (ठा २, ३—पत्त ८५) । ११ विनय का एक भेद ; (वव १) ।
पडिरूवा स्त्री [**प्रतिरूपा**] एक कुलकर पुरुष की पत्नी का नाम ; (सम १५०) ।
पडिरोव पु [**प्रतिरोप**] पुनरारोपण , (कुप्र ५५) ।
पडिरोह पुं [**प्रतिरोध**] रुकावट ; (गउड , गा ७२४) ।
पडिरोहि वि [**प्रतिरोधिन्**] रोकने वाला ; (गउड) ।
पडिलंभ सक [**प्रति + लभ्**] प्राप्त करना । संकृ—**पडिलंभिय** ; (सूअ १, १३) ।
पडिलंभ पुं [**प्रतिलम्भ**] प्राप्ति, लाभ ; (सूअ २, ५) ।
पडिलग्ग वि [**प्रतिलग्न**] लगा हुआ, संबद्ध ; (से ६, ८६)।
पडिलग्गल न [**दे**] वल्मीक, कीट-विशेष-कृत मृत्तिका-स्तूप ; (दे ६, ३३) ।
पडिलाभ } सक [**प्रति + लाभय् , लम्भय्**] साधु आदि
पडिलाह } को दान देना । पडिलाहेज्जह ; (काल) । वकृ—**पडिलाभेमाण** ; (णाया १, ५ ; भग , उवा) । संकृ—**पडिलाभित्ता** ; (भग ८, ५) ।
पडिलाहण न [**प्रतिलाभन**] दान, देना ; (रंभा) ।
पडिलिहिअ वि [**प्रतिलिखित**] लिखा हुआ , "सम्मं मनं दुवारि पडिलिहिअं" (ति १४) ।
पडिलेह सक [**प्रति + लेखय्**] १ निरीक्षण करना, देखना । २ विचार करना । पडिलेहेइ ; (उत्त ; कस , भग) । "एतेसु जाणे पडिलेह साय, एतेण काएण य आय-दंडे" (सूअ १, ७, २) । संकृ—"भूएहि जाणं **पडिलेह** साय" (सूअ १, ७, १६), **पडिलेहित्ता** ; (भग) । हेकृ—**पडिलेहित्तए, पडिलेहेत्तए** ; (कप्प) । कृ—**पडिलेहियव्व** ; (ओघ ४ ; कप्प) ।
पडिलेहग देखो **पडिलेहय** , (राज) ।
पडिलेहण न [**प्रतिलेखन**] निरीक्षण ; (ओघ ३ भा ; अंत) ।
पडिलेहणा स्त्री [**प्रतिलेखना**] निरीक्षण, निरूपण , (भग) ।
पडिलेहय वि [**प्रतिलेखक**] निरीक्षक, देखने वाला ; (ओघ ४) ।
पडिलेहा स्त्री [**प्रतिलेखा**] निरीक्षण, अवलोकन ; (ओघ ३ ; ठा ५, ३ ; कप्प) ।
पडिलेहिय वि [**प्रतिलेखित**] निरीक्षित , (उवा) ।
पडिलेहियव्व देखो **पडिलेह** ।
पडिलोम वि [**प्रतिलोम**] १ प्रतिकूल , (भग) । २ विपरीत, उल्टा ; (आचा २, २, २) । ३ न. पश्चानुपूर्वी, उल्टा क्रम ; "वत्थ दुहाणुलोमेण तह य पडिलोमओ भवे वत्थ" (सुर १६, ४८ ; निचू १) । ४ उदाहरण का एक दोष ; (दसनि १) । ५ अपवाद ; (राज) ।
पडिलोमइत्ता अ [**प्रतिलोमयित्वा**] वाद-विशेष, वाद-सभा के सदस्य या प्रतिवादी को प्रतिकूल बनाकर किया जाता वाद—शास्त्रार्थ ; (ठा ६) ।
पडिल्ली स्त्री [**दे**] १ वृति, बाड़ , २ यवनिका, परदा, (दे ६, ६५) ।
पडिव देखो **पलीव**=प्र + दीपय् । पडिवेइ ; (से ५, ६७) ।

पडिभड पुं [**प्रतिभट**] प्रतिपक्षी योद्धा ; (से १३, ७२ ; आंरा ५६ ; भवि)।

पडिभण सक [**प्रति+भण्**] उत्तर देना, जवाब देना। पडिभणइ ; (महा ; उवा ; सुपा २१५), पडिभणामि; (महानि ४)।

पडिभणिअ वि [**प्रतिभणित**] प्रत्युत्तरित, जिसका उत्तर दिया गया हो वह ; (महा ; सुपा ६०)।

पडिभम सक [**प्रति, परि+भ्रम्**] घूमना, पर्यटन करना। संकृ—" कत्थइ कडुआविय गयह पंति **पडिभमिय** सुहडसीसई दलति " (भवि)।

पडिभमिय त्रि [**प्रतिभ्रान्त, परिभ्रान्त**] घूमा हुआ, (भवि)।

पडिभय न [**प्रतिभय**] भय, डर, (पउम ७३, १२)।

पडिभा अक [**प्रतिभा**] मालूम होना। पडिभादि (शौ); (नाट—रत्ना ३)।

पडिभाग पुं [**प्रतिभाग**] १ अंश, भाग; (भग २५, ७)। २ प्रतिबिम्ब ; (राज)।

पडिभास अक [**प्रति+भास्**] मालूम होना। पडिभासदि (शौ), (नाट—मृच्छ १४१)।

पडिभास सक [**प्रति+भाष्**] १ उत्तर देना। २ बोलना, कहना। " अप्पेगे पडिभासंति " (सूअ १, ३, १, ६)।

पडिभिण्ण वि [**प्रतिभिन्न**] संबद्ध, संलग्न ; (से ४, ५)।

पडिभू पुं [**प्रतिभू**] जामिनदार, मनौतिया ; (नाट—चैत ७५)।

पडिभेअ पुं [**दे. प्रतिभेद**] उपालम्भ, " पडिभेओ पच्चारणं " (पाअ)।

पडिभोइ वि [**प्रतिभोगिन्**] परिभोग करने वाला; "अकालपडिभोईणि" (आचा २, ३, १, ८ ; पि ४०५)।

पडिम° देखो **पडिमा**। °**ट्ठाइ** वि [°**स्थायिन्**] १ कायोत्सर्ग में रहने वाला ; २ नियम-विशेष में स्थित ; (पण्ह २, १—पत्र १०० ; ठा ५, १—पत्र २९६)।

पडिमल्ल पुं [**प्रतिमल्ल**] प्रतिपक्षी मल्ल ; (भवि)।

पडिमा स्त्री [**प्रतिमा**] १ मूर्ति, प्रतिबिम्ब, " जिणपडिमादंसणेण पडिबुद्धं " (दसनि १ ; पाअ ; गा १ ; ११४)। २ कायोत्सर्ग ; ३ जैन-शास्त्रोक्त नियम-विशेष, (पण्ह २,१; सम १६ ; ठा २, ३, ५, १)। °**गिह** न [°**गृह**] मन्दिर ; (निचू १२)। देखो **पडिम°**।

पडिमाण न [**प्रतिमान**] जिससे सुवर्ण आदि का तौल किया जाता है वह रत्ती, मासा आदि परिमाण ; (अणु)।

पडिमि } सक [**प्रति+मा**] १ तौल करना, माप करना।
पडिमिण } २ गिनती करना। कर्म—पडिमिणिज्जइ; (अणु)। कवकृ—**पडिमिज्जमाण** ; (राज)।

पडिमुंच सक [**प्रति+मुच्**] छोड़ना। हेकृ—**पडिमुंचिउं**, (से १४, २)।

पडिमुंडणा स्त्री [**प्रतिमुण्डना**] निषेध, निवारण ; (बृह १)।

पडिमुक्क वि [**प्रतिमुक्त**] छोड़ा हुआ ; (से ३, १२)।

पडिमोअणा स्त्री [**प्रतिमोचना**] छूटकारा ; (से १,४६)।

पडिमोक्खण न [**प्रतिमोचन**] छूटकारा ; (स ४१)।

पडिमोयग वि [**प्रतिमोचक**] छूटकारा करने वाला ; (राज)।

पडिमोयण देखो **पडिमोक्खण** ; (औप)।

पडियक्क देखो **पडिक्क** ; (आचा)।

पडियक्क न [**प्रतिचक्र**] युद्ध-कला विशेष ; " तेण पुत्तो विव निप्फाइतो ईसत्थे पडियक्के जन्तमुक्के य अन्नासुवि कलासु " (महा)।

पडियच्च देखो **पत्तिअ**=प्रति+इ।

पडिया स्त्री [**प्रतिज्ञा**] १ उद्देश ; " पिंडवायपडियाए " (कस, आचा)। २ अभिप्राय; (ठा ५, २—पत्र ३१४)।

पडिया स्त्री [**पटिका**] वस्त्र-विशेष,
" सुपमाणा य सुसुत्ता, बहुरूवा तह य कोमला सिसिरे।
कत्तो पुण्णेहि विणा, वेसा पडियव्व सपडइ " (वज्जा ११६)।

पडियाइक्ख सक [**प्रत्या+ख्या**] त्याग करना। पडियाइक्खे ; (पि १६६)।

पडियाइक्खिय वि [**प्रत्याख्यात**] त्यक्त, परित्यक्त ; (ठा २, १ ; भग ; उवा ; कस ; विपा १, १ ; औप)।

पडियाणय न [**दे. पर्याणक**] पर्याण के नीचे दिया जाता चर्म आदि का एक उपकरण, (णाया १, १७—पत्र २३०)।

पडियाणंद पुं [**प्रत्यानन्द**] विशेष आनन्द, प्रभूत आह्लाद; (औप)।

पडियाणय न [**दे. पटतानक, पर्याणक**] पर्याण के नीचे रखा जाता वस्त्र आदि का एक घुडसवारी का उपकरण ; (णाया १, १७—पत्र २३२ टी)।

पडिर वि [**पतितृ**] गिरने वाला ; (कुमा)।

पडिरअ देखो **पडिरव**, (गा ५५ अ ; से ७, १९)।

पडिरंजिअ वि [**दे**] भग्न, टूटा हुआ ; (दे ६, ३२)।
पडिरक्खिय वि [**प्रतिरक्षित**] जिसकी रक्षा की गई हो वह ; (भवि)।
पडिरव पुं [**प्रतिरव**] प्रतिध्वनि, प्रतिशब्द ; (गउड ; गा ५५ ; सुर १, २४४)।
पडिराय पु [**प्रतिराग**] लाली, रक्तपन ,
" उव्वहइ दइयगहियाहरोट्ठझिज्जंतरोसप्पडिरायं।
पाणोसरंतमइरं व फलिहचसय इमा वयणं " (गउड)।
पडिरिग्गअ [**दे**] देखो **पडिरंजिअ** ; (पड्)।
पडिरु अक [**प्रति+रु**] प्रतिध्वनि करना , प्रतिशब्द करना। वकृ—**पडिरुअंत** ; (से १२, ६ ; पि ४७३)।
पडिरुंध } सक [**प्रति+रुध्**] १ रोकना, अटकाना।
पडिरुंभ } २ व्याप्त करना। पडिरुंभइ ; (से ८, ३६)। वकृ—**पडिरुंधंत** , (से ११, ५)।
पडिरुद्ध वि [**प्रतिरुद्ध**] रोका हुआ, अटकाया हुआ, (सुपा ८५ ; वज्जा ५०)।
पडिरूअ } वि [**प्रतिरूप**] १ रम्य, सुन्दर, चारु, मनोहर ;
पडिरूव } (सम १३७ , उवा ; औप)। २ रूपवान्, प्रशस्त रूप वाला, श्रेष्ठ आकृति वाला ; (औप)। ३ असाधारण रूप वाला , ४ नूतन रूप वाला ; (जीव ३)। ५ योग्य, उचित ; (स ८७ , भग १५ ; दस ६, १)। ६ सदृश, समान ; (णाया १, १—पत्त ६१)। ७ समान रूप वाला, सदृश आकार वाला ; (उत्त २६, ४२)। ८ न. प्रतिबिम्ब, प्रतिमूर्ति ; " कइयावि चित्तफलए कइया वि पडम्मि तस्स पडिरूवं लिहिऊण " (सुर ११, २३८ ; राय)। ६ समानरूप, समान आकृति ; " तुम्हपडिरूवधारिं पासइ विज्जाहरसुदाढं " (सुपा २६८)। १० पुं. इन्द्र-विशेष , भूत-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र, (ठा २, ३—पत्त ८५)। ११ विनय का एक भेद , (वव १)।
पडिरूवा स्त्री [**प्रतिरूपा**] एक कुलकर पुरुष की पत्नी का नाम ; (सम १५०)।
पडिरोव पुं [**प्रतिरोप**] पुनरारोपण ; (कुप्र ५५)।
पडिरोह पु [**प्रतिरोध**] रुकावट ; (गउड ; गा ७२४)।
पडिरोहि वि [**प्रतिरोधिन्**] रोकने वाला ; (गउड)।
पडिलंभ सक [**प्रति+लभ्**] प्राप्त करना। संकृ—**पडिलंभिय** ; (सूअ १, १३)।
पडिलंभ पुं [**प्रतिलम्भ**] प्राप्ति, लाभ ; (सूअ २, ५)।
पडिलग्ग वि [**प्रतिलग्न**] लगा हुआ, संबद्ध ; (से ६, ८६)।
पडिलग्गल न [**दे**] वल्मीक, कीट-विशेष-कृत मृत्तिका-स्तूप ; (दे ६, ३३)।
पडिलाभ } सक [**प्रति+लाभय्** , **लम्भय्**] साधु आदि
पडिलाह } को दान देना। पडिलाहेज्जह ; (काल)। वकृ—**पडिलाभेमाण** ; (णाया १, ५ ; भग ; उवा)। संकृ—**पडिलाभित्ता** , (भग ८, ५)।
पडिलाहण न [**प्रतिलाभन**] दान, देना , (रभा)।
पडिलिहिअ वि [**प्रतिलिखित**] लिखा हुआ , "सम्मं मतं दुवारि पडिलिहिअं" (ति १४)।
पडिलेह सक [**प्रति+लेखय्**] १ निरीक्षण करना, देखना। २ विचार करना। पडिलेहेइ , (उत्र ; कस ; भग)। "एतेउ जाणे पडिलेह सायं, एतेण काएण य आय-दंडे" (सूअ १, ७, २)। संकृ—"भूएहिं जाण **पडिलेह** साय" (सूअ १, ७, १६), **पडिलेहित्ता** ; (भग)। हेकृ—**पडिलेहित्तए**, **पडिलेहेत्तए** , (कप्प)। कृ—**पडिलेहियव्व** ; (ओघ ४ ; कप्प)।
पडिलेहग देखो **पडिलेहय** ; (राज)।
पडिलेहण न [**प्रतिलेखन**] निरीक्षण ; (ओघ ३ भा ; अंत)।
पडिलेहणा स्त्री [**प्रतिलेखना**] निरीक्षण, निरूपण ; (भग)।
पडिलेहय वि [**प्रतिलेखक**] निरीक्षक, देखने वाला , (ओघ ४)।
पडिलेहा स्त्री [**प्रतिलेखा**] निरीक्षण, अवलोकन , (ओघ ३ ; ठा ५, ३ , कप्प)।
पडिलेहिय वि [**प्रतिलेखित**] निरीक्षित , (उवा)।
पडिलेहियव्व देखो **पडिलेह**।
पडिलोम वि [**प्रतिलोम**] १ प्रतिकूल ; (भग)। २ विपरीत, उल्टा ; (आचा २, २, २)। ३ न. पश्चानुपूर्वी, उल्टा क्रम , "वत्थं दुहाणुलोमेण तह य पडिलोमओ भवे वत्थ" (सुर १६, ४८ ; निचू १)। ४ उदाहरण का एक दोष ; (दसनि १)। ५ अपवाद , (राज)।
पडिलोमइत्ता अ [**प्रतिलोमयित्वा**] वाद-विशेष, वाद-सभा के सदस्य या प्रतिवादी को प्रतिकूल बनाकर किया जाता वाद—शास्त्रार्थ , (ठा ६)।
पडिल्ली स्त्री [**दे**] १ वृति, वाड़ , २ यवनिका, परदा, (दे ६, ६५)।
पडिव देखो **पलीव**=प्र+दीपय्। पडिवेइ ; (से ५, ६७)।

पडिवइर न [**प्रतिवैर**] वैर का बदला ; (भवि)।

पडिवंचण न [**प्रतिवञ्चन**] बदला ; "वेरपडिवंचणट्ठं" (पउम २६, ७३)।

पडिवंथ देखो **पडिपंथ** ; (से २, ४६)।

पडिवंध देखो **पडिवंध** ; (भवि)।

पडिवंस पुं [**प्रतिवंश**] छोटा बाँस ; (राय)।

पडिवक्क सक [**प्रति + वच्**] प्रत्युत्तर देना, जवाब देना। पडिवक्कइ ; (भवि)।

पडिवक्ख पुं [**प्रतिपक्ष**] १ रिपु, दुश्मन, विरोधी ; (पात्र ; गा १५२ ; सुर १, ५६ ; २, १२६ ; से ३, १५)। २ छन्द-विशेष ; (पिंग)। ३ विपर्यय, वैपरीत्य ; (सण)।

पडिवक्खिय वि [**प्रतिपक्षिक**] विरुद्ध पक्ष वाला, विरोधी, (सण)।

पडिवच्च सक [**प्रति + व्रज्**] वापिस जाना। पडिवच्चइ : (पि ५६०)।

पडिवच्छ देखो **पडिवक्ख** ; "अह णवरमस्स दोसो पडिवच्छेहिंपि पडिवण्णो" (गा ६७६)।

पडिवज्ज सक [**प्रति + पद्**] स्वीकार करना, अंगीकार करना। पडिवज्जइ, पडिवज्जए ; (उव ; महा ; प्रासू १४१)। भवि—पडिवज्जिस्सामि, पडिवज्जिस्सामो ; (पि ५२७, औप)। वकृ—**पडिवज्जमाण** ; (पि ५६२)। संकृ—**पडिवज्जिऊण, पडिवज्जित्ताणं, पडिवज्जिय** ; (पि ५८६ ; ५८३ ; महा; रंभा)। हेकृ—**पडिवज्जिउं, पडिवज्जित्तए, पडिवत्तुं**; (पंचा १८; ठा २, १; कस ; रंभा)। कृ—**पडिवज्जियव्व, पडिवज्जेयव्व** ; (उत्त ३२, उप ६८४ ; १००१)।

पडिवज्जण न [**प्रतिपदन**] स्वीकार, अंगीकार , (कुप्र १४७)।

पडिवज्जण न [**प्रतिपादन**] अंगीकारण, स्वीकार कराना ; (कुप्र १४७ ; ३८६)।

पडिवज्जय वि [**प्रतिपादक**] स्वीकार करने वाला ; "एस ताव कसणधवलपडिवज्जओ त्ति" (स ५०५)।

पडिवज्जावण न [**प्रतिपादन**] स्वीकारण, स्वीकार कराना : (कुप्र ६६)।

पडिवज्जाविय वि [**प्रतिपादित**] स्वीकार कराया हुआ , (महा)।

पडिवज्जिय वि [**प्रतिपन्न**] स्वीकृत ; (भवि)।

पडिवट्टअ न [**प्रतिपट्टक**] एक जात का रेशमी कपड़ा ,(कप्पू)।

पडिवड्ढावअ वि [**प्रतिवर्धापक**] १ बधाई देने पर उसे स्वीकार कर धन्यवाद देने वाला ; २ बधाई के बदले में बधाई देने वाला। स्त्री—°**विआ** ; (कप्पू)।

पडिवण्ण वि [**प्रतिपन्न**] १ प्राप्त ; (भग)। २ स्वीकृत, अंगीकृत ; (षड्)। ३ आश्रित ; (औप ; ठा ७)। ४ जिसने स्वीकार किया हो वह ; (ठा ४, १)।

पडिवत्त पुं [**परिवर्त**] परिवर्तन ; (नाट—मृच्छ ३१८)।

पडिवत्तण देखो **पडिअत्तण** ; (नाट)।

पडिवत्ति स्त्री [**प्रतिपत्ति**] १ परिच्छित्ति ; २ प्रकृति, प्रकार ; (विसे ५७८)। ३ प्रवृत्ति, खबर ; (पउम ४७, ३० ; ३१)। ४ ज्ञान ; (सुर १४, ७४)। ५ आदर, गौरव ; (महा)। ६ स्वीकार, अंगीकार ; (णंदि)। ७ लाभ, प्राप्ति ; "धम्मपडिवत्तिहेउत्तणेण" (महा)। ८ मतान्तर ; ९ अभिग्रह-विशेष ; (सम १०६)। १० भक्ति, सेवा ; (कुमा ; महा)। ११ परिपाटी, क्रम ; (आव ४)। १२ श्रुत-विशेष, गति, इन्द्रिय आदि द्वारों में से किसी एक द्वार के जरिये समस्त संसार के जीवों को जानना ; (कम्म २, ७)। °**समास** पुं [°**समास**] श्रुत-ज्ञान विशेष—गति आदि दो चार द्वारो के जरिये जीवो का ज्ञान , (कम्म १, ७)।

पडिवत्तु देखो **पडिवज्ज**।

पडिवद्दि देखो **पडिवत्ति** ; (प्राप्र)।

पडिवद्धावअ देखो **पडिवड्ढावअ**। स्त्री—°**विआ** ; (रंभा)।

पडिवन्न देखो **पडिवण्ण** ; "पडिवन्नपालणे सुपुरिसाण जं होइ तं होउ" (प्रासू ३ ; णाया १, ५ ; उवा ; सुर ४, ५७ ; स ६५६ ; हे २, २०६ ; पाअ)।

पडिवन्निय (अप) देखो **पडिवण्ण** ; (भवि)।

पडिवय अक [**प्रति + पत्**] ऊँचे जाकर गिरना। वकृ— **पडिवयमाण** ; (आचा)।

पडिवयण न [**प्रतिवचन**] १ प्रत्युत्तर, जवाब ; (गा ४१६ ; सुर २, १२३ ; सुपा १४३ ; भवि)। २ आदेश, आज्ञा ; "देहि मे पडिवयण" (आवम)। ३ पु. हरिवंश के एक राजा का नाम ; (पउम २२, ९७)।

पडिवया स्त्री [**प्रतिपत्**] पड़वा, पक्ष की पहली तिथि ; (हे १, ४४ ; २०६ ; षड्)।

पडिववियं वि [**प्रत्युप्त**] फिर से बोया हुआ ; (दे ६, १३)।

पडिवस अक [**प्रति+वस्**] निवास करना। वकृ—**पडिवसंत** ; (पि ३९७, नाट—मृच्छ ३२१)।

पडिवह सक [**प्रति+वह्**] वहन करना, ढोना। कवकृ—**पडिवुज्झमाण** ; (कप्प)।

पडिवह देखो **पडिपह** ; (से ३, २४ ; ८, ३३ ; पउम ७३, २४)।

पडिवह पु [**प्रतिवध, परिवध**] वध, हत्या ; (पउम ७३, २४)।

पडिवाइ वि [**प्रतिवादिन्**] प्रतिवाद करने वाला, वादी का विपक्षी ; (भवि ५१, ३)।

पडिवाइ वि [**प्रतिपादिन्**] प्रतिपादन करने वाला ; (भवि ५१, ३)।

पडिवाइ वि [**प्रतिपातिन्**] १ विनश्वर, नष्ट होने के स्वभाव वाला ; (ठा २, १ ; ओघ ५३२ ; उप पृ ३५८)। २ अवधिज्ञान का एक भेद, फूंक से दीपक के प्रकाश के समान यकायक नष्ट होने वाला अवधिज्ञान ; (ठा ६, कम्म १, ८)।

पडिवाइअ वि [**प्रतिपातित**] १ फिर से गिराया हुआ ; २ नष्ट किया हुआ ; (भवि)।

पडिवाइअ वि [**प्रतिपादित**] जिसका प्रतिपादन किया गया हो वह, निरूपित ; (अच्चु ५ ; स ४६ ; ५४३)।

पडिवाइअ वि [**प्रतिवाचित**] १ लिखने के बाद पढा हुआ ; २ फिर से बाँचा हुआ ; (कुप्र १६७)।

पडिवाइऊण, **पडिवाइयव्व** } देखो **पडिवाय**=प्रति+वाचय्।

पडिवाडि देखो **परिवाडि** ; (गा ५३०)।

पडिवाद (शौ) सक [**प्रति+पादय्**] प्रतिपादन करना, निरूपण करना। पडिवादेदि, (नाट—रत्ना ५७)। कृ—**पडिवादणिज्ज** ; (अभि ११७)।

पडिवादय वि [**प्रतिपादक**] प्रतिपादन करने वाला। स्त्री—°**दिआ** ; (नाट—चैत ३४)।

पडिवाय सक [**प्रति+वाचय्**] १ लिखने के बाद उसे पढ़ लेना। २ फिर से पढ़ लेना। संकृ—**पडिवाइऊण** ; कुप्र १६७)। कृ—**पडिवाइयव्व** ; (कुप्र १६७)।

पडिवाय पुं [**प्रतिपात**] १ पुनः-पतन, फिर से गिरना ; (नव ३६)। २ नाश, ध्वंस ; (विसे ५७७)।

पडिवाय पुं [**प्रतिवाद**] विरोध ; (भवि)।

पडिवाय पु [**प्रतिवात**] प्रतिकूल पवन ; (आवम)।

पडिवायण न [**प्रतिपादन**] निरूपण ; (कुप्र ११६)।

पडिवारय देखो **परिवार** ; "पडिवारयपरियरिओ" (महा)।

पडिवाल सक [**प्रति+पालय्**] १ प्रतीक्षा करना, बाट जोहना। २ रक्षण करना। पडिवालेइ ; (हे ४, २५९)। पडिवालेदु (शौ) ; (स्वप्न १००)। पडिवालह ; (अभि १८५)। वकृ—**पडिवालअंत, पडिवालेमाण** ; (नाट—रत्ना ४८ ; णाया १, ३)।

पडिवालण न [**प्रतिपालन**] १ रक्षण ; २ प्रतीक्षा, बाट ; (नाट—महा ११८ ; उप ६९९)।

पडिवालिअ वि [**प्रतिपालित**] १ रक्षित। २ प्रतीक्षित, जिसकी बाट देखी गई हो वह ; (महा)।

पडिवास पुं [**प्रतिवास**] औषध आदि को विशेष उत्कट बनाने वाला चूर्ण आदि ; (उर ८, ५ ; सुपा ६७)।

पडिवासर न [**प्रतिवासर**] प्रतिदिन, हर रोज ; (गउड)।

पडिवासुदेव पुं [**प्रतिवासुदेव**] वासुदेव का प्रतिपक्षी राजा ; (पउम २०, २०२)।

पडिविक्किण सक [**प्रतिवि+क्री**] बेचना। पडिविक्किणइ ; (आक ३३ ; पि ५११)।

पडिवित्थर पुं [**प्रतिविस्तर**] परिकर, विस्तार ; (सूअ २, २, ६२ टी ; राज)।

पडिविद्धंसण न [**प्रतिविध्वंसन**] विनाश, ध्वंस ; (राज)।

पडिविप्पिय न [**प्रतिविप्रिय**] अपकार का बदला, बदले के रूप में किया जाता अनिष्ट ; (महा)।

पडिविरइ स्त्री [**प्रतिविरति**] निवृत्ति ; (पण्ह २, ३)।

पडिविरय वि [**प्रतिविरत**] निवृत्त ; (सम ५१ ; सूअ २, २, ७५ ; औप ; उव)।

पडिविसज्ज सक [**प्रतिवि+सर्जय्**] विसर्जन करना, विदाय करना। पडिविसज्जेइ ; (कप्प ; औप)। भवि—पडिविसज्जेहिंति ; (औप)।

पडिविसज्जिय वि [**प्रतिविसर्जित**] विदाय किया हुआ, विसर्जित ; (णाया १, १—पत्र ३०)।

पडिविहाण न [**प्रतिविधान**] प्रतीकार, (स ५६७)।

पडिवुज्झमाण देखो **पडिवह**=प्रति+वह्।

पडिवुत्त वि [**प्रत्युक्त**] १ जिसका उत्तर दिया गया हो वह ; (अनु ३ ; उप ७२८ टी)। २ न, प्रत्युत्तर ; (उप ७२८ टी)।

पडिवुद (शौ) वि [**परिवृत**] परिकरित, (अभि ५७, नाट—मृच्छ २०५)।

पडिवूह पु [**प्रतिव्यूह**] व्यूह का प्रतिपक्षी व्यूह, सैन्य-रचना-विशेष ; (औप)।

पडिवूहण वि [**प्रतिबृंहण**] १ बढ़ने वाला ; (आचा १, २, ५, ५)। २ न वृद्धि, पुष्टि ; (आचा १, २, ५, ४)।

पडिवेस पु [**दे**] विक्षेप, फेंकना ; (दे ६, २१)।

पडिवेसिअ वि [**प्रातिवेशिमक**] पड़ोसी, पड़ोस में रहने वाला ; (दे ६, ३, सुपा ५५२)।

पडिवोह देखो **पडिबोह** ; (सण)।

पडिसंका स्त्री [**प्रतिशङ्का**] भय, शंका, (पउम ६७,१५)।

पडिसंखा सक [**प्रतिसं+ख्या**] व्यवहार करना, व्यपदेश करना। पडिसखाए, (आचा)।

पडिसंखिव सक [**प्रतिसं+क्षिप्**] संक्षेप करना। संकृ—**पडिसंखिविय**, (भग १४, ७)।

पडिसंचिक्ख सक [**प्रतिसम्+ईक्ष्**] चिन्तन करना। पडिसंचिक्खे ; (उत्त २, ३०)।

पडिसंजल सक [**प्रतिसं+ज्वालय्**] उद्दीपित करना। पडिसंजलेज्जासि ; (आचा)।

पडिसंत वि [**परिशान्त**] शान्त, उपशान्त, (से ६, ६१)।

पडिसंत वि [**प्रतिश्रान्त**] विश्रान्त, (बृह १)।

पडिसंत वि [**दे**] १ प्रतिकूल, २ अस्तमित, अस्त-प्राप्त ; (दे ६, १६)।

पडिसंध } सक [**प्रतिसं+धा**] १ आदर करना।
पडिसंधा } २ स्वीकार करना। पडिसंधए ; (पच्च ७)। संकृ—**पडिसंधाय**, (सूत्र २, २, ३१ ; ३२, ३३ ; ३४; ३५)।

पडिसंमुह न [**प्रतिसंमुख**] संमुख, सामने ; "गओ पडि-संमुह पज्जोयस्स" (महा)।

पडिसंलाव पुं [**प्रतिसंलाप**] प्रत्युत्तर, जवाब, (से १, २६, ११, ३४)।

पडिसंलीण वि [**प्रतिसंलीन**] १ सम्यक् लीन, अच्छी तरह लीन, २ निरोध करने वाला, (ठा ४, २, औप)।

°**पडिया** स्त्री [**°प्रतिमा**] क्रोध आदि के निरोध करने की प्रतिज्ञा ; (औप)।

पडिसंवेद } सक [**प्रतिसं+वेदय्**] अनुभव करना।
पडिसंवेय } पडिसंवेदेइ, पडिसवेययति ; (भग, पि ४६०)।

पडिसंसाहणया स्त्री [**प्रतिसंसाधना**] अनुव्रजन, अनु-गमन ; (औप ; भग १४, ३ ; २५, ७)।

पडिसंहर सक [**प्रतिसं+हृ**] १ निवृत्त करना ; २ निरोध करना। पडिसंहरेज्जा ; (सूत्र १, ७, २०)।

पडिसक्क देखो **परिसक्क**। पडिसक्कइ ; (भवि)।

पडिसडण न [**प्रतिशदन, परिशदन**] १ सड़ जाना ; २ विनाश; "निरन्तरपडिसडणसीलाणि आउदलाणि" (काल)।

पडिसत्तु पुं [**प्रतिशत्रु**] प्रतिपक्षी, दुश्मन, वैरी, (सम १५३ ; पउम ५, १५६)।

पडिसत्थ पुं [**प्रतिसार्थ**] प्रतिकूल यूथ ; (निचू ११)।

पडिसद्द पुं [**प्रतिशब्द**] १ प्रतिध्वनि ; (पउम १६, ५३ ;भवि)। २ उत्तर, प्रत्युत्तर, जवाब ; (पउम ६, ३५)।

पडिसम अक [**प्रति+शम्**] विरत होना। पडिसमइ ; (से ६, ४४)।

पडिसर पुं [**प्रतिसर**] १ सैन्य का पश्चाद्भाग ; (प्राप्र)। २ हस्त-सूत्र, कंकण ; (धर्म २)।

पडिसलागा स्त्री [**प्रतिशलाका**] पल्य-विशेष; (कम्म ४, ७३)।

पडिसव सक [**प्रति+शप्**] शाप के बदले में शाप देना। "अहमाहओ त्ति न य पडिहणंति सत्ताविन य पडिसवंति" (उव)।

पडिसव सक [**प्रति+श्रु**] १ प्रतिज्ञा करना। २ स्वीकार करना। ३ आदर करना। कृ—**पडिसवणीय** ; (सण)।

पडिसा अक [**शम्**] शान्त होना। पडिसाइ; (हे ४, १६७)।

पडिसा अक [**नश्**] भागना, पलायन करना। पडिसाइ, पडिसति ; (हे ४, १७८ ; कुमा)।

पडिसाइल्ल वि [**दे**] जिसका गला बैठ गया हो, घर्घर कण्ठ वाला ; (दे ६, १७)।

पडिसाड सक [**प्रति+शादय्, परि+शाटय्**] १ सड़ाना। २ पलटाना। ३ नाश करना। पडिसाडेंति ; (आचा २, १५, १८)। संकृ—**पडिसाडित्ता**; (आचा २,१५, १८)।

पडिसाडणा स्त्री [**परिशाटना**] च्युत करना, भ्रष्ट करना ; (वव १)।

पडिसाम अक [**शम्**] शान्त होना। पडिसामइ, (हे ४, १६७, षड्)।

पडिसाय वि [**शान्त**] शान्त, शम-प्राप्त ; (कुमा)।

पडिसाय पुं [**दे**] घर्घर कण्ठ, बैठा हुआ गला, (दे ६, १७)।

पडिसार सक [प्रतिस्मारय्] याद दिलाना। पडिसारेउ ; (भग १५)।

पडिसार सक [प्रति+सारय्] सजाना, सजावट करना। पडिसारेदि (शौ), कर्म—परिसारीअदि (शौ), (कप्पू)।

पडिसार पुं [दे] १ पटुता, २ वि. निपुण, पटु; (दे ६, १६)।

पडिसार पुं [प्रतिसार] १ सजावट ; २ अपसरण ; ३ विनाश ; ४ पराङ्मुखता ; (हे १, २०६ ; दे ६, ७६)।

पडिसारणा स्त्री [प्रतिस्मारणा] संस्मारण, (भग १५)।

पडिसारिअ वि [दे] स्मृत, याद किया हुआ; (दे ६, ३३)।

पडिसारिअ वि [प्रतिसारित] १ दूर किया हुआ, अपसारित ; (से ११, १)। २ विनाशित ; (से १४, ५८)। ३ पराङ्मुख ; (से १३, ३२)।

पडिसारी स्त्री [दे] जवनिका, परदा ; (दे ६, २२)।

पडिसाह सक [प्रति+कथय्] उत्तर देना। पडिसाहिज्जा ; (सूअ १, ११, ४)।

पडिसाहर सक [प्रतिसं+हृ] १ संकलना, समेटना। २ वापिस ले लेना। ३ ऊँचे ले जाना। पडिसाहरइ, (औप ; णाया १, १—पत्र ३३)। संक्र—**पडिसाहरित्ता, पडिसाहरिय** (णाया १, १ ; भग १४, ७)।

पडिसाहरणा न [प्रतिसंहरण] १ समेट, संकोच; २ विनाश, "सीयतेयलेस्सापडिसाहरणट्ठयाए" (भग १५—पत्र ६६६)।

पडिसिद्ध वि [दे] १ भीत, डरा हुआ ; २ भग्न, त्रुटित , (दे ६, ७१)।

पडिसिद्ध वि [प्रतिषिद्ध] निषिद्ध, निवारित ; (पाअ , उव ; ओघ १ टी ; सण)।

पडिसिद्धि स्त्री [दे] प्रतिस्पर्धा ; (षड्)।

पडिसिद्धि स्त्री [प्रतिसिद्धि] १ अनुरूप सिद्धि ; २ प्रतिकूल सिद्धि ; (हे १, ४४ ; षड्)।

पडिसिद्धि देखो **पडिप्फद्धि** ; (सन्नि १६)।

पडिसिविणअ पुं [प्रतिस्वप्नक] एक स्वप्न का विरोधी स्वप्न, स्वप्न का प्रतिकूल स्वप्न ; (कप्पू)।

पडिसीसअ } न [प्रतिशीर्षक] १ कृत्रिम मुँह, मुँह का **पडिसीसक** } परदा ; (कप्पू)। २ सिर के प्रतिरूप सिर, पिसान आदि का बनाया हुआ सिर, (पराह १, २—पत्र ३०)।

पडिसुइ पु [प्रतिश्रुति] १ ऐरवत वर्ष के एक भावी कुलकर, (सम १५३)। २ भरतक्षेत्र में उत्पन्न एक कुलकर पुरुष का नाम , (पउम ३, ५०)।

पडिसुण सक [प्रति+श्रु] १ प्रतिज्ञा करना। २ स्वीकार करना। पडिसुणइ, पडिसुणेइ ; (औप ; कप्प ; उवा)। वकृ—**पडिसुणमाण** , (वव १ ; पि ५०३)। संकृ—**पडिसुणित्ता, पडिसुणेत्ता**; (आव ४ ; कप्प)। हेकृ—**पडिसुणेत्तए** ; (पि ५७८)।

पडिसुणण न [प्रतिश्रवण] अंगीकार; (उप ४६३)।

पडिसुणणा स्त्री [प्रतिश्रवण] १ अंगीकार, स्वीकार ; २ मुनि-भिक्षा का एक दोष, आधाकर्म-दोष वाली भिक्षा लाने पर उसका स्वीकार और अनुमोदन ; (धर्म ३)।

पडिसुण्ण वि [प्रतिशून्य] खाली, रिक्त, शून्य ; "नय निलया निच्चपडिसुण्णा" (ठा १ टी—पत्र २६)।

पडिसुत्ति वि [दे] प्रतिकूल ; (दे ६, १८)।

पडिसुय वि [प्रतिश्रुत] १ स्वीकृत, अंगीकृत ; (उप पृ १८४)। २ न. अंगीकार, स्वीकार, (उत २६)। देखो **पडिस्सुय**।

पडिसुया देखो **पडंसुआ**=प्रतिश्रुत् ; (पराह १, १—पत्र १८)।

पडिसुया स्त्री [प्रतिश्रुता] प्रव्रज्या-विशेष, एक प्रकार की दीक्षा; (ठा १० टी—पत्र ४७४)।

पडिसुहड पु [प्रतिसुभट] प्रतिपक्षी योद्धा ; (काल)।

पडिसूयग पु [प्रतिसूचक] गुप्त चरों की एक श्रेणी , नगर-द्वार पर रहने वाला जासूस ; (वव १)।

पडिसूर वि [दे] प्रतिकूल ; (दे ६, १६ ; भवि)।

पडिसूर पु [प्रतिसूर्य] इन्द्र-धनुष ; (राज)।

पडिसेज्जा स्त्री [प्रतिशय्या] शय्या-विशेष, उत्तर-शय्या ; (भग ११, ११ ; पि १०१)।

पडिसेव सक [प्रति+सेव्] १ प्रतिकूल सेवा करना, निषिद्ध वस्तु की सेवा करना। २ सहन करना। ३ सेवा करना। पडिसेवइ, पडिसेवए, पडिसेवंति , (कस ; वव ३ ; उव)। वकृ—**पडिसेवंत, पडिसेवमाण** ; (पंचू ५ , सम ३६ ; पि १७), "पडिसेवमाणो फरुसाइं अचले भगवं रीइत्था" (आचा)। कृ—**पडिसेवियव्व** ; (वव १)।

पडिसेवग देखो **पडिसेवय** ; (निचू १)।

पडिसेवण न [प्रतिषेवण] निषिद्ध वस्तु का सेवन; (कस)।

पडिसेवणा स्त्री [प्रतिषेवणा] ऊपर देखो ; (भग २५, ७ , उव , ओघ २)।

पडिसेवय वि [प्रतिषेवक] प्रतिकूल सेवा करने वाला, निषिद्ध वस्तु का सेवन करने वाला ; (भग २५, ७)।

पडिसेवा स्त्री [**प्रतिषेवा**] १ निषिद्ध वस्तु का आसेवन; (उप ८०१)। २ सेवा; (कुप्र ५२)।
पडिसेवि वि [**प्रतिषेविन्**] शास्त्र-प्रतिषिद्ध वस्तु का सेवन करने वाला; (उव; पउम ५, २८)।
पडिसेविअ वि [**प्रतिषेवित**] जिस निषिद्ध वस्तु का आसेवन किया गया हो वह; (कप्प; औप)।
पडिसेवेत्तु वि [**प्रतिषेवितृ**] प्रतिषिद्ध वस्तु की सेवा करने वाला; (ठा ७)।
पडिसेह सक [**प्रति+सिध्**] निषेध करना, निवारण करना। कृ—**पडिसेहेअव्व**; (भग)।
पडिसेह पुं [**प्रतिषेध**] निषेध, निवारण, रोक; (ओघ ६ भा; पंचा ६)।
पडिसेहण न [**प्रतिषेधन**] ऊपर देखो; (विसे २७५१; श्रा २७)।
पडिसेहिय वि [**प्रतिषेधित**] जिसका प्रतिषेध किया गया हो वह, निवारित; (विपा १, ३)।
पडिसेहेअव्व देखो **पडिसेह**=प्रति+सिध्।
पडिसोअ, **पडिसोत्त** पुं [**प्रतिस्रोतस्**] प्रतिकूल प्रवाह, उलटा प्रवाह; (ठा ४, ४; हे २, ९८; उप २५२; पि ९१)।
पडिसोत्त वि [**दे**] प्रतिकूल; (षड्)।
पडिस्संत देखो **परिस्संत**; (नाट—मृच्छ १८८)।
पडिस्संति स्त्री [**परिश्रान्ति**] परिश्रम; (नाट—मृच्छ ३२१)।
पडिस्सय पुं [**प्रतिश्रय**] जैन साधुओं को रहने का स्थान, उपाश्रय; (ओघ ८७ भा; उप ५७१; स ६८७)।
पडिस्साव सक [**प्रति+श्रावय्**] १ प्रतिज्ञा कराना। २ स्वीकार कराना। वकृ—**पडिस्सावअन्त**; (नाट—वेणी १८)।
पडिस्सावि वि [**प्रतिस्राविन्**] झरने वाला, टपकने वाला; (राज)।
पडिस्सुय वि [**प्रतिश्रुत**] १ प्रतिज्ञात; २ स्वीकृत; (महा; ठा १०)। देखो **पडिसुय**।
पडिस्सुया देखो **पडंसुआ**; (णाया १, ५)।
पडिस्सुया देखो **पडिसुया**=प्रतिश्रुता; (ठा १०—पत्र ४७३)।
पडिहच्छ वि [**दे**] पूर्ण; (सण)। देखो **पडिहत्थ**।
पडिहट्टु अ [**प्रतिहृत्य**] अर्पण करके, (कस; बृह ३)।
पडिहड पुं [**प्रतिभट**] प्रतिपक्षी योद्धा; (से ३, ५३)।
पडिहण सक [**प्रति+हन्**] प्रतिघात करना, प्रतिहिंसा करना। पडिहणंति; (उव)।
पडिहणण न [**प्रतिहनन**] १ प्रतिघात। २ वि. प्रतिघातक; (कुप्र ३७)।
पडिहणणा स्त्री [**प्रतिहनन**] प्रतिघात; (ओघ ११०)।
पडिहणिय देखो **पडिहय**; (सुपा २३)।
पडिहत्थ वि [**दे**] १ पूर्ण, भरा हुआ; (दे ६, २८; पाअ; कुप्र ३४; वज्जा १२६; उप पृ १८१; सुर ४, २३६; सुपा ४८८), "पडिहत्थविंवगहवइवअणे ता वज्ज उज्जाणं" (वाअ १५)। २ प्रतिक्रिया, प्रतिकार; ३ वचन, वाणी; (दे ६, १९)। ४ अतिप्रभूत; (जीव ३)। ५ अपूर्व, अद्वितीय; (षड्)।
पडिहत्थ सक [**दे**] प्रत्युपकार करना, उपकार का बदला चुकाना। पडिहत्थेइ; (से १२, ६६)।
पडिहत्थ वि [**प्रतिहस्त**] तिरस्कृत; (चंड)।
पडिहत्थी स्त्री [**दे**] वृद्धि; (दे ६, १७)।
पडिहम्म देखो **पडिहण**। पडिहम्मेज्जा; (पि ५४०)। भवि—पडिहम्मिहिइ; (पि ५४९)।
पडिहय वि [**प्रतिहत**] प्रतिघात-प्राप्त; (औप; कुमा; महा; सण)।
पडिहर सक [**प्रति+हृ**] फिर से पूर्ण करना। पडिहरइ; (हे ४, २५९)।
पडिहा अक [**प्रति+भा**] मालूम होना, लगना। पडिहाइ; (वज्जा १६२; पि ४८७)।
पडिहा स्त्री [**प्रतिभा**] बुद्धि-विशेष, नूतन २ उल्लेख करने में समर्थ बुद्धि; (कुमा)।
पडिहा देखो **पडिहाय**=प्रतिघात; "पंचविहा पडिहा पन्नत्ता, तं जहा, गतिपडिहा" (ठा ५, १—पत्र ३०३)।
पडिहाण देखो **पणिहाण**; "मणदुप्पडिहाणे" (उवा)।
पडिहाण न [**प्रतिभान**] प्रतिभा, बुद्धि-विशेष। °व वि [°**वत्**] प्रतिभा वाला; (सूअ १, १३; १४)।
पडिहाय देखो **पडिहा**=प्रति+भा। पडिहायइ; (स ४६१; स ७५६)।
पडिहाय पुं [**प्रतिघात**] १ प्रतिहनन, घात का बदला; २ निरोध, अटकायत, रोक; (पउम ६, ५३)।
पडिहार पुंस्त्री [**प्रतिहार**] द्वारपाल, दरवान; (हे १, २०६; णाया १, ५; स्वप्न २२८; अभि ७७)। स्त्री—°**री**; (बृह १)।

पडिहारिय देखो **पाडिहारिय** ; (कस ; आचा २, २, ३, १७ ; १८) ।

पडिहारिय वि [**प्रतिहारित**] अवरुद्ध, रोका हुआ; (स५४६)।

पडिहास अक [**प्रति+भास्**] मालूम होना, लगना । पडिहासेदि (शौ) ; (नाट) ।

पडिहास पुं [**प्रतिभास**] प्रतिभास, प्रतिभान ; (हे १, २०६ ; पड्) ।

पडिहासिय वि [**प्रतिभासित**] जिसका प्रतिभास हुआ हो वह ; (उप ६८६ टी) ।

पडिहुअ } पु [**प्रतिभू**] जामीन, जामीनदार, मनौतिया ;
पडिहू } (पाअ ; दे ५, ३८) ।

पडिहू अक [**परि+भू**] पराभव करना, हराना । कवकृ—**पडिहूअमाण**; (अभि ३६) ।

पडी स्त्री [**पटी**] वस्त्र, कपड़ा ; (गउड ; सुर ३, ४१) ।

पडीआर पुं [**प्रतीकार**] देखो **पडिआर**=प्रतिकार ; (वेणी १७७ ; कुप्र ६१) ।

पडीकर सक [**प्रति+कृ**] प्रतिकार करना । पडीकरेमि ; (मै ६६) ।

पडीकार देखो **पडिआर** ; (पण्ह १, १) ।

पडीछ देखो **पडिच्छ**=प्रति+इष् । पडीछंति ; (पि २७५)।

पडीण वि [**प्रतीचीन**] पश्चिम दिशा से संबन्ध रखने वाला ; (आचा ; औप ; ठा ५, ३) । °**वाय** पुं [°**वात**] पश्चिम का वायु ; (ठा ७) ।

पडीणा स्त्री [**प्रतीची**] पश्चिम दिशा ; (ठा ६—पत्र ३५६ ; सूअ २, २, ५८) ।

पडीर पुं [**दे**] चोर-समूह, चोरों का यूथ ; (दे ६, ८) ।

पडीव वि [**प्रतीप**] प्रतिकूल, प्रतिपक्षी, विरोधी ; (भवि)।

पडु वि [**पटु**] निपुण, चतुर, कुशल ; (औप ; कुमा ; सुर २, १४५) ।

पडु (अप) देखो **पडिअ**=पतित ; (पिंग) ।

पडुआलिअ वि [**दे**] १ निपुण बनाया हुआ ; २ ताडित, पिटा हुआ ; ३ धारित ; (दे ६, ७३) ।

पडुक्खेव पुं [**प्रत्युत्क्षेप, प्रतिक्षेप**] १ वाद्य-ध्वनि ; २ क्षेपण, फेंकना; "समतालपडुक्खेवं" (ठा ७—पत्र ३९४)।

पडुच्च अ [**प्रतीत्य**] १ आश्रय करके ; (आचा ; सूअ १, ७ ; सम ३६ ; नव ३६) । २ अपेक्षा करके ; (भग) । ३ अधिकार करके , " पडुच्च त्ति वा पप्प त्ति वा अहिकिच्च त्ति वा एगट्ठा " (आचू १ ; अणु) । °**करण** न [°**करण**] किसी की अपेक्षा से जो कुछ करना, आपेक्षिक कृति ; (बृह १)। °**भाव** पुं [°**भाव**] सप्रतियोगिक पदार्थ, आपेक्षिक वस्तु ; (भास २८) । °**वयण** न [°**वचन**] आपेक्षिक वचन; (सम्म १००) । °**सच्चा** स्त्री [°**सत्या**] सत्य भाषा का एक भेद, अपेक्षा-कृत सत्य वचन ; (पण्ण ११) ।

पडुच्चा ऊपर देखो ; " जे हिंसंति आयसुहं पडुच्चा " (सूअ १, ५, १, ४) ।

पडुजुवइ स्त्री [**दे**] युवति, तरुणी; (दे ६, ३१)।

पडुत्तिया स्त्री [**प्रत्युक्ति**] प्रत्युत्तर, जवाब ; (भवि) ।

पडुप्पण्ण } पुं [**प्रत्युत्पन्न**] १ वर्तमान काल ; (ठा
पडुप्पन्न } ३, ४) । २ वि. वार्तमानिक, वर्तमान काल में विद्यमान ; (ठा १० ; भग ८, ५; सम १३२ ; उवा) । ३ प्राप्त, लब्ध ; (ठा ४, २), " न पडुप्पन्नो य से जहोचिओ आहारो " (स २६१) । ४ उत्पन्न, जात ; (ठा ४, २), "होंति य पडुप्पन्नविणासणम्मि गंधव्विया उदाहरणं " (दसनि १) ।

पडुल्ल न [**दे**] १ लघु पिठर, छोटी थाली ; २ वि. चिर-प्रसूत ; (दे ६, ६८) ।

पडुवइअ वि [**दे**] तीक्ष्ण, तेज ; (दे ६, १४) ।

पडुवत्ती स्त्री [**दे**] जवनिका, परदा ; (दे ६, २२) ।

पडुह देखो **पड्डुह** । पडुहइ ; (हे ४, १५४ टि) ।

पडोअ वि [**दे**] बाल, लघु, छोटा ; (दे ६, ६) ।

पडोच्छन्न वि [**प्रत्यवच्छन्न**] आच्छादित, आवृत ; " अट्ठविहकम्मतमपडलपडोच्छन्ने " (उवा) ।

पडोयार सक [**प्रत्युप+चारय्**] प्रतिकूल उपचार करना । पडोयारेंति, पडोयारेह ; (भग १५—पत्र ६७६) । पडोयारेउ; (भग १५—पत्र ६७१)। पडोयारे; (पि १५५) । कवकृ—**पडोय(? या)रिज्जमाण, पडोयारेज्जमाण**; (पि १६३ ; भग १५—पत्र ६७६) ।

पडोयार पुं [**प्रत्युपचार**] प्रतिकूल उपचार; (भग १५—पत्र ६७१ ; ६७६) ।

पडोयार पु [**प्रत्यवतार**] १ अवतरण ; २ आविर्भाव ; " भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे होत्था " (भग ६, ७—पत्र २७६ ; ७, ६—पत्र ३०५; औप) ।

पडोयार पुं [**पदावतार**] किसी वस्तु का पदों में विचार के लिए अवतरण ; (ठा ४, १—पत्र १८८) ।

पडोयार पुं [**प्रत्युपकार**] उपकार का उपकार ; (राज)।

पडोयार पुं [**दे**] परिकर ; "पायस्स पडोयारं" (श्रोघ ३५२)।

पडोल पुंस्त्री [**पटोल**] लता-विशेष, परवल का गाछ ; (पगण १—पत्न ३२)।

पडोहर न [**दे**] घर का पीछला आँगन ; (दे ६, ३२ ; गा ३१३ ; काप्र २२४)।

पड्ड वि [**दे**] धवल, सफेद ; (दे ६, १)।

पड्डंस पुं [**दे**] गिरि-गुहा, पहाड़ की गुफा ; (दे ६, २)।

पड्डच्छी स्त्री [**दे**] भैंस ; "पड्डच्छिखीर" (श्रोघ ८७)।

पड्डत्थी स्त्री [**दे**] १ बहुत दूध वाली ; २ दोहने वाली ; (दे ६, ७०)।

पड्डय पुं [**दे**] भैंसा, गुजराती में 'पाडो'; "सो चेव इमो वसभो पड्डयपरिहट्टणं सहइ" (महा)।

पड्डला स्त्री [**दे**] चरण-घात, पाद-प्रहार ; (दे ६, ८)।

पड्डुस वि [**दे**] सुसंयमित, अच्छी तरह से संयमित ; (दे ६, ६)।

पड्डाविअ वि [**दे**] समापित, समाप्त कराया हुआ; (षड्)।

पड्डिया स्त्री [**दे**] १ छोटी भैंस ; २ छोटी गौ, वछिया ; (विपा १, २—पत्न २६)। ३ प्रथम-प्रसूता गौ ; ४ नव-प्रसूता महिषी ; (वव ३)।

पड्डी स्त्री [**दे**] प्रथम-प्रसूता ; (दे ६, १)।

पड्डुआ स्त्री [**दे**] चरण-घात, पाद-प्रहार ; (दे ६, ८)।

पड्डुह अक [**क्षुभ्**] क्षुब्ध होना। पड्डुहइ ; (हे ४, १५४ ; कुमा)।

पढ सक [**पठ्**] १ पढ़ना, अभ्यास करना। २ बोलना, कहना। पढइ ; (हे १, १६६ ; २३१)। कर्म—पढीअइ, पढिज्जइ ; (हे ३, १६०)। वकृ—**पढंत** ; (सुर १०, १०३)। कवकृ— **पढिज्जंत, पढिज्जमाण** ; (सुपा २६७ ; उप ५३० टी)। संकृ—**पढित्ता** ; (हे ४, २७१ ; षड्), **पढिअ, पढिदूण** (शौ) ; (हे ४, २७१), **पढि** (अप) ; (पिंग)। हेकृ—**पढिउं** ; (गा २ ; कुमा)। कृ—**पढियव्व, पढेयव्व** ; (पंसू १ ; वज्जा ६)। प्रयो—पढावइ ; (कुप्र १८२)।

पढ पुं [**पढ**] भारतीय देश-विशेष ; (इक)।

पढग वि [**पाठक**] पढ़ने वाला ; (कप्प)।

पढण न [**पठन**] पाठ, अभ्यास ; (विसे १३८४ ; कप्पू)।

पढम वि [**प्रथम**] १ पहला, आद्य ; (हे १, ५५ ; कप्प ; उवा ; भग ; कुमा ; प्रासू ४८ ; ६८)। २ नूतन, नया ; (दे)। ३ प्रधान, मुख्य ; (कप्प)। °**करण** न [°**करण**] आत्मा का परिणाम-विशेष ; (पंचा ३)। °**कसाय** पु [°**कषाय**] कषाय-विशेष, अनन्तानुबन्धी कषाय; (कम्मप)। °**ट्ठाणि**, °**ठाणि** वि [°**स्थानिन्**] अव्युत्पन्न-बुद्धि, अनिष्णात ; (पंचा १६)। °**पाउस** पुं [°**प्रावृष्**] आषाढ मास ; (निचू १०)। °**समोसरण** न [°**समवसरण**] वर्षा-काल ; "विइयसमोसरणं उदुबद्धं तं पडुच्च वासावासोग्गहो पढमसमोसरणं भगणइ" (निचू १)। °**सरय** पुं [°**शरत्**] मार्गशीर्ष मास ; (भग १५)। °**सुरा** स्त्री [°**सुरा**] नया दारू ; (दे)।

पढमा स्त्री [**प्रथमा**] १ प्रतिपदा तिथि, पड़वा ; (सम २६)। २ व्याकरण-प्रसिद्ध पहली विभक्ति ; "णिद्दे से पढमा होइ" (अणु)।

पढमालिआ स्त्री [**दे, प्रथमालिका**] प्रथम भोजन ; (श्रोघ ४७ भा ; धर्म ३)।

पढमिल्ल, **पढमिल्लुअ**, **पढमिल्लुग**, **पढमुल्लअ**, **पढमेल्लुय** वि [**प्रथम**] पहला, आद्य ; (भग ; ठा २८ ; सुपा ५७ ; पि ४४६ ; ५६५ ; विसे १२२६; णाया १, ६—पत्न १४४; बृह १ ; पउम ६२, ११ ; धण १६ ; सण)।

पढाइद [**शौ**] नीचे देखो ; (नाट—चैत ८६)।

पढावण न [**पाठन**] पढाना ; (कुप्र ६०)।

पढाविअ वि [**पाठित**] पढ़ाया हुआ ; (सुपा ४५२ ; कुप्र ६१)।

पढि, **पढिअ** देखो **पढ**=पठ्।

पढिअ वि [**पठित**] पढा हुआ ; (कुमा ; प्रासू १३८)।

पढिज्जंत, **पढिज्जमाण** देखो **पढ**=पठ्।

पढिर वि [**पठितृ**] पढने वाला ; (सण)।

पढुक्क वि [**प्रढौकित**] भेंट के लिए उपस्थापित ; (भवि)।

पढुम देखो **पढम** ; (हे १, ५५ ; नाट—विक्र २६)।

पढेयव्व देखो **पढ**=पठ्।

पण देखो **पंच** ; (सुपा १ ; नव १० ; कम्म २, ६ ; २६ ; ३१)। °**णउइ** स्त्री [°**नवति**] पचानवे, नव्वे

और पाँच ; (पि ४४६)। °तीस स्त्रीन [°त्रिंशत्] पैंतीस, तीस और पाँच ; (औप ; कम्म ४, ५३, पि २७३ ; ४४५)। °नुवइ देखो °णउइ ; (सुपा ६७)। °रस वि.व. [°दशन्] पनरह ; (सण)। °वन्निय वि [°वर्णिक] पाँच रंग का ; (सुपा ४०२)। °वीस स्त्रीन [°विंशति] पचीस, बीस और पाँच ; (सम ४४ ; नव १३ ; कम्म २)। °वीसइ स्त्री [°विंशति] वही अर्थ ; (पि ४४५)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] पैंसठ, साठ और पाँच; (सम ७८, पि २७३)। °सय न [°शत] पाँच सौ; (दं ६)। °सीइ स्त्री [°शीति] पचासी, अस्सी और पाँच ; (कम्म २)। °सुन्न न [°शून] पाँच हिंसा-स्थान ; (राज)।

पण पुं [**पण**] १ शर्त, होड ; "लक्खपणेण जुज्झावेंतस्स" (महा)। २ प्रतिज्ञा ; (आक)। ३ धन ; ४ विक्रेय वस्तु, क्रयाणक ; " तत्थ विढप्पिअ पणगणं " (ती ३)।

पण पु [**प्रण**] पन, प्रतिज्ञा , (नाट—मालती १२४)।

पणअत्तिअ वि [**दे**] प्रकटित, व्यक्त किया हुआ ; (दे ६, ३०)।

पणअन्न देखो **पणपन्न** ; (हे २, १७४ टि ; राज)।

पणइ स्त्री [**प्रणति**] प्रणाम, नमस्कार ; (पउम ६६, ६६ ; सुर १२, १३३ ; कुमा)।

पणइ वि [**प्रणयिन्**] १ प्रणय वाला, स्नेही, प्रेमी ; २ पुं. पति, स्वामी ; (पाअ ; गउड ८३७)। ३ याचक, अर्थी, प्रार्थी ; (गउड २४६ ; २५१ ; सुर १, १०८)। ४ भृत्य, दास ; " बप्पइराओत्ति पणइलवो " (गउड ७९७)।

पणइणी स्त्री [**प्रणयिनी**] पत्नी, भार्या ; (सुपा २१६)।

पणइय वि [**प्रणयिक, प्रणयिन्**] देखो **पणइ**=प्रणयिन् ; (सण)।

पणंगणा स्त्री [**पणाङ्गना**] वेश्या, वारांगना , (उप १०३१ टी ; सुपा ४६०; कुप्र ५)।

पणग न [**पञ्चक**] पाँच का समूह ; (सुर ६, ११२ ; सुपा ६३६ ; जी ६ ; दं ३१; कम्म २, ११)।

पणग पुं [**दे. पनक**] १ शैवाल, सिंवाल, तृण-विशेष जो जल में उत्पन्न होता है ; (बृह ४ ; दस ८ ; पगण १ ; गंदि)। २ काई, वर्षा-काल में भूमि, काष्ठ आदि में उत्पन्न होता एक प्रकार का जल-मैल ; (आचा ; पडि ; ठा ८—पत्र ४३६ : कप्प)। ' विशेष, स्र८ पंक ; (बृह ६ ; भग ७, ६)। देखो **पणय** (दे)। °**मट्टिया**, °**मत्तिया** स्त्री [°**मृत्तिका**] नदी आदि के पूर के खतम होने पर रह जाती कोमल चिकनी मिट्टी ; (जीव १ ; पगण १—पत्र २५)।

पणच्च अक [**प्र+नृत्**] नाचना, नृत्य करना। वकृ—**पणच्चमाण**; (णाया १, ८—पत्र १३३ ; सुपा ४७२), स्त्री—°**णी** ; (सुपा २४२)।

पणच्चण न [**प्रनर्तन**] नृत्य, नाच ; (सुपा १५४)।

पणच्चिअ वि [**प्रनृत्तित**] नाचा हुआ, जिसका नाच हुआ हो वह ; (णाया १, १—पत्र २५)।

पणच्चिअ वि [**प्रनृत्त**] नाचा हुआ ; " अन्नया रायपुरओ पणच्चिया देवदत्ता " (महा ; कुप्र १०)।

पणच्चिअ वि [**प्रनर्तित**] नचाया हुआ ; (भवि)।

पणट्ठ वि [**प्रनष्ट**] प्रकर्ष से नाश को प्राप्त ; (सूअ १, १, २ ; से ७, ८ ; सुर २, २४७ ; ३, ६६ ; भवि ; उव)।

पणद्ध वि [**प्रणद्ध**] परिगत ; (औप)।

पणपण्ण देखो **पणपन्न** ; (कप्प १४७ टि)।

पणपण्णइम देखो **पणपन्नइम** ; (कप्प १७४ टि; पि २७३)।

पणपन्न स्त्रीन [**दे. पञ्चपञ्चाशत्**] पचपन, पचास और पाँच ; (हे २, १७४ ; कप्प ; सम ७२ ; कम्म ४, ५४ ; ५५ ; ति ५)।

पणपन्नइम वि [**दे. पञ्चपञ्चाश**] पचपनवाँ, ५५वाँ ; (कप्प)।

पणपन्निय देखो **पणवन्निय** ; (इक)।

पणम सक [**प्र+नम्**] प्रणाम करना, नमन करना। पणमइ, पणमए ; (स ३४४ ; भग)। वकृ—**पणमंत** ; (सण)। कवकृ—**पणमिज्जंत**; (सुपा ८८)। संकृ—**पणमिअ, पणमिऊण, पणमिऊणं, पणमित्ता, पणमित्तु**; (अभि ११८ ; प्रारू ; पि ५६०, भग ; काल)।

पणमण न [**प्रणमन**] प्रणाम, नमस्कार ; (उव ; सुपा २७, ५६१)।

पणमिअ देखो **पणम**।

पणमिअ वि [**प्रणत**] १ नमा हुआ ; (भग ; औप)। २ जिसने नमने का प्रारम्भ किया हो वह ; (णाया १, १—पत्र ५)। ३ जिसको नमन किया गया हो वह; "पणमिओ अणेण राया " (स ७३०)।

°मिअ वि [**प्रणमित**] नमाया हुआ ; (भवि)

पणमिर वि [प्रणम्र] प्रणाम करने वाला, नमने वाला; (कुमा ; कुप्र ३५० ; सण)।

पणय सक [प्र+णी] १ स्नेह करना, प्रेम करना। २ प्रार्थना करना। वकृ—**पणअंत** ; (से २, ८)।

पणय वि [प्रणत] १ जिसको प्रणाम किया गया हो वह ; "नरनाहपणयपयकमलं" (सुपा २४०)। २ जिसने नमस्कार किया हो वह ; "पणयपडिवक्खं" (सुर १, ११२; सुपा ३६१)। ३ प्राप्त ; (सूअ १, ४, १)। ४ निम्न, नीचा ; (जीव ३ ; राय)।

पणय पुं [प्रणय] १ स्नेह, प्रेम ; (गाया १, ८ ; महा ; गा २७)। २ प्रार्थना ; (गउड)। °**वंत** वि [°वत्] स्नेह वाला, प्रेमी ; (उप १३१)।

पणय पुं [दे] पंक, कर्दम ; (दे ६, ७)।

पणय पुं [दे. पनक] १ शैवाल, सिंवाल, तृण-विशेष ; २ काई, जल-मैल ; (ओघ ३४६)। ३ सूक्ष्म कर्दम ; (पगह १, ४)।

पणयाल वि [दे. पञ्चचत्वारिंश] पैतालीसवाँ, ४५वाँ ; (पउम ४५, ४६)।

पणयाल, **पणयालीस** स्त्रीन [दे. पञ्चचत्वारिंशत्] पैतालीस, चालीस और पाँच, ४५ ; (सम ६६ ; कम्म २, २७ ; ति ३ ; भग ; सम ६८ ; औप ; पि ४४५)।

पणव देखो **पणम**। पणवइ ; (भवि)। पणवह ; (हे २, १९५)। वकृ—**पणवंत** ; (भवि)।

पणव पुं [पणव] पटह, ढोल, वाद्य-विशेष ; (औप ; कप्प ; अंत)।

पणवणिय देखो **पणवन्निय** ; (औप)।

पणवण्ण, **पणवन्न** देखो **पणवन्न** ; (पि २६५ ; २७३ ; भग ; हे २, १७४ टि)।

पणवन्निय पुं [पणपन्निक] व्यन्तर देवों की एक जाति ; (पगह १, ४)।

पणविय देखो **पणमिय**=प्रणत ; (भवि)।

पणस पुं [पनस] वृक्ष-विशेष, कटहल ; (पि २०८ ; नाट—मृच्छ २१८)।

पणाम सक [अर्पय्] अर्पण करना, देने के लिए उपस्थित करना। पणामइ ; (हे ४, ३९), "वंदिओ य पणयाण कल्लाणाइं पणामइ" (सुपा ३६३)।

पणाम सक [प्र+नमय्] नमाना। पणामेइ ; (महा)।

पणाम पुं [प्रणाम] नमस्कार, नमन ; (दे ७, ६ ; भवि)।

पणामणिआ स्त्री [दे] स्त्री-विषयक प्रणय; (दे ६, ३०)।

पणामय वि [अर्पक] देने वाला ; (सूअ १, २, २)।

पणामिअ वि [अर्पित] समर्पित, देने के लिए धरा हुआ ; (पाअ ; कुमा)। "अपणामियंपि गहिअं कुसुमसरेण महुमासलच्छीए मुहं" (हेका ५०)।

पणामिअ वि [प्रणमित] नमाया हुआ ; (से ४, ३१ ; गा २२)।

पणामिअ वि [प्रणामित] नत, नमा हुआ ; "पणामिया सायरं" (स ३१६)।

पणायक, **पणायग** वि [प्रणायक] ले जाने वाला ; "निव्वाणगमणसग्गप्पणायकाइं" (पगह २, १ ; पगह २, १ टी ; वव १)।

पणाल पुं [प्रणाल] मोरी, पानी आदि जाने का रास्ता ; (से १३, ५४ ; उर १, ५ ; ६)।

पणालिआ स्त्री [प्रणालिका] १ परम्परा ; (सूअ १, १३)। २ पानी जाने का रास्ता ; (कुमा)।

पणाली स्त्री [प्रणाली] मोरी, पानी जाने का रास्ता ; (गउड)।

पणाली स्त्री [प्रनाली] शरीर-प्रमाण लम्बी लाठी ; (पगह १, ३—पत्र ५४)।

पणास सक [प्र+नाशय्] विनाश करना। पणासेइ, पणासए ; (महा)।

पणास पुं [प्रणाश] विनाश, उच्छेदन ; (आवम)।

पणासण वि [प्रणाशन] विनाश करने वाला ; "सव्वपावप्पणासणो" (पडि ; कप्प)। स्त्री—°**णी**; (श्रा ४६)।

पणासिय वि [प्रणाशित] जिसका विनाश किया गया हो वह ; (कप्प ; भवि)।

पणिअ वि [दे] प्रकट, व्यक्त ; (दे ६, ७)।

पणिअ न [पणित] १ बेचने योग्य वस्तु ; (दे १, ७४ ; ६, ७ ; गाया १, १)। २ व्यवहार, लेन-देन, क्रय-विक्रय ; (भग १५ ; गाया १, ३—पत्र ६५)। ३ शर्त, होड, एक तरह का जूआ ; (भास ६२)। °**भूमि**, °**भूमी** स्त्री [°भूमि, °भूमी] १ अनार्य देश-विशेष, जहां भगवान् महावीर ने एक चौमासा बिताया था ; (राज ; कप्प)। २ विक्रेय वस्तु रखने का स्थान ; (भग १५)। °**साला** स्त्री [°शाला] हाट, दुकान ; (वृह २ ; निचू १६)।

पणिअ न [**पण्य**] विक्रेय वस्तु, (सुपा २७५ ; औप ; आचा) । °**गिह**, °**घर** न [°**गृह**] दुकान, हाट ; (निचू १२ ; आचा २, २, २) । °**साला** स्त्री [°**शाला**] हाट, दुकान; (आचा) । °**ावण** पुं [°**ापण**] दुकान, हाट ; (आचा) ।

पणिअ वि [**प्रणीत**] सुन्दर, मनोहर । °**भूमि** स्त्री [°**भूमि**] मनोज्ञ भूमि ; (भग १५) ।

पणिआ स्त्री [**दे**] करोटिका, सिरकी हड्डी ; (दे ६, ३) ।

पणिंदि, **पणिंदिय** वि [**पञ्चेन्द्रिय**] त्वक्, जीभ, नाक, आँख और कान इन पाँचों इन्द्रियों वाला प्राणी ; (कम्म २ ; ४, १० ; १८ ; १९) ।

पणिधाण देखो **पडिहाण**, (अभि १८९ ; नाट—विक्र ७२) ।

पणिधि पुंस्त्री [**प्रणिधि**] माया, छल, "पुणो पुणो पणिधि (? धी)ए हरित्ता उवहसे जणं" (सम ५०) । देखो **पणिहि** ।

पणियत्थ वि [**प्रणिवसित**] पहना हुआ ; (औप) ।

पणिलिअ वि [**दे**] हत, मारा हुआ ; (षड्) ।

पणिवइअ वि [**प्रणिपतित**] नत, नमा हुआ ; "पणिव-इयवच्छला णं देवाणुप्पिया ! उत्तमपुरिसा" (णाया १, १६—पत्र २१९ ; स ११ ; उप ७६८ टी) ।

पणिवय सक [**प्रणि + पत्**] नमन करना, वन्दन करना । पणिवयामि ; (कप्प ; सार्ध ६१) ।

पणिवाय पु [**प्रणिपात**] वन्दन, नमस्कार, (सुर ४, ६८ ; सुपा २८ ; २२२ ; महा) ।

पणिहा सक [**प्रणि + धा**] १ एकाग्र चिन्तन करना, ध्यान करना । २ अपेक्षा करना । ३ अभिलाषा करना । ४ चेष्टा करना, प्रयत्न करना । संकृ—**पणिहाय**, (णाया १, १० ; भग १५) ।

पणिहाण न [**प्रणिधान**] १ एकाग्र ध्यान, मनो-नियोग, अवधान ; (उत्त १६, १४ ; स ८७ ; प्रामा) । २ प्रयोग, व्यापार, चेष्टा ; "तिविहे पणिहाणे पण्णत्ते, तं जहा—मणपणिहाणे, वयपणिहाणे, कायपणिहाणे" (ठा ३, १; ४, १ ; भग १८ ; उवा) । ३ अभिलाष, कामना ; "संकाथाणाणि सव्वाणि वज्जेज्जा पणिहाणवं" (उत्त १६, १४) ।

पणिहाय देखो **पणिहा** ।

पणिहि पुंस्त्री [**प्रणिधि**] १ एकाग्रता, अवधान, (पण्ह २, ५) । २ कामना, अभिलाष ; (स ८७) । ३ पु चर पुरुष, दूत, (पण्ह १, ३ ; पाअ ; सुर ३, ४ ; सुपा ४६२) । ४ चेष्टा, व्यापार ; (दसनि १) । ५ माया, कपट; (आव ४) । ६ व्यवस्थापन ; (राज) ।

पणिहिय वि [**प्रणिहित**] १ प्रयुक्त, व्यापृत ; (दसनि ८) । २ व्यवस्थित, (आव ४) ।

पणीय वि [**प्रणीत**] १ निर्मित, कृत, रचित ; "वइसेसियं पणीयं" (विसे २५०७ ; सुर १२, ६२ ; सुपा २८ ; १६७) । २ स्निग्ध, घृत आदि स्नेह की प्रचुरता वाला ; "विभूसा इत्थीसंसग्गी पणीयरसभोयणं" (दस ८, ५७ ; उत्त १६, ७ ; ओघ १५० भा ; औप ; बृह ५) । ३ निरूपित, प्ररूपित, आख्यात ; (अणु ; आव ३) । ४ मनोज्ञ, सुन्दर ; (भग ५, ४) । ५ सम्यग् आचरित; (सूअ १, ११) ।

पणुल्ल देखो **पणोल्ल** । वकृ—**पणुल्लेमाण** ; (पि २२४) ।

पणुल्लिअ देखो **पणोल्लिअ** ; (पाअ ; सुपा २४ ; प्रासू १६६) ।

पणुवीस स्त्रीन [**पञ्चविंशति**] संख्या-विशेष, पचीस, बीस और पाँच ; २ जिनकी संख्या पचीस हों वे ; (स १०६ ; पि १०४ ; २७३) ।

पणुवीसइम वि [**पञ्चविंशतितम**] पच्चीसवाँ, २५ वाँ ; (विसे ३१२०) ।

पणोल्ल सक [**प्र + णुद्**] १ प्रेरणा करना । २ फेंकना । ३ नाश करना । पणोल्लइ ; (प्राप्र) । "पावाइं कम्माइं पणोल्लयामो" (उत्त १२, ४०) । कवकृ—**पणोल्लिज्जमाण** ; (णाया १, १ ; पण्ह १, ३) । संकृ—**पणोल्ल** ; (सूअ १, ८) ।

पणोल्लण न [**प्रणोदन**] प्रेरणा ; (ठा ८ ; उप पृ ३४१) ।

पणोल्लय वि [**प्रणोदक**] प्रेरक ; (आचा) ।

पणोल्लि वि [**प्रणोदिन्**] १ प्रेरणा करने वाला ; २ पुं. प्राजन दण्ड, बैल इत्यादि हाँकने की लकड़ी; (पण्ह १, ३—पत्र ५४) ।

पणोल्लिअ वि [**प्रणोदित**] प्रेरित ; (औप ; पि २४४) ।

पण्ण वि [**प्रज्ञ**] जानकार, दक्ष, निपुण ; (उत्त १, ८ ; सूअ १, ६) ।

पण्ण वि [**प्राज्ञ**] १ प्रज्ञा वाला, बुद्धिमान्, दक्ष ; (हे १, ५६ ; उप ६२३) । २ वि. प्राज्ञ-संबन्धी ; (सूअ २, १) ।

पण्ण न [**पर्ण**] पत्र, पत्ती ; (कुमा) ।

पण्ण देखो **पणिअ**=पण्य, (नाट) ।

पण्ण स्त्रीन [दे] पचास, ५० । स्त्री—°**ण्णा** ; (षड्) ।

पण्ण देखो **पंच, पण** ; (पि २७३ ; ४४० , ४४५) । °**रस** त्रि. ब. [°दशन्] पनरह, १५ , (सम २६ ; उवा) । °**रसम** वि [°दश] पनरहवाँ ; (उवा) °**रसी** स्त्री [°दशी] १ पनरहवीं ; २ तिथि-विशेष ; (पि २७३ ; कप्प) । °**रह** देखो °**रस** ; (प्राप्र) । °**रह** वि [°दश] पनरहवाँ, १५ वाँ ; (प्राप्र) । देखो **पन्न**=पञ्च ।

पण्ण वि [**पार्ण**] पर्ण-संबन्धी, पत्ती से संबन्ध रखने वाला ; (राज) ।

पण्ण° देखो **पण्णा**° । °**व** वि [°वत्] प्रज्ञा वाला, प्राज्ञ , (उप ६१२ टी) ।

पण्णई स्त्री [**पन्नगी**] भगवान् धर्मनाथ की शासन-देवी , (पव २७) ।

पण्णग पुं [**पन्नग**] सर्प, साँप , (उप ७२८ टी) । °**ासन** पु [°ाशन] गरुड पक्षी ; (पिंग) । देखो **पन्नय** ।

पण्णग वि [दे. **पन्नक**] दुर्गन्धी । °**तिल** पु [°**तिल**] दुर्गन्धी तिल ; (राज) ।

पण्णट्ठि स्त्री [**पञ्चषष्टि**] पैंसठ, साठ और पाँच, ६५, (कप्प)।

पण्णत्त वि [**प्रज्ञप्त**] निरूपित, उपदिष्ट, कथित , (औप; उवा ; ठा ३, १ ; ४, १ ; २ ; विपा १, १ , प्रासू १२१)। २ प्रणीत, रचित ; (आवम ; चंद २० ; भग ११, ११ ; औप) ।

पण्णत्ति स्त्री [**प्रज्ञप्ति**] १ विद्यादेवी-विशेष ; (ज १) । २ जैन आगम-ग्रन्थ विशेष, सूर्यप्रज्ञप्ति आदि उपाग-ग्रन्थ, (ठा ३, १; ४, १)। ३ विद्या-विशेष; (आचू १)। ४ प्ररूपण, प्रतिपादन , (उवा , वव ३) । °**खेवणी** स्त्री [°**क्षेपणी**] कथा का एक भेद ; (ठा ४, २) । °**पक्खेवणी** स्त्री [°**प्रक्षेपणी**] कथा का एक भेद , (राज) ।

पण्णपण्णिय पुं [**पण्णपर्णि**] व्यन्तर देवों की एक जाति, (इक) ।

पण्णय देखो **पण्णग** , (से ४, ४) ।

पण्णव सक [**प्र+ज्ञापय्**] प्ररूपण करना, उपदेश करना, प्रतिपादन करना । पण्णवेइ, पण्णवेंति , (उवा , भग) । वकृ—**पण्णवयंत, पण्णवेमाण** ; (भग , पि ५५१) । कृ—**पण्णवणिज्ज**; (द्र ७) ।

पण्णवग वि [**प्रज्ञापक**] प्ररूपक, प्रतिपादक ; (विसे ५४६) ।

पण्णवण न [**प्रज्ञापन**] १ प्ररूपण, प्रतिपादन ; २ शास्त्र, सिद्धान्त , (विसे ८६४) ।

पण्णवणा स्त्री [**प्रज्ञापना**] १ प्ररूपणा, प्रतिपादन ; (णाया १, ६ ; उवा) । २ एक जैन आगम-ग्रन्थ, प्रज्ञापना सूत्र , (भग) ।

पण्णवणिज्ज देखो **पण्णव** ।

पण्णवणी स्त्री [**प्रज्ञापनी**] भाषा-विशेष, अर्थ-बोधक भाषा ; (भग १०, ३) ।

पण्णवण्ण स्त्रीन [दे. **पञ्चपञ्चाशत्**] पचपन, पचास और पाँच ; (दे ६, २७ , षड्) ।

पण्णवय देखो **पण्णवग** , (विसे ५४७) ।

पण्णवयंत देखो **पण्णव** ।

पण्णविय वि [**प्रज्ञापित**] प्रतिपादित, प्ररूपित ; (अणु ; उत्त २६) ।

पण्णवेत्तु वि [**प्रज्ञापयितृ**] प्रतिपादक, प्ररूपण करने वाला ; (ठा ७) ।

पण्णवेमाण देखो **पण्णव** ।

पण्णा सक [**प्र+ज्ञा**] १ प्रकर्ष से जानना । २ अच्छी तरह जानना । कर्म—पण्णायंति , (भग) ।

पण्णा देखो **पण्ण**(दे) ।

पण्णा स्त्री [**प्रज्ञा**] १ बुद्धि, मति ; (उप १५४ ; ७२८ टी ; निचू १) । २ ज्ञान ; (सूअ १, १२) । °**परिसह, °परीसह** पु [°**परिषह, °परीषह**] १ बुद्धि का गर्व न करना ; २ बुद्धि के अभाव में खेद न करना ; (भग ८, ८ ; पव ८६) । °**मय** पु [°**मद**] बुद्धि का अभिमान ; (सूअ १, १३) । °**वंत** वि [°**वत्**] ज्ञानवान् ; (राज) ।

पण्णाड देखो **पन्नाड** । पण्णाडइ , (दे ६, २६) ।

पण्णाण न [**प्रज्ञान**] १ प्रकृष्ट ज्ञान ; २ सम्यग् ज्ञान , (सम ५१) । ३ आगम, शास्त्र ; (आचा) । °**व** वि [°**वत्**] १ ज्ञानवान् ; २ शास्त्र-ज्ञ ; (आचा) ।

पण्णाराह (अप) त्रि. ब [**पञ्चदशन्**] पनरह ; (पिंग)।

पण्णावीसा स्त्री [**पञ्चविंशति**] पचीस, बीस और पाँच ; (षड्) ।

पण्णास स्त्रीन [**दे. पञ्चाशत्**] पचास, ५० ; (दे ६, २७ , षड् , पि २७३ , ४४५ ; कुमा) । देखो **पन्नास** ।

पण्णुवीस देखो **पणुवीस** ; (स १४६) ।

पण्ह पुंस्त्री [**प्रश्न**] प्रश्न, पृच्छा ; (हे १, ३५ ; कुमा)। स्त्री— °**ण्हा** ; (हे १, ३५)। °**वाहण** न [°**वाहन**] जैन मुनि-गण का एक कुल ; (ती ३८)। °**वागरण** न [°**व्याकरण**] ग्यारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ ; (पगह २, ५ ; ठा १० ; विपा १, १ ; सम १)। देखो **पसिण**।

पण्हअ अक [**प्र+स्नु**] झरना, टपकना। "एक्को पगहअइ थणो" (गा ४०६ ; ४६२ अ)।

पण्हअ } पुं [**दे. प्रस्नव**] १ स्तन-धारा, स्तन से दूध का **पण्हव** } झरना ; (दे ६, ३ ; पि २३१ ; राज ; अंत ७ ; षड्)। २ झरन, टपकना ; "दिट्ठिपगहव—" (पिंड ४८७)।

पण्हव पु [**पह्नव**] १ अनार्य देश-विशेष ; २ वि. उस देश का निवासी ; (पगह १, १—पत्र १४)।

पण्हवण न [**प्रस्नवन**] चरण, झरना , (विपा १, २)।

पण्हविअ देखो **पण्हुअ** ; (दे ६, २५)।

पण्हा देखो **पण्ह**।

पण्हि पुंस्त्री [**पार्ष्णि**] फीली का अधोभाग, गुल्फ का नीचला हिस्सा , (पगह १, ३ , दे ७, ६२)।

पण्हिया स्त्री [**प्रश्निका**] एडी, गुल्फ का अधोभाग ; "मेलितु पगिहयाओ चरणे वित्थारिऊण बाहिरओ" (चेइय ४८६)।

पण्हुअ वि [**प्रस्नुत**] १ क्षरित, झरा हुआ ; २ जिसने झरने का प्रारम्भ किया हो वह ; "पगहुयपयोहराओ" (पउम ७६, २० ; हे २, ७५)।

पण्हुइर वि [**प्रस्नोतृ**] झरने वाला ;

"हत्थप्फंसेण जरग्गवीवि पगहअइ दोहअगुणेण।
अवलोअणपगहुइरिं पुत्तअ पुगणेहिं पाविहिसि" (गा ४६२)।

पण्होत्तर न [**प्रश्नोत्तर**] सवाल-जवाब ; (सुर १६, ४१ ; कप्पू)।

पतणु देखो **पयणु** , (राज)।

पतार सक [**प्र+तारय्**] ठगना। संकृ—**पतारिअ** , (अभि १७१)।

पतारग वि [**प्रतारक**] वञ्चक, ठग , (धर्मसं १४७)।

पतिण्ण } वि [**प्रतीर्ण**] पार पहुँचा हुआ, निस्तीर्ण ; **पतिन्न** } (राज ; पगह २, १—पत्र ६६)।

पतुण्ण } न [**प्रतुन्न**] वल्कल का बना हुआ वस्त्र ; (आ **पतुन्न** } चा २, ५, १, ६)।

पतेरस } वि [**प्रत्रयोदश**] प्रकृष्ट तेरहवाँ। °**वास** न [°**व**-**पतेलस** } **र्ष**] १ प्रकृष्ट तेरहवाँ वर्ष ; २ प्रकृत तेरहवाँ वर्ष , ३ प्रस्थित तेरहवाँ वर्ष; (आचा)।

पत्त वि [**प्राप्त**] मिला हुआ, पाया हुआ ; (कप्प ; सुर ४, ७० ; सुपा ३५७ ; जी ४४ ; दं ४६ ; प्रासू ३१ ; १६२ ; १८२; गा २४१)। °**काल**, °**याल** न [°**काल**] १ चैत्य-विशेष ; (राज)। २ वि. अवसरोचित; (स ४६०)।

पत्त न [**पत्र**] १ पत्ती, दल, पर्ण ; (कप्प ; सुर १, ७२ ; जी १० ; प्रासू ६२)। २ पक्ष, पंख पाँख; (गाया १, १—पत्र २४)। ३ जिस पर लिखा जाता है वह, कागज, पन्ना ; (स ६२ ; सुर १, ७२ ; हे २, १७३)। °**च्छेज्ज** न [°**च्छेद्य**] कला-विशेष ; (औप , स ६५)। °**मंत** वि [°**वत्**] पत्र वाला ; (गाया १, १)। °**रह** पुं [°**रथ**] पक्षी ; (पाअ)। °**लेहा** स्त्री [°**लेखा**] चन्दनादि से पत्र के आकृति वाली रचना-विशेष, भूषा का एक प्रकार ; (अजि २८)। °**वल्ली** स्त्री [°**वल्ली**] १ पत्र वाली लता ; २ मुँह पर चन्दन आदि से की जाती पत्र-श्रेणी-तुल्य रचना ; (कुप्र ३६५)। °**विंट** न [°**वृन्त**] पत्र का बन्धन , (पि ५३)। °**विंटिय** वि [°**वृन्तक**, °**वृन्तीय**] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष, पत्र-वृन्त में उत्पन्न होता एक प्रकार का त्रीन्द्रिय जन्तु , (पगण १—पत्र ४५)। °**विच्छुय** पु [°**वृश्चिक**] जीव-विशेष, एक तरह का वृश्चिक, चतुरिन्द्रिय जीवों की एक जाति ; (जीव १)। °**वेंट** देखो °**विंट** ; (पि ५३)। °**सगडिआ** स्त्री [°**शकटिका**] पत्तों से भरी हुई गाड़ी ; (भग)। °**समिद्ध** वि [°**समृद्ध**] प्रभूत पत्ती वाला ; (पाअ)। °**हार** पु [°**हार**] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष , (पगण १—पत्र ४५ , उत्त ३६, १३८)। °**ाहार** पुं [°**ाहार**] पत्ती पर निर्वाह करने वाला वानप्रस्थ ; (औप)।

पत्त न [**पात्र**] १ भाजन ; (कुमा ; प्रासू ३६)। २ आधार, आश्रय, स्थान ; (कुमा)। ३ दान देने योग्य गुणी लोक; (उप ६४८ टी ; महा)। ४ लगातार बत्तीस उपवास ; (संबोध ५८)। °**ाबंध** पुं [°**वन्ध**] पात्रों को बाँधने का कपड़ा ; (ओघ ६६८)। देखो **पाय**=पात्र।

पत्त वि [**प्रात्त**] प्रसारित ; (कप्प)।

पत्तइअ वि [**प्रत्ययित**] विश्वस्त ; (भग)।

पत्तइअ वि [**पत्रकित**] १ अल्प पत्र वाला ; २ कुत्सित पत्र वाला, (गाया १, ७—पत्र ११६)।

पत्तउर पुं [**दे**] वनस्पति-विशेष, एक जात का गाछ ; (पगण १—पत्र ३१)।

पत्तट्ठ वि [**दे. प्राप्तार्थ**] १ बहु-शिक्षित, विद्वान्, अति कुशल ; (दे ६, ६८ ; सुर १, ८१ ; सुपा १२६ ; भग १४, १ ; पाअ) । २ समर्थ ; (जीवस २८५) ।

पत्तट्ठ वि [**दे**] सुन्दर, मनोहर ; (दे ६, ६८) ।

पत्तण देखो **पट्टण** ; (राज) ।

पत्तण न [**दे. पत्त्रण**] १ इषु-फलक, बाण का फल ; २ पुंख, बाण का मूल भाग ; (दे ६, ६४ , गा १०००) ।

पत्तणा स्त्री [**दे.पत्त्रणा**] १—२ ऊपर देखो , (गउड ; से १५, ७३) । ३ पुंख में की जाती रचना-विशेष ; (से ७, ५२) ।

पत्तणा स्त्री [**प्रापणा**] प्राप्ति ; (पंचू ४) ।

पत्तपसाइआ स्त्री [**दे**] पत्तिओ की एक तरह की पगड़ी, जिसे भील लोग पहनते हैं ; (दे ६, २) ।

पत्तपिसालस न [**दे**] ऊपर देखो , (दे ६, २) ।

पत्तय न [**पत्रक**] एक प्रकार का गेय ; (ठा ४, ४) ।

पत्तय देखो **पत्त** ; (महा) ।

पत्तरक न [**दे. प्रतरक**] आभूषण-विशेष ; (पगह २, ५—पत्र १४६) ।

पत्तल वि [**दे**] १ तीक्ष्ण, तेज ; (दे ६, १४),
"नयणाइं समाणियपत्तलाइं परपुरिसजीवहरणाइं ।
असियसियाइं व मुद्धे खग्गा इव कं न मारंति ?"
(वज्जा ६०) । २ पतला, कृश ; (दे ६, १४; वज्जा ४६) ।

पत्तल वि [**पत्रल**] १ पत्र-समृद्ध, बहुत पत्ती वाला , (पाअ ; से १, ६२ ; गा ५३२ ; ६३५ ; दे ६, १४) । २ पद्म वाला ; (औप ; जं २) ।

पत्तल न [**पत्र**] पत्ती, पर्ण ; (हे २, १७३ ; प्रामा ; सण; हे ४, ३८७) ।

पत्तलण न [**पत्रलन**] पत्र-समृद्ध होना, पत्र-बहुल होना ; "वाउलिआपरिसोसणकुडंगपत्तलणसुलहसंकेअ" (गा ६२६) ।

पत्तली स्त्री [**दे**] कर-विशेष, एक प्रकार का राज-देय ; "गिराहह तद्देसपत्तलि झत्ति" (सुपा ४६३) ।

पत्ताण सक [**दे**] पताना, मिटाना । "पुच्छउ अन्नु कोवि जो जाणइ सो तुम्हह विवाउ पत्ताणइ " (भवि), पत्ताणहि ; (भवि) ।

पत्तामोड पुंन [**आमोटपत्र**] तोडा हुआ पत्र ; " दब्भे य कुसे य पत्तामोडं च गेगहइ " (अंत ११) ।

पत्ति स्त्री [**प्राप्ति**] लाभ ; (दे १, ४२ ; उप २२६ ; चेइय ८६४) ।

पत्ति पुं [**पत्ति**] १ सेना-विशेष जिसमें एक रथ, एक हाथी, तीन घोड़े और पाँच पैदल हों ; २ पैदल चलने वाली सेना ; (उप ७२८ टी) ।

पत्ति) सक [**प्रति+इ**] १ जानना । २ विश्वास कर-
पत्तिअ) ना । ३ आश्रय करना । पत्तिअइ, पत्तियंति, पत्तिअसि, पत्तिआमि ; (से १३, ४४ ; पि ४८७ ; से ११, ६० ; भग) । पत्तिएज्जा, पत्तिअ, पत्तिहि, पत्तिसु ; (राय ; गा २१६ ; ६६६ ; पि ४८७) । वकृ—**पत्तिअंत, पत्तियमाण** ; (गा २१६, ६७८; आचा २, २, २, १०) । संकृ—**पडियच्च, पत्तियाइत्ता** ; (सूअ १, ६, २७; उत्त २६, १) ।

पत्तिअ वि [**पत्रित**] संजात-पत्र, जिसमें पत्र उत्पन्न हुऐ हो वह ; (णाया १, ७ , ११—पत्र १७१) ।

पत्तिअ वि [**प्रतीति, प्रत्ययित**] प्रतीति वाला, विश्वस्त ; (ठा ६—पत्र ३५५ ; कप्प ; कस) ।

पत्तिअ न [**प्रीतिक**] प्रीति, स्नेह ; (ठा ४, ३ ; ठा ६—पत्र ३५५) ।

पत्तिअ पुंन [**प्रत्यय**] प्रत्यय, विश्वास ; (ठा ४, ३—पत्र २३५ ; धर्म २) ।

पत्तिअ न [**पत्रिक**] मरकत-पत्र ; (कप्प) ।

पत्तिआ स्त्री [**पत्रिका**] पत्र, पर्ण, पत्ती ; (कुमा) ।

पत्तिआअ देखो **पत्तिअ=**प्रति+**इ** । पत्तिआअइ ; (प्राकृ ७५), पत्तिआअंति; (पि ४८७) ।

पत्तिआव सक [**प्रति+आयय्**] विश्वास कराना, प्रतीति कराना । पत्तिआवेइ; (भास २३) ।

पत्तिग देखो **पत्तिअ=**प्रीतिक ; (पंचा ७, १०) ।

पत्तिज्ज देखो **पत्तिअ=**प्रति+**इ** । पत्तिज्जसि, पत्तिज्जामि; (पि ४८७) ।

पत्तिज्जाव देखो **पत्तिआव** । पत्तिज्जावइ ; (सुपा ३०२), पत्तिज्जावेमि ; (धर्मवि १३४) ।

पत्तिसमिद्ध वि [**दे**] तीक्ष्ण ; (दे ६, १४) ।

पत्ती स्त्री [**दे**] पत्तो की बनी हुई एक तरह की पगड़ी जिसे भील लोग सिर पर पहनते है ; (दे ६, २) ।

पत्ती स्त्री [**पत्नी**] स्त्री, भार्या; (उप पृ १६३ ; औप ६६ ; महा ; पाअ) ।

पत्ती स्त्री [**पात्री**] भाजन, पात्र., (उप ६२२ , महा , धर्मवि १२६) ।

पत्तुं देखो **पाव**=प्र+आप् ।

पत्तुवगद (शौ) वि [**प्रत्युपगत**] १ सामने गया हुआ , २ वापिस गया हुआ ; (नाट—विक्र २३) ।

पत्तेअ } न [**प्रत्येक**] १ हरएक, एक एक ; (हे २, **पत्तेग** } १० ; कुमा ; निचू १ ; पि ३४६) । २ एक की तरफ, एक के सामने ; "पत्तेयं पत्तेयं वणसंडपरिक्खित्ताओ" (जीव ३) । ३ न कर्म-विशेष जिसके उदय से एक जीव का एक अलग शरीर होता है ; "पत्तेयतणु पत्ते-उदएणं" (कम्म १, ५०) । ४ पृथग् पृथग्, अलग अलग; (कम्म १, ५०) । ५ पुं. वह जीव जिसका शरीर अलग हो, एक स्वतंत्र शरीर वाला जीव; "साहारणपत्तेआ वणस्सइ-जीवा दुहा सुए भणिया" (जी ८) । °**णाम** न [°**नामन्**] देखो ऊपर का ३रा अर्थ ; (राज) । °**निगोयय** पु [°**निगोदक**] जीव-विशेष ; (कम्म ४, ८२) । °**बुद्ध** पु [°**बुद्ध**] अनित्यतादि भावना के कारणभूत किसी एक वस्तु से परमार्थ का ज्ञान जिसको उत्पन्न हुआ हो ऐसा जैन मुनि ; (महा; नव ४३) । °**बुद्धसिद्ध** पुं [°**बुद्ध-सिद्ध**] प्रत्येकबुद्ध होकर मुक्ति को प्राप्त जीव ; (धर्म २) । °**रस** वि [°**रस**] विभिन्न रस वाला ; (ठा ४, ४,) । °**सरीर** वि [°**शरीर**] १ विभिन्न शरीर वाला ; "पत्तेयसरीराणं तह होंति सरीरसंघाया" (पंच ३) । २ न. कर्म-विशेष जिसके उदय से एक जीव का एक विभिन्न शरीर होता है ; (पण्ह १, १) । °**सरीरनाम** न [°**शरीरनामन्**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (सम ६७) ।

पत्थ सक [**प्र+अर्थय्**] १ प्रार्थना करना । २ अभिलाषा करना । ३ अटकाना, रोकना । पत्थेइ, पत्थेंति ; (उव ; औप) । कर्म—पत्थिज्जसि ; (महा) । वकृ—**पत्थंत, पत्थिंत, पत्थेअमाण** ; (नाट—मालवि २५ ; सुपा २१३ ; प्रासू १२०), "कामे **पत्थेमाणा** अकामा जंति दुग्गइं" (उप ३५७ टी) । कवकृ—**पत्थिज्जंत, पत्थिज्जमाण** ; (गा ४०० ; सुर १, २० ; से ३, ३३ ; कप्प) । कृ—**पत्थ, पत्थणिज्ज, पत्थेयव्व** ; (सुपा ३७० ; सुर १, ११६ ; सुपा १४८ ; पण्ह २, ४) ।

पत्थ पुं [**पार्थ**] १ अर्जुन, मध्यम पाण्डव ; (स ६१२ ; वेणी १२६ : कुमा) । २ पाञ्चाल देश के एक राजा का नाम ; (पउम ३७, ८) । ३ भद्दिलपुर नगर का एक राजा ; (सुपा ६२६) ।

पत्थ पु [**प्रार्थ**] १ प्रार्थन, प्रार्थना ; (गय) । २ दो दिन का उपवास , (संबोध ५८) ।

पत्थ देखो **पच्छ**=पथ्य ; (गा ८१४ . पउम १७, ६४ ; राज) ।

पत्थ देखो **पत्थ**=प्र+अर्थय् ।

पत्थ पु [**प्रस्थ**] १ कुडव का एक परिमाण, (बृह ३; जीवस ८८ ; तदु २६) । २ सेतिका, एक कुडव का परिमाण ; (उप पृ ६६), "पत्थगा उ जं पुरा आसी हीणमाणा उ तेधुणा" (वव १) ।

पत्थंत देखो **पत्थ**=प्र+अर्थय् ।

पत्थंत देखो **पत्था** ।

पत्थग देखो **पत्थय** ; (राज) ।

पत्थड पु [**प्रस्तर**] १ रचना-विशेष वाला समूह ; (ठा ३, ४,—पत्र १७६) । २ भवनों के बीच का अन्त-राल भाग ; (पण्ण २, सम २५) ।

पत्थड वि [**प्रस्तृत**] १ बिछाया हुआ ; २ फैला हुआ ; (भग ६, ८) ।

पत्थण न [**प्रार्थन**] प्रार्थना , (महा ; भवि) ।

पत्थणाया } स्त्री [**प्रार्थना**] १ अभिलाषा, वाञ्छा; **पत्थणा** } (आव ४) । २ याचना, माँग ; ३ विज्ञप्ति, निवेदन ; (भग १२, ५ ; सुर १, २ ; सुपा २६६ ; प्रासू २१) ।

पत्थय देखो **पत्थ** = पथ्य ; (णाया १, १) ।

पत्थय वि [**प्रार्थक**] अभिलाषा करने वाला ; (सूअ १, १, २, १६ ; म २५३) ।

पत्थय देखो **पत्थ**=प्रस्थ; (उप १७६ टी; औप) ।

पत्थयण न [**पथ्यदन**] शम्बल, पाथेय, मार्ग में खाने का खुराक ; (णाया १, १५ ; स १३० ; उर ८, ७ ; सुपा ६२४) ।

पत्थर सक [**प्र+स्तृ**] १ बिछाना । २ फैलाना । संकृ—पत्थरेत्ता ; (कस; ठा ६) ।

पत्थर पुं [**प्रस्तर**] पत्थर, पाषाण ; (औप ; उव ; पउम १७, २६ ; सिरि ३३२),

"पत्थरेणाहओ कीवो पत्थरं डक्कुमिच्छई ।
मिगारिओ सरं पप्प सरुप्पत्तिं विमग्गई" (सुर ६, २०७) ।

पत्थर न [**दे**] पाद-ताडन, लात ; (षड्) ।

पत्थर देखो **पत्थार** ; (प्राप्र ; संक्षि २)।
पत्थरण न [**प्रस्तरण**] बिछौना ; "खट्टापत्थरणयं तहा एगं" (धर्मवि १४७)।
पत्थरभल्लिअ न [**दे**] कोलाहल करना ; (दे ६, ३६)।
पत्थरा स्त्री [**दे**] चरण-घात, लात ; (दे ६, ८)।
पत्थरिअ पुं [**दे**] पल्लव ; (दे ६, २०)।
पत्थरिअ वि [**प्रस्तृत**] बिछाया हुआ ; "पत्थरिअं अत्थुअं" (पाअ)।
पत्थव देखो **पत्थाव** ; (हे १, ६८ ; कुमा ; पउम ५, २१६)।
पत्था अक [**प्र+स्था**] प्रस्थान करना, प्रवास करना। वकृ—**पत्थंत** ; (से ३, ५७)।
पत्थाण न [**प्रस्थान**] प्रयाण, गमन ; (अभि ८१ ; अजि ६)।
पत्थार पुं [**प्रस्तार**] १ विस्तार ; (उवर ६६)। २ तृण-वन ; ३ पल्लवादि-निर्मित शय्या ; ४ पिंगल-प्रसिद्ध प्रक्रिया-विशेष ; (प्राप्र)। ५ प्रायश्चित्त की रचना-विशेष ; (ठा ६—पत्र ३७१ ; कस)। ६ विनाश ; (पिंड ५०१ ; ५११)।
पत्थारी स्त्री [**दे**] १ निकर, समूह ; (दे ६, ६६)। २ शय्या, बिछौना, गुजराती में 'पथारी' ; (दे ६, ६६ ; पाअ ; सुपा ३२०)।
पत्थाव सक [**प्र+स्तावय्**] प्रारंभ करना। वकृ—**पत्था-वअंत** ; (हास्य १२२)।
पत्थाव पुं [**प्रस्ताव**] १ अवसर, २ प्रसङ्ग, प्रकरण ; (हे १, ६८ ; कुमा)।
पत्थिअ वि [**प्रस्थित**] १ जिसने प्रयाण किया हो वह; (से २, १६ ; सुर ४, १६८)। २ न. प्रस्थान, गति, चाल ; (अजि ६)।
पत्थिअ वि [**प्रार्थित**] १ जिसके पास प्रार्थना की गई हो वह ; २ जिस चीज की प्रार्थना की गई हो वह ; (भग ; सुर ६, १८ ; १६, ६ ; उव)।
पत्थिअ वि [**दे**] शीघ्र, जल्दी करने वाला ; (दे ६, १०)।
पत्थिअ वि [**प्रार्थिक**] प्रार्थी, प्रार्थना करने वाला ; (उव)।
पत्थिअ वि [**प्रास्थित**] विशेष आस्था वाला, प्रकृष्ट श्रद्धा वाला ; (उव)।
पत्थिअ° } स्त्री [**दे**] बाँस का बना हुआ भाजन-विशेष ;
पत्थिआ } (ओघ ४७६)। **°पिडग, °पिडय** न [**°पि-टक**] बाँस का बना हुआ भाजन-विशेष ; (विपा १,३)।
पत्थिद देखो **पत्थिअ**=प्रस्थित, प्रार्थित ; (प्राकृ २५)।
पत्थिव पुं [**पार्थिव**] १ राजा, नरेश ,(गाया १, १६ ; पाअ)। २ वि. पृथिवी का विकार ; (राज)।
पत्थी स्त्री [**दे. पात्री**] पात्र, भाजन ; "अंधकरवोरपत्थिं व माउआ मह पई विलुपंति" (गा २४० अ)।
पत्थीण न [**दे**] १ स्थूल वस्त्र, मोटा कपड़ा ; २ वि. स्थूल, मोटा ; (दे ६, ११)।
पत्थुय वि [**प्रस्तुत**] १ प्रकरण-प्राप्त, प्राकरणिक, (सुर ३, १६६ ; महा.)। २ प्राप्त, लब्ध ; (सूअ १,४, १,१७)।
पत्थुर देखो **पत्थर**=प्र+स्तृ। संकृ—**पत्थुरेत्ता** ; (कस)।
पत्थेअमाण
पत्थेंत } देखो **पत्थ**=प्र+अर्थय्।
पत्थेमाण
पत्थेयव्व
पत्थोउ वि [**प्रस्तोतृ**] १ प्रस्ताव करने वाला ; २ प्रवर्तक। स्त्री—**°त्थोई** ; (पगह १, ३—पत्र ४२)।
पथम (पै) देखो **पढम** ; (पि १६०)।
पद देखो **पय**=पद ; (भग ; स्वप्न १५ ; हे ४, २७० ; पगह २, १ ; नाट—शकु ८१)।
पदअ सक [**गम्**] जाना, गमन करना। पदअइ ; (हे ४, १६२)। पदअंति ; (कुमा)।
पदंसिअ वि [**प्रदर्शित**] दिखलाया हुआ , बतलाया हुआ ; (श्रा ३०)।
पदक्खिण वि [**प्रदक्षिण**] १ जिसने दक्षिण की तरफ से लेकर मण्डलाकार भ्रमण किया हो वह ; २ न. दक्षिणावर्त्त भ्रमण ; "पदक्खिणीकरअंतो भट्टारं" (प्रयौ ३५)। देखो **पदाहिण**।
पदक्खिण सक [**प्रदक्षिणय्**] प्रदक्षिणा करना, दक्षिण से लेकर मण्डलाकार भ्रमण करना। हेकृ—**पदक्खिणेउं** ; (पउम ४८, १११)।
पदक्खिणा स्त्री [**प्रदक्षिणा**] दक्षिण की ओर से मण्डलाकार भ्रमण ; (नाट—चैत ३८)।
पदण न [**पदन**] प्रत्यायन, प्रतीति कराना ; (उप ८८३)।
पदण (शौ) न [**पतन**] गिरना ; (नाट—मालती ३७)।
पदम (शौ) देखो **पउम** ; (नाट—मृच्छ १३६)।
पदय देखो **पयय**=पदग, पदक, पतग, पतंग ; (इक)।
पदरिसिय देखो **पदंसिअ** ; (भवि)।
पदहण न [**प्रदहन**] संताप, गरमी ; (कुमा)।
पदाइ वि [**प्रदायिन्**] देने वाला ; (नाट—विक्र ८)।
पदाण [**प्रदान**] दान, वितरण ; (औप ; अभि ४५)।

पदादि (शौ) पुं [**पदाति**] पैदल चलने वाला सैनिक, (प्रयौ १७ ; नाट—वेणी ६१)।

पदायग वि [**प्रदायक**] देने वाला ; (विसे ३२००)।

पदाव देखो **पयाव** ; (गा ३२६)।

पदाहिण वि [**प्रदक्षिण**] प्रकृष्ट दक्षिण, प्रकर्ष से दक्षिण दिशा में स्थित ; (जीव ३)। देखो **पदक्खिण**।

पदिकिदि (शौ) देखो **पडिकिदि**, (मा १० , नाट—विक २१)।

पदित्त देखो **पलित्त** ; (राज)।

पदिस° स्त्री [**प्रदिश्**] विदिशा, ईशान आदि कोण ; "तसंति पाणा पदिसो दिसासु य" (आचा)।

पदिस्सा देखो **पदेक्ख**।

पदीव सक [**प्र+दीपय्**] १ जलाना। २ प्रकाश करना। पदीवेसि ; (पि २४४)। वकृ—**पदीवेंत** ; (पउम १०२, १०)।

पदीव देखो **पईव**=प्रदीप ; (नाट—मृच्छ ३०)।

पदीविआ स्त्री [**प्रदीपिका**] छोटा दिया ; (नाट—मृच्छ ५१)।

पदुट्ठ वि [**प्रद्विष्ट, प्रदुष्ट**] विशेष द्वेष को प्राप्त; (उत्त ३२ ; बृह ३)।

पदुब्भेइय न [**पदोद्भेदक**] पद-विभाग और शब्दार्थ मात्र का पारायण ; (राज)।

पदूमिय वि [**प्रदावित, प्रदून**] अत्यन्त पीड़ित; (बृह ३)।

पदूस सक [**प्र+द्विष्**] द्वेष करना। पदूसंति ; (पंचा २, ३५)।

पदूसणया स्त्री [**प्रद्वेषणा, प्रदूषणा**] द्वेष, मात्सर्य ; (उप ४८६)।

पदेक्ख सक [**प्र+दृश्**] प्रकर्ष से देखना। पदेक्खइ ; (भवि)। संकृ—"**पदिस्सा** य दिस्सा वयमाणा" (भग १८,८ ; पि ३३४)।

पदेस देखो **पएस**=प्रदेश ; (भग)।

पदेस पुं [**प्रद्वेष**] द्वेष ; (धर्मसं ६७)।

पदेसिअ वि [**प्रदेशित**] प्ररूपित, प्रतिपादित ; (आचा)।

पदोस देखो **पओस**=दे. प्रद्वेष ; (अंत १३ ; निचू १)।

पदोस देखो **पओस**=प्रदोष ; (राज)।

पद्द न [**दे**] १ ग्राम-स्थान ; (दे ६, १)। २ छोटा गाँव; (पाअ)।

पद्द न [**पद्य**] श्लोक, वृत्त, काव्य ; (प्राकृ २१)।

पद्देस देखो **पदेस**=प्रद्वेष ; (सूअ १, १६, ३)।

पद्धइ स्त्री [**पद्धति**] १ मार्ग, रास्ता ; (सुपा १८६)। २ पङ्क्ति, श्रेणी; (ठा २, ४)। ३ परिपाटी, क्रम, (आवम)। ४ प्रक्रिया, प्रकरण , (वज्जा २)।

पद्धंस पुं [**प्रध्वंस**] ध्वंस, नाश। **°ाभाव** पुं [**°ाभाव**] अभाव-विशेष, वस्तु के नाश होने पर उसका जो अभाव होता है वह : (विसे १८३७)।

पद्धर वि [**दे**] ऋजु, सरल, सीधा , (दे ६, १०)। २ शीघ्र ; गुजराती में 'पाधरु' ; "पद्धरपएहिं सुहडे पचारेइ" (सिरि ४३५)।

पद्धल वि [**दे**] दोनों पार्श्वों में अ-प्रवृत्त ; (षड्)।

पद्धार वि [**दे**] जिसका पूँछ कट गया हो वह, पूँछ-कटा ; (दे ६, १३)।

पधाइय देखो **पधाविय** ; (भवि)।

पधाण देखो **पहाण** ; (नाट—मृच्छ २०५)।

पधार देखो **पहार**=प्र+धारय्। भूका —पधारेत्थ ; (औप ; गाया १, २—पत्र ८८)

पधाव सक [**प्र+धाव्**] दौड़ना, अधिक वेग से जाना। संकृ—**पधाविअ** ; (नाट)।

पधावण न [**प्रधावन**] १ दौड़, वेग से गमन ; २ कार्य की शीघ्र सिद्धि ; (श्रा १)। ३ प्रचालन; (धर्मसं १०७८)।

पधाविअ वि [**प्रधावित**] १ दौड़ा हुआ ; (महा ; पण्ह १, ४)। २ गति-रहित ; (राज)।

पधाविर वि [**प्रधावितृ**] दौड़ने वाला ; (श्रा २८)।

पधूवण न [**प्रधूपन**] १ धूप देना। २ एक प्रकार का आलेपन द्रव्य ; (कस)।

पधूविय वि [**प्रधूपित**] जिसको धूप दिया गया हो वह ; (राज)।

पधोअ सक [**प्र+धाव्**] धोना। संकृ—**पधोइत्ता** ; (आचा २, १, ६, ३)।

पधोअ वि [**प्रधौत**] धोया हुआ ; (औप)।

पधोव सक [**प्र+धाव्**] धोना। पधोवेंति ; (पि ४८२)।

पन देखो **पंच**। **°र**, **°रस** त्रि. ब. [**°दशन्**] पनरह, दस और पाँच, १५ ; (कम्म १ ; ४, ५२ ; ६८ ; जी २५)।

पनय (पै. चूपै) देखो **पणय**=प्रणय ; (हे ४, ३२६)।

पन्न देखो **पण्ण**=पर्ण ; (सुपा ३३६ ; कुप्र ४०८)।

पन्न देखो **पण्ण**=दे ; (भग ; कम्म ४, ५४)।

पन्न देखो **पण्ण**=प्रज्ञ ; (आचा ; कुप्र ४०८)।

पन्न वि [**प्राज्ञ**] १ पंडित, जानकार, विद्वान् ; (ठा ७; उप १५१ , धर्मसं ४५२) । २ वि प्रज्ञ-संबन्धी ; (सूत्र २, १, ५६) ।

पन्न देखो **पंच** । °**र**, °**रस** त्रि. ब. [°**दशन्**] पनरह, १५; (दं २२ , सम २६ ; भग , गण) । °**रस**, °**रसम** वि [°**दश**] पनरहवाँ, १५वाँ ; (सुर १५, २५० ; पउम १५, १००) । °**रसी** स्त्री [°**दशी**] १ पनरहवी ; २ पनरहवी तिथि ; (कप्प) ।

पन्न देखो **पणिअ** = पराय ; (उप १०३१ टी) ।

पन्नंगणा स्त्री [**पण्याङ्गना**] वेश्या, वाराङ्गना ; (उप १०३१ टी) ।

पन्नग देखो **पण्णग** = पन्नग ; (विपा १, ७ ; सुर २, २३८) ।

पन्नट्ठि देखो **पण्णट्ठि** ; (कप्प) ।

पन्नत्त देखो **पण्णत्त** ; (णाया १, १ ; भग ; सम १) ।

पन्नत्तरि स्त्री [**पञ्चसप्तति**] पचहत्तर, ७५ ; (सम ८५ ; ति ३) ।

पन्नत्ति देखो **पण्णत्ति** ; (सुपा १५३ ; संति ५ ; महा) । ५ प्रकृष्ट ज्ञान ; ६ जिससे प्ररूपणा किया जाय वह ; (तंदु ५४) । ७ पाँचवाँ अंग-ग्रन्थ, भगवतीसूत्र ; (श्रावक ३३३) ।

पन्नत्तु वि [**प्रज्ञापयितृ**] आख्याता, प्रतिपादक , (पि ३९०) ।

पन्नपत्तिया स्त्री [**प्रज्ञप्रत्यया**] देखो **पुन्नपत्तिया**; (कप्प) ।

पन्नपन्नइम देखो **पणपन्नइम** ; (पि ४४६) ।

पन्नय देखो **पण्णग** ; (पाअ) । °**रिउ** पुं [°**रिपु**] गरुड पक्षी ; (पाअ) ।

पन्नया स्त्री [**पन्नगा**] भगवान् धर्मनाथजी की शासन-देवी ; संति १०) ।

पन्नव देखो **पण्णव** । पन्नवेइ ; (उव) । कर्म— पन्नविज्जइ; (उव) । वकृ—**पन्नवयंत** ; (सम्म १३४) । संकृ—**पन्नवेऊणं** ; (पि ५८५) ।

पन्नवग वि [**प्रज्ञापक**] प्रतिपादक, प्ररूपक; (कम्म ५, ८५ टी) ।

पन्नवण देखो **पण्णवण** ; (सुपा २६६) ।

पन्नवणा देखो **पण्णवणा** ; (भग ; पराग १ ; ठा ३, ४) ।

पन्नवय देखो **पण्णवग** ; (सम्म १६) ।

पन्नवयंत देखो **पन्नव** ।

पन्ना देखो **पण्णा**=प्रज्ञा , (आचा ; ठा ४, १ ; १०) ।

पन्ना देखो **पण्णा**=दे. (पव ५०) ।

पन्नाड सक [**मृद्**] मर्दन करना । पन्नाडइ ; (हे ४, १२६) ।

पन्नाडिअ वि [**मृदित**] जिसका मर्दन किया गया हो वह ; (पाअ ; कुमा) ।

पन्नाण देखो **पण्णाण** ; (आचा ; पि ६०१) ।

पन्नारस (अप) त्रि. ब. [**पञ्चदशन्**] पनरह, १५ ; (भवि) ।

पन्नास देखो **पण्णास** ; (सम ७० ; कुमा) । स्त्री— °**सा** ; (कप्प) । °**इम** वि [°**तम**] पचासवाँ, ५० वाँ; (पउम ५०, २३) ।

पन्ह देखो **पण्ह** ; (कप्प) ।

पन्हु (अप) देखो **पण्हुअ**=दे. प्रस्नव ; (भवि) ।

पपंच देखो **पवंच** ; (सुपा २३५) ।

पपलीण वि [**प्रपलायित**] भागा हुआ ; (पि ३४६ ; ३६७ ; नाट—मृच्छ ५८) ।

पपिआमह पुं [**प्रपितामह**] १ ब्रह्मा, विधाता ; (राज) । २ पितामह का पिता ; (धर्मसं १४६) ।

पपुत्त पुं [**प्रपुत्र**] पौत्र, पुत्र का पुत्र ; (सुपा ४०७) ।

पपुत्त } पुं [**प्रपौत्र**] पौत्र का पुत्र ; पोते का पुत्र ;
पपोत्त } (विसे ८६२ ; राज) ।

पप्प सक [**प्र+आप्**] प्राप्त करना । पप्पोइ, पप्पोत्ति ; (पि ५०४ ; उत्त १४ , १४) । पप्पोदि (शौ) ; (पि ५०४) । संकृ— **पप्प** ; (पराग १७ ; ओघ ५५ ; विसे ५५१) । कृ—**पप्प** ; (विसे २६८७) ।

पप्पग न [**दे. पर्पक**] वनस्पति-विशेष ; (सूत्र २, २, ६) ।

पप्पड } पुंस्त्री [**पर्पट**] १ पापड, मूँग या उर्द की बहुत
पप्पडग } पतली एक प्रकार की रोटी; (पव ३७ ; भवि) । २ पापड़ के आकार वाला शुष्क मृत्खण्ड ; (निचू १) । °**पायय** पुं [°**पाचक**] नरकावास-विशेष; (देवेन्द्र ३०) । °**मोदय** पुं [°**मोदक**] एक प्रकार की मिष्ट वस्तु ; (पराग १७—पत्र ५३३) ।

पप्पडिया स्त्री [**पर्पटिका**] तिल आदि की बनी हुई एक प्रकार की खाद्य वस्तु ; (पराग १ ; पिंड ५५६) ।

पप्पल देखो **पप्पड** ; (नाट—विक्र २१) ।

पप्पीअ पुं [**दे**] चातक पक्षी ; (दे ६, १२) ।

पप्पुअ वि [**प्रप्लुत**] १ जलार्द्र, पानी से भीजा हुआ ; (पराह १, १ ; गाया १, ८)। २ व्याप्त ; "घयपप्पुय-वंजणाइं च" (पव ४ टी)। ३ न कूदना, लाँघना ; (गउड १२८)।

पप्पोइ } देखो **पप्प**।
पप्पोत्ति }

पप्फंदण न [**प्रस्पन्दन**] प्रचलन, फरकना ; (राज)।

पप्फाड पुं [**दे**] अग्नि-विशेष ; (दे ६, ६)।

पप्फिडिअ वि [**दे**] प्रतिफलित ; (दे ६, २२)।

पप्फुअ वि [**दे**] १ दीर्घ, लम्बा ; २ उड्डीयमान, उड़ता ; (दे ६, ६४)।

पप्फुट्ट अक [**प्र+स्फुट्**] १ खिलना ; २ फूटना। पप्फुट्टइ; (प्राकृ ७४)।

पप्फुडिअ पुं [**प्रस्फुटित**] नरकावास-विशेष ; (देवेन्द्र २६)।

पप्फुय देखो **पप्पुअ**; "वाहपप्फुयच्छो" (सुख २, २६)।

पप्फुर अक [**प्र+स्फुर्**] १ फरकना, हिलना। २ काँपना। पप्फुरइ ; (से १५, ७७ ; गा ६४७)।

पप्फुरिअ वि [**प्रस्फुरित**] फरका हुआ ; (दे ६, १६)।

पप्फुल्ल अक [**प्र+फुल्ल्**] विकसना। वकृ—**पप्फुल्लंत**; (रंभा)।

पप्फुल्ल वि [**प्रफुल्ल**] विकसित, खिला हुआ ; (गाया १, १३ ; उप पृ ११४; पउम ३, ६६ ; सुर २, ७६ ; षड् ; गा ६३६ ; ६७०), "इअ भणिएण णअंगी पप्फुल्लविलोअणा-जाआ" (काप्र १६१)।

पप्फुल्लिअ वि [**प्रफुल्लित**] ऊपर देखो ; (सम्मत्त १८६; भवि)।

पप्फुल्लिआ स्त्री [**प्रफुल्लिका**] देखो **उप्फुल्लिआ**; (गा १६६ अ)।

पप्फोड देखो **पप्फुट्ट**। पप्फोडइ, पप्फोडए ; (धात्वा १४३)।

पप्फोड सक [**प्र+स्फोटय्**] १ झाड़ना, झाड कर गिराना। २ आस्फालन करना। ३ प्रक्षेपण करना। पप्फोडइ ; (गा ४३३)। पप्फोडे, (उत्त २६, २४)। वकृ—**पप्फोडंत, पप्फोडयंत, पप्फोडेमाण** ; (गा १४५, पि ४६१; ठा ६)। संकृ—"**पप्फोडेऊण** सेसयं कम्मं" (आउ ६७)।

पप्फोडण न [**प्रस्फोटन**] १ झाड़ना, प्रकृष्ट धूनन ; (ओघ भा १६३)। २ आस्फोटन, आस्फालन ; (पराह २, ५—पत्र १४८ ; पिंड ३६३)।

पप्फोडणा स्त्री [**प्रस्फोटना**] ऊपर देखो ; (ओघ २६६; उत्त २६, २६)।

पप्फोडिअ वि [**दे. प्रस्फोटित**] निर्झाटित, झाड कर गिराया हुआ; (दे ६, २७; पाअ), "पप्फोडिअमोहजालस्स" (पडि)। २ फोड़ा हुआ, तोड़ा हुआ ; "पप्फोडिअसउणि-अडगं व ते हुंति निस्सारा" (संबोध १७)।

पप्फोडेमाण देखो **पप्फोड**=प्र+स्फोटय्।

पफुल्ल देखो **पप्फुल्ल**; (षड्)।

पफुल्लिअ देखो **पप्फुल्लिअ** ; (हे ४, ३६६ ; पिंग)।

पबंध पुं [**प्रबन्ध**] १ सन्दर्भ, ग्रन्थ, परस्पर अन्वित वाक्य-समूह, (रंभा ८)। २ अ-विच्छेद , निरन्तरता; (उत्त ११, ७)।

पबंधण न [**प्रबन्धन**] प्रबन्ध, संदर्भ, अन्वित वाक्य-समूह की रचना; "कहाए य पबंधणे" (सम २१)।

पबल वि [**प्रबल**] बलिष्ठ, प्रचगड, प्रखर; (कुमा)।

पबाहा स्त्री [**प्रबाधा**] प्रकृष्ट बाधा, विशेष पीड़ा, (गाया १, ४)।

पबुद्ध वि [**प्रबुद्ध**] १ प्रवीण, निपुण; (से १२, ३४)। २ जागा हुआ; (सुर ५, २२६)। ३ जिसने अच्छी तरह जानकारी प्राप्त की हो वह; (आचा)।

पबोध सक [**प्र+बोधय्**] १ जागृत करना। २ ज्ञान कराना। कर्म— पबोधीआमि; (पि ५४३)।

पबोधण न [**प्रबोधन**] प्रकृष्ट बोधन; (राज)।

पबोह देखो **पबोध**। कृ—**पबोहणीय**; (पउम ७०, २८)।

पबोह पुं [**प्रबोध**] १ जागरण ; २ ज्ञान, समझ ; (चारु ५४ ; पि १६०)।

पबोहण देखो **पबोधण** ; (राज)।

पबोहय वि [**प्रबोधक**] प्रबोध-कर्ता ; (विसे १७३)।

पबोहिअ वि [**प्रबोधित**] १ जगाया हुआ ; २ जिसको ज्ञान कराया गया हो वह ; (सुपा ३१३)।

पब्बल देखो **पबल** ; (से ४, २५ ; ६, ३३)।

पब्बाल देखो **पव्वाल**=छादय्। पब्बालइ ; (हे ४, २१)।

पब्बाल देखो **पव्वाल**=प्लावय्। पब्बालइ; (हे ४, ४१)।

पब्बुद्ध देखो **पबुद्ध** ; (पि १६६)।

पब्भ वि [**प्रह्व**] नम्र ; (औप ; प्राकृ २४)।

पब्भट्ठ } वि [**प्रभ्रष्ट**] १ परिभ्रष्ट, प्रस्खलित, चूका हुआ ; (पराह १, ३ , अभि ११६; गा ३१८; सुर ३, १२३ ; गा ३३ , ६५)। २ विस्मृत ; (से १४,
पब्भसिअ }

४२)। ३ पुं. नरकावास-विशेष ; (देवेन्द्र २८)।

पब्भार पुं [**दे. प्राग्भार**] १ संघात, समूह , जत्था; (दे ६, ६६ ; से ४, २० ; सुर १, २२३ ; कप्पू ; गउड ; कुलक २१)।

पब्भार पुं [**दे**] गिरि-गुफा, पर्वत-कन्दरा ; (दे ६, ६६), "पब्भारकंदरगया साहंती अप्पणो अट्ठं" (पच्च ८१)।

पब्भार पु [**प्राग्भार**] १ प्रकृष्ट भार , "कुमरे संकमियरज्जपब्भारो" (धम्म ८ टी)। २ ऊपर का भाग; (से ४, २०)। ३ थोडा नमा हुआ पर्वत का भाग; (णाया १, १—पत्न ६३; भग ५, ७)। ४ एक देश, एक भाग ; (से १, ५८)। ५ उत्कर्ष, परभाग ; (गउड)। ६ पुंन. पर्वत के ऊपर का भाग ; (णंदि)। ७ वि. थोड़ा नमा हुआ, ईषदवनत ; (अंत ११ ; ठा १०)।

पब्भारा स्त्री [**प्राग्भारा**] दशा-विशेष, पुरुष की सत्तर से अस्सी वर्ष तक की अवस्था , (ठा १०—पत्न ५१९ ; तंदु १६)।

पब्भूअ वि [**प्रभूत**] उत्पन्न; "मडुक्कीए गब्भे, पब्भूओ दद्दुरत्तेण" (धर्मवि ३५)।

पब्भोअ पु [**दे. प्रभोग**] भोग, विलास ; (दे ६, १०)।

पभ पु [**प्रभ**] १ हरिकान्त-नामक इन्द्र का एक लोकपाल ; (ठा ४, १ ; इक)। २ द्वीप-विशेष और समुद्र-विशेष का अधिपति देव ; (राज)।

°**पभ** वि [**प्रभ**] सदृश, तुल्य ; (कप्प ; उवा)।

°**पभइ** देखो °**पभिइ**, "चंडाणं चेंडरुद्दपभईणं" (अज्झ १४१)।

पभंकर पुं [**प्रभङ्कर**] १ ग्रह-विशेष, ज्योतिष-देव-विशेष ; (ठा २, ३)। २ पुंन. देव-विमान-विशेष; (सम ८; १४ ; पव २६७)।

पभंकर वि [**प्रभाकर**] प्रकाशक ; "सव्वलोयपभंकरो" (उत्त २३, ७६)।

पभंकरा स्त्री [**प्रभङ्करा**] १ विदेह-वर्ष की एक नगरी का नाम ; (ठा २, ३)। २ चन्द्र की एक अग्र महिषी का नाम; (ठा ४, १)। ३ सूर्य की एक अग्रमहिषी का नाम ; (भग १०, ५)।

पभंकरावई स्त्री [**प्रभङ्करावती**] विदेह वर्ष की एक नगरी, (आचू १)।

पभंगुर वि [**प्रभङ्गुर**] अति विनश्वर ; (आचा)।

पभंजण पुं [**प्रभञ्जन**] १ वायुकुमार-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र ; (ठा २, ३ ; ४, १ , सम ६६)। २ लवणसमुद्र के एक पातालकलश का अधिष्ठायक देव, (ठा ४, २)। ३ वायु, पवन ; (से १४, ६६)। ४ मानुषोत्तर पर्वत के एक शिखर का अधिपति देव; (राज)। °**तणअ** पु [°**तनय**] हनूमान् ; (से १४, ६६)।

पभंसण न [**प्रभ्रंशन**] स्खलना ; (धर्मसं १०७६)।

पभकंत पुं [**प्रभकान्त**] १—२ विद्युत्कुमार देवों के हरिकान्त और हरिस्सह-नामक दोनों इन्द्रों के लोकपालों के नाम ; (ठा ४, १—पत्न १९७ ; इक)।

पभण सक [**प्र+भण्**] कहना, बोलना। पभणइ ; (महा; सण)।

पभणिय वि [**प्रभणित**] उक्त, कथित ; (सण)।

पभम सक [**प्र+भ्रम्**] भ्रमण करना, भटकना। पभमेसि ; (श्रु १५३)।

पभव अक [**प्र+भू**] १ समर्थ होना, पहुँचना। २ होना, उत्पन्न होना। पभवइ ; (पि ४७५)। वकृ—**पभवंत** ; (सुपा ८६ ; नाट—विक्र ४५)।

पभव पु [**प्रभव**] १ उत्पत्ति, प्रसूति ; (ठा ६ ; वसु)। २ प्रथम उत्पत्ति-कारण , (णंदि)। ३ एक जैन मुनि, जम्बुस्वामी का शिष्य ; (कप्प ; वसु ; णंदि)।

पभवा स्त्री [**प्रभवा**] तृतीय वासुदेव की पटरानी ; (पउम २०, १८६)।

पभविय वि [**प्रभूत**] जो समर्थ हुआ हो ; "सा विज्जा सिद्धसुए उदग्गपुन्नम्मि पभविया नेव" (धर्मवि १२३)।

पभा स्त्री [**प्रभा**] १ कान्ति, तेज; (महा ; धर्मसं १३३३)। २ प्रभाव; "निच्चुज्जोया रम्मा,सयपभा ते विरायंति" (देवेन्द्र ३२०)।

पभाइअ } पुन [**प्रभात**] १ प्रातः काल, सुबह; (पउम
पभाय } ७०, ५६; सुर ३, ६६; महा; स २४४)। २ वि. प्रकाशित ; "रयणीए पभायाए" (उप ६४८ टी)। °**तणय** वि [°**संबन्धिन्**] प्राभातिक, प्रभात-संबन्धी; (सुर ३, २४८)।

पभार पु [**प्रभार**] प्रकृष्ट भार ; (सम १५३)।

पभाव देखो **पहाव**=प्र+भावय्। पभावेइ, पभावंति ; (उव ; पव १४८)। वकृ—**पभाविंत** ; (सुपा ३७६)।

पभाव देखो **पहाव**—प्रभाव ; (स्वप्न ६८)।

पभावई स्त्री [**प्रभावती**] १ उन्नीसवें जिन-देव की माता का नाम; (सम १५१)। २ रावण की एक पत्नी का नाम, (पउम ७४, ११) । ३ उदायन राजर्षि की पटरानी और

चेड़ा नरेश की पुत्री का नाम; (पडि)। ४ बलदेव के पुत्र निषध की भार्या ; (आचू १)। ५ राजा बल की पत्नी; (भग ११, ११)।

पभावग वि [**प्रभावक**] प्रभाव बढाने वाला, शोभा की वृद्धि करने वाला; (श्रा ६; द्र २३)। २ उन्नति-कारक, ३ गौरव-जनक; (कुप्र १६८)।

पभावण न [**प्रभावन**] नीचे देखो ; (श्रु ५)।

पभावणा स्त्री [**प्रभावना**] १ माहात्म्य, गौरव; २ प्रसिद्धि, प्रख्याति; (णाया १, १६—पत्र १२२; श्रा ६ : महा)।

पभावय वि [**प्रभावक**] गौरव बढाने वाला ; (संबोध ३१)।

पभावाल पुं [**प्रभावाल**] वृक्ष-विशेष ; (राज)।

पभाविंत देखो **पभाव**=प्र+भावय्।

पभास सक [**प्र+भाष्**] बोलना, भाषण करना। पभासति ; (विसे ४६६ टी)। वकृ—**पभासंत, पभासयंत, पभासमाण**; (उप पृ २३ ; पउम ५५, १८ ; ८६, १०)।

पभास अक [**प्र+भास्**] प्रकाशित होना। पभासिंति ; (सुज्ज १६)। भूका—पभासिंसु ; (भग ; सुज्ज १६)। भवि—पभासिस्संति ; (सुज्ज १६)। वकृ—**पभासमाण**; (कप्प)।

पभास सक [**प्र+भासय्**] प्रकाशित करना। प्रभासेइ ; (भग)। पभासंति : (सुज्ज ३—पत्र ६४)। वकृ—**पभासयंत, पभासेमाण**; (पउम १०८, ३३ ; रयण ७५; कप्प; उवा; औप; भग)।

पभास पुं [**प्रभास**] १ भगवान् महावीर क एक गणधर का नाम; (सम १६ ; कप्प)। २ एक विकटापाती पर्वत का अधिष्ठाता देव ; (ठा २, ३—पत्र ६६)। ३ एक जैन मुनि का नाम; (धर्म ३)। ४ एक चित्रकार का नाम ; (धम्म ३१ टी)। ५ न. तीर्थ-विशेष; (ज ३, महा)। ६ देव-विमान विशेष; (सम १३; ४१)। °**तित्थ** न [°**तीर्थ**] तीर्थ-विशेष, भारतवर्ष की पश्चिम दिशा में स्थित एक तीर्थ; (इक)।

पभासा स्त्री [**प्रभासा**] अहिंसा, दया ; (पगह २, १)।

पभासिय वि [**प्रभाषित**] उक्त, कथित; (सूअ १, १, १, १६)।

पभासेमाण देखो **पभास**=प्र+भासय्।

पभिइ देखो **पभिइं**; (द्र ५५)।

°**पभिइ** वि. व [°**प्रभृति**] इत्यादि, वगैरह; (भग; उवा ; महा)।

पभिइं / **पभिई** / **पभीइ** / **पभीइं** अ [**प्रभृति**] प्रारम्भ कर, (वहां से) शुरू कर, लेकर ; "बालभावाओ पभिइं" (सुर ४,१६७; कप्प; महा; स ७३६; २७५ टि)।

पभीय वि [**प्रभीत**] अति भीत, अत्यन्त डरा हुआ ; (उत्त ५, ११)।

पभु पुं [**प्रभु**] १ इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ५, ७)। २ स्वामी, मालिक ; (पउम ६३, २६; बृह २)। ३ राजा, नृप, "पभू राया अणुप्पभू जुवराया" (निचू २)। ४ वि. समर्थ, शक्तिमान् ; (श्रा २७; भग १५; उवा, ठा ४, ४)। ५ योग्य, लायक ; "पभुत्ति वा जोग्गोत्ति वा एगट्ठा" (निचू २०)।

पभुंज सक [**प्र+भुज्**] भोग करना। पभुंजेदि (शौ); (द्रव्य ६)।

पभुति (पै) देखो **पभिइं** ; (कुमा)।

पभुत्त वि [**प्रभुक्त**] १ जिसने खाने का प्रारम्भ किया हो वह; (सुर १०, ५८)। २ जिसने भोजन किया हो वह; (स १०४)।

पभूइ / **पभूइं** देखो **पभिइं** ; (पउम ६, ७६ ; स २७५)।

पभूय वि [**प्रभूत**] प्रचुर, बहुत ; (भग, पउम ५, ५ ; णाया १, १ ; सुर ३, ८१ ; महा)।

पभोय (अप) देखो **उवभोग**; "भोय-पभोयमाणु जं किज्जइ" (भवि)।

पमइल वि [**प्रमलिन**] अति मलिन ; (णाया १, १)।

पमक्खण न [**प्रम्रक्षण**] १ अभ्यञ्जन, विलेपन ; २ विवाह के समय किया जाता एक तरह का उवटन; (स ७४)।

पमक्खिअ वि [**प्रम्रक्षित**] १ विलिप्त ; २ विवाह के समय जिसको उवटन किया गया हो वह ; (वसु ; सम ७५)।

पमज्ज सक [**प्र+मृज्, मार्ज्**] मार्जन करना, साफ-सुथरा करना, झाडू आदि से धूलि वगैरः को दूर करना। पमज्जइ, (उव ; उवा)। पमज्जिया ; (आचा)। वकृ—**पमज्जेमाण**, (ठा ७)। संकृ—**पमज्जित्ता**, (भग ; उवा)। हेकृ—**पमज्जित्तु**; (पि ५७७)।

पमज्जण न [**प्रमार्जन**] मार्जन, भूमि-शुद्धि, (अंत)।

पमज्जणिया } स्त्री [**प्रमार्जनी**] झाडू, भूमि साफ करने **पमज्जणी** } का उपकरण; (णाया १, ७; धर्म ३) ।

पमज्जय वि [**प्रमार्जक**] प्रमार्जन करने वाला ; (दं ५, १८) ।

पमज्जिअ वि [**प्रमृष्ट, प्रमार्जित**] साफ किया हुआ ; (उवा; महा) ।

पमत्त वि [**प्रमत्त**] १ प्रमाद-युक्त, असावधान, प्रमादी, बेदरकार; (उव , अभि १८५ ; प्रासू ६८) । २ न. छठवाँ गुण-स्थानक; (कम्म ४, ४७; ५६) । ३ प्रमाद ; (कम्म २) । °**जोग** पु [°**योग**] प्रमाद-युक्त चेष्टा ; (भग) । °**संजय** पुं [°**संयत**] प्रमादी साधु, प्रमाद-युक्त मुनि ; (भग ३,३) ।

पमद देखो **पमय**; (स्वप्न ५१; कप्पू) ।

पमदा देखो **पमया**; (नाट—शकु २) ।

पमद्द सक [**प्र+मृद्**] १ मर्दन करना । २ विनाश करना । ३ कम करना । ४ चूर्ण करना । ५ रुई की पूणी बनाना । वकृ—**पमद्दमाण** ; (पिंड ५७४) ।

पमद्द पुं [**प्रमर्द**] १ ज्योतिष शास्त्र में प्रसिद्ध एक योग; (सम १३; सुज्ज १०, ११) । २ संघर्ष, संमर्द ; (राज) । ३ वि. मर्दन करने वाला; ४ विनाशक ; "सारं मणइ सव्वं पच्चक्खाणं खु भवदुहपमद्दं " (संबोध ३७) ।

पमद्दण न [**प्रमर्दन**] १ चूरना, चूर्ण करना; (राय) । २ नाश करना । ३ कम करना; (सम १२२) । ४ रुई की पूणी करना ; (पिंड ६०३) । ५ वि. विनाश करने वाला ; (पंचा १४, ४२) ।

पमद्दि वि [**प्रमर्दिन्**] प्रमर्दन करने वाला; (औप; पि २६१) ।

पमय पुं [**प्रमद**] १ आनन्द, हर्ष ; (काल ; श्रा २७) । २ न. धतूरे का फल । °**च्छी** स्त्री [°**ाक्षी**] स्त्री, महिला; (सुपा २३०) । °**वण** न [°**वन**] राजा का अन्तःपुर-स्थित वन , (से ११, ३७ ; णाया १, ८; १३) ।

पमया स्त्री [**प्रमदा**] उत्तम स्त्री, श्रेष्ठ महिला; (उव; बृह ४) ।

पमह पुं [**प्रमथ**] शिव का अनुचर ; (पाअ) । °**णाह** पु [°**नाथ**] महादेव ; (समु १५०) । °**ाहिव** पुं [°**ाधिप**] शिव, महादेव ; (गा ४४८) ।

पमा सक [**प्र+मा**] सत्य सत्य ज्ञान करना । कर्म—पमीयए, (विसे ६४६) ।

पमा स्त्री [**प्रमा**] १ प्रमाण, परिमाण; "पीअलधाउविणिम्मिअ-विहत्थिपमामाहुलिंगआहरणं" (कुमा) । २ प्रमाण, न्याय; "अतिप्पसंगो पमासिद्धो " (धर्मसं ६८१) ।

पमा° देखो **पमाय**=प्रमाद; (वव १) ।

पमाइ वि [**प्रमादिन्**] प्रमादी, बेदरकार; (सुपा ५४३ ; उव; आचा) ।

पमाइअव्व देखो **पमाय**—प्र+मद् ।

पमाइल्ल देखो **पमाइ**; "धम्मपमाइल्ले" (उप ७२८ टी) ।

पमाण सक [**प्र+मानय्**] विशेष रीति से मानना, आदर करना । कृ—**पमाणणिज्ज** ; (श्रा २७) ।

पमाण न [**प्रमाण**] १ यथार्थ ज्ञान; सत्य ज्ञान; २ जिससे वस्तु का सत्य सत्य ज्ञान हो वह, सत्य ज्ञान का साधन, (अणु) । ३ जिससे नाप किया जाय वह; "अणुप्पमाणंपि" (श्रा २७; भग ; अणु) । ४ नाप, माप, परिमाण; (विचार ५४४; ठा ५, ३ ; जीवस ६४ ; भग ; विपा १, २) । ५ संख्या ; (अणु ; जी २६) । ६ प्रमाण-शास्त्र, न्याय-शास्त्र, तर्क-शास्त्र; "लक्खणसाहित्तपमाणजोइसाईणि सा पढइ" (सुपा १०३) । ७ पुंन. सत्य रूप से जिसका स्वीकार किया जाय वह ; ८ माननीय , आदरणीय ; ६ सच्चा, सही, ठीक ठीक, यथार्थ; "कमागओ जो य जेसिं किल धम्मो सो य पमाणो तेसिं" (सुपा ११०; श्रा १४),

"सुचिरंपि अच्छमाणो नलथंभो पिच्छ इच्छुवाडम्मि ।
कीस न जायइ महुरो जइ संसग्गी पमाणं ते" (प्रासू ३३) ।

°**वाय** पु [°**वाद**] न्याय-शास्त्र, तर्क-शास्त्र; (सम्मत्त ११७) । °**संवच्छर** पु [°**संवत्सर**] वर्ष-विशेष, (सुज्ज १०, २०) ।

पमाण सक [**प्रमाणय्**] प्रमाण रूप से स्वीकार करना । पमाणइ, पमाणह; (पिंग) । वकृ—**पमाणंत** ; (उवर १८६) । कृ—**पमाणियव्व** ; (सिरि ६१) ।

पमाणिअ वि [**प्रमाणित**] प्रमाण रूप से स्वीकृत ; (सुपा ११० ; श्रा १२) ।

पमाणिआ } स्त्री [**प्रमाणिका, प्रमाणी**] छन्द-विशेष; **पमाणी** } (पिंग) ।

पमाणीकर सक [**प्रमाणी+कृ**] प्रमाण करना, सत्य रूप से स्वीकार करना । कर्म—पमाणीकरीअदि (शौ) ; (पि ३२४) । संकृ—**पमाणीकिअ**; (नाट—मालवि ४०) ।

पमाद देखो **पमाय**=प्र+मद् । कृ—**पमादेयव्व**; (णाया १,१—पत्र ६०) ।

पमाद देखो **पमाय**=प्रमाद; (भग; औप; स्वप्न १०६) ।

पमाय अक [प्र+मद्] प्रमाद करना, बेदरकारी करना। पमायइ, पमायए; (उव, पि ४६०)। वकृ—**पमायंत**; (सुपा १०)। कृ—**पमाइअव्व**, (भग)।

पमाय पुं [प्रमाद] १ कर्तव्य कार्य में अप्रवृत्ति और अकर्तव्य में प्रवृत्ति रूप अ-सावधानता, बेदरकारी ; (आचा; उत्त ४, ३२ ; महा; प्रासू ३८; १३४)। २ दुःख, कष्ट; "समग्गलोयाण वि जा विमायासमा समुप्पाइयसुप्पमाया" (सत्त ३५)।

पमार पुं [प्रमार] १ मरण का प्रारम्भ; (भग १५)। २ बुरी तरह मारना ; (ठा ५, १)।

पमारणा स्त्री [प्रमारणा] बुरी तरह मारना; (वव ३)।

पमिय वि [प्रमीत] परिमित, नापा हुआ; "अंगुलमूलासंखिअभागप्पमिया उ होंति सेढीओ" (पंच २, २०)।

पमिलाण वि [प्रम्लान] अतिशय मुरझाया हुआ, (ठा३, १; धर्मवि ५५)।

पमिलाय अक [प्र+म्लै] मुरझाना । "पणपन्नाय परेण जोणी पमिलायए महिलियाणं" (तंदु ४)।

पमिल्ल अक [प्र+मील्] विशेष संकोच करना, सकुचना। पमिल्लइ; (हे ४, २३२; प्राप्र)।

पमीय° देखो **पमा=प्र**+मा।

पमील देखो **पमिल्ल**। पमीलइ; (हे ४, २३२)।

पमुइअ वि [प्रमुदित] हर्ष-प्राप्त, हर्षित; (औप; जीव ३)।

पमुंच सक [प्र+मुच्] छोड़ना, परित्याग करना। पमुचंति; (उव)। कर्म—पमुच्चइ; (पि५४२)। भवि—पमोक्खसि; (आचा)। वकृ—**पमुंचमाण**; (राज)।

पमुक्क वि [प्रमुक्त] परित्यक्त ; (हे २, ६७ ; षड्)।

°**पमुक्ख** देखो °**पमुह**; (सुपा १०; गु ११; जी १०)।

पमुच्छिअ पुं [प्रमूर्च्छित] नरकावास-विशेष, (देवेन्द्र २७)।

पमुत्त देखो **पमुक्क**; (पि ५६६)।

पमुदिय देखो **पमुइअ**; (सुर ३, २०)।

पमुद्ध वि [प्रमुग्ध] अत्यन्त मुग्ध; (नाट —मालती ४४)।

पमुह वि [प्रमुख] १ तल्लीन दृष्टि वाला; "एगप्पमुहे" (आचा)। २ पु. ग्रह-विशेष, ज्योतिष्क देव-विशेष; (ठा २, ३)। ३ न. प्रकृष्ट आरम्भ, आदि, आपात; "किंपागफलसरिच्छा भोगा पमुहे हवंति गुणमहुरा" (पउम १०८, ३१ ; पाअ)।

°**पमुह** वि. ब. [°प्रमुख] १ वगैरह, आदि; २. प्रधान, श्रेष्ठ, मुख्य; (औप; प्रासू १६६)।

पमुहर वि. [प्रमुखर] वाचाल, बकवादी; (उत्त १७, ११)।

पमेइल वि [प्रमेदस्विन्] जिसके शरीर में चर्बी बहुत हो वह "थूले पमेइले वज्झे पाइमेत्ति य नो वए" (दस ७, २२)।

पमेय वि [प्रमेय] प्रमाण-विषय, सत्य पदार्थ, (धर्मसं ११६०)

पमेह पुं [प्रमेह] रोग-विशेष, मेह रोग, मूत्र-दोष, बहुमूत्रता; (निचू १)।

पमोअ पुं [प्रमोद] १ आनन्द, खुशी, हर्ष; (सुर १, ७८; महा; गांदि)। २ राक्षस-वंश के एक राजा का नाम, एक लंका-पति ; (पउम ५, २६३)।

पमोक्ख° देखो **पमुंच**।

पमोक्ख पुंन [प्रमोक्ष] १ मुक्ति, निर्वाण ; (सूअ १, १०, १२)। २ प्रत्युत्तर, जवाब; "नो संचाएइ .....किंचिवि पमोक्खमक्खाइउ" (भग)।

पमोक्खण न [प्रमोचन] परित्याग; "कंठाकंठियं अवयासिय बाहपमोक्खणं करेइ" (णाया १, २—पत्त ८८)।

पमोयणा स्त्री [प्रमोदना] प्रमोदन, प्रमोद, आह्लाद; (चेइय ४११)।

पम्मलाअ अक [प्र+म्लै] अधिक म्लान होना। पम्मलाअदि (शौ); (पि १३६; नाट—मालती ५३)।

पम्माअ } वि [प्रम्लान] १ विशेष म्लान, अत्यन्त मुरझा-
पम्माइअ } या हुआ; "पम्माअसिरीसाइं व। जह से जायाइं अंगाइं" (गा ५६; गा ५६ टि)। २ शुष्क; "वसहा य जायथामा, गामा पम्मायचिक्खल्ला" (धर्मवि ५३)।

पम्मि पुं [दे] पाणि, हाथ, कर; (षड्)।

पम्मुक्क देखो **पमुक्क** ; (हे २, ६७; षड्; कुमा)।

पम्मुह वि [प्राङ्मुख] पूर्व की ओर जिसका मुँह हो वह; (भवि; वज्जा १६४)।

पम्ह पुंन [पक्ष्मन्] १ अक्षि-लोम, बरवनी, आँख के बाल; (पाअ)। २ पद्म आदि का केसर, किंजल्क ; (उवा; भग; विपा १, १)। ३ सूत्र आदि का अत्यल्प भाग; ४ पँख, पाँख; (हे २, ७४; प्राप्र)। ५ केश का अग्र-भाग; (से ६, २०)। ६ अग्र-भाग; "णअणाहुआसणपइत्तपत्तणपम्हं" (से १५, ७३)। ७ महाविदेह वर्ष का एक विजय—प्रदेश; (ठा २, ३; इक)। ८ न. एक देव-विमान; (सम १५)।

°**कंत** न [°कान्त] एक देव-विमान का नाम; (सम १५)।

°कूड पुं [°कूट] १ पर्वत-विशेष, (राज)। २ न. ब्रह्मलोक-नामक देवलोक का एक देव-विमान, (सम १५)। ३ पर्वत-विशेष का एक शिखर; (ठा २, ३ ; ६)। °ज्झय न [°ध्वज] देव-विमान-विशेष; (सम १५)। °प्पभ न [°प्रभ] ब्रह्मलोक का एक देव-विमान; (सम १५)। °लेस, °लेस्स न [°लेश्य] ब्रह्मलोक-स्थित एक देव-विमान; (सम १५ ; राज)। °वण्ण न [°वर्ण] वही पूर्वोक्त अर्थ; (सम १५)। °सिंग न [°शृङ्ग] वही अर्थ; (सम १५)। °सिट्ठ न [°सृष्ट] वही पूर्वोक्त अर्थ; (सम १५)। °ावत्त न [°ावर्त्त] वही अर्थ; (सम १५)।

पम्ह देखो **पउम**; (पगह १, ४—पत्र ६७; ७८; जीव ३)। °गंध वि [°गन्ध] १ कमल की गन्ध। २ वि. कमल के समान गन्ध वाला ; (भग ६, ७)। °लेस वि [°लेश्य] पद्म-नामक लेश्या वाला; (भग)। °लेसा स्त्री [°लेश्या] लेश्या-विशेष, पाँचवीं लेश्या, आत्मा का शुभतर परिणाम-विशेष; (ठा ३, १ ; सम ११)। °लेस्स देखो °लेस; (पगण १७—पत्र ५११)।

पम्हअ सक [प्र+स्मृ] भूल जाना, विस्मरण होना। पम्हअइ; (प्राकृ ६१)।

पम्हगावई स्त्री [पक्ष्मकावती] महाविदेह वर्ष का एक विजय, प्रदेश-विशेष; (ठा २, ३; इक)।

पम्हट्ठ वि [प्रस्मृत] १ विस्मृत ; (से ४, ४२)। २ जिसको विस्मरण हुआ हो वह; "किं पम्हट्ठ म्हि अहं तुह चल-णुप्पणणतिवहआपडिउगणं" (से ६, १२)।

पम्हट्ठ वि [दे] १ प्रभ्रष्ट, विलुप्त; (से ४, ४२)। २ फेंका हुआ, प्रक्षिप्त; "पम्हट्ठं वा पव्विवियं ति वा एगट्ठं" (वव १)।

पम्हय वि [पक्ष्मज] १ पक्ष्म से उत्पन्न। २ न. एक प्रकार का सूता; (पंचभा)।

पम्हर पु [दे] अपमृत्यु, अकाल-मरण; (दे ६, ३)।

पम्हल वि [पक्ष्मल] पक्ष्म-युक्त, सुन्दर अक्षि-लोम वाला; (हे २, ७४ ; कुमा ; पड् ; औप ; गउड ; सुर ३, १३६ ; पाअ)।

पम्हल पुं [दे] किंजल्क, पद्म आदि का केसर; (दे ६, १३; पड्)।

पम्हलिय वि [दे, पक्ष्मलित] धवलित, सफेद किया हुआ ; "लायगणजोन्हापवाहपम्हलियचउद्दिसाभोओ" (स ३६)।

पम्हस सक [वि+स्मृ] विस्मरण करना, भूल जाना। पम्हसइ, (पड्), पम्हसिज्जासु; (गा ३४८)।

पम्हसाविय वि [विस्मारित] भूलाया हुआ, विस्मृत कराया हुआ ; (सुर २, ५)।

पम्हा स्त्री [पद्मा] १ लेश्या-विशेष, पद्म-लेश्या, आत्मा का शुभतर परिणाम-विशेष; (कम्म ३, २२; आ २६)। २ विजय-क्षेत्र विशेष; (राज)।

पम्हार पुं [दे] अपमृत्यु, अनमौत मरण; (दे ६, ३)।

पम्हावई स्त्री [पक्ष्मावती] १ विजय-विशेष की एक नगरी; (ठा २, ३; इक)। २ पर्वत-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ८०)।

पम्हुट्ठ वि [दे] १ नष्ट, नाश-प्राप्त; (हे ४, २५८)। २ विस्मृत; "पम्हुट्ठं विम्हरिअं" (पाअ), "किं थ तयं पम्हुट्ठं" (गाथा १, ८—पत्र १४८; विचार २३८)।

पम्हुत्तरवडिंसग न [पक्ष्मोत्तरावतंसक] ब्रह्मलोक में स्थित एक देव-विमान; (सम १५)।

पम्हुस सक [वि+स्मृ] भूलना, विस्मरण करना। पम्हुसइ; (हे ४, ७५)।

पम्हुस सक [प्र+मृश्] स्पर्श करना। पम्हुसइ, पम्हुस; (हे ४, १८४ ; कुमा ७, २६)।

पम्हुस सक [प्र+मुष्] चोरना, चोरी करना। पम्हुसइ ; पम्हुसेइ; पम्हुसंति ; (हे ४, १८४; सुपा १३७; कुमा ७, २६)।

पम्हुसण न [विस्मरण] विस्मृति; (पंचा १५, ११)।

पम्हुसिअ वि [विस्मृत] जिसका विस्मरण हुआ हो वह; (कुमा; उप ७६८ टी)।

पम्हुह सक [स्मृ] स्मरण करना। पम्हुहइ ; (हे ४, ७४)।

पम्हुहण वि [स्मर्तृ] स्मरण करने वाला; (कुमा)।

पय सक [पच्] पकाना, पाक करना। पयइ ; (हे ४, ९०)। वकृ—**पयंत**; (कप्प)। संकृ—**पइउं** ; (कुप्र २६६)।

पय सक [पद्] १ जाना। २ जानना। ३ विचारना। पयइ ; (विसे ४०८)।

पय पुंन [पयस्] १ क्षीर, दूध; "पओ"; (हे १, ३२ ; ओघ १२ ; पाअ)। २ पानी, जल ; (सुपा १३६ ; पाअ)। °हर देखो **पओहर**; (पिंग)।

पय पुं [प्रज] प्राणी, जन्तु; (आचा)।

पय पुन [**पद**] १ विभक्ति के साथ का शब्द; "पयमत्थवाचगं जोयगं च तं नामियाइं पंचविहं" (विसे १००३; प्रासू १३८; श्रा २३)। २ शब्द-समूह, वाक्य; "उवएसपया इह समक्खाया" (उप १०३८, श्रा २३)। ३ पैर, पाँव, चरण; "जायां च तज्जणातज्जणीइ लग्गो ठवेमि मंदपए, कव्वपहे वाला इव", "जाव न सत्तट्ट पए पच्चाहुत्तं नियत्तो मि" (सुपा १; धर्मवि ५४; सुर ३, १०७; श्रा २३)। ४ पाद-चिन्ह, पदाङ्क; (सुर २, २३२; सुपा ३५४; श्रा २३; प्रासू ५०)। ५ पद्य का चौथा हिस्सा, (अणु)। ६ निमित्त, कारण; (आचा)। ७ स्थान; "अवमाणपयं हि सेव त्ति" (सुर २, १६७; श्रा २३)। ८ पदवी, अधिकार; "जुवरायपए किं नवि अहिसिच्चइ देव मे पुत्तो?" (सुर २, १७५; महा)। ६ त्राण, शरण; १० प्रदेश, ११ व्यवसाय; (श्रा २३)। १२ कूट, जाल-विशेष; (सूअ १, १, २, ८)। °**खेम** न [°**क्षेम**] शिव, कल्याण; "कुव्वइ अ सो पयखेममप्पणो" (दस ६, ४, ६)। °**त्थ** पुं [°**स्थ**] पदाति, प्यादा; "तुरएण सह तुरंगो पाइक्को सह पयत्थेण" (पउम ६, १८२)। °**पास** पु [°**पाश**] वागुरा, जाल आदि बन्धन; (सूअ १, १, २, ८; ६)। °**रक्ख** पु [**रक्ष**] पदाति, प्यादा; (भवि, हे ४, ४१८)। °**विग्गह** पुं [°**विग्रह**] पद-विच्छेद; (विसे १००६)। °**विभाग** पुं [°**विभाग**] उत्सर्ग और अपवाद का यथा-स्थान निवेश, सामाचारी-विशेष; (आव १)। °**वीढ** देखो **पाय-वीढ**; (पव ४०; सुपा ६५६)। °**समास** पुं [°**समास**] पदों का समुदाय; (कम्म १, ७)। °**णुसारि** वि [°**ानुसारिन्**] एक पद से अनेक अनुक्त पदों का भी अनुसंधान करने की शक्ति वाला; (औप; बृह १)। °**णुसारिणी** स्त्री [°**ानु-सारिणी**] बुद्धि-विशेष, एक पद के श्रवण से दूसरे अ-श्रुत पदों का स्वयं पता लगाने वाली बुद्धि; (पगण २१)।

पय (अप) देखो **पत्त**=प्राप्त; (पिंग)।

पय° देखो **पया**=प्रजा। °**पाल** वि [°**पाल**] १ प्रजा का पालक; २ पुं. नृप-विशेष; (सिरि ४५)।

पयइ देखो **पगइ**, (गा ३१७, गउड; महा; नव ३१; भत्त ११४; कप्पू; कुप्र ३४६)।

पयइंद पुं [**पतगेन्द्र, पदकेन्द्र**] वानव्यन्तर-जातीय देवों का इन्द्र; (ठा २, ३)।

पयई देखो **पयवी**; (गउड)।

पयंग पु [**पतङ्ग**] १ सूर्य, रवि; (पाअ), "तो हरिग्गिपुलइ-यगं चक्को इव दिट्ठउग्गयपयंगं" (उप ७२८ टी)। २ रंग-विशेष, रञ्जन-द्रव्य-विशेष; (उर ६, ४; सिरि १०५७)। ३ शलभ, फतिंगा, उड़ने वाला छोटा कीट, (गाया १, १७; पाअ)। ४—५ देखो **पयय**=पतग, पदक, पदग; (पगह १, ४—पत्र ६८; राज)। °**वीहिया** स्त्री [°**वीथिका**] १ शलभ का उड़ना, २ भिक्षा के लिए पतंग की तरह चलना, बीच में दो चार घरों को छोड़ते हुए भिक्षा लेना; (उत्त ३०, १६)। °**वीही** स्त्री [°**वीथी**] वही पूर्वोक्त अर्थ; (उत्त ३०, १६)।

पयंचुल पुन [**प्रपञ्चुल**] मत्स्य-बन्धन-विशेष, मच्छी पकडने का एक प्रकार का जाल; (विपा १, ८—पत्र ८५)।

पयंड वि [**प्रचण्ड**] १ अत्युग्र, तीव्र, प्रखर; २ भयानक, भयंकर, (पगह १, १; ३; ४; उव)।

पयंड वि [**प्रकाण्ड**] अत्युग्र, उत्कट, (पगह १, ४)।

पयंत देखो **पय**=पच्।

पयंप अक [**प्र+कम्प्**] अतिशय काँपना। वकृ—**पयंप-माण**; (स ५६६)।

पयंप सक [**प्र+जल्प्**] १ कहना, बोलना। २ बकवाद करना। पयंपए; (महा)। संकृ—**पयंपिऊण, पयंपिऊणं**; (महा; पि ५८५)। कृ—**पयंपिअव्व**; (गा ४५०; सुपा ५५२)।

पयंपण न [**प्रजल्पन**] कथन, उक्ति; (उप पृ २१७)।

पयंपिय वि [**प्रकम्पित**] अति काँपा हुआ; (स ३७७)।

पयंपिय वि [**प्रजल्पित**] १ कथित, उक्त; २ न. कथन, उक्ति; ३ बकवाद, व्यर्थ जल्पन; (विपा १, ७)।

पयंपिर वि [**प्रजल्पितृ**] १ बोलने वाला; २ वाचाट, बक-वादी; (सुर १६, ५८; सुपा ४१५; श्रा २७)।

पयंस सक [**प्र+दर्शय्**] दिखलाना। पयंसेंति; (विसे ६३२)।

पयंसण न [**प्रदर्शन**] दिखलाना; (स ६१३)।

पयंसिअ वि [**प्रदर्शित**] दिखलाया हुआ; (सुर १, १०१; १२, ३२)।

पयक्ख सक [**प्रत्या+ख्या**] प्रत्याख्यान करना, प्रतिज्ञा करना। पयक्खेइ; (विचार ७५५)।

पयक्खिण देखो **पदक्खिण**=प्रदक्षिण; (गाया १, १६)।

पयक्खिण देखो **पदक्खिण**=प्रदक्षिणय्। संकृ—**पयक्खि-णिऊण**; (सुर ८, १०५)।

पयक्खिणा देखो **पदक्खिणा** ; (उप १४२ टी ; सुर १४, ३०)।

पयग देखो **पयय**=पतग, पदक, पदग ; (राज ; पव १६४)।

पयच्छ सक [प्र+यम्] देना, अर्पण करना। पयच्छइ ; (महा)। संकृ—**पयच्छिऊण** ; (राज)।

पयच्छण न [प्रदान] १ दान, अर्पण ; (सुर २, १५१)। २ वि. देने वाला ; (सण)।

पयट्ट अक [प्र+वृत्] प्रवृत्ति करना। पयट्टइ ; (हे २, ३० ; ४, ३४७; महा)। कृ—**पयट्टिअव्व**; (सुपा १२६)। प्रयो—पयट्टावेह; (स २२); संकृ—**पयट्टाविउं**; (स ७१५)।

पयट्ट वि [प्रवृत्त] १ जिसने प्रवृत्ति की हो वह; (हे २, २९ ; महा)। २ चलित ; "पयट्टयं चलियं" (पाअ)।

पयट्टय वि [प्रवर्तक] प्रवृत्ति करने वाला; (पण्ह १, १)।

पयट्टावअ वि [प्रवर्तक] प्रवृत्ति कराने वाला, (कप्पू)।

पयट्टाविअ वि [प्रवर्तित] प्रवृत्त किया हुआ, किसी कार्य में लगाया हुआ ; (महा)।

पयट्टिअ वि [दे. प्रवर्तित] ऊपर देखो; (दे ६, २६)।

पयट्टिअ वि [प्रवृत्त] प्रवृत्ति-युक्त; (उत्त ४, २; सुख ४, २)।

पयट्ठाण देखो **पइट्ठाण**; (काल; पि २२०)।

पयड सक [प्र+कटय्] प्रकट करना, व्यक्त करना। पयडइ, पयडेइ; (सण ; महा)। वकृ—**पयडंत**; (सुपा १; गा ४०६; भवि)। हेकृ—**पयडित्तु**; (पि ५७७)। प्रयो—पयडावइ; (भवि)।

पयड वि [प्रकट] १ व्यक्त, खुला; (कुमा; महा)। २ विख्यात, विश्रुत, प्रसिद्ध; "विक्खाओ विस्सुओ पयडो" (पाअ)।

पयडण न [प्रकटन] १ व्यक्त करना, खुला करना; (सण)। २ वि. प्रकट करने वाला; "जे तुज्झ गुणा वहुनेहपयडणा" (धर्मवि ६६)।

पयडावण न [प्रकटन] प्रकट कराना; (भवि)।

पयडाविय वि [प्रकटित] प्रकट कराया हुआ; (काल; भवि)।

पयडिं देखो **पगइ**; (पण्ण २३; पि २१९)।

पयडि स्त्री [दे] मार्ग, रास्ता; "जे पुण सम्मद्दिट्ठी तेसिं मणो चडणपयडीए" (सट्ठि १४२)।

पयडिय वि [प्रकटित] प्रकट किया हुआ; (सुर ३, ४८; श्रा २)।

पयडिय वि [प्रपतित] गिरा हुआ; (णाया १, ८—पत्र १३३)।

पयडीकय वि [प्रकटीकृत] प्रकट किया हुआ; (महा)।

पयडीकर सक [प्रकटी+कृ] प्रकट करना। प्रयो—पयडीकरावेमि; (महा)।

पयडीभूअ } वि [प्रकटीभूत] जो प्रकट हुआ हो;
पयडीहूअ } (सुर ६, १८४; श्रा १६; महा; सण)।

पयड्डणी स्त्री [दे] १ प्रतीहारी; २ आकृष्टि, आकर्षण; ३ महिषी; (दे ६, ७२)।

पयण देखो **पवण**, (गा ७७७)।

पयण देखो **पडण**; (विसे १८५६)।

पयण } न [पचन, °क] १ पाक, पकाना; (औप;
पयणग } कुमा)। २ पात्र-विशेष, पकाने का पात्र; (सूअनि ८०; जीव ३)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] पाक-स्थान; (बृह २)।

पयणु } वि [प्रतनु] १ कृश, पतला; २ सूक्ष्म, वारीक ;
पयणुअ } ३ अल्प, थोड़ा; (स २४६; सुर ८, १६५; भग ३, ४ ; जं २; पउम ३०, ६६; से ११, ५६; गा ६८२; गउड)।

पयण्णय देखो **पइण्णग**; (तंदु १)।

पयत्त अक [प्र+यत्] प्रयत्न करना। पअत्तध (शौ) ; (पि ४७१)।

पयत्त देखो **पयट्ट**=प्र+वृत; (काल)।

पयत्त पुं [प्रयत्न] चेष्टा, उद्यम, उद्योग; (सुपा ; उव ; सुर १, ६ ; २, १८२; ४, ८१)।

पयत्त वि [प्रदत्त, प्रत्त] १ दिया हुआ; (भग)। २ अनुज्ञात, संमत; (अनु ३)।

पयत्त देखो **पयट्ट**=प्रवृत्त; (सुर २, १५९; ३, २४८; से ३, २४; ८, ३; गा ४३६)।

पयत्ताविअ वि [प्रवर्तित] प्रवृत्त किया हुआ; (काल)।

पयत्थ पुं [पदार्थ] १ शब्द का प्रतिपाद्य, पद का अर्थ; (विसे १००३; चेइअ २७१)। २ तत्व; (सम १०६; सुपा २०५)। ३ वस्तु, चीज; (पाअ)।

पयन्न देखो **पइण्ण**=प्रकीर्ण; (भवि)।

पयन्ना देखो **पइण्णा** ; (उप १४२ टी)।

पयप्पण न [प्रकल्पन] कल्पना, विचार; (धर्मसं ३०७)।

पयय देखो **पायय**=प्राकृत; (हे १, ६७; गउड)।

पयय वि [प्रयत] प्रयत्न-शील, सतत प्रयत्न वाला;

ओप; पउम ३; ६५; सुर १, ४; उव), "इच्छिज्ज न इच्छिज्ज व तहवि पयओ निमंतए साहू" (पुप्फ ४२६; पडि)।

पयय पुं [**पतग, पदक, पदग**] १ वानव्यन्तर देवों की एक जाति ; (ठा २, ३ ; पण्ण १ ; इक)। २ पतग देवों का दक्षिण दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३)। °**वइ** पु [°**पति**] पतग देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र ; (ठा २, ३—पत्र ८५)।

पयय न [**दे**] अनिश, निरन्तर ; (दे ६, ६)।

पयर सक [**स्मृ**] स्मरण करना। पयरेइ; (हे ४, ७४)। वकृ—**पयरंत**; (कुमा)।

पयर अक [**प्र+चर्**] प्रचार होना। "रन्ना सूयारा भणिया जं लोए पयरइ तं सव्वं सव्वे रंधह" (श्रावक ७३ टी)।

पयर पु [**प्रकर**] समूह, सार्थ, जत्था; "पयरो पिवीलियाणं भीमंपि भुयगम डसइ" (स ४२१; पाअ; कप्प)।

पयर पुं [**प्रदर**] १ योनि का रोग-विशेष; २ विदारण, भग ; ३ शर, बाण ; (दे ६, १४)।

पयर देखो **पयार**=प्रकार; (हे १, ६८, षड्)।

पयर देखो **पयार**=प्रचार; (हे १, ६८)।

पयर पुंन [**प्रतर**] १ पत्रक, पत्रा, पतरा; "कणगपयरलंबमाणमुत्तासमुज्जलं. .... वरविमाणपुंडरीय" (कप्प; जीव ३ ; आचृ १)। २ वृत्त पत्राकार आभूषण-विशेष, एक प्रकार का गहना ; (ओप ; णाया १, १)। ३ गणित-विशेष, सूची से गुणी हुई सूची, (कम्म ५, ६७; जीवस ६२ ; १०२)। ४ भेद-विशेष, बाँस आदि की तरह पदार्थ का पृथग्भाव; (भास ७)। °**तव** पुंन [°**तपस्**] तप-विशेष ; °**वट्ट** न [°**वृत्त**] संस्थान-विशेष; (राज)।

पयरण न [**प्रकरण**] १ प्रस्ताव, प्रसंग; २ एकार्थ-प्रतिपादक ग्रन्थ। ३ एकार्थ-प्रतिपादक ग्रन्थांश; "जुम्हदम्हपयरणं" (हे १, २४६)।

पयरण न [**प्रतरण**] प्रथम दातव्य भिक्षा; (राज)।

पयरिस देखो **पयंस**। वकृ—**पयरिसंत**, (पउम ६, ६४)।

पयरिस देखो **पगरिस** ; (महा)।

पयल अक [**प्र+चल्**] १ चलना। २ स्खलित होना। पयलेज्ज; (आचा २, २, ३, ३)। वकृ—**पयलेमाण**; (आचा २, २, ३, ३)।

पयल देखो **पयड**=प्र+कटय्। पअल, (पिंग)। संकृ—**पअलि**; (अप) ; (पिंग)।

पयल देखो **पयड**=प्रकट; (पिंग)।

पयल (अप) सक [**प्र+चालय्**] १ चलाना। २ गिराना। पअल; (पिंग)।

पयल वि [**प्रचल**] चलायमान, चलने वाला, (पउम १००, ६)।

पयल पुं [**दे**] नीड, पक्षि-गृह; (दे ६, ७)।

पयल° } स्त्री [**दे. प्रचला**] १ निद्रा, नीद; (दे ६, ६)।
पयला } २ निद्रा-विशेष, बैठे बैठे और खड़े खड़े जो नीद आती है वह; ३ जिसके उदय से बैठे २ और खड़े २ नीद आती है वह कर्म; (सम १५; कम्म १, ११)। °**पयला** स्त्री [**दे. °प्रचला**] १ कर्म-विशेष, जिसके उदय से चलते २ निद्रा आती है वह कर्म; २ चलते २ आने वाली नीद; (कम्म १, १; ठा ६; निचू ११)।

पयला अक [**प्रचलाय्**] निद्रा लेना, नीद करना। पयलाइ; (पाअ)। हेकृ—**पयलाइत्तए**; (कस)।

पयलाइअ न [**प्रचलायित**] १ नीद, निद्रा; २ घूर्णन, नीद के कारण बैठे २ सिर का डोलना, (से १२, ४२)।

पयलाइया स्त्री [**दे**] हाथ से चलने वाले जन्तु की एक जाति; (सूअ २, ३, २५)।

पयलाय देखो **पयला**=प्रचलाय्। पयलायइ; (जीव ३)। वकृ—**पयलायंत**, (राज)।

पयलाय पुं [**दे**] १ हर, महादेव; (दे ६, ७२)। २ सर्प, साँप; (दे ६, ७२; षड्)।

पयलायण न [**प्रचलायन**] देखो **पयलाइअ**, (बृह ३)।

पयलायभत्त पुं [**दे**] मयूर, मोर; (दे ६, ३६)।

पयलिअ देखो **पयडिअ**; (पिंग; पि २३८)।

पयलिय वि [**प्रचलित**] १ स्खलित, गिरा हुआ; (राय; आउ)। २ हिला हुआ; (पउम ६८, ७३; णाया १, ८; कप्प; ओप)।

पयलिय वि [**प्रदलित**] भाँगा हुआ, तोड़ा हुआ; (कप्प)।

पयल्ल अक [**प्र+सृ**] पसरना, फैलना। पयल्लइ; (हे ४, ७७; प्राकृ ७६)।

पयल्ल अक [**कृ**] १ शिथिलता करना, ढीला होना। २ लटकना। पयल्लइ; (हे ४, ७०)।

पयल्ल वि [**प्रसृत**] फैला हुआ; (पाअ)।

पयल्ल पु [**प्रकल्प**] महाग्रह-विशेष; (सुज्ज २०)।

पयल्लिर वि [**प्रसृमर**] फैलने वाला; (कुमा)।
पयल्लिर वि [**शैथिल्यकृत्**] शिथिल होने वाला, ढीला होने वाला; (कुमा ६, ४३)।
पयल्लिर वि [**लम्बनकृत्**] लटकने वाला; (कुमा ६, ४३)।
पयव सक [**प्र+तप्, तापय्**] तपाना, गरम करना। पअवेज्ज; (से ४, २८)। वकृ—**पअविज्जंत**; (से २, २४)।
पयव सक [**पा**] पीना, पान करना। कवकृ—"धीरश्रं सइमुहल घणपअविज्जंतअं" (से २, २४)।
पयवई स्त्री [**दे**] सेना, लश्कर; (दे ६, १६)।
पयवि स्त्री [**पदवि**] देखो **पयवी**; (चेइय ८७२)।
पयविअ वि [**प्रतप्त, प्रतापित**] गरम किया हुआ, तपाया हुआ, (गा १८५, से २, २५)।
पयवी स्त्री [**पदवी**] १ मार्ग, रास्ता, (पाअ; गा १०७; सुपा ३७८)। २ बिरुद, पदवी; (उप पृ ३८६)।
पयह सक [**प्र+हा**] त्याग करना, छोडना। पयहे, पयहिज्ज, पयहेज्ज; (सूअ १, १०, १५; १, २, २, ११; १, २, ३, ६, उत्त ४, १२, स १३६)। संकृ—**पयहिय**; (पउम ६३, १६, गच्छ १, २४)। कृ—**पयहियव्व**, (स ७१४)।
पयहिण देखो **पदक्खिण**=प्रदक्षिण; (भवि)।
पया सक [**प्र+जनय्**) प्रसव करना, जन्म देना। पयामि; (विपा १, ७)। पयाएज्जासि; (विपा १, ७)। भवि—पयाहिति, पयाहिंति, पयाहिसि; (कप्प; पि ७६; कप्प)।
पया सक [**प्र+या**] प्रयाण करना, प्रस्थान करना। पयाइ; (उत्त १३, २४)।
पया स्त्री [**दे**] चुल्ली, चुल्हा, (राज)।
पया स्त्री. ब. [**प्रजा**] १ वश-वर्ती मनुष्य, रैयत, "जह य पयाण नरिंदो" (उव; विपा १, १)। २ लोक, जन समूह; (सिरि ४२; पंचा ७, ३७)। ३ जन्तु-समूह ; "निव्विगण-चारी अरए पयासु" (आचा; सूअ १, ५, २, ६)। ४ संतान वाली स्त्री; "निव्विंद नदि अरए पयासु अमोहदंसी" (आचा; सूअ १, १०, १५)। ५ संतान, संतति, (सिरि ४२)। °**णंद** पु [°**नन्द**] एक कुलकर पुरुष का नाम, (पउम ३, ५३)। °**नाह** पु [°**नाथ**] राजा, नरेश, (सुपा ५७५)। °**पाल** पु [°**पाल**] एक जैन मुनि जो पाँचवें बलदेव के पूर्वजन्म में गुरू थे, (पउम २०, १६२)। °**वइ** पुं [°**पति**] १ ब्रह्मा, विधाता, (पाअ, सुपा ३०५)। २ प्रथम वासुदेव के पिता का नाम; (पउम २०, १८२, सम १५२)। ३ नक्षत्र-देव विशेष, रोहिणी-नक्षत्र का अधिष्ठायक देव; (ठा २, ३—पत्र ७७; सुज्ज १०, १२)। ४ दक्ष, कश्यप आदि ऋषि; ५ राजा, नरेश; ६ सूर्य, रवि; ७ वह्नि, अग्नि; ८ त्वष्टा; ९ पिता, जनक, १० कीट-विशेष; ११ जामाता; (हे १, १७७; १८०)। १२ अहोरात्र का उन्नीसवाँ मुहूर्त; (सुज्ज १०, १३)।
पयाइ पुं [**पदाति**] प्यादा, पाँव से चलने वाला सैनिक; (हे २, १३८; षड्; कुमा; महा)।
पयाग पुन [**प्रयाग**] तीर्थ-विशेष जहाँ गंगा और यमुना का संगम है; (पउम ८२, ८१ ; हे १, १७७)।
पयाण न [**प्रदान**] दान, वितरण; (उवा; उप ५९७ टी; सुर ४, २१०, सुपा ४६२)।
पयाण न [**प्रतान**] विस्तार; (भग १६, ६)।
पयाण न [**प्रयाण**] प्रस्थान, गमन; (णाया १, ३; पराह २, १, पउम ५४, २८, महा)।
पयाम देखो **पकाम**; (स ६५६)।
पयाम न [**दे**] अनुपूर्व, क्रमानुसार; (दे ६, ६; पाअ)।
पयाय देखो **पयाग**; (कुमा)।
पयाय वि [**प्रयात**] जिसने प्रयाण किया हो वह; (उप २११ टी; महा, औप)।
पयाय वि [**प्रजात**] उत्पन्न, संजात; "पयायसाला विडिमा" (दस ७, ३१)।
पयाय वि [**प्रजात, प्रजनित**] प्रसूत, जिसने जन्म दिया हो वह; "दारग पयाया" (विपा १, १; २; कप्प; णाया १, १—पत्र ३३)। "पयाया पुत्तं" (वसु)।
पयाव देखो **पदाव**=प्रताप; (गा ३२६; से ४, ३०)।
पयार सक [**प्र+चारय्**] प्रचार करना। पयारइ, (सण)। संकृ—**पयारिवि** (अप), (सण)।
पयार सक [**प्र+तारय्**] प्रतारण करना, ठगना। पयारइ, पयारसि; (सण)।
पयार पुं [**प्रकार**] १ भेद, किस्म; २ ढंग, रीति, तरह, (हे १, ६८; कुमा)।
पयार पु [**प्राकार**] किला, दुर्ग; (पउम ३०, ४६)।
पयार पुं [**प्रचार**] १ सचार, संचरण; (सुपा २४)। २ प्रसार, फैलाव, (हे १, ६८)।
पयारण न [**प्रतारण**] वञ्चना, ठगाई; (सुर १२, ६१)।
पयारिअ वि [**प्रतारित**] ठगा हुआ, वञ्चित; (पाअ; सुर ४, १५५)।

पयाल पुं [**पाताल**] भगवान् अनन्तनाथजी का शासन-यक्ष; "छम्मुह पयाल किन्नर" (संति ८)।

पयाव सक [**प्र+तापय्**] तपाना, गरम करना। वकृ—**पयावेमाण**; (पि ५५२)। हेकृ— **पयावित्तए**; (कप्प)।

पयाव पुं [**प्रताप**] १ तेज, प्रखरता; (कुमा; सण)। २ प्रकृष्ट ताप, प्रखर ऊष्मा; (पव ४)।

पयावण न [**पाचन**] पकवाना, पाक कराना; (पराह १, १; श्रा ८)।

पयावण न [**प्रतापन**] १ गरम करना, तपाना; (ओघ १८० भा; पिंड ३४; आचा)। २ अग्नि; (कुप्र ३८९)।

पयावि वि [**प्रतापिन्**] १ प्रताप-शाली; २ पुं. इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम; (पउम ५, ५)।

पयास सक [**प्र+काशय्**] १ व्यक्त करना। २ चमकाना। ३ प्रसिद्ध करना। पयासेइ; (हे ४, ४५)। वकृ—**पयासंत, पयासेंत, पआसअंत**; (सण; गा ४०३; उप ८३३ टी; पि ३९७)। कृ—**पयासणिज्ज, पयासियव्व**; (उप ५९७ टी; उप पृ ५५)।

पयास देखो **पगास**=प्रकाश; (पाअ; कुमा)।

पयास पुं [**प्रयास**] प्रयत्न, उद्यम; (चेइय २६०)।

पयास (अप) नीचे देखो; (भवि)।

पयासग वि [**प्रकाशक**] प्रकाश करने वाला; (सं ७८)।

पयासण न [**प्रकाशन**] १ प्रकाश-करण; (आचा; सुपा ४१६)। २ वि. प्रकाशक, प्रकाश करने वाला; "परमत्थ-पयासणं वीरं" (पुप्फ १)।

पयासय देखो **पयासग**; (विसे ११३०; सं १; पव ८९)।

पयासि वि [**प्रकाशिन्**] प्रकाश करने वाला; (सण, हम्मीर १४)।

पयासिय देखो **पगासिय**; (भवि)।

पयासिर वि [**प्रकाशितृ**] प्रकाश करने वाला; (भवि)।

पयासेंत देखो **पयास**=प्र+काशय्।

पयाहिण देखो **पदक्खिण**=प्रदक्षिण; (उवा; औप; भवि; पि ६५)।

पयाहिण देखो **पदक्खिण**=प्रदक्षिणय्। पयाहिणइ; (भवि)। पयाहिणंति; (कुप्र २९३)।

पयाहिणा देखो **पदक्खिणा**; (सुपा ४७)।

पय्यवत्थाण (शौ) न [**पर्यवस्थान**] प्रकृति में अवस्थान; (स्वप्न ४८)।

पर सक [**भ्रम्**] भ्रमण करना, घूमना। परइ; (हे ४, १६१; कुमा)।

पर देखो **प**=प्र; (तंदु ४६)।

पर वि [**पर**] १ अन्य, भिन्न, इतर; (गा ३८४; महा; प्रासू ८; १५७)। २ तत्पर, तल्लीन; "कोऊहलपरा" (महा; कुमा)। ३ श्रेष्ठ, उत्तम, प्रधान; (आचा; रयण १५)। ४ प्रकर्ष-प्राप्त, प्रकृष्ट; (आचा; श्रा २३)। ५ उत्तर-वर्ती बाद का; "परलोग—" (महा)। ६ दूरवर्ती; (सूअ १, ८; निचू १)। ७ अनात्मीय, अ-स्वीय; (उत्त १; निचू २)। ८ पुं. शत्रु, दुश्मन, रिपु; (सुर १२, ६२; कुमा; प्रासू ६)। ९ न. केवल, फक्त; (कुमा, भवि)। °**उट्ठ** वि [°**पुष्ट**] अन्य से पालित; २ पुं. कोकिल पक्षी; (हे १, १७९)। °**उत्थिय** वि [°**तीर्थिक**] भिन्न दर्शन वाला; (भग)। °**एस** पुं [°**देश**] विदेश, भिन्न देश, अन्य देश; (भवि)। °**ओ** अ [°**तस्**] १ बाद में, परली तर्फ; "अडवीए परओ" (महा)। २ भिन्न में, इतर में; (कुमा)। ३ इतर से, अन्य से; (सूअ १, १२)। °**गणिच्चय** वि [°**गणीय**] भिन्न गण से संबन्ध रखने वाला; स्त्री—°**च्चिया**; (निचू ८)। °**गरिहंझाण** न [°**गर्हाध्यान**] इतर की निन्दा का विचार; (आउ)। °**घाय** पुं [°**घात**] १ दूसरे को आघात पहुँचाना। २ पुंन. कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव अन्य बलवानों की भी दृष्टि में अजेय समझा जाता है वह कर्म; "परघाउदया पाणी परेसिं बलीणंपि होइ दुद्धरिसो" (कम्म १, ४४)। °**चित्तण्णु** वि [°**चित्तज्ञ**] अन्य के मन के भाव को जानने वाला; (उप १७९ टी)। °**च्छंद, छंद** पुं [°**च्छन्द**] १ पर का अभिप्राय, अन्य का आशय; (ठा ४, ४; भग २५, ७)। २ पराधीन, परतन्त्र; (राज; पाअ)। °**जाणुअ** वि [°**ज्ञ**] १ पर को जानने वाला; २ प्रकृष्ट जानकार; (प्राकृ १८)। °**ट्ठ** पुं [°**अर्थ**] परोपकार; (राज)। °**ट्ठा** स्त्री [°**अर्थ**] दूसरे के लिए; "कडं परट्ठाए" (आचा)। °**णिंदंझाण** न [°**निन्दाध्यान**] अन्य की निन्दा का चिन्तन; (आउ)। °**ण्णुअ** देखो °**जाणुअ**; (प्राकृ १८)। °**तंत** वि [°**तन्त्र**] पराधीन, परायत्त; (सुपा २३३)। °**तित्थिअ** देखो °**उत्थिय**; (भग; सम्म ८५)। °**तीर** न [°**तीर**] सामने वाला किनारा; (पाअ)। °**त्त** न [°**त्व**] १ भिन्नत्व; पार्थक्य; २ वैशेषिक दर्शन में प्रसिद्ध गुण-विशेष; (विसे २४९१)। °**त्त** अ [°**त्र**] १ जन्मान्तर में, परलोक में; (सुपा

५०८)। २ न. जन्मान्तर; "ते इहअंपि परत्ते नरयगइं जंति नियमेण" (सुपा ५२१), "इह लोए च्चिय दीसइ सग्गो नरओ य किं परत्तेण" (वज्जा १३८)। °त्थ अ [°त्र] जन्मातर में, "इहं परत्थावि य जं विरुद्धं न किज्जए तंपि सया निसिद्धं" (सत्त ३७; सुर १४, ३३; उव)। °त्थ देखो °ट्ठ; (सुर ४, ७३)। °त्थी स्त्री [°स्त्री] परकीय स्त्री; (प्रासू १५५)। °दार पुंन [°दार] परकीय स्त्री; (पडि), "जो वज्जइ परदारं सो सेवइ नो कयाइ परदारं" (सुपा ३६६), "दव्वेण अप्पकालं गहिया वेसावि होइ परदारं" (सुपा३८०)। °दारि वि [°दारिन्] परस्त्री-लम्पट; "ता एस वसुमईए कएण परदारियाए आयाओ" (सुर ६, १७६)। °पक्ख वि [°पक्ष] वैधर्मिक, भिन्न धर्म का अनुयायी; (द्र १७)। °परिवाइय वि [°परिवादिक] इतर के दोषों को बोलने वाला, पर-निन्दक; (औप)। °परिवाय पुं [°परिवाद] १ पर के गुण-दोषों का विप्रकीर्ण वचन; (औप; कप्प)। २ पर-निन्दा, इतर के दोषों का परिकीर्तन; (ठा १; ४, ४)। ३ अन्य के सद्गुणों का अपलाप; (पंचू)। °परिवाय पुं [°परिपात] अन्य का पातन, दोषोद्घाटन-द्वारा दूसरे को गिराना; (भग १२, ५)। °पुट्ठ देखो °उट्ठ; (पगण १७; स ४१६)। °भव पुं [°भव] आगामी जन्म; (औप; पण्ह १, १)। °भविअ वि [°भविक] आगामी जन्म से संबन्ध रखने वाला; (भग; ठा ६)। °भाग पुं [°भाग] १ श्रेष्ठ अंश; २ अन्य का हिस्सा; ३ अत्यन्त उत्कर्ष; (उप पृ ६७)। °महेला स्त्री [°महेला] १ उत्तम स्त्री; २ परकीय स्त्री; (सुपा ४७०)। °यत्त देखो °यत्त; "परयत्तो परछंदो" (पाअ)। °लोअ, °लोग पुं [°लोक] १ इतर जन, स्वजन से भिन्न; (उप ६८६ टी)। २ जन्मान्तर; (पण्ह १, २; विसे १६५१; महा; प्रासू ७५; सण)। °वस वि [°वश] पराधीन, परतन्त्र; (कुमा; सुपा २३७)। °वाइ पुं [°वादिन्] इतर दार्शनिक; (औप)। °वाय पुं [°वाद] १ इतर दर्शन, भिन्न मत; (औप)। २ श्रेष्ठ वादी; (श्रा२३)। °वाय पुं [°वाच्] १ सज्जन, सुजन; २ वि. श्रेष्ठ वाणी वाला; (श्रा २३)। °वाय वि [°वाज] १ श्रेष्ठ गति वाला; २ पुं. श्रेष्ठ अश्व; (श्रा २३)। °वाय वि [°वाय] जानकार, ज्ञानी; (श्रा २३)। °वाय वि [°पाक] १ सुन्दर रसोई बनाने वाला; २ पुं. रसोइया; (श्रा २३)। °वायपुं [°पात]१ जुआड़ी, जूए का खेलाड़ी; २ अशुभ समय; (श्रा २३)। °वाय पुं [°व्याद] ब्राह्मण, विप्र; (श्रा२३)। °वाय पुं [°वाय] धनी जुलाहा; धनाढ्य तन्तुवाय; (श्रा २३)। °वाय वि [°व्रात] १ प्रकृष्ट समूह वाला; २ न. सुभिक्ष समय का धान्य; (श्रा २३)। °वाय पुं [°वात] ग्रीष्म समय का जलधि-तट; (श्रा २३)। °वाय पुं [°व्याघ्र] धूर्त, ठग; (श्रा २३)। °वाय वि [°पाय] अनीति वाला; (श्रा २३)। °वाय वि [°वाक] वेद-ज्ञ, वेद-वित्; (श्रा २३)। °वाय वि [°पातृ] १ दयालु, कारुणिक; २ खूब पान करने वाला; ३ खूब सूखने वाला; ४ पुं. पावृट् काल का यवास वृक्ष; ५ मद्य-व्यसनी; (श्रा २३)। °वाय वि [°बाद] सुस्थिर; (श्रा २३)। °वाय वि [°व्यातृ] १ श्रेष्ठ आच्छादक; २ पुं. वस्त्र, कपड़ा; (श्रा २३)। °वाय वि [°वातृ] १ प्रकृष्ट वहन करने वाला; २ पुं. श्रेष्ठ तन्तुवाय, उत्तम जुलाहा; ३ महान् पवन; (श्रा २३)। °वाय वि [°व्यागस्] १ अति बड़ा अपराधी, गुरुतर अपराधी; (श्रा २३)। °वाय वि [°व्याप] प्रकृष्ट विस्तार वाला; (श्रा २३)। °वाय वि [°बाक] १ जहाँ पर प्रकृष्ट बक-समूह हो वह स्थान; २ न. मत्स्य-परिपूर्ण सरोवर; (श्रा २३)। °वाय वि [°व्याय] १ श्रेष्ठ वायु वाला; २ जहाँ पर पक्षिओं का विशेष आगमन होता हो वह; ३ पुं. अनुकूल पवन से चलता जहाज; ४ सुन्दर घर; ५ वनोद्देश, वन-प्रदेश; (श्रा २३)। °वाय वि [°वाय] १ जहाँ पानी का प्रकृष्ट आगमन हो वह; २ न. जलधि-मुख, समुद्र का मुँह; ३ पुं. महा-समुद्र, महा-सागर; (श्रा २३)। °वाय वि [°व्याज] अन्य के पास विशेष गमन करने वाला; २ प्रार्थना-परायण; (श्रा २३)। °वाय वि [°पाय] १ अत्यन्त हीन-भाग्य; २ नित्य-दरिद्र; (श्रा २३)। °वाय वि [°वाप] १ प्रकृष्ट वपन वाला; २ पुं. कृषक; (श्रा २३)। °वाय वि [°पाप] १ महा-पापी; २ हत्या करने वाला; (श्रा २३)। °वाय पुं [°पाक] १ कुम्भकार, कुम्हार; २ मुक्त जीव; ३ पहली तीन नरक-भूमि; (श्रा २३)। °वाय वि [°पाग] वृक्ष-रहित, वृक्ष-वर्जित; (श्रा २३)। °वाय वि [°वाज्] शत्रु-नाशक; (श्रा २३)। °वाय पुं [°पाद] महान् वृक्ष, बड़ा पेड; (श्रा २३)। °वाय वि [°पात्] प्रकृष्ट पैर वाला; (श्रा २३)। °वाय वि [°वाच्] फलित शालि; (श्रा २३)। °वाय वि [°वाप] १ विशेष भाव से शत्रु की चिन्ता करने वाला; २ पुं. मन्त्री, अमात्य; ३ सुभट, योद्धा; (श्रा २३)। °वाय वि [°पात] आपात-सुन्दर जो प्रारम्भ में ही सुन्दर हो वह; (श्रा २३)। °वाय वि [°व्राय] श्रेष्ठ विवाह वाला;

(श्रा २३)। °वाय वि [°पाय] श्रेष्ठ रक्षा वाला, जिसकी रक्षा का उत्तम प्रबन्ध हो वह; २ अत्यन्त प्यासा; ३ पुं. राजा, नरेश; (श्रा २३)। °वाय वि [°व्यात] १ इतर के पास विशेष वमन करने वाला; २ पुं. भिक्षुक, याचक; (श्रा २३)। °वाय वि [°पायस्] १ दूसरे की रक्षा के लिये हथियार रखने वाला; २ पुं सुभट, योद्धा; (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°व्याजा] वेश्या, वारांगना; (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°व्यागस्] असती, कुलटा; (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°व्यापा] अन्तिम समुद्र की स्थिति; (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°पाता] धूर्त-मैत्री; (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°व्राया] नृप-कन्या; (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°पागा] मरु-भूमि; (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°वाच्] कश्मीर-भूमि; (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°वाज्] नृप-स्थिति; (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°पात्] शतपदी, जन्तु-विशेष (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°व्यावा] भेरी, वाद्य-विशेष; (श्रा २३)। °विएस पुं [°विदेश] परदेश, विदेश; (पउम ३२, ३६)। °व्वस देखो °वस; (षड्; गा २६५; भवि)। °संतिग वि [°सत्क] पर-संबन्धी, परकीय; (पण्ह १, ३)। °समय पुं [°समय] इतर दर्शन का सिद्धान्त; "जावइया नयवाया तावइया चेव परसमया" (सम्म १४४)। °हुअ वि [°भृत] १ दूसरे से पुष्ट, अन्य से पालित; (प्राप्र)। २ पुंस्त्री. कोयल. पिक पक्षी; (कप्प), स्त्री—°आ; (सुर ३, ५४; पाअ)। °घाय देखो °घाय; (प्रासू १०४; सम ६७)। °धीण देखो °हीण; (धर्मवि १३६)। °यत्त वि [°यत्त] पराधीन, परतन्त्र; (पउम ६४, ३४; उप पृ १८२; महा)। °हीण वि [°धीन] परतन्त्र, परायत्त; (नाट—मालवि २०)।

पर° देखो **परा**=अ; (श्रा २३; पउम ६१, ८)।

परं अ [**परम्**] १ परन्तु, किन्तु; "जं तुमं आणवेसित्ति, परं तुह दूरे नयरं" (महा)। २ उपरान्त; "नो से कप्पइ एत्तो बाहिं; तेण पर, जत्थ नाणदंसणचरित्ताइं उस्सप्पंति त्ति बेमि" (कस १, ५१; २, ४—७; ४, १२—२६)। ३ केवल, फक्त; "एस मह संतावो, परं माणससरमज्जणेण जइ अवगच्छइत्ति" (ा)।

परं अ [**परुत्**] आगामी वर्ष; "अज्जं कल्लं परं परारिं" (वै २), "अज्जं परं परारिं पुरिसा चिंतंति अत्थसंपत्तिं" (प्रासू ११०)।

परंग सक [**परि+अङ्ग्**] चलना, गति करना,। कवकृ—**परंगिज्जमाण**; (औप)।

परंगमण न [**पर्यङ्गन**] पाँव से चलना, चंक्रमण; (औप)।

परंगामण न [**पर्यङ्गन**] चलाना, चंक्रमण कराना; (भग ११, ११—पत्न ५४४)।

परंतम वि [**परतम**] अन्य को हैरान करने वाला; (ठा ४, २—पत्न २१६)।

परंतम वि [**परतमस्**] १ अन्य पर क्रोध करने वाला; २ अन्य-विषयक अज्ञान रखने वाला; (ठा ४, २—पत्न २१६)।

परंतु अ [**परन्तु**] किन्तु; (सुपा ४६९)।

परंदम वि [**परन्दम**] १ अन्य को पीड़ा पहुँचाने वाला; (उत्त ७, ६)। २ अन्य को शान्त करने वाला; ३ अश्व आदि को सीखाने वाला; (ठा ४, २—पत्न २१३)।

परंपर, **परंपरग**, **परंपरय** वि [**परम्पर**] १ भिन्न भिन्न; (णंदि)। २ व्यवहित; "परंपर-सिद्ध—" (पण्ण १; ठा २, १; १०)। ३ पुंन. परम्परा, अविच्छिन्न धारा; (उप ७३३), "पुरिसपरंपरएण तेहिं इह्रगा आणिया" "एस दव्वपरंपरगो" (आव १), "परंपरेणं " (कप्प; धर्मसं ५३१; १३०९)।

परंपरा स्त्री [**परम्परा**] १ अनुक्रम, परिपाटी; (भग; औप; पाअ)। २ अविच्छिन्न धारा, प्रवाह; (णाया १, १)। ३ निरन्तरता, अ-व्यवधान; (भग ६, १)। ४ व्यवधान, अन्तर; "अणंतरोववण्णगा चेव परंपरोववण्णगा चेव " (ठा २, २; भग १३, १)।

परंभरि वि [**परम्भरि**] दूसरे का पेट भरने वाला; (ठा ४,३—पत्न २४७)।

परंमुह वि [**पराङ्मुख**] मुँह-फिरा, विमुख; (पि २६७)।

परकीअ, **परकेर**, **परक्क** वि [**परकीय**] अन्य-संबन्धी, इतर से संबन्ध रखने वाला ; (विसे ४१ ; सुपा ३४६ ; अभि १५१ ; षड् ; स्वप्न ४० ; स २०७ ; षड्), "न सेवियव्वा पमया परक्का" (गोय १३)।

परक्क न [**दे**] छोटा प्रवाह ; (दे ६, ८)।

परक्कंत वि [**पराक्रान्त**] १ जिसने पराक्रम किया हो वह ; २ अन्य से आक्रान्त ; "गामाणुगामं दूइज्जमाणस्स दुज्जायं दुप्परक्कंतं भवइ" (आचा)। ३ न. पराक्रम, बल ; ४ उद्यम, प्रयत्न ; ५ अनुष्ठान ; "जे अबुद्धा महाभागा वीरा असम्मत्तदंसिणो, असुद्धं तेसि परक्कंतं" (सूअ १, ८, २२)।

परक्कम अक [**परा+क्रम्**] पराक्रम करना। परक्कमे, परक्कमेज्जा, परक्कमेज्जासि ; (आचा)। वकृ—**परक्कमंत, परक्कममाण**; (आचा)। कृ—**परक्कमियव्व, परक्कम्म**; (णाया १, १ ; सूअ १, १, १)।

परक्कम पुंन [**पराक्रम**] १ वीर्य, बल, शक्ति, सामर्थ्य ; (विसे १०४६, ठा ३, १ ; कुमा), "तस्स परक्कमं गीयमाणं न तए सुय" (सम्मत१७६)। २ उत्साह ; ३ चेष्टा, प्रयत्न, (आचू १; प्रासू ६३ ; आचा)। ४ शत्रु का नाश करने की शक्ति ; (जं ३)। ५ पर-आक्रमण, पर-पराजय ; (ठा ४, १ ; आवम)। ६ गमन, गति ; (सूअ २, १, ६)।

परक्कमि वि [**पराक्रमिन्**] पराक्रम-संपन्न ; (धर्मवि ११६ ; १२०)।

परग न [**दे. परक**] १ तृण-विशेष, जिससे फूल गूँथे जाते हैं ; (आचा २, २, ३, २० ; सूअ २, २, ७)। २ धान्य-विशेष ; (सूअ २, २, ११)।

परगासय वि [**प्रकाशक**] प्रकाश करने वाला; (तंदु ४६)।

परज्ज (अप) सक [**परा+जि**] पराजय करना, हराना। परज्जइ ; (भवि)।

परज्जिय (अप) वि [**पराजित**] पराजय-प्राप्त, हराया हुआ ; (भवि)।

परज्झ वि [**दे**] १ पर-वश, पराधीन, परतन्त्र ; "जेसंखया; तुच्छपरप्पवाई ते पेज्जदोसाणुगया परज्झा" (उत्त ४, १३ बृह ४)। २ पुंन. परतन्त्रता, पराधीनता ; (ठा १०—पत्र ५०५ ; भग ७, ८—पत्र ३१४)।

परट्ट देखो **परिअट्ट**=परिवर्त ; (जीवस २५२ ; पव १६२ ; कम्म ५, ५६)।

परडा स्त्री [**दे**] सर्प-विशेष ; (दे ६, ५), "उच्चारं कुणमाणो अपाणदेसम्मि गरुयपरडाए, दट्ठो पीडाए मओ" (सुपा ६२०)।

परदारिअ पुं [**पारदारिक**] परस्त्री-लम्पट ; (पउम १०५, १०७)।

परद्ध वि [**दे**] १ पीडित, दुःखित ; (दे ६, ७० ; पाअ; सुर ७, ४ ; १६, १४४ ; उप पृ २२० ; महा)। २ पतित; ३ भीरु, डरपोक ; (दे ६, ७०)। ४ व्याप्त; "जीइ परद्धा जीवा न दोसगुणदंसिणो होंति" (धम्मो १४)।

परप्पर देखो **परोप्पर**; (पि ३११; नाट—मालती १६८)।

परब्भवमाण देखो **पराभव** ॥ परा+भू।

परभत्त वि [**दे**] भीरु, डरपोक ; (पड्)।

परभाअ पुं [**दे**] सुरत, मैथुन ; (दे ६, २७)।

परम वि [**परम**] १ उत्कृष्ट, सर्वाधिक ; (सूअ १, ६ ; जी ३७)। २ उत्तम, सर्वोत्तम, श्रेष्ठ ; (पंचव ४ ; धर्म ३ ; कुमा)। ३ अत्यर्थ, अत्यन्त ; (पण्ह १, ३ ; भग ; औप)। ४ प्रधान, मुख्य; (आचा; दस ६, ३)। ५ पुं. मोक्ष, मुक्ति; ६ संयम, चारित्र ; (आचा ; सूअ १, ६)। ७ न. सुख ; (दस ४)। ८ लगातार पाँच दिनों का उपवास; (संबोध ५८)। °**ट्ठ** पुं [°**ार्थ**] १ सत्य पदार्थ, वास्तविक चीज ; "अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे" (भग; धर्म १)। २ मोक्ष, मुक्ति ; (उत्त १८ ; पण्ह १, ३)। ३ संयम, चारित्र ; (सूअ १, ६)। ४ पुंन. देखो नीचे °**त्थ**=ार्थ ; "परमट्ठनिट्ठिअट्ठा" (पडि ; धर्म २)। °**ण्ण** देखो °**न्न** ; (सम १५१)। °**त्थ** पुंन [°**ार्थ**] १ तत्त्व, सत्य; "तत्तं परमत्थं" (पाअ), "परमत्थदो" (अभि ६१)। २—४ देखो °**ट्ठ** ; (सुपा २४ ; ११० ; सण ; प्रासू १६४; महा)। °**त्थ** न [°**ास्त्र**] सर्वोत्तम हथियार, अमोघ अस्त्र ; (से १, १)। °**दंसि** वि [°**दर्शिन्**] १ मोक्ष देखने वाला ; २ मोक्ष-मार्ग का जानकार ; (आचा)। °**न्न** न [°**न्न**] १ खीर, दुग्ध-प्रधान मिष्ट भोजन ; (सुपा ३६०)। २ एक दिन का उपवास ; (संबोध ५८)। °**पय** न [°**पद**] मोक्ष, निर्वाण, मुक्ति ; (पाअ; भवि ; अजि ४० ; पंचा १४)। °**प्प** पुं [°**ात्मन्**] सर्वोत्तम आत्मा, परमेश्वर ; (कुमा ; सुपा ८३ ; रयण४३)। °**प्पय** देखो °**पय** ; (सुपा १२७)। °**प्पय** देखो °**प्प** ; (भवि)। °**प्पया** स्त्री [°**ात्मता**] मुक्ति, मोक्ष ; "सेलेसिं आरुहिउं अरिकेसरिसूरी परमप्पयं पत्तो" (सुपा १२७)। °**बोधिसत्त** पुं [°**बोधिसत्त्व**] परमार्हत, अर्हन् देव का परम भक्त ; (मोह ३)। °**संखिज्ज** न [°**संख्येय**] संख्या-विशेष ; (कम्म ४, ७१)। °**सोमणस्सिय** वि [°**सौमनस्यित**] सर्वोत्तम मन वाला, संतुष्ट मन वाला; (औप; कप्प)। °**सोमणस्सिय** वि [°**सौमनस्यिक**] वही अर्थ ; (औप ; कप्प)। °**हेला** स्त्री [°**हेला**] उत्कृष्ट तिरस्कार ; (सुपा ४७०)। °**ाउ** न [°**ायुस्**] १ लम्बा आयुष्य, बड़ी उमर ; (पउम १०, ७)। २ जीवित-काल, उमर; (विपा १, १)। °**ाणु** पुं [°**ाणु**] सर्व-सूक्ष्म वस्तु; (भग; गउड)। °**ाहम्मिय** पुं [°**ाधार्मिक**] असुर-विशेष, नारक जीवों को दुःख देने वाले

देवों की एक जाति; (सम २८)। °हाेहिअ वि [°धोवधिक] अवधिज्ञान-विशेष वाला, ज्ञानि-विशेष; (भग)।

परमिट्ठि पुं [**परमेष्ठिन्**] १ ब्रह्मा, चतुरानन; (पाअ; सम्मत ७८)। २ अर्हन्, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और मुनि; (सुपा ६५; आप ६८; गण ६; निसा २०)।

परमुक्क वि [**परामुक्त**] परित्यक्त; (पउम ७१, २६)।

परमुवगारि } वि [**परमोपकारिन्**] बड़ा उपकार करने **परमुवयारि** } वाला; (सुर २, ४२; २, ३७)।

परमुह देखो **परम्मुह**; (से २, १६)।

परमेट्ठि देखो **परमिट्ठि**; (कुमा; भवि; चेइय ४६६)।

परमेसर पुं [**परमेश्वर**] सर्वैश्वर्य-संपन्न, परमात्मा; (सम्मत १४४; भवि)।

परम्मुह वि [**पराङ्मुख**] विमुख, मुँह-फिरा; (गाया १, २; काप्र ७२३; गा ६८८)।

परय न [**परक**] आधिक्य, अतिशय; (उत्त ३४, १४)।

परलोइअ वि [**पारलोकिक**] जन्मान्तर-संबन्धी; (आचा; सम ११६ ; पगह १, ५)।

परवाय वि [**प्रवाज**] १ प्रकृष्ट शब्द से प्रेरणा करने वाला; २ पुं. सारथि, रथ हाँकने वाला; (श्रा २३)।

परवाय वि [**प्रारवाय**] १ श्रेष्ठ गाना गाने वाला; २ पुं. उत्तम गवैया; (श्रा २३)।

परवाय पुं [**प्रपाज**] नाज भरने का कोठा, वह घर जहाँ नाज संगृहीत किया जाता है; (श्रा २३)।

परवाया स्त्री [**प्रवाप्**] गिरि-नदी, पहाड़ी नदी; (श्रा २३)।

परस (अप) देखो **फास**=स्पर्श; (पिंग; भवि)। °**मणि** पुं [°**मणि**] रत्न-विशेष, जिसके स्पर्श से लोहा सुवर्ण होता है; (पिंग)।

परसण्ण (अप) देखो **पसण्ण**; (पिंग)।

परसु पुं [**परशु**] अस्त्र-विशेष, परश्वध, कुठार, कुल्हाड़ीः (भग ६, ३३; प्रासू ६; ६२; काल)। °**राम** पुं [°**राम**] जमदग्नि ऋषि का पुत्र, जिसने इक्कीस वार निःक्षत्रिय पृथिवी की थी; (कुमा, पि २०८)।

परसुहत्त पुं [**दे**] वृक्ष, पेड, दरख्त; (दे ६, २६)।

परस्सर पुंस्त्री [**दे. पराशर**] गेंडा, पशु-विशेप; (पगण १; राज)। स्त्री—°**री**; (पगण ११)।

परहुत्त वि [**पराभूत**] पराजित, हराया गया; (पउम ६१, ८)।

परा अ [**परा**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ आभिमुख्य, संमुखता; २ त्याग; ३ धर्षण; ४ प्राधान्य, मुख्यता; ५ विक्रम; ६ गति, गमन, ७ भङ्ग; ८ अनादर; ९ तिरस्कार; १० प्रत्यावर्तन; (हे २, २१७)। ११ भृश, अत्यन्त; (ठा ३, २; श्रा २३)।

परा स्त्री [**दे. परा**] तृण-विशेष, (पगह २, ३—पत्र १२३)।

पराइ सक [**परा + जि**] हराना, पराजय करना। संकृ—**पराइत्ता**; (सूअनि १६६)।

पराइअ वि [**पराजित**] पराभव-प्राप्त; (पउम २, ८६; औप; स ६३४; सुर ६, २५; १३, १७१; उत्त ३२, १२)।

पराइअ (अप) वि [**परागत**] गया हुआ; (भवि)।

पराइण देखो **पराजिण**। पराइणइ; (पि ४७३; भग)।

पराई स्त्री [**परकीया**] इतर से संबन्ध रखने वाली; (हे ४, ३५०; ३६७)। देखो **पराय**=परकीय।

पराकम देखो **परक्कम**; (सूअ २, १, ६)।

पराकय वि [**पराकृत**] निराकृत, निरस्त; (अज्झ ३०)।

पराकर सक [**परा + कृ**] निराकरण करना। पराकरोदि (शौ); (नाट—चैत ३५)।

पराजय पुं [**पराजय**] परिभव, अभिभव; (राज)।

पराजय } सक [**परा + जि**] पराजय करना, हराना। **पराजिण** } भूका—पराजयित्था; (पि ५१७)। भवि—पराजिणिस्सइ; (पि ५२१)। संकृ—**पराजिणित्ता**; (ठा ४, २)। हेकृ—**पराजिणित्तए**; (भग ७, ६)।

पराजिणिअ } देखो **पराइअ**=पराजित; (उप पृ ५२; महा)। **पराजिय** }

पराण देखो **पाण**=प्राण; (नाट—चैत ५४; पि १३३)।

पराणग वि [**परकीय**] अन्य का, दूसरे का, "जत्थ हिरगण-सुवगणं हत्थेण पराणगंपि नो छिप्पे" (गच्छ २, ५०)।

पराणिय वि [**पराणीत**] पहुँचा हुआ; (भवि)।

पराणी सक [**परा + णी**] पहुँचाना। पराणए; (भवि)। पराणेमि, (स २३४); "जइ भणसि ता निमेसमित्तेण तुमं तायमंदिरं पराणेमि" (कुप्र ६०)।

परानयण न [**पराणयन**] पहुँचाना; "नियभगिणीपरानयणे का लज्जा, अवि य ऊसवो एस" (उप ७२८ टी)।

पराभव सक [**परा + भू**] हराना। कवकृ—**पराभविज्जंत**, **परब्भवमाण**; (उप ३२० टी; गाया १, २; १८)।

पराभव पुं [**पराभव**] पराजय; (विपा १, १)।

पराभविअ वि [**पराभूत**] अभिभूत, हराया हुआ; (धर्मवि ६८)।

परामट्ठ देखो **परामुट्ठ**; (पउम ६८, ७३)।

परामरिस सक [**परा+मृश्**] १ विचार करना, विवेचन करना। २ स्पर्श करना। परामरिसइ; (भवि)। वकृ—**परामरिसंत**; (भवि)। संकृ—**परामरिसिअ**; (नाट—मृच्छ ८७)।

परामरिस पुं [**परामर्श**] १ विवेचन, विचार; (प्रामा)। २ युक्ति, उपपत्ति; ३ स्पर्श; ४ न्याय-शास्त्रोक्त व्याप्ति-विशिष्ट रूप से पक्ष का ज्ञान; (हे २, १०५)।

परामिट्ठ } **परामुट्ठ** } वि [**परामृष्ट**] १ विचारित, विवेचित; २ स्पृष्ट, छुआ हुआ; (नाट—मृच्छ ३३; हे १, १३१; स १००; कुप्र ५१)।

परामुस सक [**परा+मृश्**] १ स्पर्श करना, छूना। २ विचार करना, विवेचन करना। ३ आच्छादित करना। ४ पोंछना। ५ लोप करना। परामुसइ; (कस)। कर्म—"सूरो परामुसिज्जइ णाभिमुहुक्खित्तधूलिहिं" (उवर १२३)। वकृ—"नियउत्तरिज्जेण नयणाइं **परामुसंतेण** भणियं" (कुप्र ६६)। कवकृ—**परामुसिज्जमाण**; (स ३४९)।

परामुसिय देखो **परामुट्ठ**; (महा; पाअ)।

पराय अक [**प्र+राज्**] विशेष शोभना। वकृ—**परायंत**; (कप्प)।

पराय पुं [**पराग**] १ धूली, रज; "रेणू पंसू रओ पराओ य" (पाअ)। २ पुष्प-रज; (कुमा; गउड)।

पराय } **परायग** } वि [**परकीय**] पर-संबन्धी, इतर से संबन्ध रखने वाला; "नो अप्पणा पराया गुरुणो कइयावि हुंति सुद्धाणं" (सढ्ढि १०५; हे ४, ३७६; भग ८, ५)।

परायण वि [**परायण**] तत्पर; (कम्म १, ६१)।

परारिं अ [**परारि**] आगामी तीसरा वर्ष; (प्रासू ११०; वै २)।

पराल देखो **पलाल**; (प्रासू १३८)।

पराव (अप) सक [**प्र+आप्**] प्राप्त करना। परावहिं; (हे ४, ४४२)।

परावत्त अक [**परा+वृत्**] १ बदलना, पलटना। २ पीछे लौटना। परावत्तइ; (उवर ८८)। वकृ—**परावत्तमाण**; (राज)।

परावत्त सक [**परा+वर्तय्**] १ फिराना। २ आवृत्ति करना। परावत्तंति; (पव ७१), परावत्तेसि; (मोह ४७)। संकृ—"तो सागरेण भणियं अरे **परावत्तिऊण** निययरहं" (कुप्र ३७८)।

परावत्त पुं [**परावर्त**] परिवर्तन, हेराफेरी; (स ९२; उप पृ २७; महा)।

परावत्ति वि [**परावर्तिन्**] परिवर्तन कराने वाला; "वेस-परावत्तिणी गुलिया" (महा)।

परावत्ति स्त्री [**परावृत्ति**] परिवर्तन, हेराफेरी; (उप १०३१ टी)।

परावत्तिय वि [**परावर्तित**] परिवर्तित, बदला हुआ; (महा)।

परासर पुं [**पराशर**] १ पशु-विशेष; (राज)। २ ऋषि-विशेष; (औप; गा ८९२)।

परासु वि [**परासु**] प्राण-रहित, मृत; (श्रा १४; धर्मसं ६७)।

पराहव देखो **पराभव**=पराभव; (गुण ६)।

पराहुत्त वि [**दे. पराङ्मुख**] विमुख, मुँह-फिरा; (ग २४५; से १०, ६४; उप पृ ३८८; ओघ ५१४; वज्जा २६), "महविणयपराहुत्तो" (पउम ३३, ७४; सुख २, १७)।

पराहुत्त } **पराहूअ** } वि [**पराभूत**] अभिभूत, हराया हुआ; (उप ६४८ टी; पाअ)।

परि अ [**परि**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ सर्वतो-भाव, समंतात, चारो ओर; (गा २२; सूअ १, ९)। २ परिपाटी, क्रम; (पिंग)। ३ पुनः पुनः; फिर फिर; (पण्ह १, १; श्रावक २८४)। ४ सामीप्य, समीपता; (गउड ७७९)। ५ विनिमय, बदला; जैसे—'परियाण'=परिदान; (भवि)। ६ अतिशय, विशेष; (स ७३४)। ७ संपूर्णता; जैसे—'परिट्ठिअ'; (पव ६६)। ८ बाहरपन; (श्रावक २८४)। ९ ऊपर; (हे २, २११; सुपा २६९)। १० शेष, बाकी; ११ पूजा; १२ व्यापकता; १३ उपरम, निवृत्ति; १४ शोक; १५ किसी प्रकार की प्राप्ति; १६ आख्यान; १७ संतोष-भाषण; १८ भूषण, अलंकरण; १९ आलिंगन; २० नियम; २१ वर्जन, प्रतिषेध; (हे २, २१७; भवि; गउड)। २२ निरर्थक भी इसका प्रयोग होता है; (गउड १०; सण)।

परि देखो **पडि**=प्रति; (ठा ५, १—पत्र ३०२; पण्ण १६—पत्र ७७४; ७८१)।

परि स्त्री [**दे**] गीति, गीत; (कुमा)।

परि सक [**क्षिप्**] फेंकना। परिइ; (षड्)।

परिअंज सक [**परि+भञ्ज्**] भाँगना, तोड़ना। परिअं-जइ; (धात्वा १४३)।

परिअंत सक [**श्लिष्**] १ आलिंगन करना। २ संसर्ग करना। परिअंतइ; (हे ४, १६०)।

परिअंत देखो **पज्जंत**; (पण्ह १, ३; पउम ६५, १६; सूअ २, १, १५)।

परिअंतणा स्त्री [**परियन्त्रणा**] अतिशय यन्त्रणा; (नाट—मालती २८)।

परिअंतिअ वि [**श्लिष्ट**] आलिंगित; (कुमा)।

परिअंभिअ वि [**परिजृम्भित**] विकसित; (से २, २०)।

परिअट्ट अक [**परि+वृत्**] पलटना, बदलना। वकृ—"दिट्ठो अपरिअट्टंतीए सहयारच्छायाए एसो" (कुप्र ४५; महा), **परियट्टमाण**; (महा)।

परिअट्ट सक [**परि+वर्तय्**] १ पलटाना, बदलाना। २ आवृत्ति करना, पठित पाठ को याद करना। ३ फिराना, घुमाना। परियट्टइ, परियट्टेइ; (भवि; उव)। हेकृ—"**परि-यट्टिउमाढत्तो नलिणीगुम्मं ति अज्झयणं**" (कुप्र १७३)।

परिअट्ट सक [**परि+अट्**] परिभ्रमण करना, घूमना। परिअट्टइ; (हे ४, २३०)। संकृ—**परियट्टिवि** (अप); (भवि)।

परिअट्ट पुं [**दे**] रजक, धोबी; (दे ६, १५)।

परिअट्ट पुं [**परिवर्त**] १ पलटाव, बदला; २ समय का परिमाण-विशेष, अनन्त उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी काल; (विपा १, १; सुर १६, १४५; पव १६२)।

परिअट्टग वि [**परिवर्तक**] परिवर्तन करने वाला; (निचू १०)।

परिअट्टण न [**परिवर्तन**] १ पलटाव, बदला करना; (पिंड ३२४; वै ६७)। २ द्विगुण, त्रिगुण आदि उपकरण; (आचा १, २, १, १)।

परिअट्टणा स्री [**परिवर्तना**] १ फिर फिर होना, (पण्ह १, १)। २ आवृत्ति, पठित पाठ का आवर्तन, (आचा २, १, ४, २; उत्त २६, १; ३०, ३४,औप; ठा ५, ३)। ३ द्विगुण आदि उपकरण; (पि २८६)। ४ बदला करना; (पिंड ३२५)।

परिअट्टय वि [**पर्यटक**] परिभ्रमण करने वाला; "मेरुगिरिस-ययपरियट्टयं" (कप्प ३६)।

परिअट्टलिअ वि [**दे**] परिच्छिन्न; (दे ६, ३६)।

परिअट्टविअ वि [**दे**] परिच्छन्न; (षड्)।

परिअट्टिय वि [**परिवर्तित**] बदलाया हुआ; (ठा ३,४; पिंड ३२३; पंचा १३, १२)। देखो **परिअत्तिअ**।

परिअड सक [**परि+अट्**] परिभ्रमण करना। परिअडंति; (श्रावक १३३)। वकृ—**परियडंत**; (सुर २, २)।

परिअडण न [**पर्यटन**] परिभ्रमण; (स ११४)।

परिअडि स्त्री [**दे**] १ वृति वाड; २ वि. मूर्ख, बेवकूफ; (दे ६, ७३)।

परिअडिअ वि [**पर्यटित**] परिभ्रान्त, भटका हुआ; (सिक्खा १७)।

परिअड्ढिअ वि [**दे**] प्रकटित; व्यक्त किया हुआ; (षड्)।

परिअड्ढ अक [**परि+वृध्**] बढ़ना। "परिअड्ढइ लायण्णं" (हे ८, २२०)।

परिअड्ढ सक [**परि+वर्धय्**] बढ़ाना; (हे ४, २२०)।

परिअड्ढि स्त्री [**परिवृद्धि**] विशेष वृद्धि; (प्राकृ २१)।

परिअड्ढिअ वि [**परिवर्धिन्** °**क**] बढ़ाने वाला; "समणगण-वंदपरियड्ढिए" (औप)।

परिअड्ढिअ वि [**पर्याढ्यक**] परिपूर्ण; (औप)।

परिअड्ढिअ वि [**परिकर्षिन्**, °**क**] खींचने वाला,आकर्षक; (औप)।

परिअड्ढिअ वि [**परिकृष्ट**] खींचा हुआ, आकृष्ट; "जस्स समरेसु रेहइ हयगयमयमिलियपरिमलुग्गारा। दढपरियड्ढियजयसिरिकेसकलावो व्व खग्गलया" (सुपा ३१)।

परिअण पु [**परिजन**] १ परिवार, कुटुम्ब, पुत्र-कलत्र आदि पालनीय वर्ग; २ अनुचर, अनुगामी; (गा २८३; गउड; पि ३५०)।

परिअत्त देखो **परिअंत**=श्लिष्। परिअंतइ; (हे ४, १६० टि)।

परिअत्त देखो **परिअट्ट**=परि+वृत्। परियत्तइ; (भवि)। "नहुव्व परिअत्तए जीवो" (वै ६०), परियत्तए; (उवा)। वकृ—**परियत्तमाण**; (महा)।

परिअत्त देखो **परिअट्ट**=परि+वर्तय्। संकृ—**परियत्तेउ**; (तंदु ३८)।

परिअत्त देखो **परिअट्ट** =परिवर्त; (औप)।

परिअत्त वि [**दे**] प्रसृत, फैला हुआ; "सव्वासणरिउसंभवहो करपरिअत्ता तावँ" (हे ४, ३६५)।

परिअत्त वि [**परिवृत्त**] पलटा हुआ; (भवि)।

परिअत्तण देखो **परिअट्टण**; (गउड),
"चाइयणकरपरंपरपरियत्तणखेयवसपरिस्संता।

अत्था किविणघरत्था सुत्थावत्था सुयंति व्व" (सुपा ६३३)।

परिअत्तणा देखो **परिअट्टणा**; (राज)।

परिअत्तमाण देखो **परिअत्त**।

परिअत्तमाणी स्त्री [**परिवर्तमाना**] कर्म-प्रकृति-विशेष, वह कर्म-प्रकृति जो अन्य प्रकृति के बन्ध या उदय को रोक कर स्वयं बन्ध या उदय को प्राप्त होती है; (पंच ३, १४; ३, ४३; कम्म ५, १ टी)।

परिअत्ता स्त्री [**परिवर्ता**] ऊपर देखो; (कम्म ५, १)।

परिअत्तिअ वि [**परिवर्तित**] १ मोड़ा हुआ; "वालिअय परिअत्तिअ" (पाअ)। २ देखो **परिअट्टिय**; (भवि)।

परिअर सक [**परि+चर्**] सेवा करना। वकृ—**परिअरंत**, (नाट—शकु १५८)।

परिअर वि [**दे**] लीन, निमग्न; (दे ६, २४)।

परिअर पुं [**परिकर**] १ कटि-बन्धन; "सन्नद्धबद्धपरियर-भडेहिं" (भवि)। २ परिवार; "किरणकिलामियपरि-यरभुयगविसजलणधूमतिमिरेहिं" (गउड; चेइय ६४)।

परिअर पुं [**परिचर**] सेवक, भृत्य; "अणुणिज्जंतं रक्खा-परिअरधुअधवलचामरणिहेण" (गउड)।

परिअरण न [**परिचरण**] सेवा; (संबोध ३६)।

परिअरणा स्त्री [**परिचरणा**] सेवा; (सम्मत्त २१५)।

परिअरिय वि [**परिकरित, परिवृत**] १ परिवार-युक्त; "हय-गयरहजोहसुहडपरियरिओ" (महा; भवि; सण)। २ परिवेष्टित; "तओ तं समायण्णिऊण सुइसुह ताण गेयं समंतओ परियरिया सव्वलोगेण" (महा; सिरि १२८२)।

परिअल सक [**गम्**] जाना, गमन करना। परिअलइ; (हे ४, १६२)।

परिअल } पुंस्त्री [**दे**] थाल, थलिया, भोजन-पात्र; (भवि; **परिअलि** } दे ६, १२)।

परिअलिअ वि [**गत**] गया हुआ; (कुमा)।

परिअल्ल देखो **परिअल**। परिअल्लइ; (हे ४, १६२)। संकृ—**परिअल्लिऊण**; (कुमा)।

परिआरअ वि [**परिचारक**] सेवक, भृत्य; (चारु ५३)। स्त्री—°**रिआ**; (अभि १६६)।

परिआल सक [**वेष्टय्**] वेष्टन करना, लपेटना। परिआलेइ; (हे ४, ५१)।

परिआल वि [**दे**] परिवृत, परिवेष्टित;
"सो जयइ जामइल्लायमाणमुहलालिवलयपरिआलं।
लच्छिनिवेसंतेउरखइं व जो वहइ वणमालं" (गउड)।

परिआल देखो **परिवार**; (णाया १, ८; ठा ४, २; औप)।

परिआलिअ वि [**वेष्टित**] लपेटा हुआ, बेढा हुआ; (कुमा; पाअ)।

परिआविअ सक [**पर्या+पा**] पीना। परिआविएज्जा; (सूअ २, १, ४६)।

परिआसमंत (अप) अ [**पर्यासमन्तात्**] चारों ओर से; (भवि)।

परिइ सक [**परि+इ**] पर्यटन करना। परियंति; (उत्त २७, १३)।

परिइण्ण वि [**परिकीर्ण**] व्याप्त; (सम्मत्त १५६)।

परिइद (शौ) वि [**परिचित**] परिचय-विशिष्ट, ज्ञात, पहचाना हुआ; (अभि २४५)।

परिउंब सक [**परि+चुम्ब्**] चुम्बन करना। परिउंबइ; (भवि)।

परिउंबण न [**परिचुम्बन**] सर्वतः चुम्बन; (गा २२; हास्य १३४)।

परिउंबणा स्त्री [**परिचुम्बना**] ऊपर देखो; "गंडपरिउंबणा-पुलइअंग ण पुणो चिराइस्सं" (गा २०)।

परिउज्झिय वि [**पर्युज्झित**] सर्वथा त्यक्त; (सण)।

परिउट्ठ वि [**परितुष्ट**] विशेष तुष्ट; (स ७३४)।

परिउत्थ वि [**दे**] प्रोषित, प्रवास में गया हुआ; (दे ६, १३)।

परिउसिअ वि [**पर्युषित**] वासी, ठण्ढा, भाफ निकला (भोजन); (दे १, ३७)।

परिऊढ वि [**दे, परिगूढ**] क्षाम, कृश, पतला;
"उप्फुल्लिआइ खेल्लउ मा णं वारेहि होउ परिऊढा।
मा जहणभारगरुई पुरिसाअंती किलिम्मिहिइ" (गा१६६)।

परिऊरण न [**परिपूरण**] परिपूर्ति; (नाट—शकु ८)।

परिएस देखो **परिवेस**=परि+विष्। कवकृ—**परिएसिज्ज-माण**; (आचा २, १, २, १)।

परिएस देखो **परिवेस**=परिवेश; (स ३१२)।

परिओस सक [**परि+तोषय्**] संतुष्ट करना, खुशी करना। परिओसइ; (भवि; सण)।

परिओस पुं [**परितोष**] आनन्द, संतोष, खुशी; (से ११, ३; गा ६८; २०६; स ६; सुपा ३७०)।

परिओस पुं [**दे, परिद्वेष**] विशेष द्वेष; (भवि)।

परिओसिय वि [**परितोषित**] संतुष्ट किया हुआ; (से १३, २५; भवि)।

परिंत देखो परी=परि+इ।

परिकंख सक [परि+काङ्क्ष्] १ विशेष अभिलाषा करना। २ प्रतीक्षा करना। परिकंखए; (उत ७, २)।

परिकंद पुं [परिक्रन्द] आक्रन्द, चिल्लाहट; (हम्मीर ३०)।

परिकंपि वि [परिकम्पिन्] अतिशय कँपाने वाला; (गउड)।

परिकंपिर वि [परिकम्पितृ] विशेष काँपने वाला; (सण)।

परिकच्छिअ वि [परिकक्षित] परिगृहीत; (राय)।

परिकट्टलिअ वि [दे] एकत्र पिण्डीकृत; (पिंड २३६)।

परिकड्ड सक [परि+कृष्] १ पार्श्व भाग में खींचना। २ प्रारम्भ करना। वकृ—**परिकड्डमाण**; (राज)। संकृ—**परिकड्डिऊण**; (पंचव २)।

परिकढिण वि [परिकठिन] अत्यन्त कठिन; (गउड)।

परिकप्प सक [परि+कल्पय्] १ निष्पादन करना। २ कल्पना करना। परिकप्पयंति; (सुअ १, ७, १३)। संकृ—**परिकप्पिऊण**; (चेइय १४)।

परिकप्पिय वि [परिकल्पित] छिन्न, काटा हुआ; (पण्ह १, ३)। देखो **परिगप्पिय**।

परिकब्बुर वि [परिकर्बुर] विशेष कबरा; (गउड)।

परिकम्म } न [परिकर्मन्] १ गुण-विशेष का आधान,
परिकम्मण } संस्कार-करण; "परिकम्मं किरियाए वत्थूणं गुणविसेसपरिणामो" (विसे ९२३; सुर १३, १२४), "तेवि पयट्टा काउं सरीरपरिकम्मणं एवं" (कुप्र २७१; कप्प; उव)। २ संस्कार का कारण-भूत शास्त्र; (णंदि)। ३ गणित-विशेष; ४ संख्यान-विशेष, एक तरह की गणना; (ठा १०—पत्र ४९६)। ५ निष्पादन; (पव १३३)।

परिकम्मणा स्त्री. ऊपर देखो; "खेत्तमरुवं निच्चं न तस्स परिकम्मणा नय विणासो" (विसे ९२४; सम्म ५४; संबोध ५३; उपपं ३४)।

परिकम्मिय वि [परिकर्मित] परिकर्म-विशिष्ट, संस्कारित, (कप्प)।

परिकर देखो **परिअर**=परिकर; (पिंग)।

परिकलण न [परिकलन] उपभोग; "भमरपरिकलणतमकमलभूसियनरो" (सुपा ३)।

परिकलिअ वि [परिकलित] १ युक्त, सहित; (सिरि ३८१)। २ व्याप्त; (सम्मत्त २१५)। ३ प्राप्त; "अंजलिपरिकलियजलं व गलइ इह जीयं" (धर्मवि २५)।

परिकवलणा स्त्री [परिकवलना] भक्षण; "हरियपरिकवलणाउद्दामसंकुला" (सुपा ३)।

परिकविल वि [परिकपिल] सर्वतोभाव से कपिल वर्ण वाला; (गउड)।

परिकविस वि [परिकपिश] अतिशय कपिश रंग वाला; (गउड)।

परिकसण न [परिकर्षण] खींचाव; (गउड)।

परिकह सक [परि+कथय्] प्ररूपण करना, कहना। परिकहेइ; (उवा), परिकहेंतु; (कम्म ६, ७५)। कर्म—परिकहिज्जइ; (पि ५४३)। हेकृ—**परिकहेउं**; (औप)।

परिकहण न [परिकथन] आख्यान, प्ररूपण; (सुपा २)।

परिकहणा स्त्री [परिकथना] ऊपर देखो; (आवम)।

परिकहा स्त्री [परिकथा] १ बातचीत; २ वर्णन; (पिंड १२६)।

परिकहिय वि [परिकथित] प्ररूपित, आख्यात; (महा)।

परिकिण्ण देखो **परिकिन्न** "चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा" (उवा)।

परिकित्तिअ वि [परिकीर्त्तित] व्यावर्णित, श्लाघित; (श्रु ११०)।

परिकिन्न वि [परिकीर्ण] १ परिवृत, वेष्टित "नियपरियणपरिकिन्नो" (धर्मवि ५४)। २ व्याप्त; (सुर १, ५६)।

परिकिलंत वि [परिक्लान्त] विशेष खिन्न; (उप २६४ टी)।

परिकिलेस सक [परि+क्लेशय्] दुःखी करना, हैरान करना। परिकिलेसंति; (भग)। संकृ—**परिकिलेसित्ता**; (भग)।

परिकिलेस पुं [परिक्लेश] दुःख, बाधा, हैरानी, (सुअ २, २, ५५; औप, स ६७५; धर्मसं १००४)।

परिकीलिर वि [परिक्रीडितृ] अतिशय क्रीड़ा करने वाला; (सण)।

परिकुंठिय वि [परिकुण्ठित] जडीभूत; (विसे १८३)।

परिकुडिल वि [परिकुटिल] विशेष वक्र; (सुर १, १)।

परिकुद्ध वि [परिक्रुद्ध] अत्यन्त कुपित, (धर्मवि १२४)।

परिकुविय वि [परिकुपित] अतिशय क्रुद्ध; (णाया १, ८; उव; सण)।

परिको ... मल] सर्वथा कोमल; (गउड)।

... म] पराक्रम-युक्त; (सुअ १, ३, ४,

परिक्कम सक [परि+क्रम्] १ पाँव से चलना। २ समीप में जाना। ३ पराभव करना। ४ अक. पराक्रम करना। परिक्कमदि; (रुक्मि ४६)। परिक्कमसि; (रुक्मि ५५)। परिक्कमेघ (शौ), (पि ४८१)। वकृ—**परिक्कमंत** (नाट)। कृ—**परिक्कमियव्व**, (णाया १, ५—पत्र १०३)। संकृ—**परिक्कम्म**; (सूअ १, ४, १, २)।

परिक्कम देखो **परक्कम**=पराक्रम; (णाया १, १; सण; उत्त १८, २४)।

परिक्कहिअ देखो **परिकहिय**; (सुपा २०८)।

परिक्काम देखो **परिक्कम**=परि+क्रम्। परिक्कामदि; (पि ४८१; ति ८७)।

परिक्ख सक [परि+ईक्ष्] परखना, परीक्षा करना। परिक्खइ, परिक्खए, परिक्खंति, परिक्खउ; (भवि; महा; वज्जा १५८, स ४५७)। वकृ—**परिक्खंत**; **परिक्खमाण**; (आव ८० भा; श्रा १४)। संकृ—**परिक्खिय**; (उत्त)। कृ—**परिक्खियव्व**; (काल)।

परिक्खअ त्रि [**परीक्षक**] परीक्षा करने वाला; (सुपा ४२७; श्रा १४)।

परिक्खअ वि [**परिक्षत**] आहत, जिसको घाव हुआ हो वह; (से ८, ७३)।

परिक्खअ पुं [**परिक्षय**] १ क्रमशः हानि; "बहुलपक्खचंदस्स जोण्हापरिक्खओ विअ" (चारु ८)। २ क्षय, नाश; (गउड)।

परिक्खण न [**परीक्षण**] परीक्षा; (स ४६६; कप्पू ; सुपा ४४६; णाया १ ७ भवि)।

परिक्खणा स्त्री [**परीक्षणा**] परीक्षा. (पउम ६१, ३३)।

परिक्खमाण देखो **परिक्ख**।

परिक्खल अक [परि+स्खल्] स्खलित होना। वकृ—**परिक्खलंत**, (से ४, १७)।

परिक्खलिअ वि [**परिस्खलित**] स्खलना-प्राप्त; (पि ३०६)।

परिक्खा स्त्री [**परीक्षा**] परख जाँच, (नाट— मालवि २२)।

परिक्खाइअअ वि [**दे**] परिक्षीण; (षड्)।

परिक्खाम वि [**परिक्षाम**] अतिशय कृश; (उत्तर ७२; नाट—रत्ना ३)।

परिक्खि वि [**परीक्षिन्**] परखने वाला, परीक्षक; (श्रा१४)।

परिक्खित्त वि [**परिक्षिप्त**] १ वेष्टित, घेरा हुआ, (औप; पाअ; से १, ५३; पउ)। २ सर्वथा क्षिप्त; (आवम)। ३ चारों ओर से व्याप्त; (राय)।

परिक्खिय त्रि [**परीक्षित**] जिसकी परीक्षा की गई हो वह, (प्रासू १५)।

परिक्खिव सक [**परि+क्षिप्**] १ वेष्टन करना। २ तिरस्कार करना। ३ व्याप्त करना। ४ फेंकना। "एयं खु जरामरणं परिक्खिवइ वग्गुरा व मयजूहं" (तंदु ३३; जीवस १८६)। कर्म—परिक्खिवीआमो: (पि ३१६)।

परिक्खिविय वि [**परिक्षिप्त**] फेंका हुआ, (हम्मीर ३२)।

परिक्खेव पुं [**परिक्षेप**] घेरा, परिधि; (भग; सम ५६; कस; औप)।

परिक्खेवि वि [**परिक्षेपिन्**] तिरस्कार करने वाला; (उत्त ११, ८)।

परिखंध पुं [**दे**] काहार, कहार, जलादि-वाहक नौकर; (दे २, २७)।

परिखज्ज सक [**परि+खर्ज्**] खजवाना। कवकृ—"परिखज्जमाणमत्थयदेसो" (उप ६८६ टी)।

परिखण न [**परीक्षण**] परीक्षा-करण; (पव ३८)।

परिखविय वि [**परिक्षपित**] परिक्षीण; "गुरुअट्टज्झाणपरिखवियसरीरो" (महा)।

परिखाम वि [**परिक्षाम**] अति दुर्बल, विशेष कृश; (गा १६६)।

परिखित्त देखो **परिक्खित्त**; (सण)।

परिखिव देखो **परिक्खिव**। परिखिवइ; (भवि), "राया तं परिखिवई दोहग्गवईण मज्झम्मि" (सम्मत्त २१७; चेइय ६५५)।

परिखिविय देखो **परिखित्त**; (सण)।

परिखुहिय वि [**परिक्षुब्ध**] अतिशय क्षोभ को प्राप्त; (भवि)।

परिखेइय वि [**परिखेदित**] विशेष खिन्न किया हुआ; (सण)।

परिखेद (शौ) पुं [**परिखेद**] विशेष खेद; (स्वप्न १०; ८०)।

परिखेय सक [**परि+खेदय्**] अतिशय खिन्न करना। परिखेयइ; (सण)। संकृ—**परिखेइवि** (अप); (सण)।

परिखेविय (अप) देखो **परिखिविय**; (सण)।

परिगंतु देखो **परिगम**।

परिगण सक [**परि+गणय्**] १ गणना करना। २ चिन्तन करना, विचार करना। वकृ—"एस थक्को मम गमणस्स त्ति **परिगणंतेण** विण्णविओ राया" (महा)।

परिगप्पण न [**परिकल्पन**] कल्पना; (धर्मसं ६८१)।

परिगप्पणा स्त्री [**परिकल्पना**] ऊपर देखो. (धर्मसं ३०५)।

परिगप्पिय वि [परिकल्पित] जिसकी कल्पना की गई हो वह; (स ११३; धर्मसं ६६६)। देखो **परिकप्पिय**।

परिगम सक [परि+गम्] १ जाना, गमन करना। २ चारों ओर से वेष्टन करना। ३ व्याप्त करना। संकृ—**परिगन्तु**; (सण)।

परिगमण न [परिगमन] १ गुण, पर्याय; "परिगमणं पज्जाओ अणेगकरणं गुणंत्ति एगत्था" (सम्म १०६)। २ समन्ताद् गमन; (निचू ३)।

परिगमिर वि [परिगन्तृ] जाने वाला; (सण)।

परिगय वि [परिगत] १ परिवेष्टित; "मणुस्सवग्गुरापरिगए" (उवा; गा ६६), "बहुपरियणपरिगया" (सम्मत २१७)। २ व्याप्त; "विसपरिगयाहिं दाढाहिं" (उवा)।

परिगर पुं [परिकर] परिवार; "सेसाण तु हरियव्वं परिगर-विहवकालमादीणि णाउ" (धर्मसं ६२६)।

परिगरिय वि [परिकरित] देखो **परिअरिय**; (सुपा १२७)।

परिगल अक [परि+गल्] १ गल जाना, क्षीण होना। २ झरना टपकना। परिगलइ, (काल)। वकृ—**परिगलंत**; (पउम ११२, १५; तंदु ४४)।

परिगलिअ वि [परिगलित] गला हुआ, परिक्षीण; (कुप्र ७; महा; सुपा ८७; ३६२)।

परिगलिर वि [परिगलितृ] गल जाने वाला, क्षीण होने वाला; (सण)।

परिगह देखो **परिगेण्ह**। संकृ—**परिगहिअ**; (मा ४८)।

परिगह देखो **परिग्गह**; (कुमा)।

परिगहिय देखो **परिग्गहिय**; (बृह १)।

परिगा सक [परि+गै] गान करना। कवकृ—**परिगिज्ज-माण**; (णाया १, १)।

परिगालण न [परिगालन] गालन, छानन; (पण्ह १, १)।

परिगिज्जमाण देखो **परिगा**।

परिगिज्झ } देखो **परिगेण्ह**।
परिगिज्झिय }

परिगिण्ह देखो **परिगेण्ह**। परिगिण्हइ; (आचू १)। वकृ—**परिगिण्हंत, परिगिण्हमाण**; (सूअ २, १, ४४; ठा ७—पत्र ३८३)।

परिगिला अक [परि+ग्लै] ग्लान होना। वकृ—**परिगि-लायमाण**; (आचा)।

परिगुण सक [परि+गुणय्] परिगणन करना, गिनती करना। परिगुणइ (अप); (पिंग)।

परिगुणण न [परिगुणन] स्वाध्याय; (ओघ ६२)।

परिगुव अक [परि+गुप] १ व्याकुल होना। २ सक. सतत भ्रमण करना। वकृ—**परिगुवंत**, (राज)।

परिगुव सक [परि+गु] शब्द करना। वकृ—**परिगुवंत**; (राज)।

परिगेण्ह } सक [परि+ग्रह्] ग्रहण करना, स्वीकार करना;
परिग्गह } (प्रामा)। वकृ—**परिग्गहमाण**; (आचा १, ८, ३, १)। संकृ—**परिगिज्झिय, परिघेत्तूण**; (राज; पि ५८६)। हेकृ—**परिघेत्तुं**; (पि ५७६)। कृ— **परिगिज्झ, परिघेतव्व, परिघेत्तव्व**; (उत्त १, ४३; सुपा ३३; सूअ २, १, ४८; पि ५७०)।

परिग्गह पुं [परिग्रह] १ ग्रहण, स्वीकार; २ धन आदि का संग्रह; (पण्ह १, ५, ओप)। ३ ममत्व, मूर्छा; (ठा १)। ४ ममत्व-पूर्वक जिसका संग्रह किया जाय वह; (आचा; ठा ३, १; धर्म २)। °**वेरमण** न [°विरमण] परिग्रह से निवृत्ति; (ठा १, पण्ह २, ५)। °**वंत** वि [°वत्] परि-ग्रह-युक्त, (आचा; पि ३९६)।

परिग्गहि वि [परिग्रहिन्] परिग्रह-युक्त; (सूअ १, ९)।

परिग्गहिय वि [परिगृहीत] स्वीकृत, (उवा; ओप)।

परिग्गहिया स्त्री [पारिग्रहिकी] परिग्रह-संबन्धी क्रिया; (ठा २, १; नव १७)।

परिघघर वि [परिघर्घर] बैठा हुआ (आवाज); "हरिणो जयइ चिरं विहयलहुपरिघग्घरा वाणी" (गउड)।

परिघट्ट सक [परि+घट्ट्] आघात करना। कवकृ—**परि-घट्टिज्जंत**; (महा)।

परिघट्टण न [परिघट्टन] आघात; (वज्जा ३८)।

परिघट्टण न [परिघटन] निर्माण, रचना; (निचू १)।

परिघट्टिय वि [परिघट्टित] आहत, ताडित; (जीव ३)।

परिघट्ठ वि [परिघृष्ट] १ जिसका घर्षण किया गया हो वह, घिसा हुआ; "मंदरयडपरिघट्ठं" (हे २, १७४)।

परिघाय देखो **परीघाय**; (राज)।

परिघास सक [परि+घासय्] जिमाना, भोजन कराना। हेकृ—**परिघासेउं**; (आचा)।

परिघासिय वि [परिघर्षित] परिघर्ष-युक्त; "रयसा वा परि-घासियपुव्वे भवति" (आचा २, १०, ३, ५)।

परिघुम्मिर वि [परिघूर्णितृ] शनैः शनैः काँपता, हिलता,

डोलता; (पउम ८, २८३; गा १४८)।

परिघेतव्व
परिघेत्तव्व
परिघेत्तुं
परिघेत्तूण } देखो **परिगेण्ह**।

परिघोल सक [परि+घूर्ण्] १ डोलना। २ परिभ्रमण करना। वकृ—**परिघोलंत, परिघोलेमाण**; (से १, ३३; औप; णाया १, ४—पत्र ६७)।

परिघोलण न [दे. परिघोलन] विचार; (ठा ४, ४—पत्र २८३)।

परिघोलिर वि [परिघूर्णितृ] डोलने वाला; (गउड)।

परिचअ देखो **परियय**=परिचय; (नाट—शकु ७७)।

परिचअ देखो **परिच्चअ**। संकृ—**परिचइऊण, परिचइय**; (महा)।

परिचंचल वि [परिचञ्चल] अतिशय चपल; (वै १४)।

परिचत्त देखो **परिच्चत्त**; (महा; औप)।

परिचरणा स्त्री [परिचरणा] सेवा, भक्ति; (सुपा १५६)।

परिचल सक [परि+चल्] विशेष चलना। परिचलइ; (पिंग)।

परिचलिअ वि [परिचलित] विशेष चला हुआ; (दि ५, ६)।

परिचारअ वि [परिचारक] सेवा करने वाला, सेवक; (नाट—मालवि ६)। स्त्री—°**रिआ**. (नाट)।

परिचारणा स्त्री [परिचारणा] मैथुन-प्रवृत्ति; (ठा ५, १)।

परिचिंत सक [परि+चिन्तय्] चिन्तन करना, विचार करना। परिचितइ, परिचिंतेइ; (सण; उव)। कर्म—परिचिंतियइ (अप); (सण)। वकृ—**परिचिंतंत, परिचिंतयंत**; (सण, पउम ६६, ४)।

परिचिंतिय वि [परिचिन्तित] जिसका चिन्तन किया गया हो वह; (सण)।

परिचिंतिर वि [परिचिन्तयितृ] चिन्तन करने वाला. (सण)।

परिचिट्ठ अक [परि+स्था] रहना, स्थिति करना। परिचिट्ठइ, (सण)।

परिचिय वि [परिचित] ज्ञात, जाना हुआ, चिन्हा हुआ, (औप)।

परिचुंब देखो **परिउंब**। कवकृ—**परिचुंबिज्जमाण**; (औप)। संकृ—**परिचुंबिअ**; (अभि १५०)।

परिचुंबण देखो **परिउंबण**; (पउम १६, ७६)।

परिचुंबिय वि [परिचुम्बित] जिसका चुम्बन किया गया हो वह; "परिचुंबियनङ्गगं" (उप ५६७ टी)।

परिच्चअ सक [परि+त्यज्] परित्याग करना, छोड़ देना। परिच्चयइ, परिच्चअइ; (महा; अभि १७७)। वकृ—**परिच्चअंत**; (अभि १३७)। संकृ—**परिच्चइअ, परिच्चज्ज, परिच्चइऊण**; (पि ५६०; उत्त ३५, २; राज)। हेकृ—**परिच्चइत्तए, परिच्चत्तुं**; (उवा; नाट)।

परिच्चत्त वि [परित्यक्त] जिसका परित्याग किया गया हो वह; (से ८, २०; सुर ३; १२०; सुपा ४१८; नाट—शकु १३२)।

परिच्चयण न [परित्यजन] परित्याग; (स ३३)।

परिच्चाइ वि [परित्यागिन्] परित्याग करने वाला; (औप; अभि १४०)।

परिच्चाग
परिच्चाय } पुं [परित्याग] त्याग, मोचन; (पंचा ११, १४; उप ७६२; औप; भग)।

परिच्चाय वि [परित्याज्य] त्याग करने लायक; "अण्णेवि असुहजोगा सोहिपयाणे परिच्चाया" (संबोध ५४)।

परिच्छिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, ऊपर फेंका हुआ; (षड्)।

परिच्छिअ देखो **परिचिय**; (उप १४२ टी)।

परिच्छ देखो **परिक्ख**। "मणवयणकायगुत्तो सज्जो मरणं परिच्छिज्जा" (पच्च ६८; पिंड ३०), परिच्छंति; (पिंड ३१)।

परिच्छग वि [परीक्षक] परीक्षा-कर्ता; (धर्मसं ५१६)।

परिच्छण्ण
परिच्छन्न } वि [परिच्छन्न] १ आच्छादित, ढका हुआ; (महा)। २ परिच्छद-युक्त, परिवार-सहित; (वव ४)।

परिच्छय वि [परीक्षक] परीक्षा करने वाला; (सम्म १५६)।

परिच्छा स्त्री [परीक्षा] परख, जाँच, (ओघ ३१ भा; श्रम ८४८; उप पृ १०८)।

परिच्छिअ देखो **परिक्खिय**; (श्रा १६)।

परिच्छिंद सक [परि+छिद्] १ निश्चय करना, निर्णय करना। २ काटना, काट डालना। परिच्छिंदइ, (धर्मसं ३७१)। संकृ—"परिच्छिंदिय बाहिरगं च मायं निक्कम्मदंसी इह मच्चिएहिं" (आचा—टि, पि ५०६; ५९१)।

परिच्छिण्ण वि [परिच्छिन्न] १ काटा हुआ; "नय सुहतण्हा परिच्छिण्णा" (पच्च ६५)। २ निर्णीत, निश्चित; (श्रा १४)।

परिच्छित्ति स्त्री [परिच्छित्ति] १ परिच्छेद, निर्णय; २ परीक्षा, जाँच; (उप ८६५)।

परिच्छिन्न देखो **परिच्छिण्ण**; (स ५६६; सम्मत १४२)।
परिच्छूढ वि [दे. परिक्षिप्त] १ उत्क्षिप्त, फेंका हुआ; (दे ६, २५; नमि ९)। २ परित्यक्त; (से १३, १७)।
परिच्छेअ पुं [परिच्छेद] निर्णय, निश्चय; (विसे २२४४. स ६६७)।
परिच्छेअ वि [दे. परिच्छेक] लघु, छोटा; (ओप)।
परिच्छेअग वि [परिच्छेदक] निश्चय करने वाला, (उप ८५३ टी)।
परिच्छेज्ज वि [परिच्छेद्य] वह वस्तु जिसका क्रय-विक्रय परिच्छेद पर निर्भर रहता है—रत्न, वस्त्र आदि द्रव्य; (श्रा १८)।
परिच्छेद देखो **परिच्छेअ**=परिच्छेद, (धर्मसं १२३१)।
परिच्छेदग देखो **परिच्छेअग**; (धर्मसं ५०)।
परिच्छोय वि [परिस्तोक] थोड़ा, अल्प; (ओप)।
परिछेज्ज देखो **परिच्छेज्ज**; (श्रा १८)।
परिजंपिय वि [परिजल्पित] उक्त, कथित, (सुपा ३६४)।
परिजज्जर वि [परिजर्जर] अतिजीर्ण; (उप २६४ टी, ९८६ टी)।
परिजडिल वि [परिजटिल] अतिशय जटिल; (गउड)।
परिजण देखो **परिअण**; (उवा)।
परिजव सक [परि+विच्] पृथक् करना, अलग करना। संकृ—**परिजविय**; (सूअ २, २, ४०)।
परिजव सक [परि+जप्] १ जाप करना। २ बहुत बोलना, बकवाद करना। संकृ—'से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामागुगामं दूइज्जमाणे णो परेहिं सद्धिं **परिजविया** २ गामाणुगामं दूइज्जेज्जा' (आचा २, ३, २, ८)।
परिजवण न [परिजपन] जाप, जपन, मन्त्र आदि का पुनः पुनः उच्चारण, (विसे ११४०; सुर १२, २०१)।
परिजाइय वि [परियाचित] माँगा हुआ, (धर्मसं १०४५)।
परिजाण सक [परि+ज्ञा] अच्छी तरह जानना। परिजाणइ; (उवा)। वकृ—**परिजाणमाण**. (कुमा)। कवकृ—**परिजाणिज्जमाण**, (णाया १, १, कुमा)। संकृ—**परिजाणिया**, (सूअ १, १, १, १, १, ९, ९; १, ९, १०)। कृ—**परिजाणियव्व**. (आचा; पि ५७०)।
परिजिअ वि [परिजित] सर्वथा जित, जिसपर पूरा काबू किया गया हो वह, (विसे ८५१)।
परिजुण्ण वि [परिजीर्ण] १ फटा टूटा, अत्यन्त जीर्ण, (आचा)। २ दुर्बल; (उत्त २, १२)। ३ दरिद्र, निर्धन; "परिजुण्णो उ दरिद्दो" (वव ४)।
परिजुण्णा देखो **परिजुन्ना**; (ठा १०—पत्र ४७४ टी)।
परिजुत्त वि [परियुक्त] सहित; (संबोध १)।
परिजुन्न देखो **परिजुण्ण**, (उप २६४ टी)।
परिजुन्ना स्त्री [परिजीर्णा, परिद्यूना] प्रव्रज्या-विशेष, दरिद्रता के कारण ली हुई दीक्षा, (ठा १०—पत्र ४७३)।
परिजुसिय देखो **परिज्झुसिय**; (ठा ४, १—पत्र १८७; ओप)।
परिजुसिय न [पर्युषित] रात्रि-परिवसन, रात-वासी रहना; (ठा ४, २—पत्र २१९)। देखो **परिउसिअ**।
परिजूर अक [परि+जॄ] सर्वथा जीर्ण होना। "परिजूरइ ते सरीरयं" (उत्त १०, २६)।
परिजूरिय वि [परिजीर्ण] अतिजीर्ण; (अणु)।
परिज्जय पुं [दे] कृष्ण पुद्गल-विशेष; (सुज्ज २०)।
परिज्झामिय वि [परिध्यामित] श्याम किया हुआ; (निचू १)।
परिज्झुसिय } **परिझुसिय** } **परिझूसिय** } वि [परिजुष्ट] १ सेवित; २ प्रीत; "परिज्झुसियकामभोगसंपओगसंपउत्ते" (भग २५, ७—पत्र ९२३, ९२५ टी)। ३ परिक्षीण; (ठा ४, १—पत्र १८८ टी; पि २०९)।
परिट्ठव सक [परि+स्थापय्] १ परित्याग करना। २ संस्थापन करना। परिट्ठवेइ, परिट्ठवेज्जा; (आचा २, १, ९, ५; उवा)। संकृ—**परिट्ठवेऊण**, **परिट्ठवेत्ता**; (बृह ४; कस)। हेकृ—**परिट्ठवेत्तए**; (कस)। वकृ—**परिट्ठवंत**; (निचू २)। कृ—**परिट्ठप्प**, **परिट्ठवेयव्व**; (उत्त १४, ९; कस)।
परिट्ठवण न [प्रतिष्ठापन] प्रतिष्ठा कराना; (चेइय ७७६)।
परिट्ठवण न [परिष्ठापन] परित्याग, (उव; पत्र १५२)।
परिट्ठवणा स्त्री [परिष्ठापना] ऊपर देखो, "अविहिपरिट्ठवणाए काउस्सग्गो य गुरुसमीवम्मि" (बृह ४)।
परिट्ठवणा स्त्री [प्रतिष्ठापना] प्रतिष्ठा कराना; "वेयावच्चं जिणगिहरक्खणपरिट्ठवणाइजिणकिच्चं" (चेइय ७७६)।
परिट्ठविय स्त्री [प्रतिष्ठापित] संस्थापित; (भवि)।
परिट्ठा देखो **पइट्ठा**, (हे १, ३८)।
परिट्ठाइ वि [परिस्थायिन्] परित्यागी, (नाट—साहि १६२)।
परिट्ठाण न [परिस्थान] परित्याग, (नाट)।
परिट्ठाव देखो **परिट्ठव**। हेकृ—**परिट्ठावित्तए**, (कप्प, पि ५७८)।
परिट्ठावअ वि [परिस्थापक] परित्याग करने वाला; (नाट)।

परिट्ठिअ वि [**परिस्थित**] संपूर्ण रूप से स्थित; (पव ६६)।

परिट्ठिअ देखो **पइट्ठिय**; (हे १, ३८; २, २११; षड्; महा; सुर ३, १३)।

परिठव देखो **परिट्ठव**। परिठवहु (अप); (पिंग)।

परिठवण देखो **परिट्ठवण**=परिष्ठापन; (पव—गाथा २४)।

परिण देखो **परिणी**। "परिणइ बहुयाउ खयरकन्नाओ" (धर्मवि ८२)। वकृ—**परिणंत**; (भवि)। संकृ—**परिणिऊण**; (महा; कुप्र ७६; १२७)।

परिणइ स्त्री [**परिणति**] परिणाम; (गा ५६८; धर्मसं ६२३)।

परितणंत देखो **परिण**।

परिणंतु वि [**परिणन्तृ**] परिणाम को प्राप्त होने वाला, परिणत होने वाला; (विसे ३५३४)।

परिणंद सक [**परि+नन्द्**] वर्णन करना, श्लाघा करना। "ताणं **परिणंदंता** (? ति)" (तंदु ४०)।

परिणद्ध वि [**परिणद्ध**] १ परिगत, वेष्टित; "उंदुरमालापरिणद्धसुकयचिंधे" (उवा; याया १, ८—पत्र १३३)। २ न. वेष्टन ; (याया १, ८)।

परिणम सक [**परि+णम्**] १ प्राप्त करना। २ अक. रूपान्तर को प्राप्त करना। ३ पूर्ण होना, पूरा होना। "किण्हलेसं तु परिणमे" (उत ३४, २२), "परिणमइ अप्पमाओ" (स ६८४; भग १२, ५)। वकृ—**परिणमंत, परिणममाण**; (ठा ७; याया १, १—पत्र ३१)।

परिणमण न [**परिणमन**] परिणाम; (धर्मसं ४७२; उप ८६८)।

परिणमिअ } वि [**परिणत**] १ परिपक्व; (पाअ)। २
परिणय } वृद्धि-प्राप्त; "तह परिणमिओ धम्मो जह तं खोभति न सुरावि" (धर्मवि ८)। ३ अवस्थान्तर को प्राप्त; (ठा २, १—पत्र ५३; पिंड २६५)। °**वय** वि [°**वयस्**] १ वृद्ध, बूढा; (याया १, १—पत्र ४८)।

परिणयण न [**परिणयन**] विवाह; (उप १०१४; सुपा २७१)।

परिणयणा स्त्री. ऊपर देखो; (धर्मवि १२६)।

परिणव देखो **परिणम**। परिणवइ; (आरा ३१; महा)।

परिणाइ पुं [**परिज्ञाति**] परिचय; "कह तुज्झ तेण समयं परिणाई तक्खणेण उप्पन्नो" (पउम ५३, २५)।

परिणाम सक [**परि+णमय्**] परिणत करना। परिणामेइ; (ठा २, २)। कवकृ—**परिणामिज्जमाण, परिणामेज्जमाण**; (भग; ठा १०)। हेकृ—**परिणामित्तए**; (भग ३, ४)।

परिणाम पुं [**परिणाम**] १ अवस्थान्तर-प्राप्ति, रूपान्तर-लाभ; (धर्मसं ४७२)। २ दीर्घ काल के अनुभव से उत्पन्न होने वाला आत्म-धर्म विशेष; (ठा ४, ४—पत्र २८३)। ३ स्वभाव, धर्म; (ठा ६)। ४ अध्यवसाय, मनो-भाव; (निचू २०)। ५ त्रि. परिणत करने वाला; "दिट्ठंता परिणामे" (वव १०; बृह १)।

परिणामणया } स्त्री [**परिणामना**] परिणामना, रूपान्तर-
परिणामणा } करण; (पणण ३४—पत्र ७७४; विसे २२७८)।

परिणामय वि [**परिणामक**] परिणत करने वाला; (बृह १)।

परिणामि वि [**परिणामिन्**] परिणत होने वाला; (दे १, १; श्रावक १८३)। °**कारण** न [°**कारण**] कार्य-रूप में परिणत होने वाला कारण, उपादान कारण; (उवर २७)।

परिणामिअ वि [**पारिणामिक**] १ परिणाम-जन्य, परिणाम से उत्पन्न; २ परिणाम-संबन्धी; ३ पुं. परिणाम; ४ भाव-विशेष; "सव्वदव्वपरिणइरूवो परिणामिओ सव्वो" (विसे २१७६; ३४६५)।

परिणामिअ वि [**परिणमित**] परिणत किया हुआ; (पिंड ६१२; भग)।

परिणामिआ स्त्री [**पारिणामिकी**] बुद्धि-विशेष, दीर्घ काल के अनुभव से उत्पन्न होने वाली बुद्धि; (ठा ४, ४)।

परिणाय वि [**परिज्ञात**] जाना हुआ, परिचित; (पउम ११, २७)।

परिणाव सक [**परि+णायय्**] विवाह कराना। परिणावए; (कुप्र ११६)। कृ—**परिणावियव्व, परिणावेयव्व**; (कुप्र ३३०; १५४)।

परिणावण न [**परिणायन**] विवाह कराना; (सुपा ३६८)।

परिणाविअ वि [**परिणायित**] जिसका विवाह कराया गया हो वह; (सुपा १६५; धर्मवि १३६; कुप्र १४)।

परिणाह पुं [**परिणाह**] १ लम्बाई, विस्तार; (पाअ; से ११, १२)। २ परिधि; (स ३१२; ठा २, २)।

परिणिऊण देखो **परिण**।

परिणिंत देखो **परिणी**=परि+गम्।

परिणिज्जंत देखो **परिणी**=परि+णी।

परिणिज्जरा स्त्री [**परिनिर्जरा**] विनाश, क्षय; (पउम ३१, ६)।

परिणिज्जिअ वि [**परिनिर्जित**] पराभूत, पराजय-प्राप्त; (पउम ५२, २१)।

परिणिट्ठा स्त्री [**परिनिष्ठा**] संपूर्णता, समाप्ति; (उत्तर १२५)।

परिणिट्ठाण न [**परिनिष्ठान**] अवसान, अन्त; (विसे६२६)।

परिणिट्ठिअ वि [**परिनिष्ठित**] १ पूर्ण किया हुआ, समाप्त किया हुआ; (रयण २५)। २ पार-प्राप्त; (गाया १, ८; भास ६८; पंचा १२, १४)। ३ परिज्ञात; (वव १०)।

परिणिट्ठिया स्त्री [**परिनिष्ठिता**] १ कृषि-विशेष, जिसमें दो या तीन वार तृण-शोधन किया गया हो वह कृषि; २ दीक्षा-विशेष, जिसमें बारंबार अतिचारों की आलोचना की जाती हो वह दीक्षा; (राज)।

परिणिअ वि [**परिणीत**] जिसका विवाह हुआ हो वह; (सण; भवि)।

परिणिव्वव सक [**परिनिर्+वापय्**] सर्व प्रकार से अतिशय परिणत करना। संकृ—**परिणिव्ववियः**; (कस)।

परिणिव्वा अक [**परिनिर्+वा**] १ शान्त होना। २ मुक्ति पाना, मोक्ष को प्राप्त करना। परिणिव्वायंति; (भग)। भूका—परिणिव्वाइंसु; (पि ३१६)। भवि—परिणिव्वाहिति; (भग)।

परिणिव्वाण न [**परिनिर्वाण**] मुक्ति, मोक्ष; (आचा; कप्प)।

परिणिव्वुइ स्त्री [**परिनिर्वृति**] ऊपर देखो; (राज)।

परिणिव्वुय देखो **परिनिव्वुअ**; (औप)।

परिणी सक [**परि+णी**] १ विवाह करना। २ ले जाना। कवकृ—**परिणिज्जंत, परिणीयमाण** (कुप्र१२७; आचा)।

परिणो अक [**परि+गम्**] बाहर निकलना। वकृ—**परिणिंत**; (स ६६१)।

परिणीअ वि [**परिणीत**] जिसका विवाह किया गया हो वह; (महा; प्रासू ६३; सण)।

परिणील वि [**परिनील**] सर्वथा हरा रंग का; (गउड)।

परिणे देखो **परिणी**। परिणेइ; (महा; पि ४७४)। हेकृ—**परिणेउं**; (कुप्र ५०)। कृ—**परिणेयव्व**; (सुपा ४५५; कुप्र १३८)।

परिणेविय (अप) वि [**परिणायित**] जिसका विवाह कराया गया हो वह; (सण)।

परिणेव्वुय देखो **परिनिव्वुअ**; (उत १८, ३५)।

परिण्ण वि [**परिज्ञ**] ज्ञाता, जानकार; (आचा १, ५, ६, ४)।

परिण्ण° देखो **परिण्णा**; (आचा १, २, ६, ५)।

परिण्णा सक [**परि+ज्ञा**] जानना। संकृ—**परिण्णाय**; (आचा; भग)। हेकृ—**परिण्णादुं** (शौ); (अभि १८६)।

परिण्णा स्त्री [**परिज्ञा**] १ ज्ञान, जानकारी; (आचा; वसु; पंचा ६, २५)। २ विवेक; (आचा)। ३ पर्यालोचन, विचार; (सूअ १, १, १)। ४ ज्ञान-पूर्वक प्रत्याख्यान; (ठा ५, २)।

परिण्णाण वि [**परिज्ञान**] ज्ञान, जानकारी; (धर्मसं १२५३; उप पृ २७४)।

परिण्णाय देखो **परिण्णा**=परि+ज्ञा।

परिण्णाय वि [**परिज्ञात**] विदित, जाना हुआ; (सम १६; आचा)।

परिण्णि वि [**परिज्ञिन्**] परिज्ञा-युक्त; "गीयज्झुओ उ परिण्णी तह जिणइ परीसहाणीयं" (वव १)।

परितंत वि [**परितान्त**] सर्वथा खिन्न, निर्विण्ण; (णाया १, ४—पत्र ६७; विपा १, १; उव)।

परितंबिर वि [**परिताम्र**] विशेष ताम्र—अरुण—वर्ण वाला; (गउड)।

परितज्ज सक [**परि+तर्जय्**] तिरस्कार करना। वकृ—**परितज्जयंत**; (पउम ४८, १०)।

परितड्डविय वि [**परितत**] खूब फैलाया हुआ; (सण)।

परितणु वि [**परितनु**] अत्यन्त पतला; (सुपा ५८)।

परितप्प अक [**परि+तप्**] संतप्त होना, गरम होना। २ पश्चात्ताप करना। ३ दुःखी होना। परितप्पइ; (महा; उव). परितप्पंति; (सूअ २, २, ५५), "ता लोहभारवाहगनरव्व परितप्पसे पच्छा" (धर्मवि ६)। संकृ—**परितप्पिऊण**; (महा)।

परितप्प सक [**परि+तापय्**] परिताप उपजाना। परितप्पंति; (सूअ २, २, ५५)।

परितप्पण न [**परितपन**] परितप्त होना; (सूअ २, २, ५५)।

परितप्पण न [**परितापन**] परिताप उपजाना, (सूअ २, २, ५५)।

परितलिअ वि [**परितलित**] तला हुआ; (ओघ ८८)।

परितविय वि [**परितप्त**] परिताप युक्त; (सण)।

परिताण न [**परित्राण**] १ रक्षण; २ वागुरादि बन्धन; (सूअ १, १, २, ६)।

परिताव देखो परितप्प=परि + तापय्। कृ—**परितावेयव्व,** (पि ५७०)।
परिताव पुं [परिताप] १ संताप, दाह, २ पश्चात्ताप, ३ दुःख, पीड़ा; (महा; औप)। °यर वि [°कर] दुःख-कारक; (पउम ११०, ६)।
परितावण देखो परितप्पण=परितापन; (औप)।
परिताविअ वि [परितापित] १ संतापित, (औप)। २ तला हुआ; (ओघ १४७)।
परितास पुं [परित्रास] अकस्मात् होने वाला भय; (णाया १, १—पत्र ३३)।
परितुट्टिर वि [परित्रुटित] टूटने वाला; (सण)।
परितुट्ठ वि [परितुष्ट] तोष-प्राप्त, संतुष्ट; (उव, चेइय ७०१)।
परितुलिय वि [परितुलित] तौला हुआ; (सण)।
परितेज्जि देखो **परित्तज**।
परितोल सक [परि+तोलय्] उठाना। वकृ—"जुगवं परितोलंता खग्गं समरंगणम्मि तो दोवि" (सुपा ५७२)।
परितोस सक [परि+तोषय्] संतुष्ट करना। भवि—परितोसइस्सं; (कर्पूर ३२)।
परितोस पुं [परितोष] आनन्द, खुशी; (नाट—मालवि २३)।
परितोसिय वि [परितोषित] संतुष्ट किया हुआ; (सण)।
परित्त वि [परीत] १ व्याप्त; (सिरि १८३)। २ प्रभ्रष्ट; (सूअ २, ६, १८)। ३ संख्येय, जिसकी गिनती हो सके ऐसा; (सम १०६)। ४ परिमित, नियत परिमाण वाला; (उप ४१७)। ५ लघु, छोटा; ६ तुच्छ, हलका; (उप२७०; ६६४)। ७ एक मे लेकर असंख्येय जीवों का आश्रय, एक से लेकर असंख्येय जीव वाला, (ओघ ४१)। ८ एक जीव वाला; (पण्ण १)। °करण न [°करण] लघूकरण; (उव २७०)। °जीव पुं [°जीव] एक शरीर मे एकाकी रहने वाला जीव; (पण्ण १)। °णंत न [°नन्त] संख्या-विशेष; (कम्म ४, ७१, ८३)। °संसारिअ वि [°संसारिक] परिमित संसार वाला; (उव ४१७)। °संख न [°संख्यात] संख्या विशेष; (कम्म ४, ७१; ७८)।
परित्तज देखो परिच्चय। संकृ—**परित्तजिअ**; (स्वप्न ५१), **परितेज्जि** (अप); (पिंग)।
परित्ता } सक [परि+त्रै] रक्षण करना। परिताइ; परि-
परित्ताअ } त्तायसु, परित्ताहि, परित्तायह; (प्राकृ ७०; पि ४७९, हे ४, २६८)।
परित्ताइ वि [परित्रायिन्] रक्षण-कर्ता; (सुपा ४०५)।
परित्ताण न [परित्राण] रक्षण; (से १४, ३५; सुपा ७१; अात्मानु ८, सण)।
परित्तास देखो **परितास**; (कप्प)।
परित्तीकय वि [परीतीकृत] संक्षिप्त किया हुआ, लघूकृत; (णाया १, १—पत्र ६६)।
परित्तीकर सक [परीती+कृ] लघु करना, छोटा करना। परित्तीकरेंति; (भग)।
परित्थिमिअ न [परिस्तोम] १ मस्तक, २ वि. वक्र; "चित्तरित्थमपच्छइं" (औप)।
परित्थंभिअ वि [परिस्तम्भित] स्तब्ध किया हुआ; (सुपा ४७५)।
परित्थु सक [परि+स्तु] स्तुति करना। कवकृ—**परित्थुव्वंत**; (सुपा ६०७)।
परिथूर } वि [परिस्थूर] विशेष स्थूल, खूब मोटा;
परिथूल } (धर्मसं ८३८; चेइय ८५४; श्रा ११)।
परिदा सक [परि+दा] देना। कर्म—परिदिज्जउ (अप); (पिंग)।
परिदाह पुं [परिदाह] संताप; (उत २, ८; भग)।
परिदिण्ण वि [परित्त] दिया हुआ; (अभि १२५)।
परिदिद्ध वि [परिदिग्ध] उपलिप्त; (सुख २, ३७)।
परिदिन्न देखो **परिदिण्ण**; (सुपा २२)।
परिदेव अक [परि+देव्] विलाप करना। **परिदेवए**; (उत्त २, १३)। वकृ—**परिदेवंत**; (पउम २६, ६२; ४५, ३६)।
परिदेवण न [परिदेवन] विलाप; "तम्म कंदणसोयणपरिदेवणाडणाइं लिंगाइं" (संबोध ४६; रंभ ८)।
परिदेवणया स्त्री [परिदेवना] ऊपर देखो; (ठा ४, १—पत्र १८८)।
परिदेवि वि [परिदेविन्] विलाप करने वाला; (नाट—शकु १०१)।
परिदेविअ न [परिदेवित] विलाप; (पाअ; से ११, ६६; सुर २, २४१)।
परिदो अ [परितस्] चारों ओर मे; (गा ४५४ अ)।
परिधम्म पुं [परिधर्म] छन्द-विशेष; (पिंग)।
परिधवलिय वि [परिधवलित] खूब सफेद किया हुआ; (सण)।
परिधाम पुंन [परिधामन्] स्थान; (सुपा ४६३)।

परिधाविअ वि [**परिधावित**] दौड़ा हुआ ; (हम्मीर ३२)।
परिधाविर वि [**परिधावितृ**] दौड़ने वाला ; (सण)।
परिधूणिय वि [**परिधूनित**] अत्यन्त कँपाया हुआ; (सम्मत १३६)।
परिधूसर वि [**परिधूसर**] धूसर वर्ण वाला ; (वज्जा १२८ ; गउड)।
परिनट्ठ वि [**परिनष्ट**] विनष्ट ; (महा)।
परिनिक्खम देखो **पडिनिक्खम**। परिनिक्खमेइ ; (कप्प)।
परिनिट्ठिय देखो **परिणिट्ठिअ** ; (कप्प ; रंभा ३०)।
परिनिय सक [**परि+दृश्**] देखना, अवलोकन करना। वकृ—**परिनियंत** ; (सुपा ५२२)।
परिनिविट्ठ वि [**परिनिविष्ट**] ऊपर बैठा हुआ ; (सुपा २६६)।
परिनिविड वि [**परिनिविड**] विशेष निविड ; (महा)।
परिनिव्वा देखो **परिणिव्वा**। परिनिव्वाइ ; (भग), परिनिव्वाइंति ; (कप्प)। भवि—परिनिव्वाइस्संति ; (भग)।
परिनिव्वाण देखो **परिणिव्वाण** ; (णाया १, ८ ; ठा १, १ ; भग ; कप्प ; पव १३८ टी)।
परिनिव्वुअ, **परिनिव्वुड** वि [**परिनिवृत**] १ मुक्त, मोक्ष को प्राप्त ; (ठा १, १ ; पउम २०, ८४ ; कप्प)। २ शान्त, ठंढा ; (सूअ १, ३, ३, २१)। ३ स्वस्थ ; (सुपा १८३)।
परिन्न देखो **परिण्ण** ; (आचा)।
परिन्न° देखो **परिण्ण°**; (आचा)।
परिन्ना देखो **परिण्णा** ; (उप ५२५)।
परिन्नाण देखो **परिण्णाणं** ; (आचा)।
परिन्नाय देखो **परिण्णाय**=परिज्ञात ; (सुपा २६२)।
परिन्नाय वि [**प्रतिज्ञात**] जिसकी प्रतिज्ञा की गई हो वह ; (पिंड २८१)।
परिपंडुर, **परिपंडुल** वि [**परिपाण्डुर**] विशेष पाण्डुर—धूसर वर्ण वाला ; (सुपा २५६ ; कप्प ; गउड ; से १०, ३३)।
परिपंथग वि [**प्रतिपथक**] दुश्मन, विरोधी, प्रतिकूल ; (स १०५)।
परिपंथिअ, **परिपंथिग** वि [**परिपन्थिक**] ऊपर देखो ; (स ७४६ ; उप ६३६)।

परिपक्क वि [**परिपक्व**] पका हुआ ; (पव ४ ; भवि)।
परिपलिअ (अप) वि [**परिपतित**] गिरा हुआ ; (पिंग)।
परिपाग पु [**परिपाक**] विपाक, फल ; "पुव्वभवविहिअसुचरिअपरिपागो एस उदयसंपत्तो" (रयण ५२ ; आचा)।
परिपाडल वि [**परिपाटल**] सामान्य लाल रंग वाला, गुलाबी रँग का ; (गउड)।
परिपाडिअ वि [**परिपाटित**] फाड़ा हुआ, विदारित ; (दे ७, ६१)।
परिपाल सक [**परि+पालय्**] रक्षण करना। परिपालइ ; (भवि)। कृ—**परिपालणीअ** ; (स्वप्न २६)। संकृ—**परिपालिउं** ; (सुपा ३४२)।
परिपालण न [**परिपालन**] रक्षण ; (कुप्र २२६ ; सुपा ३०८)।
परिपालिय वि [**परिपालित**] रक्षित ; (भवि)।
परिपासय [**दे**] देखो **परिवास** (दे); (पाअ)।
परिपिअ सक [**परि+पा**] पीना, पान करना। कवकृ—**परिपिज्जंत** ; (नाट—चैत ४०)।
परिपिंजर वि [**परिपिञ्जर**] विशेष पीत-रक्त वर्ण वाला ; (गउड)।
परिपिंडिय वि [**परिपिण्डित**] १ एकत्र समुदित, इकट्ठा किया हुआ ; (पिंड ४६७)। २ न. गुरु-वन्दन का एक दोष ; (धर्म २)।
परिपिक्क देखो **परिपक्क** , (पि १०१)।
परिपिज्जंत देखो **परिपिअ**।
परिपिरिया स्त्री [**दे**] वाद्य-विशेष ; (भग ५, ४—पत्र २१६)।
परिपिल्ल सक [**परिप्र+ईरय्**] प्रेरना। परिपिल्लइ ; (सुपा ६४)।
परिपिहा सक [**परिपि+धा**] ढकना, आच्छादन करना। संकृ—**परिपिहित्ता, परिपिहेत्ता** ; (कप्प ; पि ५८२)।
परिपीडिय वि [**परिपीडित**] जिसको पीड़ा पहुँचाई गई हो वह ; (भवि)।
परिपील सक [**परि+पीडय्**] १ पीडना। २ पीलना, दवाना। परिपीलेज्जा ; (पि २४०)। संकृ—**परिपीलइत्ता, परिपीलिय, परिपीलियाण** ; (भग ; राज ; आचा २, १, ८, १)।
परिपीलिअ देखो **परिपीडिअ** ; (राज)।

परिपुंगल वि [दे] श्रेष्ठ, उत्तम; (?) "जंपइ भविसयत्तु परिपुंगलु होसइ रिद्धिविद्धिसुहमंगलु" (भवि)।

परिपुच्छ सक [परि+प्रच्छ्] प्रश्न करना। परिपुच्छइ; (भवि)।

परिपुच्छण न [परिप्रच्छन] प्रश्न, पृच्छा; (भवि)।

परिपुच्छिअ, **परिपुट्ठ** वि (परिपृष्ट) पूछा हुआ, जिज्ञासित; (गा ६२३; भवि; सुपा ३८७)।

परिपुण्ण, **परिपुन्न** वि [परिपूर्ण] सपूर्ण; (भग, भवि)।

परिपुस सक [परि+स्पृश्] संस्पर्श करना। परिपुसइ; (से ४, ५)।

परिपूज सक [परि+पूजय्] पूजना। परिपूजउ (अप); (पिंग)।

परिपूणग पुं [दे. परिपूणक] पक्षि-विशेष का नीड, सुघरी-नामक पक्षी का घोंसला; (विसे १४५४; १४६५)।

परिपूय वि [परिपूत] छाना हुआ; (कप्प; तंदु ३२)।

परिपूर सक [परि+पूरय्] पूर्ण करना, भरपूर करना। वकृ—**परिपूरंत**; (पि ५३७)। संकृ—**परिपूरिअ**; (नाट—मालवि १५)।

परिपूरिय वि [परिपूरित] भरपूर, व्याप्त; (सुर २, ११)।

परिपेच्छ सक [परिप्र+ईक्ष्] देखना। वकृ—**परिपेच्छंत**; (अच्चु ६३)।

परिपेरंत पुं [परिपर्यन्त] प्रान्त भाग; (णाया १, ४; १३; सुर १५, २०२)।

परिपेरिय वि [परिप्रेरित] जिसको प्रेरणा की गई हो वह; (सुपा १८६)।

परिपेलव वि [परिपेलव] १ सुकर, सहल; (से ३, १३)। २ अदृढ; ३ निःसार; ४ वराक, दीन; (राज)।

परिपेल्लिअ देखो **परिपेरिय**; (गा ५७७)।

परिपेस सक [परिप्र+इष्] भेजना। परिपेसइ; (भवि)।

परिपेसण न [परिप्रेषण] भेजना; (भवि)।

परिपेसल वि [परिपेशल] सुन्दर, मनोहर, (सुपा १०६)।

परिपेसिय वि [परिप्रेषित] भेजा हुआ; (भवि)।

परिपोस सक [परि+पोषय्] पुष्ट करना। कवकृ—**परिपोसिज्जंत**; (राज)।

परिप्पमाण न [परिप्रमाण] परिमाण; (भवि)।

परिप्पव सक [परि+प्लु] तैरना, गोता लगाना। वकृ—**परिप्पवंत**; (से ३, २८; १०, १३; पाअ)।

परिप्पुय वि [परिप्लुत] आप्लुत, व्याप्त; (राज)।

परिप्पुया स्त्री [परिप्लुता] दीक्षा-विशेष; (राज)।

परिप्फंद पुं [परिस्पन्द] १ रचना-विशेष; "जयइ वाया-परिप्फंदो" (गउड)। २ समन्तात् चलन; (चारु ४५)। ३ चेष्टा, प्रयत्न;

"थोयारंभेवि विहिम्मि आयसग्गे व्व खंडणमुवेंति।
स-परिप्फंदेणं चिय णीआ भमिदारुसयलं व" (गउड)।

परिप्फुड वि [परिस्फुट] अत्यन्त स्पष्ट; (से ११, ६०; सुर ४, २१४; भवि)।

परिप्फुड पुं [परिस्फोट] १ स्फोटन, भेदन; २ वि. फोड़ने वाला, विभेदक; "तमपडलपरिप्फुडं चेव तेअसा पज्जलंतरूवं" (कप्प)।

परिप्फुर अक [परि+स्फुर्] चलना। परिप्फुरदि (शौ); (नाट—उत्तर २८)।

परिप्फुरण न [परिस्फुरण] हिलन, चलन; (सण)।

परिप्फुरिअ वि [परिस्फुरित] स्फूर्ति-युक्त; "वयणु परिप्फुरिउ" (भवि)।

परिफंस पुं [परिस्पर्श] स्पर्श, छूना; (पि ७४; ३११)।

परिफंसण न [परिस्पर्शन] ऊपर देखो; (उप ८८६ टी)।

परिफग्गु वि [परिफल्गु] निस्सार, असार; (धर्मसं ६५३)।

परिफासिय वि [परिस्पृष्ट] व्याप्त; (दस ५, १, ७२)।

परिफुड देखो **परिप्फुड**=परिस्फुट; (पउम ३, ८; प्रासू ११६)।

परिफुडिय वि [परिस्फुटित] फूटा हुआ, भग्न; (पउम ६८, १०)।

परिफुर देखो **परिप्फुर**। परिप्फुरइ; (सण)। वकृ—**परिफुरंत**; (सण)।

परिफुरिअ देखो **परिप्फुरिय**; (सण)।

परिफुल्लिअ वि [परिफुल्लित] फूला हुआ, कुसुमित; (पिंग)।

परिफुस सक [परि+स्पृश्] स्पर्श करना, छूना। वकृ—**परिफुसंत**; (धर्मवि १२६; १३६)।

परिफुसिय वि [परिप्रोञ्छित] पोंछा हुआ; (उप पृ ६४)।

परिफोसिय वि [परिस्पृष्ट] छुआ हुआ, "उदगपरिफोसियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए णिसीयति" (णाया १, १६; उप ६४८ टी)।

परिबूहण न [परिबृंहण] वृद्धि, उपचय; (सूअ २, २, ६)।

परिब्भंत वि [**दे**] १ निषिद्ध, निवारित; २ भीरु, डरपोक; (दे ६, ७२)।

परिब्भंसिद (शौ) नीचे देखो; (मा ५०)।

परिब्भट्ठ वि [**परिभ्रष्ट**] पतित, स्खलित; (गाया १, १३; सुपा ५०६; अभि १४४)।

परिब्भम सक [**परि+भ्रम्**] पर्यटन करना, भटकना। परिब्भमइ; (प्राकृ ७६; भवि; उव)। वकृ—**परिब्भमंत**; (सुर २, ८७; ३, ४; ४, ७१; भवि)।

परिब्भमण न [**परिभ्रमण**] पर्यटन; (महा)।

परिब्भमिअ वि [**परिभ्रान्त**] भटका हुआ; (वै ६३; सण; भवि)।

परिब्भीअ वि [**परिभीत**] भय-प्राप्त; (पउम ५३, ३६)।

परिब्भूअ वि [**परिभूत**] पराभव-प्राप्त; (सुपा २५८)।

परिभग्ग वि [**परिभग्न**] भाँगा हुआ; (आत्मानु १४)।

परिभट्ठ देखो **परिब्भट्ठ**; (महा; पि ८५)।

परिभणिर वि [**परि+भणितृ**] कहने वाला; (सण)।

परिभम देखो **परिब्भम**। परिभमइ; (महा)। वकृ—**परिभमंत**, **परिभममाण**; (महा; सण; भवि; संवेग १४)। संकृ—**परिभमिऊणं**; (पि ५८५)। हेकृ—**परिभमिउं**; (महा)।

परिभमिअ देखो **परिब्भमिअ**; (भवि)।

परिभमिर वि [**परिभ्रमितृ**] पर्यटन करने वाला; (सुपा २६६)।

परिभव सक [**परि+भू**] पराजय करना, तिरस्कारना। परिभवइ; (उव)। कर्म—परिभविज्जामि; (मोह १०८)। कृ—**परिभवणिज्ज**; (गाया १, ३)।

परिभव पुं [**परिभव**] पराभव, तिरस्कार; (औप; स्वप्न १०; प्रासू १७३)।

परिभवण न [**परिभवन**] ऊपर देखो; (राज)।

परिभवणा स्त्री [**परिभवन**] ऊपर देखो ; (औप)।

परिभविअ वि [**परिभूत**] अभिभूत ; (धर्मवि ३६)।

परिभाअ सक [**परि+भाजय्**] बाँटना, विभाग करना। परिभाएइ ; (कप्प)। वकृ—**परिभाइंत**, **परिभायंत**, **परिभाएमाण** , (आचा २, ११, १८ ; गाया १, ७—पत्र ११७; १, १ ; कप्प)। कवकृ—**परिभाइज्जमाण**; (राज) । संकृ—**परिभाइत्ता**, **परिभायइत्ता** ; (कप्प ; औप)। हेकृ—**परिभाएउं** ; (पि ५७३)।

परिभाइय वि [**परिभाजित**] विभक्त किया हुआ; (आचा २, २, ३, २)।

परिभायंत देखो **परिभाअ**।

परिभायण न [**परिभाजन**] बँटवा देना ; (पिड १६३)।

परिभाव सक [**परि+भावय्**] १ पर्यालोचन करना। २ उन्नत करना। परिभावइ ; (महा)। संकृ—**परिभाविऊण**; (महा)। कृ—**परिभावणीय**; (राज)।

परिभावइत्तु वि [**परिभावयितृ**] प्रभावक, उन्नति-कर्ता ; (ठा ४, ४—पत्र २६५)।

परिभावि वि [**परिभाविन्**] परिभव करने वाला ; (अभि ७१)।

परिभास सक [**परि+भाष्**] १ प्रतिपादन करना, कहना। २ निन्दा करना। परिभासइ, परिभासंति, परिभासेइ, परिभासए ; (उत्त १८, २० ; सूअ १, ३, ३, ८ ; २, ७, ३६ ; विसे १४४३)। वकृ—**परिभासमाण** ; (पउम ५३, ६७)।

परिभासा स्त्री [**परिभाषा**] १ संकेत ; (संबोध ५८ ; भास १६)। २ तिरस्कार ; ३ चूर्णि, टीका-विशेष ; (राज)।

परिभासि वि [**परिभाषिन्**] परिभव-कर्ता ; "राइणियपरिभासी" (सम ३७) ।

परिभासिय वि [**परिभाषित**] प्रतिपादित ; (सूअनि ८८ ; भास २१)।

परिभिंद सक [**परि+भिद्**] भेदन करना। कवकृ—**परिभिज्जमाण**; (उप पृ ६७)।

परिभीय वि [**परिभीत**] डरा हुआ ; (उव)।

परिभुंज सक [**परि+भुञ्ज्**] १ खाना, भोजन करना। सेवन करना, सेवना। ३ वारंवार उपभोग में लेना। कर्म—परिभुंजिज्जइ, परिभुज्जइ ; (पि ५४६ ; गच्छ २, ५१)। वकृ—**परिभुंजंत**, **परिभुंजमाण** ; (निचू १ ; गाया १, १ ; कप्प)। कवकृ—**परिभुज्जमाण** ; (औप ; उप पृ ६७ ; गाया १, १—पत्र ३७)। हेकृ—**परिभोत्तु**; (दस ५, १)। कृ—**परिभोग**, **परिभोत्तव्व** ; (पिंड ३४ ; कस)।

परिभुंजण न [**परिभोजन**] परिभोग ; (उप १३४ टी)।

परिभुंजणया स्त्री [**परिभोजना**] ऊपर देखो ; (सम ४४)।

परिभुत्त वि [**परिभुक्त**] जिसका परिभोग किया गया हो वह ; (सुपा ३००)।

परिभूअ वि [**परिभूत**] अभिभूत, तिरस्कृत ; (सूअ २, ७, २ ; सुर १६, १२६ ; चेइय ७१४ ; महा)।

परिभोअ देखो **परिभोग**; (अभि १११)।
परिभोइ वि [**परिभोगिन्**] परिभोग करने वाला; (पि ४०५; नाट—शकु ३५)।
परिभोग पुं [**परिभोग**] १ वा र भोग; (ठा ५, ३ टी; आव ६)। २ जिसका ब ार भोग किया जाय वह वस्त्र आदि; (औप)। ३ जिसका एक ही वार भोग किया जाय—जो एक ही वार काम में लाया जाय वह—आहार, पान आदि; (उवा)। ४ वाह्य वस्तुओं का भोग; (आव ६)। ५ आसेवन; (पण्ह १, ३)।
परिभोग, **परिभोत्तव्व**, **परिभोत्तु** } देखो **परिभुंज**।
परिमइल सक [**परि+मृज्**] मार्जन करना; (संक्षि ३५)।
परिमउअ वि [**परिमृदुक**] १ विशेष कोमल; २ अत्यन्त सुकर, सरल; (धर्मसं ७६१; ७६२)। स्त्री—°उई; (विसे ११६६)।
परिमउलिअ वि [**परिमुकुलित**] चारों ओर से संकुचित; (सण)।
परिमंडण न [**परिमण्डन**] अलंकरण, विभूषा; (उत्त १६, ६)।
परिमंडल वि [**परिमण्डल**] वृत्त, गोलाकार; (सूअ २, १, १५; उत्त ३६, २२; स ३१२; पाअ; औप; पण्ण १; ठा १, १)।
परिमंडिय वि [**परिमण्डित**] विभूषित, सुशोभित; (कप्प; औप; सुर ३, १२)।
परिमंथर वि [**परिमन्थर**] मन्द, धीमा; (गउड; स ७१६)।
परिमंथिअ वि [**परिमथित**] अत्यन्त आलोडित; (सम्मत्त २२६)।
परिमंद वि [**परिमन्द**] मन्द, अशक्त; (सुर ४, २४०)।
परिमग्ग सक [**परि+मार्गय्**] १ अन्वेषण करना, खोजना। २ माँगना, प्रार्थना करना। वकृ—**परिमग्गमाण**; (नाट—विक्र ३०)। संकृ—**परिमग्गेउं**; (महा)।
परिमग्गि वि [**परिमार्गिन्**] खोज करने वाला; (गा२६१)।
परिमज्जिर वि [**परिमज्जितृ**] डूबने वाला; (सुपा ६)।
परिमट्ठ वि [**परिमृष्ट**] १ घिसा हुआ; (से ६,२; ८, ४३)। २ आस्फालित; "परिमट्ठमेरुसिहरो" (से ४, ३७)। ३ मार्जित, शोधित; (कप्प)।
[**परि+मर्दय्**] मर्दन करना। वकृ—**परिमद्द**- ५ १२, १७२)।
परिमद्द [**परिमर्दन**] मर्दन, मालिश; (कप्प; औप)।
परिमद्दा स्त्री [**परिमर्दा**] संबाधन, दबाना, पैचप्पी आदि; (निचू ३)।
परिमन्न सक [**परि+मन्**] आदर करना। परिमन्नइ; (भवि)।
परिमल सक [**परि+मल्, मृद्**] १ घिसना। २ मर्दन करना। "जो मरणयालि परिमलइ हत्थु" (कुप्र ४५२), "णलिणीसु भमसि परिमलसि सत्तलं मालइं पि णो मुअसि। तरलत्तणं तुह अहो महुअर जइ पाडला हरइ॥" (गा ६१६)।
परिमल पुं [**परिमल**] १ कुंकुम-चन्दनादि-मर्दन; (से १, ६४)। २ सुगन्ध; (कुमा; पाअ)।
परिमलण न [**परिमलन**] १ परिमर्दन; २ विचार; (गा ४२८; गउड)।
परिमलिअ वि [**परिमलित, परिमृदित**] जिसका मर्दन किया गया हो वह; (गा ६३७; से ७, ६२; महा; वज्जा ११८)।
परिमहिय वि [**परिमहित**] पूजित; (पउम १, १)।
परिमा (अप) देखो **पडिमा**; (भवि)।
परिमाइ स्त्री [**परिमाति**] परिमाण; "जिणसासणि छज्जीवदयाइ व पंडियमरणि सुगइपरिमाइ व" (भवि)।
परिमाण न [**परिमाण**] मान, माप, नाप; (औप; स्वप्न ४२; प्रासू ८७)।
परिमास पुं [**परिमर्श**] स्पर्श; (णाया १, ६; गउड; से ६, ४८; ६, ७६)।
परिमास पुं [**दे**] नौका का काष्ठ-विशेष; (णाया १, ६—पत्र १५७)।
परिमासि वि [**परिमर्शिन्**] स्पर्श करने वाला; (पि ६२)।
परिमिज्ज नीचे देखो।
परिमिण सक [**परि+मा**] नापना, तौलना। वकृ—**परिमिणंत**; (सुपा ७७)। कृ—**परिमिज्ज, परिमेय**; (पञ्च ५६; पउम ४६, २२)।
परिमिअ वि [**परिमित**] परिमाण-युक्त; (कप्प; ठा ५, १; औप; पण्ह २, १)।
परिमिअ वि [**परिवृत**] परिकरित, वेष्टित; (पउम १०१, भवि)।

परिमिला अक [परि+म्लै] म्लान होना। परिमिलादि (शौ); (पि १३६; ४७६)।

परिमिलाण वि [परिम्लान] म्लान, विच्छाय, निस्तेज; (महा)।

परिमिल्लिर वि [परिमोक्तृ] परित्याग करने वाला; (सण)।

परिमुअ सक [परि+मुच्] परित्याग करना। परिमुअइ; (सण)।

परिमुक्क वि [परिमुक्त] परित्यक्त; (सुपा २५२; महा; सण)।

परिमुट्ठ वि [परिमृष्ट] स्पृष्ट; (मा ४४)।

परिमुण सक [परि+ज्ञा] जानना। परिमुणसि; (वज्जा १०४)।

परिमुणिअ वि [परिज्ञात] जाना हुआ; (पउम १६, ६१; सण)।

परिमुस सक [परि+मुष्] चोरी करना। वकृ—**परिमुसंत**; (श्रा २७)। संकृ—**परिमुसिऊण**; (कर्पूर २६)।

परिमुस सक [परि+मृश्] स्पर्श करना, छूना। परिमुसइ; (भवि)।

परिमुसण न [परिमोषण] १ चोरी; २ वञ्चना, ठगाई; (गा २६)।

परिमुसिअ वि [परिमृष्ट] स्पृष्ट; (महानि ४; भवि)।

परिमूसण देखो **परिमुसण**; (गा २६)।

परिमेय देखो **परिमिण**।

परिमोक्कल वि [दे. परिमुक्त] स्वैर, स्वच्छन्दी; (भवि)।

परिमोक्ख पुं [परिमोक्ष] १ मोक्ष, मुक्ति; (आचा)। २ परित्याग; (सूअ १, १२, १०)।

परिमोय सक [परि+मोचय्] छोड़ाना, छुटकारा कराना। परिमोयह; (सूअ २, १, ३६)।

परिमोयण न [परिमोचन] मोक्ष, छुटकारा; (सुर ४, २५० ; औप)।

परिमोस पुं [परिमोष] चोरी; (महा)।

परियंच सक [परि+अञ्च्] १ पास में जाना। २ स्पर्श करना। ३ विभूषित करना। संकृ—**परिअंचिवि** (अप); (भवि)।

परियंच सक [परि+अर्च्] पूजना। संकृ—**परिअंचिवि** (अप); (भवि)।

परियंचण न [पर्यञ्चन] स्पर्श करना; (सुज्ज ३, १)। देखो **पलियंचण**।

परियंचिअ वि [पर्यञ्चित] विभूषित; "पवरारामगाम-परियंचिउ" (भवि)।

परियंचिअ वि [पर्यर्चित] पूजित; (भवि)।

परियंद सक [परि+वन्द्] वन्दन करना, स्तुति करना। कवकृ—**परियंदिज्जमाण**; (औप)।

परियंदण न [परिवन्दन] वन्दन, स्तुति; (आचा)।

परियच्छ सक [दृश्] १ देखना। २ जानना। परियच्छइ; (भवि; उव), परियच्छंति; (उव)।

परियच्छिय देखो **परिकच्छिय**; (राज)।

परियत्थि स्त्री [पर्यस्ति] देखो **पल्हत्थिया**; "जत्तो वायइ पवणो परियत्थी दिज्जए तत्तो" (चेइय १३०)।

परियप्प सक [परि+कल्पय्] कल्पना करना, चिन्तन करना। वकृ—**परियप्पमाण**; (आचा १, २, १, २)।

परियप्पण न [परिकल्पन] कल्पना; (धर्मसं १२०८)।

परियय पुं [परिचय] जान-पहचान, विशेष रूप से ज्ञान; (गउड; से १५, ६६; अभि १३१)।

परियय वि [परिगत] अन्वित, युक्त; (स २२)।

परियाइ सक [पर्या+दा] १ समन्तात् ग्रहण करना। २ विभाग से ग्रहण करना। परियाइयह; (सूअ २, १, ३७)। संकृ—**परियाइत्ता**; (ठा ७)।

परियाइअ वि [पर्यात्त] सपूर्ण रूप से गृहीत; (ठा २, ३—पत्र ६३)।

परियाइअ देखो **परियाईय**; (ठा २, ३—पत्र ६३)।

परियाइणया स्त्री [पर्यादान] समन्तात् ग्रहण; (पण्ण ३४—पत्र ७७४)।

परियाइत्त वि [पर्याप्त] काफी; (राज)।

परियाईय वि [पर्यायातीत] पर्याय को अतिक्रान्त; (राज)।

परियाग देखो **पज्जाय**; (औप; उवा; महा; कप्प)।

परियागय वि [पर्यागत] १ पर्याय से आगत; (उत्त ५, २१; सुज्ज ५, २१; णाया १, ३)। २ सर्वथा निष्पन्न; (णाया १, ७—पत्र ११६)।

परियाण सक [परि+ज्ञा] जानना। परियाणइ, परियाणाइ; (पि १७०; उवा)।

परियाण न [परित्राण] रक्षण; (सूअ १, १, २, ६; ७)।

परियाण न [परिदान] १ विनिमय, बदला, लेनदेन; २ समन्ताद् दान; (भवि)।

परियाण न [परियान] १ गमन; (ठा १०)। २ वाहन, यान; (ठा ८)। ३ अवतरण; (ठा ३, ३)।

परियाणण न [**परिज्ञान**] जानकारी ; (स १३)।

परियाणिअ वि [**परित्राणित**] परित्राण-युक्त ; (सूअ १, १, २, ७)।

परियाणिअ वि [**परिज्ञात**] जाना हुआ, विदित ; (पउम ८८, ३३ ; रत्न १८ ; भवि)।

परियाणिअ पुंन [**परियानिक**] १ यान, वाहन ; २ विमान-विशेष ; (ठा ८)।

परियादि देखो **परियाइ**। परियादियति ; (कप्प)। संकृ—**परियादित्ता** ; (कप्प)।

परियाय देखो **पज्जाय** ; (ठा ४, ४ ; सुपा १६ ; विसे २७६१; औप ; आचा ; उवा)। ६ अभिप्राय, मत; "सएहिं परियाएहिं लोयं बूया कंडेति य" (सूअ १, १, ३, ६)। १० प्रव्रज्या, दीक्षा ; (ठा ३, २—पत्र १२६)। ११ ब्रह्मचर्य ; (आव ४)। १२ जिन-देव के केवल-ज्ञान की उत्पत्ति का समय ; (णाया १, ८)। °थेर पुं [°स्थविर] दीक्षा की अपेक्षा से वृद्ध ; (ठा ३, २)।

परियायंतकरभूमि स्त्री [**पर्यायान्तकृद्भूमि**] जिन-देव के केवल ज्ञान की उत्पत्ति के समय से लेकर तदनन्तर सर्व-प्रथम मुक्ति पाने वाले के बीच के समय का अन्तर ; (णाया १, ८—पत्र १५४)।

परियार सक [**परि+चारय्**] १ सेवा-शुश्रूषा करना। २ संभोग करना, विषय-सेवन करना। परियारेइ ; (ठा ३, १ ; भग)। वकृ—**परियारेमाण** ; (राज)। कवकृ—**परियारिज्जमाण** ; (ठा १०)।

परियार पुं [**परिचार**] मैथुन, विषय-सेवन ; (पण्ण ३४—पत्र ७८० ; ठा ३, १)।

परियारग वि [**परिचारक**] १ विषय-सेवन करने वाला ; (पण्ण २ ; ठा २, ४)। २ सेवा-शुश्रूषा करने वाला ; (विपा १, १)।

परियारण न [**परिचारण**] १ सेवा-शुश्रूषा ; (सुज्ज १८—पत्र २६५)। २ काम-भोग ; (पण्ण ३४)।

परियारणया } स्त्री [**परिचारणा**] ऊपर देखो ;
परियारणा } (पण्ण ३४ ; ठा ५, १)। °सद्द पुं [°शब्द] विषय-सेवन के समय का स्त्री का शब्द ; (निचू १)।

परियालोयण न [**पर्यालोचन**] विचार, चिन्तन; (सुपा ५००)।

परियाव देखो **परिताव**=परिताप; (आचा; ओघ १५४)।

परियावज्ज अक [**पर्या+पद्**] १ पीडित होना। २ रूपान्तर में परिणत होना। ३ सक. सेवना। परियावज्जइ, परियावज्जंति; (कप्प; आचा)।

परियावज्जण न [**पर्यापादन**] रूपान्तर-प्राप्ति; (पिंड २८०)।

परियावज्जणा स्त्री [**पर्यापादन**] आसेवन; (ठा ३, ४—पत्र १७४)।

परियावण देखो **परितावण**; (सूअ २, २, ६२)।

परियावणा स्त्री [**परितापना**] परिताप, संताप; (औप)।

परियावणिया स्त्री [**परियापनिका**] कालान्तर तक अवस्थान, स्थिति; (णाया १, १४—पत्र १८६)।

परियावण्ण } वि [**पर्यापन्न**] स्थित, अवस्थित; (आचा
परियावन्न } २, १, ११, ७; ८; भग ३४, २; कस)।

परियावस सक [**पर्या+वासय्**] आवास कराना। परियावसे; (उत्त १८, ५४; सुख १८, ५४)।

परियावसह पु [**पर्यावसथ**] मठ, संन्यासी का स्थान; (आचा २, १, ८, २)।

परियाविय वि [**परितापित**] पीडित; (पडि)।

परियासिय वि [**परिवासित**] वासी रखा हुआ; (कस)।

परिरंज सक [**भञ्ज्**] भाँगना, तोड़ना। परिरंजइ; (प्राकृ ७४)।

परिरंभ सक [**परि+रभ्**] आलिंगन करना। परिरंभस्सु (शौ); (पि ४६७)। संकृ—**परिरंभिउं**; (कुप्र २४२)।

परिरंभण न [**परिरम्भन**] आलिङ्गन; (पाअ; गा ८३५; सुपा २; ३६६)।

परिरक्ख सक [**परि+रक्ष्**] परिपालन करना। परिरक्खइ; (भवि)। कृ—**परिरक्खणीअ**; (सिक्खा ३१)।

परिरक्खण न [**परिरक्षण**] परिपालन; (गा ६०१; भवि)।

परिरक्खा स्त्री [**परिरक्षा**] ऊपर देखो; (पउम ५६, ५३; धर्मवि ५३; गउड)।

परिरक्खिय वि [**परिरक्षित**] परिपालित; (भवि)।

परिरद्ध वि [**परिरब्ध**] आलिङ्गित; (गा ३६८)।

परिरय पुं [**परिरय**] १ परिधि, परिक्षेप; (उत्त ३६, ५६; पउम ८६, ६१; पव १५८; औप)। २ पर्याय, समानार्थक शब्द; "एगपरिरय त्ति वा एगपज्जाय त्ति वा एगणामभेद त्ति वा एगट्ठा" (आचू १)। ३ परिभ्रमण, फिर कर जाना; "अहवा थेरो, तस्स य अंतरा गड्डा डोंगरा वा, जे समत्था ते उज्जुएण

वच्चंति, जो असमत्थो सो परिरएणं—भमाडेण वच्चइ" (ओघभा २० टी)।

परिराय अक [परि+राज्] विराजना, शोभना। वकृ—**परिरायमाण**; (कप्प)।

परिरिंख सक [परि+रिङ्ख्] चलना, फरकना, हिलना। वकृ—**परिरिंखमाण**; (उप ५३० टी)।

परिरुंभ सक [परि+रुध्] रोकना, अटकायत करना। कर्म—परिरुज्झइ; (गउड ४३४)। संकृ—**परिरंभिऊण**; (उवकु १)।

परिलंघि वि [परिलङ्घिन्] लङ्घन करने वाला; (गउड)।

परिलंबि वि [परिलम्बिन्] लटकने वाला; (गउड)।

परिलंभिअ वि [परिलम्भित] प्राप्त कराया हुआ; "सो गयवरो मुणीणं (मुणीहिं) वयाणि परिलंभिओ पसन्नप्पा" (पउम ८४, १)।

परिलग्ग वि [परिलग्न] लगा हुआ, व्याप्त; (उप ३५६ टी)।

परिलिअ वि [दे] लीन, तन्मय; (दे ६, २४)।

परिली अक [परि+ली] लीन होना। वकृ—**परिलिंत, परिलेंत, परिलीयमाण**; (णाया १, १—पत्र ५; औप; से ६, ४८; पण्ह १, ३; राय)।

परिली स्त्री [दे] आतोद्य-विशेष, एक तरह का वाजा; (राज)।

परिलीण वि [परिलीन] निलीन; (पाअ)।

परिलुंप सक [परि+लुप्] लुप्त करना, अ-दृष्ट करना। कवकृ—**परिलुप्पमाण**; (महा)।

परिलेंत देखो **परिली**=परि+ली।

परिलोयण न [परिलोचन, परिलोकन] अवलोकन, निरीक्षण; २ वि. देखने वाला; "जुगंतरपरिलोयणाए दिट्ठीए" (उवा)।

परिल्ल देखो **पर**=पर; (से ६, १७)।

परिल्लवास वि [दे] अज्ञात-गति; (दे ६, ३३)।

परिल्ली देखो **परिली**। वकृ—**परिल्लिंत, परिल्लेंत**; (औप)।

परिल्हस अक [परि+स्रंस्] गिर पडना, सरक जाना। परिल्हसइ; (हे ४, १९७)।

परिवइत्तु वि [परिव्रजितृ] गमन करने में समर्थ; (ठा ४, ४—पत्र २७१)।

परिवंकड (अप) वि [परिवक्र] सर्वथा टेढ़ा; (भवि)।

परिवंच सक [परिवञ्चय्] ठगना। संकृ—**परिवंचिऊण**; (सम्मत्त ११८)।

परिवंचिअ वि [परिवञ्चित] जो ठगा गया हो; (दे ४, १८)।

परिवंथि वि [परिपन्थिन्] विरोधी, दुश्मन; (पि ४०५; नाट—विक्र ७)।

परिवंदण न [परिवन्दन] स्तुति, प्रशंसा; (आचा)।

परिवंदिय वि [परिवन्दित] स्तुत, पूजित; (पउम १, ६)।

परिवक्खिय देखो **परिवच्छिय**; (औप)।

परिवग्ग पुं [परिवर्ग] परिजन-वर्ग; (पउम २३, २४)।

परिवच्छिय देखो **परिकच्छिय**; "उज्जलनेवत्थहव्वपरिवच्छियं" (णाया १, १६ टी—पत्र २२१; औप)। देखो **परिवत्थिय**।

परिवज्ज सक [प्रति+पद्] स्वीकार करना। परिवज्जइ; (भवि)।

परिवज्ज सक [परि+वर्जय्] परिहार करना, परित्याग करना। परिवज्जइ; (भवि)। संकृ—**परिवज्जिय, परिवज्जियाण**; (आचा; पि ५९२)।

परिवज्जण न [परिवर्जन] परित्याग; (धर्मसं ११२०)।

परिवज्जणा स्त्री [परिवर्जना] ऊपर देखो, (उव)।

परिवज्जिय वि [परिवर्जित] परित्यक्त; (उवा; भग; भवि)।

परिवट्ट देखो **परिवत्त**=परि+वर्तय्। परिवट्टइ; (भवि)। संकृ—**परिवट्टिवि** (अप); (भवि)।

परिवट्टण न [परिवर्तन] आवर्तन, आवृत्ति; "आगमपरिवट्टण" (संबोध ३६)।

परिवट्टि देखो **परिवत्ति**, (मा ५२)।

परिवट्टिय देखो **परिवत्तिय**; (भवि)।

परिवट्टुल वि [परिवर्तुल] गोलाकार; (स ६८)।

परिवड अक [परि+पत्] पडना। वकृ—**परिवडंत, परिवडमाण**; (पंच ५, ६२; ६७; उप पृ ३)।

परिवडिअ वि [परिपतित] गिरा हुआ; (सुपा ३६०; वसु; यति २३; हम्मीर ३०; पंचा ३, २४)।

परिवड्ढ अक [परि+वृध्] बढ़ना। परिवड्ढइ; (महा; भवि)। भवि—परिवड्ढिस्सइ; (औप)। कृ—**परिवड्ढंत, परिवड्ढमाण, परिवड्ढमाण**; (गा ३४६; णाया १, १३; महा; णाया १, १०)।

परिवड्ढण न [परिवर्धन] परिवृद्धि, बढ़ाव; (गउड; धर्मसं ८७५)।

परिवड्ढि स्त्री [परिवृद्धि] ऊपर देखो; (से ५, २)।

परिवड्ढिअ देखो **परिअड्ढिअ**=परिवर्धिन्; (औप १६ टि)।

परिवड्ढिअ वि [**परिवर्धित**] बढ़ाया हुआ ; (गा १४२ ; ४३१)।

परिवड्ढमाण देखो **परिवड्ढ** ।

परिवण्ण सक [**परि+वर्णय्**] वर्णन करना । कृ—**परिवण्णेअव्व** ; (भग)।

परिवण्णिअ वि [**परिवर्णित**] जिसका वर्णन किया गया हो वह ; (आत्म ७)।

परिवत्त देखो **परिअट्ट**=परि+वृत्। परिवत्तई ; (उत्त ३३, १)। परिवत्तसु ; (गा ८०७)। वकृ—**परिवत्तंत** ; (गा २८३)।

परिवत्त देखो **परिअट्ट**=परि+वर्तय्। वकृ—**परिवत्तेंत, परिवत्तयंत** ; (स ६ ; सूअ १, ५, १, १५)। संकृ—**परिवत्तिऊण**; (काल)।

परिवत्त देखो **परिअट्ट**=परिवर्त ; "विहियरूवपरिवत्तो" (कुप्र १३४)। २ संचरण, भ्रमण ; (राज)।

परिवत्त देखो **परिअत्त**=परिवृत्त ; (काल)।

परिवत्तण देखो **पडिअत्तण**; (पि २८६; नाट—विक्र ८३)।

परिवत्तर (अप) वि [**परिपक्त्रिम**] पकाया गया, गरम किया गया; "अंगु मलेवि सुअंधामोएं निमज्जिउ परिवत्तरतोएं" (भवि)।

परिवत्ति वि [**परिवर्तिन्**] बदलाने वाला; "रूवपरिवत्तिणी विज्जा" (कुप्र १२६; महा)।

परिवत्तिय देखो **परिअट्टिय**; (सुपा २६२)।

परिवत्थ न [**परिवस्त्र**] वस्त्र, कपड़ा, (भवि)।

परिवत्थिय वि [**परिवस्त्रित**] आच्छादित: "उज्जलनेवच्छहत्थ(?व्व)परिवत्थियं" (औप)। देखो **परिवच्छिय**।

परिवद्ध देखो **परिवड्ढ** । वकृ— **परिवद्धमाण**; (राज)।

परिवन्न देखो **पडिवन्न**; (उप १३६ टी)।

परिवय सक [**परि+वद्**] निन्दा करना । परिवएज्जा, परिवयंति; (आचा)। वकृ—**परिवयंत**; (पण्ह १, ३)।

परिवरिअ वि [**परिवृत**] परिकरित, वेष्टित; (सुपा १२५)।

परिवलइअ वि [**परिवलयित**] वेष्टित; (सुख १०, १)।

परिवस अक [**परि+वस्**] वसना, रहना । परिवसइ, परिवसंति; (भग ; महा; पि ४१७)।

परिवसण न [**परिवसन**] आवास; (राज)।

परिवसणा स्त्री [**परिवसना**] पर्युषणा-पर्व; (निचू १०)।

परिवसिअ वि [**पर्युषित**] रहा हुआ, वास किया हुआ; (सण)।

परिवह सक [**परि+वह्**] वहन करना, ढोना। २ अक. चालू रहना । परिवहइ; (कप्प)। परिवहंति; (गउड)। वकृ—**परिवहंत**; (पिंड ३५६)।

परिवहण न [**परिवहन**] ढोना, (राज)।

परिवा अक [**परि+वा**] सूखना । परिवायइ ; (गउड)।

परिवाइ वि [**परिवादिन्**] निन्दा करने वाला; (उव)।

परिवाइय वि [**परिवाचित**] पढ़ा हुआ; (पउम ३७, १५)।

परिवाई स्त्री [**परिवाद**] कलङ्क-वार्ता; "दइयस्स ताव वत्ता जणपरिवाई लहु पत्ता" (पउम ६५, ४१)।

परिवाड सक [**घटय्**] १ घटाना, संगत करना । २ रचना, निर्माण करना । परिवाडेइ; (हे ४, ५०)।

परिवाडल देखो **परिपाडल**; (गउड)।

परिवाडि स्त्री [**परिपाटि**] १ पद्धति, रीति; (विसे १०८५)। २ पंक्ति, श्रेणि; (उत्त १, ३२)। ३ क्रम, परंपरा; (संबो ६)। ४ सूत्रार्थ-वाचना, अध्यापन; "थिरपरिवाडी गहियवक्को" (धर्मवि ३६), "एगत्थीहि वत्ति न करे परिवाडिदाणमवि तासिं" (कुलक ११)।

परिवाडिअ वि [**घटित**] रचित; (कुमा)।

परिवाडी देखो **परिवाडि**; "परिवाडीआगयं हवइ रज्जं" (पउम ३१, १०६; पाअ)।

परिवाद पुं [**परिवाद**] निन्दा, दोष-कीर्तन, (धर्मसं ६५४)।

परिवादिणी स्त्री [**परिवादिनी**] वीणा-विशेष; (राज)।

परिवाय देखो **परिवाद**; (कप्प; औप; पउम ६५, ६०; णाया १, १; स ३२; आत्महि १५)।

परिवायग } पुं [**परिव्राजक**] संन्यासी, बाबा, (सण; **परिवायय** } सुर १५, ५)।

परिवार सक [**परि+वारय्**] १ वेष्टन करना । २ कुटुम्ब करना। वकृ—**परिवारयंत**; (उत्त १३, १४)। संकृ—**परिवारिया**; (सूअ १, ३, २, २)।

परिवार पुं [**परिवार**] गृह-लोक, घर के मनुष्य; (औप; महा; कुमा)। २ न. म्यान; (पाअ)।

परिवारण न [**परिवारण**] १ निराकरण; (पण्ह १, १—पत्र १६)। २ आच्छादन, ढकना ; (दे १, ८६)।

परिवारिअ वि [**दे**] घटित, रचित ; (दे ६, ३०)।

परिवारिअ वि [**परिवारित**] १ परिवार-संपन्न; २ वेष्टित; "जहा से उडुवई चंदे नक्खत्तपरिवारिए" (उत्त ११, २५; काल)।

परिवाल देखो **परिआल**। परिवालइ; (दे ६, ३५ टी)।
परिवाल सक [**परि+पालय्**] पालन करना। परिवालइ, परिवालेइ ; (भवि ; महा)। वकृ—**परिवालयंत**; (सुर १, १७१)। संकृ—**परिवालिय**; (राज)।
परिवाल देखो **परिवार**=परिवार ; (गाया १, ८—पत्र १३१)।
परिवाविय वि [**परिवापित**] उखाड़ कर फिर बोया हुआ; (ठा ४, ४)।
परिवाविया स्त्री [**परिवापिता**] दीक्षा-विशेष, फिर से महाव्रतों का आरोपण ; (ठा ४, ४)।
परिवास पुं [**दे**] खेत में सोने वाला पुरुष; (दे ६, २६)।
परिवास न [**परिवासस्**] वस्त्र, कपड़ा; "जंघोरुयगुज्झंतरपासइँ सुनियत्थइँ मि झीणपरिवासइँ" (भवि)।
परिवासि वि [**परिवासिन्**] वसने वाला ; (सुपा ४२)।
परिवासिय वि [**परिवासित**] सुवासित, सुगन्ध-युक्त ; "मयपरिमलपरिवासियदूरें" (भवि)।
परिवाह सक [**परि+वाहय्**] १ वहन कराना। २ अश्वादि खेलाना, अश्वादि-क्रीडा करना ; "विवरीयसिक्खतुरयं परिवाहइ वाहियालीए" (महा)।
परिवाह पुं [**परिवाह**] जल का उछाल, वहाव ; "भरिउच्चरंतपसरिअपिअसंभरणपिसुणो वराईए। परिवाहो विअ दुक्खस्स वहइ णअणट्ठिओ वाहो" (गा ३७७)।
परिवाह पुं [**दे**] दुर्विनय, अ-विनय ; (दे ६, २३)।
परिवाहण न [**परिवाहन**] अश्वादि-खेलन ; "आसपरिवाहणनिमित्तं गएणा" (स ८१ ; महा)।
परिविआल सक [**परि+विश्**] वेष्टन करना। परिविआलइ ; (प्राकृ ७५ ; धात्वा १४४)।
परिविचिट्ठ अक [**परिवि+स्था**] १ उत्पन्न होना। २ रहना। परिविच्चिट्ठइ ; (आचा १, ४, २, २; पि ४८३)।
परिविच्छय वि [**परिविक्षत**] सर्वथा छिन्न—हत; (सूअ १, ३, १, २)।
परिविट्ठ वि [**परिविष्ट**] परोसा हुआ ; (स १८६ ; सुपा ६२३)।
परिवित्तस अक [**परिवि+त्रस्**] डरना। परिवित्तसंति; परिवित्तसेज्जा ; (आचा १, ६, ५, ५)।
परिवित्ति स्त्री [**परिवृत्ति**] परिवर्तन; (सुपा ५८७)।
परिविद्ध वि [**परिविद्ध**] जो विधा गया हो वह ; (सुपा २७०)।
परिविद्धंस सक [**परिवि+ध्वंसय्**] १ विनाश करना। २ परिताप उपजाना। संकृ—**परिविद्धंसित्ता** ; (भग)।
परिविद्धत्थ वि [**परिविध्वस्त**] १ विनष्ट ; २ परितापित; (सूअ २, ३, १)।
परिविप्फुरिय वि [**परिविस्फुरित**] स्फूर्ति-युक्त ;(सण)।
परिवियलिय वि [**परिविगलित**] चुआ हुआ, टपका हुआ; (सण)।
परिवियलिर वि [**परिविगलितृ**] झरने वाला, चूने वाला; (सण)।
परिविरल वि [**परिविरल**] विशेष विरल ; (गउड ; गा ३२६)।
परिविलसिर वि [**परिविलसितृ**] विलासी ; (सण)।
परिविस सक [**परि+विश्**] वेष्टन करना। परिविसइ ; (प्राकृ ७५)।
परिविस सक [**परि+विष्**] परोसना, खिलाना। संकृ—**परिविस्स**; (उत्त १४, ६)।
परिविसाय पुं [**परिविषाद**] समन्तात् खेद; (धर्मवि १२६)।
परिविहुरिय वि [**परिविधुरित**] अति पीड़ित ; "मणिसंजुयदेविकरपरिविहुरिओ गयं मोत्तुं" (सुर १५, १५)।
परिवीअ सक [**परि+वीजय्**] पँखा करना, हवा करना। परिवीएमि ; (स ६७)।
परिवीइअ वि [**परिवीजित**] जिसको हवा की गई हो वह ; (उप २११ टी)।
परिवीढ न [**परिपीठ**] आसन-विशेष ; (भवि)।
परिवुड वि [**परिवृत**] परिकरित, वेष्टित ; (गाया १, १४; धर्मवि २४; औप; महा)।
परिवुत्थ वि [**पर्युषित**] १ रहा हुआ ; २ न. वास, निवास ; (गउड ५४०)। देखो **परिवुसिअ**।
परिवुद देखो **परिवुड** ; (प्राकृ १२)।
परिवुदि स्त्री [**परिवृति**] वेष्टन ; (प्राकृ १२)।
परिवुसिअ वि [**पर्युषित**] स्थित, रहा हुआ; "जे भिक्खू अचेले परिवुसिए" (आचा १, ८, ७, १; १, ६, २, २)। देखो **परिवुत्थ**।
परिवूढ वि [**परिवृढ**] समर्थ ; (उत्त ७, २)।
परिवूढ वि [**परिवृद्ध**] स्थूल ; (भास ८६; उत्त ७, ६)।
परिवूढ वि [**परिव्यूढ**] वहन किया हुआ, ढोया हुआ ; "न चइस्सामि अह पुण चिरपरिवूढं इमं लोहं" (धर्मवि ७)।
परिवूहण देखो **परिवूहण** ; (राज)।

परिवेढ सक [**परि+वेष्ट्**] वेढना, लपेटना। परिवेढइ; (भवि)। संकृ—**परिवेढिय**; (निचू १)।

परिवेढ पुं [**परिवेष्ट**] वेष्टन, घेरा; "जा जग्गइ तो पिच्छइ सेवापरसुहडपरिवेढं" (सिरि ६३८)।

परिवेढाविय वि [**परिवेष्टित**] वेष्टित कराया हुआ; (पि ३०४)।

परिवेढिय वि [**परिवेष्टित**] वेढा हुआ, घेरा हुआ, लपेटा हुआ; (उप ७६८ टी; धण २० ; पि ३०४)।

परिवेय अक [**परि+वेप्**] काँपना। "कायरवरिणि परिवेयइ" (भवि)।

परिवेल्लिर वि [**परिवेल्लितृ**] कम्पन-शील; (गउड)।

परिवेव अक [**परि+वेप्**] काँपना। वकृ—**परिवेवमाण**; (आचा)।

परिवेस सक [**परि+विष्**] परोसना। परिवेसइ; (सुपा ३८६)। कर्म—परिवेसिज्जइ; (गाया १, ८)। वकृ—**परिवेसंत, परिवेसयंत**; (पिंड १२० ; सुपा ११; गाया १, ७)।

परिवेस पुं [**परिवेश, °ष**] १ वेष्टन; (गउड)। २ मंडल, मेघादि से सूर्य-चंद्र का वेष्टनाकार मंडल; "परिवेसो अंबरे फरुसवरणो" (पउम ६६, ४७; स ३१२ टी; गउड)।

परिवेसण न [**परिवेषण**] परोसना; (स १८७; पिंड ११६)।

परिवेसणा स्त्री [**परिवेषणा**] ऊपर देखो, (पिंड ४४५)।

परिवेसि [**परिवेशिन्**] समीप में रहने वाला; (गउड)।

परिव्वअ सक [**परि+व्रज्**] १ समन्तात् गमन करना। २ दीक्षा लेना। परिव्वए; परिव्वएज्जासि; (सूअ १, १, ४, ३; पि ४६०)।

परिव्वअ त्रि [**परिवृत**] परिवेष्टित; "तारापरिव्वओ विव सरयपुरिणमाचंदो" (वसु)।

परिव्वअ वि [**परिव्यय**] विशेष व्यय, (नाट—मृच्छ ७)।

परिव्वह सक [**परि+वह्**] वहन करना, धारण करना। परिव्वहइ; (संबोध २२)।

परिव्वाइया स्त्री [**परिव्राजिका**] संन्यासिनी, (गाया १, ८; महा)।

परिव्वाज (शौ) पु [**परि+व्राज्**] संन्यासी, (चारु ४६)।

परिव्वाजअ (शौ) पुं [**परिव्राजक**] संन्यासी; (पि, २८७ ; नाट—मृच्छ ८५)।

परिव्वाजिआ (शौ) देखो **परिव्वाइया**; (मा २०)।

परिव्वाय देखो **परिव्वाज**; (सूअनि ११२; औप)।

परिव्वायग, **परिव्वायय** } पुं [**परिव्राजक**] संन्यासी, साधु; (भग)।

परिव्वायय वि [**पारिव्राजक**] परिव्राजक-संबन्धी; (कप्प)।

परिस देखो **फरिस**=स्पर्श; (गउड; चारु ४२)।

परिसंक अक [**परि+शङ्क्**] भय करना, डरना। वकृ—**परिसंकमाण**; (सूअ १, १०, २०)।

परिसंकिय वि [**परिशङ्कित**] भीत; (पण्ह १, ३)।

परिसंखा सक [**परिसं+ख्या**] १ अच्छी तरह जानना। २ गिनती करना। संकृ—**परिसंखाय**; (दस ७, १)।

परिसंखा स्त्री [**परिसंख्या**] संख्या, गिनती; (पउम २, ४६; जीवस ४०; पव—गाथा १३; तंदु ४; सण)।

परिसंग पुं [**परिषङ्ग**] संग, सोहबत; (हम्मीर १६)।

परिसंग पुं [**परिष्वङ्ग**] आलिङ्गन; (पउम २१, ५२)।

परिसंगय वि [**परिसंगत**] युक्त, सहित; (धर्मवि १३)।

परिसंठव सक [**परिसं+स्थापय्**] संस्थापन करना। परिसंठवहु (अप); (पिंग)। वकृ—**परिसंठविंत**; (उपप ४३)।

परिसंठविय वि [**परिसंस्थापित**] संस्थापित; (तंदु ३८)।

परिसंठिय वि [**परिसंस्थित**] स्थित, रहा हुआ; (महा)।

परिसंत वि [**परिश्रान्त**] थका हुआ, (महा)।

परिसंथविय वि [**परिसंस्थापित**] आश्वासित; (स ५६६)।

परिसक्क सक [**परि+ष्वष्क्**] चलना, गमन करना, इधर-उधर घूमना। परिसक्कइ; (उप ६ टी; कुप्र १७५)। वकृ—**परिसक्कंत, परिसक्कमाण**; (काप्र ६१७, स ४१; १३६)। संकृ—**परिसक्किऊण**; (सुपा ३१३)। कृ—**परिसक्कियव्व**; (स १६२)।

परिसक्कण न [**परिष्वष्कण**] परिभ्रमण; (से ५, ५५; १३, ५६; सुपा २०१)।

परिसक्किअ वि [**परिष्वष्कित**] १ गत; (भवि)। २ न. परिक्रमण, परिभ्रमण; (गा ६०६)।

परिसक्किर वि [**परिष्वष्कितृ**] गमन करने वाला; (गाया १, १; पि ५६६)।

परिसज्जिअ (अप) वि [**परिष्वक्त**] आलिंगित; (सण)।

परिसडिय वि [**परिशटित**] सडा हुआ, विनष्ट, (गाया १, २; औप)।

परिसण्ह वि [**परिश्लक्ष्ण**] सूक्ष्म, छोटा; (से १, १)।
परिसन्न वि [**परिषण्ण**] जो हैरान हुआ हो, पीडित; (पउम १७, ३०)।
परिसप्प सक [**परि+सृप्**] चलना। परिसप्पेइ, (नाट—विक्र ६१)।
परिसप्पि वि [**परिसर्पिन्**] १ चलने वाला; (कप्पू)। २ पुंस्त्री. हाथ और पैर से चलने वाली जन्तु-जाति—नकुल, सर्प आदि प्राणि-गण। स्त्री—°**णी**; (जीव २)।
परिसम देखो **परिस्सम**, (महा)।
परिसमत्त वि [**परिसमाप्त**] संपूर्ण, जो पूरा हुआ हो वह; (से १५, ६५; सुर १५, २५०)।
परिसमत्ति स्त्री [**परिसमाप्ति**] समाप्ति, पूर्णता; (उप ३५७; स ५२)।
परिसमाविय वि [**परिसमापित**] जो समाप्त किया गया हो, पूरा किया हुआ; (विसे ३६०२)।
परिसमाव सक [**परिसम्+आप्**] पूर्ण करना। संकृ—**परिसमाविअ**; (अभि ११६)।
परिसर पु [**परिसर**] नगर आदि के समीप का स्थान; (औप; सुपा १३०; मोह ७६)।
परिसल्लिय वि [**परिशल्यित**] शल्य-युक्त; (सण)।
परिसव सक [**परि+स्रु**] झरना, टपकना। वकृ—**परिसवंत**; (तंदु ३६; ४१)।
परिसह पुं [**परिषह**] देखो **परीसह**; (भग)।
परिसा स्त्री [**परिषद्**] १ सभा, पर्षद्; (पाअ; औप; उवा; विपा १, १)। २ परिवार; (ठा ३, २—पत्र १२७)।
परिसाइ देखो **परिस्साइ**; (राज)।
परिसाइयाण देखो **परिसाव**।
परिसाड सक [**परि+शाटय्**] १ त्याग करना। २ अलग करना। परिसाडेइ, (कप्प; भग)। संकृ—**परिसाडइत्ता**; (भग)।
परिसाडणा स्त्री [**परिशाटना**] पृथक्करण, (सुअनि ७; २०)।
परिसाडि वि [**परिशाटिन्**] परिशाटन-युक्त; (ओघ ३१)।
परिसाडि स्त्री [**परिशाटि**] परिशाटन, पृथक्करण; (पिंड ५५२)।
परिसाम अक [**शम्**] शान्त होना। परिसामइ; (हे ४, १६७)।
परिसाम वि [**परिश्याम**] नीचे देखो; (गउड)।
परिसामल वि [**परिश्यामल**] कृष्ण, काला; (गउड)।
परिसामिअ वि [**शान्त**] शान्त, शम-युक्त; (कुमा)।
परिसामिअ वि [**परिश्यामित**] कृष्ण किया हुआ, (गाया १, १)।
परिसाव सक [**परि+स्रावय्**] १ निचोड़ना। २ गालना। संकृ— **परिसाइयाण**, (आचा २, १, ८, १)।
परिसावि देखो **परिस्सावि**, (बृह ३)।
परिसाहिय वि [**परिकथित**] प्रतिपादित, उक्त; (सण)।
परिसिंच सक [**परि+सिच्**] सींचना। परिसिंचिज्जा; (उत्त २, ६)। वकृ—**परिसिंचमाण** ; (णाया १, १)। कवकृ—**परिसिच्चमाण** ; (कप्प ; पि ५४२)।
परिसिट्ठ वि [**परिशिष्ट**] अवशिष्ट, बाकी बचा हुआ; (आचा १, २, ३, ५)।
परिसिढिल वि [**परिशिथिल**] विशेष शिथिल, ढीला; (गउड)।
परिसित्त वि [**परिषिक्त**] १ सींचा हुआ; (गा १८५; सण)। २ न. परिषेक, सेचन; (पराह १, १)।
परिसिल्ल वि [**पर्षद्वत्**] परिषद् वाला; (बृह ३)।
परिसील सक [**परि+शीलय्**] अभ्यास करना, आदत डालना। संकृ—**परिसीलिवि** (अप); (सण)।
परिसीलण न [**परिशीलन**] अभ्यास, आदत; (रंभा; सण)।
परिसीलिय वि [**परिशीलित**] अभ्यस्त; (सण)।
परिसीसग देखो **पडिसीसअ**; (राज)।
परिसुक्क वि [**परिशुष्क**] खूब सूखा हुआ; (विपा १, २; गउड)।
परिसुण्ण वि [**परिशून्य**] खाली, रिक्त, सुन्न; (से ११, ८७)।
परिसुत्त वि [**परिसुप्त**] सर्वथा सोया हुआ; (नाट—उत्तर २३)।
परिसुद्ध वि [**परिशुद्ध**] निर्मल, निर्दोष; (उव; गउड)।
परिसुद्धि स्त्री [**परिशुद्धि**] विशुद्धि, निर्मलता; (गउड; द ६५)।
परिसुन्न देखो **परिसुण्ण** ; (विसे २८५०; सण)।
परिसुस (अप) सक [**परि+शोषय्**] सुखाना। संकृ—**परिसुसिवि** (अप); (सण)।
परिसूअणा स्त्री [**परिसूचना**] सूचना; (सुपा ३०)।
परिसेय पुं [**परिषेक**] सेचन ; (ओघ ३४७)।

परिसेस पुं [**परिशेष**] १ बाकी बचा हुआ, अवशिष्ट; (से १०, २३; पउम ३५, ४०; गा ८८; कम्म ६, ६०)। २ अनुमान-प्रमाण का एक भेद, पारिशेष्य-अनुमान; (धर्मसं ६८; ६६)।

परिसेसिअ वि [**परिशेषित**] १ बाकी बचा हुआ; (भग)। २ परिच्छिन्न, निर्णीत ;

"उज्झसि उज्झसु कड्ढसि
कड्ढसु अह फुडसि हिअअ ता फुडसु।
तहवि परिसेसिओ च्चिअ
सो हु मए गलिअसब्भावो" (गा ४०१)।

परिसेह पुं [**परिषेध**] प्रतिषेध, निवारण; "पावट्ठाणाण जो उ परिसेहो, झाणज्झयणाईणं जो य विही, एस धम्मकसो" (काल)।

परिसोण वि [**परिशोण**] लाल रँग का; (गउड)।

परिसोसण न [**परिशोषण**] सुखाना; (गा ६२८)।

परिसोसिअ वि [**परिशोषित**] सुखाया हुआ; (सण)।

परिसोह सक [**परि+शोधय्**] शुद्ध करना। कवकृ—**परिसोहिज्जंत**; (सण)।

परिस्सअ सक [**परि+स्वञ्ज्**] आलिंगन करना। परिस्सअदि (शौ); (पि ३१५)। संकृ—**परिस्सइअ**; (पि ३१५; नाट—शकु ७२)।

परिस्संत देखो **परिसंत**; (णाया १, १; स्वप्न ४०; अभि २१०)।

परिस्सज (शौ) देखो **परिस्सअ**। परिस्सजह; (उत्तर १७६)। वकृ—**परिस्सजंत**; (अभि १३३)। संकृ—**परिस्सजिअ**; (अभि १२५)।

परिस्सम पुं [**परिश्रम**] मेहनत; (धर्मसं ७८८, स्वप्न १०; अभि ३६)।

परिस्सम्म अक [**परि+श्रम्**] १ मेहनत करना। २ विश्राम लेना। परिस्सम्मइ; (विसे ११६७; धर्मसं ७८६)।

परिस्सव सक [**परि+स्रु**] चूना, झरना, टपकना। वकृ—**परिस्सवमाण**; (विपा १, १)।

परिस्सव पुं [**परिस्रव**] आस्रव, कर्म-बन्ध का कारण; (आचा)।

परिस्सह देखो **परीसह**; (आचा)।

परिस्साइ देखो **परिस्सावि**=परिस्राविन्; (ठा ४, ४—पत्र २७६)।

परिस्साव देखो **परिसाव**। संकृ—**परिस्सावियाण**; (पि ५६२)।

परिस्सावि वि [**परिस्राविन्**] १ कर्म-बन्ध करने वाला; (भग २५, ६)। २ चूने वाला, टपकने वाला; ३ गुह्य बात को प्रकट कर देने वाला, (गच्छ १, २२; पंचा १५, १४)।

परिस्सावि वि [**परिश्राविन्**] सुनाने वाला; (द्रव्य ४६)।

परिह सक [**परि+धा**] पहिरना। परिहइ; (धर्मवि १५०; भवि), "सव्वंगीणेवि परिहए जंबू रयणमयालंकारे" (धर्मवि १४६)।

परिह पुं [**दे**] रोष, गुस्सा; (दे ६, ७)।

परिह पुं [**परिघ**] अर्गला, आगल ; (अणु)।

परिहच्छ वि [**दे**] १ पटु, दक्ष, निपुण; (दे ६, ७६; भवि)। २ पुं. मन्यु, रोष, गुस्सा; (दे ६, ७१)। देखो **परिहत्थ**।

परिहच्छ देखो **पडिहच्छ**; (औप)।

परिहट्ट सक [**मृद्, परि+घट्टय्**] मर्दन करना, चूर करना, कचड़ना। परिहट्टइ; (हे ४, १२६; नाट—साहित्य ११६)।

परिहट्ट सक [**वि+लुल्**] १ मारना, मार कर गिरा देना। २ सामना करना। ३ लूट लेना। ४ अक. जमीन पर लोटना। परिहट्टइ; (प्राकृ ७३)।

परिहट्टण न [**परिघट्टन**] १ अभिघात, आघात; (से १०, ४१)। २ घर्षण, घिसना; (से ८, ४३)।

परिहट्टि स्त्री [**दे**] आकृष्टि, आकर्षण, खींचाव; (दे ६, २१)।

परिहट्टिअ वि [**मृदित**] जिसका मर्दन किया गया हो वह; "परिहट्टिओ माणो" (कुमा; पाअ)।

परिहण न [**दे, परिधान**] वस्त्र, कपड़ा; (दे ६, २१; पाअ; हे ४, ३४१; सुर १, २५; भवि)।

परिहत्थ पुं [**दे**] १ जलजन्तु-विशेष; "परिहत्थमच्छपुंछच्छड-अच्छोडणपोच्छलंतसलिलोहं" (सुर १३, ४१), "पोक्खरिणी....... परिहत्थभमंतमच्छछप्पयअणेगसउणगणमिहुणवियरियसद्दुन्नइयमहुरसरनाइया पासाईया" (णाया १, १३—पत्र १७६)। २ वि. दक्ष, निपुण; "अन्ने रणपरिहत्था सूरा" (पउम ६१, १; पण्ह १, ३—पत्र ५५; पाअ; आव ४)। ३ परिपूर्ण; (औप; कप्प)। देखो **परिहच्छ, पडिहत्थ**।

परिहर सक [**परि+धृ**] धारण करना। संकृ—**परिहरिअ**; (उत्त १२, ६)।

परिहर सक [**परि+हृ**] १ त्याग करना, छोड़ना। २ करना। ३ परिभोग करना, आसेवन करना। परिहरइ; (हे ४, २५६; उव; महा)। परिहरंति; (भग १५—पत्र ६६७)। वकृ—**परिहरंत, परिहरमाण**; (गा १६६; राज)। संकृ—**परिहरिअ**; (पिंग)। हेकृ—**परि-हरित्तए, परिहरिउं**; (ठा ५, ३; काप्र ४०८)। कृ—**परिहरणीअ, परिहरिअव्व**; (पि ५७१; गा २२७; ओघ ५६; सुर १४, ८३; सुपा ३६६; ५८८; पगह २, ५)।

परिहरण न [**परिहरण**] १ परित्याग, वर्जन; (महा)। २ आसेवन, परिभोग; (ठा १०)।

परिहरणा स्त्री [**परिहरणा**] ऊपर देखो; (पिंड १६७), " परिहरणा होइ परिभोगो " (ठा ५, ३ टी—पत्र ३३८)।

परिहरिअ वि [**परिहृत**] परित्यक्त, वर्जित; (महा; सण; भवि)।

परिहरिअ देखो **परिहर**=परि+धृ, हृ।

परिहरिअ वि [**परिधृत**] धारण किया हुआ; " परिहरिअकणअकुंडलगंडत्थलमणहरेसु सवणेसु। अणुअ ! समअवसेणं परिहिज्जइ तालवेंटजुअं ॥" (गा ३६८ अ)।

परिहलाविअ पुं [**दे**] जल-निर्गम, मोरी, पनाला; (दे ६, २६)।

परिहव सक [**परि+भू**] पराभव करना। वकृ—**परिहवंत**; (वव १)। कृ—**परिहवियव्व**; (उप १०३६)।

परिहव पुं [**परिभव**] पराभव, तिरस्कार; (से १३, ४६; गा ३६६; हे ३, १८०)।

परिहवण न [**परिभवन**] ऊपर देखो; (स ५७२)।

परिहविय वि [**परिभूत**] पराजित, तिरस्कृत; (उप पृ १८०)।

परिहस सक [**परि+हस्**] उपहास करना, हँसी करना। परिहसइ; (नाट)। कर्म—परिहसीअदि (शौ); (नाट—शाकु २)।

परिहस्स वि [**परिह्रस्व**] अत्यन्त लघु; (स ८)।

परिहा अक [**परि+हा**] हीन होना, कम होना। परिहाइ, परिहायइ; (उव; सुख २, ३०)। भवि—परिहाइस्सदि (शौ); (अभि ६)। कवकृ—**परिहायंत**; **परिहायमाण**; (सुर १०, ६; १२, १४; णाया १, १३; औप, ठा ३, ३), **परिहीअमाण**; (पि ५४५)।

परिहा सक [**परि+धा**] पहिरना। भवि—परिहिस्सामि; (आचा १, ६, ३, १)। संकृ—**परिहिऊण, परिहित्ता**; (कुप्र ७२; सूअ १, ४, १, २५)। कृ—**परिहियव्व**; (स ३१५)।

परिहा स्त्री [**परिखा**] खाई; (उर ४, २; पाअ)।

परिहाइअ वि [**दे**] परिक्षीण; (षड्)।

परिहाइवि देखो **परिहाव**=परि+धापय्।

परिहाण न [**परिधान**] १ वस्त्र, कपड़ा; (कुप्र ५६; सुपा ५५)। २ वि. पहिरने वाला; " महिविलया सलिलवत्थपरिहाणी " (पउम ११, ११६)।

परिहाणि स्त्री [**परिहाणि**] ह्रास, नुकसान, क्षति; (सम ६७; उप ३२६; जी ३३; प्रासू ३६)।

परिहाय वि [**दे**] क्षीण, दुर्बल; (दे ६, २५; पाअ)।

परिहायंत, **परिहायमाण** } देखो **परिहा**=परि+हा।

परिहार पुं [**परिहार**] १ परित्याग, वर्जन; (गउड)। २ परिभोग, आसेवन; "एवं खलु गोसाला ! वणस्सइकाइयाओ पउट्टपरिहारं परिहरंति" (भग १५)। ३ परिहार-विशुद्धि-नामक संयम-विशेष; (कम्म ४, १२; २१)। ४ विषय; (वव १)। ५ तप-विशेष, (ठा ५, २; वव १)। °**विसुद्धिअ**, °**विसुद्धीअ** न [°**विशुद्धिक**] चारित्र-विशेष, संयम-विशेष; (ठा ५, २; नव २६)।

परिहारि वि [**परिहारिन्**] परिहार करने वाला; (बृह ४)।

परिहारिणी स्त्री [**दे**] देर से व्याई हुई भैंस; (दे ६, ३१)।

परिहारिय वि [**पारिहारिक**] १ परित्याग के योग्य; (बृह २)। २ परिहार-नामक तप का पालक; (पव ६६)।

परिहाल पुं [**दे**] जल-निर्गम, मोरी; (दे ६, २६)।

परिहाव सक [**परि+धापय्**] पहिराना। संकृ—**परिहाइवि** (अप); (भवि)।

परिहाव सक [**परि+हापय्**] ह्रास करना, कम करना, हीन करना। वकृ—**परिहावेमाण**; (णाया १, १—पत्र २८)।

परिहाविअ वि [**परिहापित**] हीन किया हुआ; (वव ४)।

परिहाविअ वि [**परिधापित**] पहिराया हुआ; (महा; सुर १०, १७; स ५२६; कुप्र ६)।

परिहास पु [**परिहास**] उपहास, हँसी; (गा ७७१; पाअ)।

परिहासणा स्त्री [**परिभाषणा**] उपालम्भ; (आव १)।

परिहि पुंस्त्री [**परिधि**] १ परिवेष; "ससिबिंबं व परिहिणा रुद्धं सिन्नेण तस्स रायगिहं" (पव २५५)। २ परिणाह, विस्तार; (राज)।

[illegible]

पर्रिविद्ध [illegible] [परिविद्ध] [illegible]

[illegible] पडिविद्ध, परि- [illegible]

[illegible]

परोवत्त पुं [दे, परिवर्त] [illegible] (पाअ [illegible])।

परोविस पुं [परिविश्व] [illegible] ([illegible])।

परोवइअ वि [परिवइअ] [illegible] ; (पण्ण [illegible])।

परोवाय देखो परिवाय=परिवाद ; (पउम १०[illegible], [illegible] [illegible])।

परोवार देखो परिवार=परिवार; (सुपा; [illegible])।

परोविण न [परिवेषण] [illegible]; ([illegible] २, १[illegible])।

परोव्विन देखो परिव्विन; ([illegible])।

परोसह पुं [परीसह] [illegible] आदि से होने वाली पीड़ा; ([illegible])।

परुइय वि [प्ररुदित] जो रोने लगा हो वह; ([illegible])।

परुप्पर देखो परोप्पर ; ([illegible] [illegible] ; [illegible] [illegible])।

परुण्ण, परुन्न [illegible] देखो परुइय; ([illegible])।

परूप्पर देखो परोप्पर; ([illegible])।

[illegible] वि [प्रोद्भासित] [illegible] ([illegible])।

परूढ वि [प्ररूढ] [illegible] ([illegible])।

परूढ वि [प्ररूढ] १ [illegible], ([illegible]) । २ [illegible] ([illegible])।

परूव सक [प्र + रूपय्] [illegible] ([illegible]) । [illegible] - परूवइत्ता; ([illegible])।

परूवग वि [प्ररूपक] [illegible], ([illegible])।

परूवण न [प्ररूपण] [illegible], ([illegible])।

परूवणा स्त्री [प्ररूपणा] [illegible] ([illegible])।

परूविअ वि [प्ररूपित] १ [illegible], [illegible]; ([illegible]) । २ [illegible], [illegible] ([illegible])।

परेअ पुं [दे] [illegible] ([illegible])।

परेया [illegible] [[illegible]] [illegible] ([illegible])।

परेवक्कमण देखो परिक्कमण; ([illegible])।

परेवय पुं [दे] [illegible] ([illegible])।

परेव्व वि [[illegible]] [illegible] ([illegible])।

परो अ [पर] [illegible] ([illegible])।

परोप्पर देखो परप्पर ([illegible])।

परोक्ख न [**परोक्ष**] १ प्रत्यक्ष-भिन्न प्रमाण; "पच्चक्ख-परोक्खाइं दुन्नेव जश्रो पमाणाइं" (सुर १२, ६० ; गांदि)। २ वि. परोक्ष-प्रमाण का विषय, अ-प्रत्यक्ष, (सुपा ६४७; हे ४, ४१८)। ३ न. पीछे, आँखों की ओट में; "मम परोक्खे किं तए अणुभूयं ?" (महा)।

परोट्ट देखो **पलोट्ट**=पर्यस्त; (षड्)।

परोप्पर } वि [**परस्पर**] आपस में; (हे १, ६२; **परोप्फर** } कुमा; कप्पू; षड्)।

परोवआर पु [**परोपकार**] दूसरे की भलाई; (नाट—मृच्छ १६८)।

परोवयारि वि [**परोपकारिन्**] दूसरे की भलाई करने वाला; (पउम ५०, १)।

परोवर देखो **परोप्पर**; (प्राकृ २६; ३०)।

परोविय देखो **परुइय**, (उप ७२८ टी; स ४८०)।

परोह अक [**प्र+रुह्**] १ उत्पन्न होना। २ बढना। परोहदि (शौ); (नाट)।

परोह पु [**प्ररोह**] १ उत्पत्ति, (कुमा); २ वृद्धि; ३ अंकुर, बीजोद्भेद; (हे १, ४४), "पुन्नलयाण परोहं रेहइ आवालपंतिव्व" (धर्मवि १६८)।

परोहड न [**दे**] घर का पिछला आँगन, घर के पीछे का भाग; (ओघ ४१७; पाअ; गा ६८५ अ; वज्जा १०६; १०८)।

पल अक [**पल्**] १ जीना। २ खाना। पलइ; (षड्)। देखो वल=वल्।

पल (अप) अक [**पत्**] पडना, गिरना। पलइ, (पिंग)। वकृ—**पलंत**; (पिंग)।

पल (अप) सक [**प्र+कटय्**] प्रकट करना। पल; (पिंग)।

पल अक [**परा+अय्**] भागना।

"चोराण कामुयाण य पामरपहियाण कुक्कुडो रडइ ।
रे पलह रमह वाहयह, वहह तणुइज्जए रयणी" (वज्जा १३४)।

पल न [**दे**] स्वेद, पसीना, (दे ६, १)।

पल न [**पल**] १ एक बहुत छोटी तोल, चार तोला, (ठा ३, १, सुपा ४३७; वज्जा ६८, कुप्र ४१६)। २ मांस; (कुप्र १८६)।

पलंघ सक [**प्र+लङ्घ्**] अतिक्रमण करना। पलंघेज्जा (औप)।

पलंघण न [**प्रलङ्घन**] उल्लंघन ; (औप)।

पलंड पुं [**पलगण्ड**] राज, चूना पोतने का काम करने वाला कारीगर; "पलगंडे पलंडो" (प्राकृ ३०)।

पलंडु पुं [**पलाण्डु**] प्याज; (उत्त ३६, ९८)।

पलंब अक [**प्र+लम्ब्**] लटकना। पलबए; (पि ४५७)। वकृ—**पलंबमाण**; (औप; महा)।

पलंब वि [**प्रलम्ब**] १ लटकने वाला, लटकता; (पगह १, ४, राय)। २ लम्बा, दीर्घ; (से १२, ५६; कुमा)। ३ पु. ग्रह-विशेष, एक महाग्रह, (ठा २, ३)। ४ मुहूर्त-विशेष, अहोरात्र का आठवाँ मुहूर्त, (सम ५१)। ५ पुन. आभरण-विशेष; (औप)। ६ एक तरह का धान का कोठा; (बृह २)। ७ मूल; (कस; बृह १)। ८ रुचक पर्वत का एक शिखर; (ठा ८—पत्र ४३६)। ९ न. फल; (बृह १; ठा ४, १—पत्र १८५)। ९ देव-विमान-विशेष, (सम. ३८)।

पलंबिअ वि [**प्रलम्बित**] लटका हुआ, (कप्प: भवि, स्वप्न १०)।

पलंबिर वि [**प्रलम्बितृ**] लटकने वाला, लटकता; (सुपा ११; सुर १, २४८)।

पलक्क वि [**दे**] लम्पट; "इय विसयपलक्कओ" (कुप्र ४२७; नाट)।

पलक्ख पुं [**प्लक्ष**] वड का पेड़, (कुमा, पि १३२)।

पलज्जण वि [**प्ररञ्जन**] रागी, अनुराग वाला; "अधम्म-पलज्जण—" (णाया १, १८; औप)।

पलट्ट अक [**परि+अस्**] १ पलटना, बदलना। २ सक. पलटाना, बदलाना। पलट्टइ; (पिंग)। "कोहाइकारणेवि हु नो वयणसिरिं पलट्टंति" (संबोध १८)। संकृ—पलट्टि (अप); (पिंग)। देखो **पल्लट्ट**।

पलत्त वि [**प्रलपित**] १ कथित, उक्त, प्रलाप-युक्त; (सुपा ११४; से ११, ७६)। २ न. प्रलाप, कथन, (औप)।

पलय पुं [**प्रलय**] १ युगान्त, कल्पान्त-काल; २ जगत् का अपने कारण में लय; (से २, २; पउम ७२, ३१)। ३ विनाश; "जायवजाइपलए" (ती ३)। ४ चेष्टा-क्षय; ५ छिपना; (हे १, १८७)। °**क्क** पुं [°**र्क**] प्रलय-काल का सूर्य, (पउम ७२, ३१)। °**घण** पुं [°**घन**] प्रलय का मेघ; (सण)। °**ाणल** पुं [°**ानल**] प्रलय काल की आग; (सण)।

पलल न [**पलल**] १ तिल-चूर्ण, तिल-क्षोद; (पगह २, ५; पिंड १६५)। २ मांस; (कुप्र १८७)।

पलिअ न [**प्रललित**] १ प्रक्रीडित; (णाया १, १—पत्र ६२)। २ अंग-विन्यास; (पण्ह २, ४)।

पलव सक [**प्र+लप्**] प्रलाप करना, बकवाद करना। पलवदि (शौ); (नाट—वेणी १७)। वकृ—**पलवंत, पलवमाण**; (काल; सुर २, १२५; सुपा २५०; ६४१)।

पलवण न [**प्लवन**] उछलना, उच्छलन; "संपाइमवाउवहो पलवण आऊवघाओ य" (ओघ ३४८)।

पलविअ, पलवित वि [**प्रलपित**] १ अनर्थक कहा हुआ; २ न. अनर्थक भाषण; (चंड; पण्ह १, २)।

पलविर वि [**प्रलपितृ**] बकवादी; (दे ७, ५६)।

पलस न [**दे**] १ कर्पास-फल; २ स्वेद, पसीना; (दे ६, ७०)।

पलस (अप) न [**पलाश**] पत्र, पत्ती; (भवि)।

पलसु स्त्री [**दे**] सेवा, पूजा, भक्ति; (दे ६, ३)।

पलहि पुंस्त्री [**दे**] कपास; (दे ६, ४; पाअ; वज्जा १८६; हे २, १७४)।

पलहिअ वि [**दे**] १ विषम, असम; २ पुंन. आवृत जमीन का वास्तु; (दे ६, १५)।

पलहिअअ वि [**दे. उपलहृदय**] मूर्ख, पाषाण-हृदय; (षड्)।

पलहुअ वि [**प्रलघुक**] १ स्वल्प, थोडा, २ छोटा; (से ११, ३३; गउड)।

पला देखो **पलाय**=परा+अय्। "जं जं भणामि अक्खयं सयलं पि वरहिं पलाइ तं तुज्झ" (आत्मानु २३), पलासि, पलामि; (पि ५६७)।

पलाअंत, पलाइअ देखो **पलाय**=परा+अय्।

पलाइअ, पलाण वि [**पलायित**] १ भागा हुआ, नष्ट; "पलाइए हलिए" (गा ३६०), "रिउणो सिन्नं जह पलाणं" (धर्मवि ५६; ५१; पउम ५३, ८४; ओघ ४६७; उप १३६ टी; सुपा २२; ५०३; ती १५; सण; महा)। २ न. पलायन; (दस ४, ३)।

पलाण न [**पलायन**] भागना; (सुपा ४६४)।

पलाणिअ वि [**पलायनित**] जिसने पलायन किया हो वह, भागा हुआ; "तेणवि आगच्छंतो विन्नाओ तो पलाणिओ दूरं" (सुपा ४६४)।

पलात वि [**प्रलात**] गृहीत; (चंड)।

पलाय अक [**परा+अय्**] भाग जाना, नासना। पलायइ, पलाअसि; (महा; पि ५६७)। भवि—पलाइस्सं; (पि ५६७)। वकृ—**पलाअंत, पलायमाण**; (गा २६१; णाया १, १८; आक १८; उप पृ २६)। संकृ—**पलाइअ**; (नाट; पि ५६७)। हेकृ—**पलाइउं**; (आक १६; सुपा ४६४)। कृ—**पलाइअव्व**; (पि ५६७)।

पलाय पुं [**दे**] चोर, तस्कर; (दे ६, ८)।

पलाय देखो **पलाइअ**=पलायित; (णाया १, ३; स १३१; उप पृ २५७; धण ४८)।

पलायण न [**पलायन**] भागना; (ओघ २६; सुर २, १४)।

पलायणया स्त्री. ऊपर देखो; (चेइय ४४६)।

पलायमाण देखो **पलाय**=परा+अय्।

पलाल न [**पलाल**] तृण-विशेष, पुआल; (पण्ह २, ३; पाअ; आचा)। °**पीढय** न [°**पीठक**] पलाल का आसन; (निचू १२)।

पलाव सक [**नाशय्**] भगाना, नष्ट करना। पलावइ; (हे ४, ३१)।

पलाव पुं [**प्लाव**] पानी की बाढ़; (तंदु ५० टी)।

पलाव पुं [**प्रलाप**] अनर्थक भाषण, बकवाद; (महा)।

पलावण न [**नाशन**] नष्ट करना, भगाना; (कुमा)।

पलावि वि [**प्रलापिन्**] बकवादी; "असंबद्धपलाविणी एसा" (कुप्र २२२; संबोध ४७; अभि ४६)।

पलाविअ वि [**प्लावित**] डुबोया हुआ, भिगाया हुआ; (सुर १३, २०४; कुप्र ६०; ६७; सण)।

पलाविअ वि [**प्रलापित**] अनर्थक घोषित करवाया हुआ; "मंछुडु किं दुच्चरिउ पलाविउ सज्जणजणहो नाउं लज्जाविउ" (भवि)।

पलाविर वि [**प्रलपितृ**] बकवाद करने वाला; "अहह असंबद्धपलाविरस्स वड्डयस्स पेच्छ मह पुरओ" (सुपा २०१), "दिव्वनाणीव जंपइ, एसो एवं पलाविरो" (सुपा २७७)।

पलास पुं [**पलाश**] १ वृक्ष-विशेष, किंशुक वृक्ष, ढाँक; (वज्जा १५२; गा ३११)। २ राक्षस; (वज्जा १३०; गा ३११)। ३ पुंन. पत्र, पत्ता; (पाअ; वज्जा १५२)। ४ भद्रशाल वन का एक दिग्हस्ती कूट; (ठा ८—पत्र ४३६; इक)।

पलासि स्त्री [**दे**] भल्ली, छोटा भाला, शस्त्र-विशेष; (दे ६, १४)।

पलासिया स्त्री [**दे. पलाशिका**] त्वक्काष्ठिका, छाल की बनी हुई लकड़ी; (सूअ १, ४, २, ७)।

पलाह देखो **पलास**; (संक्षि १६; पि २६२)।

पलि देखो **परि**; (सूत्र १, ६, ११; २, ७, ३६; उत्त २६, ३४; पि २५७)।

पलिअ न [**पलित**] १ वृद्ध अवस्था के कारण बालों का पकना, केशों की श्वेतता; २ वदन की झुर्रियाँ; (हे १, २१२)। ३ कर्म, कर्म-पुद्गल; "जे केइ सत्ता पलियं चयंति" (आचा १, ४, ३, १)। ४ घृणित अनुष्ठान; "से आकुट्ठे वा हए वा लुंचिए वा पलियं पकंथे" (आचा १, ६, २, २)। ५ कर्म, काम; (आचा १, ६, २, २)। ६ ताप; ७ पंक, कादा; ८ वि. शिथिल; ६ वृद्ध, बूढा; (हे १, २१२)। १० पका हुआ, पक्व; (धर्म २; निचू १५)। ११ जरा-ग्रस्त; "न हि दिज्जइ आहरणं पलियत्तयकरणाहत्थस्स" (राज)। °**ट्ठाण**, °**ठाण** न [°**स्थान**] कर्म-स्थान, कारखाना; (आचा १, ६, २, २)।

पलिअ न [**पल**] चार कर्ष या तीन सौ बीस गुञ्जा का नाप; (तंदु २६)।

पलिअ देखो **पल्ल**=पल्य; (पव १५८; भग; जी २६; नव ६; दं २७)।

पलिअ (अप) देखो **पडिअ**; (पिंग)।

पलिअंक पुं [**पर्यङ्क**] पलँग, खाट; (हे २, ६८; सम ३५; औप)। °**आसण** न [°**आसन**] आसन-विशेष; (सुपा ६५५)।

पलिअंका स्त्री [**पर्यङ्का**] पद्मासन, आसन-विशेष; (ठा ५, १—पत्र ३००)।

पलिउंच सक [**परि+कुञ्च्**] १ अपलाप करना। २ ठगना। ३ छिपाना, गोपन करना। पलिउंचंति, पलिउंचयंति, (उत्त २७, १३; सूत्र १, १३, ४)। संकृ—**पलिउंचिय**; (आचा २, १, ११, १)। वकृ—**पलिउंचमाण**; (आचा १, ७, ४, १; २, ५, २, १)।

पलिउंचण न [**परिकुञ्चन**] माया, कपट; (सूत्र १, ६, ११)।

पलिउंचणा स्त्री [**परिकुञ्चना**] १ सच्ची बात को छिपाना; २ माया; (ठा ४, १ टी—पत्र २००)। ३ प्रायश्चित्त-विशेष; (ठा ४, १)।

पलिउंचि वि [**परिकुञ्चिन्**] मायावी, कपटी; (वव १)।

पलिउंचिय वि [**परिकुञ्चित**] १ वञ्चित २ न. माया, कुटिलता, (वव १)। ३ गुरु-वन्दन का एक दोष, पूरा वन्दन न करके ही गुरु के साथ बातें करने लग जाना; (पव २)।

पलिउंजिय देखो **परिउज्जिय**, (भग)।

पलिउच्छन्न देखो **पलिओच्छन्न**; (आचा १, ५, १, ३)।

पलिउच्छूढ देखो **पलिओच्छूढ**; (औप—पृ ३० टि)।

पलिउज्जिय वि [**परियोगिक**] परिज्ञानी, जानकार; (भग २, ५)।

पलिऊल देखो **पडिऊल**; (नाट—विक्र १८)।

पलिओच्छन्न वि [**पलितावच्छन्न**] कर्मावष्टब्ध, कुकर्मी; (आचा १, ५, १, ३)।

पलिओच्छिन्न वि [**पर्यवच्छिन्न**] ऊपर देखो; (आचा; पि २५७)।

पलिओच्छूढ वि [**पर्यवक्षिप्त**] प्रसारित; (औप)।

पलिओवम पुंन [**पल्योपम**] समय-मान विशेष, काल का एक दीर्घ परिमाण; (ठा २, ४; भग; महा)।

पलिंचा (शौ) देखो **पडिण्णा**; (पि २७६)।

पलिकुंचणया देखो **पलिउंचणा**; (सम ७१)।

पलिक्खीण वि [**परिक्षीण**] क्षय-प्राप्त; (सूत्र २, ७, ११; औप)।

पलिगोव पुं [**परिगोप**] १ पङ्क, कादा; २ आसक्ति; (सूत्र १, २, २, ११)।

पलिच्छण्ण, **पलिच्छन्न** वि [**परिच्छन्न**] १ समन्ताद् व्याप्त; (णाया १, २—पत्र ७८; १, ४)। २ निरुद्ध, रोका हुआ; "एत्तेहिं पलिच्छन्नेहिं" (आचा १, ४, ४, २)।

पलिच्छाअ सक [**परि+छादय्**] ढकना, आच्छादन करना। पलिच्छाएइ; (आचा २, १, १०, ६)।

पलिच्छिंद सक [**परि+छिद्**] छेदन करना, काटना। संकृ— **पलिच्छिंदिय**, **पलिच्छिंदियाणं**; (आचा १, ४, ४, ३; १, ३, २, १)।

पलिच्छिन्न वि [**परिच्छिन्न**] विच्छिन्न, काटा हुआ; (सूत्र १, १६, ५; उप ५८५, सुर ६, २०६)।

पलित्त वि [**प्रदीप्त**] ज्वलित, (कुप्र ११६; स ७७; भग)।

पलिपाग देखो **परिपाग**; (सूत्र २, ३, २१; आचा)।

पलिप्प अक [**प्र+दीप्**] जलना। पलिप्पइ; (षड्; प्राकृ १२)। वकृ— **पलिप्पमाण**, (पि २४४)।

पलिवाहर, **पलिवाहिर** वि [**परिबाह्य**] हमेशा बाहर होने वाला; (आचा)।

पलिभाग पुं [**परिभाग**, **प्रतिभाग**] १ निर्विभागी अंश; (कम्म ४, ८२)। २ प्रतिनियत अंश, (जीवस १५४)। ३ सादृश्य, समानता; (राज)।

पलिभिंद सक [**परि+भिद्**] १ जानना। २ बोलना। ३

भेदन करना, तोड़ना। संकृ—**पलिभिंदियाणं**; (सूअ १, ४, २, २)।

पलिभेय पुं [**परिभेद**] चूरना; (निचू ५)।

पलिमंथ सक [**परि+मन्थ्**] बाँधना। पलिमंथए; (उत्त ६, २२)।

पलिमंथ पुं [**परिमन्थ**] १ विनाश; (सूअ २, ७, २६; विसे १४५७)। २ स्वाध्याय-व्याघात; (उत्त २६, ३४; धर्मसं १०१७)। ३ विघ्न, बाधा; (सूअ १, २, २, ११ टी)। ४ मुधा व्यापार, व्यर्थ क्रिया; (श्रावक १०६; ११२)।

पलिमंथग पुं [**परिमन्थक**] १ धान्य-विशेष, काला चना; (सूअ २, २, ६३)। २ गोल चना; ३ विलंब; (राज)।

पलिमंथु वि [**परिमन्थु**] सर्वथा घातक; (ठा ६—पत्र ३७१; कस)।

पलिमद्द देखो **परिमद्द**। परिमद्देज्जा; (पि २५७)।

पलिमद्द वि [**परिमर्द**] मालिश करने वाला; (निचू ६)।

पलिमोक्ख देखो **परिमोक्ख**; (आचा)।

पलियंचण न [**पर्यञ्चन**] परिभ्रमण; (सुर ७, २४३)। देखो **परियंचण**।

पलियंत पुं [**पर्यन्त**] १ अन्त भाग; (सूअ १, ३, १, १५)। २ वि. अवसान वाला, अन्त वाला; "पलियंतं मणुयाण जीवियं" (सूअ १, २, १, १०)।

पलियंत न [**पल्यान्तर्**] पल्योपम के भीतर; (सूअ १, २; १, १०)।

पलियस्स न [**परिपार्श्व**] समीप, पास, निकट; (भग ६, ५—पत्र २६८)।

पलिल देखो **पलिअ**=पलित; (हे १, २१२)।

पलिव देखो **पलीव**। पलिवेइ; (पि २४४)।

पलिवग देखो **पलीवग**; (राज)।

पलिविअ वि [**प्रदीपित**] जलाया हुआ; (षड्; हे १, १०१)।

पलिसय } सक [**परि+स्वञ्ज्**] आलिंगन करना, स्पर्श **पलिस्सय** } करना, छूना। पलिस्सएज्जा; (बृह ४)। वकृ—**पलिसयमाणे** गुरुणा दो लहुगा आणमाईणि" (बृह ४)। हेकृ—**पलिस्सइउं**; (बृह ४)।

पलिह देखो **परिह**=परिघ; (राज)।

पलिहअ वि [**दे**] मूर्ख, बेवकूफ; (दे ६, २०)।

पलिहइ स्त्री [**दे**] खेत, खेत; "नियपलिहईइ दोहिवि किसिकम्मं काउमारद्धं" (सुर १५, २०१)।

पलिहस्स न [**दे**] ऊर्ध्व दारु, काष्ठ-विशेष; (दे ६, १६)।

पलिहाय पुं [**दे**] ऊपर देखो; (दे ६, १६)।

पली सक [**परि+इ**] पर्यटन करना, भ्रमण करना। **पलेइ**; (सूअ १, १३, ६), पलिंति; (सूअ १, १, ४, ६)।

पली अक [**प्र+ली**] लीन होना, आसक्ति करना। पलिंति; (सूअ १, २, ३, २२)। वकृ—**पलेमाण**; (आचा १, ४, १, ३)।

पलीण वि [**प्रलीन**] १ अति लीन; (भग २५, ७)। २ संबद्ध; (सूअ १, १, ४, २)। ३ प्रलय-प्राप्त, नष्ट; (सुर ४, १५४)। ४ छिपा हुआ, निलीन; (सुर ६, २८)।

पलीमंथ देखो **पलिमंथ**; (सूअ १, ६, १२)।

पलीव अक [**प्र+दीप्**] जलना। पलीवइ; (हे ४, १५२; षड्)।

पलीव सक [**प्र+दीपय्**] जलाना, सुलगाना। **पलीवइ**, पलीवेइ; (महा; हे १, २२१)। संकृ—**पलीविऊण**, **पलीविअ**; (कुप्र १६०; गा ३३)।

पलीव पुं [**प्रदीप**] दीपक, दिआ; (प्राकृ १२; षड्)।

पलीवग वि [**प्रदीपक**] आग लगाने वाला; (पण्ह १, १)।

पलीवण न [**प्रदीपन**] आग लगाना; (श्रा २८; कुप्र २६)।

पलीवणया स्त्री. ऊपर देखो; (निचू १६)।

पलीविअ देखो **पलीव**=प्र+दीपय्।

पलीविअ वि [**प्रदीप्त**] प्रज्वलित; (पाअ)।

पलीविअ वि [**प्रदीपित**] जलाया हुआ; (उव)।

पलुंपण न [**प्रलोपन**] प्रलोप; (औप)।

पलुट्ट वि [**प्रलुठित**] लेटा हुआ; (दे १, ११६)।

पलुट्ट देखो **पलोट्ट**=पर्यस्त; (हे ४, ४२२)।

पलुट्टिअ देखो **पलोट्टिअ**=पर्यस्त; (कुमा ४, ७५)।

पलुट्ठ वि [**प्लुष्ट**] दग्ध, जला हुआ; (सुर ६, २०६; सुपा ४)।

पलेमाण देखो **पली**=प्र+ली।

पलेव पुं [**प्रलेप**] एक जाति का पत्थर, पाषाण-विशेष; (जी ३)।

पलोअ सक [**प्र+लोक्, लोकय्**] देखना, निरीक्षण करना। पलोयइ, पलोअए, पलोएइ; (सण; महा)। कर्म—पलोइज्जइ; (कप्प)। वकृ—**पलोअंत**, **पलोअअंत**, **पलोएंत**, **पलोएमाण**, **पलोयमाण**; (रयण १४; नाट—मालती ३२; महा; पि २६३; सुपा ४४; ३५१)।

पलोअण न [**प्रलोकन**] अवलोकन; (से १४, ३५, गा ३२२)।
पलोअणा स्त्री [**प्रलोकना**] निरीक्षण; (ओघ ३)।
पलोइ वि [**प्रलोकिन्**] प्रेक्षक; (औप)।
पलोइअ वि [**प्रलोकित**] देखा हुआ; (गा ११८, महा)।
पलोइर वि [**प्रलोकितृ**] प्रेक्षक, (गा १८०; भवि)।
पलोएंत, **पलोएमाण** } देखो **पलोअ**।
पलोघर [**दे**] देखो **परोहड**; (गा ३१३ अ)।
पलोट्ट सक [**प्रत्या + गम्**] लौटना, वापिस आना। पलोट्टइ; (हे ४, १६६)।
पलोट्ट सक [**परि+अस्**] १ फेंकना। २ मार गिराना। ३ अक. पलटना, विपरीत होना। ४ प्रवृत्ति करना। ५ गिरना। पलोट्टइ, पलोट्टेइ; (हे ४, २००; भग, कुमा)। वकृ—**पलोट्टंत**; (वज्जा ६६; गा २२२)।
पलोट्ट अक [**प्र+लुठ्**] जमीन पर लोटना। वकृ—**पलोट्टंत**; (से ५, ५८)।
पलोट्ट वि [**पर्यस्त**] १ क्षिप्त, फेंका हुआ; २ हत; ३ विक्षिप्त; (हे ४, २५८)। ४ पतित, गिरा हुआ; (गा १७०)। ५ प्रवृत्त; "रेल्लंता वणभागा तओ पलोट्टा जवा जलाणोघा" (कुमा)।
पलोट्टजीह वि [**दे**] रहस्य-भेदी, गुह्य बात को प्रकट करने वाला; (दे ६, ३५)।
पलोट्टण न [**प्रलोठन**] ढुलकाना, गिराना; (उप पृ ११०)।
पलोट्टिअ देखो **पलोट्ट**=पर्यस्त; (कुमा)।
पलोभ सक [**प्र+लोभय्**] लुभाना, लालच देना। पलोभेदि (शौ); (नाट—मृच्छ ३१३)।
पलोभविअ वि [**प्रलोभित**] लुभाया हुआ; (धर्मवि ११२)।
पलोभि वि [**प्रलोभिन्**] विशेष लोभी; (धर्मवि ७)।
पलोभिअ देखो **पलोभविअ**; (सुपा ३४३)।
पलोव (अप) देखो **पलोअ**। पलोवइ; (भवि)।
पलोहर [**दे**] देखो **परोहड**; (गा ६८५ अ)।
पलोहिद (शौ) देखो **पलोभिअ**; (नाट)।
पल्ल पुंन [**पल्य**] १ गोल आकार का एक धान्य रखने का पात्र; (पव १५८; ठा ३, १)। २ काल-परिमाण विशेष, पल्योपम; (पउम २०, ६७; दं २७)। ३ संस्थान-विशेष, पल्यंक संस्थान; "पल्लासंठाणसंठिया" (सम ७७)।
पल्ल पुं [**पल्ल**] धान्य भरने का बडा कोठा; "वहवे पल्ला सालीण पडिपुण्णा चिट्ठंति" (णाया १, ७—पत्र ११५)।
पल्लंक देखो **पलिअंक**; (हे २, ६८; षड्)।
पल्लंक पुं [**पल्यङ्क**] शाक-विशेष, कन्द-विशेष; (श्रा २०; जी ६; पव ४; संबोध ४४)।
पल्लंघण न [**प्रलङ्घन**] १ अतिक्रमण; (ठा ७)। २ गमन, गति, (उत्त २४, ४)।
पल्लग देखो **पल्ल**=पल्ल; (विसे ७०६)।
पल्लट्ट देखो **पलट्ट**=परि+अस्। पल्लट्टइ; (हे ४, २००; भवि)। संकृ—**पल्लट्टिउं**; (पंचा १३, १२)।
पल्लट्ट पुं [**दे**] पर्वत-विशेष; (पण्ह १, ४)।
पल्लट्ट पुं [**दे**, **परिवर्त**] काल-विशेष, अनन्त काल चक्रो का समय; (धण ४७)।
पल्लट्ट, **पल्लत्थ** } देखो **पलोट्ट**=पर्यस्त; (हे २, ४७; ६८)।
पल्लत्थि स्त्री [**पर्यस्ति**] आसन-विशेष;
"पायपसारणं पल्लत्थिवंधणं विंबपट्ठिदाणं च।
उच्चासणासेवणया जिणपुरओ भन्नइ अवन्ना ॥"
(चेइय ६०)। देखो **पल्हत्थिया**।
पल्लल न [**पल्वल**] छोटा तलाव; (प्राकृ १७; णाया १, १; सुपा ६४६; स ४२०)।
पल्लव पुं [**पल्लव**] १ किशलय, अंकुर; (पाअ; औप)। २ पत्र, पत्ता; (से २, २६)। ३ देश-विशेष; (भवि)। ४ विस्तार, (कप्पू)।
पल्लव देखो **पज्जव**; (सम ११३)।
पल्लवाय न [**दे**] क्षेत्र, खेत; (दे ६, २६)।
पल्लविअ वि [**दे**] लाक्षा-रक्त; (दे ६, १६; पाअ)।
पल्लविअ वि [**पल्लवित**] १ पल्लवाकार; (दे ६, १६)। २ अंकुरित, प्रादुर्भूत, उत्पन्न; (दे १, २)। ३ पल्लव-युक्त; (रंभा)।
पल्लविल्ल वि [**पल्लववत्**] पल्लव-युक्त; (सुपा ५; धण २४)।
पल्लविल्ल देखो **पल्लव**; (हे २, १६४)।
पल्लस्स देखो **पलोट्ट**=परि+अस्। पल्लस्सइ; (प्राकृ ७२)।
पल्लाण न [**पर्याण**] अश्व आदि का साज; "किं करिणो पल्लाणं उव्वोढुं रासभो तरइ" (प्रवि १७; प्राप्र)।
पल्लाण सक [**पर्याणय्**] अश्व आदि को सजाना। पल्लाणेह; (स २२)।
पल्लाणिअ वि [**पर्याणित**] पर्याण-युक्त; (कुमा)।

पल्लि स्त्री [**पल्लि**] १ छोटा गाँव। २ चोरों के निवास का गहन स्थान; (उप ७२८ टी)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] पल्ली का स्वामी; (सुपा ३५१; सुर २, ३३)। °**वइ** पुं [°**पति**] वही अर्थ; (सुर १, १६१ ; सुपा ३५१)।

पल्लिअ वि [**दे**] १ आक्रान्त; (निचू २)। २ ग्रस्त; (निचू १)। ३ प्रेरित; "पल्लट्टा पल्लिआरहट्टव्व" (धण ४७)।

पल्लित्त वि [**दे**] पर्यस्त; (षड्)।

पल्ली देखो **पल्लि**; (गउड; पंचा १०, ३६; सुर २, २०४)।

पल्लीण वि [**प्रलीन**] विशेष लोन; "गुत्तिदिए अल्लीणे पल्लीणे चिट्ठइ" (भग २५, ७; कप्प)।

पल्लोट्टजीह [**दे**] देखो **पलोट्टजीह**; (षड्)।

पल्हत्थ देखो **पलोट्ट**+परि+अस्। पल्हत्थइ; (हे ४, २००)। वकृ—**पल्हत्थंत**; (से १०, १०; २, ५)। कवकृ—**पल्हत्थंत**; (से ८; ८३, ११, ६६)।

पल्हत्थ सक [**वि**+**रेचय्**] बाहर निकालना। पल्हत्थइ; (हे ४, २६)।

पल्हत्थ देखो **पलोट्ट**=पर्यस्त; "करतलपल्हत्थमुहे" (सूत्र २, २, १६; हे ४, २५८)।

पल्हत्थण न [**पर्यसन**] फेंक देना, प्रक्षेपण; "अन्नदा भुवण-पल्हत्थणपवणो समुट्ठिदो दुद्दपवणो" (मोह ६२)।

पल्हत्थरण देखो **पच्चत्थरण**; (से ११, १०८)।

पल्हत्थाविअ वि [**विरेचित**] बाहर निकलवाया हुआ; (कुमा)।

पल्हत्थिअ देखो **पलोट्ट**=पर्यस्त; (से ७, २०; गाया १, ४६—पत्र २१६; सुपा ७६)।

पल्हत्थिया स्त्री [**पर्यस्तिका**] आसन-विशेष;—१ दो जानू खडा कर पीठ के साथ चादर लपेट कर बैठना; (पव ३८), २ जंघा पर वस्त्र लपेट कर बैठना; ३ जघा पर पाँव रख कर बैठना; (उत्त १, १६)। °**पट्ट** पुं [°**पट्ट**] योग-पट्ट; (राज)।

पल्हय, **पल्हव** पुं [**पह्लव**] १ अनार्य देश-विशेष; (कस; कुप्र ६७)। २ पुंस्त्री. पह्लव देश का निवासी; भग ३, २—पत्र १७०, अंत)। स्त्री—°**वी**, **विया**; (पि ३३०; औप; गाया १, १—पत्र ३७; इक)।

पल्हवि पुंस्त्री [**दे**, **पह्लवि**] हाथी की पीठ पर बिछाया जाता एक तरह का कपड़ा ; "पल्हवि हत्थत्थरणं" (पव ८४)।

पल्हविया, **पल्हवी** देखो पल्हव।

पल्हाय सक [**प्र**+**ह्लाद्**] आनन्दित करना, करना। पल्हायइ; (संबोध १२)। वकृ—**पल्हायंत**; (उव; सुर ३, १२१)। कृ—देखो **पल्हायणिज्ज**।

पल्हाय पुं [**प्रह्लाद**] १ आनन्द, खुशी; (कुमा)। २ हिरण्यकशिपु-नामक दैत्य का पुत्र; (हे २, ७६)। ३ आठवाँ प्रतिवासुदेव राजा; (पउम ५, १५६)। ४ एक विद्याधर नरेश; (पउम १५, ५)।

पल्हायण न [**प्रह्लादन**] १ चित्त-प्रसन्नता, खुशी; (उत्त २६, १७)। २ वि. आनन्द-दायक; (सुपा ५०७)। ३ पुं. रावण का एक सुभट; (पउम ५६, ३६)।

पल्हायणिज्ज वि [**प्रह्लादनीय**] आनन्द-जनक; (गाया १, १—पत्र १३)।

पल्हीय पुं. व. [**प्रह्लीक**] देश-विशेष; (पउम ६८, ६६)।

पव अक [**प्लु**] १ फरकना। २ सक. उछल कर जाना। ३ तैरना। पवेज्ज; (सूत्र १, १, २, ८)। वकृ—**पवंत**, **पवमाण**; (से ५, ३७; आचा २, ३, २, ४)। हेकृ—**पविउं**; (सूत्र १, १, ४, २)।

पव पुं [**प्लव**] १ पूर; (कुमा)। २ उच्छलन, कूदना; ३ तरण, तैरना; ४ भेक, मेढ़क; ५ वानर, वन्दर; ६ चाण्डाल, डोम; ७ जल-काक, ८ पाकुड़ का पेड़; ६ कारण्डव पक्षी; १० शब्द, आवाज; ११ रिपु, दुश्मन; १२ मेष, मेंढ़ा; १३ जल-कुक्कुट; १४ जल, पानी; १५ जलचर पक्षी; १६ नौका, नाव; (हे २, १०६)।

पवंग पु [**प्लवङ्ग**] १ वानर; (से २, ४६; ४, ४७)। २ वानर-वंशीय मनुष्य। °**नाह** पुं [°**नाथ**] वानर-वंशीय राजा, वाली; (पउम ६, २६)। °**वइ** पुं [°**पति**] वानर-राज; (पि ३७६)।

पवंगम पुं [**प्लवंगम**] १ वानर; (पाअ; से ६, १६)। छन्द-विशेष; (पिंग)।

पवंच पुं [**प्रपञ्च**] १ विस्तार; (उप ५३० टी; औप)। २ ससार; (सूत्र १, ७; उव)। ३ प्रतारण, ठगाई; (उव)।

पवंचण न [**प्रपञ्चन**] विप्रतारण, वञ्चना, ठगाई; (पण्ह १, १—पत्र १४)।

पवंचा स्त्री [**प्रपञ्चा**] मनुष्य की दश दशाओं में सातवीं दशा—६० से ७० वर्ष की अवस्था; (ठा १०; तंदु १६)।

पवंचिअ वि [**प्रपञ्चित**] विस्तारित; (श्रा १४; कुप्र ११८)।
पवंछ सक [**प्र+वाञ्छ्**] बाञ्छना, अभिलाषा करना। वकृ—**पवंचमाण**; (उप पृ १८०)।
पवंत देखो **पव**=प्लु।
पवंपुल पुंन [**दे**] मच्छी पकडने का जाल-विशेष, (विपा १, ८—पत्र ८५)।
पवक वि [**प्लवक**] १ उछल-कूद करने वाला; २ तैरने वाला; (पण्ह १, १ टी—पत्र २)। ३ पुं. पक्षी; ४ देव-जाति विशेष, सुपर्णकुमार-नामक देव-जाति; (पण्ह २, ४—पत्र १३०)।
पवक्खमाण देखो **पवय**=प्र+वच्।
पवग देखो **पवक**; (पण्ह २, ४; कप्प, औप)।
पवज्ज सक [**प्र+पद्**] स्वीकार करना। पवज्जइ, पवज्जिज्जा; (भवि; हित २०)। भवि—पवज्जिहिसि; (गा ६६१)। वकृ—**पवज्जंत**; (श्रा २७)। संकृ—**पवज्जिय**; (मोह १०)। कृ—**पवज्जियव्व**; (पंचा १६)।
पवज्जण न [**प्रपदन**] स्वीकार, अंगीकार, (स २७१; पंचा १४, ८; श्रावक १११)।
पवज्जा देखो **पव्वज्जा**, (महानि ४)।
पवज्जिय वि [**प्रपन्न**] स्वीकृत, अंगीकृत, (धर्मवि ५३; कुप्र २६५; सुपा ४०७)।
पवज्जिय वि [**प्रवादित**] जो बजने लगा हो; (स ७५६)।
पवज्जिय देखो **पवज्ज**।
पवट्ट अक [**प्र+वृत्**] प्रवृत्ति करना। पवट्टइ; (महा)।
पवट्ट वि [**प्रवृत्त**] जिसने प्रवृत्ति की हो वह; (षड्; हे २, २६ टि)।
पवट्टय वि [**प्रवर्तक**] प्रवृत्ति कराने वाला; (राज)।
पवट्टि स्त्री [**प्रवृत्ति**] प्रवर्तन; (हम्मीर १५)।
पवट्टिअ वि [**प्रवर्तित**] प्रवृत्त किया हुआ; (भवि; दे)।
पवट्ठ देखो **पउट्ठ**=प्रकोष्ठ; (हे १, १५६)।
पवड अक [**प्र+पत्**] पड़ना, गिरना। पवडइ, पवडिज्ज, पवडेज्ज, (भग; कप्प; आचा २, २, ३, ३)। वकृ—**पवडंत, पवडेमाण**; (णाया १, १; सिरि ६८६; आचा २, २, ३, ३)।
पवडण न [**प्रपतन**] अधः-पात, (बृह ६)।
पवडणया, **पवड़णा** स्त्री [**प्रपतना**] ऊपर देखो; (ठा ४, ४—पत्र २८०, राज)।

पवडेमाण देखो **पवड**।
पवड्ड अक [**दे**] पोढना, सोना। "जाव राया पवड्ढइ ताव कहेहि किंचि अक्खाणयं" (सुख ६, १)।
पवड्ड अक [**प्र+वृध्**] वढना। पवड्ढइ; (उव)। वकृ—**पवड्ढमाण**; (कप्प; सुर १, १८१; श्रु १२४)।
पवड्ड वि [**प्रवृद्ध**] वढ़ा हुआ; (अज्झ ७०)।
पवड्ढण न [**प्रवर्धन**] १ वढ़ाव, प्रवृद्धि, (संबोध ११)। २ वि वढाने वाला; "ससारस्स पवड्ढणं" (सूअ १, १, २, २४)।
पवड्ढिय वि [**प्रवर्धित**] वढाया हुआ; (भवि)।
पवण वि [**प्रवण**] १ तत्पर; (कुप्र १३४)। २ तंदुरस्त, सुस्थ; "पडियरिओ तह, पवणो पुव्वं व जहा स सजाओ" (उप ५६७ टी; कुप्र ४१८)।
पवण न [**प्लवन**] १ उछल कर गमन; (जीव ३)। २ तरण; "तरिउकामस्स पवहणं(? वण)किच्चं" (णाया १, १४—पत्र १६१)। °**किच्च** पुं [°**कृत्य**] नौका, नाव, डोंगी; (णाया १, १४)।
पवण पुं [**पवन**] १ पवन, वायु; (पाअ; प्रासू १०२)। २ देव-जाति विशेष, भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति, पवनकुमार; (औप; पण्ह १, ४)। ३ हनूमान का पिता; (से १, ४८)। °**गइ** पुं [°**गति**] हनूमान का पिता; (पउम १५, ३७), वानरद्वीप के राजा मन्दर का पुत्र; (पउम ६, ६८)। °**चंड** पुं [°**चण्ड**] व्यक्ति-वाचक नाम; (महा)। °**तणअ** पुं [°**तनय**] हनूमान; (से १, ४८)। °**नंदण** पुं [°**नन्दन**] हनूमान; (पउम १६, २७; सम्मत्त १२३)। °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] हनूमान; (पउम ५२, २८)। °**वेग** पुं [°**वेग**] १ हनूमान का पिता; (पउम १५, ६५)। २ एक जैन मुनि; (पउम २०, १६०)। °**सुअ** पुं [°**सुत**] हनूमान; (पउम ४६, १३; से ४, १३; ७, ४६)। °**णंद** पु [°**नन्द**] हनूमान्, (पउम ५२, १)।
पवणंजअ पु [**पवनञ्जय**] १ हनूमान का पिता; (पउम १५, ६)। २ एक श्रेष्ठि-पुत्र, (कुप्र ३७७)।
पवणिय वि [**प्रवणित**] सुस्थ किया हुआ, तंदुरस्त किया हुआ; (उप ७६८ टी)।
पवण्ण देखो **पवन्न**; (सण)।
पवत्त देखो **पवट्ट**=प्र+वृत्। पवत्तइ, पवत्तए; (पव २४७; उव)।

पवत्त सक [**प्र+वर्तय्**] प्रवृत्त करना। पवत्तेइ, पवत्तेहि; (वव १; कप्प)।

पवत्त देखो **पवट्ट**=प्रवृत्त; (पउम ३२, ७०; स ३७६; रंभा)।

पवत्तग वि [**प्रवर्त्तक**] प्रवृत्ति कराने वाला; (उप ३३६ टी; धर्मवि १३२)।

पवत्तण न [**प्रवर्तन**] १ प्रवृत्ति, (हे २, ३०; उत्त ३१, २)। २ वि. प्रवृत्ति कराने वाला; (उत्त ३१, ३; पण्ह १, ५)।

पवत्तय वि [**प्रवर्तक**] १ प्रवृत्ति करने वाला; (हे २, ३०)। वि. प्रवृत्त कराने वाला; "तित्थवरप्पवत्तयं" (अजि १८; गच्छ १, १०)।

पवत्ति स्त्री [**प्रवृत्ति**] प्रवर्तन। °**वाउय** वि [°**व्यापृत**] प्रवृत्ति में लगा हुआ; (ओप)।

पवत्ति वि [**प्रवर्तिन्**] प्रवृत्ति कराने वाला; (ठा ३, ३; कस; कप्प)।

पवत्तिणी स्त्री [**प्रवर्तिनी**] साध्वीओं की अध्यक्षा, मुख्य जैन साध्वी; (सुर १, ४१; महा)।

पवत्तिय देखो **पवट्टिअ**; (काल)।

पवत्तिया स्त्री [**दे**] संन्यासी का एक उपकरण; (कुप्र ३७२)।

पवद देखो **पवय**=प्र+वद्। वकृ—**पवदमाण**; (आचा)।

पवदि स्त्री [**प्रवृति**] ढकना, आच्छादन; (संक्षि ६)।

पवद्ध देखो **पवड्ढ**=प्र+वृध्। वकृ—**पवद्धमाण**; (चेइय ६१६)।

पवद्ध पुं [**दे**] घन, हथौड़ा; (दे ६, ११)।

पवद्धिय देखो **पवड्ढिय**; (महा)।

पवन्न वि [**प्रपन्न**] १ स्वीकृत, अंगीकृत; (चेइय ११२; प्रासू २१)। २ प्राप्त; "गुरुयणगुरुविणयपवन्नमाणसो" (महा)।

पवमाण देखो **पव**=प्लु।

पवमाण पुं [**पवमान**] पवन, वायु; (कुप्र ४४४; सुपा ८६)।

पवय सक [**प्र+वद्**] १ बकवाद करना। २ वाद-विवाद करना। वकृ—**पवयमाण**; (आचा १, ५, १, ३; आचा)।

पवय सक [**प्र+वच्**] बोलना, कहना। भवि—कवकृ—**पवक्खमाण**; (धर्मसं ६१)। कर्म—पवुच्चइ, पवुच्चई, पवुच्चति; (कप्प; पि ५४४; भग)।

पवय देखो **पवक**=प्लवक; (उप पृ २१०)।

पवय पु [**प्लवग**] वानर, कपि; (पउम ६५, ५०; हे ४, २२०; पाअ; से २, ३७; १५, १७)। °**वइ** पुं [°**पति**] वानरों का राजा, सुग्रीव; (से २, ३६)। °**हिव** पुं [°**धिप**] वही पूर्वोक्त अर्थ; (से २, ४०; १२, ७०)।

पवयण पुं [**प्राजन**] कोडा, चाबुक; (दे २, ६७)।

पवयण न [**प्रवचन**] १ जिनदेव-प्रणीत सिद्धान्त, जैन शास्त्र; (भग २०, ८; प्रासू १८१)। २ जैन संघ, "गुणसमुदाओ संघो पवयण तित्थं ति होइ एगट्ठा" (पंचा ८, ३६; विसे १११२; उप ४२३ टी; ओप)। ३ आगम-ज्ञान; (विसे १११२)। °**माया** स्त्री [°**माता**] पाँच समिति और तीन गुप्ति रूप धर्म; (सम १३)।

पवर वि [**प्रवर**] श्रेष्ठ, उत्तम; (उवा; सुपा ३१६; ३४१; प्रासू १२६, १५४)।

पवरंग न [**दे. प्रवराङ्ग**] सिर, मस्तक; (दे ६, २८)।

पवरा स्त्री [**प्रवरा**] भगवान् वासुपूज्य की शासन-देवी; (पव २७)।

पवरिस सक [**प्र+वृष्**] बरसना, वृष्टि करना। पवरिसइ; (भवि)।

पवल देखो **पवल**; (कप्पू; कुप्र २४७)।

पवस अक [**प्र+वस्**] प्रयाण करना, विदेश जाना। वकृ—**पवसंत**; (से १, २४; गा ६४)।

पवसण न [**प्रवसन**] प्रवास, विदेश-यात्रा, मुसाफिरी; (स १६६; उप १०३१ टी)।

पवसिअ वि [**प्रोषित**] प्रवास में गया हुआ; (गा ४५; ८४०; सुर ५, २११; सुपा ४७३)।

पवह अक [**प्र+वह्**] १ बहना। २ सक. टपकना, झरना। पवहइ; (भवि; पिंग)। वकृ—**पवहंत**; (सुर २, ७५)। संकृ—**पवहित्ता**; (सम ८४)।

पवह सक [**प्र+हन्**] मार डालना। वकृ—"पिच्छउ **पवहंतं** मज्झ करयल कलियकरवालं" (सुपा ५७२)।

पवह वि [**प्रवह**] १ बहने वाला; २ टपकने वाला, चूने वाला; "अट्ठ णालीओ अब्भंतरप्पवहाओ" (विपा १, १— पत्र १६)।

पवह पु [**प्रवाह**] १ स्रोत, बहाव, जल-धारा; (गा ३६६; ५४१; कुमा)। २ प्रवृत्ति; ३ व्यवहार; ४ उत्तम अश्व; (हे १, ६८)। ५ प्रभाव; (राज)।

पवहण पुंन [**प्रवहण**] १ नौका, जहाज; (णाया १, ३; पि ३५७)। २ गाड़ी आदि वाहन; "जुग्गगया गिल्लिगया थिल्लिगया पवहणगया" (ओप; वसु; चारु ७०)।

पवहाइअ वि [दे] प्रवृत्त, (दे ६, ३४)।
पवहाविय वि [प्रवाहित] बहाया हुआ; (भवि)।
पवा स्त्री [प्रपा] जलदान-स्थान, पानी-शाला, प्याऊ; (औप; पगह १, ३; महा)।
पवाइ वि [प्रवादिन्] १ वाद करने वाला, वादी; २ दार्शनिक; (सूअ १, १, १; चउ ४७)।
पवाइअ वि [प्रवात] बहा हुआ (वायु); "पवाइया कलंबवाया" (स ६८६; पउम ५७, २७; गाया १, ८; स ३६)।
पवाइअ वि [प्रवादित] बजाया हुआ; (कप्प; औप)।
पवाण (अप) देखो **पमाण**=प्रमाण; (कुमा; पि २५१; भवि)।
पवाड सक [प्र+पातय्] गिराना। वकृ—**पवाडेमाण**; (भग १७, १—पत्र ७२०)।
पवादि देखो **पवाइ**; (धर्मसं १३३)।
पवाय अक [प्र+वा] १ सुख पाना। २ बहना (हवा का)। ३ सक. गमन करना। ४ हिंसा करना। पवाअइ; (प्राकृ ७६)। वकृ—**पवायंत**; (आचा)।
पवाय पुं [प्रवाद] १ किंवदन्ती, जन-श्रुति; (सुपा ३००; उप पृ २६)। २ परंपरा-प्राप्त उपदेश; ३ मत, दर्शन; "पवाएण पवायं जाणेज्जा" (आचा)।
पवाय पुं [प्रपात] १ गर्त, गढ़ा; (गाया १, १४—पत्र १६१; दे १, ६२)। २ ऊँचे स्थान से गिरता जल-समूह; (सम ८४)। ३ तट-रहित निराधार पर्वत-स्थान; ४ रात में पड़ने वाली धाड़; (राज)। -५ पतन; (ठा २, ३)। °**द्दह** पुं [°द्रह] वह कुण्ड, जहां पर्वत पर से नदी गिरती हो; (ठा २, ३—पत्र ७३)।
पवाय पुं [प्रवात] १ प्रकृष्ट पवन ; (पगह २, ३)। २ वि. बहा हुआ (पवन); (संचि ७)। ३ पवन-रहित; (वृह १)।
पवायग वि [प्रवाचक] पाठक, अध्यापक; (विसे १०६२)।
पवायण न [प्रवाचन] प्रपठन, अध्ययन; (सम्मत ११७)।
पवायणा स्त्री [प्रवाचना] ऊपर देखो; (विसे २८३५)।
पवायय देखो **पवायग**; (विसे १०६२)।
पवाल पुंन [प्रवाल] १ नवांकुर, किसलय; (पाअ ३४१; गाया १, १; सुपा १२६)। २ मूँगा, विद्रुम; (पाअ; कप्प)। °**मंत**, °**वंत** वि [°वत्] प्रवाल वाला; (गाया १, १; औप)।
पवालिअ वि [प्रपालित] जो पालने लगा हो वह; (उप ७२८ टी)।
पवास पुं [प्रवास] विदेश-गमन, परदेश-यात्रा; (सुपा ६५७; हेका ३७; सिरि ३५६)।
पवासि } वि [प्रवासिन्] मुसाफिर; (गा ६८; षड्;
पवासु } पि ११८, हे ४, ३६५)।
पवाह सक [प्र+वाहय्] बहाना, चलाना। पवाहइ; (भवि)। भवि—पवाहेहिति; (विसे २४६ टी)।
पवाह देखो **पवह**=प्रवाह; (हे १, ६८; ८२; कुमा; गाया १, १४)।
पवाह पुं [प्रबाध] प्रकृष्ट पीड़ा; (विपा १, ६—पत्र ६०)।
पवाहण न [प्रवाहन] १ जल, पानी; (आवम)। २ बहाना, बहन कराना; (चेइय ५२३)।
पवि पुं [पवि] वज्र, इन्द्र का अस्त्र-विशेष; (उप २११ टी, सुपा ४६७; कुमा; धर्मवि ८०)।
पविअंभिअ वि [प्रविजृम्भित] प्रोल्लसित, समुत्पन्न; (गा ५३६ अ)।
पविआ स्त्री [दे] पक्षी का पान-पात्र; (दे ६, ४; ८, ३२, पाअ)।
पविइण्ण वि [प्रवितीर्ण] दिया हुआ; (औप)।
पविइण्ण } वि [प्रविकीर्ण] १ व्याप्त; (औप; गाया
पविइन्न } १, १ टी—पत्र ३)। २ विक्षिप्त, निरस्त; (गाया १, १)।
पविकत्थ सक [प्रवि+कत्थ्] आत्म-श्लाघा करना। पविकत्थई; (सम ५१)।
पविकसिय वि [प्रविकसित] प्रकर्ष से विकसित; (राज)।
पविकिर सक [प्रवि+कॄ] फेंकना। वकृ—**पविकिरमाण**; (ठा ८)।
पविक्खिअ वि [प्रवीक्षित] निरीक्षित, अवलोकित; (स ७४६)।
पविक्खिर देखो **पविकिर**। "नाविअजणेण य भंडं पविक्खिरंते समुद्दम्मि" (सुर १३, २०६)।
पविग्घ वि [दे] विस्मृत, (षड्)।
पविचरिय वि [प्रविचरित] गमन-द्वारा सर्वत्र व्याप्त;(राय)।
पविज्जल वि [प्रविज्वल] १ प्रज्वलित; (सूअ १, ५, २, ५)। २ रुधिरादि से पिच्छिल—व्याप्त; (सूअ १, ५, २, १६; २१)।
पविट्ठ वि [प्रविष्ट] घुसा हुआ; (उवा; सुर ३, १३६)।
पविणी सक [प्रवि+णी] दूर करना। पविणेति; (भग)।
पवित्त पुं [पवित्र] १ दर्भ, तृण-विशेष, (दे ६, १४)।

२ वि. निर्दोष, निष्कलङ्क, शुद्ध, स्वच्छ; (कुमा, भग; उत्तर ४५)।

पवित्त देखो **पवट्ट**=प्रवृत्त; (से ६, ५७)।

पवित्त सक [**पवित्रय्**] पवित्र करना। वकृ—**पवित्तयंत**; (सुपा ८५)। कृ—**पवित्तियव्व**; (सुपा ५८४)।

पवित्तय न [**पवित्रक**] अंगूठी, अंगुलीयक; (णाया १, ५; औप)।

पवित्ताविय वि [**प्रवर्तित**] प्रवृत्त किया हुआ, (भवि)।

पवित्ति देखो **पवत्ति**=प्रवृत्ति, (सुपा २; ओघ ६३; औप)।

पवित्तिणी देखो **पवत्तिणी**, (कस)।

पवित्थर अक [**प्रवि + स्तृ**] फैलाना। वकृ—**पवित्थरमाण**; (पव २५५)।

पवित्थर पुं [**प्रविस्तर**] विस्तार; (उवा; सूअ २, २, ६२)।

पवित्थरिअ वि [**प्रविस्तृत**] विस्तीर्ण; (स ७५२)।

पवित्थरिल्ल वि [**प्रविस्तरिन्**] विस्तार वाला; (राज — पराह १, ५)। देखो **पविरल्लिय**।

पवित्थारि वि [**प्रविस्तारिन्**] फैलने वाला; (गउड)।

पविद्ध देखो **पव्विद्ध**, (पव २)।

पविद्धत्थ वि [**प्रविध्वस्त**] विनष्ट; (जीव ३)।

पविभत्ति स्त्री [**प्रविभक्ति**] पृथग् २ विभाग; (उत्त २, १)।

पविभाग पुं [**प्रविभाग**] ऊपर देखो, (विसे १९४२)।

पविमुक्क वि [**प्रविमुक्त**] परित्यक्त, (सुर ३, १३६)।

पविमोयण न [**प्रविमोचन**] परित्याग, (औप)।

पविय वि [**प्राप्त**] प्राप्त; "भुवि उवहासं पविया दुक्खाण हुंति ते खिलया" (आरा ४४)।

पवियंभिर वि [**प्रविजृम्भितृ**] १ उल्लसित होने वाला; २ उत्पन्न होने वाला; (सण)।

पवियक्किय न [**प्रवितर्कित**] विकल्प, वितर्क; (उत्त २३, १४)।

पवियक्खण वि [**प्रविचक्षण**] विशेष प्रवीण; (उत्त ६, ६३)।

पवियार पुं [**प्रवीचार**] १ काया और वचन की चेष्टा-विशेष, (उप ६०२)। २ काम-क्रीडा, मैथुन; (देवेन्द्र २४७; पव २६६)।

पवियारण न [**प्रविचारण**] संचार; "वाउपवियारणट्ठा छब्भायं ऊणयं कुज्जा" (पिंड ६५०)।

पवियारणा स्त्री [**प्रविचारणा**] काम-क्रीडा, मैथुन; (देवेन्द्र ३४७)।

पवियास सक [**प्रवि+काशय्**] फाडना, खोलना; "पवियासइ नियवयणं" (धर्मवि १२४)।

पवियासिय वि [**प्रविकासित**] विकसित किया हुआ; "पवियासियकमलवणं खणं निहालेइ दिणनाहं" (सुपा ३४)।

पविरइअ वि [**दे**] त्वरित, शीघ्रता-युक्त; (दे ६, २८)।

पविरंज सक [**भञ्ज्**] भाँगना, तोडना। पविरंजइ; (हे ४, १०६)।

पविरंजव वि [**दे**] स्निग्ध, स्नेह युक्त, (षड्)।

पविरंजिअ वि [**भग्न**] भाँगा हुआ; (कुमा; दे ६, ७४)।

पविरंजिअ वि [**दे**] १ स्निग्ध, स्नेह-युक्त; २ कृत-निषेध, निवारित; (दे ६, ७४)।

पविरल वि [**प्रविरल**] १ अ-निविड; २ विच्छिन्न; (गउड)। ३ अत्यन्त थोड़ा, बहुत ही कम; "परकज्जकरणरसिया दीसंति महीए पविरलनरिंदा" (सुपा २४०)।

पविरल्लिय वि [**दे**] विस्तार वाला; (पराह १, ५—पत्र ९१)। देखो **पवित्थरिल्ल**।

पविरिक्क वि [**प्रविरिक्त**] एकदम शून्य, बिलकुल खाली; (गउड ६८५)।

पविरेल्लिय [**दे**] देखो **पविरल्लिय**, (पराह १, ५ टी—पत्र ९२)।

पविलुंप सक [**प्रवि + लुप्**] बिलकुल नष्ट करना। कवकृ—**पविलुप्पमाण**, (महा)।

पविलुत्त वि [**प्रविलुप्त**] बिलकुल नष्ट; (उप ५९७ टी)।

पविलुप्पमाण देखो **पविलुंप**।

पविस सक [**प्र + विश्**] प्रवेश करना, घुसना। पविसइ; (उव; महा)। भवि—पविसिस्सामि, पविसिहिइ; (पि ५२६)। वकृ—**पविसंत, पविसमाण**; (पउम ७६, १६; सुपा ४४८, विपा १, ५; कप्प)। संकृ—**पविसित्ता, पविसित्तु, पविसिअ, पविसिऊण**; (कप्प; महा; अभि ११६; काल)। हेकृ—**पविसित्तए, पवेट्ठुं**; (कस; कप्प; पि ३०३)। कृ—**पविसिअव्व**; (ओघ ६१; सुपा ३८१)।

पविसण न [**प्रवेशन**] प्रवेश, पैठ; (पिंड ३१७)।

पविसू सक [**प्रवि+सू**] उत्पन्न करना। संकृ—**पविसुइत्ता**; (सूअ २, २, ६५)।

पविस्स देखो **पविस**। पविस्सइ; (महा)। वकृ— **पविस्समाण**; (भवि)।

पविहर सक [**प्रवि+हृ**] विहार करना, विचरना। पविहरंति; (उव)।

पविहस अक [**प्रवि+हस्**] हसना, हास्य करना। वकृ— **पविहसंत**; (पउम ५६, १७)।

पवीइय वि [**प्रवीजित**] हवा के लिए चलाया हुआ; (ओप)।

पवीण वि [**प्रवीण**] निपुण, दक्ष; (उप ९८६ टी)।

पवीणी देखो **पविणी**। पवीणेइ; (ओप)।

पवील सक [**प्र+पीडय्**] पीड़ना, दमन करना। पवीलए; (आचा १, ४, ४, १)।

पवुच्च° देखो **पवय**=प्र+वच्।

पवुट्ठ वि [**प्रवृष्ट**] १ खूब वरसा हुआ, जिसने प्रभूत वृष्टि की हो वह; (आचा २, ४, १, १३)। २ न. प्रभूत वृष्टि, वर्षण; "काले पवुट्ठं विअ अहिणंदिदं देवस्स सासणं" (अभि २२०)।

पवुड्ढ वि [**प्रवृद्ध**] वढा हुआ, विशेष वृद्ध; (दे १, ६)।

पवुड्ढि स्त्री [**प्रवृद्धि**] वढ़ाव; (पंच ५, ३२)।

पवुत्त वि [**प्रोक्त**] १ जो कहने लगा हो, जिसने वोलना आरम्भ किया हो वह; (पउम २७, १६; ६४, २१)। २ उक्त, कथित; (धर्मवि ८२)।

पवुत्थ [**दे**] देखो **पउत्थ**; "खुड्डयं पुत्तं घेत्तुं गामे पवुत्था" (आक २३; २५)।

पवुद वि [**प्रवृत**] प्रकर्ष से आच्छादित; (प्राकृ १२)।

पवूढ वि [**प्रव्यूढ**] १ धारण किया हुआ; (स ५११)। २ निर्गत; (राज)।

पवेइय वि [**प्रवेदित**] १ निवेदित, प्रतिपादित; "तमेव सच्चं नीसंकं जं जिणेहिं पवेइयं" (उप ३७४ टी; भग)। २ विज्ञात, विदित; (राज)। ३ भेंट किया हुआ; (उत्त १३, १३; सुख १३, १३)।

पवेइय वि [**प्रवेपित**] कम्पित; (पउम ५, ७८)।

पवेज्ज सक [**प्र+वेदय्**] १ विदित करना। २ भेंट करना। ३ अनुभव करना। पवेज्जए; (सूअ १, ८, २४)।

पवेढिय वि [**प्रवेष्टित**] वेढ़ा हुआ; (सुर १२, १०४)।

पवेय देखो **पवेज्ज**। पवेयंति; (आचा १, ६, २, १२)। हेकृ—**पवेइत्तए**; (कस)।

पवेयण न [**प्रवेदन**] १ प्ररूपण, प्रतिपादन; २ ज्ञान, निर्णय; ३ अनुभावन; (राज)।

पवेविय वि [**प्रवेपित**] प्रकम्पित; (णाया १, १—पत्न ४७; उत्त २२, ३६)।

पवेविर वि [**प्रवेपितृ**] कॉपने वाला, (पउम ८०, ६४)।

पवेस सक [**प्र+वेशय्**] घुसाना। पवेसेइ; (महा)। पवेसआमि; (पि ४९०)।

पवेस पुं [**प्रवेश**] १ पैठ, घुसना; (कुमा; गउड; प्रासू २२)। २ नाटक का एक हिस्सा; (कप्पू)।

पवेस पुं [**प्रद्वेष**] अधिक द्वेष; (भवि)।

पवेसण, **पवेसणग**, **पवेसणय** } पुंन [**प्रवेशन, °क**] १ प्रवेश, पैठ; (पण्ह १, १; प्रासू ३८; द्रव्य ३२)। २ विजातीय जन्मान्तर में उत्पत्ति, विजातीय योनि में प्रवेश; (भग ९, ३२)।

पवेसि वि [**प्रवेशिन्**] प्रवेश करने वाला; (ओप)।

पवेसिय वि [**प्रवेशित**] घुसाया हुआ; (सण)।

पवोत्त पु [**प्रपौत्र**] पौत्र का पुत्र; (आक ८)।

पव्व पुंन [**पर्वन्**] १ ग्रन्थि, गाँठ; (ओघ ४८९; जी १२; सुपा ५०७)। २ उत्सव, त्यौहार; (सुपा ५०७; श्रा २८)। ३ पूर्णिमा और अमावास्या तिथि; ४ पूर्णिमा और अमावस्या वाला पक्ष; (ठा ६—पत्न ३७०; सुज्ज १०)। ५ अष्टमी, चतुर्दशी, पूर्णिमा और अमावास्या का दिन; "अट्ठमी चउद्दसी पुण्णिमा य तहमावसा हवइ पव्वं। मासम्मि पव्वछक्कं तिन्नि य पव्वाइं पक्खम्मि" (धर्म २)। ६ मेखला, गिरिमेखला; ७ दंष्ट्रा-पर्वत; (सूअ १, ६, १२)। ८ संख्या-विशेष, (इक)। °**बीय** पुं [°**बीज**] इक्षु-आदि वृक्ष, जिसका पर्व—ग्रन्थि—ही उत्पत्ति का कारण होता है; (राज)। °**राहु** पुं [°**राहु**] राहु-विशेष, जो पूर्णिमा और अमावास्या में क्रमशः चन्द्र और सूर्य का ग्रहण करता है, (सुज्ज १९)।

पव्वइ न [**पर्वतिन्**] १ गोत्र-विशेष, काश्यप गोत्र की एक शाखा; २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न, (राज)। देखो **पव्वपेच्छइ**।

पव्वइ° देखो **पव्वई**; (गा ४५५)।

पव्वइअ वि [**प्रव्रजित**] १ दीक्षित, संन्यस्त; (ओप; दसनि २—गाथा १६४)। २ गत, प्राप्त; "अगाराओ अणगारियं पव्वइया" (ओप; सम, कप्प)। ३ न. दीक्षा, संन्यास; (वव १)।

पव्वइंद पुं [**पर्वतेन्द्र**] मेरु पर्वत, (सुज्ज ५ टी)।

पव्वइग देखो **पव्वइअ**; (उप पृ ३३५)। स्त्री—°**गा**; (उप पृ ५४)।

पव्वइसेल्ल न [**दे**] बाल-मय कंडक—तावीज; (दे ६, ३१)।

पव्वई स्त्री [**पार्वती**] गौरी, शिव-पत्नी, (पाअ)।

पव्वंग पुंन [**पर्वाङ्ग**] संख्या-विशेष; (इक)।

पव्वक } पुंन [**पर्वक**] १ वाद्य-विशेष; (पगह २, ५—पत्न **पव्वग** } १४६)। २ ईख जैसी ग्रन्थि वाली वनस्पति; (पगण १)। ३ तृण-विशेष; (निचू १)।

पव्वज्ज पुं [**दे**] १ नख; २ शर, बाण; ३ बाल-मृग; (दे ६, ६६)।

पव्वज्जा स्त्री [**प्रव्रज्या**] १ गमन, गति; २ दीक्षा, संन्यास; (ठा ३, २; ४, ४; प्रासू १६७)।

पव्वणी स्त्री [**पर्वणी**] कार्तिकी आदि पर्व-तिथि; (णाया १, १—पत्न ५३)।

पव्वपेच्छइ न [**पर्वप्रेक्षकिन्**] देखो **पव्वइ**, (ठा ७—पत्न ३६०)।

पव्वय सक [**प्र+व्रज्**] १ जाना, गति करना। २ दीक्षा लेना, संन्यास लेना। पव्वयइ; (महा)। भवि—पव्वइस्सामो, पव्वइहिति; (औप)। वकृ—**पव्वयंत, पव्वयमाण**; (सुर १, १२३; ठा ३, १)। हेकृ—**पव्वइत्तए, पव्वइउं**; (औप; भग; सुपा २०६)।

पव्वय देखो **पव्वग**; (पगण १—पत्न ३३)।

पव्वय देखो **पव्वइअ**; "अगारमावसतावि अरगणा वावि पव्वया" (सूअ १, १, १, १६)।

पव्वय } पुंन [**पर्वत**, °**क**] १ गिरि, पहाड़; (ठा ३, ४; **पव्वयय** } प्रासू १५४; उवा), "पव्वयाणि वणाणि य" (दस ७, २६; ३०)। २ पु. द्वितीय वासुदेव का पूर्व-भवीय नाम, (सम १५३; पउम २०, १७१)। ३ एक ब्राह्मण-पुत्र का नाम; (पउम ११, ६)। ४ एक राजा; (भवि)। ५ एक राज-कुमार; (उप ६३७)। °**राय** पुं [°**राज**] मेरु पर्वत; (सुज्ज ५)। °**विदुग्ग** पुन [°**विदुर्ग**] पर्वतीय देश, पहाड वाला प्रदेश; (भग)।

पव्वह सक [**प्र+व्यथ्**] पीड़ना, दुःख देना। पव्वहेज्जा; (सूअ १, १, ४, ६)। कवकृ—**पव्वहिज्जमाण**; (णाया १, १६—पत्न १६६)।

पव्वहणा स्त्री [**प्रव्यथना**] व्यथा, पीडा; (औप)।

पव्वहिय वि [**प्रव्यथित**] अति दुःखित; (आचा १, २, ६, १)।

पव्वा स्त्री [**पर्वा**] लोकपालों की एक बाह्य परिषद्; (ठा ३, २—पत्न १२७)।

पव्वाअंत देखो **पव्वाय**=म्लै।

पव्वाइअ वि [**प्रव्राजित**] १ जिसको दीक्षा दी गई हो वह, (सुपा ५६६)। २ न. दीक्षा देना, (राज)।

पव्वाइअ वि [**म्लान**] विच्छाय, शुष्क; (कुमा ६, १२)।

पव्वाइआ स्त्री [**प्रव्राजिका**] परिव्राजिका, संन्यासिनी; (महा)।

पव्वाडिअ देखो **पव्वालिअ**=प्लावित; (से ५, ४१)।

पव्वाण वि [**म्लान**] शुष्क, सूखा; (ओघ ४८८)।

पव्वाय देखो **पवाय**=प्र+वा। पव्वाअइ; (प्राकृ ७६)।

पव्वाय सक [**प्र+व्राजय्**] दीक्षित करना; (सुपा ५६६)।

पव्वाय अक [**म्लै**] सूखना। पव्वाग्रइ; (हे ४, १८)। वकृ—**पव्वाअंत**; (से ७, ६७)।

पव्वाय वि [**म्लान, प्रवाण**] शुष्क, सूखा हुआ; (पाअ; ओघ ३६३; स २०३; से ३, ४८; ६, ६३; पिंड ४४)।

पव्वाय पुं [**प्रवात**] प्रकृष्ट पवन; (गा ६२३)।

पव्वाल सक [**छादय्**] ढकना, आच्छादन करना। पव्वालइ; (हे ४, २१)।

पव्वाल सक [**प्लावय्**] खूब भिजाना, तराबोर करना। पव्वालइ; (हे ४, ४१)।

पव्वालण न [**प्लावन**] तराबोर करना; (से ६, १५)।

पव्वालिअ वि [**प्लावित**] जल-व्याप्त, सराबोर किया हुआ; (पाअ; कुमा; से ६, १०)।

पव्वालिअ वि [**छादित**] ढका हुआ; (कुमा)।

पव्वाव सक [**प्र+व्राजय्**] दीक्षित करना, संन्यास देना। पव्वावेइ; (भग)। संकृ—**पव्वावेऊण**, (पंचव २)। हेकृ—**पव्वावित्तए, पव्वावेत्तए, पव्वावेउं**; (ठा २, १; कस; पंचभा)।

पव्वावण न [**प्रव्राजन**] दीक्षा देना; (उव; ओघ ४४२ टी)।

पव्वावण न [**दे**] प्रयोजन; (पिंड ५१)।

पव्वावणा स्त्री [**प्रव्राजना**] दीक्षा देना; (ओघ ४४३; पव २५; सुअनि १२७)।

पव्वाविय वि [**प्रव्राजित**] दीक्षित, साधु बनाया हुआ; (णाया १, १—पत्न ६०)।

पव्वाह सक [**प्र+वाहय्**] बहाना, प्रवाह में डालना। वकृ—**पव्वाहमाण**; (भग ५, ४)।

पव्विद्ध वि [**दे**] प्रेरित; (दे ६, ११)।

पव्विद्ध वि [**प्रवृद्ध**] महान्, बड़ा; (से १४, ५१)।
पव्विद्ध न [**प्रविद्ध**] गुरु-वन्दन का एक दोष, वन्दन को विना ही समाप्त किये भागना, (पव २)।
पव्वीसग न [**दे. पव्वीसग**] वाद्य-विशेष; (पण्ह १, ४— पत्र ६८)।
पसइ स्त्री [**प्रसृति**] १ नाप-विशेष, दो असृति का एक परिमाण; (तंदु २६)। २ पूर्ण अञ्जलि, दो हस्त-तल मिला कर भरी हुई चीज; (कुप्र ३७४)।
पसंग पुंन [**प्रसङ्ग**] १ परिचय, उपलक्ष; (स३०५)। २ संगति, संबन्ध; "लोए पलीवणं पिव पलालपूलप्पसंगेण" (ठा ४, ४; कुप्र २६),
"वरं दिट्ठिविसो सप्पो वरं हालाहलं विसं।
हीणायारागीयत्थवयणपसंगं खु णो भद्दं" (संबोध ३६)।
३ आपत्ति, अनिष्ट-प्राप्ति; (स १७४)। ४ मैथुन, काम-क्रीडा; (पण्ह १, ४)। ५ आसक्ति; ६ प्रस्ताव, अधिकार; (गउड; भवि; पंचा ६, २६)।
पसंगि वि [**प्रसङ्गिन्**] प्रसंग करने वाला, आसक्त; "जूयप्प-संगी" (महा; णाया १, २)।
पसंज अक [**प्र+सञ्ज्**] १ आसक्ति करना। २ आपत्ति होना, अनिष्ट-प्राप्ति होना। पसज्जइ; (उव)। "अणिच्चे जीवलोगम्मि किं हिंसाए पसज्जसि" (उत्त १८, ११; १२)। पसज्जेज्जा; (विसे २६६)।
पसंडि न [**दे**] कनक, सुवर्ण; (दे ६, १०)।
पसंत वि [**प्रशान्त**] १ प्रकृष्ट शान्त, शम-प्राप्त, (कप्प, स ४०३; कुमा)। २ साहित्यशास्त्र-प्रसिद्ध रस-विशेष, शान्त रस; (अणु)।
पसंति स्त्री [**प्रशान्ति**] नाश, विनाश; "सव्वदुक्खप्पसंतीणं" (अजि ३)।
पसंधण न [**प्रसन्धान**] सतत प्रवर्त्तन; (पिंड ४६०)।
पसंस सक [**प्रशंस्**] श्लाघा करना। पसंसइ; (महा; भवि)। वकृ—**पसंसंत**, **पसंसमाण**; (पउम २८, १५; २२, ६८)। कवकृ—**पसंसिज्जमाण**; (वसु)। संकृ—**पसंसिऊण**; (महा)। कृ—**पसंसणिज्ज**, **पसस्स**, **पसंसियव्व**; (सुपा ४७; ६४५; सुर १, २१६; पउम ७५, ८), देखो **पसंस**।
पसंस वि [**प्रशस्य**] १ प्रशंसा-योग्य; २ पुं. लोभ; (सूअ १, २, २, २६)।
पसंसण न [**प्रशंसन**] प्रशंसा, श्लाघा; (उप १४२ टी; सुपा २०६; उप पं १७)।
पसंसय वि [**प्रशंसक**] प्रशंसा करने वाला; (श्रा ६; भवि)।
पसंसा स्त्री [**प्रशंसा**] श्लाघा, स्तुति, वर्णन; (प्रासू १६७; कुमा)।
पसंसिअ वि [**प्रशंसित**] श्लाघित, (उत्त १४, ३८)।
पसज्ज° देखो **पसंज**।
पसज्झ } अ [**प्रसह्य**] १ खुले तौर से, प्रकट रीति से;
पसज्झं } (सूअ १, २, २, १६)। २ हठात्, बलात्कार से; (स ३१)।
पसढ वि [**प्रशठ**] अत्यन्त शठ, (सूअ २, ४, ३)।
पसढं देखो **पसज्झ**; (दस ५, १, ७२)।
पसढिल वि [**प्रशिथिल**] विशेष ढीला; (हे १, ८६)।
पसण्ण वि [**प्रसन्न**] १ खुश, स्वस्थ; (से ५, ४१; गा ४६५)। २ स्वच्छ, निर्मल; (औप; ओघ ३४५)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] भगवान् महावीर के समय का एक राजर्षि; (उव; पडि)।
पसण्णा स्त्री [**प्रसन्ना**] मदिरा, दारू; (णाया १, १६; विपा १, २)।
पसत्त वि [**प्रसक्त**] १ चिपका हुआ ; (गउड ५१)। २ आसक्त; (गउड ५३१; उव)। ३ आपत्ति-ग्रस्त, अनिष्ट-प्राप्ति के दोष से युक्त; (विसे १८५६)।
पसत्ति स्त्री [**प्रसक्ति**] १ आसक्ति, अभिष्वङ्ग; (उप १३१)। २ आपत्ति-दोष, (अज्झ ११६)।
पसत्थ वि [**प्रशस्त**] १ प्रशंसनीय, श्लाघनीय; २ श्रेष्ठ, अच्छा; (हे २, ४५; कुमा)।
पसत्थि स्त्री [**प्रशस्ति**] वंशोत्कीर्तन, वंश-वर्णन; (गउड; सम्मत ८३)।
पसत्थु पुं [**प्रशास्तृ**] १ लेखाचार्य, गणित का अध्यापक; (ठा ३, १)। २ धर्म-शास्त्र का पाठक; (ठा ३, १; औप)। ३ मन्त्री, अमात्य; (सूअ २, १, १३)।
पसन्न देखो **पसण्ण**; (महा; भवि; सुपा ६१४)।
पसन्ना देखो **पसण्णा**; (पाअ; पउम १०२, १२२; सुख २, २६)।
पसप्प पुं [**प्रसर्प**] विस्तार, फैलाव; (द्रव्य १०)।
पसप्पग वि [**प्रसर्पक**] १ प्रकर्ष से जाने वाला, मुसाफिरी करने वाला; २ विस्तार को प्राप्त करने वाला; (ठा ४, ४—पत्र २६४)।

पसम अक [**प्र+शम्**] अच्छी तरह शान्त होना। पसमंति; (आक १६)।

पसम पुं [**प्रशम**] १ प्रशान्ति, शान्ति; (कुमा)। २ लगा तार दो उपवास; (संबोध ५८)।

पसम पुं [**प्रश्रम**] विशेष मेहनत—खेद; (आव ४)।

पसमण न [**प्रशमन**] १ प्रकृष्ट शमन; (पिंड ६६३; सुर १, २४६)। २ वि. प्रशान्त करने वाला; (स ६६५)। स्त्री—°**णी**; (कुमा)।

पसमाविअ वि [**प्रशमित**] प्रशान्त किया हुआ; (स ६२)।

पसमिक्ख सक [**प्रसम्+ईक्ष्**] प्रकर्ष से देखना। संकृ—**पसमिक्ख**; (उत्त १४, ११)।

पसमिण वि [**प्रशमिन्**] प्रशान्त करने वाला, नाश करने वाला; "पावंति, पावपसमिण पासजिण तुह प्पभावेण" (णमि १७)।

पसम्म देखो **पसम**=प्र+शम्। पसम्मइ; (गउड)। वकृ—**पसम्मंत**; (से १०, २२; गउड)।

पसय पुं [**दे**] १ मृग-विशेष; (दे ६, ४; पण्ह १, १; भवि; सण; महा)। २ मृग-शिशु; (विपा १, ४)।

पसय वि [**प्रसृत**] फैला हुआ; "पसयच्छि !" (वज्जा ११२; १४४)। देखो **पसिअ**=प्रसृत।

पसर अक [**प्र+सृ**] फैलना। पसरइ; (पि ४७७; भवि)। वकृ—**पसरंत**; (सुर १, ८६; भवि)।

पसर पुं [**प्रसर**] विस्तार, फैलाव; (हे ४, १५७; कुमा)।

पसरण न [**प्रसरण**] ऊपर देखो; (कप्पू)।

पसरिअ वि [**प्रसृत**] फैला हुआ, विस्तृत; (औप; गा ४; भवि; णाया १, १)।

पसरेह पुं [**दे**] किंजल्क; (दे ६, १३)।

पसल्लिअ वि [**दे**] प्रेरित; (षड्)।

पसव सक [**प्र+सू**] जन्म देना, उत्पन्न करना। पसवइ; (हे ४, २३३)। पसवंति; (उव)। वकृ—**पसवमाण**; (सुपा ४३४)।

पसव (अप) सक [**प्र+विश्**] प्रवेश करना। पसवइ; (प्राकृ ११६)।

पसव पुं [**प्रसव**] १ जन्म, उत्पत्ति; (कुमा)। २ न. पुष्प, फूल; "कुसुमं पसवं पसूअं च" (पाअ), "पुप्फाणि अ कुसुमाणि अ फुल्लाणि तहेव होंति पसवाणि" (दसनि १, ३६)।

पसव [**दे**] देखो **पसय**। "पसवा हवंति एए" (पउम ११, ७७)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] मृगराज, सिंह; (स ६५७)। °**राय** पुं [°**राज**] सिंह; (स ६५७)।

पसवडक्क न [**दे**] विलोकन; (दे ६, ३०)।

पसवण न [**प्रसवन**] प्रसूति, जन्म-दान; (भग; उप ७४४; सुर ६, २४८)।

पसवि वि [**प्रसविन्**] जन्म देने वाला; (नाट—शकु ७४)।

पसविय वि [**प्रसूत**] जो जन्म देने लगा हो, जिसने जन्म दिया हो वह; "सयमेव पसविया हं महाकिलेसेण नरनाह" (सुर १०, २३०; सुपा ३६)। देखो **पसूअ**=प्रसूत।

पसविर वि [**प्रसवितृ**] जन्म देने वाला; (नाट)।

पसस्स देखो **पसंस**।

पसस्स वि [**प्रशस्य**] प्रभूत शस्य वाला; (सुपा ६४५)।

पसाइअ वि [**प्रसादित**] १ प्रसन्न किया हुआ; (स ३८६; ५७६)। २ प्रसन्न होने के कारण दिया हुआ; "अंगविलग्गमसेसं पसाइयं कडयवत्थाइं" (सुर १, १६३)।

पसाइआ स्त्री [**दे**] भिल्ल के सिर पर का पर्ण-पुट, भिल्लों की पगडी; (दे ६, २)।

पसाइयव्व देखो **पसाय**=प्र+सादय्।

पसाम वि [**प्रशाम्**] शान्त होने वाला; (षड्)।

पसाय सक [**प्र+सादय्**] प्रसन्न करना, खुश करना। पसाअंति, पसाएसि; (गा ६१; सिक्खा ६१)। वकृ—**पसाअमाण**; (गा ७४५)। हेकृ—**पसाइउं, पसाएउं**; (महा; गा ५२४)। कृ—**पसाइयव्व**; (सुपा ३६५)।

पसाय पुं [**प्रसाद**] १ प्रसत्ति, प्रसन्नता, खुशी; "जणमणपसायजणणो" (वसु)। २ कृपा, महरबानी, (कुमा)। ३ प्रणय, (गा ७१)।

पसायण न [**प्रसादन**] प्रसन्न करना; "देवपसायणपहाणमणो" (कुप्र ५; सुपा ७; महा)।

पसार सक [**प्र+सारय्**] पसारना, फैलाना। पसारेइ; (महा)। वकृ—**पसारेमाण**; (णाया १, १; आचा)। संकृ—**पसारिअ**; (नाट—मृच्छ २५५)।

पसार पुं [**प्रसार**] विस्तार, फैलाव; (कप्पू)।

पसारण न [**प्रसारण**] ऊपर देखो; (सुपा ५८३)।

पसारिअ वि [**प्रसारित**] १ फैलाया हुआ; (सण; नाट—वेणी २३)। २ न. प्रसारण; (सम्मत्त १३३; दस ४; ३)।

पसास सक [प्र+शासय्] १ शासन करना, हकूमत करना। २ शिक्षा देना। ३ पालन करना। वकृ—"रज्जं **पसासेमाणे** विहरइ" (णाया १, १ टी—पत्र ६; १, १४—पत्र १८६; औप; महा)।

पसाह सक [प्र+साधय्] १ वस में करना। २ सिद्ध करना। पसाहेइ; (नाट; भवि)। वकृ—**पसाहेमाण**; (औप)।

पसाहग वि [प्रसाधक] साधक, सिद्ध करने वाला; (धर्मसं २६)। °**तम** वि [°तम] १ उत्कृष्ट साधक; २ न. व्याकरण-प्रसिद्ध कारक-विशेष; करण-कारक; (विसे २११२)। देखो **पसाहय**।

पसाहण न [प्रसाधन] १ सिद्ध करना, साधना; "विज्जा-पसाहणुज्जयविज्जाहरसंनिरुद्धएगंतो" (सुर ३, १२)। २ उत्कृष्ट साधन; "सव्वुत्तमं माणुसत्तं दुल्लहं भवसमुद्दे पसाहणं नेव्वाणस्स न निउंजेंति धम्मे" (स ७४४)। ३ अलंकार, भूषण; (णाया १, ३; से ३, ४४)। ४ भूषण आदि की सजावट; "भूसणपसाहणाडंबरेहिं" (वज्जा ११४; सुपा ६६)।

पसाहय देखो **पसाहग**; (काल)। २ सजाने वाला; (भग ११, ११)।

पसाहा स्त्री [प्रशाखा] शाखा की शाखा, छोटी शाखा; (णाया १, १; औप महा)।

पसाहाविय वि [प्रसाधित] विभूषित कराया गया, सजवाया हुआ; (भवि)।

पसाहि वि [प्रसाधिन्] सिद्ध करने वाला; "अब्भुदयपसाहिणी" (संबोध ८; ५४)।

पसाहिअ वि [प्रसाधित] अलंकृत किया हुआ, सजाया हुआ; (से ४, ६१; पाअ)।

पसाहिल्ल वि [प्रशाखिन्] प्रशाखा-युक्त; (सुर ८, १०८)।

पसिअ अक [प्र+सद्] प्रसन्न होना। पसिअ; (गा ३८४; ४६६; हे १, १०१)। पसियइ; (सण)। संकृ—**पसिऊण, पसिऊणं**; (सण; सुपा ७)।

पसिअ वि [प्रसृत] फैला हुआ, विस्तीर्ण; "पसिअच्छि!" (गा ६२०; ६२३)।

पसिअ न [दे] पूग-फल, सुपारी; (दे ६, ६)।

पसिंच सक [प्र+सिच्] सेचन करना। वकृ—**पसिंच-माण**; (सुर १२, १७२)।

पसिंडि (दे) देखो **पसंडि**; (पाअ)।

पसिक्खअ वि [प्रशिक्षक] सीखने वाला, (गा ६२९ अ)।

पसिज्जण न [प्रसदन] प्रसन्न होना; "अत्थक्करूसणं खणपसिज्जणं अलिअवअणणिब्बंधो" (गा ६७५)।

पसिढिल देखो **पसढिल**; (हे १, ८९; गा १३३; गउड)।

पसिण पुंन [प्रश्न] १ पृच्छा, प्रश्न; (सुपा ११; ४५३)। २ दर्पण आदि में देवता का आह्वान, मन्त्रविद्या-विशेष; (सम १२३; वृह १)। °**विज्जा** स्त्री [°विद्या] मन्त्रविद्या-विशेष; (ठा १०)। °**ापसिण** न [°ाप्रश्न] मन्त्रविद्या के बल से स्वप्न आदि में देवता के आह्वान द्वारा जाना हुआ शुभाशुभ फल का कथन; (पव २; वृह १)।

पसिणिय वि [प्रश्नित] पूछा हुआ; (सुपा १६; ६२५)।

पसिद्ध वि [प्रसिद्ध] १ विख्यात, विश्रुत; (महा)। २ प्रकर्ष से मुक्ति को प्राप्त, मुक्त; (सिरि ५६५)।

पसिद्धि स्त्री [प्रसिद्धि] १ ख्याति; (हे १, ४४)। २ शंका का समाधान, आक्षेप का परिहार; (अणु; चेइय ४६)।

पसिस्स देखो **पसीस**; (विसे १४)।

पसीअ देखो **पसिअ**=प्र+सद्। पसीयइ, पसीयउ; (कुप्र १)। संकृ—**पसीऊण**; (सण)।

पसीस पुं [प्रशिष्य] शिष्य का शिष्य; (पउम ४, ८६)।

पसु पुं [पशु] १ जन्तु-विशेष, सींग पूँछ वाला प्राणी, चतुष्पाद प्राणि-मात्र; (कुमा; औप)। २ अज, बकरा; (अणु)। °**भूय** वि [°भूत] पशु-तुल्य; (सूअ १, ४, २)। °**मेह** पुं [°मेध] जिसमें पशु का भोग दिया जाता हो वह यज्ञ; (पउम ११, १२)। °**वइ** पुं [°पति] महादेव, शिव; (गा १; सुपा ३१)।

पसुत्त वि [प्रसुप्त] सोया हुआ; (हे १, ४४; प्राप्र; णाया १, १६)।

पसुत्ति स्त्री [प्रसुप्ति] कुष्ठ रोग विशेष, नखादि-विदारण होने पर भी अचेतनता; (राज)। देखो **पसूइ**।

पसुव (अप) देखो **पसु**; (भवि)।

पसुहत्त पुं [दे] वृक्ष, पेड़; (दे ६, २६)।

पसू सक [प्र+सू] जन्म देना, प्रसव करना। वकृ—**पसू-अमाण**; (गा १२३)। संकृ—**पसूइत्ता**; (राज)।

पसू वि [प्रसू] प्रसव-कर्ता, जन्म-दाता; (मोह २६)।

पसूअ न [दे] पुष्प, फूल; (दे ६, ६; पाअ; भवि)।

पसूअ वि [प्रसूत] १ उत्पन्न, जो पैदा हुआ हो; (णाया १, ७; उव, प्रासू १५६)। २ देखो **पसविय**; (महा)।

पसूअण न [प्रसवन] जन्म-दान; (सुपा ४०३)।

पसूइ स्त्री [प्रसूति] १ प्रसव, जन्म, उत्पत्ति; (पउम २१,

३४; प्रासू १२८)। २ एक जात का कुष्ठ रोग, नखादि से विदारण करने पर भी दुःख का अ-संवेदन, नमड़ी का मर जाना; (पिंड ६००)। °रोग पुं [°रोग] रोग-विशेष; (सम्मत ५८)।

पसूइय पुं [**प्रसूतिक**] वातरोग-विशेष; (सिरि ११७)।

पसूण न [**प्रसून**] फूल, पुष्प; (कुमा; सण)।

पसेअ पुं [**प्रस्वेद**] पसीना; (दे ६, १)।

पसेढि स्त्री [**प्रश्रेणि**] अवान्तर श्रेणि— पंक्ति; (पि ६६; राय)।

पसेण पुं [**प्रसेन**] भगवान् पार्श्वनाथ के प्रथम श्रावक का नाम; (विचार ३७८)।

पसेणइ पुं [**प्रसेनजित्**] १ कुलकर-पुरुष-विशेष; (पउम ३, ५५; सम १५०)। २ यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र; (अंत ३)।

पसेणि स्त्री [**प्रश्रेणि**] अवान्तर जाति; "अट्ठारससेणिप्पसे-णीओ सद्दावेइ" (णाया १, १—पत्र ३७)।

पसेयग देखो **पसेवय**; (राज)।

पसेव सक [**प्र+सेव्**] विशेष सेवा करना। वकृ—**पसेव-माण**; (श्रु ५५)।

पसेवय पुं [**प्रसेवक**] कोथला, थैला; "गलावियपसेवओ व्व उरंसि लंबंति दोवि तस्स थणाया" (उवा)।

पसेविआ स्त्री [**प्रसेविका**] थैली, कोथली; (दे ५, २५)।

पस्स सक [**दृश्**] देखना। पस्सइ; (पड्; प्राकृ ७१)। वकृ—**पस्समाण**; (आचा; औप; वसु; विपा १, १)। कृ—**पस्स**; (ठा ४, ३)।

पस्स (शौ) देखो **पास=पार्श्व**; (अभि १८६; अवि २६; स्वप्न ३६)।

पस्स देखो **पस्स=दृश्**।

पस्सओहर वि [**पश्यतोहर**] देखते हुए चोरी करने वाला; "नणु एसो पस्सओहरो तेणो" (उप ७२८ टी)।

पस्सि वि [**दर्शिन्**] देखने वाला; (पण्ण ३०)।

पस्सेय देखो **पसेअ**; (सुख २, ८)।

पह वि [**प्रह्व**] १ नम्र; २ विनीत; ३ आसक्त; (प्राकृ २४)।

पह पुं [**पथिन्**] मार्ग, रास्ता; (हे १, ८८; पाअ, कुमा; श्रा २८; विसे १०५२; कप्प; औप)। °**देसय** वि [°**देशक**] मार्ग-दर्शक; (पउम ६८, १७)।

पहएल्ल पुं [**दे**] पूप, पूआ, खाद्य-विशेष; (दे ६, १८)।

पहंकर देखो **पभंकर**; (उत्त २३, ७६; सुख २३, ७६; इक)।

पहंकरा देखो **पभंकरा**; (इक)।

पहंजण पुं [**प्रभञ्जन**] १ वायु, पवन; (पाअ)। २ देव-जाति-विशेष, भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति; (सुपा ४०)। ३ एक राजा; (भवि)।

पहकर [**दे**] देखो **पहयर**; (गाया १, १; कप्प; औप; उप पृ ४७; विपा १, १; राय; भग ९, ३३)।

पहट्ठ वि [**दे**] १ दृप्त, उद्धत; (दे ६, ६; पड्)। २ अचि-रतर दृष्ट, थोड़े ही समय के पूर्व देखा हुआ; (पड्)।

पहट्ठ वि [**प्रहृष्ट**] आनन्दित, हर्ष-प्राप्त; (औप; भग)।

पहण सक [**प्र+हन्**] मार डालना। पहणइ, पहणे; (महा; उत्त १८, ४६)। कर्म—पहणिज्जइ; (महा)। वकृ—**पहणंत**; (पउम १०५, ६५)। कवकृ—**पहम्मंत**, **पहम्ममाण**; (पि ५४०; सुर २, १४)। हेकृ—**पहणिउं**, **पहणेउं**; (कुप्र २५; महा)।

पहण न [**दे**] कुल, वंश; (दे ६, ५)।

पहणि स्त्री [**दे**] संमुखागत का निरोध; सामने आए हुए का अटकाव; (दे ६, ५)।

पहणिय देखो **पहय=प्रहत**; (सुपा ४)।

पहत्थ पुं [**प्रहस्त**] रावण का मामा; (से १२, ५५)।

पहद वि [**दे**] सदा दृष्ट; (दे ६, १०)।

पहम्म सक [**प्र+हम्म्**] प्रकर्ष से गति करना। पहम्मइ; (हे ४, १६२)।

पहम्म न [**दे**] १ सुर-खात, देव-कुण्ड; (दे ६, ११)। २ खात-जल, कुण्ड; ३ विवर, छिद्र; (से ६, ४३)।

पहम्मंत } **पहम्ममाण** } देखो **पहण=प्र+हन्**।

पहय वि [**प्रहत**] १ घृष्ट, घिसा हुआ; (से १, ५८; बृह १)। २ मार डाला गया, निहत; (महा)।

पहय वि [**प्रहत**] जिस पर प्रहार किया गया हो वह; "पहया अहिमंतियजलेण" (महा)।

पहयर पुं [**दे**] निकर, समूह, यूथ; (दे ६, १५; जय १३; पाअ)।

पहर सक [**प्र+हृ**] प्रहार करना। पहरइ; (उव)। वकृ—**पहरंत**; (महा)। संकृ—**पहरिऊण**; (महा)। हेकृ—**पहरिउं**; (महा)।

पहर पुं [**प्रहार**] १ मार, प्रहार; (हे १, ६८; षड्; प्राप्र; संक्षि २)। २ जहां पर प्रहार किया गया हो वह स्थान; (से २, ४)।

पहर पुं [**प्रहर**] तीन घंटे का समय; (गा २८; ३१; पाअ)।

पहरण न [**प्रहरण**] १ अस्त्र, आयुध; (आचा; औप; विपा १, १; गउड)। २ प्रहार-क्रिया; (से ३, ३८)।

पहराइया देखो **पहाराइया**; (पराण १—पत्र ६४)।

पहराय पुं [**प्रभराज**] भरतक्षेत्र का छठवाँ प्रतिवासुदेव; (सम १५४)।

पहरिअ वि [**प्रहृत**] १ प्रहार करने के लिए उद्यत; (सुर ६, १२६)। २ जिस पर प्रहार किया गया हो वह; (भवि)।

पहरिस पुं [**प्रहर्ष**] आनन्द, खुशी; "आमोओ पहरिसो तोसो" (पाअ; सुर ३, ४०)।

पहलादिद (शौ) वि [**प्रह्लादित**] आनन्दित; (स्वप्न १०६)।

पहल्ल अक [**घूर्ण्**] घूमना, काँपना, डोलना, हिलना। पहल्लइ; (हे ४, ११७; षड्)। वकृ—**पहल्लंत**; (सुर १, ६६)।

पहल्लिर वि [**प्रघूर्णितृ**] घूमने वाला, डोलता; (कुमा; सुपा २०४)।

पहव अक [**प्र+भू**] १ उत्पन्न होना। २ समर्थ होना। पहवइ; (पंचा १०, १०; स ७०; संक्षि ३६)। भवि—पहविस्सं; (पि ५२१)। वकृ— **पहवंत**; (नाट—मालवि ७२)।

पहव पुं [**प्रभव**] उत्पत्ति-स्थान; (अभि ४१)।

पहव देखो **पहाव**=प्रभाव; (स ६३७)।

पहव देखो **पह**=प्रह्व; (विसे ३००८)।

पहव पुं [**प्रभव**] एक जैन महर्षि; (कुमा)।

पहविय वि [**प्रभूत**] जो समर्थ हुआ हो; "मणिकुंडलाणुभावा सत्थं नो पहवियं नरिंदस्स" (सुपा ६१५)।

पहस अक [**प्र+हस्**] १ हसना। २ उपहास करना। पहसइ; (भवि; सण)। वकृ—**पहसंत**; (सण)।

पहसण न [**प्रहसन**] १ उपहास, परिहास; २ नाटक का एक भेद, रूपक-विशेष; "पहसणप्पायं कामसत्थवयणं" (स ७१३; १७७; हास्य ११६)।

पहसिय वि [**प्रहसित**] १ जो हसने लगा हो; (भग)। २ जिसका उपहास किया गया हो वह; (भवि)। ३ न. हास्य, (बृह १)। ४ पुं पवनञ्जय का एक विद्याधर-मित्र; (पउम १५, ५६)।

पहा सक [**प्र+हा**] १ त्याग करना। २ अक. कम होना, क्षीण होना। "पहेज्ज लोहं" (उत्त ४, १२; पि ५६६)। वकृ—**पहिज्जमाण, पहेज्जमाण**; (भग; राज)। संकृ—**पहाय, पहिऊण**; (आचा १, ६, १, १; वव ३)।

पहा स्त्री [**प्रथा**] १ रीति, व्यवहार; २ ख्याति, प्रसिद्धि; (षड्)।

पहा स्त्री [**प्रभा**] कान्ति, तेज, आलोक, दीप्ति; (औप; पाअ; सुर २, २३५; कुमा; चेइअ ५१४)। °**मंडल** देखो **भामंडल**; (पउम ३०, ३२)। °**यर** पुं [°**कर**] १ सूर्य, रवि; २ रामचन्द्र के भाई भरत के साथ दीक्षा लेने वाला एक राजर्षि; (पउम ८५, ५)। °**वई** स्त्री [°**वती**] आठवें वासुदेव की पटरानी; (पउम २०, १८७)।

पहाड सक [**प्र+घाटय्**] इधर उधर भमाना, घुमाना। पहाडेंति; (सूअनि ७० टी)।

पहाण वि [**प्रधान**] १ नायक, मुखिया, मुख्य; "अवगन्नइ सव्वेवि हु पुरप्पहाणेवि" (सुपा ३०८), "तत्थत्थि वणिप्पहाणो सेट्ठी वेसमणनामओ" (सुपा ६१७)। २ उत्तम, प्रशस्त, श्रेष्ठ, शोभन; (सुर १, ४८; महा; कुमा; पंचा ६, १२)। ३ स्त्रीन. प्रकृति—सत्त्व, रज और तमोगुण की साम्यावस्था; "ईसरेण कडे लोए पहाणाइ तहावरे" (सूअ १, १, ३, ६)। ४ पुं. सचिव, मन्त्री; (भवि)।

पहाण न [**प्रहाण**] अपगम, विनाश; (धर्मसं ८७५)।

पहाणि स्त्री [**प्रहाणि**] ऊपर देखो; (उत्त ३, ७; उप ६८६ टी)।

पहाम सक [**प्र+भ्रमय्**] फिराना, घुमाना। कवकृ—**पहामिज्जंत**; (से ७, ६६)।

पहाय देखो **पहा**=प्र+हा।

पहाय न [**प्रभात**] १ प्रातःकाल, सवेरा; (गउड; सुपा ३६; ६०२)। २ वि. प्रभा-युक्त; (से ६, ४४)।

पहाय देखो **पहाव**=प्रभाव; (हे ४, ३४१; हास्य १३२; भवि)।

पहाया देखो **वाहाया**; (अनु)।

पहार सक [**प्र+धारय्**] १ चिन्तन करना, विचार करना। २ निश्चय करना। भूका—पहारेत्थ, पहारेत्था, पहारिंसु; (सूअ २, ७, ३६; औप; पि ५१७; सूअ २, १, २०)। वकृ—**पहारेमाण**; (सूअ २, ४, ४)।

पहार देखो **पहर**=प्रहार; (पाअ; हे १, ६८)।
पहाराइया स्त्री [**प्रहारातिगा**] लिपि-विशेष; (सम ३५)।
पहारि वि [**प्रहारिन्**] प्रहार करने वाला; (सुपा २१५; प्रासू ६८)।
पहारिय वि [**प्रहारित**] जिस पर प्रहार किया गया हो वह; (स ५६८)।
पहारिय वि [**प्रधारित**] विकल्पित, चिन्तित; (राज)।
पहारेत्तु वि [**प्रधारयितृ**] चिन्तन करने वाला; " अहाकम्मे अणवज्जेत्ति मण पहारेत्ता भवति " (भग ५, ६)।
पहाव सक [**प्र+भावय्**] प्रभाव-युक्त करना, गौरवित करना। पहावइ, (सण)। संकृ—**पहाविऊण**; (सण)।
पहाव (अप) अक [**प्र+भू**] समर्थ होना। पहावइ; (भवि)।
पहाव पुं [**प्रभाव**] १ शक्ति, सामर्थ्य; "तुमं च तेतलिपुत्तस्स पहावेण" (णाया १, १४; अभि ३८)। २ कोष और दण्ड का तेज; ३ माहात्म्य; "तायपहावओ चेव मे अविग्घं भविस्सइ त्ति" (स २६०; गउड)।
पहावणा देखो **पभावणा**; (कुप्र २८४)।
पहाविअ वि [**प्रधावित**] दौड़ा हुआ; (स ५८४; गा ५३५; गउड)।
पहाविर वि [**प्रधावितृ**] दौड़ने वाला; (वज्जा ६२; गा २०२)।
पहास सक [**प्र+भाष्**] बोलना। पहासई; (सुख ४, ६), "नाऊण चुन्नियं तं पहिहियया पहासई पावा" (महा)।
पहास अक [**प्र+भास्**] चमकना, प्रकाशना। वकृ—**पहासंत**; (सार्ध ५६)।
पहासा स्त्री [**प्रहासा**] देवी-विशेष; (महा)।
पहिअ वि [**पान्थ, पथिक**] मुसाफिर; (हे २, १५२; कुमा; पड्; उव; गउड)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] मुसाफिर-खाना, धर्मशाला; (धर्मवि ७०; महा)।
पहिअ वि [**प्रथित**] १ विस्तृत, २ प्रसिद्ध, विख्यात; (औप)। ३ राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति, (पउम ५, २६२)।
पहिअ वि [**प्रहित**] भेजा हुआ, प्रेषित, (उप पृ ४५, ७६८ टी; धम्म ६ टी)।
पहिअ वि [**दे**] मथित, विलोडित; (दे ६, ६)।
पहिऊण देखो **पहा**=प्र+हा।
पहिंसय वि [**प्रहिंसक**] हिंसा करने वाला; (ओघ ७५३)।
पहिज्जमाण देखो **पहा**=प्र+हा।
पहिट्ठ देखो **पहट्ठ**=प्रहृष्ट; (औप; सुर ३, २४८; सुपा ६३; ४३७)।
पहिर सक [**परि+धा**] पहिरना, पहनना। पहिरइ, पहिरंति; (भवि; धर्मवि ७)। कर्म—पहिरिज्जइ; (संबोध १४)। वकृ—**पहिरंत**; (सिरि ६८)। संकृ—**पहिरिउं**; (धर्म्मवि १५)। प्रयो—संकृ—**पहिरावेऊण, पहिराविऊण**; (सिरि ४५६; ७७०)।
पहिरावण न [**परिधापन**] १ पहिराना; २ पहिरावन, भेंट में—इनाम में—दिया जाता वस्त्रादि; गुजराती में—'पहिरामणी' (श्रा २८)।
पहिराविय वि [**परिधापित**] पहिराया हुआ; (महा; भवि)।
पहिरिय वि [**परिहित**] पहिरा हुआ, पहना हुआ; (सम्मत्त २१८)।
पहिल वि [**दे**] पहला, प्रथम; (संक्षि ४७; भवि; पि ४४६)। स्त्री—°**ली**; (पि ४४६)।
पहिल्ल अक [**दे**] पहल करना, आगे करना। पहिल्लइ; (पिंग)। संकृ—**पहिल्लिअ**; (पिंग)।
पहिल्लिर वि [**प्रघूर्णितृ**] खूब हिलने वाला, अत्यन्त हिलता; (सम्मत्त १८७)।
पहिवी देखो **पुहवी**=पृथिवी; (नाट)।
पहीण वि [**प्रहीण**] १ परिक्षीण; (पिंड ६३१; भग)। २ भ्रष्ट, स्खलित; (सूअ २, १, ६)।
पहु पुं [**प्रभु**] १ परमेश्वर, परमात्मा; (कुमा)। २ एक राज-पुत्र, जयपुर के विन्ध्यराज का एक पुत्र; (वसु)। ३ स्वामी, मालिक; (सुर ४, १५६)। ४ वि. समर्थ, शक्तिमान्; " दाणं दरिद्दस्स पहुस्स खंती " (प्रासू ४८)। ५ अधि-पति, मुखिया, नायक; (हे ३, ३८)।
°**पहुइ** देखो °**पभिइ**; (कप्पू)।
पहुई देखो **पुहवी**; (षड्)।
पहुंक पुं [**पृथुक**] खाद्य पदार्थ-विशेष, चिउड़ा; (दे ६, ४४)।
पहुच्च अक [**प्र+भू**] पहुँचना। पहुच्चइ; (हे ४, ३९०)। वकृ—**पहुच्चमाण**; (ओघ ५०५)।
पहुट्ट देखो **पप्फुट्ट**। पहुट्टइ; (कप्पू)।
पहुडि देखो **पभिइ**; (हे १, १३१; ती १०; षड्)।
पहुण पु [**प्राघुण**] अतिथि, महमान; (उप ६०२)।

पहुणाइय न [**प्राघुण्य**] आतिथ्य, अतिथि-सत्कार; "न्हाण-भोयणवत्थाहरणदाणाइप्पहुणाडि(? इ)यं संपाडेइ " (रंभा)।

पहुत्त वि [**प्रभूत**] १ पर्याप्त, काफी; "पज्जत्तं च पहुत्तं" (पाअ; गउड; गा २७७)। २ समर्थ; (से २, ६)। ३ पहुँचा हुआ, (ती १५)।

पहुदि देखो **पभिइ**; (संक्षि ४; प्राकृ १२)।

पहुप्प } अक [**प्र + भू**] १ समर्थ होना, सकना। २ पहुँचना।
पहुव } पहुप्पइ; (हे ४, ६३; प्राकृ ६२), "एयाओ बालियाओ नियनियगेहेसु जह पहुप्पंति तह कुणह" (सुपा २५०), पहुप्पामो; (काल), पहुप्पिरे, (हे ३, १४२)। वकृ— " किं सहइ कोवि कस्सवि पाअपहारं **पहुप्पंतो**", **पहुप्पमाण**; (गा ७; ओघ ५०५; किरात १६)। कवकृ—**पहुव्वंत**; (से १४, २५; वव १०)। हेकृ—**पहुविउं**; (महा)।

पहुवी स्त्री [**पृथिवी**] भूमि, धरती; (नाट—मालती ७२)। °**पहु** पुं [°**प्रभु**] राजा; (हम्मीर १७)। °**वइ** पुं [°**पति**] वही अर्थ; (हम्मीर १६)।

पहुव्वंत देखो **पहुव**।

पहूअ वि [**प्रभूत**] १ बहुत, प्रचुर; (स ४५६)। २ उद्गत; ३ भूत; ४ उन्नत; (प्राकृ ६२)।

पहेज्जमाण देखो **पहा=प्र + हा**।

पहेण } न [**दे**] १ भोजनोपायन, खाद्य वस्तु की भेंट;
पहेणग } (आचा; सुअ २, १, ५६; गा ३२८; ६०३;
पहेणय } पिंड ३३५; पाअ; दे ६, ७३)। २ उत्सव; (दे ६, ७३)।

पहेरक न [**प्रहेरक**] आभरण-विशेष; (पराह २, ५—पत्र १४६)।

पहेलिया स्त्री [**प्रहेलिका**] गूढ आशय वाली कविता; (सुपा १५५; औप)।

पहोअ सक [**प्र + धाव्**] प्रक्षालन करना, धोना। पहोएज्ज; (आचा २, २, १, ११)।

पहोइअ वि [**दे**] १ प्रवर्तित; २ प्रभुत्व; (दे ६, २६)।

पहोड सक [**वि + लुल्**] हिलोरना, अन्दोलना। पहोडइ; (धात्वा १४४)।

पहोलिर वि [**प्रघूर्णित**] हिलने वाला, डोलता; (गा ८८, ६६६; से ३, ४६; पाअ)।

पहोव देखो **पधोव**। पहोवाहि, (आचा २, १, ६, ३)।

पा सक [**पा**] पीना, पान करना। भवि—पाहिसि, पाहामि, पाहामो; (कप्प; पि ३१५; कस)। कर्म—पिज्जइ; (उव), पीअति; (पि ५३६)। कवकृ—**पिज्जंत**; (गउड; कुप्र १२०), **पीअमाण**, (स ३८२), **पेंत** (अप), (सण)। संकृ—**पाऊण, पाऊणं**, (नाट—मुद्रा ३६; गउड; कुप्र ६२)। हेकृ—**पाउं, पायए**; (आचा)। कृ—**पायव्व, पिज्ज**; (सुपा ४३८; पराह १, २; कुमा २, ६), **पेअ, पेयव्व**; (कुमा; रयण ६०), **पेज्ज**; (णाया १, १; १७; उवा)।

पा सक [**पा**] रक्षण करना। पाइ, पाअइ; (विसे ३०२५; हे ४, २४०), पाउ; (पिंग)।

पा सक [**घ्रा**] सूँघना, गन्ध लेना। पाइ, पाअइ; (प्राप्र ८, २०)।

पाइ वि [**पातिन्**] गिरने वाला; (पंचा ५, २०)।

पाइ वि [**पायिन्**] पीने वाला; (गा ५६७; हि ६)।

पाइअ न [**दे**] वदन-विस्तर, मुँह का फैलाव; (दे ६, ३६)।

पाइअ देखो **पागय=प्राकृत**; (दे १, ४; प्राकृ ८; प्रासू १; वज्जा ८; पाअ, पि ५३), "अह पाइआओ भासाओ" (कुमा १, १)।

पाइअ वि [**पायित**] पिलाया हुआ, पान कराया हुआ; (कुप्र ७६; सुपा १३०; स ४५४)।

पाइंत देखो **पाय=पायय्**।

पाइक्क पुं [**पदाति**] प्यादा, पैर से चलने वाला सैनिक; (हे २, १३८; कुमा)।

पाइण देखो **पाईण**; (पि २१५ टि)।

पाइत्ता (अप) स्त्री [**पवित्रा**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

पाइद [**शौ**] वि [**पाचित**] पकवाया हुआ; (नाट—चैत १२६)।

पाइभ न [**प्रातिभ**] प्रतिभा, बुद्धि-विशेष; (कुप्र १५५)।

पाइम वि [**पाक्य**] १ पकाने योग्य; २ काल-प्राप्त, मृत, (दस ७, २२)।

पाइम वि [**पात्य**] गिराने योग्य; (आचा २, ४, २, ७)।

पाई स्त्री [**पात्री**] १ भाजन-विशेष; (णाया १, १ टी)। २ छोटा पात्र; (सूअ ?, २, ७०)।

पाईण वि [**प्राचीन**] १ पूर्वदिशा-संबन्धी; "ववहार-पाइणाई(? ईणाइ)" (पिंड ३६; कप्प; सम १०४)। २ न गोत्र-विशेष, ३ पुं स्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न; "थेरे अज्ज-भद्दबाहू पाईणसगोत्ते" (कप्प)।

पाईणा स्त्री [**प्राचीना**] पूर्व दिशा; (सूत्र २, २, ५८; ठा ६—पत्र ३५६)।

पाउ देखो **पाउं**=प्रादुस्; (सूत्र २, ६, ११; उवा)।

पाउ पुं [**पायु**] गुदा, गाँड; (ठा ६—पत्र ४५०; सण)।

पाउ पुंस्त्री [**दे**] १ भक्त, भात, भोजन; २ इक्षु, ऊख; (दे ६, ७५)।

पाउअ न [**दे**] १ हिम, अवश्याय; (दे ६, ३८)। २ भक्त; ३ इक्षु; (दे ६, ७५)।

पाउअ देखो **पाउड**=प्रावृत; (गा ५२०; स ३५०; औप; सुर ६, ८; पाअ; हे १, १३१)।

पाउअ देखो **पागय**; (गा २; ६६८; प्राप्र; कप्पू; पिंग)।

पाउआ स्त्री [**पादुका**] १ खड़ाऊँ, काष्ठ का जूता; (भग; सुख २, २६; पिंड ५७२)। २ जूता, पगरखी; (सुपा २५४; औप)।

पाउं देखो **पा**=पा।

पाउं अ [**प्रादुस्**] प्रकट, व्यक्त; "संतिं असतिं करिस्सामि पाउं" (सूत्र १, १, ३, १)।

पाउंछण } न [**पादप्रोञ्छन, °क**] जैन मुनि का एक
पाउंछणग } उपकरण, रजोहरण; (पव ११२ टी; ओघ ६३०; पंचा १७, १२)।

पाउकर सक [**प्रादुस् + कृ**] प्रकट करना। भवि—पाउकरिस्सामि; (उत्त ११, १)।

पाउकर वि [**प्रादुष्कर**] प्रादुर्भावक; (सूत्र १, १५, २५)।

पाउकरण न [**प्रादुष्करण**] १ प्रादुर्भाव; २ वि. जो प्रकाशित किया जाय वह, ३ जैन मुनि के लिए एक भिक्षा-दोष, प्रकाश कर दी हुई भिक्षा; "पकिरणपाउकरणपामिच्चं" (पराह २, ५—पत्र १४८)।

पाउकाम वि [**पातुकाम**] पीने की इच्छा वाला; "तं जो णं णवियाए माउया एदुद्धं पाउकामे से णं निग्गच्छउ" (णाया १, १८)।

पाउक्क वि [**दे**] मार्गीकृत, मार्गित; (दे ६, ४१)।

पाउक्करण देखो **पाउकरण**; (राज)।

पाउक्खालय न [**दे. पायुक्षालक**] १ पाखाना, टट्टी, मलोत्सर्ग-स्थान, "ठाइ चेव एसा पाउक्खालयम्मि रयणीए" (स ३०५; भत्त ११२)। २ मलोत्सर्ग-क्रिया; "रयणीए पाउक्खालयनिमित्तमुट्ठिओ" (स २०५)।

पाउग्ग वि [**दे**] सभ्य, सभासद; (दे ६, ४१; सण)।

पाउग्ग वि [**प्रायोग्य**] उचित, लायक; (सुर १५, २३३)।

पाउग्गिअ वि [**दे**] १ जूआ खेलाने वाला; २ सोढ, सहन किया हुआ; (दे ६, ४२; पाअ)।

पाउड देखो **पागय**, (प्राकृ १२; मुद्रा १२०)।

पाउड वि [**प्रावृत**] १ आच्छादित, ढका हुआ; (सूत्र १, २, २, २२)। २ न. वस्त्र, कपड़ा; (ठा ५, १)।

पाउण सक [**प्रा+वृ**] आच्छादित करना, पहिरना। पाउणइ; (पिंड ३१)। संकृ—"पडं **पाउणिऊण** रत्तिं णिग्गओ" (महा)।

पाउण सक [**प्र + आप्**] प्राप्त करना। पाउणइ; (भग)। पाउणंति; (औप; सूत्र १, ११, २१)। पाउणेज्जा; (आचा २, ३, १, ११)। भवि—पाउणिस्सामि, पाउणिहिइ; (पि ५३१; उत्त)। संकृ—**पाउणित्ता**; (औप; णाया १, १; विपा २, १; कप्प; उवा)। हेकृ—**पाउणित्तए**; (आचा २, ३, २, ११)।

पाउण (अप) देखो **पावण**=पावन; (पिंग)।

पाउत्त देखो **पउत्त**=प्रयुक्त; (औप)।

पाउप्पभाय वि [**प्रादुष्प्रभात**] प्रभा-युक्त, प्रकाश-युक्त; "कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए" (णाया १, १; भग)।

पाउब्भव अक [**प्रादुस्+भू**] प्रकट होना। पाउब्भवइ; (पव ४०)। भूका—पाउब्भवित्था; (उवा)। वकृ—**पाउब्भवंत, पाउब्भवमाण**; (सुपा ६; कुप्र २६; णाया १, ५)। संकृ—**पाउब्भवित्ताणं**; (उवा; औप)। हेकृ—**पाउब्भवित्तए**; (पि ५७८)।

पाउब्भव वि [**पापोद्भव**] पाप से उत्पन्न; (उप ७६८ टी)।

पाउब्भवणा स्त्री [**प्रादुर्भवन**] प्रादुर्भाव; (भग ३, १)।

पाउब्भुय (अप) नीचे देखो; (सण)।

पाउब्भूय वि [**प्रादुर्भूत**] १ उत्पन्न, संजात; २ प्रकटित; (औप; भग; उवा; विपा १, १)।

पाउरण न [**प्रावरण**] वस्त्र, कपडा; (सूत्रनि ८६; हे १, १७५; पंचा ५, १०; पव ४; षड्)।

पाउरण न [**दे**] कवच, वर्म, (षड्)।

पाउरणी स्त्री [**दे**] कवच, वर्म; (दे ६, ४३)।

पाउरिअ देखो **पाउड**=प्रावृत; (कुप्र ४५२)।

पाउल वि [**पापकुल**] हलके कुल का, जघन्य कुल में उत्पन्न; "दवाविय पाउलाण दविणजायं" (स ६२६), "कलसद्द-पउरपाउलमंगलसंगीयपवरपेक्खणयं" (सुर १०, ५)।

पाउल्ल न. देखो **पाउआ**; "पाउल्लाइं संकमट्ठाए" (सूत्र १, ४, २, १५)।

पाउव न [**पादोद**] पाद-प्रक्षालन-जल; "पाउवदाइं च गहाणुवदाइं च" (णाया १, ७—पत्त ११७) ।

पाउस पुं [**प्रावृष्**] वर्षा ऋतु; (हे १, १९; प्राप्र; महा)। °**कीड** पुं [°**कीट**] वर्षा ऋतु में उत्पन्न होने वाला कीट-विशेष; (दे)। °**गम** पु [°**गम**] वर्षा-प्रारम्भ, (पाअ)।

पाउसिअ वि [**प्रावृषिक**] वर्षा-संबन्धी; (राज)।

पाउसिअ वि [**प्रोषित, प्रवासिन्**] प्रवास में गया हुआ; "तह मेहागमसंसियआगमणाए पईए मुद्धाओ । मग्गमवलोयमाणीउ नियइ पाउसियदइयाओ ॥" (सुपा ७०)।

पाउसिआ स्त्री [**प्राद्वेषिकी**] द्वेष—मत्सर—से होने वाला कर्म-बन्ध; (सम १०; ठा २, १; भग, नव १७)।

पाउहारी स्त्री [**दे. पाकहारी**] भक्त को लाने वाली, भात-पानी ले आने वाली; (गा ६६४ अ)।

पाए अ [**दे**] प्रभृति, (वहां से) शुरू करके; (ओघ १६६; वृह १)।

पाए सक [**पायय्**] पिलाना । पाएइ; (हे ३, १४९)। पाएज्जाह; (महा)। वकृ— **पाइंत, पाययंत**; (सुर १२, १३४; १२, १७१)। संकृ— **पाएत्ता**; (आक ३०)।

पाए सक [**पादय्**] गति कराना । पाएइ; (हे ३, १४९)।

पाए सक [**पाचय्**] पकवाना । पाएइ; (हे ३, १४९)। कर्म—पाइज्जइ; (श्रावक २००)।

पाएण } अ [**प्रायेण**] बहुत करके, प्रायः; (विसे
पाएणं } ११९९; काल; कप्प; प्रासू ४३)।

पाओ अ [**प्रायस्**] ऊपर देखो, (श्रा २७)।

पाओ अ [**प्रातस्**] प्रातःकाल, प्रभात; (सुज्ज १, ६; कप्प)।

पाओकरण देखो **पाउकरण**, (पिंड २९८)।

पाओग देखो **पाउग्ग**, (सूअनि ६५)।

पाओगिय वि [**प्रायोगिक**] प्रयत्न-जनित, अ-स्वाभाविक; (चेइय ३५३)।

पाओग्ग देखो **पाउग्ग**, (भास १०; धर्मसं ११८०)।

पाओपगम न [**पादपोपगम**] देखो **पाओवगमण**; (वव १०)।

पाओयर पुं [**प्रादुष्कार**] देखो **पाउकरण**; (ठा ३, ४; पंचा १३, ५)।

पाओवगमण न [**पादपोपगमन**] अनशन-विशेष, मरण-विशेष; (सम ३३; औप; कप्प, भग)।

पाओवगय वि [**पादपोपगत**] अनशन-विशेष से मृत; (औप; कप्प; अंत)।

पाओस पुं [**दे. प्रद्वेष**] मत्सर, द्वेष; (ठा ४, ४—पत्त २८०)।

पाओसिय देखो **पादोसिय**; (ओघ ६६२)।

पाओसिया देखो **पाउसिआ**; (धर्म ३)।

पांडविअ वि [**दे**] जलार्द्र, पानी से गीला, (दे ६, २०)।

पांडु देखो **पंडु**; (पत्र २४७)। °**सुअ** पुं [°**सुत**] अभिनय का एक भेद; (ठा ४, ४—पत्त २८५)।

पाक देखो **पाग**; (कप्प)।

पाकम्म न [**प्राकाम्य**] योग की आठ सिद्धिओं में एक सिद्धि; "पाकम्मगुणेण मुणी भुवि व्व नीरे जलि व्व भुवि चरइ" (कुप्र २७७)।

पाकार पुं [**प्राकार**] किला, दुर्ग; (उप पृ ८४)।

पाकिद (शौ) देखो **पागय**; (प्रयौ २४; नाट—वेणी ३८; पि ५३; ८२)।

पाखंड देखो **पासंड**, (पिं २६५)।

पाग पुं [**पाक**] १ पचन-क्रिया; (औप; उत्रा; सुपा ३७४)। २ दैत्य-विशेष; (गउड)। ३ विपाक, परिणाम; (धर्मसं ६९५)। ४ बलवान् दुश्मन, (आवम)। °**सासण** पुं [°**शासन**] इन्द्र, देव-पति; (हे ४, २६५; गउड; पि २०२)। °**सासणी** स्त्री [°**शासनी**] इन्द्रजाल-विद्या; (सूअ २, २, २७)।

पागइअ वि [**प्राकृतिक**] १ स्वाभाविक; २ पुं. साधारण मनुष्य, प्राकृत लोक; (पव ६१)।

पागड सक [**प्र+कटय्**] प्रकट करना, खुला करना, व्यक्त करना। वकृ—**पागडेमाण**; (ठा ३, ४—पत्र १७१)।

पागड वि [**प्रकट**] व्यक्त, खुला; (उत्त ३६, ४२; औप; उव)।

पागडण न [**प्रकटन**] १ प्रकट करना । २ वि प्रकट करने वाला; (धर्मसं ८२६)।

पागडिअ वि [**प्रकटित**] व्यक्त किया हुआ, (उव; औप)।

पागड्डि } वि [**प्राकर्षिन्, °क**] १ अग्रगामी; "पागड्ढी
पागड्डिक } (? ड्ढी) पट्ठवए जूहवई" (णाया १, १)। २ प्रवर्तक, प्रवृत्ति कराने वाला; (पराह १, ३—पत्त ४५)।

पागब्भ न [**प्रागल्भ्य**] धृष्टता, धिठाई; (सूअ १, ५, १. ५)।

पागब्भि } वि [**प्रागल्भिन्, °क**] धृष्टता वाला, धृष्ट;
पागब्भिय } (सूत्र १, ५, १, ५; २, १, १८)।

पागय वि [**प्राकृत**] १ स्वाभाविक, स्वभाव-सिद्ध; २ आर्यावर्त की प्राचीन लोक-भाषा; "सक्कया पागया चेव" (ठा ७—पत्र ३६३; विसे १४६६ टी; रयण ६४; सुपा १)। ३ पु. साधारण बुद्धि वाला मनुष्य, सामान्य लोग; "जेसिं णामा-गोत्तं न पागता पण्णवेहिंति" (सुज्ज १६), "किंतु महामइ-गम्मो दुरवगम्मो पागयजणस्स" (चेइय २५६; सुर २, १३०)। °**भासा** स्त्री [°**भाषा**] प्राकृत भाषा; (श्रा २३)। °**वागरण** न [°**व्याकरण**] प्राकृत भाषा का व्याकरण; (विसे ३४५५)।

पागार पुं [**प्राकार**] किला, दुर्ग; (उत्र; सुर ३, ११४)।

पाजावच्च पुं [**प्राजापत्य**] १ वनस्पति का अधिष्ठाता देव; २ वनस्पति; (ठा ५, १—पत्र २६२)।

पाटप [**चूपै**] देखो **वाडव**; (षड्)।

पाठीण देखो **पाढीण**; (पण्ह १, १—पत्र ७)।

पाड देखो **फाड**=पाटय्। "असिपत्तधणूहि पाडंति" (सूअनि ७६)।

पाड सक [**पातय्**] गिराना। पाडेइ; (उत्र)। संकृ—**पाडिअ, पाडिऊण**; (काप्र १६६; कुप्र ४६)। कवकृ—**पाडिज्जंत**; (उप ३२० टी)।

पाड देखो **पाडय**=पाटक; "तो सो दिट्ठ्ठाणे सयं गओ वेसपाडम्मि" (सुपा ५३०)।

पाडच्चर वि [**दे**] आसक्त चित्त वाला; (दे ६, ३४)।

पाडच्चर पुं [**पाटच्चर**] चोर, तस्कर; (पाअ; दे ६, ३४)।

पाडण न [**पाटन**] विदारण; (आव ६)।

पाडण न [**पातन**] १ गिराना, पाड़ना; (सूअनि ७२)। २ परिभ्रमण, इधर-उधर घूमना; "लहुजढरपिढरपडियारपाडण-त्ताण कयकीलो" (कुमा २, ३७)।

पाडणा स्त्री [**पातना**] ऊपर देखो; (विपा १, १—पत्र १६)।

पाडय पुं [**पाटक**] महल्ला, रथ्या; "चंडालपाडए गंतु" (धर्मवि १३८; विपा १, ८; महा)।

पाडय वि [**पातक**] गिराने वाला। स्त्री—°**डिआ**; (मृच्छ २४५)।

पाडल पुं [**पाटल**] १ वर्ण-विशेष, श्वेत और रक्त वर्ण, गुलाबी रंग; २ वि. श्वेत-रक्त वर्ण वाला; (पाअ)। ३ न. पाटलिका-पुष्प, गुलाव का फूल; (गा ४६६; सुर ३, ५२; कुमा)। ४ पाटला वृक्ष का पुष्प, पाढल का फूल; (गा ३०)।

पाडल पुं [**दे**] १ हंस, पक्षि-विशेष; २ वृषभ बैल; ३ कमल; (दे ६, ७६)।

पाडलसउण पुं [**दे**] हंस, पक्षि-विशेष; (दे ६, ४६)।

पाडला स्त्री [**पाटला**] वृक्ष-विशेष, पाढल का पेड़, पाडरि; (गा ४५६; सुर ३, ५२; सम १५२), "चंपा य पाडलरुक्खो जया य वसुपुज्जपत्थिवो होइ" (पउम २०, ३८)।

पाडलि स्त्री [**पाटलि**] ऊपर देखो; (गा ४६८)। °**उत्त**, °**पुत्त** न [°**पुत्र**] नगर-विशेष, पटना, जो आजकल विहार प्रदेश का प्रधान नगर है; (हे २, १५०; महा; पि २६२; चारु ३६)। °**पुत्त** वि [°**पुत्र**] पाटलिपुत्र-संबन्धी, पटना का; (पत्र १११)। °**संड** न [°**षण्ड**] नगर-विशेष; (विपा १, ७; सुपा ८३)। देखो **पाडली**।

पाडलिय वि [**पाटलित**] श्वेत-रक्त वर्ण वाला किया हुआ; (गउड)।

पाडली देखो **पाडलि**; (उप पृ ३६०)। °**पुर** न [°**पुर**] पटना नगर; (धर्मवि ४२)। °**वुत्त** न [°**पुत्र**] पटना नगर; (पड्)।

पाडव न [**पाटव**] पटुता, निपुणता; (धम्म १० टी)।

पाडवण न [**दे**] पाद-पतन, पैर में गिरना, प्रणाम-विशेष; (दे ६, १८)।

पाडहिग } वि [**पाटहिक**] ढोल बजाने वाला, ढोली; (स
पाडहिय } २१६)।

पाडहुक वि [**दे**] प्रतिभू, मनौतिया, जामिनदार; (षड्)।

पाडिअ वि [**पाटित**] फाडा हुआ, विदारित; (स ६६६)।

पाडिअ वि [**पातित**] गिराया हुआ; (पाअ, प्रासू २; भवि)।

पाडिअग्ग पु [**दे**] विश्राम; (दे ६, ४४)।

पाडिअज्झ पु [**दे**] पिता के घर से वधू को पति के घर ले जाने वाला; (दे ६, ४३)।

पाडिआ देखो **पाडय**=पातक।

पाडिएक्क } न [**प्रत्येक**] हर एक; (हे २, २१०; कप्प;
पाडिक्क } पाअ; णाया १, १६; २, १; सूअनि १२१ टी; कुमा), " एगे जीवे पाडिक्कएणं सरीरएणं " (ठा १—पत्र १६)।

पाडिच्चरण न [**प्रतिचरण**] सेवा, उपासना; (उप पृ ३४६)।

पाडिच्छय वि [**प्रतीप्सक**] ग्रहण करने वाला; (सुख २, १३)।
पाडिज्जंत देखो **पाड**=पातय्।
पाडिपह न [**प्रतिपथ**] अभिमुख, सामने; (सूत्र २, २, ३१)।
पाडिपहिअ देखो **पडिपहिअ**; (सूत्र २, २, ३१)।
पाडिपिद्धि स्त्री [**दे**] प्रतिस्पर्धा, (पड्)।
पाडिप्पवग पुं [**पारिप्लवक**] पक्षि-विशेष; (पउम १४, १८)।
पाडिप्फद्धि वि [**प्रतिस्पर्धिन्**] स्पर्धा करने वाला; (हे १, ४४; २०६)।
पाडियंतिय न [**प्रात्यन्तिक**] अभिनय-विशेष; (राज)।
पाडियक्क देखो **पाडिएक्क**; (औप)।
पाडिवय वि [**प्रातिपद**] १ प्रतिपत्-संबन्धी, पडवा तिथि का; "जह चंदो पाडिवओ पडिपुन्नो सुक्कपक्खम्मि" (उवर ६०)। २ पु. एक भावी जैन आचार्य, (विचार ५०६)।
पाडिवया स्त्री [**प्रतिपत्**] तिथि-विशेष, पक्ष की पहली तिथि, पडवा; (सम २६; गाया १, १०, हे १, १५; ४४)।
पाडिवेसिय वि [**प्रातिवेश्मिक**] पड़ोसी। स्त्री—°**या**; (सुपा ३६४)।
पाडिसार पुं [**दे**] १ पटुता, निपुणता, २ वि. पटु, निपुण; (दे ६, १६)।
पाडिसिद्धि देखो **पडिसिद्धि**=प्रतिसिद्धि; (हे १, ४४; प्राप्र)।
पाडिसिद्धि स्त्री [**दे**] १ स्पर्धा; (दे ६, ७७; कप्पू; कुप्र ४६)। २ समुदाचार, ३ वि. सदृश, तुल्य; (दे ६, ७७)।
पाडिसिरा स्त्री [दे] खलीन-युक्ता; (दे ६, ४२)।
पाडिस्सुइय न [**प्रातिश्रुतिक**] अभिनय का एक भेद; (राज)।
पाडिहच्छी } **पाडिहत्थी** } स्त्री [**दे**] शिरो-माल्य, मस्तक-स्थित पुष्प-माला; (दे ६, ४२; राज)।
पाडिहारिय वि [**प्रातिहारिक**] वापिस देने योग्य वस्तु; (विसे ३०५७; औप; उवा)।
पाडिहेर न [**प्रातिहार्य**] १ देवता-कृत प्रतीहार-कर्म, देव-कृत पूजा-विशेष; (औप, पव ३६), "इय सामइए भावा इहइंपि नागदत्तनरनाहो। जाओ सपाडिहेरो" (सुपा ५४४)। २ देव-सान्निध्य; (भत्त ६६), "बहूणं सुरेहि कयं पाडिहेरं" (श्रु ६४; महा)।

पाडी स्त्री [**दे**] भैंस की बछिया, गुजराती में 'पाडी'; (गा ६५)।
पाडुंकी स्त्री [**दे**] व्रणी—जखम वाले—की पालकी; (दे ६, ३६)।
पाडुंगोरि वि [**दे**] १ विगुण, गुण-रहित; २ मद्य में आसक्त; ३ स्त्री. मजबूत वेष्टन वाली वाड़; "पाडुंगोरी च वृतिर्दीर्घे यस्या विवेष्टनं परितः" (दे ६, ७८)।
पाडुक पुं [**दे**] समालम्भन, चन्दन आदि का शरीर में उपलेप; २ वि पटु, निपुण; (दे ६, ७६)।
पाडुच्चिय वि [**प्रातीतिक**] किसी के आश्रय से होने वाला, आपेक्षिक। स्त्री—°**या**; (ठा २, १; नव १८)।
पाडुच्ची स्त्री [**दे**] तुरग-मण्डन, घोड़े का सिंगार; (दे ६, ३६, पाअ)।
पाडुहुअ वि [**दे**] प्रतिभू, मनौतिया, जामिनदार; (दे ६, ४२)।
पाडेक्क देखो **पाडिक्क**; (सम्म ५५)।
पाडोसिअ वि [**दे**] पड़ोसी; (सिरि ३१२; श्रा २७; सुपा ५५२)।
पाढ सक [**पाठय्**] पढ़ाना, अध्ययन कराना। पाढइ, पाढेइ; (प्राकृ ६०; प्राप्र)। कर्म—पाढिज्जइ; (प्राप्र)। संकृ—**पाढिऊण, पाढेऊण**; (प्राकृ ६१)। हेकृ—**पाढिउं, पाढेउं**; (प्राकृ ६१)। कृ—**पाढणिज्ज, पाढिअव्व, पाढेअव्व**; (प्राकृ ६१)।
पाढ पुं [**पाठ**] १ अध्ययन, पठन; (ओघभा ७१; विसे १३८४, सम्मत्त १४०)। २ शास्त्र, आगम; ३ शास्त्र का उल्लेख, "पाढो त्ति वा सत्थं ति वा एगट्ठा" (आचू १)। ४ अध्यापन, शिक्षा, (उप पृ ३०८, विसे १३८४)।
पाढ देखो **पाडय**=पाटक, (श्रा ९३ टी)।
पाढंतर न [**पाठान्तर**] भिन्न पाठ; (श्रावक ३११)।
पाढग वि [**पाठक**] १ उच्चारण करने वाला; "पढियं मंगल-पाढगेहि" (कुप्र ३२)। २ अभ्यासी, अध्ययन करने वाला; ३ अध्यापन करने वाला, अध्यापक, "वत्थुपाढगा", "सुमिण-पाढगाणं", लक्खणसुमिणपाढगाणं" (धर्मवि ३३; गाया १, १; कप्प)।
पाढण न [**पाठन**] अध्यापन; (उप पृ १२८; प्राकृ ६१; सम्मत्त १४२)।
पाढणया स्त्री [**पाठना**] ऊपर देखो; (पंचभा ४)

पाढय देखो **पाढग**; (कप्प; स ७; णाया १, १—पत्र २०, (महा) ।

पाढव वि [**पार्थिव**] पृथिवी का विकार, पृथिवी का; "पाढवं सरीरं हिच्चा" (उत्त ३, १३) ।

पाढा स्त्री [**पाठा**] वनस्पति-विशेष, पाढ, पाठ का गाछ; (पराण १७) ।

पाढाव सक [**पाठय्**] पढाना, अध्यापन करना। पाढावेइ, (प्राप्र)। संकृ—**पाढाविऊण, पाढावेऊण**; (प्राकृ ६१)। हेकृ—**पाढाविउं, पाढावेउं**; (प्राकृ ६१)। कृ—**पाढावणिज्ज, पाढाविअव्व**; (प्राकृ ६१) ।

पाढावअ वि [**पाठक**] अध्यापक; (प्राकृ ६०) ।

पाढावण न [**पाठन**] अध्यापन; (प्राकृ ६१) ।

पाढाविअ वि [**पाठित**] अध्यापित; (प्राकृ ६१) ।

पाढाविअवंत वि [**पाठितवत्**] जिसने पढ़ाया हो वह; (प्राकृ ६१) ।

पाढाविउ } वि [**पाठयितृ**] पढाने वाला, (प्राकृ ६१; **पाढाविर** } ६०) ।

पाढिअ वि [**पाठित**] पढाया हुआ, अध्यापित; (प्राप्र) ।

पाढिअवंत देखो **पाढाविअवंत**; (प्राकृ ६१) ।

पाढिआ स्त्री [**पाठिका**] पढ़ने वाली स्त्री; (कप्पू) ।

पाढिउ } वि [**पाठयितृ**] अध्यापक, पढाने वाला; (प्राकृ **पाढिर** } ६१) ।

पाढीण पुं [**पाठीन**] मत्स्य-विशेष, मत्स्य की एक जाति; (गा ४१४; विक ३२) ।

पाण सक [**प्र+आनय्**] जिलाना। वकृ— **पाणअंत**; (नाट—मालती ५) ।

पाण पुं स्त्री [**दे**] श्वपच, चाण्डाल; (दे ६, ३८; उप पृ १५४; महा, पाअ; ठा ४, ४; वव १)। स्त्री—°**णी**; (सुख ६, १; महा)। °**उडी** स्त्री [°**कुटी**] चाण्डाल की झोपड़ी; (गा २२७)। °**विलया** स्त्री [°**वनिता**] चाण्डाली; (उप ७६८ टी)। °**डंबर** पुं [°**डम्बर**] यक्ष-विशेष, (वव ७)। °**हिवइ** पुं [°**धिपति**] चाण्डाल-नायक; (महा)।

पाण न [**पान**] १ पीना, पीने की क्रिया; (सुर ३, १०)। २ पीने की चीज, पानी आदि; (सुज्ज २० टी; पडि; महा; आचा)। ३ पुं. गुच्छ-विशेष; "सणपाणकासमद्दगअग्घाडगसामसिंदुवारे य" (पराण १)। °**पत्त** न [°**पात्र**] पीने का भोजन; प्याला; (दे)। °**गार** न [°**गार**] मद्य-गृह; (णाया १, २; महा)। °**हार** पुं [°**हार**] एकाशन तप, (संबोध ५८)।

पाण पुंन [**प्राण**] १ जीवन के आधार-भूत ये दश पदार्थ;—पाँच इन्द्रियाँ, मन, वचन और शरीर का बल, उच्छ्वास तथा निःश्वास; (जी २६; पराण १, महा; ठा १; ६)। २ समय-परिमाण विशेष, उच्छ्वास-निःश्वास-परिमित काल; (इक; अणु)। ३ जन्तु, प्राणी, जीव; "पाणाणि चेवं विणिहंति मंदा" (सूअ १, ७, १६; ठा ६; आचा; कप्प)। ४ जीवित, जीवन, (सुपा २६३, ५६३; कप्पू)। °**इत्त** वि [°**वत्**] प्राण वाला, प्राणी, (पि ६००)। °**च्चय** पुं [°**त्यय**] प्राण-नाश; (सुपा २६८; ६१६)। °**च्चाय** पुं [°**त्याग**] मरण, मौत; (सुर ४, १७०)। °**जाइय** वि [°**जातिक**] प्राणी, जीव, जन्तु; (आचा १, ६, १, १)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] प्राणनाथ, पति, स्वामी; (रंभा)। °**प्पिया** स्त्री [°**प्रिया**] स्त्री, पत्नी; (सुर १, १०८)। °**वह** पुं [°**वध**] हिंसा, (पराह १, १)। °**वित्ति** स्त्री [°**वृत्ति**] जीवन-निर्वाह; (महा)। °**सम** पुं [°**सम**] पति, स्वामी; (पाअ)। °**सुहुम** न [°**सूक्ष्म**] सूक्ष्म जन्तु; (कप्प)। °**हिय** वि [°**हृत्**] प्राण-नाशक; (रंभा)। °**इंत** वि [°**वत्**] प्राण वाला, प्राणी; (प्राप्र)। °**इवाइया** स्त्री [°**तिपातिकी**] क्रिया-विशेष, हिंसा से होने वाला कर्म-बन्ध; (नव १७)। °**इवाय** पुं [°**तिपात**] हिंसा; (उवा)। °**उ** पुं न [°**युस्**] ग्रन्थांश-विशेष, बारहवाँ पूर्व; (सम २५; २६)। °**पाण**, °**पाणु** पुंन [°**पान**] उच्छ्वास और निःश्वास; (धर्मस १०८; ६८)। °**याम** पुं [°**याम**] योगाङ्ग-विशेष—रेचक, कुम्भक और पूरक-नामक प्राणों को दमने का उपाय; (गउड) ।

पाणंतकर वि [**प्राणान्तकर**] प्राण-नाशक; (सुपा ६१४) ।

पाणंतिय वि [**प्राणान्तिक**] प्राण-नाश वाला; "पाणंतिया-वई पहु !" (सुपा ४५२) ।

पाणग पुंन [**पानक**] १ पेय-द्रव्य-विशेष; (पंचभा १; सुज्ज २० टी, कप्प)। २ वि. पान करने वाला (?); "ण पाणगो जं ततो अराणो" (धर्मसं ८२; ७८) ।

पाणद्धि स्त्री [**दे**] रथ्या, मुहल्ला; (दे ६, ३६) ।

पाणम अक [**प्र+अण्**] निःश्वास लेना, नीचे साँसना। पाणमंति; (सम २; भग) ।

पाणय न [**पानक**] देखो **पाण**=पान; (विसे २५७८) ।

पाणय पुं [**प्राणत**] स्वर्ग-विशेष, दशवाँ देव-लोक; (सम ३७; भग; कप्प)। २ विमानेन्द्रक, देव-विमान विशेष; (देवेन्द्र १३५)। ३ प्राणत स्वर्ग का इन्द्र; (ठा ४, ४)। ४ प्राणत देवलोक में रहने वाला देव; (अणु)।

पाणहा स्त्री [**उपानह्**] जूता; "पाणहाओ य छत्तं च णालीयं वालवीयणं" (सूअ १, ६, १८)।

पाणाअअ पुं [**दे**] श्वपच, चाण्डाल; (दे ६, ३८)।

पाणाम पुं [**प्राण**] निःश्वास; (भग)।

पाणामा स्त्री [**प्राणामी**] दीक्षा-विशेष; (भग ३, १)।

पाणाली स्त्री [**दे**] दो हाथों का प्रहार; (दे ६, ४०)।

पाणि पु [**प्राणिन्**] जीव, आत्मा, चेतन; (आचा; प्रासू १३६; १४४)।

पाणि पुं [**पाणि**] हस्त, हाथ; (कुमा; स्वप्न ५३; प्रासू ६०)। °**गहण** देखो °**ग्गहण**; (भवि)। °**ग्गह** पुं [°**ग्रह**] विवाह, (सुपा ३७३; धर्मवि १२३)। °**ग्गहण** न [°**ग्रहण**] विवाह, सादी; (विपा १, ६; स्वप्न ६३; भवि)।

पाणिअ न [**पानीय**] पानी, जल; (हे १, १०१; प्राप्र; पण्ह १, ३; कुमा)। °**धरिया** स्त्री [°**धरिका**] पनिहारी; "जियसत्तुस्स रण्णो पाणियघ(? ध)रियं सद्दावेइ" (णाया १, १२—पत्र १७५)। °**हारी** स्त्री [°**हारी**] पनिहारी, (दे ६, ५६; भवि)। देखो **पाणीअ**।

पाणिणि पुं [**पाणिनि**] एक प्रसिद्ध व्याकरण-कार ऋषि; (हे २, १४७)।

पाणिणीअ वि [**पाणिनीय**] पाणिनि-संबन्धी, पाणिनि का; (हे २, १४७)।

पाणी देखो **पाण**=(दे)।

पाणी स्त्री [**पानी**] वल्ली-विशेष; "पाणी सामावल्ली गुंजावल्ली य वत्थाणी" (पण्ण १—पत्र ३३)।

पाणीअ देखो **पाणिअ**; (हे १, १०१; प्रासू १०५)। °**धरी** स्त्री [°**धरी**] पनिहारी; (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।

पाणु पुन [**प्राण**] १ प्राण वायु; २ श्वासोच्छ्वास; (कम्म ५, ४०, औप; कप्प)। ३ समय-परिमाण-विशेष, "एगे ऊसासनीसासे एस पाणुत्ति वुच्चइ। सत्त पाणूणि से थोवे" (तंदु ३२)।

पात } देखो **पाय**=पात्र, (सूअ १, ४, २; पण्ह २, ५—
पाद } पत्र १४८)। °**बंधण** न [°**बन्धन**] पात्र बाँधने का वस्त्र-खण्ड, जैन मुनि का एक उपकरण; (पण्ह २, ५)।

पाद देखो **पाय**=पाद; (विपा १, ३)। °**सम** वि [°**सम**] गेय-विशेष; (ठा ७—पत्र ३६४)। °**ट्ठपय** न [°**ष्ठपद**] दृष्टिवाद-नामक बारहवें जेन आगम-ग्रन्थ का एक प्रतिपाद्य विषय; (सम १२८)।

पादु° देखो **पाउ**=प्रादुस्। पादुरेसए; (पि ३४१)। पादुरकासि; (सूअ १, २, २, ७)।

पादो देखो **पाओ**=प्रातस्; (सुज्ज १, ६)।

पादोसिय वि [**प्रादोषिक**] प्रदोष-काल का, प्रदोष-संबन्धी; (ओघ ६५८)।

पादव देखो **पायव**; (गा ५३७ अ)।

पाधन्न देखो **पाहन्न**; (धर्मसं ७८६)।

पाधार सक [**स्वा+गम्, पाद+धारय्**] पधारना। "पाधारह निअगेहे" (श्रा १६)।

पाबद्ध वि [**प्राबद्ध**] विशेष बँधा हुआ, पाशित; (निचू १६)।

पाभाइय } वि [**प्राभातिक**] प्रभात-संबन्धी; (ओघभा
पाभातिय } ३११; अनु ६, धर्मवि ५८)।

पाम सक [**प्र+आप्**] प्राप्त करना; गुजराती में 'पामवुं'। "कारावेइ पडिमं जिणाण जिअरोगदोसमोहाणं। सो अन्नभवे पामइ भवमत्थणं धम्मवररयणं॥" (रयण१२)। कर्म—पामिज्जइ; (सम्मत्त १४२)।

पामण्ण न [**प्रामाण्य**] प्रमाणता, प्रमाणपन; (धर्मसं ७५)।

पामद्दा स्त्री [**दे**] दोनो पैर से धान्य-मर्दन; (दे ६, ४०)।

पामन्न देखो **पामण्ण**, (विसे १४६६; चेइय १२४)।

पामर पु [**पामर**] कृषीवल, कर्षक, खेती का काम करने वाला गृहस्थ; "पामरगहवइसेआणकासया दोणया हलिआ" (पाअ, वज्जा १३४; गउड; दे ६, ४१; सुर १६, ५३)। २ हलकी जाति का मनुष्य; (कप्पू; गा २३८)। ३ मूर्ख, बेवकूफ, अज्ञानी; (गा १६४), "को नाम पामरं मुत्तु वच्चइ दुद्दमकद्दमे" (श्रा १२)।

पामा स्त्री [**पामा**] रोग-विशेष, खुजली, खाज; (सुपा २२७)।

पामाड पुं [**पद्माट**] पमाड, पमार, पवाड, चकवड, वृक्ष-विशेष; (पाअ)।

पामिच्च न [**दे. अपमित्य**] १ धार लेना, वापिस देने का वादा कर ग्रहण करना, २ वि. जो धार लिया जाय वह, (पिंड ६२; ३१६, आचा, ठा ३, ४; ६; औप; पण्ह २, ५; पत्र १२५, पंचा १३, ५; सुपा ६४३)।

पामुक्क वि [**प्रमुक्त**] परित्यक्त; (पाअ; स ६५७)।

पामूल न [**पादमूल**] पैर का मूल भाग, पाँव का अग्र भाग; (पउम ३, ६; सुर ८, १६६; पिंड ३२८)। देखो **पाय-मूल**=पादमूल।

पामोक्ख देखो **पमुह**=प्रमुख, (गाया १, ५; ८; महा)।

पामोक्ख पुं [**प्रमोक्ष**] मुक्ति, छुटकारा, (उप ६४८ टी)।

पाय पुं [**दे**] १ रथ-चक्र, रथ का पहिया, (दे ६, ३७)। २ फणी, साँप; (षड्)।

पाय पुं [**पाक**] १ पचन-क्रिया; २ रसोई; (प्राकृ १६; उप ७२८ टी)।

पाय देखो **पाव**; (चंड)।

पाय पुं [**पात**] १ पतन, (पंचा २, २५; से १, १६)। २ संवन्ध; "पुणो पुणो तरलदिट्ठिपाएहिं" (सुर ३, १३८)।

पाय पुं [**पाय**] पान, पीने की क्रिया; (श्रा २३)।

पाय पुं [**पाद**] १ गमन, गति; (श्रा २३)। २ पैर, चरण, पाँव; "चलणा कमा य पाया" (पाअ; गाया १, १)। ३ पद्य का चौथा हिस्सा; (हे ३, १३४; पिंग)। ४ किरण, "अंसू रस्सी पाया" (पाअ; अजि २८)। ५ सानु, पर्वत का कटक; (पाअ)। ६ एकाशन तप, (संबोध ५८)। ७ छः अंगुलों का एक नाप; (इक)। °**कंच-णिया** स्त्री [°**काञ्चनिका**] पैर प्रचालन का एक सुवर्ण-पात्र; (राज)। °**कंबल** पुंन [°**कम्बल**] पैर पोंछने का वस्त्र-खण्ड; (उत्त १७, ७)। °**कुक्कुड** पु [°**कुक्कुट**] कुक्कुट-विशेष, (गाया १, १७ टी—पत्र २३०)। °**घाय** पुं [°**घात**] चरण-प्रहार; (पिंग)। °**चार** पुं [°**चार**] पैर से गमन, (गाया १, १)। °**चारि** वि [°**चारिन्**] पैर से यातायात करने वाला, पाद-विहारी, (पउम ६१, १६)। °**जाल**, °**जालग** न [°**जाल**, °**क**] पैर का आभूषण-विशेष; (औप; अजि ३१; पण्ह २, ५)। °**त्ताण** न [°**त्राण**] जूता, पगरखी, (दे १, ३३)। °**पलंब** पु [°**प्रलम्ब**] पैर तक लटकने वाला एक आभूषण; (गाया १, १—पत्र ५३)। °**पीढ** देखो °**वीढ**; (गाया १, १; महा)। °**पुंछण** न [°**प्रोञ्छन**] रजोहरण, जैन साधु का एक उपकरण; (आचा, ओघ ५११, ७०६; भग; उवा)। °**प्पडण** न [°**पतन**] पैर में गिरना, प्रणाम-विशेष, (पउम ६३, १८)। °**मूल** न [°**मूल**] १ देखो **पामूल**;(कस)। २ मनुष्यों की एक साधारण जाति, नर्तकों की एक जाति, "समागयाइं पायमूलाइं", "पुलइज्जमाणो पायमूलेहिं पत्तो रहसमीवे", "पणच्चियाइं पायमूलाइं", "सद्दाविआइं पायमूलाइ", "पणच्चतेहिं पायमूलेहिं" (स ७२१; ७२२; ७३४)। °**लेहणिआ** स्त्री [°**लेखनिका**] पैर पोंछने का जैन साधु का एक काष्ठ-मय उपकरण; (ओघ ३६)। °**वंदय** वि [°**वन्दक**] पैर पर गिर कर प्रणाम करने वाला; (गाया १, १३)। °**वडण** न [°**पतन**] पैर में गिरना; प्रणाम-विशेष; (हे १, २७०; कुमा; सुर २, १०६)। °**वडिया** स्त्री [°**वृत्ति**] पाद-पतन, पैर छूना, प्रणाम-विशेष; "पायवडिआए खेमकुसलं पुच्छंति" (गाया १, २; सुपा २५)। °**विहार** पु [°**विहार**] पैर से गति; (भग)। °**वीढ** न [°**पीठ**] पैर रखने का आसन; (हे १, २७०; कुमा; सुपा ६८)। °**सीसग** न [°**शीर्षक**] पैर के ऊपर का भाग; (राय)। °**ाउलअ** न [°**ाकुलक**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

पाय देखो **पत्त**=पात्र; (आचा; औप; ओघभा ३६; १७४)। °**केसरिआ** स्त्री [°**केसरिका**] जैन साधुओं का एक उपकरण, पात्र-प्रमार्जन का कपड़ा; (ओघ ६६८; विसे २५५२ टी)। °**ट्ठवण**, °**ठवण** न [°**स्थापन**] जैन मुनिओं का एक उपकरण, पात्र रखने का वस्त्र-खण्ड, (विसे २५५२ टी; ओघ ६६८)। °**णिज्जोग**, °**निज्जोग** पुं [°**निर्योग**] जैन साधु का यह उपकरण-समूह;—पात्र, पात्रवन्ध, पात्रस्थापन, पात्र-केशरिका, पटल, रजस्त्राण और गुच्छक; (पिंड २६; बृह ३; विसे २५५२ टी)। °**पडिमा** स्त्री [°**प्रतिमा**] पात्र-संवन्धी अभिग्रह—प्रतिज्ञा-विशेष; (ठा ४, ३)। देखो **पाद**=पात्र।

पाय (अप) देखो **पत्त**=प्राप्त, (पिंग)।

पाय अ [**प्रायस्**] प्रायः, बहुत कर के; "पायप्पाणा वणेइ त्ति" (पिंड ४४३)।

°**पाय** पु.व. [°**पाद**] पूज्य; "संथुआ अजिअसंतिपायया" (अजि ३४)।

पायए देखो **पा**=पा।

पायं देखो **पाय**°, (स ७६१; सुपा २८, ५६६; श्रावक ७३)।

पायं अ [**प्रातस्**] प्रभात; (सूअ १, ७, १४)।

पायंगुट्ठ पुं [**पादाङ्गुष्ठ**] पैर का अंगूठा, (गाया १, ८)।

पायंदुय पु [**पादान्दुक**] पैर बाँधने का काष्ठमय उपकरण, (विपा १, ६—पत्र ६६)।

पायक देखो **पाइक**, (सम्मत्त १७६)।

पायक्खिण्ण न [**प्रादक्षिण्य**] प्रदक्षिणा, (पउम ३२, ६२)।

पायग न [**पातक**] पाप; (श्रावक २४८)।

पायच्छित्त पुंन [**प्रायश्चित्त**] पाप-नाशन कर्म, पाप-क्षय करने वाला कर्म; "पारंचिओ नाम पायच्छित्तो संवुत्तो" (सम्मत्त १४४; उवा; ओप, नव २६)।

पायड देखो **पागड**=प्र+कटय्। पायडइ; (भवि)। वकृ—**पायडंत**; (सुपा २५६)। कवकृ—**पायडिज्जंत**; (गा ६८५)। हेकृ—**पायडिउं**; (कुप्र १)।

पायड न [**दे**] अंगण, आँगन; (दे ६, ४०)।

पायड देखो **पागड**=प्रकट; (हे १, ४४; प्राप्र, ओघ ७३; जी २२; प्रासू ६४)।

पायड देखो **पागड**=प्राकृत; " अहंपि दाव दिअसे णअरं परिब्भमिअ अलद्धभोया पाअडगणिआ विअ रत्तिं पस्सदो सइदु आअच्छामि " (अभि २६)।

पायड वि [**प्रावृत**] आच्छादित, (विसे २५७६ टी)।

पायडिअ वि [**प्रकटित**] व्यक्त किया हुआ; (कुप्र ४; से १, ५३; गा १६६; २६०; गउड; स ४६८)।

पायडिल्ल वि [**प्रकट**] खुला; (वज्जा १०८)।

पायण न [**पायन**] पिलाना, पान कराना; (णाया १, ७)।

पायत्त न [**पादात**] पदाति-समूह, प्यादों का लश्कर; (उत्त १८, २; ओप; कप्प)। °**णिय** न [°**नीक**] पदाति-सैन्य; (पि ८०)।

पायप्पहण पुं [**दे**] कुक्कुट, मुर्गा, (दे ६, ४५)।

पायय न [**पातक**] पाप; (अच्चु ४३)।

पायय देखो **पाव**=पाप, (पाअ)।

पायय देखो **पागड**; (हे १, ६७)।

पायय देखो **पायव**; (से ६, ७)।

पायय देखो **पावय**=पावक, (अभि १२५)।

पायय देखो **पाय**=पाद; (कप्प)।

पायरास पु [**प्रातराश**] प्रातःकाल का भोजन, जल-पान, जलखवा; (आचा; णाया १, ८)।

पायल न [**दे**] चक्षु, आँख; (दे ६, ३८)।

पायव पु [**पादप**] वृक्ष, पेड, (पाअ)।

पायव्व देखो **पा**=पा।

पायस पुन [**पायस**] दूध का मिष्टान्न, खीर, "पायसो खीरी" (पाअ, सुपा ४३८)।

पायसो अ [**प्रायशस्**] प्रायः, वहुत कर; (उप ४४६, पचा ३, २७)।

पायार पु [**प्राकार**] किला, कोट, दुर्ग; (पाअ; हे १, २६८; कुमा)।

पायाल न [**पाताल**] रसा-तल, अधो भुवन; (हे १, १८०; पाअ)। °**कलश** पुं [°**कलश**] समुद्र के मध्य में स्थित कलशाकार वस्तु; (अणु)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष; (पउम ४५, ३६)। °**मंदिर** न [°**मन्दिर**] पाताल-स्थित गृह; (महा)। °**हर** न [°**गृह**] वही अर्थ; (महा)।

पायालंकारपुर न [**पाताललङ्कापुर**] पाताल-लंका, रावण की राजधानी; " पायालंकारपुरं सिग्घं पत्ता भउव्विग्गा " (पउम ६, २०१)।

पायावच्च न [**प्राजापत्य**] अहोरात्र का चौदहवाँ मुहूर्त; (सम ५१)।

पायाविय वि [**पायित**] पिलाया हुआ; (पउम ११, ४१)।

पायाहिण न [**प्रादक्षिण्य**] १ वेष्टन; (पव ६१)। २ दक्षिण की ओर; " पायाहिणेण तिहि पंतिआहिं झाएह लद्धिपए " (सिरि १६६)।

पायाहिणा देखो **पयाहिणा**; " पायाहिण करिंतो " (उत्त ६, ५६, सुख ६, ५६)।

पार अक [**शक्**] सकना, करने में समर्थ होना। **पारइ**, **पारेइ**; (हे ४, ८६; पाअ)। वकृ—**पारंत**; (कुमा)।

पार सक [**पारय्**] पार पहुँचना, पूर्ण करना। पारेइ; (हे ४, ८६, पाअ)। हेकृ—**पारित्तए**; (भग १२, १)।

पार पुन [**पार**] १ तट, किनारा; (आचा)। २ पर्ला किनारा; " परतीरं पारं " (पाअ), " किह म्ह होही भवजलहिपारं " (निसा ५)। ३ परलोक, आगामी जन्म; ४ मनुष्य-लोक-भिन्न नरक आदि; (सूअ १, ६, २८)। ५ मोक्ष, मुक्ति, निर्वाण; " पारं पुणणुत्तरं वुहा विंति " (बृह ४)। °**ग** वि [°**ग**] पार जाने वाला, (ओप; सुपा २५४)। °**गय** वि [°**गत**] १ पार-प्राप्त; (भग, ओप)। २ पुं. जिन-देव, भगवान् अर्हन्; (उप १३२ टी)। °**गामि** वि [°**गामिन्**] पार पहुँचने वाला; (आचा; कप्प; ओप)। °**पाणग** न [°**पानक**] पेय द्रव्य-विशेष; (णाया १, १७)। °**विउ** वि [°**विद्**] पार को जानने वाला; (सूअ २, १, ६०)। °**भोय** वि [°**भोग**] पार-प्रापक; (कप्प)।

पार देखो **पायार**; (हे १, २६८; कुमा)।

पारंक न [**दे**] मदिरा नापने का पात्र, (दे ६, ४१)।

पारंगम वि [**पारगम**] १ पार जाने वाला, २ पार-गमन; (आचा)।

पारंगय वि [**पारंगत**] पार-प्राप्त, (कुप्र २१)।

पारंचि वि [**पाराञ्चि**] सर्वोत्कृष्ट—दशम—प्रायश्चित्त करने वाला; "पारंचीणं दोण्हवि" (बृह ४)।

पारंचिय न [**पाराञ्चिक**] १ सर्वोत्कृष्ट प्रायश्चित्त, तप-विशेष से अतिचारों की पार-प्राप्ति, (ठा ३, ४—पत्र १६२; औप)। २ वि. सर्वोत्कृष्ट प्रायश्चित्त करने वाला; (ठा ३, ४)।

पारंचिय [**पाराञ्चित**] ऊपर देखो, (कस; बृह ४)।

पारंपज्ज न [**पारम्पर्य**] परम्परा; (रंभा १५)।

पारंपर पुं [**दे**] राक्षस; (दे ६, ४४)।

पारंपर, **पारंपरिय** न [**पारम्पर्य**] परम्परा, (पउम २१, ८०; आरा १६; धर्मसं १११८; १३१७), "आयरियपारंपर्ये (? रिए) ण आगयं" (सूअनि १२७—पृष्ठ ४८७)।

पारंपरिय वि [**पारम्परिक**] परंपरा से चला आता, (उप ७२८ टी)।

पारंभ सक [**प्र+रभ्**] १ आरम्भ करना, शुरू करना। २ हिंसा करना, मारना। ३ पीड़ा करना। पारंभेमि; (कुप्र ७०)। कवकृ—"तण्हाए **पारज्झमाणा**" (औप)।

पारंभ पुं [**प्रारम्भ**] शुरू, उपक्रम; (विसे १०२०; पव १६६)।

पारंभिय वि [**प्रारब्ध**] आरब्ध, उपक्रान्त, (धर्मवि १४४, सुर २, ७७; १२, १५६; सुपा ५५)।

पारकेर, **पारक्क** वि [**परकीय**] पर का, अन्यदीय; (हे १, ४४; २, १४८; कुमा)।

पारज्झमाण देखो **पारंभ**=प्र+रभ्।

पारण, **पारणग**, **पारणय** न [**पारण**, °**क**] व्रत के दूसरे दिन का भोजन, तप की समाप्ति के अनन्तर का भोजन; (सण; उवा, महा)।

पारणा स्त्री [**पारणा**] ऊपर देखो। °**इत्त** वि [°**वत्**] पारण वाला; (पंचा १२, ३५)।

पारतंत न [**पारतन्त्र्य**] परतन्त्रता, पराधीनता; (उप २५२; पंचा ६, ४१; ११, ७)।

पारत्त अ [**परत्र**] परलोक में, आगामी जन्म में; "पारत्त बिइज्जओ धम्मो" (पउम ५, १६३)।

पारत्त वि [**पारत्र**, **पारत्रिक**] पारलौकिक, आगामी जन्म से संबन्ध रखने वाला; "इत्तो पारत्तहियं ता कीरउ देव ! वंकचूलिस्स" (धर्मवि ६०; ओघ ६२; स २४६)।

पारत्ति स्त्री [**दे**] कुसुम-विशेष; (गउड; कुमा)।

पारत्तिय वि [**पारत्रिक**] देखो **पारत्त**=पारत्र; (स ७०७)।

पारदारिय वि [**पारदारिक**] परस्त्री-लम्पट; (णाया १, १८—पत्र २३६)।

पारद्ध वि [**प्रारब्ध**] १ जिसका प्रारम्भ किया गया हो वह; "पारद्धा य विवाहनिमित्तं सयला सामग्गी" (महा)। २ जो प्रारम्भ करने लगा हो वह; "तओ अवरण्हसमए पारद्धो नच्चिउं" (महा)।

पारद्ध न [**दे**] पूर्व-कृत कर्म का परिणाम, प्रारब्ध; २ वि. आखेटक, शिकारी, ३ पीडित, (दे ६, ७७)।

पारद्धि स्त्री [**पापर्द्धि**] शिकार, मृगया; (हे १, २३५; कुमा; उप पृ २५७; सुपा २१६)।

पारद्धिअ वि [**पापर्द्धिक**] शिकारी, शिकार करने वाला; गुजराती में 'पारधी'; "मयणमहापारद्धियनिसायवाणावलीविद्धा" (सुपा ७१; मोह ७६)।

पारमिया स्त्री [**पारमिता**] बौद्ध-शास्त्र-परिभाषित प्राणातिपात-विरमणादि शिक्षा-व्रत, अहिंसा आदि व्रत; (धर्मसं ६८८)।

पारम्म न [**पारम्य**] परमता, उत्कृष्टता, (अज्झ ११४)।

पारय पुं [**पारद**] धातु-विशेष, पारा, रस-धातु। °**मद्दण** न [°**मर्दन**] आयुर्वेद-विहित रीति से पारा का मारण, रसायण-विशेष; "अंग-कढिणयाहेउं च सेवंति पारयमद्दणं" (स २८६)। २ वि. पार-प्रापक; (श्रु १०६)।

पारय न [**दे**] सुरा-भाण्ड, दारू रखने का पात्र, (दे ६, ३८)।

पारय देखो **पार-ग**, (कप्प; भग; अंत)।

पारय पुं [**प्रावारक**] १ पट, वस्त्र, २ वि. आच्छादक; (हे १, २७१; कुमा)।

पारलोइअ वि [**पारलौकिक**] परलोक-संबन्धी, आगामी जन्म से संबन्ध रखने वाला, (पण्ह १, ३; ४; सुअ २, ७, २३, कुप्र ३८१; सुपा ४६१)।

पारवस्स न [**पारवश्य**] परवशता, पराधीनता; (रयण ८१)।

पारस पु [**पारस**] १ अनार्य देश-विशेष, फारस देश, ईरान; (इक)। २ मणि-विशेष, जिसके स्पर्श से लोहा सुवर्ण हो जाता है; (संबोध ५३)। ३ पारस देश में रहने वाली मनुष्य-जाति; (पण्ह १, १)। °**उल** न [°**कुल**] १ ईरान देश; "भरिऊण भंडस्स वहणाइं पत्तो पारसउलं", "इओ य सो अयलो पारसउले विढविय बहुयं दव्वं" (महा)। २ वि. पारस देश का, ईरान का निवासी; "मागहयपारसउला

कालिगा सीहला य तहा" (पउम ६६, ५५) । °क्कूल न [°कूल] ईरान का किनारा, ईरान देशकी सीमा, (आवम)।

पारसिय वि [**पारसिक**] फारस देश का, "सहसा पारसिय-सुओ समागओ रायपयमूले", "पारसियकीरमिहुणं" (सुपा २६७; ३६०) ।

पारसी स्त्री [**पारसी**] १ पारस देश की स्त्री; (औप; णाया १, १—पत्र ३७; इक) । २ लिपि-विशेष, फारसी लिपि; (विसे ४६४ टी) ।

पारसीअ वि [**पारसीक**] फारस देश का निवासी; (गउड)।

पाराई स्त्री [**दे**] लोह-कुशी-विशेष, लोहे की दंडाकार छोटी वस्तु, "चडवेलावज्झपट्टपाराइं(? ई)छिन्नकसलयवरत्तनेत्तप्पहा-रसयतालियगमंगा" (पराह २, ३) ।

पाराय देखो **पारावय**, (प्राप्र) ।

पारायण न [**पारायण**] १ पार-प्राप्ति; (विसे ५६५) । २ पुराण-पाठ-विशेष; "अधीउ(? य)समत्तपरायणो साखा-पारओ जाओ" (सुख २, १३) ।

पारावय देखो **पारेवय**; (पाअ, प्राप्र; गा ६४; कप्प ५६ टि)।

पारावर पुं [**दे**] गवाक्ष, वातायन, (दे ६, ४३) ।

पारावार पुं [**पारावार**] समुद्र, सागर; (पाअ; कुप्र ३७०)।

पाराविअ वि [**पारित**] जिसको पारण कराया गया हो वह; (कुप्र २१२) ।

पारासर पुं [**पाराशर**] १ ऋषि-विशेष; (सुअ १, ३, ४, ३) । २ न. गोत्र-विशेष, जो वशिष्ठ गोत्र की एक शाखा है, ३ वि. उस गोत्र में उत्पन्न; (ठा ७—पत्र ३६०)। ४ पु. भिक्षुक; ५ कर्म-त्यागी संन्यासी, "अंतेवि पारासरा अत्थि" (सुख २, ३१) ।

पारिओसिय वि [**पारितोषिक**] तुष्टि-जनक दान, प्रसन्नता-सूचक दान, पुरस्कार; (सम्मत्त १२२; स १६३; सुर १६, १८२; विचार १७१) ।

पारिच्छा देखो **परिच्छा**; "वयपरिणामे चिंता गिहं समप्पेमि तासि पारिच्छा" (उप १७३; उप पृ २७५) ।

पारिच्छेज्ज देखो **परिच्छेज्ज**; (णाया १, ८—पत्र १३२)।

पारिजाय देखो **पारिय**=पारिजात; (कुमा) ।

पारिट्ठावणिया स्त्री [**पारिष्ठापनिकी**] समिति-विशेष, मल आदि के उत्सर्ग में सम्यक् प्रवृत्ति; (सम १०; औप, कप्प) ।

पारिडि स्त्री [**प्रावृति**] प्रावरण, वस्त्र, कपडा; "विक्किणइ माहमासम्मि पामरो पारिडिं वइल्लेण" (गा २३८) ।

पारिणामिअ देखो **परिणामिअ**= पारिणामिक, (अणु; कम्म ४, ६६) ।

पारिणामिआ) देखो **परिणामिआ**, (आव १; णाया १,
पारिणामिगी) १—पत्र ११) ।

पारितावणिया स्त्री [**पारितापनिकी**] दूसरे को परिताप—दुःख—उपजाने से होने वाला कर्म-बन्ध; (सम १०) ।

पारितावणी स्त्री [**पारितापनी**] ऊपर देखो; (नव १७)।

पारितोसिअ देखो **पारिओसिय**, (नाट; सुपा २७; प्रामा)।

पारित्त देखो **पारत्त**=परत्र; "पारित्त विइज्जओ धम्मो" (तदु ५६) ।

पारिप्पव पु [**पारिप्लव**] पक्षि-विशेष; (पराह १, १—पत्र ८)।

पारिभद्द पुं [**पारिभद्र**] वृक्ष-विशेष, फरहद का पेड़; (कप्पू) ।

पारिय वि [**पारित**] पूर्ण किया हुआ, (रयण १६) ।

पारिय पुं [**पारिजात**] १ देव-वृक्ष विशेष, कल्प-तरु विशेष; २ फरहद का पेड़, "कप्पूरपारियाण य अहिअयरो मालईगंधो" (कुमा ५, १३) । ३ न. पुष्प-विशेष, फरहद का फूल जो रक्त वर्ण का और अत्यन्त शोभायमान होता है; "सुहिए ण विढप्पइ पारियच्छि सुंडीरहं खंडइ वसइ लच्छि" (भवि) ।

पारियत्त पुं [**पारियात्र**] देश-विशेष; "परिब्भमंतो पत्तो पारियत्तविसयं" (कुप्र ३६६) ।

पारियाय देखो **पारिय**=पारिजात; (सुपा ७६; से ६, ५८; महा; स ७५६) ।

पारियावणिया देखो **पारितावणिया**; (ठा २, १—पत्र ३६) ।

पारियावणिया देखो **परियावणिगा**, (स ५५१) ।

पारियासिय वि [**परिवासित**] बासी रखा हुआ; (कस) ।

पारिव्वज्ज न [**पारिव्राज्य**] संन्यासिपन, संन्यास, (पउम ८२, २४) ।

पारिव्वाई स्त्री [**पारिव्राजी, परिव्राजिका**] संन्यासिनी; (उप पृ २७६) ।

पारिव्वाय वि [**पारिव्राज**] संन्यासि-संबन्धी; (राज) ।

पारिसज्ज वि [**पारिषद्य**] सभ्य, सभासद; (धर्मवि ६) ।

पारिसाडणिया स्त्री [**पारिशाटनिकी**] परिशाटन—परि-त्याग—से होने वाला कर्म-बन्ध; (आव ४) ।

पारिहच्छी स्त्री [**दे**] माला, (दे ६, ४२) ।

पारिहट्टी स्त्री [**दे**] १ प्रतिहारी; २ आकृष्टि, आकर्षण, ३ चिर-प्रसूता महिषी, बहुत देर से व्यायी हुई भैंस; (दे ६, ७२) ।

पारिहत्थिय वि [**पारिहस्तिक**] स्वभाव से निपुण; (ठा ६—पत्र ४५१) ।

पारिहारिय वि [**पारिहारिक**] तपस्वी निशेष, परिहार-नामक व्रत करने वाला; (कस) ।

पारिहासय न [**पारिहासक**] कुल-विशेष, जैन मुनिओं के एक कुल का नाम; (कप्प) ।

पारी स्त्री [**दे**] दोहन-भाण्ड, जिस में दोहन किया जाता है वह पात्र-विशेष; (दे ६, ३७; गउड ५७७) ।

पारीण वि [**पारीण**] पार-प्राप्त; " धीवरसत्थाण पारीणो " (धर्मवि १३; सिरि ४८६; सम्मत्त ७५) ।

पारुअग्ग पुं [**दे**] विश्राम; (दे ६, ४४) ।

पारुअल्ल पुं [**दे**] पृथुक, चिउड़ा; (दे ६, ४४) ।

पारुसिय देखो **फारुसिय**; (आचा १, ६, ४, १ टि) ।

पारुहल्ल वि [**दे**] मालीकृत, श्रेणी रूप से स्थापित, "पाली-बंधं च पारुहल्लोम्मिं " (दे ६, ४५) ।

पारेवई स्त्री [**पारापती**] कबूतरी, कबूतर की मादा; (विपा १, ३) ।

पारेवय पुं [**पारापत**] १ पक्षि-विशेष, कबूतर; (हे १, ८०; कुमा; सुपा ३२८) । २ वृक्ष-विशेष; ३ न. फल-विशेष; (पगण १७) ।

पारोक्ख वि [**पारोक्ष**] परोक्ष-विषयक, परोक्ष-संबन्धी; (धर्मसं ५०२) ।

पारोह देखो **परोह**; (हे १, ४४; गा ५७५; गउड) ।

पारोहि वि [**प्ररोहिन्**] प्ररोह वाला, अंकुर वाला; (गउड) ।

पाल सक [**पालय्**] पालन करना, रक्षण करना । पालेइ; (भग; महा) । वकृ—**पालयंत, पालंत, पालिंत, पालेमाण**; (सुर २, ७१; सं ४६; महा; औप; कप्प) । संकृ—**पालइत्ता, पालित्ता, पालेऊण**; (कप्प; महा), **पालेवि** (अप); (हे ४, ४४१) । कृ—**पालियव्व, पालेयव्व**; (सुपा ४३५; ३७६; महा) ।

पाल देखो **पार=**पारय् । संकृ—**पालइत्ता** ; (कप्प) ।

पाल पुं [**दे**] १ कलवार, शराब बेचने वाला; २ वि. जीर्ण, फटा-टूटा; (दे ६, ७५) ।

पाल पुंन [**पाल**] आभूषण-विशेष; " मुरविं वा पालं वा तिसरयं वा कडिसुत्तगं वा " (औप) । २ वि. पालक, पालन-कर्ता; " जो सयलसिंधुसायरहो पालु " (भवि) । स्त्री—°**ला**; (वव ४) ।

पालंक न [**पालङ्क्य**] तरकारी-विशेष, पालक का शाक; (बृह १) ।

पालंगा स्त्री [**पालङ्क्या**] ऊपर देखो; (उत्रा) ।

पालंत देखो **पाल=**पालय् ।

पालंब पुं [**प्रालम्ब**] १ अवलम्बन, सहारा; "पावइ तड-विडविपालंबं" (सुपा ६३५) । २ गले का आभूषण-विशेष; (औप; कप्प) । ३ दीर्घ, लम्बा; (औप; राय) । ४ पुन. ध्वजा के नीचे लटकता वस्त्राञ्चल; " ओऊलं पालंबं " (पाअ) ।

पालक्का स्त्री [**पालक्या**] देखो **पालंगा**; " वत्थुलपोरग-मज्जारपोइवल्ली य पालक्का " (पगण १—पत्र ३४) ।

पालग देखो **पालय**; (कप्प; औप; विसे २८५६; संति १; सुर ११, १०८) ।

पालण न [**पालन**] १ रक्षण; (महा; प्रासू ३) । २ वि. रक्षण-कर्ता; "धम्मस्स पालणी चेव" (संबोध १६; सं ६७) ।

पालद्दुह पु [**दे**] वृक्ष-विशेष; (उप १०३१ टी) ।

पालप्प पुं [**दे**] १ प्रतिसार; २ वि. विप्लुत; (दे ६, ७६) ।

पालय वि [**पालक**] १ रक्षक, रक्षण-कर्ता; (सुपा २७६; सार्ध १०) । २ पुं. सौधर्मेन्द्र का एक आभियोगिक देव; (ठा ८) । ३ श्रीकृष्ण का एक पुत्र; (पत्र २) । ४ भगवान् महावीर के निर्वाण के दिन अभिषिक्त अवंती (उज्जैन) का एक राजा; (विचार ४६२) । ५ देव-विमान विशेष; (सम २) ।

पालास पु [**पालाश**] पलाश-संबन्धी, २ न. पलाश वृक्ष का फल, किंशुक-फल; (गउड) ।

पालि स्त्री [**पालि**] १ तालाब आदि का बन्ध; (सुर १३, ३२, अंत १२, महा) । २ प्रान्त भाग; (गा ६४६) । देखो **पाली=**पाली ।

पालि स्त्री [**दे**] १ धान्य मापने का नाप; २ पल्योपम, समय का सुदीर्घ परिमाण-विशेष; (उत्त १८, २८; सुख १८, २८) ।

पालिआ स्त्री [**दे**] खड्ग-मुष्टि, तलवार की मूठ; (पाअ) ।

पालिआ देखो **पाली=**पाली; "उज्जाणपालियाहिं कविउत्तीहिं व बहुरसड्ढाहिं " (धर्मवि १३) ।

पालित्त पु [**पादलिप्त**] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य; (पिंड ४६८; कुप्र १७८) ।

पालित्ताण न [**पादलिप्तीय**] सौराष्ट्र देश का एक प्राचीन नगर, जो आजकल भी 'पालिताणा' नाम से प्रसिद्ध है, (कुप्र १७६)।

पालित्तिअ स्त्री [**दे**] १ राजधानी; २ मूल-नीवी; ३ भण्डार, निधि; ४ भंगी, प्रकार; (कप्पू)।

पालिय वि [**पालित**] रक्षित, (ठा १०, महा)।

पाली स्त्री [**पाली**] पंक्ति, श्रेणि, (गउड)। देखो **पालि**।

पाली स्त्री [**दे**] दिशा, (दे ६, ३७)।

पालीबंध पुं [**दे**] तालाव, सरोवर; (दे ६, ४५)।

पालीहम्म न [**दे**] वृति, वाड; (दे ६, ४५)।

पालेव पुं [**पादलेप**] पैर में किया हुआ लेप; (पिंड ५०३)।

पाव सक [**प्र+आप्**] प्राप्त करना। पावइ, (हे ४, २३९)। भवि—पाविहिसि; (पि ५३१)। कर्म—पाविज्जइ, (उव)। वकृ—**पावंत, पावत**; (पिंग; पउम १४, ३७)। कवकृ—**पावियंत, पावेज्जमाण**; (पण्ह १, १; अंत २०)। संकृ—**पाविऊण**; (पि ५८६)। हेकृ—**पत्तुं, पावेउं**; (हास्य ११६; महा)। कृ—**पावणिज्ज, पाविअव्व**; (सुर ६, १४२; स ६८६)।

पाव देखो **पव्वाल**=प्लावय्। पावेइ; (हे ४, ४१)।

पाव पुंन [**पाप**] १ अशुभ कर्म-पुद्‌गल, कुकर्म; (आचा; कुमा; ठा १; प्रासु २५), "जम्मंतरकए पावे पाणी मुहुत्तेण निद्दहे" (गच्छ १, ६)। २ पापी, अधर्मी, कुकर्मी; (पण्ह १, १; कुमा ७, ६)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] अशुभ कर्म; (आचा)। °**कम्मि** वि [°**कर्मिन्**] कुकर्म करने वाला; (ठा ७)। °**दंड** पुं [°**दण्ड**] नरकावास-विशेष; (देवेन्द्र २९)। °**पगइ** स्त्री [°**प्रकृति**] अशुभ कर्म-प्रकृति; (राज)। °**यारि** वि [°**कारिन्**] दुराचारी; (पउम ६३, ४३, महा)। °**समण** पुं [°**श्रमण**] दुष्ट साधु, (उत्त १७, ३, ४)। °**सुमिण** पुन [°**स्वप्न**] दुष्ट स्वप्न, (कप्प)। °**सुय** न [°**श्रुत**] दुष्ट शास्त्र; (ठा ६)।

पाव पुं [**दे**] सर्प, साँप, (दे ६, ३८)।

पाव (अप) देखो **पत्त**=प्राप्त; (पिंग)।

पावंस वि [**पापीयस्**] पापी, कुकर्मी; (ठा ४, ४—पत्र २६५)।

पावक्खालय न [**दे. पापक्षालक**] देखो **पाउक्खालय**; (स ७४१)।

पावग वि [**पावक**] १ पवित्र करने वाला, (राज)। पु. अग्नि, वह्न; (सुपा १४२)।

पावग वि [**प्रापक**] पहुँचाने वाला; (सुपा ५००)।

पावग देखो **पाव**=पाप; (आचा, धर्मसं ५४३)।

पावज्जा (अप) देखो **पव्वज्जा** ; (भवि)।

पावडण देखो **पाय-वडण**=पाद-पतन; (प्राप्र; कुमा)।

पावड्ढि देखो **पारद्धि**, (सिरि ११०८, १११०)।

पावण वि [**पावन**] पवित्र करने वाला; (अच्चु ४७; समु १५०)।

पावण न [**प्लावन**] १ पानी का प्रवाह, २ सरावोर करना, (पिंड २४)।

पावण न [**प्रापण**] १ प्राप्ति, लाभ; (सुर ४, १११; उप्पं ७)। २ योग की एक सिद्धि; 'पावणसत्तीए छिवइ मेरुसिरमंगुलीए मुणी" (कुप्र २७७)।

पावद्धि देखो **पारद्धि**; (धर्मवि १४८)।

पावय देखो **पाव**=पाप; (प्रासू ७५)।

पावय वि [**प्रावृत**] आच्छादित, ढका हुआ; (सूअ २, ७, ३)।

पावय पुंन [**दे**] वाद्य-विशेष, गुजराती में 'पावो'; (पउम ५७, २३)।

पावय देखो **पावग**=पावक; (उप ७२८ टी; कुप्र २८३; सुपा ४; पाअ)।

पावयण देखो **पवयण**; (हे १, ४४, उवा; णाया १, १३)।

पावयणि वि [**प्रवचनिन्**] सिद्धान्त का जानकार, सैद्धान्तिक; (चेइय १२८)।

पावयणिय वि [**प्रावचनिक**] ऊपर देखो; (सम ६०)।

पावरअ देखो **पावारय**; (स्वप्न १०४)।

पावरण न [**प्रावरण**] वस्त्र, कपड़ा; (हे १, १७५)।

पावरिय वि [**प्रावृत**] आच्छादित; (कुप्र ३८)।

पावस देखो **पाउस**; (कुप्र ११७)।

पावा स्त्री [**पापा**] नगरी-विशेष, जो आजकल भी विहार के पास पावापुरी के नाम से प्रसिद्ध है; (कप्प; ती ३; पंचा १६, १७, पव ३४, विचार ४६)।

पावाइ वि [**प्रवादिन्**] वाचाट, दार्शनिक; (सूअ २, ६, ११)।

पावाइअ वि [**प्राव्राजिक**] संन्यासी; (रयण २२)।

पावाइअ वि [**प्रावादिक**] देखो **पावाइ**; (आचा)।

पावाइअ, **पावादुय** वि [**प्रावादुक**] वाचाट, दार्शनिक; (सूअ १, १, ३, १३; २, २, ८०; पि २६५)।

पावार पु [**प्रावार**] १ रुँछा वाला कपड़ा; २ मोटा कम्बल; (पव ८४)।
पावारय देखो **पारय**=प्रावारक; (हे १, २७१, कुमा)।
पावालिआ स्त्री [**प्रपापालिका**] प्रपा पर नियुक्त स्त्री, (गा १६१)।
पावासु } वि [**प्रवासिन्, °क**] प्रवास करने वाला; (पि
पावासुअ } १०५; हे १, ६५; कुमा)।
पाविअ वि [**प्राप्त**] लब्ध, मिला हुआ; (सुर ३, १६; स ६८६)।
पाविअ वि [**प्रापित**] प्राप्त करवाया हुआ; (सण; नाट—मृच्छ २७)।
पाविअ वि [**प्लावित**] सरावोर किया हुआ, खूब भिजाया हुआ, (कुमा)।
पाविट्ठ वि [**पापिष्ठ**] अत्यन्त पापी; (उव ७२८ टी; सुर १, २१३; २, २०५; सुपा १६६; श्रा १४)।
पावीढ देखो **पाय-वीढ**; (पउम ३, १; हे १, २७०; कुमा)।
पावीयंस देखो-**पावंस**; (पि ४०६; ४१४)।
पावुअ वि [**प्रावृत**] आच्छादित; (सदि ४)।
पावेज्जमाण देखो **पाव**=प्र+आप्।
पावेस वि [**प्रावेश्य**] प्रवेशोचित, प्रवेश के लायक; (औप)।
पावेस पुं [**प्रावेश**] वस्त्र के दानों तरफ लटकता रुँछा; (णाया १, १)।
पास सक [**दृश्**] १ देखना। २ जानना। पासइ, पासेइ; (कप्प)। पासिमं='पश्य'; (आचा १, ३, ३, ५)। कर्म—पासिज्जइ; (पि ७०)। वकृ—**पासंत, पासमाण**; (स ७५; कप्प)। संकृ—**पासिउं, पासित्ता, पासित्ताणं, पासिया**; (पि ४६५; कप्प, पि ५८३; महा)। हेकृ—**पासित्तए, पासिउं**; (पि ५७८, ५७७)। कृ—**पासियव्व**; (कप्प)।
पास पु [**पार्श्व**] १ वर्तमान अवसर्पिणी-काल के तेईसवें जिन-देव; (सम १३; ४३)। २ भगवान् पार्श्वनाथ का अधिष्ठायक यक्ष; (संति ८)। ३ न. कन्धा के नीचे का भाग, पाँजर; (णाया १, १६)। ४ समीप, निकट; (सुर ४, १७६)। **°वच्चिज्ज** वि [**°पत्यीय**] भगवान् पार्श्वनाथ की परम्परा में संजात; (भग)।
पास पु [**पाश**] फाँसा, वन्धन-रज्जू; (सुर ४, ३३७; औप; कुमा)।
पास न [**दे**] १ आँख, २ दाँत; ३ कुन्त, प्रास, ४ वि. विशोभ, कुडौल, शोभा-हीन, (दे ६, ७५)। ५ अन्य वस्तु का अल्प-मिश्रण; "निच्चुन्नो तंवोलो पासेण विणा न होइ जह रंगो" (भाव २)।
°पास वि [**°पाश**] अपशद, निकृष्ट, जघन्य, कुत्सित; "एस पासंडियपासो किं करिस्सइ" (सम्मत्त १०२)।
पासंगिअ वि [**प्रासङ्गिक**] प्रसंग-सबन्धी, आनुषंगिक; (कुम्मा २७)।
पासंड न [**पाषण्ड**] १ पाखण्ड, असत्य धर्म, धर्म का ढोंग; (ठा १०; णाया १, ८, उवा, आव ६)। २ व्रत, (अणु)।
पासंडि } वि [**पाषण्डिन्, °क**] १ पाखंडी, लोक में
पासंडिय } पूजा पाने के लिए धर्म का ढोंग रचने वाला; (महानि ४; कुप्र २७६; सुपा ६६; १०६; १६२)। २ पु. व्रती, साधु, मुनि, "पव्वइए अणगारे पासंडे (? डी) चरग तावस भिक्खू। परिवाइए य समणे" (दसनि २—गाथा १६४)।
पासंदण न [**प्रस्यन्दन**] झरन, टपकना; (वृह १)।
पासग वि [**दर्शक**] देखने वाला; (आचा)।
पासग पुं [**पाशक**] १ फाँसा, वन्धन-रज्जु, (उप पृ १३; सुर ४, २५०)। २ पासा, जुआ खेलने का उपकरण-विशेष; (जं ३)।
पासग न [**प्राशक**] कला-विशेष; (औप)।
पासण न [**दर्शन**] अवलोकन, निरीक्षण; (पिंड ४७५; उप ६७७; ओघ ५४; सुपा ३७)।
पासणया स्त्री. ऊपर देखो; (ओघ ६३, उप १४८; णाया १, १)।
पासणिअ वि [**दे**] साक्षी; (दे ६, ४१)।
पासणिअ वि [**प्राश्निक**] प्रश्न-कर्ता; (सूअ १, २,२, २८; आचा)।
पासत्थ वि [**पार्श्वस्थ**] १ पार्श्व में स्थित, निकट-स्थित; (पउम ६८, १८, स २६७, सूअ १, १, २, ५)। २ शिथिलाचारी साधु; (उप ८३३ टी; णाया १, ५; ६;—पव २०६; सार्ध ८८)।
पासत्थ वि [**पाशस्थ**] पाश में फँसा हुआ, पाशित; (सूअ १, १, २, ५)।
पासल्ल न [**दे**] १ द्वार; (दे ६, ७६)। २ वि. तिर्यक्, वक्र; (दे ६, ७६; से ६, ६२; गउड)।
पासल्ल देखो **पास**=पार्श्व; (से ६, ३८; गउड)।

पासल्ल अक [**तिर्यञ्च्, पार्श्वाय्**] १ वक्र होना। २ पार्श्व घुमाना। "पासल्लंति महिहरा" (से ६, ४५)। वकृ—**पासल्लंत**; (से ६, ४१)।

पासल्लइअ देखो **पासल्लिअ**; (से ६, ७७)।

पासल्लि वि [**पार्श्विन्**] पार्श्व-शयित; " उत्ताणगपासल्ली नेसज्जी वावि ठाण ठाइत्ता " (पव ६७; पचा १८, १५)।

पासल्लिअ वि [**पार्श्वित, तिर्यक्त**] १ पार्श्व में किया हुआ, २ टेढा किया हुआ, (गउड; पि ५९५)।

पासवण न [**प्रस्रवण**] मूत्र, पेशाव, (सम १०; कस, कप्प; उवा; सुपा ६२०)।

पासाईय देखो **पासादीय**, (सम १३७; उवा)।

पासाकुसुम न [**पाशाकुसुम**] पुष्प-विशेष; "छप्पअ गम्मसु सिसिरं पासाकुसुमेहिं ताव, मा मरसु" (गा ८१९)।

पासाण पुं [**पाषाण**] पत्थर, (हे १, २६२; कुमा)।

पासाणिअ वि [**दे**] साची; (दे ६, ४१)।

पासाद देखो **पासाय**; (औप, स्वप्न ५६)।

पासादिय वि [**प्रसादित**] १ प्रसन्न किया हुआ। २ न प्रसन्न करना, (णाया १, ९—पत्न १६५)।

पासादीय वि [**प्रासादीय**] प्रसन्नता-जनक, (उवा; औप)।

पासादीय वि [**प्रासादित**] महल वाला, प्रासाद-युक्त; (सूत्र २, ७, १ टी)।

पासाय पुन [**प्रासाद**] महल, हर्म्य, (पात्र; पउम ८०, ४)। °**वडिंसय** पुं [°**ावतंसक**] श्रेष्ठ महल; (भग, औप)।

पासासा स्त्री [**दे**] भल्ली, छोटा भाला; (दे ६, १४)।

पासाव } **पासावय** } पु [**दे**] गवाक्ष, वातायन, (पड्; दे ६, ४३)।

पासि वि [**पार्श्विन्**] पार्श्वस्थ, शिथिलाचारी साधु; "पासिसारिच्छो" (संबोध ३५)।

पासिद्धि देखो **पसिद्धि**; (हे १, ४४)।

पासिम वि [**द्रश्य**] दर्शनीय, ज्ञेय; (आचा)।

पासिमं देखो **पास**=दृश्।

पासिय वि [**पाशिक**] फाँसे में फँसाने वाला, (पण्ह १, २)।

पासिय वि [**स्पृष्ट**] छुआ हुआ; (आचा—पासिम)।

पासिय वि [**पाशित**] पाश-युक्त; (गज)।

पासिया स्त्री [**पाशिका**] छोटा पाश, (महा)।

पासिया देखो **पास**=दृश्।

पासिल्ल वि [**पार्श्विक**] १ पास में रहने वाला, २ पार्श्वशायी, (पव ५४; तंदु १३; भग)।

पासी स्त्री [**दे**] चूडा, चोटी; (दे ६, ३७)।

पासु देखो **पंसु**; (हे १, २९; ७०)।

पासुत्त देखो **पसुत्त**; (गा ३२४; सुर २, ८२, ६, १६८; हे १, ४४; कुप्र २५०)।

पासेइय वि [**प्रस्वेदित**] प्रस्वेद-युक्त; (भवि)।

पासेल्लिय वि [**पार्श्ववत्**] पार्श्व-शायी, (राज)।

पासोअल्ल देखो **पासल्ल**=तिर्यञ्च्। वकृ—**पासोअल्लंत**; (से ६, ४७)।

पाह (अप) सक [**प्र+अर्थय्**] प्रार्थना करना। पाहसि, (पि ३५९)।

पाहंड देखो **पासंड**, (पि २६५)।

पाहण देखो **पाहाण**; " महतं पाहण तयं " (श्रा १२), " चउकोणा समतीरा पाहणबद्धा य निम्मविया " (धर्मवि २३, महा, भवि)।

पाहणा देखो **पाणहा**; " तेगिच्छं पाहणा पाए " (दस ३, ४)।

पाहण्ण } **पाहन्न** } न [**प्राधान्य**] प्रधानता, प्रधानपन; (प्रासू ३२; ओघ ७७२)।

पाहर सक [**प्रा+हृ**] प्रकर्ष से लाना, ले आना। पाहराहि; (सूत्र, ४, २, ९)।

पाहरिय वि [**प्राहरिक**] पहरेदार; (रा ५२५; सुपा ३१२; ४५५)।

पाहाउय देखो **पाभाइय**, (सुपा ३५; ५५९)।

पाहाण पु [**पाषाण**] पत्थर, (हे १, २६२; महा)।

पाहिज्ज देखो **पाहेज्ज**; (पात्र)।

पाहुड न [**प्राभृत**] १ उपहार, भेंट; (हे १, १३१, २०६, विपा १, ३; कर्पूर २७; कप्पू; महा; कुमा)। २ जैन ग्रन्थांश-विशेष, परिच्छेद, अध्ययन, (सुज्ज १, २, ३)। ३ प्राभृत का ज्ञान, (कम्म १, ७)। °**पाहुड** न [°**प्राभृत**] १ ग्रन्थांश-विशेष, प्राभृत का भी एक अंश, (सुज्ज १, १; २)। २ प्राभृतप्राभृत का ज्ञान; (कम्म १, ७)। °**पाहुडसमास** पुन [°**प्राभृतसमास**] अनेक प्राभृतप्राभृतो का ज्ञान; (कम्म १, ७)। °**समास** पुंन [°**समास**] अनेक प्राभृतो का ज्ञान, (कम्म १, ७)।

पाहुडिआ स्त्री [**प्राभृतिका**] १ भेंट, उपहार; (पव ६७)। २ जैन मुनि की भिक्षा का एक दोष, विवक्षित समय से पहले–

मन में संकल्पित भिक्षा, उपहार रूप से दी जाती भिक्षा, (पंचा १३, ५; पव ६७, ठा ३, ४—पत्र १५६)।

पाहुण वि [**दे**] विक्रेय, बेचने की वस्तु; (दे ६, ४०)।

पाहुण
पाहुणग
पाहुणय } पुं [**प्राघुण, °क**] अतिथि, महमान; (ओघभा ५३; सुर ३, ८५, महा; सुपा १३; कुप्र ४२; औप, काल)।

पाहुणिअ पुं [**प्राघुणिक**] अतिथि, महमान; (काप्र २२४)।

पाहुणिअ पुं [**प्राघुनिक**] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष; (ठा २, ३)।

पाहुणिज्ज वि [**प्राहवनीय**] प्रकृष्ट संप्रदान, जिसको दान दिया जाय वह, (णाया १, १ टी—पत्र ४)।

पाहुण्ण
पाहुण्णग
पाहुण्णय } न [**प्राघुण्य, °क**] आतिथ्य, अतिथि का सत्कार; "कयं मंजरीए पाहुण(? ण्ण)ं" (कुप्र ४२; उप १०३१ टी)।

पाहेअ न [**पाथेय**] रास्ते में व्यय करने की सामग्री, मुसाफिरी में खाने का भोजन, (उत्त १६, १८, महा; अभि ७६; स ६८; सुपा ४२४)।

पाहेज्ज न [**दे. पाथेय**] ऊपर देखो, (दे ६, २४)।

पाहेणग (दे) देखो **पहेणग**; (पिंड २८८)।

पि देखो **अवि**, (हे २, २१८; स्वप्न ३७; कुमा, भवि)।

पिअ सक [**पा**] पीना। पिअइ; (हे ४, १०; ४१६; गा १६१)। भूका—अपिइत्थ, (आचा)। वकृ—**पिअंत, पियमाण**, (गा १३ अ; २४६; से २, ५, विपा १, १)। संकृ—**पिच्चा, पेच्चा, पिएऊण**; (कप्प, उत्त १७, ३; धर्मवि २५), **पिएविणु** (अप); (सण)। प्रयो—पियावए; (दस १०, २)।

पिअ पुं [**प्रिय**] १ पति, कान्त, स्वामी, (कुमा)। २ इष्ट, प्रीति-जनक; (कुमा)। **°अम** पुं [**°तम**] पति, कान्त; (गा १६; कुमा)। **°अमा** स्त्री [**°तमा**] पत्नी, भार्या; (कुमा)। **°अर** वि [**°कर**] प्रीति-जनक, (नाट—पिंग)। **°कारिणी** स्त्री [**°कारिणी**] भगवान् महावीर की माता का नाम, त्रिशला देवी, (कप्प)। **°गंथ** पुं [**°ग्रन्थ**] एक प्राचीन जैन मुनि, आचार्य सुस्थित और सुप्रतिबद्ध का एक शिष्य; (कप्प)। **°जाअ** वि [**°जाय**] जिसको पत्नी प्रिय हो वह; (गा ५१८)। **°जाआ** स्त्री [**°जाया**] प्रेम-पात्र पत्नी; (गा १६६)। **°दंसण** वि [**°दर्शन**] १ जिसका दर्शन प्रिय—प्रीतिकर—हो वह, (णाया १, १—पत्र १६; औप)। २ पुं. देव-विशेष, (ठा २, ३—पत्र ७६)। **°दंसणा** स्त्री [**°दर्शना**] भगवान् महावीर की पुत्री का नाम; (आवम)। **°धम्म** वि [**°धर्मन्**] १ धर्म की श्रद्धा वाला, (णाया १, ८)। २ पुं. श्री रामचन्द्र के साथ जैन दीक्षा लेने वाला एक राजा; (पउम ८५, ५)। **°भाउग** पुं [**°भ्रातृ**] पति का भाई; (उप ६४८ टी)। **°भासि** वि [**°भासिन्**] प्रिय-वक्ता; (महा ५८)। **°मित्त** पुं [**°मित्र**] १ एक जैन मुनि, जो अपने पीछले भव में पाँचवाँ वासुदेव हुआ था; (पउम २०, १७१)। **°मेलय** वि [**°मेलक**] १ प्रिय का मेल—संयोग—कराने वाला; २ न एक तीर्थ; (स ५५१)। **°ाउय** वि [**°ायुष्क**] जीवित-प्रिय, (आचा)। **°ायग** वि [**°ायत, °ात्मक**] आत्म-प्रिय, (आचा)।

पिअ देखो **पीअ**; "पीआपीअं पिआपिअं" (प्राप्र; सण; भवि)।

पिअ° देखो **पिउ**, (प्रासू ७६; १०८)। **°हर** न [**°गृह**] पिता का घर, पीहर; (पउम १७, ७)।

पिअआ देखो **पिआ**; (श्रा १६)।

पिअइउ (अप) वि [**प्रीणयितृ**] प्रीति उपजाने वाला, खुश करने वाला, (भवि)।

पिअउल्लिय (अप) देखो **पिआ**; (भवि)।

पिअंकर वि [**प्रियंकर**] १ अभीष्ट-कर्ता, इष्ट-जनक; (उत्त ११, १४)। २ पुं. एक चक्रवर्ती राजा; (उप ६७२)। ३ रामचन्द्र के पुत्र लव का पूर्व जन्म का नाम, (पउम १०४, २६)।

पिअंगु पुं [**प्रियङ्गु**] १ वृक्ष-विशेष, प्रियंगु, ककूंदनी का पेड; (पाअ; औप, सम १५२)। २ कंगु, मालकाँगनी का पेड, "पियंगुणो कंगू" (पाअ)। ३ स्त्री. एक स्त्री का नाम, (विपा १, १०)। **°लइया** स्त्री [**°लतिका**] एक स्त्री का नाम, (महा)।

पिअंवय वि [**प्रियंवद**] मधुर-भाषी; (सुर १, ६५; ४, ११८, महा)।

पिअंवाइ वि [**प्रियवादिन्**] ऊपर देखो; (उत्त ११, १४; सुख ११, १४)।

पिअण न [**दे**] दुग्ध, दूध; (दे ६, ४८)।

पिअण न [**पान**] पीना; "तुहथन्नपियणनिरयं" (धर्मवि १२५, सुख ३, १; उप १३६ टी; स २६३; सुपा २४५; चेइय ५७०)।

पिअणा स्त्री [**पृतना**] सेना-विशेष, जिसमें २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२६ घोडे और १२१५ प्यादें हो वह लश्कर; (पउम ५६, ६)।

पिअमा स्त्री [**दे**] प्रियंगु वृक्ष; (दे ६, ४६; पाअ) ।
पिअमाहवी स्त्री [**दे**] कोकिला, पिकी; (दे ६, ५१; पाअ) ।
पिअय पुं [**प्रियक**] वृक्ष-विशेष, विजयसार का पेड़; (औप) ।
पिअर पुंन [**पितृ**] १ माता-पिता, माँ-बाप; "मुणतु निगणय-मिमं पियरा", "पियराइं रुयंताइं"(धर्मवि १२२) । २ पुं. पिता, बाप; (प्राप्र) ।
पिअरंज सक [**भञ्ज्**] भाँगना, तोड़ना । पिअरंजइ; (प्राकृ ७४) ।
पिअल (अप) देखो **पिअ**=प्रिय, (पिंग) ।
पिआ स्त्री [**प्रिया**] पत्नी, कान्ता, भार्या; (कुमा, हेका ६६) ।
पिआमह पुं [**पितामह**] १ ब्रह्मा, चतुराननः (से १, १७; पाअ; उप ५६७ टी; स २३१) । २ पिता का पिता, (उव) । °**तणअ** पुं [°**तनय**] जाम्बवान्, वानर-विशेष; (से ४, ३७) । °**त्थ** न [°**स्त्र**] अस्त्र-विशेष, ब्रह्मास्त्र; (से १५, ३७) ।
पिआमही स्त्री [**पितामही**] पिता की माता, (सुपा ४७२) ।
पिआर (अप) वि [**प्रियतर**] प्यारा; (कुप्र ३२; भवि) ।
पिआरी (अप) स्त्री [**प्रियतरा**] प्यारी, प्रिया, पत्नी, (पिंग) ।
पिआल पुं [**प्रियाल**] वृक्ष-विशेष, पियाल, चिरौंजी का पेड, (कुमा; पाअ; दे ३, २१, पण्ण १) ।
पिआलु पुं [**प्रियालु**] वृक्ष-विशेष, खिन्नी, खिरनी का गाछ, (उर २, १३) ।
पिइ देखो **पीइ**; "तेणं पिइए सिद्ध" (पउम ११, १४) ।
पिइ पुं [**पितृ**] १ पिता, बाप, (उप ७२८ टी) । २ मघा-नक्षत्र का अधिष्ठायक देव; (सुज्ज १०, १२, पि ३६१) । °**मेह** पु [°**मेध**] यज्ञ-विशेष, जिसमें बाप का होम किया जाय वह यज्ञ; (पउम ११, ४२) । °**वण** न [°**वन**] श्मशान; (सुपा ३५६) । °**हर** न [°**गृह**] पिता का घर, पीहर; (पउम १८, ७, सुर ६, २३६) । देखो **पिउ** ।
पिइज्ज पुं [**पितृव्य**] चाचा, बाप का भाई, "सुपासो वीर-जिणपिइज्जो (? ज्जो)" (विचार ४७८) ।
पिइय वि [**पैतृक**] पिता का, पितृ-संबन्धी; (भग) ।
पिउ } पुं [**पितृ**] १ बाप, पिता; (सुर १, १७६;
पिउअ } औप; उव; हे १, १३१) । २ पुंन. माँबाप, माता-पिता; "अन्नया मह पिऊणि गामं पत्ताइं" (धर्मवि १४७, सुपा ३२६) । °**कम** पुं [°**क्रम**] पितृ-वंश, पितृ-कुल; (कुमा) । °**कुल** न [°**कुल**] पिता का वंश ; (पड्) । °**घर** न [°**गृह**] पिता का घर, पीहर; (सुपा ६०१) । °**च्छा**, °**च्छी** स्त्री [°**ष्वसृ**] पिता की बहिन; (गा ११०; हे २, १४२; पाअ, णाया १, १६), "कोंतिं पिउत्थिं (? च्छिं) सक्कारेइ" (णाया १, १६—पत्र २१६)।
पिंड पुं [°**पिण्ड**] मृतक-भोजन, श्राद्ध में दिया जाता भोजन; (आचा २, १, २) । °**भगिणी** स्त्री [°**भगिनी**] फूफा, पिता की बहिन; (सुर ३, ८२) । °**वइ** पुं [°**पति**] यम, यमराज, (हे १, १३४) । °**वण** न [°**वन**] श्मशान; (पउम १०५, ५१, पाअ; हे १, १३४) । °**सिआ** स्त्री [°**ष्वसृ**] फूफा; (हे २, १४२; कुमा) । °**सेण-कण्हा** स्त्री [°**सेनकृष्णा**] राजा श्रेणिक की एक पत्नी; (अंत २५) । °**स्सिया** देखो °**सिआ**; (विपा १, ३—पत्र ४१) । °**हर** देखो °**घर**; (सुर १०, १६; भवि) ।
पिउअ देखो **पिइय**; (राज) ।
पिउच्चा स्त्री [**दे. पितृष्वसृ**] फूफा, पिता की बहिन; (षड्) ।
पिउच्चा } स्त्री [**दे**] सखी, वयस्या, (षड् १७५;
पिउच्छा } २१०) ।
पिउली स्त्री [**दे**] १ कर्पास, कपास; २ तूल-लतिका, रुई की पूनी; (दे ६, ७८) ।
पिउल्ल देखो **पिउ**; (हे २, १६४) ।
पिंकार पुं [**अपिकार**] १ 'अपि' शब्द, २ अपि शब्द की व्याख्या, (ठा १०—पत्र ४६५) ।
पिंखा स्त्री [**प्रेङ्खा**] हिंडोला, डोला; (पाअ) ।
पिंखोल सक [**प्रेङ्खोलय्**] झूलना । वकृ—**पिंखोलमाण**; (राज) ।
पिंग देखो **पंग**=ग्रह् ; (कुमा ७, ४६) ।
पिंग पुं [**पिङ्ग**] १ कपिश वर्ण, पीत वर्ण; २ वि पीला, पीत रँग का; (पाअ, कुमा, णमि १४) । ३ पुंस्त्री. कपिंजल पक्षी । स्त्री— °**गा**; (सूअ १, ३, ४, १२) ।
पिंगंग पुं [**दे**] मर्कट, बन्दर; (दे ६, ४८) ।
पिंगल पुं [**पिङ्गल**] १ नील-पीत वर्ण; २ वि. नील-मिश्रित पीत वर्ण वाला; (कुमा; ठा ४, २; औप) । ३ पुं. ग्रह-विशेष; (ठा २, ३) । ४ एक यक्ष; (सिरि ६६६) । ५ चक्रवर्ती का एक निधि, आभूषणों की पूर्ति करने वाला एक निधान, (ठा ६; उप ६८६ टी) । ६ कृष्ण पुद्गल-विशेष; (सुज्ज २०) । ७ प्राकृत-पिंगल का कर्ता एक कवि; (पिंग) । ८ एक जैन उपासक; (भग) । ६ न. प्राकृत का एक छन्द-ग्रन्थ, (पिंग) ।

°**कुमार** पुं [°**कुमार**] एक राजकुमार, जिसने भगवान् सुपार्श्वनाथ के समीप दीक्षा ली थी; (सुपा ६६)। °**क्ख** वि [°**ाक्ष**] १ नीली-पीली आँख वाला; (ठा ४, २—पत्र २०८)। २ पुं. पक्षि-विशेष; (पराह १, १; औप)।

पिंगलायण न [**पिङ्गलायन**] १ गोत्र-विशेष, जो कौत्स गोत्र की एक शाखा है; २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न; (ठा ७)।

पिंगलिअ वि [**पिङ्गलित**] नीला-पीला किया हुआ; (से ४, १८; गउड; सुपा ८०)।

पिंगलिअ वि [**पैङ्गलिक**] पिंगल-संबन्धी, (पिंग)।

पिंगा देखो **पिंग**।

पिंगायण न [**पिङ्गायन**] मघा-नक्षत्र का गोत्र; (इक)।

पिंगिअ वि [**गृहीत**] ग्रहण किया हुआ, (कुमा)।

पिंगिम पुंस्त्री [**पिङ्गिमन्**] पिंगता, पीलापन; (गउड)।

पिंगीकय वि [**पिङ्गीकृत**] पीला किया हुआ; "घणथणघुसिणक्कुप्पंकपिंगीकय व्व" (लहुअ ७)।

पिंगुल पुं [**पिङ्गुल**] पक्षि-विशेष; (पराह १, १—पत्र ८)।

पिंचु पुंस्त्री [**दे**] पक्व करीर, पका करील; (दे ६, ४६)।

पिंछ, **पिंछड** देखो **पिच्छ**; (आचा; गउड; सुपा ६४१)।

पिंछी स्त्री [**पिच्छी**] साधु का एक उपकरण; "नवि लेइ जिणो पिंछीं (? छिं)" (विचार १२८)।

पिंछोली स्त्री [**दे**] मुँह के पवन से बजाया जाता तृण-मय वाद्य-विशेष, (दे ६, ४७)।

पिंज सक [**पिञ्ज्**] पीजना, रूई का धुनना। वकृ—**पिंजंत**; (पिंड ५७४; ओघ ४६८)।

पिंजण न [**पिञ्जन**] पीजना; (पिंड ६०३; दे ७, ६३)।

पिंजर पुं [**पिञ्जर**] १ पीत-रक्त वर्ण, रक्त-पीत मिश्रित रँग; २ वि. रक्त-पीत वर्ण वाला; (गउड; कुप्र ३०७)।

पिंजर सक [**पिञ्जरय्**] रक्त-मिश्रित पीत-वर्ण-युक्त करना। वकृ—**पिंजरंत**; (पउम ६२, ६)।

पिंजरण न [**पिञ्जरण**] रक्त-मिश्रित पीत वर्ण वाला करना, (सण)।

पिंजरिअ वि [**पिञ्जरित**] पिञ्जर वर्ण वाला किया हुआ; (हम्मीर १२; गउड; सुपा ५२४)।

पिंजरुड पुं [**दे**] पक्षि-विशेष, भारुण्ड पक्षी, जिसके दो मुँह होते हैं; (दे ६, ५०)।

पिंजिअ वि [**पिञ्जित**] पीजा हुआ; (दे ७, ६४)।

पिंजिअ वि [**दे**] विधुत; (दे ६, ४६)।

पिंड सक [**पिण्डय्**] १ एकत्रित करना, संश्लिष्ट करना। २ अक. एकत्रित होना, मिलना। पिंडेइ, पिंडयए, (उव; पिंड ६६)। संकृ—**पिण्डिऊण**; (कुमा)।

पिंड पुं [**पिण्ड**] १ कठिन द्रव्यों का संश्लेष; (पिण्डभा २)। २ समूह, संघात; (ओघ ४०७, विसे ६००)। ३ गुड़ वगैरः की बनी हुई गोल वस्तु, वर्तुलाकार पदार्थ; (पराह २, ५)। ४ भिक्षा में मिलता आहार, भिक्षा, (उव; ठा ७)। ५ देह का एक देश, ६ देह, शरीर; ७ घर का एक देश; ८ अन्न का गोला जो पितरों के उद्देश से दिया जाता है; ६ गन्ध-द्रव्य विशेष, सिह्लक; १० जपा-पुष्प; ११ कवल, ग्रास; १२ गज-कुम्भ, १३ मदनक वृक्ष, दमनक का पेड़; १४ न. आजीविका; १५ लोहा; १६ श्राद्ध, पितरों को दिया जाता दान; १७ वि. संहत, १८ घन, निविड़; (हे १, ८५)। °**कप्पिअ** वि [°**कल्पिक**] सर्वथा निर्दोष भिक्षा लेने वाला; (वव ३)। °**गुला** स्त्री [°**गुला**] गुड़-विशेष, इक्षुरस का विकार-विशेष, सक्कर बनने के पहले की अवस्था-विशेष; (पिंड २८३)। °**घर** न [°**गृह**] कर्दम से बना हुआ घर; (वव ४)। °**त्थ** पुं [°**स्थ**] जिन भगवान् की अवस्था-विशेष; "न पिंडत्थपयत्थावत्थंतरभावणा सम्मं" (संबोध २)। °**त्थ** पुं [°**ार्थ**] समुदायार्थ; (राज)। °**दाण** न [°**दान**] पिण्ड देने की क्रिया, श्राद्ध; (धर्मवि २६)। °**पयडि** स्त्री [°**प्रकृति**] अवान्तर भेद वाली प्रकृति; (कम्म १, २५)। °**वद्धण** [°**वर्धन**] आहार-वृद्धि, कवल-वृद्धि, अन्न-प्राशन; (अंत)। °**वद्धावण** न [°**वर्धन**] आहार बढ़ाना; (औप)। °**वाय** पुं [°**पात**] भिक्षा-लाभ, आहार-प्राप्ति; (ठा ५, १; कस)। °**वास** पुं [°**वास**] सुहृज्जन; (भवि)। °**विसुद्धि**, °**विसोहि** स्त्री [°**विशुद्धि**] भिक्षा की निर्दोषता; (अंत; ओघभा ३)।

पिंडग पुं [**पिण्डक**] ऊपर देखो; (कस)।

पिंडण न [**पिण्डन**] १ द्रव्यों का एकत्र संश्लेष; (पिंडभा २)। २ ज्ञानावरणीयादि कर्म, (पिंड ६६)।

पिंडणा स्त्री [**पिण्डना**] १ समूह; (ओघ ४०७)। २ द्रव्यों का परस्पर सयोजन, (पिंड २)।

पिंडय देखो **पिंड**; (ओघभा ३३)।

पिंडरय न [**दे**] दाडिम, अनार, (दे ६, ४८)।

पिंडलइय वि [**दे**] पिण्डीकृत, पिण्डाकार किया हुआ; (दे ६, ५४; पाअ)।

पिंडलग न [**दे**] पटलक, पुष्प का भाजन; (ठा ७)।

पिंडवाइअ वि [**पिण्डपातिक, पैण्डपातिक**] भक्त-लाभ वाला, जिसको भिक्षा में आहार की प्राप्ति हो वह, (ठा ५, १; कस, औप; प्राक्त ६)।

पिंडार पु [**पिण्डार**] गोप, ग्वाला; (गा ७३१)।

पिंडालु पुं [**पिण्डालु**] कन्द-विशेष; (श्रा २०)।

पिंडि° देखो **पिंडी**; (भग; णाया १, १ टी—पत्र ५)।

पिंडिम वि [**पिण्डिम**] १ पिण्ड से बना हुआ, बहल; (पण्ह २, ५—पत्र १५०)। २ पुद्गल-समूहरूप, सघाताकार; (णाया १, १ टी—पत्र ५, औप)।

पिंडिय वि [**पिण्डित**] १ एकत्रित, इकट्ठा किया हुआ; (सूअनि १४०; पंचा १४, ७, महा)। २ गुणित; (औप)।

पिंडिया स्त्री [**पिण्डिका**] १ पिण्डी, पिंडली, जानू के नीचे का मांसल अवयव; (महा)। २ वर्तुलाकार वस्तु; (औप)। देखो **पिंडी**।

पिंडी स्त्री [**पिण्डी**] १ लुम्बी, गुच्छा; (औप; भग, णाया १, १; उप पृ ३६)। २ घर का आधार-भूत काष्ठ-विशेष, पीढ़ा; "विघडियपिंडीबंधसंधिपरिलंबिवालणिम्मोआ" (गउड)। ३ वर्तुलाकार वस्तु, गोला; "पिन्नागपिंडी" (सूअ २, ६, २६)। ४ खर्जूर-विशेष; (नाट—शकु ३५)। देखो **पिंडिया**।

पिंडी स्त्री [**दे**] मञ्जरी; (दे ६, ४७)।

पिंडीर न [**दे. पिण्डीर**] दाड़िम, अनार, (दे ६, ४८)।

पिंडेसणा स्त्री [**पिण्डैषणा**] भिक्षा ग्रहण करने की रीति; (ठा ७)।

पिंडेसिय वि [**पिण्डैषिक**] भिक्षा की खोज करने वाला; (भग ६, ३३)।

पिंडोलग, **पिंडोलगय**, **पिंडोलय** वि [**पिण्डावलगक**] भिक्षा से निर्वाह करने वाला, भिक्षा का प्रार्थी, भिक्षु; (आचा; उत्त ५, २२, सुख ५, २२; सूअ १, ३, १, १०)।

पिंध (अप) सक [**पि+धा**] ढकना। पिंधउ; (पिंग)। संकृ—**पिंधउ**; (पिंग)।

पिंधण (अप) न [**पिधान**] ढकना; (पिंग)।

पिंसुली स्त्री [**दे**] मुँह से पवन भर कर बजाया जाता एक प्रकार का तृण-वाद्य; (दे ६, ४७)।

पिक पुंस्त्री [**पिक**] कोकिल पक्षी; (पिंग)। स्त्री—**°की**; (दे ६, ५१)।

पिक्क देखो **पक्क**=पक्व, (हे १, ४७; पाअ, गा ५६५)।

पिक्ख सक [**प्र+ईक्ष्**] देखना। पिक्खइ; (भवि)। वकृ—**पिक्खंत**; (भवि)। कृ—**पिक्खेयव्व**; (सुर ११, १२३)।

पिक्खग वि [**प्रेक्षक**] निरीक्षक, द्रष्टा, (ती १०; धर्मवि १५)।

पिक्खण न [**प्रेक्षण**] निरीक्षण; (राज)।

पिक्खिय वि [**प्रेक्षित**] दृष्ट; (पि ३६०)।

पिग देखो **पिक**, (कुमा)।

पिचु पुं [**पिचु**] कर्पास, रुई, (दे ६, ७८)। **°लया** स्त्री [**°लता**] पूनी, रुई की पूनी; (दे ६, ५६)।

पिचुमंद पु [**पिचुमन्द**] निम्ब वृक्ष, नीम का पेड़; (मोह १०३)।

पिच्च, **पिच्चा** अ [**प्रेत्य**] पर-लोक, आगामी जन्म, (श्रा १४; सुपा ५०६; सूअ १, १, १, ११)। देखो **पेच्च**।

पिच्चा देखो **पिअ**=पा।

पिच्चिय वि [**दे. पिच्चित**] कूटी हुई छाल; (ठा ५, ३—पत्र ३३८)।

पिच्छ सक [**दृश्, प्र+ईक्ष्**] देखना। पिच्छइ, पिच्छंति, पिच्छ; (कप्प; प्रासू १६०; ३३)। वकृ—**पिच्छंत, पिच्छमाण**; (सुपा ३४६; भवि)। कवकृ—**पिच्छिज्जमाण**; (सुपा ६२)। संकृ—**पिच्छिउं, पिच्छिऊण**; (प्रासू ६१; भवि)। कृ—**पिच्छणिज्ज**; (कप्प; सुर १३, २२३; रयण ११)।

पिच्छ न [**पिच्छ**] १ पक्ष का अवयव, पंख का हिस्सा; (उवा; पाअ)। २ मयूर-पिच्छ, शिखण्ड; (णाया १, ३)। ३ पक्ष, पाँख; (उप ७६८ टी, गउड)। ४ पूँछ, लांगूल; (गउड)।

पिच्छण न [**प्रेक्षण**] १ दर्शन, अवलोकन, (श्रा १४, सुपा ५५)।

पिच्छण, **पिच्छणय** न [**प्रेक्षण, °क**] तमाशा, खेल, नाटक; "पारद्धं पिच्छणं तहिं ताव" (सुपा ४८५), "तो जवणियछिड्डेहि पिच्छइ अंतेउरपि पिच्छणय" (सुपा २००)।

पिच्छल वि [**पिच्छल**] १ स्निग्ध, स्नेह-युक्त; २ मसृण; (सण)।

पिच्छा स्त्री [**प्रेक्षा**] निरीक्षण। **°भूमि** स्त्री [**°भूमि**] रंग-मण्डप; (पाअ)।

पिच्छि वि [**पिच्छिन्**] पिच्छ वाला; (औप)।
पिच्छिर वि [**प्रेक्षितृ**] प्रेक्षक, द्रष्टा; (सुपा ७८; कुमा)।
पिच्छिल वि [**पिच्छिल**] १ स्नेह-युक्त, स्निग्ध, २ मसृण, चिकना; (गउड; हास्य १४०; दे ६, ४६)।
पिच्छिली स्त्री [**दे**] लज्जा, शरम; (दे ६, ४७)।
पिच्छी स्त्री [**दे**] चूडा, चोटी; (दे ६, ३७)।
पिच्छी स्त्री [**पिच्छिका**] पीछी; (गा ५७२)।
पिच्छी स्त्री [**पृथ्वी**] १ पृथ्वी, धरित्री, धरती; (कुमा)। २ बड़ी इलायची; ३ पुनर्नवा; ४ कृष्ण जीरक; ५ हिंगुपत्री, (हे १, १२८)।
पिज्ज सक [**पा**] पीना। पिज्जइ; (हे ४, १०)। कृ— **पिज्जणिज्ज**, (कुमा)।
पज्ज पुंन [**प्रेमन्**] प्रेम, अनुराग; (सुअ १, १६, २; कप्प)।
पिज्ज } देखो **पा**=पा।
पिज्जंत }
पिज्जा स्त्री [**पेया**] यवागू; (पिंड ६२४)।
पिज्जाविअ वि [**पायित**] जिसको पान कराया गया हो वह; (सुख २, १७)।
पिट्ट सक [**पीडय्**] पीडा करना। पिट्टंति; (सूअ २, २, ५५)।
पिट्ट अक [**भ्रंश्**] नीचे गिरना। पिट्टइ, (षड्)।
पिट्ट सक [**पिट्टय्**] पीटना, ताडन करना। पिट्टइ, पिट्टेइ; (आचा; पिंग; गा १७१; सिरि ६५५)। वकृ—**पिट्टंत**; (पिंग)।
पिट्ट न [**दे**] पेट, उदर; (पंचा ३, १६; धर्मवि ६६; चेइय २३८; करु २६; सुपा ५६३; सं २१)।
पिट्टण न [**पिट्टन**] ताडन, आघात, (सूअ २, २, ६२; पिंड ३४; पराह १, १; ओघ ५६६; उप ५०६)।
पिट्टण न [**पीडन**] पीड़ा, क्लेश; (सूअ २, २, ५५)।
पिट्टणा स्त्री [**पिट्टना**] ताडन; (ओघ ३५७)।
पिट्टावणया स्त्री [**पिट्टना**] ताडन कराना; (भग ३, ३—पत्र १८२)।
पिट्टिय वि [**पिट्टित**] पीटा हुआ, ताडित; (सुख २, १५)।
पिट्ठ न [**पिष्ट**] तण्डुल आदि का आटा, चूर्ण; (णाया १, १; ३; दे १, ७८; गा ३८८)।
पिट्ठ न [**पृष्ठ**] पीठ, शरीर के पीछे का हिस्सा; (औप; उव)। °**ओ** अ [°**तस्**] पीछे से, पृष्ट भाग से; (उवा; विपा १, १; औप)। °**करंडग** न [°**करण्डक**] पृष्ठ-वंश, पीठ की बड़ी हड्डी, (तदु ३५)। °**चर** वि [°**चर**] पृष्ठ-गामी, अनुयायी; (कुमा)। देखो **पिट्ठि**।
पिट्ठ वि [**स्पृष्ट**] १ छुआ हुआ। २ न. स्पर्श; (पव १५७)।
पिट्ठ वि [**पृष्ट**] १ पूछा हुआ; २ न. प्रश्न, पृच्छा; "जंपसि विणअं ण जंपसे पिट्ठं" (गा ६४३)।
पिट्ठंत न [**दे. पृष्ठान्त**] गुदा, गाँड; (दे ६, ४६)।
पिट्ठखउरा स्त्री [**दे**] पङ्क-सुरा, कलुष मदिरा; (दे ६, ५०)।
पिट्ठखउरिआ स्त्री [**दे**] मदिरा, दारू; (पाअ)।
पिट्ठव्व वि [**प्रष्टव्य**] पूछने योग्य; "नियकरकीदीवि किंकरी किं पिट्ठि(?ट्ठ) व्वा" (रंभा)।
पिट्ठायय पुंन [**पिष्टातक**] केसर आदि गन्ध-द्रव्य; (गउड; स ७३४)।
पिट्ठि स्त्री [**पृष्ठ**] पीठ, शरीर के पीछे का भाग; (हे १, १२६; णाया १, ६; रंभा, कुमा; षड्)। °**ग** वि [°**ग**] पीछे चलने वाला; (श्रा १२)। °**चम्पा** स्त्री [°**चम्पा**] चम्पा नगरी के पास की एक नगरी; (कप्प)। °**मंस** न [°**मांस**] परोक्ष में अन्य के दोष का कीर्तन; "पिट्ठिमंसं न खाइज्जा" (दस ८, ४७)। °**मंसिय** वि [°**मांसिक**] परोक्ष में दोष बोलने वाला, पीछे निन्दा करने वाला; (सम ३७)। °**माइया** स्त्री [°**मातृका**] एक अनुत्तर-गामिनी स्त्री; "चंदिमा पिट्ठिमाइया" (अनु २)। देखो **पिट्ठ**=पृष्ठ।
पिट्ठी स्त्री [**पैष्टी**] आटा की बनी हुई मदिरा; (बृह २)।
पिड पुं [**पिट**] १ वंश-पत्र आदि का बना हुआ पात्र-विशेष; २ कब्जा, अधीनता; "जा ताव तेण भणियं रे रे रे बाल मह पिडे पडिओ" (सुपा १७६)।
पिडग देखो **पिडय**=पिटक; (औप; उवा, सुज्ज १६)।
पिडच्छा स्त्री [**दे**] सखी; (दे ६, ४६)।
पिडय न [**पिटक**] १ वंशमय पात्र-विशेष; "भोयणपिं-(? पि)डयं करेंति" (णाया १, २—पत्र ८६)। २ दो चन्द्र और दो सूर्यो का समूह; (सुज्ज १६)।
पिडय वि [**दे**] आविग्न; (षड्)।
पिडव सक [**अर्ज्**] पैदा करना, उपार्जन करना। पिडवइ; (षड्)।
पिडिआ स्त्री [**पिटिका**] १ वंश-मय भाजन-विशेष; (दे ४, ७; ६, १)। २ छोटी मन्जूषा, पेटी, पिटारी; (उप ५८७; ५६७ टी)।

पिड्ड सक [**पीडय्**] पीड़ना। पिड्डइ; (आचा; पि २७६)।

पिड्ड अक [**भ्रंश्**] नीचे गिरना। पिड्डइ; (षड्)।

पिड्डइअ वि [**दे**] प्रशान्त, (षड्)।

पिढं अ [**पृथक्**] अलग, जुदा; (षड्)।

पिढर पुन [**पिठर**] १ भाजन-विशेष, स्थाली; (पाअ; आचा; कुमा)। २ गृह-विशेष, ३ मुस्ता, मोथा, ४ मन्थान-दगड, मथनिया; (हे १, २०१, षड्)।

पिणद्ध सक [**पि+नह्, पिनि+धा**] १ ढकना। २ पहिनना। ३ पहिराना। ४ बाँधना। पिणद्धइ, पिणद्धेइ; (पि ४५६)। हेकृ—**पिणद्धुं, पिणद्धित्तए**; (अभि १८५, राज)।

पिणद्ध वि [**पिनद्ध**] १ पहना हुआ; (पाअ; औप; गा ३२८)। २ बद्ध, यन्त्रित; (राय)। ३ पहनाया हुआ, "नियमउडोवि पिणद्धो तस्स सिरे रयणचिंचइओ" (सुपा १२५)।

पिणद्धाविद (शौ) वि [**पिनिधापित**] पहनाया हुआ, (नाट—शकु ६८)।

पिणाइ पुं [**पिनाकिन्**] महादेव, शिव; (पाअ; गउड)।

पिणाई स्त्री [**दे**] आज्ञा, आदेश; (दे ६, ४८)।

पिणाग पुंन [**पिनाक**] १ शिव-धनुष, २ महादेव का शूलास्त्र; (धर्मवि ३१)।

पिणागि देखो **पिणाइ**; (धर्मवि ३१)।

पिणाय देखो **पिणाग**; (गउड)।

पिणाय पु [**दे**] बलात्कार; (दे ६, ४६)।

पिणिद्ध वि [**पिनद्ध, पिनिहित**] देखो **पिणद्ध**=पिनद्ध; (पगह २, ४—पत्र १३०; कप्प; औप)।

पिणिधा सक [**पिनि+धा**] देखो **पिणद्ध**=पि+नह्। हेकृ—**पिणिधत्तए**; (औप, पि ५७८)।

पिण्णाग देखो **पिन्नाग**, (राज)।

पिण्ही स्त्री [**दे**] क्षामा, कृश स्त्री, (दे ६, ४६)।

पित्त पुंन [**पित्त**] शरीर-स्थित धातु-विशेष, तिक्त धातु, (भग, उव)। °**ज्जर** पुं [°**ज्वर**] पित्त से होता बुखार; (णाया १, १)। °**मुच्छा** स्त्री [°**मूर्च्छा**] पित्त की प्रबलता से होने वाली बेहोशी; (पडि)।

पित्तल न [**पित्तल**] धातु-विशेष, पीतल; (कुप्र १४४)।

पित्तिज्ज, **पित्तिय** पुं [**पितृव्य**] चाचा, पिता का भाई; (कप्प, सम्मत्त १७२; सिरि २६३; धर्मवि १२७; स ४६५; सुपा ३३४)।

पित्तिय वि [**पैत्तिक**] पित्त का, पित्त-सबन्धी, (तंदु १६; णाया १, १; औप)।

पिधं अ [**पृथक्**] अलग, जुदा; (हे १, १८८; कुमा)।

पिधाण देखो **पिहाण**; (नाट—विक्र १०३)।

पिन्नाग, **पिन्नाय** पुं [**पिण्याक**] खली, तिल आदि का तेल निकाल लेने पर जो उसका भाग बचता है वह; (सूअ २, ६, २६; २, १, १६; २, ६, २८)।

पिपीलिअ पु [**पिपीलक**] कीट-विशेष, चीऊँटा, (कप्प)।

पिपीलिआ, **पिपीलिका** स्त्री [**पिपीलिका**] चींटी; (पगह १, १; जी १६, णाया १, १६)।

पिप्पड सक [**दे**] बड़बड़ाना, जो मन में आवे सो बकना। पिप्पडइ, (दे ६, ५० टी)।

पिप्पडा स्त्री [**दे**] ऊर्णा-पिपीलिका, (दे ६, ४८)।

पिप्पडिअ वि [**दे**] १ जो बवड़ाया हो। २ न. बड़बड़ाना, निरर्थक उल्लाप, बकवाद, (दे ६, ५०)।

पिप्पय पु [**दे**] १ मशक; (दे ६, ७८)। २ पिशाच, भूत; (पाअ)। ३ वि. उन्मत्त; (दे ६, ७८)।

पिप्पर पु [**दे**] १ हंस; २ वृषभ; (दे ६, ७६)।

पिप्परी स्त्री [**पिप्पली**] पीपर का गाछ; (पगण १)।

पिप्पल पुन [**पिप्पल**] १ पीपल वृक्ष, अश्वत्थ; (उप १०३१ टी; पाअ; हि १०)। २ छुरा, क्षुरक; (विपा १, ६—पत्र ६६; ओघ ३५६)।

पिप्पलि, **पिप्पली** स्त्री [**पिप्पलि, °ली**] ओषधि-विशेष, पीपर; "महुपिप्पलिसुठाई अणेगहा साइमं होइ" (पंचा ५, ३०; पगण १७)।

पिप्पिडिअ देखो **पिप्पडिअ**; (षड्)।

पिप्पिया स्त्री [**दे**] दाँत का मैल, (गांदि)।

पिब देखो **पिअ**=पा। पिवामो; (पि ४८३)। संकृ—**पिबित्ता**; (आचा)।

पिब्ब न [**दे**] जल, पानी, (दे ६, ४६)।

पिम्म पुन [**प्रेमन्**] प्रेम, प्रीति, अनुराग; (पाअ; सुर २, १७२; रंभा)।

पियास (अप) स्त्री [**पिपासा**] प्यास, (भवि)।

पिरिडी स्त्री [**दे**] शकुनिका, चिड़िया, (दे ६, ४७)।

पिरिपिरिया देखो **परिपिरिया**; (राज)।

पिरिली स्त्री [**पिरिली**] १ गुच्छ-विशेष, वनस्पति-विशेष; (पगण १)। २ वाद्य-विशेष; (राज)।

पिल देखो **पील**। कर्म—पिलिज्जइ; (नाट)।

पिलंखु } पुं [**प्लक्ष**] १ वृक्ष-विशेष, पिलखन, पाकड़
पिलक्खु } का पेड़; (सम १५२; ओघ २६; पि ७४)। २ एक तरह का पीपल वृक्ष; "पिलक्खू पिप्पलभेदो" (निचू ३)।
पिलण न [**दे**] पिच्छिल देश, चिकनी जगह; (दे ६, ४६)।
पिला देखो **पीला**; (पि २२६)।
पिलाग न [**पिटक**] फोड़ा, फुनसी; (सूत्र १, ३, ४, १०)।
पिलिंखु देखो **पिलंखु**; (विचार १४८)।
पिलिहा स्त्री [**प्लीहा**] रोग-विशेष, पिलही, ताप-तिल्ली; (तदु ३६)।
पिलुअ न [**दे**] क्षुत, छींक; (षड्)।
पिलुंक } देखो **पिलंखु**; (पि ७४; पण्ण १—पत्र
पिलुक्ख } ३१)।
पिलुट्ठ वि [**प्लुष्ट**] दग्ध; (हे २, १०६)।
पिलोस पु [**प्लोष**] दाह, दहन; (हे २, १०६)।
पिल्ल देखो **पेल्ल**=क्षिप्। पिल्लइ; (भवि)।
पिल्लण न [**प्रेरण**] प्रेरणा; (जं ३)।
पिल्लणा स्त्री [**प्रेरणा**] प्रेरणा, (कप्प)।
पिल्लि स्त्री [**दे**] यान-विशेष; (दसा ६)।
पिल्लिअ वि [**क्षिप्त**] फेंका हुआ; (पाअ; भवि; कुमा)।
पिल्लिअ वि [**प्रेरित**] जिसको प्रेरणा की गई हो वह; (सुपा ३६१)।
पिल्लिरी स्त्री [**दे**] १ तृण-विशेष, गण्डूत तृण, २ चीरी, कीट-विशेष, ३ घम, पसीना; (दे ६, ७६)।
पिल्लुग (दे) देखो **पिलुअ**; (वव २)।
पिल्ह न [**दे**] छोटा पक्षी; (दे ६, ४६)।
पिव देखो **इव**; (हे २, १८२; कुमा; महा)।
पिव सक [**पा**] पीना। पिवइ; (पिंग)। भूका—अपिवित्था; (आचा)। कर्म—पिवीअंति; (पि ५३६)। संकृ—**पिविअ, पिवइत्ता, पिवित्ता**; (नाट; ठा ३, २; महा)। हेकृ—**पिविउं, पिवित्तए**; (आक ४२; औप)।
पिवण देखो **पिअण**=(दे); (भवि)।
पिवासय वि [**पिपासक**] पीने की इच्छा वाला; (भग—भत्थ°)।
पिवासा स्त्री [**पिपासा**] प्यास, पीने की इच्छा; (भग; पाअ)।
पिवासिय वि [**पिपासित**] तृषित; (उवा; वै २१)।
पिवीलिआ देखो **पिपीलिआ**; (उव; स ४२०; मा ४६)।
पिव्व देखो **पिब्ब**; (षड्)।
पिस सक [**पिष्**] पीसना। पिसइ; (षड्)।
पिसंग पुं [**पिशङ्ग**] १ पिंगल वर्ण, मठियारा रँग, २ वि. पिंगल वर्ण वाला; (पाअ; कुप्र १०५; ३०६)।
पिसंडि [**दे**] देखो **पसंडि**; (सुपा ६०७; कुप्र ६२; १४५)।
पिसल्ल पुं [**पिशाच**] पिशाच, व्यन्तर-योनिक देवों की एक जाति; (हे १, १६३; कुमा; पाअ; उप २६४टी; ७६८ टी)।
पिसाजि वि [**पिशाचिन्**] भूताविष्ट, (हे १, १७७; कुमा; षड्; चंड)।
पिसाय देखो **पिसल्ल**; (हे १, १६३; पण्ह १. ४, महा; इक)।
पिसिअ न [**पिशित**] मांस, (पाअ; महा)।
पिसुअ पुस्त्री [**पिशुक**] क्षुद्र कीट-विशेष। स्त्री—°**या**, (राज)।
पिसुण सक[**कथय्**]कहना। पिसुणइ, पिसुणेइ, पिसुणंति,पिसुणेंति, पिसुणसु; (हे ४, २; गा ६८५; सुर ६, १६३; गा ५५६,कुमा)।
पिसुण पुं [**पिशुन**] खल, दुर्जन, पर-निन्दक, चुगलीखोर; (सुर ३, १६; प्रासू १८, गा ३७७; पाअ)।
पिसुणिअ वि [**कथित**] १ कहा हुआ; २ सूचित; (सुपा २३; पाअ; कुप्र २७८)।
पिसुमय (पै) पुं [**विस्मय**] आश्चर्य; (प्राकृ १२४)।
पिह सक [**स्पृह**] इच्छा करना, चाहना। पिहाइ; (भग ३, २—पत्र १७३)। संकृ—**पिहाइत्ता**; (भग ३, २)।
पिह वि [**पृथक्**] भिन्न, जुदा; "पिहप्पिहाण" (विसे ८४८)।
पिहं अ [**पृथक्**] अलग; (हे १, १३७; षड्)।
पिहंड पु [**दे**] १ वाद्य-विशेष, २ वि. विवर्ण; (दे ६, ७६)।
पिहड देखो **पिढर**; (हे १, २०१; कुमा, उवा)।
पिहण न [**पिधान**] १ ढकन, (सुर १६, १६५)। २ ढकना, आच्छादन; (पंचा १, ३२; संबोध ४६; सुपा १२१)।
पिहणया स्त्री [**पिधान**] आच्छादन, ढकना, (स ५१)।
पिहय देखो **पिह**=पृथक्; (कुमा)।
पिहा सक [**पि+धा**] १ ढकना। २ बँद करना। पिहाइ; (भग ३, २)। संकृ—**पिहाइत्ता, पिहिऊण**; (भग ३, २, महा)।
पिहाण देखो **पिहण**; (ठा ४, ४; रत्न २५; कप्प)।
पिहाणिआ स्त्री [**पिधानिका**] ढकनी; (पाअ)।
पिहाणी स्त्री [**पिधानी**] ऊपर देखो; (दे)।

पिहिअ वि [पिहित] १ ढका हुआ; २ बँद किया हुआ; (पाअ; कप्प; ठा २, ४—पत्र ६६; सुपा ६३०)। °**।सव** वि [°स्रव] १ जिसने आस्रव को रोका हो; (दस ४)। २ पु. एक जैन मुनि का नाम; (पउम २०, १८)।

पिहिण देखो **पिहण**, "आणवणे पेसवणे पिहिणे ववएस मच्छरे चेव" (श्रा ३०; पडि)।

पिहिमि° (अप) स्त्री [पृथिवी] भूमि, धरती। °**पाल** पुं [°पाल] राजा; (भवि)।

पिहीकय वि [पृथक्कृत] अलग किया हुआ, (पिंड ३६१)।

पिहु वि [पृथु] १ विस्तीर्ण; (कुमा)। २ पुं एक राजा का नाम, (पउम ६८, ३४)। °**रोम** पुं [°रोम] मीन, मत्स्य; (दे ६, ५० टी)।

पिहु देखो **पिह**=पृथक्; (सुर १३, ३६; सण)।

पिहु° देखो **पिहुय**; "पिहुखज्ज त्ति नो वए" (दस ७, ३४)।

पिहुंड न [पिहुण्ड] नगर-विशेष; (उत्त ३१, २)।

पिहुण [दे] देखो **पेहुण**; (आचा २, १, ७, ६)। °**हत्थ** पुं [°हस्त] मयूर-पिच्छ का किया हुआ पँखा; (आचा २, १, ७, ६)।

पिहुत्त देखो **पुहुत्त**; (तंदु ४)।

पिहुय पुंन [पृथुक] खाद्य-विशेष, चिऊडा; (आचा २, १, १, ३; ४)।

पिहुल वि [पृथुल] विस्तीर्ण; (पगह १, ४; औप; दे ६, १४३; कुमा)।

पिहुल न [दे] मुँह के वायु से वजाया जाता तृण-वाद्य; (दे ६, ४७)।

पिहे देखो **पिहा**। पिहेइ, पिहे; (उत्त २६, ११; सूअ १, २, २, १३)। संकृ—**पिहेऊण**; (पि ५८६)।

पिहो अ [पृथक्] अलग, भिन्न; (विसे १०)।

पिहोअर वि [दे] तनु, कृश, दुर्बल; (दे ६, ५०)।

पी सक [पी] पान करना। वकृ—"तम्मुहससंककंतिपीऊस-पूरं **पीयमाणी**" (रयण ५१)।

पीअ पुं [पीत] १ पीत वर्ण, पीला रँग; २ वि. पीत वर्ण वाला, पीला; (हे २, १७३; कुमा; प्राप्र)। ३ जिसका पान किया गया हो वह; (से १, ४०; दे ६, १४४)। ४ जिसने पान किया हो वह; (प्राप्र)।

पीअ वि [प्रीत] प्रीति-युक्त, संतुष्ट; (औप)।

पीअर (अप) नीचे देखो; (पिंग)।

पीअल देखो **पीअ**=पीत, (हे २, १७३; प्राप्र)।

पीअसी स्त्री [प्रेयसी] प्रेम-पात्र स्त्री; (कुमा)।

पीइ पुं [दे] अश्व, घोड़ा; (दे ६, ५१)।

पीइ } स्त्री [प्रीति] १ प्रेम, अनुराग; (कप्प; महा)।
पीई° } २ रावण की एक पत्नी का नाम; (पउम ७४, ११)। °**कर** पुंन [°कर] एक विमानावास, आठवाँ ग्रैवेयक-विमान; (देवेन्द्र १३७; पव १६४)। °**गम** न [°गम] महाशुक्र देवेन्द्र का एक यान-विमान; (इक; औप)। °**दाण** न [°दान] हर्ष होने के कारण दिया जाता दान, पारितोषिक, (औप; सुर ४, ६१)। °**धम्मिय** न [°धर्मिक] जैन मुनिओं का एक कुल; (कप्प)। °**मण** वि [°मनस्] १ प्रीति-युक्त चित्त वाला; (भग)। २ पु महाशुक्र देवलोक का एक यान-विमान; (ठा ८—पत्र ४३७)। °**वद्धण** पुं [°वर्धन] कार्तिक मास का लोकोत्तर नाम; (सुज्ज १०, १६; कप्प)।

पीईय पुं [दे] वृक्ष-विशेष, गुल्म का एक भेद; "पीईयपाण-कणइरकुज्जय तह सिन्दुवारे य" (पगण १)।

पीऊस न [पीयूष] अमृत, सुधा, (पाअ)।

पीड सक [पीडय्] १ हैरान करना। २ दबाना। पीडइ,पीडेंतु; (पिंग; हे ४, ३८५)। कर्म—पीडिज्जइ; (पिंग)। कवकृ—**पीडिज्जंत**, **पीडिज्जमाण**, (से ११, १०२; गा ५४१; सण)।

पीड° देखो **पीडा**। °**यर** वि [°कर] पीड़ा-कारक; (पउम १०३, १४३)।

पीडरइ स्त्री [दे] चोर की स्त्री; (दे ६, ५१)।

पीडा स्त्री [पीडा] पीडन, हैरानी, वेदना; (पाअ)। °**कर** वि [°कर] पीडा-कारक;

"अलिअं न भासियव्वं अत्थि हु सच्चंपि जं न वत्तव्वं।
सच्चंपि तं न सच्चं जं परपीडाकरं वयणं"
(श्रा ११; प्रासू १५०)।

पीडिअ वि [पीडित] १ पीड़ा से अभिभूत, दुःखित; २ दबाया गया; (हे १, २०३; महा; पाअ)।

पीढ पुन [पीठ] १ आसन, पीढ़ा; "पीढं विट्ठरं आसणं" (पाअ; रयण ६३)। २ आसन-विशेष, व्रती का आसन; (चंड; हे १, १०६; उवा; औप)। ३ तल; "चत्तणा नेडपीढं" (कुमा)। ४ पुं. एक जैन महर्षि; (सद्वि ८१ टी)। °**बंध** पुं [°बन्ध] ग्रन्थ की अवतरणिका, भूमिका, "नय पीढबन्ध-रहियं कहिज्जमाणंपि देइ भावत्थं" (पउम ३, १६)। °**मद्द**, °**मद्दअ** पुंस्त्री [°मर्दक] काम-पुरुषार्थ में सहायक नायक समीप-वर्ती पुरुष, राजा आदि का वयस्य-विशेष;

(णाया १; १—पत्र १६, कप्प)। स्त्री—°मद्दिआ; (मा १६)। °सप्पि वि [°सर्पिन्] पंगु-विशेष, (आचा)।

पीढ न [दे] १ ईख पीलने का यन्त्र; (दे ६, ५१)। २ समूह, यूथ; "उद्दिय वणगइंदपीढं, पणट्ठा दिसो दिसों (?सिं) कप्पडिया" (स २३३)। ३ पीठ, शरीर के पीछे का भाग, "हत्थिपीढसमारूढो" (वि ६६)।

पीढग } न [**पीठक**] देखो **पीढ**=पीठ, (कस; गच्छ **पीढय** } १, १०; दस ७, २८)।

पीढरखंड न [**पीठरखण्ड**] नर्मदा-तीर पर स्थित एक प्राचीन जैन तीर्थ; (पउम ७७, ६४)।

पीढाणिय न [**पीठानीक**] अश्व-सेना, (ठा ५, १—पत्र ३०२)।

पीढिआ स्त्री [**पीठिका**] आसन-विशेष, मञ्च; "आसंदी पीढिआ" (पाअ)। देखो **पेढिया**।

पीढी स्त्री [दे. **पीठिका**] काष्ठ-विशेष, घर का एक आधार-काष्ठ; गुजराती में "पीढिउं";
"तत्तो नियत्तिऊणं सत्तट्ठ पयाइं जाव पहेरेइ।
ता उवरिपीढिखलणे खग्गेण खडक्किय तत्थ" (धर्मवि ५६)।

पीण सक [**प्रीणय्**] खुश करना। कृ—देखो **पीणणिज्ज**।

पीण वि [दे] चतुरस्र, चतुष्कोण, (दे ६, ५१)।

पीण वि [**पीन**] पुष्ट, मांसल, उपचित; (हे २, १५४; पाअ; कुमा)।

पीणण न [**प्रीणन**] खुश करना; (धर्मवि १४८)।

पीणणिज्ज वि [**प्रीणनीय**] प्रीति-जनक; (औप; कप्प; पणण १७)।

पीणाइय वि [दे. **पैनायिक**] गर्व से निर्वृत्त, गर्व से किया हुआ; "पीणाइयविरसरडियसद्देणं फोडयंते व अंबरतलं" (णाया १, १—पत्र ६३)।

पीणाया स्त्री [दे. **पीनाया**] गर्व, अहंकार; (णाया १, १)।

पीणिअ वि [**प्रीणित**] १ तोषित; (सण)। २ उपचित, परिवृद्ध; (दस ७, २३)। ३ पु. ज्योतिष-प्रसिद्ध योग-विशेष, जो पहले सूर्य या चन्द्र का किसी ग्रह या नक्षत्र के साथ होकर बाद में दूसरे सूर्य आदि के साथ उपचय को प्राप्त हुआ हो वह योग; (सुज्ज १२)।

पीणिम पुंस्त्री [**पीनता**] पुष्टता, मांसलता, (हे २, १५४)।

पीयमाण देखो **पा**=पा।

पीयमाण देखो **पी**=पी।

पील सक [**पीडय्**] १ पीलना, दबाना। २ पीड़ा करना, हैरान करना। पीलइ, पीलेइ; (धात्वा १४५; पि २४०)। कवकृ—**पीलिज्जंत**; (आ ६)।

पीलण न [**पीलन**] दबाव, पीलन, पीलना; "मागांमिणीण माणो पीलणभीअ व्व हिअआहि" (काप्र १६६), "जंतपीलण-कम्मं" (उवा)।

पीला देखो **पीडा**; (उप ४३६; सुपा ३५८)।

पीलावय वि [**पीडक**] १ पीलने वाला, २ पुं. तेली, यंत्र से तेल निकालने वाला; (वज्जा ११०)।

पीलिअ वि [**पीडित**] पीला हुआ, (औप; ठा ५, ३; उव)।

पीलु पु [**पीलु**] १ वृक्ष-विशेष, पीलु का पेड़; (पणण १; वज्जा ४६)। २ हाथी; (पाअ; स ७३५)। ३ न. दूध; "एगइं वहुनामं दुद्धं पया पीलु खीरं च" (पिंड १३१)।

पीलुअ पुं [दे. **पीलुक**] शावक, बच्चा, "तडसंठिअणीडक्कंत-पीलुआरक्खणेक्कदिण्णमणा" (गा १०२)।

पीलुट्ठ वि [दे. **प्लुष्ट**] देखो **पिलुट्ठ**; (दे ६, ५१)।

पीवर वि [**पीवर**] उपचित, पुष्ट; (णाया १, १; पाअ; सुपा २६१)। °**गब्भा** स्त्री [°**गर्भा**] जो निकट भविष्य में ही प्रसव करने वाली हो वह स्त्री; (ओघभा ८३)।

पीवल देखो **पीअ**=पीत; (हे १, २१३; २, १७३; कुमा)।

पीस सक [**पिष्**] पीसना। पीसइ; (पि ७६)। वकृ—**पीसंत**; (पिंड ५७४; णाया १, ७)। संकृ—**पीसिऊण**; (कुप्र ४५)।

पीसण न [**पेषण**] १ पीसना, दलना; (पणह १, १; उप पृ १४०; रयण १८)। २ वि. पीसने वाला; (सुअ १, २, १, १२)।

पीसय वि [**पेषक**] पीसने वाला; (सुपा ६३)।

पीह सक [**स्पृह्**, **प्र+ईह्**] अभिलाषा करना, चाहना। पीहंति, पीहेज्जा; (औप; ठा ३, ३—पत्र १४४)।

पीहग पु [**पीठक**] नवजात शिशु को पीलाइ जाती एक वस्तु; (उप ३११)।

°**पु** स्त्री [**पुर्**] शरीर, (विसे २०६५)।

पुअ न [**प्लुत**] १ तिर्यग् गति; २ झाँपना, झम्प-गति; "जुज्झा-मो पु(? पु)यवाएहिं" (विसे १४३६ टी)। °**जुद्ध** न [°**युद्ध**] अधम युद्ध का एक प्रकार; (विसे १४७७)।

पुअंड पुं [दे] तरुण, युवा; (दे ६, ५३; पाअ)।

पुआइ पुं [दे] १ तरुण, युवा; (दे ६, ८०)। २ उन्मत्त; (दे ६, ८०; षड्)। ३ पिशाच; (दे ६, ८०; पाअ; षड्)।

पुआइणी स्त्री [**दे**] १ पिशाच-गृहीत स्त्री, भूताविष्ट महिला; २ उन्मत्त स्त्री; ३ कुलटा, व्यभिचारिणी; (दे ६, ५४)।

पुआव सक [**प्लावय्**] ले जाना। संकृ—**पुयावइत्ता**: (ठा ३, २)।

पुं॰ पुं [**पुंस्**] पुरुष, मर्द, (पि ४१२; धम्म १२ टी)। देखो **पुंगव, पुंनाग, पुंवउ** आदि।

पुंख पुं [**पुङ्ख**] १ बाण का अग्र भाग; "तस्स य सरस्स पुंखं विद्धइ अन्नेण तिक्खबाणेण" (धर्मवि ६७; उप पृ ३६५)। २ न. देव-विमान विशेष; (सम २२)।

पुंखणग न [**दे, प्रोङ्खणक**] चुमाना, विवाह की एक रीति, गुजराती में 'पोखणुं'; (सुपा ६५)।

पुंखिअ वि [**पुङ्खित**] पुख-युक्त किया हुआ; "धणुहे तिक्खो सरो पुंखिओ" (कप्पू)।

पुंगल पु [**दे**] श्रेष्ठ, उत्तम; (भवि)।

पुंगव वि [**पुङ्गव**] श्रेष्ठ, उत्तम; (सुपा ५; ८०; श्रु ४१; गउड)।

पुंछ सक [**प्र+उञ्छ्**] पोंछना, सफा करना। पुंछइ; (प्राकृ ६७; हे ४, १०५)। कृ—**पुंछणीअ**; (पि १८२)।

पुंछ पुंन [**पुच्छ**] पूँछ, लांगूल; (प्राकृ १२; हे १, २६)।

पुंछण न [**प्रोञ्छन**] १ मार्जन; (कप्प; उवा; सुपा २६०)। २ रजोहरण, जैन मुनि का एक उपकरण, (वृह १)।

पुंछणी स्त्री [**प्रोञ्छनी**] पोंछने का एक छोटा तृणमय उपकरण; (राय)।

पुंछिअ वि [**प्रोञ्छित**] पोंछा हुआ, मृष्ट; (पाअ; कुमा; भवि)।

पुंज सक [**पुञ्ज्, पुञ्जय्**] १ इकट्ठा करना। २ फैलाना, विस्तार करना। पुंजइ; (हे ४, १०२; भवि)। कर्म—पुंजिज्जइ; (कप्पू)। कवकृ—**पुंजइज्जमाण**; (से १२, ८६)।

पुंज पुन [**पुञ्ज**] ढग, राशि, (कप्प, कस, कुमा), "खारिक्कपुंजयाइं ठावइ" (सिरि ११६६)।

पुंजइअ वि [**पुञ्जित**] १ एकत्रित, (से ६, ६३; पउम ८, २६१)। २ व्याप्त, भरपूर; (पउम ८, २६१)।

पुंजइज्जमाण देखो **पुंज**=पुञ्ज्।

पुंजक } वि [**पुञ्जक**] १ राशि रुप से स्थित, "न उणं
पुंजय } पुंजकपुंजका" (पिंड ८२)। २ देखो **पुंज**=पुञ्ज।

पुंजय पुन [**दे**] कतवार; गुजराती में 'पूंजो',
"काओवि तहिं पुंजयपुंछणछउमेण निययपावरयं।
अवणितीओ इव सारविंति जिणमदिरंगणयं" (सुपा २६०)।

पुंजाय वि [**दे**] पिण्डाकार किया हुआ, "पुंजायं पिंडलइयं" (पाअ)।

पुंजाविय वि [**पुञ्जित**] एकत्रित कराया हुआ, (काल)।

पुंजिअ वि [**पुञ्जित**] एकत्रित, (से ५, ७२; कुमा; कप्पू)।

पुंड पुं [**पुण्ड्र**] १ देश-विशेष, विन्ध्याचल के समीप का भू-भाग; (स २२५; भग १५)। २ इक्षु-विशेष, (पउम ४२, ११; गा ७४०)। ३ वि. पुण्ड्र-देशीय, (पउम ६६, ५५)। ४ धवल, श्वेत, सफेद; (णाया १, १७ टी—पत्र २३१)। ५ तिलक, (स ६; पिंडभा ४३, कुप्र २६४)। ६ देव-विमान-विशेप, (सम २२)। °**वद्धण** न [°**वर्धन**] नगर-विशेप; (स २२५)। देखो **पोंड**।

पुंडइअ वि [**दे**] पिण्डीकृत, पिण्डाकार किया हुआ, (दे ६, ५४)।

पुंडरिक देखो **पुंडरीअ**, (सूअ २, १, १)।

पुंडरिकि वि [**पुण्डरीकिन्**] पुण्डरीक वाला; (सूअ २, १, १)।

पुंडरिगिणी स्त्री [**पुण्डरीकिणी**] पुष्कलावती विजय की एक नगरी; (णाया १, १६; इक; कुप्र २६५)।

पुंडरिय देखो **पुंडरीअ**=पुण्डरीक, पौण्डरीक; (उव; काल, पि ३५४)।

पुंडरीअ पुं [**पुण्डरीक**] १ ग्यारह रुद्र पुरुषों में सातवाँ रुद्र, (विचार ४७३)। २ एक राजा, महापद्म राजा का एक पुत्र; (कुप्र २६५; णाया १, १६)। ३ व्याघ्र, शार्दूल; (पाअ)। ४ पुंन. तप-विशेप; (पव २७१)। ५ श्वेत पद्म, सफेद कमल; (सूअनि १४५)। ६ कमल, पद्म, "अंबुरुहं सयवत्तं सरोरुहं पुंडरीअमरविंदं" (पाअ; सम १; कप्प)। ६ देव-विमान विशेष; (सम ३५)। ७ वि. श्वेत, सफेद; (संग १३२)। °**गुम्म** न [°**गुल्म**] देव-विमान-विशेप, (सम ३५)। °**दह**, °**द्दह** पुं [°**द्रह**] शिखरी पर्वत पर का एक महा-हृद, (ठा २, ३; सम १०४)।

पुंडरीअ वि [**पौण्डरीक**] १ श्वेत पद्म का, श्वेत-पद्म-संबन्धी; (सूअनि १४५)। २ प्रधान, मुख्य, ३ कान्त, श्रेष्ठ, उत्तम, (सूअनि १४७, १४८)। ४ न. सूत्रकृतांग सूत्र के द्वितीय श्रुतस्कन्ध का पहला अध्ययन, (सूअनि १५७)। देखो **पोंडरीग**।

पुंडरीया स्त्री [**पुण्डरीका**] देखो **पोंडरी**, (राज)।

पुंडेअ [**दे**] जाओ, (दे ६, ५२)।

पुंढ देखो **पुंड**; (उप ७६५)।

पुंढ पुं [**दे**] गर्त, गड्हा, (दे ६, ५२)।

पुंनाग पुं [**पुन्नाग**] १ वृक्ष-विशेष, पुष्प-प्रधान एक वृक्ष-जाति, पुन्नाग, पुलाक, सुलतान चम्पक, पाटल का गाछ; (उप पृ १८; ७६८ टी; सम्मत्त १७५)। २ श्रेष्ठ पुरुष, उत्तम मर्द; (धम्म १२ टी; सम्मत्त १७५)। देखो **पुन्नाम**।

पुंपुअ पु [**दे**] संगम; (दे ६, ५२)।

पुंभ पुन [**दे**] नीरस, दाडिम का छिलका(?), "मग्गइ अलत्तयं जा निपीलियं पुंभमप्पए ताव" (धर्मवि ६७)। ["अलत्तए मग्गिए नीरसं पणामेइ" (महा ५६)]।

पुंवउ पुंन [**पुंवचस्**] व्याकरणोक्त संस्कार-युक्त शब्द-विशेष, पुंलिंग शब्द; (पणण ११—पत्र ३६३)।

पुंवेय पुं [**पुंवेद**] १ पुरुष को स्त्री-स्पर्श का अभिलाष; २ उसका कारण-भूत कर्म; (पि ४१२)।

पुंस सक [**पुंस्, मृज्**] मार्जन करना, पोंछना। पुंसइ; (हे ४, १०५)।

पुंस° देखो **पुं**°। °**कोइल**, °**कोइलग** पुं [°**कोकिल**] मरदाना कोयल, पिक; (ठा १०—पत्र ४६६; पि ४१२)।

पुंसण न [**पुंसन**] मार्जन; (कुमा)।

पुंसद्द पुं [**पुंशब्द**] 'पुरुष' ऐसा नाम; (कुमा)।

पुंसली स्त्री [**पुंश्चली**] कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री; (वज्जा ९८; धर्मवि १३७)।

पुंसिअ वि [**पुंसित**] पोंछा हुआ; (दे १, ९९)।

पुक्क } सक [**पूत् + कृ**] पुकारना, डाँकना, आह्वान **पुक्कर** } करना। पुक्करेइ; (धम्म ११ टी)। वकृ—**पुक्कंत, पुक्करंत**; (पण्ह १, ३—पत्र ४५; श्रा १२)। देखो **पोक्क**।

पुक्करिय वि [**पूत्कृत**] पुकारा हुआ; (सुपा ३८१)।

पुक्कल देखो **पुक्खल**; (पण्ह २, ५—पत्र १५१)।

पुक्का स्त्री. देखो **पुक्कार**=पूत्कार; (पाअ, सुपा ५१७)।

पुक्कार देखो **पुक्कर**। पुक्कारेंति, (राय)। वकृ—**पुक्कारंत, पुक्कारिंत, पुक्कारेमाण**; (सुपा ४१५; ३८१; २४८; गाया १, १८)।

पुक्कार पुं [**पूत्कार**] पुकार, डाँक, आह्वान; (सुपा ५१७, महा; सण)।

पुक्खर देखो **पोक्खर**=पुष्कर; (कप्प; महा; पि १२५)। °**कण्णिया** स्त्री [°**कर्णिका**] पद्म का बीज-कोश, कमल का मध्य भाग; (औप)। °**क्ख** पु [°**ाक्ष**] १ विष्णु, श्रीकृष्ण। २ कश्मीर के एक राजा का नाम; (मुद्रा २४२)। °**गय** न [°**गत**] वाद्य-विशेष का ज्ञान, कला-विशेष; (औप)। °**द्ध** न [°**ार्ध**] पुष्करवर-नामक द्वीप का आधा हिस्सा; (सुज्ज १९)। °**वर** पुं [°**वर**] द्वीप-विशेष; (ठा २, ३; पडि)। °**संवट्टग** देखो **पुक्खल-संवट्टय**; (राज)। °**ावत्त** देखो **पुक्खलावट्टय**; (राज)।

पुक्खरिणी देखो **पोक्खरिणी**; (सूअ २, १, २, ३; औप, पाअ)।

पुक्खरोअ } पुं [**पुष्करोद**] समुद्र-विशेष; (इक; ठा ७, **पुक्खरोद** } १; ७; सुज्ज १९)।

पुक्खल पुं [**पुष्कर**] १ एक विजय, प्रान्त-विशेष, जिसकी मुख्य नगरी का नाम औषधि है; (इक)। २ पद्म, कमल; "भिसभिसमुणालपुक्खलत्ताए" (सूअ २, ३, १८)। ३ पद्म-केसर; (आचा २, १, ८—सूत्र ४७)। °**विभंग** न [°**विभङ्ग**] पद्म-कन्द; (आचा २, १, ८—सूत्र ४७)। °**संवट्ट, संवट्टय** पुं [**संवर्त**, °**क**] मेघ-विशेष, जिसके बरसने से दस हजार वर्ष तक पृथिवी वासित रहती है; (उर २, ६; ठा ४, ४—पत्र २७०)। देखो **पुक्खर**।

पुक्खल पुं [**पुष्कल**] १ एक विजय, प्रदेश-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ८०)। २ अनार्य देश-विशेष; ३ पुंस्त्री. उस देश में उत्पन्न, उसमें रहने वाला; "सिंघलीहिं पुलिंदीहिं पुक्खलीहिं (?)" (भग ९, ३३—पत्र ४५७)। ["सिंहलीहिं पुलिंदीहिं पक्कणीहिं (?)" (भग ९, ३३ टी—पत्र ४६०)]। ४ अत्यन्त, प्रभूत; (कुप्र ४१०)। ५ संपूर्ण, परिपूर्ण; (सूअ २, १, १)।

पुक्खलच्छिभग } पुंन [**दे**] जलरुह-विशेष, जल में होने **पुक्खलच्छिभय** } वाली वनस्पति-विशेष; (सूअ २, ३, १८; १९)। देखो **पोक्खलच्छिलय**।

पुक्खलावई स्त्री [**पुष्करावती, पुष्कलावती**] महाविदेह वर्ष का विजय—प्रान्त-विशेष; (ठा २, ३; इक; महा)। °**कूड** पुन [°**कूट**] एकशैल पर्वत का एक शिखर; (इक)।

पुक्खलावट्टय पु [**पुष्करावर्तक, पुष्कलावर्तक**] मेघ-विशेष, "पुक्खल(?ला)वट्टए णं महामेहे एगेणं वासेणं दस वाससहस्साइं भावेति" (ठा ४, ४)।

पुक्खलावत्त पुं [**पुष्करावर्त, पुष्कलावर्त**] महाविदेह वर्ष का एक विजय—प्रान्त; (जं ४)। °**कूड** पुं [°**कूट**] एक-शैल पर्वत का एक शिखर; (इक)।

पुग्ग पुन [**दे**] वाद्य-विशेष, "सो पुरम्मि पुग्गाइं वाएइ" (कुप्र ४०३)।

पुग्गल देखो पोग्गल; (सिक्खा १५; नव ४२; पि १२५)। °परट्ट, °परावत्त पु [°परावर्त] देखो पोग्गल-परिअट्ट, (कम्म ५, ८६; वै ५०; सिक्खा ८)।

पुच्चड देखो पोच्चड; "सेयमलपुच्च(?च्च)डम्मी" (तदु ४०)।

पुच्छ सक [प्रच्छ्] पूछना, प्रश्न करना। पुच्छइ; (हे ४, ६७)। भूका—पुच्छिसु, पुच्छीअ, पुच्छे; (पि ५१६; कुमा, भग)। कर्म—पुच्छिज्जइ; (भवि)। वकृ—पुच्छंत; (गा ४७, ३५७, कुमा)। कवकृ—पुच्छिज्जंत; (गा ३४७; सुर ३, १५१)। संकृ—पुच्छित्ता; (भग)। हेकृ—पुच्छिउं, पुच्छित्तए; (पि ५७३; भग)। कृ—पुच्छणिज्ज, पुच्छणीअ, पुच्छियव्व, पुच्छेयव्व; (श्रा १४; पि ५७१; उप ८६४; कप्प)।

पुच्छ देखो पुंछ=प्र+उञ्छ्। पुच्छइ; (षड्)।

पुच्छ देखो पुंछ=पुच्छ, (कप्प)।

पुच्छअ, पुच्छग वि [प्रच्छक] पूछने वाला, प्रश्न-कर्ता; (ओघभा २८, सुर १०, ६५)। स्त्री—°च्छिआ; (अभि १२५)।

पुच्छण न [प्रच्छन, प्रश्न] पृच्छा; (सूअनि १६३; धर्मवि ८; श्रावक ६३ टी)।

पुच्छणया, पुच्छणा स्त्री [प्रच्छना] ऊपर देखो; (उप ४६६; ओप)।

पुच्छणी स्त्री [प्रच्छनी] प्रश्न की भाषा; (ठा ४, १—पत्र १८२)।

पुच्छल (अप) देखो पुट्ठ=पृष्ट ; (पिंग)।

पुच्छा स्त्री [प्रच्छा] प्रश्न; (उवा; सुर ३, ३५)।

पुच्छिअ वि [प्रष्ट] पूछा हुआ, (ओप, कुमा; भग; कप्प; सुर २, १६८)।

पुच्छिर वि [प्रष्टृ] प्रश्न-कर्ता; (गा ५६८)।

पुछल देखो पुच्छल, (पिंग)।

पुज्ज सक [पूजय्] पूजना, आदर करना। पुज्जइ; (कुप्र ४२३; भवि)। कर्म—पुज्जिज्जइ; (भवि)। वकृ—पुज्जंत; (कुप्र १२१)। कवकृ—पुज्जिज्जंत; (भवि)। संकृ—पुज्जिउं, पुज्जिऊण; (कुप्र १०२; भवि)। कृ—पुज्जिअव्व; (ती ७)। प्रयो—पुज्जावइ; (भवि)।

पुज्ज देखो पूज=पूजय्।

पुज्जंत देखो पुज्ज=पूजय्।

पुज्जंत देखो पूर=पूरय्।

पुज्जण न [पूजन] पूजा, अर्चा; (कुप्र १२१)।

पुज्जमाण देखो पूर=पूरय्।

पुज्जा स्त्री [पूजा] पूजा, अर्चा, (उप पृ २४२)।

पुज्जिय वि [पूजित] सेवित, अर्चित, (भवि)।

पुट्ट सक [प्र+उञ्छ्] पोंछना। पुट्टइ; (प्राकृ ६७)।

पुट्ट न [दे] पेट, उदर, (श्रा २८, मोह ४१; पव १३५; सम्मत्त २२६; सिरि २४२; सण)।

पुट्टल, पुट्टलय पुन [दे] गठडी, गाँठ; गुजराती में 'पोटलु'; "सवलपुट्टलयं च गहिय" (सम्मत्त ६१)।

पुट्टलिया स्त्री [दे] छोटी गठडी; (सुपा ४३; ३४४)।

पुट्टिल पुं [पोट्टिल] १ भगवान् महावीर का एक शिष्य, जो भविष्य में तीर्थंकर होने वाला है; (विचार ४७८)। २ एक अनुत्तर-देवलोक-गामी जैन महर्षि; (अनु २)।

पुट्ठ वि [स्पृष्ट] १ छुआ हुआ, (भग; ओप; हे १, १३१)। २ न. स्पर्श; (ठा २, १, नव १८)।

पुट्ठ वि [पृष्ट] १ पूछा हुआ; (ओप, सण; हे २, ३४)। २ न. प्रश्न; (ठा २, १)। °लाभिय वि [°लाभिक] अभिग्रह-विशेष वाला (मुनि), (ओप, पण्ह २, १)। °सेणियापरिकम्म पुंन [°श्रेणिकापरिकर्मन्] दृष्टिवाद का एक प्रतिपाद्य विषय; (सम १२८)।

पुट्ठ वि [पुष्ट] उपचित; (गाया १, ३, स ४१६)।

पुट्ठ देखो पिट्ठ=पृष्ठ; (प्राप्र, संक्षि १६)।

पुट्ठव वि [स्पृष्टवत्] जिसने स्पर्श किया हो वह, (आचा १, ७, ८, ८)।

पुट्ठवई देखो पोट्ठवई; (सुज्ज १०, ६)।

पुट्ठवया स्त्री [प्रोष्ठपदा] नक्षत्र-विशेष; (सुज्ज १०, ५)।

पुट्ठि स्त्री [पुष्टि] पोषण, उपचय; (विसे २३१; चेइय ८)। २ अहिंसा, दया, (पण्ह २, १—पत्र ६६)। °म वि [°मत्] १ पुष्टि वाला। २ पुं भगवान् महावीर का एक शिष्य, (अनु)।

पुट्ठि देखो पिट्ठि=पृष्ठ, "पाअपडिअस्स पइणो पुट्ठिं पुत्ते समारुहतम्मि" (गा ११; ३३; ८७, प्राप्र, संक्षि १६)।

पुट्ठि स्त्री [पृष्टि] पृच्छा, प्रश्न। °य वि [°ज] प्रश्न-जनित, (ठा २, १—पत्र ४०)।

पुट्ठि स्त्री [स्पृष्टि] स्पर्श। °य वि [°ज] स्पर्श-जनित, (ठा २, १)।

पुट्ठिया स्त्री [पृष्टिका] प्रश्न से होने वाली क्रिया—कर्म-बन्ध, (ठा २, १)।

पुट्ठिया स्त्री [**स्पृष्टिका**] स्पर्श से होने वाली क्रिया—कर्म-बन्ध; (ठा २, १)।

पुट्ठिल देखो **पोट्ठिल**, (अनु २)।

पुट्ठीया स्त्री [**स्पृष्टीया**] देखो **पुट्ठिया**=स्पृष्टिका; (नव १८)।

पुट्ठीया स्त्री [**पृष्टीया**] पृच्छा से होने वाली क्रिया—कर्म-बन्ध; (नव १८)।

पुड पुंन [**पुट**] १ मिथः संबन्ध, परस्पर जोड़ान, मिलाव, मिलान; "अंजलिपुड—", "ताहे करयलपुडेण नीओ सो" (ओप; महा)। २ खाल, ढोल आदि का चमड़ा; "हुरव्वपुडसंठाणसठिया" (उवा ६४ टी, गउड; ११६७; कुमा)। ३ संबद्ध दल-द्वय, मिला हुआ दो दल; "सिप्पपुडसठिया" (उवा; गउड ५७६)। ४ ओषधि पकाने का पात्र-विशेष; (गाया १, १३)। ५ पत्रादि-रचित पात्र, दोना; (रभा)। ६ आच्छादन, ढक्कन; (उवा; गउड)। ७ कमल, पद्म; "पुडइणी" (विक्र २३)। °**भेयण** न [°**भेदन**] नगर, शहर; (कस)। °**वाय** पुं [°**पाक**] १ पुट-पात्रों से ओषधि का पाक-विशेष; २ पाक-निष्पन्न ओषध-विशेष; "पुढ(? ड)-वाएहि" (गाया १, १३—पत्र १८१)।

पुड (शौ) देखो **पुत्त**=पुत्र; (पि २९२; प्राप्र)।

पुडइअ वि [**दे**] पिण्डीकृत, एकत्रित; (दे ६, ५४)।

पुडइणी स्त्री [**दे. पुटकिनी**] नलिनी, कमलिनी; (दे ६, ५५; विक्र २३)।

पुडग पुंन [**पुटक**] देखो **पुट**= पुट; (उवा)।

पुडपुडी स्त्री [**दे**] मुँह से सीटी बजाना, एक प्रकार की अव्यक्त आवाज; (पव ३८)।

पुडम देखो **पुढम**; (प्रति ७१; पि १०४)।

पुडय देखो **पुडग**; (उवा; सुपा ६५६)।

पुडिंग न [**दे**] मुँह, वदन; २ बिन्दु; (दे ६, ८०)।

पुडिया स्त्री [**पुटिका**] पुड़ी, पुड़िया; (दे ५, १२)।

पुड्ड (शौ) देखो **पुत्त**=पुत्र; (प्राप्र)।

पुढं देखो **पिहं**; (षड्)।

पुढम वि [**प्रथम**] पहला; (हे १, ५५; कुमा; स्वप्न २३१)।

पुढवि° देखो **पुढवी**; (आचानि १, १, २; भग १९, ३; पि ९७)। °**काइय**, °**क्काइय** वि [°**कायिक**] पृथिवी शरीर वाला (जीव); (पण्ण १; भग १९, ३; ठा १; आचानि १, १, २)। °**क्काय** देखो **पुढवी-काय**; (आचानि १, १, २)।

पुढवी स्त्री [**पृथिवी**] १ पृथिवी, धरती, भूमि; (हे १, ८८, १३१; ठा ३, ४)। २ काठिन्यादि गुण वाला पदार्थ, द्रव्य-विशेष—मृत्तिका, पाषाण, धातु आदि; (पण्ण १)। ३ पृथिवीकाय का जीव; (जी २)। ४ ईशानेन्द्र के एक लोकपाल की अग्र-महिषी; (ठा ४, १—पत्र २०४)। ५ एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८—पत्र ४३६)। ६ भगवान सुपार्श्वनाथ की माता का नाम; (राज)। °**काइय** देखो **पुढवि-काइय**; (राज)। °**काय** वि [°**काय**] पृथिवी शरीर वाला (जीव); (आचानि १, १, २)। °**वइ** पु [°**पति**] राजा; (ठा ७)। °**सत्थ** न [°**शस्त्र**] १ पृथिवी रूप शस्त्र; २ पृथिवी का शस्त्र, हल, कुद्दाल आदि; (आचा)। देखो **पुहई**, **पुहवी**।

पुढोभूय वि [**पृथग्भूत**] जो अलग हुआ हो; (सुपा २३६)।

पुढुम वि [**प्रथम**] पहला, आद्य; (हे १, ५५; कुमा)।

पुढो अ [**पृथग्**] अलग, भिन्न; (सुपा ३६२; रयण ३०; श्रावक ४०; आचा)। °**छंद** वि [°**छन्द**] विभिन्न अभिप्राय वाला; (आचा; पि ७८)। °**जण** पु [°**जन**] प्राकृत मनुष्य, साधारण लोक; (सूअ १, ३, १, ६) °**जिय** पुं [°**जीव**] विभिन्न प्राणी; (सूअ १, १, २, ३)। °**विमाय**, °**वेमाय** वि [°**विमात्र**] अनेक प्रकार का, बहुविध; (राज; ठा ४,४—पत्र २८०)।

पुढोजग वि [**दे. पृथग्जक**] पृथग्भूत, भिन्न व्यवस्थित: "जमिणं जगती पुढोजगा" (सूअ १, २, १, ४)।

पुढोवम वि [**पृथिव्युपम**] पृथिवी की तरह सब सहन करने वाला; (सूअ १, ६, २६)।

पुढोसिय वि [**पृथवीश्रित**] पृथिवी के आश्रय में रहा हुआ; (सूअ १, १२, १३; आचा)।

पुण सक [**पू**] १ पवित्र करना। २ धान्य आदि को तुष-रहित करना, साफ करना। पुणइ; (हे ४, २४१)। पुणंति; (गाया १, ७)। कर्म—पुणिज्जइ, पुव्वइ; (हे ४, २४२)।

पुण अ [**पुनर्**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ भेद, विशेष; (विसे ८११)। २ अवधारण, निश्चय; ३ अधिकार, प्रस्ताव; ४ द्वितीय वार, वारान्तर; ५ पक्षान्तर; ६ समुच्चय; (पग्ह २, ३; गउड, कुमा; ओप; जी ३७; प्रासू ९; ५२; १६८; स्वप्न ७२; पिंग)। ७ पादपूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है; (निचू १)। °**करण** न

[°करण] फिर से बनाना; २ वि जिसकी फिर से बनावट की जाय वह; "भिन्नं संख न होइ पुणकरणं" (उव)। °णव वि [°नव] फिर से नया बना हुआ, ताजा, (उप ७६८ टी; कप्पू)। °पुण अ [°पुनर्] फिर फिर, वारंवार। °पुणक्करण न [°पुनःकरण] फिर फिर बनाना, वारंवार निर्माण, (दे १, ३२)। °ब्भव पुं [°भव] फिर से उत्पत्ति, फिर से जन्म-ग्रहण, (चेइय ३५७; औप)। °ब्भू स्त्री [°भू] फिर से विवाहित स्त्री, जिसका पुनर्लग्न हुआ हो वह महिला, "अत्थि पुणब्भूकप्पो त्ति विवाहिया पच्छन्नं" (कुप्र २०८, २०९)। °रवि, °रावि अ [°अपि] फिर भी, (उवा; उत्त १०, १६; १९)। °रावित्ति स्त्री [°आवृत्ति] पुनः आवर्तन; (पडि)। °रुत्त वि [°उक्त] फिर से कहा हुआ; २ न. पुनरुक्ति; (चेइय ५३८)। °वि अ [°अपि] फिर भी; (संक्षि १९; प्राकृ ८७)। °व्वसु पु [°वसु] १ नक्षत्र-विशेष; (सम १०; ६९)। २ आठवें वासुदेव के पूर्व जन्म का नाम; (सम १५३; पउम २०, १७२)।

पुण (अप) देखो **पुण्ण**=पुण्य। °**मंत** वि [°**मत्**] पुण्यशाली; (पिंग)।

पुणअ सक [**दृश्**] देखना। पुणअइ; (धात्वा १४५)।

पुणइ पुं [**दे**] श्वपच, चाण्डाल; (दे ६, ३८)।

पुणण वि [**पवन**] पवित्र करने वाला। स्त्री—°णी; (कुमा)।

पुणरुत्त, **पुणरुत्तं** अ. कृत-करण, वारंवार, फिर फिर; "अइ सुप्पइ पसुलि णीसेहेहिँ अंगेहिँ पुणरुत्तं" (हे १, १७९; कुमा), "ण वि तह छेअरआइँवि हरंति पुणरुत्तराअरसिआइ" (गा २७४)।

पुणा, **पुणाइ**, **पुणाइं** अ. देखो **पुण**=पुनर्, (पि ३४३; हे १, ६५; कुमा, पउम ६, ९७; उवा)।

पुणु (अप) देखो **पुण**=पुनर् ; (कुमा; पि ३४२)।

पुणो देखो **पुण**=पुनर्; (औप; कुमा, प्राकृ ८७)।

पुणोत्त देखो **पुण-रुत्त**, **पुणरुत्त**; (प्राकृ ३०)।

पुणोल्ल सक [**प्र+नोदय्**] १ प्रेरणा करना। २ अत्यन्त दूर करना। पुणोल्लयामो; (उत्त १२, ४०)।

पुण्ण पुंन [**पुण्य**] १ शुभ कर्म, सुकृत; (औप; महा, प्रासु ७५; पात्र)। २ दो उपवास, बेला, "भद्दं पुणं (? ण्णं) सुद्दी (?हि)यं छट्ठभत्तस्स एगट्ठा" (संबोध ५८)। ३ वि. पवित्र; "थाणुपियाजलपुण्णं" (कुमा)। **कलसा** स्त्री [°कलशा] लाट देश क एक गाँव का नाम, (राज)। °घण पुं [°घन] विद्याधरों का एक स्वनाम-ख्यात राजा; (पउम ५, ६५)। °मंत, °मत्त वि [°वत्] पुण्य वाला, भाग्यवान्; (हे २, १५९; चंड)। देखो **पुन्न**=पुण्य।

पुण्ण वि [**पूर्ण**] १ संपूर्ण, भरपूर, पूरा; (औप; भग; उवा)। २ पुं द्वीपकुमार देवों का दाक्षिणात्य इन्द्र, (इक)। ३ इक्षुवर समुद्र का अधिष्ठायक देव; (राज)। ४ तिथि-विशेष, पक्ष की पाँचवीं, दसवी और पनरहवीं तिथि, (सुज्ज १०, १५)। ५ पुन. शिखर-विशेष, (इक)। °कलस पुं [°कलश] संपूर्ण घट, (जं १)। °घोस पु [°घोष] ऐरवत वर्ष का एक भावी जिन-देव, (सम १५४)। °चंद पुं [°चन्द्र] १ सपूर्ण चन्द्रमा। २ विद्याधर वंश के एक राजा का नाम, (पउम ५, ४४)। °प्पभ पुं [°प्रभ] इक्षुवर द्वीप का अधिपति देव, (राज)। °भद्द पु [°भद्र] १ स्वनाम-ख्यात एक गृह-पति, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ले मुक्ति पाई थी; (अंत)। २ यक्ष-निकाय का एक इन्द्र, (ठा ४, १)। ३ पुंन. अनेक कूट —शिखरों का नाम, (इक)। ४ यक्ष का चैत्य-विशेष; (औप; विपा १, १, उवा)। °मासी स्त्री [°मासी] पूर्णिमा तिथि; (दे)। °सेण पुं [°सेन] राजा श्रेणिक का पुत्र, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी, (अनु)। देखो **पुन्न**=पूर्ण।

पुण्णमासिणी स्त्री [**पौर्णमासी**] तिथि-विशेष, पूर्णिमा; (औप; भग)।

पुण्णवत्त न [**दे**] आनन्द से हृत वस्त्र; (दे ६, ५३; पाअ)।

पुण्णा स्त्री [**पूर्णा**] १ तिथि-विशेष, पक्ष की ५, १० और १५ वी तिथि; (संबोध ५४; सुज्ज १०, १५)। २ पूर्णभद्र और माणिभद्र इन्द्र की एक महादेवी—अग्र-महिषी, (इक; णाया २), "पुण्णभद्दस्स णं जक्खिंदस्स जक्खरन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं जहा—पुत्ता(? ण्णा) बहुपुत्तिआ उत्तमा तारगा, एवं माणिभद्दस्सवि" (ठा ४, १—पत्र २०४)।

पुण्णाग, **पुण्णाम** देखो **पुन्नाग**, (पउम ४३, ३९; से ६, ५९; हे १, १९०; पि २३१)।

पुण्णाली स्त्री [**दे**] असती, कुलटा, पुंश्चली; (दे ६, ५३; पड्)।

पुण्णाह पुंन [**पुण्याह**] १ पुण्य दिन, शुभ दिवस; (गा १६५; गउड)। २ वाद्य-विशेष, "पुण्णाहतूरेण" (स ४०१; ७३४)।

पुण्णिमसी स्त्री [**पूर्णमासी**] पूर्णिमा, (संबोध ३६)।

पुण्णिमा स्त्री [**पूर्णिमा**] तिथि-विशेष, पूर्णमासी; (काप्र १६४)। °**यंद** पुं [°**चन्द्र**] पूर्णिमा का चन्द्र; (महा; हेका ४८)।
पुण्णिमासिणी देखो **पुण्णमासिणी**; (सम ६६; श्रा २६; सुज्ज १०, ६)।
पुत्त पुं [**पुत्र**] लड़का, (ठा १०; कुमा; सुपा ६६, ३३४; प्रासू २७; ७७; णाया १, २)। °**वई** स्त्री [°**वती**] लड़का वाली स्त्री, (सुपा २८१)।
पुत्तंजीवय पु [**पुत्रंजीवक**] वृक्ष-विशेष, पुतजीया, जिया-पोता का पेड़; "पुत्तंजीवअरिट्ठे"(पराण १—पत्र ३१)। २ न. जियापोता का बीज; "पुत्तंजीवयमालालंकिएणं" (स ३३७)।
पुत्तय पुं [**पुत्रक**] देखो **पुत्त**; (महा)।
पुत्तरे पुस्त्री [**दे**] योनि, उत्पत्ति-स्थान; "पुत्तरे योनौ" (संचि ४७)।
पुत्तलय पुं [**पुत्रक**] पूतला; (सिरि ८६१; ६२; ६४)।
पुत्तलिया } स्त्री [**पुत्रिका**] शालभञ्जिका, पूतली; (पाअ,
पुत्तली } कुम्मा ६; प्रवि १३; सुपा २६६; सिरि ८१५)।
पुत्तह देखो **पुत्त**; (प्राकृ ३५)।
पुत्ताणुपुत्तिय वि [**पौत्रानुपुत्रिक**] पुत्र-पौत्रादि के योग्य; "पुत्ताणुपुत्तियं वित्तिं कप्पेति" (णाया १, १—पत्र ३७)।
पुत्तिआ स्त्री [**पुत्रिका**] १ पुत्री, लड़की, (अभि १७८)। २ पूतली; (दे ६, ६२; कुमा)।
पुत्तिल्ल देखो **पुत्त**; (प्राकृ ३५)।
पुत्ती स्त्री [**पुत्री**] लड़की; (कप्पू)।
पुत्ती स्त्री [**पोती**] १ वस्त्र-खण्ड, मुख-वस्त्रिका; (पत्र ६०; संबोध ५४)। २ साडी, कटी-वस्त्र, (धर्मवि १७)। देखो **पोत्ती**।
पुत्तुल्ल पुं [**पुत्र**] पुत्र, लड़का; (प्राकृ ३५)।
पुत्थ वि [**दे**] मृदु, कोमल; (दे ६, ५२)।
पुत्थ } पुंन [**पुस्त, °क**] १ लेप्यादि कर्म, (श्रा १)।
पुत्थय } २ पुस्तक, पोथी, किताब, "पुत्थए लिहावेइ" (कुप्र ३४८), "अवहरिओ पुत्थओ सहसा" (सम्मत्त ११८)। देखो **पोत्थ**।
पुथवी देखो **पुढवी**; (चंड)।
पुथुणी } (पै) देखो **पुढवी**; (प्राकृ १२४; पि १६०)।
पुथुवी } °**नाथ** (पै) पुं [°**नाथ**] राजा, (प्राकृ १२४)।
पुध देखो **पिह**=पृथक्, (ठा १०)।
पुधं देखो **पिधं**, (हे १, १८८)।
पुधम } (पै) देखो **पुढम**, **पुढुम**, (पि १०४; हे ४,
पुधुम } ३१६)।
पुन्न देखो **पुण्ण**=पुन्य, "कह मह इत्तियपुन्ना जं सो दीसिज्ज पच्चक्ख" (सुर १२, ११८; उप ७६८ टी; कुमा)। °**कंखिअ** वि [°**काङ्क्षित, °काङ्क्षिन्**] पुण्य की चाह वाला; (भग)। °**कलस** पु [°**कलश**] एक राजा का नाम; (उप ७६८ टी)। °**जसा** स्त्री [°**यशस्**] एक स्त्री का नाम, (उप ७२८ टी)। °**पत्तिया** स्त्री [°**प्रत्यया**] एक जैन मुनि-शाखा; (कप्प)। °**पिवासय** वि [°**पिपासक**] पुण्य का प्यासा, पुण्य की चाह वाला; (भग)। °**भागि** वि [°**भागिन्**] पुण्य का भागी, पुण्य-शाली; (सुपा ६४१)। °**सम्म** पु [°**शर्मन्**] एक ब्राह्मण का नाम; (उप ७२८ टी)। °**सार** पुं [°**सार**] एक स्वनाम-ख्यात श्रेष्ठी; (उप ७२८ टी)।
पुन्न देखो **पुण्ण**=पूर्ण, (सुर २, ६७; उप ७६८ टी; ठा २, ३, अनु २)। °**तल्ल** पु [°**तल**] एक जैन मुनि-गच्छ; (कुप्र ६)। °**पाय** वि [°**प्राय**] करीब-करीब संपूर्ण, कुछ-कम पूर्ण; (उप ७२८ टी)। °**भद्द** पुं [°**भद्र**] १ यक्ष-विशेष, (सिरि ६६६)। २ यक्ष-निकाय का एक इन्द्र, (ठा २, ३)। ३ एक अन्तकृद् मुनि, (अंत १८)। ४ एक जैन मुनि, आर्य श्रीसंभूतविजय का एक शिष्य; (कप्प)।
पुन्नयण पुं [**पुण्यजन**] यक्ष, एक देव-जाति; (पाअ)।
पुन्नाग } देखो **पुंनाग**; (कप्प, कुमा; पउम २१, ४६;
पुन्नाम } पाअ)। ३ पुन्नाग का फूल, (कुमा; हे १,
पुन्नाय } १६०)।
पुन्नालिया } [**दे**] देखो **पुण्णाली**, (सुपा ५६६;
पुन्नाली } ५६७)।
पुन्निमा देखो **पुण्णिमा**; (रंभा)।
पुप्पुअ वि [**दे**] पीन, पुष्ट, उपचित; (दे ६, ५२)।
पुप्फ न [**पुष्प**] १ फूल, कुसुम, (णाया १, १; कप्प; सुर ३, ६५, कुमा)। २ एक विमानावास, देव-विमान विशेष; (देवेन्द्र १३५; सम ३८)। ३ स्त्री का रज, ४ विकास; ५ आँख का एक रोग; ६ कुबेर का विमान, (हे १, २३६; २, ५३; ६०; १५४)। °**इरि** पु [°**गिरि**] एक पर्वत का नाम, (पउम ७६, १०)। °**कंत** न [°**कान्त**] ए

देव-विमान; "पुप्फकंत" (सम ३८)। °**करंडय** पु [°**करण्डक**] हस्तिशीर्ष नगर का एक उद्यान, "पुप्फकरंडए उज्जाणे" (विपा २, १)। °**केउ** पुं [°**केतु**] १ ऐरवत क्षेत्र का सातवाँ भावी तीर्थंकर—जिनदेव; (सम १५४)। २ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष; (ठा २, ३)। °**ग** न [°**क**] १ मूल भाग; "भाणस्स पुप्फगतो इमेहिं कज्जेहिं पडिलेहे" (ओघ २८६)। २ पुष्प, फूल; (कप्प)। ३ देखो नीचे °**य**, (औप)। °**चूला** स्त्री [°**चूला**] १ भगवान् पार्श्वनाथ की मुख्य शिष्या का नाम; (सम १५२, कप्प)। २ एक महासती, अन्निकाचार्य की सुयोग्य शिष्या; (पडि)। ३ सुबाहुकुमार की मुख्य पत्नी का नाम; (विपा २, १)। °**चूलिया** स्त्री [°**चूलिका**] एक जैन ग्रन्थ; (निर १, ४)। °**च्चणिया** स्त्री [°**र्चनिका**] पुष्पों से पूजा, (णाया १, २)। °**च्चिणिया** स्त्री [°**चायिनी**] फूल विनने वाली स्त्री; (पाअ)। °**छज्जिया** स्त्री [°**छादिका**] पुष्प-पात्र विशेष; (राज)। °**ज्झय** न [°**ध्वज**] एक देव-विमान; (सम ३८)। °**णंदि** पुं [°**नन्दिन्**] एक राजा का नाम; (ठा १०)। °**णालिया** देखो °**नालिया**; (तंदु)। °**दंत** पुं [°**दन्त**] १ नववाँ जिनदेव, श्री सुविधिनाथ; (सम ६२; ठा २, ४)। २ ईशानेन्द्र के हस्ति-सैन्य का अधिपति देव; (ठा ५, १; इक)। ३ देव-विशेष, (सिरि ६६७)। °**दंती** स्त्री [°**दन्ती**]। दमयन्ती की माता का नाम, एक रानी; (कुप्र ४८)। °**नालिया** स्त्री [°**नालिका**] पुष्प का बेंट, (तंदु ४)। °**निज्जास** पुं [°**निर्यास**] पुष्प-रस; (जीव ३)। °**पुर** न [°**पुर**] पाटलिपुत्र, पटना शहर; (राज)। °**पूरय** पुं [°**पूरक**] पुष्प की रचना-विशेष; (णाया १, १६)। °**प्पभ** न [°**प्रभ**] एक देव-विमान, (सम ३८)। °**बलि** पुं [°**बलि**] उपचार, पुष्प-पूजा; (पाअ)। °**बाण** पु [°**बाण**] कामदेव; (रंभा)। °**भद्द** खोन [**भद्र**] नगर-विशेष, पटना शहर; (राज)। °**मंत** वि [°**वत्**] पुष्प वाला, (णाया १, १)। °**माल** न [°**माल**] वैताढ्य की उत्तर श्रेणि का एक नगर; (इक)। °**माला** स्त्री [°**माला**] ऊर्ध्व लोक में रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८—पत्र ४३७)। °**य** पुं [°**क**] १ फेन, डिण्डीर; (पाअ)। २ न, ईशानेन्द्र का एक पारियानिक विमान, देव-विमान-विशेष; (ठा ८, इक; पउम ७६, २८, औप)। ३ पुष्प, फूल; (कप्प)। ४ ललाट का एक पुष्पाकार आभूषण, (जं २)। देखो ऊपर °**ग**। °**लाई**, °**लावी** स्त्री [°**लावी**] फूल विनने वाली स्त्री; (पाअ; दे १, ६)। °**लेस** न [°**लेश्य**] एक देव विमान; (सम ३८)। °**वई** स्त्री [°**वती**] १ ऋतुमती स्त्री; (दे ६, ६४; गा ४८०)। २ सत्पुरुष-नामक किंपुरुषेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ४, १; णाया २)। ३ बीसवें जिनदेव की प्रवर्तिनी—प्रमुख साध्वी— का नाम; (सम १५२; पव ६)। ४ चैत्य-विशेष; (भग)। °**वण्ण** न [°**वर्ण**] एक देव-विमान; (सम ३८)। °**सिंग** न [°**शृङ्ग**] एक देव-विमान, (सम ३८)। °**सिद्ध** न [°**सिद्ध**] देव-विमान विशेष: (सम ३८)। °**सुय** पु [°**शुक**] व्यक्ति-वाचक नाम; (उत्र)। °**ावत्त** न [°**ावर्त**] एक देव-विमान, (सम ३८)।

पुप्फस न [**दे**] फेफड़ा, शरीर का एक भीतरी अंग, (पउम १०५, ५५)।

पुप्फा स्त्री [**दे**] फूफी, पिता की बहिन; (दे ६, ५२)।

पुप्फिअ वि [**पुष्पित**] कुसुमित, संजात-पुष्प; (धर्मवि १४८; कुमा; णाया १, ११; सुपा ५८)।

पुप्फिआ [**दे**] देखो **पुप्फा**; (पाअ)।

पुप्फिआ स्त्री [**पुष्पिता**] एक जैन आगम-ग्रन्थ, (निर १, ३)।

पुप्फिम पुंस्त्री [**पुष्पत्व**] पुष्पपन; (हे २, १५४)।

पुप्फी [**दे**] देखो **पुप्फा**; (पड्)।

पुप्फुआ स्त्री [**दे**] करीष का अग्नि, "सूइज्जइ हेमंतम्मि दुग्गओ पुप्फुआसुअंधेण" (गा ३२६)।

पुप्फुत्तर न [**पुष्पोत्तर**] एक विमान; (कप्प)। °**वडिंसग** न [°**ावतंसक**] एक देव-विमान; (सम ३८)।

पुप्फुत्तरा } स्त्री [**पुष्पोत्तरा**] शक्कर की एक जाति; (णाया
पुप्फोत्तरा } १, १७—पत्र २२६, पण्ण १७—पत्र ५३३)।

पुप्फोदय न [**पुष्पोदक**] पुष्प-रस से मिश्रित जल; (णाया १, १—पत्र १६)।

पुप्फोवय } वि [**पुष्पोपग**] पुष्प प्राप्त करने वाला, फूलने
पुप्फोवा° } वाला (वृक्ष); (ठा ३, १—पत्र ११३)।

पुम पुं [**पुंस्**] १ पुरुष, नर; "थीअपुमाग विसुज्झंता" (पच ५, ७२), "पुमत्तमागम्म कुमार दोवि" (उत्त १४, ३; ठा ८; औप)। २ पुरुष-वेद, (कम्म ५, ६०)। °**आणमणी** स्त्री [°**आज्ञापनी**] पुरुष को आज्ञा देने वाली भाषा, भाषा-विशेष; (पण्ण ११)। °**पन्नवणी** स्त्री [°**प्रज्ञापनी**] भाषा-विशेष, पुरुष के लक्षणों का प्रतिपादन करने वाली भाषा; (पण्ण ११—पत्र ३६४)। °**वयण** न [°**वचन**] पुलिंग शब्द का उच्चारण, (पण्ण ११—पत्र ३७०)।

पुम्म (अप) सक [**दृश्**] देखना। पुम्मइ, (प्राकृ ११६)।

पुयावइत्ता देखो **पुआव**।

पुर (अप) देखो **पूर=पूरय्**। पुरह; (पिंग)।

पुर न [**पुर**] १ नगर, शहर; (कुमा; कुप्र ४३८)। २ शरीर, देह; (कुप्र ४३८)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] विद्याधर वंश का एक राजा; (पउम ५, ४४)। °**भेयण** वि [°**भेदन**] नगर का भेदन करने वाला। स्त्री—°**णी**; (उत्त २०, १८)। °**वइ** पुं [°**पति**] नगर का अधिपति, (भवि)। °**वर** न [°**वर**] श्रेष्ठ नगर; (उवा; पणह १, ४)। °**वरी** स्त्री [°**वरा**] श्रेष्ठ नगरी; (णाया १, ६; उवा; सुर २, १५२)। °**वाल** पुं [°**पाल**] नगर-रक्षक, राजा; (भवि)।

पुर देखो **पुरं**, "पुरकम्मम्मि य पुच्छा" (बृह १)।

पुरअ } देखो **पुरदेव**; (भवि)।
पुरएव }

पुरओ अ [**पुरतस्**] १ अग्रतः, आगे; (सम १५१; ठा ४, २; गा ३५०; कुमा, औप)। २ पहले, पूर्व में; "पुरओ कयं जं तु तं पुरेकम्मं" (ओघ ४८६)।

पुरं अ [**पुरस्**] १ पहले, पूर्व में; २ समक्ष; "तए णं से दरिद्दे समुक्किट्ठे समाणे पच्छा पुरं च णं विउलभोगसमितिसमन्नागते यावि विहरिज्जा" (ठा २, १—पत्र ११७)। ३ अग्रे, आगे। °**गम** वि [°**गम**] अग्र-गामी, पुरो-वर्ती; (सूअ १, ३, ३, ६)। देखो **पुरे, पुरो**।

पुरंजय पुं [**पुरञ्जय**] एक विद्याधर राजा। °**पुर** न [°**पुर**] एक विद्याधर-नगर; (इक)।

पुरंदर पु [**पुरन्दर**] १ इन्द्र, देवराज; २ गन्ध-द्रव्य विशेष; (हे १, १७७)। ३ वृक्ष-विशेष, चव्य का पेड, "पुरंदरकुसुमदामसुविणेण सूइया जाया" (उप ६८६ टी)। ४ एक राजर्षि; (पउम २१, ८०)। ५ मन्दरकुन्ज नगर का एक विद्याधर राजा; (पउम ६, १७०)। °**जसा** स्त्री [°**यशस्**] एक राज-कन्या का नाम; (उप ६७३)। °**दिसि** स्त्री [°**दिश्**] पूर्व दिशा, (उप १४२ टी)।

पुरंधि } स्त्री [**पुरन्ध्री**] १ बहु कुटुम्ब वाली स्त्री; २ पति
पुरंधी } और पुत्र वाली स्त्री, (कुमा, कुप्र १०७, सुपा २६, पाअ)। ३ अनेक काल पहले व्याही हुई स्त्री; (कप्पू)।

पुरक्कड देखो **पुरक्खड**; (सूअ २, २, १८)।

पुरक्कार पुं [**पुरस्कार**] १ आगे करना, अग्रत. स्थापन, (आचा)। २ सम्मान, आदर, (सम ४०)।

पुरक्खड वि [**पुरस्कृत**] १ आगे किया हुआ; (श्रा ६)। २ पुरो-वर्ती, आगामी; "गहणसमयपुरक्खडे पोग्गले उदीरेंति" (भग १, १)।

पुरच्छा देखो **पुरत्था**, (राज)।

पुरच्छिम देखो **पुरत्थिम**; (ठा २, ३—पत्र ६७; सुज्ज २०—पत्र २८७; पि ५६५)। °**दाहिणा** स्त्री [°**दक्षिणा**] पूर्व-दक्षिण दिशा, अग्निकोण; (ठा १०—पत्र ४७८)।

पुरच्छिमा देखो **पुरत्थिमा**; (ठा १०—पत्र ४७८)।

पुरच्छिमिल्ल देखो **पुरत्थिमिल्ल**; (सम ६६)।

पुरत्थ वि [**पुरःस्थ**] आगे रहा हुआ; अग्र-वर्ती, पुरस्सर; "पुरत्थं होइ सहायं रणे समं तेण" (उप १०३१ टी), "जेण गहिएणमत्था इत्थ परत्थावि हु पुरत्था" (श्रा १४)।

पुरत्थ } अ [**पुरस्तात्**] १ पहले, काल या देश की अपेक्षा
पुरत्थओ } से आगे; "तप्पुरपुरत्थभाए" (सुपा ३६०), "मोस-
पुरत्था } स्स पच्छा य पुरत्थओ य" (उत्त ३२, ३१), "आदीणियं दुक्कडियं पुरत्था" (सूअ १, ५, १, २)। २ पूर्वदिशा; "पुरत्थाभिमुहे" (कप्प; औप; भग; णाया १, १—पत्र १६)।

पुरत्थिम वि [**पौरस्त्य, पूर्व**] १ पूर्व की तरफ का, "उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए" (कप्प; औप)। २ न. पूर्व दिशा; "पुरतो पुरत्थिमेण" (णाया १, १—पत्र ५४; उवा)।

पुरत्थिमा स्त्री [**पूर्वा**] पूर्व दिशा; "पुरत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ" (आचा; मृच्छ १५८ टि)।

पुरत्थिमिल्ल वि [**पौरस्त्य**] पूर्व दिशा का, पूर्व दिशा में स्थित, (विपा १, ७, पि ५६५)।

पुरदेव पुं [**पुरादेव**] भगवान् आदिनाथ; "पुरदेवजिणस्स निव्वाणं" (पउम ८, ८७)।

पुरव देखो **पुव्व**; (गउड, हे ४, २७०; ३२३)।

पुरस्सर वि [**पुरस्सर**] अग्र-गामी, (कप्पू)।

पुरा स्त्री [**पुर्**] नगरी, शहर, (हे १, १६)।

पुरा देखो **पुरिल्ला=पुरा**, (सूअ १, १, २, २४; विपा १, १)। °**इय**, °**कय** वि [°**कृत**] पूर्व काल में किया हुआ; (भवि; कुप्र ३१६)। °**भव** पुं [°**भव**] पूर्व जन्म, (कुप्र ४०६)।

पुराअण वि [**पुरातन**] पुराना, प्राचीन। स्त्री—°**णी**; (नाट—चैत १३१)।

पुराकर सक [**पुरा+कृ**] आगे करना। पुराकरंति; (सूअ १, ५, २, ५)।

पुराण वि [**पुराण**] १ पुराना, पुरातन, (गउड, उत्त ८, १२)। २ न. व्यासादि-मुनि-प्रणीत ग्रन्थ-विशेष, पुरातन इतिहास के द्वारा जिसमें धर्म-तत्त्व निरूपित किया जाता हो वह शास्त्र; (धर्मवि ३८; भवि)। °**पुरिस** पुं [°**पुरुष**] श्रीकृष्ण, (वज्जा १२२)।

पुरिकोवेर पुं. ब. [**पुरीकोबेर**] देश-विशेष, (पउम ६८, ६७)।

पुरित्थिमा देखो **पुरत्थिमा**; (सूत्र २, १, ६)।

पुरिम देखो **पुव्व**=पूर्व; (हे २, १३५; प्राकृ २८; भग, कुमा), "पंचवत्रो खलु धम्मो पुरिमस्स य पच्छिमस्स य जिणस्स" (पव ७४; पंचा १७, १)। °**ड्ढ** पुंन [°**र्घ**] १ पूर्वार्ध; २ प्रत्याख्यान-विशेष, (पंचा ५; पडि)। ३ तप-विशेष, निर्विकृतिक तप; (संबोध ५७)। °**ड्ढिय** वि [°**र्धिक**] 'पुरिमड्ढ' प्रत्याख्यान करने वाला; (पण्ह २, १; ठा ५, १)।

पुरिम वि [**पौरस्त्य**] अग्र-भव, अग्रेतन, आगे का; "इय पुव्वुत्तचउक्के झाणेसु पढमदुगि खु मिच्छत्तं। पुरिमदुगे सम्मत्तं" (संबोध ५२)।

पुरिम पु [**दे**] प्रस्फोटन, प्रतिलेखन की क्रिया-विशेष; "छ प्पुरिमा नव खोडा" (ओघ २६५)।

पुरिमताल न [**पुरिमताल**] नगर-विशेष; (विपा १, ३; औप)।

पुरिमिल्ल वि [**पूर्वीय**] पहले का, पुरातन, प्राचीन; 'आसि नरा पुरिमिल्ला, ता किं अम्हेवि तह होमो" (चेइय ११५)।

पुरिल पुं [**दे**] दैत्य, दानव; (षड्)।

पुरिल्ल वि [**पुरातन**] पुरा-भव, पहले का, पूर्ववर्ती; (विसे १३२६; हे २, १६३)।

पुरिल्ल वि [**पौरस्त्य**] पुरो-भव, पुरो-वर्ती, अग्र-गामी; (से १३, २, हे २, १६३, प्राप्र, षड्)।

पुरिल्ल वि [**पौर**] पुर-भव, नागरिक; (प्राकृ ३५, हे २, १६३)।

पुरिल्ल वि [**दे**] प्रवर, श्रेष्ठ; (दे ६, ५३)।

पुरिल्ल देखो **पुरिल्ला**=पुरा, पुरस्; "पुरिल्लो" (हे २, १६४ टि, षड्)।

पुरिल्लदेव पु [**दे**] असुर, दानव, (दे ६, ५५)।

पुरिल्लपहाणा स्त्री [**दे**] साँप की दाढ, (दे ६, ५६)।

पुरिल्ला अ [**पुरा**] १ निरन्तर क्रिया-करण, विच्छेद-रहित क्रिया करना; २ प्राचीन, पुराना; ३ पुराने समय में; ४ भावी, ५ निकट, सन्निहित; ६ इतिहास, पुरावृत्त; (हे २, १६४)।

पुरिल्ला अ [**पुरस्**] आगे, अग्रतः; (हे २, १६४)।

पुरिस पुंन [**पुरुष**] १ पुमान्, नर, मर्द; (हे १, १२४; भग; कुमा, प्रासू १२६), "इत्थीणि वा पुरिसाणि वा" (आचा २, ११, १८)। २ जीव, जीवात्मा; (विसे २०६०; सूत्र २, १, २६)। ३ ईश्वर; (सूत्र २, १, २६)। ४ शङ्कु, छाया नापने का काष्ठादि-निर्मित कीलक; ५ पुरुष-शरीर; (णंदि)। °**कार**, °**क्कार**, °**गार** पुं [°**कार**] १ पौरुष, पुरुषपन, पुरुष-चेष्टा, पुरुष-प्रयत्न, (प्रासू ४३; उवा; सुर २, ३५; उवर ४७)। २ पुरुषत्व का अभिमान; (औप)। °**जाय** पुं [°**जात**] १ पुरुष, २ पुरुष-जातीय; (सूत्र २, १, ६; ७, ठा ३, १; २; ४, १)। °**जुग** न [°**युग**] क्रम-स्थित पुरुष; (सम ६८)। °**जेट्ठ** पुं [°**ज्येष्ठ**] प्रशस्त पुरुष; (पंचा १७, १०)। °**त्त**, °**त्तण** न [°**त्व**] पौरुष, पुरुषपन, "नहि नियजुव्वइसलहिया पुरिसा पुरिसत्तणमुविंति" (सुर २, २४; महा; सुपा ८४)। °**त्थ** पुं [°**र्थ**] धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूप पुरुष-प्रयोजन; "सयलपुरिसत्थकारणमइदुलहो माणुसो भवो एसो" (धर्मवि ८२; कुमा, सुपा १२६)। °**पुंडरीअ** पुं [°**पुण्डरीक**] इस अवसर्पिणी काल में उत्पन्न षष्ठ वासुदेव; (पव २१०)। °**प्पणीय** वि [°**प्रणीत**] १ ईश्वर-निर्मित; २ जीव-रचित, (सूत्र २, १, २६)। °**मेह** पुं [°**मेध**] यज्ञ-विशेष, जिसमें पुरुष का होम किया जाय वह यज्ञ, (राज)। °**यार** देखो °**कार**; (गउड, सुर २, १६; सुपा २७१)। °**लक्खण** न [°**लक्षण**] कला-विशेष, पुरुष के शुभाशुभ चिह्न पहचानने की एक सामुद्रिक कला; (जं २)। °**लिंग** न [°**लिङ्ग**] पुरुष-चिह्न। °**लिंगसिद्ध** पुं [°**लिङ्गसिद्ध**] पुरुष-शरीर से जो मुक्त हुआ हो वह, (णंदि)। °**वयण** न [°**वचन**] पुलिंग शब्द, (आचा २, ४, १, ३)। °**वर** पु [°**वर**] श्रेष्ठ पुरुष; (औप)। °**वरगंधहत्थि** पु [°**वरगन्धहस्तिन्**] १ पुरुषों में श्रेष्ठ गन्धहस्ती के तुल्य, २ जिन-देव; (भग; पडि)। °**वरपुंडरीय** पु [°**वरपुण्डरीक**] १ पुरुषों में श्रेष्ठ पद्म के समान; २ जिन-देव, अर्हन्; (भग, पडि)। °**विजय** पु [°**विचय**, °**विजय**] ज्ञान-विशेष, (सूत्र २, २, २७)। °**वेय** पुं [°**वेद**] १ कर्म-विशेष, जिसके उदय से पुरुष को स्त्री-संभोग की इच्छा होती है वह कर्म; २ पुरुष को स्त्री-भोग की अभिलाषा; (पण्ण २३, सम १५०)। °**सिंह**, °**सीह** पु [°**सिंह**] १ पुरुषों में सिंह के समान, श्रेष्ठ पुरुष; २ पु जिनदेव, जिन भगवान्; (भग, पडि)। ३ भगवान् धर्मनाथ के प्रथम श्रावक का नाम;

(विचार ३७८)। ४ इस अवसर्पिणी काल में उत्पन्न पाँचवाँ वासुदेव; (सम १०५; पउम ५, १५५; पव २१०)। °सेण पुं [°सेन] १ भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा ले कर मोक्ष जाने वाला एक अन्तकृद् महर्षि, जो वसुदेव के अन्यतम पुत्र थे; (अंत १४)। २ भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर विमान में उत्पन्न होने वाले एक मुनि, जो राजा श्रेणिक के पुत्र थे; (अनु १)। °ादाणिअ, °ादाणीय पु [°ादानीय] उपादेय पुरुष, आप्त पुरुष; (सम १३; कप्प)।

पुरिसाअ अक [**पुरुषाय्**] विपरीत मैथुन करना। वकृ—**पुरिसाअंत**, (गा १६६; ३६१)।

पुरिसाइअ न [**पुरुषायित**] विपरीत मैथुन, (दे १, ४२)।

पुरिसाइर वि [**पुरुषायितृ**] विपरीत रत करने वाला; "दर-पुरिसाइरि विसमिरि जाणसु पुरिसाण जं दुक्खं" (गा ५२, ४४६)।

पुरिसुत्तम } पुं [**पुरुषोत्तम**] १ उत्तम पुरुष, श्रेष्ठ पुमान्;
पुरिसोत्तम } २ जिन-देव, अर्हन् ; (सम १; भग, पडि)। ३ चौथा त्रिखण्डाधिपति, चतुर्थ वासुदेव; (सम ७०; पउम ५, १५५)। ४ भगवान् अनन्तनाथ का प्रथम श्रावक; (विचार ३७८)। ५ श्रीकृष्ण; (सम्मत्त २२६)।

पुरी स्त्री [**पुरी**] नगरी, शहर; (कुमा)। °नाह पु [°नाथ] नगरी का अधिपति, राजा; (उप ७२८ टी)।

पुरीस पुंन [**पुरीष**] विष्ठा; (णाया १, ८; उप १३६ टी; ३२० टी; पाअ), "मुत्तपुरीसे य पिक्खंति" (धर्मवि १६)।

पुरु पुं [**पुरु**] १ स्व-नाम-ख्यात एक राजा; (अभि १७६)। २ वि. प्रचुर, प्रभूत। स्त्री—°ई; (प्राकृ २८)।

पुरुपुरिआ स्त्री [**दे**] उत्कण्ठा, उत्सुकता; (दे ६, ५)।

पुरुमिल्ल देखो **पुरिमिल्ल**; (गउड)।

पुरुव } देखो **पुव्व**=पूर्व; "ण ईरिसो दिट्ठपुरुवो" (स्वप्न ५५)।
पुरूव } "अमंदआणंदगुदलपुरूव्वं" (सुपा २२; नाट—मृच्छ १२१; पि १२५)।

पुरुस (शौ) देखो **पुरिस**; (प्राकृ ८३; स्वप्न २६; अवि ८५; प्रयौ ६६)।

पुरुसोत्तम (शौ) देखो **पुरिसोत्तम**; (पि १२४)।

पुरुहूअ पुं [**दे**] घूक, उल्लू, (दे ६, ५५)।

पुरुहूअ पुं [**पुरुहूत**] इन्द्र, देव-राज; (गउड)।

पुरूरव पुं [**पुरूरवस्**] एक चंद्र-वंशीय राजा, (पि ४०८; ४०६)।

पुरे देखो **पुरं**; "जस्स नत्थि पुरे पच्छा मज्झे तस्स कुओ सिया" (आचा)। °कड वि [°कृत] आगे किया हुआ, पूर्व में किया हुआ; (औप; सूअ १, ५, २, १; उत्त १०, ३)। °कम्म न [°कर्मन्] पहले करने का काम, पूर्व में की जाती क्रिया; "पुरओ कयं जं तु तं पुरेकम्मं" (ओघ ४८६; हे १, ५७)। °क्कार पुं [°कार] सम्मान, आदर; (उत्त २६, ७, सुख २६, ७)। °क्खड देखो °कड; (पण्ण ३६—पत्र ७६६; पण्ह १, १)। °वाय पुं [°वात] १ सस्नेह वायु; २ पूर्व दिशा का पवन; (णाया १, ११—पत्र १७१)। °संखडि स्त्री [दे, संस्कृति] पहले ही किया जाता जिमनवार—भोजनोत्सव; (आचा २, १, २, ६; २, १, ४, १)। °संथुय वि [°संस्तुत] १ पूर्व-परिचित; २ स्व-पक्ष का सगा; (आचा २, १, ४, ५)।

पुरेस पुं [**पुरेश**] नगर-स्वामी; (भवि)।

पुरो देखो **पुरं**; (मोह ४६; कुमा)। °अ, °ग वि [°ग] अग्रगामी, अग्रेसर; (प्रति ४०; विसे २५४८)। °गम वि [°गम] वही अर्थ; (उप पृ ३५१)। °भाइ वि [°भागिन्] दोष को छोड़ कर गुण-माल को ग्रहण करने वाला; (नाट—विक्र ६७)।

पुरोकर सक [**पुरस्**+**कृ**] १ आगे करना। २ स्वीकार करना। ३ सम्मान करना। संकृ—**पुरोकरिअ**, **पुरोकाउं**; (मा १६, सूअ १, १, ३, १५)।

पुरोत्तमपुर न [**पुरोत्तमपुर**] एक विद्याधर-नगर का नाम; (इक)।

पुरोवग पुं [**पुरोपक**] वृक्ष-विशेष; (औप)।

पुरोह पुं [**पुरोधस्**] पुरोहित; (उप ७२८ टी; धर्मवि १४६)।

पुरोहड वि [**दे**] १ विषम, असम; २ पच्छोकड (?); (दे ६, १५)। ३ पुंन. आवृत भूमि का वास्तु, (दे ६, १५)। ४ अग्रद्वार, दरवाजा का अग्रभाग; (ओघ ६२२)। ५ वाडा, वाटक; "संभासमए पत्ते मज्झ वलद्दा पुरोहडस्संतो। मह दिट्ठीए दसिवि ठाएयव्वा" (सुपा ५४५; वृह २)।

पुरोहिअ पुं [**पुरोहित**] पुरोधा, याजक, होम आदि से शान्ति-कर्म करने वाला ब्राह्मण; (कुमा; काल)।

पुल पुं [**दे, पुल**] छोटा फोड़ा, फुनसी, "ते पुला भिज्जंति" (ठा १०—पत्र ५२१)।

पुल वि [**पुल**] समुच्छ्रित, उन्नत; "पुलनिप्पुलाए" (दस १०, १६)।

पुल } सक [दृश्] देखना। पुलइ, पुलअइ; (प्राकृ
पुलअ } ७१; हे ४, १८१; प्राप्र ८, ६९)। पुलएइ, (गउड १०६३), पुलएमि; (गा ५३१)। वकृ—**पुलंत, पुलअंत, पुलएंत**; (कप्पू; नाट—मालवि ६; पउम ३, ७७; ८, १६०, सुर ११, १२०; १२, २०४; ७, २१२)। संकृ—**पुलइअ**; (स ६८९)।

पुलअ पुं [**पुलक**] १ रोमाञ्च, (कुमा)। २ रत्न-विशेष, मणि की एक जाति; (पगण १; उत्त ३६, ७७; कप्प)। ३ जलचर जन्तु-विशेष, ग्राह का एक भेद; "सीमागारपुलु(? ल)-यसुसुमार—" (पगह १, १—पत्र ७)। °**कंड** पुंन [°**कण्ड**] रत्नप्रभा नरक-पृथिवी का एक काण्ड; (ठा १०)।

पुलअण वि [**दर्शन**] देखने वाला, प्रेक्षक; (कुमा)।

पुलअण न [**पुलकन**] पुलकित होना; (कप्पू)।

पुलआअ अक [**उत्+लस्**] उल्लसित होना, उल्लास पाना। पुलआअइ; (हे ४, २०२)। वकृ—**पुलआ-अमाण**; (कुमा)।

पुलइअ वि [**दृष्ट**] देखा हुआ; (गा ११८; सुर १४, ११; पाअ)।

पुलइअ वि [**पुलकित**] रोमाञ्चित; (पाअ, कुमा ४, १९; कप्प; महा; गा २०)।

पुलइज्ज अक [**पुलकाय्**] रोमाञ्चित होना। वकृ—**पुलइज्जंत**; (सण)।

पुलइल्ल वि [**पुलकिन्**] रोमाञ्च-युक्त, रोमाञ्चित; (वज्जा १६४)।

पुलएंत देखो **पुलअ**=दृश्।

पुलंधअ पुं [**दे**] भ्रमर, भमरा; (षड्)।

पुलंपुल न [**दे**] अनवरत, निरन्तर; (पगह १, ३—पत्र ४५; औप)।

पुलक } देखो **पुलअ**=पुलक; (पि २०३ टि; णाया १,
पुलग } १; सम १०४; कप्प)।

पुलाग } पुंन [**पुलाक**] १ असार अन्न; "धन्नमसारं भन्नइ
पुलाय } पुलायसद्देण" (संबोध २८; पत्र ९३), "निस्सारए होइ जहा पुलाए" (सूअ १, ७, २६)। २ चना आदि शुष्क अन्न; (उत्त ८, १२; सुख ८, १२)। ३ लहसुन आदि दुर्गन्ध द्रव्य; ४ दुष्ट रस वाला द्रव्य; "तिविह होइ पुलागं धण्णे गंधे य रसपुलाए य" (बृह ५)। ५ पुं अपने संयम को निस्सार बनाने वाला मुनि, शिथिलाचारी साधुओं का एक भेद; (ठा ३, २; ५, ३; सबोध २८; पत्र ९३)।

पुलासिअ पुं [**दे**] अग्नि-कण, (दे ६, ५५)।

पुलिंद पु [**पुलिन्द**] १ अनार्य देश-विशेष; (इक)। २ पुंस्त्री. उस देश में रहने वाला मनुष्य; (पगह १, १; औप; कप्पू; उव)। स्त्री—°**दी**; (णाया १, १; औप)।

पुलिण न [**पुलिन**] तट, किनारा; "ओइरणो नइपुलिणाओ" (पउम १०, ५४)। २ लगातार बाईस दिनों का उपवास; (सवोध ५८)।

पुलिय न [**पुलित**] गति-विशेष; (औप)।

पुलुट्ठ वि [**प्लुष्ट**] दग्ध; (पाअ)।

पुलोअ सक [**दृश्, प्र+लोक्**] देखना। पुलोएइ; (हे ४, १८१; सुर १, ८९)। वकृ—**पुलोअंत, पुलोएंत**; (पि १०४; सुर ३, ११८)।

पुलोअण न [**दर्शन, प्रलोकन**] विलोकन; (दे ६, ३०; गा ३२२)।

पुलोइअ वि [**दृष्ट, प्रलोकित**] १ देखा हुआ; (सुर ३, १९४)। २ न. अवलोकन; (से ७, ५९)।

पुलोएंत देखो **पुलोअ**।

पुलोम पुं [**पुलोमन्**] दैत्य-विशेष। °**तणया** स्त्री [°**तनया**] शची, इन्द्राणी; (पाअ)।

पुलोमी स्त्री [**पौलोमी**] इन्द्राणी; (प्राकृ १०; हे १, १६०)।

पुलोव देखो **पुलोअ**। पुलोवेदि (शौ); (पि १०४)।

पुलोस पुं [**प्लोष**] दाह, दहन; (गउड)।

पुल्ल [**दे**] देखो **पोल्ल**; (सुख ९, १)।

पुल्लि पुंस्त्री [**दे**] १ व्याघ्र, शेर; (दे ६, ७९; पाअ)। २ सिंह, पञ्चानन, मृगेन्द्र; (दे ६, ७९)। स्त्री—को पियइ पयं च पुल्लीए" (सुपा ३१२)।

पुव } सक [**प्लु**] गति करना, चलना। पुवंति, (पि
पुव्व } ४७३), पुव्वंति; (भग १५—पत्र ६७०; टी—पत्र ६७३)।

पुव्व° देखो **पुण**=पू।

पुव्व वि [**पूर्व**] १ दिशा, देश और काल की अपेक्षा से पहले का, आद्य, प्रथम; (ठा ४, ४; जी १; प्रासू १२२)। २ समस्त, सकल; ३ ज्येष्ठ भ्राता, (हे २, १३५; षड्)। ४ पुंन काल-मान-विशेष, चौरासी लाख को चौरासी लाख से गुणने पर जो सख्या लब्ध हो उतने वर्ष, (ठा २, ४; सम ७४; जी ३७; इक)। ५ जैन ग्रन्थांश-विशेष, बारहवें अंग-ग्रन्थ का एक विशाल विभाग, अध्ययन, परिच्छेद; "चोद्दसपुव्वी" (विपा १, १)। ६ द्वन्द्व, वधू-वर आदि युग्म; "पुव्वट्ठा-

णाणि" (आचा २, ११, १२)। ७ पूर्व-ग्रन्थ का ज्ञान; (कम्म १, ७)। ८ कारण, हेतु; (णंदि)। °कालिय वि [°कालिक] पूर्व काल का, पूर्व काल से संवन्ध रखने वाला; (पण्ह १, २—पत्र २८)। °गय न [°गत] जैन शास्त्रांश विशेष, वारहवें अंग का विभाग-विशेष, (ठा १०——पत्र ४६१)। °ण्ह पुं [°ह्ण] १ दिन का पूर्व भाग, सुवह से दो पहर तक का समय; (हे १, ६७)। २ तप-विशेष, 'पुरिमड्ढ' तप, (संबोध ५८)। °तव पुंन [°तपस्] वीतराग अवस्था के पहले का—सराग अवस्था का—तप; (भग)। °दारिअ वि [°द्वारिक] पूर्व दिशा में गमन करने में कल्याण-कारी (नक्षत्र); (सम १२)। °द्ध पुंन [°ार्ध] पहला आधा, (नाट)। °धर वि [°धर] पूर्व-ग्रन्थ का ज्ञान वाला; (पण्ह २, १)। °पय न [°पद] उत्सर्ग-स्थान; (निचू १)। °पुट्ठवया स्त्री [°प्रोष्ठपदा] नक्षत्र-विशेष; (सुज्ज १०, ५)। °पुरिस पु [°पुरुष] पूर्वज, पुरखा; (सुर २, १६४)। °प्पओग पु [°प्रयोग] पहले की क्रिया, पूर्व-काल का प्रयत्न, (भग ८, ६)। °फग्गुणी स्त्री [°फाल्गुनी] नक्षत्र-विशेष; (राज)। °भद्दवया स्त्री [°भाद्रपदा] नक्षत्र-विशेष; (राज)। °भव पुं [°भव] गत जन्म, अतीत जन्म; (णाया १, १)। °भविय वि [°भविक] पूर्वजन्म-संवन्धी; (भवि)। °य पु [°ज] पूर्व पुरुष, पुरखा; (सुपा २३२)। °रत्त पुं [°रात्र] रात्रि का पूर्व भाग; (भग; महा)। °व न [°वत्] अनुमान प्रमाण का एक भेद; (अणु)। °विदेह पुं [°विदेह] महाविदेह वर्ष का पूर्वीय हिस्सा; (ठा २, ३; इक)। °समास पुन [°समास] एक से ज्याद पूर्व-शास्त्रों का ज्ञान, (कम्म १, ७)। °सुय न [°श्रुत] पूर्व का ज्ञान; (राज)। °सूरि पुं [°सूरि] पूर्वाचार्य, प्राचीन आचार्य; (जीव १)। °हर देखो °धर; (पउम ११८, १२१)। °ाणुपुव्वी स्त्री [°ानुपूर्वी] क्रम, परिपाटी; (भग; विपा १, १; औप, महा)। °ाण्ह देखो °ण्ह; (हे १, ६७, षड्)। °ाफग्गुणी देखो °फग्गुणी; (सम ७, इक)। °ाभद्दवया देखो °भद्दवया; (सम ७)। °ासाढा स्त्री [°ाषाढा] नक्षत्र-विशेष; (सम ६)।

पुव्वंग पुंन [**पूर्वाङ्ग**] १ समय-परिमाण-विशेष, चौरासी लाख वर्ष; (ठा २, ४; इक)। २ पक्ष के पहले दिन का नाम, प्रतिपत्; (सुज्ज १०, १४)।

पुव्वंग वि [**दे**] मुण्डित; (षड्)।

पुव्वा स्त्री [**पूर्वा**] पूर्व दिशा; (कुमा)।

पुव्वाड वि [**दे**] पीन, मांसल, पुष्ट; (दे ६, ५२)।

पुव्वामेव अ [**पूर्वमेव**] पहले ही, (कस)।

पुव्वावईणय न [**पूर्वावकीर्णक**] नगर-विशेष; (इक)।

पुव्वि वि [**पूर्विन्**] पूर्व-शास्त्र का जानकार; (विपा १, १; राज)।

पुव्वि } क्रिवि [**पूर्वम्**] पहिले, पूर्व में; (सण; उवा; सुर
पुव्विं } १, १६४; ४, १११; औप)। °**संथव** पु [°**संस्तव**] पूर्व में की जाती श्लाघा, जैन मुनि की भिक्षा का एक दोष, भिक्षा-प्राप्ति के पहले दायक की स्तुति करना; (ठा ३, ४)।

पुव्विम पुंस्त्री [**पूर्वत्व**] पहिलापन, प्रथमता; (षड्)।

पुव्विल्ल वि [**पूर्व, पूर्वीय**] पहिले का, पूर्व का; "पुव्विल्ल-समं करणं" (चेइय ८८६), "पुव्विल्लए किंचिवि दुट्ठकम्मे" (निसा ४; सुपा ३४६; सण)।

पुव्वुत्त वि [**पूर्वोक्त**] पहले कहा हुआ, पूर्व में उक्त; (सुर २, २४८)।

पुव्वुत्तरा स्त्री [**पूर्वोत्तरा**] ईशान कोण, (राज)।

पुस सक [**प्र+उञ्छ्, मृज्**] साफ करना, शुद्ध करना, पोंछना। पुसइ; (प्राकृ ६६; हे ४, १०५; गा ४३३)। कवकृ—**पुसिज्जंत**; (गा २०६)।

पुस देखो **पुस्स**; (प्राकृ २६; प्राप्र)।

पुस पुं [**पौष**] मास-विशेष, पौष मास; "पुसो" (प्राकृ १०)।

पुसिअ वि [**प्रोञ्छित, मृष्ट**] पोंछा हुआ; (गउड; से १०, ४२; गा ५४)।

पुसिअ पुं [**पृषत**] मृग-विशेष; (गा ६२६)।

पुस्स पुं [**पुष्य**] १ नक्षत्र-विशेष, कृत्तिका से आठवाँ नक्षत्र; (प्राकृ २६; प्राप्र; सम ८; १७; ठा २, ३)। २ रेवती नक्षत्र का अधिपति देव, (सुज्ज १०, १२)। ३ ऋषि-विशेष, (राज)। °**माणअ**, °**माणव** पु [°**मानव**] मागध, स्तुति-पाठक, भाट-चारण आदि; (णाया १, ८—पत्र १३३, टी—पत्र १३६)। देखो **पूस**=पुष्य।

पुस्सायण न [**पुष्यायण**] गोत्र-विशेष; (सुज्ज १०, १६)।

पुह } देखो **पिह**=पृथक्; (हे १, १८८)। °**ब्भूय** वि
पुहं } [°**भूत**] अलग, जो जुदा हुआ हो; (अज्झ ६०)।

पुहइ } स्त्री [**पृथिवी**] १ तृतीय वासुदेव की माता का
पुहई } नाम; (पउम २०, १८४)। २ एक नगरी का नाम, (पउम २०, १८८)। ३ भगवान् सुपार्श्वनाथ की

माता का नाम, (सुपा ३६)। ४—देखो **पुढवी, पुहवी**; (कुमा; हे १, ८८, १३१)। °**धर** पुं [°**धर**] राजा, (पउम ८५, ४)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] राजा, (सुपा १२२)। °**पहु** पुं [°**प्रभु**] राजा; (उप ७२८ टी)। °**पाल** पुं [°**पाल**] राजा, (सुर १, २४३)। °**राय** पु [°**राज**] विक्रम की बारहवीं शताब्दी का शाकम्भरी देश का एक राजा; "पुहईराएण सयंभरीनरिंदेण" (मुणि १०६०१)। °**वइ** पुं [°**पति**] राजा; (सुपा २०१; २४८, ५१६)। °**वाल** देखो °**पाल**; (उप ६४८ टी)।

पुहईसर पु [**पृथिवीश्वर**] राजा, (सुपा १०७, २४१)।

पुहत्त न [**पृथक्त्व**] १ भेद, पार्थक्य, (अणु)। २ विस्तार; (राज)। ३ बहुत्व, (भग १, २; ठा १०)। ४ वि. भिन्न, अलग, "अत्थपुहत्तस्स" (विसे १०६६)। °**वियक्क** न [°**वितर्क**] शुक्ल ध्यान का एक भेद, (संबोध ५१)। देखो **पुहुत्त, पोहत्त**।

पुहत्तिय देखो **पोहत्तिय**; (भग)।

पुहय देखो **पिह**=पृथक्; "पुहय देवीण" (कुमा)।

पुहवि° } देखो **पुढवी, पुहई**; (पि ३८६; श्रा १४; प्राप्र; **पुहवी** } प्रासू ५; ११३; सम १५१; स १५२)। ६ भगवान् श्रेयांसनाथ की दीक्षा-शिविका; (विचार १२६)। १० एक छन्द का नाम; (पिंग)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] एक राजा, (यति ५०)। °**पाल** पुं [°**पाल**] १ एक राज-कुमार; (उप ६८६ टी)। २ देखो **पुहई-पाल**, (सिरि ४५)। °**पुर** न [°**पुर**] एक नगर का नाम, (उप ८४४)।

पुहवीस पुं [**पृथिवीश**] राजा; (हे १, ६)।

पुहु वि [**पृथु**] विशाल, विस्तीर्ण। स्त्री—°ई; (प्राकृ २८)।

पुहुत्त न [**पृथक्त्व**] १ दो से नव तक की संख्या; (सम ४४; जी ३०, भग)। २—देखो **पुहत्त**; (ठा १०—पत्र ४७१, ४९५)।

पुहुवी देखो **पुहु-ई**; (हे २, ११३)।

पू° देखो **पुं°**। °**सुअ** पुं [°**शुक**] तोता, मर्द पिक-पक्षी; (गा ५६३ अ)।

पूअ सक [**पूजय्**] पूजा करना। पूएइ; (महा)। कर्म—पूइज्जसि; (गउड)। वकृ—**पूयंत**; (सुपा २२४)। कवकृ—**पूइज्जंत**, (पउम ३२, ६)। कृ—**पूअणीअ**, **पूएअव्व**, **पूअणिज्ज**, (नाट—मृच्छ १९५; उवर १९६; औप; णाया १, १ टी; पंचा २, ८; उप ३२० टी)। संकृ—**पूइऊण**; (महा)।

पूअ न [**दे**] दधि, दही, (दे ६, ५६)।

पूअ पुं [**पूग**] १ वृक्ष-विशेष, सुपारी का गाछ; (गउड)। २ न. फल-विशेष, सुपारी; (स ३४५)। देखो **पूग**। °**प्फली, °फली** स्त्री [°**फली**] सुपारी का पेड़; (पउम ५३, ७९; पण्ण १)।

पूअ न [**पूर्त**] तालाव, कुआँ आदि खुदवाना, अन्न-दान करना, देव-मन्दिर बनाना आदि जन-समूह के हित का कार्य; "गरहियाणि इट्ठपूआणि" (स ७१३)।

पूअ वि [**पूत**] १ पवित्र, शुद्ध; (णाया १, ५; औप)। २ न. लगा तार छ दिनों का उपवास; (संबोध ५८)। ३ वि. सूर्प आदि से साफ—तुष-रहित किया हुआ; (णाया १, ७—पत्र ११६)।

पूअ न [**पूय**] पीव, दुर्गन्ध रक्त, व्रण से निकला हुआ गंदा सफेद बिगड़ा हुआ खून; (पण्ह १, १; णाया १, ८)।

पूअण न [**पूजन**] पूजा, सेवा; (कुमा; औप; सुपा ५८४; महा)।

पूअणा स्त्री [**पूजना**] १ ऊपर देखो; (पण्ह २, १; स ७६३; संबोध ६)। २ काम-विभूषा; (सूअ १, ३, ४, १७)।

पूअणा } स्त्री [**पूतना**] १ दुष्ट व्यन्तरी, डाइन, डाकिनी; **पूअणी** } (सूअ १, ३, ४, १३, पिंडभा ४१; सुपा २६; पण्ह १, ४)। २ गाडर, भेडी, मेषी; (सूअ १, ३, ४, १३)।

पूअय वि [**पूजक**] पूजा करने वाला; (सुर १३, १४३)।

पूअर देखो **पोर**=पूतर; (श्रा १४, जी १५)।

पूअल पु [**पूप**] अपूप, पूआ, खाद्य-विशेष; (दे ६, १८)।

पूअलिया स्त्री [**पूपिका**] ऊपर देखो; (पव ४)।

पूआ स्त्री [**दे**] पिशाच-गृहीता, भूताविष्ट स्त्री; (दे ६, ५४)।

पूआ स्त्री [**पूजा**] पूजन, अर्चा, सेवा; (कुमा)। °**भत्त** न [°**भक्त**] पूज्य के लिए निष्पादित भोजन, (बृह २)। °**मह** पु [°**मह**] पूजोत्सव; (कुप्र ८५)। °**रह** [°**रथ**] राक्षस-वंश में उत्पन्न एक राजा का नाम, एक लंका-पति; (पउम ५, २५९)। °**रिह, °रुह** वि [°**र्ह**] पूजा-योग्य; (सुपा ४६१; अभि ११८)।

पूइ वि [**पूति**] १ दुर्गन्धी, दुर्गन्ध वाला; (पउम ४४, ५५, उप ७२८ टी; तंदु ४१)। २ अपवित्र; (पंचा १३, ५)। ३ स्त्री. दुर्गन्ध; ४ अपवित्रता; (तंदु ३८)। ५ भिक्षा का एक दोष, पूति-कर्म; (पिंड २६८)। ६ रोग-विशेष, एक नासिका-रोग, नासा-कोथ; (विसे २०८)। ७ पूय, पीब; "गलंतपूइनिवहं" (महा), "पूइवसरुहिरपुन्नं" (सुर १४, ४६), "जहा सुणी पूइकण्णी" (उत्त १, ४)। ८ वृक्ष-विशेष, एकास्थिक वृक्ष की एक जाति; "पूई य निंबकरए" (पण्ण १—पत्र ३१)। °**कम्म** पुंन. [°**कर्मन्**] मुनि-भिक्षा का एक दोष, पवित्र वस्तु में अपवित्र वस्तु को मिला कर दो जाती भिक्षा का ग्रहण; (ठा ३, ४ टी; औप; पंचा १३ ५)। °**म** वि [°**मत्**] १ दुर्गन्धी; २ अपवित्र; (तंदु ३८)।

पूइआलुग न [**दे. पूत्यालुक**] जल में होने वाली वनस्पति-विशेष; (आचा २, १, ८—सूत्र ४७)।

पूइज्जंत देखो **पूअ**=पूजय्।

पूय वि [**पूजित**] अर्चित, सेवित, (औप; उव)।

पूइय वि [**पूतिक**] १ अपवित्र, अशुद्ध, दूषित; (पण्ह २, ५; उप पृ २१०)। २ दुर्गन्धी, दुष्ट गन्ध वाला; (णाया १, ८; तंदु ४१)। ३ पूति-नामक भिक्षा-दोष से युक्त; (पिंड २६८)।

पूइय देखो **पोइअ**=(दे); "बलो गओ पूइयावणं" (सुख २, २६; उप)।

पूएअव्व देखो **पूअ**=पूजय्।

पूंडरिअ न [**दे**] कार्य, काम, काज, प्रयोजन; (दे ६, ५७)।

पूग पुं [**पूग**] १ समूह, संघात; (मोह २८)। २ देखो **पूअ**=पूग; (स ७०; ७१)।

पूगी स्त्री [**पूगी**] सुपारी का पेड़। °**फल** न [°**फल**] सुपारी; (रयण ५५)।

पूज देखो **पूअ**=पूजय्। कर्म—पुज्जए; (उव)। वकृ—**पूजयंत**; (विसे २८८८)। कृ—**पूज्ज, पूज**; (पउम ११, ६७; सुपा १८०; सुर १, १७; उवर १६६; उव; उप ५६८)।

पूजग देखो **पूअय**; (पंचा ४, ४४)।

पूजण देखो **पूअण**; (पंचा ६, ३८)।

पूजा देखो **पूआ**=पूजा; (उप १०१६)।

पूजिय देखो **पूइय**=पूजित, (औप)।

पूण पुं [**दे**] हस्ती, हाथी, (दे ६, ५६)।

पूणिआ } **पूणी** } स्त्री [**दे**] पूणी, रुई को पहल; (दे ६, ७८; ६, ५६)।

पूप देखो **पूअल**; (पिंड ५५७)।

पूयंत देखो **पूअ**=पूजय्।

पूयावणा स्त्री [**पूजना**] पूजा कराना; (संबोध १५)।

पूर सक [**पूरय्**] पूर्ति करना, भरना। पूरइ, पूरए; (हे ४, १६९; औप; भग; महा, पि ४६२)। वकृ— **पूरंत, पूरयंत**; (कुमा; कप्प; औप)। कवकृ—**पुज्जंत, पुज्जमाण, पूरिज्जंत, पूरंत, पूरमाण**; (उप पृ १५४; सुपा ६८; उप १३९ टी; भवि; गा ११६, से ११, ६३; ६, ६७)। संकृ—**पूरित्ता**; (भग), **पूरि** (अप), (पिंग)। हेकृ—**पूरइत्तए**; (पि ५७८)। कृ—**पूरिअव्व**; (से ११, ४४)।

पूर पुं [**पूर**] १ जल-समूह, जल-प्रवाह, जल-धारा; (कुमा)। २ खाद्य-विशेष; "कप्पूरपूरसहिए तंबाले" (सुर २, ६०)। ३ वि. पूरा, पूर्ण; "पूराणि य से सम्मं पणइमणोरहेहिं अज्जेव सत्त राइंदियाइं, भविस्सइ य सुए सामिणो विज्जासिद्धी" (स ३६३)।

पूरइत्तअ (शौ) वि [**पूरयितृ**] पूर्ण करने वाला; (मा ४३)।

पूरंतिया स्त्री [**पूरयन्तिका**] राजा की एक परिषत्—परिवार; (राज)।

पूरग वि [**पूरक**] पूर्ति करने वाला; (कप्प; औप; रयण ७७)।

पूरण न [**पूरण**] शूर्प, सूप, सिरकी का बना एक पात्र जिससे अन्न पछोरा जाता है; (दे ६, ५६)।

पूरण न [**पूरण**] १ पूर्ति; "समस्सापूरणं" (सिरि ८६८)। २ पालन; (आचू ५)। ३ पुं. यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र; (अंत ३)। ४ एक गृह-पति का नाम; (उवा)। ५ वि पूर्ति करने वाला; (राज)।

पूरमाण देखो **पूर**=पूरय्।

पूरय देखो **पूरग**; "बत्तीसं किर कवला आहारो कुच्छिपूरओ भणिओ" (पिंड ६४२)।

पूरयंत } **पूरिअव्व** } देखो **पूर**=पूरय्।

पूरिगा स्त्री [**पूरिका**] मोटा कपड़ा; (राज)।

पूरिम वि [**पूरिम**] पूरने से—भरने से—होने वाला; (णाया १, १३; पण्ह २, ५; औप)।

पूरिमा स्त्री [**पूरिमा**] गान्धार ग्राम की एक मूर्च्छना; (ठा ७—पत्र ३९३)।

पूरिय वि [**पूरित**] भरा हुआ; (गउड; सण, भवि)।
पूरी स्त्री [**पूरी**] तन्तुवाय का एक उपकरण; (दे ६, ५६)।
पूरेंत देखो **पूर**=पूरय्।
पूरोट्टी स्त्री [**दे**] अवकर, कतवार, कूड़ा; (दे ६, ५७)।
पूल पुंन [**पूल**] पूला, घास की अंटिया; (उप ३२० टी; कुप्र २१५)।
पूव } देखो **पूअल**; (कस; दे ६, ११७; निचू १)।
पूवल }
पूवलिआ } देखो **पूअलिया**; (बृह १; निचू १६)।
पूविगा }
पूस अक [**पुष्**] पुष्ट होना। पूसइ; (हे ४, २३६; प्राकृ ६८)।
पूस देखो **पुस्स**=पुष्य; (णाया १, ८; हे १, ४३)। °**गिरि** पुं [°**गिरि**] एक जैन मुनि; (कप्प)। °**फली** स्त्री [°**फली**] वल्ली-विशेष; (पराण १)। °**माण**, °**माणग** पुं [°**माण**, °**मानव**] मागध, मङ्गल-पाठक; "—वद्धमाणपूसमाणवटियगणेहिं" (कप्प; औप)। °**माणग** पुं [°**मानक**] ज्योतिर्देवता-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेप; (ठा २, ३)। °**माणंय** देखो °**माण**; (औप)। °**मित्त** पुं [°**मित्त्र**] १ स्वनाम-प्रसिद्ध जैन मुनि-त्रय—१ घृतपुष्यमित्र; २ वस्त्रपुष्यमित्र; ३ दुर्वलिकापुष्यमित्र, जो आर्य रक्षितसूरि के शिष्य थे; (विसे २५१०; २२८९)। २ एक राजा; (विचार ४९३)। °**मित्तिय** न [°**मित्त्रीय**] एक जैन मुनि-कुल; (कप्प)।
पूस पुं [**दे**] १ राजा सातवाहन; (दे ६, ८०)। २ शुक, तोता; (दे ६, ८०; गा २६३; वज्जा १३४; पाअ)।
पूस पुं [**पूषन्**] १ सूर्य, रवि; (हे ३, ५६)। २ मणि-विशेष, (पउम ६, ३९)।
पूसा स्त्री [**पुष्या**] व्यक्ति-वाचक नाम, कुण्डकोलिक श्रावक की पत्नी; (उवा)।
पूसाण देखो **पूस**=पूषन्; (हे ३, ५६)।
°**पूह** पुं [**अपोह**] विचार, मीमांसा; "ईहापूहमग्गणगवेसणं करेमाणस्स" (औप; पि १४२; २८६)। देखो **अपोह**=अपोह।
पृथुम (पै) देखो **पढम**; "पृथुमसिनेहो" (प्राकृ १२४)।
पेअ पुं [**प्रेत**] १ व्यन्तर-भेद, एक देव-जाति; (सुपा ४९१; ४९२; जय २९)। २ मृतक; (पउम ५, ९०)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] अन्त्येष्टि क्रिया, मृत का दाहादि कार्य; (पउम २३, २४)। °**करणिज्ज** न [°**करणीय**] अन्त्येष्टि क्रिया; (पउम ७५, १)। °**काइय** वि [°**कायिक**] प्रेत-योनि में उत्पन्न, व्यन्तर-विशेष; (भग ३,७)। °**देवयकाइय** वि [°**देवताकायिक**] प्रेत देवता का, प्रेत-सम्बन्धी; (भग ३, ७)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] यमराज, जम; (स ३१९)। °**भूमि**, °**भूमी** स्त्री [°**भूमि**, °**मी**] श्मशान; (सुपा २६५)। °**लोय** पुं [°**लोक**] श्मशान; (पउम ८९, ४३)। °**वइ** पुं [°**पति**] यम; (उप ७२८ टी)। °**वण** न [°**वन**] श्मशान; (पाअ; सुर १६, २०४; वज्जा २; सुपा ५१२)। °**ाहिव** पुं [°**ाधिप**] यम, जमराज; (पाअ)।
पेअ वि [**प्रेयस्**] अतिशय प्रिय। स्त्री—°**सी**; (सम्मत्त १७५)।
पेअ } देखो **पा**=पा।
पेअव्व }
पेआ स्त्री [**पेया**] यवागू, पीने की वस्तु-विशेष; (हे १, २४८)।
पेआल न [**दे**] १ प्रमाण; (दे ६, ५७; विसे १६९ टी; णदि; उव)। २ विचार; (विसे १३६१)। ३ सार, रहस्य; (ठा ४, ४ टी—पत्र २८३; उप पृ २०७)। ४ प्रधान, मुख्य; (उवा)।
पेआलणा स्त्री [**दे**] प्रमाण-करण, "पज्जव-पेयालणा पिंडो" (पिंड ६५)।
पेआलुय वि [**दे**] विचारित, (विसे १४८२)।
पेइअ वि [**पैतृक**] १ पिता से आया हुआ, पितृ-क्रम-प्राप्त; "पेइओ धम्मो" (पउम ८२, ३३; सिरि ३४८; स ५६६)। २ न. स्त्री के पिता का घर, पीहर, नैहर, मैका; "ता जा कुले कलंकं नो पयडइ ताव पेइए एयं पेसेमि", "विमलेण तओ भणिय गच्छ पिए पेइयमियाणि" (सुपा ६००)।
पेईहर न [**पितृगृह, पैतृकगृह**] पीहर, स्त्री के पिता का घर; "इय चिंतिऊण सिग्घं धणसिरिपेईहरम्मि संचलिओ" (सुपा ६०३)।
पेऊस न [**पीयूष**] अमृत, सुधा; (हे १, १०५; गा ६५; कप्पू)। °**ासण** पु [°**ाशन**] देव, सुर; (कुमा)।
पेंखिअ वि [**प्रेङ्खित**] कम्पित; (कप्पू)।
पेंखोल अक [**प्रेङ्खोलय्**] झूलना, हिलना। वकृ—**पेंखोलमाण**; (णाया १, १—पत्र ३१)।
पेंड देखो **पिंड**=पिण्ड; (हे १, ८५; प्राकृ ५; प्राप्र; कुमा)।
पेंड न [**दे**] १ खण्ड, टुकड़ा; २ वलय; (दे ६, ८१)।
पेंडधव पुं [**दे**] खड्ग, तलवार; (दे ६, ५९)।

पेंडवाल वि [**दे**] देखो **पेंडलिअ**; (दे ६, ५४)।
पेंडय पुं [**दे**] १ तरुण, युवा, २ षण्ढ, नपुंसक; (दे ६, ५३)।
पेंडल पु [**दे**] रस; (दे ६, ५८)।
पेंडलिअ वि [**दे**] पिण्डीकृत, पिण्डाकार किया हुआ, (दे ६, ५४)।
पेंडव सक [**प्र+स्थापय्**] १ रखना, स्थापन करना। २. प्रस्थान कराना। पेंडवइ; (हे ४, ३७)।
पेंडविर वि [**प्रस्थापयितृ**] प्रस्थापन करने वाला; (कुमा)।
पेंडार पुं [**दे**] १ गोप, गो-पाल; २ महिषी-पाल; (दे ६, ५८)।
पेंडोली स्त्री [**दे**] क्रीडा; (दे ६, ५६)।
पेंढा स्त्री [**दे**] कलुष सुरा, पंक वाली मदिरा, (दे ६, ५०)।
पेंत देखो **पा**=पा।
पेक्ख सक [**प्र+ईक्ष्**] देखना, अवलोकन करना। पेक्खइ, पेक्खए; (सण, पिंग)। वकृ—**पेक्खंत**; (पि ३६७)। कवकृ—**पेक्खिज्जंत**; (से १५, ६३)। संकृ—**पेक्खिअ**, **पेक्खिऊण**; (अभि ४२; काप्र १५८)। कृ -**पेक्खणिज्ज**; (नाट—वेणी ७३)।
पेक्खअ } वि [**प्रेक्षक**] देखने वाला, निरीक्षक, द्रष्टा; (सुर
पेक्खग } ७, ८०; स ३७६; महा)।
पेक्खण न [**प्रेक्षण**] निरीक्षण, अवलोकन; (सुपा १६६; अभि ५३)।
पेक्खणग } न [**प्रेक्षणक**] खेल, तमाशा, नाटक, (सुर ७,
पेक्खणय } १८२; कुप्र ३०)।
पेक्खणा स्त्री [**प्रेक्षणा**] निरीक्षण, अवलोकन, (ओघ ३)।
पेक्खा स्त्री [**प्रेक्षा**] ऊपर देखो; (पउम ७२, २६)। देखो **पेच्छा**।
पेक्खिय देखो **पेच्छिअ**; (राज)।
पेखिल (अप) वि [**प्रेक्षित**] दृष्ट; (रंभा)।
पेच्च } अ [**प्रेत्य**] परलोक, आगामी जन्म; (भग, औप)।
पेच्चा } "संबोही खलु पेच दुल्लहा" (वै ७३)। °**भव** पु [°**भव**] आगामी जन्म, पर लोक; (औप)। °**भाविअ** वि [°**भाविक**] जन्मान्तर-संबन्धी, (पण्ह २, २)।
पेच्चा देखो **पिअ**=पा।
पेच्छ सक [**दृश्, प्र+ईक्ष्**] देखना। पेच्छइ, पेच्छए, (हे ४, १८१, उव; महा, पि ४५७)। भवि—पेच्छिहिसि; (पि ५२५)। वकृ—**पेच्छंत**; (गा ३७३; महा)। संकृ—**पेच्छिऊण**; (पि ५८५)। हेकृ—**पेच्छिउं**, **पेच्छित्तए**; (उप ७२८ टी, औप)। कृ—**पेच्छणिज्ज**, **पेच्छिअव्व**; (गा ६६, औप; पण्ह १, ४, से ३, ३३)।
पेच्छ वि [**प्रेक्ष**] द्रष्टा, दर्शक; "अपरमत्थपेच्छो" (स ७१५)।
पेच्छग देखो **पेक्खग**; (भास ४७; धर्मसं ७४३)।
पेच्छण देखो **पेक्खण**; (सुपा ३७)।
पेच्छणग } देखो **पेक्खणग**; (पंचा ६, ११; महा)।
पेच्छणय }
पेच्छय वि [**प्रेक्षक**] द्रष्टा, निरीक्षक; (पउम ८६, ७१; स ३६१; गा ४६८)।
पेच्छय वि [**दे**] जो देखे उसीको चाहने वाला, दृष्ट-माल का अभिलाषी; (दे ६, ५८)।
पेच्छा स्त्री [**प्रेक्षा**] प्रेक्षणक, तमाशा, खेल, नाटक; "पेच्छाछणा सिणविलेअणाण जहा सुचोक्खोवि न किंचिदेव" (उपपं ३७; सुर १३, ३७; औप)। देखो **पेक्खा**। °**घर** न [°**गृह**] देखो °**हर**; (ठा ४, २)। °**मंडव** पु [°**मण्डप**] नाट्य-गृह, खेल आदि में प्रेक्षकों को बैठने का स्थान; (पव २६६)। °**हर** ग [°**गृह**] नाटक-गृह, खेल-तमाशा का स्थान, (पउम ८०, ५)।
पेच्छि वि [**प्रेक्षिन्**] प्रेक्षक, द्रष्टा; (चेइय १०६; गा २१४)।
पेच्छिअ वि [**प्रेक्षित**] १ निरीक्षित, अवलोकित; (कुमा)। २ न. निरीक्षण, अवलोकन; (सुर १२, १८३; गा २२५)।
पेच्छिर वि [**प्रेक्षितृ**] निरीक्षक, द्रष्टा; (गा १७४, ३७१)।
पेज्ज देखो **पा**=पा।
पेज्ज पुंन [**प्रेमन्**] प्रेम अनुराग; (सूअ २,५, २२; आचा; भग, ठा १, चेइय ६३४)। °**दंसि** वि [°**दर्शिन्**] अनुरागी; (आचा)।
पेज्ज वि [**प्रेयस्**] अत्यन्त प्रिय; (औप)।
पेज्ज वि [**प्रेज्य**] पूज्य, पूजनीय; (राज)।
पेज्ज देखो **पेर**=प्र+ईरय्।
पेज्जल न [**दे**] प्रमाण; (दे ६, ५७)।
पेज्जलिअ वि [**दे**] संघटित, (षड्)।
पेज्जा देखो **पेआ**, (ओघ १४६, हे १, २४८)।
पेज्जाल वि [**दे**] विपुल, विशाल, (दे ६, ६)।
पेट } न [**दे**] पेट, उदर, (पिंग; पव १)।
पेट्ट }
पेट्ठ देखो **पिट्ठ**=पिष्ट, (सत्ति ३; प्राकृ ५; प्राप्र)।
पेड देखो **पेडय**, "नडपेडनिहा" (संबोध १८)।

पेडइअ पु [**दे**] धान्य आदि बेचने वाला वणिक्; (दे ६, ५६)।

पेडक } न [**पेटक**] समूह, यूथ; "पेडकसंनिहा जाण"
पेडय } (सबोध १५; सुपा ५४६; सिरि १६३; महा)।

पेडा स्त्री [**पेटा**] १ मञ्जूषा, पेटी; (दे ५, ३८; महा)। २ पेटाकार चतुष्कोण गृह-पंक्ति में भिक्षार्थ-भ्रमण; (उत्त ३०, १६)।

पेडाल पु [**दे. पेटाल**] बड़ी मञ्जूषा, बड़ी पेटी; (मुद्रा ११०)।

पेडावइ पुं [**पेटकपति**] यूथ का नायक; (सुपा ५४६)।

पेडिआ स्त्री [**पेटिका**] मञ्जूषा; (मुद्रा २४०)।

पेड्डु पु [**दे**] महिष, भैंसा, (दे ६, ८०)।

पेड्डा स्त्री [**दे**] १ भित्ति, भीत; २ द्वार, दरवाजा; ३ महिषी, भैंस; (दे ६, ८०)।

पेढ देखो **पीढ**=पीठ; (हे १, १०६; कुमा), 'काऊण पेढं ठविया तत्थ एसा पडिमा" (कुप्र ११७)।

पेढाल वि [**दे**] १ विपुल; (दे ६, ६, गउड)। २ वर्तुल, गोलाकार, (दे ६, ६; गउड, पाअ)।

पेढाल वि [**पीठवत्**] पीठ-युक्त, (गउड)।

पेढाल पु [**पेढाल**] १ भारत वर्ष का आठवाँ भावी जिन-देव. "पेढालं अट्ठमयं आणंदजियं नमंसामि" (पव ४६)। २ ग्यारह रुद्र पुरुषों में दसवाँ, (विचार ४७३)। ३ एक ग्राम, जहाँ भगवान् महावीर का विचरण हुआ था, "पेढालग्गाम-मागओ भयवं" (आवम)। ४ न एक उद्यान, "तओ सामी दढभूमि गओ, तीसे वाहिं पेढालं नाम उज्जाणं" (आव १)। °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] १ भारतवर्ष का आठवाँ भावी जिन-देव; "उदए पेढालपुत्ते य" (सम १५३)। २ भगवान् पार्श्वनाथ के संतान में उत्पन्न एक जैन मुनि, "अहे णं उदए पेढालपुत्ते भगवं पासावच्चिज्जे नियंटे मेयज्जे गोत्तेणं" (सूअ २, ७, ५; ८, ६)। ३ भगवान् महावीर के पास दीक्षा ले कर अनुत्तर विमान में उत्पन्न एक जैन मुनि, (अनु २)।

पेढिया देखो **पीढिआ**: "चत्तारि मणिपीढियाओ" (ठा ४, २—पत्र २३०), २ ग्रन्थ की भूमिका, प्रस्तावना, (वसु)।

पेढी देखो **पीढी**, (जीव ३)।

पेणी स्त्री [**प्रेणी**] हरिणी का एक भेद, (पण्ह १, ४—पत्र ६८)।

पेदंड वि [**दे**] लुप्त-दण्डक, जूए में जो हार गया हो वह, जिसका दाव चला गया हो वह; (मृच्छ ४६)।

पेम पुन [**प्रेमन्**] प्रेम, अनुराग, प्रीति, स्नेह, (उवा; औप, सं ५; सुपा २०४; रयण ४२)।

पेमालुअ वि [**प्रेमिन्**] प्रेमी, अनुरागी; (उप ६८६ टी)।

पेम्म देखो **पेम**; (हे २, ६८; ३, २५; कुमा, गा १२६, प्रासू ११६)।

पेम्मा स्त्री [**प्रेमा**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

पेर सक [**प्र + ईरय्**] १ पठाना, भेजना, प्रेषण करना। २ धक्का लगाना, आघात करना। ३ आदेश करना। ४ किसी कार्य में जोड़ना —लगाना। ५ पूर्वपक्ष करना, प्रश्न करना, सिद्धान्त का विरोध करना। ६ गिराना। पेरइ; (धर्मसं ५६०; भवि)। वकृ—**पेरंत**; (कुप्र ७०; पिंग)। कवकृ—**पेरिज्जंत**; (सुपा २५१; महा)। कृ—**पेज्ज**; (राज)।

पेरंत देखो **पज्जंत**; (हे १, ५८; २, ६३; प्राप्र, औप, गउड)। °**चक्कवाल** न [°**चक्रवाल**] बाह्य परिधि, बाहर का घेराव; (पण्ह १, ३)। °**वच्च** न [°**वर्चस्**] मण्डप, तृणादि-निर्मित गृह, (राज)।

पेरग वि [**प्रेरक**] प्रेरणा करने वाला, पूर्वपक्षी; (धर्मसं ५८७)।

पेरण न [**दे**] १ ऊर्ध्व स्थान, (दे ६, ५६)। २ खेल, तमाशा; (स ७२३, ७२५)।

पेरण न [**प्रेरण**] प्रेरणा, (कुप्र ७०)।

पेरणा स्त्री [**प्रेरणा**] ऊपर देखो; (सम्मत्त १५७)।

पेरिअ वि [**प्रेरित**] जिसको प्रेरणा की गई हो वह; (ठ ८, १२, भवि)।

पेरिज्ज न [**दे**] साहाय्य, सहायता, मदद; (दे ६, ५८)।

पेरिज्जंत देखो **पेर**=प्र+ईरय्।

पेरुल्लि वि [**दे**] पिण्डीकृत. पिण्डाकार किया हुआ; (दे ६, ५४)।

पेलव वि [**पेलव**] १ कोमल, सुकुमाल, मृदु, (पाअ, से २, २७, अभि २६; औप)। २ पतला, कृश; ३ सूक्ष्म, लघु, (णाया १,१—पत्र २५; हे १, २३८)।

पेलु स्त्री [**पेलु**] पूणी, रुई की पहल , "कंतामि ताव पलुं" (पिंडभा ३५)। °**करण** न [°**करण**] पूणी बनाने का उपकरण, शलाका आदि, (त्रिसं ३३०५)।

पेल्ल सक [**क्षिप्**] फेंकना। पेल्लइ; (हे ४, १४३)। कर्म—पेल्लिज्जइ; (उव)। वकृ—**पेल्लंत**; (कुमा)। संकृ—**पेल्लिऊण**; (महा)।

पेल्ल देखो **पेर**=प्र+ईरय्। पेल्लेइ; (प्राकृ ६०)। कवकृ—**पेल्लिज्जंत**; (से ६, २५)। संकृ—**पेल्लि** (अप), **पेल्लिअ**; (पिंग)। कृ—**पेल्लेयव्व**; (ओघभा १८ टी)।

पेल्ल सक [**पीडय्**] पीलना, दवाना, पोड़ना। पेल्लेसि, पेल्लिसि; (स ५७४ टि)।

पेल्ल सक [**पूरय्**] पूरना, भरना। कवकृ—**पेल्लिज्जंत**; (से ६, २५)।

पेल्ल } पुंन [**दे**] वच्चा, शिशु, बालक; (उप २१६),
पेल्लग } "बीयम्मि पेल्लगाइं" (उप २२० टी)।

पेल्लग देखो **पेरग**; (निचू १६)।

पेल्लण देखो **पेरण**; (पगह १,३; गउड)।

पेल्लण न [**क्षेपण**] फेंकना; (धर्म २)।

पेल्लय [**दे**] देखो **पेल्ल**=(दे); (विपा १,२—पत्र ३६); "सपेल्लियं सियालिं" (सुख २, ३३)।

पेल्लय देखो **पेरग**; (बृह १)।

पेल्लय पुं [**पेल्लक**] भगवान् महावीर के पास दिक्षा लेकर अनुत्तर विमान में उत्पन्न एक जैन मुनि; (अनु २)।

पेल्लव } देखो **पेर**। पेल्लवइ, पेल्लावइ; (प्राकृ ६०)।
पेल्लाव }

पेल्लिअ वि [**दे. पीडित**] पीडित; (दे ६, ५७), "वलियदाइयपेल्लिओ" (महा)।

पेल्लिअ देखो **पेरिअ**, (गा २२१; विपा १, १)।

पेल्लेयव्व देखो **पेल्ल**=प्र+ईरय्।

पेव्वे अ. आमन्त्रण-सूचक अव्यय, (पड्)।

पेस सक [**प्र+एषय्**] भेजना, पठाना। पेसइ, पेसेइ; (भवि; महा)। वकृ—**पेसअंत**, (पि ४६०, रंभा)। संकृ—**पेसिअ**, **पेसिउं**; (मा ४०, महा)। कृ—**पेसइयव्व**, **पेसिअव्व**; **पेसेयव्व**; (सुपा ३००; २७८; ६३०, उप १३६ टी)।

पेस देखो **पीस**। वकृ—**पेसयंत**; (राज)।

पेस पुस्त्री [**प्रेष्य**] १ कर्मकर, नौकर, दास, चाकर; (सम १६; सूअ १, २, २, ३; उवा)। २ वि. भेजने योग्य; (हे २, ६२)।

पेस पुं [**दे. पेश**] १ सिन्ध देश में होने वाली एक पशु-जाति; (आचा २, ५, १, ८)।

पेस वि [**दे. पैश**] पेश-नामक जानवर के चमड़े का बना हुआ (वस्त्र); (आचा २, ५, १, ८)।

पेसण न [**दे**] कार्य, काज, प्रयोजन; (दे ६, ५७; भवि; णाया १, ७—पत्र ११७; पउम १०३, २६)।

पेसण न [**प्रेषण**] १ पठाना, भेजना; २ नियोजन, व्यापारण; (कुमा; गउड)। ३ आज्ञा, आदेश; (से ३, ५४)।

पेसणआरी } स्त्री [**दे**] दूती, दूत-कर्म करने वाली स्त्री;
पेसणआली } (दे ६, ५६; षड्)।

पेसणा स्त्री [**पेषण**] पीसना, पेषण; "सिलाए जवगोहूमपेसणाए हेऊए" (उप ५६७ टी)।

पेसल वि [**पेशल**] १ सुन्दर, मनोज्ञ; (आचा; गउड)। २ मधुर, मञ्जु; (पाअ)। ३ कोमल; (गउड)।

पेसल } न [**दे**] सिन्ध देश के पेश-नामक पशु के चर्म के
पेसलेस } सूक्ष्म पक्ष्म से निष्पन्न वस्त्र; "पेसाणि वा पेसलाणि वा" (२ आचा २, ५, १—सूत्र १४५), "पेसाणि वा पेसलेसाणि वा" (३ आचा २, ५, १, ८; राज)।

पेसव सक [**प्र+एषय्**] भेजवाना। कृ—**पेसवेयव्व**; (उप १३६ टी)।

पेसवण न [**प्रेषण**] भेजवाना, दूसरे के द्वारा प्रेषण; (उवा; पडि)।

पेसविअ वि [**प्रेषित**] भेजवाया हुआ; प्रस्थापित; (पाअ, उप पृ ५८)।

पेसाय वि [**पैशाच**] पिशाच-संवन्धी; (बृह २)।

पेसि स्त्री [**पेशि**] देखो **पेसी**; (सुपा ४८७)।

पेसिअ वि [**प्रेषित**] १ भेजा हुआ, प्रहित; (गा ११२; भवि; काल)। २ प्रेषण, (पउम ६, ३५)।

पेसिआ स्त्री [**पेशिका**] खगड, टुकड़ा, "अंबपेसिया ति वा अंबाडगपेसिया ति वा" (अनु ६; आचा २, ७, २, ७, ८; ६)।

पेसिआर पुं [**प्रेषितकार**] नौकर, भृत्य, कर्मकर; (पउम ६, ३५)।

पेसिदवंत (शौ) वि [**प्रेषितवत्**] जिसने भेजा हो वह, (पि ५६६)।

पेसी स्त्री [**पेशी**] मास-खगड, मांस-पिगड; (तंदु ७)। देखो **पेसिआ**।

पेसुण्ण } न [**पैशुन्य**] परोक्ष में दोष-कीर्तन, चुगली;
पेसुन्न } (औप; सूअ १, १६, २; णाया १, १; भग; सुपा ४२१)।

पेसेयव्व देखो **पेस**=प्र+एपय् ।
पेस्सिदवंत देखो **पेसिदवंत**; (पि ५६६) ।
पेह सक [**प्र+ईक्ष्**] १ देखना, निरीक्षण करना, ध्यान-पूर्वक देखना । २ चिन्तन करना । पेहइ, पेहए; (पि ८७; उव), पेहति; (कुप्र १९२) । भवि—पेहिस्सामि, (पि ५३०)। वकृ—**पेहंत, पेहमाण**; (उपपृ १५४, चेइय २५०; पि ३२३) । संकृ—**पेहाए, पेहिया**; (कस; पि ३२३) ।
पेहण न [**प्रेक्षण**] निरीक्षण; (पंचा ४, ११) ।
पेहा स्त्री [**प्रेक्षण**] १ निरीक्षण, (उव; सम ३२) । २ कायोत्सर्ग का एक दोष, कायोत्सर्ग में बन्दर की तरह ओष्ठ-पुट को हिलाते रहना, (पव ५) । ३ पर्यालोचन, चिन्तन; (आव ४) । ४ बुद्धि, मति; (उत्त १, २७) ।
पेहाविय वि [**प्रेक्षित**] दर्शित, दिखलाया हुआ; (उप पृ ३८८) ।
पेहि वि [**प्रेक्षिन्**] निरीक्षक; (आचा; उव) । स्त्री—°**णी**; (पि ३२३) ।
पेहिय वि [**प्रेक्षित**] निरीक्षित; (महा) ।
पेहुण न [**दे**] १ पिच्छ, पँख; (दे ६, ५८; पाअ, गा १७३; ७६५; वज्जा ४४; भत्त १४१; गउड) । २ मयूर-पिच्छ, मयूर-पंख, शिखण्ड; (पराह १, १; २, ५; जं १; णाया १, ३) । देखो **पिहुण** ।
पोअ सक [**प्र+वे**] पिरोना, गूँथना । पोअंति; (गच्छ ३, १८; सूअनि ७४) । वकृ—**पोयमाण**; (स ५१२) । संकृ—**पोइऊण**; (धर्मवि ६७) ।
पोअ वि [**प्रोत**] पिरोया हुआ; (दे १, ७६) ।
पोअ पुं [**पोत**] १ जहाज, प्रवहण, नौका; (पाअ; सुपा ८८; ३६६) । २ बालक, शिशु, बच्चा; (दे ६, ८१; पाअ, सुपा ३६६) । ३ न. वस्त्र, कपड़ा; (ठा ३, १—पत्र ११४) ।
पोअ पुं [**दे**] १ धव वृक्ष, धाय, धौ का पेड, २ छोटा साँप, (दे ६, ८१) ।
पोअइआ स्त्री [**दे**] निद्राकरी लता, लता-विशेष; (दे ६, ६३; पाअ) ।
पोअंड वि [**दे**] १ भय-रहित, निडर; २ षण्ढ, नामर्द; (दे ६, ६१) ।
पोअंत पुं [**दे**] शपथ, सौगन, (दे ६, ६२) ।
पोअण न [**प्रवयन, प्रोतन**] पिरोना, गुम्फन; (आवम) ।
पोअणपुर न [**पोतनपुर**] नगर-विशेष; (सुपा ५०६; भवि) ।
पोअणा स्त्री [**प्रवयना, प्रोतना**] पिरोना, (उप ३५६) ।
पोअय वि [**पोतज**] पोत से उत्पन्न होने वाला प्राणी—हस्ती आदि, (ठा ३, १) ।
पोअय पुं [**पोतक**] देखो **पोअ**=पोत; (उवा, औप) ।
पोअलय पुं [**दे**] १ आश्विन मास का एक उत्सव, जिसमें पत्नी के हाथ से ले कर पति अपूप को खाता है, २ एक प्रकार का अपूप—खाद्य-विशेष, पूआ; ३ बाल वसन्त; (दे ६, ८१) ।
पोआई स्त्री [**पोताकी**] १ शकुनि को उत्पन्न करने वाली विद्या-विशेष; २ शकुनिका, पक्षि-विशेष; (विसे २४५३) ।
पोआउय वि [**पोतायुज, पोतज**] देखो **पोअय**; (पउम १०२, ६७) ।
पोआय पुं [**दे**] ग्राम-प्रधान, गाँव का मुखिआ; (दे ६, ६०) ।
पोआल पुं [**दे**] वृषभ, बलीवर्द; (दे ६, ६२) ।
पोआल [**दे. पोतक**] बच्चा; शिशु, बालक; (ओघ ४४७) ।
पोइअ पुं [**दे**] १ हलवाई, मिठाई बेचने वाला; २ख द्योत; (दे ६, ६३) । ३ निमग्न, डूबा हुआ; (ओघ १३६) । ४ स्पन्दित; (बृह १) ।
पोइअ वि [**प्रोत**] पिरोया हुआ; (दे ७, ४४; उप पृ १०६; पाअ) ।
पोइअल्लय देखो **पोइअ**=प्रोत, (ओघ ५३६ टी) ।
पोइआ, **पोई** स्त्री [**दे**] निद्राकरी लता, वल्ली-विशेष; (दे ६, ६३; पराण १—पत्र ३४) ।
पोउआ स्त्री [**दे**] करीष का अग्नि; (दे ६, ६१) ।
पोंग पुं [**दे**] पाक, पकना; (स १८०) ।
पोंगिल्ल वि [**दे**] पका हुआ, परिपक्व, परिपाक-युक्त; कच्छी भाषा में 'पोगेल';

"अन्नेवि सइंमहियलनिसीयणुप्पन्नकिणियपोंगिल्ला ।
मलिणजरकप्पडोच्छइयविग्गहा कहवि हिंडंति ॥ "
(स १८०) ।

पोंड देखो **पुंड** । °**वद्धण** न [°**वर्धन**] नगर-विशेष; (महा) । °**वद्धणिया** स्त्री [°**वर्धनिका**] जैन मुनि-गण की एक शाखा; (कप्प) ।

पोंड } पुं [दे] १ यूथ का अधिपति; (दे ६, ६०)।
पोंडअ } २ फल; (पराह १, ४—पत्र ७८)। ३ अ-विकसित अवस्था वाला कमल; (विसे १४२५)। ४ कपास का सूता; "दव्वं तु पोंडयादी भावे सुत्तमिह सूयगं नाग" (सूअनि ३)।

पोंडरिगिणी देखो **पुंडरिगिणी**; (ठा २, ३)।

पोंडरिय देखो **पुंडरीअ**=पुण्डरीक; (स ४३६)।

पोंडरी स्त्री [**पौण्ड्री, पुण्डरीका**] जम्बूद्वीप के मेरु के उत्तर रुचक पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८)।

पोंडरीअ देखो **पुंडरीअ**=पुण्डरीक; (औप; णाया १, ५; १६, सम ३३; देवेन्द्र ३१८; सूअनि १४६)।

पोंडरीअ } न [**पौण्डरीक**] १ गणित-विशेष, रज्जु-गणित;
पोंडरीग } (सूअनि १५४)। २ देखो **पुंडरीअ**=पौण्डरीक; (सूअ २, १, १; सूअनि १४६; १५१)।

पोक्क सक [**व्या+हृ, पूत्+कृ**] पुकारना, आह्वान करना। पोक्कइ, (हे ४, ७६)।

पोक्क वि [**दे**] आगे स्थूल और उन्नत तथा बीच में निम्न (नासिका); "पोक्कनासे" (उत्त १२, ६)।

पोक्कण पुं [**पोक्कण**] १ अनार्य देश-विशेष; २ उस देश में बसने वाली म्लेच्छ जाति; (पराह १, १)।

पोक्कण न [**व्याहरण, पूत्करण**] १ पुकार, आह्वान; २ वि. पुकारने वाला; (कुमा)।

पोक्कर देखो **पुक्कर**। पोक्करंति; (महा)। वकृ—**पोक्करंत**; (सुपा ३८०)।

पोक्करिय वि [**पूत्कृत**] १ पुकारा हुआ; (सुर ६, १६४)। २ न. पुकार; (दंस ३)।

पोक्कार देखो **पुक्कार**=पूत्कार; (उप पृ १८५)।

पोक्किअ देखो **पोक्करिय**. (उप १०३१ टी)।

पोक्खर न [**पुष्कर**] १ जल, पानी; २ पद्म, कमल; ३ पद्म-कोष, ४ एक तीर्थ, अजमेर-नगर के पास का एक जलाशय—तीर्थ; ५ हाथी की सूँढ का अग्र भाग; ६ वाद्य-भाण्ड; ७ आपण, दुकान; ८ असि-कोष, तलवार की म्यान; ६ मुख, मुँह; १० कुष्ठ रोग की औषधि; ११ द्वीप-विशेष; १२ युद्ध, लड़ाई; १३ शर, बाण; १४ आकाश; "पोक्खर" (हे १, ११६; २, ४; संक्षि ४)। १५ पुं. नाग-विशेष; १६ रोग-विशेष; १७ सारस पक्षी; १८ एक राजा का नाम; १६ पर्वत-विशेष; २० वरुण-पुत्र; "पोक्खरो" (प्राप्र)। देखो **पुक्खर**।

पोक्खर वि [**पौष्कर**] १ पुष्कर-संबन्धी। २ पद्माकार रचना वाला; "पोक्खरं पवहणं" (चारु ७०)।

पोक्खरिणी स्त्री [**पुष्करिणी**] १ जलाशय-विशेष, वर्तुल वापी; (णाया १, १—पत्र ६३)। २ पद्मिनी, कमलिनी, पद्म-लता; "जलेण वा पोक्खरिणीपलासं" (उत्त ३२, ६०)। ३ वापी; (कुमा)। ४ पद्म-समूह; ५ पुष्कर-मूल; (हे २, ४)। ६ चौकोना जलाशय, वापी; (पगह १, १; हे २, ४)।

पोक्खल देखो **पुक्खल**; (पगण १—पत्र ३५; आचा २, १, ८, ११)।

पोक्खलच्छिलय } देखो **पुक्खलच्छिभय**; (पगण १—
पोक्खलच्छिल्लय } पत्र ३५; राज)।

पोक्खलि पुंन [**पुष्कलिन्**] एक जैन उपासक, जिसका दूसरा नाम शतक था; (राज)।

पोग्गर } पुंन [**पुद्गल**] १ रूपादि-विशिष्ट द्रव्य, मूर्त
पोग्गल } द्रव्य, रूप वाला पदार्थ; "पोग्गला" (भग ८, १; ठा २, ४; ४, ४; ५, ३; ८), "पोग्गलाइं" (सुज्ज ६; पंच ३, ४६)। २ न. मांस; (पव २६८; हे १, ११६)। °**त्थिकाय** पु [°**अस्तिकाय**] पुद्गल-स्कन्ध, पुद्गल-राशि; (भग; ठा ५, ३)। °**परट्ट**, °**परियट्ट** पुं [°**परिवर्त**] १ समस्त पुद्गल-द्रव्यों के साथ एक २ परमाणु का संयोग-वियोग, २ समय का उत्कृष्टतम परिमाण-विशेष, अनन्त कालचक्र-परिमित समय; (कम्म५, ८६; भग १२, ४; ठा३, ४)।

पोग्गलि वि [**पुद्गलिन्**] पुद्गल वाला, पुद्गल-युक्त; (भग ८, १०—पत्र ४२३)।

पोग्गलिय वि [**पौद्गलिक**] पुद्गल-मय, पुद्गल-संबन्धी, पुद्गल का; (पिंडभा ३२४)।

पोच्च वि [**दे**] सुकुमार, कोमल; गुजराती में 'पोचु'; (दे ६, ६०)।

पोच्चड वि [**दे**] १ असार, निस्सार; (णाया १, ३—पत्र ६४)। २ अतिनिबिड, (पण्ह १, १—पत्र १४)। ३ मलिन; (निचू ११)।

पोच्छल अक [**प्रोत्+शल्**] उछलना, ऊँचा जाना। वकृ—**पोच्छलंत**; (सुर १३, ४१)।

पोच्छाहण न [**प्रोत्साहन**] उत्तेजन; (वेणी १०५)।

पोच्छाहिअ वि [**प्रोत्साहित**] विशेष उत्साहित किया हुआ, उत्तेजित; (सुर १३, २६)।

पोट्ट न [**दे**] पेट, उदर; मराठी में 'पोट'; (दे ६, ६०; णाया १, १—पत्र ६१; ओघभा ७६; गा ८३; १७१;

२८५, स ११६; ७३८; उवा, सुख २, १५; सुपा ५४३; प्राकृ ३७; पव १३५; जं २)। °साल पु [°शाल] एक परिव्राजक का नाम; (विसे २४५२; ५५)। °सारणी स्त्री [°सारणी] अतीसार रोग; (आव ४)।

पोट्ट } न [दे] पोटला, गट्ठर, गठरी; "कामिणिणियंबविंबं **पोट्टल** } कंदप्पविलासरायहाणित्ति। न मुणइ अमेज्झपोट्टं" (सुपा ३५५; दे २, २४; स १००)।

पोट्टलिगा स्त्री [दे] पोटली, गठरी; (सुख २, १७)।

पोट्टलिय वि [दे] पोटली उठाने वाला, गठरी-वाहक; (निचू १६)।

पोट्टलिया [दे] देखो **पोट्टलिगा**; (उप पृ ३८७; सुर १२, ११; सुख २, १७)।

पोट्टि स्त्री [दे] उदर-पेशी, (मृच्छ २००)।

पोट्टिल पु [**पोट्टिल**] १ भारतवर्ष का भावी नववाँ तीर्थङ्कर—जिन-देव; (सम १५३)। २ भारतवर्ष के चौथे भावी जिन-देव का पूर्वभवीय नाम; (सम १५४)। ३ भगवान् महावीर का व्युत्क्रम से छठवें भव का नाम, (सम १०५)। ४ एक जैन मुनि, जिसने भगवान् महावीर के समय में तीर्थकर-नामकर्म बँधा था; (ठा ६)। ५ एक जैन मुनि; (पउम २०, २१)। ६ देव-विशेष; (णाया १, १४)। ७ देखो **पोट्ठिल**; (राज)।

पोट्टिला स्त्री [**पोट्टिला**] व्यक्ति-वाचक नाम, एक स्त्री का नाम; (णाया १, १४)।

पोट्टिस पुं [**पोट्टिस**] एक कवि का नाम; (कप्पू)।

पोट्ठवई स्त्री [**प्रौष्ठपदी**] १ भाद्रपद मास की पूर्णिमा; २ भादों की अमावस्या; (सुज्ज १०, ६)।

पोट्ठिल पु [**पुष्टिल**] भगवान् महावीर के पास दीक्षा ले कर अनुत्तर-विमान में उत्पन्न एक जैन मुनि; (अनु)।

पोडइल न [दे] तृण-विशेष; (पण्ण १—पत्र ३३)।

पोढ वि [**प्रौढ**] १ समर्थ; (पाअ)। २ निपुण, चतुर; ३ प्रगल्भ; ४ प्रवृद्ध, यौवन के बाद की अवस्था वाला; (उप पृ ८६; सुपा २२४, रंभा; नाट—मालती १३६)। °वाय पुं [°वाद] प्रतिज्ञा-पूर्वक प्रत्याख्यान; (गा ५२२)।

पोढा स्त्री [**प्रौढा**] १ तीस से पचपन वर्ष तक की स्त्री; (कुप्र १८५)। २ नायिका का एक भेद; (प्राकृ १०)।

पोढिम पुंस्त्री [**प्रौढिमन्**] प्रौढता, प्रौढपन; (मोह २)।

पोढी स्त्री [**प्रौढी**] ऊपर देखो; (कुप्र ४०७)।

पोणिअ वि [दे] पूर्ण; (दे ६, ५८)।

पोणिआ स्त्री [दे] सूते से भरा हुआ तकुवा, (दे ६, ६१)।

पोत देखो **पोअ**=पोत; (ओप; बृह १, णाया १, ८)।

पोतणया देखो **पोअणा**; (उप पृ ४१२)।

पोत्त पुं [**पौत्र**] पुत्र का पुत्र, पोता; (दे २, ७२; श्रा १४)।

पोत्त न [**पोत्र**] प्रवहण, नौका; "वेलाउलम्मि ओयारियाणि सव्वाणि तेण पोत्ताणि" (उप ५६७ टी)।

पोत्त } न [**पोत**] १ वस्त्र, कापड़; (श्रा १२; ओघ **पोत्तग** } १६८; कप्पू; स ३३२)। २ धोती, कटी-वस्त्र; (गच्छ ३, १८; कस; वव ८४; श्रावक ६३ टी; महा)। ३ वस्त्र-खगड; (पिंड ३०८)।

पोत्तय पुं [दे] पोता, वृषण, अण्डकोश; (दे ६, ६२)।

पोत्तिअ न [**पौतिक**] वस्त्र, सूती कपड़ा; (ठा ५, ३—पत्र ३३८; कस २, २६ टि)।

पोत्तिअ वि [**पोतिक**] १ वस्त्र-धारी; २ पुं. वानप्रस्थों का एक भेद; (ओप)।

पोत्तिआ स्त्री [**पौत्रिका**] पुत्र की लड़की; (रंभा)।

पोत्तिआ स्त्री [दे] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति; (उत्त ३६, १४७)।

पोत्तिआ } स्त्री [**पोतिका, पोती**] १ धोती, पहनने का **पोत्ती** } वस्त्र, साड़ी; (विसे २६०१)। २ छोटा वस्त्र, वस्त्र-खगड, "चउप्फालयाए पोत्तीए मुहं बंधेत्ता" (णाया १, १—पत्र ५३; पिंडभा ६), "मुहपोत्तियाए" (विपा १, १)।

पोत्ती स्त्री [दे] काच, शीशा; (दे ६, ६०)।

पोत्तुल्लया देखो **पोत्तिआ**; (णाया १, १८—पत्र २३५)।

पोत्थ } पुन [**पुस्त, °क**] १ वस्त्र, कपड़ा, (णाया १, **पोत्थग** } १३—पत्र १७६)। २-३ देखो **पुत्थ**; "पोत्थ- **पोत्थय** } कम्मजक्खा विव निच्चिट्ठा" (वसु; श्रा १२; सुपा २८६; विसे १४२५; बृह ३; प्राप्र, ओप)।

पोत्था स्त्री [**प्रोत्था**] प्रोत्थान, मूलोत्पत्ति; (उत्त २०, १६)।

पोत्थार पु [**पुस्तकार**] पोथी लिखने वाला, पोथी बनाने का काम करने वाला शिल्पी; (जीव ३)।

पोत्थिया स्त्री [**पुस्तिका**] पोथी, पुस्तक; "सरस्सइ व्व पोत्थियावलग्गहत्था" (काल)।

पोप्पय पुन [**दे**] हस्त-परिमर्षण, हाथ फिराना; (उप पृ ३५३)।

पोप्फल न [**पूगफल**] सुपारी; (हे १, १७०; कुमा)।

पोप्फली स्त्री [**पूगफली**] सुपारी का पेड़; (हे १, १७०; कुमा)।

पोम देखो **पउम**; "जहा पोमं जले जायं" (उत्त २५, २७; सुख २५, २७; पउम ५३, ७६)।

पोमर न [**दे**] कुसुम्भ-रक्त वस्त्र; (दे ६, ६३)।

पोमाड पुं [**दे. पद्माट**] पमाड, पमार, चकवड का पेड; (स १४४)। देखो **पउमाड**।

पोमावई स्त्री [**पद्मावती**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

पोमिणी देखो **पउमिणी**; (सुपा ६४६; सम्मत्त १७१)।

पोम्म देखो **पउम**, (हे १, ६१; २, ११२; गा ७५; कुमा; प्राकृ २८; कप्पू; पि १६६)।

पोम्मा देखो **पउमा**; (प्राकृ २८; गा ४७१; पि १६६)।

पोम्ह देखो **पम्ह**=पक्ष्मन्; "जह उ किर णालिगाए धणियं मिदुरूयपोम्हभरियाए" (धर्मसं ६८०)।

पोर पुं [**पूतर**] जल में होने वाला क्षुद्र जन्तु; (हे १, १७०; कुमा)।

पोर वि [**पौर**] पुर में—नगर में—उत्पन्न, नागरिक; (प्राकृ ३५)।

पोर देखो **पुर**=पुरस्। °**कव्व** न [°**काव्य**] शीघ्रकवित्व; (राज)।

पोर पुंन [**दे. पर्वन्**] ग्रन्थि, गाँठ; (ठा ४, १; अनु)। °**वीय** वि [°**वीज**] पर्व-बीज से उगने वाली वनस्पति, इक्षु आदि; (ठा ४, १)।

पोरग पुंन [**पर्वक**] वनस्पति का एक भेद, पर्व वाली वनस्पति; (पण्ण १—पत्र ३३)।

पोरच्छ पुं [**दे**] दुर्जन, खल, (दे ६, ६२; पाअ)।

पोरच्छिम देखो **पुरच्छिम**; (सुपा ४१)।

पोरत्थ वि [**दे**] मत्सरी, ईर्ष्यालु, द्वेषी; (षड्)।

पोरय न [ ] खेत; (दे ६, २६)।

पोरव पुं [**पौरव**] राजा पुरु की संतान; (अभि ६५)।

पोरवाड पुं [**पौरवाट**] एक जैन श्रावक-कुल; (ती २)।

पोराण देखो **पुराण**, (पण्ण २८, औप; भग; हे ४, २८७; उव; गा ३४०)।

पोराण वि [**पौराण**] १ पुराण-संबन्धी; (राय)। २ पुराण शास्त्र का ज्ञाता; (राज)।

पोराणिय वि [**पौराणिक**] पुराण-शास्त्र-संबन्धी; (स ३४४)।

पोरिस न [**पौरुष**] १ पुरुषत्व, पुरुषार्थ; (प्रासू १७)। २ पराक्रम; (कुमा)।

पोरिस वि [**पौरुषेय**] पुरुष-जन्य, पुरुष-प्रणीत; (धर्मसं ८६२ टी)।

पोरिसिय देखो **पोरिसीय**; "अत्थाहमतारमपोरिसियंसि उदगंसि अप्पाणं मुयति" (णाया १, १४—पत्र १६०)।

पोरिसी स्त्री [**पौरुषी**] १ पुरुष-शरीर-प्रमाण छाया; २ जो समय में पुरुष-परिमाण छाया हो वह काल, प्रहर; (उवा; विपा २, १; आचा; कप्प; पव ४)। ३ प्रथम प्रहर तक भोजन आदि का त्याग, प्रत्याख्यान-विशेष, तप-विशेष; (पव ४; संबोध ५७)।

पोरिसीय वि [**पौरुषिक**] पुरुष-प्रमाण, पुरुष-परिमित; "कुभी महंताहियपोरिसीया" (सूअ १, ५, १, २४)।

पोरुस पुं [ ] अत्यन्त वृद्ध पुरुष; (सूअ १, ७, १०)।

पोरुस देखो **पोरिस**; (स २०४; उप ७२८ टी; महा)।

पोरेकच्च } न [**पौरस्कृत्य**] पुरस्कार, कला-विशेष;
पोरेगच्च } (औप; राय; औप १०७ टि)।

पोरेवच्च न [**पौरोवृत्य**] पुरोवर्तित्व, अग्रेसरता; (औप; सम ८६; विपा १, १; कप्प)।

पोलंड सक [**प्रोत् + लङ्घ्**] विशेष उल्लंघन करना। पोलंडेइ; (णाया १, १—पत्र ६१)।

पोलच्चा स्त्री [**दे**] खेटित भूमि, कृष्ट जमीन; (दे ६, ६३)।

पोलास न [**पोलास**] १ नगर-विशेष, पोलासपुर; (उवा)। २ उद्यान-विशेष; (राज)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष; (उवा; अंत)।

पोलासाढ न [**पोलाषाढ**] श्वेतविका नगरी का एक चैत्य; (विसे २३५७)।

पोअड पु [**दे**] सौनिक, कसाई; (दे ६, ६२)।

पोलिआ स्त्री [**दे. पौलिका**] खाद्य-विशेष, पूरी(?); "सुणओ इव पोलियासत्तो" (उप ७२८ टी; राज)।

पोली देखो **पओली**; "वद्धेसु पोलिदारेसु, गवेसंतो अ धुत्तयं" (श्रा १२; उप पृ ८४; धर्मवि ७७)।

पोल्ल वि [**दे**] पोला, शुषिर, खाली, रिक्त; "पोल्लो व्व मुट्ठी जह से असारे" (उत्त २०, ४२; णाया १, १—पत्र ६३; पव ८१), "वंका कीडक्खइया चित्तलया पोल्लया य दड्ढा य" (महा)।

पोल्लड वि [**दे**] ऊपर देखो; "वंका कीडक्खइया चित्तलया पोल्लडा य दड्ढा य" (ओघ ७३५; विचार ३३६)।

पोल्लर न [**दे**] तप-विशेष, निर्विकृतिक तप; (संबोध ५८)।

पोस अक [**पुष्**] पुष्ट होना। पोसइ; (धात्वा १४५; भवि)।

पोस सक [**पोषय्**] १ पुष्ट करना। २ पालन करना। पोसेइ; (पंचा १०, १४)। "मायरं पियरं पोस" (सूअ १, ३, २, ४), पोसाहि; (सूअ १, २, १, १९)। कवक्र— **पोसिज्जंत**; (गा १३५)।

पोस वि [**पोष**] १ पोषक, पुष्टि-कारक, "अभिक्खणं पोसवत्थं परिहिंति" (सूअ १, ४, १, ३)। २ पुं. पोषण; पुष्टि; (संबोध ३९)।

पोस पुं [**पोस**] १ अपान-देश, गुदा; (पण्ह १, ४—पत्र ७८; ओघ ५५६; औप)। २ योनि, (निचू ६)। ३ लिंग, उपस्थ; "णवसोतपरिस्सवा बोंदी पण्णत्ता, तं जहा; दो सोत्ता, दो णेत्ता, दो घाणा, मुहं, पोसे, पाऊ" (ठा ९—पत्र ४५०)।

पोस पुं [**पौष**] पौष मास; (सम ३५)।

पोसग वि [**पोषक**] १ पुष्टि-कारक; २ पालन-कर्ता; (पण्ह १, २)।

पोसण न [**पोषण**] १ पुष्टि; (पण्ह १, २)। २ पालन; ३ वि. पोषण-कर्ता; "लोग परं पि जहासिपोसणो" (सूअ १, २, १, १९)।

पोसण न [**पोसन**] अपान, गुदा, (ज ३)।

पोसणया स्त्री [**पोषणा**] १ पोषण, पुष्टि, २ भरण, पालन, (उवा)।

पोसय देखो **पोस**=पोस, "पोसए त्ति" (ठा ९ टी—पत्र ४५०; बृह ४)।

पोसय देखो **पोसग**, (राज)।

पोसह पुं [**पोषध, पौषध**] १ अष्टमी, चतुर्दशी आदि पर्व-तिथि में करने योग्य जैन श्रावक का व्रत-विशेष, आहार-आदि के त्याग-पूर्वक किया जाता अनुष्ठान-विशेष; (सम १९; उवा; औप, महा; सुपा ६१९, ६२०)। २ पर्व-दिवस—अष्टमी, चतुर्दशी आदि पर्व-तिथि; "पोसहसद्दो रूढीए एत्थ पव्वाणुवायओ भणिओ" (सुपा ६१९)। °**पडिमा** स्त्री [°**प्रतिमा**] जैन श्रावक को करने योग्य अनुष्ठान-विशेष, व्रत-विशेष; (पंचा १०, ३)। °**वय** न [°**व्रत**] वही पूर्वोक्त अर्थ; (पडि)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] पौषध-व्रत करने का स्थान; (णाया १, १—पत्र ३१; अंत; महा)। °**ोववास** पुं [°**ोपवास**] पर्वदिन में उपवास-पूर्वक किया जाता जैन श्रावक का अनुष्ठान-विशेष, जैन श्रावक का ग्यारहवाँ व्रत; (औप; सुपा ६१९)।

पोसहिय वि [**पौषधिक**] जिसने पोषध-व्रत किया हो वह, पौषध करने वाला; (णाया १, १—पत्र ३०; सुपा ६१९; धर्मवि २७)।

पोसिअ वि [**दे**] दुःस्थ, दरिद्र, दुःखी; (दे ६, ६१)।

पोसिअ वि [**पुष्ट**] पोषण-युक्त; (भवि)।

पोसिअ वि [**पोषित**] १ पुष्ट किया हुआ; २ पालित, (उत्त २७, १४)।

पोसिद (शौ) वि [**प्रोषित**] प्रवास में गया हुआ। °**भत्तुआ** स्त्री [°**भर्तृका**] जिसका पति प्रवास में गया हो वह स्त्री; (स्वप्न १३४)।

पोसी स्त्री [**पौषी**] १ पौष मास की पूर्णिमा; २ पौष मास की अमावस, (सुज्ज १०, ६; इक)।

पोह पुं [**दे**] बैल आदि की विष्ठा का ढग; कच्छी भाषा में 'पोह'; (पिंड २४५)।

पोह पुं [**प्रोथ**] अश्व के मुख का प्रान्त भाग; (गउड)।

पोहण पुं [**दे**] छोटी मछली; (दे ६, ६२)।

पोहत्त न [**पृथुत्व**] चौड़ाई; (भग)।

पोहत्त देखो **पुहत्त**; (पि ७८)।

पोहत्तिय वि [**पार्थक्त्विक**] पृथक्त्व-संबन्धी; (पण्ण २२—पत्र ६३९; ६४०; २३—पत्र ६६४)।

पोहल देखो **पोप्फल**, (पड्)।

°**प्प** देखो **प**=प्र, "विप्पोसहिपत्ताण" (संति २; गउड)।

°**प्पआस** देखो **पयास**=प्रयास, (अभि ११७)।

°**प्पउत्त** देखो **पउत्त**=प्रवृत्त, (मा ३)।

°**प्पच्चअ** देखो **पच्चय**, (अभि १७६)।

°**प्पडव** (मा) अक [**प्र+तप्**] गरम होना। प्पडवदि, (पि २१९)।

°**प्पडिआर** देखो **पडिआर**=प्रतिकार, (मा ४३)।

°**प्पडिहा** देखो **पडिहा**=प्रतिभा; (कुमा)।

°**प्पणइ** देखो **पणइ**=प्रणयिन्, (कुमा)।

°**प्पणाम** देखो **पणाम**=प्रणाम, (हे ३, १०५)।

°**प्पणास** देखो **पणास**=प्रणाश; (सुपा ६५७)।

°**प्पण्णा** देखो **पण्णा**=प्रज्ञा; (कुमा)।

°**प्पत्थाण** देखो **पत्थाण**; (अभि ८१)।

°**प्पदेस** देखो **पदेस**, (नाट—विक्र ४)।

समुदाय के अध्यक्ष के अधीन हो, "गच्छागच्छिं गुम्मागुम्मिं फड्डाफड्डिं" (औप; बृह १)। ३ द्वार आदि का छोटा छिद्र, विवर; ४ अवधिज्ञान का निर्गम-स्थान; "फड्डा य असंखेज्जा", "फड्डा य आणुगामी" (विसे ७३८; ७३६)। ५ समुदाय; "तत्थ पत्तइयगा फड्डगेहिं एंति" (आवम; आचू १)। ६ समुदाय-विशेष, वर्गणा-समुदाय; "नेहप्पच्चयफड्डगमेगं अविभागवग्गणा णंता" (कम्मप २८; ४४; पंच ३, २८; ५, १८३; १८४; जीवस ७६), "तं इगिफड्डं संते", "तासिं खलु फड्डगाइं तु" (पंच ५, १७६; १७१)। °वइ पुं [°पति] गण के अवान्तर विभाग का नायक, (बृह १)।

फण पुं [**फण**] फन, साँप की फणा; (से ६, ५५; पाअ; गा २४०; सुपा १; प्रासू ५१)।

फणग पुं [**दे. फनक**] कंघा, केश सवाँरने का उपकरण; (उत्त २२, ३०)।

फणज्जुय पुं [**दे**] वनस्पति-विशेष; "तुलसी कण्ह-ओराले फणज्जुए अज्जए य भूयणए" (पण्ण १—पत्र ३४)।

फणस पुं [**पनस**] कटहर का पेड़; (पण्ण १; हे १, २३२; प्राप्र)।

फणा स्त्री [**फणा**] फन; (सुर २, २३६)।

फणि पुं [**फणिन्**] १ साँप, सर्प, नाग; (उप ३५७ टी; पाअ; सुपा ५५६; महा; कुमा)। २ दो कला या एक गुरु अक्षर की संज्ञा; (पिंग)। ३ प्राकृत-पिंगल का कर्ता, पिंगलाचार्य; (पिंग)। °**चिंध** पुं [°**चिह्न**] भगवान् पार्श्वनाथ; (कुमा)। °**पहु** पुं [°**प्रभु**] १ नागकुमार देवों का एक स्वामी, धरणेन्द्र; (ती ३)। २ शेष नाग; (धर्मवि ५७)। °**राय** पुं [°**राज**] १ शेष नाग; (कुप्र २७२)। २ पिंगल-कर्ता, (पिंग)। °**लआ** स्त्री [°**लता**] नाग-लता, वल्ली-विशेष; (कप्पू)। °**वइ** पुं [°**पति**] १ इन्द्र-विशेष, धरणेन्द्र; (सुपा ३१)। २ नाग-राज; (मोह २६)। ३ पिङ्गलकार, (पिंग)। °**सेहर** पुं [°**शेखर**] प्राकृत-पिङ्गल का कर्ता; (पिंग)।

फणिंद पुं [**फणीन्द्र**] १ नाग-राज, शेष नाग; (प्रासू ११३)। २ पिङ्गलकार, (पिंग)।

फणिल्ल सक [**चोरय्**] चोरी करना। फणिल्लइ; (धात्वा १४६)।

फणिह पुं [**दे. फणिह**] कंघा, केश सवाँरने का उपकरण; (सूअ १, ४, २, ११)।

फणीसर पुं [**फणीश्वर**] देखो **फणि-वइ**; (पिंग)।

फणुज्जय देखो **फणज्जुय**; (राज)।

फड्ढ पुं [**स्पर्ध**] स्पर्धा, हिर्स; (कुमा)।

फड्ढा स्त्री [**स्पर्धा**] ऊपर देखो; (दे ८, १३; कुमा ३, १८)।

फड्ढि वि [**स्पर्धिन्**] स्पर्धा करने वाला; (प्राकृ २३)।

फर } पुं [**दे. फल, °क**] १ काष्ठ आदि का तख्ता;
फरअ } २ ढाल; (दे १, ७६; ६, ८२; कप्पू; सुर २, ३१)। देखो फल, **फलग**।

फरअ पुंन [**दे. स्फरक**] अस्त्र-विशेष, "फरएहिं छाइऊण तेवि हु गिण्हंति जीवंतं" (धर्मवि ८०)।

फरक्किद वि [**दे**] फरका हुआ, हिला हुआ, कम्पित; (कप्पू)।

फरस देखो **फरिस**=स्पर्श; (रंभा; नाट)।

फरसु पुं [**परशु**] कुठार, कुल्हाड़ा; (भवि; पि २०४)। °**राम** पुं [°**राम**] ब्राह्मण-विशेष, ऋषि जमदग्नि का पुत्र; (भत्त १५३)।

फरहर अक [**फरफराय्**] फरफर आवाज करना। वकृ—**फरहरंत**; (भवि)।

फरिल देखो **फलिह**=स्फटिक; (इक)।

फरिस सक [**स्पृश्**] छूना। फरिसइ; (षड्), फरिसइ; (प्राकृ २७)। कर्म—फरिसिज्जइ; (कुमा)। कवकृ—**फरिसिज्जंत**; (धर्मवि १३६)।

फरिस } पुंन [**स्पर्श, °क**] स्पर्श, छूना; (आचा; पण्ह
फरिसग } १, १; गा १३२; प्राप्र; पाअ; कप्प), "न य कीरइ तणुफरिसं" (गच्छ २, ४४)।

फरिसण न [**स्पर्शन**] इन्द्रिय-विशेष, त्वगिन्द्रिय; (कुप्र ४२४)।

फरिसिय वि [**स्पृष्ट**] छुआ हुआ; (कुप्र १६; ४२)।

फरिहा देखो **फलिहा**=परिखा; (णाया १, १२)।

फरुस वि [**परुष**] १ कर्कश, कठिन, (उवा; पाअ; हे १, २३२; प्राप्र)। २ न कुवचन, निष्ठुर वाक्य, "ण यावि किंची फरुसं वदेज्जा" (सूअ १, १४, ७; २१)।

फरुस } पुं [**दे. परुष, °क**] कुम्भकार, कुंभार; "पोग्गल-
फरुसग } मोयगफरुसगदंते" (बृह ४)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] कुंभकार-गृह, (बृह ३)।

फरुसिया स्त्री [**परुषता, पारुष्य**] कर्कशता, निष्ठुरता; (आचा)।

फल अक [**फल्**] फलना, फलान्वित होना। फलइ; (गा १७; ८६४), फलंति; (सिरि १२८२)। वकृ—**फलंत**; (से ७, ५६)।

फल पुंन [**फल**] १ वृक्षादि का शस्य; (आचा; कप्प; कुमा; ठा ६; जी १०)। २ लाभ; "पुच्छइ ते सुमिणाणं एएसिं किमिह मह फलो होइ" (उप ६८६ टी)। ३ कार्य, "हेउ-फलभावओ होति" (पंचव १; धर्म १)। ४ इष्टानिष्ट-कृत कर्म का शुभ या अशुभ फल—परिणाम; (सम ७२, हे ४, ३३५)। ५ उद्देश्य; ६ प्रयोजन; ७ त्रिफला; ८ जायफल; ९ वाण का अग्र भाग; १० फाल; ११ दान, १२ मुष्क, अण्डकोष; १३ ढाल; १४ कक्कोल, गन्ध-द्रव्य-विशेष; (हे १, २३)। १५ अग्र भाग; "अदु वा मुट्ठिणा अदु कुंताइफलेणं" (आचा १, ९, ३, १०)। °**मंत**, °**व** वि [°**वत्**] फल वाला; (णाया १, ४; पचा ४)। °**वड्डिय**, °**वद्धिय** न [°**वर्द्धिक**] १ नगर-विशेष, फलोधि-नामक मरुदेशीय नगर; २ वहाँ का एक जैन मन्दिर; (ती ५२)।

फलअ, **फलग** पुंन [**फलक**] १ काष्ठ आदि का तख्ता; (आचा; गा ६५६; तंदु २९; सुर १०, १६१; औप)। २ जुए का एक उपकरण; (औप; धण ३२)। ३ ढाल; "भरिएहिं फलएहि" (विपा १, ३; कुमा; सार्ध १०१)। ४ देखो **फल**; (आचा)। °**सज्जा** स्त्री [°**शय्या**] काष्ठ का तख्ता जिस पर सोया जाय; (भग)।

फलण न [**फलन**] फलना; (सुपा ६)।

फलह, **फलहग** पुं [**फलह**, °**क**] फलक, काठ आदि का तख्ता; "असंजए भिक्खुपडियाए पीढं वा फलहगं वा णिस्सेणिं वा उदूहलं वा आहट्टु उस्सविय दुरुहेज्जा" (आचा २, १, ७, १), "भूमिसेज्जा फलहसेज्जा" (औप), "घरफलहे" (दे १, ८; पि २०६), "पेक्खइ मन्दिराइँ फलहद्दुग्घाडिय-जालगवक्खाइ ", " अह फलहंतरेण दरिसियगुज्झंतरदेसइ " (भवि)।

"पिहुपत्तासयमयलं गुणनियरनिबद्धफलहसंघायं।
संजमियसयलजोगं बोहित्थं मुणिवरसरिच्छं"
(सुर १३, ३९)।

फलहिआ, **फलही** स्त्री [**फलहिका**, **फलही**] काठ आदि का तख्ता; "सुरिए अत्थमिए फलहिअं घडेउमाढवइ", "इत्थ पहाणफलही चिट्ठइ" (ती ११), "कलावईए रूवं सिग्घ आलिहसु चित्तफलहीएं" (सुर १, १५१)।

फलही स्त्री [**दे**] १ कर्पास, कपास; (दे ६, ८२; गा १६५; ३५९)। २ कपास की लता; "दरफुडिअवेंटमारोणआइ हसिअं व फलहीए" (गा ३६०)।

फलाव सक [**फालय्**] फलवान् बनाना, सफल करना; "तत्तो-वि अ धण्णतमा निअयफलेण फलावेंति" (रत्न २९)।

फलावह वि [**फलावह**] फलप्रद, फल को धारण करने वाला; (पउम १४, ४४)।

फलासव पुं [**फलासव**] मद्य-विशेष; (पण्ण १७)।

फलि पुं [**दे**] १ लिंग, चिह्न, २ वृषभ, बैल, (दे ६, ८६)।

फलिअ वि [**फलित**] १ विकसित, "फुडिअं फलिअं च दलि-अमुद्दरिअं" (पाअ)। २ फल-युक्त, जिसको फल हुआ हो वह; (णाया १, ११)।

फलिअ न [**दे**] वायनक, भोजन आदि का बाँटा जाता उपहार; (ठा ३, ३—पत्र १४७)।

फलिआरी स्त्री [**दे**] दूर्वा, कुश तृण; (दे ६, ८३)।

फलिणी स्त्री [**फलिनी**] प्रियंगु वृक्ष, (दे १, ३२; ६, ४६; पाअ, कुमा, गा ९६३)।

फलिह पुं [**परिघ**] १ अर्गला, आगल; "अग्गला फलिहो" (पाअ; औप), "ऊसियफलिहा" (भग २, ५—पत्र १३४)। २ अस्त्र-विशेष, लोहे का मुद्गर आदि अस्त्र; ३ गृह, घर; ४ काच-घट; ५ ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक योग; (हे १, २३२; प्राप्र)।

फलिह पुं [**स्फटिक**] १ मणि-विशेष, स्फटिक मणि; (जी ३; हे १, १९७; कप्पू)। २ एक विमानावास, देव-विमान-विशेष; (देवेन्द्र १३२; इक)। ३ रत्नप्रभा पृथिवी का एक स्फटिकमय काण्ड; (ठा १०)। ४ गन्धमादन पर्वत का एक कूट; (इक)। ५ कुण्डल पर्वत का एक कूट; ६ रुचक पर्वत का एक शिखर; (राज)। °**गिरि** पुं [°**गिरि**] कैलाश पर्वत; (पाअ)।

फलिह पुं [**फलिह**] फलक, काठ आदि का तख्ता; "अवेसिणो फलिहा" (पाअ), "नाणोवगरणभूयाणं कवलियाफलिहपुत्थि-याईणं" (आप ८)।

फलिहंस पुं [**फलिहंसक**] वृक्ष-विशेष; (दे ४, १२)।

फलिहा स्त्री [**परिखा**] खाई, किले या नगर के चारों ओर की नहर; (औप, हे १, २३२; कुमा)।

फलिहि देखो **परिहि**; (प्राकृ १५)।

फली स्त्री [**फली**] काठ आदि की छोटी तख्ती; "तत्तो चंदण-फलीउ वणियहट्टम्मि विक्किउं कहवि" (सुपा ३८५)।

फलोवय } वि [**फलोपग**] फल-प्राप्त, फल-सहित, (ठा
फलोवा° } ३, १ पत्र—११३)।
फल्ल वि [**फल्य**] सूते का वस्त्र, सूती कपड़ा; (बृह १)।
फव्वीह सक [**लभ्**] यथेष्ट लाभ प्राप्त करना; गुजराती में 'फाववु'। फव्वीहामो; (बृह १)।
फसल वि [**दे**] १ सार, चितकबरा, "फसलं सबलं सारं किरं चित्तलं च बोगिम्मील्लं" (पाअ; दे ६, ८७)। २ स्थासक; (दे ६, ८७)।
फसलाणिअ } वि [**दे**] कृत-विभूष, जिसने विभूषा की
फसलिअ } हो वह, श्रृङ्गारित; (दे ६, ८३), "फसलियाणि कुकुमराएण" (स ३६०)।
फसुल वि [**दे**] मुक्त; (दे ६, ८२)।
फाइ स्त्री [**स्फाति**] वृद्धि; (ओघ ४७)।
फाईकय वि [**स्फीतीकृत**] १ फैलाया हुआ; २ प्रसिद्ध किया हुआ; "वइसेसियं पणीयं फाईकयमएणमएणेहि" (विसे २५०७)।
फागुण देखो **फग्गुण**; (पि ६२)।
फाड सक [**पाटय्, स्फाटय्**] फाड़ना। फाडेइ; (हे १, १६८, २३२)। वकृ—**फाडंत**; (कुमा)।
फाडिय वि [**पाटित, स्फाटित**] विदारित; (भवि)।
फाणिअ पुंन [**फाणित**] १ गुड़; "फाणिओ गुडो भएणति" (निचू ४)। २ गुड़ का विकार-विशेष, आर्द्र गुड़, पानी से द्रावित गुड़; (औप; कस, पिंड २३६; ६२५; पव ४)। ३ क्वाथ, (पएण १७—पत्र ५३०)।
फाय वि [**स्फीत**] १ वृद्ध; २ विस्तीर्ण; ३ ख्यात; (विसे २५०७)।
फार वि [**स्फार**] १ प्रचुर, बहुत; "फारफलभारभज्जिरसाहासयसंकुलो महासाही" (धर्मवि ५५)। २ विशाल, विपुल; ३ विस्तृत, फैला हुआ, (सुर २, २३६; काप्र १७०, सुपा १६४; कुप्र ५१)।
फारक्क वि [**दे. स्फारक**] स्फरकाख्य को धारण करने वाला; "तं नासंतं दट्ठुं फारक्का नमुइवयणओ ढुक्का" (धर्मवि ८०)।
फारुसिय न [**पारुष्य**] परुषता, कर्कशता; "फारुसियं समाइयंति" (आचा)।
फाल देखो **°प्फाल**।
फाल देखो **फाड**। फालेइ; (हे १, १६८; २३२)। कवकृ—**फालिज्जंत, फालिज्जमाण**; (गा १५३; सम्मत १७४)। संकृ—**फालेऊण**; (गा ४८६)।
फाल पुंन [**फाल**] १ लोहमय कुश, एक प्रकार की लोहे की लम्बी कील, (उवा)। २ फाल से की जाती एक प्रकार की दिव्य-परीक्षा, शपथ-विशेष; (सुपा १८६)। ३ फलाङ्ग, लाँफ; "दीवि व्व विहलफालो" (कुप्र १२)।
फालण न [**पाटन, स्फाटन**] विदारण; "खोणी किं न सहेदि सीरमुहओ त तारिसं फालणं" (रंभा; सम १२५)।
फालण देखो **°प्फालण**।
फाला स्त्री [**फाला**] फलाङ्ग, लाँफ; (कुप्र २७८, कुलक ३२)।
फालि स्त्री [**दे. फालि**] १ फली, छीमी, फलियाँ; २ शाखा; "सिंबलिफालिव्व अग्गिणा दड्ढो" (संथा ८५)। ३ फाँक, टुकडा; "—नागवल्लीदलपूगीफलफालिपमुह—" (रयण ५५)।
फालिअ वि [**पाटित, स्फाटित**] विदारित; (कुमा; पण्ह १, १—पत्र १८; पउम ८२, ३१; औप)।
फालिअ न [**दे. फालिक**] देश-विशेष में होता वस्त्र-विशेष; "अमिलाणि वा गज्जलाणि वा फालियाणि वा कायहाणि वा" (आचा २, ५, १, ७)।
फालिअ } पुं [**स्फाटिक**] १ रत्न-विशेष; (कप्प)।
फालिग } २ वि. स्फटिक-रत्न का; (पि २२६; उप ६८६;
फालिह } सुपा ८८)।
फालिहद्द पुं [**पारिभद्र**] १ फरहद का पेड़; २ देवदारु का पेड़; ३ निम्ब का पेड़; (हे १, २३२)।
फास सक [**स्पृश्, स्पर्शय्**] १ स्पर्श करना, छूना। २ पालन करना। फासइ, फासेइ; (हे ४, १८२; भग)। कर्म—फासिज्जइ; (कुमा)। वकृ—**फासंत, फासयंत**; (पचा १०, ३५; पण्ह २, ३—पत्र १२३)। कवकृ—**फासाइज्जमाण**; (भग—अ°)। संकृ—**फासइत्ता, फासित्ता**; (उत्त २६, १; सुख २६, १; कप्प; भग)।
फास पुंन [**स्पर्श**] १ स्पर्श, छूना; (भग; प्रासू १०४)। २ ग्रह-विशेष, ज्योतिष्क देव-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७८)। ३ दुःख-विशेष; "एयाइं फासाइं फुसंति बालं" (सूअ १, ५, २, २२)। ४ शब्द आदि विषय; (उत्त ४, ११)। ५ स्पर्श इन्द्रिय, त्वचा; (भग)। ६ रोग; ७ ग्रहण; ८ युद्ध, लडाई; ६ गुप्त चर, जासूस; १० वायु, पवन; ११ दान; १२ 'क' से ले कर 'म' तक के अक्षर; १३ वि. स्पर्श करने वाला; (हे २, ६२)। **°कीव** पुं [**°क्लीब**] क्लीब का एक

भेद; (निचू ४)। °णाम, °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, कर्कश आदि स्पर्श का कारण-भूत कर्म; (राज, सम ६७)। °मंत वि [°मत्] स्पर्श वाला; (ठा ५, ३, भग)। °मय त्रि [°मय] स्पर्श-मय; स्पर्श से निर्वृत्त, "फासामयाओ सोक्खाओ" (ठा १०)।

फासग वि [स्पर्शक] स्पर्श करने वाला; (अज्झ १०४)।

फासण न [स्पर्शन] १ स्पर्श-क्रिया, (श्रा १६)। २ स्पर्शेन्द्रिय, त्वचा; (पव ६७)।

फासणया } स्त्री [स्पर्शना] १ स्पर्श-क्रिया; (ठा ६;
फासणा } स १५६; जीवस १८१)। २ प्राप्ति; (राज)।

फासिअ वि [स्पृष्ट] १ छुआ हुआ; (नव ४१; विसे २७८३)। २ प्राप्त; "उचिए काले विहिणा पत्तं जं फासियं तयं भणियं" (पव ४)।

फासिअ वि [स्पर्शिक] स्पर्श करने वाला; (विसे १००१)।

फासिअ वि [स्पर्शित] १ स्पर्श-युक्त, स्पृष्ट, २ प्राप्त; (पव ४—गाथा २१२)।

फासिंदिय न [स्पर्शेन्द्रिय] त्वगिन्द्रिय; (भग, णाया १, १७)।

फासु }
फासुअ } वि [प्रासु, °क] अ-चेतन, जीव-रहित, निर्जीव, अ-चित्त वस्तु, (भग; पंचा १०, ६; औप; उवा;
फासुग } णाया १, ५; पउम ८२, ५)।

फिक्कर अक [फिन् + कृ] प्रेत—पिशाच का चिल्लाना। "तह फिक्करंति पेया" (सुपा ४६२)।

फिक्कि पुंस्त्री [दे] हर्ष, खुशी; (दे ६, ८३)।

फिज न [दे. स्फिच्] नितम्ब, चूतर, जंघा का उपरि-भाग; (सुख ८, १३)।

फिट्ट अक [भ्रंश्] १ नीचे गिरना। २ टूटना, भाँगना। ३ ध्वस्त होना। ४ पलायन करना, भागना। फिट्टइ; (हे ४, १७७; प्राकृ ७६; गा १८३, चेइय ५८७), फिट्टई; (उत्त २०, ३०), फिट्टंति; (सिरि १२६३)। भवि—फिट्टिहिइ, फिट्टिहिसि; (कुप्र १६५; गा ७६८)।

फिट्ट वि [भ्रष्ट] विनष्ट; "पाणिएण तणह व्विअ न फिट्टा" (गा ६३; भवि)।

फिट्टा स्त्री [दे] १ मार्ग, रास्ता; " ता फिट्टाए मिलियं कुट्टियनरपेडियं एगं" (सिरि २६६)। २ प्रणाम-विशेष, मार्ग में किया जाता प्रणाम; (गुभा १)। °मित्त पुंन [°मित्त्र] मार्ग में मिलने पर प्रणाम करने तक की अवधि वाली मित्रता वाला; (सुपा १८६)।

फिड देखो **फिट्ट**। फिडइ; (हे ४, १७७)।

फिडिअ वि [भ्रष्ट, स्फिटित] १ भ्रंश-प्राप्त, नष्ट, च्युत; (ओघ ७; १११; ११२; से ४, ५४; ६४)। २ अतिक्रान्त, उल्लंघित; (ओघभा १७४; औप)।

फिड्ड वि [दे] वामन; (दे ६, ८४)।

फिप्प वि [दे] कृतिम, बनावटी; (दे ६, ८३)।

फिप्फिस न [दे] अन्त्र-स्थित मांस-विशेष, फेफड़ा; (सुअनि ७२; पण्ह १, १)।

फिर सक [गम्] फिरना, चलना। वकृ—**फिरंत**; (धर्मवि ८१)।

फिरक्क पुंन [दे] खाली गाडी, भार ढ़ोने वाली खाली गाड़ी;
"समचित्ता दुवि वसहा सगडं कड्ढंति उवलभरियंपि।
अहवि विभिन्नचित्ता फिरक्कजुत्तावि तम्मंति" (सुपा ४२४)।

फिरिय वि [गत] गया हुआ;
"गोधणवालणहेउं पुरिसा इह केवि अग्गओ फिरिया।
जं सुम्मइ आसन्नो सुन्नेवि हु एस संखरवो" (धर्मवि १३६)।

फिलिअ देखो **फिडिअ**; (से ८, ६८)।

फिल्लुस अक [दे] फिसलना, खिसकना, गिरना। वकृ—"सेवालियभूमितले **फिल्लुसमाणा** य थामथामम्मि" (सुर २, १०५)। देखो **फेल्लुस**।

फीअ देखो **फाय**, (सुअ २, ७, १)।

फीणिया स्त्री [दे] एक जात की मीठाई; गुजराती में 'फेणी'; (सम्मत ५७)।

फुंका स्त्री [दे] फूँक, मुँह से हवा निकालना; (मोह ६७)।

फुंकार पुं [फुङ्कार] फुफकार, कुपित सर्प आदि का आवाज; (सुर २, २३७)।

फुंटा स्त्री [दे] केश-बन्ध; (दे ६, ८४)।

फुंद देखो **फंद**=स्पन्द। फुंदइ; (से १५, ७७)।

फुंफमा }
फुंफुआ } स्त्री [दे] करीषाग्नि, छानकण्डे की आग; (पाअ; दे ६, ८४; तंदु ४५; जीव ३; बृह १; कम्म
फुंफुगा } १, २२)।

फुंफुमा स्त्री [दे] १ करीषाग्नि; "अहवा डज्झउ निहुयं निद्धूमं फुंफुम व्व चिग्गेसो" (उप ७२८ टी)। २ कचवर-वह्नि, कूडा-करकट की आग; (सुख १, ८)।

फुंफुल } सक [दे] १ उत्पाटन करना। २ कहना।
फुंफुल्ल } फुंफुल्लइ; (हे २, १७४)।

फुंस सक [मृज्, प्र+उञ्छ्] पोछना, साफ करना। फुंसदि, (प्राकृ ९३)।

फुंसण देखो **फासण**; (उप पृ ३४)।

फुक्क अक [फूत्+कृ] १ फुफकारना, फूँ फूँ आवाज करना। २ सक. मुँह से हवा निकालना, फूँकना। फुक्कइ; (पिंग)। वक्र—**फुक्कंत**; (गा १७६), **फुक्किज्जंत** (अप); (हे ४, ४२२)।

फुक्का स्त्री [दे] १ मिथ्या; (दे ६, ८३)। २ फूँक; (कुप्र १५०)।

फुक्कार पुं [फूत्कार] फुफकार, फूँ फूँ का आवाज; (कुप्र ५८; सण)।

फुक्किय वि [फूत्कृत] फुफकारा हुआ; (आव ४)।

फुक्की स्त्री [दे] रजकी, धोबिन; (दे ६, ८४)।

फुग्ग स्त्रीन [दे. स्फिच्] शरीर का अवयव-विशेष, कटि-प्रोथ; (सूअनि ७६)।

फुग्गफुग्ग वि [दे] विकीर्ण रोम वाला, परस्पर असंबद्ध केश वाला; "तस्स भुमगाओ फुग्गफुग्गाओ" (उवा)।

फुट } **फुट्ट** अक [स्फुट्, भ्रंश्] १ विकसना, खीलना। २ प्रकट होना। ३ फूटना, फटना, टूटना। ४ नष्ट होना। फुटइ, फुट्टइ, फुट्टेइ, फुट्टउ, (संक्षि ३६; प्राकृ ६६; हे ४, १७७; २३१; उव; भवि; पिंग; गा २२८)। भवि—"फुट्टिस्सइ बोहित्थं महिलाजणकहियमंतं वा" (धर्मवि १३), फुट्टिहिइ; (पि ५२६)। वक्र—**फुट्टंत**, **फुट्टमाण**; (पण्ह १, ३; गा २०४; सुर ४, १५१; णाया १, १—पत्र ३६)।

फुट्ट वि [स्फुटित, भ्रष्ट] १ फूटा हुआ, टूटा हुआ, विदीर्ण; (उप ७२८ टी; सम्मत १४५; सुर २, ६०; ३, २४३; १३; २१०)। २ भ्रष्ट, पतित; (कुमा)। ३ विनष्ट; "फुट्टहडाहडसीसं" (णाया १, १६; विपा १, १)।

फुट्टण न [स्फुटन] १ फूटना, टूटना, (कुप्र ४१७)। २ वि. फूटने वाला, विदीर्ण होने वाला; (हे ४, ४२२)।

फुट्टिअ वि [स्फुटित] विदारित; "फुट्टिअमोहो" (कुमा ७, ६४)।

फुट्टिर वि [स्फुटितृ] फूटने वाला; (सण)।

फुट्ठ देखो **पुट्ठ**=स्पृष्ट; (वि ३११)।

फुड देखो **फुट्ट**=स्फुट्, भ्रंश्। फुडइ; (हे ४, १७७; २३१; प्राकृ ६६), "फुडंति सव्वंगसंधीओ" (उप ७२८ टी)। वक्र—**फुडमाण**; (सुर ३, २४३)।

फुड देखो **पुट्ठ**=स्पृष्ट; (पण्ण ३६; ठा ७—पत्र ३८३; जीवस २००; भग)।

फुड वि [स्फुट] स्पष्ट, व्यक्त, विशद; (पाअ; हे ४, २५८; उवा)।

फुडण न [स्फुटन] टूटना, खण्डित होना; (पण्ह १, १—पत्र २३)।

फुडा स्त्री [स्फुटा] अतिकाय-नामक महोरगेन्द्र की एक पटरानी, इन्द्राणी-विशेष; (ठा ४, १; इक)।

फुडा स्त्री [फटा] साँप की फन; "उक्कडफुडकुडिलजडिलकक्कसवियडफुडाडोवकरणदच्छं" (उवा)।

फुडिअ वि [स्फुटित] १ विकसित, खिला हुआ; (पाअ, गा ३६०)। २ फूटा हुआ, विदीर्ण; (स ३८१)। ३ विकृत; (पण्ह १, २—पत्र ४०)।

फुडिअ (अप) देखो **फुरिअ**; (भवि)।

फुडिआ स्त्री [स्फोटिका] छोटा फोड़ा, फुनसी; (सुपा १३८)।

फुड्ड देखो **फुट्ट**। फुड्डइ; (षड्)।

फुन्न वि [दे. स्पृष्ट] छूआ हुआ; (पव १५८ टी; कम्म ५, ८५ टी)।

फुप्फुस न [दे] उदरवर्ती अन्त्र-विशेष, फेफड़ा; (सूअनि ७३; पउम २६, ५४)।

फुम सक [भ्रम्] भ्रमण करना। फुमइ; (हे ४, १६१)। प्रयो—फुमावइ; (कुमा)।

फुम सक [दे. फूत्+कृ] फूँक मारना, मुँह से हवा करना। फुमेज्जा; (दस ४, १०)। वक्र—**फुमंत**; (दस ४, १०)। प्रयो—फुमावेज्जा; (दस ४, १०)।

फुर अक [स्फुर्] १ फरकना, हिलना। २ तड़फड़ना। ३ विकसना, खीलना। ४ प्रकाशित होना, प्रकट होना। "फुरइ अ सीताइ तक्खणं वासच्छं" (से १५, ७६; पिंग)। वक्र—**फुरंत**, **फुरमाण**; (गा १६२; सुर २, २२१; महा; पिंग; से ६, २५; १२, २६)। संक्र—**फुरित्ता**; (ठा ७)।

फुर सक [अप+हृ] अपहरण करना, छीनना। प्रयो—फुरावेंति; (वव ३)।

फुर पुं [स्फुर] शस्त्र-विशेष; "फुरफलगावरणगहिय—" (पण्ह १, ३—पत्र ४६)।

फुर (अप) देखो **फुड**=स्फुट; (पिंग)।

फुरण न [स्फुरण] १ फरकना, कुछ हिलना, ईषत् कम्पन; "जं पुण अच्छिप्फुरणं मह होही भारिया तेण" (सुर १३, १२७)। २ स्फूर्ति; (सुपा ६; वज्जा ३४; सम्मत्त १६१)।

फोडिअय वि [दे. स्फोटित, °क] राई से बघारा हुआ शाकादि; (दे ६, ८८)।
फोडिअय न [दे] रात के समय जंगल में सिंहादि से रक्षा का एक प्रकार; (दे ६, ८८)।
फोडिया स्त्री [स्फोटिका] छोटा फोड़ा; (उप ७६८ टी)।
फोडी स्त्री [स्फोटी, स्फौटी] देखो फोडि; (उवा, पव ६; पडि)।
फोप्फस न [दे] शरीर का अवयव-विशेष; "कालिज्जय-अंतपित्तजरहिययफोप्फसंफेफसपिलिहोदर—" (तंदु ३६)।
फोफल न [दे] गन्ध-द्रव्य विशेष, एक जात की ओषधि; "महुरविरेयणमेसो कायव्वो फोफलाइदव्वेहिं" (भत्त ४२)।
फोफस देखो फोप्फस; (पण्ह १, १—पत्र ८)।
फोरण न [स्फोरण] निरन्तर प्रवर्तन; "विसयम्मि अपत्तेवि हु णियसत्तिप्फोरणेण फलसिद्धी" (उवर ७४)।
फोरविअ वि [स्फोरित] निरन्तर प्रवृत्त किया हुआ; "तेहिंपि नियनियसत्ती फोरविया" (सम्मत्त २२७; हम्मीर १४)।
फोस देखो फुस=स्पृश्। "सव्वं फोसंति जगं" (जीवस १६६)।
फोस पुं [दे] उद्गम, (दे ६, ८६)।
फोस पुं [दे. पोस] अपान-देश, गुदा; (तंदु २०)।
फोसणा स्त्री [स्पर्शना] स्पर्श-क्रिया; (जीवस १६६)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे फआराइसद्दसंकलणो
अट्ठावीसइमो तरंगो समत्तो।

——:०:——

व

व पुं [व] ओष्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष; (प्राप)।
वअर (शौ) न [वदर] १ फल-विशेष, बेर; २ कपास का बीज; (प्राकृ ८३)।
वइट्ठ (अप) वि [उपविष्ट] बैठा हुआ; (हे ४, ४४४; भवि)।
वइल्ल पुं [दे] बैल, बरध, वृषभ; (दे ६, ६१, गा २३८; प्राकृ ३८; हे २, १७४; धर्मवि ३, श्रावक २५८ टी, श्रु १५३, प्रासू ५५; कुप्र २७६; ती १५; वै ६, कप्पू)।

वइस (अप) अक [उप+विश्] बैठना; गुजराती में 'बेसवुं'। वइसइ; (भवि)।
वइसणय (अप) न [उपवेशनक] आसन; (ती ७)।
वइसार (अप) सक [उप+वेशय्] बैठाना। वइसारइ; (भवि)।
वइस्स देखो वइस्स; (पि ३००)।
वईस (अप) देखो वइस। वईसइ; (भवि)।
वईस (अप) न [उपवेश] बैठ, बैठन, बैठना, "तोवि गोट्ठडा कराविआ मुद्धए उट्ठ-वईस" (हे ४, ४२३)।
वउणी स्त्री [दे] कार्पासी, कर्पास-वल्ली; (दे ३, ५७)।
वउल पुं [वकुल] १ वृक्ष-विशेष, मौलसरी का पेड़, (सम १५२; पाअ; णाया १, ६)। २ वकुल का पुष्प; (से १, ५६)। °सिरी स्त्री [°श्री] १ वकुल का पेड़; २ वकुल का पुष्प; (श्रा १२)।
वउस पुं [वकुश] १ अनार्य देश-विशेष; २ पुंस्त्री. उस देश का निवासी; (पण्ह १, १—पत्र १४)। स्त्री—°सी; (णाया १, १—पत्र ३७)। ३ वि. शवल, चितकवरा; ४ मलिन चारित्र वाला, शरीर के उपकरण और विभूषा आदि से संयम को मलिन करने वाला; (ठा ३, २; ५, ३; सुख ६, १), स्त्री—"तए णं सा सूमालिया अज्जा सरीरवउसा जाया यावि होत्था" (णाया १, १६)। ४ पुंन. मलिन संयम, शिथिल चारित्र-विशेष; (सुख ६, १)।
वउहारी स्त्री [दे] बुहारी, संमार्जनी, झाड़ू; (दे ६, ६७)
वंग पुं [वङ्ग] १ भगवान् आदिनाथ के एक पुत्र का नाम, (ती १४)। २ देश-विशेष, बंगाल देश; (उप ७६५, ती १४)। ३ वंग देश का राजा; (पिंग)।
वंगल (अप) पुं [वङ्ग] वङ्ग देश का राजा; (पिंग)।
वंगाल पुं [वङ्गाल] बंगाल देश; "वंगालदेसवइणो तेणं तुह ससुरयस्स दिन्ना हं" (सुपा ३७७)।
वंभ देखो वंभ, (पि २६६)।
वंडि पुं [दे] देखो वंदि=वन्दिन्; (पड्)।
वंद न [दे] कैदी, कारा-बद्ध मनुष्य; "वंदंपि किंपि" (स ४२१), "वंदाइं गिन्हइ कयावि", "छलेण गिन्हंति वंदाइं" "वंदाणं मोयावणकए" (धर्मवि ३२), "एगत्थवंदपग्गहियपहियकीरंतकरुणसद्दसरा" (धर्मवि ५२)। °ग्गह पुं [°ग्रह] कैदी रूप से पकड़ना, "परदोहवट्टवाडणवंदग्गहखत्तखणणपमुहाइं" (कुप्र ११३)।
वंदि स्त्री [वन्दि] देखो वंदी; (हे १, १४२; २, १७६)।

वंदि } पुं [**वन्दिन्**] स्तुति-पाठक, मंगल-पाठक, मागध;
वंदिण } "मंगलपाढयमागहचारणवेआलिआ वंदी" (पाअ; उप ७२८ टी; धर्मवि ३०), "उद्दामसद्दवंदिणवंद्रसमुग्घुट्ठ-नामाइं" (स ५७६)।

वंदिर न [**दे**] समुद्र-वाणिज्य-प्रधान नगर, बंदर; (सिरि ४३३)।

वंदी स्त्री [**बन्दी**] १ हठ-हृत स्त्री, बाँदी; (दे २, ८४; गउड १०५; ८४३)। २ कैद किया हुआ मनुष्य; (गउड ४२६; गा ११८)।

वंदीकय वि [**वन्दीकृत**] कैद किया हुआ, बाँध कर आनीत; (गउड)।

वंदुरा स्त्री [**वन्दुरा**] अश्व-शाला; "गच्छ निरूवेहि वंदुराओ, भूसेहि तुरए" (स ७२५)।

वंध सक [**बन्ध्**] १ बाँधना, नियन्त्रण करना। २ कर्मों का जीव-प्रदेशों के साथ संयोग करना। वंधइ; (भग; महा; उव; हे १, १८७)। भूका—वंधिंसु; (पि ५१६)। कर्म—वंधिज्जइ, वज्झइ; (हे ४, २४७), भवि—वधिहिइ, वज्झिहिइ, (हे ४, २४७)। वकृ—**वंधंत, वंधमाण**; (कम्म २, ८; पण्ण २२)। संकृ—**वंधइत्ता, वंधिउं, वंधिऊण, वंधिऊणं, वंधित्ता, वंधित्तु**; (भग; पि ५१३; ५८५; ५८२)। हेकृ—**वंधेउं**; (हे १, १८१)। कृ—**वंधियव्व**; (पंच १, ३)। कवकृ—**वज्झंत, वज्झमाण**; (सुपा १६८; कम्म १, ३५; औप)।

वंध पुं [**दे**] भृत्य, नौकर; (दे ६, ८८)।

वंध पुं [**वन्ध**] १ कर्म-पुद्गलों का जीव-प्रदेशों के साथ दूध-पानी की तरह मिलना, जीव-कर्म-संयोग; (आचा; कम्म १, १५; ३२)। २ बन्धन, नियन्त्रण, संयमन; (श्रा १०; प्रासू १५३)। ३ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**सामि** वि [°**स्वामिन्**] कर्म-बन्ध करने वाला; (कम्म ३, १; २४)।

वंधई स्त्री [**बन्धकी**] पुंश्चली, असती स्त्री; (नाट—मालती १०६)।

वंधग वि [**बन्धक**] १ बाँधने वाला; २ कर्म-बन्ध करने वाला, आत्म-प्रदेश के साथ कर्म-पुद्गलों का संयोग करने वाला; (पंच ५; ८४; श्रावक ३०६; ३०७; पंचा १६, ४०; कम्म ६, ६)।

वंधण न [**बन्धन**] १ बाँधने का—संश्लेष का—साधन, जिससे बाँधा जाय वह स्निग्धतादि गुण; (भग ८, ६— पत्र ३६४)। २ जो बाँधा जाय वह, ३ कर्म, कर्म-पुद्गल; ४ कर्म-बन्ध का कारण; (सूअ १, १, १, १)। ५ सयमन, नियन्त्रण; (प्रासू ३)। ६ नियन्त्रण का साधन, रज्जु आदि; (उव)। ७ कर्म-विशेष, जिस कर्म के उदय से पूर्व-गृहीत कर्म-पुद्गलों के साथ गृह्यमाण कर्म-पुद्गलों का आपस में संबन्ध हो वह कर्म; (कम्म १, २४; ३१; ३५; ३६; ३७)।

वंधणया स्त्री [**बन्धन**] बन्धन; (भग)।

वंधणी स्त्री [**बन्धनी**] विद्या-विशेष, (पउम ७, १४१)।

वंधव पुं [**बान्धव**] १ भाई, भ्राता; २ मित्र, वयस्य, दोस्त; ३ नातीदार, नतैत; ४ माता; ५ पिता; ६ माता-पिता का संबन्धी मामा, चाचा आदि; (हे १, ३०; प्रासू ७६; उत्त १८, १४)।

वंधाव (अशो) सक [**बन्धय्**] बँधाना, बँधवाना। वंधापयति; (पि ७)।

वंधाविअ वि [**बन्धित**] बँधाया हुआ; (सुपा ३२५)।

वंधिअ देखो **वद्ध**; (सूअ १, २, १, १८; धर्मवि २३)।

वंधु पुं [**बन्धु**] १ भाई, भ्राता; २ माता; ३ पिता; ४ मित्र, दोस्त; ५ स्वजन, नातीदार, नतैत; (कुमा; महा; प्रासू १०८; सुपा १६८; २४१)। ६ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**जीव** पुं [°**जीव**] वृक्ष-विशेष, दुपहरिया का पेड़; (स्वप्न ६६; कुमा)। °**जीवग** पुं [°**जीवक**] वही अर्थ; (णाया १,१; कप्प; भग)। °**दत्त** पुं [°**दत्त**] १ एक श्रेष्ठी का नाम; (महा)। २ एक जैन मुनि का नाम; (राज)। °**मई**, °**वई** स्त्री [°**मती**] १ भगवान् मल्लिनाथ की मुख्य साध्वी का नाम, (णाया १, ८; पत्र ६; सम १५२)। २ स्वनाम-ख्यात स्त्री-विशेष; (महा, राज)। °**सिरि** स्त्री [°**श्री**] श्रीदाम राजा की पत्नी; (विपा १, ६)।

वंधुर वि [**बन्धुर**] १ सुन्दर, रम्य; (पाअ)। २ नम्र, अवनत; (गउड २०५)।

वंधुरिय वि [**बन्धुरित**] १ पिंडीकृत; (गउड ३८३)। २ नम्रीभूत, नमा हुआ, (गउड ५५६)। ३ मुकुटित, मुकुट-युक्त, ४ विभूषित, (गउड ५३३)।

वंधुल पुं [**बन्धुल**] वेश्या-पुत्र, असती-पुत्र; (मृच्छ २००)।

वंधूय पुं [**बन्धूक**] वृक्ष-विशेष, दुपहरिया का पेड़; (स ३१२)।

वंधोल पुं [**दे**] मेलक, मेल, संगति; (दे ६, ८६; षड्)।

वंभ पुं [**ब्रह्मन्**] १ ब्रह्मा, विधाता; (उप १०३१ टी; दे ६, २२; कुप्र २०३)। २ भगवान् शान्तिनाथ का शासनाधिष्ठायक

यक्ष; (संति ७)। ३ अप्काय का अधिष्ठायक देव; (ठा ५, १—पत्र २६२)। ४ पाँचवे देवलोक का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५)। ५ बारहवें चक्रवर्ती का पिता; (सम १५२)। ६ द्वितीय बलदेव और वासुदेव का पिता; (सम १५२; ठा ६—पत्र ४४७)। ७ ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक योग; (पउम १७, १०७)। ८ ब्राह्मण, विप्र; (कुलक ३१)। ६ चक्रवर्ती राजा का एक देव-कृत प्रासाद; (उत्त १३, १३)। १० दिन का नववाँ मुहूर्त; (सम ५१)। ११ छन्द-विशेष; (पिंग)। १२ ईषत्प्राग्भारा पृथिवी; (सम २२)। १३ एक जैन मुनि का नाम; (कप्प)। १४ पुंन. एक विमानावास, देव-विमान-विशेष; (देवेन्द्र १३१; १३४; सम १६)। १५ मोक्ष, अपवर्ग; (सूअ २, ६, २०)। १६ ब्रह्मचर्य; (सम १८; ओघभा २)। १७ सत्य अनुष्ठान; (सूअ २, ५, १)। १८ निर्विकल्प सुख; (आचा १, ३, १, २)। १६ योगशास्त्र-प्रसिद्ध दशम द्वार; (कुमा)। °कंत न [°कान्त] एक देव-विमान; (सम १६)। °कूड पुं [°कूट] १ महाविदेह वर्ष का एक वक्षस्कार पर्वत; (जं ४)। २ न. एक देव-विमान; (सम १६)। °चरण न [°चरण] ब्रह्मचर्य; (कुप्र ४६१)। °चारि वि [°चारिन्] १ ब्रह्मचर्य पालन करने वाला; (गाया १, १; उवा) २ पुं. भगवान् पार्श्वनाथ का एक गणधर—प्रमुख मुनि; (ठा ८—पत्र ४२६)। °चेर, °च्चेर न [°चर्य] १ मैथुन-विरति; (आचा; पण्ह २, ४; हे २, ७४; कुमा; भग; सं ११; उप पृ ३४३) २ जिनेन्द्र-शासन, जिन-प्रवचन; (सूअ २, ५, १)। °ज्झय न [°ध्वज] एक देव-विमान; (सम १६)। °दत्त पुं [°दत्त] भारतवर्ष में उत्पन्न बारहवाँ चक्रवर्ती राजा; (ठा २, ४; सम १५२; उव)। °दीव पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष; (राज)। °दीविया स्त्री [°दीपिका] जैन-मुनि गण की एक शाखा; (कप्प)। °प्पभ न [°प्रभ] एक देव-विमान; (सम १६)। °भूइ पुं [°भूति] एक राजा, द्वितीय वासुदेव का पिता; (पउम २०, १८२)। °यारि देखो °चारि; (गाया १, १; सम १३; कप्प; सुपा २७१; महा; राज), स्त्री—°णी; (गाया १, १४)। °रुइ पुं [°रुचि] स्वनाम-प्रसिद्ध एक ब्राह्मण, नारद का पिता; (पउम ११, ५२)। °लेस न [°लेश्य] एक देव-विमान; (सम १६)। °लोअ, °लोग पुं [°लोक] एक स्वर्ग, पाँचवाँ देवलोक; (भग; अनु; सम १३)। °लोगवडिंसय न [°लोकावतंसक] एक देव-विमान; (सम १७)। °व, °वंत वि [°वत्] ब्रह्मचर्य वाला; (आचा)। °वडिंसय पुं [°ावतंसक] सिद्ध-शिला, ईषत्प्राग्भारा पृथिवी; (सम २२)। °वण्ण न [°वर्ण] एक देव-विमान; (सम १६)। °वय न [°व्रत] ब्रह्मचर्य; (गाया १, १)। °वि वि [°वित्] ब्रह्म का जानकार; (आचा)। °व्वय देखो °वय; (सं ५६; प्रासू १५६)। °संति पुं [°शान्ति] भगवान् महावीर का शासन-यक्ष; (गण ११; ती १५)। °सिंग न [°शृङ्ग] एक देव-विमान, (सम १६)। °सिट्ठ न [°सृष्ट] एक देव-विमान; (सम १६)। °सुत्त न [°सूत्र] उपवीत, यज्ञोपवीत, (मोह ३०; सुख २, १३)। °हिअ पुं [°हित] एक विमानावास, देव-विमान-विशेष; (देवेन्द्र १३४)। °ावत्त न [°ावर्त] एक देव-विमान; (सम १६)। देखो बंभाण, बम्ह।

बंभंड न [**ब्रह्माण्ड**] जगत, संसार; (गउड; कुप्र ४; सुपा ३६८; ५६३)।

बंभण पुं [**ब्राह्मण**] ब्राह्मण, विप्र; (स २६०; सुर २, १३०; सुपा १६८; हे ४, २८०; महा)।

बंभणिआ स्त्री [**ब्राह्मणिका**] पञ्चेन्द्रिय जन्तु-विशेष; (पुण्फ २६७)।

बंभणिआ, **बंभणी** स्त्री [**दे. बंभणिका**] हलाहल, जहर; (दे ६, ६०; पाअ; दे ८, ६३; ७५)।

बंभण्ण, **बंभण्णय** स्त्री [**ब्रह्मण्य, ब्राह्मण्य, °क**] १ ब्राह्मण का हित; २ ब्राह्मण-संबन्धी; ३ न. ब्राह्मण-समूह; ४ ब्राह्मण-धर्म; "बंभण्णकज्जेसु सज्जो" (सम्मत्त १४०; कप्प; औप; पि २५०)।

बंभलिज्ज न [**ब्रह्मलीय**] एक जैन मुनि-कुल; (कप्प)।

बंभहर न [**दे**] कमल, पद्म; (दे ६, ६१)।

बंभाण देखो **बंभ**; (पउम ५, १२२)। °**गच्छ** पुं [°**गच्छ**] एक जैन मुनि-गच्छ; (ती २८)।

बंभि°, **बंभी** स्त्री [**ब्राह्मी**] १ भगवान् ऋषभदेव की एक पुत्री; (कप्प; पउम ५, १२०; ठा ५, २; सम ६०)। २ लिपि-विशेष; (सम ३५; भग)। ३ कल्प-विशेष; (सुपा ३२४)। ४ सरस्वती देवी; (सिरि ७६४)।

बंभुत्तर पुं [**ब्रह्मोत्तर**] एक विमानावास, देव-विमान-विशेष; (देवेन्द्र १३४)। °**वडिंसक** न [°**ावतंसक**] एक देव-विमान; (सम १६)।

वंहि पुं [**बर्हिन्**] मयूर, मोर; (उत्तर २६)।
वंहिण (अप) ऊपर देखो; (पि ४०६)।
बक देखो **बय**; (पण्ह १, १—पत्र ८)।
बक्कर न [**दे. वर्कर**] परिहास; (दे ६, ८६; कुप्र १६७; कप्पू)।
बक्कस न [**दे**] अन्न-विशेष; "'वक्कसं' मुद्गमाषादिनषिका-निष्पन्नमन्नं" (सुख ८, १२; उत्त ८, १२)।
बग देखो **बय**; (दे २, ६; कुप्र ६६)।
बगदादि पुं [**बगदादि**] देश-विशेष; बगदाद देश; "बगदा-दिविसयवसुहाहिवस्स खलीपनामधेयस्स" (हम्मीर ३४)।
बगी स्त्री [**बकी**] बगुली, बगुले की मादा; (विपा १, ३; मोह ३७)।
बगड पुं [**दे**] देश-विशेष; (ती १५)।
बज्झ वि [**बाह्य**] बाहर का, बहिरङ्ग; (पण्ह १, ३; प्रासू १७२)। °**ओ** अ [°**तस्**] बाह्य से, बहिरंग से; "किं ते जुज्झेण बज्झओ" (आचा)।
बज्झ न [**बन्ध**] बन्धन, बाँधने का वागुरा आदि साधन; "अह तं पवेज्ज बज्झं, अहे बज्झस्स वा वए" (सूअ १, १, २, ८)।
बज्झ वि [**बद्ध**] १ बन्धनाकार व्यवस्थित; "अह तं पवेज्ज बज्झं" (सूअ १, १, २, ८)। २ बँधा हुआ; (प्रति १५)।
बज्झंत } देखो **बन्ध=बन्ध्**।
बज्झमाण }
बठर पुं [**बठर**] मूर्ख छात्र; (कुप्र १६)।
बड (अप) वि [**दे**] बड़ा, महान्; (पिंग)। देखो **बड्डु**।
बडबड अक [**वि+लप्**] विलाप करना, बड़बड़ाना। बडबडइ; (षड्)।
बडहिला स्त्री [**दे**] धुरा के मूल में दी जाती कील, कीलक-विशेष; (सट्टि ११६)।
बडिस देखो **बलिस**; (हे १, २०२)।
बडु } पुं [**बटु**, °**क**] लड़का, छोकड़ा; (उप ७१३;
बडुअ } सुपा २००)।
बड्डवास [**दे**] देखो **बड्डवास**; (दे ७, ४७)।
बतीस } (अप) देखो **बत्तीस**; (पिंग)।
बत्तिस }
बत्तीस स्त्रीन [**द्वात्रिंशत्**] १ संख्या-विशेष, बत्तीस, ३२; २ जिनकी संख्या बत्तीस हों वे; "बत्तीसं जोगसंगहा पन्नत्ता" (सम ५७; औप; उव; पिंग)। स्त्री—°**सा**; (सम ५७)।
बत्तीसइ° स्त्री. ऊपर देखो; (सम ५७)। °**बद्धय** न [°**बद्धक**] १ बत्तीस प्रकार की रचनाओं से युक्त, २ बत्तीस पात्रों से निबद्ध (नाटक); "बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं" (णाया १, १—पत्र ३६; विपा २, १ टी—पत्र १०४)। °**विह** वि [°**विध**] बत्तीस प्रकार का; (सम ५७)।
बत्तीसइम वि [**द्वात्रिंशत्तम**] १ बत्तीसवाँ, ३२ वाँ; (पउम ३२, ६७; पण्ण ३२)। २ न. पनरह दिनों का लगातार उपवास; (णाया १, १)।
बत्तीसा देखो **बत्तीस**।
बत्तीसिया स्त्री [**द्वात्रिंशिका**] १ बत्तीस पद्यों का निबन्ध—ग्रन्थ; (सम्मत्त १४४)। २ एक प्रकार का नाप; (अणु)।
बद्ध वि [**बद्ध**] १ बँधा हुआ, नियन्त्रित; "बद्धं संदाणिअं निअलिअं च" (पाअ)। २ संश्लिष्ट, संयुक्त; (भग; पाअ)। ३ निबद्ध, रचित; (आवम)। °**प्फल**, °**फल** पुं [°**फल**] १ करञ्ज का पेड़, (हे २, ६७)। २ वि. फल-युक्त, फल-संपन्न, (णाया १, ७—पत्र ११६)।
बद्धय पुं [**दे**] कान का एक आभूषण; (दे ६, ८६)।
बद्धेल्लग } देखो **बद्ध**; (अणु; महा)।
बद्धेल्लय }
बप्प पुं [**दे**] १ सुभट, योद्धा; (दे ६, ८८)। २ बाप, पिता; (दे ६, ८८; दस ७, १८; स ५८१; उप ३२० टी; सुर १, २२१; कुप्र ४३; जय, भवि; पिंग)।
बप्पहट्टि पुं [**बप्पभट्टि**] एक सुविख्यात जैन आचार्य; (विचार ५३३; ती ७)।
बप्पीह पुं [**दे**] पपीहा, चातक पक्षी; (दे ६, ९०; स ६८६; पाअ; हे ४, ३८३)।
बप्पुड वि [**दे**] बिचारा, दीन, अनुकम्पनीय; गुजराती में 'बापडु'; (हे ४, ३८७; पिंग)।
बप्फ पुंन [**बाष्प**] १ भाफ, ऊष्मा; "बप्फो" (हे २, ७०; षड्), "बप्फं" (प्राकृ २३; विसे १५३५)। २ नेत्र-जल, अश्रु; "बप्फं बाहो य नयणजलं" (पाअ), "बप्फपज्जाउल-लोअणाहिं" (स ५६१; स्वप्न ८५)।
बप्फाउल वि [**दे. बाष्पाकुल**] अतिशय उष्ण; (दे ६, ९२)।
बब्बर पुं [**बर्बर**] १ अनार्य देश-विशेष; (पउम ९८, ६५)। २ वि. बर्बर देश का निवासी; (पण्ह १, १; पउम

६६, ५५)। °कूल न [°कूल] वर्वर देश का किनारा; (सिरि ४३०)।

बब्बरी स्त्री [दे] केश-रचना; (दे ६, ६०)।

बब्बरी स्त्री [**वर्वरी**] वर्वर देश की स्त्री, (णाया १, १; औप; इक)।

बब्बूल पुं [**बब्बूल**] वृक्ष-विशेष, ववूल का पेड़; (उप ८३३ टी; महा)।

बब्भ पुं [दे] वर्ध्र, चर्म, चमड़े की रज्जु, 'बब्भो वद्धे'' (दे ६, ८८), ''वज्जो वद्धो=(? बब्भो वद्धो)'' (पात्र)।

बब्भागम वि [**वहुवागम**] वहु-श्रुत, शास्त्रों का अच्छा जानकार; (कस)।

बब्भासा स्त्री [दे] नदी-भेद, वह नदी जिसके पूर से भावित पानी में धान्य आदि वोया जाता हो; (राज)।

बब्भिआयण न [**बाभ्रव्यायन**] गोत्र-विशेष; (इक)।

बमाल पुं [दे] कलकल, कोलाहल; (दे ६, ६०)।

बम्ह पुं [**ब्रह्मन्**] १ ज्योतिष्क देव-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७७)। २—देखो **बंभ**; (हे २, ७४; कुमा; गा ८१६; अच्चु १३; वज्जा २६; सम्मत ७७, हे १, ५६; २, ६३; ३, ५६)। °**चरिअ** देखो **बंभ-चेर**; (हे २, ६३; १०७)। °**तरु** पुं [°**तरु**] पलाश का पेड़; (कुमा)। °**धमणी** स्त्री [°**धमनी**] ब्रह्मनाडी; (अच्चु ८४)।

बम्हज्ज (शौ) देखो **बंभण्ण**; (प्राकृ ८७)।

बम्हण देखो **बंभण**; (अच्चु १७, प्रयौ ३७)।

बम्हण्णय देखो **बंभण्णय**; (भग)।

बम्हहर [दे] देखो **बभहर**; (षड्)।

बम्हाल पुं [दे] अपस्मार, वायु-रोग विशेष, मृगी रोग, (षड्)।

बय पुं [**बक**] १ पक्षि-विशेष, वगुला; २ कुवेर; ३ महादेव, ४ पुष्प-वृक्ष विशेष, मल्लिका का गाछ; (श्रा २३)। ५ राक्षस-विशेष; (श्रा २३)। ६ असुर-विशेष, वकासुर. (वेणी १७७)।

बयाला देखो **बा-याला**; (पव १६)।

बरठ पु [दे] धान्य-विशेष; (पव १५४ टी)।

बरह न [**बर्ह**] १ मयूर-पिच्छ; (स ५००)। २ पत्र, ३ परिवार; (प्राकृ २८)। देखो **बरिह**।

बरहि } पुं [**बर्हिन्**] मयूर, मोर; (पात्र; प्राकृ २८,
बरहिण } पउम २८, १२०; णाया १, १; पण्ह १, १; औप)।

बरिह देखो **बरह**; (हे २, १०४)। °**हर** पुं [°**धर**] मयूर; (षड्; प्राकृ २८)।

बरिहि } देखो **बरहि**; (कप्पू; हे ४, ४२२)।
बरिहिण }

बरुअ न [दे] तृण-विशेष, इक्षु-सदृश तृण; (दे ५, १६; ६, ६१; पात्र)।

बल अक [**बल्**] १ जीना। २ सक. खाना। **बलइ**; (हे ४, २५६)।

बल सक [**ग्रह्**] ग्रहण करना। **बलइ**; (षड्)। देखो **बल=ग्रह्**।

बल पुं [**बल**] १ वलदेव, हलधर, वासुदेव का वड़ा भाई; (पउम २०, ८४; पात्र) २ छन्द-विशेष; (पिंग)। ३ एक क्षत्रिय परिव्राजक; (औप)। ४ न. सामर्थ्य, पराक्रम; (जी ४२; स्वप्न ४२; प्रासू ६३)। ५ शारीरिक पराक्रम; ''वलवीरियाणं जओ भेओ'' (अज्झ ६५)। ६ सैन्य, सेना; (उत्त ६, ४; कुमा)। ७ खाद्य-विशेष; ''आसाढाहिं वलेहिं भोज्जा कज्जं साधेंति'' (सुज्ज १०, १७)। ८ अष्टम तप, लगातार तीन दिनों का उपवास; (संबोध ५८)। ६ पर्वत-विशेष का एक कूट—शिखर; (ठा ६)। °**च्छिउ** वि [°**च्छित्**] १ वल का नाशक; २ न. जहर, विष; (से २, ११)। °**ण्णु** देखो °**न्न**; (राज)। °**देव** पुं [°**देव**] हली, वासुदेव का वड़ा भाई, राम, (सम ७१; औप)। °**न्न** वि [°**ज्ञ**] वल को जानने वाला; (आचा)। °**भद्द** पुं [°**भद्र**] १ भरतक्षेत्र का भावी सातवाँ वासुदेव; (सम १५४)। २ राजा भरत का एक प्रपौत्र; (पउम ५, ३)। ३ एक विमानावास, देव-विमान-विशेष; (देवेन्द्र १३३)। देखो °**हद्द**। °**भाणु** पुं [°**भानु**] राजा वलमित्र का भागिनेय; (काल)। °**महणी** स्त्री [°**मथनी**] विद्या-विशेष; (पउम ७, १४२)। °**मित्त** पुं [°**मित्त्र**] इस नाम का एक राजा; (विचार ४६४; काल)। °**व** वि [°**वत्**] १ वलवान्, वलिष्ठ; (विसे ७६८)। २ प्रभूत सैन्य वाला; (औप)। ३ पुं. अहोरात्र का आठवाँ मुहूर्त; (सुज्ज १०, १३)। °**वइ** पुं [°**पति**] सेनापति, सेनाध्यक्ष; (महा)। °**वंत**, °**वग** देखो °**व**; (णाया १, १; औप; णाया १, ५)। °**वत्त** न [°**वत्त्व**] वलिष्ठता; (ओघभा ६)। °**वाउय** वि [°**व्यापृत**] सैन्य में लगाया हुआ; (औप)। °**हद्द** पुं [°**भद्र**] १ वलदेव; २ छन्द-विशेष; (पिंग)। देखो °**भद्द**।

वलकार } पुं [**वलात्कार**] जबरदस्ती; (पउम ४६, **वलक्कार** } २६; दे ६, ४६; अभि २१७; स्वप्न ७६)।

वलक्कारिद (शौ) वि [**वलात्कारित**] जिस पर बलात्कार किया गया हो वह; (नाट—मालती १२३)।

वलद्द पुं [**दे**] वलध, वैल; (सुपा ५४५; नाट—मृच्छ ६०)।

वलमड्डा स्त्री [**दे**] वलात्कार, जवरदस्ती; (दे ६, ६२)।

वलमोडि देखो **वलामोडि**; "मग्गिअलद्धे वलमोडिचुंविए अप्पणेण उवणीदे" (गा ८२७)।

वलमोडिअ देखो **वलामोडिअ**; "केसेसु वलमोडिअ तेण समरम्मि जअस्सिरी गहिआ" (गा ६७७)।

वलय पुं [**दे**] वलध, वैल; (पउम ८०, १३)।

वलया देखो **वलाया**; (हे १, ६७)।

वलवट्टि स्त्री [**दे**] १ सखी; २ व्यायाम को सहन करने वाली स्त्री; (दे ६, ६१)।

वलहट्टुया स्त्री [**दे**] चने के रोटी; (वज्जा ११४)।

वला अ. स्त्री [**वलात्**] जवरदस्ती, वलात्कार; (से १०, ७८; ओघभा २०), "वलाए" (उप १०३१ टी)।

वला स्त्री [**वला**] १ मनुष्य की दश दशाओं में चौथी अवस्था, तीस से चालीस वर्ष तक की अवस्था; (तंदु १६)। २ दृष्टि-विशेष, योग की एक दृष्टि; ३ भगवान् कुन्थुनाथ की शासन-देवी, अच्युता; (राज)।

वलाका देखो **वलाया**; (पराह १, १—पत्र ८)।

वलाणय न [**दे**] १ उद्यान आदि में मनुष्य को वैठने के लिए बनाया जाता स्थान—बेंच आदि; (धर्मवि ३३; सिरि ५८६)। २ द्वार, दरवाजा; "पविसंतो चेव वलाणयम्मि कुज्जा निसीहिया तिन्नि" (चेइय १८८)।

वलामोडि स्त्री [**दे. वलामोटि**] बलात्कार; (दे ६, ६२)।

वलामोडिअ अ [**दे. बलादामोट्य**] बलात्कार से, जबर-दस्ती से; "केसेसु बलामोडिअ तेण अ समरम्मि जयसिरी गहिआ" (काप्र १६७; उत्तर १०३; पि २३८)।

वलामोलि देखो **बलामोडि**; (से १०, ६४)।

वलाया स्त्री [**वलाका**] वक-विशेष, विसकगिठका, वगुले की एक जाति; (हे १, ६७, उप १०३१ टी)।

वलाहग पुं [**वलाहक**] मेघ, जीमूत, "गलियजलबलाहग-पंडुरं" (वसु)।

वलाहगा देखो **वलाहया**; (ठा ८)।

वलाहय देखो **बलाहग**; (णाया १, ५; कप्प; पाअ)।

वलाहया स्त्री [**वलाहका**] १ वक-विशेष, वलाका; (उप २६४)। २ देवी-विशेष, अनेक दिक्कुमारी देवियों का नाम; (इक—पत्र २३१; २३४)।

वलि पुं [**वलि**] १ असुरकुमारों का उत्तर दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३; १०; इक)। २ स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा; (गा ४०६)। ३ सातवाँ प्रतिवासुदेव; (पउम ५, १५६)। ४ एक दानव, दैत्य-विशेष; (कुमा)। ५ पुंस्त्री. उपहार, भेंट; (पिंड १६५; दे १, ६६)। ६ पूजोपहार, देवता को धरा जाता नैवेद्य; "सुरहिविलेवणवरकुसुमदामवलिदीवणेहिं च" (पव १ टी), "वदणपूयणवलिढोयणेसु" (चेइय ५२; पव १३३; सुर ३, ७८; कुप्र १७४)। ७ भूत आदि को दिया जाता भोग, वलिदान; "भूअबलिव्व" (वै ४६)। ८ पूजा, अर्चा, सपर्या; ९ राज-ग्राह्य भाग; १० चामर का दण्ड; ११ उपप्लव; (हे १, ३५)। १२ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**उट्ठ** पुं [°**पुष्ट**] काक, कौआ; (पाअ)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] १ पूजन, पूजा की क्रिया; २ देवता को उपहार—नैवेद्य—धरने की क्रिया; (भग; सूअ २, २, ५५; णाया १, १; ८; कप्प; औप)। °**चंचा** स्त्री [°**चञ्चा**] वलीन्द्र की राजधानी; (णाया २; इक)। °**मुह** पुं [°**मुख**] वन्दर, कपि; (पाअ)। °**यम्म** देखो °**कम्म**; (पउम ३७, ४६)।

वलि वि [**वलिन्**] १ वलवान्, वलिष्ठ; (सुपा ४५१; कुप्र २७७)। २ पुं. रामचन्द्र का एक सुभट; (पउम ५६, ३८)।

वलिअ वि [**दे**] १ पीन, मांसल, स्थूल, मोटा; (दे ६, ८८; उप १४२ टी; बृह ३)। २ क्रिवि. गाढ, वाढ, अतिशय, अत्यर्थ; "गाढं वाढं वलिअं धणिअं दढमइसएण अच्चत्थं" (पाअ; णाया १, १—पत्र ६४; भग ६, ३३)।

वलिअ वि [**वलिन्, वलिक**] १ बलवान्, सबल, पराक्रमी; "कत्थवि जीवो वलिओ कत्थवि कम्माइं हुंति वलियाइं" (प्रासू १२३), "एस अम्ह ताओ वलियदाइयपेल्लिओ इमं विसमं पल्लिं समस्सिओ" (महा; पउम ४८, ११७; सुपा २७५; औप)। २ प्राण वाला; (ठा ४, ३—पत्र २४६)।

वलिअ वि [**वलित**] जिसको बल उत्पन्न हुआ हो, सबल; (कुप्र २७७)। २ पुं. छन्द-विशेष; (पिंग)।

वलिअंक पुं [**वलिताङ्क**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

वलिआ स्त्री [**दे. वलिका**] सूर्प, अन्न को तुषादि-रहित करने का एक उपकरण; (आवम)।

बलिट्ठ वि [**बलिष्ठ**] बलवान्, सबल; (प्रासू १५४)।
बलिद्द पुं [**दे. बलीवर्द**] बलध, वृषभ; "दो सारवलिद्दावि हु" (सुपा २३८)।
बलिमड्डा स्त्री [**दे**] बलात्कार: "अन्नह बलिमड्डाए गहिउमणो सोम ! एक्कलियं" (उप ७२८ टी)।
बलिवद्द देखो **बलीवद्द**; (पउम ३३, ११६)।
बलिस न [**बडिश**] मछली पकड़ने का काँटा; (हे १, २०२)।
बलिस्सह पुं [**बलिस्सह**] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि, आर्य महागिरि का एक शिष्य; (कप्प)।
बलीअ वि [**बलीयस्**] अधिक बल वाला, बलिष्ठ; (अभि १०१)।
बलीवद्द पुं [**बलीवर्द**] बैल, वृषभ; (विपा १, २)।
बलुल्लड (अप) देखो **बल**=बल; (हे ४, ४३०)।
बले अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय:—१ निश्चय, निर्णय; २ निर्धारण; (हे २, १८५; कुमा)।
बल्ल न [**बाल्य**] बालत्व, बालकपन, शिशुता; (कुमा ३, ३५)। देखो **बाल**=बाल्य।
बव सक [**ब्रू**] बोलना, कहना। बवइ, बवए; (पड्)। देखो **बुव, बू**।
बव न [**बव**] ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक करण, (विसे ३३४८; सुज्ञनि ११; सुपा १०८)।
बव्वाड पुं [**दे**] दक्षिण हस्त, (दे ६, ८६)।
बहड वि [**बृहत्**] बड़ा, महान्। °**इच्च** न [°**ादित्य**] नगर-विशेष; (ती ३५)।
बहत्तरी देखो **बाहत्तरि**; (पव २०)।
बहप्पइ } देखो **बहस्सइ**; (हे १, १३८; २, ६६; १३७;
बहप्फइ } षड्; कुमा; सम्मत्त १३७)।
बहरिय देखो **बहिरिय**; "तालरवबहरियदियंतरं" (महा)।
बहल न [**दे**] पंक, कर्दम, कादा; (दे ६, ८६)। °**सुरा** स्त्री [°**सुरा**] पंक वाली मदिरा; (दे ५, २)।
बहल वि [**बहल**] १ निबिड, सान्द्र, निरंतर, गाढ; (गउड; हे २, १७७)। २ स्थूल, मोटा; (ठा ४, २; गउड)। ३ पुष्कल, अत्यन्त; (कप्पू)।
बहलिम पुंस्त्री [**बहलता**] १ स्थूलता, मोटाई; २ सातत्य, निरंतरता: (वज्जा ५२; गा ७५५)।
बहली स्त्री [**बहली**] १ देश-विशेष, भारतवर्ष का एक उत्तरीय देश; "तक्खसिलाइ पुरीए बहलीविसयावयंसभूयाए" (कुप्र २१२)। २ बहली देश की स्त्री; (णाया १, १—पत्र ३७; औप; इक)।
बहलीय वि [**बहलीक**] देश-विशेष में—बहली देश में—रहने वाला; (पण्ह १, १— पत्र १४)।
बहव देखो **बहु**; "काले समइक्कंते अइबहवे" (पउम ४१, ३६), "सोहग्गकप्पतरुवरपमुहतवे सा कुणइ बहवे" (सम्मत्त २१७), "जायंति बहववेरग्गपल्लवुल्लासिणो भत्ति" (हि ५)।
बहस्सइ पुं [**बृहस्पति**] १ ज्योतिष्क देव-विशेष, एक महाग्रह; (ठा २, ३—पत्र ७७; सुज्ज २०—पत्र २९४)। २ सुराचार्य, देव-गुरु; (कुमा)। ३ पुष्य नक्षत्र का अधिष्ठाता देव; (सुज्ज १०, १२)। ४ राजनीति-प्रणेता एक ऋषि; ५ नास्तिक मत का प्रवर्तक एक विद्वान्; (हे २, १३७)। ६ एक ब्राह्मण, पुरोहित-पुत्र; ७ विपाकसूत्र का एक अध्ययन; (विपा १, १)। °**दत्त** पुं [°**दत्त**] देखो अंत के दो अर्थ; (विपा १, ५)।
बहि अ [**बहिस्**] बाहर; "अबहिलेसे परिव्वए" (आचा), "गामबहिम्मि य तं ठाविऊण गामंतरे पविट्ठो सो" (उप ६ टी)। °**हुत्त** वि [°**दे**] बहिर्मुख; (गउड)।
बहिअ वि [**दे**] मथित, विलोडित; (षड्)।
बहिं देखो **बहि**; (आचा; उव)।
बहिणिआ } स्त्री [**भगिनी**] बहिन; (अभि १३७; कप्पू;
बहिणी } पाअ, पउम ६, ६; हे २, १२६; कुमा)। २ सखी, वयस्या; (संचि ४७)। °**तणअ** पुं [°**तनय**] भगिनी-पुत्र; (दे)। °**वइ** पुं [°**पति**] बहनोई; (दे)। देखो **भइणी**।
बहित्ता अ [**बहिस्तात्**] बाहर; (सुज्ज ६)।
बहिद्धा अ [**दे**] १ बाहर; २ मैथुन, स्त्री-संभोग; (हे २, १७४, ठा ४, १—पत्र २०१)।
बहिया अ [**बहिस्, बहिस्तात्**] बाहर; (विपा १,१; आचा; उवा; औप)।
बहिर वि [**बाह्य**] बहिर्भूत, बाहर का; (प्राकृ ३८)।
बहिर वि [**बधिर**] बहरा, जो सुन न सकता हो वह; (विपा १, १; हे १, १८७, प्रासू १४३)।
बहिरिय वि [**बधिरित**] बधिर किया हुआ; (सुर २, ७५)।
बहु वि [**बहु**] १ प्रचुर, प्रभूत, अनेक, अनल्प; (ठा ३, १; भग; प्रासू ४१; कुमा; श्रा २७)। स्त्री—°**हुई**; (षड्; प्राकृ २८)। २ क्रिवि. अत्यन्त, अतिशय; (कुमा ५, ६६;

काल)। °उदग पुं [°उदक] वानप्रस्थ का एक भेद; (औप)। °चूड पुं [°चूड] विद्याधर वंश का एक राजा; (पउम ५, ४६)। °जंपिर वि [°जल्पितृ] वाचाट, बकवादी; (पाअ)। °जण पुं [°जन] अनेक लोग; (भग)। २ न. आलोचना का एक प्रकार; (ठा १०)। °णड देखो °नड, (राज)। °णाय न [°नाद] नगर-विशेष; (पउम ५५, ५३)। °देसिअ वि [°देश्य] कुछ ज्यादः, थोड़ा बहुत; (आचा २, ५, १, २२)। °नड पुं [°नट] नट की तरह अनेक भेष को धारण करने वाला, (आचा)। °पडि-पुण्ण, °पडिपुन्न वि [°परिपूर्ण] पूरा पूरा; (ठा ६; भग)। °पढिय वि [°पठित] अति शिक्षित, अतिशय शिक्षित; (णाया १, १४)। °पलावि वि [°प्रलापिन्] बकवादी; (उप पृ ३३६)। °पुत्तिअ न [°पुत्रिक] बहु-पुत्रिका देवी का सिंहासन; (निर १, ३)। °पुत्तिआ स्त्री [°पुत्रिका] १ पूर्णभद्र-नामक यक्षेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ४, १; णाया २)। २ सौधर्म देवलोक की एक देवी; (निर १, ३)। °प्पएस वि [°प्रदेश] प्रचुर प्रदेश—कर्म-दल—वाला; (भग)। °फोड वि [°स्फोट] बहु-भक्षक; (ओघभा १६१)। °भंगिय न [°भङ्गिक] दृष्टिवाद का सूत्र-विशेष; (सम १२८)। °मय वि [°मत] १ अत्यन्त अभीष्ट; (जीव १)। २ अनुमोदित, संमत, अनुमत; (काप्र १७६; सुर ४, १८८)। °माइ वि [°मायिन्] अति कपटी; (आचा)। °माण पु [°मान] अतिशय आदर; (आवम; पि ६००; नाट—विक्र ५)। °माय वि [°माय] अति कपटी; (आचा)। °मुल्ल, °मोल्ल वि [°मूल्य] मूल्यवान्, कीमती; (राज, षड्)। °रय वि [°रत] १ अत्यन्त आसक्त; (आचा)। २ जमालि का अनुयायी; ३ न. जमालि का चलाया हुआ एक मत—क्रिया की निष्पत्ति अनेक समयों में ही मानने वाला मत; (ठा १०; औप)। °रय न [°रजस्] खाद्य-विशेष, चिऊड़ा की तरह का एक प्रकार का खाद्य; (आचा २, १, १, ३)। °रव वि [°रव] १ प्रभूत यश वाला, यशस्वी; (सम ५१)। २ न. एक विद्याधर-नगर; (इक)। °रूवा स्त्री [°रूपा] सुरूप-नामक भूतेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ४, १; णाया २)। °लेव पुं [°लेप] चावल आदि के चिकने माँड़ का लेप, (पडि)। °वयण न [°वचन] बहुत्व-बोधक प्रत्यय; (आचा २, ४, १, ३)। °विह वि [°विध] अनेक प्रकार का, नानाविध; (कुमा, उव)। °विहीय वि [°वि-ध, °विधिक] विविध, अनेक तरह का; (सूअनि ६४)। °संपत्त वि [°संप्राप्त] कुछ कम संप्राप्त; (भग)। °सच्च पुं [°सत्य] अहोरात्र का दशवाँ मुहूर्त; (सुज्ज १०, १३)। °सो अ [°शस्] अनेक वार; (उव; श्रा २७; प्रासू ४२; १५६; स्वप्न ५६)। °स्सुय वि [°श्रुत] शास्त्र-ज्ञ, शास्त्रों का अच्छा जानकार, पण्डित; (भग; सम ५१; ठा ६—पत्र ३५२; सुपा ५६४)। °हा अ [°धा] अनेकधा; (उव; भवि)।

बहुअ } वि [बहु, °क] ऊपर देखो; (हे २, १६४;
बहुअय } कुमा; श्रा २७)।

बहुई देखो बहु=ई।

बहुग देखो बहुअ, (आचा)।

बहुजाण पुं [दे] १ चोर, तस्कर; २ धूर्त, ठग; ३ जार, उप-पति; (पड्)।

बहुण पु [दे] १ चोर, तस्कर; २ धूर्त; (दे ६, ९७)।

बहुणाय वि [बाहुनाद] बहुनाद-नगर का; (पउम ५५, ५३)।

बहुत्त वि [प्रभूत] बहुत, प्रचुर; (हे १, २३३)।

बहुमुह पु [दे. बहुमुख] दुर्जन, खल; (दे ६, ९२)।

बहुराणा स्त्री [दे] खड्ग-धारा, तलवार की धार; (दे ६, ९१)।

बहुरावा स्त्री [दे] शिवा, शृगाली; (दे ६, ९१)।

बहुरिया स्त्री [दे] बुहारी, झाड़ू; (बृह १)।

बहुल वि [बहुल] १ प्रचुर, प्रभूत, अनेक; (कुमा, श्रा २८)। २ बहुविध, अनेक प्रकार का; (आवम)। ३ व्याप्त; (सुपा ६३०)। ४ पुं. कृष्ण पक्ष; (पाअ)। ५ स्वनाम-ख्यात एक ब्राह्मण; (भग १५)।

बहुला स्त्री [बहुला] १ गौ, गैया, (पाअ)। २ इस नाम की एक स्त्री; (उवा)। °वण न [°वन] मथुरा नगरी का एक प्राचीन वन; (ती ७)।

बहुलि पुं [बहुलिन्] स्वनाम-ख्यात एक राज-पुत्र; (उप ६३७)।

बहुली स्त्री [दे] माया, कपट, दम्भ; (सुपा ६३०)।

बहुल्लिआ स्त्री [दे] बड़े भाई की स्त्री; (षड्)।

बहुल्ली स्त्री [दे] क्रीड़ोचित शालभञ्जिका, खेलने की पुतली; (पड्)।

बहुवी देखो बहुई; (हे २, ११३)।

बहूअ वि [प्रभूत] बहुत, प्रचुर; (गउड)।

बहेडय पुं [**बिभीतक**] १ बहेड़ा का पेड़; (हे १, ८८; १०५; २०६)। २ न. बहेड़ा का फल; (कुमा)।

बा° वि. ब. [**द्वा°, द्वि**] दो, दो की संख्या वाला। °**इस** (अप) देखो °**बीस;** (पिंग)। °**ईस** देखो °**बीस;** (पिंग)। °**णउइ** स्त्री [°**नवति**] बाणवे, ९२; (सम ९६; कम्म ६, २६) °**णउय** वि [°**नवत**] ९२ वाँ; (पउम ९२, २९)। °**णुवइ** देखो °**णउइ;** (रयण ७२)। °**याल,** °**यालीस** स्त्रीन [°**चत्वारिंशत्**] बेआलीस, चालीस और दो, ४२; (उव; नव २; भग; सम ६६; कप्प; औप), स्त्री—°**याला;** °**यालीसा;** (कम्म ६, ६; कप्प)। °**यालीसइम** वि [°**चत्वारिंशत्तम**] बेआलीसवाँ, ४२ वाँ; (पउम ४२, ३७)। °**र,** °**रस** ति. ब. [°**दशन्**] बारह, १२; "बारभिक्खुपडिमवरो" (संबोध २२, कम्म ४, ५; १५; नव २०; दं ७; कप्प; जी २८; उवा)। °**रस** वि [°**दश**] बारहवाँ, १२ वाँ, (सुख २, १७)। °**रसंग** स्त्रीन [°**दशाङ्ग**] बारह जैन अंग-ग्रन्थ; (पि ४११), स्त्री—°**गी;** (राज)। °**रसम** वि [°**दश**] बारहवाँ; (सूअ २, २, २१; पत्र ४६; महा)। °**रसमासिय** वि [°**दशमासिक**] बारह मास का, बारह-मास-संबंधी; (कुप्र १४१)। °**रसय** न [°**दशक**] बारह का समूह; (ओघभा १५)। °**रसवरिसिय** वि [°**दशवार्षिक**] बारह वर्ष का; (मोह १०२; कुप्र ६०)। °**रसविह** वि [°**दशविध**] बारह प्रकार का; (नव ३०)। °**रसाह** न [°**दशाह,** °**दशाख्य**] १ बारहवाँ दिन, २ जन्म के बारहवें दिन किया जाता उत्सव; (णाया १, १; कप्प; औप; सुर ३, २५)। °**रसी** स्त्री [°**दशी**] बारहवीं तिथि, द्वादशी; (सम २६; पउम ११७, ३२; ती ७)। °**रसुत्तरसय** वि [°**दशोत्तरशत**] एक सौ बारहवाँ; (पउम ११२, २३)। °**रह** देखो °**रस=**दशन्; (हे १, २१९)। °**वट्ठि** स्त्री [°**षष्टि**] बासठ, ६२; (सम ७५; पंच ५, १८; सुर १३, २३८, देवेन्द्र १३७)। °**वण** (अप) देखो °**वन्न;** (पिंग)। °**वण्ण** देखो °**वन्न** ; (कुमा)। °**वत्तर** वि [°**सप्तत**] बहतरवाँ, ७२ वाँ; (पउम ७२, ३८)। °**वत्तरि** स्त्री [°**सप्तति**] बहतर, ७२; (सम ८३; भग; औप; प्रासू १२९)। °**वन्न** स्त्रीन [°**पञ्चाशत्**] बावन, पचास और दो, ५२; (सम ७१; महा), "बावन्नं होंति जिणभवणा" (सुख ९, १)। °**वन्न** वि [°**पञ्चाश**] बावनवाँ; (पउम ५२, ३०)। °**वीस** स्त्रीन [°**विंशति**] बाईस, २२; (भग; जी ३४), स्त्री—°**सा,** (पि ४४७)। °**वीस** वि [°**विंश**] बाईसवाँ, २२ वाँ; (पउम २०, ८२; पव ४६)। °**वीसइ** देखो °**वीस=**विंशति; (भग; पव १८६)। °**वीसइम** वि [°**विंशतितम**] १ बाईसवाँ, २२ वाँ; (पउम २२, ११०; अंत २६)। २ लगा तार दस दिन का उपवास; (णाया १, १—पत्र ७२)। °**वीसविह** वि [°**विंशतिविध**] बाईस प्रकार का; (सम ४०)। °**सट्ठ** वि [°**षष्ट**] बासठवाँ, ६२ वाँ, (पउम ६२, ३७)। °**सट्ठि** स्त्री [°**षष्टि**] बासठ, ६२; (सम ७५; पिंग)। °**सी,** °**सीइ** स्त्री [°**अशीति**] बयासी, ८२; (नव २; सम ८९, कप्प; कम्म ५, १७)। °**सीइम** वि [°**अशीतितम**] बयासीवाँ; ८२ वाँ; (पउम ८२, १२२)। °**हत्तर** (अप) देखो °**हत्तरि;** (सण)। °**हत्तरि** स्त्री [°**सप्तति**] बहतर, ७२, (कप्प; कुमा; सुपा ३१९)।

बाअ पुं [**दे**] बाल, शिशु; (षड्)।

बाइया स्त्री [**दे**] मा, माता; गुजराती में 'बाई'; (कुप्र ८७)।

बाउल्लया / **बाउल्लिआ** / **बाउल्ली** } स्त्री [**दे**] पञ्चालिका, पुतली, "आलिहिय-भित्तिबाउल्लयं व न हु मुजिउं तरइ" (वज्जा ११८, कप्पू; दे ६, ९२)।

बाउस देखो **बउस;** (पिंड २४, ओघ ३४८)।

बाउसिय वि [**बाकुशिक**] 'बकुश' चारित्र वाला; (सुख ६, १)।

बाउसिया स्त्री [**बकुशिका**] 'बकुश' चारित्र वाली; (णाया १, १६—पत्र २०६)।

बाढ क्रिवि [**बाढ**] १ अतिशय, अत्यंत, घना; (उप ३२०; पाअ; महा)। °**क्कार** पुं [°**कार**] स्वीकार-सूचक उक्ति; (विसे ५६५)।

बाण पुं [**दे**] १ पनस वृक्ष, कटहर का पेड़; २ वि. सुभग; (दे ६, ९७)।

बाण पुंस्त्री [**बाण**] १ वृक्ष-विशेष, कटसरैया का गाछ; (पराण १७—पत्र ५२६; कुमा)। २ पुं. शर, बाण; (कुमा; गउड)। ३ पाँच की संख्या; (सुर १६, २४९)। °**वत्त** न [°**पात्र**] तूणीर, शरधि, (से १, १८)।

बाध देखो **बाह=**बाध्। कवकृ—**बाधीअमाण;** (पि ५६३)।

बाधा स्त्री [**बाधा**] विरोध; (धर्मसं ११७)।

बाधिय वि [**बाधित**] विरोध वाला, प्रमाण-विरुद्ध ; (धर्मसं २५६) ।

बाम्हण देखो **बम्हण**, (हे १, ६७; षड्) ।

बाय न [**बाक**] बक-समूह ; (श्रा २३) ।

बायर वि [**बादर**] १ स्थूल, मोटा, अ-सूक्ष्म ; (पगह १, १; पव १६२ ; दे ४४) २ नववाँ गुण-स्थानक ; (कम्म २, ३; ५ : ७) । °**नाम** न [°**नामन्**] कर्म-विशेष, स्थूलता-हेतु कर्म; (सम ६७) ।

बार न [**द्वार**] दरवाजा; (हे १, ७६) ।

बारगा स्त्री [**द्वारका**] स्वनाम-प्रसिद्ध नगरी, जो आजकल भी काठियावाड में 'द्वारका' के ही नाम से प्रसिद्ध है; (उत्त २२, २२; २७) ।

बारवई स्त्री [**द्वारवती**] १ ऊपर देखो; (सम १५१; णाया १, ५; उप ६४८ टी) । २ भगवान् नेमिनाथ की दीक्षा-शिविका; (विचार १२६) ।

बाल पुं [**बाल**] १ बाल, केश; (उप ८३४) । २ बालक, शिशु; (कुमा; प्रासू ११६) । ३ वि. मूर्ख, अज्ञानी; (पाअ) । ४ नया, नूतन, (कप्पू) । ५ पुं. स्वनाम-ख्यात एक विद्याधर राजा; (पउम १०, २१) । ६ वि. असंयत, संयम-रहित; (ठा ४, ३) । °**कइ** पुं [°**कवि**] तरुण कवि, नया कवि, (कप्पू) । °**क्क** पुं [°**ार्क**] उदित होता सूर्य; (कुमा) । °**ग्गाह** पुं [°**ग्राह**] बालक की सार-सम्हाल करने वाला नौकर; (सुर १, १६२) । °**ग्गाहि** पुं [°**ग्राहिन्**] वही पूर्वोक्त अर्थ, (णाया १, २—पत्र ८४) । °**घाय** वि [°**घात**] बाल-हत्या करने वाला; (णाया १, २; १८) । °**तव** पुंन [°**तपस्**] १ अज्ञानी की तपश्चर्या; (भग; औप) । २ वि. अज्ञान-पूर्वक तप करने वाला, (कम्म १, ५६) । °**तवस्सि** वि [°**तपस्विन्**] अज्ञान-पूर्वक तप करने वाला, मूर्ख तपस्वी; (पि ४०५) । °**पंडिअ** वि [°**पण्डित**] आंशिक त्याग करने वाला, कुछ अंशो में त्यागी और कुछ में अ-त्यागी; (भग)। °**बुद्धि** वि [°**बुद्धि**] अनभिज्ञ; (धण ५०) । °**मरण** न [°**मरण**] अ-विरत दशा का मरण, अ-संयमी की मौत; (भग, सुपा ३५७) । °**वियण** पुंस्त्री [°**व्यजन**] चामर, (णाया १, ३), स्त्री—"उवणाहाओ बालवी(? वि)अणी" (ठा ५,१—पत्र ३०३) । °**हार** पुं [°**धार**] बालक की सार-सम्हाल करने वाला नौकर; (सुपा ४५८) ।

बाल देखो **बल** । °**ण्ण, °न्न** वि [°**ज्ञ**] बल को जानने वाला; (आचा १, २, ५, ५; आचा) ।

बाल न [**बाल्य**] बालत्व, बालपन, मूर्खता; (उत्त ७, ३०) । देखो **बल्ल** ।

बालअ देखो **बाल**=बाल; (गा १२६) ।

बालअ पुं [**दे**] वणिक्-पुत्र; (दे ६, ६२) ।

बालग्गपोइआ स्त्री [**दे**] १ जल-मन्दिर, तलाव आदि में बनवाया जाता छोटा प्रासाद; २ वलभी, अट्टालिका; (उत्त ६, २४) ।

बाला स्त्री [**बाला**] १ कुमारी, लड़की; (कुमा) । २ मनुष्य की दश अवस्थाओं में पहली दशा, दश वर्ष तक की अवस्था; (तंदु १६) । ३ छन्द-विशेष; (पिंग)

बालालुंबी स्त्री [**दे**] तिरस्कार, अवहेलना; (सुपा १४) ।

बालि वि [**बालिन्**] बाल-प्रधान, सुन्दर केश वाला; (अणु; बृह १) ।

बालिआ स्त्री [**बालिका**] बाला, कुमारी, लड़की; (प्रासू ५१; महा) ।

बालिआ स्त्री [**बालता**] १ बालकपन, शिशुता; (भग) । २ मूर्खता, बेवकूफी; "विइया मंदस्सा बालिया" (आचा) ।

बालिस वि [**बालिश**] मूर्ख, बेवकूफ; (पाअ; धण २३) ।

बाह सक [**बाध्**] १ विरोध करना । २ रोकना । ३ पीडा करना । ४ विनाश करना । बाहइ, बाहए; (पंचा ५, १५; हे १, १८७; उव), बाहंति; (कुप्र ६८) । कवकृ—**बाहिज्जंत, बाहीअमाण** ; (पउम १८, १६; सुपा ६४५; अभि २४४) । कृ—**बाहणिज्ज**; (कप्पू) ।

बाह पुं [**बाष्प**] अश्रु, आँसू; (हे २, ७०; पाअ; कुमा)।

बाह पुं [**बाध**] विरोध; (भास ३४) ।

बाह देखो **बाढ**; (प्रयौ ३७) ।

बाह पुं [**बाहु**] हाथ, भुजा ; (संक्षि २) ।

बाहग वि [**बाधक**] १ रोकने वाला; (पंचा १, ४६) । २ विरोधी; "अब्भुवगयबाहगा नियमा" (श्रावक १६२) ।

बाहड पुं [**बाहड, वाग्भट**] राजा कुमारपाल का स्वनाम-प्रसिद्ध मन्त्री; (कुप्र ६) ।

बाहण न [**बाधन**] १ बाधा, विरोध; (धर्मसं १२७६) । २ विराधन; (पंचा १६, ५) ।

बाहणा स्त्री [**बाधना**] ऊपर देखो; (धर्मसं १११) ।

बाहर देखो **बाहिर**; (आचा) ।

बाहल पुं [**बाहल**] देश-विशेष; (आवम) ।

वाहल्ल न [**वाहल्य**] स्थूलता, मोटाई, (सम ३५; ठा ८—पत्र ४४०; औप)।

वाहा स्त्री [**बाधा**] १ हरकत, हरज; २ विरोध; (सुपा १२६)। ३ पीडा, परस्पर संश्लेष से होने वाली पीड़ा; (जं १; भग १४, ८)।

वाहा स्त्री [**बाहु**] हाथ, भुजा; (हे १, ३६; कुमा; महा; उवा; औप)।

बाहा स्त्री [**दे. बाहा**] नरकावास-श्रेणी; (देवेन्द्र ७७)।

बाहि, **बाहिं** अ [**बाहिस्**] बाहर; (सुज्ज १६—पत्र २७१; महा; आचा; कुमा; हे २, १४०; पि ४८१)।

वाहिज्ज न [**बाधिर्य**] बधिरता, बहरापन; (विसे २०८)।

वाहिर अ [**वहिस्**] बाहर; (हे २, १४०; षाअ; आचा; उव)। °**ओ** अ [°**तस्**] बाहर से; (कप्प)।

वाहिर वि [**वाह्य**] बाहर का; (आचा; ठा २, १—पत्र ५५; भग २, ८ टी)। °**उद्धि** पुं [°**ऊर्ध्विन्**] कायोत्सर्ग का एक दोष, दोनों पार्ष्णि मिला कर और पैर को फैला कर किया जाता कायोत्सर्ग; (चेइय ४८६)।

वाहिरंग वि [**वहिरङ्ग**] बाहर का, बाह्य; (सूअ २, १, ४२)।

वाहिरिय वि [**बाहिरिक, वाह्य**] बाहर का, बाहर से संबन्ध रखने वाला; (सम ८३; णाया १, १; पिंड ६३६; औप, कप्प)।

वाहिरिया स्त्री [**वाहिरिका**] किले के बाहर की गृह-पङ्क्ति, नगर के बाहर का मुहल्ला; (सूअ २, ७, १; स ६६)।

वाहिरिल्ल वि [**वाह्य**] बाहर का, (भग, पि ५६५)।

वाहु पुंस्त्री [**वाहु**] १ हाथ, भुजा; (हे १, ३६; आचा; कुमा)। २ पुं. भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र, बाहुबलि; (कुप्र ३१०)। °**वलि** पुं [°**बलि**] १ भगवान् आदिनाथ का एक पुत्र, तक्षशिला का एक राजा; (सम ६०; पउम ४, ५२; उव)। २ बाहुबलि के प्रपौत्र का पुत्र; (पउम ५, ११)। °**मूल** न [°**मूल**] कक्षा, बगल; (कप्पू)।

वाहुअ पुं [**वाहुक**] स्वनाम-ख्यात एक ऋषि, (सूअ १, ३, ४, २)।

वाहुडिअ वि [**दे**] लज्जित, शरमिंदा; (सुपा ४७४)।

वाहुया स्त्री [**वाहुका**] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष; (राज)।

वाहुलग देखो **वाहु** ; (तंदु ३६)।

वाहुलेय पुं [**वाहुलेय**] गो-वत्स, बैल, वृषभ; (आवम)।

वाहुल्ल न [**वाहुल्य**] बहुलता, प्रचुरता; (पिंड ५६; भग; सुपा २७; उप ६०७)।

वाहुल्ल वि [**वाष्पवत्**] अश्रु वाला; (कुमा; सुपा ४६०)।

वि वि. व. [**द्वि**] दो, २; "बिन्नि" (हे ४, ४१८; नव ४; ठा २, २, कम्म ४, २; १०; सुख १, १४)। °**जडि** पुं [°**जटिन्**] एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष; (सुज्ज २०)। °**दल** न [°**दल**] चना आदि वह धान्य जिसके दो टुकड़े बराबर के होते हैं; "जह विदलं सूलीणं" (वि ३)। °**याल** देखो **वा-याल**; (कम्म ६, २८)। °**यालसय** पुंन [°**चत्वारिंशच्छत**] एक सौ बेआलीस, १४२; (कम्म २, २६)। °**विह** वि [°**विध**] दो प्रकार का; (पिंग)। °**सट्ठि** स्त्री [°**षष्टि**] बासठ, ६२; (सुज्ज १०, ६ टी)। °**सत्तरि**, °**सयरि** स्त्री [°**सप्तति**] बहत्तर, ७२; (पत्र १६; जीवस २०६; कम्म ३, ५)।

वि°, **विअ** वि [**द्वितीय**] दूसरा; (कम्म ३, १६; पिंग)। °**कसाय** पु [°**कषाय**] अप्रत्याख्यानावरण-नामक कषाय; (कम्म ४, ५६)।

विअ न [**द्विक**] दो का समुदाय, युग्म, युगल; (भग; कम्म १, ३३; प्रासू १६)।

विआया स्त्री [**दे**] कीट-विशेष, संलग्न रहने वाला कीट-द्वय; (दे ६, ६३)।

विइअ देखो **विइज्ज**; (हे १, ५; पत्र १६४)।

विइआ देखो **वीआ**; (राज)।

विइज्ज वि [**द्वितीय**] १ दूसरा; (हे १, २४८; प्रासू ५६)। २ सहाय, मदद करने वाला; (पाअ, सुर ३, १४)।

"जे दुहियम्मि न दुहिया, आवइपत्ते विइज्जया नेव।
पहुणो न ते उ भिच्चा, धुत्ता परमत्थओ णेया"
(सुर ७, १४५)।

विउण वि [**द्विगुण**] दुगुना; (हे १, ६४; २, ७६; गा २८६)। °**रय** वि [°**कारक**] दुगुना करने वाला; (भवि)।

विउण सक [**द्विगुणय्**] दुगुना करना। विउणेइ, (पि ५५६)।

विंट न [**वृन्त**] फलादि का बन्धन; "बंधणं विंटं" (पाअ)। °**सुरा** स्त्री [°**सुरा**] मदिरा, दारू; "विंटसुरा पिट्ठखउरिया मइरा" (पाअ)।

विंत देखो **वून्व्**।

विंदिय वि [**द्वीन्द्रिय**] जिसको त्वचा और जीभ ये दो ही इन्द्रियाँ हो वह; (औप)।

विंदु पुंन [**विन्दु**] १ अल्प अंश; २ बिन्दी, शून्य, अनुस्वार; ३ दोनों भ्रू का मध्य भाग; ४ रेखागणित का एक चिह्न; "बिंदुणो,

विंदू" (हे १, ३४, कप्प; उप १०२२; स्वप्न ३६; कप्प; कुमा)। °कला स्त्री [°कला] अनुस्वार, बिन्दी; (सिरि १६६)। °सार न [°सार] १ चौदहवाँ पूर्व, जैन ग्रन्थांश-विशेष, (सम २६; विसे ११२६)। २ पुं. मौर्य वंश का एक राजा, राजा चन्द्रगुप्त का पुत्र; (विसे ८६२)।

विंदुइअ वि [**विन्दुकित**] बिन्दु-युक्त, बिन्दु-विलिप्त; (पाअ; गउड)।

विंदुइज्जंत वि [**विन्दूयमान**] बिन्दुओं से व्याप्त होता; (से ११, १२५)।

विंद्रावण न [**वृन्दावन**] मथुरा के पास का एक वैष्णव-तीर्थ; (प्राकृ १७)।

विंब सक [**विम्बू**] प्रतिबिम्बित करना। कर्म—विंबिज्जइ; (सुक्त ४६)।

विंब न [**विम्ब**] १ प्रतिमा, मूर्त्ति; (कुमा)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)। ३ न. बिम्बीफल, कुन्दरुन का फल; (गाया १, ८—पत्र १२६; पाअ, कुमा; दे २, ३६)। ४ प्रतिबिम्ब, प्रतिच्छाया; ५ अर्थ-शून्य आकार, "अगणं जणं पस्सति विंबभूयं" (सूअ १, १३, ८)। ६ सूर्य तथा चन्द्र का मण्डल; (गउड; कप्पू)।

विंबवय न [**दे**] फल-विशेष, भिलावाँ; "विंबवयं भल्लायं" (पाअ)।

विंबिसार देखो **भिंभिसार**; (अंत)।

विंबी स्त्री [**विम्बी**] लता-विशेष, कुन्दरुन का गाछ; (कुमा)। °फल न [°फल] कुन्दरुन का फल; (सुपा २६३)।

विंबोवणय न [**दे**] १ क्षोभ; २ विकार; ३ ओसीसा, उच्छीर्षक, (दे ६, ६८)।

विंह सक [**बृंह्**] पोषण करना। कृ—देखो **विंहणिज्ज**।

विंहणिज्ज वि [**बृंहणीय**] पुष्टि-जनक; (ठा ६—पत्र ३७५; गाया १, १—पत्र १६)।

विंहिअ वि [**बृंहित**] पुष्ट, उपचित; (हे १, १२८)।

विग्गाइआ } स्त्री [**दे**] कीट-विशेष, संलग्न रहता कीट-युग्म;
विग्गाई } गुजराती में 'बगाई'; (दे ६, ६३)।

विज्जउर न [**बीजपूर**] फल-विशेष, एक तरह का नीबू; "बिज्जउरचिब्भिडेहिं कुणइ पिहाणाइं सव्वत्थ" (सुपा ६३०)।

विज्जय (अप) देखा **बिइज्ज**; (भवि)।

बिट्ट पुं [**दे**] बेटा, लड़का, पुत्र; (चंड)

बिट्टी स्त्री [**दे**] बेटी, पुत्री, लड़की; (चंड; हे ४, ३३०)।

बिट्ठ वि [**दे, विष्ट**] बैठा हुआ, उपविष्ट; (ओघ ४७१)।

बिडाल पुं [**बिडाल**] मार्जार, बिल्ला; (पि २४१)।

बिडालिआ } स्त्री [**बिडालिका, °ली**] बिल्ली, मार्जारी,
बिडाली } (सम्मत्त १२२; पि २४१)। देखो **बिरालिआ**।

बिडिस देखो **वडिस**; (उप १४२ टी)।

बिदिय देखो **बिइअ**; (उप २७६)।

बिन्ना स्त्री [**वेन्ना**] भारत की एक नदी; (पिड ५०३)।

बिब्बोअ पु [**बिब्बोक**] १ स्त्री की शृंगार-चेष्टा-विशेष, इष्ट अर्थ की प्राप्ति होने पर गर्व से उत्पन्न अनादर-क्रिया; (पण्ह २, ४—पत्र १३१; गाया १, ८—पत्र १४२; भत्त १०६)। २ न. उपधान, ओसीसा; "सयणीअं तूलिअं सबिब्बोअं" (गच्छ ३, ८)।

बिब्बोइअ न [**बिब्बोकित**] स्त्री की शृंगार-चेष्टा का एक भेद; (पण्ह २, ४—पत्र १३१)।

बिब्बोयण न [**दे**] उपधान, ओसीसा; (गाया १, १—पत्र १३)।

बिभेलय देखो **बहेडय**; (पणण १—पत्र ३१)।

बिराड पुं [**बिडाल**] १ पिंगल-प्रसिद्ध मध्य-लघुक पाँच मात्रा वाला अक्षर-समूह; २ छन्द-विशेष; (पिंग)।

बिराल देखो **बिडाल**; (सुर १, १८)।

बिरालिआ } देखो **बिडालिआ**; (सम्मत्त १२३; पाअ)।
बिराली } २ भुजपरिसर्प-विशेष, हाथ से चलने वाला एक प्रकार का प्राणी; (सूअ २, ३, २५)।

बिरुद न [**बिरुद**] इल्काब, पदवी; (सम्मत्त १४१)।

बिल न [**बिल**] १ रन्ध्र, विवर, साँप आदि जन्तुओं के रहने का स्थान; (विपा १, ७; गउड)। २ कूप, कुआँ; (राय)। °कोलीकारक वि [**दे, °कोलीकारक**] दूसरे को व्यामुग्ध करने के लिए विस्वर वचन बोलने वाला; (पण्ह १, ३—पत्र ४४)। °पंतिया स्त्री [°पङ्क्तिका] खान की पद्धति; (पण्ह २, ५—पत्र १५०)।

बिलाड } देखो **बिडाल**; (भग; पि २४१)।
बिलाल }

बिलालिआ देखो **बिरालिआ**; (पि २४१)।

बिल्ल पुं [**बिल्व**] १ वृक्ष-विशेष, बेल का पेड़; (पणण १; उप १०३१ टी)। २ बेल का फल; (पाअ)।

बिल्लल पुं [**बिल्वल**] १ अनार्य देश-विशेष; २ उस देश में रहने वाली मनुष्य-जाति; (पण्ह १, १—पत्र १४)। देखो **चिल्लल**=चिल्वल।

विस न [**विस**] कमल आदि के नाल का तन्तु, मृणाल; (गाया १, १३; कुमा; पाअ)। °**कंठी** स्त्री [°**कण्ठी**] बलाका, बक पत्ती की एक जाति; (दे ६, ६३)। देखो **भिस=**विस।
विसि देखो **विसी**; (दे १, ८३)।
विसिणी स्त्री [**विसिनी**] कमलिनी, कमल का गाछ; (पि २०६)।
विसी स्त्री [**वृषी**] ऋषि का आसन; (दे १, ८३; पि २०६)।
विह अक [**भी**] डरना। विहेइ; (प्राकृ ६४; पि ५०१)।
विह वि [**वृहत्**] बड़ा, महान्। °**ण्णर** पुं [°**नल**] छन्द-विशेष; (पिंग)।
विहप्पइ, **विहप्फइ**, **विहस्सइ** देखो **वहस्सइ**; (हे २, १३७; १,१३८; २, ६६; षड्; कुमा)।
विहिअ देखो **विंहिअ**; (प्राकृ ८)।
विहेलग देखो **विभेलय**; (दस ५, २, २४)।
वीअ देखो **विइअ**; (हे १, ५; २, ७६; सुर १, ३८; सुपा ४८५)।
वीअ न [**वीज**] १ वीज, बीया; "लाउअवीअं इक्कं नासइ भारं गुडस्स जह सहसा" (प्रासू १५१; आचा; जी १३; औप)। २ मूल कारण; "सारीरमाणसाणेयदुक्खवीयभूयकम्मवणदहण-सहं" (महा)। ३ वीर्य, शरीरान्तर्गत सप्त धातुओं में से मुख्य धातु, शुक्र; (सुपा ३६०; वव ६)। ४ 'ह्रीं' अक्षर; (सिरि १६६)। °**वुद्धि** वि [°**वुद्धि**] मूल अर्थ को जानने से शेष अर्थों को निज बुद्धि से स्वयं जानने वाला; (औप)। °**मंत** वि [°**वत्**] वीज वाला; (गाया १, १)। °**रुइ** स्त्री [°**रुचि**] एक ही पद से अनेक पद और अर्थों के अनु-संधान द्वारा फैलने वाली रुचि; २ वि. उक्त रुचि वाला; (पगण १)। °**रुह** वि [°**रुह**] बीज से उत्पन्न होने वाली वनस्पति; (पगण १)। °**वाय** पुं [°**वाप**] क्षुद्र जन्तु-विशेष; (राज)। °**सुहुम** न [°**सूक्ष्म**] छिलके का अग्र भाग; (कप्प)।
वीअऊरय न [**वीजपूरक**] फल-विशेष, एक तरह का नीबू; (मा ३६)।
वीअजमण न [**दे**] वीज मलने का खल—खलिहान; (दे ६, ६३)।
वीअण पुं [**दे**] नीचे देखो; (दे ६, ६३ टी)।
वीअय पुंन [**दे, वीजक**] वृक्ष-विशेष, असन वृक्ष, विजयसार का गाछ; (दे ६, ६३; पाअ)।
वीआ स्त्री [**द्वितीया**] १ तिथि-विशेष, दूज; (सम २६; श्रा २६; रयण २; गाया १, १०; सुपा १७१)। २ द्वितीय विभक्ति; (चेइय ५०६)।
वीज देखो **वीअ**=वीज, (कुमा; पगह २, १—पत्र ६६)।
वीडग न [**वीटक**] वीडा, पान का वीडा, सज्जित ताम्बूल; (सुपा ३३६)।
वीडि, **वीडी** स्त्री [**वीटि, °टी**] ऊपर देखो; "विल्लदलवीडीओ कीसेवि मुहम्मि पक्खिवइ" (धर्मवि १४०)।
वीभच्छ, **वीभत्थ** वि [**वीभत्स**] १ घृणोत्पादक, घृणा-जनक; २ भयंकर, भय-जनक; (उवा; तंदु ३८; गाया १, २; संबोध ४४)। ३ पु. रावण का एक सुभट; (पउम ५६, २)।
वीयत्तिय वि [**दे वीजयितृ**] बीज बोने वाला, बपन करने वाला; २ पु. पिता; "वीयं वीयत्तियस्सेव" (सुपा ३६०; ३६१)।
वीलय पुं [**दे**] ताडक, कर्णभूषण-विशेष, कान का एक गहना; (दे ६, ६३)।
वीह अक [**भी**] डरना। वीहइ, वीहेइ; (हे ४, ५३; महा; पि २१३)। वकृ—**वीहंत**; (ओघभा १६; उप ७६८ टी; कुमा)। कृ—**वीहियव्व**; (स ६८२)।
वीहच्छ देखो **वीभच्छ**; (पि ३२७)।
वीहण, **वीहणग**, **वीहणय** वि [**भीषण, °क**] भय-जनक, भयंकर; (पि २१३; पगह १, १; पउम ३५, ५४)।
वीहविय वि [**भीपित**] डराया हुआ; (सम्मत्त ११८)।
वीहिअ वि [**भीत**] १ डरा हुआ; (हे ४, ५३)। २ न. भय, डरना; "न य वीहिअं ममावि हु" (श्रा १४)।
वीहिर वि [**भेतृ**] डरने वाला; (कुमा ६, ३५)।
वुइअ वि [**उक्त**] कथित; (सूअ १, २, २, २४; १, १४, २५; पगह २, २)।
वुंदि पुंस्त्री [**दे**] १ चुम्बन; २ सूकर, सूअर; (दे ६, ६८)।
वुंदि स्त्री [**दे**] शरीर, देह; "इह वुंदिं चइत्ताण तत्थ गंतूण सिज्झइ" (ठा १ टी—पत्र २४; सुज्ज २०; तंदु १३; सुपा ६५६; धम्म ६ टी; पाअ)। देखो **बोंदि**।
वुंदिणी स्त्री [**दे**] कुमारी-समूह; (दे ६, ६४)।
वुंदीर पुं [**दे**] १ महिष, भैंसा; २ वि. महान्, बड़ा; (दे ६, ६८)।

बुंध न [**बुध्न**] १ वृक्ष का मूल; २ कोई भी मूल, मूलमात्र; (हे १, २६; षड्)।

बुंबा स्त्री [**दे**] चिल्लाहट, पुकार; (सुपा ५६५)।

बुंबु पुं [**दे**] ऊपर देखो; (कर ३१)।

बुंबुअ न [**दे**] वृन्द, यूथ, समूह, (दे ६, ६४)।

बुक्क अक [**गर्ज्, बुक्क्**] गर्जन करना, गरजना। बुक्कइ; (हे ४, ६८)।

बुक्क अक [**भष्, बुक्क्**] श्वान का भूँकना।। बुक्कइ; (षड्)।

बुक्क पुंन [**दे**] १ तुष, छिलका; (सुख १८, ३७)। २ वाद्य-विशेष; "बुक्कतबुक्कसंबुक्कलद्दुक्कड" (सुपा ५०)।

बुक्कण पुं [**दे**] काक, कौआ; (दे ६, ६४; पाअ)।

बुक्कस देखो **बोक्कस**; (राज)।

बुक्का स्त्री [**दे**] १ मुष्टि; (दे ६, ६४; पाअ)। २ व्रीहि-मुष्टि; (दे ६, ६४)। ३ वाद्य-विशेष; "ढक्काडक्कहुडुक्कासंबुक्काकरडिपभिईणं आउज्जाणं" (सुपा १६५)।

बुक्का स्त्री [**गर्जना**] गर्जन, गर्जारव; (पउम ६, १०८; गउड)।

बुक्कार पुं [**दे बूत्कार**] गर्जन, गर्जना; (पउम ७, १०५; गउड)।

बुक्कासार वि [**दे**] भीरु, डरपोक; (दे ६, ६५)।

बुक्किअ वि [**गर्जित**] जिसने गर्जना की हो वह; "अह बुक्किआ तुह भडा" (कुमा)।

बुज्झ सक [**बुध्**] १ जानना, ज्ञान करना, समझना। २ जागना। बुज्झइ; (उव)। भूका—बुज्झिंसु; (भग)। भवि—बुज्झिहिइ; (औप)। वकृ—**बुज्झंत, बुज्झमाण**; (पिंग; आचा)। संकृ—**बुज्झा**; (हे २, १५)। कृ—**बुद्ध, बोद्धव्व, बोधव्व**; (पिंग; कुमा; नव २३; भग; जी २१)।

बुज्झविय } **बुज्झाविअ** } वि [**बोधित**] १ जिसको ज्ञान कराया गया हो वह; २ जगाया गया; (कुप्र ६४; सुपा ४२५; प्राकृ ६८)।

बुज्झिअ वि [**बुद्ध**] ज्ञात, विदित; (पाअ)।

बुज्झिर वि [**बोद्धृ**] १ जानने वाला; २ जागने वाला; (प्राकृ ६८)।

बुडबुड अक [**बुडबुडय्**] बुडबुड आवाज करना; "सुरा जहा बुडबुडेइ अव्वत्त" (चेइय ४६२)।

बुड्ढ अक [**ब्रुड्, मस्ज्**] डूबना। बुड्डइ; (हे ४, १०१; उव; कुमा; भवि)। भवि—बुड्डीसु (अप); (हे ४, ४२३)। वकृ—**बुड्डंत, बुड्डमाण**; (कुमा; उप १०३१ टी)। प्रयो, वकृ—**बुड्डावंत**; (संबोध १५)।

बुड्ड वि [**ब्रुडित, मग्न**] डूबा हुआ, निमग्न, (धम्म १२ टी; गा ३७; रंभा २३; सुर १०, १८६; भवि), "वयबुड्डमंडगाई" (पव ४ टी)।

बुड्डण न [**ब्रुडन**] डूबना; (संवे २; कप्पू)।

बुड्डिर पुं [**दे**] महिष, भैंसा; (षड्)।

बुड्ढ वि [**वृद्ध**] बूढ़ा; (पिंग)। स्त्री—°**ड्ढा**, °**ड्ढी**; (काप्र १६७; सिरि १७३)।

बुण्ण वि [**दे**] १ भीत, डरा हुआ; २ उद्विग्न; (दे ७, ६४ टी)।

बुत्ती स्त्री [**दे**] ऋतुमती स्त्री; (दे ६, ६४)।

बुद्ध वि [**बुद्ध**] १ विद्वान्, पण्डित, ज्ञात-तत्त्व, (सम १; उप ६१२ टी; श्रा १२; कुप्र ४०, श्रु १)। २ जागा हुआ, जागृत; (सुर ६, २४३)। ३ भूत, भविष्य और वर्त्तमान का जानकार; (चेइय ७१३)। ४ विज्ञात, विदित; (ठा ३, ४)। ५ पुं. जिन-देव, अर्हन्, तीर्थकर; (सम ६०)। ६ बुद्धदेव, भगवान् बुद्ध; (पाअ; दे ७, ५१; उर ३, ७; कुप्र ४४०; धर्मसं ६७२)। ७ आचार्य, सूरि; (उत्त १, १७)। °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] आचार्य-शिष्य; (उत्त १, ७)। °**बोहिय** वि [°**बोधित**] आचार्य-बोधित; (नव ४३)। °**माणि** वि [°**मानिन्**] निज को पण्डित मानने वाला; (सूअ १, ११, २५)। °**लय** पुंन [°**लय**] बुद्ध-मन्दिर; (कुप्र ४४२)।

बुद्ध वि [**बौद्ध**] १ बुद्ध-भक्त; २ बुद्ध-संबन्धी; (ती ७; सम्मत्त ११६)।

बुद्ध देखो **बुज्झ**।

बुद्ध देखो **बुंध**; (सुज्ज २०)।

बुद्धंत पुंन [**बुध्नान्त**] अधो-भाग, नीचे का हिस्सा; "ता राहू णं देवे चंदं वा सूरं वा गेण्हमाणे बुद्धंतेणं गिण्हित्ता बुद्धंतेणं मुयइ" (सुज्ज २०)।

बुद्धि स्त्री [**बुद्धि**] १ मति, मेधा, मनीषा, प्रज्ञा; (ठा ४, ४; जी ६; कुमा; कप्प; प्रासू ४७)। २ देव-प्रतिमा-विशेष; (णाया १, १ टी—पत्र ४३)। ३ महापुण्डरीक ह्रद की अधिष्ठात्री देवी; (ठा २, ३—पत्र ७२; इक)। ४ छन्द-विशेष; (पिंग)। ५ तीर्थकरी; ६ साध्वी; (राज)। ७ अहिंसा, दया; (पण्ह २, १)। ८ पुं. इस नाम का एक मन्त्री; (उप ८४४)। °**कूड** न [°**कूट**] पर्वत-विशेष

का शिखर; (राज)। °बोहिय वि [°बोधित] १ तीर्थंकरी—स्त्री-तीर्थंकर—से प्रतिबोधित; २ सामान्य साध्वी से बोधित; (राज)। °मंत वि [°मत्] बुद्धि वाला; (उप ३३६; सुपा ३७२; महा)। °ल पुं [°ल] १ एक स्वनाम-प्रसिद्ध श्रेष्ठी; (महा)। २ देखो °ल्ल; (राज)। °ल्ल वि [°ल] बुद्ध, मूर्ख, दूसरे की बुद्धि पर जीने वाला, "तस्स पंडियमाण(? णि)स्स बुद्धिल्लस्स दुरप्पणो" (ओघभा २६ टी; २७)। °वंत देखो °मंत, (भवि)। °सागर, °सायर पुं [°सागर] विक्रम की ग्यारहवीं शताब्दी का एक सुप्रसिद्ध जैनाचार्य और ग्रन्थकार; (सुर १६, २४५; सार्ध ६६; सम्मत्त ७६)। °सिद्ध पु [°सिद्ध] बुद्धि में सिद्धहस्त, संपूर्ण बुद्धि वाला; (आवम)। °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] एक मन्त्रि-कन्या; (उप ७२८ टी)।

बुध देखो **बुह**; (पगह १, ५; सुज्ज २०)।

बुब्बुअ अक [**बुबूय्**] बु बु आवाज करना, छाग का बोलना। बुब्बुयइ; (कुप्र २४)। वकृ—**बुब्बुयंत**; (कुप्र २४)।

बुब्बुअ पुं [**बुद्बुद**] बुलबुला, पानी का बुलका; (दे ६, ६५; औप; पिंड १६; गाया १, १, वै ४५; प्रासू ६६; दं १३)।

बुभुक्खा स्त्री [**बुभुक्षा**] भूख, खाने की इच्छा: (अभि २०७)।

बुय वि [**ब्रुव**] बोलने वाला; (सूत्र १, ७, १०)।

बुयाण देखो **बुव**।

बुल वि [**दे**] बोड, भदन्त, धर्मिष्ठ; (पिंग १६८)।

बुलंबुला स्त्री [**दे**] बुलबुला, बुद्बुद; (दे ६, ६५)।

बुलबुल पुं [**दे**] ऊपर देखो; (षड्)।

बुल्ल देखो **बोल्ल**। बुल्लइ, (कुप्र २६; श्रा १४), बुल्लंति; (प्रासू ४)। प्रयो—बुल्लावेइ, बुलावेमि, बुल्लावए, (कुप्र १२७; सिरि ४४०)।

बुव सक [**ब्रू**] बोलना। बुवइ; (षड्; कुमा)। वकृ—**बुवंत, बुयाण, बुवाण**; (उत्त २३, २१; सूत्र १, ७, १०; उत्त २३, ३१)। देखो **बू**।

बुस न [**बुस**] १ भूसा, यव आदि का कडंगर, नाज का छिलका; (ठा ८—पत्र ४१७)। २ तुच्छ धान्य, फल-रहित धान्य; (गउड)।

बुसि स्त्री [**वृषि, °सि**] मुनि का आसन। °म, °मंत वि [°मत्] संयमी, व्रती, मुनि; (सूत्र २, ६, १४; आचा)।

बुसिआ स्त्री [**बुसिका**] यव आदि का कडंगर, भूसा: (दे २, १०३)।

बुह पुं [**बुध**] १ ग्रह-विशेष, एक ज्योतिष्क देव; (सुर ३, ५३; धर्मवि २४)। २ वि पण्डित, विद्वान्; (ठा ४, ४; सुर ३, ५३; धर्मवि २४, कुमा; पाअ)।

बुहप्पइ, **बुहप्फइ**, **बुहस्सइ** } देखो **बहस्सइ**; (हे २, ५३; १३७; षड्; कुमा)।

बुहुक्ख सक [**बुभुक्ष्**] खाने की इच्छा करना। बुहुक्खइ; (हे ४, ५; षड्)।

बुहुक्खा देखो **बुभुक्खा**; (राज)।

बुहुक्खिअ वि [**बुभुक्षित**] भूखा; (कुमा)।

बू सक [**ब्रू**] बोलना, कहना। बूम, बूया, बूहि; (उत्त २५, २६; सूत्र १, १, ३, ६; १, १, १, २)। बिंति, बेंति, बेमि, बुआ; (कम्म ३, १२; महा; कप्प)। भूका—अब्बवी (उत्त २३, २१; २२; २५; ३१; ठा ३, २)। वकृ—**बिंत, बेंत**; (उप ७२८ टी; सुपा ३६०; विसे ११६)। संकृ—**बूइत्ता**; (ठा ३, २) देखो **बव, बुव**।

बूर पुं [**बूर**] वनस्पति-विशेष; (गाया १, १—पत्र ६; उत्त ३४, १६; कप्प; औप)। °णालिया, °नालिआ स्त्री [°नालिका] बूर से भरी हुई नली; (राज; भग)।

बूल वि [**दे**] मूक, वाचा-शक्ति से रहित, (पिंग १६८ टी)।

बूह सक [**बृंह्**] पुष्ट करना। बूहए; (सूत्र २, ५, ३२)।

बे देखो **बि**; (वज्जा १०; हे ३, ११६, १२०; पिंग)। °आसी (अप) स्त्री [°अशीति] बयासी, ८२; (पिंग)। °इंदिय वि [°इन्द्रिय] त्वचा और जीभ ये दो ही इन्द्रिय वाला प्राणी; (ठा १; भग; स ८३; जी १५)। °हिय [**द्वयाहिक**] दो दिन का; (जीवस ११६)।

बेंट देखो **बिंट**; (महा)।

बेंत देखो **बू**।

बेंदि देखो **बे-इंदिय**; (पंच ५, ५६)।

बेड्ड देखो **बिड्ड**; (ओघभा १७४)।

बेड, **बेडय** } पुं [**दे**] नौका, जहाज; (दे ६, ६५; सुर १३, ५०)।

बेडा, **बेडिया**, **बेडी** } स्त्री [**दे**] नौका, जहाज, (उप ७२८ टी; सिरि ३८२, ४०७; श्रा १२; धम्म १२ टी), "पाणी-हि जलं दूरइ अरित्तदंडेहि वडिव्व" (धर्मवि १३२)।

बेड्डा स्त्री [**दे**] श्मश्रु, दाढी-मूँछ के बाल; (दे ६, ६५)।

वेदोणिय वि [**द्वैद्रोणिक**] दो द्रोण का, द्रोण-द्वय-परिमित; "कप्पइ मे वेदोणियाए कंसपाईए हिरण्णभरियाए संववहरित्तए" (उवा)।

वेमासिय वि [**द्वैमासिक**] दो मास का, दो महिने का संबन्ध रखने वाला; (पउम २२, २८)।

वेलि स्त्री [**दे**] स्थूणा, खूँटा; (दे ६, ६५; पाअ)।

वेल्ल देखो **विल्ल**; (प्राकृ ५)।

वेल्लग पुं [**दे**] बैल, बलीवर्द; (आवम)।

वेस अक [**विश्, स्था**] बैठना; "अंतंतं भोक्खामि त्ति वेसए भुंजए य तह चेव" (ओघ ५७१)।

वेसक्खिज्ज न [**दे**] द्वेष्यत्व, रिपुता, दुश्मनाई; (दे ७, ७६ टी)।

वेसण न [**दे**] वचनीय, लोकापवाद, लोक-निन्दा; (दे ६, ७५ टी)।

वेहिम वि [**दे. द्वैधिक**] दो टुकडे करने योग्य, खण्डनीय; (दस ७, ३२)।

वोंगिल्ल वि [**दे**] १ भूषित, अलंकृत; २ पुं. आटोप, आडम्बर; (दे ६, ६६)।

वोंटण न [**दे**] चूचुक, स्तन का अग्र भाग; (दे ६, ६६)।

वोंड न [**दे**] १ चूचुक, स्तन-वृन्त; (दे ६, ६६)। २ फल-विशेष, कपास का फल; (औप; तंदु २०)। °**य** न [°**ज**] सूती वस्त्र, सूती कपड़ा; (सूअ २, २, ७३; औप)।

वोंद न [**दे**] मुख, मुँह, (दे ६, ६६)।

वोंदि स्त्री [**दे**] १ रूप; २ मुख, मुँह; (दे ६, ६६)। ३ शरीर, देह; (दे ६, ६६; पण्ह १, १; कप्प; औप, उत्त ३५, २०; स ७१२; विसे ३१६१, पव ५५; पंचा १०, ४)।

वोंदिया स्त्री [**दे**] शाखा; (सूअ २, २, ४६)।

वोकड } पुं [**दे**] छाग, बकरा; गुजराती में 'बोकडो';
वोक्कड } (ती २; दे ६, ६६)। स्त्री—°**डी**; (दे ६, ६६ टी)।

वोक्कस पुं [**वोक्कस**] १ अनार्य देश-विशेष; (पव २७४)। २ वर्णसंकर जाति-विशेष, निषाद से अंबष्टी की कुक्षि में उत्पन्न; (सुख ३, ४)।

वोक्कसालिय पु [**दे**] तन्तुवाय, "कोट्टागकुलाणि वा गामरक्खकुलाणि वा वोक्कसालियकुलाणि वा" (आचा २, १, २. ३)।

वोक्कार देखो **वुक्कार**; (सुर १०, २२१)।

वोक्किय न [**वूत्कृत**] गर्जन, गर्जना; (पउम ५६, ५४)।

वोगिल्ल वि [**दे**] चितकबरा; "कसलं सवलं सारं किम्मीरं चित्तलं च बोगिल्लं" (पाअ)।

वोट्ट सक [**दे**] उच्छिष्ट करना, झूठा करना। गुजराती में 'बोटवु'। "रयणीए रयणिचरा चरंति बोट्टंति अन्नमाईयं" (सुपा ४६१)।

वोड वि [**दे**] १ धार्मिक. धर्मिष्ठ; २ तरुण, युवा; (दे ६, ६६)। ३ मुण्डित-मस्तक; "एमेव अडइ बोडो" गुजराती में 'बोडो'; (पिंड २१७)।

वोडघेर न [**दे**] गुल्म-विशेष; (पाअ)।

वोडिय पुं [**बोटिक**] १ दिगम्बर जैन संप्रदाय; २ वि. दिगम्बर जैन संप्रदाय का अनुयायी; "बोडियसिवभूईओ बोडियलिंगस्स होइ उप्पत्ती" (विसे १०४१; २५५२)।

वोडिय वि [**दे**] मुण्डित मस्तक (?); "बोडियमसिए धुवं मरणं" (ओघभा ८३ टी)।

वोड्डुर न [**दे**] श्मश्रु, दाढी-मूँछ; (दे ६, ६५)।

वोड्डिआ स्त्री [**दे**] कपर्दिका, कौड़ी; "कसरि न लहइ बोड्डिअवि गय लक्खेहिं घेप्पंति" (हे ४, ३३५)।

वोदर वि [**दे**] पृथु, विशाल; (दे ६, ६६)।

वोदि देखो **वोंदि**; (औप)।

वोद्दह [**दे**] देखो **वोद्रह**, (पाअ)।

वोद्ध वि [**बौद्ध**] बुद्ध-भक्त; (संबोध ३४)।

वोद्धव्व देखो **बुज्झ**।

वोद्रह वि [**दे**] तरुण, जवान; (दे ७, ८०)।

वोधण न [**बोधन**] बोध, शिक्षा, उपदेश; (सम ११६)।

वोधव्व देखो **बुज्झ**।

वोधि देखो **बोहि**; (ठा २, १—पत्र ४६)। °**सत्त** पुं [°**सत्त्व**] सम्यग् दर्शन का प्राप्त प्राणी, अर्हन् देव का भक्त जीव; (महा ३)।

वोधिअ वि [**बोधित**] ज्ञापित, अवगमित; (धर्मसं ५०६)।

वोर न [**बदर**] फल-विशेष, बेर; (गा २००; हे १७०; षड्, कुमा)।

वोरी स्त्री [**बदरी**] बेर का गाछ; (प्राकृ ४; हे १, १७०; कुमा; हेका २५६)।

वोल सक [**ब्रोडय्**] डुबाना। "तंबोलो तं बोलइ जिणवसहिट्ठिएण जेण खद्धा" (सार्ध ११४), "बुड्डंतं बोलए अन्न" (सूक्त ६६), बोलेइ, बोलए; (संबोध १३), "केसिं च बंधित्तु गले सिलाओ उदगंसि बोलंति महालयंसि" (सूअ

१, ५, १, १०), वोलेमि; (सिरि १३८), "गुरुनामेणं लोए वोलेइ वहू" (उवर १५२)।
वोल अक [व्यति+क्रम्] १ पसार होना, गुजरना। २ सक. उल्लंघन करना। "दूई ण एइ, चंदोवि उग्गओ, जामिणीवि वोलेइ" (गा ८५४), "पुणो तं वंधेण न वोलइ कयाइ" (श्रावक ३३), वोलए; (चंड)। देखो वोल=गम्।
वोल पुं [दे] १ कलकल, कोलाहल; (दे ६, ६०; भग; भवि; कप्पू; उप ५०६), "हासवोलवहुला" (ओप)। २ समूह; "कमढासुरेण रइयम्मि भीसणे पलयतुल्लजलवोले" (भाव १; कुलक ३४)।
वोलग पुन [दे. व्रोड] १ मज्जन, डूबना; २ कर्षण, खीचाव; "उच्चूलं वोलगं पज्जेति" (विपा १, ६—पत्र ६८)।
वोलिअ वि [व्रोडित] डुवाया हुआ; (वज्जा ६८)।
वोलिंदी स्त्री [दे] लिपि-विशेष, ब्राह्मी लिपि का एक भेद; "माहेसरीलिवी दामिलिवी वोलिंदिलीवी" (सम ३५)।
वोल्ल सक [कथय्] बोलना, कहना। वोल्लइ; (हे ४, २; प्राकृ ११६; सुर ८, १६७; भवि)। कर्म—वोल्लिअइ (अप); (कुमा)। कृ—वोल्लेवय (अप); (कुमा)। प्रयो—वोल्लावइ; (कुमा)।
वोल्लणअ वि [कथयितृ] बोलने का स्वभाव वाला; (हे ४, ४४३)।
वोल्ला स्त्री [कथा] वार्ता, बात; "नीयवोल्लाए" (उप १०१५)।
वोल्लाविय वि [कथित] बुलवाया हुआ; (स ४६१; ६६६)।
वोल्लिअ वि [कथित] १ उक्त; २ न. उक्ति; (भवि, हे ४, ३८३)।
वोव्व न [दे] क्षेत्र, खेत; (दे ६, ६६)।
वोह सक [वोधय्] १ समझाना, ज्ञान कराना। २ जगाना। वोहेइ; (उव)। कर्म—वोहिज्जइ; (उव)। वकृ—वोहिंत, वोहेंत, (सुर १५, २४६; महा)। कवकृ—वोहिज्जंत, (सुर २, १४५; ८, १६५)। हेकृ—वोहेउं; (अज्झ १७६)।
वोह पु [वोध] १ ज्ञान, समझ; (जी १)। २ जागरण; (कुमा)।
वोहग देखो वोहय; (दं १)।
वोहण देखो वोधण; (उप २०६; सुर १, ३७; उवर १)।
वोहय वि [वोधक] बोध देने वाला, ज्ञान-दाता; (सम १, णाया १, १; भग; कप्प)।
वोहहर पुं [दे] मागध, स्तुति-पाठक; (दे ६, ६७)।
वोहारी स्त्री [दे] वुहारी, संमार्जनी, झाड़ू, (दे ६, ६७)।
वोहि स्त्री [वोधि] १ शुद्ध धर्म का लाभ, सद्धर्म की प्राप्ति, "दुल्लहा वोही" (उत्त ३६, २५८), "वोही जिणेहि भणिया भवंतरे सुद्धधम्मसंपत्ती" (चेइय ३३२; संबोध १४, सम ११६; उप ४८१ टी)। २ अहिंसा, अनुकम्पा, दया; (पण्ह २, १)। देखो वोधि।
वोहिअ वि [वोधित] १ ज्ञापित, समझाया हुआ, (भग)। २ विकासित, विवोधित; "रविकिरणतरुणवोहियसहस्सपत्त—" (कप्प)।
वोहिअ पुं [वोधिक] मनुष्य चुराने वाला चोर; (निचू १; चेइअ ४४६)।
वोहिंत देखो वोह=वोधय्।
वोहिग देखो वोहिअ=वोधिक; (राज)।
वोहित्थ पुन [दे] प्रवहण, जहाज, यानपात्र, नौका, (दे ६, ६६, स २०६; चेइय २६४; कुप्र २२२; सिरि ३८३; सम्मत्त १५७; सुपा ६४; भवि)।
वोहित्थिय वि [दे] प्रवहण-स्थित; (वज्जा १५८)।
°ब्भंस देखो भंस; (सुपा ५०६)।
°ब्भमर देखो भमर; (नाट—मुद्रा ३६)।
°ब्भास देखो अब्भास, "किंतु अइदूहवा सा दिट्ठिब्भासेवि कुणइ न हु कोइ" (सुपा ५६७)।
°ब्भि वि [भित्] भेदन करने वाला, नाश-कर्ता; "सगडब्भि" (आचा १, ३, ४, १)।
व्रो (अप) देखो वू। व्रोहि; (प्राकृ १२१)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि वआराइसद्दसंकलणो एगूणतीसइमो तरंगो समत्तो।

——.०:——

भ

भ पुं [**भ**] १ ओष्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष; (प्राप; प्रामा)। २ पिंगल-प्रसिद्ध आदि-गुरु और दो ह्रस्व अक्षरों की संज्ञा, भगण; (पिंग)। ३ न. नक्षत्र, (सुर १६, ४१)। °**आर** पुं [°**कार**] १ 'भ' अक्षर। २ भगण; (पिंग)। °**गण** पुं [°**गण**] भगण, (पिंग)।

भइ देखो **भव**=भू।

भइ स्त्री [**भृति**] वेतन, तनखाह; (णाया १, ८—पत्र १५०; विपा १, ४; उवा)। देखो **भूइ**।

भइअ वि [**भक्त**] १ विभक्त; (श्रावक १८५; सम ७६)। २ खण्डित; "अंगुलसंखासंखप्पएसभइयं पुढो पयरं" (पंच २, १२; ओप)। ३ विकल्पित; (वव ६)।

भइअ } देखो **भय**=भज्।
भइअव्व }

भइणि° } स्त्री [**भगिनी**] बहिन, स्वसा; (सुपा १५;
भइणिआ } स्वप्न १५; १७; विपा १. ४; प्रासू ७८; कुल
भइणी } २३५; कुमा)। °**वइ** पुं [°**पति**] बहनोई; (सुपा १५; ५३२)। °**सुअ** पुं [°**सुत**] भागिनेय, भानजा; (सुपा १७)। देखो **बहिणी**।

भइरव वि [**भैरव**] १ भयंकर, भीषण, भय-जनक; (पाअ; सुपा १८२)। २ पु. नाट्यादि-प्रसिद्ध एक रस, भयानक रस; ३ महादेव, शिव; ४ महादेव का एक अवतार; ५ राग-विशेष, भैरव राग; ६ नद-विशेष; (हे १, १५१; प्राप्र)। देखो **भेरव**।

भइरवी स्त्री [**भैरवी**] शिव-पत्नी, पार्वती; (गउड)।

भइरहि पुं [**भगीरथि**] सगर चक्रवर्ती का एक पुत्र, भगीरथ; (पउम ५, १७५)।

भइल वि [**दे**] भया, जात; (रंभा ११)।

भउम्हा (शौ) देखो **भमुहा**; (पि २५१)।

भउहा (अप) देखो **भमुहा**; (पिंग)।

भएयव्व देखो **भय**=भज्।

भंकार पुं [**भङ्कार**] भनकार, अव्यक्त आवाज विशेष; (उप पृ ८६)।

भंकारि वि [**भङ्कारिन्**] भनकार करने वाला; (सण)।

भंग पुं [**भङ्ग**] १ भाँगना, खण्ड, खण्डन, (ओघ ७८८; प्रासू १७०; जी १२; कुमा)। २ प्रकार, भेद. विकल्प; (भग; कम्म ३, ५)। ३ विनाश; (कुमा, प्रासू २१)। ४ रचना-विशेष; "तरंगरंगंतभंग—" (कप्प)। ५ पराजय; ६ पलायन; (पिंग)। °**रय** न [°**रत**] मैथुन-विशेष, (वज्जा १०८)।

भंग पुं [**भृङ्ग**] आर्य देश-विशेष, जिसकी राजधानी प्राचीन काल में पावापुरी थी; (इक)।

भंग (अप) देखो **भग्ग**=भग्न; (पिंग)।

भंगरय पुं [**भृङ्गरज, भृङ्गारक**] १ पौधा विशेष, भृङ्गराज, भँगरा; २ न. भँगरा का फूल; (वज्जा १०८; सुपा ३२४)।

भंगा स्त्री [**भङ्गा**] १ वनस्पति-विशेष, अतसी, पाट, कुष्टा; "कप्पइ णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा पंच वत्थाइं धारित्तए वा परिहरेत्तए वा, त जहा—जंगिए भंगिए साणए पोत्तिए तिरीड-पट्टए णामं पंचमए" (ठा ५, ३—पत्र ३३८)। २ वाद्य-विशेष; "—पडहहुडुक्कडुहुक्काभेरीभंगापहुदिभूरिबज्झभंड-तुमुल—" (विक्र ८७)।

भंगि स्त्री [**भङ्गि**] १ प्रकार, भेद; (हे ४, ३३६; ४११)। २ व्याज, छल, बहाना; "सहिभंगिभणिअसब्भाविआवराहाए" (गा ६१३)। ३ विच्छित्ति, विच्छेद; (राज)। ४ पुंस्त्री. देश-विशेष: "पावा भंगी य" (पव २७५; विचार ४६)।

भंगिअ न [**भङ्गिक, भाङ्गिक**] १ भङ्गा-मय, एक तरह का वस्त्र, पाट का बना हुआ कपड़ा; (ठा ३, ३; ५, ३—पत्र १३८; कस)। २ शास्त्र-विशेष; "जोगतिगस्सवि भंगिय-सुत्ते किरिया जओ भणिया" (चेइय २४५)।

भंगिल्ल वि [**भङ्गवत्**] प्रकार वाला, भेद-पतित: "पढमभं-गिल्ला" (संबोध ३२)।

भंगी स्त्री [**भङ्गी**] देखो **भंगि**; (हे ४, ३३६; गा ६१३; विचार ४६)।

भंगी स्त्री [**भृङ्गी**] वनस्पति-विशेष;—१ भाँग, विजया; २ अतिविषा, अतिस का गाछ; (पण्ण १—पत्र ३६; पण्ण १७—पत्र ५३१)।

भंगुर वि [**भङ्गुर**] १ स्वयं भाँगने वाला, विनश्वर, विनाश-शील; "तडिदंडाडंबरभंगुराइं ही विसयसोक्खाइं" (उप-६ टी; पण्ह १, ४, सुर १०, १८; स ११४; धर्मसं ११७१; विवे ११४)। २ कुटिल, वक्र; "कुडिलं वंकं भंगुरं" (पाअ)।

भंछा देखो **भत्था**; (राज)।

भंज सक [**भञ्ज्**] १ भाँगना, तोड़ना। २ पलायन कराना, भगाना। ३ पराजय करना। ४ विनाश करना। **भंजइ**,

भंजए; (हे ४, १०६; षड्; पि ५०६)। भवि—भंजिस्सइ; (पि ५३२)। कर्म—भज्जइ, (भग, महा)। वकृ—**भंजंत**; (गा १६७; सुपा ५६०)। कवकृ—**भज्जंत, भज्जमाण**; (से ६, ४४; सुर १०, २१७; स ६३)। संकृ—**भंजिअ, भंजिउ, भंजिऊण, भंजिऊणं, भंजेऊण**; (नाट; पि ५७६; महा; पि ५८५; महा), **भज्जिउ** (अप); (हे ४, ३६५)। हेकृ—**भंजित्तए**; (णाया १, ८), **भंजणहं** (अप); (हे ४, ४४१ टि)।

भंजअ, भंजग वि [**भञ्जक**] भाँगने वाला, भङ्ग करने वाला; (गा ५५२; पण्ह १, ४)। २ पुं. वृक्ष, पेड़; "भंजगा इव संनिवेसं नो चयंति" (आचा)।

भंजण न [**भञ्जन**] १ भङ्ग, खण्डन; (पव ३८; सुर १०, ६१)। २ विनाश; (सुपा ३७६; पण्ह १, १)। ३ वि. भंजन करने वाला, तोड़ने वाला; विनाशक; "भवभंजण" (सिरि ५४६), "रिउसंगभंजणेण" (कुमा), स्त्री—°**णी**; (गा ७४५)।

भंजणा स्त्री [**भञ्जना**] ऊपर देखो; "विणओवयारम-(?र मा-)णस्स भंजणा पूयणा गुरुजणस्स" (विसे ३४६६; निचू १)।

भंजाविअ, भंजिअ वि [**भञ्जित**] १ भँगाया हुआ, तुड़वाया हुआ; (स ५४०)। २ भगाया हुआ; (पिंग)। ३ आक्रान्त; (तंदु ३८)।

भंजिअ देखो **भग्ग**=भग्न; (कुमा ६, ७०; पिंग; भवि)।

भंड सक [**भाण्डय्**] भँडारा करना, संग्रह करना, इकट्ठा करना। भंडेइ; (सुख २, ४५)।

भंड सक [**भण्ड्**] भाँडना, भर्त्सना करना, गाली देना। भंडइ; (सण)। वकृ—**भंडंत**; (गा ३७६)। संकृ—**भंडिउं**; (वव १)।

भंड पुं [**भण्ड**] १ विट, भड़ुआ, (पव ३८)। २ भाँड, बहुरूपिया, मुख आदि के विकार से हँसाने का काम करने वाला, निर्लज्ज; (आव ६)।

भंड न [**दे**] १ वृन्ताक, बैंगण, भंटा; (दे ६, १००)। २ पुं. मागध, स्तुति-पाठक; ३ सखा, मित्र; ४ दौहित्र, पुत्री का पुत्र; (दे ६, १०६)। ५ पुंन. मण्डन, आभूषण, गहना; (दे ६, १०६; भग; औप)। ६ वि. छिन्न-मूर्धा, सिर-कटा, (दे ६, १०६)। ७ न. क्षुर, छुरा, ८ छुरे से मुण्डन, (राज)।

भंड, भंडग पुन [**भाण्ड**] १ वर्तन, वासन, पात्र; "दुग्गइदुहभंडे घडइ अक्खंडे" (संवेग १४; दे ३, २१; श्रा २७; सुपा १६६)। २ क्रयाणक, पण्य, वेचने की वस्तु; (णाया १, १—पत्र ६०; औप; पण्ह १, १; उवा; कुमा)। ३ गृह, स्थान; (जीव ३)। ४ वस्त्र-पात्र आदि घर का उपकरण; (ठा ३, १; कप्प; ओघ ६६६; णाया १, ५)।

भंडण न [**दे. भण्डन**] १ कलह, वाक्-कलह, गाली-प्रदान; (दे ६, १०१; उव; महा; णाया १, १६—पत्र २१३; ओघ २१४; गा ६६६; उप ३३६; तंदु ५०)। २ क्रोध, गुस्सा; (सम ७१)।

भंडणा स्त्री [**भण्डना**] भाँडना, गाली-प्रदान; (उप ३३६)।

भंडय देखो **भंड**=भण्ड; (हे ४, ४२२)।

भंडय देखो **भंडग**, "पायसघयदहियाणं भरिऊणं भंडए गहए" (महा ८०, २४; उत्त २६, ८)।

भंडा स्त्री [**दे**] संबोधन-सूचक शब्द; (संक्षि ४७)।

भंडाआर, भंडागार पुं [**भाण्डागार**] भंडार, कोठा, वखार; (मुद्रा १४१; स १७२; सुपा २२१; २६)।

भंडागारि, भंडागारिअ पुंस्त्री [**भाण्डागारिन्**, °**क**] भंडारी, भंडार का अध्यक्ष; (णाया १, ८; कुप्र १०८)। स्त्री—°**रिणी**; (णाया १, ८)।

भंडार देखो **भंडागार**; (महा)।

भंडार पुं [**भाण्डकार**] वर्तन बनाने वाला शिल्पी; (राज)।

भंडारि, भंडारिअ देखो **भंडागारि**; (स २०७; सुर ४, ६०)।

भंडिअ पु [**भाण्डिक**] भंडारी, भंडार का अध्यक्ष; (सुख २, ४५)।

भंडिआ स्त्री [**भाण्डिका**] स्थाली, थलिया; (ठा ८—पत्र ४१७)।

भंडिआ, भंडी स्त्री [**दे**] १ गंत्री, गाड़ी; (बृह ३; दे ६, १०६; आवम; निचू ३; वव ६)। २ शिरीष वृक्ष; ३ अटवी, जंगल; ४ असती, कुलटा; (दे ६, १०६)।

भंडीर पुं [**भण्डीर**] वृक्ष-विशेष, शिरीष वृक्ष; (कुमा)। °**वडिंसय**, °**वडेंसय** न [°**वतंसक**] मथुरा नगरी का एक उद्यान; "महुराए णयरीए भंडि(?डीर)वडेंसए उज्जाणे" (राज; णाया २—पत्र २५३)। °**वण** न [°**वन**] १ मथुरा का एक वन; (ती ७)। २ मथुरा का एक चैत्य; (आवम)।

भंडु न [**दे**] मुण्डन; (दे ६, १००)।

भंडुल्ल देखो **भंड**=भाण्ड; (भवि)।

भंत वि [**भ्रान्त**] १ घुमा हुआ, "भंतो जसो मेइणी (ए)" (पउम ३०, ६८)। २ भ्रान्ति-युक्त, भ्रम वाला, भूला हुआ; (दे १, २१)। ३ अपेत, अनवस्थित; (विसे ३४४८)। ४ पुं. प्रथम नरक का तीसरा नरकेन्द्रक—नरकावास-विशेष; (देवेन्द्र ३)।

भंत वि [**भगवत्**] भगवान्, ऐश्वर्य-शाली; (ठा ३, १; भग; विसे ३४४८—३४५६)।

भंत वि [**भदन्त**] १ कल्याण-कारक; २ सुख-कारक; ३ पूज्य; (विसे ३४३६; कप्प; विपा १, १; कस; विसे ३४७४)।

भंत वि [**भजत्**] सेवा करता; (विसे ३४४६)।

भंत वि [**भात्, भ्राजत्**] चमकता, प्रकाशता; (विसे ३४४७)।

भंत वि [**भवान्त**] भव का—संसार का—अन्त करने वाला, मुक्ति का कारण; (विसे ३४४६)।

भंत वि [**भयान्त**] भय-नाशक; (विसे ३४४६)।

भंति स्त्री [**भ्रान्ति**] भ्रम, मिथ्या ज्ञान; (धर्मसं ७२१; ७२३; सुपा ३१२; भवि)।

भंति (अप) स्त्री [**भक्ति**] भक्ति, प्रकार; (पिंग)।

भंभल वि [**दे**] १ अप्रिय, अनिष्ट; (दे ६, ११०)। २ मूर्ख, अज्ञान, पागल, बेवकूफ; (दे ६, ११०; सुर ८, १६६)।

भंभसार पुं [**भम्भसार**] भगवान् महावीर के समकालीन और उनके परम भक्त एक मगधाधिपति, ये श्रेणिक और बिम्बिसार के नाम से भी प्रसिद्ध थे; (णाया १, १३; औप)। देखो **भिंभसार, भिंभिसार**।

भंभा स्त्री [**दे. भम्भा**] १ वाद्य-विशेष, भेरी; (दे ६ १००; णाया १, १७; विसे ७८ टी; सुर ३, ६६; सम्मत्त १०६; राय; भग ७, ६)। २ भॉं भॉं की आवाज; (भग ७, ६—पत्र ३०५)।

भंभी स्त्री [**दे**] १ असती, कुलटा; (दे ६, ६६)। २ नीति-विशेष; (राज)।

भंस अक [**भ्रंश्**] १ नीचे गिरना। २ नष्ट होना। ३ स्खलित होना। भंसइ; (हे ४, १७७)।

भंस पुं [**भ्रंश**] १ स्खलना; २ विनाश, (सुपा ११३; सुर ४, २३०), "संपाडइ संपयाभंसं" (कुप्र ४१)।

भंसण न [**भ्रंशन**] ऊपर देखो; "को णु उवाओ जिणधम्मभंसणे होज्ज एईए" (सुपा ११३; सुर ४, १५)।

भंसणा स्त्री [**भ्रंशना**] ऊपर देखो; (पण्ह २, ४; श्रावक ६५)।

भक्ख सक [**भक्षय्**] भक्षण करना, खाना। भक्खेइ; (महा)। कर्म—भक्खिज्जइ; (कुमा)। वकृ—**भक्खंत**; (सं १०२)। हेकृ—**भक्खिउं**; (महा)। कृ—**भक्ख, भक्खेय, भक्खणिज्ज**; (पउम ८४, ४; सुपा ३७०; णाया १, १०; सुर १४, ३४; श्रा २७)।

भक्ख पुं [**भक्ष**] भक्षण, भोजन; "भो कीर खीरसक्करदक्खाभक्खं करहि ताव" (सुपा २६७)।

भक्ख देखो **भक्ष**=भक्षय्।

भक्ख पुंन [**भक्ष्य**] खंड-खाद्य, चीनी का बना हुआ खाद्य द्रव्य, मिठाई; (सुज्ज २० टी)।

भक्खग वि [**भक्षक**] भक्षण करने वाला; (कुप्र २६)।

भक्खण न [**भक्षण**] १ भोजन; (पण्ण २८)। २ वि. खाने वाला; "सव्वभक्खणो" (श्रा २८)।

भक्खणया स्त्री [**भक्षणा**] भक्षण, भोजन; (उवा)।

भक्खर पुं [**भास्कर**] १ सूर्य, रवि; (उत्त २३, ७८; लहुअ १०)। २ अग्नि, वह्नि; ३ अर्क-वृक्ष; (चंड)।

भक्खराभ न [**भास्कराभ**] १ गोत्र-विशेष जो गोतम गोत्र की शाखा है; २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न; (ठा ७—पत्र ३६०)।

भक्खावण न [**भक्षण**] खिलाना; (उप १५० टी)।

भक्खि वि [**भक्षिन्**] खाने वाला; (औप)।

भक्खिय वि [**भक्षित**] खाया हुआ; (भवि)।

भक्खेय देखो **भक्ख**=भक्षय्।

भग पुंन [**भग**] १ ऐश्वर्य; २ रूप; ३ श्री; ४ यश, कीर्ति; ५ धर्म; ६ प्रयत्न; "इस्सरियरूवसिरिजसधम्मपयत्ता मया भगाभिक्खा" (विसे १०४८; चेइय २८८)। ७ सूर्य, रवि; ८ माहात्म्य; ६ वैराग्य; १० मुक्ति, मोक्ष; ११ वीर्य; १२ इच्छा; (कप्प—टी)। १३ ज्ञान; (प्रामा)। १४ पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र; (अणु)। १५ पुं. योनि, उत्पत्ति-स्थान; (पण्ह १, ४—पत्र ६८; सुज्ज १०, ८)। १६ देव-विशेष, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र का अधिष्ठाता देव, ज्योतिष्क देव-विशेष; (ठा २, ३; सुज्ज १०, १२)। १७ गुदा और अण्डकोश के बीच का स्थान; (बृह ३)। °**दत्त** पुं [°**दत्त**] नृप-विशेष; (हे ४, २६६)। °**व** देखो °**वंत**; (भग; महा)। °**वई** स्त्री [°**वती**] १ ऐश्वर्यादि-संपन्ना, पूज्या; (पडि)। २ भगवती-सूत्र, पाँचवाँ जैन अंग-ग्रन्थ; (पंच

५, १२५) °वंत वि [°वत्] १ ऐश्वर्यादि-गुण-संपन्न; २ पुं. परमेश्वर, परमात्मा; (कप्प; विसे १०४८; प्रामा)।

भगंदर पुं [**भगन्दर**] रोग-विशेष, (गाया १, १३; विपा १, १)।

भगंदरि वि [**भगन्दरिन्**] भगन्दर रोग वाला; (श्रा १६; संबोध ४३)।

भगंदरिअ वि [**भगन्दरिक**] ऊपर देखो; (विपा १, ७)।

भगंदल देखो **भगंदर**; (राज)।

भगिणी देखो **बहिणी**, (गाया १, ८; कप्प; कुप्र २३६; महा)।

भगिरहि } पुं [**भगीरथि**] सगर चक्रवर्ती का एक पुत्र;
भगीरहि } (पउम ५, १७६; २१५)।

भग्ग वि [**भग्न**] १ खण्डित, भाँगा हुआ; (सुर २, १०२; दं ४६; उवा)। २ पराजित; ३ पलायित, भागा हुआ; "जइ भग्गा पारक्कडा" (हे ४, ३७६; ३५४, महा; वव २)। °इ पुं [°जित्] क्षत्रिय परिव्राजक-विशेष; (औप)।

भग्ग वि [**दे**] लिप्त, पोता हुआ; (दे ६, ६६)।

भग्ग न [**भाग्य**] नसीब, दैव; (सुर १३, १०५)।

भग्गव पुं [**भार्गव**] १ ग्रह-विशेष, शुक्र ग्रह; (पउम १७, १०८)। २ ऋषि-विशेष; (समु १८१)।

भग्गवेस न [**भार्गवेश**] गोत्र-विशेष; (सुज्ज १०, १६ टी; इक)।

भग्गिअ (अप) देखो **भग्ग=**भग्न; (पिंग)।

भच्च पुं [**दे**] भागिनेय, भानजा; (षड्)।

भच्छिअ वि [**भर्त्सित**] तिरस्कृत; (दे १, ८०; कुमा ३, ८६)।

भज देखो **भय=**भज्। वकृ—**भजंत, भजेंत, भजमाण; भजेमाण**; (षड्)।

भज्ज सक [**भ्रस्ज्**] पकाना, भुनना। भज्जंति, भज्जेंति; (सूअनि ८१; विपा १, ३)। वकृ—**भज्जंत, भज्जेंत**; (पिंड ५७४; विपा १, ३)।

भज्ज देखो **भंज**; (आचा २, १, १, २)।

भज्ज देखो **भय=**भज्।

भज्जंत देखो **भंज**।

भज्जण } [**भ्रज्जन**] १ भुनन, भुनना; (पण्ह १, १;
भज्जणय } अनु ५)। २ भुनने का पात्र; (सूअनि ८१; विपा १, ३)।

भज्जमाण देखो **भंज**।

भज्जा स्त्री [**भार्या**] पत्नी, स्त्री; (कुमा; प्रासू ११६)।

भज्जिअ देखो **भग्ग=**भग्न; "तरुणियं वा छिवाडिं अभिक्कंत-भज्जियं पेहाए" (आचा २, १, १, २)।

भज्जिअ वि [**भृष्ट, भर्जित**] भुना हुआ, पकाया हुआ; (गा ५५७; आचा २, १, १, ३; विपा १, २; उवा)।

भज्जिआ स्त्री [**भर्जिका**] भाजी, शाक-भेद, पत्राकार तर-कारी; (पव २५६)।

भज्जिम वि [**भृज्जिम**] भुनने योग्य; (आचा २, ४, २, १५)।

भज्जिर वि [**भङ्क्तृ**] भाँगने वाला; "फारफलभारभज्जिर-साहासयसंकुलो महासाही" (धर्मवि ५५; सण)।

भज्जेंत देखो **भज्ज=**भ्रस्ज्।

भट्ट पुं [**भट्ट**] १ मनुष्य-जाति विशेष, स्तुति-पाठक की एक जाति, भाट; "जयजयसद्दकरंतसुभट्ट" (सिरि १५५; सुपा २७१; उप पृ १२०)। २ वेदाभिज्ञ पण्डित, ब्राह्मण, विप्र; (उप १०३१ टी)। ३ स्वामित्व, मालिकी; (प्रति ७)।

भट्टारग } पुं [**भट्टारक**] १ पूज्य, पूजनीय; (आव ३;
भट्टारय } महा)। २ नाटक की भाषा में राजा; (प्राकृ ६५)।

भट्टि देखो **भत्तु=**भर्तृ; (ठा ३, १; सम ८६; कप्प; स १४४; प्रति ३; स्वप्न १५)।

भट्टिअ पुं [**दे**] विष्णु, श्रीकृष्ण; (हे २, १७४; दे ६, १००)।

भट्टिणी स्त्री [**भर्त्री**] स्वामिनी, मालिकिन; (स १३४)।

भट्टिणी स्त्री [**भट्टिनी**] नाटक की भाषा में वह रानी जिसका अभिषेक न किया गया हो; (प्रति ७)।

भट्टु (शौ) देखो **भट्टारय**; (प्राकृ ६५)।

भट्ठ वि [**भ्रष्ट**] १ नीचे गिरा हुआ; २ च्युत, स्खलित; (महा; द्र ४३)। ३ नष्ट; (सुर ४, २१५; गाया १, ६)।

भट्ठ पुंन [**भ्राष्ट्र**] भर्जन-पात्र, भुनने का बर्तन; (दे ५, २०), "भट्ठट्ठियचणगो विव सयणीए कीस तडफडसि" (सुर ३, १४८)।

भट्ठि } स्त्री [**दे**] धूलि-रहित मार्ग; (ओघ २३; २४ टी;
भट्ठी } भग ७, ६ टी—पत्र ३०७)।

भड पुं [**भट**] १ योद्धा, लड़ाका; (कुमा)। २ शूर, वीर; (से ३, ६; गाया १, १)। ३ म्लेच्छों की एक जाति; ४ वर्णसंकर जाति-विशेष, एक नीच मनुष्य-जाति; ५ राक्षस;

(हे १, १६५)। °खइआ स्त्री [°खादिता] दीक्षा-विशेष; (ठा ४, ४)।

भडक पुंस्त्री [दे] आडम्बर, ठाठमाठ; (सद्दि ४४ टी)। स्त्री—°क्का; (उव)।

भडग पुं [भटक] १ अनार्य देश-विशेष; २ उस देश में रहने वाली एक म्लेच्छ-जाति; (पराह १, १—पत्न १४; इक)। देखो **भड**।

भडारय (अप) देखो **भट्टारय**; (भवि)।

भडित्त न [भटित्र] शूल-पक्व मांसादि, कवाब; (स २६२; कुप्र ४३२)।

भडिल वि [दे] संबोधन-सूचक शब्द; (संचि ४७)।

भण सक [भण्] कहना, बोलना, प्रतिपादन करना। भणइ, भणेइ; (हे ४, २३९; कुमा)। कर्म—भणइ, भणए, भणिज्जइ; (पि ५४८, षड्; पिंग)। भूका—भणीअ; (कुमा)। भवि—भणिहि, भणिस्सं; (कुमा)। वकृ—**भणंत, भणमाण, भणेमाण**; (कुमा; महा; सुर १०, ११४)। कवकृ—**भण्णंत, भणिज्जंत, भणिज्जमाण, भणीअंत, भण्णमाण**; (कुमा; पि ५४८; गा १४५)। संकृ—**भणिअ, भणिउं, भणिऊण**; (कुमा; पि ३४९)। हेकृ—**भणिउ°, भणिउं**; (पउम ६४, १३; पि ५७६)। कृ—**भणिअव्व, भणेयव्व**; (अजि ३८; सुपा ६०८) कवकृ—**भन्नंत, भन्नमाण**; (सुर २, १६१; उप पृ २३; उप १०३१ टी)।

भणग त्रि [भण, °क] प्रतिपादन करने वाला; (णंदि)।

भणण न [भणन] कथन, उक्ति; (उप ५५३; सुपा २८३; संबोध ३)।

भणाविअ वि [भाणित] कहलाया हुआ; (सुपा ३५८)।

भणिअ वि [भणित] कथित; (भग)।

भणिइ स्त्री [भणिति] उक्ति, वचन; (सुर ६, १४५; सुपा २१४; धर्मवि ५८)।

भणिर वि [भणितृ] कहने वाला, वक्ता; (गा २९७; कुमा; सुर ११, २४४; श्रा १६)। स्त्री—°री; (कुमा)।

भणेमाण देखो **भण**।

भण्ण सक [भण्] कहना, बोलना। भण्णइ; (धात्वा १४७)।

भण्णमाण देखो **भण**=भण्।

भत्त पुंन [भक्त] १ आहार, भोजन; २ अन्न, नाज; (विपा १, १; ठा २, ४; महा)। ३ ओदन, भात; (प्रामा)। ४ लगातार सात दिनों का उपवास; (संबोध ५८)। ५ वि. भक्ति-युक्त, भक्तिमान्; "सा सुलसा बालप्पभिति चेव हरिणेगमेसीभत्तया यावि होत्था" (अंत ७; उप पृ ६६; महा; पिंग)। °कहा स्त्री [°कथा] आहार-कथा, भोजन-संबन्धी वार्ता; (ठा ४, ४)। °च्छंद, °छंद पुं [°च्छन्द] रोग-विशेष, भोजन की अरुचि; "कच्छू जरो खासो सासो भत्तच्छंदो अक्खिदुक्खं" (महा; महा—टि)। °पच्चक्खाण न [°प्रत्याख्यान] आहार-त्याग-रूप अनशन, अनशन का एक भेद, मरण का एक प्रकार; (ठा २, ४—पत्न ६४; औप ३०, २)। °परिण्णा, °परिन्ना स्त्री [°परिज्ञा] १ वही पूर्वोक्त अर्थ; (भत्त १६६; १०; पव १५७)। २ ग्रन्थ-विशेष; (भत्त १)। °पाणय न [°पानक] आहार-पानी, खान-पान; (विपा १, १)। °वेला स्त्री [°वेला] भोजन-समय; (विपा १, १)।

भत्त वि [भूत] उत्पन्न, संजात; (हे ४, ६०)।

भत्ति देखो **भत्तु**; (पिंग)।

भत्ति स्त्री [भक्ति] १ सेवा, विनय, आदर; (णाया १, ८—पत्न १२२; उव; औप; प्रासू २६)। २ रचना; (विसे १६३१; औप; सुपा ५२)। ३ एकाग्र-वृत्ति-विशेष; (आव २)। ४ कल्पना, उपचार; (धर्मसं ७४२)। ५ प्रकार, भेद; (ठा ६)। ६ विच्छित्ति-विशेष; (औप)। ७ अनुराग; (धर्म १)। ८ विभाग; ९ अवयव; १० श्रद्धा; (हे २, १५९)। °मंत, °वंत वि [°मत्] भक्ति वाला, भक्त; (पउम ९२, २८; उव; सुपा १९०; हे २, १५९; भवि)।

भत्तिज्ज पुं [भ्रातृव्य] भतीजा, भाई का पुत्र; (सिरि ७१६; धर्मवि १२७)।

भत्ती नीचे देखो।

भत्तु पुं [भर्तृ] १ स्वामी, पति, भतार; (णाया १, १६—पत्न २०७), "णववहू उवरतभत्तुया" (णाया १, ६; पाअ; स्वप्न ५६)। २ अधिपति, अध्यक्ष; ३ राजा, नरेश; ४ वि. पोषक, पोषण करने वाला; ५ धारण करने वाला; (हे ३, ४४; ४५)। स्त्री—**भत्ती**; (पिंग)।

भत्तोस न [भक्तोप] १ भुना हुआ अन्न; (पंचा ५, २६; प्रभा १५)। २ सुखादिका, खाद्य-विशेष; (पव ३८)।

भत्थ पुंस्त्री [दे] भाथा, तूणीर, तरकस; "अह आरोवियचावो पिट्ठे दढवन्धभत्थओ अभओ" (धर्मवि १४६)।

भत्था स्त्री [भस्त्रा] चमड़े की धौंकनी, भाथी; (उप ३२० टी; धर्मवि १३०)।

भत्थिअ वि [भर्त्सित] तिरस्कृत; (सम्मत्त १८९)।

भत्थी स्त्री [**भस्त्री**] भाथीं, चमड़े की धौंकनी; "भत्थि व्व अनिलपुन्ना वियसियमुदरं" (कुप्र २६६)।

भद सक [**भद्**] १ सुख करना। २ कल्याण करना; (विसे ३४३६)। वकृ—**भदंत**; नीचे देखो।

भदंत वि [**भदन्त**] १ कल्याण-कारक, २ सुख-कारक; ३ पूज्य, पूजनीय; (विसे ३४३६; ३४७४)।

भद्द न [**दे**] आमलक, फल-विशेष; (दे ६, १००)।

भद्द, **भद्दअ** न [**भद्र**] १ मंगल, कल्याण, "भद्दं मिच्छादंसणसमूहमइअस्स अमयसारस्स जिणवयणस्स भगवओ" (सम्मत्त १६७; प्रासू १६)। २ सुवर्ण, सोना; ३ मुस्तक, मोथा, नागरमोथा; (हे २, ८०)। ४ दो उपवास; (संबोध ५८)। ५ देव-विमान विशेष; (सम ३२)। ६ शरासन, मूठ; (णाया १, १ टी—पत्र ४३)। ७ भद्रासन, आसन-विशेष; (आवम)। ८ वि. साधु, सरल, भला, सज्जन; ९ उत्तम, श्रेष्ठ; (भग, प्रासू १६; सुर ३, ४)। १० सुख-जनक, कल्याण-कारक; (णाया १, १)। ११ पु. हाथी की एक उत्तम जाति; (ठा ४, २—पत्र २०८; महा)। १२ भारत-वर्ष का तीसरा भावी वलदेव; (सम १५४)। १३ अंग-विद्या का जानकार द्वितीय रुद्र पुरुष, (विचार ४७३)। १४ तिथि-विशेष—द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी तिथि, (सुज्ज १०, १५)। १५ छन्द-विशेष; (पिंग)। १६ स्वनाम-ख्यात एक जैन आचार्य; (महानि ६; कप्प)। १७ व्यक्ति-वाचक नाम, (निर १, ३; आव १; धम्म)। १८ भारत-वर्ष का चौबीसवाँ भावी जिनदेव; (पव ७)। °**गुत्त** पुं [°**गुप्त**] स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैनाचार्य; (णंदि; सार्ध २३)। °**गुत्तिय** न [°**गुप्तिक**] एक जैन मुनि-कुल; (कप्प)। °**जस** पुं [°**यशस्**] १ भगवान् पार्श्वनाथ का एक गणधर; (ठा ८—पत्र ४२६)। २ एक जैन मुनि; (कप्प)। °**जसिय** न [°**यशस्क**] एक जैन मुनि-कुल; (कप्प)। °**नंदि** पुं [°**नन्दिन्**] स्वनाम-ख्यात एक राज-कुमार; (विपा २, २)। °**वाहु** पुं [°**वाहु**] स्वनाम-प्रसिद्ध प्राचीन जैना-चार्य और ग्रन्थकार; (कप्प; णंदि)। °**मुत्था** स्त्री [°**मुस्ता**] वनस्पति-विशेष, भद्रमोथा; (पण्ण १)। °**वया** स्त्री [°**पदा**] नक्षत्र-विशेष; (सुर १०, २२४)। °**साल** न [°**शाल**] मेरु पर्वत का एक वन, (ठा २, ३; इक)। °**सेण** पुं [°**सेन**] १ धरणेन्द्र के पदाति-सैन्य का अधिपति देव; (ठा ५, १; इक)। २ एक श्रेष्ठी का नाम; (आव ४)। °**स्स** न [°**श्व**] नगर-विशेष, (इक)। °**सण** न [°**सन**] आसन-विशेष, सिंहासन; (णाया १, १; पण्ह १, ४; पाअ; औप)।

भद्दव°, **भद्दवय** पुं [**भाद्रपद**] मास-विशेष, भादों का महीना; (वज्जा ८२; सुर ३, १३८)।

भद्दसिरी स्त्री [**दे**] श्रीखण्ड, चन्दन; (दे ६, १०२)।

भद्दा स्त्री [**भद्रा**] १ रावण की एक पत्नी; (पउम ७४, ९)। २ प्रथम वलदेव की माता; (सम १५२)। ३ तीसरे चक्र-वर्ती की जननी; (सम १५२)। ४ द्वितीय चक्रवर्ती की स्त्री; (सम १५२)। ५ मेरु के पूर्व रुचक पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८)। ६ एक प्रतिमा, व्रत-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ६४)। ७ राजा श्रेणिक की एक पत्नी, (अंत २५)। ८ तिथि-विशेष—द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी तिथि; (संबोध ५४)। ९ छन्द-विशेष; (पिंग)। १० कामदेव श्रावक की भार्या का नाम, ११ चुलनीपिता-नामक उपासक की माता का नाम; (उवा)। १२ एक सार्थवाह-स्त्री का नाम; (विपा १, ४)। १३ गोशालक की माता का नाम; (भग १५)। १४ अहिंसा, दया, (पण्ह २, १)। १५ एक वापी; (दीव)। १६ एक नगरी; (आचू १)। १७ अनेक स्त्रियों का नाम; (णाया १, ८; १६; आवम)।

भद्दाकरि वि [**दे**] प्रलम्ब, अति लम्बा; (दे ६, १०२)।

भद्दिआ स्त्री [**भद्रिका, भद्रा**] १ शोभना, सुन्दर (स्त्री), (ओघभा १७)। २ नगरी-विशेष; (कप्प)।

भद्दिज्जिया स्त्री [**भद्रीया, भद्रीयिका**] एक जैन मुनि-शाखा; (कप्प)।

भद्दिलपुर न [**भद्दिलपुर**] भारतवर्ष का एक प्राचीन नगर; (अंत ४; कुप्र ८४; इक)।

भद्दुत्तरवडिंसग न [**भद्रोत्तरावतंसक**] एक देव-विमान; (सम ३२)।

भद्दुत्तर°, **भद्दोत्तर°**, **भद्दोत्तरा** स्त्री [**भद्रोत्तरा**] प्रतिमा-विशेष, प्रतिज्ञा का एक भेद, एक तरह का व्रत; (औप, अंत ३०; पत्र २७१)।

भद्र देखो **भद्द**, (हे २, ८०, प्राकृ १७)।

भन्नंत, **भन्नमाण** देखो **भण**=भण्।

भप्प देखो **भस्स**=भस्मन्; (हे २, ५१, कुमा)।

भम सक [**भ्रम्**] भ्रमण करना, घूमना। भमइ; (हे ८, १६१; प्राकृ ६९)। वकृ—**भमंत, भममाण**; (गा

२०२; ३८७; कप्प; औप)। संकृ—**भमिआ, भमिऊण**; (षड्; गा ७४६)। कृ—**भमिअव्व**; (सुपा ४३८)।

भम पुं [**भ्रम**] १ भ्रमण; (कुप्र ४)। २ भ्रान्ति, मोह, मिथ्या-ज्ञान; (से ३, ४८; कुमा)।

भमग न [**भ्रमक**] लगातार एकतीस दिनों का उपवास; (संबोध ५८)।

भमड देखो **भम**=भ्रम्। "भवम्मि भमडइ एगुच्चिय" (विवे १०८; हे ४, १६१)।

भमडिअ वि [**भ्रान्त**] १ घूमा हुआ, फिरा हुआ; (स ४७३)। २ भ्रान्ति-युक्त; (कुमा)। देखो **भमिअ**।

भमण न [**भ्रमण**] घूमना, चकराना, (दं ४६; कप्प)।

भममुह पुं [**दे**] आवर्त; (दे ६, १०१)।

भमया स्त्री [**भ्रू**] भौं, नेत्र के ऊपर की केश-पङ्क्ति; (हे २, १६७; कुमा)।

भमर पु [**भ्रमर**] १ मधुकर, भौंरा; (हे १, २४४; कुमा; जी १८; प्रासू ११३)। २ पुं. छन्द-विशेष; (पिंग)। ३ विट, रंडीबाज; (कप्पू)। °**रुअ** पुं [°**रुच**] अनार्य देश-विशेष; (पव २७४)। °**ावलि** स्त्री [°**ावलि**] १ छन्द-विशेष; (पिंग)। २ भ्रमर-पंक्ति; (राय)।

भमरटेंटा स्त्री [**दे**] १ भ्रमर की तरह अक्षि-गोलक वाली; २ भ्रमर की तरह अस्थिर आचरण वाली; ३ शुष्क व्रण के दाग वाली; (कप्प)।

भमरिया स्त्री [**भ्रमरिका**] जन्तु-विशेष, वर्र; (जी १८)। देखो **भमलिया**।

भमरी स्त्री [**भ्रमरी**] स्त्री-भ्रमर, भौंरी; (दे)। नीचे देखो।

भमलिया, **भमली** स्त्री [**भ्रमरीका, °री**] १ पित्त के प्रकोप से होने वाला रोग-विशेष, चक्कर; "भमली पित्तुदयाश्रो भमंतमहिदंसणं" (चेइय ४३५; पडि)। २ वाद्य-विशेष; (राय)।

भमस पुं [**दे**] तृण-विशेष, ईख की तरह का एक प्रकार का घास; (दे ६, १०१)।

भमाडअ वि [**भ्रमित**] घुमाया हुआ, फिराया हुआ, (से ३, ६१)।

भमाड सक [**भ्रमय्**] घुमाना, फिराना। भमाडेइ; (हे ४, ३०), भमाडेसु; (सुपा ११४)। वकृ—**भमाडेंत**; (पउम १०६, ११)।

भमाड देखो **भम**=भ्रम्। भमाडइ; (हे ४, १६१; भवि)।

भमाड पुं [**भ्रम**] भ्रमण, घूमना, चक्कर; (ओघभा २६ टी; ८३ टी)।

भमाडण न [**भ्रमण**] घुमाना; (उप पृ २७८)।

भमाडिअ देखो **भमडिअ**; (कुमा)।

भमाडिअ वि [**भ्रमित**] घुमाया हुआ, फिराया हुआ; (पउम १६, २५)।

भमाव देखो **भमाड**=भ्रमय्। भमावइ, भमावेइ; (पि ५५३; हे ४, ३०)।

भमास [**दे**] देखो **भमस**; (दे ६, १०१; पाअ)।

भमि स्त्री [**भ्रमि**] १ आवर्त, पानी का चक्राकार भ्रमण; (अच्चु ६३)। २ चित्त-भ्रम करने की शक्ति; (विसे १६५३)। ३ रोग-विशेष, चक्कर; "भमिपरिभमियसरीरो" (हम्मीर २८)।

भमिअ देखो **भमडिअ**; (जी ४८; भवि)। ३ न. भ्रमण, "भमिअ्रमणिक्कंतदेहलीदेसं" (गा ५२५)।

भमिअ देखो **भमाइअ**; (पाअ)।

भमिअव्व, **भमिआ** देखो **भम**=भ्रम्।

भमिर वि [**भ्रमितृ**] भ्रमण करने वाला; (हे २, १४५; सुर १, ५५; ३, १८)।

भमुह न [**भ्रू**] नीचे देखो; "दीहाइं भमुहाइं" (आचा २, १३, १७)।

भमुहा स्त्री [**भ्रू**] भौं, आँख के ऊपर की रोम-राजी; (पउम ३७, ५०; औप; आचा; पाअ)।

भम्म, **भम्मड** देखो **भम**=भ्रम्। भम्मइ; (प्राकृ ६६), भम्मसु; (गा ४१५; ४४७)। भम्मडइ; (हे ४, १६१)। भम्मडेइ; (कुमा)।

भम्मर (अप) देखो **भमर**; (पिंग)।

भय देखो **भद**। वकृ—देखो **भयंत**=भदंत।

भय सक [**भज्**] १ सेवा करना। २ विकल्प से करना। ३ विभाग करना। ४ ग्रहण करना। भयइ, भअइ; (सम्म १२४; कुमा), भए, भएज्जा; (बृह १), भयंति; (विसे १६६०)। "तम्हा भय जीव वेरग्गं" (श्रु ६१)। वकृ—**भयंत, भयमाण**; (विसे ३४४६; सूअ १, २, ३, १७)। कवकृ—"सव्वतुभयमाणसुहेहिं" (कप्प)। संकृ—**भइत्ता**; (ठा ६)। कृ—**भइअ, भइअव्व, भएयव्व, भज्ज, भयणिज्ज**; (विसे ६१८; २०४६; उत्त ३६, २३, २४; २५; कम्म ५, ११; विसे ६१५; उप ६०४; विसे ३२०२, ७४८; पव १८१; जीवस १४५; पंच ५, ८; विसे ६१६; जीवस १४७)।

भय न [**भय**] डर, त्रास, भीतिः (आचा; गाया १. १; गा १०२; कुमा; प्रासू १६; १७३)। °**अर** वि [°**कर**] भय-जनक; (से ५, ४६; ११, ७५)। °**जणणी** स्त्री [°**जननी**] १ त्रास उत्पन्न करने वाली, (वृह १)। २ विद्या-विशेष; (पउम ७, १४१)। °**वाह** पुं [°**वाह**] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६३)।

भय देखो **भग**, (उव; कुमा; सण; सुपा ४२०; गउड)।

भय देखो **भव**; (ओप; पिंग)।

भयंकर वि [**भयंकर**] १ भय-जनक, भीषण, (हे ४, ३३१; सण, भवि)। २ प्राणि-वध, हिंसा, (पण्ह १,१)।

भयंत देखो **भय-भज**्।

भयंत देखो **भंत**=भगवत्; (सूअ १, १६, ६)।

भयंत देखो **भदंत**; (ओघ ४८; उत्त २०, ११; ओप)।

भयंत देखो **भंत**=भयान्त; (विसे ३४४६; ३४५३; ३४५४)।

भयंत देखो **भंत**=भवान्त; (विसे ३४५४; ओप)।

भयंत वि [**भयत्र**] भय से रक्षा करने वाला, (ओप; सूअ १, १६. ६)।

भयंतु वि [**भयत्रातृ**] भय से रक्षा करने वाला, "धम्ममाइक्खणे भयंतारो" (सूअ १, ४, १, २५)।

भयंतु वि [**भक्तृ**] सेवक, सेवा करने वाला; (ओप)।

भयक } पुं [**भृतक**] १ नौकर, कर्मकर; (ठा ४, १: २)।
भयग } २ वि. पोषित; (पण्ह १, २; णाया १, २)।

भयण न [**भजन**] १ सेवा; (राज)। २ विभाग; (सम्म ११३)। ३ पुं लोभ; (सूअ १, ६, ११)।

भयण देखो **भवण**; (नाट—चैत ४०)।

भयणा स्त्री [**भजना**] १ सेवा; (निचू १)। २ विकल्प; (भग; सम्म १२४; दं ३१, उव)।

भयप्पइ } देखो **वहस्सइ**; (हे २, १३७; षड्)।
भयप्फइ }

भयवग्गाम पुं [**दे**] मेव्हेरक, गुजरात का एक गाँव, (दे ६, १०२)।

भयाणय वि [**भयानक**] भयंकर, भय-जनक, (स १२१)।

भयालि पुं [**भयालि**] भारतवर्ष के भावी अठारहवें जिनदेव का पूर्व-भवीय नाम, (सम १५४)। देखो **सयालि**।

भयालु वि [**भीरु**] भीरु, डरपोक, (दे ६, १०२, नाट)।

भयावण (अप) देखो **भयाणय**; (भवि)।

भयावह वि [**भयावह**] भय-जनक, भय-कारक, (सूअ १, १३, २१)।

भर सक [**भृ**] १ भरना। २ धारण करना। ३ पोषण करना। भरइ; (भवि; पिंग), भरसु; (कम्म ४, ७६)। वकृ—**भरंत**; (भवि)। कवकृ—**भरंत, भरेंत, भरिज्जंत**; (से १. ५८; ४. ८; १, ३७)। संकृ—**भरेऊणं**; (आक ६)। कृ—**भरणिज्ज, भरणीअ, भत्तव्व, भरेअव्व**; (प्राप्र, नाट; राज; से ६, ३)।

भर सक [**स्मृ**] स्मरण करना, याद करना। भरइ, (हे ४, ७४; प्राप्र)। वकृ—**भरंत**; (गा ३८१; भवि)। संकृ—**भरिअ, भरिऊणं**; (कुमा)। प्रयो, वकृ—**भरावंत**, (कुमा)।

भर पुन [**भर**] १ समूह. प्रकर, निकर; "जइअव्वं तह एगागिणावि भीमारिदुट्ठसंगे" (प्रवि १२; सुपा ७; पाअ)। २ भार, बोझ, (से ३, ५; प्रासू २६; गा ६)। ३ गुरुतर कार्य; "भरणित्थरणसमत्था" (विसे १६६ टी, ठा ४, ४ टी—पत्र २८३)। ४ प्रचुरता, अतिशय, ५ कर—राजदेय भाग—की प्रचुरता, कर की गुरुता, "करेहि य भरेहि य" (विपा १, १)। ६ पूर्णता, सम्पूर्णता; "इय चिंताए निद्दं अलहंतो निसिभरम्मि नरनाहो" (कुप्र ६)। ७ मध्य भाग, ८ जमावट, "भरमुवगए कोलापमोए" (स ५३०)।

भरअ देखो **भरह**, (षड्)।

भरड पुं [**भरट**] व्रती विशेष. एक प्रकार का बावा, "सिवभवणाहिगारिणा भरडएण" (सम्मत १४५)।

भरण न [**स्मरण**] स्मृति, (गा २२२; ३७७)।

भरण न [**भरण**] १ भरना. पूरना; (गउड)। २ पोषण; (गा ५२७)। ३ शिल्प-विशेष, वस्त्र में बेल-बूटा आदि आकार की रचना; 'सीवणं तुन्नण भरणं'' (गच्छ ३, ७)।

भरणी स्त्री [**भरणी**] नक्षत्र-विशेष; (सम ८; इक)।

भरध (शौ) देखो **भरह**; (प्राकृ ८५)।

भरह पु [**भरत**] १ भगवान् आदिनाथ का ज्येष्ठ पुत्र और प्रथम चक्रवर्ती राजा; (सम ६०; कुमा; सुर २, १३३)। २ राजा रामचन्द्र का छोटा भाई; (पउम २५, १४)। ३ नाट्य-शास्त्र का कर्ता एक मुनि, (सिरि ५६)। ४ वर्ष-विशेष, भारत वर्ष; "इहेव जंबुद्दीवे दीवे सत्त वासा पन्नत्ता, तं जहा—भरहे हेमवए हरिवासे महाविदेहे रम्मए एरण्णवए एरवए" (सम १२, जं १; पडि)। ५ भारतवर्ष का प्रथम भावी चक्रवर्ती, (सम १५४)। ६ शबर, ७ तन्तुवाय; ८ नृप-विशेष, राजा दुष्यन्त का पुत्र; ६ भरत के वंशज राजा,

१० नट; (हे १, २१४; षड्) । ११ देव-विशेष; (जं ३) । १२ कूट-विशेष, पर्वत-विशेष का शिखर; (जं ४; ठा २, ३; ६) । °खित्त न [°क्षेत्र] भारतवर्ष; (सण) । °वास न [°वर्ष] भारतवर्ष, आर्यावर्त; (पण्ह १, ४) । °सत्थ न [°शास्त्र] भरतमुनि-प्रणीत नाट्य-शास्त्र, (सिरि ५६) । °ाहिव पुं [°ाधिप] १ संपूर्ण भारतवर्ष का राजा, चक्रवर्ती; २ भरत चक्रवर्ती; (सण) । °ाहिवइ पुं [°ाधिपति] वही अर्थ; (सण) ।

भरहेसर पुं [**भरतेश्वर**] १ संपूर्ण भारतवर्ष का राजा, चक्रवर्ती, २ चक्रवर्ती भरत; (कुमा २, १७; पडि) ।

भरिअ वि [**भृत, भरित**] भरा हुआ, पूर्ण, व्याप्त; (विपा १, ३; औप; धर्मवि १४४, काप्र १७४; हेका २७२; प्रासू १०) ।

भरिअ वि [**स्मृत**] याद किया हुआ; 'भरिअं लुढिअं सुमरिअं" (पाअ; कुमा; भवि) ।

भरिउल्लट्ट वि [**दे. भृतोल्लुठित**] भर कर खाली किया हुआ; (दे ७, ८१; पाअ) ।

भरिम वि [**भरिम**] भर कर बनाया हुआ; (अणु) ।

भरिया (अप) देखो **भारिया**; (कुमा) ।

भरिली स्त्री [**भरिली**] चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष; (राज) ।

भरु पुं [**भरु**] १ एक अनार्य देश; २ एक अनार्य मनुष्य-जाति; (इक) ।

भरुअच्छ पुं [**भृगुकच्छ**] गुजरात का एक प्रसिद्ध शहर जो आजकल 'भडौच' के नाम से प्रसिद्ध है; (काल; मुनि १०८९९; पडि) ।

भरोच्छय न [**दे**] ताल का फल; (दे ६, १०२) ।

भल देखो **भर=स्मृ** । भलइ, (हे ४, ७४) । प्रयो, वकृ—**भलावंत**; (कुमा) ।

भल सक [**भल्**] सम्हालना । भलिज्जासु, (सुपा ५४६) । भवि—भलिस्सामि; (काल) । कृ—**भलेयव्व**; (ओघ ३८६ टी) । प्रयो, संकृ—**भलाविऊण**, (सिरि ३१२; ५९९) ।

भलंत वि [**दे**] स्खलित होता, गिरता; (दे ६, १०१) ।

भलाविअ वि [**भालित**] सौंपा हुआ, सम्हालने के लिये दिया हुआ, (श्रा १६) ।

भलि पुंस्त्री [**दे**] कदाग्रह, हठ; "असुलहमेच्छणा जाहं भलि ते नवि दूर गणंति" (हे ४, ३५३; चंड) ।

भल्ल पुं [**भल्ल**] १ भालू, रीछ; (पण्ह १, १) । २ पुंन. अस्त्र-विशेष, भाला, बरछी; (गा ५०४; ५८५; ५९४) ।

भल्ल, भल्लय वि [**भद्र**] भला, उत्तम, श्रेष्ठ, अच्छा; (कुमा, हे ४, ३५१; भवि) । °त्तण, °प्पण न [°त्व] भलमनसी, भलाई; (कुमा) ।

भल्लय [**भल्लक**] देखो **भल्ल=भल्ल**; (उप पृ ३०; सण; आवम) ।

भल्लाअय, भल्लातक, भल्लाय पुं [**भल्लात, °क**] १ वृक्ष-विशेष, भिलावा का पेड़; (पण्ण १; दे १, २३) । २ भिलावा का फल; (दे १, २३; ५, २६; पाअ) ।

भल्लि स्त्री [**भल्लि**] देखो **भल्ली**; (कुमा) ।

भल्लिम पुंस्त्री [**भद्रत्व**] भलाई, भद्रता; (सुपा १२३; कुप्र १०८) ।

भल्ली स्त्री [**भल्ली**] भाला, बरछी, अस्त्र-विशेष; (सुर २, २८; कुप्र २७४; सुपा ५३०) ।

भल्लु पुंस्त्री [**दे**] भालू, रीछ; (दे ६, ९९) ।

भल्लुंकी स्त्री [**दे**] शिवा, शृगाली; (दे ६, १०१; सण), "भल्लुंकी रुद्दिया विकट्टंती" (संथा ६६) ।

भल्लोड पुंन [**दे**] बाण का पुंख, शर का अग्र भाग, गुजराती में 'भालोडुं'; "कन्नायड्ढियधणुहपहृदीसंतभल्लोडा" (सुर २, ७) ।

भव अक [**भू**] १ होना । २ सक प्राप्त करना । भवइ, भवए; (कप्प; महा), भए, (भग; ठा ३, १) । भूका—भविंसु, (भग) । भवि—भविस्सइ, भविस्स; (कप्प; भग; पि ५२१) । वकृ—**भवंत**; (गउड ५८८), "भूयभाविभा(? भ)**वमाण**-भाविही" (कुप्र ४३७) । संकृ—**भविअ, भवित्ता, भवित्ताणं**, (अभि ५७; कप्प, भग, पि ५८३), **भइ** (अप); (पिंग) । कृ—**भवियव्व**, (गाया १, १, सुर ४, २०७, उव; भग, सुपा १६४) । देखो **भव्व** ।

भव पुं [**भव**] १ संसार; (ठा ३, १; उवा; भग, विपा २, १; कुमा, जी ४१) । २ संसार का कारण; (सम्म १) । ३ जन्म, उत्पत्ति, (ठा ४, ३) । ४ नरकादि योनि, जन्म-स्थान, (आचा; ठा २, ३; ४, ३) । ५ महादेव, शिव, (पाअ) । ६ वि. होने वाला, भावी; (ठा १) । ७ उत्पन्न, "कणयपुरं नामेणं तत्थ भवो इह महाभाग ! " (सुपा ५८४) । ८ न. देव-विमान-विशेष, (सम २) । °जिण वि [°जिन] रागादि को जीतने वाला, "सासणं जिणाणं भवजिणाणं" (सम्म १) । °ट्ठिइ स्त्री [°स्थिति] १ देव आदि योनि में उत्पत्ति

की काल-मर्यादा; (ठा २, ३)। २ संसार में अवस्थान, (पंचा १)। °त्थ वि [°स्थ] संसार में स्थित; (ठा २, १)। °त्थकेवलि वि [°स्थकेवलिन्] जीवन्मुक्त, (सम्म ८६)। °धारणिज्ज न [°धारणीय] जीवन-पर्यन्त संसार में धारण करने योग्य शरीर; (भग; इक)। °पच्चइय वि [°प्रत्ययिक] १ नरकादि-योनि-हेतुक; २ न. अवधिज्ञान का एक भेद; (ठा २, १; सम १४५)। °भूइ पुं [°भूति] संस्कृत का एक प्रसिद्ध कवि; (गउड)। °सिद्धिय, °सिद्धीय वि [°सिद्धिक] उसी जन्म में या बाद के किसी जन्म में मुक्त होने वाला, मुक्ति-गामी; (सम २; पण्ण १८; भग; विस १२३०; जीवस ७५; श्रावक ७३; ठा १, विसे १२२६)। °ाभिणंदि, °ाभिनंदि, °ाहिनंदि वि [°ाभिनन्दिन्] संसार को पसंद करने वाला, संसार को अच्छा मानने वाला; (राज; संबोध ८; ५३)। °ोवग्गाहि न [°ोपग्राहिन्] कर्म-विशेष; (धर्मसं १२६१)।

भव देखो भव्व, (कम्म ४, ६)।

भव, भवंत स [भवत्] तुम, आप; (कुमा; हे २, १७४)।

भवंत देखो भव=भू।

भवँ (अप) भम=भ्रम्। भवँइ; (सण)। वकृ—भवँत, (भवि)। संकृ—भवँत्तु; (सण)।

भवँण (अप) देखो भमण; (भवि)।

भवण न [भवन] १ उत्पत्ति, जन्म; (धर्मसं १७२)। २ गृह, मकान, वसति; (पाअ; कुमा)। ३ असुरकुमार आदि देवों का विमान, (पण्ण २)। ४ सत्ता; (विसे ६६)। °वइ पुं [°पति] एक देव-जाति; (भग)। °वासि पुं [°वासिन्] वही पूर्वोक्त अर्थ; (ठा १०; औप)। °वासिणी स्त्री [°वासिनी] देवी-विशेष; (पण्ण १७, महा ६८, १२)। °ाहिव पुं [°ाधिप] एक देव-जाति; (सुपा ६२०)।

भवमाण देखो भव=भू।

भवर देखो भमर; (चउ)।

भवाणी स्त्री [भवानी] शिव-पत्नी, पार्वती, (पाअ, समु १५७)। °कंत पुं [°कान्त] महादेव, (पिंग)।

भवारिस वि [भवादृश] तुम्हारे जैसा, आपके तुल्य; (हे १, १४२; चंड; सुपा २७६)।

भवि पुं [भविन्] भव्य जीव, मुक्ति-गामी प्राणी; (भवि)।

भविअ देखो भव=भू।

भविअ वि [भव्य] १ सुन्दर, (कुमा)। २ श्रेष्ठ, उत्तम; (संबोध १)। ३ मुक्ति-योग्य, मुक्ति-गामी, (पण्ण १; उत्त)। ४ भावी, होने वाला, (हे २, १०७; षड्)। देखो भव्व=भव्य।

भविअ वि [भविक] १ मुक्ति-योग्य, मुक्ति-गामी; २ संसारी, संसार में रहने वाला; (सुर ४, ८०)।

°भविअ वि [°भविक] भव-सम्बन्धी; (सण)।

भवित्ती स्त्री [भवित्री] होने वाली; (पिंग)।

भवियव्व देखो भव=भू।

भवियव्वया स्त्री [भवितव्यता] नियति, अवश्यंभाव, (महा)।

भविस (अप) देखो भवीस। °त्त, °यत्त पुं [°दत्त] एक कथा-नायक, (भवि)।

भविस्स पुं [भविष्य] १ भविष्य काल, आगामी समय, (पउम ३५, ४६; पि ५६०)। २ वि. भविष्य काल में होने वाला, भावी; (णाया १, १६—पत्र २१४; पउम ३५, ५६; सुर १, १३५, कप्पू)।

भवीस (अप) ऊपर देखो, (भवि)।

भव्व वि [भव्य] १ सुन्दर, "सव्वं भव्वं करिस्सामि" (सुपा ३३६)। २ उचित, योग्य, (विसे २८; ४४)। ३ श्रेष्ठ, उत्तम, (वज्जा १८)। ४ होता, वर्तमान; "एयं भूयं वा भव्वं वा भविस्सं वा" (णाया १, १६—पत्र २१४; कप्प; विसे १३४२)। ५ भावी, होने वाला; (विसे ५८; पंच २, ८)। ६ मुक्ति-योग्य, मुक्ति-गामी; (विसे १८२२, ३; ४, ५; दं १)। °सिद्धीय देखो भव-सिद्धीय; "पज्जत्तापज्जत्ता सुहुमा किंचहिया भव्वसिद्धीया" (पंच २, ७८)।

भव्व पुं [दे] भागिनेय, भानजा, (दे ६, १००)।

भस सक [भष्] भूँकना, श्वान का बोलना। भसइ; (हे ४, १८६; षड्—पत्र २२२), भसंति, (सिरि ६२२)।

भसग पुं [भसक] एक राज-कुमार, श्रीकृष्ण के बड़े भाई जरत्कुमार का एक पौत्र, (उत्त)।

भसण देखो भिसण। भसणेमि; (पि ५५६)।

भसण न [भषण] १ कुत्ते का शब्द; (श्रा २७)। २ पुं. श्वान, कुत्ता, (पाअ; सिरि ६२२)।

भसणअ (अप) वि [भषितृ] भूँकने वाला; "सुणउ भसणउ" (हे ४, ४४३)।

भसम पुं [भस्मन्] १ ग्रह-विशेष; "भसमग्गहपीडियं इमं तित्थं" (सट्ठि ४२ टी)। २ राख, भभूत; "भसमुद्धूलि-यगत्तो" (महा; सम्मत ७६)। देखो भास=भस्मन्।

भसल देखो **भमर**; (हे १, २४४; २५४; कुमा; सुपा ४; पिंग)।

भसुआ स्त्री [**दे**] शिवा, शृगाली; (दे ६, १०१; पाअ)।

भसुम देखो **भसम**; (प्राकृ ३७)।

भसेल्ल पुं [**दे**] धान्य आदि का तीक्ष्ण अग्र भाग; "सालि-भसेल्लसरिसा से केसा" (उवा)।

भसोल न [**दे. भसोल**] एक नाट्य-विधि, (राज)।

भस्थ (मा) देखो **भट्ट**; (षड्)।

भस्थालय (मा) देखो **भट्टारय**; (षड्)।

भस्स देखो **भंस**=भ्रंश्। भस्सइ; (प्राकृ ७६)। वकृ—**भस्संत**; (काल)।

भस्स पुं [**भस्मन्**] १ ग्रह-विशेष; २ राख; (हे २, ५१)।

भस्सिअ वि [**भस्मित**] जलाकर राख किया हुआ, भस्म किया हुआ; (कुमा)।

भा अक [**भा**] चमकना, दीपना, प्रकाशना। "भा भाजो वा दित्तीए" (विसे ३४४७)। भाइ; (कप्पू), भासि; (गउड)। वकृ—देखो **भंत**=भान्।

भा स्त्री [**भा**] दीप्ति, प्रभा, कान्ति, तेज; (कुमा)। °**मंडल** पु [°**मण्डल**] राजा जनक का पुत्र; (पउम २६, ८७)। °**वलय** न [°**वलय**] जिन-देव का एक महाप्रातिहार्य, पीठ के पीछे रखा जाता दीप्ति-मंडल; (संबोध २; सिरि १७७)।

भा }
भाअ } अक [**भी**] डरना, भय करना। भाइ, भाअइ, भाआमि; (हे ४, ५३; षड्; महा; स्वप्न ८०), भादि (शौ); (प्राकृ ९३), भायइ; (स ए)। भवि—भाइस्सदि, भाइस्सं (शौ); (पि ५३०)। वकृ—**भायंत**, (कुमा)। कृ—**भाइयव्व**; (पगह २, २; स ५६२; सुपा ४१)।

भाअ देखो **भा**=भा। भाअदि (शौ); (प्राकृ ९३)।

भाअ सक [**भायय्**] डराना। भाअइ, भाएइ; (प्राकृ ६४), भाएसि; (कर्पूर २४)। वकृ—**भायमाण**, (सुपा २४८)।

भाअ देखो **भाव**=भावय्। कृ—**भाएअव्व**; (नव २५)।

भाअ पु [**भाग**] १ योग्य स्थान; २ एक देश; (से १३, ६)। ३ अंश, विभाग, हिस्सा; (पाअ; सुपा ४०७; पव—गाथा ३०; उवा)। ४ भाग्य, नसीव; (सार्ध ८०)। °**धेअ** °**हेअ** पुन [°**धेय**] १ भाग्य, नसीव; (से ११, ८५; स्वप्न ५१; हम्मीर १४; अभि १९७)। २ कर, राज-देय; ३ दायाद, भागीदार, "भाअहेओ, भाअहेअं" (प्राकृ ८८; नाट—चैत ६०)। देखो **भाग**।

भाअ पुं [**दे**] ज्येष्ठ भगिनी का पति; (दे ६, १०२)।

भाअ देखो **भाव**; (भवि)।

भाआव देखो **भाअ**=भायय्। भाआवेइ; (प्राकृ ६४)।

भाइ देखो **भागि**; "सारिच्छ बंधवहमरणभाइणो जिण ण हुंति तइ दिट्ठे" (धण ३२; उप ६८६ टी)।

भाइ }
भाइअ } पुं [**भ्रातृ**] भाई, बन्धु; (उप ५१६; महा; आवम)। °**बीया** स्त्री [°**द्वितीया**] पर्व-विशेष, कार्तिक शुक्ल द्वितीया तिथि; (ती १६)। °**सुअ** पु [°**सुत**] भतीजा; (सुपा ४७०)। देखो **भाउ**।

भाइअ वि [**भाजित**] १ विभक्त किया हुआ, बाँटा हुआ; (पिंड २०८)। २ खण्डित; (पच २, १०)।

भाइअ वि [**भीत**] १ डरा हुआ; २ न. डर, भय; (हे ४,५३)।

भाइणिज्ज }
भाइणेअ }
भाइणेज्ज } पुंस्त्री [**भागिनेय**] भगिनी-पुत्र, बहिन का लड़का, भानजा; (धम्म १२ टी; नाट—रत्ना ८५; स २७०; गाया १, ८—पत्र १३२; पउम ६६, ३६; कुप्र ४८०; महा)। स्त्री—°**ज्जी**; (पउम १७, ११२)।

भाइयव्व देखो **भा**=भी।

भाइर वि [**भीरु**] डरपोक; (दे ६, १०४)।

भाइल्ल पुं [**दे**] हालिक, कर्षक, कृषीवल; (दे ६, १०४)।

भाइल्ल वि [**भागिन्, °क**] भागीदार, साझीदार, अंश-ग्राही; (सूअ २, २, ६३; पगह १, २; ठा ३, १—पत्र ११३; णाया १, १४)। देखो **भागि**।

भाइहंड न [**दे. भ्रातृभाण्ड**] भाई, बहिन आदि स्वजन; गुजराती में 'सॉवट'; (कुप्र १५६)।

भाईरही स्त्री [**भागीरथी**] गंगा नदी; (गउड; हे ४, ३४७; नाट—विक्र २८)।

भाउ }
भाउअ } पुं [**भ्रातृ**] भाई, बन्धु; (महा; सुर ३, ८८; पि ५५; हे १, १३१; उत्र)। °**जाया**, °**ज्जाइया** स्त्री [°**जाया**] भोजाई, भाई की स्त्री; (दे ६, १०३; सुपा २६४)।

भाउअ देखो **भाअ**=(दे); (दे ६, १०२ टी)।

भाउअ न [**दे**] आषाढ मास में मनाया जाता गौरी—पार्वती—का एक उत्सव; (दे ६, १०३)।

भाउग देखो **भाउ**; (उप १४९ टी; महा)।

भाउज्जा स्त्री [**दे**] भोजाई, भाई की पत्नी; (दे ६, १०३)।

भाउराअण पुं [**भागुरायण**] व्यक्ति-वाचक नाम; (मुद्रा २२३) ।

भाएअव्व देखो **भाअ**=भावय् ।

भाग पुं [**भाग**] १ अंश, हिस्सा; (कुमा; जी २७; दे १, १६७) । २ अचिन्त्य शक्ति, प्रभाव, माहात्म्य; "भागोचिंता सत्ती स महाभागो महप्पभावो त्ति" (विसे १०५८) । ३ पूजा, भजन; (सूअ १, ८, २२) । ४ भाग्य, नसीब; "धन्ना कयपुन्ना हं महंतभागोदओवि मह अत्थि" (सिरि ८२३) । ५ प्रकार, भङ्गी; (राज) । ६ अवकाश; (सुज्ज १०, ३—पत्र १०४) । °**धेअ**, °**धेज्ज**, °**हेअ** देखो **भाअ-हेअ**; (पउम ६, ५७; २८, ८६; स १२; सुर १४, ६; पाअ) । देखो **भाअ**=भाग ।

भागवय वि [**भागवत**] १ भगवान् से संबन्ध रखने वाला; २ भगवान् का भक्त; (धर्मसं ३१२) । ३ न. ग्रन्थ-विशेष; (णंदि) ।

भागि वि [**भागिन्**] १ भजने वाला, सेवन करने वाला; "भग्गस्स भागी" (उव), "किं पुण मरणंपि न मे संजायं मंदभग्गभागिस्स" (सुपा ५४७) । २ भागीदार, साझीदार, अंश-ग्राही; (प्रामा) ।

भागिणेज्ज } **भागिणेय** } देखो **भाइणेज्ज**; (महा; कुप्र ३७१) ।

भागीरही देखो **भाईरही**; (पाअ) ।

भाज अक [**भ्राज्**] चमकना । वकृ—**भाजंत**, **भंत**; (विसे ३४४७) ।

भाड पुंन [**दे**] भाड, वह बड़ा चूल्हा जहां अन्न भुना जाता है, भट्ठी; "जाया भाडसमाणा मग्गा उत्तत्तवालुया अहियं" (धर्मवि १०४; सण) ।

भाडय न [**भाटक**] भाडा, किराया; (सुर ६, १५७) ।

भाडिय वि [**भाटकित**] भाड़े पर लिया हुआ; "वोहित्थं भाडियं वियडं" (सुर १३, ३५) ।

भाडिया } **भाडी** } स्त्री [**भाटिका**, °**टी**] भाड़ा, शुल्क, किराया; "एक्काण देइ भाडिं अन्नाहिं समं रमेइ रयणीए", "विलासिणीए दाऊण इच्छियं भाडिं" (सुपा ३८२; ३८३; उवा) । °**कम्म** न [°**कर्मन्**] बैल, गाड़ी आदि भाड़े पर देने का काम—धन्धा; "भाडियकम्मं" (स ५०; श्रा २२; पडि) ।

भाण देखो **भण**=भण् । संकृ—**भाणिऊण**, **भाणिऊणं**; (पिंड ६१५; उव) । कृ—**भाणियव्व**; (ठा ४, २; सम ८४; भग; उवा; कप्प; औप) ।

भाण देखो **भायण**; (ओघ ६६५; हे १, २६७, कुमा) ।

भाणिअ वि [**भाणित**] १ पढाया हुआ, पाठित, "नाणासत्थाइं भाणिआ" (रयण ६८) । २ कहलाया हुआ; "मयणसिरिनामाए रन्नो भज्जाए भाणिओ मंती" (सुपा ५८७) ।

भाणु पुं [**भानु**] १ सूर्य, रवि ; (पउम ४६; ३६; पुप्फ १६४; सिरि ३२) । २ किरण; (प्रामा) । ३ भगवान् धर्मनाथ का पिता, एक राजा; (सम १५१)। ४ स्त्री. एक इन्द्राणी, शक्र की एक अग्र-महिषी; (पउम १०२,१५६) । °**कण्ण** पुं [°**कर्ण**] रावण का एक अनुज; (पउम ७, ६७) । °**मई** स्त्री [°**मती**] रावण की एक पत्नी; (पउम ७४,१०) । °**मालिणी** [°**मालिनी**] विद्या-विशेष; (पउम ७, १३६) । °**मित्त** पुं [°**मित्र**] उज्जयिनी के राजा बलमित्र का छोटा भाई; (काल; विचार ४६४) । °**वेग** पुं [°**वेग**] एक विद्याधर का नाम; (महा; सण) । °**सिरी** स्त्री [°**श्री**] राजा बलमित्र की बहिन; (काल) ।

भाम देखो **भमाड**=भ्रमय् । भामेइ; (हे ४, ३०) । कवकृ—**भामिज्जंत**; (गा ४५७) । कृ—**भामेयव्व**; (ती ७)।

भामण न [**भ्रमण**] घुमाना, फिराना; (सम्मत्त १७४) ।

भामर न [**भ्रामर**] १ मधु-विशेष, भ्रमरी का बनाया हुआ मधु; (पव ४) । २ पुं. दोधक छन्द का एक भेद; (पिंग) ।

भामरी स्त्री [**भ्रामरी**] १ वीणा-विशेष; (णाया १, १७—पत्र २२६) । २ प्रदक्षिणा; (कप्पू; भवि) ।

भामिअ वि [**भ्रमित**] १ घुमाया हुआ; (से २, ३२) । २ भ्रान्त किया हुआ, भ्रान्त-चित्त किया हुआ; "धत्तूरभामिओ इव" (मन २७; धर्मवि २३) ।

भामिणी स्त्री [**भागिनी**] भाग्य वाली; (हे १, १९०; कुमा)।

भामिणी स्त्री [**भामिनी**] १ कोप-शीला स्त्री; २ स्त्री, महिला; (श्रा १२; सुर १, ७६; सुपा ४७५; सम्मत्त १६३) ।

भाय देखो **भाउ**; (कुमा) ।

भायंत देखो **भा**=भी ।

भायण पुंन [**भाजन**] १ पात्र; २ आधार; ३ योग्य, "भायणा, भायणाइं" (हे १, ३३; २६७), 'ति च्चिय धन्ना ते पुन्नभायणा, ताण जीवियं सहलं" (सुपा ५६७; कुमा) ।

भायणंग पुं [**भाजनाङ्ग**] कल्पवृक्ष की एक जाति, पात्र देने वाला कल्पवृक्ष; (पउम १०२, १२०) ।

भायणिज्ज देखो **भाइणिज्ज**; (धर्मवि १२; काल) ।

भायमाण देखो **भाअ**=भायय् ।

भायर देखो **भाउ**; (कुमा) ।

भायल पु [दे] जात्य अश्व, उत्तम जाति का घोड़ा; (दे ६, १०८; पाअ) ।

भार पुं [भार] १ बोझा, गुरुत्व; (कुमा) । २ भार वाली वस्तु, बोझ वाली चीज; (श्रा ४०) । ३ काम संपादन करने का अधिकार; "भारक्खमेवि पुत्ते जो नियभारं ठवित्तु नियपुत्ते, न य साहेइ सकज्जं" (प्रासू २७) । ४ परिमाण-विशेष; "लाउअवीअं इक्कं नासइ भारं गुडस्स जह सहसा" (प्रासू १५१) । ५ परिग्रह, धन-धान्य आदि का संग्रह; (पराह १, ५) । °ग्गसो अ [°अशस्] भार भार के परिमाण से; "दसद्धवन्नमल्लं कुम्भग्गसो य भारग्गसो य" (णाया १, ८—पत्र १२५) । °वह वि [°वह] बोझा ढोने वाला; (श्रा ४०) । °व्वह वि [°व्वह] वही अर्थ; (पउम ६७, २६) ।

भारई स्त्री [भारती] भाषा, वाणी, वाक्य, वचन; (पाअ) । देखो **भारही** ।

भारदाय } न [भारद्वाज] १ गोत्र-विशेष, जो गोतम गोत्र **भारद्दाय** } की एक शाखा है; (कप्प; सुज्ज १०, १६) । २ पुं. भारद्वाज गोत्र में उत्पन्न; "जे गोयमा ते गग्गा ते भारद्दा (द्दाया), ते अंगिरसा" (ठा ७—पत्र ३९०) । ३ पक्षि-विशेष; (ओघभा ८४) । ४ मुनि-विशेष; (पि २३६; २९८; ३६३) ।

भारव देखो **भार**; (सुपा १४; ३८५) ।

भारह न [भारत] १ भारतवर्ष, भरत-क्षेत्र; (उवा) । "जहा निसंते तवणच्चिमाली पभासई केवलभारहं तु" (दस ९, १, १४) । २ पाण्डव और कौरवों का युद्ध, महाभारत; (पउम १०५, १६) । ३ ग्रन्थ-विशेष, जिसमें पाण्डव-कौरव युद्ध का वर्णन है, व्यास-मुनि-प्रणीत महाभारत; (कुमा; उर ३, ८) । ४ भरत मुनि-प्रणीत नाट्य-शास्त्र; (अणु) । ५ वि. भारतवर्ष-संबन्धी, भारत वर्ष का; (ठा २, ३—पत्र ६९), "तत्थ खलु इमे दुवे सूरिया पन्नत्ता, तं जहा—भारहे चेव सूरिए, एरवए चेव सूरिए" (सुज्ज १, ३) । °खेत्त न [°क्षेत्र] भारत वर्ष; (ठा २, ३ टी—पत्र ७१) ।

भारहिय वि. [भारतीय] भारत-संबन्धी; "जा भारहियकहा इव भीमज्जुणनउलसउणिसोहिल्ला" (सुपा २६०) ।

भारही स्त्री [भारती] १ सरस्वती देवी; (पि २०७) । २ देखो **भारई**; (स ३१९) ।

भारिअ वि [भारिक] भारी, भार वाला, गुरु; (दे ४, २; णाया १, ६—पत्र ११४) ।

भारिअ वि [भारित] १ भार वाला, भारी; (उप पृ १३४)। २ जिस पर भार लादा गया हो वह, भार-युक्त किया गया; (सुख २, १५) ।

भारिआ देखो **भज्जा**; (हे २, १०७; उवा; णाया २) ।

भारिल्ल वि [भारवत्] भारी, बोझ वाला; (धर्मवि १३७)।

भारुंड पुं [भारुण्ड] दो मुँह और एक शरीर वाला पक्षी, पक्षि-विशेष; (कप्प; औप; महा; दे ६, १०८) ।

भाल न [भाल] ललाट; (पाअ; कुमा) ।

भालुंकी [दे] देखो **भल्लुंकी**, (भत्त १६०) ।

भाल्ल पुंन [दे] मदन वेदना, काम-पीड़ा; (संक्षि ४७) ।

भाव सक [भावय्] १ वासित करना, गुणाधान करना । २ चिन्तन करना । भावेइ; (विवे ९८), भाविंति; (पिंड १२६), "भाविज्ज भावणं" (हि १६), भावेसु; (महा) । कर्म—भाविज्जइ; (प्रासू ३७) । वकृ—**भावेंत, भावमाण, भावेमाण**; (सुर ८, १८५; सुपा २६५; उवा) । संकृ—**भावेत्ता, भाविऊण**, (उवा; महा) । कृ—**भावणिज्ज, भावियव्व, भावेयव्व**; (कप्पू; काल; सुर१४, ८४) ।

भाव अक [भास्] १ दिखाना, लगना, मालूम होना । २ पसंद होना, उचित मालूम होना ।

"सो चेव देवलोगो देवसहस्सोवसोहिओ रम्मो ।
तुह विरहियाइ इण्हिं भावइ नरओवमो मज्झ ॥"
(सुर ७, १६) ।

"तं चिय इमं विमाणं रम्मं मणिकणगरयणविच्छुरियं ।
तुमए मुक्कं भावइ घड़ियालयसच्छहं नाह ॥"
(सुर ७, १७) ।

"एम्वहिं राहपओहरहं जं भावइ तं होउ" (हे ४, ४२०)।

भाव पुं [भाव] १ पदार्थ, वस्तु; "भावो वत्थु पयत्थो" (पाअ; विसे ७०; १६९२)। २ अभिप्राय, आशय; (आचा; पंचा १, १; प्रासू ४२) । ३ चित्त-विकार, मानस विकृति; "हावभावपललियविक्खेवविलाससालिणीहिं" (पराह २, ४—पत्र १३२) । ४ जन्म, उत्पत्ति; "पिंडो कज्ज पइसमयभावाउ" (विसे ७१) । ५ पर्याय, धर्म, वस्तु का परिणाम, द्रव्य की पूर्वापर अवस्था; (पराह १, ३; उत्त ३०, २३; विसे ६९; कम्म ४, १; ७०) । ६ धात्वर्थ-युक्त पदार्थ, विवक्षित क्रिया का अनुभव करने वाली वस्तु, पारमार्थिक पदार्थ; (विसे ४९) । ७ परमार्थ, वास्तविक सत्य; (विसे ४९) । ८ स्वभाव, स्वरूप; (अणु; णंदि) । ९ भवन, सत्ता; (विसे

६०; गउड ६७८)। १० ज्ञान, उपयोग; (आचू १; विसे ५०)। ११ चेष्टा; (गाया १, ८)। १२ क्रिया, धात्वर्थ; (अणु)। १३ विधि, कर्तव्योपदेश; "भावाभावमणंता" (भग ४१—पत्र ६७६)। १४ मन का परिणाम; (पंचा २, ३३; उव; कुमा ७, ५५)। १५ अन्तरङ्ग बहुमान, प्रेम, राग; (उव; कुमा ७, ८३; ८५)। १६ भावना, चिन्तन; (गउड १२०४; संबोध २४)। १७ नाटक की भाषा में विविध पदार्थों का चिन्तक पण्डित; (अभि १८२)। १८ आत्मा; (भग १७, ३)। १६ अवस्था, दशा; (कप्पू)। °केउ पुं [°केतु] ज्योतिष्क देव-विशेष, महाग्रह-विशेष; (ठा २, ३)। °त्थ पुं [°र्थ] तात्पर्य, रहस्य; (स ६)। °न्न, °न्नुय वि [°ज्ञ] अभिप्राय को जानने वाला, (आचा; महा)। °पाण पुं [°प्राण] ज्ञान आदि आत्मा का अन्तरङ्ग गुण, (पण्ण १)। °संजय पु [°संयत] सच्चा साधु; (उप ७३२)। °साहु पुं [°साधु] वही अर्थ; (भग)। °ासव पुं [°स्रव] वह आत्म-परिणाम, जिससे कर्म का आगमन हो; "आसवदि जेण कम्मं परिणामेणप्पणो स विण्णेओ भावासवो" (द्रव्य २६)।

भावअ वि [भावक] होने वाला; (प्राकृ ७०)। देखो **भावग**।

भावइआ स्त्री [दे] धार्मिक-गृहिणी; (दे ६, १०४)।

भावग वि [भावक] वासक पदार्थ; गुणाधायक वस्तु; (आचू ३)। देखो **भावअ**।

भावड पु [भावक] स्वनाम-ख्यात एक जैन गृहस्थ; (ती २)।

भावण पुं [भावन] १ स्वनाम-ख्यात एक वणिक्, (पउम ५, ८२)। २ नीचे देखो; (संबोध २४; वि ६)।

भावणा स्त्री [भावना] १ वासना, गुणाधान, संस्कार-करण; (औप)। २ अनुप्रेक्षा, चिन्तन; ३ पर्यालोचन, (ओघभा ३; उव, प्रासू ३७)।

भावि वि [भाविन्] भविष्य में होने वाला, (कुमा; मण)।

भाविअ वि [दे] गृहीत, उपात्त; (दे ६, १०३)।

भाविअ न [भाविक] एक देव-विमान; (सम ३३)।

भाविअ वि [भावित] १ वासित; (पगह २, ५; उत्त १४, ५२, भग; प्रासू ३७)। २ भाव-युक्त, "जिणपवयणतिव्वभावियमइस्स" (उव)। ३ शुद्ध, निर्दोष, (बृह १)। °प्प वि [°त्मन्] १ वासित अन्तःकरण वाला, (औप, गाया १, १)। २ पु मुहूर्त-विशेष, अहोरात्र का तेरहवाँ या अठारहवाँ मुहूर्त; (सुज्ज १०, १३; सम ५१)। °प्पा स्त्री [°त्मा] भगवान् धर्मनाथ की मुख्य शिष्या; (सम १५२)।

भाविंदिअ न [भावेन्द्रिय] उपयोग, ज्ञान; (भग)।

भाविर वि [भाविन्, भवितृ] भविष्य में होने वाला, अवश्यभावी; "अम्हं भाविरदीहरपवासदुहिया मिलाएइ" (सुपा ६), "एत्थंतरम्मि भाविरनियपिउगुरुविरहग्गिदूमियमणेण" (सुपा ७५)।

भाविल्ल वि [भाववत्] भाव-युक्त, "पणवीसं भावणाइं भाविल्लो पंचमहव्वयाईणं" (संबोध २४)।

भाविस्स देखो **भविस्स**; "भाविस्सभूयपभवंतभावआलोयलोयणं विमलं" (सुण ८६)।

भावुक वि [दे] वयस्य, मित्र; (संक्षि ४७)।

भावुग } वि [भावुक] अन्य के संसर्ग की जिस पर असर
भावुय } हो सकती हो वह वस्तु; (ओघ ७७३, संबोध ५४)।

भास सक [भाष्] कहना, बोलना। भासइ, भासंति; (भग; उव)। भवि—भासिस्सामि; (भग)। वकृ—**भासंत, भासमाण**; (औप; भग; विपा १, १)। कवकृ—**भासिज्जमाण**; (भग; सम ६०)। संकृ—**भासित्ता**; (भग)। कृ—**भासिअव्व**, (भग; महा)।

भास अक [भास्] १ शोभना। २ लगना, मालूम होना। ३ प्रकाशना, चमकना। भासइ, (हे ४, २०३), भासए, भासंति, भाससि; (मोह २६; भत्त ११०; सुर ७, १६२)। वकृ—**भासंत**; (अच्चु ५४)।

भास सक [भीषय्] डराना। भासइ; (धात्वा १४७)।

भास पु [भास] १ पक्षि-विशेष; (पगह १, १; दे २, ६२)। २ दीप्ति, प्रकाश; "नावरिज्जइ कयावि। उक्कोसावरणम्मिवि जलयच्छन्नक्कभासो व्व" (विसे ४६८; भवि)।

भास पुं [भस्मन्] १ ग्रह-विशेष, ज्योतिष्क देव-विशेष, (ठा २, ३; विचार ५०७)। २ भस्म, राख, (गाया १, १; पगह २, ५)। °रासि पुं [°राशि] ग्रह-विशेष; (ठा २, ३, कप्प)।

भास न [भाष्य] व्याख्या-विशेष, पद्य-बद्ध टीका; (चैत्य १, उप ३५७ टी; विचार ३५२; सम्यक्त्वो ११)।

भास° देखो **भासा**; (कुमा)। °ण्णु वि [°ज्ञ] भाषा के गुण-दोष का जानकार; (धर्मसं ६२५)। °व वि [°वत्] वही अर्थ, (सूत्र १, १३, १३)।

भासग वि [भाषक] बोलने वाला, वक्ता, प्रतिपादक, (विसे ४१०; पंचा १८, ६; ठा २, २—पत्र ५६)।

भासण न [**भासन**] चमक, दीप्ति, प्रकाश; "वरमल्लिभासणाणं" (औप)।

भासण न [**भाषण**] कथन, प्रतिपादन; (महा)।

भासणया } स्त्री [**भाषणा**] ऊपर देखो; (उप ५१६; **भासणा** } विसे १४७; उत्त)।

भासय देखो **भासग**; (विसे ३७४; पराण १८)।

भासय वि [**भासक**] प्रकाशक; (विसे ११०४)।

भासल वि [**दे**] दीप्त, प्रज्वलित; (दे ६, १०३)।

भासा स्त्री [**भाषा**] १ बोली; "अट्ठारसदेसीभासाविसारए" (औप १०६; कुमा)। २ वाक्य, वाणी, गिरा, वचन; (पाअ)। °**जड्ड** वि [°**जड**] बोलने की शक्ति से रहित, मूक; (आव ४)। °**पज्जत्ति** स्त्री [°**पर्याप्ति**] पुद्गलों को भाषा के रूप में परिणत करने की शक्ति; (भग ६, ४)। °**विजय** पुं [°**विचय**] १ भाषा का निर्णय; २ दृष्टिवाद, बारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ; (ठा १०—पत्र ४६१)। °**विजय** पुं [°**विजय**] दृष्टिवाद; (ठा १०)। °**समिअ** वि [°**समित**] वाणी का संयम वाला; (भग)। °**समिइ** स्त्री [°**समिति**] वाणी का संयम; (सम १०)। देखो **भास**°।

भासा स्त्री [**भास्**] प्रकाश, आलोक, दीप्ति; (पाअ)।

भासि वि [**भाषिन्**] भाषक, वक्ता; (धर्मवि ५२; भवि)।

भासिअ वि [**भाषित**] १ उक्त, कथित, प्रतिपादित; (भग; आचा; सण; भवि)। २ न. भाषण, उक्ति; (आवम)।

भासिअ वि [**भाषिन्**, °**क**] वक्ता, बोलने वाला; (भवि)।

भासिअ वि [**दे**] दत्त, अर्पित; (दे ६, १०४)।

भासिअ वि [**भासित**] प्रकाश वाला, प्रकाश-युक्त; (निचू १३)।

भासिर वि [**भाषितृ**] वक्ता; (सुपा ५३८; सण)।

भासिर वि [**भास्वर**] दीप्र, देदीप्यमान; (कुमा)।

भासिल्ल वि [**भाषावत्**] भाषा-युक्त, वाणी-युक्त; (उत्त २७, ११)।

भासीकय वि [**भस्मीकृत**] जलाकर राख किया हुआ; (उप ६८६ टी)।

भासुंड अक [**दे**] बाहर निकलना। भासुंडइ; (दे ६, १०३ टी)।

भासुंडि स्त्री [**दे**] निःसरण, निर्गमन; (दे ६, १०३)।

भासुर वि [**भासुर**] १ भास्वर, दीप्तिमान्, चमकता; (सुर ६, १८४; सुपा ३३; २७२. कुप्र ६०; धर्मसं १३२६ टी)। २ घोर, भीषण, भयंकर; "घोरा दारुणभासुरभइरवलल्लक्कभीमभीसणया" (पाअ)। ३ एक देव-विमान; (सम १३)। ४ छन्द-विशेष; (अजि ३०)।

भासुरिअ वि [**भासुरित**] देदीप्यमान किया हुआ; "भासुरभूसणभासुरिअंगा" (अजि २३)।

भि देखो °**भि**; (आचा)।

भिअप्पइ } **भिअप्फइ** } देखो **बहस्सइ**; (पि २१२; षड्)। **भिअस्सइ** }

भिइ देखो **भइ**=भृति; (राज)।

भिउ पु [**भृगु**] १ स्वनाम-ख्यात ऋषि-विशेष; २ पर्वत-सानु; ३ शुक्र-ग्रह; ४ महादेव, शिव; ५ जमदग्नि; ६ ऊँचा प्रदेश; ७ भृगु का वंशज; ८ रेखा, राजि; (हे १, १२८; षड्)। °**कच्छ** न [°**कच्छ**] नगर-विशेष, भडौच; (राज)।

भिउड न [**दे**] अंग-विशेष, शरीर का अवयव-विशेष (?), "मुत्तूण तुरगभिउडे खग्गं पिट्ठम्मि उत्तरीयं च", "तो तत्थेव य खग्गं भिउडाओ गिण्हिऊण चाणक्को" (धर्मवि ४१)।

भिउडि स्त्री [**भृकुटि**] १ भौं-भंग, भौं का विकार; (विपा १, ३; ४)। २ पुं. भगवान् नमिनाथ का शासन-देव; (संति ८)।

भिउडिय वि [**भृकुटित**] जिसने भौं चढ़ाई हो वह; (णाया १, ८)।

भिउडी देखो **भिउडि**; (कुमा)।

भिउर वि [**भिदुर**] विनश्वर; (आचा)।

भिउव्व पुं [**भार्गव**] भृगु मुनि का वंशज, परिव्राजक-विशेष; (औप)।

भिंग वि [**दे**] कृष्ण, काला; (दे ६, १०४)। २ नील, हरा; ३ स्वीकृत; (षड्)।

भिंग पुं [**भृङ्ग**] १ भ्रमर, मधुकर; (पउम ३३, १४८; पाअ)। २ पक्षि-विशेष; (पराण १७—पत्र ५२६)। ३ कीट-विशेष; ४ विदलित अंगार, कोयला; (णाया १, १—पत्र २४; औप)। ५ कल्पवृक्ष की एकजाति; (सम १७)। ६ छन्द-विशेष; (पिंग)। ७ जार, उपपति; ८ भाँगरा का पेड़; ९ पात्र-विशेष, झारी; (हे १, १२८)। °**णिभा** स्त्री [°**निभा**] एक पुष्करिणी; (इक)। °**प्पभा** स्त्री [°**प्रभा**] पुष्करिणी-विशेष; (ज ४)।

भिंगा स्त्री [**भृङ्गा**] एक पुष्करिणी, वापी-विशेष, (इक)।

भिंगार) **भिंगारक** } **भिंगारग**) पुं [**भृङ्गार, °क**] १ भाजन-विशेष, झारी; (पराह १, ४; औप)। २ पक्षि-विशेष, "भिंगार-रवंतभेरवरवे" (गाया १, १—पत्र ६५), "भिंगारकदीणकंदियरवेसु" (गाया १, १—पत्र ६३; पराह १, १; औप) । ३ स्वर्ण-मय जल-पात्र; (हे १, १२८; जं २) ।

भिंगारी स्त्री [**दे. भृङ्गारी**] १ कीट-विशेष, चिरी, झिल्ली (दे ६, १०५; पात्र; उत्त ३६, १४८) । २ मशक, डाँस; (दे ६, १०५) ।

भिंजा स्त्री [**दे**] अभ्यंग, मालिश, (सूत्र १, ४, २, ८)।

भिंटिया स्त्री [**दे वृन्ताकी**] भंटा का गाछ; (उप १०३१ टी) ।

भिंडिमाल) **भिंडिवाल** } पुं [**भिन्दिपाल**] शस्त्र-विशेष, (पराह १, १; औप; पउम ८, १२०; स ३८४; कुमा; हे २, ३८, प्राप्र.)।

भिंद सक [**भिद्**] १ भेदना, तोड़ना। २ विभाग करना। भिंदइ, भिंदए, (महा; पड्)। भवि—भेच्छं, भिंदिस्संति; (हे ३, १७१; कुमा; पि ५३२)। कर्म—भिज्जइ, (आचा; पि ५४६)। वकृ—**भिंदंत, भिंदमाण**; (ग १३६, पि ५०६)। कवकृ—**भिज्जंत, भिज्जमाण**; (से ५, ६५; ठा २, ३; श्रा ६; भग; उवा; गाया १, ६: विसे ३११)। संकृ—**भित्तूण, भित्तूणं, भिंदिअ, भिंदिऊण, भेत्तुआण, भेत्तण**; (रंभा; उत्त ६, २२; नाट—विक्र १७; पि ५८६; हे २, १४६; महा)। हेकृ—**भिंदित्तए, भित्तुं, भेत्तुं**; (पि ५७८; कप्प, पि ५७४)। कृ—**भिंदियव्व**, (पराह २, १), **भेअव्व**; (से १०, २६)।

भिंदण न [**भेदन**] खगडन, विच्छेद; (सुर १६, ५६)।

भिंदणया स्त्री [**भेदना**] ऊपर देखो; (सुर १, ७२)।

भिंदिवाल (शौ) देखो **भिंडिवाल**, (प्राकृ ८७)।

भिंभल देखो **भिब्भल**; (सुपा ८३; ३६५; पि २०६)।

भिंभलिय वि [**विह्वलित**] विह्वल किया हुआ, "ता गज्जइ मायंगो विंझवणे य(? म)यपवाहभिंभलिओ" (धर्मवि ८०)।

भिंभसार पु [**भिम्भसार**] देखो **भंभसार**, (औप)।

भिंभा स्त्री [**भिम्भा**] देखो **भंभा**, (राज)।

भिंभिसार पुं [**भिम्भिसार**] देखो **भंभसार**, (ठा ६—पत्र ४५८, पि २०६)।

भिंभी स्त्री [**भिम्भी**] वाद्य-विशेष, ढक्का, (ठा ६ टी—पत्र ४६१)।

भिक्ख सक [**भिक्ष्**] भीख माँगना, याचना करना। भिक्खइ, (संबोध ३१)। वकृ—**भिक्खमाण**; (उत्त १४, २६)।

भिक्ख न [**भैक्ष**] १ भिक्षा, भीख; २ भिक्षा-समूह, (ओघभा २१६; २१७)। "न कज्जं मम भिक्खेण" (उत्त २५, ४०)। **°जीविअ** वि [**°जीविक**] भीख से निर्वाह करने वाला, भिखमंगा; (प्राकृ ६; पि ८४)।

भिक्ख देखो **भिक्खा**, (पि ६७, कुप्र १८३; धर्मवि ३८)।

भिक्खण न [**भिक्षण**] भीख माँगना, याचना, (धर्मसं १०००)।

भिक्खा स्त्री [**भिक्षा**] भीख, याचना, (उव; सुपा २७७; पिंग)। **°यर** वि [**°चर**] भिक्षुक, (कप्प)। **°यरिया** स्त्री [**°चर्या**] भिक्षा के लिये पर्यटन; (आचा; औप, ओघभा ७४, उवा)। **°लाभिय** पुं [**°लाभिक**] भिक्षुक-विशेष; (औप)।

भिक्खाग) **भिक्खाय** } वि [**भिक्षाक**] भिक्षा माँगने वाला, भिक्षा से शरीर-निर्वाह करने वाला, (ठा ४, १—पत्र १८५, आचा २, १, ११, १; उत्त ५, २८, कप्प)।

भिक्खु पुंस्त्री [**भिक्षु**] १ भीख से निर्वाह करने वाला, साधु, मुनि, सन्यासी, ऋषि, (आचा, सम २१; कुमा; सुपा ३४६, प्रासू १६६), "भिक्खणसीलो य तओ भिक्खु त्ति निद्दिसिआ समए" (धर्मसं १०००)। २ बौद्ध संन्यासी, "कम्मं चयं न गच्छइ चउव्विहं भिक्खुसमयम्मि" (सूअनि ३१)। स्त्री—**°णी**; (आचा २, ५, १, १; गच्छ ३, ३१; कुप्र १८८)। **°पडिमा** स्त्री [**°प्रतिमा**] साधु का अभिग्रह-विशेष, मुनि का व्रत-विशेष; (भग, औप)। **°पडिया** स्त्री [**°प्रतिज्ञा**] साधु का उद्देश, साधु के निमित्त; "से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से जं पुण वत्थं जाणेज्जा असंजए भिक्खुपडियाए कीयं वा धोय वा रत्त वा" (आचा २, ५, १, ४)।

भिक्खुंड देखो **भिच्छुंड**, (राज)।

भिखारि (अप) वि [**भिक्षाकारिन्**] भिखारी, भीख माँगने वाला, (पिंग)।

भिगु देखो **भिउ**, (पउम ४, ८६; ओघ ३७४)।

भिगुडि देखो **भिउडि**; (पि १२४)।

भिच्च पु [**भृत्य**] १ दास, सेवक, नौकर; (पाअ, सुर २, ६२, सुपा ३०७)। २ वि. अच्छी तरह पोषण करने वाला; (विपा १, ७—पत्र ७५)। ३ वि. भरणीय, पोषणीय, (पगह १, २—पत्र ४०)। **°भाव** पुं [**°भाव**] नौकरी, (सुर ४, १५६)।

भिच्छ° देखो **भिक्ख°**; (पि ६७)।
भिच्छा देखो **भिक्खा**; (गा १६२)।
भिच्छुंड वि [दे. भिक्षोण्ड] १ भिखारी, भिक्षा से निर्वाह करने वाला; २ पुं बौद्ध साधु; (गाया १. १५—पत्र १६३)।
भिज्ज न [भेद्य] कर-विशेष, दण्ड-विशेष; (विपा १, १ —पत्र ११)।
भिज्जा देखो **भिज्झा**; (ठा २, ३—पत्र ७१; सम ७१)।
भिज्जिय देखो **भिज्झिय**; (भग)।
भिज्झा स्त्री [अभिध्या] गृद्धि, लोभ, (कप्प)।
भिज्झिय वि [अभिध्यित] लोभ का विषय, सुन्दर; (भग ६, ३—पत्र २५३)।
भिट्ट सक [दे] भेटना। कर्म—"बहुविहभिट्टणएहिं भिट्टिज्जइ लक्खमाणेहिं" (सिरि ६०१)।
भिट्टण न [दे] भेंट, उपहार; गुजराती में 'भेटणु', (सिरि ७५६; ६०१)।
भिट्टा स्त्री [दे] ऊपर देखो; (सिरि ३६२)।
भिड सक [दे] भिडना—१ मिलना, सटना, सट जाना; २ लडना, मुठभेड करना। भिडइ; (भवि), भिडंति; (सिरि ४५०)। वकृ—**भिडंत**, (उप ३२० टी; भवि)।
भिडण न [दे] लड़ाई, मुठभेड; "सोंडीरसुहडभिडणिक्कलंपडं" (सुपा ५६६)।
भिडिय वि [दे] जिसने मुठभेड की हो वह, लड़ा हुआ; (महा; भवि)।
भिणासि पुं [दे] पक्षि-विशेष; (पण्ह १, १—पत्र ८)।
भिण्ण देखो **भिन्न**; (गउड; नाट—चैत ३४)। °**मरट्ठ** (अप) पुं [°महाराष्ट्र] छन्द का एक भेद; (पिंग)।
भित्त देखो **भिच्च**, (संक्षि ५)।
भित्तग } न [भित्तक] १ खण्ड, टुकडा; २ आधा हिस्सा;
भित्तय } (आचा २, ७, २. ८, ६; ७)।
भित्तर न [दे] १ द्वार, दरवाजा; (दे ६, १०५)। २ भीतर, अंदर; (पिंग)।
भित्ति स्त्री [भित्ति] भींत, (गउड; कुमा)। °**संध** न [°सन्ध] भीत का संधान; "जाएवि भित्तिसंधं खणियं खत्तं मुत्तिव्वसल्लेणं" (महा)।
भित्तिरुल्ल वि [दे] टंक से छिन्न, (दे ६, १०५)।
भित्तिल न [भित्तिल] एक देव-विमान; (सम ३८)।
भित्तु वि [भेत्तृ] भेदन करने वाला; (पव २)।
भित्तुं } देखो **भिंद**।
भित्तूण }
भिद देखो **भिंद**। भिदंति; (आचा २, १, ६, ६)। भवि—भिदिस्संति, (आचा २, १, ६, ६, पि ५३२)।
भिन्न वि [भिन्न] १ विदारित, खण्डित; (णाया १, ८; उव; भग; पाअ; महा)। २ प्रस्फुटित, स्फोटित; (ठा ४, ४; पण्ह २,१)। ३ अन्य, विसदृश, विलक्षण; (ठा १०)। ४ परित्यक्त, उज्झित, "जीवजढं भावओ भिन्नं" (बृह १; आव ४)। ५ ऊन, कम, न्यून; (भग)। °**कहा** स्त्री [°कथा] मैथुन-संबद्ध बात, रहस्यालाप; (ओघ ६६)। °**पिंडवाइय** वि [°पिण्डपातिक] स्फोटित अन्न आदि लेने की प्रतिज्ञा वाला; (पण्ह २, १—पत्र १००)। °**मास** पु [°मास] पचीस दिन का महीना; (जीत)। °**मुहुत्त** न [°मुहूर्त्त] अन्तर्मुहूर्त, न्यून मुहूर्त, (भग)।
भिप्फ पुं [भीष्म] १ स्वनाम-ख्यात एक कुरुवंशीय क्षत्रिय, गांगेय, भीष्म पितामह; २ साहित्य-प्रसिद्ध रस-विशेष, भयानक रस; ३ वि. भय-जनक, भयंकर; (हे २, ५४; प्राकृ ६५; कुमा)।
भिब्भल वि [विह्वल] व्याकुल; (हे २, ५८; ६०; प्राकृ २४, कुमा, वज्जा १५६)।
भिब्भलण न [विह्वलन] व्याकुल बनाना; (कुमा)।
भिब्भिस अक [भास् + यङ्=बाभास्य] अत्यन्त दीपना। वकृ—**भिब्भसमाण, भिब्भिसमीण**; (णाया १. १—पत्र ३८, राय; पि ५५६)।
भिमोर पुं [दे. हिमोर] हिम का मध्य भाग(?); (हे २, १७४)।
भियग देखो **भयग**; (सण)।
भिलिंग सक [दे] अभ्यङ्ग करना, मालिश करना। भिलिंगेज्ज; (आचा २, १३, २; ४; ५; निचू १७)। वकृ—**भिलिंगंत**, (निचू १७)। प्रयो—भिलिंगावेज्ज, (निचू १७), वकृ—**भिलिंगात**; (निचू १७)।
भिलिंग } पु [दे] धान्य-विशेष, मसूर; (कप्प; पंचा १०,
भिलिंगु } ७३)।
भिलिंज पुं [दे] अभ्यंग; (सूअ १, ४, २, ८ टी)।
भिलुगा स्त्री [दे] फटी हुई जमीन, भूमि की रेखा—फाट, (आचा २, १, ५, ५)।
भिल्ल पुं [भिल्ल] १ अनार्य देश-विशेष, (पव २७४)। २ एक अनार्य जाति; (सुर २, ४; ६, ३४; महा)।

भिल्लमाल पुं [भिल्लमाल] स्वनाम-ख्यात एक प्रसिद्ध क्षत्रिय-वंश; (विवे ११४)।
भिल्लायई स्त्री [भल्लातकी] भिलावाँ का पेड़, (उप १०३१ टी)।
भिल्लिअ वि [भिलित] खण्डित, तोड़ा हुआ, "पंचमहव्वय-तुंगो पायारो भिल्लिओ जेणं" (उव)।
भिस देखो **भास**=भास्। भिसइ; (हे ४, २०३; षड्)। वकृ—**भिसंत, भिसमाण, भिसमीण**; (पउम ३, १२७; ७५, ३७; णाया १, १; औप, कुमा, णाया १, १; पि ५६२)।
भिस सक [प्लुष्] जलाना; (प्राकृ ६५; धात्वा १४७)।
भिस सक [भायय्] डराना। भिसइ. भिसेइ; (प्राकृ ६४)।
भिस न [भृश] १ अत्यन्त, अतिशय, अतिशयित, "गलंत-भिसभिन्नदेह व्व" (पिंड ५८३; उप ३२० टी; सत्त ६१; भवि)।
भिस देखो **बिस**, (प्राकृ १५; पगण १; सूअ २, ३, १८)। °**कंदय** पुं [°कन्दक] एक प्रकार की खाने की मिष्ट वस्तु; (पगण १७—पत्र ५३३)। °**मुणाली** स्त्री [°मृणाली] कमलिनी, (पगण १)।
भिसअ पुं [भिषज्] १ वैद्य, चिकित्सक; (हे १, १८; कुमा)। २ भगवान् मल्लिनाथ का प्रथम गणधर; (पव ८)।
भिसंत देखो **भिस**=भास्।
भिसंत न [दे] अनर्थ; (दे ६, १०५)।
भिसग देखो **भिसअ**; (णाया १, १—पत्र १५४)।
भिसण सक [दे] फेंकना, डालना। भिसणेमि, (गा ३१२)।
भिसमाण देखो **भिस**=भास्।
भिसरा स्त्री [दे] मत्स्य पकडने का जाल-विशेष; (विपा १, ८—पत्र ८५)।
भिसाव सक [भायय्] डराना। भिसावेइ. (प्राकृ ६४)।
भिसिआ } स्त्री [दे. वृषिका] आसन-विशेष, ऋषि का
भिसिगा } आसन, (दे ६, १०५, भग; कुप्र ३७२, णाया १, ८, उप ६४८ टी; औप, सूअ २, २, ४८)।
भिसिण देखो **भिसण**। भिसणेमि; (गा ३१२ अ)।
भिसिणी स्त्री [बिसिनी] कमलिनी, पद्मिनी, (हे १, २३८, कुमा; गा ३०८, काप्र ३१, महा; पाअ)।
भिसी स्त्री [वृषी] देखो **भिसिआ**; (पाअ)।
भिसोल न [दे] नृत्य-विशेष; (ठा ४, ४—पत्र २८५)।

भिह } अक [भी] डरना। भिहइ, (षड्)। कृ—**भेअव्व**;
भी } (सुपा ५८४)।
भी स्त्री [भी] १ भय; "नो दंडभी दंडं समारभेज्जासि" (आचा)। २ वि डरने वाला, भीरु, (आचा)।
भीअ वि [भीत] डरा हुआ; (हे २, १९३, ४, ५३, पाअ; कुमा; उवा)। °**भीय** वि [°भीत] अत्यन्त डरा हुआ; (सुर ३, १६५)।
भीइ स्त्री [भीति] डर, भय; (सुर २, २३७; सिरि ८३६; प्रासू २४)।
भीइअ वि [भीत] डरा हुआ; (उप ६४०)।
भीइर वि [भेतृ] डरने वाला; "ता मरणभीइरं विसज्जेह मं, पव्वइस्सं" (वसु)।
भीड [दे] देखो **भिड**। संकृ—**भीडिवि** (अप); (भवि)।
भीडिअ [दे] देखो **भिडिय**, (सुपा २९२)।
भीतर [दे] देखो **भित्तर**; (कुमा)।
भीम वि [भीम] १ भयंकर, भीषण; (पाअ; उव, पगह १, १; जी ४४, प्रासू १४४)। २ पुं. एक पाण्डव, भीमसेन; (गा ४४३)। ३ राक्षस-निकाय का दक्षिण दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५)। ४ भारतवर्ष का भावी सातवाँ प्रतिवासुदेव; "अपराइए य भीमे महाभीमे य सुग्गीवे" (सम १५४)। ५ राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६३)। ६ सगर चक्रवर्ती का एक पुत्र, (पउम ५, १७५)। ७ दमयंती का पिता; (कुप्र ४८)। ८ एक कुल-पुत्र; (कुप्र १२२)। ९ गुजरात का चौलुक्य-वंशीय एक राजा—भीमदेव, (कुप्र ४)। १० हस्तिनापुर नगर का एक कूटग्राह—राज-पुरुष; (विपा १, २)। °**एव** पुं [°देव] गुजरात का एक चौलुक्य राजा; (कुप्र ५)। °**कुमार** पुं [°कुमार] एक राज-पुत्र; (धम्म)। °**प्पभ** पुं [°प्रभ] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २५९)। °**रह** पुं [°रथ] एक राजा, दमयंती का पिता; (कुप्र ४८)। °**सेण** पुं [°सेन] १ एक पाण्डव, भीम; (णाया १, १६)। २ एक कुलकर पुरुष; (सम १५०)। °**ावलि** पुं [°ावलि] अंग-विद्या का जानकार पहला रुद्र पुरुष; (विचार ४७३)। °**ासुर** न [°ासुर] शास्त्र-विशेष; (अणु)।
भीरु } वि [भीरु, °क] डरपोक; (चेइअ ६६; गउड,
भीरुअ } उत्त २७, १०; अभि ८२)।

भीस सक [भीषय्] डराना। भीसइ, (धात्वा १४७), भीसेइ; (प्राकृ ६४)।

भीसण वि [भीषण] भयंकर, भय-जनक, (जी ४६; सण; पात्र)।

भीसय देखो **भेसग**; (राज)।

भीसाव देखो **भीस**। भीसावेइ; (धात्वा १४७)।

भीसिद (शौ) वि [भीषित] भय-भीत किया हुआ, डराया हुआ; (नाट—माल ५६)।

भीह अक [भी] डरना। भीहइ, (प्राकृ ६४)।

भुअ देखो **भुंज**। भुअइ, भुअए, (षड्)।

भुअ न [दे] भूर्ज-पत्र, वृक्ष-विशेष की छाल;(दे ६, १०६)। °**रुक्ख** पुं [°वृक्ष] वृक्ष-विशेष; भूर्जपत्र का पेड़; (पण्ण १—पत्र ३४)। °**वत्त** न [°पत्र] भोजपत्र; (गउड ६४१)।

भुअ पुंस्त्री [भुज] १ हाथ, कर; (कुमा)। २ गणित-प्रसिद्ध रेखा-विशेष, (हे १, ४)। स्त्री—°**आ**; (हे १, ४; पिंग; गउड; से १, ३)। °**परिसप्प** पुंस्त्री [°परिसर्प] हाथ से चलने वाला प्राणी, हाथ से चलने वाली सर्प-जाति; (जी २१; पण्ण १, जीव २)। स्त्री—°**प्पिणी**; (जीव २)। °**मूल** न [°मूल] कक्षा, काँख, (पात्र)। °**मोयग** पुं [°मोचक] रत्न की एक जाति, (भग; औप; उत्त ३६, ७६; तंदु २०)। °**सप्प** पु [°सर्प] देखो °**परिसप्प**, (पव १५०)। °**ाल** वि [°वत्] वलवान् हाथ वाला; (सिरि ७६६)।

भुअअ देखो **भुअग**; (गउड; पिंग; से ७, ३६; पात्र)।

भुअइंद पुं [भुजगेन्द्र] १ श्रेष्ठ सर्प; (गउड)। २ शेष नाग, वासुकि, (अच्चु २७)। °**वुरेस** पुं [°पुरेश] श्रीकृष्ण; (अच्चु २७)।

भुअईसर } पुं [भुजगेश्वर] ऊपर देखो, (पण्ह १, ४—पत्र ७८; अच्चु ३६)। °**णअरणाह** पु [°नगरनाथ] श्रीकृष्ण; (अच्चु ३६)।
भुअएसर }

भुअंग पु [भुजंग] १ सर्प, साँप, (से ५, ६०, गा ६४०; गउड; सुर २, २४५; उव, महा; पात्र)। २ विट, रंडी-वाज, वेश्या-गामी; (कुमा, वज्जा ११६)। ३ जार, उपपति; (कप्पू)। ४ द्यूतकार, जुआड़ी; (उप पृ ३५२)। ५ चोर, तस्कर; "देव सलोत्तओ चेव मायापओयकुसलो वाणि-ययवेसधारी गहिओ महाभुअंगो" (स ४३०)। ६ वदमाश, ठग; "तावसवेसधारिणो गहियनलियापओगखग्गा विसेसकुमार-संतिया चत्तारि महाभुयंग त्ति" (स ५२४)। °**किंत्ति** स्त्री [°कृत्ति] कंचुक; (गा ६४०)। °**प्पआत** (अप) देखो °**प्पजाय**; (पिंग)। °**प्पजाय** न [°प्रयात] १ सर्प-गति; २ छन्द-विशेष; (भवि)। °**राअ** पुं [°राज] शेष नाग; (वि ८२)। °**वइ** पुं [°पति] शेष नाग; (गउड)। °**ापआअ** (अप) देखो °**प्पजाय**; (पिंग)।

भुअंगम पु [भुजंगम] १ सर्प, साँप; (गउड १७८; पिंग)। २ स्वनाम-ख्यात एक चोर; (महा)।

भुअंगिणी } स्त्री [भुजङ्गी] १ विद्या-विशेष; (पउम ७, १४०)। २ नागिन; (सुपा १८१; भत्त ११७)।
भुअंगी }

भुअग पुं [भुजग] १ सर्प, साँप, (सुर २, २३६; महा; जी ३१)। २ एक देव-जाति, नाग-कुमार देव; (पण्ह १, ४)। ३ वानव्यंतर देवों की एक जाति, महोरग; (इक)। ४ रंडीवाज, "मं कुट्टखित्र भुयग तुमं पयारेसि अलियवयणेहिं" (कुप्र ३०६)। ५ वि भोगी, विलासी; (णाया १, १ टी—पत्र ४; औप)। °**परिरिंगिअ** न [°परिरिङ्गित] छन्द-विशेष; (अजि १६)। °**वई** स्त्री [°वती] एक इन्द्राणी, अतिकाय-नामक महोरगेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (इक; ठा ४, १; णाया २)। °**वर** पुं [°वर] द्वीप-विशेष; (राज)।

भुअग वि [भोजक] पूजक, सेवा-कारक; (णाया १, १ टी—पत्र ४; औप, अंत)।

भुअगा स्त्री [भुजगा] एक इन्द्राणी, अतिकाय-नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ४, १, णाया २; इक)।

भुअगीसर देखो **भुअईसर**; (तंदु २०)।

भुअण देखो **भुवण**; (चंड; हास्य १२२, पिंग; गउड)।

भुअप्पइ }
भुअप्फइ } देखो **बहस्सइ**, (पि २१२; षड्)।
भुअस्सइ }

भुआ देखो **भुअ**=भुज।

भुइ स्त्री [भृति] १ भरण, २ पोषण; ३ वेतन, ४ मूल्य; (हे १, १३१; षड्)।

भुउडि देखो **भिउडि**, (पि १२४)।

भुंगल न [दे] वाद्य-विशेष; (सिरि ४१२)।

भुंज सक [भुज्] १ भोजन करना। २ पालन करना। ३ भोग करना। ४ अनुभव करना। भुंजइ; (हे ४, ११०; कस; उवा)। भुंजेज्जा; (कप्प)। "सिग्घभुवं भुंजसु सुहेणं" (सिरि १०४४)। भूका—भुंजित्था; (पि ५१७)।

भवि—भुंजिही, भोक्खसि, भोक्खामि, भोक्खसे, भोच्छं; (पि ५३२; कप्प; हे ३, १७१)। कर्म—भुज्जइ, भुंजिज्जइ; (हे ४, २४९)। वकृ—**भुंजंत, भुंजमाण, भुंजेमाण, भुंजाण,** (आचा; कुमा, विपा १, २; सम ३९; कप्प; पि ५०७; धर्मवि १२७)। कवकृ—**भुज्जंत;** (सुपा ३७५)। संकृ—**भुंजिअ, भुंजिआ, भुंजिऊण, भुंजिऊणं, भुंजित्ता, भुंजित्तु, भोच्चा, भोत्तुं, भोत्तूण,** (पि ५९१, सूअ १, ३, ४, २; सण; पि ५८५; उत्त ६, ३; पि ५०७; हे २, १५; कुमा; प्राकृ ३४)। हेकृ—**भुंजित्तए, भोत्तुं, भोत्तए;** (पि ५७८; हे ४, २१२; आचा), **भुंजण;** (अप); (कुमा)। कृ—**भुज्ज, भुंजियव्व, भुंजेयव्व, भोत्तव्व, भुत्तव्व, भोज्ज, भोग्ग;** (तंदु ३३, धर्मवि ४१; उप १३९ टी, आ१६; सुपा ४९५; पिंडभा ४५; सम्मत्त २१६; गाया १, १; पउम ६४, ६४; हे ४, २१२; सुपा ४९५; पउम ६८, २२; दे ७, २१; ओघ २१४; उप पृ ७५; सुपा १६३; भवि)।

भुंजग वि [**भोजक**] भोजन करने वाला; (पिंड १२३)।

भुंजण देखो **भुंज=भुज्**।

भुंजण न [**भोजन**] भोजन; (पिंड ५२१)।

भुंजणा स्त्री. ऊपर देखो, (पत्र १०१)।

भुंजय देखो **भुंजग;** (सण)।

भुंजाव सक [**भोजय्**] १ भोजन कराना। २ पालन कराना। ३ भोग कराना। भुंजावेइ; (महा)। कवकृ—**भुंजाविज्जंत;** (पउम २, ५)। संकृ—**भुंजाविऊण, भुंजावित्ता;** (पि ५८२)। हेकृ—**भुंजावेउं;** (पंचा १०, ४८ टी)।

भुंजावय वि [**भोजक**] भोजन कराने वाला; (स २५१)।

भुंजाविअ वि [**भोजित**] जिसको भोजन कराया गया हो वह; (धर्मवि ३८; कुप्र १६८)।

भुंजिअ देखो **भुंज=भुज्**।

भुंजिअ देखो **भुत्त;** (भवि)।

भुंजिर वि [**भोक्तृ**] भोजन करने वाला; (सुपा ११)।

भुंड पुंस्त्री [**दे**] सूकर, वराह; गुजराती में 'भुंड'; (दे ६, १०६)। स्त्री—°**डी,** °**डिणी;** (दे ६, १०६ टी; भवि)।

भुंडीर [**दे**] ऊपर देखो; (दे ६, १०६)।

भुंभल न [**दे**] मद्य-पात्र; (कम्म १, ५२)।

भुंहडि (अप) देखो **भूमि;** (हे ४, ३९५)।

भुक्क अक [**बुक्**] भूँकना, श्वान का बोलना। भुक्कइ; (गा ६६४ अ)।

भुक्कण पुं [**दे**] १ श्वान, कुत्ता; २ मद्य आदि का मान; (दे ६, ११०)।

भुक्किअ न [**बुक्कित**] श्वान का शब्द; (पाअ; पि २०९)।

भुक्किर वि [**बुक्कितृ**] भूँकने वाला; (कुमा)।

भुक्खा स्त्री [**दे. बुभुक्षा**] भूख, क्षुधा; (दे ६, १०६; गाया १, १—पत्र २८; महा; उप ३७९; आरा ९६; सम्मत्त १५७)। °**लु** वि [°**वत्**] भूखा, (धर्मवि ६६)।

भुक्खिअ वि [**दे. बुभुक्षित**] भूखा, क्षुधातुर; (पाअ; कुप्र १२६; सुपा ५०१; उप ७२८ टी; स ५८३; वै २६)।

भुगुभुग अक [**भुगभुगाय्**] भुग भुग आवाज करना। वकृ—**भुगुभुगेंत;** (पउम १०५, ५६)।

भुग्ग वि [**भुग्न**] १ मोड़ा हुआ, वक्र, कुटिल, (गाया १, ८—पत्र १३३; उवा)। २ वि. भग्न, टूटा हुआ; (गाया १, ८)। ३ दग्ध, जला हुआ, "किं मज्झ जीविएणं एवं-विहपराभवग्गिभुग्गाए" (उप ७६८ टी)। ४ भूना हुआ; "चणउव्व भुग्गु" (कुप्र ४३२)।

भुज (अप) देखो **भुंज**। भुजइ; (सण)।

भुजंग देखो **भुअंग;** (भवि)।

भुजग देखो **भुअग=भुजग;** (धर्मवि १२४)।

भुज्ज देखो **भुंज**। भुज्जइ; (षड्)।

भुज्ज पुं [**भूर्ज**] १ वृक्ष-विशेष; २ न. वृक्ष-विशेष की छाल; (कप्पू; उप पृ १२७; सुपा २७०)। °**पत्त,** °**वत्त** न [°**पत्र**] वही अर्थ; (आवम, नाट—विक्र ३३)।

भुज्ज देखो **भुंज**।

भुज्ज वि [**भूयस्**] प्रभूत, अनल्प; (औप, पि ४१४)।

भुज्जिय वि [**दे. भुग्न**] १ भूना हुआ धान्य; २ पुं. धाना, भूना हुआ यव; (पण्ह २, ५—पत्र १४८)।

भुज्जो अक [**भूयस्**] फिर, पुनः, (उवा; सुपा २७२)।

भुण्ण पुं [**भ्रूण**] १ स्त्री का गर्भ; २ बालक, शिशु; (संक्षि १७)।

भुत्त वि [**भुक्त**] १ भक्षित, (गाया १, १; उवा; प्रासू ३८)। २ जिसने भोजन किया हो वह; "ते भायरो न भुत्ता" (सुख १, १५; कुप्र १२)। ३ सेवित; ४ अनुभूत; "अम्म ताय मए भोगा भुत्ता विसफलोवमा" (उत्त १९, ११; गाया १, १)। ५ न भक्षण, भोजन; "हासभुत्तासियाणि य" (उत्त १६, १२)। ६ विष-विशेष; (ठा ६)।

°भोगि वि [°भोगिन्] जिसने भोगों का सेवन किया हो वह; (गाया १, १)।
भुत्तवंत वि [भुक्तवत्] जिसने भोजन किया हो वह; (पि ३६७)।
भुत्तव्व देखो भुंज।
भुत्ति स्त्री [भुक्ति] १ भोजन; (अच्चु १७; अज्झ ८२)। २ भोग: (सुपा १०८)। ३ आजीविका के लिये दिया जाता गाँव, खेत आदि गिरास; "उज्जेणी नाम पुरी दिन्ना तस्स य कुमारभुत्तीए" (उप २११ टी; कुप्र १६६)। °वाल पुं [°पाल] गिरासदार; (धर्मवि १५४)।
भुत्तु वि [भोक्तृ] भोगने वाला; (श्रा ६, संबोध ३५)।
भुत्तूण पुं [दे] भृत्य, नौकर; (दे ६, १०६)।
भुत्थल्ल पुं [दे] बिल्ली को फेंका जाता भोजन; (कप्पू)।
भुम देखो भम=भ्रम्। भुमइ, (हे ४, १६१; सण)। संकृ— भुमिवि (अप), (सण)।
भुम°, भुमग, भुमया, भुमा स्त्री [भ्रू] भौं, आँख के ऊपर की रोम-राजि; (भग; उवा, हे २, १६७; औप; कुमा, पाअ; पव ७३)।
भुमिअ देखो भमिअ=भ्रान्त; "भुमिअधणु" (कुमा)।
भुम्मि (अप) देखो भूमि; (पिंग)।
भुरुंडिआ स्त्री [दे] शिवा, शृगाली, (दे ६, १०१)।
भुरुंडिय, भुरुकुंडिअ, भुरुहुंडिअ वि [दे] उद्धूलित, धूलि-लिप्त; "धूलिभुरुंडियपुत्तेहिं परिगया चिंतए तत्तो" (सुपा २२६; दे ६, १०६). "भूइभुर(? रु)कुंडियंगो" (कुप्र २६३)।
भुल्ल अक [भ्रंश्] १ च्युत होना। २ गिरना। ३ भूलना। "भुल्लंति ते मणा मग्गा हा पमाओ दुरंतओ" (आत्म १६; हे ४, १७७)।
भुल्ल वि [भ्रष्ट] भूला हुआ; "कामंधओ किं पभमेसि भुल्लो" (श्रु १५३; सुपा १२४; ५१६; कप्पू)।
भुल्लविअ वि [भ्रंशित] भ्रष्ट किया हुआ; (कुमा)।
भुल्लिर वि [भ्रंशिन्] भूलने वाला; "मयणअभुल्लिरदुल्ललियभल्लिसुमहल्लतिक्खभल्लीहिं" (सुपा १२३)।
भुल्लुंकी [दे] देखो भल्लुंकी; (पाअ)।
भुव देखो हुव=भू। भुवइ; (पि ४७५)। भुअदि (शौ); (धात्वा १४७)। भूका—भुवि. (भग)।
भुव देखो भुअ=भुज; (भवि)।
भुवइंद देखो भुअइंद, (से ५. ७१)।
भुवण न [भुवन] १ जगत्, लोक; (जी १; सुपा २१; कुमा २, १५)। २ जीव, प्राणी; "भुवणाभयदाणललिअस्स" (कुमा)। ३ आकाश: (प्राकृ १००)। °क्खोहणी स्त्री [°क्षोभनी] विद्या-विशेष; (सुपा १७४)। °गुरु पुं [°गुरु] जगत् का गुरु, (सुपा ७५)। °नाह पुं [°नाथ] जगत् का त्राता; (उप पृ ३५७)। °पाल पुं [°पाल] विक्रम की बारहवीं शताब्दी का गोपगिरि का एक राजा; (मुणि १०८६६)। °बंधु पुं [°बन्धु] १ जगत का बन्धु; २ जिनदेव; (उप २११ टी)। °सोह पुं [°शोभ] सातवें बलदेव के दीक्षक एक जैन मुनि; (पउम २०, २०५)। °ालंकार पुं [°ालंकार] रावण का पट्ट-हस्ती; (पउम ८२, १११)।
भुवणा स्त्री [भुवना] विद्या-विशेष; (पउम ७, १४०)।
भुश्का (मा) देखो भुक्खा; (प्राकृ १०१)।
भुस देखो बुस; "तुसरासी इवा भुसरासी इवा" (भग १५)।
भुसुंढि स्त्री [दे. भुशुण्डि] शस्त्र-विशेष; (सण)।
भू देखो भुव=भू। भोमि; (पि ४७६)। संकृ—भोत्ता, भोदूण (शौ); (हे ४, २७१)।
भू स्त्री [भ्रू] भौं, आँख के ऊपर की रोम-राजि; "रन्ना भूसन्नाए" (सुपा ५७६; श्रा १४; सुपा २२६; कुमा)।
भू स्त्री [भू] १ पृथिवी, धरती; (कुमा; कुप्र ११६; जीवस २७६; सिरि १०४४)। २ पृथ्वीकाय, पार्थिव शरीर वाला जीव; (कम्म ४, १०; १६; ३६)। °आर पुं [°दार] शूकर, सूअर; (किरात ६)। °कंत पुं [°कान्त] राजा, नर-पति; (श्रा २८)। °गोल पुं [°गोल] गोलाकार भूमण्डल; (कप्पू)। °चंद पुं [°चन्द्र] पृथिवी का चन्द्र, भूमि-चन्द्र; (कप्पू)। °चर वि [°चर] भूमि पर चलने-फिरने वाला मनुष्य आदि; (उप ६८६ टी)। °च्छत्त पुंन [°च्छत्र] वनस्पति-विशेष; (दे १, ६४)। °तणग देखो °यणय; (राज)। °धण पुं [°धन] राजा; (श्रा २८)। °धर पुं [°धर] १ राजा, नरपति, (धर्मवि ३)। २ पर्वत, पहाड़; (धर्मवि ३; कुप्र २६४)। °नाह पुं [°नाथ] राजा; (उप ६८६ टी; धर्मवि १०७)। °मह पुं [°मह] अहोरात्र का सत्ताईसवाँ मुहूर्त, (सम ५१)। °यणय पुन [°तृणक] वनस्पति-विशेष; (पण्ण १—पत्र ३४)। °रुह पुं [°रुह] वृक्ष, पेड़; (गउड; पुप्फ ३६२; धर्मवि १३८)। °व पुं [°प] राजा; (उप ७२८ टी; ती ३; श्रु ६६; काल)।

°वइ पु [°पति] राजा; (सुपा ३६; पिंग)। °वाल पुं [°पाल] १ राजा; (गउड; सुपा ५६०)। २ व्यक्ति-वाचक नाम, (भवि)। °वित्त पुं [°वित्त] राजा; (श्रा २८)। °वीढ न [°पीठ] भूतल, भूमि-तल; (सुपा ५६३)। °हर देखो °धर, (सण)।

भू° } पु [भूयस्] कर्म-बन्ध का एक प्रकार, (कम्म ५,
भूअ } २२; २३)। °गार पु [°कार] वही अर्थ; (कम्म ५, २२)। देखो भूओगार।

भूअ पुं [दे] यन्त्रवाह, यन्त्र-वाहक पुरुष; (दे ६, १०७)।

भूअ वि [भूत] १ वृत्त, संजात, बना हुआ; २ अतीत, गुजरा हुआ; (पड्, पिंग)। ३ प्राप्त, लब्ध, (णाया १. १—पत्र ७४)। ४ समान, सदृश, तुल्य; "तसभूएहिं" (सूअ २, ७, ७; ८ टी)। ५ वास्तविक, यथार्थ, सत्य; "भूअ-त्थेहि चिअ गुणेहिं" (गउड), "भूयत्थसत्थगंथी" (सम्मत्त १३६)। ६ विद्यमान; "एवं जह स इत्थो संतो भूओ तद-न्नहाभूओ" (विसे २२५१)। ७ उपमा, औपम्य; ८ ताद-र्थ्य, तदर्थ-भाव; "ओवम्मे तादत्थे व हुज्ज एसित्थ भूयसद्दो त्ति" (श्रावक १२४)। ९ न. प्रकृत्यर्थ; "उम्मत्तगभूए" (ठ ५, १)। १० पुं. एक देव-जाति; (पण्ह १, ४; इक; णाया १, १—पत्र ३९)। ११ पिशाच, (पाअ, दे ४, २५)। १२ समुद्र-विशेष; (देवेन्द्र २५५)। १३ द्वीप-विशेष; (सुज्ज १९)। १४ पुंन. जन्तु, प्राणी, "पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं", "भूआणि वा जीवाणि वा" (आचा १, ६, ५, ४; १. ७, २, १, २, १, १, ११; पि ३६७), "हरियाणि भूआणि विलंबगाणि" (सूअ १, ७, ८, उत्त १५६)। १५ पृथिवी आदि पाँच द्रव्य, महाभूत; (स १६५), "किं मन्ने पंच भूआ" (विसे १६८९)। १६ वृक्ष, पेड़, वनस्पति; (आचा १, १, ६. २)। °इंद पुं [°इन्द्र] भूत-देवों का इन्द्र, (पि १६०)। °ग्गह पुं [°ग्रह] भूत का आवेश, (जीव ३)। °ग्गाम पुं [°ग्राम] जीव-समूह; (सम २६)। °त्थ वि [°र्थ] यथार्थ, वास्तविक; (गउड; पउम २८, १४)। °दिण्णा देखो °दिन्ना, (पडि)। °दिन्न पु [°दिन्न] १ एक जैन आचार्य; (णदि)। २ एक चाण्डाल-नायक; (महा)। °दिन्ना स्त्री [°दिन्ना] १ एक अन्त-कृत स्त्री, (अंत)। २ एक जैन साध्वी, महर्षि स्थूलभद्र की एक भगिनी; (कप्प)। °मंडलपविभत्ति न [°मण्ड-लप्रविभक्ति] नाट्य-विधि का एक भेद; (राज)। °लिवि स्त्री [°लिपि] लिपि-विशेष; (सम ३५)। °वडिंसा स्त्री [°ावतंसा] १ एक इन्द्राणी, (जीव ३)। २ एक राज-धानी; (दीव)। °वाइ, °वाइय, °वादिय पुं [°वादिन्, °वादिक] १ एक देव-जाति; (इक, पण्ह १, ४; औप)। २ वि. भूत-ग्रह का उपचार करने वाला, मन्त्र-तन्त्रादि का जानकार; (सुख १, १४)। °वाय पुं [°वाद] १ यथार्थ वाद; २ दृष्टिवाद, बारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ, (ठा १०—पत्र ४९१)। °विज्जा, °वेज्जा स्त्री [°विद्या] आयुर्वेद का एक भेद, भूत-निग्रह-विद्या; (विपा १, ७—पत्र ७५ टी)। °णंद पुं [°नन्द] १ नागकुमार देवों का दक्षिण दिशा का इन्द्र; (इक, ठा २, ३—पत्र ८४)। २ राजा कूणिक का पट्ट-हस्ती, (भग १७, १)। °णंदप्पह पु [°नन्द-प्रभ] भूतानन्द इन्द्र का एक उत्पात-पर्वत; (राज)। °वाय देखो °वाय, (विसे ५५१; पव ९२ टी)।

भूअण्ण पुं [दे] जोती हुई खल-भूमि में किया जाता यज्ञ; (दे ६, १०७)।

भूआ स्त्री [भूता] १ एक जैन साध्वी, महर्षि स्थूलभद्र की एक भगिनी, (कप्प; पडि)। २ इन्द्राणी की एक राजधानी; (जीव ३)।

भूइ स्त्री [भूति] १ संपत्ति, धन, दौलत; "ता परदेसं गंतु विढवित्ता भूरिभूइपब्भार" (सुर १, २२३; सुपा १४८)। २ भस्म, राख, "जारमसाणसमुब्भवभूइसुहप्फंससिज्जिरंगीए" (गा ४०८; स ६ ; गउड)। ३ महादेव के अंग की भस्म, "भू-इभूसियं हरसरीरं व" (सुपा १४८; ३६३)। ४ वृद्धि; (सूअ १, ६, ६)। ५ जीव-रक्षा; (उत्त १२, ३३)। °कम्म पुन [°कर्मन्] शरीर आदि की रक्षा के लिए किया जाता भस्मलेपन-सूत्रबंधनादि; (पव ७३ टी; बृह १)। °पण्ण, °पन्न वि [°प्रज्ञ] १ जीव-रक्षा की बुद्धि वाला; (उत्त १२, ३३)। २ ज्ञान की वृद्धि वाला, अनन्त-ज्ञानी, (सूअ १, ६, ६)। देखो भूई°।

भूइंद पुं [भूतेन्द्र] भूतों का इन्द्र; (पि १६०)।

भूइट्ठ वि [भूयिष्ठ] अति प्रभूत, अत्यन्त; (विसे २०३९; विक १४१)।

भूइट्ठा स्त्री [भूतेष्टा] चतुर्दशी तिथि; (प्राकृ)।

भूई° देखो भूइ; (पव २—गा ११२)। °कम्मिय वि [°कर्मिक] भूति-कर्म करने वाला; (औप)।

भूओ अ [भूयस्] १ फिर से, पुनः, (पउम ६८, २८, पच २, १८)। २ बारंबार, फिर फिर; 'भूअ। य अहिलसंत" (उप ६५१)। °गार पु [°कार] कर्म-बन्ध का एक प्रकार,

थोड़ी कर्म-प्रकृति के बन्ध के बाद होने वाला अधिक-प्रकृति-बन्ध; (पंच ५, १२)।

भूओद पुं [**भूतोद**] समुद्र-विशेष, (सुज्ज १६)।

भूओवघाइय वि [**भूतोपघातिन्, °क**] जीवों की हिंसा करने वाला; (सम ३७; औप)।

भूंहडी (अप) देखो **भूमि**, (हे ४, ३९५ टि)।

भूण देखो **भुण्ण**; (संक्षि १७; सम्मत ८६)।

भूज देखो **भुज्ज**=भूर्ज, (प्राकृ २६)।

भूमआ देखो **भुमया**; (प्राप्र)।

भूमणया स्त्री [**दे**] स्थगन, आच्छादन, (वव १)।

भूमि स्त्री [**भूमि**] १ पृथिवी, धरती; (पउम ६६, ४८, गउड)। २ क्षेत्र; (कुमा)। ३ स्थल, जमीन, जगह, स्थान; (पाअ; उत्त; कुमा)। ४ काल, समय; (कप्प)। ५ माल, मजला, तला; "सत्तभूमियं पासायभवणं" (महा)। °**कंप** पुं [°**कम्प**] भू-कम्प; (पउम ६६, ४८)। °**गिह**, °**घर** न [°**गृह**] नीचे का घर, भोंयरा; (श्रा १६; महा)। °**गोयरिय** वि [°**गोचरिक**] स्थलचर, मनुष्य आदि; (पउम ५६, ५२)। स्त्री—°**री**; (पउम ७०, १२)। °**च्छत्त** न [°**च्छत्र**] वनस्पति-विशेष; (दे)। °**तल** न [°**तल**] धरा-पृष्ठ, भूतल; (सुर २, १०५)। °**देव** पुं [°**देव**] ब्राह्मण; (मोह १०७)। °**फोड** पुं [°**स्फोट**] वनस्पति-विशेष; (जी ६)। °**फोडी** स्त्री [°**स्फोटी**] एक जात का जहरीला जन्तु; "पासवणं कुणमाणो को गुज्झम्मि भूमिफोडीए" (सुपा ६२०)। °**भाग** पुं [°**भाग**] भूमि-प्रदेश; (महा)। °**रुह** पुन [°**रुह**] भूमिस्फोट, वनस्पति-विशेष; (श्रा २०; पत्र ४)। °**वइ** पुं [°**पति**] राजा; (उप पृ १८८)। °**वाल** पुं [°**पाल**] राजा; (गउड)। °**सुअ** पुं [°**सुत**] मंगल-ग्रह; (मृच्छ १४६)। °**हर** देखो °**घर**; (महा)। देखो **भूमी**।

भूमिआ स्त्री [**भूमिका**] १ तला, मजला, माल, (महा)। २ नाटक में पात्र का वेशान्तर-ग्रहण; (कप्पू)।

भूमिंद पुं [**भूमीन्द्र**] राजा, नरपति, (सम्मत्त २१७)।

भूमी देखो **भूमि**; (से १२, ८८, कप्पू; पिंड ४४८; पउम ६४, १०)। °**तुडयकूड** न [°**तुडगकूट**] एक विद्याधर-नगर; (इक)। °**भुयंग** पुं [°**भुजङ्ग**] राजा, (मोह ८८)।

भूमीस पुं [**भूमीश**] राजा, (श्रा १२)।

भूमीसर पुं [**भूमीश्वर**] राजा; (सुपा ५०७)।

भूयिट्ठ देखो **भूइट्ठ**, (हास्य १२३)।

भूरि वि [**भूरि**] १ प्रचुर, अत्यन्त, प्रभूत; (गउड; कुमा, सुर १, २४८; २, ११४)। २ न. स्वर्ण, सोना; ३ धन, दौलत, (सार्ध ८४)। °**स्सव** पुं [°**श्रवस्**] एक चन्द्रवंशीय राजा; (नाट —वेणी ३७)।

भूस सक [**भूषय्**] १ सजावट करना। २ शोभाना, अलंकृत करना। भूसेमि; (कुमा)। वक्त—**भूसयंत**; (रंभा)। कृ—**भूस**; (रंभा)।

भूसण न [**भूषण**] १ अलंकार, गहना; (पाअ; कुमा)। २ सजावट; ३ शोभा-करण; (पगह २, ४; सगा)।

भूसा स्त्री [**भूषा**] ऊपर देखो; (दे ३, ८; कुमा)।

भूसिअ वि [**भूषित**] मण्डित, अलङ्कृत; (गा ५२०; कुमा; काल)।

भूहरी स्त्री [**दे**] तिलक-विशेष; (सिरि १०२२)।

भे अ [**भोस्**] आमन्त्रण-सूचक अव्यय, (औप)।

भेअ पुंन [**भेद**] १ प्रकार; "पुढविभेआइ इच्चाई" (जी ४; ५)। २ विशेष, पार्थक्य; (ठा २, १; गउड, कप्पू)। ३ एक राज-नीति, फूट; "दाणमाणोवयारेहिं सामभेआइएहिं य" (प्रासू ६७), "सामदंडभेयउवप्पयाणणीइसुप्पउत्तणयविहिन्नू" (णाया १, १—पत्र ११)। ४ घाव, आघात; "वड्ढंति वम्महविइण्णसरप्पसारा ताणं पआसइ लहुं चिअ चित्तभेओ" (कप्पू)। ५ मण्डल का अपान्तराल, बीच का भाग; "पडिवत्तीओ उदए तह अत्थमणेसु य। भेयवा(? घा)ओ कराणकला मुहुत्ताण गतीति य" (सुज्ज १, १)। ६ विच्छेद, पृथक्करण, विदारण, (औप; अणु)। °**कर** वि [°**कर**] विच्छेद-कर्ता; (औप)। °**घाय** पुं [°**घात**] मंडल के बीच में गमन; (सुज्ज १, १)। °**समावन्न** वि [°**समापन्न**] भेद-प्राप्त; (भग)।

भेअग वि [**भेदक**] भेद-कारक; (औप; भग)।

भेअण न [**भेदन**] १ विदारण, विच्छेदन; "कुंतस्स सत्तपायालभेयणे नूणं सामत्थं" (चेइय ७४६; प्रासू १४०)। २ भेद, फूट करना; (पत्र १०६)। ३ विनाश, "कुलसयणमित्तभेयणकारिकाओ" (तंदु ४६)।

भेअय देखो **भेअग**, (भग)।

भेअव्व देखो **भिंद**।

भेअव्व देखो **भी**=भी।

भेइल्ल वि [**भेदवत्**] भेद वाला, "सम्मत्तनाणचरणा पत्तेयं अट्ठअट्ठभेइल्ला" (संबोध २२; पंच ४, १)।

भेउर देखो **भिउर**; (आचा, ठा २, ३)।

भेंडी स्त्री [**भिण्डा, °ण्डी**] गुल्म-विशेष, एक जाति की वनस्पति; (पण्ह १—पत्र ३२)।
भेंभल देखो **भिंभल**; (से ६, ३७)।
भेंभलिद (शौ) देखो **भिंभलिअ**, (पि २०६)।
भेक देखो **भेग**. (दे १, १४७)।
भेक्खस पुं [**दे**] राक्षस-रिपु, राक्षस का प्रतिपक्षी, (कुप्र ११२)।
भेग पुं [**भेक**] मेंढक; (दे ४, ६; धर्मसं ५५७)।
भेच्छ° देखो **भिंद**।
भेज्ज देखो **भिज्ज**; (विपा १, १ टी—पत्र १२)।
भेज्ज
भेज्जलय } वि [**दे**] भीरु, डरपोक; (दे ६, १०७; पड्)।
भेज्जल्ल
भेड वि [**दे, भेर**] भीरु, कातर, (हे १, २५१; दे ६, १०७; कुमा २, ६२)।
भेडक देखो **भेलय**; (मृच्छ १८०)।
भेत्तु वि [**भेत्तृ**] भेदन-कर्ता; (आचा)।
भेत्तुआण
भेत्तुं } देखो **भिंद**।
भेत्तूण
भेद देखो **भिंद**। संकृ—**भेदिअ**; (मृच्छ १४३)।
भेद देखो **भेअ**; (भग)।
भेदअ देखो **भेअय**, (वेणी ११२)।
भेदणया देखो **भेअण**; (उप पृ ३३१)।
भेदिअ देखो **भेद**=भिंद।
भेदिअ वि [**भेदित**] भिन्न किया हुआ; (भग)।
भेरंड पु [**भेरण्ड**] देश-विशेष; (राज)।
भेरव न [**भैरव**] १ भय, डर; (कप्प)। २ पुं. राक्षस आदि भयंकर प्राणी; (सूअ १, २, २, १४; १६)। ३ देखो **भइरव**; (पउम ६, १८३; चेइय १००; औप; महा; वि ६१)। °**णंद** पु [°**नन्द**] एक योगी का नाम, (कप्पू)।
भेरि } स्त्री [**भेरि, °री**] वाद्य-विशेष, ढक्का; (कप्प; पिंग,
भेरी } औप; सण)।
भेरुंड पुं [**भेरुण्ड**] भारुंड पक्षी, दो मुँह और एक शरीर वाला पक्षि-विशेष; (दे ६, ५०)।
भेरुंड पुं [**दे**] १ चित्रक, चित्ता, श्वापद पशु-विशेष; (दे ६, १०८)। २ निर्विष सर्प; "सविसो हम्मइ सप्पो भेरुंडो तत्थ मुच्चइ" (प्रासू १६)।
भेरुताल पु [**भेरुताल**] वृक्ष-विशेष; (राज)।
भेल सक [**भेलय्**] मिश्रण करना, मिलाना। गुजराती में 'भेळववुं'। संकृ—**भेलइत्ता**: (पि २०६)।
भेलय पु [**दे भेलक**] बेड़ा, उडुप. नौका, (दे ६, ११०)।
भेलविय वि [**भेलित**] मिश्रित, युक्त, "सो भयभेलवियदिट्ठी जलं ति मन्नमाणो" (वसु)।
भेली स्त्री [**दे**] १ आज्ञा, हुकुम, २ बेड़ा, नौका; ३ चेटी, दासी; (दे ६, ११०)।
भेस सक [**भेषय्**] डराना। भेसइ, भेसेइ; (धात्वा १४८; प्राकृ ६४)। कर्म—भेसिज्जए; (धर्मवि ३)। वकृ—**भेसंत, भेसयंत**; (पउम ५३, ८६; श्रा १२)। कवकृ—**भेसिज्जंत**; (पउम ४६, ५४)। संकृ—**भेसेऊण**; (काल; पि ५८६)। हेकृ—**भेसेउं**; (कुप्र १११)।
भेसग पुं [**भीष्मक**] रुक्मिणी का पिता, कौण्डिन्य-नगर का एक राजा; (णाया १, १६; उप ६४८ टी)।
भेसज न [**भैषज**] औषध; (पउम १४, ५४; ५६)।
भेसज्ज न [**भैषज्य**] औषध, दवाई; (उवा; औप; रंभा)।
भेसण न [**भीषण**] डराना, वित्रासन; (ओघ २०१)।
भेसणा स्त्री [**भीषणा**] ऊपर देखो; (पण्ह २, १—पत्र १००)।
भेसयंत देखो **भेस**।
भेसाव देखो **भेस**। भेसावइ; (धात्वा १४८)।
भेसाविय } वि [**भीषित**] डराया हुआ; (पउम ४६, ५३;
भेसिअ } से ७, ४५; सुर २, ११०; श्रावक ६३ टी)।
भो देखो **भुंज**। संकृ—**भोऊण, भोत्तूण**; (धात्वा १४८; संक्षि ३७)। हेकृ—**भोउं**; (धात्वा १४८; संक्षि ३७)। कृ—**भोत्तव्व**, (संक्षि ३७), **भोअव्व**; (धात्वा १४८)।
भो अ [**भोस्**] आमन्त्रण-द्योतक अव्यय; (प्राकृ ७६; उवा; औप; जी ५०)।
भो° स [**भवत्**] तुम, आप। स्त्री—भोई; (उत्त १४, ३३; स ११९)।
भोअ सक [**भोजय्**] खिलाना, भोजन कराना। भोयइ, भोयए; (सम्मत्त १२५; सूअ २, ६, २९) संकृ—**भोइत्ता**; (उत्त ९, ३८)।
भोअ पुं [**दे, भोग**] भाड़ा, किराया; (दे ६, १०८)।
भोअ देखो **भोग**, (स ६५८; पाअ; सुपा ४०४, रंभा ३२)।
भोअ पुं [**भोज**] उज्जयिनी नगरी का एक सुप्रसिद्ध राजा; (रंभा)। °**राय** पु [°**राज**] वही अर्थ; (सम्मत्त ७५)।

भोअ वि [भौत] भस्म से उपलिप्त, (धर्मंग ४१)।
भोअग वि [भोजक] १ खाने वाला; (पिंड ११७)। २ पालन-कर्ता, (बृह १)।
भोअडा स्त्री [दे] कच्छ, लंगोट; "येचत्य भोअडादीयं" (निचू १)।
भोअण न [भोजन] १ भक्षण, खाना; २ भात आदि खाद्य वस्तु; (आचा; ठा ६; उवा; प्रासू १८०; स्वप्न ६२, सण)। ३ लगातार सतरह दिनों का उपवास; (संबोध ५८)। ४ उप-भोग, "विरूवरुवाइं कामभोगाइं समारंभंति भोयणाए" (सूअ २, १, १७)। °रुक्ख पुं [°वृक्ष] भोजन देने वाली एक कल्पवृक्ष-जाति; (पउम १०२, ११६)।
भोअल (अप) पुं [दे, भोल] छन्द-विशेष; (पिंग)।
भोइ वि [भोजिन्] भोजन करने वाला, (आचा; पिंड १२०; उव)।
भोइ देखो **भोगि**; (सुपा ४०४, संबोध ५०; पिंग; रंभा)।
भोइ } पुं [दे, भोगिन्, °क] १ ग्रामाध्यक्ष, ग्राम का
भोइअ } मुखिया, गाँव का नायक, (वव ७; दे ६, १०८; उत्त १५, ९, बृह १, ओघभा ४३; पिंड ४३६; सुर १, ३; पव २६८, भवि; सुपा १६५, गा ५५६)। २ महेश; (षड्)।
भोइअ वि [भोगिक] १ भोग-युक्त, भोगासक्त, विलासी; (उत्त १५, ९; गा ५५६)। २ भोग-वंश में उत्पन्न; (उत्त १५, ९)।
भोइअ वि [भोजित] जिसको भोजन कराया गया हो वह; (सुर १, २१४)।
भोइणी स्त्री [दे, भोगिनी] ग्रामाध्यक्ष की पत्नी; (पिंड ४३६; गा ६०३; ७३७, ७७६; निचू १०)।
भोइया } स्त्री [भोग्या] १ भार्या, पत्नी, स्त्री; (बृह १;
भोई } पिंड ३६८)। २ वेश्या; (वव ७)।
भोई देखो **भो**°=भवत्।
भोंड देखो **भुंड**; (गा ४०२)।
भोक्ख° देखो **भुंज**।
भोग पुंन [भोग] १ स्पर्श, रस आदि विषय, उपभोग्य पदार्थ; "रूवी भंते भोगा अरूवी" (भग ७, ७—पत्र ३१०), "भोग-भोगाइं भुंजमाणे विहरइ" (विपा १, २)। २ विषय-सेवा; (भग ९, ३३; औप), "भुजंता बहुविहाइं भोगाइं" (संथा २७)। ३ मदन-व्यापार, काम-चेष्टा; "कामभोगे यं खलु मए अप्पाहट्टु" (सूअ २, १, १२)। ४ विष-येच्छा, विषयाभिलाष; (आचा)। ५ विषय-सुख; "चइत्तु भोगाइं असासयाइं" (उत्त १३, २०), 'तुच्छा य काम-भोगा" (प्रासू ६६), "अहिभोगे विय भोगे निहणंव धणं मलंव कलपि मन्नता" (सुपा ८३)। ६ भोजन, आहार; (पंचा ५, ४; उव २०७)। ७ गुरु-स्थानीय जाति-विशेष, एक क्षत्रिय-कुल; (कप्प; सम १५१; ठा ३, १—पत्र ११३; ११४)। ८ अमात्य आदि गुरु-स्थानीय लोक, गुरु-वंश में उत्पन्न; (औप)। ९ शरीर, देह; (तंदु २०)। १० सर्प की फणा, (सुपा)। ११ सर्प का शरीर; (दे ६, ८६)। °करा देखो **भोगंकरा**; (इक)। °कुल न [°कुल] पूज्य-स्थानीय कुल-विशेष; (पि ३६७)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष; (आवम)। °पुरिस पुं [°पुरुष] भोग-तत्पर पुरुष; (ठा ३, १—पत्र ११३; ११४)। °भागि वि [°भागिन्] भोग-शाली; (पउम ५६, ८८)। °भूम वि [°भूम] भोग-भूमि में उत्पन्न, (पउम १०२, १६६)। °भूमि स्त्री [°भूमि] देवकुरु आदि अकर्म-भूमि; (इक)। °भोग पुंन [°भोग] भोगार्ह शब्दादि-विषय, मनोज्ञ शब्दादि; (भग ७, ७; विपा १, ६)। °मालिणी स्त्री [°मालिनी] अधोलोक में रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८; इक)। °राय पुं [°राज] भोग-कुल का राजा; (दस २, ८)। °वइया स्त्री [°वतिका] लिपि-विशेष; (पण्ण १—पत्र ६२), "भोगवयता(?इया)" (सम ३५)। °वई स्त्री [°वती] १ अधोलोक में रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८; इक)। २ पक्ष की दूसरी, सातवीं और बारहवीं रात्रि-तिथि; (सुज्ज १०, १५)। °विस पुं [°विष] सर्प की एक जाति; (पण्ण १—पत्र ५०)।
भोगंकरा स्त्री [भोगंकरा] अधोलोक में रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८)।
भोगा स्त्री [भोगा] देवी-विशेष; (इक)।
भोगि पुं [भोगिन्] १ सर्प, साँप; (सुपा ३६६; कुप्र २६८)। २ पुन. शरीर, देह; (भग २, ५; ७, ७)। ३ वि भोग-युक्त, भोगासक्त, विलासी; (सुपा ३६६; कुप्र २६८)।
भोग्ग }
भोच्चा }
भोच्छ° } देखो **भुंज**।
भोज्ज }
भोट्टंत पुं [भोटान्त] १ देश-विशेष, नेपाल के समीप का एक भारतीय देश, भोटान, २ भोटान का रहने वाला; (पिंग)।
भोण देखो **भोअण**, (षड्)।

भोत्त देखो **भुत्त**; (षड्; सुख २, ६; सुपा ४६५)।
भोत्तए } देखो **भुंज**।
भोत्तव्व }
भोत्ता देखो **भू=भुव=भू**।
भोत्तु वि [**भोक्तृ**] भोगने वाला; (विसे १५६६; दे २, ४८)।
भोत्तुं } देखो **भुंज**।
भोत्तूण }
भोत्तूण देखो **भुत्तूण**; (दे ६, १०६)।
भोदूण देखो **भू=भुव=भू**।
भोम वि [**भौम**] १ भूमि-संबन्धी; (सूअ १, ६, १२)। २ भूमि में उत्पन्न; (ओघ २८, जी ५)। ३ भूमि का विकार; (ठा ८)। ४ पु. मंगल-ग्रह. (पाअ)। ५ पुन. नगराकार विशिष्ट स्थान, ६ नगर; (सम १५; ७८)। ७ निमित्त-शास्त्र विशेष, भूमि-कम्पादि से शुभाशुभ फल बतलाने वाला शास्त्र, (सम ४६)। ८ अहोरात्र का सत्ताईसवाँ मुहूर्त; "अणवं च भोग(? म)रिसहे" (सुज्ज १०, १३)। °**ालिय** न [°**ालीक**] भूमि-संबन्धी मृषावाद; (पण्ह १, २)।
भोमिज्ज देखो **भोमेज्ज**; (सम २; उत्त ३६, २०३)।
भोमिर देखो **भमिर**; "लब्भइ णाइअणंते संसारे सुभोमिरो जीवो" (संबोध ३२)।
भोमेज्ज } वि [**भौमेय**] १ भूमि का विकार. पार्थिव; (सम
भोमेयग } १००; सुपा ४८)। २ पु एक देव-जाति, भवनपति-नामक देव-जाति, (सम २)।
भोरुड पुं [**दे**] भारुंड पक्षी; (दे ६, १०८)।
भोल सक [**दे**] ठगना; (सुपा ५२२)।
भोल त्रि [**दे**] भद्र, सरल चित्त वाला, गुजराती में 'भोळुं'। स्त्री—°**ला**, °**लिया**; (महानि ६; सुपा ५१४)।
भोलग पु [**भोलक**] यक्ष-विशेष, "भोलगनामा जक्खो अभिवछियसिद्धिदा अत्थि" (धर्मसं १४१)।
भोलव सक [**दे**] ठगना, गुजराती में 'भोळववु'। संकृ—**भोलविउं**; (सुपा २६४)।
भोलवण न [**दे**] वञ्चन, प्रतारण, (सम्मत्त २२६)।
भोलविय } वि [**दे**] वञ्चित ठगा हुआ; (कुप्र ४३५;
भोलिअ } सुपा ५२२)।
भोल्लय न [**दे**] पाथेय-विशेष प्रवन्ध-प्रवृत पाथेय, (दे ६, १०८)।
भोवाल (अप) देखो **भू-वाल**, (भवि)।
भोहा (अप) देखो **भू=भ्रू**; (पिंग)।
भ्रंत्रि (अप) देखो **भंति=भ्रान्ति**; (हे ४, ३६०)।

इअ सिरि**पाइअसद्दमहण्णवम्मि** भआराइसद्दसकलणो तीसइमो तरंगो समत्तो।

—— :०. ——

म

म पु [**म**] ओष्ठ-स्थानीय व्यञ्जन-वर्ण विशेष; (प्राप)।
म अ [**मा**] मत. नहीं. (हे ४, ४१८; कुमा; पि ६४. ११४; भवि)।
मअआ स्त्री [**मृगया**] शिकार; (अभि ५५)।
मइ स्त्री [**मृति**] मौत, मरण; (सुर २, १४३)।
मइ स्त्री [**मति**] १ बुद्धि, मेधा, मनीषा; "मेहा मई मणीसा" (पाअ, सुर २. ६५; कुमा, प्रासू ७१)। २ ज्ञान-विशेष. इन्द्रिय और मन से उत्पन्न होने वाला ज्ञान, (ठा ४, ४, णदि; कम्म ३, १८; ४. ११, १४, विसे ६७)। °**अन्नाण** न [°**अज्ञान**] विपरीत मति-ज्ञान, मिथ्यादर्शन-युक्त मति-ज्ञान, (भग, विसे ११४, कम्म ४, ४१)। °**णाण**, °**ण्णाण**, °**नाण** न [°**ज्ञान**] ज्ञान-विशेष; (विसे १०७; ११४; ११७; कम्म १. ४)। °**नाणावरण** न [°**ज्ञानावरण**] मति-ज्ञान का आवारक कर्म; (विसे १०४)। °**नाणि** वि [°**ज्ञानिन्**] मति-ज्ञान वाला; (भग)। °**पत्तिया** स्त्री [°**पात्रिका**] एक जैन मुनि-शाखा; (कप्प)। °**ब्भंस** पुं [°**भ्रंश**] बुद्धि-विनाश; (भग, सुपा १३४)। °**म**, °**मंत**, °**वंत** वि [°**मत्**] बुद्धिमान्; (ओघ ६३०; आचा; भवि)।
मइ° देखो **मई=मृगी**; (कुप्र ४४)।
मइअ वि [**मत्त**] मद-युक्त, उन्मत्त; (से ७, ६६; गा ४६८. ७०६; ७५१)।
मइअ देखो **मा=मा**।
मइअ वि [**दे मतिक**] १ भर्त्सित तिरस्कृत, (दे ६ ११४)। २ न. बोये हुए बीजो के आच्छादन के काम में लगती एक काष्ठ-मय वस्तु, खेती का एक औजार ; "नंगले मइयं सिया" (दस ७, २८; पण्ह १. १—पत्र ८)।

°मइअ वि [°मय] व्याकरण-प्रसिद्ध एक तद्धित-प्रत्यय, निर्वृत्त, बना हुआ; "धम्ममइएहि अइसुंदरेहि" (उत्त). "जिण-पडिमं गोसीसचंदणमइयं" (महा)।

मइआ स्त्री [मृगया] शिकार; (सिरि ११११)।

मइंद पुं [मैन्द] राम का एक सैनिक, वानर-विशेष; (से ४. ७; १३, ८३)।

मइंद पु [मृगेन्द्र] १ सिंह, पंचानन; (प्राकृ ३०; सुर १६, २४२; गउड)। २ छन्द का एक भेद; (पिंग)।

मइज्ज देखो मईअ=मदीय; (षड्)।

मइत्तो अ [मत्] मुझसे; (प्राप्र)।

मइमोहणी स्त्री [दे. मतिमोहनी] सुरा, मदिरा, दारू, (दे ६. ११३; षड्)।

मइरा स्त्री [मदिरा] ऊपर देखो; (पाअ, से २, ११; गा २७०; दे ६, ११३)।

मइरेय न [मैरेय] ऊपर देखो; (पाअ)।

मइल वि [मलिन] मैला, मल-युक्त, अ-स्वच्छ; (हे २, ३८; पाअ; गा ३४, प्रासू २५; भवि)।

मइल पु [दे] कलकल, कोलाहल; (दे ६, १४२)।

मइल वि [दे. मलिन] गत-तेजस्क, तेज-रहित, फीका; (दे ६, १४२, से ३, ४७)।

मइल सक [मलिनय्] मैला करना, मलिन बनाना। मइलइ, मइलेइ, मइलिंति, मइलेंति; (भवि; उत्त; पि ५५९)। कर्म—मइलिज्जइ; (भवि; पि ५५९)। वकृ—मइलंत; (पउम २, १००)। कृ—मइलियव्व; (स ३६६)।

मइल अक [दे. मलिनाय्] तेज-रहित होना, फीका लगना। वकृ—मइलंत; (से ३, ४७; १०, २७)।

मइलण न [मलिनन] मलिन करना; (गउड)।

मइलणा स्त्री [मलिनना] १ ऊपर देखो; (ओघ ७८८)। २ मालिन्य, मलिनता, ३ कलंक; "लहइ कुलं मइलणा जेण" (सुर ६, १२०), "इमाए मइलणाए अमुगम्मि नयरुज्जाणासन्ने नग्गोहपायवे उव्वंधणेण अत्ताणयं परिच्चइउं ववसिओ चक्कदेवो" (स ६४)।

मइलपुत्ती स्त्री [दे] पुष्पवती, रजस्वला स्त्री; (षड्)।

मइलिअ वि [मलिनित] मलिन किया हुआ; (श्रावक ६५; पि ५५९; भवि)।

मइल्ल वि [मृत] मरा हुआ। स्त्री—°ल्लिया, "एवं खलु सामी! पउमावती देवी मइल्लियं दारियं पयाया। तए णं कणगरहे राया तीसे मइल्लियाए दारियाए नीहरणं करेति, बहूणि लोइयाइं मयकिच्चाइं" (णाया १. १४—पत्र १८६)।

मइहर पुं [दे] ग्राम-प्रधान, गाँव का मुखिया; (दे ६.१२१)। देखो मयहर।

मई स्त्री [दे] मदिरा, दारू; (दे ६. ११३)।

मई स्त्री [मृगी] हरिणी, स्त्री हरिण; (गा २८७; से ६, ८०; दे ३. ४६; कुप्र १०)।

मई° देखो मइ=मति। °म, °व वि [°मत्] बुद्धि वाला; (पि ७३; ३६६; उप १४२ टी)।

मईअ वि [मदीय] मेरा, अपना; (षड्; कुमा; स ४७७, महा)।

मउ पुं [दे] पर्वत, पहाड़; (दे ६. ११३)।

मउ, मउअ वि [मृदु, °क] कोमल, सुकुमार; (हे १, १२७; षड्; सम ४१; सुर ३, ६७; कुमा)। स्त्री—°उई; (प्राकृ २८; गउड)।

मउअ वि [दे] दीन, गरीब; (दे ६, ११४)।

मउइअ वि [मृदुकित] जो कोमल बना हो; (गउड)।

मउई देखो मउ=मृदु।

मउंद पुं [मुकुन्द] १ विष्णु, श्रीकृष्ण; (राय)। २ वाद्य-विशेष; "दुंदुहिमउंदमद्दलतिलिमापमुहेण तूरसद्देण" (सुर ३, ६८), "महामउंदसंठाणसंठिए" (भग)।

मउक्क देखो माउक्क=मृदुत्व; (षड्)।

मउड पुंन [मुकुट] शिरो-भूषण, किरीट, सिरपेंच; (पत्र ३८; हे १, १०७; प्राप्र; कुमा; पाअ; औप)।

मउड, मउडि पुं [दे] धम्मिल्ल, कवरी, जूट; (पाअ; दे ६, ११७)।

मउण देखो मोण; (हे १. १६२; चंड)।

मउर पुंन [मुकुर] १ बाल-पुष्प, फूल की कली, बौर; (कुमा)। २ दर्पण, आईना, शीशा; ३ कुलाल-दण्ड; ४ वकुल का पेड़; ५ मल्लिका-वृक्ष; ६ कोशी-वृक्ष; ७ ग्रन्थिपर्णी-वृक्ष, चोरक; (हे १, १०७; प्राकृ ७)।

मउर, मउरंद पुं [दे] वृक्ष-विशेष, अपामार्ग, ओंगा, लटजीरा, चिरचिरा; (दे ६, ११८)।

मउल देखो मउड=मुकुट; (से ४, ५१)।

मउल पुन [मुकुल] थोड़ी विकसित कलि, कलिका, बौर; (रंभा २६)। २ देह, शरीर; ३ आत्मा; "मउलं. मउलो" (हे १. १०७; प्राप्र)।

मउल अक [**मुकुलय्**] सकुचना, संकुचित होना । "मउलेंति णअणाइं" (गा ५) । वकृ—**मउलंत, मउलिंत,** (से ११, ६२, पि ४६१) ।

मउलण न [**मुकुलन**] संकोच, "जं चेअ मउलणं लोअणाणं" (हे २, १८४, विसे ११०६, गउड) ।

मउलाअ अक [**मुकुलय्**] १ सकुचना । २ सक संकुचित करना । वकृ—**मउलाअंत;** (नाट—मालती ५४, पि १२३) ।

मउलाइय वि [**मुकुलित**] सकुचाया हुआ, संकोचित; (वज्जा १२६) ।

मउलाव देखो **मउलाअ** । कर्म—मउलाविज्जंति; (पि १२३) । वकृ—**मउलावेंत.** (पउम १५, ८३) ।

मउलावअ वि [**मुकुलायक**] सकुचित करने वाला; "हरिस-विसेसो वियसावओ य मउलावओ य अच्छीण" (गउड) ।

मउलाविय देखो **मउलाइय;** (उप पृ ३२१, सुपा २००; भवि) ।

मउलि पुंस्त्री [**दे**] हृदय-रस का उच्छलन; (दे ६, ११५) ।

मउलि पुं [**मुकुलिन्**] सर्प-विशेष, (पण्ह १, १—पत्र ८, पण्ण १—पत्र ५०) ।

मउलि पुंस्त्री [**मौलि**] १ किरीट, मुकुट, शिरो-भूषण, (पाअ)। २ मस्तक, सिर, (कुप्र ३८६; कुमा, अजि २२, अच्चु ३४) । ३ शिरो-वेष्टन विशेष, एक तरह की पगडी, (पव ३८) । ४ चूडा, चोटी, ५ सयत केश, ६ पु अशोक वृक्ष; ७ स्त्री भूमि, पृथिवी, (हे १, १६२; प्राकृ १०) ।

मउलिअ वि [**मुकुलित**] १ संकुचित; (सुर ३, ४५, गा ३२३; से १, ६५) । २ संवेष्टित; "संवेल्लिअ मउलिअं" (पाअ) । ३ मुकुलाकार किया हुआ, (औप) । ४ एकत्र स्थित; (कुमा) । ५ मुकुल-युक्त, कलिका-सहित; (राय) ।

मउवी देखो **मउई;** (हे २, ११३, कुमा) ।

मऊर पुंस्त्री [**मयूर**] पक्षि-विशेष. मोर, (प्राप्र; हे १, १७१; णाया १, ३) । स्त्री—°**री.** (विपा १, ३) । °**माल** न [°**माल**] एक नगर; (पउम २७, ६) ।

मऊरा स्त्री [**मयूरा**] एक रानी, महापद्म चक्रवर्ती की माता, (पउम २०, १४३) ।

मऊह पुं [**मयूख**] १ किरण, रश्मि, (पाअ) । २ २ कान्ति, तेज; ३ शिखा, ४ शोभा, (हे १, १७१, प्राप्र)। ५ राक्षस वंश के एक राजा का नाम, एक लंका-पति, (पउम ५, २६५) ।

मए सक [**मद्**] मद-युक्त करना, उन्मत्त बनाना । वकृ—**मएंत,** (से २, १७) ।

मएज्जारिस वि [**मादृश**] मेरे जैसा, मेरे तुल्य; "मएज्जारिसाण पुरिसाहमाणं इमं चेरोचियं" (स ३३) ।

मं (अप) देखो **म=मा,** (पड्; हे ४, ४१८, कुमा) । °**कार** पुं [°**कार**] 'मा' अव्यय; (ठा १०—पत्र ४६५)।

मंकड देखो **मक्कड;** (आचा) ।

मंकण पुं [**मत्कुण**] खटमल, क्षुद्र कीट-विशेष, गुजराती में 'मांकण'; (जी १६) ।

मंकण पुंस्त्री [**दे. मर्कट**] बन्दर, वानर । स्त्री—°**णी;** "सयमेव मंकणीए धणीए तं कंकणो बद्धा" (कुप्र १८५) ।

मंकाइ पु [**मङ्काति**] एक अन्तकृद् महर्षि, (अंत १८) ।

मंकार पु [**मकार**] 'म' अक्षर, (ठा १० —पत्र ४६५)।

मंकिअ न [**मङ्कित**] कूद कर जाना; (दे ८, १५) ।

मंकुण देखो **मंकण=मत्कुण,** (दे, भवि) । °**हत्थि** पु [°**हस्तिन्**] गण्डोपद प्राणि विशेष, (पण्ण १—पत्र ४९) ।

मंकुस [**दे**] देखो **मंगुस,** (गा ७८१) ।

मंख देखो **मक्ख=म्रक्ष्** । वकृ—**मंखंत,** (राज) ।

मंख पुं [**दे**] भाण्ड, भाण, (दे ६, ११२) ।

मंख पु [**मङ्ख**] एक भिक्षुक-जाति जो चित्र-पट दिखाकर जीवन-निर्वाह करता है, (णाया १, १ टी, औप, पण्ह २, ४, पिंड ३०९, कप्प) । °**फलग** न [°**फलक**] १ मंख का तख्ता; २ निर्वाह-हेतुक चैत्य, (पचा ६, ४५ टी) ।

मंखण न [**म्रक्षण**] १ मक्खन; "मखणं व सुकुमालकरचरणा" (उप ६४८ टी)। २ अभ्यंग, मालिश; (सुर १२, ८)।

मंखलि पुं [**मङ्खलि**] एक मंख-भिक्षु, गोशालक का पिता । °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] गोशालक, आजीवक मत का प्रवर्तक एक भिक्षु जो पहले भगवान् महावीर का शिष्य था; (ठा १०, उवा)।

मंग सक [**मङ्ग्**] १ जाना । २ साधना । ३ जानना । कर्म—मंगिज्जए, (विसे २२) ।

मंग पु [**मङ्ग**] १ धर्म, (विसे २२) । २ रञ्जन-द्रव्य विशेष, रंग के काम में आता एक द्रव्य, (सिरि १०५७) ।

मंगइय देखो **मगइय,** (निर १, १) ।

मंगरिया स्त्री [**दे**] वाद्य-विशेष; (राय) ।

मंगल पु [**मङ्गल**] १ ग्रह-विशेष, अंगारक ग्रह, (इक) । २ न कल्याण, शुभ, क्षेम, श्रेय, (कुमा) । ३ विवाह-

सूत्र-बन्धन, (स्वप्न ४६)। ४ विघ्न-क्षय; (ठा ३, १)। ५ विघ्न-क्षय के लिए किया जाता इ-देष्टव-नमस्कार आदि शुभ कार्य; ६ विघ्न-क्षय का कारण, दुरित-नाश का निमित्त; (निमे १२. १३; २२; २३, २४: औप; कुमा)। ७ प्रशंसा-वाक्य, खुशामद, (सूत्र १, ७, २५)। ८ इष्टार्थ-सिद्धि, वाञ्छित-प्राप्ति; (कप्प)। ९ तप-विशेष, आयंबिल, (संबोध ५८)। १० लगातार आठ दिनों का उपवास, (संबोध ५८)। ११ वि इष्टार्थ-साधक, मंगल-कारक; (आव ४)। °ज्झय पुं [°ध्वज] मांगलिक ध्वज; (भग)। °तूर न [°तूर्य] मंगल-वाद्य; (महा)। °दीव पुं [°दीप] मांगलिक दीप, देव-मन्दिर में आरती के बाद किया जाता दीपक; (धर्मवि १२३; पंचा ८, २३)। °पाढय पुं [°पाठक] मागध, चारण; (पाअ)। °पाढिया स्त्री [°पाठिका] वीणा-विशेष, देवता के आगे सुबह और सन्ध्या में बजाई जाती वीणा, (राज)।

मंगल वि [दे] १ सदृश, समान, (दे ६, ११८)। २ न अग्नि, आग; ३ डोरा बूनने का एक साधन; ४ वन्दन-माला; (विमे २७)।

मंगलग पुंन [मङ्गलक] स्वस्तिक आदि आठ मांगलिक पदार्थ; (सुपा ७७)।

मंगलसज्झ न [दे] वह खेत जिसमें बीज बोना बाकी हो. (दे ६, १२६)।

मंगला स्त्री [मङ्गला] भगवान् श्रीसुमतिनाथ की माता का नाम, (सम १५१)।

मंगलालया स्त्री [मङ्गलालया] एक नगरी का नाम; (आचू १)।

मंगलावइ पुं [मङ्गलापातिन्] सौमनस-पर्वत का एक कूट; (इक; जं ४)।

मंगलावई स्त्री [मङ्गलावती] महाविदेह वर्ष का एक विजय. प्रान्त-विशेष; (ठा २, ३; इक)।

मंगलावत्त पुं [मङ्गलावर्त] १ महाविदेह वर्ष का एक विजय, प्रान्त-विशेष; (ठा २, ३; इक)। २ देव-विशेष; (जं ४)। ३ न. एक देव-विमान; (सम १७)। ४ पर्वत विशेष का एक शिखर; (इक)।

मंगलिअ } **मंगलीअ** } वि [माङ्गलिक] १ मंगल-जनक; "सयल-जीवलोअमंगलिअजम्मलाहस्स" (उत्तर ६०; अच्चु ३६; सुपा ७८)। २ प्रशसा-वाक्य बोलने वाला; "मुहमंगलीए" (सूत्र १, ७, २५)।

मंगल्ल वि [मङ्गल्य, माङ्गल्य] मंगल-कारी मंगल-जनक, मांगलिक: "पढमाणा जिणगुणगणनिबद्धमंगल्लवित्ताइं" (चेइय १६०, गाया १, १; सम १२२; कप्प; औप; सुर १, २३८, १५, १७३. सुपा ५५)।

मंगी स्त्री [मङ्गी] षड्ज ग्राम की एक मूर्च्छना; (ठा ७—पत्र ३६३)।

मंगु पुं [मङ्गु] एक सुप्रसिद्ध जैन आचार्य, आर्यमङ्गु; (णंदि; ती ७, आत्म २३)।

मंगुल न [दे] १ अनिष्ट; (दे ६, १४५; सुपा ३३८; सुक्त ८०)। २ पाप; (दे ६, १४५; वज्जा ८; गउड; सुक्त ८०)। ३ पुं. चोर, तस्कर, (दे ६, १४५)। ४ वि. असुन्दर, खराब; (पाअ, ठा ४, ४—पत्र २७१. स ७१३; दंस ३)। स्त्री—°ली, "मंगुली णं समणस्स भगवओ महा-वीरस्स धम्मपण्णत्ती" (उवा)।

मंगुस पुं [दे] नकुल, न्योला, भुजपरिसर्प-विशेष; (दे ६, ११८; सूत्र २, ३, २५)।

मंच पुं [दे] बन्ध; (दे ६, १११)।

मंच पु [मञ्च] १ मचान, उच्चासन; (कप्प, गउड)। २ गणितशास्त्र प्रसिद्ध दश योगों में तीसरा योग, जिसमें चन्द्रादि मंचाकार से रहते हैं; (सुज्ज १२—पत्र २३३)। °इमंच पुं [°तिमञ्च] १ मचान के ऊपर का मञ्च, ऊपर ऊपर रखा हुआ मंच; (औप)। २ गणित-प्रसिद्ध एक योग जिस में चन्द्र, सूर्य आदि नक्षत्र एक दूसरे के ऊपर रक्खे हुए मंचों के आकार से अवस्थित होते हैं; (सुज्ज १२)।

मंची स्त्री [मञ्चा] खटिया, खाट; "ता आरुह मंचीए" (सुर १०, १६८, १६६)।

मंछुडु (अप) अ [मङ्क्षु] शीघ्र, जल्दी, (भवि)।

मंजर पुं [मार्जार] मजार, बिल्ला, बिलाव; (हे २, १३२; कुमा)। देखो **मज्जर, मज्जार**।

मंजरि स्त्री [मञ्जरि] देखो **मंजरी**, (औप)।

मंजरिअ वि [मञ्जरित] मञ्जरी-युक्त; "मंजरिओ चूयनिकरो" (स ७१६)।

मंजरिआ } **मंजरी** } स्त्री [मञ्जरिका, °री] नवोत्पन्न सुकुमार पल्ल-वाकार लता, बौर; (कुमा. गउड)। °गुंडी स्त्री [°गुण्डी] वल्ली विशेष; 'तोमरिगुंडी य मंजरीगुंडी' (पाअ)।

मंजार देखो **मंजर**. (हे १, २६)।

मंजिआ स्त्री [दे] तुलसी; (दे ६, ११६)।

मंजिट्ठ वि [माञ्जिष्ठ] मजीठ रंग वाला, लाल। स्त्री—°ट्ठी, (कप्पू)।
मंजिट्ठा स्त्री [मञ्जिष्ठा] मजीठ, रंग-विशेष, (कप्पू. हे ४, ४३८)।
मंजीर न [मञ्जीर] १ नूपुर; "हसयं नेउरं च मजीरं" (पाअ; स ७०४; सुपा ६६)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)।
मंजीर न [दे] शृङ्खलक, साँकल; सिकरी; (दे ६, ११६)।
मंजु वि [मञ्जु] १ सुन्दर, मनोहर; (पाअ)। २ कोमल, सुकुमार; (औप; कप्प)। ३ प्रिय, इष्ट; (राय, जं १)।
मंजुआ स्त्री [दे] तुलसी, (दे ६, ११६; पाअ)।
मंजुल वि [मञ्जुल] १ सुन्दर, रमणीय, मधुर; (सम १५२, कप्प, विपा १, ७, पाअ. पिंग)। २ कोमल; (णाया १, १)।
मंजुसा } स्त्री [मञ्जूषा] १ विदेह वर्ष की एक नगरी; (ठा
मंजूसा } २, ३—पत्न ८०, इक)। २ पिटारी, छोटी संदूक; (सुपा ३२१; कप्पू)।
मंठ वि [दे] १ शठ, लुच्चा, बदमाश, २ पुं. बन्ध; (दे ६, १११)।
मंड सक [मण्ड्] भूषित करना, सजाना। मंडइ; (षड्), मंडति; (पि ५५७)।
मंड सक [दे] १ आगे धरना। २ प्रारम्भ करना, गुजराती में 'मांडवु'। "जो मंडइ रणभरधुरहो खंधु" (भवि)।
मंड पुन [मण्ड] रस, "तयाणंतर च णं घयविहिपरिमाणं करइ, नन्नत्थ सारइएणं गोघयमंडेणं" (उवा)।
मंडअ देखो **मंडव**=मण्डप. (नाट—शकु ९८)।
मंडअ } पुं [मण्डक] खाद्य-विशेष, माँडा, एक प्रकार की
मंडग } रोटी; (उप पृ ११५; पव ४ टी; कुप्र ४३. धर्मवि ११९)।
मंडग वि [मण्डक] विभूषक, शोभा बढाने वाला, "ससिं च .जोइसमुहमंडगं" (कप्प)।
मंडण न [मण्डन] १ भूषण, भूषा. (गउड. प्रासू १३२)। २ वि. विभूषक. शोभा बढ़ाने वाला; (गउड; कुमा)। स्त्री—°णी; (प्रासू ६४)। °**धाई** स्त्री [°धात्री] आभूषण पहराने वाली दासी, (णाया १, १—पत्न ३७)।
मंडल पुं [दे, मण्डल] श्वान, कुत्ता; (दे ६, ११४, पाअ, स ३६८, कुप्र २८०; सम्मत्त १६०)।
मंडल न [मण्डल] १ समूह, यूथ; (कुमा, गउड; सम्मत्त १६०)। २ देश; (उप १४२ टी. कुप्र ४६; २८०)। ३ गोल, वृत्ताकार पदार्थ, (कुमा, गउड)। ४ गोल आकार से वेष्टन, (ठा ३, ४—पत्न १६६: गउड)। ५ चन्द्र-सूर्य आदि का चार-क्षेत्र; (राय ६९, गउड)। ६ संसार, जगत्, (उत्त ३१, ३, ४, ५, ६)। ७ एक प्रकार का कुष्ठ रोग, ८ एक प्रकार की वृत्ताकार दाद—दद्रु, (पिंड ६००)। ९ बिम्ब, "उज्झइ ससिमंडलकलसदिण्णकंठग्गहं मयणो" (गउड)। १० सुभटों का स्थान-विशेष. (राज)। ११ मण्डलाकार परिभ्रमण, (सुज्ज १, ७; स ३४९)। १२ इंगित चेष्टा, (ठा ७—पत्न ३९८)। १३ पु. नरकावास-विशेष; (देवेन्द्र २९)। °**व** वि [°वत्] मण्डल में परिभ्रमण करने वाला; (सुज्ज १, ७)। °**ाहिव** पु [°ाधिप] मण्डलाधीश; (भवि)। °**ाहिवइ** पु [°ाधिपति] वही अर्थ; (भवि)।
मंडलग्ग पुंन [मण्डलाग्र] तलवार, खड्ग, (हे १, ३४, भवि)।
मंडलि पुं [मण्डलिन्] १ मण्डलाकार चलता वायु, (जी ७)। २ माण्डलिक राजा; "तेवीसं तित्थंकरा पुव्वभवे मंडलिरायाणो होत्था" (सम ४२)। ३ सर्प की एक जाति; (पगह १—पत्न ५१)। ४ न. गोत्र-विशेष, जो कौत्स गोत्र की एक शाखा है; ५ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न; (ठा ७—पत्न ३९०)। °**पुरी** स्त्री [°पुरी] नगर-विशेष, गुजरात का एक नगर, जो आजकल भी 'माडल' नाम से प्रसिद्ध है, (सुपा ६५९)।
मंडलिअ वि [मण्डलित] मण्डलाकार बना हुआ, "मंडलियचडकोदंडमुक्ककंडालिखंडियसिरेहिं" (सुपा ४, वज्जा ६२; गउड)।
मंडलिअ वि [मण्डलिक, माण्डलिक] १ मण्डलाकार वाला, २ पु. मंडल रूप से स्थित पर्वत-विशेष; (ठा ३, ४—पत्न १६६, पगह २, ४)। ३ मण्डलाधीश, सामान्य राजा; (णाया १, १, पगह १, ४; कुमा; कुप्र १२०; महा)।
मंडली स्त्री [मण्डली] १ पङ्क्ति, श्रेणी, समूह, (स ५, ७९, गच्छ २, ५६)। २ अश्व की एक प्रकार की गति; (से १३, ६६; महा)। ३ वृत्ताकार मंडल—समूह; (सबोध १७; उत्त)।
मंडलीअ देखो **मंडलिअ**=मण्डलिक; "तह तलवरसेणाहिवकोसाहिवमंडलीयसामंते" (सुपा ७३, ठा ३, १—पत्न १२६)।
मंडव पुं [मण्डप] १ विश्राम-स्थान, २ वल्ली आदि से वेष्टित स्थान, (जीव ३, स्वप्न ३९, महा; कुमा)। ३

स्नान आदि करने का गृह, "न्हाणमंडवंसि", "भोयणमंडवंसि" (कप्प, औप)।

मंडव न [**माण्डव्य**] १ गोत्र-विशेष; २ पुंसी. उस गोत्र में उत्पन्न, (ठा ७—पत्र ३९०)।

मंडविआ स्त्री [**मण्डपिका**] छोटा मण्डप; (कुमा)।

मंडव्वायण न [**माण्डव्यायन**] गोत्र-विशेष; (सुज्ज १०, १६; इक)।

मंडावण न [**मण्डन**] सजाना, विभूषित कराना। °**धाई** स्त्री [°**धात्री**] सजाने वाली दासी; (आचा २, १५, ११)।

मंडावय वि [**मण्डक**] सजाने वाला; (निचू ९)।

मंडि°, **मंडिअ** वि [**मण्डित**] १ भूषित; (कप्प, कुमा)। २ पुं भगवान् महावीर के षष्ठ गणधर का नाम; (सम १९; विसे १८०२)। ३ एक चोर का नाम; (धर्मवि ७२; ७३)। °**कुच्छि** पुंन [°**कुक्षि**] चैत्य-विशेष; (उत्त २०, २)। °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] भगवान् महावीर का छठवाँ गणधर; (कप्प)।

मंडिअ वि [**दे**] रचित, बनाया हुआ; २ विछाया हुआ;

"संसारे हयविहिणा महिलारूवेण मंडिए पासे।
बज्झंति जाणमाणा अयाणमाणावि बज्झंति ॥"
(रयण ८)।

३ आगे धरा हुआ; "मइ मंडिउ रणभरधुरहो खंधु" (भवि)। ४ आरब्ध; "रणु मंडिउ कच्छाहिवेण ताम" (भवि; सण)।

मंडिल्ल पुं [**दे**] अपूप, पूआ, पक्वान्न-विशेष; (दे ६, ११७)।

मंडी स्त्री [**दे**] १ पिधानिका, ढकनी; (दे ६, १११; पाअ)। २ अन्न का अग्र रस, माँड; ३ माँडी, कलप, लेई; (आव ४)। °**पाहुडिया** स्त्री [°**प्राभृतिका**] एक भिक्षा-दोष, अन्न के माँड अथवा माँडी को दूसरे पात्र में रखकर दी जाती भिक्षा का ग्रहण; (आव ४)।

मंडुक, **मंडुक्क** देखो **मंडूअ**; (श्रा २८, पण्ह १, १; हे २, ९८; षड्; पाअ)।

मंडुक्कलिया, **मंडुक्किया**, **मंडुक्की** स्त्री [**मण्डूकिका**, °**की**] १ स्त्री-मेंढक, भेकी, दादुरी; (उप १४७ टी, १३७ टी)। २ शाक-विशेष, वनस्पति-विशेष; (उवा, पण्ण १—पत्र ३४)।

मंडुग, **मंडूअ**, **मंडूक**, **मंडूर** पुं [**मण्डूक**] १ मेंढक, दादुर, "मंडुगगइसरिसो खलु अहिगारो होइ सुत्तस्स" (वव ७; कुमा)। २ वृक्ष-विशेष, श्योनाक, सोनापाठा; ३ बन्ध-विशेष, (संदि १७), "मंडूरो" (प्राप्र)। ४ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**प्पुअ** न [°**प्लुत**] भेक की चाल; २ पुं ज्योतिष-प्रसिद्ध योग-विशेष, भेक की गति की तरह होने वाला योग; (सुज्ज १२—पत्र २३३)।

मंडोवर न [**मण्डोवर**] नगर-विशेष. (ती १५)।

मंत सक [**मन्त्रय्**] १ गुप्त परामर्श करना, मसलहत करना। २ आमंत्रण करना। मंतइ, (महा; भवि)। भवि—मंतहीं (अप); (पिंग)। वकृ—**मंतंत, मंतयंत**; (सुपा ५३५; ३०७; अभि १२०)। संकृ—**मंतिअ, मंतिऊण, मंतेऊण**; (अभि १२४; महा)।

मंत पुंन [**मन्त्र**] १ गुप्त बात, गुप्त आलोचना; "न कहिज्जइ एसिमेरिसं मंतं" (सिरि ६२५), "फुट्टिस्सइ वोहित्थं महिलाजणकहियमंतं व" (धर्मवि १३; कुमा)। २ जप्य, जाप करने योग्य प्रणवादिक अक्षर-पद्धति; (णाया १, १४; ठा ३, ४ टी—पत्र १५९; कुमा; प्रासू १४)। °**जंभग** पुं [°**जृम्भक**] एक देव-जाति, (भग १४, ८ टी—पत्र ६५४)। °**देवया** स्त्री [°**देवता**] मन्त्राधिष्ठायक देव; (श्रा १)। °**न्नु** वि [°**ज्ञ**] मन्त्र का जानकार; (सुपा ६०३)। °**वाइ** वि [°**वादिन्**] मान्त्रिक, मन्त्र को ही श्रेष्ठ मानने वाला; (सुपा ५९७)। °**सिद्ध** वि [°**सिद्ध**] १ सब मन्त्र जिसके स्वाधीन हों वह; २ बहु-मन्त्र; ३ प्रधान मन्त्र वाला; "साहीणसव्वमंतो बहुमंतो वा पहाणमंतो वा, नेओ स मंतसिद्धो" (आवम)।

मंत देखो **मा**=मा।

मंतक्ख न [**दे**] १ लज्जा, शरम; २ दुःख; (दे ६, १४१)। ३ अपराध; "न लेइ गरुयंपि णाम-मंतक्खं" (गउड)।

मंतण न [**मन्त्रण**] १ गुप्त आलोचना, गुप्त मसलहत, (पउम ५, ९६; ८२, ४९)। २ मसलहत, परामर्श, सलाह; "मंतणत्थं हक्कारिओ अणेण जिणदत्तसेट्ठी" (कुप्र ११९)। ३ जाप; "पुणो पुणो मंतमंतणं कुहयं" (चेइय ७९३)।

मंतर देखो **वंतर**; (कप्प)।

मंता अ [**मत्वा**] जानकर, (सूअ १, १०, ६, आचा १, १, ५, १; १, ३, १, ३; पि ५८२)।

मंति पु [**मन्त्रिन्**] १ मन्त्री, अमात्य, दीवान, (कप्प; औप; पाअ)। २ वि. मन्त्रों का जानकार; (गु १२)।

मंति पुं [**दे**] विवाह-गणक, जोशी, ज्योतिर्वित्; (दे ६, १११)।

मंतिअ वि [**मन्त्रित**] गुप्त रीति से आलोचित; (महा)।

मंतिअ देखो **मंत**=मन्त्रय्।

मंतिअ वि [**मान्त्रिक**] मंत्र का जानने वाला; "मंतेण मंतिअस्स व वाणीए ताडिओ तुज्झ" (धर्मवि ६; मन ११)।
मंतिण देखो **मंति**=मन्त्रिन्; "निगूहिओ मंतिणेहिं कुसलेहिं" (पउम ३१. ६०; ६५, ८; भवि)।
मंतु वि [**मन्तु**] १ ज्ञाता, जानकार; २ पुं जीव, प्राणी; (विसे ३५२५)।
मंतु देखो **मण्णु**; (हे २, ४४; षड्; निचू २)। °**म** वि [°**मत्**] क्रोध वाला, कोप-युक्त। स्त्री—°**मई**, (कुमा)।
मंतु पुंन [**मन्तु**] अपराध; "मंतुं विलियं विप्पियं" (पाअ)।
मंतुआ स्त्री [**दे**] लज्जा, शरम, (दे ६, ११६, भवि)।
मंतेल्लि स्त्री [**दे**] सारिका, मैना; (दे ६, ११६)।
मंथ सक [**मन्थ्**] १ विलोडन करना। २ मारना, हिंसा करना। ३ अक. क्लेश पाना। मंथइ; (हे ४, १२१; प्राकृ ३३; षड्)। कवकृ—**मंथिज्जंत, मंथिज्जमाण, मच्छंत**; (पउम ११३, ३३, सुपा २५१; १६५; पण्ह १. ३—पत्र ५३)। संकृ—**मंथित्तु**; (सम्मत्त २२६)।
मंथ पुं [**मन्थ**] १ दही विलोने का दण्ड, मथनी, (विसे ३८४)। २ केवलि-समुद्घात के समय मन्थाकार किया जाता जीव-प्रदेश-समूह, (ठा ६; औप)।
मंथ (अप) देखो **मत्थ**=मस्त; (पिंग)।
मंथण न [**मन्थन**] १ विलोडन, विलोने की क्रिया; "खीरोअमंथणुच्छलिअदुद्धमित्तो व्व महुमहणो" (गा ११७)। २ घर्षण, "मंथणजाए अग्गी" (सबोध १)। ३ पुंन. मथनी, दही आदि मथने की लकड़ी, (प्राकृ १४)।
मंथणिआ स्त्री [**मन्थनिका**] १ मथनी, महानी, दही मथने की छोटी लकड़ी; (राज)। २ मथानी, दधि-कलशी, दही महने की हँडिया, (दे २, ६५)।
मंथणी स्त्री [**मन्थनी**] ऊपर देखा, (दे २, ५५)।
मंथर वि [**मन्थर**] १ मन्द, धीमा; (से १, ३८; गउड, पाअ; सुपा १)। २ विलम्ब से होने वाला; (पंचा ६, २२)। ३ पुं मन्थन-दण्ड; "वीनाममंथरायमाणमेलवोच्छिगणसूत्तखण्डाओ" (गउड)।
मंथर वि [**दे. मन्थर**] १ कुटिल, वक्र टेढ़ा, (दे ६, १४५; भवि)। २ स्त्रीन. कुसुम्भ, वन-विशेष, कसुम का पेड़, (दे ६, १४५)। स्त्री—°**रा**, "मंथरा कुसुंभी" (पाअ)।
मंथर वि [**दे**] बहु, प्रचुर, प्रभूत, (दे ६, १४५; भवि)।
मंथरिअ वि [**मन्थरित**] मन्थर किया हुआ, (गउड)।
मंथाण पुं [**मन्थान**] १ विलोडन-दण्ड; "तत्तो विसुद्धपरिणाममेरुमंथाणमहियभवजलही" (धर्मवि १०७, दे ६, १४१; वज्जा ४; पाअ, सुपा १५०)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)।
मंथिअ वि [**मथित**] विलोडित. (दे २, ८८; पाअ)।
मंथु पुंन [**दे**] १ बदरादि-चूर्ण; (पण्ह २, ५; उत्त ८, १२; सुख ८, १२; दस ५, १, ६८; ५, २, २४; आचा)। २ चूर्ण, चुर, बुकनी; (आचा २, १, ८, ८)। ३ दूध का विकार-विशेष, मट्ठा और माखन के बीच की अवस्था वाला पदार्थ, (पिंड २८२)।
मंद पुं [**मन्द**] १ ग्रह-विशेष, शनिश्चर; (सुर १०, २२४)। २ हाथी की एक जाति; (ठा ४, २—पत्र २०८)। ३ वि. अलस, धीमा, मृदु, (पाअ; प्रासू १३२)। ४ अल्प, थोड़ा, (प्रासू ७१)। ५ मूर्ख, जड़, अज्ञानी, (सुअ १. ४. १. ३१. पाअ)। ६ नीच, खल, "मुहमेव अहीणं तह य मंदस्स" (प्रासू १६)। ७ रोग-ग्रस्त, रोगी; (उत्त ८. ७)। °**उण्णिया** स्त्री [°**पुण्यिका**] देवी-विशेष; (पंचा १६, २४)। °**भग्ग** वि [°**भाग्य**] कमनसीब, (सुपा ३७६, महा)। °**भाअ** वि [°**भाग, °भाग्य**] वही अर्थ; (स्वप्न २२, कुमा)। °**भाइ** वि [°**भागिन्**] वही अर्थ; (स ७५६; सुपा २२६)। °**भाग** देखो °**भाअ**. (सुर १०, ३८)।
मंद न [**मान्द्य**] १ बीमारी, रोग; " न य मंदगं मरई कोइ निग्गिओ अहव मणुओ वा" (सुपा २२६)। २ मूर्खता, बेवकूफी; "बालस्स मंदयं बीयं" (सुअ १. ४, १. २६)।
मंदक्ख न [**मन्दाक्ष**] लज्जा, शरम; (राज)।
मंदग, **मंदय** न [**मन्दक**] गेय-विशेष, एक प्रकार का गान; (राज; ठा ४. ४—पत्र २८५)।
मंदर पु [**मन्दर**] १ पर्वत-विशेष, मेरु पर्वत; (सुज्ज ५; सम १२; हे २. १७४. कप्प; सुपा ४७)। २ भगवान् विमलनाथ का प्रथम गणधर, (सम १५२)। ३ वानरद्वीप का एक राजा, महयकुमार का पुत्र; (पउम ६, ६७)। ४ छन्द का एक भेद, (पिंग)। ५ मन्दर-पर्वत का अधिष्ठायक देव; (जं ४)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष; (इक)।
मंदा स्त्री [**मन्दा**] १ मन्द-स्त्री; (वज्जा १०६)। २ मनुष्य की दश अवस्थाओं में तीसरी अवस्था—२१ से ३० वर्ष तक की दशा, (तंदु १६)।

मंदाइणी स्त्री [मन्दाकिनी] १ गंगा नदी, भागीरथी; (पउम १०, ४०; पात्र)। २ रामचन्द्र के पुत्र लव की स्त्री का नाम; (पउम १०६, १२)।

मंदाय क्रि [मन्द] मन्दः, धीमे से; "मंदायं मंदायं पच्च-इणए" ([illegible] ३)।

मंदाय न [मन्दाय] गेय-विशेष; (जं १)।

मंदार पुं [मन्दार] १ कल्पवृक्ष-विशेष; (सुपा १)। २ पारिभद्र वृक्ष। ३ न. मन्दार वृक्ष का फूल; "मंदारदामरम-णिज्जभूयं" (कप्प, गउड)। ४ पारिभद्र वृक्ष का फूल; (कुमा १०६)।

मंदिअ वि [मान्दिक] मन्दता वाला, मन्द; "बाले य मंदिए मूढे" (उत्त ८, ५)।

मंदिर न [मन्दिर] १ गृह, घर; (गउड; भवि)। २ नगर-विशेष; (इक; आवृ १)।

मंदिर वि [मान्दिर] मन्दिर-नगर का; "सौहपुरा सोहा वि य गोलपुरा मंदिरा य कृत्तागा" (पउम ५५, ५३)।

मंदीर न [दे] १ शृङ्खल, साँकल; २ मन्थान-दण्ड, (दे ६, १४१)।

मंदुअ पुं [दे. मन्दुक] जलजन्तु-विशेष; (पण्ह १, १—पत्र ७)।

मंदुरा स्त्री [मन्दुरा] अश्व-शाला; (सुपा ६७)।

मंदोअरी } स्त्री [मन्दोदरी] १ रावण-पत्नी; (से १३, **मंदोयरी** } ६७)। २ एक वणिक्-पत्नी; (उप ५६७ टी)।

मंदोसिण ([illegible]) वि [मन्दोष्ण] अल्प गरम, (प्राकृ १०३)।

मंधाउ पुं [मान्धातृ] हरिवंश का एक राजा, (पउम २२, ९७)।

मंधादण पुं [मन्धादन] [illegible]; "[illegible] मंधादए (?) [illegible]" (सुअ १, ३, ४, ११)।

मंभीस न [दे] [illegible], (दे ६, ११६)।

मंभीस ([illegible]) [illegible] [मा + भी] [illegible] (भवि)।

मंभीसिअ [illegible] मभीसिअ, ([illegible])।

मंस पुंन [मांस] [illegible]; "[illegible]" (सुअ १, [illegible]; [illegible] २४६, [illegible]) । °खल वि [°खल] [illegible] (सुअ १, १५)। °खड न [°खड] [illegible] स्थान; (आचा २, १, ४, १)। °चक्खु पुंन [°चक्षुष्] १ मांस-मय चक्षु; २ वि. मांस-मय चक्षु वाला, ज्ञान-चक्षु-रहित; "अदिट्ठे मंसचक्खुणा" (सम ६०)। °ासण वि [°ाशन] मांस-भक्षक; (कुमा)। °ासि, °ासिण वि [°ाशिन्] वही अर्थ; (पउम १०५, ४४; महा), "मंसा-सिणल्ल" (पउम २६, ३७)।

मंसल वि [मांसल] पीन, पुष्ट, उपचित; (पाअ; हे १, २९; पण्ह १, ४)।

मंसी स्त्री [मांसी] गन्ध-द्रव्य-विशेष, जटामांसी; (पण्ह २, ५—पत्र १५०)।

मंसु पुंन [श्मश्रु] दाढ़ी-मूँछ—पुरुष के मुख पर का बाल, (सम ६०; औप; कुमा), "मंसू" (हे १. २६; प्राप्र), "मंसूई" (उवा)।

मंसु देखो **मंस**; "मंसूणि छिन्नपुव्वाइं" (आचा)।

मंसुंडग न [दे, मांसोन्दुक] मांस-खण्ड; (पिंड ५८६)।

मंसुल्ल वि [मांसवत्] मांस वाला; (हे २, १५९)।

मक्कंडेअ पुं [मार्कण्डेय] ऋषि-विशेष; (अभि २४३)।

मक्कड पुं [मर्कट] १ वानर, बन्दर; (गा १७१; उप पृ १८८; सुपा ६०६; दे २, ७२, कुप्र ६०; कुमा)। २ मकड़ा, जाल बनाने वाला कीड़ा; (आचा, कस; गा ६३; दे ६, ११६)। ३ छन्द का एक भेद; (पिंग)। °बंध पुं [°बन्ध] बन्ध-विशेष, नाराच-बन्ध; (कम्म १, ३८)। °संताण पुं [°संतान] मकड़ा का जाल; (पडि)।

मक्कडबंध न [दे] घट्टपल्लाकार ग्रीवा-भूषण; (दे ६, १२७)।

मक्कडी स्त्री [मर्कटी] वानरी; (कुप्र ३०३)।

मक्कोल (अप) देखो **मक्कड**; (पिंग)।

मक्कार पुं [माकार] १ 'मा' वर्ण; २ 'मा' के प्रयोग वाली दण्डनीति, निषेध-सूचक एक प्राचीन दण्ड-नीति; (ठा ७—पत्र ३९८)।

मक्कुण देखो **मंकुण**, (पव २६२; दे १, ६६)।

मक्कोड पुं [दे] १ यन्त्र-गुम्फनार्थ राशि, जन्तर गूँथने के लिये बनाया जाता राशि; (दे ६, १४२)। २ पुंस्त्री. कीट-विशेष, चींटा, गुजराती में 'मकोडो', 'मंकोडो'; (निचू १; भग, टी १६)। स्त्री °डा; (दे ६, १४२)।

मक्ख सक [म्रक्ष्] १ चुपड़ना, स्नेहान्वित करना। २ घी, तेल आदि स्निग्ध द्रव्य से मालिश करना। मक्खइ; ([illegible]), मक्खेति; (उप १४० टी), मक्खिज्जइ, मक्खेज्ज;

(आचा २, १३ २; ३)। हेकृ—**मक्खेत्तए**; (कस)। कृ—**मक्खियव्व**; (ओघ ३८५ टी)।

मक्खण न [**म्रक्षण**] १ मक्खन, नवनीत; (स २५८, पभा २२)। २ मालिश, अभ्यंग; (निचू ३)।

मक्खर पुं [**मस्कर**] १ गति; २ ज्ञान; ३ वंश, बाँस, ४ छिद्र वाला बाँस; (संक्षि १५; पि ३०६)।

मक्खिअ वि [**म्रक्षित**] चुपड़ा हुआ; (पात्र, दे ८, ६२; ओघ ३८५ टी)।

मक्खिअ न [**माक्षिक**] मक्षिका-संचित मधु, (राज)।

मक्खिआ स्त्री [**मक्षिका**] मक्खी; (दे ६, १२३)।

मगइअ वि [**दे**] हस्त-पाशित, हाथ में बाँधा हुआ; (विपा १, ३—पत्र ४८; ४६)।

मगण पुं [**मगण**] छन्दःशास्त्र-प्रसिद्ध तीन गुरु अक्षरों की संज्ञा; (पिंग)।

मगदंतिआ स्त्री [**दे**] १ मालती का फूल; २ मोगरा का फूल; "कुसुअं वा मगदंतिअं" (दस ५, २, १३; १६)।

मगर पुं [**मकर**] १ मगर-मच्छ, जलजन्तु-विशेष; (पराह १, २; औप; उव; सुर १३, ४२; गाया १, ४)। २ राहु; (सुज्ज २०)। देखो **मयर**।

मगसिर स्त्रीन [**मृगशिरस्**] नक्षत्र-विशेष; "कत्तिय रोहिणी मगसिर अद्दा य" (ठा २, ३—पत्र ७७)। स्त्री—°**रा**; "दो मगसिराओ" (ठा २, ३—पत्र ७७)।

मगह देखो **मागह**। °**तित्थ** न [°**तीर्थ**] तीर्थ-विशेष; (इक)।

मगह } पुं. ब. [**मगध**] देश-विशेष; (कुमा)। °**वरच्छ**
मगहग } [°**वराक्ष**] आभरण-विशेष; (औप पृ ४८ टि)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष; (महा)। देखो **मयह**।

मगा अ [**दे**] पश्चात्, पीछे; मराठी में 'मग'; (दे १, ४ टी)।

मग्ग सक [**मार्गय्**] १ माँगना। २ खोजना। मग्गइ, मग्गंति; (उव; षड्; हे १, ३४)। वकृ—**मग्गंत, मग्गमाण**; (गा २०२, उप ६४८ टी, महा; सुपा ३०८)। संकृ—**मग्गेविणु** (अप); (भवि)। हेकृ—**मग्गिउं**; (महा)। कृ—**मग्गिअव्व, मग्गेयव्व**; (से १४, २७; सुपा ५१८)।

मग्ग सक [**मृग्**] गमन करना, चलना। मग्गइ; (हे ४, २३०)।

मग्ग पुं [**मार्ग**] १ रास्ता, पथ, (ओघ ३४; कुमा; प्रासू ५०; ११७; भग)। २ अन्वेषण, खोज; (विसे १३८१)। °**ओ** अ [°**तस्**] रास्ते से; (हे १, ३७)। °**ण्णु** वि [°**ज्ञ**] मार्ग का जानकार; (उप ६४४)। °**त्थ** वि [°**स्थ**] १ मार्ग में स्थित; २ सोलह से ज्यादः वर्ष की उम्र वाला; (सूअ २, १, ६)। °**दय** वि [°**दय**] मार्ग-दर्शक; (भग; पडि)। °**विउ** वि [°**वित्**] मार्ग का जानकार; (ओघ ८०२)। °**ह** वि [°**घ**] मार्ग-नाशक, (श्रु ७४)। °**णुसारि** वि [°**ानुसारिन्**] मार्ग का अनुयायी, (धर्म २)।

मग्ग } पुं [**दे**] पश्चात्, पीछे; (दे ६, १११; से १,
मग्गअ } ५१; सुर २, ५६; पात्र, भग)।

मग्गअ वि [**मार्गक**] माँगने वाला; (पउम ६६, ७३)।

मग्गण पुं [**मार्गण**] १ याचक, (सुपा २४)। २ बाण, शर; (पात्र)। ३ न. अन्वेषण, खोज; (विसे १३८१)। ४ मार्गणा, विचारणा, पर्यालोचन; (औप, विसे १८०)।

मग्गण° } स्त्री [**मार्गणा**] १ अन्वेषण, खोज; (उप पृ
मग्गणया } २७६; उप ६६२; ओघ ३)। २ अन्वय-
मग्गणा } धर्म के पर्यालोचन द्वारा अन्वेषण, विचारणा, पर्यालोचना; (कम्म ४, १; २३; जीवस २)।

मग्गण्णिर वि [**दे**] अनुगमन करने की आदत वाला; (दे ६, १२४)।

मग्गसिर पुं [**मार्गशिर**] मास-विशेष, मगसिर मास, अगहन; (कप्प; हे ४, ३५७)।

मग्गसिरी स्त्री [**मार्गशिरी**] १ मगसिर मास की पूर्णिमा; २ मगसिर की अमावस; (सुज्ज १०, ६)।

मग्गिअ वि [**मार्गित**] १ अन्वेषित, गवेषित; (से ६, ३६)। २ माँगा हुआ, याचित; (महा)।

मग्गिर वि [**मार्गयितृ**] खोज करने वाला; (सुपा ५८)।

मग्गिल्ल वि [**दे**] पाश्चात्य, पीछे का; (विसे १३२६)।

मग्गु पुं [**मद्गु**] पक्षि-विशेष, जल-काक; (सूअ १, ७, १५; हे २, ७७)।

मघ पुं [**मघ**] मेघ; (भग ३, २; पराग २)।

मघमघ अक [**प्र + सृ**] फैलना, गन्ध का पसरना; गुजराती में 'मघमघवुं', मराठी में 'मघमघणें'। वकृ—**मघमघंत, मघमघिंत, मघमघेंत**; (सम १३७; कप्प; औप)।

मघव पुं [**मघवन्**] १ इन्द्र, देव-राज; (कप्प; कुमा ७, ६४)। २ तृतीय चक्रवर्ती राजा; (सम १५२; पउम २०, १११)।

मघवा स्त्री [**मघवा**] छठवीं नरक-भूमि; "मघव त्ति माघवत्ति य पुढवीणं नामधेयाइं" (जीवस १२)।
मघा स्त्री [**मघा**] १ ऊपर देखो; (ठा ७—पत्र ३८८; इक)। २ देखो **महा**=मघा; (राज)।
मघोण पुं [**दे. मघवन्**] देखो **मघव**; (षड् ; पि ४०३)।
मच्च अक [**मद्**] गर्व करना। मच्चइ; (षड्, हे ४, २२५)।
मच्च (अप) देखो **मंच**; "मंकुणमच्चइ सुत्त वराई" (भवि)।
मच्च न [**दे**] मल, मैल, (दे ६. १११)।
मच्च } पुं [**मर्त्य**] मनुष्य, मानुष; (स २०८; रंभा; **मच्चिअ** } पाअ; सूअ १, ८, २; आचा)। °**लोअ** पु [°**लोक**] मनुष्य-लोक; (कुप्र ४११)। °**लोईय** वि [°**लोकीय**] मनुष्य-लोक से सबन्ध रखने वाला, (सुपा ५१९)।
मच्चिअ वि [**दे**] मल-युक्त, (दे ६. १११ टी)।
मच्चिर वि [**मदितृ**] गर्व करने वाला; (कुमा)।
मच्चु पुं [**मृत्यु**] १ मौत, मरण, (आचा; सुर २, १३८; प्रासू १०६, महा)। २ यम, यमराज; (षड्)। ३ रावण का एक सैनिक, (पउम ५६, ३१)।
मच्छ पुं [**मत्स्य**] १ मछली; (णाया १, १; पाअ; जी २०; प्रासू ५०)। २ राहु; (सुज्ज २०)। ३ देश-विशेष; (इक, भवि)। ४ छन्द का एक भेद, (पिंग)। °**खल** न [°**खल**] मत्स्यों को सुखाने का स्थान, (आचा २, १, ४, १)। °**वंध** पु [°**वन्ध**] मच्छीमार, धीवर; (पणह १, १; महा)।
मच्छंडिआ स्त्री [**मत्स्यण्डिका**] खण्डशर्करा, एक प्रकार की शक्कर; (पणह २, ४, णाया १, १७; पराण १७; पिंड २८३; मा ४३)।
मच्छंत देखो **मंथ**=मन्थ्।
मच्छंध देखो **मच्छ-बंध**, (विपा १, ८ -पत्र ८२)।
मच्छर पुं [**मत्सर**] १ ईर्ष्या, द्वेष, डाह, पर-संपत्ति की असहिष्णुता, (उव)। २ कोप, क्रोध; ३ वि. ईर्ष्यालु, द्वेषी; ४ क्रोधी; ५ कृपण; (हे २. २१)।
मच्छर न [**मात्सर्य**] ईर्ष्या, द्वेष; (स ३, १९)।
मच्छरि वि [**मत्सरिन्**] मत्सर वाला; (पणह २, ३; उवा; पाअ)। स्त्री—°**णी**, (गा ८४, महा)।
मच्छरिअ वि [**मत्सरित, मत्सरिक**] ऊपर देखो, (पउम ८, ४९; पंचा १, ३२, भवि)।
मच्छल देखो **मच्छर**=मत्सर, (हे २, २१; षड्)।
मच्छिअ देखो **मक्खिअ**=माक्षिक, (पव ४—गाथा २२०)।
मच्छिअ वि [**मात्स्यिक**] मच्छीमार; (श्रा १२; अभि १८७; विपा १, ६; ७; पिंड ६३१)।
मच्छिका (मा) देखो **माउ**=मातृ, (प्राकृ १०२)।
मच्छिगा देखो **मच्छिया**; (पि ३२०)।
मच्छिया } स्त्री [**मक्षिका**] मक्खी; (णाया १, १६; **मच्छी** } जी १८, उत्त ३६, ६०; प्राप्र; सुपा २८१)।
मज्ज सक [**मद्**] अभिमान करना,। मज्जइ, मज्जई, मज्जेज्ज; (उत्र, सूअ १, २, २, १; धर्मसं ७८)।
मज्ज अक [**मस्ज्**] १ स्नान करना। २ डूबना। मज्जइ; (हे ४. १०१), मज्जामा: (महा ५७, ७; धर्मसं ८६४)। वकृ—**मज्जमाण**; (गा २४६; णाया १, १)। संकृ—**मज्जिऊण**, (महा)। प्रयो—संकृ—**मज्जावित्ता**, (ठा ३, १—पत्र ११७)।
मज्ज सक [**मृज्**] साफ करना, मार्जन करना। मज्जइ; (षड्; प्राकृ ६६, हे ४, १०५)।
मज्ज न [**मद्य**] दारू, मदिरा, (औप; उवा; हे २, २४, भवि)। °**इत्त** वि [°**वत्**] मदिरा-लोलुप, (सुख १, १५)। °**व** वि [°**प**] मद्य-पान करने वाला; (पाअ)। °**वीअ** वि [°**पीत**] जिसने मद्य-पान किया हो वह, (विपा १, ६—पत्र ६७)।
मज्जग वि [**माद्यक**] मद्य-संबन्धी; "अन्नं वा मज्जगं रसं" (दस ५, २, ३६)।
मज्जण न [**मज्जन**] १ स्नान; २ डूबना; (सुर ३, ७६; कप्पू; गउड, कुमा)। °**घर** न [°**गृह**] स्नान-गृह; (णाया १, १—पत्र १९)। °**धाई** स्त्री [°**धात्री**] स्नान कराने वाली दासी; (णाया १, १—पत्र ३७)। °**पाली** स्त्री [°**पाली**] वही अर्थ; (कप्प)।
मज्जण न [**मार्जन**] १ साफ करना, शुद्धि, (कप्प)। २ वि. मार्जन करने वाला; (कुमा)। °**घर** न [°**गृह**] शुद्धि-गृह; (कप्प; औप)।
मज्जर देखो **मंजर**, (प्राकृ ५)। स्त्री—°**री**; "को जुन्न-मज्जरिं कंजिएण पवियारिउं तरइ" (सुर ३, १३३)।
मज्जविअ वि [**मज्जित**] १ स्नपित; २ स्नात; "एत्थ सरे रे पंथिअ गयवइवहुयाउ मज्जविया" (वज्जा ९०)।
मज्जा स्त्री [**दे. मर्या**] मर्यादा; (दे ६, ११३; भवि)।

मज्जा स्त्री [**मज्जा**] धातु-विशेष, चर्बी, हड्डी के भीतर का गूदा, (सण)।

मज्जाइल्ल वि [**मर्यादिन्**] मर्यादा वाला, (निचू ४)।

मज्जाया स्त्री [**मर्यादा**] १ न्याय्य-पथ-स्थिति, व्यवस्था, "रयणायरस्स मज्जाया" (प्रासू ६८; आवम)। २ सीमा, हद, अवधि, ३ कूल, किनारा, (हे २, २४)।

मज्जार पुंस्त्री [**मार्जार**] १ बिल्ला, बिलाव; (कुमा, भवि)। २ वनस्पति-विशेष, "वत्थुलपोरगमज्जारपोइवल्ली य पालक्का" (पण्ण १—पत्र ३४)। स्त्री—°**रिआ**, °**री**, (कप्पू, पाअ)।

मज्जाविअ वि [**मज्जित**] स्नपित; (महा)।

मज्जिअ वि [**दे**] १ अवलोकित, निरीक्षित, २ पीत; (दे ६, १४४)।

मज्जिअ वि [**मज्जित**] स्नात; (पिंड ४२३, महा; पाअ)।

मज्जिअ वि [**मार्जित**] साफ किया हुआ; (पउम २०, १२७; कप्प, औप)।

मज्जिआ स्त्री [**मार्जिता**] रसाला, भक्ष्य-विशेष—दही, शक्कर आदि का बना हुआ और सुगन्ध से वासित एक प्रकार का खाद्य, (पाअ, दे ७, २; पव २५६)।

मज्जिर वि [**मज्जितृ**] मज्जन करने की आदत वाला; (गा ४७३; सण)।

मज्जोक्क वि [**दे**] अभिनव, नूतन; (दे ६, ११८)।

मज्झ न [**मध्य**] १ अन्तराल, मझार, बीच; (पाअ, कुमा; दं ३६; प्रासू ५०; १६७)। २ शरीर का अवयव-विशेष, (कप्पू)। ३ संख्या-विशेष, अन्त्य और परार्ध्य के बीच की संख्या; (हे २, ६०; प्राप्र)। ४ वि. मध्यवर्ती, बीच का; (प्रासू १२५)। °**एस** पु [°**देश**] देश विशेष, गंगा और यमुना के बीच का प्रदेश, मध्य प्रान्त; (गउड)। °**गय** वि [°**गत**] १ बीच का, मध्य में स्थित; (आचा; कप्प)। २ पु अवधिज्ञान का एक भेद, (णंदि)। °**गेवेज्जय** न [°**ग्रैवेयक**] देवलोक-विशेष, (इक)। °**ट्ठिअ** वि [°**स्थित**] तटस्थ, मध्यस्थ, (रयण ४८)। °**ण्ण**, °**ण्ह** पुं [°**ाह्न**] दिन का मध्य भाग, दोपहर; (प्राप्र; प्राकृ १८; कुमा, अभि ५५; हे २, ८४, महा)। २ न. तप-विशेष, पूर्वार्ध तप; (संबोध ५८)। °**ण्हतरु** पुं [°**ाह्नतरु**] वृक्ष-विशेष, मध्याह्न समय में अत्यन्त फूलने वाले लाल रँग के फूल वाला वृक्ष; (कुमा)। °**त्थ** वि [°**स्थ**] तटस्थ; (उव; उप ६४८ टी, सुर १६, ६५)। २ बीच में रहा हुआ, (सुपा २५७)। °**देस** देखो °**एस**; (सुर ३, १६)। °**न्न** देखो °**ण्ण**; (हे २, ८४; सण)। °**म** वि [°**म**] मध्य का, मझला, बीच का; (भग; नाट—विक्र ५)। °**रत्त** पुं [°**रात्र**] निशीथ, (उप १३६; ७२८ टी)। °**रयणि** स्त्री [°**रजनि**] मध्य रात्रि; (स ६३६)। °**लोग** पुं [°**लोक**] मेरु पर्वत, (राज)। °**वत्ति** वि [°**वर्तिन्**] अन्तर्गत, (मोह ६४)। °**ावलिअ** वि [°**ावलित**] १ बीच में मुड़ा हुआ, २ चित्त में कुटिल; (वज्जा १२)

मज्झआर न [**दे**] मझार, मध्य, अन्तराल; (दे ६, १२१; विक्र २८; उव; गा ३, विसे २६६१; सुर १, ४५; सुपा ४६; १०३, सा १), "असोगवणिआइ मज्झयारम्मि" (भाव ७)।

मज्झंतिअ न [**दे**] मध्यन्दिन, मध्याह्न; (दे ६, १२४)।

मज्झंदिण न [**मध्यन्दिन**] मध्याह्न; (दे ६, १२४)।

मज्झंमज्झ न [**मध्यमध्य**] ठीक बीच; (भग; विपा १, १; सुर १, २४४)।

मज्झगार देखो **मज्झआर**, (राज)।

मज्झण्हिय वि [**माध्याह्निक**] मध्याह्न-संबन्धी; (धर्मवि १०५)।

मज्झत्थ न [**माध्यस्थ्य**] तटस्थता, मध्यस्थता; (उप ६१५; संबोध ४५)।

मज्झिम वि [**मध्यम**] १ मध्य-वर्ती बीच का; (हे १, ४८; सम ४३; उवा; कप्प; औप; कुमा)। २ स्वर-विशेष, (ठा ७—पत्र ३६३)। °**रत्त** पु [°**रात्र**] निशीथ, मध्य-रात्रि; (उप ७२८ टी)।

मज्झिमगंड न [**दे**] उदर, पेट; (दे ६, १२५)।

मज्झिमा स्त्री [**मध्यमा**] १ बीच की उंगली; (आघ ३६०)। २ एक जैन मुनि-शाखा, (कप्प)।

मज्झिमिल्ल वि [**मध्यम**] मध्य-वर्ती, बीच का; (अणु)।

मज्झिमिल्ला देखो **मज्झिमा**, (कप्प)।

मज्झिल्ल वि [**माध्यिक, मध्यम**] मझला, बीच का; (पव ३६; देवेन्द्र २३८)।

मट्ट वि [**दे**] शृङ्ग-रहित, (दे ६, ११२)।

मट्टिआ स्त्री [**मृत्तिका**] मट्टी, मिट्टी, माटी; (णाया १, १; औप; कुमा, महा)।

मट्टी स्त्री [**मृत्, मृत्तिका**] ऊपर देखो; (जी ४; पडि; दे)।

मट्टुहिअ न [**दे**] १ परिणीत स्त्री का कोप, २ वि. कलुष, ३ अशुचि, मैला, (दे ६, १४६)।

मट्ठ वि [**दे**] अलस, आलसी, मन्द, जड, (दे ६, ११२, पाअ)।

मट्ठ वि [**मृष्ट**] १ मार्जित, शुद्ध, (सूअ १, ६, १२; औप)। २ मसृण, चिकना; (सम १३७, दे ८, ७)। ३ घिसा हुआ; (औप; हे २, १७४)। ४ न. मिरच, मरिच; (हे १, १२८)।

मड वि [**दे. मृत**] १ मरा हुआ, निर्जीव; (दे ६, १४१), "मडोव्व अप्पाणं" (वज्जा १४८), "मडे" (मा); (प्राकृ १०३)। °**इ** वि [°**आदिन्**] निर्जीव वस्तु को खाने वाला; (भग)। °**ासय** पुं [°**ाश्रय**] श्मशान, (निचू ३)।

मड पुं [**दे**] कठ, गला; (दे ६, १४१)।

मडंब पुंन [**दे. मडम्ब**] ग्राम-विशेष, जिसके चारों ओर एक योजन तक कोई गाँव न हो ऐसा गाँव; (णाया १, १; भग; कप्प; औप; पण्ह १, ३; भवि)।

मडक्क पुं [**दे**] १ गर्व, अभिमान; "न किउ वयणु संचलिय मडक्कइ" (भवि)। २ मटका, कलश, घड़ा; मराठी में 'मडकें'; (भवि)।

मडकिया स्त्री [**दे**] छोटा मटका, कलशी; (कुप्र ११९)।

मडप्प, °प्पर, मडप्फर पुं [**दे**] गर्व, अभिमान, अहंकार; "अज्जवि कंदप्पमडप्पखंडणे वहइ पंडिच्च" (सुपा २६; कुप्र २२१; २८४, षड्; दे ६, १२०; पाअ, सुपा ६; प्रासू ८५, कुप्र २५५; सम्मत्त १८९; धम्म ८ टी; भवि; सण)।

मडभ वि [**मडभ**] कुब्ज, वामन; (राज)।

मडमड, मडमडमड अक [**मडमडाय्**] १ मड मड आवाज करना। २ सक. मड मड आवाज हो उस तरह मारना। मडमडमडंति; (पउम २६, ५३)। भवि—मडमडइस्सं, मडमडाइस्सं (मा), (पि ५२८; चारु ३५)।

मडमडाइअ वि [**मडमडायित**] मड मड आवाज हो उस तरह मारा हुआ; (उत्तर १०३)।

मडय न [**मृतक**] मुड़दा, मुर्दा, शव; (पाअ; हे १, २०६; सुपा २१९)। °**गिह** न [°**गृह**] कब्र, (निचू ३)। °**चेइअ** न [°**चैत्य**] मृतक के दाह होने पर या गाड़ने पर बनाया गया चैत्य—स्मारक-मन्दिर; (आचा २, १०, १९)। °**डाह** पुं [°**दाह**] चिता, जहां पर शव फूंके जाते हों; (आचा २, १०, १९)। °**थूभिया** स्त्री [°**स्तूपिका**] मृतक के स्थान पर बनाया गया छोटा स्तूप, (आचा २, १०, १९)।

मडय पुं [**दे**] आराम, बगीचा, (दे ६, ११५)।

मडवोज्झा स्त्री [**दे**] शिबिका, पालकी, (दे ६, १२२)।

मडह वि [**दे**] १ लघु, छोटा; (दे ६, ११७, पाअ; सण)। २ स्वल्प, थोड़ा; (गा १०५; स ८; गउड; वज्जा ४२)।

मडहर पुं [**दे**] गर्व, अभिमान; (दे ६, १२०)।

मडहिय वि [**दे**] अल्पीकृत, न्यून किया हुआ; (गउड)।

मडहुल्ल वि [**दे**] लघु, छोटा; "मडहुल्लियाए किं तुह इमीए किं वा दलेहिं तलिणेहिं" (वज्जा ४८)।

मडिआ स्त्री [**दे**] समाहत स्त्री, आहत महिला; (दे ६, ११४)।

मडुवइअ वि [**दे**] १ हत, विध्वस्त; २ तीक्ष्ण; (दे ६, १४६)।

मड्ड सक [**मृद्**] मर्दन करना। मड्डइ; (हे ४, १२६; प्राकृ ६८)।

मड्डा स्त्री [**दे**] १ बलात्कार, हठ, जबरदस्ती; (दे ६, १४०; पाअ; सुर ३, १३६; सुख २, १५)। २ आज्ञा, हुकुम; (दे ६, १४०; सुपा २७९)।

मड्डिअ वि [**मर्दित**] जिसका मर्दन किया गया हो वह; (हे २, ३६; षड्; पि २९१)।

मड्डुअ देखो **मद्दुअ**; (राज)।

मढ देखो **मड्ड**। मढइ; (हे ४, १२६)।

मढ पुंन [**मठ**] संन्यासिओं का आश्रय, व्रतिओं का निवास-स्थान; "मढो" (हे १, १९९; सुपा २३४; वज्जा ३४; भवि), "मढं" (प्राप्र)।

मढिअ देखो **मड्डिअ**; (कुमा)।

मढिअ वि [**दे**] १ खचित, गुजराती में 'मढेलु'; "एयाउ ओसहीओ तिधाउमढियाउ धारिज्जा" (सिरि ३७०)। २ परिवेष्टित, (दे २, ७५; पाअ)।

मढी स्त्री [**मठिका**] छोटा मठ; (सुपा ११३)।

मण सक [**मन्**] १ मानना। २ जानना। ३ चिन्तन करना। मणइ, मणसि, (षड्; कुमा)। कवकृ—**मणिज्जमाण**; (भग १३, ७; विसे ८१३)।

मण पुंन [**मनस्**] मन, अन्तःकरण, चित्त; (भग १३, ७; विसे ३५२५; स्वप्न ४५, दं २२; कुमा; प्रासू ४४; ४८,

१२१)। °अगुत्ति स्त्री [°अगुप्ति] मन का असंयम; (पि १५६)। °करण न [°करण] चिन्तन, पर्यालोचन; (श्रावक ३३७)। °गुत्त वि [°गुप्त] मन को संयम में रखने वाला; (भग)। °गुत्ति स्त्री [°गुप्ति] मन का संयम; (उत्त २४, २)। °जाणुअ वि [°ज्ञ] १ मन को जानने वाला, मन का जानकार; २ सुन्दर, मनोहर; (प्राकृ १८)। °जीविअ वि [°जीविक] मन को आत्मा मानने वाला; (पगह १, २—पत्न २८)। °जोअ पुं [°योग] मन की चेष्टा, मनो-व्यापार; (भग)। °ज्ज, °ण्णु, °ण्णुअ देखो °जाणुअ; (प्राकृ १८; षड्)। °थंभणी स्त्री [°स्तम्भनी] विद्या-विशेष, मन को स्तब्ध करने वाली दिव्य शक्ति; (पउम ७, १३७)। °नाण न [°ज्ञान] मन का साक्षात्कार करने वाला ज्ञान, मन-पर्यव ज्ञान; (कम्म ३, १८; ४, ११; १७; २१)। °नाणि वि [°ज्ञानिन्] मनःपर्यव-नामक ज्ञान वाला; (कम्म ४, ४०)। °पज्जत्ति स्त्री [°पर्याप्ति] पुद्गलों को मन के रूप में परिणत करने की शक्ति; (भग ६, ४)। °पज्जव पुं [°पर्यव] ज्ञान-विशेष, दूसरे के मन की अवस्था को जानने वाला ज्ञान, (भग, औप; विसे ८३)। °पज्जवि वि [°पर्यविन्] मनःपर्यव ज्ञान वाला; (पव २१)। °पसिणविज्जा स्त्री [°प्रश्नविद्या] मन के प्रश्नों के उत्तर देने वाली विद्या, (सम १२३)। °वलिअ वि [°बलिन्, °क] मनो-बल वाला, दृढ मन वाला, (पगह २, १; औप)। °मोहण वि [°मोहन] मन को मुग्ध करने वाला, चित्ताकर्षक; (गा १२८)। °योगि वि [°योगिन्] मन की चेष्टा वाला, (भग)। °वग्गणा स्त्री [°वर्गणा] मन के रूप में परिणत होने वाला पुद्गल-समूह; (राज)। °वज्ज न [°वज्र] एक विद्याधर-नगर; (इक)। °समिइ स्त्री [°समिति] मन का संयम; (ठा ८—पत्न ४२२)। °समिय वि [°समित] मन को संयम में रखने वाला; (भग)। °हंस पुं [°हंस] छन्द-विशेष, (पिंग)। °हर वि [°हर] मनोहर, सुन्दर, चित्ताकर्षक, (हे १, १५६; औप; कुमा)। °हरण पुन [°हरण] पिंगल-प्रसिद्ध एक मात्रा-पद्धति, (पिंग)। °भिराम, °भिरामेल्ल वि [°अभिराम] मनोहर; (सम १४६; औप, उप पृ ३२२, उप २२० टी)। °म वि [°आप] सुन्दर, मनोहर, (सम १४६; विपा १, १, औप, कप्प)। देखो मणो°।

मणं देखो मणयं; (प्राकृ ३८)।

मणंसि वि [मनस्विन्] प्रशस्त मन वाला; (हे १, २६)। स्त्री—°णी, (हे १, २६)।

मणंसिल°, मणंसिला स्त्री [मनःशिला] लाल वर्ण की एक उप धातु, मनशिल, मैनशिल; (कुमा; हे १, २६)।

मणग पुं [मनक] एक जैन बाल-मुनि, महर्षि शय्यंभवसूरि का पुत्र और शिष्य; (कप्प; धर्मवि ३८)। देखो मणय।

मणगुलिया स्त्री [दे] पीठिका; (राय)।

मणण न [मनन] १ ज्ञान, जानना; २ समझना; (विसे ३५२५)। ३ चिन्तन; (श्रावक ३३७)।

मणय पुं [मनक] द्वितीय नरक-भूमि का तीसरा नरकेन्द्रक—नरकावास-विशेष; (देवेन्द्र ६)। देखो मणग।

मणयं अ [मनाग्] अल्प, थोड़ा; (हे २, १६९; पाअ; षड्)।

मणस देखो मण=मनस्; "पसन्नमणसो करिस्सामि" (पउम ६, ५६), "लाभो चेव तवस्सिस्स होइ अद्दीणमणसस्स" (ओघ ५३७)।

मणसिल°, मणसिला देखो मणंसिला, (कुमा, हे १, २६; जी ३; स्वप्न ६४)।

मणसीकय वि [मनसिकृत] चिन्तित; (पगण ३४—पत्न ७८२; सुपा २४७)।

मणसीकर सक [मनसि + कृ] चिन्तन करना, मन में रखना। मणसीकरे; (उत्त २, २५)।

मणस्सि देखो मणंसि; (धर्मवि १४६)।

मणा देखो मणयं, (हे २, १६९; कुमा)।

मणाउ, मणाउं (अप) ऊपर देखो; (कुमा; भवि; पि ११४; हे ४, ४१८; ४२६)।

मणागं ऊपर देखो; (उप १३२; महा)।

मणाल देखो मुणाल; (राज)।

मणालिया स्त्री [मृणालिका] पद्म-कन्द का मूल; (तंदु २०)। देखो मुणालिआ।

मणासिला देखो मणंसिला; (हे १, २६, पि ६४)।

मणि पुस्त्री [मणि] पत्थर-विशेष, मुक्ता आदि रत्न; (कप्प; औप, कुमा; जी ३; प्रासू ४)। °अंग पुं [°अङ्ग] कल्प-वृक्ष की एक जाति जो आभूषण देती है, (सम १७)। °आर पु [°कार] जौहरी, रत्नो के गहनों का व्यापारी; (दे ७, ७७; मुद्रा ७६; गाया १, १३; धर्मवि ३६)। °कंचण न [°काञ्चन] रुक्मि-पर्वत का एक शिखर; (ठा २, ३—पत्न ७०)। °कूड न [°कूट] रुचक पर्वत का एक शिखर, (दीव)। °खइअ वि [°खचित] रत्न-

जटित; (पि १६६)। °चइया स्त्री [°चयिता] नगरी-विशेष; (विपा २, ६)। °चूड पुं [°चूड] एक विद्याधर नृप; (महा)। °जाल न [°जाल] भूषण-विशेष, मणि-माला; (औप)। °तोरण न [°तोरण] नगर-विशेष; (महा)। °प देखो °व; (से ६, ४३)। °पेढिया स्त्री [°पीठिका] मणि-मय पीठिका; (महा)। °प्पभ पुं [°प्रभ] एक विद्याधर, (महा)। °भद्द पु [°भद्र] एक जैन मुनि, (कप्प)। °भूमि स्त्री [°भूमि] मणि-खचित जमीन; (स्वप्न ५४)। °मइय, °मय वि [°मय] मणि-मय, रत्न निर्वृत्त; (सुपा ६२; महा)। °रह पुं [°रथ] एक राजा का नाम, (महा)। °व पु [°प] १ यक्ष, २ सर्प, नाग; (से २, २३)। ३ समुद्र, (से ६, ५०)। °वई स्त्री [°मती] नगरी-विशेष; (विपा २, ६—पत्र ११४ टि)। °वध पुं [°बन्ध] हाथ और प्रकोष्ठ के बीच का अवयव; (सण)। °वालय पुं [°पालक, °वालक] समुद्र; (से २, २३)। °सलागा स्त्री [°शलाका] मद्य-विशेष, (राज)। °हियय पुं [°हृदय] देव-विशेष, (दीव)।

मणिअ न [**मणित**] संभोग-समय का स्त्री का अव्यक्त शब्द, (गा ३६२, रंभा)।

मणिअं देखो **मणयं**; (पड्; हे २, १६६, कुमा)।

मणिअड (अप) पुं [**मणि**] माला का सुमेरु; (हे ४, ४१४)।

मणिच्छिअ वि [**मनईप्सित**] मनोऽभीष्ट, (सुपा ३८४)।

मणिज्जमाण देखो **मण**=मन्।

मणिट्ठ वि [**मनइष्ट**] मन को प्रिय, (भवि)।

मणिणायहर न [**दे. मनिणगागृह**] समुद्र, सागर; (दे ६, १२८)।

मणिरइआ स्त्री [**दे**] कटीसूत्र; (दे ६, १२६)।

मणीसा स्त्री [**मनीषा**] बुद्धि, मेधा, प्रज्ञा; (पाअ)।

मणीसि वि [**मनीषिन्**] बुद्धिमान्, पण्डित, (कप्पू)।

मणीसिद वि [**मनीषित**] वाञ्छित, (नाट—मृच्छ ५७)।

मणु पुं [**मनु**] १ स्मृति-कर्ता मुनि-विशेष, (विसे १५०८; उप १५० टी)। २ प्रजापति-विशेष; "चंदहमणुचंगगुणो" (कुमा, राज)। ३ मनुज, मनुष्य, "देवत्ताओ मणुत्तं" (पउम २१, ६३; कम्म १, १६; २, १६)। ४ न. एक देव विमान; (सम २)।

मणुअ पु [**मनुज**] १ मनुष्य, मानव, (उवा; भग; हे १, ८; पाअ; कुमा; सं ८२; प्रासू ४५)। २ भगवान् श्रेयांसनाथ का शासन-यक्ष; (संति ७)। ३ वि. मनुष्य-संबन्धी; "तिरिया मणुया य दिव्वगा उवसग्गा तिविहाहियासिया" (सूअ १, २, २, १५)।

मणुइंद पुं [**मनुजेन्द्र**] राजा, नरपति; (पउम ८५, २२; सुर १, ३२)।

मणुएसर पु [**मनुजेश्वर**] ऊपर देखो, (सुपा २०४)।

मणुज्ज, **मणुण्ण** वि [**मनोज्ञ**] सुन्दर, मनोहर; (पाअ, उप १४२ टी; सम १४६; भग)।

मणुस, **मणुस्स** पुंस्त्री [**मनुष्य**] १ मानव, मर्त्य; (आचा; पि ३००; आचा, ठा ४, २; भग, श्रा २८; सुपा २०३; जी १६, प्रासू २८)। स्त्री—°स्सी; (भग; पण्ण १८; पव २४१)। °खेत्त न [°क्षेत्र] मनुष्य-लोक, (जीव ३)। °सेणियापरिकम्म पु [°श्रेणिकापरिकर्मन्] दृष्टिवाद का एक सूत्र, (सम १२८)।

मणुस्स वि [**मानुष्य**] मनुष्य-संबन्धी, "दिव्वं व मणुस्सं वा तेरिच्छं वा सरागहियएणं" (आप २१)।

मणुस्सिंद पु [**मनुष्येन्द्र**] राजा, नर-पति; (उत्त १८, ३७, उप पृ १४२)।

मणूस देखो **मणुस्स**, (हे १, ४३; औप, उवर १२२; पि ६३)।

मणे अ [**मन्ये**] विमर्श-सूचक अव्यय; (हे २, २०७, पड्; प्राकृ २६, गा १११; कुमा)।

मणो° देखो **मण**=मनस्। °गम न [°गम] देवविमान-विशेष; "पालगपुप्फगसोमणससिरिवच्छनंदियावत्तकामगमपीतिगममणोगमविमलसव्वओभद्दसरिसनामधेज्जेहिं विमाणेहिं ओइण्णा" (औप)। °ज्ज वि [°ज्ञ] १ सुन्दर, मनोहर; (हे २, ८३; उप २६४ टी)। २ पुं. गुल्म-विशेष; "सरियए णोमालियकोरिंटयबंधुजीवगमणोज्जे" (पण्ण १—पत्र ३२)। °ण्ण, °न्न वि [°ज्ञ] सुन्दर, मनोहर; (हे २, ८३; पि २७६)। °भव पु [°भव] कामदेव, कन्दर्प; (सुपा ६८, पिंग)। °भिरमणिज्ज वि [°भिरमणीय] सुन्दर, चित्ताकर्षक, (पउम ८, १४३)। °भू पुं [°भू] कामदेव, कन्दर्प; (कप्पू)। °मय वि [°मय] मानसिक; 'सारीरमणोमयाणि दुक्खाणि' (पण्ह १, ३—पत्र ५५)। °माणसिय वि [°मानसिक] मन में ही रहने वाला—वचन से अप्रकटित—मानसिक दुःख आदि; (गाथा १, १—पत्र २६)।

°**रम** वि [°रम] १ सुन्दर, रमणीय; (पाअ)। २ पुं. एक विमानेन्द्रक, देवविमान-विशेष; (देवेन्द्र १३६)। ३ मेरु पर्वत; (सुज्ज ५)। ४ राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६५)। ५ किन्नर-देवों की एक जाति, ६ रुचक द्वीप का अधिष्ठायक देव; (राज)। ७ तृतीय ग्रैवेयक-विमान; (पव १६४)। ८ आठवें देवलोक के इन्द्र का पारियानिक विमान; (इक)। ६ एक देव-विमान; (सम १७)। १० मिथिला का एक चैत्य; (उत्त ६, ८, ६)। ११ उपवन-विशेष; (उप ६८६ टी)। °**रमा** स्त्री [°रमा] १ चतुर्थ वासुदेव की पटरानी का नाम; (पउम २०, १८६)। २ भगवान् सुपार्श्वनाथ की दीक्षा-शिविका; (सुपा ७५, विचार १२६)। ३ शक्र की अञ्जुका-नामक इन्द्राणी की एक राजधानी; (इक)। °**रह** पुं [°रथ] १ मन का अभिलाष, (औप; कुमा; हे ४, ४१४)। २ पक्ष का तृतीय दिवस; (सुज्ज १०, १४—पत्र १४७)। °**हंस** पुं [°हंस] छन्द-विशेष, (पिंग)। °**हर** पुं [°हर] १ पक्ष का तृतीय दिवस; (सुज्ज १०, १४)। २ छन्द-विशेष, (पिंग)। ३ वि रमणीय, सुन्दर; (हे १, १५६; षड्; स्वप्न ५२, कुमा)। °**हरा** स्त्री [°हरा] भगवान् पद्मप्रभ की दीक्षा-शिविका; (विचार १२६)। °**हव** देखो °**भव**; (स ८१; कप्पू)। °**हिराम** वि [°भिराम] सुन्दर; (भवि)।

मणोसिला देखो **मणंसिला**; (हे १, २६; कुमा)।

मण्ण देखो **मण**=मन्। मरणइ; (पि ४८८)। कर्म—मण्णिज्जइ; (कुप्र १०६)। वकृ—**मण्णमाण**; (नाट—चैत १३३)।

मण्णण न [**मानन**] मानना, आदर, (उप १५४)।

मण्णा देखो **मन्ना**; (राज)।

मण्णिय देखो **मन्निय**; (राज)।

मण्णु देखो **मन्नु**; (गा ११; ५०८; दे ६, ७१; वेणी १७)।

मण्णे देखो **मणे**; (कप्प)।

मत्त वि [**मत्त**] १ मद-युक्त, मतवाला; (उवा, प्रासू ६४; ६८; भवि)। २ न. मद्य, दारू, (ठा ७)। ३ मद, नशा, (पव १७१)। °**जला** स्त्री [°**जला**] नदी-विशेष; (ठा २, ३; इक)।

मत्त देखो **मेत्त**=मात्र, "वयणमत्तमिट्ठाणं" (रंभा)।

मत्त न [**अमत्र, मात्र**] पात्र, भाजन, (आचा २, १, ६, ३; ओघ २५१)। देखो **मत्तय**।

मत्त (अप) देखो **मच्च**=मर्त्य, (भवि)।

मत्तंगय पु [**मत्ताङ्गक**, °**द**] कल्पवृक्ष की एक जाति, मद्य देने वाला कल्पतरु; (सम १७; पव १७१)।

मत्तंड पु [**मार्तण्ड**] सूर्य, रवि; (सम्मत्त १४५, सिरि १००८)।

मत्तग न [**दे**] पेशाब, मूत्र; (कुलक ६)।

मत्तग } **मत्तय** } पुंन [**अमत्र, मात्रक**] १ पात्र, भाजन, २ छोटा पात्र; "विइज्जओ मत्तओ होइ" (बृह ३; कप्प)।

मत्तय देखो **मत्तग**=दे; (कुलक १३)।

मत्तल्ली स्त्री [**दे**] बलात्कार; (दे ६, ११३)।

मत्तवारण पुन [**मत्तवारण**] वरंडा, वरामदा, दालान; (दे ६, १२३; सुर ३, १००; भवि)।

मत्तवाल पु [**दे**] मतवाला, मदोन्मत्त, (दे ६, १२२; षड्; सुख २, १७; सुपा ४८६)।

मत्ता स्त्री [**मात्रा**] १ परिमाण, (पिंड ६५१)। २ अंश, भाग, हिस्सा; (स ४८३)। ३ समय का सूक्ष्म नाप; ४ सूक्ष्म उच्चारण-काल वाला वर्णावयव; (पिंग)। ५ अल्प, लेश, लव; (पाअ)।

मत्ता अ [**मत्वा**] जानकर, (सूअ १, २, २, ३२)।

मत्तालंब पुं [**दे. मत्तालम्ब**] वरंडा, वरामदा; (दे ६, १२३; सुर १, ५७)।

मत्तिया स्त्री [**मृत्तिका**] मिट्टी, (पएण १—पत्र २५)। °**वई** स्त्री [°**वती**] नगरी-विशेष, दशार्णदेश की राजधानी, (पव २७५)।

मत्थ } **मत्थग** } **मत्थय** } पुंन [**मस्त**, °**क**] माथा, सिर; (से १, १; स ३८५; औप)। °**त्थ** वि [°**स्थ**] सिर में स्थित, (गउड)। °**मणि** पुं [°**मणि**] शिरोमणि, प्रधान, मुख्य; (उप ६४८ टी)।

मत्थयधोय वि [**दे. धौतमस्तक**] दासत्व से मुक्त, गुलामी से मुक्त किया हुआ; (णाया १, १—पत्र ३७)।

मत्थुलुंग } **मत्थुलुय** } न [**मस्तुलुङ्ग**] १ मस्तक-स्नेह, सिर में से निकलता एक प्रकार का चिकना पदार्थ; (पण्ह १, १; तंदु १०)। २ मेद का फिप्फिस आदि, (ठा ३, ४—पत्र १७०; भग, तंदु १०)।

मथिय देखो **महिअ**=मथित, (पण्ह २, ४—पत्र १३०)।

मद देखो **मय**=मद, (कुमा; प्रयौ १६; वि २०२)।

मद (मा) देखो **मय**=मृत, (प्राकृ १०३)।

मदण देखो **मयण**, (स्वप्न ६३, नाट—मृच्छ २३१)।

मदणसला(गा) देखो **मयणसलागा**; (पराग १—पत्र ५४)।

मदणा देखो **मयणा**=मदना; (गाया २—पत्र २५१)।

मदणिज्ज वि [**मदनीय**] कामोद्दीपक, मदन-वर्धक; (गाया १, १—पत्र १६; औप)।

मदि देखो **मइ**=मति; (मा ३२; कुमा; पि १६२)।

मदीअ देखो **मईअ**; (स २३२)।

मदुवी देखो **मउई**; (चंड)।

मदोली स्त्री [**दे**] दूती, दूत-कर्म करने वाली स्त्री; (षड्)।

मद्द सक [**मृद्**] १ चूर्ण करना। २ मालिश करना, मसलना, मलना। मद्दाहि; (कप्प)। कर्म—मद्दीअदि, (नाट—मृच्छ १३५)। हेकृ—**मद्दिउं**; (पि ५८५)।

मद्दण न [**मर्दन**] १ अंग-चप्पी, मालिश; (सुपा २४)। २ हिंसा करना; "तसथावरभूयमद्दणं विविहं" (उव)। ३ वि. मर्दन करने वाला; (ती ३)।

मद्दल पुं [**मर्दल**] वाद्य-विशेष, मुरज, मृदंग; (दे ६, ११६; सुर ३, ६८; सिरि १५७)।

मद्दलिअ वि [**मार्दलिक**] मृदंग बजाने वाला; (सुपा २६४; ५५३)।

मद्दव न [**मार्दव**] मृदुता, नम्रता, विनय, अहंकार-निग्रह; (औप; कप्प)।

मद्दवि वि [**मार्दविन्**] नम्र, विनीत; "अज्जवियं मद्दवियं लाघवियं" (सूअ २, १, ५७; आचा)।

मद्दविअ वि [**मार्दविक, °त**] ऊपर देखो; (बृह ४; वव १)।

मद्दिअ देखो **मड्डिअ**; (पाअ)।

मद्दी स्त्री [**माद्री**] १ राजा शिशुपाल की मा का नाम; (सूअ १, ३, १, १ टी)। २ राजा पाण्डु की एक स्त्री का नाम; (वेणी १७१)।

मद्दुअ पुं [**मद्दुक**] भगवान् महावीर का राजगृह-निवासी एक उपासक; (भग १८, ७—पत्र ७५०)।

मद्दुग पुं [**मद्गु, °क**] पक्षि-विशेष, जल-वायस; (भग ७, ६—पत्र ३०८)। देखो **मग्गु**।

मद्दुग देखो **मुदुग**; (राज)।

मधु देखो **महु**; (षड्; रंभा; पिंग)।

मधुर देखो **महुर**; (निचू १; प्राकृ ८५)।

मधुसित्थ देखो **महुसित्थ**; (ठा ४, ४—पत्र २७१)।

मधूला स्त्री [**दे. मधूला**] पाद-गगड; (राज)।

मन अ [**दे**] निषेधार्थक अव्यय, मत, नहीं; (कुमा)।

मनुस्स देखो **मणुस्स**; (चंड; भग)।

मन्न देखो **मण्ण**। मन्नइ, मन्नसि; (आचा; महा), मन्नंते, मन्नेसि; (रंभा)। कर्म—मन्निज्जउ; (महा)। वकृ—**मन्नंत, मन्नमाण**; (सुर १४, १७१; आचा; महा; सुपा ३०७; सुर ३, १७४)।

मन्न देखो **माण**=मानय्। कृ—**मन्न, मन्नाय, मन्नणिज्ज, मन्नियव्व, मन्निय**; (उप १०३६; धर्मवि ७६; भवि; सुर १०, ३८; सुपा ३६८; ठा १ टी—पत्र २१, सं ३५)।

मन्ना स्त्री [**मनन**] १ मति, बुद्धि, (ठा १—पत्र १६)। २ आलोचन, चिन्तन; (सूअ २, १, ४१; ठा १)।

मन्ना स्त्री [**मान्या**] अभ्युपगम, स्वीकार; (ठा १—पत्र १६)।

मन्नाय देखो **मन्न**=मानय्।

मन्नाविय वि [**मानित**] मनाया हुआ, (सुपा १५६)।

मन्निय वि [**मत**] माना हुआ; (सुपा ६०५; कुमा)।

मन्नु पुं [**मन्यु**] १ क्रोध, गुस्सा; (सुपा ६०४)। २ दैन्य, दीनता; "सोयसमुब्भूयगरुयमन्नुवसा" (सुर ११, १४४)। ३ अहंकार; ४ शोक, अफसोस; ५ क्रतु, यज्ञ, (हे २, २५; ४४)।

मन्नुइय वि [**मन्युवित**] मन्यु-युक्त, कुपित, (सुख ४, १)।

मन्नुसिय वि [**दे**] उद्विग्न; (स ५६६)।

मन्ने देखो **मण्णे**; (हे १, १७१; रंभा)।

मप्प न [**दे**] माप, बाँट; "तेण य सह वणिएणं आणेवि य तस्स हट्टमप्पाणि" (सुपा ३६२)।

मब्भीसडी } (अप) स्त्री [**मा भैषीः**] अभय-वचन; (हे
मब्भीसा } ४, ४२२)।

ममकार पुं [**ममकार**] ममत्व, मोह, प्रेम, स्नेह; (गच्छ २, ४२)।

ममच्चय वि [**मदीय**] मेरा; (सुख २, १५)।

ममत्त न [**ममत्व**] ममता, मोह, स्नेह; (सुपा २६)।

ममया स्त्री [**ममता**] ऊपर देखो; (पंचा १५, ३२)।

ममा सक [**ममाय्**] ममता करना। ममाइ, ममायए; (सूअ २, १, ४२; उव)। वकृ—**ममायमाण, ममायमीण**; (आचा; सूअ २, ६, २१)।

ममाइ वि [**ममत्विन्**] ममता वाला; (सूत्र १, १, १, ४)।

ममाइअ वि [**ममायित**] जिस पर ममता की गई हो वह; (आचा)।

ममाय वि [**ममाय**] ममत्व करने वाला; (निचू १३)।

ममि वि [**मामक**] मेरा, मदीय; "ममं वा ममिं वा" (सूत्र २, २, ६)।

ममूर सक [**चूर्णय्**] चूरना। ममूरइ; (धात्वा १४८)।

मम्म पुंन [**मर्मन्**] १ जीवन-स्थान; २ सन्धि-स्थान; (गा ४४६; उप ६६१; हे १, ३२)। ३ मरण का कारण-भूत वचन आदि, (णाया १, ८)। ४ गुप्त बात, (प्रासू ११, सुपा ३०७)। ५ रहस्य, तात्पर्य; (श्रु २८)। °**य** वि [°**ग**] मर्म-वाचक (शब्द); (उत्त १, २५; सुख १, २५)।

मम्मक्क पुं [**दे**] गर्व, अहंकार; (षड्)।

मम्मक्का स्त्री [**दे**] १ उत्कण्ठा; २ गर्व; (दे ६, १४३)।

मम्मण न [**मन्मन**] १ अव्यक्त वचन; (हे २, ६१; दे ६, १४१; विपा १, ७; वा २६)। २ वि. अव्यक्त वचन बोलने वाला; (श्रा १२)।

मम्मण पुं [**दे**] १ मदन, कन्दर्प; २ रोष, गुस्सा; (दे ६, १४१)।

मम्मणिआ स्त्री [**दे**] नील मक्षिका, (दे ६, १२३)।

मम्मर पुं [**मर्मर**] शुष्क पत्तों का आवाज, (गा ३६५)।

मम्मह पुं [**मन्मथ**] कामदेव, कन्दर्प; (गा ४३०; अभि ६५)।

मम्मी स्त्री [**दे**] मामी, मातुल-पत्नी; (दे ६, ११२)।

मय न [**मत**] मनन, ज्ञान; (सूत्र २, १, ५०)। २ अभिप्राय, आशय; (ओघनि १६०; सूत्रनि १२०)। ३ समय, दर्शन, धर्म; "समग्रो मयं" (पाअ, सम्मत्त २२८)। ४ वि. माना हुआ; (कम्म ४, ४६)। ५ इष्ट, अभीष्ट; (सुपा ३७१)। °**न्नु** वि [°**ज्ञ**] दार्शनिक, (सुपा ५८२)।

मय पुं [**मय**] १ उष्ट्र, ऊँट; (सुख ६, १)। २ अश्वतर, खच्चर; "मयमहिससरहकेसरि—" (पउम ६, ५६)। ३ एक विद्याधर-नरेश; (पउम ८, १)। °**हर** पुं [°**धर**] ऊँट वाला; (सुख ६, १)।

मय वि [**मृत**] मरा हुआ, जीव-रहित, (णाया १, १; उव; सुर २, १८; प्रासू १७; प्राप्र)। °**किच्च** न [°**कृत्य**] मरण के उपलक्ष में किया जाता श्राद्ध आदि कर्म; (विपा १, २)।

मय पुन [**मद**] १ गर्व, अभिमान; "एआइं मयाइं विगिंच धीरा" (सूत्र १, १३, १६; सम १३; उप ७२८ टी; कुमा; कम्म २, २६)। २ हाथी के गण्ड-स्थल से झरता प्रवाही पदार्थ; (णाया १, १—पत्र ६५, कुमा)। ३ आमोद, हर्ष; ४ कस्तूरी; ५ मत्तता, नशा; ६ नद, बड़ी नदी; ७ वीर्य, शुक्र; (प्राप्र)। °**करि** पुं [°**करिन्**] मद वाला हाथी; (महा)। °**गल** वि [°**कल**] १ मद से उत्कट, नशे में चूर; "मअगलकुंजरगमणी" (पिंग)। २ पु हाथी; (सुपा ६०; हे १, १८२; पाअ, दे ६, १२५)। ३ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**णासणी** स्त्री [°**नाशनी**] विद्या-विशेष; (पउम ७, १४०)। °**धम्म** पुं [°**धर्म**] विद्याधर-वंश के एक राजा का नाम; (पउम ५, ४३)। °**मंजरी** स्त्री [°**मञ्जरी**] एक स्त्री का नाम; (महा)। °**वारण** पुं [°**वारण**] मद वाला हाथी; "मयवारणो उ मत्तो निवाडिया-लाणवरखंभो" (महा)।

मय पुं [**मृग**] १ हरिण; (कुमा; उप ७२८ टी)। २ पशु, जानवर; ३ हाथी की एक जाति; ४ नक्षत्र-विशेष; ५ कस्तूरी; ६ मकर राशि; ७ अन्वेषण; ८ याचन, माँग; ९ यज्ञ-विशेष; (हे १, १२६)। °**च्छी** स्त्री [°**क्षी**] हरिण के नेत्रों के समान नेत्र वाली; (सुर ४, १६; सुपा ३५५; कुमा)। °**णाह** पुं [°**नाथ**] सिंह; (स १११)। °**णाहि** पुंस्त्री [°**नाभि**] कस्तूरी, (पाअ; सुपा २००; गउड)। °**तण्हा** स्त्री [°**तृष्णा**] धूप में जल-भ्रान्ति; (दे; से ६, ३५)। °**तण्हिआ** स्त्री [°**तृष्णिका**] वही अर्थ; (पि ३७५)। °**तिण्हा** देखो °**तण्हा**; (पि ५४)। °**तिण्हिआ** देखो °**तण्हिआ**; (पि ५४)। °**धुत्त** पुं [°**धूर्त**] शृगाल, सियार; (दे ६, १२५)। °**नाभि** देखो °**णाहि**; (कुमा)। °**राय** पु [°**राज**] सिंह, केसरी, (पउम २, १७, उप पृ ३०)। °**लंछण** पुं [°**लाञ्छन**] चन्द्रमा; (पाअ; कुमा; सुर १३, ५३)। °**लोअणा** स्त्री [°**रोचना**] गोरोचन, गोरोचना, पीत-वर्ण द्रव्य-विशेष; (अभि १२७)। °**रि** पुं [°**रि**] सिंह; (पाअ)। °**रिदमण** पुं [°**रि-दमन**] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६२)। °**हिव** पुं [°**धिप**] सिंह, केसरी; (पाअ; स ६)। देखो **मिअ**, **मिग**=मृग।

मयंक } देखो **मिअंक**; (हे १. १७७; १८०; कुमा; षड्,
मयंग } गा ३६६; रंभा)।

मयंग देखो **मायंग**=मातंग; "कूवर वरुणो भिउडी गोमेहो वामणो मयंगो" (पव २६)।

मयंग पुं [**मृदङ्ग**] वाद्य-विशेष; (प्राकृ ८)।

मयंगय पुं [**मतङ्गज**] हाथी, हस्ती; (पउम ८०, ६६; उप पृ २६०)।

मयंगा स्त्री [**मृतगङ्गा**] जहां पर गंगा का प्रवाह रुक गया हो वह स्थान; (णाया १, ४—पत्र ६६)।

मयंतर न [**मतान्तर**] भिन्न मत, अन्य मत; (भग)।

मयंद देखो **मइंद**=मृगेन्द्र; (सुपा ६२)।

मयंध वि [**मदान्ध**] मद में अन्ध बना हुआ, मदोन्मत्त; (सुर २, ६६)।

मयग वि [**मृतक**] १ मरा हुआ; २ न. मुर्दा; (णाया १, ११; कुप्र २६; औप)। °**किच्च** न [°**कृत्य**] श्राद्ध आदि कर्म; (णाया १, २)।

मयड पु [**दे**] आराम, बगीचा; (दे ६, ११५)।

मयण पुं [**मदन**] १ कन्दर्प, कामदेव; (पाअ; धण २५; कुमा; रंभा)। २ लक्ष्मण का एक पुत्र; (पउम ६१, २०)। ३ एक वणिक्-पुत्र; (सुपा ६१७)। ४ छन्द का एक भेद; (पिंग)। ५ वि. मद-कारक, मादक; "मयणा दरनिव्वलिया निव्वलिया जह कोद्दवा तिविहा" (विसे १२२०)। ६ न. मीन, मोम; "मयणो मयणं विअ विलीणो" (धण २५; पाअ; सुर २, २४६)। °**घरिणी** स्त्री [°**गृहिणी**] काम-प्रिया, रति; (कुप्र १०६)। °**तालंक** पुं [°**तालङ्क**] छन्द-विशेष; (पिंग)। °**तेरसी** स्त्री [°**त्रयोदशी**] चैत्र मास की शुक्ल त्रयोदशी तिथि; (कुप्र ३७८)। °**दुम** पुं [°**द्रुम**] वृक्ष-विशेष; (से ७, ६६)। °**फल** न [°**फल**] फल-विशेष, मैनफल; "तओ तेणुप्पलं मयणफलेण भावियं मणुस्स-हत्थे दिन्नं, एयं वरखइस्स देज्जाहि" (सुख २, १७)। °**मंजरी** स्त्री [°**मञ्जरी**] १ राजा चण्डप्रद्योत की एक स्त्री का नाम; २ एक श्रेष्ठि-कन्या; (महा)। °**रेहा** स्त्री [°**रेखा**] एक युवराज की पत्नी; (महा)। °**वेय** पुं [°**वेग**] पुरुष-विशेष का नाम; (भवि)। °**सुंदरी** स्त्री [°**सुन्दरी**] राजा श्रीपाल की एक पत्नी; (सिरि ५३)। °**हरा** स्त्री [°**गृह**] छन्द-विशेष; (पिंग)। °**हल** देखो °**फल**; "मयणहल-रंधम्रो ता उव्वमिया चंदहाससुरा" (धर्मवि ६४)।

मयणंकुस पु [**मदनाङ्कुश**] श्रीरामचन्द्र का एक पुत्र, कुश; (पउम ६७, ६)।

मयणसलागा } स्त्री [**दे. मदनशलाका**] मैना, सारिका;
मयणसलाया } (जीव १ टी—पत्र ४१; दे ६, ११६)।

मयणसाला स्त्री [**दे. मदनशाला**] सारिका-विशेष; (पण्ह १, १—पत्र ८)।

मयणा स्त्री [**दे. मदना**] मैना, सारिका; (उप ११६ टी; श्राव १)।

मयणा स्त्री [**मदना**] १ वैरोचन बलीन्द्र की एक पटरानी; (ठा ५, १—पत्र ३०२)। २ शक्र के लोकपाल की एक स्त्री; (ठा ४, १—पत्र २०४)।

मयणाय पुं [**मैनाक**] १ द्वीप-विशेष; २ पर्वत-विशेष; (भवि)।

मयणिज्ज देखो **मदणिज्ज**; (कप्प; पणण १७)।

मयणिवास पुं [**दे**] कन्दर्प, कामदेव; (दे ६, १२६)।

मयर पुं [**मकर**] १ जलजन्तु-विशेष, मगर-मच्छ; (औप, सुर १३, ४६)। २ राशि-विशेष, मकर राशि; (सुर १३, ४६; विचार १०६)। ३ रावण का एक सुभट; (पउम ५६, २६)। ४ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**केउ** पुं [°**केतु**] कामदेव, कन्दर्प; (कप्पू)। °**द्धय** पुं [°**ध्वज**] वही; (पाअ; कुमा; रंभा)। °**लंछण** पुं [°**लाञ्छन**] वही; (कप्पू; पि ५४)। °**हर** पुंन [°**गृह**] वही; (पाअ; से १, १८; ४, ४८; वज्जा १५४; भवि)।

मयरंद पुं [**दे. मकरन्द**] पुष्प-रज, पुष्प-पराग; (दे ६, १२३; पाअ; कुमा ३, ५४)।

मयरंद पुं [**मकरन्द**] पुष्प-रस, पुष्प-मधु; (दे ६, १२३; सुर ३, १०; प्रासू ११३; कुमा)।

मयल देखो **मइल**=मलिन; (सुपा २६२)।

मयलणा देखो **मइलणा**; (सुपा १२४; २०६)।

मयलवुत्ती [**दे**] देखो **मइलपुत्ती**; (दे ६, १२५)।

मयलिअ देखो **मलिणिअ**; (उप ७२८ टी)।

मयल्लिगा स्त्री [**मतल्लिका**] प्रधान, श्रेष्ठ; "कूडक्खरविओ-(?उ)मयल्लिगाणं" (रंभा १७)।

मयह देखो **मगह**। °**सामिय** पुं [°**स्वामिन्**] मगध देश का राजा; (पउम ६१, ११)। °**पुर** न [°**पुर**] राज-गृह नगर; (वसु)। °**हिवइ** पुं [°**धिपति**] मगध देश का राजा; (पउम २०, ४७)।

मयहर पुं [**दे**] १ ग्राम-प्रधान, ग्राम-प्रवर, गाँव का मुखिया; (पव २६८; महा; पउम ६३, १६)। २ वि. वडील, मुखिया, नायक, "मयलहत्थागोहपहाणमयहरेण" (स २८०, महानि ४; पउम ६३, १७)। स्त्री—°**रिगा**, °**रिया**, °**री**; (उप १०३१ टी; सुर १, ४१; महा; सुपा ७६; १२६)।

मयाई स्त्री [**दे**] शिरो-माला; (दे ६, ११५)।

मयार पुं [**मकार**] १ 'म' अक्षर; २ मकारादि अश्लील—अवाच्य—शब्द; "जत्थ जयारमयारं समणी जंपइ गिहत्थपच्च-क्खं" (गच्छ ३, ४)।

मयाल (अप) देखो **मराल**; (पिंग)।

मयालि पुं [**मयालि**] जैन महर्षि-विशेष—१ एक अन्तकृद् मुनि; (अंत १४)। २ एक अनुत्तर-गामी मुनि; (अनु १)।

मयाली स्त्री [**दे**] लता-विशेष, निद्राकरी लता; (दे ६, ११६; पाअ)।

मर अक [**मृ**] मरना। मरइ, मरए; (हे ४, २३४; भग; उव; महा; षड्), मरं; (हे ३. १४१)। मरिज्जइ, मरि-ज्जउ; (भवि; पि ४७७)। भूका—मरही, मरीअ; (आचा; पि ४६६)। भवि—मरिस्ससि; (पि ५२२)। वकृ—**मरंत**, **मरमाण**; (गा ३७५; प्रासू ६४; सुपा ४०५; भग; सुपा ६५१; प्रासू ८३)। संकृ—**मरिऊण**; (पि ५८६)। हेकृ—**मरिउं**, **मरेउं**; (संक्षि ३४)। कृ—**मरियव्व**; (अत २४; सुपा २१५; ५०१; प्रासू १०६), **मरिएव्वउं** (अप); (हे ४, ४३८)।

मर पुं [**दे**] १ मशक; २ उल्लू, घूक; (दे ६, १४०)।

मरअद } पुंन [**मरकत**] नील वर्ण वाला रत्न-विशेष,
मरगय } पन्ना; (संक्षि ६; हे १, १८२; औप; षड्; गा ७५; कप्र ३१), "परिकम्मिओवि वहुसो काओ किं मरगओ होइ" (कुप्र ४०३)।

मरजीवय पुं [**दे**, **मरजीवक**] समुद्र के भीतर उतर कर जो वस्तु निकालने का काम करता है वह; (सिरि ३८५)।

मरट्ट पुं [**दे**] गर्व, अहंकार; (दे ६, १२०; सुर ४, १५४; प्रासू ८५; ती ३; भवि; सण; हे ४, ४२२; सिरि ६६२), "अखिलमइ(?र)ट्टकंदप्पमद्दणं लद्धजयपडायस्स" (धर्मवि ६७)।

मरट्टा स्त्री [**दे**] उत्कर्ष;
"एईइ अहरहरिआरणिमरट्टाइं(? इ) लज्जमाणाइं।
विवफलाइं उव्वंधणं व वल्लीसु विरयंति ॥"
(कुप्र २६६)।

मरट्ठ (अप) देखो **मरहट्ठ**, (पिंग)।

मरढ देखो **मरहट्ट**। स्त्री—°**ढी**; (कप्पू)।

मरण पुंन [**मरण**] मौत, मृत्यु, (आचा; भग; पाअ; जी ४३; प्रासू १०७; ११६), "सेसा मरणा सव्वे तब्भवमरणेण णायव्वा" (पव १५७)।

मरल देखो **मराल**=मराल; (प्राकृ ५)।

मरह सक [**मृष्**] क्षमा करना। "खमंतु मरहंतु णं देवा-णुप्पिया" (णाया १, ८—पत्र १३५)।

मरहट्ठ पुंन [**महाराष्ट्र**] १ बड़ा देश; २ देश-विशेष, महाराष्ट्र, मराठा, "मरहट्ठो मरहट्ठं" (हे १, ६६; प्राकृ ६; कुमा)। ३ सुराष्ट्र; (कुमा ३, ६०)। ४ पुं. महा-राष्ट्र देश का निवासी, मराठा; (पण्ह १, १—पत्र १४; पिंग)। ५ छन्द-विशेष; (पिंग)।

मरहट्ठी स्त्री [**महाराष्ट्री**] १ महाराष्ट्र की रहने वाली स्त्री; २ प्राकृत भाषा का एक भेद; (पि ३५४)।

मराल वि [**दे**] अलस, मन्द, आलसी; (दे ६, ११२; पाअ)।

मराल पुं [**मराल**] १ हंस पक्षी, (पाअ)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)।

मराली स्त्री [**दे**] १ सारसी, सारस पक्षी की मादा; २ दूती; ३ सखी; (दे ६, १४२)।

मरिअ वि [**मृत**] मरा हुआ; (सम्मत्त १३६)।

मरिअ वि [**दे**] १ त्रुटित, टूटा हुआ; २ विस्तीर्ण; (षड्)।

मरिअ देखो **मिरिअ**; (प्रयौ १०५; भास ८ टी)।

मरिइ देखो **मरीइ**, "अह उप्पन्ने नाणे जिणस्स, मरिई तओ य निक्खंतो" (पउम ८२, २४)।

मरिस सक [**मृष्**] सहन करना, क्षमा करना। मरिसइ, मरिसेइ, मरिसेउ; (हे ४, २३५; महा; स ६७०)। कृ—**मरिसियव्व**; (स ६७०)।

मरिसावणा स्त्री [**मर्षणा**] क्षमा; (स ६७१)।

मरीइ पुं [**मरीचि**] १ भगवान् ऋषभदेव का एक पौत्र और भरत चक्रवर्ती का पुत्र, जो भगवान् महावीर का जीव था; (पउम ११, ६४)। २ पुंस्त्री. किरण; (पण्ह १, ४—पत्र ७२; धर्मसं ७२३)।

मरीइया स्त्री [**मरीचिका**] १ किरण-समूह; २ मृग-तृष्णा, किरण में जल-भ्रान्ति; (गउ)।

मरीचि देखो **मरीइ**, (औप; सुज्ज १, ६)।
मरीचिया देखो **मरीइया**; (औप)।
मरु पुं [**मरुत्**] १ पवन, वायु; २ देव, देवता; ३ सुगन्धी वृक्ष-विशेष, मरुआ, मरुवा; (षड्)। ४ हनूमान का पिता; (पउम ५३, ७६)। °**णंदण** पुं [°**नन्दन**] हनूमान; (पउम ५३, ७६)। °**स्सुय** पु [°**सुत**] वही; (पउम १०१, १)। देखो **मरुअ**=मरुत्।
मरु } **मरुअ** } पुं [**मरु, °क**] १ निर्जल देश; (णाया १, १६—पत्त २०२; औप)। २ देश-विशेष, मारवाड़, (ती ५; महा; इक; पण्ह १, ४—पत्त ६८)। ३ पर्वत, ऊँचा पहाड़; (निचू ११)। ४ वृक्ष-विशेष, मरुआ, मरुवा; (पण्ह २,५—पत्त १५०)। ५ ब्राह्मण, विप्र; (सुख २, २७)। ६ एक नृप-वंश; ७ मरु-वंशीय राजा; "तस्स य पुट्टीए नंदो पण्णपन्नसय च होइ वासाणं। मरुयाणं अट्ठसयं" (विचार ४६३)। ८ मरु देश का निवासी; (पण्ह १, १)। °**कंतार** न [°**कान्तार**] निर्जल जंगल; (अच्चु ८५)। °**त्थली** स्त्री [°**स्थली**] मरु-भूमि; (महा)। °**भू** स्त्री [°**भू**] वही; (श्रा २३)। °**य** वि [°**ज**] मरु देश में उत्पन्न; (पण्ह १, ४—पत्त ६८)।
मरुअ देखो **मरु**=मरुत्; (पण्ह १, ४—पत्त ६८)। २ एक देव-जाति; (ठा २, २)। °**कुमार** पुं [°**कुमार**] वानरद्वीप के एक राजा का नाम; (पउम ६, ६७)। °**वसभ** पुं [°**वृषभ**] इन्द्र; (पण्ह १, ४—पत्त ६८)।
मरुअअ } **मरुअग** } पुं [**मरुबक**] वृक्ष-विशेष, मरुआ, मरुवा; (गउड; पण्ण १—पत्त ३४)।
मरुआ स्त्री [**मरुता**] राजा श्रेणिक की एक पत्नी; (अंत)।
मरुइणी स्त्री [**मरुकिणी**] ब्राह्मण-स्त्री, ब्राह्मणी; (विसे ६२८)।
मरुंड देखो **मुरुंड**; (अंत, औप; णाया १, १—पत्त ३७)।
मरुकुंद पुं [**दे. मरुकुन्द**] मरुआ, मरुवे का गाछ, (भवि)।
मरुग देखो **मरुअ**=मरुक; (पण्ह १, १—पत्त १४; इक)।
मरुदेव पुं [**मरुदेव**] १ ऐरावत क्षेत्र में उत्पन्न एक जिन-देव; (सम १५३)। २ एक कुलकर पुरुष का नाम; (सम १५०; पउम ३, ५५)।
मरुदेवा } **मरुदेवी** } स्त्री [**मरुदेवा, °वी**] १ भगवान् ऋषभदेव की माता का नाम; (उव; सम १५०; १५१)। २ राजा श्रेणिक की एक पत्नी, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ले कर मुक्ति पाई थी; (अंत)।
मरुद्देवा स्त्री [**मरुद्देवा**] भगवान् महावीर के पास दीक्षा ले कर मुक्ति पाने वाली राजा श्रेणिक की एक पत्नी; (अंत २५)।
मरुल्ल पुं [**दे**] भूत, पिशाच; (दे ६, ११४)।
मरुवय देखो **मरुअअ**; (गा ६७७; कुमा; विक्र २६)।
मरुस देखो **मरिस**। मरुसिज्ज; (भवि)।
मल देखो **मद्द**। मलइ, मलेइ; (हे ४, १२६; प्राकृ ६८; भवि), मलेमि; (से ३, ६३), मलेंति; (सुर १, ६७)। कर्म—मलिज्जइ; (पंचा १६, १०)। वकृ—**मलेंत**; (से ४, ४२)। कवकृ—**मलिज्जंत**, (से ३, १३)। संकृ—**मलिऊण, मलिऊणं**; (कुमा; पि ५८५)। कृ—**मलेव्व**; (वै ६६; निसा ३)।
मल पु [**दे**] स्वेद, पसीना; (दे ६, १११)।
मल पुंन [**मल**] १ मैल; (कुमा; प्रासू २५)। २ पाप; (कुमा)। ३ बँधा हुआ कर्म; (चेइय ६२२)।
मलंपिअ वि [**दे**] गर्वी, अहंकारी; (दे ६, १२१)।
मलण न [**मर्दन, मलन**] मर्दन, मलना; (सम १२५; गउड; दे ३, ३४; सुपा ४४०; पंचा १६, १०)।
मलय पुं [**दे. मलक**] आस्तरण-विशेष; (णाया १, १—पत्त १३; १, १७—पत्त २२६)।
मलय पुं [**दे. मलय**] १ पहाड़ का एक भाग; (दे ६, १४४)। २ उद्यान, बगीचा; (दे ६, १४४; पाअ)।
मलय पुं [**मलय**] १ दक्षिण देश में स्थित एक पर्वत; (सुपा ४५६; कुमा; पड्)। २ मलय-पर्वत के निकट-वर्ती देश-विशेष; (पव २७५; पिंग)। ३ छन्द-विशेष; (पिंग)। ४ देवविमान-विशेष; (देवेन्द्र १४३)। ५ न श्रीखण्ड, चन्दन; (जीव ३)। ६ पुंस्त्री. मलय देश का निवासी; (पण्ह १, १)। °**केउ** पु [°**केतु**] एक राजा का नाम; (सुपा ६०७)। °**गिरि** पुं [°**गिरि**] एक सुप्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार; (इक, राज)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] एक जैन उपासक का नाम; (सुपा ६४५)। °**द्दि** पुं [°**द्रि**] पर्वत-विशेष; (सुपा ४७७)। °**भव** वि [°**भव**] १ मलय देश में उत्पन्न। २ न. चन्दन, (गउड)। °**मई** स्त्री [°**मती**] राजा मलयकेतु की स्त्री; (सुपा ६०७)। °**य** [°**ज**] देखो °**भव**; (राज)। °**रुह** पुं [°**रुह**] चन्दन का पेड़; (सुर १, २८)। २ न. चन्दन-काष्ठ; (पाअ)।

°ाचल पुं [°ाचल] मलय पर्वत; (सुपा ४५६)। °ाणिल पु [°ानिल] मलयाचल से बहता शीतल पवन, (कुमा)। °ायल देखो °ाचल, (रंभा)।

मलय वि [मलयज] १ मलय देश में उत्पन्न, (अणु)। २ न. चन्दन; (भवि)।

मलवट्टी स्त्री [दे] तरुणी, युवति; (दे ६, १२४)।

मलहर पुं [दे] तुमुल-ध्वनि; (दे ६, १२०)।

मलि वि [मलिन्] मल वाला, मल-युक्त; (भवि)।

मलिअ वि [मृदित] जिसका मर्दन किया गया हो वह; (गा ११०; कुमा; हे ३, १३५; औप; णाया १, १)।

मलिअ न [दे] १ लघु क्षेत्र; २ कुण्ड; (दे ६, १४४)।

मलिअ वि [मलित] मल-युक्त, मलिन; "मलमलियदेहवत्था" (सुपा १६६; गउड)।

मलिज्जंत देखो मल=मृद्।

मलिण वि [मलिन] मैला, मल-युक्त; (कुमा; सुपा ६०१)।

मलिणिय वि [मलिनित] मलिन किया हुआ, (उव)।

मलीमस वि [मलीमस] मलिन, मैला; (पाअ)।

मलेव्व देखो मल=मृद्।

मलेच्छ देखो मिलिच्छ; (पि ८४; नाट—चैत १८)।

मल्ल पुं [मल्ल] १ पहलवान, कुश्ती लड़ने वाला, बाहु-योद्धा; (औप; कप्प; पण्ह २, ४; कुमा)। २ पात्र; "दीवसिहा-पडिपिल्लणमल्ले मिल्लंति नीसासे" (कुप्र १३१)। ३ भींत का अवष्टम्भन-स्तम्भ; ४ छप्पर का आधार-भूत काष्ठ; (भग ८, ६—पत्र ३७६)। °जुद्ध न [°युद्ध] कुश्ती; (कप्पू; हे ४, ३८२)। °दिन्न पु [°दत्त] एक राज-कुमार; (णाया १, ८)। °वाइ पुं [°वादिन्] एक सुविख्यात प्राचीन जैन आचार्य और ग्रन्थकार; (सम्मत्त १२०)।

मल्ल न [माल्य] १ पुष्प, फूल, (ठा ४, ४)। २ फूल की गुँथी हुई माला; (पाअ; औप)। ३ मस्तक-स्थित पुष्प-माला; (हे २, ७६)। ४ एक देव-विमान; (सम ३६)।

मल्लइ पुं [मल्लकि, °किन्] नृप-विशेष (भग; औप; पि ८६)।

मल्लग } न [दे. मल्लक] १ पात्र-विशेष, शराव; (विसे मल्लय } २४७ टी; पिंड २१०, तंदु ४४; महा, कुलक १४; णाया १, ६; दे ६, १४५; प्रयौ ६७)। २ चषक, पान-पात्र, (दे ६, १४५)।

मल्लय न [दे] १ अपूप-भेद, एक तरह का पूआ, २ त्रि. कुसुम्भ से रक्त; (दे ६, १४५)।

मल्लाणी स्त्री [दे] मातुलानी, मामी; (दे ६, ११२; पाअ; प्राकृ ३८)।

मल्लि वि [माल्यिन्] माल्य-युक्त, माला वाला; (औप)।

मल्लि स्त्री [मल्लि] १ उन्नीसवें जिन-देव का नाम, (सम ४३; णाया १, ८; मंगल १२; पडि)। २ वृक्ष-विशेष, मोनिया का गाछ; (दे २, १८)। °णाह, °नाह पु [°नाथ] उन्नीसवें जिन-देव, (महा, कुप्र ६३)।

मल्लिअज्जुण पु [मल्लिकार्जुन] एक राजा का नाम, (कुमा)।

मल्लिआ स्त्री [मल्लिका] १ पुष्पवृक्ष-विशेष; (णाया १, ६; कुप्र ४६)। २ पुष्प-विशेष, (कुमा)। ३ छन्द-विशेष; (पिंग)।

मल्ली देखो मल्लि; (णाया १, ८, पउम २०, ३५; विचार १४८; कुमा)।

मल्ह अक [दे] मौज मानना, लीला करना। वकृ—मल्हंत; (दे ६, ११६ टी; भवि)।

मल्हण न [दे] लीला, मौज; (दे ६, ११६)।

मव सक [मापय्] मपना, माप करना, नापना। मवंति; (सिरि ४२५)। कर्म—"आउयाइं मविज्जंति" (कम्म ५, ८५ टी)। कवकृ—मविज्जमाण; (विसे १४००)।

मविय वि [मापित] मापा हुआ; (तंदु ३१)।

मश्चली (मा) स्त्री [मत्स्य] मछली; (पि २३३)।

मस } पुं [मश, °क] १ शरीर पर का तिलाकार काला मसअ } दाग, तिल; (पव २५७)। २ मच्छड, क्षुद्र जन्तु-विशेष; (गा ५६०, चारु १०; वज्जा ४६)।

मसक्कसार न [मसक्कसार] इन्द्रों का एक स्वयं आभाव्य विमान; (देवेन्द्र २६३)।

मसग देखो मसअ; (भग; औप; पउम ३३, १०८; जी १८)।

मसण वि [मसृण] १ स्निग्ध, चिकना; २ सुकुमाल, कोमल, अ-कर्कश; ३ मन्द, धीमा; (हे १, १३०; कुमा)।

मसरक्क सक [दे] सकुचना, समेटना। संकृ—"दसवि करंगुलीउ मसरक्किवि (अप)" (भवि)।

मसाण न [श्मशान] मसान, मरघट; (गा ४०८; प्राप्र; कुमा)।

मसार पुं [दे, मसार] मसृणता-संपादक पाषाण-विशेष, कसौटी का पत्थर; (णाया १, १—पत्र ६; औप)।

मसारगल्ल पुं [मसारगल्ल] एक रत्न-जाति; (णाया १, १—पत्र ३१; कप्प, उत्त ३६, ७६, इक)।

मसि स्त्री [मसि] १ काजल, कज्जल; (कप्पू)। २ स्याही, मियाही; (सुर २, ५)।
मसिंहार पुं [मसिंहार] चत्रिय परिव्राजक-विशेष; (औप)।
मसिण देखो **मसण**; (हे १, १३०; कुमा; औप; से १, ४५; ५, ६४)।
मसिण वि [दे] रम्य, सुन्दर; (दे ६, ११८)।
मसिणिअ वि [मसृणित] १ मृष्ट, शुद्ध किया हुआ, मार्जित; "गोसिणिअं मसिणिअं" (पाअ)। २ स्निग्ध किया हुआ; (से ८, ६)। ३ विलुलित, विमर्दित; (से १, ५५)।
मसी देखो **मसि**; (उवा)।
मसूर, **मसूरग**, **मसूरय** पुन [मसूर, °क] १ धान्य-विशेष, मसूरि; (ठा ४, ३; सम १४६; पिंड ६२३)। २ उच्छीर्षक, ओसीसा; (सुर २, ८३; कप्प)। ३ वस्त्र या चर्म का वृत्ताकार आसन; (पव ८४)।
मस्सु देखो **मंसु**; (संचि १२; पि ३१२)।
मस्सूरग देखो **मसूरग**; "मस्सूरए य थिवुगे" (जीवस ५२)।
मह सक [काङ्क्ष्] चाहना, वाञ्छना। महइ; (हे ४, १९२; कुमा; सण)।
मह सक [मथ्] १ मथना, विलोडन करना। २ मारना। महेज्जा; (उवा)।
मह सक [मह्] पूजना। महइ; (कुमा), महेइ; (सिरि ५६६)। संकृ—**महिअ**; (कुमा)। कृ—**महणिज्ज**; (उप पृ १२६)।
मह पुंन [मह] उत्सव; (विपा १, १—पत्र ५; रंभा; पाअ; सण)।
मह पुं [मख] यज्ञ; (चंड; गउड)।
मह त्रि [महत्] १ बड़ा, वृद्ध; २ विपुल, विस्तीर्ण; ३ उत्तम, श्रेष्ठ; "एगं महं मणुस्सेहं" (णाया १, १—पत्र १३; कप्प; जी ७; हे १, ४)। स्त्री—°ई; (उव; महा)। °एवी स्त्री [°देवी] पटरानी; (भवि)। °कंतजस पुं [°कान्तयशस्] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६५)। °कमलंग न [°कमलाङ्ग] संख्या-विशेष, ८४ लाख कमल की संख्या; (जो २)। °कव्व न [°काव्य] सर्ग-बद्ध उत्तम काव्य-ग्रन्थ; (भवि)। °काल देखो **महा-काल**; (देवेन्द्र २४)। °गइ पुं [°गति] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंकेश; (पउम ५, २६५)। °ग्गह देखो **महा-गह**; (सम ८३)। °ग्घ वि [°अर्घ] महा-मूल्य, कीमती; (सुर ३, १०३; सुपा ३७)। °ग्घविअ वि [°अर्घित] १ महँघा, दुर्लभ; (से १४, ३७)। २ विभूषित; "विमलंगोवंगगुण-महग्घविया" (सुपा १: ६०)। ३ सम्मानित; "अच्चिय-वंदियपूइयसक्कारियपणमिओ महग्घविओ" (उव)। °ग्घिम (अप) वि [°अर्घित] बहु-मूल्य, महँघा; (भवि)। °चंद पुं [°चन्द्र] १ राजकुमार-विशेष; (विपा २, ५; ६)। २ एक राजा; (विपा १, ४)। °च्च वि [°अर्च] १ बड़ा ऐश्वर्य वाला; २ बड़ी पूजा—सत्कार वाला; (ठा ३, १—पत्र ११७; भग)। °च्च वि [°अर्च्य] अति पूज्य; (ठा ३, १; भग)। °च्छरिय न [°आश्चर्य] बड़ा आश्चर्य; (सुर १०, ११८)। °जक्ख पुं [°यक्ष] भगवान् अजितनाथ का शासनाधिष्ठायक देव; (पव २६; संति ७)। °जाला स्त्री [°ज्वाला] विद्यादेवी-विशेष; (संति ६)। °ज्जुइय वि [°द्युतिक] महान् तेज वाला; (भग औप)। °ड्डि स्त्री [°ऋद्धि] महान् वैभव; (राय)। °ड्डिय, °ड्डीअ वि [°ऋद्धिक] विपुल वैभव वाला; (भग; ओघभा १०)। °ण्णव पु [°अर्णव] महा-सागर; (सुपा ४१७; हे १, २६९)। °ण्णवा स्त्री [°अर्णवा] १ बड़ी नदी; २ समुद्र-गामिनी; (कस ४, २७ टि; बृह ४)। °तुडियंग न [°त्रुटिताङ्ग] ८४ लाख त्रुटित की संख्या; (जो २)। °त्तण न [°त्व] बड़ाई, महत्ता; (श्रा २७)। °त्तर वि [°तर] १ बहुत बड़ा; (स्वप्न २८)। २ मुखिया, नायक, प्रधान; (कप्प; औप; विपा १, ८)। ३ अन्तःपुर का रक्षक, (औप)। स्त्री—°रिया, °री; (ठा ४, १—पत्र १६८; इक)। °त्थ वि [°अर्थ] महान् अर्थ वाला; (णाया १, ८; श्रा २७)। °त्थ न [°अस्त्र] अस्त्र-विशेष, बड़ा हथियार; (पउम ७१, ६७)। °त्थिम पुस्त्री [°र्थत्व] महार्थता; (भवि)। °द्दलिल्ल वि [°दलिल] बड़ा दल वाला; (प्रासू १२३)। °द्दह पुं [°द्रह] बड़ा ह्रद; (णाया १, १—पत्र ६४; गा १८६ अ)। °द्दि स्त्री [°अद्रि] १ बड़ी याचना; २ परिग्रह; (पण्ह १, ५—पत्र ९३)। °द्दुम पुं [°द्रुम] १ महान् वृक्ष; (हे ४, ४४५)। २ वैरोचन इन्द्र के एक पदाति-सैन्य का अधिपति; (ठा ५, १—पत्र ३०२)। °द्धि वि [°ऋद्धि] बड़ी ऋद्धि वाला; (कुमा)। °धूम पु [°धूम] बड़ा धुँआ; (महा)। °न्नव देखो °ण्णव; (श्रा २८)। °पाण न [°प्राण] ध्यान-विशेष, (सिरि १३३०)। °पुंडरीअ पुं [°पुण्डरीक] ग्रह-विशेष,

(हे २, १२०)। °प्प पु [°आत्मन्] महान् आत्मा, महा-पुरुष; (पउम ११८, १२१)। °प्फल वि [°फल] महान् फल वाला; (सुपा ६२१)। °बाहु पुं [°बाहु] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६५)। °बोह पुं [°अबोध] महा-सागर;

"इय वुत्तंतं सोउं रयणा निव्वासिया तहा सुगया।

महबोहे जंतूणं जह पुणरवि नागया तत्थ" (सम्मत्त १२०)।

°ब्बल पुं [°बल] १ एक राज-कुमार; (विपा २, ७; भग ११, ११; अंत)। २ वि. विपुल बल वाला; (भग; औप)। देखो **महा-बल**। °ब्भय वि [°भय] महाभय-जनक; (पगह १, १)। °ब्भूय न [°भूत] पृथिवी आदि पाँच द्रव्य; (सूअ २, १, २२)। °मरुय पुं [°मरुत] एक महर्षि, अन्तकृद् मुनि-विशेष, (अंत २५)। °मास पुं [°अश्व] महान् अश्व; (औप)। °यर देखो °त्तर; (णाया १, १—पत्र ३७)। °रव पु [°रव] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६६)। °रिसि पु [°ऋषि] महर्षि, महा-मुनि; (उव, रयण ३७)। °रिह वि [°अर्ह] वड़े के योग्य, वहु-मूल्य, कीमती; (विपा १, ३; औप; वि. १४०)। °वाय पुं [°वात] महान् पवन; (ओघ ३८७)। °व्वइय वि [°व्रतिक] महाव्रत वाला; (सुपा ४७४)। °व्वय पुन [°व्रत] महान् व्रत; "महव्वया पंच हुति इमे" (पउम ११, २३), "सेसा महव्वया ते उत्तरगुणसंजुयावि न हु सम्म" (सिक्खा ४८, भग; उव)। °व्वय पु [°व्यय] विपुल खर्च; (उप पृ १०८)। °सलागा स्त्री [°शलाका] पल्य-विशेष, एक प्रकार का नाप; (जीवस १३६)। °सिव पुं [°शिव] एक राजा, षष्ठ बलदेव और वासुदेव का पिता; (सम १५२)। °सुक्क देखो **महा-सुक्क**; (देवेन्द्र १३५)। °सेण पुं [°सेन] १ आठवें जिन-देव का पिता, (सम १५०)। २ एक राजा, (महा)। ३ एक यादव; (उप ६४८ टी)। ४ न. वन-विशेष; (विसे १४८४)। देखो **महा-सेण**। देखो **महा°**।

महअर पुं [दे] गह्वर-पति, निकुञ्ज का मालिक, (दे ६, १२३)।

महइ° अ [**महाति**] १ अति वडा; २ अत्यन्त विपुल। °जड वि [°जट] अति बडी जटा वाला; (पउम ५८, १२)। °महाइंदइ पुं [°महेन्द्रजित्] इक्ष्वाकु-वंश के एक राजा का नाम; (पउम ५, ६)। °महापुरिस पुं [°महापुरुष] १ सर्वोत्तम पुरुष, सर्व-श्रेष्ठ पुरुष; २ जिन-देव, जिन भगवान्; (पउम १, १८)। °महालय वि [°महत्] अत्यन्त बडा; "महइमहालयंसि संसारंसि" (उवा; सम ७२), स्त्री—°लिया; (भग; उवा)।

महई देखो **मह**=महत्।

महंग पुं [**दे**] उष्ट्र, ऊँट; (दे ६, ११७)।

महंत देखो **मह**=महत्; (आचा; औप; कुमा)।

महच्च न [**माहत्य**] १ महत्त्व, २ वि. महत्त्व वाला; (ठा ३, १—पत्र ११७)।

महण न [**दे**] पिता का घर; (दे ६, ११४)।

महण न [**मथन**] १ विलोडन; (से १, ४६; वज्जा ८)। २ घर्षण; (कुप्र १४८)। ३ वि. मारने वाला; "दरित-नागदप्पमहणा" (पगह १, ४)। ४ विनाश करने वाला; "नाणं च चरणं च भवमहणं" (संबोध ३५; सुर ७, २२५)। स्त्री—°णी; (श्रा ४६)।

महण पुं [**महन**] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६२)।

महणिज्ज देखो **मह**=मह्।

महति° देखो **महइ°**; (ठा ३, ४, णाया १, १; औप)।

महत्थार न [**दे**] १ भाण्ड, भाजन, २ भोजन, (दे ६, १२५)।

महप्पुर पुं [**दे**] माहात्म्य, प्रभाव; "तुह मुहचंदपहाए फरिसाण महप्पुरो एसो" (रंभा ४३)।

महमह देखो **मघमघ**। महमहइ; (हे ४, ७८; षड्; गा ४६७), महमहेइ; (उव)। वकृ—**महमहंत**, (काप्र ६१७)। संकृ—**महमहिअ**; (कुमा)।

महमहिअ वि [**प्रसृत**] १ फैला हुआ; (हे १, १४६; वज्जा १५०)। २ सुरभित; (रंभा)।

महम्मह देखो **महमह**; "जिअलोअसिरी महम्महइ" (गा ६०४)।

महया° देखो **महा°**; "महयाहिमवंतमहंतमलयमंदरमहिंदसारे" (णाया १, १ टी—पत्र ६; औप; विपा १, १; भग)।

महर वि [**दे**] अ-समर्थ, अ-शक्त; (दे ६, ११३)।

महलयपक्ख देखो **महालवक्ख**; (षड्—पृष्ठ १७६)।

महल्ल वि [**दे. महत्**] १ वृद्ध, बड़ा, (दे ६, १४३; उवा; गउड; सुर १, ५४; पंचा ५, १६; संबोध ४७; ओघ १२६; प्रासू १४६; जय १२; सुपा ११७)। २ पृथुल, विशाल,

विस्तीर्ण; (दे ६, १४३; प्रवि १०; स ६६२, भवि)। स्त्री—॰**ल्लिया**; (औप; सुपा ११६; ५८७)।

महल्ल वि [दे] १ मुखर, वाचाट, बकवादी; (दे ६, १४३; षड्)। २ पुं. जलधि, समुद्र; (दे ६, १४३)। ३ समूह, निवह; (दे ६, १४३; सुर १, ५४)।

महल्लिर देखो **महल्ल**; "हरिनहकडिणमहल्लिरपयनहरपरंपराए विकरालो" (सुपा ११)।

महव देखो **मघव**; (कुमा; भवि)।

महा स्त्री [**मघा**] नक्षत्र-विशेष; (सम १२; सुज्ज १०, ५; इक)।

महा॰ देखो **मह**=महत्; (उवा)। ॰**अडड** न [॰**अटट**] संख्या-विशेष, ८४ लाख महाअटटांग की संख्या; (जो २)। ॰**अडडंग** न [॰**अटटाङ्ग**] संख्या-विशेष, ८४ लाख अटट, (जो २)। ॰**आल** देखो ॰**काल**; (नाट—चैत ८२)। ॰**ऊह** न [॰**ऊह**] संख्या-विशेष, ८४ लाख महाऊहांग की संख्या, (जो २)। ॰**कइ** पुं [॰**कवि**] श्रेष्ठ कवि, समर्थ कवि, (गउड, चेइय ८४३; रभा)। ॰**कंदिय** पुं [॰**क्रन्दित**] व्यन्तर देवों की एक जाति; (पण्ह १, ४; औप; इक)। ॰**कच्छ** पुं [॰**कच्छ**] १ महाविदेह वर्ष का एक विजय-क्षेत्र—प्रान्त, (ठा २, ३; इक)। २ देव-विशेष, (जं ४)। ॰**कच्छा** स्त्री [॰**कच्छा**] अतिकाय-नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ४, १—पत्र २०४; णाया २; इक)। ॰**कण्ह** पुं [॰**कृष्ण**] राजा श्रेणिक का एक पुत्र; (निर १, १)। ॰**कण्हा** स्त्री [॰**कृष्णा**] राजा श्रेणिक की एक पत्नी; (अंत २५)। ॰**कप्प** पुं [॰**कल्प**] १ जैन ग्रन्थ-विशेष; (णंदि)। २ काल का एक परिमाण; (भग १५)। ॰**कमल** न [॰**कमल**] संख्या-विशेष, चौरासी लाख महाकमलांग की संख्या, (जो २)। ॰**कव्व** देखो **मह-कव्व**; (सम्मत्त १४६)। ॰**काय** पुं [॰**काय**] १ महोरग देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३; इक)। २ वि. महान् शरीर वाला; (उवा)। ॰**काल** पुं [॰**काल**] १ महाग्रह-विशेष, एक ग्रह-देवता; (सुज्ज २०; ठा २, ३)। २ दक्षिण लवण-समुद्र के पाताल-कलश का अधिष्ठायक देव; (ठा ४, २—पत्र २२६)। ३ एक इन्द्र, पिशाच-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५)। ४ परमाधार्मिक देवों की एक जाति; (सम २८)। ५ वायु-कुमार देवों का एक लोकपाल; (ठा ४, १—पत्र १९८)। ६ वेलम्ब इन्द्र का एक लोकपाल; (ठा ४, १—पत्र १९८)। ७ नव निधिओं में एक निधि, जो धातुओं की पूर्ति करता है; (उप ९८६ टी; ठा ९—पत्र ४४९)। ८ सातवी नरक-भूमि का एक नरकावास; (ठा ५, ३—पत्र ३४१; सम ५८)। ९ पिशाच देवों की एक जाति; (राज)। १० उज्जयिनी नगरी का एक प्राचीन जैन मन्दिर; (कुप्र १७४)। ११ शिव, महादेव; (आव ६)। १२ उज्जयिनी का एक का श्मशान; (अंत)। १३ राजा श्रेणिक का एक पुत्र; (निर १, १)। १४ न एक देव-विमान; (सम ३५)। ॰**काली** स्त्री [॰**काली**] १ एक विद्या-देवी; (संति ५)। २ भगवान् सुमतिनाथ की शासन-देवी; (संति ९)। ३ राजा श्रेणिक की एक पत्नी; (अंत २५)। ॰**किण्हा** स्त्री [॰**कृष्णा**] एक महा-नदी; (ठा ५, ३—पत्र ३५१)। ॰**कुमुद**, ॰**कुमुय** न [॰**कुमुद**] १ एक देव-विमान; (सम ३३)। २ संख्या-विशेष, चौरासी लाख महाकुमुदांग की संख्या; (जो २)। ॰**कुमुयअंग** न [॰**कुमुदाङ्ग**] संख्या-विशेष, कुमुद को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (जो २)।—॰**कुम्म** पुं [॰**कूर्म**] कूर्मावतार, (गउड)। ॰**कुल** न [॰**कुल**] १ श्रेष्ठ कुल; (निचू ८)। २ वि. प्रशस्त कुल में उत्पन्न, "निक्खंता जे महाकुला" (सूअ १, ८, २४)। ॰**गंगा** स्त्री [॰**गङ्गा**] परिमाण-विशेष; (भग १५)। ॰**गह** पुं [॰**ग्रह**] १ सूर्य आदि ज्योतिष्क, (सार्ध ८७)। ॰**गह** वि [॰**आग्रह**] आग्रही, हठी; (सार्ध ८७)। ॰**गिरि** पुं [॰**गिरि**] १ एक जैन महर्षि; (उव; कप्प)। २ बड़ा पर्वत; (गउड)। ॰**गोव** पुं [॰**गोप**] १ महान् रक्षक; २ जिन भगवान्; (उवा; विसे २९५९)। ॰**घोस** पुं [॰**घोष**] १ ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिन-देव, (सम १५४)। २ एक इन्द्र, स्तनित कुमार देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५)। ३ एक कुलकर पुरुष; (सम १५०)। ४ परमाधार्मिक देवों की एक जाति, (सम २९)। ५ न. देवविमान-विशेष, (सम १२; १७)। ॰**चंद** पुं [॰**चन्द्र**] ऐरवत वर्ष के एक भावी तीर्थंकर; (सम १५४)। ॰**जणिअ** पुं [॰**जनिक**] श्रेष्ठी, सार्थवाह आदि नगर के गण्य-मान्य लोक; (कुमा)। ॰**जलहि** पुं [॰**जलधि**] महा-सागर; (सुपा ४७४)। ॰**जस** पु [॰**यशस्**] १ भरत चक्रवर्ती का एक पौत्र; (ठा ८—पत्र ४२९)। २ ऐरवत क्षेत्र के चतुर्थ भावी तीर्थंकर-देव;

(सम १५४) । ३ वि. महान् यशस्वी; (उत्त १२, २३) । °जाइ स्त्री [°जाति] गुल्म-विशेष, (पराग १) । °जाण न [°यान] १ बड़ा यान—वाहन; २ चारित्र, संयम, (आचा) । ३ एक विद्याधर-नगर का नाम; (इक) । ४ पु. मोक्ष, मुक्ति; (आचा) । °जुद्ध न [°युद्ध] बड़ी लड़ाई; (जीव ३) । °जुम्म पुन [°युग्म] महान् राशि; (भग ३५) । °ण देखो °यण; "गामदुआर-ब्भासे प्रगडसमीवे महाणमज्झे वा" (ओघ ६६) । °णई स्त्री [°नदी] बड़ी नदी; (गउड; पउम ४०, १३) । °णंदियावत्त पुं [°नन्द्यावर्त] १ घोष-नामक इन्द्र का एक लोकपाल; (ठा ४, १—पत्र १६८) । २ न. एक देव-विमान, (सम ३२) । °णगर देखो °नगर; (राज) । °णलिण देखो °नलिण; (राज) । °णील न [°नील] १ रत्न-विशेष; २ वि. अति नील वर्ण वाला; (जीव ३; औप) । °णीला देखो °नीला; (राज) । °णुभाअ, °णुभाग वि [°अनुभाग] महानुभाव, महाशय; (नाट—मालती ३६; गच्छ १, ४; भग; सिरि १६) । °णुभाव वि [°अनुभाव] वही अर्थ; (सुर २, ३५; द्र ६६) । °तमपहा स्त्री [°तमःप्रभा] सप्तम नरक-पृथिवी; (पव १७२) । °तमा स्त्री [°तमा] वही; (चेइय ७५६) । °तीरा स्त्री [°तीरा] नदी-विशेष; (ठा ५, ३—पत्र ३५१) । °तुडिय न [°त्रुटित] महात्रुटितांग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह, संख्या-विशेष; (जो २) । °दामड्ढि पुं [°दामास्थि] ईशानेन्द्र के वृषभ-सैन्य का अधिपति; (इक) । °दामड्ढि पुं [°दामर्द्धि] वही; (ठा ५, १—पत्र ३०३) । °दुम देखो मह-द्दुम; (इक) । २ न. एक देव-विमान; (सम ३५) । °दुम-सेण पुं [°द्रुमसेन] राजा श्रेणिक का एक पुत्र जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी; (अनु २) । °देव पुं [°देव] १ श्रेष्ठ देव, जिन-देव; (पउम १०६, १२) । २ शिव, गौरी-पति, (पउम १०६, १२; सम्मत्त ७६) । °देवी स्त्री [°देवी] पटरानी; (कप्पू) । °धण पुं [°धन] एक वणिक्; (पउम ५५, ३८) । °धणु पुं [°धनुष्] बलदेव का एक पुत्र; (निर १, ५) । °नई स्त्री [°नदी] बड़ी नदी; (सम २७; कस) । °नंदिआवत्त देखो °णंदियावत्त; (इक) । °नगर न [°नगर] बड़ा शहर; (पण्ह २, ४) । °नय पुं [°नद] ब्रह्म-पुत्रा आदि बड़ी नदी; (आवम) । °नलिण न [°नलिन] १ संख्या-विशेष, महानलिनांग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (जो २) । २ एक देव-विमान; (सम ३३) । °नलिणंग न [°नलिनाङ्ग] संख्या-विशेष, नलिन को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह, (जो २) । °निज्जामय पुं [°निर्यामक] श्रेष्ठ कर्णधार, (उवा) । °निद्दा स्त्री [°निद्रा] मृत्यु, मरण; (पउम ६, १६८) । °निनाद, °निनाय वि [°निनाद] प्रख्यात, प्रसिद्ध; (ओघ ८६; ८६ टी) । °निसीह न [°निशीथ] एक जैन आगम-ग्रन्थ, (गच्छ ३, २६) । °नीला स्त्री [°नीला] एक महानदी; (ठा ५, ३—पत्र ३५१) । °पउम पु [°पद्म] १ भरतक्षेत्र का भावी प्रथम तीर्थंकर; (सम १५३) । २ पुंडरीकिणी नगरी का एक राजा और पीछे से राजर्षि; (णाया १, १६—पत्र २४३) । ३ भारतवर्ष में उत्पन्न नववाँ चक्रवर्ती राजा; (सम १५२; पउम २०, १४३) । ४ भरतक्षेत्र का भावी नववाँ चक्रवर्ती राजा; (सम १५४) । ५ एक राजा; (ठा ६) । ६ एक निधि; (ठा ६—पत्र ४४६) । ७ एक द्रह; (सम १०४; ठा २, ३—पत्र ७२) । ८ राजा श्रेणिक का एक पौत्र; (निर १, १) । ६ देव-विशेष; (दीव) । १० वृक्ष-विशेष; (ठा २, ३) । ११ न. संख्या-विशेष; महापद्मांग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (जो २) । १२ एक देव-विमान; (सम ३३) । °पउमअंग न [°पद्माङ्ग] संख्या-विशेष, पद्म को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (जो २) । °पउमा स्त्री [°पद्मा] राजा श्रेणिक की एक पुत्र-वधू; (निर १, १) । °पंडिय वि [°पण्डित] श्रेष्ठ विद्वान्; (रंभा) । °पट्टण न [°पत्तन] बड़ा शहर, (उवा) । °पण्ण, °पन्न वि [°प्रज्ञ] श्रेष्ठ बुद्धि वाला; (उप ७७३; पि २७६) । °पभ न [°प्रभ] एक देव-विमान; (सम १३) । °पभा स्त्री [°प्रभा] एक राज्ञी; (उप १०३१ टी) । °पम्ह पुं [°पक्ष्म] महाविदेह वर्ष का एक विजय—प्रान्त; (ठा २, ३) । °परिण्णा, °परिन्ना स्त्री [°परिज्ञा] आचा-रांग सूत्र के प्रथम श्रुतस्कन्ध का सातवाँ अध्ययन; (राज; आक) । °पसु पुं [°पशु] मनुष्य; (गउड) । °पह पुं [°पथ] बड़ा रास्ता, राज-मार्ग; (भग; पण्ह १, ३; औप) । °पाण न [°प्राण] ब्रह्मलोक-स्थित एक देव-विमान; (उत्त १८, २८) । °पायाल पुं [°पाताल]

वडा पाताल-कलश; (ठा ४, २—पत्न २२६; सम ७१)। °पालि स्त्री [°पालि] १ वड़ा पल्य; २ सागरोपम-परिमित भव-स्थिति—आयु;

"अहमासि महापाणे जुइमं वरिससग्रोवमे।
जा सा पालिमहापाली दिव्वा वरिससग्रोवमा"
(उत्त १८, २८)।

°पिउ पुं [°पितृ] पिता का वड़ा भाई; (विपा १, ३—पत्न ४०)। °पीढ पुं [°पीठ] एक जैन महर्षि; (सट्ठि ८१ टी)। °पुंख न [°पुङ्ख] एक देव-विमान; (सम २२)। °पुंड न [°पुण्ड्र] एक देव-विमान; (सम २२)। °पुंडरीय न [°पुण्डरीक] १ विशाल श्वेत कमल; (राय)। २ पुं. ग्रह-विशेष; (सम १०४)। ३ देव-विशेष; ४ देखो °पोंडरीअ; (राज)। °पुर न [°पुर] १ एक विद्याधर-नगर; (इक)। २ नगर-विशेष; (विपा २, ७)। °पुरा स्त्री [°पुरी] महापद्म-विजय की राजधानी; (ठा २, ३—पत्न ८०)। °पुरिस पु [°पुरुष] १ श्रेष्ठ पुरुष; (पगह २, ४)। २ किंपुरुष-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्न ८५)। °पुरी देखो °पुरा; (इक)। °पोंडरीअ न [°पुण्डरीक] एक देव-विमान; (स ३३)। देखो °पुंडरीय; (ठा २, ३—पत्न ७२)। °फल देखो मह-प्फल; (उवा)। °फलिह न [°स्फटिक] शिखरी पर्वत का एक उत्तर-दिशा-स्थित कूट; (राज)। °बल वि [°बल] १ महान् वल वाला; (भग)। २ पुं. ऐरवत क्षेत्र का एक भावी तीर्थंकर; (सम १५४)। ३ चक्रवर्ती भरत के वंश में उत्पन्न एक राजा; (पउम ५, ४; ठा ८—पत्न ४२६)। ४ सोमवंशीय एक नर-पति; (पउम ५, १०)। ५ पाँचवें वलदेव का पूर्व-जन्मीय नाम; (पउम २०, १६०)। ६ भारतवर्ष का भावी छठवाँ वासुदेव; (सम १५४)। °बाहु पुं [°बाहु] १ भारत-वर्ष का भावी चतुर्थ वासुदेव; (सम १५४)। २ रावण का एक सुभट; (पउम ५६, ३०)। ३ अपर विदेह-वर्ष में उत्पन्न एक वासुदेव; (आव ४)। °भद्द न [°भद्र] तप-विशेष; (पव २७१)। °भद्दपडिमा स्त्री [°भद्रप्रतिमा] नीचे देखो; (औप)। °भद्दा स्त्री [°भद्रा] व्रत-विशेष, कायोत्सर्ग-ध्यान का एक व्रत; (ठा २, ३—पत्न ६४)। °भय देखो मह-ब्भय; (आचा)। °भाअ, °भाग वि [°भाग] महानुभाव, महाशय; (अभि १७४; महा; सुपा १६८; उप पृ ३)। °भीम पुं [°भीम] १ राक्षसों का उत्तर दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्न ८५)। २ भारत-वर्ष का भावी आठवाँ प्रतिवासुदेव; (सम १५४)। ३ वि. वडा भयानक; (दंस ४)। °भीमसेण पुं [°भीमसेन] एक कुलकर पुरुष का नाम; (सम १५०)। °भुअ पुं [°भुज] देव-विशेष; (दीव)। °भुअंग पुं [°भुजङ्ग] शेष नाग; (से ७, ५६)। °भोया स्त्री [°भोगा] एक महा-नदी; (ठा ५, ३—पत्न ३५१)। °मउंद पुंन [°मुकुन्द] वाद्य-विशेष; (भग)। °मंति पुं [°मन्त्रिन्] १ सर्वोच्च अमात्य; प्रधान मन्त्री; (औप; सुपा २२३; णाया १, १)। २ हस्ति-सैन्य का अध्यक्ष; (णाया १, १—पत्र १६)। °मंस न [°मांस] मनुष्य का मांस; (कप्पू)। °मच्च पुं [°अमात्य] प्रधान मन्त्री; (कुमा)। °मत्त पुं [°मात्र] हस्तिपक, हाथी का महावत;

"तत्तो नरसिंहनिवस्स कुंजरा सिंहभयविहुरहियया।
अवगणियमहामत्ता मत्तावि पलाइया झत्ति" (कुप्र ३६४)।

°मरुया स्त्री [°मरुता] राजा श्रेणिक की एक पत्नी; (अंत)। °मह पुं [°मह] महोत्सव; (आव ४)। °महंत वि [°महत्] अति वड़ा; (सुपा ५६४; स ६६३)। °माई (अप) स्त्री [°माया] छन्द-विशेष; (पिंग)। °माउया स्त्री [°मातृका] माता की वडी बहन; (विपा १, ३—पत्न ४०)। °माढर पुं [°माठर] ईशानेन्द्र के रथ-सैन्य का अधिपति; (ठा ५, १—पत्न ३०३; इक)। °माण-सिआ स्त्री [°मानसिका] एक विद्या-देवी; (संति ६)। °माहण पुं [°ब्राह्मण] श्रेष्ठ ब्राह्मण; (उवा)। °मुणि पुं [°मुनि] श्रेष्ठ साधु; (कुमा)। °मेह पु [°मेघ] वड़ा मेघ; (णाया १, १—पत्न ४; ठा ४, ४)। °मेह वि [°मेध] बुद्धिमान्; (उप १४२ टी)। °मोक्ख वि [°मूर्ख] वड़ा वेवकूफ; (उप १०३१ टी)। °यण पुं [°जन] श्रेष्ठ लोक; (सुपा २६१)। °यस देखो °जस; (औप; कप्प)। °रक्खस पुं [°राक्षस] लंका नगरी का एक राजा जो धनवाहन का पुत्र था; (पउम ५, १३६)। °रह पुं [°रथ] १ वडा रथ; (पगह २, ४—पत्न १३०)। २ वि. वड़ा रथ वाला; ३ वड़ा योद्धा, दस हजार योद्धाओं के साथ अकेला भूझने वाला; (सूअ १, ३, १, १; गउड)। °रहि वि [°रथिन्] देखो पूर्व का २रा और ३रा अर्थ; (उप ७२८ टी)। °राय पुं [°राज] १ वड़ा राजा, राजाधिराज; (उप ७६८ टी; रंभा; महा)। २ सामानिक देव, इन्द्र-

समान ऋद्धि वाला देव; (सुर १५, ६)। ३ लोकपाल देव; (सम ८६)। °रिट्ठ पुं [°रिष्ट] बलि-नामक इन्द्र का एक सेना-पति; (इक)। °रिसि पुं [°ऋषि] वडा मुनि, श्रेष्ठ साधु; (उव)। °रिह, °रुह देखो महरिह; (पि १४०; अभि १८७)। °रोरु पुं [°रोरु] अप्रतिष्ठान नरकेन्द्रक की उत्तर दिशा में स्थित एक नरकावास, (देवेन्द्र २४)। °रोरुअ पु [°रोरुक, °रौरव] सातवीं नरक-भूमि का एक नरकावास—नरक-स्थान; (सम ५८, ठा ५, ३—पत्र ३४१; इक)। °रोहिणी स्त्री [°रोहिणी] एक महा-विद्या; (राज)। °लंजर पुं [°अलञ्जर] बड़ा जल-कुम्भ; (ठा ४, २—पत्र २२६)। °लच्छी स्त्री [°लक्ष्मी] १ एक श्रेष्ठि-भार्या; (उप ७२८ टी)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)। ३ श्रेष्ठ लक्ष्मी; ४ लक्ष्मी-विशेष; (नाट)। °लयंग न [°लताङ्ग] संख्या-विशेष, लता-नामक संख्या को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (इक; जो २)। °लया स्त्री [°लता] संख्या-विशेष, महालतांग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (जो २)। °लोहिअक्ख पुं [°लोहिताक्ष] बलीन्द्र के महिष-सैन्य का अधिपति; (ठा ५, १—पत्र ३०२; इक)। °वक्क न [°वाक्य] परस्पर-संबद्ध अर्थ वाले वाक्यों का समुदाय; (उप ८५६)। °वच्छ पुं [°वत्स] विजय-विशेष, विदेह वर्ष का एक प्रान्त; (ठा २, ३; इक)। °वच्छा स्त्री [°वत्सा] वही; (इक)। °वण न [°वन] मथुरा के निकट का एक वन; (ती ७)। °वण पुंन [°आपण] वड़ी दुकान; (भवि)। °वप्प पुं [°वप्र] विजयक्षेत्र-विशेष, (ठा २, ३—पत्र ८०; इक)। °वय देखो मह-व्वय; (सुपा ६५०)। °वराह पुं [°वराह] १ विष्णु का एक अवतार; (गउड)। २ वड़ा सुअर; (सूअ १, ७, २५)। °वह देखो °पह; (से १, ५८)। °वाउ पुं [°वायु] ईशानेन्द्र के अश्व-सैन्य का अधिपति; (ठा ५, १—पत्र ३०३, इक)। °वाड पुं [°वाट] वड़ा वाडा, महान् गोष्ठ, "निव्वाणमहावाडं" (उवा)। °विगइ स्त्री [°विकृति] अति विकार-जनक ये वस्तु—मधु, मांस, मद्य और माखन; (ठा ४, १—पत्र २०४, अंत)। °विजय वि [°विजय] वडा विजय वाला; "महाविजयपुप्फुत्तरपवरपुंडरीयाओ महाविमाणाओ" (कप्प)। °विदेह पुं [°विदेह] वर्ष-विशेष, क्षेत्र-विशेष; (सम १२; उवा; औप; अंत)। °विमाण न [°विमान] श्रेष्ठ देव-गृह; (उवा)। °विल न [°बिल] कन्दरा आदि वडा विवर; (कुमा)। °वीर पुं [°वीर] १ वर्तमान समय के अन्तिम तीर्थकर; (सम १; उवा; विपा १, १)। २ वि. महान् पराक्रमी, (किरात १६)। °वीरिअ पुं [°वीर्य] इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम; (पउम ५, ५)। °वीहि, °वीही स्त्री [°वीथि, °थी] १ वड़ा बाजार; (पउम ६६, ३४)। २ श्रेष्ठ मार्ग; (आचा)। °वेग पुं [°वेग] एक देव-जाति, भूतों की एक जाति; (राज; इक)। °वेजयंती स्त्री [°वैजयन्ती] वड़ी पताका, विजय-पताका; (कप्पू)। °सई स्त्री [°सती] उत्तम पतिव्रता स्त्री, (उप ७२८ टी; पडि)। °सउणि स्त्री [°शकुनि] एक विद्याधर-स्त्री; (पगह १, ४—पत्र ७२)। °सड्ढि वि [°श्रद्धिन्] वडी श्रद्धा वाला; (आचा; पि ३३३)। °सत्त वि [°सत्त्व] पराक्रमी; (द्र ११; महा)। °समुद्द पुं [°समुद्र] महा-सागर; (उवा)। °सयग, °सयय पुं [°शतक] भगवान् महावीर का एक उपासक; (उवा)। °सामाण न [°सामान] एक देव-विमान; (सम ३३)। °साल पुं [°शाल] एक युवराज; (पडि)। °सिलाकंटय पुं [°शिलाकण्टक] राजा कूणिक और चेटकराज की लडाई; (भग ७, ६—पत्र ३१५)। °सीह पुं [°सिंह] एक राजा, षष्ठ बलदेव और वासुदेव का पिता; (ठा ६—पत्र ४४७)। °सीहणिक्कीलिय, °सीहनिकीलिय न [°सिंहनिक्रीडित] तप-विशेष; (राज; पव २७१—गाथा १५२२)। °सीहसेण पुं [°सिंहसेन] भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर देवलोक में उत्पन्न राजा श्रेणिक का एक पुत्र; (अनु २)। °सुक्क पुं [°शुक्र] १ एक देवलोक, सातवाँ देवलोक; (सम ३३; विपा २, १)। २ सातवें देवलोक का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५)। ३ न. एक देव-विमान; (सम ३३)। °सुमिण पुं [°स्वप्न] उत्तम फल का सूचक स्वप्न; (णाया १, १—पत्र १३; पि ४४७)। °सुर पुं [°असुर] १ वड़ा दानव; २ दानवों का राजा हिरण्यकशिपु; (से १, २; गउड)। °सुव्वय, °सुव्वया स्त्री [°सुव्रता] भगवान् नेमिनाथ की मुख्य श्राविका; (कप्प; आवम)। °सूला स्त्री [°शूला] फाँसी; (श्रा २७)। °सेअ पुं [°श्वेत] एक इन्द्र, कूष्माण्ड-नामक वानव्यन्तर देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र; (इक; ठा २, ३—पत्र ८५)। °सेण पुं [°सेन] १ ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिन-देव; (सम १५४)। २ राजा श्रेणिक का एक पुत्र जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी; (अनु २)। ३

एक राजा; (विपा १, ६—पत्र ८८)। ४ एक यादव; (णाया १, ५)। ५ न. एक वन; (विसे २०८६)। देखो °मह-सेण। °सेणकण्ह पुं [°सेनकृष्ण] राजा श्रेणिक का एक पुत्र; (पि ५२)। °सेणकण्हा स्त्री [°सेनकृष्णा] राजा श्रेणिक की एक पत्नी; (अंत २५)। °सेल पुं [°शैल] १ बडा पर्वत; (णाया १, १)। २ न. नगर-विशेष; (पउम ५५, ५३)। °सोआम, °सोदाम पुं [°सौदाम] वैरोचन बलीन्द्र के अश्व-सैन्य का अधिपति; (ठा ५, १; इक)। °हरि पुं [°हरि] एक नर-पति, दसवें चक्रवर्ती का पिता; (सम १५२)। °हिमव, °हिमवंत पुं [°हिमवत्] १ पर्वत-विशेष; (पउम १०२, १०५; ठा २, ३; महा)। २ देव-विशेष; (जं ४)।

महाअत्त वि [दे] आढ्य, श्रीमन्त; (दे ६, ११६)।

महाइय पुं [दे] महात्मा; (भवि)।

महाणड पुं [दे. महानट] रुद्र, महादेव; (दे ६, १२१)।

महाणस न [महानस] रसोई-घर, पाक-स्थान; (णाया १, ८, गा १३; उप २५६ टी)।

महाणसि वि [महानसिन्] रसोई बनाने वाला, रसोइया। स्त्री—°णी; (णाया १, ७—पत्र ११७)।

महाणसिय वि [महानसिक] ऊपर देखो; (विपा १, ८)।

महाविल न [दे. महाविल] व्योम, आकाश; (दे ६, १२१)।

महारिय (अप) वि [मदीय] मेरा; (जय ३०)।

महाल पु [दे] जार, उपपति; (दे ६, ११६)।

महालक्ख वि [दे] तरुण, जवान; (दे ६, १२१)।

महालय देखो मह=महत्; (णाया १, ८; उवा; औप), "मा कासि कम्माइं महालयाइं" (उत्त १३, २६)। स्त्री—°लिया; (औप)।

महालय पुंन [महालय] १ उत्सवों का स्थान; (सम ७२)। २ वड़ा आलय; ३ वि. बृहत्काय, वड़ा शरीर वाला; (सूअ २, ५, ६)।

महालवक्ख पुं [दे. महालयपक्ष] श्राद्ध-पक्ष, आश्विन (गुजराती भाद्रपद) मास का कृष्ण पक्ष; (दे ६, १२७)।

महावल्ली स्त्री [दे] नलिनी, कमलिनी, (दे ६, १२२)।

महासउण पुं [दे] उल्लू, घूक-पक्षी; (दे ६, १२७)।

महासद्दा स्त्री [दे] शिवा, शृगाली; (दे ६, १२०; पाअ)।

महासेल वि [माहाशैल] महाशैल नगर से सबन्ध रखने वाला, महाशैल का; (पउम ५५, ५३)।

महि° देखो मही; (कुमा)। °अल न [°तल] भू-पीठ, भूमि-पृष्ठ; (कुमा, गउड; प्रासू ४५)। °गोयर पुं [°गोचर] मनुष्य; (भवि; सण)। °पट्ठ न [°पृष्ठ] भूमि-तल; (षड्)। °पाल पु [°पाल] राजा; (उव)। °मंडल न [°मण्डल] भू-मण्डल; (भवि, हे ४, ३७२)। °रमण पुं [°रमण] राजा; (श्रा २७)। °वइ पुं [°पति] राजा; (णाया १, १ टी; औप)। °वट्ठ देखो °पट्ठ, (हे १, १२६; कुमा)। °वल्लह पुं [°वल्लभ] राजा; (गु १०)। °वाल पुं [°पाल] १ राजा, नरपति; (हे १, २२६)। २ व्यक्ति-वाचक नाम; (भवि)। °वेढ पुं [°वेष्ट, °पीठ] मही-तल, भू-तल; (से १, ४; ४६)। °सामि पुं [°स्वामिन्] राजा; (कुमा)। °हर पुं [°धर] १ पर्वत; (पाअ; से ३, ३८; ४, १७; कुप्र ११७)। २ राजा; (कुप्र ११७)।

महिअ वि [मथित] विलोडित; (से २, १८; पाअ)।

महिअ वि [महित] १ पूजित, सत्कृत; (से १२, ४७; उवा; औप)। २ न. एक देव-विमान; (सम ४१)। ३ पूजा, सत्कार; (णाया १, १)।

महिअ वि [महीयस्] वडा, गुरु; "राअनिओओ महिओ को णाम गआगअमिह करेइ" (मुद्रा १८७)।

महिअद्दुअ न [दे] घी का किट्ट, घृत-मल; (राज)।

महिआ स्त्री [महिका] १ सूक्ष्म वर्षा, सूक्ष्म जल-तुषार; (पराण १; जी ५)। २ धूमिका, धुंध, कुहरा; (ओघ ३०; पाअ)। ३ मेघ-समूह; "घणनिवहो कालिआ महिआ" (पाअ)। देखो मिहिआ।

महिंद पु [महेन्द्र] १ वड़ा इन्द्र, देवाधीश; (औप; कप्प; णाया १, १ टी—पत्र ६)। २ पर्वत-विशेष; (से ६, ५६)। ३ अति महान्, खूब वड़ा; (ठा ४, २—पत्र २३०)। ४ एक राजा; (पउम ५०, २३)। ५ ऐरवत वर्ष का भावी १५वाँ तीर्थंकर; (पव ७)। ६ पुंन. एक देव-विमान; (सम २२; देवेन्द्र १४१)। °कंत न [°कान्त] एक देव-विमान; (सम २७)। °केउ पुं [°केतु] हनूमान के मातामह का नाम; (पउम ५०, १६)। °ज्झय पुं

[°ध्वज] १ वडा ध्वज; २ इन्द्र के ध्वज के समान ध्वज, वड़ा इन्द्र-ध्वज; (ठा ४, ४—पत्न २३०)। ३ न. एक देव-विमान; (सम २२)। °दुहिया स्त्री [°दुहिता] अञ्जनासुन्दरी, हनूमान की माता; (पउम ५०, २३)। °विक्कम पुं [°विक्रम] इक्ष्वाकु वंश का एक राजा, (पउम ५, ६)। °सीह पुं [°सिंह] १ कुरु देश का एक राजा; (उप ७२८ टी)। २ सनत्कुमार चक्रवर्ती का एक मित्र; (महा)।

महिंदुत्तरवडिंसय न [महेन्द्रोत्तरावतंसक] एक देव-विमान; (सम २७)।

महिगा देखो **महिआ**; (जीवस ३१)।

महिच्छ वि [महेच्छ] महत्वाकाङ्क्षी; (सूत्र २, २, ६१)।

महिच्छा स्त्री [महेच्छा] महत्वाकाङ्क्षा, अपरिमित वाञ्छा; (पण्ह १, ५)।

महिट्ठ वि [दे] मट्ठा से संसृष्ट, तक्र-संस्कारित; (विपा १, ८—पत्न ८३)।

महिड्ढि, महिड्ढिय, महिड्ढीय वि [महर्द्धि, °क] वडी ऋद्धि वाला, महान् वैभव वाला; (श्रा २७; भग, अोघभा ६; औप; पि ७३)।

महिम पुंस्त्री [महिमन्] १ महत्त्व, माहात्म्य, गौरव; (हे १, ३५; कुमा; गउड; भवि)। २ योगी का एक प्रकार का ऐश्वर्य; (हे १, ३५)।

महिला देखो **मिहिला**; (महा; राज)।

महिला स्त्री [महिला] स्त्री, नारी; (कुमा; हे ३, ४१; पात्र)। °थूभ पुं [°स्तूप] कूप आदि का किनारा; (विसे २०६४)।

महिलिया स्त्री [महिलिका, महिला] ऊपर देखो; (गाया १, २; पउम १४, १४५, प्रासु २४)।

महिलिया स्त्री [मिथिलिका, मिथिला] देखो **मिहिला**; (कप्प)।

महिस पु [महिष] भैंसा; (गउड, औप, गा ५४८)। °ासुर पुं [°ासुर] एक दानव; (स ४३७)।

महिसंद पुं [दे] वृक्ष-विशेष, शिग्रु का पेड़, (दे ६, १२०)।

महिसिक्क न [दे] महिषी-समूह; (दे ६, १२४)।

महिसी स्त्री [महिषी] १ राज-पत्नी; (ठा ४, १)। २ भैंस; (पात्र; पउम २६, ४१)।

महिस्सर पु [महेश्वर] एक इन्द्र, भूतवादि-देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्न ८५)। देखो **महेसर**।

मही स्त्री [मही] १ पृथिवी, भूमि, धरती; (कुमा; पात्र)। २ एक नदी; (ठा ५, २—पत्न ३०८)। ३ छन्द-विशेष; (पिंग)। °नाह पुं [°नाथ] राजा, (उप पृ १६१)। °पहु पुं [°प्रभु] राजा; (उप ७२८ टी)। °पाल पुं [°पाल] वही अर्थ, (उप १५० टी; उव)। °रुह पुं [°रुह] वृक्ष, पेड़; (पात्र; सुर ३, ११०; १६, २४८)। °वइ पुं [°पति] राजा; (श्रा २८, उप १४६ टी; सुपा ३८)। °वीढ न [°पीठ] भूमि-तल; (सुर २, ७४)। °स पुं [°श] राजा; (श्रा १४)। °सक्क पुं [°शक्र] वही अर्थ; (श्रा १४)। देखो **महि°**।

महु पुं [मधु] १ एक दैत्य; (से १, १; अच्चु ४०)। २ वसन्त ऋतु; "सुरही महू वसंतो" (पात्र; कुमा)। ३ चैत्र मास; (सुर ३, ४०, १६, १०७; पिग)। ४ पाँचवाँ प्रति-वासुदेव राजा; (पउम ५, १५६)। ५ एक राजा; (श्रु ६१)। ६ मथुरा का एक राज-कुमार; (पउम १२, २)। ७ चक्रवर्ती का एक देव-कृत महल; (उत्त १३, १३)। ८ मधूक का पेड़, महुआ का गाछ, (कुमा)। ९ अशोक वृक्ष; (चंड)। १० न. मद्य, दारू; (से २, २७)। ११ क्षौद्र, शहद; (कुमा; पव ४; ठा ४, १)। १२ पुष्प-रस, १३ मधुर रस, १४ जल, पानी; (प्राप्र; हे ३, २५)। १५ छन्द-विशेष, (पिग)। १६ मधुर, मिष्ट वस्तु; (पण्ह २, १)। °अर पुंस्त्री [°कर] भ्रमर, भमरा; (पात्र; स्वप्न ७३; औप; कप्प; पिग)। स्त्री—°रिआ, °री; (अभि १६०; नाट—मृच्छ ५७)। °अरवित्ति स्त्री [°करवृत्ति] माधुकरी, भिक्षा-वृत्ति; (सुपा ८३)। °अरीगीय न [°करीगीत] नाट्यविधि-विशेष, (महा)। °आसव वि [°आश्रव] लब्धि-विशेष वाला, जिसके प्रभाव से वचन मधुर लगे ऐसी लब्धि वाला, (पण्ह २, १—पत्न १००)। °गुलिया स्त्री [°गुटिका] शहद की गोली; (ठा ४, २)। °पडल न [°पटल] मधपुडा; (दे ३, १२)। °भार पुं [°भार] छन्द-विशेष; (पिंग)। °मक्खिया, °मच्छिआ स्त्री [°मक्षिका] शहद की मक्खी, "अह उड्डियाउ तोमरमुहाउ महुक्खि(?मक्खि)याउ सव्वत्तो" (धर्मवि १२४; गा ६३४)। °मय वि [°मय] मधु से भरा हुआ; (से १, ३०)। °मह पुं [°मथ] विष्णु, वासुदेव, उपेन्द्र, (पात्र, से १, १७)। २ भ्रमर; (से १,

१७)। °मह पुं [°मह] वसन्त का उत्सव; (से १, १७)। °महण पुं [°मथन] १ विष्णु; (से १, १; वज्जा २४; गा ११७; हे ४, ३८४; पि १४३; पिंग)। २ समुद्र, सागर; ३ सेतु, पुल; (से १, १)। °मास पुं [°मास] चैत मास, (भवि)। °मित्त पुंन [°मित्र] कामदेव; (सुपा ५३६)। °मेहण न [°मेहन] रोग-विशेष, मधु-प्रमेह; (आचा १, ६, १, २)। °मेहणि वि [°मेहनिन्] मधु-प्रमेह रोग वाला; (आचा)। °मेहि पुं [°मेहिन्] वही अर्थ; (आचा)। °राय पुं [°राज] एक राजा; (रयण ७४)। °लट्ठि स्त्री [°यष्टि] १ औषधि-विशेष, यष्टिमधु; २ इक्षु, ईख; (हे १, २४७)। °वक्क पुं [°पर्क] १ दधि-युक्त मधु, दही और शहद; २ षोडशोपचार-पूजा का छठवाँ उपचार; (उत्तर १०३)। °वार पुं [°वार] मद्य, दारू; (पाअ)। °सिंगी स्त्री [°शृङ्गी] वनस्पति-विशेष, (पण्ण १—पत्र ३५)। °सूयण पुं [°सूदन] विष्णु; (गउड; सुपा ७)।

महुअ पु [मधूक] १ वृक्ष-विशेष, महुआ का गाछ; (गा १०३)। २ न. महुआ का फल; (प्राप्र; हे १, १२२)।

महुअ पुं [दे] १ पक्षि-विशेष, श्रीवद पक्षी; २ मागध, स्तुति-पाठक; (दे ६, १४४)।

महुण सक [मथ्] १ विलोडन करना। २ विनाश करना। वकृ—"तओ विमुक्कट्टहासा जलियजलणपिंगलकेसा महुणिंत-जालाकरालपिसाया मुक्का" (महा)।

महुत्त (अप) देखो मुहुत्त; (भवि)।

महुप्पल न [महोत्पल] कमल, पद्म; "महुप्पलं पंकयं नलिणं" (पाअ)।

महुमुह पुं [दे. मधुमुख] पिशुन, दुर्जन, खल; (दे ६, १२२)।

महुर पुं [मधुर] १ अनार्य देश-विशेष; २ उस देश में रहने वाली अनार्य मनुष्य-जाति; (पण्ह १, १ —पत्र १४)।

महुर वि [मधुर] १ मीठा, मिष्ट; (कुमा; प्रासू ३३; गउड; गा ४०१)। २ कोमल; (भग ६, ३१; औप)। °भासि वि [°भाषिन्] प्रिय-भाषी; (पउम ६, १३३) ।

महुरा स्त्री [मथुरा] भारत की एक प्रसिद्ध नगरी, मथुरा; (ठा १०; सम १५३; पण्ह १, ३; हे २, १५०; कुमा; वज्जा १२२)। °मंगु पु [°मङ्गु] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य; (मिक्खा ६२)। °हिव पुं [°धिप] मथुरा का राजा; (कुमा)।

महुरालिअ वि [दे] परिचित; (दे ६, १२५)।

महुरिम पुंस्त्री [मधुरिमन्] मधुरता, माधुर्य; (सुपा २६४; कुप्र ५०)।

महुरेस पुं [मथुरेश] मथुरा का राजा; (कुमा)।

महुला स्त्री [दे] रोग-विशेष, पाद-गण्ड; (निचू २)।

महुसित्थ न [मधुसिक्थ] १ मदन, मोम; (उप पृ २०६)। २ पंक-विशेष, स्त्री के पैर में लगा हुआ अलता तक लगने वाला कादा; (ओघभा ३३)। ३ कला-विशेष; (स ६०२)।

महुस्सव देखो महूसव; (राज)।

महूअ देखो महुअ=मधूक; (कुमा; हे १, १२२)।

महूसव पुं [महोत्सव] बडा उत्सव; (सुर ३, १०८; नाट—मृच्छ ५४)।

महेंद देखो महिंद; (से ६, २२)।

महेड्ड पुं [दे] पंक, कादा; (दे ६, ११६)।

महेब्भ पुं [महेभ्य] वड़ा शेठ; (श्रा १६)।

महेभ पुं [महेभ] वड़ा हाथी; (कुमा)।

महेला स्त्री [महेला] स्त्री, नारी; (हे १, १४६; कुमा)।

महेस [महेश] नीचे देखो; (ति ६४; भवि)।

महेसर पुं [महेश्वर] १ महादेव, शिव; (पउम ३५, ६४; धर्मवि १२८)। २ जिनदेव, अर्हन् ; (पउम १०६, १२)। ३ श्रीमन्त, आढ्य; (सिरि ४२)। ४ भूतवादि देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र; (इक)। °दत्त पु [°दत्त] एक पुरोहित; (विपा १, ५)।

महेसि देखो मह-रिसि; (सम १२३; पण्ह १, १; उप ३५७, ७२८ टी; अभि ११८)।

महोअर पुं [महोदर] १ रावण का एक भाई; (से १२, ५४)। २ वि बहु-भक्षी; (निचू १)।

महोअहि पु [महोदधि] महासागर; (से ५, २; महा)। °रव पुं [°रव] वानर-वंश का एक राजा; (पउम ६, ६३)।

महोच्छव देखो महूसव; (सुर ६, ११०)।

महोदहि देखो महोअहि; (पण्ह २, ४; उप ७२८ टी)।

महोरग पुं [महोरग] १ व्यन्तर देवों की एक जाति; (पण्ह १, ४—पत्र ६८; इक)। २ वड़ा साँप; ३ महा-काय सर्प की एक जाति; (पण्ह १, १—पत्र ८)। °त्थ न [°स्त्र] अस्त्र-विशेष; (महा)।

महोसव देखो महूसव; (नाट—रत्ना २४)।

महोसहि स्त्री [**महौषधि**] श्रेष्ठ ओषधि; (गउड)।

मा अ [**मा**] मत, नहीं, (चेइय ६८४, प्रासू २१)।

मा स्त्री [**मा**] १ लक्ष्मी, दौलत; (से ३, १५; सुर १६, ५२)। २ शोभा; (से ३, १५)।

मा } **माअ** } अक [**मा**] १ समाना, अटना। २ सक. माप करना। ३ निश्चय करना, जानना। माइ, माअइ, माइज्जा, माएज्जा, (पव ४०; कुमा; प्राकृ ६६; संवेग १८, औप)। वकृ—**मंत, माअंत,** (कुमा ४, ३०, से २, ६; गा २७८)। कवकृ—**मिज्जंत, मिज्जमाण**; (से ७, ६६; सम ७६; जीवस १४४)। कृ—**माअव्व,** "वाया सहस्स-**मइया**", **माइअ,** (से ६, ३; महा; कप्प), देखो **मेअ**=मेय।

माअडि पुं [**मातलि**] इन्द्र का सारथि, (से १५, ४१)।

माअरा देखो **माइ**=मातृ; (कुमा, हे ३, ४६)।

माअलि देखो **माअडि,** (से १५, ४६)।

माअलिआ स्त्री [**दे**] मातृष्वसा, माता की बहिन, (दे ६, १३१)।

माअही स्त्री [**मागधी**] काव्य की एक रीति; (कप्पू)। देखो **मागहिआ**।

माआ } **माइ** } स्त्री [**मातृ**] १ मा, जननी, (षड्, ठा ४, ३, कुमा; सुपा ३७७)। २ देवता, देवी; (हे १, १३५, ३, ४६, सुख ३, ६)। ३ स्त्री, नारी, ४ माया, (पंचा १७, ४८)। ५ भूमि; ६ विभूति, ७ लक्ष्मी, ८ रेवती; ६ आखुकर्णी, १० जटामांसी, ११ इन्द्र-वारुणी, इन्द्रायण, (षड्; हे १, १३५, ३, ४६)। °**घर** न [°**गृह**] देवी-मन्दिर, (सुख ३, ६)। °**ट्ठाण,** °**ठाण** न [°**स्थान**] १ माया-स्थान, (पंचा १७, ४८; सम ३६)। २ माया, कपट-दोष, (पंचा १७, ४८; उत्तर ८४)। °**मेह** पुं [°**मेध**] यज्ञ-विशेष, जिसमें माता का वध किया जाय वह यज्ञ; (पउम ११, ४२)। °**हर** देखो °**घर**; (हे १, १३५)। देखो **माउ, माया**=मातृ।

माइ वि [**मायिन्**] माया-युक्त, मायावी; (भग; कम्म ४, ४०)।

माइ अ [**मा**] मत, नही, (प्राकृ ७८)।

माइ } **माइअ** } वि [**दे**] १ रोमश, रोम वाला, प्रभूत बालों से युक्त, (दे ६, १२८, गाया १, १८—पत्र २३७)। २ मयूरित, पुष्प-विशेष वाला, (औप, भग, गाया १, १ टी—पत्र ५, अंत)।

माइअ वि [**मात**] समाया हुआ, अटा हुआ, (सुख ६, १)।

माइअ वि [**मायिक**] मायावी, (दे ६, १४७, गाया १, १४)।

माइअ वि [**मात्रिक**] माला-युक्त, परिमित; (तंदु २०; पन्ह १, ४—पत्र ६८)।

माइअ देखो **मा**=मा।

माइं देखो **माइ**=मा; (हे २, १६१; कुमा)।

माइंगण न [**दे**] वृन्ताक, भंटा; (उप ५६३)।

माइंद [**दे**] देखो **मायंद,** (प्राप्र; स ४१६)।

माइंद पुं [**मृगेन्द्र**] सिंह, केसरी; "एक्कसरपहरदारियमाइंद-गइंदजुज्झमाभिडिए" (वज्जा ४२)।

माइंदजाल } **माइंदयाल** } न [**मायेन्द्रजाल**] माया-कर्म, बनावटी प्रपंच, (सुर २, २२६; स ६६०)।

माइंदा स्त्री [**दे**] आमलकी, आमला का गाछ; (दे ६, १२६)।

माइण्हिआ स्त्री [**मृगतृष्णिका**] धूप में जल की भ्रान्ति; (उप २२० टी; मोह २३)।

माइलि वि [**दे**] मृदु, कोमल; (दे ६, १२६)।

माइल्ल देखो **माइ**=मायिन्; (सूत्र १, ४, १, १८; आचा; भग; ओघ ४१३; पउम ३१, ५१; औप; ठा ४, ४)।

माइवाह } **माईवाह** } पुस्त्री [**दे, मातृवाह**] द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष, क्षुद्र कीट-विशेष, (उत्त ३६, १२६; जी १५; पुष्फ २६५)। स्त्री—°**हा**; (सुख १८, ३५; जी १५)।

माउ देखो **माइ**=मातृ; (भग; सुर १, १७६, औप, प्राभा; कुमा, षड्, हे १, १३४; १३५)। °**ग्गाम** पुं [°**ग्राम**] स्त्री-वर्ग; (बृह १)। °**च्छा** देखो °**सिआ**; (हे २, १४२; गा ६४८)। °**पिउ** पु [°**पितृ**] माँ-बाप, (सुर १, १७६)। °**मही** स्त्री [°**मही**] माँ की माँ, (रंभा २०)। °**सिआ,** °**सी,** °**स्सिआ** स्त्री [°**ष्वसृ**] माँ की बहिन, माउसी; (हे २, १४२; कुमा, विपा १, ३, सुर ११, २१६; पि १४८, विपा १, ३—पत्र ४१)।

माउ } **माउअ** } वि [**मातृ,** °**क**] १ प्रमाता, प्रमाण-कर्ता, सत्य ज्ञान वाला; २ परिमाण-कर्ता, नापने वाला, ३ पु जीव, ४ आकाश; "माऊ", "माउओ" (षड्; हे १, १३१, प्राप्र, प्राकृ ८; हे १, १३४)।

माउअ वि [**मातृक**] माता-संबन्धी, (हे १, १३१; प्राप्र; प्राकृ ८; राज)।

माउअ पुंन [**मातृक,** °**का**] १ अकार आदि छयालीस अक्षर; "बंभीए णं लिवीए छायालीसं माउयक्खरा" (सम ६६; आव

५)। २ स्वर; ३ करण; (हे १, १३१; प्राप्र; प्राकृ ८)। नीचे देखो।

माउआ स्त्री [**मातृका**] १ माता, माँ; (गाया १, ६—पत्न १५८)। २ ऊपर देखो; (सम ६६)। °**पय** पुंन [°**पद**] शास्त्रों के सार-भूत शब्द—उत्पाद, व्यय और धौव्य; (सम ६६)।

माउआ स्त्री [**दे. मातृका**] दुर्गा, पार्वती, उमा; (दे ६, १४७)।

माउआ स्त्री [**दे**] १ सखी, सहेली; (दे ६, १४७; पाअ; गाया १, ६—पत्न १५८)। २ ऊपर के होठ पर के बाल, मूँछ, "रत्तगंडमंसुयाहिं माउयाहिं उवसोहियाइं" (गाया १, ६—पत्न १५८)।

माउक्क वि [**मृदु, °क**] कोमल, सुकुमार; (हे १, १२७; २, ६६, कुमा)।

माउक्क न [**मृदुत्व**] कोमलता; (हे १, १२७, २, २; कुमा)।

माउच्चा स्त्री [**दे. मातृष्वसृ**] देखो **माउ-च्छा**; (षड्)।

माउच्चा स्त्री [**दे**] सखी, सहेली; (षड्)।

माउच्छ वि [**दे**] मृदु, कोमल; (दे ६, १२६)।

माउत्त } देखो **माउक्क**=मृदुत्व; (कुमा; हे २, २;
माउत्तण } षड्)।

माउल पुं [**मातुल**] माँ का भाई, मामा; (सुर ३, ८१; रंभा; महा)।

माउलिअ देखो **मउलिअ**; (से ११, ६१)।

माउलिंग देखो **माहुलिंग**; (राज)।

माउलिंगा } स्त्री [**मातुलिङ्गा, °ङ्गी**] बीजौरे का गाछ;
माउलिंगी } (पराण १—पत्न ३२; पउम ४२, ६)।

माउलुंग देखो **माहुलिंग**; (हे १, २१४; अनु)।

मागंदिअ पुं [**माकन्दिक**] माकन्दिकपुत्न-नामक एक जैन मुनि; (भग १८—१ टी)। °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] वही अर्थ, (भग १८, ३)।

मागसीसी स्त्री [**मार्गशीर्षी**] १ अगहन मास की पूर्णिमा; २ अगहन की अमावास्या; (इक)।

मागह } वि [**मागध, °क**] १ मगध-देशीय, मगध देश
मागहय } में उत्पन्न, मगध देश का, मगध-संबंधी; (ओव ७१३; विसे १४६६; पव ६१; गाया १, ८; पउम ६६, ५५)। २ पुं. स्तुति-पाठक, वन्दी; (पाअ; औप)। °**भासा** स्त्री [°**भाषा**] देखो **मागहिआ** का पहला अर्थ; (राज)।

मागहिआ स्त्री [**मागधिका**] १ मगध देश की भाषा, प्राकृत भाषा का एक भेद; २ कला-विशेष; (औप)। ३ छन्द-विशेष; (सुख २, ४५; अजि ४)।

माघवई स्त्री [**माघवती**] सातवीं नरक-भूमि; (पव १४३; इक; ठा ७—पत्न ३८८)।

माघवा } [**माघवा, °वी**] ऊपर देखो; "मघव त्ति माघ-
माघवी } व त्ति य पुढवीणं नामधेयाइं" (जीवस १२; इक)।

माज्जार देखो **मज्जार**; (संक्षि २)।

माडंबिअ पुं [**माडम्बिक**] १ 'मडंब' का अधिपति; (गाया १, १; औप; कप्प)। २ प्रत्यन्त—सीमा-प्रान्त—का राजा; (पराह १, ५—पत्न ६४)।

माडिअ न [**दे**] गृह, घर; (दे ६, १२८)।

माढर पुं [**माठर**] १ सौधर्मेन्द्र के रथ-सैन्य का अधिपति; (ठा ५, १—पत्न ३०३; इक)। २ न. गोत्न-विशेष; (कप्प)। ३ शास्त्र-विशेष; (णंदि)।

माढरी स्त्री [**माठरी**] वनस्पति-विशेष; (पराण १—पत्न ३६)।

माढिअ वि [**माठित**] सन्नाह-युक्त, वर्मित; (कुमा)।

माढी स्त्री [**माठी**] कवच, वर्म, बख्तर; (दे ६, १२८ टी; पराह १, ३—पत्न ४४; पाअ, से १२, ६२)।

माण सक [**मानय्**] १ सम्मान करना, आदर करना। २ अनुभव करना। माणइ, माणेइ, माणंति, माणेमि; (हे १, २२८, महा; कुमा; सिरि ६६)। वकृ—**माणंत, माणेमाण**; (सुर २, १८२; गाया १, १—पत्न ३३)। कवकृ—**माणिज्जंत**, (गा ३२०)। हेकृ—**माणिउं, माणेउं**; (महा; कुमा)। कृ—**माणणिज्ज, माणणीअ, माणेयव्व**; (उव; सुर १२, १६५; अभि १०७; उप १०३१ टी), " जया य **माणिमो** होइ पच्छा होइ अ-**माणिमो**" (दसचू १, ५)।

माण पुंन [**मान**] १ गर्व, अहंकार, अभिमान; "अड्ढढ्ढीक-यमाणिणिमाणो" (कुमा), "पुव्वं विवुहसमक्खं गुरुणो एयस्स खंडियं माणं" (सम्मत ११६)। २ माप, परिमाण; ३ नापने का साधन, बाँट आदि; (अणु, कप्प; जी ३०; श्रा १४)। ४ प्रमाण, सबूत; (विसे ६४६; धर्मसं ५२५)। ५ आदर, सत्कार; (गाया १, १; कप्प)। ६ पुं. एक

श्रेष्ठि-पुत्र; (सुपा ५४५)। °इंत, °इत्त, °इल्ल वि [°वत्] मान वाला, (षड्; हे २, १५६; हेका ७३; पि ५६५): स्त्री—°त्ता, °त्ती; (कुमा, गउड)। °तुंग पुं [°तुङ्ग] एक प्राचीन जैन कवि; (नमि २१)। °वई स्त्री [°वती] १ मान वाली स्त्री, (से १०, ६६)। २ रावण की एक पत्नी; (पउम ७४, ११)। °संघ न [°संघ] एक विद्याधर-नगर; (इक)। °वाइ वि [°वादिन्] अहंकारी, (आचा)।

माण वि [**मान**] मान-संबन्धी, मान का; "कोहाए माणाए मायाए" (पडि)।

माण न [**दे**] परिमाण-विशेष, दस शेर का नाप; गुजराती में 'माणुं'; (उप १५४)।

माणंसि वि [**दे**] १ मायावी, कपटी; (दे ६, १४७; षड्)। २ स्त्री. चन्द्र-वधू; (दे ६, १४७)।

माणंसि देखो **मणंसि**; (काप्र १६६, संक्षि १७; षड्)।

माणण न [**मानन**] १ आदर, सत्कार, (आचा)। २ मानना; (रयण ८४)। ३ अनुभव, ४ सुख का अनुभव; "सुहसमाणणे" (अजि ३१)।

माणणा स्त्री [**मानना**] ऊपर देखो; (पराह २, १; रयण ८४)।

माणय देखो **माण**=(दे); (सुपा ३५८)।

माणव पुं [**मानव**] १ मनुष्य, मर्त्य; (पाअ; सुपा २४३)। २ भगवान् महावीर का एक गण, (ठा ६—पत्र ४५१; कप्प)।

माणवग } पुं [**मानवक**] १ एक निधि, अस्त्र-शस्त्रों की **माणवय** } पूर्ति करने वाला निधि; (उप ६८६ टी, ठा ६—पत्र ४४६, इक)। २ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष, एक महाग्रह; (ठा २, ३; सुज्ज २०)। ३ सौधर्म देवलोक का एक चैत्य-स्तम्भ, (सम ६३)।

माणवी स्त्री [**मानवी**] एक विद्या-देवी, (संति ६)।

माणस न [**मानस**] १ सरोवर-विशेष; (पराह १, ४; औप; महा, कुमा)। २ मन, अन्तःकरण; (पाअ, कुमा)। ३ वि. मन-संबन्धी, मन का; (सुर ४, ७५)। ४ पुं. भूता-नन्द के गन्धर्व-सैन्य का नायक; (इक)।

माणसिअ वि [**मानसिक**] मन-संबन्धी, मन का; (श्रा २४; औप)।

माणसिआ स्त्री [**मानसिका**] एक विद्या-देवी, (संति ६)।

माणि वि [**मानिन्**] १ मान-युक्त, मान वाला; (उव; कुप्र २७६; कम्म ४, ४०)। स्त्री—°णिणी; (कुमा)। २ पुं रावण का एक सुभट, (पउम ५६, २)। ३ पर्वत-विशेष; ४ कूट-विशेष, (राज; इक)।

माणिअ वि [**दे, मानित**] अनुभूत; (दे ६, १३०; पाअ)।

माणिअ वि [**मानित**] सत्कृत, (गउड)।

माणिक्क न [**माणिक्य**] रत्न-विशेष, माणिक; (सुपा २१७; वज्जा २०; कप्पू)।

माणिण देखो **माणि**; (पउम ७३, २७)।

माणिभद्द पुं [**माणिभद्र**] १ यक्ष-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र, (ठा २, ३—पत्र ८५, इक)। २ यक्षदेवों की एक जाति, (सिरि ६६६; इक)। ३ देव-विशेष; ४ शिखर-विशेष, (राज; इक)। ५ एक देव-विमान; (राज)।

माणिम देखो **माण**=मानय्।

माणुस पुंन [**मानुष**] १ मनुष्य, मानव, मर्त्य; (सुअ १, ११, ३, पराह १, १; उव; सुर ३, ५६; प्रास; कुमा), "जं पुण हिययाणंदं जणेइ तं माणुसं विरलं" (कुप्र ६), "मयाणि माइपिइपमुहमाणुसाणि सव्वाणि" (कुप्र २६)। २ वि. मनुष्य-संबन्धी; "तिविहं कहावत्थु ति पुव्वायरियपवाओ, तं जहा, दिव्वं दिव्वमाणुसं माणुसं च" (स २)।

माणुसी स्त्री [**मानुषी**] १ स्त्री-मनुष्य, मानवी; (पव २४१; कुप्र १६०)। २ मनुष्य से संबन्ध रखने वाली; "माणुसी भासा" (कुप्र ६७)।

माणुसुत्तर } पुं [**मानुषोत्तर**] १ पर्वत-विशेष, मनुष्य-**माणुसोत्तर** } लोक-सीमा-कारक पर्वत; (राज, ठा ३, ४; जीव ३)। २ न. एक देव-विमान; (सम २)।

माणुस्स देखो **माणुस**; (आचा; औप; धर्मवि १३; उपपं २; विसे ३००७), "माणुस्सं लोगं" (ठा ३, ३—पत्र १४२), "माणुस्सगा भोगभोगाइं" (कप्प)।

माणुस्स } न [**मानुष्य, °क**] मनुष्यत्व, मानसपन; **माणुस्सय** } (सुपा १६६; स १३१; प्रासू ४७; पउम ३१, ८१)।

माणुस्सी देखो **माणुसी**; (पव २४०)।

माणूस देखो **माणुस**; (सुर २, १७२; ठा ३, ३—पत्र १४२)।

माणेसर पुं [**माणेश्वर**] माणिभद्र यक्ष; (भवि)।

माणोरमा (अप) स्त्री [**मनोरमा**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

मातंग देखो **मायंग**; (औप)।

मातंजण देखो **मायंजण**, (ठा २, ३—पत्र ८०)।

मातुलिंग देखो **माहुलिंग**; (आचा २, १, ८, १)।

मादलिआ स्त्री [दे] माता, जननी, (दे ६, १३१)।

मादु देखो **माउ**=स्त्री, (प्राकृ ८)।

माधवी देखो **माहवी**=माधवी; (हास्य १३३)।

माभाइ पुंस्त्री [दे] अभय-प्रदान, अभय-दान, अभय; (दे ६, १२६; षड्)।

माभोसिअ न [दे] ऊपर देखो, (दे ६, १२६)।

माम अ कोमल आमन्त्रण का सूचक अव्यय, (पउम ३८, ३६)।

माम } पुं [दे] मामा, माँ का भाई, (सुपा १६, १६५)।
मामग }

मामग } वि [**मामक**] १ मदीय, मेरा; (आचा, अच्चु
मामय } ७३)। २ ममता वाला; (सूअ १, २, २, २८)।

मामय देखो **मामग**=(दे), (पउम ६८, ५५; स ७३१)।

मामा स्त्री [दे] मामी, मामा की वहू; (दे ६, ११२)।

मामाय वि [**मामाक**] 'मा' 'मा' बोलने वाला, निवारक; (ओघ ४३५)।

मामास पु [**मामाष**] १ अनार्य देश-विशेष; २ अनार्य देश में रहने वालो मनुष्य-जाति; (इक)।

मामि अ. सखी के आमन्त्रण में प्रयुक्त किया जाता अव्यय, (हे २, १६५; कुमा)।

मामिया } स्त्री [दे] मामी, मामा की वहू; (विपा १,
मामी } ३—पत्र ४१, दे ६, ११२; गा २०४; प्राकृ ३८)।

माय वि [**मात**] समाया हुआ; (कम्म ५, ८५ टी; पुप्फ १७२, महा)।

माय वि [**मायावत्**] कपट वाला; "कोहाए माणाए मायाए लोभाए" (पडि)।

माय देखो **मेत्त**=मात्र; "लोमुक्खणणमायमवि" (सूअ २, १, ४८)।

माय° देखो **माया**=माया; (आचा)।

माय° देखो **मत्ता**=मात्रा। °**न्न** वि [°**ज्ञ**] परिमाण का जानकार; (सूअ २, १, ५७)।

मायइ स्त्री [दे] वृत्त-विशेष; (पउम ५३, ७६)।

मायंग पुं [**मातङ्ग**] १ भगवान् सुपार्श्वनाथ का शासन-यक्ष; २ भगवान् महावीर का शासन-यक्ष; (संति ७; ८)। ३ हस्ती, हाथी; (पाअ; सुर १, ११)। ४ चाण्डाल, डोम; (पाअ)।

मायंगी स्त्री [**मातङ्गी**] १ चाण्डालिन; (निचू १)। २ विद्या-विशेष, (आचू १)।

मायंजण पु [**मातञ्जन**] पर्वत-विशेष, (इक)।

मायंड पु [**मार्तण्ड**] सूर्य, रवि, (सुपा २४२; कुप्र ८७)।

मायंद पु [**दे. माकन्द**] आम्र, आम का पेड; (हे २, १७४, प्राप्र; दे ६, १२८; कुप्र ७१; १०६)।

मायंदिअ देखो **मागंदिअ**; (भग १८, १)।

मायंदी स्त्री [**माकन्दी**] नगरी-विशेष; (स ६; कुप्र १०६)।

मायंदी स्त्री [**दे**] श्वेताम्बर साध्वी, (दे ६, १२६)।

मायण्हिया स्त्री [**मृगतृष्णिका**] किरण में जल-भ्रान्ति, मरु-मरीचिका;

"जह मुद्धमओ मायण्हियाए तिसिओ करेइ जल-बुद्धि।
तह निव्विवेअपुरिसो कुणइ अधम्मेवि धम्ममइं" (सुपा ५००)।

मायण्हिय (अप) देखो **मागहिया**; (भवि)।

माया देखो **माइ**=मातृ; "मायाइ अहं भणिओ" (धर्मवि ५; पाअ, विपा १, ६; पड्)। °**पिइ**, °**पिति** पुंन [°**पितृ**] माँ-बाप; (पि ३६१; स १८४)। °**मह** पुं [°**मह**] माँ का बाप; (सुर ११, ४६; सुपा ३८४)। °**वित्त** देखो °**पिइ**. "दुहियाण होइ सरणं मायावित्तं महिलियाणं" (पउम १७; २१), "तेणेव देवेण तहिं मायावित्ताइं रोवमाणाइं" (सुर ६, २३५, १, २३६; धर्मवि २१, महा)।

माया देखो **मत्ता**=मात्रा; "नो अइमायाए पाणभोयणं आहारेत्ता; (उत्त १६, ८; औप; उव, कस)।

माया स्त्री [**माया**] १ कपट, छल, शाठ्य, धोखा; (भग; कुमा; ठा ३, ४, पाअ; प्रासू १७५)। २ इन्द्रजाल, (दे ३, ५३; उप ८२३)। ३ मन्त्राक्षर-विशेष; 'ह्रीं' अक्षर; (सिरि १६७)। ४ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**णर** पु [°**नर**] पुरुष-वेश-धारी स्त्री-आदि; (धर्मस १२७८)। °**बीय** न [°**बीज**] 'ह्रीं' अक्षर, (सिरि ४०१)। °**मोस** पुंन [°**मृषा**] कपट-पूर्वक असत्य वचन; (णाया १, १; पण्ह १, २; भग; औप)। °**वत्तिअ**, °**वत्तीय** वि [°**प्रत्ययिक**] कपट से होने वाला, छल-मूलक, (भग; ठा २, १; नव १७)। °**वि** वि [°**विन्**] माया-युक्त; (पउम ८८, ११); स्त्री—°**विणी**; (सुपा ६२७)।

मायि वि [**मायिन्**] माया-युक्त, मायावी; (उवा, पि ४०५)।

मार सक [**मारय्**] १ ताड़न करना। २ हिंसा करना। मारइ, मारेइ, (आचा; कुमा, भग)। भवि—मारेहिसि; (पि ५२८)। कर्म—मारिज्जइ; (उव)। वकृ—**मारंत, मारेंत**; (भत्त ६२; पउम १०५, ७६)। कवकृ—**मारिज्जंत**, (सुपा १५७)। संकृ—**मारेत्ता**; (महा), **मारि** (अप), (हे ४, ४३६)। हेकृ—**मारेउं**; (महा)। कृ—**मारियव्व, मारेयव्व**; (पउम ११, ४२), **मारणिज्ज**; (उप ३५७ टी)।

मार पुं [**मार**] १ ताड़न; (सुपा २२६)। २ मरण, मौत; (आचा; सूअ २, २, १७; उप पृ ३०८)। ३ यम, जम, (सूअ १, १, ३, ७)। ४ कामदेव, कंदर्प, (उप ७६८ टी)। ५ चौथी नरक का एक नरकावास; (ठा ४, ४—पत्र २६५; देवेन्द्र १०)। ६ वि. मारने वाला, (णाया १, १६—पत्र २०२)। °**वहू** स्त्री [°**वधू**] रति; (सुपा ३०४)।

मारग वि [**मारक**] मारने वाला; स्त्री—°**रिगा**; (कुप्र २३५)।

मारण न [**मारण**] १ ताडन; २ हिंसा; (भग, स १२१)।

मारणअ (अप) वि [**मारयितृ**] मारने वाला, (हे ४, ४४३)।

मारणंतिअ वि [**मारणान्तिक**] मरण के अन्त समय का; (सम ११; ११६; औप; उवा; कप्प)।

मारणया } स्त्री [**मारणा**] मारना; (भग; पण्ह १, १;
मारणा } विपा १, १)।

मारय देखो **मारग**; (उव; संबोध ४३)।

मारा स्त्री [**मारा**] प्राणि-वध का स्थान, शूना; (णाया १, १६—पत्र २०२)।

मारि स्त्री [**मारि**] १ रोग-विशेष, मृत्यु-दायक रोग, (स २४२)। २ मारण; (आवम)। ३ मौत, मृत्यु, (उप ३२६)।

मारि देखो **मार**=मारय्।

मारि वि [**मारिन्**] मारने वाला; (महा)।

मारिज्ज पुं [**मारीच**] रावण का एक सुभट; (पउम ५६, ७)। देखो **मारीअ**।

मारिज्जि देखो **मरिइ**; (पउम ८२, २६)।

मारिय वि [**मारित**] मारा हुआ; (महा)।

मारिलिगा स्त्री [**दे**] कुत्सित स्त्री; (दे ६, १३१)।

मारिव पुंन [**दे**] गौरव, "गौरवे मारिवे" (संचि ४७)।

मारिस वि [**मादृश**] मेरे जैसा, (कुमा)।

मारी स्त्री [**मारी**] देखो **मारि**; (स २४२)।

मारीअ पुं [**मारीच**] ऋषि-विशेष; (अभि २४६)। देखो **मारिज्ज**।

मारीइ } पु [**मारीचि**] १ एक विद्याधर सामन्त राजा;
मारीजि } (पउम ८, १३२)। २ रावण का एक सुभट; (पउम ५६, २७)।

मारुअ पु [**मारुत**] १ पवन, वायु; (पाअ; सुपा २०४, सुर ३, ४०; १३, १६४, आप १४; महा)। २ हनूमान का पिता; (से २, ४४)। °**तणय** पुं [°**तनय**] हनूमान, (से २, ४४; हे ३, ८७)। °**त्थ** न [°**स्त्र**] अस्त्र-विशेष, वातास्त्र, (पउम ५६, ६१))

मारुअ वि [**मारुक**] मरु देश का, मरु-संबन्धी; "णो अमयवल्लरी मारुअम्मि कत्थइ थले होइ" (उप ६८६ टी)।

मारुइ पुं [**मारुति**] हनूमान, (से १, ३७)।

माल अक [**माल्**] १ शोभना। २ वेष्टित होना। कृ— "अच्चिसहस्समालणीयं" (णाया १, १—पत्र ३८)।

माल पुं [**दे**] १ आराम, बगीचा, (दे ६, १४६)। २ मञ्च, आसन-विशेष; (दे ६, १४६; णाया १, १—पत्र ६३; पंचा १३, १४)। ३ वि. मञ्जु; (दे ६, १४६)।

माल पुं [**दे. माल**] १ देश-विशेष; (पउम ६८, ६५)। २ घर का उपरि-भाग, तला, मजला; गुजराती में 'माळो' (णाया १, ६—पत्र ५७; चेइय ४८१; पंचा १३, १४; ठा ३, ४—पत्र १५६)। ३ वनस्पति-विशेष; (जं १)।

माल° देखो **माला**। °**गार** वि [°**कार**] माली; (उप पृ १६६)।

मालइ° } स्त्री [**मालती**] १ लता-विशेष; २ पुष्प-विशेष;
मालई } (पउम ५३, ७६, पाअ; कुमा)। ३ छन्द-विशेष; (पिंग)।

मालंकार पुं [**मालङ्कार**] वैरोचन बलीन्द्र के हस्ति-सैन्य का अधिपति; (ठा ५, १—पत्र ३०२; इक)।

मालणीय देखो **माल**=माल्।

मालय देखो **माल**=दे. माल; (ठा ३, १—पत्र १२३)।

मालव पुं [**मालव**] १ भारतीय देश-विशेष; (इक; उप १४२ टी)। २ मालव देश का निवासी मनुष्य; (पण्ह १, १—पत्र १४)।

मालवंत पुं [**माल्यवत्**] १ पर्वत-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ६६; ८०; सम १०२)। २ एक राज-कुमार; (पउम ६, २२०)। °**परियाग,** °**परियाय** पुं [°**पर्याय**] पर्वत-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ८०; ६६)।

मालविणी स्त्री [**मालविनी**] लिपि-विशेष; (विसे ४६४ टी)।

माला स्त्री [**माला**] १ फूल आदि का हार; "मल्लं माला दामं" (पाअ; स्वप्न ७२; सुपा ३१६; प्रासू ३०; कुमा)। २ पंक्ति, श्रेणी; (पाअ)। ३ समूह; "जलमालकद्दमालं" (सुअनि १६१)। ४ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**इल्ल** वि [°**वत्**] माला वाला; प्राप्र)। °**कारि** वि [°**कारिन्**] माली, पुष्प-व्यवसायी; स्त्री—°**णी**; (सुपा ५१०)। °**गार** वि [°**कार**] वही अर्थ; (उप १४२; टी; अंत १८; सुपा ५६२; उप पृ १५६)। °**धर** पुं [°**धर**] प्रतिमा के ऊपर के भाग की रचना-विशेष; (चेइय ८३)। °**यार,** °**र** देखो °**कार**; (अंत १८; उप पृ १५७; गा ५६६); स्त्री—°**री**; (कुमा; गा ५६७)। °**हरा** स्त्री [°**धरा**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

माला स्त्री [**दे**] ज्योत्स्ना, चन्द्रिका; (दे ६, १२८)।

मालाकुंकुम न [**दे**] प्रधान कुंकुम; (दे ६, १३२)।

मालि पुंस्त्री [**मालि**] वृक्ष-विशेष; (सम १५२)।

मालि पुं [**मालिन्**] १ पाताल-लंका का एक राजा; (पउम ६, २२०)। २ देश-विशेष; (इक)। ३ वि. माली, पुष्प-व्यवसायी; (कुमा)। ४ शोभने वाला; (कुमा)।

मालिअ [**मालिक**] ऊपर देखो; (दे २, ८; पगह १, २; सुपा २७३; उप पृ १५७)।

मालिअ वि [**मालित**] शोभित, विभूषित; "परलोए पुण कल्लाणमालिआमालिआ कमेणेव" (सा २३; पाअ; उप २६४ टी)।

मालिआ [**मालिका, माला**] देखो **माला**=माला; (सा २३; स्वप्न ५३; औप; उवा)।

मालिज्ज न [**मालीय**] एक जैन मुनि-कुल; (कप्प)।

मालिणी स्त्री [**मालिनी**] १ माली की स्त्री; (कुमा)। २ शोभने वाली; (औप)। ३ छन्द-विशेष; (पिंग)। ४ माला वाली; (गउड)

मालिण्ण, मालिन्न न [**मालिन्य**] मलिनता; (उप पृ २२; सुपा ३५२; ५८६)।

मालुग, मालुय पुं [**मालुक**] १ त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष; (सुख ३६, १३८)। २ वृक्ष-विशेष, (पगण १—पत्र ३१; गाया १, २—पत्र ७८)।

मालुया स्त्री [**मालुका**] १ वल्ली, लता; (सूअ १, ३, २, १०)। २ वल्ली-विशेष; (पगण १—पत्र ३३)।

मालुहाणी स्त्री [**मालुधानी**] लता-विशेष; (गउड)।

मालूर पुं [**दे. मालूर**] कपित्थ, कैथ का गाछ; (दे ६, १३०)।

मालूर पुं [**मालूर**] १ बिल्व वृक्ष, बेल का गाछ; (दे ३, १६; गा ५७६; गउड; कुमा)। २ न. बेल का फल; (पाअ; गउड)।

माविअ वि [**मापित**] मापा हुआ; (से ६, ६०; दे ८, ४८)।

मास देखो **मंस**=मांस; (हे १, २६; ७०; कुमा; उप ७२८ टी)।

मास पुं [**मास**] १ महिना, तीस दिन का समय; (ठा २, ४; उप ७६८ टी; जी ३५)। २ समय, काल; "काल-मासे कालं किच्चा" (विपा १, १; २; कुप्र ३५), "पसव-मासे" (कुप्र ४०४)। ३ पर्व—वनस्पति-विशेष; "वीरुणा-(?णी) तह इक्कडे य मासे य" (पगण १—पत्र ३३)। °**उस** देखो °**तुस**; (राज)। °**कप्प** पुं [°**कल्प**] एक स्थान में महिना तक रहने का आचार, (बृह ६)। °**खमण** न [°**क्षपण**] लगातार एक मास का उपवास; (गाया १, १; विपा २, १; भग)। °**गुरु** न [°**गुरु**] तप-विशेष, एका-शन तप, (संबोध ५७)। °**तुस** पुं [°**तुष**] एक जैन मुनि; (विवे ५१)। °**पुरी** स्त्री [°**पुरी**] १ नगरी-विशेष, भंगी देश की राजधानी; (इक)। २ 'वर्त' देश की राज-धानी; "पावा भंगी य, मासपुरी वट्टा" (पव २७५)। °**पू-रिया** स्त्री [°**पूरिका**] एक जैन मुनि-शाखा; (कप्प)। °**लहु** न [°**लघु**] तप-विशेष, 'पुरिमड्ढ' तप; (संबोध ५७)।

मास पुं [**माष**] १ अनार्य देश-विशेष; २ देश-विशेष में रहने वाली मनुष्य-जाति; (पगह १, १—पत्र १४)। ३ धान्य-विशेष, उड़द; (दे १, ६८)। ४ परिमाण-विशेष, मासा; (वज्जा १६०)। °**पण्णी** स्त्री [°**पर्णी**] वनस्पति-विशेष; (पगण १—पत्र ३६)।

मासल देखो **मंसल**; (हे १, २६; कुमा)।

मासलिय वि [**मांसलित**] पुष्ट किया हुआ; (गउड; सुपा ४७४)।

मासाहस पु [**मासाहस**] पक्षि-विशेष, "मासाहससउणि-समो किं वा चिट्ठामि घंघलिओ" (संवे ६; उव; उर ३, ३)।

मासिअ पुं [**दे**] पिशुन, खल, दुर्जन; (दे ६, १२२)।

मासिअ वि [**मासिक**] मास-संबन्धी; (उवा, औप)।

मासिआ स्त्री [**मातृष्वसृ**] माँ की बहिन; (धर्मवि २२)।

मासु देखो **मंसु**=श्मश्रु, (हे २, ८६)।

मासुरी स्त्री [**दे**] श्मश्रु, दाढ़ी-मूँछ, (दे ६, १३०; पाअ)।

माह पुं [**माघ**] १ मास-विशेष, माघ का महिना; (पांअ; हे ४, ३५७)। २ संस्कृत का एक प्रसिद्ध कवि; ३ एक संस्कृत काव्य-ग्रन्थ, शिशुपाल-वध काव्य, (हे १, १८७)।

माह न [**दे**] कुन्द का फूल; (दे ६, १२८)।

माहण पुस्त्री [**माहन, ब्राह्मण**] हिंसा से निवृत्त, अहिंसक;— १ मुनि, साधु, ऋषि; २ श्रावक, जैन उपासक; ३ ब्राह्मण; (आचा; सूअ २, २, ४८; ५४; भग १, ७; २, ५; प्रासू ८०; महा); स्त्री—°**णी**; (कप्प)। °**कुंड** न [°**कुण्ड**] मगध देश का एक ग्राम; (आचू १)।

माहप्प पुंन [**माहात्म्य**] १ महत्त्व, गौरव; २ महिमा, प्रभाव, (हे १, ३३; गउड; कुमा, सुर ३, ५३; प्रासू १७)।

माहप्पया स्त्री. ऊपर देखो; (उप ७६८ टी)।

माहय पुं [**दे**] चतुरिन्द्रिय कीट-विशेष; (उत्त ३६, १४६)।

माहव पुं [**माधव**] १ श्रीकृष्ण, नारायण, (गा ४४३; वज्जा १३०)। २ वसन्त ऋतु, ३ वैशाख मास; (गा ७७७, रुक्मि ५३)। °**पणइणी** स्त्री [°**प्रणयिनी**] लक्ष्मी; (स ५२३)।

माहविआ स्त्री [**माधविका**] नीचे देखो, (पाअ)।

माहवी स्त्री [**माधवी**] १ लता-विशेष, (गा ३२२; अभि १६६; स्वप्न ३६)। २ एक राज-पत्नी; (पउम ६, १२६; २०, १८४)।

माहारयण न [**दे**] १ वस्त्र, कपडा; २ वस्त्र-विशेष; (दे ६, १३२)।

माहिंद पुं [**माहेन्द्र**] १ एक देव-लोक; (सम ८)। २ एक इन्द्र, माहेन्द्र देवलोक का स्वामी; (ठा २, ३—पत्र ८५)। ३ ज्वर-विशेष; "माहिंदजरो जाओ" (सुपा ६०६)। ४ दिन का एक मुहूर्त, (सम ५१)। ५ वि. महेन्द्र-संबन्धी; (पउम ५५, १६)।

माहिल पुं [**दे**] महिषी-पाल, भैंस चराने वाला; (दे ६, १३०)।

माहिवाय पुं [**दे**] १ शिशिर पवन, (दे ६, १३१)। २ माघ का पवन; (षड्)।

माहिसी देखो **महिसी**, (कप्प)।

माही स्त्री [**माघी**] १ माघ मास की पूर्णिमा, २ माघ की अमावास्या; (सुज्ज १०, ६)।

माहुर वि [**माथुर**] मथुरा का, (भत्त १४५)।

माहुर न [**दे**] शाक, तरकारी; (दे ६, १३०)।

माहुर } **माहुरय** } वि [**माधुर, °क**] १ मधुर रस वाला; २ आम्ल-रस से भिन्न रस वाला; (उवा)।

माहुरिअ न [**माधुर्य**] मधुरता; (प्राकृ १६)।

माहुलिंग पुं [**मातुलिङ्ग**] १ बीजपूर वृक्ष; बीजौरानीबू का पेड़; (हे १, २४४, चंड)। २ न बीजौरे का फल; (षड्; कुमा)।

माहेसर वि [**माहेश्वर**] १ महेश्वर-भक्त; (सिरि ४८)। २ न. नगर-विशेष; (पउम १०, ३४)।

माहेसरी स्त्री [**माहेश्वरी**] १ लिपि-विशेष; (सम ३५)। २ नगरी-विशेष; (राज)।

मि (अप) देखो **अवि**=अपि, (भवि)।

मि° स्त्री [**मृत्**] मिट्टी, मट्टी; "जह मिल्लेवावगमादलाबुणो-वस्समेव गइभावो" (विसे ३१४२)। °**प्पिंड** पुं [°**पिण्ड**] मिट्टी का पिंडा; (अभि २००)। °**म्मय** वि [°**मय**] मिट्टी का बना हुआ, (उप २४२; पिंड ३३४, सुपा २७०)।

मिअ देखो **मय**=मृग; "सव्वणिंदियदोसेणं मिओ मओ वाहवा-णेण" (सुर ८, १४२; उत्त १, ५, पगह १, १; सम ६०; रंभा; ठा ४, २; पि ५४)। °**चक्क** न [°**चक्र**] विद्या-विशेष, ग्राम-प्रवेश आदि में मृगों के दर्शन आदि से शुभाशुभ फल जानने की विद्या; (सूअ २, २, २७)। °**णअणी,** °**नयणा** स्त्री [°**नयना**] देखो **मय-च्छी**; (नाट; सुर ६, १५३)। °**मय** पुं [°**मद**] कस्तूरी; (रंभा ३५)। °**रिउ** पुं [°**रिपु**] सिंह; (सुपा ५७१)। °**वाहण** पुं [°**वाहन**] भरतक्षेत्र के एक भावी तीर्थंकर; (सम १५३)।

मिअ देखो **मित्त**=मित्र; (प्राप्र)।

मिअ वि [**दे**] अलंकृत, विभूषित; (षड्)।

मिअ वि [**मित**] मानोपेत, परिमित, (उत्त १६, ८; सम १५२; कप्प)। २ थोड़ा, अल्प, "मिअं तुच्छं" (पाअ)।

°वाइ वि [°वादिन्] आत्म आदि पदार्थों को परिमित मानने वाला; (ठा ८—पत्र ४२७)।
मिअ देखो **मिव**=इव; (गा २०६ अ; नाट)।
मिअ° देखो **मिआ**। **°ग्गाम** पुं [°ग्राम] ग्राम-विशेष; (विपा १, १)।
मिअआ स्त्री [मृगया] शिकार; (नाट —शकु २७)।
मिअंक पुं [मृगाङ्क] १ चन्द्र, चाँद; (हे १, १३०; प्राप्र; कुमा; काप्र १६४)। २ चन्द्र का विमान, (सुज्ज २०)। ३ इच्वाकु वंश का एक राजा, (पउम ५, ७)। **°मणि** पुं [°मणि] चन्द्रकान्त मणि; (कप्पू)।
मिअंग देखो **मयंग**=मृदंग; (कप्पू)।
मिअसिर देखो **मगसिर**; (पि ५४)।
मिआ स्त्री [मृगा] १ राजा विजय की पत्नी; (विपा १,१)। २ राजा वलभद्र की पत्नी; (उत्त १६, १) **°उत्त**, **°पुत्त** पुं [°पुत्र] १ राजा विजय का एक पुत्र; (विपा १, १, कर्म १५)। २ राजा बलभद्र का एक पुत्र, जिसका दूसरा नाम बलश्री था, (उत्त १६, २)। **°वई** स्त्री [°वती] १ प्रथम वासुदेव की माता का नाम; (सम १५२)। २ राजा शतानीक की पटरानी का नाम; (विपा १, ५)।
मिइ स्त्री [मिति] १ मान, परिमाण, २ हद, अवधि; "किं दुक्करमुवायाणं न मिई जमुवायसत्तीए" (धर्मवि १४३)।
मिइ देखो **मिउ**=मृत्; (धर्मसं ५५८)।
मिइंग देखो **मयंग**=मृदग; (हे १, १३७; कुमा)।
मिइंद देखो **मइंद**=मृगेन्द्र; (अभि २४२)।
मिउ स्त्री [मृद्] मिट्टी, मट्टी; "मिउदंडचक्कचीवरसामग्गीवसा कुलालुव्व" (सम्मत २२४). "मिउपिंडो दव्वघडो सुसावगो तह य दव्वसाहु त्ति" (उप २५५ टी)।
मिउ वि [मृदु] कोमल, सुकुमार; (ग्रौप; कुमा; सण)।
मिंचण न [दे] मीचना, निमीलन, (दे ३, ३०)।
मिंज°, **मिंजा**, **मिंजिय** स्त्री [मज्जा] १ शरीर-स्थित धातु-विशेष, हाड के बीच का अवयव-विशेष; (पण्ह १, १—पत्र ८; महा; उवा; ग्रौप)। २ मध्यवर्ती अवयव; "पेहुणमिंजिया इवा" (पण्ण १७ —पत्र ५२६)।
मिंठ, **मिंठिल** पुं [दे] हस्तिपक, हाथी का महावत; (उप १२८ टी; कुप्र ३६८, महा; भत ७६; धर्मवि ८१; १३५; मन १०, उप १३०) देखो **मेंठ**।
मिंढ, **मिंढय** पुंस्त्री [मेढ्र] १ मेंढा, मेष, गाडर; (विसे ३०४ टी; उप पृ २०५; कुप्र १६२), "ते य दरा मिंढया ते य" (धर्मवि १४०)। स्त्री—**°ढिया**; (पाअ)। २ न. पुरुष-लिंग, पुरुष-चिह्न, (राज)। **°मुह** पुं [°मुख] १ अनार्य देश-विशेष; (पव २७४)। २ न. नगर-विशेष; (राज)। देखो **मेंढ**।
मिंढिय पुं [मेण्ढिक] ग्राम-विशेप; (कर्म १)।
मिग देखो **मय**=मृग, (विपा १, ७; सुर २, २२७; सुपा १६८, उव), "सीहो मिगाणं सलिलाण गंगा" (सूम १, ६, २१)। **°गंध** पुं [°गन्ध] युगलिक मनुष्य की एक जाति; (इक)। **°नाह** पुं [°नाथ] सिंह; (सुपा ६३२)। **°वइ** पुं [°पति] सिंह; (पण्ह १, १; सुपा ६३६)। **°वालुंकी** स्त्री [°वालुङ्की] वनस्पति-विशेष; (पण्ण १७—पत्र ५३०)। **°रि** पुं [°रि] सिंह; (उव; सुर ६, २७०)। **°हिव** पुं [°धिप] सिंह; (पण्ह २, ५)।
मिगया स्त्री [मृगया] शिकार, (सुपा २१४; कुप्र २३; मोह ६२)।
मिगव्व न [मृगव्य] ऊपर देखो; (उत्त १८, १)।
मिगसिर देखो **मगसिर**; (सम ८; इक; पि ४३६)।
मिगावई देखो **मिआ-वई**; (पउम २०, १८४; २२, ५५; उव; अंत; कुप्र १८३; पडि)।
मिगी स्त्री [मृगी] १ हरिणी; (महा)। २ विद्या-विशेष; (राज)। **°पद** न [°पद] स्त्री का गुह्य स्थान, योनि, (राज)।
मिच्चु देखो **मच्चु**, (षड्, कुमा)।
मिच्छ (अप) देखो **इच्छ**=इष्, "न उ देइ कप्पु मिच्छइ न न दंडु" (भवि)।
मिच्छ पुं [म्लेच्छ] यवन, अनार्य मनुष्य; (पउम २७, १८; ३४, ४१; ती १५; संबोध १६)। **°पहु** पुं [°प्रभु] म्लेच्छों का राजा, (रंभा)। **°पिय** न [°प्रिय] पलाण्डु, लशुन, "मिच्छप्पियं तु भुत्तं जा गंधो ता न हिंडंति" (बृह ५)। **°हिव** पुं [°धिप] यवनों का राजा; (पउम १२, १४)।
मिच्छ न [मिथ्य] १ असत्य वचन, झूठ; २ वि. असत्य, झूठा; "मिच्छं ते एवमाहंसु" (भग), "तं तहा, नेव मिच्छं" (पउम २३, २६)। ३ मिथ्यादृष्टि, सत्य पर विश्वास नहीं रखने वाला, तत्त्व का अश्रद्धालु, "मिच्छो हियाहियविभागना-णासण्णासमिस्सो कोइ" (विसे ५१६)।
मिच्छ° देखो **मिच्छा**; (कम्म ३, २; ४)। **°कार** पुं [°कार] मिथ्या-करण, (आचम)। **°त्त** न [°त्व] सत्य तत्त्व पर अश्रद्धा, सत्य धर्म का अविश्वास; (ठा ३, ३;

आचू ६; भग; औप; उप ५३१; कुमा)। °त्ति वि [°त्विन्] सत्य धर्म पर विश्वास नहीं करने वाला, परमार्थ का अश्रद्धालु; (दं १८)। °दिट्ठि, °दिट्ठीय, °द्दिट्ठि, °द्दिट्ठिय वि [°दृष्टि, °क] सत्य धर्म पर श्रद्धा नहीं रखने वाला, जिन-धर्म से भिन्न धर्म को मानने वाला; (सम २६; कुमा; ठा २, २; औप; ठा १)।

मिच्छा अ [**मिथ्या**] १ असत्य, झूठा; (पाअ)। २ कर्म-विशेष, मिथ्यात्व-मोहनीय कर्म; (कम्म २, ४; १४)। ३ गुण-स्थानक विशेष, प्रथम गुण-स्थानक; (कम्म २, २; ३; १३)। °दंसण न [°दर्शन] १ सत्य तत्त्व पर अश्रद्धा; (सम ८; भग; औप)। २ असत्य धर्म; (कुमा)। °नाण न [°ज्ञान] असत्य ज्ञान, विपरीत ज्ञान, अज्ञान; (भग)। °सुअ न [°श्रुत] असत्य शास्त्र, मिथ्यादृष्टि-प्रणीत शास्त्र; (णंदि)।

मिज्ज अक [**मृ**] मरना। मिज्जंति; (सूअ १, ७, ६)। वक्त—**मिज्जमाण**; (भग)।

मिज्जंत } देखो **मा**=मा।
मिज्जमाण }

मिज्झ वि [**मेध्य**] शुचि, पवित्र; (उप ७२८ टी)।

मिट सक [**दे**] मिटाना, लोप करना। मिटिज्जसु; (पिंग)। प्रयो—मिटावह; (पिंग)।

मिट्ठ वि [**मिष्ट, मृष्ट**] मीठा, मधुर; "मुहमिट्ठा मणदुट्ठा वेसा सिट्ठाण कहमिट्ठा" (धर्मवि ६५; कप्पू; सुर १२, १७, हे १, १२८, रंभा)।

मिण सक [**मा, मी**] १ परिमाण करना, नापना, तोलना। २ जानना, निश्चय करना। मिणइ; (विसे २१८६), मिणसु; (पव २५४)।

मिणण न [**मान**] मान, माप, परिमाण; (उप पृ ६७)।

मिणाय न [**दे**] बलात्कार, जबरदस्ती; (दे ६, ११३)।

मिणाल देखो **मुणाल**, (प्राकृ ८; रंभा)।

मित्त पुं [**मित्र**] १ सूर्य, रवि, (सुपा ६४५; सुख ४, ६; पाअ; वज्जा १४४)। २ नक्षत्रदेव-विशेष, अनुराधा नक्षत्र का अधिष्ठायक देव; (ठा २, ३—पत्र ७७, सुज्ज १०, १२)। ३ अहोरात्र का तीसरा मुहूर्त; (सम ५१; सुज्ज १०, १३)। ४ एक राजा का नाम; (विपा १, २)। ५ पुंन. दोस्त, वयस्य, सखा; "मित्तो सही वयंसो" (पाअ), "पहाण-मित्ता" (स ७०७), "तिविहो मित्तो हवइ" (स ७१५; सुपा ६४५; प्रासू ७६)। °केसी स्त्री [°केशी] रुचक पर्वत पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; "अलंबुसा मित (?-त्त)केसी" (ठा ८—पत्र ४३७; इक)। °गा स्त्री [°गा] वैरोचन बलीन्द्र की एक अग्र-महिषी, एक इन्द्राणी; (ठा ४, १—पत्र २०४)। °णंदि पुं [°नन्दिन्] एक राजा का नाम; (विपा २, १०)। °दाम पुं [°दाम] एक कुलकर पुरुष का नाम; (सम १५०)। °देवा स्त्री [°देवा] अनुराधा नक्षत्र; (राज)। °व वि [°वत्] मित्र वाला; (उत्त ३, १८)। °सेण पुं [°सेन] एक पुरोहित-पुत्र; (सुपा ५०७)।

मित्त देखो **मेत्त**=मात्र; (कप्प; जी ३१; प्रासू १४५)।

मित्तल पु [**दे**] कन्दर्प, काम; (दे ६, १२६; सुर १३, ११८)।

मित्ति स्त्री [**मिति**] १ मान, परिमाण; २ सापेक्षता; "उस्सग्गववायाणं मित्तीए अह ण भोयणं दुट्ठं। उस्सग्गववायाणं मित्तीइ तहेव उवगरणं" (अज्झ ३७)।

मित्तिआ स्त्री [**मृत्तिका**] मिट्टी, मट्टी; (अभि २४३)। °वई स्त्री [°वती] दशार्ण देश की प्राचीन राजधानी; (विचार ४८)।

मित्तिज्ज अक [**मित्त्रीय्**] मित्र को चाहना। वक्त—**मित्तिज्जमाण**; (उत्त ११, ७)।

मित्तिय न [**मैत्रेय**] १ गोत्र-विशेष, जो वत्स गोत्र की एक शाखा है; २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न, (ठा ७—पत्र ३६०)।

मित्तिवय पुं [**दे**] ज्येष्ठ, पति का बड़ा भाई; (दे ६, १३२)

मित्ती स्त्री [**मैत्री**) मित्रता, दोस्ती; (सूअ २, ७, ३६; श्रा १४, प्रासू ८)।

मिथुण देखो **मिहुण**; (पउम ६६, ३१)।

मिदु देखो **मिउ**; (अभि १८३; नाट—रत्ना ८०)।

मिरिअ पुंन [**मरिच**] १ मरिच का गाछ; २ मिरच, मिर्चा; (पगण १७—पत्र ५३१; हे १, ४६; ठा ३, १ टी; पव २५६)।

मिरिआ स्त्री [**दे**] कुटी, झोंपड़ी; (दे ६, १३२)।

मिरिइ }
मिरी } पुस्त्री [**मरीचि**] किरण, प्रभा, तेज; "चंचल-मिरिइकवयं" (औप), "सप्पहा समिरि(?री)या (औप), "निक्कंकडच्छाया समिरीया" (औप; ठा ४, १—पत्र २२६), "विज्जघणमिरीइसूरदिप्पंत-
मिरीइ }
मिरीय }

तेय—" (औप), "सूरमिरीयकवयं विणिम्मुयंतेहिं" (पराह १, ४—पत्र ७२)।

मिल अक [**मिल्**] मिलना। मिलइ; (हे ४, ३३२; रंभा; महा)। कर्म—मिलिज्जइ; (हे ४, ४३४)। वकृ—**मिलंत**; (से १०, १६)।

मिलक्खु पुंन. देखो **मिच्छ**=म्लेच्छ; (ओघ ४४०; धर्मसं ५०८; ती १५; उत्त १०, १६), "मिलक्खूणि" (पि ३८१)।

मिलण न [**मिलन**] मेल, मिलना, एकत्रित होना; "लोगमिलणम्मि" (उप ५७८; सुपा २५०)।

मिलणा स्त्री. ऊपर देखो; (उप १२८ टी; उप ७०६)।

मिला, **मिलाअ** अक [**म्लै**] म्लान होना, निस्तेज होना। मिलाइ, मिलाअइ; (हे २, १०६; ४, १८; २४०; षड्)। वकृ—**मिलाअंत**, **मिलाअमाण**; (पि १३६; ठा ३, ३; णाया १, ११)।

मिलाअ, **मिलाण** वि [**म्लान**] निस्तेज, विच्छाय; (णाया १, १—पत्र ३७; स ४२५; हे २, १०६; कुमा; महा)।

मिलाण न [**दे**] पर्याण (?) "—थासगमिलाणचमरीगंडपरिमंडियकडीणं" (औप)।

मिलाणि स्त्री [**म्लानि**] विच्छायता; (उप १४२ टी)।

मिलिअ वि [**मिलित**] मिला हुआ; (गा ४४३; कुमा)।

मिलिअ वि [**मेलित**] मिलाया हुआ; (कुमा)।

मिलिच्छ देखो **मिच्छ**=म्लेच्छ; (हे १, ८४; हम्मीर ३४)।

मिलिट्ठ वि [**म्लिष्ट**] १ अस्पष्ट वाक्य वाला; २ म्लान; ३ न. अस्पष्ट वाक्य; (प्राकृ २७)।

मिलिमिलिमिल अक [**दे**] चमकना। वकृ—**मिलिमिलिमिलंत**; (पराह १, ३—पत्र ४४)।

मिलीण देखो **मिलिअ**; (ओघभा २२ टी)।

मिल्ल सक [**मुच्**] छोड़ना, त्यागना। मिल्लइ; (भवि)। वकृ—**मिल्लंत**; (सुपा ३१७)। कृ—**मिल्लेव** (अप); (कुमा)। प्रयो—कवकृ—**मिल्लाविज्जंत**; (कुप्र १६२)।

मिल्लाविअ वि [**मोचित**] छुड़ाया हुआ; (सुपा ३८८; हम्मीर १८; कुप्र ४०१)।

मिल्लिअ (अप) देखो **मिलिअ**, (पिंग)।

मिल्लिर वि [**मोक्तृ**] छोड़ने वाला; (कुमा)।

मिल्ह देखो **मिल्ल**। मिल्हइ; (आत्मानु २२), मिल्हंति; (कुप्र १७)। भवि—मिल्हिस्सं; (कुप्र १०)। कृ—**मिल्हियव्व**; (सिरि ३५७)।

मिल्हिय वि [**मुक्त**] छोड़ा हुआ; (श्रा २७)।

मिव देखो **इव**, (हे २, २८२; प्राप्र; कुमा)।

मिस सक [**मिस्**] शब्द करना। वकृ—**मिसंत**; (तंदु ४४)।

मिस न [**मिष**] बहाना, छल, व्याज; (चेइय ८३१; सिक्खा २६; रंभा; कुमा)।

मिसमिस अक [**दे**] १ अत्यन्त चमकना। २ खूब जलना। वकृ—**मिसमिसंत**; (णाया १, १—पत्र १६; तंदु २६; उप ६४८ टी)।

मिसल (अप) सक [**मिश्रय्**] मिश्रण करना, मिलाना। मराठी में 'मिसलणें'। मिसलइ; (भवि)।

मिसल (अप) देखो **मीस**, **मीसालिअ**; (भवि)।

मिसिमिस देखो **मिसमिस**। वकृ—**मिसिमिसंत**, **मिसिमिसिंत**, **मिसिमिसिमाण**, **मिसिमिसीयमाण**, **मिसिमिसेंत**, **मिसिमिसेमाण**; (औप; कप्प; पि ५५८; उवा; पि ५५८; णाया १, १—पत्र ६४)।

मिसिमिसिय वि [**दे**] उद्दीप्त, उत्तेजित; (सुर ३, ५०)।

मिस्स सक [**मिश्रय्**] मिश्रण करना, मिलाना। मिस्सइ; (हे ४, २८)।

मिस्स देखो **मीस**=मिश्र; (भग)।

°**मिस्स** पुं [°**मिश्र**] पूज्य, पूजनीय; "वसिट्ठमिस्सेसु" (उत्तर १०३)।

मिस्साकूर पुंन [**मिश्राकूर**] खाद्य-विशेष; "अणुराहाहिं मिस्साकूरं भोच्चा कज्जं साधेंति" (सुज्ज १०, १७)।

मिह अक [**मिध्**] स्नेह करना। मिहसि; (सुर ४, २१)।

मिह देखो **मिस**=मिष; "निग्गओ अलियगामंतरगमणमिहेण" (महा)।

मिह देखो **मिहो**; (आचा)।

मिहिआ स्त्री [**दे**] मेघ-समूह; (दे ६, १३२)। देखो **महिआ**।

मिहिआ स्त्री [**मेघिका**] अल्प मेघ; (से ४, १७)। देखो **महिआ**।

मिहिर पुं [**मिहिर**] सूर्य, रवि; (उप पृ ३५०; सुपा ४१६; धर्मा ५),

"सायरनिसायराण' मेहसिंहडीण मिहिरनलिणीणं ।
दूरेवि वसंताण' पडिवन्नं नन्नहा होइ" (उप ७२८ टी)।
मिहिला स्त्री [**मिथिला**] नगरी-विशेष; (ठा १०; पउम २०, ४५; णाया १, ८—पत्र १२४; इक)।
मिहु } देखो **मिहो**; (उप ६४७; आचा)।
मिहुं }
मिहुण न [**मिथुन**] १ स्त्री-पुरुष का युग्म, दंपती; (हे १, १८७; पाअ; कुमा)। २ ज्योतिष-प्रसिद्ध एक राशि; (विचार १०६)।
मिहो अ [**मिथस्**] परस्पर, आपस में; (उप ६७६; स ५३६; पि ३४७)।
मीअ न [**दे**] समकाल, उसी समय; (दे ६, १३३)।
मीण पुं [**मीन**] १ मत्स्य, मछली; (पाअ; गउड; ओघ ११६; सुर ३, ५३; १३, ४६)। २ ज्योतिष-प्रसिद्ध राशि-विशेष; (सुर ३, ५३; विचार १०६; संबोध ५४)।
मीत देखो **मित्त**=मित्र, (संक्षि १७)।
मीमंस सक [**मीमांस्**] विचार करना। कृ—"अ-**मीमंसा** गुरू" (स ७३०)।
मीमंसा स्त्री [**मीमांसा**] जैमिनीय दर्शन; (सुख ३, १, धर्मवि ३८)।
मीमंसिय वि [**मीमांसित**] विचारित; (उप ९८६ टी)।
मीरा स्त्री [**दे**] दीर्घ चुल्ली, बड़ा चुल्हा; (सूअनि ७६)।
मील अक [**मील्**] मीचाना, सकुचाना। मीलइ; (हे ४, २३२; षड्)।
मील देखो **मिल**; (वि ११)।
मीलच्छीकार पुं [**मीलच्छीकार**] १ यवन देश-विशेष; "मीलच्छीकारदेसोवरि चलिदो खप्परखाणराया" (हम्मीर ३५)। २ एक यवन राजा; (हम्मीर ३५)।
मीलण न [**मीलन**] संकोच; (कुमा)।
मीलण देखो **मिलण**; "खणजणमणमीलणोवमा विसया" (वि ११; राज)।
मीलिअ देखो **मिलिअ**=मिलित; (पिंग)।
मीस सक [**मिश्रय्**] मिलाना, मिश्रण करना। कर्म—मीसिज्जइ; (पि ६४)।
मीस वि [**मिश्र**] १ संयुक्त, मिला हुआ, मिश्रित; (हे १, ४३; २, १७०; कुमा; कम्म २, १३; १५; ४, १३; १७; २४; भग; औप; दं २२)। २ न. लगातार तीन दिनों का उपवास; (संबोध ५८)।
मीसालिअ वि [**मिश्र**] संयुक्त, मिला हुआ; (हे २, १७०; कुमा)।
मीसिय वि [**मिश्रित**] ऊपर देखो; (कुमा; कप्प; भवि)।
मुअ सक [**मोदय्**] खुश करना। कवकृ—**मुइज्जंत**; (से ७, ३७)।
मुअ सक [**मुच्**] छोड़ना। मुअइ; (हे ४, ९१), मुअंति; (गा ३१६)। वकृ—**मुअंत, मुयमाण**, (गा ६४१; से ३, ३६; पि ४८५)। संकृ—**मुइत्ता**; (भग)।
मुअ वि [**मृत**] मरा हुआ; (से ३, १२; गा १४२; वज्जा १५८; प्रासू ५७; पउम १८, १६; उप ६४८ टी)। °**वहण** न [°**वहन**] शव-यान, ठठरी; (दे २, २०)।
मुअ वि [**स्मृत**] याद किया हुआ; (सुअ २, ७, ३८; आचा)।
मुअंक देखो **मिअंक**; (प्राकृ ८)।
मुअंग देखो **मिअंग**; (षड्; सम्मत २१८)।
मुअंगी स्त्री [**दे**] कीटिका, चींटी; (दे ६, १३४)।
मुअग्ग पुं [**दे**] 'आत्मा बाह्य और अभ्यन्तर पुद्गलों से बना हुआ है' ऐसा मिथ्या ज्ञान; (ठा ७ टी—पत्र ३८३)।
मुअण न [**मोचन**] छुटकारा, छोड़ना; (सम्मत्त ७८; विसे ३३१६; उप ५२०)।
मुअल (अप) देखो **मुअ**=मृत; (पिंग)।
मुआ स्त्री [**मृत्**] मिट्टी; (संक्षि ४)।
मुआ स्त्री [**मुद्**] हर्ष, खुशी, आनन्द; "सुरयरसाओवि मुयं अहियं उवजणइ तस्स सा एसा" (रंभा)।
मुआइणी स्त्री [**दे**] डुम्बी, चाण्डालिन; (दे ६, १३५)।
मुआविअ वि [**मोचित**] छुड़वाया हुआ; (स ४४६)।
मुइ वि [**मोचिन्**] छोड़ने वाला; (विसे ३४०२)।
मुइअ वि [**मुदित**] १ हर्षित, मोद-प्राप्त, (सुर ७, २२३; प्रासू १०५; उव; औप)। २ पुं. रावण का एक सुभट; (पउम ५६, ३२)।
मुइअ वि [**दे**] योनि-शुद्ध, निर्दोष माता वाला; "मुइओ जो होई जोणिसुद्धो" (औप—टी)।
मुइअंगा देखो **मुअंगी**; "उत्तलिप्पते काया मुइअंगाई नत्तरि छड्डे" (पिंड ३५१)।
मुइंग देखो **मिअंग**; (हे १, ४६; १३७; प्राप्र; उवा; कप्प; सुपा २६२; पाअ)। °**पुक्खर** पुंन [°**पुष्कर**] मृदंग का ऊपरला भाग; (भग)।

मुइंगलिया } स्त्री [दे] कीटिका, चींटी; (उप १३४ टी;
मुइंगा } संथा ८६; विसे १२०८; पिंड ३५१ टी)।

मुइंगि वि [मृदङ्गिन्] मृदंग बजाने वाला; (कुमा)।

मुइंद देखो **मइंद**=मृगेन्द्र; (प्राकृ ८)।

मुइज्जंत देखो **मुअ**=मोदय्।

मुइर वि [मोक्तृ] छोड़ने वाला; (सण)।

मुउ देखो **मिउ**; (काल)।

मुउंद पुं [मुचुकुन्द] १ नृप-विशेष; (अच्चु ६६)। २ पुष्पवृक्ष-विशेष; (कप्पू)।

मुउंद पुं [मुकुन्द] विष्णु, नारायण; (नाट—चैत १२६)।

मुउर देखो **मउर**=मुकुर, (षड्)।

मुउल देखो **मउल**=मुकुल; (षड्; मुद्रा ८४)।

मुंगायण न [मृङ्गायण] गोत्र-विशेष, विशाखा नक्षत्र का गोत्र; (इक)।

मुंच देखो **मुअ**=मुच्। मुचइ, मुचए; (षड्; कुमा)। भूका—मुंची; (भत्त ७६)। भवि—मोच्छं, मोच्छिहि, मुंचिहिइ; (हे ३, १७१; पि ५२६)। कर्म—मुच्चइ; मुचए, मुच्चंति; (आचा, हे ४, २०६; महा; भग); भवि—मुच्चिहिति; (भग)। वकृ—**मुंचंत**; (कुमा)। कवकृ—**मुच्चंत**; (पि ५४२)। संकृ—**मोत्तुं**, **मोत्तुआण**, **मोत्तूण**; (कुमा; षड्; प्राकृ ३४)। हेकृ—**मोत्तुं**; (कुमा); **मुंचणहिं** (अप); (कुमा)। कृ—**मोत्तव्व**, **मुत्तव्व**; (हे ४, २१२; गा ६७२; सुपा ५८६)।

मुंज पुंन [मुञ्ज] मूँज, तृण-विशेष, जिसकी रस्सी बनाई जाती है; (सूअ २, १, १६; गच्छ २, ३६; उप ६४८ टी)। °**मेहला** स्त्री [°मेखला] मूँज का कटीसूत्र; (णाया १, १६—पत्र २१३)।

मुंजइ न [मौञ्जकिन्] १ गोत्र-विशेष; २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न; (ठा ७—पत्र ३६०)।

मुंजायण पुं [मौञ्जायन] ऋषि-विशेष; (हे १, १६०; प्राप्र)।

मुंजि पुं [मौञ्जिन्] ऊपर देखो; (प्राकृ १०)।

मुंट वि [दे] हीन शरीर वाला;

"जे बंभचेरभट्ठा पाए पाडंति बंभयारीणं।
ते हुंति टुंटमुंटा बोहीवि सुदुल्लहा तेसिं" (संबोध १४)।

मुंड सक [मुण्डय्] १ मूँडना, बाल उखाड़ना। २ दीक्षा देना, संन्यास देना। मुंडइ; (भवि), मुंडेह; (सूअ २, २, ६३)। प्रयो—वकृ—**मुंडावेंत**; (पंचा १०, ४८ टी), हेकृ—**मुंडावेउं**, **मुंडावित्तए**, **मुंडावेत्तए**; (पंचा १०, ४८; ठा २, १; कस)।

मुंड पुंन [मुण्ड] १ मस्तक, सिर; (हे ४, ४४६; पिंग)। २ वि. मुण्डित, दीक्षित, प्रव्रजित, (कप्प; उवा; पिंड ३१४)। °**परसु** पुं [°परशु] नंगा कुल्हाड़ा, तीक्ष्ण कुठार; (पण्ह १, ३—पत्र ५४)।

मुंडण न [मुण्डन] केशों का अपनयन; (पंचा २, २; स २७१; सुर १२, ४५)।

मुंडा स्त्री [दे] मृगी, हरिणी; (दे ६, १३३)।

मुंडाविअ वि [मुण्डित] मूँडाया हुआ; (भग; महा; णाया १, १)।

मुंडि वि [मुण्डिन्] मुण्डन करने वाला; (उव; औप; भत्त १००)।

मुंडिअ वि [मुण्डित] मुण्डन-युक्त; (भग; उप ६३४; महा)।

मुंडी स्त्री [दे] नीरङ्गी, शिरो-वस्त्र, घूँघट; (दे ६, १३३)।

मुंढ } पुं [मूर्धन्] मूर्धा, मस्तक, सिर; (हे १, २६;
मुंढाण } २, ४१; षड्)। देखो **मुद्ध**=मूर्धन्।

मुकलाव सक [दे] भेजवाना; गुजराती में 'मोकलाववुं'। संकृ—**मुकलाविऊण**; (सिरि ४७४)।

मुक्क (अप) सक [मुच्] छोड़ना; गुजराती में 'मूकवुं'। मुक्कइ; (प्राकृ ११६)। संकृ—**मुक्किअ**; (नाट—चैत ७६)।

मुक्क वि [मूक] वाक्-शक्ति से रहित; (हे २, ६६; सुपा ५५२; षड्)।

मुक्क देखो **मुकल**; (विसे ५५०)।

मुक्क वि [मुक्त] १ छोड़ा हुआ, त्यक्त; (उवा; सुपा ४७५; महा; पाअ)। २ मुक्ति-प्राप्त, मोक्ष-प्राप्त; (हे २, २)। ३ लगातार पाँच दिन के उपवास; (संबोध ५८)। देखो **मुत्त**=मुक्त।

मुक्कय न [दे] दुलहिन के अतिरिक्त अन्य निमन्त्रित कन्याओं का विवाह; (दे ६, १३५)।

मुक्कल वि [दे] १ उचित, योग्य; (दे ६, १४७)। २ स्वैर, स्वतन्त्र, बन्धन-मुक्त; (दे ६, १४७; सुर १, २३३; विवे १८; गउड; सिरि ३५३; पाअ; सुपा १६८)।

मुक्कुंडी स्त्री [दे] जूट; (दे ६, ११७)।

मुक्कुरुड पुं [दे] राशि, ढेर; (दे ६, १३६)।

मुक्ख पुं [**मोक्ष**] १ मुक्ति, निर्वाण; (सुर १४, ६५; हे २, ८६; सार्ध ८६)। २ छुटकारा; "रिणमुक्खं" (रयण ६५; धर्मवि २१)।

मुक्ख वि [**मूर्ख**] अज्ञानी, बेवकूफ; (हे २, ११२; कुमा; गा ८२; सुपा २३१)।

मुक्ख वि [**मुख्य**] प्रधान, नायक; (हास्य १२५)।

मुक्ख पुंन [**मुष्क**] १ अण्डकोष; २ वृक्ष-विशेष, ३ चोर, तस्कर; ४ वि. मांसल, पुष्ट; (प्राप्र)।

मुक्खण देखो **मोक्खण**; (सिक्खा ४५)।

मुक्खणी स्त्री [**मोक्षणी**] स्तम्भन से छुटकारा करने वाली विद्या-विशेष; (धर्मवि १२४)।

मुख देखो **मुह**=मुख; (प्रासू ६; राज)।

मुग देखो **मुग्ग**; "एगमुगभरुव्वहणे असमत्थो किं गिरिं वहइ" (सुपा ४६१)।

मुगुंद देखो **मउंद**=मुकुन्द; (आचा २, १, २, ४, विसे ७८ टी)।

मुगुंस पुंस्त्री [**दे**] हाथ से चलने वाले जन्तु की एक जाति, भुजपरिसर्प-जातीय एक प्राणी; (पण्ह १, १—पत्र ८)। स्त्री—°**सा**; (उवा)। देखो **मंगुस, मुग्गस**।

मुग्ग पुं [**मुद्ग**] १ धान्य-विशेष, मूँग; (उवा)। २ रोग-विशेष; (ति १३)। ३ पक्षि-विशेष, जल-काक; (प्राप्र)। °**पण्णी** स्त्री [°**पर्णी**] वनस्पति-विशेष; (पण्ण १—पत्र ३६)। °**सेल** पुं [°**शैल**] पर्वत-विशेष, कभी नहीं भिजने वाला एक पर्वत; (उप ७२८ टी)।

मुग्गड पुं [**दे**] मोगल, म्लेच्छ-जाति विशेष; (हे ४, ४०६)। देखो **मोग्गड**।

मुग्गर न [**मुद्गर**] १ पुष्प-विशेष; (वज्जा १०६)। २ देखो **मोग्गर**; (प्राप्र; आप ३६; कप्प)।

मुग्गरय न [**दे. मुग्धारत**] मुग्धा के साथ रमण; (वज्जा १०६)।

मुग्गल देखो **मुग्गड**; (ती १५)।

मुग्गस पुं [**दे**] नकुल, न्यौला; (दे ६, ११८)।

मुग्गाह अक [**प्र+सृ**] फैलना। मुग्गाहइ(?); (धात्वा १४८)।

मुग्गिल } **मुग्गिल्ल** } पुं [**दे**] पर्वत-विशेष; (ती ७; भत्त १६१)।

मुग्गुसु देखो **मुग्गस**; (दे ६, ११८)।

मुग्घड देखो **मुग्गड**; (हे ४, ४०६)।

मुग्घुरुड देखो **मुक्कुरुड**; (दे ६, १३६)।

मुचकुंद } **मुचुकुंद** } देखो **मुउउंद**, (सुर २, ७६; कुमा)।

मुच्छ अक [**मूर्च्छ्**] १ मूर्च्छित होना। २ आसक्त होना। ३ बढ़ना। मुच्छइ, मुच्छए; (कस; सूत्र १, १, ४, २)। वकृ—**मुच्छंत, मुच्छमाण**; (गा ५४६; आचा)।

मुच्छणा स्त्री [**मूर्च्छना**] गान का एक अंग; (ठा ७—पत्र ३६५)।

मुच्छा स्त्री [**मूर्च्छा**] १ मोह; (ठा २, ४; प्रासू १७६)। २ अचेतनावस्था, बेहोशी; (उव; पडि)। ३ गृद्धि, आसक्ति; (सम ७१)। ४ मूर्छना, गीत का एक अंग, (ठा ७—पत्र ३६३)।

मुच्छाविअ वि [**मूर्च्छित**] मूर्छा-युक्त किया हुआ; (से १२, ३८)।

मुच्छिअ वि [**मूर्च्छित**] १ मूर्च्छा-युक्त; (प्रासू ५७; उवा)। २ पुं. नरकावास-विशेष; (देवेन्द्र २७)।

मुच्छिज्जंत वि [**मूर्च्छायमान**] मूर्च्छा को प्राप्त होता; (से १३, ४३)।

मुच्छिम पुं [**मूर्च्छिम**] मत्स्य-विशेष;

"वायाए काएणं मणरहिआणं न दारुणं कम्मं।
जोअणसहस्समाणो मुच्छिममच्छो उआहरणं" (मन ३)।

मुच्छिर वि [**मूर्च्छितृ**] १ बढने वाला; २ बेहोशी वाला; (कुमा)।

मुज्झ अक [**मुह्**] १ मोह करना। २ घबड़ाना। मुज्झइ; (आचा; उव; महा)। भवि—**मुज्झिहिति**; (औप)। कृ—**मुज्झियव्व**; (पण्ह २, ५—पत्र १४६; उव)।

मुट्टिम पुंस्त्री [**दे**] गर्व, अहंकार, गुजराती में 'मोटाई'; "कय-मुट्टिमंगीकारो" (हम्मीर ३५)। देखो **मोट्टिम**।

मुट्ठ वि [**मुष्ट, मुषित**] जिसकी चोरी हुई हो वह; (पिंड ४६६; सुर २, ११२; सुपा ३६१; महा)।

मुट्ठि पुंस्त्री [**मुष्टि**] मुट्ठी, मूठी, मूका; "मुट्ठिणा", "मुट्ठीअ" (पि ३७६; ३८५; पाअ, रंभा; भवि)। °**जुज्झ** न [°**युद्ध**] मुष्टि से की जाती लड़ाई, मूकामूकी; (आचा)। °**पुत्थय** न [°**पुस्तक**] १ चार अंगुल लम्बा वृत्ताकार पुस्तक; २ चार अंगुल लम्बा चतुष्कोण पुस्तक; (पव ८०)।

मुट्ठिअ पुं [**मौष्टिक**] १ अनार्य देश-विशेष; २ एक अनार्य मनुष्य-जाति; (पण्ह १, १—पत्र १४)। ३ मुट्ठी से

लड़ने वाला मल्ल; (पण्ह २, ५—पत्र १४६) । ४ वि. मुष्टि-संबन्धी; (कप्प) ।

मुट्ठिअ पुं [**मुष्टिक**] १ मल्ल-विशेष, जिसको बलदेव ने मारा था; (पण्ह १, ४—पत्र ७२; पिंग) । २ अनार्य देश-विशेष; ३ एक अनार्य मनुष्य-जाति; (इक) ।

मुड्ढ देखो **मुंढ**; (कुमा) ।

मुड्ढ वि [**मुग्ध, मूढ**] मूर्ख, बेवकूफ; (हम्मीर ५१) ।

मुण सक [**ज्ञा, मुण्**] जानना । मुणइ, मुणंति, मुणिमो; (हे ४, ७; कुमा) । कर्म—मुणिज्जइ; (हे ४, २५२), मुणिज्जामि; (हास्य १३८) । वकृ— **मुणंत, मुणिंत**; (महा; पउम ४८, ६) । कवकृ—**मुणिज्जमाण**, (से २, ३६) । संकृ—**मुणिय, मुणिउं, मुणिऊण, मुणेऊणं**; (औप; महा) । कृ—**मुणिअव्व, मुणेअव्व**; (कुमा; से ४, २४; नव ४२; कप्प; उत्त; जी ३१) ।

मुणण न [**ज्ञान, मुणन**] ज्ञान, जानकारी; (कुप्र १८४; संबोध २५; धर्मवि १२५; सण) ।

मुणमुण सक [**मुणमुणाय्**] अव्यक्त शब्द करना, बड़बड़ना । वकृ—**मुणमुणंत, मुणमुणिंत**; (महा) ।

मुणाल पुंन [**मृणाल**] १ पद्मकन्द के ऊपर की बेल—लता; (आचा २, १, ८, ११) । २ बिस, पद्मनाल; ३ पद्म आदि के नाल का तन्तु—सूत; (पात्र; गाया १, १३; औप) । ४ वीरण का मूल; ५ पद्म, कमल; "मुणालो", "मुणालं" (प्राप्र; हे १, १३१) ।

मुणालि पुं [**मृणालिन्**] १ पद्म-समूह; २ पद्म-युक्त प्रदेश, कमल वाला स्थान; "मुणाली वाणाली" (सुपा ४१३) ।

मुणालिआ, **मुणाली** } स्त्री [**मृणालिका, °ली**] १ बिस-तन्तु, कमल-नाल का सूता; (नाट—रत्ना २६) । २ बिस का अंकुर; (गउड) । ३ कमलिनी; (राज) । देखो **मणालिया**।

मुणि पुं [**मुनि**] १ राग-द्वेष-रहित मनुष्य, संत, साधु, ऋषि, यती; (आचा; पात्र; कुमा; गउड) । २ अगस्त्य ऋषि; "जलहिजलं व मुणिणा" (सुपा ४८६) । ३ सात की संख्या; ४ छन्द-विशेष; (पिंग) । **°चंद** पुं [**°चन्द्र**] १ एक प्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार, जो वादी देवसूरि के गुरु थे; (धम्मो २५) । २ एक राज-पुत्र; (महा) । **°नाह** पुं [**°नाथ**] साधुओं का नायक; (सुपा १६०; २५०) । **°पुंगव** पुं [**°पुङ्गव**] श्रेष्ठ मुनि; (सुपा ६७; श्रु ४१) । **°राय** पुं [**°राज**] मुनि-नायक; (सुपा १६०) । **°वइ** पुं [**°पति**] वही अर्थ; (सुपा १८१; २०६) । **°वर** पुं [**°वर**] श्रेष्ठ मुनि; (सुर ४, ५६; सुपा २४४) । **°वेजयंत** पुं [**°वैजयन्त**] मुनि-प्रधान, श्रेष्ठ मुनि; (सूअ १, ६, २०) । **°सीह** पुं [**°सिंह**] श्रेष्ठ मुनि; (पि ४३६) । **°सुव्वय** पुं [**°सुव्रत**] १ वर्तमान काल में उत्पन्न भारत-वर्ष के बीसवें तीर्थंकर; (सम ४३) । २ भारतवर्ष के एक भावी तीर्थंकर; (सम १५३) ।

मुणि पुं [**दे. मुनि**] वृक्ष-विशेष, अगस्ति-द्रुम; (दे ६, १३३; कुमा) ।

मुणिअ वि [**ज्ञात, मुणित**] जाना हुआ, (हे २, १९९; पात्र; कुमा; अवि १६; पण्ह १, २; उप १४३ टी) ।

मुणिंद पुं [**मुनीन्द्र**] श्रेष्ठ मुनि; (हे १, ८४; भग) ।

मुणिर वि [**ज्ञातृ, मुणितृ**] जानने वाला; (सण) ।

मुणीस पुं [**मुनीश**] मुनि-नायक; (उप १४१ टी; भवि) ।

मुणीसर पुं [**मुनीश्वर**] ऊपर देखो; (सुपा ३६६) ।

मुणीसिम (अप) पुंन [**मनुष्यत्व**] १ मनुष्यपन; २ पुरुषार्थ; (हे ४, ३३०) ।

मुत्त सक [**मूत्रय्**] मूतना, पेशाब करना । मुत्तंति; (कुप्र ९२) ।

मुत्त न [**मूत्र**] प्रस्रवण, पेशाब; (सुपा ६१९) ।

मुत्त देखो **मुक्क**=मुक्त, (सम १; से २, ३०; जी २) । **°ालय** पुंस्त्री [**°ालय**] मुक्त जीवों का स्थान, ईषत्प्राग्भारा-नामक पृथिवी; (इक) । स्त्री—**°या**; (ठा ८—पत्र ४४०; सम २२) ।

मुत्त वि [**मूर्त**] १ मूर्ति वाला, रूप वाला, आकार वाला; (चैत्य ६१) । २ कठिन; ३ मूढ; ४ मूर्च्छा-युक्त; (हे २, ३०) । ५ पुं. उपवास, एक दिन का उपवास; (संबोध ५८) । ६ एक प्राण का नाम; (कप्प) ।

मुत्त° देखो **मुत्ता**; (औप; पि ६७; चैत्य १४) ।

मुत्तव्व देखो **मुंच** ।

मुत्ता स्त्री [**मुक्ता**] मोती, मौक्तिक; (कुमा) । **°जाल** न [**°जाल**] मुक्ता-समूह, मोतियों की माला; (औप; पि ६७) । **°दाम** न [**°दामन्**] मोतियों की माला; (अ ४, २) । **°वलि, °वली** स्त्री [**°वलि, °ली**] १ मोती की माला, मोती का हार; (सम ४४; पात्र) । २ तप-विशेष; (अंत ३१) । ३ द्वीप-विशेष; ४ समुद्र-विशेष; (राज) । **°सुत्ति** स्त्री [**°शुक्ति**] १ मोती की छीप; २ मुद्रा-विशेष; (चेइय २४०; पंचा ३, २१) । **°हल** न [**°फल**]

मोती; (हे १, २३६; कुमा; प्रासू २)। °हलिल्ल त्रि [°फलवत्] मोती वाला; (कप्पू)।

मुत्ति स्त्री [**मूर्त्ति**] १ रूप, आकार; "मुत्तिविमुत्तेसु" (पिंड ५६; विसे ३१८२)। २ प्रतिबिम्ब, प्रतिमूर्ति, प्रतिमा; "चउ मुहमुत्तिचउक्कं" (संबोध २)। ३ शरीर, देह; (सुर १, ३; पात्र)। ४ काठिन्य, कठिनत्व; (हे २, ३०; प्राप्र)। °मंत त्रि [°मत्] मूर्ति वाला, मूर्त, रूपी; (धर्मवि ६; सुपा ३८६; श्रु ६७)।

मुत्ति स्त्री [**मुक्ति**] १ मोक्ष, निर्वाण; (आचा; पात्र; प्रासू १५५)। २ निर्लोभता, संतोष; (श्रा ३१)। ३ मुक्त जीवों का स्थान, ईषत्प्राग्भारा पृथिवी; (ठा ८—पत्र ४४०)। ४ निस्संगता; (आचा)।

मुत्ति वि [**मूत्रिन्**] बहु-मूत्र रोग वाला; "उयरिं च पास मुत्तिं च सूणियं च गिलासिणं" (आचा)।

मुत्ति वि [**मौक्तिन्, मौक्तिक**] मोती परोने वाला; (उप पृ २१०)।

मुत्तिअ न [**मौक्तिक**] मुक्ता, मोती; (से ५, ४६; कुप्र ३; कुमा; सुपा २४; २४६; प्रासू ३६; १७१)। देखो **मोत्तिअ**।

मुत्तोली स्त्री [**दे**] १ मूत्राशय; (तंदु ४१)। २ वह छोटा कोठा जो ऊपर नीचे संकीर्ण और मध्य में विशाल हो; (राज)।

मुत्थ त्रि [**मुस्त**] मोथा, नागरमोथा; (गउड)। स्त्री—°त्था; (संबोध ४४; कुमा)।

मुदग्ग देखो **मुअग्ग**; (ठा ७—पत्र ३८२)।

मुदा स्त्री [**मुद्**] हर्ष, खुशी। °गर वि [°कर] हर्ष-जनक; (सूअ १, ६, ६)।

मुदुग पुं [**दे**] ग्राह-विशेष, जल-जन्तु की एक जाति; (जीव १ टी—पत्र ३६)।

मुद्द सक [**मुद्रय्**] १ मोहर लगाना। २ बंद करना। ३ अंकन करना। मुद्देइ; (धम्म ११ टी)।

मुद्दंग पुं [**दे**] १ उत्सव; २ सम्मान (?); (से ४६३; ४६४)।

मुद्दग } पुं [**मुद्रिका**] अँगूठी; (उवा), "लद्धो भद्द !
मुद्दय } तुमे किं अह अंगुलिमुद्दओ एसो" (पउम ५३, २४)।

मुद्दा स्त्री [**मुद्रा**] १ मोहर, छाप; (सुपा ३२१; वज्जा १५६)। २ अँगूठी; (उवा)। ३ अंग-विन्यास-विशेष; (चैत्य १४)।

मुद्दिअ वि [**मुद्रित**] १ जिस पर मोहर लगाई गई हो वह; २ बंद किया हुआ; (णाया १, २—पत्र ८६; ठा ३, १—पत्र १२३; कप्पू; सुपा १४४; कुप्र ३१)।

मुद्दिअ° } स्त्री [**मुद्रिका**] अँगूठी; (पण्ह १, ४; कप्प;
मुद्दिआ } औप; तंदु २६)। °बंध पुं [°बन्ध] ग्रन्थि-बन्ध, बन्ध-विशेष, (ओघ ४०२; ४०५)।

मुद्दिआ स्त्री [**मृद्वीका**] १ द्राक्षा की लता, (पण्ण १—पत्र ३३)। २ द्राक्षा; (ठा ४, ३—पत्र २३६; उत्त ३४, १५; पव १५५)।

मुद्दी स्त्री [**दे**] चुम्बन; (दे ६, १३३)।

मुद्दुय देखो **मुदुग**; (पण्ण १—पत्र ४८)।

मुद्ध देखो **मुंढ**; (औप; कप्प; ओघभा १६; कुमा)। °न्न वि [°न्य] १ मस्तक में उत्पन्न; २ मस्तक-स्थ, अग्रेसर; ३ मूर्धस्थानीय रकार आदि वर्ण; (कुमा)। °य पुं [°ज] केश, बाल; (पण्ह १, ३—पत्र ५४)। °सूल न [°शूल] मस्तक-पीड़ा, रोग-विशेष; (णाया १, १३)।

मुद्ध वि [**मुग्ध**] १ मूढ, मोह-युक्त; २ सुन्दर, मनोहर, मोह-जनक; (हे २, ७७, प्राप्र; कुमा; विपा १, ७—पत्र ७७)।

मुद्धा स्त्री [**मुग्धा**] मुग्ध स्त्री, नायिका का एक भेद; (कुमा)।

मुद्धा (अप) देखो **मुहा**; (कुमा)।

मुद्धाण देखो **मुंढ**; (उवा; कप्प, पि ४०२)।

मुब्भ पुं [**दे**] घर के ऊपर का तिर्यक् काष्ठ, गुजराती में 'मोभ'; (दे ६, १३३)। देखो **मोब्भ**।

मुमुक्खु वि [**मुमुक्षु**] मुक्त होने की चाह वाला; (सम्मत्त १४०)।

मुम्मुइ } वि [**मूकमूक**] १ अत्यन्त मूक; २ अव्यक्त-
मुम्मुय } भाषी; (सूअ १, १२, ५; राज)।

मुम्मुर सक [**चूर्णय्**] चूरना, चूर्ण करना। मुम्मुरइ; (प्राकृ ७५)।

मुम्मुर पु [**दे**] करीष, गोइंठा; (दे ६, १४७)।

मुम्मुर पु [**दे. मुर्मुर**] १ करीषाग्नि, गोइंठा की आग; (दे ६, १४७; जी ६)। २ तुषाग्नि; (सुर ३, १८७)। ३ भस्म-च्छन्न अग्नि, भस्म-मिश्रित अग्नि-कण, (उप ६४८ टी; जी ६; जीव १)।

मुम्मुही स्त्री [**मुन्मुखी**] मनुष्य की दश दशाओं में नववीं दशा—८० से ९० वर्ष तक की अवस्था; (ठा १०—पत्र ५१९; तंदु १६)।

मुर अक [**लड्**] १ विलास करना। २ सक. उत्पीडन करना। ३ जीभ चलाना। ४ उपक्षेप करना। ५ व्याप्त करना। ६ बोलना। ७ फेंकना। मुरइ; (प्राकृ ७३)।

मुर अक [**स्फुट्**] खीलना। मुरइ; (हे ४, ११४; षड्)।

मुर पुं [**मुर**] दैत्य-विशेष। °**रिउ** पुं [°**रिपु**] श्रीकृष्ण; (ती ३)। °**वेरिय** पुं [°**वैरिन्**] वही अर्थ; (कुमा)। °**ारि** पुं [°**ारि**] वही अर्थ; (वज्जा १५४)।

मुरई स्त्री [**दे**] असती, कुलटा; (दे ६, १३५)।

मुरज } पुं [**मुरज**] मृदङ्ग, वाद्य-विशेष, (कप्प; पाअ; **मुरय** } गा २५३; सुपा ३९३; अंत; धर्मवि ११२; कुप्र २८८; औप; उप पृ २३६)। देखो **मुरव**।

मुरल पुं.व. [**मुरल**] एक भारतीय दक्षिण देश, केरल देश; "दिअर ण दिट्ठा तुए मुरला" (गा ८७६)।

मुरव देखो **मुरय**; (औप; उप पृ २३६)। २ अंग-विशेष, गल-घण्टिका; (औप)।

मुरवि स्त्री [**दे. मुरजिन्**] आभरण-विशेष; (औप)।

मुरिअ वि [**स्फुटित**] खीला हुआ; (कुमा)।

मुरिअ वि [**दे**] १ त्रुटित, टूटा हुआ; (दे ६, १३५)। २ मुड़ा हुआ; वक्र बना हुआ, (सुपा ५४७)।

मुरिअ पुं [**मौर्य**] १ एक प्रसिद्ध क्षत्रिय-वंश; (उप २११ टी)। २ मौर्य वंश में उत्पन्न; "रायगिहे मू(? मु)रिय-बलभद्दे" (विसे २३५७)।

मुरुंड पुं [**मुरुण्ड**] १ अनार्य देश-विशेष; (इक; पव २७४)। २ पादलिप्तसूरि के समय का एक राजा; (पिंड ४९४; ४९८)। ३ पुंस्त्री. मुरुण्ड देश का निवासी मनुष्य; (पण्ह १, १—पत्र १४), स्त्री—°**डी**; (इक)।

मुरुक्कि स्त्री [**दे**] पक्वान्न-विशेष; (सण)।

मुरुक्ख देखो **मुक्ख**=मूर्ख; (हे २, ११२, कुमा; सुपा ६११; प्राकृ ९७)।

मुरुमुंड पुं [**दे**] जूट, केशों की लट; (दे ६, ११७)।

मुरुमुरिअ न [**दे**] रणरणक, उत्सुकता; (दे ६, १३६; पाअ)।

मुरुह देखो **मुरुक्ख**; (षड्)।

मुलासिअ पुं [**दे**] स्फुलिंग, अग्नि-कण; (दे ६, १३५)।

मुल्ल (अप) देखो **मुंच**। मुल्लइ; (प्राकृ ११९)।

मुल्ल } पुंन [**मूल्य**] कीमत; "को मुल्लो" (वज्जा **मुल्लिअ** } १५३; औप; पाअ; कुमा; प्रयौ ७७)।

मुव (अप) देखो **मुअ**=मुच्। मुवइ; (भवि)।

मुव्वह देखो **उव्वह**=उद् + वह्। मुव्वहइ; (हे २, १७४)।

मुस सक [**मुष्**] चोरी करना। मुसइ; (हे ४, २३९; सार्ध ९२)। भवि—मुसिस्सइ; (धर्मवि ४)। कर्म—मुसिज्जामो; (वि ४५५)। वकृ—**मुसंत**; (महा)। कवकृ—**मुसिज्जंत, मुसिज्जमाण**, (सुपा ४५०; कुप्र २४७)। संकृ—**मुसिऊण**; (स ६९३)।

मुसंढि देखो **मुसुंढि**; (सम १३७, पण्ह १, १—पत्र ८; उत्त ३६, १००; पण्ण १—पत्र ३५)।

मुसण न [**मोषण**] चोरी; (सार्ध ९०; धर्मवि ५६)।

मुसल पुंन [**मुसल**] १ मूषल, एक प्रकार की मोटी लकड़ी जिससे चावल आदि अन्न कूटे जाते हैं; (औप; उवा; षड्; हे १, ११३)। २ मान-विशेष; (सम ९८)। °**धर** पुं [°**धर**] बलदेव; (कुमा)। °**ाउह** पुं [°**ायुध**] बलदेव; (पाअ)।

मुसल वि [**दे**] मांसल, पुष्ट, (षड्)।

मुसलि पु [**मुसलिन्**] बलदेव; (दे १, ११८; सण)।

मुसली देखो **मोसली**; (ओघभा १६१)।

मुसह न [**दे**] मन की आकुलता; (दे ६, १३४)।

मुसा अ. स्त्री [**मृषा**] मिथ्या, अनृत, झूठ, असत्य भाषण; (उवा; पड्, हे १, १३६; कस), "अयाणंता मुसं वए" (सुअ १, १, ३, ८; उव)। °**वाद** देखो °**वाय**; (सुअ १, ३, ४, ८)। °**वादि** वि [°**वादिन्**] झूठ बोलने वाला; (पण्ह १, २; आचा २, ४, १, ८)। °**वाय** पुं [°**वाद**] झूठ बोलना, असत्य भाषण; (सम १०; भग; कस)।

मुसाविअ वि [**मोषित**] चुरवाया हुआ, चोरी कराया हुआ; (ओघ २६० टी)।

मुसिय वि [**मुषित**] चुराया हुआ; (सुपा २२०)।

मुसुंढि पुस्त्री [**दे**] १ प्रहरण-विशेष, शस्त्र-विशेष; (औप)। २ वनस्पति-विशेष, (उत्त ३६, १००; सुख ३६, १००)।

मुसुमूर सक [**भञ्ज्**] भाँगना, तोड़ना। मुसुमूरइ, (हे ४, १०६)। हेकृ—"तेसिं च केसमवि **मुसमु[?सुमू]रिउ**-मसमत्थो" (सम्मत १२३)।

मुसुमूरण न [**भञ्जन**] तोड़ना, खण्डन; (सम्मत १८७)।

मुसुमूराविअ वि [**भञ्जित**] भँगाया हुआ; (सम्मत ३०)।

मुसुमूरिअ वि [भग्न] भाँगा हुआ; (पाअ; कुमा; सण) ।
मुह देखो **मुज्झ** । "इय मा मुहसु मणेणं" (जीवा १०) । संकृ—**मुहिअ**; (पिंग) । कवकृ—**मुहिज्जंत**; (से ११, १००) ।
मुह न [**मुख**] १ मुँह, वदन; (पाअ; हे ३, १३४; कुमा; प्रासू १६) । २ अग्र भाग; (सुज्ज ४) । ३ उपाय; (उत्त २५, १६; सुख २५, १६) । ४ द्वार, दरवाजा; ५ आरम्भ; ६ नाटक आदि का सन्धि-विशेष; ७ नाटक आदि का शब्द-विशेष; ८ आद्य, प्रथम, ९ प्रधान, मुख्य; १० शब्द, आवाज; ११ नाटक; १२ वेद-शास्त्र; (प्राप्र; हे १, १८७) । १३ प्रवेश; (निचू ११) । १४ पुं. वृक्ष-विशेष, वडहल का गाछ; (सुज्ज १०, ८) । °**णंतग**, °**णंतय** न [°**नन्तक**] मुख-वस्त्रिका; (ओघभा १५८; पव २) । °**तूरय** न [°**तूर्य**] मुँह से बजाया जाता वाद्य; (भग) । °**धोवणिया** स्त्री [°**धावनिका**] मुँह धोने की सामग्री, दतवन आदि; "मुहधोवणियं खिप्पं उवणमेहि" (उप ६४८ टी) । °**पत्ती** स्त्री [°**पत्री**] मुख-वस्त्रिका; (उवा; ओघ ६६६; द्र ५८) । °**पुत्तिया**, °**पोत्तिया**, °**पोत्ती** स्त्री [°**पोतिका**] मुख-वस्त्रिका, बोलते समय मुँह के आगे रखने का वस्त्र-खण्ड; (संबोध ५; विपा १, १; पव १२७) । °**फुल्ल** न [°**फुल्ल**] १ वडहल का फूल, २ चित्रा-नक्षत्र का संस्थान; (सुज्ज १०, ८) । °**भंडग** न [°**भाण्डक**] मुखाभरण; (औप) । °**मंगलिय**, °**मंगलीअ** वि [°**माङ्गलिक**] मुँह से पर-प्रशंसा करने वाला, खुशामदी; (कप्प; औप; सूअ १, ७, २५) । °**मक्कडा**, °**मक्कडिया** स्त्री [°**मर्कटा**, °**टिका**] गला पकड़ कर मुँह को मोड़ना, मुख-वक्रीकरण; (सुर १२, ६७; गाया १, ८—पत्र १४४)। °**वंत** वि [°**वत्**] मुँह वाला; (भवि) । °**वड** पु [°**पट**] मुँह के आगे रखने का वस्त्र; (से २, २२; १३, ५६) । °**वडण** न [°**पतन**] मुँह से गिरना; (दे ६, १३६) । °**वण्ण** पुं [°**वर्ण**] प्रशंसा, खुशामद; (निचू ११) । °**वास** पुं [°**वास**] भोजन के अनन्तर खाया जाता पान, चूर्ण आदि मुँह को सुगन्धी बनाने वाला पदार्थ; (उवा ४२, उर ८, ५) । °**वीणिया** स्त्री [°**वीणिका**] मुँह से विकृत शब्द करना, मुँह से वाद्य का शब्द करना; (निचू ५) ।
मुहड देखो **मुहल** । °**सय** न [°**शय**] एक नगर; (ती १५) ।
मुहत्थडी स्त्री [**दे**] मुँह से गिरना; (दे ६, १३६) ।
मुहर देखो **मुहल**=मुखर; (सुपा २२८) ।
मुहरिय वि [**मुखरित**] वाचाल बना हुआ, आवाज करता; (सुर ३, ५४) ।
मुहरोमराइ स्त्री [**दे**] भ्रू, भौं, (दे ६, १३६; षड्; १७३) ।
मुहल न [**दे**] मुख, मुँह; (दे ६, १३४; पड्) ।
मुहल वि [**मुखर**] १ वाचाट, बकवादी; (गा ५७८; सुर ३, १८; सुपा ४) । २ पुं. काक, कौआ; ३ शंख; (हे १, २५४; प्राप्र) । °**रव** पुं [°**रव**] तुमुल, कोलाहल; (पाअ) ।
मुहा अ. स्त्री [**मुधा**] व्यर्थ, निरर्थक; (पाअ; सुर ३, १; धर्मसं ११३२; श्रा २८; प्रासू ६), "मुहाइ हारिति अप्पाणं" (संबोध ४६) । °**जीवि** वि [°**जीविन्**] भिक्षा पर निर्वाह करने वाला; (उत्त २५, २८) ।
मुहिअ न [**दे**] मुफत, विना मूल्य, मुफत में करना; (दे ६, १३४) ।
मुहिआ स्त्री [**दे. मुधिका**] ऊपर देखो, (दे ६, १३४; कुमा; पाअ), "ते सव्वेवि हु कुमरस्स तस्स मुहिआइ सेवगा जाया" (सिरि ४५७), "जिणसासणंपि कहमवि लद्धुं हारसि मुहियाए" (सुपा १२४), "मुह(? हि)याइ गिण्ह लक्खं" (कुप्र २३७) ।
मुहु, **मुहुं** अ [**मुहुस्**] वार वार; (प्रासू २६; हे ४, ४४४; पि १८१) ।
मुहुत्त, **मुहुत्ताग** पुंन [**मुहूर्त**] दो घड़ी का काल, अटचालीस मिनिट का समय; (ठा २, ४; हे २, ३०; औप; भग; कप्प; प्रासू १०५; इक; स्वप्न ६४; आचा; ओघ ५२१)।
मुहुमुह देखो **महुमुह**; (पाअ) ।
मुहुल देखो **मुहल**=मुखर; (पाअ) ।
मुहुल्ल देखो **मुह**=मुख; (हे २, १६४; पड्; भवि) ।
मूअ देखो **मुक**=मूक; (हे २, ६६; आचा; गउड; विपा १, १) ।
मूअ देखो **मुअ**=मृत; "लज्जाइ कह ण मूओ सेवंतो गामवाहलियं" (वज्जा ५४) ।
मूअल, **मूअल्ल** वि [**दे. मूक**] मूक, वाक्-शक्ति से हीन; (दे ६, १३७; सुर ११, १५४) ।
मूअल्लइअ, **मूअल्लिअ** वि [**दे. मूकायित**] मूक बना हुआ; (से ५, ४१; गउड; पि ५९५) ।

मूइंगलिया } देखो **मुइंगलिया**; (उप १३४ टी; ओघ
मूइंगा } ४३८)।
मूइल्लअ वि [मूत] मरा हुआ;
"एषिंह वारेइ जणो तइआ मूइल्लओ, कहिं व गओ।
जाहे विसं व जाअं सव्वंगपहोलिरं पेम्मं" (गा ६६६ अ)।
मूड } पुं [दे] अन्न का एक दीर्घ परिमाण, "इगमूडलक्ख-
मूढ } नमहियमवि धन्नं अत्थि तायगिहे" (सुपा ४२७),
"तो तेहिं नाडिओ सो गाडं कणगमूडउव्व लउडेहिं" (धर्मवि
१४०)।
मूढ वि [मूढ] मूर्ख, मुग्ध; (प्राप्र; कम; पउम १, २८;
महा; प्रासू २६)। °**नइय** न [°नयिक] श्रुत-विशेष;
शास्त्र-विशेष; (आवम)। °**विसूइया** स्त्री [°विसू-
चिका] रोग-विशेष, (सुपा १३)।
मूण न [मौन] चुप्पी; (स ४७७; पण्ह २, ४—पत्र
१३१)।
मूयग पुं [दे. मूयक] मेवाड देश में प्रसिद्ध एक प्रकार का
तृण; (पण्ह २, ३—पत्र १२३)।
मूर सक [भञ्ज्] भाँगना, तोड़ना। रइ; (हे ४, १०६)।
भूका—मूरीअ; (कुमा)।
मूरग वि [भञ्जक] भाँगने वाला, चूरने वाला; (पण्ह १,
४—पत्र ७२)।
मूल न [मूल] १ जड़; (ठा ६; गउड; कुमा, गा २३२)।
२ निबन्धन, कारण; (पण्ह १, ३—पत्र ४२)। ३ आदि,
आरम्भ; (पण्ह २, ४)। ४ आद्य कारण; (आचानि १,
२, १—गाथा १७३; १७४)। ५ समीप, पास, निकट;
(ओघ ३८४; सुर १०, ६)। ६ नक्षत्र-विशेष; (सुर १०,
२२३)। ७ व्रतों का पुनः स्थापन; (ओप; पंचा १६,
२१)। ८ पिप्पली-मूल; (आचानि १, २, १)। ९
वशीकरण आदि के लिए किया जाता ओषधि-प्रयोग; "असंत-
मूलं ससीकरणं" (प्रासू १४)। १० आद्य, प्रथम, पहला;
११ मुख्य; (संबोध ३; आवम; सुपा ३६४)। १२ मूलधन,
पुंजी; (उत्त ७, १४; १५)। १३ चरण, पैर। १४ सूरण, कन्द-
विशेष; १५ टीका आदि से व्याख्येय ग्रन्थ; (सम्मि २१)।
१६ प्रायश्चित्त-विशेष; (विसे १२४६)। १७ पुंन. कन्द-
विशेष, मूली; (अनु ६; धा २०)। °**च्छेज्ज** वि [°छेद्य]
मूल-नामक प्रायश्चित्त से नाश-योग्य; (विसे १२४६)।
°**दत्ता** स्त्री [°दत्ता] कृष्ण-पुत्र साम्ब की एक पत्नी;
(अंत १५)। °**देव** पुं [°देव] व्यक्ति-वाचक नाम;
(महा; सुपा ५२६)। °**देवी** स्त्री [°देवी] लिपि-
विशेष; (विसे ४६४ टी)। °**नायग** पुं [°नायक] मन्दिर
की अनेक प्रतिमाओं में मुख्य प्रतिमा; (संबोध ३)। °**प्पाडि**
वि [°उत्पाटिन्] मूल को उखाड़ने वाला; (संक्षि २१)।
°**बिंब** न [°बिम्ब] मुख्य प्रतिमा; (संबोध ३)। °**राय**
पुं [°राज] गुजरात का चौलुक्य-वंशीय एक प्रसिद्ध राजा;
(कुप्र ४)। °**वंत** वि [°वत्] मूल वाला; (ओप; णाया
१, १)। °**सिरि** स्त्री [°श्री] शाम्बकुमार की एक पत्नी;
(अंत १५)।
मूलग } न [मूलक] १ कन्द-विशेष, मूली, मुरई; (पण्ण
मूलय } १; जी १३)। २ शाक-विशेष; (पव १५४; कुमा)।
मूलिगा स्त्री [मूलिका] ओषधि-विशेष; (उप ६०३)।
मूलिय न [मौलिक] मूलधन, पुंजी; (उत्त ७, १६; २१)।
मूलिल्ल वि [मूल, मौलिक] प्रधान, मुख्य; "मूलिल्ल-
वाहणे" (सिरि ४२३)
मूलिल्ल वि [मूलवत्] मूलधन वाला, पुंजी वाला; "अत्थि
य देवदत्ताए गाढाणुरत्तो मूलिल्लो मित्तसेणो अयलनामा सत्थ-
वाहपुत्तो" (महा)।
मूली स्त्री [मूली] ओषधि-विशेष, वशीकरण आदि के कार्य
में लगती ओषधि; (महा)।
मूस देखो **मुस=मुष्**। मूसइ, (संक्षि ३६)।
मूसग } पु [मूषक, मूषिक] मूसा, चूहा; (उव; सुर १,
मूसय } १८; हे १, ८८; पड्; कुमा)।
मूसरि वि [दे] भग्न, भाँगा हुआ; (दे ६, १३७)।
मूसल वि [दे] उपचित; (दे ६, १३७)।
मूसल देखो **मुसल=मुसल**; (हे १, ११३; कुमा)।
मूसा देखो **मुसा**; (हे १. १३६)।
मूसा स्त्री [मूषा] मूस, धातु गालने का पात्र; (कप्प; आरा
१००; सुर १३. १८०)।
मूसा स्त्री [दे] लघु द्वार, छोटा दरवाजा; (दे ६, १३७)।
मूसाअ न [दे] ऊपर देखो; (दे ६, १३७)।
मूसिय देखो **मूसय**; (आचा)। °**रि** पुं [°रि] मा-
र्जार, बिल्ला; (आचा)।
मे अ [मे] १ मेरा; २ मुझको; (स्वप्न १५; ठा १)।
मेअ पुं [मेद] १ अनार्य देश-विशेष; (इक)। २ एक
अनार्य मनुष्य-जाति; (पण्ह १. १—पत्र १४)। ३
पुंगी, चाण्डाल, (सम्मत्त १७२); स्त्री —**मेई**; (सम्मत्त
१७२)।

मेअ वि [**मेय**] १ जानने योग्य, प्रमेय, पदार्थ, वस्तु; (उत्त १८, २३)। २ नापने योग्य; (पड्)। °**न्न** वि [°**ज्ञ**] पदार्थ-ज्ञाता; (उत्त १८, २३; सुख १८, २३)।

मेअ पुन [**मेदस्**] शरीर-स्थित धातु-विशेष, चर्बी; (तंदु ३८; णाया १, १२—पत्र १७३; गउड)।

मेअज्ज न [**दे**] धान्य, अन्न; (दे ६, १३८)।

मेअज्ज पुं [**मेदार्य**] मेदार्य गोत्र में उत्पन्न; (सूत्र २, ७, ५)।

मेअज्ज पुं [**मेतार्य**] १ भगवान् महावीर का दशवाँ गणधर; (सम १६)। २ एक जैन महर्षि; (उव, सुपा ४०६; विवे ४३)।

मेअय वि [**मेचक**] काला, कृष्ण-वर्ण; (गउड ३३६)।

मेअर वि [**दे**] अ-सहन, अ-सहिष्णु; (दे ६, १३८)।

मेअल पुं [**मेकल**] पर्वत-विशेष। °**कन्ना** स्त्री [°**कन्या**] नर्मदा नदी; (पाअ)।

मेअवाडय पुंन [**मेदपाटक**] एक भारतीय देश, मेवाड; "णाह दाहविअं सअलंपि मेअवाडयं हम्मीरवीरेहि" (हम्मीर २७)।

मेइणि°, **मेइणी** स्त्री [**मेदिनी**] १ पृथिवी, धरती; (सुपा ३२; कुमा; प्रासू ५२)। २ चाण्डालिन; (सुपा १६, सम्मत्त १७२)। °**नाह** पु [°**नाथ**] राजा; (उप पृ १८६; सुपा १०८)। °**पइ** पुं [°**पति**] १ राजा; २ चाण्डाल; "जो विवुहपणयचरणोवि गोत्तभेई न, मेइणिपईवि न हु मायंगो" (सुपा ३२)। °**सामि** पुं [°**स्वामिन्**] राजा; (उप ७२८ टी)।

मेइणीसर पु [**मेदिनीश्वर**] राजा; (उप ७२८ टी)।

मेंठ पुं [**दे**] हस्तिपक, महावत; (दे ६, १३८)। देखो **मिंठ**।

मेंठी स्त्री [**दे**] मेंढी, मेषी, गड़रिया; (दे ६, १३८)।

मेंढ पुस्त्री [**मेढ्र**] मेंढा, मेष, गाड़र, (ठा ४, २)। स्त्री—°**ढी**; (दे ६, १३८)। °**मुह** पुं [°**मुख**] १ एक अन्तर्द्वीप; २ अन्तर्द्वीप-विशेष में रहने वाली मनुष्य-जाति, (ठा ४, २—पत्र २२६; इक)। °**विसाणा** स्त्री [°**विषाणा**] वनस्पति-विशेष, मेढाशिंगी; (ठा ४, १—पत्र १८५)। देखो **मिंढ**।

मेखला देखो **मेहला**, (राज)।

मेघ देखो **मेह**; (कुमा; सुपा २०१)। °**मालिणी** स्त्री [°**मालिनी**] नन्दन वन के शिखर पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८—पत्र ४३७)। °**वई** स्त्री [°**वती**] एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८—पत्र ४३७)। °**वाहण** पुं [°**वाहन**] एक विद्याधर राज-कुमार; (पउम ५, ६५)।

मेघंकरा स्त्री [**मेघङ्करा**] एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८—पत्र ४३७)।

मेच्छ देखो **मिच्छ**=म्लेच्छ; (ओघ २४; औप; उप ७२८ टी; मुद्रा २६७)।

मेज्ज देखो **मेअ**=मेय; (पड्; णाया १, ८—पत्र १३२; श्रा १८)।

मेज्झ देखो **मिज्झ**; (महा ४, ११; ४०, ३४)।

मेट देखो **मिट**। प्रयो—मेटाव; (पिंग)।

मेडंभ पुं [**दे**] मृग-तन्तु; (दे ६, १३६)।

मेडय पुं [**दे**] मजला, तला, गुजराती में 'मेडो'; "तस्स य सयणट्ठाणं संचारिमकट्ठमेडयस्सुवरिं" (सुपा ३५१)।

मेड्ढ देखो **मेंढ**; (उप पृ २२४)।

मेढ पुं [**दे**] वणिक्-सहाय, वणिक् को मदद करने वाला; (दे ६, १३८)।

मेढक पुं [**दे**] काष्ठ-विशेष, काष्ठ का छोटा डंडा; (पण्ह १, १—पत्र ८)।

मेढि पु [**मेथि**] पशुबन्धन-काष्ठ; खले के बीच का काष्ठ जहाँ पशु को बाँध कर धान्य-मर्दन किया जाता है; (हे १, २१५; गच्छ १, ८, णाया १, १—पत्र ११)। २ आधार, आधार-स्तम्भ; "सयस्स वि य णं कुडुवस्स मेढी पमाणं आहारे आलंबणं चक्खू मेढीभूए" (उवा), "सुत्तत्थविऊ लक्खणजुत्तो गच्छस्स मेढिभूओ अ" (श्रा १; कुप्र २६६; संबोध २४)। °**भूअ** वि [°**भूत**] १ आधार-सदृश, आधार-भूत; (भग)। २ नाभि-भूत, मध्य में स्थित; (कुमा)।

मेणआ, **णक्का** स्त्री [**मेनका**] १ हिमालय की पत्नी; २ स्वर्ग की एक वेश्या; (अभि ४२; नाट—विक्र ४७; पिंग)।

मेत्त न [**मात्र**] १ साकल्य, संपूर्णता; २ अवधारण, "भोअणमेत्तं" (हे १, ८१)।

मेत्तल [**दे**] देखो **मित्तल**; (सुर १२, १५२)।

मेत्ती स्त्री [**मैत्री**] मित्रता, दोस्ती; (से १, ६; गा २७२; स ७१६, उव)।

मेधुणिया देखो **मेहुणिआ**; (निचू १)।

मेर (अप) वि [**मदीय**] मेरा; (प्राकृ १२०; भवि)।

मेरग पुं [**मेरक, मैरेयक**] १ तृतीय प्रतिवासुदेव राजा; (पउम ५, १५६)। २ मद्य-विशेष; (उवा; विपा १, २—पत्र २७)। ३ वनस्पति का त्वचा-रहित टुकड़ा; "उच्छु-मेरगं" (आचा २, १, ८, १०)।

मेरा स्त्री [**दे, मिरा**] मर्यादा; (दे ६, ११३; पाअ; कुप्र ३३५; अज्झ ६७; सण; हे १, ८७; कुमा; औप)।

मेरा स्त्री [**मेरा**] १ तृण-विशेष, मुन्ज की सलाई; (पण्ह २, ३—पत्र १२३)। २ दशवें चक्रवर्ती की माता; (सम १५२)।

मेरु पुं [**मेरु**] १ पर्वत-विशेष; (उव; प्रासू १५४)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)।

मेल सक [**मेलय्**] १ मिलाना। २ इकट्ठा करना। मेलइ, मेलंति; (भवि; पि ४८६)। संकृ—**मेलित्ता, मेलिय**; (पि ४८६; महा)।

मेल पुं [**मेल**] मेल, मिलाप, संगम, संयोग, मिलन; (सूअनि १५; दे ६, ५२; सार्ध १०६), "दिट्ठो पियमेलगो मए सु-विणे" (कुप्र २१०)।

मेलण न [**मेलन**] ऊपर देखो; (प्रासू ३५)।

मेलय पुं [**मेलक**] १ संबन्ध, संयोग; (कुमा)। २ मेला, जन-समूह का एकत्रित होना; (दे ७, ८६; लि ८६)।

मेलव सक [**मेलय्, मिश्रय्**] मिलाना, मिश्रण करना। मेल-वइ; (हे ४, २८)। भवि—मेलवेहिसि; (पि ५२२)। संकृ—**मेलवि** (अप); (हे ४, ४२६)।

मेलाइयव्व नीचे देखो।

मेलाय अक [**मिल्**] एकत्रित होना। "पडिनिक्खमित्ता एग-यओ मेलायंति" (भग)। सकृ—**मेलायित्ता**; (भग)। कृ—**मेलाइयव्व**; (ओघभा २२ टी)।

मेलाव देखो **मेलव**। मेलावइ; (भवि)।

मेलाव पुंन [**मेल**] १ मिलाप, संगम, मिलन; (सुपा ४६६), "निच्चं चिय मेलावं सुमग्गनिरयाणं अइदुलहं" (सट्टि १४३)।

मेलावग देखो **मेलय**; (आत्महि १६)।

मेलावड (अप) देखो **मेलय**; "मणवल्लहमेलावडउ पुन्निहिं लब्भइ एहु" (सिरि ७३)।

मेलावय देखो **मेलावग**; (सुपा ३६१; भवि)।

मेलाविअ वि [**मेलित**] मिलाया हुआ, इकट्ठा किया हुआ; (से १०, २८)।

मेलिअ वि [**मिलित**] मिला हुआ; (ठा ३, १ टी—पत्र ११६; महा; उव),

"एवं सुसीलवंतो असीलवंतेहिं मेलिओ संतो।
पावेइ गुणपरिहाणी मेलणदोसाणुसंगेणं" (प्रासू ३५)।

मेली स्त्री [**दे**] संहति, जन-समूह का एकत्रित होना, मेला; (दे ६, १३८)।

मेलीण देखो **मिलीण**; (पउम २, ६), "अण्णोण्णकडक्खंतरपेसिअमेलीणदिट्ठिपसराइं" (गा ६६६; ७०२ अ)।

मेल्ल देखो **मिल्ल**। मेल्लइ; (हे ४, ६१), मेल्लेमि; (कुप्र १६)। वकृ—**मेल्लंत**; (महा)। संकृ—**मेल्लवि, मेल्लेप्पिणु** (अप); (हे ४, ३५३; पि ५८८)। कृ—**मेल्लियव्व**; (उप ५५५)।

मेल्लण न [**मोचन**] छोड़ना, परित्याग; (प्रासू १०२)।

मेल्लाविय वि [**मोचित**] छुड़वाया हुआ; (सुर ८, ६८; महा)।

मेव देखो **एव**; (पि ३३६)।

मेवाड, **मेवाढ** } देखो **मेअवाडय**; (ती १५; मोह ८८)।

मेस पुं [**मेष**] १ मेंढा, गाड़र; (सुर ३, ५३)। २ राशि-विशेष; (विचार १०६; सुर ३, ५३)।

मेह पुं [**मेघ**] १ अभ्र, जलधर; (औप)। २ कालागुरु, सुगंधी धूप-द्रव्य विशेष; (से ६, ४६)। ३ भगवान् सुमति-नाथ का पिता; (सम १५०)। ४ एक जैन महर्षि; (अंत १८)। ५ राजा श्रेणिक का एक पुत्र; (णाया १, १—पत्र ३७)। ६ एक देव-विमान; (देवेन्द्र १३२)। ७ छन्द-विशेष; (पिंग)। ८ एक वणिक्-पुत्र; (सुपा ६१७)। ९ एक जैन मुनि; (कप्प)। १० देव-विशेष; (राज)। ११ मुस्तक, ओषधि-विशेष, मोथा; १२ एक राक्षस; १३ राग-विशेष; (प्राप्र; हे १, १८७)। १४ एक विद्याधर-नगर; (इक)। °**कुमार** पुं [°**कुमार**] राजा श्रेणिक का एक पुत्र; (णाया १, १; उव)। °**ज्झाण** पुं [°**ध्यान**] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६६)। °**णाअ** पुं [°**नाद**] रावण का एक पुत्र; (से १३, ६८)। °**पुर** न [°**पुर**] वैताढ्य पर्वत के दक्षिण श्रेणी का एक नगर; (पउम ६, २)। °**मुह** पुं [°**मुख**] १ देव-विशेष; (राज)। २ एक अन्तर्द्वीप; ३ अन्तर्द्वीप-विशेष का निवासी मनुष्य; (ठा ४, २—पत्र २२६; इक)। °**रव** न [°**रव**] विन्ध्यस्थली का एक जैन तीर्थ; (पउम ७७, ६१)। °**वाहण** पुं [°**वाहन**] १ राक्षस-वंश का आदि पुरुष, जो लंका का राजा था;

(पउम ५, २५१)। २ रावण का एक पुत्र; (पउम ८, ६४)। °सीह पुं [°सिंह] विद्याधर-वंश का एक राजा; (पउम ५, ४३)। देखो **मेघ**।

मेह पुं [**मेह**] १ सेचन; (सूत्र १, ४, २, १२)। २ रोग-विशेष, प्रमेह; (श्रा २०; सुख १, १५)।

मेहंकरा देखो **मेघंकरा**; (इक)।

मेहच्छीर न [**दे**] जल, पानी; (दे ६, १३६)।

मेहण न [**मेहन**] १ झरन, टपकना; २ प्रस्रवण, मूत्र; "महु-मेहणं" (आचा १, ६, १, २)। ३ पुरुष-लिंग; (राज)।

मेहणि वि [**मेहनिन्**] झरने वाला; (आचा)।

मेहर पुं [**दे**] ग्राम-प्रवर, गाँव का मुखिया; (दे ६, १२१; सुर १५, १६८)।

मेहरि पुंस्त्री [**दे**] काष्ठ-कीट, घुण; (जी १५)।

मेहरिया } स्त्री [**दे**] गाने वाली स्त्री; (सुपा ३६४)।
मेहरी }

मेहलय पुं. व. [**मेखलक**] देश-विशेष; (पउम ६८, ६६)।

मेहला स्त्री [**मेखला**] काञ्ची, करधनी; (पात्र; पण्ह १, ४; औप; गा ४६३)।

मेहलिज्जिया स्त्री [**मेखलिया**] एक जैन मुनि-शाखा; (कप्प)।

मेहा स्त्री [**मेघा**] एक इन्द्राणी, चमरेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ५, १—पत्र ३०२; इक)।

मेहा स्त्री [**मेधा**] बुद्धि, मनीषा, प्रज्ञा; (सम १२५; से १, १६; हास्य १२५)। °**अर** वि [°**कर**] १ बुद्धि-वर्धक; २ पुं. छन्द-विशेष; (पिंग)।

मेहावई देखो **मेघ-वई**; (इक)।

मेहावण्ण न [**मेघावर्ण**] एक विद्याधर-नगर; (इक)।

मेहावि वि [**मेधाविन्**] बुद्धिमान्, प्राज्ञ; (ठा ५, ३; गाया १, १; आचा, कप्प; औप, उप १४२ टी; कुप्र १४०; धर्मवि ६८)। स्त्री—°**णी**; (नाट—शकु ११६)।

मेहि देखो **मेढि**; (से ६, ४२)।

मेहि वि [**मेहिन्**] प्रस्रवण करने वाला; "महुमेहिणं" (आचा)।

मेहिय न [**मेधिक**] एक जैन मुनि-कुल; (कप्प)।

मेहिल पुं [**मेधिल**] भगवान् पार्श्वनाथ के वंश का एक जैन मुनि; (भग)।

मेहुण } न [**मैथुन**] रति-क्रिया, संभोग; (सम १०;
मेहुणय } पण्ह १, ४; उवा, औप; प्रासू १७६; महा)।

मेहुणय पुं [**दे**] फूफा का लड़का; (दे ६, १४८)।

मेहुणिअ पुं [**दे**] मामा का लडका, (वृह ४)।

मेहुणिआ स्त्री [**दे**] १ साली, भार्या की वहिन; (दे ६, १४८)। २ मामा की लड़की; (दे ६, १४८; वृह ४)।

मेहुन्न देखो **मेहुण**; "हिंसालियचोरिक्के मेहुन्नपरिग्गहे य निसिभत्ते" (ओघ ७८७)।

मो अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय,—१ अवधारण, निश्चय; (सूअनि ८६; श्रावक १२५)। २ पाद-पूर्ति, (पउम १०२, ८६, धर्मसं ६४५; श्रावक ६०)।

मोअ सक [**मुच्**] छोड़ना, त्यागना। मोअइ; (प्राकृ ७०; ११६)। वकृ—**मोअंत**; (से ८, ६१)।

मोअ सक [**मोचय्**] छुडवाना, त्याग कराना। मोअअदि (शौ); (नाट—मालवि ४१)। कवकृ—**मोइज्जंत**; (गा ६७२)।

मोअ पुं [**मोद**] हर्ष, खुशी; (रयण १५; महा; भवि)।

मोअ वि [**दे**] १ अधिगत; २ पुं. चिर्भट आदि का बीज-कोश; (दे ६, १४८)। ३ मूत्र, पेशाव; (सूत्र १, ४, २, १२; पिंड ४६८; कस; पभा १५)। °**पडिमा** स्त्री [°**प्रतिमा**] प्रस्रवण-विषयक नियम-विशेष; (ठा ४, २—पत्र ६४; औप; वव ६)।

मोअइ पुं [**मोचकि**] वृक्ष-विशेष; "सल्लइमोयइमालुयवउल-पलासे करंजे य" (पण्ण १—पत्र ३१)।

मोअग वि [**मोचक**] मुक्त करने वाला; (सम १; पडि; सुपा २३४)।

मोअग पुं [**मोदक**] लड्डू, मिष्टान्न-विशेष; (अंत ६; सुपा ४०६)। देखो **मोदअ**।

मोअण न [**मोचन**] नीचे देखो; (स ५७५; गउड)।

मोअणा स्त्री [**मोचना**] १ परित्याग; (श्रावक ११५)। २ मुक्ति, छुटकारा; (सूअ १, १४, १८)। ३ छुडवाना, मुक्त कराना; (उप ५१०)।

मोअय देखो **मोअग**; (भग; पउम ११५, ६; सुपा ४०६; नाट—विक्र २१)।

मोआ स्त्री [**मोचा**] कदली वृक्ष, केला का गाछ; (राज)।

मोआव सक [**मोचय्**] छुडवाना। मोआवेमि, मोआवेहि; (नाट—शकु २५; मृच्छ ३१६)। भवि—मोआवइस्ससि;

(पि ५३८)। कर्म—मोयाविज्जइ; (कुप्र २६१)। वकृ—**मोयावंत**; (सुपा १८६)।

मोआवण न [**मोचन**] छुटकारा कराना, (सिरि ६१८, स ४७)।

मोआविअ } वि [**मोचित**] छुडवाया हुआ; (पि ५५२; **मोइअ** } नाट—मृच्छ ८६; सुर १०, ६; सुपा ४७७; महा; सुर २, ३६; ६, ७८; सुपा २३२; भवि)।

मोइल पुं [**दे**] मत्स्य-विशेष, (नाट)।

मोंड देखो **मुंड**=मुण्ड; (हे १,११६; २०२)।

मोकल्ल सक [**दे**] भेजना; गुजराती में 'मोकलवुं', मराठी में 'मोकलणें'। मोकल्लइ; (भवि)।

मोक्क देखो **मुक्क**=मुक्त; (पड्)।

मोक्कणिआ } स्त्री [**दे**] कृष्ण कर्णिका, कमल का काला **मोक्कणी** } मध्य भाग; (दे ६, १४०)।

मोक्कल देखो **मोकल्ल**; । "नियपियरं भणसु तुमं मोक्कलइ जेण सिग्घंपि" (सुपा ६१२)।

मोक्कल देखो **मुक्कल**; (सुपा ५८०; हे ४, ३६६)।

मोक्कलिय वि [**दे**] १ प्रेषित, भेजा हुआ; (सुपा ५२१)। २ विसृष्ट; (सुपा १४०)।

मोक्ख देखो **मुक्ख**=मोक्ष; (औप; कुमा; हे २, १७६; उप २६४ टी; भग; वसु)।

मोक्ख देखो **मुक्ख**=मूर्ख; (उप ५५५)।

मोक्ख न [**दे**] वनस्पति-विशेष; (सूअ २, २, ७)।

मोक्खण न [**मोक्षण**] मुक्ति, छुटकारा; (स ४१८; सुर २, १७)।

मोग्गड पुं [**दे**] व्यन्तर-विशेष; (सुपा ४०८)। देखो **मुग्गड**।

मोग्गर पुं [**दे**] मुकुल, कलिका, बौर; (दे ६, १३६)।

मोग्गर पुं [**मुद्गर**] मुगरा, मोगरी; २ कमरख का पेड़; (हे १, ११६; २, ७७)। ३ पुष्पवृक्ष-विशेष, मोगरा का गाछ; (पण्ण १—पत्र ३२)। ४ देखो **मुग्गर**। °**पाणि** पुं [°**पाणि**] एक जैन महर्षि; (अंत १८)

मोग्गरिअ वि [**दे**] सकुचित, मुकुलित; (दे ६, १३६ टी)।

मोग्गलायण } न [**मौद्गलायन, °ल्या°**] १ गोत्र-**मोग्गल्लायण** } विशेष; (इक; ठा ७; सुज्ज १०, १६)। २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न; (ठा ७—पत्र ३९०)।

मोग्गाह देखो **मुग्गाह**। मोग्गाहइ (?); (धात्वा १४६)।

मोघ देखो **मोह**=मोघ; "मोघमणोरहा" (पण्ह १, ३—पत्र ५५)।

मोच देखो **मोअ**=मोचय्। संकृ—**मोचिअ**; (अभि ४७)।

मोच न [**दे**] अर्धजंघी, एक प्रकार का जूता; (दे ६, १३६)।

मोच देखो **मोअ**=(दे); (सूअ १, ४, २, १२)।

मोचग देखो **मोअग**=मोचक; (वसु)।

मोट्टाय अक [**रम्**] क्रीड़ा करना। मोट्टायइ; (हे ४, १६८)।

मोट्टाइअ न [**रत**] रति-क्रीड़ा, रत, मैथुन; (कुमा)।

मोट्टाइअ न [**मोट्टायित**] चेष्टा-विशेष, प्रिय-कथा आदि में भावना से उत्पन्न चेष्टा; (कुमा)।

मोट्टिम न [**दे**] बलात्कार; (पि २३७)। देखो **मुट्टिम**।

मोड सक [**मोटय्**] १ मोड़ना, टेढ़ा करना। २ भाँगना। मोडसि; (सुर ७, ६)। वकृ—**मोडंत, मोडिंत, मोडयंत**; (भवि; महा; स २५७)। कवकृ—**मोडिज्जमाण**; उप पृ ३४)। संकृ—**मोडेउं**; (सुपा १३८)।

मोड पुं [**दे**] जूट, लट; (दे ६, ११७)।

मोडग वि [**मोटक**] मोड़ने वाला; (पण्ह १, ४—पत्र ७२)।

मोडण न [**मोटन**] मोड़न, मोड़ना; (वज्जा ३८)।

मोडणा स्त्री [**मोटना**] ऊपर देखो, (पण्ह १, ३—पत्र ५३)।

मोडिअ वि [**मोटित**] १ भग्न, भाँगा हुआ; (गा ५४६; णाया १, ६—पत्र १५७; पण्ह १, ३—पत्र ५३)। २ आम्रेडित, मोड़ा हुआ; (विपा १, ६—पत्र ६८; स ३३५)।

मोढ पुं [**मोढ**] एक वणिक्-कुल; (कुप्र २०)।

मोढेरय न [**मोढेरक**] नगर-विशेष; (दे ६, १०२; ती ७)।

मोण न [**मौन**] मुनिपन; वाणी का संयम; चुप्पी; (औप; सुपा २३७; महा)। °**चर** वि [°**चर**] मौन व्रत वाला, वाणी का संयम वाला, वाचंयम; (ठा ५, १—पत्र २६६; पण्ह २, १—पत्र १००)। °**पय** न [°**पद**] संयम, चारित्र; (सूअ १, १३, ६)।

मोणावणा स्त्री [**दे**] प्रथम प्रसूति के समय पिता की ओर से किया जाता उत्सव-पूर्वक निमन्त्रण; (उप ७६८ टी)।

मोणि वि [**मौनिन्**] मौन वाला; (उव; सुपा १४; संबोध २१)।

मोत्त देखो **मुत्त**=मुक्त; (धर्मसं ७५)।

मोत्तव्व देखो **मुंच**।
मोत्ता देखो **मुत्ता**; (से ७, २५; संक्षि ४; प्राकृ ६; षड् ८०)।
मोत्ति देखो **मुत्ति**=मुक्ति, (पण्ह १, ५—पत्र ६४)।
मोत्तिअ देखो **मुत्तिअ**; (गा ३१०; स्वप्न ६३, औप, सुपा २३१; महा; गउड)। °**दाम** न [°**दाम**] छन्द-विशेष; (पिंग)।
मोत्तुआण
मोत्तुं
मोत्तूण } देखो **मुंच**=मुच्।
मोत्थ देखो **मुत्थ**; (जी ६; संक्षि ४; पि १२५; प्रामा)।
मोदअ देखो **मोअग**=मोदक; (स्वप्न ६०.)। २ न. छन्द-विशेष, (पिंग)।
मोब्भ [**दे**] देखो **मुब्भ**; (दे ८, ४)।
मोर पुं [**दे**] श्वपच, चाण्डाल; (दे ६, १४०)।
मोर पुं [**मोर**] १ पक्षि-विशेष, मयूर; (हे १, १७१; कुमा)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**बंध** पुं [°**बन्ध**] एक प्रकार का बन्धन; (सुपा ३४५)। °**सिहा** स्त्री [°**शिखा**] एक महौषधि; (ती ५)।
मोरउल्ला अ. मुधा, व्यर्थ; (हे २, २१४; कुमा)।
मोरंड पुं [**दे**] तिल आदि का मोदक, खाद्य-विशेष; (राज)।
मोरग वि [**मयूरक**] मयूर के पिच्छों से निष्पन्न; (आचा २, २, ३, १८)।
मोरत्तय पुं [**दे**] श्वपच, चाण्डाल; (दे ६, १४०)।
मोरिय पुं [**मौर्य**] १ एक क्षत्रिय-वंश; २ मौर्य वंश में उत्पन्न; (पि १३४)। °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] भगवान् महावीर का एक गणधर—प्रधान शिष्य; (सम १९)।
मोरी स्त्री [**मोरी**] १ मयूर पक्षी की मादा; (पि १६६; नाट —मृच्छ १८)। २ विद्या-विशेष; (सुपा ४०१)।
मोलग पुं [**दे. मौलक**] बाँधने के लिए गाड़ा हुआ खूँटा; (उव)।
मोलि देखो **मउलि**; (काल; सम १९)।
मोल्ल देखो **मुल्ल**; (हे १, १२४; उव; उप पृ १०४; णाया १, १—पत्र ६०; भग)।
मोस पुं [**मोष**] १ चोरी; २ चोरी का माल, "राया जंपइ मोसं एसिं अप्पसु" (सुपा २२१; महा)।
मोस पुंन [**मृषा**] झूठ, असत्य भाषण; "चउव्विहे मोसे पण्णत्ते", "दसवि मोसे पण्णत्ते" (ठा ४, १; १०; औप; कप्प)।
मोसण वि [**मोषण**] चोरी करने वाला; (कुप्र ४७)।
मोसलि
मोसली } स्त्री [**दे. मुशली, मौशली**] वस्त्रादि-निरीक्षण का एक दोष, वस्त्र आदि की प्रतिलेखना करते समय मुशल की तरह ऊँचे या नीचे भीत आदि का स्पर्श करना, प्रतिलेखना का एक दोष; "वज्जेयव्वा य मोसली तइया" (उत्त २६, २६; २५, अ घ २६५; २६६)।
मोसा देखो **मुसा**; (उवा; हे १, १३६)।
मोह सक [**मोहय्**] १ भ्रम में डालना। २ मुग्ध करना। मोहइ; (भवि)। वकृ—**मोहंत, मोहेंत**; (पउम ४, ८६; ११, ६६)। कृ—देखो **मोहणिज्ज**।
मोह देखो **मऊह**; (हे १, १७१; कुमा; कुप्र ४३७)।
मोह वि [**मोघ**] १ निष्फल, निरर्थक; (से १०, ७०; गा ४८२), "मोहाइ पत्थणाए सो पुण सोएइ अप्पाणं" (अज्झ १७५; आत्म १); क्रिवि. "मोह कओ पयासो" (चेइय ७५०)। २ असत्य, मिथ्या; "मिच्छा मोहं विहलं अलिअं असच्चं असब्भूअं" (पाअ)।
मोह पु [**मोह**] १ मूढता, अज्ञता, अज्ञान; (आचा; कुमा, पण्ह १, १)। २ विपरीत ज्ञान; (कुमा २, ५३)। ३ चित्त की व्याकुलता, (कुमा ५, ५)। ४ राग, प्रेम; ५ काम-क्रीडा, "मोहाउरा मणुस्सा तह कामदुहं सुहं विंति" (प्रासू २८; पण्ह १, ४)। ६ मूर्छा, बेहोशी; (स्वप्न ३१; स ६९६)। ७ कर्म-विशेष, मोहनीय कर्म, (कम्म ४, ६०; ६९)। ८ छन्द-विशेष; (पिंग)।
मोहण न [**मोहन**] १ मुग्ध करना; २ मन्त्र आदि से वश करना; (सुपा ५९९)। ३ मूर्च्छा, बेहोशी; (निसा ९)। ४ वशीकरण, मुग्ध करने वाला मन्त्रादि-कर्म; (सुपा ५९९)। ५ काम का एक बाण; ६ प्रेम, अनुराग; (कप्पू)। ७ मैथुन, रति-क्रिया; (स ७६०; णाया १, ८, जीव ३)। ८ वि. व्याकुल बनाने वाला; (स ५५७, ७४४)। ९ मोहक, मुग्ध करने वाला, "मोहणं पसूणंपि" (धर्मवि ६५; सुर ३, २९; कर्पूर २५)।
मोहणिज्ज वि [**मोहनीय**] १ मोह-जनक; २ न. कर्म-विशेष, मोह का कारण-भूत कर्म, (सम ६६; भग; अंत; औप)।
मोहणी स्त्री [**मोहनी**] एक महौषधि; (ती ५)।
मोहर न [**मौखर्य**] वाचाटता, बकवाद, (पण्ह २, ५—पत्र १४८; पुप्फ १८०)।

मोहर वि [**मौखर**] वाचाट, बकवादी; (ठा १०—पत्र ५१६)।
मोहरिअ वि [**मौखरिक**] ऊपर देखो; (ठा ६—पत्र ३७१; औप; सुपा ५२०)।
मोहरिअ न [**मौखर्य**] वाचालता, बकवाद, (उवा; सुपा ५१४)।
मोहि वि [**मोहिन्**] मुग्ध करने वाला; (भवि)।
मोहिणी स्त्री [**मोहिनी**] छन्द-विशेष; (पिंग)।
मोहिय वि [**मोहित**] १ मुग्ध किया हुआ, (पराह १, ४; द १४)। २ न. निधुवन, मैथुन, रति-क्रीडा; (णाया १, ६—पत्र १६५)।
मोहुत्तिय वि [**मौहूर्तिक**] ज्योतिष-शास्त्र का जानकार; (कुप्र ५)।
मौलिअ देखो **मोरिय**; "णिवेदेह दाव णंदकुलणगकुलिसस्स मौलिअकुलपडिट्ठावकस्स अज्जचाणक्कस्स" (मुद्रा ३०६)।
म्मि अ. पाद-पूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय; (पिंग)।
म्मिव देखो **इव**; (प्राकृ २६)।
म्हस देखो **भंस**=भ्रंश्। म्हसइ; (प्राकृ ७६)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि मयाराइसद्दसंकलणो एगतीसइमो तरंगो समत्तो।

——:०:——

य

य पुं [**य**] तालु-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष, अन्तस्थ यकार; (प्राप्र; प्रामा)।
य अ [**च**] १ हेतु-सूचक अव्यय; (धर्मसं ३८५)। २— देखो **च**=अ; (ठा ३, १; ८; पउम ६, ८४; १५, २; श्रा १२; आचा; रंभा; कम्म २,३३; ४, ६; १०; देवेन्द्र ११; प्रासू २७)।
°**य** देखो °**ज**; (आचा)।
°**य** वि [°**द**] देने वाला; (औप; राय; जीव ३)।
यउणा देखो **जँउणा**; (संक्षि ७)।
°**यंच** सक [**अञ्च्**] १ गमन करना। २ पूजा करना। संकृ— °**यंचिय**; (ठा ५, १—पत्र ३००)।
°**यंत** वि [**यत**] प्रयत्नशील, उद्योगी; "अ-यंते" (सुअ २, २, ६३)।
°**यंद** देखो **चंद**; (सुपा २२९)।
°**यक्क** देखो **चक्क**; "दिसा-यक्कं" (पउम ६, ७१)।
°**यड** देखो **तड**=तट; (गउड)।
°**यण** देखो **जण**=जन; (सुर १, १२१)।
यणद्दण (अप) देखो **जणद्दण**; "तो वि ण देउ यणद्दणउ गोअरीहोइ मणस्सु" (पि १४ टि)।
°**यण्ण** देखो **कण्ण**=कर्ण; (पउम ६९, २८)।
°**यत्तिअ** वि [**यात्रिक**] यात्रा करने वाला, भ्रमण करने वाला; "सगडसएहिं दिसायत्तिएहिं" (उवा; वृह १)।
यदावि अ [**यद्यपि**] अभ्युपगम-सूचक अव्यय, स्वीकार-द्योतक निपात; (पंचा १४, ३९)।
यन्नोवइय देखो **जण्णोवईय**; (उप ६४८ टी)।
यम देखो **जम**=यम; "दो अस्सा दो यमा" (ठा २, ३—पत्र ७७)।
°**यर** देखो **कर**=कर; (गउड)।
°**यल** देखो **तल**=तल; (उवा)।
या देखो **जा**=या; "सुरनारगा य सम्मद्दिट्ठी जं यंति सुरमणुएसु" (विसे ४३१; कुमा ८, ८)।
याण सक [**ज्ञा**] जानना। याणइ, याणाइ, याणेइ, याणंति, याणामो, याणिमो; (पि ५१०; उव; भग; धर्मवि १७; वै ९३; प्रासू १०२)।
याण देखो **जाण**=यान, (सम २)।
°**याल** देखो **काल**; (पउम ६, २४३)।
याव (अप) देखो **जाव**=यावत्; (कुमा)।
°**युत्त** देखो **जुत्त**=युक्त; "एयम् अयुत्तं जम्हा" (अज्झ १६७; रंभा)।
येव } (पै. मा) देखो **एव**; (पि ६०; ९५)।
येव्व }
यूचिश (मा) } देखो **चिट्ठ**=स्था। यूचिशदि (शाकारी
यूचिश्त (पै) } भाषा); (प्राकृ १०५)। यूचिश्तदि (पै); (प्राकृ १२६)।
य्येव (शौ) देखो **एव**; (हे ४, २८०)।
य्येव्व देखो **येव**; (पि ९५)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि यआराइसद्दसंकलणो बत्तीसइमो तरंगो समत्तो।

——:०:——

र

र पुं [**र**] मूर्ध-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष; (सिरि १९६; पिंग)। °**गण** पुं [°**गण**] छन्दःशास्त्र-प्रसिद्ध मध्य लघु अक्षर वाले तीन स्वरों का समुदाय, (पिंग)।

र अ. पाद-पूरक अव्यय; (हे २, २१७; कुमा)।

रइ स्त्री [**रति**] १ काम-क्रीड़ा, सुरत, मैथुन, (से १, ३२; कुमा)। २ कामदेव की स्त्री; (कुमा)। ३ प्रीति, प्रेम, अनुराग; (कुमा; सुपा ५११)। ४ कर्म-विशेष; (कम्म २, १०)। ५ भगवान् पद्मप्रभ की मुख्य शिष्या, (पव ८)। ६ पुं. भूतानन्द-नामक इन्द्र का एक सेनापति; (इक)। °**अर**, °**कर** वि [°**कर**] १ रति-जनक; (गा ३२६)। २ पुं. पर्वत-विशेष; (पण्ह १, ५; ठा १०; महा)। °**कीला** स्त्री [°**क्रीडा**] काम-क्रीडा; (महा)। °**केलि** स्त्री [°**केलि**] वही अर्थ; (काप्र २०१)। °**घर** न [°**गृह**] सुरत-मन्दिर, विलास-गृह; (पि ३६६ए)। °**णाह**, °**नाह** पुं [°**नाथ**] कामदेव; (कुमा; सुर ६, ३१)। °**पहु** पुं [°**प्रभु**] वही अर्थ; (कुमा)। °**प्पभा** स्त्री [°**प्रभा**] किन्नर-नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी; (इक; ठा ४, १—पत्र २०४)। °**प्पिय** पुं [°**प्रिय**] १ कामदेव; (सुपा ७५)। २ एक इन्द्र; ३ किन्नर देवों की एक जाति; (राज)। °**प्पिया** स्त्री [°**प्रिया**] वानव्यन्तरों के इन्द्र-विशेष की एक अग्र-महिषी; (णाया २—पत्र २५२)। °**भवण** न [°**भवन**] कामक्रीडा-गृह; (महा)। °**मंत** वि [°**मत्**] १ राग-जनक, २ पुं. कामदेव, कन्दर्प; (तंदु ४६)। °**मंदिर** न [°**मन्दिर**] शयन-गृह; (पाअ)। °**रमण** पुं [°**रमण**] कामदेव; (सुपा ४; २८६; कप्पू)। °**लंभ** पुं [°**लम्भ**] १ सुरत की प्राप्ति, २ कामदेव; (से ११, ८)। °**वइ** पु [°**पति**] कामदेव; (कुमा, सुपा २६२)। °**विद्धि** स्त्री [°**वृद्धि**] विद्या-विशेष; (पउम ७, १४४)। °**सुंदरी** स्त्री [°**सुन्दरी**] एक राज-कन्या; (उप ७२८ टी)। °**सूहव** पुं [°**सुभग**] कामदेव; (कुमा)। °**सेणा** स्त्री [°**सेना**] किन्नरेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (इक; ठा ४, १—पत्र २०४)। °**हर** न [°**गृह**] शयन-गृह, सुरत-मन्दिर; (उप ६४८ टी, महा)।

रइ पुं [**रवि**] सूर्य, सूरज, (गा ३४, से १, १४, ३२, कप्पू)।

रइअ वि [**रचित**] बनाया हुआ, निर्मित; (सुर ४, २४४; कुमा; ओप; कप्प)।

रइआव सक [**रचय्**] बनवाना। संकृ—**रइआविअ**; (ती ३)।

रइगेल्ल वि [**दे**] अभिलषित; (दे ७, ३)।

रइगेल्ली स्त्री [**दे**] रति-तृष्णा; (दे ७, ३)।

रइज्जंत देखो **रय**=रचय्।

रइलक्ख न [**दे**] जघन, नितम्ब, (दे ७, १३; षड्)।

रइलक्ख न [**दे. रतिलक्ष**] रति-संयोग, मैथुन; (दे ७, १३)।

रइल्लिय वि [**रजस्वल**] रज से युक्त, रज वाला; (पि ५९५)।

रइवाडिया देखो **राय-वाडिआ**; "सामिय रइवाडियासमओ" (सिरि १०६)।

रईसर पुं [**रतीश्वर**] कामदेव, कन्दर्प; (कुमा)।

रउताणिया स्त्री [**दे**] रोग-विशेष, पामा, खुजली; (सिरि ३०६)।

रउद्द देखो **रोद्द**=रौद्र; "रउद्दखुद्देहिं अखोहणिज्जो" (यति ४२; भवि)।

रउरव वि [**रौरव**] भयंकर, घोर। °**काल** पुं [°**काल**] माता के उदर में पसार किया जाता समय-विशेष; "नवमासहिं नियकुक्खहिं धरियउ पुणु रउरवकालहो नीसरियउ" (भवि)।

रओ° देखो **रय**=रजस्, (पिंड ६ टी; सण)।

रंक वि [**रङ्क**] गरीब, दीन; (पिंग)।

रंखोल अक [**दोलय्**] १ झूलना। २ हिलना, चलना, कॉपना। रंखोलइ; (हे ४, ४८; वज्जा ६४)।

रंखोलिय वि [**दोलित**] कम्पित; (गउड)।

रंखोलिर वि [**दोलितृ**] झूलने वाला; (गउड; कुमा; पाअ)।

रंग अक [**रङ्ग्**] इधर-उधर चलना। वकृ—**रंगंत**; (कप्प; पउम १०, ३१; पण्ह १, ३—पत्र ५५)।

रंग सक [**रङ्ग्य्**] रँगना। कर्म—रंगिज्जइ; (संबोध १७)। वकृ—"रायगिहं वरनयरं वर-नय-**रंगंत**-मंदिरं अत्थि" (कुम्मा १८)।

रंग न [**दे**] राँग, राँगा, धातु-विशेष, सीसा; (दे ७, १; से २, २६)।

रंग पु [**रङ्ग**] १ राग, प्रम; (सिरि ५१५)। २ नाट्यशाला, प्रेक्षा-भूमि; (पाअ, सुपा १, कुमा)। ३ युद्ध-मण्डप, जय-भूमि; (धर्मसं ७८३)। ४ संग्राम, लड़ाई; (पिंग)।

५ रक्त वर्ण, लाली; (से २, २६)। ६ वर्ण, रँग; (भवि)। ७ रँगना, रंजन, रँग चढाना; (गउड)। °अ वि [°द] कुतूहल-जनक; (से ६, ४२)।

रंगण न [**रङ्गन**] १ राग, रँगना; २ पुं. जीव, आत्मा; (भग २०, २—पत्र ७७६)।

रंगिर वि [**रङ्गितृ**] चलने वाला, (सुपा ३)।

रंगिल्ल वि [**रङ्गवत्**] रँग वाला; (उर ६, २)।

रंज सक [**रञ्जय्**] १ रँग लगाना। २ खुशी करना। रंजए, रंजेइ; (वज्जा १३६; हे ४, ४६)। कर्म—रंजिज्जइ; (महा)। वकृ—**रंजंत**, (संवे ३)। संकृ—**रंजिऊण**; (पि ५८६)। कृ—**रंजियव्व**; (आत्महि ६)।

रंजग वि [**रञ्जक**] रञ्जन करने वाला; (रंभा)।

रंजण न [**रञ्जन**] १ रँगना; (विसे २६६१)। २ खुशी करना, "परचित्तरंजणे" (उप ६८६ टी; संवे ५)। ३ पुं. छन्द-विशेष; (पिंग)। ४ वि. खुशी करने वाला, राग-जनक; (कुमा)।

रंजण पु [**दे**] १ घडा, कुम्भ; (दे ७, ३)। २ कुण्डा, पात्र-विशेष; (दे ७, ३; पाअ)।

रंजविय } **रंजिअ** } वि [**रञ्जित**] राग-युक्त किया हुआ; (सण; से ६, ४८; गउड; महा; हेका २७२)।

रंडा स्त्री [**रण्डा**] राँड, विधवा; (उप पृ ३१३; वज्जा ४४; कप्पू; पिंग)।

रंदुअ न [**दे**] रज्जु, रस्सी; गुजराती में 'राढवुं'; (दे ७, ३)।

रंध सक [**रध्, राधय्**] राँधना, पकाना। "रंधो राधयतेः स्मृतः" रंधइ; (प्राकृ ७०), रंधेहि; (स २४६)। वकृ—**रंधंत**; (णाया १, ७—पत्र ११७)। संकृ—**रंधिऊण**; (कुप्र २०५)।

रंध न [**रन्ध्र**] छिद्र, विवर; (गा ६५२, रंभा; भवि)।

रंधण न [**रन्धन, राधन**] राँधना, पचन, पाक; (गा १४, पव ३८; सूअनि १२१ टी; सुपा १२, ४०१)। °**घर** न [°**गृह**] पाक-गृह; (रयण ३१)।

रंप सक [**तक्ष्**] छिलना, पतला करना। रंपइ; (हे ४, १६४; प्राकृ ६५; षड्)।

रंपण न [**तक्षण**] तनू-करण, पतला करना, (कुमा)।

रंफ देखो **रंप**। रंफइ, रंफए; (हे ४, १६४; षड्)।

रंफण देखो **रंपण**; (कुमा)।

रंभ सक [**गम्**] जाना, गति करना। रंभइ; (हे ४, १६२), रंभंति; (कुमा)।

रंभ देखो **रंफ**। रंभइ; (धात्वा १४६)।

रंभ सक [**आ+रभ्**] आरम्भ करना। रंभइ; (षड्)।

रंभ पुं [**दे**] अन्दोलन-फलक, हिंडोले का तख्ता; (दे ७, १)।

रंभा स्त्री [**रम्भा**] १ कदली, केला का गाछ; (सुपा २५४; ६०५; कुप्र ११७; पाअ)। २ देवांगना-विशेष, एक अप्सरा; (सुपा २५४; रयण ५)। ३ वैरोचन-नामक बलीन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ५, १—पत्र ३०२; णाया २—पत्र २५१)। ४ रावण की एक पत्नी; (पउम ७४, ८)।

रक्ख सक [**रक्ष्**] रक्षण करना, पालन करना। रक्खइ; (उव; महा)। भूका—रक्खीअ; (कुमा)। वकृ—**रक्खंत**; (गा ३८; औप; मा ३७)। कवकृ—**रक्खीअमाण**; (नाट—मालती २८)। कृ—**रक्ख, रक्खणिज्ज, रक्खियव्व, रक्खेयव्व**; (से ३, ५; सार्ध १००; गउड; सुपा २४०)।

रक्ख पुंन [**रक्षस्**] राक्षस; (पाअ; कुप्र ११३; सुपा १२०; सहि ६ टी; संबोध ४४)।

रक्ख वि [**रक्ष**] १ रक्षक, रक्षा करने वाला; (उप पृ ३६८; कप्प)। २ पुं. एक जैन मुनि; (कप्प)।

रक्ख देखो **रक्ख=रक्ष्**।

रक्खअ } **रक्खग** } वि [**रक्षक**] रक्षण-कर्ता; (नाट—मालवि ५३; रंभा; कुप्र २३३; सार्ध ६६)।

रक्खण न [**रक्षण**] रक्षा, पालन; (सुर १३, १६७; गउड; प्रासु २३)।

रक्खणा स्त्री [**रक्षणा**] ऊपर देखो, (उप ८५०; स ६६)।

रक्खणिया स्त्री [**दे**] रखी हुई स्त्री, रखात; (सुपा ३८३)।

रक्खवाल वि [**दे**] रखवाला, रक्षा करने वाला; (महा)।

रक्खस पुं [**राक्षस**] १ देवों की एक जाति; (पण्ह १, ४—पत्र ६८)। २ विद्याधर-मनुष्यों का एक वंश; (पउम ५, २५२)। ३ वंश-विशेष में उत्पन्न मनुष्य, एक विद्याधर-जाति; "तेणं चिय खयराणं रक्खसनाम कयं लोए" (पउम ५, २५७)। ४ निशाचर, क्रव्याद; (से १५, १७; नाट—मृच्छ १३२)। ५ अहोरात्र का तीसवाँ मुहूर्त; (सम ५१; सुज्ज १०, १३)। °**उरी** स्त्री [°**पुरी**] लंका नगरी; (से १२, ८४)। °**णअरी** स्त्री [°**नगरी**] वही अर्थ; (से १२, ७८)। °**णाह** पुं [°**नाथ**] राक्षसों का राजा, (से ८, १०४)। °**त्थ** न [°**अस्त्र**] अस्त्र-विशेष; (पउम ७१, ६३)। °**दीव** पुं [°**द्वीप**] सिंहल

द्वीप; (पउम ५, १२६)। °नाह देखो °णाह; (पउम ६, ३६)। °वइ पुं [°पति] राक्षसों का मुखिया; (पउम ५, १२३; से ११, १)। °ाहिव पुं [°ाधिप] वही अर्थ; (से १५, ८७; ६१)।

रक्खसिंद पुं [राक्षसेन्द्र] राक्षसों का राजा; (पउम १२, ४)।

रक्खसी स्त्री [राक्षसी] १ राक्षस की स्त्री; (नाट —मृच्छ २३८)। २ लिपि-विशेष; (विसे ४६४ टी)।

रक्खसेंद देखो **रक्खसिंद**; (से १२, ७७)।

रक्खा स्त्री [रक्षा] १ रक्षण, पालन, (श्रा १०; सुपा १०३; ११३)। २ राख, भस्म; "सो चंदणं रक्खकए दहिज्जा" (सत्त २८; सुपा ६५७)।

रक्खिअ वि [रक्षित] १ पालित; (गउड; गा ३३३)। २ पुं. एक प्रसिद्ध जैन महर्षि; (कप्प; विसे २२८८)।

रक्खिआ देखो **रक्खसी**; (रंभा १७)।

रक्खी स्त्री [रक्षी] भगवान् अरनाथ की मुख्य साध्वी; (सम १५२, पव ८)।

रगिल्ल [दे] देखो **रइगेल्ल**, (षड्)।

रग्ग देखो **रत्त**=रक्त, (हे २, १०; ८६; षड्)।

रग्गय न [दे] कुसुम्भ-वस्त्र; (दे ७, ३; पाअ; गउड)।

रघुस पुं [रघुष] हरिवंश का एक राजा; (पउम २२, ६६)।

रच्च अक [दे. रञ्ज्] राचना, आसक्त होना, अनुराग करना। रचइ, रच्चंति, रच्चेह, (कुमा; वज्जा ११२)। कर्म—"रत्ते रचिज्जए जम्हा" (कुप्र १३२)। वकृ—**रच्चंत**; (भवि)। प्रयो—रच्चावति; (वज्जा ११२)।

रच्चण न [दे. रञ्जन] १ अनुराग; २ वि. अनुराग करने वाला, राचने वाला; (कुमा)।

रच्चिर वि [दे. रञ्जितृ] राचने वाला; (कुमा)।

रच्छा देखो **रक्खा**; (रंभा १६)।

रच्छा स्त्री [रथ्या] मुहल्ला; (गा ११६; औप; कस)।

रच्छामय पुं [दे. रथ्यामृग] श्वान, कुत्ता; (दे ७, ४)।

रज देखो **रय**=रजस्; (कुमा)।

रजक } पुंस्त्री [रजक] धोबी, कपड़ा धोने का धंधा करने
रजग } वाला; (श्रा १२; दे ५, ३२)। स्त्री—°की; (दे १, ११४)।

रजय देखो **रयय**=रजत; (इक)।

रज्ज अक [रञ्ज्] १ अनुराग करना, आसक्त होना। २ रँगाना, रँग-युक्त होना। रज्जइ, (आचा; उव), रज्जह; (गाया १, ८—पत्र १४८)। भवि—रज्जिहिति; (औप)। वकृ—**रज्जंत, रज्जमाण,** (से १०, २०; गाया १, १७; उत्त २६, ३)। कृ—**रज्जियव्व**; (पण्ह २, ५—पत्र १४६)।

रज्ज न [राज्य] १ राज, राजा का अधिकृत देश; २ शासन, हुकूमत; (गाया १, ८; कुमा, दं ४७; भग; प्रासू)। °पालिया स्त्री [°पालिका] एक जैन मुनि-शाखा; (कप्प)। °वइ पुं [°पति] राजा; (कप्प)। °सिरी स्त्री [°श्री] राज्य-लक्ष्मी; (महा)। °ाहिसेय पुं [°ाभिषेक] राज-गद्दी पर बैठाने का उत्सव; (पउम ७७, ३६)।

रज्जव पुंन. नीचे देखो; "खररज्जवेसु बद्धा" (पउम ३६, ११६)।

रज्जु स्त्री [रज्जु] १ रस्सी; (पाअ; उत्ता)। २ एक प्रकार का नाप; "चउदसरज्जू लोगो" (पत्र १४३)।

रज्जु वि [दे] लेखक, लिखने का काम करने वाला; (कप्प)। °सभा स्त्री [°सभा] १ लेखक-गृह; २ शुल्क-गृह, चूँगीघर; "हत्थिपालस्स रन्नो रज्जुसभाए" (कप्प)।

रज्झिअ देखो **रहिअ**=रहित; "अरज्झियाभितावा तहवी तविंति" (सूअ १, ५, १, १७)।

रट्ठ न [राष्ट्र] देश, जनपद; (सुपा ३०७; महा)। °उड, °कूड पुं [°कूट] राज-नियुक्त प्रतिनिधि, सूबा; (विपा १, १ टी—पत्र ११; विपा १, १—पत्र ११)।

रट्ठिअ वि [राष्ट्रिय] १ देश-संबन्धी। २ पुं. नाटक की भाषा में राजा का साला; (अभि १६४)।

रट्ठिअ पुं [राष्ट्रिक] देश की चिन्ता के लिए नियुक्त राज-प्रतिनिधि, सूबा; (पण्ह १, ५—पत्र ६४)।

रड अक [रट्] १ रोना। २ चिल्लाना। रडइ; (भवि)। वकृ—**रडंत**; (हे ४, ४४५; भवि)।

रडण न [रटन] चिल्लाहट, चीस; (पिंड २२५)।

रडिय न [रटित] १ रुदन, रोना; (पण्ह २, ५)। २ आवाज करना, शब्द-करण; "परहुयवहुय रडियं कुहूकुहूमहुर-सद्देण" (रंभा)। ३ चिल्लाना, चीस; (गाया १, १—पत्र ६३)। ४ वि. कलहायित, झगड़ाखोर; "कलहाइअं रडिअं" (पाअ)।

रडरडिय न [रटरटित] शब्द-विशेष, वाद्य-विशेष का आवाज; (सुपा ५०)।

रड्ड वि [**दे**] खिसक कर गिरा हुआ, गुजराती में 'रडेलु' (कुप्र ४५६)।

रड्डा स्त्री [**रड्डा**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

रण पुन [**रण**] १ संग्राम, लड़ाई, (कुमा; पाअ)। २ पुं शब्द, आवाज; (पाअ)। °**खंभउर** न [°**स्तम्भपुर**] अजमेर के समीप का एक प्राचीन नगर; "रणखंभउरजिणहरे चडाविया कणयमयकलसा" (मुणि १०६०१)।

रणक्कार पुं [**रणत्कार**] शब्द-विशेष; (गउड)।

रणझण अक [**रणझणाय्**] 'रन् झन्' आवाज करना। रणझणइ; (वज्जा १२८)। वकृ—**रणझणंत**; (भवि)।

रणझणिर वि [**रणझणायितृ**] 'रन् झन्' आवाज करने वाला; (सुपा ६४१; धर्मवि ८८)।

रणरण अक [**रणरणाय्**] 'रन् रन्' आवाज करना। वकृ—**रणरणंत**; (पिंग)।

रणरण, **रणरणय** पुं [**दे. रणरणक**] १ निःश्वास, नीसास; "अइउण्हा रणरणया दुप्पेच्छा दूसहा दुरालोया" (वज्जा ७८)। २ उद्वेग, पीडा, अ-धृति; "गरुयपियसंगमासाभंससमुच्छलियरणरणाइन्नं" (सुर ४, २३०; पाअ)। ३ उत्कण्ठा, औत्सुक्य; (दे १, १३६; गउड; रुक्मि ४८; संवे २)।

रणरणाय देखो **रणरण**=रणरणाय्। वकृ—**रणरणायंत**; (पउम ६४, ३६)।

रणिअ न [**रणित**] शब्द, आवाज; (सुर १, २४८)।

रणिर वि [**रणितृ**] आवाज करने वाला; (सुपा ३२७; गउड)।

रण्ण न [**अरण्य**] जंगल, अटवी; (हे १, ६६; प्राप्र; औप)।

रत्त पुं [**रक्त**] १ लाल वर्ण, लाल रँग; २ कुसुम्भ, ३ वृक्ष-विशेष, हिज्जल का पेड़, (हे २, १०)। ४ न. कुंकुम; ५ ताम्र, ताँबा; ६ सिंदूर; ७ हिंगुल; ८ खून, रुधिर; ९ राग, (प्राप्र)। १० वि रँगा हुआ; (हेका २७२)। ११ लाल रँग वाला; (पाअ)। १२ अनुराग-युक्त; (ओघ ७५७; प्रासू १५५; १६०)। °**कंबला** स्त्री [°**कम्बला**] मेरु पर्वत के पण्डक वन में स्थित एक शिला, जिसपर जिनदेवों का अभिषेक किया जाता है; (ठा २, ३—पत्र ८०)। °**कूड** न [°**कूट**] शिखर-विशेष; (राज)। °**कोरिंटय** पुं [°**कुरण्टक**] वृक्ष-विशेष; (पउम ५३, ७९)। °**क्ख**, °**च्छ** वि [°**ाक्ष**] १ लाल आँख वाला; (राज; सुर ३, ६), स्त्री—°**च्छी**; (ओघभा २२ टी)। २ पुं. महिष, भैंसा; (दे ७, १३)। °**ट्ठ** पुं [°**ार्थ**] विद्याधर वंश का एक राजा; (पउम ५, ४४)। °**धाउ** पुं [°**धातु**] कुण्डल पर्वत का एक शिखर; (दीव)। °**पड** पुं [°**पट**] परिव्राजक, संन्यासी; (णाया १, १५—पत्र १९३)। °**प्पवाय** पु [°**प्रपात**] द्रह-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७३)। °**प्पह** पुं [°**प्रभ**] कुण्डल-पर्वत का एक शिखर; (दीव)। °**रयण** न [°**रत्न**] रत्न की एक जाति, पद्म-राग मणि; (औप)। °**वई** स्त्री [°**वती**] एक नदी; (सम २७; ४३; इक)। °**वड** देखो °**पड**; (सुख ८, १३)। °**सुभद्दा** स्त्री [°**सुभद्रा**] श्रीकृष्ण की एक भगिनी; (पण्ह १, ४—पत्र ८५)। °**ासोग**, °**ासोय** पुं [°**ाशोक**] लाल अशोक का पेड; (णाया १, १; महा)।

°**रत्त** पु [°**रात्र**] रात, निशा; (जी ३४)।

रत्तग देखो **रत्त**=रक्त, (महा)।

रत्तंदण न [**रक्तचन्दन**] लाल चन्दन; (सुपा १८१)।

रत्तक्खर न [**दे**] सीधु, मद्य-विशेष; (दे ७, ४)।

रत्तच्छ पुं [**दे**] १ हंस; २ व्याघ्र; (दे ७, १३)।

रत्तडि (अप) देखो **रत्ति**=रात्रि; (पि ५६६)।

रत्तय न [**दे. रक्तक**] बन्धूक वृक्ष का फूल, (दे ७, ३)।

रत्ता स्त्री [**रक्ता**] एक नदी; (सम २७; ४३; इक)। °**वइप्पवाय** पुं [°**वतीप्रपात**] द्रह-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७३)।

रत्ति स्त्री [**दे**] आज्ञा, हुकुम; (दे ७, १)।

रत्ति स्त्री [**रात्रि**] रात, निशा; (हे २, ७९; कुमा; प्रासू ९०)। °**अंधय** वि [°**अन्धक**] रात को नहीं देख सकने वाला; (गा ६६७; हेका २६)। °**अर** वि [°**चर**] १ रात में विहरने वाला; २ पुं. राक्षस; (षड्)। °**दिवह** न [°**दिवस**] रात-दिन, अहर्निश; (पि ८८)। देखो **राइ**=रात्रि।

रत्तिंचर देखो **रत्ति**=**अर**; (धर्मवि ७२)।

रत्तिंदिअह न [**रात्रिंदिवस**] रात-दिन, अहर्निश, निरन्तर; (अच्चु ७८)।

रत्तिंदिय, **रत्तिंदिव** न [**रात्रिन्दिव**] ऊपर देखो; (पउम ८, १६४; ७५, ८५)।

रत्तिंध वि [**रात्र्यन्ध**] जो रात में न देख सकता हो वह; (प्रासू १७५)।

रत्तीअ पु [**दे**] नापित, हजाम; (दे ७, २; पाअ)।

रत्तुप्पल न [**रक्तोत्पल**] लाल कमल; (पराह १, ४)।
रत्तोआ स्त्री [**रक्तोदा**] एक नदी; (इक)।
रत्तोप्पल देखो **रत्तुप्पल**, (नाट—मृच्छ १४५)।
रत्था देखो **रच्छा**; (गा ४०; अंत १२; सुर १, ६६)।
रद्ध वि [**रद्ध, राद्ध**] राँधा हुआ, पक्व, (पिंड १६५; सुपा ६२६)।
रद्धि वि [**दे**] प्रधान, श्रेष्ठ; (दे ७, २)।
रन्न देखो **रण्ण**; (सुपा ४०१; कुमा)।
रप्प सक [**आ+क्रम्**] आक्रमण करना। रप्पइ; (प्राकृ ७३)।
रप्फ पुं [**दे**] वल्मीक, गुजराती में 'राफडो'; (दे ७, १; पात्र)। २ रोग-विशेष; "करि कंपु पायमूलिसु रप्फय" (सण)।
रप्फडिआ स्त्री [**दे**] गोधा, गोह; (दे ७, ४)।
रब्बा वि [**दे**] राब, यवागू; (श्रा १४; उर २, १२; धर्मवि ४२)।
रभस देखो **रहस**=रभस; (गा ८७२, ८६४; ६३४)।
रम अक [**रम्**] १ क्रीड़ा करना। २ संभोग करना। रमइ, रमए, रमंते, रमिज्ज, रमेज्जा; (कुमा)। भवि—रमिस्सदि, रमिहिइ; (कुमा)। कर्म—रमिज्जइ; (कुमा)। वकृ—**रमंत, रममाण**; (गा ४४; कुमा)। संकृ—**रमिअ, रमिउं, रमिऊण, रंतूण**; (हे २, १४६; ३, १३६; महा; पि ३१२), **रमेप्पि, रमेप्पिणु, रमेवि** (अप); (पि ५८८)। हेकृ—**रमिउं**; (उप पृ ३८)। कृ—**रमिअव्व**; (गा ४६१), देखो **रमणिज्ज, रमणीअ, रम्म**। प्रयो—रमावेंति, (पि ५५२)।
रमण न [**रमण**] १ क्रीडा, क्रीडन; २ सुरत, संभोग, रति-क्रीड़ा; (पत्र ३८, कुमा; उप पृ १८७)। ३ स्मर-कूपिका, योनि; (कुमा)। ४ पुं. जघन, नितम्ब; (पात्र)। ५ पति, वर, स्वामी; (पउम ५१, १६; कुमा; पिंग)। ६ छन्द-विशेष, (पिंग)।
रमणिज्ज वि [**रमणीय**] १ सुन्दर, मनोहर, रम्य, (प्राप्र; पात्र; अभि २००)। २ न. एक देव-विमान; (सम १७)। ३ पुं. नन्दीश्वर द्वीप के मध्य में उत्तर दिशा की ओर स्थित एक अञ्जन-गिरि; (पव २६९ टी)। ४ एक विजय, प्रान्त-विशेष, (ठा २, ३—पत्त ८०)।
रमणी स्त्री [**रमणी**] १ नारी, स्त्री. (पात्र; उप पृ १८७; प्रासू १५५; १८०)। २ एक पुष्करिणी; (इक)।
रमणीअ वि [**रमणीय**] रम्य, मनोरम; (प्राप्र; स्वप्न ४०; गउड, सुपा २५५; भवि)।
रमा स्त्री [**रमा**] लक्ष्मी, श्री; (कुम्मा ३)।
रमिअ देखो **रम**।
रमिअ वि [**रत**] १ क्रीडित, जिसने क्रीडा की हो वह; (कुमा ४, ५०)। २ न. रमण, क्रीड़ा; (णाया १, ६—पत्त १६५; कुमा; सुपा ३७६; प्रासू ६५)।
रमिअ वि [**रमित**] रमाया हुआ; (कुमा ३, ८६)।
रमिर वि [**रन्तृ**] रमण करने वाला; (कुमा)।
रम्म वि [**रम्य**] १ मनोरम, रमणीय, सुन्दर; (पात्र, से ६, ४७; सुर ०, ६६; प्रासू ७१)। २ पुं. विजय-विशेष, एक प्रान्त, (ठा २, ३—पत्त ८०)। ३ चम्पक का गाछ, (से ६, ४७)। ४ न. एक देव-विमान; (सम १७)।
रम्मग } **रम्मय** } पुं [**रम्यक**] १ एक विजय, प्रान्त-विशेष, (ठा २, ३—पत्त ८०)। २ एक युगलिक-क्षेत्र, जंबू-द्वीप का वर्ष-विशेष; (सम १२; ठा २, ३—पत्त ६७; इक)। ३ न. एक देव-विमान; (सम १७)। ४ पर्वत-विशेष का एक कूट; (जं ४)।
रम्ह देखो **रंफ**। रम्हइ; (प्राकृ ६५)।
रय सक [**रञ्ज्**] रँगना। "नो धोएजा, नो रएज्जा, नो धोयरत्ताइं वत्थाइं धारेज्जा" (आचा)।
रय सक [**रचय्**] बनाना, निर्माण करना। रयइ, रएइ; (हे ४, ६४; षड्; महा)। कवकृ— **रइज्जंत**; (से ८, ८७)।
रय पुंन [**रजस्**] १ रेणु, धूल; (औप; पात्र; कुप्र २१)। २ पराग, पुष्प-रज; (से ३, ४८)। ३ सांख्य-दर्शन में उक्त प्रकृति का एक गुण; (कुप्र २१)। ४ वध्यमान कर्म; (कुमा ७, ५८; चेइय ६२२; उव)। °**त्ताण** न [°**त्राण**] जैन मुनि का एक उपकरण; (ओघ ६६८; पराह २, ५—पत्त १४८)। °**स्सला** स्त्री [°**स्वला**] ऋतुमती स्त्री; (दे १, १२५)। °**हर** पुन [°**हर**] जैन मुनि का एक उपकरण; (संबोध १५)। °**हरण** न [°**हरण**] वही अर्थ; (णाया १, १; कस)।
रय वि [**रत**] १ अनुरक्त, आसक्त; (औप; उव; सुर १, १२; सुपा ३०६; प्रासू १६६)। २ स्थित; (से ६, ४२)। ३ न. रति-कर्म, मैथुन; (सम १५; उव; गा १५५; स १८०; वज्जा १००; सुपा ४०३)।
रय पुं [**रय**] वेग, (कुमा; से २, ७; सण)।

रय देखो **रव**; (पउम ११४, १७)।

रयग देखो **रयय**=रजक; (श्रा १२; सुपा ५८८)।

रयण न [**रजन**] रँगना, रँग-युक्त करना, (सूत्र १, ६, १२)।

रयण वि [**रचन**] करने वाला, निर्माता; "चेडीसचिंतारयणु" (सण)।

रयण पुं [**रदन**] दाँत, दशन; (उप ६८६ टी; पाम्र; काप्र १७२; नाट—शकु १३)।

रयण पुंन [**रत्न**] १ माणिक्य आदि बहु-मूल्य पत्थर, मणि; "दुवे रयणा समुप्पन्ना"; (निर १, १; उप ५६३; गाया १, १; सुपा १४७, जी ३; कुमा; हे २, १०१)। २ श्रेष्ठ, स्व-जाति में उत्तम; (सम २६; कुमा ३, ४७), "तहवि हु चंद-सरिच्छा विरला रयणायरे रयणा" (वज्जा १५६)। ३ छन्द-विशेष; (पिंग)। ४ द्वीप-विशेष; (गाया १, ६; पउम ५५, १७)। ५ पर्वत-विशेष का एक कूट, (ठा ४, २; ८)। ६ पुं. व. रत्नद्वीप का निवासी; (पउम ५५, १७)। °**उर** न [°**पुर**] नगर-विशेष; (सण)। °**चित्त** पुं [°**चित्र**] विद्याधर वंश का एक राजा; (पउम ५, १५)। °**दीव** पुं [°**द्वीप**] द्वीप-विशेष; (गाया १, ६—पत्र १६५)। °**निहि** पुं [°**निधि**] समुद्र, सागर; (सुपा ७, १२६)। °**पुढवी** स्त्री [°**पृथिवी**] पहली नरक-भूमि, रत्नप्रभा-नामक नरक-पृथिवी; (स १३२)। °**पुर** देखो °**उर**; (कुप्र ६; महा; सण)। °**प्पभा**, °**प्पहा** स्त्री [°**प्रभा**] १ पहली नरक-भूमि, (ठा ७—पत्र ३८८; औप; भग)। २ भीम-नामक राक्षसेन्द्र की एक पटरानी, (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ रत्न का तेज; (स १३३)। °**मय** वि [°**मय**] रत्नों का बना हुआ; (महा)। °**माला** स्त्री [°**माला**] छन्द-विशेष; (अजि २४)। °**मालि** पुं [°**मालिन्**] विद्याधर-वंश में उत्पन्न नमि-राज का एक पुत्र; (पउम ५, १४)। °**मुस** वि [°**मुष्**] रत्नों को चुराने वाला; (षड्)। °**रह** पुं [°**रथ**] विद्याधर वंश का एक राजा; (पउम ५, १४)। °**रासि** पुं [°**राशि**] समुद्र; (प्रारू)। °**वइ** पुं [°**पति**] रत्नों का मालिक, धनी, श्रीमंत; (सुपा २६६)। °**वई** स्त्री [°**वती**] एक रानी; (रयण ३)। °**वज्ज** पुं [°**वज्र**] विद्याधर-वंशीय एक राजा; (पउम ५, १४)। °**वह** वि [°**वह**] रत्न-धारक; (गउड १०७१)। °**संचय** न [°**संचय**] १ रुचक पर्वत का एक कूट; (इक)। २ एक नगर; (इक; सुर ३, २०)। °**संचया** स्त्री [°**संचया**] १ मंगलावती-नामक विजय की राजधानी, (ठा २, ३—पत्र ८०)। २ ईशानेन्द्र की वसुन्धरा-नामक इन्द्राणी की एक राजधानी; (इक)। °**समया** स्त्री [°**समया**] मंगलावती-नामक विजय की एक राजधानी; (इक)। °**सार** पुं [°**सार**] १ एक राजा; (राज)। २ एक शेठ का नाम; (उप ७२८ टी)। °**सिंह** पुं [°**सिंह**] एक जैन आचार्य, संवेगचूलिका-कुलक का कर्ता; (संवे १२)। °**सिह** पुं [°**शिख**] एक राजा; (उप १०३१ टी)। °**सेहर** पुं [°**शेखर**] १ एक राजा; (रयण ३)। २ विक्रम की पनरहवीं शताब्दी में विद्यमान एक जैन आचार्य और ग्रन्थकार; (सिरि १३४०)। °**ाअर**, °**ागर** पुं [°**ाकर**] १ रत्न की खान; (षड्)। २ समुद्र; (पाम्र; सुपा ३७; प्रासू ६७; गाया १, १७—पत्र २२८)। °**ाभा** स्त्री [°**ाभा**] देखो °**प्पभा**; (उत्त ३६, १५७)। °**ामय** देखो °**मय**; (महा; औप)। °**ायरसुअ** पुं [°**ाकरसुत**] १ चन्द्रमा; २ एक वणिक्-पुत्र; (श्रा १६)। °**ावलि**, °**ावली** स्त्री [°**ावलि**, °**ावली**] १ रत्नों का हार; (सम्म २२)। २ तप-विशेष; (अंत २५)। ३ ग्रन्थ-विशेष; (दे ८, ७७)। ४ एक विद्याधर-राज-कन्या; (पउम ६, ५२)। °**ावह** न [°**ावह**] नगर-विशेष; (महा)। °**ासव** पुं [°**ास्रव**] रावण का पिता; (पउम ७, ५६; ७१)। °**ासवसुअ** पुं [°**ास्रवसुत**] रावण; (पउम ८, २२१)। °**ाहिय** वि [°**ाधिक**] ज्येष्ठ, अवस्था में बड़ा; (राज)।

रयणप्पभिय वि [**रात्नप्रभिक**] रत्नप्रभा-संबन्धी; (पंच २, ६६)।

रयणा स्त्री [**रचना**] निर्माण, कृति; (उत्त १५, १८; चेइय ८६६; सुपा ३०४; रंभा)।

रयणा स्त्री [**रत्ना**] रत्नप्रभा-नामक नरक-भूमि; (पव १७५)।

रयणि पुंस्त्री [**रत्नि**] एक हाथ का नाप, बद्ध-मुष्टि हाथ का परिमाण; (कस; पव ५८; १७६)।

रयणि स्त्री [**रजनि**] देखो **रयणी**=रजनी; (गाया १, २—पत्र ७६; कप्प)। °**अर** पुं [°**चर**] १ राक्षस; (से १०, ६६; पाम्र)। °**अर**, °**कर** पुं [°**कर**] चन्द्रमा; (हे १, ८ टि; कप्प)। °**णाह**, °**नाह** पुं [°**नाथ**] चन्द्रमा; (पाम्र; सुपा ३३)। °**भत्त** न [°**भक्त**] रात्रि में खाना; (सुपा ४६५)। °**रमण** पुं [°**रमण**] चन्द्रमा; (सण)।

°वल्लह पुं [°वल्लभ] चन्द्रमा; (कप्पू)। °विराम पुं [°विराम] प्रातःकाल, सुबह; (पात्र)।
रयणिंद पुं [रजनीन्द्र] चन्द्रमा; (सण)।
रयणिद्धय न [दे] कुमुद, कमल; (दे ७, ४; षड्)।
रयणी स्त्री [रत्नी] देखो रयणि=रत्नि; (ठा १; सम १२; जीवस १७७; जी ३३; औप)।
रयणी स्त्री [रजनी] १ रात्रि, रात; (पात्र; प्रासू १३६; कुमा)। २ ईशानेन्द्र के लोकपाल की एक पटरानी; (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ चमरेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ५, १—पत्र ३०२)। ४ मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना; (ठा ७—पत्र ३९३)। ५ षड्ज ग्राम की एक मूर्च्छना; "मंगी कोरव्वीया हरी य रयतणी(? यणी) सारकंता य" (ठा ७—पत्र ३९३)। °भोअण न [°भोजन] रात में खाना; (श्रा २०)। °सार न [°सार] सुरत, मैथुन, (से ३, ४८)। देखो रयणि=रजनि; (हे १, ८)।
रयणुच्चय, रयणोच्चय पुं [रत्नोच्चय] १ मेरु-पर्वत; (सुज्ज ५ टी—पत्र ७७; इक)। २ कूट-विशेष; (इक)।
रयणोच्चया स्त्री [रत्नोच्चया] वसुगुप्ता-नामक इन्द्राणी की एक राजधानी; (इक)।
रयत, रयद, रयय न [रजत] १ रूप्य, चाँदी; (णाया १, १—पत्र ६६; प्राक्त १२; प्राप्र; पात्र; उवा; औप)। २ एक देव-विमान; (देवेन्द्र १३१)। ३ हाथी का दाँत; ४ हार, माला; ५ सुवर्ण, सोना; ६ रुधिर, खून; ७ शैल, पर्वत; ८ धवल वर्ण; ९ शिखर-विशेष; १० वि. सफेद वर्ण वाला, श्वेत; (प्राक्त १२; प्राप्र; हे १, १७७; १८०; २०९)। °गिरि पुं [°गिरि] पर्वत-विशेष, (णाया १, १; औप)। °वत्त न [°पात्र] चाँदी का बरतन; (गउड)। °मय वि [°मय] चाँदी का बना हुआ; (णाया १, १—पत्र ५४; पि ७०)।
रयय पु [रजक] धोबी; (स २८६; पात्र)।
रयवली स्त्री [दे] शिशुत्व, बाल्य; (दे ७, ३)।
रयवाडी देखो राय-वाडिआ; (सिरि ७५८)।
रयाव सक [रचय्] बनवाना, निर्माण कराना। रयावेइ. रयाविंति, रयावेह; (कप्प)। संकृ—रयावेत्ता, (कप्प)।
रयाविय वि [रचित] बनवाया हुआ; (स ४३५)।

रल्ला स्त्री [दे] प्रियंगु, मालकाँगनी; (दे ७, १)।
रव सक [रु] १ कहना, बोलना। २ वध करना। ३ गति करना। ४ अक. रोना। ५ शब्द करना। "सुद्धं रवति परिसाए" (सूत्र १, ४, १, १८), रवइ; (हे ४, २३३; संक्षि ३३)। वकृ—रवंत, रवेंत; (णाया १,१—पत्र ६५; पिंग; औप)।
रव सक [रावय्] बुलवाना, आह्वान करना। वकृ—रवेंत; (औप)।
रव सक [दे] आर्द्र करना। भवि—रवेहिइ. (धांदि)।
रव पुं [रव] १ शब्द, आवाज; (कप्प, महा; सण; भवि)। २ वि. मधुर शब्द वाला; "रवं अलसं कलमंजुलं" (पात्र)।
रव (अप) देखो रय=रजस्; (भवि)।
रवँण, रवण (अप) देखो रमण; (भवि)।
रवण न [रवण] आवाज करना; "पच्चासन्ने य करेणुया सया रवणसीला आसी" (महा)।
रवण्ण, रवन्न (अप) देखो रम्म=रम्य; (हे ४, ४२२; भवि)।
रवय पुं [दे] मन्थान-दण्ड, विलोने की लकड़ी; गुजराती में 'रवैयो'; (दे ७, ३)।
रवरव अक [रोरूय्] १ खूब आवाज करना। २ वारंवार आवाज करना। वकृ—रवरवंत; (औप)।
रवि वि [रविन्] आवाज करने वाला, (से २, २९)।
रवि न [रवि] १ सूर्य, सुरज, (से २, २९; गउड; सण)। २ राक्षस-वंश का एक राजा; (पउम ५, २६२)। ३ अर्क वृक्ष, आक का पेड़, (हे १, १७२)। °तेअ पुं [°तेजस्] १ इक्ष्वाकु वंश का एक राजा; (पउम ५,४)। २ राक्षस वंश का एक राजा; एक लंकेश; (पउम ५, २६५)। °तेया स्त्री [°तेजा] एक विद्या; (पउम ७, १४१)। °नंदण पुं [°नन्दन] शनि-ग्रह, (श्रा १२)। °प्पभ पु [°प्रभ] वानरद्वीप का राजा; (पउम ६, ६८)। °भत्ता स्त्री [°भक्ता] एक महौषधि; (ती ५)। °भास पुं [°भास], खड्ग-विशेष, सूर्यहास खड्ग; (पउम ५५, २६)। °वार पुं [°वार] दिन-विशेष, रविवार; (कुप्र ४११)। °सुअ पुं [°सुत] १ शनिश्चर ग्रह; (से ८, २८; सुपा ३९)। २ रामचन्द्र का एक सेनापति, सुग्रीव; (से १५, ५९)। °हास पुं [°हास] सूर्यहास खड्ग; (पउम ५३, २७)।

रविय वि [दे] आर्द्र किया हुआ, भिजाया हुआ; (विसे १४५६)।

रव्वारिअ पुं [दे] दूत, संदेश-हारक; "जेण अवज्झो रव्वा-रिओ'त्ति" (सुपा ४२८)।

रस सक [रस्] चिल्लाना, आवाज करना। रसइ; (गा ४३६)। वकृ—**रसंत**; (सुर २, ७४; सुपा २७३)।

रस पुंन [**रस**] १ जिह्वा का विषय—मधुर, तिक्त आदि; "एगे रसे", "एवं गंधाइं रसाइं फासाइं" (ठा १०—पत्र ४७१; प्रासू १७४)। २ स्वभाव, प्रकृति; (से ४, ३२)। ३ साहित्य-शास्त्र-प्रसिद्ध शृङ्गार आदि नव रस; (उत्त १४, ३२; धर्मवि १३; सिरि ३९)। ४ जल, पानी; (से २, २७; धर्मवि १३)। ५ सुख; (उत्त १४, ३१)। ६ आसक्ति, दिलचस्पी, (सत्त ५३; गउड)। ७ अनुराग, प्रेम; (पाअ)। ८ मद्य आदि द्रव पदार्थ; (पण्ह १, १; कुमा)। ९ पारद, पारा; (निचू १३)। १० भुक्त अन्न का प्रथम परिणाम, शरीरस्थ धातु-विशेष; (गउड)। ११ कर्म-विशेष; (कम्म २, ३१)। १२ छन्दःशास्त्र-प्रसिद्ध प्रस्तार-विशेष; (पिंग)। १३ माधुर्य आदि रस वाला पदार्थ; (सम ११; नव २८)। °**नाम** न [°**नामन्**] कर्म-विशेष; (सम ६७)। °**न्न** वि [°**ज्ञ**] रस का जानकार; (सुपा २६१)। °**भेइ** वि [°**भेदिन्**] रस वाली चीजों का भेल-सेल करने वाला; (पउम ७५, ५२)। °**मंत** वि [°**वत्**] रस-युक्त; (भग; ठा ५, ३—पत्र ३३३)। °**वई** स्त्री [°**वती**] रसोई; (सुपा ११)। °**ल**, °**लु** वि [°**वत्**] रस वाला; (हे २, १५९; सुख ३, १)। °**वण** पुं [°**पण**] मद्य की दुकान; (पत्र ११२)।

रसण न [**रसन**] जिह्वा, जीभ, (पण्ह १, १—पत्र २३; आचा)।

रसणा स्त्री [**रसना**] १ मेखला, कांची; (पाअ, गउड; से १, १८)। २ जिह्वा, जीभ; (पाअ)। °**ल** वि [°**वत्**] रसना वाला; (सुपा ५५६)।

रसद्द न [**दे**] चूल्ली-मूल, चूल्हे का मूल भाग, (दे ७, २)।

रसा स्त्री [**रसा**] पृथिवी, धरती; (हे १, १७७; १८०; कुमा)।

रसाउ पुं [**दे, रसायुष्**] भ्रमर, भौंरा; (दे ७, २; पाअ)।

रसाय पुं [**दे**] ऊपर देखो; (दे ७, २)।

रसायण न [**रसायन**] वैद्यक-प्रसिद्ध औषध-विशेष; (विपा १, ७; प्रासू १६२; भवि)।

रसाल पुं [**रसाल**] आम्र वृक्ष, आम का गाछ; (सम्मत १७३)।

रसाला स्त्री [**दे, रसाला**] मार्जिता, पेय-विशेष; (दे ७, २; पाअ)।

रसालु पुं [**दे, रसालु**] मज्जिका, राज-योग्य पाक-विशेष—दो पल घी, एक पल मधु, आधा आढक दही, बीस मिरचा तथा दस पल चीनी या गुड से बनता पाक; (ठा ३, १—पत्र ११८; सुज्ज २० टी; पव २५९)।

रसि देखो **रस्सि**; (प्राकृ २६)।

रसिअ वि [**रसिक**] १ रस-ज्ञ, रसिया, शौकीन; (से १, ९)। २ रस-युक्त, रस वाला; (सुपा २६; २१७; पउम ३१, ४६)।

रसिअ वि [**रसित**] १ रस-युक्त, रस वाला; (पव २)। २ न शब्द, आवाज; (गउड; पण्ह १, १)।

रसिआ स्त्री [**दे, रसिका**] १ पूय, पीव, व्रण से निकलता गंदा सफेद खून, गुजराती में 'रसी'; (श्रा १२; विपा १, ७; पण्ह १, १)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)।

रसिंद पुं [**रसेन्द्र**] पारद, पारा; (जो ३; श्रु १५८)।

रसिग देखो **रसिअ**=रसिक; (पंचा २, ३४)।

रसिर वि [**रसितृ**] आवाज करने वाला; (सण)।

रसोइ (अप) देखो **रस-वई**; (भवि)।

रस्सि पुंस्त्री [**रश्मि**] १ किरण, "भरहं समासियाओ आइच्चं चेव रस्सीओ" (पउम ८०, ६४; पाअ, प्राप्र)। २ रस्सी, रज्जु; (प्रासू ११७)

रह अक [**दे**] रहना। रहइ, रहए, रहेइ; (पिंग, महा; सिरि ८९३), रहसु, रहह; (सिरि ३५५; ३५३)।

रह सक [**रह्**] त्यागना, छोड़ना; (कप्पू; पिंग)।

रह पुं [**रभस**] उत्साह; "पुणो पुणो ते स-रहं दुहेंति" (सूअ १, ५, १, १८)। देखो **रहस**=रभस।

रह पुन [**रहस्**] १ एकान्त, निर्जन, "तत्थ रहो त्ति आगच्छ" (कुप्र ८२), "लहु मे रहं देसु" (सुपा १७४; वज्जा १५२)। २ प्रच्छन्न, गोप्य; (ठा ३, ४)।

रह पुन [**रथ**] १ यान-विशेष, स्यन्दन; "धम्मस्स निव्वाण-पहे रहाणि" (सत्त १८; पाअ, कुमा)। २ एक जैन महर्षि; (कप्प)। °**कार** पुं [°**कार**] रथ-निर्माता, वर्धकि; (सुपा ४४४; कुप्र १०४; उव)। °**चरिया** स्त्री [°**चर्या**] रथ को हाँकना; "ईसत्थसत्थरहचरियाकुसलो" (महा)। °**जत्ता** स्त्री [°**यात्रा**] उत्सव-विशेष, (सुपा ५४१; सुर १६, १६;

सिरि ११७५)। °णेउर न [°नूपुर] नगर-विशेष; (पउम २८, ७; इक)। °णेउरचक्कवाल न [°नूपुरचक्रवाल] वैताढ्य पर्वत पर स्थित एक नगर; (पउम ५, ६४; इक)। °नेमि पुं [°नेमि] भगवान् नेमिनाथ का भाई; (उत्त २२, ३६)। °नेमिज्ज न [°नेमीय] उत्तराध्ययन सूत्र का बाईसवाँ अध्ययन, (उत्त २२)। °मुसल पुं [°मुसल] भारतवर्ष की एक प्राचीन लड़ाई, राजा कोणिक और राजा चेटक का संग्राम; (भग ७, ६)। °यार देखो °कार; (पाअ)। °रेणु पुं [°रेणु] एक नाप, आठ त्रसरेणु का एक परिमाण; (इक)। °वीरउर, °वीरपुर न [°वीर-पुर] एक नगर; (राज; विसे २५५०)।

रहइं अ [**रभसा**] वेग से; (स ७६२)।

रहंग पुंस्त्री [**रथाङ्ग**] १ चक्रवाक पक्षी; (पाअ; सुर ३, २४७; कुमा); स्त्री—°गी; (सुपा ४६८; सुर १०, १८५; कुमा)। २ न. चक्र, पहिया; (पाअ)।

रहट्ट देखो **अरहट्ट**; (गा ४६०; पि १४२)।

रहण न [**दे**] रहना, स्थिति, निवास; (धर्मवि २१; रयण ६)।

रहण न [**रहन**] १ त्याग; २ विरति, विराम; "रसरहणं" (पिंग)।

रहमाण पुं [**दे**] १ यवन मत का एक तत्त्व-वेत्ता; (मोह १००)। २ खुदा, अल्ला, परमेश्वर; (ती १५)।

रहस पुं [**रभस**] १ औत्सुक्य, उत्कण्ठा; (कुमा)। २ वेग; ३ हर्ष; ४ पूर्वापर का अविचार; (संक्षि ७; गउड)।

रहस देखो **रहस्स**=रहस्य; "रहसाभक्खाणे" (उवा; संबोध ४१; सुपा ४५४)।

रहसा अ [**रभसा**] वेग से; (गउड)।

रहस्स वि [**रहस्य**] १ गुह्य, गोपनीय; (पाअ; सुपा ३१८)। २ एकान्त में उत्पन्न, एकान्त का; (हे २, २०४)। ३ न. तत्त्व, तात्पर्य, भावार्थ; (ओघ ७६०; रंभा १६)। ४ अपवाद-स्थान; (बृह ६)।

रहस्स वि [**ह्रस्व**] १ लघु, छोटा; (विपा १, ८—पत्र ८३)। २ एक मात्रा वाला स्वर; (उत्त २६, ७२)।

रहस्स न [**ह्रास्व**] १ लाघव, छोटाई। °मंत वि [°वत्] लघु, छोटा; (सूअ २, १, १३)।

रहस्सिय वि [**राहसिक**] प्रच्छन्न, गुप्त; (विपा १, १—पत्र ५)।

रहाविअ वि [**दे**] स्थापित, रखवाया हुआ; (हम्मीर १३)।

रहि वि [**रथिन्**] १ रथ से लड़ने वाला योद्धा; (उप ७२८ टी)। २ रथ को हाँकने वाला; (कुप्र २८७; ४६०; धर्मवि १११)।

रहिअ वि [**रथिक**] ऊपर देखो; "रहिएहिं महारहिणो" (उप ७२८ टी; पण्ह २, ४—पत्र १३०; धर्मवि २०)।

रहिअ वि [**रहित**] परित्यक्त, वर्जित, शून्य; (उवा; दं ३२)।

रहिअ वि [**दे**] रहा हुआ, स्थित; (धर्मवि २२)।

रहु पुं [**रघु**] १ सूर्य वंश का एक स्वनाम-ख्यात राजा; (उत्तर ५०)। २ पुं. ब. रघु-वंश में उत्पन्न क्षत्रिय; (से ४, १६)। ३ पु. श्रीरामचन्द्र; "ताहे कयंतसरिसी देइ रहू रिवुबले दिट्ठी" (पउम ११३, २१)। ४ कालिदास-प्रणीत एक संस्कृत काव्य-ग्रन्थ, (गउड)। °आर पुं [°कार] रघुवंश-नामक संस्कृत काव्य-ग्रन्थ का कर्ता, कवि कालिदास; (गउड)। °णाह पुं [°नाथ] १ श्री रामचन्द्र; (से १४, १६; पउम ११३, ५५)। २ लक्ष्मण; (से १४, ६२)। °तणय पुं [°तनय] वही अर्थ; (से २, १; १४, २६)। °तिलय पुं [°तिलक] श्रीरामचन्द्र; (सुपा २०४)। °त्तम पुं [°उत्तम] वही अर्थ; (पउम १०२, १७६)। °पुंगव पुं [°पुङ्गव] वही; (से ३, ५; हे २, १८८; ३, ७०)। °सुअ पुं [°सुत] वही; (से ५, १६)।

रहो° देखो **रह**=रहस्; (कप्प; औप)। °कम्म न [°कर्मन्] एकान्त-व्यापार; (ठा ६—पत्र ४६०)।

रा सक [**रा**] देना, दान करना। राइ; (धात्वा १४६)।

रा अक [**रै**] शब्द करना, आवाज करना। राइ; (प्राकृ ६६)।

रा अक [**ली**] श्लेष करना, चिपकना। राइ; (षड्)।

राअला स्त्री [**दे**] प्रियंगु, मालकाँगनी; (दे ७, १)।

राइ देखो **रत्ति**; (हे २, ८८; काप्र १८६; महा; षड्)। २ चमरेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ५, १—पत्र ३०२)। ३ ईशानेन्द्र के सोम लोकपाल की एक पटरानी; (ठा ४, १—पत्र २०४)। °भत्त न [°भक्त] रात्रि-भोजन, रात में खाना; (सुपा ४८५)। °भोअण न [°भोजन] वही अर्थ; (सम ३६; कस)। देखो **राई**=रात्रि।

राइ स्त्री [**राजि**] पंक्ति, श्रेणि, (पाअ; औप)। २ रेखा, लकीर; (कम्म १, १६; सुपा १६७)। ३ राई, राजसर्षप, एक प्रकार का मसाला; (दे ६, ८८)।

राइ वि [**रागिन्**] राग-युक्त, राग वाला; (दसा ६)। स्त्री—°णी; (महा)।

राइ° देखो **राय**=राजन्; (हे २, १४८; ३, ५२; ५३; कुमा)।

राइअ वि [**राजित**] शोभित; (से १, ५६; कुमा ६, ६३)।

राइअ वि [**रात्रिक**] रात्रि-संबन्धी; (उत्त २६, ४६; औप; पडि)।

राइआ स्त्री [**राजिका**] राई का गाछ, "गोलाणईअ कच्छे चक्खंतो राइआइ पत्ताइं" (गा १७१ अ)। देखो **राइगा**।

राइंद पुं [**राजेन्द्र**] बड़ा राजा; (कुमा)।

राइंदिअ पुं [**रात्रिन्दिव**] रात-दिन, अहोरात्र; (भग; आचा; कुप्प; पव ७८; सम २१)।

राइक्क वि [**राजकीय**] राज-संबन्धी; (हे २, १४८; कुमा)।

राइगा स्त्री [**राजिका**] राई, राज-सर्सो; (कुप्र ४५)।

राइणिअ वि [**रात्निक**] १ चारित्र वाला, संयमी; (पंचा १२, ६)। २ पर्याय से ज्येष्ठ, साधुत्व-प्राप्ति की अवस्था से बड़ा; (सम ३७; ५८; कप्प)।

राइणिअ वि [**राजकल्प**] राजा के समान वैभव वाला, श्री-मन्त; (सूअ १, २, ३, ३)।

राइण्ण } पुं [**राजन्य**] राजवंशीय, क्षत्रिय; (सम १५१;
राइन्न } कप्प; औप; भग)।

राइल्ल वि [**रागिन्**] राग-युक्त; (देवेन्द्र २७८)।

राई स्त्री [**राजी**] देखो **राइ**=राजि; (गउड; सुपा ३४; प्रासू ६२; पव २५६)।

राई स्त्री [**रात्रि**] देखो **राइ**=रात्रि, (पाअ; णाया २—पत्र १५०; औप; सुपा ४६१; कस)। °**दिवस** न [°**दिवस**] रात्रिदिवस, अहर्निश; (सुपा १२७)।

राईमई स्त्री [**राजीमती**] राजा उग्रसेन की पुत्री और भगवान नेमिनाथ की पत्नी; (पडि)।

राईव न [**राजीव**] कमल, पद्म; (पाअ, हे १, १८०)।

राईसर पु [**राजेश्वर**] १ राजाओं के मालिक, महाराज; २ युवराज; (औप; उवा; कप्प)।

राउत्त पुं [**राजपुत्र**] राजपूत, क्षत्रिय; (प्राकृ ३०)।

राउल पुं [**राजकुल**] १ राजाओं का यूथ, राज-समूह; (कुमा; हे १, २६७; प्राप्र)। २ राजा का वंश; (षड्)। ३ राज-गृह, दरबार; "णं ईदिसस्स राउलस्स दूरेण पणामो कीरदि, जत्थ बंभणावि एवं विडंबिज्जंति" (मोह ११)। देखो **राओल**।

राउलिय वि [**राजकुलिक**] राजकुल-संबन्धी; (सुख २, ३१)।

राउल्ल देखो **राइक्क**; (प्राकृ ३५)।

राएसि पुं [**राजर्षि**] १ श्रेष्ठ राजा; २ ऋषि-तुल्य राजा, संयतात्मा भूपति; (अभि ३६; विक्र ६८; मोह ३)।

राओ अ [**रात्रौ**] रात में; (णाया १, १—पत्र ६१; सुपा ४६७; कप्प)।

राओल देखो **राउल**;

"तो किंपि धणं सयणेहिं विलसियं किंपि वाणिपुत्तेहिं।
किंपि गयं राओले एस अपुत्तत्ति भणिऊण ॥
(धर्मवि १४०)।

राग देखो **राय**=राग, (कप्प; सुपा २४१)।

रागि देखो **राइ**=रागिन्. (पउम ११७, ४१)।

राघव देखो **राहव**। °**घरिणी** स्त्री [°**गृहिणी**] सीता, जानकी; (पउम ४६, ५७)।

राच } [चूपै. पै] देखो **राय**=राजन्; (हे ४, ३२५;
राचि° } ३०४; प्राप्र)।

राज देखो **राय**=राजन्; (हे ४, २६७; पि १६८)।

राजस वि [**राजस**] रजो-गुण-प्रधान, "राजसचित्तस्स पुरस्स" (कुप्र ४२८)।

राडि स्त्री [**राटि**] बूम, चिल्लाहट; (सुख २, १५)।

राडि स्त्री [**दे. राटि**] संग्राम, लडाई; (दे ७, ४)।

राढा स्त्री [**राढा**] १ विभूषा; (धर्मसं १०१८; कप्पू)। २ भव्यता; (वज्जा १८)। ३ बंगाल का एक प्रान्त; ४ बंगाल देश की एक नगरी, (कप्पू)। °**इत्त** वि [°**वत्**] भव्य आत्मा; "गंजणरहिओ धम्मो राढाइत्ताण संपडइ" (वज्जा १८)। °**मणि** पुं [°**मणि**] काच-मणि; (उत्त २०, ४२)।

राण सक [**वि+नम्**] विशेष नमना। राणइ (?); (धात्वा १४६)।

राण पुं [**राजन्**] राणा, राजा; (चंड; सिरि ११४)।

राणय पुं [**राजक**] १ राणा, राजा; (ती १५; सिरि १२३; १२५)। २ छोटा राजा; (सिरि ६८६; १०४०)।

राणिआ } स्त्री [**राज्ञिका, °ज्ञी**] रानी, राज-पत्नी, (कुम्मा
राणी } ३; श्रावक ६३ टी; सिरि १२५; २६७)।

राम सक [**रमय्**] रमण कराना। कृ—**रामेयव्व**; (भत्त ८५)।

राम पुं [**राम**] १ श्री रामचन्द्र, राजा दशरथ का बड़ा पुत्र; (गा ३५; उप पृ ३७५; कुमा)। २ परशुराम; (कुमा १, ३१)। ३ क्षत्रिय परिव्राजक-विशेष, (औप)। ४ बल-देव, बलभद्र, वासुदेव का बड़ा भाई; (पात्र)। ५ वि. रमने वाला: (उप पृ ३७५)। °**कण्ह** पुं [°**कृष्ण**] राजा श्रेणिक का एक पुत्र. (राज)। °**कण्हा** स्त्री [°**कृष्णा**] राजा श्रेणिक की एक पत्नी; (अंत २५)। °**गिरि** पुं [°**गिरि**] पर्वत-विशेष; (पउम ४०, १६)। °**गुत्त** पुं [°**गुप्त**] एक राजर्षि; (सूअ १, ३, ४, २)। °**देव** पुं [°**देव**] श्रीरामचन्द्र; (पउम ४५, २६)। °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] एक जैन मुनि; (अनु २)। °**पुरी** स्त्री [°**पुरी**] अयोध्या नगरी; (ती ११)। °**रक्खिआ** स्त्री [°**रक्षिता**] ईशानेन्द्र की एक पटरानी; (ठा ८—पत्र ४२६; इक)।

रामणिज्जअ न [**रामणीयक**] रमणीयता, सौन्दर्य; (विक्र २८)।

रामा स्त्री [**रामा**] १ स्त्री, महिला, नारी; (तंदु ५०; कुमा; पात्र; वज्जा १०६; उप ३५७ टी)। २ नववें जिनदेव की माता; (सम १५१)। ३ ईशानेन्द्र की एक पटरानी; (ठा ८—पत्र ४२६; इक)। ४ छन्द-विशेष; (पिंग)।

रामायण न [**रामायण**] १ वाल्मीकि-कृत एक संस्कृत काव्य-ग्रन्थ; (पउम २, ११६; महा)। २ रामचन्द्र तथा रावण की लड़ाई; (पउम १०५, १६)।

रामिअ वि [**रमित**] रमण कराया हुआ; (गा ५६; पउम ८०, १६)।

रामेसर पुं [**रामेश्वर**] दक्षिण भारत का एक हिन्दू-तीर्थ; (सम्मत्त ८४)।

राय अक [**राज्**] चमकना, शोभना। रायइ; (हे ४, १००)। वकृ—**राय°, रायमाण**; (कप्प)।

राय देखो **रा=रै**। राअइ; (प्राकृ ६६)।

राय पुं [**राग**] १ प्रेम, प्रीति; (प्रासू १८०)। २ मत्सर, द्वेष; "न पेमराइल्ला" (देवेन्द्र २७८)। ३ रँगना, रंजन; ४ वर्णन; ५ अनुराग; ६ राजा, नरपति; ७ चन्द्र, चाँद; ८ लाल वर्ण; ९ लाल रँग वाली वस्तु; १० वसन्त आदि स्वर; (हे १, ६८)।

राय पुं [**राजन्**] १ राजा, नर-पति, नरेश; (आचा; उवा; श्रा २७; सुपा १०३)। २ चन्द्र, चन्द्रमा; (श्रा २७; हम्मीर ३; धर्मवि ३)। ३ एक महाग्रह, (सुज्ज २०)। ४ इन्द्र; ५ क्षत्रिय, ६ यक्ष; ७ शुचि, पवित्र; ८ श्रेष्ठ, उत्तम; (हे ३, ४९, ५०)। ९ इच्छा, अभिलाष; (से १, ९)। १० छन्द-विशेष; (पिंग)। °**ईअ** वि [°**कीय**] राज-संबन्धी, (प्राकृ ३५)। °**उत्त** पु [°**पुत्र**] राज-पूत, राज-कुमार; (सुर ३, १६५)। °**उल** देखो **रा-उल**; (हे १, २६७; कुमा; पड्; प्राप्र; अभि १८४)। °**कीअ** देखो °**ईअ**; (नाट—शकु १०४)। °**कुल** देखो °**उल**; (महा)। °**केर**, °**क्क** वि [°**कीय**] राज-सवन्धी; (हे २, १४८; कुमा; पड्)। °**गिह** न [°**गृह**] मगध देश की प्राचीन राजधानी, जो आजकल 'राजगिर' नाम से प्रसिद्ध है; (ठा १०—पत्र ४७७; उवा; अंत)। °**गिही** स्त्री [°**गृही**] वही अर्थ; (ती ३)। °**चंपय** पुं [°**चम्पक**] वृक्ष-विशेष, उत्तम चम्पक-वृक्ष; (श्रा १२)। °**धम्म** पुं [°**धर्म**] राजा का कर्तव्य; (नाट—उत्तर ४१)। °**धाणी** स्त्री [°**धानी**] राज-नगर, राजा का मुख्य नगर, जहां राजा रहता हो; (नाट—चैत १३२)। °**पत्ती** स्त्री [°**पत्नी**] रानी; (सुर १३, ५; सुपा ३७५)। °**पसेणीय** वि [°**प्रश्नीय**] एक जैन आगम-ग्रन्थ, (राय)। °**पह** पुं [°**पथ**] राज मार्ग; (महा; नाट—चैत १३०)। °**पिंड** पुं [°**पिण्ड**] राजा के घर की भिक्षा—आहार; (सम ३६)। °**पुत्त** देखो °**उत्त**; (गउड)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष; (पउम २, ८)। °**पुरिस** पुं [°**पुरुष**] राजा का आदमी, राज-कर्मचारी; (पउम २८, ४)। °**मग्ग** पुं [°**मार्ग**] राजपंथ, सड़क; (औप; महा)। °**मास** पुं [°**माष**] धान्य-विशेष, बरबटी; (श्रा १८; संबोध ४३)। °**राय** पुं [°**राज**] राजाओं का राजा, राजेश्वर; (सुपा १०७)। °**रिसि** देखो **राएसि**; (णाया १, ५—पत्र १११; उप ७२८ टी; कुमा; सण)। °**रुक्ख** पुं [°**वृक्ष**] वृक्ष-विशेष; (औप)। °**लच्छी** स्त्री [°**लक्ष्मी**] राज-वैभव; (अभि १३१; महा)। °**ललिय** पुं [°**ललित**] आठवें बलदेव के पूर्व जन्म का नाम; (सम १५३)। °**वट्टय** न [°**वार्तक**] राज-संबन्धी वार्ता-समूह; (हे २, ३०)। °**वल्ली** स्त्री [°**वल्ली**] लता-विशेष; (पण्ण १—पत्र ३६)। °**वाडिआ**, °**वाडी** स्त्री [°**पाटिका**, °**पाटी**] चतुरंग सैन्य-श्रम-करण, राजा की चतुर्विध सेना के साथ सवारी; (कुमा; कुप्र ११६; १२०; सुपा

२२२)। °सद्दूल पुं [°शार्दूल] चक्रवर्ती राजा, श्रेष्ठ राजा; (सम १५२)। °सिट्ठि पुं [°श्रेष्ठिन्] नगर-सेठ; (भवि)। °सिरी स्त्री [°श्री] राज-लक्ष्मी; (से १, १३)। °सुअ पुं [°सुत] राज-कुमार; (कप्पू ; उप ७२८ टी)। °सुअ पुं [°शुक] उत्तम तोता; (उप ७२८ टी)। °सुअ पुं [°सूय] यज्ञ-विशेष; "पिइमेहमाइमेहे रायसुए आसमेह-पसुमेहे" (पउम ११, ४२)। °सेण पुं [°सेन] छन्द-विशेष; (पिंग)। °सेहर पुं [°शेखर] १ महादेव, शिव; २ एक राजा; (सुपा ५२६)। ३ एक कवि, कर्पूरमंजरी का कर्ता; (कप्पू)। °हंस पुंस्त्री [°हंस] १ उत्तम हंस-पक्षी; २ श्रेष्ठ राजा; (सुर १२, ३४; गा ६२४; गउड; सुपा १३६; रंभा; भवि), स्त्री—°सी; (सुपा ३३४; नाट—रत्ना २३)। °हर न [°गृह] राजा का महल; (पउम ८३, ८६; हे २, १४४)। °हाणी देखो °धाणी; (सम ८०; पव्ह २०, ८)। °हिराय, °ाहिराय पुं [°अधिराज] राजाओं का राजा, चक्रवर्ती राजा; (काल; सुपा १०५)। °ाहिव पुं [°ाधिप] वही अर्थ; (सुपा १०५)।

राय देखो राव=राव; (से ६, ७२)।

राय पुं [दे] चटक, गौरैया पक्षी; (दे ७, ४)।

राय पुं [रात्र] रात्रि, रात; (आचा)।

राय° देखो राय=राज्।

रायंदुअ) पुंन [दे] १ वेतस का पेड़; (पाअ; दे ७,
रायंबु) १४)। २ पुं. शरभ; (दे ७, १४)।

रायंस पुं [राजांस] राज-यक्ष्मा, क्षय का व्याधि; (आचा)।

रायंसि वि [राजांसिन्] राज-यक्ष्मा वाला, क्षय का रोगी; (आचा)।

रायगाइ स्त्री [दे] जलौका; (दे ७, ५)।

रायग्गल पुं [राजार्गल] ज्योतिष्क ग्रह-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७८)।

रायणिअ देखो राइणिअ=रात्निक; (उव; संबोध २२३)।

रायणी स्त्री [राजादनी] खिरनी, खिरनी का पेड़; (पउम ५३, ७६)।

रायण्ण देखो राइण्ण; (ठा ३, १—पत्र ११४; उप ३५६ टी)।

रायमइया स्त्री [राजीमतिका] देखो राईमई; (कुप्र १)।

रायस्स देखो राजस; (स ३; से ३, १५)।

रायाण देखो राय=राजन्; (हे ३, ५६; षड्)।

राल) पुंन [राल, °क] धान्य-विशेष, एक प्रकार की
रालग) कङ्गु; (सूअ २, २, ११; ठा ७—पत्र ४०५;
रालय) पिंड १६२; वज्जा ३४)।

राला स्त्री [दे] प्रियंगु, मालकाँगनी; (दे ७, १)।

राव सक [दे] आर्द्र करना। भवि—रावेहिति; (विसे २४६ टी)।

राव देखो रंज=रञ्जय्। रावेइ; (हे ४, ४६)। हेकृ—राविउं; (कुमा)।

राव सक [रावय्] पुकारना, आह्वान करना। वकृ—रावेंत; (औप)।

राव पुं [राव] १ रोला, कलकल; (पाअ)। २ पुकार, आवाज; (सुपा ३४८; कुमा)।

रावण पुं [रावण] १ एक स्वनाम-प्रसिद्ध लंका-पति; (पि ३६०)। २ गुल्म-विशेष; (पएण १—पत्र ३२)।

राविअ वि [रञ्जित] रँगा हुआ; (दे ७, ५)।

राविअ वि [दे] आस्वादित; (दे ७, ५)।

रास) पुं [रास, °क] एक प्रकार का नृत्य, जिसमें एक
रासग) दूसरे का हाथ पकड़ कर नाचते नाचते और गान करते करते मंडलाकार फिरना होता है; (दे २, २८; पाअ; वज्जा १२२; सम्मत्त १४१; धर्मवि ८१)।

रासभ देखो रासह; (सुर २, १०२)।

रासय देखो रासग; (सुर १, ४६; सुपा ५०; ४३३)।

रासह पुंस्त्री [रासभ] गर्दभ, गदहा; (पाअ; प्राप्र; रंभा)। स्त्री—°ही; (काल)।

रासाणंदिअय न [रासानन्दितक] छन्द-विशेष; (अजि १२)।

रासालुद्धय पुं [रासालुब्धक] छन्द-विशेष; (अजि १०)।

रासि देखो रस्सि; (संक्षि १७)।

रासि पुंस्त्री [राशि] १ समूह, ढग, ढेर; (ओघ ४०७; औप; सुर २, ५; कुमा)। २ ज्योतिष्क-प्रसिद्ध मेष आदि बारह राशि; (विचार १०६)। ३ गणित-विशेष; (ठा ४, ३)।

राह पुं [राध] १ वैशाख मास; २ वसन्त ऋतु; (से १, १३)। ३ एक जैन आचार्य; (उप २८५; सुख २, १५)।

राह पुं [दे] १ दयित, प्रिय; २ वि. निरन्तर; ३ शोभित; ४ सनाथ; ५ पलित, सफेद केश वाला; (दे ७, १३)। ६ रुचिर, सुन्दर; (पाअ)।

राहअ } पुं [**राघव**] १ रघु-वंश में उत्पन्न; (उत्तर २०)। **राहव** } २ श्रीरामचन्द्र; (से १२. २२; १, १३; ४७)।

राहा स्त्री [**राधा**] १ वृन्दावन की एक प्रधान गोपी, श्रीकृष्ण की पत्नी; (वज्जा १२२; पिंग)। २ राधावेध में रखी जाती पूतली; (उप पृ १३०)। ३ शक्ति-विशेष; ४ कर्ण की पालन करने वाली माता; (प्राकृ ४२)। °**मंडव** पुं [°**मण्डप**] जहां पर राधावेध किया जाय वह स्थान, (सुपा २६६)। °**वेह** पुं [°**वेध**] एक तरह की वेध-क्रिया, जिसमें चक्राकार घूमती पूतली की वाम चक्षु वींधी जाती है; (उप ६३५; सुपा २५५)।

राहिआ } स्त्री [**राधिका**] ऊपर देखो; (गा ८६; हे ४, **राही** } ४४२; प्राकृ ४२)।

राहु पुं [**राहु**] १ ग्रह-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७८; पाअ)। २ कृष्ण पुद्गल-विशेष; (सुज्ज २०)। ३ विक्रम की पहली शताब्दी के एक जैन आचार्य; (पउम ११८, ११७)।

राहेअ पुं [**राधेय**] राधा-पुत्र, कर्ण; (गउड)।

रि अ [**रे**] संभाषण-सूचक अव्यय; (तंदु ५०; ५२ टी)।

रि सक [**ऋ**] गमन करना। कर्म—अज्जए; (विसे १३६६)।

रिअ सक [**री**] गमन करना। रियइ, रियंति, रिए; (सूअ २, २, २०; सुपा ४४५; उत्त २४, ४)। वकृ—**रियंत**; (पउम २८, ४)।

रिअ सक [**प्र+विश्**] प्रवेश करना, पैठना। रिअइ; (हे ४, १८३; कुमा)।

रिअ न [**ऋत**] १ गमन; "पुरओ रियं सोहमाणे" (भग)। २ सत्य; (भग ८, ७)।

रिअ वि [**दे**] लून, काटा हुआ; (षड्)।

रिउ देखो **उउ**; (हे १, १४१; कुमा; पव १४१)।

रिउ वि [**ऋजु**] १ सरल, सीधा; (सुपा ३४६)। २ न. विशेष पदार्थ, सामान्य-भिन्न वस्तु; (पव २७०)। °**सुत्त** पुं [°**सूत्र**] नय-विशेष; (विसे २२३१; २६०८)। देखो **उज्जु**।

रिउ पुं [**रिपु**] शत्रु, वैरी, दुश्मन; (सुर २, ६६; कुमा)। °**महण** पुं [°**मथन**] राक्षस-वंश का एक राजा; (पउम ५, २६३)।

रिउ स्त्री [**ऋच्**] वेद का नियत अक्षर-पाद वाला अंश; °**व्वेय** पुं [°**वेद**] एक वेद-ग्रन्थ; (णाया १, ५; कप्प)।

रिंखण न [**रिङ्खण**] सर्पण, गति, चाल; (पउम २५, १२)।

रिंखि वि [**रिङ्खिन्**] चलने वाला; "गिद्धावरिंखि हदंन्नए (?गिद्धु व्व रिंखी हदन्नए)" (पिंड ४७१)।

रिंग देखो **रिग**। रिंगइ, रिंगए; (हे ४, २५६ टि; षड्; पिंग)। वकृ—**रिंगंत**; (हास्य १४६)।

रिंगण न [**रिङ्गण**] चलना, सर्पण; (पव २)।

रिंगणी स्त्री [**दे**] वल्ली-विशेष, कण्टकारिका, गुजराती में 'रिंगणी'; (दे २, ४; उर २, ८)।

रिंगिअ न [**दे**] भ्रमण; (दे ७, ६)।

रिंगिअ न [**रिङ्गित**] १ रेंगना, कच्छप की तरह हाथ के बल चलना; २ गुरु-वन्दन का एक दोष; (गुभा २४)।

रिंगिसिया स्त्री [**दे**] वाद्य-विशेष; (राज)।

रिंछ (अप) देखो **रिच्छ=ऋक्ष**; (भवि)।

रिंछोली स्त्री [**दे**] पंक्ति, श्रेणि; (दे ७, ७; सुर ३, ३१; विसे १४३६ टी; पाअ; चेइय ४४; सम्मत्त १८८; धर्मवि ३७; भवि)।

रिंडी स्त्री [**दे**] कन्थाप्राया, कन्था की तरह का फटा-टूटा आच्छादन-वस्त्र; (दे ७, ५)।

रिक्क वि [**दे**] स्तोक, थोड़ा; (दे ७, ६)।

रिक्क देखो **रित्त=**रिक्त; (आचा; पाअ; पउम ८, ११८; सुपा ४२२; चउ ३६)।

रिक्किअ वि [**दे**] शटित, सड़ा हुआ; (दे ७, ७)।

रिक्ख अक [**रिङ्ख्**] चलना। वकृ—"गिरिव्व अच्छिन्नपक्खो अंतरिक्खे **रिक्खंतो** लक्खिज्जइ" (कुम ६७)।

रिक्ख वि [**दे**] १ वृद्ध, बूढ़ा; २ पुं. वयः-परिणाम, वृद्धता; (दे ७, ६)।

रिक्ख पुं [**ऋक्ष**] १ भालू, श्वापद प्राणि-विशेष; (हे २, १६)। २ न. नक्षत्र; (पाअ; सुर ३, २६; ८, ११६)। °**पह** पुं [°**पथ**] आकाश; (सुर ११, १७१)। °**राय** पुं [°**राज**] वानर-वंश का एक राजा; (पउम ८, २३४)।

रिक्खण न [**दे**] १ उपलम्भ, अधिगम; २ कथन; (दे ७, १४)।

रिक्खा देखो **रेहा=**रेखा; (ओघ १७६)।

रिग } अक [**रिङ्ग्**] १ रेंगना, चलना। २ प्रवेश **रिग्ग** } करना। रिगइ, रिग्गइ; (हे ४, २५६; टि)।

रिग्ग पुं [**दे**] प्रवेश; (दे ७, ५)।

रिच स्त्रीन. देखो **रिउ=**ऋच्; (पि ५६; ३१८)। स्त्री—°**चा**; (नाट—रत्ना ३८)।

रिच्छ वि [दे] वृद्ध, बूढ़ा; (दे ७, ६)।
रिच्छ देखो **रिक्ख**=ऋक्ष; (हे १, १४०; २, १६; पाअ)। °**ाहिव** पुं [°**ाधिप**] जाम्बवान्, राम का एक सेनापति; (से ४, १८; ४५)।
रिच्छभल्ल पुं [दे] भालू, रीछ; (दे ७, ७)।
रिजु देखो **रिउ**=ऋच्; (भग)।
रिजु देखो **रिउ**=ऋजु; (विसे ७८४)।
रिज्ज देखो **रिअ**=री। रिज्जइ; (आचा)।
रिज्जु देखो **रिउ**=ऋजु, (हे १, १४१; संचि १७; कुमा)।
रिज्झ अक [ऋध्] १ बढ़ना। २ रीझना, खुशी होना। रिज्झइ; (भवि)।
रिट्ठ पुं [दे. अरिष्ट] १ अरिष्ट, दुरित; (षड्; पि १४२)। २ दैत्य-विशेष; (षड्; से १, ३)। ३ काक, कौआ; (दे ७, ६; गाया १, १—पत्र ६३; षड्; पाअ)। °**नेमि** पुं [°**नेमि**] बाईसवें जिनदेव; (पि १४२)।
रिट्ठ पुं [**रिष्ट**] १ देव-विशेष, रिष्ट-नामक विमान का निवासी देव; (गाया १, ८—पत्र १५१)। २ वेलम्ब और प्रभञ्जन नामक इन्द्रों के लोकपाल; (ठा ४, १—पत्र १९८)। ३ एक वृष साँढ, जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था; (पगह १, ४—पत्र ७२)। ४ पक्षि-विशेष; (पउम ७, १७)। ५ न. रत्न-विशेष, (चेइय ६१५; औप; गाया १, १ टी)। ६ एक देव-विमान; (सम ३५)। ७ पुन. फल-विशेष, रीठा; (उत्त ३४, ४; सुख ३४, ४)। °**पुरी** स्त्री [°**पुरी**] कच्छावती-विजय की राजधानी; (ठा २, ३—पत्र ८०; इक)। °**मणि** पुं [°**मणि**] श्याम रत्न-विशेष; (सिरि ११६०)।
रिट्ठा स्त्री [**रिष्टा**] १ महाकच्छ विजय की राजधानी; (ठा २, ३—पत्र ८०; इक)। २ पाँचवीं नरक-भूमि; (ठा ७—पत्र ३८८)। ३ मदिरा, दारू; (राज)।
रिट्ठाभ न [**रिष्टाभ**] १ एक देव-विमान; (सम १४)। २ लोकान्तिक देवों का एक विमान; (पव २६७)।
रिट्ठि स्त्री [**रिष्टि**] १ खड्ग, तलवार; (दे ७, ६)। २ अशुभ; ३ पुं. रन्ध्र, विवर; (संक्षि ३)।
रिड सक [**मण्डय्**] विभूषित करना। रिडइ; (षड्)।
रिण न [**ऋण**] १ करजा, धार लिया हुआ धन; (गा ११३; कुमा; प्रासू ७७)। २ जल, पानी; ३ दुर्ग, किला; ४ दुर्ग भूमि; ५ आवश्यक कार्य, फरज; ६ कर्म; (हे १, १४१; प्राप्र)। देखो **अण**=ऋण।
रिणिअ वि [**ऋणित**] करजदार, अधमर्ण; (कुप्र ४३६)।
रिते अ [**ऋते**] सिवाय, विना; (पिंड ३७०)।
रित्त वि [**रिक्त**] १ खाली, शून्य; (से ७, ११; गा ४६०, धर्मवि ६; ओघभा १६६)। २ न. विरेक, अभाव; (उत्त २८, ३३)।
रित्तूडिअ वि [दे] शातित, झड़वाया हुआ; (दे ७, ८)।
रित्थ न [**रिक्थ**] धन, द्रव्य; (उप ५२०; पाअ; स ६०; सुख ४, ६; महा)।
रिद्ध वि [**ऋद्ध**] ऋद्धि-संपन्न; (गाया १, १; उवा; औप)।
रिद्ध वि [दे] पक्व, पका; (दे ७, ६)।
रिद्धि पुंस्त्री [दे] समूह, राशि; (दे ७, ६)।
रिद्धि स्त्री [**ऋद्धि**] १ संपत्ति, समृद्धि, वैभव; (पाअ; विपा २, १; कुमा; सुर २, १६८; प्रासू १२; ६२)। २ वृद्धि; ३ देव-विशेष; ४ ओषधि-विशेष, (हे १, १२८; २, ४१; पंचा ८)। ५ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**म, °ल्ल** वि [°**मत्**] समृद्ध, ऋद्धि-संपन्न; (ओघ ६८४; पउम ५, ५६; सुर २, ६८; सुपा २२३)। °**सुंदरी** स्त्री [°**सुन्दरी**] एक वणिक्-कन्या; (उप ७२८ टी)।
रिपु देखो **रिवु**; (कप्प)।
रिप्प न [दे] पृष्ठ, पीठ; (दे ७, ५)।
रिभिय न [**रिभित**] १ एक प्रकार का नृत्य; (ठा ४, ४—पत्र २८५)। २ स्वर का घोलन; ३ वि. स्वर-घोलना से युक्त; (राज; गाया १, १—पत्र १३)।
रिमिण वि [दे] रोने की आदत वाला; (दे ७, ७; षड्)।
रिरंसा स्त्री [**रिरंसा**] रमण की चाह, मैथुनेच्छा; (अज्झ ७६)।
रिरिअ वि [दे] लीन, (दे ७, ७)।
रिल्ल अक [दे] शोभना। वकृ—**रिल्लंत**, (भवि)।
रिवु देखो **रिउ**=रिपु; (पउम १२, ४१; ४४, ५०; स १३८; उप पृ ३२१)।
रिसभ } पुं [**ऋषभ**] १ स्वर-विशेष; (ठा ७—पत्र **रिसह** } ३९३)। २ अहोरात्र का अठावीसवाँ मुहूर्त; (सम ५१; सुज्ज १०, १३)। ३ सहत अस्थि-द्वय के ऊपर का वलयाकार वेष्टन-पट्ट; "रिसहो य होइ पट्टो" (जीवस ४६)। देखो **उसभ**; (औप; हे १, १४१; सम १४६; कम्म १, १६; सुपा २६०)।
°**रिसह** पुं [°**ऋषभ**] श्रेष्ठ, उत्तम; (कुमा)।
रिसि पुं [**ऋषि**] मुनि, संत, साधु; (औप; कुमा; सुपा ३१;

अवि १०१; उप ७६८ टी)। °घाय पुं [°घात] मुनि-हत्या; (उप ४६६)।

रिह सक [प्र+विश्] प्रवेश करना, पैठना। रिहइ; (षड्)।

री } अक [री] जाना, चलना। रीयइ, रीयए, रीयंते,
रीअ } रीइज्जा; (आचा; सूअ १, २, २, ५; उत्त २४, ७)। भूका—रीइत्था; (आचा)। वकृ—**रीयंत, रीयमाण**; (आचा)।

रीइ स्त्री [रीति] प्रकार, ढंग, पद्धति; "तं जयां विडंवंति निच्चं नवनवरीईइ" (धर्मवि ३२; कप्पू)।

रीड सक [मण्डय्] अलंकृत करना। रीडइ; (हे ४, ११५)।

रीडण न [मण्डन] अलंकरण; (कुमा)।

रीढ स्त्रीन [दे] अवगणन, अनादर; (दे ७, ८), स्त्री—°**ढा**; (पाअ; धम्म ११ टी; पंचा २, ८; बृह १)।

रीण वि [रीण] १ क्षरित, स्नुत। २ पीडित; (भत्त २)।

रीर अक [राज्] शोभना, चमकना, दीपना। रीरइ; (हे ४, १००)।

रीरिअ वि [राजित] शोभित; (कुमा)।

रीरी स्त्री [रीरी] धातु-विशेष, पीतल; (कुप्र ११; सुपा १४२)।

रु स्त्री [रुज्] रोग, बिमारी; "अह (? रु) उवसग्गो" (तंदु ४६)।

रुअ अक [रुद्] रोना। रुअइ; (षड्; संक्षि ३६; प्राकृ ६८; महा)। भवि—रोच्छं; (हे ३, १७१)। वकृ—**रुअ**, **रुअंत, रुयमाण**; (गा २१६; ३७६; ४००; सुर २, ६६; ११२; ४, १२६)। संकृ—**रोत्तूण**, (कुमा; प्राकृ ३४)। हेकृ—**रोत्तुं**, (प्राकृ ३४)। कृ—**रोत्तव्व**; (हे ४, २१२; से ११, ६२)। प्रयो—रुयावेइ; (महा), रुआवंति; (पुप्फ ४४७)।

रुअ न [रुत] शब्द, आवाज; (से १, २८; गाया १, १३; पव ७३ टी)।

रुअ देखो **रूअ**=रूप; (इक)।

रुअ देखो **रूअ**=(दे); (औप)।

रुअंती स्त्री [रुदती] वल्ली-विशेष; (संबोध ४७)।

रुअंस देखो **रूअंस**; (इक)।

रुअग पुं [रुचक] १ कान्ति, प्रभा, (पण्ह १, ४—पत्र ७८; औप)। २ पर्वत-विशेष, "नगुत्तमो होइ पव्वओ रुयगो" (दीव)। ३ द्वीप-विशेष; (दीव)। ४ एक समुद्र, (सुज्ज १६)। ५ एक विमानावास—देव-विमान; (देवेन्द्र १३२)। ६ न. इन्द्रों का एक आभाव्य विमान; (देवेन्द्र २६३)। ७ रत्न-विशेष; (उत्त ३६, ७६; सुख ३६, ७६)। ८ रुचक पर्वत का पाँचवाँ कूट; (दीव)। ६ निषध पर्वत का आठवाँ कूट; (इक)। °**प्पभ** न [°प्रभ] महाहिमवंत पर्वत का एक कूट; (ठा २, ३)। °**वर** पुं [°वर] १ द्वीप-विशेष, (सुज्ज १६)। २ पर्वत-विशेष; (पण्ह २, ४—पत्र १३०)। ३ समुद्र-विशेष; ४ रुचकवर समुद्र का एक अधिष्ठाता देव; (जीव ३—पत्र ३६७)। °**वरभद्द** पुं [°**वरभद्र**] रुचकवर द्वीप का अधिष्ठायक एक देव; (जीव ३—पत्र ३६६)। °**वरमहाभद्द** पुं [°**वरमहाभद्र**] वही अर्थ; (जीव ३)। °**वरमहावर** पुं [°**वरमहावर**] रुचकवर समुद्र का एक अधिष्ठाता देव; (जीव ३)। °**वरावभास** पुं [°**वरावभास**] १ द्वीप-विशेष; २ समुद्र-विशेष; (जीव ३)। °**वरावभासभद्द** पुं [°**वरावभासभद्र**] रुचकवरावभास द्वीप का एक अधिष्ठाता देव; (जीव ३)। °**वरावभासमहाभद्द** पुं [°**वरावभासमहाभद्र**] वही अर्थ, (जीव ३)। °**वरावभासमहावर** पुं [°**वरावभासमहावर**] रुचकवरावभास-नामक समुद्र का एक अधिष्ठाता देव; (जीव ३)। °**वरावभासवर** पुं [°**वरावभासवर**] वही अर्थ; (जीव ३—पत्र ३६७)। °**वरोद** पुं [°**वरोद**] समुद्र-विशेष; (सुज्ज १६)। °**वरोभास** देखो °**वरावभास**; (सुज्ज १६)। °**वई** स्त्री [°**वती**] एक इन्द्राणी; (गाया २—पत्र २५२)। °**द** पुं [°**द**] समुद्र-विशेष; (जीव ३—पत्र ३६६)।

रुअगिंद पुं [रुचकेन्द्र] पर्वत-विशेष; (सम ३३)।

रुअगुत्तम न [रुचकोत्तम] कूट-विशेष; (इक)।

रुअण न [रोदन] रुदन, रोना; (संबोध ४)।

रुअय देखो **रुअग**; (सम ६२)।

रुअरुइआ स्त्री [दे] उत्कण्ठा; (दे ७, ८)।

रुआ स्त्री [रुज्] राग, बिमारी; (उव; धर्मसं ५६८)।

रुआविअ वि [रोदित] रुलाया हुआ; (गा ३८६)।

रुइ स्त्री [रुचि] १ कान्ति, प्रभा, तेज; (सुर ७, ४; कुमा)। २ अनुराग, प्रेम; (ओ ५१)। ३ आसक्ति; (प्रासू १६६)। ४ स्पृहा, अभिलाष; ५ शोभा, ६ बुभुक्षा, खाने की इच्छा; ७ गारोचना; (षड्)।

रुइअ वि [रुचित] १ अभीष्ट, पसंद, (सुर ७, २४३; महा)। २ पुंन. विमानावास-विशेष, एक देव-विमान, (देवेन्द्र १३२)।

रुइअ देखो **रुण्ण**=रुदित; (स १२०)।

रुइर वि [**रुचिर**] १ सुन्दर, मनोरम; (पाअ)। २ दीप्त, कान्ति-युक्त; (तंदु २०)। ३ पुंन. एक विमानेन्द्रक, देव-विमान-विशेष; (देवेन्द्र १३१)।

रुइर वि [**रोदितृ**] रोने वाला; स्त्री—°**री**; (पि ५९६; गा २१६ अ)।

रुइल वि [**रुचिर, °ल**] १ शोभन, सुन्दर; (औप; णाया १, १-टी; तंदु २०)। २ दीप्त, चमकता; (पगह १, ४—पत्र ७८; सूअ २, १, ३)। ३ पुंन. एक देव-विमान; (सम ३८)।

रुइल्ल न [**रुचिर, रुचिमत्**] एक देव-विमान; (सम १५)। °**कंत** न [°**कान्त**] एक देव-विमान; (सम १५)। °**कूड** न [°**कूट**] एक देव-विमान; (सम १५)। °**ज्झय** न [°**ध्वज**] देवविमान-विशेष; (सम १५)। °**प्पभ** न [°**प्रभ**] एक देव-विमान; (सम १५)। °**लेस** न [°**लेश्य**] एक देव-विमान, (सम १५)। °**वण्ण** न [°**वर्ण**] देवविमान-विशेष; (सम १५)। °**सिंग** न [°**शृङ्ग**] एक देव-विमान; (सम १५)। °**सिट्ठ** न [°**सृष्ट**] एक देव-विमान; (सम १५)। °**ावत्त** न [°**ावर्त**] एक देव-विमान; (सम १५)।

रुइल्लुत्तरवडिंसग न [**रुचिरोत्तरावतंसक**] एक देव-विमान; (सम १५)।

रुंच सक [**रुञ्च्**] रुई से उसके बीज को अलग करने की क्रिया करना। वकृ—**रुंचंत,** (पिंड ५७४)।

रुंचण न [**रुञ्चन**] रुई से कपास को अलग करने की क्रिया; (पिंड ५८८)।

रुंचणी स्त्री [**दे**] घरट्टी, दलने का पत्थर-यन्त्र; (दे ७, ८)।

रुंज अक [**रु**] आवाज करना। रुंजइ; (हे ४, ५७; षड्)।

रुंजग पुं [**दे, रुञ्जक**] वृक्ष, पेड़, गाछ, "कुहा महीरुहा वच्छा रोवगा रुंजगाई अ" (दसनि १)।

रुंजिय न [**रवण**] शब्द, आवाज, गर्जना; (स ४२०)।

रुंट देखो **रुंज**। रुंटइ, (हे ४, ५७, षड्)। वकृ—**रुंटंत**; (स ६२; पउम १०५. ५५; गउड)।

रुंटणया स्त्री [**दे**] अवज्ञा, अनादर, (पिंड २१०)।

रुंटणिया स्त्री [**दे, रवणिका**] रोदन-क्रिया, (णाया १, १६—पत्र २०२)।

रुंटिअ न [**रुत**] गुन्जारव, आवाज; "रुंटिअं अलिविरुअं" (पाअ; कुमा)।

रुंड पुंन [**रुण्ड**] बिना सिर का धड़, कबन्ध; "पडिया य मुंडरुंडा" (कुप्र १३५; गउड; भवि; सण)।

रुंढ पुं [**दे**] आक्षिक, कितव, जूआड़ी; (दे ७, ८)।

रुंढिअ वि [**दे**] सफल; (दे ७, ८)।

रुंद वि [**दे**] १ विपुल, प्रचुर; (दे ७, १४; गा ४०२; सुपा २९३; वज्जा १२८; १६२)। २ विशाल, विस्तीर्ण; (विसे ७१०; स ७०२; पव ६१; औप)। ३ स्थूल, मोटा, पीन; (पाअ)। ४ मुखर, वाचाल; (दे ७, १४)।

रुंदी स्त्री [**दे**] विस्तीर्णता, लम्बाई; (वज्जा १६४)।

रुंध सक [**रुध्**] रोकना, अटकाना। रुंधइ; (हे ४, १३३; २१८)। कर्म—रुंधिज्जइ, रुब्भइ, रुब्भए; (हे ४, २४५; कुमा)। वकृ—**रुंधंत**; (कुमा)। कवकृ—**रुब्भंत, रुब्भमाण, रुज्झंत**; (पउम ७३, २६; से ४, १७; भवि)। कृ—**रुंधिअव्व**; (अभि ५०)।

रुंधिअ वि [**रुद्ध**] रोका हुआ; (कुमा)।

रुंप पुंन [**दे**] १ त्वचा, सूक्ष्म छाल; (गा ११९; १२०; वज्जा ४२)। २ उल्लिखन; (वज्जा ४२)।

रुंपण न [**रोपण**] रोपाना, वपन कराना, वापन; (पिंड १६२)।

रुंफ देखो **रुंप**; (पि २०८)।

रुंभ देखो **रुंध**। रुंभइ; (हे ४, २१८; प्राप्र)। वकृ—**रुंभंत**; (पि ५३५)। कृ—**रुंभिअव्व**; (से ९, ३)।

रुंभण न [**रोधन**] रोक, अटकायत, (पगह १, १; कुप्र ३७७; गा ६९०)।

रुंभय वि [**रोधक**] रोकने वाला; (स ३८१)।

रुंभाविअ वि [**रोधित**] रुकवाया हुआ, बँद किया हुआ; (श्रा २७)।

रुंभिअ वि [**रुद्ध**] रोका हुआ; (हेका ९९; सुपा १२७)।

रुक्किणी देखो **रुप्पिणी**, (पि २७७)।

रुक्ख पुंन [**वृक्ष**] पेड, गाछ, पादप; (णाया १, १, हे २, १२७; प्राप्र; उव, कुमा; जी २७; प्रति ६; प्रासू १६८); "रुक्खाइं, रुक्खाणि" (पि ३५८)। २ संयम, विरति; (सूअ १, ४, १, २५)। °**मूल** न [°**मूल**] पेड़ की जड; (कप्प)। °**मूलिअ** पुं [°**मूलिक**] वृक्ष के मूल में रहने वाला वानप्रस्थ; (औप)। °**सत्थ** न [°**शास्त्र**]

वनस्पति-शास्त्र; (स ३११)। °उवेद पुं [°युर्वेद] वही अर्थ; (विसे १७७५)।
रुक्खल्ल ऊपर देखो; (षड्)।
रुक्खिम पुंस्री [वृक्षत्व] वृक्षपन; (षड्)।
रुग्ग वि [रुग्ण] भग्न, भाँगा हुआ, (पाअ; गउड ५६१)।
रुचिर देखो रुइर; (दे १, १४६)।
रुच्च अक [रुच्] रुचना, पसंद पड़ना। रुच्चइ, रुच्चए; (वज्जा १०६; महा; सिरि १०६; भवि)। वकृ—रुच्चंत, रुच्चमाण; (भवि; उप १४३ टी)।
रुच्च सक [दे] व्रीहि आदि को यन्त्र में निस्तुष करना। वकृ—रुच्चंत; (णाया १, ७—पत्र ११७)।
रुच्चि देखो रुइ=रुचि; (कप्पू)।
रुच्छ देखो रुक्ख; (संक्षि १५)।
रुच्मि देखो रुप्पि; (हे २, ५२; कुमा)।
रुज्ज न [रोदन] रुदन, रोना; "दीहुण्हा णीसासा, रणरणो, रुज्जणग्गिरं गेअं" (गा ८४३)।
रुज्झ देखो रुंध। रुज्झइ; (हे ४, २१८)।
रुज्झ° देखो रुह=रुह्।
रुज्झंत देखो रुंध।
रुज्झिअ वि [रुद्ध] रोका हुआ; (कुमा)।
रुट्टिया स्त्री [दे] रोटी; (सट्टि ३६)।
रुट्ठ वि [रुष्ट] रोष-युक्त; (उवा; सुर २, १२१)। २ पुं. नरकावास-विशेष; (देवेन्द्र २८)।
रुणरुण न [दे] करुण क्रन्दन, (भवि)।
रुणरुण अक [दे] करुण क्रन्दन करना। रुणरुणइ; (वज्जा ५०, भवि)। वकृ—रुणरुणंत; (भवि)।
रुणुरुण देखो रुणरुण, (पउम १०५, ५८)।
रुणुरुणिय वि [दे] करुण क्रन्दन वाला; (पउम १०५, ५८)।
रुण्ण न [रुदित] रोदन, रोना; (हे १, २०६; प्राप्र; गा १८)।
रुत्थिणी देखो रुप्पिणी; (षड्)।
रुदिअ देखो रुण्ण, (नाट—मालती १०६)।
रुद्द पुं [रुद्र] १ महादेव, शिव; (सम्मत १४५; हेका ५६)। २ शिव-मूर्ति विशेष; (णाया १, १—पत्र ३६)। ३ जिन देव, जिन भगवान्; (पउम १०६, १२)। ४ परमाधार्मिक देवों की एक जाति; (सम २८)। ५ नृप-विशेष, एक वासुदेव का पिता; (पउम २०, १८२; सम १५२)। ६ ज्योतिष्क देव-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७७; सुज्ज १०, १२)। ७ अंग-विद्या का जानकार पुरुष, (विचार ४८४)। ८ वि. भयंकर, भय-जनक; (सम्मत १४५)। देखो रोद्द=रुद्र।
रुद्द देखो रोद्द=रौद्र; (सम ६)।
रुद्दक्ख पुं [रुद्राक्ष] वृक्ष-विशेष; (पउम ५३, ७६)।
रुद्दाणी स्त्री [रुद्राणी] शिव-पत्नी, दुर्गा, (समु १५४)।
रुद्ध वि [रुद्ध] रोका हुआ; (कुमा)।
रुद्ध देखो रुद्द; (हे २, ८०)।
रुन्न देखो रुण्ण; (सुर २, १२६)।
रुप्प सक [रोपय्] रोपना, बोना; "सहयारभरियदेसे रुप्पसि धत्तूरयं तुमं वच्छे" (धर्मवि ६७)।
रुप्प न [रुक्म] १ काञ्चन, सोना; २ लोहा; ३ धतूरा; ४ नागकेसर; (प्राप्र)। ५ चाँदी, रजत; (जं ४)।
रुप्प न [रूप्य] चाँदी, रजत; (औप; सुर ३, ६; कप्पू)। °कूड पुं [°कूट] रुक्मि पर्वत का एक कूट; (राज)। °कूलप्पवाय पुं [°कूलप्रपात] द्रह-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७३)। °कूला स्त्री [°कूला] १ एक महानदी; (ठा २, ३—पत्र ७२; ८०; सम २७; इक)। २ एक देवी; ३ रुक्मि पर्वत का एक कूट; (जं ४)। °मय वि [°मय] चाँदी का बना हुआ; (णाया १, १—पत्र ५२; कुमा)। °भास पु [°भास] एक ज्योतिष्क महा-ग्रह; (ठा २, ३—पत्र ७८)।
रुप्प वि [रौप्य] रूपा का, चाँदी का; (णाया १, १—पत्र २४; उर ८, ४)।
रुप्पय देखो रुप्प=रूप्य; "रुप्पयं रययं" (पाअ; महा)।
रुप्पि पुं [रुक्मिन्] १ कौण्डिन्य नगर का एक राजा, रुक्मिणी का भाई; (णाया १, १६—पत्र २०६; कुमा; रुक्मि ४२)। २ कुणाल देश का एक राजा; (णाया १, ८—पत्र १४०)। ३ एक वर्षधर-पर्वत; (ठा २, ३—पत्र ६६; सम १२; ७२)। ४ एक ज्योतिष्क महा-ग्रह; (ठा २, ३—पत्र ७८)। ५ देव-विशेष; (जं ४)। ६ रुक्मि पर्वत का एक कूट, (जं ४)। ७ वि सुवर्ण वाला; ८ चाँदी वाला; (हे २, ५२; ८६)। °कूड पुंन [°कूट] रुक्मि पर्वत का एक कूट, (ठा २, ३, सम ६३)।
रुप्पिणी स्त्री [रुक्मिणी] १ द्वितीय वासुदेव की एक पटरानी; (पउम २०, १८६)। २ श्रीकृष्ण वासुदेव की एक अग्र-

महिषी, (पउम २०. १८७; परि)। ३ एक श्रेष्ठि-पत्नी; (सुपा ३३४)।
रुप्पोभास पुं [रूप्यावभास] १ एक महाग्रह; (सुज्ज २०)। २ वि. रूपा की तरह चमकता; (ठा ४)।
रुभंत } देखो रुंध।
रुभमाण }
रुम्मिणी देखो रुप्पिणी; (षड्)।
रुमह सक [म्लापय्] म्लान करना, मलिन करना। "विअसइ जसं" (से ३, ४)।
रुरु पुं [रुरु] १ मृग-विशेष; (पउम ९, ६६; पण्ह १, १—पत्र ७)। २ वनस्पति-विशेष, (पणण १—पत्र ३६)। ३ एक अनार्य देश; ४ एक अनार्य मनुष्य-जाति; (पव १, १—पत्र १४)।
रुरुव अक [रोरूय्] १ खूब आवाज करना; २ बारंबार चिल्लाना। वकृ—रुरुवंत; (स २१३)।
रुल अक [लुट्] लेटना। वकृ—रुलंत, रुलित, (पण्ह १, ३—पत्र ४५), "पाडियमत्तकरतुरयं रुलंततमुहडअसमगाइन्नं" (धर्मवि ८०)।
रुलुघुल अक [दे] खिन्न होना, निःश्वास डालना। वकृ—रुलुघुलंत; (भवि)।
रुव देखो रुअ=रुद्। रुवइ; (हे ४, २२६; प्राकृ ६८; महा ३६; भवि; महा), रुवामि, (कुप्र ६८)। कर्म—रुव्वइ, रुविज्जइ; (हे ४, २४९)।
रुवण न [रोदन] रोना; (उप ३३५)।
रुवणा स्त्री. ऊपर देखो; (ओघभा ३०)।
रुविल देखो रुइल; (औप)।
रुव्व देखो रुअ=रुद्। रुव्वइ; (महा ३६; प्राकृ ६८)।
रुसा स्त्री [रोष] रोष, गुस्सा; (कुमा)।
रुसिय देखो रूसिअ; (पउम ५५, १५)।
रुह अक [रुह्] १ उत्पन्न होना। २ सक. घाव को सुखाना। रुहइ; (नाट)। कर्म—"जेण निवारिज्जंति रागाइपहारा इमीए पक्खालणोयएणंवि पणट्ठवेणणा तक्खणा चेव रुज्झइ त्ति" (स ४१३)।
रुह वि [रुह] उत्पन्न होने वाला; (आचा)।
रुहरुह अक [दे] मन्द मन्द बहना। "वासंगि सुत्ति रुहरुहइ वाउ" (भवि)।
रुहुरुहय पु [दे] उत्कण्ठा; (भवि)।

रूअ न [दे. रूत] रूई, तूल, (दे ७, ९, कुमा; पा ७८; दे १२ ११७; धर्मवि १४८; भग; पिंड ३१)।
रूअ पुं [रूप] १-२ पूर्वोक्त और विशिष्ट-नामक इन्द्र का एक लोकपाल; (ठा ४, १—पत्र १९७)। ३ आकृति, आकार; (गा ११२)। ४ वि. सदृश, तुल्य, (से ६. ४१)। °कंत पुं [°कान्त] १-२ पूर्वोक्त और विशिष्ट-नामक इन्द्र का एक लोकपाल, (ठा ४, १)। °कंता स्त्री [°कान्ता] १ भूतानन्द-नामक इन्द्र की एक अग्रमहिषी, (णाया २—पत्र २५२)। २ एक दिक्कुमारी-महत्तरिका; (राज)। °प्पभ पुं [°प्रभ] पूर्वोक्त और विशिष्ट [illegible] एक लोकपाल; (ठा ४, १—पत्र १९७, १९८)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] १ भूतानन्द इन्द्र की एक अग्रमहिषी, (णाया २—पत्र २५२)। २ एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ६—पत्र ३६१)। देखो रूव=रूप; (राज)।
रूअंस पुं [रूपांश] १-२ पूर्वोक्त और विशिष्ट इन्द्र का एक लोकपाल; (ठा ४, १—पत्र १९७, १९८)।
रूअंसा स्त्री [रूपांशा] १ भूतानन्द इन्द्र की एक अग्रमहिषी, (णाया २—पत्र २५२)। २ एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ६—पत्र ३६१)।
रूअग } पुं [रूपक] १ रुपया; (हे ४, ४२२)। २
रूअय } न एक रूपक, (णाया २—पत्र २५२)। ३ रूपा देवी का सिंहासन, (णाया २—पत्र २५२)। °वडिंसय न [°वतंसक] रूपा देवी का भवन; (णाया २)। °सिरी स्त्री [°श्री] एक इभ्य-पत्नी, (णाया २)। °वई स्त्री [°वती] भूतानन्द-नामक इन्द्र की एक अग्रमहिषी; (णाया २)। देखो रूवय=रूपक।
रूअलइआ [दे] देखो रूआलइआ; (षड्)।
रूआ स्त्री [रूपा] १ भूतानन्द इन्द्र की एक अग्रमहिषी; (णाया २—पत्र २५२)। २ एक दिक्कुमारी देवी, (ठा ४, १—पत्र १९८)।
रूआमाला स्त्री [रूपमाला] छन्द-विशेष; (पिंग)।
रूआर वि [रूपकार] मूर्ति बनाने वाला; "भंजुवनोरुवं जोण्णे अलिए नां करेइ रूआरो" (सिरि १११०)।
रूआवई स्त्री [रूपवती] एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ४, १—पत्र १९८)।
रूढ वि [रूढ] १ परंपरागत, रूढ़ि-सिद्ध; २ प्रसिद्ध, "रूढकमेण सव्वे नराहिवा तत्थ उवविट्ठा" (उप ६४८ टी)। ३ प्रगुण, तंदुरस्त; (पाअ)।

रूढि स्त्री [**रूढि**] परम्परा से चली आती प्रसिद्धि; "पोसहसद्दो रुढीए एत्थ पव्वाणुवायओ भणिओ" (सुपा ६१६; कप्पू)।
रूप पुं [**रूप**] पशु, जनावर; (मृच्छ २००)। देखो **रूअ**=रूप; (ठा ६—पत्र ३६१)।
रूपि पुं [**रूपिन्**] शौनिक, कसाइ; (मृच्छ २००)।
रूरुइय न [**दे**] उत्सुकता, रणरणक; (पाअ)।
रूव पुन [**रूप**] १ आकृति, आकार; (णाया १, १, पाअ)। २ सौन्दर्य, सुन्दरता; (कुमा; ठा ४, २; प्रासू ४७; ७१)। ३ वर्ण, शुक्ल आदि रँग; (औप, ठा १, २, ३)। ४ मूर्ति, (विसे १११०)। ५ स्वभाव; (ठा ६)। ६ शब्द, नाम; ७ श्लोक; ८ नाटक आदि दृश्य काव्य; (हे १, १४२)। ६ एक की संख्या, एक; (कम्म ४, ७७; ७८; ७६; ८०; ८१)। १०–११ रूप वाला, वर्ण वाला, (हे १, १४२)। १२—देखो **रूअ, रूप**=रूप। °**कंता** देखो **रूअ-कंता**; (ठा ६—पत्र ३६१; इक)। °**धार** वि [°**धार**] रूप-धारी; "जलयरमज्झगएणं अणेगमच्छाइरूव-धारेण" (स्वा ६)। °**प्पभा** देखो **रूअ प्पभा**; (इक)। °**मंत** देखो °**वंत**; (पउम १२, ५७; ६१, २६)। °**वई** स्त्री [°**वती**] १ भूतानन्द-नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ६—पत्र ३६१)। २ सुरूप-नामक भूतेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ एक दिक्कुमारी महत्तरिका; (ठा ६)। °**वंत**, °**स्सि** वि [°**वत्**] रूप वाला, सु-रूप; (श्रा १०; उवा; उप पृ ३३२; सुपा ४७४; उव)।
रूवग पुंन [**रूपक**] १ रुपया; (उप पृ २८०; धम्म ८ टी; कुप्र ४१४)। २ साहित्य-प्रसिद्ध एक अलंकार; (सुर १, २६; विसे ६६६ टी)। देखो **रूअग**=रूपक।
रूवमिणी स्त्री [**दे**] रूपवती स्त्री; (दे ७, ६)।
रूवय देखो **रूवग**; (कुप्र १२३; ४१३; भास ३४)।
रूवस्सिणी देखो **रूवमिणी**; (षड्)।
रूवा देखो **रूआ**; (इक)।
रूवि वि [**रूपिन्**] रूप वाला; (आचा; भग; स ८३)।
रूवि पुस्त्री [**दे**] गुच्छ-विशेष, अर्क-वृक्ष, आक का पेड, (पराण १—पत्र ३२; दे ७, ६)।
रूस अक [**रुष्**] गुस्सा करना। रूसइ, रूसए, (उव; कुमा; हे ४, २३६; प्राकृ ६८; षड्)। कर्म—रूसिज्जइ; (हे ४, ४१८)। हेकृ—**रूसिउं, रूसेउं**; (हे ३, १४१; पि ५७३)। कृ—**रूसिअव्व, रूसेयव्व**; (गा ४६६; पराह २, ५—पत्र १५०; सुर १६, ६४)। प्रयो—संकृ—**रूसविअ**, (कुमा)।
रूसण न [**रोषण**] १ रोष, गुस्सा; (गा ६७५; हे ४, ४१८)। २ वि. गुस्साखोर, रोष करने वाला; (सुख १, १४; रंबोध ४८)।
रूसिअ वि [**रुष्ट**] रोष-युक्त, (सुख १, १३; १६)।
रे अ [**रे**] इन अर्थों का सूचक अव्यय,—१ परिहास; २ अधिक्षेप; (संक्षि ४७)। ३ संभाषण; (हे २, २०१; कुमा)। ४ आक्षेप; (संक्षि ३८)। ५ तिरस्कार; (पव ३८)।
रेअ पुं [**रेतस्**] वीर्य, शुक्र; (राज)।
रेअव सक [**मुच्**] छोड़ना, त्यागना। रेअवइ; (हे ४,६१)।
रेअविअ वि [**मुक्त**] छोड़ा हुआ, त्यक्त; (कुमा; दे ७, ११)।
रेअविअ वि [**दे, रेचित**] क्षणीकृत, शून्य किया हुआ, खाली किया हुआ; (दे ७, ११; पाअ; से ११, २)।
रेआ स्त्री [**रै**] १ धन; २ सुवर्ण, सोना; (षड्)।
रेइअ वि [**रेचित**] रिक्त किया हुआ; (से ७, ३१)।
रेंकिअ वि [**दे**] १ आक्षिप्त; २ लीन; ३ व्रीडित, लज्जित; (दे ७, १४)।
रेकार पुं [**रेकार**] 'रे' शब्द, 'रे' की आवाज; (पव ३८)।
रेड्डि देखो **रिद्धि**; (संक्षि ३)।
रेणा स्त्री [**रेणा**] महर्षि स्थूलभद्र की एक भगिनी, एक जैन साध्वी; (कप्प; पडि)।
रेणि पुंस्त्री [**दे**] पङ्क, कर्दम; (दे ७, ६)।
रेणु पुंस्त्री [**रेणु**] १ रज, धूली; (कुमा)। २ पराग; (स्वप्न ७६)।
रेणुया स्त्री [**रेणुका**] ओषधि-विशेष; (पराण १—पत्र ३६)।
रेभ पुं [**रेफ**] १ 'र' अक्षर, रकार; (कुमा)। २ वि. दुष्ट; ३ अधम, नीच, ४ क्रूर, निर्दय; ५ कृपण, गरीब; (हे १, २३६; षड्)।
रेरिज्ज अक [**राराज्य्**] अतिशय शोभना। वकृ—**रेरिज्जमाण**; (णाया १, २—पत्र ७८; १, ११—पत्र १७१)।
रेल्ल सक [**प्लावय्**] सराबोर करना। वकृ—**रेल्लंत**; (कुमा)।

रेल्लि स्त्री [**दे**] रेल, स्रोत, प्रवाह; (राज)।
रेवइय न [**रैवतिक**] एक उद्यान का नाम; (कप्प)।
रेवइआ स्त्री [**रेवतिका**] भूत-ग्रह विशेष; (सुख २, १६)।
रेवई स्त्री [**रेवती**] १ बलदेव की स्त्री; (कुमा)। २ एक श्राविका का नाम; (ठा ६—पत्र ४५५; सम १५४)। ३ एक नक्षत्र; (सम ५७)।
रेवई स्त्री [**दे. रेवती**] मातृका, देवी; (दे ७, १०)।
रेवंत पुं [**रेवन्त**] सूर्य का एक पुत्र, देव-विशेष; "रेवंत-तणुभवा इव अस्सकिसोरा सुलक्खणिणो" (धर्मवि १४२; सुपा ५६)।
रेवज्जिअ वि [**दे**] उपालब्ध; (दे ७, १०)।
रेवण पुं [**रेवण**] व्यक्ति-वाचक नाम, एक साधारण काव्य-ग्रन्थ का कर्ता; (धर्मवि १४२)।
रेवय न [**दे**] प्रणाम, नमस्कार; (दे ७, ६)।
रेवय पुं [**रैवत**] गिरनार पर्वत; (णाया १, ५—पत्र ६६; अंत; कुप्र १८)।
रेवलिआ स्त्री [**दे**] वालुकावर्त, धूल का आवर्त; (दे ७, १०)।
रेवा स्त्री [**रेवा**] नदी-विशेष, नर्मदा; (गा ५७८; पाअ; कुमा; प्रासू ६७)।
रेसणिआ } **रेसणी** } स्त्री [**दे**] १ करोटिका, एक प्रकार का कांस्य-भाजन; (पाअ, दे ७, १५)। २ अक्षि-निकोच; (दे ७, १५)।
रेसम्मि देखो **रेसिम्मि**; "जो उण सद्धा-रहिओ दाणं देइ ज-सकित्तिरेसम्मि" (स १५७)।
रेसि (अप) देखो **रेसिं**; (हे ४, ४२५; सण)।
रेसिअ वि [**दे**] छिन्न, काटा हुआ; (दे ७, ६)।
रेसिं (अप) नीचे देखो; (हे ४, ४२५)।
रेसिम्मि अ. निमित्त, लिए, वास्ते; "दंसणनाणचरित्ताण एस रेसिम्मि सुपसत्थो" (पंचा १६, ४०)।
रेह अक [**राज्**] दीपना, शोभना, चमकना। रेहइ, रेहए; (हे ४, १००; धात्वा १५०; महा)। वकृ—**रेहंत**; (कप्प)।
रेहा स्त्री [**रेखा**] १ चिह्न-विशेष, लकीर; (ओघ ४८६; गउड; सुपा ४१; वज्जा ६४)। २ पंक्ति, श्रेणि, (कप्पू)। ३ छन्द-विशेष; (पिंग)।
रेहा स्त्री [**राजना**] शोभा, दीप्ति; (कप्पू)।
रेहिअ न [**दे**] छिन्न पुच्छ, कटा हुआ पूँछ; (दे ७, १०)।
रेहिअ वि [**राजित**] शोभित; (सुर १०, १८६)।
रेहिर वि [**रेखावत्**] रेखा वाला; (हे २, १५६)।
रेहिर } **रेहिल्ल** } वि [**राजितृ**] शोभने वाला; (सुर १, ५०; सुपा ५६); "नयरे नयरेहिल्ले" (उप ७२८ टी)।
रेहिल्ल देखो **रेहिर**=रेखावत्; (उप ७२८ टी)।
रोअ देखो **रुअ**=रुद्। रोअइ; (संक्षि ३६; प्राकृ ३८)। वकृ—**रोअंत, रोयमाण**, (गा ५४६; उप पृ १२८; सुर २, २२६)। हेकृ—**रोउं**, (संक्षि ३७)। कृ—**रोअ-त्तअ, रोइअव्व**; (से ३, ४८; गा ३४८; हेका ३३)।
रोअ देखो **रुच्च**=रुच्। रोयइ, रोयए; (भग; उव), "रोएइ जं पहुणं तं चेव कुणंति सेवगा निच्चं" (रंभा)। वकृ—**रोयंत**; (श्रा ६)।
रोअ सक [**रोचय्**] १ रुचि करना। २ पसंद करना, चा-हना। रोयइ, रोएमि, रोएहि; (उत्त १८, ३३; भग)। संकृ—**रोयइत्ता**; (उत्त २६, १)।
रोअ पुं [**रोच**] रुचि;
"दुक्कररोया विउसा बाला भणियंपि नेव बुज्झंति।
तो मज्झिमबुद्धीणं हियत्थमेसो पयासो मे" (चेइय २६०)।
रोअ पुं [**रोग**] आमय, बिमारी; (पाअ)।
रोअग वि [**रोचक**] १ रुचि-जनक; २ न. सम्यक्त्व का एक भेद; (संबोध ३५; सुपा ५५१)।
रोअण न [**रोदन**] रोना, रुदन; (दे ५, १०; कुप्र २३५; २८६)।
रोअण पुं [**रोचन**] १ एक दिग्हस्ति-कूट; (इक)। २ न. गोरोचन; (गउड)।
रोअणा स्त्री [**रोचना**] गोरोचन; (से ११, ४५; गउड)।
रोअणिआ स्त्री [**दे**] डाकिनी, डाइन; (दे ७, १२; पाअ)।
रोअत्तअ देखो **रोअ**=रुद्।
रोआविअ वि [**रोदित**] रुलाया हुआ; (गा ३५७; सुपा ३१७)।
रोइ वि [**रोगिन्**] रोग वाला, बिमार; (गउड)।
रोइ देखो **रुइ**=रुचि, "अवि सुंदरेवि दिण्णे दुक्कररोई कलहंमाई" (पिंड ३२१)।
रोइअ वि [**रोचित**] १ पसंद आया हुआ; (भग)। २ चिकीर्षित; (ठा ६—पत्र ३५५)।
रोइर वि [**रोदितृ**] रोने वाला; (गा ३८६; षड्)।
रोंकण वि [**दे**] रंक, गरीब; (दे ७, ११)।
रोंच सक [**पिष्**] पीसना। रोंचइ, (हे ४, १८५)।

रोक्कअ वि [दे] प्रोक्षित, अति सिक्त; (षड्)।
रोक्कणि } वि [दे] १ शृंगी, शृंग वाला. २ नृशंस,
रोक्कणिअ } निर्दय; (दे ७, १६)।
रोग पुं [रोग] १ विमारी, व्याधि; (उवा; पगह १, ४)। २ एक ब्राह्मण-जातीय श्रावक; (उप ५३६)।
रोगि वि [रोगिन्] विमार; (सुपा ५७६)।
रोगिअ वि [रोगिक, °त] ऊपर देखो, (सुख १, १४)।
रोगिणिआ स्त्री [रोगिणिका] रोग के कारण ली जाती दीक्षा; (ठा १०—पत्र ४७३)।
रोगिल्ल देखो **रोगि**; (प्रामा)।
रोघस वि [दे] रंक, गरीब; (दे ७, ११)।
रोच्च देखो **रोंच**। रोच्चइ; (षड्)।
रोज्झ पुं [दे] ऋश्य, पशु-विशेष; गुजराती में 'रोझ'; (दे ७, १२; विपा १, ४; पाअ)।
रोट्ट पुंन [दे] १ तंदुल-पिष्ट, चावल आदि का आटा, पिसान, गुजराती में 'लोट'; (दे ७, ११; ओघ ३६३; ३७४; पिंड ४४; बृह १)।
रोट्टग पुं [दे] रोटी; (महा)।
रोड सक [दे] १ रोकना, अटकायत करना। २ अनादर करना। ३ हैरान करना। रोडिसि; (स ५७५)। कवकृ—**रोडिज्जंत**; (उप पृ १३३)।
रोड न [दे] घर का मान, गृह-प्रमाण; (दे ७, ११)।
रोडी स्त्री [दे] १ इच्छा, अभिलाष; २ मणी की शिविका; (दे ७, १५)।
रोत्तव्व देखो **रुअ=रुद्**।
रोद्द पुं [रौद्र] १ अहोरात्र का पहला मुहूर्त; (सम ५१)। २ एक नृपति, तृतीय वलदेव और वासुदेव का पिता; (ठा ६—पत्र ४४७)। ३ अलंकार-शास्त्र-प्रसिद्ध नव रसों में एक रस; (अणु)। ४ वि. दारुण, भयंकर, भीषण, (ठा ४, ४; महा)। ५ न. ध्यान-विशेष, हिंसा आदि क्रूर कर्म का चिन्तन; (औप)।
रोद्द पुं [रुद्र] अहोरात्र का पहला मुहूर्त; (सुज्ज १०, १३)। देखो **रुद्द=रुद्र**।
रोद्ध वि [दे] १ कुथिताक्ष; २ न. मल; (दे ७, १५)।
रोम पुंन [रोमन्] लोम. वाल, रोंआ; (औप; पाअ; गउड)। °**कूव** पु [°कूप] लोम का छिद्र; (गाया १, १—पत्र १३; सुर २, १०१)।
रोमंच पु [रोमाञ्च] रोंओं का खड़ा होना, भय या हर्ष से रोंओं का उठ जाना, पुलक, (कुमा; काल; भवि; सण)।
रोमंचइअ } वि [रोमाञ्चित] पुलकित, जिसके रोम खड़े
रोमंचिअ } हुए हों वह; (पउम ३, १०४; १०२, २०३; पाअ; भवि)।
रोमंथ पुं [रोमन्थ] पगुराना, चवी हुई वस्तु का पुनः चवाना; (से ६, ८७; पाअ; सण)।
रोमंथ } अक [रोमन्थय्] चवी हुई चीज का फिर से
रोमंथाअ } चवाना, पगुराना। रोमंथइ; (हे ४, ४३)। वकृ—**रोमंथाअमाण**; (चारु ७)।
रोमग } पुं [रोमक] १ अनार्य देश-विशेष, रोम देश;
रोमय } (पव २७४)। २ रोम देश में रहने वाली मनुष्य-जाति; (पगह १, १—पत्र १४)।
रोमय पुं [रोमज] पक्षि-विशेष, रोम की पाँख वाला पक्षी; (जी २२)।
रोमराइ स्त्री [दे] जघन, नितम्ब; (दे ७, १२)।
रोमलयासय न [दे] पेट, उदर; (दे ७, १२)।
रोमस वि [रोमश] रोम-युक्त, रोम वाला; (दे ३, ११; पाअ)।
रोमूसल न [दे] जघन, नितम्ब; (दे ७, १२)।
रोर पुं [रोर] चौथी नरक-भूमि का एक नरकावास; (ठा ४, ४—पत्र २६५)।
रोर वि [दे] रंक, गरीब, निर्धन; (दे ७, ११; पाअ; सुर २, १०५; सुपा २६६)।
रोरु पुं [रोरु] सातवीं नरक-पृथिवी का एक नरकावास; (देवेन्द्र २४; इक)।
रोरुअ पु [रोरुक, रौरव] १ रत्नप्रभा नरक-पृथिवी का दूसरा नरकेन्द्रक—नरकावास-विशेष; (देवेन्द्र ३)। २ रत्नप्रभा का तेरहवाँ नरकेन्द्रक, (देवेन्द्र ५)। ३ सातवीं नरक-पृथिवी का एक नरकावास—नरक-स्थान; (ठा ५, ३—पत्र ३४१; सम ५८; इक)। ५ चौथी नरक-भूमि का एक नरकावास; (ठा ४, ४—पत्र २६५)।
रोल पुं [दे] १ कलह, झगड़ा; (दे ७, १५)। २ रव, कोलाहल, कलकल आवाज; (दे ७, १५; पाअ; कुमा; सुपा ५७६; चेइय १८४; मोह ५)।
रोलंब पुं [दे, रोलम्ब] भ्रमर, मधुकर; (दे ७, २; कुप्र ५८)।

रोला स्त्री [**रोला**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

रोव देखो **रुअ**=रुद्। रोवइ; (हे ४, २२६; संक्षि ३६, प्राकृ ६८; षड्; महा; सुर १०, १७१; भवि)। वकृ—**रोवंत, रोवमाण**; (पउम १७, ३७; सुर २, १२४; ६, २३५; पउम ११०, ३५)। संकृ—**रोविऊण**; (पि ५८६)। हेकृ—**रोविउं**; (स १००)।

रोव पुं [**दे. रोप**] पौधा, गुजराती में 'रोपो'; (सम्मत्त १४४)।

रोवण न [**रोदन**] रोना; (सुर ६, ७६)।

रोवाविअ देखो **रोआविअ**; (वज्जा ६२)।

रोविअ वि [**रोपित**] १ बोया हुआ। २ स्थापित; (से १३, ३०)।

रोविंदय न [**दे**] गेय-विशेष, एक प्रकार का गान; (ठा ४, ४—पत्र २८५)।

रोविर देखो **रोइर**; (दे ७, ७; कुमा; हे २, १४५)।

रोविर वि [**रोपयितृ**] बोने वाला; (हे २, १४५)।

रोस देखो **रूस**। रोसइ(?); (धात्वा १५०)।

रोस पुं [**रोष**] गुस्सा, क्रोध; (हे २, १६०; १६१)। °**इत्त,** °**इंत** वि [°**वत्**] रोष वाला; (संक्षि २०; प्राप्र)।

रोसण वि [**रोषण**] रोष करने वाला, गुस्साखोर; (उप १४७ टी; सुख १, १३)।

रोसविअ वि [**रोषित**] कोपित, कुपित किया हुआ; (पउम ११०, १३)।

रोसाण सक [**मृज्**] मार्जन करना, शुद्ध करना। रोसाणइ; (हे १, १०५; प्राकृ ६६; षड्)।

रोसाणिअ वि [**मृष्ट**] शुद्ध किया हुआ, मार्जित; (पाअ; कुमा; पिंग)।

रोसिअ देखो **रोसविअ**; (पउम ६६, ११; भवि)।

रोह अक [**रुह्**] उत्पन्न होना। रोहंति; (गउड)।

रोह देखो **रुंध**। संकृ—**रोहिऊण, रोहेउं**; (काल; बृह ३)।

रोह पुं [**रोध**] १ घेरा, नगर आदि का सैन्य से वेष्टन; (णाया १, ८—पत्र १४६; उप पृ ८४; कुप्र १५८)। २ रुकावट, अटकाव; (कुप्र १; द्रव्य ४६)। ३ कैद; (पुप्फ १८६)।

रोह पुं [**रोधस्**] तट, किनारा; (पाअ)।

रोह पुं [**रोह**] १ एक जैन मुनि; (भग)। २ प्ररोह, व्रण आदि का सूख जाना; (दे ६, ६५)। ३ वि. रोहक, रोहण-कर्ता; (भवि)।

रोह पुं [**दे**] १ प्रमाण; २ नमन; ३ मार्गण, (दे ७, १६)।

रोहग वि [**रोधक**] घेरा डालने वाला, अटकाव करने वाला; "रोहगसज्जुत्तीए रोहिओ कुमारेण" (स ६३५), "रोहगसंजुत्ती उण कीरउ" (सुर १२, १०१)।

रोहग देखो **रोह**=रोध; (स ६३५; सुर १२, १०१)।

रोहग पुं [**रोहक**] एक नट-कुमार; (उप पृ २१५)।

रोहगुत्त पुं [**रोहगुप्त**] १ एक जैन मुनि; (कप्प)। २ त्रैराशिक मत का प्रवर्तक एक आचार्य; (विसे २४५२)।

रोहण न [**रोधन**] १ अटकाव; (आरा ७२)। २ वि. रोकने वाला; (द्रव्य ३४)।

रोहण न [**रोहण**] १ चढना, आरोहण; (सुपा ४३८; कुप्र ३६६)। २ उत्पत्ति; (विसे १७५३)। ३ पुं. पर्वत-विशेष; (सुपा ३२; कुप्र ६)। ४ एक दिग्हस्ति-कूट; (इक)।

रोहिअ [**दे**] देखो **रोज्झ**; (दे ७, १२; पाअ; पण्ह १, १—पत्र ७)।

रोहिअ वि [**रोधित**] घेरा हुआ; "रोहियं पाडलिपुरं तेण" (धर्मवि ४२; कुप्र ३६६; स ६३५)।

रोहिअ वि [**रोहित**] १ सुखाया हुआ (घाव); (उप पृ ७६)। २ द्वीप-विशेष; (जं ४)। ३ पुं. मत्स्य-विशेष; (स २५७)। ४ न. तृण-विशेष; (पण्ण १—पत्र ३३)। ५ कूट-विशेष; (ठा २, ३; ८)।

रोहिअंस पुं [**रोहितांश**] एक द्वीप; (जं ४)।

रोहिअंस° } **रोहिअंसा** } स्त्री [**रोहितांशा**] एक नदी; (सम २७; इक)। °**पवाय** पुं [°**प्रपात**] द्रह-विशेष; (ठा २, ३; जं ४)।

रोहिअप्पवाय पु [**रोहिताप्रपात**] द्रह-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७२)।

रोहिआ स्त्री [**रोहित्, रोहिता**] एक नदी; (सम २७; इक; ठा २, ३—पत्र ७२; ८०)।

रोहिंसा स्त्री [**रोहिदंशा**] एक नदी; (इक)।

रोहिणिअ पुं [**रौहिणेय**] एक प्रसिद्ध चोर का नाम; (श्रा २७)।

रोहिणी स्त्री [**रोहिणी**] १ नक्षत्र-विशेष; (सम १०)। २ चन्द्र की पत्नी; (श्रा १६)। ३ ओषधि-विशेष; (उत्त ३४, १०; सुर १०, २२३)। ४ भविष्य में भारतवर्ष में तीर्थकर होने वाली एक श्राविका; (सम १५४)। ५ नववें बलदेव की माता का नाम; (सम १५२)। ६ एक विद्या-

देवी; (संति ५)। ७ शक्रेन्द्र की एक पटरानी, (ठा ८—पत्र ४२६)। ८ सत्पुरुष-नामक किंपुरुषेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ४, १—पत्र २०४)। ९ शक्रेन्द्र के एक लोकपाल की पटरानी; (ठा ४, १—पत्र २०४)। १० तप-विशेष, (पव २७१; पंचा १९, २३)। ११ गो, गैया; (पाअ)। °**रमण** पु [°**रमण**] चन्द्रमा; (पाअ)।

रोहीडग न [**रोहीतक**] नगर-विशेष; (संथा ६८)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि रआराइसद्दसंकलणो तेत्तीसइमो तरंगो समत्तो।

——:०:— —

ल

ल पुं [**ल**] मूर्ध-स्थानीय अन्तस्थ व्यञ्जन वर्ण-विशेष, (प्राप)।

लइ अ. ले, अच्छा, ठीक; (भवि)।

लइ देखो **लय**=ला।

लइअ वि [**दे. लगित**] १ परिहित, पहना हुआ; २ अंग में पिनद्ध; (दे ७, १८; पिंड ५९१; भवि)।

लइअल्ल पुं [**दे**] वृषभ, बैल; (दे ७, १९)।

लइआ स्त्री [**लतिका, लता**] देखो **लया**; (नाट—रत्ना ७; गउड; उप ७६८ टी)।

लइणा, **लइणी** स्त्री [**दे**] लता, वल्ली, (षड् ; दे ७, १८)।

लउअ पु [**लकुच**] वृक्ष-विशेष, बड़हल का गाछ; (औप, पि ३६८)।

लउड, **लउल** पु [**लकुट**] लकड़ी, यष्टि; (दे ७, १९; सुर २, ८; औप)।

लउस, **लउसय** पु [**लकुश**] १ अनार्य देश-विशेष, (पव २७४; इक)। २ पुंस्त्री. लकुश देश का निवासी मनुष्य; स्त्री—°**सिया**; (णाया १, १—पत्र ३७; औप; इक)।

लंका स्त्री [**लङ्का**] नगरी-विशेष, सिंहलद्वीप की राजधानी; (से ३, ६२; पउम ४६, १९; कप्पू)। °**लय** वि [°**लय**] लंका-निवासी; (वज्जा १३०)। °**सुंदरी** स्त्री [°**सुन्दरी**] हनूमान की एक पत्नी; (पउम ५२, २१)। °**सोग** पुं [°**शोक**] राक्षस वंश का एक राजा, (पउम ५, २६५)। °**हिव** पुं [°**धिप**] लंका का राजा; (उप पृ ३७५)। °**हिवइ** पुं [°**धिपति**] वही अर्थ; (पउम ४६, १७)।

लंका स्त्री [**दे**] शाखा; (वज्जा १३०)।

लंख, **लंखग** पुंस्त्री [**लङ्ख**] बड़े बाँस के ऊपर खेल करने वाली एक नट-जाति, (णाया १, १—पत्र २; पण्ह २, ५—पत्र १३२; औप; कप्प)। स्त्री—°**खिगा**; (उप १०१४)।

लंगल न [**लाङ्गल**] हल, "खित्तेसु वहंति लंगलाण सया" (धर्मवि २४; हे १, २५६; षड् ८०)।

लंगलि पुं [**लाङ्गलिन्**] बलभद्र, बलदेव, (कुमा)।

लंगलि°, **लंगली** स्त्री [**लाङ्गली**] वल्ली-विशेष, शारदी लता; (कुमा)।

लंगिम पुंस्त्री [**दे**] १ जवानी, यौवन; २ ताजापन, नवीनता; "पिसुणइ तणुलही लंगिमं चंगिमं च" (कप्पू)।

लंगूल न [**लाङ्गूल**] पुच्छ, पूँछ; (हे १, २५६; पाअ; कप्प; कुमा)।

लंगूलि वि [**लाङ्गूलिन्**] पुच्छ वाला, पशु; (कुमा)।

लंगोल देखो **लंगूल**; (सुज्ज १०, ८)।

लंघ सक [**लङ्घ्, लङ्घय्**] १ लाँघना, अतिक्रमण करना। २ भोजन नहीं करना। लंघइ, लघेइ; (महा; भवि)। कर्म—लघिज्जइ; (कुमा)। वकृ—**लंघंत, लंघयंत**; (सुपा २७१; पउम ६७, २१)। संकृ—**लंघित्ता, लंघिऊण**; (महा)। हेकृ—**लंघेउं**; (पि ५७३)। कृ—**लंघणिज्ज**; (से २, ४४), **लंघ**, (कुमा १, १७)।

लंघण न [**लङ्घन**] १ अतिक्रमण; (सुर ५, १९२)। २ अ-भोजन; (उप १३५ टी)।

लंघि वि [**लङ्घिन्**] लंघन करने वाला; (कप्पू)।

लंघिअ वि [**लङ्घित**] जिसका लघन किया गया हो वह; (गउड)।

लंच पुं [**दे**] कुक्कुट, मुर्गा; (दे ७, १७)।

लंचा स्त्री [**लञ्चा**] घुस, रिशवत; (पाअ; पण्ह १, ३—पत्र ५३; दे १, ९२; ७, १७; सुपा ३०८)।

लंचिल्ल वि [**लाञ्चिक**] घुसखोर, रिशवत ले कर काम करने वाला; (वव १)।

लंछ पुं [**लञ्छ**] चोरों की एक जाति; (विपा १, १—पत्र ११)।

लंछण न [**लाञ्छन**] १ चिह्न, निशानी; (पाअ)। २ नाम; ३ अंकन, चिह्न करना; (हे १, २५; ३०)।

लंछणा स्त्री [**लाञ्छना**] चिह्न करना; (उप ५२२)।

लंछिअ वि [**लाञ्छित**] चिह्नित, कृत-चिह्न; (पव १५४; गाया १, २—पत्र ८६; ठा ३, १; कस; कप्पू)।

लंडुअ वि [**दे. लण्डित**] उत्क्षिप्त; "चंडप्पवादलंडुओ विअ वरंडो पव्वदादो दूरं आरोविअ पाडिदो म्हि" (चारु ३)।

लंतक, लंतग, लंतय पुं [**लान्तक**] १ देवलोक, छठवाँ देवलोक; (भग; औप; अंत; इक)। २ एक देव-विमान; (सम २७; देवेन्द्र १३४)। ३ षष्ठ देवलोक के निवासी देव; ४ षष्ठ देवलोक का इन्द्र; (राज; ठा २, ३—पत्र ८५)।

लंद पुंन [**लन्द**] काल, समय; (कप्प; पव ७०)।

लंदय पुंन [**दे**] कलिन्दक, गो आदि का खादन-पात्र; (पव २)।

लंपड वि [**लम्पट**] लोलुप, लालची, लुब्ध; (पाअ; सुपा १०७; ५६६; सुर ३, १०)।

लंपाग पुं [**लम्पाक**] देश-विशेष; (पउम ६८, ५६)।

लंपिक्ख पुं [**दे**] चोर, तस्कर; (दे ७, १६)।

लंब सक [**लम्ब्**] १ सहारा लेना, आलम्बन करना। २ अक. लटकना। लबेइ; (महा)। वकृ—**लंबंत, लंबमाण**; (औप; सुर ३, ७१; ४, २४२; कप्प; वसु)। संकृ—**लंबिऊण**; (महा)।

लंब वि [**लम्ब**] लम्बा, दीर्घ, "उद्धा उट्टस्स चेव लंबा" (उवा; गाया १, ८—पत्र १३३)।

लंब पुं [**दे**] गोवाट, गो-वाड़ा; (दे ७, २६)।

लंबअ न [**लम्बक**] ललन्तिका, नाभि-पर्यन्त लटकती माला आदि; (स्वप्न ६३)।

लंबणा स्त्री [**लम्बना**] रज्जु, रस्सी; (स १०१)।

लंबा स्त्री [**दे**] १ वल्लरी, लता; (षड्)। २ केश, बाल; (षड्; दे ७, २६)।

लंबाली स्त्री [**दे**] पुष्प-विशेष, (दे ७, १६)।

लंबि वि [**लम्बिन्**] लटकता; (गउड)।

लंबिअ, लंबिअय वि [**लम्बित**] १ लटकता हुआ; (गा ५३२; सुर ३, ७०)। २ पुं. वानप्रस्थ का एक भेद; (औप)।

लंबिर वि [**लम्बितृ**] लटकने वाला, (कुमा; गउड)।

लंबुअ वि [**लम्बुक**] १ लम्बी लकड़ी के अन्त भाग में बँधा हुआ मिट्टी का ढेला; २ भींत में लगा हुआ ईंटों का समूह; (मृच्छ ६)।

लंबुत्तर पुंन [**लम्बोत्तर**] कायोत्सर्ग का एक दोष, चोलपट्ट को नाभि-मंडल से ऊपर रख कर और जानु को चोलपट्ट से नीचे रख कर कायोत्सर्ग करना; (चेइय ४८४)।

लंबूस पुंन [**दे. लम्बूष**] कन्दुक के आकार का एक आभरण; "छत्तं चमर-पडाया दप्पणलंबूसया वियाणं च" (पउम ३२, ७६; ६६, १२)।

लंबोदर, लंबोयर वि [**लम्बोदर**] १ बड़ा पेट वाला; (सुख १, १४; उवा)। २ पुं. गणपति, गणेश; (श्रा १२; कुप्र ६७)।

लंभ सक [**लभ्**] प्राप्त करना। "अज्जेवाहं न लंभामि अवि लाभो सुए सिया" (उत्त २, ३१)। भवि—लंभिस्सं; (पि ५२५)। कर्म—लंभीअदि, लंभीआमो (शौ); (पि ५४१)। संकृ—**लंभिअ, लंभित्ता**; (मा १६; नाट—चैत ६१; ठा ३, २)।

लंभ सक [**लम्भय्**] प्राप्त कराना। संकृ—**लंभिअ**; (नाट—चैत ४४)। कृ—**लंभइदव्व** (शौ), **लंभणिज्ज, लंभणीअ**, (मा ५१; नाट—मालती ३६; चैत १२५)।

लंभ पुं [**लाभ**] प्राप्ति; (पउम १००, ४३; से ११, ३१; गउड; सिरि ८२२; सुपा ३६४)। देखो **लाह**=लाभ।

लंभण पुं [**लम्भन**] मत्स्य की एक जाति, (विपा १, ८ टी—पत्र ८४)।

लंभिअ देखो **लंभ**=लभ्, लम्भय्।

लंभिअ वि [**लब्ध**] प्राप्त; (नाट—चैत १२५)।

लंभिअ वि [**लम्भित**] प्राप्त कराया हुआ, प्रापित; (सूअ २, ७, ३७; स ३१०; अच्चु ७१)।

लक्कुड म [**दे. लकुट**] लकडी, यष्टि, (दे ७, १६; पाअ)।

लक्ख सक [**लक्षय्**] १ जानना। २ पहचानना। ३ देखना। लक्खइ; (महा)। कर्म—लक्खिज्जए, लक्खीयसि; (विसे २१४६; महा; काल)। कवकृ—**लक्खिज्जंत**; (से ११, ४५)। कृ—**लक्खणीअ**; (नाट—शकु २४), देखो **लक्ख**=लक्षय्।

लक्ख पुन [**दे**] काय, शरीर, देह; (दे ७, १७)।

लक्ख पुंन [**लक्ष**] संख्या-विशेष, सौ हजार; (जी ४५; सुपा १०३; २४८; कुमा; प्रासू ६६)। °**पाग** पुं [°**पाक**] लाख रुपयों के व्यय से बनता एक तरह का पाक; (ठा ६)।

लक्ख वि [**लक्ष्य**] १ पहचानने योग्य; "चिरलक्खणो" (पउम ८२, ८४)। २ जिससे जाना जाय वह, लक्षण, प्रकाशक: "भुअदप्पबीअलक्खं चावं" (से ५, १७)। ३ वेध्य, निशाना; "लक्खविंधण—" (धर्मवि ५२; दे २, २६; कुमा)।

लक्ख° देखो **लक्खा**; (पडि)।

लक्खग वि [**लक्षक**] पहचानने वाला; (पउम ८२, ८४; कुप्र ३००)।

लक्खण पुन [**लक्षण**] १ इतर से भेद का बोधक चिह्न; २ वस्तु-स्वरूप; (ठा ३, ३; ४, १; जी ११; विसे २१४६; २१४७; २१४८)। ३ चिह्न; "लक्खणपुराणं" (कुमा)। ४ व्याकरण-शास्त्र; "लक्खणसाहित्तपमाणजोइसाईणि सा पढइ" (सुपा १४१; ६५७)। ५ व्याकरण आदि का सूत्र; ६ प्रतिपाद्य, विषय; (हे २, ३)। ७ पु. लक्ष्मण; ८ सारस पक्षी; "लक्खणो" (प्राकृ २२)। °**संवच्छर** पुं [°**संवत्सर**] वर्ष-विशेष; (सुज्ज १०, २०)।

लक्खण पुं [**लक्ष्मण**] श्रीराम का छोटा भाई; (से १, ४८)। देखो **लखमण**।

लक्खणा स्त्री [**लक्षणा**] १ शब्द-वृत्ति विशेष, शब्द की एक शक्ति जिससे मुख्य अर्थ के बाध होने पर भिन्न अर्थ की प्रतीति होती है; (दे १, ३)। २ एक महौषधि; (ती ५)।

लक्खणा स्त्री [**लक्ष्मणा**] १ आठवें जिनदेव की माता; (सम १५१)। २ उसी जन्म में मुक्ति पाने वाली श्रीकृष्ण की एक पत्नी; (अंत १५)। ३ एक अमात्य की स्त्री; (उप ७२८ टी)।

लक्खणिय वि [**लाक्षणिक, लाक्षण्य**] १ लक्षणों का जानकार; २ लक्षण-युक्त; (सुपा १३६)।

लक्खमण } पु [**लक्ष्मण**] विक्रम की बारहवी शताब्दी **लखमण** } का एक जैन मुनि और ग्रन्थकार; (सुपा ६५८)।

लक्खा स्त्री [**लाक्षा**] लाख, लाह, जतु, चपड़ा; (णाया १, १— पत्र २४; पगह २, ५)। °**रुणिय** वि [°**रुणित**] लाख से रँगा हुआ; (पाअ)।

लक्खिअ वि [**लक्षित**] १ जाना हुआ; २ पहचाना हुआ; ३ देखा हुआ; (गउड; नाट—रत्ना १४)।

लग न [**दे**] निकट, पास; (पिंग)।

लगंड न [**लगण्ड**] वक्र काष्ठ; (पचा १८, १६; स ५९९)। °**साइ** वि [°**शायिन्**] वक्र काष्ठ की तरह सोने वाला; (पगह २, १—पत्र १००, औप; कस; पचा १८, १६; ठा ५, १—पत्र २९६)। °**सण** न [°**ासन**] आसन-विशेष; (सुपा ८५)।

लगुड देखो **लउड**; (कुप्र ३८९)।

लग्ग सक [**लग्**] लगना, संग करना, संबन्ध करना। लग्गइ; (हे ४, २३०; ४२०; ४२२; प्राकृ ६८; प्राप्र; उव)। भवि—लग्गिस्सं, लग्गिहिइ; (पि ५२७)। वकृ—**लग्गंत, लग्गमाण**; (चेइय ११२; उप ६६६; गा १०५)। संकृ—**लग्गूण**; (कुप्र ६६), **लग्गिवि** (अप), (हे ४, ३३९)। कृ—**लग्गिअव्व**; (सुर १०, ११२)।

लग्ग न [**दे**] १ चिह्न, २ वि. अ-घटमान, असं-बद्ध; (दे ७, १७)।

लग्ग न [**लग्न**] १ मेष आदि राशि का उदय; (सुर २, १७०; मोह १०१)। २ वि. संसक्त, संबद्ध; (पाअ; कुमा; सुर २, ५६)। ३ पु. स्तुति-पाठक; (हे २, ६८)।

लग्गण न [**लगन**] संग, संबन्ध, "वडपायवसाहालग्गणेण" (सुर १५, १४; उप १३४; ५३८)।

लग्गणय पुं [**लग्नक**] प्रतिभू, जामीन, (पाअ)।

लग्गूण देखो **लग्ग**=लग्।

लघिम पुंस्त्री [**लघिमन्**] १ लघुता, लाघव; २ योग की एक सिद्धि, "लंघिज्ज लघिमगुणओ अनिलस्सवि लाघवं साहू" (कुप्र २७७)। ३ विद्या-विशेष; (पउम ७, १३६)।

लच्चय न [**दे**] तृण-विशेष, गण्डूत् तृण; (दे ७, १७)।

लच्छ देखो **लक्ख**=लक्ष्य; (नाट)।

लच्छ° देखो **लस**।

लच्छण देखो **लक्खण**=लक्षण; (सुपा ६४; प्राकृ २२; नाट—चैत ५५)।

लच्छि° } स्त्री [**लक्ष्मी**] १ संपत्ति, वैभव, २ धन, द्रव्य; **लच्छी** } ३ कान्ति; ४ औषध-विशेष; ५ फलिनी वृक्ष; ६ स्थल-पद्मिनी; ७ हरिद्रा; ८ मुक्ता, मोती; ९ शटी-नामक ओषधि; (कुमा; प्राकृ ३०; हे २, १७)। १० शोभा; (से २, ११)। ११ विष्णु-पत्नी; (पाअ; से २, ११)। १२ रावण की एक पत्नी; (पउम ७४, १०)। १३ षष्ठ वासुदेव की माता; (पउम २०, १८४)। १४ पुंडरीक द्रह की अधिष्ठात्री देवी; (ठा २, ३—पत्र ७२)। १५ देव-प्रतिमा विशेष, (णाया १, १ टी—पत्र ४३)। १६ छन्द-विशेष, (पिंग)। १७ एक वणिक्-पत्नी; (उप ७२८ टी)। १८ शिखरी पर्वत का एक कूट; (इक)। °**निलय**

पुं [°निलय] वासुदेव; (पउम ३७, ३७)। °मई स्त्री [°मती] १ छठवें वासुदेव की माता; (सम १५२)। २ ग्यारहवें चक्रवर्ती का स्त्री-रत्न; (सम १५२)। °मंदिर न [°मन्दिर] नगर-विशेष; (सुपा ६३२)। °वइ पुं [°पति] लक्ष्मी का स्वामी, श्रीकृष्ण; (प्राकृ ३०)। °वई स्त्री [°वती] दक्षिण रुचक पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८—पत्र ४३६; इक)। °हर पुं [°धर] १ वासुदेव; (पउम ३८, ३४)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)। ३ न. नगर-विशेष, (इक)।

लज्जुक (अशो) देखो **रज्जु**=(दे); (कप्प—रज्जु)।

लज्ज अक [**लस्ज्**] शरमाना। लज्जइ, (उव; महा)। कर्म—लज्जिज्जइ; (हे ४, ४१९)। वकृ—**लज्जंत, लज्जमाण**; (उप पृ ५५; महा; आचा)। कृ—**लज्जणिज्ज**; (से ११, २६; गाया १, ८—पत्र १४३)।

लज्जण } न [**लज्जन**] १ शरम, लाज; (सा ८; राज)। **लज्जणय** } २ वि. लज्जा-कारक; "किं एत्तो लज्जणयं. . ...जं पहरिज्जइ दीणे पलायमाणे पमत्ते वा" (सुपा २१५; भवि)।

लज्जा स्त्री [**लज्जा**] १ लाज, शरम; (औप; कुमा; प्रासू ६६; गा ६१०)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)। ३ संयम; (भग २, ५; औप)।

लज्जापइत्तअ (शौ) वि [**लज्जयितृ**] लजाने वाला; "जुवइवेसलज्जापइत्तअं" (मा ४२)।

लज्जालु वि [**लज्जालु**] लज्जावान्, शरमिंदा; (उप १७९ टी)।

लज्जालु, **लज्जालुआ**, **लज्जालुइणी** } स्त्री [**लज्जालु**] १ लता-विशेष; (षड्; हे २, १५९; १७४)। २ लज्जा वाली स्त्री; (षड्; हे २, १५९; १७४; सुर २, १५९; गा १२७; प्राकृ ३५)।

लज्जालुइणी स्त्री [दे] कलह-कारिणी स्त्री, (षड्)।

लज्जालुइर } वि [**लज्जालु**] लज्जाशील, शरमिंदा। स्त्री—°री; (गा ४८२; ६१२ अ)। **लज्जालुर** }

लज्जाव सक [**लज्जय्**] शरमिंदा बनाना। लज्जावेदि (शौ); (नाट—मृच्छ ११०)। कृ—**लज्जावणिज्ज**; (स ३६८, भवि)।

लज्जावण वि [**लज्जन**] शरमिन्दा करने वाला; (पण्ह १, ३—पत्र ५४)।

लज्जाविय वि [**लज्जित**] लजवाया हुआ; (पण्ह १, ३—पत्र ५४)।

लज्जिअ वि [**लज्जित**] १ लज्जा-युक्त; (पाअ)। २ न. लज्जा, शरम "न लज्जिअं अप्पणोवि पलिआणं" (श्रा १४)।

लज्जिर वि [**लज्जितृ**] लज्जा-शील; (हे २, १४५; गा १५०; कुमा; वज्जा ८; भवि)। स्त्री—°री; (पि ५९६)।

लज्जु स्त्री [**रज्जु**] १ रस्सी; २ वि. रस्सी की तरह सरल, सीधा; "चाई लज्जू धन्ने तवस्सी" (पण्ह २, ५—पत्र १४९; भग)।

लज्जु वि [**लज्जावत्**] लज्जा-युक्त, लज्जा वाला; "एसणासमिओ लज्जू गामे अनियओ चरे" (उत्त ६, १७)।

लज्जु देखो **रिज्जु**=ऋजु; (भग)।

लज्झ° देखो **लभ**।

लट्ट } न [दे] १ खसखस आदि का तेल; (पभा ३१)। **लट्टय** } २ कुसुम्भ; "लट्टयवसणा" (दे ७, १७)।

लट्टा स्त्री [दे. **लट्टा**] धान्य-विशेष, कुसुम्भ धान्य; (पव १५४)।

लट्टा स्त्री [**लट्वा**] १ वृक्ष-विशेष; (कुमा)। २ कुसुम्भ; (बृह १)। ३ गौरेया, पक्षि-विशेष; ४ भ्रमर, भौंरा; ५ वाद्य-विशेष; (दे २, ५५)।

लट्ठ वि [दे] १ अन्यासक्त, (दे ७, २६)। २ मनोहर, सुन्दर, रम्य; (दे ७, २६; पाअ; गाया १, १; पण्ह १, ४; सुर १, २९; कुप्र ११; श्रु ९; पुप्फ ३४; सार्ध २१; धण ५; सुपा १५६)। ३ प्रियंवद, प्रिय-भाषी; (दे ७, २६)। ४ प्रधान, मुख्य; "खमियव्वो अवराहो ममावि पाविट्ठलट्ठस्स" (उप ७२८ टी)। °दंत पु [°दन्त] १ एक जैन मुनि, (अनु १)। २ द्वीप-विशेष, एक अन्तर्द्वीप; ३ द्वीप-विशेष में रहने वाला मनुष्य; (ठा ४, २—पत्र २२६; इक)।

लट्ठरी स्त्री [दे] सुन्दर, रमणीय; (कुप्र २१०)।

लट्ठि स्त्री [**यष्टि**] लाठी, छड़ी; (औप; कुमा)।

लट्ठिअ न [दे] खाद्य-विशेष; "जेट्ठाहिं लट्ठिएणं भोच्चा कज्जं साहिंति" (सुज्ज १०, १७)।

लडह वि [दे] १ रम्य, सुन्दर; (दे ७, १७; सुपा ६; सिरि ४७; ८७५; गउड; औप; कप्प, कुमा; हेका २६५; सण; भवि)। २ सुकुमार, कोमल; (काप्र ७६५, भवि)। ३ विदग्ध, चतुर; (दे ७, १७)। ४ प्रधान मुख्य; (कुमा)।

लडहक्खमिअ वि [दे] विघटित, वियुक्त; (दे ७, २०)।

लडहा स्त्री [**दे**] विलासवती स्त्री; (षड्)।
लडाल देखो **णडाल**; (प्राकृ ३७; पि २६०)।
लड्डिय न [**दे**] लाड़, छोह, प्यार, (भवि)।
लड्डुअ } पुं [**लड्डुक**] लड्डू, मोदक; (गा ६४१; प्रयौ
लड्डुग } ८३; कुप्र २०९; भवि; पउम ८४, ४; पिंड ३७७)।
लड्डुयार वि [**लड्डुककार**] लड्डू बनाने वाला, हलवाई; (कुप्र २०९)।
लढ सक [**स्मृ**] स्मरण करना, याद करना। लढइ; (हे ४, ७४)। वकृ—**लढंत**; (कुमा)।
लढिअ वि [**स्मृत**] याद किया हुआ; (पाअ)।
लण्ह वि [**श्लक्ष्ण**] १ चिकना, मसृण; (सम १३७; ठा ४, २; औप; कप्पू)। २ अल्प, थोड़ा, ३ न. लोहा, धातु-विशेष; (हे २, ७७; प्राकृ १८)।
लत्त वि [**लप्त, लपित**] उक्त, कथित, (सुपा २३४)।
लत्ता } स्त्री [**दे**] १ लात, पार्ष्णि-प्रहार; (सुपा २३८;
लत्तिआ } ठा २, ३—पत्र ६३)। २ आतोद्य-विशेष; (ठा २, ३; आचा २, ११, ३)।
लद्दण } (मा) देखो **रयण**=रत्न; (अभि १८४; प्राकृ
लद्दन } १०२)।
लद्द सक [**दे**] भार भरना, बोझ डालना, गुजराती में 'लादवुं'। हेकृ—**लद्देउं**; (सुपा २७५)।
लद्दण न [**दे**] भार-क्षेप; (स ५३७)।
लद्दी स्त्री [**दे**] हाथी आदि की विष्ठा, गुजराती में 'लीद'; (सुपा १३७)।
लद्ध वि [**लब्ध**] प्राप्त; (भग; उवा; औप; हे ३, २३)।
लद्धि स्त्री [**लब्धि**] १ क्षयोपशम, ज्ञान आदि के आवारक कर्मों का विनाश और उपशान्ति; (विसे २९९७)। २ सामर्थ्य-विशेष, योग आदि से प्राप्त होती विशिष्ट शक्ति; (पव २७०; संबोध २८)। ३ अहिंसा; (पण्ह २, १—पत्र ९९)। ४ प्राप्ति, लाभ; (भग ८, २)। ५ इन्द्रिय और मन से होने वाला विज्ञान, श्रुत ज्ञान का उपयोग; (विसे ४६६)। ६ योग्यता; (अणु)। °**पुलाअ** पुं [°**पुलाक**] लब्धि-विशेष-संपन्न मुनि; "संघाइयाण कज्जे चुण्णिज्जा चक्कवट्टिमवि जीए। तीए लद्धीइ जुओ लद्धिपुलाओ" (संबोध २८)।
लद्धिअ वि [**लब्ध**] प्राप्त; (वै ६९)।
लद्धिल्ल वि [**लब्धिमत्**] लब्धि-युक्त; (पंच १, ७)।

लद्धुं } देखो **लभ**।
लद्धूण }
लप्पसिया स्त्री [**दे**] लपसी, एक प्रकार का पक्वान्न, (पव ४)।
लब्भ नीचे देखो।
लभ सक [**लभ्**] प्राप्त करना। लभइ, लभए; (आचा; कस; विसे १२१५)। भवि—लच्छिसि, लभिस्सं, लभिस्सामि; (उव; महा; पि ५२५)। कर्म—लज्भइ, लब्भइ; (महा ६०, १६; हे १, १८७; ४, २४९; कुमा)। संकृ—**लभिय, लद्धुं, लद्धूण**; (पंच ५, १६४; आचा; काल)। हेकृ—**लद्धुं**; (काल)। कृ—**लब्भ**; (पण्ह २, १; विसे २८३७, सुपा ११, २३३; स १७५; सण)।
लय सक [**ला**] ग्रहण करना। लएइ, लयंति; (उव)। कर्म—लइज्जइ, लिज्जइ; (भवि; सिरि ९९३)। वकृ—**लयंत**; (वज्जा २८; महा; सिरि ३७५)। संकृ—**लइ, लएवि, लएविणु** (अप); (पिंग, भवि)। देखो **ले**=ला।
लय न [**दे**] नव-दम्पति का आपस में नाम लेने का उत्सव; (दे ७, १६)।
लय देखो **लव**=लव; (गउड; से ५, १४)।
लय पुं [**लय**] १ श्लेष; २ मन की साम्यावस्था; (कुमा)। ३ लीनता, तल्लीनता; ४ तिरोभाव; (विसे २६९६)। ५ संगीत का एक अंग, स्वर-विशेष, (स ७०४; हास्य १२३)।
लय° देखो **लया**। °**हरय** न [°**गृहक**] लता-गृह; (सुपा ३८१)।
लयंग न [**लताङ्ग**] संख्या-विशेष, चौरासी लाख पूर्व; "पुव्वाण सयसहस्सं चुलसीइगुणं लयंगमिह होइ" (जो २)।
लयण वि [**दे**] १ तनु, कृश, क्षाम; (दे ७, २७; पाअ)। २ मृदु, कोमल; ३ न. वल्ली, लता; (दे ७, २७)।
लयण न [**लयन**] १ तिरोभाव, छिपना; (विसे २८१७; दे ७, २४)। २ अवस्थान, (सुर ३, २०६)। ३ देखो **लेण**; (राज)।
लयणी स्त्री [**दे**] लता, वल्ली; (पाअ; षड्)।
लया स्त्री [**लता**] १ वल्ली, वल्लरी; (पण्ण १; गा २८; काप्र ७२३, कुमा; कप्प)। २ प्रकार, भेद; "संघाडो त्ति वा लय त्ति वा पगारो त्ति वा एगट्ठा" (बृह १)। ३ तप-विशेष; (पव २७१)। ४ संख्या-विशेष, चौरासी लाख लतांग-परिमित संख्या; (जो २)। ५ कम्बा, छड़ी, यष्टि;

"करप्पहारे य लयप्पहारे य छिवापहारे य" (णाया १, २—पत्र ८६; विपा १, ६—पत्र ६६)। °जुद्ध न [°युद्ध] लड़ने की एक कला, एक तरह का युद्ध; (औप)।

लयापुरिस पुं [दे] वह स्थान जहां पद्म-हस्त स्त्री का चित्रण किया जाय; "पउमकरा जत्थ वह लिहिज्जए सो लयापुरिसो" (दे ७, २०)।

लल अक [लल्, लड्] १ विलास करना, मौज करना। २ भूलना। ललइ, ललेइ; (प्राकृ ७३; सण; महा; सुपा ४०३)। वकृ—**ललंत, ललमाण**, (गा ४४६, सुर २, २३७; भवि; औप; सुपा १८१; १८७)।

ललणा स्त्री [ललना] स्त्री, महिला, नारी; (तंदु ५०; सुपा ४६७)।

ललाड देखो **णडाल**, (औप; पि २६०)।

ललाम न [ललामन्] प्रधान, नायक; (अभि ६५)।

ललिअ न [ललित] १ विलास, मौज, लीला, (पाअ; पत्र १६६; औप)। २ अंग-विन्यास-विशेष, (पराह १, ४)। ३ प्रसन्नता, प्रसाद; (विपा १, २ टी—पत्र २२)। ४ वि. क्रीडा-प्रधान, मौजी; (णाया १, १६—पत्र २०५)। ५ शोभा-युक्त, सुन्दर, मनोहर; (णाया १, १; औप; राय)। ६ मंजु, मधुर; (पाअ)। ७ ईप्सित, अभिलषित, (णाया १, ६)। °मित्त पुं [°मित्र] सातवें वासुदेव का पूर्व-जन्मीय नाम; (सम १५३; पउम २०, १७१)। °वित्थरा स्त्री [°विस्तरा] आचार्य श्रीहरिभद्रसूरि का बनाया हुआ एक जैन ग्रन्थ; (चेइय २५६)।

ललिअंग पुं [ललिताङ्ग] एक राज-कुमार; (उप ६८६ टी)।

ललिअय न [ललितक] छन्द-विशेष; (अजि १८)।

ललिआ स्त्री [ललिता] एक पुरोहित-स्त्री, (उप ७२८ टी)।

लल्ल वि [दे] १ स-स्पृह, स्पृहा वाला; २ न्यून, अधूरा; (दे ७, २६)।

लल्ल वि [लल्ल] अव्यक्त आवाज वाला, (पराह १, २)।

लल्लक्क पुं [लल्लक्क] छठवीं नरक-पृथिवी का एक नरक-स्थान, (देवेन्द्र १२)।

लल्लक्क वि [दे] १ भीम, भयंकर; (दे ७, १८; पाअ; सुर १६, १४८), "लल्लक्कनरयविअणाओ" (भत्त ११०)। २ पुं. ललकार, लड़ाई आदि के लिए आह्वान, (उप ७६८ टी)।

लल्लि स्त्री [दे] खुशामद; (धर्मवि ३८; जय १६)।

लल्लिरी स्त्री [दे] मछली पकड़ने का जाल-विशेष; (विपा १, ८—पत्र ८५)।

लव सक [लू] काटना। संकृ—**लविऊण**, हेकृ—**लविउं**; कृ—**लविअव्व**, (प्राकृ ६६)।

लव सक [लप्] बोलना, कहना। लवइ; (कुमा; संबोध १८; सण), लवे; (भास ६६)। वकृ—**लवंत, लवमाण**; (सुपा २६७; सुर ३, ६१)।

लव सक [प्र+वर्तय्] प्रवृत्ति कराना। "णो विज्जं लवंति" (सुज्ज २०)।

लव वि [लप] वाचाट, बकवादी; (सुअ २, ६, १५)।

लव पुं [लव] १ समय का एक सूक्ष्म परिमाण, सात स्तोक, मुहूर्त का सतरहवाँ अंश; (ठा २, ४—पत्र ८६; सम ८५)। २ लेश, अल्प, थोड़ा; (पाअ; प्रासू ६६; ११८; सण)। ३ न. कर्म; (सुअ १, २, २, २०; २, ६, ६)। °सत्तम पुं [°सप्तम] अनुत्तरविमान निवासी देव, सर्वोत्तम देव-जाति; (पराह २, ४; उव; सुअ १, ६, २४)।

लवअ पुं [दे. लवक] गोंद, लासा, चेंप, निर्यास; "लवओ गुदो" (पाअ)।

लवइअ वि [दे. लवकित] नूतन दल से युक्त, अंकुरित, पल्लवित; (औप; भग, णाया १, १ टी—पत्र ५)।

लवंग पुन [लवङ्ग] १ वृक्ष-विशेष, (पराण १—पत्र ३४; कुप्र २४६)। २ वृक्ष-विशेष का फूल; (णाया १, १—पत्र १२; पराह २, ५)।

लवण न [लवन] छेदन, काटना; (विसे ३२०६)।

लवण न [लवण] १ लोन, नमक; (कुमा)। २ पुं. रस-विशेष, खार रस; (अणु)। ३ समुद्र-विशेष; (सम ६७; णाया १, ६; पउम ६६, १८)। ४ सीता का एक पुत्र, लव; (पउम ६७, १६)। ५ मधुराज का एक पुत्र; (पउम ८६, ४७)। °जल पुं [°जल] लवण समुद्र; (पउम ५७, २७)। °य पुं [°द] लवण समुद्र, (पउम ६४, १३)। देखो **लोण**।

लवणिम पुंस्त्री [लवणिमन्] लावण्य; (कुमा)।

लवल न [लवल] पुष्प-विशेष; (कुमा)।

लवली स्त्री [लवली] लता-विशेष; (सुपा ३८१; कुप्र २४६)।

लवव वि [दे] सुप्त, सोया हुआ; (षड्)।

लविअ वि [लपित] उक्त, कथित; (सुअ १, ६, २५; कुमा; सुपा २६७)।

लवित्त न [**लवित्र**] दात्र, घास काटने का एक औजार; (दे १, ८२)।

लविर वि [**लवितृ**] बोलने वाला, (सण)। स्त्री---°**रा**; (कुमा.)।

लस अक [**लस्**] १ श्लेष करना। २ चमकना। ३ क्रीडा करना। लसइ; (प्राकृ ७२)। वकृ---**लसंत**; (सण)।

लसइ पुं [**दे**] काम, कन्दर्प; (दे ७, १८)।

लसक न [**दे**] तरु-क्षीर, पेड़ का दूध; (दे ७, १८)।

लसण देखो **लसुण**; (सूत्र १, ७, १३)।

लसिर वि [**लसितृ**] १ श्लिष्ट होने वाला, २ चमकने वाला, दीप्र; (से ८, ४४)।

लसुअ न [**दे**] तैल, तेल; (दे ७, १८)।

लसुण न [**लशुन**] ल्हसुन, कन्द-विशेष; (श्रा २०)।

लह देखो **लभ**। लहइ, लहेइ, लहए; (महा; पि ४५७)। भवि---लहिस्सामो; (महा)। कर्म---लहिज्जइ; (हे ४, २४९)। वकृ---**लहंत**; (प्राप्र)। संकृ---**लहिउं**, **लहिऊण**, (कुप्र १; महा), **लहेप्पि**, **लहेप्पिणु**, **लहेवि** (अप); (पि ५८८)। कृ---**लहणिज्ज**, **लहिअव्व**; (श्रा १४; सुर ६, ५३, सुपा ४२७)।

लहग पुं [**दे**] वासी अन्न में पैदा होने वाला द्वीन्द्रिय कीट-विशेष; (जी १५)।

लहण न [**लभन**] १ लाभ, प्राप्ति; २ ग्रहण, स्वीकार; (श्रा १४)।

लहर पुं [**लहर**] एक वणिक्-पुत्र, (सुपा ६१७)।

लहरि, **लहरी** स्त्री [**लहरि**, °**री**] तरंग, कल्लोल; (सण; प्रासू ६९; कुमा)।

लहाविअ वि [**लम्भित**] प्रापित, प्राप्त कराया हुआ, (कुप्र २३२)।

लहिअ देखो **लद्ध**; (कप्प; पिंग)।

लहिम देखो **लघिम**; (पड्)।

लहु, **लहुअ** वि [**लघु**] १ छोटा, जघन्य; (कुमा, सुपा ३६०; कम्म ४, ७२; महा)। २ हलका; (से ७, ४४; पाअ)। ३ तुच्छ, निःसार; (पणह १, २---पत्र २८; पगह २, २---पत्र ११९)। ४ श्लाघनीय, प्रशंसनीय; (से १२, ५३)। ५ थोडा, अल्प; (सुपा ३५४)। ६ मनोहर, सुन्दर; (हे २, १२२)। स्त्री---°**ई**, °**वी**; (षड्; प्राकृ २८; गउड; हे २, ११३)। ७ न. कृष्णागुरु, सुगन्धि धूप-द्रव्य विशेष; ८ वीरण-मूल; (हे २, १२२)। ९ शीघ्र, जल्दी; (द्र ४६; पगह २, २---पत्र ११९)। १० स्पर्श-विशेष; (अणु)। ११ लघुस्पर्श-नामक एक कर्म-भेद; (कम्म १, ४१)। १२ पुं एक मात्रा वाला अक्षर; (हे ३, १३४)। °**कम्म** वि [°**कर्मन्**] जिसके अल्प ही कर्म अवशिष्ट रहे हों, शीघ्र मुक्ति-गामी; (सुपा ३५४)। °**करण** न [°**करण**] दक्षता, चातुरी; (णाया १, ३---पत्र ९२; उवा)। °**परक्कम** पु [°**पराक्रम**] ईशानेन्द्र का एक पदाति-सेनापति; (ठा ५, १---पत्र ३०३; इक)। °**संखिज्ज** न [°**संख्येय**] संख्या-विशेष, जघन्य संख्यात, (कम्म ४, ७२)।

लहुअ सक [**लघय्**, **लघु+कृ**] लघु करना। लहुअंति, लहुएमि, (श्रा २०; गा ३४५)। वकृ---**लहुअंत**; (से १५, २७)।

लहुअवड पुं [**दे**] न्यग्रोध वृक्ष; (दे ७, २०)।

लहुआइअ, **लहुइअ** वि [**लघूकृत**] लघु किया हुआ; (से ६, ४; १२, ५४; स २०७; गउड)।

लहुई देखो **लहु**।

लहुग देखो **लहु**; (कप्प, द्र ५८)।

लहुवी देखो **लहु**।

लाइअ वि [**लागित**] लगाया हुआ; (से २, २६; वज्जा ५०)।

लाइअ वि [**दे**] १ गृहीत, स्वीकृत, (दे ७, २७)। २ घृष्ट; (से २, २६)। ३ न. भूषा, मण्डन, (दे ७, २७)। ४ भूमि को गोबर आदि से लीपना; (सम १३७; कप्प; औप; णाया १, १ टी---पत्र ३)। ५ चर्मार्ध, आधा चमड़ा; (दे ७, २७)।

लाइअव्व देखो **लाय**=लावय्।

लाइज्जंत देखो **लाय**=लागय्।

लाइम वि [**दे**] १ लाजा के योग्य, खोई के योग्य, २ रोपण के योग्य, बोने लायक; (आचा २, ४, २, १५; दस ७, ३४)।

लाइल्ल पुं [**दे**] वृषभ, बैल; (दे ७, १९)।

लाउ देखो **अलाउ**; (हे १, ६६; भग; कस, औप)।

लाऊ देखो **अलाऊ**; (हे १, ६६; कुमा)।

लाख (अप) देखो **लक्ख**=लक्ष; (पिंग)।

लाग पुं [**दे**] चुंगी, एक प्रकार का सरकारी कर; गुजराती में 'लागो'; (सिरि ४३३; ४३४)।

लाघव न [लाघव] लघुता, लघुपन, [illegible] अल्प, कम; (सुपा १०३; कुप्र [illegible]; निचू १६)।

लाघवि वि [लाघविन्] लघुता-युक्त, अल्प वाला; (उत्त २६, ४२; [illegible])।

लाघविअ न [लाघविक] लाघव, लघुता; (ठा ५, ३ — पत्र ३४२; [illegible]; सुअ २, १, ५२; [illegible])।

लाइ देखो लाय=[illegible]; (दे ६, १०)।

लाड पुं [लाट] देश-विशेष; (पउम ६६, [illegible]; कुप्र २५४; सत्त ६७ टी; [illegible])।

लाडी स्त्री [लाटी] लिपि-विशेष, (विसे ४६४ टी)।

लाढ पुं [लाढ] देश-विशेष, एक आर्य देश; (आचा; पव २७५; विचार ४९)।

लाढ वि [दे] १ निर्दोष आहार से आत्मा का निर्वाह करने वाला, [illegible], आत्मनिर्वाही; (सूअ १, १०, ३; सुपा २, १८)। २ प्रधान, मुख्य, (उत्त १५, २)। ३ पुं. एक जैन मुनि; (राज)।

लाण न [म्लान] [illegible]; (से ७, ६०)।

लाऊ देखो लाऊ; ([illegible])।

लाभ पुं [लाभ] १ नफा, फायदा; (उप; सुपा ८, ११)। २ प्राप्ति; (ठा ३, ४)। ३ सूद, व्याज; (उप ९६७)।

लाभंतराइय न [लाभान्तरायिक] लाभ का प्रतिबन्धक कर्म; (कम्म १, ५२)।

लाभिअ } वि [लाभिक] लाभ-युक्त, लाभ वाला; (औप;
लाभिल्ल } धर्म ११)।

लाम वि [दे] रम्य, सुन्दर, (औप)।

लामंजअ न [दे] तृण-विशेष, उशीर तृण; (पाअ)।

लामा स्त्री [दे] डाकिनी, डाइन, (दे ७, २१)।

लाय सक [लागय्] लगाना, जोड़ना। लाएइ; ([illegible])। [illegible]—लाइंत; (भवि)। कवकृ—लाइ-ज्जंत, (से ११, ९१)। कृ—लाइव्व ([illegible]); (से ८, ११२, १४१)।

लाय सक [लापय] १ [illegible]; २ [illegible], [illegible]। ३ [illegible], (से १५, ७५)।

लाय देखो लाइअ=[illegible]; "[illegible]" ([illegible])।

लाय वि [लात] १ [illegible], २ [illegible]; ([illegible])। ३ [illegible] "[illegible]" (सुर १०[illegible])।

लाय पुंस्त्री [लाज] १ आर्द्र तण्डुल; २ ब. भुने धान्य, भुँजा हुआ नाज, खोई; (कप्पू)।

लायण न [लागन] लगवाना; (गा ४५८)।

लायण्ण न [लावण्य] १ शरीर-सौन्दर्य-विशेष, शरीर-कान्ति; (पाअ; कुमा; नाट; पि १८६)। २ लवणत्व, खारापन; (हे १, १७७; १८०)।

लाल सक [लालय्] स्नेह-पूर्वक पालन करना। लालंति; (तंदु ५०)। कवकृ—लालिज्जंत (सुर २, ७३; सुपा २४)।

लालंप अक [वि + लप्] विलाप करना। लालंपइ; (प्राकृ ७३)।

लालंपिअ न [दे] १ प्रवाल; २ खलीन; ३ आक्रन्दित, (दे ७, २७)।

लालंभ देखो लालंप। लालंभइ; (प्राकृ ७३)।

लालण न [लालन] स्नेह-पूर्वक पालन; (पउम २६, ८८)।

लालप्प देखो लालंप। लालप्पइ; (प्राकृ ७३)।

लालप्प सक [लालप्य्] १ खूब बकना। २ बारबार बोलना। ३ गर्हित बोलना। लालप्पइ; (सूअ १, १०, १६)। वकृ—लालप्पमाण; (उत्त १४, १०; आचा)।

लालप्पण न [लालपन] गर्हित जल्पन; (पण्ह १, ३—पत्र ४३)।

लालम्भ } देखो लालंप। लालम्भइ, लालम्हइ; (प्राकृ
लालम्ह } ७३; भवि १४०)।

लालय न [लालक] लाला, लार; (दे ५, १६)।

लालस वि [दे] १ मृदु, कोमल; २ इच्छा; (दे ७, २१)।

लालस वि [लालस] लम्पट, लोलुप; (पाअ; हे ४, ४०१)।

लाला स्त्री [लाला] लार, मुँह से गिरता जल-तंतु; (औप; गा ५५१; कुमा; सुपा २२६)।

लालिअ देखो ललिअ; "कुसुमियकदंबसुरहिसयलदिसापरिरंभणा-लिअजीमूउ" (गउड)।

लालिअ वि [लालित] स्नेह-पूर्वक पालित; (भवि)।

लालिच (अप) पुं [नालिच] वृक्ष-विशेष; (पिंग)।

लालिल्ल वि [लालावत्] लार वाला; (सुपा ५३१)।

लाव सक [लापय्] बुलवाना, कहलाना। लावएज्जा; (सूअ १, ९, २४)।

लाव देखो लावग, (उप ५०१)।

लावंज न [दे] सुगन्धी तृण-विशेष, उशीर, खस; (दे ७, २१)।

लावक } **लावग** } पुं [**लावक**] १ पक्षि-विशेष; (विपा १, ७—पत्र ७५; पण्ह १, १—पत्र ८)। २ वि. काटने वाला; (विसे ३२०६)।

लावणिअ वि [**लावणिक**] लवण से संस्कृत; (विपा १, २—पत्र २७)

लावण्ण } **लावन्न** } देखो **लायण्ण**; (औप; रंभा; काल; अभि ६२; भवि)।

लावय देखो **लावग**; (उवा)।

लाविय (अप) वि [**लात**] लाया हुआ; (भवि)।

लाविया स्त्री [**दे**] उपलोभन; (सूअ १, ३, १, १८)।

लाविर वि [**लवितृ**] काटने वाला; (गा ३५५)।

लास न [**लास्य**] १ भरतशास्त्र-प्रसिद्ध गेयपद आदि; (कुमा)। २ नृत्य, नाच; (पात्र)। ३ स्त्री का नाच; ४ वाद्य, नृत्य और गीत का समुदाय; (हे २, ९२)।

लासक } **लासग** } पुं [**लासक**] १ रास गाने वाला; २ जय-शब्द बोलने वाला, भाण्ड; (णाया १, १ टी—पत्र २; औप; पण्ह २, ४—पत्र १३२; कप्प)।

लासय पुं [**लासक, ह्लासक**] १ अनार्य देश-विशेष; २ पुंस्त्री. अनार्य देश-विशेष का रहने वाला; स्त्री—°**सिया**; (औप; णाया १, १—पत्र ३७; इक; अंत)। देखो **ल्हासिय**।

लासयविहय पुं [**दे. लासकविहग**] मयूर, मोर; (दे ७, २१)।

लाह सक [**श्लाघ्**] प्रशंसा करना। लाहइ; (हे १, १८७)।

लाह देखो **लाभ**; (उव; हे ४, ३९०; श्रा १२; णाया १, ६)।

लाहण न [**दे**] भोज्य-भेद, खाद्य वस्तु की भेंट; (दे ७, २१; ६, ७३; सट्टि ७८ टी; रंभा १३)।

लाहल देखो **णाहल**; (हे १, २५६; कुमा)।

लाहव देखो **लाघव**; (किरात १७)।

लाहवि देखो **लाघवि**; (भवि)।

लाहविय देखो **लाघविअ**; (राज)।

लिअ सक [**लिप्**] लेपन करना, लीपना। लिअइ; (प्राकृ ७१)।

लिअ वि [**लिप्त**] १ लीपा हुआ; (गा ५२८)। २ न. लेप, (प्राकृ ७७)।

लिआर पुं [**लकार**] 'लृ' वर्ण; (प्राकृ ६)।

लिंक पुं [**दे**] बाल, लड़का; (दे ७, २२)।

लिंकिअ वि [**दे**] १ आक्षिप्त; २ लीन; (दे ७, २८)।

लिंखय देखो **लंख**; (सुपा ३५६)।

लिंग सक [**लिङ्ग्**] १ जानना। २ गति करना। ३ आलिंगन करना। कर्म—लिंगिज्जइ, (संबोध ५१)।

लिंग न [**लिङ्ग**] १ चिह्न, निशानी; (प्रासू २४; गउड)। २ दार्शनिकों का वेष-धारण, साधु का अपने धर्म के अनुसार वेष, (कुमा, विसे २५८५ टि; ठा ५, १—पत्र ३०३)। ३ अनुमान प्रमाण का साधक हेतु; (विसे १५५०)। ४ पुंश्चिह्न, पुरुष का असाधारण चिह्न; (गउड)। ५ शब्द का धर्म-विशेष, पुंलिंग आदि; (कुमा; राज)। °**ड्ढय** पु [°**ध्वज**] वेष-धारी साधु; (उप ४८६)। °**जीव** पुं [°**जीव**] वही अर्थ; (ठा ५, १)।

लिंगि वि [**लिङ्गिन्**] १ साध्य, हेतु से जानी जाती वस्तु; (विसे १५५०)। २ किसी धर्म के वेष को धारण करने वाला, साधु, संन्यासी; (पउम २२, ३; सुर २, १३०); स्त्री—°**णी**; (पुप्फ ४५४)।

लिंगिय वि [**लैङ्गिक**] १ अनुमान प्रमाण; (विसे ९५)। २ किसी धर्म के वेष को धारण करने वाला साधु, संन्यासी; (मोह १०१)।

लिंछ न [**दे**] १ चुल्ली-स्थान, चुल्हा का आश्रय, २ अग्नि-विशेष; (ठा ८ टी—पत्र ४१६)। देखो **लिच्छ**।

लिंड न [**दे**] १ हाथी आदि की विष्ठा, गुजराती में 'लींद'; (णाया १, १—पत्र ६३; उप २६४ टी, ती २)। २ शैवल-रहित पुराना पानी; (पण्ह २, ५—पत्र १५१)।

लिंडिया स्त्री [**दे**] अज आदि की विष्ठा; गुजराती में 'लिंडी'; (उप पृ २३७)।

लिंत देखो **ले**=ला।

लिंप सक [**लिप्**] लीपना, लेप करना। लिंपइ; (हे ४, १४९; प्राकृ ७१)। कर्म—लिप्पइ, (आचा)। वकृ—**लिंपेमाण**; (णाया १, ६)। कवकृ—**लिप्पंत, लिप्पमाण**; (ओघभा १९५; रयण २९)।

लिंपण न [**लेपन**] लेप, लीपना; (पिंड २४६; सुपा ६१६)।

लिंपाविय वि [**लेपित**] लेप कराया हुआ; (कुप्र १४०)।

लिंपिय वि [**लिप्त**] लीपा हुआ; (कुमा)।

लिंब पु [**निम्ब**] वृक्ष-विशेष, नीम का पेड़, मराठी में 'लिंब'; (हे १, २३०; कुमा; स ३५)।

लिंब पु [**दे. लिम्ब**] आस्तरण-विशेष; (णाया १, १—पत्र १३)।

लिंबड (अप) देखो **लिंब**=निम्ब; गुजराती में 'लिबडो'; (हे ४, ३८७, पि २४७)।

लिंबोहली स्त्री [**दे**] निम्ब-फल; (सूक्त ८६)।

लिकार देखो **लिआर**; (पि ५६)।

लिक्क अक [**नि+ली**] छिपना। लिक्कइ; (हे ४, ५५; षड्)। वकृ—**लिक्कंत**; (कुमा)।

लिक्ख न [**लेख्य**] लेखा, हिसाब; "लिक्खं गणिऊण चिंतए सिद्धी" (सिरि ४१८, सुपा ४२५)। देखो **लेक्ख**।

लिक्ख स्त्रीन [**दे**] छोटा स्रोत, (दे ७, २१); स्त्री—°**क्खा**; (दे ७, २१)।

लिक्खा स्त्री [**लिक्षा**] १ लघु यूका; (दे ८, ६६, से ६७)। २ परिमाण-विशेष; (इक)।

लिखाप (अशो) सक [**लेखय्**] लिखवाना। भवि—लिखापयिस्सं; (पि ७)।

लिखापित (अशो) वि [**लेखित**] लिखवाया हुआ; (पि ७)।

लिच्छ सक [**लिप्स्**] प्राप्त करने को चाहना। लिच्छइ; (हे २, २१)।

लिच्छ देखो **लिंछ**; (ठा ८—पत्र ४३७)।

लिच्छवि देखो **लेच्छइ**=लेच्छकि; (अंत)।

लिच्छा स्त्री [**लिप्सा**] लाभ की इच्छा; (उप ६३०; प्राकृ ३३)।

लिच्छु वि [**लिप्सु**] लाभ की चाह वाला, (सुख ६, १; कुमा)।

लिज्जिअ (अप) वि [**लात**] गृहीत; (पिंग)।

लिट्टिअ न [**दे**] १ चाटु, खुशामद; (दे ७, २२)। २ वि. लम्पट, लोलुप, (सुपा ५६३)।

लिट्ठु देखो **लेट्ठु**; (वसु)।

लित्त वि [**लिप्त**] १ लेप-युक्त, लिपा हुआ; (हे १, ६; कुमा; भवि)। २ संवेष्टित; (सूअ १, ३, ३, १३)।

लित्ति पुंस्त्री [**दे**] खड्ग आदि का दोष, (दे ७, २२)।

लिप्प देखो **लित्त**; (गा ५१६, गउड)।

लिप्प देखो **लेप्प**; (कुप्र ३८४)।

लिप्पंत }
लिप्पमाण } देखो **लिंप**।

लिब्भंत देखो **लिह**=लिह्।

लिल्लिर वि [**दे**] १ हरा, आर्द्र, २ हरा रँग वाला, "अइ-लिल्लिरपट्टबंधणमिसेण चोरसु पट्टबंध व जो फुड तत्थ उव्वहइ" (धर्मवि ७३)।

लिवि }
लिवी } स्त्री [**लिपि, °पी**] अक्षर-लेखन-प्रक्रिया; (सम ३५; भग)।

लिस अक [**स्वप्**] सोना, शयन करना। लिसइ; (हे ४, १४६)।

लिस सक [**श्लिष्**] आलिंगन करना। भवि—लिसिस्सामो; (सूअ २, ७, १०)।

लिसय वि [**दे**] तनूकृत, क्षीण; (दे ७, २२)।

लिस्स देखो **लिस**=श्लिष्। लिस्संति; (सूअ १, ४, १, २)।

लिह सक [**लिख्**] १ लिखना। २ रेखा करना। लिहइ; (हे १, १८७; प्राकृ ७०)। कर्म—लिक्खइ; (उव)। प्रयो—लिहावेइ, लिहावंति, (कुप्र ३४८; सिरि १२७८)।

लिह सक [**लिह्**] चाटना। लिहइ; (कुमा; प्राकृ ७०)। कर्म—लिहिज्जइ, लिब्भइ; (हे ४, २४५)। वकृ—**लिहंत**; (भत्त १४२)। कवकृ—**लिब्भंत**; (से ६, ४१)। कृ—**लेज्झ**, (गाथा १, १७—पत्र २३२)।

लिहण न [**लेहन**] चाटन; (उर १, ८; षड्; रंभा १६)।

लिहण न [**लेखन**] १ लिखना, लेख; (कुप्र ३६८)। २ रेखा-करण; (तंदु ५०)। ३ लिखवाना; "पत्तयणलिहणं सहस्से लक्खे जिणभवणकारवणं" (सबोध ३६)।

लिहा स्त्री [**लेखा**] देखो **रेहा**=रेखा; "इक्केक चिय मह भइणी मयणा धन्नाण धू(?धु)रि लहइ लिहं" (सिरि ६७७)।

लिहावण न [**लेखन**] लिखवाना; (उप ७२४)।

लिहाविय वि [**लेखित**] लिखवाया हुआ; (स ६०)।

लिहिअ वि [**लिखित**] १ लिखा हुआ; (प्रासू ५८)। २ उल्लिखित; (उवा)। ३ रेखा किया हुआ, चित्रित; (कुमा)।

लिह्अ (अप) वि [**लात**] लिया हुआ, गृहीत; (पिंग)।

लीढ वि [**लीढ**] १ चाटा हुआ; (सुपा ६५१)। २ स्पृष्ट; "नरिंदसिरि(? सिर)कुसुमलीढपायवीढं" (कुप्र ५)। ३ युक्त; (पव १२५)।

लीण वि [**लीन**] लय-युक्त, (कुमा)।

लील पु [**दे**] यज्ञ; (दे ७, २३)।

लीला स्त्री [**लीला**] १ विलास, मौज; २ क्रीड़ा; (कुमा; पाअ; प्रासू ६१)। ३ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**वई** स्त्री [°**वती**] १ विलास-वती स्त्री; (प्रासू ६१)। २ छन्द-विशेष, (पिंग)। °**वह** वि [°**वह**] लीला-वाहक; (गउड)।

लीलाइअ न [**लीलायित**] १ क्रीड़ा, केलि, (कप्पू)। २ प्रभाव; "धम्मस्स लीलाइयं" (उप १०३१ टी)।

लीलाय सक [**लीलाय्**] लीला करना । वकृ—**लीलायंत**. (गाया १, १—पत्र १३; कप्प) । कृ—**लीलाइयव्व**; (गउड) ।

लीव पुं [**दे**] बाल, बालक; (दे ७, २२; सुर १५, २१८)।

लीहा देखो **लिहा**, (गाया १, ८—पत्र १४५; कुमा; भवि; सुपा १०६; १२४) ।

लुअ सक [**लू**] छेदना, काटना । लुएज्जा; (पि ४७३) ।

लुअ देखो **लुंप** । लुअइ; (प्राकृ ७१) ।

लुअ वि [**लून**] काटा हुआ, छिन्न; (हे ४, २५८; गा ८; से ३, ४२; दे ७, २३; सुर १३, १७५; सुपा ५२४) ।

लुअ वि [**लुप्त**] १ जिसका लोप किया गया हो वह; २ न. लोप; (प्राकृ ७७) ।

लुअंत वि [**लूनवत्**] जिसने छेदन किया हो वह; (धात्वा १५१) ।

लुंक वि [**दे**] सुप्त, सोया हुआ; (दे ७, २३) ।

लुंकणी स्त्री [**दे**] लुकना, छिपना; (दे ७, २४) ।

लुंख पुं [**दे**] नियम, (दे ७, २३) ।

लुंखाय पुं [**दे**] निर्णय; (दे ७, २३) ।

लुंखिअ वि [**दे**] कलुष, मलिन; (से १५, ४२) ।

लुंच सक [**लुञ्च्**] १ बाल उखाड़ना । २ अपनयन करना, दूर करना । लुंचइ; (भवि) । भूका—लुंचिंसु; (आचा) ।

लुंचिअ वि [**लुञ्चित**] केश-रहित किया हुआ, मुण्डित; (कुप्र २६२; सुपा ६४१) ।

लुंछ सक [**मृज्, प्र+उञ्छ्**] मार्जन करना, पोंछना । लुंछइ; (हे ४, १०५; प्राकृ ६७; धात्वा १५१) । वकृ—**लुंछंत**; (कुमा) ।

लुंट सक [**लुण्ट्**] लूटना । लुटंति; (सुपा ३५२) । वकृ—**लुंटंत**; (धर्मवि १२३) । कवकृ—**लुंटिज्जंत**; (सुर २, १४) ।

लुंटण न [**लुण्टन**] लूट; (सुर २, ४६; कुमा) ।

लुंटाक वि [**लुण्टाक**] लूटने वाला, लुटेरा; (धर्मवि १२३) ।

लुंठग वि [**लुण्ठक**] खल, दुर्जन; "चेडवंदवेढिआ उवहसिज्जमाणा लुंठगलोएण, अणुकंपिज्जंती धम्मिअजणेण" (सुख २, ६) ।

लुंठिअ वि [**लुण्ठित**] बलाद् गृहीत, जबरदस्ती से लिया हुआ; (पिंग) ।

लुंप सक [**लुप्**] १ लोप करना, विनाश करना । २ उत्पीडन करना । लुंपइ, लुंपहा; (प्राकृ ७१; सूअ १, ३, ४, ७) । कर्म—लुप्पइ; (आचा), लुप्पए, (सूअ १, २, १, १३) । कवकृ—**लुप्पंत, लुप्पमाण**; (पि ५४२; उवा) । संकृ—**लुंपित्ता**; (पि ५८२) ।

लुंपइत्तु वि [**लोपयितृ**] लोप करने वाला; (आचा; सूअ २, २, ६) ।

लुंपणा स्त्री [**लोपना**] विनाश; (पण्ह १, १—पत्र ६) ।

लुंपित्तु वि [**लोप्तृ**] लोप करने वाला; (आचा) ।

लुंबी स्त्री [**दे. लुम्बी**] १ स्तवक, फलों का गुच्छा; (दे ७, २८; कुमा; गा ३२२, कुप्र ४६०) । २ लता, वल्ली; (दे ७, २८) ।

लुक्क अक [**नि+ली**] लुकना, छिपना । लुक्कइ; (हे ४, ५५, षड्) । वकृ—**लुक्कंत**; (कुमा; वज्जा ५६) ।

लुक्क अक [**तुड्**] टूटना । लुक्कइ; (हे ४, ११६) ।

लुक्क वि [**दे**] सुप्त, सोया हुआ; (षड्) ।

लुक्क वि [**निलीन**] लुका हुआ, छिपा हुआ; (गा ४६; ५५८; पिंग) ।

लुक्क वि [**रुग्ण**] १ भग्न; (कुमा) । २ बिमार, रोगी; (हे २; २) ।

लुक्क वि [**लुञ्चित**] मुण्डित, केश-रहित; (कप्प; पिंड २१७) ।

लुक्कमाण देखो **लोअ**=लोक् ।

लुक्किअ वि [**तुडित**] टूटा हुआ, खण्डित; (कुमा) ।

लुक्किअ वि [**निलीन**] लुका हुआ, छिपा हुआ; (पिंग) ।

लुक्ख पुं [**रूक्ष**] १ स्पर्श-विशेष, लूखा स्पर्श; (ठा १; सम ४१) । २ वि. रूक्ष स्पर्श वाला, स्नेह-रहित, लूखा; (णाया १, १—पत्र ७३; कप्प; औप) । देखो **लूह**=रूक्ष ।

लुग्ग वि [**दे. रुग्ण**] १ भग्न, भाँगा हुआ; (दे ७, २३; हे २, २; ४, २५८) । २ रोगी, बिमार; (हे २, २; ४, २५८; षड्) ।

लुच्छ देखो **लुंछ**=मृज् । लुच्छइ; (षड्) ।

लुट्ट सक [**लुण्ट्**] लूटना । लुट्टइ; (षड्) ।

लुट्ट देखो **लोट्ट**=स्वप् । लुट्टइ; (कुमा ६, १००) ।

लुट्ट वि [**लुण्टित**] लूटा गया; (धर्मवि ७) ।

लुट्ठ पुं [**लोष्ट**] रोड़ा, ईंट आदि का टुकड़ा; (दे ७, २६)।

लुड्ड देखो **लुद्ध**; (प्राकृ २१) ।

लुढ अक [**लुठ्**] लुढकना, लेटना । वकृ—**लुढमाण**; (स २५४) ।

लुढिअ वि [लुठित] लेटा हुआ, (सुपा ५०३; स ३६६)।

लुण देखो **लुअ**=लू। लुणइ; (हे ४, २४१)। कर्म— लुणिज्जइ, लुव्वइ, (प्राप्र; हे ४, २४२)। संकृ —**लुणिऊण, लुणेऊण**, (प्राकृ ६६; षड्), **लुणेप्पि** (अप); (पि ५८८)।

लुणिअ वि [लून] काटा हुआ, (धर्मवि १२६; सिरि ४०४)।

लुत्त वि [लुप्त] लोप-प्राप्त, "करेइ लुत्तो इकारो त्थ" (चेइय ६७७)।

लुत्त न [लोप्त्र] चोरी का माल; (श्रावक ९३ टी)।

लुद्ध पुं [लुब्ध] १ व्याध; (पण्ह १, २; निचू ४)। २ वि· लोलुप, लम्पट; (पाअ; विपा १, ७—पत्र ७७; प्रासू ७६)। ३ न· लोभ; (बृह ३)।

लुद्ध न [लोध्र] गन्ध-द्रव्य-विशेष, "सिणाणं अदुवा कक्कं लुद्धं पउमगाणि अ" (दस ६, ६४)। देखो **लोद्ध**=लोध्र।

लुप्पंत } देखो **लुंप**।
लुप्पमाण }

लुब्भ } अक [लुभ्] १ लोभ करना। २ आसक्ति करना।
लुभ } लुब्भइ, लुब्भसि; (हे ४, १५३; कुमा), लुभइ; (षड्)। कृ—**लुभियव्व**; (पण्ह २, ५—पत्र १४९)।

लुभ देखो **लुह**=मृज्। लुभइ; (संक्षि ३५)।

लुरणी स्त्री [दे] वाद्य-विशेष; (दे ७, २४)।

लुल देखो **लुढ**। लुलइ; (पिंग)। वकृ—**लुलंत, लुलमाण**; (सुपा ११७; सुर १०, २३१)।

लुलिअ वि [लुठित] लेटा हुआ; (सुर ४, ६८)।

लुलिअ वि [लुलित] घूर्णित, चलित; (उवा; कुमा; काप्र ८६३)।

लुव देखो **लुअ**=लू। लुवइ; (धात्वा १५१)।

लुव्व° देखो **लुण**।

लुह सक [मृज्] मार्जन करना, पोंछना। लुहइ; (हे ४, १०५; षड्; प्राकृ ६६; भवि)।

लुहण न [मार्जन] शुद्धि; (कुमा)।

लूअ देखो **लुअ**=लून; (षड्)।

लूआ स्त्री [दे] मृग-तृष्णा, सूर्य-किरण में जल की भ्रान्ति; (दे ७, २४)।

लूआ स्त्री [लूता] १ वातिक रोग-विशेष; (पंचा १८, २७; सुपा १४७; लहुअ १५)। २ जाल बनाने वाला कृमि, मकड़ी; (ओघ ३२३, दे)।

लूड सक [लुण्ट्] लूटना, चोरी करना। लूडइ, लूडेइ, लूडेह, (धर्मवि ८०; संवेग २६; कुप्र ५९)। हेकृ—**लूडेउं**; (सुपा ३०७; धर्मवि १२४)। प्रयो—वकृ—**लूडावंत**; (सुपा ३५२)।

लूड वि [लुण्ट] लूटने वाला; स्त्री—°**डी**;

"सो नत्थि एत्थ गामे जो एयं महमहंतलायरणं।
तरुणाण हिययलूडिं परिसक्कंतिं निवारेइ ॥"
(हेका २९०; काप्र ९१७)।

लूडण न [लुण्टन] लूट, चोरी; (स ४४१)।

लूडिअ वि [लुण्टित] लूटा हुआ; (स ५३९; पउम ३०, ६२; सुपा ३०७)।

लूण देखो **लुअ**=लून; (दे ७, २३; सुपा ५२२; कुमा)।

लूण न [लवण] १ लून, नमक; (जी ४)। २ पुं. वनस्पति-विशेष; (श्रा २०; धर्म २)। देखो **लवण**।

लूर सक [छिद्] काटना। लूरइ; (हे ४, १२४)।

लूरिअ वि [छिन्न] काटा हुआ; (कुमा ६, ८३)।

लूस सक [लूषय्] १ वध करना, मार डालना। २ पीड़ना, कदर्थन करना, हैरान करना। ३ दूषित करना। ४ चोरी करना। ५ विनाश करना। ६ अनादर करना। ७ तोड़ना। ८ छोटे को बड़ा और बड़े को छोटा करना। लूसंति, लूसयति, लूसएज्जा; (सूअ १, ३, १, १४; १, ७, २१; १, १४, १९; १, १४, २५)। भूका—लूसिंसु; (आचा)। संकृ—**लूसिउं**; (श्रा १२)।

लूसअ } वि [लूषक] १ हिंसक, हिंसा करने वाला; २
लूसग } विनाशक; (सूअ २, १, ५०; १, २, ३, ९)। ३ प्रकृति-क्रूर, निर्दय; ४ भक्षक; (सूअ १, ३, १, ८)। ५ दूषित करने वाला; (सूअ १, १४, २६)। ६ विराधक, आज्ञा नहीं मानने वाला; (सूअ १, २, २, ६; आचा)। ७ हेतु-विशेष; (ठा ४, ३—पत्र २५४)।

लूसण वि [लूषण] ऊपर देखो; (आचा; औप)।

लूसिअ वि [लूषित] १ लुण्टित, लुटा गया; (श्रा १२)। २ उपद्रुत, पीडित; (सम्मत १७५)। ३ विनाशित; (संबोध १०)। ४ हिंसित; (आचा)।

लूह सक [मृज्, रूक्षय्] पोंछना। लूहेइ, लूहेंति; (राय; णाया १, १—पत्र ५३)। संकृ—**लूहित्ता**; (पि ५८२)।

लूह वि [रूक्ष] १ लूखा, स्नेह-रहित; (आचा; पिंड १२६; उव)। २ पुं· संयम, विरति, चारित्र; (सूअ १, ३, १,

३)। ३ न. तप-विशेष, निर्विकृतिक तप, (संबोध ५८)। देखो **लुक्ख**।
लूहिय वि [**रूक्षित**] पोंछा हुआ; (गाया १,१—पत्र १६; कप्प; औप)।
ले सक [**ला**] लेना, ग्रहण करना। लेइ; (हे ४, २३८; कुमा)। वकृ—**लिंत**, (सुपा ५३२; पिंग)। संकृ—**लेवि** (अप); (हे ४, ४४०)। हेकृ—**लेविणु** (अप), (हे ४, ४४१)।
लेक्ख न [**लेख्य**] १ व्यवहार, व्यापार, (सुपा ४२४)। २ लेखा, हिसाब; (कुप्र २३८)।
लेक्खा देखो **लिहा**; (गउड)।
लेख देखो **लेह**=लेख; (सम ३५)।
लेखापित देखो **लिखापित**, (पि ७)।
लेच्छइ पुं [**लेच्छकि**] १ क्षत्रिय-विशेष, २ एक प्रसिद्ध राज-वंश; (सूअ १, १३, १०; भग, कप्प; औप; अंत)।
लेच्छइ पुं [**लिप्सुक, लेच्छकि**] १ वणिक्, वैश्य; २ एक वणिग्-जाति; (सूअ २, १, १३)।
लेच्छारिय वि [**दे**] खरण्टित, लिप्त; (पिंड २१०)।
लेज्झ देखो **लिह**=लिह्।
लेट्ठु पुंन [**लेष्टु**] रोड़ा, ईंट पत्थर आदि का टुकड़ा; (विसे २४६६; औप; उव; कप्प; महा)।
लेडु, **लेडुअ** पुंन [**दे, लेष्टु**] ऊपर देखो; (पाअ; दे ७, २४)।
लेडुक्क पु [**दे**] १ रोडा, लोष्ट; २ वि. लम्पट; (दे ७, २६)।
लेढिअ न [**दे**] स्मरण, स्मृति; (दे ७, २५)।
लढुक्क पुं [**दे**] रोड़ा, लोष्ट; (दे ७, २४; पाअ)।
लेण न [**लयन**] १ गिरि-वर्ती पाषाण-गृह; (णाया १, २—पत्र ७६)। २ बिल, जन्तु-गृह, (कप्प)। °**विहि** पुंस्त्री [°**विधि**] कला-विशेष; (औप)। देखो **लयण**=लयन।
लेप्प न [**लेप्य**] भित्ति, भींत; (धर्मसं २६, कुप्र ३००)।
लेलु देखो **लेडु**; (आचा; सूअ २, २, १८; पिंड ३४६)।
लेव पुं [**लेप**] १ लेपन; (सम ३६; पउम २, २८)। २ नाभि-प्रमाण जल, (ओघभा ३४)। ३ पु. भगवान् महावीर के समय का नालंदा-निवासी एक गृहस्थ, (सूअ २, ७, २)। °**कड**, °**ड** वि [°**कृत**] लेप-मिश्रित, (ओघ ५६५; पत्र ४ टी—पत्र ४६; पडि)।
लेवण न [**लेपन**] लेप-करण; (पत्र १३३)।
लेस पुं [**लेश**] १ अल्प, स्तोक, लव, थोड़ा; (पाअ, दे ७, २८)। २ संक्षेप; (दं १)।
लेस वि [**दे**] १ लिखित; २ आश्वस्त; ३ निःशब्द, शब्द-रहित, ४ पुं. निद्रा; (दे ७, २८)।
लेस पुं [**श्लेष**] संश्लेष, संबन्ध, मिलान; (राय)।
लेसण न [**श्लेषण**] ऊपर देखो; (विसे ३००७)।
लेसणया, **लेसणा** स्त्री [**श्लेषणा**] ऊपर देखो; (औप; ठा ४, ४—पत्र २८०; राज)।
लेसणी स्त्री [**श्लेषणी**] विद्या-विशेष; (सूअ २, २, २७; णाया १, १६—पत्र २१३)।
लेसा स्त्री [**लेश्या**] १ तेज, दीप्ति; २ मंडल, बिम्ब; "चंदस्स लेसं आवरेत्ताणं चिट्ठइ" (सम २६)। ३ किरण; (सुज्ज १६)। ४ देह-सौन्दर्य; (राज)। ५ आत्मा का परिणाम-विशेष, कृष्णादि द्रव्यों के सांनिध्य से उत्पन्न होने वाला आत्मा का शुभ या अशुभ परिणाम; ६ आत्मा के शुभ या अशुभ परिणाम की उत्पत्ति में निमित्त-भूत कृष्णादि द्रव्य; (भग, उवा; औप; पव १५२; जीवस ७४; संबोध ४८; पण्ण १७; कम्म ४, १, ६; ३१)।
लेसिय वि [**श्लेषित**] श्लेष-युक्त; (स ७६२)।
लेस्सा देखो **लेसा**; (भग)।
लेह देखो **लिह**=लिख्। लेहइ; (प्राकृ ७०)।
लेह देखो **लिह**=लिह्। लेहइ; (प्राकृ ७०)।
लेह (अप) देखो **लह**=लभ्। लेहइ; (पिंग)।
लेह पु [**लेह**] अवलेह, चाटन; (पउम २, २८)।
लेह पुं [**लेख**] १ लिखना, लेखन, अक्षर-विन्यास; (गा २४४; उवा)। २ पत्र, चिट्ठी; (कप्पू)। ३ देव, देवता; ४ लिपि; ५ वि. लेख्य, जो लिखा जाय; (हे २, १८६)। ६ लेखक, लिखने वाला, "अज्जवि लेहत्तणे तणहा" (वज्जा १००)। °**वाह** वि [°**वाह**] चिट्ठी ले जाने वाला, पत्र-वाहक; (पउम ३१, १, सुपा ५१६)। °**वाहग**, °**वाहय** वि [°**वाहक**] वही अर्थ, (सुपा ३३१; ३३२)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] पाठशाला, (उप ७२८ टी)। °**ारिय** पु [°**ाचार्य**] उपाध्याय, शिक्षक; (महा)।
लेहड वि [**दे**] लम्पट, लुब्ध, (दे ७, २५, उव)।
लेहण न [**लेहन**] चाटन, आस्वादन; (पउम ३, १०७)।
लेहणी स्त्री [**लेखनी**] कलम, लेखिनी, (पउम २६, ५; गा २४४)।
लेहल देखो **लेहड**; (गा ४६१)।

लेहा देखो **लिहा**; (औप; कप्प, कप्पू; कुप्र ३६६; स्वप्न ५२)।
लेहिय वि [**लेखित**] लिखवाया हुआ; (ती ७)।
लेहुड पुं [**दे**] लोष्ट, रोड़ा, ढेला, (दे ७, २४)।
लोअ देखो **रोअ=**रोचय् । संकृ—लोएया; (कस)।
लोअ सक [**लोक्, लोकय्**] देखना । वकृ—**लोअअंत**; (नाट) । कवकृ—**लुक्कमाण**; (उप १४२ टी)। संकृ—**लोइउं**; (कुप्र ३)।
लोअ पुं [**लोक**] १ धर्मास्तिकाय आदि द्रव्यों का आधार-भूत आकाश-क्षेत्र, जगत, संसार, भुवन; २ जीव, अजीव आदि द्रव्य; ३ समय, आवलिका आदि काल; ४ गुण, पर्याय, धर्म; ५ जन, मनुष्य आदि प्राणि-वर्ग; (ठा १—पत्र १३; टी—पत्र १४; भग; हे १, १८०; कुमा; जी १४; प्रासू ५२; ७१; उव; सुर १, ८६)। ६ आलोक, प्रकाश; (वज्जा १०६)। °**ग्ग** न [°**ग्र**] १ ईषत्प्राग्भारा-नामक पृथिवी, मुक्त-स्थान; (णाया १, ५—पत्र १०५; इक)। २ मुक्ति, मोक्ष, निर्वाण; (पाअ)। °**ग्गथूभिआ** स्त्री [°**ग्रस्तूपिका**] मुक्त-स्थान, ईषत्प्राग्भारा पृथिवी; (इक)। °**ग्गपडिवुज्झणा** स्त्री [°**ग्रप्रतिबोधना**] वही अर्थ; (इक)। °**णाभि** पुं [°**नाभि**] मेरु पर्वत, (सुज्ज ५)। °**प्पवाय** पुं [°**प्रवाद**] जन-श्रुति, कहावत; (सुर २, ४७)। °**मज्झ** पुं [°**मध्य**] मेरु पर्वत; (सुज्ज ५)। °**वाय** पुं [°**वाद**] जन-श्रुति, लोकोक्ति; (स २६०; मा ४८)। °**गास** पुं [°**काश**] लोक-क्षेत्र, अलोक-भिन्न आकाश, (भग)। °**हाणय** न [°**भाणक**] कहावत, लोकोक्ति; (भवि)। देखो **लोग**।
लोअ पुं [**लोच**] लुञ्चन, केशों का उत्पाटन; (सुपा ६४१; कुप्र १७३; णाया १, १—पत्र ६०; औप; उव)।
लोअ पुं [**लोप**] अ-दर्शन, विध्वंस; (चेइय ६८१)।
लोअंतिय पुं [**लोकान्तिक**] एक देव-जाति; (कप्प)।
लोअग न [**दे. लोचक**] गुण-रहित अन्न, खराब नाज; (कस)।
लोअडी (अप) स्त्री [**लोमपटी**] कम्बल; (हे ४, ४२३)।
लोअण पुंन [**लोचन**] आँख, चक्षु, नेत्र; (हे १, ३३; २, १८४; कुमा, पाअ, सुर २, २२२)। °**वत्त** न [°**पत्र**] अक्षि-लोम, बरवनी, पद्म; (से ६, ६८)।
लोअणिल्ल वि [**लोचनवत्**] आँख वाला; (सुपा २००)।
लोआणी स्त्री [**दे**] वनस्पति-विशेष; (पण्ण १—पत्र ३६)।
लोइअ वि [**लोकित**] निरीक्षित, दृष्ट; (गा २७१; स ७१३)।
लोइअ वि [**लौकिक**] लोक-संबन्धी, सांसारिक; (आचा; विपा १, २—पत्र ३०; णाया १, ६—पत्र १६६)।
लोउत्तर वि [**लोकोत्तर**] लोक-प्रधान, लोक-श्रेष्ठ, असाधारण; "लोउत्तरं चरित्रं" (श्रा १६; विसे ८७०)। देखो **लोगुत्तर**।
लोउत्तरिय वि [**लोकोत्तरिक**] ऊपर देखो; (श्रा १)।
लोंक वि [**दे**] सुप्त, सोया हुआ; (दे ७, २३)।
लोग देखो **लोअ=**लोक; (ठा ३, २; ३, ३—पत्र १४३; कप्प; कुमा; सुर १, ७६; हे १, १७७, प्रासू २५; ४७)। ७ न. एक देव-विमान, (सम २५)। °**कंत** न [°**कान्त**] एक देव-विमान, (सम २५)। °**कूड** न [°**कूट**] एक देव-विमान, (सम २५)। °**ग्गचूलिआ** स्त्री [°**ग्रचूलिका**] मुक्त-स्थान, सिद्धि-शिला; (सम २२)। °**जत्ता** स्त्री [°**यात्रा**] लोक-व्यवहार; (णाया १, २—पत्र ८८)। °**ट्ठिइ** स्त्री [°**स्थिति**] लोक-व्यवस्था; (ठा ३, ३)। °**दव्व** न [°**द्रव्य**] जीव, अजीव आदि पदार्थ-समूह; (भग)। °**नाभि** पुं [°**नाभि**] मेरु पर्वत; (सुज्ज ५ टी—पत्र ७७)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] जगत का स्वामी, परमेश्वर; (सम १; भग)। °**परिपूरणा** स्त्री [°**परिपूरणा**] ईषत्प्राग्भारा पृथिवी, मुक्त-स्थान; (सम २२)। °**पाल** पुं [°**पाल**] इन्द्रों के दिक्पाल, देव-विशेष; (ठा ३, १; औप)। °**प्पभ** पुं [°**प्रभ**] एक देव-विमान; (सम २५)। °**बिंदुसार** पुंन [°**बिन्दुसार**] चौदहवाँ पूर्व-ग्रन्थ; (सम ४४)। °**मज्झावसिअ** पुंन [°**मध्यावसित**] अभिनय-विशेष; (ठा ४, ४—पत्र २८५)। °**मज्झावसाणिअ** पुंन [°**मध्यावसानिक**] वही अर्थ; (राय)। °**रूव** न [°**रूप**] एक देव-विमान; (सम २५)। °**लेस** न [°**लेश्य**] एक देव विमान, (सम २५)। °**वण्ण** न [°**वर्ण**] एक देव-विमान; (सम २५) °**वाल** देखो °**पाल**; (कुप्र १३५)। °**वीर** पुं [°**वीर**] भगवान् महावीर; (उव)। °**सिंग** न [°**शृङ्ग**] एक देव-विमान; (सम २५)। °**सिट्ठ** न [°**सृष्ट**] एक देव-विमान; (सम २५)। °**हिअ** न [°**हित**] एक देव-विमान; (सम २५)। °**ायय** न [°**ायत**] नास्तिक-प्रणीत शास्त्र, चार्वाक-दर्शन, (णंदि)। °**ालोग** पुंन [°**ालोक**] परिपूर्ण आकाश-क्षेत्र, संपूर्ण जगत; (उव, पि २०२)। °**ावत्त** न [°**ावर्त**] एक देव-विमान; (सम २५)। °**ाहाण** न [°**ाख्यान**] लोकोक्ति, जन-श्रुति; (उप ५३० टी)।
लोगंतिय देखो **लोअंतिय**; (पि ४६३)।

लोगिग देखो लोइअ=लौकिक; (धर्मसं १२४८)।

लोगुत्तर देखो लोउत्तर। °वडिंसय न [°वतंसक] एक देव-विमान; (सम २५)।

लोगुत्तरिय देखो लोउत्तरिय; (ओघ ७६५)।

लोट्ट अक [स्वप्] लोटना, सोना। लोट्टइ; (हे ४, १४६)। वकृ—लोट्टय; (पाअ)।

लोट्ट अक [लुठ्] १ लेटना। २ प्रवृत्त होना। लोट्टइ, लोट्टती; (प्राकृ ७२; सूअ १, १५, १४)। वकृ—लोट्टंत; (सुपा ४६६)।

लोट्ट } पुं [दे] १ कच्चा चावल; (निचू ४)। २ पुंस्त्री.
लोट्टय } हाथी का छोटा बच्चा; (णाया १, १—पत्र ६३), स्त्री—°ट्टिया; (णाया १, १)।

लोट्टिअ वि [दे] उपविष्ट; (दे ७, २५)।

लोट्ठ वि [दे] स्मृत; (षड्)।

लोट्ठु पुं [लोष्ट] रोड़ा, ढेला; (दे ७, २४)।

लोडाविअ वि [लोटित] घुमाया हुआ; (गा ७६६)।

लोढ सक [दे] कपास निकालना; गुजराती में 'लोढवुं'। वकृ—लोढयंत; (राज)।

लोढ पुं [दे] १ लोढ़ा, शिलापुत्रक, पीसने का पत्थर; (दस ५, १, ४५; उवा)। २ ओषधि-विशेष, पद्मिनीकन्द; (पत्र ४; श्रा २०; संबोध ४४)। ३ वि. स्मृत; ४ शयित; (दे ७, २६)।

लोढय पुं [दे. लोठक] कपास के बीज निकालने का यन्त्र, (गउड)।

लोढिअ वि [लोठित] लेटवाया हुआ, सोलाया हुआ; (पउम ६१, ६७)।

लोण न [लवण] १ लून, नमक; २ लावण्य, शरीर-कान्ति; (गा ३१६; कुमा)। ३ पुं. वृक्ष-विशेष; (पउम ४२, ७; श्रा २०; पव ४)। ४—देखो लवण; (हे १, १७१; प्राप्र; गउड; औप)।

लोणिय वि [लावणिक] लवण-युक्त, लवण-संबन्धी; (ओघ ७७६)।

लोण्ण न [लावण्य] शरीर-कान्ति; (प्राकृ ५)।

लोत्त न [लोप्त्र] चोरी का माल; (स १७३)।

लोद्ध पुं [लोध्र] वृक्ष-विशेष; (णाया १, १—पत्र ६५; पराण १; सुअ १. ४, २, ७; औप; कुमा)। देखो लुद्ध=लोध्र।

लोद्ध देखो लुद्ध=लुब्ध, (पाअ; सुर ३, ४७; १०, २२३; प्राप्र)।

लोप्प देखो लुंप। "जो एए वायं लोप्पइ सो तिन्निवि लोप्पयंतो किं केणावि धरिउं पारीयइ" (स ४६२)।

लोभ सक [लोभय्] लुभाना, लालच देना। कवकृ—लोभिज्जंत; (सुपा ६१)।

लोभ पुं [लोभ] लालच, तृष्णा; (आचा; कप्प; औप; उव; ठा ३, ४)। २ वि. लोभ-युक्त; (पडि)।

लोभि } व [लोभिन्] लोभ वाला; (कम्म ४, ४०;
लोभिल्ल } पउम ४, ४६)।

लोम पुंन [लोम] रोम, रोंआँ, रूँगटा; (उवा)। °पक्खि पुं [°पक्षिन्] रोम के पँख वाला पक्षी; (ठा ४, ४—पत्र २७१)। °स वि [°श] लोम-युक्त; (गउड)। °हत्थ पुं [°हस्त] पींछी, रोमों का बना हुआ झाड़ू; (विपा १, ७—पत्र ७८; औप; णाया १, २)। °हरिस पुं [°हर्ष] १ नरकावास-विशेष; (देवेन्द्र २७)। २ रोमाञ्च, रोमों का खड़ा होना; (उत्त ५, ३१)। °हार पुं [°हार] मार कर धन लूटने वाला चोर; (उत्त ६, २८)। °हार पुं [°ाहार] रूँगटों से लिया जाता आहार, त्वचा से ली जाती खुराक; (भग; सूअनि १७१)।

लोमसी स्त्री [दे] १ ककड़ी, खीरा; (उप पृ २५२)। २ वल्ली-विशेष, ककड़ी का गाछ; (वव १)।

लोर पुंन [दे] १ नेत्र, आँख; २ अश्रु, आँसु; (पिंग)।

लोल अक [लुठ्] १ लेटना। २ सक. विलोडन करना। लोलइ; (पिंड ४२२; पिंग), "लोलेइ रक्खसवलं" (पउम ७१, ४०)। वकृ—लोलंत; लोलमाण; (कप्प; पिंग; पउम ५३, ७६)।

लोल सक [लोठय्] लेटाना। लोलेइ, लोलेमि; (उवा)।

लोल वि [लोल] १ लम्पट, लुब्ध, आसक्त; (णाया १, १ टी—पत्र ५; औप; कप्प; पाअ; सुपा ३६५)। २ पुं. रत्नप्रभा नरक का एक नरकावास; (ठा ६—पत्र ३६५; देवेन्द्र ३०)। ३ शर्कराप्रभा-नामक द्वितीय नरक-पृथिवी का नववाँ नरकेन्द्रक—नरक-स्थान; (देवेन्द्र ७)। °मज्झ पुं [°मध्य] नरकावास-विशेष; (ठा ६ टी—पत्र ३६७)। °सिट्ठ पुं [°शिष्ट] नरकावास-विशेष, (ठा ६ टी)। °ावत्त पुं [°ावर्त] नरकावास-विशेष; (ठा ६ टी; देवेन्द्र ७)।

लोलंठिअ न [दे] चाटु, खुशामद; (दे ७, २२)।

लोलण न [लोठन] १ लेटना, घोलन; (सुअ १, ५, १, १७)। २ लेटवाना; (उप ५१०)।

लोलपच्छ पु [लोलपाक्ष] नरक-स्थान-विशेष; (देवेन्द्र ३०)।

लोलिक्क न [**लौल्य**] लम्पटता, लोलुपता, (पण्ह १, ३—पत्र ४३)।

लोलिम पुंस्त्री [**लोलत्व**] ऊपर देखो; (कुमा)।

लोलुअ वि [**लोलुप**] १ लम्पट, लुब्ध; (पउम १, ३०; २६, ४७; पाअ; सुर १४, ३३)। २ पुं. रत्नप्रभा नरक का एक नरकावास; (ठा ६—पत्र ३६५)। °**च्चुअ** पुं [°**च्युत**] रत्नप्रभा-नरक का एक नरक-स्थान; (उवा)।

लोलुंचाविअ वि [**दे**] रचित-तृष्णा, जिसने तृष्णा की हो वह; (दे ७, २५)।

लोलुव देखो **लोलुअ**; (सूअ २, ६, ४४)।

लोव सक [**लोपय्**] लोप करना, विध्वंस करना। लावेइ; (महा)।

लोव पुंन [**लोप**] विध्वंस, विनाश, अ-दर्शन; "कम्म-लोव-कारया" (कुप्र ४), "आ दुट्ठे जासु बहिं लोवं व तुमं अदं-सणा होसु" (धर्मवि १३३)।

लोह देखो **लोभ=लोभ**; (कुमा; प्रासू १७६)।

लोह पुंन [**लोह**] १ धातु-विशेष, लोहा; (विपा १, ६—पत्र ६६; पाअ; कुमा)। २ धातु, कोई भी धातु; "जह लोहाण सुवन्नं तणाण धन्नं धणाण रयणाइं" (सुपा ६३६)। °**कार** पुं [°**कार**] लोहार; (कुप्र १८८)। °**जंघ** पुं [°**जङ्घ**] १ भारत में उत्पन्न द्वितीय प्रतिवासुदेव राजा; (सम १५४)। २ राजा चण्डप्रद्योत का एक दूत; (महा)। °**जंघवण** न [°**जङ्घवन**] मथुरा के समीप का एक वन; (ती ७)।

लोह वि [**लौह**] लोहे का, लोह-निर्मित; (से १४, २०)।

लोहंगिणी स्त्री [**लोहाङ्गिनी**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

लोहल पुं [**लोहल**] शब्द-विशेष, अव्यक्त शब्द; (षड्)।

लोहार पुं [**लोहकार**] लोहार, लोहे का काम करने वाला शिल्पी; (दे ८, ७१; ठा ८—पत्र ४१७)।

लोहि° } देखो **लोही**; "कुभीसु य पयणेसु य लोहियसु य
लोहिअ° } कंदुलोहिकुंभीसु" (सूअनि ८०, ७६)।

लोहिअ पुं [**लोहित**] १ लाल रंग, रक्त-वर्ण; २ वि. रक्त वर्ण वाला, लाल, (से २, ४; उवा)। ३ न. रुधिर, खून, (पउम ५, ७६)। ४ गोत्र-विशेष, जो कौशिक गोत्र की एक शाखा है; (ठा ७—पत्र ३९०)।

लोहिअंक पुं [**लोहित्यक, लोहिताङ्क**] अठासी महाग्रहों में तीसरा महाग्रह, (सुज्ज २०)।

लोहिअक्ख पुं [**लोहिताक्ष**] १ एक महाग्रह; (ठा २, ३—पत्र ७७)। २ चमरेन्द्र के महिष-सैन्य का अधिपति; (ठा ५, १—पत्र ३०२; इक)। ३ रत्न की एक जाति; (णाया १, १—पत्र ३१; कप्प; उत्त ३६, ७६)। ४ एक देव-विमान; (देवेन्द्र १३२; १४४)। ५ रत्नप्रभा पृथिवी का एक काण्ड; (सम १०४)। ६ एक पर्वत-कूट; (इक)।

लोहिआ } अक [**लोहिताय्**] लाल होना। लोहिआइ,
लोहिआअ } लोहिआअइ; (हे ३, १३८; कुमा)।

लोहिआमुह पु [**लोहितामुख**] रत्नप्रभा का एक नरका-वास; (स ८८)।

लोहिच्च } न [**लौहित्यायन**] गोत्र-विशेष; (सुज्ज
लोहिच्चायण } १०, १६ टी; इक; सुज्ज १०, १६)।

लोहिणी } स्त्री [**दे**] वनस्पति-विशेष, कन्द-विशेष; (पण्ण
लोहिणीहू } १—पत्र ३५), "लोहिणीहू य थीहू य" (उत्त ३६, ९९; सुख ३६, ९९)।

लोहिल्ल वि [**दे, लोभिन्**] लम्पट, लुब्ध; (दे ७, १९; पउम ८, १०७; गा ४४४)।

लोही स्त्री [**लौही**] लोहे का बना हुआ भाजन-विशेष, कराह; (उप ८३३; चारु १)।

ल्हस देखो **लस=लस्**। ल्हसइ; (प्राकृ ७२)।

ल्हस अक [**स्रंस्**] खिसकना, सरकना, गिर पड़ना। ल्हसइ; (हे ४, १९७, षड्)। वकृ—**ल्हसंत**; (वज्जा ९०)।

ल्हसण न [**स्रंसन**] खिसकना, पतन; (सुपा ५५)।

ल्हसाव सक [**स्रंसय्**] खिसकाना। संकृ—**ल्हसाविअ**; (सुपा ३०८)।

ल्हसाविअ वि [**स्रंसित**] खिसकाया हुआ; (कुमा)।

ल्हसिअ वि [**स्रस्त**] खिसक कर गिरा हुआ; (कुप्र १८५; वज्जा ८४)।

ल्हसिअ वि [**दे**] हर्षित; (चंड)।

ल्हसुण देखो **लसुण**; (पण्ण १—पत्र ४०; पि २१०)।

ल्हादि स्त्री [**ह्लादि**] आह्लाद, प्रमोद, खुशी; (राज)।

ल्हाय पुं [**ह्लाद**] ऊपर देखो; (धर्मसं २१६)।

ल्हासिय पुं [**ल्हासिक**] एक अनार्य मनुष्य-जाति; (पण्ह १, १—पत्र १४)।

ल्हिक्क अक [**नि+ली**] छिपना। ल्हिक्कइ; (हे ४, ५५; षड् २०९)। वकृ—**ल्हिक्कंत**; (कुमा)।

ल्हिक्क वि [**दे**] १ नष्ट; (हे ४, २५८)। २ गत; (षड्)।

इअ सिरि**पाइअसद्दमहण्णवम्मि** लआराइसद्दसंकलणो
चउत्तीसइमो तरंगो समत्तो।

यह पुस्तक मिलने का पता--

१ श्रीयुत दलीचंद माणेकचंद सेठ,

नं० ४६, ईजरा स्ट्रीट, कलकत्ता।

२ श्रीयुत फकलभाई बी. वकील,

मिन्सेल स्ट्रीट, मलहर बिल्डिंग, बम्बई ।

३ श्रीयुत केशरलालभाई प्रेमचंद, मोदी. बी. ए., एल्. एल्. बी.,

हाजापटेल की पोल, अहमदाबाद, (गुजरात)।

४ Messrs. OTTO HARRASOWITZ,

Leipzig, (Germany).

५ Messrs. PROBSTHAIN & Co,

41, Great Russell Street,

London. W. C. 1.

पाइअ-सद्द-महण्णवो।

[प्राकृत-शब्द-महार्णवः]

अर्थात्

प्राकृत भाषाओं के शब्दों का संस्कृत-प्रतिशब्दों से युक्त, हिन्दी अर्थों से अलंकृत, प्राचीन ग्रन्थों के अवतरणों और परिपूर्ण प्रमाणों से विभूषित बृहत्कोष।

(चतुर्थ खण्ड)

कर्त्ता

कलकत्ता-विश्वविद्यालय के प्राकृत-साहित्य-व्याख्याता, न्याय-व्याकरण-तीर्थ

पंडित हरगोविन्ददास त्रिकमचंद सेठ।

प्रकाशक।

प्रथम आवृत्ति।

संवत् १९८५।

PĀIA-SADDA-MAHAṆṆAVO

A COMPREHENSIVE PRĀKRIT-HINDI DICTIONARY
with Sanskrit equivalents, quotations
AND
complete references.

Vol. IV

BY

PANDIT HARGOVIND DAS T. SHETH, Nyaya-Vyakarana tirtha,
Lecturer in Prakrit, Calcutta University.

CALCUTTA

FIRST EDITION

1928

Printed by Ambalal Shanabhai Patel at The Bombay Fine Arts Printing Works,
56/1, Canning Street, Calcutta;
Except from Page No. 909 to Page No. 988 and from Page No 1201 to Page No. 1232
which were printed at The Rajaram Press and
The Indian National Press
respectively.

पाइअ-सद्द-महण्णवो।

(प्राकृत-शब्द-महार्णवः)।

अर्थात्

विविध प्राकृत भाषाओं के शब्दों का संस्कृत प्रतिशब्दों से युक्त हिन्दी अर्थों से अलंकृत, प्राचीन ग्रन्थों के अनल्प अवतरणों और परिपूर्ण प्रमाणों से विभूषित बृहत्कोष।

कर्ता—

गूर्जरदेशान्तर्गत-राधनपुर-नगर-वास्तव्य, कलकत्ता-विश्वविद्यालय के संस्कृत, प्राकृत और गूजराती भाषा के अध्यापक, "हरिभद्रसूरिचरित" के कर्ता, "यशोविजय-जैन-ग्रन्थमाला" और "जैन-विविध-साहित्य शास्त्रमाला" के भूतपूर्व संपादक, न्याय-व्याकरण-तीर्थ

पंडित हरगोविन्ददास त्रिकमचंद शेठ।

कलकत्ता।

प्रथम आवृत्ति।

संवत् १९८५।

PĀIA-SADDA-MAHAṆṆAVO

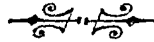
A COMPREHENSIVE PRAKRIT-HINDI DICTIONARY

with Sanskrit equivalents, quotations
AND
complete references.

BY

PANDIT HARGOVIND DAS T. SHETH, Nyaya-Vyakarana-tirtha,

Lecturer in Sanskrit, Prakrit and Gujrati, Calcutta University; Author of "Haribhadra suri Charitra" Late Editor of 'Yashovijaya Jaina Granthamala", "Jaina Vividha Sahitya Shastra mala" etc. etc.



CALCUTTA.



FIRST EDITION.



1928

Forms from 1 to 76 at the GURJAR PRABHAT PRINTING PRESS,
27; Amratolla Street,
Forms from 77 to 124 at the RAJARAM PRESS, 29, Armenian Street,
Forms from 125 to 151, all titles and abbreviation Forms
Printed by AMBALAL S. PATEL at the Bombay Fine Arts Printing Works,
56/1, Canning Street,
Forms from 152 to 161 at the INDIAN NATIONAL PRESS, Machua Bazar Street,
and
Published by Pandit HARGOVIND DAS T. SHETH,
1 C, European Asylum Lane,
CALCUTTA.

इस कोष के विषय में कतिपय सुप्रसिद्ध विद्वान और पत्रकारों के

कुछ अभिप्राय।

A few Opinions of some Savants & Journalists regarding the

PRĀKRIT DICTIONARY.

Prof. Earnest Leumann (in the journal of Royal Asiatique Society, London. July, 1924.

"During recent years several scholars in India have tried to bring out a Prākrit Dictionary. However, no one seems to have succeeded in publishing more than a small specimen. Only recently, towards the end of 1923, there has appeared a new start, which is no longer a simple specimen, but an elaborate first part, comprising no less than 260 large size pages. In this volume all words beginning with vowels are included. And, if the following parts, which are to embrace the words beginning with consonants, carries on the Dictionary in the same lines, it will be finished in about seven such parts, and will contain nearly 2000 pages. **On its completion Indian philology will certainly be congratulated from all sides, and Prākrit literature, which is so immensely rich may then be studied** as it ought to be, in intimate connexion with Sanskrit lore, which has long possessed Lexicographic aids of all kinds.

The title of the forthcoming dictionary is Pāia-sadda-mahannav[illegible] great ocean of Prākrit words." Its compiler is Pandit Hargovind Das Sheth, Lecturer in Prākrit in the Calcutta University.

The meaning of the words are given both in Hindi and in S[illegible] and each entry is furnished with references to test passages. S[illegible] also the test passages are fully quoted (forming generally a [illegible] Gāthā or Āryā).

B

Comprehensiveness and accuracy are the qualities most desired in a dictionary. As to the first quality, I may mention that the texts worked up in the dictionary seem to number about 200 or more Even in the first ten pages a full hundred Titles are quoted (Accu, Aji, Aṇu=Anuyogadvāra-sūtra, Anta=Anatkṛd-daśā, Abhi, Ācā=Ācarânga, Ācū=Ācāra-cūlikā, Āva=Āvaśyaka, and others). And, as to the second quality, it may be stated that in the references mistakes are scarcely detectable. Also errors in the quoted editions are corrected, so early as the second entry of the first page we are, for Pkt *a*=Skt. *ca*, rightly referred to Pauma-cariya 113, 14, where the edition has by mistake Avirāhio instead of a Virāhio.

Consequently I may be allowed to recommend Pandit Sheth's Prakrit Dictionary to all Sanskrit scholars as well as to Sanskrit libraries—and, what will probably do more to secure the final success of the undertaking, to the Government authorities."

Sir, George A. Grierson, K.CI.E., P.H. D., D. LITT, LL.D.

"I must congratulate you on the success you have achieved in compiling this excellent book. I have already been able to make use of it and have found it a help in my work."

Jainacharya Shri Vijayendra Sureeshwarjee.

Itihās-tattva-mahodadhi.

"A big dictionary named Pāia-sadda-Mahaṇṇavo (पाइअ-सद्द-महण्णवो) is being composed and edited by Nyaya-Vyakarana-tirtha Pandit Hargovind Das Trikamchand Sheth, Prākrit Lecturer, Calcutta University. Three of its parts have already been brought into light. On seeing these parts and the work done therein, one cannot but say that it is excellent.

We can not help saying frankly and impartially that amidst all dictionaries of the type in existence this Kosha takes its first place. In absence of such a good Prākrit dictionary Prākrit-scholars had great many difficulties. To remove them Pandit Hargovinddas has taken immense pains in producing this work and has put Prākrit-scholars at large to great obligation. Pandit Haragovinddas deserves all honour for such a nice work.

We are conversant with Pandit Hargovinddas's vast knowledge and originality. It gives us a great pleasure to note that these two things in him have gone a great way to make the dictionary very valuable and useful. We can, without the least hesitation, say that Pandit Hargovinddas can well stand in the category of high culture. × × × It is the duty of all scholars in the field of learning and specially that of Jain samaj to encour-

age by extending their helping hand towards such learned man rendering services to Jain literature and Jain Religion."

Dr. Geuseppe Tucci, Professor of sanskrit, Rome University. "The Prākrit Dictionary is very useful in my study."

Dr. M. Winternits, Professor of Prague University. "Many thanks for the first two parts of the Prākrit Dictionary which is very useful to me."

Dr. F.W. Thomas, M.A., PH.D., Chief Librarian, India office, London. "I have myself consulted the book and found it useful. It is based upon a very large number of texts."

Prof. A B. Dhruva, Pro Vice-chancellor, Hindu University, Benares. "I have seen Mr. Hargovinddas Sheth's Prākrit Dictionary. It represents a genuine attempt to supply a need which has long been felt and I am sure it will receive the appreciation which it so well deserves."

Dr. Sunity Kumar Chatterji, M.A., D Litt., Professor of Calcutta University. (in the Calcutta Review, February and December, 1924). ......"The work is not a mere compilation of glossaries It contains ample evidence of Pandit Sheth's wide reading in Prākrit literature and of his vast labours in the field It will be a very useful publication and no student of Prākrit and of modern Indo-Aryan languages can afford to be without it .. The work so far accomplished by Pandit Sheth, is an extremely laborious one requiring not only great scholarship, but also great patience.... .. Pandit Sheth ought to receive entire support from all interested in Prākritic and Jain studies.
.. ..Those who have had occasion to use this work and can testify to its excellence & usefulness will be pleased to see that it has received proper appreciation from competent scholars in the domain of Prākrit and Indian Philology both in India and Europe The Calcutta University can well be congratulated in possessing such an erudite scholar of Prākrit in Pandit Hargovinddas."

Pro. Muralidhar Banerji, M.A , Late Principal, Sanskrit College, Calcutta, Lecturer in Prākrit, Calcutta University. "The work though concise covers a vast field of Prākrit literature and is a monument of scholarly labour and scientific accuracy and can be relied on by all who take any interest in the study of the Prākrit literature."

Dr. B. M. Baruva, M A., D. Litt., professor of Pali, Calcutta University. "I can quite understand that the task undertaken by you is a self imposed one, and you are sure to render a permanent service in the cause of Indology by completing the same. A handy and at the same time comprehensive Prākrit dictionary has been a long-felt desideratum. After going through the

printed parts of your lexicon I find reasons to hope that your single-handed labour will go to remove it to a great extent. I have not seen elsewhere an attempt of this kind ... What I sincerely wish is the consumanation of the noble task you are engaged upon with the indefatigable zeal and unflinching devotion of a scholar like yourself who has been born and brought up in a religious tradition footing the culture of Prākrit languages."

Dr. I. J. S. Taraporewala, B.A., PH.D., Bar-at-law, professor of comparative philology, Calcutta University. "The author has already considerable reputation as a teacher of Prākrit in the University of Calcutta and also as a deep scholar in Jaina Literature and philosophy. For many years he has had the preparation of a Prākrit Dictionary. In contemplation that for that he set about a systematic course of reading in all the various branches of Prākrit Literature. As a result of this enormous amount of labour the Panditji has now given us the first three volumes of his Prākrit Dictionary...... To students of Prakrit this book will supply a greatly felt want and the work is very well done indeed for the general reader.. In any case the work is an useful one and should help all earnest students."

Prof. Vidhushekhar Bhattacharya, M. A., Principal, Vishva-Bhārati, Shānti-Niketan, Bolpur, (in the Modern Review, April, 1925).

The author hardly needs introduction to those who have aquaintance with Yasovijaya Jaina Granthamala. His present work is Prākrit-Hindi Dictionary. We extend our hearty welcome to it.

A Prākrit Dictionary of this kind was a desideratum and every Prākrit lover should feel thankful to Pandit Haragovindadas who has now supplied it. We have not the least doubt in saying that the students of Prākrit will be much benefited by it. ..... It supplies sanskrit equivalents so far as possible, quotes authorities and gives references. The words are explained in Hindi, yet the language is so simple that it can be used by any one knowing some vernacular of northern India."

Indian Antiquary, February, 1925.

This is the first part of a dictionary of the Prākrit language intended to be comolated in four parts. It is a comprehensive dictionary of the Prākrit language giving the meaning of Prākrit words in Hindi. It provides at the same time the Sanskrit equivalents of the Prākrit words. The dictionary as a whole contains about seventy thousand words. The author Pandit Hargovinddas T. Sheth, Lecturer, Calcutta University, has taken care to support the meanings that he gives by quotations from the original

sources giving complete references. It removes one of the desiderata for a satisfactory study of the vast Prākrit literature which still remains unexplored but inadequately by scholars Indian and European It is likely to be of great assistance in promoting this desirable study. The author deserves to be congratulated upon the result of his labours in this good cause. The work is a monument of his learning and effort and it is to be hoped that this industry will be suitably rewarded to encourage him to go on with his work and complete it as originally projected in four parts."

Bombay Chronicle, 26th, July, 1925.

Europe has been compiling a Pali dictionary. Several scholars have been collaborating to acheive a great lexicon. When it will be completed it will be a great species of Encyclopedea of Buddhism. What a number of scholars have aimed at accomplishing in the west with reference to Buddhism a single man of vast learning is endeavouring in effect in India with regard to Jainism. Pandit Hargovinddas T. Sheth, Nyaya-Vyakarana-tirtha, Lecturer in Prākrit, Calcutta University has just issued the third volume of his large Pāia-sadda-mahannavo which is a comprehensive Prākit Hindi Dictionary with Sanskrit equivalents, quotations and complete references. The fourth volume is in the press and when it is out it will be one of the monuments of learning for which Indian Pandits are celebrated The last page of the volume three brings us to the middle of the letter "L". It is not easy to test a lexicon which has the merit of great treasures and in which words explained have been illustrated from the huge library of Jaina literature. The list of abbreviation of the works quoted is a measure Herculian enterprise. Generally the Hindi explanation is lucid and to the point. English equivalents would not have necessarily added to the value of the dictionary. It is a credit to the Calcutta University and to the pious erudition of Guzerat.

संस्कृतसाहित्यपत्रिका, फाल्गुन, शकाब्द १८४५. "अत्यर्थमुपयोगमावहन्त्याः प्राकृतभाषायाः सम्यग् विज्ञान-संपादनाय समपेक्षितः समीचीनः कश्चन प्राकृतशब्दकोशग्रन्थः, परिप्राप्तश्च संप्रति तथाविध एवायम्। अत्र हि शब्दकोशेऽकारादिक्रमसंनिवेशितानां शब्दानां संस्कृतपर्यायशब्दानुल्लिख्य हिन्दीभाषायां तदर्थाः परिकल्पिताः, यथावसरमुदाहरणान्यपि मूलग्रन्थतः प्रदर्शितानि। **प्राकृताध्यायिनामतिहितोऽयं ग्रन्थः** खण्ड-चतुष्टयेन समाप्तिमाप्नुयात्। प्रथमखण्डेऽत्र स्वरादिशब्दा निःशेषिताः। नूनमयं पण्डितप्रवरश्रीशेठमहोदयस्य यत्नातिशयं प्राकृतभाषाप्रावीण्यं च सूचयति।"

महामहोपाध्यायपण्डितश्री**गुरुचरणतर्क**-दर्शनतीर्थ, अध्यापक, विश्वविद्यालय, कलकत्ता. "ग्रन्थनानेन प्राकृत-जिज्ञासूनां महानुपकारो भवेत्।"

वैयाकरणकेसरी पण्डितश्री**चक्रधर झा**, अध्यापक. दुर्गापाठशाला, काशी। "**अदृष्टचरोऽश्रुतपूर्वो नव्यो भव्यश्चायं प्राकृतशब्दकोशः, कलानिधिरिव कैरवकुलं, प्रभाकर इव पद्मनिकरं; सहृदयहृदयसरस्सु प्राकृत-शब्दशतपत्रपटलं प्रकाशयन्नतीवोपयोगितामावहति कवीनाम्।** प्राकृतमयतत्तद्देशभाषा बुभुत्सूनामपि पटुताप्रदो

बहुदार्शनिकानामपि दीपवद्गहनपथप्रदर्शको निधिरिव धननिचयानामाकर इव रत्नानामाश्रय इव व्युत्पत्तिशक्तीनां गुरुरिव शिक्षकः सुहृदिवाह्लादकः केषा **नोपकारकतां व्रजति** ? प्राकृतशब्दरत्नाकर इत्यभिधानमस्यान्वर्थतां शब्दनिलयाभिख्या स्याभिख्या विकाशयेत्।

"स तु तत्र विशेषदुर्लभः सदुपन्यस्यति कृत्यवर्त्म यः" इति न्यायेनातीव धन्यवादार्हो जगद्योजक इवास्य योजकः प्रशंसनीयश्चास्य सुधियः श्रमो, भव्या चायोजनशक्तिर्योजना च। समुपलभ्यावलोक्य विविच्य चेमं प्रमुदितः प्रार्थयते परमात्मानं यदेवंविधो जगदुपकारको जनो भूयो भूयो भुवि भूरि भूयादिति ॥ "

विश्वमित्र, सोमवार, ता १० दिसम्बर, १९२३, और रविवार, ता १७ मई, १९२५।
"इस कोष में प्राकृत शब्द और उनके पर्याय-वाचक संस्कृत शब्द तथा हिन्दी अर्थ **बडी उत्तमता से** दिया गया है। **बहुतसी प्राचीन पुस्तकों के हवाले देकर शब्दार्थ स्पष्ट कर दिया गया है। हिन्दी में इस प्रकार का व्यय-साध्य उद्योग वास्तव में हिन्दी-भाषा-भाषियों के लिये बड़े गौरव की वस्तु** है। कोष-रचयिता का उत्साह बढ़ाना आवश्यक है। जिस समय यह पूरा कोष तैयार हो जायगा, राष्ट्र-भाषा में **एक नयी चीज स्थान पा जायेगी।** हम चाहते हैं कि हिन्दी-भाषा-भाषी यथासंभव इस कोष के ग्राहक बढ़ावेंगे और विभिन्न हिन्दी पुस्तकालय इस ग्रन्थ को अपने यहा स्थान देंगे।"

"**इस प्रकार का ग्रन्थ अपने ढङ्ग का निराला** है और उससे प्राकृत भाषा के ग्रन्थ पढ़ने में वडी भारी सहायता मिलेगी। हरगोविन्दजी सेठ को धन्यवाद हैं कि उन्होंने राष्ट्र-भाषा हिन्दी का इतना उपकार किया। इस कोष का संग्रह प्राकृत-प्रेमियों के लिए आवश्यक है। **ग्रन्थकार को अपने कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है।**"

स्वतन्त्र (अग्र लेख) शुक्रवार, ता १९ जनवरी, १९२४। "कलकत्ता विश्व-विद्यालय के प्राकृत-साहित्य-व्याख्याता पं० श्री हरगोविन्द दास त्रिकमचंद शेठने प्राकृत-शब्द-महार्णव (पाइअ-सद्द-महण्णवो) नाम का प्राकृत-कोश रच कर **प्राकृत के विद्यार्थिओं का जो उपकार किया है उसके लिए समुचित शब्दों में उनकी प्रशंसा नहीं की जा सकती।** जहाँ तक हमें याद है प्राकृत का ऐसा कोई कोष प्रकाशित नहीं हुआ है, जिससे विद्यार्थियों को शब्दार्थ जानने में सुभीता हो। . ... इस पाइअसद्दमहण्णवो में प्राकृत भाषाओं के शब्दों के साथ ही हिन्दी अर्थ ही नहीं दिया गया हैं बल्कि प्राचीन ग्रन्थों के अवतरण और प्रमाण भी दिये गये है।"

जैन विविध विचार माला. જેઠ સુદિ ૧, સંવત્ ૧૯૮૦. "કાશીની યશોવિજય પાઠશાળાએ જે લગભગ ૩૦—૪૦ વિદ્વાન રત્નો ઉત્પન્ન કર્યા છે તેઓમાંના મુખ્ય પંડિત હરગોવિંદદાસની વિદ્વત્તા કોનાથી અજાણી છે? પંડિત હરગોવિંદદાસે અનેક સંસ્કૃત-પ્રાકૃતના ગ્રન્થો સંશોધિત કરી જૈન સાહિત્યમાં સુંદર વધારો કર્યો છે તેમા આ કોષની રચનાથી તેમણે સમાજ ઉપર મહાન ઉપકાર કર્યો કહી શકાય. .... કોષ જેવી ચીજ તૈયાર કરવામા કેટલો સમય અને શ્રમનો ભોગ આપવો પડે છે, એ સમજનારને તો આ કિંમત વધુ નજ લાગે

પ્રાકૃત અને માગધી ભાષાના કોષો જોવાની ઘણા વખતથી વિદ્વાનો જે આતુરતા ધરાવતા હતા તે આતુરતા આ કોષથી પુરી થશે એ ખરેખર આનંદનો વિષય છે વિદ્વાન પુરૂષો પોતાની વિદ્વત્તાનો લાભ આપી જનતાને ઉપકૃત કરે એ જૈન સમાજનું સદ્ભાગ્ય સમજવું જોઇએ. વિદ્વાન થવા છતાં સમાજમાં કલેશો કરાવવામાં કે અસંતોષની ચિનગારીઓ ઉડાડવામાં વિદ્વત્તાનો ઉપયોગ કરનારાઓએ આવા વિદ્વાનથી ઘણું શીખવું જોઇએ છે."

જૈન તા ૪ જાન્યુઆરી, ૧૯૨૫, "પ્રસ્તુત કોષમાં અકારાદિ ક્રમથી પહેલાં પ્રાકૃત શબ્દ, ત્યાર બાદ શબ્દનું લિંગ આદિ, પછી કૌંસમાં સંસ્કૃત પ્રતિશબ્દ અને બાદ સુગમ હિન્દીમાં અર્થો આપવામાં આવેલ

છે, અને તેના દરેક અર્થની પછી તે શબ્દના ગ્રન્થ સ્થળ—પ્રમાણ—अध्याय, गाथा, पत्र કે पृष्ठना નંબર સાથે જણાવવામાં આવેલ છે અને તેમ કરીને ગ્રન્થની સુંદરતા અને પ્રામાણિકતા માટે પૂરેપૂરો ખ્યાલ રાખવામાં આવેલ છે. શુદ્ધિ માટે જોતાં કોઇ પણ સંસ્કરણમાં સંશોધકની, અનુવાદકારની કે છાપાની ભૂલને લીધે છપાયેલ અશુદ્ધિને યોગ્ય રીતે સુધારીનેજ આ કોષમાં સ્થાન આપેલ છે એમ તેમના હાલમાંજ "વિવિધ વિચારમાળા" માં પ્રસિદ્ધ થયેલા એક લેખમાં આપેલા અનેક ઉદાહરણો ઉપરથી સ્પષ્ટ રીતે સમજવામાં આવે છે.

આપણા આગમો-સૂત્રો અને પૂર્વ પુરૂષો રચિત સંખ્યાબંધ ગ્રન્થો પ્રાકૃત ભાષામા હોઇને તેના અભ્યાસ કે ભાષાંતર માટે આવા પ્રાકૃત કોષની ખોટ લાંબા કાળથી હતી. જો કે વચ્ચે 'શ્રી રાજેન્દ્રાભિધાન કોષ'ની રચના થવા પામી જણાય છે, પરંતુ તેમાં ફક્ત સૂત્રશબ્દોજ તરવાયા જણાય છે અને તે પણ જૈનેતરોને હાથે તૈયાર થવાથી સમાસ, પુનરાવૃત્તિ અને અર્થ-ભેદની રહી જતી ખોટ ભાઈ હરગોવિંદદાસે પુરવા માટે તેમને માન ઘટે છે. ભાઇ હરગોવિંદ માગધી તથા સંસ્કૃતના સંપૂર્ણ અભ્યાસી અને નિત્યના પરિચિત છે, તેમજ જૈન ખમીર હોવાથી તેમના હાથે આવા કોષની થયેલી તૈયારી આવકારદાયક થઇ પડે તે સ્વાભાવિક છે. ... ... આવી એક લાંબા વખતની ખોટ સર્વાંગ-સુન્દર રીતે પાર પાડવાના ભગીરથ પ્રયત્ન માટે પંડિત હરગોવિંદદાસને અમે મુબારકબાદી આપીએ છીએ.

मनसुखलाल कीरतचंद मेहता. बी. ए. 'કોષ સુન્દર ગોઠવ્યો છે. શ્રમના પ્રમાણમાં મૂલ્ય યોગ્યજ છે.'

शेठ कुंवरजीभाइ आणंदजी. "પ્રયાસ બહુ પ્રશંસનીય કર્યો છે"

शास्त्र-विशारद जैनाचार्य **श्रीबुद्धिसागर सूरिजी** (સંવત્ ૧૯૮૧ ચૈત્રના જૈન ધર્મ પ્રકાશમા), 'પ્રાકૃત કોષ માટે કલકત્તાથી પંડિત સુશ્રાવક હરગોવિંદ દાસે જે પ્રયત્ન કર્યો છે તે પ્રશંસનીય ને ધન્યવાદ પાત્ર છે."

जैन युग, આષાઢ-શ્રાવણ, સંવત ૧૯૮૩. "પંડિત હરગોવિંદદાસ એક સુપ્રસિદ્ધ વિદ્વાન છે તેઓશ્રી યશોવિજય પાઠશાળામાંથી નીકળેલા વિરલ સુવાસિત પુષ્પો પૈકી એક છે. ઘણાં વર્ષોથી કલકત્તામાં રહી અધ્યાપક તરીકે કામ કર્યું છે અને સુરસુંદરી-ચરિયમ્ (કે જે એમ. એ. ના મુંબઇ યુનિવર્સિટીના અભ્યાસ ક્રમમાં નિર્ણીત થયેલું છે.) અને સુપાસનાહ ચરિયમ્ એ બે પ્રાકૃત ગ્રન્થોનું સુંદર સંશોધન કરેલ છે તદુપરાંત સંસ્કૃતમાં શ્રી હરિભદ્રસૂરિ સંબંધે નિબંધ પણ તેમણે લખી બહાર પાડયો છે. હમણાં કેટલાંક વર્ષોથો કલકત્તા યુનિવર્સિટીમાં પ્રાકૃતના લેકચરર (વ્યાખ્યાતા) તરીકે કાર્ય કરી રહ્યા છે .તે વિદ્વાને પ્રાકૃત શબ્દ તેના સંસ્કૃત સમાન શબ્દો, હિન્દી ભાષામાં અર્થ, તેમજ પ્રાકૃત ગ્રન્થોમાંથી તે અર્થને જણાવનારાં અવતરણો તે તે ગ્રન્થોનાં સૂચન સહિત એકઠાં કરી એક કોષકાર તરીકે જે ભગીરથ પ્રયત્ન આદર્યો હતો તે પ્રકાશમાં પોતેજ ત્રણ ખંડમાં પ્રાકૃત શબ્દ મહાર્ણવ એ નામના કોષ તરીકે લાવવા શક્તિમાન થયા છે તે માટે અનેકશઃ ધન્યવાદ અમે તેમને આપીએ છીએ.

હિંદીભાષા પોતાની માતૃભાષા ન હોવા છતાં તે ભાષામાં અર્થ પૂરવાનું સાહસ કર્યું છે તેમાં પણ તેઓ વિજયવંત થયા છે. પ્રાકૃત ભાષાનો સારો કોષ પ્રાકૃત, સંસ્કૃત અને અંગ્રેજી એમ ત્રણ ભાષામા

કરી આપવા માટે ડો. સ્વાલીએ પોતાનો મનોરથ બહાર પાડયો હતો અને તે સંપૂર્ણ પ્રકટ થાય ત્યાં સુધી માત્ર દશ હજાર રૂપીઆ જોઇએ તે માટે અમે ઘણાં વર્ષો પહેલાં તે વખતની જૈન ગ્રેજ્યુએટ એસોસિએશનના મંત્રી તરીકે તેમજ જૈન કોન્ફરન્સ હેરલ્ડ નામના પત્રમાં અપીલ બહાર પાડી હતી, અને આખી યોજના રજુ કરી હતી, છતા તેટલા રૂપીઆ આપનાર સખી દાતા એક મળવો તો દૂર રહ્યો, પણ અમુક થોડા મળીને રકમ પૂરી કરવાવાળા કોઇ શ્રીમંતો બહાર પડ્યા નહોતા. આજે એક જૈન પંડિત પોતેજ પ્રાકૃત કોષનું કાર્ય કરી પોતેજ પોતાના ખર્ચથી બહાર પાડે છે એ માટે તે પંડિતને અમો ઉલ્લાસથી વધાવીએ છીએ, જૈન સમાજનાં વખાણ તો કેમજ કરી શકીએ ?

× × × × × ×

પ્રાકૃત સાહિત્યમાં પણ સમરાઇચ્ચ કહા, પઉમચરિયમ, સુરસુંદરી કહા, સુપાસનાહ ચરિયં, કુમારપાલ પ્રતિબોધ, ઉપદેશ માલા, ઘણાં ખરાં આગમો વગેરે બહાર પડતાં ગયાં. હજુ ઘણાં બહાર પડવાની જરૂર છે આ બહાર પડેલાં તેમજ અપ્રકટ પ્રાકૃત ગ્રન્થોનો ઉપયોગ પંડિત હરગોવિન્દદાસે યથાયોગ્ય કરી તેમનાં અવતરણો પણ આપવાની પુષ્કળ મહેનત લીધી છે. આ કોષ માટે ખરેખર અમારાં તેમને વંદન છે આ ગ્રંથોની નામાવલી બીજા અને ત્રીજા ખંડના આદિ ભાગમાં આપેલી છે તે પરથી સમજાય છે કે કેટલા બધા ગ્રન્થો કોષકારને જોવા પડ્યા છે આવું કાર્ય યુરોપિયન સ્કોલરો કરી શકે એ ભ્રમણા છે એમ આ પંડિતજીએ બતાવી આપ્યું છે; વળી એમ બતાવી આપનાર ગૂજરાતીને માટે સમસ્ત ગૂજરાત અભિનંદન લઇ શકે તેમ છે અને તે ગૂજરાતી જૈન છે તેથી જૈનોએ પણ અભિમાન લેવા જેવુ છે.

પંડિત બહેચરદાસે ૧૯૮૦ ના પોષ માસ ના પુરાતત્ત્વમાં આ કોષના પ્રથમ ખંડની આલોચના કરી હતી અને તેની પ્રત્યાલોચના કોષકારે વિવિધ વિચાર માળાના તેજ વર્ષના આસો શુદિ ૧૪ ના અને ૧૯૮૧ માગશર સુદ ૧૪ ના અંકમાં કરી હતી. આ બંને અમો વાંચી ગયા છીએ. કોષકારના વિચારે અમારી આ બાબતમાં અલ્પ બુદ્ધિને ગ્રાહ્ય લાગે છે. ... કોશકારે અતિ પરિશ્રમ લઇ સાવધાની બને તેટલી રાખી કાર્ય લીધું છે એમ તો અમો મુક્તકંઠે કહીએ છીએ. આ કોષ પંડિત હરગોવિંદદાસની વિજય પ્રશસ્તિ છે. તેમણે આ મહાભારત કાર્ય કરી બહાર પાડી પ્રાકૃતના અભ્યાસીઓને ઉપકૃત કરેલ છે અને ભવિષ્યની પ્રજાને અમૂલ્ય વારસો આપ્યો છે એ નિર્વિવાદ છે.

× × × × × ×

દરેક જૈન લાઇબ્રેરી, દરેક ગ્રંથભંડાર અને દરેક શિક્ષણસંસ્થામાં આ કોષ રહેવોજ ઘટે એમ અમે ભારપૂર્વક કહીએ છીએ, એટલુંજ નહિ પરંતુ યૂરોપાદિમાં રહેલી મોટી મોટી લાઇબ્રેરીઓ તેમજ યૂરોપના ને હિન્દના ભાષાના વિદ્વાનોને આ કોષ ભેટ મોકલવા માટે જૈન શ્રીમંતોએ બહાર આવવું જોઇએ કે જેથી આ જૈન વિદ્વાનનો પરિશ્રમ અને તેની વિદ્વત્તાની કદર થાય; જૈન સમાજ બેકદર નથી એ પણ એથી સિદ્ધ થાય ”

समर्पण।



जैन श्वेताम्बर श्रीसंघ, कलकत्ता के अग्रगण्य नेता

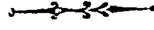
शेठ नरोत्तमभाई जेठाभाई,

गर्भ-श्रीमन्त होने पर भी सन्त-जनोचित निरभिमानिता, समाज-सेवा में अविश्रान्त प्रवृत्ति, अविचलित धर्म-निष्ठा, प्रशंसनीय साहित्य-प्रेम, पवित्र चारित्र, सहज वदान्यता आदि आदर्श जैन संघ-नायक-योग्य आपके अनेक उत्तम गुणों से मुग्ध हो यह ग्रन्थ आपके कर-कमलों में सादर समर्पित करता हूँ।

ग्रन्थकार।

C

संकेत—सूची ।



अ	=	अव्यय ।
अक	=	अकर्मक धातु ।
(अप)	=	अपभ्रंश भाषा ।
(अशो)	=	अशोक शिलालेख ।
उभ	=	सकर्मक तथा अकर्मक धातु ।
कर्म	=	कर्मणि-वाच्य ।
कवकृ	=	कर्मणि-वर्तमान-कृदन्त ।
कृ	=	कृत्य-प्रत्ययान्त ।
क्रि	=	क्रियापद ।
क्रिवि	=	क्रिया-विशेषण ।
(चूपै)	=	चूलिकापैशाची भाषा ।
त्रि	=	त्रिलिङ्ग ।
[दे]	=	देश्य-शब्द ।
न	=	नपुंसकलिङ्ग ।
पुं	=	पुंलिङ्ग ।
पुंन	=	पुंलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग ।
पुंस्त्री	=	पुंलिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग ।
(पै)	=	पैशाची भाषा ।
प्रयो	=	प्रेरणार्थक णिजन्त ।
ब	=	बहुवचन ।
भकृ	=	भविष्यत्कृदन्त ।
भवि	=	भविष्यत्काल ।
भूका	=	भूतकाल ।
भूकृ	=	भूत-कृदन्त ।
(मा)	=	मागधी भाषा ।
वकृ	=	वर्तमान कृदन्त ।
वि	=	विशेषण ।
(शौ)	=	शौरसेनी भाषा ।
स	=	सर्वनाम ।
संकृ	=	संबन्धक कृदन्त ।
सक	=	सकर्मक धातु ।
स्त्री	=	स्त्रीलिङ्ग ।
स्त्रीन	=	स्त्रीलिंग तथा नपुंसकलिंग ।
हेकृ	=	हेत्वर्थ कृदन्त ।

——:०:——

प्रमाण-ग्रन्थों [रेफरन्सेज़] के संकेतों का विवरण।

संकेत।	ग्रन्थ का नाम।	संस्करण आदि।	जिसके अंक दिये गये हैं वह।
अंग	= अंगचूलिआ	हस्तलिखित।	
अंत	= अंतगडदसाओ	* १ रोयल एसियाटिक सोसाइटी, लंडन, १९०७ ...	
		२ आगमोदय-समिति, बंबई, १९२० ...	पत्र
अच्चु	= अच्चुअसअअं	वेणीविलास प्रेस, मद्रास, १८७२ ...	गाथा
अजि	= अजिअसंतिथव	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८ ...	,,
अज्झ	= अध्यात्ममतपरीक्षा	१ भीमसिंह माणक, संवत् १९३३ ...	,,
		२ जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर ...	,,
अणु	= अणुओगदारसुत्त	१ राय धनपतिसिंहजी बहादूर, कलकत्ता, संवत् १९३६	
		२ आगमोदय समिति, १९२४ बम्बई, .	पत्र
अनु	= अणुत्तरोववाइअदसा	* १ रोयल एसियाटिक सोसाइटी, लंडन, १९०७ ...	
		२ आगमोदय-समिति, बंबई, १९२० ...	पत्र
अभि	= अभिज्ञानशाकुन्तल	निर्णयसागर प्रेस, बंबई, १९१६ ...	पृष्ठ
अवि	= अविमारक	त्रिवेन्द्र संस्कृत सिरिज़	,,
आउ	= आउरपच्चक्खाणपयन्नो	१ जैन-धर्म-प्रसारक सभा, भावनगर, संवत् १९६६	गाथा
		२ शा. बालाभाई ककलभाई, अमदावाद, संवत १९६२	,,
आक	= १ आवश्यककथा	हस्तलिखित	
	२ आवश्यक-एर्ज़ॅलुंगन	डॉ. इ. ल्युमेन्-संपादित, लाइपजिग, १८९७ ...	पृष्ठ
आचा	= आचाराग सूत्र	* १ डॉ. डबल्यु. शुब्रिंग् संपादित, लाइपजिग, १९१०	
		+ २ आगमोदय-समिति, बंबई, १९१६	श्रुतस्कन्ध, अध्य०
		३ प्रो. रवजीभाई देवराज-संपादित, राजकोट, १९०६	,,
आचानि	= आचाराङ्ग-निर्युक्ति	आगमोदय-समिति, बंबई, १९१६	गाथा
आचू	= आवश्यकचूर्णि	हस्तलिखित	अध्ययन
आत्म	= आत्मसंबोधकुलक	† हस्तलिखित	गाथा
आत्महि	= आत्महितोपदेश-कुलक	,, ...	,,
आत्मानु	= आत्मानुशास्ति-कुलक	,, ...	,,

* ऐसी निशानी वाले संस्करणों में अकारादि क्रम से शब्द-सूची छपी हुई है, इससे ऐसे संस्करणों के पृष्ठ आदि के अंकों का उल्लेख प्रस्तुत कोश में बहुधा नहीं किया गया है, क्योंकि पाठक उस शब्द-सूची से ही अभिलषित शब्द के स्थल को तुरन्त पा सकते है। जहाँ किसी विशेष प्रयोजन से अंक देने की आवश्यकता प्रतीत भी हुई है, वहाँ पर उसी ग्रन्थ की पद्धति के अनुसार अंक दिये गये है, जिससे जिज्ञासु को अभीष्ट स्थल पाने में विशेष सुविधा हो।

+ इन संस्करणों में श्रुतस्कन्ध, अध्ययन और उद्देश के अङ्क समान होने पर भी सूत्रों के अङ्क भिन्न भिन्न हैं। इससे इस कोष में जिस संस्करण से जो शब्द लिया गया है उसी का सूत्राङ्क वहाँ पर दिया गया है। अंक की गिनती उसी उद्देश या अध्ययन के प्रथम सूत्र से आरम्भ की गई है।

† श्रद्धेय श्रीयुत केशवलालभाई प्रेमचन्द मोदी, बी.ए., एल्. एल्.बी. से प्राप्त।

संकेत।	ग्रन्थ का नाम।	संस्करण आदि।		जिस के अंक दिये गये हैं वह।
आनि	= आवश्यकनिर्युक्ति	१ यशोविजय-जैन-ग्रन्थमाला, बनारस। २ हस्तलिखित।		
आप	= आराधनाप्रकरण	शा. बालाभाई ककलभाई, अमदावाद, सवत् १९६२		गाथा
आरा	= आराधनासार	मानिकचन्द-दिगंबर-जैन-ग्रन्थमाला, संवत् १९७३		,,
आव	= आवश्यकसूत्र	हस्तलिखित ...	...	
आवम	= आवश्यकसूत्र मलयगिरिटीका	,, ...	...	
इंदि	= इन्द्रियपराजयशतक	भीमसिंह माणेक, बंबई, संवत् १९६८	...	गाथा
इक	= दि कोस्मोग्राफी देर् इदेर्	* डॉ. डबल्यु. किर्फेल-कृत, लाइपजिग, १९२०		
उत्त	= उत्तराध्ययन सूत्र	१ राय धनपतिसिंह बहादूर, कलकत्ता, संवत् १९३६		अध्ययन, गाथा
		२ स्व-संपादित, कलकत्ता, १९२३		,,
		+ ३ हस्तलिखित		,,
उत्त का	= ,,	डो. जे. कारपेंटिअर-संपादित, १९२१	...	,,
उत्तनि	= उत्तराध्ययननिर्युक्ति	हस्तलिखित ...	...	,,
उत्तर	= उत्तररामचरित्र	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१५	...	पृष्ठ
उप	= उपदेशपद	हस्तलिखित ...	...	गाथा
उप टी	= उपदेशपद-टीका	हस्तलिखित ...	...	मूल-गाथा
उपपं	= उपदेशपंचाशिका	† ,,		गाथा
उप पृ	= उपदेशपद	जैन-विद्या-प्रचारक वर्ग, पालीताणा...	...	पृष्ठ
उर	= उपदेशरत्नाकर	देवचन्द लालभाई पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९१४	...	अंश, तरंग
उव	= उवएसमाला	* डॉ. एल्. पी. टेसेटोरि-संपादित, १९१३	...	
उवकु	= उपदेशकुलक	† हस्तलिखित	...	गाथा
उवर	= उपदेशरहस्य	मनसुखभाई भगुभाई, अमदावाद, संवत् १९६७	...	,,
उवा	= उवासगदसाओ	* एसियाटिक सोसाइटी, बंगाल, कलकत्ता, १८९०	...	
ऊरु	= ऊरुभंग	त्रिवेन्द्र संस्कृत-सिरिज ...	...	पृष्ठ
ओघ	= ओघनिर्युक्ति	आगमोदय समिति, बम्बई, १९१९	...	गाथा
ओघ भा	= ओघनिर्युक्ति-भाष्य	,, ...	...	,,
औप	= औपपातिकसूत्र	* डॉ. इ. ल्युमेन्-संपादित, लाइपजिग, १८८३	...	
कप्प	= कल्पसूत्र	* डॉ. एच्. जेकोबी-संपादित, लाइपजिग, १८७९	...	
कप्पू	= कर्पूरमञ्जरी	* हार्वर्ड् ओरिएन्टल् सिरिज, १९०१	...	
कम्म १	= कर्मग्रन्थ पहला	* आत्मानन्द-जैन-पुस्तक-प्रचारक मण्डल, आगरा, १९१८		गाथा
कम्म २	= ,, दूसरा	* ,, ,,	,,	,,
कम्म ३	= ,, तीसरा	* ,, ,,	१९१९	,,
कम्म ४	= ,, चौथा	* ,, ,,	१९२३	,,

+ सुखबोधा-नामक प्राकृत-बहुल टीका से विभूषित यह उत्तराध्ययन सूत्र की हस्त-लिखित प्रति आचार्य श्रीविजय-मेघसूरिजी के भंडार से श्रद्धेय श्रीयुत के. प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त हुई थी, इस प्रति के पत्र १८६ हैं।

† श्रद्धेय श्रीयुत के. प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त।

संकेत।		ग्रन्थ का नाम।	संस्करण आदि।		जिसके अंक दिये गये हैं वह।
कम्म ५	=	कर्मग्रन्थ पाँचवाँ	१ भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९६८	...	गाथा
			२ जैन-धर्म प्रसारक सभा, भावनगर, संवत् १९६८		,,
कम्म ६	=	,, छठवाँ	,,	...	,,
कम्मप	=	कर्मप्रकृति	जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, १९१७	...	पत्र
करु	=	करुणावज्रायुधम्	आत्मानन्द-जैन-सभा, भावनगर, १९१६	...	पृष्ठ
कर्ण	=	कर्णभार	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरिज ...	...	,,
कर्पूर	=	कर्पूरचरित (भाग्ग)	गायकवाड ओरिएन्टल् सिरिज, नं. ८, १९१८		,,
कर्म	=	कर्मकुलक	† हस्त-लिखित		गाथा
कस	=	(बृहत्) कल्पसूत्र	* डॉ. डबल्यु. शुब्रिं-संपादित, लाइपजिग, १९०५	...	
काप्र	=	काव्यप्रकाश	वामनाचार्यकृत-टीका-युक्त, निर्णयसागर प्रेस, बम्बई ...		पृष्ठ
काल	=	कालकाचार्यकथानक	* डॉ. एच्. जेकोबी-संपादित, जेड्-डी-एम्-जी, खंड ३४, १८८०		
किरात	=	किरातार्जुनीय (व्यायोग)	गायकवाड ओरिएन्टल् सिरिज, नं ८, १९१८		पृष्ठ
कुप्र	=	कुमारपालप्रतिबोध	गायकवाड-ओरिएण्टल् सिरिज, १९२०	...	,,
कुमा	=	कुमारपालचरित	* बंबई-संस्कृत-सिरिज, १९००	...	
कुम्मा	=	कुम्मापुत्तचरित्र	स्व-संपादित, कलकत्ता, १९१९ ...	...	पृष्ठ
कुलक	=	कुलकसंग्रह	जैन श्रेयस्कर मंडल, म्हेसाणा, १९१४		,,
खा	=	खामणाकुलक	† हस्तलिखित		गाथा
खेत्त	=	लघुक्षेत्रसमास	भीमसिंह माणेक, बंबई, संवत् १९६८	...	,,
गउड	=	गउडवहो	* बंबई-संस्कृत-सिरिज, १८८७ ...	...	
गच्छ	=	गच्छाचारपयन्नो	१ हस्तलिखित		अधिकार, गाथा
			२ चंदुलाल मोहोलाल कोठारी, अहमदावाद, संवत् १९८०		,,
			३ शेठ जमनाभाई भगूभाई, अहमदावाद, १९२४		,,
गण	=	गणधरस्मरण	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८	...	गाथा
गणि	=	गणिविज्जापयन्नो	राय धनपतिसिंह बहादूर, कलकत्ता, १८४२	...	,,
गा	=	गाथासप्तशती	+ १ डॉ. ए. वेबर्-संपादित, लाइपजिग, १८८१		,,
			२ निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९११	...	,,
गु	=	गुरुपारतन्त्र्य-स्मरण	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८	...	गाथा
गुण	=	गुणानुरागकुलक	अंबालाल गोवर्धनदास, बम्बई, १९१३	...	,,

† श्रद्धेय के. प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त।

+ लाइपजिग वाले संस्करण का नाम "सप्तशतक डेस हाल" है और बम्बई वाले का "गाथासप्तशती"। ग्रन्थ एक ही है, परन्तु बम्बई वाले संस्करण में सात शतकों के विभाग में करीब ७०० गाथाएँ छपी हैं और लाइपजिग वाले में सीधे नंबर से ठीक १००० । एक से ७०० तक की गाथाएँ दोनों संस्करणों में एक-सी हैं, परन्तु गाथाओं के क्रम में कहीं कहीं दो चार नंबरों का आगा-पीछा है। ७०० के बाद का और ७०० के भीतर भी जहा गाथांक के अनन्तर 'अ' दिया है वह नंबर केवल लाइपजिग के ही संस्करण का है।

संकेत।		ग्रन्थ का नाम।	संस्करण आदि।		जिसके अंक दिये गये हैं वह।
निचू	=	निशीथचूर्णि	हस्तलिखित	...	उद्देश
निर	=	निरयावलीसूत्र	१ हस्तलिखित	...	वर्ग, अध्य०
			२ आगमोदय-समिति, बम्बई, १९२२	...	,,
निसा	=	निशाविरामकुलक	† हस्तलिखित	...	गाथा
निसी	=	निशीथसूत्र	हस्तलिखित	.	उद्देश
पउम	=	पउमचरिअ	जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, प्रथमावृत्ति	.	पर्व, गाथा
पंच	=	पंचसंग्रह	१ हस्तलिखित	.	द्वार, गाथा
			२ जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, १९१९	.	,,
पंचभा	=	पचकल्पभाष्य	हस्तलिखित	...	
पंचव	=	पंचवस्तु	,, ...	...	द्वार
पंचा	=	पंचासकप्रकरण	जैन-धर्म-प्रसारक सभा, भावनगर, प्रथमावृत्ति	...	पंचासक
पंचू	=	पंचकल्पचूर्णि	हस्तलिखित	..	
पंनि	=	पंचनिर्ग्रन्थीप्रकरण	आत्मानन्द-जैन सभा, भावनगर, संवत् १९७४	. .	गाथा
पंरा	=	पंचरात्र	त्रिवेन्द्र संस्कृत-सिरिज	.	पृष्ठ
पंसू	=	पंचसूत्र	हस्तलिखित	...	सूत्र
पक्खि	=	पक्खिसूत्र	भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९६२	...	
पच्च	=	महापच्चक्खाणपयन्नो	शा. बालाभाई ककलभाई, अमदावाद, संवत् १९६२		गाथा
पडि	=	पंचप्रतिक्रमणसूत्र	१ जैन-ज्ञान-प्रसारक-मंडल, बम्बई, १९११	...	
			२ आत्मानन्द-जैन-पुस्तक-प्रचारक-मंडल, आगरा, १९२१		
पण्ण	=	पण्णवणासुत्त	राय धनपतिसिंह बहादूर, बनारस, सवत् १९४०	..	पद

मालती	for	मालतीमाधवम्	Calcutta Edition of 1830
चैत	,,	चैतन्यचन्द्रोदयम्	,, 1854
विक्र	,,	विक्रमोर्वशी	,, 1830
साहित्य	,,	साहित्यदर्पण	Edition of Asiatic Society
उत्तर	,,	उत्तररामचरित	Calcutta Edition of 1831
रत्ना	,,	रत्नावली	,, 1832
मृच्छ	,,	मृच्छकटिक	,, 1832
प्राप्र	,,	प्राकृतप्रकाश	Mr. Cowell's Edition of 1854
शाकु	,,	शाकुन्तला	Calcutta Edition of 1840
मालवि	,,	मालविकाग्निमित्र	Tulberg's Edition of 1850
वेणि	,,	वेणिसंहार	Muktaram's Edition of 1855
पाअ	,,	सक्षिप्तसारस्य प्राकृताध्यायः	
महावी	,,	महावीरचरितम्	Trithen's Edition of 1848
पिंग	,,	पिंगलः	Ms.

† श्रद्धेय के. प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त।

C

संकेत।		ग्रन्थ का नाम।	सम्करण आदि।		जिसके अंक दिये गये है वह।
पराह	=	प्रश्नव्याकरणसूत्र	आगमोदय-समिति, बम्बई, १९१९		श्रुतस्कन्ध, द्वार
पभा	=	पच्चक्खाणभाष्य	भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९६२	...	गाथा
पव	=	प्रवचनसारोद्धार	१ ,, संवत् १९३४	..	+द्वार
			२ दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, १९२२-२५		,,
पस	=	प्रज्ञापनोपाङ्ग-तृतीयपदसंग्रहणी	आत्मानन्द-जैन-सभा, भावनगर, संवत् १९७४	...	गाथा
पाअ	=	पाइअलच्छीनाममाला	बी. बी. एण्ड कंपनी, भावनगर, संवत १९७३	..	
पार्थ	=	पार्थपराक्रम	गायकवाड ओरिएण्टल सिरिज, नं. ४, १९१७		पृष्ठ
पि	=	ग्रामेटिक् देर् प्राकृत स्प्राखन्	डा. आर्. पिशेल् कृत, १९००	..	पेरा
पिंग	=	प्राकृतपिंगल	* एसियाटिक् सोसाइटी, बंगाल, कलकत्ता, १९०२	...	
पिंड	=	पिंडनिर्युक्ति	१ हस्तलिखित	...	गाथा
			२ दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९२२		,,
पिंडभा	=	पिंडनिर्युक्तिभाष्य	,,		,,
पुप्फ	=	पुप्फमालाप्रकरण	जैन-श्रेयस्कर-मंडल, म्हेसाणा, १९११		,,
प्रति	=	प्रतिमानाटक	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरिज	..	पृष्ठ
प्रबो	=	प्रबोधचन्द्रोदय	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१०	...	,,
प्रयौ	=	प्रतिमायौगन्धरायण	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरिज	...	,,
प्रवि	=	प्रव्रज्या-विधान-कुलक	† हस्तलिखित	..	गाथा
प्राकृ	=	प्राकृतसर्वस्व (मार्कण्डेयकृत)	विभागापटम्		पृष्ठ
प्राप	=	इन्ट्रडक्शन् टु दि प्राकृत	* पंजाब युनिवर्सिटि, लाहोर, १९१७		
प्राप्र	=	प्राकृतप्रकाश	* १ डा. कावेल्-संपादित, लंडन, १८६८	...	
			* २ वंगीय-साहित्य-परिषद्, कलकत्ता, १९१४		
प्रामा	=	प्राकृतमार्गोपदेशिका	* शाह हर्षचन्द्र भूराभाई, बनारस, १९११		
प्रारू	=	प्राकृतशब्दरूपावली	* शेठ मनसुखभाई भगुभाई, अमदाबाद, संवत् १९६८	.	
प्रासू	=	प्राकृतसूक्तरत्नमाला	जैन-विविध-साहित्य-शास्त्र-माला, बनारस, १९१९		गाथा
बाल	=	बालचरित	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरिज	...	पृष्ठ
बृह	=	बृहत्कल्पभाष्य	हस्तलिखित	..	उद्देश
भग	=	भगवतीसूत्र	* १ जिनागमप्रकाश सभा, बम्बई, संवत् १९७४	...	
			२ हस्तलिखित		शतक, उद्देश
			३ आगमोदय समिति, बम्बई, १९१८ १९१९-१९२१		,,
भत्त	=	भत्तपरिण्णापयन्नो	१ जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, संवत् १९६६	.	गाथा
			२ शा. बालाभाई ककलभाई, अमदाबाद, संवत् १९६२		,,
भवि	=	भविसत्तकहा	* १ डा. एच्. जेकोबी संपादित, १९१८		
			* २ गायकवाड ओरिएण्टल सिरिज, १९२३		

+ द्वार-प्रारम्भ के पूर्व के प्रस्ताव के लिए 'पव' के बाद केवल गाथा के अंक दिये गये है।

† श्रद्धेय श्रीयुत के. प्र. मोदी द्वारा प्राप्त।

संकेत।	ग्रन्थ का नाम।	संस्करण आदि।		जिसके अंक दिये गए है वह।
भाव	= भावकुलक	अंबालाल गोवर्धनदास, वम्बई, १९१३		गाथा
भास	= भाषारहस्य	शेठ मनसुखभाई भगुभाई, अमदावाद.		,,
मगल	= मगलकुलक	† हस्तलिखित		,,
मध्य	= मध्यमव्यायोग	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरिज		पृष्ठ
मन	= मनोनिग्रहभावना	† हस्तलिखित		गाथा
महा	= आउसगेव्याल्ते-एरस्यालुगन् इन् महाराष्ट्री	* डा. एच्. जेकोबी-संपादित, लाइपजिग, १८८६		
महानि	= महानिशीथसूत्र	हस्तलिखित	..	अध्ययन
मा	= मालविकाग्निमित्र	निर्णयसागर प्रेस, वम्बई, १९१५	.	पृष्ठ
माल	= मालतीमाधव	,, ,,	...	,,
मुणि	= मुनिसुव्रतस्वामिचरित	हस्तलिखित		गाथा
मुद्रा	= मुद्राराक्षस	वम्बई-संस्कृत-सिरिज, १९१५	...	पृष्ठ
मृच्छ	= मृच्छकटिक	१ निर्णयसागर प्रेस, वम्बई, १९१६	...	,,
		२ वम्बई-संस्कृत-सिरिज, १८९६	...	.
मै	= मैथिलीकल्याण	माणिकचंद-दिगम्बर-जैन-ग्रन्थमाला, वम्बई, १९७३		,,
मोह	= मोहराजपराजय	गायकवाड ओरिएन्टल सिरिज, न. ९, १९१८		,,
यति	= यतिशिक्षापंचाशिका	† हस्तलिखित	...	गाथा
रंभा	= रंभामजरी	* निर्णय-सागर प्रेस, वम्बई, १८८९	...	
रत्न	= रत्नत्रयकुलक	† हस्तलिखित	.	गाथा
रयण	= रयणसेहरनिवकहा	स्व-सपादित, वनारस, १९१८	.	पृष्ठ
राज	= अभिधानराजेन्द्र	* जैन प्रभाकर प्रिंटिंग प्रेस, रतलाम	...	
राय	= रायपसेणीसुत्त	१ हस्तलिखित	...	
		२ आगमोदय-समिति, वम्बई, १९२५	..	पत्र
रुक्मि	= रुक्मिणी-हरण (ईहामृग)	गायकवाड ओरिएन्टल सिरिज, न. ८, १९१८		पृष्ठ
लघु	= लघुसंग्रहणी	भीमसिंह माणेक, वम्बई, १९०८	...	गाथा
लहुअ	= लघुअजितशान्ति-स्मरण	स्व-सपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८	..	,,
वज्जा	= वज्जालग्ग	एसियाटिक सोसाइटी, वंगाल, कलकत्ता	..	पृष्ठ
वव	= व्यवहारसूत्र, सभाष्य	१ हस्तलिखित	...	उद्देश
		२ मुनि माणेक संपादित, भावनगर, १९२६		,,
वसु	= वसुदेवहिंडी	हस्तलिखित		
वा	= वाग्भटकाव्यानुशासन	निर्णयसागर प्रेस, वम्बई, १९१५		पृष्ठ
वाग्भ	= वाग्भटालंकार	,, १९१६		,,
वि	= विपयतृष्णागोपदेशकुलक	† हस्तलिखित	...	गाथा
विक	= विक्रमोर्वशीय	निर्णयसागर प्रेस, वम्बई, १९१४	...	पृष्ठ

† श्रद्धेय श्रीयुत के. प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त।

संकेत।	ग्रन्थ का नाम।	संस्करण आदि।		जिसके अंक दिये गये हैं वह।
विक्र	= विक्रान्तकौरव	माणिकचंद-दिगम्बर-जैन-ग्रन्थ-माला, संवत् १९७२		पृष्ट
विचार	= विचारसारप्रकरण	आगमोदय-समिति, बम्बई, १९२३	..	गाथा
विपा	= विपाकश्रुत	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७९	...	श्रुतस्कन्ध, अध्य०
विवे	= विवेकमंजरीप्रकरण	स्व-संपादित, बनारस, संवत् १९७५-७६	...	गाथा
विसे	= विशेषावश्यकभाष्य	स्व-संपादित, बनारस, वीर-संवत् २४४१	...	,,
वृष	= वृषभानुजा	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १८९५	..	पृष्ट
वेणी	= वेणीसंहार	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१५	...	,,
वै	= वैराग्यशतक	विट्ठलभाई जीवाभाई पटेल, अमदावाद, १९२०		गाथा
श्रा	= श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्रवृत्ति	दे०ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९१९	..	मूलगाथा
श्रावक	= श्रावकप्रज्ञप्ति	श्रीयुत केशवलाल प्रेमचन्द संपादित, १९०५	..	गाथा
श्रु	= श्रुतास्वाद	† हस्तलिखित	..	,,
षड्	= षड्भाषाचन्द्रिका	* बम्बई सस्कृत एन्ड् प्राकृत सिरिज, १९१६		
स	= समराइच्चकहा	एसियाटिक सोसाइटी, बंगाल, कलकत्ता, १९०८-२३		पृष्ठ
सं	= संबोधसत्तरी	विट्ठलभाई जीवाभाई पटेल, अमदावाद, १९२०	...	गाथा
सक्षि	= संक्षिप्तसार	१ हस्तलिखित	...	
		२ संस्कृत प्रेस डिपोजिटरी, कलकत्ता, १८८९	...	पृष्ठ
सग	= बृहत्सग्रहणी	१ भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९६८	...	गाथा
		२ आत्मानन्द जैन सभा, भावनगर, संवत् १९७३		,,
संघ	= संघाचारभाष्य	हस्तलिखित	...	प्रस्ताव
सच	= शान्तिनाथचरित्र (देवचन्द्रसूरि-कृत)	,,	...	
संति	= संतिकरस्तोत्र	१ जैन-ज्ञान-प्रसारक-मंडल, बम्बई, १९११	..	गाथा
		२ आत्मानन्द-जैन-पुस्तक-प्रचारक-मंडल, आगरा, १९२१		,,
संथा	= संथारगपयन्नो	१ हस्तलिखित	...	,,
		२ जैन-धर्म-प्रचारक-सभा, भावनगर, सवत् १९६६		,,
संबोध	= संबोधप्रकरण	जैन-ग्रन्थ-प्रकाशक-सभा, अहमदावाद, १९१६		पत्र
संवे	= सवेगच्चूलिकाकुलक	† हस्तलिखित	...	गाथा
संवेग	= सवेगमजरी	,,	...	,,
सट्ठि	= सट्ठिसयपयरण	१ स्व-संपादित, बनारस, १९१७	...	,,
		२ सत्यविजय-जैन-ग्रन्थमाला, न. ६, अहमदावाद, १९२५		,,
सण	= सनत्कुमारचरित	* डा. एच. जेकोबी-संपादित, १९२१	...	
सत्त	= उपदेशसप्ततिका	जैन धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, संवत् १९७६	...	गाथा
सम	= समवायागसूत्र	आगमोदय-समिति, बम्बई, १९१८	..	पृष्ठ
समु	= समुद्रमन्थन (समवकार)	गायकवाड ओरिएन्टल सिरिज, नं. ८, १९१८	...	,,
सम्म	= सम्मतिसूत्र	जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, संवत् १९६५	...	गाथा

† श्रद्धेय श्रीयुत के. प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त।

संकेत ।	ग्रन्थ का नाम ।	संस्करण आदि ।		जिसके अंक दिये गये हैं वह ।
सम्मत्त	= सम्यक्त्वसप्तति सटीक	दे० ला० पुस्तकोद्धार-फंड, बम्बई, १९१६	...	पत्र
सम्य	= सम्यक्त्वस्वरूप पच्चीसी	अंबालाल गोवर्धनदास, बम्बई, १९१३	...	गाथा
सम्यक्त्वो	= सम्यक्त्वोत्पादविधिकुलक	† हस्तलिखित	.	„
सा	= सामान्यगुणोपदेशकुलक	„	...	„
सार्ध	= गणधरसार्धशतकप्रकरण	जौहरी चुन्नीलाल पन्नालाल, बम्बई, १९१६	..	„
सिक्खा	= शिक्षाशतक	† हस्तलिखित	...	„
सिग्घ	= सिग्घमवहरउ-स्मरण	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८	...	„
सिरि	= सिरिसिरिवालकहा	दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९२३	...	„
सुख	= सुखबोधा टीका (उत्तराध्ययनस्य)	‡ हस्तलिखित	...	अध्ययन, गाथा
सुज	= सूर्यप्रज्ञप्ति	आगमोदय-समिति, बम्बई, १९१९	...	पाहुड
सुपा	= सुपासनाहचरिअ	स्व-संपादित, बनारस, १९१८-१९	...	पृष्ठ
सुर	= सुरसुंदरीचरिअ	जैन-विविध-साहित्य-शास्त्र-माला, बनारस, १९१६	...	परिच्छेद, गाथा
सूअ	= सूअगडांगसुत्त	§ १ भीमसिंह माणेक, बम्बई, १९३६	...	श्रुतस्कंध, अध्य०
		२ आगमोदय-समिति, बम्बई, संवत् १९१७	...	„
सूअनि	= सूत्रकृताङ्गनिर्युक्ति	१ हस्तलिखित	...	श्रुतस्कन्ध
		२ आगमोदय-समिति, बम्बई, संवत् १९७३	...	गाथा
		३ भीमसिंह माणेक „ „ १९३६	...	„
सूक्त	= सूक्तमुक्तावली	दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९२२	...	पत्र
से	= सेतुबंध	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १८९५	...	आश्वासक, पद्य
स्वप्न	= स्वप्नवासवदत्त	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरिज	...	पृष्ठ
हम्मीर	= हम्मीरमदमर्दन	गायकवाड ओरिएन्टल सिरिज, नं. १०, १९२०	...	„
हास्य	= हास्यचूडामणि (प्रहसन)	„	...	„
हि	= हितोपदेशकुलक	† हस्तलिखित	...	गाथा
हित	= हितोपदेशसारकुलक	„	...	„
हे	= हेमचन्द्र-प्राकृत-व्याकरण	* १ डॉ. आर्. पिशेल्-संपादित, १८७७	...	पद, सूत्र
		२ बम्बई-संस्कृत-सिरिज, १९००	...	„
हेका	= हेमचन्द्र-काव्यानुशासन	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९०१	...	पृष्ठ



† श्रद्धेय श्रीयुत के. प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त।

‡ देखो 'उत्त' के नीचे की टिप्पणी।

§ सूत्र के अंक इन दोनो में भिन्न भिन्न हैं, प्रस्तुत कोष में सूत्राङ्क केवल भी. मा. के संस्करण के दिये गये है।

शुद्धिपत्र।

पृष्ठ	कोलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	१	२१	विसे ;	विसे
५	१	२०	प्ररणा	प्रेरणा
,,	२	१०	अईअ	अईअ पु
,,	२	१०	२ जो	२ वि. जो
६	२	११	°वाली °ली	°वालि, °वाली
,,	२	११	°ली,	°पाली
८	१	३४	अंङ्गुलि	अङ्गुल
,,	१	३७	परिणाम	परिमाण
९	१	३२	२, ३७	१, ३७
,,	२	३	अंजणिआ	अंजणी
,,	२	३	अञ्जनिका	अञ्जनी
,,	२	८	निसी	निचू
,,	२	१८	१, ९ ;	१, १ ;
,,	२	२०	२, १	१, १
,,	२	२६	१, २	२
१०	२	१	°द्धाणिया	°द्धाणी
,,	२	२	°धानिका	°र्धानी
,,	२	२४	१, २	१, ३
११	२	३	निसी	निचू
१२	१	४	मज्झोवसाणिय पुं	मज्झावसाणिय पुंन
१३	२	९	अबरिस	अंबरिस
१४	१	१४	दरवाजा एक अंश	दरवाजे का तख्ता
१५	२	१	आलसु	आलसी
१७	१	३१	णिहितव	निहि
,,	१	३१	निध्रितपस्	निध्रि
,,	१	३२	पंचा ९	पव २७१
१८	२	३८	वव १	वव १ टी
१९	१	३	घव-	अघव-
,,	१	३४	अणिए अ	अणिएअ-
२१	१	२	तावसय	तावस
,,	१	३	तापसक	तापस
२२	२	३८	अर्ह	अर्ह्
२३	१	३२	'२' से '२३८४'	०
,,	२	१	निसी	निचू
२६	१	१५	अञ्चणिउरंग	अञ्छणिउरंग
२७	२	३७	पंचा ८	पंचा ७
२९	१	२	अज्जं	अज्ज°
,,	१	३८	२, २	२, १
३१	१	१७	१९४	१७४
,,	२	२	च्चितियं	च्चितियं
,,	२	३७	अथ	अर्थ
,,	२	२१	तत्तव	तत्त्व
३२	१	३४	त्ति	स्त्रीन
,,	२	२२	स्त्री	स्त्रीन
,,	२	३४	न [अस्थान]	वि [अस्थानिक]
३३	१	२४	७ ;	९ ,
३५	१	१३	अण	°अण
३६	१	३०	अनगारिक	आनगारिक
,,	१	३३	पुं	वि
,,	१	३४	२	२ पुं.
,,	२	२८	(ाचा)	(आचा)
३७	१	३६	खुला	खिला
३८	२	१२	अनध्यासक	अनध्यास
३९	२	३६	अवृष्टि	अनावृष्टि
४०	१	७	अणासिय	अणासिय वि [
,,	२	२०	(दस १)।	(दस ५, १)।
४१	२	४	अणिहस	अणीइस
,,	२	६	अणिय	अणीय
,,	२	३५	(दे १, ५२)	(दे १, ५)।
४२	२	१२	हत	हित
४४	१	२१	१, ३, ३	१, ७
,,	१	२२	३	३२
,,	१	२४	लिइत्ता	लित्ता
४५	२	२७	अणजुत्ति	अणुजुत्ति
,,	२	२८	१, ४, १	१, ३, ३

पृष्ठ	कोलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
[illegible]	२	१०	गोहल्लग	गोहिल्लग
३८७	२	१०	गवअ	गोवअ
३८८	१	१०	गव-	गोव-
,,	१	३०	नवय-	गोसण्ण वि
,,	२	३२	गोमण्ण	अणु
,,	२	२	अनु	तुर १६,
३८१	२	१६	तुर	हिलाना
३८२	१	१३	हिलना	०, ७, ६;
,,	२	८	१, ७, ६;	दिखाने
३८४	१	१६	दखाने	दे. गृहिणी
,,	२	३५	है	घि°
,,	२	६	घि	घिप्प
३८६	२	१८	घिण्णं	वक्क—घुन्नंत
,,	१	१६	वक्क—	दे २,
३८७	१	३१	है २.	विशेष. ग्राम-
,,	२	२५	विशेष	२ पुंन.
,,	२	६	२	न
३९०	१	३७	नी	गुत्रानि ६०
,,	२	४	गुप्प १, ७	[°पुगी]
३९३	१	७	[°पुग]	चक्कवर्त्ती
,,	२	७	नमवर्ती	२ पुं.
३९६	१	१८	२	दसनि
,,	१	२५	मत	२ वि.
३९८	१	१४	२	-नमुक्कार-
३९९	२	१५	-नमस्कार-	२ वि.
,,	२	३०	२	छन्नती०, थोड़ा;
४०१	२	२८	गावन, तगएन.	चिल्लाहट,
४०२	१	१७	निलना, टह	गाया
४०३	१	३६	गत	चित्तठिअ
४०८	१	३६	चित्तहिअ	२ पुं.
,,	२	१६	२	०
,,	२	२०	२	[illegible]
४०६	१	११-१२	'निपिपण' से ५, ७)।	[illegible]

पृष्ठ	कोलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
[illegible]	२	२४	[illegible]	सौधर्म विमान
४११	२	३८	विमान का पाठान्तर-	३ वि.
४१२	१	२३	३	दे. स्थान
४१६	१	६	दे	छिपक
४२१	२	१३	छिपक	[illegible]
४२२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

पृष्ठ	कोलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४२३	१	२१	पड्; उत्त २७)।	पड्)।
,,	१	३२	अजि ५	लहुअ ५
४२४	१	३	छेवह	छेवट्ठ
४२६	१	७	दस	दसनि
,,	१	१२	[छेत्त]	[छेत्तृ]
,,	१	३०	चीत्कार करना,	नाक छीकने का
,,				शब्द,
४२७	२	३१, ३२	जउं-	जॅउ-
४२८	१	१५	जाङ्गलि	जाङ्गुलि
,,	१	२२	जघा	जंघा
,,	१	१६	२	२ न.
४२९	२	३३	२०	१६
,,	१	१६	दिखाता	दीखता
४३०	१	१	जाडअ	जडिअ
४३२	१	१२	है	जटिलक
,,	१	१०	२	२ पुं.
४३७	१	२८	२	२ पुं.
४३९	२	१६	वि	°मूअ वि
४४२	२	२२	२२	१२
,,	२	३८	पराहम्. २, ४; अ	पराह २, ४; सूअ
,,	१	३२	२, ३	२, १५
४४३	१	३७	°प्प पुं	°प्प वि
४४४	२	३५	ज्येष्ठ	ज्येष्ठ
,,	१	२७	पंचा ४	पंचा ३
४४६	१	२६	३	३ पुं.
४४७	२	३७	एका	एक
४४८	२	१०	है	रूपक
४५०	२	१६, २२	देखो पत्र	(गी) देखो पत्र
४५१	२	३४	६, १, १३	६, १३
,,	२	४५	चंद १	सुत्त २०; १८
४५२	१	३६	देखो	(गी) देखो
४५४	१	५	२, २, २	२, २
४५५	१	३४	झर्खत	झखंत
,,	१	१३	नद्द	गांदि
४५६	१	३०	झडुअ	झेंडुअ
४५८	१	४	°क	टंक
४५९	१	२३	सम्म	सम्मा

पृष्ठ	कोलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४६०	१	२४	स्तम्भ्	स्तम्भ
४६४	१	३६	उत्+लंघ्	डिप्
,,	१	३८	उल्लङ्घन	डेपन
,,	२	१३	जघन्य मनुष्य-जाति;	मनुष्य-जाति, ब्राह्मण;
४६६	१	१७	ढिक्क	ढिक्क
,,	१	२२	स्त्री	वि
,,	२	१८	ढढोल्ल	ढोल्ल
४६८	२	१६	[°वृद्ध्र]	[°वृद्ध]
४७०	२	३२	२	२ पुन.
४७४	१	१५	णलिणिं	णलिणि°
४७५	२	१०	[दे]	नखहरणी
४८०	१	३०	णिअठ	णिअंठ
,,	२	३७	धर्म । १	धर्म २)।
४८३	१	३८	नाद्र	निद्रा
४८४	१	३८	निकालने वर्ला;	निकलने वाला;
,,	२	३७	कवकृ—णिक्कसिज्जंत;	कर्म—णिक्कसिजइ;
,,	२	३८	सूत्र १, १४	राज
४८५	२	३८	पर्वत-विशेष;	भूमि-खंड;
४८६	१	१६	णिच्छुभित्ता	णिच्छुभित्ता
,,	१	१५	कना ।	करना ।
४६१	१	१५	णिट्टुइअ	णिट्टुट्टुइअ
,,	१	३७	नि १)। °कहा स्त्रीचू	निच्चू १)। °कहा स्त्री
४६२	२	१३	णत्तिर ड	णित्तिरडि
४६३	१	१०	व	वि
४६४	१	२८	२	२ वि.
४६५	१	११	१, ६	१, ५
४६८	१	२५	आख	ऑख
४६६	२	५	३४	३५
५००	१	१३	णिरणासइ;	णिरणासइ;
,,	१	३८-३६	'३ नरक' से 'पण्ह १, १)।'	०
,,	२	३४	निरवसेस	निरवशेष
५०१	१	२२	करिमों;	करिमो;
,,	१	२४	प्रतिषेध	प्रतिषेध; (पंचा
५०२	२	२५	१; ३	१, ३०
५०६	२	५	साधुओं को	साधुओं का
,,	२	१५	। १२	आ १२
,,	२	१६	सुज २	सुज १, १
,,	२	२१	निवृद्धि	निवृद्धि
५०७	१	१६	णिव्वक्कल	णिवक्कल
५०६	१	१५	२	२ न.
,,	१	२४	निःसशय;	निःसंशय,
,,	२	१४	णिव्विलंबक्कि वि	णिव्विलंब क्रिवि
५१०	१	२	निश्चिन्तन्ता	निश्चिन्तता
५१२	२	३७	निवसेइ	निसेवइ,
५१३	१	२१	२, ४ १	२, १६, ६
५१४	१	२	निःसिङ्कित	नि.शिङ्कित
,,	१	६	णिस्सिंचिय;	णिस्सिंचिया;
,,	२	८	२	२ पुं.
५१५	२	२६	२	२ वि.
५१६	१	१६	नीचस्	नीचैस्
,,	१	२७	सारभडणि	सारभडाणि
,,	२	१६	दे	दे नीरङ्गी
५१६	१	२२	कड्डिया	कड्ढिया
,,	२	१८	छादन	दे
	१	३०	धान्य का	धान्य आदि का थोकबन्द
		३२	णेसज्ज वि [नैषद्य]	णेसज्जि वि [नैषद्यिन्]
		२६	'°नाह' से '१५६)।'	०
	२		णांदि	णादि—टी
	२		नपय्	तापय्
	२	१	णाकर	गुणाकार
	२	१६	ड़	का पेड़ ;
	२	२०	का	] कान का
	१	२८	र.	एक राज-
	२	२८	तव	तावँहिं
	१	२६	तीन,	तीन
	२	३१	त्रमासि	[illegible]
	२	१४	[illegible]	[illegible]

पृष्ठ	कोलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५४१	२	८	२	२ न.
५४३	२	१९	२, १	१, ५ टी
,,	२	२०	१, ५, १	१, ५, १ टी
,,	२	२५	**तुर**	**तुर°**
५४६	२	११	चिचित्सा	चिकित्सा
,,	२	३५	**णायत्ते**	**तेणय**
५४९	१	२	**त्थअ**	**°त्थअ**
५५०	१	४	२	२ वि.
५५१	२	३६	**ठाण**	**स्थान**
५५३	१	३०	घोडा	थोडा
५५४	१	२२,२६	**दे**	**दे. स्थविरासन**
५५५	१	३३	८	८ पुन.
,,	२	३५	**°दंडि**	**दंडि°**
५५६	१	२२	**°पहावण**	**°पहोयण**
,,	१	२६	**दे**	**दे. दन्तपवन**
५५९	१	१३	पुर्व	पूर्व
,,	१	१४	इत्पन्न	उत्पन्न
,,	१	३३	दिग्ग	दिग्गग
,,	२	१०	दर्दर	दर्दुर
५६२	१	१४	सूत्र १, १	सूत्रनि १०८
५६४	२	२२	दाढ़ी	दाढा
५६५	१	१३	**दे**	**दामन**
५६६	१	३४	**दे**	**दामन**
५७१	१	७	सुत्र	सूत्र
५७२	१	१९	दीर्थ	दीर्घ
,,	२	२६	**द्व्यणुक**	**द्व्यणुक**
५७४	१	३	**दुःक्खाय्**	**दुःखाय्**
,,	१	१५	वरागना	वाराङ्गना
५७५	२	२५	**दुचचरिअ**	**दुच्चरिअ**
५७६	२	२४	भग ७, ६	राज

५७८ प्रथम कोलम के आरम्भ की चार लाइनें उसी पेज के दूसरे कोलम के अन्त में पढ़ो।

पृष्ठ	कोलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५७९	२	२९	२०	२१
५८०	१	२६	२	२ वि.
,,	१	२९	**°सद्द**	**°सद्द** पुंन
५८२	२	११	२	२ न.
५८३	२	३६	२	२ न.
५८४	१	२९	दसनि २	दस ९, २
५८४	२	२३	१९	१७
५८६	१	२६	वक्क	कवक्क—
,,	२	१३	आणाती	आणत्ती
५८८	२	१४	यएजा'	वएजा'
५८९	१	१३	वही अर्थ;	नीचे देखो;
,,	१	३५	देखो **°पडिक्खोभ;**	पुं [**°परिक्षोभ**] कृष्णा-राजि;
५९०	१	१०	**°रएण**	**°रन्न**
,,	१	२८	**देवकिलिब-**	**दैवकिलिब-**
,,	२	१३	पार्घती	पार्वती
५९१	१	२८	**द्वषिन्**	**द्वेषिन्**
,,	२	१६	२	२ पुं.
५९२	२	३०	सूर	सुर
५९४	१	१६	१२)।	११)।
५९६	२	१७	जसमें	जिममें
५९७	१	३७	**पण्णत्ति**	**पण्णत्ति**
६००	१	३१	**ध्राड्**	**ध्राट्**
,,	१	३२	सूत्र १, ४, २	सूत्रनि ७०
,,	१	३४	**ध्राडन**	**ध्राटन**
६०३	१	१६	**ध्रूनन**	**ध्रूनना**
,,	२	३६	१, ४, १	१, २, १
६०५	२	९	धुरन्घर	धुरन्धर
६०७	२	२०	पंचा ८	पंचा ७
६०८	१	१४	**पइदिद्ध** वि [**प्रतिदिग्ध**]	**पइद्धिय** वि [**प्रदिग्ध**]
६१०	१	६	८	८ पुं.
,,	२	२६	सूभूमि-राज	सुभूमराज
६११	२	३२	**प्राक्**	**प्रगे**
६१२	२	२६	**पओप्पय**	**पओप्पिय**
६१३	१	१५	३	३ पुंन.
६१४	१	२६	[**°वष**]	[**°वर्ष**]
६१५	१	११	२	२ पुं.
६२१	१	९	२	२ वि.
,,	२	२	पुं	वि
,,	२	९	पगिब्भ	पगब्भि
६२२	१	२०	२९)	२, २९)

निवेदन।

कोई भी भाषा के ज्ञान के लिए उस भाषा का व्याकरण और कोष प्रधान साधन है। प्राकृत भाषा के प्राचीन व्याकरण अनेक हैं, जिनमें **चंड** का **प्राकृतलक्षण**, **वररुचि** का **प्राकृतप्रकाश**, **हेमाचार्य** का **सिद्धहेम** (अष्टम अध्याय) **मार्कण्डेय** का **प्राकृतसर्वस्व** और **लक्ष्मीधर** की **षड्भाषाचन्द्रिका** मुख्य हैं। और, अर्वाचीन प्राकृत व्याकरणों की संख्या अल्प होने पर भी उनमें जर्मनी के सुप्रसिद्ध प्राकृत-विद्वान् डो. **पिशल्** का प्राकृतव्याकरण सर्व-श्रेष्ठ है जो अतिविस्तृत और तुलनात्मक है। परन्तु प्राकृत-कोष के विषय में यह बात नहीं है। प्राकृत के प्राचीन कोषों में अद्यापि पर्यन्त केवल दो ही कोष उपलब्ध हुए हैं—पण्डित **धनपाल**-कृत **पाइअलच्छीनाममाला** और **हेमाचार्य**-प्रणीत **देशीनाममाला**। इनमें पहला अतिसंक्षिप्त—दो सौ से भी कम पद्यों में ही समाप्त और दूसरा केवल देश्य शब्दों का कोष है। इनके सिवा अन्य कोई भी प्राकृत का कोष न होनेसे प्राकृत के हरएक अभ्यासी को अपने अभ्यास में बहूत असुविधा होती थी, खुद मुझे भी अपने प्राकृत-ग्रन्थों के अनुशीलन-काल में इस अभाव का कटु अनुभव हुआ करता था। इससे आज से करीब पनरह साल पहले पूज्यपाद, प्रातःस्मरणीय, गुरुवर्य शास्त्र-विशारद जैनाचार्य श्री १००८ श्री **विजयधर्मसूरीश्वरजी** महाराज की प्रेरणा से प्राकृत का एक उपयुक्त कोष बनाने का मैंने विचार किया था।

इसी अरसे में श्री**राजेन्द्रसूरिजी** का **अभिधानराजेन्द्र**-नामक कोष का प्रथम भाग प्रकाशित हुआ और अभी दो वर्ष हुए इसका अन्तिम भाग भी बाहर हो गया है। बड़ी बड़ी सात जिल्दों में यह कोष समाप्त हुआ है। इस संपूर्ण कोष का मूल्य २६०) रूपये हैं जो परिश्रम और ग्रन्थ-परिमाण में अधिक नहीं कहे जा सकते। यद्यपि इस कोष की विस्तृत आलोचना करने की न तो यहाँ जगह है, न आवश्यकता ही; तथापि यह कहे विना नहीं रहा जा सकता कि इसकी तय्यारी में इसके कर्ता और उसके सहकारिओं को सचमुच घोर परिश्रम करना पड़ा है और प्रकाशन में जैन श्वेताम्बर संघ को भारी धन-व्यय। परन्तु खेद के साथ कहना पड़ता है कि इसमें कर्ता को सफलता की अपेक्षा निष्फलता ही अधिक मिली है और प्रकाशक के धनका अपव्यय ही विशेष हुआ है। सफलता न मिलने का कारण भी स्पष्ट है। इस ग्रन्थ को थोडे गौर से देखने पर यह सहज ही मालूम होता है कि इसके कर्ता को न तो प्राकृत भाषाओं का पर्याप्त ज्ञान था और न प्राकृत शब्द-कोष के निर्माण की उतनी प्रबल इच्छा, जितनी जैन-दर्शन-शास्त्र और तर्क-शास्त्र के विषय में अपने पाण्डित्य-प्रख्यापन की धून। इसी धून ने अपने परिश्रम को योग्य दिशा में ले जाने वाली विवेक-बुद्धि का भी ह्रास कर दिया है। यही कारण है कि इस कोष का निर्माण, केवल पचहत्तर से भी कम प्राकृत जैन पुस्तकों के ही, जिनमें अर्धमागधी के दर्शन-विषयक ग्रंथों की बहुलता है, आधार पर किया गया है और प्राकृत की ही इतर मुख्य शाखाओं के तथा विभिन्न विषयों के अनेक जैन तथा जैनेतर ग्रन्थों में एक का भी उपयोग नहीं किया गया है। इससे यह कोष व्यापक न होकर प्राकृत भाषा का एकदेशीय कोष हुआ है। इसके सिवा प्राकृत तथा संस्कृत ग्रन्थों के विस्तृत अंशों को और कहीं २ तो छोटे-बड़े *संपूर्ण ग्रन्थ को ही अवतरण के रूप में उद्धृत करने के कारण पृष्ठ-संख्या में बहूत बड़ा होने पर भी शब्द-संख्या में ऊन ही नहीं, बल्कि आधार-भूत ग्रंथो में आये हुए कई †उपयुक्त शब्दों को छोड़ देने से और विशेषार्थ-हीन

---

* जैसे 'चेइय' शब्द की व्याख्या में **प्रतिमाशतक**-नामक सटीक संस्कृत ग्रन्थ को आदि से लेकर अन्त तक उद्धृत किया गया है। इस ग्रंथ की श्लोक-संख्या करीब पाँच हजार है।

† अक्क=अर्क आदि।

*अतिदीर्घ सामासिक शब्दों की भरती से वास्तविक शब्द-संख्या में यह कोष अतिन्यून भी है। इतना ही नहीं, इस कोष में आदर्श पुस्तकों की, असावधानी की और प्रेस की तो असंख्य अशुद्धियाँ हैं ही, प्राकृत भाषा के अज्ञान से संबन्ध रखने वाली भूलों की भी कमी नहीं है। और सबसे बढ़कर दोष इस कोष में यह है कि **वाचस्पत्य, अनेकान्तजयपताका, अष्टक, रत्नाकरावतारिका** आदि केवल संस्कृत के और **जैन इतिहास** जैसे केवल आधुनिक गुजराती ग्रन्थों के संस्कृत और गुजराती शब्दों पर से कोरी निजी कल्पना से ही † बनाये हुए प्राकृत शब्दों की इसमें खूब मिलावट की गई है, जिससे इस कोष की प्रामाणिकता ही एकदम नष्ट हो गई है। ये और अन्य अनेक अक्षम्य दोषों के कारण साधारण अभ्यासी के लिए इस कोष का उपयोग जितना भ्रामक और भयंकर है, विद्वानों के लिए भी उतना ही क्लेशकर है।

इस तरह प्राकृत के विविध भेदों और विषयों के जैन तथा जैनेतर साहित्य के यथेष्ट शब्दों से संकलित, आवश्यक अवतरणों से युक्त, शुद्ध एवं प्रामाणिक कोष का नितान्त अभाव बना ही रहा। इस अभाव की पूर्ति के लिये मैंने मेरे उक्त विचार को कार्य-रूप में परिणत करने का दृढ संकल्प किया और तदनुसार शीघ्र ही प्रयत्न भी शुरु कर दिया गया, जिसका फल प्रस्तुत कोष के रूप में चौदह वर्षों के कठोर परिश्रम के पश्चात् आज पाठकों के सामने उपस्थित है।

प्रस्तुत कोष की तय्यारी में जो अनेक कठिनाइयाँ मुझे झेलनी पड़ी हैं उनमें सर्व-प्रथम प्राकृत के शुद्ध - पुस्तकों के विषय में थी। प्राकृत का विशाल साहित्य-भण्डार विविध-विषयक ग्रंथ-रत्नों से पूर्ण होने पर भी आजतक वह यथेष्ट रूप मे प्रकाशित हो नहीं हुआ है। और, हस्त-लिखित पुस्तकें तो बहुधा अज्ञान लेखकों के हाथ से लिखो जानेके कारण प्राय: अशुद्ध ही हुआ करती है; परन्तु आजतक जो प्राकृत की पुस्तकें प्रकाशित हुई है वे भी, न्यूनाधिक परिमाण में, अशुद्धिओं से खाली नही है। अलबत, यूरोप की और इस देश की कुछ पुस्तकें ऐसी उत्तम पद्धति से छपी हुई है कि जिनमें अशुद्धियाँ बहूत हो कम है, और जो कुछ रह भो गई हैं वे उनमें टिप्पनी में दिये हुए अन्य प्रतिओं के पाटान्तरों से सुधारी जा सकती है। परन्तु दुर्भाग्य से ऐसे संस्करणों की संख्या बहूत ही अल्प—नगण्य है। सचमुच, यह बड़े खेद की बात है कि भारतीय और खास कर हमारे जैन विद्वान प्राचीन पुस्तकों के संशोधन में अधिक हस्त-लिखित पुस्तकों का उपयोग करने की और उनके भिन्न भिन्न पाठों को टिप्पनी के आकार में उद्धृत करने की तकलीफ ही नही उठाते। इसका नतीजा यह होता है कि संशोधक की बुद्धि में जो पाठ शुद्ध मालूम होता है वही एक, फिर चाहे वह वास्तव में अशुद्ध ही क्यों न हो, पाठकों को देखने को मिलता है। प्राकृत के इतर मुद्रित ग्रन्थों की तो यह दुर्दशा है ही, परन्तु जैनों के पवित्रतम और अति प्राचीन आगम-ग्रन्थों की भी यही अवस्था है। कई वर्षो के पहले **मुर्शिदाबाद** के प्रसिद्ध धन-कुबेर राय **धनपतिसिंहजी** बहादूर ने अनेक आगम-ग्रन्थ भिन्न भिन्न स्थानों में भिन्न भिन्न संशोधकों से संपादित करा कर छपवाये थे जिनमें अधिकांश अज्ञान संशोधकों से सम्पादित होनेके कारण खूब ही अशुद्ध छपे थे। किन्तु अभी कुछ हो वर्ष हुए हमारी **आगमोदय-समिति** ने अच्छा फंड एकत्रित करके भी जो आगमों के ग्रन्थ छपवाये है वे कागज, छपाई, सफाई आदि बाह्य शरीर की सजावट में सुन्दर होने पर भी शुद्धता के विषय में बहुधा पूर्वोक्त संस्करणों की पुनरावृत्ति ही है। क्योंकि, न किसी में आदर्श-पुस्तकों के पाठान्तर देने का परिश्रम किया गया है, न मूल और टीका के प्राकृत शब्दों की संगति की और ध्यान दिया गया है, और न तो प्रथम संस्करण की साधारण अशुद्धियाँ सुधारने की यथोचित कोशिश ही की गई है। क्या ही अच्छा हो, यदि श्री**आगमोदय-समिति** के कार्य-कर्ताओं का ध्यान इस तथ्य की और आकृष्ट हो और वे प्राकृत के विशेषज्ञ और परिश्रमी विद्वानों से संपादित करा कर समस्त (प्रकाशित और अप्रकाशित) आगम-ग्रन्थों का एक शुद्ध (Critical) संस्करण प्रकाशित करें, जिसकी अनिवार्य आवश्यकता है।

---

* जैसे अइ-तिक्ख-रोस, अइ-दुक्ख-धम्म, अइ-तिव्व-कम्म-विगम, अकुसल-जोग-णिरोह, अचियंते(?)उर-पर-घर-प्पवेस, अजिम्म(?)कंत-णयण, अजस-सय-विसप्पमाण-हियय, अजहण्णुको(?)स-पएसिय आदि। इन शब्दों का इनके अवयवों की अपेक्षा कुछ भी विशेष अर्थ नहीं है।

† देखो अअगर, अखंडणाणरज्ज, अगोरसव्वय, अचिंतगुणसमुदय, अज्झत्तबिंदु, अज्झत्तमयपरिक्खा, अज्झत्थबिंदु, अज्झत्थमयपरिक्खा, अभ(?)त्थओगसाहणजुत्त, अणेगंतजयपडागा प्रभृति शब्दों के रेफरेंस।

इस तरह हस्त-लिखित और मुद्रित प्राकृत-ग्रन्थ प्रायः अशुद्ध होने के कारण आवश्यकतानुसार एकाधिक हस्त-लिखित पुस्तकों का, अन्य ग्रन्थों में उद्धृत उन्हीं पाठों का और भिन्न भिन्न संस्करणों का सावधानी से निरीक्षण करके उनमें से शुद्ध प्राकृत शब्दों का तथा एक ही शब्द के भिन्न भिन्न परन्तु शुद्ध रूपों का ही यहाँ ग्रहण किया गया है और अशुद्ध शब्द या रूप छोड़ दिये गये हैं। और, जिस ग्रन्थ की एक ही हस्त-लिखित प्रति अथवा एक ही मुद्रित संस्करण पाया गया है उसमें रही हुई अशुद्धिओं का भी संशोधन यथामति किया गया है, और संशोधित शब्दों को ही इस कोष में स्थान दिया गया है। साधारण स्थलों को छोड़ कर खास खास स्थानों में ऐसी अशुद्धिओं का उल्लेख भी उन पाठों को उद्धृत करके किया गया है, जिससे विद्वान पाठक को मैंने की हुई शुद्धि की योग्यता या अयोग्यता पर विचार करने की सुविधा हो। इस प्रकार जैसे मूल प्राकृत शब्दों की अशुद्धिओं के संशोधन में पूरी सावधानी रक्खी गई है वैसे ही आधुनिक विद्वानों की की हुई छाया (संस्कृत प्रतिशब्द) और अर्थ की भूलों को सुधारने की भी पूरी कोशिश की गई है। सारांश यह कि इस कोष को सर्वाङ्ग-शुद्ध बनाने में संपूर्ण ध्यान दिया गया है। मुझे यह जानकर संतोष हुआ है कि मेरे इस प्रयत्न की कदर भी प्रोफेसर **ल्योमेन** जैसे प्राकृत के सुप्रसिद्ध जर्मन विद्वान् तकने की है *।

दूसरी मुख्य कठिनाई अर्थ-व्यय के बारे में थी। मेरी आर्थिक अवस्था ऐसी नहीं थी कि इस महान् ग्रन्थ की तय्यारी के लिये पुस्तकादि आवश्यक साधनों के और सहायक मनुष्यों के वेतन-खर्च के अतिरिक्त प्रकाशन का भार भी वहन कर सकूँ। और, मुफ्त में किसी से आर्थिक सहायता लेना मैं पसन्द नहीं करता था। इससे इस कठिनाई को दूर करने के लिये अग्रिम ग्राहक बनाने की योजना की गई, जिसमें उन अग्रिम ग्राहकों को हर पचीस रूपये में इस संपूर्ण ग्रन्थ की एक कॉपी देने को व्यवस्था थी। इससे मेरी उक्त कठिनाई संपूर्ण तो नहीं, किन्तु बहुत-कुछ कम हो गई। इस योजना को इतने दूरतक सफल बनाने का अधिक श्रेयः कलकत्ता के जैन श्वेताम्बर-श्रीसंघ के अग्रगण्य नेता श्रीमान् **शेठ नरोत्तमभाई जेठाभाई** को है, जिन्होंने शुरु से ही इसकी संरक्षकता का भार अपने पर लेते हुए मुझे हर तरह से इस कार्य में सहायता की है, जिसके लिये मैं उनका चिर-कृतज्ञ हूँ। इसी तरह **अहमदाबाद**-निवासी श्रद्धेय श्रीयुत **केशवलाल-भाई प्रेमचन्द मोदी** बी. ए., एलूएल्. बी. का भी मैं बहूत ही उपकृत हूँ कि जिन्होंने कई मुद्रित पुस्तकों में दी हुई प्राकृत शब्द-सूचिओं पर से एकत्रित किया हुआ एक बड़ा शब्द-संग्रह मुझे दिया था; इतना ही नहीं, बल्कि समय समय पर प्राकृत की अनेक हस्त-लिखित तथा मुद्रित पुस्तकों का जोगाड़ कर दिया था, और उक्त योजना में ग्राहक-संख्या बढ़ा देने का हार्दिक प्रयत्न किया था। प्रातःस्मरणीय, पूज्यपाद, गुरुवर्य मुनिराज **श्रीअमोविजयजी** महाराज, पूज्य जैनाचार्य **श्रीविजयमोहन सूरिजी**, जं. यु. भट्टारक **श्रीजिनचारित्रसूरिजी** तथा स्वतन्त्र-सम्पादक विद्वद्वर्य श्रीयुत **अम्बिकाप्रसादजी वाजपेयी** का भी मैं हृदय से उपकार मानता हूँ कि जिनकी प्रेरणा से अग्रिम ग्राहकों की वृद्धि द्वारा मुझे इस कार्य में सहायता मिली है। उन महानुभावों को, जिनके शुभ नाम इसी ग्रन्थ में अन्यत्र दी हुई अग्रिम-ग्राहक-सूची में प्रकाशित किये गये है, अनेकानेक धन्यवाद हैं कि जिन्होंने यथाशक्ति अल्पाधिक संख्या में इस पुस्तक की कॉपियाँ खरीद कर मेरा यह कार्य सरल कर दिया है। यहाँ पर मेरे मित्र श्रीयुत **शेठ गिरधरलाल त्रिकमलाल** और श्रीमान् बाबू **डालचंदजी सिंघी** के नाम विशेष उल्लेखनीय है। इन दोनों महाशयों ने अपनी अपनी शक्ति के अनुसार यथेष्ट संख्या में इस कोष की कॉपियाँ खरीदने के अतिरिक्त मुझे इस कार्य के लिये समय समय पर विना सूद ऋण देने की भी कृपा की थी। यह कहने में कोई अत्युक्ति नहीं है कि यदि उक्त सब महानुभावों की यह सहायता मुझे प्राप्त न हुई होती तो इस कोष का प्रकाशन मेरे लिए मुश्किल ही नहीं, असंभव था।

यहाँ इस बात का भी उल्लेख करना उचित जान पड़ता है कि आज से करीब दश वर्ष पहले मेरे सहाध्यापक श्रद्धेय प्रोफेसर **मुरलीधर बेनर्जी** एम्. ए. महाशय ने और मैंने मिलकर एक प्रस्ताव विशिष्ट पद्धति का प्राकृत-इंग्लिश कोष तैयार करने के लिए **कलकत्ता-विश्वविद्यालय** में उपस्थित किया था, परन्तु उस समय वह अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दिया गया था। इसके कई वर्ष बाद जब मेरे इस प्राकृत-हिन्दी कोष का प्रथम भाग प्रकाशित

---

* देखो अन्यत्र उद्धृत किये हुए इस ग्रन्थ-विषयक अभिप्रायों में रोयल एसियाटिक सोसाईटी के जर्नल में प्रकाशित प्रो. ल्युमेन का अभिप्राय।

प्राचीन काल की जिन भारतीय भाषाओं के आदर्श संरक्षित हैं—जिन भाषाओं ने साहित्य में स्थान पाया है, उनके नाम ये हैं—वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, पाली, अशोक लिपि तथा उसके बाद की लिपि की भाषा और प्राकृत भाषा-समूह। इनमें प्रथम की दो भाषाएँ कभी जन-साधारण की कथ्य भाषा न थीं, केवल लेख्य—साहित्यिक भाषा—ही थीं। अवशिष्ट भाषाएँ कथ्य और लेख्य उभय रूप में प्रचलित थीं। इस समय ये समस्त भाषाएँ कथ्य रूप से व्यवहृत नहीं होती, इसी कारण ये मृत भाषा (dead languages) कहलाती है। उक्त वैदिक आदि सब भाषाएँ आर्य भाषा के अन्तर्गत हैं और इन्ही प्राचीन आर्य भाषाओं में से कइएक क्रमशः रूपान्तरित होकर आधुनिक समस्त आर्य भाषाएँ उत्पन्न हुई है।

ये प्राचीन आर्य भाषाएँ कौन युग में किस रूप में परिवर्तित होकर क्रमशः आधुनिक कथ्य भाषाओं में परिणत हुई, इसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जाता है।

प्राचीन भारतीय आर्य भाषाओं का परिणति-क्रम।

वेद-भाषा और लौकिक संस्कृत।

सर ज्योर्ज ग्रियर्सन ने अपनी लिंग्विस्टिक सर्वे ओफ इंडिया (Linguistic survey of India) नामक पुस्तक में भारतवर्षीय समस्त आर्य भाषाओं के परिणाम का जो क्रम दिखाया है उसके अनुसार वैदिक भाषा उक्त साहित्य-भाषाओं में सर्व-प्राचीन है। इसका समय अनेक विद्वानों के मत में ख्रिस्ताब्द-पूर्व दो हजार वर्ष (2000 B. C.) और प्रो. मेक्समूलर के मत में ख्रिस्ताब्द-पूर्व बारह सौ वर्ष (1200 B. C.) है। यह वेद-भाषा क्रमशः परिमार्जित होती हुई ब्राह्मण, उपनिषद् और यास्क के निरुक्त की भाषा में और बाद में पाणिनि-प्रभृति के व्याकरण-द्वारा नियन्त्रित होकर लौकिक संस्कृत में परिणत हुई है। पाणिनि-आदि के पद-प्रभृति के नियम-रूप संस्कारों को प्राप्त करने के कारण यह संस्कृत कहलाई। मुख्य रूप से 'संस्कृत' शब्द का प्रयोग इसी भाषा के अर्थ में किया जाता है। यह संस्कृत भाषा वैदिक भाषा से उत्पन्न होने से और उसके साथ घनिष्ठ संबन्ध रखने से वेद-भाषा के अर्थ में भी 'संस्कृत' शब्द बाद के समय से प्रयुक्त होने लग गया है। पाणिनि के बाद संस्कृत भाषा का कोई परिवर्तन नही हुआ है। यह परिवर्तन होने में—वेद-भाषा को लौकिक संस्कृत के रूप में परिणत होने में—प्रायः डेढ़ हजार वर्ष लगे हैं। पाणिनि का समय गोल्डस्टुकर के मत में ख्रिस्ताब्द-पूर्व सप्तम शताब्दी और बोथलिंक के मत में ख्रिस्ताब्द-पूर्व चतुर्थ शताब्दी है।

वेद और वैदिक सभ्यता

यहाँ पर इस बात का उल्लेख करना आवश्यक है कि डो. होर्नलि और सर ग्रियर्सन के मन्तव्य के अनुसार आर्य लोगों के दो दल भिन्न २ समय में भारतवर्ष में आये थे *। पहले आर्यों के एक दल ने यहाँ आकर मध्यदेश में अपने उपनिवेश की स्थापना की थी। इसके कई सौ वर्षों के बाद आर्यों के दूसरे दल ने भारत में प्रवेश कर प्रथम

---

* आर्य लोगों के आदिम वास-स्थान के विषय में आधुनिक विद्वानों में गहरा मत-भेद है। कोई स्कान्डीनेविया को, कोई जर्मनी को, कोई पोलान्ड को, कोई हंगरी को, कोई दक्षिण रशिया को, कोई मध्य एशिया को आर्यों की आदिम निवास-भूमि मानते हैं तो कोई २ पंजाब और काश्मीर को ही इनका प्रथम वसति-स्थान बतलाते हैं। किन्तु अधिकांश विद्वान भाषा-तत्त्व के द्वारा इस सिद्धान्त पर उपनीत हुए हैं कि युरोपीय और पूर्वदेशीय आर्यों में प्रथम विच्छेद हुआ। पीछे पूर्वदेश के आर्य लोग मेसेपोटेमिया और ईरान में एक साथ रहे और एक ही देव-देवी की उपासना करते थे। उसके बाद वे भी विच्छिन्न होकर एक दल फारस में गया और अन्य दल ने अफगानिस्थान के बीच होकर भारतवर्ष में प्रवेश और निवास किया। परन्तु जैन और हिन्दू शास्त्रों के अनुसार भारतवर्ष ही चिरकाल से आर्यों का आदिम निवास-स्थान है। कोई २ आधुनिक विद्वान ने पुरातत्त्व की नूतन खोज के आधार पर भारतवर्ष से ही कुछ आर्य लोगों का ईरान आदि देशों में गमन और विस्तार-लाभ सिद्ध किया है, जिससे उक्त शास्त्रीय प्राचीन मत का समर्थन होता है।

दल के आर्यों को मध्यदेश की चारों ओर भगा कर उनके स्थान को अपने अधिकार में किया और मध्यदेश को ही अपना वास-स्थान कायम किया। उक्त विद्वानों को यह मन्तव्य इसलिए करना पड़ा है कि मध्यदेश के चारों पार्श्वों में स्थित पंजाब, सिन्ध, गूजरात, राजपूताना, महाराष्ट्र, अयोध्या, बिहार, बंगाल और उडीसा प्रदेशों की आधुनिक आर्य कथ्य भाषाओं में परस्पर जो निकटता देखी जाती है तथा मध्यदेश की आधुनिक हिन्दी भाषा [पाश्चात्य हिन्दी] के साथ उन सब प्रान्तों की भाषाओं में जो भेद पाया जाता है, उस निकटता और भेद का अन्य कोई कारण दिखाना असंभव है। मध्यदेशवासी इस दूसरे दल के आर्यों का उस समय का जो साहित्य और जो सभ्यता थी उन्हीं के क्रमशः नाम हैं वेद और वैदिक सभ्यता।

प्राकृत-भाषाओं का प्रथम स्तर। (खिस्त-पूर्व २००० से खिस्त-पूर्व ६००)

उक्त वेद-भाषा प्राचीन होने पर भी वह वैदिक युग में जन-साधारण की कथ्य भाषा न थी, ऋषि-लोगों की साहित्य-भाषा थी। उस समय जन-साधारण में वैदिक भाषा के अनुरूप अनेक प्रादेशिक भाषायें (dialects) कथ्य रूप से प्रचलित थीं। इन प्रादेशिक भाषाओं में से एक ने परिमार्जित होकर वैदिक साहित्य में स्थान पाया है। ऊपर वैदिक युग से पूर्व काल में आये हुए प्रथम दल के जिन आर्यों के मध्यदेश के चारों तरफ के प्रदेशों में उपनिवेशों का उल्लेख किया गया है उन्होंने वैदिक युग अथवा उसके पूर्व-काल मे अपने २ प्रदेशों की कथ्य भाषाओं में, दूसरे दल के आर्यों की वेद-रचना की तरह, किसी साहित्य की रचना नहीं की थी। इससे उन प्रादेशिक आर्य भाषाओं का तात्कालिक साहित्य में कोई निदर्शन न रहने से उनके प्राचीन रूपों का संपूर्ण लोप हो गया है। वैदिक काल की और इसके पूर्व की उन समस्त कथ्य भाषाओं को सर ग्रियर्सन ने प्राथमिक प्राकृत (Primary Prakrits) नाम दिया है। यही प्राकृत भाषा-समूह का प्रथम स्तर (First stage) है। इसका समय खिस्त-पूर्व २००० से खिस्त-पूर्व ६०० तक का निर्दिष्ट किया गया है। प्रथम स्तर की ये समस्त प्राकृत भाषायें स्वर और व्यञ्जन आदि के उच्चारण में तथा विभक्तिओं के प्रयोग में वैदिक भाषा के अनुरूप थीं। इससे ये भाषायें विभक्ति-बहुल (synthetic) कही जाती हैं।

प्राकृत-भाषाओं का द्वितीय स्तर। (खिस्त-पूर्व ६०० से खिस्ताब्द ६००)

वैदिक युग मे जो प्रादेशिक प्राकृत भाषायें कथ्य रूप से प्रचलित थीं, उनमें परवर्ति-काल में अनेक परिवर्तन हुए, जिनमें ऋ, ॠ आदि स्वरों का, शब्दों के अन्तिम व्यञ्जनो का, सयुक्त व्यञ्जनों का तथा विभक्ति और वचन-समूह का लोप या रूपान्तर मुख्य है। इन परिवर्तनों से ये कथ्य भाषायें प्रचुर परिमाण में रूपान्तरित हुईं। इस तरह द्वितीय स्तर (second stage) की प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति हुई। द्वितीय स्तर की ये भाषायें जैन और बौद्ध धर्म के प्रचार के समय से अर्थात् खिस्त-पूर्व षष्ठ शताब्दी से लेकर खिस्तीय नवम या दशम शताब्दी पर्यन्त प्रचलित रहीं। भगवान महावीर और बुद्धदेव के समय ये समस्त प्रादेशिक प्राकृत भाषायें, अपने द्वितीय स्तर के आकार में, भिन्न २ प्रदेश में कथ्य भाषा के तौर पर व्यवहृत होती थीं। उन्होंने अपने सिद्धान्तों का उपदेश इन्हीं कथ्य प्राकृत भाषाओं में से एक में दिया था। इतना ही नहीं, बलिक बुद्धदेव ने अपना उपदेश संस्कृत भाषा में न लिखकर कथ्य प्राकृत भाषा में ही लिखने के लिए अपने शिष्यों को आदेश किया था। इस तरह प्राकृत भाषाओं का क्रमशः साहित्य की भाषाओं में परिणत होने का सूत्रपात हुआ, जिसके फल-स्वरूप पश्चिम मगध और सूरसेन देश के मध्यवर्ती प्रदेश में प्रचलित कथ्य भाषा से जैनों के धर्म-पुस्तकों की अर्धमागधी भाषा और पूर्व मगध में प्रचलित लोक-भाषा से बौद्ध धर्म-ग्रन्थों की पाली भाषा उत्पन्न हुई। पाली भाषा के उत्पत्ति-स्थान के संबन्ध में पाश्चात्य विद्वानों का जो मत-भेद है उसका विचार हम आगे जा कर करेंगे। खिस्ताब्द से २५० वर्ष पहले सम्राट् अशोक ने बुद्धदेव के उपदेशों को भिन्न २ प्रदेशों में वहाँ २ की विभिन्न प्रादेशिक प्राकृत भाषाओं में खुदवाये। इन अशोक शिलालेखों में द्वितीय स्तर की प्राकृत

भाषाओं के असंदिग्ध सर्व-प्राचीन निदर्शन संरक्षित है। द्वितीय स्तर के मध्य भाग में—प्रायः ख्रिस्तीय पंचम शताब्दी के पूर्व में—भिन्न २ प्रदेशों की अपभ्रंश भाषाओं की उत्पत्ति हुई। इस स्तर की भाषाओं में चतुर्थी विभक्ति का, सब विभक्तिओं के द्विवचनों का और आख्यात की अधिकांश विभक्तिओं का लोप होने पर भी विभक्तिओं का प्रयोग अधिक मात्रा में विद्यमान था। इससे इस स्तर की भाषायें भी विभक्ति-बहुल कही जाती है।

सर ग्रियर्सन ने यह सिद्धान्त किया है कि आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की उत्पत्ति द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं से, खास कर उसके शेष भाग में प्रचलित विविध अपभ्रंश-भाषाओं से हुई है और आधुनिक भाषाओं को 'तृतीय स्तर की प्राकृत (Tertiary Prakrits)' कह कर निर्देश किया है। इन भाषाओं की उत्पत्ति का समय ख्रिस्तीय दशम शताब्दी है। इनका साधारण लक्षण यह है कि इनमें अधिकांश विभक्तिओं का लोप हुआ है, एवं भाषाओं की प्रकृति विभक्ति-बहुल न होकर विभक्तिओं के बोधक स्वतन्त्र शब्दों का व्यवहार हुआ है। इससे ये विश्लेषणशील भाषायें (Analytical Languages) कही जाती हैं।

प्राकृत भाषाओं का तृतीय स्तर या आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की उत्पत्ति। (खिस्ताब्द ९००)

जिस प्रादेशिक अपभ्रंश से जिस आधुनिक भारतीय आर्य भाषा की उत्पत्ति हुई है उसका विवरण आगे 'अपभ्रंश' शीर्षक में दिया जायगा।

द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं का इतिहास।

प्रस्तुत कोष में द्वितीय स्तर की साहित्यिक प्राकृत भाषाओं के शब्दों को ही स्थान दिया गया है। इससे इन भाषाओं की उत्पत्ति और परिणति के संबन्ध में यहाँ पर कुछ विस्तार से विवेचन करना आवश्यक है।

साधारणतः लोगों की यही धारणा है कि संस्कृत भाषा से ही द्वितीय स्तर की समस्त प्राकृत भाषायें और आधुनिक भारतीय भाषायें उत्पन्न हुई है। कई प्राकृत-वैयाकरणों ने भी अपने प्राकृत-व्याकरणों में इसी मत का समर्थन किया है। परन्तु यह मत कहाँ तक सत्य है, इसका विचार करने के पहले इन भाषाओं के भेदों को जानने की जरूरत है।

प्राकृत का संस्कृत-सापेक्ष विभाग।

प्राकृत वैयाकरणों ने प्राकृत भाषाओं के शब्द, संस्कृत शब्दों के सादृश्य और पार्थक्य के अनुसार, इन तीन भागों में विभक्त किये हैं:—(१) तत्सम, (२) तद्भव और (३) देश्य या देशी।

(१) जो शब्द संस्कृत और प्राकृत में बिलकुल एक रूप हैं उनको 'तत्सम' या 'संस्कृतसम' कहते हैं, जैसे—अञ्जलि, आगम, इच्छा, ईहा, उत्तम, ऊढा, एरंड, ओङ्कार, किङ्कर, खञ्ज, गण, घण्टा, चित्त, छल, जल, झङ्कार, टङ्कार, डिम्भ, ढक्का, तिमिर, दल, धवल, नीर, परिमल, फल, बहु, भार, मरण, रस, लव, वारि, सुन्दर, हरि, गच्छन्ति, हरन्ति प्रभृति।

(२) जो शब्द संस्कृत से वर्ण-लोप, वर्णागम अथवा वर्ण-परिवर्तन के द्वारा उत्पन्न हुए हैं वे 'तद्भव' अथवा 'संस्कृतभव' कहलाते हैं, जैसे—अग्र=अग्ग, आर्य=आरिअ, इष्ट=इट्ठ, ईर्ष्या=ईसा, उद्गम=उग्गम, कृष्ण=कसण, खर्जूर=खज्जूर, गज=गअ, धर्म=धम्म, चक्र=चक्क, क्षोभ=छोह, यक्ष=जक्ख, ध्यान=झाण, दंश=डंस, नाथ=णाह, त्रिदश=तिअस, दृष्ट=दिट्ठ, धार्मिक=धम्मिअ, पश्चात्=पच्छा, स्पर्श=फंस, बदर=बोर, भार्या=भारिआ, मेघ=मेह, अरण्य=रण्ण, लेश=लेस, शेष=सेस, हृदय=हिअअ, भवति=हवइ, पिबति=पिअइ, पृच्छति=पुच्छइ, अकार्षीत्=अकासी, भविष्यति=होहिइ इत्यादि।

(३) जिन शब्दों का संस्कृत के साथ कुछ भी सादृश्य नहीं है—कोई भी संबन्ध नहीं है, उनको 'देश्य' या 'देशी' बोला जाता है; यथा—अगय (दैत्य), आकासिय (पर्याप्त), इराव, (हस्ती), ईस (कीलक),

उअचित्त (अपगत), ऊसअ (उपधान), एलविल (धनाढ्य, वृषभ), ओंडल (धम्मिल्ल), कंदोट्ट (कुमुद), खुड्डिअ (सुरत), गयसाउल (विरक्त), घढ (स्तूप), चउक्कर (कार्तिकेय), छंकुई (कपिकच्छू), जच्च (पुरुष), झडप्प (शीघ्र), टंका (जङ्घा), डाल (शाखा), ढंढर (पिशाच, ईर्ष्या), णिव्विरडिअ (त्रुटित), तोमरी (लता), थमिअ (विस्मृत), दाणि (शुल्क), धयण (गृह), निक्खुत्त (निश्चित), पणिआ (करोटिका), फुटा (केश-बन्ध), बिट्ट (पुत्र), भुंड (शूकर), मड्डा (बलात्कार), रत्ति (आज्ञा), लंच (कुक्कुट), विच्छड्ड (समूह), सयराह (शीघ्र), हुत्त (अभिमुख), उअ (पश्य), खुप्पइ (निमज्जति), छिवइ (स्पृशति), देक्खइ, निअच्छइ (पश्यति), चुक्कइ (भ्रश्यति), चोप्पडइ (म्रक्षति), अहिपच्चुअइ (गृह्णाति) प्रभृति।

उपर्युक्त विभाग प्राकृत के साथ संस्कृत के सादृश्य और पार्थक्य के ऊपर निर्भर करता है। इसके सिवा संस्कृत और प्राकृत के प्राचीन ग्रन्थकारों ने प्राकृत भाषाओं का और एक विभाग किया है जो प्राकृत भाषाओं के उत्पत्ति-स्थानों से संबन्ध रखता है। यह भौगोलिक विभाग (Geographical Classification) कहा जा सकता है।

प्राकृत भाषाओं का भौगोलिक विभाग।

भरत-प्रणीत कहे जाते नाट्य-शास्त्र में, * सात भाषाओं के जो मागधी, अवन्तिजा, प्राच्या, सूरसेनी, अर्धमागधी, वाह्लीका और दाक्षिणात्या ये नाम हैं, चण्ड के प्राकृत-व्याकरण मे जो † पैशाचिकी और ‡ मागधिका ये नाम मिलते हैं, दण्डी ने काव्यादर्श में जो § महाराष्ट्राश्रया, शौरसेनी, गौडी और लाटी ये नाम दिये है, आचार्य हेमचन्द्र आदि ने मागधी, शौरसेनी, पैशाची और चूलिकापैशाचिक कह कर जिन नामों का निर्देश किया है और मार्कण्डेय ने अपने प्राकृतसर्वस्व में प्राकृतचन्द्रिका के × कतिपय श्लोंको को उद्धृत कर महाराष्ट्री, आवन्ती, शौरसेनी, अर्धमागधी, वाह्लीकी, मागधी, प्राच्या और दाक्षिणात्या इन आठ भाषाओं के, छह विभाषाओं में द्राविड और ओढ्रज इन दो विभाषाओ के, ग्यारह पिशाच-भाषाओं में काञ्चीदेशीय, पाण्ड्य, पाञ्चाल, गौड, मागध, व्राचड, दाक्षिणात्य, शौरसेन, कैकय और द्राविड इन दश पिशाच-भाषाओं के और सताईस अपभ्रंशों में व्राचड, लाट, वैदर्भ, वार्बर, आवन्त्य, पाञ्चाल, टाक, मालव, कैकय, गौड, उड्र, हैव, पाण्ड्य, कौन्तल, सिंहल, कालिङ्ग, प्राच्य, कार्णाट, काञ्च, द्राविड, गौर्जर, आभीर और मध्यदेशीय इन तेईस अपभ्रंशों के जिन नामों का उल्लेख किया है वे उस भिन्न २ देश से ही संबन्ध रखते हैं जहाँ २ वह २ भाषा उत्पन्न हुई है। षड्भाषाचन्द्रिका के कर्ता ने ÷ 'शूरसेन देश में उत्पन्न भाषा शौरसेनी कही जाती है, मगध देश में उत्पन्न भाषा को मागधी कहते हैं और पिशाच-देशो की भाषा पैशाची और चूलिकापैशाची है' यह लिखते हुए यही बात अधिक स्पष्ट रूप में कही है।

---

* "मागध्यवन्तिजा प्राच्या सूरसेन्यर्धमागधी।
वाह्लीका दाक्षिणात्या च सप्त भाषाः प्रकीर्तिताः॥" (नाट्यशास्त्र १७, ४८)।

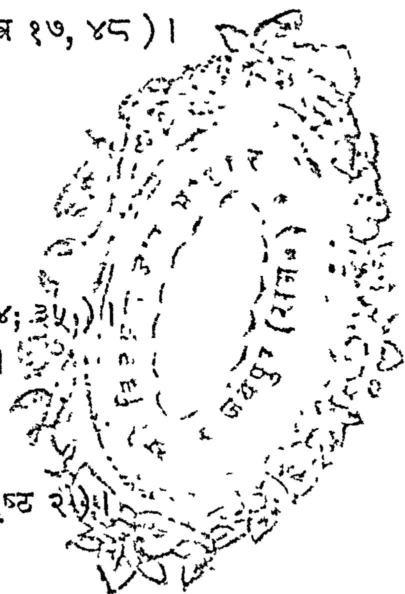
† "पैशाचिक्या रणयोर्लनौ" (प्राकृतलक्षण ३, ३८)।

‡ "मागधिकायां रसयोर्लशौ" (प्राकृतलक्षण ३, ३९)।

§ "महाराष्ट्राश्रयां भाषां प्रकृष्टं प्राकृतं विदुः।
सागरः सूक्तिरत्नाना सेतुबन्धादि यन्मयम्॥
शौरसेनी च गौडी च लाटी चान्या च तादृशी।
याति प्राकृतमित्येवं व्यवहारेषु सन्निधिम्॥" (काव्यादर्श १, ३४; ३५)।

× ये श्लोक 'पैशाची' और 'अपभ्रंश' के प्रकरण में दिये गये है।

÷ "शूरसेनोद्भवा भाषा शौरसेनीति गीयते।
मगधोत्पन्नभाषा ता मागधीं संप्रचक्षते।
पिशाचदेशनियतं पैशाचीद्वितयं भवेत्॥" (षड्भाषाचन्द्रिका, पृष्ठ २)।



प्राकृत वैयाकरणों के मत से तत्सम आदि शब्दों की प्रकृति।

पूर्व में प्राकृत भाषाओं के शब्दों के जो तीन प्रकार दिखाये हैं उनमें प्रथम प्रकार के तत्सम शब्द संस्कृत से ही सब देशों के प्राकृतों में लिये गये हैं; दूसरे प्रकार के तद्भव शब्द संस्कृत से उत्पन्न होने पर भी काल-क्रम से भिन्न २ देश में भिन्न २ रूप को प्राप्त हुए हैं और तीसरे प्रकार के देश्य शब्द वैदिक अथवा लौकिक संस्कृत से उत्पन्न नहीं हुए हैं, किन्तु भिन्न २ देश में प्रचलित भाषाओं से गृहीत हुए हैं। प्राकृत वैयाकरणों का यही मत है।

देश्य शब्द।

मूल

पहले प्राकृत भाषाओं का जो भौगोलिक विभाग बताया गया है, ये तृतीय प्रकार के देशीशब्द उसी भौगोलिक विभाग से उत्पन्न हुए हैं। वैदिक और लौकिक संस्कृत भाषा पंजाब और मध्यदेश में प्रचलित वैदिक काल की प्राकृत भाषा से उत्पन्न हुई है। पंजाब और मध्यदेश के बाहर के अन्य प्रदेशों में उस समय आर्य लोगों की जो प्रादेशिक प्राकृत भाषायें प्रचलित थीं उन्हीं से ये देशीशब्द गृहीत हुए हैं। यही कारण है कि वैदिक और संस्कृत साहित्य में देशीशब्दों के अनुरूप कोई शब्द (प्रतिशब्द) नहीं पाया जाता है।

प्राचीन काल में भिन्न भिन्न प्रादेशिक प्राकृत भाषाये हयात थीं, इस बात का प्रमाण व्यास के महाभारत, भरत के नाट्यशास्त्र और वात्स्यायन के कामसूत्र आदि प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में और जैनों के ज्ञाताधर्मकथा, विपाकश्रुत, औपपातिकसूत्र तथा राजप्रश्नीय आदि प्राचीन प्राकृत ग्रन्थो में भी मिलता है*। इन ग्रन्थों में 'नानाभाषा', 'देशभाषा' या 'देशीभाषा' शब्द का प्रयोग प्रादेशिक प्राकृत के अर्थ में ही किया गया है। चंड ने अपने प्राकृत व्याकरण में जहाँ † देशीप्रसिद्ध प्राकृत का उल्लेख किया है वहाँ भी देशी शब्द का अर्थ देशीभाषा ही है। ये सब देशी या प्रादेशिक भाषाएँ भिन्न भिन्न प्रदेशों के निवासी आर्य लोगों की ही कथ्य भाषायें थीं। इन भाषाओं का पंजाब और मध्यदेश की कथ्य भाषा के साथ अनेक अंशों में जैसे सादृश्य था वैसे किसी किसी अंश में भेद भी था। जिस जिस अंश में इन भाषाओं का पंजाब और मध्यदेश की प्राकृत भाषा के साथ भेद था उसमें से जिन भिन्न भिन्न नामों ने और धातुओं ने प्राकृत-साहित्य में स्थान पाया है वे ही हैं प्राकृत के देशी वा देश्य शब्द।

---

* "नानाचर्मभिराच्छन्ना नानाभाषाश्च भारत। कुशला देशभाषासु जल्पन्तोऽन्योन्यमीश्वराः" (महाभारत, शल्यपर्व ४६, १०३)।

"अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि देशभाषाविकल्पनम्।"

"अथवा च्छन्दतः कार्या देशभाषा प्रयोक्तृभिः" (नाट्यशास्त्र १७, २४; ४६)।

"नात्यन्त संस्कृतेनैव नात्यन्तं देशभाषया। कथा गोष्ठीषु कथयंल्लोके बहुमतो भवेत्" (कामसूत्र १,४,५०)।

"तते णं से मेहे कुमारे. ....अट्ठारसविहिप्पगारदेसीभासाविसारए......होत्था"; "तत्थ णं चंपाए नयरीए देवदत्ता नाम गणिया परिवसइ अड्ढा .. अट्ठारसदेसीभासाविसारया" (ज्ञाताधर्मकथासूत्र, पत्र ३८; ६२)।

"तत्थ णं वाणियगामे कामज्झया णामं गणिया होत्था......अट्ठारसदेसीभासाविसारया" (विपाकश्रुत, पत्र २१-२२)।

"तए णं से दढपइण्णे दारए......अट्ठारसदेसीभासाविसारए" (औपपातिक सूत्र, पेरा १०९)।

"तए णं से दढपतिण्णे दारए......अट्ठारसविहदेसिप्पगारभासाविसारए" (राजप्रश्नीयसूत्र, पत्र १४८)।

† "सिद्धं प्रसिद्धं प्राकृतं त्रेधा त्रिप्रकारं भवति—संस्कृतयोनि . ...,संस्कृतसमं......,देशीप्रसिद्धं तच्चेदं हर्षित—ल्हसिअ" (प्राकृतलक्षण पृष्ठ १-२)।

प्राकृत-वैयाकरणों ने इन समस्त देश्य शब्दों में अनेक नाम और धातुओं को संस्कृत नामों के और धातुओं के स्थान में आदेश-द्वारा सिद्ध करके तद्भव-विभाग में अन्तर्गत किये हैं *। यही कारण है कि आचार्य हेमचन्द्र ने अपनी देशीनाममाला में केवल देशी नामों का ही संग्रह किया है और देशी धातुओं का अपने प्राकृत-व्याकरण में संस्कृत धातुओं के आदेश-रूप में उल्लेख किया है; यद्यपि आचार्य हेमचन्द्र के पूर्ववर्ती कई वैयाकरणो ने इनकी गणना देशी धातुओं में ही की है †। ये सब नाम और धातु संस्कृत के नाम और धातुओं के आदेश-रूप में निष्पन्न करने पर भी तद्भव नहीं कहे जा सकते, क्योंकि संस्कृत के साथ इनका कुछ भी सादृश्य नहीं है।

कोई-कोई पाश्चात्य भाषातत्त्वज्ञ का यह मत है कि उक्त देशी शब्द और धातु भिन्न भिन्न देशों की द्राविड, मुण्डा आदि अनार्य भाषाओं से लिये गये हैं। यहाँ पर यह कहा जा सकता है कि यदि आधुनिक अनार्य भाषाओं में इन देशी-शब्दों और देशी-धातुओं का प्रयोग उपलब्ध हो तो यह अनुमान करना असंगत नहीं है। किन्तु जबतक यह प्रमाणित न हो कि 'ये देशी शब्द और धातु वर्तमान अनार्य भाषाओं में प्रचलित हैं', तबतक 'ये देशी शब्द और धातु प्रादेशिक आर्य भाषाओं से ही गृहीत हुए हैं' यह कहना ही अधिक संगत प्रतीत होता है। इन अनार्य भाषाओं में दोएक देश्य शब्द और धातु प्रचलित होने पर भी 'वे अनार्य भाषाओं से ही प्राकृत भाषाओं में लिये गये हैं' यह अनुमान न कर 'प्राकृत भाषाओं से ही वे देश्य शब्द और धातु अनार्य भाषाओं में गये हैं' यह अनुमान किया जा सकता है। हाँ, जहाँ ऐसा अनुमान करना असंभव हो वहाँ हम यह स्वीकार करने के लिए वाध्य होंगे कि 'ये देश्य शब्द और धातु अनार्य भाषाओं से ही प्राकृत में लिये गये हैं'; क्योंकि आर्य और अनार्य ये उभय जातियाँ जब एक स्थान में मिश्रित हो गई हैं तब कोई कोई अनार्य शब्द और धातु का आर्य भाषाओं में प्रवेश करना असंभव नहीं है।

डो. केल्डवेल (Caldwell) प्रभृति के मत में वैदिक और लौकिक संस्कृत में भी अनेक शब्द द्राविडीय भाषाओं से गृहीत हुए है। यह बात भी संदिग्ध ही है, क्योंकि द्राविडीय भाषा के जिस साहित्य में ये सब शब्द पाये जाते हैं वह वैदिक संस्कृत के साहित्य से प्राचीन नहीं है। इससे 'वैदिक साहित्य में ये सब शब्द द्राविडीय भाषा से गृहीत हुए हैं' इस अनुमान की अपेक्षा 'आर्य लोगों की भाषा से ही अनार्यों की भाषा में ये सब शब्द लिये गये है' यह अनुमान ही विशेष ठीक मालूम पड़ता है।

जिन प्रादेशिक देशी-भाषाओं से ये सब देशी शब्द प्राकृत-साहित्य में गृहीत हुए हैं वे पूर्वोक्त प्रथम स्तर की प्राकृत भाषाओं के अन्तर्गत और उनकी समसामयिक हैं। खिस्त-पूर्व षष्ठ शताब्दी के पहले ये सब देशीभाषायें प्रचलित थीं, इससे ये देश्य शब्द अर्वाचीन नहीं, किन्तु उतने ही प्राचीन हैं जितने कि वैदिक शब्द।

समय।

द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति—वैदिक या लौकिक संस्कृत से नहीं, किन्तु प्रथम स्तर की प्राकृतों से।

प्राकृत के वैयाकरण-गण प्राकृत शब्द की व्युत्पत्ति में प्रकृति शब्द का अर्थ संस्कृत करते हुए प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति लौकिक संस्कृत से मानते हैं। संस्कृत के कई अलंकार-शास्त्रों के टीकाकारों ने

---

* देखो हेमचन्द्र-प्राकृत-व्याकरण के द्वितीय पाद के १२७, १२९, १३४, १३६, १३८, १४१, १७४ वगेरः सूत्र और चतुर्थ पाद के २, ३, ४, ५, १०, ११, १२ प्रभृति सूत्र।

† "एते चान्यैर्देशीषु पठिता अपि अस्माभिर्धात्वादेशीकृताः" (हे० प्रा० ४, २) अर्थात् अन्य विद्वानों ने वज्जर, पज्जर, उप्पाल प्रभृति धातुओं का पाठ देशी में किया है, तो भी हमने संस्कृत धातु के आदेश-रूप से ही ये यहीं बताये है।

भी तद्भव और तत्सम शब्दों में स्थित 'तत्' शब्द का संबन्ध संस्कृत से लगाकर इसी मत का अनुसरण किया है *। कतिपय प्राकृत-व्याकरणों में प्राकृत शब्द की व्युत्पत्ति इस तरह की गई है :—

"प्रकृतिः संस्कृतं, तत्र भवं तत आगतं वा प्राकृतम्" (हेमचन्द्र प्रा० व्या०)।

"प्रकृतिः संस्कृत तत्र भवं प्राकृतमुच्यते" (प्राकृतसर्वस्व)।

"प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवत्वात् प्राकृतं स्मृतम्" (प्राकृतचन्द्रिका)।

"प्रकृतेः सस्कृतायास्तु विकृतिः प्राकृती मता" (षड्भाषाचन्द्रिका)।

"प्राकृतस्य तु सर्वमेव संस्कृतं योनिः" (प्राकृतसंजीवनी)।

इन व्युत्पत्तिओं का तात्पर्य यह है कि प्राकृत शब्द 'प्रकृति' शब्द से बना है, 'प्रकृति' का अर्थ है संस्कृत भाषा, संस्कृत भाषा से जो उत्पन्न हुई है वह है प्राकृत भाषा।

प्राकृत वैयाकरणों की प्राकृत शब्द की यह व्याख्या अप्रामाणिक और अव्यापक ही नहीं है, भाषा-तत्त्व से असंगत भी है। अप्रामाणिक इस लिए कही जा सकती है कि प्रकृति शब्द का मुख्य अर्थ संस्कृत भाषा कभी नहीं होता—संस्कृत के किसी कोष में प्राकृत शब्द का यह अर्थ उपलब्ध नहीं है † और गौण या लाक्षणिक अर्थ तबतक नहीं लिया जाता जबतक मुख्य अर्थ में बाध न हो। यहाँ प्रकृति शब्द के मुख्य अर्थ स्वभाव अथवा ‡ जन-साधारण लेने में किसी तरह का बाध भी नहीं है। इससे उक्त व्युत्पत्ति के स्थान में "प्रकृत्या स्वभावेन सिद्धं प्राकृतम्" अथवा "प्रकृतीनां साधारणजनानामिदं प्राकृतम्" यही व्युत्पत्ति संगत और प्रामाणिक हो सकती है। अव्यापक कहने का कारण यह है कि प्राकृत के पूर्वोक्त तीन प्रकारों में तत्सम और तद्भव शब्दों की ही प्रकृति उन्होंने संस्कृत मानी है, तीसरे प्रकार के देश्य शब्दों की नहीं, अथच देश्य को भी प्राकृत कहा है। इससे देश्य प्राकृत में वह व्युत्पत्ति लागू नहीं होती। प्राकृत की संस्कृत से उत्पत्ति भाषा-तत्त्व के सिद्धान्त से भी संगति नहीं रखती, क्योंकि § वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत ये दोनों ही साहित्य की मार्जित भाषायें हैं। इन दोनों भाषाओं का व्यवहार शिक्षा की अपेक्षा रखता है। अशिक्षित, अज्ञ और बालक लोग किसी काल में साहित्य की भाषा का न तो स्वयं व्यवहार कर सकते हैं और न समझ ही पाते हैं। इस लिए समस्त देशों में सर्वदा ही अशिक्षित लोगों के व्यवहार के लिए एक कथ्य भाषा चालू रहती है जो साहित्य की भाषा से स्वतन्त्र—अलग—होती है। शिक्षित लोगों को भी अशिक्षित लोगों के साथ बातचीत के प्रसङ्ग में इस कथ्य भाषा का ही व्यवहार करना पड़ता है। वैदिक समय में भी ऐसी कथ्य भाषा प्रचलित थी। और, जिस समय लौकिक संस्कृत भाषा प्रचलित हुई उस समय भी साधारण लोगों की स्वतन्त्र कथ्य भाषा विद्यमान थी, यह नाटक आदि में संस्कृत भाषा के साथ प्राकृत-भाषी पात्रों के उल्लेख से प्रमाणित होता है।

पाणिनि ने संस्कृत भाषा को जो लौकिक भाषा कही है और पतञ्जलि ने इसको जो शिष्ट-भाषा का नाम दिया है, उसका मतलब यह नहीं है कि उस समय प्राकृत भाषा थी ही नहीं, परन्तु उसका अर्थ

---

* "प्रकृतेः संस्कृतादागतं प्राकृतम्" वाग्भटालंकारटीका २, २। "संस्कृतरूपायाः प्रकृतेरुत्पन्नत्वात् प्राकृतम्" काव्यादर्श की प्रेमचन्द्रतर्कवागीश-कृत टीका १, ३३।

† "प्रकृतिर्योनिशिल्पिनोः। पौरामात्यादिलिङ्गेषु गुणसाम्यस्वभावयोः। प्रत्ययात् पूर्विकायां च" (अनेकार्थसंग्रह ८७६-७)।

‡ "स्वाम्यमात्यः सुहृत्कोशो राष्ट्रदुर्गबलानि च।
राज्याङ्गानि प्रकृतयः पौराणां श्रेणयोऽपि च॥" (अभिधानचिन्तामणि ३, ३७८)।
"यत् कात्यः—अमात्याद्याश्च पौराश्च सद्भिः प्रकृतयः स्मृताः" (अ०चि० ३, ३७८ की टीका)।

§ कोई कोई आधुनिक विद्वान प्राकृत भाषा की उत्पत्ति वैदिक संस्कृत से मानते हैं, देखो पाली-प्रकाश का प्रवेशक पृष्ठ ३४-३६।

यह है कि उस समय के शिक्षित लोगों के आपस के वार्तालाप में, वर्तमान काल के पण्डित लोगों में संस्कृत की तरह, और भिन्नदेशीय लोगों के साथ के व्यवहार में Lingua Franca की माफिक संस्कृत भाषा व्यवहृत होती थी। किन्तु बालक, स्त्रियाँ और अशिक्षित लोग अपनी मातृ-भाषा में बातचीत करते थे जो संस्कृत-भिन्न साधारण कथ्य भाषा थी। साधारण कथ्य भाषा किसी देश में किसी काल में साहित्य की भाषा से गृहीत नहीं होती, बल्कि साहित्य-भाषा ही जन-साधारण की कथ्य भाषा से उत्पन्न होती है। इसलिए 'संस्कृत से प्राकृत भाषा की उत्पत्ति हुई है' इसकी अपेक्षा 'क्या तो वैदिक संस्कृत और क्या लौकिक संस्कृत, दोनों ही उस उस समय की प्राकृत भाषाओं से उत्पन्न हुई हैं' यही सिद्धान्त विशेष युक्ति-संगत है। आजकल के भाषा-तत्त्वज्ञों में इसी सिद्धान्त का अधिक आदर देखा जाता है। यह सिद्धान्त पाश्चात्य विद्वानों का कोई नूतन आविष्कार नहीं है, भारतवर्ष के ही प्राचीन भाषातत्त्वज्ञों में भी यह मत प्रचलित था यह निम्नोद्धृत कतिपय प्राचीन ग्रन्थों के अवतरणों से स्पष्ट प्रतीत होता है। रुद्रट-कृत काव्यालङ्कार के एक * श्लोक की व्याख्या में खिस्त की ग्यारहवीं शताब्दी के जैन विद्वान नमिसाधु ने लिखा है कि :—

"प्राकृतेति। सकलजगज्जन्तूना व्याकरणादिभिरनाहितसंस्कारः सहजो वचन-व्यापारः प्रकृतिः, तत्र भवं सैव वा प्राकृतम्। 'आरिसवयणे सिद्धं देवाणं अद्धमागहा वाणी' इत्यादिवचनाद् वा प्राक् पूर्वं कृतं प्राक्कृतं बाल-महिलादि-सुबोधं सकलभाषानिबन्धनभूतं वचनमुच्यते। मेघनिर्मुक्तजलमिवैकस्वरूपं तदेव च देशविशेषात् संस्कारकरणाच्च समासादित-विशेषं सत् संस्कृताद्युत्तरविभेदानाप्नोति। अतएव शास्त्रकृता प्राकृतमादौ निर्दिष्टं तदनु संस्कृतादीनि। पाणिन्यादि-व्याकरणोदितशब्दलक्षणेन संस्करणात् संस्कृतमुच्यते।"

इस व्याख्या का तात्पर्य यह है कि—'प्रकृति शब्द का अर्थ है लोगों का व्याकरण आदि के संस्कारों से रहित स्वाभाविक वचन-व्यापार, उससे उत्पन्न अथवा वही है प्राकृत। अथवा, 'प्राक् कृत' पर से प्राकृत शब्द बना है, 'प्राक् कृत' का अर्थ है 'पहले किया गया'। बारह अंग-ग्रन्थों में ग्यारह अंग ग्रन्थ पहले किये गये हैं और इन ग्यारह अङ्ग-ग्रन्थों की भाषा आर्ष-वचन में—सूत्र में—अर्धमागधी कही गई है ‡ जो बालक, महिला आदि को सुबोध—सहज-गम्य—है § और जो सकल भाषाओं का मूल है। यह अर्धमागधी भाषा ही प्राकृत है। यही प्राकृत, मेघ-मुक्त जल की तरह, पहले एक रूप वाला होने पर भी, देश-भेद से और संस्कार करने से भिन्नता को प्राप्त करता हुआ संस्कृत आदि अवान्तर विभेदों में परिणत हुआ है अर्थात् अर्धमागधी प्राकृत से संस्कृत और अन्यान्य प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति हुई है। इसी कारण से मूल ग्रन्थकार (रुद्रट) ने प्राकृत का पहले और संस्कृत

---

* "प्राकृतसंस्कृतमागधपिशाचभाषाश्च शौरसेनी च।
षष्ठोऽत्र भूरिभेदो देशविशेषादपभ्रंशः॥" (काव्यालंकार २, १२)।

‡ बारहवाँ अङ्ग-ग्रन्थ, जिसका नाम दृष्टिवाद है और जिसमें चौदह पूर्व (प्रकरण) थे, संस्कृत भाषा में था। यह बहुत काल से लुप्त हो गया है। यद्यपि इसके विषयों का संक्षिप्त वर्णन समवायाङ्ग सूत्र में है।

"चतुर्दशापि पूर्वाणि संस्कृतानि पुराऽभवन् ॥११४॥
प्रज्ञातिशयसाध्यानि तान्युच्छिन्नानि कालतः। अधुनैकादशाङ्ग्यस्ति सुधर्मस्वामिभाषिता ॥ ११५ ॥
बालस्त्रीमूढमूर्खादिजनानुग्रहणाय सः। प्राकृतां तामिहाकार्षीत्" (प्रभावकचरित्र, पृ० ९८-९९)।

§ "मुत्तूण दिट्ठिवायं कालियउक्कालियंगसिद्धंतं। थीबालवायणत्थं पाययमुइयं जिणवरेहिं॥"
(आचारदिनकर में उद्धृत प्राचीन गाथा)।

"बालस्त्रीमन्दमूर्खाणां नृणां चारित्रकाङ्क्षिणाम्। अनुग्रहार्थं तत्त्वज्ञैः सिद्धान्तः प्राकृतः कृतः॥"
(दशवैकालिक टीका पत्र १०० में हरिभद्रसूरि ने और काव्यानुशासन की टीका (पृ० १) में आचार्य हेमचन्द्र ने उद्धृत किया हुआ प्राचीन श्लोक)।

१२। प्राकृत में पञ्चमी के एकवचन में देवा, वच्छा, जिणा आदि रूप होते हैं; वैदिक साहित्य में भी इसी तरह के उच्चा, नीचा, पश्चा प्रभृति उपलब्ध होते है।

१३। प्राकृत में द्विवचन के स्थान में बहुवचन ही होता है; वैदिक भाषा में भी इस तरह के अनेकों प्रयोग मौजुद हैं, यथा—'इन्द्रावरुणौ' के स्थान में 'इन्द्रावरुणा', 'मित्त्रावरुणौ' की जगह 'मित्त्रावरुणा', 'यौ सुरथौ रथितमौ दिविस्पृशावश्विनौ' के बदले 'या सुरथा रथीतमा दिविस्पृशा अश्विना', 'नरौ हे' के स्थल में 'नरा हे' आदि।

इस तरह अनेक युक्ति और प्रमाणों से यह साबित होता है कि प्राकृत की उत्पत्ति वैदिक अथवा लौकिक संस्कृत से नहीं, किन्तु वैदिक संस्कृत की उत्पत्ति जिस प्रथम स्तर की प्रादेशिक प्राकृत भाषा से पूर्व में कही गई है उसीसे हुई है। इससे यहाँ पर इस बात का उल्लेख करना आवश्यक है कि संस्कृत के अनेक आलंकारिकों ने और प्राकृत के प्रायः समस्त वैयाकरणों ने 'तत्' शब्द से संस्कृत को लेकर 'तद्भव' शब्द का जो व्यवहार 'संस्कृतभव' अर्थ में किया है वह किसी तरह संगत नहीं हो सकता। इसलिए वहाँ 'तत्' शब्द से संस्कृत के स्थान में वैदिक काल के प्राकृत का ग्रहण कर 'तद्भव' शब्द का प्रयोग 'वैदिक काल के प्राकृत से जो शब्द संस्कृत में लिया गया है उससे उत्पन्न' इसी अर्थ में करना चाहिए। संस्कृत शब्द और प्राकृत तद्भव शब्द इन दोनों का साधारण मूल वैदिक काल का प्राकृत अर्थात् पूर्वोक्त प्राथमिक प्राकृत या प्रथम स्तर का प्राकृत है। इससे जहाँ पर 'तद्भव' शब्द का सैद्धान्तिक अर्थ 'संस्कृतभव' नहीं, किन्तु 'वैदिक काल के प्राकृत से उत्पन्न' यही समझना चाहिए।

द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं का उत्पत्ति-क्रम और उनके प्रधान भेद।

जब उपर्युक्त कथन के अनुसार वैदिक तथा लौकिक संस्कृत और समस्त प्राकृत भाषाओं का मूल एक ही है और वैदिक तथा लौकिक संस्कृत द्वितीय स्तर की सभी प्राकृत भाषाओं से प्राचीन है, तब यह कहने की कोई आवश्यकता नहीं है कि द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं के उत्पत्ति-क्रम का निर्णय एकमात्र उसी सादृश्य के तारतम्य पर निर्भर करता है जो उभय संस्कृत और प्राकृत तद्भव शब्दों में पाया जाता है। जिस प्राकृत भाषा के तद्भव शब्दों का वैदिक और लौकिक संस्कृत के साथ जितना अधिक सादृश्य होगा वह उतनी ही प्राचीन और जिसके तद्भव शब्दों का उभय संस्कृत के साथ जितना अधिक भेद होगा वह उतनी ही अर्वाचीन मानी जा सकती है, क्योंकि अधिक भेद के उत्पन्न होने में समय भी अधिक लगता है यह निर्विवाद है।

द्वितीय स्तर की जिन प्राकृत भाषाओं ने साहित्य में अथवा शिलालेखों में स्थान पाया है उनके शब्दों की वैदिक और लौकिक संस्कृत के साथ, उपर्युक्त पद्धति से तुलना करने पर, जो भेद (पार्थक्य) देखने में आते हैं उनके अनुसार द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं के निम्नोक्त प्रधान भेद (प्रकार) होते हैं जो क्रम से इन तीन मुख्य काल-विभागों में बाँटे जा सकते हैं;—(१) प्रथम युग—खिस्त-पूर्व चारसौ से ले कर खिस्त के बाद एक सौ वर्ष तक (400 B. C to 100 A. D.); (२) मध्ययुग—खिस्त के बाद एक सौ से पाँच सौ वर्ष तक (100 A. D. to 500 A. D.); (३) शेष युग—खिस्तीय पाँच सौ से एक हजार वर्ष तक (500 A. D to 1000 A. D.)।

प्रथम युग (खिस्त-पूर्व ४०० से खिस्त के बाद १००)।

(क) हीनयान बौद्धों के त्रिपिटक, महावंश और जातक-प्रभृति ग्रन्थों की पाली भाषा।
(ख) पैशाची और चूलिकापैशाची।

(ग) जैन अंग-ग्रन्थों की अर्धमागधी भाषा।
(घ) अंग-ग्रन्थ-भिन्न प्राचीन सूत्रों की और पउम-चरिअ आदि प्राचीन ग्रन्थों की जैन महाराष्ट्री भाषा।
(ङ) अशोक-शिलालेखों की एवं परवर्ति-काल के प्राचीन शिलालेखों की भाषा।
(च) अश्वघोष के नाटकों की भाषा।

मध्ययुग (खिस्तीय १०० से ५००)।

(क) त्रिवेन्द्रम से प्रकाशित भास-रचित कहे जाते नाटकों की और बाद के कालिदास-प्रभृति के नाटकों की शौरसेनी, मागधी और महाराष्ट्री भाषायें।
(ख) सेतुवन्ध, गाथासप्तशती आदि काव्यों की महाराष्ट्री भाषा।
(ग) प्राकृत व्याकरणों में जिनके लक्षण और उदाहरण पाये जाते हैं वे महाराष्ट्री, शौरसेनी, मागधी, पैशाची, चूलिकापैशाची भाषायें।
(घ) दिगम्बर जैन ग्रन्थों की शौरसेनी और परवर्ति-काल के श्वेताम्बर ग्रन्थों की जैन महाराष्ट्री भाषा।
(ङ) चंड के व्याकरण में निर्दिष्ट और विक्रमोर्वशी में प्रयुक्त अपभ्रंश भाषा।

शेष युग (खिस्तीय ५०० से १००० वर्ष)।

भिन्न भिन्न प्रदेशों की परवर्ती काल की अपभ्रंश भाषायें।

अव इन तीन युगों में विभक्त प्रत्येक भाषा का लक्षण और विशेष विवरण, उक्त क्रम के अनुसार (१) पालि (२) पैशाची (३) चूलिकापैशाची (४) अर्धमागधी (५) जैन महाराष्ट्री (६) अशोक-लिपि (७) शौरसेनी (८) मागधी (९) महाराष्ट्री (१०) अपभ्रंश इन शीर्षकों में क्रमशः दिया जाता है।

———ooo———

(१) पालि।

निर्देश और व्युत्पत्ति।

हीनयान बौद्धों के धर्म-ग्रन्थों की भाषा को पालि कहते हैं। कई विद्वानों का अनुमान है कि पालि शब्द 'पङ्क्ति' पर से बना है *। 'पङ्क्ति' शब्द का अर्थ है 'श्रेणी' §। प्राचीन बौद्ध लेखक अपने ग्रन्थ में धर्म-शास्त्र की वचन-पङ्क्ति को उद्धृत करते समय इसी पालि शब्द का प्रयोग करते थे, इससे बाद के समय में बौद्ध धर्म-शास्त्रों की भाषा का ही नाम पालि हुआ। अन्य विद्वानों का मत है कि पालि शब्द 'पङ्क्ति' पर से नहीं, परन्तु 'पल्लि' पर से हुआ है। 'पल्लि' शब्द असल में संस्कृत नहीं, परन्तु प्राकृत है, यद्यपि अन्य अनेक प्राकृत शब्दों की तरह यह भी पीछे से संस्कृत में लिया गया है। पल्लि शब्द जैनों के प्राचीन अंग-ग्रन्थों में भी पाया जाता है ÷। 'पल्लि' शब्द का अर्थ है ग्राम या गाँव। 'पालि' का अर्थ गावों में बोली जाती भाषा—ग्राम्य भाषा—होता है। 'पङ्क्ति' पर से 'पालि' होने की कल्पना जितनी क्लेश-साध्य है 'पल्लि' पर से 'पालि' होना उतना ही सहज-बोध्य है। इससे हमें पिछला मत ही अधिक संगत मालूम होता है। 'पालि' केवल ग्रामों की ही भाषा थी, इससे उसका यह

---

* "पङ्क्ति=पंक्ति=पंति=पन्ति=पंटि=पंलि=पल्लि=पालि; अथवा पङ्क्ति=पन्ति=पट्टि=पल्लि=पालि" (पालिप्रकाश, प्रवेशक, पृष्ठ ९)।

§ "सेतुस्सिं तन्तिपन्तीसु नालियं पालि कथ्यते" (अभिधानप्रदीपिका ९९६)।

÷ देखो विपाकश्रुत पत्र ३८, ३९)।

* वाग्भट तथा † केशवमिश्र ने क्रम से भूत और पिशाच-प्रभृति पात्रों के लिए और ‡ षड्भाषा-चन्द्रिकाकार ने राक्षस, पिशाच और नीच पात्रों के लिए इसका विनियोग बतलाया है।

विनियोग।

षड्भाषाचन्द्रिकाकार पिशाच-देशों की भाषा को ही पैशाची कहते हैं और पिशाच-देशों के निर्देश के लिए नीचे के श्लोकों को उद्धृत करते हैं :—

उत्पत्ति-स्थान।

"§ पाण्ड्यकेकयवाह्लीकसह्यनेपालकुन्तलाः।
सुधेष्णभोजगान्धारहैवकन्नोजनास्तथा।
एते पिशाचदेशाः स्युः"

मार्कण्डेय ने अपने प्राकृतसर्वस्व में प्राकृतचन्द्रिका के

"काञ्चीदेशीयपाण्ड्ये च पाञ्चालं गौड-मागधम्।
व्राचड दाक्षिणात्यं च शौरसेनं च कैकयम्॥
शावरं द्राविड चैव एकादश पिशाचजाः।"

इस वचन को उद्धृत कर ग्यारह प्रकार की पैशाची का उल्लेख किया है; परन्तु बाद में इस मत का खण्डन करके सिद्धान्त रूप से इन तीन प्रकार की पैशाची का ग्रहण किया है; यथा—"कैकयं शौरसेनं च पाञ्चालमिति च त्रिधा पैशाच्यः"।

लक्ष्मीधर और मार्कण्डेय ने जिन प्राचीन वचनों का उल्लेख किया है उनमें पाण्ड्य, काञ्ची और कैकय आदि प्रदेश एक दूसरे से अतिदूरवर्ती प्रान्तों में अवस्थित हैं। इतने दूरवर्ती प्रदेश एकदेशीय भाषा के उत्पत्ति-स्थान कैसे हो सकते हैं? यदि पैशाची भाषा किसी प्रदेश की भाषा न हो कर भिन्न भिन्न प्रदेशों में रहने वाली किसी जाति-विशेष की भाषा हो तो इसका संभव इस तरह हो भी सकता है कि पूर्वकाल में किसी एक देश-विशेष में रहने वाली पिशाच-प्राय मनुष्य-जाति बाद में भिन्न भिन्न देशों में फैलती हुई वहाँ अपनी भाषा को ले गई हो। मार्कण्डेय-निर्दिष्ट तीन प्रकार की पैशाची परस्पर संनिहित प्रदेशों की भाषा है, इससे खूब ही संभव है कि यह पहले केकय देश में उत्पन्न हुई हो और बाद में उसीके समीपस्थ शूरसेन और पञ्जाब तक फैल गई हो। मार्कण्डेय ने शौरसेन-पैशाची और पाञ्चाल-पैशाची की प्रकृति जो कैकय-पैशाची कही है इसका मतलब भी यही हो सकता है। सर् ग्रियर्सन के मत में पिशाच-भाषा-भाषी लोगों का आदिम वास-स्थान उत्तर-पश्चिम पञ्जाब अथवा अफगानिस्थान का प्रान्त प्रदेश है, और बाद में वहाँ से ही संभवतः इसका अन्य देशों में विस्तार हुआ है। किन्तु डो. होर्नलि का इस विषय में और ही मत है। उनका कहना यह है कि अनार्य जाति के लोग आर्य-जाति की भाषा का जिस विकृत रूप में उच्चारण करते थे वही पैशाची भाषा है, अर्थात् इनके मत से पैशाची भाषा न तो किसी देश-विशेष की भाषा है और न वह वास्तव में भिन्न भाषा ही है। हमें सर ग्रियर्सन का मत ही प्रामाणिक प्रतीत होता है जो मार्कण्डेय के मत के साथ अनेकांश में मिलता-जुलता है।

---

* "यद् भूतैरुच्यते किञ्चित् तद्भौतिकमिति स्मृतम्" (वाग्भटालङ्कार २, ३)। † "पैशाचीं तु पिशाचाद्याः (प्राहुः)" (अलङ्कारशेखर, पृष्ठ ५)। ‡ "रक्षःपिशाचनीचेषु पैशाचीद्वितयं भवेत्॥ ३५॥" (षड्भाषा-चन्द्रिका, पृष्ठ ३)।

§ वर्तमान मदुरा और कन्याकुमारी के आसपास के प्रदेश का नाम पाण्ड्य, पञ्चनद प्रदेश का नाम केकय, अफगानिस्थान के वर्तमान बाल्खनगर वाले प्रदेश का नाम वाह्लीक, दक्षिण भारत के पश्चिम उपकूल का नाम सह्य, नर्मदा के उत्पत्ति-स्थान के निकटवर्ती देश का नाम कुन्तल, वर्तमान काबूल और पेशावर वाले प्रदेश का नाम गान्धार, हिमालय के निम्न-वर्ती पार्वत्य प्रदेश-विशेष का नाम हैव और दक्षिण महाराष्ट्र के पार्वत्य अञ्चल का नाम कन्नोजन है।

वररुचि ने शौरसेनी प्राकृत को ही पैशाची भाषा का मूल कहा है*। मार्कण्डेय ने पैशाची भाषा को कैकय, शौरसेन और पाञ्चाल इन तीन भेदों में विभक्त कर संस्कृत और शौरसेनी उभय को कैकय-पैशाची का और कैकय-पैशाची को शौरसेन-पैशाची का मूल बतलाया है। पाञ्चाल-पैशाची के मूल का उन्होंने निर्देश ही नहीं किया है, किन्तु उन्होंने इसके जो केरी (केलिः) और मदिलं (मन्दिरम्) ये दो उदाहरण दिये हैं इससे मालूम होता है कि इस पाञ्चाल-पैशाची का कैकय-पैशाची से रकार और लकार के व्यत्यय के अतिरिक्त अन्य कोई भेद नहीं है, सुतरां शौरसेन-पैशाची की तरह पाञ्चाल-पैशाची की प्रकृति भी इनके मत से कैकय-पैशाची ही हो सकती हैं। यहाँ पर यह कहना आवश्यक है कि मार्कण्डेय ने शौरसेन-पैशाची के जो §लक्षण दिये हैं उन पर से शौरसेन-पैशाची का शौरसेनी भाषा के साथ कोई भी संबन्ध प्रतीत नहीं होता, क्योंकि कैकय-पैशाची के साथ शौरसेन-पैशाची के जो भेद उन्होंने बतलाये हैं वे मागधी भाषा के ही अनुरूप है, न कि शौरसेनी के। इससे इसको शौरसेन-पैशाची न कह कर मागध-पैशाची कहना ही संगत जान पड़ता है।

प्रकृति।

प्राकृत वैयाकरणों के मत से पैशाची भाषा का मूल शौरसेनी अथवा संस्कृत भाषा है, किन्तु हम पहले यह भलीभान्ति दिखा चुके हैं कि कोई भी प्रादेशिक कथ्य भाषा, संस्कृत अथवा अन्य प्रादेशिक भाषा से उत्पन्न नहीं है, परन्तु वह उसी कथ्य अथवा प्राकृत भाषा से उत्पन्न हुई है जो वैदिक युग में उस प्रदेश में प्रचलित थी। इस लिए पैशाची भाषा का भी मूल संस्कृत या शौरसनी नहीं, किन्तु वह प्राकृत भाषा ही है जो वैदिक युग मे भारतवर्ष के उत्तर-पश्चिम प्रान्त की या अफगानिस्थान के पूर्व-प्रान्त-वर्ती प्रदेश की कथ्य भाषा थी।

समय।

प्रथम युग की पैशाची भाषा का कोई निदर्शन साहित्य में नहीं मिलता है। गुणाढ्य की बृहत्कथा संभवतः इसी प्रथम युग की पैशाची भाषा में रची गई थी; किन्तु वह आजकल उपलब्ध नहीं है। इस समय हम व्याकरण, नाटक और काव्य में पैशाची भाषा के जो निदर्शन पाते हैं वह मध्ययुग की पैशाची भाषा का है। मध्ययुग की यह पैशाची भाषा ख्रिस्त की द्वितीय शताब्दी से पाँचवीं शताब्दी पर्यन्त प्रचलित थी।

लक्षण।

पैशाची भाषा का शौरसेनी भाषा के साथ जिस जिस अंश में भेद है वह सामान्य रूप से नीचे दिया जाता है। इसके सिवा अन्य सभी अंशों में वह शौरसेनी के ही समान है। इससे इसके बाकी के लक्षण शौरसेनी के प्रकरण से जाने जा सकते है।

वर्ण-भेद।

१। ज्ञ, न्य और ण्य के स्थान में ञ्ञ होता है, यथा—प्रज्ञा=पञ्ञा; ज्ञान=ञ्ञान; कन्यका=कञ्ञका; अभिमन्यु=अभिमञ्ञु; पुण्य=पुञ्ञ।

२। ण और न के स्थान में न होता है; जैसे—गुण=गुन; कनक=कनक।

३। त और द की जगह त होता है; जैसे—भगवती=भगवती; शत=सत; मदन=मतन; देव=तेव।

४। लकार ळ में बदलता है यथा—सील=सीळ; कुल=कुळ।

५। टु की जगह टु और तु होता है; जैसे—कुटुम्बक=कुटुम्बक, कुतुम्बक।

६। महाराष्ट्री के लक्षण में असंयुक्त-व्यञ्जन-परिवर्तन के १ से १३, १५ और १६ अंक वाले जो नियम बतलाये गये हैं वे शौरसेनी भाषा में लागू होते हैं, किन्तु पैशाची में नहीं; यथा—लोक=ळोक; शाखा=साखा; भट=भट; मठ=मठ; गरुड=गरुड; प्रतिभास=पतिभास; कनक=कनक; शपथ=सपथ; रेफ=रेफ; शबल=सबळ; यशस्=यस; करणीय=करणीय; अंगार=इंगार; दाह=दाह।

* "प्रकृतिः शौरसेनी" (प्राकृतप्रकाश १०, २)।

§ "रस्य शः", "रस्य लो भवेत्", "चवर्गस्योपरिष्टाद् यः", "कृतादिषु कडादयः", "क्षस्य ञ्छ", "स्थाविकृतेः ष्टस्य स्तः", "त्तत्थयोः श ऊर्ध्वं स्यात्", "अतः सोरो (?रे) त्" (प्राकृतसर्वस्व, पृष्ठ १२६)।

* वाग्भट तथा † केशवमिश्र ने क्रम से भूत और पिशाच-प्रभृति पात्रों के लिए और ‡ षड्भाषा-चन्द्रिकाकार ने राक्षस, पिशाच और नीच पात्रों के लिए इसका विनियोग बतलाया है।

विनियोग।

षड्भाषाचन्द्रिकाकार पिशाच-देशों की भाषा को ही पैशाची कहते हैं और पिशाच-देशों के निर्देश के लिए नीचे के श्लोकों को उद्धृत करते हैं :—

उत्पत्ति-स्थान।

"§ पाण्ड्यकेकयवाह्लीकसह्यनेपालकुन्तलाः।
सुदेष्णभोजगान्धारहैवकन्नोजनास्तथा।
एते पिशाचदेशाः स्युः"

मार्कण्डेय ने अपने प्राकृतसर्वस्व में प्राकृतचन्द्रिका के

"काञ्चीदेशीयपाण्ड्ये च पाञ्चालं गौड-मागधम्।
व्राचडं दाक्षिणात्यं च शौरसेनं च कैकयम्॥
शाबरं द्राविडं चैव एकादश पिशाचजाः।"

इस वचन को उद्धृत कर ग्यारह प्रकार की पैशाची का उल्लेख किया है; परन्तु बाद में इस मत का खण्डन करके सिद्धान्त रूप से इन तीन प्रकार की पैशाची का ग्रहण किया है; यथा—"कैकयं शौरसेनं च पाञ्चालमिति च त्रिधा पैशाच्यः"।

लक्ष्मीधर और मार्कण्डेय ने जिन प्राचीन वचनों का उल्लेख किया है उनमें पाण्ड्य, काञ्ची और कैकय आदि प्रदेश एक दूसरे से अतिदूरवर्ती प्रान्तों में अवस्थित हैं। इतने दूरवर्ती प्रदेश एकदेशीय भाषा के उत्पत्ति-स्थान कैसे हो सकते हैं? यदि पैशाची भाषा किसी प्रदेश की भाषा न हो कर भिन्न भिन्न प्रदेशों में रहने वाली किसी जाति-विशेष की भाषा हो तो इसका संभव इस तरह हो भी सकता है कि पूर्वकाल में किसी एक देश-विशेष में रहने वाली पिशाच-प्राय मनुष्य-जाति बाद में भिन्न भिन्न देशों में फैलती हुई वहाँ अपनी भाषा को ले गई हो। मार्कण्डेय-निर्दिष्ट तीन प्रकार की पैशाची परस्पर संनिहित प्रदेशों की भाषा है; इससे खूब ही संभव है कि यह पहले केकय देश में उत्पन्न हुई हो और बाद में उसीके समीपस्थ शूरसेन और पञ्जाब तक फैल गई हो। मार्कण्डेय ने शौरसेन-पैशाची और पाञ्चाल-पैशाची की प्रकृति जो कैकय-पैशाची कही है इसका मतलब भी यही हो सकता है। सर् ग्रियर्सन के मत में पिशाच-भाषा-भाषी लोगों का आदिम वास-स्थान उत्तर-पश्चिम पञ्जाब अथवा अफगानिस्थान का प्रान्त प्रदेश है, और बाद में वहाँ से ही संभवतः इसका अन्य देशों में विस्तार हुआ है। किन्तु डो. होर्नलि का इस विषय में और ही मत है। उनका कहना यह है कि अनार्य जाति के लोग आर्य-जाति की भाषा का जिस विकृत रूप में उच्चारण करते थे वही पैशाची भाषा है, अर्थात् इनके मत से पैशाची भाषा न तो किसी देश-विशेष की भाषा है और न वह वास्तव में भिन्न भाषा ही है। हमें सर ग्रियर्सन का मत ही प्रामाणिक प्रतीत होता है जो मार्कण्डेय के मत के साथ अनेकांश में मिलता-जुलता है।

---

* "यद् भूतैरुच्यते किञ्चित् तद्भौतिकमिति स्मृतम्" (वाग्भटालङ्कार २, ३)। † "पैशाचीं तु पिशाचाद्याः (प्राहुः)" (अलङ्कारशेखर, पृष्ठ ५)। ‡ "रक्षःपिशाचनीचेषु पैशाचीद्वितयं भवेत्॥ ३५॥" (षड्भाषा-चन्द्रिका, पृष्ठ ३)।

§ वर्तमान मदुरा और कन्याकुमारी के आसपास के प्रदेश का नाम पाण्ड्य, पञ्चनद प्रदेश का नाम केकय, अफगानिस्थान के वर्तमान बाल्खनगर वाले प्रदेश का नाम वाह्लीक, दक्षिण भारत के पश्चिम उपकूल का नाम सह्य, नर्मदा के उत्पत्ति-स्थान के निकटवर्ती देश का नाम कुन्तल, वर्तमान काबूल और पेशावर वाले प्रदेश का नाम गान्धार, हिमालय के निम्न-वर्ती पार्वत्य प्रदेश-विशेष का नाम हैव और दक्षिण महाराष्ट्र के पार्वत्य अञ्चल का नाम कन्नोजन है।

वररुचि ने शौरसेनी प्राकृत को ही पैशाची भाषा का मूल कहा है *। मार्कण्डेय ने पैशाची भाषा को कैकय, शौरसेन और पाञ्चाल इन तीन भेदों में विभक्त कर संस्कृत और शौरसेनी उभय को कैकय-पैशाची का और कैकय-पैशाची को शौरसेन-पैशाची का मूल बतलाया है। पाञ्चाल-पैशाची के मूल का उन्होंने निर्देश ही नहीं किया है, किन्तु उन्होंने इसके जो केरी (केलिः) और मदिलं (मन्दिरम्) ये दो उदाहरण दिये है इससे मालूम होता है कि इस पाञ्चाल-पैशाची का कैकय-पैशाची से रकार और लकार के व्यत्यय के अतिरिक्त अन्य कोई भेद नहीं है, सुतरां शौरसेन-पैशाची की तरह पाञ्चाल-पैशाची की प्रकृति भी इनके मत से कैकय-पैशाची ही हो सकती है। यहाँ पर यह कहना आवश्यक है कि मार्कण्डेय ने शौरसेन-पैशाची के जो § लक्षण दिये है उन पर से शौरसेन-पैशाची का शौरसेनी भाषा के साथ कोई भी संबन्ध प्रतीत नहीं होता, क्योंकि कैकय-पैशाची के साथ शौरसेन-पैशाची के जो भेद उन्होंने बतलाये हैं वे मागधी भाषा के ही अनुरूप है, न कि शौरसेनी के। इससे इसको शौरसेन-पैशाची न कह कर मागध-पैशाची कहना ही संगत जान पड़ता है।

प्रकृति।

प्राकृत वैयाकरणों के मत से पैशाची भाषा का मूल शौरसेनी अथवा संस्कृत भाषा है, किन्तु हम पहले यह भलीभान्ति दिखा चुके हैं कि कोई भी प्रादेशिक कथ्य भाषा, संस्कृत अथवा अन्य प्रादेशिक भाषा से उत्पन्न नहीं है, परन्तु वह उसी कथ्य अथवा प्राकृत भाषा से उत्पन्न हुई है जो वैदिक युग में उस प्रदेश में प्रचलित थी। इस लिए पैशाची भाषा का भी मूल संस्कृत या शौरसनी नहीं, किन्तु वह प्राकृत भाषा ही है जो वैदिक युग में भारतवर्ष के उत्तर-पश्चिम प्रान्त की या अफगानिस्थान के पूर्व-प्रान्त-वर्ती प्रदेश की कथ्य भाषा थी।

समय।

प्रथम युग की पैशाची भाषा का कोई निदर्शन साहित्य में नहीं मिलता है। गुणाढ्य की वृहत्कथा संभवत. इसी प्रथम युग की पैशाची भाषा में रची गई थी; किन्तु वह आजकल उपलब्ध नहीं है। इस समय हम व्याकरण, नाटक और काव्य में पैशाची भाषा के जो निदर्शन पाते हैं वह मध्ययुग की पैशाची भाषा का है। मध्ययुग की यह पैशाची भाषा ख्रिस्त की द्वितीय शताब्दी से पाँचवीं शताब्दी पर्यन्त प्रचलित थी।

लक्षण।

पैशाची भाषा का शौरसेनी भाषा के साथ जिस जिस अंश में भेद है वह सामान्य रूप से नीचे दिया जाता है। इसके सिवा अन्य सभी अंशों में वह शौरसेनी के ही समान है। इससे इसके बाकी के लक्षण शौरसेनी के प्रकरण से जाने जा सकते हैं।

वर्ण-भेद।

१। ज्ञ, न्य और ण्य के स्थान मे ञ्ञ होता है, यथा—प्रज्ञा=पञ्ञा; ज्ञान=ञ्ञान; कन्यका=कञ्ञका; अभिमन्यु=अभिमञ्ञु; पुण्य=पुञ्ञ।

२। ण और न के स्थान में न होता है; जैसे—गुण=गुन; कनक=कनक।

३। त और द की जगह त होता है; जैसे—भगवती=भगवती; शत=सत; मदन=मतन; देव=तेव।

४। लकार ळ में बदलता है यथा—सील=सीळ; कुल=कुळ।

५। टु की जगह टु और तु होता है; जैसे—कुटुम्बक=कुटुम्बक, कुतुम्बक।

६। महाराष्ट्री के लक्षण में असंयुक्त-व्यञ्जन-परिवर्तन के १ से १३, १५ और १६ अंक वाले जो नियम बतलाये गये है वे शौरसेनी भाषा में लागू होते है, किन्तु पैशाची में नहीं; यथा—लोक=ळोक; शाखा=साखा; भट=भट; मठ=मठ; गरुड=गरुड; प्रतिभास=पतिभास; कनक=कनक; शपथ=सपथ; रेफ=रेफ; शवल=सवळ; यशस्=यस; करणीय=करणीय; अंगार=इंगार; दाह=दाह।

---

* "प्रकृतिः शौरसेनी" (प्राकृतप्रकाश १०, २)।

§ "सस्य शः", "रस्य लो भवेत्", "चवर्गस्योपरिष्टाद् यः", "कृतादिषु कडादयः", "त्तस्य च्छ", "स्थाविकृतेः ष्टस्य श्तः", "त्तथयोः श ऊर्ध्वं स्यात्", "अतः सोरो (?रे) त्" (प्राकृतसर्वस्व, पृष्ठ १२६)।

७। यादृश आदि शब्दों का द परिणत होता है ति में; यथा—यादृश=यातिस; सदृश=सतिस।

नाम-विभक्ति।

१। अकारान्त शब्द की पञ्चमी का एकवचन आतो और आतु होता है; जैसे—जिनातो, जिनातु।

आख्यात।

१। शौरसेनी के दि और दे प्रत्ययों की जगह ति और ते होता है; यथा—गच्छति, गच्छते; रमति, रमते।
२। भविष्य-काल में स्सि के बदले एय्य होता है; जैसे—भविष्यति=हुवेय्य।
३। भाव और कर्म में ईअ तथा इज्ज के स्थान में इय्य होता है, यथा—पठ्यते=पठिय्यते, हसिय्यते।

कृदन्त।

१। त्वा प्रत्यय के स्थान में कहीं तून और कहीं त्थून और द्धून होते हैं; यथा पठित्वा=पठितून; गत्वा= गन्तून; नष्ट्वा=नत्थून, नद्धून; तष्ट्वा=तत्थून, तद्धून।

---

(३) चूलिकापैशाची।

चूलिकापैशाची भाषा के लक्षण आचार्य हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत-व्याकरण में और पंडित लक्ष्मीधर ने अपनी षड्भाषाचन्द्रिका में दिये है। आचार्य हेमचन्द्र के कुमारपालचरित और काव्यानुशासन में इस भाषा के निदर्शन पाये जाते है। इनके अतिरिक्त हम्मीर-मदमर्दन-नामक नाटक में और दोएक छोटे २ षड्भाषास्तोत्रों में भी इसके कुछ नमूने देखने में आते है।

निदर्शन।

प्राकृतलक्षण, प्राकृतप्रकाश, संक्षिप्तसार और प्राकृतसर्वस्व वगैरः प्राकृत-व्याकरणों में और संस्कृत के अलंकार-ग्रन्थों में चूलिकापैशाची का कोई उल्लेख नहीं है; अथ च आचार्य हेमचन्द्र ने और पं. लक्ष्मीधर ने चूलिकापैशाची के जो लक्षण दिये हैं वे चंड, वररुचि, क्रमदीश्वर और मार्कण्डेय-प्रभृति वैयाकरणों ने पैशाची भाषा के लक्षणों में ही अन्तर्गत किये है। इससे यह स्पष्ट जाना जाता है कि उक्त वैयाकरण-गण चूलिकापैशाची को पैशाची भाषा के अन्तर्भूत ही मानते थे, स्वतन्त्र भाषा के रूप में नहीं। आचार्य हेमचन्द्र भी अपने अभिधानचिन्तामणि-नामक संस्कृत कोष-ग्रन्थ के "भाषाः षट् संस्कृतादिकाः" (काण्ड २, १९९) इस वचन की "संस्कृतप्राकृतमागधीशौरसेनीपैशाच्यपभ्रंशलक्षणाः" यह व्याख्या करते हुए चूलिकापैशाची का अलग उल्लेख नहीं करते है। इससे मालूम पड़ता है कि वे भी चूलिकापैशाची को पैशाची का ही एक भेद मानते हैं। हमारा भी यही मत है। इससे यहाँ पर इस विषय में पैशाची भाषा के अनन्तरोक्त विवरण से कुछ अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं रहती। सिर्फ, आचार्य हेमचन्द्र ने और उन्हीं का पूरा अनुसरण कर पं. लक्ष्मीधर ने इस भाषा के जो लक्षण दिये हैं वे नीचे उद्धृत किये जाते हैं। इनके सिवा सभी अंशों में इस भाषा का पैशाची से कोई पार्थक्य नहीं है।

पैशाची में इसका अन्तर्भाव।

लक्षण।

१। वर्ग के तृतीय और चतुर्थ अक्षरों के स्थान में क्रमशः प्रथम और द्वितीय होता है*; यथा—नगर= नकर, व्याघ्र=वक्ख, राजा=राचा, निर्झर=निच्छर, तडाग=तटाक, ढक्का=ठक्का; मदन=मतन, मधुर=मथुर, बालक=पालक, भगवती=फकवती।
२। र के स्थान में वैकल्पिक ल होता है, यथा—रुद्र=लुद्द, रुद्द।

---

* अन्य वैयाकरणों के मत से यह नियम शब्द के आदि के अक्षरों में लागू नहीं होता है (हे० प्रा० ४, ३२७)।

(४) अर्धमागधी।

प्राचीन जैन सूत्रों की भाषा अर्धमागधी।

भगवान महावीर अपना धर्मोपदेश अर्धमागधी भाषा में देते थे *। इसी उपदेश के अनुसार उनके समसामयिक गणधर श्रीसुधर्मस्वामी ने अर्धमागधी भाषा में ही आचाराङ्ग-प्रभृति सूत्र-ग्रन्थों की रचना की थी ‡। ये ग्रन्थ उस समय लिखे नहीं गये थे, परन्तु शिष्य-परम्परा से कण्ठ-पाठ द्वारा संरक्षित होते थे। दिगम्बर जैनों के मत से ये समस्त ग्रन्थ विलुप्त हो गये हैं, परन्तु श्वेताम्बर जैन दिगम्बरों के इस मन्तव्य से सहमत नहीं है। श्वेताम्बरों के मत के अनुसार ये सूत्र-ग्रन्थ महावीर-निर्वाण के बाद ९८० अर्थात् ख्रिस्ताब्द ४५४ में वलभी (वर्तमान वळा, काठियावाड) में श्रीदेवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण ने वर्तमान आकार में लिपिबद्ध किये। उस समय लिखे जाने पर भी इन ग्रन्थों की भाषा प्राचीन है। इसका एक कारण यह है कि जैसे ब्राह्मणों ने कण्ठ-पाठ-द्वारा बहु-शताब्दी-पर्यन्त वेदों की रक्षा की थी वैसे ही जैन मुनिओं ने भी अपनी शिष्य-परम्परा से मुख-पाठ-द्वारा करीब एक हजार वर्ष तक अपने इन पवित्र ग्रन्थों को याद रखा था। दूसरा यह है कि जैन धर्म में सूत्र-पाठों के शुद्ध उच्चारण के लिए खूब जोर दिया गया है, यहाँ तक कि मात्रा या अक्षर के भी अशुद्ध या विपरीत उच्चारण करने में दोष माना गया है। तिस पर भी सूत्र-ग्रन्थों की भाषा का सूक्ष्म निरीक्षण करने से इस बात का स्वीकार करना ही पडेगा कि भगवान महावीर के समय की अर्धमागधी भाषा के इन ग्रन्थों में, अज्ञातभाव से ही क्यों न हो, भाषा-विषयक परिवर्तन अवश्य हुआ है। यह परिवर्तन होना असंभव भी नहीं है, क्योंकि ये सूत्र-ग्रन्थ वेदों की तरह शब्द-प्रधान नहीं, किन्तु अर्थ-प्रधान हैं। इतना ही नहीं, बल्कि ये ग्रन्थ जन-साधारण के बोध के लिए ही उस समय की कथ्य भाषा में रचे गये थे § और कथ्य भाषा में समय गुजरने के साथ साथ अवश्य होने वाले परिवर्तन का प्रभाव, कण्ठ-पाठ के रूप में स्थित इन सूत्रों की भाषा पर पड़ना, अन्ततः उस उस समय के लोगों को समझाने के उद्देश्य से भी, आश्चर्यकर नहीं है। इसके सिवा, भाषा-परिवर्तन का यह भी एक मुख्य कारण माना जा सकता है कि भगवान महावीर के निर्वाण से करीब दो सौ वर्ष के बाद (ख्रिस्त-पूर्व ३१०) चन्द्रगुप्त के राजत्व-काल में मगध देश में बारह वर्षों का सुदीर्घ अकाल पड़ने पर साधु लोगों को निर्वाह के लिए समुद्र-तीर-वर्ती प्रदेश (दक्षिण देश) में जाना पड़ा था ÷। उस समय वे सूत्र-ग्रन्थों का परिशीलन न कर सकने के कारण उन्हें भूल से गये थे। इससे अकाल के बाद पाटलिपुत्र में संघ ने एकत्रित होकर जिस जिस साधु को जिस जिस अङ्ग-ग्रन्थ का जो जो अंश जिस जिस आकार में याद रह गया था, उस उस से उस उस अङ्ग-ग्रन्थ के उस उस अंश को उस उस रूप में

---

* "भगवं च णं अद्धमागहीए भासाए धम्ममाइक्खइ" (समवायाङ्ग सूत्र, पत्र ६०)।

"तए णं समणे भगवं महावीरे कूणिअस्स रएणो भिंभिसारपुत्तस्स......अद्धमागहाए भासाए भासइ।..... सा वि य णं अद्धमागहा भासा तेसिं सव्वेसिं आरियमणारियाणं अप्पणो सभासाए परिणामेणं परिणमइ" (औपपातिक सूत्र)।

‡ "अत्थं भासइ अरिहा, सुत्तं गंथंति गणहरा निउणं" (आवश्यकनिर्युक्ति)।

§ "मुत्तूण दिट्ठिवायं कालियउक्कालियंगसिद्धंतं।
थीबालवायणत्थं पाययमुइयं जिणवरेहिं ॥"
(आचारदिनकर में श्रीवर्धमानसूरि ने उद्धृत की हुई प्राचीन गाथा)।

"बालस्त्रीमन्दमूर्खाणां नृणां चारित्रकाङ्क्षिणाम्।
अनुग्रहार्थं तत्त्वज्ञैः सिद्धान्तः प्राकृतः कृतः॥"
(हरिभद्रसूरि की दशवैकालिक टीका में और हेमचन्द्र के काव्यानुशासन में उद्धृत प्राचीन श्लोक)

÷ देखो Annual Report of Asiatic Society, Bengal, 1893 में डो. होर्नेलि का लेख।

प्राप्त कर ग्यारह अङ्ग-ग्रन्थों का संकलन किया *। इस घटना से जैसे अङ्ग-ग्रन्थों की भाषा के परिवर्तन का कारण समझ में आ सकता है, वैसे इन ग्रन्थों की अर्धमागधी भाषा में; मगध के पार्श्ववर्ती प्रदेशों की भाषाओं की तुलना में, दूरवर्ती महाराष्ट्र प्रदेश की भाषा का जो अधिक साम्य देखा जाता है उसके कारण का भी पता चलता है। जब ऐतिहासिक प्रमाणों से यह बात सिद्ध है कि दक्षिण प्रदेश में प्राचीन काल में जैन धर्म का अच्छी तरह प्रचार और प्रभाव हुआ था तब यह अनुमान करना अयुक्त नहीं है कि उक्त दीर्घकालिक अकाल के समय साधु लोग समुद्र-तीर-वर्ती इस दक्षिण देश में ही गये थे और वहाँ उन्होंने उपदेश-द्वारा जैन धर्म का प्रचार किया था। यह कहने की कोई आवश्यकता नहीं है कि उक्त साधुओं को दक्षिण प्रदेश में उस समय जो भाषा प्रचलित थी उसका अच्छी तरह ज्ञान हो गया था, क्योंकि उसके विना उपदेश-द्वारा धर्म-प्रचार का कार्य वे कर ही नहीं सकते थे। इससे यह असंभव नहीं है कि उन साधुओं की इस नव-परिचित भाषा का प्रभाव, उनके कण्ठ-स्थित सूत्रों की भाषा पर भी पड़ा था। इसी प्रभाव को लेकर उनमेंसे कईएक साधु-लोग पाटलिपुत्र के उक्त संमेलन में उपस्थित हुए थे, जिससे अङ्गों के पुन संकलन में उस प्रभाव ने न्यूनाधिक अंश में स्थान पाया था।

उक्त घटना से करीब आठ सौ वर्षों के बाद वलभी (सौराष्ट्र) और मथुरा में जैन ग्रन्थों को लिपि-बद्ध करने के लिए मुनि-संमेलन किये गये थे, क्योंकि इन सूत्र-ग्रन्थों का और उस समय तक अन्य जो जैन ग्रन्थ रचे गये थे उनका भी क्रमशः विस्मरण हो चला था और यदि वही दशा कुछ अधिक समय तक चालू रहती तो समग्र जैन शास्त्रों के लोप हो जाने का डर था जो वास्तव में सत्य था। संभवतः इस समय तक जैन साधुओं का भारतवर्ष के अनेक प्रदेशों में विस्तार हो चुका था और इन समस्त प्रदेशों से अल्पाधिक संख्या में आकर साधु लोगों ने इन संमेलनों में योग-दान किया था। भिन्न भिन्न प्रदेशों से आगत इन मुनिओं से जो ग्रन्थ अथवा ग्रन्थ के अंश जिस रूप में प्राप्त हुआ उसी रूप में वह लिपि-बद्ध किया गया। उक्त मुनिओं के भिन्न भिन्न प्रदेशों में चिर-काल तक विचरने के कारण उन प्रदेशों की भिन्न भिन्न भाषाओं का, उच्चारणों का और विभिन्न प्राकृत भाषाओं के व्याकरणों का कुछ-न-कुछ अलक्षित प्रभाव उनके कण्ठ-स्थित धर्म-ग्रन्थों की भाषा पर भी पड़ना अनिवार्य था। यही कारण है कि अंग-ग्रन्थों में, एक ही अङ्ग-ग्रन्थ के भिन्न भिन्न अंशों में और कहीं कहीं तो एक ही अंग-ग्रन्थ के एक ही वाक्य में परस्पर भाषा-भेद नजर आता है। संभवतः भिन्न भिन्न प्रदेशों की भाषाओं के प्रभाव से युक्त इसी भाषा-भेद को लक्ष्य में लेकर खिस्त की सप्तम शताब्दी के ग्रन्थकार श्रीजिनदासगणि ने अपनी निशीथचूर्णि में अर्धमागधी भाषा का "अट्ठारसदेसीभासानियय वा अद्धमागह" यह वैकल्पिक लक्षण किया है। भाषा-परिवर्तन के उक्त अनेक प्रबल कारण उपस्थित होने पर भी अंग-ग्रन्थों की अर्धमागधी भाषा में, पाटलिपुत्र के संमेलन के बाद से, आमूल वा अधिक परिवर्तन न होकर उसके बदले जो सूक्ष्म या अल्प ही भाषा-भेद हुआ है और सैंकड़ो की तादाद में उसके प्राचीन रूप अपने असल आकार में जो संरक्षित रह सके हैं उसका श्रेयः सूत्रों के अशुद्ध उच्चारण आदि के लिए प्रदर्शित पाप-बन्ध के उस धार्मिक नियम को है जो संभवतः पाटलीपुत्र के संमेलन के बाद निर्मित या दृढ किया गया था।

---

* "इतश्च तस्मिन् दुष्काले कराले कालरात्रिवत् । निर्वाहार्थं साधुसङ्घस्तीरं नीरनिधेर्ययौ ॥ ५५ ॥
अगुण्यमानं तु तदा साधूना विस्मृतं श्रुतम् । अनभ्यसनतो नश्यत्यधीतं धीमतामपि ॥ ५६ ॥
संघोऽथ पाटलीपुत्रे दुष्कालान्तेऽखिलोऽमिलत् । यदङ्गाध्ययनोद्देशाद्यासीद् यस्य तदाददे ॥ ५७ ॥
ततश्चैकादशाङ्गानि श्रीसंघोऽमेलयत् तदा । दृष्टिवादनिमित्तं च तस्थौ किञ्चिद् विचिन्तयन् ॥ ५८ ॥
नेपालदेशमार्गस्थं भद्रबाहुं च पूर्विणम् । ज्ञात्वा संघः समाह्वातुं ततः प्रैषीन्मुनिद्वयम् ॥ ५९ ॥"
(स्थविरावलीचरित, सर्ग ९)।

यहाँ पर प्रसङ्ग-वश इस बात का उल्लेख करना उचित प्रतीत होता है कि *समवायाङ्ग सूत्र में निर्दिष्ट अङ्ग-ग्रन्थ-संबन्धी विषय और परिमाण का वर्तमान अङ्ग-ग्रन्थों में कहीं कहीं जो थोडा-वहुत क्रमशः विसंवाद और ह्रास पाया जाता है और अङ्ग-ग्रन्थों में ही बाद के § उपाङ्ग-ग्रन्थों का और बाद की ÷ घटनाओं का जो उल्लेख दृष्टिगोचर होता है उसका समाधान भी हमको उक्त संमेलनों की घटनाओं से अच्छी तरह मिल जाता है।

अर्धमागधी और आर्ष एक है।

×समवायाङ्ग सूत्र, व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र, औपपातिक सूत्र और प्रज्ञापना सूत्र में तथा अन्यान्य प्राचीन जैन ग्रन्थों में जिस भाषा को अर्धमागधी नाम दिया गया है, + स्थानाङ्ग-सूत्र और अनुयोगद्वारसूत्र में जिस भाषा को 'ऋषिभाषिता' कहा गया है और संभवत. इसी 'ऋषिभाषिता' पर से $ आचार्य हेमचन्द्र आदि ने जिस भाषा की 'आर्ष (ऋषिओं की भाषा)' संज्ञा रखी है वह वस्तुतः एक ही भाषा है अर्थात् अर्धमागधी, ऋषिभाषिता और आर्ष ये तीनों एक ही भाषा के भिन्न भिन्न नाम हैं, जिनमें पहला उसके उत्पत्ति-स्थान से और बाकी के दो उस भाषा को सर्व-प्रथम साहित्य में स्थान देने वालों से संबन्ध रखते हैं। जैन सूत्रों की भाषा यही अर्धमागधी, ऋषिभाषिता या आर्ष है। आचार्य हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत-व्याकरण में आर्ष प्राकृत के जो लक्षण और उदाहरण बताये हैं उनसे तथा "अत एत् सौ पुंसि मागध्याम् ¶" (हे० प्रा० ४, २८७) इस

---

* समवायाङ्ग सूत्र, पत्र १०६ से १२५।

§ "जहा पन्नवणाए पढमए आहारुद्देसए" (व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र १, १—पत्र १९)।

÷ देखो स्थानाङ्ग सूत्र, पत्र ४१० में वर्णित निह्नव-स्वरूप।

× देखो पृष्ठ १९ में दिया हुआ समवायाङ्ग सूत्र और औपपातिकसूत्र का पाठ।

"देवा णं भंते ! कयराए भासाए भासंति ? कयरा वा भासा भासिज्जमाणी विसिस्सति ? गोयमा ! देवा णं अद्धमागहाए भासाए भासंति, सावि य णं अद्धमागहा भासा भासिज्जमाणी विसिस्सति।" (व्याख्या-प्रज्ञप्तिसूत्र ५, ४—पत्र २२१)।

"से किं तं भासारिया ? भासारिया जे णं अद्धमागहाए भासाए भासंति" (प्रज्ञापनासूत्र १—पत्र ६२)।

"मगहद्धविसयभासाणिवद्धं अद्धमागहं, अट्ठारसदेसीभासाणियं वा अद्धमागहं" (निशीथचूर्णि)।

"आरिसवयणे सिद्धं देवाणं अद्धमागहा वाणी" (काव्यालंकार की नमिसाधुकृतटीका २, १२)।

"सर्वार्धमागधीं सर्वभाषासु परिणामिनीम्।
सर्वेषां सर्वतो वाचं सार्वज्ञीं प्रणिदध्महे ॥" (वाग्भट्टकाव्यानुशासन, पृष्ठ २)।

\+ "सक्कता पागता चेव दुहा भणितीओ आहिया।
सरमंडलम्मि गिज्जते पसत्था इसिभासिता ॥" (स्थानाङ्गसूत्र ७—पत्र ३९४)।

"सक्कया पायया चेव भणिईओ होंति दोण्णि वा।
सरमंडलम्मि गिज्जंते पसत्था इसिभासिआ ॥" (अनुयोगद्वारसूत्र, पत्र १३१)।

$ देखो हेमचन्द्र-प्राकृतव्याकरण का सूत्र १, ३।

"आर्षोत्थमार्षतुल्यं च द्विविधं प्राकृतं विदुः" (प्रेमचन्द्रतर्कवागीश ने काव्यादर्शटीका १, ३३ में उद्धृत किया हुआ पद्यांश)।

¶ मागधी भाषा में अकारान्त पुंलिंग शब्द के प्रथमा के एकवचन में 'ए' होता है।

सूत्र की व्याख्या में जो "* यदपि § "पोराणमद्धमागहभासानिययं हवइ सुत्तं ÷" इत्यादिना आर्षस्य अर्धमागध-भाषानियतत्वमाम्नायि वृद्धैस्तदपि प्रायोऽस्यैव विधानात्, न वक्ष्यमाणलक्षणस्य" यह कह कर उसी के अनन्तर जो दशवैकालिक सूत्र से उद्धृत "कयरे आगच्छइ, से तारिसे जिइंदिए" यह उदाहरण दिया है उससे उक्त बात निर्विवाद सिद्ध होती है।

डो. जेकोबी ने प्राचीन जैन सूत्रों की भाषा को प्राचीन महाराष्ट्री कह कर 'जैन महाराष्ट्री' नाम दिया है ×। डो. पिशल ने अपने सुप्रसिद्ध प्राकृत-व्याकरण में डो. जेकोबी की इस बात का सप्रमाण खंडन किया है और यह सिद्ध किया है कि आर्ष और अर्धमागधी इन दोनों में परस्पर भेद नहीं है, एवं प्राचीन जैन सूत्रों की—गद्य और पद्य दोनों की—भाषा परम्परागत मत के अनुसार अर्धमागधी है +। परवर्ती काल के जैन प्राकृत ग्रन्थों की भाषा अल्पांश में अर्धमागधी की और अधिकांश में महाराष्ट्री की विशेषताओं से युक्त होने के कारण 'जैन महाराष्ट्री' कही जा सकती है; परन्तु प्राचीन जैन सूत्रों की भाषा को, जो शौरसेनी आदि भाषाओं की अपेक्षा महाराष्ट्री से अधिक साम्य रखती हुई भी, अपनी उन अनेक खासियतों से परिपूर्ण है जो महाराष्ट्र आदि किसी प्राकृत में दृष्टिगोचर नहीं होती हैं, यह (जैन महाराष्ट्री) नाम नहीं दिया जा सकता।

अर्धमागधी महाराष्ट्री से भिन्न है।

पंडित बेचरदास अपने गूजराती प्राकृत-व्याकरण की प्रस्तावना में जैन सूत्रों की अर्धमागधी भाषा को § प्राकृत (महाराष्ट्री) सिद्ध करने की विफल चेष्टा करते हुए डो. जेकोबी से भी दो कदम आगे बढ़ गये हैं, क्योंकि डो. जेकोबी जब इस भाषा को प्राचीन महाराष्ट्री—साहित्य-निबद्ध महाराष्ट्री से पुरातन महाराष्ट्री—बताते हैं तब पंडित बेचरदास, प्राकृत भाषाओं के इतिहास जानने की तनिक भी परवा न रखकर, अर्वाचीन महाराष्ट्री से इस प्राचीन अर्धमागधी को अभिन्न सिद्ध करने जा रहे हैं! पंडित बेचरदास ने अपने सिद्धान्त के समर्थन में जो दलीलें पेश की हैं वे अधिकांश में भ्रान्त संस्कारों से उत्पन्न होने के कारण कुछ महत्त्व न रखती हुई भी कुतूहल-जनक अवश्य हैं। उन दलीलों का सारांश यह है—(१) अर्धमागधी में महाराष्ट्री से मात्र दो चार रूपों की ही विशेषता; (२) आचार्य हेमचन्द्र का इस भाषा के लिए स्वतन्त्र व्याकरण या शौरसेनी आदि की तरह अलग अलग सूत्र न बनाकर प्राकृत (महाराष्ट्री) या आर्ष प्राकृत में ही इसको अन्तर्गत करना; (३) इसमें मागधी भाषा की कतिपय विशेषताओं का अभाव; (४) निशीथचूर्णिकार

---

* इसका अर्थ यह है कि प्राचीन आचार्यों ने "पुराना सूत्र अर्धमागधी भाषा में नियत है" इत्यादि वचन-द्वारा आर्ष भाषा को जो अर्धमागधी भाषा कही है वह प्रायः मागधी भाषा के इसी एक एकारवाले विधान को लेकर, न कि आगे कहे जाने वाले मागधी भाषा के अन्य लक्षण के विधान को लेकर।

§ इसी वचन के आधार पर डो. होर्नलि का चण्ड-कृत प्राकृतलक्षण के इन्ट्रोडक्शन (पृष्ठ १८-१९) में यह लिखना कि हेमचन्द्र के मत में 'पोराण' आर्ष प्राकृत का एक नाम है, भ्रम-पूर्ण है, क्योंकि यहाँ पर 'पोराण' यह सूत्र का ही विशेषण है, भाषा का नहीं।

÷ आवश्यकसूत्र के पारिष्ठापनिकाप्रकरण (दे० ला०पु०फं० पत्र ६२८) में यह संपूर्ण गाथा इस तरह है :—

"पुव्वावरसंजुत्तं वेरग्गकरं सततमविरुद्धं। पोराणमद्धमागहभासानिययं हवइ सुत्तं॥"

× Kalpa Sutra, Sacred Books of the East, VoL. XII

+ Grammatik der Prākrit-Sprachen, § 16-17.

§ जैसे आचार्य हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत-व्याकरण में महाराष्ट्री भाषा के अर्थ में प्राकृत शब्द का प्रयोग किया है वैसे पंडित बेचरदास ने भी अपने प्राकृत-व्याकरण में, जो केवल हेमाचार्य के ही प्राकृत-व्याकरण के आधार पर रचा गया है, सर्वत्र साहित्यिक महाराष्ट्री के ही अर्थ में प्राकृत शब्द का व्यवहार किया है।

के अर्धमागधी के दोनों में एक भी लक्षण की इसमें असंगति; (५) प्राचीन जैन ग्रन्थों में इस भाषा का 'प्राकृत' शब्द से निर्देश; (६) नाट्य-शास्त्र में और प्राकृत-व्याकरणों में निर्दिष्ट अर्धमागधी के साथ प्रस्तुत अर्धमागधी की असमानता।

प्रथम दलील के उत्तर में हमें यहाँ अधिक कहने की कोई आवश्यकता नहीं, इसी प्रकरण के अन्त में महाराष्ट्री से अर्धमागधी की विशेषताओं की जो संक्षिप्त सूची दी गई है वही पर्याप्त है। इसके अतिरिक्त डो. बनारसीदासजी की "अर्धमागधी रीडर" मुनि श्रीरत्नचन्द्रजी की "जैन सिद्धान्त-कौमुदी" और डो. पिशल का प्राकृत-व्याकरण मौजुद हैं जिनमें क्रमशः अधिकाधिक संख्या में अर्धमागधी की विशेषताओं का संग्रह है। आचार्य हेमचन्द्र के ही प्राकृत-व्याकरण के "आर्षम्" सूत्र से, इसकी स्पष्ट और सर्व-भेद-ग्राही व्यापक * व्याख्या से और जगह जगह † किये हुए आर्ष के सोदाहरण उल्लेखों से दूसरी दलील की निर्मूलता सिद्ध होती है। यदि आचार्य हेमचन्द्र ने ही निर्दिष्ट की हुई दो-एक विशेषताओं के कारण चूलिकापैशाची अलग भाषा मानी जा सकती है, अथवा आठ-दस विशेषतओं को ले कर शौरसेनी, मागधी और पैशाची भाषाओं को भिन्न भिन्न भाषा स्वीकार करने में आपत्ति नहीं की जा सकती, तो कोई वजह नहीं है कि उसी वैयाकरण ने प्रकारान्तर से अथच स्पष्ट रूप से बताई हुई वैसी ही अनेक विशेषतओं के कारण आर्ष या अर्धमागधी भी भिन्न भाषा न कही जाय। तीसरी दलील की जड़ यह भ्रान्त संस्कार है कि "वही भाषा अर्धमागधी कही जाने योग्य हो सकती है जिसमें मागधी भाषा का आधा अंश हो"। इसी भ्रान्त संस्कार के कारण चौथी दलील में उद्धृत निशीथचूर्णि के अर्धमागधी के प्रथम लक्षण का सत्य और सीधा अर्थ भी उक्त पंडितजी की समझ में नहीं आया है। इस भ्रान्त संस्कार का निराकरण और निशीथचूर्णिकार ने बताये हुए अर्धमागधी के प्रथम लक्षण का और उसके वास्तविक अर्थ का निर्देश इसी प्रकरण में आगे चलकर अर्धमागधी के मूल की आलोचना के समय किया जायगा, जिससे इन दोनों दलीलों के उत्तरों को यहाँ दुहराने की आवश्यकता नहीं है। पाँचवीं दलील भी प्राचीन आचार्यों ने जैन सूत्र-ग्रन्थों की भाषा के अर्थ में प्रयुक्त किये हुए 'प्राकृत' शब्द को 'महाराष्ट्री' के अर्थ में घसीटने से ही हुई है। मालुम पड़ता है, पंडितजी ने जैसे अपने व्याकरण में 'प्राकृत' शब्द को केवल महाराष्ट्री के लिए रिजर्व कर रखा है वैसे सभी प्राचीन आचार्यों के 'प्राकृत' शब्द को भी वे एकमात्र महाराष्ट्री के ही अर्थ में मुकर्रर किया हुआ समझ बैठे हैं ‡। परन्तु यह समझ गलत है। प्राकृत शब्द का मुख्य अर्थ है प्रादेशिक कथ्य भाषा—लोक-भाषा। प्राकृत शब्द की व्युत्पत्ति भी वास्तव में इसी अर्थ से संगति रखती है यह हम पहले ही अच्छी तरह प्रमाणित कर चुके हैं। ख्रिस्त की षष्ठ शताब्दी के आचार्य दण्डी ने अपने काव्यादर्श में

"शौरसेनी च गौडी च लाटी चान्या च तादृशी। याति प्राकृतमित्येवं व्यवहारेषु संनिधिम्॥" (१, ३५)।

---

* "आर्षं प्राकृतं बहुलं भवति। तदपि यथास्थानं दर्शयिष्यामः। आर्षे हि सर्वे विधयो विकल्प्यन्ते" (हे० प्रा० १, ३)।

† देखो हेमचन्द्र-प्राकृत व्याकरण के १, ४६; १, ५७; १, ७९; १, ११८; १, ११९; १, १५१; १, १७७; १, २२८; १, २५४; २, १७; २, २१; २, ८९; २, १०१; २, १०४; २, १४६; २, १७४; ३, १६२; और ४, २८७ सूत्रों की व्याख्या।

‡ "ऊपरना बधा उल्लेखोमा वपरायेलो 'प्राकृत' शब्द प्राकृत भाषानो सूचक छे, अनुयोगद्वारमा 'प्राकृत' शब्द प्राकृत भाषाना अर्थमां वपरायेलो छे. (पृ० १३१ स०)। **वैयाकरण वररुचिना समयथी तो ए शब्द ए ज अर्थमां वपरातो आव्यो छे; अने ए पछीना आचार्योए पण ए शब्दने ए ज अर्थमां वापरेलो छे,** माटे कोईए अहीं ए शब्दने मरडवो नहीं।" (प्राकृतव्याकरण, प्रवेश, पृष्ठ २९ टिप्पनी)।

इन खुले शब्दों में यही बात कही है। इससे भी यह स्पष्ट है कि प्राकृत शब्द मुख्यतः प्रादेशिक लोक-भाषा का ही वाचक है और इससे साधारणतः सभी प्रादेशिक कथ्य भाषाओं के अर्थ में इसका प्रयोग होता आया है। दण्डी के समय तक के सभी प्राचीन ग्रन्थों में इसी अर्थ में प्राकृत शब्द का व्यवहार देखा जाता है। खुद दंडी ने भी महाराष्ट्री भाषा में प्राकृत शब्द के प्रयोग को 'प्रकृष्ट' शब्द से विशेषित करते हुए इसी बात का समर्थन किया है *। दण्डी के महाराष्ट्री को 'प्रकृष्ट प्राकृत' कहने के बाद ही से, विशेष प्रसिद्धि होने के कारण, महाराष्ट्री के अर्थ में 'प्रकृष्ट' शब्द को छोड़ कर केवल प्राकृत शब्द का भी प्रयोग हेमचन्द्र आदि, किन्तु दण्डी के पीछे के ही विद्वानों ने, कहीं कहीं किया है। पंडितजी ने वररुचि के समय से लेकर पीछले आचार्यों का महाराष्ट्री के ही अर्थ में प्राकृत शब्द का व्यवहार करने की जो बात उक्त टिप्पनी में ही लिखी है उससे प्रतीत होता है कि उन्होंने न तो वररुचि का ही व्याकरण देखा है और न उनके पीछे के आचार्यों के ही ग्रन्थों का निरीक्षण करने की कोशिश की है, क्योंकि वररुचि ने तो "शेषं महाराष्ट्रीवत्" (प्राकृतप्रकाश १२, ३२) कहते हुए इस अर्थ में महाराष्ट्री शब्द का ही प्रयोग किया है, न कि प्राकृत शब्द का। आचार्य हेमचन्द्र ने भी कुमारपालचरित में "पाइआहिं भासाहिं" (१, १) में बहुवचन का निर्देश कर और देशीनाममाला (१, ४) में 'विशेष' शब्द लगा कर 'प्राकृत' का प्रयोग साधारण लोक-भाषा के ही अर्थ में किया है। आचार्य दण्डी और हेमचन्द्र ही नहीं, बल्कि खिस्त की नववीं शताब्दी के कवि राजशेखर †, ग्याहवीं शताब्दी के नमिसाधु ‡, उन्नीसवीं शताब्दी के प्रेमचन्द्रतर्कवागीश प्रभृति § प्रभूत जैन और जैनेतर विद्वानों ने इसी अर्थ में प्राकृत शब्द का प्रयोग किया है। इस तरह जब यह अभ्रान्त सत्य है कि प्राचीन काल से ले कर आजतक प्राकृत शब्द प्रादेशिक कथ्य भाषा के अर्थ मे व्यवहृत होता आया है और इसका मुख्य और प्राचीन अर्थ साधारणतः सभी और विशेषतः कोई भी प्रादेशिक भाषा है, तब प्राचीन आचार्यों ने भगवान महावीर की उपदेश-भाषा के और उनके समसामयिक शिष्य सुधर्मस्वामि-प्रणीत जैन सूत्रों की भाषा के ही अभिप्राय में प्रयुक्त किये हुए 'प्राकृत' शब्द का 'अर्ध मगध-प्रदेश (जहाँ भगवान महावीर और सुधर्मस्वामी का उपदेश और विचरण होना प्रसिद्ध है) की लोक-भाषा (अर्धमागधी)' इस सुसंगत अर्थ को छोड़ कर मगध से सुदूरवर्ती प्रदेश 'महाराष्ट्र (जहाँ न तो भगवान महावीर का और न सुधर्मस्वामी का ही उपदेश या विहार होना जाना गया है) की भाषा (महाराष्ट्री)' यह असंगत अर्थ लगाना, अपनी हीन विवेचना-शक्ति का परिचय देना है। इसी सिलसिले में पंडितजी ने अनुयोगद्वार सूत्र की एक अपूर्ण गाथा उद्धृत की है। यदि उक्त पंडितजी अनुयोगद्वार की गाथा के पूर्वार्ध का यहाँ पर उल्लेख करने के पहले इस गाथा के मूल स्थान को ढूंढ पाते और वे प्राकृत शब्द से जिस भाषा (महाराष्ट्री) का ग्रहण करते हैं इसके और प्राचीन सूत्रों की अर्धमागधी भाषा के इतिहास को न जानते हुए भी सिर्फ उत्तरार्ध-सहित इस गाथा पर ही प्रकरण-संगति के साथ जरा गोर से विचार करने का कष्ट उठाते तो हमारा यह विश्वास है कि वे कमसे कम इस गाथा का यहाँ हवाला देने का साहस और अनुयोगद्वार के कर्त्ता पर अर्धमागधी के विस्मरण का व्यङ्ग-बाण छोड़ने की धृष्टता कदापि नहीं कर पाते। क्योंकि इस गाथा का मूल स्थान है तृतीय अंग-ग्रन्थ जिसका नाम स्थानाङ्ग-सूत्र है। इसी स्थानाङ्ग-सूत्र के संपूर्ण स्वर-

---

* "महाराष्ट्राश्रया भाषां प्रकृष्टं प्राकृतं विदुः" (काव्यादर्श १, ३४)।

† 'परुसा सक्कअ-बंधो पाउअ-बंधोवि होइ सुउमारो" (कर्पूरमञ्जरी, अङ्क १)।

‡ 'सूरसेन्यपि प्राकृतभाषैव, तथा प्राकृतमेवापभ्रंशः" (काव्यालङ्कार-टिप्पन २, १२)।

§ "सर्वासामेव प्राकृतभाषाणां"—(काव्यादर्शटीका १, ३३), "तादृशीत्यनेन देशनामोपलक्षिताः सर्वा एव भाषाः प्राकृतसंज्ञयोच्यन्त इति सूचितम्" (काव्यादर्शटीका १, ३५)।

प्रकरण को अनुयोगद्वार सूत्र में उद्धृत किया गया है जिसमें वह गाथा भी शामिल है। वह संपूर्ण गाथा इस तरह है;—

"सक्कता पागता चेव दुहा भणिईओ आहिया। सरमंडलम्मि गिज्जंते पसत्था इसिभासिता ॥"

इसका शब्दार्थ है—"संस्कृत और प्राकृत ये दो प्रकार की भाषायें कही गई हैं, गाये जाते स्वर-समूह (षड्ज-प्रभृति) में ऋषिभाषिता—आर्ष भाषा—प्रशस्त है।" यहाँ पर प्रकरण है सामान्यतः गीत की भाषा का। वर्तमान समय की तरह उस समय भी सभी भाषाओं में गीत होते थे। इससे यहाँ पर इन सभी भाषाओं का निर्देश करना ही सूत्रकार को अभिप्रेत है जो उन्होंने संस्कृत—व्याकरण-संस्कार-युक्त—भाषा और प्राकृत—व्याकरण-संस्कार-रहित—लोक-भाषा—इन दो मुख्य विभागों में किया है। इस तरह इस गाथा मे पहले गीत की भाषाओं का सामान्य रूप से निर्देश कर बाद में इन भाषाओं में जो प्रशस्त है वह 'ऋषिभाषिता' इस विशेष रूप से बताई गई है। यदि यहाँ पर प्राकृत शब्द का 'प्रादेशिक लोक-भाषा' यह सामान्य अर्थ न ले कर पंडितजी के कथनानुसार 'महाराष्ट्री' यह विशेष अर्थ लिया जाय तो गीत को सभी भाषाओं का निर्देश, जो सूत्रकार को करना आवश्यक है, कैसे हो सकता है? क्या उस समय अन्य लोक-भाषाओं में गीत होते ही न थे? गीत का ठेका क्या संस्कृत और महाराष्ट्री इन दो भाषाओं को ही मिला हुआ था? यह कभी संभवित नहीं है। इसी गाथा के उत्तरार्ध के 'पसत्था इसिभासिता" इस वचन से अर्धमागधी की सूचना ही नहीं, बल्कि उसका श्रेष्ठपन भी सूत्रकार ने स्पष्ट रूप में बताया है। इससे पंडितजी के उस कथन में कुछ भी सत्यांश नजर नहीं आता है जो उन्होने सूत्रकार के अर्धमागधी की अलग सूचना न करने के बारे में किया है।

जैसे बौद्धसूत्रों की मागधी (पालि) से नाट्य-शास्त्र या प्राकृत-व्याकरणों में निर्दिष्ट मागधी भिन्न है वैसे जैन सूत्रों की अर्धमागधी से नाट्य-शास्त्र की या प्राकृत-व्याकरणों की अर्धमागधी भी अलग है। इससे बौद्धसूत्रों की मागधी नाट्य-शास्त्र या प्राकृत व्याकरणों की मागधी से मेल न रखने के कारण जैसे महाराष्ट्री न कही जाकर मागधी कही जाती है वैसे जैन सूत्रों की अर्धमागधी भाषा भी नाट्य-शास्त्र या प्राकृत-व्याकरणों की अर्धमागधी से समान न होने की वजह से ही महाराष्ट्री न कही जाकर अर्धमागधी ही कही जा सकती है।

नाटकीय अर्धमागधी जैन-सूत्रों की अर्धमागधी से भिन्न है।

भरत-रचित कहे जाते नाट्य-शास्त्र में जिन सात भाषाओं का उल्लेख है उनमें एक अर्धमागधी भी है *। इसी नाट्यशास्त्र में नाटकों के नौकर, राजपुत्र और श्रेष्ठी इन पात्रों के लिए इस भाषा का प्रयोग निर्दिष्ट किया गया है ÷। इससे नाटकों में इन पात्रों की जो भाषा है वह अर्धमागधी कही जाती है। परन्तु नाटकों की अर्धमागधी और जैन सूत्रों की अर्धमागधी में परस्पर समानता की अपेक्षा इतना अधिक भेद है कि यह एक दूसरे से अभिन्न कभी नहीं कही जा सकती। मार्कण्डेय ने अपने प्राकृत-व्याकरण में मागधी भाषा के लक्षण बताकर उसी प्रकरण के शेष में अर्धमागधी भाषा का यह लक्षण कहा है—"× शौरसेन्या अदूरत्वादियमेवार्धमागधी" अर्थात् शौरसेनी भाषा के निकट-वर्ती होने के कारण मागधी ही अर्धमागधी है। इस लक्षण के अनन्तर उन्होंने उक्त नाट्य-शास्त्र के उस वचन को उद्धृत किया है जिसमें

* "मागध्यवन्तिजा प्राच्या सूरसेन्यर्धमागधी। वाह्लीका दक्षिणात्या च सप्त भाषाः प्रकीर्तिताः" (१७, ४८)।

÷ "चेटानां राजपुत्राणां श्रेष्ठिनां चार्धमागधी" (भरतीय नाट्यशास्त्र, निर्णयसागरीय संस्करण, १७, ५०)। मार्कण्डेय ने अपने व्याकरण में इस विषय में भरत का नाम देकर जो वचन उद्धृत किया है वह इस तरह है—"'राक्षसीश्रेष्ठिचेटानुकम्प्यादेरर्धमागधी' इति भरतः" यह पाठान्तर ज्ञात होता है।

× प्राकृतसर्वस्व, पृष्ठ १०३।

वर्ण-भेद।

१। **दो स्वरों के मध्यवर्ती असंयुक्त क के स्थान में प्रायः सर्वत्र ग और अनेक स्थलों में त और य होता है; जैसे—**

ग—प्रकल्प=पगप्प; आकर=आगर; आकाश=आगास; प्रकार=पगार; श्रावक=सावग; विवर्जक=विवज्जग; निषेवक=णिसेवग; लोक=लोग; आकृति=आगइ।

त—आराधक=आराहत (ठाणंगसूत्र—पत्र ३१७), सामायिक=सामातित (ठा० ३२२), विशुद्धिक=विशुद्धित (ठा० ३२२), अधिक=अहित (ठा० ३६३), शाकुनिक=साउणित (ठा० ३६३), नैषधिक=णेसज्जित (ठा० ३६७), वीरासनिक=वीरासणित (ठा० ३६७), वर्धकि=वड्ढति (ठा० ३६८), नैरयिक=नेरतित (ठा० ३६६), सीमंतक=सीमतत (ठा० ४५८), नरकात्=नरतातो (ठा० ४५८), माडम्बिक=माडंबित (ठा० ४५६), कौटुम्बिक=कोडुंबित (ठा० ४५६), सचक्षुष्केण=सचक्खुतेणं (विपाकश्रुत—पत्र ५), कृणिक=कूणित (विपा० ५ टि), अन्तिकात्=अंतितातो (विपा० ७), राहसिकेन=रहस्सितेणं (विपा० ४; १८) **इत्यादि।**

य—कायिक=काइय, लोक=लोय **वगैरः।**

२। **दो स्वरों के बीच का असंयुक्त ग प्रायः कायम रहता है। कहीं कहीं इसका त और य होता है। जैसे**—आगम=आगम, आगमन=आगमण, आनुगामिक=आणुगामिय, आगमिष्यत्=आगमिस्स, जागर=जागर, अगारिन्=अगारि, भगवन्=भगवं; अतिग=अतित (ठा० ३६७); सागर=सायर।

३। **दो स्वरों के बीच के असंयुक्त च और ज के स्थान में त और य उभय ही होता है। च के उदाहरण, जैसे**—नाराच=णाराात (ठा० ३५७), वचस्=वति (ठा० ३६८; ४५०), प्रवचन=पावतण (ठा० ४५१), कदाचित्=कयाती (विपा० १७; ३०), वाचना=वायणा, उपचार=उवयार; लोच=लोय, आचार्य=आयरिय। ज के **कुछ निदर्शन ये हैं**—भोजिन्=भोति (सूअ० २, ६, १०), वज्र=वतिर (ठा० ३५७), पूजा=पूता (ठा० ३५८), राजेश्वर=रातीसर (ठा० ४५६), आत्मजः=अत्तते (विपा० ४ टि), प्रजात=पयाय, कामध्वजा=कामज्झया, आत्मज=अत्तय।

४। **दो स्वरों का मध्यवर्ती त प्रायः कायम रहता है, कहीं कहीं इसका य होता है; यथा**—वन्दते=वंदति, नमस्यति=नमंसति, पर्युपास्ते=पज्जुवासति (सूअ २, ७; विपा—पत्र ६), जितेन्द्रिय=जितिंदिय (सूअ २, ६, ५), सतत=सतत (सूअ १, १, ४, १२), भवति=भवति (ठा०—पत्र ३१७) अंतरित=अंतरित (ठा० ३४६), धैवत=धेवत (ठा० ३६३), जाति=जाति, आकृति=आगिति, विहरति=विहरति (विपा—४), पुरतः=पुरतो, करोति=करेति (विपा० ६), ततः=तते (विपा० ६; ७; ८), संदिसतु=संदिसतु, संलपति=संलवति (विपा० ७; ८), प्रभृति=पभिति (विपा० १५; १६), करतल=करयल।

५। **स्वरों के बीच में स्थित द का द और त ही अधिकांश में देखा जाता है, कहीं कहीं य भी होता है, जैसे—**

द—प्रदिशः=पदिसो (आचा), भेद=भेद, अनादिकं=अणादियं (सूअ २, ७), वदत्=वदमाण, नदति=णदति, जनपद=जणवद, वेदिष्यति=वेदिहिती (ठा०—पत्र क्रमशः ३२१, ३६३, ४५८, ४५८) **इत्यादि।**

त—यदा=जता, पाद=पात, निषाद=निसात, नदी=नती, मृषावाद=मुसावात, वादिक=वातित, अन्यदा=अन्नता, कदाचित्=कताती (ठा०—पत्र क्रमशः ३१७, ३४६, ३६३, ३६७, ४५०, ४५१, ४५६, ४५६); यदि=जति, चिरादिक=चिरातीत (विपा० पत्र ४) **इत्यादि।**

य—प्रतिच्छादन=पडिच्छायण, चतुष्पद=चउप्पय **वगैरः।**

६। **दो स्वरों के मध्य में स्थित प के स्थान में प्रायः सर्वत्र व ही होता है; यथा**—पापक=पावग, संलपति=संलवति, सोपचार=सोवयार, अतिपात=अतिवात, उपनीत=उवणीय, अध्युपपन्न=अज्झोववरण, उपगूढ=उवगूढ, आधिपत्य=आहेवच्च, तपक=तवय, व्यपरोपित=ववरोवित **इत्यादि।**

७। स्वरों के मध्यवर्ती य प्राय: कायम रहता है, अनेक स्थानों में इसका त देखा जाता है; जैसे—

य—वायव=वायव, प्रिय=पिय, निरय=निरय, इंद्रिय=इंदिय, गायति=गायइ प्रभृति।

त—स्यात्=सिता, सामायिक=सामातित, कायिक=काितत, पालयिष्यन्ति=पालतिस्संति, पर्याय=परितात, नायक=णातग, गायति=गातति, स्थायिन्=ठाति, शायिन्=साति, नैरयिक=नेरतित (ठा० पत्र क्रमशः ३१७, ३२२, ३२२, ३५७, ३५८, ३६३, ३६४, ३६७, ३६७, ३६६), इन्द्रिय=इंदित (ठा० ३२२, ३५५) इत्यादि।

८। दो स्वरों के बीच के व के स्थान में व, त और य होता है; यथा—

व—वायव=वायव, गौरव=गारव, भवति=भवति, अनुविचिन्त्य=अणुवीति (सूत्र १, १, ३, १३) इत्यादि।

त—परिवार=परिताल, कवि=कति (ठा० पत्र क्रमशः ३५८, ३६३) इत्यादि।

य—परिवर्तन=परियट्टण, परिवर्तना=परियट्टणा (ठा० ३४६) वगैरः।

६। महाराष्ट्री में स्वर-मध्य-वर्ती असंयुक्त क, ग, च, ज, त, द, प, य, व इन व्यञ्जनों का प्रायः सर्वत्र लोप होता है और प्राकृतप्रकाश आदि प्राकृत-व्याकरणों के अनुसार इन लुप्त व्यञ्जनों के स्थान में अन्य कोई वर्ण नहीं होता। सेतुबन्ध, गाथासप्तशती और कर्पूरमञ्जरी आदि नाटकों की महाराष्ट्री भाषा में भी यह लक्षण ठीक ठीक देखने में आता है। आचार्य हेमचन्द्र के प्राकृत-व्याकरण के अनुसार उक्त लुप्त व्यञ्जनों के दोनों तर्फ अवर्ण (अ या आ) होने पर लुप्त व्यञ्जन के स्थान में 'य्' होता है। 'गउडवहो' में यह 'य्' अधिक मात्रा में (उक्त व्यञ्जनों के पूर्व में अवर्ण-भिन्न स्वर रहने पर भी) पाया जाता है। परन्तु जैन अर्धमागधी में, जैसा हम ऊपर देख चुके हैं, प्रायः उक्त व्यञ्जनों के स्थान में अन्य अन्य व्यञ्जन होते हैं और कहीं कहीं तो वही व्यञ्जन कायम रहता है। हाँ, कहीं कहीं उक्त व्यञ्जनों के स्थान में अन्य व्यञ्जन होने या वही व्यञ्जन रहने के बदले महाराष्ट्री की तरह लोप भी देखा जाता है, किन्तु यह लोप वहाँ पर ही देखने में आता है जहाँ उक्त व्यञ्जनों के बाद अ या आ से भिन्न कोई स्वर होता है; जैसे—लोकः=लोओ, रोचित=रोइत, भोजिन्=भोइ, आतुर=आउर, आदेशि=आएसि, कायिक=काइय, आवेश=आएस वगैर.।

१०। शब्द की आदि में, मध्य में और संयोग में सर्वत्र ण की तरह न भी होता है, जैसे—नदी=नई, ज्ञातपुत्र=नायपुत्त, आरनाल=आरनाल, अनल=अनल, अनिल=अनिल, प्रज्ञा=पन्ना, अन्योन्य=अन्नमन्न, विज्ञ=विन्नु, सर्वज्ञ=सव्वन्नु इत्यादि।

११। एव के पूर्व के अम् के स्थान में आम् होता है, यथा—यामेव=जामेव, तामेव=तामेव, क्षिप्रमेव=खिप्पामेव, एवमेव=एवामेव, पूर्वमेव=पुव्वामेव इत्यादि।

१२। दीर्घ स्वर के बाद के इति वा के स्थान में ति वा और इ वा होता है, जैसे—इन्द्रमह इति वा=इंदमहे ति वा, इंदमहे इ वा इत्यादि।

१३। यथा और यावत् शब्द के य का लोप और ज दोनों ही देखे जाते है, जैसे—यथाख्यात=अहक्खाय, यथाजात=अहाजात, यथानामक=जहाणामए, यावत्कथा=आवकहा, यावज्जीव=जावज्जीव।

वर्णागम।

१। गद्य में भी अनेक स्थलों में समास के उत्तर शब्द के पहले म् आगम होता है, यथा—निरयंगामी, उड्ढंगारव, दीहंगारव, रहस्संगारव, गोणमाइ, सामाइयमाइयाइ, अजहण्णमणुक्कोस, अदुक्खमसुहा आदि। महाराष्ट्री में पद्य में पादपूर्त्ति के लिए ही कहीं कहीं म् आगम देखा जाता है, गद्य में नहीं।

शब्द-भेद।

१। अर्धमागधी में ऐसे प्रचुर शब्द है जिनका प्रयोग महाराष्ट्री में प्रायः उपलब्ध नहीं होता; यथा—अज्झत्थिय, अज्झोववरण, अणुवीति, आघवरण, आघवेत्तग, आरणपारणू, आवीकम्म, करणहुइ, केमहालय, दुरूह, पच्चत्थिमिल्ल, पाउकुव्वं, पुरत्थिमिल्ल, पोरेवच्च, महतिमहालिया, वक्क, विउस इत्यादि।

२। ऐसे शब्दों की संख्या भी बहुत बड़ी है जिनके रूप अर्धमागधी और महाराष्ट्री में भिन्न भिन्न प्रकार के होते हैं। उनके कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते है :—

अर्धमागधी	महाराष्ट्री	अर्धमागधी	महाराष्ट्री
अभियागम	अब्भाअम	नितिय	णिच्च
आउटण	आउंचण	निएय	णिअअ
आहरण	उआहरण	पडुप्पन्न	पच्चुप्पण्ण
उप्पिं	उवरि, अवरि	पच्छेकम्म	पच्छाकम्म
किया	किरिआ	पाय (पात्र)	पत्त
कीस, केस	केरिस	पुढो (पृथक्)	पुहं, पिहं
केवच्चिर	किअच्चिर	पुरेकम्म	पुराकम्म
गेहि	गिद्धि	पुव्विं	पुव्वं
चियत्त	चइअ	माय (मात्र)	मत्त, मेत्त
छच्च	छक्क	माहण	ब्रम्हण
जाया	जत्ता	मिलक्खु, मेच्छ	मिलिच्छ
णिगण, णिगिण (नग्न)	णग्ग	वग्गू	वाआ
णिगिणिण (नाग्न्य)	णग्गत्तण	वाहणा (उपानह्)	उवाणआ
तच्च (तृतीय)	तइअ	सहेज्ज	सहाअ
तच्च (तथ्य)	तच्छ	सीआण, सुसाण	मसाण
तेगिच्छा	चिइच्छा	सुमिण	सिमिण
दुवालसंग	बारसंग	सुहम, सुहुम	सण्ह
दोच्च	दुइअ	सोहि	सुद्धि

और, दुवालस, बारस, तेरस, अउणवीसइ, बत्तीस, पणतीस, इगयाल, तेयालीस, पणयाल, अढयाल, एगट्ठि, बावट्ठि, तेवट्ठि, छावट्ठि, अढसट्ठि, अउणत्तरि, बावत्तरि, पणणत्तरि, सत्तहत्तरि, तेयासी, छलसीइ, बाणउइ प्रभृति संख्या-शब्दों के रूप अर्धमागधी मे मिलते हैं, महाराष्ट्री में वैसे नहीं।

नाम-विभक्ति।

१। अर्धमागधी में पुंलिंग अकारान्त शब्द के प्रथमा के एकवचन में प्रायः सर्वत्र ए और क्वचित् ओ होता है, किन्तु महाराष्ट्री मे ओ ही होता है।

२। सप्तमी का एकवचन स्सिं होता है जब महाराष्ट्री में म्मि।

३। चतुर्थी के एकवचन में आए या आते होता है, जैसे—देवाए, सवणयाए, गमणाए, अट्ठाए, अहिताते, असुभाते, अखमाते (ठा० पत्र ३५८) इत्यादि, महाराष्ट्री में यह नहीं है।

४। अनेक शब्दों के तृतीया के एकवचन मे सा होता है, यथा—मणसा, वयसा, कायसा, जोगसा, बलसा, चक्खुसा; महाराष्ट्री मे इनके स्थान मे क्रमशः मणेण, वएण, काएण, जोगेण, बलेण, चक्खुणा।

५। कम्म और धम्म शब्द के तृतीया के एकवचन में पालि की तरह कम्मुणा और धम्मुणा होता है, जब कि महाराष्ट्री में कम्मेण और धम्मेण।

६। अर्धमागधी में तत् शब्द के पञ्चमी के बहुवचन में तेब्भो रूप भी देखा जाता है।

७। युष्मत् शब्द का षष्ठी का एकवचन संस्कृत की तरह तव और अस्मत् का षष्ठी का बहुवचन अस्माकं अर्धमागधी में पाया जाता है जो महाराष्ट्री में नहीं है।

आख्यात-विभक्ति।

१। अर्धमागधी में भूतकाल के बहुवचन में इंसु प्रत्यय है, जैसे—पुच्छिंसु, गच्छिंसु, आभासिंसु इत्यादि। महाराष्ट्री में यह प्रयोग लुप्त हो गया है।

धातु-रूप।

१। अर्धमागधी में आइक्खइ, कुव्वइ, भुविं, होक्खती, बूया, अब्बवी, होत्था, हुत्था, पहारेत्था, आघं, दुरूहइ, विगिंचए, तिवायए, अकासो, तिउट्टई, तिउट्टिज्जा, पडिसंधयाति, सारयती, घेच्छिइ, समुच्छिहिंति, आहंसु प्रभृति प्रभृत प्रयोगों में धातु को प्रकृति, प्रत्यय अथवा ये दोनों जिस अकार में पाये जाते हैं, महाराष्ट्री में वे भिन्न भिन्न प्रकार के देखे जाते हैं।

धातु-प्रत्यय।

१। अर्धमागधी में त्वा प्रत्यय के रूप अनेक तरह के होते हैं :—

(क) ट्टु; जैसे—कट्टु, साहट्टु, अवहट्टु इत्यादि।

(ख) इत्ता, एत्ता, इत्ताणं और एत्ताणं; यथा—चइत्ता, विउट्टित्ता, पासित्ता, करेत्ता, पासित्ताणं करेत्ताणं इत्यादि।

(ग) इत्तु, यथा—दुरूहित्तु, जाणित्तु, वधित्तु प्रभृति।

(घ) च्चा; जैसे—किच्चा णच्चा, सोच्चा, भोच्चा, चेच्चा वगैरः।

(ङ) इया; यथा—परिजाणिया, दुरूहिया आदि।

(च) इनके अतिरिक्त विउक्कम्म, निसम्म, समिच्च, संखाए, अणुवीति, लद्धुं, लद्धूणं, दिस्सा इत्यादि प्रयोगों में 'त्वा' के रूप भिन्न भिन्न तरह के पाये जाते हैं।

२। तुम् प्रत्यय के स्थान में इत्तए या इत्तते प्राय: देखने में आता है, जैसे—करित्तए, गच्छित्तए, संभुंजित्तए, उवसामित्तते, (विपा० १३), विहरित्तए आदि।

३। ऋकारान्त धातु के त प्रत्यय के स्थान में ड होता है, जैसे—कड, मड, अभिहड, वावड, संवुड, वियड, वित्थड प्रभृति।

तद्धित।

१। तर प्रत्यय का तराय रूप होता है, यथा—अणिट्ठतराए, अप्पतराए, बहुतराए, कंततराए इत्यादि।

२। आउसो, आउसंतो, गोमी, वुसिमं, भगवंतो, पुरत्थिम, पच्चत्थिम, ओयंसी, दोसिणो, पोरेवच्च आदि प्रयोगों में मतुप्, और अन्य तद्धित प्रत्ययों के जैसे रूप जैन अर्धमागधी में देखे जाते हैं, महाराष्ट्री में वे भिन्न तरह के होते हैं।

महाराष्ट्री से जैन अर्धमागधी में इनके अतिरिक्त और भी अनेक सूक्ष्म भेद हैं जिनका उल्लेख विस्तार-भय से यहाँ नहीं किया गया है।

(५) जैन महाराष्ट्री।

जैन सूत्र-ग्रन्थों के सिवा श्वेताम्बर जैनों के रचे हुए अन्य ग्रन्थों की प्राकृत भाषा को 'जैन महाराष्ट्री' नाम दिया गया है। इस भाषा में तीर्थंकर और प्राचीन मुनिओं के चरित्र, कथायें, दर्शन, तर्क, ज्योतिष, भूगोल, स्तुति आदि विषयों का विशाल साहित्य विद्यमान है।

नाम-निर्देश और साहित्य।

प्राकृत के प्राचीन वैयाकरणों ने 'जैन महाराष्ट्री' यह नाम दे कर किसी भिन्न भाषा का उल्लेख नहीं किया है। किन्तु आधुनिक पाश्चात्य विद्वानों ने, व्याकरण, काव्य और नाटक-ग्रन्थों में महाराष्ट्री का जो रूप देखा जाता है उससे श्वेताम्बर जैनों के ग्रन्थों की भाषा में कुछ कुछ पार्थक्य देख कर, इसको 'जैन महाराष्ट्री' नाम दिया है। इस भाषा में प्राकृत-व्याकरणों में बताये हुए महाराष्ट्री भाषा के लक्षण विशेष रूप से मौजुद होने पर भी जैन अर्धमागधी का बहुत-कुछ प्रभाव देखा जाता है।

जैन महाराष्ट्री के कतिपय ग्रन्थ प्राचीन हैं। यह द्वितीय स्तर के प्रथम युग के प्राकृतों में स्थान पा सकती है। पयन्ना-ग्रन्थ, निर्युक्तियाँ, पउमचरिअ, उपदेशमाला प्रभृति ग्रन्थ प्रथम युग की जैन महाराष्ट्री के उदाहरण हैं। बृहत्कल्प-भाष्य, व्यवहारसूत्र-भाष्य, विशेषावश्यक-भाष्य, निशीथचूर्णि, धर्मसंग्रहणी, समराइच्चकहा-प्रभृति ग्रन्थ मध्य-युग और शेष-युग में रचित होने पर भी इनकी भाषा प्रथम युग की जैन महाराष्ट्री के समान है। दशम शताब्दी के बाद रचे गये प्रवचन-सारोद्धार, उपदेशपदटीका, सुपासनाहचरिअ, उपदेशरहस्य, भाषारहस्य प्रभृति ग्रन्थों की भाषा भी प्रायः प्रथम युग की जैन महाराष्ट्री के ही अनुरूप है। इससे यहाँ पर यह कहना होगा कि जैन महाराष्ट्री के ये ग्रन्थ आधुनिक काल में रचित होने पर भी उसकी भाषा, संस्कृत की तरह, अतिप्राचीन काल में ही उत्पन्न हुई थी और यह भी अनुमान किया जा सकता है कि जैन महाराष्ट्री क्रमशः परिवर्तित हो कर मध्य-युग की व्यञ्जन-लोप-बहुल महाराष्ट्री में रूपान्तरित हुई है।

समय।

अर्धमागधी के जो लक्षण पहले बताये गये हैं उनमें से अनेक इस भाषा में भी पाये जाते हैं। ऐसे लक्षणों में कुछ ये हैं:—

लक्षण।

१। क के स्थान में अनेक स्थलों में ग।
२। लुप्त व्यञ्जनों के स्थान में य।
३। शब्द की आदि और मध्य में भी ण की तरह न।
४। यथा और यावत् के स्थान में क्रमशः जहा और जाव की तरह अहा और आव भी।
५। समास में उत्तर पद के पूर्व में 'म्' का आगम।
६। पाय, माय, तेगिच्छग, पडुप्पण्ण, सोहि, सुहुम, सुमिण आदि शब्दों का भी, पत्त, मेत्त, चेइच्छय आदि की तरह प्रयोग।
७। तृतीया के एकवचन में कहीं कहीं सा प्रत्यय।
८। आइक्खइ, कुव्वइ प्रभृति धातु-रूप।
९। सोच्चा, किच्चा, वंदित्तु आदि त्वा प्रत्यय के रूप।
१०। कड, वावड, संवुड, प्रभृति त-प्रत्ययान्त रूप।

(६) अशोक-लिपि ।

सम्राट् * अशोक ने भारतवर्ष के भिन्न भिन्न स्थानों में अपने धर्म के उपदेशों को शिलाओं में खुदवाये थे। ये सब शिलालेख उस समय में प्रचलित भिन्न भिन्न प्रादेशिक भाषाओं में रचित हैं। भाषा-साम्य की दृष्टि से ये सब शिलालेख प्रधानतः इन तीन भागों में विभक्त किये जा सकते हैं :—

(१) पंजाब के शिलालेख। इनकी भाषा संस्कृत के अनुरूप है। इनमें र का लोप नहीं देखा जाता।

(२) पूर्व भारत के शिलालेख। इनकी भाषा का मागधी के साथ सादृश्य देखने में आता है। इनमें र के स्थान में सर्वत्र ल है।

(३) पश्चिम भारत के शिलालेख। ये उज्जयिनी की उस भाषा में है जिसका पालि के साथ अधिक साम्य है।

इन तीनों प्रकार के शिलालेखों के कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं जिन पर से इनका भेद अच्छी तरह समझ में आ सकता है।

संस्कृत।	कपर्दिगिरि (पंजाब)।	धौलि (उडिसा)।	गिरनार (गूजरात)।
देवानाप्रियस्य	देवानंप्रियस	देवानंपियस	देवानंपियस
राज्ञः	रञो	लजिने	रानो, रनो
वृद्धाः	—	लुखनि	वच्छा
शुश्रूषा	सुश्रुषा	सुसूसा	सुसुसा
नास्ति	नस्ति, नास्ति	नाथि, नथि, नथा	नास्ति

इन शिलालेखों का समय ख्रिस्त-पूर्व २५० वर्ष का है।

इन शिलालेखों की भाषा की उत्पत्ति भगवान महावीर की एवं संभवतः बुद्धदेव की उपदेश-भाषा से ही हुई है †।

---

(७) सौरसेनी।

संस्कृत-नाटकों में प्राकृत गद्यांश सामान्य रूप से सौरसेनी भाषा में लिखा गया है। अश्वघोष के नाटकों में एक तरह की सौरसेनी के उदाहरण पाये जाते हैं जो पालि और अशोकलिपि की भाषा के अनुरूप और पिछले काल के नाटकों में प्रयुक्त सौरसेनी की अपेक्षा प्राचीन है। भास के, कालिदास के और इनके बाद के अधिक नाटकों में सौरसेनी के निदर्शन देखे जाते हैं।

निदर्शन।

वररुचि, हेमचन्द्र, क्रमदीश्वर, लक्ष्मीधर और मार्कण्डेय आदि के प्राकृत-व्याकरणों में सौरसेनी भाषा के लक्षण और उदाहरण पाये जाते हैं।

दण्डी, रुद्रट और वाग्भट आदि संस्कृत के आलंकारिकों ने भी इस भाषा का उल्लेख किया है।

---

* हाल ही में डो. त्रिभुवनदास लहेरचंद ने अपने एक गूजराती लेख में अनेक प्रमाण और युक्तियों से यह सिद्ध किया है कि अशोक के शिलालेखों के नाम से प्रसिद्ध शिलालेख सम्राट् अशोक के नहीं, परन्तु जैन सम्राट् संप्रति के खुदवाये हुए है।

† See Dr. A. B. Keith's Sanskrit Drama, Page 87.

भरत के नाट्यशास्त्र में सौरसेनी भाषा का उल्लेख है, उन्होंने नाटक में नायिका और सखीओं के लिए इस भाषा का प्रयोग बताया है *।

विनियोग।

भरत ने विदूषक की भाषा प्राच्या कही है †, परन्तु मार्कण्डेय के व्याकरण में प्राच्या भाषा के जो लक्षण दिये गये हैं उनसे और नाटकों में प्रयुक्त विदूषक की भाषा पर से यह मालूम होता है कि सौरसेनी से इस भाषा (प्राच्या) का कुछ विशेष भेद नहीं है। इससे हमने भी प्रस्तुत कोष में उसका अलग उल्लेख न करके सौरसेनी में हीं अन्तर्भाव किया है।

प्राच्या भाषा सौरसेनी के अन्तर्गत।

दिगम्बर जैनों के प्रवचनसार, द्रव्यसंग्रह प्रभृति ग्रन्थ भी एक तरह की सौरसेनी भाषा में ही रचित है। यह भाषा श्वेताम्बरों की अर्धमागधी और प्राकृत-व्याकरणों में निर्दिष्ट सौरसेनी के मिश्रण से बनी हुई है। इस भाषा को 'जैन सौरसेनी' नाम दिया गया है। जैन सौरसेनी मध्ययुग को जैन महाराष्ट्री की अपेक्षा जैन अर्धमागधी से अधिक निकटता रखती है और मध्ययुग की जैन महाराष्ट्री से प्राचीन है।

जैन सौरसेनी।

सौरसेनी भाषा की उत्पत्ति ‡ सूरसेन देश अर्थात् मथुरा प्रदेश से हुई है।

वररुचि ने अपने व्याकरण में संस्कृत को हो सौरसेनो भाषा की प्रकृति अर्थात् मूल कहा है ÷। किन्तु यह हम पहले ही प्रमाणित कर चुके हैं कि किसी प्राकृत भाषा को उत्पत्ति संस्कृत से नहीं हुई है। सुतरां, सौरसेनी प्राकृत का मूल भी वैदिक या लौकिक संस्कृत नहीं है। सौरसेनो और संस्कृत ये दोनों हो वैदिक युग में प्रचलित सूरसेन अथवा मध्यदेश की कथ्य प्राकृत भाषा से ही उत्पन्न हुई हैं। संस्कृत भाषा पाणिनि-प्रभृति के व्याकरण द्वारा नियन्त्रित होने के कारण परिवर्तन-हीन मृत-भाषा मे परिणत हुई। वैदिक काल की सौरसेनी ने प्राकृत-व्याकरण द्वारा नियन्त्रित न होने के कारण क्रमशः परिवर्तित होते हुए पिछले समय की सौरसेनी भाषा का आकार धारण किया। पिछले समय की यह सौरसेनी भी बाद में प्राकृत-व्याकरणों के द्वारा जकड़े जाने के कारण संस्कृत की तरह परिवर्तन-शून्य हो कर मृत-भाषा में परिणत हुई है।

प्रकृति।

अश्वघोष के नाटकों में जिस सौरसेनी भाषा के उदाहरण मिलते हैं वह अशोकलिपि की सम-सामयिक कही जा सकती है। भास के नाटकों की सौरसेनी का और जैन सौरसेनी का समय संभवतः खिस्त की प्रथम या द्वितीय शताब्दी मालूम होता है।

समय।

महाराष्ट्री भाषा के साथ सौरसेनी भाषा का जिस जिस अंश में भेद है वह नीचे दिया जाता है। इसके सिवा महाराष्ट्री भाषा के जो लक्षण उसके प्रकरण में दिये जायंगे उनमें

लक्षण।

---

* "नायिकानां सखीनां च सूरसेनाविरोधिनी" (नाट्यशास्त्र १७, ५१)।

† "प्राच्या विदूषकादीना" (नाट्यशास्त्र १७, ५१)।

‡ पन्नवणासुत्त के "सोत्तियमइया (?मई य) चेदी वीयभयं सिंधुसोवीरा। महुरा य सूरसेणा पावा भंगी य मासपुरिवट्टा" (पत्र ६१) इस पाठ पर "चेदिषु शुक्तिकावती, वीतभयं सिन्धुषु, सौवीरेषु मथुरा, सूरसेनेषु पापा, भङ्ग(?ङ्गि)षु मासपुरिवट्टा" इस तरह व्याख्या करते हुए आचार्य मलयगिरि ने सूरसेन देश की राजधानी पावा बतला-कर आजकल के बिहार प्रदेश को ही सूरसेन कहा है। नेमिचन्द्रसूरि ने अपने प्रवचनसारोद्धार-नामक ग्रन्थ में पन्नवणासूत्र के उक्त पाठ को अविकल रूप में उद्धृत किया है। इसकी टीका में श्रीसिद्धसेनसूरि ने आचार्य मलयगिरि की उक्त व्याख्या को 'अतिव्यवहृत' कह कर, उक्त मूल पाठ की व्याख्या इस तरह की है:—शुक्ती-मती नगरी चेदयो देशः वीतभयं नगरं सिन्धुसौवीरा जनपदः, मथुरा नगरी सूरसेनाख्यो देशः, पापा नगरी भङ्गयो देशः, मासपुरी नगरी वर्ती देशः" (दे० ला० संस्करण, पत्र ४४६)। ÷ प्राकृतप्रकाश १२, २।

महाराष्ट्री के साथ सौरसेनी का कोई भेद नहीं है। इन भेदों पर से यह ज्ञात होता है कि अनेक स्थलों में महाराष्ट्री की अपेक्षा सौरसेनी का संस्कृत के साथ पार्थक्य कम और सादृश्य अधिक है।

वर्ण-भेद।

१। स्वर-वर्णो के मध्यवर्ती असंयुक्त त और द के स्थान में द होता है, यथा—रजत=रअद, गदा=गदा।
२। स्वरों के बीच असंयुक्त थ का ह और ध दोनों होते हैं, जैसे—नाथ=णाध, णाह।
३। र्य के स्थान में य्य और ज्ज होता है, यथा—आर्य=अय्य, अज्ज; सूर्य=सुय्य, सुज्ज।

नाम-विभक्ति।

१। पञ्चमी के एकवचन में दो और दु ये दो ही प्रत्यय होते है और इनके योग में पूर्व के अकार का दीर्घ होता है, यथा—जिनात्=जिणादो, जिणादु।

आख्यात।

१। ति और ते प्रत्ययों के स्थान में दि और दे होता है, जैसे—हसदि, हसदे, रमदि, रमदे।
२। भविष्यत्काल के प्रत्यय के पूर्व में स्सि लगता है, यथा—हसिस्सिदि, करिस्सिदि।

सन्धि।

१। अन्त्य मकार के बाद इ और ए होने पर ण् का वैकल्पिक आगम होता है, यथा—युक्तम् इदम्=जुत्तं णिमं, जुत्तमिमं; एवम् एतत्=एवं णेदं, एवमेदं।

कृदन्त।

१। त्वा प्रत्यय के स्थान में इअ, दूण और त्ता होते हैं, यथा—पठित्वा=पढिअ, पढिदूण, पढित्ता।

---

(८) मागधी।

मागधी प्राकृत के सर्व-प्राचीन निदर्शन अशोक-साम्राज्य के उत्तर और पूर्व भागों के खालसी, मिरट, लौरिया (Lauriya), सहसराम, बराबर (Barābar), रामगढ, धौलि और जौगढ (Jaugada) प्रभृति स्थानों के अशोक-शिलालेखों में पाये जाते हैं। इसके बाद नाटकीय प्राकृतों में मागधी भाषा के उदाहरण देखे जाते हैं। नाटकीय मागधी के सर्व-प्राचीन नमूने अश्वघोष के नाटकों के खण्डित अंशों में मिलते हैं। भास के नाटकों में, कालिदास के नाटकों में और मृच्छकटिक आदि नाटकों में मागधी भाषा के उदाहरण विद्यमान हैं।

निदर्शन।

वररुचि के प्राकृतप्रकाश, चण्ड के प्राकृतलक्षण, हेमचन्द्र के सिद्धहेमचन्द्र (अष्टम अध्याय), क्रमदीश्वर के संक्षिप्तसार, लक्ष्मीधर की षड्भाषाचन्द्रिका और मार्कण्डेय के प्राकृतसर्वस्व आदि प्रायः समस्त प्राकृत-व्याकरणों में मागधी भाषा के लक्षण और उदाहरण दिये गये हैं।

भरत के नाट्यशास्त्र में मागधी भाषा का उल्लेख है और उन्होंने नाटक में राजा के अन्तःपुर में रहने वाले, सुरंग खोदने वाले, कलवार, अश्वपालक वगैरः पात्रों के लिए और विपत्ति में नायक के लिए भी इस भाषा का प्रयोग करने को कहा है *। परन्तु मार्कण्डेय

विनियोग।

---

* "मागधी तु नरेन्द्राणामन्तःपुरनिवासिनाम्" (नाट्यशास्त्र १७, ५०)।
"सुरङ्गाखनकादीनां शुण्डकाराश्वरक्षिणाम्। व्यसने नायकाना स्यादात्मरक्षासु मागधी॥" (नाट्यशास्त्र १७,५६)।

ने अपने प्राकृतसर्वस्व में उद्धृत किये हुए कोहल के "राजसभिक्षुक्षपणकचेटाद्या मागधीं प्राहुः" इस वचन से मालूम होता है कि भरत के कहे हुए उक्त पात्रों के अतिरिक्त भिक्षु, क्षपणक आदि अन्य लोग भी इस भाषा का व्यवहार करते थे। रुद्रट, वाग्भट, हेमचन्द्र आदि आलंकारिको ने भी अपने अपने अलंकार-ग्रन्थों में इस भाषा का उल्लेख किया है।

उत्पत्ति-स्थान।

मगध देश ही मागधी भाषा का उत्पत्ति-स्थान है। मगध देश की सीमा के बाहर भी अशोक के शिलालेखों में जो इसके निदर्शन पाये जाते हैं उसका कारण यह है कि मागधी भाषा उस समय राज-भाषा होने के कारण मगध के बाहर भी इसका प्रचार हुआ था। संभवतः राज-भाषा होने के कारण ही नाटकों में सर्वत्र ही राजा के अन्तःपुर के लोगों के लिए इस भाषा का व्यवहार करने का नियम हुआ था। प्राचीन भिक्षु और क्षपणक भी मगध के ही निवासी होने से, संभव है, नाटकों में इनकी भाषा भी मागधी ही निर्दिष्ट की गई है।

प्रकृति।

वररुचि ने अपने प्राकृत-व्याकरण में मागधी की प्रकृति—मूल—होने का सम्मान सौरसेनी को दिया है *। इसीका अनुसरण कर मार्कण्डेय ने भी सौरसेनी से ही मागधी की सिद्धि कही है †। किन्तु मागधी और सौरसेनी आदि प्रादेशिक भाषाओं का भेद अशोक के शिलालेखो में भी देखा जाता है। इससे यह सिद्ध है कि ये सब प्रादेशिक भेद प्राचीन और समसामयिक हैं, एक प्रदेश की भाषा से दूसरे प्रदेश में उत्पन्न नहीं हुए हैं। जैसे सौरसेनी मध्यदेश में प्रचलित वैदिक युग की कथ्य भाषा से उत्पन्न हुई है वैसे मागधी ने भी उस कथ्य भाषा से जन्म-ग्रहण किया है जो वैदिककाल में मगध देश में प्रचलित थी।

समय।

अशोक-शिलालेखों की और अश्वघोष के नाटकों की मागधी भाषा प्रथम युग की मागधी भाषा के निदर्शन हैं। भास के और परवर्ती काल के अन्य नाटकों की और प्राकृत-व्याकरणों की मागधी मध्य-युग की मागधी भाषा के उदाहरण है।

शाकारी आदि भाषाएँ मागधी के अन्तर्गत हैं।

शाकारी, चाण्डाली और शाबरी ये तीन भाषायें मागधी के ही प्रकार-भेद—रूपान्तर—हैं। भरत ने शाकारी भाषा का व्यवहार शबर, शक आदि और उसी प्रकृति के अन्य लोगों के लिए कहा है ‡ किन्तु मार्कण्डेय ने राजा के साले की भाषा शाकारी बतलाई है ×। भरत पुक्कस आदि जातिओं की व्यवहार-भाषा को चाण्डाली और अंगारकार, व्याध, काठहार और यन्त्र-जीवी लोगों की भाषा को शाबरी कहते है ÷। इन तीनों भाषाओं के जो लक्षण और उदाहरण मार्कण्डेय के प्राकृत-व्याकरण में और नाटकों के उक्त पात्रों की भाषा में पाये जाते हैं उनमें और इतर प्राकृत-व्याकरणों की मागधी भाषा के लक्षण और उदाहरणों में तथा नाटकों के मागधी-भाषा-भाषी पात्रों की भाषा में इतना कम भेद और इतना अधिक साम्य है कि उक्त तीन भाषाओं को मागधी से अलग नहीं कही जा सकतीं। यही कारण है कि हमने प्रस्तुत कोष में इन भाषाओं का मागधी में ही समावेश किया है।

---

* "प्रकृतिः शौरसेनी" (प्राकृतप्रकाश ११, २)।

† "मागधी शौरसेनीतः" (प्राकृतसर्वस्व, पृष्ठ १०१)।

‡ "शबराणां शकादीनां तत्स्वभावश्च यो गणः। शकारभाषा योक्तव्या" (नाट्यशास्त्र १७, ५३)।

× "शकारस्येयं शाकारी, शकारश्च
'राज्ञोऽनूढाभ्राता-श्यालस्त्वैश्वर्यसंपन्नः।
मदमूर्खताभिमानी शकार इति दुष्कुलीनः स्यात्' इत्युक्तेः" (प्राकृतसर्वस्व, पृष्ठ १०५)।

÷ "चाण्डाली पुक्कसादिषु। अंगारकरव्याधानां काष्ठयन्त्रोपजीविनाम्। योज्या शबरभाषा तु" (नाट्यशास्त्र १७, ५३-४)।

मृच्छकटिक के पात्र माथुर और दो द्यूतकारों की भाषा को 'ढक्की' नाम दिया गया है। यह भी मागधी भाषा का ही एक रूपान्तर प्रतीत होता है। मार्कण्डेय ने 'ढक्की' का ही 'टाक्की' नाम से निर्देश किया है, यह उन्होंने वहाँ पर उद्धृत किये हुए एक श्लोक से ज्ञात होता है *। मार्कण्डेय ने पदान्त में उ, तृतीया के एकवचन में ए, पञ्चमी के बहुवचन में हुम् आदि जो इस भाषा के लक्षण दिये हैं उनपर से इसमें अपभ्रंश का ही विशेष साम्य नजर आता है। इस लिए मार्कण्डेय ने वहाँ पर जो यह कहा है कि 'हरिश्चन्द्र इस भाषा को अपभ्रंश मानता है §' वह मत हमें भी संगत मालूम पड़ता है।

ढक्की या टाक्की भाषा।

मागधी भाषा का सौरसेनी के साथ जो प्रधान भेद है वह नीचे दिया जाता है। इसके सिवा अन्य अंशों में मागधी भाषा साधारणतः सौरसेनी के ही अनुरूप है।

लक्षण।

वर्ण-भेद।

१। र के स्थान में सर्वत्र ल होता है +; यथा—नर=णल; कर=कल।

२। श, ष और स के स्थान में तालव्य श होता है; यथा—शोभन=शोहण; पुरुष=पुलिश; सारस=शालश।

३। संयुक्त ष और स के स्थान में दन्त्य सकार होता है; यथा—शुष्क=शुस्क; कष्ट=कस्ट; स्खलति=स्खलदि; बृहस्पति=बुहस्पदि।

४। ट्ट और ष्ठ के स्थान में स्ट होता है; यथा—पट्ट=पस्ट; सुष्ठु=शुस्टु।

५। स्थ और र्थ की जगह स्त होता है; जैसे—उपस्थित=उवस्तिद; सार्थ=शस्त।

६। ज, द्य और य के बदले य होता है; यथा—जानाति=याणादि, दुर्जन=दुय्यण; मद्य=मय्य, अद्य=अय्य; याति=यादि, यम=यम।

७। न्य, ण्य, ज्ञ और ञ्ज के स्थान में ञ्ञ होता है; यथा—अन्य=अञ्ञ; पुण्य=पुञ्ञ; प्रज्ञा=पञ्ञा; अञ्जलि=अञ्ञलि।

८। अनादि छ के स्थान में श्च होता है; यथा—गच्छ=गश्च, पिच्छिल=पिश्चिल।

९। क्ष की जगह स्क होता है ÷, जैसे—राक्षस=लस्कश, यक्ष=यस्क।

नाम-विभक्ति।

१। अकारान्त पुंलिंग-शब्द के प्रथमा के एकवचन में ए होता है; यथा—जिनः=यिणे, पुरुषः=पुलिशे।

२। अकारान्त शब्द के षष्ठी का एकवचन स्स और आह होता है; यथा—जिनस्य=यिणस्स, यिणाह।

३। अकारान्त शब्द के षष्ठी के बहुवचन में आण और आहँ ये दोनों होते हैं; जैसे—जिनानाम्=यिणाण, यिणाहँ।

४। अस्मत् शब्द के प्रथमा के एकवचन और बहुवचन का रूप हगे होता है।

---

* "प्रयुज्यते नाटकादौ द्यूतादिव्यवहारिभिः।
वणिग्भिर्हीनदेहैश्च तदाहुष्टक्कभाषितम्" (प्राकृतसर्वस्व, पृष्ठ ११०)।

§ "हरिश्चन्द्रस्त्विमां भाषामपभ्रंश इतीच्छति" (प्राकृतस० पृष्ठ ११०)।

+ मार्कण्डेय यह नियम वैकल्पिक मानते हैं; "रस्य लो वा भवेत्" (प्राकृतस० पृष्ठ १०१)।

÷ हेमचन्द्र-प्राकृत-व्याकरण के अनुसार 'क्ष' की जगह जिह्वामूलीय '≍क' होता है; देखो हे० प्रा० ४, २९६।

स्वर।

१। **अनेक जगह भिन्न स्वरों के स्थान मे भिन्न भिन्न स्वर होते हैं; जैसे**—समृद्धि=सामिद्धि, ईषत्=ईसि, हर=हीर, ध्वनि=झुणि, शय्या=सेज्जा, पद्म=पोम्म; यथा=जह, सदा=सइ, स्त्यान=थीण, सास्ना=सुण्हा, आसार=ऊसार, ग्राह्य=गेज्झ, आली=ओली; इति=इअ, पथिन्=पह, जिह्वा=जीहा, द्विवचन=दुवअण, पिण्ड=पेंड, द्विधाकृत=दोहाइअ; हरीतकी=हरडई, कश्मीर=कम्हार, पानीय=पाणिअ, जीर्ण=जुण्ण, हीन=हूण, पीयूष=पेऊस; मुकुल=मउल, भ्रुकुटि=भिउडि, क्षुत=छीअ, मुसल=मूसल, तुण्ड=तोंड; सूक्ष्म=सण्ह, उद्व्यूढ=उव्वीढ, वातूल=वाउल, नूपुर=णेउर, तूणीर=तोणीर; वेदना=विअणा, स्तेन=थूण; मनोहर=मणहर, गो=गउ, गाअ; सोच्छ्वास=सूसास।

२। **महाराष्ट्री में ऋ, ॠ, ऌ, ॡ ये स्वर सर्वथा लुप्त हो गये हैं।**

३। **ऋ के स्थान में भिन्न भिन्न स्वर एवं रि होता है, यथा**—तृण=तण, मृदुक=माउक्क, कृपा=किवा, मातृ=माइ, माउ; वृत्तान्त=वुत्तंत, मृषा=मुसा, मूसा, मोसा; वृन्त=विंट, वेंट, वोंट; ऋतु=उउ, रिउ; ऋद्धि=रिद्धि, ऋक्ष=रिच्छ; सदृश=सरिस, दृप्त=दरिअ।

४। **ऌ के स्थान में इलि होता है, जैसे**—क्लृप्त=किलित्त, क्लृन्न=किलिण्ण।

५। ऐ का **प्रयोग भी * प्रायः महाराष्ट्री में नहीं है। उसके स्थान में सामान्यतः** ए **और विशेषतः** अइ **होता है, यथा**—शैल=सेल, ऐरावण=एरावण, वैद्य=वेज्ज, वैधव्य=वेहव्व; सैन्य=सेण्ण, सइण्ण; कैलाश=केलास, कइलास; दैव=देव्व, दइव; ऐश्वर्य=अइसरिअ, दैन्य=दइण्ण।

६। औ **का व्यवहार भी * प्रायः महाराष्ट्री में नहीं है। उसके स्थान में सामान्यतः** ओ **और विशेष स्थलों में** उ **या** अउ **होता है; यथा**—कौमुदी=कोमुई, यौवन=जोव्वण, दौवारिक=दुवारिअ, पौलोमी=पुलोमी; कौरव=कउरव, गौड=गउड, सौध=सउह।

असंयुक्त व्यञ्जन।

१। **स्वरों के मध्यवर्ती** क, ग, च, ज, त, द, य, व **इन व्यञ्जनों का प्रायः लोप होता है; जैसे क्रमशः**—लोक=लोअ, नग=णअ, शची=सई, रजत=रअअ, यती=जई, गदा=गआ, वियोग=विओअ, लावण्य=लाअण्ण।

२। **स्वरों के बीच के** ख, घ, थ, ध **और** भ **के स्थान में** ह **होता है, यथा क्रमशः**—शाखा=साहा, श्लाघते=लाहइ, नाथ=णाह, साधु=साहु, सभा=सहा।

३। **स्वरों के बीच के** ट **का** ड **होता है, यथा**—भट=भड, घट=घड।

४। **स्वरों के बीच के** ठ **का** ढ **होता है, जैसे**—मठ=मढ, पठति=पढइ।

५। **स्वरों के बीच के** ड **का** ल **प्रायः होता है, यथा**—गरुड=गरुल, तडाग=तलाअ।

६। **स्वरों के बीच के** त **का अनेक स्थल में** ड **होता है, यथा**—प्रतिभास=पडिहास, प्रभृति=पहुडि, व्यापृत=वावड, पताका=पडाआ।

७। न **के स्थान में सर्वत्र** ण **होता है यथा**—कनक=कणअ, वचन=वअण, नर=णर, नदी=णई, अन्य=अण्ण, दैन्य=दइण्ण †।

---

* संस्कृत के 'अयि' शब्द का महाराष्ट्री में 'ऐ' होता है। इसके सिवा किसी किसी के मत में 'ऐ' तथा 'औ' का भी प्रयोग होता है, जैसे—कैतव=कैअव, कौरव=कौरव; (हे० प्रा० १, १)।

† वररुचि के प्राकृत-व्याकरण के "नो णः सर्वत्र" (२, ४२) सूत्र के अनुसार सर्वत्र 'न' का 'ण' होता है। सेतुबन्ध और गाथासप्तशती में इसी तरह सार्वत्रिक 'ण' पाया जाता है। हेमचन्द्र आदि कई प्राकृत वैयाकरणों के मत से शब्द की आदि के 'न' का विकल्प से 'ण' होता है, यथा—नदी=णई, नई; नर=णर, नर। गउडवहो में णकार का वैकल्पिक प्रयोग देखा जाता है।

८। दो स्वरों के मध्यवर्ती प का कहीं कहीं व और कहीं कहीं लोप होता है, **यथा**—शपथ=सवह, शाप=साव,उपसर्ग=उवसग्ग, रिपु=रिउ, कपि=कइ।

९। स्वरों के बीच के फ के स्थान में कहीं कहीं भ, कहीं कहीं ह और कहीं कहीं ये दोनों होते हैं; **यथा**—रेफ=रेभ, शिफा=सिभा, मुक्ताफल=मुत्ताहल, सफल=सभल, सहल, शेफालिका=सेभालिआ, सेहालिआ।

१०। स्वरों के मध्यवर्ती ब का व होता है, **जैसे**—अलाबू=अलावू, शबल=सवल।

११। आदि के य का ज होता है, **यथा**—यम=जम, यशस्=जस, याति=जाइ।

१२। कृदन्त के अनीय और य प्रत्यय के य का ज होता है, **जैसे**—करणीय=करणिज्ज, पेय=पेज्ज।

१३। अनेक जगह र का ल होता है, **यथा**—हरिद्रा=हलिद्दा, दरिद्र=दलिद्द, युधिष्ठिर=जहुट्ठिल, अङ्गार=इंगाल।

१४। श और ष का सर्वत्र स होता है, **यथा**—शब्द=सद्द, विश्राम=वीसाम, पुरुष=पुरिस, सस्य=सास, शेष=सेस।

१५। अनेक जगह ह का घ होता है, **यथा**—दाह=दाघ, सिंह=सिंघ, संहार=संघार।

१६। कहीं कहीं श, ष और स का छ होता है; **जैसे**—शाव=छाव, षष्ठ=छट्ठ, सुधा=छुहा।

१७। अनेक शब्दों में स्वर-सहित व्यञ्जन का लोप होता है, **यथा**—राजकुल=राउल, आगत=आअ, कालायस=कालास, हृदय=हिअ, पादपतन=पावडण, यावत्=जा, त्रयोदश=तेरह, स्थविर=थेर, बदर=बोर, कदल=केल, कर्णिकार=कणोर, चतुर्दश=चोद्दह, मयूख=मोह।

संयुक्त व्यञ्जन।

१। क्ष के स्थान में प्रायः ख और कहीं कहीं छ और भ होता है; **जैसे**—क्षय=खय, लक्षण=लक्खण, अक्षि=अच्छि, क्षीण=छीण, भीण।

२। त्व, थ्व, द्व और ध्व के स्थान में कहीं कहीं क्रमशः च, छ, ज और भ होता है, **यथा**—ज्ञात्वा=णच्चा, पृथ्वी=पिच्छी, विद्वान=विज्जं, बुद्ध्वा=बुज्झा।

३। ह्रस्व स्वर के परवर्ती थ्य, श्च, त्स और प्स के स्थान में छ होता है; **जैसे**—पथ्य=पच्छ, पश्चात्=पच्छा, उत्साह=उच्छाह, अप्सरा=अच्छरा।

४। द्य, य्य और र्य का ज होता है, **यथा**—मद्य=मज्ज, जय्य=जज्ज, कार्य=कज्ज।

५। ध्य और ह्य का भ होता है, **यथा**—ध्यान=झाण, साध्य=सज्झ, गुह्य=गुज्झ, सह्य=सज्झ।

६। र्त का प्रायः ट होता है, **जैसे**—नर्तकी=णट्टई, कैवर्त=केवट्ट।

७। ष्ट के स्थान में ठ होता है, **यथा**—मुष्टि=मुट्ठि, पुष्ट=पुट्ठ, काष्ठ=कट्ठ, इष्ट=इट्ठ।

८। म्न का ण होता है, **यथा**—निम्न=णिण्ण, प्रद्युम्न=पज्जुण्ण।

९। ज्ञ का ण और ज होता है, **जैसे**—ज्ञान=णाण, जाण; प्रज्ञा=पण्णा, पज्जा।

१०। स्त का थ होता है, **जैसे**—हस्त=हत्थ, स्तोत्र=थोत्त, स्तोक=थोव।

११। ड्म और क्म का प होता है, **यथा**—कुड्मल=कुंपल, रुक्मिणी=रुप्पिणी।

१२। ष्प और स्प का फ होता है, **यथा**—पुष्प=पुप्फ, स्पन्दन=फंदण।

१३। ह्व का भ होता है, **यथा**—जिह्वा=जिब्भा, विह्वल=विब्भल।

१४। न्म और ग्म का म होता है, **जैसे**—जन्मन्=जम्म, मन्मथ=वम्मह, युग्म=जुम्म, तिग्म=तिम्म।

१५। श्म, ष्म, स्म और ह्म का म्ह होता है, **यथा**—कश्मीर=कम्हार, ग्रीष्म=गिम्ह, विस्मय=विम्हअ, ब्राह्मण=बम्हण।

१६। श्न, ष्ण, स्न, ह्न, ह्ण और क्ष्ण के स्थान में ण्ह होता है, **यथा**—प्रश्न=पण्ह, उष्ण=उण्ह, स्नान=ण्हाण, वह्नि=वण्हि, पूर्वाह्ण=पुव्वण्ह, तीक्ष्ण=तिण्ह।

१७। ह्ल का ल्ह होता है, यथा—प्रह्लाद=पल्हाअ, कह्लार=कल्हार।

१८। संयोग में पूर्ववर्ती क, ग, ट, ड, त, द, प, श, ष और स का लोप होता है, जैसे—भुक्त=भुत्त, मुग्ध=मुद्ध, षट्पद=छप्पअ, खड्ग=खग्ग, उत्पल=उप्पल, मुद्गर=मुग्गर, सुप्त=सुत्त, निश्चल=णिच्चल, निष्ठुर=णिट्ठुर, स्खलित=खलिअ।

१६। संयोग में परवर्ती म, न और य का लोप होता है,यथा—स्मर=सर, लग्न=लग्ग, व्याध=वाह।

२०। संयोग में पूर्ववर्ती और परवर्ती सभी ल, व और र का लोप होता है, यथा—उल्का=उक्का, विक्लव=विक्कव, शब्द=सद्द, पक्व=पक्क, अर्क=अक्क, चक्र=चक्क।

२१। संयुक्त अक्षरो के स्थान मे जो जो आदेश ऊपर कहा है उसका और संयुक्त व्यञ्जन के लोप होने पर जो जो व्यञ्जन बाकी रहता है उसका, यदि वह शब्द की आदि में न हो तो, द्वित्व होता है, जैसे—ज्ञात्वा=णच्चा, मद्य=मज्ज, भुक्त=भुत्त, उल्का=उक्का। परन्तु वह आदेश अथवा शेष व्यञ्जन यदि वर्ग का द्वितीय अथवा चतुर्थ अक्षर हो तो द्वित्व न हो कर उसके पूर्व में आदेश अथवा शेष व्यञ्जन के अनन्तर-पूर्व व्यञ्जन का आगम होता है; यथा—लक्षण=लक्खण, पश्चात्=पच्छा, इष्ट=इट्ठ, मुग्ध=मुद्ध।

विश्लेषण।

१। र्ह, र्श, र्ष के मध्य में और संयोग में परवर्ती ल के पूर्व में स्वर का आगम हो कर संयुक्त व्यञ्जनों का विश्लेषण किया जाता है, यथा—अर्हत्=अरह, अरिह, अरुह, आदर्श=आयरिस, हर्ष=हरिस, क्लिष्ट=किलिट्ठ।

व्यत्यय।

१। अनेक शब्दो मे व्यञ्जन के स्थान का व्यत्यय होता है, यथा—करेणू=कणेरू, आलान=आणाल, महाराष्ट्र=मरहट्ठ, हरिताल=हलिआर, लघुक=हलुअ, ललाट=णडाल, गुह्य=गुय्ह, सह्य=सय्ह।

सन्धि।

१। समास में कहीं कहीं ह्रस्व स्वर के स्थान मे दीर्घ और दीर्घ के स्थान में ह्रस्व होता है; यथा—अन्तर्वेदि=अन्तावेइ, पतिगृह=पइहर, यमुनातट=जँउणअड, नदीस्रोतः=णइसोत्त।

२। स्वर पर रहने पर पूर्व स्वर का लोप होता है, जैसे—त्रिदशेशः=तिअसीस।

३। संयुक्त व्यञ्जन का पूर्व स्वर ह्रस्व होता है, जैसे—आस्य=अस्स, मुनीन्द्र=मुणिंद, चूर्ण=चुण्ण, नरेन्द्र=णरिंद, म्लेच्छ=मिलिच्छ, नीलोत्पल=णीलुप्पल।

सन्धि-निषेध।

१। उद्वृत्त (व्यञ्जन का लोप होने पर अवशिष्ट रहे हुए) स्वर की पूर्व स्वर के साथ प्रायः सन्धि नहीं होती है, यथा—निशाकर=णिसाअर, रजनीकर=रअणीअर।

२। एक पद मे स्वरों की सन्धि नहीं होती है, जैसे—पाद=पाअ, गति=गइ, नगर=णअर।

३। इ, ई, उ और ऊ की, असमान स्वर पर रहने पर, सन्धि नहीं होती है, यथा—वग्गेवि अवयासो, दणुइंदो।

४। ए और ओ की परवर्ती स्वर के साथ सन्धि नहीं होती है, यथा—फले आबंधो, आलक्खिमो एण्हिं।

५। आख्यात के स्वर की सन्धि नहीं होती है, जैसे—होइ इह।

नाम-विभक्ति।

१। अकारान्त पुंलिंग शब्द के एकवचन में ओ होता है, जैसे—जिनः=जिणो, वृक्षः=वच्छो।

२। पञ्चमी के एकवचन में त्तो, ओ, उ, हि और लोप होता है और त्तो-भिन्न अन्य प्रत्ययों के प्रसंग में अकार का आकार होता है जैसे—जिनात्=जिणात्तो, जिणाओ, जिणाउ, जिणाहि, जिणा।

३। पञ्चमी के बहुवचन का प्रत्यय त्तो, ओ, उ और हि होता है, एवं त्तो से अन्य प्रत्यय में पूर्व के अ का आ होता है, हि के प्रसंग में ए भी होता है, यथा—जिणात्तो, जिणाओ, जिणाउ, जिणाहि, जिणेहि।

४। पञ्चमी के एकवचन के प्रत्यय के स्थान में हिंतो और बहुवचन के प्रत्यय के स्थान में हिंतो और सुंतो इन स्वतन्त्र शब्दों का भी प्रयोग होता है, यथा—जिनात्=जिणा हिंतो; जिनेभ्यः=जिणा हिन्तो, जिणे हिन्तो, जिणा सुंतो, जिणे सुंतो।

५। षष्ठी के एकवचन का प्रत्यय स्स होता है, यथा—जिणस्स, मुणिस्स, तरुस्स।

६। अस्मत् शब्द के प्रथमा के एकवचन के रूप म्मि, अम्मि, अम्हि, हं, अहं और अहयं होता है।

७। अस्मत् शब्द के प्रथमा के बहुवचन के रूप अम्ह, अम्हे, अम्हो, मो, वयं और भे होता है।

८। अस्मत् शब्द के षष्ठी का बहुवचन णे, णो, मज्झ, अम्ह, अम्हं, अम्हे, अम्हो, अम्हाण, ममाण, महाण और मज्झाण होता है।

९। युष्मत् शब्द के षष्ठी का एकवचन तइ, तु, ते, तुम्हं, तुह, तुहं, तुव, तुम, तुमे, तुमो, तुमाइ, दि, दे, इ, ए, तुब्भ, तुम्ह, तुज्झ, उब्भ, उम्ह, उज्झ और उय्ह होता है।

लिङ्ग-व्यत्यय।

१। संस्कृत में जो शब्द केवल पुंलिंग है, उनमें से कईएक महाराष्ट्री में स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग भी हैं, यथा—प्रश्नः=पण्हो, पण्हा; गुणाः=गुणा, गुणाइं; देवाः=देवा, देवाणि।

२। अनेक जगह स्त्रीलिंग के स्थान में पुंलिंग होता है, यथा—शरत्=सरओ, प्रावृट्=पाउसो, विद्युता=विज्जुणा।

३। संस्कृत के अनेक क्लीबलिंग शब्दों का प्रयोग महाराष्ट्री में पुंलिंग और स्त्रीलिंग में भी होता है, यथा—यशः=जसो, जन्म=जम्मो, अक्षि=अच्छी, पृष्ठम्=पिट्ठी, चौर्यम्=चोरिआ।

आख्यात।

१। ति और ते प्रत्ययों के त का लोप होता है, जैसे—हसति=हसइ, हसए; रमते=रमइ, रमए।

२। परस्मैपद और आत्मनेपद का विभाग नहीं है, महाराष्ट्री में सभी धातु उभयपदी की तरह हैं।

३। भूतकाल के ह्यस्तन, अद्यतन और परोक्ष विभाग न होकर एक ही तरह के रूप होते हैं। और भूतकाल में आख्यात की जगह त-प्रत्ययान्त कृदन्त का ही प्रयोग अधिक होता है।

४। भविष्यत्-काल के भी संस्कृत की तरह श्वस्तन और भविष्यत् ऐसे दो विभाग नहीं हैं।

५। भविष्यत्काल के प्रत्ययों के पहले हि होता है, यथा—हसिष्यति=हसिहिइ, करिष्यति=करिहिइ।

६। वर्तमान काल के, भविष्यत्काल के और विधि-लिंग और आज्ञार्थक प्रत्ययों के स्थान में ज्ज और ज्जा होता है, यथा—हसति, हसिष्यति, हसेत्, हसतु=हसेज्ज, हसेज्जा।

७। भाव और कर्म में ईअ और इज्ज प्रत्यय होते हैं, यथा—हस्यते=हसीअइ, हसिज्जइ।

कृदन्त।

१। शीलाद्यर्थक तृ-प्रत्यय के स्थान में इर होता है, यथा—गन्तृ=गमिर, नमनशील=णमिर।

२। त्वा-प्रत्यय के स्थान में तुम्, अ, तूण, तुआण और त्ता होता है, जैसे—पठित्वा=पढिउं पढिअ, पढिऊण, पढिउआण, पढित्ता।

तद्धित।

१। त्व-प्रत्यय के स्थान में त्त और त्तण होता है, यथा—देवत्व=देवत्त, देवत्तण।

(१०) अपभ्रंश।

'अपभ्रंश' शब्द का सामान्य और विशेष अर्थ।

महर्षि पतञ्जलि ने अपने महाभाष्य में लिखा है कि "भूयांसोऽपशब्दाः, अल्पीयांसः शब्दाः। एकैकस्य हि शब्दस्य बहवोऽपभ्रंशाः, तद्यथा—गौरित्यस्य शब्दस्य गावी, गोणी, गोता, गोपोतलिका इत्येवमादयोऽपभ्रंशाः" अर्थात् अपशब्द बहुत और शब्द (शुद्ध) थोड़े हैं, क्योंकि एक एक शब्द के बहुत अपभ्रंश हैं, जैसे 'गौः' इस शब्द के गावी, गोणी, गोता, गोपोतलिका इत्यादि अपभ्रंश हैं। यहाँ पर 'अपभ्रंश' शब्द अपशब्द के अर्थ में ही व्यवहृत है और अपशब्द का अर्थ भी 'संस्कृत-व्याकरण से असिद्ध शब्द' है, यह स्पष्ट है। उक्त उदाहरणों में 'गावी' और 'गोणी' ये दो शब्दों का प्रयोग प्राचीन * जैन-सूत्र-ग्रन्थों में पाया जाता है और † चंड तथा ‡ आचार्य हेमचन्द्र आदि प्राकृत-वैयाकरणों ने भी ये दो शब्द अपने अपने प्राकृत-व्याकरणों में लक्षण-द्वारा सिद्ध किये हैं। दण्डी ने अपने काव्यादर्श में पहले प्राकृत और अपभ्रंश का अलग अलग निर्देश करते हुए काव्य में व्यवहृत आभीर-प्रभृति की भाषा को अपभ्रंश कही है और बाद में यह लिखा है कि 'शास्त्र में संस्कृत-भिन्न सभी भाषायें अपभ्रंश कही गई हैं' §। यहाँ पर दण्डी ने शास्त्र-शब्द का प्रयोग महाभाष्य-प्रभृति व्याकरण के अर्थ में ही किया है। पतञ्जलि-प्रभृति संस्कृत-वैयाकरणों के मत में संस्कृत-भिन्न सभी प्राकृत-भाषायें अपभ्रंश के अन्तर्गत है, यह ऊपर के उनके लेख से स्पष्ट है। परन्तु प्राकृत-वैयाकरणों के मत में अपभ्रंश भाषा प्राकृत का ही एक अवान्तर भेद है। काव्यालंकार की टीका में नमिसाधु ने लिखा है कि "प्राकृतमेवापभ्रंशः" (२, १२) अर्थात् अपभ्रंश भी शौरसेनी, मागधी आदि की तरह एक प्रकार का प्राकृत ही है। उक्त क्रमिक उल्लेखों से यह स्पष्ट है कि पतञ्जलि के समय में जिस अपभ्रंश शब्द का 'संस्कृत-व्याकरण-असिद्ध (कोई भी प्राकृत)' इस सामान्य अर्थ में प्रयोग होता था उसने आगे जा कर क्रमशः 'प्राकृत का एक भेद' इस विशेष अर्थ को धारण किया है। हमने भी यहाँ पर अपभ्रंश शब्द का इस विशेष अर्थ में ही व्यवहार किया है।

निदर्शन।

अपभ्रंश भाषा के निदर्शन विक्रमोर्वशी, धर्माभ्युदय आदि नाटक-ग्रन्थों में, हरिवंशपुराण, पउमचरिअ (स्वयंभूदेवकृत), भविसयत्तकहा, संजममंजरी, महापुराण, यशोधरचरित, नागकुमारचरित, कथाकोश, पार्श्वपुराण, सुदर्शनचरित, करकंडुचरित, जयतिहुअणस्तोत्र, विलासवईकहा, सणकुमारचरिअ, सुपासनाहचरिअ, कुमारपालचरित, कुमारपालप्रतिबोध, उपदेशतरंगिणी प्रभृति काव्य-ग्रन्थों में, प्राकृतलक्षण, सिद्धहेमचन्द्रव्याकरण (अष्टम अध्याय), संक्षिप्तसार, षड्भाषाचन्द्रिका, प्राकृतसर्वस्व वगैरः व्याकरणों में और प्राकृतपिङ्गल-नामक छन्द-ग्रन्थ में पाये जाते हैं।

प्रकृति और समय।

डो. होर्नलि के मत में जिस तरह आर्य लोगो की कथ्य भाषायें अनार्य लोगों के मुख से उच्चारित होने के कारण जिस विकृत रूप को धारण कर पायी थीं वह पैशाची भाषा है और वह कोई भी प्रादेशिक भाषा नहीं है, उस तरह आर्यो की कथ्य भाषायें भारत के आदिम-निवासी अनार्य लोगो की भिन्न भिन्न भाषाओं के प्रभाव से जिन रूपान्तरों को प्राप्त हुई थी वे ही भिन्न भिन्न अपभ्रंश भाषायें है और ये महाराष्ट्री की अपेक्षा अधिक प्राचीन हैं। डो. होर्नलि

---

* "खीरीणियाओ गावीओ", "गोणं वियालं" (आचा २, ४, ५)।
"णगरगावीओ" (विपा १, २—पत्र २६)।
"गोणाणं सगेल्लं" (व्यवहारसूत्र, उ० ४)।

† "गोर्णावी" (प्राकृतलक्षण २, १६)। ‡ "गोणादयः" (हे० प्रा० २, १७४)।

§ "आभीरादिगिरः काव्येष्वपभ्रंश इति स्मृताः।
शास्त्रे तु संस्कृतादन्यदपभ्रंशतयोदितम" (१, ३६)।

के इस मत का सर ग्रियर्सन-प्रभृति आधुनिक भाषातत्त्वज्ञ स्वीकार नहीं करते हैं। सर ग्रियर्सन के मत में भिन्न भिन्न प्राकृत भाषायें साहित्य और व्याकरण में नियन्त्रित होकर जन-साधारण में अप्रचलित होने के कारण जिन नूतन कथ्य भाषाओं की उत्पत्ति हुई थी वे ही अपभ्रंश हैं। ये अपभ्रंश-भाषायें ख्रिस्तीय पञ्चम शताब्दी के बहुत काल पूर्व से ही कथ्य भाषाओं के रूप में व्यवहृत होती थीं, क्योंकि चण्ड के प्राकृत-व्याकरण में और कालिदास की विक्रमोर्वशी में इसके निदर्शन पाये जाने के कारण यह निश्चित है कि ख्रिस्तीय पञ्चम शताब्दी के पहले से ही ये साहित्य में स्थान पाने लगी थीं। ये अपभ्रंश-भाषायें प्रायः दशम शताब्दी पर्यन्त साहित्य की भाषायें थीं। इसके बाद फिर जन-साधारण में अप्रचलित होने से जिन नूतन कथ्य भाषाओं की उत्पत्ति हुई वे हो हिन्दी, बंगला, गूजराती वगैरः आधुनिक आर्य कथ्य भाषायें हैं। इनका उत्पत्ति-समय ख्रिस्त की नववीं या दशवीं शताब्दी है। सुतरां, अपभ्रंश-भाषायें ख्रिस्त की पञ्चम शताब्दी के पूर्व से ले कर नववीं या दशवीं शताब्दी पर्यन्त साहित्य की भाषाओं के रूप में प्रचलित थीं। इन अपभ्रंश-भाषाओं की प्रकृति वे विभिन्न प्राकृत-भाषायें हैं जो भारत के विभिन्न प्रदेशों में इन अपभ्रंशों की उत्पत्ति के पूर्वकाल में प्रचलित थीं।

भेद। अपभ्रंश के बहुत भेद हैं, प्राकृतचन्द्रिका में इसके ये सताईस भेद बताये गये हैं :—

"ब्राचडो लाटवैदर्भावुपनागरनागरौ। वार्बरावन्त्यपाञ्चालटाक्कमालवकैकयाः ॥
गौडोढ्रहैवपाश्चात्यपाण्ड्यकौन्तलसैंहलाः। कालिङ्ग्यप्राच्यकार्णाटकाञ्च्यद्राविडगौर्जराः ॥
आभीरो मध्यदेशीयः सूक्ष्मभेदव्यवस्थिताः। सप्तविंशत्यपभ्रंशा वैतालादिप्रभेदतः ※ ॥

मार्कण्डेय ने अपने प्राकृतसर्वस्व में प्राकृतचन्द्रिका से सताईस अपभ्रंशों के जो लक्षण और उदाहरण उद्धृत किये हैं ‡ वे इतने अपर्याप्त और अस्पष्ट हैं कि खुद मार्कडेय ने भी इनको सूक्ष्म कह कर नगण्य बताये है और इनका पृथग् पृथग् लक्षण-निर्देश न कर उक्त समस्त अपभ्रंशों का नागर, ब्राचड और उपनागर इन तीन प्रधान भेदों में ही अन्तर्भाव माना है §। परन्तु यह बात मानने योग्य नहीं है, क्योंकि जब यह सिद्ध है कि जिन भाषाओं का उत्पत्ति-स्थान भिन्न भिन्न प्रदेश है और जिनकी प्रकृति भी भिन्न भिन्न प्रदेश की भिन्न भिन्न प्राकृत भाषायें हैं तब वे अपभ्रंश भाषायें भी भिन्न भिन्न ही हो सकती हैं और उन सब का समावेश एक दूसरे में नहीं किया जा सकता। वास्तव में बात यह है कि वे सभी अपभ्रंश भिन्न भिन्न होने पर भी साहित्य में निबद्ध न होने के कारण उन सब के निदर्शन ही उपलब्ध नहीं हो सकते थे। इसीसे प्राकृतचन्द्रिकाकार न उनके स्पष्ट लक्षण ही कर पाये हैं और न तो उदाहरण ही अधिक दे सके हैं। यही कारण है कि मार्कण्डेय ने भी इन भेदों को सूक्ष्म कहकर टाल दिये हैं। जिन अपभ्रंश भाषाओं के साहित्य-निबद्ध होने से निदर्शन पाये जाते हैं उनके लक्षण और उदाहरण आचार्य हेमचन्द्र ने केवल अपभ्रंश के सामान्य नाम से और मार्कण्डेय ने अपभ्रंश के तीन विशेष नामों से दिये हैं। आचार्य

※ वङ्गीयसाहित्यपरिषत्-पत्रिका, १३१७।

‡ "टाक्कं टक्कभाषानागरोपनागरादिभ्योऽवधारणीयम्। तुबहुला मालवी। वाडीबहुला पाञ्चाली। उल्लप्राया वैदर्भी। सबोधनाढ्या लाटी। ईकारोकारबहुला औढ्री। सवीप्सा कैकेयी। समासाढ्या गौडी। डकारबहुला कौन्तली। एकारिणी च पाण्ड्या। युक्ताढ्या सैंहली। हियुक्ता कालिङ्गी। प्राच्या तद्देशीयभाषाढ्या। ज(भ)ट्टादिबहुलाऽऽभीरी। वर्णविपर्ययात् कार्णाटी। मध्यदेशीया तद्देशीयाढ्या। संस्कृताढ्या च गौर्जरी। चकारात् पूर्वोक्तटक्कभाषाग्रहणम्। रत(ल)हभा व्यत्ययेन पाश्चात्या। रेफव्यत्ययेन द्राविडी। ढकारबहुला वैतालिकी। एओबहुला काञ्ची। शेषा देशभाषाविभेदात्।"

§ "नागरो ब्राचडश्चोपनागरश्चेति ते त्रयः। अपभ्रंशाः परे सूक्ष्मभेदत्वान्न पृथङ् मताः" (प्रा० स० पृष्ठ ३)। "अन्येषामपभ्रंशानामेष्वेवान्तर्भाव." (प्रा० स० पृष्ठ १२२)।

हैमचन्द्र ने 'अपभ्रंश' इस सामान्य नाम से और मार्कण्डेय ने 'नागरापभ्रंश' इस विशेष नाम से जो लक्षण और उदाहरण दिये है वे राजस्थानी-अपभ्रंश या राजपूताना तथा गूजरात प्रदेश के अपभ्रंश से ही संबन्ध रखते है। व्राचडापभ्रंश के नाम से सिन्धप्रदेश के अपभ्रंश के लक्षण और उदाहरण मार्कण्डेय ने अपने व्याकरण में दिये हैं, और उपनागर-अपभ्रंश का कोई लक्षण न देकर केवल नागर और व्राचड के मिश्रण को 'उपनागर अपभ्रंश' कहा है। इसके सिवा सौरसेनी-अपभ्रंश के निदर्शन मध्यदेश के अपभ्रंश में पाये जाते हैं। अन्य अन्य प्रदेशों के अथवा महाराष्ट्री, अर्धमागधी, मागधी और पैशाची भाषाओं के जो अपभ्रंश थे उनका कोई साहित्य उपलब्ध न होने से कोई निदर्शन भी नहीं पाये जाते है।

उत्पत्ति-स्थान। भिन्न भिन्न अपभ्रंश भाषा का उत्पत्ति-स्थान भी भारतवर्ष का भिन्न भिन्न प्रदेश है। रुद्रट ने और वाग्भट ने अपने अपने अलङ्कार-ग्रन्थ में यह बात संक्षेप में अथच स्पष्ट रूप से इस तरह कही है :—

"षष्ठोऽत्र भूरिभेदो देशविशेषादपभ्रंशः" (काव्यालङ्कार २, १२),

"अपभ्रंशस्तु यच्छुद्धं तत्तद्देशेषु भाषितम्" (वाग्भटालङ्कार २, ३)।

आधुनिक आर्य कथ्य भाषाओं की प्रकृति। ख्रिस्त की पञ्चम शताब्दी के पूर्व से लेकर दशम शताब्दी पर्यन्त भारत के भिन्न भिन्न प्रदेश में कथ्य भाषाओं के रूप में प्रचलित जिस जिस अपभ्रंश भाषा से भिन्न भिन्न प्रदेश की जो जो आधुनिक आर्य कथ्य भाषा (Modern Vernacular) उत्पन्न हुई हैं उसका विवरण यों है :—

महाराष्ट्री-अपभ्रंश से मराठी और कोंकणी भाषा।

मागधी-अपभ्रंश की पूर्व शाखा से बंगला, उड़िया और आसामी भाषा।

मागधी-अपभ्रंश की बिहारी शाखा से मैथिली, मगही और भोजपुरिया।

अर्धमागधी-अपभ्रंश से पूर्वीय हिन्दी भाषायें अर्थात् अवधी, बघेली और छत्तीसगढी।

सौरसेनी-अपभ्रंश से बुन्देली, कनौजी, व्रजभाषा, बॉंगरू, हिन्दी या उर्दू ये पाश्चात्य हिन्दी भाषायें।

नागर-अपभ्रंश से राजस्थानी, मालवी, मेवाडी, जयपुरी, मारवाडी तथा गूजराती भाषा।

पालि से सिंहली और मालद्वीवन।

टाक्की अथवा ढाक्की से लहण्डी या पश्चिमीय पंजाबी।

टाक्की-अपभ्रंश (सौरसेनी के प्रभाव-युक्त) से पूर्वीय पंजाबी।

व्राचड-अपभ्रंश से सिन्धी भाषा।

पैशाची-अपभ्रंश से काश्मीरी भाषा।

लक्षण। नागर-अपभ्रंश के प्रधान प्रधान लक्षण ये हैं :—

वर्ण-परिवर्तन।

१। भिन्न भिन्न स्वरों के स्थान में भिन्न भिन्न स्वर होते है; यथा—कृत्य=कच्च, काच; वचन=वेण, वीण; बाहु=बाह, बाहा, बाहु; पृष्ठ=पट्ठि, पिट्ठि, पुट्ठि; तृण=तण, तिण, तृण; सुकृत=सुकिद, सुकृद; लेखा=लिह, लीह, लेह।

२। स्वरों के मध्यवर्ती असंयुक्त क, ख, त, थ, प और फ के स्थान में प्रायः क्रमश. ग, घ, द, ध, व और भ होता है; यथा—विच्छेदकर=विच्छोहगर; सुख=सुघ, कथित=कधिद, शपथ=सवध, सफल=सभल।

३। अनादि और असंयुक्त म के स्थान मे वैकल्पिक सानुनासिक व होता है, यथा—कमल=कवॅल, कमल; भ्रमर=भवॅर, भमर।

४। संयोग में परवर्ती र का विकल्प से लोप होता है; यथा—प्रिय=पिय, प्रिय; चन्द्र=चन्द, चन्द्र।

५। कहीं कहीं संयोग के परवर्ती य का विकल्प से र होता है, जैसे—व्यास=व्रास, वास; व्याकरण=व्रागरण, वागरण।

६। महाराष्ट्री में जहाँ म्ह होता है वहाँ अपभ्रंश में म्भ और म्ह दोनों होते हैं, यथा—ग्रीष्म=गिम्भ, गिम्ह; श्लेष्म=सिम्भ, सिम्ह।

नाम-विभक्ति।

१। विभक्ति के प्रसङ्ग में ह्रस्व स्वर का दीर्घ और दीर्घ का ह्रस्व प्रायः होता है, यथा—श्यामलः=सामला, खड्गाः=खग्ग; दृष्टिः=दिट्ठि, पुत्री=पुत्ति।

२। साधारणतः सातों विभक्ति के जो प्रत्यय हैं वे नीचे दिये जाते हैं। लिंग-भेद मे और शब्द-भेद में अनेक विशेष प्रत्यय भी हैं, जो विस्तार-भय से यहाँ नहीं दिये गये हैं।

	एकवचन।	बहुवचन।
प्रथमा	उ, हो	०
द्वितीया	,,	०
तृतीया	एं	हि
चतुर्थी	सु, हो, स्सु	हं, ०
पञ्चमी	हे, हु	हुं
षष्ठी	सु, हो, स्सु	हं, ०
सप्तमी	इ, हि	हि

आख्यात-विभक्ति।

		एकवचन।	बहुवचन।
१।	१ पु०	उं	हुं
	२ पु०	हि	हु
	३ पु०	इ, ए	हिं

२। मध्यम पुरुष के एकवचन में आज्ञार्थ मे इ, उ और ए होते है, यथा—कुरु=करि, करु, करे।

३। भविष्यत्काल में प्रत्यय के पूर्व में स आगम होता है—यथा—भविष्यति=होसइ।

कृदन्त।

१। तव्य-प्रत्यय के स्थान में इएव्वउं, एव्वउं और एवा होता है, यथा—कर्तव्य=करिएव्वउं, करेव्वउ, करेवा।

२। त्वा के स्थान में इ, इउ, इवि, अवि, एप्पि, एप्पिणु, एवि, एविणु होते हैं, यथा—कृत्वा=करि, करिउ, करिवि, करवि, करेप्पि, करेप्पिणु, करेवि, करेविणु।

३। तुम्-प्रत्यय की जगह एवं, अण, अणहं, अणहि, एप्पि, एप्पिणु, एवि, एविणु होते है, यथा—कर्तुम्=करेवं, करण, करणहं, करणहिं, करेप्पि, करेप्पिणु, करेवि, करेविणु।

४। शीलाद्यर्थक तृ-प्रत्यय के स्थान में अणअ होता है, जैसे—कर्तृ=करणअ, मारयितृ=मारणअ।

तद्धित।

१। त्व और ता के स्थान मे प्पण होता है, यथा—देवत्व=देवप्पण, महत्त्व=वड्डुप्पण।

हम पहले यह कह आये हैं कि वैदिक और लौकिक संस्कृत के शब्दों के साथ तुलना करने पर जिस प्राकृत भाषा में वर्ण-लोप-प्रभृति परिवर्तन जितना अधिक प्रतीत हो, वह उतनी ही परवर्ती काल में उत्पन्न मानी जानी चाहिए। इस नियम के अनुसार, हम देखते हैं कि महाराष्ट्री प्राकृत में व्यञ्जनों का लोप सर्वापेक्षा अधिक है, इससे वह अन्यान्य प्राकृत-भाषाओं के पीछे उत्पन्न हुई है, ऐसा अनुमान किया जाता है। परन्तु अपभ्रंश में उक्त नियम का व्यत्यय देखने में आता है, क्योंकि भिन्न भिन्न प्रदेशों की अपभ्रंश-भाषायें यद्यपि महाराष्ट्री के बाद ही उत्पन्न हुई हैं तथापि महाराष्ट्री में जो व्यञ्जन-वर्ण-लोप देखा जाता है, अपभ्रंश में उसकी अपेक्षा अधिक नहीं, बल्कि कम ही वर्ण-लोप पाया जाता है और ऋ स्वर तथा संयुक्त रकार भी विद्यमान है। इस पर से यह अनुमान करना असंगत नहीं है कि वर्ण-लोप की गति ने महाराष्ट्री प्राकृत में अपनी चरम सीमा को पहुँच कर उसको (महाराष्ट्री को) अस्थि-हीन माँस-पिण्ड की तरह स्वर-बहुल आकार में परिणत कर दिया। अपभ्रंश में उसीकी प्रतिक्रिया शुरू हुई, और प्राचीन स्वर एवं व्यञ्जनों को फिर स्थान दे कर भाषा को भिन्न आदर्श में गठित करने की चेष्टा हुई। उस चेष्टा का ही यह फल है कि पिछले समय में संस्कृत-भाषा का प्रभाव फिर प्रतिष्ठित होकर आधुनिक आर्य कथ्य भाषायें उत्पन्न हुई हैं।

अपभ्रंशों का भिन्न आदर्श में गठन।

प्राकृत पर संस्कृत का प्रभाव।

जैन और बौद्धों ने संस्कृत भाषा का परित्याग कर उस समय की कथ्य भाषा में धर्मोपदेश को लिपि-बद्ध करने की प्रथा प्रचलित की थी। इससे जो दो नयी साहित्य-भाषाओं का जन्म हुआ था, वे जैन सूत्रों की अर्धमागधी और बौद्ध धर्म-ग्रन्थ की पालि भाषा हैं। परन्तु ये दो साहित्य-भाषायें और अन्यान्य समस्त प्राकृत-भाषायें संस्कृत के प्रभाव को उल्लंघन नहीं कर सकी हैं। इस बात का एक प्रमाण तो यह है कि इन समस्त प्राकृत-भाषाओं में संस्कृत-भाषा के अनेक शब्द अविकल रूप में गृहीत हुए हैं। ये शब्द तत्सम कहे जाते हैं। यद्यपि इन तत्सम शब्दों ने प्रथम स्तर की प्राकृत-भाषाओं से ही संस्कृत में स्थान और रक्षण पाया था, तो भी यह स्वीकार करना ही होगा कि ये सब शब्द परवर्ती काल की प्राकृत-भाषाओं में जो अपरिवर्तित रूप में व्यवहृत होते थे वह संस्कृत-साहित्य का ही प्रभाव था।

इसके अतिरिक्त, संस्कृत के ही प्रभाव से बौद्धों में एक मिश्र-भाषा उत्पन्न हुई थी। महायान-बौद्धों के महावैपुल्यसूत्र-नामक कतिपय सूत्र-ग्रन्थ हैं। ललितविस्तर, सद्धर्म-पुण्डरीक, चन्द्रप्रदोपसूत्र प्रभृति इसके अन्तर्गत हैं। इन ग्रन्थों की भाषा में अधिकांश शब्द तो संस्कृत के हैं ही, अनेक प्राकृत-शब्दों के आगे भी संस्कृत की विभक्ति लगाकर उनको भी संस्कृत के अनुरूप किये गये हैं। पाश्चात्य विद्वानों ने इस भाषा को 'गाथा' नाम दिया है। परन्तु यहाँ पर यह कहना आवश्यक है कि इसका यह 'गाथा' नाम असंगत है, क्योंकि यह संस्कृत-मिश्रित प्राकृत का प्रयोग उक्त ग्रन्थों के केवल पद्यांशों मे ही नहीं, बल्कि गद्यांश में भी देखा जाता है। इससे इन ग्रन्थों की भाषा को 'गाथा' न कह कर 'प्राकृत-मिश्र संस्कृत' या 'संस्कृत-मिश्र प्राकृत' अथवा संक्षेप में 'मिश्र-भाषा' ही कहना उचित है।

गाथा-भाषा।

डो. बर्नफ और डो. राजेन्द्रलाल मित्र का मत है कि 'संस्कृत-भाषा क्रमशः परिवर्तित होती हुई प्रथम गाथा-भाषा के रूप में और बाद मे पालि-भाषा के आकार में परिणत हुई है। इस तरह गाथा-भाषा संस्कृत और पालि की मध्यवर्ती होने के कारण इन दोनों के (संस्कृत और पालि के) लक्षणों से आक्रान्त है।'

यह सिद्धान्त सर्वथा भ्रान्त है, क्योंकि हम यह पहले ही अच्छी तरह प्रमाणित कर चुके हैं कि संस्कृत-भाषा क्रमशः परिवर्तित होकर पालि-भाषा में परिणत नहीं हुई है, किन्तु पालि-भाषा वैदिक-युग की एक प्रादेशिक भाषा से ही उत्पन्न हुई है। और, गाथा-भाषा पालि-भाषा के पहले प्रचलित न थी, क्योंकि गाथा-भाषा के समस्त ग्रन्थों का रचना-काल ख्रिस्त-पूर्व दो सौ वर्षों से लेकर ख्रिस्त की तृतीय शताब्दी पर्यन्त का है, इससे गाथा-भाषा बहुत तो पालि-भाषा की समकालीन हो सकती है, न कि पालि-भाषा की पूर्वावस्था। यह भाषा संस्कृत के प्रभाव को कायम रख कर विभिन्न प्राकृत-भाषाओं के मिश्रण से बनी है, इसमें संदेह नहीं है। यही कारण है कि इसके शब्दों को प्रस्तुत कोष में स्थान नहीं दिया गया है।

गाथा-भाषा का थोड़ा नमूना ललितविस्तर से यहां उद्धृत किया जाता है :—

"अध्रुवं त्रिभवं शरदभ्रनिभं, नटरङ्गसमा जगि जन्मि च्युति।
गिरिनद्यसमं लघुशीघ्रजवं, व्रजतायु जगे यथ विद्यु नभे॥ १॥"
"उदकचन्द्रसमा इमि कामगुणाः, प्रतिबिम्ब इवा गिरिघोष यथा।
प्रतिभाससमा नटरङ्गसमास्तथ स्वप्नसमा विदितार्यजनैः॥ १॥" (पृष्ठ २०४, २०६)।

बुद्धदेव और उसके सारथि की आपस में बातचीत :—

"एषो हि देव पुरुषो जरयाभिभूतः, क्षीणेन्द्रियः सुदुःखितो बलवीर्यहीनः।
बन्धुजनेन परिभूत अनाथभूतः, कार्यासमर्थ अपविद्ध वनेव दारु॥
कुलधर्म एष अयमस्य हि त्वं भणाहि, अथवापि सर्वजगतोऽस्य इयं ह्यवस्था।
शीघ्रं भणाहि वचनं यथभूतमेतत्, श्रुत्वा तथार्थमिह योनि संचिन्तयिष्ये॥
नैतस्य देव कुलधर्म न राष्ट्रधर्मः, सर्वे जगस्य जर यौवन धर्षयाति।
तुभ्यंपि मातृपितृबान्धवज्ञातिसंघो, जरया अमुक्त नहि अन्यगतिर्जनस्य॥
धिक् सारथे अबुधबालजनस्य बुद्धिर्यद् यौवनेन मदमत्त जरां न पश्ये।
आवर्तयस्विह रथं पुनरहं प्रवेक्ष्ये, किं मह्य क्रीडरतिभिर्जरया श्रितस्य॥"

संस्कृत पर प्राकृत का प्रभाव।

पहले जो यह कहा जा चुका है कि वैदिक काल के मध्यदेश-प्रचलित प्राकृत से ही वैदिक संस्कृत उत्पन्न हुआ है और वह साहित्य और व्याकरण के द्वारा क्रमशः मार्जित और नियन्त्रित होकर अन्त में लौकिक संस्कृत मे परिणत हुआ है; एवं प्राकृत के अन्तर्गत समस्त तत्सम शब्द संस्कृत से नहीं, परन्तु प्रथम स्तर के प्राकृत से ही संस्कृत में और द्वितीय स्तर के प्राकृत में आये हैं; प्राकृत के अन्तर्गत तद्भव शब्द भी संस्कृत से प्राकृत में गृहीत न होकर प्रथम स्तर के प्राकृत से ही क्रमशः परिवर्तित होकर परवर्ती काल के प्राकृत में स्थान पाये है और संस्कृत व्याकरण-द्वारा नियन्त्रित होने से वे शब्द संस्कृत में अपरिवर्तित रूप में ही रह गये हैं; इसी तरह प्राकृत के अधिकांश देशी-शब्द भी वैदिक काल के मध्यदेश-भिन्न अन्यान्य प्रदेशों के आर्य-उपनिवेशों की प्राकृत-भाषाओं से ही बाद की प्राकृत-भाषाओं में आये हैं; इससे उन्होंने (देशीशब्दों ने) मध्यदेश के प्राकृत से उत्पन्न वैदिक और लौकिक संस्कृत में कोई स्थान नहीं पाया है। इस पर से यह सहज ही समझा जा सकता है कि प्राकृत ही संस्कृत भाषा का मूल है।

अब इस जगह हम यह बताना चाहते है कि प्राकृत से न केवल वैदिक और लौकिक संस्कृत भाषायें उत्पन्न ही हुई है, बल्कि संस्कृत ने मृत होकर साहित्य-भाषा मे परिणत होने पर भी अपनी अंग-पुष्टि के लिए प्राकृत से ही अनेक शब्दों का संग्रह किया है। ऋग्वेद आदि मे प्रयुक्त वंक (वक्र), वहू (वधू),

मेह (मेघ), पुराण (पुरातन), तितउ (चालनी), उच्छेक (उत्सेक), प्रभृति शब्द और लौकिक संस्कृत में प्रचलित तितउ (चालनी), आवुत्त (भगिनीपति), खुर (क्षुर), गोखुर (गोक्षुर), गुग्गुलु (गुल्गुलु), छुरिका (क्षुरिका), अच्छ (ऋक्ष), कच्छ (कक्ष), पियाल (प्रियाल), गल्ल (गण्ड), चन्दिर (चन्द्र), इन्दिर (इन्द्र), शिथिल (श्लथ), मरन्द (मकरन्द), किसल (किसलय), हाला (सुराविशेष), हेवाक (व्यसन), दाढा (दंष्ट्रा), खिडक्किका (लघुद्वार, भाषा में खिड़की), जारुज (जरायुज), पुराण (पुरातन), वगैरः शब्द प्राकृत से ही अविकल रूप में गृहीत हुए हैं और मारिष (मार्ष), जहिष्यसि (हास्यसि), ब्रूमि (ब्रवीमि), निकृन्तन (निकर्तन), लटभ (सुन्दर), प्रभृति प्राकृत के ही मूल शब्द मार्जित कर संस्कृत में लिये गये है।

प्राकृत-भाषाओं का उत्कर्ष।

कोई भी कथ्य भाषा क्यों न हो, वह सर्वदा ही परिवर्तन-शील होती है। साहित्य और व्याकरण उसको नियम के बन्धन मे जकड़ कर गति-हीन और अपरिवर्तनीय करते हैं। उसका फल यह होता है कि साहित्य की भाषा क्रमशः कथ्य भाषा से भिन्न हो जाती है और जन-साधारण में अप्रचलित होकर मृत-भाषा मे परिणत होती है। साहित्य की हरकोई भाषा एक समय की कथ्य भाषा से ही उत्पन्न होती है और वह जब मृत-भाषा में परिणत होती है तब कथ्य भाषा से फिर एक नयी साहित्य की भाषा की सृष्टि होती है। इस तरह एक समय की कथ्य भाषा से हो वैदिक और लौकिक संस्कृत उत्पन्न हुई थी और वह साधारण के पक्ष में दुर्बोध होने पर अर्धमागधी, पालि आदि प्राकृत भाषाओं ने साहित्य में स्थान पाया था। ये सब प्राकृत-भाषायें भी समय पाकर जन-साधारण में दुर्बोध हो जाने पर संस्कृत की तरह मृत-भाषा में परिणत हो गई और भिन्न भिन्न प्रदेश की अपभ्रंश-भाषायें साहित्य-भाषाओं के रूप मे व्यवहृत होने लगीं। अपभ्रंश-भाषायें भी जब दुर्बोध होकर मृत-भाषाओं में परिणत हो चली तब हिन्दी, बंगला, गूजराती, मराठी प्रभृति आधुनिक आर्य कथ्य भाषायें साहित्य की भाषाओं के रूप में गृहीत हुई हैं। उक्त समस्त कथ्य भाषायें उस उस युग को साहित्य की मृत-भाषाओं की तुलना में अवश्य ऐसे कतिपय उत्कर्षों से विशिष्ट होनी चाहिएँ जिनकी बदौलत हो ये उस उस समय की मृत-भाषाओं को साहित्य के सिंहासन से च्युत कर उस सिंहासन को अपने अधिकार में कर पायी थीं। अब यहाँ हमें यह जानना जरूरी है कि ये उत्कर्ष कौन थे ?

हरकोई भाषा का सर्व-प्रथम उद्देश्य होता है अर्थ-प्रकाश। इसलिए जिस भाषा के द्वारा जितने स्पष्ट रूप से और जितने अल्प प्रयास से अर्थ-प्रकाश किया जाय वह उतनी ही उत्कृष्ट भाषा मानी जाती है। इन दो कारणों के वश होकर हो भाषा का निरन्तर परिवर्तन साधित होता है और भिन्न भिन्न काल में भिन्न भिन्न कथ्य-भाषाओं से नयी नयी साहित्य-भाषाओं की उत्पत्ति होती है। वैदिक संस्कृत क्रमशः लुप्त होकर लौकिक संस्कृत की उत्पत्ति उक्त दो कारणों से हो हुई थी। वैदिक शब्द-समूह अप्रचलित होने पर उसके अनावश्यक प्रकृति और प्रत्ययों को बाद देकर जो सहज ही समझ में आ सके वैसी प्रकृति और प्रत्ययों का संग्रह कर वैदिक भाषा से लौकिक संस्कृत को उत्पत्ति हुई थी। संस्कृत-भाषा के प्रकृति-प्रत्यय काल-क्रम से अप्रचलित होकर जब दुःख-बोध्य हो ऊठे तब उस समय की कथ्य भाषाओं से ही स्पष्टार्थक, सुखोच्चारण-योग्य, मधुर और कोमल प्रकृति-प्रत्ययों का संग्रह कर संस्कृत के अनावश्यक, दुर्बोध, कष्टोच्चारणीय, कठोर और कर्कश प्रकृति-प्रत्यय-सन्धि-समासों का वर्जन कर अर्धमागधी, पाली और अन्यान्य प्राकृत-भाषायें साहित्य-भाषाओं के रूप में व्यवहृत होने लगीं। यदि इन सब नूतन साहित्य-भाषाओं में संस्कृत की अपेक्षा अर्थ-प्रकाश

की अधिक शक्ति, अल्प आयास से और सुख से उच्चारण-योग्यता प्रभृति गुण न होते तो ये कभी भी संस्कृत जैसी समृद्ध भाषा को साहित्य के सिंहासन से च्युत करने में समर्थ न होतीं। काल-क्रम से ये सब प्राकृत-साहित्य-भाषायें भी जब व्याकरण-द्वारा नियन्त्रित होकर अप्रचलित और जन-साधारण में दुर्बोध हो चलीं तब उस समय प्रचलित प्रादेशिक अपभ्रंश-भाषाओं ने इनको हटाकर साहित्य-भाषाओं का स्थान अपने अधिकार में किया। यहाँ पर यह प्रश्न हो सकता है कि साहित्य की प्राकृत-भाषाओं की अपेक्षा इन अपभ्रंश-भाषाओं में वह कौनसा गुण था जिससे ये अपने पहले की प्राकृत-साहित्य-भाषाओं को परास्त कर उनके स्थान को अपने अधिकार में कर सकीं ? इसका उत्तर यह है कि कोई भी गुण चरम सीमा में पहुँच जाने पर फिर वह गुण ही नहीं रहने पाता, वह दोष में परिणत हो जाता है। संस्कृत की अपेक्षा प्राकृत-भाषाओं में यह उत्कर्ष था कि इनमें संस्कृत के कर्कश और कष्टोच्चारणीय असंयुक्त और संयुक्त व्यञ्जन वर्णों के स्थान में सब कोमल और सुखोच्चारणीय वर्ण व्यवहृत होते थे। किन्तु इस गुण की भी सीमा है, महाराष्ट्री-प्राकृत में यह गुण सीमा का अतिक्रम कर गया, यहाँतक कि संस्कृत के अनेक व्यञ्जनों का एकदम ही लोप कर उनके स्थान में स्वर-वर्णों की परम्परा-द्वारा समस्त शब्द गठित होने लगे। इससे इन शब्दों के उच्चारण सुख-साध्य होने के बदले अधिकतर कष्ट-साध्य हुए, क्योंकि बीच बीच में व्यञ्जन-वर्णों से व्यवहित न होकर केवल स्वर-परम्परा का उच्चारण करना कष्टकर होता है। इस तरह प्राकृत-भाषा महाराष्ट्री-प्राकृत में आकर जब इस चरम अवस्था में उपनीत हुई तबसे ही इसका पतन अनिवार्य हो उठा। इसकी प्रतिक्रिया-स्वरूप अपभ्रंश-भाषाओं में नूतन व्यञ्जन-वर्ण बिठा कर सुखोच्चारण-योग्यता करने की चेष्टा हुई। इसका फल यह हुआ कि प्रादेशिक अपभ्रंश-भाषायें साहित्य की भाषाओं के रूप में उन्नीत हुईं। आधुनिक प्रादेशिक आर्य-भाषायें भी प्राकृत-भाषाओं के उस दोष का पूर्ण संशोधन करने के लिए नूतन संस्कृत शब्दों को ग्रहण कर अपभ्रंशों के स्थान को अपने अधिकार में करके नवीन साहित्य-भाषाओं के रूप में परिणत हुई है। आधुनिक आर्य-भाषाओं में पूर्व-वर्ती प्राकृतों और अपभ्रंशों की अपेक्षा उत्कर्ष यह है कि इन्होंने शब्दों के संबन्ध में प्राकृत और संस्कृत को मिश्रित कर उभय के गुणों का एक सुन्दर सामञ्जस्य किया है। इनके तद्भव और देश्य शब्दों में प्राकृत की कोमलता और मधुरता है और तत्सम शब्दों में संस्कृत की ओजस्विता। आधुनिक आर्य-भाषाओं में संस्कृत और प्राकृत दोनों की अपेक्षा उत्कर्ष यह है कि ये संस्कृत और प्राकृतों के अनावश्यक लिंग, वचन और विभक्तिओं के भेदों का वर्जन कर, उनके बदले भिन्न भिन्न स्वतन्त्र शब्दों के द्वारा लिंग, वचन और विभक्तिओं के भेदों को प्रकाशित कर और संस्कृत तथा प्राकृतों के विभक्ति-बहुल स्वभाव का परित्याग कर विश्लेषण-शील-भाषा में परिणत हुई हैं। इस तरह इन भाषाओं ने अल्प आयास से वक्ता के अर्थ को अधिकतर स्पष्ट रूप में प्रकाशित करने का मार्ग-प्रदर्शन किया है। उक्त गुणों के कारण ही आधुनिक आर्य-भाषाओं ने वैदिक, संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश इन सब साहित्य-भाषाओं के स्थान पर अपना अधिकार जमाया है।

संस्कृत की अपेक्षा प्राकृत-भाषाओं में जो उत्कर्ष—गुण—ऊपर बताये हैं वे अनेक प्राचीन ग्रन्थकारों ने पहले ही प्रदर्शित किये हैं। उनके ग्रन्थों से, प्राकृत के उत्कर्ष के संबन्ध में, कुछ वचन यहाँ पर उद्धृत किये जाते है :—

* "अमिअं पाउअ-कव्वं पढिउं सोउं च जे ण आणंति।
कामस्स तत्त-तत्तिं कुणंति, ते कह ण लज्जंति ?॥ (हाल की गाथासप्तशती १, २)।

अर्थात् जो लोग अमृतोपम प्राकृत-काव्य को न तो पढ़ना जानते है और न सुनना जानते हैं अथच काम-तत्त्व की आलोचना करते हैं उनको शरम क्यों नहीं आती ?

---

* अमृतं प्राकृतकाव्यं पठितुं श्रोतुं च ये न जानन्ति। कामस्य तत्त्वचिन्तां कुर्वन्ति, ते कथं न लज्जन्ते ?॥

* "उम्मिल्लइ लायरणं पयय-च्छायाए सक्कय-वयाणं।
सक्कय-सक्कारुक्करिसणेण पययस्सवि पहावो ॥" (वाक्पतिराज का गउडवहो ६५)।

संस्कृत शब्दों का लावण्य प्राकृत की छाया से ही व्यक्त होता है; संस्कृत-भाषा के उत्कृष्ट संस्कार में भी प्राकृत का प्रभाव व्यक्त होता है।

† "णवमत्थ-दसणं संनिवेस-सिसिराओ बंध-रिद्धीओ।
अविरलमिणमो आभुवण-बंधमिह णवर पययम्मि ॥" (गउडवहो ७२)।

सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आज:तक प्रचुर परिमाण में नूतन नूतन अर्थों का दर्शन और सुन्दर रचना वाली प्रवन्ध-संपत्ति कहीं भी है तो वह केवल प्राकृत मे ही।

‡ "हरिस-विसेसो वियसावओ य मउलावओ य अच्छीण।
इह बहि-हुत्तो अंतो-मुहो य हिययस्स विप्फुरइ ॥" (गउडवहो ७४)।

प्राकृत-काव्य पढने के समय हृदय के भीतर और बाहर एक ऐसा अभूत-पूर्व हर्ष होता है कि जिससे दोनों आँखें एक ही साथ विकसित और मुद्रित होती हैं।

§ "परुसो सक्कअ-बंधो पाउअ-बंधोवि होइ सुउमारो।
पुरिस-महिलाणं जेत्तिअमिहतरं तेत्तिअमिमाणं ॥" (राजशेखर की कर्पूरमञ्जरी, अङ्क १)।

संस्कृत-भाषा कर्कश और प्राकृत भाषा सुकुमार है। पुरुष और महिला में जितना अन्तर है, इन दो भाषाओं में भी उतना ही प्रभेद है ॥

"गिरः श्रव्या दिव्याः प्रकृतिमधुराः प्राकृतगिरः
सुभव्योऽपभ्रंशः सरसरचनं भूतवचनम्।" (राजशेखर का बालरामायण १, ११)

संस्कृत-भाषा सुनने योग्य है, प्राकृत भाषा स्वभाव-मधुर है, अपभ्रंश-भाषा भव्य है और पैशाची-भाषा की रचना रस-पूर्ण है।

× "सक्कय-कव्वस्सत्थं जेण न याणंति मंद-बुद्धीया।
सव्वाणवि सुह-बोहं तेणेमं पाययं रइयं ॥
गुढत्थ-देसि-रहियं सुललिय-वन्नेहिं विरइयं रम्मं।
पायय-कव्वं लोए कस्स न हिययं सुहावेइ ? ॥ (महेश्वरसूरि का पञ्चमीमाहात्म्य)

सामान्य मनुष्य संस्कृत-काव्य के अर्थ को समझ नहीं पाते हैं। इसलिए यह ग्रन्थ उस प्राकृत-भाषा में रचा जाता है जो सब लोगों को सुख-बोध्य है।

गूढार्थक देशी-शब्दों से रहित ओर सुललित पदों में रचा हुआ सुन्दर प्राकृत-काव्य किसके हृदय को सुखी नहीं करता ?

"÷ उज्झउ सक्कय-कव्वं सक्कय-कव्वं च निम्मियं जेण।
वंस-हरं व पलित्तं तडयडतट्टत्तणं कुणइ ॥"
(वज्जालग्ग(?) से अपभ्रंशकाव्यत्रयी की प्रस्ता० पृष्ठ ७६ में उद्धृत)

---

* उन्मीलति लावण्यं प्राकृतच्छायया संस्कृतपदानाम्। संस्कृतसंस्कारोत्कर्षणेन प्राकृतस्यापि प्रभाव ॥
† नवमार्थदर्शनं संनिवेशशिशिरा बन्धर्द्धयः। अविरलमिदमाभुवनबन्धमिह केवलं प्राकृते ॥
‡ हर्षविशेषो विकासको मुकुलीकारकश्चाक्ष्णोः। इह बहिर्मुखोऽन्तर्मुखश्च हृदयस्य विस्फुरति ॥
§ परुषः संस्कृतबन्धः प्राकृतबन्धस्तु भवति सुकुमारः। पुरुषमहिलयोर्यावदिहान्तरं तावदनयोः ॥
× संस्कृतकाव्यस्यार्थं येन न जानन्ति मन्दबुद्धयः। सर्वेषामपि सुखबोधं तेनेदं प्राकृतं रचितम् ॥
गुढार्थदेशीरहितं सुललितवर्णैर्विरचितं रम्यम्। प्राकृतकाव्यं लोके कस्य न हृदयं सुखयति ? ॥
÷ उज्झयता संस्कृतकाव्यं संस्कृतकाव्यं च निर्मितं येन। वंशगृहमिव प्रदीप्तं तडतडतट्टत्वं करोति ॥

संस्कृत-काव्य को छोड़ो और जिसने संस्कृत-काव्य की रचना की है उसका भी नाम मत लो, क्योंकि वह (संस्कृत) जलते हुए वाँस के घर की तरह 'तड तड तट्ट' आवाज करता है— श्रुतिकटु लगता है।

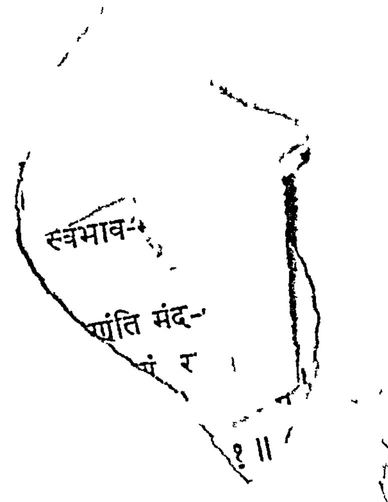
"* पाइय-कव्वम्मि रसो जो जायइ तह व छेय-भणिएहिं।
उययस्स य वासिय-सीयलस्स तित्ति न वच्चामो ॥
ललिए महुरक्खरए जुवई-यण-वल्लहे स-सिंगारे।
संते पाइय-कव्वे को सक्कइ सक्कयं पढिउं ? ॥" (जयवल्लभ का वज्जालग्ग, पृष्ठ ६)

प्राकृत-भाषा की कविता में और विदग्ध के वचनों में जो रस आता है उससे, वासी और शीतल जल की तरह, तृप्ति नहीं होती है—मन कभी ऊवता नहीं है—उत्कण्ठा निरन्तर वनी ही रहती है।

जब सुन्दर, मधुर, शृङ्गार-रस-पूर्ण और युवतिओं को प्रिय ऐसा प्राकृत-काव्य मौजुद है तब संस्कृत पढने को कौन जाता है ?

---

* प्राकृतकाव्ये रसो यो जायते तथा वा छेकभणितैः। उदक [illegible] तशीतलस्य तृप्तिं न व्रजामः ॥
ललिते मधुराक्षरके युवतिजनवल्लभे सशृङ्गारे। सति [illegible] ते संस्कृतं पठितम ? ॥



स्वभाव-
ंति मंद-

इस कोष में स्वीकृत पद्धति।

१। प्रथम काले टाइपों में क्रम से **प्राकृत शब्द**, उसके बाद सादे टाइपों में उस प्राकृत शब्द के लिङ्ग आदि का संक्षिप्त निर्देश, उसके पश्चात् काले कोष्ठ (ब्राकेट) में काले टाइपों में प्राकृत शब्द का **संस्कृत प्रतिशब्द**, उसके अनन्तर सादे टाइपों में हिन्दी भाषा में अर्थ और तदनन्तर सादे टाइपों में ब्राकेट में प्रमाण (रेफरेंस) का उल्लेख किया गया है।

२। शब्दों का क्रम नागरी वर्ण-माला के अनुसार इस तरह रखा गया है;—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, क, ख, ग आदि। इस तरह अनुस्वार के स्थान की गणना संस्कृत-कोषों की तरह पर-सवर्ण अनुनासिक व्यञ्जन के स्थान मे न कर अन्तिम स्वर के बाद और प्रथम व्यञ्जन के पूर्व में ही करने का कारण यह है कि संस्कृत की तरह प्राकृत में *व्याकरण की दृष्टि से भी अनुस्वार के स्थान में अनुनासिक का होना कहीं भी अनिवार्य नहीं है और प्राचीन हस्त-लिखित पुस्तकों में प्रायः सर्वत्र अनुस्वार का ही प्रयोग पाया जाता है।

३। प्राकृत शब्द का प्रयोग विशेष रूप से आर्ष (अर्धमागधी) और महाराष्ट्री भाषा के अर्थ में और सामान्य रूप से आर्ष से ले कर अपभ्रंश-भाषा तक के अर्थ में किया जाता है। प्रस्तुत कोष के 'प्राकृत-शब्द-महार्णव' नाम में प्राकृत-शब्द सामान्य अर्थ में ही गृहीत है। इससे यहाँ † आर्ष, महाराष्ट्री, शौरसेनी, अशोक-शिलालिपि, देश्य, मागधी, पैशाची, चूलिकापैशाची तथा अपभ्रंश भाषाओं के शब्दों का संग्रह किया गया है। परन्तु प्राचीनता और साहित्य की दृष्टि से इन सब भाषाओं में आर्ष और महाराष्ट्री का स्थान ऊँचा है। इससे इन दोनों के शब्द यहाँ पूर्ण रूप से लिये गये है और शौरसेनी आदि भाषाओं के प्रायः उन्हीं शब्दों को स्थान दिया गया है जो या तो प्राकृत (आर्ष और महाराष्ट्री) से विशेष भेद रखते है अथवा जिनका प्राकृत रूप नहीं पाया गया है, जैसे 'य्येव', 'विधुव', 'संपादइत्तअ', 'संभावीअदि' वगैरः। इस भेद की पहिचान के लिए प्राकृत से इतर भाषा के शब्दों और आख्यात-कृदन्त के रूपों के आगे सादे टाइपों में कोष्ठ मे उस उस भाषा का संक्षिप्त नाम-निर्देश कर दिया गया है, जैसे ‡ '(शौ)', '(मा)' इत्यादि। परन्तु शौरसेनी आदि में भी जो शब्द या रूप प्राकृत के ही समान है वहाँ ये भेद-दर्शक चिह्न नहीं दिये गये हैं।

(क) आर्ष और महाराष्ट्री से शौरसेनी आदि भाषाओं के जिन शब्दों में सामान्य (सर्व-शब्द-साधारण) भेद है उनको इस कोष में स्थान दे कर पुनरावृत्ति-द्वारा ग्रन्थ के कलेवर को विशेष बढाना इसलिए उचित नहीं समझा गया है कि वह सामान्य भेद प्राकृत-भाषाओं के साधारण अभ्यासी से भी अज्ञात नहीं है और वह उपोद्घात मे भी उस उस भाषा के लक्षण-प्रसङ्ग में दिखा दिया गया है जिससे वह सहज ही ख्याल में आ सकता है।

(ख) आर्ष और महाराष्ट्री में भी परस्पर उल्लेखनीय भेद है। तिस पर भी यहाँ उनका भेद-निर्देश न करने का एक कारण तो यह है कि इन दोनों में इतर भाषाओं से अपेक्षा-कृत समानता अधिक है; दूसरा, प्रकृति की अपेक्षा प्रत्ययों में ही विशेष भेद है जो व्याकरण से संबन्ध रखता है, कोष से नहीं; तीसरा, जैन ग्रन्थकारों ने महाराष्ट्री-ग्रन्थों में भी आर्ष प्राकृत के शब्दों का अविकल रूप में अधिक व्यवहार कर उनको महाराष्ट्री का रूप दे दिया है §।

---

* देखो प्राकृतप्रकाश, सूत्र ४, १४; १७; हेमचन्द्र-प्राकृत-व्याकरण, सूत्र १,२५; और प्राकृतसर्वस्व, सूत्र ४,२३ आदि।

† प्राकृतसर्वस्व (पृष्ठ १-३) आदि में इनसे अतिरिक्त और भी प्राच्या, शाकारी आदि अनेक उपभेद बताये गये है, जिनका समावेश यहाँ शौरसेनी आदि इन्हीं मुख्य भेदों में यथास्थान किया गया है।

‡ इन संक्षिप्त नामों का विवरण संकेत-सूची में देखिए।

§ इसीसे डो. पिशल् आदि पाश्चात्य विद्वानों ने आर्ष-भिन्न जैन प्राकृत-ग्रन्थों की भाषा को 'जैन महाराष्ट्री' नाम दिया है। देखो डो. पिशल् का प्राकृतव्याकरण और डो. टेसेटोरी की उपदेशमाला की प्रस्तावना।

४। प्राकृत में यश्रुति वाला * नियम खूब ही अव्यवस्थित है। प्राकृत-प्रकाश, सेतुबन्ध, गाथासप्तशती और प्राकृतपिंगल आदि में इस नियम का एकदम अभाव है जब कि आर्ष, जैन महाराष्ट्री तथा गउडवहो-प्रभृति ग्रन्थों में इस नियम का हद से ज्यादः आदर देखा जाता है; यहाँ तक कि एक ही शब्द में कहीं तो यश्रुति है और कहीं नहीं, जैसे 'पअ' और 'पय', 'लोअ' और 'लोय'। इस कोष में ऐसे शब्दों की पुनरावृत्ति न कर कोई भी (यश्रुतिवाले 'य' से रहित या सहित) एक ही शब्द लिया गया है। इससे क्रम तथा इतर समान शब्द की तुलना की सुविधा के लिए आवश्यकतानुरूप कहीं कहीं रेफरेंस वाले शब्द के 'अ' के स्थान में 'य' और 'य' की जगह 'अ' किया गया है।

५। आर्ष ग्रन्थों में यश्रुतिवाले 'य' की तरह 'त' का प्रयोग भी बहुत ही पाया जाता है, जैसे 'अय' (अज) के स्थान में 'अत', 'अईअ' (अतीत) की जगह 'अतीय' आदि। ऐसे शब्दों की भी इस कोष में बहुधा पुनरावृत्ति न करके त-वर्जित शब्दों को ही विशेष रूप से स्थान दिया गया है।

६। संयुक्त शब्दों को उनके क्रमिक स्थान में अलग न दे कर मूल (पूर्व भाग वाले) शब्द के भीतर ही उत्तर भाग वाले शब्द अकारादि क्रम से काले टाइपों में दिये गये है और उसके पूर्व °(ऊर्ध्व बिन्दी) का चिह्न दिया गया है। ऐसे शब्द का सस्कृत प्रतिशब्द भी काले टाइपों में ° चिह्न दे कर दिये गये हैं। विशेष स्थानों में पाठकों की सुगमता के लिए सयुक्त शब्द उसके क्रमिक स्थान मे अलग भी बतलाये गये है और उसके अर्थ तथा रेफरेंस के लिए मूल शब्द में जहाँ वे दिये गये है, देखने की सूचना की गई है।

(क) इन सयुक्त शब्दों में जहाँ 'देखो °——' से जिस शब्द को देखने को कहा गया है वहाँ उस शब्द को उसी मूल शब्द के भीतर देखना चाहिए न कि अन्य शब्द के अन्दर।

७। त्त, त्तण (त्व), आ, या (तल्), अर, यर, तराग (तर), अम, तम (तम) आदि सुगम और सर्वत्र-साधारण प्रत्यय वाले शब्दों में प्रत्ययों को छोड़ कर केवल मूल शब्द ही यहाँ लिये गये हैं। परन्तु जहाँ ऐसे प्रत्ययों में रूप आदि की विशेषता है वहाँ प्रत्यय-सहित शब्द भी लिये गये है।

८। धातुओं के सब रूप सादे टाइपों में और कृदन्तों के रूप काले टाइपों में धातु के भीतर दिये गये है।

(क) भाव तथा कर्म-कर्तरि रूपों का निर्देश भी धातु के भीतर 'कर्म—' से ही किया गया है।

(ख) भूत कृदन्त के रूप तथा अन्य आख्यात तथा कृदन्त के विशिष्ट रूप बहुधा अलग अलग अपने क्रमिक स्थान में दिये गये है।

९। जिन संस्करणों से शब्द-संग्रह किया गया है उनमें रही हुई संपादन की या प्रेस की भूलों को सुधार कर शुद्ध शब्द ही यहाँ दिये गये है। पाठकों के ज्ञानार्थ साधारण भूलों को छोड़ कर विशेष भूल वाले पाठ रेफरेंस के उल्लेख के अनन्तर-पूर्व में ज्यों के त्यों उद्धृत भी किये गये है और भूल वाले भाग की शुद्धि कौंस में '?' (शङ्काचिह्न) के बाद बतला दी गई है; जैसे देखो **छोब्भ, बब्भ** आदि शब्द।

(क) जहाँ भिन्न भिन्न ग्रन्थों में या एक ही ग्रन्थ के भिन्न भिन्न स्थानों में या संस्करणों में एक ही शब्द के अनेक संदिग्ध रूप पाये गये हैं और जिनके शुद्ध रूप का निर्णय करना कठिन जान पड़ा है वहाँपर ऐसे रूप वाले सब शब्द इस कोष में यथास्थान दिये गये है और तुलना के लिए ऐसे प्रत्येक शब्द के अन्त भाग में 'देखो—' लिख कर इतर रूप भी सूचाया गया है; जैसे देखो **'पुक्खलच्छिभय, पोक्खलच्छिलय'**: **'पेसल, पेसलेस'**; **'भयालि, सयालि'** आदि शब्द।

१०। एक ही ग्रन्थ के एक या भिन्न भिन्न संस्करणों के अथवा भिन्न भिन्न ग्रन्थों के पाठ-भेदों के सभी शुद्ध शब्द इस कोष में यथास्थान दिये गये है; जैसे—**परिउभुसिय** ('भगवतीसूत्र २५—पत्र ९२३) और **परिभुसिय**

* हेमचन्द्र-प्राकृत-व्याकरण का सूत्र १, १८०।

(भग २५ टी—पत्र ६२५); **णिव्विदेज्ज** (भी. मा. का सूत्रकृताङ्ग १, २, ३, १२) और **णिव्विदेज्ज** (आ. स. का सूत्रकृताङ्ग १, २, ३, १२); **पविरल्लिय** (आ. स. का प्रश्नव्याकरण १, ५—पत्र ६१) और **पवित्थरिल्ल** (अभिधानराजेन्द्र का प्रश्नव्याकरण १, ५), **सामकोट्ट** (समवायाङ्ग-सूत्र, पत्र १५३) और **सामिकुट्ट** (प्रवचनसारोद्धार, द्वार ७) प्रभृति।

११। संस्कृत की तरह प्राकृत में भी कम से कम शब्द के आदि के 'व' तथा 'ब' के विषय में गहरा मत-भेद है। एक ही शब्द कहीं वकारादि पाया जाता है तो कहीं बकारादि। जैसे भगवतीसूत्र में 'वत्थि' है तो विपाकश्रुत में 'बत्थि' छपा है। इससे ऐसे शब्दों को दोनों स्थानों में न देकर जो 'ब' या 'व' उचित जान पड़ा है उसी एक स्थल में वह शब्द दिया गया है और उभय प्रकार के शब्दों के रेफरेंस भी वहाँ ही दिये गये हैं। हाँ, जहाँ दोनों अक्षरों के अस्तित्व का स्पष्ट रूप से उल्लेख पाया गया है वहाँ दोनों स्थलों में वह शब्द दिया गया है, जैसे '**वप्फाउल**' और '**बप्फाउल**' * आदि।

१२। लिङ्गादि-बोधक संक्षिप्त शब्द प्राकृत शब्द से ही संबन्ध रखते हैं, संस्कृत-प्रतिशब्द से नहीं।

(क) जहाँ अर्थ-भेद में लिङ्ग आदि का भी भेद है वहाँ उस अर्थ के पूर्व में ही भिन्न लिङ्ग आदि का सूचक शब्द दे दिया गया है। जहाँ ऐसा भिन्न शब्द नहीं दिया है वहाँ उसके पूर्व के अर्थ या अर्थों के समान ही लिङ्ग आदि समझना चाहिए।

(ख) प्राकृत में लिङ्ग-विधि खूब ही अनियमित है। प्राकृत के वैयाकरणों ने भी कुछ अति संक्षिप्त परन्तु † व्यापक सूत्रों के द्वारा इस बात का स्पष्ट उल्लेख किया है। प्राचीन ग्रन्थों में एक ही शब्द का जिस जिस लिङ्ग में प्रयोग जहाँ तक हमें दृष्टिगोचर हुआ है, उस उस लिङ्ग का निर्देश इस कोष में उस शब्द के पास कर दिया गया है। जहाँ लिङ्ग में विशेष विलक्षणता पाई गई है वहाँ उस ग्रन्थ का अवतरण भी दे दिया गया है।

(ग) जहाँ स्त्री-लिङ्ग का विशेष रूप पाया गया है वहाँ वह अर्थ के बाद 'स्त्री—' निर्देश कर के रेफरेंस के साथ दिया गया है।

(घ) प्राकृत में अनेक ग्रन्थों में अव्यय के बाद विभक्ति का भी प्रयोग पाया जाता है। इससे ऐसे स्थानों में अव्यय-सूचक 'अ' के बाद प्रायः लिङ्ग-बोधक शब्द भी दिया गया है; जैसे '**वला**' के बाद 'अ. स्त्री'=(अव्यय तथा स्त्रीलिङ्ग)।

१३। देश्य शब्दों के संस्कृत-प्रतिशब्द के स्थान में केवल देश्य का संक्षिप्त रूप '**दे**' ही काले टाइपों में कोष्ठ में दिया गया है।

(क) जो धातु वास्तव में देश्य होने पर भी प्राकृत के प्रसिद्ध प्रसिद्ध व्याकरणों में संस्कृत धातु के आदेश कह कर तद्भव बतलाये गये हैं उनके संस्कृत-प्रतिशब्द के स्थान मे '**दे**' न दे कर प्राचीन वैयाकरणों की मान्यता बतलाने के उद्देश से वे वे आदेशि संस्कृत रूप ही दिये गये हैं। इससे संस्कृत से बिलकुल विसदृश रूप वाले इन देश्य धातुओं को वास्तविक तद्भव समझने की भूल कोई न करे।

(ख) जो धातु तद्भव होने पर भी प्राकृत-व्याकरणों में उसका अन्य धातु का आदेश बतलाया गया है उस धातु के व्याकरण-प्रदर्शित आदेशि संस्कृत रूप के बाद वास्तविक संस्कृत रूप भी दिखलाया गया है, यथा **पेच्छ** के [**दृश्, प्र+ईक्ष्**] आदि।

(ग) प्राचीन ग्रन्थों में जो शब्द देश्य रूप से माना गया है परन्तु वास्तव में जो देश्य न होकर तद्भव ही प्रतीत होता है, ऐसे शब्दों का संस्कृत-प्रतिशब्द दिया गया है और प्राचीन मान्यता बतलाने के लिए संस्कृत प्रतिशब्द के पूर्व में '**दे**' भी दिया गया है।

---

* देशीनाममाला ६, ९२ का टीका। † हेमचन्द्र-प्राकृत-व्याकरण, सूत्र १, ३३ से ३५।

(घ) जो शब्द वास्तव में देश्य ही है, परन्तु प्राचीन व्याख्याकारों ने उसको तद्भव बतलाते हुए उसके जो परिमार्जित—छिल छाल कर बनाये हुए संस्कृत—रूप अपने ग्रन्थों में दिये हैं, परन्तु जो संस्कृत-कोषों में नहीं पाये जाते हैं, ऐसे संस्कृत-प्रतिरूपों को यहाँ स्थान न देते हुए केवल **'दे'** ही दिया गया है।

(ङ) जो शब्द देश्य रूप से संदिग्ध है उसके प्रतिशब्द के पूर्व में **'दे'** भी दिया गया है।

१४। प्राचीन व्याख्याकारों ने दिये हुए संस्कृत-प्रतिशब्द से भी जो अधिक समानता वाला संस्कृत प्रतिशब्द है वही यहाँ पर दिया गया है, जैसे 'ण्हाविय' के प्राचीन प्रतिशब्द **'स्नापित'** के बदले **'स्नानित'**।

१५। अनेक अर्थ वाले शब्दों के प्रत्येक अर्थ १, २, ३ आदि अंकों के बाद क्रमशः दिये गये हैं और प्रत्येक अर्थ के एक या अनेक रेफरेंस उस अर्थ के बाद सादे ब्राकेट में दिये हैं।

(क) धातु के भिन्न भिन्न रूप वाले रेफरेंसों में जो जो अर्थ पाये गये हैं वे सब १, २, ३ के अंकों से दे कर क्रमशः धातु के आख्यात तथा कृदन्त के रूप दिये गये हैं और उस उस रूप वाले रेफरेंस का उल्लेख उसी रूप के बाद ब्राकेट में कर दिया गया है।

(ख) जिस शब्द का अर्थ वास्तव में सामान्य या व्यापक है, किन्तु प्राचीन ग्रन्थों में उसका प्रयोग प्रकरण-वश विशेष या संकीर्ण-अर्थ में हुआ है, ऐसे शब्द का सामान्य या व्यापक अर्थ ही इस कोष में दिया गया है; यथा—'हत्थिच्चग' का प्रकरण-वश होता 'हाथ के योग्य आभूषण' यह विशेष अर्थ यहाँ पर न दे कर 'हाथ-संबन्धी' यह सामान्य अर्थ ही दिया गया है। 'णाक्खत्त (नाक्षत्र)' आदि तद्धितान्त शब्दों के लिए भी यही नियम रखा गया है।

१६। शब्द-रूप, लिङ्ग, अर्थ की विशेषता या सुभाषित की दृष्टि से जहाँ अवतरण देने की आवश्यकता प्रतीत हुई है वहाँ पर वह, पर्याप्त अंश में, अर्थ के बाद और रेफरेंस के पूर्व में दिया गया है।

(क) अवतरण के बाद कोष्ठ में जहाँ अनेक रेफरेंसों का उल्लेख है वहाँ पर केवल सर्व-प्रथम रेफरेंस का ही अवतरण से संबन्ध है, शेष का नहीं।

१७। एक ही ग्रन्थ के जिन अनेक संस्करणों का उपयोग इस कोष में किया गया है, रेफरेंस में साधारणतः संस्करण-विशेष का उल्लेख न करके केवल ग्रन्थ का ही उल्लेख किया गया है। इससे ऐसे रेफरेंस वाले शब्द को सब संस्करणों का या संस्करण-विशेष का समझना चाहिए।

(क) जहाँ पर संस्करण-विशेष के उल्लेख की खास आवश्यकता प्रतीत हुई है वहाँ पर रेफरेंस की संकेत-सूची में दिये हुए संस्करण के १, २ आदि अंक रेफरेंस के पूर्व में दिये गये हैं; जैसे **पेसल** और **पेसलेस** शब्दों के रेफरेंस 'आचा' के पूर्व में '२' का अंक आगमोदय-समिति के संस्करण का और '३' का अंक प्रो. रवजीभाई के संस्करण का बोधक है।

१८। जहाँ कहीं प्राकृत के किसी शब्द के रूप की, अर्थ की अथवा संयुक्त शब्द आदि की समानता या विशेषता के लिए प्राकृत के ही ऐसे शब्दान्तर की तुलना बतलाना उपयुक्त जान पड़ा है वहाँ पर रेफरेंस के बाद 'देखो—' से उस शब्द को देखने की सूचना की गई है।

१९। जहाँ कहीं 'देखो' के बाद काले टाइपों में दिये हुए प्राकृत शब्द के अनन्तर सादे टाइपों में लिंगादि-बोधक या संस्कृत-प्रतिशब्द दिया गया है वहाँ उसी लिंग आदि वाले या संस्कृत प्रतिशब्द वाले ही प्राकृत शब्द से मतलब है, न कि उसके समान इतर प्राकृत शब्द से। जैसे अ शब्द के 'देखो **च** अ' के **च** से पुंलिंग **च** को छोड़ कर दूसरा ही अव्यय-भूत **च** शब्द, और **ओसार** के 'देखो **ऊसार** =उत्सार' के 'ऊसार' से तीसरा ही **ऊसार** शब्द देखना चाहिए; पहले, दूसरे और चौथे **ऊसार** शब्द को नहीं।

उक्त नियमों से अतिरिक्त जिन नियमों का अनुसरण इस कोष में किया गया है वे आधुनिक नूतन पद्धति के संस्कृत आदि कोषों के देखने वालों से परिचित और सुगम होने के कारण खुलासे की जरूरत नहीं रखते।

व

व पुं [**व**] १ अन्तस्थ व्यञ्जन वर्ण-विशेष, जिसका उच्चारण-स्थान दन्त और ओष्ठ हैं; (प्राप; प्रामा)। २ पुंन. वरुण; (से १, १; २, ११)।

व अ [**व**] देखो **इव**; (से २, ११; गा १८; ६३; ६४; ७६; कुमा; हे २, १८२; प्रासू २)।

व देखो **वा=अ**; (हे १, ६७; गा ४२; १६४; कुमा; प्राकृ २६; भवि)।

व° देखो **वाया=वाच्**। **°क्खेवअ** वि [**°क्षेपक**] वचन का निरसन—खण्डन; (गा २४२ अ)। **°प्पइराय** पुं [**°पति-राज**] एक प्राचीन कवि, 'गउडवहो' काव्य का कर्ता; (गउड)।

वअणीआ स्त्री [**दे**] १ उन्मत्त स्त्री; २ दुःशील स्त्री; (षड्)।

वअल अक [**प्र+सृ**] पसरना, फैलना। वअलइ; (षड्)।

वआड देखो **वायाड=वाचाट**; (संक्षि २)।

वइ अ [**वै**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ अवधारण, निश्चय; (विसे १८००)। २ अनुनय; ३ संबोधन; ४ पादपूर्ति; (चंड)।

वइ अ [**दे**] वदि, कृष्ण पक्ष; "फग्गुणवइछ्ठीए" (सुपा ८६)।

वइ वि [**व्रतिन्**] व्रत वाला, संयमी; (उत्त; सुपा ४३६)। स्त्री—°णी; (उप ५७१)।

वइ स्त्री [**वाच्**] वाणी, वचन; (सम २५; कप्प; उप ६०४; श्रा ३१; सुपा १८४; कम्म ४, २४; २७; २८)। **°गुत्त** वि [**°गुप्त**] वाणी का संयम वाला; (आचा; उप ६०४)। **°गुत्ति** स्त्री [**°गुप्ति**] वाणी का संयम, (आचा)। **°जोअ, °जोग** पुं [**°योग**] वचन-व्यापार; (भग, पराह १, २)। **°जोगि** वि [**°योगिन्**] वचन-व्यापार वाला; (भग)। **°मंत** वि [**°मत्**] वचन वाला; (आचा २, १, ६, १)। **°मेत्त** न [**°मात्र**]. निरर्थक वचन; (धर्मसं २८४; २८५; ८४४)। देखो **वई**।

वइ स्त्री [**वृति**] वाड, काँटे आदि से बनाई जाती स्थान-परिधि, घेरा, "धन्नाणं रक्खट्ठा कीरंति वईओ" (श्रा १०; गउड; गा ६६; उप ६४८; पउम १०३, १११; वज्जा ८६), "उच्छू वोलंति वइं" (धर्मवि ५३; संबोध ४२)।

°वइ देखो **पइ=पति**; (गा ६६; से ४, ३४; कप्प; कुमा)।

वइ° देखो **वय=वद्**।

वइ° देखो **वय=व्रज्**।

वइअ वि [**दे**] १ पीत, जिसका पान किया गया हो वह; (दे ७, ३४)। २ आच्छादित, ढका हुआ; "पच्छाइअनूमिआइं वइआइं" (पाअ)।

वइअ वि [**व्ययित**] जिसका व्यय किया गया हो वह; "कि-मिह दव्वेण वइएणं बहुएणं" (सुपा ५७८; ७३; ४१०)।

वइअब्भ पुं [**वैदर्भ**] १ विदर्भ देश का राजा; २ वि. विदर्भ देश में उत्पन्न; (षड्)।

वइअर पुं [**व्यतिकर**] प्रसङ्ग, प्रस्ताव; (सुर ४, १३६; महा)।

वइअव्व देखो **वय=व्रज्**।

वइआ स्त्री [**व्रजिका**] छोटा गोकुल; (पिंड ३०६; सुख २, ५; ओघ ८४)।

वइआलिअ वि [**वैतालिक**] मंगल-स्तुति आदि से राजा को जगाने वाला मागध आदि; (हे १, १५२)।

वइआलीअ पुंन [**वैतालीय**] छन्द-विशेष; (हे १, १५१)।

वइएस वि [**वैदेश**] विदेश-संबन्धी, परदेशी; (पउम ३३, २४; हे १, १५१; प्राकृ ६)।

वइएह पुं [**वैदेह**] १ वणिक्, वैश्य; २ शूद्र पुरुष और वैश्य स्त्री से उत्पन्न जाति-विशेष; ३ राजा जनक; ४ वि. देह-रहित से संबन्ध रखने वाला; ५ मिथिला देश का; (हे १, १५१; प्राकृ ६)।

वइंगण न [**दे**] वैंगन, वृन्ताक, भंटा; (दे ६, १००)।

वइकच्छ पुं [**वैकक्ष**] उत्तरासंग; (औप)।

वइकल्लिअ न [**वैकल्य**] विकलता; (पाअ)।

वइकुंठ पुं [**वैकुण्ठ**] १ उपेन्द्र, विष्णु; (पाअ)। २ लोक-विशेष, विष्णु का धाम; (उप १०३१ टी)।

वइक्कंत वि [**व्यतिक्रान्त**] व्यतीत, गुजरा हुआ; (पउम २, ७४; उवा; पडि)।

वइक्कम पुं [**व्यतिक्रम**] विशेष उल्लंघन, व्रत-दोष-विशेष; (ठा ३, ४—पत्र १५६; पव ६ टी; पउम ३१, ६१)।

वइगरणिय पुं [**वैकरणिक**] राज-कर्मचारि-विशेष; (सुपा ५४८)।

वइगा देखो **वइआ**; (सुख २, ५; बृह ३)।

वइगुण्ण न [**वैगुण्य**] १ वैकल्य, अपरिपूर्णता, असंपन्नता; (धर्मसं ८८४)। २ विपरीतपन, विपर्यय; (राज)।

वइचित्त न [**वैचित्र्य**] विचित्रता; (विसे ३११; धर्मसं ६५)।

वइजवण वि [**वैजवन**] गोत्र-विशेष में उत्पन्न; (हे १, १५१)।

वइणी देखो **वइ**=व्रतिन्।

वइतुलिय वि [**वैतुलिक**] तुल्यता-रहित; (निचू ११)।

वइत्तए } देखो **वय**=वद्।
वइत्ता }

वइत्ता देखो **वय**=वच्।

वइत्तु वि [**वदितृ**] बोलने वाला; "मुसं वइत्ता भवति" (ठा ७—पत्र ३८६)।

वइदब्भ देखो **वइअब्भ**; (हे १, १५१)।

वइदिस पुं [**वैदिश**] १ अवन्ती देश, मालव देश; "वइदिस उज्जेणीए जियपडिमा एलगच्छं च" (उप २०२)। २ वि. विदिशा-संबन्धी; (बृह ६)।

वइदेस देखो **वइएस**; (प्राप्र)।

वइदेसिअ वि [**वैदेशिक**] विदेशीय, परदेशी; (संक्षि ५; कुप्र ३८०; सिरि ३६३; पि ६१)।

वइदेह देखो **वइएह**; (प्राप्र)।

वइदेही स्त्री [**वैदेही**] १ राजा जनक की स्त्री, सीता की माता; (पउम २६, ७५)। २ जनकात्मजा, सीता; ३ हरिद्रा, हल्दी; ४ पिप्पली, पीपल; ५ वणिक्-स्त्री; (संक्षि ५)।

वइधम्म न [**वैधर्म्य**] विरुद्धधर्मता, विपरीतपन; (विसे ३२२८)।

वइमिस्स वि [**व्यतिमिश्र**] संमिलित; (आचा २, १, ३, २)।

वइर पुंन [**वज्र**] १ रत्न-विशेष, हीरक, हीरा; (सम ६३; औप; कप्प; भग; कुमा)। २ इन्द्र का अस्त्र; (षड्)। ३ एक देव-विमान; (देवेन्द्र १३३; सम २५)। ४ विद्युत्, बिजली; (कुमा)। ५ पुं. एक सुप्रसिद्ध जैन महर्षि; (कप्प; हे १, ६; कुमा)। ६ कोकिलाक्ष वृक्ष; ७ श्वेत कुशा; ८ श्रीकृष्ण का एक प्रपौत्र; ९ न. बालक, शिशु; १० धात्री; ११ काँजी; १२ वज्रपुष्प; १३ एक प्रकार का लोहा; १४ अभ्र-विशेष; १५ ज्योतिष-प्रसिद्ध एक योग; (हे २, १०५)। १६ कीलिका, छोटा कील; (सम १४६)। °**कंड** न [°**काण्ड**] रत्नप्रभा पृथिवी का एक वज्ररत्न-मय कागड; (राज)। °**कंत** न [°**कान्त**] एक देव-विमान; (सम २५)। °**कूड** न [°**कूट**] १ एक देव-विमान; (सम २५)। २ देवी-विशेष का आवासभूत एक शिखर; (राज)। °**जंघ** पुं [°**जङ्घ**] १ भरतक्षेत्र में उत्पन्न तृतीय प्रतिवासुदेव; (सम १५४)। २ पुष्कलावती विजय के लोहार्गल नगर का एक राजा; (आव)। °**प्पभ** न [°**प्रभ**] एक देव-विमान; (सम २५)। °**मज्झा** स्त्री [°**मध्या**] प्रतिमा-विशेष, एक प्रकार का व्रत; (ठा ४, १—पत्र १६५)। °**रूव** न [°**रूप**] एक देव-विमान; (सम २५)। °**लेस** न [°**लेश्य**] एक देव-विमान; (सम २५)। °**वण्ण** न [°**वर्ण**] देवविमान-विशेष; (सम २५)। °**सिंग** न [°**शृङ्ग**] एक देव-विमान का नाम; (सम २५)। °**सिंह** पुं [°**सिंह**] एक राजा; (काल; पि ४००)। °**सिट्ठ** न [°**सृष्ट**] एक देव-विमान; (सम २५)। °**सीह** देखो **सिंह**, (काल)। °**सेण** पुं [°**सेन**] एक प्राचीन जैन महर्षि जो वज्रस्वामी के शिष्य थे; (कप्प)। °**सेणा** स्त्री [°**सेना**] १ एक इन्द्राणी, दाक्षिणात्य वानव्यन्तरेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (णाया २—पत्र २५२)। २ एक दिक्कुमारी देवी; (इक)। °**हर** पुं [°**धर**] इन्द्र; (षड्)। °**ामय** वि [°**मय**] वज्र रत्नों का बना हुआ; (सम ६३; औप; पि ७०; १३५), स्त्री—°**ामई**, °**ामती**; (जीव ३; पि २०३ टि ४)। °**ावत्त** न [°**ावर्त**] एक देव-विमान; (सम २५)। °**ोसभनाराय** न [°**ऋषभनाराच**] संहनन-विशेष; (सम १४६; भग)। देखो **वज्ज**=वज्र।

वइरा स्त्री [**वज्रा**] एक जैन मुनि-शाखा; (कप्प)।

वइराग न [**वैराग्य**] विरक्ति, उदासीनता; (पउम २६, २०)।

वइराड पुं [**वैराट**] १ एक आर्य-देश; २ न. प्राचीन भारतीय नगर-विशेष, जो मत्स्य देश की राजधानी थी; "वइराड मच्छ वरणा अच्छा" (पव २७५)।

वइराय देखो **वइराग**; (भवि)।

वइरि } वि [**वैरिन्**] दुश्मन, रिपु; (सुर १, ७; काल;
वइरिअ } प्रासू १७४)।

वइरिक्क न [**दे**] विजन, एकान्त स्थान; देखो **पइरिक्क**; " अहिअं सुगणाइ निरंजणाइ वइरिक्करगणपुसिआइ "; (गा ८७०)।

वइरित्त वि [**व्यतिरिक्त**] भिन्न, अलग; (सुर १२, ४४; चेइय ५६४)।

वइरी स्त्री [**वज्रा**] एक जैन मुनि-शाखा; (कप्प)।

वइरुट्टा स्त्री [**वैरोट्या**] १ एक विद्या-देवी; (संति ६)। २ भगवान् मल्लिनाथजी की शासन-देवी; (संति १०)।

वइरुत्तरवडिंसग न [**वज्रोत्तरावतंसक**] एक देव-विमान; (सम २५)।

वइरेअ } पुं [**व्यतिरेक**] १ अभाव; (धर्मसं ११२)।
वइरेग } २ साध्य के अभाव में हेतु का नितान्त अभाव; (धर्मसं ३६३; उप ४१३; विसे २६०; २२०४)।

वइरोअण पुं [**वैरोचन**] १ अग्नि, वह्नि; (सुअ १, ६, ६)। २ बलि-नामक इन्द्र; (देवेन्द्र ३०७)। ३ उत्तर दिशा में रहने वाले असुरनिकाय के देव; (भग ३, १; सम ७४)। ४ पुंन. ऐक लोकान्तिक देव-विमान; (पव २६७; सम १४)।

वइरोअण पुं [**दे**] बुद्ध देव; (दे ७, ५१)।

वइरोड पुं [**दे**] जार, उपपति; (दे ७, ४२)।

वइवलय पुं [**दे**] साँप की एक जाति, दुन्दुभ सर्प; (दे ७, ५१)।

वइवाय पुं [**व्यतीपात**] ज्योतिष-प्रसिद्ध एक योग; (राज)।

वइवेला स्त्री [**दे**] सीमा; (दे ७, ३१)।

वइस देखो **वइस्स**=वैश्य,

"वाणिज्जकरिसणाइगोरक्खणपालणेसु उज्जुत्ता।
ते होंति वइसनामा वावारपरायणा धीरा"
(पउम ३, ११६)।

वइसइअ वि [**वैषयिक**] विषय से उत्पन्न, विषय-संबन्धी; (संक्षि ५)।

वइसंपायण पुं [**वैशम्पायन**] एक ऋषि जो व्यास का शिष्य था; (हे १, १५१; प्राप्र)।

वइसम्म पुंन [**वैषम्य**] विषमता; "वइसम्मो" (संक्षि ५; पि ६१)।

वइसवण पुं [**वैश्रवण**] कुबेर; (हे १, १५२; भवि)।

वइसस न [**वैशस**] रोमाञ्चकारी पाप-कृत्य; (उप ५७५)।

वइसानर देखो **वइस्साणर**; (धम्म १२ टी)।

वइसाल वि [**वैशाल**] विशाला में उत्पन्न; (हे १, १५१)।

वइसाह पुं [**वैशाख**] १ मास-विशेष; (सुर ४, १०१; भवि)। २ मन्थन-दण्ड; ३ पुंन. योद्धा का स्थान-विशेष; (हे १, १५१; प्राप्र)।

वइसाही देखो **वेसाही**; (राज)।

वइसिअ वि [**वैशिक**] वेष से जीविका उपार्जन करने वाला; (हे १, १५२; प्राप्र)।

वइसिट्ठ न [**वैशिष्ट्य**] विशिष्टता, भेद; (धर्मसं ६६)।

वइसेसिअ न [**वैशेषिक**] १ दर्शन-विशेष, कणाद-दर्शन; (विसे २५०७)। २ विशेष; "जोएज्ज भावओ वा वइसेसियलक्खणं चउहा" (विसे २१७८)।

वइस्स पुंस्त्री [**वैश्य**] वर्ण-विशेष, वणिक्, महाजन; (विपा १, ५)।

वइस्स वि [**द्वेष्य**] अप्रीतिकर; (उत्त ३२, १०३)।

वइस्सदेव पुं [**वैश्वदेव**] वैश्वानर, अग्नि; (निर ३, १)।

वइस्साणर पुं [**वैश्वानर**] १ वह्नि, अग्नि; २ चित्रक वृक्ष; ३ सामवेद का अवयव-विशेष; (हे १, १५१)।

वई देखो **वइ**=वाच्; (आचा)। °**मय** वि [°**मय**] वचनात्मक; (दस ६, ३, ६)।

वईअ वि [**व्यतीत**] अतीत, गुजरा हुआ। °**सोग** पु [°**शोक**] एक जैन मुनि; (पउम २०, २०)।

वईवय सक [**व्यति+व्रज्**] जाना, गमन करना। वक्र— "कोल्लायस्स संनिवेसस्स अदूरसामंतेणं **वईवयमाणे** बहुजणसद्दं निसामेइ" (उवा)।

वईवाय देखो **वइवाय**; (राज)।

वउ पुंस्त्री [**दे**] लावण्य, शरीर-कान्ति; "वऊ अ लायण्णे" (दे ७, ३०)।

वउ न [**वपुष्**] शरीर, देह; (राज)।

वउलिअ वि [**दे**] शूल-प्रोत; (दे ७, ४४)।

वएमाण देखो **वय**=वद्।

वओ° देखो **वय**=वचस्; (आचा)। °**मय** न [°**मय**] वाङ्मय, शास्त्र; (विसे ५५१)।

वओ° देखो **वय**=वयस्; (पउम ४८, ११५)।

वओवउप्फ } पुंन [**दे**] विषुवत, समान रात और दिन वाला
वओवत्थ } काल; (दे ७, ५०)।

वं° देखो **वाया**=वाच्। °**नियम** पुं [°**नियम**] वाणी की मर्यादा; (उप ७२८ टी)।

वंक वि [**वङ्क, वक्र**] १ बाँका, टेढ़ा, कुटिल; (कुमा; सुपा १७२; पि ७४)। २ नदी का बाँक; (हे १, २६; प्राप्र)।

वंक पुं [**दे**] कलंक, दाग; (दे ७, ३०)।

°**वंक** देखो **पंक**; (से ६, २६; गउड)।

वंकचूल पुं [**वङ्कचूल**] एक प्रसिद्ध राज-कुमार; (धर्मवि ५२; पडि)।

वंकचूलि पुं [**वङ्कचूलि**] ऊपर देखो; "तओ गया वंकचूलिणो गेहे" (धर्मवि ५३; ५६; ६०)।

वंकण न [**वङ्कन, वक्रण**] वक्रीकरण, कुटिल बनाना; (ठा २, १—पत्र ४०)।

वंकिअ वि [**वक्रित**] बाँका किया हुआ; (से ६, ५६)।

°**वंकिअ** वि [**पङ्कित**] पंक-युक्त; (से ६, ५६)।

वंकिम पुंस्त्री [**वक्रिमन्**] वक्रता, कुटिलता; (पि ७४; हे ४, ३४४; ४०१)।

वंकुड } देखो **वंक**=वंक, "विविहविसविडविनिग्गयवंकुड-
वंकुण } तिक्खग्गकंटइए। एयारिसम्मि य वणे" (स २५६; हे ४, ४१८; भवि; पि ७४)।

वंकुभ (शौ) ऊपर देखो; (प्राकृ ६७)।

वंग न [दे] वृन्ताक, भंटा; (दे ७, २६)।

वंग वि [व्यङ्ग] विकृत अंग; "ववगयवलीपलियवंगदुव्वन्नवाधिदोहग्गसोयमुक्काओ" (पण्ह १, ४—पत्र ७६)।

वंगच्छ पुं [दे] प्रमथ, शिव का अनुचर-विशेष, (दे ७, ३६)।

वंगण न [व्यङ्गन] क्षत; (राज)।

वंगिअ वि [व्यङ्गित] विकृत शरीर वाला; (राज)।

वंगेवड्ड पुं [दे] सूकर, सूअर; (दे ७, ४२)।

वंच सक [वञ्च्] ठगना। वंचइ; (हे ४, ६३; षड्; महा)। कर्म—वंचिज्जइ; (भवि)। संकृ—**वंचिऊण**; (महा)। कृ—**वंचणीअ**; (प्राप्र)। प्रयो—वकृ—"तो सो **वंचावितो** कुमरपहारं वएइ पुरवाहिं" (सुपा ५७२)।

वंच (अप) देखो **वच्च**=व्रज्। वंचइ; (प्राकृ ११६)। संकृ—**वंचिवि**; (भवि)।

वंच सक [उद् + नमय्] ऊँचा उठाना। वंचइ (?); (धात्वा १५१)।

वंच वि [वञ्च] ठगने वाला, धूर्त; "कुडिलत्तणं च वंकत्तणं च वंचत्तणं असच्चं च" (वज्जा ११६; हे ४, ४१२)।

वंचअ } वि [वञ्चक] ऊपर देखो; (नाट—मालवि;
वंचग } श्रा २८)।

वंचण न [वञ्चन] १ प्रतारण, ठगाई, (सम्मत्त २१७)। २ वि. ठगने वाला; (संबोध ४१)। °**चण** वि [°चण] ठगने में चतुर; (सम्मत्त २१७)।

वंचणा स्त्री [वञ्चना] प्रतारणा; (उव; कप्पू)।

वंचिअ वि [वञ्चित] १ प्रतारित; (पाअ)। २ रहित, वर्जित; (गउड)।

वंछा स्त्री [वाञ्छा] इच्छा, चाह; (सुपा ४०४)।

वंज सक [वि + अञ्ज्] व्यक्त करना, प्रकट करना। कर्म—वंजिज्जइ; (विसे १६४; ४६३; धर्मसं ५३)।

वंज देखो **वंच**= उद् + नमय्। वंजइ (?), (धात्वा १५१)।

वंज देखो **वंद**=वन्द्।

वंजग देखो **वंजय**; (राज)।

वंजण न [व्यञ्जन] १ वर्ण, अक्षर; "अणक्खरं होज्ज वंजणक्खरओ" (विसे १७०), "तो नत्थि अत्थभेओ वंजणरयणा परं भिन्ना" (चेइय ८६६)। २ स्वर-भिन्न अक्षर, क से ह तक वर्ण; (विसे ४६१; ४६२)। ३ शब्द, पद; "सो पुण समासओ चिअ वंजणनिअओ य अत्थनिअओ अ" (सम्म ३०; सूअनि ६; पडि, विसे १७०)। ४ तरकारी, कढी आदि रस-व्यञ्जक वस्तु; (सुपा ६२३; ओघ ३५६)। ५ शुक्र, वीर्य; (विसे २२८)। ६ शरीर का मश आदि चिह्न; (पव २५७; औप)। ७ मश आदि शरीर-चिह्नों के फल का उपदेशक शास्त्र; (सम ४६)। ८ कक्षा आदि के बाल; (राज)। ९ प्रकाशन, व्यक्तीकरण; (विसे ४६१)। १० श्रोत्रादि इन्द्रिय; ११ शब्द आदि द्रव्य; १२ द्रव्य और इंद्रिय का संबन्ध; (णंदि; विसे २५०)। °**वग्गह**, °**ग्गह** पुं [°ावग्रह] ज्ञान-विशेष, चक्षु और मन को छोड़ कर अन्य इन्द्रियों से होने वाला ज्ञान-विशेष; (कम्म १, ४; ठा २, १)।

वंजय वि [व्यञ्जक] व्यक्त करने वाला; (भास २६)।

वंजर पुं [मार्जार] बिल्ला; (हे २, १३२; कुमा)।

वंजर न [दे] नीवी, कटी-वस्त्र; (दे ७, ४१)।

वंजिअ वि [व्यञ्जित] व्यक्त किया हुआ, प्रकटित; (कुमा १, १८; २, ६६)।

वंजुल पुं [वञ्जुल] १ अशोक वृक्ष; (गा ४२२; स १११)। २ वेतस वृक्ष; (पाअ), "वंजुलसरणेण विसं व पन्नगो मुयइ सो पावं" (धम्म ११ टी; वज्जा ६६; उप ७२८ टी)। ३ पक्षि-विशेष; (पण्ह १, १—पत्र ८)।

वंजुलि वि [वञ्जुलिन्] वेतस वृक्ष वाला; स्त्री—°**णी**; (गउड)।

वंझ वि [वन्ध्य] शून्य, वर्जित; (कुमा)।

वंझा स्त्री [वन्ध्या] बाँझ स्त्री, अपुत्रवती स्त्री; (पउम २६, ८३; सुपा ३२४)।

वंट न [वृन्त] फल या पत्तों का बन्धन; (पिंड ४५)।

वंटग पुं [वण्टक] बाँट, विभाग; (निचू १६)।

वंठ पुं [दे] १ अकृत-विवाह, अ-विवाहित; गुजराती में 'वांढो'; (दे ७, ८३; ओघ २१८)। २ खण्ड, टुकड़ा; ३ गण्ड; (दे ७, ८३)। ४ भृत्य, दास; (दे ७, ८३; सुर २, १६८; रयण ८३; सिरि १११५)। ५ वि. निःस्नेह, स्नेह-रहित; (दे ७, ८३)। ६ धूर्त, ठग; (श्रा १२)।

वंठ वि [**वण्ठ**] खर्व, वामन; (हे ४, ४४७)।
वंठण (अप) न [**वण्टन**] बाँटना, विभाजन. (पिंग)।
वंडइअ वि [**दे**] पीडित; (षड्)।
°**वंडु** देखो **पंडु**; (गा २६५)।
वंडुअ न [**दे**] राज्य; (दे ७, ३६)।
°**वंडुर** देखो **पंडुर**; (गा ३७४)।
वंढ पुं [**दे**] वन्ध, (दे ७, २६)।
वंत वि [**वान्त**] १ जिसका वमन किया गया हो वह; (उत्र)। २ पुंन. वमन; "वंते इ वा पित्ते इ वा" (भग)।
वंतर पुं [**व्यन्तर**] एक देव-जाति; (दं २७; महा)।
वंतरिअ पुं [**व्यन्तरिक**] ऊपर देखो, (भग)।
वंतरिणी स्त्री [**व्यन्तरी**] व्यन्तर-जातीय देवी; (सुपा ६१३)।
वंता देखो **वम**।
°**वंति** देखो **पन्ति**; (गा २७८; ४६३)।
°**वंथ** देखो **पन्थ**; (से १, १६; ३, ४२; १३, २०; पि ४०३)।
वंद सक [**वन्द्**] १ प्रणाम करना। २ स्तवन करना। वंदइ; (उव; महा; कप्प)। वकृ—**वन्दमाण**; (ओघ १८; सं १०; अभि १७२)। कवकृ—**वन्दिज्जमाण**; (उप ६८६ टी; प्रासू १६५)। संकृ—**वन्दिअ, वन्दिओ, वन्दिऊण, वन्दित्ता, वन्दित्तु, वंदेवि**; (कम्म १, १; चंड; कप्प; षड्; हे ३, १४६; चंड)। हेकृ—**वंदित्तए**; (उवा)। कृ—**वंज, वंद, वंदणिज्ज, वंदणीअ, वंदिम**; (राज; अजि १४; द्रव्य १; गाया १, १; प्रासू १६२; नाट—मृच्छ १३०; दसचू १)।
वंद न [**वृन्द**] समूह, यूथ; (पउम १, १; औप; प्राप्र)।
वंदअ } **वंदग** } वि [**वन्दक**] वन्दन करने वाला; (पउम ६, ५८; १०१, ७३; महा; औप; सुख १, ३)।
वंदण न [**वन्दन**] १ प्रणमन, प्रणाम, २ स्तवन, स्तुति; (कप्प; सुर ४, ६२; उत्र)। °**कलस** पुं [°**कलश**] मांगलिक घट; (औप)। °**घड** पुं [°**घट**] वही अर्थ; (औप)। °**माला,** °**मालिआ** स्त्री [°**माला**] घर के द्वार पर मंगल के लिए बँधी जाती पत्र-माला; (सुपा ५४; सुर १०, ४; गा २६२)। °**वडिआ,** °**वत्तिआ** स्त्री [°**प्रत्यय**] वन्दन-हेतु; (सुपा ४३२; पडि)।
वंदणा स्त्री [**वन्दना**] १ प्रणाम; २ स्तवन; (पंचा ३, २; पण्ह २, १—पत्र १००; अंत)।
वंदणिया स्त्री [**दे**] मोरी, नाला, पनाला; "अत्थि कंबलो, गणियाए नेमि। मुक्को। तओ तीसे दिन्नो। तीए च(? वं)-दणियाए छूढो" (सुख २, १७)।
वंदाप (अशो) देखो **वंदाव**। वंदापयति; (पि ७)।
वंदारय पुं [**वृन्दारक**] १ देव, देवता, (पाअ; कुमा)। २ वि. मनोहर; (कुमा)। ३ मुख्य, प्रधान; (हे १, १३२)।
वंदारु वि [**वन्दारु**] वन्दन करने वाला; (चेइय ६२१; लहुअ १)।
वंदाव सक [**वन्दय्**] वन्दन करवाना। वंदावइ; (उव)।
वंदावणग न [**वन्दन**] वन्दन, प्रणाम; (श्रावक ३७४)।
वंदिअ देखो **वंद**=वन्द्।
वंदिअ वि [**वन्दित**] जिसको वन्दन किया गया हो वह; (कप्प; उव)।
वंदिम देखो **वंद**=वन्द्।
वंद्र न [**वन्द्र**] समूह, यूथ; (हे १, ५३; २, ७६; पउम ११, १२०; स ६६६)।
वंध पुं [**वन्ध्य**] एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष; (सुज्ज २०)।
वंफ सक [**काङ्क्ष्**] चाहना, अभिलाष करना। वंफइ, वंफए, वंफंति; (हे ४, १९२; कुमा)।
वंफ अक [**वल्**] लौटना। वंफइ; (हे ४, १७६; षड्)।
वंफि वि [**वलिन्**] १ लौटने वाला: २ नीचे गिरने वाला; (कुमा)।
वंफिअ वि [**काङ्क्षित**] अभिलषित; (कुमा)।
वंफिअ वि [**दे**] भुक्त, खाया हुआ; (दे ७, ३५; पाअ)।
वंस पुं [**दे**] कलंक, दाग; (दे ७, ३०)।
वंस पुं [**वंश**] १ वाँस, वेणु; (पण्ह २, ५—पत्र १४६; पाअ)। २ वाद्य-विशेष; "वाइओ वंसो" (कुमा २, ७०; राय)। ३ कुल; "चुलुगवंसदीवओ" (कुमा २, ६१)। ४ सन्तान, संतति; ५ पृष्ठावयव, पीठ का भाग; ६ वर्ग; ७ इक्षु, ऊख; ८ वृक्ष-विशेष, सालवृक्ष; (हे १, २६०)। °**इरि** पुं [°**गिरि**] पर्वत-विशेष; (पउम ३६, ४)। °**करिल्ल,** °**गरिल्ल** पुंन [°**करील**] वंशांकुर, वाँस का कोमल नवावयव; (श्रा २०; पव ४)। °**जाली,** °**याली** स्त्री [°**जाली**] वाँसों की गहन घटा; (सुर १२, २००; उप पृ ३६)। °**रोअणा** स्त्री [°**रोचना**] वंशलोचन; (कप्पू)।

वंसकवेल्लुय पुंन [**दे. वंशकवेल्लुक**] छत के नीचे दोनो तरफ तिरछा रखा जाता वाँस; (जीव ३; राय)।

वंसग देखो **वंसय**; (राज)।

वंसप्फाल वि [**दे**] १ प्रकट, व्यक्त; २ ऋजु, सरल, (दे ७, ४८)।

वंसय वि [**व्यंसक**] १ धूर्त, ठग; २ पुं. दुष्ट हेतु-विशेष; (ठा ४, ३—पत्न २५४)।

वंसा स्त्री [**वंशा**] द्वितीय नरक-पृथिवी; (ठा ७—पत्न ३८८; इक)।

वंसि° देखो **वंसी**=वंश; (कम्म १, २०)।

वंसिअ वि [**वांशिक**] वंश-वाद्य वजाने वाला; (हे १, ७०; कुमा)।

वंसिअ वि [**व्यंसित**] छलित, प्रतारित; (राज)।

वंसी स्त्री [**वांशी**] १ सुरा-विशेष; (बृह २)। २ वाँस की जाली; (ठा ३, १—पत्न १२१)। **°कलंका** स्त्री [**°कलङ्का**] वाँस की जाली की वनी हुई वाड़; (विपा १, ३—पत्न ३८)। **°पत्तिया** स्त्री [**°पत्रिका**] योनि-विशेष, वंशजाली के पत्न के आकार की योनि; (ठा ३, १)।

वंसी स्त्री [**वंशी**] वाद्य-विशेष, मुरली; (बृह २)। **°णहिया** स्त्री [**°नखिका**] वनस्पति-विशेष; (पराण १—पत्न ३८)। **°मुह** पुं [**°मुख**] द्वीन्द्रिय जीव-विशेष; (जीव १ टी—पत्न ३१)।

वंसी स्त्री [**वंश**] वाँस। **°मूल** न [**°मूल**] वाँस की जड़; (कस)।

वंसी स्त्री [**दे**] मस्तक पर स्थित माला; (दे ७, ३०)।

वक्क न [**वाक्य**] पद-समुदाय, शब्द-समूह; (उव; उप ८३३; ८५६)।

वक्क न [**वल्क**] त्वचा, छाल; (उप ८३६; औप)। **°बंध** पुं [**°बन्ध**] वल्क-बन्धन; (विपा १, ८)।

वक्क देखो **वंक**=वंक; (णाया १, ८—पत्न १३३; स ६११; धर्मसं ३४८; ३४६)।

वक्क न [**वक्त्र**] मुख, मुँह; (पउम १११, १७; गा १६४)।

वक्क न [**दे**] पिष्ट, पिसान, आटा; (षड्)।

वक्कंत पुंन [**वक्रान्त**] प्रथम नरक-भूमि का दशवाँ नर-केन्द्रक—नरकावास-विशेष; (देवेन्द्र ५)।

वक्कंत वि [**अवक्रान्त**] उत्पन्न; (कप्प; पि १४२)।

वक्कंति स्त्री [**अवक्रान्ति**] उत्पत्ति; (कप्प; सम २; भग)।

वक्कड न [**दे**] १ दुर्दिन; २ निरन्तर वृष्टि; (दे ७, ३५)।

वक्कडबंध न [**दे**] कर्णाभरण, कान का आभूषण; (दे ७, ५१)।

वक्कम अक [**अव+क्रम्**] उत्पन्न होना। **वक्कमइ**; (भग; कप्प)। भूका—वक्कमिंसु; (कप्प)। भवि—वक्कमिस्संति; (कप्प)। वकृ—**वक्कममाण**; (भग; णाया १, १—पत्न २०)।

वक्कर (अप) देखो **वक्क**=वंक; (भवि)।

वक्कल न [**वल्कल**] वृक्ष की छाल; (प्राप्र; सुपा २५२; हे ४, ३४१; ४११; प्रति ५)। **°चीरि** पुं [**°चीरिन्**] एक महर्षि, जो राजा प्रसन्नचन्द्र के छोटे भाई थे; (कुप्र २८६)।

वक्कलि } **वक्कलिण** } वि [**वल्कलिन्**] वृक्ष की छाल पहनने वाला (तापस); (कुमा; भत्त १००; संबोध २१; पउम ३६, ८४)।

वक्कलुय वि [**दे**] पुरस्कृत, आगे किया हुआ; (दे ७, ४६)।

वक्कस न [**दे**] १ पुराणे धान का चावल; २ पुरातन सक्तु-पिराड; ३ वहुत दिनों का वासी गोरस, ४ गेहूँ का माँड; (आचा १, ६, ४, १३)।

वक्किद (शौ) देखो **वंकिअ**; (पि ७४)।

वक्ख देखो **वच्छ**=वृक्ष, (चंड; उप ८८५)।

वक्ख देखो **वच्छ**=वक्षस्; (संक्षि १५; प्राक्ट २२; नाट—मृच्छ १३३)।

°वक्ख देखो **पक्ख**; (गा ४४२; से ३, ४२; ४, २३; स ६५१)।

वक्खमाण देखो **वय**=व ।

वक्खल वि [**दे**] आच्छादित, ढका हुआ; (षड्)।

वक्खा सक [**व्या+ख्या**] १ विवरण करना। २ कहना। कृ—**वक्खेय**; (विसे १३७०)।

वक्खा स्त्री [**व्याख्या**] विवरण, विशद रूप से अर्थ-प्ररूपण; (विसे ६६४)।

वक्खाण न [**व्याख्यान**] १ ऊपर देखो; (चेइय २७१; विसे ६६५)। २ कथन; (हे २, ६०)।

वक्खाण सक [**व्याख्यानय्**] १ विवरण करना। २ कहना। वक्खाणइ; (भवि)। भवि—वक्खाणइस्सं (शौ); (पि २७६)। कर्म—वक्खाणिज्जइ; (विसे ६८४)। वकृ—**वक्खाणयंत**; (उवर ६८; रयण २१)।

संकृ—**वक्खाणेउं**; (विसे ११)। कृ—**वक्खाणेअव्व**; (राज)।
वक्खाणि वि [**व्याख्यानिन्**] व्याख्यान-कर्ता; (धर्मसं १२६१)।
वक्खाणिय वि [**व्याख्यानित**] व्याख्यात; (विसे १०८७)।
वक्खाणीअ (अप) ऊपर देखो; (पिंग ५०६)।
वक्खाय वि [**व्याख्यात**] १ विवृत, वर्णित; (स १३२; चेइय ७७१)। २ पुं. मोक्ष, मुक्ति; (आचा १, ५, ६, ८)।
वक्खार पुं [**दे**] वखार, अन्न आदि रखने का मकान, गुदाम; (उप १०३१ टी)।
वक्खार पुं [**वक्षार, वक्षस्कार**] १ पर्वत-विशेष, गज-दन्त के आकार का पर्वत; (सम १०१; इक)। २ भू-भाग, भू-प्रदेश; (पउम २, ५४; ५५; ५६; ५८)।
वक्खारय न [**दे**] १ रति-गृह; २ अन्तःपुर; (दे ७, ४५)।
वक्खाव सक [**व्या+ख्यापय्**] व्याख्यान कराना। वक्खावइ; (प्राकृ ६१)।
वक्खित्त वि [**व्याक्षिप्त**] १ व्यग्र, व्याकुल; (ओघ १३; कुप्र २७)। २ किसी कार्य में व्यापृत; (पव २)।
वक्खेय देखो **वक्खा**=व्या+ख्या।
वक्खेव पुं [**व्याक्षेप**] १ व्यग्रता, व्याकुलता; (उवा; उप १३६ टी; १४०)। २ कार्य-बाहुल्य; (सुख ३, १)।
वक्खेव पुं [**अवक्षेप**] प्रतिषेध, खण्डन; (गा २४२ अ)।
वक्खो° देखो **वच्छ**=वक्षस्। °**रुह** पुं [°**रुह**] स्तन, थन; (सुपा ३८६)।
वक्खु (शौ) देखो **वंक**=वंक; (प्राकृ ६७)।
वखाण (अप) देखो **वक्खाण**=व्याख्यानय्। वखाण; (पिंग)।
वखाणिअ (अप) देखो **वक्खाणिय**; (पिंग)।
वगडा स्त्री [**दे**] वाड, परिक्षेप; (कस; वव ६)।
वग्ग सक [**वल्ग्**] १ जाना, गति करना। २ कूदना। ३ बहु-भाषण करना। ४ अभिमान-सूचक शब्द करना, खूँखारना। वग्गइ; (भवि; सण, पि २६६), वग्गंति; (सुपा २८८)। कर्म—वग्गीअदि (शौ); (किरात १७)। वकृ—**वग्गंत**; (स ३८३; सुपा ४६३; भवि)। संकृ—**वग्गित्ता**; (पि २६६)।
वग्ग पुं [**वर्ग**] १ सजातीय समूह; (णंदि; सुर ३, ४; कुमा)। २ गणित-विशेष, दो समान संख्या का परस्पर गुणन; (ठा १०—पत्र ४६६)। ३ ग्रन्थ-परिच्छेद, अध्ययन, सर्ग; (हे १, १७७; २, ७६)। °**मूल** न [°**मूल**] गणित-विशेष, वह अंक जिसका वर्ग किया गया हो, जैसे ४ का वर्ग करने से १६ होता है, १६ का वर्गमूल ४ होता है; (जीवस १५७)। °**वग्ग** पुं [°**वर्ग**] गणित-विशेष, वर्ग से वर्ग का गुणन, जैसे २का वर्ग ४, ४का वर्ग १६, यह २का वर्गवर्ग कहलाता है; (ठा १०)।
वग्ग सक [**वर्गय्**] वर्ग करना, किसी अंक को समान अंक से गुणाना। वग्गसु; (कम्म ४, ८४)।
वग्ग वि [**व्यग्र**] व्याकुल; (उत्त १५, ४; रयण ८०)।
वग्ग देखो **वक्क**=वल्क, (विसे १५४)।
वग्ग वि [**वाल्क**] वृक्ष-त्वचा का बना हुआ; (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।
वग्गंलिअ न [**दे**] युद्ध, लडाई; (दे ७, ४६)।
वग्गण न [**वल्गन**] कूदना; (औप; कुप्र १०७; कप्प; णाया १, १—पत्र १६; प्राप)।
वग्गणा स्त्री [**वर्गणा**] सजातीय समूह; (ठा १—पत्र २७)।
वग्गय न [**दे**] वार्ता, बात; (दे ७, ३८)।
वग्गा स्त्री [**वल्गा**] लगाम; (उप ७६८ टी)।
वग्गावग्गिं अ. वर्ग रूप से; (औप)।
वग्गि वि [**वाग्मिन्**] १ प्रशस्त वाक्य बोलने वाला; २ पुं. बृहस्पति; (प्राप्र; पि २७७)।
वग्गिअ [**वर्गित**] वर्ग किया हुआ; (कम्म ४, ८०)।
वग्गिअ न [**वल्गित**] १ बहु भाषण, बकवाद; (सम्मत्त २२७)। २ वड़ाई का आवाज; (मोह ८७)। ३ गति, चाल; (सण)।
वग्गिर वि [**वल्गितृ**] १ खूँखार आवाज करने वाला; २ गति-विशेष वाला; (सुर ११, १७१)।
वग्गु देखो **वाया**=वाच्; "वग्गूहिं" (औप; कप्प; सम ५०; कुम्मा १६)।
वग्गु देखो **वग्ग**=वर्ग; "वग्गूहि" (औप)।
वग्गु वि [**वल्गु**] १ सुन्दर, शोभन; (सूअ १, ४, २, ४)। २ कल, मधुर; (पाअ)। ३ विजय-क्षेत्र-विशेष, प्रान्त-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ८०)। ४ पुंन. एक देव-विमान, वैश्रमण लोकपाल का विमान; (देवेन्द्र १३१; २७०)।
वग्गुरा न [**वागुरा**] १ मृग-बन्धन, पशु फँसाने का जाल,

फन्दा; (पराह १, १; विपा १, २—पत्र ३५)। २ समूह, समुदाय; "मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते" (उवा; प्राप)।

वग्गुरिय वि [**वागुरिक**] १ मृग-जाल से जीविका निर्वाह करने वाला, व्याध, पारधि; (ओघ ७६६)। २ पुं. नर्तक-विशेष; (राज)।

वग्गुलि पुंस्त्री [**वल्गुलि**] १ पक्षि-विशेष; (पराह १, १—पत्र ८)। २ रोग-विशेष; (ओघभा २७७; श्रावक ६१ टी)।

वग्गेज्ज वि [**दे**] प्रचुर, प्रभूत; (दे ७, ३८)।

वग्गोअ वि [**दे**] नकुल, न्यौला; (दे ७, ४०)।

वग्गोरमय वि [**दे**] रूक्ष, लूखा; (दे ७, ५२)।

वग्गोल सक [**रोमन्थय्**] पगुराना, चवी हुई वस्तु का पुनः चबाना, गुजराती में 'वागोळवुं'। वग्गोलइ; (हे ४, ४३)।

वग्गोलिर वि [**रोमन्थयितृ**] पगुराने वाला; (कुमा)।

वग्घ पुं [**व्याघ्र**] १ वाघ, शेर; (पाअ; स्वप्न ७०; सुपा ४६३)। २ रक्त एरराड का पेड; ३ करञ्ज वृक्ष; (हे २, ६०)। °**मुह** पुं [°**मुख**] १ एक अन्तर्द्वीप; २ उस में रहने वाली मनुष्य-जाति; (ठा ४, २—पत्र २२६; इक)।

वग्घाअ पुं [**दे**] १ साहाय्य, मदद; २ वि. विकसित, खिला हुआ; (दे ७, ८६)।

वग्घाडी स्त्री [**दे**] उपहास के लिये किया जाता एक प्रकार का आवाज, "अप्पेगइया वग्घाडीओ करेंति" (णाया १, ८—पत्र १४४)।

वग्घारिअ वि [**व्याघारित**] १ वघारा हुआ, छौंका हुआ; (नाट—मृच्छ २२१)। २ व्याप्त; "सीतोदयवियडवग्घारियपाणिणा" (सम ३६)।

वग्घारिअ वि [**दे**] प्रलम्बित; "पडिवद्धसरीरवग्घारियसोणिसुत्तगमल्लदामकलावे" (सूअ २, २, ५५), "वग्घारियपाणी" (णाया १, ८—पत्र १५४; कप्प; औप; महा)।

वग्घावच्च न [**व्याघ्रापत्य**] एक गोत्र जो वाशिष्ठ गोत्र की एक शाखा है; (ठा ७—पत्र ३६०; सुज्ज १०, १६; कप्प; इक)।

वग्घी स्त्री [**व्याघ्री**] १ वाघ की मादा; (कुमा)। २ एक विद्या; (विसे २४५४)।

वघाय देखो **वाघाय**; "आउस्स कालाइचरं वघाए, लद्धाणुमाणे य परस्स अट्ठे" (सूअ १, १३, २०)।

वचा स्त्री [**वचा**] १ पृथिवी, धरती; (से २, ११)। २ ओषधि-विशेष, वच; (मृच्छ १७०)। देखो **वया**=वचा।

वच्च सक [**व्रज्**] जाना, गमन करना। वच्चइ; (हे ४, २२५; महा)। भवि—वच्चिहिसि; (महा)। वकृ—**वच्चंत, वच्चमाण**; (सुर २, ७२; महा; गा १६)।

वच्च सक [**काङ्क्ष्**] चाहना, अभिलाष करना। वच्चइ, वच्चउ; (हे ४, १६२; कुमा)।

वच्च देखो **वय**=व्रच्।

वच्च पुंन [**वर्चस्**] १ पुरीष, विष्ठा; (पाअ; ओघ १६७; सुपा १७६; तंदु १४)। २ कूडा-करकट; "भोगो तंबोलाइ कुणंतो जिणगिहे कुणइ वच्चं" (संबोध ४)। ३ चौथी नरक का चौथा नरकेन्द्रक—नरकस्थान-विशेष; (देवेन्द्र १०)। ४ तेज, प्रभाव; (णाया १, १—पत्र ६)। °**घर, °हर** न [°**गृह**] पाखाना, टट्टी; (सूअ १, ४, २, १३; स ७४१)।

वच्च देखो **वय**=वचस्; (णाया १, १—पत्र ६)।

वच्चंसि वि [**वचस्विन्**] प्रशस्त वचन वाला; (णाया १, १—पत्र ६)।

वच्चंसि वि [**वर्चस्विन्**] तेजस्वी; (णाया १, १; सम १५२; औप; पि ७४)।

वच्चय पुं [**व्यत्यय**] विपर्यास, उलट-पुलट; (उपपृ २६६; पव १०४)। देखो **वत्तअ**।

वच्चरा (अप) देखो **वचा**; (भवि)।

वच्चा देखो **वय**=वच्।

वच्चामेलिय देखो **विच्चामेलिय**; (विसे १४८१)।

वच्चास पुं [**व्यत्यास**] विपर्यास, विपर्यय; (ओघ २७१; कम्म ५, ८६)।

वच्चासिय वि [**व्यत्यासित**] उलटा किया हुआ; (विसे ८५३)।

वच्चीसग पुं [**वच्चीसक**] वाद्य-विशेष; (अनु)।

वच्चो° देखो **वच्च**=वर्चस्; (सुर ६, २८)।

वच्छ न [**दे**] पार्श्व, समीप; (दे ७, ३०)।

वच्छ पुंन [**वक्षस्**] छाती, सीना; (हे २, १७; संक्षि १५; प्राप्र; गा १५१; कुमा)। °**त्थल** न [°**स्थल**] उरः-स्थल, छाती; (कुमा; महा)। °**सुत्त** न [°**सूत्र**] आभूषण-विशेष, वक्षःस्थल में पहनने की सँकली; (भग ६, ३३ टी—पत्र ४७७)।

वच्छ पुं [**वृक्ष**] पेड़, शाखी, द्रुम, (प्राप्र; कुमा; हे २, १७; पाअ)।

वच्छ पुं [**वत्स**] १ वछडा; (सुर २, ६५; पाअ)। २

शिशु, बच्चा; ३ वत्सर, वर्ष; ४ वक्षःस्थल, छाती; (प्राप्र)। ५ ज्योतिषशास्त्र-प्रसिद्ध एक चक्र; (गण १६)। ६ देश-विशेष; (ती १०)। ७ विजय-क्षेत्र-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ८०)। ८ न. गोत्र-विशेष; ६ वि. उस गोत्र में उत्पन्न; (ठा ७—पत्र ३६० ; कप्प)। °दर पुंस्त्री [°तर] १ क्षुद्र वत्स; २ दमनीय बछड़ा आदि; स्त्री—°री; (प्राकृ २३)। °मित्ता स्त्री [°मित्रा] १ अधोलोक में रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८—पत्र ४३७; इक)। २ ऊर्ध्वलोक में रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (इक; राज)। °यर देखो °दर; (दे २, ६; ७, ३७)। °राय पुं [°राज] एक राजा; (ती १०)। °वाल पुंस्त्री [°पाल] गोप, ग्वाला; (पाअ), स्त्री—°ली; (आवम)।

वच्छगावई स्त्री [**वत्सकावती**] एक विजय-क्षेत्र; (ठा २, ३—पत्र ८०; इक)।

वच्छर पुंन [**वत्सर**] साल, वर्ष; (प्राप्र; सिरि ६३५)।

वच्छल वि [**वत्सल**] स्नेही, स्नेह-युक्त; (गा ३; कुमा; सुर ६, १३७)।

वच्छल्ल न [**वात्सल्य**] स्नेह, अनुराग, प्रेम; (कुमा; पडि)।

वच्छा स्त्री [**वत्सा**] १ विजय-क्षेत्र विशेष; २ एक नगरी; (इक)। ३ लड़की; (कप्पू)।

वच्छाण पुं [**उक्षन्**] बैल, बलीवर्द; "उक्खा वसहा य वच्छाणा" (पाअ)।

वच्छावई स्त्री [**वत्सावती**] विजय-क्षेत्र विशेष; (जं ४)।

वच्छि° देखो **वय**=वच्।

वच्छिउड पुं [**दे**] गर्भाशय; (दे ७, ४४ टी)।

वच्छिम पुंस्त्री [**वृक्षत्व**] वृक्षपन, (षड्)।

वच्छिमय पुं [**दे**] गर्भ शय्या; (दे ७, ४४)।

वच्छीउत्त पुं [**दे**] नापित, हजाम; (दे ७, ४७; पाअ; स ७५)।

वच्छीव पुं [**दे**] गोप, ग्वाला; (दे ७, ४१; पाअ)।

वच्छुद्दलिअ वि [**दे**] प्रत्युद्गत; (षड्)।

वच्छोम न [**वक्षोम**] नगर-विशेष, कुन्तल देश की प्राचीन राजधानी; (कप्पू)।

वच्छोमी स्त्री [**दे**] काव्य की एक रीति; (कप्पू)।

वज्ज अक [**त्रस्**] डरना। वज्जइ, वज्जए; (हे ४, १६८; प्राकृ ७५; धात्वा १५१)।

वज्ज देखो **वच्च**=व्रज्। वज्जइ; (नाट—मृच्छ १६३), वज्जसि; (पि ४८८)।

वज्ज सक [**वर्जय्**] त्याग करना। कवकृ—**वज्जिज्जंत**; (पंचा १०, २७)। संकृ—**वज्जिय, वज्जेवि, वज्जिऊण, वज्जेत्ता**; (महा; काल; पंचा १२, ६)। कृ—**वज्ज, वज्जणिज्ज, वज्जेयव्व**; (पिंड ५६२; भग; पण्ह २, ४; सुपा ४८५; महा; पण्ह १, ४; सुपा ११०; उप १०३७)।

वज्ज अक [**वद्**] बजना, वाद्य आदि का आवाज होना। वज्जइ; (हे ४, ४०६; सुपा ३३४)। वकृ—**वज्जंत, वज्जमाण**; (सुर ३, ११५; सुपा ६५६)।

वज्ज न [**वाद्य**] बाजा, वादित्र; (दे ३, ५८; गा ४२०)।

वज्ज वि [**वर्य**] १ श्रेष्ठ, उत्तम; (सुर १०, २)। २ प्रधान, मुख्य; (हे २, २४)।

वज्ज वि [**वर्ज**] १ रहित, वर्जित; "जिणवज्जदेवयाणं न नमइ जो तस्स तणुसुद्धी" (श्रा ६), "सहजनिओगजवज्जा पायं न घडंति आगारा" (चेइय ४७१), "लोयववहारवज्जा तुब्भे परमत्थमूढा य" (धर्मवि ८४५; विसे २८४७; श्रावक ३०७; सुर १४, ७८)। २ न. छोड़कर, विना, सिवाय; (श्रा ६; दं १७; कम्म ४, ३४; ५३)। ३ पुं. हिंसा, प्राण-वध; (पण्ह १, १—पत्र ६)।

वज्ज देखो **अवज्ज**; (सूअ १, ४, २, १६; बृह १)।

वज्ज देखो **वइर**=वज्र; (कुमा; सुर ४, १५२; गु ५; हे १, १७७; २, १०५; षड्; कम्म १, ३६; जीवस ४६; सम २५)। १७ पुं. विद्याधर-वंश का एक राजा; (पउम ५, १६; १७; ८, १३३)। १८ हिंसा, प्राण-वध; (पण्ह १, १—पत्र ६)। १६ कन्द-विशेष; (पण्ण १—पत्र ३६; उत्त ३६, ६६)। २० म. कर्म-विशेष, बँधाता हुआ कर्म; (सूअ २, २, ६५; ठा ४, १—पत्र १६७)। २१ पाप; (सूअ १, ४, २, १६)। °कंठ पुं [°कण्ठ] वानर-द्वीप का एक राजा; (पउम ६, ६०)। °कंत न [°कान्त] एक देव-विमान; (सम २५)। °कंद पुं [°कन्द] एक प्रकार का कन्द, वनस्पति-विशेष; (श्रा २०)। °कूड न [°कूट] एक देव-विमान; (सम २५)। °क्ख पुं [°ाक्ष] एक विद्याधर-वंशीय राजा; (पउम ८, १३२)। °चूड पुं [°चूड] विद्याधर-वंश का एक राजा; (पउम ५, ४६)। °जंघ पुं [°जङ्घ] विद्याधर-वंशीय एक नरेश; (पउम ५, १५)। °णाभ पुं [°नाभ] भगवान् अभिनन्दन-स्वामी के प्रथम गणधर; (सम १५२)। देखो °नाभ।

°दत्त पुं [°दत्त] १ विद्याधर-वंश का एक राजा; (पउम ५, १५)। २ एक जैन मुनि; (पउम २०, १८)। °द्धय पुं [°ध्वज] एक विद्याधर-वंशीय राजा; (पउम ५, १५)। °धर देखो °हर; (पउम १०२, १५६; विचार १००)। °नागरी स्त्री [°नागरी] एक जैन मुनि-शाखा; (कप्प)। °नाभ पुं [°नाभ] एक जैन मुनि; (पउम २०, १६)। देखो °णाभ। °पाणि पुं [°पाणि] १ इन्द्र; (उत्त ११, २३; देवेन्द्र २८३; उप २११ टी)। २ एक विद्याधर-नरपति; (पउम ५, १७)। °प्पभ न [°प्रभ] एक देव-विमान; (सम २५)। °वाहु पुं [°वाहु] एक विद्याधर-वंशीय राजा; (पउम ५, १६)। °भूमि स्त्री [°भूमि] लाट देश का एक प्रदेश; (आचा १, ६, ३, २)। °म (अप) देखो मय; (हे ४, ३६५)। °मज्झ पुं [°मध्य] १ राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंकेश; (पउम ५, २६३)। २ रावणाधीन एक सामन्त राजा; (पउम ८, १३२)। °मज्झा स्त्री [°मध्या] एक प्रतिमा, व्रत-विशेष; (औप २४)। °मय वि [°मय] वज्र का बना हुआ; (पउम ६२, १०), स्त्री—°मई; (नाट—उत्तर ४५)। °रिसहनाराय न [°ऋषभनाराच] संहनन-विशेष, शरीर का एक तरह का सर्वोत्तम बन्ध; (कम्म १, ३८)। °रूव न [°रूप] एक देव-विमान; (सम २५)। °लेस न [°लेश्य] एक देव-विमान; (सम २५)। °वँ (अप) देखो °म; (हे ४, ३६५)। °वण्ण न [°वर्ण] एक देव-विमान; (सम २५)। °वेग पुं [°वेग] एक विद्याधर का नाम; (महा)। °सिंखला स्त्री [°शृङ्खला] एक विद्या-देवी; (संति ५)। °सिंग न [°शृङ्ग] एक देव-विमान; (सम २५)। °सिट्ठ न [°सृष्ट] एक देव-विमान; (सम २५)। °सुंदर पुं [°सुन्दर] विद्याधर-वंश में उत्पन्न एक राजा; (पउम ५, १७)। °सुजण्हु पुं [°सुजह्नु] विद्याधर-वंश का एक राजा; (पउम ५, १७)। °सेण पुं [°सेन] १ एक जैन मुनि जो भगवान् ऋषभदेव के पूर्व जन्म में गुरु थे; (पउम २०, १७)। २ विक्रम की चौदहवीं शताब्दी के एक जैन आचार्य; (सिरि १३४०)। °हर पुं [°धर] १ इन्द्र, देव-राज; (से १५, ४८; उव)। २ वि. वज्र को धारण करने वाला; (सुपा ३३४)। °ाउह पुं [°ायुध] १ इन्द्र; (पउम ३, १३७; ५१, १८)। २ विद्याधर-वंश का एक राजा; (पउम ५, १६)। °ाभ पुं [°ाभ] एक विद्याधर-वंशीय राजा; (पउम ५, १६)। °ावत्त न [°ावर्त] एक देव-विमान; (सम २५)। °ास पुं [°ाश] एक विद्याधर-राजा; (पउम ५, १७)।

वज्जंक पुं [वज्राङ्क] विद्याधर-वंश का एक राजा; (पउम ५, १६)।

वज्जंकुसी स्त्री [वज्राङ्कुशी] एक विद्या-देवी; (संति ५)।

वज्जंत देखो वज्ज=वद्।

वज्जंधर पुं [वज्रन्धर] विद्याधर-वंश का एक राजा; (पउम ५, १६)।

वज्जघट्टिता स्त्री [दे] मन्द-भाग्य स्त्री; (संक्षि ४७)।

वज्जण न [वर्जन] परित्याग, परिहार; (सुर ४, ८१; स २७१; सुपा २४५; श्रु ६)।

वज्जणअ (अप) वि [वदितृ] वजने वाला; "पडहु वज्जणउ" (हे ४, ४४३)।

वज्जणया } स्त्री [वर्जना] परित्याग; (सम ४४; उत्त
वज्जणा } १६, ३०; उव)।

वज्जमाण देखो वज्ज=वद्।

वज्जय वि [वर्जक] त्यागने वाला; (उवा)।

वज्जर सक [कथय्] कहना, बोलना। वज्जरइ, वज्जरेइ; (हे ४, २; षड्; महा)। वकृ—वज्जरंत; (हे ४, २; चेइय १४६)। संकृ—वज्जरिऊण; (हे ४, २)। कृ—वज्जरिअव्व; (हे ४, २)।

वज्जर देखो वंजर=मार्जार; (चंड)।

वज्जर पुं [वर्जर] १ देश-विशेष; २ वि. देश-विशेष में उत्पन्न; "परिवाहिया य तेणं बहवे वल्हीयतुरुक्कवज्जराइया आसा" (स १३)।

वज्जरण न [कथन] उक्ति, वचन; (हे ४, २)।

वज्जरा स्त्री [दे] तरंगिणी, नदी; (दे ७, ३७)।

वज्जरिअ वि [कथित] कहा हुआ, उक्त; (हे ४, २; सुर १, ३२; भवि)।

वज्जा स्त्री [दे] अधिकार, प्रस्ताव; (दे ७, ३२; वज्जा २)।

वज्जाव (अप) सक [वाचय्] वचवाना, पढ़ाना। वज्जावइ; (प्राकृ १२०)।

वज्जाव सक [वादय्] वजाना। वज्जावइ; (भवि)।

वज्जाविय वि [वादित] वजाया हुआ; (भवि)।

वज्जि पुं [वज्रिन्] इन्द्र; (संबोध ८)।

वज्जिअ वि [दे] अवलोकित, दृष्ट; (दे ७, ३६; महा)।

वज्जिअ वि [वादित] वजाया हुआ; (सिरि ५२५)।

वज्जिअ वि [**वर्जित**] रहित; (उवा; औप; महा; प्रासू ७६)।
वज्जियावग पुं [**दे**] इक्षु, ऊख; (वव १)।
वज्जिर वि [**वदितृ**] बजने वाला; (सुर ११, १७२; सुपा ४५; ८७; सिरि १५५; सण), "गहिख(?ख)ज्जिराउज्ज-गज्जिजज्जरियवंभंडभंडोयरो" (कुप्र २२४)।
वज्जुत्तरवडिंसग न [**वज्रोत्तरावतंसक**] एक देव-विमान; (सम २५)।
वज्जोयरी स्त्री [**वज्रोदरी**] विद्या-विशेष; (पउम ७, १३८)।
वज्झ वि [**वध्य**] वध के योग्य; (सुपा २४८; गा २६; ४६६; दे ८, ४६)। °**नेवत्थिय** वि [°**नेपथ्यिक**] मृत्यु-दंड-प्राप्त को पहनाया जाता वेष वाला; (पण्ह १, ३—पत्त ५४)। °**माला** स्त्री [°**माला**] वध्य को पहनाई जाती माला, कनेर के फूलों की माला; (भत्त १२०)।
वज्झ वि [**वाह्य**] १ वहन करने योग्य; (प्राप्र; उप १५० टी)। २ न. अश्व आदि यान; (स ६०३)। °**खेड्ड** न [°**खेल**] कला-विशेष, यान की सवारी का इल्म; (स ६०३)।
वज्झा स्त्री [**हत्या**] वध, घात; (सुख ४, ६; महा)।
वज्झियायण न [**वध्यायन**] गोत्र-विशेष; (सुज्ज १०, १६)।
वञ (अप) देखो **वच्च**=व्रज्। वजइ, वञदि; (षड्)।
वट्ट सक [**वृत्**] १ वरतना, होना। २ आचरण करना। वट्टइ, वट्टए, वट्टंति; (सुर ३, ३६; उव; कप्प)। वकृ— **वट्टंत, वट्टमाण**; (गा ४१०; कम्म ३, २०; चेइय ७१३; भवि; उवा; पडि; कप्प; पि ३५०)। हेकृ—**वट्टिउं**; (चेइय ३६८)। कृ—**वट्टियव्व**; (उव)।
वट्ट सक [**वर्तय्**] १ वरताना। २ पिंड रूप से बाँधना। ३ परोसना। ४ ढकना, आच्छादन करना। वट्टंति; (पिंड २३६)। कवकृ—**वट्टिज्जमाण**; (औप)।
वट्ट वि [**वृत्त**] १ वर्तुल, गोलाकार; (सम ६३; औप; उवा)। २ अतीत, गुजरा हुआ; ३ मृत, ४ संजात, उत्पन्न; ५ अधीत; ६ दृढ़; ७ पुं. कूर्म, कछुआ; (हे २, २६)। ८ न. वर्तन, वृत्ति, प्रवृत्ति; (सूअ १, ४, २, २)। °**क्खुर**, °**खुर** पुं [°**खुर**] श्रेष्ठ अश्व; (ओघ ४३८; राज)। °**खेड**, °**खेड्ड** स्त्रीन [°**खेल**] कला-विशेष; (णाया १, १—पत्त ३८; स ६०३; अंत ३१ टि); देखो **वत्थ-खेड्ड**। देखो **वत्त, वित्त**=वृत्त।
वट्ट पुंन [**वर्त्मन्**] वाट, मार्ग, रास्ता; "पडिसोएण पवट्टा चत्ता अणुसोअगामिणो वट्टा" (सार्ध ११८; सुर १०, ४; सुपा ३३०), "वट्टं" (प्राकृ २०)। °**वाडण** न [°**पातन**] मुसाफिरों को रास्ते में लुटना; "परदोहवट्टवाडण-वंदग्गहखत्तखणणपमुहाइं" (कुप्र ११३), "सो वट्टपाडणेहिं वंदग्गहणेहिं खत्तखणणेहिं" (धर्मवि १२३)। °**वेयड्ढ** पुं [°**वैताढ्य**] पर्वत-विशेष; (ठा १०)।
वट्ट पुंन [**दे**] १ प्याला, गुजराती में 'वाटको'; "पढमघुंटम्मि खलिया जीहा, हत्थाउ निवडियं वट्टं" (सुपा ४६६)। २ पुं. हानि, नुकसान, गुजराती में 'वट्टो'; "अन्नह उवक्खएणावि मूला वट्टो इहं होही" (सुपा ४४५)। ३ लोष्टक, शिला-पुत्रक; "वट्टावरएणं" (भग १६, ३—पत्त ७६६)। ४ खाद्य-विशेष, घाढ़ी कढ़ी; (पण्ह २, ५—पत्त १४८)।
वट्ट पुं [**वर्त**] देश-विशेष; (सत्त ६७ टी)।
°**वट्ट** पुं [**पट्ट**] प्रवाह; (कुमा)। देखो **पट्ट**; (से ५, १४; भवि; गउड)।
वट्टंत देखो **वट्ट**=वृत।
वट्टक } देखो **वट्टय**=वर्तक; (पण्ह १, १—पत्त ८; विपा
वट्टग } १, ७—पत्त ७५; सूअ २, २, १०; २६; ४३)।
वट्टणा देखो **वत्तणा**; (राज)।
वट्टमग न [**वर्त्मक**] मार्ग, रास्ता; (आचा; औप)।
वट्टमाण देखो **वट्ट**=वृत।
वट्टमाण न [**दे**] १ अंग, शरीर; २ गन्ध-द्रव्य का एक तरह का अधिवास; (दे ७, ८७)।
वट्टय देखो **वट्ट**=दे; (पउम १०२, १२०)।
वट्टय पुं [**वर्तक**] १ पक्षि-विशेष, बटेर; (सूअ १, २, १, २; उवा)। २ बालकों को खेलने का एक तरह का चपड़े का बना हुआ गोल खिलौना; (अनु ५; णाया १, १८—पत्त २३५)।
°**वट्टय** देखो **पट्ट**; (गउड)।
वट्टा स्त्री [**दे. वर्त्मन्**] देखो **वट्ट**=वर्त्मन्; (दे ७, ३१)।
वट्टा स्त्री [**वार्ता**] बात, कथा; (कुमा)।
वट्टाव सक [**वर्तय्**] बरताना, काम में लगाना। वट्टावेइ; (उव)।
वट्टावण न [**वर्तन**] बरताना, कार्य में लगाना; (उव)।
वट्टावय वि [**वर्तक**] बरताने वाला, प्रवर्तक; (उव; णाया १, १४—पत्त १८६)।
वट्टि स्त्री [**वर्ति**] १ बत्ती, दीपक में जलने वाली बाती; २ सलाई, आँख में सुरमा लगाने की सली; ३ शरीर पर किया

जाता एक तरह का लेप; ४ लेख, लिखना; ५ कलम, पीछी; (हे २, ३०)। देखो **वत्ति, वित्ति**।

वट्टिअ वि [**वर्तित**] १ परिवर्तित; (दे ५, २७)। २ वलित; (पव २१६ टी)। ३ वर्तुल, गोल; (पण्ह १, ४—पत्र ७८; तंदु २०)। ४ प्रवर्तित; (भवि)।

वट्टिआ स्त्री [**वर्तिका**] देखो **वट्टि**; (अभि २१७; नाट—रत्ना २१; स २३६)।

वट्टिम वि [**दे**] अतिरिक्त; (दे ७, ३४)।

वट्टिव न [**दे**] पर-कार्य; (दे ७, ४०)।

वट्टी स्त्री [**वर्ती**] देखो **वट्टि**; (हे २, ३०)।

°**वट्टी** स्त्री [**पट्टी**] पट्टा; "ताव य कडिवट्टीओ पडिया रयणावली भत्ति" (सुपा ३४४; १५४)।

वट्टु न [**दे**] पात्र-विशेष; (बृह १)। °**कर** पुं [°**कर**] यत्न-विशेष; (राज)। °**करी** स्त्री [°**करी**] विद्या-विशेष; (राज)।

वट्टुल वि [**वर्तुल**] १ गोल, वृत्ताकार; (पाअ)। २ पलाण्डु के समान एक तरह का कन्द-मूल; (हे २, ३०; प्राकृ)।

°**वट्ठ** देखो **पट्ठ**=पृष्ठ; (गउड; गा १५०; हे १, ८४; १२६)।

°**वड्ढि** देखो **सड्ढि**; "वा-वड्ढी" (सम ७५; पंच ५, १८; पि २६५; ४४६)।

वड पुं [**दे**] १ द्वार का एक देश, दरवाजे का एक भाग; २ खेत; (दे ७, ८२)। ३ मत्स्य की एक जाति; (पण्ण १—पत्र ४७)। ४ विभाग; (निचू २)। देखो **वड्ड**; "वडसफरपवहणाणं" (सिरि ३८२)।

वड पुं [**वट**] १ वृक्ष-विशेष, वड़ का पेड़; (पण्ण १—पत्र ३१; गा ६४; कप्पू)। २ न. वस्त्र-विशेष; "वडजुगपट्टजुगाइं" (णाया १, १ टी—पत्र ४३)। °**नयर** न [°**नगर**] नगर-विशेष; (पउम १०५, ८८)। °**वद्द** न [°**पद्र**] १ गुजरात का एक नगर, जो आज कल 'वडौदा' नाम से प्रसिद्ध है; (उप ५१६)। २ एक गोकुल; (उप ५६७ टी)। °**सावित्ती** स्त्री [°**सावित्री**] एक देवी; (कप्पू)।

वड देखो **पड**=पत्। वकृ—"उअहिम्मि उण **वडंता**" (से ७, ७)।

°**वड** देखो **पड**=पट; "पवणाहयवडचंचलाओ लच्छीओ तह य मणुयाणं" (सुर ४, ७६; से १०, १६; सुर १, ६१; ३, ६७; गा ३२६)।

वडग न [**वटक**] खाद्य-विशेष, वड़ा; (पिंड ६३७)।

वडग देखो **वड**=वट; (अंत)।

°**वडण** देखो **पडण**; (गा ५६७; गउड; महा)।

वडप्प न [**दे**] १ लता-गहन; २ निरन्तर वृष्टि; (दे ७, ८४)।

वडभ वि [**वडभ**] १ वामन, ह्रस्व; (ओघभा ८२)। २ जिसका पृष्ठ-भाग वाहर निकल आया हो वह; (आचा)। ३ नाभि के ऊपर का भाग जिसका टेढ़ा हो वह; (पण्ह १, १—पत्र २३)। ४ पीछे का या आगे का अंग जिसका बाहर निकल आया हो वह; (पव ११०)। ५ जिसका पेट वड़ा हो कर आगे निकल आया हो वह; स्त्री—°**भी**; (णाया १, १—पत्र ३७; औप; पि ३८७)।

वडय देखो **वडग**=वटक; (सुपा ४८५)।

°**वडल** देखो **पडल**; (गउड)।

वडवग्गि पुं [**वडवाग्नि**] वडवानल, समुद्र के भीतर की आग; (गा ४०३)।

वडवड अक [**वि+लप्**] विलाप करना। वडवडइ; (हे ४, १४८), वडवडंति; (कुमा)।

वडवा स्त्री [**वडवा**] घोड़ी; (पाअ; धर्मवि १४५)। °**णल**, °**नल** पुं [°**नल**] समुद्र के भीतर की आग, वडवाग्नि; (पि २४०; श्रा १६)। °**मुह** न [°**मुख**] १ वही अर्थ; (से १, ८)। २ एक महा-पाताल; (इक)। °**हुआस** पुं [°**हुताश**] वडवानल; (समु १५४)।

वडह देखो **वडभ**; (आचा १, २, ३, २)।

वडह पुं [**दे**] पक्षि-विशेष; (दे ७, ३३)।

°**वडह** देखो **पडह**; (से १२, ४७)।

वडही देखो **वलही**; (गउड)।

°**वडाआ** देखो **पडाया**; (गा १२०)।

वडालि स्त्री [**दे**] पंक्ति, श्रेणि; (दे ७, ३६)।

°**वडाहा** देखो **पडाया**; "धवलधयवडाहो" (महा)।

°**वडिअ** देखो **पडिअ**; (से ५, १०; कुप्र १८१; उवा)।

वडिअ वि [**गृहीत**] ग्रहण किया हुआ; (सुर ७, १६६)।

वडिंस पुं [**वतंस**] १ मेरु पर्वत; (सुज्ज ५ टी—पत्र ७८)। २ भूषण; "रायकुलवडिंसगा वि मुणिवसभा" (उव; कप्प)। ३ एक दिग्हस्ति-कूट; (इक)। ४ प्रधान, मुख्य; ५ श्रेष्ठ, उत्तम; (कप्प; महा)। ६ कर्णपूर, कान का आभूषण; (णाया १, १—पत्र ३१)। देखो **वडेंस, अवयंस**।

वडिणाय पुं [**दे**] घर्घर कण्ठ, बैठा हुआ गला; (षड्)।

वडिया स्त्री [**वृत्तिता**] वर्तन; "भयवंतदंसणवडियाए" (स ६८३; आचा २, ७, १)।
°**वडिया** देखो **पडिया**=प्रतिज्ञा; (आचा २, ७, १)।
वडिसर न [**दे**] चूल्ली-मूल, चूल्हे का मूल; (दे ७, ४८)।
वडिवस्सअ वि [**वरिवस्यक**] पूजक, पूजा करने वाला; (चारु १)।
वडिसाअ वि [**दे**] स्नुत, टपका हुआ; (षड्)।
वडी स्त्री [**दे**] वड़ी, एक प्रकार का खाद्य, (पव ३८)।
वडुमग } देखो **वट्टमग**; (औप; आचा)।
वडूमग
वडेंस पुं [**वतंस**] शेखर, मुकुट; (भग; णाया १, १ टी—पत्र ५)। देखो **वडिंस**।
वडेंसा स्त्री [**वतंसा**] किनर-नामक किन्नरेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ४, १—पत्र २०४; णाया २—पत्र २५२)।
वडेंसिया स्त्री [**वतंसिका**] अवतंस की तरह करना, मुकुट-स्थानापन्न करना; "अट्ठारसवंजणाउल भोयणं भोयावेत्ता जाव-ज्जीवं पिट्ठिवडेंसियाए परिवहेज्जा" (ठा ३, १—पत्र ११७)।
वड्ड वि [**दे**] वड़ा, महान्; (दे ७, २९; तंदु ५५; सुपा १२४; णाया २—पत्र २४८; सम्मत्त १७३; भवि; हे ४, ३६६; ३६७; ३७१)। °**अत्थरग** पुं [°**आस्तरक**] ऊँट की पीठ पर रखा जाता आसन; (पव ८४ टी)। °**त्तण** न [°**त्व**] वड़प्पन, महत्ता; (हे ४, ३८४; कप्पू)। °**प्पण** (अप) न [°**त्व**] वही; (हे ४, ३६६; ४३७; पि ३००)। °**यर** वि [°**तर**] विशेष वड़ा; (हे २, १७४)।
वड्डवास पुं [**दे**] मेघ, अभ्र; (दे ७, ४७; कुमा)।
वड्डहुल्लि पुं [**दे**] मालाकार, माली; (दे ७, ४२)।
वड्डार (अप) देखो **वड्ड-यर**; (भवि)।
वड्डिम वि [**दे**] स्नुत, टपका हुआ; (षड्)।
वड्डिल [**दे**] देखो **वड्ड**;
"नयणाण पडउ वज्जं अहवा वज्जस्स वड्डिलं किंपि।
अमुणियजणेवि दिट्ठे अणुवंधं जाणि कुव्वंति"
(सुर ४, २०; वज्जा ६२)।
वड्डुअर देखो **वड्ड-यर**; (षड्)।
वड्ढ अक [**वृध्**] वढ़ना। वड्ढइ; (हे ४, २२०; महा; काल)। भूका—वड्ढित्था; (कप्प)। वकृ—**वड्ढंत**, **वड्ढमाण**; (सुर १, ११९; महा; गा ११३)। हेकृ—**वड्ढिउं**; (महा)।
वड्ढ सक [**वर्धय्**] १ वढाना, विस्तारना। २ वधाई देना। वड्ढंति; (उव)। वकृ—**वड्ढअंत**; (नाट—मृच्छ १८)। कर्म—वड्ढिज्जंति; (सिरि ४२४)। देखो **वद्ध**=वर्धय्।
वड्ढइ पुं [**वर्धकि**] वढई, सुतार; (सम २७; उप पृ १५३; पाअ; धर्मसं ४८९; दे ७, ४४)।
वड्ढइअ पुं [**दे**] चर्मकार, मोची; (दे ७, ४४)।
वड्ढण न [**वर्धन**] १ वृद्धि, वढ़ाव; (कप्पू)। २ वि. वृद्धि-जनक; (महा; सुर १२, १३९)।
वड्ढणमिर वि [**दे**] पीन, पुष्ट; (दे ७, ५१)।
वड्ढणसाल वि [**दे**] जिसका पूँछ कट गया हो वह; (दे ७, ४९)।
वड्ढमाण देखो **वड्ढ**=वृध्।
वड्ढमाण } न [**वर्धमान**, °**क**] १ गुजरात का एक नगर
वड्ढमाणय } जो आजकल 'वढवाण' के नाम से प्रसिद्ध है; "सिरिवड्ढमाणनयरं पत्ता गुज्जरधरावलयं" (सम्मत्त ७५)। २ अवधिज्ञान का एक भेद, उत्तरोत्तर वढता जाता एक प्रकार का परोक्ष रूपी द्रव्यों का ज्ञान; (ठा ६—पत्र ३७०; कम्म १, ८)। ३ पुं. भगवान् महावीर; (भवि)। देखो **वद्धमाण**।
वड्ढय देखो **वट्ट**=दे; "पाणभरियं वड्ढयं पियावयणसमप्पियं पीयमाणं पि तीए सुट्ठुयरं भरियमंसुएहिं" (स ३८२)।
वड्ढव सक [**वर्धय्, वर्धापय्**] १ वढ़ाना, वृद्धि करना। २ वधाई देना, अभ्युदय का निवेदन करना। वड्ढवइ; (प्राकृ ६०)।
वड्ढवअ वि [**वर्धक**] १ वढाने वाला; २ वधाई देने वाला; (प्राकृ ६१)।
वड्ढवण न [**दे**] वस्त्र का आहरण; (दे ७, ८७)।
वड्ढवण न [**दे, वर्धापन**] वधाई, अभ्युदय-निवेदन; (दे ७, ८७)।
वड्ढविअ वि [**वर्धित, वर्धापित**] जिसको वधाई दी गई हो वह; (दे ६,७४)।
वड्ढार (अप) सक [**वर्धय्**] वढ़ाना, गुजराती में 'वधारवुं'। वड्ढारइ; (भवि)।
वड्ढाव देखो **वड्ढव**। वड्ढावेमि; (प्राकृ ६१; पि ५५२)।
वड्ढावअ देखो **वड्ढवअ**; (प्राकृ ६१; कप्पू; उवा)।
वड्ढाविअ वि [**दे**] समापित, समाप्त किया हुआ; (दे ७, ४५)।
वड्ढि वि [**वर्धिन्**] वढ़ने वाला; (से १, १)।

वड्डि स्त्री [**वृद्धि**] वढ़ाव; (उवा; देवेन्द्र ३६७; जीवस २७४)।

वड्डिअ वि [**वृद्ध**] वढ़ा हुआ; (कुमा ७, ५८; गा ४१०; महा)।

वड्डिअ वि [**वर्धित**] १ वढ़ाया हुआ; "महिवीढे नइवड्डिय-नीरो उयहिव्व वित्थरइ" (सिरि ६२७)। २ खण्डित किया हुआ, काटा हुआ; (से १, १)।

वड्डिआ स्त्री [**दे**] कूपतुला, ढेंकुवा; (दे ७, ३६)।

वड्डिम पुंस्त्री [**वृद्धिमन्**] वृद्धि, वढ़ाव; "पत्ता दिग्गं वड्डिमा" (प्राकृ ३३; कप्पू)।

वढ देखो **वड**=वट; (हे २, १७४; पि २०७)।

वढ वि [**दे**] मूक, वाक्-शक्ति से रहित; (संचि ३९)।

वढर, **वढल** पुं [**वठर**] १ मूर्ख छात्र; २ ब्राह्मण पुरुष और वैश्य स्त्री से उत्पन्न संतान, अम्बष्ठ; ३ वि. शठ, धूर्त; ४ मन्द, अलस; (हे १, २५४; षड्)।

वण सक [**वन्**] माँगना, याचना करना। वणेइ; (पिंड ४४३)।

वण पुं [**दे**] १ अधिकार; २ श्वपच, चाँडाल; (दे ७, ८२)।

वण पुंन [**व्रण**] घाव, प्रहार, क्षत; "जस्सेअ वणो तस्सेअ वेअणा" (काप्र ८७१; गा ३८१; ४२७; पाअ)। °**वट्ट** पुं [°**पट्ट**] घाव पर बाँधी जाती पट्टी; (गा ४५८)।

वण न [**वन**] १ अरण्य, जंगल; (भग; पाअ; उवा; कुमा; प्रासू ६२; १४५)। २ पानी, जल; (पाअ; वज्जा ८८)। ३ निवास; ४ आलय; (हे ३, ८८; प्राप्र)। ५ वनस्पति; (कम्म ४, १०; १९; ३६; दं १३)। ६ उद्यान, वगीचा; (उप ९८६ टी)। ७ पुं. देवों की एक जाति, वानव्यंतर देव; (भग; कम्म ३, १०)। ८ वृक्ष-विशेष; (राय)। °**कम्म** पुंन [°**कर्मन्**] जंगल को काटने या बेचने का काम; (भग ८, ५—पत्र ३७०; पडि)। °**कम्मंत** न [°**कर्मान्त**] वनस्पति का कारखाना; (आचा २, २, २, १०)। °**गय** पुं [°**गज**] जंगली हाथी; (से ३, ६३)। °**ग्गि** पुं [°**ग्नि**] दावानल; (पाअ)। °**चर** वि [°**चर**] वन में रहने वाला, जंगली; (पण्ह १, १—पत्र १३); स्त्री—°**री**; (रयण ६०); देखो °**यर**। °**छिंद** वि [°**च्छिद्**] जंगल काटने वाला; (कुप्र १०४)। °**त्थली** स्त्री [°**स्थली**] अरण्य-भूमि; (से ३, ६२)। °**दव** पुं [°**दव**] दवानल; (णाया १, १—पत्र ६५)। °**पव्वय** पुंन [°**पर्वत**] वनस्पति से व्याप्त पर्वत; "वणाणि वा वणपव्वयाणि वा" (आचा २, ३, ३, २)। °**विराल** पुं [°**विडाल**] जंगली विल्ला; (सण)। °**माल** न [°**माल**] एक देव-विमान; (सम ४१)। °**माला** स्त्री [°**माला**] १ पैर तक लटकने वाली माला; (औप; अच्चु ३६)। २ एक राज-पत्नी; (पउम ११, १४)। ३ रावण की एक पत्नी; (पउम ३६, ३२)। °**य** वि [°**ज**] वन में उत्पन्न, जंगली; (वज्जा १२८)। °**यर** वि [°**चर**] १ वन में रहने वाला, वनैला; (णाया १, १—पत्र ६२; गउड)। २ पुंस्त्री. व्यन्तर देव; (विसे ७०७; पव १९०); स्त्री—°**री**; (उप पृ ३३०)। °**राइ** स्त्री [°**राजि**] तरु-पंक्ति, वृक्ष-समूह; (चंड; सुर ३, ४२; अभि ५५)। °**राज**, °**राय** पुं [°**राज**] १ विक्रम की आठवीं शताब्दी का गुजरात का एक प्रसिद्ध राजा; (मोह १०८)। २ सिंह, केसरी; (चंड)। °**लइया**, °**लया** स्त्री [°**लता**] १ एक स्त्री का नाम; (महा)। २ वह वृक्ष जिसको एक ही शाखा हो; (कप्प; राय)। °**वाल** वि [°**पाल**] उद्यान-पालक, माली; (उप ९८६ टी)। °**वास** पुं [°**वास**] अरण्य में रहना; (पि ३५१)। °**वासी** स्त्री [**वासी**] नगरी-विशेष; (राज)। °**विदुग्ग** न [°**विदुर्ग**] नानाविध वृक्षों का समूह; (सूअ २, २, ८; भग)। °**विरोहि** पुं [°**विरोहिन्**] आषाढ मास; (सुज्ज १०, १९)। °**संड** पुंन [°**षण्ड**] अनेकविध वृक्षों की घटा—समूह; (ठा २, ४; भग; णाया १, २; औप)। °**हत्थि** पुं [°**हस्तिन्**] जंगल का हाथी; (से ८, ३६)। °**ालि**, °**ेलि** स्त्री [°**ालि**] वन-पंक्ति; (गा ५७९; हे २, १७७)।

वणइ स्त्री [**दे**] वन-राजि, वृक्ष-पंक्ति; (दे ७, ३८; षड्)।

वणण न [**वनन**] वछडे को उसकी माता से भिन्न दूसरी गो से लगाना; (पण्ह १, २—पत्र २९)।

वणद्धि स्त्री [**दे**] गो-वृन्द, गो-समूह; (दे ७, ३८)।

वणनत्तडिअ वि [**दे**] पुरस्कृत, आगे किया हुआ; (षड्)।

वणपक्कसावअ पुं [**दे**] शरभ, श्वापद-विशेष; (दे ७, ५२)।

वणप्फइ पुं [**वनस्पति**] १ वृक्ष-विशेष, फूल के विना ही जिसमें फल लगता हो वह वृक्ष; (हे २, ६९; कुमा)। २ लता, गुल्म, वृक्ष आदि कोई भी गाछ, पेड़ मात्र; (भग)। ३ न. फल; (कुमा ३, २६)। °**काइअ** वि [°**कायिक**]

वनस्पति का जीव; (भग)।

वणय पुं [**वनक**] दूसरी नरक-पृथिवी का एक नरक-स्थान; (देवेन्द्र ६)।

वणरसि (अप) देखो **वाणारसी**; (पिंग; पि ३५४)।

वणव पुं [**दे**] दावानल; (दे ७, ३७)।

वणसवाई स्त्री [**दे**] कोकिला, कोयल; (दे ७, ५२; पाअ)।

वणस्सइ देखो **वणप्फइ**; (हे २, ६९; जी २; उव; पण्ण १)।

वणाय वि [**दे**] व्याध से व्याप्त; (दे ७, ३५)।

वणार पुं [**दे**] दमनीय वछड़ा; (दे ७, ३७)।

वणि वि [**व्रणिन्**] घाव वाला, जिसको घाव हुआ हो वह; (दे ६, ३९; पंचा १६, ११)।

वणि, **वणिअ** } पुं [**वणिज्**] वनिया, व्यापारी, वैश्य; (औप; उप ७२८ टी; सुर १४, ९९; सुपा २७९; सुर १, ११३; प्रासु ८०; कुमा; महा)।

वणिअ वि [**व्रणित**] व्रण-युक्त, घाव वाला; (गा ४५८; ९४९; पउम ७५, १३)।

वणिअ पुं [**वनीपक**] भिक्षुक, भिखारी; "वणि जायणि त्ति वणिओ पायप्पाणं वणेइत्ति" (पिंड ४४३)।

वणिअ न [**वणिज**] ज्योतिष-प्रसिद्ध एक करण; (विसे ३३४८; सुअनि ११)।

वणिआ स्त्री [**वनिका**] वाटिका, बगीचा; "असोयवणिआइ मज्झयारम्मि" (भाव ७; उवा)।

वणिआ स्त्री [**वनिता**] स्त्री, महिला, नारी; (गा १७; कुमा; तंदु ५०; सम्मत्त १७५)।

वणिज देखो **वणिअ**=वणिज्; (चारु ३४)।

वणिज, **वणिज्ज** } न [**वाणिज्य**] व्यापार, बेपार; "एत्तियकालं हट्टे जइ तं चिट्ठेसि वणिजकए" (सुपा ५१०; २५२), "उज्जेणी-आगओ वणिज्जेणं" (पउम ३३, ६६; स ४४३; सुर १, ६०; कुप्र ३६५; सुपा ३८४; प्रासू ८०; भवि; श्रा १२)। °**रय** वि [°**कारक**] व्यापारी; (सुपा ३४३; उप पृ १०४)।

वणी स्त्री [**वनी**] १ भीख से प्राप्त धन; (ठा ५, ३—पत्र ३४१)। २ फली-विशेष, जिससे कपास निकलता है; (राज)।

वणीमग, **वणीमय** } पुं [**वनीपक**] याचक, भिक्षुक, भिखारी; (ठा ५, ३; सुपा १६८; सण; ओघ ४३६)।

वणे अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय,—१ निश्चय; (हे २, २०६; कुमा)। २ विकल्प; ३ अनुकम्पनीय; ४ संभावना; (हे २, २०६)।

वणेचर देखो **वण-यर**; (रयण ५९)।

वण्ण सक [**वर्णय्**] १ वर्णन करना। २ प्रशंसा करना। ३ रँगना। वण्णआमो; (पि ४९०)। कर्म—वण्णिज्जइ; (सिरि १२८८), वण्णिअइ (अप); (हे ४, ३४५)। वकृ—**वण्णंत**; (गा ३५०)। हेकृ—**वण्णिउं**; (पि ५७३)। कृ—**वण्णणिज्ज**, **वण्णेअव्व**; (हे ३, १७९; भग)।

वण्ण पुं [**वर्ण**] १ प्रशंसा, श्लाघा; (उप ९०७)। २ यश, कीर्ति; (ओघ ६०)। ३ शुक्ल आदि रँग; (भग; ठा ४, ४; उवा)। ४ अकार आदि अक्षर; ५ ब्राह्मण, वैश्य आदि जाति; ६ गुण; ७ अंगराग; ८ सुवर्ण, सोना; ९ विलेपन की वस्तु; १० व्रत-विशेष; ११ वर्णन; १२ विलेपन-क्रिया; १३ गीत का क्रम; १४ चित्र; (हे १, १७७; प्राप्र)। १५ कर्म-विशेष, शुक्ल आदि वर्ण का कारण-भूत कर्म; (कम्म १, २४)। १६ संयम; १७ मोक्ष, मुक्ति; (आचा)। १८ न. कुंकुम; (हे १, १४२)। °**णाम**, °**नाम** पुंन [°**नामन्**] कर्म-विशेष; (राज; सम ६७)। °**मंत** वि [°**वत्**] प्रशस्त वर्ण वाला; (भग)। °**वाइ** वि [°**वादिन्**] श्लाघा-कर्ता, प्रशंसक; (वव १)। °**वाय** पुं [°**वाद**] प्रशंसा, श्लाघा; (पंचा ९, २३)। °**ावास** पुं [°**ावास**] वर्णन-प्रकरण, वर्णन-पद्धति; (जीव ३; उवा)। °**ावास** पुं [°**व्यास**] वर्णन-विस्तार; (भग; उवा)।

वण्ण वि [**दे**] १ अच्छ, स्वच्छ; २ रक्त; (दे ७, ८३)।

°**वण्ण** देखो **पण्ण**; (गा ६०१; गउड)।

वण्णग देखो **वण्णय**; (उवा; औप)।

वण्णण न [**वर्णन**] १ श्लाघा, प्रशंसा; (कप्पू)। २ विवेचन, विवरण, निरूपण; (रयण ४)।

वण्णणा स्त्री [**वर्णना**] ऊपर देखो; (दे १, २१; सार्ध ४५)।

वण्णय पुंन [**दे, वर्णक**] १ चन्दन, श्रीखण्ड; (दे ७, ३७; पंचा ८, २३)। २ पिष्टातक-चूर्ण, अंगराग; (दे ७, ३७; स्वप्न ६१)।

वण्णय पुं [**वर्णक**] वर्णन-ग्रन्थ, वर्णन-प्रकरण; (विपा १, १; उवा; औप)।

वण्णिअ वि [**वर्णित**] जिसका वर्णन किया गया हो वह;

-(महा)।

वण्णिआ देखो **वन्निआ**; (गा ६२०)।

वण्हि पुं [**वृष्णि**] १ एक राजा, जो अन्धक-वृष्णि नाम से प्रसिद्ध था; "वण्हि पिया धारिणी माया" (अंत ३)। २ एक अन्तकृद् महर्षि; "अक्खोभ पसेणई वण्ही" (अंत)। ३ अन्धकवृष्णि-वंश में उत्पन्न, यादव; (णंदि)। °**दसा** स्त्री. व. [°**दशा**] एक जैन आगम-ग्रन्थ; (निर ५)। °**पुंगव** पुं [°**पुंगव**] यादव-श्रेष्ठ; (उत्त २२, १३; णाया १, १६—पत्र २११)।

वण्हि पुं [**वह्नि**] १ अग्नि, आग; (पाअ; महा)। २ लोकान्तिक देवों की एक जाति, (णाया १, ८—पत्र १५१)। ३ चित्रक वृक्ष; ४ भिलावाँ का पेड़; ५ नीबू का गाछ; (हे २, ७५)।

वत देखो **वय**=व्रत; (चंड)।

वति देखो **वइ**=व्रतिन्; (उप ३८१)।

वति देखो **वइ**=वृति; (चंड)।

वतु पुं [**दे**] निवह, समूह; (दे ७, ३२)।

वत्त देखो **वट्ट**=वृत। वत्तइ; (भवि), वत्तदि (शौ); (स्वप्न ६०)।

वत्त देखो **वट्ट**=वर्तय्। वत्तइ; (भवि)। वत्तेज्ज; (आचा २, १५, ४२)। वत्तेज्जासि, वत्तेहामि; (उवा; पि ५२८)।

वत्त न [**वार्त**] आरोग्य; (उत्त १८, ३८)।

वत्त वि [**व्याप्त**] फैला हुआ, भरपूर; (कप्प; विसे ३०३६)।

वत्त देखो **वट्ट**=वृत्त; (स ३०८; महा; सुर १, १७८; ३, ७६; औप; हे १, १४५)।

वत्त वि [**व्यक्त**] प्रकट, खुला; (धर्मसं ५५५)।

वत्त न [**वक्त्र**] मुख, मुँह; (हे १, १८; भवि)।

°**वत्त** देखो **पत्त**=पत्र; (गा ६०४; हेका ५०; गउड)।

°**वत्त** देखो **पत्त**=पात्र; (गउड; गा ३००)।

वत्त° देखो **वत्ता**; (भवि)। °**यार** वि [°**कार**] वार्ता कहने वाला; (भवि)।

वत्तअ पुं [**व्यत्यय**] १ विपर्यय, विपर्यास; २ व्यतिक्रम, उल्लंघन; (प्राकृ २१)।

वत्तए देखो **वय**=वच्।

वत्तडिआ, **वत्तडी** } (अप) देखो **वत्ता**; (कुमा; हे ४, ४३२; सण)।

वत्तण न [**वर्तन**] १ जीविका, निर्वाह; "किं न तुमं मच्छएहिं कुडुंबवत्तणं करेसि" (कुप्र २८)। २ आवृत्ति, परावर्तन; (पंचा १२, ४३)। ३ स्थिति; ४ स्थापन; ५ वर्तन, होना; ६ वि वृत्ति वाला; ७ रहने वाला; (संदि १०)।

वत्तणा स्त्री [**वर्तना**] ऊपर देखो; "वत्तणालक्खणो कालो" (उत्त २८, १०; आवम)।

वत्तणी स्त्री [**वर्तनी**] मार्ग, रास्ता; (पण्ह १, ३—पत्र ५४; विसे १२०७; सूअनि ६१ टी; सुपा ५१८)।

वत्तद्ध वि [**दे**] १ सुन्दर; २ बहु-शिक्षित; (दे ७, ८४)।

वत्तमाण पुं [**वर्तमान**] १ काल-विशेष, चलता काल; (प्राप्र; संदि १०)। २ वर्तमान-कालीन, विद्यमान; ३ विद्यमानता; (धर्मसं ५७३)।

°**वत्तरि** देखो **सत्तरि**; (सम ८३; प्रासू १२६; पि ४४६)।

वत्तव्व देखो **वय**=वच्।

वत्ता स्त्री [**दे**] सूत्र-वलनक, सूत्र-वेष्टन-यंत्र; (पण्ह १, ४—पत्र ७८; तंदु २०)। देखो **चत्ता**=(दे)।

वत्ता स्त्री [**वार्ता**] १ बात, कथा; (से ६, ३८; सुपा ३८७; प्रासू १; कुमा)। २ वृत्तान्त, हकीकत; (पाअ)। ३ वृत्ति; ४ दुर्गा; ५ कृषि-कर्म, खेती; ६ जनश्रुति, किंवदन्ती; ७ गन्ध का अनुभव; ८ काल-कर्तृक भूत-नाश; (हे २, ३०)। °**लाव** पुं [°**लाप**] बातचीत; (सिरि २८२)।

वत्तार वि [**दे**] गर्वित, गर्व-युक्त; (दे ७, ४१)।

वत्ति स्त्री [**दे**] सीमा; (दे ७, ३१)।

वत्ति देखो **वट्टि**; (गा २३२; ६५८; विसे १३६८)।

वत्ति वि [**वर्तिन्**] वर्तने वाला; (महा)।

वत्ति स्त्री [**वृत्ति**] प्रवृत्ति; (सूअ २, ४, २)। देखो **वित्ति**।

वत्ति स्त्री [**व्यक्ति**] अमुक एक वस्तु, एकाकी वस्तु। °**पइट्ठा** स्त्री [°**प्रतिष्ठा**] प्रतिष्ठा-विशेष, जिस समय में जो तीर्थंकर विद्यमान हो उसके बिम्ब की विधि-पूर्वक स्थापना; (चेइय ३५)।

वत्तिअ वि [**वार्तिक**] कथाकार; "वत्तिओ" (हे २, ३०)। २ पुंन, टीका की टीका; (सम ४६; विसे १४२२)। ३ ग्रन्थ की टीका—व्याख्या; (विसे १३८५)।

वत्तिअ वि [**वर्तित**] १ वृत्त—गोल किया हुआ; (णाया १, ७)। २ आच्छादित; (पडि)।

°**वत्तिअ** देखो **पच्चय**=प्रत्यय; (औप)।

वत्तिआ देखो **वट्टिआ**; (प्राप्र)।

वत्तिणी स्त्री [**वर्तिनी**] मार्ग, रास्ता; (पाअ; स ४; सुर १२, १३६)।

°**वत्ती** देखो **पत्ती**=पत्नी; (गा ७६; १०६; १७३)।

वत्तुं देखो **वय**=वच्।

वत्तुकाम वि [**वक्तुकाम**] बोलने की चाह वाला; (स ३१८; अभि ४४; स्वप्न १०; नाट—विक ४०)।

वत्तुल देखो **वट्टुल**; (राज)।

वत्थ पुंन [**वस्त्र**] कपड़ा; (आचा २, १४, २२; उवा; पण्ह १,१; उप पृ ३३३; सुपा ७२; ४६१; कुमा; सुर ३,७०)। °**खेड्ड** न [°**खेल**] कला-विशेष; (जं २ टी—पत्र १३७)। °**धोव** वि [°**धाव**] वस्त्र धोने वाला; (सूअ १, ४, २, १७)। °**पूस** पुं [°**पुष्य**] एक जैन मुनि; (कुलक २२)। °**पूसमित्त** पुं [°**पुष्यमित्र**] एक जैन मुनि; (ती ७)। °**विज्जा** स्त्री [°**विद्या**] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से वस्त्र-स्पर्श कराने से ही बिमार अच्छा हो जाय; (वव ५)। °**सोहग** वि [°**शोधक**] वस्त्र धोने वाला; (स ४१)।

वत्थ वि [**व्यस्त**] पृथग्, भिन्न, जुदा; (सुर १६, ५५)।

वत्थउड पुं [**दे. वस्त्रपुट**] तंबू, कपड-कोट, वस्त्र-गृह; (दे ७, ४५)।

वत्थए देखो **वस**=वस्।

वत्थंग पुं [**वस्त्राङ्ग**] कल्पवृक्ष की एक जाति, जो वस्त्र देने का काम करता है; (पउम १०२, १२१)।

°**वत्थर** देखो **पत्थर**=प्रस्तर; (गा ५५१)।

वत्थलिज्ज न [**वस्त्रलिय**] दो जैन मुनि-कुलों के नाम; (कप्प)।

वत्थव्व वि [**वास्तव्य**] रहने वाला, निवासी; (पिंड ४२७; सुर ३, ६१; सुपा ३६५; महा)।

वत्थाणी स्त्री [**दे**] वल्ली-विशेष; (पण्ण १—पत्र ३३)।

वत्थाणीअ पुंन [**दे**] खाद्य-विशेष; "हत्थेण वत्थाणीएण भोच्चा-कज्जं साबेंति" (सुज्ज १०, १७)।

वत्थि पुं [**वस्ति**] १ दृति, मसक; (भग १, ६; १८, १०; णाया १, १८), "वत्थिव्व वायपुण्णो अत्तुक्करिसेण जहा तहा लवइ" (संबोध १८)। २ अपान, गुदा; "वत्थी अवाणं" (पाअ; पण्ह १, ३—पत्र ५३)। ३ छाती में शलाका—सली—बैठाने का स्थान, छत का एक अवयव; (औप)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] १ सिर आदि में चर्म-वेष्टन द्वारा किया जाता तैल आदि का पूरण; २ मल साफ करने के लिए गुदा में बत्ती आदि का किया जाता प्रक्षेप; (विपा १, १—पत्र १४; णाया १, १३)। °**पुडग** पुंन [°**पुटक**] पेट का भीतरी प्रदेश; (निर १, १)।

वत्थिय पुं [**वास्त्रिक**] वस्त्र बनाने वाला शिल्पी; (अणु)।

वत्थी स्त्री [**दे**] उटज, तापसों की पर्ण-कुटी; (दे ७, ३१)।

वत्थु न [**वस्तु**] १ पदार्थ, चीज; (पाअ; उवा; सम्म ८; सुपा ४०१; प्रासू ३०; १६१; ठा ४, १ टी—पत्र १८८)। २ पुंन. पूर्व-ग्रन्थों का अध्ययन—प्रकरण, परिच्छेद; (सम २५; णंदि; अणु; कम्म १, ७)। °**पाल**, °**वाल** पुं [°**पाल**] राजा वीरधवल का एक सुप्रसिद्ध जैन मंत्री; (ती २; हम्मीर १२)।

वत्थु न [**वास्तु**] १ गृह, घर; "खेत्तवत्थुविहिपरिमाणं करेइ" (उवा)। २ गृहादि-निर्माण-शास्त्र; (णाया १, १३)। ३ शाक-विशेष; (उवा)। °**पाढग** वि [°**पाठक**] वास्तु-शास्त्र का अभ्यासी; (णाया १, १३; धर्मवि ३३)। °**विज्जा** स्त्री [°**विद्या**] गृह-निर्माण-कला; (औप; जं २)।

वत्थुल पुं [**वस्तुल**] गुच्छ और हरित वनस्पति-विशेष, शाक-विशेष; (पण्ण १—पत्र ३२; ३४; पव २५६)।

वत्थूल पुं [**वस्तूल**] ऊपर देखो; "वत्थु(? त्थु)ला थेग-पल्लंका" (जी ६)।

वद देखो **वय**=वद्। वदसि, वदह; (उवा; भग; कप्प)। भूका—वदासी; (भग)। हेकृ—**वदित्तए**; (कप्प)।

वद देखो **वय**=व्रत; (प्राकृ १२; नाट—विक ५६)।

वदिंसा देखो **वडेंसा**; (इक)।

वदिकलिअ वि [**दे**] वलित, लौटा हुआ; (दे ७, ५०)।

वदूमग देखो **वडुमग**; (आचा)।

वद्दल न [**दे. वार्दल**] १ वद्दल, बादल, मेघ-घटा, दुर्दिन; (दे ७, ३५; हे ४, ४०१; सुपा ६५५; राय; आवम; ठा ३, ३—पत्र १४१)। २ पुं. छठवीं नरक का दूसरा नरकेन्द्रक—नरक-स्थान; (देवेन्द्र १२)।

वद्दलिया स्त्री [**दे. वार्दलिका**] बदली, छोटा वद्दल, दुर्दिन; (भग ६, ३३—पत्र ४६७; औप)।

वद्ध देखो **वड्ढ**=वर्धय्। कर्म—वद्धसि; (सुपा ६०)।

वद्ध पुंन [**वर्ध्र**] चर्म-रज्जु; "वज्झा वद्धो (? वज्भो वद्धो)" (पाअ; दे ६, ८८, पव ८३; सम्मत्त १७४)।

वद्ध देखो **विद्ध**=वृद्ध; (प्राप्र, प्राकृ ७)।

वद्धण न [**वर्धन**] १ वृद्धि, बढ़नी; (णाया १, १; कप्प)। २ वि. बढाने वाला; (उप ६७३; महा)।

वड्ढणिआ } स्त्री [**वर्धनिका, °नी**] संमार्जनी, झाड़ू; (दे
वड्ढणी } ८, १७; ७, ४१ टी)।

वड्ढमाण पुं [**वर्धमान**] १ भगवान् महावीर; (आचा २, १५, १०; सम ४३; अंत; कप्प; पडि)। २ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य; (सार्ध ६३; विचार ७६; ती १५; गु ८)। ३ स्कन्धारोपित पुरुष, कन्धे पर चढ़ाया हुआ पुरुष; (अंत; औप)। ४ एक शाश्वत जिन-देव; ५ एक शाश्वती जिन-प्रतिमा; (पव ५६)। ६ न. गृह-विशेष; (उत्त ६, २४)। ७ राजा रामचन्द्र का एक प्रेक्षा-गृह—नाट्य-शाला; (पउम ८०, ५)। देखो **वड्ढमाण**।

वड्ढमाणग } पुं [**वर्धमानक**] १ अठासी महाग्रहों में एक
वड्ढमाणय } महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष; (ठा २, ३—पत्न ७८)। २ एक देव-विमान; (देवेन्द्र १४०)। ३ न. पात्र-विशेष, शराव; (णाया १, १—पत्न ५४; पउम १०२, १२०)। ४ पुरुष पर आरूढ पुरुष, पुरुष के कन्धे पर चढ़ा हुआ पुरुष; ५ स्वस्तिक-पञ्चक; ६ प्रासाद-विशेष; एक तरह का महल; (णाया १, १—पत्न ५४; टी—पत्न ५७)। ७ एक गाँव का नाम, अस्थिक ग्राम; "अट्ठियगामस्स पढमं वड्ढमाणयं ति नामं होत्था" (आवम)। ८ वि. कृताभिमान, अभिमानी, गर्वित; (औप)।

वड्ढय वि [**दे**] प्रधान, मुख्य; (दे ७, ३६)।

वड्ढार सक [**वर्धय्**] बढाना, गुजराती में 'वधारवुं'। वकृ—**वड्ढारंत**; (सट्ठि १२; संबोध ४; द्र ८)।

वड्ढारिय वि [**वर्धित**] बढाया हुआ; (भवि)।

वड्ढाव सक [**वर्धय्, वर्धापय्**] बधाई देना। वड्ढावेइ, वड्ढावेंति, (कप्प)। कर्म—वड्ढावीअसि; (रंभा)। वकृ—**वड्ढाविंत**; (सुपा २२०)। संकृ—**वड्ढावित्ता**; (कप्प)।

वड्ढावण न [**वर्धन, वर्धापन**] बधाई, अभ्युदय-निवेदन; (भवि; सुर ३, २४; महा; सुपा १२२; १३४)।

वड्ढावणिया स्त्री [**वर्धन्तिका, वर्धापनिका**] ऊपर देखो; (सिरि १३१६)।

वड्ढावय वि [**वर्धक, वर्धापक**] बधाई देने वाला; (सुर १५, ७६; स ५७०; सुपा ३६१)।

वड्ढाविअ वि [**वर्धित, वर्धापित**] जिसको बधाई दी गई हो वह; (सुपा १२२; १६५)।

वड्ढिअ पुं [**दे**] १ षण्ढ, नपुंसक; (दे ७, ३७)। २ नपुंसक-विशेष, छोटी उम्र में ही छेद दे कर जिसका अण्डकोष गलाया गया हो वह. (पव १०६ टी)।

वड्ढिअ देखो **वड्ढिअ**=वृद्ध; (भवि)।

वड्ढी स्त्री [**दे**] अवश्य-कृत्य, आवश्यक कर्तव्य; (दे ७, ३०)।

वड्ढीसक } पुन [**दे. वड्ढीसक**] वाद्य-विशेष, एक प्रकार
वड्ढीसग } का बाजा; (पण्ह २, ५—पत्न १४६; अनु ६)।

वध देखो **वह**=वध; (कुमा)।

वधय देखो **वहय**, (भग)।

वधू देखो **वहू**; (औप)।

वन्न देखो **वण्ण**=वर्णय्। वन्नेहि; (कुमा; उव)। हेकृ—**वन्निउं**; (कुमा)। कृ—**वन्नणिज्ज**; (सुर २, ६७; रयण ५४)।

वन्न देखो **वण्ण**=वर्ण; (भग; उव; सुपा १०३; सत्त ५६; कम्म ४, ४०; ठा ५, ३)।

वन्नग देखो **वण्णय**; (कप्प, श्रा २३)।

वन्नण देखो **वण्णण**; (उप ७६८ टी; सिरि ७२७)।

वन्नणा देखो **वण्णणा**; (रंभा)।

वन्नय देखो **वण्णय**; (पिंड ३०८; कप्प)।

वन्निअ देखो **वण्णिअ**; (भग)।

वन्निआ स्त्री [**वर्णिका**] १ बानगी, नमूना; "सग्गस्स वन्निया मिव नयरं इह अत्थि पाडलीपुत्तं" (धर्मवि ६४)। २ लाल रँग की मिट्टी; (जी ३)।

वन्हि देखो **वण्हि**=वृष्णि; (उत्त २२, १३)।

वन्हि देखो **वण्हि**=वह्नि; (चंड)।

वप्प सक [**त्वच् ?**] ढकना, आच्छादन करना। वप्पइ; (धात्वा १५१)।

वप्प पुं [**वप्र**] १ विजयक्षेत्र-विशेष, जंबूद्वीप का एक प्रान्त जिसकी राजधानी विजया है; (ठा २, ३—पत्न ८०; जं ४)। २ पुंन. किला, दुर्ग, कोट; (ती ८)। ३ केदार, खेत; "केआरो वप्पियं वप्पो" (पाअ; आचा २, १, ५, २; दे ७, ८३ टी)। ४ तट, किनारा; "रोहो वप्पो य तडो" (पाअ)। ५ उन्नत भू-भाग, ऊँची जमीन; "वप्पाणि वा फलिहाणि वा पागाराणि वा" (आचा २, १, ५, २)।

वप्प वि [**दे**] १ तनु, कृश; २ बलवान्, बलिष्ठ; ३ भूत-गृहीत, भूताविष्ट; (दे ७, ८३)।

वप्पइराय देखो **व-प्पइराय**।

वप्पगा देखो **वप्पा**; (राज)।

वप्पगावई स्त्री [**वप्रकावती**] जंबूद्वीप का एक विजय-क्षेत्र, जिसकी राजधानी का नाम अपराजिता है; (ठा २, ३—पत्न ८०, इक)

वप्पा स्त्री [**वप्रा**] १ भगवान् नमिनाथजी की माता का नाम; (सम १५१)। २ दशवें चक्रवर्ती राजा हरिषेण की माता का नाम; (पउम ८, १४४; सम १५२)।

वप्पिअ पु [**दे**] १ केदार, खेत; (षड्)। २ नपुंसक-विशेष; (पुप्फ १२६)। ३ वि. रक्त, राग-युक्त; (षड्)।

वप्पिण पुंन [**दे**] १ केदार, खेत; (दे ७, ८५; औप; णाया १, १ टी—पत्र २; पाअ; पउम २, १२; पगह १, १; २, ५)। २ वि. उषित, जिसने वास किया हो वह; (दे ७, ८५)।

वप्पीअ पुं [**दे**] चातक पक्षी; (दे ७, ३३)।

वप्पीडिअ न [**दे**] क्षेत्र, खेत; (दे ७, ४८)।

वप्पीह पुं [**दे**] स्तूप, मिट्टी आदि का कूट; (दे ७, ४०)।

वप्पे अ [**दे**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ उपहास-युक्त उल्लापन; २ विस्मय, आश्चर्य, (संक्षि ४७)।

वप्फाउल देखो **वप्फाउल**; (दे ६, ९२ टी)।

वफर न [**दे**] शस्त्र-विशेष; (सुर १३, १९६)।

वब्भ° देखो **वह**=वह् ।

वब्भ पु [**वभ्र**] पशु-विशेष; (स ४३७)।

वब्भय न [**दे**] कमलोदर, कमल का मध्य भाग; (दे ७, ३८)।

वभिचरिअ वि [**व्यभिचरित**] व्यभिचार दोष से दूषित; (श्रा १४)।

वभिचार देखो **वहिचार**; (स ७११)।

वभिचारि वि [**व्यभिचारिन्**] १ न्याय-शास्त्रोक्त दोष-विशेष से दूषित, ऐकान्तिक; (धर्मसं १२२७; पंचा २, ३७)। २ पुं. परस्त्री-लम्पट; (वव ६; ७)।

वभियार देखो **वहिचार**; (उवर ७९)।

वम सक [**वम्**] उलटी करना। वकृ—**वमंत, वममाण**; (गउड; विपा १, ७)। संकृ—**वंता**; (आचा; सूअ १, ६, २६)। कृ—**वम्म**; (उर १, ७)।

वमग वि [**वामक**] उलटी करने वाला; (चेइय १०३)।

वमण न [**वमन**] उलटी, वान्ति, कै; (आचा; णाया १, १३)।

वमाल सक [**पुञ्जय्**] १ इकट्ठा करना। २ विस्तारना। वमालइ; (हे ४, १०२; षड्)।

वमाल पुं [**दे**] कलकल, कोलाहल; (दे ६, ९०; पाअ; स ४३५; ५२०; भवि)।

वमाल पुं [**पुञ्ज**] राशि, ढग; (सण)।

वमालण न [**पुञ्जन**] १ इकट्ठा करना; २ विस्तार; ३ वि. इकट्ठा करने वाला; ४ विस्तारने वाला; (कुमा)।

वम्म पुंन [**वर्मन्**] कवच, संनाह, बख्तर; (प्राप्र; कुमा)।

वम्म देखो **वम**।

वम्मथ } पुं [**मन्मथ**] कामदेव, कंदर्प; (चंड; प्राप्र; हे १, २४२; २, ६१; पाअ)।
वम्मह }

वम्मा देखो **वामा**; (कप्प; पउम २०, ४९; सुख २३, १; पव ११)।

वम्मिअ वि [**वर्मित**] कवचित, संनाह-युक्त; (विपा १, २—पत्र २३)।

वम्मिअ } पुं [**वल्मीक**] कीट-विशेष-कृत मिट्टी का स्तूप; (सूअ २, १, २६; हे १, १०१; षड्; पाअ; स १२३; सुपा ३१७)।
वम्मीअ }

वम्मीइ पुं [**वाल्मीकि**] एक प्रसिद्ध ऋषि, रामायण-कर्ता मुनि; (उत्तर १०३)।

वम्मीसर पुं [**दे**] काम, कन्दर्प; (दे ७, ४२)।

वम्ह न [**दे**] वल्मीक; (दे ७, ३१)।

वम्ह पुं [**ब्रह्मन्**] १ वृक्ष-विशेष, पलाश का पेड़; "नग्गोह-वम्हा तरू" (पउम ५३, ७९)। २—देखो **बंभ**; (प्राप्र)।

वम्हल न [**दे**] केसर, किंजल्क; (दे ७, ३३; हे २, १७४)।

वम्हाण देखो **बंभण**; (कुमा)।

वय सक [**वच्**] बोलना, कहना। वअइ, वअए; (षड्)। भवि— वच्छिहिइ, वच्छिइ, वच्छिहिंति, वच्छिंति, वोच्छिइ, वोच्छिहिइ, वोच्छिंति, वोच्छिहिंति, वोच्छं; (संक्षि ३२; षड्; हे ३, १७१; कुमा)। कर्म—वुच्चइ; (कुमा)। कर्म—भवि—वकृ—**वक्खमाण**; (विसे १०५३)। संकृ—**वइत्ता, वच्चा, वोत्तूण**; (ठा ३,१—पत्र १०८; सूअ २, १, ६; हे ४, २११; कुमा)। हेकृ—**वत्तए, वत्तुं, वोत्तुं**; (आचा; अभि १७२; हे ४, २११; कुमा)। कृ—**वच्च, वत्तव्व, वोत्तव्व**; (विसे २; उप १३६ टी, ६४८ टी; ७६८ टी; पिंड ८७; धर्मसं ९२२; सुर ४, ९७; सुपा १५०; औप; उवा; हे ४, २११), देखो **वयणिज्ज**।

वय सक [**वद्**] बोलना, कहना। वयइ, वयसि; (कस; कप्प), वइज्जा, वएज्जा; (कप्प)। भूका—वयासि, वयासी; (औप; कप्प; भग; महा)। वकृ—**वयंत, वयमाण, वएमाण**; (कप्प; काल; ठा ४,४—पत्र २७४; सम्म ६९; ठा ७)। संकृ—**वइत्ता**; (आचा)। हेकृ—**वइत्तए**; (कप्प)।

वय सक [व्रज्] जाना, गमन करना। वयइ; (सुर १, २४८)। वयउ; (महा), वइज्ज; (गच्छ २, ६१)। वकृ—**वयंत**; (सुर ३, २७; सुपा ४३२)। कृ—**वइयव्व**; (राज)।

वय पुं [वृक] पशु-विशेष, भेड़िया; (पउम ११८, ७)।

वय पुं [दे] गृध्र पक्षी; (दे ७, २६; पाअ)।

वय पुं [वज] १ संस्कार-करण; २ गमन; (श्रा २३)।

वय पुं [व्रज] १ देश-विशेष; (गा ११२)। २ गोकुल, दस हजार गौओं का समूह; (णाया १, १ टी—पत्र ४३; श्रा २३)। ३ मार्ग, रास्ता; ४ संस्कार-करण; ५ गमन, गति; श्रा २३)। ६ समूह, यूथ, (श्रा २३; स २६७; सुपा २८८; ती ३)।

वय पुं [व्यय] १ खर्च; (स ५०३)। २ हानि, नुकशान; (उव; प्रासू १८१)। देखो **विअ**=व्यय।

वय न [वचस्] वचन, उक्ति; (सुअ १, १, २, २३; १, २, २, १३; सुपा १६४; भास ६१; दं २२)। °**समिअ** वि [°समित] वचन का संयमी; (भग)।

वय पुं [वद] कथन, उक्ति; (श्रा २३)।

वय पुंन [व्रत] नियम, धार्मिक प्रतिज्ञा; (भग; पंचा १०, ८; कुमा; उप २११ टी; ओघभा २; प्रासू १५४)। °**मंत** वि [°वत्] व्रती; (आचा २, १, ६, १)।

वय पुंन [वयस्] १ उम्र, आयु; (ठा ३, ३; ४, ४; गा २३२; उप पृ १८; कुमा; प्रासू ४८; श्रा १४)। २ पक्षी; (गउड; उप पृ १८)। °**त्थ** वि [°स्थ] तरुण, युवा; (सुख १, १६)। °**परिणाम** पुं [°परिणाम] वृद्धता, बुढ़ापा; (से ४, २३; पाअ)।

°**वय** पुं [पच] पचन, पाक; (श्रा २३)।

°**वय** देखो **पय**=पद, (स ३४५; श्रा २३; गउड; कप्पू; से १, २४)।

°**वय** देखो **पय**=पयस्, (कुमा)।

वयंग न [दे] फल-विशेष, (सिरि ११६८)।

वयंतरिअ वि [वृत्यन्तरित] वाड से तिरोहित; (दे २, ६३)।

वयंस पुं [वयस्य] समान उमर वाला मित्र; (ठा ३, १—पत्र ११४; हे १, २६; महा)।

वयंसि देखो **वच्चंसि**=वचस्विन्; (राज)।

वयंसी स्त्री [वयस्या] सखी, सहेली; (कप्पू)।

वयड पुं [दे] वाटिका, बगीचा; (दे ७, ३५)।

वयण न [दे] १ मन्दिर, गृह; २ शय्या, बिछौना; (दे ७, ८५)।

वयण पुंन [वदन] १ मुख, मुँह; "वअणो, वअणं" (प्राकृ ३३; पि ३५८; सुर २, २४३; ३, ४४; प्रासू ६२)। २ न कथन, उक्ति; (विसे २७६४)।

वयण पुंन [वचन] १ उक्ति, कथन; "वयणा, वयणाइं" (हे १, ३३; पव २; सुर ३, ६४; प्रासू १४; १३४; १५०; कुमा)। २ एकत्व आदि संख्या का बोधक व्याकरण-शास्त्रोक्त प्रत्यय; (पण्ह २, २ टी—पत्र ११८)।

वयणिज्ज वि [वचनीय] १ वाच्य, कथनीय, अभिधेय; "वत्थु दव्वट्ठिअस्स वयणिज्जं" (सम्म ८; सुअ २, १, ६०)। २ निन्दनीय; (सुपा ३००)। ३ उपालम्भनीय, उलहना देने योग्य; (कुप्र ३)। ४ न. वचन, शब्द; (से ४, १३; सम्म ५३; काप्र ८९६)। ५ लोकापवाद; निन्दा; (स ५३२)।

वयर वि [दे] चूर्णित; (दे ७, ३४)।

वयर देखो **वइर**=वज्र; (कप्प; उव; ओघभा ८; सार्ध ३५; भग; औप)।

°**वयर** देखो **पयर**=प्रकर; (से १, २२)।

वयराड देखो **वइराड**; (सत्त ६७ टी)।

वयल वि [दे] १ विकसता, खिलता; (दे ७, ८४)। २ पुं. कलकल, कोलाहल; (दे ७, ८४; पाअ)।

वयली स्त्री [दे] लता-विशेष, निद्राकरी लता; (दे ७, ३४; पाअ)।

°**वयस** देखो **वय**=वयस्; "सवयसं" (आचा १, ८, २, २)।

वयस्स देखो **वयंस**; (स ३१४; मोह ४७; अभि ५५; स्वप्न ७६)।

वया स्त्री [वपा] १ विवर, छिद्र; २ मेद, चरबी; (श्रा २३)।

वया स्त्री [वचा] १ ओषधि-विशेष; २ मैना, सारिका; (श्रा २३)। देखो **वचा**।

वया स्त्री [व्यजा] १ मार्ग-विशेष, ऊख को खीचने के लिए रज्जु-बद्ध घट आदि डालने का मार्ग; २ प्रेरण-दण्ड; (श्रा २३)।

वर सक [वृ] १ सगाई करना, संबन्ध करना। २ आच्छादन करना, ढकना। ३ याचना करना। ४ सेवा करना। वरइ; (हे ४, २३४; सुज्ज १६; प्राप्र; षड्), "वरं वरेहि", (कुप्र ८०), "वरं वरसु इच्छिअं" (श्रा १२)। भवि—वरिस्सइ; (सिरि ८१६)। कृ—**वरणीअ**; (पउम २८, १०४)।

वर सक [वरय्] १ प्राप्त करने की इच्छा करना। २ संसृष्ट करना। वरइ, वरयति; (भवि; सुज्ज ७), "के सूरियं वरयते" (सुज्ज १, १)। वकृ—**वरिंत**; (सुज्ज ७)।

वर पुं [वर] १ पति, स्वामी, दुलहा, (स ७८; स्वप्न ४१; गा ४०४; ४७६; भवि)। २ बरदान, देव आदि का प्रसाद, (कुमा; श्रा १२; २७; कुप्र ८०; भवि)। ३ वि. श्रेष्ठ, उत्तम; (कप्प; महा; कुमा; प्रासू ५२; १७५)। ४ अभीष्ट, (श्रा १२; कुप्र ८०)। ५ न. कुछ अभीष्ट, अच्छा; "वरं मे अप्पा दंतो" (उत्त १, १६; प्रासू २२; ३८; १०६)। °**दत्त** पुं [°दत्त] १ भगवान् नेमिनाथजी का प्रथम शिष्य; (सम १५२; कप्प)। २ एक राज-कुमार; (विपा २, १, १०)। °**दाम** न [°दामन्] एक तीर्थ; (ठा ३, १—पत्र १२२, इक; सण)। °**धणु** पुं [°धनुष्] एक मन्त्रि-कुमार, ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती का बाल-मित्र; (महा)। °**पुरिस** पुं [°पुरुष] वासुदेव; (पण्ण १७—पत्र ५२६; राय; आवम; जीव ३)। °**माल** पुं [°माल] एक देव-विमान; (देवेन्द्र १३३)। °**माला** स्त्री [°माला] वर को पहनायी जाती माला, वरत्व-सूचक माला; (कुप्र ४०७)। °**रुइ** पुं [°रुचि] राजा नन्द के समय का एक विद्वान् ब्राह्मण; (कुप्र ४४७)। °**वरिया** स्त्री [°वरिका] अभीष्ट वस्तु माँगने के लिए की जाती घोषणा, ईप्सित वस्तु के दान देने की घोषणा; (णाया १, ८—पत्र १५१; आवम; स ४०१; सुर १६, १८, सुपा ७२)। °**सरक** न [°सरक] खाद्य-विशेष; (पण्ह २, ५—पत्र १४८)। °**सिट्ठ** पुंन [°शिष्ट] यम लोकपाल का एक विमान; (भग ३, ७—पत्र १९७; देवेन्द्र २७०)।

वर देखो **वार**। °**विलया** स्त्री [°वनिता] वेश्या; (कुमा)।

°**वर** देखो **पर**; "जीवाणमभयदाणं जा देइ दयावरो नरो निच्चं" (कुप्र १८२)।

वरइअ वि [दे] धान्य-विशेष; (दे ७, ४९)।

वरइत्त पुं [दे, वरयितृ] अभिनव वर, दुलहा; (दे ७, ४४; षड्; भवि)।

वरई देखो **वरय**=वराक।

वरउप्फ वि [दे] मृत; (दे ७, ४७)।

वरं देखो **परं**=परम्; "अदो वरं विरुद्धमस्हाण इत्थ अवत्थाणं" (मोह ९२; स्वप्न २०९)।

वरंड पुं [वरण्ड] १ दीर्घ काष्ठ, लम्बो लकडी; २ भित्ति, भींत; (मृच्छ ६)।

वरंड पुं [दे] १ तृण-पुञ्ज, तृण-संचय, (चारु ३)। २ प्राकार, किला; (दे ७, ८६; षड्)। ३ कपोतपाली, गाल पर लगाई जाती कस्तूरी आदि की छटा; (दे ७, ८६)। ४ समूह; (गा ६३०)।

वरंडिया स्त्री [दे] छोटा वरंडा, बरामदा, दालान; (सुपा २०३)।

वरक्ख न [वराख्य] गन्ध-द्रव्य विशेष, सिल्हक; (से ९, ४४)।

वरक्ख पुं [वराक्ष] १ योगी; २ यक्ष; ३ वि. श्रेष्ठ इन्द्रिय वाला; (से ९, ४४)।

वरक्खा स्त्री [वराख्या] त्रिफला; (से ९, ४४)।

वरट्ट पुं [दे] धान्य-विशेष; (पव १५४)।

वरडा } स्त्री [दे, वरटा] १ तैलाटी, कीट-विशेष, गंधोली;
वरडी } २ दंश-भ्रमर, जन्तु-विशेष; (मृच्छ १२; दे ७, ८४)।

वरण न [वरण] १ सगाई, विवाह-संबन्ध; (सुपा ३५४; सुर १, १२९; ४,१०)। २ तट, किनारा; (गउड)। ३ पूल, सेतु; (ओघ ३०)। ४ प्राकार, किला; (गा २४५)। ५ स्वीकार, ग्रहण; (राज), देखो **वीर-वरण**। ६ पुं. देश-विशेष, एक आर्य-देश; "वइराड वच्छ वरणा अच्छा" (सूअनि ६६ टी; इक), देखो **वरुण**।

वरणय न [वरणक] तृण-विशेष; (गउड)।

वरणसि (अप) देखो **वाराणसी**; (पि ३५४)।

वरणा स्त्री [वरणा] १ काशी की एक नदी; (राज)। २ अच्छ देश की प्राचीन राजधानी; (सूअनि ६६ टी), देखो **वरुणा**।

वरणीअ देखो **वर**=वृ।

वरत्त वि [दे] १ पीत; २ पतित; ३ पेटित, संहत; (षड्)।

वरत्ता स्त्री [वरत्रा] रज्जु, रस्सी; (पाअ; विपा १, ६; सुपा ५६२)।

वरय पुं [वरक] सगाई करने वाला, विवाह का प्रार्थक पुरुष; (सुर ६, ११५)।

वरय पुं [दे] शालि-विशेष, एक तरह का धान्य; (दे ७, ३६)।

वरय वि [वराक] दीन, गरीब, विचारा, रंक; (पाअ; सुर २, १३, ६, १६५; सुपा ९३; गा ५३३), स्त्री—°**रई**; (संक्षि २; पि ८०)।

वरला स्त्री [**वरला**] हंसी, हंसपक्षी की मादा; (पाअ)।

वरसि देखो **वरिसि**; (मोह ३०)।

वरहाड अक [**निर्+सृ**] बाहर निकलना। वरहाडइ; (हे ४, ७९)।

वरहाडिअ वि [**निःसृत**] बाहर निकला हुआ, निर्गत; (कुमा)।

वराग देखो **वराय**; (रंभा)।

वराड, वराडग, वराडय पुं [**वराट, °क**] १ दक्षिण का एक देश, जो आजकल भी 'वरार' नाम से प्रसिद्ध है; (कुप्र २५५; सुख १८, ३५; राज)। २ कपर्दक, कौड़ा; (उत्त ३६, १३०; ओघ ३३४; श्रा १)। ३ न. कौड़िओं का जूआ जिसे बालक खेलते हैं; (मोह ८६)।

वराडिया स्त्री [**वराटिका**] कपर्दिका, कौड़ी, (सुपा २०३)।

वराय देखो **वरय**=वराक; (गा ६१; ६६; १४१; महा)। स्त्री—**°राइआ, °राई,** (गा ४६२; पि ३५०)।

वरावड पुं. ब. [**वरावट**] देश-विशेष; (पउम ९८, ६४)।

वराह पुं [**वराह**] १ शूकर, सूअर; (पाअ)। २ भगवान् सुविधिनाथ का प्रथम शिष्य; (सम १५२)।

वराही स्त्री [**वराही**] विद्या-विशेष; (विसे २४५३)।

वरि अ [**वरम्**] अच्छा, ठीक;

"वरि मरणं मा विरहो, विरहो अइदूसहो म्ह पडिहाइ।
वरि एक्कं चिय मरणं, जेण समप्पंति दुक्खाइं॥"
(सुर ४, १८२; भवि)।

वरिअ देखो **वज्ज**=वर्य; (हे २, १०७; षड्)।

वरिअ वि [**वृत**] १ स्वीकृत; (से १२, ८८)। २ सेवित; (भवि)। ३ जिसकी सगाई की गई हो वह; (वसु; महा)। ४ न. सगाई करना; "सुवरियं ति" (उप ६४८ टी)।

वरिट्ठ पुं [**वरिष्ठ**] १ भरत-क्षेत्र का भावी बारहवाँ चक्रवर्ती राजा; (सम १५४)। २ अति-श्रेष्ठ; (औप; कप्प; उप पृ ३८४; सुपा ४०३; भवि)।

वरिल्ल न [**दे**] वस्त्र-विशेष, (कप्पू)।

वरिस सक [**वृष्**] बरसना, वृष्टि करना। वरिसइ; (हे ४, २३५; प्राप्र)। वकृ—**वरिसंत, वरिसमाण**; (सुपा ६३४; ६२२)। हेकृ—**वरिसिउं**; (पि १३५)।

वरिस पुंन [**वर्ष**] १ वृष्टि, वर्षा; (कुमा; कप्पू; भवि)। २ संवत्सर, साल; (कुमा; सुपा ४५२; नव ६; दं २७; कप्पू; कम्म १, १८)। ३ जंबू-द्वीप; ४ जंबूद्वीप का अंश-विशेष, भारत आदि क्षेत्र; ५ मेघ; (हे २, १०५)। **°अ** वि [**°ज**] वर्षा में उत्पन्न; (षड्)। **°कण्ह** न [**°कृष्ण**] १ एक गोत्र; २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न; (ठा ७—पत्र ३९०)। **°धर** पुं [**°धर**] अन्तःपुर-रक्षक षण्ढ-विशेष; (णाया १, १—पत्र ३७; कप्पू; औप ५५ टि)। **°वर** पुं [**°वर**] वही अनन्तरोक्त अर्थ; (औप)। देखो **वास**=वर्ष।

वरिसविअ वि [**वर्षित**] बरसाया हुआ; (सुपा २२३)।

वरिसा स्त्री [**वर्षा**] १ वृष्टि, पानी का बरसना; (हे २, १०५)। २ वर्षा-काल, श्रावण और भादो का महीना; (प्रयौ ७४)। **°काल** पुं [**°काल**] वर्षा ऋतु, प्रावृष्; (कुप्र ७५)। **°रत्त** पुं [**°रात्र**] वही अर्थ; (ठा ६; णाया १, १—पत्र ६३)। **°ल** देखो **°काल**; (पव ८५; महा)। देखो **वासा**।

वरिसि वि [**वर्षिन्**] बरसने वाला; (वेणी १११)।

वरिसिणी स्त्री [**वर्षिणी**] विद्या-विशेष; (पउम ७, १४२)।

वरिसोलक पुं [**दे. वर्षोलक**] पक्वान्न-विशेष, एक प्रकार का खाद्य; (पव ४ टी)।

°वरिहरिअ देखो **परिहरिअ**; (से ७, ३८)।

वरु, वरुअ पुंन [**दे**] देखो **वरुअ**; "चपयतरुणो वरुणो फुल्लंति सुरहिजलसित्ता(?त्ता)" (संबोध ४७)।

वरुंट पुं [**वरुण्ट**] एक शिल्पि-जाति; (राज)।

वरुड पुं [**वरुड**] एक अन्त्यज-जाति; (दे २, ८४)।

वरुण पुं [**वरुण**] १ चमर आदि इन्द्रों का पश्चिम दिशा का लोकपाल; (ठा ४, १—पत्र १९७; १९८; इक)। २ वलि-आदि इन्द्रों का उत्तर दिशा का लोकपाल; (ठा ४, १)। ३ लोकान्तिक देवों की एक जाति; (णाया १, ८—पत्र १५१)। ४ भगवान् मुनिसुव्रत का शासनाधिष्ठायक यक्ष; (संति ८)। ५ शतभिषक् नक्षत्र का अधिष्ठाता देव; (सुज्ज १०, १२)। ६ एक देव-विमान; (देवेन्द्र १३१)। ७ वृक्ष की एक जाति; (पव ४)। ८ अहोरात्र का पनरहवाँ मुहूर्त; (सुज्ज १०, १३; सम ५१)। ९ एक विद्याधर-नरपति; (पउम ६, ४४; १६, १२)। १० एक श्रेष्ठि-पुत्र; (सुपा ५५९)। ११ छन्द-विशेष; (पिंग)। १२ वरुणवर द्वीप का एक अधिष्ठाता देव; (जीव ३—पत्र ३४८)। १३ पुं. ब. एक आर्य-देश; (पव २७५)। **°काइय** पुं [**°कायिक**] वरुण लोकपाल के भृत्य-स्थानीय देवों की एक जाति; (भग ३, ७—पत्र १९९)। **°देवकाइय** पुं [**°देवकायिक**] वही अर्थ; (भग ३, ७)। **°प्पभ** पु [**°प्रभ**] १ वरुणवर द्वीप का एक अधिष्ठायक देव; (जीव ३—पत्र

३४८)। २ वरुण लोकपाल का उत्पात-पर्वत; (ठा १०—पत्र ४८२)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] वरुणप्रभ पर्वत की दक्षिण दिशा में स्थित वरुण लोकपाल की एक राजधानी; (दीव)। °वर पुं [°वर] एक द्वीप का नाम; (जीव ३—पत्र ३४८; सुज्ज १६)।

वरुणा स्त्री [**वरुणा**] १ अच्छ देश की प्राचीन राजधानी; (पव २७५)। २ वरुणप्रभ पर्वत की पूर्व दिशा में स्थित वरुण-नामक लोकपाल की एक राजधानी; (दीव)। ३ एक राज-पत्नी; (पउम ७, ४४)।

वरुणी स्त्री [**वरुणी**] विद्या-विशेष; (पउम ७, १४०)।

वरुणोअ } पुं [**वरुणोद**] एक समुद्र; (ठा ७—पत्र ४०५;
वरुणोद } इक; सुज्ज १६)।

वरुल पुं. ब. [**वरुल**] देश-विशेष, (पउम ६८, ६४)।

वरूहिणी स्त्री [**वरूथिनी**] सेना, सैन्य; (पाअ)।

वरेइत्थ न [**दे**] फल; (दे ७, ४७)।

वल अक [**वल्**] १ लौटना, वापिस आना; २ मुड़ना, टेढा होना; गुजराती में 'वळवुं'। ३ उत्पन्न होना। ४ सक. ढकना। ५ जाना, गमन करना। ६ साधना। वलइ; (हे ४, १७६; षड्; गा ४४६; धात्वा १५२)। भवि—वलिस्सं; (महा)। वकृ—**वलंत, वलय, वलाय, वलमाण**; (हे ४, ४२२; गा २५, से ५, ४७; ५, ४२; औप; ठा २, ४; पव १५७)। कवकृ—**वलिज्जंत**; (से ४, २६)। संकृ—**वलिऊण**; (काल)। हेकृ—**वलिउं**; (गा ४८४; पि ५७६)। कृ—**वलियव्व**; (महा; सुपा ६०१)।

वल सक [**आ + रोपय्**] ऊपर चढाना। वलइ; (हे ४, ४७; दे ७, ८६)।

वल सक [**ग्रह्**] ग्रहण करना। वलइ, (हे ४, २०६; दे ७, ८६)। कृ—**वलणिज्ज**; (कुमा)।

वल पुं [**वल**] रस्सी आदि को मजबूत करने के लिए दिया जाता वल; (उत्त २६, २५)।

वलअंगी स्त्री [**दे**] वृति वाली, वाड वाली; (दे ७, ४३)।

वलइय वि [**वलयित**] १ वलय की तरह गोलाकार किया हुआ, वलय की तरह मुड़ा हुआ; (पउम २८, १२४; कप्पू)। २ वेष्टित; (कप्पू)।

वलंगणिआ स्त्री [**दे**] वाड वाली; (दे ७, ४३)।

वलक्किअ वि [**दे**] उत्सगित, उत्संग-स्थित, (षड् १८३)।

वलक्ख वि [**वलक्ष**] श्वेत, सफेद; (पाअ)।

वलक्ख न [**वलाक्ष**] आभूषण-विशेष, एक तरह का गले में पहनने का गहना; (औप)।

वलग्ग सक [**आ + रुह्**] आरोहण करना, चढ़ना। गुजराती में 'वळगवु'। वलग्गइ; (हे ४, २०६; षड्; भवि)।

वलग्ग वि [**आरूढ**] जिसने आरोहण किया हो वह, चढ़ा हुआ; (पाअ)।

वलग्गंगणी स्त्री [**दे**] वृति, वाड; (दे ७, ४३)।

वलग्गिअ देखो **वलग्ग**=आरूढ; (कुमा)।

वलण न [**वलन**] १ मोड़ना, वक्र करना; (दे १, ४२)। २ प्रत्यावर्तन, पीछे लौटना; (से ८, ६; गउड)। ३ बाँक, वक्रता; (हे ४, ४२२)।

वलण (शौ. मा) देखो **वरण**; (प्राकृ ८५; हे ४, २६३)।

वलणा स्त्री [**वलना**] देखो **वलण**=वलन; (गउड)।

वलत्थ वि [**दे**] पर्यस्त; (भवि)।

वलमय न [**दे**] शीघ्र, जल्दी; "वच्च वलमयं तत्थ" (दे ७, ४८)।

वलय पुंन [**वलय**] १ कंकण, कड़ा; (औप; गा १३३; कप्पू; हे ४, ३५२)। २ पृथिवी-वेष्टन, घनवात आदि; (ठा २, ४—पत्र ८६)। ३ वेष्टन, वेठन; ४ वर्तुल, गोलाकार; (गउड; कप्पू; ठा ५, १)। ५ नदी आदि के बाँक से वेष्टित भू-भाग; (सूअ २, २, ८; भग)। ६ माया, प्रपंच, (सूअ १, १२, २२; सम ७१)। ७ असत्य वचन, मृषा, झूठ; (पण्ह १, २—पत्र २६)। ८ वलयाकार वृक्ष, नालिकेर आदि; (पण्ण १; उत्त ३६, ६६; सुख ३६, ६६)। °आर, °ारअ पुं [°कार, °कारक] कंकण बनाने वाला शिल्पी; (दे ७, ५४)।

वलय वि [**वलक**] मोडने वाला; "छगलग-गल-वलया" (पिंड ३१४)।

वलय न [**दे**] १ क्षेत्र, खेत; २ गृह, घर; (दे ७, ८५)।

वलय देखो **वल**=वल्। °मयग वि [°मृतक] १ संयम से भ्रष्ट होकर जिसका मरण हुआ हो वह; २ भूख आदि से तड़फता हुआ जो मरा हो वह; (औप)। °मरण न [°मरण] संयम से च्युत होने वाले का मरण; (भग २, १)।

वलयणी स्त्री [**दे**] वृति, वाड; (दे ७, ४३)।

वलयवाहा } स्त्री [**दे**] १ दीर्घ काष्ठ, जिस पर ध्वजा आदि
वलयवाहु } बाँधा जाता है वह लम्बा काष्ठ; "संसारियासु वलयवाहासु ऊसिएसु सिएसु झयग्गेसु" (णाया १, ८—पत्र १३३)। २ हाथ का एक आभूषण, चूड़ा; (दे ७, ५२; पाअ)।

वलया देखो **वडवा**। °**णल** पुं [°**नल**] वडवाग्नि; (हे १, १७७; षड्)। °**मुह** न [°**मुख**] १ वडवानल; (हे १, २०२; प्राकृ; पि २४०)। २ पुं. एक बड़ा पाताल-कलश; (ठा ४, २—पत्र २२६; टी—पत्र २२८; सम ७१)।

वलया स्त्री [**दे**] वेला, समुद्र-कूल। °**मुह** न [°**मुख**] वेला का अग्र भाग;

"ति वलागमुहुम्मुक्को, तिक्खुत्तो वलयामुहे।
ति सत्तक्खुत्तो जालेणं, सइ छिन्नोदए दहे॥
एयारिसं ममं सत्तं, सढं घट्टियघट्टणं।
इच्छसि गलेण घेत्तुं, अहो ते अहिरीयया॥
(पिंड ६३२; ६३३)।

वलयाइअ वि [**वलयायित**] जो वलय की तरह गोल हुआ हो वह; (कुमा)।

वलवट्टि [**दे**] देखो **बलवट्टि**; (दे ६, ९१)।

वलवा देखो **वडवा**; "गोमहिसिवलवपुण्णो" (पउम २,२; दे ७, ४१; इक; पि २४०)।

वलवाडी स्त्री [**दे**] वृति, वाड़; (दे ७, ४३)।

वलविअ न [**दे**] शीघ्र, जल्दी; (दे ७, ४८)।

वलहि स्त्री [**दे**] कर्पास, कपास; (दे ७, ३२)।

वलहि } स्त्री [**वलभि**, °**भी**] १ गृह-चूडा, छज्जा, वरा-
वलही } मदा; २ महल का अग्रस्थ भाग; (प्राप्र)। ३ काठियावाड़ का एक प्राचीन नगर, जिसको आजकल 'वळा' कहते हैं; (ती १५; सम्मत्त ११६)।

वलाअ देखो **पलाय**=परा+अय्। वकृ—"दीसइ वि वलाअंतो" (से ६, ८६)।

वलाअ देखो **पलाव**=प्रलाप; (से ६, ४६)।

°**वलाय** देखो **वल**=वल्। °**मरण** देखो **वलय-मरण**; "संजमजोग-विसन्ना मरंति जे तं वलायमरणं तु" (पव १५७; ठा २, ४—पत्र ६३)।

वलि स्त्री [**वलि**] १ पेट का अवयव-विशेष; "उग्गवलिमंसेहिं" (निर १, १)। २ त्रिवलि, नाभि के ऊपर पेट की तीन रेखाएँ; (गा ४२५; भवि)। ३ जरा आदि से होती शिथिल चमड़ी; (गाया १, १—पत्र ६६)।

वलिअ वि [**दे**] भुक्त, भक्षित; (दे ७, ३५)।

वलिअ वि [**वलित**] १ मुड़ा हुआ; (गा ६; २७०; औप)। २ जिसको वल चढ़ाया गया हो वह; (रस्सि आदि), (उत्त २६, २५)।

वलिअ देखो **विलिअ**=व्यलीक; (प्राप्र)।

वलिआ स्त्री [**दे**] ज्या, धनुष की डोरी; (दे ७, ३४)।

°**वलिच्छन्न** देखो **परिच्छन्न**; (औप)।

वलिज्जंत देखो **वल**=वल्।

°**वलित्त** देखो **पलित्त**; (उप ७२८ टी)।

वलिमोडय पुं [**वलिमोटक**] वनस्पति में ग्रन्थि का चक्राकार वेष्टन; (पण्ण १—पत्र ४०)।

वलिर वि [**वलितृ**] लौटने वाला; (सुपा ५६)।

वली स्त्री [**वली**] देखो **वलि**; (निर १, १)।

वलुण देखो **वरुण**; (हे १, २५४)।

वले अ. संबोधन-सूचक अव्यय; (प्राकृ ८०)। २-३ देखो **बले**; (षड्)।

वल्ल देखो **वल**=वल्। वल्लइ; (धात्वा १५२)।

वल्ल अक [**वल्ल्**] चलना, हिलना; (कुप्र ८४)।

वल्ल पुं [**दे**] शिशु, बालक; (दे ७, ३१)।

वल्ल पुं [**दे. वल्ल**] अन्न-विशेष, निष्पाव; गुजराती में 'वाल'; (सुपा १३; ६३१; सम्मत्त ११८; सण)।

वल्लई स्त्री [**वल्लवी**] गोपी; (दे ७, ३६ टी)।

वल्लई स्त्री [**दे**] गो, गैया; (दे ७, ३६)।

वल्लई } स्त्री [**वल्लकी**] वीणा; (पाअ; दे ७, ३६ टी;
वल्लकी } णाया १, १७—पत्र २२६)।

वल्लट्ट वि [**दे**] पुनरुक्त, फिर से कहा हुआ; (षड्)।

वल्लभ देखो **वल्लह**; (गा ६०४)।

वल्लर न [**दे. वल्लर**] १ वन, गहन; (दे ७, ८६; पाअ; उत्त १६, ८१)। २ क्षेत्र, खेत; (दे ७, ८६; पण्ह १, १—पत्र १४)। ३ अरण्य-क्षेत्र; (पाअ)। ४ वालुका-युक्त क्षेत्र; (गा ८१२)।

वल्लर न [**दे**] १ अरण्य, अटवी; २ निर्जल देश; ३ पुं. महिष, भैंसा; ४ समीर, पवन; ५ वि. युवा, तरुण; (दे ७, ८६)। ६ वेष्टन-शील; ७ वेष्टित-नामक आलिंगन-विशेष करने की आदत वाला; स्त्री—°**री**; (गा ५३४)।

वल्लरी स्त्री [**वल्लरी**] वल्ली, लता; (पाअ; गउड; सुपा ५२६)।

वल्लरी स्त्री [**दे**] केश, बाल; (दे ७, ३२)।

वल्लव पुंस्त्री [**वल्लव**] गोप, अहीर, ग्वाला; (पाअ)। स्त्री—°**वी**; (गा ८६)।

वल्लवाय न [**दे**] क्षेत्र, खेत; (दे ६, २६)।

वल्लविअ वि [**दे**] लाक्षा से रँगा हुआ; (षड्)।

वल्लह पुं [**वल्लभ**] १ दयित, पति, भर्ता; (गउड; कप्पू;

गा १२३; हे ४, ३८३)। २ वि. प्रिय, स्नेह-पात्र; "अहं जाया वल्लहा अईव पिउणो" (महा; गा ४२; ६७; कुमा; पउम १५, ७३; रयण ७६)। °राय पुं [°राज] १ गुजरात का एक चौलुक्य-वंशीय राजा; (कुप्र ४)। २ दक्षिण के कुन्तल देश का एक राजा; (कुप्पू)।

वल्लहा स्त्री [**वल्लभा**] दयिता, पत्नी; (गा ७२)।

वल्लादय न [**दे**] आच्छादन, ढकने का वस्त्र; (दे ७, ४५)।

वल्लाय पुं [**दे**] १ श्येन पक्षी; २ नकुल, न्यौला; (दे ७, ८४)।

वल्लि स्त्री [**वल्लि**] लता, वेल; (कुमा)।

वल्लिर वि [**वल्लितृ**] हिलने वाला; "न विरायइ वल्लिर-पल्लवा वि वल्लिव्व फलहीणा" (कुप्र ८४)।

वल्ली स्त्री [**वल्ली**] लता, वेल; (कुमा; पि ३८७)।

वल्ली स्त्री [**दे**] केश, वाल; (दे ७, ३२)।

वल्हीअ पुं [**वाह्लीक**] १ देश-विशेष; (स १३; नाट)। २ त्रि. वाह्लीक देश में उत्पन्न, वाह्लीक देश का; (स १३)।

वव सक [**वप्**] बोना। "जे सत्तखित्तेसु ववंति वित्तं" (सत्त ७२)। वकृ—**ववंत**; (आत्महि ७)। कवकृ—**ववि-ज्जंत**; (गा ३५८)।

ववइस सक [**व्यप+दिश्**] १ कहना, प्रतिपादन करना। २ व्यवहार करना। ववइसंति; (धर्मसं ४५२; सूअनि १४१),

"अन्ने अकालमरणस्सभावओ वहनिवित्तिमो मोहा।
वंझासुअपिसियासणनिवित्तितुल्लं ववइसंति ॥"
(श्रावक १६२)।

ववएस पुं [**व्यपदेश**] १ कथन, प्रतिपादन; २ व्यवहार; (से ३, २६)। ३ कपट, वहाना, छल; (महा)।

ववगम पुं [**व्यपगम**] नाश; (आवम)।

ववगय वि [**व्यपगत**] १ दूर किया हुआ; (सुपा ४१)। २ मृत; (पण्ह २, ५—पत्र १४८)। ३ नाश-प्राप्त, नष्ट, "ववगयविग्घा सिग्घं पत्ता हिअइच्छिअं ठाणं" (णमि ११; औप; कप्प)।

ववट्ठंभ पुं [**व्यवष्टम्भ**] अवलम्बन, सहारा; (से ४, ४६)।

ववट्ठावण देखो **ववत्थावण**; (राज)।

ववट्ठिअ वि [**व्यवस्थित**] व्यवस्था-प्राप्त; (से १२, ५२)।

ववण न [**वपन**] वोना; (वव १; श्रु ६)।

ववण स्त्रीन [**दे**] कार्पास, तूला, रूई; "पलही ववणं तूलो रूवो" (पाअ); स्त्री—°**णी**, (दे ६, ८२; ७, ३२)।

ववत्थंभ पुं [**दे**] बल, पराक्रम; (दे ७, ४६)।

ववत्था स्त्री [**व्यवस्था**] १ मर्यादा, स्थिति; (स १३; कुप्र ११४)। २ प्रक्रिया, रीति; ३ इन्तेजाम; (सुपा ४१)। ४ निर्णय; (स १३)। °**पत्तय** न [°**पत्रक**] दस्तावेज; (स ४१०)।

ववत्थावण न [**व्यवस्थापन**] व्यवस्था करना; "जीव-ववत्थावणादिणा" (धर्मसं ५२०)।

ववत्थावणा स्त्री [**व्यवस्थापना**] ऊपर देखो; (धर्मसं ५२०)।

ववत्थिअ वि [**व्यवस्थित**] व्यवस्था-युक्त; (स ४६; ७२७; सुर ७, २०५; सण)।

ववदेस देखो **ववएस**; (उवा; स्वप्न १३२)।

ववदेसि वि [**व्यपदेशिन्**] व्यपदेश करने वाला; (नाट—शकु ६६)।

ववधाण न [**व्यवधान**] अन्तर, दो पदार्थों के बीच का अन्तर; (अभि २२२)।

ववरोव सक [**व्यप+रोपय्**] विनाश करना, मार डालना। ववरोवेसि, ववरोवेज्जसि, ववरोवेज्जा; (उवा)। कर्म—ववरो-विज्जसि; (उवा)। संकृ—**ववरोवित्ता**; (उवा)।

ववरोवण न [**व्यपरोपण**] विनाश, हिंसा; (सण)।

ववरोविअ वि [**व्यपरोपित**] विनाशित, मार डाला गया; "जीविआओ ववरोविआ" (पडि)।

ववस सक [**व्यव+सो**] १ प्रयत्न करना, चेष्टा करना। २ निर्णय करना। ववसइ; (स २०२)। वकृ—**ववसंत**, **ववसमाण**; (सुपा २३८; स ५६२)। संकृ—**ववसि-ऊण**; (सुपा ३३६)। कवकृ—**ववसिज्जमाण**; (पउम ५७, ३६)। हेकृ—**ववसिदुं** (शौ); (नाट—शकु ७१)।

ववसाय पुं [**व्यवसाय**] १ निर्णय, निश्चय; २ अनुष्ठान; (ठा ३, ३—पत्र १५१; णंदि)। ३ उद्यम, प्रयत्न, (से ३, १४; सुपा ३५२; स ६८३; हे ४, ३८५; ४२२; कुप्र २६)। ४ व्यापार, कार्य, काम; (औप; राय)।

ववसिअ न [**दे**] वलात्कार; (दे ७, ४२)।

ववसिअ } वि [**व्यवसित**] १ उद्यत, उद्यम-युक्त; "से-
ववस्सिअ } णिओ नाम राया पयासुहे सुहं ववसिओ" (वसु; उत्त २२, ३०; उव)। २ त्यक्त; "अवि जीविअं ववसिअं न चेव गुरुपरिभवो सहिओ" (उव)। ३ निश्चय वाला; ४ पराक्रमी; (ठा ४, १—पत्र १७६)। ५ न. व्यवसाय, कर्म; (णाया १, १—पत्र ५०)। ६ चेष्टित; (स

७५६)। ७ उद्यम, प्रयत्न, (से ३, २२)।

ववहर सक [व्यव+हृ] १ व्यापार करना। २ अक. वर्तना, आचरण करना। ववहरइ, ववहरए; (उत्त १७, १८; स १०८; विसे २२१२)। वकृ—**ववहरंत, ववहरमाण**; (उत्त २१, २; ३; भग ८, ८; सुपा १५; ४४६)। हेकृ—**ववहरिउं**; (स १०५)। कृ—**ववहरणिज्ज, ववहरियव्व**; (उप २११ टी; वव १; सुपा ५८५)।

ववहरग वि [व्यवहारक] व्यापार करने वाला, व्यापारी; (कुप्र २२४)।

ववहरण न [व्यवहरण] व्यवहार; (णाया १, ८—पत्त १३५; स ५८५; उप ५३० टी; सुपा ४६७; विसे २२१२)।

ववहरय देखो **ववहरग**; (सुपा ५७८)।

ववहरियव्व देखो **ववहर**।

ववहार पुं [व्यवहार] १ वर्तन, आचरण; (वव १; भग ८, ८; विसे २२१२; ठा ५, २; पव १२६)। २ व्यापार, धन्धा, रोजगार; (सुपा ३३४)। ३ नय-विशेष, वस्तु-परीक्षा का एक दृष्टि-कोण; (विसे २२१२; ठा ७—पत्त ३९०)। ४ मुमुक्षु की प्रवृत्ति-निवृत्ति का कारण-भूत ज्ञान-विशेष; (भग ८, ८—पत्त ३८३; वव १; पव १२६; द्र ४६)। ५ जैन आगम-ग्रन्थ विशेष; (वव १)। ६ दोष के नाशार्थ किया जाता प्रायश्चित; "आयारे ववहारे पन्नत्ती चेव दिट्ठिवाए य" (दसनि ३)। ७ विवाद, मामला, मुकद्दमा; "ववहारवियारणं कुणइ" (पउम १०५, १००; स ४६०; चेइय ५६०; उप ५९७ टी)। ८ विवाद-निर्णय, फैसला, चुकादा; (उप पृ २८३)। ९ व्यवस्था; (सूअ २, ५, ३)। १० काम, काज; (विसे २२१२; २२१४)। ११ जीवराशि-विशेष; (सिक्खा ६)। °**व** वि [°वत्] व्यवहार-युक्त; (द्र ४६)। °**रासिय** वि [°राशिक] जीवराशि-विशेष में स्थित; (सिक्खा ६)।

ववहारि पुं [व्यवहारिन्] १ ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न एक जिन-देव; (सम १५३)। २ वि. व्यापारी, वणिक्; (मोह ६४; श्रा १४; सुपा ३३४)। ३ व्यवहार-क्रिया-प्रवर्तक; (वव १)।

ववहारिअ वि [व्यावहारिक] व्यवहार-संबन्धी; (ओघ २८१; अणु)।

ववहिअ वि [व्यवहित] व्यवधान-युक्त; (अणु; आवम)।

ववहिअ वि [दे] मत्त, उन्मत्त; (दे ७, ४१)।

ववाँल देखो **समाल**; (सण)।

वविअ वि [उप्त] बोया हुआ; (उप ७२८ टी; प्रासू ६)।

वविज्जंत देखो **वव**।

ववेअ वि [व्यपेत] व्यपगत; (सूअ २, १, ४७)।

ववेक्खा स्त्री [व्यपेक्षा] विशेष अपेक्षा, परवा; (धर्मसं ११९७)।

वव्वय पुं [वल्वज] तृण-विशेष; "मूययवक्क (? व्व) यपुप्फफल—" (पराह २, ३—पत्त १२३; कस २, ३०)।

वव्वर वि [वर्वर] १ पामर; २ मूर्ख; (कुमा)।

वव्वा° देखो **वव्वय**; (कस २, ३०)।

वव्वाड पुं [दे] अर्थ, धन; (दे ७, ३९)।

वव्वीस देखो **वच्चीसग, वद्धीसक**; (पउम ११३, ११)।

वशधि (मा) देखो **वसहि**=वसति; (प्राकृ १०१)।

वश्च (मा) देखो **वच्छ**=वृक्ष; (प्राकृ १०१)।

वस अक [वस्] १ वास करना, रहना। २ सक. बाँधना। वसइ; (कप्प; महा)। भूका—वसीय; (उत्त १३, १८)। वकृ—**वसंत, वसमाण**; (सुर २, २१९; ६, १२०; कुप्र १४; कप्प)। संकृ—**वसित्ता, वसित्ताणं**; (आचा; कप्प; पि ५८३)। हेकृ—**वत्थए, वसिउं**; (कप्प; पि ५७८; राज)। कृ—**वसियव्व**; (ठा ३, ३; सुर १४, ८७; सुपा ४३८)।

वस वि [वश] १ आयत्त, अधीन; (आचा; से २, ११)। २ पुंन. अधीनता, परतन्त्रता; (कुमा; कम्म १, ४४)। ३ प्रभुत्व, स्वामित्व; ४ आज्ञा; (कुमा)। ५ बल, सामर्थ्य; (णाया १, १७; ओप)। °**अ, °ग** वि [°ग] वशीभूत, पराधीन; (पउम ३०, २०; अच्चु ६१; सुर २, २३१; कुमा; सुपा २५७)। °**ट्ट** वि [°र्त] पराधीनता से पीड़ित, इन्द्रिय आदि की परवशता के कारण दुःखित; (आचा; विपा १, १—पत्त ८; ओप)। °**ट्टमरण** न [°र्तमरण] इन्द्रियादि-परवश की मौत; (ठा २, ४—पत्त ९३; भग)। °**वत्ति** वि [°वर्तिन्] वशीभूत, अधीन; (उप १३९ टी; सुपा २३८)। °**इत्त** वि [°यत्त] अधीन, परतंत्र; (धर्मवि ३१)। °**णुग** वि [°नुग] वही अर्थ; (पउम १४, ११)।

वस पुं [वृष] १ धर्म; (चेइय ५४१)। २ बैल, वृषभ; (स ६५४; कम्म १, ४३)। देखो **विस**=वृष।

वसइ स्त्री [वसति] १ स्थान, आश्रय; (कुमा)। २ रात्रि, रात; (दे ७, ४१)। ३ गृह, घर; (गा १६९)। ४ वास, निवास; (हे १, २१४)।

वसंत देखो **वस**=वस्।

वसंत पुं [**वसन्त**] १ ऋतु-विशेष, चैत्र और वैशाख मास का समय; (णाया १, १—पत्र ६४; पाअ; सुर ३, ३६; कुमा; कप्पू; प्रासू ३४; ६२)। २ चैत्र मास; (सुज्ज १०, १६)। °**उर** न [°**पुर**] नगर-विशेष; (महा)। °**तिलअ** पुं [°**तिलक**] १ हरिवंश में उत्पन्न एक राजा; (पउम २२, ६८)। २ न. एक उद्यान, जहाँ भगवान् ऋषभदेव ने दीक्षा ली थी; (पउम ३, १३४)। °**तिलआ** स्त्री [°**तिलका**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

वसंवय वि [**वशंवद**] निज को अधीन कहने वाला; (धर्मवि ६)।

वसण न [**वसन**] १ वस्त्र, कपड़ा; (पाअ; सुपा २४४; चेइय ४८२; धर्मवि ६)। २ निवास, रहना; (कुप्र ४८)।

वसण पुं [**वृषण**] अण्ड-कोश, पोता; (सम १२५; भग; पण्ह १, ३; विपा १, २; औप; कुप्र ३६५)।

वसण न [**व्यसन**] १ कष्ट, विपत्ति, दुःख; (पाअ; सुर ३, १६२; महा; प्रासू २३)। २ राजादि-कृत उपद्रव; (णाया १, २)। ३ खराब आदत—द्यूत, मद्य-पान आदि खोटी आदत; (बृह १)।

वसणि वि [**व्यसनिन्**] खोटी आदत वाला; (सुपा ४८८)।

वसभ पुं [**वृषभ**] १ ज्योतिष-प्रसिद्ध राशि-विशेष, वृष राशि; (पउम १७, १०८)। २ भगवान् ऋषभदेव; (चेइय ५४१)। ३ एक जैन मुनि, जो चतुर्थ बलदेव के पूर्व जन्म में गुरू थे; (पउम २०, १६२)। ४ गीतार्थ मुनि, ज्ञानी साधु; (बृह १; ३)। ५ बैल, बलीवर्द; (उव)। ६ उत्तम, श्रेष्ठ; "मुणिवसभा" (उव)। °**करण** न [°**करण**] वह स्थान जहाँ बैल बाँधे जाते हों; (आचा २, १०, १४)। °**क्खेत्त** न [°**क्षेत्र**] स्थान-विशेष, जहाँ पर वर्षा-काल में आचार्य आदि रहते हों वह स्थान; (वव १०; निचू १७)। °**ग्गाम** पुं [°**ग्राम**] ग्राम-विशेष, कुत्सित देश में नगर-तुल्य गाँव; "अत्थि हु वसभग्गामा कुदेसनगरोवमा सुहविहारा" (वव १०)। °**णुजाय** पुं [°**ानुजात**] ज्योतिषशास्त्र-प्रसिद्ध दश योगों में प्रथम योग, जिसमें चन्द्र, सूर्य और नक्षत्र बैल के आकार से स्थित होते हैं; (सुज्ज १२—पत्र २३३)। देखो **उसभ, रिसभ, वसह**।

वसभुद्ध पुं [**दे**] काक, कौआ; (दे ७, ४६)।

वसम देखो **वसिम**; (महा)।

वसमाण देखो **वस**=वस्।

वसल वि [**दे**] दीर्घ, लम्बा; (दे ७, ३३)।

वसह पुं [**वृषभ**] वैयावृत्त्य करने वाला मुनि; (ओघ १४०)। २ लक्ष्मण का एक पुत्र; (पउम ६१, २०)। ३ बैल, साँड़; (पाअ)। ४ कान का छिद्र; ५ औषध-विशेष; (प्राप्र)। °**इंध** पुं [°**चिह्न**] शंकर, महादेव; (गउड)। °**केउ** पुं [°**केतु**] इक्ष्वाकु-वंश का एक राजा; (पउम ५, ७)। °**वाहण** पुं [°**वाहन**] १ ईशान देवलोक का इन्द्र; (जं २—पत्र १५७)। २ महादेव, शंकर; (वज्जा ६०)। °**वोही** स्त्री [°**वीथी**] शुक्र ग्रह का एक क्षेत्र-भाग; (ठा ६—पत्र ४६८)।

वसहि देखो **वसइ**; (हे १, २१४; कुमा; गा ५८२; पि ३८७)।

वसा स्त्री [**वसा**] १ शरीरस्थ धातु-विशेष; "मेयवसामंस—" (पण्ह १, १—पत्र १४; णाया १, १२)। २ मेद, चरबी; (आचा)।

°**वसारअ** वि [**प्रसारक**] फैलाने वाला; (से ६, ४०)।

°**वसारअ** देखो **पसाहय**; (से ६, ४०)।

°**वसाहा** स्त्री [**प्रसाधा**] अलंकार, आभूषण; (से १, १६)।

वसि देखो **वसइ**; " जत्थ न नज्जइ पहि पहिं अडविवसिठाणयविसेसो" (सुर १, ५२)।

वसिअ वि [**उषित**] १ रहा हुआ, जिसने वास किया हो वह; (पाअ; स २६५; सुपा ४२१; भत्त ११२; वै ७)। २ वासी, पर्युषित; " अवणेइ रयणिवसियं निम्मल्लं लोमहत्थेण " (संबोध ६)।

वसिट्ठ पुं [**वशिष्ठ**] १ भगवान् पार्श्वनाथ का एक गणधर; (ठा ८—पत्र ४२६; सम १३)। २ एक ऋषि; (नाट—उत्तर ८२)।

वसिट्ठ पुं [**वशिष्ट**] द्वीपकुमार देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र; (इक)।

वसित्त न [**वशित्व**] योग की एक सिद्धि, योग-जन्य एक ऐश्वर्य; "साहुवसित्तगुणेणं पसमं कूरावि जंतुणो जंति" (कुप्र २७७)।

वसिम न [**दे. वसिम**] वसति वाला स्थान; (सुर १, ५२; सुपा १६४; कुप्र २२४; महा)।

वसियव्व देखो **वस**=वस्।

वसिर वि [**वसितृ**] वास करने वाला, रहने वाला; (सुपा ६४७; सम्मत २१७)।

वसीकय वि [**वशीकृत**] वश में किया हुआ, अधीन किया हुआ; (सुपा ५६०; महा)।

वसीकरण न [**वशीकरण**] वश में करने के लिए किया जाता मन्त्र आदि का प्रयोग, (गाया १, १४; प्रासू १४; महा)।

वसीयरणी स्त्री [**वशीकरणी**] वशीकरण-विद्या; (सुर १३, ८१)।

वसीहूअ वि [**वशीभूत**] जो अधीन हुआ हो वह; (उप ६८६ टी)।

वसु न [**वसु**] १ धन, द्रव्य; (आचा; सूअ १, १३, १८; कुमा)। २ संयम, चारित्र; (आचा; सूअ १, १३, १८)। ३ पुं. जिनदेव; ४ वीतराग, राग-रहित, ५ संयत, संयमी, साधु; (आचा १, ६, २, १)। ६ आठ की संख्या; (विवे १४४; पिंग)। ७ धनिष्ठा नक्षत्र का अधिपति देव; (ठा २, ३; सुज्ज १०, १२)। ८ एक राजा का नाम; (पउम ११, २१; भत्त १०१)। ९ एक चतुर्दश-पूर्वी जैन महर्षि; (विसे २३३४)। १० एक छन्द का नाम; (पिंग)। ११ स्त्री. ईशानेन्द्र की एक पटरानी; (इक)। १२ न. लोकान्तिक देवों का एक विमान; (इक)। १३ सुवर्ण, सोना; (कप्प ६८; भग १५; उत्त १२, ३६)। °**गुत्ता** स्त्री [°**गुप्ता**] ईशानेन्द्र की एक पटरानी; (ठा ८—पत्र ४२६; इक; गाया २—पत्र २५३)। °**देव** पुं [°**देव**] नववें वासुदेव श्रीकृष्ण और बलदेव का पिता; (ठा ६; सम १५२; अंत; उव)। °**नंदय** पुं [°**नन्दक**] एक तरह की उत्तम तलवार; (सुर २, २२; भवि)। °**पुज्ज** पुं [°**पूज्य**] एक राजा, भगवान् वासुपूज्य का पिता; (सम १५१)। °**बल** पुं [°**बल**] इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न एक राजा, (पउम ५, ४)। °**भाग** पुं [°**भाग**] एक व्यक्ति-वाचक नाम; (महा)। °**भागा** स्त्री [°**भागा**] ईशानेन्द्र की एक पटरानी; (इक)। °**भूइ** पुं [°**भूति**] एक जैन मुनि का नाम; (पउम २०, १७६; आवम)। °**म**, °**मंत** वि [°**मत्**] १ द्रव्यवान्, धनी, श्रीमंत; (सूअ १, १३, ८; १, १५, ११; आचा)। २ संयमी, साधु; (सूअ १, १३, ८; आचा)। °**मित्ता** स्त्री [°**मित्रा**] १ ईशानेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ८—पत्र ४२६; गाया २; इक)। °**सद्द** पुं [°**शब्द**] छन्द-विशेष; (पिंग)। °**हारा** स्त्री [°**धारा**] १ आकाश से देव-कृत सुवर्ण-वृष्टि; (भग १५; कप्प ६८; उत्त १२, ३६; विपा १, १०)। २ एक श्रेष्ठिनी; (उप ७२८ टी)।

वसुआ, **वसुआअ** } अक [**उद्+वा**] शुष्क होना, सूखना। वसुआइ, वसुआअइ; (हे ४, ११; २, १४५; प्राकृ ७४)। वकृ—**वसुअंत**; (कुमा)। प्रयो—कवकृ—**वसुआइज्जमाण**; (गउड)।

वसुआअ वि [**उद्वात**] शुष्क; (पाअ; से १, २०; गउड; प्राकृ ७७)।

वसुआइअ वि [**उद्वापित**] शुष्क किया गया, सुखाया गया; (से ६, २५)।

वसुआइज्जमाण देखो **वसुआ**।

वसुंधर पु [**वसुन्धर**] एक जैन मुनि; (पउम २०, १६१)।

वसुंधरा स्त्री [**वसुन्धरा**] १ पृथिवी, धरती; (पाअ; धर्मवि ४१; प्रासू १४२)। २ ईशानेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ८—पत्र ४२६; गाया २; इक)। ३ चमरेन्द्र के सोम आदि चारों लोकपालों की एक पटरानी का नाम; (ठा ४, १—पत्र २०४; इक)। ४ एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८—पत्र ४३६; इक)। ५ नववें चक्रवर्ती राजा की पटरानी; (सम १५२)। ६ रावण की एक पत्नी; (पउम ७४, १०)। ७ एक श्रेष्ठि-पत्नी; (उप ७२८ टी)। °**वइ** पुं [°**पति**] राजा, भू-पति; (सुपा २८८)।

वसुधा (शौ) देखो **वसुहा**; (स्वप्न ६८)।

वसुपुज्ज देखो **वासुपुज्ज**; "वसुपुज्जमल्ली नेमी पासो वीरो कुमारपव्वइया" (विचार ११५; पंचा १६, १३; १७), "वसुपुज्जजिणो जगुत्तमो जाओ" (पव ३५)।

वसुमइ°, **वसुमई** } स्त्री [**वसुमती**] १ पृथिवी, धरती; (उप ७६८ टी; पाअ; सुपा २६०; ४७१)। २ भीम-नामक राक्षसेन्द्र की एक अग्र-महिषी, एक इन्द्राणी; (ठा ४, १—पत्र २०४; गाया २—पत्र २५२; इक)। °**णाह**, °**नाह** पुं [°**नाथ**] राजा; (उप ७६८ टी; पउम ७४, २६)। °**भवण** न [°**भवन**] भूमि-गृह, भोंयरा; (सुख ४, ६)। °**वइ** पुं [°**पति**] राजा; (पउम ६६, २)।

वसुल पुंस्त्री [**दे. वृषल**] १ निष्ठुरता-बोधक आमन्त्रण-शब्द; "होलि त्ति वा गोलि त्ति वा वसुलि त्ति वा" (आचा २, ४, २, ३), "तहेव होले गोलि त्ति साणे वा वसुलि त्ति य" (दस ७, १४)। २ गौरव और कुत्सा-बोधक आमन्त्रण-शब्द; "होल वसुल गोल णाह दइय पिय रमण" (गाया १, ६—पत्र १६५); स्त्री—°**ली**; (दस ७, १६; आचा २, ४, २, ३)।

वसुहा स्त्री [**वसुधा**] पृथिवी, धरती; (पाअ; कुमा)। °**हिव** पुं [°**धिप**] राजा; (सुपा ८७)।

वसू स्त्री [**वसू**] ईशानेन्द्र की एक पटरानी; (ठा ८—पत्र ४२६; इक; णाया २—पत्र २५३)।

वसेरी स्त्री [**दे**] गवेषणा, खोज; (सुपा ४७३)।

वस्स (शौ) देखा **वरिस**। वस्सदि; (नाट—मृच्छ १५५)।

वस्स वि [**वश्य**] अधीन, आयत्त; (विसे ८७५)।

वस्सोक न [**दे**] एक प्रकार की क्रीडा; "अन्नया य वस्सोकेण रमंति राय(? या)णं राणियाउ पोत्तेण वाहिंति" (श्रावक ६३ टी)।

वह सक [**वह्**] १ पहुँचाना। २ धारण करना। ३ ले जाना, ढ़ोना। ४ अक. चलना। "परिमलवहलो वहइ पवणो" (कुमा; उव; महा), "गंगा वहइ पाडलं" (सुख २, ४५), वहसि; (हे २, १९४)। कर्म—वहिज्जइ, वब्भइ, वुब्भइ; (कुमा; धात्वा १५१; पि ५४१; हे ४, २४५)। वकृ—**वहंत, वहमाण**; (महा; सुर ३, ११; औप)। कवकृ—**उज्झमाण**; (उत्त २३, ६५; ६८)। हेकृ—**वहिउं, वहित्तए, वोढुं**; (धात्वा १५२; कस; सा १५)। कृ—**वहिअव्व, वोढव्व**; (धात्वा १५२; प्रवि ३)।

वह सक [**वध्, हन्**] मार डालना। वहेइ, वहंति; (उत्त १८, ३; ५; स ७२८; संबोध ४१)। कर्म—वहिज्जंति; (कुप्र २५)। वकृ—**वहंत, वहमाण**; (पउम २६, ७७, सुपा ६५१; श्रावक १३९)। कवकृ—**वहिज्जंत, वज्झमाण**; (पउम ४६, २०; आचा)। संकृ—**वहिऊण**; (महा)।

वह सक [**व्यथ्**] १ पीड़ा करना। २ प्रहार करना। कृ—**वहेयव्व**; (पण्ह २, १—पत्र १००)।

वह (अप) देखो **वरिस**=वृष्। वहदि; (प्राकृ १२१)।

वह पुंस्त्री [**वध**] घात, हत्या; (उवा; कुमा; हे ३, १३३; प्रासू १३९; १५३); स्त्री—°**हा**; (सुख १, ३; स २७)। °**कारी** स्त्री [°**करी**] विद्या-विशेष; (पउम ७, १३७)।

वह पुं [**दे**] १ कन्धे पर का व्रण; २ व्रण, घाव; (दे ७, ३१)।

वह पुं [**वह**] १ वृष-स्कन्ध, बैल का कन्धा; (विपा १, २—पत्र २७)। २ परीवाह, पानी का प्रवाह; (दे १, ५५)।

वह पुं [**व्यथ**] लकुट आदि का प्रहार; (सूअ १, ५, २, १४; उत्त १, १६)।

°**वह** देखो **पह**=पथिन्; (से १, ६१; ३, १४; कुमा)।

वहइअ वि [**दे**] पर्याप्त; (षड् १७७)।

वहग वि [**वधक**] घातक, हिंसक, मार डालने वाला; (उव; स २१३; सुपा ५६४; उप पृ ७०; श्रावक २१२; श्रा २३)।

वहग वि [**व्यथक**] ताड़ना करने वाला; (जं २)।

वहड पुं [**दे**] दमनीय बछड़ा; (दे ७, ३७)।

वहढोल पुं [**दे**] वात्या, वात-समूह; (दे ७, ४२)।

वहण न [**वधन**] वध, घात, हत्या; "अजओ छज्जीवकायवहणम्मि" (सुपा ५२२; धर्मवि १७; मोह १०१; महा; श्रावक १४४; २३७; उप पृ ३५७; सुपा १८४; पउम ४३, ४६)।

वहण न [**वहन**] १ ढोना; (धर्मवि ७२)। २ पोत, जहाज, यानपात्र; (पाअ, उप ५६६; कुम्मा १५)। ३ शकट आदि वाहन; (उत्त २७, २; सुपा १८२)। ४ वि. वहन करने वाला; (से ३, ६; ती ३)।

वहण (शौ) देखो **पगय**=प्रकृत; (प्राकृ ९७)।

वहण (अप) देखो **वसण**=वसन; (भवि)।

वहणया स्त्री [**वहना**] निर्वाह; (णाया १, २—पत्र ९०)।

वहणा स्त्री [**वधना**] वध, घात, हिंसा; (पण्ह १, १—पत्र ५)।

वहण्णु पुं [**व्यधज्ञ**] एक नरक-स्थान; "उव्वेयणए विज्जलविमुहे तह विच्छवी वि(?व)हण्णू य" (देवेन्द्र २८)।

वहय देखो **वहग**=वधक; (सूअ २, ४, ४; पउम २६, ४७; श्रावक २०८; सण)।

वहलीअ देखो **वहलीय**; (इक)।

वहा देखो **वह**=वध।

वहाव सक [**वाहय्**] वहन कराना। कर्म—वहाविज्जइ; (श्रावक २५८ टी)।

वहाविअ वि [**वधित**] मरवाया हुआ; (स २४)।

°**वहाविअ** देखो **पहाविअ**; (से ९, १)।

वहिअ वि [**व्यथित**] पीडित; (पंचा ५, ४४)।

वहिअ वि [**ऊढ**] वहन किया हुआ; (धात्वा १५२)।

वहिअ वि [**वधित**] जिसका वध किया गया हो वह; (श्रावक १७०; पउम ५, १९५; विपा १, ५; उव; स २३; २४)।

वहिअ वि [**दे**] अवलोकित, निरीक्षित; "तेलोक्कवहियमहियपूइए" (उवा)।

वहिइअ देखो **वहइअ**; (षड्)।

वहिचर अक [**व्यभि+चर्**] १ पर-पुरुष या पर-स्त्री से संभोग करना। २ सक. नियम-भंग करना। वकृ—**वहि-**

चरंत; (स ७११)।

वहिचार पुं [**व्यभिचार**] १ पर-स्त्री या पर-पुरुष से संभोग; (स ७११)। २ न्यायशास्त्र-प्रसिद्ध एक हेतु-दोष; (धर्मसं ६३)।

वहिज्जंत देखो **वह**=वध्।

वहिया स्त्री [**दे**] वही, हिसाब लिखने की किताब; (सम्मत्त १४२; सुपा ३८५; ३८६; ३८७; ३६१)।

वहियाली देखो **वाहियाली**; "गुरुउज्जाणतडिट्ठियवहियालिं नेइ तं निवइ" (धर्मवि ४)।

वहिलग पुं [**दे, वहिलक**] ऊँट, बैल आदि पशु; (राज)।

वहिल्ल वि [**दे**] शीघ्र, शीघ्रता-युक्त; गुजराती में 'वहेलो'; (हे ४, ४२२; कुमा; वज्जा १२८)।

वहु पुंस्त्री [**दे**] चिविडा, गन्ध-द्रव्य विशेष; (दे ७, ३१)।

वहु° देखो **वहू**; (हे १, ४; षड्; प्राप्र)।

वहुधारिणी स्त्री [**दे**] नवोढा, दुलहिन; (दे ७, ५०)।

वहुण्णी स्त्री [**दे**] ज्येष्ठ-भार्या, पति के बड़े भाई की वहू; (दे ७, ४१)।

वहुमास पुं [**दे**] रमण-विशेष, क्रीड़ा-विशेष, जिसमें खेलता हुआ पति नवोढा के घर से बाहर नहीं निकलता है; (दे ७, ४६)।

वहुरा स्त्री [**दे**] शिवा, सियार; (दे ७, ४०)।

वहुलिआ (अप) स्त्री [**वधूटिका**] अल्प वय वाली स्त्री; (पिंग)।

वहुव्वा स्त्री [**दे**] छोटी सास; (दे ७, ४०)।

वहुहाडिणी स्त्री [**दे**] एक स्त्री के रहते हुए व्याही जाती दूसरी स्त्री; (दे ७, ५०; षड्)।

वहू स्त्री [**वधू**] वहू, भार्या, नारी; (स्वप्न ४२; पाअ; हे १, ४)।

वहोल पुं [**दे**] छोटा जल-प्रवाह, गुजराती में 'वहेल्लो'; (दे ७, ३७)।

वा सक [**वा**] गति करना, चलना। वाइ; (से ६, ५२; गा ५४३; कुमा)।

वा अक [**वै, म्लै**] सूखना। वाइ; (से ६, ५२; हे ४, १८)।

वा सक [**व्ये**] बुनना। कृ—**वाइम**; "गंथिमपूरिमवेढिमवाइमसंघाइमं छेज्जं" (दसनि २)।

वा अ [**वा**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ विकल्प, अथवा, या; (आचा; कुमा)। २ समुच्चय, और, तथा; (उत ८, १२; सुख ८, १२)। ३ अपि, भी; (कुमा; कप्प; सुख ५, २२)। ४ अवधारण, निश्चय; (ठा ८)। ५ सादृश्य, समानता; (विसे १८६४)। ६ उपमा; "कप्पद्दुमं तणेणेव कायाकवङ्केण कामधेणुं वा" (हि १७; सूअ १, ४, २, १५; सुख २, ६; वव १)। ७ पाद-पूर्ति; (उत्त १८, २८)।

वाअड पुं [**दे**] शुक, तोता; (षड्)।

वाअड देखो **वावड**=व्यापृत; "रइवाअडा रुअंतं पिअंपि पुत्तं सवइ माआ" (गा ४००)।

वाइ वि [**वादिन्**] १ बोलने वाला, वक्ता; (आचा; भग; उव; ठा ४, ४)। २ वाद-कर्ता, शास्त्रार्थ में पूर्वपक्ष का प्रतिपादन करने वाला; (सम १०२; विसे १७२१; कुप्र ४४०; चेइय १२८, सम्मत १४१; श्रा ६)। ३ दार्शनिक, तीर्थिक, इतर धर्म का अनुयायी; (ठा ४, ४)।

वाइ वि [**वाचिन्**] वाचक, अभिधायक, कहने वाला; (विसे ८७४)।

वाइ देखो **वाजि**; (राज)।

वाइअ वि [**वाचिक**] वचन-संबन्धी; (औप; श्रा ३४; पडि)।

वाइअ वि [**वाचित**] १ पाठित, पढ़ाया हुआ; (उत्त २७, १४; विसे २३५८)। २ पढ़ा हुआ; "नामम्मि वाइए तत्थ" (सुपा २७०), "अलाहि किं वाइएण लेहेण" (हे २, १८६)।

वाइअ वि [**वातिक**] १ वात से उत्पन्न, वायु-जन्य (रोग आदि); (भग; णाया १, १—पत्र ५०; तंदु १६)। २ वायु से फूला हुआ, वात-रोग वाला; (विसे २५७६ टी; पव ६१)। ३ उत्कर्ष वाला; "सपरक्कमराउलवाइएण सीसे पलीविए नियए" (उव), "चिंतइ सूरी एसो निवमन्नो वाइउव्व दुट्ठमणो" (धर्मवि ७६)। ४ पुं. नपुंसक का एक भेद; (पुप्फ १२७; धर्म ३)।

वाइअ वि [**वादित**] १ बजाया हुआ; (गा ५५७; कुमा २, ८; ६६; ७०)। २ वन्दित, अभिवादित; "चलणेसु निवडिऊणं वाइआ बंभणा" (स २६०)।

वाइअ न [**वाद्य**] १ बाजा, वादित्र; (कप्प)। २ बाजा बजाने की कला; (सम ८३; औप)।

वाइअ वि [**वात**] बहा हुआ, चला हुआ; "मुचकुंदकुडयसंदियरयगडिभयणवाइयसमीरो" (सुर २, ७६)।

वाइंगण न [**दे**] बैंगन, वृन्ताक, भंटा; (उप ५९७ टी; दे ७, २६)।

वाइंगणी } स्त्री [**दे**] बैंगन का गाछ, वृन्ताकी; (राज;
वाइंगिणी } पराग १७—पत्र ५२७)।

वाइगा (**दे**) देखो **वाइया**; (उप १०३१ टी)।

वाइज्जंत देखो **वाए**=वाचय्।

वाइज्जंत देखो **वाए**=वादय्।

वाइत्त न [**वादित्र**] वाद्य, बाजा; (कुप्र ११०; भवि)।

वाइद्ध वि [**व्याविद्ध**] विपर्यय से उपन्यस्त, उलट-पुलट रखा हुआ; (विसे ८५३)।

वाइद्ध वि [**व्यादिग्ध**] १ उपदिग्ध, उपलिप्त; २ वक्र, टेढ़ा; (भग १६, ४—पत्र ७०४)।

वाइम देखो **वा**=व्ये।

वाइयव्व देखो **वाय**=वादय्।

वाईकरण देखो **वाजीकरण**, (राज)।

वाउ पुं [**वायु**] १ पवन, वात; (कुमा)। २ वायु-शरीर वाला जीव; (अणु; जी २; दं १३)। ३ मुहूर्त-विशेष; (सम ५१)। ४ सौधर्मेन्द्र के अश्व-सैन्य का अधिपति देव; (ठा ५, १—पत्र ३०२)। ५ नक्षत्र-देव विशेष, स्वाति-नक्षत्र का अधिपति देवता; (ठा २, ३—पत्र ७७; सुज्ज १०, १२ टी)। °**आय** पुं [°**काय**] १ प्रचण्ड पवन; (ठा ३, ३—पत्र १४१)। २ वायु शरीर वाला जीव; (भग)। °**काइय** पुं [°**कायिक**] वायु शरीर वाला जीव; (ठा ३, १—पत्र १२३; पि ३५५)। °**काय** देखो °**आय**; (जी ७; पि ३५५)। °**कुमार** पुं [°**कुमार**] १ एक देव-जाति, भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति; (भग)। २ हनूमान का पिता; (पउम १६, २)। °**क्कलिया** स्त्री [°**उत्कलिका**] वायु-विशेष, नीचे बहने वाला वायु; (पराग १—पत्र २६)। °**क्काइय** देखो °**काइय**; (भग)। °**क्काय** देखो °**आय**; (राज)। °**त्तरवडिंसग** पुंन [°**उत्तरावतंसक**] एक देव-विमान; (सम १०)। °**पवेस** पुं [°**प्रवेश**] गवाक्ष, वातायन; (ओघभा ५८)। °**प्पइट्ठाण** वि [°**प्रतिष्ठान**] वायु के आधार से रहने वाला; (भग)। °**भूइ** पुं [°**भूति**] भगवान् महावीर का एक गणधर—मुख्य शिष्य; (कप्प)।

वाउ पुं [**दे**] इक्षु, ऊख; (दे ७, ५३)।

°**वाउड** वि [**प्रावृत**] १ आच्छादित, ढका हुआ; (भग २, १; पव ६१)। २ न, कपड़ा, वस्त्र, (ठा ५, १—पत्र २९६)।

वाउत्त पुं [**दे**] १ विट; २ जार, उपपति; (दे ७, ८८)।

वाउप्पइया स्त्री [**दे. वातोत्पतिका**] भुज-परिसर्प की एक जाति, हाथ से चलने वाले जन्तु की एक जाति; "घाउलसरड-जाहगमुगुंसखाडहिलवाउप्पि(?प्पइ)यघीरोलियसिरीसिवगणे य" (पराह १, १—पत्र ८)।

वाउब्भाम पुं [**वातोद्भ्राम**] अनवस्थित पवन; "वाउ-ज्भा(?ब्भा)मे वाउक्कलिया" (परा १—पत्र २६)।

वाउय वि [**व्यापृत**] किसी कार्य में लगा हुआ; (णाया १, ८—पत्र १४६; औप)।

वाउरा स्त्री [**वागुरा**] मृग-बन्धन, पशु फँसाने का जाल, फन्दा; (पउम ३३, ६७; हेका ३१; गा ६५७)। देखो **वग्गुरा**।

वाउरिय वि [**वागुरिक**] जाल में फँसाने का काम करने वाला, व्याध; (पराह १, १; विपा १, ५—पत्र ६४)।

वाउल वि [**व्याकुल**] १ घबड़ाया हुआ; (उव; उप पृ २२०; कप्प ३४; हे २, ६६)। २ पुं, क्षोभ; (पराह १, ३—पत्र ४४) °**हूअ** वि [°**भूत**] व्याकुल बना हुआ; (उप २२० टी)।

वाउल वि [**वातूल**] १ वात-रोगी, उन्मत्त; २ पुं, वात-समूह; (हे १, १२१; प्राकृ ३०)।

वाउलग्ग न [**दे**] सेवा, भक्ति; "निच्चं चिय वाउलग्गं कुणंति" (राज)।

वाउलणा स्त्री [**व्याकुलना**] व्याकुल करना; (वव ४)।

वाउलिअ वि [**व्याकुलित**] १ व्याकुल बना हुआ; (सण)। २ विलोलित, क्षोभ-प्राप्त; (पराह १, ३—पत्र ४५)।

वाउलिआ स्त्री [**दे**] छोटी खाई; (गा ६२६)।

वाउल्ल देखो **वाउल**=व्याकुल; (हे २, ६६; षड्)।

वाउल्ल वि [**दे. वातूल**] वाचाट, प्रलाप-शील, बकवादी; (दे ७, ५६; पात्र; षड्)।

वाउल्लअ पुंन [**दे**] पूतला, गुजराती में 'बावलुं'; "आ-लिहिअभित्तिवाउल्लओ व्व ण परम्मुहं ठाइ" (गा २१७), "आलिहियभित्तिवाउल्लयं व न परम्मुहं ठाइ" (वज्जा १४)।

वाउल्लआ } स्त्री [**दे**] देखो **वाउल्लया, वाउल्ली**;
वाउल्ली } "आलिहिअभित्तिवाउल्लअ व्व ण संमुहं ठाइ" (गा २१७ अ; दे ६, ६२)।

वाऊल देखो **वाउल**=वातूल; "अभिवायणवाऊलो हसिज्जए

नयरलोएण" (धर्मवि १११; प्राकृ ३०)।

वाऊल देखो **वाउल**=व्याकुल; (प्राकृ ३०)।

वाए सक [**वादय्**] बजाना। वाएइ; (महा)। वकृ—**वाएंत**; (महा)। कवकृ—**वाइज्जंत**; (कुप्र १६)। हेकृ—**वाइउं**; (महा)।

वाए सक [**वाचय्**] १ पढ़ाना। २ पढ़ना। वाएइ, वाएंति; (भग; कप्प)। कवकृ—**वाइज्जंत**; (सुपा ३३८; कुप्र १६)।

वाएरिअ वि [**वातेरित**] पवन-प्रेरित; (गा १७६)।

वाएसरी स्त्री [**वागीश्वरी**] सरस्वती देवी; "वाएसरी पुत्थयवग्गहत्था" (पडि; सम्मत्त २१५)।

वाओलि } स्त्री [**वातालि, °ली**] पवन-समूह; "किं अय-
वाओली } लो चालिज्जइ पयंडवाउ(?आ)लिसएहिंवि" (धर्मवि २७; गउड; णाया १, १—पत्र ६३)।

वाक } देखो **वक्क**=वल्क; (औप, विसे ६७; विपा १,
वाग } ६—पत्र ६६)।

वागड पुं [**वागड**] गुजरात का एक प्रान्त, जो आजकल भी 'वागड' नाम से ही प्रसिद्ध है, (कुप्र ६)।

वागर सक [**व्या + कृ**] प्रतिपादन करना, कहना। वागरेइ, वागरेज्जा; (कप्प; पि ५०६)। वकृ—**वागरमाण, वागरेमाण**; (सुर ७, ४१; सुपा ५११; औप)। संकृ—**वागरित्ता**; (सम ७२)। हेकृ—**वागरिउं, वागरित्तए**; (कुप्र २३८; उवा)।

वागरण न [**व्याकरण**] १ कथन, प्रतिपादन, उपदेश; (विसे ५५०; कुप्र २; पण्ह १, १ टी)। २ निर्वचन, उत्तर; (औप; उवा; कप्प)। ३ शब्दशास्त्र; (धर्मवि ३८; मोह २)।

वागरणि वि [**व्याकरणिन्**] प्रतिपादन करने वाला; (सम्म २)।

वागरणी स्त्री [**व्याकरणी**] भाषा का एक भेद, प्रश्न के उत्तर की भाषा, उत्तर रूप वचन; (ठा ४, १—पत्र १८३)।

वागरिय वि [**व्याकृत**] उक्त, कथित; (उवा; अंत ६; उप १४२ टी; पव ७३ टी)। देखो **वायड**=व्याकृत।

वागल न [**वल्कल**] वृक्ष की छाल; (णाया १, १६—पत्र २१३)।

वागल वि [**वाल्कल**] वृक्ष की त्वचा से बना हुआ; "वागलवत्थनियत्थे" (भग ११, ६—पत्र ५१६)।

वागली स्त्री [**दे**] वल्ली-विशेष; (पण्ण १—पत्र ३३)।

वागिल्ल वि [**वाग्मिन्**] बहु-भाषी, वाचाल; (वव ७)।

वागुर पुं [**वागुरा**] मृग-बन्धन, फन्दा; "रे रे रएह वागुरे" (मोह ७६)।

वागुरि } वि [**वागुरिन्, °रिक**] देखो **वाउरिय**; गुज-
वागुरिय } राती में 'वाघरी'; "ससयपसयरोहिए य साहिंति वागुरा(?री)णं" (पण्ह १, २—पत्र २६; सूअ २, २, ३६; विपा १, ८—पत्र ८३)।

वाघाइअ वि [**व्याघातिक**] व्याघात से उत्पन्न; (जं ७—पत्र ५३१)।

वाघाइम वि [**व्याघातिम**] व्याघात से होने वाला; (सुज्ज १८—पत्र २६५)। २ न. मरण-विशेष—सिंह, दावानल आदि से होने वाली मौत; (औप)।

वाघाय पुं [**व्याघात**] १ स्खलना; (सुज्ज १८)। २ विनाश; (उव ६७६)। ३ प्रतिबन्ध, रुकावट; (भग; ओघभा १८)। ४ सिंह, दावानल आदि से अभिभव; (औप)।

वाघारिय वि [**व्याघारित**] प्रलम्ब, लम्बा; (पंचा १८, १८; पव ६७)।

वाघुण्णिय वि [**व्याघूर्णित**] दोलायमान, डोलता; (णाया १, १—पत्र ३१)।

वाघेल पुं [**दे**] एक क्षत्रिय-वंश; (ती २६)।

वाच देखो **वाय**=वाचय्। कवकृ—**वाचीअमाण**; (नाट—मालवि ६१)। संकृ—**वाचिऊण**; (हम्मीर १७)।

वाचय देखो **वायग**=वाचक; (द्रव्य ४६)।

वाचिय देखो **वाइअ**=वाचित; (स ६२१)।

वाज देखो **वाय**=व्याज; (कुप्र २०१)।

वाजि पुं [**वाजिन्**] अश्व, घोड़ा, (विपा १, ७)।

वाजीकरण न [**वाजीकरण**] १ वीर्य-वर्धक औषध-विशेष; २ उसका प्रतिपादक शास्त्र, आयुर्वेद का एक अंग; (विपा १, ७—पत्र ७५)।

वाड पुं [**वाट**] १ बाड, कंटक आदि से की जाती गृहादि-परिधि; (उत्त २२, १४; माल १६५)। २ बाड़ा, बाड वाली जगह, वृति वाला स्थान, "निव्वाणमहावाडं साहत्थिं संपावेइ" (उवा; गा २२७; दे ७, ५३ टि; गउड), "अंते सो साहूणं गोवाडनिरोहणं करेऊणं" (विचार ५०६)। ३ वृति आदि से परिवेष्टित गृह-समूह, रथ्या, मुहल्ला; (उत्त ३०, १८), "अहो गणिआवाडस्स सस्सिरीअआ" (चारु ७६)।

वाडंतरा स्त्री [**दे**] कुटीर, झोंपड़ा; (दे ७, ५८)।

वाडग देखो **वाड**; (पिंड ३३४; विपा १, ४—पत्र ५५; उप पृ २८६) ।
°**वाडण** देखो **पाडण**; "परदोहवट्टवाडणउद्दंदग्गहखत्तखणणपमुहाइं" (कुप्र ११३) ।
वाडव पुं [**वाडव**] वडवानल, समुद्र-स्थित अग्नि; (सण) ।
वाडहाणग पुंन [**वाटधानक**] १ एक छोटा गाँव; २ वि. उस गाँव का निवासी; "ताहे तेण वाडहाणगा हरिएसा धिज्जाइया कया" (सुख ६, १; महा) ।
वाडि° देखो **वाडी**=वाटी; (गा ८; णाया १, ७—पत्र ११६) ।
वाडिआ स्त्री [**वाटिका**] बगीचा, उद्यान; "सणवाडिआ" (गा ६; चारु ५६; दे ७, ३५; रंभा) ।
वाडिम पुं [**दे**] पशु-विशेष, गण्डक, गेंडा; (दे ७, ५७) ।
वाडिल्ल पुं [**दे**] कृमि, कीट; (दे ७, ५६) ।
वाडी स्त्री [**दे**] वृति, वाड; "घरबारे कारिया कंटएहिं वाडी" (कुप्र २६; दे ७, ४३; ५८; षड्) ।
वाडी स्त्री [**वाटी**] बगीचा, उद्यान; (धर्मसं ४१) ।
वाढि, **वाढिअ** } पुं [**दे**] वणिक्-सहाय, वैश्य-मित्र; (दे ७, ५३)।
वाण सक [**वि+नम्**] विशेष नमना—नत होना । वाणइ(?); (धात्वा १५२) ।
वाण वि [**वान**] वन में उत्पन्न, वन-संबन्धी, (औप; सम १०३) । °**पत्थ**, °**प्पत्थ** पुं [°**प्रस्थ**] वन में रहने वाला तापस, तृतीय आश्रम में स्थित पुरुष; (औप; उप ३७७) । °**मंत**, °**मंतर**, °**वंतर** पुंस्त्री [°**व्यन्तर**] देवों की एक जाति; (भग; ठा २, २; सुर १, १३७; औप; जी २४; मह ; पि २५१), स्त्री—°**री**; (पण्ण १७—पत्र ४६६; जीव २) । °**वासिआ** स्त्री [°**वासिका**] छन्द-विशेष; (अजि ३३) ।
°**वाण** देखो **पाण**=पान । °**वत्त** न [°**पात्र**] पीने का प्याला; (से १, १८) ।
वाणय पुं [**दे**] वलयकार, कंकण बनाने वाला शिल्पी; (दे ७, ५४) ।
वाणर पुंन [**वानर**] १ बन्दर, कपि, मर्कट; (पण्ह १, १; पाअ) । २ विद्याधर मनुष्यों का एक वंश; ३ वानर-वंश में उत्पन्न मनुष्य; (पउम ६, १) । °**उरी** स्त्री [°**पुरी**] किष्किन्धा-नामक एक भारतीय प्राचीन नगरी; (से १४, ५०) । °**केउ** पुं [°**केतु**] वानरवंश का कोई भी राजा; (पउम ८, २३५) । °**दीव** पुं [°**द्वीप**] एक द्वीप; (पउम ६,३४) । °**द्धय** पुं [°**ध्वज**] हनूमान्; (पउम ५३, ४३) । °**वइ** पुं [°**पति**] सुग्रीव, रामचन्द्र का एक सेनापति; (से २, ४१; ३, ५२) । देखो **वानर** ।
वाणरिंद पुं [**वानरेन्द्र**] वानर-वंशीय पुरुषों का राजा, वाली; (पउम ६, ४०) ।
वाणवाल पुं [**दे**] इन्द्र, पुरन्दर; (दे ७, ६०) ।
वाणहा देखो **पाणहा**, **वाहणा**=उपानह्; (पि १४१) ।
वाणा देखो **वायणा**=वाचना । °**यरिअ** पुं [°**चार्य**] अध्यापन करने वाला साधु, शिक्षक; "एसो च्चिय ता कीरउ वाणायरिओ, तओ गुरू भणइ" (उप १४२ टी) ।
वाणारसी स्त्री [**वाराणसी**] भारत वर्ष की एक प्राचीन नगरी, जो आज कल 'बनारस' नाम से प्रसिद्ध है; (हे २, ११६; णाया १, ४; उवा; इक; उव; धर्मवि ५; पि ३८५)।
वाणि- देखो **वणि**=वणिज्; (भवि) । °**उत्त**, °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] वैश्य-कुमार, बनिया का लड़का; (कुप्र ३६; ८८; २२१; ४०४; सिरि ३८४; धर्मवि १०४) ।
वाणि स्त्री [**वाणि**] देखो **वाणी**; (संति ४) ।
वाणिअ पुं [**वाणिज**] १ बनिया, व्यापारी, बैश्य; (श्रा १२; सुर १, २४८; १३, २६; नाट—मृच्छ ५५; वसु; सिरि ४०) । २ एक गाँव का नाम; (उवा, अंत; विपा १, २) ।
वाणिअ (अप) देखो **वाणिज्ज**; (सण) ।
°**वाणिअ** देखो **पाणिअ**=पानीय; (गा ६८२; सिरि ४०; सुपा २२६) ।
वाणिअय पुं [**वाणिजक**] बनिया, वैश्य, व्यापारी; (पाअ; काप्र ८६३; गा ६५१; उव; सुपा २२६; २७५; प्रासू १८१)।
वाणिज्ज न [**वाणिज्य**] १ व्यापार, बेपार; (सुपा ३४३; पडि) । २ एक जैन मुनि-कुल का नाम, (कप्प) ।
वाणिज्जा स्त्री [**वणिज्या**] व्यापार; "अहिच्छत्तं नगरं वाणिज्जाए गमित्तए" (णाया १, १५) ।
वाणिज्जिय वि [**वाणिजिक**] वाणिज्य-कर्ता, व्यापारी, (भवि) ।
वाणी स्त्री [**वाणी**] १ वचन, वाक्य; (पाअ) । २ वाग्देवता, सरस्वती देवी; (कुमा; संति ४) । ३ छन्द-विशेष; (पिंग) ।
°**वाणीअ** देखो **पाणीअ**; (काप्र ६२५) ।
वाणीर पुं [**दे**] जम्बू वृक्ष, जामू का पेड, (दे ७, ५६)।
वाणीर पुं [**वानीर**] वेतस-वृक्ष; (पाअ; गा ५६६)।

वाणुंजुअ पुं [**दे**] वणिक्, वैश्य; "एसो हला नवल्लो दीसइ वाणुंजुओ कोवि" (उप ७२८ टी) ।
वात देखो **वाय**=वात; (ठा २, ४—पत्र ८६) ।
वातिक } देखो **वाइअ**=वातिक; (पण्ह १, ३—पत्र ५४;
वातिय } ओघ ७२२) ।
वाद देखो **वाय**=वाद, (राज) ।
वादि देखो **वाइ**=वादिन्; (उवा) ।
वानर देखो **वाणर**; (विपा १, २—पत्र ३६; विसे ८६३; सुपा ६१८), "पुव्वभववानराणि व ताइं विलसंति सिच्छाए" (धर्मवि १३१) ।
वापंफ देखो **वावंफ**। वापंफइ; (षड्) ।
वापिद (शौ) देखो **वावड**=व्यापृत; (नाट—वेणी ६७)
वावाहा स्त्री [**व्याबाधा**] विशेष पीड़ा; (णाया १, ४; चेइय ३५५) ।
वाम सक [**वमय्**] वमन कराना । वामेइ, वामेज्ज (भग; पिंड ६४६) । संकृ—**वामेत्ता**; (भग; उवा) ।
वाम वि [**दे**] १ मृत; (दे ७, ४७) । २ आक्रान्त; (षड्) ।
वाम वि [**वाम**] १ सव्य, बाँया; (ठा ४, २—पत्र २१६; कुमा; सुर ४, ५; गउड) । २ प्रतिकूल, अननुकूल; (पाअ; पण्ह १, २—पत्र २८; गउड ८८०; ६६४; कुमा) । ३ सुन्दर, मनोहर; "वामलोअणा" (पाअ) । ४ न. सव्य पक्ष; "वामत्थो" (पउम ५५, ३१) । ५ बाँया शरीर; (गा ३०३) । °**लोअणा** स्त्री [°**लोचना**] सुन्दर नेत्र वाली स्त्री, रमणी; (पाअ) । °**लोकवादि**, °**लोगवादि** पुं [°**लोकवादिन्**] दार्शनिक-विशेष, जगत् को असद् मानने वाले मत का प्रतिपादक दार्शनिक; (पण्ह १, २—पत्र २८) । °**वट्ट** वि [°**वर्त**] प्रतिकूल आचरण करने वाला; (बृह १) । °**ावत्त** वि [°**ावर्त**] वही अर्थ; (ठा ४, २—पत्र २१६) ।
वाम पुं [**व्याम**] परिमाण-विशेष, नीचे फैलाए हुए दोनों हाथों के बीच का अन्तराल; (पव २१२; औप) ।
वामण पुंन [**वामन**] १ संस्थान-विशेष, शरीर का एक तरह का आकार, जिसमें हाथ, पैर आदि अवयव छोटे हो और छाती, पेट आदि पूर्ण या उन्नत हो वह शरीर; (ठा ६—पत्र ३५७; सम १४६; कम्म १, ४०) । २ वि. उक्त आकार के शरीर वाला, ह्रस्व, खर्व; (पव ११०; से २, ६; पाअ); स्त्री—°**णी**; (औप; णाया १, १—पत्र ३७) । ३ पुं. श्रीकृष्ण का एक अवतार; (से २, ६) । ४ देव-विशेष, एक यक्ष-देवता; (सिरि ६६७) । ५ न. कर्म-विशेष, जिसके उदय से वामन शरीर की प्राप्ति हो वह कर्म; (कम्म १, ४०) । °**थली** स्त्री [°**स्थली**] देश-विशेष; (ती १५) ।
वामणिअ वि [**दे**] नष्ट वस्तु—पलायित—को फिर से ग्रहण करने वाला; (दे ७, ५६) ।
वामणिआ स्त्री [**दे**] दीर्घ काष्ठ की बाड; (दे ७, ५८) ।
वामद्दण न [**व्यामर्दन**] एक तरह का व्यायाम, हाथ आदि अंगों का एक दूसरे से मोड़ना; (णाया १, १—पत्र १६; कप्प; औप) ।
वामरि पुं [**दे**] सिंह, मृगेन्द्र; (दे ७, ५४) ।
वामलूर पुं [**वामलूर**] वल्मीक; (पाअ; गउड) ।
वामा स्त्री [**वामा**] भगवान् पार्श्वनाथजी की माता का नाम; (सम १५१) ।
वामिस्स देखो **वामीस**; (पउम ६३, ३६) ।
वामी स्त्री [**दे**] स्त्री, महिला; (दे ७, ५३) ।
वामीस वि [**व्यामिश्र**] मिश्रित, युक्त, सहित; (पउम ७२, ४; तंदु ४४) ।
वामीसिय वि [**व्यामिश्रित**] ऊपर देखो; (भवि) ।
वामुत्तय वि [**व्यामुक्तक**] १ परिहित, पहना हुआ; २ प्रलम्बित, लटका हुआ; (औप) ।
वामूढ वि [**व्यामूढ**] विमूढ, भ्रान्त; (सुर ६, १२६; १२, १४३; सुपा ७०) ।
वामोह पुं [**व्यामोह**] मूढता, भ्रान्ति; (उप पृ ३३६; सुपा ६५; भवि) ।
वामोहण वि [**व्यामोहन**] भ्रान्ति-जनक; (भवि) ।
वाय सक [**वाचय्**] १ पढना । २ पढ़ाना । वाएइ, वाएसि; (कुप्र १६६), "सावक्का सुयजणणी पासत्था गहिय वायए लेहं" (धर्मवि ४७), "सुत्तं वाए उवज्झाओ" (संबोध २५) । वकृ—**वायंत**; (सुपा २२३) । संकृ—**वाइऊण**; (कुप्र १६६) । कृ—**वायणिज्ज**; (ठा ३, ४) ।
वाय सक [**वा**] बहना, गति करना, चलना । वायंति; (भग ५, २) । वकृ—**वायंत**; (पिंड ८२; सुर ३, ४०; सुपा ४५०; दस ५, १, ८) ।
वाय अक [**वै, म्लै**] सूखना । वाअइ; (संक्षि ३६; प्राप्र)। वकृ—**वायंत**; (गउड ११६५) ।
वाय सक [**वादय्**] बजाना । वकृ—**वायंत, वायमाण**; (सुपा २६३; ४३२) । कृ—**वाइयव्व**; (स ३१४) ।
वाय वि [**वान**] शुष्क, सूखा, म्लान; (गउड; से ५, ५७; पाअ; प्राप्र; कुमा) ।

वाय पुं [**दे**] १ वनस्पति-विशेष; (सूत्र २, ३, १६) । २ न. गन्ध; (दे ७, ५३) ।

वाय पुं [**व्रात**] समूह, संघ, (श्रा २३; भवि) ।

वाय वि [**व्यातृ**] संवरण करने वाला; (श्रा २३) ।

वाय वि [**व्यागस्**] प्रकृष्ट अपराधी; (श्रा २३) ।

वाय पुं [**वातृ**] १ पवन, वायु; २ कपड़ा बुनने वाला, जुलाहा, (श्रा २३) ।

वाय वि [**व्याप**] प्रकृष्ट विस्तार वाला; (श्रा २३) ।

वाय पुं [**वाक**] ऋग्वेद आदि वाक्य; (श्रा २३) ।

वाय पुं [**व्याय**] १ गति, चाल; २ पवन, वायु; ३ पक्षी का आगमन; ४ विशिष्ट लाभ; (श्रा २३) ।

वाय पुं [**व्याच**] वंचन, ठगाई; (श्रा २३) ।

वाय पुं [**वाज**] १ पक्ष, पँख; २ मुनि, ऋषि; ३ शब्द, आवाज; ४ वेग; ५ न. घृत, घी; ६ पानी, जल; ७ यज्ञ का धान्य; (श्रा २३) ।

वाय न [**वाच**] शुक-समूह; (श्रा २३) ।

वाय वि [**वाज्**] १ फेंकने वाला; २ नाशक; (श्रा २३) ।

वाय पुं [**व्याज**] १ कपट, माया; २ बहाना, छल; ३ विशिष्ट गति; (श्रा २३) ।

वाय देखो **वाग**=वल्क; (विपा १, ६—पत्र ६६) ।

वाय पुं [**व्राय**] विवाह, शादी; (श्रा २३) ।

वाय पुं [**व्यात**] विशिष्ट गमन; (श्रा २३) ।

वाय पुं [**वाप**] १ वपन, बोना, २ क्षेत्र, खेत; (श्रा २३) ।

वाय पुं [**वाय**] १ गमन, गति; २ सूँघना; ३ जानना, ज्ञान; ४ इच्छा; ५ खाना, भक्षण; ६ परिणयन, विवाह; (श्रा २३) ।

वाय वि [**व्याद**] विशेष ग्रहण करने वाला; (श्रा २३) ।

वाय वि [**वाच्**] वक्ता, बोलने वाला; (श्रा २३) ।

वाय पुं [**वात**] १ पवन, वायु; (भग, णाया १, ११; जी ७; कुमा) । २ उत्कर्ष, (उव ५५ टि) । ३ पुंन. एक देव-विमान; (सम १०) । °**कंत** पुंन [°**कान्त**] एक देव-विमान; (सम १०) । °**कम्म** न [°**कर्मन्**] अपान वायु का सरना, पर्दन; (ओघ ६२२ टी) । °**कूड** पुंन [°**कूट**] एक देव-विमान; (सम १०) । °**खंध** पु [°**स्कन्ध**] घनवात आदि वायु; (ठा २, ४—पत्र ८६) । °**ज्झय** पुंन [°**ध्वज**] एक देव-विमान; (सम १०) । °**णिसग्ग** पुं [°**निसर्ग**] अपान वायु का सरना, पर्दन, (पडि) । °**पलिक्खोभ** पुं [°**परिक्षोभ**] कृष्णराजि, काले पुद्गलों की रेखा; (भग ६, ५—पत्र २७१) । °**प्पभ** पुंन [°**प्रभ**] देव-विमान विशेष; (सम १०) । °**फलिह** पुं [°**परिघ**] वही अर्थ; (भग ६, ५) । °**रुह** पुं [°**रुह**] वनस्पति-विशेष; (पण्ण १—पत्र ३६) । °**लेस्स** पुंन [°**लेश्य**] एक देव-विमान; (सम १०) । °**वण्ण** पुंन [°**वर्ण**] एक देव-विमान; (सम १०) । °**सिंग** पुंन [°**शृङ्ग**] एक देव-विमान; (सम १०) । °**सिट्ठ** पुंन [°**सृष्ट**] एक देव-विमान; (सम १०) । °**ावत्त** पुंन [°**ावर्त**] एक देव-विमान; (सम १०) ।

वाय पुं [**वाद**] १ तत्त्व-विचार, शास्त्रार्थ; (ओघभा १७; धर्मवि ८०; प्रासू ६३) । २ उक्ति, वचन; (औप) । ३ नाम, आख्या; "वल्लहवाएण अलं मम" (गा १२३) । ४ बजाना; "मद्दलवायचउप्फललोय" (सिरि १५७) । ५ स्थैर्य, स्थिरता; (श्रा २३) । °**त्थ** पुं [°**ार्थ**] तत्त्व-चर्चा; "तेहि समं कुणइ वायत्थं" (पउम ४१, ५७) । °**त्थि** वि [°**ार्थिन्**] शास्त्रार्थ की चाह वाला; (पउम १०५, २६) ।

°**वाय** पुं [**पाक**] १ रसोई; २ बालक; ३ दैत्य, दानव; (श्रा २३) । देखो **पाग** ।

°**वाय** पु [**पात**] १ पतन; (स ६५७; कुमा) । २ गमन; ३ उत्पतन, कूदना; (से १, ५५) । ४ पक्षी; ५ न. पक्षि-समूह; (श्रा २३) ।

°**वाय** वि [**पातृ**] १ रक्षा करने वाला; २ पीने वाला; ३ सूखने वाला; (श्रा २३) ।

°**वाय** देखो **वाय**, (श्रा २३) ।

°**वाय** पुं [**पाद**] १ पर्यन्त; २ पर्वत, ३ पूजा; ४ मूल; ५ किरण; ६ पैर; ७ चौथा भाग; (श्रा २३) । देखो **पाय**=पाद ।

°**वाय** देखो **पाव**=पाप; (श्रा २३) ।

°**वाय** पुं [**पाय**] १ रक्षा, रक्षण; २ वि. पीने वाला; (श्रा २३) ।

°**वाय** देखो **अवाय**=अपाय; "बहुवायम्मि वि देहे विसुज्झमाणस्स वर मरणं" (उव) ।

वायउत्त पुं [**दे**] १ विट, भड़ुआ; २ जार, उपपति; (दे ७, ८८) ।

वायंगण न [**दे**] बैंगन, वृन्ताक, भंटा; (श्रा २०; संबोध ४४; पव ४) ।

वायंतिय वि [**वागन्तिक**] वचन-मात्र में नियमित; (राज) ।

वायग पुं [**वाचक**] १ अभिधायक, अभिधा-वृत्ति से अर्थ का प्रकाशक शब्द; (सम्मत्त १४३)। २ उपाध्याय, सूत्र-पाठक मुनि; (गण ५; संबोध २५; सार्ध १४७)। ३ पूर्व-ग्रन्थों का जानकार मुनि; (पराण १—पत्र ४; सम्मत्त १४१; पंचा ६, ४५)। ४ एक प्राचीन जैन महर्षि और ग्रन्थकार, तत्त्वार्थ सूत्र का कर्ता श्री उमास्वातिजी; (पंचा ६, ४५)। ५ वि. कथक, कहने वाला; ६ पढाने वाला; (गण ५)।

वायग वि [**वादक**] बजाने वाला; (कुप्र ६; महा)।

वायग पुं [**वायक**] तन्तुवाय, जुलाहा; (दे ६, ५६)।

वायड पुं [**दे**] एक श्रेष्ठि-वंश, (कुप्र १४३)।

वायड वि [**व्याकृत**] स्पष्ट, प्रकट अर्थ वाला; (दसनि ७)। देखो **वागरिय**।

वायडघड पुं [**दे**] वाद्य-विशेष, दर्दुर-नामक बाजा; (दे ७, ६१)।

वायडाग पुं [**दे**] सर्प की एक जाति; (पराण १—पत्र ५१)।

वायण न [**वाचन**] देखो **वायणा**; (नाट—रत्ना १०)।

वायण न [**वादन**] १ बजाना; (सुपा १६; २६३; कुप्र ४१; महा; कप्पू)। २ वि. बजाने वाला; (दे ७, ६१ टी)।

वायण न [**दे**] भोज्योपायन, खाद्य पदार्थ का बाँटा जाता उपहार; (दे ७, ५७; पाअ)।

वायणया } **वायणा** } स्त्री [**वाचना**] १ पठन, गुरु-समीपे अध्ययन; (उत्त २६, १)। २ अध्यापन, पढ़ाना; (सम १०६; उव)। ३ व्याख्यान, (पव ६४)। ४ सूत्र-पाठ; (कप्प)।

वायणिअ वि [**वाचनिक**] वचन-संबन्धी; (नाट—विक्र ३५)।

वायय देखो **वायग**=वायक; (दे ५, २८)।

वायरण देखो **वागरण**; (हे १, २६८; कुमा; भवि; षड्)।

वायव वि [**वायव**] वायु रोग वाला, वात-रोगी; (विपा १, १—पत्र ५)।

°**वायव** देखो **पायव**, (से ७, ६७)।

वायव्व पुं [**वायव्य**] १ वायुदेवता-संबन्धी; "वारुण-वायव्वाइं पहवियाइं कमेण सत्थाइं" (सुर ८, ४५; महा)। २ न. गौ के खुर से उड़ी हुई रज; "वायव्वपहाणपहाया" (कुमा)।

वायव्वा स्त्री [**वायव्या**] पश्चिम और उत्तर के बीच की दिशा, वायव्य कोण; (ठा १०—पत्र ४७८; सुपा ६८; २६७)।

वायस पुं [**वायस**] १ काक, कौआ; (उवा; प्रासू १६६; हे ४, ३५२)। २ कायोत्सर्ग का एक दोष, कायोत्सर्ग में कौए की तरह दृष्टि को इधर-उधर घुमाना; (पव ५)। °**परिमंडल** न [°**परिमण्डल**] विद्या-विशेष, कौए के स्वर और स्थान आदि से शुभाशुभ फल बतलाने वाली विद्या; (सूअ २, २, २७)।

वाया स्त्री [**वाच्**] १ वचन, वाणी; (पाअ; प्रासू ६; पडि; स ४६२; से १, ३७; गा ३२; ४०६)। २ वाणी की अधिष्ठायिका देवी, सरस्वती; (श्रा २३)। ३ व्याकरण-शास्त्र; (गउड ८०२)। देखो **वइ**=वाच्।

वायाड पुं [**दे. वाचाट**] शुक, तोता; (दे ७, ५६)।

वायाड वि [**वाचाट**] वाचाल, बकवादी; (सुपा ३६०; चेइय ११७; संक्षि २)।

वायाम पुं [**व्यायाम**] कसरत, शारीरिक श्रम; (ठा १—पत्र १६; णाया १, १—पत्र १६; कप्प; औप; स्वप्न ३६)।

वायाम सक [**व्यायामय्**] कसरत करना, शारीरिक श्रम करना। वकृ—"सुट्ठु वि **वायामेंतो** कायं न करेइ किंचि गुणं" (उव)।

वायायण पुंन [**वातायन**] १ गवाक्ष; (पउम ३६, ६१; स २४१; पाअ; महा)। २ पुं राम का एक सैनिक; (पउम ६७, १०)।

वायार पुं [**दे**] शिशिर-वात, गुजराती में 'वायरो'; (दे ७, ५६)।

वायाल वि [**वाचाल**] मुखर, बकवादी, (श्रा १२; पाअ; सुपा ११३)।

°**वायाल** देखो **पायाल**; (से ५, ३७)।

वायाविअ वि [**वादित**] बजवाया हुआ; (स ५२७; कुप्र १३६)।

वायु देखो **वाउ**=वायु; (सुज्ज १०, १२; कुमा, सम १६)।

वार सक [**वारय्**] रोकना, निषेध करना। वारेइ; (उव; महा)। वकृ—**वारंत**; (सुपा १८३)। कवकृ—**वारिज्जंत**; (काप्र १६१; महा)। हेकृ—**वारेउं**; (सूअ १, ३, २, ७)। कृ—**वारियव्व**, **वारेयव्व**; (सुपा ५५२; २७२)।

वार पुं [**दे. वार**] चषक, पान-पात्र; (दे ७, ५४)।

वार पुं [**वार**] १ समूह, यूथ; (सुपा २१४; सुर १४, २४;

सार्थ ४६; कुमा; सम्मत्त १७५)। २ अवसर, वेला, दफा; (उप ६२८, सुपा ३६०; भवि)। ३ सूर्य आदि ग्रह से अधिकृत दिन, जैसे रविवार, सोमवार आदि, (गा २६१)। ४ चौथी नरक का एक नरक-स्थान, (ठा ६—पत्र ३६५)। ५ वारी, परिपाटी; (उप ६४८ टी)। ६ कुम्भ, घड़ा; (दस ५, १, ४५)। ७ वृक्ष-विशेष; ८ न. फल-विशेष; (पराग १७—पत्र ५३१)। °जुवइ स्त्री [°युवति] वारांगना, वेश्या, (कुमा)। °जोव्वणी स्त्री [°यौवना] वही अर्थ; (प्राकृ १४)। °तरुणी स्त्री [°तरुणी] वही; (सण)। °वहू स्त्री [°वधू] वही अर्थ; (कुप्र ४४३)। °विलया स्त्री [°वनिता] वही पूर्वोक्त अर्थ; (कुमा; सुपा ७८; २००)। °विलासिणी स्त्री [°विलासिनी] वही; (कुमा; सुपा २००)। °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] वही अर्थ; (सुपा ७६)।

वार न [**द्वार**] दरवाजा; (प्राकृ २६; कुमा; गा ८८०)। °**वई** स्त्री [°**वती**] द्वारका नगरी; (कुप्र ६३)। °**वाल** पुं [°**पाल**] दरवान, प्रतीहार; (कुमा)।

वारंत देखो **वार**=वारय्।

वारंवार न [**वारंवार**] फिर फिर; (से ६, ३२; गा २६४)।

वारग पुं [**वारक**] १ वारी, क्रम; (उप ६४८ टी)। २ छोटा घड़ा, लघु कलश; (पिंड २७८)। ३ वि. निवारक, निषेधक; (कुप्र २६; धर्मवि १३२)।

वारडिय न [**दे**] रक्त वस्त्र, लाल कपड़ा; (गच्छ २, ४६)।

वारड्ड वि [**दे**] अभिपीडित; (षड्)।

वारण न [**वारण**] १ निषेध, अटकायत, निवारण; (कुमा; ओघ ४४८)। २ छत्र, छाता; "वारणयचामरेहिं नज्जंति फुडं महासुहडा" (सिरि १०२३)। ३ वि. रोकने वाला, निवारक, (कुप्र ३१२)। ४ पुं. हाथी; (पाअ; कुमा; कुप्र ३१२)। ५ छन्द का एक भेद, (पिंग)।

वारण देखो **वागरण**, (हे १, २६८; कुमा; षड्)।

वारणा स्त्री [**वारणा**] निवारण, अटकायत; (बृह १)।

वारत्त पुं [**वारत्त**] १ एक अन्तकृद् मुनि; (अंत १८)। २ एक ऋषि; (उव)। ३ एक अमात्य; ४ न. एक नगर; (धम्म ६ टी)।

वारवाण पुं [**वारवाण**] कञ्चुक, चोली; (पाअ)।

वारय देखो **वारग**; (रंभा, गाया १, १६—पत्र १६६; उप पृ ३४२; उवा; अंत)।

वारसिआ स्त्री [**दे**] मल्लिका, पुष्प-विशेष; (दे ७, ६०)।

वारसिय देखो **वारिसिय**; "वारसियमहादाणं" (सुपा ७१)।

वारा स्त्री [**वारा**] १ देरी, विलम्ब, "अम्मो किमज्ज कज्जं जं लग्गा एत्तिया वारा" (सुपा ४५६)। २ वेला, दफा; "तो पुणरवि निज्झायइ वाराओ दुन्नि तिन्नि वा जाव" (सट्ठि ६ टी)।

वाराणसी देखो **वाणारसी**; (अन्त; पि ३५४)।

वाराविय वि [**वारित**] जिसका निवारण कराया गया हो वह; (कुप्र १४०)।

वाराह पुं [**वाराह**] १ पाँचवें बलदेव का पूर्वभवीय नाम; (सम १५३)। २ न. शूकर के सदृश; (उवा)।

वाराही स्त्री [**वाराही**] १ विद्या-विशेष; (पउम ७, १४१)। २ वराहमिहिर का बनाया हुआ एक ज्योतिष-ग्रन्थ, वराह-संहिता; (सम्मत्त १२१)।

वारि न [**वारि**] १ पानी, जल; (पाअ; कुमा; सण)। २ स्त्री. हाथी को फँसाने का स्थान; "वारी करिधरणट्ठाणं" (पाअ; स २७७; ६७८)। °**भद्दग** पुं [°**भद्रक**] भिक्षुक की एक जाति, शैवलाशी भिक्षुक; (सूअनि ६०)। °**मय** वि [°**मय**] पानी का बना हुआ; स्त्री—°ई; (हे १, ४; पि ७०)। °**मुअ** पुं [°**मुच्**] मेघ, जलधर; (षड्)। °**य** पुं [°**द**] पानी देने वाला भृत्य; (स ७४१)। °**रासि** पुं [°**राशि**] समुद्र, सागर; (सम्मत्त १६०)। °**वाह** पुं [°**वाह**] मेघ, अभ्र; (उप २६४ टी)। °**सेण** पुं [°**षेण**] १ एक अन्तकृद् महर्षि जो राजा वसुदेव के पुत्र थे, और जिन्होंने भगवान् अरिष्टनेमि के पास दीक्षा ली थी; (अन्त १४)। २ एक अनुत्तर-गामी मुनि, जो राजा श्रेणिक के पुत्र थे; (अनु १)। ३ ऐरवत वर्ष में उत्पन्न चौवीसवें जिनदेव; (सम १५३)। ४ एक शाश्वती जिन-प्रतिमा; (पव ५६; महा)। °**सेणा** स्त्री [°**षेणा**] १ एक शाश्वती जिन-प्रतिमा; (ठा ४, २—पत्र २३०)। २ अधोलोक में रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८—पत्र ४३७; इक २३१ टि)। ३ एक महा-नदी; (ठा ५, ३—पत्र ३५१; इक)। ४ ऊर्ध्वलोक में रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (इक २३२)। °**हर** पुं [°**धर**] मेघ, (गउड)।

वारिअ पुं [**दे**] हजाम, नापित; (दे ७, ४७)।

वारिअ वि [**वारित**] १ निवारित, प्रतिषिद्ध, (पाअ; से २, २३)। २ वेष्टित; (से २, २३)।

वारिआ स्त्री [**द्वारिका**] छोटा दरवाजा, बारी; (ती २), "वप्पस्स चा(?वा)रियाए परिखित्तो खाइयामज्झे।" "जो जलपूरियविड्डाकूआग्रो चा(? वा)रियाइ निक्कासा। सो उव्वचियगब्भाग्रो जोणीए निग्गमो इत्थ॥" (धर्मवि १४६)।

वारिज्ज पुन [**दे**] विवाह, शादी, (दे ७, ५५; पाअ; उप पृ ८०)।

वारिसा देखो **वरिसा**; (विक्र १०१)।

वारिसिय वि [**वार्षिक**] १ वर्ष-संबन्धी; (राज)। २ वर्षा-संबन्धी, "चिट्ठइ चउरो मासा वारिसिया विवुहपरिमहिश्रो" (पउम ८२, ६५)।

वारी स्त्री [**द्वारिका**] बारी, छोटा दरवाजा; (ती २)।

वारी स्त्री [**वारी**] देखो 'वारि' का दूसरा अर्थ; "बद्धो वारीवंधे फासेण गओ गओ निहणं" (सुर ८, १३६; ओघ ४४६ टी)।

वारी° न [**वारि**] जल, पानी; (हे १, ४; पि ७०)।

वारुअ न [**दे**] १ शीघ्र, जल्दी; २ वि. शीघ्रता-युक्त; "ण वारुआ अम्हे" (दे ७, ४८)।

वारुण न [**वारुण**] १ जल, पानी; "निम्मलवारुणमंडल-मंडिअससिचारपाणसुपवेसे" (सिरि ३६१)। २ वि. वरुण-संबन्धी; (पउम १२, १२७; सुर ८, ४५; महा)। **°त्थ** न [**°ास्त्र**] वरुणाधिष्ठित अस्त्र; (महा)। **°पुर** न [**°पुर**] नगर-विशेष, (इक)।

वारुणी स्त्री [**वारुणी**] १ मदिरा, सुरा दारू; (पाअ; से २, १७; सुर ३, ५५; पण्ह २, ५—पत्र १५०)। २ लता-विशेष, इन्द्रवारुणी, इन्द्रायन; (कुमा)। ३ पश्चिम दिशा; (ठा १०—पत्र ४७८; सुपा २५५)। ४ भगवान् सुविधि-नाथ की प्रथम शिष्या का नाम; (सम १५२; पव ६)। ५ एक दिक्कुमारी देवी; (इक)। ६ कायोत्सर्ग का एक दोष—१ निष्पन्न होती मदिरा की तरह कायोत्सर्ग में 'बुड बुड' आवाज करना; २ कायोत्सर्ग में मतवाला की तरह डोलते रहना; (पव ५)।

वारुया, **वारूया** } स्त्री [**दे**] हस्तिनी, हथनी; (स ७३५; ६४)।

वारेज्ज देखो **वारिज्ज**; (स ७३४)

वारेयव्व देखो **वार**=वारय्।

वाल सक [**वालय्**] १ मोड़ना। २ वापिस लौटाना। वालइ, वालेइ; (हे ४, ३३०; भवि; सिरि ४४२)। कवकृ—**वालिज्जंत**; (सुर ३, १३६)। संकृ—**वालेऊण**; (महा)।

वाल पुं [**व्याल**] १ सर्प, साँप; (गउड; णाया १, १ टी—पत्र ६; औप)। २ दुष्ट हाथी; (सुर १०, २१६; चेइय ५८)। ३ हिंसक पशु, श्वापद; (णाया १, १ टी—पत्र ६; औप)। देखो **विआल**=व्याल।

वाल न [**वाल**] १ एक गोत्र, जो कश्यप-गोत्र की एक शाखा है; २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न; (ठा ७—पत्र ३६०)।

वाल देखो **वाल**=वाल; (औप; पाअ)। **°य** वि [**°ज**] केशों से बना हुआ; (पउम १०२, १२१)। **°वीयणी** स्त्री [**°व्यजनी**] १ चामर "पंच रायककुहाइं; तं जहा—खग्गं छत्तं उप्फेसं वाहणाओ वालवीयणिं" (औप)। २ छोटा व्यजन—पंखा; "सेयचामरवालवीयणीहिं वीइज्जमाणी" (णाया १, १—पत्र ३२; सूअ १, ६, १८)। **°हि** पुं [**°धि**] वही अर्थ; (पाअ; सुपा २८१)।

°वाल देखो **पाल**=पाल; (काल; भवि; कुमा १, ६६)।

वालंफोस न [**दे**] कनक, सोना; (दे ७, ६०)।

वालगपोतिया, **वालग्गपोइया** } स्त्री [**दे**] देखो **वालग्गपोइआ**; (सुज्ज ४—पत्र ७०; उत्त ६, २४; सुख ६, २४)।

वालण न [**वालन**] लौटाना; (सुर १, २४६)।

वालप्प न [**दे**] पुच्छ, दुम, पूँछ; (दे ७, ५७)।

वालय पु [**वालक**] गन्ध-द्रव्य विशेष; (पाअ)।

वालवास पुं [**दे**] मस्तक का आभूषण; (दे ७, ५६)।

वालवि पुं [**व्यालविन्**] मदारी, साँपों को पकड़ने आदि का व्यवसाय करने वाला; (पण्ह १, २—पत्र २६)।

वालहिल्ल पुं [**वालखिल्य**] क्रतु से उत्पन्न पुलस्त्य कन्या के साठ हजार पुत्र, जो अंगुष्ठ-पर्व के देह-मान वाले थे; (गउड)। देखो **वालिखिल्ल**।

वाला पुंस्त्री [**वाला**] कंगू, अन्न-विशेष, "संपयणं वाला-वल्लरअं" (गा ८१२)।

वालि पुं [**वालि**] एक विद्याधर-राजा, कपिराज; (पउम ६, ६; से १, १३)। **°तणअ** पु [**°तनय**] राजा वालि का पुत्र, अंगद; (से १३, ८३)। **°सुअ** पुं [**°सुत**] वही अर्थ; (से ४, १२; १३, ६२)।

वालि वि [**वालिन्**] वक्र, टेढ़ा; (से १, १३)।

वालिअ वि [**वालित**] मोड़ा हुआ; (पाअ; स ३३७)।

वालिआफोस न [**दे**] कनक, सुवर्ण; (दे ७, ६०)।

वालिंद पुं [**वालीन्द्र**] विद्याधर वंश का एक राजा; (पउम ५, ४५)।

वालिखिल्ल पुं [**वालिखिल्य**] एक राजर्षि; (पउम ३४, १८)। देखो **वालिहिल्ल**।

वालिहाण न [**वालिधान**] पुच्छ, पूँछ; (गाया १, ३; उत्रा)।

वालिहिल्ल देखो **वालहिल्ल**; (गउड ३२०)।

वाली स्त्री [**दे**] वाद्य-विशेष, मुँह के पवन से बजाया जाता तृण-वाद्य; (दे ७, ५३)।

°**वाली** स्त्री [**पाली**] रचना-विशेष, गाल आदि पर की जाती कस्तूरी आदि की छटा; (कप्पू)। देखो **पाली**।

वालुअ पुं [**वालुक**] १ परमाधार्मिक देवों की एक जाति, जो नरक-जीवों को तप्त वालुका में चने की तरह भुनते हैं; (सम २६)। २ धूली-संबन्धी; (उप पृ २०५)।

वालुअ° } स्त्री [**वालुका**] धूली, रेत, रज; (गउड)।
वालुआ } °**पुढवी** स्त्री [°**पृथिवी**] तीसरी नरक-पृथिवी; (पउम ११८, २)। °**प्पभा**, °**प्पहा** स्त्री [°**प्रभा**] तीसरी नरक-भूमि; (ठा ७—पत्र ३८८; इक; अंत १५)। °**भा** स्त्री [°**भा**] वही अर्थ; (उत्त ३६, १५७)।

वालुंक न [**दे**] पक्वान्न-विशेष, एक तरह का खाद्य; "खीर-दहिसूवकट्टरलंभे गुडसप्पिवडगवालुंके" (पिंड ६३७)।

वालुंक न [**वालुङ्क**] ककड़ी, खीरा; (अनु ६; कुप्र ५८)।

वालुंकी } स्त्री [**वालुङ्की**] ककड़ी का गाछ; (गा १०;
वालुक्की } गा १० अ)।

वालुग° देखो **वालुअ**°; (स १०२)।

वाव सक [**वि+आप्**] व्याप्त करना। वावेइ; (हे ४, १४१)।

वाव अ [**वाव**] अथवा, या; (विसे २०२०)।

वाव पुं [**वाप**] वपन, वोना; (दे ६, १२६)।

वावइज्ज देखो **वावज्ज**। वावइज्जामि; (स ७४१)।

वावंफ अक [**कृ**] श्रम करना। वावंफइ; (हे ४, ६८)।

वावंफिर वि [**करिष्णु**] श्रम करने वाला; (कुमा)।

वावज्ज अक [**व्या+पद्**] मर जाना। वावज्जंति; (भग)।

वावड पुं [**दे**] कुटुम्बी, किसान; (दे ७, ५४)।

वावड वि [**व्यापृत**] १ व्याकुल; (दे ७, ५४ टी)। २ किसी कार्य में लगा हुआ; (हे १, २०६; प्राप्र, कस; सुर १, २६)।

वावड वि [**व्यावृत्त**] लौटाया हुआ, वापिस किया हुआ; (उप ५३४)।

वावडय स्त्रीन [**दे**] विपरीत मैथुन; (दे ७, ५८), स्त्री—°**या**; (पाअ)।

वावण न [**व्यापन**] व्याप्त करना; (विसे ८६)।

वावणी स्त्री [**दे**] छिद्र, विवर; (दे ७, ५५)।

वावण्ण देखो **वावन्न**; (गाया १, १२)।

वावत्ति स्त्री [**व्यापत्ति**] विनाश, मरण; (गाया १, ६—पत्र १६६; उप ५०६; स ३६५; ४३२; धर्मसं ६३४; ६७६)।

वावत्ति स्त्री [**व्यापृति**] व्यापार; (उप ५०६)।

वावत्ति स्त्री [**व्यावृत्ति**] निवृत्ति; (ठा ३, ४—पत्र १७४)।

वावन्न वि [**व्यापन्न**] विनाश-प्राप्त; (ठा ५, २—पत्र ३१३, स २४१; सम्मत्त २८; सं ६०)।

वावय पुं [**दे**] आयुक्त, गाँव का मुखिया; (दे ७, ५५)।

वावर अक [**व्या+पृ**] १ काम में लगना। २ सक. काम में लगाना। वावरेइ; (हे ४, ८१), वावरइ; (भवि), "सयं गिहं परिच्चिज्ज परगिहम्मि वावरे" (उत्त १७, १८; सुख १७, १८)। वकृ—**वावरंत**; (कुमा ६, ५१)। प्रयो—हेकृ—**वावराविउं**; (स ७६२)।

वावरण न [**व्यापरण**] कार्य में लगाना; (भवि)।

वावल्ल देखो **वावड**=व्यापृत; (उप पृ ८७)।

वावल्ल पुंन [**दे, वावल्ल**] शस्त्र-विशेष; (सण)।

वावहारिअ वि [**व्यावहारिक**] व्यवहार से संबन्ध रखने वाला; (इक; विसे ६५६; जीवस ६५)।

वावाअ(?) अक [**अव+काश्**] अवकाश पाना, जगह प्राप्त करना। वावाअइ; (धात्वा १५२)।

वावाअ सक [**व्या+पादय्**] मार डालना, विनाश करना। वावाएइ; (स ३१; महा)। कर्म—वावाइज्जइ, वावाईयइ; (स ६७३), भवि—वावाइज्जिस्सइ; (पि ५४६)। संकृ—**वावाइऊण**; (स ७५५)। कृ—**वावाइयव्व**; (स १३५)।

वावाइअ वि [**व्यापादित**] मार डाला गया, विनाशित; (सुपा २४१), "अवावावि(?इ)ओ चेव विउत्तो खु एसो" (स ४११)।

वावायग वि [**व्यापादक**] हिंसक, विनाश-कर्ता; (स २६७)।

वावायण न [**व्यापादन**] हिंसा, मार डालना, विनाश; (स ३३; १०२; १०३; ६७५; सुर १२, २१६)।

वावायय देखो **वावायग**; (स ७५०)।

वावार सक [व्या+पारय्] काम में लगाना। वकृ—**वावारेंत**; (गउड २४४)। कृ—**वावारियव्व**; (सुपा १६२)।

वावार पुं [व्यापार] व्यवसाय; (ठा ३, १ टी—पत्र ११४; प्रासू ६१; १२१, नाट—विक्र १७)।

वावारण न [व्यापारण] कार्य में लगाना; (विसे ३०७१; उप पृ ७१)।

वावारि वि [व्यापारिन्] व्यापार वाला; (से १४, ६६; हम्मीर १३)।

वावारिद (शौ) वि [व्यापारित] कार्य में लगाया हुआ, (नाट—शकु १२०)।

वावि अ [वापि] १ अथवा, या; (पव ६७)। २ स्त्री. देखो **वावी**; (पण्ह १, १— पत्र ८)।

वावि वि [व्यापिन्] व्यापक; (विसे २१५; श्रा २८४; धर्मसं ५२५)।

वाविअ वि [दे] विस्तारित; (दे ७, ५७)।

वाविअ वि [वापित] १ प्रापित, प्राप्त करवाया हुआ; (से ६, ६२)। २ बोया हुआ; गुजराती में 'वावेलु'; "जं आसी पुव्वभवे धम्मवीयं वावियं तए जीव" (आत्महि ८; दे ७, ८६)।

वाविअ वि [व्याप्त] भरा हुआ; (कुमा ६, ६५)।

वावित्त वि [व्यावृत्त] व्यावृत्ति वाला, निवृत्त, (धर्मसं ३२१)।

वावित्ति स्त्री [व्यावृत्ति] व्यावर्तन, निवृत्ति; (धर्मसं १०५)।

वाविद्ध देखो **वाइद्ध**=व्यादिग्ध, व्याविद्ध; (ठा ५, २—पत्र ३१३)।

वाविर देखो **वावर**। वाविरइ; (षड्)।

वावी स्त्री [वापी] चतुष्कोण जलाशय-विशेष, (औप; गउड; प्रामा)।

वावुड } (शौ) देखो **वावड**=व्यापृत; (नाट—मृच्छ
वावुद } २०१; पि २१८; चारु ६)।

वावोवणय न [दे] विकीर्ण, विखरा हुआ; (दे ७, ५६)।

वासू (मा) स्त्री [वासू] नाटक की भाषा में बाला; (मृच्छ २७)।

वास देखो **वरिस**=वृष्। वासति; (भग)। भूका—वासिंसु; (कप्प)। कृ—**वासिउं**; (ठा ३, ३—पत्र १४१; पि ६२; ५७७)।

वास अक [वाश्] १ तिर्यंचों का—पशु-पक्षिओं का बोलना। २ आह्वान करना। "खीरदुमम्मि वासइ वामत्थो वायसो चलियपक्खो" (पउम ५५, ३१), वासइ, वासए, (भवि; कुप्र २२३)। वकृ—**वासंत**; (कुप्र २२३; ३८७)।

वास सक [वासय्] १ संस्कार डालना। २ सुगन्धित करना। ३ वास करवाना। वासइ; (भवि)। वकृ—**वासंत, वासयंत**; (औप; कप्प)। कृ—**वासणिज्ज**; (विसे १६७७; धर्मसं ३२६)।

वास देखो **वरिस**=वर्ष; (सम ३; कप्प; जी ३४; गउड; कुमा; भग ३, ६; सम १२; हे १, ४३; २, १०५; षड् ४६; सुपा ६७)। °**त्ताण** न [°त्राण] छत्र, छाता; (धर्म ३; ओघ ३०)। °**धर, °हर** पुं [°धर] पर्वत-विशेष; (उवा ७४, २५३; ठा २, ३, सम १२; इक)।

वास पु [वास] १ निवास; रहना; (आचा; उप ४८६; कुमा; प्रासू ३८)। २ सुगन्ध; (कुमा; भवि)। ३ सुगन्धी द्रव्य-विशेष; (गउड)। ४ सुगन्धी चूर्ण-विशेष; "पणवन्नवासवासं विहियं तोसाउ तियसेहि" (सुपा ६७; दंस २)। ५ द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति; (पण्ण १—पत्र ४४)। °**घर** न [°गृह] शयन-गृह; (णाया १, १६—पत्र २०१)। °**भवण** न [°भवन] वही अर्थ; (महा)। °**रेणु** पुं [°रेणु] सुगन्धी रज, (औप)। °**हर** न [°गृह] वही, (सुर ६, २७; सुपा ३१३; भवि)।

वास पु [व्यास] १ ऋषि-विशेष, पुराण-कर्ता एक मुनि; (हे १, ५; कप्पू)। २ विस्तार; (भग २, ८ टी)।

वास न [वासस्] वस्त्र, कपड़ा, (पाअ; वज्जा १६२; भवि)।

°**वास** देखो **पास**=पाश; (गउड)।

°**वास** देखो **पास**=पार्श्व; (प्राकृ ३०; गउड)।

वासंग पुं [व्यासङ्ग] आसक्ति, तत्परता; "ताहे सा पडिबुद्धा विसं व मोत्तूण विसयवासंगं" (उप १३१ टी; कुप्र ११८; उप पृ १२७)।

वासंठ } (अप) पुं [वसन्त] छन्द का एक भेद;
वासंत } (पिंग १६३; १६३ टि)।

वासंत पुं [वर्षान्त] वर्षा-काल का अन्त-भाग; (उप ४८८)।

वासंतिअ वि [वासन्तिक] वसन्त-संबन्धी; (मै ३)।

वासंतिअ° } स्त्री [वासन्तिका, °न्ती] लता-विशेष;
वासंतिआ } (औप, कप्प; कुमा; पण्ण १—पत्र ३३; णाया
वासंती } १, ६—पत्र १६०; पण्ह १, ४—पत्र ७६)।

वासंदी स्त्री [दे] कुन्द का पुष्प; (दे ७, ५५)।

वासग वि [**वासक**] १ रहने वाला; (उप ७६८ टी)। २ वासना-कर्ता, संस्काराधायक, (धर्मसं ३२६)। ३ शब्द करने वाला; ४ पुं. द्वीन्द्रिय आदि जन्तु; (आचा)।

वासण न [**दे**] पात्र, वर्तन; गुजराती में 'वासण': "दिट्ठं च पयत्तठ्ठावियं चंदणनामंकियं हिरण्णवासणं" (स ६१; ६२)।

वासणा स्त्री [**वासना**] संस्कार; (धर्मसं ३२६)।

°**वासणा** स्त्री [**दर्शन**] अवलोकन, निरीक्षण; (विसे १६७७; उप ४६७)। देखो **पासणया**।

वासय देखो **वासग**। °**सज्जा** स्त्री [°**सज्जा**] नायिका का एक भेद; (कुमा)।

वासर पुंन [**वासर**] दिवस, दिन; (पात्र; गउड; महा)।

वासव पुं [**वासव**] १ इन्द्र, देव-पति; (पात्र; सुपा ३०४; चेइय ५८०)। २ एक राज-कुमार; (विपा १, १—पत्र १०३)। °**केउ** पु [°**केतु**] हरिवंश का एक राजा, राजा जनक का पिता; (पउम २१, ३२)। °**दत्त** पु [°**दत्त**] विजयपुर नगर का एक राजा; (विपा २, ४)। °**दत्ता** स्त्री [°**दत्ता**] एक आख्यायिका; (राज)। °**धणु** पुंन [°**धनुष्**] इन्द्र-धनुष; (कुप्र ४५६)। °**नयर** न [°**नगर**] अमरावती, इन्द्र-नगरी; (सुपा ६०६)। °**पुरी** स्त्री [°**पुरी**] वही अर्थ; (उप पृ १७६)। °**सुअ** पुं [°**सुत**] इन्द्र का पुत्र, जयन्त; (पात्र)।

वासवार पुं [**दे**] १ तुरग, घोड़ा; (दे ७, ५६)। २ श्वान, कुत्ता; "विट्टालिज्जइ गंगा कयाइ कि वासवारेहिं" (चेइय १३४)।

वासवाल पुं [**दे**] श्वान, कुत्ता, (दे ७, ६०)।

वासस न [**वासस्**] वस्त्र, कपडा, "कुभोयणा कुवाससा" (पण्ह १, २—पत्र ४०)।

वासा देखो **वरिसा**; (कुमा; पात्र, सुर २, ७८; गा २३१)। °**रत्त** स्त्री. देखो **वरिसा-रत्त**; (हे ४, ३६५)। °**वास** पु [°**वास**] चतुर्मास में एक स्थान में किया जाता निवास; (औप; काल; कप्प)। °**वासिय** वि [°**वार्षिक**] वर्षा-काल-संवन्धी; (आचा २, २, २, ८; ६)। °**हू** पु [°**भू**] भेक, मेढ़क; (दे ७, ५७)।

वासाणिया स्त्री [**दे. वासनिका**] वनस्पति-विशेष; (सूअ २, ३, १६)।

वासाणी स्त्री [**दे**] रथ्या, मुहल्ला; (दे ७, ५५)।

वासि वि [**वासिन्**] १ निवास करने वाला, रहने वाला; (सूअ १, ६, ६; उवा; सुपा ६१८; कुप्र ४६; औप)। २ वासना-कारक, संस्कार-स्थापक; (विसे १६७७)।

वासि स्त्री [**वासि**] वसूला, वढई का एक अस्त्र; "न हि वासिवड्ढईणं इहं अभेदो कहंचिदवि" (धर्मसं ४८६)। देखो **वासी**।

वासिक } वि [**वार्षिक**] वर्षाकाल-भावी; (सुज्ज **वासिक्क** } १२—पत्र २१६)।

वासिट्ठ न [**वाशिष्ठ**] १ गोत्र-विशेष, (ठा ७—पत्र ३६०; कप्प; सुज्ज १०, १६)। २ पुंस्त्री. वाशिष्ठ गोत्र में उत्पन्न; (ठा ७), स्त्री—°**ट्ठा**, °**ट्ठी**; (कप्प; उत्त १४, २६)।

वासिट्ठिया स्त्री [**वाशिष्ठिका**] एक जैन मुनि-शाखा, (कप्प)।

वासित्तु वि [**वर्षितृ**] बरसने वाला; (ठा ४, ४—पत्र २६६)।

वासिद } वि [**वासित**] १ बसाया हुआ, निवासित, (मोह **वासिय** } २१)। २ बासी रखा हुआ (अन्न आदि); (सुपा १२; ५३२)। ३ सुगन्धित किया हुआ; (कप्प; पव १३३; महा)। ४ भावित, संस्कारित; (आव)।

वासी स्त्री [**वासी**] बसूला, वढई का एक अस्त्र; (पण्ह १, १; पउम १४, ७८; कप्प; सुर १, २८; औप)। °**मुह** पुं [°**मुख**] वसूले के तुल्य मुँह वाला एक तरह का क्रीट, द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति, (उत्त ३६, १३६)।

वासुइ } पुं [**वासुकि**] एक महा-नाग, सर्पराज; (से २, **वासुगि** } १३; गा ६६; गउड; ती ७; कुमा; सम्मत्त ७६)।

वासुदेव पु [**वासुदेव**] १ श्रीकृष्ण, नारायण; (पण्ह १, ४—पत्र ७२)। २ अर्ध-चक्रवर्ती राजा, त्रिखण्ड भूमि का अधीश; (सम १७; १५२; १५३; अंत)।

वासुपुज्ज पुं [**वासुपूज्य**] भारतवर्ष में उत्पन्न वारहवें जिन भगवान्; (सम ४३; कप्प; पडि)।

वासुली स्त्री [**दे**] कुन्द का फूल; (दे ७, ५५)।

वाह सक [**वाहय्**] वहन कराना, चलाना। वाहइ, वाहेइ; (भवि; महा)। कवकृ— **वाहिज्जमाण**; (महा)। हेकृ—**वाहिउं**; (महा)। कृ—**वाह, वाहिम**; (हे २, ७८; आचा २, ४, २, ६)।

वाह पुंस्त्री [**व्याध**] लुब्धक, वहेलिया; (हे १, १८७, पात्र), स्त्री—°**ही**; (गा १२१; पि ३८५)।

वाह पुं [**वाह**] १ अश्व, घोड़ा; (पाअ; सूअ १, २, ३, ५; उप ७२८ टी; कुप्र १४७; हम्मीर १८)। २ जहाज, नौका; "वाहोडुआइ तरणं" (विसे १०२७)। ३ भार-वहन, बोझ ढोना; (सूअ १, ३, ४, ५)। ४ परिमाण-विशेष, आठ सौ आढ़क का एक मान; (तंदु २६)। ५ शाकटिक, गाड़ी हाँकने वाला; (सूअ १, २, ३, ५)। °**वाहिया** स्त्री [°**वाहिका**] घुड़सवारी; (धर्मवि ४)।

वाहगण } पुं [**दे**] मन्त्री, अमात्य, प्रधान; (दे ७, ६१)।
वाहगणय }

वाहडिया स्त्री [**दे**] कावर, वहङ्गी; (उप पृ ३३७)।

वाहण पुंन [**वाहन**] १ रथ आदि यान; "जह भिच्चवाहणा लोए" (गच्छ १, ३८; उवा; औप; कप्प)। २ जहाज, नौका, यानपात्र; गुजराती में 'वहाण'; (उवा; सिरि ४२३; कुम्मा १६)। ३ न. चलाना; "वाहवाहणपरिस्संतो" (कुप्र १४७)। ४ शकट, बोझ आदि ढोआना, भार लाद कर चलाना; (पण्ह १, २—पत्र २६; द्र २६)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] यान रखने का घर; (औप)।

वाहणा स्त्री [**वाहना**] वहन कराना, बोझ आदि ढोआना; (श्रावक २५८ टी)।

वाहणा स्त्री [**दे**] ग्रीवा, डोक, गला; (दे ७, ५४)।

वाहणा स्त्री [**उपानह्**] जूता; (औप; उवा; पि १४१)।

वाहणिय वि [**वाहनिक**] वाहन-संबन्धी; (उप ७२८ टी)।

वाहणिया स्त्री [**वाहनिका**] वहन कराना, चलाना; "आ-सवाहणियाए" (स ३००)।

वाहत्तुं देखो **वाहर**।

वाहय वि [**वाहक**] चलाने वाला, हाँकने वाला; (उत्त १, ३७)।

वाहय वि [**व्याहत**] व्याघात-प्राप्त; (मोह १०७; उव)।

वाहर सक [**व्या+हृ**] १ बोलना, कहना। २ आह्वान करना। वाहरइ; (हे ४, २५६; सुपा ३२२; महा)। कर्म—वाहिप्पइ, वाहरिज्जइ; (हे ४, २५३), "वाहिप्पंति पहाणा गारुडिया" (सुर १६, ६१)। कवकृ—**वाहिप्पंत**; (कुमा)। वकृ—**वाहरंत**; (गा ५०३; सुर ६, १६६)। संकृ—**वाहरिउं**; (वव ४)। हेकृ—**वाहत्तुं**; (से ११, ११६)।

वाहरण न [**व्याहरण**] १ उक्ति, कथन; (कुमा)। २ आह्वान; (स २५२; ५०६)।

वाहराविय वि [**व्याहारित**] बुलवाया हुआ; (कुप्र १५; महा)।

वाहरिअ देखो **वाहित्त**=व्याहृत; (सुर १, १५०; ४, ६; सुपा १३२; महा)।

वाहलार वि [**दे. वात्सल्यकार**] १ स्नेही, अनुरागी; २ सगा; गुजराती में 'वाहलेसरी'; "अह सत्थाहो तमन्नजायंपि। नियतणुजं मन्नंतो लालेइ वाहलारुव्व" (धर्मवि १२८)।

वाहलिया } स्त्री [**दे**] क्षुद्र नदी, छोटा जल-प्रवाह; (वज्जा
वाहली } २२; ५४; दे ७, ३६)।

वाहा स्त्री [**दे**] वालुका, रेत; (दे ७, ५४)।

वाहाया स्त्री [**दे**] वृक्ष-विशेष; "समिसंगलिया ति वा वाहा-यासंगलिया ति वा अगत्थिसंगलिया ति वा" (अनु ५)।

वाहाविय वि [**वाहित**] चलाया हुआ; (महा)।

वाहि देखो **वाहर**। संकृ—**वाहित्ता**; (आक ३८; पि ५८२)।

वाहि पुंस्त्री [**व्याधि**] रोग, बिमारी; "चउव्विहे वाही पन्नत्ते" (ठा ४, ४—पत्र २६५; पाअ; सुर ४, ७५; उवा; प्रासू १३३; महा), "एयाओ सत्त वाहीओ दारुणाओ" (महा)।

वाहि वि [**वाहिन्**] वहन करने वाला, ढोने वाला; "जहा खरो चंदणभारवाही" (उव)।

वाहिअ वि [**वाहित**] चलाया हुआ; "वाहियं तम्मि वंसकुडंगे तं खग्गं" (महा), "तो तेण तेण खग्गेण कोस-खित्तेण वाहिओ घाओ" (सुपा ५२७)।

वाहिअ देखो **वाहित्त**=व्याहृत; (हे २, ६६; षड्; महा; गाया १, १—पत्र ६३)।

वाहिअ वि [**व्याधित**] रोगी, बिमार; (सिरि १०७८; गाया १, १३—पत्र १७६; विपा १, ७—पत्र ७५; पण्ह १, ३—पत्र ५४; कस)।

वाहिणी स्त्री [**वाहिनी**] १ नदी; (धर्मवि ३)। २ सेना, लश्कर; "सेणा वरूहिणी वाहिणी अणीअं चमू सिन्नं" (पाअ)। ३ सेना-विशेष, जिसमें ८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ घोड़े और ४०५ प्यादे हों वह सैन्य; (पउम ५६, ६)। °**णाह** पुं [°**नाथ**] सेना-पति; (किरात १३)। °**स** पुं [°**श**] वही; (किरात ११)।

वाहित्त वि [**व्याहृत**] १ उक्त, कथित; (हे १, १२८; २, ६६; प्राप्र)। २ आहूत, शब्दित; (पाअ; उत्त १, २०)।

वाहित्ति स्त्री [**व्याहृति**] १ उक्ति, वचन; २ आह्वान, (मच्छु २)।

वाहिप्प° देखो **वाहर**।

वाहिम देखो **वाह**=वाहय्।

वाहियाली स्त्री [**वाह्याली**] अश्व खेलने की जगह; (स १३; सुपा ३२७; महा)।

वाहिल्ल वि [**व्याधिमत्**] रोगी, (धम्म ८ टी)।

वाही देखो **वाह**=व्याध।

वाहुडिअ वि [**दे**] गत, चलित; "तो वाहुडिउ जवेण" (कुप्र ४५८)। देखो **वाहुडिअ**।

वाहुय देखो **वाहित्त**=व्याहृत; (औप)।

वि देखो **अवि**=अपि; (हे २, २१८; कुमा; गा ११; १७: २३; कम्म ४, १६; ६०; ६६; रंभा)।

वि अ [**वि**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ विरोध, प्रतिपक्षता; जैसे—'विग्गहा', 'विओग' (ठा ४, २; गच्छ १, ११; सुर २, २१५)। २ विशेष; जैसे—'विउस्सिय' (सूअ १, १, २, २३; भग १, १ टी)। ३ विविधता; जैसे—'वियक्खमाण', 'विउस्सग्ग' (ओघभा १८८; भग १, १ टी; आवम)। ४ कुत्सा, खराबी; जैसे—'विरूव' (उप ७२८ टी)। ५ अभाव; जैसे—'विइराह' (से २, १०)। ६ महत्त्व; जैसे—'विएअ' (गउड)। ७ भिन्नता; जैसे—'विएस' (महा)। ८ ऊँचाई, ऊर्ध्वता; जैसे—'विक्खेव' (ओघभा १६३)। ९ पादपूर्ति; (पउम १७, ६७)। १० पुं. पक्षी; (से १, १; सुर १६, ४३)। ११ वि. उद्दीपक, उत्तेजक; १२ व्यवबोधक, ज्ञापक; "सम्मं सम्मत्तवि-यासउं वरं दिसउ भवियाणं" (विवे १४३)।

वि देखो **वि**=द्वि; "ते पुण होज्ज विहत्था कुम्मापुत्तादओ जह-न्नेणं" (विसे ३१६६)।

वि वि [**विद्**] जानकार, विज्ञ; (आचा; विसे ५००)। °**उच्छा** स्त्री [°**जुगुप्सा**] विद्वान् की निन्दा, साधु की निन्दा; (श्रा ६ टी—पत्र ३०)।

वि° स्त्री [**विप्**] पुरीष, विष्ठा; (पराह २, १—पत्र ६६; संति २; औप; विसे ७८१)।

विअ सक [**विद्**] जानना। वियसि; (विसे १६००)। भवि—विच्छं, वेच्छं; (पि ५२३; ५२६; प्राप्र; हे ३, १७१)। वकृ—**विअंत**; (रंभा)। संकृ—**विइत्ता**, **विइत्ताणं**, **विइत्तु**; (आचा; दस १०, १४)।

विअ न [**वियत्**] आकाश, गगन; (से ६, ४८)। °**च्चर** वि [°**च्चर**] आकाश-विहारी। °**च्चरपुर** न [°**च्चर-पुर**] एक विद्याधर-नगर; (इक)।

विअ वि [**विद्**] १ जानकार. विद्वान्, "तं च भिक्खू परिन्नाय वियं तेसु न मुच्छए" (सूअ १, १, ४, २)। २ विज्ञान, जानकारी; (राज)।

विअ देखो **इव**; (हे २, १८२; प्राप्र; स्वप्न १७; कुमा; पउम ११, ८१; महा)।

विअ पुं [**वृक**] श्वापद जन्तु-विशेष, भेड़िया; (नाट—उत्तर ७१)।

विअ पुं [**व्यय**] विगम, विनाश; "पंचविहे छेयणे पन्नत्ते, तं जहा—उप्पाछेयणे वियच्छेदणे" (ठा ५, ३—पत्र ३४६)।

विअ वि [**विगत**] विनष्ट, मृत। °**च्चा** स्त्री [°**र्चा**] मृत आत्मा का शरीर; (ठा १—पत्र १६)।

विअ देखो **अविअ**=अपिच; (जीव १)।

विअइ वि [**विजयिन्**] जिसकी जीत हुई हो वह; (मा २२)।

विअइ स्त्री [**विगति**] विगम, विनाश; (ठा १—पत्र १६)।

विअइ देखो **विगइ**=विकृति; (ठा १—पत्र १६; राज)।

विअइत्ता देखो **विअत्त**=वि+वर्तय्।

विअइल्ल पुं [**विचकिल**] १ पुष्प-वृक्ष विशेष; २ न. पुष्प-विशेष; (हे १, १६६; कप्पू; वा २३; कुमा)। ३ वि. विकच, विकसित; (सण)।

विअओलिअ वि [**दे**] मलिन; (दे ७, ७२)।

विअंग सक [**व्यङ्गय्**] अंग से हीन करना—हाथ, कान आ-दि को काटना। वियंगेइ; (णाया १, १४—पत्र १८५)।

विअंग वि [**व्यङ्ग**] अग-हीन; "वियंगमंगा" (पराह १, १—पत्र १८)।

विअंगिअ वि [**दे**] निन्दित; (दे ७, ६६)।

विअंगिअ वि [**व्यङ्गित**] खण्डित, छिन्न; (पराह १, ३—पत्र ४५; टी—पत्र ४६)।

विअंजण देखो **वंजण**=व्यञ्जन; (प्राकृ ३१; सम्म ७२)।

विअंजिअ वि [**व्यञ्जित**] व्यक्त किया हुआ, प्रकट किया हुआ; (सूअ २, १, २७; ठा ५, २—पत्र ३०८)।

विअंदूत वि [**दे**] १ अवरोपित; २ मुक्त; (पड् १७७)।

विअंति स्त्री [**व्यन्ति**] अन्त-क्रिया। °**कारय** वि [°**का-रक**] अन्त-क्रिया करने वाला, कर्मों का अन्त करने वाला, मुक्ति-साधक; (आचा १, ८, ४, ३)।

विअंभ अक [**वि+जृम्भ्**] १ उत्पन्न होना। २ विकसना। ३ जँभाई खाना। विअंभइ; (हे ४, १५७; षड्; भवि)। वकृ—**विअंभंत**, **विअंभमाण**; (धात्वा १५२; से १, ४३; गा ४२५; महा)।

विअंभ वि [**विद्म्भ**] निष्कपट, सत्य, "अयाणयं वियंभसुहस्स" (स ६६०)।

विअंभण न [**विजृम्भण**] १ जँभाई, जम्हाई; (स ३३६; सुपा १४६)। २ विकाश; ३ उत्पत्ति; (भवि; माल ८४)।

विअंभिअ वि [**विजृम्भित**] १ प्रकाशित; (गा ५६४)। २ उत्पन्न; (माल ८६)। ३ न. जँभाई; (गा ३५२)।

विअंसण वि [**विवसन**] वस्त्र-रहित, नग्न; (प्राकृ ३२)।

विअंसय पुं [**दे**] व्याध, बहेलिया; (दे ७, ७२)।

विअक्क सक [**वि+तर्कय्**] विचारना, विमर्श करना, मीमांसा करना। वकृ—**वियक्कंत, वियक्कमाण**; (सुपा २६४; उप २२० टी)।

विअक्क पुंस्त्री [**वितर्क**] विमर्श, मीमांसा; (औप; सम्मत्त १४१), स्त्री—°**क्का**; (सूअ १, १२, २१; पउम ६३, ६)।

विअक्किय वि [**वितर्कित**] विमर्शित, विचारित; (सण)।

विअक्ख सक [**वि+ईक्ष्**] देखना। वकृ—**वियक्खमाण**; (ओघभा १८८)।

विअक्खण वि [**विचक्षण**] विद्वान्, पण्डित, दक्ष; (महा; प्रासू ४१; भवि; नाट—वेणी २४)।

विअग्ग वि [**व्यग्र**] व्याकुल; (प्राकृ ३१)।

विअग्घ देखो **वग्घ**=व्याघ्र; "—महिसवि(?विय)ग्घछगलदीविया—" (पराह १, १—पत्त ७; पि १३४)।

विअग्घ पुं [**वैयाघ्र**] व्याघ्र-शिशु; (पराह १, १—पत्त १८)।

विअज्जास देखो **विवज्जास**; (नाट—मृच्छ ३२६)।

विअट्ट सक [**विसं+वद्**] अप्रमाणित करना, असत्य साबित करना। विअट्टइ; (हे ४, १२६)।

विअट्ट अक [**वि+वृत्**] विचरना, विहरना। वकृ—"गिम्हसमयंसि पत्ते **वियट्टमाणे**(सु?) वणेसु वणकरेणुविविहदिण्णकयपंसुघाओ तुमं" (णाया १, १—पत्त ६५)।

विअट्ट वि [**विवृत्त**] निवृत्त, व्यावृत्त; "विअट्टछउमेणं जिणेणं" (सम १; भग; कप्प; औप; पंडि)। °**भोइ** वि [°**भोजिन्**] प्रतिदिन भोजन करने वाला; (भग)।

विअट्ट पुं [**विवर्त**] प्रपन्च; (स १७८)।

विअट्ट } वि [**विसंवदित**] संवाद-रहित, अप्रमाणित;
विअट्टिअ } "विअट्टं विसंवइअं" (पाअ; कुमा ६, ८८)।

विअट्ठ वि [**विकृष्ट**] १ दूर-स्थित; २ क्रिवि. दूर; (णाया १, १ टी—पत्त १)।

विअड सक [**वि+कटय्**] १ प्रकट करना। २ आलोचना करना। वियडेइ; (ठा १० टी—पत्त ४८५)। कवकृ—**वियडिज्जंत**; (राज)।

विअड वि [**व्यर्द**] लज्जित, लज्जा-युक्त; (णाया १, ८—पत्त १४३)।

विअड वि [**विवृत**] खुला हुआ, अनावृत; (ठा ३, १—पत्त १२१; ५, २—पत्त ३१२)। °**गिह** न [°**गृह**] चारों तरफ खुला घर, स्थान-मण्डपिका; (कप्प; कस)। °**जाण** न [°**यान**] खुला वाहन, ऊपर से खुला यान; (णाया १, १ टी—पत्त ४३)।

विअड न [**दे**] १ प्रासुक जल, जीव-रहित पानी; (सूअ १, ७, २१; ठा ३, ३—पत्त १३८; ५, २—पत्त ३१३; सम ३७; उत्त २, ४; कप्प)। २ मद्य, दारू; (पिंड २३६)। ३ प्रासुक आहार, निर्दोष आहार; "जं किंचि पावगं भगवं त अकुव्वं वियडं भुंजित्था" (आचा १, ६, १, १८), "वियडगं भोच्चा" (कप्प)।

विअड वि [**विकृत**] विकार-प्राप्त; (आचा; उत्त २, ४; कस; पि २१६)।

विअड वि [**विकट**] १ प्रकट, खुला; (सूअ १, २, २, २२; पंचा १०, १८; पव १५३)। २ विशाल, विस्तीर्ण; "—अकोसायंतपउमगंभीरवियडनाभे" (उवा; औप; गा १०३; गउड)। ३ सुन्दर, मनोहर; (गउड)। ४ प्रभूत, प्रचुर; (सूअ २, २, १८)। ५ पुं. एक ज्योतिष्क महाग्रह; (ठा २, ३—पत्त ७८; सुज्ज २०)। ६ एक विद्याधर-राजा; (पउम १०, २०)। °**भोइ** वि [°**भोजिन्**] प्रकाश में भोजन करने वाला, दिन में ही भोजन करने वाला, (सम १६)। °**ावइ**, °**ावाइ** पुं [°**ापातिन्**] पर्वत-विशेष; (ठा ४, २—पत्त २२३; इक; ठा २, ३—पत्त ६६; ८०)।

विअड अक [**विकटय्**] विस्तीर्ण होना। वियडेइ; (गउड ११६८)।

विअडण स्त्रीन [**विकटन**] १ अतिचारों की आलोचना; २ स्वाभिप्राय-निवेदन; (पंचा २, २७), स्त्री—°**णा**; (ओघ ६१३; ७६१; पिंडभा ४१; श्रावक ३७६; पंचा १६, १६)।

विअडी स्त्री [**वितटी**] १ खराब किनारा; २ अटवी, जंगल; (णाया, १ १—पत्त ६३)।

विअड्डि स्त्री [**वितर्दि**] वेदिका, हवन-स्थान, चोतरा; (हे २, ३६; कुमा; प्राप्र)।

विअड्ड वि [**विदग्ध**] १ निपुण, कुशल; २ पण्डित, विद्वान्; (हे २, ४०; गउड; महा)।

विअड्डक वि [**विकर्षक**] खींचने वाला: "महाधणुवियट्ट-(ड्ट)का" (पगह १, ४—पत्र ७२)।

विअड्डा स्त्री [**विदग्धा**] नायिका का एक भेद; (कुमा)।

वियड्डिम पुंस्त्री [**विदग्धता**] १ निपुणता; २ पांडित्य; (सुप्र ४०५; वज्जा १३४)।

विअण पुंन [**व्यजन**] वेना, पंखा. (प्राप्र; हे १, ४६; पगह १. १—पत्र ८)।

विअण वि [**विजन**] निर्जन, जन-रहित; "लंघंति वियणा-काणणं" (भवि)।

विअणा स्त्री [**वेदना**] १ ज्ञान; २ सुख-दुःख आदि का अनुभव; ३ विवाह; (प्राप्र; हे १, १४६)। ४ पीड़ा, दुःख, संताप; (पाअ; गउड; कुमा)।

विअणिय वि [**वितनित, वितत**] विस्तीर्ण; (भवि)।

विअणिय वि [**विगणित**] अनादृत, तिरस्कृत; (भवि)।

विअण्ण वि [**विपन्न**] मृत; (गा ५४६)।

विअण्ह वि [**वितृष्ण**] तृष्णा-रहित; (गा ६३)।

विअत्त सक [**वि+वर्तय्**] घूम कर जाना। संकृ—**विय-त्तूण, वियइत्ता, विउत्ता**; (आचा १, ८, १, २)।

विअत्त वि [**व्यक्त**] १ परिस्फुट; (सूअ १, १, २, २५)। २ अ-मुग्ध, विवेकी; (सूअ १, १, २, ११)। ३ वृद्ध, परिणत-वयस्क; "णिग्गंथाणं सखुड्डयविअत्ताणं" (सम ३५)। ४ पुं. भगवान् महावीर का चतुर्थ गणधर—प्रमुख शिष्य; (सम १६)। ५ गीतार्थ मुनि; (ठा ४, १ टी—पत्र २००)। °**किच्च** न [°**कृत्य**] गीतार्थ का कर्तव्य—अनुष्ठान; (ठा ४, १ टी)।

विअत्त वि [**विदत्त**] विशेष रूप से दिया हुआ; (ठा ४, १ टी—पत्र २००)।

विअत्त पुं [**विवर्त**] एक ज्योतिष्क महाग्रह; (ठा २, ३ टी—पत्र ७६; सुज्ज १६ टी—पत्र २६६)।

विअद्द वि [**वितर्द**] हिंसक; (आचा १, ६, ४, ५)।

विअद्ध देखो **विअड्ड**=विदग्ध; (पञ्च ६०; नाट—मालती ५४)।

विअन्तु देखो **विन्तु**; (सहि ८)।

विअप्प सक [**वि+कल्पय्**] १ विचार करना। २ संशय करना। वियप्पइ, विअप्पेइ; (भवि; गा ४७६)। वकृ—**वियप्पंत**; (महा)। कृ—**वियप्प**; (उप ७२८ टी)।

विअप्प पुं [**विकल्प**] १ विविध तरह की कल्पना; "तं जयइ विरुद्धं पिव वियप्पजालं कइंदाण" (गउड)। २ वितर्क, विचार; (महा)। ३ भेद, प्रकार; "दव्वट्ठिओ अ पज्जवनओ अ, सेसा विअप्पा सिं" (सम्म ३)। देखो **विगप्प**=विकल्प।

विअप्पण न [**विकल्पन**] ऊपर देखो; "एगंतुच्छेअम्मि वि सुहदुक्खविअप्पणमजुत्तं" (सम्म १८; स ६८४)।

विअप्पणा स्त्री [**विकल्पना**] ऊपर देखो; (धर्मसं २१०)।

विअब्भ देखो **विदब्भ**; (प्राकृ ३८; पउम २६, ८)।

विअम्ह देखो **विअंभ**=वि + जृम्भ्। विअम्हइ; (प्राकृ ६४)।

विअय देखो **विजय**=विजय; (औप; गउड)।

विअय वि [**वितत**] १ विस्तीर्ण, विशाल; (महा)। २ प्रसारित, फैलाया हुआ; (विसे २०६१; श्रावक २०३)। °**पक्खि** पुं [°**पक्षिन्**] मनुष्य-लोक से बाहर रहने वाले पक्षी की एक जाति; "नरलोगाओ बाहिं समुग्गपक्खी विअ-यपक्खी" (जी २२)। देखो **वितत**=वितत।

विअर सक [**वि+चर्**] विहरना, घूमना-फिरना। विअरइ; (गउड ३८८)।

विअर सक [**वि+तॄ**] देना, अर्पण करना। वियरइ; (कस; भवि), वियरेज्जा; (कप्प)। कर्म—वियरिज्जइ; (उत्त १२, १०)। वकृ—**वियरंत**; (काल)।

विअर पुं [**दे**] १ नदी आदि जलाशय सूख जाने पर पानी निकालने के लिए उसमें किया जाता गर्त, गुजराती में 'वियडो'; (ठा ४, ४—पत्र २८१; णाया १, १—पत्र ६३; १, ५—पत्र ६६)। २ गर्त, खड्डा; "तत्थ गुलस्स जाव अन्नेसिं च बहूणं जिब्भिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं पुंजे य निकरे य करेंति, करेत्ता वियरए खणंति,...वियरे भरंति" (णाया १, १७—पत्र २२६)।

विअरण न [**विचरण**] विहार, चलना-फिरना; (अजि १६)।

विअरण न [**वितरण**] प्रदान, अर्पण; (पंचा ७, ६; उप ५६७ टी; सण)।

विअरिय वि [**विचरित**] जिसने विचरण किया हो वह, विहृत; (महा), "विमलीकयम्ह चक्खू जहत्थया विअरिया गुणा तुज्झ" (पिंड ४६३)।

विअल अक [**भुज्**] मोड़ना, वक्र करना। विअलइ; (धात्वा १५२)।

विअल अक [**वि+गल्**] १ गल जाना, क्षीण होना। २

टपकना, झरना। वकृ—**विअलंत**; (गा ३६९; सुर ४, १२७)।
विअल अक [ओजय्] मजबूत होना; (संक्षि ३४)।
विअल वि [विकल] १ हीन, असंपूर्ण; (पण्ह १, ३—पत्र ४०)। २ रहित, वर्जित, वन्ध्य; (सा २)। ३ विह्वल, व्याकुल; "विअलुद्धरणसहावा हुवंति जइ केवि सप्पुरिसा" (गा २८५)। देखो **विगल**=विकल।
विअल सक [विकलय्] विकल बनाना। वियलइ; (सण)।
विअल देखो **विअड**=विकट; (से ८, २१)।
विअल देखो **विदल**=द्विदल; (संबोध ४४)।
विअलंवल वि [दे] दीर्घ, लम्बा, (दे ७, ३३)।
विअलिअ वि [विगलित] १ नाश-प्राप्त, नष्ट, (से २, ४५; सण)। २ पतित, टपक कर गिरा हुआ; "विअलिअ उत्तरं" (पाअ)।
विअल्ल अक [वि+चल्] १ क्षुब्ध होना। २ अव्यवस्थित होना। "खलइ जीहा, मुहवयणु वियल्लइ" (भवि)।
विअस अक [वि+कस्] खिलना। विअसइ; (प्राकृ ७६; हे ४, १९५)। वकृ—**विअसंत, विअसमाण**; (औप; सुपा २०)।
विअसावय वि [विकासक] विकसित करने वाला; (गउड)।
विअसाविअ वि [विकासित] विकसित किया हुआ; (सुपा २२५)।
विअसिअ वि [विकसित] विकास-प्राप्त; (गा १३; पाअ; सुर २, २२२; ४, ५८; औप)।
विअह देखो **विजह**=वि+हा। संकृ—**वियहित्तु**; (आचा १, १, ३, २)।
विआउआ स्त्री [विपादिका] रोग-विशेष, पामा; (दे ८, ७१)।
विआउरी स्त्री [विजनयित्री] व्याने वाली, प्रसव करने वाली; (णाया १, २—पत्र ७९)।
विआगर देखो **वागर**। वियागरेइ, वियागरंति, (आचा २, २, ३, १, सूअ १, १४, १८), वियागरे, वियागरेज्जा; (सूअ १, ९, २५; विसे ३३६; सूअ १, १४, १९)। वकृ—**वियागरेमाण**; (आचा २, २, ३, १)।
विआघाय देखो **वाघाय**; (आचा)।
विआण सक [वि+ज्ञा] जानना, मालूम करना। वियाणइ, विआणंति; (भग; गा ४८), वियाणासि; (पि ५१०), वियाणाहि, वियाणेहि; (पणण १—पत्र ३९; महा)। कर्म—वियाणिज्जइ; (सद्दि १६)। वकृ—**वियाणंत, वियाणमाण**; (औप; उव)। संकृ—**वियाणिआ, वियाणिऊण, वियाणित्ता**; (दसचू १, १८; महा; औप; कप्प)। कृ— **वियाणियव्व**; (उप पृ ६०)।
विआण न [विज्ञान] जानकारी, ज्ञान, "एक्कंपि भाय! दुलहं जिणमयविहियणुवियाणं" (सद्दि १६)। देखो **विन्नाण**।
विआण न [वितान] १ विस्तार, फैलाव; (गउड १७६; ३८६, ५६२)। २ वृत्ति-विशेष; ३ अवसर, ४ यज्ञ; (हे १, १७७; प्राप्र)। ५ पुंन. चन्द्रातप, चँदवा, आच्छादन-विशेष; (गउड २००, ११८०; हे १, १७७; प्राप्र)।
विआणग वि [विज्ञायक] जानकार, विज्ञ; (उप पृ ११६)।
विआणण न [विज्ञान] जानना, मालूम करना; (स २६७; सुर ३, ७)।
वियाणय देखो **विआणग**; (सम्म १६०; भग; औप; सुर ६, २१; सण)।
विआणिअ वि [विज्ञात] जाना हुआ, विदित; (स २६७; सुपा ३६१; महा; सुर ४, २१४; १२, ७१; पिंग)।
विआय सक [वि+जनय्] जन्म देना, प्रसव करना; गुजराती में 'वियावु'। "वियायइ पढमं जं पिउगिहे नारी" (उप ९६८ टी)। संकृ—**विआय**; (राज)।
विआर सक [वि+कारय्] विकृत करना। विआरेदि (शौ); (मा ५१)।
विआर सक [वि+चारय्] विचारना, विमर्श करना। विआरेइ; (प्राकृ ७१; भग), वियारिज्ज; (सत्त ३९)। वकृ—**वियारयंत**; (श्रा १६)। कवकृ—**वियारिज्जंत**; (सुपा १४८)। संकृ—**विआरिअ**, (अभि ४४)। कृ—**विआरणिज्ज**; (श्रा १४)।
विआर सक [वि+दारय्] फाड़ना, चीरना। विआरे; (अप), (पिंग)। संकृ—**वियारिऊण**; (स २६०)।
विआर पुं [विकार] विकृति, प्रकृति का भिन्न रूप वाला परिणाम; (हे ३, २३; गउड; सुर ३, २६, प्रासू ४६)।
विआर पुं [विचार] १ तत्त्व-निर्णय; (गउड; विचार १; दं १)। २ तत्त्व-निर्णय के अनुकूल शब्द-रचना; (जी ५१)। ३ ख्याल, सोच; "अण्णो वक्करकालो अण्णो कज्जविआर-कालो" (कप्पू)। ४ दिशा-फरागत के लिए बाहर जाना; (पव २; १०१)। ५ गमन की अनुकूलता; (पव १०४)। ६ विचरण, ७ अवकाश; "अंतेउरे य दिण्णवियारे जाते

यावि होत्था" (विपा १, ५—पत्र ६३)। ८ विमर्श, मीमांसा; ६ मत, अभिप्राय; (भवि)। °धवल पु [°धवल] एक राजा का नाम; (उप ७२८ टी, महा)। °भूमि स्त्री [°भूमि] दिशा-फरागत जाने का स्थान; (कप्प; उप १४२ टी)।

विआरण न [**विचारण**] १ विचार करना; (सुपा ४६४; सार्ध ६०)। २ विचार करने वाला; "जय जिणनाह समत्थवत्थुपरमत्थवियारण" (सुपा ५२)। ३ वि. विचरण करने वाला; "अंबरतरविआरणिआहिं" (अजि २६)।

विआरण न [**विदारण**] चीरना, फाड़ना, (सार्ध ४६, स २४१)।

विआरण देखो **वागरण**; (कुप्र २४५)।

विआरण वि [**वैदारण**] विदारण-संबन्धी, विदारण से उत्पन्न होने वाला, स्त्री—°णिआ; (नव १६)।

विआरणा स्त्री [**विचारणा**] विचार, विमर्श, (उप ७२८ टी; स २४७; पंचा ११, ३४)।

विआरणा स्त्री [**वितारणा**] विप्रतारणा, ठगाई; (उप ६१६)।

विआरय वि [**विचारक**] विचार करने वाला; (पउम ८, ५)।

विआरि वि [**विचारिन्**] ऊपर देखो; (औप)।

विआरिअ वि [**वितारित**] जिसका विचार किया गया हो वह; (दे १, १६८)।

विआरिअ वि [**विदारित**] १ खोला हुआ, फाड़ा हुआ; "दूरविआरिअमुहं महाकायं—सीहं" (णमि १२)। २ विदीर्ण किया हुआ, चीरा हुआ; (भवि)।

विआरिअ वि [**वितारित**] १ अर्पित, दिया गया, "वालिया सिरोहरा वियारिया दिट्ठी" (स ३३७)। २ ठगा हुआ, विप्रतारित; "जइ पुण धुत्तेण अहं वियारिओ" (सुपा ३२४)।

विआरिआ स्त्री [**दे**] पूर्वाह्न का भोजन; (दे ७, ७१)।

विआरिल्ल } **विआरुल्ल** } वि [**विकारवत्**] विकार वाला, विकार-युक्त; (प्राप्र; हे २, १५६)। स्त्री—°ल्ला; (सुपा १६४)।

विआल देखो **विआर**=वि+चारय्। वकृ—**वियालंत**, (उवर ८२)।

विआल देखो **विआर**=वि+दारय्। कृ—**वियालणिय**; (सूअनि ३६; ३७)।

विआल पुं [**विकाल**] सन्ध्या, साँझ, सायंकाल; (दे ७, ६१; कप्पू; विपा १, ५—पत्र ६३; हे ४, ३७७; ४२४; कस, भवि)। °**चारि** वि [°**चारिन्**] विकाल में घूमने वाला; (णाया १, १—पत्र ३८; १, ४; औप)।

विआल पु [**दे**] चोर, तस्कर; (दे ७, ६१)।

विआल वि [**व्याल**] दुष्ट; "गोणं वियालं पडिपहे पेहाए, महिसं वियालं पडिपहे पेहाए, चित्ताचेल्लडयं वियालं पडिपहे पेहाए" (आचा २, १, ५, ४)। देखो **वाल**=व्याल।

विआल देखो **विचाल**; (राज)।

विआलग देखो **विआलय**=विकालक; (ठा २, ३—पत्र ७७)।

विआलण देखो **विआरण**=विचारण, (ओघ ६६; विसे १७६, पिंड ५६७)।

विआलणा देखो **विआरणा**=विचारणा; (विसे ३४७ टी; पिंड ५६७)।

विआलय वि [**विदारक**] विदारण-कर्ता, (सूअनि ३६)।

विआलय पु [**विकालक**] एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष; (सुज्ज २०)।

विआलिअ न [**दे**] व्यालू, सायंकाल का भोजन; "जा महु पुत्तह करयलि लग्गइ सा अमिएण वियालिउ मग्गइ" (भवि)।

विआलुअ वि [**दे**] अ-सहन, अ-सहिष्णु; (दे ७, ६८)।

विआव सक [**वि+आप्**] व्याप्त करना; (प्रामा)।

विआवड देखो **वावड**=व्यापृत; (ओघभा १६६; पउम २, ६)।

विआवत्त पु [**व्यावर्त**] १ घोष और महाघोष इन्द्रों के दक्षिण दिशा के लोकपाल; (ठा ४, १—पत्र १९८; इक)। २ ऋजुवालिका नदी के तीर पर स्थित एक प्राचीन चैत्य; (कप्प)। ३ पुंन. एक देव-विमान, (सम ३२)।

विआवाय पुं [**व्यापात**] भ्रंश, नाश, (आचा १, ६, ५, ६ टि)।

विआविअ देखो **वावड**=व्यापृत; (धर्मसं ६७६)।

विआस पुं [**विकाश**] १ मुँह आदि की फाड़—खुलापन, "थूलं वियासं मुहे" (सूअ १, ५, २, ३)। २ अवकाश; (गउड २०१)।

विआस पुं [**विकास**] प्रफुल्लता; (पि १०२; भवि)।

विआस देखो **वास**=व्यास; (राज)।

विआसइत्तअ (शौ) वि [**विकासयितृक**] विकसित करने वाला; (पि ६००)।

विआसग वि [**विकासक**] ऊपर देखो; (सुपा ६५८)।

विआसर वि [**विकस्वर**] विकसने वाला, प्रफुल्ल; (षड्)।

विआसि } वि [**विकासिन्**] ऊपर देखो; (पि ४०५; **विआसिल्ल** } सुपा ४०२; ६)।

विआह पुं [**विवाह**] १ व्याह, परिणयन, शादी; (गा ४७६; नाट—मालती ६)। २ विविध प्रवाह, ३ विशिष्ट प्रवाह; ४ वि. विशिष्ट संतान वाला; (भग १, १ टी)। °**पण्णत्ति** स्त्री [°**प्रज्ञप्ति**] पाँचवाँ जैन अंग-ग्रन्थ; (भग १, १ टी)।

विआह वि [**विवाध**] वाध-रहित; (भग १, १ टी)। °**पण्णत्ति** स्त्री [°**प्रज्ञप्ति**] पाँचवाँ जैन अंग-ग्रन्थ; (भग १, १ टी)।

विआह° स्त्री [**व्याख्या**] १ विशद रूप से अर्थ का प्रतिपादन; २ वृत्ति, विवरण। °**पण्णत्ति** स्त्री [°**प्रज्ञप्ति**] पाँचवाँ जैन अंग-ग्रन्थ; (भग १, १ टी)।

विआहिअ वि [**व्याख्यात**] १ जिसकी व्याख्या की गई हो वह, वर्णित; (श्रा २२)। २ उक्त, कथित, "स एव भव्वसत्ताणं चक्खुभूए विआहिए" (गच्छ १, २६; भग)।

विइ स्त्री [**वृति**] रज्जु-बन्धन; (औप)। देखो **वइ**=वृति।

विइअ वि [**विदित**] ज्ञात, जाना हुआ; (पाअ; पिंड ८२; संबोध ४६; स १६२; महा)।

विइइन्न देखो **विइकिण्ण**, (भग १, १ टी—पत्न ३७)।

विइंचिअ वि [**विविक्त**] विनाशित, (स १३५)।

विइंत सक [**वि+कृत्**] काटना, छेदना। विइंतइ; (णाया १, १४ टी—पत्न १८७)।

विइंत देखो **विचिंत**। वकृ—**विइंतंत**; (गउड ६७८)।

विइकिण्ण वि [**व्यतिकीर्ण**] व्याप्त, फैला हुआ; (भग १, १—पत्न ३६)।

विइक्कंत वि [**व्यतिक्रान्त**] व्यतीत, गुजरा हुआ; (ठा ६—पत्न ४४५; उवा; कप्प)।

विइगिंछा } देखो **वितिगिंछा**; (आचा; कस; उवा)। **विइगिच्छा** }

विइगिट्ठ वि [**व्यतिकृष्ट**] दूर-स्थित, विप्रकृष्ट; (वृह १)।

विइगिण्ण देखो **विइकिण्ण**; (कस)।

विइज्जंत देखो **वीअ**=वीजय्।

विइज्जंत देखो **विकिर**।

विइण्ण वि [**विकीर्ण**] १ विखरा हुआ; "विइण्णकेसी" (उवा)। २ विक्षिप्त, फेंका हुआ; (से १०, ३)। देखो **विकिण्ण**, **विकिन्न**।

विइण्ण वि [**वितीर्ण**] दिया हुआ, अर्पित; (गा ३४६; ६१७; से ८, ६५; १०, ३; हे ४, ४४४; महा)।

विइण्ह वि [**वितृष्ण**] तृष्णा-रहित, निःस्पृह; (से २, १०; प्राप्र; गा ६३; १७६)।

विइत्त देखो **विचित्त**; (गउड; स २३६; ७४०)।

विइत्त देखो **विवित्त**; (स ७४०)।

विइत्ता } देखो **विअ**=विद्। **विइत्ताणं** }

विइत्तिद (शौ) देखो **विचित्तिय**, (स्वप्न ३६)।

विइत्तु देखो **विअ**=**विद्**।

विइन्न देखो **विइण्ण**=वितीर्ण; (सुर ४, ११)।

विइमिस्स वि [**व्यतिमिश्र**] मिश्रित, मिला हुआ; (आचा)।

विउ वि [**विद्**, **विद्वस्**] विद्वान्, पण्डित, जानकार; (णाया १, १६; उप ७६८ टी; सुर १, १३५; सूअ २, १, ६०; रंभा)। °**पकड** स्त्री [°**प्रकृत**] १ विद्वान् द्वारा प्रक्रान्त, २ विद्वान् ने किया हुआ; (भग ७, १० टी—पत्र ३२५; १८, ७—पत्न ७५०)।

विउअ वि [**वियुत**] वियुक्त, रहित; "दव्वं पज्जवविउअं दव्व-विउत्ता य पज्जवा नत्थि" (सम्म १२)।

विउअ वि [**विवृत**] १ विस्तृत; २ व्याख्यात; (हे १, १३१)।

विउअ (अप) देखो **विओअ**=वियोग; (हे ४, ४१६)।

विउंचिआ स्त्री [**दे. विचर्चिका**] रोग-विशेष, पामा रोग का एक भेद; "कवि विउंचिअपामासमन्निया सेवगा तस्स" (सिरि ११७)।

विउंज सक [**वि+युज्**] विशेष रूप से जोड़ना। विउंजति; (सूअ २, २, २१)।

विउक्कंति स्त्री [**व्युत्क्रान्ति**] उत्पत्ति; "अ-विउक्कंतियं चयमाणे" (भग १, ७)।

विउक्कंति स्त्री [**व्युत्क्रान्ति**, **व्यवक्रान्ति**] मरण, मौत; (भग १, ७)।

विउक्कम सक [**व्युत्+क्रम्**] १ परित्याग करना। २ उल्लंघन करना। ३ अक. च्युत होना, नष्ट होना, मरना। ४ उत्पन्न होना। विउक्कमंति; (भग; ठा २, ३—पत्न १४१)। संकृ—**विउकम्म**; (सूअ १, १, १, ६; उत्त ५, १५; आचा १, ८, १, २)।

विउक्कस सक [व्युत् + कर्षय्] गर्व करना, वडाई करना । विउक्कसेज्जा, (सूअ १, १३, ६); विउक्कसे, (आचा १, ६, ४, २) ।
विउक्कस्स पुं [व्युत्कर्ष] गर्व, अभिमान; (सूअ १, १, २, १२) ।
विउच्छा देखो **वि-उच्छा**=विद्-जुगुप्सा ।
विउच्छेअ पुं [व्यवच्छेद] विनाश; (पंचा १७, १८) ।
विउज्जम अक [व्युद् + यम्] विशेष उद्यम करना । वकृ— "धणियंपि **विउज्जमंताणं**" (पउम १०२, १३७) ।
विउज्झ अक [वि + बुध्] जागना । विउज्झइ; (भवि, सण)।
विउट्ट सक [वि + कुट्टय्] विच्छेद करना, विनाश करना । हेकृ—**विउट्टित्तए**; (ठा २, १—पत्र ५६; कस) ।
विउट्ट सक [वि + त्रोटय्] तोड़ डालना । विउट्टइ; (सूअ २, २, २०) । हेकृ—**विउट्टित्तए**; (ठा २, १—पत्र ५६) ।
विउट्ट अक [वि + वृत्] १ उत्पन्न होना । २ निवृत्त होना । विउट्टंति; (सूअ २, ३, १), विउट्टेज्जा; (ठा ८ टी—पत्र ४१८) ।
विउट्ट सक [वि + वर्तय्] १ विच्छेद करना । २ घूमकर जाना । विउट्टंति; (स १७८) । संकृ—**विउट्टाणं**; (आचा १, ८, १, २) । हेकृ—**विउट्टित्तए**; (ठा २, १—पत्र ५६) ।
विउट्ट देखो **विअट्ट**=विवृत्त, (कप्प) ।
विउट्टण न [विवर्तन] निवृत्ति; (ओघ ७६१) ।
विउट्टण न [विकुट्टन] १ विच्छेद; २ आलोचना, अतिचार-विच्छेद; (ओघ ७६१) । ३ वि. विच्छेद-कर्ता; (धर्मसं ६६६) ।
विउट्टणा स्त्री [विकुट्टना] १ विविध कुट्टन; २ पीड़ा, संताप; (सूअ १, १२, २१) ।
विउट्ठिअ वि [व्युत्थित] जो विरोध में खड़ा हुआ हो वह, विरोधी बना हुआ; (सूअ १, १४, ८) ।
विउड सक [वि + नाशय्] विनाश करना । विउडइ; (हे ४, ३१) । कर्म—विउडिज्जंति; (स ६७६) ।
विउडण न [विनाशन] १ विनाश, (स २७; ६६१) । २ वि. विनाश-कर्ता; (स ३७; २८२) ।
विउडिअ वि [विनाशित] नष्ट किया गया; (पाअ; कुमा; उप ७२८ टी) ।
विउण वि [विगुण] गुण-रहित, गुण-हीन; (दे ६, ७८) ।
विउत्त वि [वियुक्त] विरहित, वियोग-प्राप्त; (सुर ३, १२३; १०, १४५; सुपा ११०; काल; सण) ।
विउत्त देखो **विअत्त**=वि + वर्तय् ।
विउत्थिअ देखो **विउट्ठिअ**; (कुप्र २२४; ३६६) ।
विउद देखो **विउअ**=विवृत; (प्राप्र) ।
विउद्ध वि [विबुद्ध] १ जागृत, (सुपा १४०) । २ विकसित; (स ७६८) ।
विउप्पकड वि [व्युत्प्रकट] अतिशय प्रकट—व्यक्त; (भग ७, १० टी—पत्र ३२५) ।
विउम वि [विद्वस्] विद्वान्, विज्ञ; "विउमं ता पयहिज्ज संथवं" (सूअ १, २, २, ११) ।
विउर देखो **विदुर**; (वेणी १३४) ।
विउल वि [विपुल] १ प्रभूत, प्रचुर; २ विस्तीर्ण, विशाल; (उवा; औप) । ३ उत्तम, श्रेष्ठ, (भग ६, ३३) । ४ अगाध, गम्भीर; (प्राप्र) । ५ पुं. राजगिर के समीप का एक पर्वत; (पउम २, ३७) । °**जस** पुं [°**यशस्**] एक जिन-देव का नाम; (उप ६८६ टी) । °**मइ** स्त्री [°**मति**] मनःपर्यव-नामक ज्ञान का एक भेद; (कम्म १, ८; आवम) । २ वि. उक्त ज्ञान वाला, (कप्प; औप) । °**गरी** स्त्री [°**करी**] विद्या-विशेष; (पउम ७, १३८) । देखो **विपुल** ।
विउव देखो **विउव्व**=वैक्रिय; (कम्म ३, २) ।
विउवसिय देखो **विओसिय**=व्यवशमित; (राज) ।
विउवाय पुं [व्युत्पात] हिंसा, प्राण-वध; (सूअ २, ४, ३)।
विउव्व सक [वि + कृ, वि + कुर्व्] १ बनाना—दिव्य सामर्थ्य से उत्पन्न करना । २ अलंकृत करना, मण्डित करना । विउव्वइ, विउव्वए; (भग; कप्प; महा; पि ५०८) । भूका—विउव्विंसु; भवि—विउव्विस्संति; (भग ३, १—पत्र १५६), विउव्विस्सामि, (पि ५३३) । वकृ—**विउव्वमाण**; (सुज्ज २०) । कवकृ—**विउव्विज्जमाण**, (ठा १०—पत्र ४७२) । संकृ—**विउव्विऊण, विउव्विऊणं, विउव्वित्ता, विउव्विउं**; (महा; पि ५८५; भग; कस; सुपा ४७) । हेकृ—**विउव्वित्तए**; (पि ५७८) ।
विउव्व न [वैक्रिय] १ शरीर-विशेष, अनेक स्वरूपों और क्रियाओं को करने में समर्थ शरीर, (पउम १०२, ९८; पव १६२; कम्म १, ३७) । २ कर्म-विशेष, वैक्रिय शरीर की प्राप्ति का कारण-भूत कर्म; (कम्म १, ३३) । ३ वि. वैक्रिय शरीर से संवन्ध रखने वाला; (कम्म ४, २६) ।

विउव्वणया } स्त्री [विक्रिया, विकुर्वणा] १ बनावट,
विउव्वणा } शक्ति-विशेष से किया जाता वस्तु-निर्माण; (सूअनि १६३; औप; पउम ११७, ३१; पव २३०)। २ शक्ति-विशेष, वैक्रिय-करण शक्ति; (देवेन्द्र २३०)।

विउव्वाढ वि [दे] १ विस्तीर्ण; २ दुःख रहित; (दे १,१२६)।

विउव्वि वि [वैक्रियिन्, विकुर्विन्] १ विकुर्वणा करने वाला; (उप ३५७ टी)। २ वैक्रिय-शरीर वाला; (उत्त १३, ३२; सुख १३, ३२)।

विउव्विअ वि [विकृत, विकुर्वित] १ निर्मित, बनाया हुआ; (भग; महा; औप; सुपा ८८)। २ अलकृत, विभूषित; (वृह १)।

विउव्विअ वि [वैक्रियिक] वैक्रिय शरीर से संबन्ध रखने वाला; (कम्म ४, २४)। देखो **वेउव्विअ**।

विउस वि [विद्वस्] विज्ञ, पण्डित; (पाअ, उप पृ १०६; सुपा १०७; प्रासू ६३; भवि; महा), "विउसेहिं" (चेइय ७७४), "विउसाणं" (सम्मत्त २१६)।

विउसग्ग देखो **विओसग्ग**, (हे २, १७४; षड्)।

विउसमण न [व्युपशमन, व्यवशमन] १ उपशम, उपक्षय; २ सुरत का अवसान; "ता से णं पुरिसे विउसमणकालसमयंसि केरिसए सायासोक्खं पच्चणुब्भवमाणे विहरति" (सुज्ज २०; भग १२, ६—पत्र ५७८)। ३ वि. विनाशक; "सव्व-दुक्खपावाण विउसमणं" (पण्ह २, १—पत्र १००)।

विउसमणया स्त्री [व्यवशमना] उपशम, क्रोध-परित्याग; (भग १७, ३—पत्र ७२६)।

विउसमिय देखो **विओसमिय**; (राज)।

विउसरण न [व्युत्सर्जन] परित्याग; (दंस १)।

विउसरणया स्त्री [व्युत्सर्जना] ऊपर देखो; (भग; णाया १, १—पत्र ४६)।

विउसव देखो **विओसव**। सक्र—**विउसवेत्ता**; (कस १, ३५ टि)।

विउसवण देखो **विउसमण**; (पण्ह २, ४—पत्र १३१)।

विउसविय देखो **विओसविय**; (ठा ६—पत्र ३७०)।

विउसिज्जा देखो **विओसिज्ज**; (आचा १, ६, २, २)।

विउस्स सक [वि+उश्] विशेष बोलना। विउस्सति; (सुअ १, १, २, २३)।

विउस्स अक [विद्वस्य्] विद्वान् की तरह आचरण करना। विउस्संति; (सुअ १, १, २, २३)।

विउस्सग्ग देखो **विओसग्ग**; (भग १, ६; उत्त ३०,३०)।

विउस्सित्त वि [व्युत्सित, व्युत्सिक्त] अभिनिविष्ट, कदाग्रह-युक्त; (सूअ १, १, १, ६)।

विउस्सिय वि [व्युषित] विशेष रूप से रहा हुआ; (सूअ १, १, २, २३)।

विउस्सिय वि [व्युच्छ्रित] विविध तरह से आश्रित; "ससारं ते विउस्सिया" (सूअ १, १, २, २३)।

विउह वि [विबुध] १ पण्डित, विद्वान्; २ पु. देव, सुर, (हे १, १७७)। देखो **विबुह**।

विऊरिअ वि [दे] नष्ट, नाश-प्राप्त; (दे ७, ७२)।

विऊसिर सक [व्युत्+सृज्] परित्याग करना; "विऊसिरे विन्नु अगारवंधणं" (आचा २, १६, १)।

विऊह पुं [व्यूह] रचना-विशेष, (पंचा ८, ३०)।

विएअ वि [वितेजस्] महान् प्रकाश;
"अच्चंतविएएणवि गरुयाण ण खिज्जइ कंति संकप्पा।
विज्जुज्जुओ वहलत्तेण मोहेइ अच्छीइं" (गउड)।

विएऊण अ [दे] चुन कर; "सुयसागरा विएऊण जेण सुय-रयणमुत्तमं दिण्णं" (पण्ण १—पत्र ४)।

विएस पुं [विदेश] १ देशान्तर, परदेश; (सिरि ४६७; महा)। २ कुत्सित ग्राम, खराब गाँव; ३ बन्धन-स्थान; (गा ७६)।

विओअ पुं [वियोग] जुदाई, विछोह, विरह; (स्वप्न ६३; अभि ४६; हे १, १७७; सुर ४, १५२; महा)।

विओइअ वि [वियोजित] जुदा किया हुआ; (से ६, ७१; गा १३२; स ६८; सुर १५, २१७)।

विओग देखो **विओअ**; (सुर ३, २१५; ४, १५१; महा)।

विओगिय वि [वियोगित] वियोग-प्राप्त; (धर्मवि १३१)।

विओज सक [वि+योजय्] अलग करना। विओजयंति; (सूअ १, ५, १, १६)।

विओजय वि [वियोजक] वियोग-कारक; (स ७५०)।

विओदर पुं [वृकोदर] भीमसेन, एक पाण्डव; (नाट—वेणी ३६)।

विओयण न [वियोजन] वियोग, विछोह; (सुर ११,३२)।

विओरमण न [व्युपरमण] विराधना, विनाश; "छक्काय-विओरमणं" (ओघभा १६०; ओघ ३२६)।

विओल वि [दे] आविग्न, उद्वेग-युक्त; (दे ७, ६३)।

विओवाय पु [व्यवपात] भ्रंश, नाश; (आचा; सूअ १, ३, ३, ४)।

विओसग्ग पुं [व्युत्सर्ग] १ परित्याग; २ तप-विशेष, निरीहपन से शरीर आदि का त्याग; (औप)।

विओसमण देखो **विउसमण**; (पण्ह २, २—पत्र ११८; २, ५—पत्र १४९) ।
विओसमिय वि [**व्यवशमित**] उपशान्त किया हुआ; (कस ६, १ टि) ।
विओसरणया देखो **विउसरणया**; (औप) ।
विओसव सक [**व्यव + शमय्**] उपशान्त करना, दबा देना । संकृ—"तं अहिगरणं अ-**विओसवेत्ता**" (कस) ।
विओसविय } देखो **विओसमिय**; "अविओसवियपाहुडे"
विओसिअ } (कस १, ३५; ४, ५) । "विओसवियं वा पुणो उदीरित्तए" (कस ६, १; ४, ५ टि) ।
विओसिज्जा अ [**व्युत्सृज्य**] परित्याग कर; (आचा १, ६, २, १) ।
विओसिय वि [**व्यवसित**] पर्यवसित, समाप्त किया हुआ; (सूअ १, १, ३, ५) ।
विओसिय वि [**विकोशित**] कोश-रहित, निरावरण, नंगा; "विउ(?ओ)सियवरासि—" (पण्ह १, ३—पत्र ४५) ।
विओसिर देखो **विऊसिर**; (पि २३५) ।
विओह पुं [**विबोध**] जागरण, जागृति; (भवि) ।
विंख न [**दे**] वाद्य-विशेष; (राज) ।
विंचिणिअ वि [**दे**] १ पाटित, विदारित; २ धारा; (दे ७, ९३) ।
विंचुअ पुं [**वृश्चिक**] जन्तु-विशेष, विच्छू; (हे १, १२८; २, १६; ८९) ।
विंछ अक [**वि + घट्ट्**] अलग होना । विंछइ; (प्राकृ ७१) ।
विंछिअ } देखो **विंचुअ**; (हे १, २६; २, १६; सुख
विंछुअ } ३६, १४८; पउम ३९, १७; प्राप्र; प्राकृ २३; गा २३७ अ) ।
विंजण देखो **वंजण**; "तेत्तीसविंजणाइं" (चंड) ।
विंजण देखो **विअण**=व्यजन; गुजराती में 'विंजणो'; (रंभा २०) ।
विंझ पुं [**विन्ध्य**] १ पर्वत-विशेष, विन्ध्याचल; (गा ११५; णाया १, १—पत्र ६४) । २ व्याध, बहेलिया; (हे १, २५; २, २६; प्राप्र) । ३ एक जैन मुनि; (विसे २५१२) । ४ एक श्रेष्ठि-पुत्र; (सुपा ५७८) ।
विंट सक [**वेष्ट्**] वेष्टन करना, लपेटना, गुजराती में 'विंटवु' । "विंटइ तं उज्जाणं हयगयरहसुहडकोडीहिं" (सुपा ५७३) । प्रयो—संकृ—**विंटाविउं**; (सुपा १८९) ।
विंट न [**वृन्त**] फल-पत्र आदि का बन्धन; (हे १, १३९; प्राकृ ४; रंभा; प्राप्र १०२) ।
विंटल } न [**दे**] १ वशीकरण-विद्या; "अन्नाइंपि कुंड-
विंटलिअ } लवि(?टलवि)टलाइं करलाघवाइं कम्माइं" (सिरि ५७) । २ निमित्त आदि का प्रयाग; (बृह १), "विंटलिआणि पउजंति" (गच्छ ३, १३) ।
विंटलिआ स्त्री [**दे**] गठरी, पोटली, गुजराती में 'विंटलु'; "ताव कुमरेण खित्ता तच्पुरओ वत्थविंटलिया", "तीए विंटलियाए" (सुपा २९१) ।
विंटिया स्त्री [**दे**] १ गठरी, पोटली; (सुख २, ५; उप १४२ टी) । २ मुद्रिका, अंगुलीयक, गुजराती में 'वींटी'; "उच्चारोवरि मुक्का कणयमयविंटिआ नियया" (सुपा ६११), "पडिवन्नाओ मणिविंढि(?टि)याहि तह अंगुलीओ त्ति" (स ७६) ।
विंतर पुं [**व्यन्तर**] १ विच्छू आदि दुष्ट जन्तु; (उप ५९४), "दुट्ठाण को न बीहइ विंतरसप्पाण व खलाणं" (वज्जा १२) । २ एक देव-जाति; "निस्सूगाणं नराणं हि विंतरा अवि किंकरा" (श्रा १२; दं २) ।
विंतागी स्त्री [**वृन्ताकी**] बैंगन का गाछ; (सण) ।
विंद सक [**विद्**] १ जानना । २ प्राप्त करना । "धम्मं च जे विंदति तत्थ तत्थ" (सूअ १, १४, २७) । वकृ—**विंदमाण**; (णाया १, १—पत्र २९; विपा १, २—पत्र ३४) ।
विंद देखो **वंद**=वृन्द; (भवि; पि ३६८) ।
विंदारग } देखो **वंदारय**; (सुपा ५०३; नाट—शाकु
विंदारय } ८८) । °**वर** पुं [°**वर**] इन्द्र; (सम्मत ७५) ।
विंदावण पुंन [**वृन्दावन**] मथुरा का एक वन, (ती ७) ।
विंदुरिल्ल वि [**दे**] १ उज्ज्वल, देदीप्यमान; २ मंजुल घोष वाला, कल-कंठ; ३ विद्राण, म्लान; ४ विस्तृत; "घंटाहिं विंदुरिल्लासुरतरुणीविमाणाणुसारं लहंती" (कप्पू) ।
विंद्र देखो **चंद्र**; (प्राकृ ३६) ।
विंद्रावण देखो **विंदावण**; (प्राकृ ३६) ।
विंध सक [**व्यध्**] बींधना, छेदना, वेधना । विंधइ, विंधेज्जा; (पि ४८९; भग) । वकृ—**विंधंत**, (सुर २, ९३) । संकृ—**विंधिअ**, (नाट—मृच्छ २१३) । हेकृ—**विंधिउं**; (स ६२) । कृ—**विंधेयव्व**; (सुपा २६९) ।
विंधण न [**व्यधन**] छेदन, वेधना; "लक्खविंधण—" (धर्मवि ५२) ।
विंधिअ वि [**विद्ध**] जो वेधा गया हो वह, छिन्न; (सम्मत्त १५८) ।

विंभय देखो **विम्हय**=विस्मय; (भवि)।

विंभर देखो **विम्हर**। विंभरइ; (पि ३१३)।

विंभल वि [**विह्वल**] व्याकुल, घबड़ाया हुआ; "विसविंभल—" (उप ५९७ टी; कुप्र ६०; पिंड ५९८; भवि; ओघ ७३)।

विंभिअ वि [**विस्मित**] आश्चर्य-चकित; "ओघुणइ दीवओ विंभ (?भि)ओ व्व पवणाहओ सीसं" (वज्जा ६६; भवि)।

विंभिअ देखो **विअंभिअ**; "सोहग्गविंभियासाए" (वज्जा ८६)।

विंसदि (शौ) स्त्री [**विंशति**] बीस, २०; (प्रयौ २०)।

विकंथ सक [**वि+कत्थ्**] प्रशंसा करना। विकंथइज्जा; (सुअ १, १४, २१)।

विकंप अक [**वि+कम्प्**] हिल जाना, चलित होना। वकृ—**विकंपमाणो**; (सूअ १, १४, १४)।

विकंप सक [**वि+कम्पय्**] १ हिलाना, चलाना। २ त्याग करना, छोड़ना। ३ अपने मंडल से बाहर निकलना। ४ भीतर प्रवेश करना। विकंपइ; (सुज्ज १, १)। संकृ—**विकंपइत्ता**; (सुज्ज १, ६)।

विकंप वि [**विकम्प**] कम्प, हिलन; (पंचा १८, १५)।

विकच वि [**विकच**] विकसित, प्रफुल्ल; (दे ७, ८६)।

विकट्ट सक [**वि+कृत्**] काटना। वकृ—**विकट्टंत**; (संथा ६६)।

विकट्टिय वि [**विकृत्त**] काटा हुआ; (तंदु ४४)।

विकट्ठ देखो **विअट्ठ**; (राज)।

विकड्ढ सक [**वि+कृष्**] खींचना। विकड्ढइ; (पण्ह १, १—पत्र १८)। वकृ—**विकड्ढमाण**; (उवा)।

विकत्त देखो **विकट्ट**। विकत्तंति; (सूअ १, ५, २, २), विकत्ताहि; (पण्ह १, १—पत्र १८)।

विकत्तु वि [**विकरितृ**] विक्षेपक, विनाशक; "अप्पा कत्ता विकत्ता य दुक्खाण य सुहाण य" (उत्त २०, ३७)।

विकत्थ देखो **विकंथ**। विकत्थइ, विकत्थसि; (उत्त; कुप्र १२५)। वकृ—**विकत्थंत**; (सुपा ३१६)।

विकत्थण न [**विकत्थन**] १ प्रशंसा, श्लाघा; २ वि. प्रशंसा-कर्ता; (पुप्फ ३३०; धर्मवि ३६)।

विकत्थणा स्त्री [**विकत्थना**] प्रशंसा, श्लाघा; (पिंड १२८)।

विकप्प देखो **विअप्प**; (कस; पंचभा)।

विकप्पण न [**विकल्पन**] छेदन, काटना; "पओउ(?पउ)लण-विकप्पणाणि य" (पण्ह १, १—पत्र १८)।

विकप्पणा देखो **विअप्पणा**; (णाया १, १६—पत्र २१८)।

विकप्पिय देखो **विगप्पिअ**; (राज)।

विकय देखो **विगय**=विकृत; (पण्ह १, १—पत्र २३; १, ३—पत्र ४५)।

विकय देखो **विकच**; (पिंग)।

विकर सक [**वि+कृ**] विकार पाना। कवकृ—**विकीरंत**; (अच्चु ४७)।

विकरण न [**विकरण**] विक्षेपण, विनाश; "कम्मरयविकरणकरं" (णाया १, ८—पत्र १५२)।

विकराल देखो **विगराल**; (दे; राज)।

विकल देखो **विअल**=विकल; "कला अ-विकला तुज्झ" (कुप्र ८; सिरि २२३; पंचा ६, ३६)। देखो **विगल**=विकल।

विकस देखो **विअस**। विकसइ; (षड्)।

विकसिय देखो **विअसिअ**; (कप्प)।

विकहा देखो **विगहा**; (सम ४६)।

विकारिण वि [**विकारिन्**] विकार-युक्त; "बालो अ-विकारिणो अबुद्धीओ" (पउम २६, ६०)।

विकासर देखो **विआसर**; (हे १, ४३)।

विकिइ देखो **विगइ**=विकृति; (विसे २६६८)।

विकिंचण देखो **विगिंचण**; (ओघभा २०६ टी)।

विकिंचणया देखो **विगिंचणया**; (ओघभा २०६ टी; ठा ८ टी—पत्र ४४१)।

विकिट्ठ वि [**विकृष्ट**] १ उत्कृष्ट; "विकिट्ठतवसोसियंगो" (महा)। २ न. लगा तार चार दिनों का उपवास; (संबोध ५८)। देखो **विगिट्ठ**।

विकिण सक [**वि+क्री**] बेचना। विकिणइ; (हे ४, ५२)।

विकिणण न [**विक्रयण**] विक्रय, बेचना; (कुमा)।

विकिण्ण वि [**विकीर्ण**] १ व्याप्त, भरा हुआ; (भग)। २—देखो **विइण्ण**, **विकिन्न**=विकीर्ण; (दे)।

विकिदि देखो **विगइ**=विकृति; (प्राकृ १२)।

विकिन्न वि [**विकीर्ण**] १ आकृष्ट; (पण्ह १, १—पत्र १८)। २—देखो **विइण्ण**=विकीर्ण; (पण्ह १, ३—पत्र ४५)।

विकिय देखो **विगिय**; (ओघभा २८६ टी)।

विकिर अक [**वि+कॄ**] १ बिखरना। २ सक. फेंकना। ३ हिलाना। कवकृ—**विइज्जंत**, **विकिरिज्जमाण**; (गउड ३३४; राज)।

विकिरण देखो **विकरण**; (तंदु ४१)।

विकिरिया स्त्री [**विक्रिया**] १ विविध क्रिया; २ विशिष्ट क्रिया; (राज)। देखो **विक्किरिया** ।
विकीण देखो **विकिण** । विकीणइ, विकीणए; (षड्)।
विकीरंत देखो **विकर** ।
विकुच्छिअ वि [**विकुत्सित**] खराब, दुष्ट; (भवि)।
विकुज्ज सक [**विकुब्जय्**] कुब्ज करना, दबाना। संकृ— **विकुज्जिय**; (आचा २, ३, २, ६)।
विकुप्प अक [**वि+कुप्**] कोप करना। विकुप्पए; (गा ६६७)।
विकुव्व देखो **विउव्व**=वि+कृ, कुर्व् । विकुव्वंति, (पि ५०८)। भूका—विकुव्विंसु; (पि ५१६)। भवि—विकुव्विस्संति; (पि ५३३)। वकृ— **विकुव्वमाण**; (ठा ३, १—पत्र १२०)।
विकुस पुं [**विकुश**] वल्वज आदि तृण; (औप; णाया १, १ टी—पत्र ६)।
विकूड सक [**वि+कूटय्**] प्रतिघात करना। विकूडे; (विसे ९३३)।
विकूण सक [**वि+कूणय्**] घृणा से मुँह मोड़ना। विकूणेइ, (विवे १०६)।
विकोअ पुं [**विकोच**] विस्तार, फैलाव; (धर्मसं ३६५; भग ५, ७ टी—पत्र २३६)।
विकोव देखो **विगोव** । "जो पवयणं विकोवइ सो नेओ दीहसंसारी" (चेइय ८३०)।
विकोवण न [**विकोपन**] विकास, प्रसार, फैलाव, "सीसमइविकोवणट्ठाए" (पिंड ६७)।
विकोवणया स्त्री [**विकोपना**] विपाक; "इंदिअत्थविकोवणयाए" (ठा ६—पत्र ४४६)।
विकोविय वि [**विकोविद**] कुशल, निपुण, (पिंड ४३१)।
विकोस वि [**विकोश**] कोश-रहित; (तंदु २०)।
विकोस, **विकोसाय** } अक [**विकोशय्**] १ कोश-रहित होना, विकसना; २ फैलना। विकोसइ; (हे ४, ४२)। वकृ—**विकोसायंत**; (पण्ह १, ४—पत्र ७८)।
विकोसिअ वि [**विकोशित**] १ विकसित; (कुमा)। २ कोश-रहित, नंगा; (णाया १, ८—पत्र १३३)।
विक्क सक [**वि+क्री**] बेचना। वकृ —**विक्कंत**; (पउम २६, ६)। कवकृ—**विक्कायमाण**, (दस ५, १, ७२)।
विक्कअ पुं [**विक्रय**] बेचना; (अभि १८४; गउड; सं ४६)।
विक्कअ देखो **विक्कव**; (षड्)।
विक्कइ वि [**विक्रयिन्**] बेचने वाला; (दे २, ६८)।
विक्कंत देखो **विक्क** ।
विक्कंत वि [**विक्रान्त**] १ पराक्रमी, शूर; (णाया १, १—पत्र २१; विसे १०५६; प्रासू १०७, कप्प)। २ पुं. पहली नरक-भूमि का बारहवाँ नरकेन्द्रक—नरक-स्थान विशेष; (देवेन्द्र ५)।
विक्कंति स्त्री [**विक्रान्ति**] विक्रम, पराक्रम; (णाया १, १६—पत्र २११)।
विक्कंभ देखो **विक्खंभ**=विष्कम्भ; (देवेन्द्र ३०९)।
विक्कणण न [**विक्रयण**] विक्रय, बेचना; (सुपा ६०६; सट्ठि ६ टी)।
विक्कम अक [**वि+क्रम्**] पराक्रम करना, शूरता दिखलाना। भवि—विक्कमिस्सदि (शौ); (पार्थ ६)।
विक्कम पुं [**विक्रम**] १ शौर्य, पराक्रम; (कुमा)। २ सामर्थ्य; (गउड)। ३ एक राजा का नाम, (सुपा ५६६)। ४ राजा विक्रमादित्य; (रंभा ७)। °**जस** पुं [°**यशस्**] एक राजा; (महा)। °**पुर** न [°**पुर**] एक नगर का नाम; (ती २१)। °**राय** पुं [°**राज**] एक राजा; (महा)। °**सेण** पुं [°**सेन**] एक राज-कुमार; (सुपा ५९२)। °**इच्च**, °**इत्त** पुं [°**आदित्य**] एक सुप्रसिद्ध राजा, (गा ४६४ अ; सम्मत्त १४६; सुपा ५९२; गा ४६४)।
विक्कमण पुं [**दे**] चतुर चाल वाला घोड़ा; (दे ७, ६७)।
विक्कमि वि [**विक्रमिन्**] पराक्रमी, शूर; (कुमा)।
विक्कव वि [**विक्लव**] व्याकुल, बेचैन; (पव १६९; प्राप्र; संबोध २१)।
विक्कायमाण देखो **विक्क** ।
विक्कि देखो **विक्कइ**; "ते नाणविक्किणो पुण मिच्छत्तपरा, न ते मुणिणो" (संबोध १६)।
विक्किंत वि [**विकृत्त**] छिन्न, काटा हुआ; (पण्ह १, ३—पत्र ५४)।
विक्किट्ठ देखो **विकिट्ठ**; (संबोध ५८)।
विक्किण सक [**वि+क्री**] बेचना। विक्किणइ; (प्राप्र)। कर्म—विक्किणीअंति, (पि ५४८)। वकृ— **विक्किणंत**, **विक्किणिंत**; (पि ३९७, सुपा २७६)। संकृ— **विक्किणिअ**; (नाट—मृच्छ ६५)।
विक्किणिअ, **विक्किय** } वि [**विक्रीत**] बेचा हुआ; (सुपा ६४२; भवि)।
विक्किय देखो **विउव्व**=वैक्रिय; "कयविक्कियरूवो सुरो व्व

लक्खियसि" (सुपा १८७), "कयविक्किय-कारुओ देवुव्व" (सम्मत्त १०४)।

विक्किरिया स्त्री [**विक्रिया**] विकृति, विकार; "तीए नय-णाइएहिं विक्किरियं कुणइ" (सुपा ५१४)। देखो **विक्कि-रिया**।

विक्कीय देखो **विक्किय=**विक्रीत; (सुर ६, १६६; सुपा ३८५)।

विक्के सक [**वि+क्री**] बेचना। विक्केइ, विक्केअइ; (हे ४, ५२; प्राप्र; धात्वा १५२)। कृ—**विक्केज्ज**; (दे ६, ४०; ७, ६६)।

विक्केणुअ वि [**दे**] विक्रेय, बेचने योग्य; (दे ७, ६६)।

विक्कोण पुं [**विकोण**] विकूणन, घृणा से मुँह सिकुड़ना; (दे ३, २८)।

विक्कोस सक [**वि+क्रुश्**] चिल्लाना। विक्कोश (मा); (मृच्छ २७)।

विक्खंभ पुं [**दे**] १ स्थान, जगह; (दे ७, ८८)। २ अंतराल, बीच का भाग; (दे ७, ८८; से ६, ५७)। ३ विवर, छिद्र; (से ३, १४)।

विक्खंभ पुं [**विष्कम्भ**] १ विस्तार; (पराण १—पत्र ५२; ठा ४, २—पत्र २२६; दे ७, ८८; पात्र)। २ चौडाई; "जंबुद्दीवे दीवे एगं जोयणसहस्सं आयामविक्खंभेणं पराणत्ते" (सम २)। ३ वाहल्य, स्थूलता, मोटाई; (सुज्ज १, १—पत्र ७)। ४ प्रतिबन्ध, निरोध; (सम्यक्त्वो ८)। ५ नाटक का एक अंग; (कप्पू)। ६ द्वार के दोनो तर्फ के खम्भो के बीच का अन्तर; (ठा ४, २—पत्र २२५)।

विक्खंभिअ वि [**विष्कम्भित**] निरुद्ध, रोका हुआ; (सम्य-क्त्वो ८)।

विक्खण न [**दे**] कार्य, काम, काज; (दे ७, ६४)।

विक्खय वि [**विक्षत**] व्रण-युक्त, कृत-व्रण; (भग ७, ६—पत्र ३०७)।

विक्खर सक [**वि+कृ**] १ छितरना, तितर-बितर करना। २ फैलाना। ३ इधर उधर फेंकना। विक्खरइ; (कप्पू), विक्खरेज्जा; (उवा २०० टि)। कवकृ—**विक्ख-रिज्जमाण**; (राज)।

विक्खवण न [**विक्षपण**] १ विनाश; २ वि. विनाशक; "वज्जं असंखपडिवक्खविक्खवणं" (सुपा ४७)।

विक्खाइ स्त्री [**विख्याति**] प्रसिद्धि; (भवि)।

विक्खाय वि [**विख्यात**] प्रसिद्ध, विश्रुत; (पात्र; सुर १, ४६; रंभा; महा)।

विक्खास वि [**दे**] विरूप, खराब, कुत्सित; (दे ७, ६३)।

विक्खिण्ण वि [**दे**] १ आयत, लम्बा; २ अवतीर्ण; ३ न. जघन; (दे ७, ८८)।

विक्खिण्ण देखो **विक्किण्ण**; (कस)।

विक्खित्त वि [**विक्षिप्त**] १ फेंका हुआ; (पात्र; कस; गउड)। २ भ्रान्त, पागल; "पसुत्तविक्खित्तजणे परियणे" (उप ७२८ टी, दे १, १३३; महा)।

विक्खिर देखो **विक्खर**। विक्खिरेज्जा; (उवा)।

विक्खिरिअ वि [**विकीर्ण**] बिखरा हुआ, छितरा हुआ, फैला हुआ; (सुर ५, २०६; सुपा २४६; गउड)।

विक्खिव सक [**वि+क्षिप्**] १ दूर करना। २ प्रेरना। ३ फेंकना। विक्खिवइ; (महा)।

विक्खिवण न [**विक्षेपण**] १ दूरीकरण; २ प्रेरणा; (पव ६४)।

विक्खेव पुं [**विक्षेप**] १ क्षोभ; "छोहो विक्खेवो" (पात्र)। २ उचाट, ग्लानि, खेद; (से ५, ३)। ३ ऊँचा फेंकना, ऊर्ध्व-क्षेपण; (ओघभा १६३)। ४ फेंकना, क्षेपण; (गा ५८२)। ५ शृंगार-विशेष, अवज्ञा से किया हुआ मण्डन; (पण्ह २, ४—पत्र १३२)। ६ चित्त-भ्रम; (स २८२)। ७ विलंब, देरी; (स ७३५)। ८ सैन्य, लश्कर; (स २४; ५७३)।

विक्खेवणी स्त्री [**विक्षेपणी**] कथा का एक भेद; (ठा ४, २—पत्र २१०)।

विक्खेविया स्त्री [**विक्षेपिका**] व्याक्षेप, विक्षेप; (वव ६)।

विक्खोड सक [**दे**] निन्दा करना; गुजराती में 'वखोडवुं'। विक्खोडेइ; (सिरि ८२५)।

विखंडिय वि [**विखण्डित**] खण्डित किया हुआ; (पउम २२, ६२)।

विग देखो **विअ=**वृक; (पण्ह १, १—पत्र ७; सण; णाया १, १—पत्र ६५)।

विगइ स्त्री [**विकृति**] १ विकार-जनक घृत आदि वस्तु; (णाया १, ८—पत्र १२२; उव; सं ७२; श्रा २०)। २ विकार; (उत्त ३२, १०१)।

विगइ स्त्री [**विगति**] विनाश; (विसे २१४६)।

विगइंगाल वि [**विगताङ्गार**] राग-रहित; (ओघ ५७६)।

विगइच्छ वि [**विगतेच्छ**] इच्छा-रहित, निःस्पृह; (उप १३० टी, ६१३)।

विगंच देखो **विगिंच**। संकृ— **विगंचिउं, विगंचिऊण**; (वव २; संबोध ५७)।

विगंचण देखो **विगिंचण**; "काए कंडूयणं वज्जे तहा खेल-विगंचणं" (संबोध ३)।

विगंचिअ देखो **विइंचिअ**; (स १३५ टि)।

विगच्छ अक [**वि+गम्**] नष्ट होना। वकृ—**विगच्छंत**; (सम्म १३४)।

विगज्झ देखो **विगह**=वि+ग्रह्।

विगड देखो **विअड**=विकट; (पण्ह १, ४—पत्र ७८; ऋौप)।

विगड देखो **विअड**=विवृत; (ठा ३, १ टी—पत्र १२२)।

विगण सक [**वि + गणय्**] १ निन्दा करना, २ घृणा करना। कवकृ—**विगणिज्जंत**; (तंदु १४)।

विगत्त सक [**वि+कृत्**] काटना, छेदना। संकृ—**विगत्तिऊणं**; (सूअ १, ५, २, ८)।

विगत्त वि [**विकृत्त**] काटा हुआ, छिन्न; (पण्ह १, १—पत्र १८)।

विगत्तग वि [**विकर्तक**] काटने वाला; (सूअ २, २, ६२)।

विगत्तणा स्त्री [**विकर्तना**] छेदन; (उत्त)।

विगत्थय वि [**विकत्थक**] प्रशंसा करने वाला, आत्म-श्लाघा करने वाला; (भवि)।

विगप्प देखो **विअप्प** = वि + कल्पय्। वकृ—**विगप्पयंत, विगप्पमाण**; (सुर ६, २२४; ३, १२४)।

विगप्प पुं [**विकल्प**] १ एक पक्ष में प्राप्ति; "चसद्दो विगप्पेणं" (पंच ३, ४४)। २—देखो **विअप्प**=विकल्प; (गाया १, १६—पत्र २१८; सुर ३, १०२, ४, २२२; सुपा १२६; जी २५)।

विगप्पण देखो **विअप्पण**, (उत्तर २३, ३२; महा)।

विगप्पिअ वि [**विकल्पित**] १ उत्प्रेक्षित, कल्पित; (पव २; उत्त)। २ चिन्तित, विचारित; (पव १४५)। ३ काटा हुआ, छिन्न ; "हत्थपायपडिच्छिन्नं कन्ननासविगप्पिअं" (दस ८, ५६)।

विगम पुं [**विगम**] विनाश; (सुर ७, २२६; १२, १६)।

विगय वि [**विकृत**] विकार-प्राप्त; (गाया १, २—पत्र ७६; १, ८—पत्र १३३)।

विगय वि [**विगत**] १ नाश-प्राप्त, विनष्ट; (सम्म १३४; विसे ३३७७; पिंड ६१०)। २ पु. एक नरक-स्थान; (देवेन्द्र २६)। °**धूम** वि [°**धूम**] द्वेष-रहित; (ओघ ५७६)। °**सोग** पुं [°**शोक**] एक महा-ग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७८), देखो **वीअ-सोग**। °**सोगा** स्त्री [°**शोका**] विजय-विशेष की एक नगरी; (ठा २, ३—पत्र ८०)।

विगरण न [**विकरण**] परिष्ठापन, परित्याग; (कस)।

विगरह सक [**वि+गर्ह्**] निन्दा करना। वकृ—**विगरह-माण**; (सूअ २, ६, १२)।

विगराल वि [**विकराल**] भीषण, भयंकर; (सुपा १८२; ५०५; सण)।

विगल सक [**वि+गल्**] टपकना, चूना। विगलइ; (षड्)।

विगल पुं [**विकल**] १ विकलेन्द्रिय—दो, तीन या चार ज्ञाने-न्द्रिय वाला जन्तु; (कम्म ३, ११; ४, ३; १५; १६; जी ४१)। २—देखो **विअल**=विकल; (उत्त; उप पृ १८१; पंचा १४, ४७)। °**देस** पुं [°**देश**] नय-वाक्य; (अज्झ ६२)।

विगलिंदिय पुं [**विकलेन्द्रिय**] दो, तीन या चार इन्द्रिय वाला जन्तु; (ठा २, २; ३, १—पत्र १२१)।

विगस अक [**वि+कस्**] खिलना, फूलना। विगसंति; (तंदु ५३)। वकृ—**विगसंत**; (गाया १, १—पत्र १६)।

विगह सक [**वि+ग्रह्**] १ लड़ाई करना। २ वर्ग-मूल निकालना। ३ समास आदि का समानार्थक वाक्य बनाना। संकृ—"भूओ भूओ **विगज्झ** मूलतिगं" (पंच २, १८)।

विगह देखो **विग्गह**; "हासदवविवज्जिए विगहमुक्के" (गच्छ २, ३३)।

विगहा स्त्री [**विकथा**] शास्त्र-विरुद्ध वार्ता, स्त्री आदि की अनुपयोगी वात, (भग; उत्त; सुर १४, ८८; सुपा २५२; गच्छ १, ११)।

विगाढ वि [**विगाढ**] १ विशेष गाढ, अतिशय निबिड; (उत्त १०, ४ टी)। २ चारों ओर से व्याप्त; ([illegible])।

विगाण न [**विगान**] १ वचनीय, लोकापवाद; (दे ३, ३)। २ विप्रतिपत्ति, विरोध, (धर्मसं २६६; चेइय ७५६)।

विगार पुं [**विकार**] विकृति, प्रकृति का अन्यथा परिणाम, (उप ६८६ टी; विसे १६८८)।

विगारि वि [**विकारिन्**] विकृत होने वाला, (पिंड २८०; पउम १०१, ४८)।

विगाल देखो **विआल**=विकाल; (सुर १, ११७)।

विगालिय वि [**विगालित**] विलम्बित, प्रतीक्षित: "एत्तिय-मेत्तं कालं विगा(?गा)लियं जेण आसाए" (सुर ६, २३)।

विगाह सक [**वि+गाह्**] १ अवगाहन करना। २ प्रवेश करना। संकृ—**विगाहिआ**; (सम ५०)।

विगिंच सक [**वि+विच्**] १ पृथक् करना, अलग करना। २ परित्याग करना। ३ विनाश करना। विगिंचइ, विगिंचए, विगिंचंति; (आचा; कस; श्रावक २६२ टी; सूअ १, १, ४, १२; पिंड ३६६), विगिंच; (सूअ १, १३, २१; उत्त ३, १३; पिंड ३६५)। वकृ—**विगिंचंत**, **विगिंचमाण**; (श्रावक २६२ टी; आचा)। संकृ—**विगिंचिऊणं**; **विगिंचित्ता**; (पिंड ३०५; आचा)। हेकृ—**विगिंचिउं**; (पिंड ३६८)। कृ—**विगिंचियव्व**; (पि ५७०)।

विगिंचण न [**विवेचन**] परिष्ठापन, परित्याग; (पिंड ४८३; कस)।

विगिंचणया, विगिंचणा, विगिंचणिआ स्त्री [**विवेचना**] १ निर्जरा, विनाश: (ठा ८—पत्र ४४१)। २ परित्याग; (ओघभा २०६; स ५१; ओघ ६०६ : ८७)।

विगिच्छा स्त्री [**विचिकित्सा**] संदेह, संशय, वहम; (श्रा ३; पडि)।

विगिट्ठ देखो **विकिट्ठ**; "अन्ने तवं विगिट्ठं काउं थोवावसेस-संसारा" (पउम २, ८३; ४, २७, गच्छ २, २५; उत्त ३६, २५३)। °**खमग** पुं [°**क्षपक**] तपस्वी साधु, (राज)। °**भत्तिय** वि [°**भक्तिक**] लगातार चार या उससे अधिक दिनों का उपवास करने वाला; (कप्प)।

विगिय देखो **विगय**=विकृत; (ओघभा २८६)।

विगिला, विगिलाअ अक [**वि+ग्लै**] विशेष ग्लान होना, खिन्न होना। विगिलाइ, विगिलाएज्जा; (पि १३६; आचा २, २, ३, २८)।

विगुण वि [**विगुण**] १ गुण-रहित; (सिरि १२३३; प्रासू ७१)। २ अननुगुण, प्रतिकूल; (पंचा ६, ३२)।

विगुत्त वि [**विगुप्त**] १ तिरस्कृत, अवधीरित; (श्रा १२)। २ जो खुला पड़ गया हो वह, जिसकी पोल खुल गई हो वह, जिसकी फजीहत हुई हो वह; "सदुक्कयविगुत्तो" (श्रा १४; धर्मवि ७७)।

विगुप्प° देखो **विगोव**।

विगुव्वणा देखो **विउव्वणा**; (ठा १—पत्र १६)।

विगुव्विय देखो **विउव्विअ**; (पउम ३६, ३२)।

विगोइय वि [**विगोपित**] जिसका दोष प्रकट किया गया हो वह; (सण)।

विगोव सक [**वि+गोपय्**] १ प्रकाशित करना। २ तिरस्कार करना। ३ फजीहत करना। भवि—"न खु न खु चउवेयपुत्तगो भोदुं सुद्दिक्खं पवज्जिय अप्पाणं विगोविस्सं" (मोह १०)। कर्म—विगुप्पए; (धर्मवि १३४), विगुप्पहि (अप); (भवि)। संकृ—**विगोवित्ता**, **विगोवइत्ता**, (कप्प; णाया १, १६—पत्र २४४)।

विगोवण न [**विकोपन**] विकास; "तहवि य दंसिज्जंतो सौसमइविगोवणमदुट्ठो" (श्रावक २२८)।

विग्गह पुं [**विग्रह**] १ वक्रता, बाँक, (ठा २, ४—पत्र ८६)। २ शरीर, देह; (पाअ; स ७२६; सुपा १६)। ३ युद्ध, लड़ाई; (स ६३४)। ४ समास आदि के समान अर्थ वाला वाक्य; (विसे १००२)। ५ विभाग; (ठा १०)। ६ आकृति, आकार; "वरवइरविग्गहए" (भग २, ८)। °**गइ** स्त्री [°**गति**] बाँक वाली गति, वक्र गति; (ठा २, १—पत्र ५५; भग)।

विग्गहिय वि [**वैग्रहिक**] शरीर के अनुरूप; "विग्गहिय-उन्नयकुच्छी" (पण्ह १, ४—पत्र ७८)।

विग्गहीअ वि [**विग्रहिक**] युद्ध-प्रिय; "जे विग्गहीए अनाय-भासी" (सूअ १, १३, ६)।

विग्गाहा (अप) स्त्री [**विगाथा**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

विग्गुत्त वि [**दे**] व्याकुल किया हुआ; (भवि)।

विग्गुत्त देखो **विगुत्त**; (धर्मवि ५८; ६८)।

विग्गोव देखो **विगोव**। संकृ—**विग्गोवित्ता**; (कप्प; औप)।

विग्गोव पुं [**दे**] आकुलता, व्याकुलता; (दे ७, ६४; भवि; वज्जा ३२)।

विग्गोवणया स्त्री [**विगोपना**] १ तिरस्कार; २ फजीहत; (उव)।

विग्घ पुंन [**विघ्न**] १ अन्तराय, व्याघात, प्रतिबन्ध; (सुपा ३६५; कुमा; प्रासू ५४; १३५; कप्प; कम्म १, ६१; षड्)। २ कर्म-विशेष, आत्मा की वीर्य, दान आदि शक्तियों का घातक कर्म; (कम्म १, ५२; ५३)। °**कर** वि [°**कर**] प्रतिबन्ध-कर्ता; (कम्म १, ६१)। °**ह** वि [°**घ्न**] विघ्न-

नाशक; (श्रु ७५)। °वह वि [°वह] विघ्न वाला; (सुर १, ४३)।
विग्घर वि [विगृह] गृह-रहित; "तह उग्घरविग्घरनिरंगणोवि न य इच्छियं लहइ" (गाया १, १० टी—पत्र १७१)।
विग्घिय वि [विघ्नित] विघ्न-युक्त; (हम्मीर १४)।
विग्घुट्ठ वि [विघुष्ट] चिल्लाया हुआ; (विपा १, २—पत्र २६)। देखो विघुट्ठ।
विघट्ट सक [वि+घट्टय्] १ वियुक्त करना। २ विनाश करना। विघट्टेइ; (उव)।
विघट्टण न [विघट्टन] विनाश; (नाट)।
विघडण देखो विहडण; (राज)।
विघत्थ वि [विघस्त, विग्रस्त] १ विशेष रूप से भक्षित; २ व्याप्त; "वाहिविघत्थस्स मत्तस्स" (महा; प्राप)।
विघर देखो विग्घर; (उव)।
विघाय पुं [विघात] विनाश; (कुमा)।
विघायग वि [विघातक] विनाश-कर्ता; (धर्मसं ५२६)।
विघुट्ठ न [विघुष्ट] विरूप आवाज करना, (पगह १, ३—पत्र ४५)। देखो विग्घुट्ठ।
विघुम्म अक [वि+घूर्णय्] डोलना। वकृ—**विघुम्ममाण**; (सुर ३, १०६)।
विचक्खु वि [विचक्षुष्क] चक्षु-रहित, अन्धा; (उप ७२८ टी)।
विचच्चिया स्त्री [विचर्चिका] रोग-विशेष, पामा; (राज)।
विचलिर वि [विचलितृ] चलायमान होने वाला; (सण)।
विचलिलय वि [विचलित] चंचल बना हुआ; (भवि)।
विचार देखो विआर=वि+चारय्। विचारेंति; (मृच्छ १०४)।
विचारग वि [विचारक] विचार-कर्ता; (रंभा)।
विचारण देखो विआरण=विचारण, (कुप्र ३९७)।
विचारणा देखो विआरणा=विचारणा; (धर्मसं ३०६)।
विचाल न [विचाल] अन्तराल; (दे ७, ८८)।
विचिअ वि [विचित] चुना हुआ; (दे ७, ९१)।
विचिंत सक [वि+चिन्तय्] विचार करना। विचिंतेइ; (महा)। वकृ—**विचिंतेंत**; (सुर १२, १६६)। कृ—**विचिंतियव्व, विचिंतिज्ज**, (पंचा ६, ४६; द्रव्य ५०)।
विचिंतण न [विचिन्तन] विचार, विमर्श, (श्रु ६)।
विचिंतिअ वि [विचिन्तित] विचारित, (सुर ८, ३)।
विचिंतिर वि [विचिन्तयितृ] विचार-कर्ता; (श्रा १२; सण)।
विचिगिच्छा स्त्री [विचिकित्सा] संशय, धर्म-कार्य के फल की तरफ संदेह; (सम्मत ६५)।
विचिट्ठिअ वि [विचेष्टित] १ जिसकी कोशिश की गई हो वह; (सुपा ४७०)। २ न. चेष्टा, प्रयत्न; (उप ३२० टी)।
विचिण } सक [वि+चि] १ खोज करना। २ फूल
विचिण्ण } आदि चुनना। विचिणंति, (पि ५०२)। वकृ—**विचिण्णंत**; (मा ४६)।
विचित्त वि [विचित्र] १ विविध, अनेक तरह का; "विचित्ततवोकम्मेहिं" (महा; राय; प्रासू ४२)। २ अद्‌भुत, आश्चर्यकारक; "विहिणो विचित्तयं जाणिऊण" (सुर १३, ४)। ३ अनेक रँग वाला, शवल; (गाया १, ६; कप्प)। ४ अनेक चित्रों से युक्त; (कप्प; सुज्ज २०)। ५ पुं. पर्वत-विशेष; (पगह १, ५—पत्र ९४)। ६ वेणुदेव और वेणुदारि-नामक इन्द्रों का एक लोकपाल; (ठा ४, १—पत्र १९७)। °कूड पुं [°कूट] शीतोदा नदी के किनारे पर स्थित पर्वत-विशेष; (इक)। °पक्ख पु [°पक्ष] १ वेणुदेव और वेणुदारि-नामक इन्द्रों का एक लोकपाल; (ठा ४, १—पत्र १९७; इक)। २ चतुरिन्द्रिय जंतु की एक जाति; (पगण १—पत्र ४६)।
विचित्ता स्त्री [विचित्रा] ऊर्ध्व लोक में रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ७—पत्र ४३७)। २ अधोलोक में रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (राज)।
विचित्तिय वि [विचित्रित] विचित्रता से युक्त; (सण)।
विचुणिद (शौ) देखो विचिअ, (नाट—मालती १४१)।
विचुन्नण न [विचूर्णन] चूर चूर करना, टुकड़ा २ करना; (द्र ३०)।
विचेयण वि [विचेतन] चैतन्य-रहित, निर्जीव; (उप पृ ४६)।
विचेल वि [विचेल] वस्त्र-वर्जित, नंगा; (पिंड ४७८)।
विच्च सक [वि+अय्] व्यय करना। विच्चेइ; (ती ८)। देखो विव्व।
विच्च न [दे. वर्त्मन्] १ बीच, मध्य; "विच्चम्मि य सउज्झाओ कायव्वो परमपयहेऊ" (पुप्फ ४२७), "ठिओ अहं कुडकवाडविच्चे" (निसा १६)। २ मार्ग, रास्ता; (हे ४, ४२१; कुमा; भवि)।
विच्च सक [दे] समीप में आना। विच्चइ, (भवि)।
विच्चवण न [विच्यवन] भ्रंश, विनाश, (विसे २९१)।

विच्चामेलिय वि [व्यत्याम्रेडित] १ भिन्न भिन्न अंशों से मिश्रित; २ अस्थान में ही छिन्न हो कर फिर ग्रथित, तोड़ कर साँधा हुआ; (विसे ८५५)।

विच्चाय पुं [वित्याग] परित्याग; "पूयम्मि वीयरायं भावो विप्फुरइ विसयविच्चाया" (संबोध ८)।

विच्चि स्त्री [वीचि] तरंग, कल्लोल; (पउम १०६, ४१)।

विच्चु } देखो विंचुअ; (उप ५६३; पि ५०; पगण १—
विच्चुअ } पत्र ४६)।

विच्चुइ स्त्री [विच्युति] भ्रंश, विनाश; (विसे १८०)।

विच्चोअय न [दे] उपधान, ओसीसा; (दे ७, ६८)।

विच्छ° देखो विअ=विद्।

विच्छड्ड सक [वि + छर्दय्] परित्याग करना। वकृ— **विच्छड्डेमाण**; (णाया १, १८—पत्र २३६)। संकृ— **विच्छड्डइत्ता**; (कप्प)।

विच्छड्ड पुं [विच्छर्द] १ ऋद्धि, वैभव, संपत्ति, (पाअ; दे ७, ३२ टी; हे २, ३६; षड्)। २ विस्तार; (कुमा; सुपा १६२)।

विच्छड्ड पुं [दे] १ निवह, समूह; (दे ७, ३२; गउड; से २, २; ६, ७२; गा ३८७)। २ ठाटबाट, सजधज, धामधूम; "महया विच्छड्डेणं सोहणलग्गम्मि गुरुपमोएणं। कमलावई उ रन्ना परिणीया" (सुर १, १६६; कुप्र ५१; सम्मत्त १६३; धर्मवि ८२)।

विच्छड्डि स्त्री [विच्छर्दि] १ विशेष वमन; २ परित्याग; (प्राप्र)। ३ विस्तार; "निम्मलो केवलालोअलच्छिविच्छि-(?च्छ)ड्डिकारओ" (सिरि १०६१)।

विच्छड्डिअ वि [विच्छर्दित] १ परित्यक्त; "पामुक्कं विच्छड्डिअं अवहत्थिअं उज्झिअं चत्तं" (पाअ; णाया १, १; ठा ८; औप)। २ विक्षिप्त, फेंका हुआ; (सूअ २, ७, २)। ३ पुंजीकृत, इकट्ठा किया हुआ; (से १०, ४६)। ४ विच्छादित, आच्छादित; (हम्मीर १७)।

विच्छड्डेमाण देखो विच्छड्ड=वि + छर्दय्।

विच्छद्दिअ देखो विच्छड्डिअ; (नाट—मालती १२६)।

विच्छय वि [विक्षत] विविध तरह से पीड़ित; (सूअ १, २, ३, ५)। देखो विक्खय।

विच्छल देखो विब्भल; (षड् ४०)।

विच्छवि वि [विच्छवि] १ विरूप आकृति वाला, कुडौल; (पगह १, ३—पत्र ५४)। २ पुं. एक नरक-स्थान; (देवेन्द्र २८)।

विच्छाइय वि [विच्छायित] निस्तेज किया हुआ; (सुपा १६६)।

विच्छाय वि [विच्छाय] निस्तेज, कान्ति-रहित, फीका; (सुर ४, १०६; कप्पू; प्रासू १३७; महा; गउड)।

विच्छाय सक [विच्छायय्] निस्तेज करना। "विच्छाएइ मियंकं तुसारवरिसो अणुगुणोवि" (गउड)। वकृ— **विच्छाअंत**, (कप्पू)।

विच्छिअ वि [दे] १ पाटित, विदारित; २ विचित, चुना हुआ; ३ विरल; (दे ७, ६१)।

विच्छिअ देखो विंछिअ; (उत्त ३६, १४८; पि ५०; ११८; ३०१)।

विच्छिंद सक [वि + छिंद्] तोड़ना, अलग करना। विच्छिंदइ; (पि ५०६)। भवि—विच्छिंदिहिति; (पि ५३२)। वकृ—**विच्छिंदमाण**; (भग ८, ३—पत्र ३६५)।

विच्छिण्ण वि [विच्छिन्न] अलग किया हुआ; (विपा १, २ टि—पत्र २८; नाट—मृच्छ ८६)।

विच्छित्ति स्त्री [विच्छित्ति] १ विन्यास, रचना; (पाअ; स ६१५; सुपा ५४; ८३; २६०; गउड)। २ प्रान्त भाग; (सुर ३, ७०)। ३ अंगराग; (गा ७८०)।

विच्छिन्न देखो विच्छिण्ण; (विपा १, २ टी—पत्र २८)।

विच्छिव सक [वि + स्पृश्] विशेष रूप से स्पर्श करना। कवकृ—**विच्छिप्पमाण**; (कप्प; औप)।

विच्छिव सक [वि + क्षिप्] फेंकना। संकृ—विच्छिविअ; (नाट—चैत ३८)।

विच्छु } देखो विंचुअ; (गा २३७; जी १८; उत्त ३६,
विच्छुअ } १४८; प्रासू १६; णाया १, ८—पत्र १३३)।

विच्छुडिअ वि [विच्छुटित] १ बिछुड़ा हुआ, जो अलग हुआ हो, विरहित; "जइवि हु कालवसेणं ससी समुद्दाओ कहवि विछु-(?च्छु)डिओ" (वज्जा १५६)। २ मुक्त; (राज)।

विच्छुरिअ वि [दे] अपूर्व, अद्भुत; (षड्)।

विच्छुरिअ वि [विच्छुरित] १ खचित, जड़ा हुआ; "खचिअं विच्छुरिअयं जडिअं" (पाअ)। २ संबद्ध, जोड़ा हुआ; (से १४, ७६)। ३ व्याप्त; (पउम २, १०१; सुपा ६; २१२; सुर २, २२१)।

विच्छुह सक [वि + क्षिप्] फेंकना, दूर करना। विच्छुहइ; (से १०, ७३; गा ४२४ अ)। कृ—**विच्छूढव्व**; (से १०, ५३)।

विच्छुह अक [**वि+क्षुभ्**] विक्षोभ करना, चंचल हो उठना। विच्छुहिरे; (हे ३, १४२)।

विच्छूढ वि [**विक्षिप्त**] १ फेंका हुआ, दूर किया हुआ; (से ६, १६)। २ प्रेरित; (पाअ)।

विच्छूढ वि [**दे**] वियुक्त, विरहित, विघटित; "विच्छूढा जूहाओ" (स ६७८)।

विच्छूढव्व देखो **विच्छुह=वि+क्षिप्**।

विच्छेअ पुं [**दे**] १ विलास; २ जघन; (दे ७, ९०)।

विच्छेअ पुं [**विच्छेद**] १ विभाग, पृथक्करण; (विसे १००६)। २ वियोग; (गा ६१३)। ३ अनुबन्ध-विनाश, प्रवाह-निरोध; (कप्पू)।

विच्छेअण न [**विच्छेदन**] ऊपर देखो; (राज)।

विच्छेअय वि [**विच्छेदक**] विच्छेद-कर्ता; (भवि)।

विच्छेइ वि [**विच्छेदिन्**] ऊपर देखो; (कुप्र २२)।

विच्छेइअ वि [**विच्छेदित**] विच्छिन्न किया हुआ; (नाट—विक्र ८२)।

विच्छोइय वि [**दे**] विरहित; (भवि)।

विच्छोड देखो **विच्छोल**। संकृ—**विच्छोडिवि** (अप); (हे ४, ४३९)।

विच्छोम पुं [**दे, विदर्भ**] नगर-विशेष. "विदर्भे विच्छोमो" (प्राकृ ३८)।

विच्छोय पुं [**दे**] विरह, वियोग; (भवि)। देखो **विच्छोह**।

विच्छोल सक [**कम्पय्**] कँपाना। विच्छोलइ; (हे ४, ४६)। वकृ—**विच्छोलंत, विच्छोलिंत**; (कप्पू; सुर १०, १०७; १५, १३)।

विच्छोलिअ वि [**कम्पित**] कँपाया हुआ; (कुमा; गउड)।

विच्छोलिअ वि [**विच्छोलित**] धौत, धोया हुआ; "धोअं विच्छोलिअं" (पाअ)।

विच्छोव सक [**दे**] वियुक्त करना, विरहित करना ;
"कालेण रूढपेम्मे परोप्परं हिययनिव्वडियभावे।
अकलुणहियओ एसो विच्छोवइ सत्तसंघाए" (स १८६)।

विच्छोह पुं [**दे**] विरह, वियोग; (दे ७, ६२; हे ४, ३९६)।

विच्छोह पुं [**विक्षोभ**] १ विक्षेप; "जे संमुहागअवोलंतवलिअपिअपेसिअच्छिविच्छोहा" (गा २१०), "पुलइयकवोलमूला विमुक्ककडक्खविच्छोहा" (सम्मत १९१)। २ चंचलता; (उप पृ १५८)।

विछल सक [**वि+छलय्**] छलित करना, ठगना। कर्म—विछलिज्जइ; (महा)।

विछोय देखो **विच्छोव**। विछोयइ; (स १८६ टि)।

विजइ वि [**विजयिन्**] विजेता, जीतने वाला, (कप्पू; नाट—विक ५)।

विजंभ देखो **विअंभ=वि+जृम्भ्**। वकृ—**विजंभंत**; (काप्र १८९)।

विजढ वि [**वित्यक्त**] परित्यक्त; (उत्त ३६, ८३; सुख ३६, ८३; ओघ २४९)।

विजण देखो **विअण=विजन**। "लक्खण ! देसो इमो विजणो" (पउम ३३, १३; हे १, १७७; कुमा)।

विजय सक [**वि+जि**] १ जीतना, फतह करना। २ अक, उत्कर्ष से बरतना, उत्कर्ष-युक्त होना। विजयइ; (पव २७६—गाथा १५९९), "विजयंतु ते पएसा विहरेइ जत्थ वीरजिणनाहो"(धर्मवि २२)। कृ—**विजेतव्व** (पै); (कुमा)।

विजय पुं [**विचय**] १ निर्णय, शास्त्र के अर्थ का ज्ञान-पूर्वक निश्चय; (ठा ४, १—पत्र १८८; सुज्ज १०, २२)। २ अनुचिन्तन, विमर्श; (औप)।

विजय पुं [**विजय**] १ जय, जीत, फतह; (कुमा; कम्म १, ५५; अभि ८१)। २ एक देव-विमान; (अनु; सम ५७; ५८)। ३ विजय-विमान-निवासी देवता; (सम ५६)। ४ एक मुहूर्त, अहोरात्र का बारहवाँ या सतरहवाँ मुहूर्त; (सम ५१; सुज्ज १०, १३; कप्प; णाया १, ८—पत्र १३३)। ५ भगवान् नमिनाथजी का पिता; (सम १५१)। ६ भारत वर्ष के बीसवें भावी जिनदेव; (सम १५४; पव ४६)। ७ तृतीय चक्रवर्ती के पिता का नाम; (सम १५२)। ८ आश्विन मास; (सुज्ज १०, १९)। ९ भारत वर्ष में उत्पन्न द्वितीय बलदेव; (सम ८४; १५८ टी; अनु; पव २०९)। १० भारत वर्ष का भावी दूसरा बलदेव; (सम १५४)। ११ ग्यारहवें चक्रवर्ती राजा का पिता; (सम १५२)। १२ एक राजा; (उप ७६८ टी)। १३ एक क्षत्रिय का नाम; (विपा १, १—पत्र ४)। १४ भगवान् चन्द्रप्रभ का शासन-देव; (संति ७)। १५ जंबूद्वीप का पूर्व द्वार; १६ उस द्वार का अधिष्ठाता देव; (ठा ४, २—पत्र २२५)। १७ लवण समुद्र का पूर्व द्वार; १८ उस द्वार का अधिपति देव; (ठा ४, २—पत्र २२६; इक)। १९ क्षेत्र-विशेष, महाविदेह वर्ष का प्रान्त-तुल्य प्रदेश; (ठा ८—पत्र ४३५; इक; जं ४)। २० उत्कर्ष; "जएणं

विजएणं वद्धावेइ" (णाया १,१—पत्र ३०; औप; गय)। २१ पराभव करके ग्रहण करना; (कुमा)। २२ विक्रम की प्रथम शताब्दी के एक जैन आचार्य; (पउम ११८, ११७)। २३ अभ्युदय ; (राय)। २४ समृद्धि; (राज)। २५ धातकी खण्ड का पूर्व द्वार; (इक)। २६ कालोद समुद्र, पुष्करवर द्वीप तथा पुष्करोद समुद्र का पूर्व द्वार; (राज)। २७ रुचक पर्वत का एक कूट; (ठा ८—पत्र ४३६; इक)। २८ एक राज-कुमार; (धम्म ११)। २९ छन्द-विशेष; (पिंग)। ३० वि. जीतने वाला; "वरतुरए विहगाहिवविजयवेगधरे" (सम्मत्त २१६)। °चरपुर न [°चरपुर] एक विद्याधर-नगर; (इक)। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] विजय के लिए किया जाता प्रयाण; (धर्मवि ५६)। °ढक्का स्त्री [°ढक्का] विजय-सूचक भेरी; (सुपा २६८)। °देव पुं [°देव] अठारहवीं शताब्दी का एक जैन आचार्य; (अज्झ १)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष; (इक २२३; २२४; ३२६)। °पुरा, °पुरी स्त्री [°पुरी] पद्मकावती-नामक विजय-क्षेत्र की राजधानी; (ठा २, ३—पत्र ८०; इक)। °माण पुं [°मान] एक जैन आचार्य; (द्र ७०)। °वंत वि [°वत्] विजयी, विजेता; (ति १४)। °वद्धमाण पुंन [°वर्धमान] ग्राम-विशेष; (विपा १, १)। °वेजयंती स्त्री [°वैजयन्ती] विजय-सूचक पताका; (औप)। °सायर पुं [°सागर] एक सूर्यवंशी राजा; (पउम ५, ६२)। °सिंह, °सीह पुं [°सिंह] १ एक सुप्रसिद्ध प्राचीन जैनाचार्य; (सुपा ६५८)। २ एक विद्याधर राज-कुमार; (पउम ६, १५७)। °सूरि पु [°सूरि] चन्द्रगुप्त के समय का एक जैन आचार्य; (धर्मवि ४४)। °सेण पुं [°सेन] एक प्रसिद्ध जैन आचार्य जो आम्रदेव सूरि के शिष्य थे; (पत्र २७६—गाथा १५६६)।

विजयंता, **विजयंती** स्त्री [**वैजयन्ती**] १ पक्ष की आठवीं रात; (सुज्ज १०, १४)। २ एक रानी का नाम; (उप ७२८ टी)।

विजया स्त्री [**विजया**] १ भगवान अजितनाथजी की माता का नाम; (सम १५१)। २ पाँचवें बलदेव की माता; (सम १५२)। ३ अंगारक आदि ग्रहों की एक पटरानी; (ठा ४, १—पत्र २०४)। ४ विद्या-विशेष; (पउम ७, १४१)। ५ पूर्व-रुचक पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८—पत्र ४३६)। ६ पाँचवें चक्रवर्ती राजा की पटरानी—स्त्री-रत्न; (सम १५२)। ७ विजय-नामक देव की राजधानी; (सम २१)। ८ वप्रा-नामक विजय की राजधानी; (ठा २, ३—पत्र ८०; इक)। ९ पक्ष की सातवीं रात; (सुज्ज १०, १४)। १० एक श्रेष्ठिनी; (सुपा ६२६)। ११ भगवान् विमलनाथजी की शासनदेवी; (पव २७; संति १०)। १२ भगवान् सुमतिनाथजी की दीक्षा-शिबिका; (सम १५१)। १३ एक पुष्करिणी; (इक)।

विजल वि [**विजल**] १ जल-रहित; (गउड)। २ न. जल-रहित पंक; (दस ५, १, ४)। देखो **विज्जल**।

विजह सक [**वि + हा**] परित्याग करना। विजहइ; (पि ५७७)। संकृ—**विजहित्तु**; (उत्त ८, २)।

विजहणा स्त्री [**विहान**] परित्याग; (ठा ३, ३—पत्र १३९)।

विजाइय वि [**विजातीय**] भिन्न जाति का, दूसरी तरह का; (उप १२८ टी)।

विजाण देखो **विआण**=वि + ज्ञा। संकृ—**विजाणित्ता**, **विजाणिय**; (कप्प)।

विजाणग, **विजाणय** वि [**विज्ञायक**] जानने वाला, विज्ञ; (आचा; सूअनि १४५)।

विजाणुअ वि [**विज्ञ, विज्ञायक**] ऊपर देखो; (प्राकृ १८)।

विजादीअ (शौ) देखो **विजाइय**; (नाट—चैत ८८)।

विजाय न [**दे**] लक्ष्य, निशाना; "लक्खं विजायं" (पाअ)।

विजिअ वि [**विजित**] पराभूत, हारा हुआ; (सुर ६, २५; स ७००)।

विजुत्त वि [**वियुक्त**] विरहित; (धर्मसं १७४)।

विजुरि (अप) स्त्री [**विद्युत्**] बिजली; (पिंग)।

विजेट्ठ वि [**विज्येष्ठ**] मध्यम; "जेट्ठ विजेट्ठा कणिट्ठा य" (चेइय १५३)।

विजेतव्व देखो **विजय**=वि + जि।

विजोज सक [**वि + योजय्**] वियोग करना, अलग करना। संकृ—**विजोजिय**; (पंच ५, १२९)।

विजोजिअ वि [**वियोजित**] जुदा किया हुआ; (कुप्र २८८)।

विजोयावइत्तु वि [**वियोजयितृ**] वियोजक, अलग करने वाला; (ठा ४, ३—पत्र २३८; २३९)।

विजोहा स्त्री [**विज्जोहा**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

विज्ज अक [**विद्**] होना। विज्जइ, विज्जए, (षड्; कप्प; भग; महा), विज्जई; (सूय १, ११, ६)। वकृ— **विज्जंत; विज्जमाण;** (सुर २, १७६; पंचा ६, ४७)।
विज्ज सक [**वीजय्**] पँखा चलाना, हवा करना। कर्म— विज्जिज्जइ; (भवि)। कवकृ—**विज्जिज्जंत;** (पउम ६१, ३७; वज्जा ३६)।
विज्ज पुं [**वैद्य**] चिकित्सक, हकीम; (सुर १२, २४; नाट—विक्र ६५)।
विज्ज पुं. व. [**दे**] देश-विशेष; (पउम ६८, ६५)।
विज्ज पुं [**विद्वस्, विज्ञ**] पण्डित, जानकार; (हे २, १५; कुमा; प्राकृ १८; सूअ १, ६, ५)।
विज्ज देखो **वीरिअ;** (पउम ३७, ७०)।
विज्ज° देखो **विज्जा**। **°ज्झर** (अप) देखो **विज्जा-हर;** (पि २१६)। **°त्थि** वि [**°र्थिन्**] छात्र, अभ्यासी; (सम्मत्त १४३)।
विज्ज° देखो **विज्जु;** (कुप्र ३६६)।
°विज्जंतअ देखो **विज्जंत;** (से २, २४; पि ६०३)।
विज्जय न [**वैद्यक**] चिकित्सा; (उर ८, १०; भवि)।
विज्जल पुं [**विजल**] १ नरकावास-विशेष, एक नरक-स्थान; (देवेन्द्र २८)। २ जल-रहित; (निचू १)।
विज्जलिया स्त्री [**विद्युत्**] बिजली; (कुप्र २८५)।
विज्जा स्त्री [**विद्या**] १ शास्त्र-ज्ञान, यथार्थ ज्ञान, सम्यग् ज्ञान; (उत्त २३, २; सांदि; धर्मवि ३६; कुमा; प्रासू ४३)। २ मन्त्र, देवी-अधिष्ठित अक्षर-पद्धति; ३ साधना वाला मन्त्र; (पिंड ४६४; औप; ठा ३, ४ टी—पत्र १५६)। **°अणुप्पवाय** न [**°अनुप्रवाद**] जैन अंग-ग्रन्थांश विशेष, दशवाँ पूर्व; (सम २६)। **°चारण** पुं [**°चारण**] शक्ति-विशेष-संपन्न मुनि; (भग २०, ६—पत्र ७६३)। **°चारणलद्धि** स्त्री [**°चारणलब्धि**] शक्ति-विशेष; (भग २०, ६)। **°णुप्पवाय** देखो **°अणुप्पवाय;** (राज)। **°णुवाय** न [**°नुवाद**] दशवाँ पूर्व; (सिरि २०७)। **°पिंड** पु [**°पिण्ड**] विद्या के बल से अर्जित भिक्षा; (निचू १३)। **°मंत** वि [**°वत्**] विद्या-संपन्न; (उप ४२५)। **°लय** पुंन [**°लय**] पाठ-शाला; (प्रामा)। **°सिद्ध** वि [**°सिद्ध**] १ सर्व विद्याओं का अधिपति, सभी विद्याओं से सपन्न; २ जिसको कम-से कम एक महाविद्या सिद्ध हो चुकी हो वह, "विज्जाण चक्कवट्टी विज्जासिद्धो स, जस्स वेगावि सिज्झेज्ज महाविज्जा" (आवम)। **°हर** पुं [**°धर**] १ क्षत्रियों का एक वंश; (पउम ५, २)। २ पुंस्त्री. उस वंश में उत्पन्न; (महा), स्त्री—**°री;** (महा; उत्त)। ३ त्रि. विद्या-धारी, शक्ति विशेष-संपन्न; (औप; राय; जं ४)। **°हरगोवाल** पुं [**°धरगोपाल**] एक प्राचीन जैन मुनि, जो सुस्थित और सुप्रतिबुद्ध आचार्य के शिष्य थे; (कप्प)। **°हरी** स्त्री [**°धरी**] एक जैन मुनि-शाखा; (कप्प)। **°हार** (अप) न [**°धर**] छन्द-विशेष; (पिंग)।
विज्जावच्च (अप) देखो **वेयावच्च;** (भवि)।
विज्जाहर वि [**वैद्याधर**] विद्याधर-संबन्धी; स्त्री—"एसा विज्जाहरी माया" (महा)।
विज्जिडिय देखो **विज्झडिय;** (राज)।
विज्जु पु [**विद्युत्**] १ विद्याधर-वंश का एक राजा ; (पउम ५, १८)। २ देवो की एक जाति, भवनपति देवो का एक भेद; (पराह १, ४—पत्र ६८)। ३ आमलकप्पा नगरी का निवासी एक गृहस्थ ; (णाया २—पत्र २५१)। ४ एक नरक-स्थान; (देवेन्द्र २६)। ५ स्त्री. ईशानेन्द्र के सोम आदि लोकपालों की एक अग्रमहिषी—पटरानी; (ठा ४, १—पत्र २०४)। ६ चमर-नामक इन्द्र की एक पटरानी; (ठा ५, १—पत्र ३०२; णाया २—पत्र २५१)। ७ पुंस्त्री. बिजली ; "विज्जुणा, विज्जूए" (हे १, ३३ ; कुमा ; गा १३५)। ८ सन्ध्या, शाम; (हे १, ३३)। ६ वि. विशेष रूप से चमकने वाला; "विज्जुसोयामणिप्पभा" (उत्त २२, ७)। **°कार** देखो **°यार,** (जीव ३—पत्र ३४२)। **°कुमार** पुं [**°कुमार**] एक देव-जाति; (भग; इक)। **°कुमारी** स्त्री [**°कुमारी**] विदिग् रुचक पर रहने वाली दिक्कुमारी देवी, "चत्तारि विज्जुकुमारिमहत्तरियाओ पराणत्ताओ" (ठा ४, १—पत्र १६८)। **°जिज्झ** (?), **°जिब्भ** पुं [**°जिह्व**] अनुवेलंधर नाग-राज का एक आवास-पर्वत ; (इक; राज)। **°तेअ** पुं [**°तेजस्**] विद्याधरवंश का एक राजा; (पउम ५, १८)। **°दंत** पु [**°दन्त**] १ एक अन्तर्द्वीप ; २ उसमे रहने वाली मनुष्य-जाति; (ठा ४, २—पत्र २२६)। **°दत्त** पुं [**°दत्त**] विद्याधरवश का एक राजा ; (पउम ५, १८)। **°दाढ** पुं [**°दंष्ट्र**] विद्याधर-वंश में उत्पन्न एक राजा का नाम; (पउम ५, १८)। **°पह, °प्पभ, °प्पह** पुं [**°प्रभ**] १ एक वक्षस्कार पर्वत का नाम ; (सम १०२ टी ; ठा २, ३—पत्र ६६, ५, २—पत्र ३२६; जं ४; सम १०२ ; इक)। २ कूट-विशेष, विद्युत्प्रभ वक्षस्कार का एक शिखर ;

विणिक्कम देखो **विणिक्खम**। विणिक्कमइ; (गउड २७५; पि ४८१)।

विणिक्कस सक [विनि+कृष्] खींच कर निकालना। संकृ—**विणिक्कस्स**; (सूत्र १, ५, १, २२)।

विणिक्खंत वि [**विनिष्क्रान्त**] १ बाहर निकला हुआ; २ जिसने गृह-त्याग किया हो वह, सन्यस्त; (उप १४७ टी; कुप्र ३६; महा)।

विणिक्खम अक [विनिस् + क्रम्] १ बाहर निकलना। २ संन्यास लेना। विणिक्खमइ, (गउड ८५१; ११८१)। संकृ—**विणिक्खमित्ता**; (भग)।

विणिक्खमण न [**विनिष्क्रमण**] १ बाहर निकलना। २ संन्यास लेना; (पंचा १८, २१)।

विणिक्खित्त वि [**विनिक्षिप्त**] फेंका हुआ; (नाट—मृच्छ ११६)।

विणिगिण्ह सक [विनि+ग्रह्] निग्रह करना, दंड देना। वकृ—**विणिगिण्हंत**; (उप पृ २३)।

विणिगूह सक [विनि + गूहय्] गुप्त रखना, ढकना। विणिगूहिज्जा; (आचा २, १, १०, २)।

विणिग्गम पुं [**विनिर्गम**] निःसरण, बाहर निकलना; (गउड)।

विणिग्गय वि [**विनिर्गत**] बाहर निकला हुआ, बाहर गया हुआ; (से २, ५ ; महा ; भवि)।

विणिघाय पुं [**विनिघात**] १ मरण, मौत ; २ संसार, भव-भ्रमण; (ठा ५, १—पत्न २६१)।

विणिच्छ सक [विनिस्+चि] निश्चय करना। विणिच्छइ; (सण)। संकृ—**विणिच्छिऊण** ; (सण)।

विणिच्छय पुं [**विनिश्चय**] निश्चय, निर्णय, परिज्ञान; (पण्ह १, १—पत्न १, ठा ३, ३ ; उव)।

विणिच्छिअ वि [**विनिश्चित**] निश्चित, निर्णीत, (भग ; उवा; कप्प; सुर २, २०२)।

विणिजुंज सक [विनि+युज्] जोडना, कार्य में लगाना, प्रवृत्त करना। विणिजुंजइ; (कुप्र ३६१)।

विणिज्जंतण वि [**विनियन्त्रण**] १ नियन्त्रण-रहित ; २ प्रकटित, खुला ; ३ निर्व्याज, कपट-रहित ; (से ११, २१)।

विणिज्जमाण देखो विणी=वि+नी।

विणिज्जरण न [**विनिर्जरण**] निर्जरा, विनाश; (विसे ३०७६ ; संवोध ५१)।

विणिज्जरा स्त्री [देखो ; (संबोध ४६)।

विणिज्जिअ वि [**विनिर्जित**] पराभूत, जिसका पराभव किया गया हो वह; (महा; रंभा ; नाट—विक्र ६०)।

विणिद्द वि [**विनिद्र**] खिला हुआ, विकसित; (पाअ)।

विणिद्दलिय वि [**विनिर्दलित**] विदारित, तोड़ा हुआ, (सण)।

विणिद्धुण सक [विनिर् + धू] कँपाना। वकृ—**विणिद्धुणमाण** ; (पि ५०३)।

विणिप्फन्न वि [**विनिष्पन्न**] संसिद्ध, संपन्न ; (उप ३६६)।

विणिप्फिडिअ वि [**विनिस्फिटित**] विनिर्गत, बाहर निकला हुआ; "सालिग्गामाउ तओ वंदणहेउं विणिप्फिडिओ" (पउम १०५, २३)।

विणिबुड्ड देखो **विणिवुड्ड**; (पि ५६६)।

विणिब्भिन्न वि [**विनिर्भिन्न**] विदारित; "कुतविणिब्भिन्न-करिकलहमुक्कसिक्कारपउरम्मि" (णमि १६)।

विणिमीलिअ वि [**विनिर्मीलित**] मीचा हुआ, मूँदा हुआ; "अलिअपसुत्तअविणिमीलिअच्छ दे सुहअ मज्झ ओआसं" (गा २०)।

विणिमुक्क देखो **विणिम्मुक्क**; (पि ५६६)।

विणिमुय देखो **विणिम्मुय**। वकृ—**विणिमुयंत**; (औप, पि ५६०)।

विणिम्मविअ वि [**विनिर्मित**] विरचित, बनाया हुआ, कृत; (उप ७२८ टी)।

विणिम्माण न [**विनिर्माण**] रचना, कृति; (विसे ३३१२)।

विणिम्मिअ देखो **विणिम्मविअ**; (गा १५६; २३५; पाअ; महा)।

विणिम्मुक्क वि [**विनिर्मुक्त**] परित्यक्त; "सव्वकम्मविणिम्मुक्कं तं वयं बूम माहणं" (उत्त २५, ३४)।

विणिम्मुय वि [विनिर्+मुच्] छोडना, परित्याग करना। वकृ—**विणिम्मुयमाण**; (णाया १, १—पत्न ५३; पि ४८५)।

विणिय देखो **विणीअ**; (भवि)।

विणियट्ट देखो **विणिवट्ट**। विणियट्टिज्ज; (दस ८, ३४)। वकृ—**विणियट्टमाण**; (आचा १, ५, ४, ३)।

विणियट्ट वि [**विनिवृत्त**] १ पीछे हटा हुआ ; २ प्रणष्ट ; "विणियट्टं ति पणट्ठं" (चेइय ३४६)।

विणियट्टणया स्त्री [**विनिवर्तना**] निवृत्ति; (उत्त २६, १)।

विणियत्त देखो **विणियट्ट**; (सुपा ३३५; भवि; गा ७१; कुप्र १८२)।

विणियत्ति स्त्री [**विनिवृत्ति**] निवृत्ति, उपरम ; (कुप्र १८२; गउड)।

विणिरोह पुं [**विनिरोध**] प्रतिबन्ध, अटकायत; (भवि)।

विणिवट्ट अक [**विनि + वृत्**] निवृत्त होना, पीछे हटना। वकृ— **विणिवट्टमाण**; (आचा १, ५, ४, ३)।

विणिवट्टण देखो **विनियट्टण**; (राज)।

विणिवट्टणया स्त्री [**विनिवर्तना**] निवर्तन, विराम; (भग १७, ३—पत्र ७२७)।

विणिवडिअ वि [**विनिपतित**] नीचे गिरा हुआ ; (दे १, १५७)।

विणिवत्ति देखो **विणियत्ति**; (उप ७२८ टी)।

विणिवाइ वि [**विनिपातिन्**] मार गिराने वाला; (गा ६३०)।

विणिवाइज्जंत देखो **विणिवाए**।

विणिवाइय न [**विनिपातिक**] एक तरह का नाटक; (राज)।

विणिवाइय वि [**विनिपातित**] मार गिराया हुआ, व्यापादित; (उप ६४८ टी; महा; स ५६; सिक्खा ८२)।

विणिवाए सक [**विनि + पातय्**] मार गिराना। कवकृ — **विणिवाइज्जंत**; (पउम ४५, ८)।

विणिवाडिअ देखो **विणिवाइय**; (दे १, १३८)।

विणिवाद } पुं [**विनिपात**] १ निपात, अन्तिम पतन,
विणिवाय } विनाश; "परक्खग्गेण वि दिट्ठो विणिवादो किं न लोगम्मि" (धर्मसं १२५; १२६; स २६५; ७६२)। २ मरण, मौत; (से १३, १६; गउड; गा १०२)। ३ संसार; (राज)।

विणिवायण न [**विनिपातन**] मार गिराना; (पउम ४, ४८)।

विणिवार सक [**विनि + वारय्**] रोकना, निवारण करना, निषेध करना। विणिवारइ; (भवि)। कवकृ—**विणिवारीअंत**; (नाट—मृच्छ १५४)।

विणिवारण न [**विनिवारण**] १ निवारण, प्रतिषेध; २ वि. निवारण करने वाला , (पंचा ७, ३२)।

विणिवारि वि [**विनिवारिन्**] निवारण-कर्ता; (पचा ७, ३२)।

विणिवारिय वि [**विनिवारित**] प्रतिषिद्ध, निवारित; (महा)।

विणिविट्ठ वि [**विनिविष्ट**] १ उपविष्ट, स्थित; (कुप्र १५२), "सकम्मविणिविट्ठसरिसकयचेट्ठो" (उव ; वै ६०)। २ आसक्त, तल्लीन; (आचा)।

विणिवित्त देखो **विणियट्ट**; (उप ७८६)।

विणिवित्ति देखो **विणियत्ति**; (विसे २६३६ ; उवर १२७ ; श्रावक २५१; २५२ ; पंचा १, १७)।

विणिवुड्ड वि [**विनिमग्न**] निमग्न, बुडा हुआ, तराबोर, सराबोर ; "तइया ठिआ ति जं किर पलोट्टसंरंभसेयविणिवुड्डो" (गउड ४६०)।

विणिवेइअ वि [**विनिवेदित**] जनाया हुआ, ज्ञापित; (से १४, ४०)।

विणिवेस पुं [**विनिवेश**] १ स्थिति, उपवेशन; २ विन्यास, रचना; (गउड)।

विणिवेसिअ वि [**विनिवेशित**] स्थापित, रखा हुआ; (गा ९७४; सुर ३, ६५)।

विणिव्वर न [**दे**] पश्चात्ताप, अनुशय; (दे ७, ६८)।

विणिव्ववण न [**विनिर्वपन**] शान्ति, दाहोपशम ; (गउड)।

विणिस्सरिय वि [**विनिःसृत**] बाहर निकला हुआ; (सण)।

विणिस्सह वि [**विनिस्सह**] श्रान्त, थका हुआ ; "कइ-णावि धणुपरिस्समविणिस्सहो दीहियासु मज्जेइ" (सुपा ५६)।

विणिह° देखो **विणिहण**।

विणिहट्टु देखो **विणिहा**।

विणिहण सक [**विनि + हन्**] मार डालना। विणिहणेज्जा, विणिहंति ; (सुअ १, ११, ३७ ; १, ७, १६)। कर्म—विणिहम्मंति ; (उत्त ३, ६)।

विणिहय वि [**विनिहत**] जो मार डाला गया हो, व्यापादित, (महा)।

विणिहा सक [**विनि + धा**] १ व्यवस्था करना। २ स्थापन करना। संकृ—**विणिहट्टु**, **विणिहाय**, **विणिहित्तु**; (चेइय २६८; सुअ १, ७, २१, कप्प)।

विणिहाय देखो **विणिघाय**; (णाया १, १४—पत्र १८६)।

विणिहिअ } वि [**विनिहित**] स्थापित; (गा ३९१;
विणिहित्त } सुपा ६२)।

विणिहित्तु देखो **विणिहा**।

विणी अक [**विनिर् + इ**] बाहर निकलना। विणिंति, विणेंति; (गा ९५४; पि ४९३)। वकृ—**विणिंत**; (गउड १३८)।

विणी सक [वि+नी] १ दूर करना, हटाना। २ विनय-ग्रहण कराना, सिखाना। विणिंति; (णाया १, १—पत्र २६; ३०), विणिज्जामि, विणइज्ज, विणएज्ज, विणेउ; (णाया १, १—पत्र २६; सूत्र १, १३, २१; पि ४६०; णाया १, १—पत्र ३२)। भूका—विणइंसु; (सूत्र १, १२, ३)। भवि—विणेहिइ; (पि ५२१)। वकृ—**विणेमाण**; (णाया १, १—पत्र ३३)। कवकृ—**विणिज्जमाण**, (णाया १, १—पत्र २६)। हेकृ—**विणएत्तु**, (आचा १, ५, ६, ४; पि ५७७)।

विणीअ वि [**विनीत**] १ अपनीत, दूर किया हुआ, हटाया हुआ, (णाया १, १—पत्र ३३), "सव्वदव्वेसु विणीयतण्हे" (उत्त २६, १३)। २ विनय-युक्त, नम्र, शिष्ट; (ठा ४, ४—पत्र २८५; सुपा ११६; उव)। ३ शिक्षित; "भद्दो विणीअवि-णओ" (उव ६)।

विणीआ स्त्री [**विनीता**] अयोध्या नगरी; (सम १५१; कप्प; पउम ३२, ५०; ती १)।

विणील वि [**विनील**] विशेष हरा रँग का; (गउड)।

विणु (अप) देखो **विणा**; (हे ४, ४२६; षड्; हम्मीर २८; कुलक १२; भवि; कम्म २, ६; २६; २७; ३, ५; कुमा)।

विणेअ वि [**विनेय**] शिक्षणीय, शिष्य; अन्तेवासी, चेला; (सार्ध ७०; उप १०३१ टी)।

विणेमाण देखो **विणी**=वि+नी।

विणोअ सक [**वि+नोदय्**] १ खण्डित करना। २ दूर करना, हटाना। ३ खेल करना। ४ कुतूहल करना। विणो-एइ, विणोयंति; (गउड), विणोदेमि (शौ); (स्वप्न ५१)। भवि—विणोदइस्सामो (शौ); (पि ५२८)। वकृ—**विणोदअंत** (शौ); (नाट—उत्तर ६५)। कवकृ—**विणोदीअमाण** (शौ); (नाट—मालवि ४५)।

विणोअ पुं [**विनोद**] १ खेल, क्रीडा; २ कौतुक, कुतूहल; (गउड; सिरि ५६; सुर ४, २१६; हे १, १४६)।

विणोइअ वि [**विनोदित**] विनोदित-युक्त किया हुआ; (सुर ११, २३८; सण)।

विणोदअंत देखो **विणोअ**=वि+नोदय्।

विणोयक } वि [**विनोदक**] कुतूहल-जनक; (रंभा)।
विणोयग }

विणोयण न [**विनोदन**] १ अपनयन, दूर करना; "परिस्सम-विणोयणत्थं" (उप १०३१ टी; कुप्र १४७)। २ कुतूहल, कौतुक; (गा ४८७)।

विण्ण देखो **विण्णु**; (संक्षि १६)।

विण्णइदव्व देखो **विण्णव**।

विण्णत्त वि [**विज्ञप्त**] निवेदित; (सुपा २२)।

विण्णत्ति स्त्री [**विज्ञप्ति**] १ निवेदन, प्रार्थना; (कुमा)। २ ज्ञान; (सूत्र १, १२, १७)।

विण्णय देखो **विणइय**, (ठा १०—पत्र ५१६)।

विण्णय देखो **विण्ण**; (विपा १, २—पत्र ३६; १, ८—पत्र ८४)।

विण्णव सक [**वि+ज्ञपय्**] १ विनती करना, प्रार्थना करना। २ मालूम करना, विदित करना। ३ कहना। विण्णवइ, विण्णवेमि, विण्णवेमो; (पि ५५३; ५५१)। भवि—विण्ण-विस्सं, (रुक्मि ४१)। वकृ—**विण्णवंत**; (काल)। संकृ—**विण्णविअ**; (नाट—मृच्छ २६४)। हेकृ—**विण्ण-विदुं** (शौ); (अभि ५३)। कृ—**विण्णइदव्व** (शौ); (पि ५५१)।

विण्णवणा स्त्री [**विज्ञापना**] विज्ञापन, निवेदन; (उवा)। देखो **विन्नवणा**।

विण्णा सक [**वि+ज्ञा**] जानना। संकृ—**विण्णाय**; (दस ८, ५६)। कृ—**विण्णेय**; (काल)।

विण्णाउ देखो **विन्नाउ**; (राज)।

विण्णाण देखो **विन्नाण**; (उवा; महा; षड्)।

विण्णाणि वि [**विज्ञानिन्**] निपुण, विचक्षण; (कुमा)।

विण्णाय वि [**विज्ञात**] १ जाना हुआ, विदित; (पात्र; गउड १२०)। २ न. विज्ञान; (कप्प)।

विण्णाव देखो **विण्णव**। विण्णावेमि, विण्णावेहि; (मा ३८; ३६)।

विण्णास वि [**वि+न्यासय्**] स्थापन करना, रखना। वकृ—**विण्णासंत**; (पउम ४३, २६)।

विण्णास देखो **विन्नास**; (मा ५१)।

विण्णासणा स्त्री [**विन्यासना**] स्थापना; (उप ३५४)।

विण्णु } वि [**विज्ञ**] पण्डित, जानकार, विद्वान्; (भग; प्राकृ १८)।
विण्णुअ }

विण्णेय देखो **विण्णा**।

विण्हावणक न [**विस्नापनक**] मन्त्र आदि द्वारा संस्कृत जल से कराया जाता स्नान, (पण्ह १, २—पत्र ३०)।

विण्हि देखो **वण्हि**=वृष्णि, (राज)।

विण्हु पुं [**विष्णु**] १ भगवान् श्रेयांसनाथ के पिता का नाम, (सम १५१)। २ श्रवण नक्षत्र का अधिपति देव; (ठा २,

३—पत्र ७७) । ३ यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि का नववाँ पुत्र; (अंत ३) । ४ एक जैन मुनि, विष्णुकुमार-नामक मुनि; (कुलक ३३) । ५ एक श्रेष्ठी; (उप १०१४) । ६ वासुदेव, नारायण, श्रीकृष्ण, ७ व्यापक; ८ वह्नि, अग्नि; ९ शुद्ध; १० एक स्मृति-कर्ता मुनि; (हे २, ७५) । ११ आर्य जेहिल के शिष्य एक जैन मुनि; (राज)। १२ स्त्री. ग्यारहवें जिनदेव की माता का नाम; (सम १५१) । °कुमार पुं [°कुमार] एक विख्यात जैन मुनि; (पडि) । °सिरी स्त्री [°श्री] एक सार्थवाह-पत्नी; (महा) । देखो विन्हु ।

वितंड देखो **वितद्द**; (आचा) ।

वितण्ह वि [**वितृष्ण**] तृष्णा-रहित, निःस्पृह; (उप २६४ टी) ।

वितत पुं [**वितत**] १ वाद्य का एक प्रकार का शब्द; (ठा २, ३—पत्र ६३) । २ एक महाग्रह; (सुज्ज २०—पत्र २६५), देखो **विअत्त** । ३ देखो **विअय**=वितत; (ठा ४, ४—पत्र २७१) ।

वितत न [**दे**] कार्य, काम, काज; (दे ७, ६४) ।

वितत्त वि [**वितृप्त**] विशेष तृप्त; (पण्ह १, ३—पत्र ६०) ।

वितत्थ पुं [**वित्रस्त**] १ एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७८)। २ वि. भय-भीत, डरा हुआ; (महा)।

वितत्था स्त्री [**वितस्ता**] एक महा-नदी; (ठा ५, ३—पत्र ३५१) ।

वितद्द वि [**वितर्द**] १ हिंसक; २ प्रतिकूल; (आचा) ।

वितर देखो **विअर**=वि+तॄ । वितराम, वितरामो; (पि १०; ४५५) ।

वितर (अप) सक [**वि+स्तारय्**] विस्तार करना । वितर; (पिंग) ।

वितरण देखो **विअरण**=वितरण; (राज) ।

वितल वि [**वितल**] शबल, चितकबरा; (राज) ।

वितह वि [**वितथ**] मिथ्या, असत्य, झूठा; (आचा; कप्प; सण) ।

वितिकिच्छिअ वि [**विचिकित्सित**] फल की तरफ संदेह वाला; (भग) ।

वितिकिण्ण देखो **विइकिण्ण**, (निचू १६) ।

वितिक्कंत देखो **विइक्कंत**; (भग) ।

वितिगिंछ सक [**वि+चिकित्स्**] १ विचार करना, विमर्श करना । २ संशय करना । ३ निन्दा करना । वितिगिंछइ; (सूअ २, २, ४६; ५०; पि ७४; २१५) ।

वितिगिंछा देखो **वितिगिच्छा**; (आचा १, ३, ३, १; १, ५, ५, २; पि ७४) ।

वितिगिंछिय देखो **वितिकिच्छिअ**, (पि ७४; २१५) ।

वितिगिच्छ देखो **वितिगिंछ** । वितिगिच्छामि; (पि २१५; ३२७) ।

वितिगिच्छा स्त्री [**विचिकित्सा**] १ संशय, शंका, वहम; (सूअ १, ३, ३, ५; पि ७४) । २ चित्त-विप्लव, चित्त-भ्रम; ३ निन्दा; (सूअ १, १०, ३; पि ७४) ।

वितिगिच्छिअ देखो **वितिकिच्छिअ**; (भग) ।

वितिगिट्ठ देखो **विइगिट्ठ**; (राज) ।

वितिमिर वि [**वितिमिर**] १ अन्धकार-रहित, विशुद्ध, निर्मल; (सम १३७; पण्ण १७—पत्र ५१६; ३६—पत्र ८४७; कप्प) । २ अज्ञान-रहित; (औप) । ३ पुं. ब्रह्म-देवलोक का एक विमान-प्रस्तट; (ठा ६—पत्र ३६७) ।

वितिरिच्छ वि [**वितिर्यञ्च्**] वक्र, टेढा, (स ३३५; पि १५१; भग ३, २—पत्र १७३) ।

वित्त वि [**दे**] दीर्घ, लम्बा; (दे ७, ३३) ।

वित्त न [**वित्त**] १ द्रव्य, धन; (पाअ; सूअ १, २, १, २२; औप) । २ वि. प्रसिद्ध, विख्यात; (सूअ २, ७, २; उत्त १, ४४) । °म वि [°वत्] धनी; (द्र ५) ।

वित्त न [**वृत्त**] १ छन्द, पद्य, कविता; (सूअनि ३८; सम्मत्त ८३) । २ चरित्र, आचरण, (सिरि १०६३) । ३ वृत्ति, वर्तन; (हे १, १२८) । ४ वि. उत्पन्न, संजात, (स ७३७; महा) । ५ अतीत, गुजरा हुआ; (महा) । ६ दृढ, मजबूत, ७ वर्तुल, गोल; ८ अधीत, पठित; ९ मृत; (हे १, १२८) । १० संसिद्ध, पूर्ण; (सुर ४, ३६; महा) । °प्पाय वि [°प्राय] पूर्ण-प्राय; (सुर ७, ८४) । देखो **वट्ट**=वृत्त ।

वित्त देखो **वेत्त**=वेत्र, (सूअनि १०८) ।

°**वित्त** देखो **पित्त**; (उप ५२२) ।

वित्तइ वि [**दे**] १ गर्वित, अभिमानी; २ पुं. विलसित, विलास. ३ गर्व, अहंकार, (दे ७, ९१) ।

वित्तंत पुं [**वृत्तान्त**] समाचार, खबर, (पउम २३, १८; सुपा २०४, भवि) ।

वित्तत्थ देखो **वितत्थ**; (सुख ६, १; नाट—वेणी २६) ।

वित्तविय देखो **वट्टिअ**, **वत्तिअ**=वर्तित; (भवि) ।

वित्तास सक [**वि+त्रासय्**] भय-भीत करना, डराना ।

वित्तासए; (उत्त २, २०)। वकृ—**वित्तासंत**; (पउम २८, २६)।

वित्तास पुं [**वित्रास**] भय, त्रास, डर; (सुपा ४४१)।

वित्तासण न [**वित्रासन**] भय-प्रदर्शन; (आव)।

वित्तासिअ वि [**वित्रासित**] डरा कर भगाया हुआ; (सुपा ६५२)।

वित्ति पुं [**वेत्रिन्**] दरवान, प्रतीहार; (कम्म १, ६)।

वित्ति स्त्री [**वृत्ति**] १ जीविका, निर्वाह-साधन; (णाया १, १—पत्र ३७; स ६७६; सुर २, ४६)। २ टीका, विवरण; (सम ४६; विसे १४२२; सार्ध ७३)। ३ वर्तन, आचरण; ४ स्थिति; ५ कौशिकी आदि रचना-विशेष; ६ अन्तःकरण आदि का एक तरह का परिणाम, (हे १, १२८)। °**अ** वि [°**द**] वृत्ति देने वाला; (औप; अंत; णाया १, १ टी—पत्र ३)। °**आर** वि [°**कार**] टीकाकार, विवरण-कर्ता; (कप्पू)। °**च्छेय**, °**छेय** पुं [°**च्छेद**] जीविका-विनाश; (आचा; सूअ १, ११, २०)। देखो **वित्ती°**=वृत्ति।

वित्तिअ वि [**वित्तिक**] वित्त से युक्त, धन वाला, वैभवशाली; (औप; अंत; णाया १, १ टी—पत्र ३)।

वित्ती° देखो **वित्त**=वृत्त। °**कप्प** वि [°**कल्प**] सिद्ध-प्राय, पूर्ण-प्राय; (तंदु ७)।

वित्ती° देखो **वित्ति**=वृत्ति। °**संखेव** पुं [°**संक्षेप**] बाह्य तप का एक भेद—खाने, पीने और भोगने की चीजों को कम करना; (सम ११)। °**संखेवण** न [°**संक्षेपण**] वही अर्थ; 'वित्तीसंखेवणं रसच्चाओ'' (नव २८; पडि)।

वित्तेस पुं [**वित्तेश**] धनी, श्रीमंत; (उप ७२८ टी)।

वित्थ पुंन [**विस्त**] सुवर्ण, सोना; (से १, १)।

वित्थक्क अक [**वि+स्था**] १ स्थिर होना। २ विलम्ब करना। ३ विरोध करना। वकृ—**वित्थक्कंत**; (से ३, ४; १३, ७०; ७४)।

वित्थक्क देखो **विथक्क**; (स ६३४ टि)।

वित्थड, **वित्थय** वि [**विस्तृत**] १ विस्तार-युक्त, विशाल; (भग; औप; पाअ; वसु; भवि; गा ४०७)। २ संकट, पतित; (से १, १)।

वित्थर अक [**वि+स्तृ**] १ फैलना। २ बढ़ना। वित्थरइ; (प्राकृ ७६; स २०१; ६८४; सिरि ६२७; मन ३४)। वकृ—**वित्थरंत**; (से ३, ३१; स ६८६)। हेकृ—**वित्थरिउं**; (पि ५०४)।

वित्थर पुंन [**विस्तर**] १ विस्तार, प्रपञ्च; (गउड)। २ शब्द-समूह; (गउड ८६)।

वित्थर देखो **वित्थड**; "तत्थ वित्थरा कज्जधुरा" (से ४, ४६), "वित्थरं च तलवट्टं" (वज्जा १०४)।

वित्थरण वि [**विस्तरण**] १ फैलाने वाला; २ वृद्धि-जनक; (कुमा)।

वित्थरिअ देखो **वित्थड**; (सुर ३, ५४; सुपा ३६८; पि ५०५; भवि; सण)।

वित्थार सक [**वि+स्तारय्**] फैलाना। वित्थारइ; (भवि), वित्थारेदि(शौ); (नाट—शकु १०६)।

वित्थार पुं [**विस्तार**] फैलाव, प्रपञ्च; (गउड; हे ४, ३९५; नाट—शकु ६)। °**रुइ** वि [°**रुचि**] सम्यकत्व-विशेष वाला, सर्व पदार्थों को विस्तार से जानने की चाह वाला सम्यक्त्वी; (पव १४६)।

वित्थारइत्तअ (शौ) वि [**विस्तारयितृ**] फैलाने वाला; (अभि २८; पि ६००)।

वित्थारग वि [**विस्तारक**] फैलाने वाला; (रंभा)।

वित्थारण न [**विस्तारण**] फैलाव; "सोसमइवित्थारण-मित्तत्थोयं कओ समुल्लावो" (सम्म १२२; सिरि १२०७)।

वित्थारिय वि [**विस्तारित**] फैलाया हुआ; (सण; दे)।

वित्थिण्ण, **वित्थिन्न** वि [**विस्तीर्ण**] विस्तार-युक्त, विशाल; (नाट—मृच्छ ६४; पाअ; भवि)।

वित्थिय देखो **वित्थड**; (स ६६७; गा ४०७ अ)।

वित्थिर न [**दे**] विस्तार, फैलाव; (षड्)।

वित्थुय देखो **वित्थड**; (स ६१०)।

विथक्क वि [**विष्ठित**] जो विरोध में खड़ा हुआ हो, विरोधी बना हुआ; (स ४६७; ६३४)।

विद देखो **विअ**=विद्। वकृ—**विदंत**; (उप १८० टी)। संकृ—**विदित्ता**, **विदित्ताणं**; (सूअ १, ६, २८; पि ५८३)।

विदंड पुं [**विदण्ड**] कक्षा तक लम्बी लटठी; (पव ८१)।

विदंसग देखो **विदंसय**; (पण्ह १, १ टी—पत्र १५)।

विदंसण न [**विदर्शन**] अन्धकार-स्थित वस्तु का प्रकाशन; (पण्ह १, १—पत्र ८)। देखो **विदरिसण**।

विदंसय वि [**विदंशक**] श्येन आदि हिंसक पक्षी; (उत्त १६, ६५; सुख १६, ६५)।

विदड्ढ, **विदद्ध** वि [**विदग्ध**] १ पण्डित, विचक्षण; (संचि ८)। २ विशेष दग्ध; (पव १२५)। ३ अजीर्ण का एक भेद; (राज)। देखो **विदड्ढ**।

विदब्भ पुंस्त्री [**विदर्भ**] १ देश-विशेष; "इओ य विदब्भ-देसमंडणं कुंडिणं नयरं" (कुप्र ४८; गा ८६)। २ भगवान् सुपार्श्वनाथ के गणधर—मुख्य शिष्य—का नाम; (सम १५२)। ३ पुंस्त्री. विदर्भ देश की प्राचीन राजधानी, कुण्डिनपुर, जो आजकल 'नागपुर' के नाम से प्रसिद्ध है; "दूरे विदब्भा" (कुप्र ७०)।

विदरिसण वि [**विदर्शन**] जिसके देखने से भय उत्पन्न हो वह वस्तु, विरूप आकार वाली विभीषिका आदि; "एस णं तए विदरिसणे दिट्ठे" (उवा)। देखो **विदंसण**।

विदल न [**विदल**] वंश, वाँस; (सुख १०, १; ठा ४, ४—पत्त २७१)।

विदल न [**द्विदल**] १ चना आदि वह शुष्क धान्य जिसके दो टुकड़े समान होते हैं;

"जम्मि हु पीलिज्जंते नेहो न हु होइ विंति तं विदलं।
विदलेवि हु उप्पन्नं नेहजुयं होइ नो विदलं" (संबोध ४४)।

२ वि. जिसके दो टुकड़े किए गए हों वह; (सुअनि ७१)।

विदलिद (शौ) वि [**विदलित**] खण्डित, चूर्णित; (नाट—वेणी २६)।

विदाअ देखो **विद्दाय**=विद्रुत; (से १३, २५)।

विदारग } वि [**विदारक**] विदारण-कर्ता; "कम्मरय-
विदारय } विदारगाइं" (पण्ह २, १—पत्त ६६; राज)।

विदालण न [**विदारण**] विविध प्रकार से चीरना, फाड़ना; (पण्ह १, १—पत्त १४)।

विदिअ देखो **विइअ**; (अभि १२३; पउम ३६, ६८)।

विदिण्ण देखो **विइण्ण**=वितीर्ण; (विपा १, २—पत्त २२)।

विदिण्ण वि [**विदीर्ण**] फाडा हुआ, चीरा हुआ; (नाट—मृच्छ २५५)।

} देखो **विद**=विद्।
विदित्ताणं }

विदिन्न देखो **विदिण्ण**=वितीर्ण; (विपा १, २ टी—पत्त २२; सुर ५, १८७)।

विदिस (अप) स्त्री [**विदिशा**] एक नगरी का नाम; (भवि)।

विदिसा } स्त्री [**विदिश्**] १ विदिशा, उपदिशा, कोण; } (आचा; पि ४१३; पण्ण १—पत्त २६)। २ विपरीत दिशा, अ-संयम; (आचा)।

विदु देखो **विउ**; (पंचा १६, ७)।

विदुगुंछा देखो **विउच्छा**; (राज)।

विदुग्ग न [**विदुर्ग**] समुदाय; (भग १, ८)।

विदुम वि [**विद्वस्**] विद्वान्, जानकार; (सूअ १, २, ३, १७)।

विदुर वि [**विदुर**] १ विचक्षण, विज्ञ; (कुमा)। २ धीर; ३ नागर, नागरिक; (हे १, १७७)। ४ पुं. कौरवों के एक प्रख्यात मन्त्री, (णाया १, १६—पत्त २०८)।

विदुलतंग न [**विद्युल्लताङ्ग**] संख्या-विशेष, हाहाहूहू को चौरासी लाख से गुनने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (इक)।

विदुलता स्त्री [**विद्युल्लता**] संख्या-विशेष, विद्युल्लतांग को चौरासी लाख से गुनने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (इक)।

विदुस देखो **विदु**; "ण पमाणं अत्थि विदुसाणं" (धर्मसं ८८०)।

विदूसग } पुं [**विदूषक**] मसखरा, राजा के साथ रहने
विदूसय } वाला मुसाहब; (सार्ध ६५; सम्मत्त ३०)।

विदेस देखो **विएस**=विदेश; (णाया १, २—पत्त ७६; औप, पउम १, ६६; विसे १६७१; कुमा; प्रासू ४४)।

विदेसि वि [**विदेशिन्**] परदेशी; (सुपा ७२)।

विदेसिअ वि [**वैदेशिक**] ऊपर देखो; (सिरि ३६४)।

विदेह पुं [**विदेह**] १ राजा जनक; (ती ३)। २ पुं. व. देश-विशेष; विहार का उत्तरीय प्रदेश जो आजकल तिहुंत के नाम से प्रसिद्ध है; "इहेव भारहे वासे पुव्वदेसे विदेहा णामं जणवया" (ती १७; अंत)। ३ पुंन. वर्ष-विशेष, महा-विदेह-क्षेत्र; (पव १६३)। ४ वि. विशिष्ट शरीर वाला; ५ निर्लेप, लेप-रहित; ६ पुं. अनंग, कामदेव; ७ गृह-वास; (कप्प ११०)। ८ निषध पर्वत का एक कूट; १० नील-वंत पर्वत का एक कूट; (ठा ६—पत्त ४५४)। °**जंबू** स्त्री [°**जम्बू**] जम्बूवृक्ष-विशेष, जिसके नाम से यह जम्बू-द्वीप कहलाता है; (जं ४, इक)। °**जच्च** पुं [°**जार्च**, °**यार्य**] भगवान् महावीर; (कप्प ११०)। °**दिन्ना** स्त्री [°**दत्ता**] भगवान् महावीर की माता, रानी त्रिशला; (कप्प)। °**दुहिआ** स्त्री [°**दुहितृ**] राजा जनक की पुत्री, सीता; (ती ३)। °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] राजा कूणिक; (भग ७, ८)।

विदेहदिन्न पुं [**वैदेहदत्त**] भगवान् महावीर; (कप्प ११० टी)।

विदेहा स्त्री [**विदेहा**] १ भगवान् महावीर की माता, त्रिशला

दत्री; (कप्प ११० टी)। २ जानकी, सीता; (पउम ४६, १०)।

विदेहि पुं [**वैदेहिन्**] विदेह देश का अधिपति, तिहुंत का राजा; (सूम १, ३, ४, २)।

विदेही स्त्री [**विदेही**] राजा जनक की पत्नी, सीता की माता; (पउम २६, २)।

विद्दंडिअ त्रि [**दे**] नाशित, नष्ट किया हुआ; (दे ७, ७०)।

विद्दड्ड पुं [**विदग्ध**] एक नरक-स्थान; (देवेन्द्र २७)।

विद्दव सक [**वि+द्रावय्**] १ विनाश करना। २ हैरान करना, उपद्रव करना। ३ दूर करना, हटाना। ४ झरना, टपकना। विद्दवइ; (कुप्र २८०)। वकृ—**विद्दवयंत**; (रयण ७२)। कवकृ—"रज्जं रक्खइ न परेहिं **विद्दविज्जंतं**" (कुप्र २७; सुर १३, १७०)।

विद्दव पुं [**विद्रव**] १ उपद्रव, उपसर्ग; "परचक्कचरडचोराइविद्दवा दूरमुवगया सव्वे" (कुप्र २०)। २ विनाश; (णाया १, ६—पत्र १५७; धर्मवि २३)।

विद्दविअ वि [**विद्रवित**] १ विप्लावित; (से ४, ६०)। २ दूर किया हुआ, हटाया हुआ; (गा ८८)। ३ विनाशित; (भवि; सण)।

विद्दा अक [**वि+द्रा**] खराब होना। विद्दाइ; (से ४, २६)।

विद्दाण वि [**विद्राण**] १ म्लान, निस्तेज, फीका; "विद्दाणमुहा ससोगिल्ला" (सुर ६, १२४), "अदीणविद्दाणमुहकमलो" (यति ४३), "दारिद्दमविद्दाणं नज्जइ आयारमित्तओ तुज्झ" (कुप्र १६५)। २ शोकातुर, दिलगीर; "विद्दाणो परियणो" (स ४७३; उप ६०४; उप ३२० टी)।

विद्दाय वि [**विद्रुत**] १ विनष्ट; (कुमा)। २ पलायित; ३ द्रव-युक्त, द्रव-प्राप्त; (हे १, १०७; पड्)।

विद्दाय अक [**विद्वस्य्**] खुद को विद्वान् मानना। वकृ—**विद्दायमाण**; (आचा)।

विद्दारण (अप) वि [**विदारण**] चीरने वाला, फाड़ने वाला; स्त्री—°णी; (भवि)।

विद्दाविय देखो **विद्दविअ**; (भवि)।

विद्दुम पुं [**विद्रुम**] १ प्रवाल, मूँगा; (से २, २६; गउड; जी ३)। २ उत्तम वृक्ष; (से २, २६)। °**भ** पुं [°**भ**] नवें बलदेव का पूर्व-जन्म का गुरु; (पउम २०, १६३)।

विद्दुय वि [**विद्रुत**] अभिभूत, पीड़ित; "अरिगणयविद्दु(ह्दु)या" (णाया १, १—पत्र ६५)।

विद्दूणा स्त्री [**दे**] लज्जा, शरम; (दे ७, ६५)।

विद्देस पुं [**विद्वेष**] द्वेष, मत्सर; (पगह १, २—पत्र २६)।

विद्देस वि [**विद्वेष्य**] द्वेष-योग्य, अप्रिय; (पगह १, २—पत्र २६)।

विद्देसण न [**विद्वेषण**] एक प्रकार का अभिचार-कर्म, जिससे परस्पर में शत्रुता होती है; (स ६७८)।

विद्देसि वि [**विद्वेषिन्**] द्वेष-कर्ता; (कुप्र ३६७)।

विद्देसिअ देखो **विदेसिअ**; (श्रा १२)।

विद्देसिअ वि [**विद्वेषित**] द्वेष-युक्त; (भवि)।

विद्ध सक [**व्यध्**] वींधना, छेद करना। विद्धइ; (धात्वा १५३; नाट—रत्ना ७)। कवकृ—**विद्धिज्जंत**; (वै ८८)। संकृ—**विद्धूण**; (सूअ १, ५, १, ६)।

विद्ध वि [**विद्ध**] वींधा हुआ, वेध किया हुआ; (से १, १३; भवि)।

विद्ध देखो **वुड्ढ**=वृद्ध; (उत्त ३२, ३; हे १, १२८; भवि)।

विद्धंस अक [**वि+ध्वंस्**] विनष्ट होना। विद्धंसइ; (ठा ३, १—पत्र १२३)। वकृ—**विद्धंसमाण**; (सूअ १, १५, १८)।

विद्धंस सक [**वि+ध्वंसय्**] विनष्ट करना। भवि—विद्धंसेहिंति; (भग ७, ६—पत्र ३०५)।

विद्धंस पुं [**विध्वंस**] १ विनाश; (सुर १, १२)। २ वि. विनाश-कर्ता; "जहा से तिमिरविद्धंसे उत्तिट्ठंते दिवायरे" (उत्त ११, २४)।

विद्धंसण न [**विध्वंसन**] विनाश; (णाया १, १—पत्र ४८; पगह १, ३—पत्र ५५; सूअ १, २, २, १०; चेइय ६६४; उप पृ १८७)।

विद्धंसणया स्त्री [**विध्वंसना**] विनाश; (भग)।

विद्धंसित वि [**विध्वंसित**] विनाशित; (चंड ३, ५)।

विद्धंसिय } वि [**विध्वस्त**] विनष्ट; (पउम ८, २३७;
विद्धत्थ } १६, ३०; पव १५५)।

विद्धि स्त्री [**वृद्धि**] १ बढ़ाव, बढ़ती; (उप ७२८ टी; सुर ४, ११५)। २ समृद्धि; (ठा १०—पत्र ५२५; विसे ३४०८)। ३ अभ्युदय; ४ संपत्ति; ५ अहिंसा; (पगह २, १—पत्र ६६)। ६ कलान्तर, सुद; (विपा १, १—पत्र ११)। ७ व्याकरण-प्रसिद्ध स्वर का विकार; (विसे ३४८२)। ८ ओषधि-विशेष; (राज)।

विद्धूण देखो **विद्ध**=व्यध्।
विधम्म देखो **विहम्म**; (राज)।
विधम्मिय वि [**विधर्मित**] तिरस्कृत; (विसे २३४६)।
विधवा देखो **विहवा**; (निचू ८)।
विधा अ [**वृथा**] मुधा, निरर्थक, व्यर्थ; (धर्मसं ४११)।
विधाण देखो **विहाण**=विधान; (बृह १)।
विधाय देखो **विहाय**=विधातृ; (राज)।
विधार सक [**वि+धारय्**] निवारण करना। संकृ—**विधारेउं**; (पिंड १०२)।
विधि (शौ) देखो **विहि**; (हे ४, २८२; ३०२)।
विधुर वि [**विधुर**] १ व्याकुल, विह्वल; "नहि विधुरसहावा हुंति दुत्थेवि धीरा" (कुप्र ५४)। २ विषम, असमान; (धर्मसं १२२३; १२२४)। देखो **विहुर**।
विधुव (शौ) देखो **विहुण**=वि+धू। विधुवेदि; (पि ५०३)।
विधूण देखो **विहुण**=वि+धू। संकृ—**विधूणित्ता**; (सूअ २, ४, १०)।
विधूम पुं [**विधूम**] अग्नि, वह्नि; (सूअ १, ५, २, ८; वसु)।
विधूय वि [**विधूत**] चूरण, सम्यक् स्पृष्ट; "विधूयकप्पे" (आचा १, ३, ३, ३; १, ६, ३, १)। देखो **विहूअ**।
विनड देखो **विणड**। विनडइ; (भवि), "अइ हिअअ पसिअ विरमसु दुल्लहपेम्मेण किं नु विनडेसि" (रुक्मि ५८)। कवकृ—**विनडिज्जंत, विनडिज्जमाण**; (सुपा ६५५; १३४)।
विनडण न [**विनटन**] १ व्याकुल करना; २ विडम्बना; (सुपा २०८)।
विनडिअ वि [**विनटित**] १ व्याकुल बना हुआ; २ विडम्बित; "तण्हाछुहाविनडिओ फलजलरहियम्मि सेलम्मि" (सम्मत्त १५६; सुपा २६०)।
विनमि पुं [**विनमि**] भगवान् ऋषभदेव का एक पौत्र; (धण १४)।
विनास देखो **विणास**=वि+नाशय्। विनासए; (महा)।
विनिबद्ध वि [**विनिबद्ध**] संबद्ध, बँधा हुआ; (महा)।
विनिमय पुं [**विनिमय**] व्यत्यय; "इअ सव्वभासविनिमयपरिहिं" (कुमा)।
विनियट्ट देखो **विणिवट्ट**। वकृ—**विनियट्टमाण**; (आचा १, ५, ४, ३)।
विनियट्टण न [**विनिवर्तन**] निवृत्ति, विराम; (आचा)।
विनिरय वि [**विनिरत**] लीन, आसक्त; (कुप्र ६६)।
विनिहन्न सक [**वि+नि+हन्**] मार डालना, विनाश करना। विनिहन्निज्जा; (उत्त २, १७)।
विनिहाय देखो **विणिघाय**; (विपा १, २—पत्र ३१)।
विनीय देखो **विणीअ**; (कस)।
विन्नत्त देखो **विण्णत्त**; (काल)।
विन्नत्ति देखो **विण्णत्ति**; (दं ४७; कुमा)।
विन्नप्प देखो **विन्नव**।
विन्नव देखो **विण्णव**। विन्नवइ, विन्नवेइ; (पउम ३६, ११४; महा), विन्नवेज्जा; (कप्प)। वकृ—**विन्नवेमाण**; (कप्प)। संकृ—**विन्नविउं, विन्नवित्ता**; (सुपा ३२३; पि ५८२)। कृ—**विन्नप्प, विन्नवणीय, विन्नवियव्व**; (पउम ४६, ४६; मोह ८२; सुपा १६२; २१६; ३३१)।
विन्नवण न [**विज्ञपन**] निवेदन, विज्ञापन; (सुपा २६७)।
विन्नवणा स्त्री [**विज्ञापना**] १ प्रार्थना, विनती; (सूअ १, ३, ४, १०)। २ महिला, नारी, (सूअ १, २, ३, २)। देखो **विण्णवणा**।
विन्नविय वि [**विज्ञापित**] निवेदित; (महा)।
विन्ना देखो **विण्णा**=वि+ज्ञा। कृ—**विन्नेय**; (भग; उप ३३६ टी)।
विन्ना देखो **बिन्ना**। °**यड** न [°**तट**] एक नगर का नाम; (उप पृ ११२)।
विन्नाउ वि [**विज्ञातृ**] जानने वाला; (आचा)।
विन्नाण न [**विज्ञान**] १ सद्बोध, ज्ञान; (भग; आचा)। २ कला, शिल्प; "तं नत्थि किंपि विन्नाणं जेण धरिज्जइ काया" (वै ७), "कुसुमविन्नाणं" (कुमा; प्रासू ४३; ११२)। ३ मेधा, मति, बुद्धि; "मेहा मई मणीसा विन्नाणं धी चिई बुद्धी" (पाअ)।
विन्नाणिय } देखो **विण्णाय**; (उप १५० टी; सुर २,
विन्नाय } १३१; पि १०६; पाअ)।
विन्नाविय देखो **विन्नविय**; (सुपा १४४)।
विन्नास पु [**विन्यास**] १ रचना, विच्छित्ति; "विन्नासो विच्छित्ती" (पाअ), "वयणविन्नासो" (स ३०१, सुपा १७; २६६; महा)। २ स्थापना; (भवि)।
विन्नासण न [**विन्यासन**] संस्थापन; (स ३१८)।
विन्नासिअ वि [**विन्यासित**] संस्थापित; (स ५६०)।
विन्नासिअ (अप) देखो **विणासिअ**; (हे ४, ४१८)।

विन्नु देखो **विण्णु**; (आचा), "एगा विन्नू" (ठा १—पत्र १६)।

विन्नेय देखो **विन्ना**=वि+ज्ञा।

विन्हु पुं [**विष्णु**] एक जैन मुनि, जो आर्य-जेहिल के शिष्य थे, (कप्प)। देखो **विण्हु**। °**पअ** न [°**पद**] आकाश; (सम्मु १५०)। °**पदी** स्त्री [°**पदी**] गंगा नदी; (सम्मु १५०)।

विपंची स्त्री [**विपञ्ची**] वाद्य-विशेष, वीणा; (पण्ह १, ४—पत्र ६८; २, ५—पत्र १४६)।

विपक्क वि [**विपक्व**] पका हुआ; (उप पृ २११)। देखो **विवक्क**।

विपक्ख देखो **विवक्ख**; " निज्जियविपक्खलक्खो " (सुपा १०३; २४०)।

विपक्खिय वि [**विपक्षिक**] विरोधी, दुश्मन; (संबोध ५६)।

विपच्चइग न [**विप्रत्ययिक**] बारहवें जैन अंग-ग्रन्थ का सूत्र विशेष, (सम १२८)।

विपच्चमाण वि [**विपच्यमान**] १ जो पकाया जाता हो वह, (श्रा २०, सं ८६), " आमासु अपक्कासु विपच्चमाणासु मंसपेसीसु " (संबोध ४४)। २ दग्ध होता, जलता; " तव्विरहानलजालाविपच्चमाणस्स मह निच्चं " (रयण ४१)।

विपज्जय देखो **विवज्जय**; (राज)।

विपज्जास देखो **विवज्जास**; (नाट—मृच्छ २२६)।

विपडिवत्ति देखो **विप्पडिवत्ति**; (विसे २६१४; सम्मत्त २२८)।

विपडिसेह सक [**विप्रति+सिध्**] निषेध करना। कृ—**विपडिसेहेयव्व**; (भग ५, ७—पत्र २३४)।

विपणोल्ल सक [**विप्र+नोदय्**] प्रेरणा करना। विपणोल्लए; (आचा १, ५, २, २; पि २४४)।

विपण्ण देखो **विवण्ण**=विपन्न; (चारु ८)।

विपत्ति देखो **विवत्ति**=विपत्ति; (गा २८२ अ; राज)।

विपत्थाविद (शौ) वि [**विप्रस्तावित**] आरब्ध, जिसका प्रारंभ किया गया हो वह; "एदाए चोरिआए एसम्ह घरे कलहो विपत्थाविदो" (हास्य १२१)।

विपरामुस सक [**विपरा+मृश्**] १ समारम्भ करना, हिंसा करना। २ पीड़ा उपजाना, हैरान करना। ३ अक उत्पन्न होना, उपजना। विपरामुसइ, विपरामुसंति, विपरामुसह; (आचा; पि ४७१)। देखो **विप्परामुस**।

विपराहुत्त वि [**विपराङ्मुख**] विशेष पराङ्मुख, अतिशय उदासीन; (पउम ११५, २२)।

विपरिकुंचि वि [**विपरिकुञ्चिन्**] विपरिकुचित-नामक वन्दनदोष वाला; "देसकहावित्तंते कहेइ दरवंदिए विपरिकुंची" (बृह ३)।

विपरिकुंचिय देखो **विप्पलिउंचिय**; (राज)।

विपरिखल अक [**विपरि+स्खल्**] १ स्खलित होना, गिरना। २ भूल करना। वकृ—**विपरिखलंत**; (अच्चु २२)।

विपरिणम अक [**विपरि+णम्**] १ बदलना, रूपान्तर को प्राप्त होना। २ विपरीत होना, उलटा होना। विपरिणमे; (पिंड ३२७)। वकृ—**विपरिणममाण**; (भग ७, १०—पत्र ३२५)।

विपरिणय वि [**विपरिणत**] रूपान्तर को प्राप्त; (पिंड २६५)।

विपरिणाम सक [**विपरि+णमय्**] १ विपरीत करना, उलटा करना। २ बदलवाना, रूपान्तर को प्राप्त करना। विपरिणामेइ; (स ५१३) हेकृ—**विपरिणामित्तए**; (उवा)।

विपरिणाम पुं [**विपरिणाम**] १ रूपान्तर-प्राप्ति; (आचा; औप)। २ उलटा परिणाम, विपरीत अध्यवसाय; (धर्मसं ५११)।

विपरिणामिय वि [**विपरिणमित**] रूपान्तर को प्राप्त; (भग ६, १ टी—पत्र २५१)।

विपरिधाव सक [**विपरि+धाव्**] इधर-उधर दौड़ना। विपरिधावई; (उत्त २३, ७०)।

विपरियास देखो **विप्परियास**; (राज)।

विपरिवसाव सक [**विपरि+वासय्**] रखना। विपरिवसावेइ; (णाया १, १२—पत्र १७५)। वकृ—**विपरिवसावेमाण**; (णाया १, १२)।

विपरीअ देखो **विवरीअ**; (सूअ १, १, ४, ५; गा ५४ अ)।

विपलाअ अक [**विपरा+अय्**] दूर भागना। वकृ—**विपलाअंत**; (गा २६१)।

विपल्हत्थ देखो **विवल्हत्थ**; (पि २८५)।

विपस्सि वि [**विदर्शिन्**] देखने वाला; (आचा)।

विपाग देखो **विवाग**; (राज)।

विपिक्ख देखो **विप्पेक्ख**। वकृ—**विपिक्खंत**; (राज)।

विपिण देखो **विविण**; (कुमा)।

विपित्त वि [दे] विकसित, खिला हुआ; (दे ७, ६१)।
विपुल देखो **विउल**; (णाया १, १—पत्र ७५; कप्प; पराह २, १—पत्र ६६)। °**वाहण** पुं [°**वाहन**] भारतवर्ष में होने वाला बारहवाँ चक्रवर्ती राजा; (सम १५४)।
विप्प न [**दे**] पुच्छ, दुम, पूँछ; (दे ७, ५७)।
विप्प पुं [**विप्र**] ब्राह्मण, द्विज; (हे १, १७७; महा)।
विप्प पुं [**विप्रुष्, विप्र**] १ मूत्र और विष्ठा के बिन्दु; २ विष्ठा और मूत्र; "मुत्तपुरीसाण विप्पुसो विप्पा अन्ने विडित्ति विट्ठा भासंति य पत्ति पासवणं" (विसे ७८१; औप; महा)।
विप्पइट्ठ देखो **विप्पगिट्ठ**; (राज)।
विप्पइण्ण वि [**विप्रकीर्ण**] बिखरा हुआ, इधर उधर पटका हुआ; (से २, ५; कस)।
विप्पइर सक [**विप्र+कृ**] इधर उधर पटकना, बिखेरना। विप्पइरामि; (उत्त)। वकृ—**विप्पइरमाण**; (णाया १, ६—पत्र १५७)।
विप्पउंज सक [**विप्र+युज्**] १ विरुद्ध प्रयोग करना। २ विशेष रूप से जोडना। "अदुवा वायाओ विप्पउंजंति" (आचा १, ८, १, ३)।
विप्पओअ } पुं [**विप्रयोग**] अलहदगी, जुदाई, विरह,
विप्पओग } वियोग, (उत्तर १५; स २८१; चंड; पउम ४५, ४६; जी ४३; उत्त १३, ८; महा)।
विप्पकड वि [**विप्रकट**] विशेष रूप से प्रकट; (भग ७, १०—पत्र ३२४)।
विप्पकिर देखो **विप्पइर**। वकृ—**विप्पकिरेमाण**; (णाया १, १—पत्र ३६)।
विप्पकख देखो **विपक्ख**; (पि १६६)।
विप्पगब्भिय वि [**विप्रगल्भित**] अत्यन्त धृष्ट; (सूत्र १, १, २, ५)।
विप्पगरिस पुं [**विप्रकर्ष**] दूरी, आसन्नता का अभाव; "देसाइविप्पगरिसा" (धर्मसं १२१७)।
विप्पगाल सक [**नाशय्, विप्र+गालय्**] नाश करना। विप्पगालइ; (हे ४, ३१; पि ५५३)।
विप्पगालिअ वि [**नाशित, विप्रगालित**] नाशित; (कुमा)।
विप्पगिट्ठ वि [**विप्रकृष्ट**] १ दूरवर्ती, दूरी पर स्थित; (स ३२६)। २ दीर्घ, लम्बा; "गाइविप्पगिट्ठेहिं अद्धाणेहिं" (णाया १, १५)।
विप्पचय सक [**विप्र+त्यज्**] छोड़ना, त्याग करना। कृ—**विप्पचइयव्व**; (तंदु ३५)।
विप्पच्चय पुं [**विप्रत्यय**] १ संदेह, संशय; (उत्त २३, २४)। २ वि. प्रत्यय-रहित, अ-विश्वसनीय; (उव)।
विप्पजढ वि [**विप्रहीण**] परित्यक्त; (णाया १, २—पत्र ८४; पंचा १४, ६; पव १२३)।
विप्पजह सक [**विप्र+हा**] परित्याग करना, छोड़ देना। विप्पजहइ, विप्पजहंति, विप्पजहे, (कप; उत्त, सूत्र २, १, ३८; उत्त ८, ४)। भवि—विप्पजहिस्सामो; (पि ५३०)। वकृ—**विप्पजहमाण**; (ठा २, २—पत्र ५६; पि ५००)। संकृ—**विप्पजहित्ता, विप्पजहाय**; (उत्त २६, ७३; भग)। कृ—**विप्पजहणिज्ज, विप्पजहियव्व**; (णाया १, १—पत्र ४८, पि ५७१, णाया १, १८—पत्र २४१)।
विप्पजह न [**विप्रहाण**] परित्याग। °**सेणिआ** स्त्री [°**श्रेणिका**] बारहवें जैन अंग-ग्रन्थ का एक परिकर्म—अंश-विशेष; (सम १२६)।
विप्पजहणा } स्त्री [**विप्रहाणि**] प्रकृष्ट त्याग, परित्याग;
विप्पजहन्ना } (उत्त २६, ७३; औप, विसे ३०८६; पराण ३६—पत्र ८४७)।
विप्पजहिय वि [**विप्रहीण**] परित्यक्त; (पि ५६५)।
विप्पजोग देखो **विप्पओअ**; (चंड)।
विप्पडिइ अक [**विपरि+इ**] विपरीत होना, उलटा होना। विप्पडिएइ; (सूत्र १, १२, १०)।
विप्पडिघाय पुं [**विप्रतिघात**] प्रतिबन्ध, अटकायत; (णाया १, १६—पत्र २४५)।
विप्पडिपह पुं [**विप्रतिपथ**] विपरीत मार्ग; (उप १०३१ टी)।
विप्पडिवण्ण देखो **विप्पडिवन्न**, (पत्र ७३ टी)।
विप्पडिवत्ति स्त्री [**विप्रतिपत्ति**] १ विरोध, (विसे २४८०)। २ प्रतिज्ञा-भंग; (उप ५१६)।
विप्पडिवन्न वि [**विप्रतिपन्न**] १ जिसने विशेष रूप से स्वीकार किया हो वह; "मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवड्ढमाणेहिं २ मिच्छत्तं विप्पडिवन्ने जाए यावि होत्था" (णाया १, १३—पत्र १७८)। २ विरोध-प्राप्त, विरोधी बना हुआ; (आचा १, ८, १, ३; सूत्र १, ३, १, ११)।
विप्पडिवेअ } सक [**विप्रति+वेदय्**] १ जानना। २
विप्पडिवेद } विचारना। विप्पडिवेएइ, (आचा १, ५, ४, ४), विप्पडिवेदेंति; (सूत्र २, १, १५)।

विप्पडिसिद्ध वि [**विप्रतिषिद्ध**] आपस में असंमत; (उवर ३)।

विप्पडीव वि [**विप्रतीप**] प्रतिकूल; (माल १७७)।

विप्पणट्ठ वि [**विप्रनष्ट**] पलायित, नाश-प्राप्त; (स ३५३; उवा)।

विप्पणम } **विप्पणव** } सक [**विप्र+णम्**] १ नमना। २ अक. तत्पर होना। विप्पणवंति; (सूत्र १, १२, १७)। वकृ—**विप्पणमंत**; (राज)।

विप्पणस्स अक [**विप्र+नश्**] नष्ट होना, विनाश-प्राप्त होना। विप्पणस्सइ; (कस)। भवि—विप्पणस्सिहिइ; (महानि ४)।

विप्पणास पुं [**विप्रणाश**] विनाश; (धर्मवि ५७)।

विप्पतार सक [**विप्र+तारय्**] ठगना। विप्पतारसि; (धर्मवि १४७)। कर्म—विप्पतारीअदि (शौ); (नाट—शकु ७५)।

विप्पदीअ } **विप्पदीव** } (शौ) देखो **विप्पडीव**; (नाट—मालती १०६; ११६; मृच्छ ४८)।

विप्पमाय पु [**विप्रमाद**] विविध प्रमाद; (सूत्र १, १४, १)।

विप्पमुंच सक [**विप्र+मुच्**] छोड़ना, मुक्त करना। कर्म—विप्पमुच्चइ; (उत्त २५, ४१)।

विप्पमुक्क वि [**विप्रमुक्त**] विमुक्त; (औप; सुर २, २३७; सुपा ४४५)।

विप्पय न [**दे**] १ खल-भिक्षा; २ दान; ३ वि. वापित; ४ पु. वैद्य; (दे ७, ८६)।

विप्पयार सक [**विप्र+तारय्**] ठगना। विप्पयारंति, विप्पआरेमि; (कुप्र ६; लि ८८)। कर्म—विप्पयारीअइ; (कुप्र ४४)। संकृ—**विप्पआरिअ**; (लि ८८)।

विप्पयारणा स्त्री [**विप्रतारणा**] वंचना, ठगाई; (कुप्र ४४; मोह ६४)।

विप्पयारिअ वि [**विप्रतारित**] वञ्चित, ठगा हुआ; (मोह १०१)।

विप्परद्ध वि [**दे**] विशेष पीड़ित; "करचरणदंतमुसलप्पहारेहि विप्परद्धे समाणे तं चेव महद्दहं पाणीयं पादेउं (?पाउं) समोयरेति" (णाया १, १—पत्त ६४)। देखो **परद्ध**।

विप्परामुस देखो **विपरामुस**, "आवंती केयावंती लोगंसि विप्परामुसंति अट्ठाए अणट्ठाए वा, एएसु चेव विप्परामुसंति" (आचा)।

विप्परिणम देखो **विपरिणम**। भवि—विप्परिणमिस्सति; (भग)।

विप्परिणय देखो **विपरिणय**; (भग ५, ७ टी—पत्त २३६; काल)।

विप्परिणाम देखो **विपरिणाम=विपरि+णमय्**। विप्परिणामंति, विप्परिणामेंति; (आचा)। संकृ—**विप्परिणामइत्ता**; (भग)।

विप्परिणाम देखो **विपरिणाम** = विपरिणाम; (आचा; भग ५, ७ टी—पत्त २३६)।

विप्परिणामिय देखो **विपरिणामिय**; (भग ६, १—पत्त २५०)।

विप्परियास सक [**विपरि+आसय्**] व्यत्यय करना, उलटा करना। विप्परियासेइ; (निचू ११)। वकृ—**विप्परियासंत**, (निचू ११)।

विप्परियास पुं [**विपर्यास**] १ व्यत्यय, विपरीतता; (आचा; सूत्र १, ७, ११)। २ परिभ्रमण; (सूत्र १, १२, १३; १, १३, १२)।

विप्परियासणा स्त्री [**विपर्यासना**] व्यत्यय करना; (निचू ११)।

विप्परुद्ध वि [**विप्ररुद्ध**] तिरस्कृत; "हयनिहयविप्परुद्धो दूओ" (पउम ८, ८५)।

विप्पल देखो **विप्प**=विप्र; (प्राकृ ३७)।

विप्पलंभ सक [**विप्र+लभ्**] ठगना। विप्पलंभेमि; (स ५०६)।

विप्पलंभ पुं [**विप्रलम्भ**] १ वञ्चना, ठगाई; (उप २४)। २ शृंगार की एक अवस्था; (सुपा १६४)। ३ विपर्यास, व्यत्यय, वैपरीत्य; (धर्मसं ३०४)। ४ विरह, वियोग; (कप्पू)।

विप्पलंभअ वि [**विप्रलम्भक**] प्रतारक, ठगने वाला; (मृच्छ ४७)।

विप्पलंभिअ वि [**विप्रलम्भित**] १ प्रतारित; २ विरहित; (सुपा २१६)।

विप्पलद्ध वि [**विप्रलब्ध**] वञ्चित, प्रतारित; (चारु ४५; स ४१८; ६८०)।

विप्पलय पुंन [**दे**] विविधता, विचित्रता; "तं दट्ठुं सो सव्वं जाणइ संबंधविप्पलयं" (धर्मवि १२७)।

विप्पलविद (शौ) न [**विप्रलपित**] निरर्थक वचन, बकवाद; (स्वप्न ८१)।

विप्पलाअ देखो **विप्पलाअ**। भूका—विप्पलाइत्था; (विपा १, २—पत्न २६)। वकृ—**विप्पलायमाण**; (णाया १, १—पत्न ६५)।

विप्पलाअ, **विप्पलाव** पुं [**विप्रलाप**] १ परिदेवन, रोना, क्रन्दन; "अविओगो विप्पलाओ" (तंदु ८७; रयण; ६४)। २ निरर्थक वचन, बकवाद; (उत्त १३, ३३)। ३ विरहालाप; (पउम ४४, ६८)।

विप्पलिउंचिय न [**विपरिकुञ्चित**] गुरु-वन्दन का एक दोष, संपूर्ण वन्दन न करके बीच में बातचीत करने लग जाना; (पव २—गाथा १५२)।

विप्पलुंपग वि [**विप्रलोपक**] लूटने वाला, लुटेरा; (पण्ह १, ३—पत्न ४४)।

विप्पलोहण वि [**विप्रलोभन**] लुभाने वाला; (स ७६३)।

विप्पव पुं [**विप्लव**] १ देश का उपद्रव, क्रान्ति; २ दूसरे राजा के राज्य आदि से भय; (हे २, १०६)। ३ शरीर की विसंस्थुलता, अ-स्वस्थता; (कुमा)।

विप्पवर न [**दे**] भल्लातक, भिलाँवा; (दे ७, ६६)।

विप्पवस अक [**विप्र + वस्**] प्रवास में जाना, देशान्तर जाना। संकृ—**विप्पवसिय**; (आचा २, ५, २, ३)।

विप्पवसिय वि [**विप्रोषित**] देशान्तर में गया हुआ, प्रवास में गया हुआ; (णाया १, २—पत्न ७६; १, ७—पत्न ११५)।

विप्पवास पुं [**विप्रवास**] प्रवास, देशान्तर-गमन; (प्रति १००)।

विप्पसन्न वि [**विप्रसन्न**] १ विशेष प्रसन्न, खुश; २ प्रसन्न-चित का मरण; (उत्त ५, १८)।

विप्पसर अक [**विप्र+सृ**] फैलना। भूका—"बहवे हत्थी......दिसो दिसं विप्पसरित्था" (पि ५१७)।

विप्पसाय सक [**विप्र+सादय्**] प्रसन्न करना। विप्पसायए; (आचा १, ३, ३, १)।

विप्पसीअ अक [**विप्र+सद्**] प्रसन्न होना। विप्पसीएज्ज; (उत्त ५, ३०; सुख ५, ३०)।

विप्पहय वि [**विप्रहत**] आहत, जखमी; (सुर ६, २२१)।

विप्पहाइय वि [**विप्रभाजित**] विभक्त, बँटा हुआ; (औप)।

विप्पहीण, **विप्पहूण** वि [**विप्रहीण**] रहित, वर्जित; (सं ७७; स १६१; पि १२०, ५०३)।

विप्पावग वि [**दे**] हास्य-कर्ता, उपहास करने वाला; (सुख १, १३)।

विप्पिअ पुंन [**विप्रिय**] १ अप्रिय, अनिष्ट; (णाया १, १८—पत्न २१३; गा २५०; से ४, ३६; हे ४, ४२३)। २ अपराध, गुन्हा; (पाअ)। °**आरय** वि [°**कारक**] १ अप्रिय-कर्ता; २ अपराध-कर्ता; (हे ४, ३४३)।

विप्पिंडिअ वि [**दे**] नाशित; (दे ७, ७०)।

विप्पीइ स्त्री [**विप्रीति**] अप्रीति; (पण्ह १, ३—पत्न ४२)।

विप्पु स्त्री [**विप्रुष्**] विन्दु, अवयव, अंश; "मुत्तपुरीसाण विप्पुसो विप्पा" (औप; विसे ७८१)।

विप्पुअ वि [**विप्लुत**] उपद्रुत, उपद्रव-युक्त; (दे ६, ७६)।

विप्पुस पुंन. देखो **विप्पु**; "असुइस्स विप्पुसेणवि" (पिंड १६५)।

विप्पेक्ख सक [**विप्र+ईक्ष्**] निरीक्षण करना, देखना। वकृ—**विप्पेक्खंत**; (पण्ह १, १—पत्न १८)।

विप्पेक्खिअ वि [**विप्रेक्षित**] निरीक्षित; (पण्ह २, ४—पत्न १३१; भग ६, ३३—पत्न ४६६)।

विप्पोसहि स्त्री [**विप्रौषधि**] आध्यात्मिक शक्ति-विशेष, जिसके प्रभाव से योगी के विष्ठा और मूत्र के विन्दु औषधि का काम करता है; (पण्ह २, १—पत्न ६६; औप; विसे ७७६; संति २)।

विप्फंद अक [**वि+स्पन्द्**] इधर उधर चलना, तड़फना। वकृ—**विप्फंदमाण**; (आचा)।

विप्फंदिअ वि [**विस्पन्दित**] इधर उधर भटका हुआ, परिभ्रान्त;

"खउजंतेण जलथले सकम्मविप्फंडि(? दि)एण जीवेणं।
तिरियभवे दुक्खाइं छुहतण्हाईणि भुत्ताइं॥"
(पउम ६५, ५२)।

विप्फारस पुं [**विस्पर्श**] विरुद्ध स्पर्श; (प्राप्र)।

विप्फाडग वि [**विपाटक**] चीरने वाला, विदारक; (पण्ह १, ४—पत्न ७२)।

विप्फाडिअ वि [**दे, विपाटित**] नाशित; (दे ७, ७०)।

विप्फारिय वि [**विस्फारित**] १ विस्तारित; (उप पृ १५२)। २ विकाशित; (सुपा ८३)।

विप्फाल सक [**दे**] पूछना, पृच्छा करना। विप्फालेइ; (वव १)।

विप्फाल देखो **विफाल**। संकृ—**विप्फालिय**; (राज)।

विप्फालिय देखो **विप्फारिय**. (राज)।

विप्फुड वि [विस्फुट] स्पष्ट, व्यक्त; (रंभा)।

विप्फुर अक [वि+स्फुर्] १ होना। २ विकसना। ३ तड़फड़ना। ४ फरकना, हिलना। विफुरइ; (संबोध ३४; भत्त; भवि)। वकृ—विप्फुरंत; (उत्त १६, ५४; पउम ९.३, ३)।

विप्फुरण न [विस्फुरण] १ विजृम्भण, विकास; (श्रावक २४५; सुर २, २३७)। २ स्पन्दन, हिलन; (गउड)।

विप्फुरिय वि [विस्फुरित] विजृम्भित; (सुपा २०४; भत्त)।

विप्फुल्ल वि [विफुल्ल] विकसित, प्रफुल्ल; "तह तह सुण्हा विप्फुल्लगंडविवरंमुही हवइ" (वज्जा ४४)।

विप्फोडअ पुं [विस्फोटक] फोड़ा; (नाट—शकु २७; पि ३११; प्राप)।

विफंद देखो विप्फंद। वकृ—विफंदमाण; (आचा १, ४, ३, ३)।

विफाल सक [वि+पाटय्] १ विदारण करना। २ उखेड़ना। संकृ—विफालिय, (आचा २, ३, २, ६)।

विफुट्ट अक [वि+स्फुट्] फटना। वकृ—चिंतंति किं विफुट्टंतचंडवंभंडखल्प रवो". (सुपा ४५)।

विफुरण देखो विप्फुरण; (सुपा २५१)।

विबंधग वि [विबन्धक] विशेष रूप से बाँधने वाला; (पंच ३, १)।

विबद्ध वि [विबद्ध] १ विशेष बद्ध; २ मोहित; (सुअ १, ३, ३, ८)।

विबाहग वि [विबाधक] विरोधी, बाधक; (धर्मसं ४६६)।

विबुद्ध वि [विबुद्ध] जागृत; (सिरि ६१५)।

विबुध (शौ) नीचे देखो; (पि ३६१)।

विबुह पुं [विबुध] १ देव, त्रिदश; (पाअ; सुर १, ४५)। २ पण्डित, विद्वान्; (सुर १, ४५)। °चंद पुं [°चन्द्र] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य; (सुपा ६५८)। °पहु पुं [°प्रभु] इन्द्र; (सुर १, १७२)। °पुर न [°पुर] स्वर्ग; (सम्मत्त १७५)।

विबुहेसर पुं [विबुधेश्वर] इन्द्र; (श्रावक ५६)।

विबोह पुं [विबोध] जागरण; (पंचा १, ४२)।

विबोहय देखो विबोहय, (कप्प)।

विबोहण न [विबोधन] ज्ञान कराना; "भवियजणविबोहण-मिम" (सम्म १२१)।

विबोहय वि [विबोधक] १ विकासक; "कुमुयवणविबोहय" (कप्प ३८ टि)। २ ज्ञान-जनक; (विसे १७४)।

विब्बोअ पुं [विब्बोक] विलास, लीला; "हेला लेलिअं लीला विब्बोआ विब्भमो विलासो य" (पाअ)। देखो विव्वोअ।

विब्भंग देखो विभंग, (भग; पव २२६; कम्म ४, १४; ४०)।

विब्भंगि वि [विभङ्गिन्] विभंग-ज्ञान वाला; (भग)।

विब्भंत वि [विभ्रान्त] १ विशेष भ्रान्त, चक्कर में पड़ा हुआ; (आचा १, ६, ४, ३)। २ पुं. प्रथम नरक-भूमि का सातवाँ नरकेन्द्रक—स्थान-विशेष; (देवेन्द्र ४)।

विब्भंस पुं [विभ्रंश] अतिपात, हिंसा, प्राण-वियोजन, (राज)।

विब्भट्ठ वि [विभ्रष्ट] विशेष भ्रष्ट; (प्रति ४०)।

विब्भम पुं [विभ्रम] १ विलास; (पाअ; गउड ५५; १६७; कुमा)। २ स्त्री की शृंगार के अंग-भूत चेष्टा-विशेष, (गउड; गा ५)। ३ चित्त-भ्रम, पागलपन; (राय)। ४ शृंगार-संबन्धी मानसिक अशान्ति; (कप्पू)। ५ विशेष भ्रान्ति; (सुपा ३२७; गउड)। ६ संदेह; ७ आश्चर्य; ८ शोभा; (गउड)। ९ भूषणों का स्थान-विपर्यय; (कुमा)। १० रावण का एक सुभट; (पउम ५६, २६)। ११ मैथुन, अ-ब्रह्म; १२ काम-विकार; (पण्ह १, ४—पत्र ६६)।

विब्भल वि [विह्वल] १ व्याकुल, व्यग्र; (सुर ८, ५७; १२, १६८)। २ व्यासक्त, तल्लीन; ३ पुं. विष्णु, नारायण; (पइ ४०; हे २, ५८)।

विब्भलिअ वि [विह्वलित] व्याकुल किया हुआ; (कुमा)।

विब्भवण न [दे] उपधान, ओसीसा; (दे ७, ६८)।

विब्भाडिय वि [दे] नाशित; (भवि)।

विब्भार देखो वेब्भार; (पि २६६)।

विब्भिडि पुं [दे] मत्स्य की एक जाति, (विपा १, ८ टी—पत्र ८३)।

विब्भेइअ वि [दे] सूई से विद्ध; (दे ७, ६७)।

विभंग पुं [विभङ्ग] १ विपरीत अवधिज्ञान, वितथ अवधि-ज्ञान, मिथ्यात्व-युक्त अवधिज्ञान; (पव २२६ टी)। २ ज्ञान-विशेष, (सुअ २, २, २५)। ३ विराधना, खण्डन, ४ मैथुन, अ-ब्रह्म; (पण्ह १, ४—पत्र ६६)। देखो विहंग=विभंग।

विभंगु पुंस्त्री [**दे**] तृण-विशेष; "एरंडे कुरुविंदे करकरसुंठे तहा विभंगू य" (पराण १—पत्र ३३)।
विभंगुर वि [**विभङ्गुर**] विनश्वर; (सुपा ६०५; प्रासू ६६; पुप्फ २२०)।
विभंज सक [वि+भञ्ज्] भाँग डालना, तोड़ना। संकृ—**विभंजिऊण**; (काल)।
विभंतडी (अप) स्त्री [**विभ्रान्ति**] विशिष्ट भ्रम; (हे ४, ४१४)।
विभग्ग वि [**विभग्न**] भाँगा हुआ, खण्डित; (पउम ११३, २६)।
विभज सक [वि+भज्] १ बाँटना, विभाग करना। २ विकल्प से प्राप्त करना, पक्षतः प्राप्ति करना—विधान और निषेध करना। कर्म—विभज्जंति; (तंदु २)। कवकृ—**विभज्जमाण**; (याया १, १—पत्र ६०; उप २६४ टी)। संकृ—**विभजिऊण**; (धर्मवि १०५), देखो **विभज्ज**।
विभजण न [**विभजन**] विभाग, भाग-बँटाई, (पव ३८)।
विभज्ज देखो **विभज**। विभज्ज; (कम्म ६, १०)।
विभज्जवाद } पुं [**विभज्यवाद**] स्याद्वाद, अनेकान्त-वाद, **विभज्जवाय** } जैन दर्शन; (धर्मसं ६२१; सूम १, १४, २२; उवर ६६)।
विभत्त वि [**विभक्त**] १ विभाग-युक्त, बाँटा हुआ; (नाट—शकु ४६; कप्प)। २ भिन्न, अलग, जुदा; "विभत्तं धम्मं झोसेमाणे" (आचा; कप्प; महा)। ३ न. विभाग; (राज)।
विभत्ति स्त्री [**विभक्ति**] १ विभाग, भेद; (भग १२, ५—पत्र ५७४; सुमनि ६६; उत्तनि ३६), "लोगस्स पएसेसु अणंतरपरंपराविभत्तीहिं" (पंच २, ३६; ४०; ४१)। २ व्याकरण-प्रसिद्ध प्रत्यय-विशेष; (ओघभा ४; चेइय २६८; सुमनि ६६)।
विभमण न [**दे**] उपधान, ओसीसा; (दे ७, ६८ टी)।
विभय देखो **विभज**। विभए, विभयंति; (कम्म ६, ३१; आचा; उत्त १३, २३)।
विभयणा स्त्री [**विभजना**] विभाग; (सम्म १०१)।
विभर सक [वि+स्मृ] विस्मरण करना, भूल जाना। विभरइ; (पि ३१३)।
विभव देखो **विहव**; (उव; महा)।
विभवण न [**विभवन**] विरूप-करण, खराब करना; (राज)।
विभाइम वि [**विभाज्य**] विभाग-योग्य; (ठा ३, २—पत्र १३४)।
विभाइम वि [**विभागिम**] विभाग से बना हुआ; (ठा ३, २—पत्र १३४)।
विभाग पुं [**विभाग**] अंश, बाँट; (काल; सण)।
विभागिम देखो **विभाइम**=विभागिम; (उप पृ १४१)।
विभाय देखो **विभाग**, (रंभा)।
विभाय न [**विभात**] प्रकाश, कान्ति, तेज; (सण)।
विभाय पुं [**विभाव**] परिचय; "कस्स विसमदसाविभाओ न होइ" (स १६८)।
विभाव सक [वि+भावय्] १ विचार करना, ख्याल करना। २ विवेक से ग्रहण करना। ३ समझना। वकृ—**विभावंत, विभावेंत, विभावेमाण**; (सुपा ३७७; उप ५६७ टी; कप्प)। कवकृ—**विभाविज्जंत, विभाविज्जमाण**; (से ८, ३२; स ७५०)। हेकृ—**विभावेत्तए**; (कस)। कृ—**विभावणीय**; (पुप्फ २५४)।
विभाव देखो **विभव**; "तओ महाविभावेणं पूइऊण पेसिया गया य" (महा)।
विभावसु पुं [**विभावसु**] १ सूर्य, रवि; २ रविवार; (पउम १७, १७७)। देखो **विहावसु**।
विभाविय वि [**विभावित**] विचारित; (सण)।
विभास सक [वि+भाष्] १ विशेष रूप से कहना, स्पष्ट कहना। २ व्याख्या करना। ३ विकल्प से विधान करना। विभासइ; (पव ७३ टी)। कृ—**विभासियव्व**; (उत्तनि ३६; पिंड १२४)। हेकृ—**विभासिउं**; (विसे १०८५)।
विभासण न [**विभाषण**] व्याख्या, व्याख्यान; (विसे १४२८)।
विभासय वि [**विभाषक**] व्याख्याता, व्याख्या-कर्ता; (विसे १४२५)।
विभासा स्त्री [**विभाषा**] १ विकल्प-विधि, पाक्षिक प्राप्ति, भजना, विधि और निषेध का विधान; (पिंड १४३; १४४; १४५; २३५; ३०२; उप ४१५ टी; द १६)। २ व्याख्या, विवरण, स्पष्टीकरण; (विसे १३८५; १४२१; पिंड ६३७)। ३ विज्ञापन, निवेदन; (उप ६८०)। ४ विविध भाषण; (पिंड ४३८)। ५ विशेषोक्ति; (देवेन्द्र ३६७)। ६ परिभाषा, संकेत; (कम्म १, २८; २६)। ७ एक महानदी; (ठा ५, ३—पत्र ३५१)।

विभासिय वि [**विभासित**] प्रकाशित, उद्द्योतित; (सम्मत्त ६२)।

विभिण्ण } देखो **विहिण्ण**=विभिन्न; (गउड ५७०; **विभिन्न** } ११८०; उत्त १६, ५५)।

विभीसण पुं [**विभीषण**] १ रावण का एक छोटा भाई; (पउम ८, ६२)। २ विदेह-वर्ष का एक वासुदेव; (राज)।

विभीसावण वि [**विभीषण**] भय-जनक, भयंकर; (भवि)।

विभीसिया स्त्री [**विभीषिका**] भय-प्रदर्शन; (उव)।

विभु पुं [**विभु**] १ प्रभु, परमेश्वर; (पउम ५, ११२)। २ नाथ, स्वामी, मालिक; (पउम ७०, १२)। ३ इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम, (पउम ५, ७)। ४ वि. व्यापक; (विसे १६८५)।

विभूइ स्त्री [**विभूति**] १ ऐश्वर्य, वैभव; (उव; औप)। २ ठाटबाट, धामधूम; "महाविभूईए चलिओ जिणजत्ताए" (सुर ३, ६२; महा)। ३ अहिंसा; (पण्ह २, १—पत्र ६६)।

विभूसण न [**विभूषण**] १ अलंकार, गहना; २ शोभा; "दिव्वालंकारविभूसणाइं" (उव; औप)।

विभूसा स्त्री [**विभूषा**] १ सिंगार की सजावट, शरीर पर अलंकार-वस्त्र आदि की सजावट; (आचा १, २, १, ३; औप; जीव ३)। २ शरीर-शोभा; "मेहुणाओ उवसंतस्स किं विभूसाइ कारिअं" (दस ६, २, ६५; ६६; ६७; उत्त १६, ६)।

विभूसिय वि [**विभूषित**] विभूषा-युक्त, अलंकृत, शोभित; (भग; उत्त १६, ६; महा; विपा १, १—पत्र ७)।

विभेद } पुं [**विभेद**] १ भेदन, विदारण, (धर्मसं ८२६), **विभेय** } "जयवारणकुंभविभेयक्खमे" (गउड; उप ७२८ टी)। २ भेद, प्रकार; "उड्ढाहोतिरियविभेयं तिहुयणंपि" (चेइय ६६४)।

विभेयग वि [**विभेदक**] भेदन-कर्ता; "परमम्मविभेयगो" (धर्मवि ७६)।

विमइ स्त्री [**विमति**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

विमइअ वि [**दे**] भर्त्सित, तिरस्कृत; (दे ७, ७१)।

विमउल वि [**विमुकुल**] विकसित, खिला हुआ; (गाया १, १ टी—पत्र ३; औप)।

विमंतिय वि [**विमन्त्रित**] जिसके बारे में मसलहत की गई हो वह; (सुर १२, ६७)।

विमंसिअ वि [**विमृष्ट, विमर्शित**] विचारित, पर्यालोचित; (सिरि १०४५)।

विमग देखो **विमय**; (राज)।

विमग्ग सक [**वि+मार्गय्**] १ विचार करना। २ अन्वेषण करना, खोजना। ३ प्रार्थना करना, माँगना। ४ इच्छा करना, चाहना। विमग्गइ, विमग्गहा; (उव; उत्त १२, ३८)। वकृ—**विमग्गंत, विमग्गमाण**; (गा ३५१; सुर २, १७; से ४, ३६; महा)।

विमग्गिअ वि [**विमार्गित**] १ याचित, माँगा हुआ; (सिरि १२७; सुर ४, १०७)। २ अन्वेषित, गवेषित; (पाअ)।

विमज्झ न [**विमध्य**] अन्तराल; (राज)।

विमण वि [**विमनस्**] १ विषण्ण, खिन्न, शोक-संतप्त; (कप्प; सुर ३, १६८; महा)। २ शून्य-चित्त, सुन्न चित्त वाला; (विपा १, २—पत्र २७)। ३ निराश, हताश; (गा ७६)। ४ जिसका मन अन्यत्र गया हो वह, (से ४, ३१; गउड)।

विमद्द सक [**वि+मर्दय्**] १ संघर्ष करना। २ मर्दन करना। कवकृ—**विमद्दिज्जमाण**; (सिरि १०३८)।

विमद्द पुं [**विमर्द**] १ विनाश; "आसत्तपुरिससंतइदालिद्दविमद्दतंजणयं" (सुपा ३८; गउड)। २ संघर्ष; (स ७२२; कुप्र ४६)।

विमद्दण न [**विमर्दन**] ऊपर देखो; (भवि)।

विमन्न सक [**वि+मन्**] मानना, गिनना। वकृ—"सव्वं सुविणं व तं **विमन्नंतो**" (सुर ४, २४४)।

विमय पुं [**दे**] पर्व-वनस्पति विशेष; (पण्ण १—पत्र ३३)।

विमर (अप) नीचे देखो। **विमरह**; (पिंग)।

विमरिस सक [**वि+मृश्**] विचारना। कृ—**विमरिसिदव्व** (शौ); (अभि १८४)।

विमरिस पुं [**विमर्श**] विकल्प, विचार; (राज)।

विमल वि [**विमल**] १ मल-रहित, विशुद्ध, निर्मल; (कप्प; औप, से ८, ४६; पउम ५१, २७; कुमा; प्रासू ३; १५७; १६१)। २ पुं. इस अवसर्पिणी-काल में उत्पन्न तेरहवें जिनदेव; (सम ४३; पडि)। ३ भारतवर्ष में होने वाले बाईसवें जिन-भगवान्, (सम १५४)। ४ एक प्राचीन जैन आचार्य और कवि जिन्होंने विक्रम की प्रथम शताब्दी में 'पउम चरिअ'-नामक जैन रामायण बनाई है; (पउम ११८, ११८)। ५ एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७८)। ६ भगवान् अजितनाथ का पूर्वजन्मीय नाम; (सम १५१)। ७ पुंन. सहस्रार देवलोक के इन्द्र

का एक पारियानिक विमान; (ठा ८—पत्र ४३७)। ८ ब्रह्म-देवलोक में स्थित एक देव-विमान; (सम १३; देवेन्द्र १४०)। ९ एक ग्रैवेयक देव-विमान; (सम ४१; देवेन्द्र १४१)। १० लगातार छह दिनों का उपवास; ११ लगातार सात दिनों का उपवास; (संबोध ५८)। १२ पु. अहिंसा, दया; (पराह २, १—पत्र ९९)। °घोस पुं [°घोष] एक कुलकर पुरुष; (सम १५०)। °चंद पुं [°चन्द्र] एक जैन आचार्य; (महा)। °प्पहा स्त्री [°प्रभा] भगवान् शीतलनाथजी की दीक्षा-शिविका ; (विचार १२९)। °वर पुं [°वर] आनत-प्राणत देवलोक के इन्द्र का एक पारियानिक विमान; (ठा १०—पत्र ५१८)। °वाहण पुं [°वाहन] १ भारत-वर्ष के भावी प्रथम जिनदेव, जिनके दूसरे नाम देवसेन तथा महापद्म होंगे; (ठा ९—पत्र ४५९)। २ कुलकर पुरुष-विशेष; (सम १०४; १५०, १५३; पउम ३, ५५)। ३ भारतवर्ष का एक भावी चक्रवर्ती राजा; (सम १५४)। ४ एक जैन मुनि, जो भगवान् अभिनन्दन के पूर्व जन्म में गुरु थे; (पउम २०, १२; १७)। ५ भगवान् संभवनाथ का पूर्व-जन्मीय नाम; (सम १५१)। °सामि पुं [°स्वामिन्] सिद्धचक्रजी का अधिष्ठायक देव; (सिरि २०४)। °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] षष्ठ वासुदेव की पटरानी; (पउम २०, १८६)।

विमलण न [विमर्दन] मणि आदि को शाण पर घिसना, घर्षण; (दे १, १४८)।

विमलहर पु [दे] कलकल, कोलाहल; (दे ७, ७२)।

विमला स्त्री [विमला] १ ऊर्ध्व दिशा; (ठा १०—पत्र ४७८)। २ धरणेन्द्र के लोकपालों की अग्र-महिषिओं के नाम; (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ गीतरति और गीतयश नाम के गन्धर्वेन्द्रों की अग्र-महिषिओं के नाम; (ठा ४, १—पत्र २०४)। ४ चौदहवें जिनदेव की दीक्षा-शिविका; (सम १५१)।

विमलिअ वि [विमर्दित] जिसका मर्दन किया गया हो वह, घृष्ट; (से ९, ७)।

विमलिअ वि [दे] १ मत्सर से उक्त; २ शब्द-सहित, शब्द वाला; (दे ७, ७२)।

विमलेसर पुं [विमलेश्वर] सिद्धचक्रजी का अधिष्ठायक देव; (सिरि ७७३)।

विमलोत्तर पुं [विमलोत्तर] ऐरवत वर्ष का एक भावी जिनदेव; (सम १५४)।

विमहिद (शौ) वि [विमथित] जिसका मथन किया गया हो वह; (नाट—मालवि ४०)।

विमाउ स्त्री [विमातृ] सौतेली मा; (सत्त ३५; १७१)।

विमाण सक [वि+मानय्] अपमान करना, तिरस्कार करना। विमाणेज्जह; (महा ५९)।

विमाण पुंन [विमान] १ देव का निवास-भवन ; (सम २; ८; ९; १०; १२; ठा ८; १०; उवा; कप्प; देवेन्द्र २५१; २५३; पराह १, ४—पत्र ६८; ति१२)। २ देव-यान, आकाश-यान, आकाश में गति करने में समर्थ रथ; (से ९, ७२; कप्पू)। ३ अपमान, तिरस्कार; ४ वि. मान-रहित, प्रमाण-शून्य; (से ९, ७२)। °पविभत्ति स्त्री [°प्रविभक्ति] जैन ग्रन्थ-विशेष; (सम ६६)। °भवण न [°भवन] विमानाकार गृह; (कप्प)। °वासि पुं [°वासिन्] देवों की एक उत्तम जाति, वैमानिक देव; (पराह १, ४—पत्र ६८; ति १२)।

विमाणणा स्त्री [विमानना] अवगणना, तिरस्कार; (चेइय १३२)।

विमाणिअ वि [विमानित] अपमानित; (पिंड ४१३; कप्प ; महा)।

विमिस्स अ [विमृश्य] विचार करके। °गारि वि [°कारिन्] विचार-पूर्वक करने वाला; (स १८४; ३२४)।

विमिस्स वि [विमिश्र] मिश्रित, मिला हुआ, युक्त; (पंच २, ७ ; महा)।

विमिस्सण न [विमिश्रण] मिश्रण, मिलावट; (सम्मत्त १७१)।

विमीसिय वि [विमिश्रित] विमिश्र, मिश्रित · (भवि)।

विमुउल देखो **विमउल**; (राज)।

विमुंच सक [वि+मुच्] १ छोड़ना, बन्धन-मुक्त करना। २ परित्याग करना। विमुंचइ; (सण)। कर्म—विमुच्चई; (आचा २, १, ६, ९)। वकृ—**विमुंचंत**; (महा), **विमुच्च** [? मुंच] **माण**; (णाया १, ३—पत्र ९५)। कृ—**विमोत्तव्व**; (उप २६४ टी), **विमोय**; (ठा २, १—पत्र ४७)।

विमुकुल देखो **विमउल**; (पराह १, ४—पत्र ७२)

विमुक्क वि [**विमुक्त**] १ छुटा हुआ, छुट्टा, बन्धन-रहित; "जवविमुक्केण आसेण" (महा ४६; पाअ; आचानि ३४३)। २ परित्यक्त; "विमुक्कजीयाण" (महा ७७)। ३ निःसंग, संग-रहित; (आचा २, १६, ८)।

विमुक्ख पुं [**विमोक्ष**] छुटकारा, मुक्ति; (से ११, ५६; आचानि २५८; २५६; अजि ५)।

विमुक्खण देखो **विमोक्खण**; (उत्त १४, ४; कुप्र ३६६)।

विमुच्छिअ वि [**विमूर्च्छित**] मूर्छा-प्राप्त; (से ११, ५६)।

विमुत्त देखो **विमुक्क**; "मुत्तिविमुत्तेसुवि" (पिंड ५६)।

विमुत्ति स्त्री [**विमुक्ति**] १ मोक्ष, मुक्ति; (आचानि ३४३; कुप्र १६)। २ आचारांग सूत्र का अन्तिम अध्ययन; (आचा २, १६, १२)। ३ अहिंसा; (पण्ह २, १—पत्र ६६)।

विमुयण न [**विमोचन**] परित्याग; (सबोध १०)।

विमुह वि [**विमुख**] १ पराङ्मुख, उदासीन; (गउड; सुपा २८; भवि)। २ पुं. एक नरक-स्थान; (देवेन्द्र २८)। ३ पुंन. आकाश, गगन; (भग २०, २—पत्र ७७६)।

विमुह अक [**वि+मुह्**] घबराना, व्याकुल होना, बेचैन होना। वकृ—**विमुहिज्जंत**; (से २, ४६; ११, ४६)।

विमुहिअ वि [**विमुग्ध**] घबराया हुआ; (से ४, ४४; गा ७६२)।

विमुहिअ वि [**विमुखित**] पराङ्मुख किया हुआ; (पण्ह १, ३—पत्र ५३)।

विमूढ वि [**विमूढ**] १ घबराया हुआ; २ अस्फुट, अस्पष्ट; (गउड)।

विमूरण वि [**विभञ्जक**] तोड़ने वाला, खण्डन-कर्ता; "जं मंगलं बाहुबलिस्स आसि तेअस्सिणो माण-विमूरणस्स" (मंगल १०)।

विमोइय वि [**विमोचित**] छुड़ाया हुआ; (णाया १, २—पत्र ८८; सण)।

विमोक्ख देखो **विमुक्ख**; (से ३, ८)।

विमोक्खण न [**विमोक्षण**] १ छुटकारा, छुडाना, बन्धन-मोचन; (आचा; सूअ २, ७, १०; पउम १०२, १८८; स ६८; ७४२)। २ वि. छुड़ाने वाला, विमुक्त करने वाला; "सव्वदुक्खविमोक्खणं" (सूअ १, ११, २; २, ७, १०), स्त्री—°णी; (उत्त २६, १)।

विमोक्खय वि [**विमोक्षक**] छुटकारा पाने वाला; "ते दुक्ख-विमोक्खया" (सूअ १, १, २, ५)।

विमोडण न [**विमोटन**] मोड़ना; (दे)।

विमोत्तव्व देखो **विमुंच**।

विमोय सक [**वि+मोचय्**] छुड़ाना, मुक्त करना। संकृ—**विमोइऊण**; (सण)।

विमोय देखो **विमुंच**।

विमोयग वि [**विमोचक**] छोड़ने वाला, दूर करने वाला; "न ते दुक्खविमोयगा" (सूअ १, ६, ३)।

विमोयण न [**विमोचन**] १ छुटकारा, मुक्ति; २ वि. छुडाने वाला; "दुहसयविमोयणकाइ" (पण्ह २, १—पत्र ६६)।

विमोयणा स्त्री [**विमोचना**] छुटकारा; (सूअ १, १३, २१)।

विमोह सक [**वि+मोहय्**] मुग्ध करना, मोह उपजाना। विमोहेइ; (महा)। संकृ—**विमोहित्ता, विमोहेत्ता**; (भग १०, ३—पत्र ४६८)।

विमोह देखो **विमोक्ख**; (आचा)।

विमोह वि [**विमोह**] १ मोह-रहित; (उत्त ५, २६)। २ पुं. विशेष मोह, घबराहट; (सम्मत्त २२६)। ३ आचारांग सूत्र का एक अध्ययन; (सम १५; टा ६ टी—पत्र ४४५)।

विमोहण न [**विमोहन**] १ मोह उपजाना; (सुर ६, ३८)। २ वि. मोह उपजाने वाला; (उप ७२८ टी)।

विमोहिअ वि [**विमोहित**] मोह-प्राप्त; (महा २३, ५२)।

विम्ह न [**वेश्मन्**] गृह, घर; (राज)।

विम्हइअ वि [**विस्मित**] आश्चर्य-चकित, चमत्कृत; (सुर १, १६०)।

विम्हय अक [**वि+स्मि**] चमत्कृत होना, विस्मित होना, आश्चर्यान्वित होना। कृ—**विम्हयणिज्ज, विम्हयणीअ**; (हे १, २४८; अभि २०२)।

विम्हय पुं [**विस्मय**] आश्चर्य, चमत्कार; (हे २, ७४; षड्; प्राप्र; उव; गउड; अवि १)।

विम्हर सक [**स्मृ**] याद करना। विम्हरइ; (हे ४, ७४)।

विम्हर सक [वि+स्मृ] विस्मरण करना, याद न आना, भूल जाना। विम्हरइ; (हे ४, ७५; प्राकृ ६३; षड्)। वकृ—**विम्हरंत**; (श्रा १६)।

विम्हरण न [विस्मरण] विस्मृति; (पव ६; संबोध ४३; सूक्त ८०)।

विम्हराइअ वि [दे] १ मूर्छित, मूर्छा-प्राप्त; २ विस्मापित; (से ६, ४१)।

विम्हरावण वि [स्मरण] स्मरण कराने वाला, याद दिलाने वाला; "वावरणावीरकहविम्हरावणा" (कुमा)।

विम्हरिअ वि [विस्मृत] भुला हुआ, याद न किया हुआ; (कुमा; पाअ)।

विम्हल देखो **विब्भल**; (उप ५३० टी)।

विम्हलिअ देखो **विब्भलिअ**; (अच्चु २२)।

विम्हारिअ वि [विस्मारित] भुलाया हुआ; (कुमा; श्रा २८)।

विम्हारिअ (अप) देखो **विम्हरिअ**; (सण)।

विम्हाव सक [वि+स्मापय्] आश्चर्य-चकित करना। विम्हावेइ; (महा; निचू ११)। वकृ—**विम्हावेंत**; (उत्त ३६, २६२)।

विम्हावण न [विस्मापन] आश्चर्य उपजाना, विस्मय-करण; (औप)।

विम्हावणा स्त्री [विस्मापना] ऊपर देखो; (निचू ११)।

विम्हावय वि [विस्मापक] विस्मय-जनक; (सम्मत्त १७४)।

विम्हाविअ वि [विस्मापित] आश्चर्यान्वित किया हुआ; (धर्मवि १४७)।

विम्हिअ वि [विस्मित] विस्मय-प्राप्त, चमत्कृत; (श्रा २८—पत्र १६०: उव)।

विम्हिय (अप) देखो **विम्हय**। विम्हियइ, (सण)।

विम्हिर वि [विस्मेर] विस्मय पाने वाला, चमत्कृत होने वाला; (श्रा १२; २७)।

वियच्चा देखो **विअ-च्चा**।

वियद्द पुं [व्यर्द, व्यद्द] आकाश, गगन; (भग २०, २—पत्र ७७६)।

विर सक [भञ्ज्] भाँगना, तोड़ना। विरइ; (हे ४, १०६)।

विर अक [गुप्] व्याकुल होना। विरइ; (हे ४, १५०), विरंति; (कुमा)।

विर (अप) देखो **वीर**; (सण)।

विरइ स्त्री [विरति] १ विराम, निवृत्ति; २ सावद्य कर्म से निवृत्ति, संयम, त्याग; (उव; आचा)। ३ छन्दः-शास्त्र-प्रसिद्ध विश्राम-स्थान, यति; (चेइय ५०७)।

विरइअ वि [विरचित] १ कृत, निर्मित, बनाया हुआ; २ सजाया हुआ; (पाअ; औप; कप्प; पउम ११८, १२१; कुमा; महा; रंभा; कप्पू)।

विरइअ देखो **विराइअ**; (कप्प)।

विरइयव्व देखो **विरय** = वि+रचय्।

विरंचि पुं [विरञ्चि] ब्रह्मा, विधाता; (कुप्र ४०३; ति ८७; सम्मत्त १६२)।

विरच्च } अक [वि+रञ्ज्] १ विरक्त होना, उदासीन
विरज्ज } होना। २ रँग-रहित होना। विरज्जइ; (उव; उत्त २६, २; महा)। वकृ—**विरज्जंत, विरच्चमाण, विरज्जमाण**; (से ४, १४; भवि; उत्त २६, २; गा १४६; २६६)।

विरत्त वि [विरक्त] १ उदासीन, विराग-प्राप्त; (सम ५७; प्रासू १५५; १६६; महा)। २ विविध रँग वाला; (आचा १, २, ३, ५)।

विरत्ति स्त्री [विरक्ति] वैराग्य, उदासीनता; (उप पृ ३२)।

विरम अक [वि+रम्] निवृत्त होना, अटकना। विरमइ; (गा ७०८), विरमेज्जा; (आचा), विरम, विरमसु; (गा ३४५; १४६)। प्रयो—हेकृ—**विरमावेउं**; (गा ३४६)।

विरम पु [विरम] विराम, निवृत्ति; (गउड; गा ४५६; ६०६; सुर ७, १६३)।

विरमण देखो **वेरमण**; (राज; प्रामा)।

विरमाण सक [प्रति+पालय्] पालन करना, रक्षण करना। विरमाणइ; (धात्वा १५३)।

विरमाल सक [प्रति+ईक्ष्] राह देखना, बाट जोहना, प्रतीक्षा करना। विरमालइ; (हे ४, १६३)। सकृ—**विरमालिअ**; (कुमा)।

विरमालिअ वि [प्रतीक्षित] जिसकी प्रतीक्षा की गई हो वह; (पाअ)।

विरय सक [वि+रचय्] १ करना, बनाना। २ सजाना, सजावट करना। विरएइ, विरअंति, विरअआमि; विरयइ;

(प्राकृ ७४; कप्पू; पि ५६०; सरा)। वकृ—**विरयमाण**; (सुर १६, १५)। संकृ—**विरइअ**; (नाट)। हेकृ—**विरइउं**; (सुपा २)। कृ—**विरइयव्व**; (पउम ६६, १९)।

विरय वि [विरत] १ निवृत्त, रुका हुआ, विराम-प्राप्त; (उव; गा ५४१; दं ४६)। २ पाप-कार्य से निवृत्त, संयमी, त्यागी; (आचा; उव)। ३ न. विरति, विराम; ४ संयम, त्याग; (दं ४६; कम्म २, २)। °**विरय** वि [°विरत] आंशिक संयम रखने वाला, जैन उपासक, श्रावक; (सम २६)।

विरय पुं [दे] छोटा जल-प्रवाह, छोटी नदी; (दे ७, ३९). "विरया तरंगुत्तरिआओ" (पाअ)।

विरय पुं (विरजस्) १ एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष; (सुज्ज २०)। २ एक देव-विमान; (देवेन्द्र १४१)।

विरयण स्त्रीन [विरचन] १ कृति, निर्माण; २ सजावट; (नाट—मालती २८; कप्पू), स्त्री—°णा; (सुपा ६५; से १५, ७१) "पडिवट्टुए विअ तलर-विरअणा" (कप्पू)।

विरया स्त्री [विरजा] १ गो-लोक में स्थित राधा की एक सखी; २ उसके शाप से बनी हुई एक नदी; "लंघिअविरआसरिअं" (अच्चु ८६)।

विरल त्रि [विरल] १ अल्प, थोड़ा; "परदुक्खे दुक्खिआ विरला" (हे २, ७२; ४, ४१२; उव; प्रासू १८०; गउड)। २ अनिबिड; ३ विच्छिन्न; (गउड; उव)।

विरलि स्त्री [दे] वस्त्र-विशेष, डोरिया, डोरी वाला कपड़ा; "विरलिमाई भूरिभेआ" (पव ८४ टी)।

विरलिअ वि [विरलित] विरल बना हुआ, विरल किया हुआ; (गउड)।

विरली देखो **विराली**; (राज)।

विरल्ल सक [तन्] विस्तारना, फैलाना। विरल्लइ, विरल्लेइ, विरल्लन्ति; (हे ४, १३७; षड्; गउड)।

विरल्लण न [तनन] विस्तार, फैलाव; "अट्टुमयविरल्लणो मग्ग मग्गे" (उत्र)।

विरल्लिअ वि [तत] विस्तार वाला, विस्तारित; (दे ७, ७१; पाअ; कुमा; गाया १, १७—पत्र २३२; ठा ४, ४—पत्र २७६); "जह उल्ला साडीया आसु सुक्कइ विरल्लिया संती" (विसे ३०३२)।

विरल्लिअ देखो **विरलिअ**; (राज; भवि)।

विरल्लिअ वि [दे] जलार्द्र, भींजा हुआ; (दे ७, ७१)।

विरस अक [वि+रस्] चिल्लाना, क्रन्दन करना। वकृ—**विरसंत**; (सण)।

विरस वि [विरस] रस-रहित, शुष्क; (णाया १, ५—पत्र १११; गउड; हे १, ७; सण)। २ विरुद्ध रस वाला; (भग ७, ६—पत्र ३०५)। ३ पुं. राम-भ्राता भरत के साथ जैन दीक्षा लेने वाला एक राजा; (पउम ८५, ३)। ४ न. तप-विशेष, निर्विकृतिक तप; (संबोध ५८)।

विरस न [दे] वर्ष, साल, बारह मास; (दे ७, ६२)।

विरसमुह पुं [दे] काक, कौआ; (दे ७, ४९)।

विरसिय वि [विरसित] रस-हीन, रस-विरहित; (हम्मीर ५१)।

विरह सक [वि+रह्] १ परित्याग करना। २ अलग करना। कवकृ—**विरहिज्जंत**; (नाट—शकु ८२)। कृ—**विरहियव्व** (शौ); (नाट—शकु ११७)।

विरह पुं [विरह] १ वियोग, विछोह, जुदाई; (गउड; हे १, ८४; ११५; प्रासू १५९; कुमा; महा)। २ आन्तर, व्यवधान; (भग)। ३ पुं. वृक्ष-विशेष; "फुल्लंति विरहरुक्खा सोऊण पंचमुग्गारं" (संबोध ४७; श्रा ३५) "धराविओ पच्चासन्ने विरहो नाम तरु, वाइऊण वीणं फुल्लाविओ सो" (कुप्र १३९), "फुल्लंति विरहिणो विरहयव्व लहिऊण पंचमं केवि" (कुप्र २४८)। ४ अभाव; ५ विनाश; (राज)। ६ हरिवंश में उत्पन्न एक राजा; (पउम २२, ९८)।

विरह वि [विरथ] रथ-रहित; (पउम १०, ६३)।

विरह पुंन [दे] १ एकान्त, विजन; (दे ७, ९१; णाया १, २—पत्र ७९; पुप्फ ३४४). "सामाए देवीए अंतराणि य छिद्दाणि य विरहाणि य पडिजागर-माणीओ २ विहरति" (विपा १, ९—पत्र ८९)। २ कुसुंभ से रँगा हुआ कपड़ा; (दे ७, ९१)।

विरहाल न [दे] कुसुम्भ से रँगा हुआ वस्त्र; (दे ७, ६८)।

विरहि वि [विरहिन्] वियोगी, बिछुड़ा हुआ; (कुमा)।

विरहिअ वि [विरहित] विरह-युक्त; (भग; उव;

हे ४, ३७७)।

विरा अक [**वि+ली**] १ नष्ट होना। २ द्रवित होना, पिघलना। ३ अटकना, निवृत्त होना। विराइ; (हे ४, ५६)।

विराइ वि [**विरागिन्**] विराग वाला, विरक्त, उदासीन; स्त्री—°**णी** ; (नाट)।

विराइ वि [**विराजिन्**] शोभने वाला, चमकता; (से २, २६)।

विराइ वि [**विराविन्**] शब्द-युक्त, आवाज वाला; (से २, २६)।

विराइअ देखो **विराय**=विलीन; (से २, २६)।

विराइअ वि [**विराजित**] सुशोभित; (उवा; औप; महा)।

विराग पुं [**विराग**] १ राग का अभाव, वैराग्य, उदासीनता; (सुज्ज १३; उप ७२८ टी)। २ वि. राग-रहित, वीतराग; (पच्च १०४; औप)।

विराड पुं [**विराट**] देश-विशेष; (उप ६४८ टी)। °**नयर** न [°**नगर**] नगर-विशेष; (णाया १, १६—पत्र २०६)।

विराध (अप) पुं [**विराध**] एक राक्षस का नाम; (पिंग)।

विराम पुं [**विराम**] उपरम, निवृत्ति, अवसान; (गउड)।

विरामण न [**विरमण**] विरत करना, निवर्तन, विरमाना; "वेरविरामणपज्जवसाणं" (पण्ह २, ४—पत्र १३१)।

विराय अक [**वि+राज्**] शोभना, चमकना। विरायए; (पाअ)। वकृ—**विरायंत, विरायमाण**, (कप्प, औप; णाया १, १ टी—पत्र २; सुर २, ७६)।

विराय वि [**विलीन**] १ विशीर्ण, विगलित, नष्ट, (से ७, ६४, गउड; कुमा ६, ३८)। २ पिघला हुआ; (पाअ)।

विराय देखो **विराग**; (पण्ह २, ५—पत्र १४६; कुमा; सुपा २०५; वज्जा ६; कुप्र १११)।

विराल देखो **विराल**; (णाया १, १—पत्र ६५; पि २४१)।

विरालिआ स्त्री [**विरालिका**] १ पलाश-कन्द; २ पर्व वाला कन्द; (दस ५, २, १८)। देखो **विरालिआ**।

विराली स्त्री [**विराली**] १ वल्ली-विशेष; (पत्र ४; आ २०; संबोध ४४)। २ चतुरिन्द्रिय जंतु की एक जाति; (उत्त ३६, १४८; सुख ३६, १४८)। देखो **विराली**।

विराव पुं [**विराव**] शब्द, आवाज; (गउड)।

विरावि वि [**विराविन्**] आवाज करने वाला; (गउड)।

विराह सक [**वि+राधय्**] १ खण्डन करना, भाँगना, तोड़ना। विराहंति; (उव)। वकृ—**विराहंत, विराहेंत**; (सुपा ३२८; उव)।

विराहअ } **विराहग** } वि [**विराधक**] खण्डन करने वाला, तोड़ने वाला, भंजक; (भग; णाया १, ११—पत्र १७१)।

विराहणा स्त्री [**विराधना**] खण्डन, भंग; (सम ८; णाया १, ११ टी—पत्र १७३, पण्ह १, १—पत्र ६; ओघ ७८८)।

विराहिअ वि [**विराधित**] १ खण्डित, भग्न; (भग)। २ अपराद्ध, जिसका अपराध किया गया हो वह; "अविराहियवेरिएहिं" (पण्ह १, ३—पत्र ५३)। ३ पु. एक विद्याधर-नरेश; (पउम ७६, ७)।

विरिअ वि [**भग्न**] भाँगा हुआ, तोड़ा हुआ; (कुमा)।

विरिअ देखो **वीरिअ**; (सूअनि ९१; ६४; औप)।

विरिंच सक [**वि+भञ्ज्**] विभाग-ग्रहण करना, भाग लेना, बाँट लेना। "सयणो वि य से रोगं न विरिंचइ, नेय नासेइ" (स १३७)।

विरिंच पु [**विरिञ्च**] ब्रह्मा, विधाता; (पाअ)।

विरिंचि पु [**विरिञ्चि**] ऊपर देखो, (सुर १२, ७८)।

विरिंचिअ वि [**दे**] १ विमल, निर्मल; २ विरक्त, उदासीन, (दे ७, ९३)।

विरिंचिर पु [**दे**] १ अश्व, घोड़ा; २ वि. विरल; (दे ७, ९३)।

विरिंचिरा स्त्री [**दे**] धारा, प्रवाह; (दे ७, ९३)।

विरिक्क वि [**दे**] पाटित, विदारित; (दे ७, ६४)।

विरिक्क वि [**विरिक्त**] जो खाली हुआ हो वह; (पउम ४५, ३२, सुपा ४२२)।

विरिक्क वि [**विभक्त**] १ बाँटा हुआ; "जे णं चित्तयराणं सभा समभागेहिं विरिक्का" (महा)। २ जिसने भाग बाँट लिया हो वह, अपना हिस्सा ले कर जो अलग हुआ हो वह, "एगम्मि सण्णिवेसे दो भाउया वणिया, ते य परोप्परं विरिक्का"

(ओघ ४६४ टी)।

विरिक्का स्त्री [दे] बिन्दु, लव, लेश; (सुख २, २७)।

विरिंचिर वि [दे] धारा से विरेचन करने वाला; (षड्)।

विरिज्जय वि [दे] अनुचर, अनुगत; (दे ७, ६६)।

विरिल्ल सक [वि+स्तृ] विस्तारना, फैलाना। विरिल्लइ; (प्राकृ ७६)।

विरीअ (अप) देखो **विवरीअ**; (पिंग)।

विरीह सक [प्रति+पालय्] पालन करना, रक्षण करना। विरीहइ; (प्राकृ ७५; धात्वा १५३)।

विरु } अक [वि+रु] रोना, चिल्लाना। वकृ—
विरुअ } **विरुयमाण**; (उप ३३६ टी)।

विरुअ न [विरुत] ध्वनि, पक्षी का आवाज, शब्द; (गा ६४; से १, २३; नाट—मृच्छ १३६)।

विरुअ वि [दे. विरूप] १ खराब, कुडौल, दुष्ट रूप वाला, कुत्सित; (दे ७, ६३; भवि)। २ विरुद्ध, प्रतिकूल; (षड्)। देखो **विरूअ**।

विरुट्ठ पु [विरुष्ट] नरक-स्थान विशेष; (देवेन्द्र २८)।

विरुद्ध वि [विरुद्ध] विरोध वाला, विपरीत, प्रतिकूल, उलटा; (औप; गउड)। °**यारि** वि (°**चारिन्**) विपरीत आचरण करने वाला; (उप ७२८ टी)।

विरुव देखो **विरूव**; (दे ६, ७५)।

विरुह अक [वि+रुह्] विशेष रूप से उगना, अङ्कुरित होना। विरुहति; (उत्त १२, १३)।

विरुह देखो **विरूह**; (पण्ण १—पत्र ३६; श्रा २०)।

विरूअ } वि [विरूप] १ कुरूप, भौंडा, कुडौल,
विरूव } खराब, कुत्सित, (गा २६३; भवि; स्वप्न ४४; सुर १, २६; उप ७२८ टी)। २ विरुद्ध, प्रतिकूल, उलटा, (सुर ११, ८०)। ३ बहुविध, अनेक तरह का, नानाविध; (आचा)।

विरूह पुन [विरूढ] अंकुरित द्विदल-धान्य; (पव ४)।

विरेअ सक [वि+रेचय्] १ मल को नीचे से निकालना। २ बाहर निकालना। विरेअइ; (हे ४, २६)। वकृ—**विरेअंत**; (कुमा ६, १७)।

विरेअण न [विरेचन] १ मल-निस्सारण, जुलाव; (उवकु २५; णाया १, १३—पत्र १८१)। २ वि. भेदक, विनाशक; "सयलदुक्खविरेयण समणत्तणाति" (स २७८; ६६३)।

विरेल्लिअ देखो **विरिल्लिअ**=तत; (णाया १, १७ टी—पत्र २३४; गउड ४३५)।

विरोयण पुं [विरोचन] अग्नि, वह्नि; (भत्त १२३)।

विरोल सक [मन्थ्] विलोडना, विलोड़न करना। विरोलइ; (हे ४, १२१; षड्)।

विरोल सक [वि+लग्] १ अवलम्बन करना। २ आरोहण करना, चढ़ना। विरोलइ; (धात्वा १५३)।

विरोलिअ वि [मथित] विलोडित; (पाअ; कुमा; भवि)।

विरोह सक [वि+रोधय्] विरोध करना। विरोहंति; (सबोध १७)।

विरोह पुं [विरोध] विरुद्धता, प्रतीपता, वैर, दुश्मनाई; (गउड; नाट—मालती १३८; भवि)।

विरोहय वि [विरोधक] विरोध-कर्ता; (भवि)।

विरोहि वि [विरोधिन्] दुश्मन, प्रतिपन्थी; (पि ४०५; नाट—शकु १६)।

विरोहिय वि [विरोधित] विरोध-प्राप्त; (वज्जा ७०)।

विल अक [व्रीड्] लज्जा करना, शरमिन्दा होना। संकृ—**विलिऊण**; (स ३७५)।

विल न [विल] नमक-विशेष; एक तरह का नोन; (आचा २, १, ६, ६)।

विलइअ वि [दे] १ अधिज्य, धनुष की डोरी पर चढ़ाया हुआ; २ दीन, गरीब; (दे ७, ९२)। ३ ऊपर चढ़ाया हुआ, आरोपित; "आणा जस्स विलइआ सोसे सेसव्व हरिहरेहिंपि" (धण २५), "पढुमं चिअ रहुवइणा उवरि हिअए तुलिओ भरोव्व विलइओ" (से ३, ५)।

विलओलग पुं [दे] लुंटाक, लुटेरा; (राज)।

विलओली स्त्री [दे] १ विस्वर वचन; २ विलोकना, तलाशी; (पण्ह १, ३—पत्र ५३)। देखो **विल-कोली**°।

विलंघ सक [वि+लङ्घ्] उल्लंघन करना। विलंघेति; (धर्मसं ८४२)। वकृ—**विलंघंत**; (काल)।

विलंघण न [विलङ्घन] उल्लंघन, अतिक्रमण, "ही ही सीलविलंघणं" (उप ५६७ टी)।

विलंघल (अप) देखो **विहलंघल**; (सण)।

विलंघलिअ (अप) वि [विह्वलाङ्गित] व्याकुल शरीर वाला "मुच्छविलंघलिउ" (सण)।

विलंब देखो **विडंब**=वि+डम्बय्। वकृ—**विलबमाण**; (धर्मसं १००५)।
विलंब अक [**वि+लम्ब्**] १ देरी करना। २ सक. लटकाना, धारण करना। कर्म—विलंबीअदि (शौ); (नाट—विक्र ३१)। वकृ—**विलंबंत**; (से ३, २६)। संकृ—**विलंबिअ**, (नाट—वेणी ७६)। कृ—**विलंवणिज्ज**; (श्रा १४)।
विलंब पु [**विलम्ब**] १ देरी, अ-शीघ्रता; (गा ५८८)। २ तप-विशेष, पूर्वार्ध तप; (संबोध ५८)। ३ न. नक्षत्र-विशेष, सूर्य ने परिभोग कर छोड़ा हुआ नक्षत्र; (विसे ३४०६)।
विलंबग वि [**विलम्बक**] धारण करने वाला; (सूअ १, ७, ८)।
विलंवणा देखो **विडंवणा**; (प्रासू १०३)।
विलंबिअ वि [**विलम्बित**] १ विलम्ब-युक्त; (कप्प)। २ न. नक्षत्र-विशेष; (वव १)। ३ नाट्य-विशेष; (राय)।
विलक्ख वि [**विलक्ष**] १ लज्जित, शरमिन्दा; (से १०, ७०; सुर १२, ६६; सुपा १६८; ३२८; महा; भवि)। २ प्रतिभा-शून्य, मूढ; (से १०, ७०)।
विलक्ख न [**वैलक्ष्य**] विलक्षता, लज्जा, शरम; (सुर ३, १७६)।
विलक्खिम पुंस्त्री. ऊपर देखो; "उवसमियविलक्खिम—" (भवि)।
विलग्ग सक [**वि+लग्**] १ अवलम्बन करना, सहारा लेना। २ चढ़ना, आरोहण करना। ३ पकडना। ४ चिपटना। गुजराती में 'वळगवु'। विलग्गसि, विलग्गेजासि; (महा)। वकृ—**विलग्गंत**; (पि ४८८)।
विलग्ग वि [**विलग्न**] १ लगा हुआ, चिपटा हुआ; संलग्न "जह लोहसिला अप्पंपि बोलए तह विलग्गपुरिसपि" (संबोध १३; से ४, २; ३, १४२; गा १८८; ३५६; महा)। २ अवलम्बित; (सुर १०, ११४)। ३ आरूढ; "अन्नया आयरिया सिद्धसेलं तेण समं वदगा विलग्गा" (सुख १, ३)।
विलज्ज अक [**वि+लस्ज्**] शरमाना। विलजामि; (कुप्र ५७)।
विलट्ठि पुंस्त्री [**वियष्टि**] साढ़े तीन हाथ में चार अंगुल कम लट्ठी, जैन साधुओं का उपकरण-दड; (पव ८)।
विलद्ध वि [**विलब्ध**] अच्छी तरह प्र

(पिंग)।
विलप्प पुं [**विलात्मन्**] एक नरक-स्थान; (देवेन्द्र २६)।
विलभ सक [**खेदय्**] खिन्न करना, खेद उपजाना। विलभेइ; (प्राकृ ६७)।
विलमा स्त्री [**दे**] ज्या, धनुष की डोरी; (दे ७, ३४)।
विलय पुं [**दे**] सूर्य का अस्त होना; (दे ७, ६३; पाअ)।
विलय पु [**विलय**] १ विनाश; (कुप्र ५१; सुपा १६७, ती ३)। २ तल्लीनता; (ती ३)। ३ पुं. एक नरक-स्थान; (देवेन्द्र २६)।
विलया स्त्री [**वनिता**] स्त्री, महिला, नारी, (पाअ; दे २, १२८; पड्; कुमा; रंभा, भवि)।
विलव अक [**वि+लप्**] रोना, कॉंदना, चिल्लाना। विलवइ; (पड्; महा)। वकृ—**विलवंत, विलवमाण**; (महा; णाया १, १—पत्र ४७)।
विलवण वि [**विलपन**] रोने वाला, चिल्लाने वाला। °**या** स्त्री [°**ता**] विलाप, क्रन्दन; (औप)।
विलविअ न [**विलपित**] विलाप, क्रन्दन, (पाअ; औप)।
विलविर वि [**विलपितृ**] विलाप करने वाला; (कुमा; सण)।
विलस अक [**वि+लस्**] १ मौज करना। २ चमकना। विलसइ, विलसेसु; (महा)। वकृ—**विलसंत**; (कप्प, सुर १, २२८)।
विलसण न [**विलसन**] १ विलास, मौज; (उप पृ १८१)। २ मौज करने वाला, (सुर १, २२१ टि)।
विलसिय न [**विलसित**] १ चेष्टा-विशेष; २ दीप्ति, चमक, (महा)।
विलसिर वि [**विलसितृ**] विलासी, विलास करने वाला; (सुपा २०४; २५४; धर्मवि १६; सण)।
विला देखो **विरा**। "मयणा व मणो मुणिणोवि हंत सिग्घं चिय विलाइ" (भत्त १२७), "तावेण व नवणीयं विलाइ सो उद्धरिज्जतो" (कुप्र १०५)।
विलाल देखो **बिराल**; (पि २४१)।
वि[illegible] पु [**विलाप**] क्रन्दन, परिदेवन; (उव)।
[illegible] वि [**विलापित**] विलाप-युक्त; (

[illegible])।

विलास पुं [विलास] १ [illegible]; २ स्त्री की [illegible], [illegible] और [illegible] स्त्री की [illegible], [illegible] २, [illegible] १३३; औप, [illegible])। [illegible] [illegible]। ३ [illegible]-विशेष, [illegible]। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष; (सुपा [illegible])। °वई स्त्री [°वती] स्त्री, नारी, महिला; ([illegible] [illegible])।

विलासि वि [विलासिन्] १ [illegible], शौकीन; ([illegible] [illegible])। २ [illegible] वाला; स्त्री—°णी; "[illegible]" (औप)।

विलासिअ वि [विलासिक, °सित] विलास-युक्त; ([illegible])।

विलासिणी स्त्री [विलासिनी] १ नारी, स्त्री; २ [illegible]; नाट—रत्ना ६; [illegible] विलासि।

विलिअ न [व्यलीक] १ [illegible]-सम्बन्धी अपराध, [illegible]। २ [illegible]; (गा ५३)। ३ [illegible] ५८; पाअ)। ४ व्याकुल, अप्रिय; [illegible] ६ [illegible]-विशेष; ७ वि. अपराधी; [illegible] ९ [illegible]; १० झूठ बोलने [illegible] [illegible])।

विलिअ वि [व्रीडित] लज्जित, शरमिन्दा; (पाअ; [illegible])।

विलिंग [illegible] [[illegible]] [illegible], [illegible]; (दे ७, ६५; [illegible])।

विलि[illegible] [व्यलीकित] व्यलीक-युक्त; "विलि-[illegible] ६८; [illegible])।

विलिंप [illegible] [वि+लिप्] [illegible] करना, स्पर्श [illegible] २, ८, ३)।

[illegible] [दे] [illegible] (दे ७, ६६)।

[illegible] [[illegible]] [illegible] करना, [illegible], [illegible]। [illegible] विलिंपिऊण; ([illegible])। [illegible] [illegible]—विलिं-[illegible]।

विलिज्ज [illegible] [वि+ली] १ [illegible]। २ [illegible]। [illegible] ४, ५६; ४१८; औप; [illegible] २, ३६)। वकृ—विलिज्जंत, विलिज्जमाण; (पउम ६, २० ३; ३१, २२)।

विलित देखो विलिअ=व्रीडित; (उप २६६)।

विलित्त वि [विलिप्त] लिपा हुआ, जिसको विलेपन किया गया हो वह; (सुर ३, ६२; १०, १७; भवि)।

विलिविली स्त्री [दे] कोमल और निर्बल शरीर वाली स्त्री, नाजुक बदन वाली नारी; (दे ७, ७०)।

विलिह सक [वि+लिख्] १ रेखा करना। २ चित्र बनाना। ३ खोदना। विलिहइ; (भवि)। वकृ—विलिहमाण; (पउम ७, १२०)। कवकृ—विलिहिज्जमाण; (कप्प)। हेकृ—विलिहिउं; (कप्पू)।

विलिह सक [वि+लिह्] १ चाटना। २ चुम्बन करना। विलिहंतु; (कप्पू)। वकृ—विलिहंत; (गच्छ १, १७; भत्त १४२)।

विलिहण न [विलेखन] रेखा-करण; (तंदु ५०)।

विलिहिअ वि [विलिखित] चित्रित; (सुर १०, २०)।

विलीअ देखो विलिअ=व्रीडित; "सोगविवसो विलीओ" (कुप्र १३५)।

विलीअ देखो विलिअ=व्यलीक; "मज्झ विलीयं नरवइस्स परिवसइ किंपि चित्ते" (सुपा ३००)।

विलीइर वि [विलेतृ] द्रवण-शील, पिघलने वाला; (कुमा)।

विलीण वि [विलीन] १ पिघला हुआ, द्रवीभूत; २ विनष्ट; "सोवि तुह भागधेज्जेण मरणं मरणं विय विलीणो" (धण २५; पाअ; महा; भवि)। ३ जुगुप्सित; (पण्ह १, १—पत्र १४)।

विलुंगयाम वि [दे] निर्ग्रन्थ, अकिंचन, साधु; "एस विलुंगयामी सिजाए" (आचा २, १, ८, ४)।

विलुंचण न [विलुञ्चन] उन्मूलन, उखेड़ना; (पण्ह १, १—पत्र २३)।

विलुंप सक [वि + लुप्] १ लूटना। २ काटना। ३ विनाश करना। विलुंपंति, विलुंपइ; (आचा; सूअ २, १, १६; पि ४७१); "अन्नो मीसा विलुंपंति" (महा)। वकृ—विलुंपमाण; (सुपा ५७४)। कवकृ—विलुप्पंत, विलुप्पमाण; (पउम १६, ३१; महा ८० ; सुर २, ९१ ; उप्पा)।

विलुंप सक [कांक्ष्] अभिलाष करना, चाहना। विलुंपइ; (हे ४, १९२)।

विलुंपइत्तु वि [**विलोप्तृ**] विलोप-कर्ता, काटने वाला; (सूअ २, २, ६)।
विलुंपय पु [**दे**] कीट, कीडा; (दे ७, ६७)।
विलुंपिअ वि [**काङ्क्षित**] अभिलषित; (कुमा ७, ३८; दे. ७, ६६)।
विलुंपिअ पुं [**दे. विलुप्त**] अशित, कवलित, खाया हुआ, "घत्थ कवलिअं असिअं विलुंपिअ वंफिअं खइअं" (पाअ)। देखो **विलुत्त**।
विलुंपित्तु देखो **विलुंपइत्तु**; (आचा)।
विलुक्क [**दे**] छिपा हुआ ; (भवि)।
विलुक्क वि [**विलुञ्चित**] विमुण्डित, सर्वथा केश-रहित किया हुआ, (पिंड २१७)।
विलुत्त वि [**विलुप्त**] १ काटा हुआ, छिन्न; "विलुत्त-केसिं" (पउम १०२, ५३; पण्ह १, ३—पत्र ५४)। २ लुण्ठित, लुटा हुआ; "इमाइ अडवीइ वाणियगसत्थो। मह पुरिसेहि विलुत्तो, पत्तं वित्त तहिं पउर" (सुर११, ४८)। ३ विनष्ट; "तुमं उण जलविलुत्तप्पसाहणं जेव सुमरसि" (कप्पू)।
विलुत्तहिअअ वि [**दे**] जो समय पर काम करने को न जानता हो वह ; (दे ७, ७३)।
विलुप्पंत, **विलुप्पमाण** } देखो **विलुंप**।
विलुलिअ वि [**विलुलित**] उपमर्दित; (से ६, १२)।
विलूण वि [**विलून**] काटा हुआ, छिन्न; (सुपा ६)।
विलेवण न [**विलेपन**] १ शरीर पर लगाने का चन्दन, कुंकुम आदि पिष्ट द्रव्य; (कुमा; उवा; पाअ)। २ लेपन-क्रिया; (ओप)।
विलेविअ वि [**विलेपित**] विलेपन-युक्त; (सण)।
विलेविआ स्त्री [**विलेपिका**] पान-विशेष; (राज)।
विलेहिअ वि [**विलेखित**] चित्रित किया हुआ; (सुर १२, ११७)।
विलोअ सक [**वि+लोक्**] देखना। कर्म—विलोइज्जंति, विलोईअंति, (पि ११)। कवकृ—**विलोइज्जमाण**; (उप पृ ६७)। संकृ—**विलोइऊण**; (काप्र १९५)।
विलोअ पुं [**विलोक**] आलोक, प्रकाश; (उप पृ ३५८)।
विलोअ देखो **विलोव**; (सुपा ४४०)।
विलोअण पुन [**विलोचन**] आँख, नेत्र; (काप्र १६१; गा ९७०; सुपा ५२९)।

विलोअण न [**विलोकन**] १ देखना, निरीक्षण; २ वि. देखने वाला; "लोयालोयविलोयणकेवलनाणेण नायभावस्स" (सुर ४, ८६)।
विलोट्ट अक [**विसं+वद्**] १ अप्रमाणित होना; झूठा साबित होना। २ उलटा होना, विपरीत होना। विलोट्टइ, विलोट्टए; (हे ४, १२९; भवि; स ७१६)।
विलोट्ट, **विलोट्टिअ** } वि [**विसंवदित**] १ जो झूठा साबित हुआ हो; (कुमा ६, ८८)। २ जो कहकर फिर गया हो, प्रतिज्ञा-च्युत; "कन्नाए सयणमहिलाई-लोयवरुओ विलोट्टो सो" (उप ५९७ टी)। ३ विरुद्ध बना हुआ; "चउरो महनरवइणो विलोट्टि (? ट्टि) या चउ दिसिं पि अइबलिणो" (सुपा ४५२)।
विलोड सक [**वि+लोडय्**] मथन करना। विलोडेइ ; (कुप्र ३४७)।
विलोडिय वि [**विलोडित**] मथित; (कुप्र ७८)।
विलोभ सक [**वि+लोभय्**] १ लुब्ध करना, लुभाना, आसक्त करना। २ लालच देना। ३ विस्मय उपजाना। कृ—**विलोभणिज्ज**; (कुप्र १३८)।
विलोल देखो **विलोड**। वकृ—**विलोलंत**; (उप पृ ७७)।
विलोल अक [**वि+लुठ्**] लेटना। "विलोलंति महीतले विसूणियगमंगा" (पण्ह १, १— पत्र १८)।
विलोल वि [**विलोल**] चंचल, अस्थिर; (से २, १६; गउड ; कप्पू)।
विलोव पुं [**विलोप**] लूट, डकैती; "सत्थविलोवे जाए" (सुर १५, १८)।
विलोवण न [**विलोपन**] ऊपर देखो; "परधणविलोव-णाईणं" (उव)।
विलोवय वि [**विलोपक**] लूटने वाला, लुटेरा; "अद्धा-णम्मि विलोवए" (उत्त ७, ५)।
विलोह देखो **विलोभ**। हेकृ—**विलोहइदुं** (शौ); (मा ४२)।
विलोहण वि [**विलोभन**] १ आश्चर्य-कारक; २ लुभाने वाला, "मुद्धमइविलोहणा नेय" (श्रावक १३२)।
विल्ल अक [**वेल्ल्**] चलना, हिलना "विल्लंति द्दुम-पल्लवा" (रभा)।
विल्ल देखो **बिल्ल**; (हे १, ८५; राज)।
विल्ल वि [**दे**] १ अच्छ, स्वच्छ; २ विलसित, विलास-युक्त; (दे ७, ८८)। ३ पुंन. सुगधी द्रव्य-विशेष, जो

करना। विसंजोएइ; (भग)।

विसंजोअ } पुं [विसंयोग] वियोग, विघटन, पृथग्भाव,
विसंजोग } जुदाई; (कम्म ५, ८२; पंच ३, ५४)।

विसंठुल वि [विसंस्थुल] १ विह्वल, व्याकुल; (पाअ; से १४, ४१; हे २, ३२; ४, ४३६; मोह २२; धम्मो ५)। २ अव्यवस्थित; (गा १४६; कुप्र ४१७; दे १, ३४)।

विसंतव पुं [द्विषन्तप] शत्रु को तपाने वाला, दुश्मन को हैरान करने वाला; (हे १, १७७)।

विसंथुल देखो विसंठुल; (पउम ८, २००; स ५२१)।

विसंथुलिय वि [विसंस्थुलित] व्याकुल बना हुआ; (सण)।

विसंधि पुं [विसन्धि] १ एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७८)। २ वि. बन्धन-रहित; (राज)। °कप्प, °कप्पेल्लय पुं [°कल्प] एक महाग्रह; (सुज्ज २०)।

विसंनिविट्ठ न [विसंनिविष्ट] विविध रथ्या, अनेक महल्ला; (औप)।

विसंभ देखो वीसंभ; (महा)।

विसंभणया देखो विस्संभणया; (आचा १, ८, ६, ४)।

विसंभोइय वि [विसंभोगिक] जिसके साथ भोजन आदि का व्यवहार न किया जाय वह, मंडली-बाह्य, समाज-बाह्य; (ठा ५, १—पत्र ३००)।

विसंभोग पुं [विसंभोग] साथ बैठ कर भोजन आदि का अव्यवहार, (ठा ३, ३)।

विसंभोगिय देखो विसंभोइय; (ठा ३, ३—पत्र १३६)।

विसंवइअ वि [विसंवदित] १ सबूत रहित, अ-प्रमाणित; (पाअ; स ५३६)। २ विघटित, वियुक्त; (से ११, ३६)।

विसंवय अक [वि+सं+वद्] १ अप्रमाणित होना, असत्य ठहरना, सबूत से सिद्ध न होना। २ विघटित होना, अलग होना। ३ विपरीत होना, अन्यथा होना। विसंवयइ, विसंवयति; (हे ४, १२६; उव), "सो तारिसो धम्मो नियमेण फले विसंवयइ" (स ६४८; ७१६), "चरिएण कहं विसंवयसि" (मन २६), विसंवएज्जा; (महानि ४)। वकृ—विसंवअंत; (उव; उप ७६८ टी; धर्मसं ८८३)।

विसंवयण न [विसंवदन] विसंवाद; सबूत का अभाव; (उप पृ २६८)।

विसंवाइ वि [विसंवादिन्] १ विघटित होने वाला, विच्छिन्न होने वाला; (कुमा ६, ८६)। २ अप्रमाणित होने वाला, सबूत से सिद्ध नहीं होने वाला, असत्य वाला; (कुप्र २६४; सम्मत्त १२३)।

विसंवाइअ वि [विसंवादित] विसंवाद-युक्त; (दे १, ११४; से ३, ३०)।

विसंवाद देखो विसंवाय=विसंवाद; (धर्मसं १४८)।

विसंवादण देखो विसंवायण; (उत्त २६, ४८)।

विसंवादणा देखो विसंवायणा; (ठा ४, १—पत्र १६६)।

विसंवाय वि [दे] मलिन, मैला; (दे ७, ७२)।

विसंवाय पुं [विसंवाद] १ सबूत का अभाव, विरुद्ध सबूत, विपरीत प्रमाण; "अएणोएणाविसंवाओ" (संबोध १७; सुपा ६०८)। २ व्याघात; (गा ६१६)। ३ विकलता; (से ३, ३०)।

विसंवायग वि [विसंवादक] १ सबूत रहित, प्रमाण-रहित; २ ठगने वाला, वंचक; (सुपा ६०८)।

विसंवायण न [विसंवादन] नीचे देखो; (उत्त २६, ४८; सुख २६, ४८)।

विसंवायणा स्त्री [विसंवादना] १ असत्य कथन; २ वंचना, ठगाई; (ठा ४, १—पत्र १६६)।

विसंसरिय वि [विसंसृत] उठ गया हुआ; "पहायसमए य विसंसरिएसुं थाणएसुं" (स ५३७)।

विसंहणा देखो विस्संभणया; (आचा)।

विसकल वि [विशकल] नीचे देखो; (राज)।

विसकलिय वि [विशकलित] टूकड़ा २ किया हुआ, खण्डित; (आवम)।

विसग्ग पुं [विसर्ग] १ निसर्ग, त्याग; "सिमिणोवि सुरयसंगमकिरियासंजणियवंजणविसग्गो" (विसे २२८)। २ विसर्जन, छुटकारा, छोड़ देना; (पिंड २१५)। ३ अक्षर-विशेष, विसर्जनीय वर्ण; (पिंग)।

विसज्ज सक [वि+सृज्, सर्जय्] १ विदा करना, भेजना। २ त्यागना। विसज्जेइ; (महा)। संकृ—विसज्जिऊण, विसज्जिअ; (महा; अभि ४६)। हेकृ विसज्जिदुं (शौ); (अभि ६०)। कृ—विसज्जिदव्व (शौ); (अभि ५०)।

विसज्जणा स्त्री [विसर्जना] विदाई; (वव ४)।

विसज्जिअ वि [विसृष्ट, विसर्जित] १ विदा किया हुआ, भेजा हुआ; (औप; अभि ११६; महा; सुपा १५०; ३५७)। २ त्यक्त; "जीवेण जाणि उ विसज्जियाणि जाईसएसु देहाणि" (उव)।

विसट्ट अक [दल्] फटना, टूटना, टूकड़े २ होना।

विसट्टइ; (हे ४, १७६; षड्), विसट्टंति; (गउड), "तस्स विसट्टउ हिअयं" (कुमा)। वकृ—**विसट्टंत**; (स ५७६)।
विसट्ट अक [वि+कस्] विकसना, खिलना, फूलना। विसट्टइ; (प्राकृ ७६), विसट्टंति; (वज्जा १३८)। वकृ—**विसट्टंत, विसट्टमाण**; (वज्जा ६०; ठा ४, ४—पत्र २६४)।
विसट्ट सक [वि+कासय्] विकसित करना, फुलाना, प्रफुल्ल करना। विसट्टइ; (धात्वा १५३)।
विसट्ट अक [पत्] गिरना, स्खलित होना। विसट्टंति; (सुख २, २६)।
विसट्ट वि [दे] १ विघटित, विश्लिष्ट; (पात्र; गउड १००६)। २ विकसित, प्रफुल्ल, खिला हुआ; (प्राकृ ७७; गउड ६६७; ८०५; कुमा; सुर ३, ४२; भत्त ३०)। ३ दलित, विशीर्ण, खण्डित, जिसका टुकड़ा २ हुआ हो वह; (से६, ३०; गउड ५५६; भवि)। ४ उत्थित, (गउड ७)।
विसट्टण न [विकसन] विकास, प्रफुल्लता; "देव ! पणय-जणकल्लाणकंदुट्टविसट्टणुग्गंतमिहराणुगारिणो" (धर्म ५)।
विसड } देखो **विसम**; (षड्, हे १, २४१; कुमा; दे ७,
विसढ } ६२), "ढढेण तहा विसढा, विसढा जह सफलिया जाया" (उव)।
विसढ वि [दे] १ नीराग, राग-रहित; २ नीरोग, रोग-रहित; (दे ७, ६२)। ३ विषोढ, सहन किया हुआ; (उव)। ४ विशीर्ण, टुकडे २ किया हुआ; (से ६, ६६)। ५ आकुल, व्याकुल, (से ११, ८९)।
विसढ वि [विशठ] १ अत्यत दंभी; अतिशय मायावी; "देवेहि पाडिहेरं कि व कय एत्थ विसढेहि" (पउम १०२, ५२)। २ पु. एक श्रेष्ठि-पुत्र; (सुपा ५५०)।
विसण देखो **वसण**=वृषण; (दे ६, ६२)।
विसण न [वेशन] प्रवेश; (राज)।
विसण्ण वि [विसंज्ञ] संज्ञा-रहित, चेतन्य-वर्जित; (से ६, ६८)।
विसण्ण देखो **विसन्न**=विषण्ण; (महा; वसु; राज)।
विसत्त वि [विसत्त्व] सत्त्व-रहित; (वव ६)।
विसत्थ देखो **वीसत्थ**; (णाया १, १—पत्र १३; स्वप्न १६; उप ७२८ टी)।
विसद देखो **विसय**=विशद; (पणह १, ४—पत्र ७२; कप्प. ति ६७)।
विसद्द पुं [विशब्द] १ विशिष्ट शब्द; २ वि. विशिष्ट शब्द वाला; (गउड)।
विसन्न वि [विषण्ण] १ खिन्न, शोक-ग्रस्त, विषाद-युक्त; (पणह १, ३—पत्र ५५; सुर ६, १८०; श्रु १२)। २ आसक्त, तल्लीन; (सूत्र १, १२, १४)। ३ निमग्न; "अतरा चेव सेयसि विसन्ने" (णाया १, १—पत्र ६३)। ४ पुं. असंयम; (सूत्र १, ४, १, २९)।
विसन्न देखो **विसन्न**।
विसन्ना स्त्री [विसंज्ञा] विद्या-विशेष, (पउम ७, १३९)।
विसप्प अक [वि+सृप्] फैलना, विस्तरना, व्याप्त होना। वकृ—**विसप्पंत, विसप्पमाण**; (कप्प; भग; औप; तदु ५३)।
विसप्प पुं [विसर्प] एक नरक-स्थान, (देवेन्द्र २७)।
विसप्पि वि [विसर्पिन्] फैलने वाला; (सुपा ४४७)।
विसप्पिर वि [विसर्पितृ] ऊपर देखो; (सण)।
विसम देखो **वीसम**=वि+श्रम्। विसमदु; (रंभा ३१)।
विसम वि [विषम] १ ऊँचा-नीचा, उन्नतावनत; (कुमा; गउड)। २ अ-सम, अ-समान, अ-तुल्य; (भग; गउड)। ३ अयुग्म, एकी सख्या, जैसे—एक, तीन पाँच, सात आदि; ४ दारुण, कठिन, कठोर, ५ सकट, संकड़ा, कमचौड़ा, सकीर्ण; (हे १, २४१; षड्)। ६ पुंन. आकाश, (भग २०, २)। °**क्खर** वि [°क्षर] अपसिद्धान्त वाला, असत्य निर्णय वाला; (से ४, २४)। °**लोअण** पु [°लोचन] महादेव, शिव; (वेणी ११७)। °**बाण** पुं [°बाण] कामदेव; (सण)। °**सर** पुं [°शर] वही; (स १; सुपा १६३; सण)।
विसमय न [दे] भल्लातक, भिलावाँ; (दे ७, ६६)।
विसमय देखो **विस-मय**।
विसमिअ वि [विषमित] १ बीच बीच में विच्छेदित ; (से ६, ८७)। २ विषम बना हुआ; (गउड)।
विसमिअ वि [विस्मृत] भुला हुआ, अस्मृत; (से ६, ८७)।
विसमिअ [विश्रमित] विश्रान्त किया हुआ, विश्राम-प्रापित; (से ६, ८७)।
विसमिअ वि [दे] १ विमल, निर्मल ; २ उत्थित; (दे ७, ९२)।
विसमिर वि [विश्रमितृ] विश्राम करने वाला; स्त्री—°**री**;

(गा ५२; श्राक्त ३०)।

विसम्म अक [वि+श्रम्] विश्राम करना, आराम करना। भवि—विसम्मिहिइ; (गा ५७५)। कृ—**विसम्मिअव्व**; (से ६, २)।

विसय वि [विशद] १ निर्मल, स्वच्छ; (कुप्र ४१५; सट्टि ७८ टी)। २ व्यक्त, स्पष्ट; (पात्र)। ३ धवल, सफेद; (औप)।

विसय वि [विशय] १ गृह, घर; (उत्त ७, १)। २ संभव, संभावना; (आचू १)।

विसय पुं [विषय] १ गोचर, इन्द्रिय आदि से जाना जाता पदार्थ—शब्द, रूप, रस आदि वस्तु; (पात्र; कुमा; महा) २ जनपद, देश; (ओघभा ८; कुमा; पउम २७, ११; सुपा ३१; महा)। ३ काम-भोग, विलास; "भोग-पुरिसो समज्जियविसयसुहो" (ठा ३, १ टी—पत्र ११४; धम्म १, ५७; सुपा ३१, महा)। ४ बाबत, प्रकरण, प्रस्ताव; "गोत्थविसए" (उप ९८६ टी; ओघभा ६)। °ाहिवइ पुं [°ाधिपति] देश का मालिक, राजा; (सुपा ४६४)।

विसर सक [वि+सृज्] १ त्याग करना। २ विदा करना, भेजना। विसरइ, (षड्)।

विसर अक [वि+सृ] सरकना, धसना, नीचे गिरना, खिसकना। वकृ—**विसरंत**; (णाया १, ९—पत्र १५७; से १४, ५४)।

विसर सक [वि+स्मृ] भूल जाना, याद न आना। विसरइ; (प्राकृ ६३)।

विसर पुं [दे] सैन्य, सेना, लश्कर (दे ७, ६२)।

विसर पुं [विसर] समूह, यूथ, संघात; (सुपा ३; सुर १, १८५; १०, १४)।

विसरण न [विशरण] विनाश (राज)।

विसरय पुंन [दे] वाद्य-विशेष; (महा)।

विसरा स्त्री [विसरा] मछली पकड़ने का जाल-विशेष; (विपा १, ८—पत्र ८५)।

विसरिअ वि [विस्मृत] याद नहीं आया हुआ; (पि ४१३)।

विसरिया स्त्री [दे] सरट, कृकलास, गिरगिट; (राज)।

विसरिस वि [विसदृश] अ-समान, विजातीय; (सण)।

विसलेस पुं [विश्लेष] जुदाई, वियोग, पृथग्भाव; (चउ)।

विसल्ल वि [विशल्य] शल्य-रहित; (पउम ६३, ११; चेइय ३८७)। °**करणी** स्त्री [°**करणी**] विद्या-विशेष; (सूअ २, २, २७)।

विसल्ला स्त्री [विशल्या] १ एक महौषधि; (ती ५)। २ लक्ष्मण की एक स्त्री; (पउम ६३, २९)।

विसस सक [वि+शस्] वध करना, मार डालना। "विससेह महिसे" (मोह ७९)। कवकृ—**विससिज्जंत**; (गउड ३१९)।

विसस देखो **विस्सस**=वि+श्वस्। कृ-**विससिअव्व**; (स १०८)।

विससिय वि [विशसित] वध किया हुआ, जो मार डाला गया हो वह; (गउड, स ४७५; सम्मत्त १४०)।

विसह सक [वि+षह्] सहन करना। विसहंति; (उव)। वकृ—**विसहंत**; (से १२, २३; सुपा २३३)। हेकृ—**विसहिउं**; (स ३४९)।

विसह वि [विषह] सहन करने वाला, सहिष्णु; " वसुंधरा इव सव्वफासविसहे " (कप्प; औप)।

विसह देखो **वसभ**; (गउड)।

विसहण न [विषहण] १ सहन करना; (धर्मसं ८९७)। २ वि. सहिष्णु; (पव ७३ टी)।

विसहिअ वि [विषोढ] सहन किआ हुआ; (से ६, २३)।

विसाअ (अप) स्त्री [विश्वा] छन्द-विशेष; (पिंग)।

विसाइ वि [विषादिन्] विषाद-युक्त, शोक-ग्रस्त; (संबोध ३९)।

विसाण न [विषाण] १ हाथी का दाँत; (पराह १, १—पत्र ८; अणु २१२)। २ शृंग, सिंग; (सुख ९, १; पात्र; औप)। ३ सूअर का दाँत; (उवा)। ४ पुं. ब. देश-विशेष; (पउम ९८, ६५)।

विसाण सक [विशाणय्] घिसना, शाण पर चढ़ाना। कर्म—विसाणीअदि (शौ); (नाट— मृच्छ १३९)।

विसाणि वि [विषाणिन्] १ सिंग वाला; २ पुं. हाथी, हस्ती; ३ शृंगाटक, सिंघाडा; ४ ऋषभ-नामक औषध; (अणु १४२)।

विसाय सक [वि+स्वादय्] विशेष चखना, खाना। वकृ—**विसाएमाण**; (णाया १, १—पत्र ३७; कप्प)।

विसाय पुं [विषाद] खेद, शोक, दिलगीरी, अफसोस; (उव; गउड; सुपा १०४; हे १, १५५)। °**वंत** वि [°वत्] खिन्न, शोक-ग्रस्त; (श्रा १४)।

विसाय वि [विस्वात] १ सुख-रहित; (विवे १३९)। २

पुंन. एक देव-विमान. (सम ३८)।
विसाय वि [**विस्वाद**] स्वाद-रहित; "आमयकारि विसायं मिच्छत्तं कयसरा व ज भुत्तं" (विवे १३६)।
विसार सक [**वि+सारय्**] फैलाना। वकृ—**विसारंत**; (उत्त २२, ३४)।
विसार पुं [**दे**] सैन्य, सेना, (षड्)।
विसार वि [**विसार**] सार-रहित, निस्सार, (गउड)।
विसारण न [**विशारण**] खण्डन; (पिंड ५९०)।
विसारणिय वि [**विस्मारणिक**] स्मारणा-रहित, जिसको याद न दिलाया गया हो वह; (काल)।
विसारय वि [**दे**] धृष्ट, ढीठ, साहसी, (दे ७, ६६)।
विसारय वि [**विशारद**] विद्वान्, पण्डित, दक्ष ; (पण्ह, १, ३—पत्र ५३; भग; औप, सुर १, १३; आत्म १९)।
विसारि वि [**विसारिन्**] फैलने वाला, व्यापक; (गउड), स्त्री—°णी; (कप्पू)।
विसारि पुं [**दे**] कमलासन, ब्रह्मा; (दे ७, ६२)।
विसाल वि [**विशाल**] १ विस्तृत, बड़ा, विस्तीर्ण, चौड़ा; (पाअ; सुर २, ११६; प्रति १०)। २ पु. एक ग्रह-देवता, अठासी महाग्रहों में एक महाग्रह; (ठा २, ३—पत्र ७८)। ३ एक इन्द्र, क्रन्दित-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५)। ४ पुन. देव-विमान विशेष; (सम ३५; देवेन्द्र १३६; पव १९४)। ५ न. एक विद्याधर-नगर; (इक)।
विसालय पुं [**दे**] जलधि, समुद्र; (दे ७, ७१)।
विसाला स्त्री [**विशाला**] १ एक नगरी का नाम, उज्जयिनी, उजैन; (सुपा १०३; उप ९८८)। २ भगवान् पार्श्वनाथ की दीक्षा-शिबिका; (विचार १२९)। ३ जंबूवृक्ष विशेष, जिससे यह जंबूद्वीप कहलाता है; ४ राजधानी-विशेष; (इक)। ५ भगवान महावीर की माता का नाम; (सूअ १, २, ३, २२)। ६ एक पुष्करिणी; (राज)।
विसालिस देखो **विसरिस**; (उत्त ३, १४)।
विसासण वि [**विशासन**] विघातक, विनाशक, "कुसमय-विसासणं" (सम्म १)।
विसासिअ वि [**विशासित**] १ मारित, हिंसित, जिसका वध किया गया हो वह; २ विशेष रूप से धर्षित; ३ विश्लेषित, वियुक्त किया हुआ; ४ मार भगाया हुआ; (से ८, ६३)।
विसाह पुं [**विशाख**] स्कन्द, कार्तिकेय; (पाअ)।
विसाहा स्त्री [**विशाखा**] १ नक्षत्र-विशेष; (सम १०)। २ व्यक्ति-वाचक नाम, एक स्त्री का नाम; (वज्जा १२२)। ३ एक विद्याधर-कन्या; (महा)।
विसाहिअ वि [**विसाधित**] १ सिद्ध किया गया; २ न. संसिद्धि, "खग्गविसाहिउ जहि लहहु पिय तहि देसहि जाहु" (हे ४, ३८६; ४११)।
विसाही स्त्री [**वैशाखी**] १ वैशाख मास की पूर्णिमा; २ वैशाख मास की अमावस; (सुज्ज १०, ६)।
विसि स्त्री [**दे**] करि-शारी, गज-पर्याण; (दे ७, ६१)।
विसि देखो **बिसि**; (हे १, १२८; प्राप्र)।
विसिज्जमाण देखो **विस**=वि-शॄ।
विसिट्ठ वि [**विशिष्ट**] १ प्रधान, मुख्य; (सूअ १, ६, ७, पण्ह २, १—पत्र ९९)। २ विशेष-युक्त, (महा)। ३ विशेष शिष्ट, सुसभ्य; (वज्जा १६०)। ४ युक्त, सहित; (पण्ण २३—पत्र ६७१)। ५ व्यतिरिक्त, भिन्न, विलक्षण; (विसे)। ६ पु. एक इन्द्र, द्वीपकुमार-देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८४)। ७ न. लगातार छह दिनों का उपवास; (संबोध ५८)। °**दिट्ठि** स्त्री [°**दृष्टि**] अहिंसा; (पण्ह २, १)।
विसिट्ठि स्त्री [**विसृष्टि**] विपरीत क्रम; (सिरि ८७८)।
विसिण वि [**दे**] रोमश, प्रचुर रोम वाला, (दे ७, ६४)।
विसिस सक [**वि+शिष्**] विशेषण-युक्त करना। कर्म—"किरिया विस(?सि)स्सए पुण नाणाउ, सुए जओ भणिअ" (अज्झ ५८; ५९)।
विसिह पु [**विशिख**] १ बाण, तीर; (पाअ; पउम ८, १००; सुपा २२; किरात १३)। २ वि. शिखा-रहित; (गउड ५३९)।
विसी देखो **बिसी**; (हे १, १२८; प्राप्र)।
विसी स्त्री [**विंशति**] बीस, बीस का समूह; "केत्ती(?त्ति)-आओ भाअवदाणं विसीओ" (हास्य १३९)।
विसीअ अक [**वि+सद्**] १ खेद करना। २ निमग्न होना, डूबना। विसीयइ, विसीअंति, विसीअए, विसीयह; (सूअ १, ३, ४, १; १, ३, ४, ५; ठा ४, ४—पत्र २७८; उव)। वकृ—**विसीयंत**; (पि ३९७)।
विसीइय वि [**विशीर्ण**] १ जीर्ण, त्रुटित; २ न. टूटना, जर्जरित होना; "संधीहिं विहडियं पिव विसीइयं सव्व-अंगेहि" (सुर १२, १६९)।
विसीरंत देखो **विस**=वि+शॄ।
विसील वि [**विशील**] १ ब्रह्मचर्य-रहित, व्यभिचारी;

विसोत्तिया स्त्री [**विस्रोतसिका**] १ विमार्ग-गमन, प्रतिकूल गति; २ मन का विमार्ग में गमन, अपध्यान, दुष्ट चिन्तन; (आचा; विसे ३०१२; उव; धर्मसं ८१२)। ३ शंका; (आचा)।

विसोपग } पुन [**दे. विंशोपक**] कौड़ी का बीसमा
विसोवग } हिस्सा; (धर्मवि ५७; पचा ११, २२)।

विसोह सक [**वि+शोधय्**] १ शुद्ध करना, मल-रहित करना, निर्दोष बनाना। २ त्याग करना। विसोहइ, विसोहेइ; (उव; सण; कस)। विसोहिज्ज; (आचा २, ३, २, ३)। हेकृ—**विसोहित्तए**; (ठा २, १—पत्न ५६)।

विसोह वि [**विशोभ**] शोभा-रहित; (दे १, ११०)।

विसोहण न [**विशोधन**] शुद्धि-करण; (कस)।

विसोहणया स्त्री [**विशोधना**] ऊपर देखो; (ठा ८—पत्न ४४१)।

विसोहय वि [**विशोधक**] शुद्धि-कर्ता; (सूअ १, २, ३, १६)।

विसोहि स्त्री [**विशोधि**] १ विशुद्धि, निर्मलता, विशुद्धता; (पउम १०२, १६६; उव; पिंड ६७१; सुपा १६२)। २ अपराध के योग्य प्रायश्चित्त; (ओघ २)। ३ आवश्यक, सामायिक आदि षट्-कर्म; (अणु ३१)। ४ भिक्षा का एक दोष, जिस दोष वाले आहार का त्याग करने पर शेष भिक्षा या भिक्षा-पात्न विशुद्ध हो वह दोष; (पिंड ३९५)। °**कोडि** स्त्री [°**कोटि**] पूर्वोक्त विशोधि-दोष का प्रकार; (पिंड ३९५)।

विसोहिय वि [**विशोधित**] १ शुद्ध किया हुआ; २ पुं. मोक्ष-मार्ग; (सूअ १,१३, ३)।

विस्स देखो **विस**=विश्। "देवीए जेण समयं अहंपि अग्गीए विस्सामि" (सुर २, १२७)।

विस्स न [**विस्र**] १ कच्ची गन्ध, अपक्व मांस आदि की बू; २ वि. कच्ची गन्ध वाला; (प्राप; अभि १८४)। °**गंधि** वि [°**गन्धिन्**] आमगंधि, अपक्व मांस के समान गंध वाला; (अभि १८४)।

विस्स पुं [**विश्व**] १ एक नक्षत्र-देवता, उत्तराषाढा नक्षत्र का अधिष्ठाता देव; (ठा २, ३—पत्न ७७; अणु १४५; सुज्ज १०, १२)। २ स. सर्व, सकल, सब; (विसे १६०३; सुर १२, ५६)। ३ पुंन. जगत्, दुनियाँ; (सुपा १३६; सम्मत्त १६०; रंभा)। °**इ** पुं [°**जित्**] यज्ञ-विशेष; (प्राकृ ९५)। °**कम्म** पुं [°**कर्मन्**] शिल्पी विशेष, देव-वर्धकि; (स ६००; कुप्र ९)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष; (सुपा ६३५)। °**भूइ** पुं [°**भूति**] प्रथम वासुदेव का पूर्व-भवीय नाम; (सम १५३; पउम २०, १७१; भत्त १३७; ती ७)। °**यम्म** देखो °**कम्म**; (स ६१०)। °**वाइअ** पु [°**वादिक**] भगवान् महावीर का एक गण; (ठा ९—पत्न ४५१)। °**सेण** पु [°**सेन**] १ भगवान् शान्तिनाथजी का पिता, एक राजा; (सम १५१; १५२)। २ अहोरात्न का एक मुहूर्त; (सम ५१)। देखो **वीस**=विश्व।

विस्सअ (मा) देखो **विम्हय**=विस्मय; (षड्)।

विस्संत देखो **वीसंत**; (सुपा ५८३)।

विस्संतिअ न [**विश्रान्तिक**] मथुरा का एक तीर्थ; (ती ७)।

विस्संद सक [**वि+स्यन्द्**] टपकना, झरना, चूना। विस्संदति; (ठा ४, ४—पत्न २७९)।

विस्संभ सक [**वि+श्रम्भ्**] विश्वास करना। कृ—**विस्संभणिज्ज**; (श्रा १४ ; उपपं १९)।

विस्संभ पु [**विश्रम्भ**] विश्वास,श्रद्धा; (प्रयौ ९९; महा)। °**घाइ** वि [°**घातिन्**] विश्वास-घातक; (णाया १, २—पत्न ७९)।

विस्संभण न [**विश्रम्भण**] विश्वास; (माल १६६)।

विस्संभणया स्त्री [**विश्रम्भणा**] विश्वास; (आचा)।

विस्संभर पुं [**विश्वम्भर**] जन्तु-विशेष; भुजपरिसर्प की एक जाति; (सूअ २, ३, २५; ओघ ३२३)। २ मूषक, चूहा; (ओघ ३२३)। ३ इन्द्र; ४ विष्णु, नारायण; (नाट—चैत ३८)।

विस्संभरा स्त्री [**विश्वम्भरा**] पृथिवी, धरती; (कुप्र २१३)।

विस्संभिय वि [**विश्रब्ध**] विश्वास-प्राप्त, विश्वासी; (सुख १, १४)।

विस्संभिय वि [**विश्वभृत्**] जगत्-पूरक; (उत्त ३, २)।

विस्सत्थ देखो **वीसत्थ**; (नाट—शकु ५३)।

विस्सद्ध देखो **वीसद्ध**; (अभि १६३; मुद्रा २२३)।

विस्सम अक [**वि+श्रम्**] थाक लेना। विस्समइ; (प्राकृ २६)। कृ—**विस्समिअ**; (नाट—मालती ११)।

विस्सम पु [**विश्रम**] विश्राम, विश्रान्ति; (स्वप्न १०६)

विस्समिअ देखो **विस्संत**; (सुपा ३७२)।

विस्सर सक [**वि+स्मृ**] भूलना। विस्सरइ; (धात्व

१५३)।

विस्सर वि [**विस्वर**] खराब आवाज वाला; (सम ५०; पण्ह १, १—पत्र १८)।

विस्सरण न [**विस्मरण**] विस्मृति, याद न आना; (पभा २४; कुल १४)।

विस्सरिय वि [**विस्मृत**] भुला हुआ; (उप पृ ११३)।

विस्सस सक [**वि+श्वस्**] विश्वास करना, भरोसा करना। विस्ससइ; (प्राकृ २६)। वकृ—**विस्ससंत**; (श्रा १४)। कृ—**विस्ससणिज्ज**; (श्रा १४; भत्त ६६)।

विस्ससिअ वि [**विश्वस्त**] विश्वास-युक्त, भरोसा-पात्र; (श्रा १४; सुपा १८३)।

विस्साणिय वि [**विश्राणित**] दिया हुआ, अर्पित; (उप १३८ टी)।

विस्साम देखो **वीसाम**. (प्राकृ २६; नाट—शकु २७)।

विस्सामण न [**विश्रामण**] चम्पी, अंग-मर्दन आदि भक्ति, वैयावृत्त्य; (ती ८)।

विस्सामणा स्त्री [**विश्रामणा**] ऊपर देखो; (पव ३८; हित २०)।

विस्साय देखो **विसाय**=वि+स्वादय्। कृ—**विस्सायणिज्ज**, (णाया १, १२—पत्र १७४)।

विस्सार सक [**वि+स्मृ**] भूल जाना। संकृ—"कोऊ-हलपरा **विस्सारिऊण** रायसासणं अगणिऊण नियभूमि पविट्ठा नयरिं" (महा)।

विस्सार सक [**वि + स्मारय्**] विस्मरण करवाना; (नाट—मालती ११७)।

विस्सारण न [**विसारण**] विस्तारण, फैलाना; (पव ३८)।

विस्सावसु पुं [**विश्वावसु**] एक गन्धर्व, देव-विशेष; (पउम ७२, २६)।

विस्सास पु [**विश्वास**] भरोसा, प्रतीति, श्रद्धा; (सुख १, १०; सुपा ३५२; प्रासू)।

विस्सासिय वि [**विश्वासित**] जिसको विश्वास कराया गया हो वह; (सुपा १७७)।

विस्साहल पुं [**विश्वाहल**] अंग-विद्या का जानकार चतुर्थ रुद्र-पुरुष; (विचार ४७३)।

विस्सुअ वि [**विश्रुत**] प्रसिद्ध, विख्यात; (पाअ; औप; प्रासू १०७)।

विस्सुमरिय देखो **विसुमरिअ**, (उप १२७)।

विस्सेणि, **विस्सेणी** स्त्री [**विश्रेणि, °णी**] निःश्रेणि, सीढ़ी; (आचा)।

विस्सेसर पु [**विश्वेश्वर**] काशी-विश्वनाथ, काशी में स्थित महादेव की एक मूर्ति; (सम्मत्त ७५)।

विस्सोअसिआ देखो **विसोत्तिआ**; (हे २, ९८)।

विह सक [**व्यध्**] ताडन करना। वकृ—**विहमाण**; (उत्त २७, ३; सुख २७, ३)।

विह देखो **विस**=विष; (आचा; पि २६३)।

विह पुंन [**दे**] १ मार्ग, रास्ता; (ओघ ६०६)। २ अनेक दिनों में उल्लंघनीय मार्ग; (आचा २, ३, १, ११; २, ३, ३, १४)। ३ अटवी-प्राय मार्ग; (आचा २, ५, २, ७)।

विह पुंन [**विहायस्**] आकाश, गगन; (भग २०, २—पत्र ७७५; दसनि १, २३)। देखो **विहग**=विहायस्।

विह पुंस्त्री [**विध**] १ भेद, प्रकार; (उवा; कप्प)। २ पुन. आकाश, गगन; (भग २०, २—पत्र ७७५; आचा १, ८, ४, ५; दसनि १, २३)।

विहई स्त्री [**दे**] वृन्ताकी, बैंगन का गाछ; (दे ७, ६३)।

विहंग पुं [**विहङ्ग**] पक्षी, चिड़िया, पखेरू; (पाअ; गउड; कप्प; सुर ३, २४५; प्रासू १७२)। °**णाह** पुं [°**नाथ**] गरुड पक्षी; (गउड ८२३; ८२४; १०२२)।

विहंग पुं [**विभङ्ग**] विभाग, टुकड़ा, अंश; (पण्ह १, ३—पत्र ५४; गउड ४०४)। देखो **विभंग**; (गउड; भवि)।

विहंगम पुं [**विहंगम**] पक्षी, चिड़िया; (गउड; मोह ३२; श्रु ७७; सण)।

विहंज सक [**वि+भञ्ज्**] भाँगना, तोड़ना, विनाश करना। संकृ—**विहंजिवि** (अप); (भवि)।

विहंजिअ वि [**विभक्त**] बाँटा हुआ; "आगमजुत्तिपमाण-विहंजिओ" (भवि)।

विहंड सक [**वि+खण्डय्**] विच्छेद करना, विनाश करना। विहंडइ; (भवि)।

विहंडण न [**विखण्डन**] १ विच्छेद, विनाश; (सम्मत्त ३०)। २ वि. विच्छेद-कर्ता, विनाशक; (सण)।

विहंडण वि [**विभण्डन**] भाँडने वाला, गालि-सूचक; "भणणसि रे जइ विहंडणं वअणं" (गा ९१२)।

विहंडिअ वि [**विखण्डित**] विनाशित; (पिंग; सण)।

विहग पुं [**विहग**] पक्षी, चिड़िया; (पउम १४, ८०; स ६९७; उत्त २०, ६०)। °**हिव** पु [°**धिप**] गरुड

पक्षी; (सम्मत्त २१६)।

विहग पुन [**विहायस्**] आकाश, गगन। °**गइ** स्त्री [°**गति**] १ आकाश में गमन; (पचा ३, ६)। २ कर्म-विशेष, आकाश में गति कर सकने में कारण-भूत कर्म; (सम ६७; कम्म १, २४, ४३)।

विहट्ट देखो **विघट्ट**। विहट्टइ; (भवि)।

विहट्टिअ वि [**विघट्टित**] खण्डित, द्विधाभूत; (से २, ३२)।

विहड अक [**वि+घट्**] वियुक्त होना, अलग होना, टूट जाना। विहडइ, विहडेइ; (महा; प्राकृ ७१)। वकृ—**विहडंत**; (से ३, १४)।

विहड सक [**वि+घटय्**] ताड़ना, खण्डित करना। संकृ—**विहडिऊण**; (सण)।

विहड देखो **विहल**=विह्वल; (से ४, ५४)।

विहडण न [**विघटन**] १ अलग होना, वियोग, (सुपा ११६; २४३)। २ अलग करना; ३ खोलना; "तह भीणा जह मउलियलोयणउडविहडणे वि असमत्था" (वज्जा ८८)।

विहडण पुं [**दे**] अनर्थ; (पड्)।

विहडणा स्त्री [**विघटना**] वियोजन, अलग करना; "संवडणविहडणावावडेण विहिणा जणो नडिओ" (धर्मवि ४२)।

विहडप्फड वि [**दे**] १ व्याकुल, व्यग्र; (हे २, १७४)। २ त्वरित, शीघ्र; (भवि)।

विहडा स्त्री [**विघटा**] विभेद, अनैक्य, फाट-फुट; "जह मह कुडुंबविहडा न घडइ कइयावि दंतकलहेण" (सुपा ४२१)।

विहडाव सक [**वि+घटय्**] वियुक्त करना, अलग करना। विहडावइ; (महा)।

विहडावण न [**विघटन**] वियोजन; (भवि)।

विहडाविय वि [**विघटित**] वियोजित; (सार्ध ७१)।

विहडिय वि [**विघटित**] १ वियुक्त, विच्छिन्न; (महा ३६, ५)। २ खुला हुआ; (महा ३०, ३०)।

विहण देखो **विहन्न**। विहणाति; (पि ४६०)। संकृ—**विहत्तु**; (सूअ १, ५, १, २१)।

विहणु वि [**दे**] संपूर्ण, सकल, (सण)

विहण्ण न [**दे**] पिंजन, पींजना; (दे ७, ६३)।

विहत्त देखो **विभत्त**, (से ७, १५; चेइय २७४; सुर १, ४७, सुपा ३६६)।

विहत्ति देखो **विभत्ति**; (पउम २४, ५; उप पृ १४७)।

विहत्तु देखो **विहण**।

विहत्थ वि [**विहस्त**] १ व्याकुल, व्यग्र; (से १२, ४६; कुप्र ४०६; सिरि ३८६, ८३६; सम्मत्त १६१)। २ कुशल, दक्ष; "पहरणविहत्थहत्था" (कुप्र १०३; २०६)। ३ पु. विशिष्ट हाथ, किसी वस्तु से युक्त हाथ; "पढम उत्तरिऊणं धवलो जा जाइ पाहुडविहत्थो" (सिरि ६६१), "सद्दवभाणविहत्थो" (उव)। ४ क्लीब; (सम्मत्त १६१)।

विहत्थि पुस्त्री [**वितस्ति**] परिमाण-विशेष, बारह अंगुल का परिमाण; (हे १, २१४; कुमा, अणु १५७)।

विहदि स्त्री [**विधृति**] १ विशेष धैर्य; २ वि. धैर्य-रहित; (संक्षि ९)।

विहन्न } सक [**वि + हन्**] १ मारना, ताड़न करना। **विहम्म** } २ नाश करना। ३ अतिक्रमण करना। विहन्नई; (उत्त २, २२)। कर्म—विहन्निज्जा; (उत्त २, १)। वकृ—**विहम्ममाण**, **विहम्माण**; (पि ५६२; उत्त २७, ३)। कवकृ—**विहम्ममाण**; (सूअ १, ७, ३०)।

विहम्म वि [**विधर्मन्**] भिन्न धर्म वाला, विभिन्न, विलक्षण; "मोत्तूणायमहाव वसेज वत्थुं विहम्मम्मि" (विसे २२४१)।

विहम्म सक [**विधर्मय्**] धर्म-रहित करना। वकृ—**विहम्मेमाण**; (विपा १,१—पत्र ११)।

विहम्म न [**वैधर्म्य**] १ विधर्मता, विरुद्ध-धर्मता; २ तर्क-शास्त्र-प्रसिद्ध उदाहरण-भेद, वैधर्म्य-दृष्टान्त; (सम्म १५३)।

विहम्मणा स्त्री [**विधर्मणा, विहनन**] कदर्थना, पीड़ा; (पण्ह १, ३—पत्र ५३; विसे २३५०)।

विहय वि [**दे**] पिंजित, धुना हुआ; (दे ७, ६४)।

विहय वि [**विहत**] १ मारा हुआ, आहत ; (पउम २७, २८)। २ विनाशित; (महा)।

विहय देखो **विहग**=विहग; (गउड; सण)।

विहय देखो **विहव**=विभव; (दे ३, २९; नाट—मालवि ३३)।

विहर अक [**वि+हृ**] १ क्रीड़ा करना, खेलना। २ रहना, स्थिति करना। ३ सक. गमन करना, जाना। विहरइ; (हे ४, २५९; उवा; कप्प; उव), विहरति; (भग), विहरेज

(पव १०४)। भूका—विहरिंसु, विहरित्था; (उत्त २३, ६; पि ३५०, ५१७)। भवि—विहरिस्सइ; (पि ५२२)। वक्र—**विहरंत, विहरमाण**; (उत्त २३, ७; सुत्र २३, ७; ओघ १२४; महा; भग)। सक्र—**विहरित्ता, विहरिअ**: (भग; नाट—वक्र १०२)। हेक्र—**विहरित्तए, विहरिउं**; (भग; ठा २, १—पत्र ५६; उव)। क्र—**विहरियव्व**; (उप १३१ टी)।

विहर सक [**प्रति+ईक्ष्**] प्रतीक्षा करना, बाट जोहना। विहरइ; (पड्)।

विहर देखो **विहार**; (उप ८३३ टी)।

विहरण न [**विहरण**] विहार; (कुप्र २२)।

विहरिअ न [**दे**] सुरत, सभोग; (दे ७, ७०)।

विहरिअ वि [**विहृत**] जिसने विहार किया हो वह; (ओघ २१०, उव; कुप्र १६६)।

विहल अक [**वि+ह्वल्**] व्याकुल होना। वक्र—**विहलंत**; (स ४१५)।

विहल देखो **विहड**=वि+घट्। वक्र—**विहलंत**: (से १४, २६)।

विहल वि [**विह्वल**] व्याकुल, व्यग्र; (हे २, ५८; प्राकृ २४; पउम ८, २००; से ५, ५८, गा २८५; प्रासू ५; हास्य १४०; वज्जा २४; पड्; गउड)।

विहल देखो **विअल**=विकल; (सत्ति ८)।

विहल वि [**विफल**] १ निष्फल, निरर्थक. (गउड; सुपा ३६६)। २ असत्य, झूठा; "मिच्छा मोह विहल अलिअं असच्चं असब्भूअं" (पात्र)।

विहल सक [**विफलय्**] निष्फल बनाना, निरर्थक करना। विहलंति; (उव)।

विहलंखल } वि [**विह्वलाङ्ग**] व्याकुल शरीर वाला;
विहलघल } (काप्र १६६, स २५५; सुख १८, ३५; सुर ६, १७३; सुपा ४४७), "वियणाविहलघला पडिया" (सुर १५, २०४)।

विहलिअ वि [**विह्वलित**] व्याकुल किया हुआ; (कुमा ३, ४३; प्राप; महा)।

विहलिअ देखो **विहडिय**; (से ७, ४६)।

विहलिअ वि [**विफलित**] विफल किया हुआ; (सण)।

विहल्ल अक [**वि+रु, वि+स्तृ ?**] १ आवाज करना। २ सक. विस्तार करना। विहल्लइ; (धात्वा १५३)।

विहल्ल पुं [**विहल्ल**] राजा श्रेणिक का एक पुत्र; (पडि)।

विहव पुं [**विभव**] समृद्धि, संपत्ति, ऐश्वर्य; (पात्र, गउड; कुमा; हे ४, ६०; प्रासू ७२; ७६)।

विहवण न [**विध्वन**] विनाश; (राज)।

विहवा स्त्री [**विधवा**] जिसका पति मर गया हो वह स्त्री, रॉड; (ओप; उव; गा ५३६; स्वप्न ५६; सुर १, ४३)।

विहवि वि [**विभविन्**] संपत्ति-शाली, धनाढ्य; (कुमा; सुपा ४२२; गउड)।

विहव्व देखो **विहव**=विभव; (नाट—मृच्छ ६६)।

विहस अक [**वि+हस्**] १ विकसना, खिलना, प्रफुल्ल होना। २ हास्य करना, मध्यम प्रकार का हास्य करना। विहसइ, विहसए, विहसेइ, विहसति; (प्राकृ २६; सण; कुमा; हे ४, ३६५)। विहसेज्ज, विहसेज्जा; (कुमा ५, ८५)। भवि—विहसिहिइ, विहसेहिइ; (कुमा ५, ८३)। वक्र—**विहसंत, विहसेंत**: (से २, ३६; कुमा ३, ८८; ५, ८४)। सक्र—**विहसिऊण, विहसिअ, विहसेऊण**; (गउड ८४५; ६१५ ; नाट—शकु ६८; कुमा ५, ८२)। हेक्र—**विहसिउं, विहसेउं**: (कुमा ५, ८२)।

विहसाव सक [**वि+हासय्**] १ हँसाना। २ विकसित करना। सक्र—**विहसाविऊण, विहसावेऊण**; (प्राकृ ६१)।

विहसाविअ वि [**विहासित**] १ हँसाया हुआ; २ विकसित किया हुआ; (प्राकृ ६१)।

विहसिअ वि [**विहसित**] १ विकसित, खिला हुआ, प्रफुल्ल; "विहसियदिट्ठीए विहसियमुहीए" (महा; सम्मत्त ७६)। २ न. मध्यम प्रकार का हास्य; (गउड ६९६; ७५१)।

विहसिर वि [**विहसितृ**] खिलने वाला, विकसित होने वाला; (कुमा)।

विहसिव्विअ वि [**दे**] विकसित, खिला हुआ; (दे ७, ६१)।

विहस्सइ देखो **विहस्सइ**; (पात्र; ओप)।

विहा अक [**वि+भा**] शोभना, चमकना। विहादि (शौ) (पि ४८७)।

विहा सक [**वि+हा**] परित्याग करना। संकृ—**विहाय**; (सूत्र १, १४, १)।

विहा अ [**वृथा**] निरर्थक, व्यर्थ, मुधा; (पचा १२, ५)।

विहा स्त्री [**विधा**] प्रकार, भेद; (कप्प; महा; अणु)।

विहा° देखो **विहग**=**विहायस्**; (धर्मसं ६१६)।

विहाइ वि [**विधायिन्**] कर्ता, करने वाला, (चेइय ४०३, उप ७६८ टी; धर्मवि १३६)।

विहाउ वि [**विधातृ**] १ कर्ता, निर्माता; (विसे १५६७; पचा ६, ३६)। २ पुं. पण्णपन्नि-देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३ —पत्र ८५)।

विहाड सक [**वि+घटय्**] १ वियुक्त करना, अलग करना। २ विनाश करना। ३ खोलना, उघाड़ना। विहाडेइ, विहाडेंति; (राय १०४: महा; भग), "कम्मसमुग्गं विहाडेति" (औप; राय)। संकृ—"समुग्गय तं **विहाडेउं**" (धर्मवि १५)। कृ—**विहाडेयव्व**: (महा)।

विहाड वि [**विघाट**] विकट; (राज)।

विहाड वि [**विहाट**] प्रकाश-कर्ता; (सम्म २)।

विहाडण न [**दे**] अनर्थ; (दे ७, ७१.)।

विहाडिअ वि [**विघटित**] १ वियोजित, अलग किया हुआ; (धर्मसं ७४२)। २ विनाशित; (उप ५६७ टी)।

विहाडिअ वि [**विघटित**] उद्घाटित, खोला हुआ; (उप पृ ५४; वसु)।

विहाडिर वि [**विघटयितृ**] अलग करने वाला, वियोजक; (सण)।

विहाण पुं [**दे**] १ विधि, विधाता, दैव, भाग्य; (दे ७, ९०), "माणुसमयजूहवह विहाणवाहो करेमाणो" (स १३०; भवि)। २ विहान, प्रभात, सुबह; (दे ७, ९०; से ३, ३१; भवि; हे ४, ३३०; ३६२; सिरि ५२५)। ३ पूजन अर्चन; "अश्रो चेव कुरदेवयाविहाणनिमित्तं पयारिऊण परियणं एयाए वावाइओ हविस्सइ" (स २९६)।

विहाण न [**विधान**] १ शास्त्रोक्त रीति; (उप ७६८; पव ३५)। २ निर्माण, रचना; (पंचा ७, ५; रभा; महा)। ३ प्रकार, भेद; (से ३, ३१; पण्ह १, १; भग)। ४ व्याकरणोक्त विधि-विशेष; (पण्ह २, २—पत्र ११४)। ५ अवस्था-विशेष; (सूत्र २, १, ३२)। ६ विशेष; "विहाणमग्गणं पडुच्च" (भग १, १ टी)। ७ रीति; (महा)। ८ क्रम, परिपाटी; (बृह १)।

विहाण न [**विहान**] परित्याग; (राज)।

विहाणिय (अप) वि [**विधायिन्**] कर्ता, करने वाला; (सण)।

विहाय अक [**वि+भा**] १ शोभना। २ प्रकाशना, चमकना, दीपना। विहायति; (स १२)। वकृ—**विहायंत**; (सिरि २९८)।

विहाय पु [**विघात**] १ अवसान, अंत; (से १, १९)। २ विरोधी, दुश्मन, परिपन्थी; (से ८, ५४; स ४१२)।

विहाय देखो **विभाग**; (गउड; से ६, ३२)।

विहाय वि [**विभात**] १ प्रकाशित; "निसा विहाय त्ति उट्ठिओ कण्हो" (कुप्र २६८)। २ न.प्रभात, प्रातःकाल; (से १२, १९)।

विहाय देखो **विहग**=विहायस्; (श्रा २२)।

विहाय देखो **विहा**=वि+हा।

विहाय (अप) देखो **विहिअ**, (भवि)।

विहार सक [**वि+धारय्**] १ अपेक्षा करना। २ विशेष रूप से धारण करना। वकृ—**विहारंत**; (पउम ८,१५९)।

विहार पुं [**विहार**] १ विचरण, गमन, गति, (पव १०४; उवा)। २ क्रीड़ा-स्थान, (सम १००)। ३ देव-गृह, देव-मन्दिर; (उत्त ३०, ७; कुमा)। ४ अवस्थान, अवस्थिति; "असासय दट्ठु इम विहार" (उत्त १४, ७)। ५ क्रीड़ा; (ठा ८; कप्प)। ६ मुनि-वर्तन, मुनि-चर्या, साध्वाचार; (वव १; णंदि; उव)। °**भूमि** स्त्री [°**भूमि**] १ स्वाध्याय-स्थान; (आचा २, १, १, ८; कस; कप्प)। २ विचरण-भूमि; (वव ४)। ३ क्रीड़ा-स्थान; ४ चैत्य की जगह; (कप्प; राज)।

विहारि वि [**विहारिन्**] विहार करने वाला; (आचा; उव; श्रा १४)।

विहालिय देखो **विहाडिअ**; "दुवारं विहालिय पासइ" (उ° ६४८ टी)।

विहाव देखो **विभाव**=वि+भावय्। विहावइ, विहावेमि (भवि; रुक्मि ५७)। कवकृ—**विहाविज्जमाण**, (४१)। कृ—**विहावियव्व**; (उप ३४२)।

विहावण न [**विधापन**] निर्मापण, करवाना, (चेइ ६९)।

विहावण न [**विभावन**] आलोचन; " एवं विचिंतिय° गुणदोसविहावणं परमं " (पंचा ६, ४६)।

विहावरी स्त्री [**विभावरी**] रात्रि, निशा; (पाअ; ° ७६८ टी; सुपा ३९३)।

विहावसु पु [**विभावसु**] अग्नि, आग, (पाअ)। दे° **विभावसु**।

विहाविअ वि [**विभावित**] दृष्ट, निरीक्षित; "दि विहाविअं" (पाअ; गा ५०७)।

विहाविअ वि [**विधावित**] उल्लसित, प्रस्फुरित; (

६७)।

वेहास पुं [**विहास**] हाँसी, उपहास; (भवि)।

विहास) देखो **विहसाव**। संकृ—**विहासिऊण. विहासेऊण, विहासाविऊण, विहासावेऊण**;
विहासाव) (प्राकृ ६१)।

विहासाविअ } देखो **विहसाविअ**; (प्राकृ ६१)।
विहासिअ }

विहि पुं [**विधि**] १ ब्रह्मा, चतुरानन, विधाता; (पाअ, अच्चु ३७, धर्मसं ६२६; कुमा)। २ पुस्त्री. प्रकार, भेद; (उवा). "सव्वाहि नयविहीहि " (पव १४६)। ३ शास्त्रोक्त विधान, अनुष्ठान, व्यवस्था; (पंचा ६. ४८; औप)। ४ क्रम, सिलसिला, परिपाटी; (बृह १)। ५ रीति; ६ नियोग, आदेश, आज्ञा. ७ आज्ञा-सूचक वाक्य; ८ व्याकरण का सूत्र-विशेष; ९ कर्म. १० हाथी को खाने का अन्न. (हे १, ३५)। ११ दैव, भाग्य. "अणुकूलो अहव विही किंवा तं जं न कुणइ" (सुर ६, ८१; पाअ. कुमा; प्रासू ५८)। १२ नीति, न्याय; १३ स्थिति, मर्यादा; (बृह १)। १४ कृति, करण. (पंचा ११)। °न्नु वि [°ज्ञ] विधि का जानकार; (णाया १, १,—पत्र ११, सुर ८, ११८)। °**वयण** न [°**वचन**] विधि-वाक्य, विधि-वाद, विध्युपदेश; (चेइय ७४४)। °**वाय** पुं [°**वाद**] वही पूर्वोक्त अर्थ; (भास ७५; चेइय ७४४)।

विहिअ वि [**विहित**] १ कृत, अनुष्ठित, निर्मित; (पाअ. महा)। २ चेष्टित; (औप)। ३ शास्त्र में जिसका विधान हो, वह, शास्त्रोक्त; (पचा १४, २७)।

विहिंस सक [**वि + हिंस्**] विविध उपायों से मारना, वध करना। विहिंसइ; (आचा १, १, १, ४)। कृ—**विहिंस**, (पगह १, २—पत्र ४०)।

विहिंस वि [**विहिंस**] हिंसा करने वाला; "अ-विहिंसे सुव्वए दंते" (आचा १, ६, ४, ३)।

विहिंसग वि [**विहिंसक**] वध करने वाला, (आचा; गच्छ १, १०)।

विहिंसण न [**विहिंसन**] विविध प्रकार से मारना; (पगह १, १—पत्र १८)।

विहिंसा स्त्री [**विहिंसा**] १ विशेष हिंसा; (पगह १, १—पत्र ५)। २ विविध हिंसा; (सूअ १, २, १, १४)।

विहिण्ण) वि [**विभिन्न**] १ जुदा, अलग; (से ७, ५३;
विहिन्न) १३, ८६; भवि)। २ खण्डित, भाँग कर टुकडा २ बना हुआ; (से ३, ६०)।

विहिम न [**दे**] जंगल, अरण्य; (उप ८४२ टी)।

विहिमिहिय वि [**दे**] विकसित, प्रफुल्ल; (षड्)।

विहियव्व देखो **विहे**=वि+धा।

विहिविल्ल सक [**वि+रचय्**] बनाना, निर्माण करना। विहिविल्लइ; (प्राकृ ७४)।

विहीण वि [**विहीन**] १ वर्जित, रहित; (प्रासू १७२)। २ त्यक्त; (कुमा)।

विहीर सक [**प्रति+ईक्ष्**] प्रतीक्षा करना, वाट जोहना। विहीरइ; (हे ४, १९३), विहीरह; (स ४१८)।

विहीर वि [**प्रतीक्ष**] प्रतीक्षा करने वाला; (कुमा ७, ३८)।

विहीरिअ वि [**प्रतीक्षित**] जिसकी प्रतीक्षा की गई हो वह; (पाअ)

विहीसण देखो **विभीसण**; (से ४, ५५)।

विहीसिया देखो **विभीसिया**; (सुपा ५४१)।

विहु पु [**विधु**] १ चन्द्र, चाँद; (पाअ)। २ विष्णु, श्रीकृष्ण. ३ ब्रह्मा; ४ शंकर, महादेव; ५ वायु, पवन; ६ कपूर; (हे ३, १९)।

विहुअ वि [**विधुत**] कम्पित; (गा ६६०; गउड)। २ उन्मूलित, उखाड़ा हुआ; (से १, ५५)। ३ त्यक्त; (गउड)।

विहुंडुअ पुं [**दे**] राहु, ग्रह-विशेष; (दे ७, ६५)।

विहुण सक [**वि + धू**] १ कँपाना, हिलाना। २ दूर करना, हटाना। ३ त्याग करना। ४ पृथग् करना, अलग करना। विहुणइ, विहुणंति; (भवि; पि ५०३), विहुणाहि; (उत्त १०, ३)। कर्म—विहुव्वइ; (पि ५३६)। वकृ—**विहुणंत, विहुणमाण**; (सुपा २७२; पउम ६४, ३५)। कवकृ—**विहुव्वंत**; (से ६, ३५; ७, २१)। संकृ—**विहुणिय**; (सूअ १, २, १, १५; यति २१; स३०८)।

विहुणण न [**विधूनन**] १ दूरीकरण; (पउम १०१, १९)। २ व्यजन, पंखा; (राज)।

विहुणिय वि [**विधूत**] देखो **विहुअ**; (सुपा २५३; यति २१)।

विहुर वि [**विधुर**] १ विकल, व्याकुल, विह्वल; (स्वप्न ६३; महा; कुमा; दे १, १५; सुपा ६२; गउड; सण)। २ क्षीण; (गउड १०३६)। ३ विसदृश, विलक्षण, विषम; "अविसिट्ठम्मिवि जोगम्मि बाहिरे होइ विहुरया" (ओघ

५,१)। ४ विश्लिष्ट, वियुक्त; (गउड ८३६)। ५ न. व्याकुल-भाव, विह्वलता; "विलोट्टए विहुरम्मि" (स ७१६; वज्जा ३२; ६४; प्रासू ५८; भवि; सण)।

विहुराइअ वि [**विधुरायित**] व्याकुल बना हुआ; (गउड १११ टी)।

विहुरिज्जमाण वि [**विधुरायमाण**] व्याकुल बनता; (सुपा ४१६)।

विहुरिय वि [**विधुरित**] १ व्याकुल बना हुआ; (सुर २, २१६; ६, ११५; महा)। २ वियुक्त बना हुआ, बिछुड़ा हुआ, विरहित; (गउड)।

विहुरीकय वि [**विधुरीकृत**] व्याकुल किया हुआ; (कुमा)।

विहुल देखो **विहुर**; (पाअ)।

विहुल्ल वि [**विफुल्ल**] १ खिला हुआ, २ उत्साही; "निय-कज्जविहुल्ली" (भवि)।

विहुव्वंत देखो **विहुण**।

विहूअ वि [**विधूत**] १ कम्पित; (माल १७८)। २ वर्जित, रहित; "नयविहिविहूयबुद्धी" (पउम ५५, ४)। देखो **विधूय, विहुअ**।

विहूइ देखो **विभूइ**; (अच्चु १४; भवि)।

विहूण देखो **विहुण**। संकृ—**विहूणिया**; (आचा १, ७, ८, २४; सूअ १, १, २, १२; पि ५०३)।

विहूण देखो **विहीण**; (कुमा; उव)।

विहूणय न [**विधूनक**] व्यजन, पंखा; (सूअ १, ४, २, १०)।

विहूसण देखो **विभूसण**; (दे ६, १२७, सुपा १६१; कुप्र २६)।

विहूसा स्त्री [**विभूषा**] १ शोभा; (सुपा ६२१; दे ६, ८३)। २ अलंकार आदि से शरीर की सजावट; (पंचा १०, २१)।

विहूसिअ वि [**विभूषित**] विभूषा-युक्त, अलंकृत; (भवि)।

विहे सक [**वि+धा**] करना, बनाना। विहेइ, विहेंति, विहेसि, विहेमि; (धर्मस १०११; स ६३४, ७१२; गउड ३३२; कुमा ७, ६७)। संकृ—**विहेऊण**; (पि ५८५)। हेकृ—**विहेउं**; (हित १)। कृ—**विहियव्व, विहेअ, विहेअव्व**; (सुपा १५८; हि २२; धम्मो ४; महा; सुपा १६३; श्रा १२; हि २; पउम ६६, १८; सुपा १५९)।

विहेड सक [**वि+हेटय्**] १ मारना, हिंसा करना। २ पीड़ा करना। वकृ—**विहेडयंत**; (उत्त १२, ३९)। कवकृ—"विहम्ममाणाहि विहेड(?ड्ड)यंता" (पण्ण १, ३—पत्र ५३)।

विहेडय वि [**विहेठक**] अनादर-कर्ता; (दस १०, १०)।

विहेडि वि [**विहेटिन्**] १ हिंसा करने वाला; २ पीड़ा करने वाला; "अंगे मंते अहिज्जंति पाणभूयविहेडिणो" (सूअ १, ८, ४)।

विहेडिय वि [**विहेटित**] पीडित; (भत्त १३३)।

विहेढणा स्त्री [**विहेठना**] कदर्थना, पीड़ा; (उव)।

विहोड सक [**ताडय्**] ताड़न करना। विहोडइ, (हे ४, २७)।

विहोडिअ वि [**ताडित**] जिसका ताड़न किया गया हो वह; (कुमा)।

विहोय (अप) देखो **विहव**; (भवि)।

वी देखो **वि**=अपि, वि; "एक्क चिय जाव न वी, दुक्खं वोलेइ जणियपियविरहं" (पउम १७, १२)।

वीअ सक [**वीजय्**] हवा डालना, पखा करना। वीअअति; (अभि ८९), वीयति; (सुर १, ९६) वकृ—**वीअंत**; (गा ८६; सुर ७, ८८)। कवकृ—**विइज्जंत, वीइज्ज-माण**; (से ६, ३७; णाया १,१—पत्र ३३)।

वीअ वि [**दे**] १ विधुर, व्याकुल; २ तत्काल, तात्कालिक, उसी समय का; (दे ७, ९३)।

वीअ देखो **वीअ**=द्वितीय; (कुमा; गा ८६; २०९; ४०९; गउड)।

वीअ वि [**वीत**] विगत, नष्ट; (भग; अज्झ ९६)। °**कम्ह** न [°**कश्म ?**] १ गोत्र-विशेष; २ पुस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न; (ठा ७—पत्र ३९०)। °**धूम** वि [°**धूम**] द्वेष-रहित; (भग ७, १—पत्र २९१)। °**भय**, °**भय** न [°**भय**] १ नगर-विशेष, सिन्धुसौवीर देश की प्राचीन राजधानी; (धर्मवि १६; २१; इक; विचार ४८; महा)। २ वि. भय-रहित; (धर्मवि २१)। °**मोह** वि [°**मोह**] मोह-रहित; (अज्झ ९६)। °**राग**, °**राय** वि [°**राग**] राग-रहित, क्षीण-राग; (भग; सं ४१)। °**सोग** पुं [°**शोक**] एक महाग्रह; (सुज्ज २०; ठा २,३—पत्र ७९)। °**सोगा** स्त्री [°**शोका**] सलिलावती-नामक विजय-प्रान्त की राजधानी, नगरी-विशेष, (णाया १, ८—पत्र १२१; इक; पउम २०, १४२)।

वीअजमण देखो **वीअजमण**, (दे ६, ९३ टी)।

६७)।

वेहास पुं [**विहास**] हँसी, उपहास; (भवि)।

वेहास) देखो **विहसाव**। सक्—**विहासिऊण, विहा-**
वेहासाव) **सेऊण, विहाम्याविऊण, विहासावेऊण**; (प्राकृ ६१)।

विहासाविअ)
विहासिअ) देखो **विहसाविअ**; (प्राकृ ६१)।

विहि पु [**विधि**] १ ब्रह्मा, चतुरानन, विधाता; (पाअ; अच्चु ३७; धर्मसं ८२६; कुमा)। २ पुस्त्री. प्रकार, भेद; (उवा); "सव्वाहिं नयविहीहिं" (पव १४९)। ३ शास्त्रोक्त विधान, अनुष्ठान, व्यवस्था; (पंचा ६, ४८; औप)। ४ क्रम, सिलसिला, परिपाटी; (बृह १)। ५ रीति. ६ नियोग. आदेश, आज्ञा, ७ आज्ञा-सूचक वाक्य; ८ व्याकरण का सूत्र-विशेष, ९ कर्म, १० हाथी को खाने का अन्न. (हे १, ३५)। ११ दैव, भाग्य, "अणुकूलो अहव विही किवा तं जं न करेइ" (सुर ६, ८१, पाअ, कुमा; प्रासू ५८)। १२ नीति, न्याय, १३ स्थिति, मर्यादा; (बृह १)। १४ कृति, करण (पंचा ११)। °न्नु वि [°ज्ञ] विधि का जानकार, (णाया १, १,—पत्र ११; सुर ८, ११८)। °**वयण** न [°**वचन**] विधि-वाक्य, विधि-वाद, विध्युपदेश, (चेइय ७४४)। °**वाय** पु [°**वाद**] वही पूर्वोक्त अर्थ, (भास ७५; चेइय ७४४)।

विहिअ वि [**विहित**] १ कृत, अनुष्ठित, निर्मित; (पाअ, महा)। २ चेष्टित, (औप)। ३ शास्त्र में जिसका विधान हो, वह, शास्त्रोक्त; (पंचा १४, २७)।

विहिंस सक [**वि+हिंस्**] विविध उपायों से मारना, वध करना। विहिंसइ; (आचा १, १, १, ४)। कृ —**विहिंस**, (पराह १, २—पत्र ४०)।

विहिंस वि [**विहिंस**] हिंसा करने वाला; "अ-विहिंसे सुव्वए दंते" (आचा १, ६, ४, ३)।

विहिंसग वि [**विहिंसक**] वध करने वाला (आचा; गच्छ १, १०)।

विहिंसण न [**विहिंसन**] विविध प्रकार से मारना; (पराह १, १—पत्र १८)।

विहिंसा स्त्री [**विहिंसा**] १ विशेष हिंसा; (पराह १, १—पत्र ५)। २ विविध हिंसा; (सूअ १, २, १, १४)।

विहिण्ण) वि [**विभिन्न**] १ जुदा, अलग; (से ७, ५३;
विहिन्न) १३, ८६; भवि)। २ खरिडत, भाँग कर टुकड़ा २ बना हुआ; (से ३, ६०)।

विहिम न [**दे**] जंगल, अरण्य; (उप ८४२ टी)।

विहिमिहिय वि [**दे**] विकसित, प्रफुल्ल; (पड्)।

विहियव्व देखो **विहे**=वि+धा।

विहिविल्ल सक [**वि+रचय्**] बनाना, निर्माण करना। विहिविहलइ; (प्राकृ ७४)।

विहीण वि [**विहीन**] १ वर्जित, रहित, (प्रासू १७२)। २ त्यक्त; (कुमा)।

विहीर सक [**प्रति+ईक्ष्**] प्रतीक्षा करना, बाट जोहना। विहीरइ, (हे ४, १९३), विहीरह; (स ४१८)।

विहीर वि [**प्रतीक्ष**] प्रतीक्षा करने वाला; (कुमा ७, ३८)।

विहीरिअ वि [**प्रतीक्षित**] जिसकी प्रतीक्षा की गई हो वह; (पाअ)।

विहीसण देखो **विभीसण**; (से ४, ५५)।

विहीसिया देखो **विभीसिया**; (सुपा ५४१)।

विहु पु [**विधु**] १ चन्द्र, चाँद; (पाअ)। २ विष्णु, श्रीकृष्ण, ३ ब्रह्मा; ४ शंकर, महादेव, ५ वायु, पवन; ६ कपूर, (हे ३, १९)।

विहुअ वि [**विधुत**] कम्पित; (गा ६६०; गउड)। २ उन्मूलित, उखाड़ा हुआ, (से १, ५५)। ३ त्यक्त; (गउड)।

विहुंडुअ पुं [**दे**] राहु, ग्रह-विशेष, (दे ७, ६५)।

विहुण सक [**वि+धू**] १ कँपाना, हिलाना। २ दूर करना, हटाना। ३ त्याग करना। ४ पृथग् करना, अलग करना। विहुणइ, विहुणाति; (भवि; पि ५०३), विहुणाहि; (उत्त १०, ३)। कर्म—विहुव्वइ; (पि ५३६)। वकृ—**विहुणंत, विहुणमाण**, (सुपा २७२; पउमं ९४, ३५)। कवकृ—**विहुव्वंत**; (से ६, ३५; ७, २१)। संकृ—**विहुणिय**; (सूअ १, २, १, १५; यति २१; स३०८)।

विहुणण न [**विधूनन**] १ दूरीकरण; (पउम १०१, १९)। २ व्यजन, पखा; (राज)।

विहुणिय वि [**विधूत**] देखो **विहुअ**; (सुपा २५३; यति २१)।

विहुर वि [**विधुर**] १ विकल, व्याकुल, विह्वल; (स्वप्न ९३; महा; कुमा; दे १, १५; सुपा ९२, गउड; सण)। २ क्षीण; (गउड १०३९)। ३ विसदृश, विलक्षण, विषम; "अविसिट्ठम्मिवि जोगम्मि बाहिरे होइ विहुरया" (ओघ

निर्णय की चाह, (सूत्र १, १, २, १७, विसे २८६. ३६६; ५६५; उप ५२०)।

वीमंसिय वि [**विमर्शित, मीमांसित**] विचारित, पर्यालोचित, (सम्मत्त ५४)।

वीर पु [**वीर**] १ भगवान् महावीर; (पण्ह १, १—पत्र २३; १, २; सुज्ज २०; जी १)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)। ३ साहित्य-प्रसिद्ध एक रस, (अणु १३६)। ४ वि. पराक्रमी, शूर; (आचा; सूत्र १, ८, २३; कुमा)। ५ पुन. एक देव-विमान; (सम १२; इक)। ६ न. वैताढ्य पर्वत की उत्तर श्रेणी में स्थित एक विद्याधर-नगर, (इक)। °**कंत** पुन [°**कान्त**] एक देव-विमान; (सम १२)। °**कण्ह** पु [°**कृष्ण**] राजा श्रेणिक का एक पुत्र; (निर १, १; पि ५२)। °**कण्हा** स्त्री [°**कृष्णा**] राजा श्रेणिक की एक पत्नी. (अंत २५)। °**कूड** पुंन [°**कूट**] एक देव-विमान; (सम १२)। °**गत** पुन [°**गत**] एक देव-विमान. (सम १२)। °**जस** पु [°**यशस्**] भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेने वाला एक राजा; (ठा ८—पत्र ४३०)। °**ज्झय** पुन [°**ध्वज**] एक देव-विमान; (सम १२)। °**धवल** पु [°**धवल**] गुजरात का एक प्रसिद्ध राजा; (ती २; हम्मीर १३)। °**निहाण** न [°**निधान**] स्थान-विशेष; (महा)। °**प्पभ** न [°**प्रभ**] एक देव-विमान; (सम १२)। °**भद्द** पुं [°**भद्र**] भगवान् पार्श्व-नाथ का एक गणधर; (सम १३; कप्प)। °**मई** स्त्री [°**मती**] एक चोर-भगिनी, (महा)। °**लेस** पुंन [°**लेश्य**] एक देव-विमान; (सम १२)। °**वण्ण** पुन [°**वर्ण**] एक देव-विमान. (सम १२)। °**वरण** न [°**वरण**] प्रतिसुभट से युद्ध का स्वीकार, 'इस योद्धा से मैं लड़ूँगा' ऐसी युद्ध की माँग· (कुमा ६, ४६; ५२)। °**वरणी** स्त्री [°**वरणी**] प्रतिसुभट से प्रथम शस्त्र-प्रहार की याचना; (सिरि १०२४)। °**वलय** न [°**वलय**] सुभट का एक आभूषण, वीरत्व-सूचक कडा (कप्प; तंदु २९)। °**विराली** स्त्री [°**विराली**] वल्ली-विशेष; (पण्ण १—पत्र ३३)। °**सिंग** पुन [°**श्रृङ्ग**] एक देव-विमान; (सम १२)। °**सिट्ठ** पुन [°**सृष्ट**] एक देव-विमान; (सम १२)। °**सेण** पुं [°**सेन**] एक प्रसिद्ध वीर यादव का नाम; (णाया १, ५—पत्र १००, अंत. उत्त ६४८ टी)। °**सेणिय** पुंन [°**सैनिक, श्रेणिक**] एक देव-विमान; (सम १२)। °**वत्त** पुंन [°**वर्त**] देवविमान-विशेष· (सम १२)। °**ासण** न [°**ासन**] आसन-विशेष, नीचे पैर रख कर सिंहासन पर बैठने के जैसा अवस्थान; (णाया १, १—पत्र ७२; भग)। °**ासणिय** वि [°**ासनिक**] वीरासन से बैठने वाला; (ठा ५. १—पत्र २९९, कस, औप)।

वीरंगय पु [**वीराङ्गद**] १ भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेने वाला एक राजा, (ठा ८—पत्र ४३०)। २ एक राजकुमार. (उप १०३१ टी)।

वीरण स्त्रीन [**वीरण**] तृण-विशेष· उशीर, (अणु २१२; पाअ)।

वीरल्ल पु [**वीरल्ल**] श्येन पक्षी; (पण्ह १, १—पत्र ८; १३)।

वीरिअ पु [**वीर्य**] १ भगवान् पार्श्वनाथ का एक मुनि-संघ, २ भगवान् पार्श्वनाथ का एक गणधर, (ठा ८—पत्र ४२९)। ३ पुन. शक्ति, सामर्थ्य, (उवा; ठा ३, १ टी—पत्र १०६)। ४ अंतरंग शक्ति, आत्म-बल; (प्रासू ४६; अज्झ ९५)। ५ पराक्रम. (कम्म १, ५२)। ६ एक देव-विमान; (देवेन्द्र १३१)। ७ शरीर-स्थित एक धातु, शुक्र; ८ तेज, दीप्ति; (हे २, १०७; प्राप्र)।

वीरुणी स्त्री [**वीरुणी**] पर्व-वनस्पति विशेष; "वीरुणा (१णी) तह इक्कडे य मासे य" (पण्ण १—पत्र ३३)।

वीरुत्तरवडिंसग पुन [**वीरोत्तरावतंसक**] एक देव-विमान; (सम १२)।

वीरुहा स्त्री [**वीरुधा**] विस्तृत लता, (कुप्र ६५; १३६)।

वीलण वि [**दे**] पिच्छिल, स्निग्ध, मसृण, (दे ७, ७३)।

वीलय देखो **वीलय**; (दे ६, ९३)।

वीली स्त्री [**दे**] १ तरंग, कल्लोल; (दे ७, ७३)। २ वीथी, पंक्ति, श्रेणी; (पड्)।

वीवाह देखो **विवाह**=विवाह; "एसा एक्का धूया वल्लहिया ता इमीए वीवाह" (सुर ७, १२१; महा)।

वीवाहण न [**विवाहन**] विवाह-करण, विवाह-क्रिया; (उव ९८६ टी, सिरि १५१)।

वीवाहिग वि [**वैवाहिक**] विवाह-संबन्धी. (धर्मवि १४७)।

वीवाहिय वि [**विवाहित**] जिसकी शादी की गई हो वह; (महा)।

वीवी स्त्री [**दे**] वीचि, तरंग; (पड्)।

वीस देखो **विस्स**=विश्व; (सूत्र २, २, ६६; सनि २०)।

वीस देखो **विस्स**=विश्व; (सूअ १, ६, २२)। °**उरी** स्त्री [°**पुरी**] नगरी-विशेष, (उप ५६२)। °**सअ** वि [°**सृज्**] जगत्कर्ता; (षड्)। °**सेण** पु [°**सेन**] १ चक्रवर्ती राजा; " जोहेसु णाए जह वीससेणो " (सूअ १, ६, २२)। २ पुं. अहोरात्र का १८ वॉं मुहूर्त; (सुज्ज १०, १३)।

वीस° } स्त्री [**विंशति**] १ संख्या-विशेष, वीस, २०, **वीसइ** } २ जिनकी संख्या वीस हों वे; (कप्प, कुमा, प्राकृ ३१ ; सत्ति २१)। °**म** वि [°**म**] १ वीसवॉं, २० वॉं; (सुपा ४५२, ४५७; पउम २०, २०८, पव ४६)। २ न. लगा तार नव दिनों का उपवास; (णाया १, १—पत्र ७२)। °**हा** अ [°**धा**] वीस प्रकार से; (कम्म १, ५)।

वीसंत वि [**विश्रान्त**] विश्राम-प्राप्त, जिसने विश्रान्ति ली हो वह; "परिस्संता वीसंता नग्गोहतरुतले" (कुप्र ६२; पउम ३३, १३; दे ७, ८६, पाअ; सण; उप ६४८ टी)।

वीसंदण न [**विस्यन्दन**] दही की तर और आटे से बनता एक प्रकार का खाद्य; (पव ४; पभा ३३)।

वीसंभ देखो **विस्संभ**=वि+श्रम्भ्। वीसंभइ; (सूअनि ६१ टी)।

वीसंभ देखो **विस्संभ**=विश्रम्भ ; (उव; प्राप्र; गा ४३७)।

वीसज्जिअ देखो **विसज्जिअ**; (से ६, ७७, १५, ६३; पउम १०, ५२; धर्मवि ४६)।

वीसत्थ वि [**विश्वस्त**] विश्वास-युक्त, (प्राप्र; गा ६०८)।

वीसद्ध वि [**विश्रब्ध**] विश्वास-युक्त, (गा ३७६; अभि ११६; भवि; नाट—मृच्छ १६१)।

वीसम देखो **विस्सम**=वि+श्रम्। वीसमइ, वीसमामो; (षड्; महा; पि ४८६)। वकृ—**वीसममाण**; (पउम ३२, ४२; पि ४८६)।

वीसम देखो **विस्सम**=विश्रम; (षड्)।

वीसम देखो **वीस-म**।

वीसमिर वि [**विश्रमितृ**] विश्राम करने वाला; (सण)।

वीसर देखो **विस्सर**=वि+स्मृ। वीसरइ; (हे ४, ७५; ४२६; प्राकृ ६३; षड् ; भवि), वीसरेसि; (रंभा)।

वीसर देखो **विस्सर**=विस्वर "वीसरसर रसंतो जो सो जोणीमुहाओ निप्फिडइ" (तंदु १४)।

वीसरणालु वि [**विस्मर्तृ**] भूल जाने वाला ; (ओघ ४२५)।

वीसरिअ देखो **विस्सरिय**; (गा ३६१)।

वीसव (अप) सक [**वि+श्रमय्**] विश्राम करवाना। वीसवइ; (भवि)।

वीसस देखो **विस्सस**। वीससइ; (पि ६४; ४६६)। वकृ—**वीससंत**; (पउम ११३, ५)। कृ—**वीससणिज्ज**, **वीससणीअ**, (उत्त २६, ४२. नाट—मालवि ५३)।

वीससा अ [**विस्रसा**] स्वभाव, प्रकृति; (ठा ३, ३—पत्र १५२; भग; णाया १, १२)।

वीससिय वि [**वैस्रसिक**] स्वाभाविक; (आवम)।

वीसा देखो **वीसइ**; (हे १, २८; ६२; ठा ३, १—पत्र ११६; षड्)।

वीसा स्त्री [**विश्वा**] पृथिवी, धरती; (नाट)।

वीसाण पु [**विष्वाण**] आहार, भोजन; (हे १, ४३)।

वीसाम पु [**विश्राम**] १ विराम, उपरम; २ प्रवृत्त व्यापार का अवसान, चालू क्रिया का अंत; (हे १, ४३; से २, ३१; महा)।

वीसामण देखो **विस्सामण**; (कुप्र ३१०)।

वीसामणा देखो **विस्सामणा**; (कुप्र ३१०)।

वीसाय देखो **विसाय**=वि+स्वादय्। कृ—**विसायणिज्ज**; (पराण १७—पत्र ५३२)।

वीसार देखो **विस्सार**=वि+स्मृ। वीसारेइ; (धर्मवि ५३१)।

वीसारिअ वि [**विस्मारित**] भुलवाया हुआ; (कुमा)।

वीसाल सक [**मिश्रय्**] मिलाना, मिलावट करना। वीसालइ; (हे ४, २८)।

वीसालिअ वि [**मिश्रित**] मिलाया हुआ; (कुमा)।

वीसावँ (अप) देखो **वीसाम**; (कुमा)।

वीसास देखो **विस्सास**; (प्राप्र; कुमा)।

वीसिया स्त्री [**विंशिका**] वीस संख्या वाला; (वव १)।

वीसु न [**दे**] पृथक्, पृथग्, जुदा; (दे ७, ७३)।

वीसुं अ [**विष्वक्**] १ समन्तात्, सब ओर से; २ समस्त-पन, सामस्त्य; (हे १, २४; ४३; ५२; षड् ; कुमा; दे ७, ७३ टी)।

वीसुंभ देखो **वीसंभ**=वि+श्रम्भ्। वीसुंभेज्जा; (ठा ५, २—पत्र ३०८; कस)।

वीसुंभ अक [**दे**] पृथग् होना, जुदा होना। वीसुंभेज्जा; (ठा ५, २—पत्र ३०८; कस)।

वीसुंभण न [**दे**] पृथग्भाव, अलग होना; (ठा ५, २ टी—पत्र ३१०)

वीसुंभण न [**विश्रम्भण**] विश्वास; (ठा ५, २ टी—पत्र ३१०)।

वीसुय देखो **विस्सुअ**; (पराह १, ४—पत्र ६८)।

वीसेढि } देखो **विसेढि**; (भास १०; णंदि १८४)।
वीसेणि }

वीहि पुंन [**व्रीहि**] धान्य-विशेष; "सालीणि वा वीहीणि वा कोद्दवाणि वा कगूणि वा" (सूत्र २, २, ११; कस)।

वीहि } स्त्री [**वीथि, °का, °थी**] १ मार्ग, रास्ता;
वीहिया } (आचा; सूत्र १, २, १, २१; प्रयौ १००;
वीही } गउड ११८८)। २ श्रेणि, पङ्क्ति, (स १४)। ३ क्षेत्र-भाग, (ठा ६—पत्र ४६८)। ४ बाजार; (उप २८; महा)।

वुअ वि [**दे**] १ बुना हुआ; २ बुनवाया हुआ; "जत्र तयट्ठा कीयं नेव वुयं जं न गहियमन्नेसिं" (पव १२५)। देखो **वूय**।

वुअ } वि [**वृत**] १ प्रार्थित; २ प्रार्थना आदि से नियुक्त;
वुइय } "वुओ" (सत्ति ४)। ३ वेष्टित; 'कुकम्मवुइया" (सुपा ६३)।

वुइय वि [**उक्त**] कथित; (उत्त १८, २६)।

वुंज(?) सक [**उद्+नमय्**] ऊँचा करना। वुंजइ; (धात्वा १५४)।

वुंताकी स्त्री [**वृन्ताकी**] बैंगन का गाछ; (दे ७, ६३)।

वुंद देखो **वंद**=**वृन्द**; (गा ५५६; हे १, १३१)।

वुंदारय देखो **वंदारय**; (हे १, १३२; कुमा; पड्)।

वुंदावण देखो **विंदावण**; (हे १, १३१; प्राप्र; संक्षि ४; कुमा)।

वुंद्र देखो **वंद्र**; (हे १, ५३, कुमा १, ३८)।

वुक्क देखो **बुक्क**=दे; (सरा)।

वुक्कंत वि [**व्युत्क्रान्त**] १ अतिक्रान्त, व्यतीत, गुजरा हुआ; "बालीणं वुक्कंतं अइच्छिअं वोलिअं अइक्कंतं" (पाअ), "वुक्कंतो बहुकालो तुह पयसेव कुणंतस्स" (सुपा ५६१)। २ विध्वस्त, विनष्ट; (राज)। ३ निष्क्रान्त, बाहर निकला हुआ; (निचू १६)। देखो **वोक्कंत**।

वुक्कंति स्त्री [**व्युत्क्रान्ति**] उत्पत्ति; (राज)।

वुक्कम पु [**व्युत्क्रम**] १ वृद्धि, बढ़ाव; (सूत्र २, ३, १)। २ उत्पत्ति; (सूत्र २, ३, १; २, ३, १७)।

वुक्कस सक (**व्युत्+कृष्**) पीछे खींचना, वापिस लौटाना। वुक्कसाहि; (आचा २, ३, १, ६)।

वुक्कार देखो **बुक्कार**; (सरा)।

वुक्कार सक [**दे. बूत्कारय्**] गर्जन करना। वुक्कारेंति; (राय १०१)।

वुक्कारिय न [**दे. बूत्कारित**] गर्जना, (स ५४८)।

वुग्गह पु [**व्युद्ग्रह**] १ कलह, झगड़ा, विग्रह, लड़ाई; (ठा ५, १—पत्र ३००; वव १, पव २६८)। २ धाड़, डाका; (उप पृ २४५)। ३ बहकाव; (सबोध ५२)। ४ मिथ्याभिनिवेश, कदाग्रह; (राज)।

वुग्गहअ वि [**व्युद्ग्राहक**] कलह-कारक, "नय वुग्गहिअं कहं कहिज्जा" (दस १०, १०)।

वुग्गहिअ वि [**व्युद्ग्रहिक**] कलह-सबन्धी, (दस १०, १०)।

वुग्गाह सक [**व्युद्+ग्राहय्**] बहकाना, भ्रान्त-चित्त करना। वुग्गाहेमो; (महा)। वकृ—**वुग्गाहेमाण**; (णाया १, १२—पत्र १७४; औप)।

वुग्गाहणा स्त्री [**व्युद्ग्राहणा**] बहकाव; (ओघभा २५)।

वुग्गाहिअ वि [**व्युद्ग्राहित**] बहकाया हुआ, भ्रान्त-चित्त किया हुआ; (कस; चेइय ११७; सिरि १०८१)।

वुच्च° देखो **वय**=वच्।

वुच्चमाण वि [**उच्यमान**] जो कहा जाता हो वह, (सूत्र १, ६, ३१; भग; उप ५३० टी)।

वुच्चा अ [**उक्त्वा**] कह कर; (सूत्र २, २, ८१; पि ५८७)।

वुच्छ देखो **वच्छ**=वृक्ष; (नाट—मृच्छ १५४)।

वुच्छ° देखो **वोच्छ°**; (कम्म १, १)।

वुच्छ° देखो **वोच्छिंद**।

वुच्छिण्ण देखो **वुच्छिन्न**; (राज)।

वुच्छित्ति देखो **वोच्छित्ति**; (विसे २४०५)।

वुच्छिन्न वि [**व्युच्छिन्न, व्यवच्छिन्न**] १ अपगत, हटा हुआ; २ विनष्ट; (उव)। ३ न. लगा तार चौदह दिनों का उपवास, (संबोध ५८)।

वुच्छेअ देखो **वोच्छेअ**; (पव २७३; कम्म २, २२; सुपा २५४)।

वुच्छेयण देखो **वोच्छेयण**; (ठा ६—पत्र ३५८)।

वुज्ज अक [**त्रस्**] डरना। वुज्जइ; (प्राप्र)। देखो **वोज्ज**।

वुज्जण न [**दे**] स्थगन, आच्छादन, ढकना; (धर्मसं

[illegible])।

वुज्झंत वि [उह्यमान] पानी के वेग से खिंचा जाता, बह [illegible]; (पउम १०२, ३४). "गिरिनिज्झरणोदगेहिं [illegible]); देखो वह=[illegible]।

वुज्झमाण देखो वुज्झण; ([illegible] १०८१)।

वुज्झमाण देखो वुज्झंत; (पउम ८३, ४)।

वुञ्ज ([illegible]) देखो वञ्च [illegible]। [illegible] (हे ४. ३६० ; [illegible])। संकृ—वुञ्जे प्पि, वुञ्जे प्पिणु; (हे ४. ३९२)।

वुट्ठ [illegible] [व्युत् + स्था] उठना, खड़ा होना। वुट्ठाण; (सि २३७)।

वुट्ठ वि [वृष्ट] १ बरसा हुआ; (हे १. १३७; विपा २, १—[illegible] १०८; कुमा १. ८७)। २ न. वृष्टि; (दस ८. ६)।

वुट्ठि देखो विट्ठि=वृष्टि; (हे १. १३७; कुमा)। °काय पु [°काय] बरसता जल-समूह; (भग १८. ७—पत्र ३३४; [illegible])।

वुट्ठिय वि [व्युत्थित] जो उठ कर खड़ा हुआ हो वह; ([illegible])।

वुड देखो बुड=ब्रुड; "[illegible] कयजलिवुडो" (पउम ९३. [illegible])।

वुड्ढ [illegible] [वृध्] बढ़ना, (संक्षि ३४)। वुड्ढति; (भग ५, ८)।

वुड्ढ [illegible] [वर्धय्] बढ़ाना। वकृ—वुड्ढंत. ([illegible])।

वुड्ढ वि [वृद्ध] १ [illegible] वाला, बड़ा; (औप; [illegible] ; सुपा [illegible], सम्मत्त १७८ प्राप्र ११६; [illegible])। २ [illegible], (कुमा)। ३ वृद्धि-प्राप्त. ४ [illegible], कुशल, निपुण; ५ पण्डित, [illegible]; (हे १. [illegible])। ६ निश्चल, शान्त, निर्विकार; ([illegible])। ७ [illegible], [illegible]. (गाया १. १५—[illegible])। ८ [illegible] जैन मुनि का नाम; (कप्प)। °त्त न [°त्व] [illegible], [illegible]. (सुपा ३६०; [illegible])। °वाइ पु [°वादिन्] [illegible] जैनाचार्य जो [illegible] (सम्मत्त [illegible])। °वाय पु [°वाद] [illegible], [illegible], जनश्रुति; ([illegible])। °सावग पु [°श्रावक] ब्राह्मण; (गाया १. १५ [illegible])। °ाणुग वि [°ानुग] [illegible]; ([illegible])।

वुड्ढ वि [दे] [illegible]; ([illegible])।

वुड्ढि स्त्री [वृद्धि] १ [illegible], [illegible]; उवा; कुमा; सण)। २ अभ्युदय, उन्नति; ३ समृद्धि, संपत्ति; ४ व्याकरण-प्रसिद्ध ऐकार आदि वर्णों की एक संज्ञा; (सुपा १०३; हे १, १३१)। ५ समूह; ६ कलान्तर, सूद; ७ ओषधि-विशेष; ८ पुं. गन्धद्रव्य-विशेष; (हे १, १३१)। °कर वि [°कर] वृद्धि-कर्ता; (सुर १, १२६; ३ २४)। °धम्मय वि [°धर्मक] बढ़ने वाला, वर्धन-शील; (आचा)। °म वि [°मत्] वृद्धि वाला; (विचार ४९७)।

वुणण न [दे] बुनना; (सम्मत्त १७३)।

वुणिय वि [दे] बुना हुआ; "अ-वुणिया खट्टा" (कुप्र २२६)।

वुण्ण वि [दे] १ भीत, त्रस्त; (दे ७. ९४. विपा १, ७—पत्र ७४)। २ उद्विग्न. (दे ७. ९४)।

वुत्त वि [उक्त] कथित; (उवा; अनु ३; महा)।

वुत्त वि [उप्त] बोया हुआ; (उव)।

वुत्त न [वृत्त] छन्द, कविता, पद्य; (पिंग)। देखो वट्ट=वृत्त।

वुत्त देखो पुत्त; (प्रयौ २२)।

वुत्तंत पुं [वृत्तान्त] खबर, समाचार, हकीकत, बात; (स्वप्न १५३; प्राप्र; हे १, १३१; स ३५)।

वुत्ति देखो वत्ति=वृत्ति; "जायामायावुत्तिण्णा" (सूअ २. १, ५०; प्राकृ ८)।

वुत्थ वि [उषित] बसा हुआ, रहा हुआ; (पाअ; गाया १. ८—पत्र १४८; उव; धर्म ४३; उप पृ १२७; सुख २, १७. से ११. ८०; कुप्र १८७)।

वुद देखो वुअ=वृत. (प्राकृ ८)।

वुदास पु [व्युदास] निरास; (विसे ३४७५)।

वुदि देखो वइ=वृति; (प्राकृ ८)।

वुद्ध देखो वुड्ढ=वृद्ध; (पड्)।

वुद्धि देखो वुड्ढि; (ठा १०—पत्र ५२५; सम ११; संक्षि ४)।

वुन्न देखो वुण्ण; (सुर ६, १२४; सुपा २५०; गाभि १०; भवि; कुमा; हे ४. ४२१)।

वुप्पंत वि [उप्यमान] बोया जाता; "पंक्लट्ट य मंगलसएहिं वप्पिणं करिसगेहिं वुप्पंतं" (श्राक २५, पि ३३७)।

वुप्पाय वि [व्युत्+पादय्] व्युत्पन्न करना हुशियार करना। वकृ—वुप्पाएमाण; (गाया १. १२—पत्र १७४; औप)।

वुप्फ न [दे] शेखर, शिरः-स्थित; (दे ७, ७४)।

वुब्भ° देखो **वह**=वह्।
वुब्भमाण देखो **वुज्झमाण**; (कुप्र २२३)।
°वुर देखो **पुर**; (अच्चु १६)।
°वुरिस देखो **पुरिस**=पुरुष, (पउम ६५, ४५)।
वुल्लाह पु [**दे**] अश्व की उत्तम जाति; (सम्मत्त २१६)।
वुसह देखो **वसभ**; (चारु ७; गा ४६०, ८२०; नाट—मृच्छ १०)।
वुसि स्त्री [**वृषि**] मुनि का आसन। **°राइ, °राइअ** वि [**°राजिन्**] सयमी, जितेन्द्रिय, त्यागी, साधु; (निचू १६)। देखो **वुसि, वुसी**।
वुसि वि [**वृषिन्**] सविग्न, साधु, संयमी, मुनि; "वुसि संविग्गो भणिओ" (निचू १६)।
वुसिम वि [**वश्य**] वश मे आने वाला, अधीन होने वाला; "निस्सारियं वुसिमं मन्नमाणा" (निचू १६)।
वुसी स्त्री [**वृषी**] मुनि का आसन। **°म** वि [**°मत्**] सयमी, साधु, मुनि; "एस धम्मे वुसीमओ" (सूअ १, ८, १९; १, ११, १५; १, १५, ४; उत्त ५, १८, सुख ५, १८)। देखो **वुसि**।
वुस्सग्ग देखो **विओसग्ग**; "सचित्ताणं पुप्फाइयाण दव्वाण कुणइ वुस्सग्ग" (उप १४२; संबोध ५१; ५२)।
वूढ देखो **वुड्ढ**=वृद्ध; (सुपा ५१०; ५२०)।
वूढ वि [**व्यूढ**] १ धारण किया हुआ; "सीआपरिमट्ठेण व वूढो तेणावि णिरंतरं रोमंचो" (से १, ४२; धण २०; विचार २२६; णंदि ५२)। २ ढोया हुआ; "मुणि-वूढो सीलभरो विसयपसत्ता तरंति नो वोढुं" (प्रवि १७; स १६२)। ३ वहा हुआ, वेग में खिंचा गया; (भत्त १२२)। ४ उपचित, पुष्ट; (से ६, ५०)। ५ निःसृत, निकला हुआ;

"जम्मुहमहद्दहाओ दुवालसंगी महानई वूढा।
ते गणहरकुलगिरिणो सव्वे वंदामि भावेण"
(चेइय ४)।

वूणक पुंन [**दे**] बालक, बच्चा; (राज)।
वूय वि [**दे**] बुना हुआ; "जं न तयट्ठा वूयं नय किणियं नेय गहियमन्नेहिं" (सुपा ६४३)। देखो **वुअ**=(दे)।
वूह पुन [**व्यूह**] १ युद्ध के लिए की जाती सैन्य की रचना-विशेष; (पगह १, ३—पत्र ४४; औप; स ६०३, कुमा)। २ समूह; (सम १०६; कुप्र ५६)।
वे देखो **वइ**=वै; (प्राकृ ८०; राज)।
वे अक [**वि+इ**] नष्ट होना। वेइ; (विसे १७९४)।
वे } सक [**व्ये**] संवरण करना। वेइ, वेअइ, वेअए;
वेअ } (षड्)।
वेअ सक [**वेदय्**] १ अनुभव करना, भोगना। २ जानना। वेअइ, वेएइ, वेएंति (सम्यक्त्वो ६, भग)। वकृ—**वेअंत, वेएमाण, वेयमाण**; (सम्यक्त्वो ५; पउम ७५, ४५; सुपा ७४३; णाया १, १—पत्र ६६, औप, पंच ५, १३२; सुपा ३६६)। कवकृ—**वेइज्जमाण**, (भग, पगह १, ३—पत्र ५५)। संकृ—**वेयइत्ता**; (सूअ १, ६, २७)। कृ—**वेय, वेअव्व, वेइयव्व**; (ठा २,१—पत्र ४७ रयण ७४, सुख ६, १; सुपा ६१४, महा)। देखो **वेअ**=(वेद्य), **वेअणिज्ज, वेअणिय**।
वेअ अक [**वि+एज्**] विशेष काँपना। वेयइ (णंदि ४२ टी)। वकृ—**वेयंत**; (ठा ७—पत्र ३८३)।
वेअ अक [**वेप्**] काँपना। वकृ—**वेअमाण**; (गा ३१२ अ)।
वेअ पु [**वेद**] १ शास्त्र-विशेष, ऋग्वेद आदि ग्रन्थ; (विपा १, ५ टी—पत्र ६०, पाअ; उव)। २ कर्म-विशेष, मोहनीय कर्म का एक भेद, जिसके उदय से मैथुन की इच्छा होती है; (कम्म १, २२, उप पृ ३५३)। ३ आचाराग आदि जैन ग्रन्थ; (आचा १,३,१,१)। ४ विज्ञ, जानकार; (भग)। **°व** वि [**°वत्**] वेदों का जानकार; (आचा १,३,१,२)। **°वि, °विउ** वि [**°विद्**] वही अर्थ; (पि ४१३; श्रा २३)। **°वत्त** न [**°व्यक्त**] चैत्य-विशेष; (आचा २, १५, ३५)। **°वत्त** न [**°वर्त**] देखो **°वत्त**; (आचा २, १५, ५)।
वेअ न [**वेद्य**] कर्म-विशेष, सुख तथा दुःख का कारण-भूत कर्म; (कम्म १,३)।
वेअ पुं [**वेग**] शीघ्र गति, दौड़, तेजी, (पाअ; से ५,४३ कुमा; महा; पउम ९३, ३९)। २ प्रवाह; ३ रेतस्; ४ मूत्र आदि निःसारण-यन्त्र; ५ संस्कार-विशेष (प्राकृ ४१)। देखो **वेग**।
वेअंत पुं [**वेदान्त**] दर्शन-विशेष, उपनिषद् का विचार करने वाला दर्शन, (अच्चु १)।
वेअग वि [**वेदक**] १ भोगने वाला, अनुभव करने वाला; (सम्यक्त्वो १२; संबोध ३३, श्रावक ३०६)। २ न. सम्यक्त्व का एक भेद; (कम्म ३, १९)। ३ वि. सम्यक्त्व-विशेष वाला जीव; (कम्म ४, १३; २२)। **°छहिय** वि

[छिन्नवेदक] जिसका पुरुष-चिह्न आदि काटा गया हो वह; (सूअ २, २, ६३)।

वेअच्छ न [**वैकक्ष**] १ उत्तरासंग, छाती में यज्ञोपवीत की तरह पहना जाता वस्त्र, माला आदि; २ बन्ध-विशेष, मर्कट-बन्ध; ३ कन्धे के नीचे लटकना; (णाया १, ८—पत्र १३३)।

वेअड सक [**खच्**] जड़ना। वेअडइ; (हे ४, ८९; षड्)।

वेअडिअ वि [**खचित**] जडा हुआ, जड़ाऊ; (कुमा; पाअ; भवि)।

वेअडिअ वि [**दे**] प्रत्युप्त, फिर से बोया हुआ; (दे ७, ७७)।

वेअडिअ पु [**दे. वैकटिक**] मोती वेधने वाला शिल्पी, जौहरी; (कप्पू)।

वेअड्डि देखो **विअड्डि**; (औप)।

वेअड्ड न [**दे**] भल्लातक, भिलावाँ; (दे ७, ६६)।

वेअड्ड पु [**वैताढ्य**] पर्वत-विशेष; (सुर ६, १७, सुपा ६२९; महा, भवि)।

वेअड्ड न [**वैदग्ध्य**] विदग्धता, विचक्षणता, (सुपा ६२९)।

वेअण न [**वेतन**] मजूरी का मूल्य, तनखाह, (पाअ; विपा १, ३—पत्र ४२; उप पृ ३६८)।

वेअण न [**वेपन**] १ कम्प, काँपना; (चेइय ४३५; नाट—उत्तर ६१)। २ वि. काँपने वाला; (चेइय ४३५)।

वेअण न [**वेदन**] अनुभव, भोग, (आचा; कम्म २, १३)।

वेअणा देखो **विअणा**; (उवा, हे १, १४६, प्रामू १०४; १३३; १७४)।

वेअणिज्ज } वि [**वेदनीय**] १ भोगने योग्य; २ न. **वेअणिय** } कर्म-विशेष, सुख-दुःख आदि का कारण-भूत कर्म, (प्राप्त, ठा २, ४, कप्प; कम्म १, १२)।

वेअय देखो **वेअग**; (विसे ५२८)।

वेअरणी स्त्री [**वैतरणी**] १ नरक-नदी, (कुप्र ४३२; उव)। २ परमाधार्मिक देवों की एक जाति, जो वैतरणी की विकुर्वणा करके उसमें नरक-जीवों को डालता है; (सम २९)। ३ विद्या-विशेष; (आवम)।

वेअल्ल देखो **वेइल्ल**=विचकिल; "वेयल्लफुल्लनियर-च्छलेण हसइव्व गिम्हरिऊ" (धर्मवि २०)।

वेअल्ल वि [**दे**] १ मृदु, कोमल; (दे ७, ७५)। २ न. असामर्थ्य; (दे ७, ७५; पाअ)।

वेअल्ल न [**वैकल्य**] विकलता, व्याकुलता; (गउड)।

वेअव्व देखो **वेअ**=वेदय्।

वेअस पु [**वेतस**] वृक्ष-विशेष, बेत का पेड़; (हे १, २०७; षड्; गा ६४५)।

वेआगरण वि [**वैयाकरण**] व्याकरण-संबन्धी, संदेह-निराकरण से सबन्ध रखने वाला; (पंचभा)।

वेआर सक [**दे**] ठगना, प्रतारण करना। वेयारइ; (भवि)। कर्म—वेआरिज्जसि; (गा ९०९)। हेकृ—**वेआरिउं**; (गा २८६; वज्जा ११४)।

वेआरणिय वि [**वैदारणिक**] विदारण-संबन्धी, विदारण से उत्पन्न; (ठा २, १—पत्र ४०)।

वेआरणिय वि [**दे**] प्रतारण-संबन्धी, ठगने से उत्पन्न; (ठा २, १—पत्र ४०)।

वेआरणिय वि [**वैचारणिक**] विचार-सवन्धी; (ठा २, १—पत्र ४०)।

वेआरिअ वि [**दे**] १ प्रतारित, ठगा हुआ, (दे ७, ९५; पउम १४, ४६; सुपा १५२)। २ पु. केश, बाल; (दे ७, ९५)।

वेआल पु [**वेताल**] १ भूत-विशेष, विकृत पिशाच, प्रेत; (पण्ह १, ३—पत्र ४६; गउड; महा; पिंग)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)।

वेआल वि [**दे**] १ अन्धा; २ पुं. अंधकार; (दे ७, ९५)।

वेआलग वि [**विदारक**] विदारण-कर्ता; (सूअनि ३६)।

वेआलग न [**विदारण**] फाड़ना, चीरना; (सूअनि ३६)।

वेआलि पु [**वैतालिन्**] बन्दी, स्तुति-पाठक; (उप ७२८ टी)।

वेआलिअ देखो **वइआलिअ**; (पाअ; दे १, १५२; चेइय ७४६)।

वेआलिय वि [**वैक्रिय**] विक्रिया से उत्पन्न; (सूअ १, ५, २, १७)।

वेआलिय वि [**वैकालिक**] विकाल-संवन्धी, अपरान्ह में बना हुआ; (दसनि १, ६; १५)।

वेआलिय न [**विदारक**] विदारण-क्रिया, (सूअनि ३६)।

वेआलिय देखो **वइआलीअ**; (सूअनि ३८)।

वेआलिया स्त्री [**वैतालिकी**] वीणा-विशेष; (जीव ३)।

वेआली स्त्री [**वैताली**] १ विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से

अचेतन काष्ठ भी उठ खड़ा होता है—चेतन की तरह क्रिया करता है; (सूअ २, २, २७)। २ नगरी-विशेष; (णाया १, १६—पत्र २१७)।

वेइ स्त्री [**वेदि**] परिष्कृत भूमि-विशेष, चौतरा; (कुमा; महा)।

वेइ वि [**वेदिन्**] १ जानने वाला; (चेइय ११६; गउड)। २ अनुभव करने वाला; (पंच ५, ११६)।

वेइअ वि [**वेदित**] १ अनुभूत; (भग)। २ ज्ञात, जाना हुआ; (दस ४, १; पउम ६६, ३)।

वेइअ देखो **वेविअ**=वेपित; (गा ३६२ अ)।

वेइअ वि [**वैदिक**] १ वेदाश्रित, वेद-संबन्धी; (ठा ३, ३—पत्र १५१)। २ वेदों का जानकार; (दसनि ४, ३५)।

वेइअ वि [**वेगित**] वेग वाला, वेग-युक्त; (णाया १, १—पत्र २६)।

वेइअ वि [**व्येजित**] १ कम्पित, काँपा हुआ; (भग १, १ टी—पत्र १८)। २ कँपाया हुआ; (राय ७४)।

वेइआ स्त्री [**दे**] पनीहारी, पानी ढोने वाली स्त्री; (दे ७, ७६)।

वेइआ स्त्री [**वेदिका**] १ परिष्कृत भूमि-विशेष, चौतरा; (भग; कुमा; महा)। २ अंगुलि-मुद्रा, अंगूठी; (दे ७, ७६ टी)। ३ वर्जनीय प्रतिलेखन का एक भेद, प्रत्युपेक्षणा का एक दोष; (उत्त २६, २६; सुख २६, २६; ओघभा १६३)।

वेइज्ज अक [**वि + एज्**] काँपना। वकृ—**वेइज्जमाण**; (भग १, १ टी—पत्र १८)।

वेइज्जमाण देखो **वेअ**=वेदय्।

वेइद्ध वि [**दे**] १ ऊँचा किया हुआ; २ विसंस्थुल; ३ आविद्ध; ४ शिथिल; (दे ७, ६५)।

वेइल्ल देखो **विअइल्ल**; (हे १, १६६; २, ६८; कुमा)।

वेउंठ देखो **वेकुंठ**; (गउड)।

वेउट्टिया स्त्री [**दे**] पुनः पुनः, फिर फिर; (कप्प)।

वेउव्व देखो **विउव्व**=वि+कृ, कुर्व्। संकृ—**वेउव्विऊण**; (सुपा ४२)।

वेउव्व वि [**वैक्रिय**] १ विकृत, विकार-प्राप्त; (विसे २५७६ टी)। २ देखो **विउव्व**=वैक्रिय, (कम्म ३, १६)। °**लद्धि** स्त्री [°**लब्धि**] शक्ति-विशेष, वैक्रिय शरीर उत्पन्न करने का सामर्थ्य; (पउम ७०, २६)।

वेउव्वि देखो **विउव्वि**; (पण्ह २, १—पत्र ६६; कप्प; ओप; ओघभा ५७)।

वेउव्विअ देखो **विउव्विअ**=विकृत, विकुर्वित; "वेउव्वियं असुइजंबालं अइचिक्कणं फासेण" (स ७६२; सुपा ४७)।

वेउव्विअ वि [**वैक्रिय, वैक्रियिक, वैकुर्विक**] १ शरीर-विशेष, अनेक स्वरूपों और क्रियाओं को करने में समर्थ शरीर; (सम १४१; भग; दं ८)। २ वैक्रिय शरीर बनाने की शक्ति वाला; (सम १०३; पव—गाथा ६)। ३ विकुर्वणा से बनाया हुआ; "विंझगिरिसमीवगयं एयं वेउव्वियं च मह भवणं" (सुपा १७८)। ४ वैक्रिय शरीर वाला; (विसे ३७५)। ५ वैक्रिय शरीर से संबन्ध रखने वाला; (भग)। ६ विभूषित; (भग १८, ५—पत्र ७४६)। °**लद्धिअ** वि [°**लब्धिक**] वैक्रिय शरीर उत्पन्न करने की शक्ति वाला; (भग)। °**समुग्घाय** पुं [°**समुद्घात**] वैक्रिय शरीर बनाने के लिए आत्म-प्रदेशों को बाहर निकालना; (अंत)।

वेउव्विया स्त्री [**दे**] पुनः पुनः, फिर फिर; (कप्प)।

वेंकड पुं [**वेङ्कट**] दक्षिण देश में स्थित एक पर्वत; (अच्चु १)। °**णाह** पु [°**नाथ**] विष्णु की वेङ्कटाद्रि पर स्थित मूर्ति; (अच्चु १)।

वेंगी स्त्री [**दे**] वृति वाली, बाड़ वाली; (दे ७, ४३)।

वेंजण देखो **वंजण**; (प्राकृ ३१)।

वेंट देखो **विंट**=वृन्त; (गा ३५६; हे १, १३६; २, ३१; कुमा; प्राकृ ४)।

वेंटल देखो **विंटल**; (ओघ ४२४)।

वेंटली देखो **विंटलिआ**; "तओ तेण तस्स (करिणो) पुरओ वेंटलीकाऊण पक्खित्तमुत्तरीयं" (महा)।

वेंटिआ देखो **विंटिया**; (ओघ २०३; ओघभा ७६; उप १४२ टी; वव १)।

वेंड पुं [**वेतण्ड**] हाथी, हस्ती; (प्राकृ ३०)। देखो **वेयंड**।

वेंढसुरा स्त्री [**दे**] कलुष मदिरा; (दे ७, ७८)।

वेंढि पु [**दे**] पशु; (दे ७, ७४)।

वेंढिअ वि [**दे**] वेष्टित, लपेटा हुआ, (दे ७, ७६; महा)।

वेंभल देखो **विंभल**, (पण्ह १, ३—पत्र ४५; पउम ५, १६२)।

वेकक्ख देखो **वेअच्छ** "वेकक्खउत्तरीआ" (कुमा)।

वेकच्छिया } देखो **वेगच्छिया**; (ओघभा ३१८; ओघ ६७७)।
वेकच्छी }

वेकिल्लिअ न [**दे**] रोमन्थ, चबी हुई चीज को फिर से

नयाना; (दे ७, ८२)।

वेकुंठ पुं [**वैकुण्ठ**] १ विष्णु, नारायण; २ इन्द्र, देवाधीश; ३ गरुड पक्षी; ४ अर्जक वृक्ष, सफेद बर्बरी का गाछ; ५ लोक-विशेष, विष्णु का धाम; (हे १, १९९)। ६ पुंन. मथुरा का एक वैष्णव तीर्थ; (ती ७)।

वेग देखो **वेअ**=वेग; (उवा; कप्प; कुमा)। °**वई** स्त्री [°**वती**] एक नदी का नाम; (ती १५)। °**वंत** वि [°**वत्**] वेग वाला; (सुर २, १६७)।

वेगच्छ देखो **वेअच्छ**; (उवा)।

वेगच्छिया } स्त्री [**वैकक्षिका**, °**क्षी**] कक्षा के पास **वेगच्छी** } पहना जाता वस्त्र, उत्तरासंग; (पव ६२), "कयतिलओ वेगच्छिं आणाववहारपसारुवं" (संबोध ६)।

वेगड स्त्रीन [**दे**] पोत-विशेष, एक तरह का जहाज; "नउगट्ठी वेगडाणं" (सिरि ३८२)।

वेगर पु [**दे**] द्राक्षा, लौंग आदि से मिश्रित चीनी आदि; (उर ७, ६)।

वेगुन देखो **वइगुण्ण**; (धर्मसं ८८४; सुपा २९०)।

वेग्ग देखो **विअग्ग**; (प्राकृ ३०)।

वेग्ग देखो **वेग**; (भवि)।

वेग्गल वि [**दे**] दूर-वर्ती; गुजराती में 'वेगळुं'। (हे ४, ३७०)।

वेचित्त देखो **वइचित्त**; (भाम ३०; अज्म ४६)।

वेच्च देखो **विच्च**=वि + अय्। वेचइ; (हे ४, ४१९)।

वेच्छ देखो **विअ**=विद्।

वेच्छा देखो **वेगच्छिया**। °**सुत्त** न [°**सूत्र**] उपवीत की तरह पहनी जाती साँकली; (भग ९, ३३ टी—पत्र ४७७; राय)।

वेजयंत पुंन [**वैजयन्त**] १ एक अनुत्तर देव-विमान; (सम ५९; औप; अनु)। २-७ जंबूद्वीप, लवण समुद्र, धातकी खण्ड, कालोद समुद्र, पुष्करवर द्वीप तथा पुष्करोद समुद्र का दक्षिण द्वार; (ठा ४, २—पत्र २२५; जीव ३, २—पत्र २६०; ठा ४, २—पत्र २२६; जीव ३, २—पत्र ३२७; ३२९; ३३१; ३४७)। ८-१३ पुं. जंबूद्वीप, लवण समुद्र आदि के दक्षिण द्वारों के अधिष्ठाता देव; (ठा ४, २—पत्र २२५; जीव ३, २—पत्र २६०; ठा ४, २—पत्र २२६; जीव ३, २—पत्र ३२७; ३२९; ३३१; ३४७)। १४ एक अनुत्तर देव-विमान का निवासी देव; (सम ५९)। १५ जंबू-मन्दर के उत्तर रुचक पर्वत का एक शिखर; "विजए य वि(? वे) जयंते" (ठा ८—पत्र ४३६)। १६ वि. प्रधान, श्रेष्ठ; (सूअ १, ६, २०)।

वेजयंती स्त्री [**वैजयन्ती**] १ ध्वजा, पताका; (सम १३७; सूअ १, ६, १०; सुर १, ७०; कुमा)। २ षष्ठ बलदेव की माता का नाम; (सम १५२)। ३ अंगारक आदि महाग्रहों की एक २ अग्रमहिषी का नाम; (ठा ४, १—पत्र २०४)। ४ पूर्व रुचक पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८—पत्र ४३६)। ५ विजय-विशेष की राजधानी; (ठा २, ३—पत्र ८०)। ६ एक विद्याधर-नगरी; (सुर ५, २०४)। ७ रामचन्द्रजी की एक सभा; (पउम ८०, ३)। ८ भगवान् पद्मप्रभ की दीक्षा-शिबिका; (सम १५१)। ९ उत्तर अंजनगिरि की दक्षिण दिशा में स्थित एक पुष्करिणी; (ठा ४, २—पत्र २३०)। १० पक्ष की आठवीं रात्रि का नाम; "विजया य विजयंता (? वेजयंती)" (सुज्ज १०, १४)। ११ भगवान कुन्थुनाथ की दीक्षा-शिबिका; (विचार १२९)

वेज्ज वि [**वेद्य**] भोगने योग्य, अनुभव करने योग्य; (संबोध ३३)।

वेज्ज पुं [**वैद्य**] १ चिकित्सक, हकीम; (गा २३७; उव)। २ वृक्ष-विशेष; ३ वि. पण्डित, विद्वान्; (हे १, १४८; २, २४)। °**सत्थ** न [°**शास्त्र**] चिकित्सा-शास्त्र; (स १७)।

वेज्जग } न [**वैद्यक**] १ चिकित्सा-शास्त्र; (ओघ ६२२ टी; **वेज्जय** } स ७११)। २ वैद्य-संबन्धी क्रिया, वैद्य-कर्म; (अणु २३४; कुप्र १८१)।

वेज्झ वि [**वेध्य**] बींधने योग्य; (नाट—साहित्य १५८)।

वेट्ठण देखो **वेढण**; (नाट—मालती ११९)।

वेट्ठणग पु [**वेष्टनक**] १ सिर पर बाँधी जाती एक तरह की पगड़ी; २ कान का एक आभूषण; (राज)।

वेट्ठया देखो **विट्ठा**; (सुर १६, १७५)।

वेट्ठि देखो **विट्ठि**; "रायवेट्ठिं व मन्नंता" (उत्त २७, १३; प्राकृ ५)।

वेट्ठिद (शौ) देखो **वेढिअ**; (नाट—मृच्छ ९२)।

वेड [**दे**] देखो **वेड**; (दे ६, ९५; कुमा)।

वेडइअ पुं [**दे**] वाणिजक, व्यापारी; (दे ७, ७८)।

वेडंबग देखो **विडंबग**; "जह वेडंबगलिंगे" (संबोध १२)।

वेडस पुं [**वेतस**] वृक्ष-विशेष, बेत का गाछ; (पाअ; सम १५२; कप्प)।

वेडिअ पुं [**दे**] मणिकार, जौहरी; (दे ७, ७७)।

वेडिकिल्ल वि [**दे**] संकट, सकड़ा, कमचौड़ा; (दे ७, ७८)।

वेडिस देखो **वेडस**; (प्राप्र; हे १, ४६; २०७; कुमा; गा ७६०)।

वेडुज्ज } देखो **वेरुलिअ**; (हे २, १३३; पाअ; नाट—
वेडुरिअ } मृच्छ १३६)।

वेडुल्ल वि [**दे**] गर्वित, अभिमानी; (दे ७, ४१)।

वेड्ड देखो **वेढ**=वेष्ट्। वेड्ढइ; (प्राप्र)।

वेड्डय पुं [**वेष्टक**] छन्द-विशेष; (अजि ६)।

वेढ सक [**वेष्ट्**] लपेटना। वेढइ, वेढेइ; (हे ४, २२१; उवा)। कर्म—वेढिज्जइ; (हे ४, २२१)। वकृ—**वेढंत**, **वेढेमाण**; (पउम ४६, २१; णाया १, ६)। कवकृ—**वेढिज्जमाण**; (सुपा ६४)। संकृ—**वेढित्ता, वेढेत्ता, वेढिउं, वेढेउं**; (पि ३०४; महा)। प्रयो—वेढावेइ; (पि ३०४)।

वेढ पुं [**वेष्ट**] १ छन्द-विशेष; (सम १०६; अणु २३३; णादि २०६)। २ वेष्टन, लपेटन; (गा ६६; २२१; से ६, १३)। ३ एक वस्तु-विषयक वाक्य-समूह, वर्णन-ग्रन्थ; (णाया १, १६—पत्र २१८; १, १७—पत्र २२८; अनु)।

°**वेढ** देखो **पीढ**; (गउड)।

वेढण न [**वेष्टन**] लपेटना; (से १, ६०, ६, ४३; १२, ६५; गा ५६३; धर्मसं ४६७)।

वेढिअ वि [**वेष्टित**] लपेटा हुआ; (उव; पाअ; सुर २, २३८)।

वेढिम वि [**वेष्टिम**] १ वेष्टन से बना हुआ; (पण्ह २, ५—पत्र १५०, णाया १, १३—पत्र १७८; औप)। २ पुंस्त्री. खाद्य-विशेष; (पण्ह २, ५—पत्र १४८; राज)।

वेण पुं [**दे**] नदी का विषम घाट; (दे ७, ७४)।

वेण (अप) देखो **वयण**=वचन; (हे ४, ३२६)।

वेणइअ न [**वैनयिक**] १ विनय, नम्रता, (ठा ५, २—पत्र ३३१; दस ६, १, १२; सट्ठि १०६ टी)। २ मिथ्यात्व-विशेष, सभी देवों और धर्मों को सत्य मानना; (संबोध ५२)। ३ वि. विनय-संबन्धी; (सम १०६; भग)। ४ विनय को ही प्रधान मानने वाला, विनय-वादी; (सूअ १, ६, २७)। °**वाद** पुं [°**वाद**] विनय को ही मुख्य मानने वाला दर्शन; (धर्मसं ६६५)।

वेणइगी } स्त्री [**वैनयिकी**] विनय से प्राप्त होने वाली
वेणइया } बुद्धि; (उप पृ ३४०; णाया १, १—पत्र ११)।

वेणइया स्त्री [**वैणकिया**] लिपि-विशेष; (सम ३५; पण्ण १—पत्र ६२)।

वेणा स्त्री [**वेणा**] महर्षि स्थूलभद्र की एक भगिनी; (कप्प; पडि)।

वेणि स्त्री [**वेणि**] १ एक प्रकार की केश-रचना; (उवा)। २ वाद्य-विशेष; (सण)। ३ गंगा और यमुना का संगम-स्थान; (राज)। °**वच्छराय** पुं [°**वत्सराज**] एक राजा; (कुप्र ४४०)।

वेणिअ न [**दे**] वचनीय, लोकापवाद; (दे ७, ७५; षड्)।

वेणी स्त्री [**वेणी**] देखो **वेणि**; (से १, ३६; गा २७३; कप्पू)।

वेणु पुं [**वेणु**] १ वंश, बाँस; (पाअ; कुमा; षड्)। २ एक राजा; (कुमा)। ३ वाद्य-विशेष, बंसी; (हे १, २०३)। °**दालि** पुं [°**दालि**] एक इन्द्र, सुपर्णकुमार देवों का उत्तरदिशा का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८४; इक)। °**देव** पु [°**देव**] १ सुपर्णकुमार-नामक देव-जाति का दक्षिण दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८४)। २ देव-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ६७; ७६)। ३ गरुड पक्षी; (सूअ १, ६, २१)। °**णाणुजाय** पुं [°**कानुजात**] गणितशास्त्र-प्रसिद्ध दश योगों में द्वितीय योग, जिसमें चन्द्र, सूर्य और नक्षत्र वंशाकार से अवस्थान करते हैं; (सुज्ज १२—पत्र २३३)।

वेणुणास }
वेणुसाअ } पु [**दे**] भ्रमर, भौरा; (दे ७, ७८; षड्)।

वेण्ण वि [**दे**] आक्रान्त; (षड्)।

वेण्णा स्त्री [**वेन्ना**] नदी-विशेष; °**यड** न [°**तट**] नगर-विशेष, (पउम ४८, ६३; महा)।

वेण्हु देखो **विण्हु**; (संक्षि ३; प्राकृ ५)।

वेताली स्त्री [**दे**] तट, किनारा; "जन्नं नावा पुव्ववेतालीउ दाहिणवेतालिं जलपहेणं गच्छति" (पण्ण १६—पत्र ४८०)।

वेत्त न [**दे**] स्वच्छ वस्त्र; (दे ७, ७५)।

वेत्त पु [**वेत्र**] वृक्ष-विशेष, बेंत का गाछ; (पण्ण १—पत्र ३३; विपा १, ६—पत्र ६६)। °**ासण** न [°**ासन**]

वेत का बना हुआ आसन; (पउम ६६, १४)।
वेत्तव्व वि [**वेत्तव्य**] जानने योग्य; (प्राप्र)।
वेत्तिअ पुं [**वैत्रिक**] द्वारपाल, चपरासी; (सुपा ७३)।
वेद देखो **वेअ** = वेदय्। वेदेइ, वेदंति, वेदेंति; (भग; सूअ १, ७, ४; ठा २, ४—पत्र १००), वेदेज; (धर्मसं १९६)। भूका—वेदेंसु; (ठा २, ४; भग)। भवि—वेदिस्संति; (ठा २, ४; भग)। कवकृ—**वेदिज्जमाण**; (ठा १०—पत्र ४७२)।
वेद देखो **वेअ**=वेद; (पण्ह १, २—पत्र ४०; धर्मसं ८९२)।
वेदंत देखो **वेअंत**; (धर्मसं ८९३)।
वेदक } देखो **वेअग**; (पण्ह १, २—पत्र २८; धर्मसं
वेदग } १९६)।
वेदणा देखो **वेअणा**; (भग; स्वप्न ८०; नाट—मालवि १४)।
वेदब्भी स्त्री [**वैदर्भी**] प्रद्युम्न कुमार की एक स्त्री का नाम; (अंत १४)।
वेदस्स (शौ) देखो **वेडिस**; (प्राकृ ८३; नाट—शकु ९८)।
वेदि देखो **वेइ**=वेदि; (पउम ११, ७३)।
वेदिग पुं [**वैदिक**] एक इभ्य मनुष्य-जाति;

"अंबट्ठा य कलंदा य वेदेहा वेदिगातिता (? इया)।
हरिता चुंचुणा चेव छप्पेता इब्भजाइओ ॥"
(ठा ६—पत्र ३५८)।

वेदिय देखो **वेइअ** = वेदित; (भग)।
वेदिस न [**वैदिश**] विदिशा तरफ का नगर; (अणु १४९)।
वेदुल्लिय देखो **वेरुलिअ**; (चंड)।
वेदूणा स्त्री [**दे**] लज्जा, शरम; (दे ७, ६५)।
वेदेसिय देखो **वइदेसिअ**; (राज)।
वेदेह पुं [**वैदेह**] एक इभ्य मनुष्य-जाति; (ठा ६—पत्र ३५८)। देखो **वइदेह**।
वेदेहि पुं [**विदेहिन्**] विदेह देश का राजा; (उत्त ९, ६२)।
वेधम्म देखो **वइधम्म**; (धर्मसं १८५)।
वेधव्व देखो **वेहव्व**; (काप्र ९९)।
वेन्ना देखो **वेण्णा**; (उप पृ ११५)।
वेप्प वि [**दे**] भूत आदि से गृहीत, पागल; (दे ७, ७४)।
वेप्पुअ न [**दे**] १ शिशुत्व, बचपन; २ वि. भूत-गृहीत, भूताविष्ट; (दे ७, ७६)।
वेफल्ल न [**वैफल्य**] निष्फलता; (विसे ४१६; धर्मसं २२; अज्झ १३३)।
वेब्भल वि [**विह्वल**] व्याकुल; (प्राप्र)।
वेब्भार } पु [**वैभार**] पर्वत-विशेष, राजगृही के समीप
वेभार } का एक पहाड़; (णाया १, १—पत्र ३३; सिरि ४)।
वेम देखो **वेमय**। वेमइ; (प्राकृ ७४)।
वेम पुं [**वेमन्**] तन्तुवाय का एक उपकरण; (विसे २१००)।
वेमइअ वि [**भग्न**] भाँगा हुआ; (कुमा ६, ६८)।
वेमणस्स न [**वैमनस्य**] १ मनमुटाव, भीतरी द्वेष; (उव)। २ दैन्य, दीनता; (पण्ह १, १—पत्र ५)।
वेमय सक [**भञ्ज्**] भाँगना, तोड़ना। वेमयइ; (हे ४, १०६; षड्)।
वेमाउअ } वि [**वैमातृक**] विमाता की सतान; (सम्मत्त
वेमाउग } १७१; मोह ८८)।
वेमाणि पुंस्त्री [**विमानिन्**] विमान-वासी देवता, एक उत्तम देव-जाति; (दं २), स्त्री—°**णिणी**; (पण्ण १७—पत्र ५००; पंचा २, १८)।
वेमाणिअ पुं [**वैमानिक**] एक उत्तम देव-जाति, विमान-वासी देवता; (भग; औप; पण्ह १, ५—पत्र ९३; जी २४)।
वेमाया स्त्री [**विमात्रा**] अनियत परिमाण; (भग १, १० टी)।
वेम्मि क्रि [**वच्मि**] मे कहता हूँ; (चंड)।
वेयंड पुं [**वेतण्ड**] हस्ती, हाथी; (स ६३०; ७३५)। देखो **वेंड**।
वेयावच्च } न [**वैयावृत्त्य, वैयापृत्य**] सेवा, शुश्रूषा;
वेयावडिय } (उव; कस; णाया १, ५; औप; ओघभा ३२१; आचा; णाया १, १—पत्र ७५; धर्मसं ९९५; श्रु ५३)।
वेर न [**वैर**] दुश्मनाई, शत्रुता; (दे १, १५२; अंत १२; प्रासू १२३)।
वेर न [**द्वार**] दरवाजा; (षड्)।
वेरग्ग न [**वैराग्य**] विरागता, उदासीनता; (उव; रयण ३०; सुपा १७३; प्रासू ११९)।
वेरग्गिअ वि [**वैराग्यिक**] वैराग्य-युक्त, विरागी; (उव;

स १३५)।

वेरज्ज न [**वैराज्य**] १ वैरि-राज्य, विरुद्ध राज्य; (सुख २, ३५; कस)। २ जहाँ पर राजा विद्यमान न हो वह राज्य; ३ जहाँ पर प्रधान आदि राजा से विरक्त रहते हों वह राज्य; (कस; बृह १)।

वेरत्तिय वि [**वैरात्रिक**] रात्रि के तृतीय प्रहर का समय; (उत्त २६, २०; ओघ ६६२)।

वेरमण न [**विरमण**] विराम, निवृत्ति; (सम १०; भग; उवा)।

वेराड पुं [**वैराट**] भारतीय देश-विशेष, अलवर तथा उसके चारों ओर का प्रदेश; (भवि)।

वेराय (अप) पुं [**विराग**] वैराग्य, उदासीनता; (भवि)।

वेरि, **वेरिअ** } देखो **वइरि**; (गउड; कुमा; पि ६१)।

वेरिज्ज वि [**दे**] १ असहाय, एकाकी; २ न. सहायता, मदद; (दे ७, ७६)।

वेरुलिअ पुन [**वैडूर्य**] १ रत्न की एक जाति; "सुचिरं पि अच्छमाणो वेरुलिओ कायमणीअ उम्मीसो" (प्रासू ३२; पाअ), "वेरुलिअं" (हे २, १३३; कुमा)। २ विमानावास-विशेष; (देवेन्द्र १३२)। ३ शक्र आदि इन्द्रों का एक आभाव्य विमान; (देवेन्द्र २६३)। ४ महाहिमवंत पर्वत का एक शिखर; (ठा २, ३—पत्र ७०; ठा ८—पत्र ४३६)। ५ रुचक पर्वत का एक शिखर; (ठा ८—पत्र ४३६)। ६ वि. वैडूर्य रत्न वाला, (जीव ३, ४; राय)। °**मय** वि [°**मय**] वैडूर्य रत्नों का बना हुआ; (पि ७०)।

वेरोयण देखो **वइरोअण** =वैरोचन; (णाया २, १—पत्र २४७)।

वेल न [**दे**] दन्त मास, दाँत के मूल का माँस; (दे ७, ७४)।

वेलंधर पुं [**वेलन्धर**] एक देव-जाति, नागराज-विशेष; (सम ३३)। २ पर्वत-विशेष; ३ न. नगर-विशेष; (पउम ५४, ३९)।

वेलंधर वि [**वैलन्धर**] वेलन्धर-संबन्धी; (पउम ५५, १७)।

वलंब पुं [**वेलम्ब**] १ वायुकुमार-नामक देवों का दक्षिण दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५; इक)। २ पाताल-कलश का अधिष्ठाता देव-विशेष; (ठा ४, १—पत्र १९८; ४, २—पत्र २२६)।

वेलंब पुं [**दे. विडम्ब**] १ विडम्बना; (दे ७, ७५; गउड)। २ वि. विडम्बना-कारक; (पराह २, २—पत्र ११४)।

वेलंबग पुं [**विडम्बक**] १ विदूषक, मसखरा; (औप; णाया १, १ टी—पत्र २; कप्प)। २ वि. विडम्बना करने वाला; (पुप्फ २२६)।

वेलक्ख न [**वैलक्ष्य**] लज्जा, शरम; (गउड)।

वेलणय न [**दे. व्रीडनक**] १ लज्जा, शरम; (दे ७, ६५ टी)। २ पुं. साहित्य-प्रसिद्ध रस-विशेष, लज्जा-जनक वस्तु के दर्शन आदि से उत्पन्न होने वाला एक रस; (अणु १३५)।

वेलव सक [**उपा+लभ्**] १ उपालम्भ देना, उलहना देना। २ कँपाना। ३ व्याकुल करना। ४ व्यावृत्त करना, हटाना। वेलवइ, (हे ४, १५६; षड्)। वकृ—**वेलवंत**, (से २, ८)। कवकृ—**वेलविज्जंत**; (से १०, ६८)। कृ—**वेलवणिज्ज**; (कुमा)।

वेलव सक [**वञ्च्**] १ ठगना। २ पीड़ा करना। वेलवेइ; (हे ४, ९३)। कर्म—वेलविज्जंति; (सुपा ४८२; गउड)।

वेलविअ वि [**वञ्चित**] १ प्रतारित, ठगा हुआ; (पाअ; वज्जा १५२; विवे ७७; वे २६)। २ पीड़ित, हैरान किया हुआ; (खा ११)।

वेला स्त्री [**दे**] दन्त-मास, दाँत के मूल का माँस; (दे ७, ७४)।

वेला स्त्री [**वेला**] १ समय, अवसर, काल; (पाअ; कप्पू)। २ ज्वार, समुद्र के पानी की वृद्धि; (पराह १, ३—पत्र ५५)। ३ समुद्र का किनारा; (से १, ६२; औप; गउड)। ४ मर्यादा; (सूअ १, ९, २९)। ५ वार, दफा; (पंचा १२, २९)। °**उल** न [°**कुल**] बन्दर, जहाजों के ठहरने का स्थान; (सुर १३, ३०; उप ५९७ टी)। °**वासि** पुं [°**वासिन्**] समुद्र-तट के समीप रहने वाला वानप्रस्थ; (औप)।

वेलाइअ वि [**दे**] मृदु, कोमल; २ दीन, गरीब; (दे ७, ९६)।

वेलाव (अप) सक [**वि+लम्बय्**] देरी करना, विलम्ब करना। वेलावसि; (पिंग)।

वेलिल्ल वि [**वेलावत्**] वेला-युक्त; (कुमा)।

वेसक्खिअ न [दे] द्वेष्यत्व, विरोध, दुश्मनाई; (दे ७, ७६)।

वेसण न [दे] वचनीय, लोकापवाद; (दे ७, ७२)।

वेसण न [**वेषण**] जीरा आदि मसाला; (पिंड ५४)।

वेसण न [**वेसन**] चना आदि द्विदल का आटा; (पिंड २५६)।

वेसमण पु [**वैश्रमण**] १ यक्षराज, कुबेर; (पाअ; णाया १, १—पत्र ३६; सुपा १२८)। २ इन्द्र का उत्तर दिशा का लोकपाल; (सम ८६; भग ३, ७—पत्र १६६)। ३ एक विद्याधर-नरेश; (पउम ७, ६६)। ४ एक राज-कुमार, (विपा २, ६)। ५ एक शेठ का नाम; (सुपा १२८; ६२७)। ६ अहोरात्र का चौदहवाँ मुहूर्त, (सुज्ज १०, १३; सम ५१)। ७ एक देव-विमान; (देवेन्द्र १४४)। ८ क्षुद्र हिमवान् आदि पर्वतों के शिखरों का नाम; (ठा २, ३—पत्र ७०; ८०; ८—पत्र ४३६; ६—पत्र ४५४)। °**काइय** पुं [°**कायिक**] वैश्रमण की आज्ञा में रहने वाली एक देव-जाति; (भग ३, ७—पत्र १६६)। °**दत्त** पुं [°**दत्त**] एक राजा का नाम; (विपा १, ६—पत्र ८८)। °**देवकाइय** पुं [°**देवकायिक**] वैश्रमण के अधीनस्थ एक देव-जाति; (भग ३, ७—पत्र १६६)। °**प्पभ** पुं [°**प्रभ**] वैश्रमण के उत्पात-पर्वत का नाम, (ठा १०—पत्र ४८२)। °**भद्द** पुं [°**भद्र**] एक जैन मुनि; (विपा २, ३)।

वेसम्म न [**वैषम्य**] विषमता, अ-समानता; (अज्झ ५; पव २१६ टी)।

वेसर पुंस्त्री [**वेसर**] १ पक्षि-विशेष; (पराह १, १—पत्र ८)। २ अश्वतर, खच्चर; स्त्री—°री; (सुर ८, १६)।

वेसलग पुं [**वृषल**] शूद्र, अधम-जातीय मनुष्य; (सूत्र २, २, ५४)।

वेसवण पुं [**वैश्रवण**] देखो **वेसमण**; (हे १, १५२; चंड; देवेन्द्र २७०)।

वेसवाडिय पुं [**वेशवाटिक**] एक जैन मुनि-गण; (कप्प)।

वेसवार पु [**वेसवार**] धनिया आदि मसाला; (कुप्र ६८)।

वेसा देखो **वेस्सा**, (कुमा; सुर ३, ११६, सुपा २३५)।

वेसाणिय पुं [**वैषाणिक**] १ एक अन्तर्द्वीप; २ अन्तर्द्वीप विशेष में रहने वाली मनुष्य-जाति; (ठा४, २—पत्र २२५)।

वेसानर देखो **वइसानर**; (सट्ठि ६ टी)।

वेसायण देखो **वेसियायण**; (राज)।

वेसालिअ वि [**वैशालिक**] १ समुद्र में उत्पन्न; २ विशालाख्य जाति में उत्पन्न; ३ विशाल, बड़ा, विस्तीर्ण; "मच्छा वेसालिया चेव" (सूत्र १, १, ३, २)। ४ पु. भगवान् ऋषभदेव; (सूत्र १, २, ३, २२)। ५ भगवान् महावीर; (सूत्र १, २, ३, २२; भग)।

वेसाली स्त्री [**वैशाली**] एक नगरी का नाम; (कप्प; उप ३३०)।

वेसास देखो **वीसास**; " को किर वेसासु वेसासो" (धर्मवि ६५)।

वेसासिअ वि [**वैश्वासिक, विश्वास्य**] विश्वास-योग्य, विश्वसनीय, विश्वास-पात्र; (ठा ५,३—पत्र ३४२; विपा १,१—पत्र १५; कप्प; औप; तंदु ३५)।

वेसाह देखो **वइसाह**; (पाअ; वव १)।

वेसाही स्त्री [**वैशाखी**] १ वैशाख मास की पूर्णिमा; २ वैशाख मास की अमावस; (इक)।

वेसि वि [**द्वेषिन्**] द्वेष करने वाला; (पउम ८, १८७; सुर ६, ११५)।

वेसिअ देखो **वइसिअ**; (हे १, १५२)।

वेसिअ पुंस्त्री [**वैशिक**] १ वैश्य, वणिक्; (सूत्र १, ६, २)। २ न. जैनेतर शास्त्र-विशेष, काम-शास्त्र, (अणु ३६; राज)।

वेसिअ वि [**वैषिक**] वेष-प्राप्त, वेष-सम्बन्धी; (सूत्र २, १, ५६; आचा २, १, ४, ३)।

वेसिअ वि [**व्येषित**] १ विशेष रूप से अभिलषित; २ विविध प्रकार से अभिलषित; (भग ७, १—पत्र २६३)।

वेसिट्ठ देखो **वइसिट्ठ**; (धर्मसं २७१)।

वेसिणी स्त्री [दे] वेश्या, गणिका; (गा ४७४)।

वेसिया देखो **वेस्सा**; "कामासत्तो न मुणइ गम्मागम्मंपि वेसियाणुव्व" (भत्त ११३; ठा ४, ४—पत्र २७१)।

वेसियायण पुं [**वैश्यायन**] एक बाल तापस; (भग १५—पत्र ६६५; ६६६)।

वेसी स्त्री [**वैश्या**] वैश्य जाति की स्त्री; (सुख ३, ४)।

वेसुम पु [**वेश्मन्**] गृह, घर; (प्राकृ २८)।

वेस्स देखो **वइस्स**=वैश्य, (सूत्र १, ६, २)।

वेस्स देखो **वेस**=द्वेष्य; (उत्त १३, १८)।

वेस्स देखो **वेस**=वेष्य; (राज)।

वेस्सा स्त्री [**वेश्या**] १ पणयांगना, गणिका; (विसे १०३०;

गा १५६; ८६०)। २ ओषधि-विशेष; पाड़ का गाछ; (प्राकृ २६)।

वेस्सासिअ देखो **वेसासिअ**; (भग)।

वेह सक [**प्र+ईक्ष्**] देखना, अवलोकन करना। "जहा संगामकालंसि पिट्ठतो भीरु वेहइ" (सूअ १, ३, ३, १)।

वेह सक [**व्यध्**] बींधना। वेहइ; (पि ४८६)।

वेह पुं [**वेध**] १ वेधन, छेद; (सम १२५; वज्जा १४२)। २ अनुवेध, अनुगम, मिश्रण; ३ द्यूत-विशेष, एक तरह का जूआ; (सूअ १, ६, १७)। ४ अनुशय, अत्यन्त द्वेष; (पण्ह १, ३—पत्र ४२)।

वेह पु [**वेधस्**] विधि, विधाता; (सुर ११, ५)।

वेहण न [**वेधन**] वेधन, छेद करना; (राय १४६; धर्मवि ७१)।

वेहम्म देखो **वइधम्म**; (उप १०३१ टी; धर्मसं १८५ टी)।

वेहल्ल पु [**विहल्ल**] राजा श्रेणिक का एक पुत्र; (अनु १; २; निर १, १)।

वेहव सक [**वञ्च्**] ठगना। वेहवइ, (हे ४, ९३; षड्)।

वेहव न [**वैभव**] विभूति, ऐश्वर्य, (भवि)।

वेहविअ पु [**दे**] १ अनादर, तिरस्कार; २ वि. क्रोधी; (दे ७, ९६)।

वेहविअ वि [**वञ्चित**] प्रतारित; (दे ७, ९६ टी)।

वेहव्व न [**वैधव्य**] १ विधवापन, रँडापन; (गा ६३०; हे १, १४८; गउड; सुपा १३६)।

वेहाणस देखो **वेहायस**; (आचा २, १०, २; ठा २,४—पत्र ९३; सम ३३; णाया १, १६—पत्र २०२; भग)।

वेहाणसिय वि [**वैहायसिक**] फाँसी आदि से लटक कर मरने वाला; (औप)।

वेहायस वि [**वैहायस**] १ आकाश-संबन्धी, आकाश में होने वाला; २ न. मरण-विशेष, फाँसी लगा कर मरना; (पव १५७)। ३ पुं. राजा श्रेणिक का एक पुत्र; (अनु)।

वेहारिय वि [**वैहारिक**] विहार-सबन्धी, विहार-प्रवण; (सुख २, ४५)।

वेहास न [**विहायस्**] १ आकाश, गगन; (णाया १, ८—पत्र १३४)। २ अन्तराल, बीच भाग; (सूअ १, २, १, ८)।

वेहास देखो **वेहायस**, (पव १५७; अनु १)।

वेहिम वि [**वैधिक, वेध्य**] तोड़ने योग्य, दो टूकडे करने योग्य; (दस ७, ३२)।

वैउंठ देखो **वेकुंठ**; (समु १५०)।

वैभव देखो **वेहव**; (ति १०३)।

वोअस देखो **वोक्कस**। कवकृ—**वोयसिज्जमाण**; (भग)

वोइय वि [**व्यपेत**] वर्जित, रहित; (भवि)।

वोंट देखो **विंट**=वृन्त; (हे १, १३९)।

वोकिल्ल वि [**दे**] गृह-शूर, झूठा शूर; (दे ७, ८०)।

वोकिल्लिअ न [**दे**] रोमन्थ, चबी हुई चीज को पुनः चबाना; (दे ७, ८२)।

वोक्क सक [**वि+ज्ञपय्**] विज्ञप्ति करना। वोक्कइ; (हे ४, ३८)। वकृ—**वोक्कंत**; (कुमा)।

वोक्क सक [**व्या+हृ, उद्+नद्**] पुकारना, आह्वान करना। वोक्कइ; (षड्; प्राकृ ७४)।

वोक्क सक [**उद्+नट्**] अभिनय करना। वोक्कइ; (प्राकृ ७४)।

वोक्कंत वि [**व्युत्क्रान्त**] १ विपरीत क्रम से स्थित; (हे १, ११६)। २ अतिक्रान्त; "पज्जवनयवोक्कंतं तं वत्थुं दव्वट्ठिअस्स वयणिज्जं" (सम्म ८)। देखो **वुक्कंत**।

वोक्कस सक [**व्यप+कृष्**] ह्रास प्राप्त करना, कमी करना। कवकृ—**वोक्कसिज्जमाण**; (भग ५, ६—पत्र २२८)।

वोक्कस देखो **वोक्कस**; (सूअ १, ९, २)।

वोक्कस देखो **वुक्कस**=व्युत्+कृष्। वोक्कसाहि; (आचा २, ३, १, १४)।

वोक्का स्त्री [**दे**] वाद्य-विशेष; "डक्कावोक्काण रवो वियंभिओ रायपंगणाए" (सुपा २४२)। देखो **वुक्का**।

वोक्का स्त्री [**व्याहृति**] पुकार; (उप ७६८ टी)।

वोक्कार देखो **बोक्कार**; (सुर १, २४६)।

वोक्ख देखो **वोक्क**=उद्+नद्। वोक्खइ; (धात्वा १५४)।

वोक्खंदय पुं [**अवस्कन्द**] आक्रमण; (महा)।

वोक्खारिय वि [**दे**] विभूषित; "पवरदेवंगवत्थवोक्खारियकणयखंभं" (स २३९)।

वोगड वि [**व्याकृत**] १ कहा हुआ, प्रतिपादित; (सूअ २, ७, ३८; भग; कस)। २ परिस्फुट; (आचानि २९२)।

वोगडा स्त्री [**व्याकृता**] प्रकट अर्थ वाली भाषा; (पणण ११—पत्र ३७४)।

वोगसिअ वि [**व्युत्कर्षित**] निष्कासित, बाहर निकाला हुआ; (तंदु २)।

वोच्च } सक [वद्] बोलना, कहना। वोच्चइ, वोच्चइ;
वोच्चत्र } (धात्वा १५४)।

वोच्चत्थ वि [व्यत्यस्त] विपरीत, उल्टा; "हियनिस्सेस-(?यस)बुद्धिवोच्चत्थे" (उत्त ८, ५; सुख ८, ५; विसे ८५३)।

वोच्चत्थ न [दे] विपरीत रत; (दे ७, ५८)।

वोच्छ° देखो **वय=वच्**।

वोच्छिंद सक [व्युत्, व्यव+छिद्] १ भाँगना, तोड़ना, खण्डित करना। २ विनाश करना। ३ परित्याग करना। वोच्छिंदइ; (उत्त २६, २)। भवि—वोच्छिंदिहिति; (पि ५३२)। कर्म—वुच्छिज्ज, वोच्छिजइ, वोच्छिजए; (कम्म २, ७; पि ५४६; काल); भवि—वोच्छिजिहिंति; (पि ५४६)। वकृ—**वोच्छिंदंत, वोच्छिंदमाण**; (से १५, ६२; ठा ६—पत्र ३५६)। कवकृ—**वोच्छिज्जंत, वोच्छिज्जमाण**; (से ८, ५; ठा ३, १—पत्र ११६)।

वोच्छिण्ण देखो **वोच्छिन्न**; (विपा १, २—पत्र २८)।

वोच्छित्ति स्त्री [व्यवच्छित्ति] विनाश; "संसारवोच्छित्ती" (विसे १६३३)। °**णय** पु [°**नय**] पर्याय-नय; (णंदि)।

वोच्छिन्न देखो **वुच्छिन्न**, (भग; कप्प; सुर ४, ६६)।

वोच्छेअ } पुं [व्युच्छेद, व्यवच्छेद] १ उच्छेद, विनाश;
वोच्छेद } "संसारवोच्छेयकरे" (णाया १, १—पत्र ६०; धर्मसं २२८)। २ अभाव, व्यावृत्ति; (कम्म ६, २३)। ३ प्रतिबन्ध, रुकावट, निरोध; (उवा; पचा १, १०)। ४ विभाग; (गउड ७४०)।

वोच्छेयण न [व्युच्छेदन] १ विनाश; (चेइय ५२४; पिंड ६६६)। २ परित्याग; (ठा ६ टी—पत्र ३६०)।

वोज्ज देखो **वुज्ज**। वोज्जइ; (हे ४, १६८ टी)।

वोज्ज सक [वीजय्] हवा करना। वोज्जइ; (हे ४, ५; षड्)। वकृ—**वोज्जंत**; (कुमा)।

वोज्जिर वि [त्रसितृ] डरने वाला; (कुमा)।

वोज्झ देखो **वह=वह्**। भवि—"तेणं कालेणं तेणं समएणं गंगासिंधूओ महानदीओ रहपहवित्थराओ अक्खसोयप्पमाणमेत्तं जणं वोज्झिहिंति" (भग ७, ६—पत्र ३०७)। कृ—"नासानीसासवायवोज्झं...अंसुयं" (णाया १, १—पत्र २५; राय १०२; प्राप)।

वोज्झ } पुं [दे] बोझ, भार; "असिवोज्झं फलय-
वोज्झमल्ल } वोज्झमल्लं च" (दे ७, ८०)।

वोज्झर वि [दे] १ अतीत; २ भीत, त्रस्त; (दे ७, ६६)।

वोट्टि वि [दे] सक्त, लीन; (षड्)।

वोड वि [दे] १ दुष्ट; २ छिन्न-कर्ण, जिसका कान कट गया हो वह; (गा ५४६)। देखो **वोंड**।

वोडही स्त्री [दे] १ तरुणी, युवति; २ कुमारी; "सिक्खंतु वोडहीओ" (गा ३६२)। देखो **वोद्रह**।

वोड्ड वि [दे] मूर्ख, बेवकूफ; (उव)।

वोढ वि [ऊढ] वहन किया हुआ; (धात्वा १५४)।

वोढ वि [दे] देखो **वोड**; (गा ५५० अ)।

वोढव्व देखो **वह=वह्**।

वोढु वि [वोढृ] वहन-कर्ता; (महा)।

वोढुं देखो **वह=वह्**।

वोढूण अ [उड्ढ्वा] वहन कर; (पि ५८६)।

वोत्तव्व देखो **वय=वच्**।

वोत्तुआण अ [उक्त्वा] कह कर, (षड्—पृ १५३)।

वोत्तुं } देखो **वय=वच्**।
वोत्तूण }

वोदाण न [व्यवदान] १ कर्म-निर्जरा, कर्मों का विनाश; (ठा ३, ३—पत्र १५६; उत्त २६, १)। २ शुद्धि, विशेष रूप से कर्म-विशोधन; (पंचा १५, ४; उत्त २६, १; भग)। ३ तप, तपश्चर्या; (सूअ १, १४, १७)। ४ वनस्पति-विशेष; (पण्ण १—पत्र ३४)।

वोद्रह वि [दे] तरुण, युवा; (दे ७, ८०), "वोद्रहद्रहम्मि पडिआ" (हे २, ८०); स्त्री—°**ही**; "सिक्खंतु वोद्रहीओ" (हे २, ८०)।

वोभीसण वि [दे] वराक, दीन, गरीब; (दे ७, ८२)।

वोम न [व्योमन्] आकाश, गगन; (पाअ; विसे ६५६)। °**विंदु** पु [°**विन्दु**] एक राजा का नाम; (पउम ७, ५३)।

वोमज्झ पुं [दे] अनुचित वेष; (दे ७, ८०)।

वोमज्झिअ न [दे] अनुचित वेष का ग्रहण; (दे ७, ८० टी)।

वोमिल पु [व्योमिल] एक जैन मुनि; (कप्प)।

वोमिला स्त्री [व्योमिला] एक जैन मुनि-शाखा; (कप्प)।

वोय पुं [वोक] एक देश का नाम; (पउम ९८, ६४)।

वोरच्छ वि [दे] तरुण, युवा; (दे ७, ८०)।

वोरमण न [व्युपरमण] हिंसा, प्राणि-वध; (पण्ह १, १—पत्र ५)।

वोरल्ली स्त्री [दे] १ श्रावण मास की शुक्ल चतुर्दशी तिथि में होने वाला एक उत्सव; २ श्रावण मास की शुक्ल चतुर्दशी; (दे ७, ८१)।
वोरविअ वि [व्यपरोपित] जो मार डाला गया हो वह; "सक्कारित्ता जुयलं दिन्नं विइएण वोरविओ" (वव १)।
वोरुद्धी स्त्री [दे] रुई से भरा हुआ वस्त्र; (पव ८४)।
वोल सक [गम्] १ गति करना, चलना। २ गुजारना, पसार करना। ३ अतिक्रमण करना, उल्लंघन करना। ४ अक. गुजरना, पसार होना। वोलइ; (प्राकृ ७३; हे ४, १६२; महा; धर्मसं ७५४), "काल वोलेइ" (कुप्र २२४), वोलंति; (वज्जा १४८; धर्मवि ५३)। वकृ—**वोलंत, वोलेंत**; (कुमा; गा २१०; २२०; पउम ६, ५४; से १४, ७५; सुपा २२४; से ६, ८६)। संकृ—**वोलिऊण, वोलेत्ता**; (महा; आव)। कृ—**वोलेअव्व**; (से २, १; स ३९३)। प्रयो—संकृ—**वोलाविउं, वोलावेउं**; (सुपा १४०; गा ३४६ अ ?)। देखो **वोल**=व्यति+क्रम्।
वोल देखो **वोल**=दे; (दे ६, ६०)।
वोलट्ट अक [व्यप+लुट्] छलकना। वकृ—**वोलट्टमाण**; (भग)।
वोलाविअ वि [गमित] अतिक्रामित; (वज्जा १४; सुपा ३३४; गा २१)।
वोलिअ } वि [गत] १ गया हुआ; (प्राकृ ७७)। २
वोलीण } गुजरा हुआ, जो पसार हुआ हो वह, व्यतीत; (सुर ६, १६; महा; पव ३५; सुर ३, २५)। ३ अतिक्रान्त, उल्लंघित; (पाअ; सुर २, १; कुप्र ४५; से १, ३; ४, ४८; गा ५७; २५२; ३४०; हे ४, २५८; कुमा; महा)।
वोल्ल सक [आ+क्रम्] आक्रमण करना। वोल्लइ; (धात्वा १५४)।
वोल्लाह पुं [वोल्लाह] देश-विशेष; (स ८१)।
वोल्लाह वि [वौल्लाह] देश-विशेष में उत्पन्न; (स ८१)।
वोवाल पुं [दे] वृषभ, बैल; (दे ७, ७६)।
वोसग्ग पुं [व्युत्सर्ग] परित्याग; (विसे २६०५)।
वोसग्ग } अक [वि+कस्] १ विकसना। २ बढ़ना।
वोसट्ट } वोसग्गइ, वोसट्टइ; (षड्; हे ४, १९५; प्राकृ ७६)। वकृ—**वोसट्टमाण**; (भग; गा ८२८)।
वोसट्ट सक [वि+कासय्] १ विकाश करना। २ बढ़ाना। वोसट्टइ; (धात्वा १५४)।
वोसट्ट वि [विकसित] विकास-प्राप्त; (हे ४, २५८; प्राकृ ७७)।
वोसट्ट वि [दे] भर कर खाली किया हुआ; (दे ७, ८१)।
वोसट्टिअ वि [विकसित] विकास-प्राप्त; (कुमा)।
वोसट्ठ वि [व्युत्सृष्ट] १ परित्यक्त, छोड़ा हुआ; (कप्प; कस; ओघ ६०५; उत्त ३५, १९; आचा २, ८, १; पंचा १८, ६)। २ परिष्कार-रहित, साफसूफ-वर्जित; (सूअ १, १६, १)। ३ कायोत्सर्ग में स्थित; (दस ५, १, ९१)।
वोसमिय वि [व्यवशमित] उपशमित, शान्त किया हुआ; "खामिय वोसमियाइं अहिगरणाइं तु जे उदीरेंति। ते पावा नायव्वा" (ठा ६ टी—पत्र ३७१)।
वोसर } सक [व्युत्+सृज्] परित्याग करना, छोड़ना।
वोसिर } वोसरिमो, वोसिरइ, वोसिरामि; (पव २३७, महा; भग; औप), वोसिरेज्जा, वोसिरे; (पि २३५)। वकृ—**वोसिरंत**, (कुप्र ८१)। संकृ—**वोसिज्ज, वोसिरित्ता**; (सूअ १, ३, ३, ७; पि २३५)। कृ—**वोसिरियव्व**; (पव ४६)।
वोसिर वि [व्युत्सर्जन] छोड़ने वाला; (उप पृ २६८)।
वोसिरण न [व्युत्सर्जन] परित्याग; (हे २, १७४; श्रा १२; श्रावक ३७६; ओघ ८५)।
वोसिरिअ देखो **वोसट्ठ**; (पउम ४, ५२; धर्मसं १०५१; महा)।
वोसेअ वि [दे] उन्मुख-गत; (दे ७, ६१)।
वोहित्त न [वहित्र] प्रवहण, जहाज, नौका; (गा ७४६)। देखो **वोहित्थ**।
वोहार न [दे] जल-वहन; (दे ७, ८१)।
व्युड पुं [दे] विट, भडुआ; (षड्)।
व्रंद देखो **वंद**=वृन्द; (प्राप्र)।
व्रत्त (अप) देखो **वय**=व्रत; (हे ४, ३९४)।
व्राकोस (अप) पुं [व्याक्रोश] १ शाप; २ निन्दा; ३ विरुद्ध चिन्तन; (प्राकृ ११२)।
व्रागरण (अप) देखो **वागरण**; (प्राकृ ११२)।
व्राडि (अप) पुं [व्याडि] संस्कृत व्याकरण और कोष का कर्ता एक मुनि; (प्राकृ ११२)।
व्रास देखो **वास**=व्यास; (हे ४, ३९९; प्राकृ ११२; षड्; कुमा)।
व्व देखो **इव**; (हे २, १८२; कप्प; रंभा)।
व्व देखो **वा**=अ; (प्राकृ २६)।

°व्वअ देखो **वय**=व्रत; (कुमा)।

व्ववसिअ देखो **ववसिअ**=व्यवसित; (अभि १२४)।

°**व्वाज** देखो **वाय**=व्याज; (मा २०)।

°**व्वावार** देखो **वावार**=व्यापार; (मा ३६)।

°**व्वावुड** देखो **वावुड**; (अभि २४६)।

°**व्वाहि** देखो **वाहि**; (मा ४४)।

व्विव देखो **इव**; (प्राकृ २६)।

व्वे अ [**दे**] संबोधन-सूचक अव्यय; (प्राकृ ८०)।

इअ सिरि**पाइअसद्दमहण्णवम्मि** **वआराइसद्दसंकलणो** पचतीसइमो तरंगो समत्तो।

———०००———

श

शिआल (मा) पु [**श्याल**] वहू का भाई; (प्राकृ १०२, मृच्छ २०४)।

श्चि ट (मा) देखो **चिट्ठ**=स्था। श्चिटदि; (धात्वा १५४; प्राकृ १०३)।

इअ सिरि**पाइअसद्दमहण्णवम्मि** **शआराइसद्दसंकलणो** छत्तीसइमो तरंगो समत्तो।

———०००———

स

स पु [**स**] व्यञ्जन वर्ण-विशेष, इसका उच्चारण-स्थान दाँत होने से यह दन्त्य कहा जाता है; (प्राप)। °**अण**, °**गण** पुं [°**गण**] पिंगल-प्रसिद्ध एक गण, जिसमें प्रथम के दो ह्रस्व और तीसरा गुरु अक्षर होता है, (पिंग)। °**गार** पु [°**कार**] 'स' अक्षर; (दसनि १०, २)।

स देखो **सं**=सम्; (षड्; पिंग)।

स पुं [**श्वन्**] श्वान, कुत्ता; (हे १, ५२; ३, ५६; पड्)। °**पाग** पुं [°**पाक**] चण्डाल; (उव)। °**मुहि** पुस्त्री [°**मुखि**] कुत्ते की तरह आचरण, कुत्ते की तरह भषण; (णाया १, ६—पत्र १६०)। °**व्वच** पु [°**पच**] चाण्डाल; (दे १, ६४)। °**वाग**, °**वाय** देखो °**पाग**; (वै ५६, पाअ)।

स अ [**स्वर्**] सुरालय, स्वर्ग; (विसे १८८३)।

स वि [**सत्**] १ श्रेष्ठ, उत्तम; (उवा; कुमा; कुप्र १४१)। २ विद्यमान; "नो य उप्पजए अ-स" (सूअ १, १, १,१६)। °**उरिस** पु [°**पुरुष**] श्रेष्ट पुरुष, सज्जन; (गउड)। °**क्कय** वि [°**कृत**] संमानित; (पण्ह १, ४—पत्र ६८); देखो °**क्किअ**। °**क्कह** वि [°**कथ**] सत्य-वक्ता; (सं ३२)। °**क्किअ** न [°**कृत**] सत्कार, संमान; (उत्त १५, ५); देखो °**क्कय**। °**ग्गइ** स्त्री [°**गति**] उत्तम गति—१ स्वर्ग; २ मुक्ति, मोक्ष; (भवि; राज)। °**ज्जण** पुं [°**ज्जन**] भला आदमी, सत्पुरुष; (उव; हे १, ११; प्रासू ७)। °**त्तम** वि [°**त्तम**] अतिशय साधु, सज्जनों में अतिश्रेष्ठ; (सुपा ६५५; श्रा १४; सार्ध ३)। °**त्थाम** न [°**स्थामन्**] प्रशस्त बल; (गउड)। °**धम्मिअ** वि [°**धार्मिक**] श्रेष्ठ धार्मिक, (श्रा १२)। °**न्नाण** न [°**ज्ज्ञान**] उत्तम ज्ञान, (श्रा २७)। °**प्पभ** वि [°**प्रभ**] सुन्दर प्रभा वाला (राय)। °**प्पुरिस** पु [°**पुरुष**] १ सज्जन, भला आदमी, (अभि २०१; प्रासू १२)। २ किंपुरुष-निकाय का दक्षिण दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५)। ३ श्रीकृष्ण. (कुप्र ४८)। °**प्फल** वि [°**फल**] श्रेष्ठ फल वाला (अच्चु ३१)। °**ब्भाव** पुं [°**भाव**] १ संभव, उत्पत्ति; (उप ७२६)। २ सत्त्व, अस्तित्व; (सम्म ३७, ३८ ३९)। ३ सुन्दर भाव, चित्त का अच्छा अभिप्राय; "सब्भावो पुण उज्जुजणस्स कोडि विसेसेइ" (प्रासू ९: १७२; उव; हे २, १९७)। ४ भावार्थ, तात्पर्य; (सुर ३,१०१)। ५ विद्यमान पदार्थ; (अणु)। °**ब्भावदायणा** स्त्री [°**भावदर्शन**] आलोचना, प्रायश्चित्त के लिए निज दोष का गुर्वादि के समक्ष प्रकटीकरण; (ओघ ७९१)। °**ब्भाविअ** वि [°**भावित**] सद्भाव-युक्त, (स २०१, ६९८)। °**ब्भूअ** वि [°**भूत**] १ सत्य, वास्तविक, सच्चा, "सब्भूएहि भावेहि" (उवा)। २ विद्यमान; (पंचा ४, २४)। °**याचार** पु [°**आचार**] प्रशस्त आचरण; (रयण १५)। °**रूव** वि [°**रूप**] प्रशस्त रूप वाला; (पउम ८, ६)। °**ल्लग** वु [°**लग**] प्रशस्त संवरण, इन्द्रिय-संयम; (सूअ २, २, ५७) °**वाय** पुं [°**वाद**] प्रशस्त वाद; (सूअ २, ७, ५)। °**वाया** स्त्री [°**वाच्**] प्रशस्त वाणी, (सूअ २, ७, ५)।

स पु [**स्व**] १ आत्मा, खुद, (उवा, कुमा; सुर २, २०६)। २ ज्ञाति, नात; (हे २, ११४; षड्)। ३ वि. आत्मीय, स्वीय, निजी; (उवा; ओघभा ६; कुमा; सुर ४, ६०)। ४ न. धन, द्रव्य; (पचा ८, ६, आचा २, १, १, ११)। ५ कर्म; (आचा २, १६, ६)। °**कडब्भि**. °**गडब्भि** वि [°**कृतभिद्**] निज के किए हुए कर्मों का

विनाशक; (पि १९९; आचा १, ३, ४, १; ४)। °जण पु [°जन] १ ज्ञाति, सगा; २ आत्मीय लोक; (स्वप्न ६७; षड्)। °तंत वि [°तन्त्र] १ स्वाधीन, स्व-वश; (विसे २११२; दे ३, ४३; अच्चु १)। २ न. स्वकीय सिद्धान्त; (निचू ११)। °त्थ वि [°स्थ] १ तंदुरुस्त, स्वभाव-स्थित; २ सुख से अवस्थित; (पाअ; पउम २६, ३१; स्वप्न १०६; सुर १०, १०४; सुपा २७९; महा; सण)। °पक्ख पु [°पक्ष] १ साधर्मिक, समान धर्म वाला; (द्र १७)। २ तरफदार; (कुप्र ११९)। ३ अपना पक्ष; (सम्म २१)। °पाय न [°पात्र] निज का नाम, खुद की संज्ञा; (राज)। °प्पभ वि [°प्रभ] निज से ही शोभने वाला; (सम १३७)। °ब्भाव, °भाव पु [°भाव] प्रकृति, निसर्ग; "कणियारतरू नवकणियाआरसुदेरदरिअस-ब्भावो" (कुमा ३, ४४; सम्म २१; सुर १, २७; ४, १२५),

"कुवियस्स आउरस्स य वसणासत्तस्स आयरत्तस्स।
मत्तस्स मरतस्स य सब्भावा पायडा हुंति"

(प्रासू ६४)।

°भावन्नु वि [°भावज्ञ] स्वभाव का जानकार· (पउम ८९, ४१)। °यण देखो °जण; (उवा; हे २, ११४; सुर ४, ७९; प्रासू ७६; ९५)। °रूय, °रूव न [°रूप] स्वभाव; (गउड; धर्मसं ९१३; कुमा; भवि, सुर २, १४२)। °संवेयण न [°संवेदन] स्व-प्रत्यक्ष ज्ञान; (धर्मसं ४४)। °हाअ, °हाव देखो °भाव; (से ३, १५; ७, १७; गउड; सुर ३, २२; प्रासू २; १०३)। °हाववाद पु [°भाव-वाद] स्वभाव से ही सब कुछ होता है ऐसा मानने वाला मत; (उप १००३)। °हिअ न [°हित] १ निज का भला, स्वीय भलाई; २ वि. निज का भला करने वाला, स्व-हितकर; (सुपा ४१०)।

स° वि [स°] १ सहित, युक्त; (सम १३७; भग; उवा; सुपा १९२; सण)। २ समान, तुल्य; "सगुत्ते", "सपक्खे" (कप्प; निर १, १)। °अण्ह वि [°तृष्ण] उत्कण्ठित, उत्सुक; (से १२, ६८; गा ३४८; गउड; सुपा ३८४)। °अर वि [°कर] कर-सहित; (से २, २९)। °अर वि [°गर] विष-युक्त, जहरिला; (से २, २९)। °इण्ह देखो °अण्ह; (सुपा ४१२)। °उण वि [°गुण] गुण-युक्त; (सुपा १८५)। °उण्ण, °उन्न वि [°पुण्य] पुण्य-युक्त, पुण्य-शाली; (महा; सुर २, ९८; सुपा ६३५)। °ओस वि [°तोष] संतुष्ट; (उप ७२८ टी)। °ओस वि [°दोष] दोष-युक्त; (उप ७२८ टी)। °काम वि [°काम] १ समृद्ध मनोरथ वाला; (स्वप्न ३०)। २ मनोरथ-युक्त, इच्छा वाला; (राज)। °कामणिज्जरा स्त्री [°कामनिर्जरा] कर्म-निर्जरा का एक भेद; (राज)। °काममरण न [°काममरण] मरण-विशेष, पण्डित-मरण; (उत्त ५, २)। °केय वि [°केत] १ गृहस्थ; २ प्रत्याख्यान-विशेष; (पव ४)। °क्खर वि [°क्षर] विद्वान्, जानकार; (वज्जा १५८; सम्मत्त १४३)। °गार वि [°गार] गृहस्थ; (ओघभा २०)। °गार वि [°कार] आकार-युक्त; (धर्मवि ७२)। °गुण वि [°गुण] गुणवान्, गुणी; (उव; सुपा ३४५; सुर ४, १९६)। °ग्ग वि [°ग्र] श्रेष्ठ, उत्तम; (से ९, ४७)। °ग्गह वि [°ग्रह] उपरक्त, गुहण-युक्त, दुष्ट ग्रह से आक्रान्त; (पाअ; वव १)। °घिण वि [°घृण] दयालु; (अच्चु ५०)। °चक्खु, °चक्खुअ वि [°चक्षुष्, °चक्षुष्क] नेत्र वाला, देखता; (पउम ९७, २३; वसु; सं ७८; विपा १, १—पत्र ५)। °चित्त वि [°चित्त] चेतना वाला, सजीव; (उवा; पडि)। °चेयण वि [°चेतन] वही अर्थ, (विसे १७५३)। °च्चित्त देखो °चित्त; (ओघ २२; सुपा ६२५; ६२६; पि १९६; ३५०)। °जिय देखो °ज्जीअ; (सुर १२, २१०)। °जोइ वि [°ज्योतिष्] प्रकाश-युक्त; (पि ४११; सूअ १, ५, १, ७)। °जोणिय वि [°योनिक] उत्पत्ति-स्थान वाला, संसारी; (ठा २, १—पत्र ३८)। °ज्जीअ, °ज्जीव वि [°जीव] १ ज्या-युक्त, धनुष की डोरी वाला; २ सचेतन, जीव वाला; (पि १९६; से १, ४५)। ३ न. कला-विशेष, मृत धातु वगैरः को सजीवन करने का ज्ञान; (औप; राय; जं २ टी—पत्र १३७)। °ड्ढ वि [°र्ध] डेढ़। °ड्ढकाल पुं [°र्धकाल] तप-विशेष, पुरिमड्ढ तप; (संबोध ५८)। °णप्पय, °णप्फद, °णप्फय वि [°नखपद] नख-युक्त पैर वाला, सिंह आदि श्वापद जंतु; (सूअ २, ३, २३; ठा ४, ४—पत्र २७१; सूअ १, ५, २, ७; पण्ण १—पत्र ४९; पि १४८)। °णाह वि [°नाथ] स्वामी वाला, जिसका कोई मालिक हो वह; (विपा १, २—पत्र २७, रंभा; कुमा)। °ण्ह वि [°तृष्ण] तृष्णा-युक्त, उत्कण्ठित, उत्सुक; (से १, ४६)। °त्तर वि [°त्वर] १ त्वरा-युक्त, वेग वाला, २ न. शीघ्र, जल्दी; (सुपा १५९)। °द्ध वि [°र्ध]

अर्थ-सहित, डेढ़; (पउम ६८, ५४)। °धवा स्त्री [°धवा] सौभाग्यवती स्त्री, जिसका पति जीवित हो वह स्त्री; (सुपा ३६५)। °नय वि [°नय] न्याय-युक्त, व्याजवी; (सुपा ५०४)। °पक्ख वि [°पक्ष] १ पँख वाला, पँखों से युक्त; (से २, १४)। २ सहायता करने वाला, सहायक, मित्र; (पव २३६; स ३६७)। ३ समान पार्श्व वाला, दक्षिण आदि तरफ से जो समान हो वह, (निर १, १)। °पुन्न वि [°पुण्य] पुण्यशाली, पुण्यवान, (सुपा ३८४)। °प्पभ वि [°प्रभ] प्रभा-युक्त; (सम १३७; भग)। °प्परिआव, °प्परिताव वि [°परिताप] परिताप—संताप से युक्त; (आ ३७; षड्)। °प्पिसल्लग वि [°पिशाचक] पिशाच-गृहीत, पागल; (पण्ह २, ५—पत्न १५०)। °प्पिवास वि [°पिपास] तृषातुर, सतृष्ण; (हे २, ६७)। °प्पिह वि [°स्पृह] स्पृहा वाला; (दे ७, २६)। °प्फंद वि [°स्पन्द] चलायमान; (दे ८, ६)। °प्फल, °फल वि [°फल] सार्थक; (से १५, १४; हे २, २०४; प्राप; उप ७२८ टी)। °ब्बल वि [°बल] बलवान, बलिष्ठ; (पिंग)। °भल देखो °फल; (हे १, २३६; कुमा)। °मण वि [°मनस्] १ मन वाला, विवेक-बुद्धि वाला; (धण २२)। २ समान मन वाला, राग-द्वेष आदि से रहित, मुनि, साधु; (अणु)। °मणक्ख वि [°मनस्क] पूर्वोक्त अर्थ; (सूअ २, ४, २)। °मय वि [°मद] मद-युक्त; (से १, १६; सुपा १८८)। °महिड्ढिअ वि [°महर्द्धिक] महान् वैभव वाला; (प्रासू १०७)। °मिरिईअ, °मिरीय वि [°मरीचिक] किरण-युक्त; (भग; औप; ठा ४, १—पत्न ३२६)। °मेर वि [°मर्याद] मर्यादा-युक्त; (ठा ३, २—पत्न १२६)। °यण्ह वि [°तृष्ण] तृष्णा-युक्त; (गउड; सुपा ३८४)। °याण वि [°ज्ञान] सियाना, जानकार; (सुपा ३८५)। °योगि वि [°योगिन्] १ व्यापार-युक्त, योग वाला; २ न. तेरहवाँ गुण-स्थानक; (कम्म २, ३१)। °रय वि [°रत] कामी; (से १, २७)। °रहस वि [°रभस] वेग-युक्त, उतावला; (गा ३५४; सुपा ६३२; कप्पू)। °राग वि [°राग] राग-सहित; (ठा २, १—पत्न ५८)। °रागसंजत, °रागसजय वि [°रागसंयत] वह साधु जिसका राग क्षीण न हुआ हो; (पण्ण १७—पत्न ४६४; उवा)। °रूव वि [°रूप] समान रूप वाला; (पउम ८, ६)। °लूण वि [°लवण] लावण्य-युक्त, (सुपा २६३)। °लोग वि [°लोक] समान, सदृश; (सट्टि २१ टी)। °लोण देखो °लूण; (गा ३१६; हे ४, ४४४; कुमा), स्त्री—°लोणी; (हे ४, ४२०)। °वक्ख देखो °पक्ख; (गउड; भवि)। °वण वि [°व्रण] घाव वाला, व्रण-युक्त; (सुपा २८१)। °वय वि [°वयस्] समान उम्र वाला; (दे ८, २२)। °वय वि [°व्रत] व्रती; (सुपा ४५१)। °वाय वि [°पाद] सवाया; (स ४४१)। °वाय वि [°वाद] वाद-सहित; (सूअ २, ७, ५)। °वास वि [°वास] समान वास वाला, एक देश का रहने वाला; (प्रासू ७६)। °विज्ज वि [°विद्य] विद्यावान्, विद्वान; (उप पृ २१५)। °व्वण देखो °वण; (गउड; श्रा १२)। °व्वेक्ख वि [°व्यपेक्ष] दूसरे की परवा रखने वाला, सापेक्ष; (धर्मसं ११६७)। °व्वाव वि [°व्याप] व्याप्ति-युक्त, व्यापक; (भग १, ६—पत्न ७७)। °व्विवर वि [°विवर] विवरण-युक्त, सविस्तर; (सुपा ३६४)। °संक वि [°शङ्क] शङ्का-युक्त, (दे २, १०६; सुर १६, ५५; कुप्र ४४५, गउड)। °संकिअ वि [°शङ्कित] वही; (सुर ८, ४०)। °सत्ता स्त्री [°सत्त्वा] सगर्भा, गर्भिणी स्त्री; (उत्त २१, ३)। °सिरिय, °सिरीय वि [°श्रीक] श्री-युक्त, शोभा-युक्त; (पि ६८; णाया १, १; राय)। °सिह वि [°स्पृह] स्पृहा वाला; (कुमा)। °सिह वि [°शिख] शिखा-युक्त; (राज)। °सूग वि [°शूक] दयालु; (उव)। °सेस वि [°शेष] १ सावशेष, बाकी रहा हुआ; (दे ८, ५६; गउड)। २ शेषनाग-सहित; (गउड १५)। °सोग, °सोगिल्ल वि [°शोक] दिलगीर, शोक-युक्त; (पउम ६३, ४; सुर ६, १२४)। °स्सिरिअ, °स्सिरीअ देखो °सिरिय; (पि ६८; अभि १५६; भग; सम १३७; णाया १, ६—पत्न १५७)।

सअ सक [स्वद्] १ प्रीति करना। २ चखना, स्वाद लेना। सअइ; (प्राकृ ७५; धात्वा १५४)।

सअ न [सदस्] सभा; (षड्)।

सअअ न [दे] १ शिला, पत्थर का तख्ता; २ वि. घूर्णित, (दे ८, ४६)।

सअक्खगत्त पुं [दे] कितव, जुआरी; (दे ८, २१)।

सअज्जिअ } पुस्त्री [दे] प्रातिवेश्मिक, पड़ौसी; (गा
सअज्झिअ } ३३५), स्त्री—°आ; (गा ३६; ३६ अ), "सअज्झिअं संठवंतीए" (गा ३६; पिंड ३४२)। देखो

सड्डिज्झअ।

सअडिआ देखो सगडिआ; (पि २०७)।

सअड्ढ न [दे] [illegible]; (दे ८, ११)।

सअढ पुं [शकट] १ दैत्य-विशेष; (प्राकृ; मंदि ७; दे २, १७६)। २ पुंन. यान-विशेष, गाड़ी; (दे २, १८०)। °रि पुं [°रि] नारायण, श्रीकृष्ण; (कुमा)। देखो सगड।

सअर देखो स-अर = स-कर, स-चार।

सअर देखो सगर; (से २, २६)।

सआ अ [सदा] १ हमेशा, निरन्तर; (प्राप्र; दे १, ७२; कुमा; सम्म ४६)। °चार पुं [°चार] निरन्तर गति; (स्वप्न ६५)।

सआ स्त्री [स्रज] माला; (षड्)।

सइ देखो सआ=सदा; (गाअ; हे १, ७२; कुमा)।

सइ अ [सकृत्] एक बार, एक दफा; (हे १, १२८; सम [illegible]; सुर ८, २४४)।

सइ स्त्री [स्मृति] स्मरण, चिन्तन, याद; (श्रा १६)। °काल पुं [°काल] भिक्षा मिलने का समय; (दस ५, २, ६)।

सइ देखो स—स्व; "[illegible]कारियविजियारविमाण" (सुपा [illegible])।

सइ देखो सय = शत; "अम्मोवत्थ मोत्ताणि फुट्टए जं न [illegible]" ([illegible])। °कोडि स्त्री [°कोटि] एक [illegible]; (षड्)।

सइ देखो सई=शची; (काल; हे ४, ३९५; ४३०)।

सइ देखो सई = सती; (सुपा ३०६)।

सइअ वि [शतिक] सौ का परिमाण वाला; (गाया १, १—पत्र ३७)। देखो सइय।

सइअ वि [शयित] सुप्त, सोया हुआ; (हे ३, २८; [illegible] पउम १०१, ६०)।

सइण्णय [illegible] "[illegible] न आगओ पव्वियाओ [illegible] [illegible] नालिरपुरिसे बेत्तुया" (महा)।

सइं देखो सइ=[illegible]; (षण्णा)।

सइं देखो सयं=[illegible]; (ठा २, ३—पत्र ६३; हे ४, ३३६; ४४०; औप)।

सइग वि [शतिक] सौ ([illegible] आदि) की कीमत का; (दसनि ३, १३)।

सइज्झ
सइज्झिअ } पुंस्त्री [दे] प्रातिवेश्मिक, पड़ोसी; (दे ८, १०); स्त्री—°आ; (सुपा २७८; पिंड ३४२ टी; वज्जा ९४)।

सइज्झिअ न [दे] प्रातिवेश्य, पड़ोसिपन; (दे ८, १ टी)।

सइण्ण न [सैन्य] सेना, लश्कर; (षड्)।

सइत्तए देखो सय=शी।

सइदंसण वि [दे. स्मृतिदर्शन] मनो-दृष्ट, चित्त में अवलोकित, विचार में प्रतिभासित; (दे ८, १९; पाअ)।

सइदिट्ठ वि [दे. स्मृतिदृष्ट] ऊपर देखो; (दे ८, १९)।

सइन्न देखो सइण्ण; (हे १, १५१; कुमा)।

सइम वि [शततम] सौवाँ, १०० वाँ; (णाया १, १६—पत्र २१४)।

सइर न [स्वैर] १ स्वेच्छा, स्वच्छन्दता; (हे १, १५१; प्राप्र; णाया १, १८—पत्र २३६)। २ वि. मन्द, अलस; (पाअ)। ३ स्वैरी, स्वच्छन्दी; (पाअ; प्राप्र)।

सइरवसह पुं [दे. स्वैरवृषभ] स्वच्छन्दी साँढ़, धर्म के लिए छोड़ा जाता बैल; (दे २, २५; ८, २१)।

सइरि वि [स्वैरिन्] स्वच्छंदी, स्वेच्छाचारी; (गच्छ १, ३८)।

सइरिणी स्त्री [स्वैरिणी] व्यभिचारिणी स्त्री, कुलटा; (पउम ५, १०५)।

सइल देखो सेल; (हे ४, ३२६)।

सइलंभ वि [दे. स्मृतिलम्भ] देखो सइदंसण; (दे ८, १९; पाअ)।

सइलासअ
सइलासिअ } पुं [दे] मयूर, मोर; (दे ८, २०; षड्)।

सइव पुं [सचिव] १ प्रधान, मन्त्री, अमात्य; (पाअ)। २ सहाय, मदद-कर्ता; ३ काला धतूरा; (प्राकृ ११)

सइम्मिलिअ पुं [दे] स्कन्द, कार्तिकेय; (दे ८, २०)।

सइसुह वि [दे. स्मृतिसुख] देखो सइदंसण; (दे ८, १९; पाअ)।

सई स्त्री [शची] इन्द्राणी, शक्रेन्द्र की एक पटरानी; (ठा ८—पत्र ४२९; णाया २—पत्र २५३; पाअ; सुपा ६८; ६२२; कुम्र २३)। °स पुं [°श] इन्द्र; (कुमा)। देखो सची।

सई स्त्री [सती] पतिव्रता स्त्री; (कुम्र २३; सिरि १४३)।

सई स्त्री [शती] सौ, १००; "पंचसई" धर्मवि ([illegible])

सईणा स्त्री [दे] अन्न-विशेष, तुवरी, रहर; (ठा ५, ३—पत्न ३४३)।

सउ } (अप) देखो **सहु**; (सण; भवि)।
सउं }

सउंत पुं [**शकुन्त**] १ पक्षी, पाखी; (पाअ)। २ पक्षि-विशेष, भास-पक्षी; (स ४३६)।

सउंतला स्त्री [**शकुन्तला**] विश्वामित्र ऋषि की पुत्री और राजा दुष्यंत की गन्धर्व-विवाहिता पत्नी; (हे ४, २६०)।

सउंदला (शौ) ऊपर देखो, (अभि २६, ३०, पि २७५)।

सउण वि [**दे**] रूढ, प्रसिद्ध; (दे ८, ३)।

सउण पुंन [**शकुन**] १ शुभाशुभ-सूचक बाहु-स्पन्दन, काक-दर्शन आदि निमित्त, सगुन; "सुहजोगाई सउणा कंदिअसद्दाई इअरो उ" (धर्म २; सुपा १८५; महा)। २ पुं. पक्षी, पाखी; (पाअ, गा २२०; २८५, करु ३४; सट्ठि ६ टी)। ३ पक्षि-विशेष; (पराह १, १—पत्न ८)। °**विउ** वि [°**विद्**] सगुन का जानकार; (सुपा २६७)। °**रुअ** न [°**रुत**] १ पक्षी का आवाज; २ कला-विशेष, सगुन का परिज्ञान; (णाया १, १—पत्न ३८; जं २ टी —पत्न १३७)।

सउण देखो **स-उण**=स-गुण।

सउणि पुं [**शकुनि**] १ पक्षी, पखेरू; पाखी, (औप; हेका १०५; संबोध १७)। २ पक्षि-विशेष, चील पक्षी; (पाअ)। ३ ज्योतिष-प्रसिद्ध एक स्थिर करण जो कृष्ण चतुर्दशी की रात में सदा अवस्थित रहता है; (विसे ३३५०)। ४ नपुंसक-विशेष, चटक की तरह बारबार मैथुन-प्रसक्त क्लीव; (पव १०६; पुप्फ १२७)। ५ दुर्योधन का मामा; (णाया १, १६—पत्न २०८; सुपा २६०)।

सउणिअ देखो **साउणिअ**, (राज)।

सउणिआ }
सउणिगा } स्त्री [**शकुनिका**, °**नी**] १ पक्षिणी, पक्षी की मादा; (गा ८१०; आव १)। २ पक्षि-विशेष की मादा; "सउणी जाया तुमं" (ती ८)।
सउणी }

सउण्ण देखो **स-उण्ण**=सपुण्य।

सउत्ती स्त्री [**सपत्नी**] एक पति की दूसरी स्त्री, समान पतिवाली स्त्री, सौत, सौतिन; (सुपा ६८)।

सउन्न देखो **स-उन्न**।

सउम पुं [**सद्मन्**] १ गृह, घर, २ जल, पानी; (प्राकृ २८)।

सउमार वि [**सुकुमार**] कोमल; (से १०, ३४; षड्)।

सउर पुं [**सौर**] १ ग्रह-विशेष, शनैश्चर; २ यम, जमराज; ३ वृक्ष-विशेष, उदुम्बर का पेड़, ४ वि. सूर्य का उपासक, ५ सूर्य-संबन्धी; (चंड; हे १, १६२)।

सउरि पु [**शौरि**] विष्णु, श्रीकृष्ण, (पाअ)।

सउरिस देखो **स-उरिस**=सत्पुरुष।

सउल पुं [**शकुल**] मत्स्य, मछली; "सउला सहरा मीणा तिमी झसा अणिमिसा मच्छा" (पाअ)।

सउलिअ वि [**दे**] प्रेरित, (दे ८, १२)।

सउलिआ } स्त्री [**दे. शकुनिका**, °**नी**] १ पक्षि-विशेष की मादा, चील पक्षी की मादा; (ती ८, अणु १४१; दे ८, ८)। २ एक महौषधि; (ती ५)। °**विहार** पुं [°**विहार**] गुजरात के भरौच शहर का एक प्राचीन जैन मन्दिर; (ती ८)।
सउली }

सउह पुं [**सौध**] १ राज-महल, राज-प्रासाद; (कुमा)। २ न. रूपा, चाँदी; ३ पुं. पाषाण-विशेष; ४ वि. सुधा-संबन्धी, अमृत का; (चंड; हे १, १६२)।

सएज्झिअ देखो **सइज्झिअ**; (कुप्र १६३)।

सओस देखो **स-ओस**=स-तोष, स-दोष।

सं अ [**शम्**] सुख, शर्म; (स ६११; सुर १६, ४२; सुपा ४१६)।

सं अ [**सम्**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ प्रकर्ष, अतिशय, (धर्मसं ८६७)। २ संगति; ३ सुन्दरता, शोभनता; ४ समुच्चय; ५ योग्यता, व्याजवीपन; (षड्)।

संक सक [**शङ्क्**] १ संशय करना, संदेह करना। २ अक. भय करना, डरना। सकइ, संकए, सकंति; संकसि, संकसे, संकह, संकत्थ; संकामि, संकामो, संकामु, संकाम (सत्ति ३०), "असकिआइं संकंति" (सूअ १, १, २, १०; ११), "जं सम्ममुज्जमंताण पाणि(?णी) णं संकए हु विही" (सिरि ६६६)। कर्म—संकिज्जइ; (गा ५०६)। वकृ—**संकंत**, **संकमाण**, (पव, रभा ३३)। कृ—**संकणिज्ज**; (उप ७२८ टी)।

संकंत वि [**संक्रान्त**] १ प्रतिबिम्बित; (गा १; से १, ५७)। २ प्रविष्ट; घुसा हुआ, (ठा ३, ३, कप्प; महा)। ३ प्राप्त; ४ संक्रमण-कर्ता; ५ सक्राति-युक्त; ६ पिता आदि से दाय रूप से प्राप्त स्त्री का धन, (प्राप्र)।

संकंति स्त्री [**संक्रान्ति**] १ संक्रमण, प्रवेश; (पव १५५,

अज्झ १५३)। २ सूर्य आदि का एक राशि से दूसरी राशि में जाना; "आरब्भ कक्कसंकंतिदिवसओ दिवसनाहु व्व" (धर्मवि ६६)।

संकंदण पुं [**संक्रन्दन**] इन्द्र, देवाधीश ; (उप ५३० टी; उपपं १)।

संकट्टिअ वि [**संकर्तित**] काटा हुआ; "धन्नसंकट्टित-माणा" (ठा ४, ४—पत्र २७६)।

संकट्ठ वि [**संकष्ट**] व्याप्त; (राज)।

संकट्ठ देखो **संकिट्ठ**; (राज)।

संकड वि [**संकट**] १ संकीर्ण, कम-चौड़ा; अल्प अवकाश वाला; (स ३९२; सुपा ४१६; उप ८३३ टी)। २ विषम, गहन; (पिंड ६३४)। ३ न. दुःख;

"धन्नाणवि ते धन्ना पुरिसा निस्सीमसत्तिसंजुत्ता।
जे विसमसंकडेसुवि पडियावि चयंति ण धम्मं॥"
(रयण ७३)।

संकडिय वि [**संकटित**] संकीर्ण किया हुआ; (कुप्र ३९०)।

संकडिल्ल वि [**दे**] निश्छिद्र, छिद्र-रहित; (दे ८, १५; सुर ४, १४३)।

संकड्ढिय वि [**संकर्षित**] आकर्षित; (राज)।

संकण न [**शङ्कन**] शंका, संदेह; (दस ६, ५६)।

संकप्प पुं [**संकल्प**] १ अध्यवसाय, मनः-परिणाम, विचार; (उवा; कप्प; उप १०३५)। २ संगत आचार, सदाचार; (उप १०३५)। ३ अभिलाष, चाह; (गउड)। °**जोणि** पुं [°**योनि**] कामदेव, कंदर्प; (पाअ)।

संकम सक [**सं+क्रम्**] १ प्रवेश करना। २ गति करना, जाना। संकमइ, संकमंति; (पिंड १०८; सूअ २, ४, १०)। वकृ—**संकममाण**; (सम ३९; सुज्ज २, १; रंभा)। हेकृ—**संकमित्तए**; (कस)।

संकम पुं [**संक्रम**] १ सेतु, पूल, जल पर से उतरने के लिए काष्ठ आदि से बाँधा हुआ मार्ग; (से ६, ९५; दस ५, १, ४; पण्ह १, १)। २ संचार, गमन, गति; "पाउल्लाइ संकमट्ठाए" (सूअ १, ४, २, १५; श्रावक २२३)। ३ जीव जिस कर्म-प्रकृति को बाँधता हो उसी रूप से अन्यप्रकृति के दल को प्रयत्न-द्वारा परिणमाना; बँधी जाती कर्म-प्रकृति में अन्य कर्म-प्रकृति के दल को डाल कर उसे बँधी जाती कर्म-प्रकृति के रूप से परिणत करना; (ठा ४, २—पत्र २२०)।

संकमग वि [**संक्रामक**] संक्रमण-कर्ता; (धर्मसं १३३०)।

संकमण न [**संक्रमण**] १ प्रवेश; "नवरं मुत्तूण घरं घरसंकमणं कयं तेहिं" (संबोध १४)। २ संचार, गमन; (प्रासू १०५)। ३ चारित्र, संयम; (आचा)। ४ देखो **संकम** का तीसरा अर्थ; (पंच ३, ४८)। ५ प्रतिबिम्बन; (गउड)।

संकर पुं [**दे**] रथ्या, मुहल्ला; (दे ८, ६)।

संकर पुं [**शङ्कर**] १ शिव, महादेव; (पउम ५, १२२; कुमा; सम्मत्त ७६)। २ वि. सुख करने वाला; (पउम ५, १२२; दे १, १७७)।

संकर पुं [**संकर**] १ मिलावट, मिश्रण; (पण्ह १, ५—पत्र ९२)। २ न्यायशास्त्र-प्रसिद्ध एक दोष; (उवर १७६)। ३ शुभाशुभ-रूप मिश्र भाव; (सिरि ५०६)। ४ अशुचि-पुंज, कचरे का ढेर; (उत्त १२, ६)।

संकरण न [**संकरण**] अच्छी कृति; (संबोध ६)।

संकरिसण पुं [**संकर्षण**] भारतवर्ष का भावी नववाँ बलदेव; (सम १५४)।

संकरी स्त्री [**शङ्करी**] १ विद्या-विशेष; (पउम ७, १४२; महा)। २ देवी-विशेष; ३ सुख करने वाली; (गउड)।

संकल सक [**सं+कलय्**] संकलन करना, जोड़ना। संकलेइ; (उव)।

संकल पुंन [**शृङ्खल**] १ साँकल, निगड़; २ लोहे का बना हुआ पाद-बन्धन, बेड़ी; (विपा १, ६—पत्र ६६; धर्मवि १३६; सम्मत्त १९०; हे १, १८९)। ३ सीकली, आभूषण-विशेष; (सिरि ८११)।

संकलण न [**संकलन**] मिश्रता, मिलावट; (माल ८७)।

संकला स्त्री [**शृङ्खला**] देखो **संकल**=शृङ्खल; (स १७१; सुपा २९१; प्राप)।

संकलिअ वि [**संकलित**] १ एकत्र किया हुआ; (उप पृ ३४१; तंदु २)। २ युक्त; "तत्थ य भमिओ तं पुण कायट्ठिईकालसंखसंकलिओ" (सिक्खा १०)। ३ योजित, जोड़ा हुआ; (सिरि १३४०)। ४ संगृहीत; (उव)। ५ न. संकलन, कुल जोड़; (वव १)।

संकलिआ स्त्री [**संकलिका**] १ परंपरा; (पिंड २३६)। २ संकलन; ३ सूत्रकृतांग सूत्र का पनरहवाँ अध्ययन; (राज)।

संकलिआ, **संकली** स्त्री [**शृङ्खलिका**, °**ली**] साँकल, सीकली; निगड़; (सूअ १, ५, २, २०; प्रामा)।

संकहा स्त्री [**संकथा**] संभाषण, वार्तालाप; (पउम ७,

१५८;१०६,६; सुर ३, १२६; उप पृ ३७८; पिंड १६४)।

संका स्त्री [**शङ्का**] १ संशय, संदेह; (पडि)। २ भय, डर; (कुमा)। °**लुअ** वि [°**वत्**] शंका वाला, शंका-युक्त; (गउड)।

संकाम देखो **संकम**=सं+क्रम्। संकामइ; (सुज्ज २, १; पञ्च ५, १४७)।

संकाम सक [**सं+क्रमय्**] संक्रम करना, बँधी जाती कर्म-प्रकृति में अन्य प्रकृति के कर्म-दलों को प्रक्षिप्त कर उस रूप से परिणत करना। संकामेंति; (भग)। भूका—संकामिंसु; (भग)। भवि-संकामेस्संति; (भग)। कवकृ—**संकामिज्ज-माण**; (ठा ३, १—पत्र १२०)।

संकामण न [**संक्रमण**] १ संक्रम-करण; (भग)। २ प्रवेश कराना; (कुप्र १४०)। ३ एक स्थान से दूसरे स्थान मे ले जाना; (पंचा ७, २०)।

संकामणा स्त्री [**संक्रमणा**] संक्रमण, पैठ; (पिंड २८)।

संकामणी स्त्री [**संक्रमणी**] विद्या-विशेष, एक से दूसरे में जिससे प्रवेश किया जा सके वह विद्या; (णाया १, १६—पत्र २१३)।

संकामिय वि [**संक्रमित**] एक स्थान से दूसरे स्थान में नीत; (राज)।

संकार देखो **सक्कार**=संस्कार; (धर्मसं ३५४)।

संकास वि [**संकाश**] १ समान, तुल्य, सरीखा; (पाअ; णाया १, ५; उत्त ३४, ४; ५; ६; कप्प; पंच ३, ४०; धर्मवि १४६)। २ पुं. एक श्रावक का नाम; (उप ४०३)।

संकासिया स्त्री [**संकाशिका**] एक जैन मुनि-शाखा; (कप्प)।

संकि वि [**शङ्किन्**] शंका करने वाला; (सूअ १, १, २, ६; गा ८७३; संबोध ३४; गउड)।

संकिअ वि [**शङ्कित**] १ शंका वाला, शंका-युक्त; (भग; उवा)। २ न. संशय, संदेह; (पिंड ४६३; महा ६८)। ३ भय, डर; (गा ३३३), "संकिअमवि नेव दविअस्स" (श्रा १४)।

संकिट्ठ वि [**संकृष्ट**] विलिखित, जोता हुआ, खेती किया हुआ; (ओप; णाया १, १ टी—पत्र १)।

संकिट्ठ देखो **संकिलिट्ठ**; (राज)।

संकिण्ण वि [**संकीर्ण**] १ सकड़ा, तंग, अल्पावकाश वाला; (पाअ; महा)। २ व्याप्त; (राज)। ३ मिश्रित, मिला हुआ; (ठा४, २; भग २५, ७ टी—पत्र ६१६)। ४ पुं. हाथी की एक जाति; (ठा ४, २—पत्र २०८)।

संक्तित देखो **संकिअ**; (णाया १, ३—पत्र ६४)।

संकित्तण न [**संकीर्तन**] उच्चारण; (स्वप्न २७)।

संकिन्न देखो **संकिण्ण**; (ठा ४, २; भग २५, ७)।

संकिर वि [**शङ्कितृ**] शङ्का करने की आदत वाला, शंका-शील; (गा २०६; ३३३; ५८२; सुर १२, १२५; सुपा ४६८)।

संकिलिट्ठ वि [**संक्लिष्ट**] संक्लेश-युक्त, संक्लेश वाला; (उव; ओप; पि १३६)।

संकिलिस्स अक [**सं+क्लिश्**] १ क्लेश पाना, दुःखी होना। २ मलिन होना। सकिलिस्सइ, संकिलिस्संति; (उत्त २६, ३४; भग; ओप)। वकृ—**संकिलिस्समाण**; (भग १३, १—पत्र ५६६)।

संकिलेस पुं [**संक्लेश**] १ अ-समाधि, दुःख, कष्ट, हैरानी; (ठा १०—पत्र ४८६; उव)। २ मलिनता, अ-विशुद्धि; (ठा ३, ४—पत्र १५६; पंचा १५, ४)।

संकीलिअ वि [**संकीलित**] कील लगा कर जोड़ा हुआ; (से १४, २८)।

संकु पु [**शङ्कु**] १ शल्य अस्त्र; २ कीलक, खूँटा, कील; "अंतोनिविट्ठसंकुव्व" (कुप्र ४०२; राय ३०; आवम)। °**कण्ण** न [°**कर्ण**] एक विद्याधर-नगर; (इक)।

संकुइय वि [**संकुचित**] १ सकुचा हुआ, संकोच-प्राप्त; (ओप; रंभा)। २ न. संकोच; (राज)।

संकुक पुं [**शङ्कुक**] वेताढ्य पर्वत की उत्तर श्रेणी का एक विद्याधर-निकाय; (राज)।

संकुका स्त्री [**शङ्कुका**] विद्या-विशेष; (राज)।

संकुच अक [**सं+कुच्**] सकुचना, संकोच करना। संकुचए; (आचा; संबोध ४७)। वकृ—**संकुचमाण, संकुचेमाण**; (आचा)।

संकुचिय देखो **संकुइय**; (दस ४, १)।

संकुड वि [**संकुट**] सकड़ा, संकीर्ण, संकुचित; "अंतो य संकुडा बाहिं वित्थडा चंदसूराणं" (सुज्ज १६)।

संकुडिअ वि [**संकुटित**] सकुचा हुआ, सकुचित; (भग ७, ६—पत्र ३०७; धर्मसं ३८७; स ३५८; सिरि ७८६)।

संकुद्ध वि [**संक्रुद्ध**] क्रोध-युक्त; (वज्जा १०)।

संकुय देखो **संकुच**। संकुयइ; (वज्जा ३०)। वकृ—**संकुयंत**; (वज्जा ३०)।

संकुल वि [**संकुल**] व्याप्त, पूर्ण भरा हुआ; (से १, ५७; उव; महा; स्वप्न ५१; धर्मवि ५५; प्रासू १०)।

संकुलि } देखो **सक्कुलि**; (पि ७४; ठा ४,४—पत्र २२६;
संकुली° } पव २६२; आचा २, १, ४, ५)।

संकुसुमिअ वि [**संकुसुमित**] अच्छी तरह पुष्पित; (राय ३८)।

संकेअ सक [**सं+केतय्**] १ इसारा करना। २ मसलहत करना। संकृ—**संकेइय** जोगिणिमेगं" (सम्मत्त २१८)।

संकेअ पुं [**संकेत**] १ इशारा, इंगित; (सुपा ४१५; महा)। २ प्रिय-समागम का गुप्त स्थान; (गा ६२६; गउड)। ३ वि. चिह्न-युक्त; ४ न. प्रत्याख्यान-विशेष; (आव)।

संकेअ वि [**साङ्केत**] १ सकेत-सबन्धी; २ न. प्रत्याख्यान-विशेष; (पव ४)।

संकेइअ वि [**संकेतित**] संकेत-युक्त; (श्रा १४; धर्मवि १३४; सम्मत्त २१८)।

संकेल्लिअ वि [**दे**] सकेला हुआ, संकुचित किया हुआ; (गा ६६४)।

संकेस देखो **संकिलेस**; (उप ३१२; कम्म ५, ६३)।

संकोअ सक [**सं+कोचय्**] संकुचित करना। वकृ—**संकोअंत**; (सम्मत्त २१७)।

संकोअ पुं [**संकोच**] सकोच, सिमट; (राय १४० टी; धर्मस ३६५; सबोध ४७)।

संकोअण न [**संकोचन**] संकोच, सकुचाना; (दे ५, ३१; भग; सुर १, ७६; धर्मवि १०१)।

संकोइय वि [**संकोचित**] सकुचित किया हुआ, सकेला हुआ; (उप ७२८ टी)।

संकोड पुं [**संकोट**] सकोडना, संकोच; (पराह १, ३—पत्र ५३)।

संकोडणा स्त्री [**संकोटना**] ऊपर देखो; (राज)।

संकोडिय वि [**संकोटित**] सकोडा हुआ, संकोचित; (पराह १, ३—पत्र ५३; विपा १, ६—पत्र ६८; स ७४१)।

संख पुंन [**शङ्ख**] १ वाद्य-विशेष, शंख; (णादि; राय; जी १५; कुमा; दे १, ३०)। २ पुं. ज्योतिष्क ग्रह-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७८)। ३ महाविदेह वर्ष का प्रान्त-विशेष, विजय-क्षेत्र विशेष; (ठा २, ३—पत्र ८०)। ४ नव निधि में एक निधि, जिसमे विविध तरह के बाजों की उत्पत्ति होती है; (ठा ९—पत्र ४४९; उप ९८६ टी)। ५ लवण समुद्र में स्थित वेलन्धर-नागराज का एक आवास-पर्वत; (ठा ४, २—पत्र २२६; सम ६८)। ६ उक्त आवास-पर्वत का अधिष्ठाता एक देव; (ठा ४, २—पत्र २२६)। ७ भगवान् मल्लिनाथ के समय का काशी का एक राजा; (णाया १, ८—पत्र १४१)। ८ भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेने वाला एक काशी-नरेश; (ठा ८—पत्र ४३०)। ९ तीर्थंकर-नामकर्म उपार्जित करने वाला भगवान् महावीर का एक श्रावक;(ठा ९—पत्र ४५५; सम १५४; पव ४६; विचार ४७७)। १० नववें बलदेव का पूर्वजन्मीय नाम; (पउम २०, १९१)। ११ एक राजा; (उप ७३६)। १२ एक राज-पुत्र; (सुपा ५६९)। १३ रावण का एक सुभट; (पउम ५६, ३४)। १४ छन्द-विशेष; (पिंग)। १५ एक द्वीप; १६ एक समुद्र; १७ शंखवर द्वीप का एक अधिष्ठायक देव; (दीव)। १८ पुंन. ललाट की हड्डी; (धर्मवि १७; हे १,३०)। १९ नखी नामका एक गन्ध-द्रव्य; २० कान के समीप की एक हड्डी; २१ एक नाग-जाति; २२ हाथी के दाँत का मध्य भाग; २३ संख्या-विशेष, दस निखर्व की संख्या; २४ दस निखर्व की संख्या वाला; (हे १, ३०)। २५ आँख के समीप का अवयव; (णाया १, ८—पत्र १३३)। °**उर** देखो °**पुर**; (ती ३; महा)। °**णाभ** पुं [°**नाभ**] ज्योतिष्क महाग्रह-विशेष; (सुज्ज २०)। °**णारी** स्त्री [°**नारी**] छन्द-विशेष; (पिंग)। °**धमग** पुं [°**ध्मायक**] वानप्रस्थ की एक जाति; (राज)। °**धर** पुं [°**धर**] श्रीकृष्ण, गुि व८; (कुमा)। °**पाल** देखो °**वाल**; (ठा ४, १—पत्र १९७)। °**पुर** न [°**पुर**] १ एक विद्याधर-नगर; (इक)। २ नगर-विशेष जो आजकल गुजरात में संखेश्वर के नाम से प्रसिद्ध है; (राज)। °**पुरी** स्त्री [°**पुरी**] कुरुजंगल देश की प्राचीन राजधानी, जो पीछे से अहिच्छत्रा के नाम से प्रसिद्ध हुई थी; (सिरि ७८)। °**माल** पुं [°**माल**] वृक्ष की एक जाति; (जीव ३—पत्र १४५)। °**वण** न [°**वन**] एक उद्यान का नाम; (उवा)। °**वण्णाभ** पुं [°**वर्णाभ**] ज्योतिष्क महाग्रह-विशेष; (सुज्ज २०)। °**वन्न** पुं [°**वर्ण**] जोतिष्क महाग्रह-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७८)। °**वन्नाभ** देखो °**वण्णाभ**; (ठा २, ३—पत्र ७८)। °**वर** पुं [°**वर**] १ एक द्वीप; २ एक समुद्र; (दीव; इक)। °**वरोभास** पुं [°**वरावभास**] १ एक द्वीप; २ एक समुद्र; (दीव)। °**वाल** पुं [°**पाल**] नाग-कुमार-देवों के धरण और भूतानन्द-नामक इन्द्रों के एक

२ लोकपाल का नाम; (इक)। °वालय पुं [°पालक] १ जैनेतर दर्शन का अनुयायी एक व्यक्ति; (भग ७, १०—पत्र ३२३)। २ आजीविक मत का एक उपासक; (भग ८, ५—पत्र ३७०)। °ालग वि [°वत्] शंख वाला: (णाया १, ८—पत्र १३३)। °ावई स्त्री [°ावती] नगरी-विशेष; (ती ५)।

संख वि [**संख्य**] संख्यात, गिना हुआ, गिनती वाला: (कम्म ४, ३९; ४१)।

संख न [**सांख्य**] १ दर्शन-विशेष, कपिलमुनि-प्रणीत (णाया १, ५—पत्र १०५; सुपा ५६६)। २ वि. साख्य मत का अनुयायी; (औप; कुप्र २३)।

संख पुं [**दे**] मागध, स्तुति-पाठक; (दे ८, २)।

संखइम वि [**संख्येय**] जिसकी संख्या हो सके वह; (विसे ६७०; अणु ६१ टी)।

संखड न [**दे**] कलह, झगड़ा; (पिंड ३२४; ओघ १५७)।

संखडि स्त्री [**दे**] १ विवाह आदि के उपलक्ष्य में नात आदि को दिया जाता भोज, जेवनार; (आचा २, १, २, ४; २, १, ३. १; २; ३; पिंड २२८; ओघ १२: ८८; भास ९२)।

संखडि स्त्री [**संस्कृति**] ओदन-पाक, (कप्प)।

संखणग पुं [**शङ्खनक**] छोटा शंख; (उत्त ३६, १२९; पएण १—पत्र ४४; जीव १ टी—पत्र ३१)।

संखद्दह पुं [**दे**] गोदावरी ह्रद; (दे ८, १४)।

संखवइल्ल पुं [**दे**] कृषक की इच्छानुसार उठ कर खडा होने वाला बैल; (दे ८, १९)।

संखम वि [**संक्षम**] समर्थ; (उप ९८६ टी)।

संखय पुं [**संक्षय**] क्षय, विनाश; (से ९, ४२)।

संखय वि [**संस्कृत**] संस्कार-युक्त; "णाय संखयमाहु जीवियं" (सूअ १, २, २, २१; १, २, ३, १०; पि ४९), "असंखयं जीविय मा पमायए" (उत्त ४, १)।

संखलय पुं [**दे**] शम्बूक, शुक्ति के आकार वाला जल-जंतु विशेष; (दे ८, १६)।

संखला देखो **संकला**; (गउड; प्रामा)।

संखलि पुंस्त्री [**दे**] कर्ण-भूषण विशेष, शंख-पत्र का बना हुआ ताडंक; (दे ८, ७)।

संखव सक [**सं + क्षपय्**] विनाश करना। संकृ—**संखवियाण**; (उत्त २०, ५२)।

संखविअ वि [**संक्षपित**] विनाशित; (अच्चु ८)।

संखा सक [**सं+ख्या**] १ गिनती करना। २ जानना। संकृ—**संखाय**; (सूअ १, २, २, २१)। कृ—**संखिज्ज, संखेज्ज**; (उवा; जी ४१; उव; कप्प)।

संखा अक [**सं + स्त्यै**] १ आवाज करना। २ संहत होना, सान्द्र होना, निविड़ बनना। संखाइ, संखाअइ; (हे ४, १५; षड्)।

संखा स्त्री [**संख्या**] १ प्रज्ञा, बुद्धि: (आचा १, ६. ४, १)। २ ज्ञान; (सूअ १, १३, ८)। ३ निर्णय, (अणु)। ४ गिनती, गणना; (भग; अणु; कप्प; कुमा)। ५ व्यवस्था; (सूअ २, ७, १०)। °ईअ वि [°तीत] असंख्य; (भग १, १ टी; जीव १ टी—पत्र १३; श्रा ४१)। °दत्तिय वि [°दत्तिक] उतनी ही भिक्षा लेने का व्रत वाला सयमी जितनी कि अमुक गिने हुए प्रक्षेपों में प्राप्त हो जाय; (ठा ७, ४—पत्र १००; ५, १—पत्र २९६; औप)।

संखाण न [**संख्यान**] १ गिनती, गणना, संख्या: २ गणित-शास्त्र; (ठा ४, ४—पत्र २६३; भग; कप्प; औप; पउम ८५, ६; जीवस १३५)।

संखाय वि [**संस्त्यान**] १ सान्द्र, निविड; (कुमा ६, ११)। २ आवाज करने वाला; ३ संहत करने वाला: ४ न. स्नेह; ५ निविड़पन; ६ संहति, संघात; ७ आलस्य; ८ प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि; (हे १, ७४; ४, १५)।

संखाय देखो **संखा** सं+ख्या।

संखाय वि [**संख्यात**] संख्या-युक्त; (सूअ १, १३, ८)।

संखायण न [**शाङ्खायन**] गोत्र-विशेष: (सुज १०, १६; इक)।

संखाल पुं [**दे**] हरिण की एक जाति, साँबर मृग; (दे ८, ६)।

संखालग देखो **संख-ालग**=शङ्ख-वत्।

संखावई देखो **संख-ावई**=शङ्खावती।

संखाविय वि [**संख्यापित**] जिसकी गिनती कराई गई हो वह, (सुपा ३६२; स ४१९)।

संखिग देखो **संखिय**=शाङ्खिक; (स १७३; कुप्र १४९)।

संखिज्ज देखो **संखा**=सं+ख्या।

संखिज्जइ वि [**संख्येयतम**] संख्यातवाँ; (अणु ६१)।

संखित्त वि [**संक्षिप्त**] संक्षेप-युक्त, छोटा किया हुआ; (उवा; द ३; जी ५१)।

संखिय वि [**शाङ्खिक**] १ मगल के लिए चन्दन-गर्भित

शख को हाथ में धारण करने वाला; २ शंख बजाने वाला; (कप्प: औप)।

संखिय देखो **संख**=संख्य; (स ४४१; पंच २, ११; जीवस १४६)।

संखिया स्त्री [**शङ्खिका**] छोटा शख; (जीव ३—पत्र १४६; जं २ टी—पत्र १०१; राय ४५)।

संखुड्ड अक [**रम्**] क्रीडा करना. संभोग करना। संखुड्डइ; (हे ४, १६८)।

संखुड्डण न [**रमण**] क्रीडा, सुरत-क्रीडा; (कुमा)।

संखुत्त (अप) नीचे देखो; (भवि)।

संखुद्ध वि [**संक्षुब्ध**] क्षोभ-प्राप्त; (स ५६८; ६७४; सम्मत्त १५६; सुपा ५१७; कुप्र १७४)।

संखुभिअ } वि [**संक्षुब्ध. संक्षुभित**] ऊपर देखो; (सम
संखुहिअ } १२५; पव २७२; पउम ३३. १०६; पि ३१६)।

संखेज्ज देखो **संखा**=सं+ख्या।

संखेज्जइ } देखो **संखिज्जइ**; (अणु ६१; विसे ३६०)।
संखेज्जइम }

संखेत्त देखो **संखित्त**; (ठा ४. २—पत्र २२६; चेइय ३२५)।

संखेव पुं [**संक्षेप**] १ अल्प, कम, थोडा; (जी २५; ५१)। २ पिंड, संघात, संहति; (ओघभा १)। ३ स्थान; " तेरससु जीवसखेवएसु" (कम्म ६, ३५)। ४ सामायिक, सम-भाव से अवस्थान, (विसे २७६६)।

संखेवण न [**संक्षेपण**] अल्प करना, न्यून करना; (नव २८)।

संखेविय वि [**संक्षेपिक**] सक्षेप-युक्त। °**दसा** स्त्री.ब. [°**दशा**] जैन ग्रन्थ-विशेष; (ठा १०—पत्र ५०५)।

संखोभ } सक [**सं + क्षोभय्**] क्षुब्ध करना। संखोहइ;
संखोह } (भवि)। कवकृ—**संखोभिज्जमाण**; (णाया १, ६—पत्र १५६)।

संखोह पुं [**संक्षोभ**] १ भय आदि से उत्पन्न चित्त की व्यग्रता, क्षोभ; (उव; सुर २, २२; उपपृ १३१; गु ३; ति ६४; गउड)। २ चंचलता; (गउड)।

संखोहिअ वि [**संक्षोभित**] क्षुब्ध किया हुआ, क्षोभ-युक्त किया हुआ; (से १, ४६, अभि ६०)।

संग न [**शृङ्ग**] १ सिंग, विषाण; (धर्मसं ६३; ६४)। २ उत्कर्ष; (कुमा)। ३ पर्वत के ऊपर का भाग, शिखर; ४ प्रधानता, मुख्यता; ५ वाद्य-विशेष; ६ काम का उद्रेक; (हे १, १३०)। देखो **सिंग**=शृङ्ग।

संग न [**शार्ङ्ग**] शृङ्ग-संबन्धी; (विवे २८६)।

संग पुंन [**सङ्ग**] १ संपर्क, संबन्ध; (आचा; महा; कुमा)। २ सोबत; "तह हीणायारजइजणसंगं सड्ढाण पडिसिद्धं" (संबोध ३६; आचा; प्रासू ३०)। ३ आसक्ति, विषयादि-राग; (गउड; आचा; उव)। ४ कर्म, कर्म-बन्ध; (आचा)। ५ बन्धन; "भोगा इमे संगकरा हवंति" (उत्त १३, २७)।

संगइ स्त्री [**संगति**] १ औचित्य, उचितता; (सुपा ११०)। २ मेल; (भवि)। ३ नियति; (सूअ १, १, २, ३)।

संगइअ वि [**साङ्गतिक**] १ नियति-कृत, नियति-संबन्धी; (सूअ १, १, २, ३)। २ परिचित; "सुही ति वा सहाए ति वा संग(? गइ)ए ति वा" (ठा ४, ३—पत्र २४३; राज)।

संगंथ पुं [**संग्रन्थ**] १ स्वजन का स्वजन, सगे का सगा; (आचा)। २ संबन्धी, श्वशुर-कुल से जिसका संबन्ध हो वह; (पण्ह २, ४—पत्र १३२)।

संगच्छ सक [**सं+गम्**] १ स्वीकार करना। २ अक. संगत होना, मेल रखना। संगच्छइ; (चेइय ७७६; पड्), सगच्छह; (स १६)। कृ—**संगमणोअ**; (नाट—विक्र १००)।

संगच्छण न [**संगमन**] स्वीकार, अंगीकार; (उप ६३०)।

संगम पु [**संगम**] १ मेल, मिलाप; (पाअ; महा)। २ प्राप्ति; "सग्गापवग्गसंगमहेऊ जिणदेसिओ धम्मो" (महा)। ३ नदी-मीलक, नदियों का आपस में मिलान; (णाया १, १—पत्र ३३)। ४ एक देव का नाम; (महा)। ५ स्त्री-पुरुष का सभोग; (हे १, १७७)। ६ एक जैन मुनि का नाम; (उव)।

संगमय पुं [**संगमक**] भगवान् महावीर को उपसर्ग करने वाला एक देव; (चेइय २)।

संगमी स्त्री [**संगमी**] एक दूती का नाम; (महा)।

संगय वि [**दे**] मसृण, चिकना; (दे ८, ७)।

संगय न [**संगत**] १ मित्रता, मैत्री; (सुर ६, २०६)। २ संग, सोबत; (उव; कुप्र १३४)। ३ पुं. एक जैन मुनि का नाम; (पुप्फ १८२)। ४ वि. युक्त, उचित; (विपा १, २—पत्र २२)। ५ मिलित, मिला हुआ; (प्रासू ३१; पंचा १, १; महा)।

संगयय न [**संगतक**] छन्द-विशेष; (अजि ७)।

संगर देखो **संकर**=संकर; (विसे २८८४)।

संगर न [**संगर**] युद्ध, रण, लडाई; (पाअ; काप्र १९३; कुप्र ७३; धर्मवि ९३; हे ४, ३४५)।

संगरिगा स्त्री [**दे**] फली-विशेष, जिसकी तरकारी होती है, साँगरी; (पव ४—गाथा २२९)।

संगल सक [**सं+घटय्**] मिलना, सघटित करना। संगलइ; (हे ४, ११३)। संकृ—**संगलिअ**; (कुमा)।

संगल अक [**सं+गल्**] गल जाना, हीन होना। वकृ—**संगलंत**; (से १०, ३४)।

संगलिया स्त्री [**दे**] फली, फलिया, छीमी; (भग १५—पत्र ६८०; अनु ४)।

संगह सक [**सं+ग्रह्**] १ संचय करना। २ स्वीकार करना। ३ आश्रय देना। संगहइ; (भवि)। भवि—संगहिस्सं; (मोह ९३)।

संगह पुं [**दे**] घर के ऊपर का तिरछा काष्ठ; (दे ८, ४)।

संगह पु [**संग्रह**] १ सञ्चय, इकट्ठा करना, बटोरना; (ठा ७—पत्र ३८५; वव ३)। २ संक्षेप, समास; (पाअ; ठा ३, १ टी—पत्र ११४)। ३ उपधि, वस्त्र आदि का परिग्रह; (ओघ ६६६)। ४ नय-विशेष; वस्तु-परीक्षा का एक दृष्टि-कोण, सामान्य रूप से वस्तु को देखना; (ठा ७—पत्र ३९०; विसे २२०३)। ५ स्वीकार, ग्रहण; (ठा ८—पत्र ४२२)। ६ कष्ट आदि में सहायता करना; (ठा १०—पत्र ४९६)।७ वि. संग्रह करने वाला; (वव ३)। ८ न. नक्षत्र-विशेष, दुष्ट ग्रह से आक्रान्त नक्षत्र; (वव १)।

संगहण न [**संग्रहण**] संग्रह, (विसे २२०३; संबोध ३७; महा)। °**गाहा** स्त्री [°**गाथा**] संग्रह-गाथा; (कप्प ११८)। देखो **संगिण्हण**।

संगहणि स्त्री [**संग्रहणि**] संग्रह-ग्रन्थ, सक्षिप्त रूप से पदार्थ-प्रतिपादक ग्रन्थ, सार-संग्राहक ग्रन्थ; (सग १; धर्मस ३)।

संगहिअ वि [**संग्रहिक**] सग्रह वाला, संग्रह-नय को मानने वाला; (विसे २८५२)।

संगहिअ वि [**संगृहीत**] १ जिसका संचय किया गया हो वह; (हे २, १९८)। २ स्वीकृत, स्वीकार किया हुआ; (सण)। ३ पकडा हुआ; "संगहिओ हत्थी" (कुप्र ८१)। देखो **संगिहीअ**।

संगा सक [**सं+गै**] गान करना। कवकृ—**संगिज्जमाण**; (उप ५९७ टी)।

संगा स्त्री [**दे**] वल्गा, घोडे की लगाम; (दे ८, २)।

संगाम सक [**सङ्ग्रामय्**] लडाई करना। सगामेइ; (भग; तंदु ११)। वकृ—**संगामेमाण**; (णाया १, १६—पत्र २२३; निर १, १)।

संगाम पुं [**सङ्ग्राम**] लडाई, युद्ध; (आचा; पाअ; महा)। °**सूर** पु [°**शूर**] एक राजा का नाम; (श्रु २८)।

संगामिय वि [**साङ्ग्रामिक**] संग्राम-सबन्धी, लड़ाई से संबन्ध रखने वाला; (ठा ५, १—पत्र ३०२; औप)।

संगामिया स्त्री [**साङ्ग्रामिकी**] श्रीकृष्ण वासुदेव की एक भेरी, जो लडाई की खबर देने के लिए बजाई जाती थी; (विसे १४७६)।

संगामुड्डामरी स्त्री [**सङ्ग्रामोड्डामरी**] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से लडाई में आसानी से विजय मिलती है; (सुपा १४४)।

संगार पु [**दे**] सकेत; (ठा ४, ३—पत्र २४३; णाया १, ३; ओघभा २२; सुख २, १७; सूअनि २९; धर्मसं १३८८; उप ३०९)।

संगाहि वि [**संग्राहिन्**] सग्रह-कर्ता; (विसे १५३०)।

संगि वि [**सङ्गिन्**] संग-युक्त; (भग; संबोध ७, कप्पू)।

संगिज्जमाण देखो **संगा**=सं+गै।

संगिण्ह देखो **संगह**=सं+ग्रह्। सगिण्हइ; (विसे २२०३)। कर्म—संगिज्जंते; (विसे २२०३)। वकृ—**संगिण्हमाण**; (भग ५, ६—पत्र २३१)। संकृ—**संगिण्हित्ताण**; (पि ५८३)।

संगिण्हण न [**संग्रहण**] आश्रय-दान; (ठा ८—पत्र ४४१)। देखो **संगहण**।

संगिल्ल वि [**सङ्गवत्**] बद्ध, सग-युक्त; (पाअ)।

संगिल्ल देखो **संगेल्ल**; (राज)।

संगिल्ली देखो **संगेल्ली**; (राज)।

संगिहीय वि [**संगृहीत**] १ आश्रित; (ठा ८—पत्र ४४१)। २—देखो **संगहिअ**=संगृहीत।

संगीअ न [**संगीत**] १ गाना, गान-तान; (कुमा)। २ वि. जिसका गान किया गया हो वह; "तेण संगीओ तुह चेव गुणग्गामो" (सुपा २०)।

संगुण सक [**सं+गुणय्**] गुणाकार करना। सगुणए; (सुज १०, ६ टी)।

संगुण वि [**संगुण**] गुणित, जिसका गुणाकार किया गया (सुज १०, ६ टी)।

संगुणिअ वि [**संगुणित**] ऊपर देखो; (ओघ २१; देवेन्द्र ११६; कम्म ५, ३७)।

संगुत्त वि [**संगुप्त**] १ छिपाया हुआ, प्रच्छन्न रखा हुआ; (उप ३३९ टी)। २ गुप्ति-युक्त, अकुशल प्रवृत्ति से रहित; (पव १२३)।

संगेल्ल पुं [**दे**] समूह, समुदाय; (दे ८, ४; वव १)।

संगेल्ली स्त्री [**दे**] १ परस्पर अवलम्बन; "हत्थसंगेल्लीए" (णाया १, ३—पत्र ९३)। २ समूह, समुदाय; (भग ९, ३३—पत्र ४७४; औप)।

संगोढण वि [**दे**] व्रणित, व्रण-युक्त; (दे ८, १७)।

संगोप्फ } पुं [**संगोफ**] बन्ध-विशेष, मर्कट-बन्ध रूप **संगोफ** } गुम्फन; (उत्त २२, ३५)।

संगोल्ल न [**दे**] सघात, समूह; (षड्)।

संगोल्ली स्त्री [**दे**] समूह, संघात; (दे ८, ४)।

संगोव सक [**सं + गोपय्**] १ छिपाना, गुप्त रखना। २ रक्षण करना। संगोवइ; (प्राकृ ६६)। वकृ—**संगोवमाण, संगोवेमाण**; (णाया १, ३—पत्र ९१; विपा १, २—पत्र ३१)।

संगोवग वि [**संगोपक**] रक्षण-कर्ता; (णाया १, १८—पत्र २४०)।

संगोवाव देखो **संगोव**। संगोवावसु; (स ८९)।

संगोविअ वि [**संगोपित**] १ छिपाया हुआ; (स ८९)। २ सरक्षित; (महा)।

संगोवित्तु } वि [**संगोपयितृ**] संरक्षण-कर्ता; (ठा ७—**संगोवेत्तु** } पत्र ३८५)।

संघ सक [**कथ्**] कहना। सघइ, (हे ४, २), संघसु; (कुमा)।

संघ पुं [**संघ**] १ साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविकाओं का समुदाय; (ठा ४, ४—पत्र २८१; णंदि; महानि ४; सिग्घ १; ३; ५)। २ समान धर्म वालों का समूह; (धर्मसं ९८८)। ३ समूह, समुदाय; (सुपा १८०)। ४ प्राणि-समूह; (हे १, १८७)। °**दास** पुं [°**दास**] एक जैन मुनि और ग्रन्थ-कर्ता, (ती ३; राज)। °**पालिय,** °**वालिय** पुं [°**पालित**] एक प्राचीन जैन मुनि जो आर्य-वृद्ध मुनि के शिष्य थे; (कप्प; राज)।

संघअ वि [**संहत**] निबिड, सान्द्र; (से १०, २९)।

संघंस पुं [**संघर्ष**] १ घिसाव, रगड़; २ आघात, धक्का; (णाया १, १—पत्र ६५; आ २८)।

संघट्ट सक [**सं + घट्ट्**] १ स्पर्श करना, छूना। २ अक. आघात लगना। संघट्टइ; (भवि), संघट्टेइ; (णाया १, ५—पत्र ११२; भग ५, ६—पत्र २२९), संघट्टए; (दस ८, ७)। वकृ—**संघट्टंत**; (पिंड ५७५)। संकृ—**संघट्टिऊण**; (पव २)।

संघट्ट पुं [**संघट्ट**] १ आघात, धक्का, संघर्ष; (उव; कुप्र १६; धर्मवि ५७; सुपा १४)। २ अर्ध जंघा तक का पानी; (ओघभा ३४)। ३ दूसरी नरक का छठवाँ नरकेन्द्रक—स्थान-विशेष; (देवेन्द्र ६)। ४ भीड़; जमावड़ा; (भवि)। ५ स्पर्श; (राय)।

संघट्ट वि [**संघट्टित**] संलग्न; (भवि)।

संघट्टण न [**संघट्टन**] १ संमर्दन, संघर्ष; (णाया १, १—पत्र ७१; पिंड ५८९)। २ स्पर्श करना; (राज)।

संघट्टणा स्त्री [**संघट्टना**] संचलन, सञ्चार; "गब्भे संघट्टणा उ उट्ठंतुवेसमाणीए" (पिंड ५८६)।

संघट्टा स्त्री [**संघट्टा**] वल्ली-विशेष; (पराण १—पत्र ३३)।

संघट्टिय वि [**संघट्टित**] १ स्पृष्ट, छुआ हुआ; (णाया १, ५—पत्र ११२; पडि)। २ संघर्षित, संमर्दित; (भग १९, ३—पत्र ७६६; ७६७)।

संघड अक [**सं+घट्**] १ प्रयत्न करना। २ सबद्ध होना, युक्त होना। कृ—**संघडियव्व**; (ठा ८—पत्र ४४१)। प्रयो—संघडावेइ; (महा)।

संघड वि [**संघट**] निरन्तर; "संघडदंसिणो" (आचा १, ४, ४, ४)।

संघडण देखो **संघयण**; (चउ—पृ ४८; भवि)।

संघडणा स्त्री [**संघटना**] रचना, निर्माण; (समु १५८)।

संघडिअ वि [**संघटित**] १ संबद्ध, युक्त; (से ४, २४)। २ गठित, जटित; (प्रासू २)।

संघदि (शौ) स्त्री [**संहति**] समूह; (पि २६७)।

संघयण न [**दे. संहनन**] १ शरीर, काय; (दे ८, १४; पाअ)। २ अस्थि-रचना, शरीर के हाड़ों की रचना, शरीर का बाँध; (भग; सम १४९; १५५; उव; औप; उवा; कम्म १, ३८; षड्)। ३ कर्म-विशेष, अस्थि-रचना का कारण-भूत कर्म; (सम ६७; कम्म १, २४)।

संघयणि वि [**दे. संहननिन्**] सहनन वाला; (सम १५५; अणु ८ टी)।

संघरिस देखो **संघंस**; (उप २६४ टी)।

संघरिसिद (शौ) वि [**संघर्षित**] सघर्ष-युक्त, घिसा

हुआ; (मा ३७)।

संघस सक [**सं+घृष्**] संघर्ष करना। संघसिज्ज: (आचा २, १, ७, १)।

संघस्सिद देखो **संघरिसिद**; (नाट—मालवि २६)।

संघाइअ वि [**संघातित**] १ संघात रूप से निष्पन्न; (से १३, ६१)। २ जोड़ा हुआ : (आव)। ३ इकट्ठा किया हुआ; (पडि)।

संघाइम वि [**संघातिम**] ऊपर देखो; (औप; आचा २, १२, १; पि ६०२; अणु १२; दसनि २. १७)।

संघाड देखो **संघाय**=संघात; (ओघभा १०२; राज)।

संघाड } पुं [**दे. संघाट**] १ युग्म, युगल; (राय ६६;
संघाडग } धर्मस १०६५; उप पृ ३६७; सुपा ६०२; ६२३; ओघ ४११; उप २७५)। २ प्रकार, भेद; "संघाडो त्ति वा लय त्ति वा पगारो त्ति वा एगट्ठा" (निचू)। ३ ज्ञाताधर्म-कथा-नामक जैन अंग-ग्रन्थ का दूसरा अध्ययन; (सम ३६)।

संघाडग देखो **सिंघाडग**; (कप्प)।

संघाडणा स्त्री [**संघटना**] १ सबन्ध; २ रचना; "अक्खर-गुणमतिसघाय(? ड)णाए" (सूअनि २०)।

संघाडी स्त्री [**दे. संघाटी**] १ युग्म, युगल, (दे ८, ७, प्राकृ ३८; गा ४१६)। २ उत्तरीय वस्त्र-विशेष; (ठा ४, १—पत्र १८६; णाया १, १६—पत्र २०४, ओघ ६७७; विसे २३२६; पव ६२; कस)।

संघाणय पुं [**दे**] श्लेष्मा, नाक मे से बहता द्रव पदार्थ, (तंदु १३)।

संघानिम देखो **संघाइम**: (णाया १, ३—पत्र १७६, पएह २, ५—पत्र १५०)।

संघाय सक [**सं+घातय्**] १ संहत करना, इकट्ठा करना, मिलाना। २ हिंसा करना, मारना। संघायइ, संघाएइ; (कम्म १, ३६· भग ५, ६—पत्र २२६)। कृ—**संघायणिज्ज**: (उत्त २६, ५६)।

संघाय पुं [**संघात**] १ संहति, संहत रूप से अवस्थान, निबिडता; (भग; दस ४, १)। २ समूह, जत्था; (पाअ; गउड: औप: महा)। ३ संहनन-विशेष, वज्रऋषभ-नाराच-नामक शरीर-बन्ध; "संघाएणं सठाणेण" (औप)। ४ श्रुतज्ञान का एक भेद: (कम्म १, ७)। ५ संकोच, सकुचाना: (आचा)। ६ न. नामकर्म-विशेष, जिस कर्म के उदय से शरीर-योग्य पुद्गल पूर्व-गृहीत पुद्गलों पर व्यवस्थित रूप से स्थापित होते है, (कम्म १, ३१; ३६)। °**समास** पु [°**समास**] श्रुतज्ञान का एक भेद; (कम्म १, ७)।

संघायण न [**संघातन**] १ विनाश, हिंसा; (स १७०)। २ देखो '**संघाय**' का छठवाँ अर्थ; (कम्म १, २४)।

संघायणा स्त्री [**संघातना**] संहति। °**करण** न [°**करण**] प्रदेशों को परस्पर संहत रूप से रखना, (विसे ३३०८)।

संघार पुं [**संहार**] १ बहु-जंतु-क्षय, प्रलय; (तदु ४५)। २ नाश; (पउम ११८, ८०; उप १३६ टी)। ३ संक्षेप; ४ विसर्जन; ५ नरक-विशेष; ६ भैरव-विशेष; (हे १, २६४, षड्)।

संघार (अप) देखो **संहर**=सं+हृ। संकृ—**संघारि** (पिंग)।

संघारिअ वि [**संहारित**] मारित, व्यापादित. (भवि)।

संघासय पुं [**दे**] स्पर्धा, बराबरी; (दे ८, १३)।

संघिअ देखो **संधिअ**=सहित; (प्राप)।

संघिल्ल वि [**संघवत्**] संघ-युक्त, समुदित; (राज)।

संघोडी स्त्री [**दे**] व्यतिकर, संबन्ध; (दे ८, ८)।

संच (अप) देखो **संचिण**। संचइ. (भवि)।

संच (अप) पु [**संचय**] परिचय; (भवि)।

संचइ } वि [**संचयिन्**] सचय वाला, संग्रही, संग्रह करने
संचइग } वाला; (दसनि १०, १०; पव ७३ टी)।

संचइय वि [**संचयित**] संचय-युक्त; (राज)।

संचक्कार पुं [**दे**] अवकाश, जगह;

"अविगणिय कुलकलंकं इय कुहियकरककारणो कीस।
वियरसि सचक्कारं तं नारयतिरियदुक्खाणा ॥"
(उप ७२८ टी)।

संचत्त वि [**संत्यक्त**] परित्यक्त; (अज्झ १७८)।

संचय पु [**संचय**] १ संग्रह; (पएह १, ५—पत्र ६२· गउड; महा)। २ समूह (कप्प· गउड)। ३ सकलन, जोड़; (वव १)। °**मास** पुं [°**मास**] प्रायश्चित्त-संबन्धी मास-विशेष; (राज)।

संचर सक [**सं+चर्**] १ चलना. गति करना। २ सम्यग् गति करना, अच्छी तरह चलना। ३ धीरे धीरे चलना। संचरइ, (गउड ४२६, भवि)। वकृ—**संचरंत**: (से २, २४; सुर ३, ७६; नाट—चैत १३०)। कृ—**संचरणिज्ज**, **संचरिअव्व**; (नाट—वेणा १४; से १४, २८)।

संचरण न [**संचरण**] १ चलना, गति; २ सम्यग् गति, (गउड; पि १०२; कप्पू)।

संचरिअ वि [**संचरित**] चला हुआ, जिसने संचरण किया हो वह; (उप पृ ३५८; रुक्मि ५६; भवि)।

संचलण न [**संचलन**] संचार, गति; (गउड)।

संचलिअ वि [**संचलित**] चला हुआ; (सुर ३, १४०; महा)।

संचल्ल सक [**सं+चल्**] चलना, गति करना। संचल्लइ; (भवि)।

संचल्ल (अप) देखो **संचलिय**; (भवि)।

संचल्लिअ देखो **संचलिअ**; (महा)।

संचाइय वि [**संशकित**] जो समर्थ हुआ हो वह; (भग ३, २ टी—पत्र १७८)।

संचाय अक [**सं+शक्**] समर्थ होना। संचाएइ; (भग; उवा; कस), संचाएमो; (सूअ २, ७, १०; णाया १, १८—पत्र २४०)।

संचाय पुं [**संत्याग**] परित्याग; (पंचा १३, ३४)।

संचार सक [**सं+चारय्**] संचार कराना। संचारइ; (भवि)। संकृ—सचारि (अप); (पिंग)।

संचार पुं [**संचार**] सचरण, गति; (गउड; महा; भवि)।

संचारि वि [**संचारिन्**] गति करने वाला; (कप्पू)।

संचारिअ वि [**संचारित**] जिसका सचार कराया गया हो वह; (भवि)।

संचारिम वि [**संचारिम**] सचार-योग्य, जो एक स्थान से उठा कर दूसरे स्थान में रखा जा सके वह; (पिंड ३००; सुपा ३५१)।

संचारी स्त्री [**दे**] दूत-कर्म करने वाली स्त्री; (पाअ; षड्)।

संचाल सक [**सं+चालय्**] चलाना। संचालइ; (भवि)। कवकृ—**संचालिज्जंत**, **संचालिज्जमाण**; (से ६, ३६; णाया १, ६—पत्र १५६)।

संचालिअ वि [**संचालित**] चलाया हुआ; (से ४, २७)।

संचिअ वि [**संचित**] सगृहीत; (ओघ ३२६; भवि; नाट—वेणी २७; सुपा ३५२)।

संचिंतण न [**संचिन्तन**] चिन्तन, विचार; (हि २२)।

संचिंतणया स्त्री [**संचिन्तना**] ऊपर देखो; (उत्त ३२, ३)।

संचिक्ख अक [**सं+स्था**] रहना, ठहरना, अच्छी तरह रहना, समाधि में रहना। संचिक्खइ; (आचा १, ६, २, २)। संचिक्खे; (उत्त २, ३३; ओघ ६६)।

संचिज्जमाण देखो **संचिण**।

संचिट्ठ देखो **संचिक्ख**। संचिट्ठइ; (भग; उवा; महा)।

संचिट्ठण न [**संस्थान**] अवस्थान; (पि ४८३)।

संचिण सक [**सं+चि**] १ संग्रह करना, इकट्ठा करना। २ उपचय करना। संचिणोइ, संचिणाइ, संचिणंति; (श्रु १०७; पि ५०२)। संकृ—**संचिणित्ता**; (सूअ २, २, ६५; भग)। कवकृ—**संचिज्जमाण**; (आचा २, १, ३, २)।

संचिणिय वि [**संचित**] संगृहीत; (स ४७३)।

संचिन्न वि [**संचीर्ण**] आचरित; (सण)।

संचुण्ण सक [**सं+चूर्णय्**] चूर चूर करना, खंड खंड करना, टूकड़ा टूकड़ा करना। कवकृ—**संचुण्णिज्जंत**; (पउम ५६, ४४)।

संचुण्णिअ } **संचुन्निअ** } वि [**संचूर्णित**] चूर चूर किया हुआ; (महा; भवि; णाया १, १—पत्र ४७; सुर १२, २४१)।

संचेयणा स्त्री [**संचेतना**] अच्छी तरह सूध, भान; "लद्धसचेयणाउ" (सिरि ६५७)।

संचोइय वि [**संचोदित**] प्रेरित; (ठा ४, ३ टी—पत्र २३८)।

संछइय } **संछण्ण** } **संछन्न** } वि [**संछन्न**] ढका हुआ; (उप पृ १२३; सुर २, २४७; सुपा ५६२; महा; सण)।

संछाइय वि [**संछादित**] ढका हुआ; (सुपा ५६२)।

संछाय सक [**सं+छादय्**] ढकना। वकृ—**संछायंत**; (पउम ५६, ४७)।

संछुह सक [**सं+क्षिप्**] एकत्रित कर छोड़ना, इकट्ठा करना। "संछुहई एगगेहम्मि" (पिंड ३११)।

संछोभ पुं [**संक्षेप**] अच्छी तरह फेंकना, क्षेपण; (पंच ५, १५६; १८०)।

संछोभग वि [**संक्षेपक**] प्रक्षेपक; (राज)।

संछोभण न [**संक्षेपण**] परावर्तन; (राज)।

संजइ पुं [**संयति**] उत्तम साधु, मुनि; "संजईया दव्वलिंगीयामंतरं मेरुसरिसवसरिच्छं" (संबोध ३६)।

संजई स्त्री [**संयती**] साध्वी; (ओघ १६; महा; द्र २७)।

संजणग वि [**संजनक**] उत्पन्न करने वाला; (सुर ११, १६६)।

संजणण न [**संजनन**] १ उत्पत्ति; २ वि. उत्पन्न करने वाला; (सुर ६, १४२; सुपा ३८२); स्त्री—**णी**; (रत्न २८)।

संजणय देखो **संजणग**; (चेइय ६१५; सुपा ३८; सिक्खा २६)।
संजणिय वि [**संजनित**] उत्पादित; (प्रासू १४६; सण)।
संजत्त सक [**दे**] तैयार करना। संजत्तेह; (स २२)।
संजत्ता स्त्री [**संयात्रा**] जहाज की मुसाफिरी; (णाया १, ८—पत्र १३२)।
संजत्ति स्त्री [**दे**] तैयारी; "आयात्ता नियपुरिसा सजत्तिं कुणह गमणत्थं" (सुर ७, १३०; स ६३५; ७३५; महा)। देखो **संजुत्ति**।
संजत्तिअ वि [**दे**] तैयार किया हुआ; (स ४४३)।
संजत्तिअ, संजत्तिग वि [**सांयात्रिक**] जहाज से यात्रा करने वाला, समुद्र-मार्ग का मुसाफिर; (सुपा ६५५; ती ६; सिरि ४३१; प्रव २७६; हे १, ७०; महा; णाया १, ८—पत्र १३५)।
संजत्थ वि [**दे**] १ कुपित, क्रुद्ध; २ पुं. क्रोध; (दे ८, १०)।
संजद देखो **संजय**=संयत; (प्राप्र; प्राकृ १२; सक्षि ९)।
संजम अक [**सं+यम्**] १ निवृत्त होना। २ प्रयत्न करना। ३ व्रत-नियम करना। ४ सक. बाँधना। ५ काबू में करना। कर्म—संजमिज्जंति ; (गउड २८६)। वकृ—**संजमेंत, संजमयंत, संजममाण**; (गउड ८४०; दसनि १, १४०; उत्त १८, २६)। कवकृ—**संजमीअमाण**; (नाट—विक्र ११२)। संकृ—**संजमित्ता**; (सूअ १, १०, २)। हेकृ—**संजमिउं**, (गउड ४८७)। कृ—**संजमिअव्व, संजमितव्व**; (भग; णाया १, १—पत्र ६०)।
संजम सक [**दे**] छिपाना। सजमेसि; (दे ८, १५ टी)
संजम पुं [**संयम**] १ चारित्र, व्रत, विरति, हिंसादि पाप-कर्मो से निवृत्ति; (भग; ठा ७; औप; कुमा; महा)। २ शुभ अनुष्ठान; (कुमा ७, २२)। ३ रक्षा, अहिंसा; (णाया १, १—पत्र ६०)। ४ इन्द्रिय-निग्रह; ५ बन्धन; ६ नियन्त्रण, काबू; (हे १, २४५)। °**ासंजम** पुं [°**ासंयम**] श्रावक-व्रत; (औप)।
संजमण न [**संयमन**] ऊपर देखो; (धर्मवि १७; गा २६१; सुपा ५५३)।
संजमिअ वि [**दे**] संगोपित, छिपाया हुआ; (दे ८, १५)।
संजमिअ वि [**संयमित**] बाँधा हुआ, बद्ध; (गा ६४६; सुर ७, ५; कुप्र १८७)।

संजय अक [**सं+यत्**] १ सम्यक् प्रयत्न करना। २ सक. अच्छी तरह प्रवृत्त करना। संजयए, संजए; (पव ७२; उत्त २, ४)।
संजय वि [**संयत**] साधु, मुनि, व्रती; (भग; ओघभा १७; काल), "ममावि मायावित्ताणि संजयाणि" (महा)। °**पंता** स्त्री [°**प्रान्ता**] साधु को उपद्रव करने वाली देवी आदि; (ओघभा ३७ टी)। °**भद्दिगा** स्त्री [°**भद्रिका**] साधु को अनुकूल रहने वाली देवी आदि; (ओघभा १७ टी)। °**ासंजय** वि [°**ासंयत**] किसी अंश में व्रती और किसी अंश में अव्रती, श्रावक; (भग)।
संजय पुं [**संजय**] भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेने वाला एक राजा; (ठा ८—पत्र ४३०)।
संजयंत पुं [**संजयन्त**] एक जैन मुनि; (पउम ५, २१)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष; (इक)।
संजर पुं [**संज्वर**] ज्वर, बुखार; (अच्चु ९७)।
संजल अक [**सं+ज्वल्**] १ जलना। २ आक्रोश करना। ३ क्रुद्ध होना। संजले; (सूअ १, ९, ३१; उत्त २, २४)।
संजलण वि [**संज्वलन**] १ प्रतिक्षण क्रोध करने वाला; (सम ३७)। २ पुं. कषाय-विशेष; (कम्म १, १७)।
संजलिअ पुं [**संज्वलित**] तीसरी नरक-भूमि का एक नरक-स्थान; (देवेन्द्र ९)।
संजल्लिअ (अप) वि [**संज्वलित**] आक्रोश-युक्त; (भवि)।
संजव देखो **संजम**=सं+यम्। सजवहु (अप); (भवि)।
संजव देखो **संजम**=(दे)। संजवइ; (प्राकृ ६६)।
संजविअ देखो **संजमिअ**=(दे); (पाअ; भवि)।
संजविअ देखो **संजमिअ**=संयमित; (भवि)।
संजा देखो **संणा**; (हे २, ८३)।
संजाणय वि [**संज्ञायक**] विज्ञ, विद्वान्, जानकार; (राज)
संजात, संजाद देखो **संजाय**=संजात; (सुर २, ११४; ४, १९०; प्राप्र; पि २०४)।
संजाय अक [**सं+जन्**] उत्पन्न होना। संजायइ; (सण)।
संजाय वि [**संजात**] उत्पन्न; (भग; उवा; महा; सण; पि ३३३)।
संजीवणी स्त्री [**संजीवनी**] १ मरते हुए को जीवित करने वाली ओषधि; (प्रासू ८३)। २ जीवित-दात्री नरक-भूमि; (सूअ १, ५, २, ९)।
संजीवि वि [**संजीविन्**] जिलाने वाला, जीवित करने

वाला; (कप्पू) ।

संजुअ वि [**संयुत**] सहित, सयुक्त; (द्र २२; सिक्खा ४८; सुर ३, ११७; महा)। देखो **संजुत**।

संजुअ न [**संयुग**] १ लडाई, युद्ध, संग्राम; (पाअ)। २ नगर-विशेष; (राज)।

संजुंज सक [**सं+युज्**] जोड़ना। कर्म—अविसिट्ठे सब्भावे जलेण संजुञ(? ज्ज)ती जहा वत्थ" (धर्मस १८०)। कवक्—**संजुज्जंत**; (सम्म ५३)।

संजुत न [**संयुत**] छन्द-विशेष; (पिंग)। देखो **संजुअ**= संयुत।

संजुता स्त्री [**संयुता**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

संजुत्त वि [**संयुक्त**] सयोग वाला, जुडा हुआ; (महा; सण; पि ४०४; पिंग)।

संजुत्ति स्त्री [**दे**] तैयारी; (सुर ४, १०२; १२, १०१; स १०३; कुप्र २००)। देखो **संजत्ति**।

संजुद्ध वि [**दे**] स्पन्द-युक्त, थोड़ा हिलने-चलने वाला, फरकने वाला, (दे ८, ६)।

संजूह पुन [**संयूथ**] १ उचित समूह; (ठा १०—पत्र ४६५)। २ सामान्य, साधारणता; ३ संक्षेप, समास; (सूअ २, २, १)। ४ ग्रन्थ-रचना, पुस्तक-निर्माण; (अणु १४६)। ५ दृष्टिवाद के अठासी सूत्रों में एक सूत्र का नाम; (सम १२८)।

संजोअ सक [**सं+योजय्**] सयुक्त करना, संबद्ध करना, मिश्रण करना। संजोएइ, सजोयइ; (पिंड ६३८; भग; उव; भवि)। वकृ—**संजोयंत**; (पिंड ६३६)। संकृ—**संजोएऊण**; (पिंड ६३६)। कृ—**संजोएअव्व**, (भग)।

संजोअ सक [**सं+दृश्**] निरीक्षण करना, देखना। संकृ—**संजोइऊण**; (श्रु ३२)।

संजोअ पुं [**संयोग**] सबन्ध, मेल, मिलाप, मिश्रण; (पउ; महा)।

संजोअण न [**संयोजन**] १ जोडना, मिलाना; (ठा २, १—पत्र २६)। २ वि. जोड़ने वाला; ३ कषाय-विशेष, अनन्तानुबन्धि-नामक क्रोधादि-चतुष्क; (विसे १२२६; कम्म ५, ११टी)। °**धिकरणिय** स्त्री [°**धिकरणिकी**] खड्ग आदि को उसकी मूठ आदि से जोड़ने की क्रिया; (ठा २, १—पत्र ३६)।

संजोअणा स्त्री [**संयोजना**] १ मिलान, मिश्रण; (पिंड ६३६)। २ भिक्षा का एक दोष, स्वाद के लिए भिक्षा-प्राप्त चीजों को आपस में मिलाना; (पिंड १)।

संजोइय वि [**संयोजित**] मिलाया हुआ, जोड़ा हुआ; (भग; महा)।

संजोइय वि [**संदृष्ट**] दृष्ट, निरीक्षित; (भवि)।

संजोग देखो **संजोअ**=संयोग; (हे १, २४५)।

संजोगि वि [**संयोगिन्**] संयोग-युक्त, सबन्धी; (संबोध ४६)।

संजोगेत्तु वि [**संयोजयितृ**] जोड़ने वाला; (ठा ८—पत्र ४२६)।

संजोत्त (अप) देखो **संजोअ**=सं+योजय्। संकृ—**संजोत्तिवि**; (भवि)।

संझ° नीचे देखो; (णाया १, १—पत्र ४८)। °**च्छेया-वरण** वि [°**च्छेदावरण**] १ सन्ध्या-विभाग का आवारक; २ चन्द्र, चाँद; (अणु १२० टी)। °**प्पभ** पुन [°**प्रभ**] शक्र के सोम-लोकपाल का विमान; (भग ३, ७—पत्र १७५)।

संझा स्त्री [**सन्ध्या**] १ साँझ, साम, सायकाल; (कुमा; गउड; महा)। २ दिन और रात्रि का सधि-काल; ३ युगों का सधि-काल; ४ नदी-विशेष; ५ ब्रह्मा की एक पत्नी; (हे १, ३०)। ६ मध्याह्न काल; "तिसंझं" (महा)। °**गय** न [°**गत**] १ जिस नक्षत्र में सूर्य अनन्तर काल में रहने वाला हो वह नक्षत्र; २ सूर्य जिसमे हो उससे चौदहवाँ या पनरहवाँ नक्षत्र; ३ जिसके उदय होने पर सूर्य उदित हो वह नक्षत्र; ४ सूर्य के पीछे के या आगे के नक्षत्र के बाद का नक्षत्र; (वव १)। °**छेयावरण** देखो **संझ-च्छेयावरण**; (पव २६८)। °**णुराग** पुं [°**नुराग**] साँझ के बादल का रँग; (पउम २—पत्र १०६)। °**वली** स्त्री [°**वली**] एक विद्याधर-कन्या का नाम; (महा)। °**विगम** पु [°**विगम**] रात्रि, रात; (निचू १६)। °**विराग** पुं [°**विराग**] साँझ का समय; (जीव ३, ४)।

संझाअ सक [**सं+ध्यै**] ख्याल करना, चिन्तन करना, ध्यान करना। संझाअदि (शौ); (पि ४७६; ५५८)। वकृ—**संझायंत**; (सुपा ३६६)।

संझाअ अक [**संध्याय्**] संध्या की तरह आचरण करना। संझायइ; (गउड ६३२)।

संटंक पुं [**संटङ्क**] अन्वय, संबन्ध; (चेइय ३६६)।

संठ वि [**शठ**] धूर्त, मायावी; (कुमा; दे ६, १११)।

संठ (चूपै) देखो **संढ**; (हे ४, ३२५)।

संठप्प देखो **संठव**।

संठव सक [**सं+स्थापय्**] १ रखना, स्थापन करना। २ आश्वासन देना, उद्वेग-रहित करना, सान्त्वन करना। संठवइ, संठवेइ; (भवि; महा)। वकृ—**संठवंत**; (गा ३६)। कवकृ—**संठविज्जंत**; (सुर १२, ४१)। संकृ—**संठवेऊण**; (महा), **संठप्प**; (उव) **संठविअ**; (पिंग)।

संठवण देखो **संठावण**; (मृच्छ १५४)।

संठविअ वि [**संस्थापित**] १ रखा हुआ; (हे १. ६७; प्राप्र; कुमा)। २ आश्वासित; ३ उद्वेग-रहित किया हुआ; (महा)।

संठा अक [**सं+स्था**] रहना, अवस्थान करना, स्थिति करना। संठाइ; (पि ३०६; ४८३)।

संठाण न [**संस्थान**] १ आकृति, आकार; (भग; औप; पव २७६; गउड; महा; दं ३)। २ कर्म-विशेष, जिसके उदय से शरीर के शुभ या अशुभ आकार होता है वह कर्म; (सम ६७; कम्म १, २४; ४०)। ३ संनिवेश, रचना; (प्रासू ८७)।

संठाव देखो **संठव**। संकृ—**संठाविअ**; (नाट—चैत ७५)।

संठावण न [**संस्थापन**] रखना; "तेरिच्छसंठावणं" (पव ३८)। देखो **संथावण**।

संठावणा स्त्री [**संस्थापना**] आश्वासन, सान्त्वन; (से ११, १२१)। देखो **संथावणा**।

संठाविअ देखो **संठविअ**; (हे १, ६७; कुमा; प्राप्र)।

संठिअ वि [**संस्थित**] १ रहा हुआ, सम्यक् स्थित; (भग; उवा; महा; भवि)। २ न. आकार; (राय)।

संठिइ स्त्री [**संस्थिति**] १ व्यवस्था; (सुज १, १)। २ अवस्था, दशा, स्थिति; (उप १३६ टी)।

संड पु [**शण्ड, षण्ड**] १ वृष, बैल, साँढ; "मत्तसड्डुव्व भमेइ विलसेइ अ" (श्रा १२; सुर १५, १४०)। २ पुंन. पद्म आदि का समूह, वृक्ष आदि की निविडता; (णाया १, १—पत्र १६; भग; कप्प; औप; गा ८; सुर ३, ३०; महा; प्रासू १४५), "तियसतरुसंडो" (गउड)। ३ पुं. नपुंसक; (हे १, २६०)।

संडास पुंन [**संदंश**] १ यन्त्र-विशेष, सँडसी, चिमटा; (सुअ १, ४, २, ११; विपा १, ६—पत्र ६८; स ६६६)। २ ऊरु-संधि, जाँघ और ऊरु के बीच का भाग; (ओघ २०६; ओघभा १५५)। °**तोंड** पु [°**तुण्ड**] पक्षि-विशेष, सँड़सी की तरह मुख वाला पाखी; (पण्ह १, १—पत्र १४)।

संडिज्झ } न [**दे**] बालकों का क्रीडा-स्थान; (राज; **संडिब्भ** } दस ५, १, १२)।

संडिल्ल पु [**शाण्डिल्य**] १ देश-विशेष; (उप १०३१ टी; सत्त ६७ टी)। २ एक जैन मुनि का नाम; (कप्प; णदि ४६)। ३ एक ब्राह्मण का नाम; (महा)। देखो **संडेल्ल**।

संडी स्त्री [**दे**] वल्गा, लगाम; (दे ८, २)।

संडेय पुं [**षाण्डेय**] षंढ-पुत्र, षंढ, नपुंसक; "कुक्कुडसडेय-गामपउरा" (औप; णाया १, १ टी—पत्र १)।

संडेल्ल न [**शाण्डिल्य**] १ गोत्र-विशेष; २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न; (ठा ७—पत्र ३६०)। देखो **संडिल्ल**।

संडेव पु [**दे**] पानी में पैर रखने के लिए रखा जाता पाषाण आदि; (ओघ ३१)।

संडेवय (अप) देखो **संडेय**; "गामइ कुक्कुडसडेवयाइ" (भवि)।

संडोलिअ वि [**दे**] अनुगत, अनुयात; (दे ८, १७)।

संढ पु [**षण्ढ**] नपुंसक; (प्राप्र; हे १. ३०; सबोध १६)।

संढो स्त्री [**दे**] साँढनी, ऊँटनी; (सुपा ५८०)।

संढोइय वि [**संढौकित**] उपस्थापित; (सुपा ३२३)।

संण वि [**संज्ञ**] जानकार, ज्ञाता; (आचा १, ५, ६,१०)।

संणक्खर देखो **संनक्खर**; (राज)।

संणज्ज न [**सांनाय्य**] मन्त्र आदि से संस्कारा जाता घी वगैरः; (प्राकृ १६)।

संणज्झ अक [**सं+नह्**] १ कवच धारण करना, बखतर पहनना। २ तैयार होना। संणज्झइ; (पि ३३१)।

संणडिअ वि [**संनटित**] व्याकुल किया हुआ, विडम्बित; (वज्जा ७०)।

संणद्ध वि [**संनद्ध**] सनाह-युक्त, कवचित; (विपा १, २—पत्र २३; गउड)।

संणय देखो **संनय**; (राज)।

संणवणा स्त्री [**संज्ञापना**] संज्ञप्ति, विज्ञापन; (उवा)।

संणा स्त्री [**संज्ञा**] १ आहार आदि का अभिलाष; (सम ६; भग; पण्ण १, ३—पत्र ५५; प्रासू १७६)। २ मति, बुद्धि; (भग)। ३ संकेत, इसारा; (से ११, १३४ टी)। ४ आख्या, नाम; ५ सूर्य की पत्नी; ६ गायत्री; (हे २,

४२)। ७ विष्ठा, पुरीष; (उप १४२ टी)। ८ सम्यग् दर्शन; (भग)। ९ सम्यग् ज्ञान; (राय १३३)। °इअ वि [°कृत] टट्टी फिरा हुआ, फरागत गया हुआ; (दस १. १ टी)। °भूमि स्त्री [°भूमि] पुरीषोत्सर्जन की जगह; (उप १४२ टी; दस १, १ टी)।

संणामिय वि [**संनामित**] अवनत किया हुआ; (पंचा १९, ३६)।

संणाय वि [**संज्ञात**] १ ज्ञाति, नात का आदमी; (पंच १०, ३६)। २ स्वजन, सगा; (उप ६५३)। देखो **संनाय**।

संणास पुं [**संन्यास**] संसार-त्याग, चतुर्थ आश्रम; (नाट—चैत ९०)।

संणासि वि [**संन्यासिन**] संसार-त्यागी, चतुर्थ-आश्रमी, यति, व्रती; (नाट—चैत ८८)।

संणाह सक [**स+नाहय्**] लड़ाई के लिए तैयार करना, युद्ध-सज्ज करना। सणाहेहि; (औप ४०)।

संणाह पुं [**संनाह**] १ युद्ध की तैयारी; (से ११, १३४)। २ कवच, वख्तर; (नाट—वेणी ६२)। °पट्ट पुं [°पट्ट] शरीर पर बाँधने का वस्त्र-विशेष; (बृह ३)।

संणाहिय वि [**सांनाहिक**] युद्ध की तैयारी से संबन्ध रखने वाला; "संणाहियाए भेरीए सद्द सोचा" (णाया १, १६—पत्र २१७)।

संणि वि [**संज्ञिन्**] १ संज्ञा वाला, संज्ञा-युक्त; २ मन वाला प्राणी; (सम २; भग; औप)। ३ श्रावक, जैन गृहस्थ; (ओघ ८)। ४ सम्यग् दर्शन वाला, सम्यक्त्वी, जैन; (भग)। ५ न. गोत्र-विशेष, जो वासिष्ट गोत्र की शाखा है; ६ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३९०)।

संणिक्खित्त देखो **संनिक्खित्त**; (राज)।

संणिगास देखो **संणियास**; (णाया १. १—पत्र ३२)।

संणिगास देखो **संनिगास**=संनिकर्ष. (राज)।

संणिचय देखो **संनिचय**; (राज)।

संणिचिय देखो **संनिचिय**; (आचा २. १. २, ४)।

संणिज्झ देखो **संनिज्झ**; (गउड)।

संणिणाय देखो **संनिनाय**, (राज)।

संणिधाइ देखो **संणिहाइ**; (नाट—मालती २९)।

संणिधाण देखो **संनिहाण**; (नाट—उत्तर ४४)।

संणिपडिअ वि [**संनिपतित**] गिरा हुआ; (विपा १, ९—पत्र ९८)।

संणिभ देखो **संनिभ**; (राज)।

संणिय वि [**संज्ञित**] जिसको इसारा किया गया हो वह; (सुपा ८८)।

संणियास पुं [**संनिकाश**] समान, सदृश; (पउम २०, १८८)। देखो **संनियास**।

संणिरुद्ध वि [**संनिरुद्ध**] रुका हुआ, नियन्त्रित; (आचा २, १, ४, ४)।

संणिरोह पु [**संनिरोध**] अटकायत, रुकावट; (से ५, ६४)।

संणिवय अक [**संनि+पत्**] पड़ना, गिरना। वकृ—**संणिवयमाण**; (आचा २, १, ३, १०)।

संणिवाय पुं [**संनिपात**] संबन्ध; (पंचा ७, १८)।

संणिविट्ठ देखो **संनिविट्ठ**; (णाया १, १ टी—पत्र २)।

संणिवेस देखो **संनिवेस**; (आचा १, ८, ६, ३; भग; गउड; नाट—मालती ५९)।

संणिसिज्जा } **संणिसेज्जा** } देखो **संनिसिज्जा**; (राज)।

संणिह देखो **संनिह**; (गा २५८; नाट—मृच्छ ६१)।

संणिहाइ वि [**संनिधायिन्**] समीप-स्थायी; (माल ५२)।

संणिहाण देखो **संनिहाण**; (राज)।

संणिहि देखो **संनिहि**; (आचा २, १, २, ४)।

संणिहिअ वि [**संनिहित**] सहायता के लिए समीप-स्थित, निकट-वर्ती; (महा)। देखो **संनिहिअ**।

संणेज्झ देखो **संनेज्झ**; (गउड)।

संत देखो **स**=सत्; (उवा; कप्प; महा)।

संत वि [**शान्त**] १ शम-युक्त, क्रोध-रहित; (कप्प; आचा १, ८, ५. ४)। २ पुं. रस-विशेष; "विणयंता चेव गुणा संतंतरसा किया उ भावंता" (सिरि ८८२)।

संत वि [**श्रान्त**] थका हुआ; (णाया १, ४; उवा १०१; ११२; विपा १, १; कप्प; दे ८, ३६)।

संतइ स्त्री [**संतति**] १ संतान, अपत्य, लडका-बाला; "दुट्ठसीला खु इत्थिया विणासेइ संतइं" (स ५०५; सुपा १०४)। २ अविच्छिन्न धारा, प्रवाह; (उत्त ३६, ९; उप पृ १८१)।

संतच्छण न [**संतक्षण**] छिलना; (सूअ १, ५, १, १४)।

संतच्छिअ वि [**संतक्षित**] छिला हुआ; (पण्ह १, १—पत्र १८)।

संतट्ठ वि [**संत्रस्त**] डरा हुआ, भय-भीत; (सुर ६, २०५)।

संतत्ति देखो **संतइ**; (स ६८४)।

संतत्त वि [**संतत**] १ निरन्तर, अविच्छिन्न; २ विस्तीर्ण; "अच्छिनिमीलियमित्तं नत्थि सुहं दुक्खमेव संततं। नरए नेरइयाणं अहोनिसिं पच्चमाणाणं।" (सुर १४, ४६)।

संतत्त वि [**संतप्त**] संताप-युक्त; (सुर १४, ५६; गा १३६; सुपा १६; महा)।

संतत्थ देखो **संतट्ठ**; (उव; श्रा १८)।

संतप्प अक [**सं+तप्**] १ तपना, गरम होना। २ पीड़ित होना। संतप्पइ; (हे ४, १४०; स २०)। भवि—संतप्पिस्सइ; (स ६८१)। कृ—**संतप्पियव्व**; (स ६८१)। वकृ—**संतप्पमाण**; (सुज्ज ६)।

संतप्पिअ वि [**संतप्त**] १ संताप-युक्त; (कुमा ६, १४)। २ न. संताप; (स २०)।

संतमस न [**संतमस**] १ अन्धकार, अँधेरा; (पाअ; सुपा २०५)। २ अन्ध-कूप, अँधेरा कुँआ; (सुर १०, १५८)।

संतय देखो **संतत्त**=संतत; (पाअ; भग)।

संतर सक [**सं+तॄ**] तैरना, तैर कर पार करना। हेकृ—**संतरित्तए**; (कस)।

संतरण न [**संतरण**] तैरना, तैर कर पार करना; (ओघ ३८; चेइय ७४३; कुप्र २२०)।

संतस अक [**सं+त्रस्**] १ भय-भीत होना। २ उद्विग्न होना। संतसे; (उत्त २, ११)।

संता स्त्री [**शान्ता**] सातवें जिन-भगवान् की शासन-देवता; (संति ६)।

संताण पु [**संतान**] १ वंश; (कप्प)। २ अविच्छिन्न धारा, प्रवाह; (विसे २३९७; २३९८; गउड; सुपा १९८)। ३ तंतु-जाल, मकडी आदि का जाल; "मक्कडासंताणए" (आचा; पडि; कस)।

संताण न [**संत्राण**] परित्राण, संरक्षण; (बृह १)।

संताणि वि [**संतानिन्**] १ अविच्छिन्न धारा में उत्पन्न, प्रवाह-वर्ती; "संताणीणं न भिण्णं जइ संताणो न नाम संताणो" (विसे २३९८; धर्मसं २३५)। २ वंश में उत्पन्न, परंपरा में उत्पन्न; "देव इह अत्थि पत्ता उज्जाणे पासनाह-संताणी। केसी नाम गणहरो" (धर्मवि ३)।

संतार वि [**संतार**] १ तारने वाला, पार उतारने वाला; (पउम २, ४४)। २ पुं. संतरण, तैरना; (पिंग)।

संतारिअ वि [**संतारित**] पार उतारा हुआ; (पिंग)।

संतारिम वि [**संतारिम**] तैरने योग्य; (आचा २, ३, १, १३)।

संताव सक [**सं+तापय्**] १ गरम करना, तपाना। २ हैरान करना। संतावेंति; (सुज्ज ६)। वकृ—**संतावित**; (सुपा २४८)। कवकृ—**संताविज्जमाण**; (नाट—मृच्छ १३७)।

संताव पुं [**संताप**] १ मन का खेद; (पण्ह १, ३—पत्र ५५; कुमा; महा)। २ ताप, गरमी; (पण्ह १, ३—पत्र ५५; महा)।

संतावण न [**संतापन**] संताप, संतप्त करना; (सुपा २३२)।

संतावणी स्त्री [**संतापनी**] नरक-कुम्भी; (सूअ १, ५, २, ६)।

संतावय वि [**संतापक**] संताप-जनक; (भवि)।

संतावि वि [**संतापिन्**] संतप्त होने वाला, जलने वाला; (कप्पू)।

संताविय वि [**संतापित**] संतप्त किया हुआ; (काल)।

संतास सक [**सं+त्रासय्**] भय-भीत करना, डराना। संतासइ; (पिंग)।

संतास पुं [**संत्रास**] भय, डर; (स ५४४)।

संतासि वि [**संत्रासिन्**] त्रास-जनक; (उप ७६८ टी)।

संति स्त्री [**शान्ति**] १ क्रोध आदि का जय, उपशम, प्रशम; (आचा १, १, ७, १; चेइय ५९४)। २ मुक्ति, मोक्ष; (आचा १, २, ४, ४; सूअ १, १३, १; ठा ८—पत्र ४२५)। ३ अहिंसा; (आचा १, ६, ५, ३)। ४ उपद्रव-निवारण; (विपा १,६—पत्र ६१; सुपा ३६४)। ५ विषयों से मन को रोकना; ६ चैन, आराम; ७ स्थिरता; (उप ७२८ टी; संति १)। ८ दाहोपशम, ठंढ़ाई; (सूअ १, ३, ४, २०)। ९ देवी-विशेष; (पंचा १९, २४)। १० पुं. सोलहवें जिनदेव का नाम; (सम ४३; कप्प; पडि)। °**उदअ** न [°**उदक**] शान्ति के लिए मस्तक में दिया जाता मन्त्रित पानी; (पि १६२)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] उपद्रव-निवारण के लिए किया जाता होम आदि कर्म; (पण्ह १, २—पत्र ३०; सुपा २६२)। °**कम्मंत** न [°**कर्मान्त**] जहाँ शान्ति-कर्म किया जाता हो वह स्थान; (आचा २, २, २, ६)। °**गिह** न [°**गृह**] शान्ति-कर्म करने का स्थान; (कप्प)। °**जल** न [°**जल**]

देखो °उदअ; (धर्म २)। °जिण पुं [°जिन] सोलहवें जिन-देव; (संति १)। °मई स्त्री [°मती] एक श्राविका का नाम; (सुपा ६२२)। °य वि [°द] शान्ति-प्रदाता; (उप ७२८ टी)। °सूरि पु [°सूरि] एक जैनाचार्य और ग्रन्थकार; (जी ५०)। °सेणिय पुं[°श्रेणिक] एक प्राचीन जैन मुनि; (कप्प)। °हर न [°गृह] भगवान् शान्ति-नाथजी का मन्दिर; (पउम ६७, ५)। °होम पुं [°होम] शान्ति के लिए किया जाता हवन; (विपा १, ५—पत्र ६१)।

संतिअ } **संतिग** } वि [दे. सत्क] संबन्धी, संबन्ध रखने वाला; "अम्मा-पिउसतिए वद्धमाणे" (कप्प), "नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा सागारियसंतियं सेज्जा-संथारयं आयाए अहिगरणं कट्टु संपव्वइत्तए" (कस; उव; महा; स २०६; सुपा २७८; ३२२; पराह १. ३—पत्र ४२)।

संतिज्जाघर देखो **संति-गिह**; (महा ६८, ८)।

संतिण्ण वि [**संतीर्ण**] पार-प्राप्त, पार उतरा हुआ; "संतिराणं सव्वभया" (अजि १२)।

संतुट्ठ वि [**संतुष्ट**] संतोष-प्राप्त; (स्वप्न २०; महा)।

संतुयट्ट वि [**संत्वग्वृत्त**] जिसने पार्श्व घुमाया हो वह, जिसने करवट बदली हो वह, लेटा हुआ; (णाया १, १३—पत्र १७६)।

संतुलणा स्त्री [**संतुलना**] तुलना, तुल्यता, सरीखाई; (सार्ध २०)।

संतुस्स अक [सं+तुष्] १ प्रसन्न होना। २ तृप्त होना। संतुस्सइ; (सिरि ४०२)।

संतेज्जाघर देखो **संतिज्जाघर**; (महा ६८, १४)।

संतो अ [**अन्तर्**] मध्य, बीच, "अंतो संतो च मध्यार्थे" (प्राकृ ७६)।

संतोस सक [सं + तोषय्] १ प्रसन्न करना, खुशी करना। २ तृप्त करना। कर्म—संतोसीअदि (शौ), (नाट—रत्ना ४०)।

संतोस पुं [**संतोष**] तृप्ति, लोभ का अभाव; "हरइ अणूवि परगुणो गरुयम्मिवि णियगुणे न संतोसो" (गउड; कुमा; पराह १, ५—पत्र ६३; प्रासू १७७; सुपा ४३६)।

संतोसि स्त्री [**संतोषि**] संतोष, तुष्टि, तृप्ति; (उवा)।

संतोसि वि [**संतोषिन्**] १ संतोष-युक्त, लोभ-रहित, निर्लोभी, तृप्त; (सूअ १, १२, १५; सुपा ४३६)। २ आनन्दित, खुशी; (कप्पू)।

संतोसिअ पुं [**संतोषिक**] संतोष, तृप्ति; (उवा १६)।

संतोसिअ वि [**संतोषित**] संतुष्ट किया हुआ; (महा; सण)।

संथ वि [**संस्थ**] संस्थित; (विसे ११०१)।

संथड } **संथडिय** } वि [**संस्तृत**] १ आच्छादित, परस्पर के संश्लेष से आच्छादित; (भग; ठा ४, ४)। २ घन, निबिड़; (आचा २, १, ३, १०)। ३ व्याप्त; (उत्त २१, २२; ओघ ७४७)। ४ समर्थ; ५ तृप्त, जिसने पर्याप्त भोजन किया हो वह; (कस; आचा २, ४, २, ३; दस ७, ३३)। ६ एकलित; (आचा २, १, ६, १)।

संथण अक [**सं+स्तन्**] आक्रन्द करना। संथणती; (सूअ १, २, ३, ७)।

संथर सक [**सं+स्तृ**] १ बिछौना करना, बिछाना। २ निस्तार पाना, पार जाना। ३ निर्वाह करना। ४ अक. समर्थ होना। ५ तृप्त होना। ६ होना, विद्यमान होना। संथरइ; (भग २, १—पत्र १२७; उवा; कस); "ण समुच्छे णो संथरे तणं" (सूअ १, २, २, १३; आचा), संथरिज्ज, संथरे, संथरेज्जा; (कप्प; दस ५, २, २; आचा)। वकृ—**संथर**, **संथरंत**, **संथरमाण**; (उवर १४२; ओघ १८२; १८१; आचा २, ३, १, ८)। संकृ—**संथरित्ता**; (भग; आचा)।

संथर पुं [**संस्तर**] निर्वाह; (पिंड ३७५; ४००)।

संथर देखो **संथार**; (सुर २, २४७)।

संथरण न [**संस्तरण**] १ निर्वाह; (बृह १)। २ बिछौना करना; (राज)।

संथव सक [**सं + स्तु**] १ स्तुति करना, श्लाघा करना। २ परिचय करना। संथवेज्जा; (सूअ १, १०, ११)। कृ—**संथवियव्व**; (सुपा २)।

संथव पुं [**संस्तव**] १ स्तुति, श्लाघा; "संथवो थुई" (निचू २; वव ३; पिंड ४८४)। २ परिचय, संसर्ग; (उवा; पिंड ३१०; ४८४; ४८५; श्राक ८८)। ३ वि. स्तुति-कर्ता; (णाया १, १६ टी—पत्र २२०; राज)।

संथवण न [**संस्तवन**] ऊपर देखो; (संबोध ५६; उप ७६८ टी)।

संथवय वि [**संस्तावक**] स्तुति-कर्ता; (णाया १, १६—पत्र २१३)।

संथविअ देखो **संठविअ**; (पउम ८३, १०)।

संथार } पुं [**संस्तार**] १ दर्भ आदि की शय्या,
संथारग } बिछौना; (णाया १, १—पत्र ३०, उवा;
संथारय } उव; ५ग)। २ अपवरक, कमरा; (आचा २, २, ३, १)। ३ उपाश्रय, साधु का वास-स्थान; (वव ४)। ४ संस्तार-कर्ता; (पव ७१)।

संथाव देखो **संठाव**। वकृ—**संथावंत**; (पउम १०३, २४)।

संथावण न [**संस्थापन**] सान्त्वना, समाश्वासन; (पउम ११, २०; ४६, ८; ६५, ४७)। देखो **संठावण**।

संथावणा स्त्री [**संस्थापना**] संस्थापन, रखना; (सा २४)। देखो **संठावणा**।

संथिद (शौ) देखो **संठिअ**; (नाट—मृच्छ ३०१)।

संथुअ वि [**संस्तुत**] १ संबद्ध, सगत; (सूअ १, १२, २)। २ परिचित; (आचा १. २, १, १)। ३ जिसकी स्तुति की गई हो वह, श्लाघित; (उत्त १, ४६; भवि)।

संथुइ स्त्री [**संस्तुति**] स्तुति, श्लाघा, प्रशंसा; (चेइय ४६६; सुपा ६५०)।

संथुण सक [**सं+स्तु**] स्तुति करना, श्लाघा करना। संथुणइ; (उव; यति ६)। वकृ—**संथुणमाण**; (पउम ८३, १०)। कवकृ—**संथुणिज्जंत, संथुव्वंत**; (सुपा १६०; आक ७)। संकृ—**संथुणित्ता**; (पि ४६४)।

संथुल वि [**संस्थुल**] रमणीय, रम्य, सुन्दर; (चारु १६)।

संथुव्वंत देखो **संथुण**।

संद अक [**स्यन्द्**] झरना, टपकना। सदति; (सूअ १, १२, ७)।

संद पुं [**स्यन्द**] १ झरन, प्रस्रव; (से ७, ५६)। २ रथ; "रवि-संडु(?दु)व्व भमंतो" (धर्मवि १४४)।

संद वि [**सान्द्र**] घन, निविड; (अच्चु ३७; विक्र २३)।

संदंस पुं [**संदंश**] दक्षिण हस्त; "छिंदाविओ निवेण कावयसा तहवि तस्स सदंसो" (कुप्र २३२)।

संदंसण न [**संदर्शन**] दर्शन, देखना, साक्षात्कार; (उप ३५७ टी)।

संदट्ट वि [**संदष्ट**] जो काटा गया हो वह, जिसको दंश लगा हो वह; (हे २, ३४; कुमा ३, ८; पड्)।

संदट्ट } वि [**दे**] १ संलग्न, संयुक्त, संबद्ध; (दे ८,
संदट्टय } १८; गउड २३६)। २ न. संघट्ट, संघर्ष; (दे ८, १८)।

संदड्ढ वि [**संदग्ध**] अति जला हुआ; (सुर ६, २०५; सुपा ५६६)।

संदण पुं [**स्यन्दन**] १ रथ; (पाअ; महा)। २ भारतवर्ष में अतीत उत्सर्पिणी-काल में उत्पन्न तेइसवाँ जिन-देव; (पव ७)। ३ न. क्षरण, प्रस्रव; ४ वहन, बहना; ५ जल, पानी; "जत्थ णं नई निच्चोयगा निच्चसंदणा" (कप्प)।

संदब्भ पु [**संदर्भ**] रचना, ग्रन्थन; (उवर २०३; सण)।

संदमाणिया } स्त्री [**स्यन्दमानिका, °नी**] एक प्रकार का
संदमाणी } वाहन, एक तरह की पालखी; (औप; णाया १, ५—पत्र १०१; १, १ टी—पत्र ४३; औप)।

संदाण सक [**कृ**] अवलम्बन करना, सहारा लेना। संदाणइ; (हे ४, ६७)। वकृ—**संदाणंत**; (कुमा)। कवकृ—**संदाणिज्जंत**; (नाट—मालती ११६)।

संदाणिअ वि [**संदानित**] बद्ध, नियन्त्रित; (पाअ; से १, ६०; १३, ७१; सुपा ३; कुप्र ६६; नाट-मालती १६६)।

संदामिय वि [**संदामित**] ऊपर देखो, (स ३१६; सम्मत्त १६०)।

संदाव देखो **संताव** = सताप; (गा ८१७; ६६४; पि २७५; स्वप्न २७; अभि ६१; माल १७६)।

संदाव पुं [**संद्राव**] समूह, समुदाय; (विसे २८)।

संदिट्ठ वि [**संदिष्ट**] १ जिसका अथवा जिसको सँदेशा दिया गया हो वह, उपदिष्ट, कथित; (पाअ, उप ७२८ टी, ओघभा ३१, भवि)। २ जिसको आज्ञा दी गई हो वह, "हरिणेगमेसिणा सक्कवयणसंदिट्ठेणं" (कप्प)। ३ छँटा हुआ, छिलका निकाला हुआ; (चावल आदि). (राय ६७)।

संदिद्ध वि [**संदिग्ध**] संशय-युक्त, सदेह वाला; (पाअ)।

संदिन्न न [**संदत्त**] उनतीस दिनों का लगातार उपवास; (संबोध ५८)।

संदिय वि [**स्यन्दित**] क्षरित, टपका हुआ; (सुर २. ७६)।

संदिर वि [**स्यन्दितृ**] झरने वाला; (सण)।

संदिस सक [**सं+दिश्**] १ सँदेशा देना, समाचार पहुँचाना। २ आज्ञा देना। ३ अनुज्ञा देना, सम्मति देना। ४ दान के लिए सकल्प करना। संदिसइ; (पड्; महा ,) सदिसह; (पडि)। कवकृ—**संदिस्संत**; (पिंड २३६)।

प्रयो—संकृ—**संदिसाविऊण**; (पंचा ५, ३८)।
संदिसण न [**संदेशन**] उपदेश, कथन; "कुलनीइट्ठिइभग-प्पमुहाणोगप्पश्रोससंदिसणं" (संबोध १५)।
संदीण पुं [**संदीन**] १ द्वीप-विशेष, पक्ष या मास आदि में पानी से सराबोर होता द्वीप; २ अल्पकाल तक रहने वाला दीपक; ३ श्रुतज्ञान; ४ क्षोभ्य, क्षोभणीय; (आचा १, ६, ३, ३)।
संदीवग वि [**संदीपक**] उत्तेजक, उद्दीपक; "कामग्गि-संदीवग" (रंभा)।
संदीवण न [**संदीपन**] १ उत्तेजना, उद्दीपन; (संबोध ४८; नाट—उत्तर ५६)। २ वि. उत्तेजन का कारण, उद्दीपन करने वाला; (उत्तम ८८)।
संदीविय वि [**संदीपित**] उत्तेजित, उद्दीपित; (भवि)।
संदुक्ख अक [**प्र+दीप्**] जलना, सुलगना। संदुक्खइ; (षड्)।
संदुट्ठ वि [**संदुष्ट**] अतिशय दुष्ट; (संबोध ११)।
संदुम अक [**प्र+दीप्**] जलना, सुलगना। संदुमइ; (हे ४, १५२; कुमा)।
संदुमिअ वि [**प्रदीप्त**] जला हुआ, सुलगा हुआ; (पाअ)।
संदेव पुं [**दे**] १ सीमा, मर्यादा; २ नदी-मेलक, नदी-संगम; (दे ८, ७)।
संदेस पुं [**संदेश**] सँदेशा, समाचार; (गा ३४२; ८३३; हे ४, ४३४; सुपा ३०१; ५१६)।
संदेह पुं [**संदेह**] संशय, शंका; (स्वप्न ६६; गउड; महा)।
संदोह पुं [**संदोह**] समूह, जत्था; (पाअ; सुर २, १४६; सिरि ५६४)।
संध सक [**सं+धा**] १ साँधना, जोड़ना। २ अनुसंधान करना, खोज करना। ३ इच्छा, चाहना। ४ वृद्धि करना, बढ़ाना। ५ करना। "भग्गं व संधइ रहं सो" (कुप्र १०२), संधइ, संधए; (आचा; सूअ १, १४, २१; १, ११, ३४; ३५)। भवि—संधिस्सामि, संधिहिसि; (पि ५३०)। वकृ—**संधंत**; (से ५, २४)। कवकृ—**संधिज्जमाण**; (भग)। हेकृ—**संधिउं**; (कुप्र ३८१)।
संध° देखो **संभ**°; (देवेन्द्र २७०)।
संधण स्त्रीन [**संधान**] १ साँधा, सधि, जोड़; (धर्मसं १०१७)। २ अनुसधान; (पंचा १२, ४३)। स्त्री—°**णा**; (आचानि १७५; सूअनि १६७; ओघ ७२७)।
संधणया स्त्री [**संधना**] साँधना, जोड़ना; (वव १)।
संधय वि [**संधक**] संधान-कर्ता; (दस ६, ४, ५)।
संधया देखो **संध**=सं+धा। संधयाती; (सूअ २, ६, २)।
संधा स्त्री [**संधा**] प्रतिज्ञा, नियम; (श्रा १२; उप पृ ३३३; सम्मत्त १७१)।
संधाण न [**संधान**] १ दो हाड़ों का संयोग-स्थान; (सुर १२, ६)। २ संधि, सुलह; (हम्मीर १५)। ३ मद्य, सुरा, दारू; (धर्मसं ५६)। ४ जोड़, संयोग, मिलान; (आचा; कुमा; भवि)। ५ अचार, नींबू आदि का मसाला दिया हुआ खाद्य-विशेष; (पव ४)।
संधारण न [**संधारण**] सान्त्वन, आश्वासन; (स ४१६)।
संधारिअ वि [**दे**] योग्य, लायक; (दे ८, १)।
संधारिअ वि [**संधारित**] रखा हुआ, स्थापित; (णाया १, १—पत्र ६६)।
संधाव सक [**सं+धाव्**] दौड़ना। संधावइ; (उत्त २०, ४६)।
संधि पुंस्त्री [**संधि**] १ छिद्र, विवर; २ संधान, उत्तरोत्तर पदार्थ-परिज्ञान; (सूअ १, १, १, २०; २१; २२; २३; २४)। ३ व्याकरण-प्रसिद्ध दो अक्षरों के संयोग से होने वाला वर्ण-विकार; (पण्ह २, २—पत्र ११४)। ४ सेंध, चोरी के लिए भींत में किया जाता छेद; (चारु ६०; महा; हास्य ११०)। ५ दो हाड़ों का संयोग-स्थान; "थक्काओ सव्वसंधीओ" (सुर ४, १६५; १२, १६६; जी १२)। ६ मत, अभिप्राय; "अहवा विचित्त-संधिणो हि पुरिसा हवंति" (स २६)। ७ कर्म, कर्म-संतति; (आचा; सूअ १, १, १, २०)। ८ सम्यग् ज्ञान की प्राप्ति; ९ चारित्र-मोहनीय कर्म का क्षयोपशम; १० अवसर, समय, प्रसंग; ११ मीलन, संयोग; (आचा)। १२ दो पदार्थों का संयोग-स्थान; (विपा १, ३—पत्र ३६; महा)। १३ मेल के लिए कतिपय नियमों पर मित्रता-स्थापन, सुलह; (कप्पू; कुमा ६, ४०)। १४ ग्रन्थ का प्रकरण, अध्याय, परिच्छेद; (भवि)। °**गिह** न [°**गृह**] दो भींतों के बीच का प्रच्छन्न स्थान; (कप्प)। °**च्छेयग**, °**छेयग** वि [°**च्छेदक**] सेंध लगा कर चोरी करने वाला; (णाया १, १८—पत्र २३६; विपा १, ३—पत्र ३६)। °**पाल**, °**वाल** वि [°**पाल**] दो राज्यों की सुलह का रक्षक; (कप्प; औप; णाया १, १—पत्र १६)।

संघिअ वि [दे] दुर्गन्धि, दुर्गन्ध वाला; (दे ८, ८)।

संघिअ वि [**संहित**] साँधा हुआ, जोड़ा हुआ; (से १, ५४, गा ५३; स २६७; तदु ३६; वज्जा ७०)।

संघिअ वि [**संधित**] प्रसारित; (गउड)।

संघिआ देखो **संहिया**; (ओघ ६२)।

संघिउं देखो **संध**=स+धा।

संधित देखो **संधिअ**=संहित; (भग)।

संधिविग्गहिअ पुं [**सान्धिविग्रहिक**] राजा का संधि और लड़ाई के कार्य में नियुक्त मन्त्री; (कुमा)।

संधीर सक [**सं+धीरय्**] आश्वासन देना, धीरज देना। वकृ—**संधीरंत**; (सुपा ४७६)।

संधीरविय वि [**संधीरित**] जिसको आश्वासन दिया गया हो वह, आश्वासित; (सुर ४, १११)।

संधुक्क अक [**प्र+दीप्, सं+धुक्ष्**] १ जलना, सुलगना। २ सक. जलाना। ३ उत्तेजित करना। संधुक्कइ; (हे ४, १५२; कुमा)। कर्म—संधुक्किज्जइ; (वज्जा १३०)।

संधुक्कण न [**संधुक्षण**] १ सुलगना, जलना; २ प्रज्वालन, सुलगाना; (भवि)। ३ वि. सुलगाने वाला; (स २४१)।

संधुक्किअ वि [**संधुक्षित**] १ जलाया हुआ, सुलगाया हुआ; (सुपा ५०१)। २ जला हुआ, प्रदीप्त, सुलगा हुआ; (पाअ; महा; स २७)। ३ उत्तेजित; "अविवेय-पवणसंधुक्किओ पज्जलिओ मे मणम्मि कोवाणलो" (स २४१)।

संधुक्खिद (शौ) ऊपर देखो; (नाट—मृच्छ २३३)।

संधुम देखो **संदुम**। सधुमइ; (षड्)।

संधे देखो **संध**=सं+धा। संधेइ, संधेंति, संधेज्जा; (आचा १, १, १, ५; पि ५००; सूअ १, ४, १, ५)। वकृ—**संधेंत, संधेमाण**, (पउम ६८, ३१, पचा १४, २७; आचा; पि ५००)।

संन देखो **संण**; (आचा १, ५, ६, ४)।

संनक्खर न [**संज्ञाक्षर**] अकार आदि अक्षरों की आकृति; (णादि १८७)।

संनज्झ देखो **संणज्झ**। सनज्झइ; (भवि)। सकृ—**संनज्झिऊण**; (महा)। हेकृ—**संनज्झिउं**; (स ३७६)।

संनण न [**संज्ञान**] इसारा करना, संज्ञा करना; (उप २६०)।

संनत देखो **संनय**; (पण्ह १, ४—पत्र ७८)।

संनद्ध देखो **संणद्ध**; (औप; विपा १, २ टी—पत्र २३)।

संनय वि [**संनत**] नमा हुआ, अवनत; (औप; वज्जा १५०)।

संनव सक [**सं+ज्ञापय्**] सभापण से संतुष्ट करना। सनवेइ; (राय १४०)।

संनह देखो **संणज्झ**। संनहइ;(भवि), सनहह; (धर्मवि २०)।

संनहण न [**संनहन**] सनाह; (पउम १०, ६४)।

संनहिय देखो **संणद्ध**; (सुपा २२)।

संना देखो **संणा**; (ठा १—पत्र १९; पण्ह १, ३—पत्र ५५; पाअ; सुर ३, ६७; पिंड २४५; उप ७५१; द ३)।

संनाय वि [**संज्ञात**] पिछाना हुआ; "संनाया परियणेणं" (महा)। देखो **संणाय**; (पव १५३)।

संनाह देखो **सणाह**=स+नाहय्। सनाहेइ; (औप; तंदु ११)। सकृ—**संनाहित्ता**; (तंदु ११)।

संनाह देखो **संणाह**=संनाह; (महा)।

संनाहिय वि [**संनाहित**] तय्यार किया हुआ, सजाया हुआ; (औप)।

संनाहिय देखो **संणाहिय**; (णाया १, १६—पत्र २१७)।

संनि देखे **संणि**; (सम २; ठा २, २—पत्र ५९; जी ४३; कम्म १, ६)।

संनिकास देखो **संनिगास**; (ठा ६—पत्र ४५६; कप्प)।

संनिकिट्ठ वि [**संनिकृष्ट**] आसन्न, समीप-स्थित; (सुख ४, ८)।

संनिक्खित्त वि [**संनिक्षिप्त**] डाला हुआ, रखा हुआ; (कप्प)।

संनिगास वि [**संनिकाश**] १ समान, तुल्य; (भग २, १, णाया १, १—पत्र २५; औप; स ३८१)। २ पु. अपवाद (पंचू)। ३ पुन. समीप, पास; (पउम ३६, २८)।

संनिगास पु [**संनिकर्ष**] संयोग; "सजोग सनिगासो पडुच्च सबंध एगट्ठा" (णादि १२८ टी)।

संनिचय पु [**संनिचय**] १ निचय, समूह; (आचा)। २ संग्रह; (आचा १, २, ५, १)।

संनिचिय वि [**संनिचित**] निबिड किया हुआ; (पव १५८; जीवस. ११६)।

संनिजुंज सक [**संनि+युज्**] अच्छी तरह जोड़ना। कवकृ—**संनिजुज्जंत**; (पिंड ४५५)।

संनिज्झ न [**सांनिध्य**) सहायता करने के लिए समीप में आगमन, निकटता; (स ३८२)।

संनिनाय पुं [**संनिनाद**] प्रतिध्वनि, प्रतिशब्द; (कप्प)।

संनिभ देखो **संनिह**; (णाया १, १—पत्र ४८; उवा; औप १)।

संनिमहिअ वि [**संनिमहित**] १ व्याप्त, पूर्ण, भरा हुआ; २ पूजित; "चंपा नाम नयरी पंडुरवरभवणसंनिमहिया" (औप; णाया १, १ टी—पत्र ३), "अत्थि मगहा जणवओ गामसतसंनिमहिओ" (वसु)।

संनिय देखो **संणिय**; (सिरि ८६०; भवि)।

संनियट्ट वि [**संनिवृत्त**] रुका हुआ, विरत। °**यारि** वि [°**चारिन्**] प्रतिषिद्ध का वर्जन करने वाला; (कप्प)।

संनियास देखो **संनिगास**; (पउम ३३, ११६)।

संनिलयण न [**संनिलयन**] आश्रय, आधार; "लोभ-घत्था संसारं अतिवयंति सव्वदुक्खसंनिलयणं" (पण्ह १, ५—पत्र ६४)।

संनिवइय देखो **संणिपडिअ**; (णाया १, १—पत्र ६५)।

संनिवाइ वि [**संनिपातिन्**] संयोगी, संबन्धी; "सव्वक्खर-संनिवाइणो" (कप्प; औप; सम्मत्त १४४)।

संनिवाइ वि [**संनिवादिन्**] संगत बोलने वाला, व्याजवी कहने वाला; (भग १, १—पत्र ११)।

संनिवाइय वि [**सांनिपातिक**] संनिपात रोग से संबन्ध रखने वाला; (णाया १, १—पत्र ५०; तंदु १६; औप ८७)। २ भाव-विशेष, अनेक भावों के संयोग से बना हुआ भाव; (अणु ११३; कम्म ४, ६४; ६८)। ३ पुं. संनिपात, मेल,संयोग; (अणु ११३)।

संनिवाइय वि [**संनिपातिक**] देखो **संनिवाइ**; "सव्व-क्खरसंनिवाइयाए" (औप ५६)।

संनिवाडिय वि [**संनिपातित**] विध्वस्त किया हुआ; (णाया १, १६—पत्र २२३)।

संनिवाय पु [**संनिपात**] सयोग, संबन्ध; (कप्प; औप)।

संनिविट्ठ न [**संनिविष्ट**] १ मुहल्ला, रथ्या; (औप)। २ वि. जिसने पडाव डाला हो वह, नगर के बाहर पड़ाव ड़ाल कर पड़ा हुआ; (कप्प)। ३ संहत और स्थिर आसन से व्यवस्थित—बैठा हुआ; (णाया १, ३—पत्र ६१; राय २७)।

संनिवेस पुं [**संनिवेश**] १ नगर के बाहर का प्रदेश, जहाँ आभीर वगैरः लोग रहते हों; २ गाँव, नगर आदि स्थान; (भग १, १—पत्र ३६)। ३ यात्री आदि का ड़ेरा, मार्ग का वास-स्थान, पड़ाव; (उत्त ३०, १७)। ४ ग्राम, गाँव; (सिरि ३८)। ५ रचना; (उप पृ १४२)।

संनिवेसणया स्त्री [**संनिवेशना**] संस्थापन; (उत्त २६, १)।

संनिवेसिल्ल वि [**संनिवेशिन्**] रचना वाला; (उप पृ १४२)।

संनिसन्न वि [**संनिषण्ण**] बैठा हुआ, सम्यक् स्थित; (णाया १, १—पत्र १६; कुप्र १६६; श्रु १२; मण)।

संनिसिज्जा, **संनिसेज्जा** स्त्री [**संनिषद्या**] आसन-विशेष, पीठ आदि आसन; (सम २१; उत्त १६. ३; उव)।

संनिह वि [**संनिभ**] समान, सदृश; (प्रासू ६६; सण)।

संनिहाण न [**संनिधान**] १ ज्ञानावरणीय आदि कर्म, (आचा)। २ कारक-विशेष, अधिकरण कारक, आधार; (विसे २०६६; ठा ८—पत्र ४२७)। ३ सान्निध्य, निकटता; (स ७१८; ७६१)। °**सत्थ** न [°**शस्त्र**] संयम, त्याग; (आचा)। °**सत्थ** न [°**शास्त्र**] कर्म का स्वरूप बताने वाला शास्त्र; (आचा)।

संनिहि पुंस्त्री [**संनिधि**] १ उपभोग के लिए स्थापित वस्तु; (आचा १, २, १, ४)। २ संस्थापन; ३ सुन्दर निधि; (आचा १, २, ५, १)। ४ समीपता, निकटता; (उप पृ १८६; स ६८०; कुप्र १३०)। ५ संचय, संग्रह; (उत्त ६, १५; दस ३, ३; ८, २४)।

संनिहिअ पुं [**संनिहित**] अणपन्नि देवों का दक्षिण दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५)। देखो **संणिहिअ**; (णाया १, १ टी—पत्र ४)।

संनेज्झ देखो **संनिज्झ**: "उवगारि त्ति करेइ कुमरस्स सन्नेज्जं(?ज्झं)" (कुप्र २५; चेइय ७८३)।

संपअ, **संपइ** (अप) देखो **संपया**; (पिंग; पि ४१३; हे ४, ३३५; कुमा)।

संपइ अ [**संप्रति**] १ इस समय, अधुना, अब: (पाअ; महा; जी ५०; दं ४६; कुमा)। २ पुं. एक प्रसिद्ध जैन राजा, सम्राट् अशोक का पौत्र; (कुप्र २; धर्मवि ३७; पुप्फ २६०)। °**काल** पुं [°**काल**] वर्तमान काल; (सुपा ४४६)। °**कालीण** वि [°**कालीन**] वर्तमान-काल-सबन्धी; (विसे २२२६)।

संपइण्ण वि [**संप्रकीर्ण**] व्याप्त; (राज)।

संपउत्त वि [**संप्रयुक्त**] संयुक्त, संबद्ध, जोड़ा हुआ; (ठा ४, १—पत्र १८७; सूअ २, ७, २; उवा; औप; धर्मसं

६६५; राय १४६)।

संपओग पुं [**संप्रयोग**] सयोग, संबन्ध; (ठा ४, १—पत्र १८७; स ६१४; उप ७२८ टी; कुप्र ३७३; औप)।

संपकर देखो **संपगर**। सपकरेइ; (उत्त २१, १६)।

संपक्क पुं [**संपर्क**] संबन्ध; (सुपा ५८; सम्मत्त १४१)।

संपक्कि वि [**संपर्किन्**] सपर्क वाला, सबन्धी; (कप्पू; काप्र १७)।

संपक्खाल पुं [**संप्रक्षाल**] तापस का एक भेद जो मिट्टी वगैरः घिस कर शरीर का प्रक्षालन करते है; (औप)।

संपक्खालिय वि [**संप्रक्षालित**] धोया हुआ; (धर्म ३)।

संपक्खित्त वि [**संप्रक्षिप्त**] प्रक्षिप्त, फेंका हुआ, डाला हुआ; (पंच ५, १५७)।

संपगर सक [**संप्र+कृ**] करना। संपगरेइ; (उत्त २१, १६)।

संपगाढ वि [**संप्रगाढ**] १ अत्यन्त आसक्त; (उत्त २०, ४५; सूअ २, ६, २२)। २ व्याप्त; (सूअ १, ५, १, १७)। ३ स्थित, व्यवस्थित; (सूअ १, १२, १२)।

संपगिद्ध वि [**संप्रगृद्ध**] अति आसक्त; (पण्ह १, ४—पत्र ८५)।

संपग्गहिअ वि [**संप्रगृहीत**] खूब प्रकर्ष से गृहीत, विशेष अभिमान-युक्त; (दस ६, ४, २)।

संपज्ज अक [**सं+पद्**] १ संपन्न होना, सिद्ध होना। २ मिलना। संपजइ; (षड्; महा)। भवि—संपजिस्सइ; (महा)।

संपज्जलिअ पुं [**संप्रज्वलित**] तीसरी नरक का नववाँ नरकेन्द्रक, नरकावास-विशेष; (देवेन्द्र ९)।

संपट्ठिअ देखो **संपत्थिअ**=संप्रस्थित; (उप १४२ टी; औप; संबोध ५५; सुपा ७७; उपपृ १५८)।

संपड अक [**सं+पद्**] १ प्राप्त होना, मिलना; गुजराती मे 'सांपडवुं'। २ सिद्ध होना, निष्पन्न होना। संपडइ, सपडंति; (वज्जा ११६; समु १५८; वज्जा ५०)। वकृ—**संपडंत**; (से १४, १; सुर १०, ९७)।

संपडिअ वि [**दे. संपन्न**] लब्ध, मिला हुआ, प्राप्त; (दे ८, १४; स २५६)।

संपडिवूह सक [**संप्रति+बृंह**] प्रशंसा करना, तारीफ करना। संपडिवूहंति; (सूअ २, २, ५५)।

संपडिलेह सक [**संप्रति+लेखय्**] प्रतिजागरण करना, प्रत्युपेक्षण करना, अच्छी तरह निरीक्षण करना। संपडिलेहए; (उत्त २६, ४३)। कृ—**संपडिलेहिअव्व**; (दसचू १, १)।

संपडिवज्ज सक [**संप्रति+पद्**] स्वीकार करना। सपडिवजइ; (भग)।

संपडिवत्ति स्त्री [**संप्रतिपत्ति**] स्वीकार, अंगीकार; (विसे २६१४)।

संपडिवाइअ वि [**संप्रतिपादित**] स्थित; (उत्त २२, ४६; सुख २२, ४६)। २ स्थापित; (दस २, १०)।

संपडिवाय सक [**संप्रति+पादय्**] संपादन करना, प्राप्त करना। संपडिवायए; (दस ९, २, २०)।

संपणदिय } देखो **संपणाइय**; (राज; कप्प)।
संपणद्दिय

संपणा देखो **संपण्णा**; (दे ८. ८)।

संपणाइय } वि [**संप्रणादित**] समीचीन शब्द वाला; "तुडियसद्दसंपणाइया" (जीव ३, ४—पत्र २२४; पत्र २२७ टी)।
संपणादिय

संपणाम सक [**संप्र + नामय्**] अर्पण करना। संपणामए; (उत्त २३, १७)।

संपणिपाअ } पु [**संप्रणिपात**] प्रणाम, समीचीन नमस्कार; (पंचा ३, १८; चेइय २३७)।
संपणिवाय

संपणुण्ण वि [**संप्रनुन्न**] प्रेरित, उत्तेजित; "अक्खंडचडानिलसंपणुण्णविलोलजालासयसकुलम्मि" (उपपं ४५)।

संपणुल्ल } सक [**संप्र + नुद्**] प्रेरणा करना। संकृ—**संपणुल्लिया, संपणोल्लिया**; (दस ५, १, ३०)।
संपणोल्ल

संपण्ण देखो **संपन्न**; (णाया १, १—पत्र ६; हेका ३३१; नाट—मृच्छ ९)।

संपण्णा स्त्री [**दे**] घेबर (मिष्टान्न-विशेष) बनाने का आटा, गेहूँ का वह आटा जिसका घृतपूर बन ता है; (दे ८, ८)।

संपत्त वि [**संप्राप्त**] १ सम्यक् प्राप्त; (णाया १, १; उवा; विपा १, १; महा; जी ५०)। २ समागत, आया हुआ; (सुपा ४१९)।

संपत्त पुंन [**संपात्र**] सुन्दर पात्र, सुपात्र; (सुपा ४१९)।

संपत्ति स्त्री [**संपत्ति**] १ समृद्धि, वैभव, संपदा; (पाअ; प्रासू ९६; १२८)। २ संसिद्धि; ३ पूर्त्ति; "तव दोहलस्स संपत्ती भविस्सइ" (विपा १, २—पत्र २७)।

संपत्ति स्त्री [**संप्राप्ति**] लाभ, प्राप्ति; (चेइय ८९४;

सुपा २१०)।

संपत्तिआ स्त्री [दे] १ बाला, कुमारी; लड़की; (दे ८, १८; वज्जा ११६)। २ पिप्पली-पत्र, पीपल की पत्ती; (दे ८, १८)।

संपत्थिअ न [दे] शीघ्र, जलदी; (दे ८, ११)।

संपत्थिअ }
संपत्थित } वि [संप्रस्थित] १ जिसने प्रयाण किया हो वह, प्रयात, प्रस्थित; (अंत २२; उप ६६६; सुपा १०७, ६५१; णाया १, १—पत्र ३२)। २ उपस्थित; "गहियाउहेहि जइवि हु रक्खिज्जइ पंजरोवरुच्छो(? रुद्धो)वि। तहवि हु मरइ निरुत्त पुरिसो संपत्थिए काले ॥" (पउम ११, ६१)।

संपइं अ [सांप्रतम्] १ युक्त, उचित; (प्राकृ १२)। २ अधुना, अब. (अभि ५६)।

संपदत्त वि [संप्रदत्त] दिया हुआ, अर्पित; (महा; प्राप)।

संपदाण देखो **संपयाण**; (णाया १, ८—पत्र १५०; आचा २, १५, ५)।

संपदाय पु [संप्रदाय] गुरु-परपरागत उपदेश, आम्नाय; (सबोध ५३, धर्मस १२३७)।

संपदावण न [संप्रदापन, संप्रदान] कारक-विशेष, "नतिआ करणम्मि कता चउत्थी संपदावणे" (ठा ८—पत्र ४२७)।

संपदि देखो **संपइ**=संप्रति; (प्राकृ १२)।

संपदि देखो **संपत्ति**=सपत्ति; (सक्षि ६; पि २०४)।

संपधार देखो **संपहार**=संप्र+धारय्। संपधारेदि (शौ); (नाट—मृच्छ २१६)। कर्म—सपधारीअदु (शौ); (पि ५४३)।

संपधारणा स्त्री [संप्रधारणा] व्यवहार-विशेष, धारणा-व्यवहार; (वव १०)।

सपधारिय वि [संप्रधारित] निश्चित. निर्णीत; (सण)।

संपधूमिय वि [संप्रधूमित] धूप-वासित, धूप दिया हुआ; (कस; कप्प; आचा २, २, १, १)।

संपन्न वि [संपन्न] १ संपत्ति-युक्त; (भग· महा, कप्प)। २ संसिद्ध; (विपा १, २—पत्र २६)।

संपप्प देखो **संपाव**।

संपबुज्झ अक [संप्र+बुध्] सत्य ज्ञान को प्राप्त करना। सपबुज्झंति; (पचा ७, २३)।

संपमज्ज सक [संप्र+मृज्] मार्जन करना, झाड़ना, साफ-सफ़ करना। संपमज्जेइ; (औप ४४)। संकृ—**संपमज्जेत्ता, संपमज्जिय**; (औप; आचा २, १, ४, ५)।

संपमार सक [संप्र+मारय्] मूर्च्छित करना। संपमारए; (आचा १, १, २, ३)।

संपय वि [सांप्रत] विद्यमान, वर्तमान; "पाएणा संपए च्चिय कालम्मि न याइदीहकालएणा" (विसे ५१६)।

संपयं देखो **संपइं**; (पाअ; महा; सुपा ५६८)।

संपयट्ट अक [संप्र+वृत्] सम्यक् प्रवृत्ति करना। संपयट्टेज्जा; (धर्मसं ६३१)। वकृ—**संपयट्टंत**; (पंचा ८, १४)।

संपयट्ट वि [संप्रवृत्त] सम्यक् प्रवृत्त; (सुर ४, ७६)।

संपया स्त्री [संपद्] १ समृद्धि, संपत्ति, लक्ष्मी, विभव; (उवा, कुमा; सुर ३, ६८, महा; प्रासू ६६)। २ वाक्यों का विश्राम-स्थान; (पव १)। ३ प्राप्ति; "बोहीलाभो जिणधम्मसंपया" (चेइय ६३१; पव ६२)। ४ एक वणिक्-स्त्री का नाम; (उप ५६७ टी)।

संपयाण न [संप्रदान] १ सम्यक् प्रदान, अच्छी तरह देना, समर्पण; (आचा २, १५, ५; गा ६८; सुपा २६८)। २ कारक-विशेष, चतुर्थी-कारक, जिसको दान दिया जाय वह; (विसे २०६६)।

संपयावण देखो **संपदावण**; "चउत्थी संपयावणे" (अणु १३३)।

संपराइग }
संपराइय } वि [सांपरायिक] संपराय-संबन्धी, संपराय में उत्पन्न; (ठा २, १—पत्र ३६; सूअ १, ८, ८; भग; श्रावक २२६)।

संपराय पुं [संपराय] १ संसार, जगत्; (सूअ १, ५, २, २३; दस २, ५)। २ क्रोध आदि कषाय; (ठा २, १—पत्र ३६)। ३ बादर कषाय, स्थूल कषाय; (सूअ १, ८, ८)। ४ कषाय का उदय; (औप)। ५ युद्ध, सग्राम, लडाई; (णाया १, ६—पत्र १५७; कुप्र ४००; विक्र ८८; दस २, ५)।

संपरिकित्ति पुं [संपरिकीर्त्ति] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६०)।

संपरिक्ख सक [संपरि+ईक्ष्] सम्यक् परीक्षा करना। संकृ—**संपरिक्खाए**; (सबोध २१)।

संपरिक्खित्त }
संपरिखित्त } वि [संपरिक्षिप्त] वेष्टित; (भग; पउम ३, २२; णाया १, १ टी—पत्र ४)।

संपरिफुड वि [संपरिस्फुट] सुस्पष्ट, अति व्यक्त; (पउम ७८, १६)।

संपरिवुड वि [**संपरिवृत**] १ सम्यक् परिवृत, परिवार-युक्तः (विपा. १, १—पत्र १; उवा; औप)। २ वेष्टित; (सूअ २, २, ५५)।

संपरी सक [**संपरी+इ**] पर्यटन करना, भ्रमण करना। संपरीइ; (विसे १२७७)।

संपल (अप) अक [**स+पत्**] आ गिरना। संपलइ; (पिंग)।

संपलग्ग वि [**संप्रलग्न**] १ संयुक्त, मिला हुआ; २ जा लडाई के लिए भिड गया हो वह; (णाया १, १८—पत्र २३९)।

संपलत्त वि [**संप्रलपित**] उक्त, कथित, प्रतिपादित; (णाया १, २—पत्र ८६)।

संपललिय वि [**संप्रललित**] जिसका अच्छी तरह लालन हुआ हो वह, "सुहसंपललिया" (औप)।

संपलिअ पु [**संपलित**] एक जैन महर्षि; (कप्प)।

संपलिअंक पु [**संपर्यङ्क**] पद्मासन; (भग; औप; कप्प; राय १४५)।

संपलित्त वि [**संप्रदीप्त**] प्रज्वलित, सुलगा हुआ; (णाया १, १—पत्र ६३; पउम २२, १६; धर्मसं ९७०; सुपा २९८; महा)।

संपलिमज्ज सक [**संपरि+मृज्**] प्रमार्जन करना। वकृ—**संपलिमज्जमाण**; (आचा १, ५, ४, ३)।

संपली सक [**संपरि+इ**] जाना, गति करना। संपलिंति; (सूअ १, १, २, ७)।

संपवेय } अक [**संप्र+वेप्**] काँपना। संपवेयए, संपवेवए;
संपवेव } (आचा २, १६, ३)।

संपवेस पुं [**संप्रवेश**] प्रवेश, पैठ; (गउड)।

संपव्वय सक [**संप्र+व्रज्**] गमन करना, जाना। वकृ—**संपव्वयमाण**; (आचा १, ५, ५, ३; ठा ६—पत्र ३५२)। हेकृ—**संपव्वइत्तए**; (कस)।

संपसार पुं [**संप्रसार**] एकांतित होना, समवाय; (राज)।

संपसारग } वि [**संप्रसारक**] १ विस्तारक, फैलाने
संपसारय } वाला. (सूअ १, २, २, २८)। २ पर्यालोचन-कर्ता; (आचा १, ५, ४, ५)।

संपसारि वि [**संप्रसारिन्**] ऊपर देखो; (सूअ १, ९, १६)।

संपसिद्ध वि [**संप्रसिद्ध**] अत्यन्त प्रसिद्ध; (धर्मसं ८६७)।

संपस्स सक [**सं+दृश्**] १ अच्छी तरह देखना। २ विचार करना। संकृ—**संपस्सिय**; (दसचू १, १८)।

संपहार सक [**संप्र+धारय्**] १ चिंतन करना। २ निर्णय करना, निश्चय करना। संपहारेति; (सुख १, १५)। भूका—संपहारिंसु; (सूअ २, १, १४; २९)। संकृ—**संपहारिऊण**; (स १०६)।

संपहार पुं [**संप्रधार**] निश्चय, निर्णय; (पउम १६, २६; उप १०३१ टी; भवि)।

संपहार पुं [**संप्रहार**] युद्ध, लडाई; (से ८, ४६)।

संपहारण न [**संप्रधारण**] निश्चय; (पउम ४८, ९८)।

संपहाव सक [**संप्र+धाव्**] दौड़ना। संपहावेइ, (आचा २, १, ३, ३)।

संपहिट्ठ वि [**संप्रहृष्ट**] हर्षित, प्रमुदित, (उत्त १५, ३)।

संपा स्त्री [**दे**] काञ्ची, मेखला, करधनी; (दे ८, २)।

संपाइअव वि [**संपादितवत्**] जिसने सपादन किया हो वह; (हे ४, २६५; विसे ९३४)।

संपाइम वि [**संपातिम**] १ भ्रमर, कीट, पतंग आदि उड़ने वाला जंतु; (आचा; पिंड २४; सुपा ४९१; ओघ ३४८)। २ जाने वाला, गति-कर्ता; "तिरिच्छसंपाइमा वा तसा पाणा" (आचा २, १, ३, ९; २, ३, १, १४)।

संपाइय वि [**संपातित**] १ आगत, आया हुआ; २ मिलित, मिला हुआ; (भवि)।

संपाइय वि [**संपादित**] साधित, सिद्ध किया हुआ; "सपाइयइट्ठफलि" (सण)।

संपाउण सक [**संप्र+आप्**] अच्छी तरह प्राप्त करना। सपाउणाइ, संपाउणंति; (उत्त २९, ५९; पि ५०४)। भवि—संपाउणिस्सामा; (णाया १, १८—पत्र २४१)। प्रयो—"जेणप्पाणं परं चेव सिद्धिं संपाउणेज्जासि" (उत्त ११, ३२)।

संपाओ अ [**संप्रातर्**] १ जब प्रभात होय तब, प्रातः-काल; २ अति प्रभात, बड़ी सुबह; ३ हर प्रभात; (ठा ३, १ टी—पत्र ११८)।

संपागड वि [**संप्रकट**] प्रकट, खुला; "संपागडपडिसेवी" (ठा ४, १—पत्र २०३, उव)।

संपाड सक [**सं+पादय्**] १ सिद्ध करना, निष्पन्न करना। २ प्रार्थित वस्तु देना, दान करना। ३ करना। ४ प्राप्त करना। "देइ सो जम्मरगियं, सपाडेइ वत्थाभरणाइय" (महा), "संपाडेमि भयवओ आणं ति" (स ६८४),

संपाडेइ; (स ६६)। कृ—**संपाडेयव्व**; (स २१४)।

संपाडग वि [**संपादक**] कर्ता, निर्माता; "ता को अन्नो तस्सुवरोइए संपाडगो होज्जा" (उप १४२ टी)।

संपाडण न [**संपादन**] १ निष्पादन; (स ७४८)। २ करण, निर्माण; (पंचा ६, ३८), "परत्थसंपाडणिक्करसिअन्नं" (सा ११)।

संपाडिअ वि [**संपादित**] १ सिद्ध किया हुआ, निष्पादित; (स २१४; सुर २, १७०)। २ प्राप्त किया हुआ, (उप पृ १२४)। ३ दत्त, अर्पित; (स २३५)।

संपातो देखो **संपाओ**; (ठा ३, १—पत्र ११७)।

संपाद (शौ) देखो **संपाड=सं+पादय्**। संपादेदि; (नाट—शकु ६५)। कृ—**संपादणीअ**; (नाट—विक्र ६०)।

संपादइत्तअ (शौ) वि [**संपादयितृ**] संपादन-कर्ता, संपादक; (पि ६००)।

संपादिअवद (शौ) देखो **संपाइअव**; (पि ५६६)।

संपाय पु [**संपात**] १ सम्यक्पतन; "सलिलसंपायकयकद्दमुप्पीलयं" (सुर ३, ११६)। २ संबन्ध, संयोग; "सारीरमाणसाणेयदुक्खसंपायकलियं ति" (सुर ४, ७५; गउड)। ३ व्यर्थ का भूठ, निरर्थक असत्य-भाषण; (पण्ह १, ५—पत्र ६२)। ४ संग, संगति; (श्रा ६; पंचा १, ४१)। ५ आगमन; (पंचा ७, ७२)। ६ चलन, हिलन; (उत्त १८, २३; सुख १८, २३)।

संपाय देखो **संपाओ**; (राज)।

संपायग वि [**संपादक**] संपादन-कर्ता; (उप पृ २६; महा; चेइय ६०५)।

संपायग वि [**संप्रापक**] १ प्राप्त करने वाला; "रिसिगुणसंपायगो होइ" (चेइय ६०५)। २ प्राप्त कराने वाला; (उप पृ २६)।

संपायण देखो **संपाडण**; (सुर ४, ७३; सुपा २८; ३४३; चेइय ७६७)।

संपायणा स्त्री [**संपादना**] ऊपर देखो; (पंचा १३, १७)।

संपाल सक [**सं+पालय्**] पालन करना। संपालइ; (भवि)।

संपाव सक [**संप्र+आप्**] प्राप्त करना। संपावेइ; (भवि)। संकृ—**संपप्प**; (सवंग १२)। हेकृ—**संपाविउं**; (सम १; भग; औप)।

संपाव सक [**संप्र+आपय्**] प्राप्त करवाना। संपावेइ; (उवा)।

संपावण न [**संप्रापण**] प्राप्ति, लाभ; (णाया १, १८—पत्र २४१; सुर १४, ५७)।

संपाविअ वि [**संप्राप्त**] प्राप्त, लब्ध; (सुर २, २२६; सुपा १६५; सण)।

संपाविअ वि [**संप्रापित**] नीत, जो ले जाया गया हो वह; (राज)।

संपासंग वि [**दे**] दीर्घ, लंबा; (दे ८, ११)।

संपिंडण न [**संपिण्डन**] १ द्रव्यों का परस्पर संयोजन; (पिंड २)। २ समूह; (ओघ ४०७)।

संपिंडिअ वि [**संपिण्डित**] पिण्डाकार किया हुआ, एकत्र किया हुआ; (औप; जी ४७; सण)।

संपिक्ख देखो **संपेह=संप्र+ईक्ष्**। संपिक्खई; (दसचू २, १२)।

संपिट्ठ वि [**संपिष्ट**] पिसा हुआ; (सूअ १, ४, २, ८)।

संपिणद्ध वि [**संपिनद्ध**] नियन्त्रित; "रज्जुपिणद्धो व इंदकेतू विसुद्धणेगगुणसंपिणद्ध" (पण्ह २, ४—पत्र १३०)।

संपिहा सक [**समपि+धा**] आच्छादन करना, ढकना। संकृ— **संपिहित्ताणं**; (पि ५८३)।

संपीड पुं [**संपीड**] संपीडन, दबाना; (गउड)। देखो **संपील**।

संपीडिअ वि [**संपीडित**] दबाया हुआ; (गउड १४४)।

संपीणिअ वि [**संप्रीणित**] खुश किया हुआ; (सण)।

संपील पु [**संपीड**] संघात, समूह; (उत्त ३२, २६)।

संपीला स्त्री [**संपीडा**] पीड़ा, दुःखानुभव; (उत्त ३२, ३६; ५२; ६५; ७८)।

संपुच्छ सक [**सं+प्रच्छ्**] पूछना, प्रश्न करना। संपुच्छदि (शौ); (नाट—विक्र २१)।

संपुच्छण स्त्रीन [**संप्रच्छन, संप्रश्न**] प्रश्न, पृच्छा; (सूअ १, ६, २१; सुपा २१)। स्त्री—°**णा**; (दस ३, ३)।

संपुच्छणी स्त्री [**संपुच्छनी**] भाड़ू, संमार्जनी; (राज २१)।

संपुज्ज वि [**संपूज्य**] संमाननीय, आदरणीय; (पउम ३३, ४७)।

संपुड पुं [**संपुट**] १ जुड़े हुए दो समान अंश वाली वस्तु, दो समान अंशों का एक दूसरे से जुड़ना; "कवाडसंपुडघणम्मि" (धण ३), "दलसंपुडे" (कप्पू; महा; भवि; से ७, ५६)। २ संचय, समूह; (सूअ १, ५, १, २३)।

°फलग पुं [°फलक] दोनों तर्फ जिल्द-बँधी पुस्तक, हिसाब की वही के समान किताब; (पव ८०)।

संपुड सक [**संपुटय्**] जोड़ना, दोनों हिस्सों को मिलाना। संपुडइ; (भवि)।

संपुडिअ वि [**संपुटित**] जुडा हुआ; (णाया १, १—पत्र ६३)।

संपुण्ण वि [**संपूर्ण**] १ पूर्ण, पूरा; (उवा, महा)। २ न. दश दिनों का लगातार उपवास; (संबोध ५८)।

संपूअ सक [**सं+पूजय्**] सम्मान करना, अभ्यर्चना करना। संकृ—**संपूइऊण**; (पंचा ८, ७)।

संपूजिय वि [**संपूजित**] अभ्यर्चित; (महा)।

संपूयण न [**संपूजन**] पूजन, अभ्यर्चन; (सूअ १, १०, ७, धर्मसं ६३४)।

संपूरिय वि [**संपूरित**] पूर्ण किया हुआ; "संपूरिय-दोहला" (महा; सण)।

संपेल्ल पुं [**संपीड**] दबाव; (पउम ८, २७२)।

संपेस सक [**संप्र+इष्**] भेजना। संपेसइ; (महा; भवि)।

संपेस पु [**संप्रष**] प्रेषण, भेजना; (णाया १, ८—पत्र १४७)।

संपेसण न [**संप्रेषण**] ऊपर देखो; (णाया १, ८—पत्र १४६; स ३७६; गउड; भवि)।

संपेसिय वि [**संप्रेषित**] भेजा हुआ; (सुर १६, ११५)।

संपेह सक [**संप्र+ईक्ष्**] देखना. निरीक्षण करना। संपेहइ, सपेहेइ; (दसचू २, १२; पि ३२३, भग; उवा; कप्प)। सकृ—**संपेहाए, संपेहित्ता**; (आचा १, २, ४, ४; १, ५, ३, २; सूअ २, २, १; भग)।

संपेहा स्त्री [**संप्रेक्षा**] पर्यालोचन;(आचा १, २, २. ६)।

संफ न [**दे**] कुमुद, चन्द्र-कमल; (दे ८, १)।

संफाल सक [**सं+पाटय्**] फाड़ना, चीरना। संफालइ, (भवि)।

संफाली स्त्री [**दे**] पंक्ति, श्रेणि; (दे ८, ५)।

संफास सक [**सं+स्पृश्**] स्पर्श करना, छूना। "माइ-ट्ठाणं सफासे" (आचा २, १, ३, ३; २, १, ५, ५; २, १, ६, २; ४; ५)।

संफास पुं [**संस्पर्श**] स्पर्श; (आचा; उप ६४८ टी; पव २ टी; हे १, ४३; पडि)।

संफासण न [**संस्पर्शन**] ऊपर देखो; "आणावीरिय-संफासणभावतो" (पचा १०, २८)।

संफिट्ट पु [**दे**] संयोग, मेलन; (श्रा १६)।

संफुल्ल वि [**संफुल्ल**] विकसित; (प्राकृ १४)।

संफुसिय वि [**संमृष्ट**] प्रमार्जित; "दसणकरनियरसंफुसिय-दिसिमुहमला" (सुपा २६३)।

संब पुं [**शाम्ब**] १ श्रीकृष्ण वासुदेव का एक पुत्र,(णाया १, ५—पत्र १००; अंत १४)। २ राजा कुमारपाल के समय का एक शेठ; (कुप्र १४३)।

संब पुन [**शम्ब**] वज्र, इन्द्र का आयुध. (सुर १६, ५०)।

संबंध सक [**सं+ग्रन्थ्**] १ जोड़ना। २ नाता करना। कर्म—सबज्झइ; (चेइय ७२७)।

संबंध पुं [**संबन्ध**] १ संसर्ग, संग; (भवि)। २ संयोग, (कम्म १, ३५)। ३ नाता, सगाई, रिश्तेदारी, (स्वप्न ४३)। ४ योजना, मेल; (वव ५)।

संबंधि वि [**संबन्धिन्**] संबन्ध रखने वाला; (उवा, सम्म ११७, स ५३६)।

संबर पुं [**शम्बर**] मृग-विशेष, हरिण की एक जाति. (पण्ह १, १—पत्र ७; दे ८, ६, कुप्र ४२६)।

संबल पुंन [**शम्बल**] १ पाथेय, रास्ते मे खाने का भोजन. "धन्नाणं चिय परलोयसंबलो मिलइ नन्नाण" (सम्मत्त १५७; पाअ; सुर १६, ५०; दे ६, १०८; महा; भवि; सुपा ६४)। २ एक नागकुमार देव, (आवम)।

संबलि देखो **सिंबलि**=शिम्बलि: (आचा २, १, १०, ४)।

संबलि पुंस्त्री [**शाल्मलि**] वृक्ष-विशेष, सेमल का पेड, (सुर २, २३४; ८, ५७)। देखो **सिंबलि**।

संबाधा देखो **संबाहा**, (पउम २, ५६)।

संबाह सक [**सं+बाध्**] १ पीड़ा करना। २ दबाना, चप्पी करना। सबाहज्जा; (निचू ३)।

संबाह पु [**संबाध**] १ नगर-विशेष, जहाँ ब्राह्मण आदि चारों वर्णों की प्रभूत वस्ती हो वह शहर; (उत्त ३०, १६)। २ पीडा, "सबाहा बहवे भुज्जो दुरइक्कमा अजा-णओ अपासओ" (आचा)। ३ वि. सकीर्ण, सकडा; "सबाहं संकिण्णं" (पाअ)।

संबाहण न [**संबाधन**] देखो **संवाहण**; (आचा १, ६, ४, २)।

संबाहणा स्त्री [**संबाधना**] देखो **संवाहणा**· (औप)।

संबाहणी स्त्री [**संबाधनी**] विद्या-विशेष; (पउम ७,

१३७)।

संबाहा स्त्री [**संबाधा**] १ पीड़ा; (आचा १, ५, ४, २)। २ अंग-मर्दन, चप्पी; (निचू ३)।

संबाहिय वि [**संबाधित**] १ पीडित; (सूत्र १, ५. २, १८)। २ देखो **संवाहिय**; (औप)।

संबुक्क पुं [**शम्बूक**] १ शंख; (ठा ४, २—पत्र २१६; सुपा ५०; १६५)। २ रावण का एक भागिनेय—खर-दूषण का पुत्र; (पउम ४३, १८)। ३ एक गाँव का नाम; (राज)। °**वट्टा** स्त्री [°**वर्ता**] शंख के आवर्त के समान भिक्षा-चर्या; (उत्त ३०, १९)। देखो **संवूअ**।

संबुज्झ सक [**सं + बुध्**] समझना, ज्ञान पाना। संबुज्झइ, संबुज्झंति, संबुज्झह; (महा; स ४८९; सूत्र १, २, १, १; वै ७३)। वकृ—**संबुज्झमाण**; (आचा १, १, २, ५)।

संबुद्ध वि [**संबुद्ध**] ज्ञान-प्राप्त; (उवा; महा)।

संबुद्धि स्त्री [**संबुद्धि**] ज्ञान, बोध; (अज्झ ३६)।

संबूअ पुं [**शम्बूक**] जल-शुक्ति, शुक्ति के आकार का जल-जंतु विशेष; (दे ८, १६; गउड)।

संबोधि स्त्री [**संबोधि**] सत्य धर्म की प्राप्ति; (धर्मसं १३९६)।

संबोह सक [**सं+बोधय्**] १ समझाना, बुझाना; २ आमन्त्रण करना। ३ विज्ञप्ति करना। संबोहइ, संबोहेइ; (भवि; महा)। कवकृ—**संबोहिज्जमाण**; (णाया १, १४)। कृ—**संबोहेअव्व**; (ठा ४, ३—पत्र २४३)।

संबोह पुं [**संबोध**] ज्ञान, बोध, समझ; (आत्म २०)।

संबोहण न [**संबोधन**] १ ऊपर देखो; (विसे २३३२; सुख १०, १; चेइय ७७५)। २ आमन्त्रण; (गउड)। ३ विज्ञप्ति; (णाया १. ८—पत्र १५१)।

संबोहि देखो **संबोधि**; (उप पृ १७९. वै ७३)।

संबोहिअ वि [**संबोधित**] १ समझाया हुआ; (यति ४८)। २ विज्ञापित; (णाया १, ८—पत्र १५१)।

संभंत वि [**संभ्रान्त**] १ भीत. घबड़ाया हुआ, त्रस्त; (उत्त १८, ७; महा; गउड)। २ पुन. प्रथम नरक का पाँचवाँ नरकेन्द्रक—नरकस्थान-विशेष; (देवेन्द्र ४)। ३ न. भय, घबराहट; (महा)।

संभंति स्त्री [**संभ्रान्ति**] संभ्रम, उत्सुकता; (भग १६, ५—पत्र ७०६)।

संभंतिय वि [**सांभ्रान्तिक**] संभ्रम से बना हुआ; (भग १६, ५—पत्र ७०६)।

संभग्ग वि [**संभग्न**] चूर्णित; (उत्त १६, ६१)।

संभण सक [**सं+भण्**] कहना। संकृ—**संभणिअ**; (पिंग)।

संभणिअ वि [**संभणित**] कथित, उक्त; (पिंग)।

संभम सक [**सं+भ्रम्**] १ अतिशय भ्रमण करना। २ अक. भय-भीत होना, घबडाना। वकृ—**संभमंत**; (पि २७५)।

संभम पुं [**संभ्रम**] १ आदर; "संभमो आयरो पयत्तो य" (पाअ)। २ भय, घबराहट, क्षोभ; "संखोहो संभमो तासो" (पाअ; प्रासू १०५; महा)। ३ उत्सुकता; (औप)।

संभर सक [**सं+भृ**] १ धारण करना। २ पोषण करना। ३ संक्षेप करना, संकोच करना। वकृ—**संभरमाण**; (से ७, ४१)। संकृ—**संभरि** (अप); (पिंग)।

संभर सक [**सं+स्मृ**] स्मरण करना, याद करना। संभरेइ, संभरिमो; (महा; पि ४५५)। वकृ—**संभरंत, संभरमाण**; (गा २६; सुपा ३१७; से ७, ४१)। कृ—**संभरणिज्ज, संभरणीय**; (धम्मो १८; उप ५३८ टी)।

संभरण न [**संस्मरण**] स्मरण, याद; (गा २२२; णाया १, १—पत्र ७१; दे ७, २५; उवकु १४)।

संभरणा स्त्री [**संस्मरणा**] ऊपर देखो; (उप ५३० टी)।

संभराविअ वि [**संस्मारित**] याद कराया हुआ; (दे ८, २५; कुप्र ४२१)।

संभरिअ वि [**संस्मृत**] याद किया हुआ; (गउड; काप्र ८९२)।

संभल सक [**सं+स्मृ**] याद करना। संभलइ; (उप पृ ११३)। कर्म—संभलिज्जइ; (वज्जा ८०)। वकृ—**संभलि** (अप); (पिंग २९७)।

संभल सक [**सं+भल्**] १ सुनना; गुजराती में 'सांभळवुं'। २ अक. सम्भलना, सावधान होना। संभलइ; (भवि)। "संभलसु मह पइन्न" (सम्मत्त २१७)। संकृ—**संभलि** (अप); (पिंग २८९)।

संभली स्त्री [**दे. संभली**] १ दूती; (दे ८, ६; वव ५)। २ कुट्टनी, पर-पुरुष के साथ अन्य स्त्री का योग कराने वाली स्त्री; (कुमा)।

संभव अक [**सं+भू**] १ उत्पन्न होना। २ संभावना होना, उत्कट संशय होना। संभवइ; (पि ४७५; काल; भवि)।

वक्ृ—**संभवंत**; (सुपा ५६)। कृ—**संभव्व**; (श्रा १२; सूअनि ६५)।

संभव पुं [**संभव**] १ उत्पत्ति; (महा; उव; हे ४, ३९५) । २ संभावना; (भवि)। ३ वर्तमान अवसर्पिणी काल में उत्पन्न तीसरे जिनदेव का नाम; (सम ४३; पडि)। ४ एक जैन मुनि जो दूसरे वासुदेव के पूर्व-जन्म के गुरू थे; (पउम २०, १७६)। ५ कला-विशेष; (औप)।

संभव पुं [**दे**] प्रसव-जरा, प्रसूति से होने वाला बूढ़ापा; (दे ८, ४)।

संभव (अप) देखो **संभम**=संभ्रम; (भवि)।

संभवि वि [**संभविन्**] जिसका सभव हो वह; (पंच ५, २५; भास ३५)।

संभविय देखो **संभूअ**; (चेइय ५५६)।

संभव्व देखो **संभव** = सं + भू।

संभाणय न [**संभाणक**] गुजरात का एक प्राचीन नगर; (राज)।

संभार सक [**सं+भारय्**] मसाला से संस्कृत करना, वासित करना। संभारेइ, संभारेंति, संभारेह; (खाया १, १२—पत्न १७५; १७६)। संकृ—**संभारिय**; (पिंड १९३)। कृ—**संभारणिज्ज**; (खाया १, १२)।

संभार पु [**संभार**] १ समूह, जत्था; "उत्तुंगथंभसंभार-भासमाणं करावए राया" (उप ६४८ टी; श्रावक १३०)। २ मसाला, शाक आदि में ऊपर डाला जाता मसाला; (खाया १, १६—पत्र १९६)। ३ परिग्रह, द्रव्य-सचय; (पण्ह १, ५—पत्न ९२)। ४ अवश्यतया कर्म का वेदन; (सूअ २, ७, ११)।

संभारिअ वि [**संस्मृत**] याद किया हुआ; (से १४, ६५)।

संभारिअ वि [**संस्मारित**] याद कराया हुआ; (खाया १, १—पत्न ७१; सुर १४, २३५)।

संभाल सक [**सं+भालय्**] संभालना। सभालइ; (भवि)।

संभाल पु [**संभाल**] खोज, अन्वेषण; "उदिए सूरम्मि जा न जणणीए पायपणामनिमित्तं समागओ ताव संभालो जाओ तस्स, न कत्थवि जाव पउत्ती कहंचि उवलद्धा" (उप २२० टी)।

संभालिय वि [**संभालित**] सभाला हुआ; (सण)।

संभाव सक [**सं+भावय्**] १ संभावना करना। २ प्रसन्न नजर से देखना। "न संभावसि अवरोहं" (मोह ६); संभावेमि, (संवेग ४); सभावेहि, (मोह २९)। कर्म—संभावीअदि (शौ); (नाट—मृच्छ २६०)। वकृ—**संभावअंत**; (नाट—शकु १३४)। संकृ—**संभाविअ**; (नाट—शकु ९७)। कृ—**संभावणिज्ज**, **संभावणीय**; (उप ७६८ टी; स ६१; श्रा २३)।

संभाव अक [**लुभ्**] लोभ करना, आसक्ति करना। संभावइ; (हे ४, १५३; पड्)।

संभावणा स्त्री [**संभावना**] सभव; (से ८, १६; गउड)

संभावि वि [**संभाविन्**] जिसका संभव हो वह. (श्रा १४)।

संभाविअ वि [**संभावित**] जिसकी संभावना की गई हो वह; (नाट—विक्र ३४)।

संभास सक [**सं+भाष्**] बातचीत करना, आलाप करना। कृ—**संभासणीय**; (सुपा ११५)।

संभास पुं [**संभाष**] संभाषण, वार्तालाप; (उप पृ ११२; सबोध २१; सण; काल; सुपा ११५; ५४२)।

संभासण न [**संभाषण**] ऊपर देखो; (भवि)।

संभासा स्त्री [**संभाषा**] संभाषण, बातचीत, (औप)।

संभासि वि [**संभाष**] संभाषण; "सभासिस्साणरिहो" (काल)।

संभासिय वि [**संभाषित**] जिसके साथ संभाषण—वार्तालाप किया गया हो वह; (महा)।

संभिडण न [**संभेदन**] आघात; (गउड)।

संभिण्ण } वि [**संभिन्न**] १ परिपूर्ण (पव १९८)।
संभिन्न } २ किंचिद् न्यून, कुछ कम; (देवेन्द्र ३४२)। ३ व्याप्त; ४ बिलकुल भिन्न—भेद वाला, (पण्ह २, १—पत्र ९९)। ५ खंडित; (दसचू १, १३) °**सोअ** वि [°**श्रोतस्**, °**श्रोतृ**] लब्धि-विशेष वाला, शरीर के कोई भी अंग से शब्द को स्पष्ट रूप से सुनने की शक्ति वाला (पण्ह २, १—पत्र ९९; औप)।

संभिन्न न [**दे**] आघात; (गउड ६३४ टी)।

संभिय वि [**संभृत**] १ पुष्ट, "आरंभसंभिया" (सूअ १, ९, ३)। २ संस्कार-युक्त, सस्कृत; "बहुसंभारसंभिए" (खाया १, १६—पत्र १९६; स ९८; विसे २९३)।

संभु पुं [**शम्भु**] १ शिव, शंकर; (सुपा २४०; सार्ध १३५; समु १५०)। २ रावण का एक सुभट; (पउम ५६, २)। ३ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**घरिणी** स्त्री [°**गृहिणी**] गौरी, पार्वती; (सुपा ४४२)।

संभुंज सक [**सं+भुज्**] साथ भोजन करना, एक मण्डली में बैठ कर भोजन करना। संभुंजइ; (कस)। हेकृ—**संभुंजित्तए**: (सूअ २, ७, १६: ठा २, १—पत्र ५६)।

संभुंजणा स्त्री [**संभोजना**] एकत्र भोजन-व्यवहार; (पंचू)।

संभुल्ल वि [**दे**] दुर्जन, खल; (दे ८, ७)।

संभूअ वि [**संभूत**] १ उत्पन्न, संजात; (सुपा ४०; ५०७; महा)। २ पुं. एक जैन मुनि जो प्रथम वासुदेव के पूर्वजन्म में गुरू थे; (सम १५३: पउम २०, १७६)। ३ एक प्रसिद्ध जैन महर्षि जो स्थूलभद्र मुनि के गुरू थे; (धर्मवि ३८; सार्ध १३)। ४ व्यक्ति-वाचक नाम; (महा)। °**विजय** पुं [°**विजय**] एक जैन महर्षि; (कुप्र ४५३; विपा २, ५)।

संभूइ स्त्री [**संभूति**] १ उत्पत्ति; (पउम १७, ६८; गा ६५४; सुर ११, १३५: पव २४४)। २ श्रेष्ठ विभूति: (सार्ध १३)।

संभूस सक [**सं+भूष्**] अलंकृत करना। संभूसइ; (सण)।

संभोअ पुं [**संभोग**] सुन्दर भोग: (सुपा ४६८: कप्पू)। देखो **संभोग**।

संभोइअ वि [**सांभोगिक**] समान सामाचारी-क्रियानुष्ठान होने के कारण जिसके साथ खान-पान आदि का व्यवहार हो सके ऐसा साधु; (ओघभा २०: पंचा ५. ४१; द्र ५०)।

संभोग पुं [**संभोग**] समान सामाचारी वाले साधुओं का एकत्र भोजनादि-व्यवहार: (सम २१; औप; कस)।

संभोगि वि [**संभोगिन्**] देखो **संभोइअ**· (कुप्र १७२)।

संभोगिय देखो **संभोइअ**; (ठा ३, ३—पत्र १३९)।

संमइ स्त्री [**संमति**] १ अनुमति: (सूअ १, ८, १४; विसे २२०९)। २ पुं. वायुकाय, पवन; ३ वायुकाय का अधिष्ठाता देव; (ठा ५, १—पत्र २६२)।

संमज्ज पुं [**संमार्ज**] संमार्जन, साफ करना: (विसे ६२५)।

संमज्जग पुं [**संमज्जक**] वानप्रस्थ तापसों की एक जाति; (औप)।

संमज्जण न [**संमार्जन**] साफ करना, प्रमार्जन (अभि १५९)।

संमज्जणी स्त्री [**संमार्जनी**] झाड़ू; (दे ६. ९७)।

संमज्जिय वि [**संमार्जित**] साफ किया हुआ; (सुपा ५४; औप; भवि)।

संमट्ठ वि [**संमृष्ट**] १ प्रमार्जित, सफा किया हुआ; (राय १००; औप; पव १३३)। २ पूर्ण भरा हुआ; (जीवस ११९; पव १५८)।

संमड्ड पुं [**संमर्द**] १ युद्ध, लड़ाई; (हे २, ३६)। २ परस्पर संघर्ष; (हे २, ३६; कुमा)।

संमड्डिअ वि [**संमर्दित**] सघृष्ट; (हे २, ३६)।

संमद्द सक [**सं+मृद्**] मर्दन करना। संकृ—**संमद्दिआ**; (दस ५, २, १६)।

संमद्द देखो **संमड्ड**; (उप १३९ टी: पाअ; दे १, ९३; सुपा २२२: प्राकृ ८६)।

संमद्दा स्त्री [**संमर्दा**] प्रत्युपेक्षणा-विशेष, वस्त्र के कोनों को मध्य भाग में रखकर अथवा उपधि पर बैठकर जो प्रत्युपेक्षणा—निरीक्षण—की जाय वह; (ओघ २६६; ओघभा १६२)।

संमय वि [**संमत**] १ अनुमत; २ अभीष्ट; (उव)।

संमविय वि [**संमापित**] नापा हुआ; (भवि)।

संमा अक [**सं+मा**] समाना, अटना। समाइ: (कुप्र २७७)।

संमाण सक [**सं+मानय्**] आदर करना, गौरव करना। संमाणइ, संमाणेइ, संमाणिति, संमाणेमो; (भवि; उवा; महा: कप्प; पि ४७०)। भवि—समाणेहिंति; (पि ५२८)। वकृ—**संमाणंत, संमाणेंत**: (सुपा २२४; पउम १०५, ७६)। सकृ—**संमाणिऊण, संमाणेऊण, संमाणित्ता**; (महा; कप्प)। कवकृ—**संमाणिज्जमाण**: (काल)। कृ—**संमाणणिज्ज**; (णाया १, १ टी—पत्र ४: उवा)।

संमाण पु [**संमान**] आदर, गौरव; (उव; हे ४. ३१६; नाट—मालवि ६३)।

संमाणण न [**संमानन**] ऊपर देखो; (सुपा २०८)।

संमाणिय वि [**संमानित**] जिसका आदर किया गया हो वह; (कप्प; महा)।

संमिद (शौ) वि [**संमित**] १ तुल्य, समान: २ समान परिमाण वाला; (अभि १८६)।

संमिल अक [**सं+मिल्**] मिलना। समिलइ; (भवि)।

संमिलिअ वि [**संमिलित**] मिला हुआ; (भवि)।

संमिल्ल अक [**सं+मील्**] सकुचाना, संकोच करना। समिल्लइ; (हे ४, २३२; षड्; धात्वा १५५)।

संमिस्स वि [**संमिश्र**] १ मिला हुआ, युक्त; (महा)। २ उखड़ी हुई छाल वाला; (आचा २, १, ८, ६)।

संमील देखो **संमिल्ल**। संमीलइ; (हे ४, २३२; पड्)।

संमीलिअ वि [**संमीलित**] संकुचित; (से १२, १)।
संमीस देखो **संमिस्स**; (सुर २, १११; सण)।
संमुइ पु [**संमुचि**] भारतवर्ष में भविष्य में होने वाला एक कुलकर पुरुष; (ठा १०—पत्र ५१८)।
संमुच्छ अक [**सं+मूर्च्छ्**] उत्पन्न होना। "एतासि णं लेसाणं अंतरेसु अण्णतरीओ छिण्णलेसाओ समुच्छंति" (सुज्ज ९)।
संमुच्छण स्त्रीन [**संमूर्च्छन**] स्त्री-पुरुष के संयोग के विना ही यूकादि की तरह होती जीवों की उत्पत्ति; (धर्मसं १०१७); स्त्री—°**णा**; (धर्मसं १०३१)।
संमुच्छिम वि [**संमूर्च्छिम**] स्त्री-पुरुष के समागम के विना उत्पन्न होने वाला प्राणी; (आचा; ठा ५, ३—पत्र ३३४; सम १४९; जी २३)।
संमुच्छिय वि [**संमूर्च्छित**] उत्पन्न; (सुज्ज ९)।
संमुज्झ अक [**सं+मुह्**] मोह करना, मुग्ध होना समुज्झइ; (संबोध ५२)।
संमुत्त देखो **समुत्त**; (राज)।
संमुस सक [**सं+मृश्**] पूर्ण रूप से स्पर्श करना। वकृ—**संमुसमाण**; (भग ८, ३—पत्र ३६५)।
संमुह वि [**संमुख**] सामने आया हुआ; (हे १, २९; ४, ३९५; ४१४; महा)। स्त्री—°**ही**; (काप्र ७२३)।
संमूढ वि [**संमूढ**] जड़, विमूढ; (पाअ; सुपा ५४०)।
संमेअ पुं [**संमेत**] १ पर्वत-विशेष जो आजकल 'पारस-नाथ पहाड़' के नाम से प्रसिद्ध है; (णाया १, ८—पत्र १५४; कप्प; महा; सुपा २११; ५८४, विवे १८)। २ राम का एक सुभट; (पउम ५९, ३७)।
संमेल पुं [**संमेल**] परिजन अथवा मित्रों का जिमनवार, प्रीति-भोजन; (आचा २, १, ४, १)।
संमोह पुं [**संमोह**] १ मूढता, अज्ञान; (अणु; स ३५८)। २ मूर्च्छा; (सिक्खा ४२)। ३ दुःख, कष्ट, (से ३, १३)। ४ सनिपात रोग; (उप १६०)।
संमोह न [**सांमोह**] १ मिथ्यात्व का एक भेद—रागी को देव, संगी—परिग्रही—को गुरु और हिंसा को धर्म मानना; (संबोध ५२)। २ वि. संमोह-संबन्धी; "(ठा ४, ४—पत्र २७४), स्त्री—°हा, °ही; (ठा ४, ४ टी—पत्र २७४; बृह १)।
संमोहण न [**संमोहन**] १ मोहित करना। २ मूर्च्छित करना; (कुप्र २५०)।
संमोहा स्त्री [**संमोहा**] छन्द-विशेष; (पिंग)।
संरंभ पुं [**संरम्भ**] १ हिंसा करने का संकल्प; "संकप्पो संरंभो" (संबोध ४१; श्रा ७)। २ आटोप; (कुमा १, २१; ६, ९२)। ३ उद्यम; (कुमा ५, ७०)। ४ क्रोध, गुस्सा; (पाअ)।
संरक्खग वि [**संरक्षक**] अच्छी तरह रक्षा करने वाला; (णाया १, १८—पत्र २४०)।
संरक्खण न [**संरक्षण**] समीचीन रक्षण; (णाया १, १४; पि ३६१)।
संरक्खय देखो **संरक्खग**; (उत्त २६, ३१)।
संरद्ध सक [**सं+राध्**] पकाना। कृ—**संरद्धियव्व**; (कुप्र ३७)।
संरुंध सक [**सं+रुध्**] रोकना, अटकाना। कर्म—संरुंधि-जइ, संरुज्झइ; (हे ४, २४८)। भवि—संरुंधिहिइ, संरुज्झिहिइ; (हे ४, २४८)।
संरोह पुं [**संरोध**] अटकाव; (कुप्र ५१; पव २३८)।
संरोहणी स्त्री [**संरोहणी**] घाव को रुझाने वाली ओषधि-विशेष; (सुपा २१७)।
संलक्ख सक [**सं+लक्षय्**] पिछानना। कर्म—सलक्खी-अदि (शौ); (नाट—वेणी ७८)।
संलग्ग वि [**संलग्न**] लगा हुआ, संयुक्त; (सुपा २२९)।
संलग्गिर वि [**संलगितृ**] संयुक्त होने वाला, जुड़ने वाला; (ओघ ९८)।
संलत्त वि [**संलपित**] संभाषित, उक्त, कथित; (सुर ३, ६१; सुपा ३२९; ३८५, महा)।
संलप्प नीचे देखो।
संलव सक [**सं+लप्**] संभाषण करना। संलवइ, सलवेमि, (महा; पव १४८)। वकृ—**संलवमाण**; (णाया १, १—पत्र १३; कप्प)। कृ—**संलप्प**; (राज)।
संलव पुं [**संलाप**] संभाषण, वार्तालाप; (सूअनि ५८)।
संलाव सक [**सं+लापय्**] बातचीत करना। संलाविंति; (कप्प)।
संलाव देखो **संलव**=संलाप, (औप; से २, ३९; गउड; श्रा ६)।
संलाविअ वि [**संलापित**] १ उक्त, कथित; २ कहल-वाया हुआ; (गा १११)।
संलिद्ध वि [**संश्लिष्ट**] संयुक्त; (संबोध १६)।
संलिह सक [**सं+लिख्**] १ निर्लेप करना। २ शरीर

आदि का शोषण करना, कृश करना। ३ घिसना। ४ रेखा करना। संलिहिज्जा; (आचा २, ३, २, ३)। संलिहे; (उत्त ३६, २४६; दस ८, ४; ७)। संकृ—**संलिहिय**; (कप्प)।

संलिहिय वि [**संलिखित**] जिसने तपश्चर्या से शरीर आदि का शोषण किया हो वह; (स १३०)।

संलीढ वि [**संलीढ**] संलेखना-युक्त; (णंदि २०६)।

संलीण वि [**संलीन**] जिसने इन्द्रिय तथा कषाय आदि को काबू में किया हो वह, संवृत; (पव ६)।

संलीणया स्त्री [**संलीनता**] तप-विशेष, शरीर आदि का संगोपन, (सम ११, नव २८. पव ६)।

संलुंच सक [**सं+लुञ्च्**] काटना। कवकृ—"**संलुंचमाणा** सुणएहिं" (आचा १, ६. ३, ६)। संकृ—**संलुंचिअ**; (दस ५, २, १४)।

संलेहणा स्त्री [**संलेखना**] शरीर, कषाय आदि का शोषण, अनशन-व्रत से शरीर-त्याग का अनुष्ठान; (सम ११९; सुपा ६४८)। °**सुअ** न [°**श्रुत**] ग्रन्थ-विशेष, (णंदि २०२)।

संलेहा स्त्री [**संलेखा**] ऊपर देखो; (उत्त ३६, २५०; सुपा ६४८)।

संलोअ पुं [**संलोक**] १ दर्शन, अवलोकन; (आचा २, १, ६, २; उत्त २४, १६; पव ६१)। २ दृष्टि-पात, दृष्टि-प्रचार; ३ जगत्, संपूर्ण लोक; ४ प्रकाश; (राज)। ५ वि. दृष्टि-प्रचार वाला, जिस पर दृष्टि पड सकती हो वह, (उत्त २४, १६)।

संलोक सक [**सं+लोक्**] देखना। कृ—**संलोकणिज्ज**; (सूअ १, ४, १, ३०)।

संवइयर पुं [**संव्यतिकर**] व्यतिसबन्ध, विपरीत प्रसंग; (उव)।

संवग्ग पुं [**संवर्ग**] १ गुणन. गुणाकार; (वव १; जीवस १५४)। २ गुणित, जिसका गुणाकार किया गया हो वह; (राज)।

संवच्छर पु [**संवत्सर**] वर्ष. साल; (उव; हे २, २१)। °**पडिलेहणग** न [°**प्रतिलेखनक**] वर्ष-गाँठ, वर्ष की पूर्णता के दिन किया जाता उत्सव, (णाया १, ८—पत्र १३१; भग; अंत)।

संवच्छरिय पुं [**सांवत्सरिक**] १ जोतिषी, ज्योतिष शास्त्र का विद्वान्; (स ३४; कुप्र ३२)। २ वि. संवत्सर-संबंधी, वार्षिक; (धर्मवि १२६; पडि)।

संवच्छल देखो **संवच्छर**; (हे २, २१)।

संवट्ट सक [**सं+वर्तय्**] १ एक स्थान में रखना। २ संकुचित करना। संवट्टेइ; (औप)। संवट्टेज्जा; (आचा १, ८, ६, ३)। संकृ—**संवट्टइत्ता**; (ठा २, ४—पत्र ८९), **संवट्टित्ता**; (आचा १, ८, ६, ३)।

संवट्ट पुं [**संवर्त**] १ पीड़ा; (उप २६९)। २ भय-भीत लोगों का समवाय—समूह; (उत्त ३०, १७)। ३ वायु-विशेष, तृण को उड़ाने वाला वायु; (पराण १—पत्र २९)। ४ अपवर्तन; (ठा २, ३—पत्र ६७)। ५ घेरा; ६ जहाँ पर बहुत गाँवों के लोग एकत्रित हो कर रहे वह स्थान, दुर्ग आदि; (राज)। देखो **संवत्त**।

संवट्टइअ वि [**संवर्तकित**] तूफान में फँसा हुआ; (उप पृ १४३)।

संवट्टग पुं [**संवर्तक**] वायु-विशेष; (सुपा ४१)। देखो **संवट्टय**।

संवट्टण न [**संवर्तन**] १ जहाँ पर अनेक मार्ग मिलते हों वह स्थान; (णाया १, २—पत्र ७९)। २ अपवर्तन, (विसे २०४५)।

संवट्टय पुं [**संवर्तक**] अपवर्तन; (ठा २, ३—पत्र ६७)। देखो **संवट्टग**।

संवट्टिअ वि [**दे. संवर्तित**] संवृत, संकोचित; (दे ८, १२)।

संवट्टिअ वि [**संवर्तित**] १ पिंडीभूत, एकत्रित, (वव १)। २ संवर्त-युक्त; (हे २, ३०)।

संवड्ढ अक [**सं+वृध्**] बढ़ना। संवड्ढइ; (महा)।

संवड्ढण देखो **संवद्धण**; (अभि ४१)।

संवड्ढिअ वि [**संवृद्ध**] बढ़ा हुआ; (महा)।

संवड्ढिअ वि [**संवर्धित**] बढ़ाया हुआ; (नाट—रत्ना २२)।

संवत्त पुं [**संवर्त**] १ प्रलय काल; (से ५, ७१; १०, २२)। २ वायु-विशेष; "जुगंतसरिसं संवत्तवायं विउव्विऊण" (कुप्र ६६)। ३ मेघ; ४ मेघ का अधिपति-विशेष; ५ वृक्ष-विशेष, बहेड़ा का पेड़; ६ एक स्मृतिकार मुनि; (सत्ति १०)। देखो **संवट्ट**=संवर्त।

संवत्तण देखो **संवट्टण**; (हे २, ३०)।

संवत्तय वि [**संवर्तक**] १ अपवर्तन-कर्ता; २ पुं. बलदेव; ३ वडवानल; (हे २, ३०; प्राप्र)।

संवत्तुवत्त पु [**संवर्तोद्वर्त**] उलट-पुलट; (स १७४; २५८)।

संवद्धण न [**संवर्धन**] १ वृद्धि, बढाव; २ वि. वृद्धि करने वाला; (भवि; स ७२७)।

संवय सक [**सं+वद्**] १ बोलना, कहना। २ प्रमाणित करना, सत्य साबित करना। संवयइ, संवएज्जा; (कुप्र १८७; सूअ १, १४, २०)। वकृ—**संवयंत**; (धर्मसं ८८३)।

संवय वि [**संवृत**] आवृत, आच्छादित· (कुप्र ३६)।

संवर सक [**सं+वृ**] १ निरोध करना, रोकना। २ कर्म को रोकना। ३ बँध करना। ४ ढकना। ५ गोपन करना। संवरइ, संवरसि, संवरेमि; (भग; भवि; सण: हास्य १३०, पव २३६ टी); संवरेहि; (कुप्र ३११)। वकृ—**संवरेमाण**; (भग)। संकृ—**संवरेवि**; (महा)।

संवर पु [**संवर**] १ कर्म-निरोध, नूतन कर्म-बन्ध का अटकाव; (भग; पण्ह १, १: नव १)। २ भारतवर्ष मे होने वाले अठारहवें जिनदेव; (पव ४६; सम १५४)। ३ चौथे जिनदेव के पिता का नाम; (सम १५०)। ४ एक जैन मुनि; (पउम २०, २०)। ५ पशु-विशेष, (कुप्र १०४)। ६ दैत्य-विशेष; ७ मत्स्य को एक जाति; (हे १, १७७)।

संवरण न [**संवरण**] १ निरोध, अटकाव; (पंचा १, ४४), "आसवदाराण संवरणं" (श्रु ७)। २ गोपन; (गा १९९; सुपा ३०१)। ३ सकोचन, समेटन; (गा २७०)। ४ प्रत्याख्यान, परित्याग; (ओघ ३७, विसे २६१२; श्रावक ३३३)। ५ श्रावक के बारह व्रतों का अंगीकार; (सम्मत्त १५२)। ६ अनशन, आहार-परित्याग: (उप पृ १७६)। ७ विवाह, लग्न, शादी; (पउम ४६, २३)। ८ वि. रोकने वाला; (पव १२३)।

संवरिअ वि [**संवृत**] १ आसेवित, आराधित; "एवमिणं संवरस्स दारं सम्मं संवरियं होइ" (पण्ह २, १—पत्र १०१)। २ सकोचित; (दे ८, १२)। ३ आच्छादित; (बृह ३)।

संवलण न [**संवलन**] मिलन. (गउड: नाट—मालती ५७)।

संवलिअ वि [**संवलित**] १ व्याप्त; (गा ७५: सुर ६, ७६; ८, ४३; रुक्मि ६०)। २ युक्त, मिलित. मिश्रित; (सुर ३, ७८; धर्मवि १३६), "सरसा वि दुमा दावानलेण डज्झंति सुक्खसंवलिया" (वज्जा १४)।

संववहार पुं [**संव्यवहार**] व्यवहार; (विसे १८५३)।

संवस अक [**सं+वस्**] १ साथ में रहना। २ रहना, वास करना। ३ संभोग करना। संवसइ; (कस)। वकृ—**संवसमाण**: (ठा ५, २—३१२. ३१४; गच्छ १, ३)। संकृ—**संवसित्ता**, (गच्छ १, २)। हेकृ—**संवसित्तए**; (ठा २, १—पत्र ५६)। कृ—**संवसेयव्व**; (उप पृ १६)।

संवह सक [**सं+वह्**] १ वहन करना। २ अक. सज्ज होना, तय्यार होना। वकृ—**संवहमाण**, (सुपा ४६४; गाया १, १३—पत्र १८०)। संकृ—**संवहिऊण**. (सण)।

संवहण न [**संवहन**] १ ढोना, वहन करना; (राज)। २ वि. वहन करने वाला; (आचा २, ४, २, ३; दस ७, २५)।

संवहणिय वि [**सांवहनिक**] देखो **संवाहणिय**, (उवा)।

संवहिअ वि [**समूढ**] जो सज्ज हुआ हो वह, तय्यार बना हुआ, "सामिअ पूरिअपोआ अम्हे सव्वेवि संवहिआ" (सिरि ५९६; सम्मत्त १५७)।

संवाइ वि [**संवादिन्**] प्रमाणित करने वाला, सबूत देने वाला; (सुर १२, १७६)।

संवाइय वि [**संवादित**] १ खबर दिया हुआ, जनाया हुआ; (स २९६)। २ प्रमाणित; (स ३१५)।

संवाद, **संवाय** पु [**संवाद**] १ पूर्वज्ञान को सत्य साबित करने वाला ज्ञान, सबूत, प्रमाण; (धर्मसं १४८; स ३२९: उप ७२८ टी)। २ विवाद, वाक्-कलह;

"इय जाओ संवाओ तेसिं पुत्तस्स कारणे गरुओ।
ता कीरेणं भणियं रायसमीवे समागच्छ ॥"
(सुपा ३६०)।

संवाय सक [**सं+वादय्**] खबर देना, समाचार कहना। संवाएमि, संवाएहि; (स २६१; २९६)।

संवायय पुं [**दे**] १ नकुल, न्यौला; २ श्येन पक्षी; (दे ८, ४८)।

संवास सक [**सं+वासय्**] साथ में रहने देना। हेकृ—**संवासेउं**; (पंचा १०, ४८ टी)।

संवास पुं [**संवास**] १ सहवास, साथ में निवास; (उव २२३; ठा ४, १—पत्र १९७, ओघ ६७; हित १७; पंचा ६, १३)। २ मैथुन के लिए स्त्री के साथ निवास; (ठा ४, १—पत्र १९३)।

संवासिय (अप) वि [**समाश्वासित**] जिसको आश्वासन

दिया गया हो वह; "तिं वयरिणि धरावइ संवासिउ" (भवि)।

संवाह सक [**सं+वाहय्**] १ वहन करना। २ तय्यारी करना। अंग-मर्दन—चप्पी करना। संवाहइ; (भवि)। कवकृ—**संवाहिज्जंत**; (सुपा २००; ३४९)।

संवाह पुं [**संवाह**] १ दुर्ग-विशेष, जहाँ कृषक-लोक धान्य आदि को रक्षा के लिए ले जाकर रखते हैं; (ठा २, ४—पत्र ८६; पराह १, ४—पत्र ६८; औप; कस)। २ लग्न, विवाह; (सुपा २५५)।

संवाहण न [**संवाहन**] १ अंग-मर्दन, चप्पी; (पराह २, ४—पत्र १३१; सुर ४, २४७; गा ४६४)। २ संबाधन, विनाश; (गा ४६४)। ३ पुं. एक राजा का नाम; (उव)। ४ वि. वहन करने वाला; (आचा २, ४, २, १०)।

संवाहणा स्त्री [**संवाहना**] ऊपर देखो; (कप्प; औप)।

संवाहणिय वि [**सांवाहनिक**] भार-वहन करने के काम में आता वाहन; (उवा)।

संवाहय वि [**संवाहक**] चप्पी करने वाला; (चारु ३९)।

संवाहिअ वि [**संवाहित**] जिसका अंग-मर्दन—चप्पी—किया गया हो वह; (कप्प; सुर ४, २४३)। २ वहन किया हुआ; (भवि)।

संविकिण्ण वि [**संविकीर्ण**] अच्छी तरह व्याप्त; (पराग २—पत्र १००)।

संविक्ख सक [**संवि+ईक्ष**] सम भाव से देखना, रागादि-रहित हो कर देखना। वकृ—**संविक्खमाण**; (उत्त १४, ३३)।

संविग्ग वि [**संविग्न**] संवेग-युक्त, भव-भीरु, मुक्ति का अभिलाषी, उत्तम साधु; (उव; पंचा ५, ४१; सुर ८, १६६; ओघभा ४९)।

संविचिण्ण } वि [**संविचीर्ण**] सविचरित, आसेवित;
संविचिन्न } (गाया १, ५ टी—पत्र १००; गाया १, ५—पत्र ९९)।

संविज्ज अक [**सं+विद्**] विद्यमान होना। संविज्जइ; (सूत्र १, ३, २, १८)।

संविट्ठ सक [**सं+वेष्टय्**] १ वेष्टन करना, लपेटना। २ पोपरण करना। संकृ—**संविट्ठमाण**; (गाया १, ३—पत्र ९१)।

संविढत्त वि [**समर्जित**] पैदा किया हुआ, उपार्जित; (स ५)।

संविणीय वि [**संविनीत**] विनय-युक्त; (ओघभा १३४)।

संवित्त देखो **संवीअ**; (सूअ १, ३, १, १७)।

संवित्त वि [**संवृत्त**] १ संजात, बना हुआ; (सुर ६, ८९)। २ वि. अच्छा आचरण वाला; ३ बिलकुल गोल; (सिरि १०९३)।

संवित्ति स्त्री [**संवित्ति**] संवेदन, ज्ञान; (विसे १६२६; धर्मसं २९९)।

संविद सक [**सं+विद्**] जानना। "जिच्चमाणो न संविदे" (उत्त ७, २२)।

संविद्ध वि [**संविद्ध**] १ संयुक्त; (उवर १३३)। २ अभ्यस्त; ३ दृष्ट; "संविद्धपहे" (आचा १, ५, ३, ९)।

संविधा स्त्री [**संविधा**] संविधान, रचना, बनावट; (चारु १)।

संविधुण सक [**संवि+धू**] १ दूर करना। २ परित्याग करना। ३ अवगणना, तिरस्कार करना। संकृ—**संविधुणिय, संविधुणित्ताणं**; (आचा १, ८, ६, ५; सूअ १, १६, ४; औप)।

संविभत्त वि [**संविभक्त**] बाँटा हुआ; "देवगुरुसंविभत्त भत्तं" (कुप्र १५३)।

संविभाअ } पुं [**संविभाग**] १ विभाग करना, बाँट;
संविभाग } (गाया १, २—पत्र ८६; उवा; औप)। २ आदर, सत्कार; (स ३३४)।

संविभागि वि [**संविभागिन्**] दूसरे को दे कर भोजन करने वाला; (उत्त ११, ९; दस ९, २, २३)।

संविभाव सक [**संवि+भावय्**] पर्यालोचन करना, चिन्तन करना। संकृ—**संविभाविऊण**; (राज)।

संविराय अक [**संवि+राज्**] शोभना। वकृ—**संवि-रायंत**; (पउम ७, १४९)।

संविल्ल देखो **संवेल्ल**। वकृ—**संविल्लंत**, (वै ४२)। संकृ—**संविल्लिऊण**; (कुप्र ३१५)।

संविल्लिअ वि [**संवेल्लित**] चालित; (उवा)।

संविल्लिअ देखो **संवेल्लिअ**=संवेष्टित; (कुमा)।

संविल्लिअ देखो **संवेल्लिअ**=(दे); (उवा; ज १)।

संविह पुं [**संविध**] गोशाले का एक उपासक; (भग ८, ६—पत्र ३६९)।

संविहाण न [**संविधान**] १ रचना, बनावट, (सुपा ५८६; धर्मवि १२७; माल १५१; १६३)। २ भेद, प्रकार; (वै १०)।

संवीअ वि [**संवीत**] १ व्याप्त; (सूअ १, ३, १, १६)। २ परिहित, पहना हुआ; "संवीयदिव्ववसणो" (धर्मवि ६)।

संवुअ देखो **संवुड**; (हे १, १३१; संक्षि ४; औप)।

संवुट्ट देखो **संवुत्त**; (रंभा ४४)।

संवुड वि [**संवृत**] १ सकट, सकड़ा, अ-विवृत; (ठा ३, १—पत्र १२१)। २ संवर-युक्त, सावद्य प्रवृत्ति से रहित, (सूअ १, १, २, २६; पंचा १४, ६; भग)। ३ निरुद्ध, निरोध-प्राप्त; (सूअ १, २, ३, १)। ४ आवृत; ५ संगोपित; (हे १, १७७)। ६ न. कषाय और इन्द्रियों का नियंत्रण; (पण्ह २, ३—पत्र १२३)।

संवुड्ढ वि [**संवृद्ध**] बढ़ा हुआ; (सूअ २, १, २६; औप)।

संवुत्त वि [**संवृत्त**] संजात, बना हुआ; "पव्वइया ते संसारंतकरा सवुत्ता" (वसु; कुप्र ४३५; किरात १७; स्वप्न १७, अभि ८२; उत्तर १४१; महा; सण)।

संवुद देखो **संवुड**; (प्राकृ ८; १२; प्राप्र)।

संवुदि स्त्री [**संवृति**] सवरण; (प्राकृ ८; १२)।

संवूढ वि [**संव्यूढ**] १ तय्यार बना हुआ, सजित; "जह इह नगरनरिंदो सव्वबलेणंपि एइ संवूढो" (सुपा ५८५; सुर ६, १५२)। २ बह कर किनारे लगा हुआ, बह कर स्थित; "तए णं ते मागंदियदारगा तेणं फलयखंडेणं उवु-(१ व्वु)ज्झमाणा २ रयणदीवतेण संवु(१ वू)ढा यावि होत्था" (णाया १, ६—पत्र १५७)।

संवेअ वि [**संवेद्य**] अनुभव-योग्य; (विसे ३००७)।

संवेअ / **संवेग** पुं [**संवेग**] १ भय आदि के कारण से होती त्वरा—शीघ्रता; (गउड)। २ भव-वैराग्य, ससार से उदासीनता; ३ मुक्ति का अभिलाष, मुमुक्षा; (द्र ६३; सम १२६; भग; उव; सुर ८, १६५; सम्मत्त १६६; १६५; सुपा ५४१)।

संवेयण न [**संवेदन**] १ ज्ञान; (धर्मसं ४४; कुप्र १४६)। २ वि. बोध-जनक; स्त्री—°णी; (ठा ४, २—पत्र २१०)।

संवेयण वि [**संवेजन**] संवेग-जनक; स्त्री—°णी, (ठा ४, २—पत्र २१०)।

संवेयण वि [**संवेगन**] ऊपर देखो; (ठा ४, २—पत्र २१०)।

संवेल्ल सक [**सं+वेल्ल्**] चालित करना, कँपाना, (से ७, २६)।

संवेल्ल सक [**सं+वेष्ट्**] लपेटना। सवेल्लइ; (हे ४, २२२; संक्षि ३६)।

संवेल्ल सक [**दे**] सकेलना, समेटना, संकुचित करना। संवेल्लेइ; (भग १६, ६—पत्र ७१२)। वकृ—**संवेल्लेंत**; **संवेल्लेमाण**; (उव; भग १६, ६)। सकृ—**संवेल्लेऊण**; (महा)।

संवेल्लिअ वि [**दे**] संवृत, सकुचित; "संवेल्लिअं मउलिअं" (पाअ; दे ८, १२; भग १६, ६—पत्र ७१२; राय ४५)।

संवेल्लिअ वि [**संवेल्लित**] चलित; (से ७, २६)।

संवेल्लिअ वि [**संवेष्टित**] लपेटा हुआ; (गा ६४६)।

संवेह पुं [**संवेध**] संयोग; "अन्नन्नवण्णसवेहरमणिज्ज गंधव्वं" (महा), "अन्नन्नवन्नसंवेहमणहरं मोहणं पसूणंपि तग्गीयं सोऊणं" (धर्मवि ६५)।

संस अक [**स्रंस्**] खिसकना, गिरना। ससइ, (हे ४, १६७, षड्)।

संस सक [**शंस्**] १ कहना। २ प्रशसा करना। संसइ; (चेइय ७३७, भवि), ससति; (सिरि १८७)। कृ—**संसणिज्ज**, (पउम ११८, ११४)।

संस वि [**सांश**] अंश-युक्त, सावयव, (धर्मसं ७०६)।

संसइ वि [**संशयिन्**] संशय-कर्ता, शका-शील; (विसे १५५७; सुर १३, ७; सुपा १४७)।

संसइअ वि [**संशयित**] सशय वाला, सदिग्ध; (पाअ; विसे १५५७; सम १०६; सुर १२, १०८)।

संसइअ न [**सांशयिक**] मिथ्यात्व-विशेष; (पंच ४, २; श्रा ६, सबोध ५२; कम्म ४, ५१)।

संसग्ग पुंस्त्री [**संसर्ग**] संबन्ध, संग, सोबत, (सुपा ३५८; प्रासू ३१; गउड), स्त्री—°**ग्गी**. (णाया १, १ टी—पत्र १७१; प्रासू ३३; सुपा १७१),

"एएण चिय नेच्छंति साहवो सज्जणेहिं संसग्गिं।
जम्हा विओगविहुरियहिययस्स न ओसह अन्नं"
(सुर २, २१६)।

संसज्ज अक [**सं+सञ्ज्**] संबन्ध करना, संसर्ग करना। संसज्जति; (सम्मत्त २२०)।

संसज्जिम वि [**संसक्तिमत्**] बीचमें गिरे हुए जीवों से युक्त; (पिंड ५३८)।

संसट्ठ वि [**संसृष्ट**] १ खरंटित, विलिप्त; २ न. खरंटित हाथ से दी जाती भिक्षा आदि; (औप)। देखो **संसिट्ठ**।

संसण न [**शंसन**] १ कथन, २ प्रशंसा; ३ आस्वादन; "सुत्तविहीणा पुण सुयमपक्कफलसंसणसरिच्छं" (उप ६४८

टी; उवकु १६)।

संसणिज्ज देखो **संस=शंस्**।

संसत्त वि [**संसक्त**] १ संसर्ग-युक्त, संबद्ध; (णाया १, १—पत्र १११; औप; पाअ; सं ६; उत्त २, १६)। २ आगन्तु-जन्तु विशेष; (कप्प)।

संसत्ति स्त्री [**संसक्ति**] संसर्ग; (सम्मत्त १५६)।

संसद्द पुं [**संशब्द**] शब्द, आवाज; (सुर २, ११०)।

संसप्पग वि [**संसर्पक**] १ चलने-फिरने वाला; २ पुं. चींटी आदि प्राणी; (आचा १, ८, ८, ६)।

संसप्पिअ न [**दे. संसर्पित**] कूद कर चलना; (दे ८, १७)।

संसमण न [**संशमन**] उपशम, शान्ति; (पिंड ४५६)।

संसय पुं [**संशय**] संदेह, शंका; (हे १, ३०; भग; कुमा; अभि ११०; महा; भवि)।

संसया स्त्री [**संसत्**] परिषत्, सभा; (उत्त १, ४७)।

संसर सक [**सं+सृ**] परिभ्रमण करना। वकृ—**संसरंत, संसरमाण**; (भवि १; वै ८८; संबोध ११; अच्चु ६८)।

संसरण न [**संस्मरण**] स्मृति, याद; (श्रु ७)।

संसवण न [**संश्रवण**] श्रवण, सुनना; (सुर १, २४२; रंभा)।

संसह सक [**सं+सह्**] सहन करना। संसहइ; (धर्मसं ६८८)।

संसा स्त्री [**शंसा**] प्रशंसा, श्लाघा; (पव ७३ टी; भग)।

संसाअ वि [**दे**] १ आरूढ; २ चूर्णित; ३ पीत; ४ खंडित; (षड्)।

संसार पुं [**संसार**] १ नरक आदि गति में परिभ्रमण, एक जन्म से जन्मान्तर में गमन; (आचा; ठा ४, १—पत्र १६८; ४, २—पत्र २१६; दसनि ४, ४६; उत्त २६, १; उव; गउड; जी ४४)। २ जगत्, विश्व; (उव; कुमा; गउड; पउम १०३, १४१)। °**वंत** वि [°**वत्**] संसार वाला, संसार-स्थित जीव, प्राणी; (पउम २, ६२)।

संसारि } वि [**संसारिन्**] नरक आदि योनि में परि-
संसारिण } भ्रमण करने वाला जीव; (जी २), "संसारिआण जं पुण जीवस्स सुहं तु फरिसमादीणं" (पउम १०२, १७४)।

संसारिय वि [**संसारिक**] ऊपर देखो; (स ४०२; उप)।

संसारिय वि [**सांसारिक**] संसार से संबन्ध रखने वाला; (पउम १०६, ४३; उप १४२ टी; स १७६; सिक्खा ७१; सण; काल)।

संसारिय वि [**संसारित**] एक स्थान से दूसरे स्थान में स्थापित; "संसारियासु वलयबाहासु" (णाया १, ८—पत्र १३३)।

संसाहण स्त्रीन [**दे**] अनुगमन; (दे ८, १६; दसनि ३८८), स्त्री—°णा; (वव १)।

संसाहण न [**संकथन**] कथन; (सुपा ४१५)।

संसाहिय वि [**संसाधित**] सिद्ध किया हुआ; (सुपा ३६७)।

संसि वि [**शंसिन्**] कहने वाला; (गउड)।

संसिअ वि [**शंसित**] १ श्लाघित; (सुर १३, ६८)। २ कथित; (उप पृ १६१)।

संसिअ वि [**संश्रित**] आश्रित; (विपा १, ३—पत्र ३८; पराह १, ४—पत्र ७२; औप ४८; अणु १५१)।

संसिंच सक [**सं+सिंच्**] १ पूरना, भरना। २ बढ़ाना। ३ सिंचन करना। कवकृ—**संसिच्चमाण**; (आचा; पि ५४२)। संकृ—**संसिंचियाणं**; (आचा १, २, ३, ४)।

संसिज्झ अक [**सं+सिध्**] अच्छी तरह सिद्ध होना। संसिज्झंति; (स ७६७)।

संसिट्ठ देखो **संसट्ठ**; (भग)। °**कप्पिअ** वि [°**कल्पिक**] खरंटित हाथ अथवा भाजन से दी जाती भिक्षा को ही ग्रहण करने के नियम वाला मुनि; (पराह २, १—पत्र १००)।

संसित्त वि [**संसिक्त**] सिंचा हुआ; (सुर ४, १४; महा; हे ४, ३९५)।

संसिद्धिअ वि [**सांसिद्धिक**] स्वभाव-सिद्ध; (हे १, ७०)।

संसिलेस देखो **संसेस**; (राज)।

संसिलेसिय देखो—**संसेसिय**; (राज)।

संसीव सक [**सं+सिव्**] सीना, सिलाई करना। संसीविज्जा; (आचा २, ५, १, १)।

संसुद्ध वि [**संशुद्ध**] १ विशुद्ध, निर्मल; (सुपा ५७३)। २ न. लगातार उन्नीस दिन का उपवास; (संबोध ५८)।

संसूयग वि [**संसूचक**] सूचना-कर्ता; (रंभा)।

संसेइम वि [**संसेकिम**]। संसेक से बना हुआ; (निचू १५)। २ उबाली हुई भाजी जिस ठंढे जल से सिंची जाय वह पानी; (ठा ३, ३—पत्र १४७; कप्प)। ३ तिल का धोन; (आचा २, ८४)। १, ७, पिष्टोदक, आटा का

धान; (दस ५, १, ७५)।

संसेइम वि [**संस्वेदिम**] १ पसीने से उत्पन्न होने वाला; (पण्ह १, ४—पत्र ८५)।

संसेय अक [**सं+स्विद्**] बरसना। "जावं च णं बहवे उराला बलाहया संसेयंति" (भग)।

संसेय पुं [**संस्वेद**] पसीना। °य वि [°ज] पसीने से उत्पन्न; (सूअ १, ७, १; आचा)।

संसेय पुं [**संसेक**] सिचन; (ठा ३, ३)।

संसेविय वि [**संसेवित**] आसेवित; (सुपा २२७)।

संसेस पु [**संश्लेष**] सबन्ध, संयोग; (आचा २, १३, १)।

संसेसिय वि [**संश्लेपिक**] सश्लेष वाला ; (आचा २, १३, १)।

संसोधण न [**संशोधन**] शुद्धि-करण; (पिंड ४५९)। देखो **संसोहण**।

संसोधित वि [**संशोधित**] अच्छी तरह शुद्ध किया हुआ; (सूअ १, १४, १८)।

संसोय सक [**सं+शोचय्**] शोक करना। कृ—**संसोयणिज्ज**; (सुर १४, १८१)।

संसोहण न [**संशोधन**] विरेचन, जुलाब; (आचा १, ९, ४, २)। देखो **संसोधण**।

संसोहा स्त्री [**संशोभा**] शोभा, श्री; (सुपा ३७)।

संसोहि वि [**संशोभिन्**] शोभने वाला; (सुपा ४८)।

संसोहिय देखो **संसोधित**; (राज)।

संह देखो **संघ**; (नाट—विक्र २५)।

संहडण देखो **संघयण**; (चंड)।

संहदि स्त्री [**संहृति**] सहार; (संक्षि ९)।

संहय वि [**संहत**] मिला हुआ; (पण्ह १, ४—पत्र ७८)।

संहर सक [**सं+हृ**] १ अपहरण करना। २ विनाश करना। ३ संवरण करना, सकेलना, समेटना। ४ ले जाना। संहरइ; (पव २६१, हे १, ३०; ४, २५९)। कवकृ—**संहरिज्जमाण**; (णाया १, १—पत्र ३७)।

संहर पुं [**संभार**] समुदाय, संघात; "संघाओ संहरो निअरो" (पाअ)।

संहरण न [**संहरण**] संहार; (श्रु ८७)।

संहार देखो **संभार**=सं+भारय्। कृ—**संहारणिज्ज**; (णाया १, १२—पत्र १७६)।

संहार देखो **संवार**; (हे १, २६४; षड्)।

संहारण न [**संधारण**] धारण, बनाये रखना, टिकाना; "कायसंहारणट्ठाए" (आचा)।

संहाव देखो **संभाव**=सं+भावय्। वकृ—**संहावअंत** (शौ); (पि २७५)।

संहिदि देखो **संहदि**; (प्राकृ १२)।

संहिच्च अ [**संहत्य**] साथ में मिलकर, एकत्रित होकर; (णाया १, ३ टी—पत्र ९३)।

संहिय देखो **संधिअ**=संहित; (कप्प; नाट—महावी २९)।

संहिया स्त्री [**संहिता**] १ चिकित्सा आदि शास्त्र; "चिगिच्छासहियाओ" (स १७)। २ अस्खलित रूप से सूत्र का उच्चारण; "अक्खलियसुत्तुच्चारणरूवा इह संहिया मुणेयव्वा" (चेइय २७२)।

संहुदि स्त्री [**संभृति**] अच्छी तरह पोषण; (संक्षि ४)।

सक देखो **सग**=शक; (पण्ह १, १—पत्र १४)।

सकण्ण देखो **सकन्न**; (राज)।

सकथ न [**सकथ**] तापसों का एक उपकरण; (निर ३, १)।

सकधा देखो **सकहा**; "चेइयखंभेसु जिणसकधा संणिक्खित्ता चिट्ठंति" (सुज्ज १८)।

सकयं अ [**सकृत्**] एक वार; "किं सक(? क)य बोलीणं" (सुर १६, ४५)।

सकन्न वि [**सकर्ण**] विद्वान्, जानकार; (सुर ८, १४९; १२, ५४)।

सकल देखो **सयल**=सकल; (पण्ह १, ४—पत्र ७८)।

सकहा स्त्री [**सक्थिन्**] अस्थि, हाड़; (सम ६३; सुपा ६५७; राय ८९)।

सकाम देखो **स-काम**=सकाम।

सकुंत पुं [**शकुन्त**] पक्षी; (कुप्र ६८; अणु १४१)।

सकुण देखो **सक्क**=शक्। सकुणोमो; (स ७६५)।

सकेय देखो **स-केय**=सकेत।

सक्क अक [**शक्**] सकना, समर्थ होना। सक्कइ, सक्कए; (हे ४, २३०; प्राप्र; महा)। भवि—सक्खं, सक्खामो, सक्किस्सामो; (आचा; पि ५३१)। कृ—**सक्क**, **सक्कणिज्ज**, **सक्किअ**; (संक्षि ६; सुर १, १३०; ४, २२७; स ११४; संबोध ४०; सुर १०, ८१)।

सक्क सक [**सृप्**] जाना, गति करना। सक्कइ; (प्राकृ ६५; धात्वा १५५)।

सक्क सक [ष्वष्क्] गति करना, जाना। सक्कइ; (पि ३०२)।

सक्क न [शल्क] छाल; (दे ३, ३४)।

सक्क वि [शक्त] समर्थ, शक्ति-युक्त; "को सक्को वेयणा-विगमे" (विवे १०२; हे २, २)।

सक्क देखो **सक्क**=शक्।

सक्क पुं [शक्र] १ सौधर्म-नामक प्रथम देवलोक का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५; उवा; सुपा २६६)। २ कोई भी इन्द्र, देव-पति; (कुमा)। ३ एक विद्याधर-राजा; (पउम १२, ८२)। ४ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**गुरु** पुं [°गुरु] बृहस्पति; (सिरि ४४)। °**प्पभ** पुं [°प्रभ] शक्र का एक उत्पात-पर्वत; (ठा १०—पत्र ४८२)। °**सार** न [°सार] एक विद्याधर-नगर; (इक)। °**ावदार** (शौ) न [°ावतार] तीर्थ-विशेष; (अभि १८३)। °**ावयार** न [°ावतार] चैत्य-विशेष; (स ४७७; द्र ६१)।

सक्क पुं [शाक्य] १ बुद्ध देव; (पात्र)। २ वि. बौद्ध, बुद्ध का भक्त; (विसे २४१६; श्रावक ८८; पव ६४; पिंड ४४५)।

सक्क (अप) देखो **सग**=स्वक; (भवि)।

सक्कंदण पुं [संक्रन्दन] इन्द्र; (सुर १, ६ टि; ४, १६०)।

सक्कणो (शौ) देखो **सक्कुण**। सक्कणोमि; (अभि ९२; पि १४०), सक्कणोदि; (नाट—रत्ना १०२)।

सक्कय देखो **स-क्कय**=सत्कृत।

सक्कय वि [संस्कृत] १ संस्कार-युक्त; (पिंड १९१)। २ स्त्रीन. संस्कृत भाषा; (कुमा; हे १, २८; २, ४), "परमेट्ठिनमोक्कारं सक्कइ(?य)भासाए भणइ थुइसमए" (चेइय ४९८); स्त्री—°या; "सक्कया पायया चेव भणिईओ होंति दोण्णि वा" (अणु १३१)।

सक्कर न [शर्कर] खण्ड, टुकड़ा; (उव)।

सक्कर° देखो **सक्करा**। °**पुढवी** स्त्री [°पृथिवी] दूसरी नरक-भूमि; (पउम ११८, २)। °**प्पभा** स्त्री [°प्रभा] वही अर्थ; (ठा ७—पत्र ३८८; इक)।

सक्करा स्त्री [शर्करा] १ चीनी, पक्की खाँड; (णाया १, १७—पत्र २२९; सुपा ८४; सुर १, १४)। २ उपल-खण्ड, पत्थर का टुकड़ा, कंकर; (सूअ २, ३, ३६; अणु)। ३ बालु, रेती; (महा)। °**भ** न [°भ] १ गोत्र-विशेष, जो गोतम गोत्र की एक शाखा है; २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न; (ठा ७—पत्र ३९०)। °**भा** स्त्री [°भा] दूसरी नरक-पृथिवी; (उत्त ३६, १५७)।

सक्कार पुं [सत्कार] संमान, आदर, पूजा; (भग; स्वप्न ८९; भवि; हे ४, २६०)।

सक्कार पु [संस्कार] १ गुणान्तर का आधान; २ स्मृति का कारण-भूत एक गुण; ३ वेग; ४ शास्त्राभ्यास से उत्पन्न होती व्युत्पत्ति; ५ गुण-विशेष, स्थिति-स्थापन; ६ व्याकरण के अनुसार शब्द-सिद्धि का प्रकार; ७ गर्भाधान आदि समय की जाती धार्मिक क्रिया; ८ पाक, पकाना; (हे १, २८; २, ४; प्राकृ २१)।

सक्कार सक [सत्कारय्] सत्कार करना, संमान करना। सक्कारेइ, सक्कारिंति, सक्कारेमो; (उवा; कप्प; भग)। संकृ—**सक्कारित्ता**; (भग; कप्प)। कृ—**सक्कारणिज्ज**; (णाया १, १ टी—पत्र ४; उवा)।

सक्कारण न [सत्कारण] सत्कार, सम्मान; (दस १०, १७)।

सक्कारि वि [सत्कारिन्] सत्कार करने वाला, संमान-कर्ता; (गउड)।

सक्कारिय वि [सत्कारित] संमानित; (सुख २, १३; महा)।

सक्कारिय वि [संस्कारित] संस्कार-युक्त किया हुआ; (धर्मसं ८६३)।

सक्काल देखो **सक्कार**=संस्कार; (हे १, २५४)।

सक्किअ देखो **सक्क**=शाक्य; "अहं खु दाव कत्तव्वकर-त्थीकिदसंकेदो विअ सक्किअसमणाओ णिद्दं ण लभामि" (चारु ५६)।

सक्किअ देखो **सक्क**=शक्।

सक्किअ वि [शकित] जो समर्थ हुआ हो वह; (आ २८; कुप्र ३)।

सक्किअ वि [स्वकीय] निज का, आत्मीय; "सि (? स)-क्कियमुवहिं च तहा पडिलेहंतो न वेमि सया" (कुलक ७; ९)।

सक्किअ देखो **स-क्किअ**=सत्कृत।

सक्किरिआ स्त्री [संस्क्रिया] संस्कार, संस्कृति; (प्राकृ ३३)।

सक्कुण देखो **सकुण**। सक्कुणादि (शौ); (प्राकृ ९४), सक्कुणोमि; (स २४; मोह ७)।

सक्कुलि स्त्री [**शष्कुलि**] १ कर्ण-विवर, कान का छिद्र; (णाया १, ८—पत्र १३३)। २ तिलपापडी, एक तरह का खाद्य पदार्थ; (पण्ह २, ५—पत्र १४८; दस ५, १, ७१; कस; विसे २६६)। °**कण्ण** पुं [°**कर्ण**] एक अन्तर्द्वीप; २ उसमें रहने वाली मनुष्य-जाति; (इक)।

सक्ख° देखो **सक्क**=शक्।

सक्ख न [**सख्य**] मैत्री, दोस्ती; (उत्त १४, २७)।

सक्ख न [**साक्ष्य**] साक्षिपन, गवाही; (सुपा २७६; संबोध १७)।

सक्खं अ [**साक्षात्**] प्रत्यक्ष, आँखों के सामने, प्रकट; (हे १, २४; पि ११४)।

सक्खय देखो **सक्कय**=संस्कृत; (जं २ टी—पत्र १०४)।

सक्खर देखो **स-क्खर**=साक्षर।

सक्खा देखो **सक्खं**; (पंचा ६, ४०; सुर ५, २२१; १२, ३६; पि ११४)।

सक्खि वि [**साक्षिन्**] साखी, गवाह; (पण्ह १, २—पत्र २६; धर्मसं १२००; कप्पू; श्रा १४; स्वप्न १३१)।

सक्खिअ देखो **सक्ख**=सख्य; "कादंबरीसक्खिअं अम्हाणं पढमसोहिदं इच्छीअदि" (अभि १८८)।

सक्खिज्ज न [**साक्षित्व**] गवाही, साख; (श्रावक २६०)।

सक्खिण देखो **सक्खि**; (हे २, १७४; षड्; सुर ६, ४४)।

सग [**स्वक**] देखो **स**=स्व; (भग; पणण २१—पत्र ६२८; पउम ८२, ११७; उत्त २०, २६; २७; सबोध ५०; चेइय ५६१)।

सग देखो **सत्त**=सप्तन्; (रयण ७२; उर ५, ३; २, २३)। °**वण्ण, °वन्न** स्त्रीन [°**पञ्चाशत्**] सत्तावन, पचास और सात; (कम्म ६, ६०; श्रु १११; कम्म २, २०)। °**वीस** स्त्रीन [°**विंशति**] सताईस; (श्रा २८; रयण ७२; संबोध २६)। °**सयरि** स्त्री [°**सप्तति**] सतहत्तर; (कम्म २, ६)। °**सीइ** स्त्री [°**शीति**] सतासी; (कम्म २, १६)।

सग देखो **सत्तम**; (कम्म ४, ७६)।

सग पुं [**शक**] १ एक अनार्य देश, अफगानिस्तान के उत्तर का एक म्लेच्छ देश; (सूअनि ६६; पउम ६८, ६४; इक)। २ उस देश का निवासी; (काल)। ३ एक सुप्रसिद्ध राजा जिसका शक-संवत् चलता है; (विचार ४६५; ५१३)। °**कूल** न [°**कूल**] एक म्लेच्छ-देश का किनारा; (काल)।

सग° स्त्री [**स्रज्**] माला; "सगचंदणविससत्थाइजोगओ तस्स अह य दीसंति" (श्रावक १८६)।

सगड न [**शकट**] १ गाड़ी; (उवा; आचा २, ३, १६)। २ पुं. एक सार्थवाह-पुत्र; (विपा १, १—पत्र ४; १, ४—पत्र ५५)। °**भद्दिआ** स्त्री [°**भद्रिका**] जैनेतर ग्रन्थ-विशेष; (णंदि १६४; अणु ३६)। °**मुह** न [°**मुख**] पुरिमताल नगर का एक प्राचीन उद्यान; (कप्प)। °**वूह** पु [°**व्यूह**] कला-विशेष, गाड़ी के आकार से सैन्य की रचना; (औप)। देखो **सअढ**।

सगडब्भि देखो **स-गडब्भि**=स्वकृतभिद्।

सगडाल पुं [**शकटाल**] राजा नन्द का सुप्रसिद्ध मंत्री और महर्षि स्थूलभद्र का पिता; (कुप्र ४४३)।

सगडिया स्त्री [**शकटिका**] छोटी गाड़ी; (भग; विपा १, १—पत्र ८; णाया १, १—पत्र ७४)।

सगडी स्त्री [**शकटी**] गाड़ी; (णाया १, ७—पत्र ११८)।

सगण देखो **स-गण**=स-गण।

सगन्न देखो **सकन्न**; (कुप्र ४०३)।

सगय न [**दे**] श्रद्धा, विश्वास; (दे ८, ३)।

सगर पुं [**सगर**] एक चक्रवर्ती राजा; (सम ८२; उत्त १७, ३५)।

सगल देखो **सयल**=सकल; (णाया १, १६—पत्र २१३; भग; पंच १, १३; सुर १, ११६; पव २१६; सिक्खा ३७)।

सगसग अक [**सगसगाय्**] सग सग आवाज करना। वकृ—**सगसगेंत**; (पउम ४२, ३१)।

सगार देखो **स-गार**=सागार, साकार।

सगार देखो **स-गार**=स-कार।

सगास न [**सकाश**] पास, निकट, समीप; (औप; सुपा ४५२; ४८८; महा)।

सगुण देखो **स-गुण**=स-गुण।

सगुणि देखो **सउणि**; (पण्ह १, ४—पत्र ७८)।

सगुत्त वि [**सगोत्र**] समान गोत्र वाला, एकगोत्रीय; (कप्प)।

सगेद्द न [**दे**] निकट, समीप; (दे ८, ६)।

सगोत्त देखो **सगुत्त**; (कुप्र २१७)।

सग्ग पुंन [**स्वर्ग**] देवों का आवास-स्थान; (णाया १, ५—पत्र १०५; भग; सुपा २६३), "वेरग्गं चेवमिह सग्ग"

(श्रु ५८)। °तरु पुं [°तरु] कल्पवृक्ष; (से ११, ११)। °सामि पुं [°स्वामिन्] इन्द्र; (उप २६४ टी)। °वहू स्त्री [°वधू] देवागना, देवी; (उप ७२८ टी)।

सग्ग पु [सर्ग] १ मुक्ति, मोक्ष, ब्रह्म; (ओप)। २ सृष्टि, रचना; (रंभा)।

सग्ग देखो **स-ग्ग**=साग्र।

सग्ग देखो **सग**=स्वक; (उत्त २०, २६; राज)।

सग्गइ देखो **स-ग्गइ**=सद्गति।

सग्गह वि [दे] मुक्त, मुक्ति-प्राप्त; (दे ८, ४ टी)।

सग्गह देखो **स-ग्गह**=स-ग्रह।

सग्गीय वि [स्वर्गीय] स्वर्ग-सम्बन्धी; (विसे १८००)।

सग्गु देखो **सिग्गु**; (उप १०३१ टी)।

सग्गोकस पु [स्वर्गौकस्] देव, देवता; (धर्म ६)।

सग्घ सक [कथ्] कहना। सग्घइ; (षड्)।

सग्घ वि [श्लाघ्य] प्रशसनीय; (सुत्र १, ३, २, १६; विसे ३५७८)।

सघिण देखो **स-घिण**=स-घृण।

सचक्खु / **सचक्खुअ** } देखो **स-चक्खु**=स-चक्षुष्।

सचित्त देखो **स-चित्त**=स-चित्त।

सचिव देखो **सइव**; (सण)।

सची देखो **सई**=शची; (धर्मवि ६६; नाट—शकु ९७)। °वर पु [°वर] इन्द्र; (सिरि ४२)।

सचेयण देखो **स-चेयण**=स-चेतन।

सच्च न [सत्य] १ यथार्थ भाषण, अमृषा-कथन; (ठा १०—पत्र ४८६; कुमा, पण्ह २, ५—पत्र १४८; स्वप्न २२; प्रासू १५०; १७७)। २ शपथ, सोगन; ३ सत्य युग; ४ सिद्धान्त; (हे २, १३)। ५ वि॰ यथार्थ, सच्चा, वास्तविक; "सच्चपरक्कमे" (उत्त १८, ४६; श्रा १२; ठा ४, १—पत्र १६६; कुमा)। ६ पु॰ संयम, चारित्र; (आचा; उत्त ६, २)। ७ जिनागम, जैन सिद्धान्त; (आचा)। ८ अहोरात्र का दशवाँ मुहूर्त; (सम ५१)। ९ एक वणिक्-पुत्र; (उप ५१६)। °उर न [°पुर] भारत का एक प्राचीन नगर, जो आजकल 'साचोर' नाम से मारवाड में प्रसिद्ध है; (ती ७; सिग्घ ७)। °उरी स्त्री [°पुरी] वही अर्थ; (पडि)। °णेमि, °नेमि पु [°नेमि] भगवान् अरिष्टनेमि के पास दीक्षा ले मुक्ति पाने वाला एक मुनि जो राजा समुद्रविजय का पुत्र था; (अंत; अंत १४)। °प्पवाय न [°प्रवाद] छठवाँ पूर्व-ग्रन्थ; (सम २६)। °भामा स्त्री [°भामा] श्रीकृष्ण की एक पत्नी; (अंत १५)। °वाइ वि [°वादिन्] सत्य-वक्ता; (पउम ११, ३१)। °संध वि [°सन्ध] सत्य प्रतिज्ञा वाला, प्रतिज्ञा-निर्वाहक; (उप पृ ३३३; सुपा २८३)। °सिरी स्त्री [°श्री] पाँचवें आरे की अन्तिम श्राविका; (विचार ५३४)। °सेण पुं [°सेन] ऐरवत वर्ष में होने वाला एक जिनदेव; (सम १५४)। °हामा देखो °भामा; (पि १४)। °वाइ देखो °वाइ; (आचा १, ८, ६, ५; १, ८, ७, ५)।

सच्चइ पुं [सत्यकि] १ आगामी काल में बारहवाँ तीर्थंकर होने वाला एक साध्वी-पुत्र; (ठा ९—पत्र ४५७; सम १५४; पव ४६)। २ विषय-लम्पट एक विद्याधर; (उव; उर ७, १ टी)। ३ श्रीकृष्ण का संबन्धी एक व्यक्ति; (रुक्मि ४६)। °सुय पुं [°सुत] ग्यारह रुद्रों में अन्तिम रुद्र पुरुष; (विचार ४७३)।

सच्चंकार वि [सत्यंकार] सत्य साबित करने वाला, लेन-देन की सच्चाई के लिए दिया जाता बहाना; "गहिओ संजमभारो सच्चंकारु व्व सिद्धीए" (धर्मवि १४; आप ६६; रयण ३४)।

सच्चव सक [दृश्] देखना। सच्चवइ; (हे ४, १८१; षड्; सण)। कर्म—सच्चविज्जइ; (कुप्र ९८)।

सच्चव सक [सत्यापय्] सत्य साबित करना। सच्चवइ; (सुपा २९२)। कर्म—"अलिअंपि सच्चविज्जइ पहुत्तणं तेण रमणिज्जं" (सूक्त ८५)।

सच्चवण न [दर्शन] अवलोकन, निरीक्षण; (कुमा; सुपा २२९)।

सच्चवय वि [दर्शक] द्रष्टा; (सबोध २४)।

सच्चविअ वि [दृष्ट] देखा हुआ, विलोकित; (गा ५३९; ८०९; सुर ४, २२५; पाअ; महा)।

सच्चविअ वि [दे] अभिप्रेत, इष्ट; (दे ८, १७; भवि)।

सच्चा स्त्री [सत्या] १ सत्य वचन; (पण्ण ११—पत्र ३७६)। २ श्रीकृष्ण की एक पत्नी, सत्यभामा; (कुप्र २५८)। °मोस वि [°मृषा] मिश्र-भाषा, सत्य से मिला हुआ झूठ वचन; "सच्चामोसाणि भासइ" (सम ५०)।

सच्चित्त देखो **स-च्चित्त** = स-चित्त।

सच्चिल्लय वि [दे॰ सत्य] सच्चा, यथार्थ; (दे ८, १४)।

सच्चीसय पुं [दे॰ सच्चीसक] वाद्य-विशेष; (पउम १०२, १२३)। देखो **वद्धीसक**।

सच्चेविअ वि [**दे**] रचित, निर्मित; (दे ८, १८)।
सच्छ वि [**स्वच्छ**] अति निर्मल; (सुपा ३०)।
सच्छंद वि [**स्वच्छन्द**] १ स्वाधीन, स्व-वश; (उप ३३९ टी; सुर १४, ८५)। २ न. स्वेच्छानुसार; (णाया १, ८—पत्र १५२; औप; अभि ४६; प्रासू १७)। °**गामि** वि [°**गामिन्**] इच्छानुसार गमन करने वाला, स्वैरी; स्त्री—°**णी**; (सुपा २३५)। °**चारि**, °**यारि** वि [°**चारिन्**] स्वच्छन्दी, इच्छानुसार विहरण करने वाला, स्वैरी; स्त्री—°**णी**; (स ३६; श्रा १६; गच्छ १, १०)।
सच्छर सक [**दृश्**] देखना; (संक्षि ३६)।
सच्छह वि [**दे. सच्छाय**] सदृश, समान, तुल्य; (दे ८, ६; गा ५; ४५; ३०८; ५३३; ५८०; ६८१; ७२१; सुर ३, २४६; धर्मवि ५७)।
सच्छाय वि [**सच्छाय**] १ समान छाया वाला, तुल्य; (गउड; कुप्र २३)। २ अच्छी कान्ति वाला; (कुमा)। ३ सुन्दर छाया वाला; ४ कान्ति-युक्त; ५ छाया-युक्त; (हे १, २४९)।
सच्छाह वि [**सच्छाय**] जिसकी छाँही सुन्दर हो वह; २ छाँही वाला; ३ समान छाया वाला, तुल्य, सदृश; (हे १, २४९)।
सछत्ता स्त्री [**सच्छत्रा**] वनस्पति-विशेष; (सूत्र २, ३, १६)।
सजण देखो **स-जण**=स्व-जन।
सजिय देखो **सज्जीव**; (सुर १२, २१०)।
सजुत्त देखो **संजुत्त**; (पिंग)।
सजोइ देखो **स-जोइ**=स-ज्योतिष्।
सजोगि वि [**सयोगिन्**] १ मन आदि का व्यापार वाला; २ पुंन. तेरहवाँ गुण-स्थानक; (पि ४११; सम २६; कम्म २, २; २०)।
सजोणिय देखो **स-जोणिय**=स-योनिक।
सज्ज अक [**सञ्ज्**] १ आसक्ति करना। २ सक. आलिंगन करना। सज्जइ; (उत्त २५, २०), सजह; (णाया १, ८—पत्र १४८)। वकृ—**सज्जमाण**; (सूत्र १, ७, २७; दसचू २, १०; उत्त १४, ६; उवर १२)। कृ—**सज्जियव्व**; (पण्ह २, ५—पत्र १४९)।
सज्ज अक [**सस्ज्**] १ तय्यार होना। २ सक. तय्यार करना, सजाना। सज्जेइ, सज्जेंति; (कुमा; णाया १, ८—पत्र १३२)। कर्म—सजीअंति; (कप्पू)। कवकृ—**सज्जिज्जंत**; (कप्पू)। संकृ—**सज्जिऊण**, **सज्जेउं**; (स ६४; महा)। कृ—**सज्जियव्व**, **सज्जेयव्व**; (सत्त ४०; स ७०)। प्रयो—संकृ—**सज्जावेऊण**; (महा)।
सज्ज पुं [**सर्ज**] वृक्ष-विशेष; (णाया १, १—पत्र २५; विसे २६८२; स १११; कुमा)।
सज्ज पुं [**षड्ज**] स्वर-विशेष; (कुमा)।
सज्ज वि [**सज्ज**] तय्यार, प्रगुण; (णाया १, ८—पत्र १४६; सुपा १२२; १९७; हेका ४६; पिंग)।
सज्ज / **सज्जं** अ [**सद्यस्**] तुरंत, जल्दी, शीघ्र; "सज्जघायणं से कम्मणजोगं पउंजामि" (स १०८; सुख ८, १३; गा ५९७ अ; कस)।
सज्जंभव पुं [**शय्यम्भव**] एक प्रसिद्ध जैन महर्षि; (सार्ध १२)।
सज्जण देखो **स-ज्जण**=सज्जन।
सज्जा देखो **सेज्जा**; (राज)।
सज्जिअ वि [**सज्जित**] सजाया हुआ, तय्यार किया हुआ; (औप; कुमा; महा)।
सज्जिअ वि [**सर्जित**] बनाया हुआ; (दे १, १३८)।
सज्जिअ पुं [**दे**] १ नापित, नाई; २ रजक, धोबी; ३ वि. पुरस्कृत, आगे किया हुआ; ४ दीर्घ, लम्बा; (दे ८, ४७)।
सज्जिआ स्त्री [**सर्जिका**] क्षार-विशेष, साजी खार; "वत्थं सज्जियाखारेण अणुलिपति" (णाया १, ५—पत्र १०६)।
सज्जीअ / **सज्जीव** देखो **स-ज्जीअ**=स-जीव।
सज्जीहव अक [**सज्जी+भू**] सज्ज होना, तय्यार होना। सज्जीहवेइ; (श्रा १४)।
सज्जो देखो **सज्ज**=सद्यस्; (सुपा ३९७)।
सज्जोक्क वि [**दे**] प्रत्यग्र, नूतन, ताजा; (दे ८, ३)।
सज्झ वि [**साध्य**] १ साधनीय, सिद्ध करने योग्य; २ वश में करने योग्य; "अलिओ हु इमो सत्तू ताव य सज्झो न पुरिसगारस्स" (सुर ८, २६; सा २४)। ३ तर्कशास्त्र-प्रसिद्ध अनुमेय पदार्थ, जैसे धूम से ज्ञातव्य वह्नि; (पंचा १४, ३५)। ४ पुं. साध्य वाला, पक्ष; (विसे १०७७)। ५ देव-गण विशेष; ६ योग-विशेष; ७ मन्त्र-विशेष; (हे २, २६)।
सज्झ पुं [**सह्य**] १ पर्वत-विशेष; (स ६७९)। २ वि.

सहन-योग्य; (हे २, २६; १२४)।
सज्झंतिय पुं [**दे**] ब्रह्मचारी; (राज)।
सज्झंतिया स्त्री [**दे**] भगिनी, बहिन; (राज)।
सज्झंतेवासि पुं [**स्वाध्यायान्तेवासिन्**] विद्या-शिष्य; (सुख २, १५)।
सज्झमाण वि [**साध्यमान**] जिसकी साधना की जाती हो वह; (रयण ४०)।
सज्झव सक [**दे**] ठीक करना, तंदुरस्त करना। सज्झवेहि, सज्झवेमि; (सुख २, १५)।
सज्झस न [**साध्वस**] भय, डर; (हे २, २६; कुमा)।
सज्झाइय वि [**स्वाध्यायिक**] १ जिसमें पठन आदि स्वाध्याय हो सके ऐसा शास्त्रोक्त देश, काल आदि; (ठा १०—पत्र ४७५)। २ न. स्वाध्याय, शास्त्र-पठन आदि; (पव २६८; णंदि २०७ टी)।
सज्झाय पुं [**स्वाध्याय**] शोभन अध्ययन, शास्त्र का पठन, आवर्तन आदि; (औप; हे २, २६; कुमा; नव २६)।
सज्झाराय वि [**साह्यराज**] सह्याचल के राजा से संबन्ध रखने वाला, सह्याद्रि के राजा का; (पउम ५५, १७)।
सज्झिलग पुं [**दे**] भ्राता, भाई; (उप २७५; ३७७; पिंड ३२४)।
सज्झिलगा स्त्री [**दे**] भगिनी, बहिन; (पिंड ३१६; उप २०७)।
सज्झिल्लग देखो **सज्झिलग**; (राज)।
सट्ट पुंस्त्री [**दे**] १ सट्टा, विनिमय, बदला; (सुपा २३३), स्त्री—°**ट्टी**; (सुपा २७५; वज्जा १४२)। २ वि. सटा हुआ; "पीणुण्णायसट्टइं...थणवट्टइं" (भवि)।
सट्ट, **सट्टय** पुन [**सट्टक**] १ एक तरह का नाटक; (कप्पू; रंभा १०); "रंभं तं परिणेदि अट्ठसतियं एयम्मि सट्टे वरे" (रंभा १०)। २ खाद्य-विशेष; (रंभा ३३)।
सट्ठ न [**शाठ्य**] शठता, धूर्तता; (उप ७२८ टी; गुभा २४)।
सट्ठ (शौ) देखो **छट्ठ**; (चारु ७; प्रबो ७३; पि ४४९)।
सट्ठि स्त्री [**षष्टि**] १ संख्या-विशेष, साठ, ६०; २ साठ संख्या वाला; (सम ७४; कप्प; महा; पि ४४८)। °**तंत**, °**यंत** न [°**तन्त्र**] शास्त्र-विशेष, सांख्य-शास्त्र; (भग; णाया १, ५—पत्र १०५; औप; अणु ३६)। °**म** वि [°**तम**] साठवाँ; (पउम ६०, १०)।
सट्ठिक्क, **सट्ठिय**, **सट्ठीअ** वि [**षष्टिक**] १ साठ वर्ष की वय वाला; (तंदु १७; राज)। २ एक प्रकार का चावल; (राज; श्रा १८)।
सड अक [**सद्**] १ सड़ना। २ विषाद करना, खिन्न होना। ३ सक. गति करना, जाना। सडइ; (हे ४, २१९; प्राप्र; षड्; धात्वा १५५)।
सड अक [**शद्**] १ सड़ना। २ खेद करना। ३ रोगी होना। ४ सक. जाना। सडइ; (विपा १, १—पत्र १६)।
सडंग न [**षडङ्ग**] शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष। °**वि** वि [°**विद्**] छह अंगों का जानकार; (भग; औप; पि ३४१)।
सडण न [**शटन**] विशरण, सड़ना; (पण्ह १, १—पत्र २३; णाया १, १—पत्र ४८)।
सडा देखो **सढा**; (से १, ५०; पि २०७)।
सडिअ वि [**सन्न, शटित**] सड़ा हुआ, विशीर्ण; (विपा १, ७—पत्र ७३; श्रा १४; कुमा)।
सडिअग्गिअ वि [**दे**] १ वर्धित, बढ़ाया हुआ; २ प्रेरित; (षड्)।
सड्ड सक [**शद्**] १ विनाश करना। २ कृश करना। सड्डइ; (धात्वा १५५)।
सड्ढ पुंस्त्री [**श्राद्ध**] १ श्रावक, जैन गृहस्थ; (ओघ ६३; महा); स्त्री—°**ड्ढी**; (सुपा ६५४)। २ वि. श्रद्धेय वचन वाला, जिसका वचन श्रद्धेय हो वह; (ठा ३, ३—पत्र १३९)। देखो **सद्ध**=श्राद्ध।
सड्ढ देखो **स-ड्ढ**=सार्ध।
सड्ढइ पुं [**श्राद्धकिन्**] वानप्रस्थ तापस की एक जाति; (औप)।
सड्ढा स्त्री [**श्रद्धा**] १ स्पृहा, अभिलाष, वाञ्छा; (विपा १, १—पत्र २)। २ धर्म आदि में विश्वास, प्रतीति; ३ आदर, संमान; ४ शुद्धि; ५ चित्त की प्रसन्नता; (हे २, ४१; षड्)। देखो **सद्धा**।
सड्ढि वि [**श्रद्धिन्**] १ श्रद्धालु, श्रद्धावान्; (ठा ६—पत्र ३५२; उत्त ५, ३१; पिंडभा ३३)। २ पुं. श्रावक, जैन गृहस्थ; (कप्प)।
सड्ढिअ वि [**श्राद्धिक**] देखो **सड्ढ**=श्राद्ध; (पि ३३३; राज)।
सड्ढी देखो **सड्ढ**=श्राद्ध।
सढ वि [**शठ**] १ धूर्त, मायावी, कपटी; (कुमा; उप

२६४ टी; ओघभा ५८; भग; कम्म १, ५८)। २ कुटिल, वक्र; (पिंड ६३३)। ३ पुं. धत्तूरा; ४ मध्यस्थ पुरुष; (हे १, १९९; संक्षि ८)।

सढ पुं [**दे**] १ पाल, जहाज का बादवान, गुजराती में 'सढ' (सिरि ३८७)। २ केश, बाल; (दे ८, ४६)। ३ स्तम्ब, गुच्छा; (दे ८, ४६; पाअ)। ४ वि. विषम; (दे ८, ४६)।

सढय न [**दे**] कुसुम, फूल; (दे ८, ३)।

सढा स्त्री [**सटा**] १ सिंह आदि की केसरा; २ जटा; ३ व्रती का केश-समूह; ४ शिखा; (हे १, १९६)।

सढाल पुं [**सटाल**] सटा वाला, सिंह; (कुमा)।

सढि पुं [**दे. सटिन्**] सिंह; (दे ८, १)।

सढिल वि [**शिथिल**] ढीला; (हे १, ८९; कुमा)।

सण पुंन [**शण**] १ धान्य-विशेष; (श्रा १८; पव १५४; पण्ह २, ५—पत्र १४८)। २ तृण-विशेष, पाट, जिसके ततु रस्सी आदि बनाने के काम में लाये जाते हैं; (णाया १, १—पत्र २४; पण्ण १—पत्र ३२; कप्पू)। °**बंधण** न [°**बन्धन**] सन का पुष्प-वृन्त; (औप; णाया १, १ टी—पत्र ६)। °**वाडिआ** स्त्री [°**वाटिका**] सन का बगीचा; (गा ९)।

सण पुं [**स्वन**] शब्द, आवाज; (स ३७२)।

सणंकुमार पुं [**सनत्कुमार**] १ एक चक्रवर्ती राजा; (सम १५२)। २ तीसरा देवलोक; (अनु; औप)। ३ तीसरे देवलोक का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५)। °**वडिंसय** पुंन [°**ावतंसक**] एक देव-विमान; (सम १३)।

सणप्पय / **सणप्फद** / **सणप्फय** } देखो **स-णप्पय=स-नखपद**।

सणा अ [**सना**] सदा, हमेशा। °**तण**, °**यण** वि [°**तन**] सदा रहने वाला, नित्य, शाश्वत; (सूअ २, ६, ४७), "सिद्धाण सणायणाओ परिणामिओ दव्वओवि गुणो" (संबोध २)।

सणाण न [**स्नान**] नहाना, नहान, अवगाहन; (उवा)।

सणाह देखो **स-णाह**=स-नाथ।

सणाहि पुं [**सनाभि**] १ स्वजन, ज्ञाति; "बंधू समणो सणाही य" (पाअ)। २ समान, सदृश; (रंभा)।

सणि पुं [**शनि**] १ ग्रह-विशेष, शनैश्चर; (पउम १७ ८१)। २ शनिवार; (सुपा ५३२)।

सणिअ पुं [**दे**] १ साक्षी, गवाह; २ ग्राम्य, ग्रामीण; (दे ८, ४७)।

सणिअं अ [**शनैस्**] धीरे, हौले; (णाया १, १६—पत्र २२६; गा १०३; हे २, १६८; गउड; कुमा)।

सणिच्चर पुं [**शनैश्चर**] ग्रह-विशेष, शनि-ग्रह; (पि ८४)। °**संवच्छर** पुं [°**संवत्सर**] वर्ष-विशेष; (ठा ५, ३—पत्र ३४४)।

सणिंचरि / **सणिंचारि** } पुं [**शनैश्चारिन्**] युगलिक मनुष्यों की एक जाति; (इक; भग ६, ७—पत्र २७६)।

सणिच्चर / **सणिच्छर** } देखो **सणिचर**; (ठा २, ३—पत्र ७७; हे १, १४९; औप; कुमा; सुज्ज १०, २०; २०)।

सणिद्ध देखो **सिणिद्ध**; (हे २, १०९; कुमा)।

सणिप्पवाय पुं [**शनैःप्रपात**] जीवों से भरी हुई पौद्गलिक वस्तु-विशेष; (ठा २, ४—पत्र ८६)।

सणेह पुं [**स्नेह**] १ प्रेम, प्रीति; (अभि २७; कुमा)। २ घृत, तैल आदि स्निग्ध रस; ३ चिकनाई, चिकनाहट; (प्राप्र; हे २, १०२)।

सण्ण देखो **सन्न**; (से १३, ७२)।

सण्णज्ज न [**सान्नाय्य**] मन्त्र आदि से संस्कारा जाता घृत आदि; (प्राकृ १९)।

सण्णत्तिअ वि [**दे**] परितापित; (दे ८, २८)।

सण्णविअ वि [**दे**] १ चिन्तित; २ न. सानिध्य, मदद के लिए समीप-गमन; (दे ८, ५०)।

सण्णिअ वि [**दे**] आर्द्र, गिला; (दे ८, ५)।

सण्णिर देखो **सन्निर**; (राज)।

सण्णुमिअ वि [**दे**] १ संनिहित; २ मापित, नापा हुआ; ३ अनुनीत, अनुनय-युक्त; (दे ८, ४८)।

सण्णुमिअ देखो **सन्नुमिअ**; (दे ८, ४८ टी)।

सण्णेज्झ पुं [**दे**] यक्ष-देवता; (दे ८, ६)।

सण्ह वि [**श्लक्ष्ण**] १ मसृण, चिकना; (कप्प; औप)। २ छोटा, बारीक; (विपा १, ८—पत्र ८३)। ३ न. लोहा; (हे २, ७५; पड्)। ४ पुं. वृक्ष-विशेष; (पण्ण १—पत्र ३१)। °**करणी** स्त्री [°**करणी**] पीसने की शिला; (भग १९, ३—पत्र ७६६)। °**मच्छ** पुं [°**मत्स्य**] मछली की एक जाति; (विपा १, ८—पत्र ८३; पण्ण १—पत्र ४७)। °**सण्हिआ** स्त्री [°**श्लक्ष्णिका**] आठ उच्छ्लक्ष्णश्लक्ष्णिका का एक नाप; (इक)।

सण्ह वि [**सूक्ष्म**] १ छोटा, बारीक; (कुमा)। २ न. कैतव, कपट; ३ अध्यात्म; ४ अलंकार-विशेष; (हे २, ७५)। देखो **सुहम, सुहुम**।

सण्हाई स्त्री [**दे**] दूती; (दे ८, ९)।

सत देखो **सय** = शत; (गा ३)। °**क्कतु** पुं [°**क्रतु**] इन्द्र; (कप्प)। °**ग्घी** स्त्री [°**घ्नी**] अस्त्र-विशेष; (पराह १, १—पत्र ८; वसु)। °**द्दु** स्त्री [°**द्रु**] एक महा-नदी; (ठा ५, ३—पत्र ३५१)। °**भिसया** स्त्री [°**भिषज्**] नक्षत्र-विशेष; (सम २९)। °**रिसभ** पुं [°**ऋषभ**] अहो-रात्र का इक्कीसवाँ मुहूर्त; (सम २१)। °**वच्छ** पु [°**वत्स**] पक्षि-विशेष; (पराण १—पत्र ५४)। °**वाइया** स्त्री [°**पादिका**] त्रीन्द्रिय जंतु की एक जाति; (पराण १—पत्र ४५)।

सत देखो **सत्त**=सप्तन्; (पिंग)। °**र** त्रि [°**दशन्**] सतरह, १७; "जं चाणतगुणाणि हु वरिसाणइ सतरभेअदस-भेअं" (सिरि १२८८; कम्म २, ११; १६)। °**रसय** न [°**दशशत**] एक सौ सतरह; (कम्म २, १३)।

सतंत देखो **स-तंत**=स्व-तन्त्र।

सतत देखो **सयय** = सतत; (राज)।

सतय देखो **सयय** = शतक; (सम १५४)।

सतर न [**सतर**] दधि, दही, (ओघ ४८)।

सति देखो **सइ**=स्मृति, (ठा ४, १—पत्र १८७; औप)।

सती देखो **सई**=सती; (कुप्र ६०)।

सतीणा देखो **सईणा**; (ठा ५, ३—पत्र ३४३)।

सतेरा स्त्री [**शतेरा**] विदिग् रुचक पर रहने वाली एक विद्युत्कुमारी देवी; (ठा ४, १—पत्र १९८; इक)।

सत्त वि [**शक्त**] समर्थ; (हे २, २; षड्)।

सत्त वि [**शप्त**] शाप-ग्रस्त, जिस पर आक्रोश किया गया हो वह; (पउम ३५, ६०; पव १०९ टी; प्रति ८६)।

सत्त देखो **सच्च**=सत्य; (अभि १८९; पिंग)।

सत्त वि [**सक्त**] आसक्त, गृद्ध, लोलुप; (सूअ १, १, १, ६; सुर ८, १३६; महा)।

सत्त पुंन [**सत्त्र**] १ सदाव्रत, जहाँ हमेशा अन्न आदि का दान दिया जाता हो वह स्थान; (कुप्र १७२)। २ यज्ञ; (अजि ८)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] सदाव्रत-स्थान, दान-क्षेत्र; (सण)। °**गार** न [°**गार**] वही अर्थ; (धर्मवि २६)।

सत्त वि [**दे**] गत, गया हुआ; (षड्)।

सत्त पुंन [**सत्त्व**] १ प्राणी, जीव, चेतन; (आचा; सुर २, १३६; सुपा १०२; धर्मसं ११८९)। २ अहोरात्र का दूसरा मुहूर्त; (सम ५१)। ३ न. बल, पराक्रम; ३ मानसिक उत्साह; (पिंड ६३३; अणु; प्रासू ७१)। ५ विद्यमानता; (धर्मसं १०५)। ६ लगातार सात दिनों का उपवास; (संबोध ५८)।

सत्त वि [**सप्तन्**] सात संख्या वाला, सात; (विपा १, १—पत्र २; कप्प; कुमा; जी ३३; ४१)। °**खित्ती**, °**खेत्ती** स्त्री [°**क्षेत्री**] जिन-चैत्य, जिन-बिम्ब, जैन आगम, साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका ये सात धन-व्यय-स्थान; (ती ८; श्रु १२९; राज)। °**ग** न [°**क**] सात का समुदाय; (दं ३५; कम्म २, २६; २७; ६, १३)। °**चत्ताल** वि [°**चत्वारिंश**] सैंतालीसवाँ, ४७ वाँ; (पउम ४७, ५८)। °**चत्तालीस** स्त्रीन [°**चत्वारिंशत्**] सैंतालीस, ४७; (सम ६७)। °**च्छय** पुं [°**च्छद**] वृक्ष-विशेष, सतवन का पेड़, सतौना; (पाअ; से ९, २३; णाया १, १६—पत्र २११; सण)। °**ट्ठि** स्त्री [°**षष्टि**] १ संख्या-विशेष, सड़सठ, ६७; २ सड़सठ संख्या वाला; (सम १०९; कम्म १, २३; ३२; २, ६)। °**ट्ठिधा** अ [°**षष्टिधा**] सड़सठ प्रकार का; (सुज्ज १२—पत्र २२०)। °**णउइ** देखो °**णउइ**; (राज)। °**तीसइम** वि [°**त्रिंशत्तम**] सइतीसवाँ, ३७ वाँ; (पउम ३७, ७१)। °**तंतु** पुं [°**तन्तु**] यज्ञ; (पाअ)। °**दस** त्रि [°**दशन्**] सतरह, १७; (पउम ११७, ४७)। °**पण्ण** देखो °**वण्ण**; (राज)। °**भूम** वि [°**भूम**] सात तला वाला प्रासाद; (श्रा १२)। °**भूमिय** वि [°**भूमिक**] वही पूर्वोक्त अर्थ; (महा)। °**म** वि [°**म**] सातवाँ, ७ वाँ; (कप्प), स्त्री—°**मा**; (जी २९)। °**मासिअ** वि [°**मासिक**] सात मास का; (भग)। °**मासिआ** स्त्री [°**मासिकी**] सात मास में पूर्ण होने वाली एक साधु-प्रतिज्ञा, व्रत-विशेष; (सम २१)। °**मिया**, °**मी** स्त्री [°**मिका**, °**मी**] १ सातवीं, ७वीं; (महा; सम २९; चारु ३०; कम्म ३, ६; प्रासू १२१)। २ सातवीं विभक्ति; (चेइय ६८२; राज)। °**य** देखो °**ग**; (कम्म ६, ६६ टी)। °**र** वि [°**त**] सत्तरवाँ, ७०वाँ; (पउम ७०, ७२)। °**र** त्रि [°**दशन्**] सतरह, १७; (कम्म २, ३)। °**रत्त** पुं [°**रात्र**] सात रात-दिन का समय; (महा)। °**रस** त्रि [°**दशन्**] सतरह, १७; (भग)। °**रस**, °**रसम** वि [°**दश**] सतरहवाँ;

(कम्म ६, १६; पउम १७, १२३; पव ४६)। °रह देखो °रस=दशन्; (षड्)। °रि स्त्री [°ति] सत्तर, ७०; (सम ८१; कप्प; षड्)। °रिसि पुं [°ऋषि] सात नक्षत्रों का मंडल-विशेष; (सुपा ३५४)। °वण्ण, °वन्न पुं [°पर्ण] १ वृक्ष-विशेष, सतौना; (औप; भग)। २ देव-विशेष; (राय ८०)। °वन्नवडिंसय पु [°पर्णावतंसक] सौधर्म देवलोक का एक विमान; (राय ५६)। °विह वि [°विध] सात प्रकार का; (जी १६; प्रासू १०४; पि ४५१)। °वीसइ, °वीसा स्त्री [°विंशति] सताईस, २७; (पि ४४५, भग)। °सइय वि [°शतिक] सात सौ की संख्या वाला; (णाया १, १—पत्र ६४)। °सट्ठ वि [°षष्ट] सडसठवाँ, ६७वाँ; (पउम ६७, ५१)। °सट्ठि देखो °ट्ठि; (सम ७६)। °सत्तमिया स्त्री [°सप्तमिका] प्रतिज्ञा-विशेष, नियम-विशेष, (अंत)। °सिक्खावइय वि [°शिक्षाव्रतिक] सात शिक्षाव्रत वाला; (णाया १, १२; औप)। °हत्तर वि [°सप्तत] सतहतरवाँ, ७७वाँ; (पउम ७७, ११८)। °हत्तरि स्त्री [°सप्तति] १ संख्या-विशेष, सतहतर की संख्या, ७७; २ सतहतर संख्या वाला; (सम ८५; भग, श्रा २८)। °हा अ [°धा] सात प्रकार का, सप्तविध; (पि ४५१)। °हुत्तरि देखो °हत्तरि; (नव ८)। °ाईस (अप) देखो °ावीसा; (पि ४४५)। °ाणउइ स्त्री [°नवति] सताणवे, ६७; (सम ६८)। °ाणउय वि [°नवत] १ सताणवेवाँ, ६७ वाँ; (पउम ६७, ३०)। २ जिसमे सताणवे अधिक हो वह; "सत्ताणउयजोयणसए" (भग)। °ारह (अप) देखो °रह (पिंग)। °ावण्ण, °ावन्न स्त्रीन [°पञ्चाशत्] १ संख्या-विशेष, सतावन, ५७; २ सतावन संख्या वाला; (पडि; पिंग; सम ७३; नव २), स्त्री—°ण्णा, °न्ना; (पिंग; पि २६५; ४४७)। °ावन्न वि [°पञ्चाश] सतावनवाँ, ५७वाँ; (पउम ५७, ३७)। °ावीस न [°विंशति] १ सख्या-विशेष, सताईस, २ सताईस की संख्या वाला; "एवं सत्तावीसं भगा णेयव्वा" (भग)। °ावीसइ स्त्री [°विंशति] वही पूर्वोक्त अर्थ, (कुमा)। °ावीसइम वि [°विंशतितम] सताईसवाँ, २७वाँ; (पउम २७, ४२)। °ावीसइविह वि [°विंशतिविध] सताईस प्रकार का, (पण्ण १७—पत्र ५३४)। °ावीसा स्त्री. देखो °ावीस; (हे १, ४; षड्)। °ासाइ स्त्री [°शीति] सतासी, ८७; (सम ६३)। °ासाइम वि [°शीतितम] सतासिवाँ, ८७ वाँ; (पउम ८७, २१)।

सत्तंग वि [**सप्ताङ्ग**] १ राजा, मन्त्री, मित्र, कोश-भंडार, देश, किला तथा सैन्य ये सात राज्याङ्ग वाला; (कुमा)। २ न. हस्ति-शरीर के ये सात अवयव—चार, पैर, सूँढ, पुच्छ और लिंग; "सत्तंगपइट्ठियं" (उवा १०१)।

सत्तण्ह देखो **स-त्तण्ह**=स-तृष्ण।

सत्तत्थ वि [**दे**] अभिजात, कुलीन; (दे ८, १०)।

सत्तम देखो **स-तम** = सत्-तम।

सत्तर देखो **स-त्तर** = स-त्वर।

सत्तर देखो **सत्त-र**=सप्त-दशन्, दश।

सत्तल न [**सप्तल**] पुष्प-विशेष; (गउड)।

सत्तला, **सत्तली** स्त्री [**सप्तला**] लता-विशेष, नवमालिका का गाछ; (पाअ, गा ६१६; पउम ५३, ७६)।

सत्तल्ली स्त्री [**दे. सप्तला**] लता-विशेष, शेफालिका का गाछ; (दे ८, ४)।

सत्तवीसंजोयण देखो **सत्तावीसंजोअण**; (चंड)।

सत्ता स्त्री [**सत्ता**] १ सद्भाव, अस्तित्व; (णंदि १३६ टी)। २ आत्मा के साथ लगे हुए कर्मों का अस्तित्व, कर्मों का स्वरूप से अप्रच्यव—अवस्थान; (कम्म २, १; २५)।

सत्तावरी स्त्री [**शतावरी**] कन्द-विशेष; "सत्तावरी विराली कुमारि तह थोहरी गलोई य" (पव ४; संबोध ४४; श्रा २०)।

सत्तावीसंजोअण पु [**दे**] चन्द्र, चन्द्रमा; (दे ८, २२); "सत्तावीसंजोअणकरपसरो जाव अज्जवि न होइ" (वाअ १५)।

सत्ति स्त्री [**दे**] १ तिपाई, तीन पाया वाला गोल काष्ठ-विशेष; २ घड़ा रखने का पलंग की तरह ऊँचा काष्ठ-विशेष; (दे ८, १)।

सत्ति स्त्री [**शक्ति**] १ अस्त्र-विशेष; (कुमा)। २ त्रिशूल; (पराह १, १—पत्र १८)। ३ सामर्थ्य; (ठा ३, १—पत्र १०६; कुमा; प्रासू २६)। ४ विद्या-विशेष; (पउम ७, १४२)। °म, °मंत वि [°मत्] शक्ति वाला; (ठा ६—पत्र ३५२; सवोध ८; उप १३६ टी)।

सत्ति पुं [**सप्ति**] अश्व, घोड़ा; (पाअ)।

सत्तिअ वि [**सात्त्विक**] सत्त्व-युक्त, सत्त्व-प्रधान; (सुअनि ६२; हम्मीर १६; स ४)।

सत्तिअणा स्त्री [**दे**] आभिजात्य, कुलीनता; (दे ८,

१६)।

सत्तिवण्ण } देखो **सत्त-वण्ण**; (सम १५२; पि १०३;
सत्तिवन्न } विचार १४८)।

सत्तु पुं [**शत्रु**] रिपु, दुश्मन, वैरी; (णाया १, १—पत्न ५२; कप्पू; सुपा ७)। °**इ** वि [°**जित्**] १ शत्रु को जीतने वाला; २ पुं. एक राजा का नाम; (प्राक्ट ६५)। °**ग्घ** वि [°**घ्न**] १ रिपु को मारने वाला; (प्राक्ट ६५)। २ पुं. रामचन्द्र का एक छोटा भाई; (पउम २५, १४)। °**निहण** [°**निघ्न**] वही पूर्वोक्त अर्थ; (पउम १०, ६६)। °**मद्दण** वि [°**मर्दन**] शत्रु का मर्दन करने वाला; (सम १५२)। °**सेण** पुं [°**सेन**] एक अन्तकृद् मुनि; (अंत ३)। °**हण** देखो °**ग्घ**; (पउम ८०, ३८)।

सत्तु } पुं [**सक्तु**] सत्तू, सतुआ, भुजे हुए यव आदि
सत्तुअ } का चूर्ण; (पि ३६७; निचू १; स २५३; सुर ५, २०६; सुपा ४०६; महा)।

सत्तुंज न [**शत्रुञ्ज**] १ एक विद्याधर-नगर; (इक)। २ पुं. रामचन्द्रजी का एक छोटा भाई, शत्रुघ्न; (पउम ३२, ४७)।

सत्तुंजय [**शत्रुञ्जय**] १ काठियावाड़ में पालीताना के पास का एक सुप्रसिद्ध पर्वत जो जैनों का सर्व-श्रेष्ठ तीर्थ है; (सुर ५, २०३)। २ एक राजा का नाम; (राज)।

सत्तुंदम पुं [**शत्रुन्दम**] एक राजा का नाम; (पउम ३८, ४५)।

सत्तुग देखो **सत्तुअ**; (कुप्र १२)।

सत्तुत्तरि स्त्री [**सप्तसप्तति**] सतहत्तर, ७७; (कम्म ६, ४८)।

सत्थ वि [**शस्त**] प्रशस्त, श्लाघनीय; (चेइय ५७२)।

सत्थ न [**शस्त्र**] हथियार, आयुध, प्रहरण; (आचा; उव; भग; प्रासू १०५)। °**कोस** पु [°**कोश**] शस्त्र—औजार रखने का थैला; (णाया १, १३—पत्न १८१)। °**वज्झ** वि [°**वध्य**] हथियार से मारने योग्य; (णाया १, १६—पत्न १९९)। °**ोवाडण** न [°**ावपाटन**] शस्त्र से चीरना; (णाया १, १६—पत्न २०२; भग)।

सत्थ वि [**दे**] गत, गया हुआ; (दे ८, १)।

सत्थ देखो **स-त्थ**=स्व-स्थ।

सत्थ न [**स्वास्थ्य**] स्वस्थता; (णाया १, ९—पत्न १६६)।

सत्थ पुं [**सार्थ**] १ व्यापारी मुसाफिरों का समूह; (णाया १, १५—पत्न १९३; उत्त ३०, १७; बृह १; अणु; सुर १, २१४)। २ प्राणि-समूह; (कुमा; हे १, ६७)। ३ वि. अन्वर्थ, यथार्थ-नामा; (चेइय ५७२)। °**वह**, °**वाह** पुंस्त्री [°**वाह**] सार्थ का मुखिया, संघ-नायक; (श्रु ५५; उवा; विपा १, २—पत्न ३१); स्त्री—°**ही**; (उवा; विपा १, २—पत्न ३१)। °**वाहिक** पु [°**वाहिन्**] वही पूर्वोक्त अर्थ; (भवि)। °**ाह** देखो °**वाह**; (धर्मवि ४१; सण)। °**ाहिव** पुं [°**ाधिप**] सार्थ-नायक; (सुर २, ३२; सुपा ५६४)। °**ाहिवइ** पुं [°**ाधिपति**] वही अर्थ; (सुपा ५६४)।

सत्थ पुंन [**शास्त्र**] हितोपदेशक ग्रन्थ, हित-शिक्षक पुस्तक, तत्त्व-ग्रन्थ; (विसे १३८४; कुमा), "नाणासत्थे सुणंतोवि" (श्रा ४)। °**ण्णु** वि [°**ज्ञ**] शास्त्र का जानकार; "सुमिणसत्थरणू" (उप ९८६ टी; उप पृ ३२७)। °**गार** वि [°**कार**] शास्त्र-प्रणेता; (धर्मसं १००३; सिक्खा ३१)। °**त्थ** पुं [°**ार्थ**] शास्त्र-रहस्य; (कुप्र ६; २०६; भवि)। °**यार** देखो °**गार**; (स ४; धर्मसं ६८२)। °**वि** वि [°**विद्**] शास्त्र-ज्ञाता; (स ३१२)।

सत्थइअ वि [**दे**] उत्तेजित; (दे ८, १३)।

सत्थर पुं [**दे**] निकर, समूह; (दे ८, ४)।

सत्थर } पुंन [**स्रस्तर**] शय्या, बिछौना; (दे ८, ४
सत्थरय } टी; सुपा ५८३; पाअ; षड्; हास्य १३६; सुर ४, २४४)।

सत्थव देखो **संथव**=संस्तव; (प्राकृ ३३; पि ७६)।

सत्थाम देखो **स-त्थाम**=स-स्थामन्।

सत्थाव देखो **संथव**=संस्तव; (प्राकृ ३३)।

सत्थि अ. स्त्री [**स्वस्ति**] १ आशीर्वाद; "सत्थि करेइ कविलो" (पउम ३५, ६२)। २ क्षेम, कल्याण, मंगल; ३ पुण्य आदि का स्वीकार; (हे २, ४५; सत्ति २१)। °**मई** स्त्री [°**मती**] १ एक विप्र-स्त्री, क्षीरकदम्बक उपाध्याय की स्त्री; (पउम ११, ९)। २ एक नगरी; (उप ९०२)। ३ संनिवेश-विशेष; (स १०३)। देखो **सोत्थि**।

सत्थिअ पुं [**स्वस्तिक**] १ माङ्गलिक विन्यास-विशेष, मंगल के लिए की जाती एक प्रकार की चावल आदि की रचना-विशेष; (श्रा २७; सुपा ५२)। २ स्वस्तिक के आकार का आसन-बन्ध; (बृह ३)। ३ एक देवविमान, (देवेन्द्र १४०)। °**पुर** न [°**पुर**] एक नगर का नाम;

(श्रा २७)। देखो **सोत्थिअ**

सत्थिअ वि [**सार्थिक**] १ सार्थ-संबन्धी, सार्थ का मनुष्य आदि; (कुप्र ६२; स १२६; सुर ६, १६६; सुपा ६५१; धर्मवि १२४)। २ पुं. सार्थ का मुखिआ; (बृह १)।

सत्थिअ न [**सक्थि**न्] ऊरु, जाँघ; (स २६२)।

सत्थिआ स्त्री [**शस्त्रिका**] छुरी; (प्राप)।

सत्थिग देखो **सत्थिअ**=स्वस्तिक; (पंचा ८, २३)।

सत्थिल्ल देखो **सत्थिअ**=सार्थिक; (सुर १०, २०८)।

सत्थिल्लय देखो **सत्थ**=सार्थ; (महा; भवि)।

सत्थु वि [**शास्तृ**] शास्ति-कर्ता, सीख देने वाला; (आचा; सूअ २, ५, ४; १, १३, २)।

सत्थुअ देखो **संथुअ**; (प्राकृ ३३; पि ७६)।

सदा देखो **सआ**=सदा; (राज)।

सदावरी देखो **सयावरी**=सदावरी; (उत्त ३६, १३६)।

सदिस (शौ) देखो **सरिस**=सदृश; (नाट—मृच्छ ११३)।

सद्द अक [**शब्दय्**] १ आवाज करना। २ सक. आह्वान करना, बुलाना। सद्दइ; (पिंग)।

सद्द पुंन [**शब्द**] १ ध्वनि, आवाज; (हे १, २६०; २, ७६; कुमा; सम १५) "सद्दाणि विरूवरूवाणि" (सूअ १, ४, १, ६), "सद्दाइं" (आचा २, ४, २, ४)। २ पुं. नय-विशेष; (ठा ७—पत्र ३६०; विसे २१८१)। ३ छन्द-विशेष; (पिंग)। ४ नाम, आख्या; (महा)। ५ प्रसिद्धि; (औप; णाया १, १ टी—पत्र ३)। °**वेहि** वि [°**वेधिन्**] शब्द के अनुसार निशाना मारने वाला; (णाया १, १८—पत्र २३६; गउड)। °**वाइ** पुं [°**पातिन्**] एक वृत्त वैताढ्य पर्वत; (ठा २, ३—पत्र ६६; ८०; ४, २—पत्र २२३; इक)।

सद्दल न [**शाद्वल**] हरित, हरा घास; (पाअ; णाया १, १—पत्र २४; गउड)।

सद्दलिय वि [**शाद्वलित**] हरा घास वाला प्रदेश; (गउड)।

सद्दह सक [**श्रद्+धा**] श्रद्धा करना, विश्वास करना, प्रतीति करना। सद्दहइ, सद्दहामि; (हे ४, ६; भग; उवा)। भवि—सद्दहिस्सइ; (पि ५३०)। वकृ—**सद्दहंत, सद्दहमाण, सद्दहाण**; (नव ३६; हे ४, ६; श्रु २३)। संकृ—**सद्दहित्ता**; (उत्त २६, १)। कृ—**सद्दहियव्व**; (उव; सं ८६; कुप्र १४६)।

सद्दहण देखो **सद्दहाण**; (हे ४, २३८; कुमा)।

सद्दहणया, **सद्दहणा** स्त्री [**श्रद्धान**] श्रद्धा, विश्वास, प्रतीति; (ठा ६—पत्र ३५५; पंचभा)।

सद्दहा देखो **सड्ढा**=श्रद्धा; (सट्ठि १२७)।

सद्दहाण न [**श्रद्धान**] श्रद्धा, विश्वास, (श्रावक ६२, पव ११६; हे ४, २३८)।

सद्दहाण देखो **सद्दह**।

सद्दहिअ वि [**श्रद्धित**] जिस पर श्रद्धा की गई हो वह, विश्वस्त; (ठा ६—पत्र ३५५; पि ३३३)।

सद्दाइद (शौ) वि [**शब्दायित**] आहूत, बुलाया हुआ, (नाट—मृच्छ २८६)।

सद्दाण देखो **संदाण**। सद्दाणाइ; (पड्)।

सद्दाल वि [**शब्दवत्**] शब्द वाला; (हे २, १५६; पउम २०, १०; प्राप्र; सुर ३, ६६; पाअ; औप)।

सद्दाल न [**दे**] नूपुर; (दे ८, १०; षड्)। °**पुत्त** पु [°**पुत्र**] एक जैन उपासक; (उवा)।

सद्दाव सक [**शब्दय्, शब्दायय्**] आह्वान करना, बुलाना। सद्दावेइ, सद्दाविंति, सद्दावेंति; (औप; कप्प; भग)। सद्दावेहि, (स्वप्न ६२)। कर्म—सद्दावीअंति; (अभि १२८)। संकृ—**सद्दावित्ता, सद्दावेत्ता**; (पि ५८२; महा)।

सद्दाविय वि [**शब्दित, शब्दायित**] आहूत, बुलाया हुआ; (कप्प; महा; सुर ८, १३३)।

सद्दिअ वि [**शब्दित**] १ प्रसिद्ध; (औप; णाया १, १ टी —पत्र ३)। २ आहूत; (सुपा ४१३; महा)। ३ वार्तित, जिसको बात कही गई हो वह; (कुमा ३, ३४)।

सद्दिअ वि [**शाब्दिक**] शब्द-शास्त्र का ज्ञाता; (अणु २३४)।

सद्दूल पु [**शार्दूल**] १ श्वापद पशु की एक जाति, बाघ; (पाअ; पण्ह १, १—पत्र ७; दे १, २४; अभि ५५)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**विक्कीडिअ** न [°**विक्रीडित**] उन्नीस अक्षरों के पाद वाला एक छन्द; (पिंग)। °**सट्ट** पुन [°**साटक**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

सद्ध देखो **स-द्ध**=सार्ध।

सद्ध न [**श्राद्ध**] १ पितरों की तृप्ति के लिए तर्पण, पिण्ड-दानादि; (अच्चु १७; पुप्फ १६७)। २ वि. श्रद्धा वाला, श्रद्धालु; (उप ८६८)। देखो **सड्ढ**=श्राद्ध; (उप

विशेष, चारों कोणों से समान शरीर की आकृति-विशेष;
(ठा ६—पत्र ३५७; सम १४६; भग; कम्म १, ४०)।
°चक्कवाल न [**°चक्रवाल**] वृत्त, गोलाकार; (सुज्ज ४)।
°ताल न [**°ताल**] १ कला-विशेष; (औप)। २ वि.
समान ताल वाला; (ठा ७)। **°धम्मिअ** वि [**°धर्मिक**]
समान धर्म वाला; (उप ५३० टी)। **°पादपुत** पुंन
[**°पादपुत**] आसन-विशेष, जिसमें दोनों पैर मिला कर
जमीन में लगाये जाते है वह आसन-बन्ध; (ठा ५,
१—पत्र ३००)। **°पासि** वि [**°दर्शिन्**] तुल्य दृष्टि
वाला, सम-दर्शी; (गच्छ १, २२)। **°प्पभ** पुंन [**°प्रभ**]
एक देव-विमान; (सम १३)। **°भाव** पु [**°भाव**]
समता; (सुपा ३२०)। **°या** स्त्री [**°ता**] राग-द्वेष का
अभाव, मध्यस्थता, (उत्त ४, १०; पउम १४, ४०;
आ २७)। **°वत्ति** पु [**°वर्तिन्**] यमराज, जम; (सुपा
४३३)। **°सरिस** वि [**°सदृश**] अत्यन्त तुल्य, सदृश,
(पउम ४६, ५७)। **°सहिय** वि [**°सहित**] युक्त, सहित;
(पउम १७, १०५)। **°सुद्ध** पुं [**°शुद्ध**] एक राजा
जो छठवे केशव का पिता था; (पउम २०, १८२)।

समइअ वि [**सामयिक**] समय-संबन्धी, समय का; (भग)।

समइअ वि [**समयित**] सकेतित; (धर्मसं ५०५)।

समइअ न [**समयिक**] सामायिक-नामक संयम-विशेष; (कम्म ३, १८; ४, २१; २८)।

समइंछिअ देखो **समइच्छिअ**; (से १२, ७२)।

समइक्कंत वि [**समतिक्रान्त**] व्यतीत, गुजरा हुआ; (सुपा २३)।

समइच्छ सक [**समति+क्रम्**] १ उल्लंघन करना। २ अक. गुजरना, पसार होना। वकृ—**समइच्छमाण**; (औप; कप्प)।

समइच्छिअ वि [**समतिक्रान्त**] १ गुजरा हुआ; २ उल्लंघित; (उप ७६८ टी; दे ८, २०; स ४५)।

समईअ वि [**समतीत**] १ गुजरा हुआ; (पउम ५, १५२)। २ पुं. भूत काल, (जीवस १८१)।

समईअ देखो **समइअ**=समयिक; (कम्म ४, ४२)।

समउ (अप) नीचे देखो; (भवि)।

समं अ [**समम्**] साथ, सह; (गा १०२; १६४; २६५; उत्त १६, ३; महा; कुमा)।

समंजस वि [**समञ्जस**] उचित, योग्य; (आचा; गउड; भवि)।

समंत° देखो **समंता**; "वसिओ अंगेसु समंतपीणाकणकब्बुरो सेओ" (गउड)।

समंत देखो **सामन्त**; (उप पृ ३२७)।

समंत (अप) देखो **समत्थ**=समस्त; (पिंग)।

समंतओ अ [**समन्ततस्**] सर्वतः, चारों तरफ; (गा ६७३; सुर २, २३८)।

समंता } अ [**समन्तात्**] ऊपर देखो; (पाअ; भग;
समंतेण } विपा १, २—पत्र २६; से ६, ५१; सुर २, २८; १३, १९५)।

समक्कंत वि [**समाक्रान्त**] १ जिस पर आक्रमण किया गया हो वह; (से ५, ५७)। २ अवरुद्ध, रोका हुआ; (से ८, ३३)।

समक्ख न [**समक्ष**] नजर के सामने, प्रत्यक्ष; (गा ३७०; सुपा १५०; महा)। देखो **समच्छ**।

समक्खाय } वि [**समाख्यात**] उक्त, कथित; (उप
समक्खिअ } २११ टी; ६९४; जी २५; श्रु १३३)।

समगं देखो **समयं**=समकम्; (पव २३२; सुपा ८७; सण)।

समग्ग वि [**समग्र**] १ सकल, समस्त; (सुपा ९९)। २ युक्त, सहित; (पण्ह १, ३—पत्र ४४; कुप्र ७)।

समग्गल वि [**समर्गल**] अत्यधिक; (सिरि ८६७; सुपा ३९७; ४२०)।

समग्गल (अप) देखो **समग्ग**; (पिंग)।

समग्घ वि [**समर्घ**] सस्ता, अल्प मूल्य वाला; (सुपा ४४५; ४४७; सम्मत्त १४१)।

समच्चण न [**समर्चन**] पूजन, पूजा; (सुपा ६)।

समच्चिअ वि [**समर्चित**] पूजित; (पउम ११६, ११)।

समच्छ अक [**सम्+आस्**] १ बैठना। २ सक. अवलम्बन करना। ३ अधीन रखना। वकृ—**समच्छंत**; (उप ६६८ टी)।

समच्छ वि [**समक्ष**] प्रत्यक्ष का विषय; (सत्ति १५)। देखो **समक्ख**।

समच्छायग वि [**समाच्छादक**] ढकने वाला; (स ६९)।

समज्ज } सक [**सम्+अर्ज्**] पैदा करना, उपार्जन
समज्जिण } करना। समज्जइ, समज्जिणाइ; (सण; पव १०; महा)। वकृ—**समज्जिणमाण**; (विपा १, १—पत्र १२)। संकृ—**समज्जिवि** (अप); (सण)।

समज्जिणिय ⎫ वि [**समर्जित**] उपार्जित; (सण; ठा
समज्जिय ⎭ ३, १—पत्र ११४; सुपा २०५; सण)।

समज्झासिय वि [**समध्यासित**] अधिष्ठित; (सुज्ज १०, १)।

समट्ठ वि [**समर्थ**] संगत अर्थ, व्याजबी, न्याय-युक्त; (णाया १, १—पत्र ६२; उवा)। देखो **समत्थ**=समर्थ।

समण न [**शमन**] १ उपशमन, दबाना, शान्त करना; (सुपा ३६६)। २ पथ्यानुष्ठान; (उवर १४०)। ३ एक दिन का उपवास; (संबोध ५८)। ४ वि. उपशमन करने वाला. दबाने वाला; (उप ७८२; पंचा ४, २६; सुर ४, २३१)।

समण देखो **स-मण**=स-मनस्।

समण देखो **सवण**=श्रवण; (पउम १७, १०७; राज)।

समण पुं [**समण**] सर्वत्र समान प्रवृत्ति वाला, मुनि, साधु; (अणु)।

समण पुं [**श्रमण**] १ भगवान् महावीर; (आचा २, १५, ३)। २ पुस्त्री. निर्ग्रन्थ मुनि, साधु, यति, भिक्षु, सन्यासी; तापस; "निग्गंथसक्कतावसगेरुयआजीवं पंचहा समणा" (पव ९४; अणु; आचा; उवा; कप्प; विपा १, १; धण २१; सुर १०, २२४), स्त्री—°णी; (भग; गच्छ १, १५)। °**सीह** पुं [°**सिंह**] १ एक जैन मुनि जो दूसरे बलदेव के पूर्वभवीय गुरू थे; (पउम २०, १९२)। २ श्रेष्ठ मुनि; (पण्ह २, ५—पत्र १४८)। °**वासग**, °**वासय** पुंस्त्री [°**पासक**] श्रावक, जैन गृहस्थ; (उवा), स्त्री—°**सिया**; (उवा; णाया १, १४—पत्र १८७)।

समणंतरु (अप) न [**समनन्तरम्**] अनन्तर, बाद मे, पीछे; (सण)।

समणक्ख देखो **स-मणक्ख**=स-मनस्क।

समणुगच्छ ⎫ सक [**समनु+गम्**] १ अनुसरण करना।
समणुगम ⎭ २ अच्छी तरह व्याख्या करना। ३ अक. सबद्ध होना, जुड़ जाना। वकृ—**समणुगच्छमाण**; (णाया १. १—पत्र २५)। कवकृ—**समणुगम्मंत**, **समणुगम्म-माण**; (औप; सूअ २, २. ७९; णाया १, १—पत्र ३२; कप्प)।

समणुगय वि [**समनुगत**] १ अनुसृत; (स ७२०)। २ अनुविद्ध, जुड़ा हुआ; (पंचा ६, ४६)।

समणुचिण्ण वि [**समनुचीर्ण**] आचरित, विहित; "तवो समणुचिण्णो" (पउम ६, १६४)।

समणुजाण सक [**समनु+ज्ञा**] १ अनुमोदन करना, अनुमति देना। २ अधिकार-प्रदान करना। समणुजाणइ, समणुजाणाइ, समणुजाणेज्जा; (आचा)। वकृ—**समणु-जाणमाण**; (आचा)।

समणुजाय वि [**समनुजात**] उत्पन्न, सजात, (पउम १००, २४; सुपा ५७८)।

समणुनाय वि [**समनुज्ञात**] अनुमत, अनुमोदित, (पउम ८, ७)।

समणुन्न वि [**समनुज्ञ**] अनुमोदन-कर्ता, (आचा १, १, १, ५)।

समणुन्न वि [**समनोज्ञ**] १ सुन्दर, मनोहर; २ सुन्दर वेष आदि वाला; (आचा १, ८, १, १)। ३ संविग्न, सवेग-युक्त मुनि; (आचा १, ८, २, ६)। ४ समान सामाचारी वाला—साभोगिक —मुनि; (ठा ३, ३—पत्र १३९; वव १)।

समणुन्ना स्त्री [**समनुज्ञा**] १ अनुमति, संमति; २ अधि-कार-प्रदान; (ठा ३, ३—पत्र १३९)।

समणुन्नाय देखो **समणुनाय**; (आचा २, १, १०, ४)।

समणुपत्त वि [**समनुप्राप्त**] सप्राप्त; (सुर १, १८३; १०, १२०; सिरि ४३०; महा)।

समणुबद्ध वि [**समनुबद्ध**] निरन्तर रूप से व्याप्त; (णाया १, ३—पत्र ९१; औप; उव)।

समणुभूअ वि [**समनुभूत**] अच्छी तरह जिसका अनुभव किया गया हो वह; (वै ९२)।

समणुवत्त वि [**समनुवृत्त**] संवृत्त, संजात; (पउम १०, १)।

समणुवास सक [**समनु+वासय्**] १ वासना-युक्त करना। २ सिद्ध करना। ३ परिपालन करना। "आयट्ठं सम्मं समणुवासेज्जासि" (आचा १, २, १, ५; १, २, ४, ४; १, ५, ४, ५; १, ६, १, ६)।

समणुसट्ठ वि [**समनुशिष्ट**] अनुज्ञात, अनुमत; (आचा २, १, १०, ४)।

समणुसास सक [**समनु+शासय्**] सम्यग् सीख देना, अच्छी तरह सीखाना। समणुसासयंति; (सूअ १, १४, १०)।

समणुसिट्ठ वि [**समनुशिष्ट**] अच्छी तरह शिक्षित; (वसु)। देखो **समणुसट्ठ**; (आचा २, १, १०, ४)।

समणुहो सक [**समनु+भू**] अनुभव करना। समणुहोइ; (वव १)।
समण्णागय वि [**समन्वागत**] १ समन्वित, सहित; "छत्तीसगुणसमण्णागएण" (गच्छ १, १२)। २ संप्राप्त; (राय)।
समण्णाहार पुं [**समन्वाहार**] समागमन; (राज)।
समण्णिय देखो **समन्निय**; (काल)।
समतिक्कंत देखो **समइक्कंत**; (गाया १, १—पत्र ६३)।
समतुरंग सक [**समतुरंगाय्**] समान अश्व की तरह आपस में आरोहण करना, आश्लेष करना। वकृ—**समतुरंगेमाण**; (गाया १, ८—पत्र १३४; पव १७४ टी)।
समत्त वि [**समस्त**] १ सपूर्ण; (पण्ह १, ४—पत्र ६८)। २ सकल, सब; (विसे ४७२)। ३ समास-युक्त, ४ मिलित, मिला हुआ, (हे २, ४५; पड्)।
समत्त वि [**समाप्त**] पूर्ण, पूरा, सिद्ध, जो हो चुका हो वह; (उवा; औप)।
समत्ति स्त्री [**समाप्ति**] पूर्णता; (उप १४२; ७२८ टी; विसे ४१५; पव—गाथा ६५; स ५३; सुपा २५३; ४३५)।
समत्थ सक [**सम्+अर्थय्**] १ साबित करना, सिद्ध करना। २ पुष्ट करना। ३ पूर्ण करना। कर्म—समत्थीअइ; (स १६५),
"उयहो त्ति समत्थिज्जइ दाहेण सरोरुहाण हेमंतो।
चरिएहिं णज्जइ जणो सगोवंतोवि अप्पाणा" (गा ७३०)।
समत्थ देखो **समत्त**=समस्त; (से ४, २८, सुर १, १८१; १६, ५५)।
समत्थ वि [**समर्थ**] शक्त, शक्तिमान; (पाअ; ठा ४, ४—पत्र २८३; प्रासू २३; १८२; औप)।
समत्थि वि [**समर्थिन्**] प्रार्थक, चाहने वाला; (कुप्र ३५१)।
समत्थिअ वि [**समर्थित**] १ पूर्ण, पूरा किया हुआ; (कुप्र ११५; सुपा २६६)। २ पुष्ट किया हुआ; (सुर १६, ६५)। ३ प्रमाणित, साबित किया हुआ, (अज्झ १२१)।
समद्धासिय वि [**समाध्यासित**] अधिष्ठित; (स ३५; ६७६)।
समद्धि देखो **समिद्धि**; (गा ४२६)।

समन्नागय देखो **समण्णागय**; (ओघ ७६४; गाया १, १—पत्र ६४; औप; महा; ठा ३, १—पत्र ११७)।
समन्नि सक [**समनु+इ**] १ अनुसरण करना। २ अक. एकलित होना, मिलना। समन्नेइ, समन्निंति; (विसे २५१७; औप)।
समन्निअ वि [**समन्वित**] युक्त, सहित; (हे ३, ४६; सुर ३, १३०; ४, २२०; गउड)।
समन्ने देखो **समन्नि**।
समप्प सक [**सम्+अर्पय्**] अर्पण करना, दान करना, देना। समप्पेइ; (महा)। वकृ—**समप्पंत, समप्पअंत, समप्पेंत**; (नाट—मृच्छ १०५; रत्ना ५५; पउम ७३, १४)। संकृ—**समप्पिअ, समप्पिऊण**; (नाट—मृच्छ ३१५; महा)। कृ—**समप्पिउं**; (महा)। कृ—**समप्पियव्व**; (सुपा २५६)।
समप्प देखो **समाव**=सम्+आप्।
समप्पण न [**समर्पण**] अर्पण, प्रदान; (सुर ७, २२; कुप्र १३; वज्जा ६६)।
समप्पणया स्त्री [**समर्पणा**] ऊपर देखो; (उप १७६)।
समप्पिय वि [**समर्पित**] दिया हुआ; (महा; काल)।
समब्भस सक [**समभि+अस्**] अभ्यास करना। समब्भसइ; (द्रव्य ४७)।
समब्भहिअ वि [**समभ्यधिक**] अत्यन्त अधिक; (से १५, ८५)।
समब्भास पु [**समभ्यास**] निकट, पास; (पउम ३३, १७)।
समब्भिडिय वि [**दे**] भिड़ा हुआ, लड़ा हुआ; (पउम ८६, ४८)।
समभिआवण्ण वि [**समभ्यापन्न**] समुख आया हुआ; (सूअ १, ४, २, १४)।
समभिजाण सक [**समभि+ज्ञा**] १ निर्णय करना। २ प्रतिज्ञा-निर्वाह करना। समभिजाणिया, समभिजाणाहि; (आचा)। वकृ—**समभिजाणमाण**; (आचा)।
समभिद्दव सक [**समभि+द्रु**] हैरान करना। समभिद्दवंति; (उत्त ३२, १०)।
समभिधंस सक [**समभि+ध्वंसय्**] नष्ट करना। समभिधंसेज्ज, समभिधंसेति; (भग)।
समभिपड सक [**समभि+पत्**] आक्रमण करना। हेकृ—**समभिपडित्तए**; (अंत २१)।

समभिभूअ वि [**समभिभूत**] अत्यन्त पराभूत; (उवा; धर्मवि ३४)।

समभिरूढ पुं [**समभिरूढ**] नय-विशेष; (ठा ७—पत्र ३९०)।

समभिलोअ सक [**समभि+लोक्**] देखना, निरीक्षण करना। समभिलोएइ; (भग १५—पत्र ६७०)। वकृ—**समभिलोएमाण**; (पण्ण १७—पत्र ५१८)।

समभिलोइअ वि [**समभिलोकित**] विलोकित, दृष्ट; (भग १५—पत्र ६७०)।

समय अक [**सम्+अय्**] समुदित होना, एकत्रित होना। "सव्वे समयंति सम्मं चेगवसाओ नया विरुद्धावि" (विसे २२६७)।

समय पुं [**समय**] १ काल, वख्त, अवसर; (आचा; सूअनि २९; कुमा)। २ काल-विशेष, सर्व-सूक्ष्म काल, जिसका दूसरा हिस्सा न हो सके ऐसा सूक्ष्म काल; (अणु; इक; कम्म २, २३; २४; ३०)। ३ मत, दर्शन; (प्राप)। ४ सिद्धान्त, शास्त्र, आगम; (आचा; पिंड ६; सूअनि २९; कुमा; दं २२)। ५ पदार्थ, चीज, वस्तु; (सम्म १ टी—पृष्ठ ११४)। ६ संकेत, इसारा; (सूअनि २९; पिंड ६; प्राप; से १, १९)। ७ समीचीन परिणति, सुन्दर परिणाम; ८ आचार, रिवाज, ९ एकवाक्यता; (सूअनि २९)। १० सामायिक, संयम-विशेष; (विसे १४२१)। °**क्खेत्त**, °**खेत्त** न [°**क्षेत्र**] कालोपलक्षित भूमि, मनुष्य-लोक, मनुष्य-क्षेत्र; (भग; सम ६८)। °**ज्ज**, °**ण्ण**, °**न्न** वि [°**ज्ञ**] समय का जानकार; (धण ३९; गा ४०५; पि २७६)।

समय देखो **स-मय**=स-मद।

समय } अ [**समकम्**] १ युगपत्, एक साथ; (पव **समयं** } २१६ टी; विसे १९९६; १९९७; सुर १, ५, महा; गउड ११०६)। २ सह, साथ; (गा ६१)।

समया देखो **सम-या**।

समया अ [**समया**] पास, नजदीक; (सुपा १८८)।

समर सक [**स्मृ**] याद करना। कृ—**समरणीय**; (चउ २७. नाट—शकु ६), **समरियव्व**, (रयण २८)।

समर देखो **सबर**; (हे १, २५८; षड्), स्त्री—°**री**; (कुमा)।

समर पुंन [**समर**] १ युद्ध, लडाई; (से १३, ४७; उप ७२८ टी; कुमा)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**इच्च** पुं [°**ादित्य**] अवन्तीदेश का एक राजा; (स ५)।

समर न [**स्मार**] कामदेव-संबन्धी, कामदेव का (मन्दिर आदि); (उप ४५४)।

समरइत्तु वि [**स्मर्तृ**] स्मरण-कर्ता; (सम १५)।

समरण न [**स्मरण**] स्मृति, याद; (धर्मवि २०; आप ६८)।

समरसद्दहय पुं [**दे**] समान उम्र वाला; (दे ८, २२)।

समराइअ वि [**दे**] पिष्ट, पिसा हुआ; (षड्)।

समरी देखो **समर**=शबर।

समरेत्तु देखो **समरइत्तु**; (ठा ९— पत्र ४४४)।

समलंकर सक [**समलम्+कृ**] विभूषित करना। समलंकरेइ; (आचा २, १५, ५)। संकृ—**समलंकरेत्ता**; (आचा २, १५, ५)।

समलंकार सक [**समलम्+कारय्**] विभूषित करना, विभूषा-युक्त करना। समलकारेइ; (औप)। संकृ—**समलंकारेत्ता**; (औप)।

समलद्ध (अप) वि [**समालब्ध**] विलिप्त; (भवि)।

समल्लिअ अक [**समा+ली**] १ संबद्ध होना। २ लीन होना। ३ सक. आश्रय करना। समल्लियइ; (आक ४७)। वकृ—**समल्लिअंत**; (से १२, १०)।

समल्लीण वि [**समालीन**] अच्छी तरह लीन; (औप)।

समवइण्ण वि [**समवतीर्ण**] अवतीर्ण; (सुपा २२)।

समवट्ठाण न [**समवस्थान**] सम्यग् अवस्थिति; (अज्झ १४७)।

समवट्ठिइ स्त्री [**समवस्थिति**] ऊपर देखो; "केई बिति मुणीणं सहावसमवट्ठिई हवे चरणं" (अज्झ १४६)।

समवत्ति देखो **सम-वत्ति**=सम-वर्तिन्।

समवय° देखो **समवे**।

समवसर देखो **समोसर**=समव+सृ; (प्रामा)।

समवसरण देखो **समोसरण**; (सूअनि ११६)।

समवसरिअ देखो **समोसरिअ**=समवसृत; (धर्मवि ३०)।

समवसेअ वि [**समवसेय**] जानने योग्य, ज्ञातव्य; (सा ४)।

समवाइ वि [**समवायिन्**] समवाय संबन्ध का, समवाय-संबन्धी; (विसे १९२९; धर्मसं ४८७)।

समवाय पुं [**समवाय**] १ संबन्ध-विशेष, गुण-गुणी आदि का संबन्ध; (विसे २१०८)। २ संबन्ध; (पउम ३६, २५; धर्मसं ४८१; विवे ११६)। ३ समूह, समुदाय;

(सूअ २, १, २२; ओघ ४०७; अणु २७० टी; पिंड २; आरा २; विसे ३५९३ टी)। ४ एकत्र करना; "काउं तो संघसमवायं" (विसे २५४६)। ५ जैन अग-ग्रन्थ विशेष, चौथा अंग-ग्रन्थ; (सम १)।

समवे अक [**समव+इ**] १ शामिल होना। २ सबद्ध होना। समवेदि (शौ); (मोह ९३), समवयति; (विसे २१०६)।

समवेद (शौ) वि [**समवेत**] समुदित, एकत्रित; (मोह ७८)।

समसम अक [**समसमाय्**] 'सम्' 'सम्' आवाज करना। वकृ—**समसमंत**; (भवि)।

समसरिस देखो **सम-सरिस**।

समसाण देखो **मसाण**; "समसाणे सुन्नघरे देवउले वावि त वसमु" (सुपा ४०८)।

समसीस वि [**दे**] १ सदृश, तुल्य; २ निर्भर; (दे ८, ५०)। ३ न. स्पर्धा; (से ३, ८)।

समसीसिअ } स्त्री [**दे**] स्पर्धा, बराबरी; (सुपा ७;
समसीसी } वज्जा २४; कप्पू ; दे ८, १३; सुर १, ८; वज्जा ३२; १५४; विवे ४५; सम्मत्त १४५; कुप्र ३३४)।

समस्सअ सक [**समा+श्रि**] आश्रय करना। समस्सअइ; (पि ४७३)। संकृ—**समस्सइअ**; (पि ४७३)।

समस्सस अक [**समा+श्वस्**] आश्वासन प्राप्त करना, सान्त्वन मिलना। समस्ससध (शौ), (पि ४७१)। हेकृ—**समस्ससिदुं** (शौ); (नाट—शकु ११९)।

समस्ससिद (शौ) देखो **समासत्थ**; (नाट—मृच्छ २५८)।

समस्सा स्त्री [**समस्या**] बाकी का भाग जोडने के लिए दिया जाता श्लोक-चरण वा पद आदि; (सिरि ८९८; कुप्र २७; सुपा १५५)।

समस्सास सक [**समा+श्वासय्**] सान्त्वन करना, दिलासा देना। समस्सासदि (शौ), (नाट)। वकृ—**समस्सासअंत**; (अभि २२२)। हेकृ—**समस्सासिदुं** (शौ); (नाट—मृच्छ ८१)।

समस्सास पुं [**समाश्वास**] आश्वासन; (विक्र ३५)।

समस्सासण न [**समाश्वासन**] ऊपर देखो; (मै ७५)।

समस्सिअ वि [**समाश्रित**] आश्रय में स्थित, आश्रित; (स ६३५; उप पृ ४७; सुर १३, २०४; महा)।

समहिअ वि [**समधिक**] विशेष ज्याद; (प्रासू १७८; सहा; कुमा; सुर ४, १६६; सण)।

समहिगय वि [**समधिगत**] १ प्राप्त, मिला हुआ; २ ज्ञात; (सण)।

समहिट्ठ सक [**समधि+स्था**] काबू मे रखना, अधीन रखना। कवकृ—**समहिट्ठिज्जमाण**; (राय १३२)।

समहिट्ठाउ वि [**समधिष्ठातृ**] अध्यक्ष, मुखी, अधिपति; (आचा २. २, ३, ३; २, ७, १, २)।

समहिट्ठिअ वि [**समधिष्ठित**] आश्रित; (उप ७२८ टी; सुपा २०९)।

समहिड्ढिय देखो **स-महिड्ढिय** = स-महर्द्धिक।

समहिणंदिय वि [**समभिनन्दित**] आनन्दित, खुशी किया हुआ; (उप ५३० टी)।

समहिल वि [**समखिल**] सकल, समस्त; (गउड)।

समहुत्त वि [**दे**] संमुख, अभिमुख; (अणु २२२)।

समा स्त्री [**समा**] १ वर्ष, बारह मास का समय; (जी ४१)। २ काल, समय; (सम ६७; ठा २, १—पत्र ४७; कप्प)।

समाअम देखो **समागम**; (अभि २०२; नाट—मालती ३२)।

समाइच्छ सक [**समा+गम्**] १ सामने आना। २ समादर करना, सत्कार करना। संकृ—**समाइच्छिऊण**; (सहा)।

समाइच्छिय वि [**समागत**] आदृत, सत्कृत; (स ३७२)।

समाइट्ठ वि [**समादिष्ट**] फरमाया हुआ; (महा)।

समाइड्ढ वि [**समाविद्ध**] वेध किया हुआ; (से ६, ३८)।

समाइण्ण वि [**समाकीर्ण**] व्याप्त; (औप; सुर ४, २४१)।

समाइण्ण } वि [**समाचीर्ण**] अच्छी तरह आचरित;
समाइन्न } (भग; उप ८१३; विचार ८९५)।

समाउट्ट अक [**समा+वृत्**] नम्र होना, नमना, अधीन होना। भूका—समाउट्टिंसु; (सूअ २, १, १८)।

समाउट्ट वि [**समावृत्त**] विनम्र; (वव १)।

समाउत्त वि [**समायुक्त**] युक्त, सहित; (औप; सुपा ३०१)।

समाउल वि [**समाकुल**] १ समिश्र, मिश्रित; (राय)। २ व्याप्त; (सुपा ३०५)। ३ आकुल, व्याकुल; (हे ४, ४४४; सुर ६, १७४)।

समाउलिअ वि [**समाकुलित**] व्याकुल बना हुआ; (स ६६)।

समाएस पुं [**समादेश**] १ आज्ञा, हुकुम; (उप १०२११ टी)। २ विवाह आदि के उपलक्ष में किए हुए जीमन में बचा हुआ वह खाद्य जिसको निर्ग्रन्थों में बाँटने का संकल्प किया गया हो; (पिंड २२६; २३०)।

समाएसण न [**समादेशन**] आज्ञा, हुकुम; (भवि)।

समाओग पुं [**समायोग**] स्थिरता; (तंदु १४)।

समाओसिय वि [**समातोषित**] संतुष्ट किया हुआ; (भवि)।

समाकरिस सक [**समा+कृष्**] खींचना। हेक्—**समाकरिसिउं**; (पि ५७५)।

समाकरिसण न [**समाकर्षण**] खींचाव; (सुपा ४)।

समाकार सक [**समा+कारय्**] आह्वान करना, बुलाना। संकृ—**समाकारिय**; (सम्मत्त २२६)।

समागच्छ° देखो **समागम=समा+गम्**।

समागत देखो **समागय**; (सुर २, ८०)।

समागम सक [**समा+गम्**] १ सामने आना। २ आगमन करना। ३ जानना। समागच्छइ; (महा)। भवि—समागमिस्सइ; (पि ५२३)। संकृ—**समागच्छिअ**; (पि ५८१), "विन्नाणेण समागम्म: (उत्त २३, ३१)।

समागम पुं [**समा+गम्**] १ संयोग, सबन्ध; (गउड, महा)। २ प्राप्ति, (सूअ १, ७, ३०)।

समागमण न [**समागमन**] ऊपर देखो; (महा)।

समागय वि [**समागत**] आया हुआ, (पि ३६७ ए)।

समागूढ वि [**समागूढ**] समाश्लिष्ट, आलिंगित; (पउम ३१, १२२)।

समाज पुं [**समाज**] समूह, सघात, (धर्मवि १२३)। देखो **समाय**=समाज।

समाजुत्त न [**समायुक्त**] सयोजन, जोडना, (राय ४०)।

समाढत्त वि [**समारब्ध**] १ आरब्ध, जिसका प्रारंभ किया गया हो वह; (काल, पि २२३; २८६)। २ जिसने आरंभ किया हो वह; "एव भणिउं समाढत्तो" (सुर १. ६६)।

समाण सक [**भुज्**] भोजन करना, खाना। समाणइ; (हे ४, ११०; कुमा)।

समाण सक [**सम्+आप्**] समाप्त करना, पूरा करना। समाणइ; (हे ४, १४२), समाणेमि, (स ३७६)।

समाण वि [**समान**] १ सदृश, तुल्य, सरिखा; (कप्प)। २ मान-सहित, अहंकारी; (से ३, ४६)। ३ पुंन. एक देव-विमान; (सम ३५)।

समाण वि [**सत्**] विद्यमान, होता हुआ; (उवा; विपा १, २—पत्र ३४), स्त्री—°**णी**; (भग; कप्प)।

समाण देखो **संमाण=संमान**; (से ३, ४६)।

समाणअ वि [**समापक**] समाप्त करने वाला; (से ३. ४६)।

समाणण न [**भोजन**] भक्षण, खाना; "तंबोलसमाणण-पज्जाउलवयणाए" (स ७२)।

समाणत्त वि [**समाज्ञप्त**] जिसको हुकुम दिया गया हो वह; (महा)।

समाणिअ देखो **संमाणिय**; (से ३, २४)।

समाणिअ वि [**समानीत**] जो लाया गया हो वह, आनीत; (महा; सुपा ५०५)।

समाणिअ वि [**समाप्त**] पूरा किया हुआ; (से ६, ६२; गाया १, ८—पत्र १३३; स ३७१; कुमा ६, ६५)।

समाणिअ वि [**दे**] म्यान किया हुआ, म्यान में डाला हुआ; "विलिएण तक्खणं चेव समाणियं मंडलग्गं" (स २४२)।

समाणिअ वि [**भुक्त**] भक्षित, खाया हुआ; (स ३१५)।

समाणिआ स्त्री [**समानिका**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

समाणी सक [**समा+नी**] ले आना। समाणेइ; (विसे १३२५)।

समाणी देखो **समाण=सत्**।

समाणु (अप) देखो **समं**; (हे ४, ४१८; कुमा)।

समादह सक [**समा+दह्**] जलाना, सुलगाना। वकृ—**समादहमाण**; (आचा १, ८, २, १४)।

समादा सक [**समा+दा**] ग्रहण करना। संकृ—**समादाय**, (आचा १, २, ६, ३)।

समादाण न [**समादान**] ग्रहण; (राज)।

समादिट्ठ वि [**समादिष्ट**] फरमाया हुआ; (मोह ८९)।

समादिस सक [**समा+दिश्**] आज्ञा करना। संकृ—**समादिसिअ**; (नाट)।

समादेस देखो **समाएस**; (नाट—मालती ४६)।

समाधारणया स्त्री [**समाधारणा**] समान भाव से स्थापन; (उत्त २६, १)।

समाधि देखो **समाहि**; (ठा १०—पत्र ४७३)।

समापणा स्त्री [**समापना**] समाप्ति: (विसे ३५६५)।

समाभरिअ वि [**समाभरित**] आभरण-युक्त; (अणु २५३)।

समाय पु [**समाज**] १ सभा, परिषत्; (उत्त ३०, १७; अच्चु ४)। २ पशु-भिन्न अन्यों का समूह, संघात; ३ हाथी; (षड्)।

समाय पुं [**समाय**] सामायिक, सयम-विशेष: (विसे १४२१)।

समाय देखो **समवाय**; "एते चेव य दोसा पुरिससमाएवि इत्थियाणंपि" (सूअनि ६३; राज)।

समायं देखो **समयं**; (भग २६, १—पत्र ६४०)।

समायण्ण सक [**समा+कर्णय**] सुनना। संकृ—**समायण्णिऊण**; (महा)।

समायण्णण न [**समाकर्णन**] श्रवण. (गउड)।

समायण्णिय वि [**समाकर्णित**] सुना हुआ, (काल)।

समायय सक [**समा+दद्**] ग्रहण करना, स्वीकार करना। समाययति, (उत्त ४, २)।

समायय देखो **समागय**; (भवि)।

समायर सक [**समा+चर्**] आचरण करना। समायरइ; (उवा; उव), समायरेसि, (निसा ५)। कृ—**समायरियव्व**; (उवा)।

समायरिय वि [**समाचरित**] आचरित, (गउड)।

समाया देखो **समादा**। संकृ—**समायाय**; (आचा १, ३, १, ४)।

समायाय वि [**समायात**] समागत, (उप ७२८ टी)।

समायार पुं [**समाचार**] १ आचरण; (विपा १, १—पत्र १२)। २ सदाचार. (अणु १०२)। ३ वि. आचरण करने वाला; (णादि ५२)।

समार सक [**समा+रचय्**] १ ठीक करना, दुरुस्त करना। २ करना, बनाना। समारइ. (हे ४, ९५; महा)। भूका—समारीअ; (कुमा)। वकृ—**समारंत**; (पउम ६८, ४०)।

समार सक [**समा+रभ्**] प्रारंभ करना। समारइ; (षड्)।

समार वि [**समारचित**] बनाया हुआ, 'अद्धसमारम्मि जरकुडीरम्मि" (सुर २, ६६)।

समारंभ सक [**समा+रभ्**] १ प्रारम्भ करना। २ हिंसा करना। समारंभेज्जा; (आचा)। वकृ—**समारंभंत**, **समारंभमाण**; (आचा)। प्रयो—समारंभावेज्जा; (आचा)।

समारंभ पुं [**समारम्भ**] १ पर-परिताप, हिंसा; (आचा; पराह १, १—पत्र ५; श्रा ७), "परितावकरो भवे समारंभो" (संबोध ४१)। २ प्रारंभ; (कप्पू)।

समारवण } न [**समारचन**] १ ठीक करना, दुरुस्त
समारण } करना; "कारेइ जिणहराणं समारणं जुणणभग्गपडियाणं" (पउम ११, ३)। २ वि. विधायक, कर्ता; (कुमा)।

समारद्ध देखो **समाढत्त**; (सुर १, १; स ७६४)।

समारभ } देखो **समारंभ**=समा+रभ्। समारभे, समारभेज्जा,
समारह } समारभेज्जासि, समारहइ; (सूअ १, ८, ५; पि ४६०; षड्)। संकृ—**समारब्भ**; (पि ५९०)।

समारिय वि [**समारचित**] दुरुस्त किया हुआ; (कुप्र ३३४)।

समारुह सक [**समा+रुह्**] आरोहण करना, चढ़ना। समारुहइ; (भवि; पि ४८२)। वकृ—**समारुहंत**; (गा ११)। संकृ—**समारुहिय**; (महा)।

समारुहण न [**समारोहण**] आरोहण, चढ़ना; (सुपा २५३)।

समारूढ वि [**समारूढ**] चढा हुआ; (महा)।

समारोव सक [**समा+रोपय्**] चढ़ाना। संकृ—**समारोविय**; (पि ५९०)।

समालंकार } देखो **समलंकार**=समलं+कारय्। समालं-
समालंके } कारेइ, समालंकेइ; (औप; आचा २, १५, १८)। संकृ—**समालंकारेत्ता, समालंकेत्ता**; (औप; आचा २, १५, १८)।

समालंब पु [**समालम्ब**] आलम्बन, सहारा; (संबोध ४०)।

समालंभण न [**समालम्भन**] अलंकरण, विभूषा करना; "मंगलसमालंभणाणि विरएमि" (अभि १२७)। देखो **समालभण**।

समालत्त वि [**समालपित**] उक्त, कथित; "पवणंजओ समालत्तो" (पउम १५, ८८)।

समालभण न [**समालभन**] विलेपन, अंगराग; (सुर १६, १४)। देखो **समालंभण**।

समालव सक [**समा+लप्**] विस्तार से कहना। समालवेज्जा; (सूअ १, १४, २४)।

समालवणी स्त्री [**समालपनी**] वाद्य-विशेष; "वेणुवीणा-

समालवणिरवसुदरं भल्लरिघोससंमीसखरमुहिसर" (सुपा ५०)।
समालविय देखो **समालत्त**; (भवि)।
समालह सक [**समा+लभ्**] १ विलेपन करना। २ विभूषा करना, अलंकार पहनना। संकृ—**समालहिवि** (अप); (भवि)।
समालहण देखो **समालभण**; (सुपा १०८; दस ३, १ टी; नाट—शकु ७३)।
समालाव पुं [**समालाप**] बातचीत, संभाषण; (पउम ३०, ३)।
समालिंगिय वि [**समालिङ्गित**] आलिंगित, ... (भवि)।
समालीढ वि [**समाश्लिष्ट**] ऊपर देखो; (भवि)।
समालोव पु [**समालोच**] विचार, विमर्श, (३६९)।
समालोयण न [**समालोचन**] सामान्य अर्थ का (विसे २७६)।
समाव सक [**सम्+आप्**] पूरा करना। समावेइ; १४२)। कर्म—समप्पइ; (हे ४, ४२२)।
समावज्जिय वि [**समावर्जित**] प्रसन्न किया (महा)।
समावड अक [**समा+पत्**] १ संमुख । गिरना। २ लगना। ३ सबन्ध करना। (भवि)।
समावडण न [**समापतन**] पड़ना, गिरना;
समावडिय वि [**समापतित**] १ संमुख हुआ; (सुर २, ९; सुपा २०३)। २ बद्ध; होने लगा हो वह; "समावडिय जुद्ध " (
समावण्ण वि [**समापन्न**] संप्राप्त; (
समावत्ति स्त्री [**समावाप्ति**] समाप्ति, समावत्तीए विहरंता" (सुख २, ७)।
समावद सक [**समा+वद्**] बोलना देजा; (आचा १, १५, ५४)।
समावन्न देखो ... पत्त ३८; दस ५, २,
समावय देखो ... ५)।
समावय देखो

त. २ वृद्धि; (हे २८)। °ल वि

। ...त्त १५९)।

...चक।

...ग-कीलक. गाडी की ... लकडी का खीला,

...लइ; (पड्)।
..., लकडी; (अत ११, पउम

...ोष, छोंकर का पेड, (सूअ १, २, टी; वज्जा १५०)। २ शिवा,
...खल्लय न [**दे**] छोंकर की पत्ती, ..., (सूअ १, २, २, १९ टी; बृह १)।
... (नाट—मालवि ५)।
...कृत] समान किया हुआ; "जं किंचि ... समीकत" (सूअ १, ३, २, ८; गउड)।
... [**समीचीन**] साधु, सुन्दर, शोभन; (नाट—

... [**सम्+ईरय्**] प्रेरणा करना। समीरए; (आचा ..., १७)।
... [**समीर**] पवन, वायु; (पाअ; गउड)।
... पु [**समीरण**] ऊपर देखो; (गउड)।
... देखो **संमील**। समीलइ; (पड्)।
...व वि [**समीप**] निकट, पास; (पउम ९९. ८; ...हा)।
...मोह सक [**सम्+ईह्**] चाहना, वाछा करना। वकृ—**समीहमाण**; (उप ३२० टी)।
समीहा स्त्री [**समीहा**] इच्छा, वाछा, (उप १०३१ टी)।
समीहिय वि [**समीहित**] इष्ट, वाछित; (महा)।
समीहिय देखो **समिक्खिअ**; (वव ३)।
...**मुआचार** पु [**समुदाचार**] समीचीन आचरण: (दे २, ...)।
...] योग्य, उचित; (से १३, ६८;

...] १ परिवृत; "गुणसमुइओ" (उव;

समासीण वि [**समासीन**] बैठा हुआ; (महा) ।

समाहट्टु देखो **समाहर** ।

समाहड वि [**समाहृत**] १ विशुद्ध, निर्मल. "असमाहडाए लेस्साए" (आचा २, १, ३, ६) । २ स्वीकृत, (राज)।

समाहय वि [**समाहत**] आघात-प्राप्त, आहत; (औप; सुर ४, १२७; सरण) ।

समाहर सक [**समा + हृ**] १ ग्रहण करना । २ एकत्रित करना । संकृ—**समाहट्टु**; (सूअ १, ८, २६, १, १०, १५). **समाहरित्ति** (अप); (भवि) ।

समाहविअ वि [**समाहूत**] आहूत, बुलाया हुआ; (धर्मवि ६०) ।

समाहाण न [**समाधान**] १ समाधि; (उप ३२० टी)। २ औत्सुक्य-निवृत्ति रूप स्वास्थ्य, मानसिक शान्ति, चित्त-स्वस्थता; (अरणु १३६; सुपा ५४८) ।

समाहार पुं [**समाहार**] १ समूह; "छद्दव्वसमाहारो भाविज्जइ एस जियलोओ" (श्रु ११५) । °**दंद** पु [°**द्वन्द्व**] व्याकरण-प्रसिद्ध समास-विशेष; (चेइय ६६०)।

समाहारा स्त्री [**समाहारा**] १ दक्षिण रुचक पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८—पत्र ४३६; इक)। २ पक्ष की बारहवीं रात्रि; (सुज्ज १०, १४) ।

समाहि पुंस्त्री [**समाधि**] १ चित्त का स्वस्थता, मनोदुःख का अभाव, (सम ३७; उत्त १६, १; सुख १६, १; चेइय ७७७) । २ स्वस्थता; "साहाहि रुक्खो लभते समाहि छिन्नाहि साहाहि तमेव खाणु" (उत्त १४, २९) । ३ धर्म; ४ शुभ ध्यान, चित्त की एकाग्रता-रूप ध्यानावस्था; (सूअ १, १०, १; सुपा ८९) । ५ समता, राग आदि का अभाव; (टा १० टी—पत्र ४७४) । ६ श्रुत, ज्ञान; ७ चारित्र, सयमानुष्ठान; (ठा ४, १—पत्र १९५) । ८ पुं. भरतक्षेत्र के सतरहवें भावी तीर्थंकर; (सम १५४; पव ४६)। °**पडिमा** स्त्री [°**प्रतिमा**] समाधि-विषयक व्रत-विशेष; (ठा ४, १) । °**पाण** न [°**पान**] शक्कर आदि का पानी; (भत्त ४०)। °**मरण** न [°**मरण**] समाधि-युक्त मौत. (पडि) ।

समाहिअ वि [**समाहित**] १ समाधि-युक्त; (सूअ १, २, २, ४; सूअनि १०६; उत्त १६, १५; पउम ९०, २४; औप; महा)। २ अच्छी तरह व्यवस्थापित; ३ उपशमित; (आचा १, ८, ६, ३) । ४ समापित; (विसे ३५६३) । ५ शोभन, सुन्दर; ६ अ-बीभत्स; ७ निर्दोष; (सूअ १, ३, १, १०) ।

समाहिअ वि [**समाहृत**] गृहीत; (आचा १, ८, ५, २)।

समाहिअ वि [**समाख्यात**] सम्यग् कथित; (सूअ १, ६, २९; आचा २, १६, ४) ।

समाहुत्त (अप) नीचे देखो; (भवि) ।

समाहूअ वि [**समाहूत**] बुलाया हुआ, आकारित; (सार्ध १०५) ।

समाहे सक [**समा+धा**] स्वस्थ करना । "सुक्कज्झाण समाहेइ" (संबोध ५१) ।

समि स्त्री [**शमि**] देखो **समी**; (अरणु; पाअ) ।

समि ⎱ वि [**शमिन्**, °**क**] १ शम-युक्त; २ पु. साधु,
समिअ ⎰ मुनि; (सुपा ४३९; ६४२; उप १४२ टो) ।

समिअ देखो **संत**=शान्त; (सिरि ११०४) ।

समिअ वि [**समित**] सम्यक् प्रवृत्ति करने वाला, सावधान होकर गति आदि करने वाला; (भग; उप ६०४; कप्प; औप; उव; सूअ १, १६, २; पव ७२) । २ राग-आदि से रहित; (सूअ १, ६, ४) । ३ उपपन्न; (सुज्ज ९) । ४ सम्यग् गत; (सूअ १, ६, ४) । ५ संतत; (ठा २, २—पत्र ५८) । ६ सम्यग् व्यवस्थित; (सूअ २, ५, ३१) ।

समिअ वि [**सम्यञ्च्**] १ सम्यक् प्रवृत्ति वाला; (भग २, ५—पत्र १४०) । २ अच्छा, सुन्दर, शोभन, समीचीन; (सूअ २, ५, ३१) ।

समिअ वि [**शमित**] शान्त किया हुआ; (विसे २४५८; औप; पराह २, ५—पत्र १४८; सरण) ।

समिअ वि [**श्रमित**] श्रम-युक्त; (भग २, ५—पत्र १४०) ।

समिअ वि [**समिक**] सम, राग-द्वेष-रहित, "समियभावे" (पराह २, ५—पत्र १४९) ।

समिअ न [**साम्य**] समता, रागादि का अभाव, सम-भाव; (सूअ १, १६, ५; आचा १, ८, ८, १४) ।

समिअ वि [**संमित**] प्रमाणोपेत; (णाया १, १—पत्र ६२; भग) ।

समिअ वि [**सामित**] गेहूँ के आटा का बना हुआ पक्वान्न-विशेष, मराडक; (पिंड २४५) ।

समिअं अ [**सम्यग्**] अच्छी तरह; (आचा; पराह २, ३—पत्र १२३) ।

समिआ स्त्री. अ. ऊपर देखो; (भग २, ५—पत्र १४०

आचा १, ५, ५, ४). 'समियाए' (आचा १, ५, ५,४)।

समिआ स्त्री [**समिता**] गेहूँ का आटा; (णाया १, ८—पत्र १३२; सुख ४, ५)।

समिआ स्त्री [**समिका, शमिका, शमिता**] चमर आदि सब इन्द्रों की एक अभ्यन्तर परिषद्; (भग ३, १० टी—पत्र २०२)।

समिइ स्त्री [**समिति**] १ सम्यक् प्रवृत्ति, उपयोग-पूर्वक गमन-भाषण आदि क्रिया; (सम १०, ओघभा ३; उव; उप ६०२; रयण ४)। २ सभा, परिषद्; "नत्थि किर देवलोगेवि देवसमिईसु ओगासो" (विवे १३६ टी; तंदु २५ टी)। ३ युद्ध, लड़ाई; (रयण ४)। ४ निरन्तर मिलन; (अणु ४२)।

समिइ स्त्री [**स्मृति**] १ स्मरण; २ शास्त्र-विशेष, मनुस्मृति आदि; (सिरि ५५)।

समिइम वि [**समितिम**] गेहूँ के आटे की बनी हुई मंडक आदि, वस्तु; (पिंड २०२)।

समिंजग पुं [**समिञ्जक**] त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति; (उत्त ३६, १३९)।

समिक्ख सक [**सम्+ईक्ष्**] १ आलोचना करना, गुण-दोष-विचार करना। २ पर्यालोचन करना, चिन्तन करना। ३ अच्छी तरह देखना, निरीक्षण करना। समिक्खए; (उत्त २३, २५)। संकृ—**समिक्ख**; (सूअ १, ६, ४; उत्त ६, २; महा; उपपं २५)।

समिक्खा स्त्री [**समीक्षा**] पर्यालोचना; (सूअ १, ३, ३, १४)।

समिक्खिअ वि [**समीक्षित**] आलोचित; (धर्मसं ११११)।

समिच्च देखो **समे**।

समिच्छण न [**समीक्षण**] समीक्षा; (भवि)।

समिच्छिय देखो **समिक्खिअ**; (भवि)।

समिज्झा अक [**सम्+इन्ध्**] चारों तरफ से चमकना। समिज्झाइ; (हे २, २८)। वकृ—**समिज्झन्त**; (कुमा ३, ४)।

समिता देखो **समिआ**=समिका; (ठा ३, २—पत्र १२७; भग ३, १०—पत्र ३०२)।

समिद्ध वि [**समृद्ध**] १ अतिशय संपत्ति वाला; (औप; णाया १, १ टी—पत्र १); २ वृद्ध, बढ़ा हुआ; (प्रासू १३)।

समिद्धि स्त्री [**समृद्धि**] १ अतिशय संपत्ति; २ वृद्धि; (हे १, ४४; पड्; कुमा; स्वप्न ६५; प्रासू १२८)। °**ल** वि [°**ल**] समृद्धि वाला; (सुर १, ४६)।

समिर पु [**समिर**] पवन, वायु; (सम्मत्त १५६)।

समिरिईअ } देखो **स-मिरिईअ**=समरीचिक।
समिरीय }

समिला स्त्री [**शमिला, शम्या**] युग-कीलक, गाडी की धोंसरी में दोनों ओर डाला जाता लकड़ी का खीला; (उप पृ १३८; सुपा २५८)।

समिल्ल देखो **संमिल्ल**। समिल्लइ; (पड्)।

समिहा स्त्री [**समिध्**] काष्ठ, लकड़ी; (अत ११, पउम ११, ७६; पिंड ४४०)।

समी स्त्री [**शमी**] १ वृक्ष-विशेष, छोंकर का पेड़; (सूअ १, २, २, १६ टी; उप १०३१ टी; वज्जा १५०)। २ शिंबा, छिमी, फली; (पाअ)। °**खल्लय** न [**दे**] छोंकर की पत्ती, शमी वृक्ष का पत्र-पुट; (सूअ १, २, २, १६ टी, बृह १)।

समीअ देखो **समीव**; (नाट—मालवि ५)।

समीकय वि [**समीकृत**] समान किया हुआ; "ज किंचि अणग तात तंपि समीकतं" (सूअ १, ३, २, ८; गउड)।

समीचीण वि [**समीचीन**] साधु, सुन्दर, शोभन; (नाट—चैत ४७)।

समीर सक [**सम्+ईरय्**] प्रेरणा करना। समीरए; (आचा १, ८, ८, १७)।

समीर पु [**समीर**] पवन, वायु; (पाअ; गउड)।

समीरण पु [**समीरण**] ऊपर देखो; (गउड)।

समील देखो **संमील**। समीलइ; (पड्)।

समीव वि [**समीप**] निकट, पास; (पउम ६६, ८; महा)।

समीह सक [**सम्+ईह्**] चाहना, वाञ्छा करना। वकृ—**समीहमाण**; (उप ३२० टी)।

समीहा स्त्री [**समीहा**] इच्छा, वाञ्छा; (उप १०३१ टी)।

समीहिय वि [**समीहित**] इष्ट, वाञ्छित; (महा)।

समीहिय देखो **समिक्खिअ**; (वव ३)।

समुआचार पु [**समुदाचार**] समीचीन आचरण; (दे २, ६४)।

समुइअ वि [**समुचित**] योग्य, उचित; (से १३, ६८; महा)।

समुइअ वि [**समुदित**] १ परिवृत; "गुणसमुइओ" (उव;

स ३८६)। २ एकत्रित; (विसे २६२४)।

समुइन्न वि [**समुदीर्ण**] उदय-प्राप्त; (सुपा ६१४)।

समुईर देखो **समुदीर**। कर्म—"जह बुड्ढगाण मोहो समुईरइ किंनु तरुणाण" (गच्छ ३, १५)।

समुक्कस देखो **समुक्करिस**; (उत्त २३, ८८)।

समुक्कत्तिय वि [**समुत्कर्तित**] काट डाला हुआ; (सुर १४, ४५)।

समुक्करिस पुं [**समुत्कर्ष**] अतिशय उत्कर्ष; (उत्त २३, ८८; सुख २३, ८८)।

समुक्कस सक [**समुत्+कृष्**] १ उत्कृष्ट बनाना। २ अक. गर्व करना। समुक्कसेज्जा; (ठा ३, १—पत्र ११७), समुक्कसंति; (प्रासू १६५)।

समुक्किट्ठ वि [**समुत्कृष्ट**] उत्कृष्ट. (ठा ३. १—पत्र ११७)।

समुक्कित्तण न [**समुत्कीर्तन**] उच्चारण; (सुपा १४६)।

समुक्खअ वि [**समुत्खात**] उखाड़ा हुआ; (गा २७६)।

समुक्खण सक [**समुत्+खन्**] उखाड़ना। समुक्खणइ. (गा ६८४)। वकृ—**समुक्खणंत**. (सुपा ५४१)।

समुक्खणण न [**समुत्खनन**] उन्मूलन, उत्पाटन. (कुप्र १७४)।

समुक्खित्त वि [**समुत्क्षिप्त**] उठा कर फेंका हुआ; (से ११, ७२)।

समुक्खिव सक [**समुत्+क्षिप्**] उठा कर फेंकना। समुक्खिवइ; (पि ३१६; सण)।

समुग्ग पु [**समुद्ग**] १ डिब्बा, संपुट; (सम ६३; अणु; णाया १, १७ टी. धर्मवि १५ औप; पराण ३६—पत्र ८३७; महा)। २ पक्षि-विशेष; (जी २२. ठा ४. ४—पत्र २७१)।

समुग्गद (शौ) वि [**समुद्गत**] समुद्भूत समुत्पन्न; (नाट—मालती ११६)।

समुग्गम पु [**समुद्गम**] समुद्भव (नाट—रत्ना १३)।

समुग्गिअ वि [**दे**] प्रतीक्षित; (दे ८, १३)।

समुग्गिण्ण वि [**समुद्गीर्ण**] उगामा हुआ, उत्तोलित, ऊपर उठाया हुआ, (पउम १५, ७४)।

समुग्गिर सक [**समुद्+गॄ**] ऊपर उठाना, उगामना। वकृ—**समुग्गिरंत**; (पउम ६५, ४८)।

समुग्घडिअ वि [**समुद्घटित**] खुला हुआ; (धर्मवि १५)।

समुग्घाइअ वि [**समुद्घातित**] विनाशित; (प्रासू १६५)।

समुग्घाय पुं [**समुद्घात**] कर्म-निर्जरा विशेष, जिस समय आत्मा वेदना, कषाय आदि से परिणत होता है उस समय वह अपने प्रदेशों को बाहर कर उन प्रदेशों से वेदनीय, कषाय आदि कर्मों के प्रदेशों की जो निर्जरा—विनाश करता है वह; ये समुद्घात सात है;—वेदना, कषाय, मरण. वैक्रिय, तैजस, आहारक और केवलिक; (पराण ३६—पत्र ७९३; भग; औप; विसे ३०५०)।

समुग्घायण न [**समुद्घातन**] विनाश; (विसे ३०५०)।

समुग्घुट्ठ वि [**समुद्घोषित**] उद्घोषित; (सुर ११, २६)।

समुघाय देखो **समुग्घाय**; (दं ३)।

समुच्चय पु [**समुच्चय**] विशिष्ट राशि, ढग, समूह; (भग ८, ६—पत्र ३९५; भवि)।

समुच्चर सक [**समुत्+चर्**] उच्चारण करना, बोलना। समुचरइ; (चेइय ६४१)।

समुच्चलिअ वि [**समुच्चलित**] चला हुआ; (उप पृ ४८; भवि)।

समुच्चिण सक [**समुत्+चि**] इकट्ठा करना, संचय करना। समुच्चिणइ; (गा १०४)।

समुच्चिय वि [**समुच्चित**] एक क्रिया आदि में अन्वित; (विसे ५७६)।

समुच्छ सक [**समुत्+छिद्**] १ उन्मूलन करना, उखाड़ना। २ दूर करना। समुच्छे; (सूअ १, २, २, १३)। भवि—समुच्छिहिति; (सूअ २, ५, ४)। संकृ—**समुच्छित्ता**; (सूअ २, ४, १०)।

समुच्छइय वि [**समवच्छादित**] सतत आच्छादित; (पउम ६३, ७)।

समुच्छणी स्त्री [**दे**] संमार्जनी, झाड़ू; (दे ८, १७)।

समुच्छल अक [**समुत्+शल्**] १ उछलना, ऊपर उठना। २ विस्तीर्ण होना। समुच्छले; (गच्छ १, १५)। वकृ—**समुच्छलंत**; (सुर २, २३६)।

समुच्छलिअ वि [**समुच्छलित**] १ उछला हुआ; २ २ विस्तीर्ण; (गच्छ १, ६; महा)।

समुच्छारण न [**समुत्सारण**] दूर करना; (अभि ६०)।

समुच्छिअ वि [**दे**] १ तोषित, संतुष्ट किया हुआ; २ समारचित; ३ न. अंजलि-करण, नमन; (दे ८, ४६)।

समुच्छिर (शौ) वि [**समुच्छ्रित**] अति-उन्नत; (पि २८७)।

समुच्छिन्न वि [**समुच्छिन्न**] क्षीण, विनष्ट; (ठा ४,

१—पत्र १८७)।

समुच्छुंगिय वि [**समुच्छृङ्गित**] टोच पर चढा हुआ; (हम्मीर १५)।

समुच्छुग वि [**समुत्सुक**] अति-उत्कण्ठित; (सुर २, २१५; ४, १७७)।

समुच्छेद } पुं [**समुच्छेद**] सर्वथा विनाश; (ठा ८—
समुच्छेय } पत्र ४२५; राज)। °**वाइ** वि [°**वादिन्**] पदार्थ को प्रतिक्षण सर्वथा विनश्वर मानने वाला; (ठा ८—पत्र ४२५; राज)।

समुज्जम अक [**समुद्+यम्**] प्रयत्न करना। वकृ—**समुज्जमंत**; (पउम १०२, १७६; चेइय १५०)।

समुज्जम पुं [**समुद्यम**] १ समीचीन उद्यम; २ वि. समीचीन उद्यम वाला; (सिरि २४८)।

समुज्जल वि [**समुज्ज्वल**] अत्यन्त उज्ज्वल; (गउड; भवि)।

समुज्जाय वि [**समुद्यात**] १ निर्गत; (विसे २६०६)। २ ऊँचा गया हुआ; (कप्प)।

समुज्जोअ अक [**समुद्+द्युत्**] चमकना, प्रकाशना। वकृ—**समुज्जोयंत**; (पउम ११६, १७)।

समुज्जोअ पुं [**समुद्द्योत**] प्रकाश, दीप्ति; (सुपा ४०; महा)।

समुज्जोवय सक [**समुद्+द्योतय्**] प्रकाशित करना। वकृ—**समुज्जोवयंत**; (स ३४०)।

समुज्झ सक [**सम्+उज्झ्**] त्याग करना। संकृ—**समुज्झिऊण**; (वै ८७)।

समुट्ठा अक [**समुत्+स्था**] १ उठना। २ प्रयत्न करना। ३ ग्रहण करना। ४ उत्पन्न होना। संकृ—**समुट्ठिऊण**; (सण); **समुट्ठाए, समुट्ठिऊण**; (आचा १, २, २, १; १, २, ६, १, सण)।

समुट्ठाइ वि [**समुत्थायिन्**] सम्यग् यत्न करने वाला; (आचा)।

समुट्ठाइअ देखो **समुट्ठिअ**; (स १२५)।

समुट्ठाण न [**समुपस्थान**] फिर से वास करना। °**सुय** न [°**श्रुत**] जैन शास्त्र-विशेष; (णंदि २०२)।

समुट्ठाण न [**समुत्थान**] १ सम्यग् उत्थान; २ निमित्त, कारण; (राज)। देखो **समुत्थाण**।

समुट्ठिअ वि [**समुत्थित**] १ सम्यक् प्रयत्न-शील; (सूअ १, १४, २२)। २ उपस्थित; ३ प्राप्त; (सूअ १, ३, २, ६)। ४ उठा हुआ, जो खड़ा हुआ हो वह; (सुर १, ६६)। ५ अनुष्ठित, विहित; (सूअ १, २, २, ३१)। ६ उत्पन्न; (णाया १, ६—पत्र १५६)। ७ आश्रित; (राज)।

समुड्डीण वि [**समुड्डीन**] उडा हुआ; (वज्जा ६२; मोह ६३)।

समुण्णइय देखो **समुत्तइय**; (राज)।

समुत्त न [**संमुक्त**] १ गोत्र-विशेष; २ पुस्त्री. उस गोत्र मे उत्पन्न; "समुता(त्ता)" (ठा ७—पत्र ३६०)। देखो **संमुत्त**।

समुत्तइय वि [**दे**] गर्वित, (पिंड ४६५)।

समुत्तर सक [**समुत्+तृ**] १ पार जाना। २ अक. नीचे उतरना। ३ अवतीर्ण होना। समुत्तरइ; (गउड ६४१; १०६६)। संकृ—**समुत्तरेवि** (अप); (भवि)।

समुत्ताराविय वि [**समुत्तारित**] १ पार पहुँचाया हुआ; २ कूप आदि से बाहर निकाला हुआ; (स १०२)।

समुत्तास सक [**समुत्+त्रासय्**] अतिशय भय उपजाना। समुत्तासेदि (शौ); (नाट—मालती ११६)।

समुत्तिण्ण वि [**समवतीर्ण**] अवतीर्ण; (पउम १०६, ४२)।

समुत्तुंग वि [**समुत्तुङ्ग**] अति ऊँचा, (भवि)।

समुत्तुण वि [**दे**] गर्वित; (गउड)।

समुत्थ वि [**समुत्थ**] उत्पन्न; (स ४८; ठा ४, ४ टी—पत्र २८३; सुर २, २२५; सुपा ४७०)।

समुत्थइउं देखो **समुत्थय**=समुत्+स्थगय्।

समुत्थण न [**समुत्थान**] उत्पत्ति; (णाया १, ६—पत्र १५७)।

समुत्थय सक [**समुत्+स्थगय्**] आच्छादन करना, ढकना। हेकृ—**समुत्थइउं**; (गा ३६४ अ; पि ३०६)।

समुत्थय वि [**समवस्तृत**] आच्छादित; (कुप्र १६२)।

समुत्थल्ल वि [**समुच्छलित**] उछला हुआ; (स ५७८)।

समुत्थाण न [**समुत्थान**] निमित्त, कारण; (विसे २८२८)। देखो **समुट्ठाण**।

समुत्थिय देखो **समुट्ठिअ**; (भवि)।

समुदय पु [**समुदय**] १ समुदाय, संहति, समूह; (औप; भग; उवर १८६)। २ समुन्नति, अभ्युदय; (कुप्र २२)।

समुदाआर } देखो **समुआचार**; (स्वप्न ४५; नाट—शकु
समुदाचार } ७७; औप; स ५६५)।

समुदाण न [**समुदान**] १ भिक्षा; (औप)। २ भिक्षा-समूह; (भग)। ३ क्रिया-विशेष, प्रयोग-गृहीत कर्मों को प्रकृति-स्थित्यादि-रूप से व्यवस्थित करने वाली क्रिया; (सूअनि १६६)। ४ समुदाय; (आव ४)। °**चर** वि [°**चर**] भिक्षा की खोज करने वाला; (पण्ह २, १—पत्र १००)।

समुदाण सक [**समुदानय्**] भिक्षा के लिए भ्रमण करना। संकृ—**समुदाणेऊण**; (पण्ह २, १—पत्र १०१)।

समुदाणिय देखो **सामुदाणिय**; (औप; भग ७, १—पत्र २९३)।

समुदाणिया स्त्री [**सामुदानिकी**] क्रिया-विशेष, समुदान-क्रिया; (सूअनि १६८)।

समुदाय पुं [**समुदाय**] समूह; (अणु २७० टी; विसे ९२१)।

समुदाहिय वि [**समुदाहृत**] प्रतिपादित, कथित; (उत्त ३६, २१)।

समुदिअ देखो **समुइअ**=समुदित; (सूअनि १२१ टी; सुर ७, ५६)।

समुदिण्ण देखो **समुइन्न**; (राज)।

समुदीर सक [**समुद्+ईरय्**] १ प्रेरणा करना। २ कर्मों को खींच कर उदय में लाना, उदीरणा करना। वकृ—**समुद्दो**[?**दी**] **रेमाण**; (गाया १, १७—पत्र २२९)। संकृ—**समुदीरिऊण**; (सम्यक्त्वो ५)।

समुद्द पुं [**समुद्र**] १ सागर, जलधि; (पाअ; गाया १, ८—पत्र १३३; भग; से १, ७१; हे २, ८०; कप्पू; प्रासू ६०)। २ अन्धकवृष्णि का ज्येष्ठ पुत्र; (अंत ३)। ३ आठवें बलदेव और वासुदेव के पूर्व जन्म के धर्म-गुरु; (सम १५३)। ४ वेलन्धर नगर का एक राजा; (पउम ५४, ३९)। ५ शाण्डिल्य मुनि के शिष्य एक जैन मुनि; (णंदि ४९)। ६ वि. मुद्रा-सहित; (से १, २१)। °**दत्त** पुं [°**दत्त**] १ चौथे वासुदेव का पूर्वजन्मीय नाम; (सम १५३)। २ एक मच्छीमार का नाम; (विपा १, ८—पत्र ८२)। °**दत्ता** स्त्री [°**दत्ता**] १ हरिषेण वासुदेव की एक पत्नी; (महा ४४)। २ समुद्रदत्त मच्छीमार की भार्या; (विपा १, ८)। °**लिक्खा** स्त्री [°**लिक्षा**] द्वीन्द्रिय जंतु की एक जाति; (पण्ण १—पत्र ४४)। °**विजय** पुं [°**विजय**] १ चौथे चक्रवर्ती राजा का पिता; (सम १५२)। २ भगवान् अरिष्टनेमि का पिता; (सम १५१; कप्प; अंत)। °**सुआ** स्त्री [°**सुता**] लक्ष्मी; (समु १५२)। देखो **समुद्द**।

समुद्दणवणीअ न [**दे. समुद्रनवनीत**] १ अमृत, सुधा; २ चन्द्रमा; (दे ८, ५०)।

समुद्दव सक [**समुद्+द्रावय्**] १ भयंकर उपद्रव करना। २ मार डालना। समुद्दवे; (गच्छ २, ४)।

समुद्दहर न [**दे**] पानीय-गृह, पानी-घर; (दे ८, २१)।

समुद्दाम वि [**समुद्दाम**] अति उद्दाम, प्रखर; "थुई समुद्दामसद्देण" (चेइय ६५०)।

समुद्दिस सक [**समुद्+दिश्**] १ पाठ को स्थिर-परिचित करने के लिए उपदेश देना। २ व्याख्या करना। ३ प्रतिज्ञा करना। ४ आश्रय लेना। ५ अधिकार करना। कर्म—समुद्दिस्सइ; (उवा), समुद्दिस्सिज्जंति; (अणु ३)। संकृ—**समुद्दिस्स**; (आचा १, ८, २, १; २, २, १, ४; ५)। हेकृ—**समुद्दिसित्तए**; (ठा २, १—पत्र ५६)।

समुद्देस पुं [**समुद्देश**] १ पाठ को स्थिर-परिचित करने का उपदेश; (अणु ३)। २ व्याख्या, सूत्र के अर्थ का अध्यापन; (वव १)। ३ ग्रन्थ का एक विभाग, अध्ययन, प्रकरण, परिच्छेद; (पउम २, १२०)। ४ भोजन; "जत्थ समुद्देसकाले" (गच्छ २, ५६)।

समुद्देस वि [**सामुद्देश**] देखो **समुद्देसिय**; (पिंड २३०)।

समुद्देसण न [**समुद्देशन**] सूत्रों के अर्थ का अध्यापन; (णंदि २०९)।

समुद्देसिय वि [**समुद्देशिक**] १ समुद्देश-सबन्धी; २ विवाह आदि के उपलक्ष्य में किए गये जीमन में बचे हुए वे खाद्य पदार्थ जिनको सब साधु-सन्यासियों में बाँट देने का संकल्प किया गया हो; (पिंड २२९)।

समुद्धर सक [**समुद्+हृ**] १ मुक्त करना। २ जीर्ण मन्दिर आदि को ठीक करना। समुद्धरइ; (प्रासू ५)। वकृ—**समुद्धरंत**; (सुपा ४७०)। संकृ—**समुद्धरेऊण**; (सिक्खा ६०)। हेकृ—**समुद्धत्तुं**; (उत्त २५, ८)।

समुद्धरण न [**समुद्धरण**] १ उद्धार; २ वि. उद्धार करने वाला; (सण)।

समुद्धरिअ वि [**समुद्धृत**] उद्धार-प्राप्त; (गा ५९३; सण)।

समुद्धाइअ वि [**समुद्धावित**] समुत्थित, उठा हुआ; (स ५६६; ५६७)।

समुद्धाय अक [**समुद्+धाव्**] उठना। वकृ—**समुद्धा-**

यंत; (पराह १, ३—पत्र ४५)।
समुद्धिअ देखो **समुद्धरिअ**; (गच्छ ३, २६)।
समुद्दधुर वि [**समुद्दधुर**] दृढ, मजबूत; (उप १४२ टी)।
समुद्दधुसिअ वि [**समुद्दधुषित**] पुलकित, रोमाञ्चित; "घणागमे कयंबकुसुमं व समुग्धु(?द्धु)सियं सरीरं" (कुप्र २१०; स १८०; धर्मवि ४८)।
समुद्र पुं [**समुद्र**] १ एक देव-विमान; (देवेन्द्र १४३)। २—देखो **समुद्द**; (हे २, ८०)।
समुन्नइ स्त्री [**समुन्नति**] अभ्युदय; (सार्ध ८२)।
समुन्नद्ध वि [**समुन्नद्ध**] संनद्ध, सज्ज;
"जं नमिया सयलनिवा जिणस्स अच्चंतबलसमुन्नद्धा।
तेण विजएण रन्ना नमित्ति नामं विणिम्मवियं"
(चेइय ६१३)।
समुन्नय वि [**समुन्नत**] अति ऊँचा; (महा)।
समुपेह सक [**समुत्प्र+ईक्ष्**] १ अच्छी तरह देखना, निरीक्षण करना। २ पर्यालोचन करना, विचार करना। वकृ—**समुपेहमाण**; (सूअ १, १३, २३)। संकृ—**सपुपेहिया, समुपेहियाणं**; (दस ७, ५५; महा)।
समुप्पज्ज अक। [**सपुत् + पद्**] उत्पन्न होना। समुप्पज्जइ; (भग; महा) समुप्पज्जिज्जा; (कप्प)। भूका—समुप्पज्जित्था: (भग)।
समुप्पण्ण } वि [**समुत्पन्न**] उत्पन्न; (पि १०२; भग;
समुप्पन्न } वसु)।
समुप्पयण न [**समुत्पतन**] ऊँचा जाना, ऊर्ध्व-गमन, उड्डयन; (गउड)।
समुप्पाअअ वि [**समुत्पादक**] उत्पत्ति-कर्ता; (गा १८८)।
समुप्पाड सक [**समुत्+पादय्**] उत्पन्न करना। समुप्पाडेइ; (उत्त २६, ७१)।
समुप्पाय पुं [**समुत्पाद**] उत्पत्ति, प्रादुर्भाव; (सूअ १, १, ३, १०; आचा)।
समुप्पिंजल न [**दे**] अयश, अपकीर्त्ति; २ रज, धूली; (दे ८, ५०)।
समुप्पित्थ वि [**दे**] उत्त्रस्त, भय-भीत; (सुर १३, ४४)।
समुप्पेक्ख } देखो **समुपेह**। वकृ—**समुप्पेक्खमाण**,
समुप्पेह } **समुप्पेहमाण**; (राज; आचा १, ४, ४, ४)। संकृ—**समुप्पेहं**; (दस ७, ३)। देखो **समुवेक्ख**।

समुप्फालय वि [**समुत्पाटक**] उठा कर लाने वाला; "पहए जयसिरिसमुप्फालए मंगलतूरे" (स २२)।
समुप्फालिय वि [**समुत्फालित**] आस्फालित; (भवि)।
समुप्फुंद सक [**समा+क्रम्**] आक्रमण करना। वकृ—**समुप्फुंदंत**: (से ४, ४३)।
समुप्फोडण न [**समुत्स्फोटन**] आस्फालन; (पउम ६, १८०)।
समुब्भड वि [**समुद्भट**] प्रचंड, (प्रासू १०२)।
समुब्भव अक [**समुद्+भू**] उत्पन्न होना। समुब्भवति; (उपपं २५)।
समुब्भव पुं [**समुद्भव**] उत्पत्ति; (उव; भवि)।
समुब्भिय वि [**समूर्ध्वित**] ऊँचा किया हुआ, (सुपा ८८; भवि)।
समुब्भुय (अप) नीचे देखो; (सण)।
समुब्भूअ वि [**समुद्भूत**] उत्पन्न; (स ४७६; सुर २, २३५; सुपा २६५)।
समुयाण देखो **समुदाण**=समुदान; (विपा १, २—पत्र २५; ओघ १८४)।
समुयाण देखो **समुदाण**=समुदानय्। वकृ—**समुयाणित**; (सुख ३, १)।
समुयाणिअ देखो **समुदाणिय**; (ओघ ५१२)।
समुयाय देखो **समुदाय**; (राज)।
समुल्लव सक [**समुत्+लप्**] बोलना, कहना। समुल्लवइ; (सण)। वकृ—**समुल्लवंत**; (सुर २, २६)। कवकृ—**समुल्लविज्जंत**; (सुर २, २१७)।
समुल्लवण न [**समुल्लपन**] कथन, उक्ति; (से १२, ७४)।
समुल्लविअ वि [**समुल्लपित**] उक्त, कथित; (सुर २, १५१; ५, २३८; प्रासू ७)।
समुल्लस अक [**समुत्+लस्**] उल्लसित होना, विकसना। समुल्लसइ; (नाट—विक्र ७१)। वकृ—**समुल्लसंत**; (कप्प; सुर २, ८५)।
समुल्लसिय वि [**समुल्लसित**] उल्लास-प्राप्त; (सण)।
समुल्लालिय वि [**समुल्लालित**] उछाला हुआ; (णाया १, १८—पत्र २३७)।
समुल्लाव पुं [**समुल्लाप**] आलाप, संभाषण; (विपा १, ७—पत्र ७७; महा; णाया १, १६—पत्र १९६)।
समुल्लास पु [**समुल्लास**] विकास; (गउड)।

समुवइट्ठ वि [**समुपविष्ट**] बैठा हुआ; (उप २८८)।
समुवउत्त वि [**समुपयुक्त**] उपयोग-युक्त, सावधान; (जीवस ३६३)।
समुवगय वि [**समुपगत**] समीप आया हुआ; (ठव ४)।
समुवज्जिअ वि [**समुपार्जित**] उपार्जित, पैदा किया हुआ; (सुपा १००; सण)।
समुवत्थिय वि [**समुपस्थित**] हाजिर, उपस्थित; (उप ४३५)।
समुवयंत देखो **समुवे**।
समुवविट्ठ वि [**समुपविष्ट**] बैठा हुआ; (राय ७५)।
समुवसंपन्न वि [**समुपसंपन्न**] समीप में समागत; (धर्म ३)।
समुवहसिअ वि [**समुपहसित**] जिसका खूब उपहास किया गया हो वह; (सण)।
समुवागय वि [**समुपागत**] समीप में आगत; (णाया १, १६—पत्र १९६; सण)।
समुवे सक [**समुपा+इ**] १ पास में आना। २ प्राप्त करना। समुवेइ, समुवेंति (यति ४२; पि ४९३)। वकृ—**समुवयंत**; (स ३७०)।
समुवेक्ख } सक [**समुत्प्र+ईक्ष्**] १ निरीक्षण करना। २ व्यवहार करना, काम में लाना। वकृ—**समुवेक्खमाण, समुवेहमाण**; (णाया १, १—पत्र ११; आचा १, ५, २, ३)।
समुवेह }
समुव्वत्त वि [**समुद्वृत्त**] ऊँचा किया हुआ; (से ११, ५१)।
समुव्वत्तिय वि [**समुद्वर्तित**] घुमाया हुआ, फिराया हुआ; (सुर १३, ४३)।
समुव्वह सक [**समुद्+वह्**] १ धारण करना। २ ढोना। समुव्वहइ; (भवि; सण)। वकृ—**समुव्वहंत**; (से ६, २; नाट—रत्ना ८३)।
समुव्वहण न [**समुद्वहन**] सम्यग् वहन—ढोना; (उव)।
समुव्विग्ग वि [**समुद्विग्न**] अत्यन्त उद्वेग वाला; (गा ४६२)।
समुव्वूढ वि [**समुद्व्यूढ**] १ विवाहित; (उप पृ १२७)। २ उत्तानित, ऊँचा किया हुआ; (से ११, ६०)।
समुव्वेल्ल वि [**समुद्वेल्लित**] अत्यन्त कँपाया हुआ, संचालित; "गयजूहसमायड्ढियविसमसमुव्वेल्लकमलसंघायं" (पउम ९४, ५२)।

समुसरण देखो **समोसरण**; (पिंड २)।
समुस्सय पुं [**समुच्छ्रय**] १ ऊँचाई, ऊर्ध्वता; (सूअ २, ४, ७)। २ उन्नति, उत्तमता; (सूअ १, १५, ७)। ३ कर्मों का उपचय; (आचा)। ४ संघात, समूह, राशि, ढग; (दस ६, १७; अणु २०)।
समुस्सविय वि [**समुच्छ्रयित**] ऊँचा किया हुआ; (पउम ४०, ६)।
समुस्ससिय वि [**समुच्छ्वसित**] १ उल्लास-प्राप्त, "समुस्ससियरोमकूवा" (कप्प)। २ उच्छ्वास-प्राप्त; (पउम ६४, ३८)। देखो **समूससिअ**।
समुस्सिअ [**समुच्छ्रित**] ऊर्ध्व-स्थित, ऊँचा रहा हुआ; (सूअ १, ५, १, १५; पि ६४)।
समुस्सिणा सक [**समुत्+श्रु**] १ निर्माण करना, बनाना। २ संस्कार करना, सँवारना, जीर्ण मन्दिर आदि को ठीक करना। समुस्सिणासि, समुस्सिणामि; (आचा १, ८, २, १; २)।
समुस्सुग } देखो **समूसुअ**; (द्र ४८; महा)।
समुस्सुय }
समुह देखो **संमुह**; (हे १, २९; गा ६५९; कुमा; हेका ५१; महा; पाअ)।
समुहय वि [**समुद्धत**] समुद्घात-प्राप्त; (श्रावक ६८)।
समुहि देखो **स-मुहि**=श्व-मुखि।
समूसण न [**समूषण**] त्रिकटुक—सूँठ, पीपल तथा मरिच; (उत्तनि ३)।
समूसविय देखो **समुस्सविय**; (पण्ह १, ३—पत्र ४५)।
समूसस अक [**समुत्+श्वस्**] १ ऊँचा जाना। २ उल्लसित होना। ३ ऊर्ध्व श्वास लेना। समूससंति; (पि १४३)। वकृ—**समूससंत, समूससमाण**; (गा ६०४; गउड; से ११, १३२)।
समूससिअ न [**समुच्छ्वसित**] १ निःश्वास; (से ११, ५९)। २—देखो **समुस्ससिय**; (णाया १, १—पत्र १३; कप्प; गउड)।
समूसिअ देखो **समुस्सिअ**; (भग; औप; सूअ १, ५, १, ११ टी ; पण्ह १, ३—पत्र ४५)।
समूसुअ वि [**समुत्सुक**] अति उत्कंठित; (सुपा ४७७; नाट—विक्र ९२)।
समूह पुंन [**समूह**] समुदाय, राशि, संघात; "मंतीहि व उवसमियं भुयंगमाणं समूहं व" (पउम १०६, १५; औ

४०७; गउड; भवि)।

समूह (अप) देखो **समुह**; (भवि)।

समे सक [**समा+इ**] १ आगमन करना, आना, संमुख आना। २ जानना। ३ प्राप्त करना। ४ अक. संहत होना, इकट्ठा होना। समेइ, समेंति; (भवि; विसे २२६६)। वकृ—**समेमाण**; (आचा १, ८, १, २)। संकृ—**समिच्च, समेच्च**; (सूअ १, १२, ११; पि ५६१; आचा १, ६, १, १६; पंच ३, ४५)।

समेअ / **समेत** वि [**समेत**] १ समागत, समायात; "सीलवई परिगोउं गिहं समेओ महिड्ढीए" (श्रा १६)। २ युक्त, सहित; 'तेहि समेतो अहयं वयामि जा किंत्तियंपि भूभागं" (सुर १, १६६; ३, ८८; सुपा २५६; महा)।

समेर देखो **स-मेर**=स-मर्याद।

समोअर अक [**समव+तृ**] १ समाना, समावेश होना, अन्तर्भाव होना। २ नीचे उतरना। ३ जन्म-ग्रहण करना। समोअरइ; (अणु २४६; उव; विसे ६४५), समोअरंति; (सूअ २, २. ७६; अणु ५६)।

समोआर पुं [**समवतार**] अन्तर्भाव; (अणु २४६)।

समोइन्न वि [**समवतीर्ण**] नीचे उतरा हुआ; (सुर ७, १३४)।

समोगाढ वि [**समवगाढ**] सम्यग् अवगाढ; (औप)।

समोच्छइअ वि [**समवच्छादित**] आच्छादित, अतिशय ढका हुआ; (सुर १०, १५७)।

समोणम सक [**समव+नम्**] सम्यग् नमना—नीचा होना। वकृ—**समोणमंत**; (औप; सुर ६, २३७)।

समोणय वि [**समवनत**] अति नमा हुआ; (गा २८२)।

समोत्थइअ वि [**समवस्थगित**] आच्छादित, (से ६, ८४)।

समोत्थय वि [**समवस्तृत**] ऊपर देखो; (उप ७७३ टी)।

समोत्थर सक [**समव+स्तृ**] १ आच्छादन करना, ढकना। २ आक्रमण करना। वकृ—**समोत्थरंत**; (णाया १, १—पत्र २५; पउम ३, ७८)।

समोयार पुं [**समवतार**] अन्तर्भाव, समावेश; (विसे ६५६; अणु)।

समोयारणा स्त्री [**समवतारणा**] अन्तर्भाव; (विसे ६७३)।

समोयारिय वि [**समवतारित**] अन्तर्भावित, समावेशित; (विसे ६५६)।

समोलइय वि [**दे**] समुत्क्षिप्त; (गउड)।

समोलुग्ग वि [**समवरुग्ण**] रोगी, रोग-ग्रस्त; (से ३, ४७)।

समोवअ सक [**समव+पत्**] १ सामने आना। २ नीचे उतरना। वकृ—**समोवयंत, समोवयमाण**; (स १३६; ३३०)।

समोवइअ वि [**समवपतित**] नीचे उतरा हुआ; (णाया १, १६—पत्र २१३)।

समोसड्ड / **समोसढ** वि [**समवसृत**] समागत, पधारा हुआ; (सम्मत्त १२०; पि ६७; भग; णाया १, १—पत्र ३६; औप; सुपा ११)।

समोसर सक [**समव+सृ**] १ पधारना, आगमन करना। २ नीचे गिरना। समोसरेज्जा; (औप; पि २३५)। हेकृ—**समोसरिउं**°; (औप)। वकृ—**समोसरंत**; (से २, ३६)।

समोसर अक [**समप+सृ**] १ पीछे हटना। २ पलायन करना। समोसरइ; (काप्र १६६), समोसर; (हे २, १६७)। वकृ—**समोसरंत**; (गा १६२)।

समोसरण पुन [**समवसरण**] १ एकत्र मिलन, मेलापक, मेला; (सूअनि ११७, राय १३३)। २ समुदाय, समवाय, समूह; "समोसरण निचय उवचय चए य जुम्मे य रासी य" (ओघ ४०७)। ३ साधु-समुदाय, साधु-समूह; (पिंड २८५; २८८ टी)। ४ जहाँ पर उत्सव आदि के प्रसंग में अनेक साधु-लोग इकट्ठे होते हों वह स्थान; (सम २१)। ५ परतीर्थिकों का समुदाय, जैनेतर दार्शनिकों का समवाय; (सूअ १, १२, १)। ६ धर्म-विचार, आगम-विचार; (सूअ २, २, ८१; ८२)। ७ सूत्रकृताङ्ग सूत्र के प्रथम श्रुतस्कन्ध का बारहवाँ अध्ययन; (सूअनि १२०)। ८ पधारना, आगमन; (उवा; औप; विपा १, ७—पत्र ७२)। ९ तीर्थंकर-देव की पर्षद्; १० जहाँ पर जिन-भगवान् उपदेश देते हैं वह स्थान, (आवम; पंचा २, १७; ती ४३)। °**तव** पुं [°**तपस्**] तप-विशेष; (पव २७१)।

समोसरिअ वि [**समपसृत**] १ पीछे हटा हुआ; (गा ६५६; पउम १२, ६३)। २ पलायित; (से १०, ५)।

समोसरिअ वि [**समवसृत**] समायात, समागत; (से ७, ४१; उवा)।

समोसव सक [**दे**] टूकड़ा टूकड़ा करना। समोसवेंति;

(सूअ १, ५, २, ८)।

समोसिअ अक [**समव+सद्**] क्षीण होना, नाश पाना, नष्ट होना। वकृ—**समोसिअंत**; (से ८, ७)।

समोसिअ पुं [**दे**] १ प्रातिवेश्मिक, पडौसी; (दे ८, ४९; पाअ)। २ प्रदोष; ३ वि. वध्य, वध-योग्य; (दे ८, ४९)।

समोहण सक [**समुद्+हन्**] समुद्घात करना, आत्म-प्रदेशों को बाहर निकाल कर उनसे कर्म-निर्जरा करना। समोहणइ, समोहणंति; (कप्प; औप; पि ४९९)। संकृ—**समोहणित्ता**; (भग; कप्प; औप)।

समोहय वि [**समुद्धत**] जिसने समुद्घात किया हो वह; (ठा २, २—पत्र ६१)।

समोहय वि [**समवहत**] आघात-प्राप्त; (सुर ७, २८)।

सम्म अक [**श्रम्**] १ खेद पाना। २ थकना। सम्मइ; (उत्त १, ३७)।

सम्म अक [**शम्**] शान्त होना, ठण्ढा होना। सम्मइ; (धात्वा १५५)।

सम्म न [**शर्मन्**] सुख; (हे १, ३२; कुमा)।

सम्म वि [**सम्यञ्च्**] १ सत्य, सच्चा; (सूअ १, ८, २३; कप्प; सम्म ८७; वसु)। २ अ-विपरीत, अ-विरुद्ध; (ठा १—पत्र २७; ३, ४—पत्र १५९)। ३ प्रशंसनीय, श्लाघनीय; (कम्म ४, १४; पव ६)। ४ शोभन, सुन्दर; ५ संगत, उचित, व्याजबी; (सूअ २, ४, ३)। ६ सम्यग् दर्शन; (कम्म ४, ९; ४५)। °त्त न [°त्व] १ समकित, सम्यग्-दर्शन, सत्य तत्त्व पर श्रद्धा; (उवा; उव; पव ६३; जी ५०; कम्म ४, १४)। २ सत्य, परमार्थ; "सम्मत्त-दंसिणो" (आचा; सूअ १, ८, २३)। °दिट्ठिय, °दिट्ठीय वि [°दृष्टिक] सत्य तत्त्व पर श्रद्धा रखने वाला; (ठा १—पत्र २७; २, २—पत्र ५९)। °द्दंसण न [°दर्शन] सत्य तत्त्व पर श्रद्धा; (ठा १०—पत्र ५०३)। °द्दिट्ठि वि [°दृष्टि] देखो °दिट्ठिय; (सूअनि १२१)। °न्नाण न [°ज्ञान] सत्य ज्ञान, यथार्थ ज्ञान; (सम्म ८७; वसु)। °सुय न [°श्रुत] १ सत्य शास्त्र; २ सत्य शास्त्र-ज्ञान; (णादि) °ामिच्छद्दिट्ठि वि [°मिथ्यादृष्टि] मिश्र दृष्टि वाला, सत्य और असत्य तत्त्व पर श्रद्धा रखने वाला; (सम २६; ठा १—पत्र २८)। °ावाय पुं [°वाद] १ अविरुद्ध वाद; २ दृष्टिवाद, बारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ; (ठा १० - पत्र ४९१)। ३ सामायिक, संयम-विशेष; "सामाइयं समइयं सम्मावाओ समास सखेवो" (आव १)।

सम्मइ देखो **सम्मुइ**=सन्मति, स्वमति; (उत्त २८, १७; आचा)।

सम्मइग देखो **सामाइय**; (सबोध ४५)।

सम्मं अ [**सम्यग्**] अच्छी तरह; (आचा; सूअ १, १४, ११; महा)।

सम्मुइ स्त्री [**सन्मति**] १ संगत मति; २ सुन्दर बुद्धि, विशद बुद्धि; (उत्त २८, १७; सुख २८, १७; कप्प; आचा)। ३ पु. एक कुलकर पुरुष; (पउम ३, ५२)।

सम्मुइ स्त्री [**स्वमति**] स्वकीय बुद्धि; (आचा)।

सम्हरिअ वि [**संस्मृत**] अच्छी तरह याद किया हुआ; (अच्चु ३५)।

सय अक [**शी, स्वप्**] सोना, शयन करना। सयइ, सए, सएज्जा, (कप्प; आचा १, ७, ८, १३; २, २, ३, २५; २६), सयंति; (भग १३, ६—पत्र १७)। वकृ—**सयमाण**; (आचा २, २, ३, २६)। हेकृ—**सइत्तए**; (पि ५७८)। कृ—देखो **सयणिज्ज, सयणीअ**।

सय अक [**स्वद्**] पचना, जीर्ण होना, माफिक आना। सयइ; (आचा २, १, ११, १)।

सय अक [**स्रु**] झरना टपकना। सयइ; (सूअ २, २, ५६)।

सय सक [**श्रि**] सेवा करना। सयंति; (भग १३, ६—पत्र ६१७)।

सय देखो **स**=**सत्**; "वंदणिज्जो सयाण" (स ६९५)।

सय देखो **स**=**स्व**; (सूअ १, १, २, २३, णाया १, १४—पत्र १९०; आचा; उवा; स्वप्न १६)।

सय देखो **सग**=सप्तन्। °हत्तरि स्त्री [°सप्तति] सतहत्तर, ७७; (श्रा २८)।

सय अ [**सदा**] हमेशा, निरन्तर; "असवुडो सय करेइ कंदप्प" (उव)। °काल न [°काल] हमेशा, निरन्तर; (सुपा ८५)।

सय पुन [**शत**] १ संख्या-विशेष, सौ, १००; २ सौ की संख्या वाला; (उवा; उव; गा १०१, जी २६; द ६)। ३ बहुत, भूरि, अनल्प संख्या वाला; (णाया १, १—पत्र ६५)। ४ अध्ययन, ग्रन्थ-प्रकरण, ग्रन्थांश-विशेष; "विवाहपन्नत्तीए एकासीतिं महाजुम्मसया पन्नत्ता" (सम ८८)। °कंत न [°कान्त] १ रत्न-विशेष; २ वि. शत-कान्त रत्नों से बना हुआ; (देवेन्द्र २६८)। °कित्ति

पुं [°कीर्ति] एक भावी जिन-देव; (पव ४६), "सत्त (?य) कित्ती" (सम १५३)। °गुणिअ वि [°गुणित] सौगुना; (श्रा १०; सुर ३, २३२)। °ग्घी स्त्री [°घ्नी] १ यन्त्र-विशेष, पाषाण-शिला-विशेष; (सम १३७; अंत; औप)। २ चक्की, जाँता; (दे ८, ५ टी)। °ज्जल न [°ज्वल] १ वरुण का विमान; (देवेन्द्र २७०), देखो सयंजल। २ रत्न की एक जाति; ३ वि. शतज्वल-रत्नों का बना हुआ; (देवेन्द्र २६६)। ४ पुन. विद्युत्प्रभ-नामक वक्षस्कार पर्वत का एक शिखर; (इक)। °दुवार न [°द्वार] एक नगर; (अंत)। °धणु पुं [°धनुष्] १ ऐरवत वर्ष में होने वाला एक कुलकर पुरुष; (सम १५३)। २ भारत वर्ष में होने वाला दसवाँ कुलकर पुरुष; (ठा १०—पत्र ५१८)। °पई स्त्री [°पदी] क्षुद्र जन्तु की एक जाति; (श्रा२३)। °पत्त देखो °वत्त; (णाया १, १—पत्र ३८)। °पाग न [°पाक] एक सौ ओषधिओं से बनता एक तरह का उत्तम तेल; (णाया १, १—पत्र १६; ठा ३, १—पत्र ११७)। °पुप्फा स्त्री [°पुष्पा] वनस्पति-विशेष, सोया का गाछ; (पराण १—पत्र ३४; उत्तनि ३)। °पोर न [°पर्वन्] इक्षु, ऊख; (पव १७४ टी)। °बाहु पुं [°बाहु] एक राजर्षि; (पउम १०, ७४)। °भिसया, °भिसा स्त्री [°भिषज्] नक्षत्र-विशेष; (इक; पउम २०, ३८)। °यम वि [°तम] सौवाँ, १०० वाँ; (पउम १००, ६४)। °रह पुं [°रथ] एक कुलकर पुरुष; (सम १५०)। °रिसह पु [°वृषभ] अहोरात्र का तेईसवाँ मुहूर्त; (सुज्ज १०, १३)। °वई देखो °पई; (दे २, ६१)। °वत्त न [°पत्र] १ पद्म, कमल; (पाअ)। २ सौ पत्ती वाला कमल, पद्म-विशेष, (सुपा ४६)। ३ पक्षि-विशेष, जिसका दक्षिण दिशा में बोलना अपशुकन माना जाता है; (पउम ७, १७)। °सहस्स पुन [°सहस्र] सख्या-विशेष, लाख; (सम २; भग; सुर ३, २१, प्रासू ६; १३४)। °सहस्सइम वि [°सहस्रतम] लाखवाँ; (णाया १, ८—पत्र १३१)। °साहस्स वि [°साहस्र] १ लाख-संख्या का परिमाण वाला, (णाया १, १—पत्र ३७)। २ लाख रूप्या जिसका मूल्य हो वह; (पव १११; दसनि ३, १३)। °साहस्सि वि [°सहस्रिन्] लख-पति, लक्षाधीश; (उप पृ ३१५)। °साहस्सिय वि [°साहस्रिक] देखो °साहस्स; (स ३६६; राज)। °साहस्सी स्त्री [°सहस्री] लक्ष, लाख, (पि ४४७, ४४८)। °सिक्कर वि [°शर्कर] शत खंड वाला, सौ टुकडा वाला; (सुर ४, २२; १५३)। °हा अ [°धा] सौ प्रकार से, सौ टुकड़ा हो ऐसा; (सुर १४, २४२)। °हुत्तं अ [°कृत्वस्] सौ वार; (हे २, १५८; प्राप्र; षड्)। °ाउ पु [°ायुष्] १ एक कुलकर पुरुष का नाम; (सम १५०)। २ मदिरा-विशेष; (कुप्र १६०; राज)। °ाणिय, °ाणीअ पुं [°ानीक] एक राजा का नाम; (विपा १, ५—पत्र ६०; अंत; ती १०)।

सय° देखो सयं=स्वयं; "सयपालणा य एत्थं" (पचा ५, ३६)।

सयं देखो सइं=सकृत्; (वै ८८)।

सयं अ [स्वयम्] आप, खुद, निज; (आचा १, ६, १, ६; सुर २, १८७; भग; प्रासू ७८; अभि ५६; कुमा)। °कड वि [°कृत] खुदने किया हुआ; (भग)। °गाह पुं [°ग्राह] १ जबरदस्ती ग्रहण करना; २ विवाह-विशेष; (से १, ३४)। ३ वि. स्वयं ग्रहण करने वाला; (वव १)। °पभ पु [°प्रभ] १ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७८)। २ भारतवर्ष में अतीत उत्सर्पिणी काल मे उत्पन्न चौथा कुलकर पुरुष; (सम १५०)। ३ आगामी उत्सर्पिणी-काल में भारत मे होनेवाला चौथा कुलकर पुरुष; (सम १५३)। ४ आगामी उत्सर्पिणी काल मे इस भारतवर्ष मे होने वाले चौथे जिन-देव; (सम १५३)। ५ एक जैन मुनि जो भगवान् सभवनाथ के पूर्वजन्म में गुरू थे; (पउम २०, १७)। ६ एक हार का नाम; (पउम ३६, ४)। ७ मेरु पर्वत; (सुज्ज ५)। ८ नन्दीश्वर द्वीप के मध्य में पश्चिम-दिशा-स्थित एक अञ्जन-गिरि; (पव २६६ टी)। ६ न. एक नगर का नाम, राजा रावण के लिए कुवेर ने बनाया हुआ एक नगर; (पउम ७, १४६)। १० वि. आप से प्रकाश करने वाला; (पउम ३६, ४)। °पभा स्त्री [°प्रभा] १ प्रथम वासुदेव की पटरानी, (पउम २० १८६)। २ एक रानी का नाम; (उप १०३१ टी)। °पह देखो °पभ (पउम ८, २२)। °बुद्ध वि [°बुद्ध] अन्य के उपदेश के बिना ही जिसको तत्त्व-ज्ञान हुआ हो वह, (नव ४३)। °भु पु [°भु] १ ब्रह्मा; (पराह १, २—पत्र २८)। २ भारत में उत्पन्न तीसरा वासुदेव; (सम ६४)। ३ सतरहवें जिनदेव का गणधर—मुख्य शिष्य; (सम १५२)। ४ जीव, आत्मा, चेतन; (भग २०, २—

पत्र ७७६)। ५ एक महा-सागर, स्वयंभूरमण समुद्र; "जहा सयंभू उदहीण सेट्ठे" (सूअ १, ६, २०)। ६ पुन. एक देव-विमान; (सम १२)। देखो °भू। °भुगेहिणी स्त्री [°भुगेहिनी] सरस्वती देवी; (अच्चु २)। °भुरमण पु [°भुरमण] देखो °भूरमण; (पराह २, ४—पत्र १३०; पउम १०२, ६१; स १०७, सुज्ज १६, जी ३, २—पत्र ३६७; देवेन्द्र २५५)। °भुव, °भू पु [°भू] १ अनादि-सिद्ध सर्वज्ञ; "जय जय नाह सयंभुव" (स ६४७, उवर १२२)। २ ब्रह्मा; (पाअ; पउम २८, ४८; ता ७; से १४, १७)। ३ तीसरा वासुदेव; (पउम ५, १५५)। ४ रावण का एक योद्धा; (पउम ५६, २७)। ५ भगवान् विमलनाथ का प्रथम श्रावक, (विचार ३७८)। ६ कुच, स्तन; (प्राकृ ४०)। देखो °भु। °भूरमण पुं [°भूरमण] १ समुद्र-विशेष; २ द्वीप-विशेष; (जीव ३, २—पत्र ३६७; ३७०)। ३ एक देव-विमान; (सम १२)। °भूरमणभद्द पु [°भूरमणभद्र] स्वयंभूरमण द्वीप का एक अधिष्ठाता देव; (जीव ३, २—पत्र ३६७)। °भूरमणमहाभद्द पु [°भूरमणमहाभद्र] वही अर्थ; (जीव ३, २)। °भूरमणमहावर पु [°भूरमणमहावर] स्वयंभूरमण-समुद्र का एक अधिष्ठायक देव; (जीव ३, २—पत्र ३६७)। °भूरमणवर पु [°भूरमणवर] वही अनन्तर उक्त अर्थ; (जीव ३, २)। °वर पु [°वर] कन्या का स्वेच्छानुसार वरण, एक प्रकार का विवाह जिसमें कन्या निमन्त्रित विवाहार्थियों में से अपनी इच्छानुसार अपना पति वरण कर ले; (उव. गउड, अभि ३१)। °वरा स्त्री [°वरा] अपनी इच्छानुसार वरण करने वाली; (पउम १०६, १७)। °संबुद्ध वि [°संबुद्ध] स्वयं ज्ञात-तत्त्व; (सम १)।

सयंजय पु [**शतञ्जय**] पक्ष का तेरहवाँ दिवस. (सुज १०, १४)।

सयंजल पु [**शतञ्जल**] १ एक कुलकर-पुरुष; (सम १५०)। २ वरुण लोकपाल का विमान, (भग ३, ७—पत्र १९८), देखो **सय-ज्जल**। ३ ऐरवत वर्ष में उत्पन्न चौदहवें जिनदेव; (पव ७)।

सयंभरी स्त्री [**शाकम्भरी**] देश-विशेष; (मुणि १०८७३)।

सयग देखो **सयय**; (पव ४६; कम्म ५, १००)।

सयग्घी स्त्री [**दे**] जाँता, चक्की, पीसने का यन्त्र; (दे ८, ५)।

सयड पुंन [**शकट**] १ गाड़ी; (पउम २६, २१), "सयडो गती" (पाअ)। २ न. नगर-विशेष; (पउम ५, २७)। °मुह न [°मुख] उद्यान-विशेष जहाँ भगवान् ऋषभदेव को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ था; (पउम ४, १६)।

सयडाल देखो **सगडाल**, (कुप्र ४४८)।

सयण देखो **स-यण**=स्व-जन।

सयण न [**सदन**] १ गृह, घर; (गउड; सुपा ३६९)। २ अंग-ग्लानि, शरीर-पीड़ा; (राज)।

सयण न [**शयन**] १ वसति, स्थान; (आचा १, ९, १, ६)। २ शय्या, बिछौना; (गउड; कुमा; गा ३३)। ३ निद्रा; (कुमा ८, १७)। ४ स्वाप, सोना; (पराह २, ४; सुपा ३६९)।

सयणिज्ज न [**शयनीय**] शय्या, बिछौना; (णाया १, १४—पत्र १९०; गउड)।

सयणिज्जग देखो **स-यण**=स्व-जन; "सेहस्स सयणिज्जगा आगया" (ओघभा ३० टी)।

सयणीअ देखो **सयणिज्ज**; (स्वप्न ६२; ९८; सुर ३, ९०)।

सयण्ण देखो **सकण्ण**; (महा)।

सयण्ह देखो **स-यण्ह**=स-तृष्ण।

सयत्त वि [**दे**] मुदित, हर्षित; (दे ८, ५)।

सयन्न देखो **सकन्न**; (सुपा २८२)।

सयय वि [**सतत**] निरन्तर; (उव; सुर १, १३; महा)।

सयय पु [**शतक**] १ वर्तमान अवसर्पिणी-काल में उत्पन्न ऐरवत वर्ष के एक जिन-देव; (सम १५३)। २ आगामी उत्सर्पिणी में भारतवर्ष में होनेवाले एक जिनदेव के पूर्वजन्म का नाम, जो भगवान् महावीर का श्रावक था; (ठा ९—पत्र ४५५)। ३ न. सौ का समुदाय; (गा ७०९; अच्चु १०१)।

सयर देखो **सायर**=सागर; (विसे ११८७)।

सयरहं देखो **सयराहं**; (स ७६२)।

सयरा देखो **सक्करा**; "सयरं दहिं च दुद्धं तूरंतो कुणसु साहीणं" (पउम ११५, ८)।

सयराहं } अ [**दे**] १ शीघ्र, जल्दी; (दे ८, ११; कुमा; **सयराहा** } गउड; चेइय ६१०)। २ युगपत्, एक साथ; (विसे ६५६)। ३ अकस्मात्; (औप)।

सयरि देखो **सत्त-रि**=सप्तति; (पि २४५; ४४६)।

सयरी स्त्री [**शतावरी**] वृक्ष-विशेष, शतावर का गाछ; (पराग १—पत्र ३१)।
सयल न [**शकल**] खंड, टुकड़ा; (दे १, २८)।
सयल वि [**सकल**] १ संपूर्ण, पूरा, २ सब, समग्र; (गा ५३०; कुमा; सुपा १९७; दं ३६; जी १४; प्रासू १०८; १६४)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] 'श्रुतास्वाद' का कर्ता एक जैन मुनि; (श्रु १६६)। °**भूसण** पुं [°**भूषण**] एक केवलज्ञानी मुनि; (पउम १०२, ५७)। °**ादेस** पुं [°**ादेश**] सर्वापेक्षी वाक्य, प्रमाण-वाक्य; (अज्झ ६२)।
सयलि पुं [**शकलिन्**] मीन, मछली; (दे ८, ११)।
सयहत्थिय वि [**सौवहस्तिक**] १ स्व-हस्त से उत्पन्न; २ न. शस्त्र-विशेष; "महकालोवि नरिंदो मिल्हइ सयहत्थियं सहत्थेण" (सिरि ४५१; ४५२)।
सयाचार देखो **स-याचार** = सदाचार।
सयाचार देखो **सआ-चार**=सदा-चार।
सयाण देखो **स-याण**=स-ज्ञान।
सयालि पुं [**शतालि**] भारतवर्ष के भावी अठारहवें जिनदेव का पूर्वजन्मीय नाम; (पव ४६, सम १५४)। देखो भयालि।
सयालु वि [**शयालु**] सोने की आदत वाला, आलसी; (कुमा)।
सयावरी स्त्री [**सदावरी**] त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति; (उत्त ३६, १३९; सुख ३६, १३९)।
सयावरी देखो **सयरी**=शतावरी; (राज)।
सयास देखो **सगास**=सकाश; (काल, अभि १२५; नाट—मृच्छ ५२)।
सयासव वि [**शताश्रव, सदाश्रव**] सूक्ष्म छिद्र वाला; (भग)।
सय्यं देखो **सज्जं**=सद्यस्; "सय्यंभवुत्ति सय्यं भवोयहीपारगो जओ तेण" (धर्मवि ३८)।
सय्यंभव देखो **सज्जंभव**; (धर्मवि ३८)।
सय्ह देखो **सज्झ**=सह्य; (हे २, १२४; षड्)।
सर सक [**सृ**] १ सरना, खिसकना। २ अवलम्बन करना, आश्रय लेना। ३ अनुसरण करना। सरइ; (हे ४, २३४), सरेज्जा; (उपपं २५)। कृ—**सरणीअ**; (चउ २७), **सरेअव्व**; (सुपा ४१४)।
सर सक [**स्मृ**] याद करना। सरइ; ([illegible] ७४; गुरु १२; प्राप्र)। वकृ—**सरंत**; (सुपा ५६४ [illegible], (णाया १, ९—पत्र १६५; पउम ८, १६४; सुपा ३३९)। हेकृ—**सरित्तए**; (पि ५७८)। कृ—**सरणीअ, सरेअव्व, सरियव्व**; (चउ २७; धम्मो २०; सुपा ३०७)। प्रयो—सरयंति; (सूअ १, ५, १, १९)।
सर सक [**स्वर्**] आवाज करना। सरइ, सरंति; (विसे ४६२)।
सर पुंन [**शर**] १ बाण; "मज्झे सराणि वरिसयंति" (णाया १, १४—पत्र १९१; कुमा; सुर १, ६४; स्वप्न ५५)। २ तृण-विशेष; "सो सरवणे निलीणो रहिओ पक्खिव्व पच्छन्नो" (धर्मवि ९२; पराग १—पत्र ३३; कुप्र १०)। ३ छन्द-विशेष; ४ पाँच की संख्या; (पिंग)। °**पण्णी** स्त्री [°**पर्णी**] तृण-विशेष, मुन्ज का घास; (राज)। °**पत्त** न [°**पत्र**] अस्त्र-विशेष; (विसे ५१३)। °**पाय** न [°**पात**] धनुष; (सूअ १, ४, २, १३)। °**ासण** पुन [°**ासन**] धनुष; (विपा १, २—पत्र २४; पाअ; औप)। °**ासणपट्टी**, °**ासणवट्टिया** स्त्री [°**ासनपट्टी**, °**ासनपट्टिका**] १ धनुर्यष्टि, धनुर्दण्ड; २ धनुष खींचने के समय हाथ की रक्षा के लिए बाँधा जाता चर्मपट्ट—चमडे का पट्टा; (विपा १, २—पत्र २४; औप)। °**ासरि** न [°**ाशरि**] बाण-युद्ध; (सिरि १०३२)।
सर पु [**स्मर**] कामदेव; (कुमा; से ६, ४३)।
सर वि [**सर**] गमन-कर्ता; (दस ६, ३, ६)।
सर पु [**स्वर**] १ वर्ण-विशेष, 'अ' से 'औ' तक के अक्षर; (पराह २, २; विसे ४६१)। २ गीत आदि का ध्वनि, आवाज, नाद; (सुपा ५९; कुमा)। ३ स्वर के अनुरूप फलाफल को बताने वाला शास्त्र; (सम ४९)।
सर पुंन [**सरस्**] तडाग, तालाव; (से ३, ६; उवा; कप्प; कुमा; सुपा ३१९)। °**पंति** स्त्री [°**पङ्क्ति**] तडागपद्धति; (ठा २, ४—पत्र ८६)। °**रुह** न [°**रुह**] कमल, पद्म; (प्राप्र; हे १, १५६; कुमा)। °**सपंतिया** स्त्री [°**सर:पङ्क्ति**] श्रेणि-बद्ध रहे हुए अनेक तालाव; (पराह २, ५—पत्र १५०)।
सर देखो **सरय**=शरद्; (गा ७१२)। °**दिंदु** पुं [°**इन्दु**] शरद् ऋतु का चन्द्र; (सुर २, ७०; १६, २४६)।
[illegible] **ी** [**सरयू**] नदी-विशेष; (ठा ५, १—पत्र ३०८; [illegible] कस)।

सरंग (अप) पुं [**सारङ्ग**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

सरंब पुं [**शरम्ब**] हाथ से चलने वाले सर्प की एक जाति; (पराह १, १—पत्र ८)।

सरक्ख सक [**सं+रक्ष्**] अच्छी तरह रक्षण करना। सरक्खए; (सूत्र १, १, ४, ११ टि)।

सरक्ख वि [**सरजस्क, सरक्ष**] १ शैव-धर्मी, शिव-भक्त, भौत, शैव; (ओघ २१८; विसे १०४०; उप ६७७)। २ वि. रजो-युक्त; (आव ४)।

सरक्ख पुंन [**सद्रजस्**] १ धूलि, रज; "ससरक्खेहि पाएहिं" (दस ५, १, ७)। २ भस्म; (पिंड ३७; ओघ ३५६)।

सरग देखो **सरय**=शरक, (णाया १, १८—पत्र २४१)।

सरग वि [**शारक**] शर-तृण से बना हुआ (शूर्प आदि); (आचा २, १, ११, ३)।

सरगिका (अप) स्त्री [**सारङ्गिका**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

सरड पु [**सरट**] कृकलास, गिरगिट; (णाया १, ८—पत्र १३३; ओघ ३२३; पुप्फ २६७; दे ८, ११; उप पृ २६८, सुपा १७७)।

सरडु } न [**शलाटु, °क**] वह फल जिसमें अस्थि—
सरडुअ } गुठली न बँधी हो, कोमल फल; (पिंड ४४; आचा २, १, ८, ६, पि ८२, २५६)।

सरण पुंन [**शरण**] १ त्राण, रक्षा. (आचा; सम १; प्रासू १५६; कुमा)। २ त्राण-स्थान, (आचा कुमा २,४५)। ३ गृह, आश्रय, स्थान, "निवायसरणप्पईवमित्र चित्त" (संबोध ५१)। °**दय** वि [°**दय**] त्राण-कर्ता; (भग; पडि)। °**गय** वि [°**गत**] शरणापन्न; (प्रासू ५)।

सरण न [**स्मरण**] स्मृति, याद; (ओघ ८; विसे ५१८; महा; उप ५६२; औप; वि ६)।

सरण न [**स्वरण**] आवाज करना, ध्वनि करना; (विसे ४६१)।

सरण न [**सरण**] गमन, (राज)।

सरणि पुंस्त्री [**सरणि**] १ मार्ग, रास्ता; (पाअ; सुपा २; कुप्र २२), "सरलो सरणी समगं कहिओ" (सार्ध ७५)। २ आलवाल, क्यारी; (गउड)।

सरण्ण वि [**शरण्य**] शरण-योग्य, त्राण के लिए आश्रय-णीय; (सम १५३; पराह १, ४—पत्र ७२; सुपा २६१; अच्चु १५; संबोध ४८)।

सरत्ति अ [**दे**] शीघ्र, जल्दी, सहसा; (दे ८, २)।

सरद देखो **सरय**=शरत्; (प्राप्र)।

सरन्न देखो **सरण्ण**; (सुपा १८३)।

सरभ देखो **सरह**=शरभ; (भग; णाया १, १—पत्र ६५; पराह १, १—पत्र ७; गा ७४२; पिंग)।

सरभेअ वि [**दे**] स्मृत, याद किया हुआ; (दे ८, १३)।

सरमय पुं. ब. [**शर्मक**] देश-विशेष; (पउम ६८, ६५)।

सरय पुन [**शरद्**] ऋतु-विशेष, आसोज तथा कार्तिक का महिना; (पराह २, २—पत्र ११४; गउड; से १, २७; गा ५३४; स्वप्न ७०; कुमा; हे १, १८), "मुय माणं माणा पियं पियसरय जाव वच्चए सरय" (वज्जा ७४)। °**चंद** पु [°**चन्द्र**] शरद् ऋतु का चाँद; (णाया १, १—पत्र ३१)। देखो **सर**=शरद।

सरय पु [**शरक**] काष्ठ-विशेष, अग्नि उत्पन्न करने के लिए अरणि का काष्ठ जिससे घिसा जाता है वह; (णाया १, १८—पत्र २४१)।

सरय पुन [**सरक**] १ मद्य-विशेष, गुड़ तथा धातकी का बना हुआ दारू; (पराह २, ५—पत्र १५०; सुपा ४८५; गा ५५१ अ; कुप्र १०)। २ मद्य-पान; (वज्जा ७४)।

सरय देखो **स-रय**=स-रत।

सरय (अप) पुं [**सरस**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

सरल पुं [**सरल**] १ वृक्ष-विशेष; (पराण १—पत्र ३४)। २ ऋजु, माया-रहित; (कुमा; सण)। ३ सीधा, अ-वक्र; (कुमा; गउड)।

सरलिअ वि [**सरलित**] सीधा किया हुआ; (कुमा; गउड)।

सरली स्त्री [**दे**] चीरिका, क्षुद्र कीट-विशेष, झींगुर; (दे ८, २)।

सरलीआ स्त्री [**दे**] १ जन्तु-विशेष, साही, जिसके शरीर में काँटे होते है; २ एक जात का कीड़ा; (दे ८, १५)।

सरव पुं [**शरप**] भुजपरिसर्प की एक जाति; (सूत्र २, ३, २५)।

सरस वि [**सरस**] रस-युक्त; (औप; अंत; गउड)। °**रण्ण** पु [°**रण्य**] समुद्र, सागर, (से ६, ४३)।

सरसिज } न [**सरसिज**] कमल, पद्म, (हम्मीर ५१;
सरसिय } रंभा)।

सरसिरुह न [**सरसिरुह**] कमल, पद्म, (उप ७२८ टी; सम्मत्त ७६)।

सरसी स्त्री [**सरसी**] बड़ा तालाव—तडाग; (औप; उप पृ ३८; सुपा ४८५)। °रुह न [°रुह] कमल, (सम्मत्त १२०; १३९)।

सरस्सई स्त्री [**सरस्वती**] १ वाणी, भारती, भाषा, (पाअ; औप)। २ वाणी की अधिष्ठाती देवी, (सुर १, १५)। ३ गीतरति-नामक इन्द्र की एक पटरानी; (ठा ४, १—पत्र २०४; णाया २—पत्र २५२)। ४ एक राज-पत्नी; (विपा २, २—पत्र ११२)। ५ एक जैन साध्वी जो सुप्रसिद्ध कालकाचार्य की बहिन थी; (काल)।

सरह पुं [**शरभ**] १ शिकारी पशु की एक जाति, (सुपा ६३२)। २ हरिवंश का एक राजा; (पउम २२, ९८)। ३ लक्ष्मण के एक पुत्र का नाम, (पउम ९१, २०)। ४ एक सामन्त नरेश, (पउम ८, १३२)। ५ एक वानर; (से ४, ९)। ६ छन्द-विशेष; (पिंग)।

सरह पुं [**दे**] १ वृक्ष-विशेष, वेतस का पेड़; (दे ८, ४७)। २ सिंह, पञ्चानन, (दे ८, ४७; सुर १०. २२२)।

सरह (अप) वि [**श्लाघ्य**] प्रशंसनीय; (पिंग)।

सरहस देखो **स-रहस**=स-रभस।

सरहा स्त्री [**सरघा**] मधु-मक्षिका; (दे २, १००)।

सरहि पुंस्त्री [**शरधि**] तूणीर, तीर रखने का भाथा; (मे ७०)।

सरा स्त्री [**दे**] माला; (दे ८. २)।

सराग देखो **स-राग**=स-राग।

सराडि स्त्री [**शराटि, शराडि**] पक्षी की एक जाति; (गउड)।

सराव पुं [**शराव**] मिट्टी का पात्र-विशेष, सकोरा, पुरवा; (दे २, ४७; सुपा २९९)।

सरासण देखो **सर-ासण**=शरासन।

सराह वि [**दे**] दर्पोद्धुर, गर्व से उद्धत; (दे ८, ५)।

सराहय पुं [**दे**] सर्प, साँप; (दे ८, १२)।

सरि वि [**सदृश्**] सदृश, सरीखा, तुल्य; (भग; णाया १, १—पत्र ३९; अंत ५; हे १, १४२; कुमा)।

सरि स्त्री [**सरित्**] नदी; (से २, २९; सुपा ३५४; कुप्र ४३; भत्त १२३; महा)। °नाह पुं [°नाथ] समुद्र; (धर्मवि १०१)। देखो **सरिआ**।

सरिअ वि [**स्मृत**] याद किया हुआ, (पउम ३०, ५४; सुपा २२१; ४९२)।

सरिअ देखो **सरि**=सदृश्; "सोभेमाणा सरियं सपत्थिया थिरजसा देविदा" (औप)।

सरिअं न [**सृतम्**] अलं, पर्याप्त, बस; "बहुभणिएण सरिअं" (रयण ५०)।

सरिआ स्त्री [**सरित्**] नदी; (कुमा, हे १, १५; महा)। °वइ पुं [°पति] समुद्र; (से ७. ४१; ९, २)।

सरिआ स्त्री [**दे**] माला, हार; (पराह १, ४—पत्र ६८; कुप्र ३; सुपा ३४३)।

सरिक्ख } वि [**सदृक्ष**] सदृश, समान, तुल्य; (प्राकृ ८९;
सरिच्छ } प्राप्र; हे १, १४२; २, १७; कुमा)।

सरित्तु वि [**स्मर्तृ**] स्मरण-कर्ता; (ठा ९—पत्र ४४४)।

सरिभरी स्त्री [**दे**] समानता, सरीखाई, गुजराती में 'सरभर'; "तओ जाया दोराहवि सरिभरी" (महा १०)।

सरिर देखो **सरीर**; (पव २०५)।

सरिवाय पुं [**दे**] आसार, वेग वाली वृष्टि; (दे ८,१२)।

सरिस वि [**सदृश**] समान, सरीखा, तुल्य; (हे १, १४२; भग; उव; हेका ४८)।

सरिस पुंन [**दे**] १ सह, साथ;

"का समसीसी तियसिंदयाण वडवालणस्स सरिसम्मि।
उवसमियसिहीपसरो मयरहरो इंधणं जस्स ॥"
(वज्जा १५४)।

"आढत्तो संगामो बलवइणा तेण सरिसोत्ति" (महा)। २ तुल्यता, समानता; (संक्षि ४७), "अंतेउरसरिसेणं पलोइयं नरवरिंदेणं" (महा)।

सरिसरी देखो **सरिभरी**; (महा)।

सरिसव पुं [**सर्षप**] सरसों, (चंड; श्राव ४०९; सं ४४; कुमा; कम्म ४, ७४; ७५; ७७; णाया १, ५—पत्र १०७)।

सरिसाहुल वि [**दे**] समान, सदृश, (दे ८, ९)।

सरिस्सव देखो **सरीसव**; (पउम २०, ९२)।

सरी स्त्री [**दे**] माला, हार; (सुपा २३१)।

सरीर पुंन [**शरीर**] देह, काय, तनु; (सम ६७; उवा; कुमा; जी १२), "कइ णं भंते सरीरा पण्णत्ता" (पण्ण १२)। °णाम, °नाम पुन [°नामन्] कर्म-विशेष, शरीर का कारण-भूत कर्म, (राज; सम ६७)। °बंधण न [°बन्धन] कर्म-विशेष; (सम ६७)। °संघायण न [°संघातन] नाम कर्म का एक भेद; (सम ६७)।

सरीरि पुं [**शरीरिन्**] जीव, आत्मा; (पउम ११२, १७)।

सरीसव } **सरीसिव** } पुं [**सरीसृप**] १ सर्प, साँप; (खा ११; सूअ १, २, २, १४)। २ सर्प की तरह पेट से चलने वाला प्राणी; (सम ६०)।

सरूय } **सरूव** } देखो **स-रूय**=स्व-रूप।

सरूव देखो **स-रूव**=सद्-रूप, स-रूप।

सरूवि पुं [**स्वरूपिन्**] जीव, प्राणी; (ठा २, १—पत्र ३८)।

सरेअव्व देखो **सर**=स्मृ, स्मृ।

सरेवय पुं [**दे**] १ हंस; २ घर का जल-प्रवाह, मोरी; (दे ८, ४८)।

सरोअ न [**सरोज**] कमल, पद्म; (कुमा; अच्चु ४२; सुपा ५६; २११; कुप्र २६८)।

सरोरुह न [**सरोरुह**] ऊपर देखो; (प्राप्र, कुमा; कुप्र ३०४)।

सरोवर न [**सरोवर**] बड़ा तालाव, (सुपा २६०; महा)।

सलभ देखो **सलह**=शलभ; (राज)।

सलली स्त्री [**दे**] सेवा; (दे ८, ३)।

सलह सक [**श्लाघ्**] प्रशंसा करना। सलहइ; (हे ४, ८८)। कर्म—सलहिज्जइ, (पि १३२)। कृ—**सलहिज्ज**; (कुमा)। देखो **सलाह**।

सलह पु [**शलभ**] १ पतङ्ग. (पाअ; गउड; सुपा १४२)। २ एक वणिक्-पुत्र, (सुपा ६१७)।

सलहण न [**श्लाघन**] प्रशंसा, श्लाघा, (गा ११४; पि १३२)।

सलहत्थ पुं [**दे**] कुड़छी आदि का हाथा, (दे ८, ११)।

सलहिअ वि [**श्लाघित**] प्रशंसित; (कुमा)।

सलहिज्ज देखो **सलह**=श्लाघ्।

सलाग न [**शालाक्य**] चिकित्सा-शास्त्र—आयुर्वेद का एक अग, जिसमें श्रवण आदि शरीर के ऊर्ध्व भाग के संबन्ध में चिकित्सा का प्रतिपादन हो वह शास्त्र; (विपा १, ७—पत्र ७५)।

सलागा } **सलाया** } स्त्री [**शलाका**] १ सली, सलाई; (सूअ १, ४, २, १०; कप्पू)। २ पल्य-विशेष, एक प्रकार का नाप; (जीवस १३६; कम्म ४, ७३; ७५)। °**पुरिस** पुं [°**पुरुष**] २४ जिनदेव, १२ चक्रवर्ती, ९ वासुदेव, ९ प्रतिवासुदेव तथा ९ बलदेव ये ६३ महापुरुष; (संबोध ११)।

सलाह देखो **सलह**=श्लाघ्। सलाहइ; (प्राकृ २८)। वकृ—**सलाहमाण**; (गा ३४६; सम्म १५६)। कृ—**सलाहणिज्ज, सलाहणिय, सलाहणीअ**; (प्राकृ २८; णाया १, १६—पत्र २०१; सुर ७, १७१, रयण ३५; पउम ८२, ७३; पि १३२)।

सलाहण न [**श्लाघन**] श्लाघा, प्रशंसा; (गा ११४; उप पृ १०६)।

सलाहा स्त्री [**श्लाघा**] प्रशंसा; (प्राप्र; हे २, १०१; षड्)।

सलाहिअ देखो **सलहिअ**; (कुमा)।

सलिल पुंन [**सलिल**] पानी, जल; "सलिला ण सदंति ण वंति वाया" (सूअ १, १२, ७; कुमा; प्रासू ३५)। °**णिहि** पु [°**निधि**] सागर, समुद्र; (से ६, ९)। °**नाह** पु [°**नाथ**] वही; (पउम ९, ६६)। °**बिल** न [°**बिल**] भूमि-निर्झर, जमीन से बहता झरना; (भग ७, ६—पत्र ३०५)। °**रासि** पु [°**राशि**] वही; (पाअ)। °**वाह** पु [°**वाह**] मेघ; (पउम ४२, ३४)। °**हर** पु [°**धर**] वही, (से ६, ६४)। °**ावई**, °**ावती** स्त्री [°**ावती**] विजय-क्षेत्र-विशेष; (राज; णाया १, ८—पत्र १२१)। °**ावत्त** न [°**ावर्त**] वैताढ्य पर्वत पर उत्तर दिशा-स्थित एक विद्याधर-नगर; (इक)।

सलिला स्त्री [**सलिला**] महानदी, बडी नदी; (सम ११२)।

सलिलुच्छय वि [**सलिलोच्छ्रय**] प्लावित, डुबोया हुआ; (पाअ)।

सलिस अक [**स्वप्**] सोना, शयन करना। सलिसइ; (षड्)।

सलूण देखो **स-लूण**=स-लवण।

सलोग पुं [**श्लोक**] श्लाघा, प्रशंसा; (सूअ १, १३, १२)। देखो **सिलोग**।

सलोग देखो **स-लोग**=स-लोक।

सलोण देखो **स-लोण**=स-लवण।

सलोय देखो **सलोग**=श्लोक; (सूअ १, ९, २२)।

सल्ल पुन [**शल्य**] १ अस्त्र-विशेष, तोमर, साँग; "तओ सल्ला पण्णत्ता" (ठा ३, ३—पत्र १४७)। २ शरीर में घुसा हुआ काँटा, तीर आदि; (सूअ २, २, २०; पंचा

६, १६; आसू १२०)। ३ पापानुष्ठान, पाप-क्रिया; "पागडियसव्वसल्ला" (उव; सूअ १, १५, २४)। ४ पापानुष्ठान से लगने वाला कर्म, (सूअ १, १५, २४; वव १)। ५ पुं भरत के साथ दीक्षा लेने वाले एक राजा का नाम; (पउम ८५, २)। ६ न. छन्द-विशेष; (पिंग)। °ग वि [°क] शल्य वाला, शूल आदि शल्य से पीडित; (पराह २, ५—पत्न १५०)। °ग न [°ग] परिज्ञान, जानकारी; (सूअ २, २, ५७)।

सल्ल पुस्त्री [**दे**] हाथ से चलने वाले सर्प-जातीय जन्तु की एक जाति; (सूअ २, ३, २५)।

सल्लइय वि [**शल्यकित**] शल्य-युक्त, जिसको शल्य पैदा हुआ हो वह; (णाया १, ७—पत्न ११६)।

सल्लई स्त्री [**सल्लकी**] वृक्ष-विशेष; (णाया १, ७ टी—पत्न ११६; उप १०३१ टी; कुमा; धर्मवि १३०; सुपा २६१)।

सल्लग देखो **सल्ल-ग**=शल्य-क, शल्य-ग।

सल्लग देखो **स-ल्लग**=सत्-लग।

सल्लहत्त पुन [**शाल्यहत्य**] आयुर्वेद का एक अंग, जिसमें शल्य निकालने का प्रतिपादन किया गया हो वह शास्त्र; (विपा १, ७—पत्न ७५)।

सल्ला स्त्री [**शल्या**] एक महौषधि; (ती ५)।

सल्लिअ वि [**शल्यित**] शल्य-पीडित; (सुर १२, १५२; सुपा २२७; महा; भवि)।

सल्लिह देखो **संलिह**=सं+लिख्। सल्लिहदि; (आरा ३५)।

सल्लुद्धरण न [**शल्योद्धरण**] १ शल्य को बाहर निकालना; (विपा १, ८—पत्न ८६)। २ आलोचना, प्रायश्चित्त के लिए गुरु के पास दूषण-निवेदन; (ओघ ७६१)।

सल्लेहणा देखो **संलेहणा**; (आरा ३५; भवि)।

सल्लेहिय वि [**संलेखित**] क्षीण; "सल्लेहिया कसाया करंति मुणिणो ण चित्तसंखोहं" (आरा ३६)।

सव सक [**शप्**] १ शाप देना, आक्रोश करना, गाली देना। २ आह्वान करना। सवइ; (गा ३२४; ४००), सविमो, सवसु; (कुमा)। कर्म—सप्पए; (विसे २२२७)। वकृ—**सवमाण**; (उव)। कवकृ—**सप्पमाण**; (पराह १, ३—पत्न ५४)।

सव सक [**सू**] उत्पन्न करना, जन्म देना। सवइ; (हे ४, २३३; षड्)।

सव देखो **सो**=सु। सवइ, सवए; (षड्)।

सव सक [**स्रु**] झरना, टपकना, चूना। सवइ; (विसे १३६८)।

सव पु [**श्रवस्**] १ कान; २ ख्याति; "सवोमूओ" (प्राप्र)।

सव न [**शव**] शव, मुड़दा, मृत शरीर; (पाअ; स ७६३; सण)।

सवंती स्त्री [**स्रवन्ती**] नदी; (उप १०३१ टी)।

सवक्की देखो **सवत्ती**; (सुपा ३३७; ६०१; सूक्त ४६; महा; कुप्र १७०)।

सवक्ख देखो **स-वक्ख**=स-पक्ष।

सवग्गीय वि [**सवर्गीय**] सवर्ग-सबन्धी; (हास्य १३०)।

सवच देखो **स-पच**=श्व-पच।

सवज्जा देखो **सपज्जा**; (चेइय २०४; कप्पू)।

सवडंमुह } वि [**दे**] अभिमुख, संमुख; "सहसा सवडं-
सवडहुत्त } मुहो चलिओ" (महा; दे ८, २१; पउम ७२, ३२; भवि), उप्पइओ नहयलं विमाणत्थो अइ तारा सवडहुत्तो रणरसतपहालुओ सहसा" (पउम ८, ४७), "वच्चइ य दाहिणदिसं लंकानयरीसवडहुत्तो" (पउम ८, १३४)।

सवण देखो **समण**=श्रमण; (आरा ३६; भवि)।

सवण पु [**श्रवण**] १ कर्ण, कान; (पाअ; सुपा १२८)। २ नक्षत्र-विशेष; (सम ८, १५; सुज्ज १०, ५)। ३ न. आकर्णन, सुनना; (भग; सुर १, २४६)। देखो **सवन**।

सवण न [**शपन**] आह्वान; (विसे २२२७)।

सवण देखो **स-वण**=स-व्रण।

सवण न [**सवन**] कर्मों में प्रेरणा; (राज)।

सवणता } स्त्री [**श्रवणता**] १ आकर्णन, श्रवण,
सवणया } सुनना; (ठा २,१—पत्न ४६; ६—पत्न ३५५; णाया १, १—पत्न २९; भग; ओप)। २ अवग्रह-ज्ञान; (णंदि १७४)।

सवण्ण वि [**सवर्ण**] समान वर्ण वाला; (पउम २, ३१)।

सवण्ण न [**सावर्ण्य**] समान-वर्णता; (प्रयौ २०)।

सवत्त पु [**सपत्न**] १ दुश्मन, शत्रु, रिपु; (से ३, ५७; उप १०३१ टी; गउड)। २ वि. विरुद्ध; (ओघ २७६)। ३ समान, तुल्य; "सयवत्तसवत्तनयणरमणिज्जा" (कुप्र

२), "सयमेव ससिसवत्तं छत्तं उवरि ठिय तस्स" (कुम्म ११९)।

सवत्तिणी देखो सवत्ती. "सवि(? व)त्तिणी" (पिंड ५१०)।

सवत्तिया स्त्री [सपत्निका] नीचे देखो; (उवा)।

सवत्ती स्त्री [सपत्नी] पति की दूसरी स्त्री; (उवा; काप्र ८७१; स्वप्न ५७; ठा ४, ३—पत्र २४२; हेका ४५)।

सवन (मा) पुं [श्रवण] एक ऋषि का नाम, (मोह १०६)। देखो सवण=श्रवण।

सवन्न देखो सवण्ण; (हम्मीर १७)।

सवय देखो स-वय=स-वयस्, स-व्रत।

सवर देखो सवर; (पउम ९८, ६५; इक; कप्पू; पि २५०)।

सवरिआ देखो सपज्जा; (नाट—वेणी २६)।

सवल देखो सबल; (दे २, ५५; कुमा; हे १, १३७; रंभा)।

सवलिया स्त्री [दे] भरोंच का एक प्राचीन जैन मन्दिर; (मुणि १०८९९)।

सवह पुं [शपथ] १ आक्रोश-वचन, गाली; (णाया १, १—पत्र २९; देवेन्द्र ३५)। २ सोगन्ध, सौंह; (गा ३३३; महा)। ३ दिव्य, दोषारोप की शुद्धि के लिए किया जाता अग्नि-प्रवेश आदि; (पउम १०१, ७)।

सवाय पुं [दे] श्येन पक्षी; (दे ८, ७)।

सवाग } देखो स-वाग=श्व-पाक।
सवाय }

सवाय देखो स-वाय=स-पाद, स-वाद, सद्-वाच्।

सवार न [दे] सुबह, प्रभात; गुजराती में 'सवार'; (बृह १)।

सवास पुं [दे] ब्राह्मण; (दे ८, ५)।

सवास देखो स-वास=स-वास।

सविअ वि [शप्त] शाप-ग्रस्त, आक्रुष्ट; (दे १, १३; पाअ)।

सविउ पुं [सवितृ] १ सूर्य, रवि; (ओघ ६९७)। २ हस्त-नक्षत्र का अधिपति देव; (सुज्ज १०, १२)। ३ हस्त नक्षत्र; (अणु)।

सविक्ख वि [सापेक्ष] अपेक्षा रखने वाला; (सम्मत्त ७६)।

सविज्ज देखो स-विज्ज=स-विद्य।

सविट्ठा स्त्री [श्रविष्ठा] नक्षत्र-विशेष, धनिष्ठा नक्षत्र; (राज)।

सविण देखो सुमिण=स्वप्न; (पव ९८)।

सवितु देखो सविउ; (ठा २, ३—पत्र ७७)।

सविस न [दे] सुरा, दारू; (दे ८, ४)।

सविह न [सविध] पास, निकट; (पाअ)।

सव्व वि [सव्य] वाम, बाँया; (औप; उप पृ १३०)।

सव्व वि [श्रव्य] श्रवण-योग्य; "सव्वक्खरसंनिवाई" (भग १, १—पत्र ११)।

सव्व स [सर्व] १ सब, सकल, समस्त; २ सपूर्ण; (हे ३, ५८; ५९)। °ओ अ [°तस्] १ सब से; २ सब ओर से; (हे १, ३७; कुमा; आचा)। °ओभद्द वि [°तोभद्र] १ सब प्रकार से सुखी; २ न. सब प्रकार से सुख; (पंचू १)। ३ चक्र-विशेष, शुभाशुभ के ज्ञान का साधन-भूत एक चक्र; (ति ६)। ४ महाशुक्र देवलोक में स्थित एक विमान; (सम ३२)। ५ पाँचवाँ ग्रैवेयक विमान; (पव १९४)। ६ एक नगर का नाम; (विपा १, ५—पत्र ६१)। ७ अच्युतेन्द्र का एक पारियानिक विमान; (ठा १०—पत्र ५१८; औप)। ८ दृष्टिवाद का एक सूत्र; (सम १२८)। ९ पुं. यक्ष की एक जाति; (राज)। १० देव-विमान विशेष; (देवेन्द्र १३६; १४१)। °ओभद्दा स्त्री [°तोभद्रा] प्रतिमा-विशेष, एक व्रत; (औप; ठा २, ३—पत्र ६४; अंत २९)। °कामसमिद्ध पुं [°कामसमृद्ध] पक्ष का छठवाँ दिवस, षष्ठी तिथि; (सुज्ज १०, १४)। °कामा स्त्री [°कामा] विद्या-विशेष, जिसकी साधना से सर्व इच्छाएँ पूर्ण होती हैं; (पउम ७, १०७)। °गय वि [°गत] व्यापक; (अच्चु १०)। °गा स्त्री [°गा] उत्तर रुचक पर्वत पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८—पत्र ४३७)। °गुत्त वि [°गुप्त] एक जैन मुनि; (पउम २०, १९)। °ज्ज वि [°ज्ञ] १ सर्व पदार्थों का जानकार; २ पुं जिन भगवान्; ३ बुद्धदेव; ४ महादेव; ५ परमेश्वर; (हे २, ८३; षड्; प्राप्र)। °ट्ठ पुं [°र्थ] १ अहोरात्र का उनतीसवाँ मुहूर्त; (सुज्ज १०, १३)। २ पुन. सहस्रार देवलोक का एक विमान; (सम १०५)। ३ अनुत्तर देवलोक का सर्वार्थसिद्ध-नामक एक विमान; (पव १९०)। ४ पु. सब अर्थ; (आचा १, ८, ८, २५)। °ट्ठसिद्ध पुंन [°र्थसिद्ध] १ अहोरात्र का उनतीसवाँ मुहूर्त; (सम ५१)। २ एक

सर्व-श्रेष्ठ देव-विमान, अनुत्तर देवलोक का पाँचवाँ विमान; (सम २; भग; अंत; औप)। ३ पुं. ऐरवत वर्ष मे उत्पन्न होने वाले छठवें जिनदेव; (पव ७)। °ट्ठसिद्धा स्त्री [°र्थसिद्धा] भगवान् धर्मनाथजी की दीक्षा-शिविका; (विचार १२९)। °ट्ठसिद्धि स्त्री [°र्थसिद्धि] एक देव-विमान; (देवेन्द्र १३७)। °ण्णु देखो °ज्ज; (हे १, ५६; षड्; औप)। °त्त देखो °त्थ; (समु १५०)। °त्तो देखो °ओ; (पाअ)। °त्थ अ [°त्र] सब स्थान मे, सब में; (गउड; प्रासू ३९; ९८)। °दंसि, °दरिसि वि [°दर्शिन्] १ सब वस्तुओं को देखने वाला; २ पु. जिन भगवान्, अर्हन्; (राज; भग; सम १; पडि)। °देव पुं [°देव] १ एक प्रसिद्ध जैन आचार्य; (सार्ध ८०)। २ राजा कुमारपाल के समय का एक शेठ; (कुप्र १४३)। °द्दंसि देखो °दंसि; (चेइय ३५१)। °द्धा स्त्री [°द्धा] सब काल, अतीत आदि सर्व समय; (भग)। °धत्ता स्त्री [°धत्ता] व्यापक, सर्व-ग्राहक; (विसे ३४९१)। °न्नु देखो °ज्ज; (सम १; प्रासू १७०; महा)। °प्पग वि [°त्मक] १ व्यापक; २ पुं. लोभ; (सूअ १, १, २, १२)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] उत्तर रुचक पर्वत पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (राज)। °भक्ख वि [°भक्ष] सब को खाने वाला, सर्व-भोजी; "अग्गिमिव सव्वभक्खे" (णाया १, २—पत्त ७९)। °भद्दा स्त्री [°भद्रा] प्रतिज्ञा-विशेष, व्रत-विशेष; (पव २७१)। °भावविउ पु [°भावविद्] आगामी काल में भारत वर्ष में होने वाले बारहवें जिन-देव; (सम १५३)। °य वि [°द] सब देने वाला; (पगह २, १—पत्त ९९)। °या अ [°दा] हमेशा, सदा; (रंभा)। °रयण पुं [°रत्न] १ एक महा-निधि; (ठा ९—पत्त ४४९)। २ पुंन. पर्वत-विशेष का एक शिखर; (इक)। °रयणा स्त्री [°रत्ना] ईशानेन्द्र की वसुमित्रा-नामक इन्द्राणी की एक राजधानी; (इक)। °रयणामय वि [°रत्नमय] १ सब रत्नों का बना हुआ; (पि ७०; जीव ३, ४)। २ चक्रवर्ती का एक निधि; (उव ९८६ टी)। °विग्गहिअ वि [°विग्रहिक] सर्व-संक्षिप्त, सब से छोटा; (भग १३, ४—पत्त ६१६)। °विरइ स्त्री [°विरति] पाप-कर्म से सर्वथा निवृत्ति, पूर्ण संयम; (विसे २६८४)। °संजम पुं [°संयम] पूर्ण संयम; (राय)। °सह वि [°सह] सब सहन करने वाला, पूर्ण सहिष्णु; (पउम १४, ७९)। °सिद्धा स्त्री [°सिद्धा] पक्ष की चौथी, नववीं और चौदहवीं रात्रि-तिथि; (सुज्ज १०, १५)। °सो अ [°शस्] सब ओर से, सब प्रकार से; (उत्त १, ४; आचा)। °स्स न [°स्व] सकल द्रव्य, सब धन; (स ४५९; अभि ४०; कप्पू)। °हा अ [°था] सब प्रकार से, सब तरह से; (गा ८९७; महा; प्रासू ३; १८१)। °ाणंद पु [°ानन्द] ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिन-देव; (सम १५४)। °ाणुभूइ पुं [°ानुभूति] १ भारत वर्ष में होने वाले पाँचवें जिन भगवान्; (सम १५३)। २ भगवान् महावीर का एक शिष्य; (भग १५—पत्त ६७८)। °ारुहा स्त्री [°ारुहा] विद्या-विशेष; (पउम ७, १४४)। °ाव वि [°ाप] संपूर्ण; (भग)। °ासण पुं [°ाशन] अग्नि, आग; (हे ४, ३९५)।

सव्वंकस वि [**सर्वंकष**] १ सर्वातिशायी, सर्व से विशिष्ट; (कप्पू)। २ न. पाप; (आव)।

सव्वंग वि [**सर्वाङ्ग**] १ संपूर्ण; (ठा ४, २—पत्र २०८)। २ सर्व-शरीर-व्यापी; (राज)। °सुंदर त्रि [°सुन्दर] १ सर्व अंगों में श्रेष्ठ; २ पुंन. तप-विशेष; (राज; पव २७१)।

सव्वंगिअ } वि [**सर्वाङ्गीण**] सर्व अवयवों में व्याप्त; **सव्वंगीण** } (हे २, १५१; कुमा; से १५, ५४), "सव्वंगीणाभरणा पत्तेयं तेण ताणा कय" (कुप्र २३५; धर्मवि १४९)।

सव्वण देखो **स-व्वण** = स-व्रण।

सव्वराइअ वि [**सार्वरात्रिक**] संपूर्ण रात्रि से संबन्ध रखने वाला, सारी रात का; (सूअ २, २, ५५; कप्प)।

सव्वरी स्त्री [**शर्वरी**] रात्रि, रात; (पाअ; गा ६५३; सुपा ४९१)।

सव्वल पुं [**दे. शर्वल**] कुन्त, बर्छा; (राज; काल)। देखो **सब्बल**।

सव्वला स्त्री [**दे. शवला**] कुशी, लोहे का एक हथियार; (दे ८, ६)।

सव्ववेक्ख देखो **स-व्ववेक्ख**=स-व्यपेक्ष।

सव्वाव देखो **सव्व-ाव** = सर्वाप।

सव्वाव देखो **स-व्वाव** = स-व्याप।

सव्वावंति अ [**दे**] सर्व, सब, सपूर्ण; "एयावंति सव्वावंति लोगंसि" (आचा), "सव्वावंति च णं तीसे णं पुक्खरि-

वीए" (सूअ २, १, ५); " सव्वावंति च णं लोगंसि" (सूअ २, ३, १), "सव्वं ति सव्वावंति फुसमाणकालसमयंसि जावतिय खेत्तं फुसइ" (भग १, ६—पत्र ७७)।

सव्विड्ढि स्त्री [**सर्वर्द्धि**] सपूर्ण वैभव; (णाया १, ८—पत्र १३१)।

सव्विवर देखो **स-व्विवर**=स-विवर।

सव्वोसहि स्त्री [**सर्वौषधि**] १ लब्धि-विशेष, जिसके प्रभाव से शरीर की कफ आदि सब चीज ओषधि का काम करती है; (पराह २, १—पत्र ६६)। २ वि. लब्धि-विशेष को प्राप्त, (राज)।

सस अक [**श्वस्**] श्वास लेना, साँसना। ससइ; (रयण ६)। वकृ—**ससंत**; (णाया १, १—पत्र ६३; गा ५४६; सुर १२, १६४; नाट—मृच्छ २२०)।

सस पु [**शश**] खरगोश; (णाया १, १—पत्र २४; ६५)। °इंध पुं [°चिह्न] चन्द्रमा; (गउड)। °हर पु [°धर] चन्द्रमा; (णाया १, ११; सुर १६, ६०; हे ३, ८५; कुमा; वज्जा १६, रंभा)।

ससंक पु [**शशाङ्क**] १ चन्द्रमा, चाँद; (कप्प; सुर १६, ५५; सुपा २०; कप्पू; रंभा)। २ नृप-विशेष; (पउम ५, ४३; ८५, २)। °धम्म पु [°धर्म] विद्याधर-वंश का एक राजा; (पउम ५, ४४)।

ससंक देखो **स-संक**=स-शङ्क।

ससंकिअ देखो **स-संकिअ**=स-शङ्कित।

ससंग देखो **ससंक**=शशाङ्क।

ससंवेयण देखो **स-संवेयण**=स्व-संवेदन।

ससक्ख वि [**ससाक्ष्य**] साक्षी वाला; (राय १४०)।

ससग पु [**शशक**] देखो **सस**=शश; (उव)।

ससण पुं [**श्वसन**] १ शुण्डा-दण्ड, हाथी की सूँढ; (तंदु २०; औप)। २ वायु, पवन; ३ न. निश्वास; (राज)।

ससत्त देखो **स-सत्त**=स-सत्त्वा।

ससरक्ख वि [**सरजस्क, सरक्ष**] १ रजो-युक्त, धूली वाला; (आचा २, १, ६, ३; २, २, ३, ३३; आव ४)। २ पुं. बौद्ध मत का साधु; (सुज १८, ४३; महा)।

ससराइअ वि [**दे**] निष्पिष्ट, पिसा हुआ; (दे ८, २०)।

ससा स्त्री [**स्वसृ**] बहिन, भगिनी; (पिंड ३१७; हे ३, ३५; कुमा)।

ससि पुं [**शशिन्**] १ चन्द्रमा, चाँद; (सुज २०—पत्र २६१; उव; कप्प; कुमा; पि ४०५)। २ एक विद्यार्थी का नाम; (पउम ५, ६४)। ३ चन्द्र नाड़ी, वाम नाड़ी; (सिरि ३६१)। ४ एक देव-विमान; (देवेन्द्र १४३)। ५ छन्द-विशेष; (पिंग)। ६ एक राजा का नाम; (उव)। ७ दक्षिण रुचक पर्वत का एक कूट; (ठा ८—पत्र ४३६)। °अंत पु [°कान्त] चन्द्रकान्त मणि; (अच्चु ५८)। °अला स्त्री [°कला] चन्द्र की कला, सोलहवाँ भाग; (गउड)। °कंत देखो °अंत; (कुमा; सण)। °पभ, °पह पु [°प्रभ] १ आठवें जिनदेव, भगवान् चन्द्रप्रभ; २ इक्ष्वाकु वंश का एक राजा; (पउम ५, ५)। °प्पहा (पउम ८, ६१)। स्त्री [°प्रभा] एक रानी, कर्पूरमंजरी की माता; (कप्पू)। °मणि पुंस्त्री [°मणि] चन्द्रकान्त मणि; (से ६, ६७)। °लेहा स्त्री [°लेखा] चन्द्र की कला; (सुपा ६०३)। °वक्कय न [°वक्रक] आभूषण-विशेष; (औप)। °वेग पु [वेग] एक राज-कुमार; (उप १०३१ टी)। °सेहर पु [°शेखर] महादेव, शिव; (सुपा ३३)।

ससिअ न [**श्वसित**] श्वास, साँस; (से १२, ३२)।

ससिण देखो **ससि**; (कप्पू)।

ससिणिद्ध वि [**संस्निग्ध, सस्निग्ध**] स्नेह-युक्त; (आचा २, १, ७, ११; कप्प)।

ससित्थ न [**ससिक्थ**] आटा आदि से लिप्त हाथ या बरतन आदि का धोवन; (पडि)।

ससिरिय, **ससिरीय** } देखो **स-सिरिय**=स-श्रीक।

ससिह देखो **स-सिह**=स-स्पृह, स-शिख।

ससुर पुं [**श्वशुर**] ससुर, पति और पत्नी का पिता; (पउम १८, ८; हेका ३२; कुमा; सुपा ३७७)।

ससूग देखो **स-सूग**=स-शूक।

ससेस देखो **स-सेस**=स-शेष।

ससोग, **ससोगिल्ल** } देखो **स-सोग**=स-शोक।

सस्स न [**शस्य**] १ क्षेत्र-गत धान्य; (गा ६८६; महा; सुपा ३२)। २ वि. प्रशंसनीय, श्लाघ्य; (सुपा ३२)। देखो **सास**=शस्य।

सस्सवण वि [**सश्रवण**] सकर्ण, निपुण; (सुपा ६४५)।

सस्सिय पुं [**शस्यिक**] कृषीबल, कृषक; (राज)।

सस्सिरिअ देखो **स-स्सिरिअ**=स-श्रीक।

सस्सिरिली देखो **सिस्सिरिली**; (उत्त ३६, ९८)।
सस्सिरीअ देखो **स-स्सिरीअ**=स-श्रीक।
सस्सू स्त्री [**श्वश्रू**] सास, पति या पत्नी की माता; (प्राकृ ३८; सिरि ३५५)।
सह अक [**राज्**] शोभना, विराजना। सहइ; (हे ४, १००; पात्र; कुमा; सुपा ४)।
सह अक [**सह्**] सहन करना। सहइ, सहति; (उव; महा; कुमा), सहइरे, सहेइरे; (पि ४५८)। वकृ—**सहंत**, **सहमाण**; (महा; पड्)। संकृ—**सहिअ**; (महा)। हेकृ—**सहिउं, सोढुं**; (महा; धात्वा १५५; १५७)। कृ—**सहिअव्व, सोढव्व**; (धात्वा १५५; सुर १४, ८०; गा १८; कप्पू; उप ७२८ टी; धात्वा १५७)।
सह सक [**आ+ज्ञा**] हुकुम करना, आदेश करना, फरमाना। सहइ; (धात्वा १५५)।
सह वि [**दे**] १ योग्य, लायक; (दे ८, १)। २ सहाय, मदद-कर्ता; (सूत्र १, ३, २, ६)।
सह वि [**स्वक**] देखो **स**=स्व; (आचा)। °**देस** पुं [°**देश**] स्वदेश, स्वकीय देश; (पिंग)। °**संबुद्ध** वि [**संबुद्ध**] १ निज से ही ज्ञान को प्राप्त; २ पुं. जिन-देव; (औप)।
सह वि [**सह**] १ समर्थ, शक्तिमान; (पात्र; से ५, २३)। २ सहिष्णु, सहन-कर्ता; (आचा)। ३ पुं. युगलिक मनुष्य की एक जाति, (इक; राज)। ४ अ. साथ, संग; (स्वप्न ३४; आचा; जी ४३; प्रासू ३८)। ५ युगपत्, एक साथ, (राज)। °**कार** पुं [°**कार**] १ आम का पेड़, (कप्प)। २ साथ मिल कर काम करना; ३ मदद, साहाय्य; (हे १, १७७)। °**कारि** वि [°**कारिन्**] १ साहाय्य-कर्ता; (पंचा ११, १२)। २ कारण-विशेष; (विसे ११६८; श्रावक २०९)। °**गत**, °**गय** वि [°**गत**] संयुक्त, (पण्ण २२—पत्र ६३७; उव)। °**गारि, गारिअ** देखो °**कारि**; (धर्मसं ३०९; उप ४७२; उवर ७६)। °**चर** देखो °**यर**; (कुमा)। °**चरण** न [°**चरण**] सहचर, साथ रहना, मेलाप; "रयणिनिहाणेहिं भवउ सहचरणं" (श्रु ८४)। °**ज** पुं [°**ज**] १ स्वभाव; (कुमा; पिंग)। २ वि. स्वाभाविक; (चेइय ४७१)। °**जाय** वि [°**जात**] एक साथ उत्पन्न; (णाया १, ५—पत्र १०७)। °**देव** पुं [°**देव**] १ एक पाण्डव, माद्री-पुत्र; (धर्मवि ८१)। २ राजगृह नगर का एक राजा; (उप ६४८ टी)। °**देवा** स्त्री [°**देवा**] ओषधि-विशेष; (धर्मवि ८१)। °**देवी** स्त्री [°**देवी**] १ चतुर्थ चक्रवर्ती की माता; (सम १५२; महा)। २ एक महौषधि; (ती ५)। °**धम्मआरिणी** स्त्री [°**धर्म-चारिणी**] पत्नी, भार्या; (प्रति २२)। °**पंसुकीलिअ** वि [°**पांशुक्रीडित**] बाल-मित्र; (सुपा २५४; णाया १, ५—पत्र १०७)। °**य** देखो °**ज**; (चेइय ४४६; राज)। °**यर** वि [°**चर**] १ सहाय, साहाय्य-कर्ता; २ वयस्य, दोस्त; ३ अनुचर; (पात्र; कुप्र २; अच्चु ९०; नाट—शकु ६१)। °**यरी** स्त्री [°**चरी**] पत्नी, भार्या; (कुप्र १५१; से ९, ६६)। °**यार** देखो °**कार**; (पात्र; हे १, १७७)। °**राग** वि [°**राग**] राग-सहित; (पउम १४, ३४)। °**र** देखो °**कार**; (पउम ५३, ७९)।
सह° देखो **सहा**=सभा; (कुमा)।
सहउत्थिया स्त्री [**दे**] दूती; (दे ८, ९)।
सहगुह पुं [**दे**] घूक, उल्लू, पक्षि-विशेष; (दे ८, १६)।
सहडामुह न [**शकटामुख**] वैताढ्य की उत्तर श्रेणि में स्थित एक विद्याधर-नगर; (इक)।
सहण न [**सहन**] १ तितिक्षा, मर्षण; २ वि. सहिष्णु, सहन करने वाला; (सं २९)।
सहर पुंस्त्री [**शफर**] मत्स्य, मछली; (पात्र; गउड), स्त्री—°**री**; (हे १, २३६; गउड)।
सहर वि [**दे**] साहाय्य-कर्ता, सहाय; "न तस्स माया न पिया न भाया, कालम्मि तम्मि (?म्मी) सहरा भवंति" (वै ४३)।
सहल वि [**सफल**] फल-युक्त, सार्थक; (उप १०३१ टी; हे १, २३६; कुमा; स्वप्न १९)।
सहस देखो **सहस्स**, (श्रा ४४, पि ९२; ९६)। °**किरण** पुं [°**किरण**] सूर्य, रवि; (सम्मत्त ७६)। °**क्ख** पुं [°**अक्ष**] १ इन्द्र; (सुपा १३०)। २ रावण का एक योद्धा; (पउम ५६, २९)। ३ छन्द-विशेष; (पिंग)।
सहसक्कार पुं [**सहसाकार**] १ विचार किये विना करना; (आचा)। २ आकस्मिक क्रिया, अकस्मात् करना; (भग २५, ७—पत्र ९१९)। ३ वि. विचार किए विना करने वाला; (आचा)।
सहसत्ति अ. अकस्मात्, शीघ्र, जल्दी, तुरन्त; (पात्र; प्राकृ ८१)।
सहसा अ [**सहसा**] अकस्मात्, शीघ्र, जल्दी; (पात्र;

प्रासू १५१; भवि)। °वित्तासिय न [°वित्रासित] अकस्मात् स्त्री के नेत्र-स्थगन आदि क्रीड़ा; (उत्त १६, ६)।

सहस्स पुंन [**सहस्र**] १ संख्या-विशेष, दस सौ, १०००; २ हजार की संख्या वाला; (जी २७; ठा ३, १ टी—पत्र ११६; प्रासू ४; कुमा)। ३ प्रचुर, बहुत; (कप्प; आवम; हे २, १६८)। °**किरण** पुं [°**किरण**] १ सूर्य, रवि; (सुपा ३७)। २ एक राजा; (पउम १०, ३४)। °**क्ख** पुं [°**ाक्ष**] इन्द्र, देवाधिपति; (कप्प; उत्त ११, २३)। °**णयण**, °**नयण** पुं [°**नयन**] १ इन्द्र; (उव; हम्मीर ५०; महा)। २ एक विद्याधर राज-कुमार, (पउम ५, ६७)। °**पत्त** न [°**पत्र**] हजार दल वाला कमल; (कप्प)। °**पाग** पुन [°**पाक**] हजार ओषधि से बनता एक प्रकार का उत्तम तैल; (णाया १, १—पत्र १६; ठा ३, १—पत्र ११७)। °**रस्सि** पुं [°**रश्मि**] सूर्य, रवि. (णाया १, १—पत्र १७; भग, रयण ८३)। °**लोयण** पु [°**लोचन**] इन्द्र; (स ६२२)। °**सिर** वि [°**शिरस्**] १ प्रभूत मस्तक वाला; २ विष्णु, (हे २, १६८)। °**वत्त** देखो °**पत्त**; (से ६, ३८; सुपा ४६)। °**सो** अ [°**शस्**] हजार हजार, अनेक हजार; (श्रा १२)। °**हा** अ [°**धा**] सहस्र प्रकार से; (सुपा ५३)। °**हुत्तं** अ [°**कृत्वस्**] हजार वार; (प्राप्र; हे २, १५८)। देखो **सहस**, **सहास**।

सहस्संबवण न [**सहस्राम्रवण**] एक उद्यान, आम के प्रभूत पेड़ों वाला वन; (णाया १, ८—पत्र १५२; अंत; उवा)।

सहस्सार पुं [**सहस्रार**] १ आठवाँ देवलोक; (सम ३५; भग; अंत)। २ आठवें देवलोक का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५)। ३ एक देव-विमान; (देवेन्द्र १३५)। °**वडिंसय** पुंन [°**ावतंसक**] एक देव-विमान; (सम ३५)।

सहा स्त्री [**सभा**] समिति, परिषत्; (कुमा; स १२६; ५१६; सुपा ३८४)। °**सय** वि [°**सद**] सभ्य, सदस्य; (पाअ; स ३८५)।

सहा देखो **साहा**=शाखा; (गा २३०)।

सहाअ देखो **स-हाअ**=स्व-भाव।

सहाअ पुं [**सहाय**] साहाय्य-कर्ता; (णाया १, २—पत्र ८८; पाअ; से ३, ३; स्वप्न १०६; महा; भग)।

सहाइ वि [**साहाय्यिन्**] ऊपर देखो; (सिरि ६७; सुपा ५६३)।

सहाइया स्त्री [**सहायिका**] मदद करने वाली; (उवा)।

सहार देखो **सह-ार**=सह-कार।

सहाव देखो **स-हाव**=स्व-भाव।

सहास देखो **सहस्स**; (भवि)। °**हुत्तो** अ [°**कृत्वस्**] हजार वार; (षड्)।

सहासय देखो **सहा-सय**=सभा-सद।

सहि वि [**सखि**] मित्र, दोस्त; (पाअ; उर २, ६)। देखो **सही**°।

सहि° देखो **सही**; (कुमा)।

सहिअ वि [**सोढ**] सहन किया हुआ; (से १, ५५; धात्वा १५५)।

सहिअ वि [**सहित**] १ युक्त, समन्वित; (उव; कुमा; सुपा ६१)। २ हित-युक्त; (सूअ १, २, २, २३)। ३ पुं. ज्योतिष्क ग्रह-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७७)।

सहिअ पुं [**सभिक**] द्यूत-कारक, जूआ खेलने वाला; (दे ६, ४२; पाअ; सुपा ४८८)।

सहिअ देखो **स-हिअ**=स्व-हित।

सहिअ देखो **सह**=सह।

सहिअ, **सहिअय** वि [**सहृदय**] १ सुन्दर चित्त वाला; २ परिपक्व बुद्धि वाला; (हे १, २६९; दे १, १; काप्र ५२१)।

सहिआ देखो **सही**; (महा)।

सहिज्ज वि. देखो **सहाअ**=सहाय; "हुंति सहिजा विहुरे कुवियाग्गि सहोयरा चेव" (सुपा ४२७; महा; कुप्र १२), स्त्री—°**ज्जी**; (सुपा १६ टि)।

सहिण देखो **सण्ह**=श्लक्ष्ण; (आचा २, ५, १, ७, स २६४, ३२९; ३३३)।

सहिण्हु, **सहिर** वि [**सहिष्णु**] सहन करने की आदत वाला; (राज; पि ५६६), स्त्री—°**री**, (गा ४७; पि ५६६)।

सही स्त्री [**सखी**] सहेली, संगनी; (स्वप्न १४१; कुमा)।

सही° देखो **सहि**। °**वाय** पु [°**वाद**] मित्रता-सूचक वचन, (सूअ १, ९, २७)।

सहीण वि [**स्वाधीन**] स्वायत्त, स्व-वश; (पउम २७, १७; उव; दस ८, ६)।

सहु वि [**सह**] समर्थ, शक्तिमान; (ओघ ७७; ओघभा

९८; उवर १४२; वव ४)।

सहु (अप) देखो **संघ**; (संक्षि ३९)।

सहुं (अप) अ [**सह**] साथ, संग; (हे ४, ४१९; कुमा)।

सहेज्ज देखो **सहिज्ज**; (महा)।

सहेर (अप) पुं [**शेखर**] षट्पद छन्द का एक भेद; (पिंग)।

सहेल वि [**सहेल**] हेला-युक्त, अनायास होने वाला, सरल, गुजराती में 'सहेलु' (प्रवि ११)।

सहोअर वि [**सहोदर**] १ तुल्य, सदृश; (से ६, ४)। २ पुं. सगा भाई; (पात्र; काल)।

सहोअरी स्त्री [**सहोदरी**] सगी बहिन; (राज)।

सहोढ वि [**सहोड**] चोरी के माल से युक्त, स-मोष; (पिंड ३८०; साया १, २—पत्र ८६)।

सहोदर देखो **सहोअर**; (सुपा २४०; महा)।

सहोसिअ वि [**सहोषित**] एक-स्थान-वासी; (दे १, १४६)।

साअड्ढ सक [**कृष्**] १ चाष करना, कृषि करना। २ खींचना। साअड्ढइ; (हे ४, १८७; षड्)।

साअड्ढिअ वि [**कृष्ट**] खींचा हुआ; (कुमा ७, ३१)।

साअद (शौ) देखो **सागद**; (अभि १०२; नाट—मृच्छ ४; पि १८५)।

साइ वि [**शायिन्**] सोने वाला, शयन-कर्ता; (सूअ १, ४, १, २८; आचा; दस ४, २६)।

साइ वि [**सादि**] १ आदि-सहित, उत्पत्ति-युक्त; (सम्म ६१)। २ न. संस्थान-विशेष, शरीर की आकृति-विशेष, जिस शरीर में नाभि से नीचे के अवयव पूर्ण और नाभि के ऊपर के अवयव हीन हो ऐसी शरीराकृति; (सम १४९; अणु)। ३ कर्म-विशेष, सादि-संस्थान की प्राप्ति का कारण-भूत कर्म. (कम्म १, ४०)।

साइ न [**साचि**] १ सेमुल का पेड़, शाल्मली वृक्ष; २ संस्थान-विशेष, देखो **साइ**=सादि का दूसरा और तीसरा अर्थ; (जीव १ टी—पत्र ४३)।

साइ पुंस्त्री [**स्वाति**] १ नक्षत्र-विशेष; (सम २९; कप्प), "सा साई तं च जलं पत्तविसेसेण अंतरं गरुयं" (प्रासू ३९)। २ पुं. भारत वर्ष में होने वाले एक जिन-देव का पूर्वजन्मीय नाम; (सम १५४)। ३ एक जैन मुनि; (णंदि ४९)। ४ हैमवत-वर्ष के शब्दापाती पर्वत का अधिष्ठायक देव; (ठा २, ३—पत्र ६९; ८०)।

साइ पुं [**सादिन्**] घुड़सवार; (उप ७२८ टी)।

साइ पुंस्त्री [**साति**] १ अच्छी चीज के साथ खराब चीज का मिश्रण, उत्तम वस्तु के साथ हीन वस्तु की मिलावट; (सूअ २, २, ६५)। २ अ-विश्रम्भ, अ-विश्वास; ३ असत्य वचन, झूठ; (पगह १, २—पत्र २६)। ४ सातिशय द्रव्य, अपेक्षा-कृत अच्छी चीज, (राज ११४)। °**जोग** पुं [°**योग**] १ मोहनीय कर्म; (सम ७१)। २ अच्छी चीज से हीन चीज की मिलावट; (राय ११४ टी)। °**संपओग** पु [°**संप्रयोग**] वही अर्थ; (राय ११४)।

साइ पुस्त्री [**दे**] केसर; "सालतले सारिठिआ अच्चइ चंडिं ससाइपउमेहिं" (दे ८, २२)।

साइज्ज सक [**स्वाद्, सात्मी+कृ**] १ स्वाद लेना, खाना। २ चाहना, अभिलाष करना,। ३ स्वीकार करना, ग्रहण करना। ४ आसक्ति करना। ५ अनुमोदन करना। ६ उपभोग करना। साइज्जइ, साइज्जामो, (आचा, कस; कप्प—टी; भग १५—पत्र ६८०; औप), साइज्जेज्ज; (आचा २, १, ३, २)। भवि—साइज्जिस्सामि; (आचा)। हेकृ—**साइज्जित्तए**; (औप)।

साइज्जण न [**स्वादन**] अभिष्वङ्ग, आसक्ति; (विसे २६८५)।

साइज्जणया स्त्री [**स्वादना**] उपभोग, सेवा; (ठा ३, ३ टी—पत्र १४७)।

साइज्जिअ वि [**दे**] अवलम्बित; (दे ८, २६)।

साइज्जिअ वि [**स्वादित**] १ उपभुक्त; (कप्प—टी)। २ उपभुक्त-सम्बन्धी, स्त्री—°**या**; (कप्प)।

साइम वि [**स्वादिम**] पान, सुपारी आदि मुखवास, (ठा ४, २—पत्र २१९; आचा; उवा, औप; सम २९)।

साइय वि [**सादिक**] आदि वाला, (कम्म १, ६; नव ३६)।

साइय देखो **सागय**=स्वागत; (सुर ११, २१७)।

साइय न [**दे**] संस्कार; (दे ८, २५)।

साइयंकार वि [**दे**] स-प्रत्यय. विश्वस्त; (पिंडभा ४२)।

साइरेग वि [**सातिरेक**] साधिक, स-विशेष; (सम २; भग)।

साइसय वि [**सातिशय**] अतिशय वाला; (महा; सुपा ३९७)।

साई देखो **सई**=शची; (कुक)।

साउ वि [**स्वादु**] स्वाद वाला, मधुर; (पिंड १२८; उप ६७०; से २, १८; कुमा; हे १, ५)।

साउग वि [**स्वादुक**] स्वादिष्ठ भोजन वाला, मधुर भोजन वाला; "कुलाइं जे धावइ साउगाइं" (सूत्र १, ७, २३)।

साउज्ज न [**सायुज्य**] सहयोग, साहाय्य; (अच्चु ६५)।

साउणिअ वि [**शाकुनिक**] १ पक्षि-घातक, पक्षिओं के वध का काम करने वाला; (पण्ह १, १; २—पत्न २६; अणु १२६ टि; विपा १, ८—पत्न ८३)। २ शकुन-शास्त्र का जानकार; (सुपा २६७; कुप्र ५)। ३ श्येन पक्षी द्वारा शिकार करने वाला; (अणु १२६ टि)।

साउय देखो **साउग**. (राज)।

साउय वि [**सायुष्**] आयु वाला, प्राणी; (ठा २, १—पत्न ३८)।

साउल वि [**संकुल**] व्याप्त, भरपूर; (सुर १०, १८६)।

साउलय वि [**साकुलत**] आकुलता-युक्त, व्याकुल, व्यग्र; "इंदियसुहसाउलओ परिहिंडई सोवि संसारे" (पउम १०२, १६७)।

साउली स्त्री [**दे**] १ वस्त्राञ्चल; (गा २६६)। २ वस्त्र, कपड़ा; (गा ६०५)। देखो **साहुली**।

साउल्ल पुं [**दे**] अनुराग, प्रेम; (हे ८, २४; षड्)।

साएज्ज देखो **साइज्ज**। साएजइ; (भवि ११, २)।

साएय न [**साकेत**] अयोध्या नगरी; (इक; सुपा ५५०; पि ६३)। °**पुर** न [°**पुर**] वही अर्थ, (उप ७२८ टी)। °**पुरी** स्त्री [°**पुरी**] वही; (पउम ४, ४)। देखो **साकेय**।

साएया स्त्री [**साकेता**] अयोध्या नगरी; (पउम २०, १०; णाया १, ८—पत्न १३१)।

सांतवण न [**सान्तपन**] व्रत-विशेष, (प्रबो ७३)।

साक देखो **साग**; (दे ६, १३०)।

साकेय न [**साकेत**] १ नगर-विशेष, अयोध्या; (ती ११)। २ वि. गृहस्थ-संबन्धी; ३ न. प्रत्याख्यान-विशेष; (पव ४)।

साकेय वि [**साङ्केत**] १ संकेत का, संकेत-सबन्धी; २ न. प्रत्याख्यान का एक भेद; (पव ४)।

साग पुं [**शाक**] १ वृक्ष-विशेष; (पउम ४२, ७; दे १, २७)। २ तक्र-सिद्ध वड़ा आदि खाद्य; "सागो सो तक्कसिद्धं जं" (पव २५६)। ३ शाक, तरकारी; (पि २०२; ३६४)।

सागडिअ वि [**शाकटिक**] गाडीवान, गाड़ी चला कर निर्वाह करने वाला; (सुर १६, २२३; स २६२; उत्त ५, १४; श्रा १२)।

सागय न [**स्वागत**] १ शोभन आगमन, प्रशस्त आगमन; (भग)। २ अतिथि-सत्कार, आदर, बहु-मान; (सुपा २५६)। ३ कुशल; (कुमा)।

सागर पुं [**सागर**] १ समुद्र; (पण्ह १, ३—पत्न ४४, प्रासू १३४)। २ एक राज-पुत्र; (उप ६३७)। ३ राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र; (अंत ३)। ४ एक वणिक्—व्यापारी; (उप ६४८ टी)। ५ सातवें बलदेव तथा वासुदेव के पूर्व भव के धर्म-गुरु; (सम १५३)। ६ पुंन. कूट-विशेष; (इक))। ७ समय-परिमाण-विशेष, दश-कोटाकोटि-पल्योपम-परिमित काल; (नव ६; जी ३६; पव २०५)। ८ एक देव-विमान; (सम २)। °**कंत** पुन [°**कान्त**] एक देव-विमान; (सम २)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] १ एक जैन आचार्य; (काल)। २ एक व्यक्ति-वाचक नाम; (उव; पडि; राज)। °**चित्त** पुंन [°**चित्र**] कूट-विशेष; (इक)। °**दत्त** पुं [°**दत्त**] १ एक जैन मुनि; (सम १५३)। २ तीसरे बलदेव का पूर्व-जन्मीय नाम; (सम १५३)। ३ एक श्रेष्ठि-पुत्र; (महा)। ४ एक सार्थवाह का नाम; (विपा १, ७)। ५ हरिषेण चक्रवर्ती का एक पुत्र; (महा ४४)। °**दत्ता** स्त्री [°**दत्ता**] १ भगवान् धर्मनाथजी की दीक्षा-शिबिका; (सम १५१)। २ भगवान् विमलनाथजी की दीक्षा-शिबिका; (विचार १२६)। °**देव** पुं [°**देव**] हरिषेण चक्रवर्ती का एक पुत्र; (महा)। °**वूह** पुं [°**व्यूह**] सैन्य की रचना-विशेष; (महा)। देखो **सायर**=सागर।

सागरिअ देखो **सागारिय**; (पिंड ५६८; पव ११२)।

सागरोवम पुंन [**सागरोपम**] समय-परिमाण विशेष, दश-कोटाकोटि-पल्योपम-परिमित काल; (ठा २, ४—पत्न ६०; सम २; ८; ६; १०; ११; उव; पि ४४८)।

सागार वि [**साकार**] १ आकार-सहित, आकृति वाला; २ विशेषांश को ग्रहण करने की शक्ति, विशेष-ग्रहण, ज्ञान; (औप; भग; सम्म ६५)। ३ अपवाद-युक्त; (भग ७, २—पत्न २६५; उप ७२८ टी)। °**पस्सि** वि [°**दर्शिन्**], ज्ञान वाला; (पण्ण ३०—पत्न ७५६)।

सागार वि [**सागार**] गृह-युक्त, गृहस्थ; (आवम)।

सागारि } वि [**सागारिन्**, °**रिक**] १ गृह का मालिक,
सागारिय } उपाश्रय का मालिक, साधु को स्थान देने वाला गृहस्थ, शय्यातर; (पिंड ३१०; आचा २, २, ३, ५; सूअ १, ६, १६; ओघ १६६)। २ सूतक, प्रसव और मरण की अशुद्धि, अशौच; (सूअ १, ६, १६)। ३ गृहस्थ से युक्त; "सागारिए उवस्सए" (आचा २, २, १, ४; ५)। ४ न. मैथुन; (आचा १, ६, १, ६)। ५ वि. शय्यातर गृहस्थ का, उपाश्रय के मालिक से सम्बन्ध रखने वाला; "सागारियं पिंडं भुंजेमाणे" (सम ३६)।

सागेय देखो **साकेय**=साकेत; (णाया १, ८—पत्र १३१; उप ७२८ टी)।

साड सक [**शाटय्, शातय्**] सड़ाना, विनाश करना। हेकृ—**साडेत्तए**; (विपा १, १—पत्र १६)।

साड पु [**शाट, शात**] १ शाटन, विनाश, (विसे ३३२१)। २ शाटक, उत्तरीय वस्त्र, चद्दर; (पव ३८)। ३ वस्त्र, कपड़ा; "एगसाडे अदुवा अचेले" (आचा; सुपा ११)।

साडअ } पुंन [**शाटक**] वस्त्र, कपड़ा; (सुपा १५३;
साडग } राज)।

साडण न [**शाटन, शातन**] १ विशरण, विनाश; (विसे ३३१६; स ११६)। २ छेदन; (सूअनि ७२)।

साडणा स्त्री [**शाटना, शातना**] खण्ड २ होकर गिराने का कारण, विनाश-कारण; (विपा १, १—पत्र १६)।

साडिअ वि [**शाटित, शातित**] सड़ाकर गिराया हुआ, विनाशित; (सुर १५, ३; दे ७, ८)।

साडिआ स्त्री [**शाटिका**] वस्त्र, कपड़ा; (औप; कप्प)।

साडिल्ल देखो **साड**=शाट; "नियसियआजाणुमलिणसाडिल्लो" (सुपा ११)।

साडी स्त्री [**शाटी**] वस्त्र, कपड़ा; (कुप्र ४१२)।

साडी स्त्री [**शकटी**] गाड़ी। °**कम्म** पुंन [°**कर्मन्**] गाड़ी बनाना, बेचना, चलाना आदि शकट-जीविका; (उवा; श्रा २२)।

साडीया देखो **साडिआ**; "जह उल्ला साडीया आसु सुक्कइ विरल्लिया संती" (विसे ३०३२)।

साडोल्लय देखो **साडअ**; (णाया १, १८—पत्र २३५)।

साण सक [**शाणय्**] शाण पर चढ़ाना, तीक्ष्ण करना। साणअदि (शौ); (नाट)।

साण पुंस्त्री [**श्वान**] १ कुत्ता; (पाअ; पण्ह १, १—पत्र ७; प्रासू १६६; हे १, ५२), स्त्री—°**णी**; (सुपा ११४)। २ पुं. छन्द-विशेष; (पिंग)।

साण वि [**श्यान**] निबिड, घनीभूत; (गा ६८२)।

साण पुं [**शाण, शान**] शस्त्र को घिस कर तीक्ष्ण करने का यन्त्र; (गउड; रंभा)।

साण वि [**शाण**] सन का बना हुआ, पाट का बना हुआ; स्त्री—°**णी**; (दस ५, १, १८)।

साण देखो **सासायण**; (कम्म ३, २१)।

साणइअ वि [**दे. शाणित**] उत्तेजित; (दे ८, १३)।

साणय न [**शाणक**] शण का बना हुआ वस्त्र; (ठा ५, ३—पत्र ३३८; कस)।

साणि स्त्री [**शाणि**] शण का बना हुआ कपड़ा; (दस ५, १, १८)।

साणिअ वि [**दे**] शान्त; (षड्)।

साणी देखो **साण**=श्वान।

साणी स्त्री [**शाणी**] देखो **साणि**; "साणीपावारपिहिअ" (दस ५, १, १८)।

साणु पुन [**सानु**] पर्वत पर का समान भूमि वाला प्रदेश; (पाअ; सुर ७, २१४; स ३६५)। °**मंत** पुं [°**मत्**] पर्वत; (उप १०३१ टी)। °**लट्ठिया** स्त्री [°**यष्टिका**] ग्राम-विशेष; (राज)।

साणुक्कोस वि [**सानुक्रोश**] दयालु; (ठा ४, ४—पत्र २८५; पण्ह १, ४—पत्र ७२; स्वप्न २६; ४४; वसु)।

साणुप्पग न [**सानुप्रग**] प्रातःकाल, प्रभात-समय; (बृह १)।

साणुबंध वि [**सानुबन्ध**] निरन्तर, अ-च्छिन्न प्रवाह वाला; (उप ७७२)।

साणुबीय वि [**सानुबीज**] जिसमें उत्पादन-शक्ति नष्ट न हुई हो वह बीज; (आचा २, १, ८, ३)।

साणुवाय वि [**सानुवात**] अनुकूल पवन वाला; (उव)।

साणुसय वि [**सानुशय**] अनुताप-युक्त; (अभि १११; गउड)।

साणूर न [**दे**] देव-गृह, देव-मन्दिर; (दे ८, २४)।

सात न [**सात**] १ सुख; (ठा २, ४)। २ वि. सुख वाला; स्त्री—°**ता**; (पण्ण ३५—पत्र ७८६)।

°वेयणिज्ज न [°वेदनीय] सुख का कारण-भूत कर्म; (ठा २, ४—पत्र ६६)।
साति देखो साइ=स्वाति, सादि, साचि, साति; (सम २; ठा २, ३—पत्र ८०; ६—पत्र ३५७; जीव १—पत्र ४२; पराह १, २—पत्र २६; सम ७१)।
सातिज्जणया देखो साइज्जणया; (ठा ३, ३—पत्र १४७)।
साद पुं [साद] अवसाद, खेद; (दे १, १६८)।
सादिव्व वि [सदैव] देवता-प्रयुक्त, देव कृत; (पव २६८)।
सादिव्व देखो सादेव्व; (पिंड ४२७)।
सादीअ देखो साइय=सादिक; (भग; औप)।
सादीणगंगा स्त्री [सादीनगङ्गा] आजीविक मत में उक्त एक परिमाण; (भग १५—पत्र ६७४)।
सादेव्व न [सादिव्य] देव का अनुग्रह—सानिध्य; "सादेव्वाणि य देवयाओ करेंति सच्चवयणे रयाणं" (पराह २, २—पत्र ११४; उप ८०३)।
सादूदूलसद्द (अप) देखो सद्दूल-सद्द; (पिंग)।
साध देखो साह=साधय्। साधेंति; (सुज्ज १०, १७)।
साधग देखो साहग; (धर्मसं १४२; ३२३)।
साधम्म देखो साहम्म, (धर्मसं ८७७)।
साधम्मिअ देखो साहम्मिअ; (पउम ३५, ७४)।
साधारण देखो साहारण=साधारण; (लि ८२)।
साधारणा स्त्री [संधारणा] वासना, धारणा, स्मरण-शक्ति; (सादि १७६)।
साधीण देखो स्वाहीण (नाट—मालती १११)।
सापद (शौ) देखो सावय=श्वापद; (नाट—शकु ३०)।
साफल्ल, साफल्लया देखो साहल्ल, (विसे २५३२; उप ७६८ टी; धर्मवि ६६, ५ ७०८; ७०९)।
साबाह वि [साबाध] आबाधा-सहित; (उप ३३९ टी)।
साभरग पुं [दे. साभरक] रुपया, सोलह आने का सिक्का; (पव १११)।
साभव्व देखो साहव्व; (विसे १३९)।
साभाविक, साभाविय देखो साहाविअ; (सूअनि १९; कप्प; श्रावक २५८ टी)।
साम पुंन [सामन्] १ शत्रु को वश करने का उपाय-विशेष, एक राज-नीति; (णाया १, १—पत्र ११; प्रासू ९७)। २ प्रिय वाक्य; (कुमा; महा १४)। ३ एक वेद-शास्त्र; (भग; कप्प)। ४ मैत्री, मित्रता; (विसे ३४८१)। ५ शर्करा आदि मिष्ट वस्तु; "महुरपरिणामं सामं" (आव १)। ६ सामायिक, संयम-विशेष; (संबोध ४५), "सामं समं च सम्मं इगमवि सामाइयस्स एगट्ठा" (आव १)। °कोट्ठ पुं [°कोष्ठ] ऐरवत वर्ष में उत्पन्न एकोनवें जिनदेव; (सम १५३)। देखो सामि-कुट्ठ।
साम पुं [श्याम] १ कृष्ण वर्ण, काला रंग; २ हरा वर्ण, नीला रंग; ३ वि. काला वर्ण वाला; ४ हरा वर्ण वाला; (आचा; कुमा; सुर ४, ४४)। ५ पुं. परमाधार्मि देवों की एक जाति; (सम २८; सूअनि ७२)। ६ एक जैन मुनि, श्यामार्य; (णंदि ४९)। ७ न. तृण-विशेष, गन्ध-तृण; (सूअ २, २, ११)। ८ पुंन. आकाश, गगन; (भग २०, २—पत्र ७७६)। °हत्थि पुं [°हस्तिन्] भगवान् महावीर का शिष्य एक मुनि; (भग १०, ४—पत्र ५०१)।
सामइअ वि [प्रतीक्षित] जिसकी प्रतीक्षा की गई हो वह; (कुमा)।
सामइअ देखो सामाइअ; (विसे २६२४; २६३३; २६३४; २६३६)।
सामइअ, सामइग पुं [सामयिक] १ एक गृहस्थ का नाम; (सूअनि १९१)। २ वि. समय-संबन्धी; (पंच ५, १६९)। ३ सिद्धान्त का जानकार; (पिंडभा ६)। ४ आगम-आश्रित, सिद्धान्त-आश्रित; (ठा ३, ३—पत्र १५१)। ५ बौद्ध विद्वान; (दसनि ४, ३५)।
सामइग देखो सामाइअ; (विसे २७१६)।
सामइगि वि [सामायिकिन्] सामायिक वाला; (विसे २७१६)।
सामंत पुंन [सामन्त] १ निकट, समीप, पास; "तस्स णं अदूरसामंते" (णाया १, २—पत्र ७८; उवा; कप्प)। २ पुं. अधीन राजा; (महा; काल)। ३ अपने देश के अनन्तर देश का राजा, समीप देश का राजा; (कप्प)।
सामंती स्त्री [दे] सम-भूमि; (दे ८, २३)।
सामंतोवणिवाइय न [सामन्तोपनिपातिक] अभिनय का एक भेद; (राय ५४)।
सामंतोवणिवाइया, सामंतोवणीआ स्त्री [सामन्तोपनिपातिकी] क्रिया-विशेष, चारों तरफ से इकट्ठे हुए

जन-समुदाय में होने वाली क्रिया—कर्म-बन्ध का कारण; (ठा २, १—पत्र ४०; नव १८)।

सामंतोवायणिय पुंन [**सामन्तोपपातनिक**] अभिनय-विशेष; (ठा ४, ४—पत्र २८५)।

सामक्ख देखो **समक्ख**; "सभरियं च्चिय वयणं, जं तं अणारण्णमित्तमामक्खं। भणियं अईयकाले" (पउम १०, ८४)।

सामग देखो **सामय**=श्यामाक; (राज)।

सामग्ग सक [**श्लिष्**] आलिङ्गन करना। सामग्गइ; (हे ४, १९०)।

सामग्ग } न [**सामग्र्य**] सामग्री, सपूर्णता, सकलता; **सामग्गिअ** } (से ६, ४७; आचा २. १, १, ६; महा)।

सामग्गिअ वि [**श्लिष्ट**] आलिङ्गित; (कुमा)।

सामग्गिअ वि [**दे**] १ चलित; २ अवलम्बित; ३ पालित, रक्षित; (दे ८, ५३)।

सामग्गी स्त्री [**सामग्री**] १ समस्तता; २ कारण-समूह; (सम्मत्त २२४; महा; कप्पू; रभा)।

सामच्छ सक [**दे**] मन्त्रणा करना, पर्यालोचन करना संकृ—**सामच्छिऊण**; (पउम ४२, ३५)।

सामच्छ न [**सामर्थ्य**] समर्थता, शक्ति; (हे २, २२; कुमा)।

सामच्छण देखो **सामत्थण**; (राज)।

सामज्ज न [**साम्राज्य**] सार्वभौम राज्य, बड़ा राज्य; (उप ३५७ टी)।

सामण } वि [**श्रामण, °णिक**] श्रमण-सबन्धी; **सामणिय** } (राज)।

सामणिय देखो **सामण्ण**=श्रामण्य; (सूअ १, ७, २३. दस ७, ५६)।

सामणेर पुं [**श्रामणि**] श्रमण का अपत्य, साधु की संतान; (सूअ १, ४, २, १३)।

सामण्ण न [**श्रामण्य**] श्रमणता, साधुपन; (भग; दस २, १; महा)।

सामण्ण पु [**सामान्य**] १ अणपन्नी देवों का एक इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५)। २ न. वैशेषिक दर्शन में प्रसिद्ध सत्ता पदार्थ; (धर्मसं २५९)। ३ वि. साधारण, (गा ८९१; ९९९; नाट—रत्ना ८१)।

सामत्थ देखो **सामच्छ**(दे)। संकृ—**सामत्थेऊण**; (काल)।

सामत्थ देखो **सामच्छ**=सामर्थ्य; (हे २, २२; कुमा; ठा ३, १—पत्र १०६; सुपा २८२; प्रासू १४४)।

सामत्थ } न [**दे**] पर्यालोचन, मन्त्रणा; "कास **सामत्थण** } हरामोत्ति अज्ज दव्वं इति सामत्थं करेंति गुज्झं" (पण्ह १, ३—पत्र ४६; पिंड १२१, बृह १)।

सामन्न देखो **सामण्ण**=श्रामण्य; (भग; कप्प; सुर १.१)।

सामन्न देखो **सामण्ण**=सामान्य (उव, स ३२५; धर्मवि ५९; कम्म १, १०; ३१)।

सामय सक [**प्रति+ईक्ष्**] प्रतीक्षा करना, बाट जोहना। सामयइ; (हे ४, १९३; षड्)।

सामय पु [**श्यामाक**] धान्य-विशेष, (हे १, ७१, कुमा)।

सामरि पुस्त्री [**दे. शाल्मलि**] शाल्मली वृक्ष, सेमर का पेड़; (दे ८. २३; पाअ)।

सामरिस वि [**सामर्ष**] ईर्ष्यालु, अ-सहिष्णु, (सुर २, ९०)।

सामल वि [**श्यामल**] १ काला, कृष्ण वर्ण वाला; (से १, ५९; सुर ३, ६५; कुमा)। २ पु. एक वणिग्, (सुपा ५५५)।

सामलइअ वि [**श्यामलित**] काला किया हुआ; (से ८, ६६)।

सामलय वि [**श्यामलक**] १ काला; २ काला पत्तों वाला; (से १, ५९)। ३ पु. वनस्पति-विशेष, (राज)।

सामला स्त्री [**श्यामला**] १ कृष्ण वर्ण वाली स्त्री २ सोलह वर्ष की स्त्री, श्यामा; (वज्जा ११२)।

सामलि पुंस्त्री [**शाल्मलि**] सेमल का गाछ; (सूअ १. ६, १८; उव; औप)।

सामलिय देखो **सामलइअ**; (सुर ४, १२७)।

सामली देखो **सामला**; (गउड; गा १२३; २३८; ७६४; सुपा १८५)।

सामलेर पुं [**शाबलेय**] काबरचित गौ का वत्स; (अणु २१७)।

सामा स्त्री [**श्यामा**] १ तेरहवें जिनदेव की माता; (सम १५१)। २ तृतीय जिनदेव की प्रथम शिष्या; (सम १५२)। ३ रात्रि, रात; (सूअ २. १, ५६; से १. ५९; ओघ ३८७)। ४ शक्र की एक अग्र-महिषी—पटरानी; (पउम १०२, १५९)। ५ प्रियंगु वृक्ष; (पण्ण १—पत्र ३३; १७—पत्र ५२६; अनु ४)। ६ एक महौषधि. (ती ५)। ७ लता-विशेष, साम-लता;

(औप)। ८ सोम-लता; (से १, ५६)। ६ नारी, स्त्री; (से १, ५६; अणु १३६)। १० श्याम वर्ण वाली स्त्री; (कुमा)। ११ सोलह वर्ष की उम्र वाली स्त्री; (वज्जा २०४)। १२ सुन्दर स्त्री, रमणी; (से १, ५६; गउड)। १३ यमुना नदी; १४ नील का गाछ; १५ गुग्गुल का गाछ; १६ गुडूची, गला; १७ गुन्द्रा; १८ कृष्णा; १६ अम्बिका, २० कस्तूरी; २१ वटपत्री; २२ वन्दा की लता; २३ हरी पुनर्नवा; २४ पिप्पली का गाछ; २५ हरिद्रा, हलदी; २६ नील दूर्वा; २७ तुलसी; २८ पद्मबीज; २६ गौ, गैया; ३० छाया; ३१ शिंशपा, सीसम का पेड; ३२ पक्षि-विशेष; (हे १, २६०)। °स पु [°श] रात्रि-भोजन; (सूअ २, १, ५६; आचा १, २, ५, १)।

सामाइअ न [**सामायिक**] संयम-विशेष, सम-भाव, राग-द्वेष-रहित अवस्थान; (विसे २६७६, २६८०; २६८१, २६६०, कस; औप, नव)।

सामाइअ वि [**सामाजिक**] समाज का, समूह से संबन्ध रखने वाला, सभ्य; (उत्त ११, २६; सुख ११, २६)।

सामाइअ वि [**श्यामायित**] रात्रि-सदृश; (गा ५६०)।

सामाग पुं [**श्यामाक**] भगवान् महावीर के समय का एक गृहस्थ, जिसके ऋजुवालिका नदी के किनारे पर स्थित खेत में भगवान् महावीर को केवलज्ञान हुआ था; (कप्प)। देखो **सामाय**=श्यामाक।

सामाजिअ देखो **सामाइअ**=सामाजिक; (हास्य ११८)।

सामाण देखो **समाण**=समान. "लोद्रो हलिद्दखंजणकद्दम-किमिरागसामाणो" (कम्म १, २०; पुप्फ २८७)।

सामाण पुंन [**सामान**] एक देव-विमान, (सम ३३)।

सामाणिअ वि [**सामानिक**] १ संनिहित, निकट-वर्ती, नजदीक में स्थित, (विसे २६७६)। २ पु. इन्द्र के समान ऋद्धि वाले देवों की एक जाति, (सम ३७; ठा ३, १—पत्र ११६; उवा, औप; पउम २, ४१)।

सामाय अक [**श्यामाय्**] काला होना। सामाइ, सामायइ, सामायंति; (गउड)। वकृ—सामायंत; (गउड)।

सामाय देखो **सामय**=श्यामाक; (राज)।

सामाय पुं [**सामाय**] संयम-विशेष, सामायिक, (विसे १४२१; संबोध ४५)।

सामायारि वि [**समाचारिन्**] आचरण करने वाला; (उव)।

सामायारी स्त्री [**सामाचारी**] साधु का आचार—क्रिया-कलाप; (गच्छ १, १५; उव; उप ६६६)।

सामास देखो **सामा-स**=श्यामा-श।

सामासिअ वि [**सामासिक**] समास-संबन्धी; (अणु १४७)।

सामि } वि [**स्वामिन्**] १ नायक, अधिपति; २ ईश्वर,
सामिअ } मालिक; (सम ८६; विपा १, १ टी—पत्र ११; उव; कुमा; प्रासू ८८); स्त्री—°णी; (महा)। ३ प्रभु, भगवान; (कुमा १, १; ७, ३७, सुपा ३५)। ४ राजा, नृप; ५ भर्ता, पति; (महा)। °**कुट्ठ** पुं [°**कुष्ठ**] ऐरवत वर्ष में उत्पन्न एक्कीसवें जिन-देव; (पव ७), देखो **साम-कोट्ठ**। °**त्त** न [°**त्व**] मालिकी, आधिपत्य; (सम ८६; सं २२)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष; (उप ५६७ टी)।

सामिअ वि [**दे**] दग्ध, जलाया हुआ; (दे ८, २३)।

सामिअ वि [**शमित**] शान्त किया हुआ; (सुपा ३५)।

सामिद्धि स्त्री [**समृद्धि**] १ अति संपत्ति; २ वृद्धि; (प्राप्र; हे १, ४४; कुमा)।

सामिधेय न [**सामिधेय**] काष्ठ-समूह; (अंत ११; स ५६१)।

सामिलि न [**स्वामिलिन्**] १ गोत्र-विशेष, जो वत्स गोत्र की एक शाखा है; २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न; (ठा ७—पत्र ३६०)।

सामिसाल देखो **सामि**; (पउम ८, ६८; सुपा २६३; भवि; सण), स्त्री—°**ली**; (स ३०६)।

सामिहेय देखो **सामिधेय**; (स ३४०; ३४४; महा)।

सामीर वि [**सामीर**] समीर-संबन्धी; (गउड)।

सामुंडुअ पु [**दे**] तृण-विशेष, बरु तृण, जिसकी कलम की जाती है; (पाअ)।

सामुग्ग वि [**सामुद्ग**] संपुटाकार वाला; "सामुग्गनिमग्ग-गूढजाणू" (औप)।

सामुच्छेइय वि [**सामुच्छेदिक**] वस्तु को एकान्त क्षणिक मानने वाला एक मत और उसका अनुयायी; (ठा ७—पत्र ४१०; विसे २३८६)।

सामुदाइय वि [**सामुदायिक**] समुदाय का, समुदाय से संबन्ध रखने वाला; (णाया १, १६—पत्र २०८)।

सामुदाणिय वि [**सामुदानिक**] १ भिक्षा-संबन्धी, भिक्षा से लब्ध; (ठा ४, १—पत्र २१२; सूअ २, १, ५६)। २ भिक्षा, भैक्ष; (भग ७, १ टी—पत्र २६३)।

सामुद्द पुं [**दे**] इक्षु-समान तृण-विशेष; (दे ८, २३)।

सामुद्द) वि [**सामुद्र, °क**] १ समुद्र-संबन्धी, सागर का;
सामुद्दय) (णाया १, ८—पत्र १४५; भग ५, २—पत्र २११ दस ३, ८)। २ न. छन्द-विशेष; (सूअनि १३९)।

सामुद्दिअ न [**सामुद्रिक**] १ शास्त्र-विशेष, शरीर पर के चिह्नों का शुभाशुभ फल बतलाने वाला शास्त्र; (श्रा १२)। २ शरीर का रेखा आदि चिह्न; "सामुद्दिय-लक्खणाण लक्खंपि" (संबोध ४२)। ३ वि. सामुद्रिक शास्त्र का ज्ञाता; (कुप्र ५)।

सामुयाणिय देखो **सामुदाणिय**, (उत्त १७, १९)।

साय देखो **साइज्ज**=स्वाद्, सात्मी+कृ। सायए; (आचा २, १३, १), साएज्जा; (वव १)।

साय देखो **साग**=शाक: "भोत्तव्वं संजएण समियं न सायसूयाहिकं" (पण्ह २, ३—पत्र १२३; पराण १—पत्र ३४)।

साय न [**सात**] १ सुख: (भग; उव)। २ सुख का कारण-भूत कर्म: (कम्म १, १३; ५५)। ३ एक देव-विमान. (सम ३८)। °**वाइ** वि [°**वादिन्**] सुख-सेवन से ही मुख की उत्पत्ति मानने वाला, (ठा ८—पत्र ४२५)। °**वाहण** पुं [°**वाहन**] एक प्रसिद्ध राजा; (काल)। °**गारव** पुं न [°**गौरव**] १ सुख-शीलता; (सम ८)। २ सुख का गर्व; (राज)। °**सुक्ख** न [°**सौख्य**] अतिशय सुख; (जीव ३)। देखो **सात**=सात।

साय पुं [**स्वाद**] रस का अनुभव (विसे ७९९; पउम ३३, १०; उप ७९८ टी)।

साय न [**दे**] १ महाराष्ट्र देश का एक नगर; २ दूर; (दे ८. ५१)।

सायं अ [**सायम्**] १ सन्ध्या-समय, शाम; (पाअ; गउड; कप्पू)। २ सत्य, सच्चा; (ठा १०—पत्र ४९५)। °**कार** पुं [°**कार**] १ सत्य; २ सत्य-करण; (ठा १०—पत्र ४९५)। °**तण** वि [°**तन**] सन्ध्या-समय का; (विक्र १९)।

सायंदूर न [**दे**] नगर-विशेष; (दे ८, ५१ टी)।

सायंदूला स्त्री [**दे**] केतकी, केवड़े का गाछ; (दे ८, २५)।

सायकुंभ न [**शातकुम्भ**] १ सुवर्ण, सोना; २ वि. सुवर्ण का बना हुआ; (सुपा २०१)।

सायग पुं [**सायक**] बाण, तीर; (सुपा ६५१)।

सायग वि [**स्वादक**] स्वाद लेने वाला; (दस ४, २६)।

सायणा स्त्री [**शातना**] खण्डन, छेदन; (सम ५८)।

सायणी स्त्री [**शायनी, स्वापनी**] मनुष्य की दश दशाओं में दसवीं—९० से १०० वर्ष के उम्र वाली—दशा; (तंदु १६)।

सायत्त वि [**स्वायत्त**] स्वाधीन, स्वतन्त्र; (स २७६)।

सायय देखो **सायग**; (पाअ; स ५४८)।

सायर पुं [**सागर**] १ समुद्र; (सुपा ५६; ८८; जी ४४; गउड; प्रासू ८७; १४४; प्राप्र; हे २, १८२)। २ ऐरवत वर्ष में होने वाले चौथे जिन-देव; (पव ७)। ३ मृग-विशेष, ४ संख्या-विशेष; (प्राप्र)। ५ एक शेठ का नाम; (सुपा २८०)। °**घोस** पुं [°**घोष**] एक जैन मुनि जो आठवें बलदेव के पूर्वजन्म में गुरू थे; (पउम २०, १९३)। °**भद्द** पुं [°**भद्र**] इक्ष्वाकुवंश का एक राजा: (पउम ५, ४)। देखो **सागर**=सागर।

सायर वि [**सादर**] आदर-युक्त; (गउड; सुर २, २४५)।

सायार देखो **सागार**=साकार; (सम्म ६४; पउम ६, ११८)।

सार सक [**प्र+हृ**] प्रहार करना। सारइ; (हे ४, ८४)। वकृ—**सारंत**, (कुमा)।

सार सक [**स्मारय्**] याद दिलाना। सारे; (वव १)।

सार सक [**सारय्**] १ ठीक करना, दुरस्त करना। २ प्रख्यात करना, प्रसिद्ध करना। ३ प्रेरणा करना। ४ उन्नत करना, उत्कृष्ट बनाना। ५ सिद्ध करना। ६ अन्वेषण करना, खोजना। ७ सरकाना, खिसकाना, एक स्थान से अन्य स्थान में ले जाना। सारइ; (सुपा १५४), सारंति, सारयइ, (सूअ १, २, २, २६; २, ६, ४)। "सारेहि वीणं" (स ३०९), सारेह; (सूअ १, ३, ३, ९)। कर्म—"हंसाण सरेहि सिरी सारिज्जइ अह सराण हंसेहि" (गा ९५३; काप्र ८६२)। कवकृ—**सारिज्जंत**; (सुपा ५७)।

सार सक [**स्वरय्**] १ बुलवाना। २ उच्चारण-योग्य करना। सारंति; (विसे ४६२)।

सार वि [**शार**] १ शबल, चितकबरा; (पाअ; गउड ३७८; ५३०)। २ पुं. सार, पासा, खेलने के लिए काठ आदि का चौपहलू रंगबिरंगा साँचा; (सुपा १५४)।

सार पुंन [**सार**] १ धन, दौलत; (पाअ; से २, १;

२६; सुज्ञ २६७)। २ न्याय्य, न्याय-युक्त; "एवं खु नाणिणो सारं जं न हिंसइ किंचण" (सूत्र १, १, ४, १०)। ३ बल, पराक्रम; (पाअ; से ३, २७)। ४ परमार्थ; (आचानि २३९)। ५ प्रकर्ष; (आचानि २४०)। ६ फल; (आचानि २४१)। ७ परिणाम; (ठा ४, ४ टी —पत्र २८३)। ८ रस, निचोड़; (कप्पू)। ९ एक देव-विमान; (देवेन्द्र १४३)। १० स्थिर अंश; (से ३, २७; गउड)। ११ पु. वृक्ष-विशेष; (पराग १—पत्र ३४)। १२ छन्द-विशेष; (पिंग)। १३ वि. श्रेष्ठ, उत्तम; "जह चंदो ताराणं गुणाण सारा तहेह दया" (धम्मो ६; से २, २६)। °कंता स्त्री [°कान्ता] षड्ज ग्राम की एक मूर्छना; (ठा ७—पत्र ३९३)। °य वि [°द] सार देने वाला; (से ९, ४०)। °वई स्त्री [°वती] छन्द-विशेष; (पिंग)। °वंत वि [°वत्] सार-युक्त; (ठा ७—पत्र ३९४; गउड)। °वती देखो °वई; (पिंग)।

सारइय वि [शारदिक] शरद् ऋतु का; (उत्त १०, २८; पराग १७—पत्र ५२९; ती ५; उवा)।

सारंग वि [शार्ङ्ग] १ सींग का बना हुआ; २ न. धनुष; ३ आर्द्रक, आदा; (हे २, १००; प्राप्र)। ४ विष्णु का धनुष; (हे २, १००; सुपा ३४८)। °पाणि पुं [°पाणि] विष्णु; (प्राकृ २७)।

सारंग पुं [सारङ्ग] १ सिंह, मृगेन्द्र; (सुर १, ११; सुपा ३४८)। २ चातक पक्षी; (पाअ; से ६, ८२)। ३ हरिण, मृग; (से ६, ८०; कप्पू)। ४ हाथी; ५ भ्रमर; ६ छत्र; ७ राजहंस; ८ चित्र-मृग, चितकबरा हरिण; ९ वाद्य-विशेष; १० शंख; ११ मयूर; १२ धनुष; १३ केश; १४ आभरण, अलंकार; १५ वस्त्र, १६ पद्म, कमल; १७ चन्दन; १८ कपूर; १९ पुष्प; २० कोयल; २१ मेघ; (सुपा ३४८)। °रूअक, °रूवक (अप) पुंन [°रूपक] छन्द-विशेष; (पिंग)।

सारंग न [साराङ्ग] प्रधान अङ्ग, श्रेष्ठ अवयव; (पराह २, ५—पत्र १५०; सुपा ३४८)।

सारंगि पुं [शार्ङ्गिन्] विष्णु, श्रीकृष्ण; (कुमा)।

सारंगिका, सारंगिक्का स्त्री [सारङ्गिका] छन्द-विशेष; (पिंग)।

सारंगी स्त्री [सारङ्गी] १ हरिणी; (पाअ)। २ वाद्य-विशेष; (सुपा १३२)।

सारंभ देखो संरंभ; (ठा ७—पत्र ४०३)।

सारकल्लाण पु [सारकल्याण] वलयाकार वनस्पति-विशेष; (पराग १—पत्र ३४)। देखो सालकल्लाण।

सारक्ख सक [सं + रक्ष्] परिपालन करना, अच्छी तरह रक्षण करना। सारक्खइ; (तंदु १३)। वकृ—सारक्खंत, सारक्खमाण; (पि ७६; उवा)।

सारक्खण न [संरक्षण] सम्यग् रक्षण, त्राण; (गाया १, २—पत्र ९०; सूत्र १, ११, १८; औप)।

सारक्खणया स्त्री [संरक्षणा] ऊपर देखो; (पि ७६)।

सारक्खि वि [संरक्षिन्] संरक्षण-कर्ता; (पि ७६)।

सारक्खिअ वि [संरक्षित] जिसका संरक्षण किया गया हो वह; (पराह २, ४—पत्र १३०)।

सारक्खेत्तु वि [संरक्षितृ] संरक्षण-कर्ता; (ठा ७—पत्र ३८९)।

सारग देखो सारय=स्मारक; (आचा; औप)।

सारज्ज न [स्वाराज्य] स्वर्ग का राज्य; (विसे १८८३)।

सारण पु [सारण] १ एक यादव-कुमार; (अंत ३; कुप्र १०१)। २ रावणाधीन एक सामन्त राजा; (पउम ८, १३३)। ३ रावण का मन्त्री; (से १२, ६४)। ४ रावण का एक सुभट; (से १४, १३)। ५ न. ले जाना, प्रापण; (ओघ ४४८)

सारण न [स्मारण] १ याद कराना; (ओघ ४४८)। २ वि. याद दिलाने वाला; स्त्री—°णिया, °णी; (ठा १०—पत्र ४७३)।

सारणा स्त्री [स्मारणा] याद दिलाना; (सुर १५, २४८, विचार २३८; काल)।

सारणि, सारणी स्त्री [सारणि, °णी] १ आलवाल, नीक, कियारी; (धरण २९; कुप्र ५८)। २ परंपरा; (सम्मत्त ७७)।

सारत्थ न [सारथ्य] सारथिपन, (गाया १, १६—पत्र पउम २४, ३८)।

सारदा देखो सारया; (रंभा)।

सारदिअ देखो सारइय; (अभि ९९)।

सारमिअ वि [दे] स्मारित, याद कराया हुआ; (दे ८, २५)।

सारमेअ पुं [सारमेय] श्वान, कुत्ता; (उप ७६८ टी, कुप्र ३९३; सम्मत्त १८९; प्रासू १५८)।

सारमेई स्त्री [सारमेयी] कुत्ती, शुनी; (सुर १४, १५५)।

सारय वि [**शारद**] शरद् ऋतु का; (सम १५३; पण्ह १, ४—पत्र ६८; विसे १४६६; अजि १३; कप्प; औप)।

सारय वि [**सारक**] १ श्रेष्ठ करने वाला; (से ३, ४८)। २ साधक, सिद्ध करने वाला; (कप्प; से ६, ४०)।

सारय वि [**स्मारक**] १ याद करने वाला, २ याद दिलाने वाला; (भग; आचा १, ४, ४, १; कप्प)।

सारय वि [**स्वारत**] आसक्त, खूब लीन; (आचा १, ४, ४, १)।

सारय देखो **सार-य**।

सारया स्त्री [**शारदा**] सरस्वती देवी; (सम्मत्त १४०)।

सारव देखो **सार**=सारय्। भवि—सारविस्स; (वव १)।

सारव सक [**समा+रच्**] साफ करना, ठीक-ठाक करना, दुरुस्त करना। सारवइ; (हे ४, ६५), "सारवह सयल-सरणीओ" (सुर १५, ८२)। वकृ—**सारवेंत**, (गउड)। कवकृ—**सारविज्जंत**; (सण)।

सारव सक [**समा+रभ्**] शुरूआत करना, प्रारम्भ करना। सारवइ; (षड्)।

सारवण न [**समारचन**] संमार्जन, साफ करना; (ओघ ७३)।

सारविअ वि [**समारचित**] दुरुस्त किया हुआ, साफ किया हुआ; (दे ८, ४६; कुमा; ओघभा ८)।

सारस पुं [**सारस**] १ पक्षि-विशेष; (कप्प; औप; स्वप्न ७०; कुमा; सण)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)।

सारसी स्त्री [**सारसी**] १ षड्ज ग्राम की एक मूर्छना; (ठा ७—पत्र ३९३)। २ मादा सारस-पक्षी: ३ छन्द-विशेष; (पिंग)।

सारस्सय पु [**सारस्वत**] १ लोकान्तिक देवों की एक जाति, (णाया १, ८—पत्र १५१; पि ३५३)।

सारह न [**सारघ**] मधु, शहद; (पाअ: दे ८, २७)।

सारहि पुं [**सारथि**] रथ हाँकने वाला; (सम १; पाअ; महा)।

साराडि पुंस्त्री [**दे**] पक्षि-विशेष, शरारि पक्षी; (दे ८, २४)।

साराय अक [**साराय्**] सार-रूप होना। वकृ—**सारायंत**; (उप ७२८ टी)।

साराव सक [**सारय्**] चिपकवाना, लगवाना, सील कराना। संकृ—"साराविऊण लक्खं नीरंधत्तं तत्थ कयं" (धर्मवि ५)।

सारि स्त्री [**शारि**] १ पक्षि-विशेष, मैना; (गा ५५२)। २ पासा खेलने का रंग-बिरंगा खाँचा; (गा १३८)। ३ युद्ध के लिए गज-पर्याण; (दे ७, ६१; भवि)।

सारि देखो **सारी** (दे); (पाअ)।

सारिअ वि [**सारिक**] सार वाला; 'आरोग्गसारिअं माणुसत्तणं सच्चसारिओ धम्मो" (श्रा १८)।

सारिअ वि [**सारित**] चिपकाया हुआ, सील किया हुआ. "तत्तो कुंभीए निक्खिविऊण तीए सम्म मुहं पूरिऊण उवरि लक्खाए सारियाए" (सम्मत्त २२६)।

सारिआ } स्त्री [**सारिका**] मैना, पक्षि-विशेष; (गा **सारिइआ** } ५८९; पाअ; दे ८, २४)।

सारिक्ख न [**सादृक्ष्य**] समानता, सरीखाई; (हे २, १७; कुमा, धर्मस ४२५; समु १८०; विसे ४६६)।

सारिक्ख } वि [**सदृक्ष**] समान, सरीखा; "सारिक्ख-**सारिच्छ** } विप्पलंभा तह भेदे किमिह सारिक्खं" (धर्मसं ४२५; समु १७६; प्राप; हे १, ४४; कुमा; गा ३०; ६४)।

सारिच्छ देखो **सारिक्ख**=सादृच्य; (हे २, १७; सुर १२, १२२)।

सारिच्छिआ स्त्री [**दे**] दूर्वा, दूब; (दे ८, २७)।

सारिज्जंत देखो **सार**=सारय्।

सारिस देखो **सरिस**=सदृश; (संक्षि २; वज्जा ११४)।

सारिस } न [**सादृश्य**] समानता, सरीखाई; (राज; **सारिस्स** } नाट—रत्ना ७६)।

सारी स्त्री [**दे**] वृसी, ऋषि का आसन; (दे ८, २२. ६१)। २ मृत्तिका, मिट्टी; (दे ८, २२ टी)।

सारी स्त्री [**शारी**] देखो **सारि**=शारि: "सज्जिओ कंचणगुडासारीहिं .... हत्थी" (कुप्र १२०)।

सारीर वि [**शारीर**] शरीर का, शरीर-संबन्धी, (उव: सुर ४, ७५)।

सारीरिय वि [**शारीरिक**] ऊपर देखो; (सुर १२, १०; सण)।

सारूवि } पुं [**सारूपिन्**, °**क**] जैन साधु के समान **सारूविअ** } वेष को धारण करने वाला रजोहरण-वर्जित स्त्री-रहित गृहस्थ, साधु और गृहस्थ के बीच की अवस्था वाला जैन पुरुष; (संबोध ३१; ५४; बृह १, वव ४)।

सारूविअ न [**सारूप्य**] समान-रूपता; (सूअ २, ३, २; २१)।

२ छन्द-विशेष; (पिंग)।

सालिभंजिया स्त्री [**शालिभञ्जिका**] पुतली ; (पउम १६, ३७)।

सालिय पुं [**शालिक**] तन्तुवाय, जुलाहा; (विसे २६०१)।

सालिय वि [**शाल्मलिक**] शाल्मलि वृक्ष का, सेमल गाछ का; "एगं सालियपोंडं वद्धो आमेलगो होइ" (उत्तनि ३)।

सालिस देखो **सारिस**=सदृश; (णाया १, १—पत्त १३; ठा ४, ४—पत्त २६५; कप्प)।

सालिहीपिउ पु [**शालिहीपितृ**] एक जैन गृहस्थ; (उवा)।

साली स्त्री [**श्याली**] पत्नी-भगिनी, भार्या की बहिन; (दे ६, १४८)।

सालुअ पुन [**शालूक**] जल-कन्द विशेष, कमल-कन्द; (आचा २, १, ८, ३; दस ५, २, १८)।

सालुअ न [**दे**] १ शम्बूक, शंख; २ सूखे यव आदि धान्य का अग्र भाग; (दे ८, ५२)।

सालूर पुस्त्री [**शालूर**] १ भेक, मेंढक; (पाअ; सुर २, ७४; सुपा ६२; सार्ध १०६; सूक्त २०), स्त्री—°**री**; (गा ३६१)। २ न. छन्द-विशेष; (पिंग)।

साव सक [**श्रावय्**] सुनाना। सावेंति; (औप)। वकृ—**सावंत, सावित, सावेंत**; (औप; राज; पउम १०, ५७)।

साव पुं [**शाप**] १ सराप, आक्रोश; (औप; कुमा; प्रति ६६)। २ शपथ, सौगन; (प्राप्र; हे १, २३१)।

साव पु [**शाव**] बालक, बच्चा; (समु १५६; प्राकृ ८५)।

साव पुं [**स्वाप**] स्वपन, शयन, सोना; (विसे१७५५)।

साव (अप) देखो **सव्व**=सर्व; (हे ४, ४२०)।

सावइज्ज देखो **सावएज्ज**; (कप्प)।

सावइत्तु वि [**श्रावयितृ**] सुनाने वाला; (सूअ २, २, ७६)।

सावएज्ज न [**स्वापतेय**] धन, द्रव्य; (कप्प)।

सावक्क न [**सापत्न्य**] सपत्नीपन, सौतिनपन; (कुप्र २५५)।

सावक्क वि [**सापत्न**] सौतेली माँ की संतान; (धर्मवि ४७)।

सावक्का स्त्री [**सपत्नी**] सौतेली मा, विमाता; गुजराती में 'सावकी'; "सावक्का सुयजणणी पासत्था गहिय वायए लेहं" (धर्मवि ४७)।

सावग पुंन [**श्रावक**] १ जैन उपासक, अर्हद्-भक्त गृहस्थ; (ठा १०—पत्त ४६६, उवा; णाया १, २—पत्त ६०)। २ ब्राह्मण; ३ वृद्ध श्रावक; (णाया १, १५—पत्त १६३; अणु २४); "तओ सागरचंदो कमलामेला य....गहियाणुव्वयाणि सावगाणि संवुत्ताणि" (आक ३१)। ४ वि. सुनने वाला; ५ सुनाने वाला; (हे १, १७७)। °**धम्म** पुं [°**धर्म**] प्राणातिपात-विरमण आदि बारह व्रत, जैन गृहस्थ का धर्म; (णाया १, १४—पत्त १६१)।

सावज्ज वि [**सावद्य**] पाप-युक्त, पाप वाला; (भग; उव; ओघ ७६३; विसे ३४६६; सुर ४, ८२)।

सावण न [**श्रावण**] १ सुनाना; (उप ७२८ टी; सुपा २८८)। २ पु. मास-विशेष, सावन का महिना; (पउम ६७, ७; कप्प; हे ४, ३५७; ३६६)। ३ वि. श्रवणेन्द्रिय-संबन्धी, श्रावण-प्रत्यक्ष का विषय, जो कान से सुना जाय वह; (धर्मसं १२८१)।

सावणा स्त्री [**श्रावणा**] सुनाना; (कुप्र ६०)।

सावणी स्त्री [**स्वापनी**] देखो **सायणी**; (ठा १०—पत्त ५१६)।

सावतेज्ज } देखो **सावएज्ज**; (णाया १, १—पत्त **सावतेय** } ३६; औप; सूअ २, १, ३६)।

सावत्त देखो **सावक्क**; (दे १, २५; भवि; सिरि ४६; कप्पू)।

सावत्थिगा स्त्री [**श्रावस्तिका**] एक जैन मुनि-शाखा; (कप्प—पृ ८१)।

सावत्थी स्त्री [**श्रावस्ती**] कुणाल देश की प्राचीन राजधानी; (णाया १, ८—पत्त १४०; उवा)।

सावन्न (अप) देखो **सामन्न**=सामान्य; (भवि)।

सावय देखो **सावग**; (भग; उवा; महा), "एयं कहेहि सुंदर सवित्थरं सच्चसावओ तुहय" (पउम ५३, २६)।

सावय पुं [**श्वापद**] शिकारी पशु, हिंसक जानवर; (णाया १, १—पत्त ६५; गउड; प्रासू १५४; महा; सण)।

सावय पुं [**दे**] १ शरभ, श्वापद पशु-विशेष; (दे ८, २३)। २ बालों की जड़ में होने वाला एक तरह का क्षुद्र कीट; (जी १६)।

सावय पुं [**शावक**] बालक; बच्चा, शिशु; (नाट)।
सावरी स्त्री [**शावरी**] विद्या-विशेष; (सूअ २, २, २७)।
सावसेस वि [**सावशेष**] अवशिष्ट, बाकी बचा हुआ; "जावाऊ सावसेसं" (उव)।
सावहाण वि [**सावधान**] अवधान-युक्त, सचेत; (नाट; रंभा)।
साविअ वि [**शापित**] १ जिसको शाप दिया गया हो वह; २ जिसको सौगन दिया गया हो वह; (णाया १, १—पत्र २६; भग १५—पत्र ६८२; स १२६)।
साविअ वि [**श्रावित**] सुनाया हुआ; (भग १५—पत्र ६८२; णाया १, १—पत्र २६; पउम १०२, १५; सुपा ६६; सार्ध १८)।
साविआ स्त्री [**श्राविका**] जैन गृहस्थ-धर्म पालने वाला स्त्री; (भग; णाया १, १६—पत्र २०४. कप्प; महा)।
साविक्ख वि [**सापेक्ष**] अपेक्षा-युक्त, अपेक्षा वाला, (श्रा ६; संबोध ४१)।
साविगा देखो **साविआ**; (ठा १०—पत्र ४९९; णाया १, २—पत्र ९०; महा)।
साविट्ठी स्त्री [**श्राविष्ठी**] १ श्रावण मास की पूर्णिमा; २ श्रावण की अमावस; (सुज्ज १०, ६; इक)।
सावित्ती स्त्री [**सावित्री**] ब्रह्मा की पत्नी; (उप ५९७ टी; कुप्र ४०३)।
साविह पुं [**श्वाविध्**] श्वापद पशु-विशेष, साही. (दे २, ५०; ८, १५)।
सावेक्ख देखो **साविक्ख**; (पउम १००, ११; उप ८७०)।
सास सक [**शास्**] १ सजा करना। २ सीख देना। ३ हुकुम करना। भूका—सासित्था; (कुप्र १४)। कर्म—सासिज्जइ, सीसइ, (नाट—मृच्छ २००, कुप्र ३९९)। वकृ—**सास**°, **सासंत**; (उत्त १, ३७; औप; पि ३९७)। कृ—**सासणीअ**; (नाट—विक्र १०४)। कवकृ—**सासिज्जंत**; (उप १४९ टी)।
सास सक [**कथय्**] कहना। सासइ; (षड्)। कर्म—सासइ; (प्राकृ ७७)।
सास पुं [**श्वास**] १ साँस; (गा १४१; १४७)। २ रोग-विशेष, श्वास-रोग; (णाया १, १३—पत्र १८१; उवा; विपा १, १)।
सास पुंन [**शस्य, सस्य**] १ क्षेत-गत धान्य; (पण्ह १, ४—पत्र ७२; स १३१), "सासा अकिट्ठजाया" (पउम ३३, १४)। २ वृक्ष आदि का फल; ३ वि. वध-योग्य; (हे १, ४३)। देखो **सस्स** = शस्य।
सासग पुंन [**सस्यक**] रत्न की एक जाति; "पुलग-वइरिंदनीलसासगकक्केयणलोहियक्ख—" (कप्प)।
सासग पुं [**सासक**] वृक्ष-विशेष, बीयक नाम का पेड़; (णाया १, १—पत्र २४)।
सासण न [**शासन**] १ द्वादशाङ्गी, बारह जैन अंग-ग्रन्थ, आगम, सिद्धान्त, शास्त्र; "अणुसासणमेव पक्कमे" (सूअ १, २, १, ११; अणु ३८; सम्म १; विसे ८९४)। २ प्रतिपादन; (णंदि; उप पृ ३७४)। ३ शिक्षा, सीख; (अणु)। ४ आज्ञा, हुकुम; (पण्ह २, १—पत्र १०१; महा)। ५ ग्रास, निर्वाह-साधन; "जीवंतसामिपडिमाए सासणं विअरिऊण भत्तीए" (कुलक २३)। ६ वि. प्रतिपादक, प्रतिपादन-कर्ता; (सम्म १; गण २२; णंदि ४८)। ७ प्रतिपाद्य, जिसका प्रतिपादन किया जाय वह; (पण्ह २, १—पत्र ९९)। °**देवी** स्त्री [°**देवी**] शासन की अधिष्ठात्री देवी; (कुमा)। °**सुरा** स्त्री [°**सुरी**] वही अर्थ; (पंना ८, ३२)।
सासण देखो **सासायण**; (कम्म २, २; ५; १४; ४, १८; २६; ५, ११; ६, ५६; पंच २, ४२)।
सासणा स्त्री [**शासना**] शिक्षा; (पण्ह २, १—पत्र १००)।
सासणावण न [**शासन**] आज्ञापन; (स ४६३)।
सासय वि [**शाश्वत**] नित्य, अ-विनश्वर; (भग; पाअ; से २, ३; सुर ३, ५८; प्रासू १४१)।
सासय पुं [**स्वाश्रय**] निज का आधार; (से २, ३)।
सासव पुं [**सर्षप**] सर्षों; (आचा २, १, ८, ३)। °**नालिया** स्त्री [°**नालिका**] कन्द-विशेष; (आचा २, १, ८, ३)।
सासवूल पुं [**दे**] कपिकच्छू का पेड़, कौंछ, किवांच; (दे ८, २५)।
सासाण } न [**सास्वादन**] १ गुण-स्थानक विशेष, **सासायण** } द्वितीय गुण-स्थान; (कम्म ४, १३; ४९) २ वि. द्वितीय गुण-स्थान में वर्तमान जीव; (सम्य. १६; सम्म २६)।
सासि वि [**श्वासिन्**] श्वास-रोग वाला; (तंदु ५०)।
सासिदु (शौ) वि [**शासितृ**] शासन-कर्ता, शिक्षक-

वर्ती; (चेइय २६४)।

सालिल्ल देखो **सालि**; (विपा १, ७—पत्र ७३)।

सालुया देखो **सालू**; (सुर ६, १५७; ६, २३३; सिरि २४६)।

सासुर न [**श्वाशुर**] श्वशुर-गृह; (सुर ८, १९८)।

सासुर (अप) देखो **ससुर**=श्वशुर; (भवि)।

सासू स्त्री [**श्वश्रू**] सास, पति तथा पत्नी की माता; (पाअ; पउम १७, ४; गा ३३६)।

सासूय वि [**सासूय**] असूया-युक्त, मत्सरी; (सुर ३, १९७; उप ७२८ टी)।

सासेरा स्त्री [दे] यान्त्रिक नाचने वाली, यन्त्र की बनी हुई नर्तकी; (राज)।

साह सक [**कथय्, शास**] कहना। साहइ, साहेइ; (हे ४, २; उव; काल; महा)। साहसु, साहेसु; (महा)। भवि—साहिस्सइ, साहिस्सामो; (महा; आचा १, ४, ४, ४)। वकृ—**साहेंत, साहयंत**; (हेका ३८; काप्र ३०; सुर ९, १३२)। कवकृ—**साहिज्जंत, साहिप्पंत, साहिप्पंत, साहियमाण**; (चेइ; सुर १, ३०; सुपा २०५; चेइ; सुपा २९३; उप पृ ४२; चंड)। संकृ—**साहिऊण, साहेत्ता**; (काल)। हेकृ—**साहिउं**; (काल; महा)। कृ—**साहियव्व, साहेअव्व**; (महा; सुर १, २५४)।

साह देखो **सलाह**=श्लाघ्। कृ—**साहणीअ**; (प्राप)।

साह सक [**साध्**] १ सिद्ध करना, बनाना। २ वश में करना। साहइ, साहेइ, साहेंति; (भग; कप्प; उव; प्रासू २७; महा)। वकृ—**साहंत, साहिंत, साहेमाण**; (सिरि ९२८; महा; सुर १३, ८२)। कवकृ—**साहिज्जमाण**; (नाट)। हेकृ—**साहिउं**; (महा)। कृ—**साहणिज्ज, साहणीअ, साहियव्व**; (मा ३९; पउम ३७, ३०; सुर ३, ८८)।

साह पुं [दे] १ वालुका, बालू; २ उलूक, उल्लू; ३ दधिसर, दही की मलाई; (दे ८, ५१)। ४ प्रिय, पति; (सुख ४७)।

साह (अप) देखो **सव्व**=सर्व; (हे ४, ३६६; कुमा)।

साहंजण } पुं [दे] गोक्षुर, गोखरू; (दे ८, २७)।
साहंजय }

साहंजणी स्त्री [**साभाञ्जनी**] नगरी-विशेष; (विपा १, ४—पत्र ५४)।

साहग वि [**साधक**] सिद्धि करने वाला, साधना करने वाला; (गाया १, ८ टी—पत्र १५५; कप्प; नव २५; सुपा ८४; धर्मसं ७०; हि २०)।

साहग वि [**शासक, कथक**] कहने वाला; (सुर १२, ३०; स ३६१)।

साहज्ज न [**साहाय्य**] सहायता, मदद; (विसे २९५८; गया ६; रयण १४; सिरि ३९८; कुप्र १२)।

साहट्ट सक [**सं+वृ**] संवरण करना, समेटना। साहट्टइ; (हे ४, ८२)।

साहट्टिअ वि [**संवृत**] समेटा हुआ, संहृत किया हुआ, पिंडीकृत; (कुमा)।

साहट्टु अ [**संहृत्य**] समेट कर, संकुचित कर; "दाहिणं जाणुं धरणितलंसि साहट्टु" (कप्प), "साहट्टु पाय रीएज्जा" (आचा २, ३, १, ६), "वियडेण साहट्टु य जे सिणाई" (सूअ १, ७, २१)।

साहट्ठ वि [**संहृष्ट**] पुलकित; (राज)।

साहण सक [**सं+हन्**] संघात करना, संहत करना, चिपकाना। साहणंति; (भग)। कर्म—साहन्नंति, (भग १२, ४—पत्र ५६१)। कवकृ—**साहण्णंत साहन्नंत**; (राज; ठा २, ३—पत्र ६२)। संकृ—**साहणित्ता**; (भग)।

साहण न [**साधन**] १ उपाय, कारण, हेतु; (विसे १७०६)। २ सैन्य, लश्कर; (कुमा; सुर १०, १२१)। ३ वि. सिद्ध करने वाला; "जह जीवाण पमाओ अणत्थ-सयसाहणो होइ" (हि १३; सुर ८, ७०)। स्त्री—°णा, °णी; (हे ३, ३१; पड्)।

साहणण न [**संहनन**] संघात, अवयवों का आपस में चिपकना; (भग ८, ९—पत्र ३९५; १२, ४—पत्र ५६७)।

साहणिअ पुं [**साधनिक**] सेना-पति; (सुपा २९२)।

साहणिज्ज देखो **साह**=साध्।

साहणी देखो **साहण**=साधन।

साहणीअ देखो **साह**=श्लाघ्, साध्।

साहण्णंत देखो **साहण**=सं+हन्।

साहत्थि अ [**स्वहस्तेन**] १ अपने हाथ से। २ साक्षात्; (गाया १, ९—पत्र १६३; उवा)।

साहत्थिया } स्त्री [**स्वाहस्तिकी**] क्रिया-विशेष, अपने
साहत्थी } हाथ से गृहीत जीव आदि द्वारा हिंसा करने से होने वाला कर्म-बन्ध; (ठा २, १—पत्र ४०; नव १८)।

साहन्नंत देखो साहण=सं+हन्।

साहम्म न [साधर्म्य] १ समान धर्म, तुल्य धर्म (सम्म १५३; पिंड १३९)। २ सादृश्य, समानता; (विसे २५८९; ओघ ४०४, पंचा १४, ३५)।

साहम्मि वि [सधर्मिन्, साधर्मिन्] समान धर्म वाला, एक-धर्मी; (पिंड १३९, १४६; १४७), स्त्री—°णी; (आचा २, १, १, १२; महा)।

साहम्मिअ } वि [साधर्मिक] ऊपर देखो; (ओघ ११; साहम्मिग } ७७९; औप; उत्त २९, १; स्त; सुपा ११२; पंचा १६, २२)।

साहय देखो साहग=साधक; (उप ३६०; स ४५; काल)।

साहय देखो साहग=शासक, कथक; (सम्म १४३)।

साहय वि [संहत] संमिलित, समेटा हुआ; (पगह १, ४—पत्र ७८; औप, तंदु २०)।

साहर सक [सं+वृ] संवरण करना। साहरइ; (हे ४, ८२)।

साहर सक [सं+हृ] १ संकोच करना, संक्षेप करना, सकेलना, समेटना। २ स्थानान्तर में ले जाना। ३ प्रवेश कराना। ४ छिपाना। ५ व्यापार-रहित करना। साहरइ, साहरे, साहरति; (भग ५, ४—पत्र २१८, कप्प; उव; सूअ १, ८, १७ पि ७६)। साहरिज्ज, (भग ५, ४)। भवि—साहरिज्जिस्सामि· (कप्प)। कवकृ—साहरिज्जमाण; (कप्प; औप)। संकृ—साहरित्ता; (कप्प)। हेकृ—साहरित्तए; (भग ५, ४—पत्र २१८)।

साहरण न [संहरण] एक स्थान से दूसरे स्थान मे ले जाना, स्थानान्तर-नयन; (पिंड ६०६; ६०७)।

साहरय वि [दे] गत-मोह, मोह-रहित; (दे ८, २६)।

साहरिअ वि [संहृत] १ स्थानान्तर में नीत; (सम ८९; कप्प)। २ अन्यत क्षिप्त; (पिंड ५२०)। ३ संलीन किया हुआ, संकोचित, (औप)।

साहरिअ वि [संवृत] संवरण-युक्त; (कुमा. पाअ)।

साहल्ल न [साफल्य] सफलता; (ओघ ७३)।

साहव देखो साहु=साधु; "अह पेच्छइ साहव तहि वालि" (पउम ९, ६१; ७७, ९४)।

साहव न [साधव] साधुता, साधुपन; (पउम १, ९०)।

साहव्व न [स्वाभाव्य] स्वभावता, स्वभावपन; (धर्मसं ९६)।

साहस न [साहस] १ विना विचार किया जाता काम; (उव; महा)। २ पुं. एक विद्याधर नरेन्द्र, साहस-गति; (पउम ४७, ४७)। °गइ पुं [°गति] वही अर्थ; (पउम ४७, ४५; महा)।

साहस्स देखो साहस्स=साहस्र; (राज)।

साहसि वि [साहसिन्] साहस-कर्म करने वाला, साहसिक; "नं भीम साहसिओ उत्तमसत्ता" (उप ७२८ टी; किरात १४)।

साहसिअ वि [साहसिक] ऊपर देखो; (औप; सुअ २, २, ६२; नाट ३७, कुप्र ४१६)।

साहस्स वि [साहस्र] १ जिसका मूल्य हजार (मुद्रा, रुपया आदि) हो वह वस्तु; (दसनि ३, १३; उव; महा)। २ हजार का परिमाण वाला; "जोयणसयसाहस्सो वित्थिण्णो गेरुनाभीओ" (जीवस १८५)। ३ न. हजार; (जीवस १८५)। मल्ल पुं [°मल्ल] व्यक्ति-वाचक नाम; (उव)।

साहस्सिय वि [साहस्रिक] १ हजार का परिमाण वाला, (णाया १, १—पत्र ३७; कप्प)। २ हजार आदमी के साथ लड़ने वाला मल्ल; (राज)।

साहस्सी स्त्री [साहस्री] हजार, दस सौ; "गिहत्थाण अणेगाओ साहस्सीओ समागया" (उत्त २३, १९; सम २६; उवा; औप; उत्त २२, २३; हे ३, १२३)।

साहा स्त्री [श्लाघा] प्रशंसा; (सम ५१)।

साहा अ [स्वाहा] देवता के उद्देश से द्रव्य-त्याग का सूचक अव्यय, आहुति-सूचक शब्द; (ठा ८—पत्र ४२७; ओघभा ५७)।

साहा स्त्री [शाखा] १ एक ही आचार्य की संतति मे उत्पन्न अमुक मुनि की सन्तान-परम्परा, अवान्तर संतति; (कप्प)। २ वृक्ष की डाल, डाली; (आचा २, १, ७, ६; उव; औप; प्रासू १०२)। ३ वेद का एक देश; (सुख ४, ६)। °भंग पुं [°भङ्ग] शाखा का टुकड़ा, पल्लव; (आचा २, १, ७, ६)। °मय, °मिअ, °मिग पुं [°मृग] वानर, बन्दर; (पाअ; ती २; सुपा २६२; ६१८)। °र, °ल वि [°वत्] १ शाखा वाला, शाखा-युक्त; (धम्म १२ टी; सुपा ४७४)। २ पुं. वृक्ष, पेड़; (सुपा ६३८)।

साहाणुसाहि पुं [दे] शक देश का सम्राट्, बादशाह; "पत्तो सगकूलं नाम कूलं, तत्थ जे सामंता ते साहिणो

भयणांति जो सामंताहिवई सयलनरिदवंदचूडामणी सो साहाणुसाही भयणइ" (काल)।
साहार सक [**सं+धारय्**] अच्छी तरह धारण करना। साहारइ; (भवि)।
साहार पुं [**सहकार**] आम का गाछ; "होसइ किल साहारो साहारे अंगणम्मि वड्ढंते" (वजा १३०; सुपा ६३८)।
साहार पुं [**दे. साधुकार**] साहुकार, महा-जन; (धम्म १२ टी)।
साहार पुं [**सदाधार, सहकार**] अच्छा आधार, सहारा, अवलम्बन, सहायता, मदद, उपकार; " परचित्तरंजणेणं न वेसमेत्तेण साहारो" (उव; पुप्फ २२५), "भुंजंतो आहारं गुणोवयारसरीरसाहारं" (ओघ ५८३; स ४२५; वजा १३०; सण)।
साहार वि [**साहकार**] आम के गाछ से उत्पन्न, आम्र-वृक्ष-संबन्धी; (कप्पू)।
साहार } पुंन [**साधारण**] १ वनस्पति-विशेष, जहाँ
साहारण } एक शरीर में अनन्त जीव हों वह वनस्पति, कन्द आदि; २ कर्म-विशेष, जिसके उदय से साधारण-वनस्पति में जन्म होय वह कर्म; (कम्म २, २८; पराह १, १—पत्र ८; कम्म १, २७; जी ८; पएण १—पत्र ४२)। ३ कारण; (आचू १)। ४ पुं. साधारण वनस्पति-काय का जीव; (पएण १—पत्र ४२)। ५ वि. सामान्य; ६ समान, तुल्य; (पएण १—पत्र ४२)। ७ उपकार, सहायता, मदद; "साहारणट्ठा जे केइ गिलाणम्मि उवट्ठिए। पभू ण कुणई किच्चं" (सम ५१)। °**सरीरनाम** न [°**शरीर-नामन्**] देखो ऊपर का दूसरा अर्थ; (सम ६७)।
साहारण न [**संधारण**] ठीक तरह से धारण करना, टिकाना; "अभिक्कमे पडिक्कमे संकुचए पसारए काय-साहारणट्ठाए" (आचा १, ८, ८, १५)।
साहारण न [**स्वाधारण**] सहारा करना, उपकार करना। (सम ५१)।
साहारण न [**संहरण**] संकोचन, समेटन; (विसे ३०५३)।
साहारिअ वि [**संधारित**] ठीक तरह धारण किया हुआ; (भवि)।
साहाविअ वि [**स्वाभाविक**] स्वभाव-सिद्ध, नैसर्गिक, कुदरती; (गा २२५; गउड; कप्प; सुपा ४९३)।

साहि पुं [**शाखिन्**] वृक्ष, पेड़; (पाअ; सण; उप पृ १५३)।
साहि पुं [**दे**] १ शक देश का सामन्त राजा; "पत्तो सगकूल नाम कूलं। तत्थ जे सामंता ते साहिणो भणणंति" (भग)। २—देखो **साही**; (दे ८, ६; से १२, ९२)।
साहि (अप) देखो **सामि**=स्वामिन्; (पिंग)।
साहिअ वि [**कथित, शासित, स्वाख्यात**] कहा हुआ, उक्त, प्रतिपादित; (सुपा २७९; सुर १, २०४; काल; पाअ; आचा)।
साहिअ वि [**साधित**] सिद्ध किया हुआ, निष्पादित; (अत १३; सुर ६, ९९; भवि)।
साहिअ वि [**साधिक**] स-विशेष, सातिरेक; (कप्प; सुपा २७९)।
साहिअ वि [**स्वाहित**] स्व-हित से विरुद्ध, निज का अ-हित; (सुपा २७९)।
साहिकरण वि [**साधिकरण**] १ अधिकरण-युक्त; (निचू १०)। २ कलह करता, झगड़ता; (ठा ३—पत्र ३५२)।
साहिकरणि वि [**साधिकरणिन्**] अधिकरण-युक्त; शरीर आदि अधिकरण वाला; (भग १६, १—पत्र ६९८)।
साहिगरण देखो **साहिकरण**; (राज)।
साहिगरणि देखो **साहिकरणि**; (भग १६, १ टी—पत्र ६९९)।
साहिज्ज देखो **साहज्ज**; (अंत १३; सुपा २०५; गउड; कुप्र १३)।
साहिज्जंत देखो **साह**=कथय्।
साहिज्जमाण देखो **साह**=साध्।
साहिण (अप) वि [**कथिन्**] कहने वाला; (सण)।
साहित्त न [**साहित्य**] अलङ्कार-शास्त्र; (सुपा १०३; ४५३)।
साहिप्पंत
साहियमाण } देखो **साह**=कथय्।
साहिय्यंत
साहिर वि [**शासितृ, कथयितृ**] शासन करने वाला, कहने वाला; (गउड)।
साहिलय न [**दे**] मधु, शहद; (दे ८, २७)।
साही स्त्री [**दे**] १ रथ्या, मुहल्ला; (दे ८, ६; से १२, ९२)। २ वर्तनी, मार्ग, रास्ता; (पिंड ३३४)। ३ राज-मार्ग; (से १२, ९२)। ४ खिड़की, छोटा दरवाजा; (ओघ

६२२)।

साहीण वि [**स्वाधीन**] स्वायत्त, स्वतन्त्र; (पात्र; गा १६७; चारु ४३; सुर ३, ५६; प्रासू ६६)।

साहीय देखो **साहिअ**=साधिक; "तेत्तीस उयहिनामा साहीया हुंति अजयसम्माणं" (जीवस २२३)।

साहु पुं [**साधु**] १ मुनि, यति; (विसे ३६००; आचा; सुपा ३४२)। २ सज्जन, सत्पुरुष; "साहवो सुप्पुरिसा" (पात्र)। ३ वि. सुन्दर, शोभन, अच्छा; (आचा; स्वप्न ६७; कुप्र ४५६)। °**कम्म** न [°**कर्मन**] तप-विशेष, निर्विकृतिक तप; (संबोध ५८)। °**कार, °क्कार** पुं [°**कार**] धन्यवाद, साधुवाद, प्रशंसा; (वेणी ११४; ठा ४, ४ टी—पत्र २८३; पउम ५६, २३; से १२, १६; महा; भवि; विक्र १०६)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] श्रेष्ठ मुनि, आचार्य; (सुपा ५४५)। °**वाय** पुन [°**वाद**] प्रशंसा; "जायं च साहुवायं" (सिरि ३३४; स ३८५; सुपा ३७०)।

साहुई स्त्री [**साध्वी**] १ स्त्री-साधु, श्रमणी, यतिनी; २ सती स्त्री; ३ अच्छी; (प्राकृ २८)।

साहुणी स्त्री [**साध्वी**] स्त्री-साधु, यतिनी; (काल; उप १०१४; सुपा ६७; ३३२; सार्ध २६; कुप्र २१४)।

साहुलिआ } स्त्री [**दे**] १ वस्त्र, कपडा; (दे ८, ५२; **साहुली** } गा ६०६ अ; कप्पू; पात्र; सुपा २२०; २४६)। २ शिरोवस्त्र-खंड; (रंभा)। ३ शाखा, डाली; (दे ८, ५२; पड्; पात्र)। ४ भ्रू, भौं; ५ भुज, हाथ; ६ पिकी, कोयल; ७ सदृश, समान; ८ सखी, सहचरी; (दे ८, ५२)। ६ मयूर-पिच्छ, (स ५२३ टि)।

साहेज्ज देखो **साहज्ज**; (दे ७, ८६; सुपा १५२; गउड; महा; उपपं २८)।

साहेज्ज वि [**दे**] अनुगृहीत; (दे ८, २६)।

साहेमाण देखो **साह**=साधू।

सिअ देखो **सिव**=शिव; (संक्षि १७)।

सिअ वि [**श्रित**] आश्रित; (से ६, ४८; उत्त १३, १५; सूअ १, ७, ८)।

सिअ देखो **सिआ**=स्यात्; (भग; श्रावक १२८; धर्मसं २५८; ११११२; गया ५; कुप्र १५६)।

सिअ वि [**शित**] तीक्ष्ण धार वाला; (सुपा ४७५)।

सिअ वि [**स्वित**] अच्छी तरह प्राप्त; (विसे ३४४५)।

सिअ पुं [**सित**] १ शुक्ल वर्ण; २ वि. श्वेत, सफेद, शुक्ल; (औप; उव; नाट—विक्र ७१; सुपा ११; भवि)। ३ बद्ध, बँधा हुआ; (विसे ३०२६)। ४ नाम-कर्म का एक भेद, श्वेत-वर्ण का कारण-भूत कर्म; (कम्म १, ४०)। °**किरण** पु [°**किरण**] चन्द्र, चाँद; (उप १३३ टी)। °**गिरि** पुं [°**गिरि**] वैताढ्य पर्वत की उत्तर श्रेणि में स्थित एक विद्याधर-नगर; (इक)। °**ज्झाण** न [°**ध्यान**] सर्व श्रेष्ठ ध्यान, शुक्ल ध्यान; (सुपा १)। °**पक्ख** पु [°**पक्ष**] शुक्ल पक्ष; (सुपा १७१)। °**यर** पु [°**कर**] चन्द्रमा; (उप ७२८ टी)। °**वड** पु [°**पट**] पाल, जहाज का बादबान; "संकोडओ सियवडो पारद्धा देववाणा निसती" (उप ७२८ टी)। °**वास** पु [°**वासस्**] श्वेताम्बर जैन; (ती १५)।

सिअ (अप) देखो **सिरी**=श्री; (भवि)। °**वंत** वि [°**मत्**] लक्ष्मी-संपन्न, धनाढ्य; (भवि)।

सिअअ देखो **सिचय**; (गा ८७७; ८६८; कप्पू)।

सिअंग पु [**दे**] वरुण देवता; (दे ८, ३१)।

सिअंबर पुं [**श्वेताम्बर**] जैनों का एक संप्रदाय, श्वेताम्बर जैन; (सुपा ६५८)।

सिअलि पुस्त्री [**दे**] वृक्ष-विशेष; (स २५६)। देखो **सीअलि**।

सिआ देखो **सिवा**=शिवा; (से १३, ६५)।

सिआ अ [**स्यात्**] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रशंसा, श्लाघा; २ अस्तित्व, सत्ता; ३ संशय, संदेह; ४ प्रश्न; ५ अवधारण, निश्चय; ६ विवाद; ७ विचारणा; (हे २, १०७)। ८ अनेकान्त, अ-निश्चय, कदाचित्; (सूअ १, १०, २३; बृह १; पयण ५—पत्र २३७)। °**वाइ** पुं [°**वादिन्**] जिन-देव, अर्हन् देव; (कुमा)। °**वाय** पुं [°**वाद**] अनेकान्त दर्शन, जैन दर्शन; (हे २, १०७; चंड; पड्)।

सिआ स्त्री [**सिता**] १ लेश्या-विशेष, शुक्ल-लेश्या; (पव १५२)। २ द्राक्षा आदि का संग्रह; (राज)।

सिआल पुं [**शृगाल, सृगाल**] १ पशु-विशेष, सियार, गीदड़; (णाया १, १—पत्र ६५)। २ दैत्य-विशेष; ३ वासुदेव; ४ निष्ठुर; ५ खल, दुर्जन; (हे १, १२८; प्राप्र)।

सिआली स्त्री [**दे**] डमर, देश का भीतरी या बाहरी उपद्रव; (दे ८, ३२)।

सिआली स्त्री [**शृगाली**] मादा सियार; (नाट; पि ५०)।

सिआलीस स्त्रीन [षट्चत्वारिंशत्] छेआलीस, चालीस और छह; (विसे ३४६ टी)।

सिआसिअ पुं [**सितासित**] १ बलभद्र, बलराम; २ वि. श्वेत और कृष्ण; (प्राप्र)।

सिइ पुं [**शिति**] १ हरा वर्ण; २ वि. हरा वर्ण वाला। °**पावरण** पुं [°**प्रावरण**] बलराम, बलभद्र; (कुमा)।

सिइ स्त्री [**दे. शिति**] सीढी, निःश्रेणि; (पिंड ४७३; वव १०)।

सिउं (अप) देखो **सम**; (भवि)।

सिउंठा स्त्री [**दे. असिकुण्ठा**] साधारण वनस्पति-विशेष; (पराण १—पत्र ३५)।

सिएअर वि [**सितेतर**] कृष्ण, काला; (पाश्र)।

सिकला देखो **संकला**; (अच्चु ४०)।

सिखल न [**दे**] नूपुर; (दे ८, १०; कुप्र ६८)।

सिखला देखो **संकला**; (से १, १४; प्राप; नाट—मृच्छ ८६)।

सिंग न [**शृङ्ग**] १ लगातार छव्वीस दिनों के उपवास; (संबोध ५८)। २—देखो **संग**=शृङ्ग; (उवा; पाश्र; राय ४६; कप्प; उप ५६७ टी; सुपा ४३२; विक्र ८६; गउड; हे १. १३०)। °**णाइय** न [°**नादित**] प्रधान काज; (पंचभा ३)। °**पाय** न [°**पात्र**] सिंग का बना हुआ पात्र; (आचा २, ६, १, ५)। °**माल** पुं [°**माल**] वृक्ष-विशेष; (राज)। °**वंदण** न [°**वन्दन**] ललाट से नमन; (वृह ३)। °**वेर** न [°**वेर**] १ आर्द्रक, आदा; २ शुराठी, सूँठ; (उत्त ३६, ९७, दस ५, १, ७०; भास ८ टी; पराण १—पत्र ३५)।

सिंग वि [**दे**] कृश, दुर्बल; (दे ८, २८)।

सिंगय वि [**दे**] तरुण, जवान; (दे ८, ३१)।

सिंगरीडी देखो **सिंगिरीडी**; (राज)।

सिंगा स्त्री [**दे**] फली, फलियाँ; (भास ८ टी)।

सिंगार पु [**शृङ्गार**] १ नाट्यशास्त्र-प्रसिद्ध रस-विशेष; "सिंगारो णाम रसो रइसंजोगाभिलाससंजणणो" (अणु)। २ वेष, भूषण आदि की सजावट, भूषण आदि की शोभा; (औप; विपा १, २)। ३ लवङ्ग, लौंग; ४ सिन्दूर; ५ चूर्ण, चून; ६ काला अगरु; ७ आर्द्रक, आदा; ८ हाथी का भूषण; ९ अलंकार, भूषण; (हे १, १२८; प्राप्र)। १० वि. अतिशय शोभा वाला; "तए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स वियट्टभोइस्स सरीरयं ओरालं सिंगारं कल्लाणं सिवं धन्नं मंगल्लं अणलंकिअविभूसिअं . . . . चिट्ठइ" (भग)।

सिंगार सक [**शृङ्गारय्**] सिंगार करना, सजावट करना। सिंगारइ; (भवि)।

सिंगारि वि [**शृङ्गारिन्**] सिंगार करने वाला, शोभा करने वाला; (सिरि ८४४)।

सिंगारिअ वि [**शृङ्गारित**] सिंगारा हुआ, सजाया हुआ; (सिरि १५८)।

सिंगारिअ वि [**शृङ्गारिक**] शृङ्गार-युक्त; (उवा)।

सिंगि वि [**शृङ्गिन्**] १ सिंग वाला, (सुख ८, १३; दे ७, १६)। २ पुं. मेष, भेड़; ३ पर्वत; ४ भारतवर्ष का एक सीमा-पर्वत; ५ मुनि-विशेष; ६ वृक्ष; (अणु १४२)।

सिंगिणी स्त्री [**दे**] गौ, गैया; (दे ८, ३१)।

सिंगिया स्त्री [**शृङ्गिका**] पानी छिटकने का पात्र-विशेष, पिचकारी; (सुपा ३२८)।

सिंगिरीडी स्त्री [**शृङ्गिरीटी**] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति; (उत्त ३६, १४८)।

सिंगी स्त्री [**शृङ्गी**] देखो **सिंगिया**, (सुपा ३२८)।

सिंगेरिवम्म न [**दे**] वल्मीक; (दे ८, ३३)।

सिंघ सक [**शिङ्घ्**] सूँघना। सिंघइ; (कुप्र ८१)। संकृ—**सिंघिउं**, (धर्मवि ९४)। हेकृ—**सिंघेउं**; (धर्मवि ९४)।

सिंघ देखो **सिंह**; (हे १, २९; विपा १, ४—पत्र ५५; पड्)।

सिंघल देखो **सिंहल**, (मुर १३, २९; सुपा १५; पि २६७)।

सिंघाडग } पुन [**शृङ्गाटक**] १ सिंघाड़ा, पानी-फल;
सिंघाडय } (पराण १—पत्र ३६; आचा २, १, ८, ५)। २ त्रिकोण मार्ग; (पराह १, ३—पत्र ५४; औप; गाया १, १ टी—पत्र ३; कप्प)। ३ राहु; (सुज २०)।

सिंघाण पुंन [**शिङ्घाण**] १ नासिका-मल, श्लेष्मा; (ठा ५, ३—पत्र ३४२; सम १०; पराह २, ५—पत्र १४८; औप; कप्प; कस; दस ८, १८; पि २६७)। २ काला पुद्गल-विशेष; (सुज २०)।

सिंघासण देखो **सिंहासण**; (स ११७)।

सिंघुअ पुं [**दे**] राहु; (दे ८, ३१)।

सिंच सक [**सिच्**] सींचना, छिटकना। सिंचइ; (हे ४, ९६; महा)। भूका—सिंचिअ; (कुमा)। भवि—सिंचिस्सं;

(पि ५२६)। कृ—**सिंचेयव्व**; (सुर ७, २३५)। कवकृ—**सिच्चंत, सिच्चमाण**; (पि ५४२; उप २११ टी; स ३४६)।

सिंचण न [**सेचन**] छिटकाव; (सूअ १, ४, १, २१; मोह ३१)।

सिंचाण पु [**दे**] पक्षि-विशेष, श्येन पक्षी, बाज, गुजराती में 'सिंचाणो' (सण)।

सिंचाविअ वि [**सेचित**] छिटकवाया हुआ, (उप १०३१ टी; स २८०; ५४६)।

सिंचिअ वि [**सिक्त**] सींचा हुआ, छिटका हुआ; (कुमा)।

सिंज अक [**शिञ्ज्**] अस्फुट आवाज करना । वकृ—**सिंजंत**; (सुपा ५०, सण)। कृ—**सिंजिअव्व**; (गा ३६२)।

सिंजण न [**शिञ्जन**] १ अस्पष्ट शब्द, भूषण का आवाज; २ वि. अस्पष्ट आवाज करने वाला; (सुपा ४)।

सिंजा स्त्री [**शिञ्जा**] भूषण का शब्द; (कप्पू ; प्राप)।

सिंजिणी स्त्री [**शिञ्जिनी**] धनुर्गुण, धनुष की डोरी; (गा ५४)।

सिंजिय न [**शिञ्जित**] अव्यक्त आवाज; (उप १०३१ टी; कप्पू)।

सिंजिर वि [**शिञ्जितृ**] अस्फुट आवाज करने वाला; "सद्दालं सिंजिरं कणिरं" (पाअ)।

सिंझ पुंन [**सिध्मन्**] कुष्ठ रोग-विशेष; (भग ७, ६—पत्र ३०७)।

सिंड वि [**दे**] मोटित, मोडा हुआ; (दे ८, २६)।

सिंढ पुं [**दे**] मयूर, मोर; (दे ८, २०)।

सिंढा स्त्री [**दे**] नासिका-नाद, नाक का आवाज; (दे ८, २९)।

सिंदाण न [**दे**] विमान; (उप १४२ टी)।

सिंदी स्त्री [**दे**] खजूरी, खजूर का गाछ; (दे ८, २९; पाअ; आवम)।

सिंदीर न [**दे**] नपुर; (दे ८, १०)।

सिंदु स्त्री [**दे**] रज्जु, रस्सी; (दे ८, २८)।

सिंदुरय न [**दे**] १ रज्जु, रस्सी; २ राज्य; (दे ८, ५४)।

सिंदुवण पुं [**दे**] अग्नि, आग; (दे ८, ३२)।

सिंदुवार पुं [**सिन्दुवार**] वृक्ष-विशेष, निर्गुण्डी, सम्हालु का गाछ; (गउड; कुमा; उप १०१६; कुप्र ११७)।

सिंदूर न [**दे**] राज्य; (दे ८, ३०)।

सिंदूर न [**सिन्दूर**] १ सिंदूर, रक्त-वर्ण चूर्ण-विशेष; (पउम २, ३८; गउड; महा)। २ पुं. वृक्ष-विशेष; (हे १, ८५; संक्षि २)।

सिंदूरिअ वि [**सिन्दूरित**] सिन्दूर-युक्त किया हुआ; (गा ३००)।

सिंदोल न [**दे**] खजूर, फल-विशेष; (पाअ)।

सिंदोला स्त्री [**दे**] खजूरी, खजूर का पेड़; (दे ८, २९)।

सिंधव न [**सैन्धव**] १ सिंध देश का लवण, सिंधानोन; (गा ६७६; कुमा)। २ पुं. घोड़ा; (हे १, १४९)।

सिंधविया स्त्री [**सैन्धविका**] लिपि-विशेष; (विसे ४६४ टी)।

सिंधु स्त्री [**सिन्धु**] १ नदी-विशेष, सिन्धु नदी; (धर्मवि ८३; ज ४—पत्र २६०; सम २७)। २ नदी; "सरिआ तरंगिणी निण्णया नई आवगा सिंधू" (पाअ)। ३ सिन्धु नदी की अधिष्ठायिका देवी; (जं ४)। ४ पुं. समुद्र, सागर; (पाअ; कुप्र २२; सुपा १; ३६४)। ५ देश-विशेष; सिन्ध देश; (मुद्रा २४२; भवि; कुमा)। ६ द्वीप-विशेष; ७ पद्म-विशेष; (जं ४—पत्र २६०)। °**णद** न [°**नद**] नगर-विशेष; (पउम ८, १६८)। °**णाह** पुं [°**नाथ**] समुद्र; (समु १५१)। °**देवी** स्त्री [°**देवी**] सिन्धु नदी की अधिष्ठायिका देवी; (उप ७२८ टी)। °**देवीकूड** पुं [°**देवीकूट**] क्षुद्र हिमवंत पर्वत का एक शिखर; (जं ४—पत्र २६५)। °**प्पवाय** पुंन [°**प्रपात**] कुण्ड-विशेष, जहाँ पर्वत से सिन्धु नदी गिरती है; (ठा ३, ३—पत्र ७२)। °**राय** पुं [°**राज**] सिन्ध देश का राजा; (मुद्रा २४२)। °**वइ** पुं [°**पति**] १ समुद्र, सागर; (स २०२)। २ सिन्ध देश का राजा; (कुमा)। °**सोवीर** पुं [°**सौवीर**] सिन्धुनदी के समीप का देश-विशेष; (भग १३, ६; महा)।

सिंधुर पुं [**सिन्धुर**] हस्ती, हाथी; (सुपा ८३; सम्मत्त १५७; कुमा)।

सिंप देखो **सिंच** । सिंपइ; (हे ४, ९६)। कर्म—सिप्पइ; (हे ४, २५५)। कवकृ—**सिप्पंत**; (कुमा ७, ६०)।

सिंपिअ देखो **सिंचिअ**; (कुमा)।

सिंपुअ वि [**दे**] पागल, भूत-गृहीत, भूताविष्ट; (दे ८, ३०)।

सिंबल पुं [शाल्मल] सेमल का गाछ; (रंभा २०)।
सिंबलि देखो संबलि=शाल्मलि; (हे १, १४६; ८, २३; पाअ; सुर १४, ४३; पि १०९; संथा ८५; उत्त १९, ५२)।
सिंबलि स्त्री [शिम्बलि, शिम्बा] कलाय आदि की फली, छीमी, फलियाँ; (भग १५—पत्र ६८०; आचा २, १, १०, ३; दस ५, १, ७३)। °थालग पुंन [°स्थालक] १ फली की थाली; २ फली का पाक; (आचा २, १, १०, ३) देखो संबलि।
सिंबा स्त्री [शिम्बा] फली, छिमी; "कोसी समी य सिंबा" (पाअ)।
सिंबाडो स्त्री [दे] नाक की आवाज; (दे ८, २९)।
सिंबीर न [दे] पलाल, घास; (दे ८, २८)।
सिंभ पुं [श्लेष्मन्] श्लेष्मा, कफ; (हे २, ७४; तंदु १४; महा)।
सिंभलि देखो सिंबलि=शाल्मलि; (सुपा ८४)।
सिंभि वि [श्लेष्मिन्] श्लेष्म-युक्त, श्लेष्म-रोगी; (सुपा ५७६)।
सिंभिय त्रि [श्लैष्मिक] श्लेष्म-संबन्धी; (तंदु १९; णाया १, १—पत्र ५०; औप; पि २६७)।
सिंह पुं [सिंह] १ श्वापद पशु-विशेष, मृग-राज, केसरी, (प्रासू १५४; १६९)। २ एक राज-कुमार; (उप ९८६ टी)। ३ एक राजा; (रयण २६)। ४ भगवान् महावीर का एक शिष्य, मुनि-विशेष, (राज)। ५ व्रत-विशेष, त्रिविधाहार की संलेखना—परित्याग; (संबोध ५८)। °अलोअण (अप) न [°विलोकन] १ सिंह की तरह पीछे देखना; २ छन्द-विशेष; (पिंग)। °उर न [°पुर] पंजाब देश का एक प्राचीन नगर; (भवि)। °कण्णी स्त्री [°कर्णी] वनस्पति-विशेष; (पराण १—पत्र ३५)। °केसर पु [°केसर] एक प्रकार का उत्तम मोदक—लड्डू, (उप २११ टी)। °दत्त पुं [°दत्त] १ व्यक्ति-वाचक नाम; २ वि. सिंहने दिया हुआ; (हे १, ९०)। °दुवार न [°द्वार] राज-द्वार; (मोह १०३)। °विलोक पु [°विलोक] १ सिंह को तरह पीछे की तरफ देखना, २ छन्द-विशेष; (पिंग)। °सण न [°ासन] आसन-विशेष, राजासन, राज-गद्दी, (महा)। देखो सीह।
सिंहल पुं [सिंहल] १ देश-विशेष, सिंहल-द्वीप, लंका-द्वीप, (इक, सुर १३, २५; २७)। २ पुंस्त्री. सिंहल-द्वीप का निवासी; (औप). स्त्री—°ली; (औप; णाया १, १—पत्र ३७)।
सिंहलिआ स्त्री [दे] शिखा, चोटी; (पाअ)।
सिंहिणी स्त्री [सिंहिनी] छन्द-विशेष; (पिंग)।
सिंहीभूय न [सिंहीभूत] व्रत-विशेष, चतुर्विध आहार की संलेखना—परित्याग; (संबोध ५८)।
सिकता } स्त्री [सिकता] वालू, रेत; (अणु २७० टी;
सिकया } पउम ११२, १७; विसे १७३६)।
सिक्क पु [सृक्क] होठ का अन्त भाग; (दे १, २८)।
सिक्कग पुन [शिक्यक] सिकहर, सिका, रस्सी की बनी डोलनुमा एक चीज जो छत में लटकायी जाती है और उसमें चीजें रख दी जाती है जिससे उसमें चीटियाँ न चढें और उसे बिल्ली न खाय; (राय ६३, उवा; निचू १; श्रावक ९३ टी)।
सिक्कड पुन [दे] खटिया, मचिया; "कोवभवणम्मि जरजिन्नसिक्कडे पडइ जरियव्व" (सुपा ६)।
सिक्कय देखो सिक्कग; (राय ६३; श्रावक ९३ टी; स ५८३)।
सिक्करा स्त्री [शर्करा] खंड, टूकडा; "सयसिक्करो" (स ६९३)।
सिक्करिअ न [सीत्कृत] अनुराग से उत्पन्न आवाज; (गा ३९२)।
सिक्करिआ स्त्री [दे. श्रोकरी] जहाज का आभरण-विशेष, (सिरि ३८७)।
सिक्कार पुं [सीत्कार] १ अनुराग की आवाज; (गा ७२१; भवि; सण; नाट—मृच्छ १३९)। २ हाथी की चिल्लाहट; "कुंतविणिभिन्नकरिकलहमुक्कसिक्कारपउरम्मि .... समरम्मि" (धम्मि १६)।
सिक्किआ स्त्री [शिक्या, शिक्यिका] रस्सी की बनी हुई एक चीज जो चढने के काम में आती है; (सिरि ४२४)।
सिक्ख सक [शिक्ष्] सीखना, पढना, अभ्यास करना। सिक्खइ; (गा ४७७; ५२४), सिक्खंतु, सिक्खह, (गा ३९२; गुण ४)। भवि—सिक्खिस्सामि; (स्वप्न ६७)। वक्र—सिक्खंत, सिक्खमाण; (नाट—मृच्छ १४१; पि ३९७, सूअ १, १४, १)। संकृ—सिक्खिअ; (नाट—रत्ना २१)। हेकृ—सिक्खिउं; (गा ८९२)।

सिक्ख देखो **सिक्खाव**। वकृ—**सिक्खयंत**; (पउम ८२, ९२)। कृ—**सिक्खणीअ**; (पउम ३२, ५०)।

सिक्खग वि [**शिक्षक**] शिक्षा-कर्ता; "दुक्खाणं सिक्खगं तं परिणादमिह मे दुक्कयं" (रंभा)।

सिक्खग पुं [**शैक्षक**] नूतन शिष्य; (सुअनि १२८)।

सिक्खण न [**शिक्षण**] १ अभ्यास, पाठ; (कुप्र २३०)। २ सीख, उपदेश; (सुर ८, ५१)। ३ अध्यापन, पाठन; (सिरि ७८१)।

सिक्खव देखो **सिक्खाव**। सिक्खवेसु; (गा ७५०; ९४८)। कवकृ—**सिक्खविज्जमाण**, (सुपा ३१५)। कृ—**सिक्खवियव्व**; (सुपा २०७)।

सिक्खवअ वि [**शिक्षक**] शिक्षा देने वाला, पढ़ाने वाला, शिक्षक, (प्राकृ ६१)।

सिक्खविअ वि [**शिक्षित**] १ सिखाया हुआ, पढ़ाया हुआ; (गा ३५२)। २ न. शिक्षा देना, अभ्यास कराना, अध्यापन; (सुपा २५)।

सिक्खा स्त्री [**शिक्षा**] १ सजा, दण्ड, (कुप्र ११०)। २ वेद का एक अङ्ग, वर्ण के उच्चारण सबन्धी ग्रन्थ-विशेष, अक्षरों के स्वरूप को बतलाने वाला शास्त्र; "सिक्खावागरणछंदकप्पड्ढो" (धर्मवि ३८; औप; कप्प; अत)। ३ शास्त्र और आचार सबन्धी शिक्षण, अभ्यास, सीख, सीखाई, उपदेश; (औप; बृह १; महा; कुप्र १९७)। °**वय** न [°**व्रत**] व्रत-विशेष, जैन गृहस्थ के सामायिक आदि चार व्रत; (औप; उप; सुपा ५४०)। °**वय** न [°**पद**] शिक्षा-स्थान; (औप)।

सिक्खा (अप) स्त्री [**शिखा**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

सिक्खाण न [**शिक्षाण**] आचार-संबन्धी उपदेश देने वाला शास्त्र; (कप्प)।

सिक्खाव सक [**शिक्षय्**] सिखाना, पढ़ाना, अभ्यास कराना। सिक्खावेइ; (पि ५५९)। भवि—सिक्खावेहिति; (औप)। संकृ—**सिक्खावेत्ता**; (औप)। हेकृ—**सिक्खा-वित्तए, सिक्खावेत्तए; सिक्खावेउं**; (ठा २, १—पत्र ५६; कम; पंचा १०, ४८ टी)।

सिक्खावअ देखो **सिक्खवअ**; (गा ३५८; प्राकृ ६१)।

सिक्खावण न [**शिक्षण**] सिखाना, सीख, हितोपदेश; (सुख २, १६; प्राकृ ६१; कप्पू)।

सिक्खावणा स्त्री [**शिक्षणा**] ऊपर देखो; (सुअनि १२७; उप १५० टी)

सिक्खाविअ वि [**शिक्षित**] सिखाया हुआ; (भग; पउम ९७, २२; गाया १, १—पत्र ६०; १, १८—पत्र २३६)।

सिक्खिअ वि [**शिक्षित**] सिखा हुआ, जानकार, विद्वान; (णाया १, १४—पत्र १८७; औप)।

सिक्खिर वि [**शिक्षितृ**] सीखने की आदत वाला, अभ्यासी; (गा ६६१)।

सिखा स्त्री [**शिखा**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

सिखि देखो **सिहि**=शिखिन; (नाट—विक्र ३४)।

सिगया देखो **सिकया**; (राज)।

सिगाल देखो **सिआल**; (सण)।

सिगाली देखो **सिआली**=शृगाली; (चारु ११)।

सिग्ग वि [**दे**] १ श्रान्त, थका हुआ; (दे ८, २८; ओघ २३)। २ पुंन. परिश्रम, थकावट; (वव ४)।

सिग्गु पुं [**शिग्रु**] वृक्ष-विशेष, सहिंजना का पेड़; (दे ६, २०; पाअ)।

सिग्घ न [**शीघ्र**] १ जल्दी, तुरंत; २ वि. शीघ्रता-युक्त, त्वरा-युक्त; (पाअ; स्वप्न ५४; चंड; कप्पू; महा; सुर १, २१०; ४, ६६; सुपा ५८०)।

सिचय पुं [**सिचय**] वस्त्र, कपडा; (पाअ; गा २९१; कुप्र ४३३)।

सिच्चंत } देखो **सिंच**=सिच्।
सिच्चमाण }

सिच्छा स्त्री [**स्वेच्छा**] स्वच्छन्द; (सुपा ३१६)।

सिज्ज अक [**स्विद्**] पसीना होना। सिज्जइ; (षड् २०३)। वकृ—**सिज्जंत**; (नाट—उत्तर ६१)।

सिज्ज° देखो **सिज्जा**; (सम्मत्त १७०)।

सिज्जंभव पुं [**शय्यंभव**] एक सुप्रसिद्ध प्राचीन जैन महर्षि; (कप्प—पृ ७८; णंदि)।

सिज्जंस देखो **सेज्जंस**=श्रेयांस; (कप्प; पडि; आचा २, १५, ३)।

सिज्जा स्त्री [**शय्या**] १ बिछौना; (सम १५; उवा; सुपा ५७३)। २ उपाश्रय, वसति; (ओघ १६७)। °**तरी**, °**यरी** स्त्री [°**तरी**] उपाश्रय की मालकिन; (ओघ १६७; पि १०१)। °**वाली** स्त्री [°**पाली**] बिछौना का काम करने वाली दासी; (सुपा ६४१)। देखो **से**°।

सिज्जिअ (अप) वि [**सृष्ट**] उत्पन्न किया हुआ, बनाया

हुआ; (पिंग)।

सिज्जिर वि [स्वेत्तृ] जिसको पसीना हुआ करता हो वह, पसीना वाला; (गा ४०७; ४०८; ७७४; कुमा), स्त्री—°री; (हे ४, २२४)।

सिज्जूर न [दे] राज्य; (दे ८, ३०)।

सिज्झ अक [सिध्] १ निष्पन्न होना, बनना। २ पकना। ३ मुक्त होना। ४ मंगल होना। ५ सक. गति करना, जाना। ६ शासन करना। सिज्झइ; (हे ४, २१७; भग; महा), सिज्झंति; (कप्प)। भूका—सिज्झिंसु; (भग; पि ५१६)। भवि—सिज्झिहिइ, सिज्झिस्संति, सिज्झिहिंति, सिज्झिही; (उवा; भग; पि ५२७; महा)। वकृ—**सिज्झंत**; (पिंड ७५१)।

सिज्झ देखो **सिंझ**; (राज)।

सिज्झणया, **सिज्झणा** स्त्री [सेधना] १ सिद्धि, मुक्ति, मोक्ष, निर्वाण; (सम १४७; उप १३१; ७६६; पव ८८; धर्मवि १५१; विसे ३०३७)। २ निष्पत्ति, साधना; "सव्वो परोवयारं करेइ नियकज्जसिज्झणाभिरओ।
निरविक्खो नियकज्जे परोवयारी हवइ धन्नो ॥"
(रयण ४६)।

सिट्ठ वि [श्रेष्ठ] अति उत्तम; (उप ८७६)।

सिट्ठ वि [सृष्ट] १ रचित, निर्मित; (उप ७२८ टी; रंभा)। २ युक्त; ३ निश्चित; ४ भूषित; ५ बहल, प्रचुर; ६ त्यक्त; (हे १, १२८)।

सिट्ठ वि [शिष्ट] १ कथित, उक्त, उपदिष्ट; (सुर १, १६५; २, १८४; जी ५०; वज्जा १३६)। २ सज्जन, भलामानस, प्रतिष्ठित; (उप ७६८ टी; कुप्र ६४; सिरि ४५; सुपा ४७०)। °**यार** पुं [°चार] भलमनसी, सदाचार; (धर्म १)।

सिट्ठ वि [दे] सो कर उठा हुआ; (षड्)।

सिट्ठि स्त्री [सृष्टि] १ विश्व-निर्माण, जगद्-रचना; (सुपा १११; महा)। २ निर्माण, रचना; ३ स्वभाव; ४ जिसका निर्माण होता हो वह; (हे १, १२८)। ५ सीधा क्रम, अविपरीत क्रम; "चक्काइं जंतजोगेणं सिट्ठि-विसिट्ठिकमेणं एगंतरियं भमंताइं" (सिरि ८७८)।

सिट्ठि पुं [दे. श्रेष्ठिन्] नगर-शेठ, नगर का मुख्य साहूकार, महाजन; (कप्प; सुपा ५८०)। °**पय** न [°पद] नगर-शेठ की पदवी; (सुपा ३४२)। देखो **सेट्ठि**।

सिट्ठिणी स्त्री [श्रेष्ठिनी] श्रेष्ठि-पत्नी, शेठानी; (सुपा १२)।

सिड्डी स्त्री [दे] सीढ़ी, निःश्रेणि; (अज्झ ७०)।

सिढिल वि [शिथिर, शिथिल] १ श्लथ, ढीला; २ अ-दृढ, जो मजबूत न हो वह; ३ मन्द; (हे १, २१५; २५४; प्राप्र; कुमा; प्रासू १०२; गउड)।

सिढिल सक [शिथिलय्] शिथिल करना। सिढिलेइ, सिढिलंति, सिढिलेंति; (उव; वज्जा १०; से ६, ६५), सिढिलेहि; (वेणी २४३; पि ४६८)। वकृ—**सिढिलेंत**; (से ५, ४२)।

सिढिलाविअ वि [शिथिलित] शिथिल कराया हुआ, (प्राकृ ६१)।

सिढिलिअ वि [शिथिलित] शिथिल किया हुआ; (कुमा; गउड; भवि)।

सिढिलीकय वि [शिथिलीकृत] शिथिल किया हुआ; (सुर २, १६; १७३)।

सिढिलीभूय वि [शिथिलीभूत] शिथिल बना हुआ; (पउम ५३, २४)।

सिण देखो **सण**=शण; (जी १०; सुपा १८६; गा ७६८)।

सिणगार देखो **सिंगार**=शृङ्गार; "सिणगारचारुवेसो" (संबोध ४७), "कारिअसुरसुंदरिसिणगार" (सिरि १५८)।

सिणा अक [स्ना] स्नान करना, नहाना। सिणाइ; (सूअ १, ७, २१; प्राकृ २८)। संकृ—**सिणाइत्ता**; (सूअ २, ७, १७)। हेकृ—**सिणाइत्तए**; (औप)।

सिणाउ पुंस्त्री [स्नायु] नाडी-विशेष, वायु वहन करने वाली नाड़ी; (प्राकृ २८)।

सिणाण न [स्नान] नहान, अवगाहन; (सम ३५; ओघ ४६६; रयण १४)।

सिणात देखो **सिणाय**=स्नात; (ठा ४, १—पत्र १६३; ५, ३—पत्र ३३६)।

सिणाय देखो **सिणा**। सिणायंति; (दस ६, ६३)। वकृ—**सिणायंत**; (दस ६, ६२; पि १३३)।

सिणाय, **सिणायग**, **सिणायय** वि [स्नात, °क] १ प्रधान, श्रेष्ठ; (सूअ २, २, ५६)। २ मुनि-विशेष, केवलज्ञान-प्राप्त मुनि, केवली भगवान्; (भग २५, ६; णंदि १३८ टी; ठा ३, २—पत्र १२६; ध्रमंस १३५८; उत्त २५, ३४)। ३ बुद्ध-शिष्य, बोधि-सत्त्व; (सूअ २,

६, २९)।

सिणाव सक [**स्नपय्**] स्नान कराना। सिणावेदि (शौ); (नाट—चैत ४४), सिणावेंति, सिणावेंति; (आचा २, २, ३, १०; पि १३३)।

सिणि स्त्री [**सृणि**] अंकुश; (सुपा ५३७; सिरि १०५८)।

सिणिज्झ अक [**स्निह्**] प्रीति करना। सिणिज्झइ; (प्राकृ २४)। कर्म—सिप्पइ; (हे ४, २५५)। कवकृ—**सिप्पंत**; (कुमा ७, ६०)।

सिणिद्ध वि [**स्निग्ध**] १ प्रीति-युक्त, स्नेह-युक्त; (स्वप्न ५३; प्रास ६२)। २ आर्द्र, रस-युक्त; (कुमा)। ३ मसृण, कोमल; ४ चिकना; ५ न. भात का मॅाड; (हे २, १०९; प्राप्र)।

सिणेह देखो **सणेह**; (भग; णाया १, १३—पत्र १८१; स्वप्न १५; कुमा; प्रास ९)।

सिणेहालु वि [**स्नेहवत्**] स्नेह वाला; (स ७६३)।

सिण्ण वि [**स्विन्न**] स्वेद-युक्त; (गा २४४)।

सिण्ण देखो **सिन्न**=शीर्ण; (नाट—मृच्छ २१०)।

सिण्ह पुन [**शिश्न**] पुंश्चिह्न, पुरुष-लिंग; (प्राप्र; दे ४, ५)।

सिण्हा स्त्री [**दे**] १ हिम, आकाश से गिरता जल-कण; (दे ८, ५३)। २ अवश्याय, कुहरा, कुहासा; (दे ८, ५३; पाअ)।

सिण्हालय पुंन [**दे**] फल-विशेष; (अनु ६)।

सिति देखो **सिइ**=(दे); (वव १०)।

सित्त वि [**सिक्त**] सिंचा हुआ; (सुर ४, १४५; कुमा)।

सित्तुज देखो **सेत्तुंज**; (सूक्त ५२)।

सित्थ न [**दे**] गुण, धनुष की डोरी, "सित्थं व असोत्त-गय मह मण देव दूमेइ" (कुप्र ५४; पाअ)।

सित्थ)न [**सिक्थ**] १ धान्य-कण; (पण्ह १, ३—
सित्थय) पत्र ५५, कप्प, औप; अणु १४२)। २ मोम; (दे १, ५२; पाअ, उप ७२८ टी)। ३ ओषधि-विशेष, नीली, नील; (हे २, ७७)। ४ पुन. कवल, ग्रास, "मासे मासे उ जा अज्जा एगसित्थेण पारए" (गच्छ ३, २८; प्राप्र)।

सित्था स्त्री [**दे**] १ लाला; २ जीवा, धनुष की डोरी; (दे ८, ५३)।

सितिथ पुं [**दे**] मत्स्य, मछली; (दे ८, २८)।

सिद्ध वि [**दे**] परिपाटित, विदारित, चिरा हुआ; (दे ८, ३०)।

सिद्ध वि [**सिद्ध**] १ मुक्त, मोक्ष-प्राप्त, निर्वाण-प्राप्त; (ठा १—पत्र २५; भग; कप्प; विसे ३०२७; २९; सम्म ८९; जो २५; सुपा २४४; ३४२)। २ निष्पन्न, बना हुआ; (प्रासू १५)। ३ पका हुआ; (सुपा ६३३)। ४ शाश्वत, नित्य; (चेइय ६७९)। ५ प्रतिष्ठित, लब्ध-प्रतिष्ठ; (चेइय ६७९; सम्म १) ६ निश्चित, निर्णीत; (सम्म १)। ७ विख्यात, प्रसिद्ध; (चेइय ६८०)। ८ शब्द-विशेष, साध्य-विलक्षण शब्द; (भास ८९)। ९ साधित किया हुआ; १० प्रतीत, ज्ञात; (पंचा ११, २६)। ११ पु. विद्या, मंत्र, कर्म, शिल्प आदि में जिसने पूर्णता प्राप्त की हो वह पुरुष; (ठा १—पत्र २५; विसे ३०२८; वज्जा ९८)। १२ समय-परिमाण-विशेष, स्तोक-विशेष; (कप्प)। १३ न. लगातार पनरह दिनों के उपवास; (संबोध ५८)। १४ पुंन. महाहिमवंत आदि अनेक पर्वतों के शिखरों का नाम; (ठा ८—पत्र ४३६; ९—पत्र ४५४; इक)। °**क्खर** पुंन [°**क्षर**] "नमो अरिहंताणं" यह वाक्य; (भवि)। °**गंडिया** स्त्री [°**गण्डिका**] सिद्ध-सम्बन्धी एक ग्रन्थ-प्रकरण; (भग)। °**चक्क** न [°**चक्र**] अर्हन् आदि नव पद; (सिरि ३४)। °**न्न** न [°**ान्न**] पकाया हुआ अन्न; (सुपा ६३३)। °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] जैन साधु और गृहस्थ के बीच की अवस्था वाला पुरुष; (संबोध ३१; निचू १)। °**मणोरम** पुं [°**मनोरम**] पक्ष का दूसरा दिन, (सुज्ज १०, १४)। °**राय** पुं [°**राज**] विक्रम की बारहवीं शताब्दी का गुजरात का एक सुप्रसिद्ध राजा, जो सिद्धराज जयसिंह के नाम से प्रसिद्ध था; (कुप्र २२; वाअ १५)। °**वाल** पुं [°**पाल**] बारहवीं शताब्दी का गुजरात का एक प्रसिद्ध जैन कवि; (कुप्र १७९)। °**सेण** पु [°**सेन**] एक सुप्रसिद्ध प्राचीन जैन महाकवि और तार्किक आचार्य; (सम्मत्त १४१)। °**सेणिया** स्त्री [°**श्रेणिका**] बारहवें जैन अंग-ग्रन्थ का एक अंश, (णंदि)। °**सेल** पुं [°**शैल**] शत्रुञ्जय पर्वत, सौराष्ट्र देश में पालीताना के पास का जैन महा-तीर्थ; (सुख १, ३; सिरि ५५२)। °**हेम** न [°**हैम**] आचार्य हेमचन्द्र विरचित प्रसिद्ध व्याकरण-ग्रन्थ; (मोह २)।

सिद्धंत पुं [**सिद्धान्त**] १ आगम, शास्त्र; (उव; बृह १; णंदि)। २ निश्चय; (स १०३)।

सिद्धत्थ पुं [**दे**] रुद्र, देव-विशेष; (दे ८, ३१)।

सिद्धत्थ वि [**सिद्धार्थ**] १ कृतार्थ, कृतकृत्य; (पउम ७२, ११)। २ पुं. भगवान् महावीर के पिता का नाम; (सम १५१; कप्प; पउम २, २१; सुर १, १०)। ३ ऐरवत वर्ष के भावी दूसरे जिन-देव; (सम १५४)। ४ एक जैन मुनि जो नववें बलदेव के दीक्षा-गुरू थे; (पउम २०, २०६)। ५ वृक्ष-विशेष; (सुपा ७७; पिंड ५६१)। ६ सर्षप, सरसों; (अणु २३; कुप्र ४६०; पव १५४; हे ४, ४२३; उप पृ ९६)। ७ भगवान् महावीर के कान से कील निकालने वाला एक वणिक्; (चेइय ९९)। ८ एक देव-विमान; (सम ३८; आचा २, १५, २; देवेन्द्र १४५)। ९ यक्ष-विशेष; (आक)। १० पाटलिसंड नगर का एक राजा; (विपा १, ७—पत्र ७२)। ११ एक गाँव का नाम; (भग १५—पत्र ६६४)। °**पुर** न [°**पुर**] अंग देश का एक प्राचीन नगर; (सुर २, ६८)। °**वण** न [°**वन**] वन-विशेष; (भग)।

सिद्धत्था स्त्री [**सिद्धार्था**] १ भगवान् अभिनन्दन-स्वामी की माता का नाम; (सम १५१)। २ एक विद्या; (पउम ७, १४५)। ३ भगवान् संभवनाथजी की दीक्षा-शिबिका; (विचार १२९)।

सिद्धत्थिया स्त्री [**सिद्धार्थिका**] १ मिष्ट-वस्तु विशेष; (पगण १७—पत्र ५३३)। २ आभरण-विशेष, सोने की कंठी; (औप)।

सिद्धय पुं [**सिद्धक**] १ वृक्ष-विशेष, सिंदुवार वृक्ष, सम्हालु का गाछ; २ शाल वृक्ष; (हे १, १८७)।

सिद्धा स्त्री [**सिद्धा**] १ भगवान् महावीर को शासन-देवी, सिद्धायिका; (संति १०)। २ पृथिवी-विशेष, मुक्ति-स्थान, सिद्ध-शिला; (सम २२)।

सिद्धाइया स्त्री [**सिद्धायिका**] भगवान् महावीर की शासन-देवी; (गण १२)।

सिद्धाययण पुंन [**सिद्धायतन**] १ शाश्वत मन्दिर—देव-गृह; २ जिन-मन्दिर; (ठा ४, २—पत्र २२९; इक; सुर ३, १२)। ३ अनेक पर्वतों के शिखरों का नाम; (इक; जं ४)।

सिद्धालय स्त्रीन [**सिद्धालय**] मुक्त-स्थान, सिद्ध-शिला; (औप; पउम ११, १२१; इक), स्त्री—°**या**; (ठा ८—पत्र ४४०; सम २२)।

सिद्धि स्त्री [**सिद्धि**] १ सिद्ध-शिला, पृथिवी-विशेष, जहाँ मुक्त जीव रहते हैं; (भग; उव; ठा ८—पत्र ४४०; औप; इक)। २ मुक्ति, निर्वाण, मोक्ष; (ठा १—पत्र २५; पडि; औप; कुमा)। ३ कर्म-क्षय; (सूअ २, ५, २५; २६)। ४ अणिमा आदि योग की शक्ति; (ठा १)। ५ कृतार्थता, कृतकृत्यता; (ठा १—पत्र २५; कप्प; औप)। ६ निष्पत्ति; "न कयाइ दुव्विणीओ सकज्जसिद्धिं समाणेइ" (उव)। ७ संबन्ध; (दसनि १, १२२)। ८ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**गइ** स्त्री [°**गति**] मुक्ति-स्थान में गमन; (कप्प; औप; पडि)। °**गंडिया** स्त्री [°**गण्डिका**] ग्रन्थ-प्रकरण-विशेष; (भग ११, ९—पत्र ५२१)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष; (कुप्र २२)।

सिन्न वि [**शीर्ण**] जीर्ण, गला हुआ; (सुपा ११; विवे ७० टी)।

सिन्न देखो **सिण्ण** = स्विन्न; (सुपा ११)।

सिन्न स्त्रीन [**सैन्य**] १ मिला हुआ हाथी-घोड़ा आदि; २ सेना का समुदाय; (हे १, १५०; कुमा)। स्त्री—"ता अन्नदिणे नयरे पवेढियं सत्तुसन्नाए" (सुर १२, १०४)।

सिप्प देखो **सिंप**। सिप्पइ; (षड्)।

सिप्प न [**दे**] पलाल, पुआल, तृण-विशेष; (दे ८, २८)।

सिप्प न [**शिल्प**] कारु-कार्य, कारीगरी, चित्रादि-विज्ञान, कला, हुनर, क्रिया-कुशलता; (पण्ह १, ३—पत्र ५५; उवा; प्रासू ८०)। २ तेजस्काय, अग्नि-संघात; ३ अग्नि का जीव; ४ पुं. तेजस्काय का अधिष्ठाता देव; (ठा ५, १—पत्र २९२)। °**सिद्ध** पुं [°**सिद्ध**] कला में अति-कुशल; (आवम)। °**ाजीव** वि [°**ाजीव**] कारीगर, कला—हुनर से जीविका-निर्वाह करने वाला; (ठा ५, १—पत्र ३०३)।

सिप्पा स्त्री [**सिप्रा**] नदी-विशेष, जो उज्जैन के पास से गुजरती है; (स २९३; उप पृ २१८; कुप्र ५०)।

सिप्पि वि [**शिल्पिन्**] कारीगर, हुनरी, चित्र आदि कला में कुशल; (औप; मा ४)।

सिप्पि स्त्री [**शुक्ति**] सीप, घोंघा; (हे २, १३८; उवा; षड्; कुमा; प्रासू ३९; पि ३८५)।

सिप्पिअ वि [**शिल्पिक**] शिल्पी, कारीगर, (महा)।

सिप्पिर न [**दे**] तृण-विशेष, पलाल, पुआल; (पगण १—पत्र ३३; गा ३३०)।

सिप्पी स्त्री [**दे**] सूची, सूई; (पड्)।
सिप्पीर देखो **सिप्पिर**; (गा ३३० अ; पि २११)।
सिबिर देखो **सिविर**; (पउम १०, २७)।
सिब्भ देखो **सिंभ**; (चंड)।
सिभा स्त्री [**शिफा**] वृक्ष का जटाकार मूल; (हे १, २३६)।
सिम स [**सिम**] सर्व, सब; (प्रामा)।
सिम° देखो **सीमा**; "जाव सिमगंनिहाणं पत्तो नगरस्स वाहिरुज्जाणे" (सुपा १६२)।
सिमसिम } अक [**सिमसिमाय्**] 'सिम सिम' आवाज
सिमसिमाय } करना। सिमसिमायंति; (वज्जा ८२)। वकृ—**सिमसिमंत**; (गा ५६१ अ)।
सिमिण देखो **सुमिण**; (हे १, ४६; २५६)।
सिमिर (अप) देखो **सिविर**; (भवि)।
सिमिसिम } देखो **सिमसिम**। वकृ—**सिमिसिमंत**,
सिमिसिमाअ } **सिमिसिमाअंत**; (गा ५६०; पि ५५८)।
सिमिसिमिय वि [**सिमिसिमित्**] 'सिम सिम' आवाज करने वाला; (पउम १०५, ५५)।
सिर सक [**सृज्**] १ बनाना, निर्माण करना। २ छोड़ना, त्याग करना। सिरइ; (पि २३५), सिरामि, (विसे ३५७९)।
सिर न [**शिरस्**] १ मस्तक, माथा, सिर; (पाअ; कुमा; गउड)। २ प्रधान, श्रेष्ठ; ३ अग्र भाग; (हे १, ३२)। °**क्क** न [°**क**] शिरस्त्राण, मस्तक का बख्तर; (दे ५, ३१; कुमा; कुप्र २९२)। °**ताण**, °**त्ताण** न [°**त्राण**] वही पूर्वोक्त अर्थ; (कुमा; स ३८५)। °**वत्थि** स्त्री [°**वस्ति**] चिकित्सा-विशेष, सिर में चर्म-कोश देकर उसमें संस्कृत तैल आदि पूरने का उपचार; (विपा १, १—पत्र १४), "सिरावेढेहि (?सिरवत्थीहि)य" (णाया १, १३—पत्र १८१)। °**मणि** देखो **सिरो-मणि**; (सुपा ५३२)। °**य** पुं [°**ज**] केश, बाल; (भग; कप्प; औप; स ५७८)। °**हर** न [°**गृह**] मकान के ऊपर की छत, चन्द्रशाला; (दे ३, ४६)। देखो **सिरो°**।
सिर° देखो **सिरा**; (जी १०)।
°**सिरय** } देखो **सिर=शिरस्**; (कप्प, पराह १, ४—पत्र
°**सिरस** } ६८; औप)।
सिरसावत्त वि [**शिरसावर्त, शिरस्यावर्त**] मस्तक पर प्रदक्षिणा करने वाला, शिर पर परिभ्रमण करता; (णाया १, १—पत्र १३; कप्प; औप)।

सिरा स्त्री [**शिरा, सिरा**] १ रग, नस, नाडी; (णाया १, १३—पत्र १८१; जी १०; जीव १)। २ धारा, प्रवाह; (कुमा; उप पृ ३६६)।
सिरि° देखो **सिरी**; (कुमा; जी ५०; प्रासू ५२; ८०; कम्म १, १; पि ९८)। °**उत्त** पुं [°**पुत्र**] भारतवर्ष में होने वाला एक चक्रवर्ती राजा; (सम १५४)। °**उर** न [°**पुर**] नगर-विशेष; (उप ५५०)। °**कंठ** पुं [°**कण्ठ**] १ शिव, महादेव; (कुमा)। २ वानरद्वीप का एक राजा; (पउम ६, ३)। °**कंत** पुंन [°**कान्त**] एक देव-विमान; (सम २७)। °**कंता** स्त्री [°**कान्ता**] १ एक राज-पत्नी; (पउम ८, १८७)। २ एक कुलकर-पत्नी; (सम १५०)। ३ एक राज-कन्या; (महा)। ४ एक पुष्करिणी; (इक)। °**कंदलग** पुं [°**कन्दलक**] पशु-विशेष, एक-खुरा जानवर की एक जाति; (पराण १—पत्र ४९)। °**करण** न [°**करण**] १ न्यायालय, न्याय-मन्दिर; २ फैसला; (सुपा ३९१)। °**करणीय** वि [°**करणीय**] श्रीकरण-संबन्धी; (सुपा ३९१)। °**कूड** पुंन [°**कूट**] हिमवंत पर्वत का एक शिखर; (राज)। °**खंड** न [°**खण्ड**] चन्दन; (सुर २, ५९; कप्पू)। °**गरण** देखो °**करण**; (सुपा ४२५)। °**गीव** पुं [°**ग्रीव**] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६१)। °**गुत्त** पुं [°**गुप्त**] एक जैन महर्षि; (कप्प)। °**घर** न [°**गृह**] भंडार, खजाना; (णाया १, १—पत्र ५३; सूअनि ५५)। °**घरिअ** वि [°**गृहिक**] भंडारी, खजानची; (विसे १४२५)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] १ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य और ग्रन्थकार; (पव ४६; सुपा ६५८)। २ ऐरवत क्षेत्र में होने वाले एक जिनदेव; (सम १५४; पव ७)। ३ आठवें बलदेव का पूर्वभवीय नाम; (पउम २०, १९१)। °**चंदा** स्त्री [°**चन्द्रा**] १ एक पुष्करिणी; (इक)। २ एक राज-पत्नी; (उप ९८६ टी)। °**इढ** पुं [°**आढ्य**] एक जैन मुनि; (कप्प)। °**णयर** न [°**नगर**] वैताढ्य की दक्षिण-श्रेणी का एक विद्याधर-नगर; (इक), देखो °**नयर**। °**णिकेतण** न [°**निकेतन**] वैताढ्य की उत्तर-श्रेणी में स्थित एक विद्याधर-नगर; (इक)। °**णिलय** न [°**निलय**] वैताढ्य पर्वत की दक्षिण-श्रेणि में स्थित एक नगर; (इक), देखो °**निलय**। °**णिलया** स्त्री [°**निलया**] एक पुष्करिणी; (इक)। °**णिहुवय** पुं [°**कामक**] विष्णु, श्रीकृष्ण; (कुमा)।

°नाली स्त्री [°ताली] वृक्ष-विशेष; (कप्पू)। °दत्त पुं [°दत्त] ऐरवत वर्ष में उत्पन्न पाँचवें जिन-देव; (पव ७)। °दाम न [°दामन्] १ शोभा वाली माला; (जं ५)। २ आभरण-विशेष; (आवम)। ३ पुं. एक राजा; (विपा १, ६—पत्र ६४)। °दामकंड, °दामगंड पुंन [°दामकाण्ड] १ शोभा वाली मालाओं का समूह; (जं ५)। २ एक देव-विमान; (सम ३६)। °दामगंड पुंन [°दामगण्ड] शोभावाली मालाओं का दण्डाकार समूह; (जं ५)। °देवी स्त्री [°देवी] १ देवी-विशेष; (राज)। २ लक्ष्मी; (धर्मवि १४७)। °देवीनंदण पुं [°देवी-नन्दन] कामदेव; (धर्मवि १४७)। °नंदण पुं [°नन्दन] १ कामदेव; २ वि. श्री से समृद्ध; (सुपा २३४; धम्म १३ टी)। °नयर न [°नगर] दक्षिण देश का एक शहर; (कुमा), देखो °णयर। °निलय पुं [°निलय] वासुदेव; (पउम ३८, ३०), देखो °णिलय। °पट्ट पुं [°पट्ट] नगर-शेठाई का सूचक एक राज-चिह्न; (सुपा २८३)। °पव्वय पुं [°पर्वत] पर्वत-विशेष; (वज्जा ६८)। °पह पुं [°प्रभ] एक प्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार; (धर्मवि १५२)। °पाल देखो °वाल; (सिरि ३४)। °फल पुं [°फल] बिल्व-वृक्ष; (कुमा), देखो °हल। °भूइ पुं [°भूति] भारतवर्ष में होने वाले छठवें चक्रवर्ती राजा; (सम १५४)। °म देखो °मंत; (उप पृ ३७४)। °मई स्त्री [°मती] १ इन्द्र-नामक विद्याधर-राज की एक पत्नी; (पउम ६,३)। २ एक राज-पत्नी; (महा)। ३ एक सार्थवाह-कन्या; (महा)। °मंगल पुं [°मङ्गल] दक्षिण भारत का एक देश; (उप ७६८ टी)। °मंत वि [°मत्] १ शोभा वाला, शोभा-युक्त; (कुमा)। २ पुं. तिलक वृक्ष; ३ अश्वत्थ वृक्ष; ४ विष्णु; ५ शिव, महादेव; ६ श्वान, कुत्ता; (हे २, १५९; षड्)। °मलय न [°मलय] वैताढ्य की दक्षिण-श्रेणी में स्थित एक विद्याधर-नगर; (इक)। °महिअ पुंन [°महिक] एक देव-विमान; (सम २७)। °महिआ स्त्री [°महिता] एक पुष्करिणी; (इक)। °माल पुं [°माल] एक प्रसिद्ध वंश; (कुप्र १४३)। °मालपुर न [°मालपुर] एक नगर; (ती १५)। °यंठ देखो °कंठ; (गउड)। °यंदल देखो °कंदलग; (पण्ह १, १—पत्र ७)। °वइ पुं [°पति] श्रीकृष्ण, वासुदेव; (सम्मत्त ७५)। °वच्छ पुं [°वत्स] १ जिनदेव आदि महापुरुषों के हृदय का एक ऊँचा अवयवाकार चिह्न; (औप; सम १५३; महा)। २ महेन्द्र देवलोक के इन्द्र का एक पारियानिक विमान; (ठा ८—पत्र ४३७)। ३ एक देव-विमान; (सम ३९; देवेन्द्र १४०; औप)। °वच्छा स्त्री [°वत्सा] भगवान् श्रेयासनाथजी की शासन-देवी; (संति ९)। °वडिंसय न [°अवतंसक] सौधर्म देवलोक का एक विमान; (राज)। °वण न [°वन] एक उद्यान; (अंत ४)। °वण्णी स्त्री [°पर्णी] वृक्ष-विशेष; (पण्ण १—पत्र ३१)। °वत्त (अप) देखो °मंत; (भवि)। °वद्धण पुं [°वर्धन] एक राजा; (पउम ५, २९)। °वय पुं [°वद] पक्षि-विशेष; (दे १, ६७; ८, ५२ टी)। °वारिसेण पुं [°वारिषेण] ऐरवत वर्ष में होने वाले चौबीसवें जिनदेव; (पव ७)। °वाल पुं [°पाल] १ एक प्रसिद्ध जैन राजा; (सिरि ३१७)। २ राजा सिद्धराज के समय का एक जैन महाकवि; (कुप्र २१९)। °संभूआ स्त्री [°संभूता] पक्ष की छठवीं रात; (सुज्ज १०, १४)। °सिचय पुं [°सिचय] ऐरवत वर्ष में उत्पन्न दूसरे जिनदेव; (पव ७)। °सेण पुं [°षेण] एक राजा; (उप ९८६ टी)। °सेल पुं [°शैल] हनूमान; (पउम १७, १२०)। °सोम पुं [°सोम] भारतवर्ष में होने वाला सातवाँ चक्रवर्ती राजा; (सम १५४)। °सोमणस पुंन [°सौमनस] एक देव-विमान; (सम २७)। °हर न [°गृह] भंडार; (श्रा २८)। °हर पुं [°धर] १ भगवान् पार्श्वनाथ का एक मुनि-गण; २ भगवान् पार्श्वनाथ का एक गणधर—मुख्य शिष्य; (कप्प)। ३ भारतवर्ष में अतीत उत्सर्पिणी काल में उत्पन्न सातवें जिनदेव; ४ ऐरवत वर्ष में वर्तमान अवसर्पिणी काल में उत्पन्न वीसवें जिनदेव; (पव ७; उप ९८६ टी)। ५ वासुदेव; (पउम ४७, ४९; षड्)। °हर वि [°हर] श्री को हरण करने वाला; (कुमा)। °हल न [°फल] बिल्व फल; (पाअ), देखो °फल।

सिरिअ पुं [**श्रीक, श्रीयक**] स्थूलभद्र का छोटा भाई और नन्द राजा का एक मन्त्री; (पडि)।

सिरिअ न [**स्वैर्य**] स्वच्छन्दता; (मै ७३)।

सिरिंग पु [**दे**] विट, लम्पट, कामुक; (दे ८, ३२)।

सिरिहह पुस्त्री [**दे**] पक्षिओं का पान-पात्र; (पाअ, दे ८, ३२)।

सिरिमुह वि [**दे**] मद-मुख, जिसके मुह मे मद हो वह;

(दे ८, ३२)।

सिरिया देखो **सिरी**; (सम १५१)।

सिरिली स्त्री [दे. श्रीली] कन्द-विशेष; (उत्त ३६, ६८)।

सिरिविच्छीव पुं [दे] गोपाल, ग्वाला; (दे ८, ३३)।

सिरिविय पुं [दे] हंस पक्षी; (दे ८, ३२)।

सिरिविय देखो **सिरि-वय**।

सिरिस पुं [शिरीष] १ वृक्ष-विशेष, सिरसा का पेड़; (सम १५२; हे १, १०१)। २ न. सिरसा का फूल; (कुमा)।

सिरी स्त्री [श्री] १ लक्ष्मी, कमला; (पाअ; कुमा)। २ संपत्ति, समृद्धि, विभव; (पाअ; कुमा)। ३ शोभा; (औप; राय; कुमा)। ४ पद्महद की अधिष्ठाली देवी; (ठा २, ३—पत्र ७२)। ५ उत्तर रुचक पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८—पत्र ४३७)। ६ देव-प्रतिमा-विशेष; (णाया १, १ टी—पत्र ४३)। ७ भगवान् कुन्थुनाथजी की माता का नाम; (पव ११)। ८ एक श्रेष्ठि-कन्या; (कुप्र १५२)। ९ एक श्रेष्ठि-पत्नी; (कुप्र २२१)। १० देव, गुरु आदि के नाम के पूर्व में लगाया जाता आदर-सूचक शब्द; (पव ७; कुमा; पि ९८)। ११ वाणी; १२ वेष-रचना; १३ धर्म आदि पुरुषार्थ; १४ प्रकार, भेद; १५ उपकरण, साधन; १६ बुद्धि, मति; १७ अधिकार; १८ प्रभा, तेज; १९ कीर्ति, यश; २० सिद्धि; २१ वृद्धि; २२ विभूति; २३ लवङ्ग, लौंग; २४ सरल वृक्ष; २५ बिल्व वृक्ष; २६ ओषधि-विशेष; २७ कमल, पद्म; (हे २, १०४)। देखो **सिअ, सिरि°, ली** = श्री।

सिरीस देखो **सिरिस**; (णाया १, ९—पत्र १६०; औप; कुमा)।

सिरीसिव पुं [सरीसृप] सर्प, साँप; (सूअ १, ७, १५; पि ८१; १७७)।

सिरो° देखो **सिर** = शिरस्। °**धरा** (शौ) देखो °**हरा**; (पि ३४७)। °**मणि** पु [°मणि] प्रधान, अग्रणी, मुख्य; "अलससिरोमणी" (गा ९७०; सुपा ३०१; प्रारू २७)। °**रुह** पुं [°रुह] केश, बाल; (पाअ)। °**विअणा** स्त्री [°वेदना] सिर की पीड़ा; (हे १, १५६)। °**वत्थि** देखो **सिर-बत्थि**; (राज)। °**हरा** स्त्री [°धरा] ग्रीवा, डोक; (पाअ; णाया १, ३; स ८; अभि २२४)।

सिल° देखो **सिला**; (कुमा)। °**प्पवाल** न [°प्रवाल] विद्रुम; (औप)।

सिलंब देखो **सिलिंब**; (पाअ)।

सिलय पुं [दे] उञ्छ, गिरे हुए अन्न-कणों का ग्रहण; (दे ८, ३०)।

सिला स्त्री [शिला] १ सिल, चट्टान, पत्थर; (पाअ; प्राप्र; कप्प; कुमा)। २ ओला; (दस ८, ६)। °**ज**[तु] पुंन [°जतु] शिलाजित, पर्वतों से उत्पन्न होने वा[ला] द्रव्य-विशेष, जो दवा के काम में आता है, शिला-र[स]; (उप ७२८ टी; धर्मवि १४१)।

सिलाइच्च पुं [शिलादित्य] वलभीपुर का एक राजा; (ती १५)।

सिलागा देखो **सलागा**; (सं ८४)।

सिलाघ (शौ) नीचे देखो। कृ—**सिलाघणीअ**; (प्र[...] ९७)।

सिलाह सक [श्लाघ्] प्रशंसा करना। कृ—**सिलाहणि**[...] (रयण १९)।

सिलाहा स्त्री [श्लाघा] प्रशंसा; (मै ८८)।

सिलिंद पुं [शिलिन्द] धान्य-विशेष; (पव १५६; सं[...] ४३; आ १८; दसनि ६, ८)।

सिलिंध पुंन [शिलीन्ध्र] १ वृक्ष-विशेष, छत्रक वृ[क्ष], भूमिस्फोट वृक्ष; (णाया १, १—पत्र २५; ९—[पत्र] १६०; औप; कुमा)। २ पुं. पर्वत-विशेष; (स २५२)। °**निलय** पुं [°निलय] पर्वत-विशेष; (स ४२४)।

सिलिंब पुं [दे] शिशु, बच्चा; (दे ८, ३०; सुर [...] २०६; सुपा ३४)।

सिलिट्ठ वि [श्लिष्ट] १ मनोज्ञ, सुन्दर; "अइकंतविस[...] माणमउयसुकुमालकुम्मसंठियसिलिट्ठचरणा" (पण्ह [...] ४—पत्र ७९)। २ संगत, सुयुक्त; (औप)। ३ आ[लि]ङ्गित; ४ संसृष्ट; ५ श्लेषालंकार-युक्त; (हे २, १[...] प्राप्र)।

सिलिपइ देखो **सिलिवइ**; (राज)।

सिलिम्ह पुंस्त्री [श्लेष्मन्] श्लेष्मा, कफ; (हे २, ५[५]; १०६; पि १३६)। देखो **सेम्ह**।

सिलिया स्त्री [शिलिका] १ चीरेता आदि तृण, ओष[धि]-विशेष; २ पाषाण-विशेष, शस्त्र को तीक्ष्ण करने [का] पाषाण; (णाया १, १३—पत्र १८१)।

सिलिसिअ देखो **सिलिट्ठ**; (कुमा ७, २५)।

सिलिवइ वि [श्लीपदिन्] श्लीपद-नामक रोग वा[ला]

जिससे पैर फूला हुआ और कठिन हो जाता है उस रोग से युक्त; (आचा; वृह १)।

सिलीमुह पुं [**शिलीमुख**] १ बाण, तीर; (पाअ; सुर ६, १४)। २ रावण का एक योद्धा; (पउम ५६, ३६)।

सिलीस देखो **सिलेस**=श्लिष्। सिलीसइः (भवि)। सिलीसंति; (सूअ २, २, ५५)।

सिलुच्चय पुं [**शिलोच्चय**] १ मेरु पर्वत; (सुज ५)। २ पर्वत, पाहाड़; (रंभा)।

सिलेच्छिय पुं [**शिलैक्ष्किक**] मत्स्य-विशेष; (जीव १ टी—पत्र ३६)।

सिलेम्ह देखो **सिलिम्ह**; (पड्)।

सिलेस सक [**श्लिष्**] आलिङ्गन करना, भेटना। सिलेसइ; (हे ४, १६०)।

सिलेस पुं [**श्लेष**] १ वज्रलेप आदि संधान; (सूअनि १८५)। २ आलिङ्गन, भेट; (सुर १६, २४३)। ३ संसर्ग; ४ दाह; (हे २, १०६; पड्)। ५ एक शब्दालंकार; (सुर १, ३६; १६, २४३)।

सिलेस देखो **सिलिम्ह**; (अनु ५)।

सिलोअ } **सिलोग** } पुं [**श्लोक**] १ कविता, पद्य, काव्य; (मुद्रा १६८; सुपा ५६४; अजि ३; महा)। २ यश, कीर्ति; (सूअ १, १३, २२; हे २, १०६)। ३ कला-विशेष, कवित्व, काव्य बनाने की कला; (औप)।

सिलोच्चय देखो **सिलुच्चय**; (पाअ; सुर १, ७; राज)।

सिल्ल पुं [**दे**] १ कुन्त, बर्छा, शस्त्र-विशेष; (सुपा ३११; कुप्र २८; काल; सिरि ४०३)। २ पोत-विशेष, एक प्रकार का जहाज; (सिरि ३८३)।

सिल्ला देखो **सिला**। °र पु [°**कार**] शिलावट, पत्थर घड़ने वाला शिल्पी; (ती १५)।

सिल्हग न [**सिह्लक**] गन्ध-द्रव्य विशेष; (राज)।

सिल्हा स्त्री [**दे**] शीत, जाड़ा; (से १२, ७)।

सिव न [**शिव**] १ मङ्गल, कल्याण; २ सुख; (पाअ; कुमा; गउड)। ३ अहिंसा; (पण्ह २, १—पत्र ६६)। ४ पुन. मुक्ति, मोक्ष; (पाअ; सम्मत्त ७६; सम १; कप्प; औप; पडि)। ५ वि. मङ्गल-युक्त, उपद्रव-रहित; (कप्प; औप; सम १; पडि)। ६ पु. महादेव; (णाया १, १—पत्र ३९; पाअ; कुमा; सम्मत्त ७६)। ७ जिनदेव, तीर्थंकर, अर्हन्; (पउम १०६, १२)। ८ एक राजर्षि, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी; (ठा ८—पत्र ४३०; भग ११, ६)। ६ पाँचवें वासुदेव तथा बलदेव का पिता; (सम १५२)। १० देव-विशेष; (राय; अणु)। ११ पौष मास का लोकोत्तर नाम; (सुज १०, १६)। १२ एक देव-विमान; (देवेन्द्र १४३)। १३ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**कर** न [°**कर**] १ शैलेशी अवस्था की प्राप्ति; २ मुक्ति-मार्ग; (सूअनि ११५)। °**गइ** स्त्री [°**गति**] १ मुक्ति, मोक्ष; २ वि. मुक्त, मुक्ति-प्राप्त; (राज)। ३ पुं. भारत वर्ष में अतीत उत्सर्पिणी-काल में उत्पन्न चौदहवें जिन-देव; (पव ७)। °**तित्थ** न [°**तीर्थ**] काशी, बनारस; (हे ४, ४४२)। °**नंदा** स्त्री [°**नन्दा**] आनन्द-श्रावक की पत्नी; (उवा)। °**भूइ** पु [°**भूति**] १ एक जैन महर्षि; (कप्प)। २ बोटिक मत—दिगंबर जैन संप्रदाय—का स्थापक एक मुनि; (विसे २५५१)। °**रत्ति** स्त्री [°**रात्रि**] फाल्गुन (गुजराती माघ) मास की कृष्ण चतुर्दशी तिथि; (सट्ठि ७८ टी)। °**सेण** पुं [°**सेन**] ऐरवत वर्ष में उत्पन्न एक अर्हन्; (सम १५३)।

सिवंकर पुं [**शिवङ्कर**] पाँचवें केशव का पिता; (पउम २०, १८२)।

सिवक } **सिवय** } पुं [**शिवक**] १ घड़ा तैयार होने के पूर्व की एक अवस्था; (विसे २३१६)। २ वेलन्धर नागराज का एक आवास-पर्वत; (इक)।

सिवा स्त्री [**शिवा**] १ भगवान नेमिनाथजी की माता का नाम; (सम १५१)। २ सौधर्म देवलोक के इन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ८—पत्र ४१६; णाया २—पत्र २५३)। ३ पनरहवें जिनदेव की प्रवर्तिनी—मुख्य साध्वी; (पव ६)। ४ शृगाली, मादा सियार; (अणु; वज्जा ११८)। ५ पार्वती; (पाअ)।

सिवाणंदा देखो **सिव-नंदा**; (उवा)।

सिवासि पुं [**शिवाशिन्**] भरतक्षेत्र में अतीत अवसर्पिणी-काल में उत्पन्न बारहवें जिनदेव; (पव ७)।

सिविण देखो **सुमिण**; (हे १, ४६; प्राप्र; रंभा; कुमा; कप्पू)।

सिविया स्त्री [**शिविका**] सुखासन, पालकी, डोली; (कप्प; औप; महा)।

सिविर न [**शिविर**] १ स्कन्धावार, सैन्य-निवास-स्थान, छावनी; (कुमा)। २ सैन्य, सेना, लश्कर; (सुपा ६)।

सिव्व सक [**सीव्**] सीना, साँधना। सिव्वइ; (षड्; विसे १३६८)। भवि—सिव्विस्सामि; (आचा १, ६,

३, १)।

सिव्व देखो **सिव**=शिव; (प्राकृ २६; संक्षि १७)।

सिव्विअ वि [**स्यूत**] सिया हुआ; (पव ६२)।

सिव्विणी } स्त्री [**दे**] सूची, सूई; (दे ८, २९)।
सिव्वी

सिस देखो **सिलेस**=श्लिष्। सिसइ; (षड्)।

सिसिर न [**दे**] दधि, दही; (दे ८, ३१; पाअ)।

सिसिर पुं [**शिशिर**] १ ऋतु-विशेष, माघ तथा फागुन का महिना; (उप ७२८ टी; हे ४, ३५७)। २ माघ मास का लोकोत्तर नाम; (सुज्ज १०, १९)। ३ फागुन मास; "सिसिरो फग्गुण-माहो" (पाअ)। ४ वि. जड़, ठंढा, शीतल; (पाअ; उप ७६८ टी)। ५ हलका; (उप ७६८ टी)। ६ न. हिम; (उप ९८६ टी)। °**किरण** पुं [°**किरण**] चन्द्रमा; (धर्मवि ५)। °**महीहर** पुं [°**महीधर**] हिमालय पर्वत; (उप ९८६ टी)।

सिसिरली देखो **सिस्सिरिली**; (राज)।

सिसु पुंन [**शिशु**] बालक, बच्चा; (सुपा ५८८; सम्मत्त १२२), "सा खाइ पायमेक्कं सिसूणि बीयं पढमपहरे" (कुप्र १७३)। °**आल** पुं [°**काल**] बाल्य, बाल-काल; (नाट—चैत ३७)। °**नाग** पुं [°**नाग**] क्षुद्र कीट-विशेष, अलस; (उत्त ५, १०)। °**पाल** पुं [°**पाल**] एक प्रसिद्ध राजा; (णाया १, १६—पत्र २०८; सूअ १, ३, १,१; उप ६४८ टी; कुप्र २५६)। °**यव** पुंन [°**यव**] तृण-विशेष; (पणण १—पत्र ३३)। °**वाल** देखो °**पाल**; (सूअ १, ३, १, १ टी)।

सिस्स पुंस्त्री [**शिष्य**] १ चेला, छात्र, विद्यार्थी; (णाया १, १—पत्र ६०; सुअनि १२७); स्त्री—°**स्सा**, °**स्सिणी**; (मा ६; णाया १, १४—पत्र १८८)।

सिस्स देखो **सीस**=शीर्ष; (सम ५०)।

सिस्सिरिली स्त्री [**दे**] कन्द-विशेष; (उत्त ३६, ९८)।

सिह सक [**स्पृह्**] इच्छा करना, चाहना। सिहइ; (हे ४, ३४; प्राकृ २३)। कृ—सिहणिज्ज; (दे ८, ३१ टी)।

सिह पुं [**दे**] भुजपरिसर्प की एक जाति; (सूअ २, ३, २५)।

सिहंड पुं [**शिखण्ड**] शिखा, चूला, चोटी; (पाअ; अभि १५१)।

सिहंडइल्ल पुं [**दे**] १ बालक, शिशु; २ दधिसर, दही की मलाई; ३ मयूर, मोर; (दे ८, ५४)।

सिहंडहिल्ल पुं [**दे**] बालक, बच्चा; (षड्)।

सिहंडि वि [**शिखण्डिन्**] १ शिखा-धारी; (भत्त १००; औप)। २ पुं. मयूर-पक्षी, मोर; (पाअ; उप ७२८ टी)। ३ विष्णु; (सुपा १४२)।

सिहण देखो **सिहिण**; (रंभा)।

सिहर न [**शिखर**] १ पर्वत के ऊपर का भाग, शृङ्ग; (पाअ; गउड; सुर ४, ५६; से ६, १८)। २ अग्र भाग; (णाया १, ९)। ३ लगातार अठाईस दिनों के उपवास; (संबोध ५८)। °**अण** वि [°**चण**] शिखरों से प्रसिद्ध; (से ६, १८)।

सिहरि पुं [**शिखरिन्**] १ पहाड़, पर्वत; (पाअ; सुपा ४९)। २ वर्षधर पर्वत-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ६९; सम १२; ४३)। ३ पुंन. कूट-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७०)। °**वइ** पुं [°**पति**] हिमालय पर्वत; (से ८, ९२)।

सिहरिणी } स्त्री [**दे. शिखरिणी**] मार्जिता, खाद्य-
सिहरिल्ला } विशेष, दही-चीनी आदि से बनता एक तरह का मिष्ट खाद्य; (दे १, १५४; ८, ३३; पण्ह २, ५—पत्र १४८; पव ४; पभा ३३; कस; सण)।

सिहली } स्त्री [**शिखा**] १ चोटी, मस्तक पर के बालों
सिहा } का गुच्छा; (पंचा १०, ३२; पव १५३; पाअ; णाया १, ५—पत्र १०८; संबोध ३१)। २ अग्नि की ज्वाला; (पाअ; कुमा; गउड)।

सिहाल वि [**शिखावत्**] शिखा वाला, शिखा-युक्त; (गउड)।

सिहि पुं [**शिखिन्**] १ अग्नि, आग; (गा १३; पाअ; सुपा ५१९)। २ मयूर, मोर; (पाअ; हेका ४५; गा ५२; १७३)। ३ रावण का एक सुभट; (पउम ५६, ३०)। ४ पर्वत; ५ ब्राह्मण; ६ मुर्गा; ७ केतु ग्रह; ८ वृक्ष; ९ अश्व; १० चित्रक-वृक्ष; ११ मयूरशिखा-वृक्ष; १२ बकरे का रोम; १३ वि. शिखा-युक्त; (अणु १४२)।

सिहि पुं [**दे**] कुक्कुट, मुर्गा; (दे ८, २८)।

सिहिअ वि [**स्पृहित**] अभिलषित; (कुमा)।

सिहिण पुंन [**दे**] स्तन, थन; (दे ८, ३१; सुर १, ९०; पाअ; षड्; रंभा; सुपा ३२; भवि; हम्मीर ५०; सम्मत्त १६१)।

सिहिणी स्त्री [**शिखिनी**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

सिही (अप) स्त्री [**सिंही**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

सी (अप) स्त्री [**श्री**] छन्द-विशेष; (पिंग)। देखो

सिरी।

सीअ अक [सद्] १ विषाद करना, खेद करना। २ थकना। ३ पीडित होना, दुःखी होना। ४ फलना, फल लगना। सीअइ, सीअंति; (पि ४८२; गा ८७४) 'जया सीवन्नि सीयइ" (पिंड ८२), "सीयंति य सव्वअंगाइं" (सुर १२, २)। वकृ—सीअंत; (पाअ ५०७; सुपा ५१०; कुप्र ११८)।

सीअ न [दे] सिक्थक, मोम; (दे ८, ३३)।

सीअ वि [स्वीय] स्वकीय, निज का; "सीयतेयलेस्सा-पडिसाहरणट्ठयाए", "सीओसिणा तेयलेस्सा" (भग १५—पत्र ६६६)।

सीअ देखो सिअ = सित; "सीआसीअं" (प्राप्र)।

सीअ पुंन [शीत] १ स्पर्श-विशेष, ठंढ़ा स्पर्श; (ठा १—पत्र २५; पव ८६)। २ हिम, तुहिन; (से ३, ४७)। ३ शीत-काल; (राज)। ४ ठंढ़, जाड़ा; (ठा ४, ४—पत्र २८७; औप; गउड; उत्त २, ६)। ५ कर्म-विशेष, शीत स्पर्श का कारण-भूत कर्म; (कम्म १, ४१; ४२)। ६ वि. शीतल, ठंढ़ा; (भग; औप; णाया १, १ टी—पत्र ४)। ७ पुं. प्रथम नरक का एक नरक-स्थान; (देवेन्द्र ४)। ८ न. तप-विशेष, आयम्बिल तप; (संबोध ५८)। ९ वि. अनुकूल; (सूअ १, २, २, २२)। १० न. सुख; (आचा)। °घर न [°गृह] चक्रवर्ती का वर्धकि-निर्मित वह घर जहाँ सर्व ऋतु में स्पर्श की अनुकूलता होती है; (वव ३)। °च्छाय वि [°च्छाय] शीतल छाया वाला; (औप; णाया १, १ टी—पत्र ४)। °परीसह पुं [°परीषह] शीत को सहना; (उत्त २, १)। °फास पुं [°स्पर्श] ठंढ, जाड़ा, सर्दी; (आचा)। °सोआ स्त्री [°श्रोता, स्रोता] नदी-विशेष; (इक; ठा ३, ४—पत्र १६१)। °ालोअअ पुं [°ालोकक] १ चन्द्रमा; २ शीतकाल, हिम-ऋतु; (से ३, ४७)।

सीअ° देखो सीआ=शीता। °प्पवाय पुं [°प्रपात] द्रह-विशेष, जहाँ शीता नदी पहाड़ पर से गिरती हैं; (ठा २, ३—पत्र ७२)।

सीअ° देखो सीआ=सीता; (कुमा)।

सीअउरय पुं [दे. शीतोरस्क] गुल्म-विशेष; "पत्तउर-मीयउरए हवइ तह जवासए य बोधव्वे" (पराण १—पत्र ३२)।

सीअण न [सदन] हैरानी; (सम्मत्त १९९)।

सीअणय न [दे] १ दुग्ध-पारी, दूध दोहने का पात्र; २ श्मशान, मसान; (दे ८, ५५)।

सीअर पुं [शीकर] १ पवन से क्षिप्त जल, फुहार, जल-कण; (हे १, १८४; गउड; कुमा; सण)। २ वायु, पवन; (हे १, १८४; प्राकृ ८४)।

सीअरि वि [शीकरिन्] शीकर-युक्त; (गउड)।

सीअल पुं [शीतल] १ वर्तमान अवसर्पिणी काल के दसवें जिन-देव; (सम ४३; पडि)। २ कृष्ण पुद्गल-विशेष; (सुज्ज २०)। ३ वि. ठढ़ा; (हे ३, १०; कुमा; गउड; रयण ५७)।

सीअलिया स्त्री [शीतलिका] १ ठंढ़ी, शीतला; "सीयलियं तेअलेस्सं निसिरामि" (भग १५—पत्र ६६६)। २ लूता-विशेष; (राज)।

सीअलिल पुंस्त्री [दे] १ हिमकाल का दुर्दिन; २ वृक्ष-विशेष; (दे ८, ५५)।

सीआ स्त्री [शीता] १ एक महा-नदी; (सम २७; १०२; इक)। २ ईषत्प्राग्भारा-नामक पृथिवी, सिद्ध-शिला; (इक)। ३ शीताप्रपात द्रह की अधिष्ठात्री देवी; (जं ४)। ४ नील पर्वत का एक शिखर; ५ माल्यवत् पर्वत का एक कूट; (इक)। ६ पश्चिम रुचक पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८—पत्र ४३६)। °मुह न [°मुख] एक वन; (जं ४)।

सीआ स्त्री [सीता] १ जनक-सुता, राम-पत्नी; (पउम ३८, ५६)। २ चतुर्थ वासुदेव की माता का नाम; (पउम २०, १८४; सम १५२)। ३ लाङ्गल-पद्धति, खेत में हल चलाने से होती भूमि-रेखा; (दे २, १०४)। ४ ईषत्प्राग्भारा-नामक पृथिवी; (उत्त ३६, ६२; चेइय ७२५)। ५-६ नील तथा माल्यवत् पर्वतों के शिखर-विशेष; (इक)। ७ एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८)।

सीआ देखो सिविया; (कप्प; औप; सम १५१)।

सीआण देखो मसाण=श्मशान; (हे २, ८६, वव ७)।

सीआर देखो सिक्कार; (णाया १, १—पत्र ६३)।

सीआला स्त्री [सप्तचत्वारिंशत्] सेंतालीस, ४७; (कम्म ६, २१)।

सीआलीस स्त्रीन. ऊपर देखो; (पि ४४५; ४४८), स्त्री—°सा; (सुज्ज २, ३—पत्र ५१)।

सीआव सक [सादय्] शिथिल करना। "सीयावेइ विहारं" (गच्छ १, २३)।

सीइआ स्त्री [**दे**] झड़ी, निरन्तर वृष्टि; (दे ८, ३४)।
सीइय वि [**सन्न**] खिन्न, परिश्रान्त; (स ८५)।
सीई स्त्री [**दे**] सीढ़ी, निःश्रेणि; (पिंड ६८)।
सीउग्गय वि [**दे**] सुजात, (दे ८, ३४)।
सीउट्ट न [**दे**] हिम-काल का दुर्दिन; (षड्)।
सीउण्ह न [**शीतोष्ण**] १ ठंढ़ा तथा गरम; २ अनुकूल तथा प्रतिकूल; (सूअ १, २, २, २२; पि १३३)।
सीउल्ल देखो **सीउट्ट**; (षड्)।
सीओअ° देखो **सीओआ**। **°प्पवाय** पुं [**°प्रपात**] कुण्ड-विशेष, जहाँ शीतोदा नदी पहाड़ से गिरती है, (ज ४—पत्र ३०७)। **°दीव** पु [**°द्वीप**] द्वीप-विशेष; (जं ४—पत्र ३०७)।
सीओआ स्त्री [**शीतोदा**] १ एक महा-नदी; (ठा २, ३—पत्र ७२; इक; सम २७; १०२)। २ निषध पर्वत का एक कूट; (ठा ६—पत्र ४५४)।
सीकोत्तरी स्त्री [**दे**] नारी, स्त्री, महिला; (सिरि ३६०)।
सीत देखो **सीअ**=शीत; (ठा ३, ४—पत्र १६१)।
सीता देखो **सीआ** = शीता, सीता; (ठा ८—पत्र ४३६; ६—पत्र ४५४)।
सीतालीस देखो **सीआलीस**; (सुज्ज २, ३—पत्र ५१)।
सीतोद° देखो **सीओअ°**; (ठा २, ३—पत्र ७२)।
सीतोदा / **सीतोया** देखो **सीओआ**; (पण्ह २, ४—पत्र १३०; सम ८४)।
सीदण न [**सदन**] शैथिल्य, प्रमत्तता; (पंचा १२, ४६)।
सीधु देखो **सीहु**; (णाया १, १६—पत्र २०६; उवा)।
सीभर देखो **सीअर**; (प्राप्र; कुमा; हे १, १८४, षड्)।
सीभर वि [**दे**] समान, तुल्य; (अणु १३१)।
सीमआ स्त्री [**सीमन्**] १ मर्यादा; २ अवधि; ३ स्थिति; ४ क्षेत्र; ५ वेला, समय; ६ अण्डकोप, पोता; (षड्)। देखो **सीमा**।
सीमंकर पुं [**सीमङ्कर**] १ इस अवसर्पिणी काल में उत्पन्न एक कुलकर पुरुष का नाम; (पउम ३, ५३)। २ एेरवत क्षेत्र के भावी द्वितीय कुलकर; (सम १५३)। ३ वि. मर्यादा-कर्ता; (सूअ २, १, १३)।
सीमंत पुं [**सीमन्त**] १ बालों मे बनाई हुई रेखा-विशेष; (से ६, २०; गउड; उप ७२८ टी)। २ अपर काय; (गउड ८५)। ३ ग्राम से लगी हुई भूमि का अन्त, सीम, गाँव का पर्यन्त भाग; (गउड २७३; २७७; उप ७२८ टी)। ४ सीमा का अन्त, हद्द; "एसो च्चिय सीमंतो गुणाण दूरं फुरंताण" (गउड)।
सीमंत पुं [**सीमान्त**] १ सीमा का अन्त भाग, गाँव का पर्यन्त भाग; (गउड ३९७; ४०५)। २ हद्द; (गउड ८८६)।
सीमंत सक [**दे. सीमान्तय्**] बेचना। सकृ—**सीमंतिऊण**; (राज)।
सीमंतग / **सीमंतय** पु [**सीमन्तक**] प्रथम नरक-भूमि का एक नरका-वास, नरक-स्थान; (निचू १; ठा ३, १—पत्र १२६; सम ६८)। **°प्पभ** पु [**°प्रभ**] सीमन्तक नरकावास की पूर्व तरफ स्थित एक नरकावास; (देवेन्द्र २०)। **°मज्झिम** पुं [**°मध्यम**] सीमन्तक की उत्तर तरफ स्थित एक नरकावास, (देवेन्द्र २०)। **°ावसिट्ठ** पु [**°ावशिष्ट**] सीमन्तक की दक्षिण दिशा में स्थित एक नरकावास; (देवेन्द्र २१)। **°ावत्त** पु [**°ावर्त**] सीमन्तक की पश्चिम तरफ का एक नरकावास; (देवेन्द्र २१)।
सीमंतय न [**दे**] सीमंत—बालों की रेखा-विशेष—में पहना जाता अलंकार-विशेष; (दे ८, ३५)।
सीमंतिअ वि [**सीमन्तित**] खण्डित, छिन्न; (पाअ)।
सीमंतिणी स्त्री [**सीमन्तिनी**] स्त्री, नारी, महिला; (पाअ; उप ७२८ टी; सम्मत्त १६१; सुपा ७)।
सीमंधर पु [**सीमन्धर**] १ भारतवर्ष में उत्पन्न एक कुलकर पुरुष; (पउम ३, ५३)। २ एेरवत वर्ष का एक भावी कुलकर; (सम १५३)। ३ पूर्व-विदेह में वर्तमान एक अर्हन् देव; (काल)। ४ एक जैन मुनि जो भगवान् सुमतिनाथ के पूर्व जन्म में गुरू थे; (पउम २०, १७)। ५ भगवान् शीतलनाथ जी का मुख्य श्रावक; (विचार ३७८)। ६ वि. मर्यादा को धारण करने वाला, मर्यादा का पालक; (सूअ २, १, १३)।
सीमा स्त्री [**सीमा**] देखो **सीमआ**; (पाअ; गा १६८, ७५१; काल, गउड)। **°गार** पुं [**°कार**] जलजन्तु-विशेष, ग्राह का एक भेद; (पण्ह १, १—पत्र ७)। **°धर** वि [**°धर**] मर्यादा-धारक; (पडि; हे ३, १३४)। **°ल** वि [**°ल**] सीमा के पास का, सीमा के निकट-वर्ती; "सीमाला नरवइणो सव्वे ते सेवमावन्ना" (सुपा २२२; ३५२; ४६३; धर्मवि ५६)।
सीर पुंन [**सीर**] हल, जिससे खेत जोतते हैं; (पउम

११३, ३२; कुमा; पडि), "संसयवसुहासीरो" (धर्मवि १६)। °धारि पुं [°धारिन्] बलदेव, बलभद्र, राम; (पउम २०, १६३)। °पाणि पुं [°पाणि] वही; (दे २, २३; कुमा)। °सीमंत पुं [°सीमन्त] हल से फाड़ी हुई जमीन की रेखा; (दे)।

सीरि पुं [**सीरिन्**] बलभद्र, बलदेव; (पाअ)।

सीरिअ वि [**दे**] भिन्न; "सीरिओ भिन्नो" (पाअ)।

सील सक [**शीलय्**] १ अभ्यास करना, आदत डालना। २ पालन करना। "सीलेज्जा सीलमुज्जलं" (हित १९), "सव्वसीलं सीलह पव्वजगहणोणं" (श्रा १६)। देखो **सीलाव**।

सील न [**शील**] १ चित्त का समाधान; "सीलं चित्तसमाहाणलक्खणं भएणए एत्थ" (उप ५९७ टी)। २ ब्रह्मचर्य; (प्रासू २२; ५१, १५४; १६६; श्रा १६; हित १९)। ३ प्रकृति, स्वभाव; "सीलं पयई" (पाअ), "कलहसील" (कुमा)। ४ सदाचार, चारित्र, उत्तम वर्तन; (कुमा; पचा १४, १; पराह २, १—पत्र ९९)। ५ चरित्र, वर्तन; (हे २, १८४)। ६ अहिंसा; (पराह २, १—पत्र ९९)। °इ पु [°जित्] क्षत्रिय परिव्राजक का एक भेद; (औप)। °ड्ढ वि [°ढ्य] शील-पूर्ण; (ओघ ७८४)। °परिघर पुन [°परिगृह] १ चारित्र-स्थान; २ अहिंसा; (पराह २, १—पत्र ९९)। °मंत, °व वि [°वत्] शील-युक्त; (आचा; ओघ ७७७; श्रा ३९)। °व्वय न [°व्रत] अणुव्रत, जैन श्रावक के पालने योग्य अहिंसा आदि पाँच व्रत; (भग)। °सालि वि [°शालिन्] शील से शोभने वाला; (सुपा २४०)।

सीलाव सक [**शीलय्**] तंदुरस्त करना। कर्म—सीलप्पए; (वव १)।

सीलुट्ट न [**दे**] त्रपुस, खीरा, ककड़ी; (दे ८, ३५; पाअ)।

सीव सक [**सीव्**] सीना, सिलाई करना, साँधना। भवि—सीविस्सामि; (आचा)। संकृ—**सीविऊण**; (स ३५०)।

सीवणा स्त्री [**सीवना**] सीना, सिलाई; (उप पृ २९८)।

सीवणी स्त्री [**दे**] सूची, सूई; (गउड)। देखो **सिव्विणी**।

सीवण्णी, **सीवन्नी** स्त्री [**श्रीपर्णी**] वृक्ष-विशेष; (ओघ ४४९ टी; पिंड ८१; ८२; उप १०३१ टी)।

सीविअ देखो **सिव्विअ**; (से १४, २८; दे ४, ७; ओघभा ३१५)।

सीस सक [**शिष्**] १ वध करना, हिंसा करना। २ शेष करना, बाकी रखना। ३ विशेष करना। सीसइ; (हे ४, २३६; षड्)।

सीस सक [**कथय्**] कहना। सीसइ; (हे ४, २; भवि)।

सीस न [**सीस**] धातु-विशेष, सीसा; (दे २, २७)।

सीस देखो **सिस्स**=शिष्य; (हे १, ४३; कुमा; दं ४७; णाया १, ५—पत्र १०३)।

सीस पुंन [**शीर्ष**] १ मस्तक, माथा; (स्वप्न ९०; प्रासू ३)। २ स्तबक, गुच्छा; (आचा २, १, ८, ६)। ३ छन्द-विशेष; (पिंग)। °अ न [°क] शिरस्त्राण; (वेणी ११०)। °घडी स्त्री [°घटी] सिर की हड्डी; (तंदु ३८)। °पकंपिअ न [°प्रकम्पित] संख्या-विशेष, महालता को चौरासी लाख से गुनने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (इक)। °पहेलिअ स्त्रीन [°प्रहेलिक] संख्या-विशेष, शीर्षप्रहेलिकाग को चौरासी लाख से गुनने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (इक), स्त्री—°आ; (ठा २, ४—पत्र ८६; सम ९०; अणु ९९)। °पहेलियंग न [°प्रहेलिकाङ्ग] संख्या-विशेष, चूलिका को चौरासी लाख से गुनने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (ठा २, ४—पत्र ८६; अणु ९९)। °पूरग, °पूरय पुं [°पूरक] मस्तक का आभरण; (राज; तंदु ४१)। °रूपक, °रूअ (अप) पुन [°रूपक] छन्द-विशेष; (पिंग)। °वेढ पुं [°वेष्ट] गिले चमड़े आदि से मस्तक को लपेटना; (सम ५०)।

सीस° देखो **सास**=शास्।

सीसक्क न [**दे. शीर्षक**] शिरस्त्राण, मस्तक का कवच; (दे ८, ३४; से १५, ३०)।

सीसम पुंन [**दे**] सीसम का गाछ, शिंशपा; (उप १०३१ टी)।

सीसय वि [**दे**] प्रवर, श्रेष्ठ; (दे ८, ३४)।

सीसय न [**सीसक**] देखो **सीस**=सीस; (महा)।

सीसवा स्त्री [**शिंशपा**] सीसम का गाछ; (पराण १—पत्र ३१)।

सीह देखो **सिग्घ**=शीघ्र; (राज)।

सीह पुं [**सिंह**] १ श्वापद जन्तु-विशेष, केसरी, मृग-राज; (पराह १, १—पत्र ७; प्रासू ५१; १७१)। २ वृक्ष-विशेष, सहिंजने का पेड़; (हे १, १४४; प्राप्र)। ३ राशि-विशेष, मेष से पाँचवीं राशि; (विचार १०६)।

४ एक अनुत्तर देवलोक-गामी जैन मुनि; (अनु २)। ५ एक जैन मुनि जो आर्य-धर्म के शिष्य थे; (कप्प)। ६ भगवान् महावीर का शिष्य एक मुनि; (भग १५—पत्र ६८५)। ७ एक विद्याधर सामन्त राजा; (पउम ८, १३२)। ८ एक श्रेष्ठि-पुत्र; (सुपा ५०६)। ९ एक देव-विमान; (सम ३३; देवेन्द्र १४०)। १० एक जैन आचार्य जो रेवतीनक्षत्र-नामक आचार्य के शिष्य थे; (णंदि ५१) । ११ छन्द-विशेष; (पिंग) °उर न [°पुर] नगर-विशेष; (सण)। °कंत पुंन [°कान्त] एक देव-विमान; (सम ३३)। °कडि पुं [°कटि] रावण का एक योद्धा; (पउम ५६, २७)। °कण्ण पुं [°कर्ण] एक अन्तर्द्वीप; (इक)। °कण्णी स्त्री [°कर्णी] कन्द-विशेष; (उत्त ३६, १००)। °केसर पुं [°केसर] १ आस्तरण-विशेष, जटिल कम्बल; (णाया १, १—पत्र १३)।२ मोदक विशेष; (अंत ६; पिंड ४८२)। °गइ पुं [°गति] अमितगति तथा अमितवाहन-नामक इन्द्र का एक लोकपाल; (ठा ४, १—पत्र १९८)। °गिरि पुं [°गिरि] एक प्रसिद्ध जैन महर्षि; (उव; उप १४२ टी; पडि)। °गुहा स्त्री [°गुहा] एक चोर-पल्ली; (णाया १, १८—पत्र २३६)। °चूड पुं [°चूड] विद्याधर-वंश का एक राजा, (पउम ५, ४६)। °जस पुं [°यशस्] भरत चक्रवर्ती का एक पौत्र; (पउम ५, ३)। °णाय पुं [°नाद] सिंह-गर्जन, सिंह की गर्जना के तुल्य आवाज; (भग)। °णिक्कीलिय न [°निक्रीडित] १ सिंह की गति; २ तप-विशेष; (अंत २८)। °णिसाइ देखो °निसाइ; (राज)। °दुवार न [°द्वार] राज-द्वार, राज-प्रासाद का मुख्य दरवाजा; (कुप्र ११९)। °द्धय पुं [°ध्वज] १ विद्याधर-वंश का एक राजा; (पउम ५, ४३)। २ हरिषेण चक्रवर्ती के पिता का नाम; (पउम ८, १४४)। °नाय देखो °णाय; (पण्ह १, ३—पत्र ४५)। °निक्कीलिय, °निक्कीलिय देखो °णिक्कीलिय; (पव २७१; अंत २८; णाया १, ८—पत्र १२२)। °निसाइ वि [°निषादिन्] सिंह की तरह बैठने वाला; (सुज १०, ८ टी)। °णिसिज्जा स्त्री [°निषद्या] भरत चक्रवर्तीने अष्टापद पर्वत पर बनवाया हुआ जैन मन्दिर; (ती ११)। °पुच्छ न [°पुच्छ] पृष्ठ-वर्ध्र, पीठ की चमड़ी; (सूअनि ७७)। °पुच्छण न [°पुच्छन] पुरुष-चिह्न का तोड़ना, लिंग-त्रोटन; (पण्ह २, ५—पत्र १५१)। °पुच्छिय वि [°पुच्छित] १ जिसका पुरुष-चिह्न तोड़ दिया गया हो वह; २ जिसकी कृकाटिका से लेकर पुत-प्रदेश नितम्ब—तक की चमड़ी उखाड़ कर सिंह के पुच्छ के तुल्य की जाय वह; (औप)। °पुरा, °पुरी स्त्री [°पुरी] नगर-विशेष, विजय-क्षेत्र की एक राजधानी; (ठा २, ३—पत्र ८०; इक)। °मुह पुं [°मुख] १ अन्तर्द्वीप-विशेष; २ उ... रहने वाली मनुष्य-जाति; (ठा ४, २—पत्र २२६; इक)। °रव पुं [°रव] सिंह-गर्जना, सिंह-नाद, सिंह की आवाज; (पउम ४४, ३५)। °रह पुं [°रथ] गन्धार देश के पुंड्रवर्धन नगर का एक राजा; (महा)। °वाह पुं [°वाह] विद्याधर-वंश का एक राजा; (पउम ५, ४३)। °वाहण पुं [°वाहन] राक्षस-वंश का एक राजा; (पउम ५, २६३)। °वाहणा स्त्री [°वाहना] अम्बिका देवी; (राज)। °विक्कमगइ पुं [°विक्रमगति] अमितगति तथा अमितवाहन-नामक इन्द्र का एक लोकपाल; (ठा ४, १—पत्र १९८; इक)। °वीअ पुंन [°वीत] एक देव-विमान; (सम ३३)। °सेण पुं [°सेन] चौदहवें जिनदेव का पिता, एक राजा; (सम १५१)। २ भगवान् अजितनाथ का एक गणधर; (सम १५२)। ३ राजा श्रेणिक का एक पुत्र; (अनु २)। ४ राजा महासेन का एक पुत्र; (विपा १, ९—पत्र ८९)। ५ ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न एक जिनदेव; (राज)। °सोआ स्त्री [°स्रोता] एक नदी; (ठा २, ३—पत्र ८०)। °वलोइअ न [°वलोकित] सिंहावलोकन, सिंह की तरह चलते हुए पीछे की तरफ देखना; (महा)। °सण न [°सन] आसन-विशेष, सिंहाकार आसन, सिंहाङ्कित आसन, राजासन; (भग)। देखो सिंह।

सीह वि [सैंह] सिंह-संबन्धी; स्त्री—°हा; (णाया १, १—पत्र ३१)।

°सीह पुं [°सिंह] श्रेष्ठ, उत्तम; (सम १; पडि)।

सीहंडय पुं [दे] मत्स्य, मछली; (दे ८, २८)।

सीहणही स्त्री [दे] १ वृक्ष-विशेष, करौंदी का गाछ; २ करौंदी का फल; (दे ८, ३५)।

सीहपुर वि [सैंहपुर] सिंहपुर-संबन्धी; (पउम ५५, ५३)।

सीहर देखो सीअर; (हे १, १८४; कुमा)।

सीहरय पुं [दे] आसार, जोर की वृष्टि; (दे ८, १२

सीहल देखो **सिंहल**; (पण्ह १, १—पत्त १४, इक; पउम ९९, ५५)।

सीहलय पुं [**दे**] वस्त्र आदि को धूप देने का यन्त्र; (दे ८, ३४)।

सीहलिआ स्त्री [**दे**] १ शिखा, चोटी; २ नवमालिका, नवारी का गाछ; (दे ८, ५५)।

सीहलिपासग पुंन [**दे**] ऊन का बना हुआ कंकण जो वेणी बाँधने के काम में आता है; (सूअ १, ४, २, ११)।

सीही स्त्री [**सिंही**] स्त्री-सिंह, सिंह की मादा; (नाट)।

सीहु पुंन [**सीधु**] १ मद्य, दारू; २ मद्य-विशेष; (पण्ह २, ५—पत्त १५०; दे १, ४६; पाअ; गा ५४५; मा ४३)।

सु अ [**सु**] इन अर्थ का सूचक अव्यय; १ प्रशंसा, श्लाघा; (विसे ३४४३; सूअनि ८८)। २ अतिशय, अत्यन्तता; (श्रु १९)। ३ समीचीनता; (सट्टि १६)। ४ अतिशय योग्यता; (पिंग)। ५ पूजा; ६ कष्ट, मुश्किली; ७ अनुमति; ८ समृद्धि; (षड् १२२; १२३; १३५)। ९ अनायास; (ठा ५, १—पत्त २९६)।

सुअ अक [**स्वप्**] सोना। सुअइ; (हे ४, १४६; प्राकृ ६६; पि ४९७; उव), सुयामि, (निसा १), "खणंपि मा सुय वीसत्थो" (आत्महि ६)। कर्म—सुप्पइ; (हे २, १७९)। वकृ—**सुयंत, सुयमाण**; (सुर ५, २१९; सुपा ५०५; महा ३७, १२; पि ४९७)। हेकृ—**सोउं**; (पि ४९७)। कृ—**सोएव्वा** (अप), (हे ४, ४३८)।

सुअ सक [**श्रु**] सुनना। वकृ—**सुअंत**; (धात्वा १५६)।

सुअ पुं [**सुत**] पुत्र, लड़का; (सुर १, १०; प्रास् ८९; कुमा; उव)।

सुअ पुं [**शुक**] १ पक्षि-विशेष, तोता; (पण्ह १, १—पत्त ८; उत्त ३४, ७; सुपा ३१)। २ रावण का मत्री; (से १२, ६३)। ३ रावणाधीन एक सामंत राजा; (पउम ८, १३३)। ४ एक परिव्राजक; (णाया १, ५—पत्त १०५)। ५ एक अनार्य देश; (पउम २७, ७)।

सुअ वि [**श्रुत**] १ सुना हुआ, आकर्णित; (हे १, २०९; भग; ठा १—पत्त ६)। २ न. ज्ञान-विशेष, शब्द-ज्ञान, शास्त्र-ज्ञान; (विसे ७९; ८१; ८५; ८६; ९४; १०४; १०५; णंदि; अणु)। ३ शब्द, ध्वनि, आवाज; ४ क्षयोपशम, श्रुतज्ञान के आवारक कर्मों का नाश-विशेष, ५ आत्मा, जीव; "तं तेण तओ तम्मि व सुणेइ सो वा सुअं तेणं" (विसे ८१)। ६ आगम, शास्त्र, सिद्धान्त; (भग; णंदि; अणु; से ४, २७; कम्म ४, ११; १४; २१; बृह १; जी ८)। ७ अध्ययन, स्वाध्याय; (सम ५१; से ४, २७)। ८ श्रवण; (प्राकृ ७०)। °**केवलि** पुं [°**केवलिन्**] चौदह पूर्व-ग्रन्थों का जानकार मुनि; (राज)। °**क्खंध, °खंध** पुं [°**स्कन्ध**] १ अंग-ग्रन्थ का अध्ययन-समूहात्मक महान् अंश—खंड; (सूअ २, ७, ४०; विपा १, १—पत्त ३)। २ बारह अंग-ग्रन्थों का समूह; ३ बारहवाँ अंग-ग्रन्थ, दृष्टिवाद; (राज)। °**णाण** देखो °**नाण**; (ठा २, १ टी—पत्त ५१)। °**णाणि** वि [°**ज्ञानिन्**] शास्त्र-ज्ञान-संपन्न, शास्त्रों का जानकार; (भग)। °**णिस्सिय** न [°**निश्रित**] मति-ज्ञान का एक भेद; (णंदि)। °**तिहि** स्त्री [°**तिथि**] शुक्ल पंचमी तिथि; (रयण २)। °**थेर** पुं [°**स्थविर**] तृतीय और चतुर्थ अंग-ग्रन्थ का जानकार मुनि; (ठा ३, २)। °**देवया** स्त्री [°**देवता**] जैन शास्त्रों की अधिष्ठात्री देवी; (पडि)। °**देवी** स्त्री [°**देवी**] वही; (सुपा १; कुमा)। °**धम्म** पुं [°**धर्म**] १ जैन अंग-ग्रन्थ; (ठा २, १—पत्त ५२)। २ शास्त्र-ज्ञान; (आवम)। ३ आगमों का अध्ययन, शास्त्राभ्यास; (णंदि)। °**धर** वि [°**धर**] शास्त्र-ज्ञ, (सुपा ६५२; पण्ह २, १—पत्त ९९)। °**नाण** पुंन [°**ज्ञान**] शास्त्र-ज्ञान; (ठा २, १—पत्त ४९; भग)। °**नाणि** देखो °**णाणि**; (वव १०)। °**निस्सिय** देखो °**णिस्सिय**; (ठा २, १—पत्त ४९)। °**पंचमी** स्त्री [°**पञ्चमी**] कार्तिक मास की शुक्ल पाँचवीं तिथि; (भवि)। °**पुव्व** वि [°**पूर्व**] पहले सुना हुआ; (उप १४२ टी)। °**सागर** पुं [°**सागर**] ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिनदेव; (सम १५४)।

सुअ वि [**स्मृत**] याद किया हुआ; (भग)।

सुअंध पु [**सुगन्ध**] १ अच्छी गन्ध, खुशबू; (गा १४)। २ वि. सुगन्धी; (से ८, ९२; सुर १, २८)।

सुअंधि वि [**सुगन्धि**] सुन्दर गन्ध वाला; (से १, ६२; दे ८, ८)। देखो **सुगंधि**।

सुअक्खाय वि [**स्वाख्यात**] अच्छी तरह कहा हुआ; (सूअ २, १, १५; १६; २०; २९)।

सुअच्छ वि [**स्वच्छ**] निर्मल, विशुद्ध; (भवि)।

सुअण पुं [**सुजन**] सज्जन, भला आदमी; (गा २२४;

पाअ; प्रासू ८; ४०; सुर २, ४६; गउड)।

सुअण न [**स्वपन**] सोना, शयन; (सूक्त ३१)।

सुअणा स्त्री [**दे**] अतिमुक्तक, वृक्ष-विशेष; (दे ८, ३८)।

सुअणु वि [**सुतनु**] १ सुन्दर शरीर वाला; २ स्त्री. नारी, महिला; (गा २६६; ३८४; ५६६; पि ३४६; गउड)।

सुअण्ण देखो **सुवण्ण**; (प्राकृ ३०)।

सुअम वि [**सुगम**] सुबोध; (प्राकृ ११)।

सुअर वि [**सुकर**] जो अनायास से हो सके वह, सरल; (अभि ६६)।

सुअर पु [**शूकर**] सूअर, वराह; (विपा १, ७—पत्र ७५; नाट—मृच्छ २२२)।

सुअरिअ न [**सुचरित**] सदाचार, सद्वर्तन; (अभि २५३)।

सुअलंकिय वि [**स्वलंकृत**] अच्छी तरह विभूषित; (णाया १, १—पत्र १६)।

सुआ स्त्री [**सुता**] पुत्री, लड़की; (गा ६०२; ८६३; कुमा)।

सुआ (शौ) अक [**शी**] शयन करना, सोना। सुआदि; (प्राकृ ६४)।

सुआ स्त्री [**स्रुच्**] यज्ञ का उपकरण-विशेष, घी आदि डालने की कुड़छी; (उत्त १२, ४३; ४४)।

सुआइक्ख वि [**स्वाख्येय**] सुख से—अनायास से—कहने योग्य; (ठा ५, १—पत्र २६६)।

सुआउत्त वि [**स्वायुक्त**] अच्छी तरह ख्याल रखने वाला. (उव)।

सुइ पुं [**शुचि**] १ पवित्रता, निर्मलता, 'जिणधम्मठिया मुणिणो य वच्छ दीसंति सुइरहिया'' (सुपा १६६)। २ वि. श्वेत, सफेद; (कुमा)। ३ पवित्र, निर्मल; (औप; कप्प; श्रा १२; महा; कुमा)। ४ शक्र की एक अग्र-महिषी; (इक)।

सुइ स्त्री [**श्रुति**] १ श्रवण, आकर्णन, सुनना; (उत्त ३, १; वसु; विसे १२५)। २ कर्ण, कान; (गा ६४१; सुर ११, १७४; सम्मत्त ८४; सुपा ४६; २४७)। ३ वेद-शास्त्र; (पाअ; अच्चु ४; कुमा)। ४ शास्त्र, सिद्धान्त; (संथा ७; प्रासू ४६)।

सुइ स्त्री [**स्मृति**] स्मरण; (विपा १, २—पत्र ३४)।

सुइअ देखो **सूइअ**=सूचिक; (दे १, ६६)।

सुइण देखो **सुमिण**; (सुर ६, ८२; उप ७२८ टी; हे ४, ४३४)।

सुइदि स्त्री [**सुकृति**] १ पुण्य; २ मङ्गल, कल्याण; ३ सत्-कर्म; (प्राप्र; पि २०४)।

सुइयाणिया स्त्री [**दे. सूतिकारिणी**] सूति-कर्म करने वाली स्त्री; (सुपा ५७८)।

सुइर न [**सुचिर**] अत्यन्त दीर्घ काल, बहु काल; (गा १३७; ४६०; सुपा १; १२७; महा)।

सुइल देखो **सुक्क**=शुक्ल; (हे २, १०६)।

सुइव्व वि [**श्वस्तन**] आगामी कल से संबन्ध रखने वाला, कल होने वाला; (पिंड २४१)।

सुई स्त्री [**दे**] बुद्धि, मति; (दे ८, ३६)।

सुई स्त्री [**शुकी**] शुक पक्षी की मादा, मैना; (सुपा ३६०)।

सुउज्जुयार वि [**सुऋजुकार**] अतिशय संयम में रहने वाला, सु-संयमी; (सूअ १, १३, ७)।

सुउज्जुयार वि [**सुऋजुचार**] अतिशय सरल आचरण वाला; (सूअ १, १३, ७)।

सुउमार } देखो **सुकुमाल**; (स्वप्न ६०; कुमा)।
सुउमाल }

सुउरिस पुं [**सुपुरुष**] सज्जन, भला आदमी; (प्राप्र; हे १, ८; कुमा)।

सुए अ [**श्वस्**] आगामी कल; (स ३६; वै ४१)।

सुंक न [**शुल्क**] १ मूल्य; (णाया १, ८—पत्र १३१; विपा १, ६—पत्र ६३)। २ चुंगी, विक्रेय वस्तु पर लगता राज-कर; (धम्म १२ टी; सुपा ४४७)। ३ वर-पक्ष के पास से कन्यापक्ष वालों को लेने योग्य धन; (विपा १, ६—पत्र ६४)। °**ठाण** न [°**स्थान**] चुंगी-घर; (धम्म १२ टी)। °**पालय** वि [°**पालक**] चुंगी पर नियुक्त राज-पुरुष; (सुपा ४४७)। देखो **सुक्क**=शुल्क।

सुंकअ } पुन [**दे**] किशारु, धान्य आदि का अग्र भाग;
सुंकल } (दे ८, ३८)।

सुंकलि पुंन [**दे**] तृण-विशेष; (पण्ण १—पत्र ३३)।

सुंकविय वि [**शुल्कित**] जिसकी चुंगी दी गई हो वह; (सुपा ४४७)।

सुंकाणिअ पुं [**दे**] नाव का डाड खेने वाला व्यक्ति, पतवार चलाने वाला; (सिरि ३८५)।

सुंकार पु [**सूत्कार**] अव्यक्त शब्द-विशेष, (सुर २, ८; गउड)।
सुंकिअ वि [**शौल्किक**] शुल्क लेने वाला, चुंगी पर नियुक्त पुरुष; (उप पृ १२०)।
सुंख देखो **सुक्ख**=शुष्क; (संक्षि १९)।
सुंग देखो **सुक्क**=शुल्क; (हे २, ११; कुमा)।
सुंगायण न [**शौङ्गायन**] गोत्र-विशेष; (सुज्ज १०, १६)।
सुंघ सक [**दे**] सूँघना। वकृ—**सुंघंत**; (सिरि ६२२)।
सुंघिअ वि [**दे**] घ्रात, सूँघा हुआ; (दे ८, ३७)।
सुंचल न [**दे**] काला नमक; "सुंठिसुंचलाईयं" (कुप्र ४१४)।
सुंठ पुंन [**शुण्ठ**] पर्व-वनस्पति-विशेष; (पराग १—पत्र ३३)।
सुंठय पुन [**शुण्ठक**] भाजन-विशेष; "मीरासु य सुंठएसु य कंडूसु य पयंडएसु य पयंति" (सूअनि ७६)।
सुंठी स्त्री [**शुण्ठी**] सूँठ; (पभा १५; कुप्र ४१४; पंचा ५, ३०)।
सुंड वि [**शौण्ड**] १ मत्त, मद्यप, दारू पीने वाला; (हे १, १६०; प्राकृ १०; संक्षि ६)। २ दक्ष, कुशल; (कुमा)। देखो **सोंड**।
सुंडा देखो **सोंडा**; (आचा २, १, ३, २; आवम)।
सुंडिअ पुं [**शौण्डिक**] कलवार, दारू बेचने वाला; (प्राकृ १०; संक्षि ६)।
सुंडिआ स्त्री [**शौण्डिका**] मदिरा-पान में आसक्ति; (दस ५, २, ३८)।
सुंडिक देखो **सुंडिअ**; (दे ६, ७५)।
सुंडिकिणी स्त्री [**शौण्डिकी**] कलवार की स्त्री; (प्रयौ १०९)।
सुंडीर देखो **सोंडीर**; (भवि)।
सुंद पुं [**सुन्द**] राजा रावण का एक भागिनेय, खरदूषण का पुत्र; (पउम ४३, १८)।
सुंदर वि [**सुन्दर**] १ मनोहर, चारु, शोभन; (पराह १, ४; सुपा १२८; २९५; कप्पू; काप्र ४०८)। २ पुं. एक शेठ का नाम; (सुपा ६४३)। ३ तेरहवें जिनदेव का पूर्वजन्मीय नाम; (सम १५१)। ४ न. तप-विशेष, तेला, तीन दिनों का लगातार उपवास; (सबोध ५८)। °**बाहु** पुं [°**बाहु**] सातवें जिनदेव का पूर्वजन्मीय नाम; (सम १५१)।

सुंदरिअ देखो **सुंदेर**; (हे २, १०७)।
सुंदरिम पुंस्त्री. देखो **सुंदेर**; (कुप्र २२१)।
सुंदरी स्त्री [**सुन्दरी**] १ उत्तम स्त्री; (प्रासू ५७; वि १८)। २.भगवान् ऋषभदेव की एक पुत्री; (ठा ५, २—पत्र ३२६; सम ६०; पउम ३, १२०; वि १८)। ३ रावण की एक पत्नी; (पउम ७४, ९)। ४ छन्द-विशेष; (पिंग)। ५ मनोहरा, शोभना; "सुंदरी णं देवाणुप्पिया गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स धम्मपरणत्ती" (उवा)।
सुंदेर } न [**सौन्दर्य**] सुन्दरता, शरीर का मनोहरपन;
सुंदेरिम } (प्राप्र; हे १, ५७; कुमा; सुपा ४; ६२२; धम्म ११ टी)।
सुंब न [**शुम्ब**] १ तृण-विशेष; (ठा ४, ४—पत्र २७१; सुख १०, १)। २ तृण विशेष की बनी हुई डोरी—रस्सी; (विसे १५४)।
सुंभ पुं [**शुम्भ**] १ एक गृहस्थ जो शुंभा-नामक इन्द्राणी का पूर्व-जन्म में पिता था; (णाया २, २—पत्र २५१)। २ दानव-विशेष; (पि ३६०; ३६७ ए)। °**वडेंसय** न [°**ावतंसक**] शुंभा देवी का एक भवन; (णाया २, २)। °**सिरी** स्त्री [°**श्री**] शुम्भा देवी की पूर्व-जन्मीय माता; (णाया २, २)।
सुंभा स्त्री [**शुम्भा**] बलि-नामक इन्द्र की एक पटरानी; (णाया २, २—पत्र २५१)।
सुंसुमा स्त्री [**सुंसुमा**] धन सार्थवाह की कन्या का नाम; (णाया १, १८—पत्र २३५)।
सुंसुमार पुं [**सुंसुमार, शिशुमार**] १ जलचर प्राणी की एक जाति; (णाया १, ४, पि ११७)। २ द्रह-विशेष; (भत्त ९६)। ३ पर्वत-विशेष; ४ न. एक अरण्य; (स ८६)। देखो **सुंसु-मार**।
सुक देखो **सुअ**=शुक; (सुपा २३४)। °**प्पहा** स्त्री [°**प्रभा**] भगवान् सुविधिनाथ की दीक्षा-शिविका; (विचार १२९)।
सुकइ पु [**सुकवि**] अच्छा कवि; (गा ५००, ६००; महा)।
सुकंठ वि [**सुकण्ठ**] १ सुन्दर कण्ठ वाला; २ पुं. एक वणिक्-पुत्र; (श्रा १६)। ३ एक चोर-सेनापति; (महा)।
सुकच्छ पु [**सुकच्छ**] विजय-क्षेत्र विशेष; (ठा २, ३—पत्र ८०; इक)। °**कूड** पुन [°**कूट**] शिखर-विशेष; (इक; राज)।

सुकड देखो **सुकय**; (चउ ५८)।

सुकण्ह पुं [**सुकृष्ण**] एक राज-पुत्र; (निर १, १; पि ५२)।

सुकण्हा स्त्री [**सुकृष्णा**] राजा श्रेणिक की एक पत्नी; (अंत २५)।

सुकद देखो **सुकय**; (संक्षि ६)।

सुकम्माण वि [**सुकर्मन्**] अच्छा कर्म करने वाला; (हे ३, ५६; षड्)।

सुकय न [**सुकृत**] १ पुण्य; (पण्ह १, २—पत्र २८; प्राप्र)। २ उपकार; (से १, ४६)। ३ त्रि. अच्छी तरह निर्मित; (राज)। °**जाणुअ**, °**ण्णु**, °**ण्णुअ** वि [°**ज्ञ**] सुकृत का जानकार, उपकार की कदर करने वाला; (प्राकृ १८; उप ७६८ टी)।

सुकयत्थ वि [**सुकृतार्थ**] अत्यन्त कृतकृत्य; (प्रासू १५५)।

सुकर देखो **सुगर**; (आचा १, ६, १, ८)।

सुकाल पुं [**सुकाल**] राजा श्रेणिक का एक पुत्र; (निर १, १)।

सुकाली स्त्री [**सुकाली**] राजा श्रेणिक की एक पत्नी; (अंत २५)।

सुकिअ देखो **सुकय**; (हे ४, ३२६; भवि)।

सुकिट्ठ वि [**सुकृष्ट**] अच्छी तरह जोता हुआ; (पउम ३, ४५)।

सुकिट्ठि पुं [**सुकृष्टि**] एक देव-विमान; (सम ६)।

सुकिदि वि [**सुकृतिन्**] १ पुण्य-शाली; २ सत्कर्म-कारी; (रंभा)।

सुकिल } **सुकिल्ल** } देखो **सुक्क**=शुक्ल; (हे २, १०६; पि १३६)।

सुकुमार } **सुकुमाल** } वि [**सुकुमार**] १ अति कोमल; २ सुन्दर कुमार अवस्था वाला; (सहा; हे १, १७१; पि १२३; १६०)।

सुकुमालिअ वि [दे] सुघटित, सुन्दर बना हुआ; (दे ८, ४०)।

सुकुल पुंन [**सुकुल**] उत्तम कुल; (भवि)।

सुकुसुम न [**सुकुसुम**] १ सुन्दर फूल; २ वि. सुन्दर फूल वाला; (हे १, १७७; कुमा)।

सुकुसुमिय वि [**सुकुसुमित**] जिसको अच्छी तरह फूल आया हो वह; (सुपा ५६८)।

सुकोसल पु [**सुकोशल**] १ ऐरवत-वर्ष के एक जिनदेव; (सम १५४; पव ७)। २ एक जैन (पउम २२, ३६)।

सुकोसला स्त्री [**सुकोशला**] एक राज-कन्या; (१०३१ टी)।

सुक्क अक [**शुष्**] सूखना। सुक्कइ; (विसे ३०३२; ७०), सुक्कंति; (दे ८, १८ टी)।

सुक्क वि [**शुष्क**] सूखा हुआ; (हे २, ५; णाया १, ६—पत्र ११४; उवा; पिड २७६; सुर ३, ६५; १०, २२३; धात्वा १५६)।

सुक्क न [**शुल्क**] १ चुंगी, बेचने की वस्तु पर लगता राज-कर; (णाया १, १—पत्र ३७; कुमा; श्रा १४; सम्मत्त १५६)। २ स्त्री-धन विशेष; ३ वर पक्ष से कन्या-पक्ष वालों को लेने योग्य धन; ४ स्त्री को संभोग के लिए दिया जाता धन; ५ मूल्य; (हे २, ११)। देखो **सुंक**।

सुक्क पुं [**शुक्र**] १ ग्रह-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७८; सम ३६; वज्जा १००)। २ पुंन. एक देव-विमान; (सम ३३; देवेन्द्र १४३)। ३ न. वीर्य, शरीर-स्थ धातु-विशेष; (ठा ३, ३—पत्र १४४; धर्मसं ६८४; वज्जा १००)।

सुक्क पुं [**शुक्ल**] १ वर्ण-विशेष, सफेद रँग; २ वि. सफेद वर्ण वाला, श्वेत; (हे २, १०६; कुमा; सम २६)। ३ न. शुभ ध्यान-विशेष; (औप)। ४ वि. जिसका अर्ध पुद्गल-परावर्त काल से कम रह गया हो वह;(पंचा १, २)। °**ज्झाण**, °**झाण** न [°**ध्यान**] शुभ ध्यान-विशेष; (सम ६; सुपा ३७; अंत)। °**पक्ख** पुं [°**पक्ष**] १ जिसमें चन्द्र की कला क्रमशः बढ़ती है वह आधा महिना; (सम २६; कुमा)। २ हंस पक्षी; ३ काक, कौआ; बगुला, बक पक्षी; (हे २, १०६)। °**पक्खिय** वि [°**पाक्षिक**] वह आत्मा जिसका संसार अर्ध पु° परावर्त से कम रह गया हो; (ठा २, २—पत्र ५६)। °**लेस** देखो °**लेस्स**; (भग)। °**लेसा** देखो °**लेस्सा**; (सम ११; ठा १—पत्र २८)। °**लेस्स** वि [°**लेश्य**] शुक्ल लेश्या वाला; (पण्ण १७—पत्र ५११)। °**लेस्सा** स्त्री [°**लेश्या**] आत्मा का अध्यवसाय-विशेष, शुभतम आत्म-परिणाम; (पण्ह २, ४—पत्र १३०)।

सुक्कड } **सुक्कय** } देखो **सुकय**; (सम १२५; पउम १५, १००)।

सुक्कव सक [**शोषय्**] सूखाना। वकृ—**सुक्कवेमाण**;

(णाया १, ६—पत्र ११४)।

सुक्काणय न [दे] जहाज के आगे का ऊँचा काष्ठ, गुजराती में 'सुकान'; (सिरि ४२४)।

सुक्काभ न [शुक्राभ] १ एक लोकान्तिक देव-विमान; (पव २६७)। २ वैताढ्य पर्वत की दक्षिण श्रेणि में स्थित एक विद्याधर-नगर; (इक)।

सुक्किय देखो **सुकय**; (भवि)।

सुक्किय देखो **सुक्कीअ**; (राज)।

सुक्किल, सुक्किलय, सुक्किल्ल देखो **सुक्क**=शुक्ल; (भग; औप; हे २, १०६; पंच ५, ३३; अणु १०६), "मुत्तं सुक्किलवत्थं" (गच्छ २, ४६; कप्प; सम ४१; धर्मसं ४५४); स्त्री—"एगो सुक्किलियाणं एगो सबलाणं वग्गो कओ" (आक ७)।

सुक्कीअ वि [सुक्रीत] अच्छी तरह खरीदा हुआ; "सुक्कीअं वा सुविक्कीअं" (दस ७, ४५)।

सुक्ख देखो **सुक्क**=शुष्। वकृ—**सुक्खंत**· (गा ४१४; वज्जा १४६)।

सुक्ख देखो **सुक्क**=शुष्क; (हे २, ५; गा २६३; मा ३१; उप ३२० टी)।

सुक्ख न [सौख्य] सुख; (कप्प; कुमा; सार्ध ५१; प्रासू २८; १४५)।

सुक्खव देखो **सुक्कव**। कर्म—सुक्खवीअंति; (पि ३५६; ५४३)।

सुक्खिय वि [स्वाख्यात] अच्छी तरह कहा हुआ, प्रतिज्ञात, "तओ सूइवइयरराजपरो जं ते सुक्खियमासि बुद्धिलेण अद्धलक्खं, तन्निमित्तमेसो पेसिओ चालीस-साहस्सो हारो त्ति वोत्तुं समप्पिउं च हारकरंडियं गओ दासचेडो" (महा)।

सुखम (पै) देखो **सण्ह**=सूक्ष्म, "सुखमवरिसो" (प्राकृ १२४)।

सुग देखो **सुअ**=शुक; (उप ६७२; स ८६; उर ५, ७; कुप्र ४३८; कुमा)।

सुगइ स्त्री [सुगति] १ अच्छी गति; (ठा ३, ३—पत्र १४६)। २ सन्मार्ग, अच्छा मार्ग; (सूअनि ११५)। ३ वि. अच्छी गति को प्राप्त; (आवम)।

सुगंध देखो **सुअंध**; (कप्प; कुमा; औप; सुर २, ५८)।

सुगंधा स्त्री [सुगन्धा] पश्चिम विदेह का एक विजय-क्षेत्र; (इक)।

सुगंधि देखो **सुअंधि**; (औप)। °**पुर** न [°**पुर**] वैताढ्य की उत्तर श्रेणि में स्थित एक विद्याधर-नगर; (इक)।

सुगण वि [सुगण] अच्छी तरह गिनने वाला; (षड्)।

सुगम वि [सुगम] १ अल्प परिश्रम से जाया जा सके वैसा, सुख-गम्य; (ओघभा ७५)। २ सुबोध (चेइय ३६३)।

सुगय वि [सुगत] १ अच्छी गति वाला; (ठा ४, १—पत्र २०२; कुप्र १००)। २ सुस्थ, ३ धनी ४ गुणी; (ठा ४, १—पत्र २०२; राज; हे १, १७७)। ५ पुं. बुद्ध देव; (पाअ; पव ६४)।

सुगय वि [सौगत] बुद्ध-भक्त, बौद्ध; (सम्मत्त १२०)।

सुगर वि [सुकर] सुख-साध्य, अल्प परिश्रम से हो सके ऐसा; (आचा १, ६, १, ८)।

सुगरिट्ठ वि [सुगरिष्ठ] अति बडा; (श्रु १६)।

सुगिज्झ वि [सुग्राह्य] सुख से ग्रहण करने योग्य; (पउम ३१, ५४)।

सुगिम्ह पु [सुग्रीष्म] १ चैत्र मास की पूर्णिमा; (ठा ५, २—पत्र २१३)। २ फाल्गुन का उत्सव; (दे ८, ३६)।

सुगिर वि [सुगिर] अच्छी वाणी वाला; (षड्)।

सुगिहिय, सुगिहीय वि [सुगृहीत] विख्यात, विश्रुत; (स ६६; १३)।

सुगी देखो **सुई**=शुकी; (कुमा)।

सुगुत्त पुं [सुगुप्त] एक मंत्री का नाम; (महा)।

सुगुरु पुं [सुगुरु] उत्तम गुरु; (कुमा)।

सुग्ग न [दे] १ आत्म-कुशल; (दे ८, ५६; सण)। २ वि. निर्विघ्न, विघ्न-रहित; ३ विसर्जित; (दे ८, ५६)।

सुग्गइ देखो **सुगइ**; (सुपा १६१; सं ८१)।

सुग्गय देखो **सुगय**=सुगत; (ठा ४, १—पत्र २०२)।

सुग्गाह अक [प्र+सृ] फैलना। सुग्गाहइ; (धात्वा १५६)।

सुग्गीव पुं [सुग्रीव] १ नागकुमार देवों के इन्द्र भूतानन्द के अश्व सैन्य का अधिपति; (ठा ५, १—पत्र ३०२)। २ भारतवर्ष में होने वाला नववाँ प्रति-वासुदेव राजा; (सम १५४)। ३ राक्षस-वंश का एक राजा, एक लङ्का पति; (पउम ५, २६०)। ४ नववें जिनदेव के पिता का नाम; (सम १५१)। ५ राजा वालि का छोटा भाई; (पउम ६, ६; से १, ४६; १४, ३६)।

६ एक राजा का नाम; (सुर ६, २१४)। ७ न. नगर-विशेष; (उत्त १६, १)।

सुघ (अप) देखो **सुह**=सुख; (हे ४, ३६६)।

सुघट्ठ वि [**सुघृष्ट**] अच्छी तरह घिसा हुआ. (राय ८० टी)।

सुघरा स्त्री [**सुगृहा**] मादा-पक्षी की एक जाति जो अपना घोंसला खूब सुन्दर बनाती है; (आचू १)।

सुघोस पुं [**सुघोष**] १ एक कुलकर-पुरुष; (सम १५०)। २ एक पुरोहित का नाम; (उप ७२८ टी)। ३ पुन. सनत्कुमार देवलोक का एक विमान; (सम १२)। ४ लान्तक-नामक देवलोक का एक विमान; (सम १७)। ५ वि. सुन्दर आवाज वाला; (जीव ३, १; भवि)। ६ एक नगर का नाम; (विपा २, ८)।

सुघोसा स्त्री [**सुघोषा**] १ गीतरति-नामक गन्धर्वेन्द्र की एक पटरानी, (ठा ४, १—पत्र २०४)। २ गीतयश-नामक गन्धर्व की एक पटरानी, (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ सुधर्मेन्द्र की प्रसिद्ध घंटा, (पराह २, ५—पत्र १४६; सुपा ४५)। ४ वाद्य-विशेष, (राय ४६)।

सुचंद पुं [**सुचन्द्र**] ऐरवत वर्ष में उत्पन्न दूसरे जिन-देव; (सम १५३)।

सुचरिअ न [**सुचरित**] १ सदाचरण, सदाचार; (कप्प; गउड)। २ वि. सदाचरण-संपन्न; (गउड)। ३ अच्छी तरह आचरित; (पउम ७५, १८; गाया १, १६—पत्र २०५)।

सुचिण्ण वि [**सुचीर्ण**] १ सम्यग् आचरित; "तव-सुचिन्न संजमा सुचिएणोवि" (पउम ६, ६५; ६४, ३२; ठा ४, २—पत्र २१०)। २ न. पुराय; (औप; उवा)।

सुचिर न [**सुचिर**] अत्यन्त चिर काल, सुदीर्घ काल; (सुपा २७; महा; प्रासू ३२)।

सुचोइअ वि [**सुचोदित**] प्रेरित; (उत्त १, ४४)।

सुच्च वि [**शौच्य**] अफसोस करने योग्य. "सुच्चा ते जियलोए जिणवयणं जे नरा न याणंति" (धर्मवि १७)।

सुच्चा देखो **सुण**=श्रु।

सुजंपिय न [**सुजल्पित**] आशीर्वाद, (गाया १, १—पत्र ३६)।

सुजड पुं [**सुजट**] एक विद्याधर-नरेश; (पउम १०, २०)।

सुजस पुं [**सुयशस्**] १ एक जिनदेव का नाम; (उप १०३१ टी)। २ वि. यशस्वी; (श्रा १६)।

सुजसा स्त्री [**सुयशस्**] १ चौदहवें जिनदेव की माता; (सम १५१)। २ एक राज-पत्नी; (उप ६८६ टी)।

सुजह त्रि [**सुहान**] सुख से जिसका त्याग हो सके वह; (उत्त ८, ६)।

सुजाइ वि [**सुजाति**] प्रशस्त जाति वाला, जात्य; (महा)।

सुजाण वि [**सुज्ञ**] सियाना, अच्छा जानकार; (सिरि ७६१, प्रासू १३; सुपा ५८८)।

सुजाय वि [**सुजात**] १ सुन्दर जाति में उत्पन्न, कुलीन, खानदान; (उप ७२८ टी)। २ अच्छी तरह उत्पन्न, सुन्दर रूप से उत्पन्न; (ठा ४, २—पत्र २०८; औप; जीव ३, ४; उवा)। ३ न. सुन्दर जन्म; (आव)। ४ पु. एक राज-कुमार; (विपा २, ३)। ५ पुन. एक देव-विमान; (देवेन्द्र २७२)।

सुजाया स्त्री [**सुजाता**] १ कालवाल आदि लोकपालों की पटरानियों के नाम; (ठा ४, १—पत्र २०४; इक)। २ राजा श्रेणिक की एक पत्नी; (अंत २५)।

सुजिट्ठा स्त्री [**सुज्येष्ठा**] एक महासती राज-कुमारी, जो चेटकराज की पुत्री थी; (पडि)।

सुजुत्ति स्त्री [**सुयुक्ति**] सुन्दर युक्ति; (सुपा १११)।

सुजेट्ठा देखो **सुजिट्ठा**; (राज)।

सुजोसिअ वि [**सुजुष्ट**] अच्छी तरह सेवित; (सूअ १, २, २, २६)।

सुजोसिअ वि [**सुजोषित**] सुष्ठु क्षपित, सम्यग् विनाशित; (सूअ १, २, २, २६)।

सुज्ज पु [**सूर्य**] १ सूरज, रवि; २ आक का पेड़; ३ दैत्य-विशेष; (हे २, ६४; प्राप्र)। ४ पुन. एक देव-विमान; (सम १५)। °**कंत** पुंन [°**कान्त**] एक देव-विमान; (सम १५)। °**ज्झय** पुंन [°**ध्वज**] देव-विमान विशेष; (सम १५)। °**प्पभ** पुंन [°**प्रभ**] एक देव-विमान; (सम १५)। °**लेस** पुंन [°**लेश्य**] एक देव-विमान; (सम १५)। °**वण्ण** पुंन [°**वर्ण**] देव-विमान विशेष; (सम १५)। °**सिंग** पुंन [°**शृङ्ग**] एक देव-विमान; (सम १५)। °**सिट्ठ** पुंन [°**सृष्ट**] एक देव-विमान का नाम; (सम १५)। °**सिरी** स्त्री [°**श्री**] एक

ब्राह्मण-कन्या; (महानि २)। °सिव पु [°शिव] एक ब्राह्मण का नाम; (महानि २)। °हास पु [°हास] तलवार की एक उत्तम जाति; (पउम ४३, १६)। °ाभ न [°ाभ] वैताढ्य की उत्तम-श्रेणि में स्थित एक विद्याधर-नगर; (इक)। °ावत्त पुंन [°ावर्त] एक देव-विमान; (सम १५)। देखो सूर, सूरिअ=सूर, सूर्य।

सुज्जाण वि [**सुज्ञान**] सुजान, सियाना, सुज्ञ; (पड्; पिंग)।

सुज्जुत्तरवडिंसग पुन [**सूर्योत्तरावतंसक**] एक देव-विमान; (सम १५)।

सुज्झ अक [**शुध्**] शुद्ध होना। सुज्झइ; (महा)। संकृ—**सुज्झिऊण**; (सम्यक्त्वो ८)।

सुज्झंत वि [**दृश्यमान**] सूझता, दीख पड़ता, मालूम होता; "अन्नंपि ज अ-सुज्झंतं। भुंजतएण रत्ति" (पउम १०३, २५)।

सुज्झणया स्त्री [**शोधना**] शुद्धि; (उप ८०४)।

सुज्झय न [**दे**] १ रौप्य, चाँदी; २ पु. रजक, धोबी; (दे ८, ५६)।

सुज्झरय पुं [**दे**] रजक, धोबी; (दे ८, ३६)।

सुज्झवण न [**शोधन**] शुद्धि, प्रक्षालन; (उप ६८५)।

सुज्झाइ वि [**सुध्यायिन्**] शुभ ध्यान करने वाला; (संबोध ५२)।

सुज्झाइय वि [**सुध्यात**] अच्छी तरह चिन्तित; (राज)।

सुट्ठिअ वि [**सुस्थित**] १ सम्यक् स्थित; (कप्प)। २ पुं. लवण समुद्र का अधिष्ठायक देव; (णाया १, १६—पत्र २१७)। ३ आर्यसुहस्ति आचार्य का शिष्य एक जैन महर्षि; (कप्प)।

सुट्ठु, **सुट्ठुं** अ [**सुष्ठु**] १ अच्छा, शोभन, सुन्दर; (आचा; भग; स्वप्न २३; सुर २, १७८)। २ अतिशय, अत्यन्त; (सुर ४, २४; प्रासू १३७)।

सुठिअ देखो **सुढिअ**; (पाअ)।

सुढ सक [**स्मृ**] याद करना। सुढइ; (प्राकृ ६३)।

सुढिअ वि [**दे**] १ श्रान्त, थका हुआ; (दे ८, ३६; गउड; सुपा १७६; ५३०; सुर १०, २१८)। २ सकुचित अंग वाला; (महा)।

सुण-सक [**श्रु**] सुनना। सुणइ, सुणेइ; (हे ४, ५८; २४१; महा)। सुणउ, सुणेउ, सुणाउ; (हे ३, १५८)। भवि—सुणिस्सइ, सुणिस्सामो; सोच्छिइ, सोच्छिहिइ; सोच्छं, सोच्छिस्सं, सोच्छिमि, सोच्छिहिमि, सोच्छिस्सामि, सोच्छिहामि; (पि ५३१; औप; हे ३, १७२)। कर्म—सुणिज्जइ, सुव्वइ, सुव्वए, सुम्मइ, सुणीअइ; (हे ४, २४२; कुमा; महा; पि ५३६)। वकृ—**सुणंत**, **सुणिंत**, **सुणमाण**, **सुणेमाण**; (हेका १०५; सुर ११, ३७; पि ५६१; विपा १, १; सुर ३, ७६)। कवकृ—**सुम्मंत**, **सुव्वंत**, **सुव्वमाण**; (सुर ११, १६६; ३, ११; से २, १०; ६, ४६)। संकृ—**सुणिअ**, **सुणिऊण**, **सुणित्ता**, **सुणेत्ता**, **सोऊण**, **सोउआण**, **सोउआणं**, **सोउं**, **सोच्चा**, **सोच्चं**, **सुच्चा**; (अभि ११६. पड्; हे ४, २४१; पि ५८२; हे ४, २३७; २, १४६; कुमा; हे २, १५; पि ११४, ३४६; ५८७)। हेकृ—**सोउं**; (कुमा)। कृ—**सुणेयव्व**; **सोअव्व**; (भग; पण्ह १, १—पत्र ५; से २,१०; गउड, अजि ३८)।

सुणई देखो **सुणय**।

सुणंद पु [**सुनन्द**] १ एक राजर्षि, (धम्म)। २ भगवान् वासुपूज्य को प्रथम भिक्षा-दाता गृहस्थ; (सम १५१)। ३ पुन. एक देव-विमान; (सम २६)। देखो **सुनंद**।

सुणंदा स्त्री [**सुनन्दा**] १ भगवान् पार्श्वनाथ की मुख्य श्राविका, (कप्प)। २ तृतीय चक्रवर्ती की पटरानी—तीसरा स्त्री-रत्न; (सम १५२; महा)। ३ भूतानन्द आदि इन्द्रों के लोकपालों की अग्रमहिषिओं के नाम; (ठा ४, १—पत्र २०४; इक)।

सुणक्खत्त पु [**सुनक्षत्र**] १ एक जैन मुनि; (अनु २)। २ भगवान् महावीर का शिष्य एक मुनि; (भग १५—पत्र ६७८)।

सुणक्खत्ता स्त्री [**सुनक्षत्रा**] पक्ष की दूसरी रात; (सुज्ज १, १४)।

सुणग देखो **सुणय**; (आचा; पि २०६)।

सुणण न [**श्रवण**] सुनना; (स ५३)।

सुणय, **सुणह** पुंस्त्री [**शुनक**] १ कुक्कुर, कुत्ता; (हे १, ५२; गा ५५०; ६८८; ६६०; णाया १, १—पत्र ६५; गा १३८; १७५; सुर २, १०३; ६, २०४; श्रा १६; कुप्र १५३; रंभा); स्त्री—**सुणई**, **सुणिआ**; (कुमा; गा ६६६)। २ पुं. छन्द-विशेष; (पिंग)।

सुणहिल्लया स्त्री [**शुनकी**] कुत्ती, मादा-कुक्कुर; (वज्जा ८६)।

सुणावण न [**श्रावण**] सुनाना; (विसे २४८५)।

सुणाविअ वि [श्रावित] सुनाया हुआ; (सुपा ६०२)।
सुणासीर पुं [सुनासीर] इन्द्र, देव-राज; (पात्र; हम्मीर १२)।
सुणाह देखो **सुनाभ**: (राज)।
सुणिअ देखो **सुण**।
सुणिअ वि [श्रुत] सुना हुआ; (कुमा; रयण ४४)।
सुणिअ पुं [शौनिक] कसाई; (सिरि १०७७)।
सुणिउण देखो **सुनिउण**; (राज)।
सुणिप्पकंप देखो **सुनिप्पकंप**. (राज)।
सुणिम्मिय वि [सुनिर्मित] चारु रूप से बना हुआ; (कप्प)।
सुणिव्वुय वि [सुनिर्वृत] अत्यन्त स्वस्थ; (णाया १, १—पत्र ३२)।
सुणिसंत वि [सुनिशान्त] अच्छी तरह सुना हुआ; "इहमेगेसि आयारगोयरे णो सुणिसंते भवति" (आचा १, ८, १, २; २, २, २, १०; १३; १५)।
सुणुसुणाय सक [सुनसुनाय्] 'सुन्' 'सुन्' आवाज करना। वकृ—**सुणुसुणायंत**; (महा)।
सुण्ण न [शून्य] १ निर्जन स्थान; (गउड ५२४)। २ वि. रिक्त, रीता, खाली; (स्वप्न ३१; गउड)। ३ निष्फल, व्यर्थ, निष्प्रयोजन; (गउड ८४२; ९७२)। ४ न. तप-विशेष, एकाशन-व्रत, (संबोध ५७)। देखो **सुन्न**।
सुण्णआर देखो **सुण्णार**; (दे ३, ५४)।
सुण्णइअ } वि [शून्यित] शून्य किया हुआ; (से ११,
सुण्णविअ } ४०; गउड; गा २६; १६६; ६०६)।
सुण्णार पुं [सुवर्णकार] सोनी; (दे ५, ३६)।
सुण्ह देखो **सण्ह**=सूक्ष्म; (हे १, ११८; कुमा)।
सुण्हसिअ वि [दे] स्वपन-शील, सोने की आदत वाला; (दे ८, ३६; षड्)।
सुण्हा स्त्री [सास्ना] गौ का गल-कम्बल; (हे १, ७५; कुमा)। °**ल** पुं [°ल] वृषभ, बैल; (कुमा)। °**लंछिध** पुं [°लचिह्न] १ भगवान ऋषभदेव; २ महादेव; (कुमा)।
सुण्हा स्त्री [स्नुषा] पुत्र-वधू; (णाया १, ७—पत्र ११७; सुर ४, ६८)।
सुतणु स्त्री [सुतनु] नारी, स्त्री; (सुर २, ८६)।
सुतरं अ [सुतराम्] निश्चित अर्थ के अतिशय का सूचक अव्यय; (विसे ८६१)।
सुतवसिय न [सुतपसित] सुन्दर तप, तपश्चर्या का सुन्दर अनुष्ठान; (राज)।
सुतवस्सि वि [सुतपस्विन्] अच्छा तपस्वी; (सम ५१)।
सुतार वि [सुतार] १ अत्यन्त निर्मल; २ अतिशय ऊँचा; ३ अच्छा तैरने वाला; ४ अत्युच्च आवाज वाला; (हे १, १७७)।
सुतारया } स्त्री [सुतारा] १ भगवान् सुविधिनाथजी
सुतारा } की शासन-देवी; (संति ६)। २ सुग्रीव की पत्नी; (पउम १०, ६)। ३ आभूषण-विशेष; (कुमा)।
सुतितिक्ख वि [सुतितिक्ष] सुख से सहन करने योग्य; (ठा ५, १—पत्र २९६)।
सुतोसअ वि [सुतोष्य] सुख से तुष्ट करने योग्य; (दस ५, २, ३४)।
सुत्त सक [सूत्रय्] बनाना। सुत्तइ; (सुपा २३५)।
सुत्त देखो **सुअ**=श्रुत; "पच्चक्खमोहिमणकेवलं च परोक्ख मइसुत्त" (जीवस १४१)।
सुत्त देखो **सोत्त**=स्रोतस्; (भवि)।
सुत्त देखो **सोत्त**=श्रोत्र; (रंभा; भवि)।
सुत्त वि [सुप्त] सोया हुआ, शयित; (ठा ५, २—पत्र ३१६; स्वप्न १०४; प्रासू ९८; श्रा २५)।
सुत्त वि [सूक्त] १ सुचारु रूप से कहा हुआ; २ न. सुभाषित, सुन्दर वचन; "सुकइव्व सुत्तउत्तीए" (सुपा ३३)।
सुत्त न [सूत्र] १ सूता, धागा, वस्त्र-तन्तु; (विपा १, ८—पत्र ८५; सुपा २८१)। २ नाटक का प्रस्ताव; (मोह ४८; सुपा १)। ३ शास्त्र-विशेष; (भग; ठा ४, ४—पत्र २८३; जी ३६)। °**आर** पुं [°कार] ग्रन्थकार; (कप्पू)। °**कंठ** पुं [°कण्ठ] ब्राह्मण, विप्र; (पउम ४, ६५)। °**कड** न [°कृत] द्वितीय जैन आगम-ग्रन्थ; (सूअनि २)। °**ग** न [°क] यज्ञोपवीत; (औप)। °**धार** पुं [°धार] देखो °**हार**; (सुपा १; मोह ४८)। °**फासियणिज्जुत्ति** स्त्री [°स्पर्शिकनिर्युक्ति] सूत्र की व्याख्या; (अणु)। °**रुइ** स्त्री [°रुचि] शास्त्र-श्रद्धा; (औप)। °**हार** पुं [°धार] १ प्रधान नट, नाटक का मुख्य पात्र; (प्रासू १६३)। २ सुतार, बढ़ई; (कम्म १, ४८)।
सुत्ति स्त्री [शुक्ति] सीप, घोंघा; (हे २, १३८; कुमा)। °**मई** स्त्री [°मती] चेदि देश की प्राचीन राजधानी; (णाया १, १६—पत्र २०८)।

सुत्ति स्त्री [**सूक्ति**] सुन्दर वचन, सुभाषित। °**वत्तिया** स्त्री [°**प्रत्यया**] एक जैन मुनि-शाखा; (कप्प—पृ ७९ टि; राज)।

सुत्तिय देखो **सोत्तिअ**=सौतिक; (वव ९)।

सुत्तिय वि [**सूत्रित**] सूत्र-निबद्ध; (राज)।

सुत्थ वि [**सुस्थ**] १ स्वस्थ, तन्दुरस्त; २ सुखी; (संक्षि १२; गा ४७८; महा; चेइय २९६; उप १०३१ टी)।

सुत्थ न [**सौस्थ्य**] १ तंदुरस्ती, स्वस्थता; २ सुखिपन; (सक्षि १२; कुप्र १७६; सुपा १८; १५८; स १३५; उप ९०२; धर्मवि २२)।

सुत्थिय देखो **सुट्ठिअ**; (सुपा ६३२)।

सुत्थिर वि [**सुस्थिर**] अतिशय स्थिर, अति-निश्चल; (प्राकृ १९; सुपा ३४८; कुमा)।

सुथेव वि [**सुस्तोक**] अत्यल्प; (पउम ८, १५२)।

सुदंती स्त्री [**सुदती**] सुन्दर दाँत वाली; (उप ७९८ टी)।

सुदंसण पुं [**सुदर्शन**] १ भगवान् अरनाथ के पिता का नाम; (सम १५१)। २ तीसरे वासुदेव तथा बलदेव के धर्म-गुरू; (सम १५३)। ३ भारतवर्ष में होने वाला पाँचवाँ बलदेव; (सम १५४)। ४ धरणेन्द्र के हस्ति-सैन्य का अधिपति; (ठा ५, १—पत्र ३०२)। ५ एक अन्तकृद् मुनि; (अंत १८)। ६ मेरु पर्वत; (सूअ १, ६, ९; सुज्ज ५)। ७ एक विख्यात श्रेष्ठी; (पडि; वि १६)। ८ देव-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७९)। ९ विष्णु का चक्र; (सुपा ३१०)। १० भगवान् अरनाथ का पूर्वभवीय नाम; ११ भगवान् पार्श्वनाथ का पूर्वजन्मीय नाम; (सम १५१)। १२ पुंन. एक देव-विमान; (देवेन्द्र १३६)। १३ वि. जिसका दर्शन सुन्दर हो वह; (वि १६)। १४ न. पश्चिम रुचक पर्वत का एक शिखर; (ठा ८—पत्र ४३६)।

सुदंसणा स्त्री [**सुदर्शना**] १ जम्बू-नामक एक वृक्ष, जिससे यह द्वीप जंबूद्वीप कहलाता है; (सम १३; पण्ह २, ४—पत्र १३०)। २ भगवान् महावीर की ज्येष्ठ बहिन का नाम; (आचा २, १५, ३; कप्प)। ३ धरण आदि इन्द्रों के कालवाल आदि लोकपालों की एक २ अग्र-महिषी; (ठा ४, १—पत्र २०४)। ४ काल तथा महाकाल-नामक पिशाचेन्द्रों की अग्रमहिषिओं के नाम; (ठा ४, १—पत्र २०४)। ५ भगवान् ऋषभदेव की दीक्षा-शिबिका; (विचार १२९)। ६ चतुर्थ बलदेव की माता; (सम १५२)।

सुदक्खिन्न वि [**सुदाक्षिण्य**] दाक्षिण्य वाला; (धम्म १५; सं ३१)।

सुदच्छ वि [**सुदक्ष**] अति चतुर; (सुपा ५१७)।

सुदरिसण देखो **सुदंसण**; (हे २, १०५; पउम २०, १७६; १९०; पव १९४; इक)।

सुदाम पुं [**सुदाम**] अतीत उत्सर्पिणी-काल में उत्पन्न भारतवर्ष का दूसरा कुलकर पुरुष; (सम १५०)।

सुदारु न [**सुदारु**] सुन्दर काष्ठ; (गउड)।

सुदारुण पुं [**दे**] चंडाल; (दे ८, ३९)।

सुदिट्ठ वि [**सुदृष्ट**] सम्यग् विलोकित; (गा २२५)।

सुदिप्प अक [**सु+दीप्**] अतिशय चमकना। वकृ—**सुदिप्पंत**; (सुपा ३५१)।

सुदीह } वि [**सुदीर्घ**] अत्यन्त लम्बा; (सुर २, १२५;
सुदीहर } ३, १९८)। °**कालीय** वि [°**कालिक**] सुदीर्घ-काल-संबन्धी; (सुर १५, २२०)। °**दंसि** वि [°**दर्शिन्**] परिणाम का विचार कर कार्य करने वाला; (स ३२)।

सुदुक्कर वि [**सुदुष्कर**] जो अत्यन्त दुःख से किया जा सके वह, अति मुश्किल; (उप पृ १६०)।

सुदुक्खत्त वि [**सुदुःखार्त**] अति दुःख से पीडित; (सुर ७, ११)।

सुदुक्खिअ वि [**सुदुःखित**] अत्यन्त दुःखित; (सुपा ३०४)।

सुदुग्ग वि [**सुदुर्ग**] जहाँ दुःख से गमन किया जा सके वह; (पउम ३०, ४९)।

सुदुच्चय वि [**सुदुस्त्यज**] मुश्किली से जिसका त्याग हो सके वह; "सहावो वि सुदुच्चओ" (श्रा १२)।

सुदुत्तार वि [**सुदुस्तार**] कठिनता से जिसको पार किया जा सके वह; (औप; पि ३०७)।

सुदुद्धर वि [**सुदुर्धर**] अति दुःख से जो धारण किया जा सके वह; (श्रा ४९; प्रासू ४८)।

सुदुन्निवार वि [**सुदुर्निवार**] अति कठिनाई से जिसका निवारण किया जा सके वह; (सुपा ९४)।

सुदुप्पिच्छ वि [**सुदुर्दर्श**] अतिशय मुश्किली से देखने योग्य; (सुर १२, १९९)।

सुदुब्भेअ वि [**सुदुर्भेद**] अति दुःख से जिसका भेदन

हो सके वह, (उप २५३ टी)।

सुदुम्मणिआ स्त्री [दे] रूपवती स्त्री; (दे ८, ४०)।

सुदुल्लह वि [सुदुर्लभ] अत्यन्त दुर्लभ; (राज)।

सुदूसह वि [सुदुःसह] अत्यन्त दुःख से सहन करने योग्य; (सुर ६, १५८)।

सुदेव पु [सुदेव] उत्तम देव. (सुपा २५९)।

सुद्द पुं [शूद्र] मनुष्य की अधम जाति, चतुर्थ वर्ण; (विपा १, ५—पत्र ६१, पउम ३, ११७; श्रु १३)।

सुद्दय पु [शूद्रक] एक राजा का नाम; (मोह १०५; १०६)।

सुद्दिणी (अप) स्त्री [शूद्रा] शूद्रजातीय स्त्री; (पिंग)।

सुद्ध पु [दे] गोपाल, ग्वाला, (दे ८, ३३)।

सुद्ध वि [शुद्ध] १ शुक्ल. उज्वल; "वइसाहसुद्धपञ्चमिरत्तीए सोहणं लग्गे" (सुर ४, १०१, कुप्र ७०. पचा ६, ३४)। २ पवित्र; ३ निर्दोष; ४ केवल, किसीसे अ-मिश्रित; ५ न. सिंधा लून; ६ मरिच. मिर्चा, (हे १, २६०)। ७ लगातार १८ दिनों के उपवास; (संबोध ५८)। ८ पु. छन्द-विशेष; (पिंग)। °गंधारा स्त्री [°गन्धारा] गन्धार-ग्राम की एक मूर्च्छना; (ठा ७—पत्र ३९३)। °दंत पुं [°दन्त] १ भारतवर्ष में होनेवाले चौथे जिन-देव; (सम १५४)। २ एक अनुत्तर-गामी जैन मुनि; (अनु २)। ३ एक अन्तर्द्वीप; ४ उसमें रहने वाली एक मनुष्य जाति; (इक)। °पक्ख पुं [°पक्ष] शुक्ल पक्ष; (पउम ६, २७)। °प्प पुं [°ात्मन्] पवित्र आत्मा; (कप्प)। °प्पवेस वि [°प्रवेश्य] पवित्र और प्रवेश के लिए उचित; (भग)। °प्पवेस वि [°ात्मवेश्य] पवित्र तथा वेशोचित (भग)। °वाय पुं [°वात] वायु-विशेष, मन्द पवन; (जी ७)। °वियड न [°विकट] उष्ण जल; (कप्प)। °सज्जा स्त्री [°षड्जा] षडज ग्राम की एक मूर्च्छना; (ठा ७—पत्र ३९३)।

सुद्धंत पुं [शुद्धान्त] अन्तःपुर, (उप ७६८ टी; कुप्र ५४; कुम्मा २६; फस)।

सुद्धवाल वि [दे] शुद्ध-पूत, शुभ्र और पवित्र; (दे ८, ३८)।

सुद्धि स्त्री [शुद्धि] १ शुद्धता, निर्दोषता, निर्मलता; (सम्मत्त २३०; कुमा)। २ पता, खबर, खोई हुई चीज की प्राप्ति; "वद्धाविज्जइ पियाइ सुद्धीए" (सुपा ५१७; कुप्र २०२; सम्मत्त १७२; कुम्मा ६)।

सुद्धेसणिअ वि [शुद्धैषणिक] निर्दोष आहार की खोज करने वाला; (पण्ह २, १—पत्र १००)।

सुद्धोअण पुं [शुद्धोदन] बुद्ध देव के पिता का नाम। °तणय पु [°तनय] बुद्ध देव; (सम्म १४५)। देखो सुद्धोदण।

सुद्धोअणि पु [शौद्धोदनि] बुद्ध देव; (पाअ)।

सुद्धोदण देखो सुद्धोअण। °पुत्त पु [°पुत्र] बुद्ध देव; (कुप्र ४४०)।

सुधम्म पु [सुधर्मन्] १ भगवान् महावीर का पट्टधर शिष्य; (कुमा)। २ एक जैन मुनि; (विपा २, ४)। ३ तीसरे बलदेव के गुरु—एक जैन मुनि; (पउम २०, २०५)। ४ एक जैन मुनि जो सातवें बलदेव के पूर्व-जन्म में गुरु थे; (पउम २०, १९३)। ५ एक जैनाचार्य; "तह अज्जमगुसूरि अज्जधम्मं च धम्मरयं" (सार्ध २२)। देखो सुहम्म।

सुधा देखो छुहा = सुधा; (कुमा)।

सुनंद पु [सुनन्द] १ भारतवर्ष के भावी दशवें जिनदेव के पूर्वभव का नाम; (सम १५४)। २ एक जैन मुनि; (पउम २०, २०)। देखो सुणंद।

सुनक्खत्त देखो सुणक्खत्त; (भग १५—पत्र ६७८; ६८७)।

सुनच्चिरी स्त्री [सुनर्तिनी] अच्छी तरह नृत्य करने वाली स्त्री; (सुपा २८६)।

सुनयण पुं [सुनयन] १ राजा रावण के अधीनस्थ एक विद्याधर सामन्त राजा; (पउम ८, १३३)। २ वि. सुन्दर लोचन वाला; (आवम)।

सुनाभ पुं [सुनाभ] अमरकंका नगरी के राजा पद्मनाभ का पुत्र; (णाया १, १६—पत्र २१४)।

सुनिउण वि [सुनिपुण] १ अत्यन्त सूक्ष्म; (सम ११४)। २ अति चतुर; (सुर ४, १३६)।

सुनिउण वि [सुनिगुण] अतिशय निश्चित गुण वाला; (सम ११४)।

सुनिग्गल वि [सुनिर्गल] चिर-स्थायी; (विसे ७६६)।

सुनिच्छय वि [सुनिश्चय] दृढ निर्णय वाला; (सुपा ४६८)।

सुनिप्पकंप वि [सुनिष्प्रकम्प] अत्यन्त निश्चल; (सुपा ६५३)।

सुनिम्मल वि [सुनिर्मल] अतिशय निर्मल; (पउम २६,

६२)।

सुनिरूविय वि [**सुनिरूपित**] अच्छी तरह तलासा हुआ; (सुपा ५२३)।

सुनिविन्न वि [**सुनिर्विण्ण**] अतिशय खिन्न; (सुर १४, ५८; उव)।

सुनिव्वुड देखो **सुणिव्वुय**; (द्र ४७)।

सुनिसाय वि [**सुनिशात**] अत्यन्त तीक्ष्ण; (सुपा ५७०)।

सुनिसिअ वि [**सुनिशित**] ऊपर देखो; (दस १०, २)।

सुनिस्संक वि [**सुनि:शङ्क**] बिलकुल शङ्का-रहित; (सुपा १८८)।

सुनीविआ स्त्री [**सुनीविका**] सुन्दर नीवी—वस्त्र-ग्रन्थि-वाली स्त्री; (कुमा)।

सुनेत्ता स्त्री [**सुनेत्रा**] पाँचवें वासुदेव की पटरानी; (पउम २०, १८६)।

सुन्न न [**शून्य**] १ बिन्दी; (सुर १६, १४६)। २—देखो **सुण्ण**; (प्रासू १०; महा; भग; आचा; सं ३६; रंभा)। °**पत्तिया** स्त्री [°**प्रत्ययिका**, °**पत्रिका**] एक जैन मुनि-शाखा; (कप्प)।

सुन्नयार देखो **सुण्णआर**; (सुपा ५६४; धर्मवि १२)।

सुन्नार देखो **सुण्णार**; (सुपा ५६२)।

सुन्हा देखो **सुण्हा**; (वा ३७; भवि)।

सुप सक [**मृज्**] मार्जन करना, शोधन करना। सुपइ; (प्राप्र)।

सुपइट्ठ त्रि [**सुप्रतिष्ठ**] १ न्याय-मार्ग मे स्थित; २ प्रतिज्ञा-शूर; (कुमा १, २८)। ३ अतिशय प्रसिद्ध; ४ जिसकी स्थापना विधि-पूर्वक की गई हो वह; (कुमा २, ४०)। ५ भगवान् महावीर के पास दीक्षा ले कर मुक्ति जाने वाला एक गृहस्थ; (अंत १८)। ६ अंग-विद्या का जानकार पाँचवाँ रुद्र पुरुष; (विचार ४७३)। ७ भगवान् सुपार्श्वनाथ के पिता का नाम; (सुपा ३६)। ८ भाद्रपद मास का लोकोत्तर नाम; (सुज्ज १०, १६)। ९ पात्र-विशेष; (राय)। १० न. एक नगर का नाम; (विपा १, ६—पत्र ८८)। °**भ** पुंन [°**भ**] एक देव-विमान; (सम १४; पव २६७)।

सुपइट्ठिय वि [**सुप्रतिष्ठित**] अच्छी तरह प्रतिष्ठा-प्राप्त; (भग; राय)।

145A

सुपक्क वि [**सुपक्व**] अच्छी तरह पका हुआ; (प्रासू १०२; नाट—मृच्छ १५७)।

सुपडाय वि [**सुपताक**] सुन्दर ध्वजा वाला; (कुमा)।

सुपडिबुद्ध वि [**सुप्रतिबुद्ध**] १ सुन्दर रीति से प्रतिबोध को प्राप्त; (आचा १, ५, २, ३)। २ पुं. एक जैन महर्षि; (कप्प)।

सुपडिवत्त वि [**सुपरिवृत्त**] जो अच्छी तरह हुआ हो वह; (पउम ६४, ४५)।

सुपणिहिय वि [**सुप्रणिहित**] सुन्दर प्रणिधान वाला; (पण्ह २, ३—पत्र १२३)।

सुपण्ण देखो **सुप्पन्न**; (राज)।

सुपण्ण } **सुपन्न** } पुं [**सुवर्ण**] गरुड पक्षी; (नाट; कुप्र ६३)।

सुपन्नत्त वि [**सुप्रज्ञप्त**] १ सुन्दर रूप से कथित; (आचा १, ८, १, ३)। २ सम्यग् आसेवित; (दस ४, १)।

सुपभ देखो **सुप्पभ**; (राज)।

सुपम्ह पुं [**सुपक्ष्मन्**] १ एक विजय-क्षेत्र; (ठा २, ३—पत्र ८०)। २ पुंन. एक देव-विमान; (सम १५)।

सुपरिकम्मिय वि [**सुपरिकर्मित**] सुन्दर संस्कार वाला; (णाया १, ७—पत्र ११६)।

सुपरिक्खिय } **सुपरिच्छिय** } वि [**सुपरीक्षित**] अच्छी तरह जिसकी परीक्षा की गई हो वह; (उव; प्रासू १५)।

सुपरिणिट्ठिय } **सुपरिनिट्ठिअ** } वि [**सुपरिनिष्ठित**] अच्छी तरह निपुण; (राज; भग)।

सुपरिप्फुड वि [**सुपरिस्फुट**] सुस्पष्ट; (पउम ४५, २६)।

सुपरिसंत वि [**सुपरिश्रान्त**] अतिशय थका हुआ; (पउम १०२, ४५)।

सुपरुन्न वि [**सुप्ररुदित**] जिसने जोर से रोने का आरंभ किया हो वह; (णाया १, १८—पत्र २४०)।

सुपवित्त वि [**सुपवित्र**] अत्यन्त विशुद्ध; (सुपा ३५४)।

सुपवित्तिय [**सुपवित्रित**] अत्यन्त पवित्र किया हुआ; (सुपा ३)।

सुपव्व पुं [**सुपर्वन्**] १ देव; २ न. सुन्दर पर्व; (कुप्र ४२)।

सुपसाइअ वि [**सुप्रसादित**] अच्छी तरह प्रसन्न किया हुआ; (रंभा)।

सुपसिद्ध वि [सुप्रसिद्ध] अति विख्यात; (पिंग)।
सुपस्स वि [सुदर्श] सुख से देखने योग्य; (ठा ४, ३—पत्र २५३; ५, १—पत्र २६६)।
सुपह पुं [सुपथ] शुभ मार्ग; (उव; सुपा ३७७)।
सुपहाय न [सुप्रभात] माङ्गलिक प्रातः-काल; (हे २, २०४)।
सुपावय वि [सुपापक] अतिशय पापी; (उत्त १२, १४)।
सुपास पुं [सुपार्श्व] १ भारतवर्ष में उत्पन्न सातवें जिन भगवान्; (सम ४३; कप्प; सुपा २)। २ भगवान् महावीर के पिता का भाई; (ठा ६—पत्र ४५५; विचार ४७८)। ३ एक कुलकर पुरुष का नाम; (सम १५०)। ४ भारतवर्ष के भावी तीसरे जिनदेव; (सम १५३)। ५ ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न एक जिनदेव; (सम १५३)। ६ ऐरवत क्षेत्र में आगामि उत्सर्पिणी-काल में होने वाले अठारहवें जिनदेव; (सम १५४; पव ७)। ७ भारतवर्ष के भावी दूसरे जिनदेव का पूर्वजन्मीय नाम; (सम १५४)।
सुपासा स्त्री [सुपार्श्वा] एक जैन साध्वी; (ठा ६—पत्र ४५७)।
सुपीअ पुं [सुपीत] अहोरात्र का पाँचवाँ मुहूर्त; (सम ५१)।
सुपुंख पुंन [सुपुङ्ख] एक देव-विमान; (सम २२)।
सुपुंड पुंन [सुपुण्ड्र] एक देव-विमान; (सम २२)।
सुपुप्फ पुंन [सुपुष्प] एक देव-विमान; (सम ३८)।
सुपुरिस पुं [सुपुरुष] सज्जन, साधु पुरुष; (हे २, १८४; गउड; प्रासू ३)।
सुपेसल वि [सुपेशल] अति मनोहर; (उत्त १२, १३)।
सुप्प अक [स्वप्] सोना। सुप्पइ; (हे २, १७६)।
सुप्प पुंन [सूर्प] सूप, छाज, सिरकी का बना एक पात्र जिससे अन्न पछोरा जाता है; (उवा; पण्ह १, १—पत्र ८)। °णह वि [°नख] सूप के जैसे नख वाला; (णाया १, ८—पत्र १३३)। °णहा, °णही स्त्री [°नखा] रावण की बहिन का नाम; (प्राकृ ४२)।
सुप्पइट्ठ देखो सुपइट्ठ; (राज)।
सुप्पइट्ठिय देखो सुपइट्ठिय; (राज)।
सुप्पइण्णा, सुप्पइन्ना स्त्री [सुप्रतिज्ञा] दक्षिण रुचक पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (राज; इक)।
सुप्पंजल वि [सुप्राञ्जल] अत्यन्त ऋजु—सीधा; (कप्पू)।
सुप्पडिआणंद वि [सुप्रत्यानन्द] उपकृत पुरुष के किए हुए उपकार को मानने वाला; (ठा ४, ३—पत्र २४८)।
सुप्पडिआर न [सुप्रतिकार] उपकार का बदला, प्रत्युपकार; (ठा ३, १—पत्र ११७)।
सुप्पडिबुद्ध देखो सुपडिबुद्ध; (राज)।
सुप्पडिलग्ग वि [सुप्रतिलग्न] अच्छी तरह लगा हुआ, अवलम्बित; (सुपा ५६१)।
सुप्पणिहाण न [सुप्रणिधान] शुभ ध्यान; (ठा ३, १—पत्र १२१)।
सुप्पणिहिय देखो सुपणिहिय; (पण्ह २, १—पत्र १०१)।
सुप्पन्न वि [सुप्रज्ञ] सुन्दर बुद्धि वाला; (सूअ १, ६, ३३)।
सुप्पबुद्ध पुंन [सुप्रबुद्ध] एक ग्रैवेयक-विमान; (देवेन्द्र १३६; पत्र १६४)।
सुप्पबुद्धा स्त्री [सुप्रबुद्धा] दक्षिण रुचक पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८—पत्र ४३६; इक)।
सुप्पभ पुं [सुप्रभ] वर्तमान अवसर्पिणी-काल में उत्पन्न चतुर्थ बलदेव; (सम ७१)। २ आगामी उत्सर्पिणी में होने वाला चौथा बलदेव; (सम १५४)। ३ भारतवर्ष का भावी तीसरा कुलकर पुरुष; (सम १५३) ४ हरिकान्त तथा हरिसह नामक इन्द्रों के एक २ लोकपाल का नाम; (ठा ४, १—पत्र १६७; इक)। ५ पुंन. एक देव-विमान; (देवेन्द्र १४१)। °कंत पुं [°कान्त] हरिकान्त तथा हरिसह-नामक इन्द्रों के एक २ लोकपाल का नाम; (ठा ४, १—पत्र १६७)।
सुप्पभा स्त्री [सुप्रभा] १ तीसरे बलदेव की माता; (सम १५२)। २ धरण आदि दक्षिण-श्रेणि के कई इन्द्रों के लोकपालों की एक २ अग्रमहिषी का नाम; (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ घनवाहन-नामक विद्याधर-नरेश की पत्नी; (पउम ५, १३८)। ४ भगवान् अजितनाथ की दीक्षा-शिबिका; (विचार १२६; सम १५१)।
सुप्पभूय वि [सुप्रभूत] अति प्रचुर; (पउम ५५, ३६)।
सुप्पसण्ण, सुप्पसन्न वि [सुप्रसन्न] अत्यन्त प्रसाद-युक्त; (नाट—मालती १६१; भवि)।
सुप्पसार वि [सुप्रसार] सुख से पसारने योग्य; (सुख २, २६)।
सुप्पसारिय वि [सुप्रसारित] अच्छी तरह पसारा

हुआ; (औप)।

सुप्पसिद्ध देखो **सुपसिद्ध**; (सम १५१; पि ३५०)।

सुप्पसूय वि [सुप्रसूत] सम्यग् उत्पन्न; (औप)।

सुप्पहूअ (अप) देखो **सुप्पभूय**; (भवि)।

सुप्पाडोस पुं [दे] अच्छा पड़ोस; (श्रा २७)।

सुप्पिय वि [सुप्रिय] अत्यन्त प्रिय; (उत्त ११, ८; सुपा ४६५)।

सुप्पुरिस देखो **सुपुरिस**; (रयण २४)।

सुफणि स्त्रीन [सुफणि] जिसमें तक्र आदि उबाला जाय ऐसा बटवा आदि पात्र; (सूअ १, ४, २, १०)।

सुबंधु पुं [सुबन्धु] १ दूसरे बलदेव का पूर्वजन्मीय नाम; (सम १५३)। २ भारतवर्ष का भावी सातवाँ कुलकर; (सम १५३)।

सुबंभ पुंन [सुब्रह्मन्] एक देव-विमान; (सम १६)।

सुबंभण पुं [सुब्राह्मण] प्रशस्त विप्र; (पि २५०)।

सुबद्ध वि [सुबद्ध] अच्छी तरह बँधा हुआ; (उव)।

सुबल पुं [सुबल] १ सोम-वंश का एक राजा; (पउम ५, ११)। २ पहले बलदेव का पूर्वजन्मीय नाम; (पउम २०, १९०)।

सुबलिट्ठ त्रि [सुबलिष्ठ] अतिशय बलवान; (श्रु १८)।

सुबहु वि [सुबहु] अति प्रभूत; (उव)।

सुबहुल वि [सुबहुल] ऊपर देखो; (कप्पू)।

सुबाहु पुं [सुबाहु] १ एक राज-कुमार; (विपा २, १—पत्र १०३)। २ स्त्री. रुक्मिराज की एक कन्या; (णाया १, ८—पत्र १४०)।

सुबुद्धि स्त्री [सुबुद्धि] १ सुन्दर प्रज्ञा; (श्रा १४)। २ पुं. राम-भ्राता भरत के साथ दीक्षा लेने वाला एक राजा; (पउम ८५, ३)। ३ एक मन्त्री; (महा)।

सुब्भ वि [शुभ्र] १ सफेद, श्वेत; (सुपा ५०९)। २ न. एक प्रकार की चाँदी; (राय ७५)।

सुब्भ न [शौभ्रय] सफेदी, श्वेतता; (सबोध ५२)।

सुब्भि पुं [सुरभि] १ सुगन्ध, खुशबू ; (सम ४१; भग; णाया १, १२)। २ वि. सुगन्धी, सुगन्ध-युक्त; (उत्त ३६, २८; आचा १, ६, २, ३)। ३ मनोहर, मनोज्ञ, सुन्दर; (णाया १, १२—पत्र १७४)।

सुब्भिक्ख न [सुभिक्ष] सुकाल; (सुपा ३५८)।

सुब्भु स्त्री [सुभ्रू] नारी, महिला; (रंभा)।

सुभ पुं [शुभ] १ भगवान् पार्श्वनाथ का प्रथम गणधर; (ठा ८—पत्र ४२९; सम १३)। २ भगवान् नमिनाथ का प्रथम गणधर; (सम १५२)। ३ एक मुहूर्त; (पउम १७, ८२)। ४ न. नाम-कर्म का एक भेद; (सम ६७; कम्म १, २६)। ५ मंगल, कल्याण; ६ वि. मंगल-जनक, मांगलिक, प्रशस्त; (कप्प; भग; कम्म १, ४२; ४३)। °**घोस** पुं [°घोष] भगवान् पार्श्वनाथ का द्वितीय गणधर; (सम १३)। °**णुधम्म** पुं [°ानुधर्मन्] राक्षस-वंश का एक राजा; (पउम ५, २६२)। देखो **सुह**= शुभ।

सुभंकर न [शुभंकर] वरुण-नामक लोकान्तिक देवों का विमान; (राज)। देखो **सुहंकर**।

सुभग वि [सुभग] १ आनन्द-जनक; (कप्प)। २ सौभाग्य-युक्त, वल्लभ, जन-प्रिय, (सुज्ज २०)। ३ न. पद्म-विशेष; (सूअ २, ३, १८; राय ८२)। ४ कर्म-विशेष; (सम ६७; कम्म १, २६; ५०; धर्मसं ६२० टी)।

सुभगा स्त्री [सुभगा] १ लता-विशेष; (पराण १—पत्र ३३)। २ सुरूप-नामक भूतेन्द्र की एक पटरानी; (ठा ४, १—पत्र २०४; णाया २—पत्र २५३; इक)।

सुभग्ग वि [सुभाग्य] भाग्य-शाली, जिसका भाग्य अच्छा हो वह; (उव १०३१ टी)।

सुभड देखो **सुहड**; (नाट—मालती १३८)।

सुभणिय वि [सुभणित] वचन कुशल; (उव)।

सुभद्द पुं [सुभद्र] १ इक्ष्वाकु-वंश का एक राजा; (पउम २८, १३६)। २ दूसरे वासुदेव तथा बलदेव के धर्म-गुरू; (सम १५३)। ३ पुंन. एक देव-विमान; (देवेन्द्र १४१)। ४ नगर-विशेष; (उप १०३१ टी)।

सुभद्दा स्त्री [सुभद्रा] १ दूसरे बलदेव की माता; (सम १५२)। २ प्रथम स्त्री-रत्न, भरत चक्रवर्ती की अग्र-महिषी; (सम १५२)। ३ बलि-नामक इन्द्र के सोम आदि चारों लोकपालों की एक २ अग्रमहिषी का नाम; (ठा ४, १—पत्र २०४)। ४ भूतानन्द आदि इन्द्रों के कालवाल-नामक लोकपाल की एक २ अग्र-महिषी का नाम; (ठा ४, १—पत्र २०४)। ५ प्रतिमा-विशेष, एक व्रत; (ठा ४, १—पत्र २०४)। ६ राम के भाई भरत की पत्नी; (पउम २८, १३६)। ७ राजा कोणिक की स्त्री; (औप)। ८ राजा श्रेणिक की एक स्त्री; (अंत २५)। ९ एक सती स्त्री; (पडि)। १० एक सार्थवाह-पत्नी; (विपा १, २—पत्र २२)। ११ जम्बूवृक्ष-विशेष, जिससे यह द्वीप जम्बूद्वीप

कहलाता है; (इक)।

सुभय देखो **सुभग**; (भग १२, ६—पत्र ५७८)।

सुभरिय वि [सुभृत] अच्छी तरह भरा हुआ, भरपूर, परिपूर्ण; (उव)।

सुभा स्त्री [शुभा] १ वैरोचन बलीन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ५, १—पत्र ३०२)। २ एक विजय-क्षेत्र; (ठा २, ३—पत्र ८०)। ३ रावण की एक पत्नी; (पउम ७४, ११)।

सुभासिय देखो **सुहासिय**; (उत्त २०, ५१; दस ६, १, १७)।

सुभासिर वि [सुभाषितृ] सुन्दर बोलने वाला; स्त्री—°री; (सुपा ५६८)।

सुभिक्ख देखो **सुब्भिक्ख**; (उव; सार्ध ३६)।

सुभिच्च पुं [सुभृत्य] अच्छा नोकर; (सुपा ४६५; हे ४, ३३४)।

सुभीम वि [सुभीम] अति भयंकर; (सुर ७, २३३)।

सुभीसण पुं [सुभीषण] रावण का एक सुभट; (पउम ५६, ३१)।

सुभूम पुं [सुभूम] १ भारतवर्ष में उत्पन्न आठवाँ चक्रवर्ती राजा; (ठा २, ४—पत्र ६६)। २ भारतवर्ष के भावी दूसरा कुलकर पुरुष; (सम १५३)। ३ भगवान् अरनाथ का प्रथम श्रावक; (विचार ३७८)।

सुभूसण पुं [सुभूषण] विभीषण का एक पुत्र; (पउम ६७, १६)।

सुभोगा स्त्री [सुभोगा] अधोलोक में रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८—पत्र ४३७; इक)।

सुभोयण न [सुभोजन] व्रत-विशेष, एकाशन तप; (संबोध ५८)।

सुम न [सुम] पुष्प, फूल; (सम्मत्त १६१)। °**सर** पुं [°शर] कामदेव; (रंभा)।

सुमइ पुं [सुमति] १ पाँचवाँ जिन भगवान्; (सम ४३)। २ ऐरवत क्षेत्र में होनेवाला दसवाँ कुलकर पुरुष; (सम १५३)। ३ एक जैन उपासक; (महानि ४)। ४ वि. शुभ बुद्धि वाला; (गउड)। ५ पुं. एक नैमित्तिक विद्वान; (सुर ११, १३२)।

सुमंगल पुं [सुमङ्गल] ऐरवत वर्ष में होने वाले प्रथम जिनदेव; (सम १५४)।

सुमंगला स्त्री [सुमङ्गला] १ भगवान् ऋषभदेव की एक पत्नी; (पउम ३, ११९)। २ सूर्यवंशीय राजा विजय-सागर की पत्नी; (पउम ५, ६२)।

सुमग्ग पुं [सुमार्ग] अच्छा रास्ता; (सुपा ३३०)।

सुमण, **सुमणस** न [सुमनस्] १ पुष्प, फूल; (हे १, ३२; सुपा ८६)। २ पुं. देव, सुर; (सुपा ८६; ३३४)। ३ वि. सुन्दर मन वाला, सज्जन; (सुपा ३३४; पउम ३९, १३०; ७७, १७; रयण ३)। ४ हर्षवान्, आनन्दित, सुखी; (ठा ३, २—पत्र १३०)। ५ पुंन. एक देव-विमान; (देवेन्द्र १३६)। °**भद्द** पुं [°भद्र] १ भगवान् महावीर के पास दीक्षा ले कर मुक्ति पाने वाला एक गृहस्थ; (अंत १८)। २ आर्य संभूतिविजय के एक शिष्य, एक जैन मुनि; (कप्प)।

सुमणसा स्त्री [सुमनस्] वल्ली-विशेष; (पराण १—पत्र ३३)।

सुमणा स्त्री [सुमनस्] १ भगवान् चन्द्रप्रभ की प्रथम शिष्या; (सम १५२; पव ९)। २ भूतानन्द आदि इन्द्रों के एक २ लोकपाल की एक २ अग्र-महिषी का नाम; (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ राजा श्रेणिक की एक पत्नी; (अंत २५)। ४ एक जम्बू वृक्ष का नाम; (इक)। ५ शक्र की पद्मा-नामक इन्द्राणी की एक राजधानी; (इक)। ६ मालती का फूल; (स्वप्न ६१)।

सुमणो° देखो **सुमण**; (उप पृ १८)।

सुमणोहर वि [सुमनोहर] अत्यन्त मनोहर; (उप पृ १८)।

सुमर सक [स्मृ] याद करना। सुमरइ; (हे ४, ७४)। भवि—सुमरिस्ससि; (पि ५२२)। कर्म—सुमरिज्जइ; (हे ४, ४२६; पि ५३७)। वकृ—**सुमरंत**; (सुर ६, ६४; सुपा ४०८; पउम ७८, १९)। कवकृ—**सुमरिज्जंत**; (पउम ५, १८९; नाट—मालती ११०)। संकृ—**सुमरिअ**, **सुमरिऊण**; (कुमा; काल)। हेकृ—**सुमरेउं**, **सुमरित्तए**; (पि ४६५; ५७८)। कृ—**सुमरियव्व**, **सुमरेयव्व**, **सुमरणीअ**; (सुपा १५३; १८२; २१७; अभि १२०)।

सुमर पुं [स्मर] कामदेव; (नाट—चैत ८१)।

सुमरण स्त्रीन [स्मरण] याद, स्मृति; (कुमा; हे ४, ४२६; वसु; प्राप; सुपा ७१; १५९; ३६७; स ३३४)। स्त्री—°णा; (स ६७०; सुपा २२०)।

सुमराव सक [स्मारय्] याद दिलाना। वकृ—**सुमरा-वंत**; (कुप्र ५६)।

सुमराविय वि [**स्मारित**] याद कराया हुआ; (सुर १४, ४८; २४३)।

सुमरिअ देखो **सुमर**=स्मृ।

सुमरिअ वि [**स्मृत**] याद किया हुआ; (पाअ)।

सुमरुया स्त्री [**सुमरुत्**] भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पाने वाली राजा श्रेणिक की एक पत्नी; (अंत २५)।

सुमहुर वि [**सुमधुर**] अति मधुर; (विपा १, ७—पत्र ७७)।

सुमाणस वि [**सुमानस**] प्रशस्त मन वाला, सज्जन; (पउम १०२, २७)।

सुमाणुस पुं [**सुमानुष**] सज्जन, उत्तम मनुष्य; (सुपा २५६)।

सुमालि पुं [**सुमालिन्**] एक राज-कुमार; (पउम ६, २२०)।

सुमिण पुंन [**स्वप्न**] १ स्वप्न, सपना; (हे १, ४६; कुमा; महा; पडि; सुर ३, ६१; ६७)। २ स्वप्न के फल को बतलाने वाला शास्त्र; (स्वप्न ४६)। °**पाढय** वि [°**पाठक**] स्वप्न के फल बताने वाले शास्त्रों का जानकार; (णाया १, १—पत्र २०)। देखो **सुविण**।

सुमित्त पुं [**सुमित्र**] १ भगवान मुनिसुव्रतस्वामी का पिता—एक राजा; (सम १५१)। २ द्वितीय चक्रवर्ती का पिता; (सम १५२)। ३ चतुर्थ बलदेव के पूर्व जन्म का नाम; (पउम २०, १६०)। ४ छठवें बलदेव के धर्म-गुरू—एक जैन मुनि; (पउम २०, २०५)। ५ एक वणिक् का नाम; (उप ७२८ टी)। ६ अच्छा मित्र; "सुमित्तो व्व जिणधम्मो" (सुपा २३४)। ७ भगवान् शान्तिनाथ को प्रथम भिक्षा देने वाले एक गृहस्थ का नाम; (सम १५१)।

सुमित्ता स्त्री [**सुमित्रा**] लक्ष्मण की माता और राजा दशरथ की एक पत्नी; (पउम २५, ४)। °**तणय** पुं [°**तनय**] लक्ष्मण; (से ४, १५; १४, ३२)।

सुमित्ति पुं [**सौमित्रि**] सुमित्रा का पुत्र—लक्ष्मण; (पउम ४५, ३६)।

सुमुइअ वि [**सुमुदित**] अति-हर्षित; (औप)।

सुमुखी देखो **सुमुही**; (पिंग)।

सुमुणिअ वि [**सुज्ञात**] अच्छी तरह जाना हुआ; (सुपा २८२)।

सुमुह पुं [**सुमुख**] १ भगवान नेमिनाथ के पास दीक्षा ले मुक्ति पाने वाला एक राज-कुमार; (अंत ३)। २ राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६१)। ३ न. छन्द-विशेष; (अजि २०)।

सुमुही स्त्री [**सुमुखी**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

सुमेघा स्त्री [**सुमेघा**] ऊर्ध्व लोक में रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८—पत्र ४३७)।

सुमेरु पुं [**सुमेरु**] मेरु-पर्वत; (पाअ; पउम ७५, ३८)।

सुमेहा देखो **सुमेघा**; (इक)।

सुमेहा स्त्री [**सुमेधा**] सुन्दर बुद्धि; (उप पृ ३६८)।

सुम्मंत देखो **सुण**=श्रु।

सुम्ह पुं. ब. [**सुह्म**] देश-विशेष; (हे २, ७४)।

सुर पुं [**सुर**] १ देव, देवता; (पण्ह १, ४—पत्र ६८; कप्प; जी ३३; कुमा)। २ एक राजा का नाम; (उप ७६५)। °**अण** न [°**वन**] नन्दन-वन; (से ६, ८६)। °**अरु** पुं [°**तरु**] कल्प वृक्ष; (नाट)। °**करडि** पुं [°**करटिन्**] ऐरावण हाथी; (सुपा १७६)। °**करि** पुं [°**करिन्**] वही अर्थ; (सुपा २६१)। °**कुंभि** पुं [°**कुम्भिन्**] वही; (सुपा २०१)। °**कुमर** पुं [°**कुमार**] भगवान् वासुपूज्य का शासन-यक्ष; (पव २६)। °**कुसुम** न [°**कुसुम**] लवंग, लौंग; (पि १४)। °**गय** पुं [°**गज**] इन्द्र-हस्ती, ऐरावण; (पाअ; से २, २२)। °**गिरि** पु [°**गिरि**] मेरु पर्वत; (सुपा २; ३१; ३५४; सण)। °**गिह** देखो °**घर**; (उप ७६८ टी)। °**गुरु** पुं [°**गुरु**] १ बृहस्पति; (पाअ; सुपा १७६)। २ नास्तिक मत का प्रवर्तक एक आचार्य; (मोह १०१)। °**गोव** पुं [°**गोप**] कीट-विशेष, इन्द्रगोप; (णाया १, ६—पत्र १६०; पाअ)। °**घर** न [°**गृह**] १ देव-मन्दिर; (कुप्र ४)। २ देव-विमान; (सण)। °**चमू** स्त्री [°**चमू**] देव-सेना; (सुपा ४५)। °**चाव** पुं [°**चाप**] इन्द्र-धनुष; (गा ५८५; ८०८; सुपा १२४)। °**जाल** न [°**जाल**] इन्द्रजाल; (राज)। °**णई** स्त्री [°**नदी**] गंगा नदी; (पाअ)। °**णाह** पु [°**नाथ**] इन्द्र; (गा ८६४; दे)। °**तरंगिणी** स्त्री [°**तरङ्गिणी**] गंगा नदी; (सण)। °**तरु** देखो °**अरु**; (सण)। °**ताण** पुं [°**त्राण**] यवन-नृप, सुलतान; (ती १५)। °**दारु** न [°**दारु**] देवदार की लकड़ी; (स ६३३)। °**धंसी** स्त्री [°**ध्वंसिनी**] विद्या-विशेष; (पउम ७, १३७)। °**धणु**, °**धणुह** न

[°धनुष्] इन्द्र-धनुष; (कुमा; सण)। °नई देखो °णई; (श्रु ७७)। °नाह देखो °णाह; (सण)। °पहु पुं [°प्रभु] इन्द्र, देव-राज; (सुपा ५०२; उप १४२ टी; सण)। °पुर न [°पुर] देव-पुरी, अमरावती, स्वर्ग; (पउम ५०, १; सण)। °पुरी स्त्री [°पुरी] वही अर्थ; (पाअ; कुमा)। °पिअ पुं [°प्रिय] एक यक्ष; (अंत)। °बंदी स्त्री [°बन्दी] देवी, देव-स्त्री; (से ६, ५०)। °भवण न [°भवन] देव-प्रासाद; (भग; सण)। °मंति पुं [°मन्त्रिन्] बृहस्पति; (सुपा ३२६)। °मंदिर न [°मन्दिर] १ देहरा, मन्दिर; (कुप्र ४)। २ देव-विमान; (सण)। °मुणि पुं [°मुनि] नारद मुनि; (पउम ९०, ८)। °रमण न [°रमण] रावण का एक बगीचा; (पउम ४६, ३७)। °राय पुं [°राज] इन्द्र; (सुपा ४५; सिरि २४)। °रिउ पुं [°रिपु] दैत्य, दानव; (पाअ)। °लोअ पुं [°लोक] स्वर्ग, (महा)। °लोइय वि [°लौकिक] स्वर्गीय; (पुप्फ २५८)। °लोग देखो °लोअ; (पउम ५२, १८)। °वइ पुं [°पति] १ इन्द्र, देव-राज, (पाअ; सुपा ४४; ४८; ८८; ४०२)। २ इन्द्र-नामक एक विद्याधर-नरेश; (पउम ७, २७)। °वण्ण पुंन [°वर्ण] एक देव-विमान; (सम १०)। °वधू देखो °वहू; (पि ३८७)। °वन्नी स्त्री [°पर्णी] पुंनाग वृक्ष; (पाअ)। °वर पुं [°वर] उत्तम देव; (भग)। °वरिंद पुं [°वरेन्द्र] इन्द्र, देव-राज; (आ २७)। °वहू स्त्री [°वधू] देवाङ्गना, देवी; (कुमा)। °वारण पुं [°वारण] ऐरावण हस्ती; (उप २११ टी)। °संगीय न [°संगीत] नगर-विशेष; (पउम ८, १८)। °सरि स्त्री [°सरित्] भागीरथी, गङ्गा नदी; (गउड; उप पृ ३९; सुपा ३३; ७८९)। °सिहरि पुं [°शिखरिन्] मेरु पर्वत; (सण)। °सुंदर पुं [°सुन्दर] रथचक्रवाल-नगर का एक विद्याधर-नरेश; (पउम ८, ४१)। °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] १ देव-वधू, देवाङ्गना; (सुर ११, ११५; सुपा २००)। २ एक राज-पुत्री; (सुर ११, १४३)। ३ एक राज-कुमारी; (सिरि ५३)। °सुरहि स्त्री [°सुरभि] काम-धेनु; (रयण १३)। °सेल पुं [°शैल] मेरु-पर्वत; (सुपा १३०)। °हत्थि पुं [°हस्तिन्] ऐरावण हाथी; (से ९, ६)। °उह न [°आयुध] वज्र; (पाअ)। °दिव पुं [°देव] एक श्रावक का नाम; (उवा)। °देवी स्त्री [°देवी] पश्चिम रुचक पर रहने वाली एक दिशा-कुमारी देवी; (ठा ८—पत्र ४३६; इक)। °रि पुं [°रि] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६२)। °लय पुंन [°लय] स्वर्ग; (पाअ; सुअ १, ६, ९; सुपा ५६९)। °हिराय पुं [°धिराज] इन्द्र; (उप १४० टी)। °हिव पुं [°धिप] इन्द्र; (से १५, ५३)। °हिवइ पुं [°धिपति] वही; (सुपा ४९)।

सुरइ स्त्री [सुरति] सुख; (पण्ह १, ४—पत्र ६८)।

सुरइय वि [सुरचित] अच्छी तरह किया हुआ; (पण्ह १, ४—पत्र ६८)।

सुरंगणा स्त्री [सुराङ्गना] देव-वधू; (सुपा २४९)।

सुरंगा स्त्री [सुरङ्गा] सुरंग, जमीन के भीतर का मार्ग; (उप पृ २६; महा; सुपा ४५४)।

सुरंगि पुंस्त्री [दे] वृक्ष-विशेष, शिग्रु वृक्ष, सहिंजना का गाछ; (दे ८, ३७)।

सुरजेट्ठ पुं [दे] वरुण देवता; (दे ८, ३१)।

सुरट्ठ पुं. ब. [सुराष्ट्र] एक भारतीय देश जो आजकल काठियावाड़ के नाम से प्रसिद्ध है; (णाया १, १६—पत्र २०८; हे २, ३४; पिंड २०२)।

सुरणुचर वि [स्वनुचर] सुख से करने योग्य; (ठा ५, १—पत्र २९६)।

सुरत } देखो सुरय; (पउम १६, ८०; सचि ६; प्राकृ
सुरद } १२)।

सुरभि पुंस्त्री [सुरभि] १ वसन्त ऋतु; २ स्त्री. गौ, गैया; (कुम्मा १४)। ३ वि. सुगन्ध-युक्त, सुगंधी; (सम ६०; गा ८९१; कप्प; कुम्मा १४)। ४ पुंन. एक देव-विमान; (देवेन्द्र १४०)। °गंध वि [°गन्ध] सुगन्धी; (आचा)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष; (राज)। देखो सुरहि।

सुरमणोअ वि [सुरमणीय] अत्यन्त मनोहर; (सुर ३, ११२)।

सुरम्म वि [सुरम्य] ऊपर देखो; (औप)।

सुरय न [सुरत] मैथुन, स्त्री-संभोग; (सुर १३, २०; गा १५५; काप्र ११३)।

सुरयण न [सुरत्न] सुन्दर रत्न; (सुपा ३२७)।

सुरयणा स्त्री [सुरचना] सुन्दर रचना; (सुपा ३२)।

सुरस वि [सुरस] १ सुन्दर रस वाला; (णाया १, १२—पत्र १७४)। २ न. तृण-विशेष; (दे १, ५४)। °लया स्त्री [°लता] तुलसी-लता; (दे ५, १४)।

सुरसुर पुं [**सुरसुर**] ध्वनि-विशेष, 'सुर सुर' आवाज; (ओघ २८९)।

सुरसुर अक [**सुरसुराय्**] 'सुर सुर' आवाज करना। वकृ—**सुरसुरंत**; (गा ७४)।

सुरह सक [**सुरभय्**] सुगन्धित करना। सुरहेइ; (कुमा; प्रासू ६)।

सुरह पुंन [**सौरभ**] सुन्दर गन्ध, खुशबू; "गंधोव्विअ सुरहो मालईइ मलणं पुण विणासो" (भत्त १२१)।

सुरह पु [**सुरथ**] साकेतपुर का एक राजा; (महा)।

सुरहि पुंस्त्री [**सुरभि**] १ वसंत ऋतु; (रंभा; पाअ; कप्पू)। २ चैत्र मास; (गा १०००)। ३ वृक्ष-विशेष, शतद्रु वृक्ष; (आचा २, १, ८, ३)। ४ स्त्री. गौ, गैया; (रयण १३; धर्मवि ६५; पाअ; प्रासू १६८)। ५ न. नाम-कर्म का एक भेद, जिसके उदय से प्राणी के शरीर में सुगन्ध उत्पन्न होती है; (कम्म १, ४१)। ६ वि. सुगन्ध-युक्त; (उवा; कुमा; गा ३१७; ३६६; सुर ३, ३९; हे २, १५५)। देखो **सुरभि**।

सुरा स्त्री [**सुरा**] मदिरा, दारू; (उवा)। °**रस** पुं [°**रस**] समुद्र-विशेष; (दीव)।

सुरिंद पु [**सुरेन्द्र**] १ इन्द्र, देव-स्वामी; (सुर २, १५३; गउड; सुपा ४४)। २ एक विद्याधर-नरेश; (पउम ७, २९)। °**दत्त** पुं [°**दत्त**] एक राज-कुमार; (उप ९३६)।

सुरिंदय पुं [**सुरेन्द्रक**] विमानेन्द्रक, देव-विमान विशेष; (देवेन्द्र १३७)।

सुरी स्त्री [**सुरी**] देवी; (कुमा)।

सुरुंगा देखो **सुरंगा**; (पउम ८, १५८)।

सुरुग्घ [**स्रुघ्न**] देश-विशेष; (हे २, ११३; षड्)। °**ज** वि [°**ज**] देश-विशेष में उत्पन्न; (कुमा)।

सुरुट्ठ वि [**सुरुष्ट**] अत्यन्त रोष-युक्त; (पउम ६८, २५)।

सुरूया स्त्री [**सुरूपा**] एक इन्द्राणी; (णाया २—पत्र २५२)। देखो **सुरूवा**।

सुरूव पुं [**सुरूप**] १ भूत-निकाय का दक्षिण दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५)। २ न. सुन्दर रूप; ३ वि. सुन्दर रूप वाला; (उवा; भग)।

सुरूवा स्त्री [**सुरूपा**] १ सुरूप तथा प्रतिरूप-नामक भूतेन्द्रों की एक २ अग्र-महिषी; (ठा ४, १—पत्र २०४)। २ भूतानन्द-नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी; (इक)। ३ एक दिशा-कुमारी देवी; (ठा ४, १—पत्र १९८; ६—पत्र ३६१)। ४ एक कुलकर-पत्नी; (सम १५०)। ५ सुन्दर रूप वाली; (महा)।

सुरेस पुं [**सुरेश**] १ देव-पति, इन्द्र; २ उत्तम देव; (सुपा ६१४)।

सुरेसर पुं [**सुरेश्वर**] इन्द्र, देव-राज; (सुपा २७; कुप्र ४)।

सुलक्खणि वि [**सुलक्षणिन्**] उत्तम लक्षण वाला; (धर्मवि १४२)।

सुलग्ग वि [**सुलग्न**] अच्छी तरह लगा हुआ; (महा)।

सुलद्ध वि [**सुलब्ध**] सम्यक् प्राप्त; (णाया १, १—पत्र २४; उवा)।

सुलब्भ } **सुलभ** } वि [**सुलभ**] सुख से प्राप्त हो सके वह; (श्रा १२; सुख २, १५; महा)।

सुलस पुं [**सुलस**] पर्वत-विशेष; (इक)।

सुलस न [**दे**] कुसुम्भ-रक्त वस्त्र, (दे ८, ३७)।

सुलसमंजरी } **सुलसा** } स्त्री [**दे**] तुलसी; (दे ८, ४०; पाअ)।

सुलसा स्त्री [**सुलसा**] १ नववें जिनदेव की प्रथम शिष्या; (सम १५२)। २ भगवान महावीर की एक श्राविका जिसका आत्मा आगामि काल में तीर्थंकर होगा; (ठा ९—पत्र ४५५; सम १५४)। ३ नाग-नामक गृहपति की स्त्री; (अंत ४)। ४ शक्र की एक अग्र-महिषी, एक इन्द्राणी; (पउम १०२, १५९)। ५ शंखपुर के राजा सुन्दर की पत्नी; (महा)।

सुलह देखो **सुलभ**; (स्वप्न ४८; महा; दं ४६)।

सुलाह पुं [**सुलाभ**] अच्छा नफा; (सुपा ४४६)।

सुली स्त्री [**दे**] उल्का, आकाश से गिरती आग, (दे ८, ३६)।

सुलुसुल } **सुलुसुलाय** } अक [**सुलसुलाय्**] सुल सुल आवाज करना। सुलुसुलायइ; (तंदु ४१)। वकृ—**सुलुसुलिंत, सुलुसुलेंत**; (तंदु ४४, महा)।

सुलूह वि [**सुरूक्ष**] अत्यन्त लूखा; (सूअ १, १३, १२)।

सुलोअ देखो **सिलोअ**=श्लोक; (अवि १६)।

सुलोयण पुं [**सुलोचन**] एक विद्याधर-नरेश, (पउम ५, ६६)।

सुलोल वि [**सुलोल**] अति चपल; (कप्पू)।

सुल्ल न [**शूल्य**] शूला-प्रोत मांस; (दे ८, ३९; पाअ)।

सुव अक [स्वप्] सोना। सुवइ, सुवंति; (हे १, ६४; षड्; महा; रंभा)। भवि—सुविस्सं; (पि ५२६)। वकृ—सुवंत, सुवमाण; (पाअ; से १, २१; भग)। संकृ—सुविऊण; (कुप्र ५६)।

सुव देखो **स**=स्व; (हे २, ११४; षड्; कुमा)।

सुव (अप) देखो **सुअ**=श्रुत, सुत; (भवि)।

सुवंस पुं [सुवंश] १ अच्छा बाँस; २ वि. सुन्दर कुल में उत्पन्न, खानदान; (हे ४, ४१९)।

सुवग्गु पुं [सुवल्गु] एक विजय-क्षेत्र जिसकी राज-धानी खड्गपुरी है; (ठा २, ३—पत्र ८०; इक)।

सुवच्छ पुं [सुवत्स] १ व्यन्तर-देवों का एक इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५)। २ एक विजय-क्षेत्र, प्रान्त-विशेष, जिसकी राजधानी कुंडला नगरी है; (ठा २, ३—पत्र ८०; इक)।

सुवच्छा स्त्री [सुवत्सा] १ अधोलोक में रहने वाली एक दिशा-कुमारी देवी; (ठा ८—पत्र ४३७)। २ सौमनस पर्वत पर रहने वाली एक देवी; (इक)।

सुवज्ज पुं [सुवज्र] १ एक विद्याधर-वंशीय राजा; (पउम ५, १६)। २ पुन. एक देव-विमान; (सम २५)।

सुवट्टिय वि [सुवर्तित] अतिशय गोल किया हुआ; (राज)।

सुवण न [स्वपन] शयन, (ओघ ८७; पचा १, ४५; उप ७६२)।

सुवण्ण पुं [सुपर्ण] १ गरुड़ पक्षी; (उत्त १४, ४७)। २ भवनपति देवों की एक जाति; (औप)। ३ आदित्य, सूर्य; (गउड)। °कुमार पुं [°कुमार] भवनपति देवों की एक जाति, (इक)।

सुवण्ण पुं [दे] अर्जुन वृक्ष; (दे ८, ३७)।

सुवण्ण न [सुवर्ण] १ सोना, हेम; (उवा; महा; णाया १, १७; गउड)। २ पु. भवनपति देवों की एक जाति; (भग)। ३ सोलह कर्म-माषक का एक बाँट; (अणु १५५)। ४ सुन्दर वर्ण; ५ वि. सुन्दर वर्ण वाला; (भग)। °आर, °कार पुं [°कार] सोनी; (दे; महा)। °कुंभ पुं [°कुम्भ] प्रथम बलदेव के धर्म-गुरू एक जैन मुनि; (पउम २०, २०५)। °कुसुम न [°कुसुम] सुवर्ण-यूथिका लता का फूल, (राय ३१)। °कूला स्त्री [°कूला] नदी-विशेष; (सम २७; इक)। °गुलिया स्त्री [°गुलिका] एक दासी का नाम; (महा)। °सिला स्त्री [°शिला] एक महौषधि; (ती ५; राज)। °गर पुं [°कर] सोने की खान; (णाया १, १७—पत्र २२८)। °र पु [°कार] सोनी; (उप पृ ३५१)। देखो **सुवन्न**=सुवर्ण।

सुवण्णबिंदु पुं [दे] विष्णु; (दे ८, ४०)।

सुवण्णिअ वि [सौवर्णिक] सुवर्ण-मय, सोने का बना हुआ; (हे १, १६०; षड्; प्राकृ ३६)।

सुवत्त देखो **सुव्वत्त**; (राज)।

सुवन्न न [सुवर्ण] १ सोना; (सं ५०; प्रासू २; कुप्र १; कुमा)। २ वि. सुन्दर अक्षर वाला; (कुप्र १)। °कुमार पुं [°कुमार] भवनपति देवों की एक जाति; (भग; सम ८३)। °कूलप्पवाय पुं [°कूलप्रपात] एक ह्रद जहाँसे सुवर्णकूला नदी बहती है; (ठा २, ३—पत्र ७२)। °गार पुं [°कार] सोनी; (णाया १, ८—पत्र १४०; उप पृ ३५३)। °जूहिया स्त्री [°यूथिका] लता-विशेष; (पराण १७—पत्र ५२६)। °यार देखो °गार; (सुपा ५६५)। देखो **सुवण्ण**=सुवर्ण।

सुवन्न वि [सौवर्ण] सोने का बना हुआ; (कुप्र ४)।

सुवन्नालुगा स्त्री [दे] दतवन करने का पात्र—लोटा आदि; (कुप्र १४०)।

सुवप्प पुं [सुवप्र] एक विजय-क्षेत्र; (ठा २, ३—पत्र ८०)।

सुवयण न [सुवचन] सुन्दर वचन; (भग)।

सुवर, **सुवँर** (अप) देखो **सुमर**। सुवरइ, सुवँरहिं; (भवि; पि २५१)।

सुवहु देखो **सुवहु**; (प्राप)।

सुवाय पुंन [सुवात] एक देव-विमान; (सम १०)।

सुवास पुं [सुवर्ष] १ सुन्दर वृष्टि; (उप ८४९)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)।

सुवासणी देखो **सुवासिणी**; (धर्मवि १२३)।

सुवासव पुं [सुवासव] एक राज-कुमार; (विपा २, ४)।

सुवासिणी स्त्री [दे. सुवासिनी] जिसका पति जीवित हो वह स्त्री; (सिरि १५६)।

सुवाहा अ [स्वाहा] देवता को हविष आदि अर्पण का सूचक अव्यय; (सिरि १९७)।

सुविअज्जिअ वि [सुव्यर्जित] विशेष रूप से उपार्जित; (तंदु ५६)।

सुविअड्ढ वि [सुविदग्ध] अत्यन्त चतुर; (नाट—रत्ना

६)
सुविइय वि [**सुविदित**] अच्छी तरह ज्ञात; (उव; सुपा ४०४)।
सुविउ वि [**सुविद्**] अच्छा जानकार; (श्रा २८)।
सुविउल वि [**सुविपुल**] अति विशाल; (उव)।
सुविक्कम पुं [**सुविक्रम**] भूतानन्द-नामक इन्द्र के हस्ति-सैन्य का अधिपति; (ठा ५, १—पत्र ३०२; इक)।
सुविक्खाय वि [**सुविख्यात**] सुप्रसिद्ध; (सुर ६, ६४)।
सुविगा स्त्री [**शुकिका, शुकी**] मैना; (उप ६७३; ६७५)।
सुविज्जा स्त्री [**सुविद्या**] उत्तम विद्या; (प्रासू ५३)।
सुविण देखो **सुमिण**; (सुर ३, १०१; महा; रंभा)। °**न्नु** वि [°**ज्ञ**] स्वप्न-शास्त्र का जानकार; (उप पृ ११६; सुर १०, ६८)।
सुविणट्ठ वि [**सुविनष्ट**] बिलकुल नष्ट; (गा ७४०)।
सुविणिच्छिअय वि [**सुविनिश्चित**] अच्छी तरह निर्णीत; (उव)।
सुविणिम्मिय वि [**सुविनिर्मित**] अच्छी तरह बनाया हुआ; (णाया १, १—पत्र १२)।
सुविणीय वि [**सुविनीत**] १ अतिशय दूर किया हुआ; (उत्त १, ४७)। २ अत्यन्त विनय-युक्त; (दस ६, २, ६)।
सुवित्त न [**सुवृत्त**] १ अत्यन्त गोलाकार; २ सदाचार, अच्छा आचरण; (सुर १, २१)।
सुवित्थड वि [**सुविस्तृत**] अति विस्तारयुक्त; (अजि ४० ; प्रासू १२८; द्र ६८)।
सुवित्थिन्न वि [**सुविस्तीर्ण**] ऊपर देखो; (सुर १, ४५; १२, १)।
सुविधि देखो **सुविहि**; (सम ४३)।
सुविभज्ज वि [**सुविभज्य**] जिसका विभाग अनायास हो सके वह; (ठा ५, १—पत्र २६६)।
सुविभत्त वि [**सुविभक्त**] अच्छी तरह विविक्त; (णाया १, १ टी—पत्र ५; औप; भग)।
सुविम्हिअ वि [**सुविस्मित**] अतिशय आश्चर्यान्वित; (उत्त २०, १३)।
सुवियक्खण वि [**सुविचक्षण**] अति चतुर; (सुपा १५०)।
सुवियाण न [**सुविज्ञान**] अच्छा ज्ञान, सुन्दर जानकारी, पंडिताई; (सट्ठि १६)।
सुविर वि [**स्वप्तृ**] स्वपन-शील, सोने की आदत वाला; (ओघभा १३३; दे ८, ३६)।
सुविरइय वि [**सुविरचित**] अच्छी तरह घटित, सुघटित; (उवा २०६)।
सुविराइय वि [**सुविराजित**] सुशोभित; (सुपा ३१०)।
सुविराहिय वि [**सुविराधित**] अतिशय विराधित; (उव)।
सुविलास वि [**सुविलास**] सुन्दर विलास वाला; (सुर ३, ११४)।
सुविवेइय वि [**सुविवेचित**] सम्यग् विवेचित; (उव)।
सुविवेच सक [**सुवि+विच्**] अच्छी तरह व्याख्या करना। संकृ—**सुविवेचित**(?य); (धर्मस १३११)।
सुविसट्ट वि [**सुविकसित**] अच्छी तरह विकसित, (सुर ३, १११)।
सुविसत्थ पुं [**दे**] व्यभिचारी पुरुष; (वज्जा ६८)।
सुविसाय पुन [**सुविसात**] एक देव-विमान; (सम ३८)।
सुविहाणा स्त्री [**सुविधाना**] विद्या-विशेष; (पउम ७, १३७)।
सुविहि पुं [**सुविधि**] १ नववाँ जिन भगवान्; (सम ८५; पडि)। २ पुंस्त्री. सुन्दर अनुष्ठान; (पण्ह २, ५ टी—पत्र १४६)। ३ न. रामचन्द्र तथा लक्ष्मण का एक यान; "चंकमणं हवइ सुविहि-नामेणं" (पउम ८०, ४)।
सुविहिअ वि [**सुविहित**] सुन्दर आचरण वाला, सदाचारी; (सम १२५; भास १; उव; स १३०; सार्ध ११५; द्र ३२)।
सुवीर पुं [**सुवीर**] १ यदुराज का एक पौत्र; (अंत)। २ पुंन. एक देव-विमान; (सम १२)।
सुवीसत्थ वि [**सुविश्वस्त**] अच्छी तरह विश्वास-प्राप्त; (सुर ६, १५६; सुपा २११)।
सुवुण्णा स्त्री [**दे**] संकेत, इसारा; (दे ८, ३७)।
सुवुरिस देखो **सुपुरिस**; (गउड)।
सुवे अ [**श्वस्**] आगामी कल; (हे २, ११४; चंड; कुमा)।
सुवेल पुं [**सुवेल**] १ पर्वत-विशेष; (से ८, ८०)। २ न. नगर-विशेष; (पउम ५४, ४३)।
सुवो देखो **सुवे**; (षड्; प्राप)।
सुव्व न [**शुल्व**] १ ताँबा, ताम्र; (ती २)। २ रज्जु, रस्सी; ३ जल-समीप; ४ आचार; ५ यज्ञ का कार्य;

(दे ८, ३९)।

सुव्वंत देखो सुण।

सुव्वत देखो सुव्वय (ठा २, ३—पत्र ७८)।

सुव्वत्त वि [सुव्यक्त] स्फुट, सुस्पष्ट; (अंत २०; औप; नाट—मृच्छ २८)।

सुव्वमाण देखो सुण।

सुव्वय पुं [सुव्रत] १ भारतवर्ष में उत्पन्न बीसवें जिनदेव, मुनिसुव्रत स्वामी; (ती ८; पव ३५)। २ ऐरवत वर्ष के एक भावी जिनदेव; (सम १५४)। ३ छठवें जिनदेव का गणधर; (१५२)। ४ एक जैन मुनि जो तीसरे बलदेव के पूर्व जन्म में गुरु थे; (पउम २०. १९२)। ५ आठवें बलदेव के धर्म-गुरु; (पउम २०. २०६)। ६ भगवान् पार्श्वनाथ का मुख्य श्रावक; (कप्प)। ७ एक ज्योतिष्क महा-ग्रह; (राज)। ८ एक दिवस का नाम; (सुज्ज १०, १४; कप्प)। ९ न. एक गोत्र; (कप्प)। १० वि सुन्दर व्रत वाला; (पव ३५)। °ग्गि पुं [°ग्नि] एक दिवस का नाम; (कप्प)।

सुव्वया स्त्री [सुव्रता] १ भगवान् धर्मनाथ की माता; (सम १५१)। २ एक जैन साध्वी; (सुर १५, २४७; महा)।

सुव्विअ स्त्री [दे] अम्बा, माता; (दे ८, ३८)।

सुस देखो सस्स। "सुसइ व पंकं न वहंति निज्झरा सरिया न सरंति" (वज्जा १३४; भवि)। कृ—सुसियव्व, (सुर ४, २२९)।

सुसंगद वि [सुसंगत] अति-संबद्ध; (प्राकृ १२)।

सुसंजमिअ वि [सुसंयमित] अति-नियन्त्रित; (दे)।

सुसंढिआ स्त्री [दे] शूला-प्रोत मांस; (दे ८, ३९)।

सुसंतय वि [सुसतत] अति सुन्दर; "अहो जणा कुणह नवं सुसंतयं" (पउम ९८, ५६)।

सुसंनिविट्ठ वि [सुसंनिविष्ट] अच्छी तरह स्थित; (सुपा १३३)।

सुसंपरिग्गहिय वि [सुसंपरिगृहीत] खूब अच्छी तरह ग्रहण किया हुआ; (गच्छ ६३)।

सुसंपिणद्ध वि [सुसंपिनद्ध] खूब अच्छी तरह बँधा हुआ; (राय)।

सुसंभंत वि [सुसंभ्रान्त] अतिशय व्याकुल; (उत्त २०, १३)।

सुसंभिअ वि [सुसंभृत] अच्छी तरह संस्कृत; (स १८९; उप ६४८ टी)।

सुसंमय वि [सुसंमत] अच्छी तरह संमति-युक्त; (सुर १०, ८२)।

सुसंवुअ } **सुसंवुड** } वि [सुसंवृत] १ परिगत, व्याप्त; २ अच्छी तरह पहना हुआ; (णाया १, १—पत्र १६; पि २१९)। ३ जितेन्द्रिय; ४ रुका हुआ; (उत्त २, ४२)।

सुसंहय वि [सुसंहत] अतिशय संश्लिष्ट; (औप)।

सुसज्ज वि [सुसज्ज] अच्छी तरह तय्यार; (सुपा ३११)।

सुसण्णप्प देखो **सुसन्नप्प**; (राज)।

सुसद्द पु [सुशब्द] १ सुन्दर आवाज वाला; २ प्रसिद्ध, विख्यात; (सुपा ५६९)।

सुसन्नप्प वि [सुसंज्ञाप्य] सुख-बोध्य; (कस)।

सुसमत्थ वि [सुसमर्थ] सुशक्त, अतिशय सामर्थ्य वाला; (सुर १, २३२)।

सुसमदुस्समा } **सुसमदूसमा** } स्त्री [सुषमदुष्षमा] काल-विशेष, अवसर्पिणी-काल का तीसरा और उत्सर्पिणी का चौथा आरा; (इक; ठा २, ३—पत्र ७६)।

सुसमसुसमा स्त्री [सुषमसुषमा] काल-विशेष, अवसर्पिणी का पहला और उत्सर्पिणी का छठवाँ आरा; (इक; ठा १—पत्र २७)।

सुसमा स्त्री [सुषमा] १ काल-विशेष, अवसर्पिणी का दूसरा और उत्सर्पिणी का पाँचवाँ आरा; (ठा २, ३—पत्र ७६; इक)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)।

सुसमाहर सक [सुसमा+हृ] अच्छी तरह ग्रहण करना। सुसमाहरे; (सूअ १, ८, २०)।

सुसमाहिअ वि [सुसमाहित] अच्छी तरह समाधि-संपन्न; (दस ५, १, ६; उत्त २०, ४)।

सुसमिद्ध वि [सुसमृद्ध] अत्यन्त समृद्ध; (नाट—मृच्छ १५९)।

सुसर पुंन [सुस्वर] १ एक देव-विमान; (सम १७)। २ न. नामकर्म का एक भेद, जिसके उदय से सुन्दर स्वर की प्राप्ति हो वह कर्म; (सम ६७; कम्म १, २६; ५१)। देखो **सुस्सर**, **सूसर**।

सुसा स्त्री [स्वसृ] बहिन, भगिनी; (सूअ १, ३, १, १ टी)।

सुसा देखो **सुण्हा**=स्नुषा; (कुमा)।

सुसागय न [सुस्वागत] सुन्दर स्वागत; (भग)।

सुसागर पुन [**सुसागर**] एक देव-विमान; (सम २)।

सुसाण न [**श्मशान**] मुर्दाघाट, मरघट; (णाया १, २—पत्र ७६; हे २, ८६; स ५६७; श्रा १४; महा)।

सुसामण्ण न [**सुश्रामण्य**] अच्छा साधुपन; (उवा)।

सुसाय वि [**सुस्वाद**] स्वादिष्ट, सुन्दर स्वाद वाला; (पउम ८२, ६६; १०२, १२२)।

सुसाल पुन [**सुशाल**] एक देव-विमान; (सम ३५)।

सुसावग } पुं [**सुश्रावक**] अच्छा श्रावक—जैन गृहस्थ;
सुसावय } (कुमा; पडि; द्र २१)।

सुसाहय देखो **सुसंहय**; (पराह १, ४—पत्र ७६)।

सुसाहु पुं [**सुसाधु**] उत्तम मुनि; (पराह २, १—पत्र १०१; उव)।

सुसिअ वि [**शुष्क**] सूखा हुआ; (सुपा २०४; कुप्र १३)।

सुसिअ वि [**शोषित**] सुखाया हुआ; (महा; वज्जा १५०; कुप्र १३)।

सुसिक्खिअ वि [**सुशिक्षित**] अच्छी तरह शिक्षा को प्राप्त; (मा २०)।

सुसिणिद्ध वि [**सुस्निग्ध**] अत्यन्त स्नेह-युक्त; (सुर ४, १६६)।

सुसित्थ देखो **सुत्थ**=सौस्थ्य; (संक्षि १२)।

सुसिन्न वि [**सुशीर्ण**] अति सडा हुआ; (सुपा ४६६)।

सुसिर वि [**शुषिर**] १ पोला, खाली, छूँछा; (उप ७२८ टी; कुप्र १६२)। २ पुंन. एक देव-विमान; (सम ३७)।

सुसिलिट्ठ वि [**सुश्लिष्ट**] सुसंगत, अति संबद्ध; (सुर १०, ८२; पंचा १८, २३)।

सुसिस्स पु [**सुशिष्य**] उत्तम चेला; (उप पृ ४०१)।

सुसीअ वि [**सुशीत**] अति शीतल; (कुमा)।

सुसीम न [**सुसीम**] नगर-विशेष; (उप ७२८ टी)।

सुसीमा स्त्री [**सुसीमा**] १ भगवान् पद्मप्रभ की माता; (सम १५१)। २ कृष्ण वासुदेव की एक पत्नी; (अंत १५)। ३ वत्स-नामक विजय-क्षेत्र की एक राजधानी; (ठा २, ३—पत्र ८०)।

सुसील न [**सुशील**] १ उत्तम स्वभाव; (पउम १४, ४४)। २ वि. उत्तम स्वभाव वाला, सदाचारी; (प्रासू ८)। °**वंत** वि [°**वत्**] सदाचारी; (पउम १४, ४४; प्रासू ३६)।

सुसु पुं [**शिशु**] बच्चा, बालक। °**मार** पुं [°**मार**] जलचर प्राणी की एक जाति, महिषाकार मत्स्य विशेष; (पि ११७)। °**मारिया** स्त्री [°**मारिका**] वाद्य-विशेष; (राय ४६)। देखो **सुंसुमार**।

सुसुज्ज पुंन [**सुसूर्य**] एक देव-विमान; (सम १५)।

सुसुमार पु [**सुसुमार**] जलचर जन्तु की एक जाति; (जी २०)। देखो **सुसु-मार**।

सुसुयंध वि [**सुसुगन्ध**] १ अत्यन्त सुगन्धी, (पउम ६, ४१; गउड)। २ पुं. अत्यन्त खुशबू; (गउड)।

सुसुर देखो **ससुर**; (धर्मवि १३४; सिरि ३४४ ३४५; ३४७; ६८८)।

सुसुहंकर पु [**सुशुभङ्कर**] छन्द का एक भेद. (पिंग)।

सुसूर पुंन [**सुसूर**] एक देव-विमान; (सम १०)।

सुसेण पुं [**सुषेण**] १ सुग्रीव का श्वशुर; (से ४, ११ १३, ८४)। २ एक मन्त्री; (विपा १, ४—पत्र ५४)। ३ भरत चक्रवर्ती का मन्त्री (राज)।

सुसेणा स्त्री [**सुषेणा**] एक बडी नदी; (ठा ५, ३—पत्र ३५१)।

सुसोह वि. [**सुशोभ**] अच्छी शोभा वाला, (सुपा २७५)।

सुसोहिय वि [**सुशोभित**] शोभा-सपन्न, समलङ्कृत; (उप ७२८ टी)।

सुस्स अक [**शुष्**] सूखना। सुस्से; (सूअ १, २, १, १६)। वकृ—**सुस्संत**; (स १६६)।

सुस्समण पुं [**सुश्रमण**] उत्तम साधु; (उव)।

सुस्सर वि [**सुस्वर**] सुन्दर आवाज वाला; (सुपा २८६)। देखो **सुसर**।

सुस्सरा स्त्री [**सुस्वरा**] गीतरति तथा गीतयश नाम के गन्धर्वेन्द्रों की एक २ अग्रमहिषी का नाम, (ठा ४, १—पत्र २०४; इक)।

सुस्सार वि [**सुसार**] सार-युक्त, (भवि)।

सुस्सावग } देखो **सुसावग**; (उव; श्रा १२)।
सुस्सावय }

सुस्सील देखो **सुसील**; (सुपा ११०; ५०८)।

सुस्सुय देखो **सूसुअ**. (राज)।

सुस्सुयाय अक [**सुसुकाय्, सूत्कारय्**] सु सु आवाज करना, सूत्कार करना। सकृ—**सुस्सुयाइत्ता**; (उत्त २७, ७)।

सुस्सू स्त्री [**श्वश्रू**] सासू; (बृह २)।

सुस्सूस सक [**शुश्रूष्**] सेवा करना। सुस्सूसइ; (उव;

महा)। वकृ—**सुस्सूसंत, सुस्सूसमाण**; (कुलक ३४; भग; औप)। हेकृ—**सुस्सूसिदुं** (शौ); (मा ३६)।

सुस्सूसअ वि [**शुश्रूषक**] सेवा करने वाला; (कप्पू)।

सुस्सूसण न [**शुश्रूषण**] सेवा, शुश्रूषा; (कुप्र २४७; रत्न २१)।

सुस्सूसणया } स्त्री [**शुश्रूषणा**] ऊपर देखो; (उत्त
सुस्सूसणा } २९, १; औप; णाया १, १३—पत्र १७८)।

सुस्सूसा स्त्री [**शुश्रूषा**] ऊपर देखो; (सुपा १२७)।

सुह देखो **सोह**=शुभ्। सुहइ; (वज्जा १४; पिंग)।

सुह सक [**सुखय्**] सुखी करना। सुहइ; (पिंग), सुहेदि (शौ); (अभि ८९)।

सुह देखो **सुभ**; (हे ३, २६; ३०, कुमा; सुपा ३६०; कम्म १, ५०)। °**अ** वि [°**द**] मंगल-कारी; (कुमा)। °**कम्मिय** वि [°**कर्मिक**] पुण्यशाली; (भवि)। °**काम** वि [°**काम**] मङ्गल की चाह वाला; (सुपा ३२६)। °**गर** वि [°**कर**] मङ्गल-जनक; (कुमा)। °**णामा** स्त्री [°**नामा**] पक्ष की पाँचवीं, दसवीं तथा पनरहवीं रात्रि-तिथि; (सुज्ज १०, १५)। °**त्थि** वि [°**र्थिन्**] १ शुभेच्छुक; (भग)। २ शुभ अर्थ वाला; (णाया १, १—पत्र ७४)। °**द** देखो °**अ**; (कुमा)।

सुह न [**सुख**] १ आनन्द, चैन, मजा; २ आराम, शान्ति; (ठा २, १—पत्र ४७; ३, १—पत्र ११४; भग; स्वप्न २३; प्रासू १३३; हे १, १७७, कुमा)। ३ निर्वाण, मुक्ति; ४. वि. जितेन्द्रिय; (विसे ३४४३; ३४४४)। ५ सुख-प्रद, सुख-जनक; (णाया १, १२—पत्र १७४, आचा; कम्म १, ५१)। ६ अनुकूल; (णाया १, १२)। ७ सुखी; (हे ३, १६)। °**अ** वि [°**द**] सुख-दायक; (सुर २, ६५; सुपा ११२; कुमा)। °**इत्तअ** वि [°**वत्**] सुखी, (पि ६००)। °**कर** वि [°**कर**] सुख-जनक; (हे १, १७७)। °**कामि** वि [°**कामिन्**] सुखाभिलाषी, (आघ ११६)। °**त्थि** वि [°**र्थिन्**] वही अर्थ; (आचा)। °**द** वि [°**द**] सुख-दाता; (वै १ २, कुमा)। °**दाय** वि [°**दाय**] वही; (पउम १०३, १६२)। °**फास** वि [°**स्पर्श**] कोमल; (पाअ)। °**यर** देखो °**कर**; (हे १, १७७; कुमा; सुपा ३)। °**संझा** स्त्री [°**सन्ध्या**] सुख-जनक सायंकाल; (कप्पू)। °**वह** वि [°**वह**] १ सुख-जनक; (आ २८; उव; सं ६७)। २ पुंन. एक पर्वत-शिखर; (ठा २, ३—पत्र ८०)। °**सण** न [°**सन**] आसन-विशेष, पालखी; (सुर २, ६०; सुपा २७८; कप्प)। °**सिया** स्त्री [°**सिका**] सुख से बैठना, सुखी स्थिति; (प्रासू ८५)।

सुहउत्थिआ स्त्री [**दे**] दूती; (दे ८, ६)।

सुहंकर वि [**सुखकर**] सुख-कारक; (सिरि ३६; कुमा)।

सुहंकर वि [**शुभकर**] १ शुभ कारक; (कुमा)। २ पुं. एक वणिक् का नाम; (उप ५०७ टी)।

सुहंभर वि [**सुखम्भर**] सुखी; (गउड)।

सुहग देखो **सुभग**; (रयण ४०; गा ६; नाट—मालवि २८)।

सुहड पुं [**सुभट**] योद्धा; (सुर २, २६; कुमा; प्रासू ७४; सण)।

सुहड वि [**सुहृत**] अच्छी तरह हरण किया हुआ; (दस ७, ४१)।

सुहत्थ वि [**सुहस्त**] १ अच्छा हाथ वाला, हाथ की लघुता वाला, शीघ्र २ हाथ से काम करने में समर्थ; (से १२, ५५)। २ दाता, दान शील; (भवि)।

सुहत्थि पु [**सुहस्तिन्**] १ गन्ध-हस्ती; (णाया १, १—पत्र ७४; उवा)। २ एक जैन महर्षि; (कप्प; पडि)।

सुहद्द न [**सौहार्द**] १ स्नेह; २ मित्रता; (भवि)।

सुहम न [**सूक्ष्म**] १ फूल, पुष्प; (दसनि १, ३६)। २—देखो **सण्ह, सुहुम**=सूक्ष्म; (हे २, १०१; चंड)।

सुहम्म पुं [**सुधर्मन्**] १ भगवान् महावीर का पट्टधर शिष्य; (विपा १, १—पत्र १)। २ बारहवें जिनदेव का प्रथम शिष्य; (सम १५२)। ३ एक यक्ष का नाम; (विपा १, १—पत्र ४; १, २—पत्र २१)। °**सामि** पुं [°**स्वामिन्**] भगवान् महावीर का पट्टधर शिष्य; (भग)। देखो **सुधम्म**।

सुहम्म° देखो **सुहम्मा**। °**वइ** पुं [°**पति**] इन्द्र; (महा)।

सुहम्ममाण वि [**सुहन्यमान**] जो अच्छी तरह मारा जाता हो वह; (पि ५४०)।

सुहम्मा स्त्री [**सुधर्मा**] चमर आदि इन्द्रों की सभा, देव-सभा; (सम १५; भग)।

सुहय देखो **सुह-अ**=सुख-द, शुभ-द।

सुहय देखो **सुभग**; (गउड; सण; हेका २७२; कुमा)।

सुहय वि [**सुहत**] अच्छी तरह जो मारा गया हो वह;

(कुप्र २२६)।
सुहर वि [**सुभर**] सुख से भरने योग्य; (दस ८, २५)।
सुहरअ देखो **सुहराय**; (षड्)।
सुहरा स्त्री [**दे. सुगृहा**] पक्षि-विशेष, सुघरी; (दे ८, ३६)।
सुहराय पुं [**दे**] १ वेश्या का घर; २ चटक, गैरैया पक्षी; (दे ८, ५६)।
सुहल्ली स्त्री [**दे**] सुख, आनन्द; (दे ८, ३६)।
सुहव देखो **सुभग**; (वज्जा ६६; संक्षि ६), स्त्री—°**वी**; (प्राकृ ३७)।
सुहा अक [**सु+भा**] अच्छा लगना। "न सुहाइ गोमईए सालू" (कुप्र ३५२)।
सुहा देखो **छुहा**=सुधा; (स २८२; कुमा; सण)। °**कम्मंत** न [°**कर्मान्त**] चूने का कारखाना; (आचा २, २, २, ६)। °**हार** पुं [°**हार**] देव, देवता; (स ७५५)।
सुहा, सुहाअ, सुहाव अक [**सुखाय्**] १ सुख पाना। २ सक. सुखी करना। सुहाइ, सुहाअइ, सुहावइ, सुहावेइ; (भवि; गा ६१७; पि ५५८; से १२, ८६; वज्जा १६४, भवि; उव)। वकृ—**सुहाअंत**,; (से १, २८; नाट—रत्ना ६१)।
सुहाव देखो **सहाव**=स्वभाव; (गा ५०८; वज्जा १०)।
सुहावण वि [**सुखायन**] सुख-जनक; (सण; भवि)।
सुहावय वि [**सुखायक**] ऊपर देखो; (वज्जा १६४; भवि)।
सुहासिय वि [**सुभाषित**] १ सम्यग् उक्त; (पण्ह १, १—पत्र १)। २ न. सुन्दर वचन, सूक्त; (स ७६१; सुपा ५१४)।
सुहि वि [**सुखिन्**] सुख-युक्त; (सुपा ३१२, ४३१)।
सुहि, सुहिअ पुं [**सुहृद्**] मित्र, दोस्त; (ठा ४, ३—पत्र २४३; णाया १, २—पत्र ६०; उत्त २०, ६; सुर ४, ७६; सुपा १०७; ४१६; प्रयौ ३६; सुर २, १५४; भवि)।
सुहिअ वि [**सुखित**] सुखी, सुख-युक्त; (से २, ८; गा ४१८; कुप्र ४०६; उव; कुमा)।
सुहिअ त्रि [**सुहित**] १ तृप्त; (से २, ८)। २ सुन्दर हित वाला; (धर्म २)।
सुहिट्ठ वि [**सुहृष्ट**] अति हर्षित; (उप ७२८ टी)।
सुहिर देखो **सुसिर**; "अवनामंतो पुहविं अंतो सुहिरं व चरणघाएहिं" (धर्मवि १२४; रंभा)।
सुहिरण्णा, सुहिरण्णिया, सुहिरन्निया स्त्री [**सुहिरण्या, °ण्यिका**] वनस्पति-विशेष, पुष्प-प्रधान वृक्ष-विशेष; (राय ३१; राज; पण्ण १७—पत्र ५२६)।
सुहिरीमण वि [**सुह्रीमनस्**] अत्यन्त लज्जालु, अतिशय शरमिन्दा; (सूत्र १, ४, २, १७; राज)।
सुहिल्लिया देखो **सुहेल्लि**; "सुहिल्लियं अट्ठिय रसं सुणाओ" (भत्त १४२)।
सुही वि [**सुधी**] पडित, विद्वान्; (सिरि ४०)।
सुहुम वि [**सूक्ष्म**] १ बारीक, अत्यन्त छोटा; २ तीक्ष्ण; (हे १, ११८; २, ११३; कुमा; जी १४)। ३ पु. भारत वर्ष के एक भावी कुलकर पुरुष; (सम १५३)। ४ एकेन्द्रिय जीव-विशेष; (ठा ८; कम्म ४, २; ५)। ५ न. कर्म-विशेष, (सम ६७)। °**संपराग**, °**संपराय** पुन [°**संपराय**] १ चारित्र-विशेष; (ठा ५, २—पत्र ३२२)। २ दशवाँ गुण-स्थानक; (सम २६)। देखो **सण्ह**, **सुहम**=सूक्ष्म।
सुहुय वि [**सुहुत**] अच्छी तरह होम किया हुआ; (उप २८० टी; कप्प; औप)।
सुहेल्लि स्त्री [**दे. सुखकेलि**] सुख, आनन्द, मजा; (दे ८, ३६; पाअ, गा १०८; २११; २६१; २८८; ३६८; ५५६; ८६४; स ७२)।
सुहेसि वि [**सुखैषिन्**] सुखाभिलाषी; (सुपा २२७)।
सू अ. निन्दा-सूचक अव्यय; (नाट)।
सूअ सक [**सूचय्**] १ सूचना करना। २ जानना। ३ लक्ष करना। सूएइ, सूअंति, सूएमो; (विसे १३६८; स २४८; गउड; पिंड ४१७)। कर्म—सूइज्जइ; (गा ३२६)। वकृ—**सूयंत**. **सूययंत**; (गउड; स ३६६)। कवकृ—**सूइज्जंत**; (चेइय ६०५)। कृ—**सूएअव्व**; (से १०, २८)।
सूअ पुं [**सूद**] रसोया; (महा)।
सूअ पु [**सूत**] १ सारथि, रथ हाँकने वाला; (पाअ)। २ वि. प्रसूत, जिसने जन्म दिया हो वह; "सु(? सू)-यगोव्व अदूरए" (सूत्र १, ३, २, ११)। °**गड** पुंन [°**कृत**] दूसरा जैन अंग-ग्रन्थ; (सूअनि २)।
सूअ पु [**शूक**] धान्य आदि का तीक्ष्ण अग्र भाग; (गउड; गा ५६८)।
सूअ वि [**शून**] फुला हुआ, सूजन वाला; "सूयमुहं सूयहत्थं सूयपायं" (विपा १, ७—पत्र ७३)।

सूअ पुं [**सूप**] दाल; (पव ६१ टी; उवा; पण्ह २. ३—१२३; सुपा ५७)। °**गार**, °**यार**, °**र** पुं [°**कार**] रसोया; (स १७; कुप्र ६६; ३७; श्रावक ९३ टी)। °**रिणी** स्त्री [°**कारिणी**] रसोई बनाने वाली स्त्री; (पउम ७७, १०६)।

सूअ देखो **सुत्त**=सूत्र। °**गड** पुन [°**कृत**] दूसरा जैन अंग-ग्रन्थ; "आयारो सूयगडो" (सूअ २, १, २७; सम १)।

सूअअ / **सूअक** / **सूअग** वि [**सूचक**] १ सूचना करने वाला; (वेणी ४५; श्रा ११; सुर २. २२६)। २ पुं. पिशुन, खल, दुर्जन; (पण्ह १, २—पत्र २८)। ३ गुप्त दूत, जासूस; (प्राप)।

सूअग / **सूअय** न [**सूतक**] सूतक, जनन और मरण की अशुद्धि; (पंचा १३, ३८. वव १)।

सूअण न [**सूचन**] सूचना; (उव; सुर २, २३३)।

सूअर पुं [**शूकर**] सूअर, वराह; (उवा; विपा १. ३—पत्र ५३; प्रयौ ७०)। °**वल्ल** पुं [°**वल्ल**] अनन्तकाय वनस्पति-विशेष, (पव ४ श्रा २०)।

सूअरिअ वि [**दे**] यन्त्र-पीडित, (दे ८, ४१ टी)।

सूअरिया / **सूअरी** स्त्री [**दे**] यन्त्र-पीडन; (सुर १३, १५७; दे ८, ४१)।

सूअल न [**दे**] किशारु, धान्य का तीक्ष्ण अग्र भाग; (दे ८, ३८)।

सूआ स्त्री [**सूचा**] सूचन, सूचना (पिंड ४३७; उपपं ५०; सूअनि २)। °**का** वि [°**कर**] सूचक; (उप ७६८ टी)।

सूआ / **सूइ** स्त्री [**सूति**] प्रसव, प्रसूति, जन्म; (पउम २६, ८५; १. ६१; सुपा २३)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] प्रसव-क्रिया; (सुर १०. १; सुपा ४०)। °**हर** न [°**गृह**] प्रसूति-गृह; (पउम २६, ८५)।

सूइ स्त्री [**सूचि**] देखो सूई, (आचा, सम १४६; राय २७)।

सूइअ वि [**सूचित**] जिसकी सूचना की गई हो वह; (महा)। २ उक्त, कथित; (पाअ)। ३ व्यञ्जनादि-युक्त (खाद्य); (दस ५, १, ६८)।

सूइअ वि [**सूत**] प्रसूत, जिसने जन्म दिया हो वह, व्यायी; "साणं सूइअं गावि" (दस ५, १, १२)।

सूइअ पुं [**सूचिक**] दरजी; (कुप्र ४०१)।

सूइअ पुं [**दे**] चण्डाल; (दे ८, ३६)।

सूइय न [**सुप्त**] निद्रा; "सेज्जं अत्थरिऊण अलिय-सूइयं काऊण अच्छंति" (महा)।

सूइय वि [**दे. सूप्य, सूपिक**] भीजा हुआ (खाद्य); "अवि सूइयं वा सुक्कं वा" (आचा)।

सूइया स्त्री [**सूतिका**] प्रसूति-कर्म करने वाली स्त्री; (सम्मत्त १४५)।

सूई स्त्री [**सूची**] कपड़ा सीने की सलाई, सूई; (पण्ह १. ३—पत्र ४४; गा ३६४; ५०२)। २ परिमाण-विशेष, एक अंगुल लम्बी एक प्रदेश वाली श्रेणी; (अणु १५८)। ३ दो तख्तों के जोड़ने के काम में आता एक तरह का पतला कील; (राय २७; ८२)। °**फलय** न [°**फलक**] तख्ते का वह हिस्सा जहाँ सूची-कीलक लगाया गया हो, (राय ८२)। °**मुह** पुं [°**मुख**] १ पक्षि-विशेष; (पण्ह १, १—पत्र ८)। २ द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति; (पण्ण १—पत्र ४४)। ३ न. जहाँ सूची-कीलक तख्ते का छेद कर भीतर घुसता है उसके समीप की जगह; (राय ८२)।

सूई स्त्री [**दे**] मंजरी; (दे ८, ४१)।

सूई देखो **सूइ**=सूति; (सुपा २६५)।

सूड सक [**भञ्ज्, सूदय्**] भाँगना, तोडना, विनाश करना। सूडइ; (हे ४, १०६)। कर्म—सूडिज्जतु; (पण्ह १, २—पत्र २६)।

सूडण न [**सूदन**] १ भञ्जन, विनाश; (गउड)। २ वि. विनाशक; (पव २७१)।

सूण वि [**शून**] सुजा हुआ, सुजन से फुला हुआ (पउम १०३. १४८; गा ६३६; स ३७१; ४८०)।

सूण° / **सूणा** स्त्री [**सूना**] वध-स्थान; (निर १. १; मा ३४; कुप्र २७६)। °**वइ** पुं [°**पति**] कसाई, (दे ७, ७०)।

सूणिय वि [**शूनिक**] १ सूजन का रोग वाला, जिसका शरीर सूज गया हो वह; २ न. सूजन; (आचा)।

सूणु पुं [**सूनु**] पुत्र, लड़का; (कुप्र ३१६)।

सूतक देखो **सूअय**=सूतक; (वव १)।

सूप देखो **सूअ**=सूप; (पण्ह २, ५—पत्र १४८)।

सूभग देखो **सुभग**; "सूभग दूभगनामं सूसर तह दूसरं चेव" (धर्मसं ६२०; श्रावक २३)।

सूभग देखो **सोभग्ग**; (पिंड ५०२)।

सूमाल देखो **सुउमाल**; (पगह १, ४—पत्र ७८, णाया १, १—पत्र ४७; १, १६—पत्र २००; कप्प; सुर १३, ११८; कुप्र ५५)।

सूर सक [भञ्ज्] तोड़ना, भाँगना। सूरइ; (हे ४, १०६)।

सूर वि [शूर] १ पराक्रमी, वीर; (ठा ४, ३—पत्र २३७; कप्प; सुपा २२२; ४१२; प्रासू ७१)। २ पुं. एक राजा; (सुपा ६२२)। ३ पुंन. एक देव-विमान; (देवेन्द्र १४३)। °**सेण** पुं [°सेन] एक भारतीय देश, जिसकी प्राचीन राजधानी मथुरा थी; (विचार ४९; पउम ९८. ६६; ती १४; विक्र ६६; सत्त ६७ टी)। २ ऐरवत वर्ष के एक भावी जिनदेव, (सम १५४)। ३ एक जैनाचार्य; (उप ७२८ टी)। ४ भगवान् आदिनाथ का एक पुत्र; (ती १४)।

सूर पुं [सूर, सूर्य] १ सूर्य, रवि; (हे २, ६४; ठा २, ३—पत्र ८५; उव; सुपा २२२; ६२२; कप्प; कुमा)। २ सतरहवें जिन-देव का पिता; (सम १५१)। ३ इक्ष्वाकु-वंश का एक राजा; (पउम ५. ६)। ४ एक लंका-पति, (पउम ५, २६३)। ५ एक द्वीप का नाम; (सुज्ज १९)। ६ एक राजा; (सुपा ५५९)। ७ छन्द का एक भेद; (पिंग)। ८ पुंन. एक देव-विमान; (सम १०)। °**अंत**, °**कंत** पुं [°कान्त] १ मणि-विशेष; (से ९, ५०; पउम ३, ७५; पगण १—पत्र २६; उत्त ७७)। २ पुन. एक देव-विमान; (देवेन्द्र १४४; सम १०)। °**कूड** पुंन [°कूट] एक देव-विमान—देव-भवन; (सम १०)। °**ज्झय** पुन [°ध्वज] एक देव-विमान; (सम १०)। °**दीव** पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष; (इक)। °**देव** पु [°देव] आगामि उत्सर्पिणी-काल में होने वाले भारत वर्ष के दूसरे जिनदेव; (सम १५३)। °**पन्नत्ति** स्त्री [°प्रज्ञप्ति] एक जैन उपाङ्ग ग्रन्थ; (ठा ३, २—पत्र १२६)। °**परिवेस** पुं [°परिवेष] मेघ आदि से होता सूर्य का वलयाकार मंडल; (अणु १२०)। °**पव्वय** पुं [°पर्वत] पर्वत-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ८०)। °**पाया** स्त्री [°पाका] सूर्य के किरण से होने वाली रसोई; (कुप्र ६९)। °**प्पभ** पुन [°प्रभ] एक देव-विमान; (सम १०)। °**प्पभा**, °**प्पहा** स्त्री [°प्रभा] १ सूर्य की एक अग्र-महिषी; (इक; णाया २—पत्र २५२)। २ ग्यारहवें जिनदेव की दीक्षा-शिबिका; (सम १५१)। ३ आठवें जिनदेव की दीक्षा-शिबिका; (विचार १२९)। °**मल्लिया** स्त्री [°मल्लिका] वनस्पति-विशेष; (राय ७६)। °**मालिया** स्त्री [°मालिका] आभरण-विशेष; (ओप)। °**लेस** पुन [°लेश्य] एक देव-विमान; (सम १०)। °**वक्कय** न [°वक्कक] आभूषण-विशेष; (ओप)। °**वर** पु [°वर] १ एक द्वीप; २ एक समुद्र; (सुज्ज १९)। °**वरोभास** पुं [°वरावभास] १ द्वीप-विशेष; २ समुद्र-विशेष; (सुज्ज १९)। °**वल्ली** स्त्री [°वल्ली] लता-विशेष; (पगण १—पत्र ३३)। °**वेग** पु [°वेग] एक राज-कुमार; (उप १०३१ टी)। °**सिंग** पुन [°शृङ्ग] एक देव-विमान; (सम १०)। °**सिट्ठ** पुन [°सृष्ट] एक देव-विमान, (सम १०)। °**सिरी** स्त्री [°श्री] सातवें चक्रवर्ती की स्त्री; (सम १५२)। °**सुअ** पुं [°सुत] शनैश्चर-ग्रह, (नाट—मृच्छ १९२)। °**ाभ** पुन [°ाभ] एक देव-विमान; (सम १४; पव २६७)। °**ावत्त** पुन [°ावर्त] एक देव-विमान; (सम १०)। देखो **सुज्ज**।

सूरंग पु [दे] प्रदीप, दीपक; (दे ८, ४१; षड्)।

सूरंगय पु [सूराङ्गज] एक राजा; (उप १०३१ टी)।

सूरण पुं [दे. सूरण] कन्द-विशेष, सूरन; (दे ८, ४१; पगण १—पत्र ३६; उत्त ३६, ९९; पंचा ५, २७)।

सूरद्धय पु [दे] दिन, दिवस, (दे ८, ४२, षड्)।

सूरल्लि पुस्त्री [दे] १ मध्याह्न, दुपहर का समय; (दे ८, ५७; षड्)। २ कीट-विशेष, मशक के समान आकृति वाला कीट, (दे ८, ५७)। ३ तृण-विशेष, ग्रामणी-नामक तृण, (दे ८, ५७; जीव ३, ४; राय)।

सूरि पु [सूरि] आचार्य; (जी १; सण)।

सूरिअ वि [भग्न] भाँगा हुआ; (कुमा)।

सूरिअ देखो **सुज्ज**; (हे २, १०७; सम ३६, भग; उप ७२८ टी)। °**कंत** पुं [°कान्त] प्रदेशि-नामक राजा का पुत्र; (भग ११, ९—पत्र ५१४; कुप्र १४६)। °**कंता** स्त्री [°कान्ता] प्रदेशी राजा की पत्नी; (कुप्र १४६)। °**पाग** पुंस्त्री [°पाक] सूर्य के ताप से होने वाली रसोई; (कुप्र ७०), स्त्री—°**गा**; (कुप्र ६८)। °**लेस्सा** स्त्री [°लेश्या] सूर्य की प्रभा, (सुज्ज ५—पत्र ७६)। °**ाभ** पुं [°ाभ] १ प्रथम देवलोक का एक देव; (राय १४; धर्मवि ९)। २ पुंन. एक देव-विमान; ३ न. सूर्याभ देव का सिंहासन; (राय १४)। °**ावत्त** पुं [°ावर्त] मेरु पर्वत; (सुज्ज ५; इक)। °**ावरण** पुं [°ावरण] मेरु

पर्वत; (सुज्ज ५; इक)।

सूरिल पुं [**दे**] श्वशुर पक्ष (?) "महंत मे पओयणा ति साहिऊण सूरिलस्स समागओ चंपं" (स ५१०)।

सूरिस देखो **सुउरिस**; (हे १, ८)।

सूरुत्तरवडिंसग पुंन [**सूरोत्तरावतंसक**] एक देव-विमान; (सम १०)।

सूरुल्लि देखो **सूरल्लि**; (राय ८० टी)।

सूरोद पु [**सूरोद**] एक समुद्र; (सुज्ज १९)।

सूरोदय न [**सूरोदय**] नगर-विशेष; (पउम ८, १८९)।

सूरोवराग पुं [**सूरोपराग**] सूर्य-ग्रहण; (भग)।

सूल पुन [**शूल**] १ लोहे का सुतीक्ष्ण काँटा, शूली; (विपा १, ३—पत्र ५३; औप)। २ शस्त्र-विशेष, त्रिशूल; (पण्ह १, १—पत्र १८; कुमा)। ३ रोग-विशेष; (प्रासू १०५)। ४ बब्बूल आदि का तीक्ष्ण अग्र भाग वाला काँटा; (कुप्र ३७)। ५ पु. व. देश-विशेष; (पउम ९८, ६५)। °**पाणि** पु [°**पाणि**] यक्ष-विशेष; (कर्म ५)। °**धर** पुं [°**धर**] शिव, महादेव; (पिंग)।

सूलच्छ न [**दे**] पल्वल, छोटा तलाव; (दे ८, ४२)।

सूलत्थारी स्त्री [**दे**] चण्डी, पार्वती, (दे ८, ४२)।

सूला स्त्री [**शूला**] शूली, सुतीक्ष्ण लोह-कंटक; (गा ६४; उप ३३९ टी; धर्मवि १३७)। °**इय** वि [°**चित**, °**तिग**] शूली पर चढ़ाया हुआ; (णाया १, ९—पत्र १५७; १६३; राय १३४)।

सूला स्त्री [**दे**] वेश्या, वारागना, (दे ८, ४१)।

सूलि वि [**शूलिन्**] १ शूल-रोग वाला, "जह विदलं सूलीणं" (वि ३)। २ पु. शिव, महादेव; (पाअ)।

सूलिया स्त्री [**शूलिका**] शूली, जिस पर वध्य को चढ़ाया जाता है, (पण्ह १, १—पत्र ८)।

सूव पु [**सूप**] दाल. (उवा; ओघ ७१४; चारु ६; पिंड ६२४; पंचा १०, ३७)। °**यार**, °**र** पुं [°**कार**] रसोया, रसोई बनाने वाला नौकर (पउम ११३, ७; सुर १६, ३८, उप ३०२)।

सूस अक [**शुष्**] सूखना। सूसइ, सूसंति, सूसइरे; (हे ४, २३६; प्राकृ ६८; कुमा ३७४; हे ३, १४२)।

सूसर वि [**सुस्वर**] १ सुन्दर आवाज वाला; (सुर १६, ४६)। २ न. नामकर्म का एक भेद, जिससे सुन्दर स्वर की प्राप्ति हो वह कर्म; (धर्मसं ६२०; श्रावक २३; कम्म २, २२)। °**परिवादिणी** स्त्री [°**परिवादिनी**] एक तरह की वीणा; (पण्ह २, ५—पत्र १४९)।

सूसास वि [**सोच्छ्वास**] ऊर्ध्व श्वास वाला; (हे १, १५७; कुमा)।

सूसिय वि [**शोषित**] सुखाया हुआ; (सुर १५, २४८)।

सूसुअ वि [**सुश्रुत**] १ अच्छी तरह सुना हुआ; २ अच्छी तरह ज्ञात; (वज्जा १०६)। ३ पुं. वैद्यक ग्रन्थ-विशेष; (वज्जा १०६)।

सूहअ }
सूहव } देखो **सुभग**; (संक्षि २०; हे १, ११३; १९२)।

से° देखो **सेअ**=श्वेत। °**वड** पुं [°**पट**] श्वेताम्बर जैन; (सम्मत्त १३७)।

से अ [**दे**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ वाक्य का उपन्यास; २ प्रश्न; (भग १, १; उवा)। ३ प्रस्तुत वस्तु का परामर्श; (उत्त २, ४०; जं १)। ४ अनन्तरता; (ठा १०—पत्र ४९५)।

से }
सेअ } अक [**शी**] सोना। सेइ, सेअइ; (षड्)।

सेअ सक [**सिच्**] सींचना। सेअइ; (हे ४, ९६)।

सेअ पु [**दे**] गणपति, गणेश; (दे ८, ४२)।

सेअ पुं [**सेय**] १ कर्दम, कादा, पंक; (सूअ २, १, २; णाया १, १—पत्र ६३)। २ एक अधम मनुष्य-जाति; "चंडाला मुट्ठिया सेया जे अन्ने पावकम्मिणो" (ठा ७—पत्र ३९३)।

सेअ पुं [**स्वेद**] पसीना; (गा २७८; दे ४, ४९; कुमा)।

सेअ पुं [**सेक**] सेचन, सींचना; (मै ६५; गा ७९९; हेका ९९; अभि ३३)।

सेअ न [**श्रेयस्**] १ शुभ, कल्याण; (भग)। २ धर्म; ३ मुक्ति, मोक्ष; (हे १, ३२)। ४ वि. अति प्रशस्त, अतिशय शुभ; "इय सजमोवि सेओ" (पंचा ७, १४; कुमा; पंच ९६)। ५ पुं. अहोरात्र का दूसरा मुहूर्त; (सुज १०, १३)।

सेअ वि [**सैज**] स-कम्प, कम्प-युक्त; (भग ५, ७—पत्र २३४)।

सेअ वि [**श्वेत**] १ शुक्ल, सफेद; (णाया १, १—पत्र ५३; अभि ३३; उव)। २ पु. एक इन्द्र, कुभंड-निकाय का दक्षिण दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५)। ३ शक्र का नट-सेना का अधिपति; (इक)। ४ आमल-

कल्पा नगरी का एक राजा जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी; (ठा ८—पत्र ४३०: राय ६)। °कंठ पुं [°कण्ठ] भूतानन्द-नामक इन्द्र के महिष-सैन्य का अधिपति; (ठा ५, १—पत्र ३०२; इक)। °पड, °वड पुं [°पट] श्वेताम्बर जैन, जैन का एक सम्प्रदाय; (सुपा ६४१; विसं २५८५; धर्मसं ११०६)।

सेअ वि [**एष्यत्**] आगामी, भविष्य; "पभू गां भंते केवली सेयकालंसि वि तेसु चेव आगासपदेसेसु हत्थ वा जाव आगाहित्ताणं चिट्ठित्तए" (भग ५, ४—पत्र २२३; ठा १०—पत्र ४६५; अणु २१)। °ाल पुं [°काल] भविष्य काल; (भग; उत्त २६, ७१)।

सेअंकर पुं [**श्रेयस्कर**] ज्योतिष्क ग्रह-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७८)।

सेअंकार पुं [**श्रेयस्कार**] श्रेयः-करण, 'श्रेयस्' का उच्चारण: (ठा १०—पत्र ४६५)।

सेअंबर पुं [**श्वेताम्बर**] १ एक जैन संप्रदाय; (स २; सम्मत्त १२३; सुपा ५६६)। २ न. सफेद वस्त्र; (पउम ६६, ३०)।

सेअंस पुं [**श्रेयांस**] १ एक राज-कुमार; (धण १५)। २ चतुर्थ वासुदेव तथा बलदेव के पूर्व जन्म के धर्म-गुरू—एक जैन मुनि; (सम १५३; पउम २०, १७६)। देखो **सेज्जंस**।

सेअंस देखो **सेअ**=श्रेयस्; (ठा ४, ४—पत्र २६५)।

सेअण न [**सेचन**] सेक, सींचना; (कुमा; अभि ४७; णाया १. १३—पत्र १८१; सुपा ३०६)। °वह पुं [°पथ] नीक; (आचा २, १०, २)।

सेअणग } पुं [**सेचनक**] १ राजा श्रेणिक का एक **सेअणय** } हाथी; (उप २६४ टी; णाया १, १—पत्र २५)। २ वि. सींचने वाला; (कुमा)। देखो **सेचणय**।

सेअविय वि [**सेवनीय**] सेवा-योग्य; "ण सिक्खती सेयवियस्स किंचि" (सूअ १. ५, १, ४)।

सेअविया स्त्री [**श्वेतविका**] केकयार्ध देश की प्राचीन राजधानी; (विचार ५०: पव २७५; इक)।

सेआ स्त्री [**श्वेतता**] सफेदपन; (सुज्ज १, १)।

सेआ देखो **सेवा**; (नाट—चैत ६२)।

सेआल देखो **सेवाल**=शैवाल; (से २, ३१)।

सेआल देखो **सेअ-ाल**=एष्यत्-काल।

सेआल पुं [**दे**] १ गाँव का मुखिया; २ सांनिध्य करने वाला यक्ष आदि; (दे ८, ५८)। ३ कृषक, खेती करने वाला गृहस्थ; (पाअ)।

सेआली स्त्री [**दे**] दूर्वा, दूब; (दे ८, २७)।

सेआलुअ पुं [**दे**] मनौती की सिद्धि के लिए उत्सृष्ट बैल; (दे ८, ४४)।

सेइअ न [**स्वेदित**] पसीना; (भवि)।

सेइआ } स्त्री [**सेतिका**] परिमाण-विशेष, दो प्रसृति का **सेइगा** } एक नाप; (तंदु २६; उप पृ ३३७; अणु १५१)।

सेउ पुंन [**सेतु**] १ बाँध, पुल; (से ६, १७; कुप्र २२०; कुमा)। २ आलवाल, कियारी, थाँवला; ३ कियारी के पानी से सींचने योग्य खेत; (औप; णाया १, १ टी—पत्र १)। ४ मार्ग; (औप; णाया १, १ टी—पत्र १; कप्प ८६)। °बंध पुं [°बन्ध] पुल बाँधना; (से ६, १७)। °वह पुं [°पथ] पुल वाला मार्ग; (से ८, ३८)।

सेउ वि [**सेक्तृ**] सेचक, सिंचन करने वाला; (कप्प ८६)।

सेउय वि [**सेवक**] सेवा-कर्ता; (कप्प ८६)।

सेंदूर देखो **सिंदूर**; (प्राप्र; सक्षि ३)।

सेंधव देखो **सिंधव**; (विक्र ८६)।

सेंभ देखो **सिंभ**; (उव; पि २६७)।

सेंभिय देखो **सिंभिय**; (भग; पि २६७)।

सेंवाडय पुं [**दे**] चुटकी का आवाज; (दे ८, ४३)।

सेचणय न [**सेचनक**] सिंचन, छिटकाव; (मोह २७)। देखो **सेअणय**।

सेचाण (अप) पुं [**श्येन**] छन्द-विशेष; (पिंग)। देखो **सेण**=श्येन।

सेच्च न [**शैत्य**] शीतपन, ठंढापन; (प्राप्र)।

सेज्ज° देखो **सेज्जा**। °वइ पुं [°पति] वसति-स्वामी गृहस्थ; (पव ८४)।

सेज्जंभव देखो **सिज्जंभव**; (कप्प; दसनि १, १२)।

सेज्जंस पुं [**श्रेयांस**] १ ग्यारहवें जिनदेव का नाम; (सम ८८; कप्प)। २ एक राज-पुत्र जिसने भगवान् आदिनाथ का इक्षु-रस से प्रथम पारणा कराया था; (कप्प; कुप्र २१२)। ३ मार्गशीर्ष मास का लोकोत्तर नाम; (सुज्ज १०, १६)। ४ भगवान् महावीर का पिता, राजा सिद्धार्थ; (आचा २, १५, ३)। देखो **सिज्जंस**, **सेअंस**=श्रेयांस।

सेज्जंस देखो **सेअंस**=श्रेयस्; (आवम)।
सेज्जा स्त्री [**शय्या**] १ सेज, बिछौना; (से १, ५७; कुमा)। २ मकान, घर, वसति, उपाश्रय; (पव १५२; सुख १, १५)। °**यर** पुं [°**तर**] गृह-स्वामी, उपाश्रय का मालिक, साधु को रहने के लिए स्थान देने वाला गृहस्थ, (ओघ २४२; पव ११२; पंचा १७, १७)। °**वाल** पुं [°**पाल**] शय्या का काम करने वाला चाकर; (सुपा ५८७)। देखो **सिज्जा**।
सेज्जारिअ न [**दे**] आन्दोलन, हिंडोले में झूलना; (दे ८. ४३)।
सेट्ठि पुं [**दे. श्रेष्ठिन्**] गाँव का मुखिया, शेठ, महाजन; (दे ८. ४२; सम ५१. णाया १, १—पत्र १९; उवा)।
सेडिय न [**दे**] तृण-विशेष; (पराण १—पत्र ३३)।
सेडिया स्त्री [**दे. सेटिका**] सफेद मिट्टी, खडी; (आचा २, १, ६, ३)।
सेढि स्त्री [**श्रेणि**] देखो **सेढी**=श्रेणी; (सुर ३, १७; ५, १९६)।
सेढिया } देखो **सेडिया**; (दस ५, १, ३४; जी ३)।
सेढी }
सेढी स्त्री [**श्रेणी**] १ पंक्ति; (सम १४२; महा)। २ राशि; (अणु)। ३ असंख्य योजन-कोटाकोटी का एक नाप; (अणु १७३)। देखो **सेणि**।
सेण पुं [**श्येन**] १ पक्षि-विशेष; (पउम ८, ७९; दे ७, ८४; गै ७४)। २ विद्याधर-वंश का एक राजा; (पउम ५, १५)।
सेण देखो **सेण्ण**. "सगणणरवइणो मरणे मरंति सेणाइं इंदियमयाइं" (आरा ६०)।
सेणा स्त्री [**सेना**] १ भगवान् संभवनाथजी की माता; (सम १५१)। २ लश्कर, सैन्य; (कुमा)। ३ एक जैन साध्वी जो महर्षि स्थूलभद्र की बहिन थी; (कप्प; पडि)। ४ वह लश्कर जिसमें ३ हाथी, ३ रथ, ९ घोड़े और १५ प्यादे हों; (पउम ५६, ५)। °**णिय**, °**णी**, °**णीय** पुं [°**नी**] सेना-पति, लश्कर का मुखिया; "सेणाणीओवि ताहे घेत्तूण जिणेसरं सुरवइस्स" (पउम ३, ७७; सुपा ३००; धर्मवि ८४; पउम ६४, २०)। °**मुह** न [°**मुख**] वह सेना जिसमें ९ हाथी, ९ रथ, २७ घोड़े और ४५ प्यादे हों; (पउम ५६, ५)। °**वइ** पुं [°**पति**] सेना का मुखिया, सेना-नायक; (कप्प; पउम ३७, २; सम २७; सुपा २५५)। °**हिवइ** पुं [°**धिपति**] वही पूर्वोक्त अर्थ; (सुपा ७३)।
सेणावच्च न [**सैनापत्य**] सेनापतिपन, सेना का नेतृत्व; (कप्प; औप)।
सेणि स्त्री [**श्रेणि**] १ पंक्ति; २ समूह; (महा)। ३ कुम्भकार आदि मनुष्य-जाति; (णाया १, १—पत्र ३७)।
सेणिअ पुं [**श्रेणिक**] १ मगध देश का एक प्रख्यात राजा; (णाया १, १—पत्र ११; ३७; ठा ९—पत्र ४५५; सम १५४; उवा; अंत; पउम २, १५; कुमा)। २ एक जैन मुनि; (कप्प)।
सेणिआ स्त्री [**सेणिका**] एक जैन मुनि-शाखा, (कप्प)।
सेणिआ } स्त्री [**सेनिका**] छन्द का एक भेद; (पिंग)।
सेणिका }
सेणिग देखो **सेणिअ**; (संबोध ३५)।
सेणिग पुं [**सैनिक**] लश्करी सिपाई; (स ३८१)।
सेणी स्त्री [**श्रेणी**] देखो **सेणि**; (महा; णाया १, १)।
सेण्ण देखो **सिन्न**=सैन्य; (णाया १, ८—पत्र १४६; गउड)।
सेत्त देखो **सित्त**=सिक्त; (कुप्र १६)।
सेत्त (अप) देखो **सेअ**=श्वेत; (पिंग)।
सेत्तुंज पुं [**शत्रुञ्जय**] एक प्रसिद्ध पर्वत; (णाया १, १६—पत्र २२६; अंत)।
सेद देखो **सेअ**=स्वेद; (दे ४, ३४; स्वप्न ३९)।
सेध देखो **सेह**=सेह; (जीव २—पत्र ५२)।
सेन्न देखो **सिन्न**=सैन्य; (हे १, १५०; कुमा; सण; सुर १२, १०४ टि)।
सेप्फ } देखो **सेम्ह**; (हे २, ५५; षड्; कुमा; प्राकृ २२)।
सेफ }
सेफ पुंन [**शेफ**] पुरुष-चिह्न, लिंग; (प्राकृ १४)।
सेभालिआ स्त्री [**शेफालिका**] लता-विशेष, (हे १, २३६; प्राकृ १४)।
सेमुसी } स्त्री [**शेमुषी**] मेधा, बुद्धि; (राज; उप पृ ३३३; हम्मीर १४, २२)।
सेमुही }
सेम्ह पुंस्त्री [**श्लेष्मन्**] कफ; "सेम्हा गरुई" (प्राकृ २२; पि २६७)।
सेर वि [**स्वैर**] स्वच्छन्दी, स्वतन्त्र, स्वेच्छ; (स्वप्न ७७; विक्र ३७)।
सेर वि [**स्मेर**] विकस्वर; (हे २, ७८; कुमा)।

सेर पुं [दे] सेर, परिमाण-विशेष; (पिंग)।
सेरंध्री स्त्री [सैरन्ध्री] स्त्री-विशेष, अन्य के घर में रहकर शिल्प-कार्य करने वाली स्वतन्त्र स्त्री; (कप्पू)।
सेराह पुं [दे] अश्व की एक उत्तम जाति; (सम्मत्त २१६)।
सेरिभ पुं [दे] धुर्य वृषभ, गाड़ी का बैल; (दे ८, ४४)।
सेरिस देखो **सेरिह**; (सुख ८, १३; दे ८, ४४ टी)।
सेरिय पुंस्त्री [दे] वाद्य-विशेष: "करडिभभसेरियहुडुक्कहिं" (सण)।
सेरियय पुं [दे] गुल्म-विशेष; (पगण १—पत्र ३२)।
सेरिह पुंस्त्री [सैरिभ] भैंसा, महिष; (गा १७२; ७४२; नाट—मृच्छ १३५), स्त्री—°ही; (पात्र)।
सेरी स्त्री [दे] १ लम्बी आकृति; २ भद्र आकृति; (दे ८, ५७)। ३ रथ्या, मोहोल्ला; (सिरि ३१८)। ४ यन्त्र-निमित नर्तकी, (राज)।
सेरीस पुंन [सेरीश] एक गाँव का नाम; (ती ११)।
सेल पुं [शैल] १ पर्वत, पहाड़; (से २, ११; प्राप्र; सुर ३, २२६)। २ पाषाण, पत्थर; (उप १०३१)। ३ न. पत्थरों का समूह; (से ६, ३१)। °**कार** पुं [°कार] पत्थर घडने वाला शिल्पी, शिलावट; (अणु १४६)। °**गिह** न [°गृह] पर्वत में बना हुआ घर; (कप्प)। °**जाया** स्त्री [°जाया] पार्वती; (रंभा)। °**त्थंभ** पुं [°स्तम्भ] पाषाण का खंभा; (कम्म १, १८)। °**पाल**, °**वाल** पु [°पाल] १ धरण तथा भूतानन्द-नामक इन्द्रों का एक २ लोकपाल; (ठा ४, १—पत्र १६७; इक)। २ एक जैनेतर धर्मावलम्बी पुरुष; (भग ७, १०—पत्र ३२३)। °**स** न [°स] वज्र; (से ३, २७)। °**सिहर** न [°शिखर] पर्वत का शिखर; (कप्प)। °**सुआ** स्त्री [°सुता] पार्वती; (पात्र)।
सेलग } **सेलय** } पुं [शैलक] १ एक राजर्षि; (णाया १, ५—पत्र १०४; १११)। २ एक यक्ष; (पि १५६; णाया १, ६—पत्र १६४)। °**पुर** न [°पुर] एक नगर; (णाया १, ५)।
सेलयय न [शैलकज] एक गोत्र; (ठा ७—पत्र ३६०; राज)।
सेला स्त्री [शैला] तीसरी नरक-पृथिवी; (ठा ७—पत्र ३८८; इक)।
सेलाइच्च पुं [शैलादित्य] वलभीपुर का एक प्रसिद्ध राजा; (ती १५)।
सेलु पुं [शैलु] श्लेष्म-नाशक वृक्ष-विशेष; (पगण १—पत्र ३१)।
सेलूस पु [दे] कितव, जुआडी, (दे ८, २१)।
सेलेय वि [शैलेय] पर्वत में उत्पन्न, पर्वतीय, (धर्मवि १४०)।
सेलेस पुं [शैलेश] मेरु पर्वत; (विसे ३०६५)।
सेलेसी स्त्री [शैलेशी] मेरु की तरह निश्चल साम्यावस्था, योगी की सर्वोत्कृष्ट अवस्था; (विसे ३०६५; ३०६७; सुपा ६५५)।
सेलोदाइ पुं [शैलोदायिन्] एक जैनेतर धर्मावलम्बी गृहस्थ; (भग ७, १०—पत्र ३२३)।
सेल्ल देखो **सेल**=शैल; "न हु झिज्जइ ताण मणं सेल्लं मिव सलिलपूरेण" (वज्जा ११२)।
सेल्ल पुं [दे] १ मृग-शिशु; २ शर, बाण; (दे ८, ५७)। ३ कुन्त, बर्छी; (कुमा; हे ४, ३८७)।
सेल्ल पु [शैल्य] एक राजा; (णाया १, १६—पत्र २०८)।
सेल्लग पुं [शैल्यक] भुजपरिसर्प की एक जाति, जन्तु-विशेष; (पगह १, १—पत्र ८)।
सेल्लि स्त्री [दे] रज्जु, रस्सी; (उत्त २७, ७)।
सेव सक [सेव्] १ आराधन करना। २ आश्रय करना। ३ उपभोग करना। सेवइ, सेवए; (आचा; उव; महा)। भूका—सेवित्था, सेविंसु; (आचा)। वकृ—**सेवमाण**; (सम ३६; भग)। कवकृ—**सेविज्जंत**, **सेविज्जमाण**; (सुर १२, १३६; कप्प)। संकृ—**सेविअ**, **सेवित्ता**; (नाट—मृच्छ २४५; आचा)। कृ—**सेवेयव्व**; (सुपा ५५७; कुमा), **सेवणिय**; (सुपा १६७)।
सेवग देखो **सेवय**; (पंचा ११, ४१)।
सेवड देखो **से**°=श्वेत।
सेवण न [सेवन] १ सीना, सिलाई करना; (उप पृ १२३)। २ सेवा; (उत्त ३५, ३)।
सेवणया } **सेवणा** } स्त्री [सेवना] सेवा; (उत्त २६, १; उप ८०१)।
सेवय वि [सेवक] १ सेवा-कर्ता; (कुप्र ४०२)। २ पुं. नौकर, भृत्य; (पात्र; कुप्र ४०२; सुपा ५३२)।
सेवल न [शैवल] सेवार, सेवाल, एक प्रकार की घास

जो नदियों मे लगती है; (पाअ)।

सेवा स्त्री [**सेवा**] १ भजन, पर्युपासना, भक्ति; २ उपभोग; ३ आश्रय; ४ आराधन; (हे २, ९९; कुमा)।

सेवाड } न [**शैवाल**] १ सेवार, सेवाल, घास विशेष;
सेवाल } (उप पृ १३६; पाअ; जी ९)। २ एक तापस जिसको गौतम स्वामीने प्रतिबोध किया था; (कुप्र २९३)। °दाइ पुं [°दायिन्] भगवान् महावीर के समय का एक अजैन पुरुष; (भग ७, १०—पत्र ३२३)।

सेवाल पुं [**दे**] पङ्क, कादा; (दे ८, ४३; षड्)।

सेवालि पुं [**शैवालिन्**] एक तापस जिसको गौतम स्वामीने प्रतिबोध किया था; (उप १४२ टी)।

सेवालिय वि [**शैवालिक, °त**] सेवाल वाला, शैवाल-युक्त; "सेवालियभूमितले फिल्लुसमाणा य थामथामम्मि" (सुर २, १०५)।

सेवि वि [**सेविन्**] सेवा-कर्ता; (उवा)।

सेवित्तु वि [**सेवितृ**] ऊपर देखो; (सम १५)।

सेविय वि [**सेवित**] जिसकी सेवा की गई हो वह; (काल)।

सेव्वा देखो **सेवा**; (हे २, ९९; प्राप्र)।

सेस पु [**शेष**] १ शेष-नाग, सर्प-राज; (से २, २८)। २ छन्द का एक भेद; (पिंग)। ३ वि. अवशिष्ट, बाकी का; (ठा ३, १ टी—पत्र ११४, दसनि १, १३४; हे १, १८२, गउड)। °मई, °वई स्त्री [°वती] १ सातवें वासुदेव की माता; (सम १५२)। २ दक्षिण रुचक पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८—पत्र ४३६; इक)। ३ वल्ली-विशेष; (पराग १—पत्र ३३)। ४ भगवान् महावीर की दौहित्री—पुत्री की पुत्री; (आचा २, १५, १६)। °व न [°वत्] अनुमान का एक भेद; (अणु २१२)। °राअ पु [°राज] छन्द-विशेष; (पिंग)।

सेसव न [**शैशव**] बाल्यावस्था; (दे ७, ७६)।

सेसा स्त्री [**शेषा**] निर्माल्य, (उप ७२८ टी; सिरि ५५५)।

सेसिअ वि [**शेषित**] १ बाकी बचाया हुआ; (गा ९६१)। २ अल्प किया हुआ, खतम किया हुआ; (विसे ३०२९)।

सेसिअ वि [**श्लेषित**] सबद्ध किया हुआ, चिपकाया हुआ; (विसे ३०३६)।

सेह अक [**नश्**] पलायन करना, भागना। सेहइ; (हे ४, १७८; कुमा)।

सेह सक [**शिक्षय्**] १ सिखाना, सीख देना। २ सजा करना। सेहंति; (सूअ १, २, १, १९)। कवकृ—**सेहिज्जंत**; (सुपा ३४५)।

सेह पुं [**दे. सेह**] भुजपरिसर्प की एक जाति, साही, जिसके शरीर में काँटे होते हैं; (पराह १, १—पत्र ८; पराग १—पत्र ५३)।

सेह पुं [**शैक्ष**] १ नव-दीक्षित साधु; (सुअ १, ३, १, ३; सम ५८; ओघ १९५; ३७८; उव; कस)। २ जिसको दीक्षा दी जाने वाली हो वह; (पव १०७)। ३ शिष्य, चेला; (सुख १, १३)।

सेह पु [**सेध**] सिद्धि; (उवा)।

सेहंब वि [**सेधाम्ल**] खाद्य-विशेष, वह खाद्य जिसमें पकने पर खटाई का संस्कार किया जाय; (उवा; पराह २, ५—पत्र १५०)।

सेहणा स्त्री [**शिक्षणा**] शिक्षा, सजा, कदर्थना; "वह-बधमारणसेहणाओ काओ परिग्गहे नत्थि" (उव)।

सेहर पुं [**शेखर**] १ शिखा; "फलसेहरा" (पिंड १९५; पाअ)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)। ३ मस्तक-स्थित माला; (कुमा)।

सेहरय पुं [**दे**] चक्रवाक पक्षी; (दे ८, ४३)।

सेहालिआ देखो **सेभालिआ**; (स्वप्न ६३; गा ४१२; कुमा; हे १, २३६)।

सेहाली स्त्री [**शेफाली**] लता-विशेष; (दे ५, ४)।

सेहाव देखो **सेह**=शिक्षय्। सेहावेइ; (पि ३२३)। भवि—सेहावेहिति; (औप)। संकृ—**सेहावेत्ता**; (पि ५८२)। हेकृ—**सेहावेत्तए**; (कस)। कृ—**सेहावेयव्व**; (भत्त १६०)।

सेहाविअ वि [**शिक्षित**] सिखाया हुआ; (भग; णाया १, १—पत्र ६०; पि ३२३)।

सेहि देखो **सिद्धि**; (आचा)।

सेहिअ वि [**सैद्धिक**] १ मुक्ति-संबन्धी; २ निष्पत्ति-संबन्धी; (सूअ १, १, २, २)।

सेहिअ वि [**दे**] गत, गया हुआ; (दे ८, १)।

सो सक [**सु**] १ दारू बनाना। २ पीड़ा करना। ३ मन्थन करना। ४ अक. स्नान करना। सोइ; (षड्)।

सो } अक [**स्वप्**] सोना। सोइ, सोअइ; (धात्वा
सोअ } १५७; प्राकृ ६६)।

सोअ सक [**शुच्**] १ शोक करना। २ शुद्धि करना। सोअइ, सोएइ, सोइंति, सोयंति; (से १, ३८; हे ३, ७०; आचा; अज्झ १७४; १७५; सूअ २, २, ५५)। वकृ—**सोइंत, सोएंत**; (उप १४६ टी; पउम ११८, ३५)। कवकृ—**सोइज्जंत**; (सण)। कृ—**सोअणिज्ज, सोअणीअ, सोइयव्व**; (अभि १०५ ; सूक्त ४७; पउम ३०, ३५)। देखो **सोच=शुच्**।

सोअ न [**शौच**] १ शुद्धि, पवित्रता, निर्मलता; (आचा; औप; सुर २, ६२; उप ७६८ टी; सुपा २८१)। २ चोरी का अभाव, पर-द्रव्य का अ-हरण; (सम १२०; नव २३; श्रा ३१)।

सोअ पुं [**शोक**] अफसोस, दिलगीरी; (सुर १, ५३; गउड; कुमा; महा)।

सोअ न [**श्रोत्र**] कान, श्रवणेन्द्रिय; (आचा; भग; औप; सुर १, ५३)। °**मय** वि [°**मय**] श्रोत्रेन्द्रिय-जन्य; (ठा १०—पत्र ४७६)।

सोअ पुंन [**स्रोतस्**] १ प्रवाह; (आचा; गा ६६२)। २ छिद्र; (औप)। ३ वेग; (णाया १, ८)।

सोअण न [**स्वपन**] शयन; (उव)।

सोअण न [**शोचन**] १ शोक, दिलगीरी; (सूअ २, २, ५५; संबोध ४६)। २ शुद्धि, प्रक्षालन; (स ३४८)।

सोअणया } स्त्री [**शोचना**] १ ऊपर देखो; (औप;
सोअणा } अज्झ १७४)। २ दीनता, दैन्य, (ठा ४, १—पत्र १८८)।

सोअमल्ल न [**सौकुमार्य**] सुकुमारता, अति-कोमलता; (हे १, १०७; प्राप्र; कुमा)।

सोअर पुं [**सोदर**] सगा भाई; (प्रबो २६; सुपा १६३; रंभा)।

सोअरा स्त्री [**सोदरा**] सगी बहिन; (कुमा)।

सोअरिअ वि [**शौकरिक**] १ शूकरों का शिकार करने वाला; (विपा १, ३—पत्र ५४)। २ शिकारी, मृगया करने वाला, ३ कसाई; (पिंड ३१४, उव; सुपा २१४)।

सोअरिअ वि [**सोदर्य**] सहोदर, एक उदर से उत्पन्न; (सूअ १, १, १, ५)।

सोअल्ल देखो **सोअमल्ल**; (सत्ति २)।

सोअविय स्त्रीन [**शौच**] शुद्धि, पवित्रता; (सूअ २, १, ५७); स्त्री—°**या**; (आचा)।

सोअव्व देखो **सुण=श्रु**।

सोआमणी } स्त्री [**सौदामनी, °मिनी**] १ विद्युत्,
सोआमिणी } बिजली; (उत्त २२, ७; पउम ७४, १४; स १२; महा; पात्र)। २ एक दिक्कुमारी देवी; (इक; ठा ४, १—पत्र १६८)।

सोइअ न [**शोचित**] चिन्ता, विचार; (सुर ८, १४; सुपा २६६)। देखो **सोचिय**।

सोइंदिय न [**श्रोत्रेन्द्रिय**] श्रवणेन्द्रिय, कान; (भग)।

सोइंधिअ देखो **सोगंधिअ**; (इक)।

सोउ वि [**श्रोतृ**] सुनने वाला; (स ३; प्रासू २)।

सोउणिअ देखो **सोवणिअ**; (सूअ २, २, २८; पि १५२)।

सोउमल्ल देखो **सोअमल्ल**; (अभि २१३; सुर ८, १२५)।

सोंड देखो **सुंड**; (पात्र)। °**मगर** पु [°**मकर**] मगर की एक जाति; (पण्ण १—पत्र ४८)।

सोंडा स्त्री [**शुण्डा**] १ सुरा, दारू; (आचा २, १, ३, २)। २ हाथी की नाक, सूँढ; (उवा)।

सोंडिअ पुं [**शौण्डिक**] दारू बेचने वाला, कलवार; (अभि १८८)।

सोंडिया स्त्री [**शुण्डिका**] दारू का पात्र-विशेष; (ठा ८—पत्र ४१७)।

सोंडीर वि [**शौण्डीर**] १ शूर, वीर, पराक्रमी; (कप्प; सुर २, १३४; सुपा ६०)। २ गर्व-युक्त, गर्वित; (महा)।

सोंडीर न [**शौण्डीर्य**] १ पराक्रम, शूरता; २ गर्व; (हे २, ६३; पड्)।

सोंडीरिम पुंस्त्री [**शौण्डीरिमन्**] ऊपर देखो; (सुपा २६२)।

सोंदज्ज (शौ) देखो **सुंदेर**; (पि ८४)।

सोक्क देखो **सुक्क=शुष्क**; (पड्)।

सोक्ख देखो **सुक्ख=सौख्य**; (प्राकृ १०; गा १५८; सुपा ७०; कुमा)।

सोक्ख देखो **सुक्ख=शुष्क**; (पड्)।

सोग देखो **सोअ=शोक**; (पउम २०, ४५; सुर २, १४०; स २५५; प्रासू ८३; उव)।

सोगंध } न [**सौगन्ध्य**] १ लगातार चौवीस दिनों
सोगंधिअ } के उपवास; (संबोध ५८)। २ सुगन्धिपन, सुगन्ध; "सोगंधियपरिकलियं तंबोलं" (सम्मत्त २२०)।

सोगंधिअ न [**सौगन्धिक**] १ रत्न-विशेष, रत्न की एक जाति; (णाया १, १—पत्र ३१; पण्ण १—पत्र २६; उत्त ३६, ७७; कप्प; कुम्मा १५)। २ रत्नप्रभा-नामक नरक-

पृथिवी का एक सौगन्धिक-रत्न-मय काण्ड; (सम ८६)। ३ कह्लार, पानी में होने वाला श्वेत कमल; (सूअ २, ३, १८; राय ८२)। ४ पुं. नपुंसक का एक भेद, अपने लिंग को सूँघने वाला नपुंसक; (पव १०६; पुप्फ १२८)। ५ पुंन. एक देव-विमान; (देवेन्द्र १४२)। ६ वि सुगन्ध वाला, सुगन्धी; (उवा; सम्मत्त २२०)।

सोगंधिया स्त्री [**सौगन्धिका**] नगरी-विशेष; (णाया १, ५—पत्र १०५)।

सोगमल्ल देखो **सोअमल्ल**; (दस २, ५)।

सोग्गइ देखो **सुग्गइ**; (उत्त २८, ३; पउम २६, ६०; स २५०)।

सोग्गाह(?) अक [**प्र+सृ**] पसरना, फैलना। सोग्गाहइ; (धात्वा १५६)।

सोच देखो **सोअ**=शुच्। वकृ—**सोचंत, सोचमाण**; (नाट—मृच्छ २८१; णाया १, १—पत्र ४७)। संकृ—"**सोचिऊण** हत्थपाए आरोग्गमणिरयणेण ओमज्जिओ राया" (स ५६७)। कृ—**सोच्च**; (उव)।

सोचिय वि [**शोचित**] शुद्ध किया हुआ, प्रक्षालित; (स ३४८)।

सोच्च देखो **सोच**।

सोच्चं
सोच्चा } देखो **सुण**=श्रु।
सोच्च°

सोच्छिअ देखो **सोत्थिअ**; (इक)।

सोजण्ण } न [**सौजन्य**] सुजनता, सज्जनता, भलमन-
सोजन्न } सी; (उप ७२८ टी; सुर २, ६१)।

सोज्ज देखो **सोरिअ**=शौर्य; (प्राकृ १६)।

सोज्झ वि [**शोध्य**] शुद्धि-योग्य, शोधनीय; (सुज १०, ६ टी)।

सोज्झय पुं [**दे**] रजक, धोबी; (पाअ)। देखो **सुज्झय**।

सोडिअ देखो **सोंडिअ**; (कर्पूर ३४)।

सोडीर वि [**शौटीर**] देखो **सोंडीर**=शौण्डीर; (कप्प; औप; मोह १०४; कप्पू; चारु ६३)।

सोडीर न [**शौटीर्य**] देखो **सोंडीर**=शौण्डीर्य; (कुमा; से ३, ४; ५; ३; १३, ७६; ८७; प्राकृ १६)।

सोढ वि [**सोढ**] सहन किया हुआ; (उप २६४ टी; धात्वा १५७)।

सोढव्व
सोढुं } देखो **सह**=सह्।

सोण वि [**शोण**] लाल, रक्त वर्ण वाला; (पाअ)।

सोणंद न [**दे. सौनन्द**] त्रिकाष्ठिका, तिपाई; (पण्ह १, ४—पत्र ७८; औप; तंदु २०)।

सोणहिअ वि [**शौनकिक**] १ श्वान-पालक; २ कुत्तों से शिकार करने वाला; (स २५३)।

सोणार देखो **सुण्णार**; (गा १६१; पि ६६; १५२)।

सोणि स्त्री [**श्रोणि**] कटी, कमर; (कप्प; उप १५६)।
°**सुत्तग** न [°**सूत्रक**] कटी-सूत्र, करधनी; (औप)।

सोणिअ पुं [**शौनिक**] कसाई; (दे ६, ६२)।

सोणिअ न [**शोणित**] रुधिर, खून; (उवा; भवि)।

सोणिम पुंस्त्री [**शोणिमन्**] रक्तता, लाली; (विक्र २८)।

सोणी स्त्री [**श्रोणी**] देखो **सोणि**; (पण्ह १, ४—पत्र ६८; ७६)।

सोणीअ देखो **सोणिअ**=शोणित; "भुंजंते मंससोणीअं ण छणे ण पमज्जए" (आचा १, ८, ८, ६; पि ७३)।

सोण्ण न [**स्वर्ण**] सोना, सुवर्ण; (प्राकृ ३०; संक्षि २१)।

सोण्ह देखो **सुण्ह**=सूक्ष्म; (षड्; गा ७२३)।

सोण्हा देखो **सुण्हा**=स्नुषा; (संक्षि १५; प्राकृ ३७; गा १०७; काप्र ८६३)।

सोत्त न [**श्रोत्र**] कान, श्रवणेन्द्रिय; (आचा; रंभा; विक्र ६८)।

सोत्त देखो **सोअ**=स्रोतस्; (हे २, ६८; गा ५५१; से १, ५८; कुमा)।

सोत्ति देखो **सुत्ति**=शुक्ति; (षड्; उप ६४८ टी)।

सोत्तिअ पुं [**श्रोत्रिय**] वेदाभ्यासी ब्राह्मण; (पिंड ४३६; नाट—मृच्छ १३४; प्राप)।

सोत्तिअ वि [**सौत्रिक**] १ सूत्र-निर्मित, सूते का बना हुआ; (ओघभा ८६; ओघ ७०५)। २ सूते का व्यापारी; (अणु १४६)।

सोत्तिअ पुं [**शौक्तिक**] द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष; (पण्ण १—पत्र ४४)।

सोत्तिअमई } स्त्री [**शुक्तिकावती**] केकय देश की
सोत्तिअवई } प्राचीन राजधानी; (राज; इक)।

सोत्ती स्त्री [**दे**] नदी; (दे ८, ४४; षड्)।

सोत्थि पुंन [**स्वस्ति**] १ एक देव-विमान; (देवेन्द्र

१३३)। २—देखो सत्थि; (संक्षि २१; गा २४४; अभि १२८; नाट—रत्ना १०)।

सोत्थिअ पु [**स्वस्तिक**] १ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष; (ठा २, ३—पत्न ७८)। २ न. शाक-विशेष, एक प्रकार की हरित वनस्पति; (पराण १—पत्न ३४)। ३—देखो सत्थिअ, सोवत्थिअ=स्वस्तिक; (पराह १, ४—पत्न ६८; णाया १, १—पत्न ५४)।

सोदाम पुं [**सौदाम**] देखो सोदामि; (इक)।

सोदामणी देखो सोआमणी; (पउम २६, ८१)।

सोदामि पुं [**सौदामिन्**] चमरेन्द्र के अश्व-सैन्य का अधिपति; (ठा ५, १—पत्न ३०२)।

सोदामिणी देखो सोआमिणी; (नाट—मालती ८)।

सोदास पुं [**सौदास**] एक राजा; (पउम २२, ८१)।

सोध (शौ) देखो सउह=सौध; (पि ६१ ए)।

सोपार, **सोपारय** पुं. व. [**सोपार, °क**] १ देश-विशेष; (पउम ९८, ६४; सुपा २७५)। २ न. नगर-विशेष; (सार्ध ३६; ती ११)।

सोवंधव वि [**सौवन्धव**] सुबन्धु-नामक कवि का बनाया हुआ ग्रन्थ; (गउड)।

सोभ अक [**शुभ्**] शोभना, चमकना। सोभति; (सुज्ज १९)। भूका—सोभिंसु; सोभेंसु; (सुज्ज १९)। भवि—सोभिस्सति; (सुज्ज १९)। वकृ—सोभंत, (णाया १, १—पत्न २५; कप्प; औप)।

सोभ सक [**शोभय्**] शोभाना, शोभा-युक्त करना। सोभेइ; (भग)। वकृ—सोभयंत; (पि ४९०)। संकृ—सोभित्ता; (कप्प)।

सोभग वि [**शोभक**] १ शोभाने वाला; २ शोभाने वाला; (कप्प)।

सोभग्ग देखो सोहग्ग; (स्वप्न ४५)।

सोभण देखो सोहण=शोभन; (पउम ७८, ५६; स्वप्न ४९)।

सोभा देखो सोहा=शोभा; (प्राकृ १७; उत्त २१, ८; कप्प; सुज्ज १९)।

सोभिय देखो सोहिअ=शोभित; (णाया १, १ टी—पत्न ३)।

सोम पु [**सोम**] १ चन्द्र, चाँद, एक ज्योतिष्क महा-ग्रह; (ठा २, ३—पत्न ७७; विसे १८८३; गउड)। २ भगवान पार्श्वनाथ का पाँचवाँ गणधर; (सम १३; ठा ८—पत्न ४२९)। ३ एक प्रसिद्ध क्षत्रिय-वंश; (पउम ५, २)। ४ चतुर्थ बलदेव और वासुदेव का पिता; (ठा ९—पत्न ४४७; पउम २०, १८२)। ५ एक विद्याधर नर-पति, जो ज्योतिःपुर का स्वामी था; (पउम ७, ४३)। ६ एक शेठ का नाम; (सुपा ५९७)। ७ एक ब्राह्मण का नाम; (णाया १, १६—पत्न १९६)। ८ चमरेन्द्र, बलीन्द्र, सौधर्मेन्द्र तथा ईशानेन्द्र के एक २ लोकपाल के नाम; (ठा ४, १—पत्न २०४; भग ३, ७—पत्न १९४)। ९ लता-विशेष, सोमलता; १० उसका रस; ११ अमृत; (षड्)। १२ आर्यसुहस्ति सूरि का एक शिष्य—जैन मुनि; (कप्प)। १३ पुन. देव-विमान-विशेष; (देवेन्द्र १३३; १४३; १४५)। १४ वि. कीर्त्तिमान्, यशस्वी; (कप्प)। °काइय पुं [°कायिक] सोम लोकपाल का आज्ञाकारी देव; (भग ३, ७—पत्न १९५)। °ग्गहण न [°ग्रहण] चन्द्र-ग्रहण; (हे ४, ३९६)। °चंद पुं [°चन्द्र] १ ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न सातवें जिन-देव; (सम १५३)। २ आचार्य हेमचन्द्र का दीक्षा समय का नाम; (कुप्र २१)। °जस पुं [°यशस्] एक राजा; (सुर २, १३४)। °णाह देखो °नाह; (राज)। °दत्त पु [°दत्त] १ एक ब्राह्मण का नाम; (णाया १. १६—पत्न १९६)। २ एक जैन मुनि, जो भद्रबाहु-स्वामी का शिष्य था; (कप्प)। ३ भगवान् चन्द्रप्रभस्वामी को प्रथम भिक्षा-दाता गृहस्थ; (सम १५१)। ४ राजा शतानीक का एक पुरोहित; (विपा १, ५—पत्न ६०)। °देव पुं [°देव] १ सोम-नामक लोकपाल का सामानिक देव; (भग ३, ७— पत्न १९५)। २ भगवान् पद्मप्रभ को प्रथम भिक्षा-दाता गृहस्थ; (सम १५१)। °नाह पु [°नाथ] सौराष्ट्र देश की सुप्रसिद्ध महादेव-मूर्त्ति; (ती १५; सम्मत्त ७५)। °प्पभ, °प्पह पुं [°प्रभ] १ क्षत्रियों के सोमवंश का आदि पुरुष, बाहुबलि का एक पुत्र; (पउम ५, १०; कुप्र २१२)। २ तेरहवीं शताब्दी का एक जैन आचार्य और ग्रन्थकार; (कुप्र ११५)। ३ चमरेन्द्र के सोम-लोकपाल का उत्पात-पर्वत; (ठा १०—पत्न ४८२)। °भूइ पुं [°भूति] एक ब्राह्मण का नाम; (णाया १, १६—पत्न १९६)। °भूइय न [°भूतिक] एक कुल का नाम; (कप्प)। °य न [°क] एक गोत्र जो कौत्स गोत्र की शाखा है; (ठा ७—पत्न ३९०)। °व, °वा वि [°प, °पा] सोम-रस पीने वाला; (षड्)। °सिरी स्त्री

[°श्री] एक ब्राह्मण; (अंत)। °सुंदर पुं [°सुन्दर] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य तथा ग्रन्थकार; (संति १४; कुलक ४४)। °सूरि पुं [°सूरि] एक जैनाचार्य, आराधना-प्रकरण का कर्ता एक जैनाचार्य, (आप ७०)।

सोम वि [**सौम्य**] १ अ-रौद्र, अनुग्र; (ठा ६; भग १२, ६—पत्र ५७८)। २ नीरोग, रोग-रहित; (भग १२, ६)। ३ प्रशस्त, श्लाघ्य; (कप्प)। ४ प्रिय-दर्शन, जिसका दर्शन प्रिय मालूम हो वह, ५ मनोहर, सुन्दर; ६ शान्त आकृति वाला, (ओघभा २२; उव; सुपा १८०; ६२२)। ७ शोभा-युक्त, दीप्तिमान्; (जं २)। देखो **सोम्म**।

सोमइअ वि [**दे**] सोने की आदत वाला; (दे ८, ३६)।

सोमंगल पु [**सौमङ्गल**] द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति; (उत्त ३६, १२६)।

सोमणंतिय वि [**स्वापनान्तिक, स्वाप्नान्तिक**] १ सोने के बाद किया जाता प्रतिक्रमण—प्रायश्चित्त-विशेष; २ स्वप्न-विशेष मे किया जाता प्रतिक्रमण; (ठा ६—पत्र ३७६)।

सोमणस पु [**सौमनस**] १ महाविदेह-वर्ष का एक वक्षस्कार-पर्वत; (ठा २, ३—पत्र ६६; सम १०२; जं ४)। २ उस पर्वत पर रहने वाला एक महर्द्धिक देव; (जं ४)। ३ पक्ष का आठवाँ दिन; (सुज्ज १०, १४)। ४ पुन. सनत्कुमार-नामक इन्द्र का एक पारियानिक विमान; (ठा ८—पत्र ४३७, औप)। ५ एक देव-विमान, छठवाँ ग्रैवेयक-विमान; (देवेन्द्र १३७, १४३; पव १६४)। ६ सौमनस-पर्वत का एक शिखर; (ठा २, ३—पत्र ८०)। ७ न. मेरु-पर्वत का एक वन, (ठा २, ३—पत्र ८०)।

सोमणस न [**सौमनस्य**] १ सुन्दर मन, संतुष्ट मन; (राय; कप्प)।

सोमणसा स्त्री [**सौमनसा**] १ जम्बू-वृक्ष-विशेष, जिससे यह द्वीप जम्बूद्वीप कहलाता है; (इक)। २ एक राज-धानी; (इक)। ३ सौमनस वन की एक वापी; (जं ४)। ४ पक्ष की पाँचवीं रात; (सुज्ज १०, १४)।

सोमणसिय वि [**सौमनस्यित**] १ सतुष्ट मन वाला; २ प्रशस्त मन वाला; (कप्प)।

सोमणस्स देखो **सोमणस**=सौमनस्य; (कप्प; औप)।

सोमणस्सिय देखो **सोमणसिय**; (कप्प, औप; णाया १, १—पत्र १३)।

सोमल्ल देखो **सोअमल्ल**; (प्राकृ २०; ३०)।

सोमहिंद न [**दे**] उदर, पेट; (दे ८, ४५)।

सोमहिट्ठ पुं [**दे**] पंक, कादा; (दे ८, ४३)।

सोमा स्त्री [**सोमा**] १ शक्र के सोम आदि चारों लोक-पालों की एक २ पटरानी का नाम; (ठा ४, १—पत्र २०४)। २ सातवें जिनदेव की प्रथम शिष्या; (सम १५२; पव ६)। ३ सोम लोकपाल की राजधानी; (भग ३, ७—पत्र १६५)।

सोमा स्त्री [**सौम्या**] उत्तर दिशा; (ठा १०—पत्र ४७८; भग १०, १—पत्र ४६३)।

सोमाण न [**श्मशान**] मसान, मरघट; (दे ८, ४५)।

सोमाणस पुं [**सौमानस**] सातवाँ ग्रैवेयक विमान; (पव १६४)।

सोमार } देखो **सुकुमार**; (गा १८६; स ३५६; मै ७;
सोमाल } पड्; प्राप्र; हे १, १७१; कुमा; प्राकृ २०; ३८; भवि)।

सोमाल न [**दे**] माँस; (दे ८, ४४)।

सोमित्ति पु [**सौमित्रि**] राम-भ्राता लक्ष्मण; (गा ३५)।

सोमित्ति स्त्री [**सुमित्रा**] लक्ष्मण की माता। °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] लक्ष्मण; "रामसोमित्तिपुत्ता" (पउम ३८, ५७)। °**सुय** पु [°**सुत**] वही अर्थ; (पउम ७२, ३)।

सोमिल पुं [**सोमिल**] एक ब्राह्मण; (अंत ६)।

सोमेत्ति देखो **सोमित्ति**=सौमित्रि; (से १२, ८८)।

सोमेसर पुं [**सोमेश्वर**] सौराष्ट्र का सोमनाथ महादेव; (सम्मत्त ७५)।

सोम्म वि [**सौम्य**] १ रमणीय, सुन्दर; (से १, २७)। २ ठढ़ा, शीतल; (से ४, ८)। ३ शीतल प्रकृति वाला, शान्त स्वभाव वाला; (से ५, १६; विसे १७३१)। ४ प्रिय-दर्शन, जिसका दर्शन प्रिय लगे वह; ५ जिसका अधिष्ठाता सोम-देवता हो वह; ६ भास्वर, कान्ति वाला; ७ पु. बुध ग्रह; ८ शुभ ग्रह; ६ वृष-आदि सम राशि; १० उदुम्बर वृक्ष; ११ द्वीप-विशेष; १२ सोम-रस पीने वाला ब्राह्मण; (प्राप्र)। देखो **सोम**=सौम्य।

सोय्ज (अप) अ [**स एव**] वही; (प्राकृ १२१)।

सोरट्ठ पुं [**सौराष्ट्र**] १ एक भारतीय देश, सोरठ, काठियावाड़; (इक; ती १५)। वि. २ सोरठ देश का

निवासी; (श्रावक ६३)। ३ न. छन्द-विशेष; (पिंग)।

सोरट्ठिया स्त्री [**सौराष्ट्रिका**] १ एक प्रकार की मिट्टी, फिटकिडी; (आचा २, १, ६, ३; दस ५, १, ३४)। २ एक जैन मुनि-शाखा; (कप्प)।

सोरब्भ, **सोरंभ**, **सोरभ** न [**सौरभ**] सुगन्ध, खुशबू ; (विक्र ११३; कुप्र २२३; भवि; उप ६८६ टी)।

सोरसेणी स्त्री [**शौरसेनी**] शूरसेन देश की प्राचीन भाषा, प्राकृत भाषा का एक भेद; (विक्र ६७)।

सोरह देखो **सोरभ**; (गउड)।

सोरिअ न [**शौर्य**] शूरता, पराक्रम; (प्राप्र; प्राकृ १९)।

सोरिअ न [**शौरिक**] १ कुशावर्त देश की प्राचीन राज-धानी; (इक)। २ एक यक्ष; (विपा १, ८—पत्र ८२)। °**दत्त** पुं [°**दत्त**] १ एक मच्छीमार का पुत्र; (विपा १, १—पत्र ४; विपा १, ८)। २ एक राजा; (विपा १, ८—पत्र ८२)। °**पुर** न [°**पुर**] एक नगर; (विपा १, ८)। °**वडिंसग** न [°**ावतंसक**] एक उद्यान; (विपा १, ८—पत्र ८२)।

सोलस त्रि. ब. [**षोडशन्**] १ संख्या-विशेष, सोलह, १६; २ सोलह संख्या वाला; (भग ३५, १—पत्र ९६४; ९६७, उवा; सुर १, ३५; प्रासू ७७; पि ४४३)। ३ वि. सोलहवाँ, १६ वाँ; (राज)। °**म** वि [°**श**] १ सोलहवाँ, १६ वाँ; (णाया १, १६—पत्र १९६; सुर १६, २५१; पंव ४६)। २ लगा तार सात दिनों के उपवास; (णाया १, १—पत्र ७२)। °**य** न [°**क**] सोलह का समूह; (उत्त ३१, १३)। °**विह** वि [°**विध**] सोलह प्रकार का; (पि ४५१)।

सोलसिआ स्त्री [**षोडशिका**] रस-मान-विशेष, सोलह पलों का एक नाप; (अणु १५२)।

सोलह देखो **सोलस**; (नाट; भवि)।

सोलहावत्तय पुं [**दे**] शंख; (दे ८, ४६)।

सोल्ल सक [**पच्**] पकाना। सोल्लइ; (हे ४, ९०; धात्वा १५६)। वकृ—**सोल्लंत**; (विपा १, ३—पत्र ४३)।

सोल्ल सक [**क्षिप्**] फेंकना। सोल्लइ; (हे ४, १४३; षड्)। कर्म—सोल्लिज्जइ; (कुमा)।

सोल्ल सक [**ईर्**, **सम्+ईर्**] प्रेरणा करना। सोल्लइ; (धात्वा १५६; प्राकृ ६६)।

सोल्ल न [**दे**] माँस; (दे ८, ४४)। देखो **सुल्ल**=शूल्य।

सोल्ल वि [**पक्व**] पकाया हुआ; (उवा; विपा १, २—पत्र २७; १, ८—पत्र ८५; ८६; औप)।

सोल्लिय वि [**पक्व**] १ पकाया हुआ; "इंगालसोल्लियं" (औप)। २ न. पुष्प-विशेष; (औप)।

सोव देखो **सुव**=स्वप्। सोवइ, सोवंति; (हे १, ६४; उव; भवि; पि १५२)।

सोवकम, **सोवक्कम** वि [**सोपक्रम**] निमित्त-कारण से जो नष्ट या कम हो सके वह कर्म, आयु, आपदा आदि; (सुपा ४५२; ४५९)।

सोवचिय वि [**सोपचित**] उपचय-युक्त, स्फीत, पुष्ट; (कप्प)।

सोवच्चल पुंन [**सौवर्चल**] एक तरह का नोन, काला नमक; (दस ३, ८; चंड)।

सोवण न [**स्वपन**] शयन, सोना; (उप पृ २३७)।

सोवण न [**दे**] १ वास-गृह, शय्या-गृह, रति-मन्दिर; (दे ८, ५८; स ५०३; पाअ)। २ स्वप्न; ३ पुं. मल्ल; (दे ८, ५८)।

सोवण (अप) देखो **सोवण्ण**; (भवि)।

सोवणिअ वि [**शौवनिक**] १ श्वान-पालक, कुत्तों को पालने वाला; २ कुत्तों से शिकार करने वाला; (सूअ २, २, ४२)।

सोवणी स्त्री [**स्वापनी**] विद्या-विशेष; (पि ७८)।

सोवण्ण वि [**सौवर्ण**] स्वर्ण-निर्मित, सोने का; (महा; सम्मत्त १७३)।

सोवण्णमक्खिआ स्त्री [**दे**] मधुमक्षिका की एक जाति, एक तरह की शहद की मक्खी; (दे ८, ४६)।

सोवण्णिअ, **सोवण्णिग** वि [**सौवर्णिक**] सोने का, सुवर्ण-घटित; (प्रति ७; स ४५८)। °**पव्वय** पुं [°**पर्वत**] मेरु पर्वत; (पउम २, १८)।

सोवण्णेअ पुंस्त्री [**सौपर्णेय**] गरुड पक्षी; स्त्री—°**आ**, °**ई**; (षड्)।

सोवत्थ न [**दे**] १ उपकार; २ वि. उपभोग्य, उपभोग-योग्य; (दे ८, ४५)।

सोवत्थि, **सोवत्थिअ** वि [**सौवस्तिक**] १ माङ्गलिक वचन बोलने वाला, मागध आदि स्वस्ति-वादक; (ठा ४, २—पत्र २१३; औप)। २ पुं ज्योतिष्क

महाग्रह-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७८)। ३ त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति; (पण्ण १—पत्र ४५)।

सोवत्थिअ पुं [**स्वस्तिक**] १ साथिया, एक मङ्गल-चिह्न; (औप)। २ पुंन. विद्युत्प्रभ-नामक वक्षस्कार पर्वत का एक शिखर; (इक)। ३ पूर्व रुचक-पर्वत का एक शिखर; (राज)। ४ एक देव-विमान; (देवेन्द्र १४१)। देखो **सत्थिअ, सोत्थिअ**=स्वस्तिक।

सोवन्न देखो **सोवण्ण**; (अंत १७; श्रा २८; सिरि ८११; भवि)।

सोवन्निअ देखो **सोवण्णिअ**; (णाया १, १—पत्र ५२)।

सोवरिअ देखो **सोअरिअ**=शौकरिक; (सूअ २, २, २८)।

सोवरी स्त्री [**शाम्बरी**] विद्या-विशेष; (सूअ २, २, २७)।

सोववत्तिअ वि [**सोपपत्तिक**] सयुक्तिक, युक्ति-युक्त; (उप ७२८ टी)।

सोवाअ वि [**सोपाय**] उपाय-साध्य; (गउड)।

सोवाग पुं [**श्वपाक**] चाण्डाल, डोम; (आचा; ठा ४, ४—पत्र २७१; उत्त १३, ६; उव; सुपा ३७०; कुप्र २६२; उर १, १५)।

सोवागी स्त्री [**श्वापाकी**] विद्या-विशेष; (सूअ २, २, २७)।

सोवाण न [**सोपान**] सीढ़ी, नसैनी, पैड़ी; (सम १०६; गा २७८; उव; सुर १, ६२)।

सोवासिणी देखो **सुवासिणी**; (भवि)।

सोविअ वि [**स्वापित**] सुलाया हुआ, शायित; "कमल-किसलयरइए सत्थरए सोविओ तेण" (सुर ४, २४४; उप १०३१ टी)।

सोवियल्ल पुंस्त्री [**सौविदल्ल**] अन्तःपुर का रक्षक; (गउड); स्त्री—°ल्ली; (सुपा ७)।

सोवीर पुं. ब. [**सौवीर**] १ देश-विशेष; (पव २७५; सूअ १, ५, १, १—टी)। २ न. काञ्जिक, काँजी; (ठा ३, ३—पत्र १४७; पाअ)। ३ अञ्जन-विशेष, सौवीर देश में होता सुरमा; (जी ४)। ४ मद्य-विशेष; (कस)।

सोवीरा स्त्री [**सौवीरा**] मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना; (ठा ७—पत्र ३९३)।

सोव्व वि [**दे**] पतित-दन्त, जिसका दाँत गिर गया हो वह; (दे ८, ४५)।

सोस सक [**शोषय्**] सुखाना, शोषण करना। सोसइ; (भवि)। वकृ—**सोसयंत**; (कप्प)।

सोस देखो **सुस्स**। सोसउ; (हे ४, ३६५)।

सोस पुं [**शोष**] १ शोषण; (गउड; प्रासू ६४)। २ रोग-विशेष, दाह-रोग; (लहुअ १५)।

सोसण पुं [**दे**] पवन, वायु; (दे ८, ४५)।

सोसण न [**शोषण**] १ सुखाना; २ कामदेव का एक बाण; (कप्पू)। ३ वि. शोषण-कर्ता, सुखाने वाला; (पउम २८, ५०; कुप्र ४७)।

सोसणया, **सोसणा** स्त्री [**शोषणा**] शोषण; (उवा; उत्त ३०, ५)।

सोसणी स्त्री [**दे**] कटी, कमर; (दे ८, ४५)।

सोसविअ वि [**शोषित**] सुखाया हुआ; (हे ३, १५०; उव)।

सोसाव देखो **सोस**=शोषय्। हेकृ—**सोसावेदुं** (शौ); (नाट)।

सोसास वि [**सोच्छ्वास**] ऊर्ध्व श्वास-युक्त; (षड्)।

सोसिअ देखो **सोसविअ**; (हे ३, १५०; सुर ३, १८६; महा)।

सोसिअ वि [**सोच्छ्रित**] ऊँचा किया हुआ; (कप्प)।

सोसिल्ल वि [**शोफवत्**] शोफ-युक्त, सूजन रोग वाला; (विपा १, ७—पत्र ७३)।

सोह अक [**शुभ्**] शोभना, चमकना। सोहइ, सोहए; सोहंति; (हे १, १८७; पाअ; कुमा)। वकृ—**सोहंत, सोहमाण**; (कप्प; सुर ३, १११; नाट—उत्तर ८)।

सोह सक [**शोभय्**] शोभा-युक्त करना। सोहेइ; (उवा)।

सोह सक [**शोधय्**] १ शुद्धि करना। २ खोज करना, गवेषणा करना। ३ संशोधन करना। सोहेइ; (उव)। वकृ—"लूसिअ सगिहं दट्ठुं **सोहिंतो** दइअं निअ" (श्रा १२), **सोहेमाण**; (उवा; विपा १, १—पत्र ७)। कवकृ—**सोहिज्जंत**; (उप ७२८ टी)। कृ—**सोहणीअ, सोहेयव्व**; (णाया १, १६—पत्र २०२; नाट—शकु ९६; सुपा ६५७)। संकृ—**सोहइत्ता**; (उत्त २६, १)।

सोह देखो **सउह**=सौध; (रुक्मि ६१; प्रति ४१; नाट—मालती १३८)।

सोहंजण पुं [**दे. शोभाञ्जन**] वृक्ष-विशेष, सहिजने का पेड़; (दे ८, ३७; कप्पू)।

सोहग देखो **सोभग**; (कप्प ३८ टी)।

सोहग पुं [**शोधक**] धोबी, रजक; (उप पृ २४१)। देखो **सोहय**=शोधक।

सोहग्ग न [**सौभाग्य**] १ सुभगता, लोक-प्रियता; (औप; प्रासू ६६)। २ पति-प्रियता; (सुर ३, १८१; प्रासू ८५)। ३ सुन्दर भाग्य; (उप पृ ४७; १०८)। °**कप्परुक्ख** पुं [°**कल्पवृक्ष**] तप-विशेष; (पव २७१)। °**गुलिया** स्त्री [°**गुटिका**] सौभाग्य-जनक मन्त्र-विशेष-संस्कृत गोली; (सुपा ५६७)।

सोहग्गंजण न [**सौभाग्याञ्जन**] सौभाग्य-जनक अंजन; (सुपा ५६७)।

सोहग्गिअ वि [**सौभागित**] भाग्य-शाली, सुन्दर भाग्य वाला; (उप पृ ४७; १०८)।

सोहण पुं [**शोभन**] १ एक प्रसिद्ध जैन मुनि; (सम्मत्त ७५)। २ वि. शोभा-युक्त, सुन्दर; (सुर १, १४७; ३, १८५; प्रासू १३२); स्त्री—°**णा**, °**णी**; (प्राकृ ४२)। °**वर** न [°**वर**] वैताढ्य की उत्तर श्रेणि का एक विद्याधर-नगर; (इक)।

सोहण न [**शोधन**] १ शुद्धि, सफाई; (उप ५६७ टी; सुज्ज १०, ६ टी; कप्प)। २ वि. शुद्धि-जनक; (श्रा ६)।

सोहणी स्त्री [**दे**] संमार्जनी, झाडू; (दे ८, १७)।

सोहद न [**सौहृद**] १ मित्रता; २ बन्धुता; (अभि २१८; अच्चु ५०)।

सोहम्म देखो **सुधम्म**, **सुहम्म**=सुधर्मन्; (सम १६)।

सोहम्म पुं [**सौधर्म**] प्रथम देवलोक; (सम २; राय; अणु)। °**कप्प** पुं [°**कल्प**] पहला देवलोक, स्वर्ग-विशेष; (महा)। °**वइ** पुं [°**पति**] प्रथम देवलोक का स्वामी, शक्रेन्द्र; (सुपा ५१)। °**वडिंसय** पुंन [°**वतंसक**] एक देव-विमान; (सम ८; २५; राय ५६)। °**सामि** पुं [°**स्वामिन्**] प्रथम देवलोक का इन्द्र; (सुपा ५१)।

सोहम्म° देखो **सुहम्मा**; (महा)।

सोहम्मण देखो **सोहण**=शोधन; "रयणांपि गुणुक्करिसं उवेइ सोहम्मणगुणेणं" (कम्म ६, १ टी)

सोहम्मिंद पुं [**सौधर्मेन्द्र**] शक्र, प्रथम देवलोक का स्वामी; (महा)।

सोहम्मिय वि [**सौधर्मिक**] सौधर्म-देवलोक का; (सण)।

सोहय वि [**शोधक**] शुद्धि-कर्ता, सफाई करने वाला; (विसे ११६६)। देखो **सोहग**=शोधक।

सोहय देखो **सोहग**=शोभक; (उप पृ २१६)।

सोहल वि [**शोभावत्**] शोभा-युक्त; (सण; भवि)।

सोहा स्त्री [**शोभा**] १ दीप्ति, चमक; (से १, ४८; कुमा; सुपा ३१; रंभा)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)।

सोहाव सक [**शोधय्**] सफा कराना। सोहावेह; (स ५१६)।

सोहाविय वि [**शोधित**] साफ कराया हुआ; (स ६२)।

सोहि स्त्री [**शुद्धि, शोधि**] १ निर्मलता; (णाया १, ५—पत्र १०५; संबोध १२)। २ आलोचना, प्रायश्चित्त; (ओघ ७६१; ७६७; आचा)।

सोहि वि [**शोधिन्**] शुद्धि-कर्ता; (औप)।

सोहि वि [**शोभिन्**] शोभने वाला; (संबोध ४८; कप्पू; भवि), स्त्री—°**णी**; (नाट—रत्ना १३)।

सोहि पुंस्त्री [**दे**] १ भूत काल; २ भविष्य काल; (दे ८, ५८)।

सोहिअ न [**दे**] पिष्ट, आटा, चावल आदि का चूर्ण; (षड्)।

सोहिअ वि [**शोभित**] शोभा-युक्त; (सुर ३, ७२; महा; औप; भग)।

सोहिअ वि [**शोधित**] शुद्ध किया हुआ; (पण्ह २, १; भग)।

सोहिद देखो **सोहद**; (नाट—शकु १०६)।

सोहिर वि [**शोभितृ**] शोभने वाला; (गा ५११)।

सोहिल्ल वि [**शोभावत्**] शोभा-युक्त; (गा ५४७; सुर ३, ११; ८, १०८; हे २, १५६; चंड; भवि; सण)।

सौअरिअ देखो **सोअरिअ**=सौदर्य; (चंड)।

सौंअरिअ न [**सौन्दर्य**] सुन्दरता; (हे १, १)।

सौह देखो **सउह**=सौध; (रुक्मि ५६; नाट—मालती १३६)।

°**स्स** देखो **स**=स्व; (गा २२६)।

°**स्सास** देखो **सास**=श्वास; (गा ८५६)।

°**स्सिरी** देखो **सिरी**=श्री; (गा ६७७)।

°**स्सेअ** देखो **सेअ**=स्वेद; (अभि २१०)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि सयाराइसद्दसंकलणो सत्ततीसइमो तरंगो समत्तो।

—— ००० ——

ह

ह पुं [**ह**] १ कंठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष; (प्राप; प्रामा)। २ अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय;—संबोधन; "से भिक्खू गिलाइ, से हंद ह णं तस्साहरह" (आचा २, १, ११, १; २; पि २७५)। ३ नियोग; ४ क्षेप, निन्दा; ५ निग्रह; ६ प्रसिद्धि; ७ पादपूर्ति; (हे २, २१७)।

ह देखो **हा**=अ. (हे १, ६७)।

हइ स्त्री [**हति**] हनन, वध, मारण; (श्रा २७)।

हं अ. [**हम्**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ क्रोध; (उवा)। २ अ-सम्मति; (स्वप्न २१)।

हंजय पुं [**दे**] शरीर-स्पर्श-पूर्वक किया जाता शपथ—सौगन; (दे ८, ६१)।

हंजे अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ दासी का आह्वान; (हे ४, २८१; कुमा; पिंग)। २ सखी का आमन्त्रण; (स ६२२; सम्मत्त १७२)।

°**हंड** देखो **खंड**; (हम्मीर १७)।

°**हंडण** देखो **भंडण**; (गा ६१२; पि ५८८)।

हंत देखो **हंता**; (धर्मसं २०२; राय २६; सण; कप्पू; पि २७५)।

हंतव्व, **हंता** } देखो **हण**।

हंता अ [**हन्त**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ अभ्युपगम, स्वीकार; (उवा; औप; भग; तंदु १४; अणु १६०; णाया १, १—पत्र ७४)। २ कोमल आमन्त्रण; (भग; अणु १६०; तंदु १४; औप)। ३ वाक्य का आरम्भ; ४ प्रत्यवधारण; ५ संप्रेषण; ६ खेद; ७ निर्देश; (राज)। ८ हर्ष; ९ अनुकम्पा; (राय)। १० सत्य; (उवा)।

हंतु वि [**हन्तृ**] मारने वाला; (आचा, भग; पउम ५१, १९; ७३, १९; विसे २९१७)।

हंतूण देखो **हण**।

हंद अ. 'ग्रहण करो' इस अर्थ का सूचक अव्यय; (हे २, १८१; कुमा; आचा २, १, ११, १; २; पि २७५)।

हंदि अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ विषाद, खेद; २ विकल्प; ३ पश्चात्ताप; ४ निश्चय; ५ सत्य; ६ 'लो', 'ग्रहण करो'; (पाअ; हे २, १८०; षड्, कुमा)। ७ आमन्त्रण, संबोधन; (पिंड २१०; धर्मसं ४४)। ८ उपदर्शन; (पंचा ३, १२; दसनि ३, ३७)।

हंभो देखो **हंहो**; (सुर ११, २३४; आचा; सूअ २, २, ८१)।

हंस देखो **हस्स**=ह्रस्व; (प्राप्र)।

हंस पुं [**हंस**] १ पक्षि-विशेष; (णाया १, १—पत्र ५३; पणह १, १—पत्र ८; कुमा; प्रासू १३; १६९)। २ रजक, धोबी; "वत्थधोवा हवंति हंसा वा" (सूअ १, ४, २, १७)। ३ संन्यासि-विशेष; (से १, २६; औप)। ४ सूर्य, रवि; (सिरि ५४७)। ५ मणि-विशेष, हंसगर्भ-नामक रत्न की एक-जाति; (पणण १—पत्र २६)। ६ छन्द का एक भेद; (पिंग)। ७ निर्लोभी राजा; ८ विष्णु; ९ परमेश्वर, परमात्मा; १० मत्सर; ११ मन्त्र-विशेष; १२ शरीर-स्थित वायु की चेष्टा-विशेष; १३ मेरु पर्वत; १४ शिव, महादेव; १५ अश्व की एक जाति; १६ श्रेष्ठ; १७ अगुआ; १८ विशुद्ध; १९ मन्त्र-वर्ण विशेष; (ह २, १८२)। २० पतंग, चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष; (अणु ३४)। °**गब्भ** पुं [°**गर्भ**] रत्न की एक जाति; (णाया १, १—पत्र ३१; १७—पत्र २२९; कप्प; उत्त ३६, ७७)। °**तूली** स्त्री [°**तूली**] बिछौने की गद्दी; (सुर ३, १८८; ६, १२८)। °**दीव** पुं [°**द्वीप**] द्वीप-विशेष; (पउम ५४, ४५)। °**लक्खण** वि [°**लक्षण**] १ शुक्ल, सफेद; (अंत)। २ विशद, निर्मल; (जं २)।

हंसय पुंन [**हंसक**] नूपुर; (पाअ; सुपा ३२७)।

हंसल पु [**दे**] आभूषण-विशेष; (अणु)। देखो **हांसल**।

हंसी स्त्री [**हंसा**] १ हंस पक्षी की मादा; (पाअ)। २ छन्द का एक भेद; (पिंग)।

हंसुलय पुं [**हंस**] अश्व की एक उत्तम जाति; (सम्मत्त २१६)।

हंहो अ [**हंहो**] इन अर्थों का सूचक अव्यय,—१ संबोधन, आमन्त्रण; (सुख २३, १; धर्मवि ५५; उप ५९७ टी)। २ तिरस्कार; (धम्म ११ टी)। ३ दर्प, गर्व; ४ दंभ, कपट; ५ प्रश्न; (हे २, २१७)।

हकुव न [**हकुव**] फल-विशेष; (अनु ५)।

हक्क सक [**नि+षिध्**] निषेध करना, निवारण करना। हक्कइ; (हे ४, १३४; षड्)। वकृ—**हक्कमाण**; (कुमा)।

हक्क सक [**दे**] हाँकना—१ पुकारना, आह्वान करना। २ प्रेरणा करना। ३ खदेड़ना। हक्कइ; (सुपा १८३)।

वकृ—**हक्कंत**; (सुर १५, २०३; सुपा ५३८)। कवकृ—**हक्किज्जंत**; (सुपा २५३)। संकृ—**हक्किय, हक्किउं, हक्किऊण**; (सुर २, २३१; सुपा २४८; महा)।

हक्का स्त्री [दे] हाँक—१ पुकार, बुलाहट, आह्वान; २ प्रेरणा; "धवलो धुरम्मि जुत्तो न सहइ उच्चारियं हक्कं" (वज्जा ३८; पिंग; सुपा १५१; सिरि ४१०; उप पृ ७८)।

हक्कार सक [आ+कारय्] पुकारना, आह्वान करना, बुलाना। हक्कारइ; (महा; भवि)। हक्कारह; (सुपा १८८)। कर्म—हक्कारिज्जंतु; (सुर १, १२६; सुपा २६१)। वकृ—**हक्कारेंत, हक्कारेमाण**; (सुर ३, ६८; णाया १, १८—पत्र २४०)। संकृ—**हक्कारिऊण, हक्कारेऊण**; (कुप्र ५; सुपा २२०)। प्रयो—हक्कारावइ; (सुपा ११८)।

हक्कार सक [दे] ऊँचे फैलाना। कर्म—हक्कारिज्जंति; (सिरि ४२४)।

हक्कार पुं [हाकार] १ युगलिकों के समय की एक दण्ड-नीति; (ठा ७—पत्र ३९८)। २ हाँकने की आवाज; (सुर १, २४६)।

हक्कारण न [आकारण] आह्वान, (स ३९४; कुप्र २१६)।

हक्कारिअ वि [आकारित] आहूत; (सुपा २६९; ओघ ६२२ टी; महा)।

हक्किअ वि [दे] हाँका हुआ—१ खदेड़ा हुआ, "हक्किओ करी" (महा); "जेण तओ पासत्थाइतेणासेणावि हक्किया सम्म" (सार्ध १०३), २ आहूत; (कुप्र १४१), ३ प्रेरित (सुपा २६१)। ४ उन्नत; (षड्)।

हक्किअ वि [निषिद्ध] निवारित; (कुमा)।

हक्कोद्ध वि [दे] अभिलषित; (दे ८, ६०)।

हक्खुत्त वि [दे] उत्पाटित, उठाया हुआ, उत्क्षिप्त; (दे ८, ६०; पउम ११७, ५; पाअ; स ६१४)।

हक्खुव सक [उत्+क्षिप्] १ ऊँचा करना, उठाना। २ फेंकना। हक्खुवइ, (हे ४, १४४), "तणुयरदेहो देवो हक्खुवइ व कि महासेलं" (विसे ६६५)।

हक्खुविअ वि [उत्क्षिप्त] उत्पाटित; (कुमा)।

हच्चा स्त्री [हत्या] वध, घात; (कुप्र १५७, धर्मवि १७)।

हट्ट पुं [हट्ट] १ आपण, बाजार; (गा ७९४; भवि)। २ दूकान; (सुपा ११; १८६)। °**गाई**, °**गावी** स्त्री [°गवी] व्यभिचारिणी स्त्री, कुलटा; (सुपा ३०१; ३०२)।

हट्टिगा } स्त्री [हट्टिका] छोटी दूकान; (मोह ९२;
हट्टी } सुपा १८६)।

हट्ठ वि [हृष्ट] १ हर्ष-युक्त, आनन्दित; २ विस्मित; (उवा; विपा १, १; औप; राय)। ३ नीरोग, रोग-रहित; "हट्ठेण गिलाणेण व अमुगतवो अमुगदिणम्मि नियमेणं कायव्वो" (पव ४—गाथा १९२)। ४ शक्ति-शाली जवान, समर्थ तरुण; (कप्प)। ५ दृढ, मजबूत; (ओघ ७५)।

°**हट्ठ** देखो **भट्ठ**; (गा ६५४ अ)।

हट्ठमहट्ठ वि [दे] १ नीरोग; २ दक्ष, चतुर; (दे ८, ६५)। ३ स्वस्थ युवा; (षड्)।

हड वि [दे. हृत] जिसका हरण किया गया हो वह; (दे ८, ५९; कप्प)।

हडक } (मा) देखा **हिअय**=हृदय; (प्राकृ १०५;
हडक्क } १०२; प्राप; नाट—मृच्छ ६१; पि ५०; १५०)।

हडप्प } पुं [दे] १ पात्र-विशेष, द्रम्म आदि का पात्र;
हडप्फ } २ ताम्बूल आदि का पात्र; (औप)। ३ आभरण का करण्डक; (णाया १, १ टी—पत्र ५७, ५८)।

हडहड पुं [दे] १ अनुराग, प्रेम; (दे ८, ७४; षड्)। २ ताप, (दे ८, ७४)।

हडहड पुं [हडहड] हड हड' आवाज; (सिरि ७७९)।

हडाहड वि [दे] अत्यर्थ, अत्यन्त; (विपा १, १—पत्र ५; णाया १, १६—पत्र १९९)।

हडि पुं [हडि] काष्ठ का बन्धन-विशेष, काठ की बेड़ी; (णाया १, २—पत्र ८६; विपा १, ६—पत्र ६६; औप, कम्म १, २३)।

हड्ड न [दे] हाड़, अस्थि; (दे ८, ५९; तंदु ३८; सुपा ३५५; श्रु १००)।

हढ पुं [हठ] १ बलात्कार; (पाअ; पणह १, ३—पत्र ४४; दे १, १९)। २ जल में होने वाली वनस्पति-विशेष, कुम्भी, जलकुम्भी, काई; "वायाइद्धो व्व हढो अट्ठिअप्पा भविस्ससि" (उत्त २२, ४४; सूअ २, ३, १८; पणण १—पत्र ३४)।

हण सक [हन्] १ वध करना। २ जाना, गति करना। हणइ, हणिया; (कुमा; आचा)। भूका—हणिंसु;

हणीअ; (आचा; कुमा)। भवि—हणिाहो; (कुमा)। कर्म—हणिज्जइ, हणिज्जए, हएणए, हम्मइ, हम्मइ; (हे ४, २४४; कुमा; प्रासू १६; आचा); भवि—हम्मिहिइ, हणिहिइ; (हे ४, २४४)। वकृ—हणंत; (आचा; कुमा)। कवकृ—हण्णु, हणिज्जमाण, हम्मंत, हम्ममाण; (सूअ १, २, २, ५; श्रा १४; सुर १, ६६; विपा १, २—पत्र २४; पि ५४०)। संकृ—हंता, हंतूण, हंतूणं, हत्तूण, हणिऊण, हणिअ; (आचा; प्रासू १४७; प्राकृ ३४; नाट)। हेकृ—हंतुं, हणिउं; (महा; उप पृ ४८)। कृ—हंतव्व; (से ३, ३; हे ४, २४४; आचा)।

हण सक [श्रु] सुनना। हणइ; (हे ४, ५८)।

हण वि [दे] दूर, अ-निकट; (दे ८, ५६)।

हण देखो हणण; "हणदहणपयणमारण—" (पउम ८, २३२)।

°हण देखो घण=घन, (गा ७१५; ८०१)।

हणण न [हनन] १ मारण, वध, घात; (सुपा २४५; सण)। २ विनाश; (पएह २, ५—पत्र १४८)। ३ वि. वध-कर्ता; स्त्री—°णी; (कुप्र २२)।

हणिअ वि [हत] जिसका वध किया गया हो वह; (श्रा २७; कुमा; प्रासू १६; पिंग)।

हणिअ देखो हण=हन्।

हणिअ वि [श्रुत] सुना हुआ; (कुमा)।

हणिद्द देखो हिंगिद; (गा ६६३)।

हणिर वि [हन्तृ] वध करने वाला; (सुपा ६०७)।

हणिहणि । अ [अहन्यहनि] १ प्रतिदिन, हमेशा; हणिंहणिं (पएह २, ३—पत्र १२२)। २ सर्वथा, सब तरह से; (पएह २, ५—पत्र १४८)।

हणु वि [दे] सावशेष, बाकी बचा हुआ; (दे ८, ५६; सण)।

हणु पुंस्त्री [हनु] चिबुक, होठ के नीचे का भाग, ठुड्डी, ठोढी, दाढी; (आचा; पएह १, ४—पत्र ७८)। °अ, °म, °मंत, °यंत पुं [°मत्] हनुमान, रामचन्द्रजी का एक प्रख्यात अनुचर, पवन तथा अञ्जनासुन्दरी का पुत्र; (पउम १, ५६; १७, १२१; ४७, २६; हे २, १४६; कुमा; प्राप्र; पउम १६, १५; ५६, २१)। °रुह, °रूह न [°रुह] नगर-विशेष; (पउम १, ६१; १७, ११८)। °व, °वंत देखो °म; (पउम ४७, २५; ५०, ६; उप पृ ३७६)।

हणुया स्त्री [हनुका] १ ठुड्डी, ठोढ़ी, दाढ़ी; (अनु ५)। २ दंष्ट्रा-विशेष, दाढ़ा-विशेष; (उवा)।

हणू स्त्री [हनू] देखो हणु; (पि ३९८; ३९९)।

हण्णु देखो हण=हन्।

हत्त देखो हय=हत; (पि १९४; ५६५)।

°हत्तरि देखो सत्तरि; (पि २६४)।

हत्तु वि [हर्तृ] हरण-कर्ता; (प्राकृ २०)।

हत्तूण देखो हण=हन्।

हत्थ वि [दे] १ शीघ्र, जल्दी करने वाला; (दे ८, ५९)। २ क्रिवि. जल्दी; (औप)।

हत्थ पुन [हस्त] १ हाथ; "अत्थित्तणेण हत्थ पसारियं जस्स करहेणं" (वज्जा १०६; आचा; कप्प, कुमा; द ६)। २ पु. नक्षत्र-विशेष; (सम १०; १७)। ३ चौवीस अगुल का एक परिमाण; ४ हाथी की सूँढ; (हे २, ४५; प्राप्र)। ५ एक जैन मुनि; (कप्प)। °कप्प न [°कल्प] नगर-विशेष; (णाया १, १६—पत्र २२६; पिंड ४६१)। °कम्म न [°कर्मन्] हस्त-क्रिया, दुश्चेष्टा-विशेष; (सूअ १, ९, १७; ठा ३, ४—पत्र १६२; सम ३९; कस)। °ताड, °ताल पुं [°ताड] हाथ से ताड़न; (राज, कस ४, ३ टि)। °पहेलिअ स्त्रीन [°प्रहेलिक] संख्या-विशेष, शीर्षप्रकम्पित को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (इक)। °प्पाहुड न [°प्राभृत] हाथ से दिया हुआ उपहार; (दे ८, ७३)। °मालय न [°मालक] आभरण-विशेष; (औप)। °लहुत्तण न [°लघुत्व] १ हस्त-लाघव; २ चोरी; (पएह १, ३—पत्र ४३)। °सीस न [°शीर्ष] नगर-विशेष; (णाया १, १६—पत्र २०८)। °भरण न [°भरण] हाथ का गहना; (भग)। °याल पुं [°ताड] देखो °ताड; (कस)। °लंब पु [°लम्ब] हाथ का सहारा, मदद; (से १, १६; सुर ४, ७१; कस)।

हत्थंकर पुं [हस्तङ्कर] वनस्पति-विशेष; (आचा २, १०, २)।

हत्थंदु } पुन [हस्तान्दुक] हाथ बाँधने का काठ हत्थंदुय } आदि का बन्धन-विशेष; (पिंड ५७३; विपा १, ६—पत्र ६६)।

हत्थच्छुहणी स्त्री [दे] नव-वधू, नवोढ़ा; (दे ८, ६५)।

हत्थड (अप) देखो **हत्थ**; (हे ४, ४४५; पि ५९९) ।

हत्थल पु [**दे**] १ क्रीड़ा के लिए हाथ में ली हुई चीज; २ वि. हस्त-लोल, चञ्चल हाथ वाला; (दे ८, ७३) ।

हत्थल वि [**हस्तल**] १ खराब हाथ वाला; २ पुं. चोर, तस्कर; (पण्ह १, ३—पत्र ४३) ।

हत्थलिज्ज देखो **हत्थिलिज्ज**; (राज) ।

हत्थउल्ल वि [**दे**] क्रीड़ा से हाथ में लिया हुआ; (दे ८, ६०) ।

हत्थलिअ वि [**दे**] हस्तापसारित, हाथ से हटाया हुआ; (दे ८, ६४) ।

हत्थल्ली स्त्री [**दे**] हस्त-वृसी, हाथ में स्थित आसन-विशेष; (दे ८, ६१) ।

हत्थार न [**दे**] सहायता, मदद; (दे ८, ६०) ।

हत्थारोह पुं [**हस्त्यारोह**] हस्तिपक, हाथी का महावत; (विपा १, २—पत्र २३) ।

हत्थावार न [**दे**] सहायता, मदद; (भवि) ।

हत्थाहत्थि स्त्री [**हस्ताहस्तिका**] हाथोहाथ, एक हाथ से दूसरे हाथ; (गा १७९) ।

हत्थाहत्थि अ. ऊपर देखो; (गा २२९; ५८१; पुप्फ ४९३) ।

हत्थि पुंस्त्री [**हस्तिन्**] १ हाथी; (गा ११६; कुमा; अभि १८७); स्त्री—°**णी**; (णाया १, १—पत्र ६३)। २ पुं. नृप-विशेष; (ती १४) । °**आरोह** पु [°**आरोह**] हाथी का महावत; (धर्मवि १९) । °**कण्ण**, °**कन्न** पुं [°**कर्ण**] १ एक अन्तर्द्वीप; २ वि. उसका निवासी मनुष्य. (इक; ठा ४, २—पत्र २२६) । °**कप्प** न [°**कल्प**] देखो **हत्थ-कप्प**; (राज) । °**गुलगुलाइय** न [°**गुल-गुलायित**] हाथी का शब्द-विशेष; (राय) । °**णागपुर** न [°**नागपुर**] नगर-विशेष, हस्तिनापुर; (उप ६४८ टी; सण) । °**तावस** पुं [°**तापस**] बौद्ध साधु-विशेष, हाथी को मार कर उसके मांस से जीवन-निर्वाह करने के सिद्धान्त वाला संन्यासी; (औप; सूअनि १९०) । °**नायपुर** देखो °**नागपुर**; (भवि) । °**पाल** पुं [°**पाल**] भगवान् महावीर के समय का पावापुरी का एक राजा; (कप्प) । °**पिप्पली** स्त्री [°**पिप्पली**] वनस्पति-विशेष; (उत्त ३४, ११) । °**मुह** पु [°**मुख**] १ एक अन्तर्द्वीप; २ वि. उसका निवासी मनुष्य; (ठा ४, २—पत्र २२६; इक) । °**रयण** न [°**रत्न**] उत्तम हाथी; (औप) । °**राय** पुं [°**राज**] उत्तम हाथी; (सुपा ४२९) । °**वाउय** पुं [°**व्यापृत**] महावत; (औप) । °**वाल** देखो °**पाल**; (कप्प) । °**विजय** न [°**विजय**] वैताढ्य की उत्तर श्रेणि का एक विद्याधर-नगर; (इक) । °**सीस** न [°**शीर्ष**] एक नगर, जो राजा दमदन्त की राजधानी थी; (उप ६४८ टी) । °**सुंडिया** देखो °**सोंडिगा**; (राज) । °**सोंड** पुं [°**शौण्ड**] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष; (पगण १—पत्र ४५) । °**सोंडिगा** स्त्री [°**शुण्डिका**] आसन-विशेष; (ठा ५, १ टी—पत्र २९९) ।

हत्थिअवक्खु न [**दे**] वक्र अवलोकन; (दे ८, ६५) ।

हत्थिच्चग वि [**हस्तीय, हस्त्य**] हाथ का, हाथ-सबन्धी; (पिंड ४२४) ।

हत्थिणउर, **हत्थिणपुर**, **हत्थिणाउर**, **हत्थिणापुर** न [**हस्तिनापुर**] नगर-विशेष; (ठा १०—पत्र ४७७, सुर १०, १५५; महा; गउड; सुर १, ६४; नाट—शकु ७४; अंत) ।

हत्थिणी देखो **हत्थि** ।

हत्थिमल्ल पु [**दे**] इन्द्र-हस्ती, ऐरावण हाथी; (दे ८, ६३) ।

हत्थियार न [**दे**] १ हथियार, शस्त्र; (धर्मसं १०२२; ११०४, भवि) । २ युद्ध, लडाई; "ता उट्ठेहि सयं करेहि हत्थियार ति", "देव, कोइसं देवेण सह हत्थियार-करणं" (स ६३७; ६३८) ।

हत्थिलिज्ज न [**हस्तिलीय**] एक जैन-मुनि-कुल; (कप्प)।

हत्थिवय पुं [**दे**] ग्रह-भेद; (दे ८, ६३) ।

हत्थिहरिल्ल पुं [**दे**] वेष; (दे ८, ६४) ।

हत्थुत्तरा स्त्री [**हस्तोत्तरा**] उत्तरफाल्गुनी नक्षत्र; (कप्प) ।

हत्थुल्ल देखो **हत्थ**, (हे २, १६४; षड्) ।

हत्थोडी स्त्री [**दे**] १ हस्ताभरण, हाथ का आभूषण; २ हस्त-प्राभृत, हाथ से दिया जाता उपहार; (दे ८, ७३)।

हथलेव पुं [**दे**] हस्त-ग्रहण, पाणि-ग्रहण; (सिरि १५८)।

हद देखो **हय**=हत; (प्राप्र; प्राकृ १२) ।

हद, **हद्द** पु [**दे**] बालक का मल-मूत्रादि; (पिंड ४७१)।

हद्धय पुं [**दे**] हास, विकास; (दे ८, ६२) ।

हद्धि, **हद्धी** अ [**हाधिक्**] १ खेद; २ अनुताप; (प्राकृ ७९; षड्; स्वप्न ६१; नाट—शकु ६६; हे २, १९२)।

हमार (अप) वि [**अस्मदीय**] हमारा, हमसे संबन्ध रखने वाला; (पिंग)।

हमिर देखो **भमिर**; (पि १८८)।

हम्म सक [**हन्**] वध करना। हम्मइ; (हे ४, २४४; कुमा; सक्षि ३४; प्राकृ ६८)।

हम्म सक [**हम्म्**] जाना। हम्मइ; (हे ४, १६२)।

हम्म न [**हर्म्य**] क्रीडा-गृह; (से ६, ४३)।

हम्म° देखो **हण**=हन्।

हम्मार देखो **हमार**; (पिंग)।

हम्मिअ वि [**हम्मित**] गत, गया हुआ; (स ७४३)।

हम्मिअ न [**दे हर्म्य**] गृह, प्रासाद, महल; (दे ८, ६२; पात्र; सुर ६, १५०; आचा २, २, १, १०)।

हम्मीर पुं [**हम्मीर**] विक्रम की तेरहवीं शताब्दी का एक मुसलमान राजा; (ती ५; हम्मीर २७; पिंग)।

हय वि [**हत**] जो मारा गया हो वह; (औप; से २, ११; महा)। °**माकोड** पुं [°**मत्कोट**] एक विद्याधर-नरेश, (पउम १०, २०)। °**स** वि [°**श**] निराश; (पउम ६१, ७४; गा २८१; हे १, २०६; २, १६५; (उव)।

हय पुं [**हय**] अश्व, घोडा; (औप; से २, ११; कुमा)। °**कंठ** पु [°**कण्ठ**] रत्न-विशेष, अश्व के कठ जितना बड़ा रत्न; (राय ६७)। °**कण्ण**, °**कन्न** पुं [°**कर्ण**] १ एक अन्तर्द्वीप; २ वि. उसका निवासी मनुष्य; (इक; ठा ४, २—पत्र २२६)। ३ एक अनार्य देश; (पव २७४)। °**मुह** पु [°**मुख**] १ एक अन्तर्द्वीप; (इक)। २ एक अनार्य देश; (पव २७४)।

हय देखो **हिअ**=हृत, (महा; भवि, राय ४४)।

हय देखो **हर**=ह्रद। °**पोंडरीय** पुं [°**पुण्डरीक**] पक्षि-विशेष; (पराह १, १—पत्र ८)।

°**हय** देखो **भय**, (गा ३८०)।

हयमार पुं [**दे. हतमार**] कणेर का गाछ; (पात्र)।

हर सक [**हृ**] १ हरण करना, छीनना। २ प्रसन्न करना, खुश करना। हरइ; (हे ४, २३४; उव; महा)। कर्म—हरिज्जइ, हीरइ, हरीअइ हीरिज्जइ, (हे ४, २५०; धात्वा १५७)। वकृ—हरंत; (पि ३९७)। कवकृ—**हीरंत**, **हीरमाण**, (गा १०५; सुर १२, १११; सुपा ६३५)। संकृ—**हरिऊण**; (महा)। हेकृ—**हरिउं**; (महा)। कृ—**हिज्ज**, **हेज्ज**; (पिंड ४४९; ४५३)।

हर सक [**ग्रह्**] ग्रहण करना, लेना। हरइ; (हे ४, २०९)।

हर सक [**ह्राद्**] आवाज करना। °हरइ; (से ५, ७१)।

हर पुं [**हर**] १ महादेव, शंकर; (सुपा ३६३; कुमा; पड्; हे १, ५१; गा ६८७; ७६४)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**मेहल** न [°**मेखल**] कला-विशेष; (सिरि ५६)। °**वल्लहा** स्त्री [°**वल्लभा**] गौरी, पार्वती; (सुपा ५९७)।

हर पु [**ह्रद**] द्रह, बड़ा जलाशय; (से ६, ६५)।

हर देखो **घर**=गृह; "ता वच्च पहिय मा मग्ग वासयं एत्थ मज्झ हरे" (वज्जा १००; कुमा; सुपा ३६३; हे २, १४४)।

°**हर** देखो **धर**=धृ। कृ—**हरेअव्व**; (से ६, ३)।

°**हर** देखो **भर**=भर; (पउम १००, ५४; सुपा ४३२)।

°**हर** वि [°**हर**] हरण-कर्ता; (सण)।

°**हर** वि [°**धर**] धारण करने वाला; (गा ३१५; ३६५)।

हरअई } स्त्री [**हरीतकी**] १ हर्रे का गाछ; २ फल-**हरडई** } विशेष, हर्रे; (पड्; हे १, ९९; कुमा)।

हरण न [**हरण**] १ छीनना; (सुपा १८; ४३६; कुमा)। २ वि. छीनने वाला, (कुप्र ११४; धर्मवि ३)।

हरण न [**ग्रहण**] स्वीकार; (कुमा)।

हरण न [**स्मरण**] स्मृति; याद;

"अलिअकुविअपि कअमंतुअंव मं जेसु सुहअ अणुणंता।
ताण दिअहाण हरणे रुआमि, ण उणो अहं कुविआ"
(गा ९४१)।

°**हरण** देखो **भरण**; (गा ५२७ अ)।

हरतणु पु [**हरतनु**] खेत में बोये हुए गेहूँ, जौ आदि के बालों पर होता जल-बिन्दु; (कप्प; चेइय ३७३; जी ५)।

हरद देखो **हरय**; (भग)।

हरपच्चुअ वि [**दे**] १ स्मृत, याद किया हुआ; २ नाम के उद्देश से दिया हुआ; (दे ८, ७४)।

हरय पुं [**ह्रद**] बड़ा जलाशय, द्रह; (आचा; भग; पराह २, ५—पत्र १४९, उत्त १२, ४५; ४६; हे २, १२०)।

हरहरा स्त्री [**दे**] युक्त प्रसङ्ग, योग्य अवसर, उचित प्रस्ताव;

"निद्धूमगं च गामं महिलाथूभ च सुराणयं दट्ठुं।
नीयं च काया ओलिंति जाया भिक्खस्स हरहरा"
(विसे २०६४)।

हरहराइय न [**हरहरायित**] 'हर हर' आवाज; (पण्ह १, ३—पत्र ४५)।

हराविअ वि [**हारित**] हराया हुआ, जिसका पराभव किया गया हो वह; (हे ४, ४०६)।

हरि पुं [**दे. हरि**] शुक, तोता; (दे ८, ५६)।

हरि पुं [**हरि**] १ विद्युत्कुमार-देवों का दक्षिण दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८४)। २ एक महाग्रह; (ठा २, ३—पत्र ७८)। ३ इन्द्र, देव-राज; (कुमा; कुप्र २३; सम्मत्त २२६; श्रु ८६)। ४ विष्णु, श्रीकृष्ण; (गा ४०६; ४११; सुपा १४३)। ५ रामचन्द्र; (से ६, ३१)। ६ सिंह, मृगेन्द्र; (से ६, ३१; कुमा; कुप्र ३४६)। ७ वानर, बन्दर; (से ४, २५; ६, २२; धर्मवि ५१; सम्मत्त २२२)। ८ अश्व, घोडा; (उप १०३१ टी; ती ८; कुप्र २३; सुख ४, ६)। ९ भरत के साथ जैन दीक्षा लेने वाला एक राजा; (पउम ८५, ४)। १० ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक योग; "गुरुहरिविट्ठे गंडविइवाए" (सबोध ५४)। ११ छन्द का एक भेद; (पिंग)। १२ सर्प, साँप; १३ भेक, मण्डूक; १४ चन्द्र; १५ सूर्य; १६ वायु, पवन; १७ यम, जमराज; १८ हर, महादेव; १९ ब्रह्मा; २० किरण; २१ वर्ष-विशेष; २२ मयूर, मोर; २३ कोकिल, कोयल; २४ भर्तृहरि-नामक एक विद्वान; २५ पीला रँग; २६ पिंगल वर्ण; २७ हरा रँग; २८ वि. पीत वर्ण वाला; २९ पिंगल वर्ण वाला; (हे ३, ३८)। ३० हरा वर्ण वाला; "हरिमणिसरिच्छछाणिअरुइ—" (अच्चु ३२)। ३१ पुन. महाहिमवंत पर्वत का एक शिखर; (ठा ८—पत्र ४३६)। ३२ विद्युत्प्रभ पर्वत का एक शिखर; (ठा ९; इक)। ३३ निषध पर्वत का एक शिखर; (ठा ९—पत्र ४५४; इक)। ३४ हरिवर्ष-क्षेत्र का मनुष्य-विशेष; (कप्प)। °अंद पु [°श्चन्द्र] स्व-नाम-प्रसिद्ध एक राजा; (हे २, ८७; षड्; गउड; कुमा)। °अंदण न [°चन्दन] १ चन्दन की एक जाति; (से ७, ३७; गउड; सुर १६, १४)। २ पुं. एक तरह का कल्पवृक्ष; (सुपा ८७; गउड)। देखो °चंदण। °अण्ण देखो °अंद; (सत्ति १७)। °आल पुंन [°ताल] १ पीत वर्ण वाली उपधातु-विशेष, हरताल; (णाया १, १—पत्र २४; जी ३; पव १५५; कुमा; उत्त ३४, ८; ३६, ७५)। २ पुं. पक्षि-विशेष; (हे २, १२१)। देखो °ताल। °एस पुं [°केश] १ चंडाल; (ओघ ७६६; सुख ६, १; महा)। २ एक चण्डाल मुनि; (उत्त १२)। °एसबल पुं [°केशबल] चाण्डाल-कुलोत्पन्न एक मुनि; (उव; उत्त १२, १)। °एसिज्ज वि [°केशीय] १ चण्डाल-संबन्धी; २ हरिकेशबल-नामक मुनि का; (उत्त १२)। °कंखि न [°काङ्क्षिन्] नगर-विशेष; (ती २७)। °कंत पुं [°कान्त] विद्युत्कुमार देवों का दक्षिण दिशा का इन्द्र; (इक)। °कंतपवाय, °कंतप्पवाय पुं [°कान्ताप्रपात] एक द्रह; (ठा २, ३—पत्र ७२; टी—पत्र ७५)। °कंता स्त्री [°कान्ता] १ एक महा-नदी; (ठा २, ३—पत्र ७२; सम २७; इक)। २ महाहिमवान् पर्वत का एक शिखर; (इक; ठा ८—पत्र ४३६)। °केलि पु [°केलि] भारतीय देश-विशेष; (कप्पू)। °केसबल देखो °एसबल; (कुलक ३१)। °केसि पुं [°केशिन्] एक जैन मुनि; (श्रु १४०)। °गीअ न [°गीत] छन्द का एक भेद; (पिंग)। °ग्गीव पुं [°ग्रीव] राक्षस-वंश का एक राजा; (पउम ५, २६०)। °चंद पु [°चन्द्र] १ विद्याधर-वंश का एक राजा; (पउम ५, ४४)। २ एक विद्याधर-कुमार; (महा)। °चंदण पुं [°चन्दन] १ एक अन्तकृद् जैन मुनि; (अंत १८)। २ देखो °अंदण; (प्रासू १४५; स ३४६)। °णयर न [°नगर] वैताढ्य की दक्षिण-श्रेणि मे स्थित एक विद्याधर-नगर; (इक)। °ताल पुं [°ताल] द्वीप-विशेष; (इक)। देखो °आल। °दास पुं [°दास] एक वणिक् का नाम; (पउम ५, ८३)। °धणु न [°धनुष्] इन्द्र-धनुष; (उप ५९७ टी)। °पुरी स्त्री [°पुरी] इन्द्र-पुरी, अमरावती, स्वर्ग; (सुपा ६३५)। °भद्द पुं [°भद्र] एक सुविख्यात जैन आचार्य तथा ग्रन्थकार; (चेइय ३४; उप १०३९; सुपा १)। °मंथ पु [°मन्थ] धान्य-विशेष, काला चना; (श्रा १८; पव १५६; संबोध ४३)। °मेला स्त्री [°मेला] वृक्ष-विशेष; (औप)। °वइ पु [°पति] वानर-पति, सुग्रीव; (से १, १६)। °वंस पुं [°वंश] एक सुप्रसिद्ध क्षत्रिय-कुल; (कप्प; पउम ५, २)। °वस्स; °वास पु [°वर्ष] १ क्षेत्र-विशेष; (अणु १६१; ठा २, ३—पत्र ६७; सम १२; पउम १०२, १०६; इक)। २ पुंन. महाहिमवान पर्वत का एक शिखर; (ठा ८—पत्र ४३६)। ३ निषध पर्वत का एक शिखर; (ठा ९—पत्र ४५४; इक)। °वाहण पुं

[°वाहन] १ मथुरा एक राजा; (पउम १२, २)। २ नन्दीश्वर द्वीप के अपरार्ध का अधिष्ठाता देव; (जीव ३, ४)। °सह देखो °स्सह; (राज)। °सेण पुं [°षेण] १ दशवाँ चक्रवर्ती राजा; (सम ६८; १५२)। २ भगवान् नमिनाथजी का प्रथम श्रावक; (विचार ३७८)। °स्सह पु [°सह] १ विद्युत्कुमार-देवों का दक्षिण दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्न ८४; इक)। २ माल्यवन्त पर्वत का एक शिखर; (ठा ६—पत्न ४५४)।

हरि पुं [हरित्] १ हरा रँग, वर्ण-विशेष; २ वि. हरा रँग वाला; (णाया १, १६—पत्न २२८)। ३ स्त्री. एक महा-नदी; (सम २७; इक; ठा २, ३—पत्न ७२)। ४ षड्ज ग्राम की एक मूर्च्छना; (ठा ७—पत्न ३६३)। °पवात, °प्पवाय पुं [°प्रपात] एक द्रह, जहाँ से हरित् नदी निकलती है; (ठा २, ३—पत्न ७२; टी—पत्न ७५)।

हरि° देखो हिरि°; (भग; पि ६८; उत्त ३२, १०३)।

हरिअ पु [हरित] १ वर्ण-विशेष, हरा रँग; २ वि. हरा वर्ण वाला; (औप; णाया १, १ टी—पत्न ४; १, ७—पत्न ११६, से ८, ४६; गा ६६५)। ३ पु. एक आर्य मनुष्य-जाति; (ठा ६—पत्न ३५८)। ४ पुंन. वनस्पति-विशेष, हरा तृण, सब्जी; (पराण १—पत्न ३०; औप, पाअ; पच २, ५०; दस १०, ३)।

हरिअ देखो हिअ=हृत; (कस, महा)।

°हरिअ देखो भरिअ=भरित, (गा ६३२)।

हरिअग } न [हरितक] जीरा आदि के पत्तों से बना
हरिअय } हुआ भोज्य-विशेष; (पव २५६, सुज २० टी)।

हरिआ स्त्री [हरिता] दूर्वा, दूब, तृण-विशेष; (से ७, ५६; ६, ३१)।

हरिआ देखो हिरी; (कुमा)।

हरिआल देखो हरि-आल।

हरिआली स्त्री [दे. हरिताली] दूर्वा, दूब; (दे ८, ६४; पाअ; अत, कप्प; अणु २३)।

हरिएस देखो हरि-एस।

हरिचंदण देखो हरि-चंदण।

हरिचंदण न [दे. हरिचन्दन] कुङ्कुम, केसर; (दे ८, ६५)।

हरिडय पु [हरितक] कोंकण देश-प्रसिद्ध वृक्ष-विशेष; (पराण १—पत्न ३१)।

हरिण पुं [हरिण] १ हिरन, मृग, (कुमा)। २ छन्द का एक भेद; (पिंग)। °च्छी स्त्री [°क्षी] सुन्दर नेत्र वाली स्त्री; (कप्पू)। °रि पुं [°रि] सिंह; (उप पृ २६)। °हिव पुं [°धिप] वही; (हे ३, १८०)।

हरिणंक पुं [हरिणाङ्क] चन्द्र, चाँद; (हे ३, १८०; कप्पू; सण)।

हरिणंकुस पुं [हरिणाङ्कुश] चौथे बलदेव के गुरू एक जैन मुनि; (पउम २०, २०५)।

हरिणगवेसि देखो हरिणेगमेसि; (पउम ३, १०४)।

हरिणी स्त्री [हरिणी] १ मादा हिरन, हिरनी; (पाअ)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)।

हरिणेगमेसि पुं [हरिनैगमैषिन्] शक्र के पदाति-सैन्य का अधिपति देव; (ठा ५, १—३०२; अंत ७; इक)।

हरिद्दा देखो हलिद्दा; (पि ३७५)।

हरिमंथ पुं [दे] काला चना, अन्न-विशेष; (श्रा १८; पव १५६, सबोध ४३; दे ८, ७० टि)। देखो हिरिमंथ।

हरिमिग्ग पुं [दे] लगुड, लट्ठी, डंडा; (दे ८, ६३)।

हरिली देखो हिरिली; (उत्त ३६, ६८)।

°हरिल्ल वि [°भरवत्] भार वाला, बोझ वाला; (गा ५४५)।

हरिस अक [हृष्] खुशी होना। हरिसइ; (हे ४, २३५; प्राप्र; पड्), "हरिसिज्जइ कयतावो रुद्दज्झाणोवगयचित्तो" (सबोध ४६)।

हरिस सक [हृष्] हर्ष से रोम खड़ा करना। "लोमादियं पि ण हरिसे सुन्नागारगओ मुणी" (सूअ १, २, २, १६)।

हरिस पुं [हर्ष] १ सुख; २ आनन्द, प्रमोद, खुशी, (हे २, १०५; प्राप्र; कुमा; भग)। ३ आभूषण-विशेष; (औप)। °उर पुं [°पुर] एक जैन गच्छ; (सुपा ६५८)। °ल वि [°वत्] हर्ष-युक्त; (प्राकृ ३५)।

हरिसण पुं [हर्षण] ज्योतिष-प्रसिद्ध एक योग; (सुपा १०८)।

हरिसाइय वि [हर्षित] हर्ष-प्राप्त, (पउम ६१, ७२)।

हरिसाल देखो हरिस-ल=हर्ष-वत्।

हरिसिअ वि [हर्षित] हर्ष-प्राप्त, आनन्दित; (औप; भवि; महा; सण)।

हरी देखो हिरी; (सूअ १, १३, ६; भग)।

हरीडई देखो हरडई; (प्राकृ १२)।

हरे अ [अरे] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ दोष,

निन्दा; २ संभाषण; ३ रति-कलह; (हे २, २०२; कुमा; स ४३०; पि ३३८)।

हरेडगी देखो **हरीडई**; (पचा १०, २५)।

हरेणुया स्त्री [**हरेणुका**] प्रियंगु, मालकाँगनी; (उत्तनि३)।

हरेस सक [**ह्रेष्**] गति करना; (नाट—वेणी ६७)।

हल न [**हल**] हर, जिससे खेत जोतते हैं; (उवा; औप)। °**उत्तय** पुंन [°**युक्तक**] हल जोतना; "असुभे समयम्मि कओ तेणं हलउत्तओ खित्ते" (सुपा २३७; २३६; सुर २, ७७)। °**कुड्डाल**, °**कुद्दाल** पुं [°**कुद्दाल**] हल के ऊपर का भाग; (उवा)। °**धर** पुं [°**धर**] बलदेव, राम; (पराण १७—पत्र ५२६; दे २, ५५)। °**धारण** पुं [°**धारण**] बलभद्र, राम; (पउम ११७, ६)। °**वाहग** वि [°**वाहक**] हालिक, हल जोतने वाला; (श्रा २३)। °**हर** देखो °**धर**; (सम ११३; पव—गाथा ४८; औप; कुप्र २५७)। °**ाउह** पुं [°**ायुध**] बलभद्र, राम; (पउम ३८, २३, ७६, २६)।

°**हल** देखो **फल**=फल; (सुपा ३६६; भवि; ति १०३)।

हलअ (मा) देखो **हिअय**=हृदय; (चारु ११; नाट—मृच्छ २१)।

हलउत्तय देखो **हल-उत्तय**।

हलद्दा, **हलद्दी** } देखो **हलिद्दा**; (हे १, ८८, कुमा; षड्)।

हलप्प वि [**दे**] बहु-भाषी, वाचाल; (दे ८, ६१)।

हलबोल पुं [**दे**] कलकल, शोरगुल, कोलाहल, (दे ८, ६४; पाअ, कुमा; सुपा ८७; १३२; सट्टि १४०; कुप्र ३६२; सिरि ४३३; सम्मत्त १२२)।

हलहर देखो **हल-हर**=हल-धर।

हलहल देखो **हडहड**=(दे); (गा २१)।

हलहल, **हलहलअ** } पुन [**दे**] १ तुमुल, कोलाहल, शोरगुल; (दे ८, ७४; से १२, ८६)। २ कौतुक, कुतूहल; (दे ८, ७४; स ७०४)। ३ त्वरा, हड़बड़ी, हलफल, शीघ्रता: "हलहलओ तरा" (पाअ; स ७०४)। ४ औत्सुक्य, उत्कंठा; (गा २१; ७८०)।

हलहलिअ वि [**दे**] कम्पित, काँपा हुआ; (पिंग)।

हला अ [**हला**] सखी का आमन्त्रण, हे सखि; (हे २, १६५; स्वप्न ४०; अभि २६; कुमा; गा ४३०; सुपा ३४६)।

हलाहल न [**हलाहल**] एक जातका उग्र जहर, विष-विशेष; (प्रासू ३८)।

हलाहला स्त्री [**दे**] बंभणिका, बाम्हनी, जन्तु-विशेष; (दे ८, ६३)।

हलि पुं [**हलिन्**] बलराम, बलभद्र; (पउम ७०, ३५; कुप्र १०१)।

हलिअ वि [**हालिक**] हल जोतने वाला, कृषक, (हे १, ६७; पाअ; प्राप्र; गा १०७; ३१७; ३६०)।

°**हलिअ** देखो **फलिअ**; (गा ६)।

हलिआ स्त्री [**हलिका**] १ छिपकली; २ बाम्हनी, जन्तु-विशेष; (कप्प)।

हलिआर देखो **हरि-आल**=हरि-ताल; (हे २, १२१; षड्)।

हलिद्द पु [**हरिद्र**, **हारिद्र**] १ वृक्ष-विशेष; (हे १, २५४; गा ८६३)। २ वर्ण विशेष, पीला रँग; ३ न. नाम-कर्म का एक भेद, जिसके उदय से जीव का शरीर हल्दी के समान पीला होता है वह कर्म, (कम्म १, ४०)। °**पत्त** पु [°**पत्र**] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति; (पराण १—पत्र ४६)। °**मच्छ** पुं [°**मत्स्य**] मछली की एक जाति, (पराण १—पत्र ४७)।

हलिद्दा, **हलिद्दी** } स्त्री [**हरिद्रा**] ओषधि-विशेष, हल्दी; (हे १, ८८; २५४: गा ५८; ८०; २४६)।

हलीसागर पुं [**हलिसागर**] मत्स्य की एक जाति; (पराण १—पत्र ४७)।

हलुअ वि [**लघुक**] हलका; (हे २, १२२: स ७४५)।

हलूर वि [**दे**] स-तृष्ण, सस्पृह; (दे ८, ६२)।

हले अ [**हले**] हे सखि, सखी का संबोधन; (हे २, १९५, कुमा)।

हल्ल अक [**दे**] हिलना, चलना। हल्लंति; (सट्टि ६८)। वकृ—**हल्लंत**; (उवकु २१; सुपा ३४. २२३; वज्जा ४०; से ८, ४५)।

हल्ल पु [**हल्ल**] एक अनुत्तर-गामी जैन मुनि, (अनु २; पडि)।

हल्लअ न [**हल्लक**] पद्म-विशेष, रक्त कह्लार· (विक्र २३)।

हल्लप्फलिअ वि [**दे**] त्वरित, शीघ्र, (षड्)।

हल्लप्फल न [**दे**] १ हलफल, हड़बड़ी, औत्सुक्य, त्वरा, शीघ्रता; (हे २, १७४; स ६०२; कुमा)। २ आकुलता; "अह उवसंते करिणो हल्लप्फलए" (सुपा

६३९)। ३ वि. कम्पनशील, काँपता, चञ्चल; "पासट्ठिओ-वि दीवो सहसा हल्लप्फलो जाओ" (वज्जा ६६)।
हल्लप्फलिअ वि [दे] १ शीघ्र, जल्दी; २ न. आकुलता, व्याकुलपन; (दे ८, ५९)। ३ वि. व्याकुल; (धर्मवि ५६)।
हल्लफल देखो हल्लप्फल; (गा ७९)।
हल्लफलिअ देखो हल्लप्फलिअ; "विमलो आह लोहेया, तो हल्लफलिओ इमं" (श्रा १२)।
हल्लाविय वि [दे] हिलाया हुआ; (सुर ३, १०९)।
हल्लिअ वि [दे] हिला हुआ, चलित; (दे ८, ६२; भवि)।
हल्लिर वि [दे] चलन-शील, हिलने वाला, (स ५७८; कुप्र २५१)।
हल्लीस पुं [दे] रासक, मण्डलाकार हो कर स्त्रियों का नाच; (दे ८, ६१; पाअ)।
हल्लुत्ताल } न [दे] शीघ्रता, जल्दी, त्वरा; गुजराती
हल्लुत्तावल } में 'उतावळ'; (भवि; सुर १५, ८८)।
हल्लुप्फलिय देखो हल्लप्फलिअ; (जय १२)।
हल्लोहल देखो हल्लप्फल. (उप पृ ७७; श्रा १६, हे ४, ३९६; उप ७२८ टी; सुपा १८, ३७; महा; भवि)।
हल्लोहलिअ देखो हल्लप्फलिअ; (सिरि ६६४; ९३४; भवि)।
हल्लोहलिय पुस्त्री [दे] सरट, गिरगिट; स्त्री—°या; (कप्प)।
हव अक [भू] १ होना। २ सक. प्राप्त करना। हवइ, हवेइ, हवंति; (हे ४, ६०; कप्प; उव; महा; ठा ३, १—पत्र १०६); "किं इक्खुवाडमज्झट्ठिओ नलो हवइ महुरत्तं" (धर्मवि १७), हवेज्ज, हवेज्जा; (पि ४७५)। वकृ—हवंत, हवेमाण; (पड)।
°हव देखो भव=भव; (उप ४९४)।
हवण न [हवन] होम; (विसे १५९२)।
हवि पुंन [हविस्] १ घृत, घी; २ हवनीय वस्तु. (स ९; ७१४; दसनि १, १०४)।
हविअ वि [दे] म्रक्षित. चुपड़ा हुआ; (दे ५, २२; ८, ६२)।
हव्व वि [हव्य] हवनीय पदार्थ, होम-योग्य वस्तु; (सुपा १६३)। °वह पुं [°वह] अग्नि, आग; (उप ५९७ टी; सुपा ४१६; गउड)। °वाह पुं [°वाह] वही; (आचा; पाअ; सम्मत्त २२८; वेणी १९२; दस ६, ३५)।
हव्व वि [अर्वाच्] १ अवर, पर से अन्य; "नो हव्वाए नो पाराए" (आचा; सूअ २, १, १; ८; १०; १६; २४; २८; ३३)। २ न. शीघ्र, जल्दी; (णाया १, १—पत्र ३१; उवा; सम ५६; विपा १, १—पत्र ८; ती १०; औप; कप्प; कस)।
°हव्व देखो भव्व=भव्य; (गा ३९०; ४२०; ४७६)।
हस अक [हस्] १ हँसना, हास्य करना। २ सक. उपहास करना, मजाक करना। हसइ, हसेइ, हसए, हसंति, हससि, हससे, हसित्था, हसह, हसामि, हसमि, हसामो, हसामु, हसाम, हसेम, हसेमु; (हे ३, १३९; १४०; १४१; १४२; १४३; १४४; १५४; १५८; कुमा)। हसेउ, हसंतु, हससु, हसेज्जसु, हसेज्जहि, हसेज्जे, हसेज्जं, हसेज्जा; (हे ३, १५८; १७३; १७५; १७६)। भवि—हसिहिइ, हसिस्सामो, हसिहिमो, हसिहिस्सा; हसिहित्था, हसिस्सं; (हे ३, १६६; १६७; १६८; १६९)। कर्म—हसीअइ, हसिज्जइ, हसिज्जति; (हे ३, १६०; १४२)। वकृ—**हसंत, हसेंत, हसमाण**; (औप; हे ३, १५८; १८१; षड्)। कवकृ—**हसिज्जंत, हसीअंत, हसीअमाण, हसिज्जमाण, हसेज्जमाण**; (हे ३, १६०; उप ५९७ टी; सुर १४, १८०)। संकृ—**हसिऊण, हसेऊण, हसिउआण, हसिउआणं, हसेउआण, हसेउआणं, हसिऊणं**; (हे ३, १५७; पि ५८४; ५८५)। हेकृ—**हसिउं, हसेउं**; (हे ३, १५७)। कृ—**हसिअव्व, हसेअव्व, हसणीअ**; (पण्ह २, ५—पत्र १४९; हे ३, १५७; षड्; संक्षि ३४; नाट—मृच्छ ११४)।
हस अक [ह्रस्] हीन होना, कम होना। हसइ; (पंच ५, ५३)।
हस पुं [हास] हास्य; (उप १०३१ टी)।
हसण स्त्रीन [हसन] हास्य, हँसी; (भग; उत्त ३६, २६२; पंचा २, ८)। स्त्री—°णा; (उप पृ २७५)।
हसहस अक [हसहसाय्] १ उत्तेजित होना। २ सुलगना। "सिंगाररसत्तु(?)इया मोहमईफुंफुमा हसहसेइ" (सुख १, ८)। वकृ—**हसहसित**; (दसनि ३, ३५)। संकृ—**हसहसेऊण**; (राज)।
हसाव देखो हास=हासय्। हसावइ, हसावेइ; (हे ३, १४९)।
हसिअ वि [हसित] १ जिसका उपहास किया गया हो;

वह; (उव ११३)। २ न. हास्य, हँसी; (उव २२४)।

हसिअ वि [**हसित**] ह्रास-प्राप्त, हीन; (पंच ५, ५३)।

हसिर वि [**हसितृ**] हास्य-कर्ता, हँसने कि आदत वाला; (प्राप्र; गा १७४; उप ७२८ टी; सुर २, ७८; कुमा); स्त्री—°री; (गउड)।

हसिरिआ स्त्री [**दे**] हास, हँसी; (दे ८, ६२)।

हस्स अक [**ह्रस्**] कम होना, न्यून होना, क्षीण होना। वकृ—**हस्समाण**; (णंदि ८२ टी)।

हस्स देखो **हस**=हस्। हस्सइ; (धात्वा १५७)। कर्म— हस्सइ; (धात्वा १५७; हे ४, २४६)।

हस्स न [**हास्य**] १ हँसी, (आचा १, २, १, २; पव ७२; नाट—मृच्छ ९२)। २ पु. महाक्रन्दित-नामक देवों का दक्षिण दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५)। °**गय** न [°**गत**] कला-विशेष; (स ६०३)। °**रइ** पु [°**रति**] इन्द्र-विशेष, महाक्रन्दित-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५)।

हस्स वि [**ह्रस्व**] १ लघु, छोटा; (सूअ २, १, १५; पव ५४)। २ वामन, खर्व; (पाअ)। ३ अल्प, थोड़ा; (भग; पंच ५, १०३; कम्म ५, ८४)। ४ पुं. एक मात्रा वाला स्वर; (पण्ण ३६—पत्र ८४६; विसे ३०६८)।

हस्सण वि [**हर्षण**] हर्ष-कारक; "रोमहस्सणो जुद्ध-संमद्दो" (विक्र ८७)।

हस्सिर देखो **हसिर**; "अ-हस्सिरे सदा दंते" (उत्त ११, ४; सुख ११, ४)।

हहह } **हहहा** } अ [**हहह**, °**हा**] १ इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ आश्चर्य; (प्रयौ ७४)। २ खेद, विषाद; (सिरि ६१२)।

हहा पुं [**हहा**] १ गन्धर्व देवों की एक जाति; (हे ३, १२९)। २ अ. खेद-सूचक अव्यय; (सिरि २९८; ७९७)।

हा अ [**हा**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ विषाद, खेद; (सुर १, ९६; स्वप्न २७; गा २१८; ७५४; ९९०; प्रासू २०)। २ शोक, दिलगीरी; ३ पीड़ा; ४ कुत्सा, निन्दा; (हे १, ६७; २, २१७)। °**कंद** पुं [°**क्रन्द**] हाहाकार; (पिंग)। °**रव** पुं [°**रव**] वही अर्थ; (सुर २, १११)।

हा सक [**हा**] १ त्याग करना। २ गति करना। ३ क्षीण करना, हीन करना, कम करना। हाइ; (षड्)। कर्म— हायइ, हायंति; (भग; उव), हिज्जइ; (भवि)। हिज्जउ; (प्रयौ १०७)। कवकृ—**हायंत**; (णाया १, १० टी—पत्र १७१), **हीयमाण**; (काल)। संकृ—**हाउं**; (उवकु १०; ११), **हिच्चा**, **हिच्चाणं**; (आचा १, ४, ४, १; पि ५८७), **हेच्च**, **हेच्चा**; (सूअ १, २, ३, १; उत्त १८, ३५), **हेच्चाण**, **हेच्चाणं**; (पि ५८७)। कृ— **हेअ**; (स ५९५; पंचा ६, २०; अच्चु ८; गउड)।

°**हा** देखो **भा**—स्त्री; (गउड)।

हाअ देखो **हा**—सक। हाअइ, हाअए; (षड्)।

हाअ सक [**हादय्**] अतिसार रोग को उत्पन्न करना। हाएज्ज; (पिंड ६४६)।

°**हाअ** देखो **भाअ**=भाग; (से ८, ८२; षड्)।

°**हाअ** देखो **घाय**=घात; (से ७, ५९)।

°**हाअ** देखो **भाव**=भाव; (से ३, १५)।

हाउ देखो **भाउ**; "मह वअणं मइरागंधिअंति हाआ तुहं भणइ" (गा ८७२)।

हांसल देखो **हंसल**; (राज)।

हाकंद देखो **हा-कंद**।

हाकलि स्त्री [**हाकलि**] छन्द का एक भेद; (पिंग)।

हाडहड न [**दे**] तत्काल, तत्क्षण; (वव १)।

हाडहडा स्त्री [**दे**] आरोपणा का एक भेद, प्रायश्चित्त-विशेष; (ठा ५, २—पत्र ३२५, निचू २०)।

हाणि स्त्री [**हानि**] क्षति, अपचय; (भवि)।

हाम अ [**दे**] इस तरह, इस प्रकार, एवं; "हाम भण" (प्राकृ ८१)।

हायण पुं [**हायन**] वर्ष, संवत्सर; (औप, णाया १, १ टी—पत्र ५७)।

हायणी स्त्री [**हायनी**] मनुष्य की दश दशाओं में छठवीँ अवस्था; (ठा १०—पत्र ५१९; तंदु १०)।

हार सक [**हारय्**] १ नाश करना। २ हारना, पराभव पाना। हारेइ, हारसु; (उव; महा)। वकृ—**हारंत**; (सुपा १५४)।

हार पुं [**हार**] १ माला, अठारह सर की मोती आदि की माला; (कप्प, राय १०२; उवा; कुमा; भवि)। २ हरण, अपहरण; (वव १)। ३ द्वीप-विशेष; ४ समुद्र-विशेष; (जीव ३, ४—पत्र ३६७)। ५ हरण-कर्ता; "अदत्तहारा" (आचा १, २, ३, ५)। °**पुड** पुंन [°**पुट**] धातु-विशेष, लोहा; (आचा २, ६, १, १)।

°भद्द पुं [°भद्र] हार-द्वीप का अधिष्ठाता एक देव; (जीव ३, ४—पत्र ३६७)। °महाभद्द पुं [°महाभद्र] हारद्वीप का एक अधिष्ठाता देव; (जीव ३, ४)। °महावर पुं [°महावर] हार-समुद्र का एक अधिष्ठायक देव; "हारसमुद्दे हारवर-हारवर(?हार)महावरा एत्थ दो देवा महिड्ढीया" (जीव ३, ४—पत्र ३६७)। °वर पुं [°वर] १ हार-समुद्र का एक अधिष्ठाता देव; २ द्वीप-विशेष; ३ समुद्र-विशेष; ४ हारवर-समुद्र का एक अधिष्ठाता देव; (जीव ३, ४)। °वरभद्द पुं [°वरभद्र] हारवर-द्वीप का एक अधिष्ठायक देव; (जीव ३, ४)। °वरमहाभद्द पुं [°वरमहाभद्र] हारवर-द्वीप का एक अधिष्ठाता देव; (जीव ३, ४)। °वरमहावर पुं [°वरमहावर] हारवर-समुद्र का एक अधिष्ठायक देव; (जीव ३, ४)। °वरावभास पुं [°वरावभास] १ एक द्वीप; २ एक समुद्र; (जीव ३, ४)। °वरावभासभद्द पुं [°वरावभासभद्र] हारवरावभास-द्वीप का एक अधिष्ठाता देव; (जीव ३, ४)। °वरावभासमहाभद्द पुं [°वरावभासमहाभद्र] हारवरावभास-द्वीप का एक अधिष्ठायक देव; (जीव ३, ४)। °वरावभासमहावर पुं [°वरावभासमहावर] हारवरावभास-समुद्र का एक अधिष्ठाता देव; (जीव ३, ४)। °वरावभासवर पुं [°वरावभासवर] हारवरावभास-समुद्र का एक अधिष्ठायक देव; (जीव ३, ४—पत्र ३६७)।

°हार देखो भार; (सुपा ३६१; भवि)।

हारअ वि [हारक] नाश-कर्ता; (अभि १११)।

हारण वि [हारण] ऊपर देखो; "धम्मत्थकामभोगाण हारणं कारणं दुहसयाणं" (पुप्फ २६२; धम्म १० टी)।

हारव देखो हार=हारय। हारवइ; (हे ४, ३१)। भवि—हारविस्सइ; (स ५६६)।

हारविअ वि [हारित] नाशित; (कुमा; सुपा ५१२)।

हारा स्त्री [दे] लिक्षा, जन्तु-विशेष; (दे ८, ६६)।

°हारा देखो धारा; (कप्पू, गा ७८५)।

हारि स्त्री [हारि] १ हार, पराजय; (उप पृ ५२)। २ पंक्ति, श्रेणि; (कुप्र ३४४)। ३ छन्द-विशेष; (पिंग)।

हारि वि [हारिन्] १ हरण-कर्ता; (विसे ३२४५; कुमा)। २ मनोहर, चित्ताकर्षक, (गउड)।

हारिअ न [हारीत] १ गोत्र-विशेष, जो कौत्स गोत्र की एक शाखा है; २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न; (ठा ७—पत्र ३९०; णंदि ४९; कप्प)। °मालागारी स्त्री [°मालाकारी] एक जैन मुनि-शाखा; (कप्प)।

हारिअ वि [हारित] १ हारा हुआ, द्यूत आदि में पराजित; (सुपा ३९९; महा; भवि)। २ खोया हुआ, गुमाया हुआ; (वव १; सुपा १९९)।

हारियंद वि [हारिचन्द्र] हरिचन्द्र का; हरिचन्द्र-कवि का बनाया हुआ; (गउड)।

हारिया स्त्री [हारीता] एक जैन मुनि-शाखा; (राज)। देखो हारिअ-मालागारी।

हारियायण न [हारितायन] एक गोत्र; (कप्प)।

हारी स्त्री [हारी] देखो हारि=हारि; (उप पृ ५२; कुप्र ३४४; पिंग)।

हारीय पुं [हारीत] १ मुनि-विशेष; २ न. गोत्र-विशेष; (राज)। °बंध पुं [°बन्ध] छन्द-विशेष; (पिंग)।

हारोस पुं [हारोष] १ अनार्य देश-विशेष; २ वि. उस देश का निवासी; (पराण १—पत्र ५८)।

हाल पुं [दे. हाल] राजा सातवाहन, गाथा-सप्तशती का कर्ता; (दे ८, ६६; २, ३६; गा ३; वज्जा ९४)।

हाला स्त्री [हाला] मदिरा, दारू; (पाअ; कुप्र ४०७; रंभा)।

हालाहल पुं [दे] मालाकार, माली; (दे ८, ७५)।

हालाहल पुंस्त्री [हालाहल] १ जन्तु-विशेष, ब्रह्मसर्प, बाम्हनी; (दे ६, ९०; पाअ; गा ६२), स्त्री—°ला; (दे ८, ७५)। २ त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष; (पराण १—पत्र ४५)। ३ पुंन. स्थावर विष-विशेष; (दस ६, १, ७; गच्छ २, ४)। ४ पुं. रावण का एक सुभट; (पउम ५६, ३३)।

हालाहला स्त्री [हालाहला] एक आजीविक-मतानुयायिनी कुम्हारिन; (भग १५—पत्र ६५९)।

हालिअ देखो हलिअ=हालिक; (हे १, ६७; प्राप्र)।

हालिज्ज न [हालीय] एक जैन मुनि-कुल; (कप्प)।

हालिद्द पुं [हारिद्र] १ हल्दी के तुल्य रँग, पीला वर्ण; (अणु १०९; ठा ५, १—पत्र २९१)। २ वि. पीला; जिसका रँग पीला हो वह; (पराण १—पत्र २५; सुअ २, १, १५, भग; औप)। ३ पुंन. एक देव-विमान; (देवेन्द्र १३२)।

हालिया स्त्री [हालिका] देखो हलिआ; (राज)।

हालुअ वि [दे] क्षीव, मत्त; (दे ८, ६६)।

हाव सक [हापय्] १ हानि करना। २ त्याग करना। ३ परिभव करना। ४ लोप करना। "थंडिलसामायारि हावेइ" (वव १), हावए; (उत्त ५, २३; सट्ठि २१ टी), हावइज्जा; (दस ८, ४१)। वकृ—**हावित**; (विसे २७४६)।

हाव पुं [हाव] मुख का विकार-विशेष; (परह २, ४—पत्र १३२; भवि)।

हाव वि [दे] जंघाल, द्रुतगामी, वेग से दौड़ने वाला; (दे ८, ७५)।

°**हाव** देखो **भाव**=भाव; "ईसरहावेण" (अच्चु २५)।

हावण वि [हापन] हानि करने वाला; (हे २, १७८)।

हाविर वि [दे] १ जंघाल, द्रुत-गामी; २ दीर्घ, लम्बा; ३ मन्थर; ४ विरत; (दे ८, ७५)।

हास देखो **हस**=हस्। वकृ—"न **हासमाणो** वि गिरं वइज्जा" (दस ७, ५४)।

हास सक [हासय्] हँसाना। हासेइ; (हे ३, १४९)। कर्म—हासीअइ, हासिज्जइ; (हे ३, १५२)। वकृ—**हासेंत**; (औप)। कवकृ—**हासिज्जंत**; (सुपा ५७)।

हास पुं [हास] १ हास्य, हँसी; (औप; गच्छ २, ४२; उव; गा ११, ३३२)। २ कर्म-विशेष, जिसके उदय से हँसी आवे वह कर्म; (कम्म १, २१, ५७)। ३ अलंकार-शास्त्रोक्त रस-विशेष; (अणु १३५)। °**कर** वि [°कर] हास्य-कारक; (सुपा २४३)। °**कारि** वि [°कारिन्] वही; (गउड)।

हास पुं [ह्रास] क्षय, हानि; (धर्मसं ११६४)।

हास देखो **हरिस**=हर्ष; (औप)।

हासंकर देखो **हास-कर**; (सुपा ७८)।

हासंकुहय वि [हास्यकुहक] हास्य-जनक कौतुक-कर्ता; (दस १०, २०)।

हासण वि [हासन] १ हास्य कराने वाला, (पव ७३ टी)। २ हास्य-कर्ता; (आचा २, १५, ५)।

हासा स्त्री [हासा] एक देवी; (महा)।

हासाविअ, **हासिअ** } वि [हासित] हँसाया हुआ, (गा १२३; पड्; कुमा; हे ३, १५६)।

हासि वि [हासिन्] हास्य-कर्ता; (आचा २, १५, ५)।

हासिअ वि [हास्य] हँसने योग्य; "चडुआरअं पइ मा हु पुत्ति जणहासिअं कुणसु" (गा ६०५; हे ३, १०५)।

°**हासिअ** देखो **भासिअ**=भाषित; (नाट—विक्र ६१)।

हासीअ न [दे. हास्य] हास, हँसी; (दे ८, ६२)।

हाहक्कार देखो **हाहा-कार**; "हाहक्कारमुहरवा" (पउम १७, १०)।

हाहा पुं [हाहा] गन्धर्व देवों की एक जाति; (सुपा ५६; कुमा; धर्मवि ४८)। २ अ. विलाप, हाहाकार, शोकध्वनि; (पाअ; भग ७, ६—पत्र ३०५)। °**कय** न [°कृत] हाहाकार, शोक-शब्द; (णाया १, ६—पत्र १५७)। °**कार** पुं [°कार] वही; (महा; भवि; वेणी १३९)। °**भूअ** वि [°भूत] हाहाकार को प्राप्त; (भग ७, ६—पत्र ३०५)। °**रव** पुं [°रव] हाहाकार, (महा, सुपा १३६; भवि)। °**हूहू** स्त्री [°हूहू] संख्या-विशेष, 'हाहाहूहूअंग' को चौरासी लाख से गुनने पर जो सख्या लब्ध हो वह; (इक)। °**हूहूअंग** न [°हूहूअङ्ग] सख्या-विशेष, 'अमम' को चौरासी लाख से गुनने पर जो सख्या लब्ध हो वह; (इक)।

हि अ [हि] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ अव-धारण, निश्चय; (स्वप्न १०)। २ हेतु, कारण; (कुमा ८, १७; कप्पू)। ३ एवम्, इस तरह; (गउड ३२४; सण)। ४ विशेष; ५ प्रश्न; ६ संभ्रम; ७ शोक; ८ असूया; ९ पाद-पूरण; (कुमा; गउड; गा २४२; २६५; ६०२; ६४८; पिंग; हे २, २१७)।

हिअ वि [हृत] १ अपहृत, छीना हुआ; (णाया १, १६—पत्र २१५; पउम ५, ७३; ३०, २०; सुर ६, १७५)। २ नीत, जो दूसरी जगह ले जाया गया हो वह; (पाअ; हे १, १२८)। ३ विनष्ट, स्फेटित; (पिंड ४१५)। ४ आकृष्ट, खींचा हुआ; "हियहियए" (राय)।

हिअ न [हित] १ मङ्गल, कल्याण; २ उपकार, भलाई; (उत्त १, ६; पउम ६५, २१; उव; ठा ४, ४ टी—पत्र २८३; प्रासू १४)। ३ त्रि. हित-कारक, उपकारी; (उत्त १, २८; २९; उव ३२९; ४५०; प्रासू १४)। ४ स्थापित; निहित; (भत्त ७८)। °**कर** वि [°कर] १ हित-कारक; (ठा ९)। २ पु. दो उपवास, (संबोध ५८)। ३ एक वणिक् का नाम; (पउम ५, २८)। °**कार** वि [°कार] हित-कारक, (श्रु १४९)। °**यर** देखो °**कर**; (पउम ६५, २१)।

हिअ देखो **हिअय**=हृदय, (हे १, २६९, कुमा, आचा; कप्प)। °**इट्ठ** वि [°इष्ट] मनः-प्रिय; (पउम ८५, २३)। °**उड्डावण** वि [°उड्डायन] चित्ताकर्षण का

साधन; (णाया १, १४—पत्र १८७)। २ चित्त को शून्य बनाने वाला; (विपा १, २—पत्र ३६)।
°हिअ न [घृत] घी; (सुख १८, ४३)।
हिअउल्ल (अप) देखो **हिअय**=हृदय; (कुमा)।
हिअंकर पुं [**हितंकर**] राम-पुत्र कुश के पूर्व जन्म का नाम; (पउम १०४, २६)।
हिअड } (अप) देखो **हिअय**=हृदय; (हे ४, ३५०;
हिअडुल्ल } पि ५९९; सण)।
हिअय न [**हृदय**] १ अन्तःकरण, हिया, मन; (हे १, २६९; स्वप्न ३३; कुमा; गउड; दं ४६; प्रासू ४४)। २ वक्षस्, छाती; (से ४, २१)। ३ पर ब्रह्म; (प्राप्र)। °**गमणीअ** वि [°**गमनीय**] हृदयंगम, मनोहर; (सम ६०)। °**हारि** वि [°**हारिन्**] चित्ताकर्षक; (उप ७२८ टी)।
हिअय देखो **हिअ**=हित; "कुद्धे हि जेहि जणो अयाणगो हिअयमग्गम्मि" (उप७६८ टी)।
हिअयंगम वि [**हृदयंगम**] मनोहर, चित्ताकर्षक; (दे १, १)।
हिआली स्त्री [**हृदयाली**] काव्य-समस्या-विशेष, गूढार्थक काव्य-विशेष; (वज्जा १२४)।
हिइ स्त्री [**हृति**] १ अपहरण, २ न. स्थानान्तर में ले जाना; (सक्षि ५)।
हिएसअ वि [**हितैषक**] हितेच्छु, हित चाहने वाला; (उत्त ३४, २८)।
हिएसि वि [**हितैषिन्**] ऊपर देखो; (उत्त १३, १५; उप ७२८ टी; सुपा ४०४; पुप्फ १०)।
हिओ अ [**ह्यस्**] गत कल; (अभि ५६; प्राप; पि १३४)।
हिंग पुं [**दे**] जार, उपपति; (दे १, ४)।
हिंगु पुन [**हिङ्गु**] १ वृक्ष-विशेष, हिंग का गाछ; (पण्ण १—पत्र ३४)। २ हिंग; "डाए लोणे हिंगू संकामण फोडणे धूमे" (पिंड २५०; स २५८; चारु ७)। °**सिव** पुं [°**शिव**] व्यन्तर देव-विशेष; (दसनि १, ६६)।
हिंगुल पुन [**हिङ्गुल**] पार्थिव धातु-विशेष, हिंगुल, सिंगरफ; (पण्ण १—पत्र २५; तो २; जी ३; सुख ३६, ७५)।
हिंगुलु पुंन [**हिङ्गुलु**] ऊपर देखो; (उत्त ३६, ७५; कप्प)।
हिंगोल पुंन [**दे**] १ मृतक-भोजन, किसी के मरण के उपलक्ष्य में दिया जाता जीमन, श्राद्ध; २ यक्ष आदि के यात्रा के उपलक्ष्य में किया जाता जीमनवार; (आचा २, १, ४, १)।
हिंचिअ न [**दे**] एक पैर से चलने की बाल-क्रीड़ा; (दे ८, ६८)।
हिंजीर न [**हिञ्जीर**] शृंखलक, सिकरी, साँकल; (दे ६, ११६; गउड)।
हिंड सक [**हिण्ड्**] १ भ्रमण करना। २ जाना, चलना। हिंडइ; (सुपा ३८४; महा), हिंडिज्जा; (ओघ २५४)। कर्म—हिंडिज्जइ; (प्रासू ४०)। वकृ—**हिंडंत**; (गा १३८)। कृ—**हिंडियव्व**; (उप पृ ५०; महा)। संकृ—**हिंडिय**; (महा)। हेकृ—**हिंडिउं**; (महा)।
हिंडग वि [**हिण्डक**] १ भ्रमण करने वाला; (पंचा १८, ८)। २ चलने वाला; (अणु १२६)।
हिंडण न [**हिण्डन**] १ परिभ्रमण, पर्यटन; (पउम ९७, १८; स ४९)। २ गमन, गति; (उप १०१७)। ३ वि. भ्रमण-शील; (दे २, १०६)।
हिंडि स्त्री [**हिण्डि**] परिभ्रमण, पर्यटन;
"वासुदेवाइणो हिंडी राय-वंसुब्भवाण वि।
तारुण्णेवि कहं हु ता न हु तं जइ कम्मयं" (कर्म १६)।
हिंडि पुं [**हिण्डिन्**] रावण का एक सुभट; (पउम ५६, ३२)।
हिंडिअ वि [**हिण्डित**] १ चला हुआ, चलित, गत; (महा ३४)। २ जहाँ पर जाया गया हो वह; "हिंडियं असेसं गामं" (महा ६१)। ३ न. गति, गमन, विहार; (णाया १, ९—पत्र १६५; ओघ २५४)।
हिंडुअ पुं [**दे. हिण्डुक**] आत्मा, जीव, जन्मान्तर मानने वाला आत्मा, हिन्दु; (भग २०, २—पत्र ७७६)।
हिंडोल न [**दे**] १ खेत में पशुओं को रोकने की आवाज; २ क्षेत्र की रक्षा का यन्त्र; (दे ८, ६९)।
हिंडोल देखो **हिंदोल**; (स ५२१)।
हिंडोलण न [**दे**] १ रत्नावली, रत्न-माला; २ क्षेत्र की रक्षा का आवाज, खेत में पशु आदि को रोकने का शब्द; (दे ८, ३६)।
हिंडोलय देखो **हिंडोल**; (दे ८, ६९)।
हिंताल पुं [**हिन्ताल**] वृक्ष-विशेष; (उप १०३१ टी; कुमा)।

हिंद सक [ग्रह्] स्वीकार करना, ग्रहण करना। हिंदइ; (प्राकृ ७०; धात्वा १५७)। कर्म—हिंदिजइ; (धात्वा १५७)। संकृ—**हिंदिऊण**; (प्राकृ ७०; धात्वा १५७)।

हिंदोल सक [हिन्दोलय्] झूलना। वकृ—**हिंदोलअंत**; (कप्पू)।

हिंदोल पुं [हिन्दोल] हिंडोला, झूलना, दोला; (कप्पू)।

हिंदोलण न [हिन्दोलन] झूलना, दोलन; (कप्पू)।

हिंबिअ न [दे] एक पैर से चलने की बाल-क्रीडा; (दे ८, ६८)।

हिंस सक [हिंस्] १ वध करना। २ पीड़ा करना। हिंसइ, हिंसई; (आचा; पव १२१)। भूका—हिंसिंसु; (आचा; पव १२१)। भवि—हिंसिस्सइ, हिंसिस्संति, हिंसेही; (पि ५१६; आचा; पव १२१)। वकृ—**हिंसमाण**; (आचा)। कृ—**हिंस, हिंसियव्व**; (उप ६२५; पण्ह १, १—पत्र ५; २, १—पत्र १००; उव)।

हिंस वि [हिंस्र] १ हिंसा करने वाला, हिंसक; (उत्त ७, ५; पण्ह १, १—पत्र ५; विसे १७६३; पंचा १, २३; उप ६२५; स ५०)। °**प्पदाण**, °**प्पयाण** न [°प्रदान] हिंसा के साधन-भूत खड्ग आदि का दान; (औप; राज)।

हिंस° देखो **हिंसा**; (पण्ह १, १—पत्र ५)। °**प्पेहि** वि [°प्रेक्षिन्] हिंसा को देखने वाला; (ठा ५, १—पत्र ३००)।

हिंसअ } वि [हिंसक] हिंसा करने वाला; (भग; ओघ
हिंसग } ७५२; उत्त ३६, २५६; उव; कुप्र २६)।

हिंसण न [हिंसन] हिंसा; "अहिंसणं सव्व-जियाण धम्मो" (सत्त ४२)।

हिंसा स्त्री [हिंसा] १ वध, घात; (उवा; महा; प्रासू १४३)। २ वध, बन्धन आदि से जीव को की जाती पीड़ा, हैरानी; (ठा ४, १—पत्र १८८)।

हिंसा स्त्री [हेषा] अश्व का शब्द; "गयगज्जि हयहिंसं च तप्पुरओ केवि कुव्वंता" (सुपा १६४)।

हिंसिय वि [हिंसित] हिंसा-प्राप्त, (राज)।

हिंसिय न [हेषित] अश्व-शब्द; (पउम ६, १८०; दस ३, १-टी)।

हिंसो स्त्री [हिंसो] लता-विशेष; (गउड)।

हिंदु पुं [दे] हिन्दू, हिन्दुस्थान का निवासी; (पिंग)।

हिक्का स्त्री [दे] रजकी, धोबिन; (दे ८, ६६)।

हिक्का स्त्री [हिक्का] रोग-विशेष, हिचकी; (सुपा ४८६)।

हिक्कास पुं [दे] पङ्क, कादा; (दे ८, ६६)।

हिक्किअ न [दे] हेषा-रव, अश्व-शब्द; (दे ८, ६८)।

हिज्ज देखो **हर=हृ**।

हिज्ज° देखो **हा**।

हिज्जा } अ [दे. ह्यस्] गत कल; (षड्; दे ८, ६७;
हिज्जो } पाअ; प्रयौ १३; पि १३४)।

हिज्जो अ [दे] आगामी कल; (दे ८, ६७)।

हिट्ठ वि [दे] आकुल; (दे ८, ६७)।

हिट्ठ देखो **हेट्ठ**; (सुर ४, २२५; महा; सुपा ६८)।

हिट्ठ देखो **हट्ठ=हृष्ट**; (उव; सम्मत्त ७५)।

हिट्ठाहिड वि [दे] आकुल; (दे ८, ६७)।

हिट्ठिम देखो **हेट्ठिम**; (सिरि ७०८; सुज्ज १०, ५ टी)।

हिट्ठिल्ल देखो **हेट्ठिल्ल**; (सम ८७)।

हिडिंब पुं [हिडिम्ब] १ एक विद्याधर राजा; (पउम १०, २०)। २ एक राक्षस, (वेणी १७७)। ३ देश-विशेष; (पउम ६८, ६५)।

हिडिंबा स्त्री [हिडिम्बा] एक राक्षसी, हिडिम्ब राक्षस की बहिन; (हे ४, २६६)।

हिडोलणय देखो **हिंडोलण**; (दे ८, ७६)।

हिड्ड वि [दे] वामन, खर्व; (दे ८, ६७)।

हिणिद वि [भणित] उक्त, कथित; "खणपाहुणिआ देअरजाआ ए सुहअ किं ति दे ह(हि)णिदा" (गा ६६३)।

हिण्ण सक [ग्रह्] ग्रहण करना। हिण्णइ; (धात्वा १५७)।

हिण्ण (अप) देखो **हीण**; (पिंग)।

°**हिण्ण** देखो **भिण्ण**; (गा ५६३)।

हितअ } (पै) देखो **हिअअ=हृदय**; (प्राप्र; षड्; वाअ
हितप } १६; पि २५४; हे ४, ३१०; कुमा; प्राकृ १२४)।

हित्थ वि [दे] १ लज्जित; (दे ८, ६७; धण ६)। २ त्रस्त, भय-भीत, (दे ८, ६७; हे २, १३६; प्राप्र; गा ३८६; ७६३; सुर १६, ६१; कुमा)। ३ हिंसित, मारा हुआ; "हित्थो व ण हित्थो मे सत्तो, भणियं व न भणियं मोस" (वव १)।

हित्था स्त्री [दे] लज्जा, शरम; (दे ८, ६७)।

हिदि अ [हृदि] हृदय में; "हिदि निरुद्धवाउव्व" (विसे २२०)।

हिद्ध वि [दे] स्रस्त, खिसका हुआ, खिसक कर गिरा

हुआ; (षड्)।

हिम न [**हिम**] १ तुषार, आकाश से गिरता जल-कण; (पाअ; आचा; से २, ११)। २ चन्दन, श्रीखण्ड; (से २, ११)। ३ शीत, ठंढी, जाड़ा; (बृह १)। ४ बर्फ, जमा हुआ जल; (कप्प; जी ५)। ५ पुं. छठवीं नरक-पृथिवी का पहला नरकेन्द्रक—नरक-स्थान; (देवेन्द्र १२)। ६ ऋतु-विशेष, मार्गशीर्ष तथा पौष का महिना; (उप ७२८ टी)। °**कर** पुं [°**कर**] चन्द्रमा, चाँद; (सुपा ५१)। °**गिरि** पुं [°**गिरि**] हिमाचल पर्वत; (कुमा; भवि; सण)। °**धाम** पुं [°**धामन्**] वही; (धम्म ६ टी)। °**नग** पुं [°**नग**] वही; (उप पृ ३४८)। °**यर** देखो °**कर**; (पाअ)। °**व**, °**वंत** पुं [°**वत्**] १ वर्षधर पर्वत-विशेष; "हिमवो य महाहिमवो" (पउम १०२, १०५; उवा; कप्प; इक)। २ हिमाचल पर्वत; (पि ३९६)। ३ राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र; (अंत ३)। ४ एक प्राचीन जैन मुनि जो स्कन्दिलाचार्य के शिष्य थे; "हिमवंतखमासमणे वंदे" (णांदि ५२)। °**वाय** पुं [°**पात**] तुषार-पतन; (आचा)। °**सीयल** पुं [°**शीतल**] कृष्ण पुद्गल-विशेष; (सुज्ज २०)। °**सेल** पुं [°**शैल**] हिमालय पर्वत, (उप २११ टी)। °**ागम** पुं [°**ागम**] ऋतु-विशेष, हेमन्त ऋतु; (गा ३३०)। °**ाणी** स्त्री [°**ानी**] हिम समूह; (कुप्र ३९७)। °**ायल** पुं [°**ाचल**] हिमालय पर्वत; (सुपा ६३२)। °**ालय** पुं [°**ालय**] वही अर्थ, (पउम १०, १३; गउड)।

हिर देखो **किर**=किल; (हे २, १८६; कुमा)।

हिरडी स्त्री [**दे**] चील पक्षी की मादा; (दे ८, ६८)।

हिरण्ण, **हिरन्न** न [**हिरण्य**] १ रजत, चाँदी; (उवा; कप्प)। २ सुवर्ण, सोना; (आचा; कप्प)। ३ द्रव्य, धन; (सूअ १, ३, २, ८)। °**क्ख** पुं [°**ाक्ष**] एक दैत्य; (से ४, २२)। °**गब्भ** पुं [°**गर्भ**] १ ब्रह्मा; २ जिन भगवान; (पउम १०९, १२),

"गब्भट्ठिअस्स जस्स उ हिरण्णवुट्ठी सकंचणा पडिया।
तेणं हिरण्णगब्भो जयम्मि उवगिज्जए उसभो॥"
(पउम ३, ६८)।

हिरि अक [**ह्री**] लज्जित होना। हिरिआमि; (अभि २५५)।

हिरि° देखो **हिरी**; (णाया १, १६—पत्र २१७; षड्)। °**म** वि [°**मत्**] लज्जालु, शरमिन्दा; (उत्त ११, १३; ३२, १०३; पिंड ५२६)। °**बेर** पुं [°**बेर**] तृण-विशेष, सुगन्धवाला; (पाअ; उत्तनि ३)।

हिरि पुं [**हिरि**] भालूक का शब्द; (पउम ६४, ४५)।

हिरिअ वि [**ह्रीत**] लज्जित; (हे २, १०४)।

हिरिआ स्त्री [**ह्रीका**] लज्जा, शरम; (उप ७०६; कुमा)।

हिरिंव न [**दे**] पल्वल, क्षुद्र तलाव; (दे ८, ६९)।

हिरिमिंथ पुं [**दे**] चना, अन्न-विशेष; (दे ८, ७०)। देखो **हरिमिंथ**।

हिरिली स्त्री [**दे**] कन्द-विशेष; (उत्त ३६, ९८)।

हिरिविंग पुं [**दे**] लगुड, लट्ठी; (दे ८, ६३)।

हिरी स्त्री [**ह्री**] १ लज्जा, शरम; (आचा; हे २, १०४)। २ महापद्म-हद की अधिष्ठात्री देवी; (ठा २, ३—पत्र ७२)। ३ उत्तर रुचक-पर्वत पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८—पत्र ४३७)। ४ सत्पुरुष-नामक किंपुरुषेन्द्र की एक अग्र महिषी; (ठा ४, १—पत्र २०४)। ५ महाहिमवान् पर्वत का एक कूट; (इक)। ६ देव-प्रतिमा विशेष; (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।

हिरीअ देखो **हिरिअ**; (हे २, १०४)।

हिरे देखो **हरे**; (प्राप्र)।

हिला, **हिल्ला** स्त्री [**दे**] वालुका, रेती; (दे ८, ६६)।

हिल्लिय पुंस्त्री [**दे**] कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति; (पण्ण १—पत्र ४५)।

हिल्लिरी स्त्री [**दे**] मछली पकड़ने की जाल-विशेष; (विपा १, ८—पत्र ८५)।

हिल्लूरी स्त्री [**दे**] लहरी, तरङ्ग; (दे ८, ६७)।

हिल्लोडण न [**दे**] खेत में पशुओं को रोकने की आवाज; (दे ८, ६९)।

हिव देखो **हव**=भू। हिवइ; (हे ४, २३८)।

हिसोहिसा स्त्री [**दे**] स्पर्धा; (दे ८, ६९)।

ही अ [**ही**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ विस्मय, आश्चर्य; (सिरि ४७३)। २ दुःख; (उप ५६७ टी)। ३ विषाद, खेद; ४ शोक, दिलगीरी; (आ १६; कुप्र ४३६; कुमा; रंभा; मन ३७)। ५ वितर्क; (सिरि २६८)। ६ कन्दर्प का अतिरेक; ७ प्रशान्त-भाव का अतिशय; (अणु १३९)।

ही देखो **हिरी**; (विसे २६०३)। °**म** वि [°**मत्**] लज्जाशील, लज्जालु; (सूअ १, २, २, १८)।

हीं अ [ह्रीँ] मंत्राक्षर-विशेष, मायाबीज; (सिरि १२११)।

हीण वि [हीन] १ न्यून, कम, अपूर्ण; (उवा; णाया १, १४—पत्र १६०)। २ रहित, वर्जित; "हयं नाणं कियाहीणं" (हे २, १०४)। ३ अधम, हलका; ४ निन्द्य, निन्दनीय; (प्रासू १२५; उप ७२८ टी)। ५ पुं. प्रतिवादि-विशेष; (हे १, १०३)। °**जाइल्ल** वि [°जातिक] अधम जाति का, नीच जाति का; (उप ७२८ टी)। °**वाइ** पुं [°वादिन्] वादि-विशेष; (सुपा २८२)।

हीण वि [ह्रीण] भीत; (विपा १, २ टी—पत्र २८)।

हीमाणहे } (शौ) अ. १ विस्मय, आश्चर्य; २ निर्वेद;
हीमादिके } (हे ४, २८२; कुमा; प्राकृ ६८; मृच्छ २०२; २०६)।

हीयमाण देखो **हा**।

हीयमाणग } न [हीयमानक] अवधिज्ञान का एक भेद,
हीयमाणय } क्रमशः कम होता जाता अवधिज्ञान; (ठा ६—पत्र ३७०; णंदि)।

हीर देखो **हर**=हर; (हे १, ५१; कुमा; षड्)।

हीर पुं [हीर] १ विषम भंग, अ-समान छेद; (पएण १—पत्र ३७)। २ बारीक कुत्सित तृण, कन्द आदि में होता बारिक रेसा; (जीव ३, ४; जी १२)। ३ पुन. हीरा, मणि-विशेष; (स २०२; सिरि ११८६; कप्पू)। ४ छन्द-विशेष; (पिंग)। ५ दाढा का अग्र भाग; (से ४, १४)।

हीर पुंन [दे] १ सूई की तरह तीक्ष्ण मुँह वाला काष्ठ आदि पदार्थ; (दे ८, ७०; कस)। २ भस्म; (दे ८, ७०)। ३ प्रान्त, अन्त भाग; (गउड)।

हीरंत देखो **हर**=हृ।

हीरणा स्त्री [दे] लाज, शरम; (दे ८, ६७; षड्)।

हीरमाण देखो **हर**=हृ।

हील सक [हेलय्] १ अवज्ञा करना, तिरस्कार करना। २ निन्दा करना। ३ कदर्थन करना, पीड़ना। हीलइ; (उव; सुख २, १६), हीलंति; (दस ६, १, २; प्रासू २६)। वकृ—**हीलंत**; (सट्ठि ८६)। कवकृ—**हीलिज्जंत**, **हीलिज्जमाण**; (उप पृ १३३; णाया १, ८—पत्र १४४; प्रासू १६५)। कृ—**हीलणिज्ज**; (णाया १, ३), **हीलियव्व**; (पएह २, १—पत्र १००; २, ५—पत्र १५०)।

हीलण स्त्रीन [हेलन] १ अवज्ञा, तिरस्कार; २ निन्दा; (सुपा १०४); स्त्री—°**णा**; (पएह २, १—पत्र १००; औप; उव; दस ६, १, ७; सट्ठि १००)।

हीला स्त्री [हेला] ऊपर देखो; (उव; उप पृ २१६; उप १४२ टी)।

हीलिअ वि [हीलित] १ निन्दित; २ अवमानित, तिरस्कृत; (सुख २, १७; ओघ ५२६; कस; दस ६, १, ३)। ३ पीड़ित, कदर्थित; (आचा २, १६, ३)।

हीसमण न [दे. हेषित] हेषारव, अश्व का शब्द; (दे ८, ६८; हे ४, २५८)।

हीही } (शौ) अ. विदूषक का हर्ष-सूचक अव्यय;
हीहीभो } (हे ४, २८५; कुमा; प्राकृ ६७; मोह ४१)।

हु अ [खलु] इन अर्थों का द्योतक अव्यय;—१ निश्चय; (हे २, १६८; से १, १५; कुमा; प्राकृ ७८; प्रासू ५४)। २ ऊह, वितर्क; (हे २, १६८; कुमा; प्राकृ ७८)। ३ संशय, संदेह; (हे २, १६८; कुमा)। ४ संभावना; (हे २, १६८; कुमा; प्राकृ ७८)। ५ विस्मय, आश्चर्य; (हे २, १६८; कुमा)। ६ किन्तु, परन्तु; (प्रासू १०१)। ७ अपि, भी; "हु अविसद्दत्थम्मि व त्ति" (धर्मसं १४० टी)। ८ वाक्य की शोभा; (पंचा ७, ३५)। ९ पाद-पूर्त्ति, पाद-पूरण; (पउम ८, १४६; कुमा)।

हु } देखो **हव**=भू। हुअइ, हुएइ, हुंति, हुइरे, हुअइरे,
हुअ } हुज्ज, हुएज्ज, हुएइरे, हुएज्जइरे; (पि ४७६; हे ४, ६१; पि ४५८; ४६६)। भवि—हुक्खामि, होक्खामि, हुक्खं; (उत्त २, १२; सुख २, १२)। वकृ—**हुंत**; (हे ४, ६१; सं ३४)।

हुअ देखो **हुण**=हु। हुअइ; (प्राकृ ६६)। वकृ—**हुअंत**; (धात्वा १५७)।

हुअ वि [हुत] १ होमा हुआ, हवन किया हुआ; (सुपा २६३; स ५५; प्राकृ ६६)। २ न. होम, हवन; (सूअ १, ७, १२; प्राकृ ६६)। °**वह** पुं [°वह] अग्नि, आग; (गा २११; पाअ; णाया १, १—पत्र ६३; गउड)। °**स** पुं [°श] अग्नि; (गउड; अज्झ १५०; भवि; हि १३)। °**सन** पुं [°शन] वही; (भग; से ५, ५७; पाअ)।

हुअ देखो **हूअ**=भूत; (प्राप्र; कुमा; भवि; सण)।

हुअंग देखो **भुअंग**; "चंदनलट्ठिव्व हुअंगदूमिआ कि ग्गु दूमेसि" (गा ६२६)।

°**हुअग** देखो **भुअग**; (गा ८०१; पि १८८)।

हुं अ [हुम्] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ दान; २ पृच्छा, प्रश्न; (हे २, १६७; प्राप्र; कुमा)। ३ निवारण; (हे २, १६७; कुमा)। ४ निर्धारण; (प्राप्र; रंभा)।

५ स्वीकार; (श्रा १२; कुप्र ३४५)। ६ हुङ्कार, 'हु' शब्द; "हुं करंति घूअव्व" (सुपा ४६२)। ७ अनादर; (सिरि १५३)।
हुंकय पुं [दे] अंजलि, प्रणाम; (दे ८, ७१)।
हुंकार पुं [हुङ्कार] १ अनुमति-प्रकाशक शब्द, हाँ; (विसे ५६६५; से १०, २४; गा ३५६, आत्मानु ६)। २ 'हु' आवाज, 'हु' ऐसा शब्द; (हे ४, ४२२; कप्पू; सुर १, २४६)।
हुंकारिय न [हुङ्कारित] 'हु' ऐसा किया हुआ आवाज; (स ३७७)।
हुंकुरव पु [दे] अजलि, प्रणाम; (दे ८, ७१)।
हुंड न [हुण्ड] १ शरीर की आकृति-विशेष, शरीर का बेढ़ब अवयव; (ठा ६—पत्र ३५७; सम ४४; १४६)। २ कर्म-विशेष, जिसके उदय से शरीर का अवयव असपूर्ण बेढब—प्रमाण-शून्य अव्यवस्थित हो वह कर्म; (कम्म १, ४०)। ३ वि. बेढ़ब अंग वाला; (विपा १, १—पत्र ५)। °वसप्पिणी स्त्री [°वसर्पिणी] वर्तमान हीन समय; (विचार ५०३)।
हुंडी स्त्री [दे] घटा; (पाअ)।
हुंबउट्ठ पुं [दे] वानप्रस्थ तापस की एक जाति; (औप; भग ११, ६—पत्र ५१५; ५१६)।
हुंहुय अक [हुंहुं+कृ] हुं हुं आवाज करना। वकृ—हुंहुयंत; (चेइय ४६०)।
°हुच्च देखो पहुच्च=प्र + भू।
हुड्ड देखो होड्ड; (आचा, पि ८४, ३३८)।
हुड पुं [दे] १ मेष, मेढ़ा, (दे ८, ७०)। २ श्वान, कुत्ता; (मृच्छ २५३)।
हुडुअ पु [दे] प्रवाह; (दे ८, ७०)।
हुडुक्क पुंस्त्री [दे. हुडुक्क] वाद्य-विशेष, (औप; कप्पू; सण; विक्र ८७), स्त्री—°क्का; (राय; सुपा ५०; १७५; २४२)।
हुडुम पुं [दे] पताका, ध्वजा; (दे ८, ७०; पाअ)।
हुड्ड पुंस्त्री [दे] होड, वाजी, पण, शर्त, दाँव; स्त्री—°ड्डा; (दे ८, ७०; सुपा २७६, पव ३८), "हुड्डाहुड्डं सुयंतेहिं" (सम्मत्त १४३)। देखो होड्ड।
हुण सक [हु] होम करना। हुणइ; (हे ४, २४१; भग ११, ६—पत्र ५१६; कुमा)। कर्म—हुव्वइ, हुणिज्जइ, हुणिजए; (हे ४, २४२; कुमा)। कवकृ—हुणिज्जमाण; (सुपा ६७)। संकृ—हुणिऊण, हुणेऊण, हुणित्ता; (पड्; भग ११, ६—पत्र ५१६)।
हुणण न [हवन] होम; (सुपा ६३)।
हुणिअ देखो हुअ=हुत; (सुपा २१७; मोह १०७)।
हुत्त वि [दे] अभिमुख, संमुख; (दे ८, ७०; हे २, १५८; गउड; भवि)।
हुत्त देखो हूअ = हूत; (हे २, ६६)।
°हुत्त देखो हूअ = भूत; (गा २४५; ८६६)।
°हुमआ देखो भुमआ; (गा ५०५; पि १८८)।
हुर देखो फुर=स्फुर्। वकृ—"कंतीए हुरंतीए" (कुप्र ४२०)।
हुरड पुंस्त्री [दे] तृण आदि से कुछ २ पकाया हुआ चना आदि धान्य, होला आदि; (सुपा ३८६; ४७३)।
हुरत्था अ [दे] बाहर; (आचा १, ८, २, १; ३; २, १, ३, २; कस)।
हुरुडी स्त्री [दे] विपादिका, रोग विशेष; (दे ८, ७१)।
हुल सक [क्षिप्] फेंकना। हुलइ; (हे ४, १४३; पड्)।
हुल सक [मृज्] मार्जन करना, साफ करना। हुलइ; (हे ४, १०५; पड्)।
हुलण वि [मार्जन] सफा करने वाला; (कुमा ६, ६८)।
हुलण न [क्षेपण] फेंकना; (कुमा)।
हुलिअ वि [दे] १ शीघ्र, वेग-युक्त; "मह पवणाहुलिए" (दे ८, ५६)। २ न. शीघ्र, जल्दी, तुरंत; (पण्ह १, १—पत्र १४; स ३५०; उप ७२८ टी)।
हुलुफुलि स्त्री [दे] कपट, दम्भ; (नाट—मृच्छ २८२)।
हुलुव्वी स्त्री [दे] प्रसव-परा, निकट-भविष्य में प्रसव करने वाली स्त्री; (दे ८, ७१)।
°हुल्ल देखो फुल्ल= फुल्ल; (भवि)।
हुव देखो हुण=हु। हुवइ; (प्राकृ ६६)।
हुव देखो हव=भू। हुवंति; (हे ४, ६०; प्राप्र)। भूका—हुवीअ; (कुमा ५, ८८)। भवि—हुविस्सति; (पि ५२१)। वकृ—हुवंत, हुवमाण, हुवेमाण; (षड्)। संकृ—हुविअ; (नाट—चैत ५७)।
हुव (अप) देखो हूअ=भूत; (भवि)।
हुव (अप) देखो हुअ = हुत; (भवि.)।
हुव्व° देखो हुण=हु।
°हुव्वंत देखो धुव्वंत = धुव=धाव्, (से ६, ३४)।
हुस्स देखो हस्स=ह्रस्व; (आचा; औप; सम्मत्त १६०)।

हुहुअ पुंन [हुहुक] देखो हूहूअ; (अणु ६६; १७६)।
हुहुअंग पुंन [हुहुकाङ्ग] देखो हूहूअंग; (अणु ६६; १७६)।
हुहुरु अ [हुहुरु] अनुकरण-शब्द विशेष, 'हुहुरु' ऐसा शब्द; (हे ४, ४२३; कुमा)।
हूअ देखो भूअ=भूत; (हे ४, ६४; कुमा; श्रा १४; १६; महा; सार्ध १०५)।
हूअ वि [हूत] आहूत, आकारित; (हे २, ६६)।
हूअ देखो हुअ=हुत; "मन्ने पंचसरो पुरा भगवया ईसेण हूओ सयं, कोहंधेण सआसुगोवि सघणुद्दंडोवि णित्तानले" (रंभा २५)।
हूण पुं [हूण] १ एक अनार्य देश; २ वि. उसका निवासी मनुष्य; (पण्ह १, १—पत्र १४; कुमा)।
हूण देखो हीण=हीन; (हे १, १०३; षड्)।
हूम पुं [दे] लोहार; (दे ८, ७१)।
°हूसण देखो भूसण; (गा ६५५; पि १८८)।
हूहू पुं [हूहू] गन्धर्व देवों की एक जाति; (धर्मवि ४८; सुपा ५६)।
हूहूअ पुंन [हूहूक] संख्या-विशेष, 'हूहूअंग' को चौरासी लाख से गुनने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (ठा २, ४—पत्र ८६; अणु २४७)।
हूहूअंग पुंन [हूहूकाङ्ग] संख्या-विशेष, 'अवव' को चौरासी लाख से गुनने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (ठा २, ४—पत्र ८६; अणु २४७)।
हे अ [हे] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ संबोधन; २ आह्वान; ३ असूया, ईर्ष्या; (हे २, २१७ टि; पि ७१; ४०३; भवि)।
हेअ देखो हा=हा।
°हेअ देखो भेअ=भेद; (गा ८२७)।
हेअंगवीण न [हैयङ्गवीन] १ नवनीत, मक्खन; २ ताजा घी; (नाट—साहित्य २३६)।
हेआल पुं [दे] हस्त-विशेष से निषेध, साँप के फण की तरह किये हुए हाथ से निवारण; (दे ८, ७२)।
हेउ पुंन [हेतु] १ कारण, निमित्त; "हेऊइं" (राय २६; उवा; पण्ह २, २—पत्र ११४; कप्प; गउड; जी ५१; महा; पि ३५८)। २ अनुमान-वाक्य, पंचावयव वाक्य; (उत्त ६, ८; सुख ६, ८)। ३ अनुमान का साधन; (धर्मसं ७७; ठा ४, ४ टी—पत्र २८३)। ४ प्रमाण; (अणु)। °वाय पुं [°वाद] १ बारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ, दृष्टिवाद; (ठा १०—पत्र ४६१)। २ तर्कवाद, युक्तिवाद; (सम्म १४०; १४२)।
हेउअ वि [हैतुक] १ हेतुवाद को मानने वाला, तर्कवादी; "जो हेउवायपक्खम्मि हेउओ आगमे य आगमिओ" (सम्म १४२; उवर १५१)। २ हेतु का, हेतु से संबन्ध रखने वाला; स्त्री—°उई; (विसे ५२२)।
हेच्च, हेच्चाणं } देखो हा=हा।
हेज्ज देखो हर=हृ।
हेट्ठ स्त्रीन [अधस्] नीचे, गुजराती में 'हेठ'; "नग्गोहहेट्ठम्मि" (सुर १, २०५; पि १०७; हे २, १४१; कुमा; गउड), "हेट्ठओ" (महा); स्त्री—°ट्ठा; (औप; महा; पि १०७; ११४)। °मुह वि [°मुख] अवाङ्मुख; जिसने मुँह नीचा किया हो वह; (विपा १, ६—पत्र ६८; दे १, ६३; भवि)। °वणि वि [°अवनि] महाराष्ट्र देश का निवासी, मरहट्टा; (पिंड ६१६)।
हेट्ठिम, हेट्ठिल्ल } वि [अधस्तन] नीचे का; (सम १६; ४१; भग; हे २, १६३; सम ८७; षड्; औप)।
हेडा स्त्री [दे] १ घटा, समूह; (सुपा ३८६; ५३०)। २ द्यूत आदि खेलने का स्थान, अखाड़ा; (धम्म १२ टी)।
हेडिस, हेदिस } (अशो) देखो एरिस; (पि १२१)।
हेपिअ वि [दे] उन्नत, ऊँचा; (षड्)।
हेम न [हेम] १ सुवर्ण, सोना; (पाअ; जं ४; औप; संक्षि १७)। २ धत्तूरा; ३ मासे का परिमाण; ४ पुं. काला घोड़ा; ५ वि. पंडित; (संक्षि ७)। ६ पुं. एक विद्याधर राजा; (पउम १०, २१)। °चंद पुं [°चन्द्र] १-२ विक्रम की बारहवीं शताब्दी के दो सुप्रसिद्ध जैन आचार्य तथा ग्रन्थकार; (दे ८, ७७; सुपा ६५८)। ३ विक्रम की पनरहवीं शताब्दी का एक जैन मुनि; (सिरि १३४१)। °जाल न [°जाल] सुवर्ण की माला; (औप)। °तिलय पुं [°तिलक] विक्रम की चौदहवीं शताब्दी का एक जैनाचार्य; (सिरि १३४०)। °पुर न [°पुर] एक विद्याधर-नगर; (इक)। °मय वि [°मय] सोने का बना हुआ; (सुपा ८८)। °महिहर पुं [°महिधर] मेरु पर्वत; (गउड)। °मालिणी स्त्री [°मालिनी] एक दिक्कुमारी देवी; (इक)। °व पुं [°वत्] फाल्गुन

मास; (सुज्ज १०, १६)। °विमल पु [°विमल] एक
जैन आचार्य; (कुम्मा ३५)। °भ पुं [°भ] चौथी
नरक-पृथिवी का एक नरक-स्थान; (निर १, १)।
हेमंत पुं [**हेमन्त**] १ ऋतु-विशेष, मगसिर तथा पोस
महिना; (पाअ; आचा; कप्प; कुमा)। २ शीतकाल;
(दस ३, १२)।
हेमंत वि [**हैमन्त**] हेमन्त ऋतु में उत्पन्न; (सुज्ज १२—
पत्त २१६)।
हेमंतिअ वि [**हैमन्तिक**] ऊपर देखो; (कप्प; ओप; गा
हेमग वि [**हैमक**] हिम का, हिम-संबन्धी; (ठा ४, ४—
६६; राय ३८)।
पत्त २८७)।
हेमवइ } पुंन [**हैमवत**] १ वर्ष-विशेष, क्षेत्र-विशेष; (इक;
हेमवय } सम १२; जं ४—पत्त २६६; ३००; ठा २, ३
टी—पत्त ६७; पउम १०२, १०६)। २ हिमवंत पर्वत का
एक शिखर; ३ कूट-विशेष; (इक)। ४ वि. हिमवंत पर्वत
का; (राय ७४; ओप)। ५ पुं. हैमवत क्षेत्र का
अधिष्ठाता देव; (जं ४—पत्त ३००)।
हेम्म देखो **हेम**; (सत्ति १७)।
हेर सक [दे] १ देखना, निरीक्षण करना। २ खोजना,
अन्वेषण करना। वकृ—**हेरंत**; (पिंग)। संकृ—
हेरिऊण; (धर्मवि ५४)।
हेरंब पुं [दे] १ महिष, भैंसा; २ डिण्डिम, वाद्य विशेष;
(दे ८, ७६)।
हेरण्णवय पुंन [**हैरण्यवत**] १ वर्ष-विशेष, एक युगलिक-
क्षेत्र; (इक; पउम १०२, १०६)। २ रुक्मि पर्वत का एक
शिखर; ३ शिखरी पर्वत का एक शिखर; (इक २१८)।
हेरण्णिअ पुं [**हैरण्यिक**] सुवर्णकार; (उप पृ २१०)।
हेरन्नवय देखो **हेरण्णवय**; (ठा २, ३—पत्त ६७; ७६)।
हेरिअ पुं [**हेरिक**] गुप्त चर, जासूस; (सुपा ४६४;
५८६)।
हेरिंब पु [दे. **हेरम्ब**] विनायक, गणेश; (दे ८, ७२;
षड्)।
हेरुयाल सक [दे] क्रुद्ध करना, गुस्सा उपजाना। हेरु-
यालंति; (णाया १, ८—पत्त १४४)।
हेला स्त्री [**हेला**] १ स्त्री की शृङ्गार-संबन्धी चेष्टा-विशेष;
(पाअ)। २ अनादर; (पाअ; से १, ५५)। ३ अना-
यास, अल्प प्रयास, सहलाई, सरलता; (से १, ५५; कप्पू;
प्रवि ११; पि ३७५)।
हेला स्त्री [दे. **हेला**] वेग, शीघ्रता; (दे ८, ७१; कप्पू;
प्रवि ११; पि ३७५)।
हेलिय पुं [**हैलिक**] एक तरह की मछली; (जीव १
टी—पत्त ३६)।
हेलुअ न [दे] क्षुत, छींक; (दे ८, ७२)।
हेलुक्का स्त्री [दे] हिक्का, हिचकी; (दे ८, ७२)।
हेल्लि (अप) अ [**हले**] सखी का आमन्त्रण, हे सखि;
(हे ४, ४२२; ३७६; पि १०७)।
हेवं (अशो) देखो **एवं**; (पि ३३६)।
हेवाग पुं [**हेवाक**] स्वभाव, आदत; (राज)।
हेसमण वि [दे] उन्नत, ऊँचा; (षड्)।
हेसा स्त्री [**हेषा**] अश्व-शब्द; (सुपा २८८; श्रा २७)।
हेसिअ न [**हेषित**] ऊपर देखो; (दे ८, ६८; पउम
५४, ३०; ओप; महा; भवि)।
हेसिअ न [दे. **हेषित**] रसित, चीत्कार; (षड्)।
हेहंभूअ वि [दे] गुण-दोष के ज्ञान से रहित और निर्दम्भ,
अज्ञ किन्तु निखालस; (वव १)।
हेहय पु [**हैहय**] १ एक राजा; (राज)। २ °डिंब पुं
[°डिम्ब] एक विद्याधर राजा; (पउम १०, २०)।
हो देखो **हव**=भू। होइ, होअइ, होअए, होएइ, होंति,
होइरे, होअइरे; (हे ४, ६०; षड्; कप्प; उव; महा; पि
४५८; ४७६)। होज्ज, होज्जा, होएज्ज, होएज्जा, होउ;
(हे २, १५६; १७७; भग; प्राप्र; पि ४६६)। भूका—
होत्था, होहीअ; (कप्प; प्राप्र)। भवि—होहिइ, होहिंति,
होहामि, होहिमि, होस्सं, होस्सामि, होक्खइ, होक्खं;
(हे ३, १६६; १६७; १६६; प्राप्र; पि ५२१), होसइ
(अप); (हे ४, ३८८)। कर्म—होइज्जइ, होइज्जए,
होईअइ; (षड्; पि ४७६)। वकृ—**होंत**, **होमाण**; (हे
३, १८०; ४, ३५५; ३७२; कुमा; पि ४७६)। संकृ—
होऊण, **होऊणं**, **होअऊण**, **होइऊण**, **हविय**, **होत्ता**;
(गउड; पि ५८५; ५८६; कुमा)। हेकृ—**होउं**, **होत्तए**;
(महा; पि ४७५; कप्प)। कृ—**होयव्व**; (कप्प; महा;
उव; प्रासू १६; ६१)।
हो अ [**हो**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ विस्मय,
आश्चर्य; (पाअ; नाट—मृच्छ ११२)। २ संबोधन,
आमन्त्रण; (संक्षि ४७; उप ५६७ टी)।
होउ वि [**होतृ**] होम-कर्ता; (गा ७२७)।

होंड देखो हुंड; (विचार ५०७)।
होट्ठ पुं [**ओष्ठ**] होठ; (आचा)।
होड्डु देखो हुड्डु; "तो हं छोडेमि होड्डुओ" (सुपा २७७; २७८)।
होढ पुं [**होड**] मोष, चोरी की वस्तु; (णाया १, २—पत्र ८६; पिंड ३८०)।
होण देखो हूण=हूण; (पव २७४; विचार ४३)।
होत्तिय पुं [**होत्रिक**] १ वानप्रस्थ तापसों का एक वर्ग, अग्निहोत्रिक वानप्रस्थ; (औप; भग ११, ९—पत्र ५१५)। २ न. तृण-विशेष; (पराण १—पत्र ३३)।
होम पुं [**होम**] हवन, अग्नि में मन्त्र-पूर्वक घृत आदि का प्रक्षेप; (अभि १५९)।
होम सक [**होमय्**] होम करना। हेकृ—**होमिउं**,(ती ८)।
होमिअ वि [**होमित**] हवन किया हुआ; "अणत्थपंडिय-कुकव्वहविहोमिओ" (स ७१४)।
होरंभा स्त्री [**होरम्भा**] वाद्य-विशेष, महाढक्का, बड़ा ढ़ोल; (राय ४६)।
होरण न [**दे**] वस्त्र, कपड़ा; (दे ८, ७२; गा ७७१)।
होरा स्त्री [**होरा**] १ खड़ी से की हुई रेखा; (गा ४३५)। २ ज्योतिष-शास्त्र में उक्त लग्न; (मोह १०१)। ३ होरा-ज्ञापक शास्त्र; (स ६०२)।
होल पुंस्त्री [**दे**] १ वाद्य-विशेष; "होलं वाएह मे इत्थ" (धर्मवि ४४), "आढत्तं मज्जपाणं वायावेइ होलं" (सुख ३, १)। २ पक्षि-विशेष;
"होलाहगिद्धकुक्कुडहसबगाईसु सउणजाईसु।
जं खुहवसेण खद्धा किमिमाई तेवि खामेमि" (खा १३)।
३ एक तरह की गाली, अपमान-सूचक शब्द—मूर्ख, बेवकूफ, (आचा २, ४, १, ८; ११; दस ७, १४; १६)। °**वाय** पुं [°**वाद**] दुर्वचन बोलना, गाली-प्रदान; (सूअ १, ९, २७)।
होलिया स्त्री [**होलिका**] होली, फागुन मास का पर्व-विशेष; (सट्ठि ७८ टी)।
होस° देखो हो=भू।
ह्रद देखो दह; (पिंड ८४; पि ३६६ ए)।
ह्रस्स देखो **रहस्स**=ह्रस्व; (पि ३५४)।
ह्रास देखो हास=ह्रास; (णादि २०६ टी)।

इअ **पाइअसद्दमहण्णवम्मि** हआराइसद्दसंकलणो अट्ठतीसइमो तरंगो समत्तो। समत्तो अ तस्समत्तीए एस गंथो।

पसत्थी [प्रशस्तिः]।

आसाइ पच्छिमाए भारह-वासे इहत्थि अइ-रम्मो।
गुज्जर-णामा देसो पुव्वं लाढो त्ति विक्खाओ ॥ १ ॥
तस्सुत्तर-दिसि-भाए पुरं पुराणं पुराणमइ-पवरं।
राहणपुरं ति अच्छइ सच्छाण जिणिंद-भवणाणं ॥ २ ॥
चंगाणं तुङ्गाणं धय-वड-सेअंचलेहिं चलिरेहिं।
पडिसेहंतं विव जं णिअ-वासि-जणे अहम्माओ ॥ ३ ॥
णिअ-पाय-पणासेणं वासेण य वास-याल-पेरंतं।
जं पुण कयं पवित्तं जय-गुरु-पमुहेहिं सूरीहिं ॥ ४ ॥ [कुलयं]।
तव्वत्थव्वो आसी सिट्ठी सिरिमाल-वंस-वर-रयणं।
णामेण तिअमचंदो दक्खिण्ण-दयाइ-गुण-कलिओ ॥ ५ ॥
आवय-संपत्तीणं संपत्तीए वि जेण णिअचित्ते।
दिण्णो णेव कयाई विसाय-हरिसाण अवयासो ॥ ६ ॥ [जुग्गं]
अणवज्ज-कज्ज-सज्जा धम्म-मणा धम्मपत्ती से धणिअं।
सीलाइ-गुण-प्पहाणा पहाणदेवि त्ति अ अहेसि ॥ ७ ॥
तेसिं दो तणुजम्मा आवल्लं लद्ध-धम्म-सक्कारा।
जिट्ठो हरगोविंदो कणिट्ठओ बुड्ढिचंदो अ ॥ ८ ॥

सत्थ-विसारय-जइणायरिएहिं विजयधम्म-सूरीहिं ।
कासीइ महेसीहिं विज्जागारम्मि संठविए ॥ ९ ॥
गंतूण सोअरेहिं तेहिं बेहिंपि तत्थ सत्थाणं ।
सक्कय-पययमयाणं अब्भासो काउमारद्धो ॥ १० ॥
खण-दिट्ठ-णट्ठ-भावं संसारं सार-वज्जिअं णाउं ।
एअंतिअ-अच्चंतिअ-सोक्खं मोक्खं च वाय-फलं ॥ ११ ॥
पडिवज्जिअ पव्वज्जं अणुओ पयणुअ-राग-विद्देसो ।
विहरइ तं पालिंतो विसालविजओ त्ति पत्तभिहो ॥ १२ ॥ [जुग्गं]
जेट्ठो उण सत्थाणं णाय-व्वायरणमाइ-विसयाणं ।
पढणज्झावण-संसोहणाइ-कज्जेसु दिण्ण-मणो ॥ १३ ॥
लंकाइ सिंहलेसुं पाली-भासाइ सुगय-समयाणं ।
अब्भास-परिक्खासुं पारं पत्तोप्प-कालेण ॥ १४ ॥
कलिकायाए णाए वायरणे चेव लद्ध-तित्थ-पओ ।
खायाइ परिक्खाए उत्तिण्णो उच्च-कक्खाए ॥ १५ ॥
तत्थेव विस्सविज्जालयम्मि सव्वुत्तमाइ सेणीए ।
पायय-सक्कय-सत्थज्झावण-कज्जम्मि विणिउत्तो ॥ १६ ॥
तेण य पायय-भासाहिहाण-गंथस्स विक्खमाणेण ।
चिर-कालाउ अभावं आयर जोग्गस्स विवुहाणं ॥ १७ ॥
वाणारसीइ वरिसे सिअहय-हय-अंक-रयणिरयण-मिए ।
विहिओ उवक्कमो विक्कमाओ एअस्स गंथस्स ॥ १८ ॥
कलिकायाए जाया पावय-वसु-अंक इंदु-परिगणिए ।
वरिसे भद्दय-मासे सिअ-सत्तमीए समत्ती ओ ॥ १९ ॥
तस्स सुभद्दादेवी-णामाइ सधम्मिणीइ एत्थ बहुं ।
आयरिअं साहिज्जं विज्जज्झयणाणुरत्ताए ॥ २० ॥
आरंभं काऊण आरिस-भासाउ आ अवब्भंसा ।
जो सद्दो जहिं अत्थे जत्थ ग्गंथे उ उवलद्धो ॥ २१ ॥
वण्णाणमणुक्कमेण सो सद्दो तम्मि अत्थए लिहिओ ।
तग्गन्थ-ठाण-दंसण-पुव्वं णिउणं णिरूवेत्ता ॥ २२ ॥
पाईण-पाइआणं भासाण बहुत्त-भेअ-भिण्णाणं ।
सद्दण्णव-पारं जे गया तयट्ठो ण एस समो ॥ २३ ॥
जे उण अण-पत्तट्ठा सयं तयब्भासिणो य अ-सहाया ।
ताणं हत्थालंवण-दाणाएवस्स णिम्माणं ॥ २४ ॥
जइ थेवोवि हवेज्जा तेसिं गन्थेणणेण उवयारो ।
ता एत्तिअमेत्तेण मण्णे आयास-साहल्लं ॥ २५ ॥
अण्णाणेण मईए भमेण वा एत्थ किंचि जमसुद्धं ।
तं सोहितु पसायं काऊण सयासया स-यणा ॥ २६ ॥

॥ समाप्त ॥

परिशिष्ट।

अ [दे] देखो इव; "चंदो अ" (प्राकृ ७६)।
अइ अ [अति] सामर्थ्य-सूचक अव्यय; जैसे—अइवहइ; (सूअ १, २, ३, ५)।
अइउट्ट वि [अतिवृत्त] अतिगत, प्राप्त; (सूअ १, ५, १, १२)।
अइंमुत्त देखो अइमुत्त ; (प्राकृ ३२)।
अइकम अक [अति+क्रम्] गुजरना, बीतना। 'देवचयणस्स समश्रो अइकमइ दुद्धरस्स रायस्स" (सम्मत्त १७४)। देखो अइक्कम=अति+क्रम्।
अइक्ख वि [अतीक्ष्ण] तीक्ष्णता-रहित ; "अइक्खा वेयरणी" (तंदु ४६)।
अइक्ख वि [अनीक्ष्य] अदृश्य; "अइक्खा वेयरणी" (तंदु ४६)।
अइगय वि [अतिगत] प्राप्त: "एवं बुंदिमइगओ गब्भे संवसइ दुक्खओ जीवो" (तंदु १३)।
अइट्ठ वि [अदृष्ट] जो देखा न गया हो वह ; (हास्य १४६)।
अइणीअ वि [अतिगत] गत, गया हुआ; (सुख २, १३)।
अइतेया स्त्री [अतितेजा] पक्ष की चौदहवीं रात; (सुज्ज १०, १४)।
अइपाइअ वि [अतिपातिक] हिंसा करने वाला; (सूअ २, १, ५७)।
अइपास सक [अति+दृश्] अतिशय देखना, खूब देखना। अइपासइ; (सूअ १, १, ४, ६)।
अइप्पमाण वि [अतिप्रमाण] १ तृप्त न होता हुआ भोजन करने वाला; २ न तीन वार से अधिक भोजन; (पिंड ६४७)।
अइप्पसंगि वि [अतिप्रसङ्गिन्] अतिप्रसंग दोष वाला; (अज्झ १०)।
अइय वि [अतिग] प्राप्त; (राय १३४)।
अइर वि [दे] अ-तिरोहित; (पिंड ५६०; ५६१)।
अइरेइय वि [अतिरेकित] अतिरेक-युक्त, अति प्रभूत; (राय ७८ टी)।
अइवय सक [अति+वृत्] उल्लंघन करना। संकृ—अइवइत्ता ; (सूअ २, २, ६५)।
अइवह सक [अति+वह्] वहन करने में समर्थ होना। अइवहइ; (सूअ १, २, ३, ५)।
अइवाह सक [अति+वाहय्] बीताना, गुजारना। "सो अइवाहेइ दुन्नि दिणे" (धर्मवि ३३)।
अइसंधण देखो अइसंधाण ; "मितगणाइसंधणं न कायव्वं" (पंचा ७, २१)।
अइसायण न [अतिशायन] उत्कृष्टता, उत्कर्ष; (चेइय ५३३)।
अइसेसि वि [अतिशेषिन्] १ महिमान्वित; २ समृद्ध, ज्ञान आदि के अतिशय से सम्पन्न; (सट्ठि ४२ टी)।
अइसेसिय वि [अतिशेषित] ज्ञात, जाना हुआ; (वव १)।
अईसार पुं [अतीसार] रोग-विशेष, संग्रहणी रोग; (सुख १, ३)।
अउ देखो आउ=स्त्री; "उल्लसिओ तमरुवो वलयागारो अउक्काओ" (पव २५५)।
अउचित्त न [औचित्य] उचितपन; (प्राकृ १०)।
अउणतीसइ स्त्री देखो अउण-त्तीस ; (उत्त ३६, २४०)।
अउणप्पन्न देखो अउणापन्न ; (जीवस २०८)।
अउणासट्ठि देखो अउण-सट्ठि ; (सुज्ज ६)।
अउमर वि [अद्मर] खाने वाला, भक्षक; (प्राकृ २८)।
अओग्ग वि [अयोग्य] नालायक, (स ७६४)।
अं अ [दे] स्मरण-द्योतक अव्यय, "अं दठ्ठव्वा मालइलआ" (प्राकृ ८०)।
अंक पुन [अङ्क] एक देव-विमान; (देवेन्द्र १३२)।
अंककरेलुअ, °ग देखो अंक-करेल्लुअ; (आचा २, १, ८, ५)।
अंकदास पुं [अङ्कदास] बालक को उत्संग में लेकर उसका जी बहलाने वाला नौकर; (सम्मत्त २१७)।
अंकवाणिय देखो अंक-वणिय; (राय १२६)।
अंकुस पुंन [अङ्कुश] १ एक देव-विमान; (देवेन्द्र १४०)। २ पुं. अंकुशाकार खूंटी; (राय ३७)।

अंकूर देखो अंकुर ; "सा पुण्ण विरतमित्ता निरंकूरे विसेसेइ" (सूअनि ६१ टी)।

अंग पुं [अङ्ग] भगवान् आदिनाथ के एक पुत्र का नाम; (ती १४)। २ न. लगातार बारह दिनों का उपवास; (संबोध ५८)। °ज देखो °य; (धर्मवि १२६)। °हर वि [°धर] अङ्ग-ग्रन्थों का जानकार; (विचार ४७३)।

अंगुलेयग देखो अंगुलेयय ; (सुख २, २९)।

अंच सक [अञ्च्] जाना। अंचति; (पंचा १६, २३)। "अञ्चु गइ पूयणम्मि य", 'सोधीए पारमंचइ' (पुच ४)।

अंचियरिभिय न [अञ्चितरिभित] एक तरह का नाट्य; (राय ५३)।

अंजण पुं [अञ्जन] १ कृष्ण पुद्गल-विशेष; (सुज्ज २०)। २ देव-विशेष; (सिरि ६६७)।

अंतगय देखो अंत-ग्गय; (वव १)।

अंतद्धाण वि [अन्तर्धान] तिरोधान-कर्त्ता; (पिंड ५००)।

अंतब्भाव देखो अंत-भाव; (अज्झ १४२)।

अंतरपल्ली स्त्री [अन्तरपल्ली] मूल स्थान से ढ़ाई गव्यूत की दूरी पर स्थित गाँव; (पव ७०)।

अंतरमुहुत्त देखो अंत-मुहुत्त; (पंच २, १३)।

अंतरापह पुं [अन्तरापथ] रास्ता का बीचला भाग; (सुख १, १५)।

अंतरीय न [अन्तरीप] द्वीप; "सरवरगिहंतराले जिणभवणं आसि अंतरीयं व" (धर्मवि १४३)।

अंतरेण अ [अन्तरेण] बीच में, मध्य में; (स ७६७)।

अंध पुं [अन्ध] पांचवीं नरक का चौथा नरकेन्द्रक—एक नरक-स्थान; (देवेन्द्र ११)।

अंधार सक [अन्धकारय्] अन्धकार-युक्त करना। कर्म—"मेहच्छन्ने सूरे अंधारिजइ न किं भुवणं" (कुप्र ३८७)।

अंधिअ वि [अन्धित] अन्ध बना हुआ; (सम्मत्त १२१)।

अंधिआ स्त्री [अन्धिका] चतुरिन्द्रिय जंतु की एक जाति; (उत्त ३६, १४७)।

अंधिल्लय देखो अंधिल्लग; (पिंड ५७२)।

अंबर पुंन [अम्बर] एक देव-विमान; (देवेन्द्र १४४)।

अंबरस पुंन [अम्बरस] आकाश, गगन; (भग २०, २—पत्र ७७५)।

अंभोहि पुं [अम्भोधि] समुद्र ; (कुप्र २७१)।

अंस पुं [अंश] विद्यमान कर्म, सत्ता-स्थित कर्म; "अंस इति संतकम्मं भन्नई" (कम्म ६, ६)। °हर वि [°धर] भागीदार; (उत्त १३, २२)।

अंसु देखो अंसुय=अंशुक; (पंच ३,४०)।

अंसु पुं [अंशु] किरण। °मंत, °वंत वि [°मत्] १ किरण वाला ; २ पुं. सूर्य ; (प्राकृ ३५)।

अंसु न [अश्रु] आँसू, नेत्र-जल। °मंत, °वंत वि [°मत्] अश्रु वाला; (प्राकृ ३५)।

अंह पुंन [अंहस्] मल; "मउयं व वाहिओ सो निरंहसा तेण जलपवाहेण" (धर्मवि १४६)।

अकंत वि [अकान्त] अनिष्ट, अनभिलषित, अनभिमत; (सूअ १,१,४,६)।

अक्का स्त्री [अक्का] कुट्टनी, दूती; (कुप्र १०)।

अक्कूर पुं [अक्रूर] श्रीकृष्ण के चाचा का नाम; (रुक्मि ४६)।

अक्खउहिणी देखो अक्खोहिणी; (प्राकृ ३०)।

अक्खाउ वि [आख्यातृ] कहने वाला; (सूअ १,१,२,१३)।

अक्खित्त वि [आक्षिप्त] सब तरफ से प्रेरित; (सिरि ३९६)।

अक्खिव सक [आ+क्षिप्] आक्रोश करना। अक्खिवंति ; (सिरि ८३१)।

अक्खुभिय देखो अक्खुहिय; (णंदि ४९)।

अक्खोड पुं [आस्फोट] प्रतिलेखन की क्रिया-विशेष ; (पव २)।

अखरय पुं [दे] भृत्य-विशेष, एक प्रकार का दास; (पिंड ३६७)।

अखोड देखो अक्खोड+आस्फोट ; (पव २ टी)।

अगम पुं [अगम] १ वृक्ष, पेड़; "दुमा य पायवा रुक्खा णा(१ अ)गमा विडिमा तरू" (दसनि १, ३५)। २ वि. स्थावर, नहीं चलने वाला; (महानि ४)।

अगारग वि [अकारक] अ कर्ता; (सूअनि ३०)।

अगिगि देखो अग्गि; (संक्षि १२)।

अगुणासी देखो एगूणासी ; (पव २४)।

अग्ग न [अग्रय] प्रकर्ष; (उत्त २०, १५)।

अग्ग पुंन [दे] १ परिहास; २ वर्णन; (संक्षि ४७)।

अग्ग न [अग्र] १ प्रभूत, बहु; २ उपकार ; (आचानि २८५)। °भाव न [°भाव] धनिष्ठा-नक्षत्र

का गोत्र; (जं ७—पत्र ५००)। °माहिसी देखो °महिसी ; (उत्त १९, १)।
अग्गाहार पुं [दे· अग्राहार] उच्च जीविका; (सुख २, १३)।
अग्गि पुं [अग्नि] नरकावास-विशेष, एक नरक-स्थान; (देवेन्द्र २७)। °मंत, °वंत वि [°मत्] अग्नि वाला; (प्राकृ ३५)। °हुत्त देखो °होत्त; (उत्त २५, १६; सुख २५, १६)।
अग्गिल देखो अग्गिल्ल=अग्रिल ; (सुज्ज २०)।
अग्गिल्ल वि [अग्रिम] अग्रवर्ती; (सिरि ४०६)।
अग्गेय वि [आग्नेय] अग्नि (कोण)-सम्बन्धी; (अणु २१५)।
अग्घ सक [आ-घ्रा] सूँघना। संकृ—अग्घेऊण ; (सम्मत्त १४२)।
अग्घ पुं [अर्घ] १ एक देव-विमान; (देवेन्द्र १३२)। २ पूजा; (राय १००)।
अचल पुं [अचल] छठवाँ रुद्र पुरुष; (विचार ४७३)।
अचिरजुवइ देखो अइरजुवइ; (दे १, १८ टी)।
अच्चग्गल वि [अत्यर्गल] निरंकुश, अनियन्त्रित; (मोह ८७)।
अच्चणिया स्त्री [अर्चनिका] अर्चन, पूजा; (राय १०८)।
अच्चा स्त्री [अर्चा] १ शरीर, देह; (सूत्र १, १३, १७; १, १५, १८; २, २, ६; ठा १—पत्र १९)। २ लेश्या, चित्त-वृत्ति; (सूत्र १, १३, १७; १, १५, १८)। ३ ऐश्वर्य; (ठा ३, १—पत्र ११७)।
अच्चासण पुं [अत्यशन] पक्ष का बारहवाँ दिन, द्वादशी तिथि; (सुज्ज १०, १४)।
अच्चुअ पुंन [अच्युत] एक देव-विमान; (देवेन्द्र १३५)।
अच्चे अक [अति+इ] १ अतिक्रान्त होना, गुजरना। २ सक, उल्लंघन करना। अच्चेइ; (उत्त १३, ३१; सूत्र १, १५, ८)।
अच्चे सक [अत्या+इ] त्याग करवाना। अच्चेही ; (सूत्र १, २, ३, ७)।
अच्छ सक [आ+छिद्] १ काटना, छेदना। २ खींचना। अच्छे; (आचा १, १, २, ३)। संकृ—अच्छित्तु; (श्रावक २२५), अच्छेत्तु ; (पिंड ३६८)।
अच्छ पुं [अच्छ] १ मेरु पर्वत; (सुज्ज ५)। २ न· तीन वार औटा हुआ स्वच्छ पानी; (पडि)।
अच्छरा स्त्री [दे· अप्सरा] चुटकी, चुटकी का आवाज; (सूत्र २, २, ५४)।
अच्छोडिअ वि [आच्छोटित] पटका हुआ, आस्फालित; (कुप्र ४३३)।
अजिअ पुं [अजित] भगवान् मल्लिनाथ का प्रथम श्रावक; (विचार ३९८)। °नाह पुं [°नाथ] नववाँ रुद्र पुरुष; (विचार ४७३)।
अजियंधर पुं [अजितधर] ग्यारह रुद्रों में आठवाँ रुद्र पुरुष; (विचार ४७३)।
अजीरण देखो अइन्न=अजीर्ण; (पिंड २७; पव १३१)।
अजुय देखो अउअ ; "पंच अजुयाणि हयाणं सत्त कोडीओ पाइक्कजणाणं" (सुख ९, १)।
अज्ज वि [आर्य] १ निर्दोष; २ आर्य-गोत्र में उत्पन्न; (णंदि ४९)। ३ शिष्ट-जनोचित; "अज्जाइं कम्माइं करेहि रायं" (उत्त १३, ३२)। °खउड पुं [°खपुट] एक जैन आचार्य; (कुप्र ४४०)।
अज्जकालिअ वि [अद्यकालिक] आजकल का; (अणु १५८)।
अज्जण सक [अर्ज्] उपार्जन करना। संकृ—अज्जणित्ता; (सूत्र १, ५, २, २३)।
अज्जविय न [आर्जव] सरलता; (सूत्र २, १, ५७)।
अज्जाय वि [अजात] अनुत्पन्न ; "अजायस्सियरस्सवि एस सहावो त्ति दुग्घडं जाए" (धर्मसं २७०)।
अज्जिड्डीय वि [दे] दत्त, दिया हुआ; (वव १ टी)।
अज्झत्थीअ देखो अज्झत्थिय ; (पव १२१)।
अज्झप्पिअ वि [आध्यात्मिक] १ अध्यात्म का जानकार ; (अज्झ २)। २ अध्यात्म-सम्बन्धी ; (सूत्रनि ९४)।
अज्झवसिय वि [अध्यवसित] निश्चित ; (धर्मसं ४२८)।
अज्झा, अज्झाअ } सक [अधि+इ] अध्ययन करना, पढ़ना। अज्झामि ; (सुख २, १३)। हेकृ—अज्झाइउं ; (सुख २,१३)।
अज्झाअ सक [अध्यापय्] पढ़ाना। कर्म—अज्झाइज्जइ; (सुख २, १३)।
अज्झारोव पुं [अध्यारोप] आरोप, उपचार ; (धर्मसं ३५२; ३५३)।

अज्झाव देखो अज्झाअ=अध्यापय्। अज्झावेइ; (सुख २,१३)। वकृ—अज्झावअंत; (हास्य १२४)।
अज्झावग देखो अज्झावय ; (दसनि १, १ टी)।
अज्झावण न [अध्यापन] पाठन; (सिरि २७)।
अज्झुसिअ वि [अध्युषित] आश्रित; (पिंड ४५०)।
अझावणा देखो अज्झावणा ; "पसमो पसन्नवयणो वि-हिया सव्वाणभावणाकुसलो" (संबोध २४)।
अट्टणा स्त्री [आवर्तना] आवृत्ति ; (प्राकृ ३१)।
अट्टमट्ट वि [दे] निरर्थक, व्यर्थ, निकम्मा; (सुख ५,८)।
अट्ठ पुं [अर्थ] संयम ; (सूअ १, २, २, १६)।
अट्ठंस वि [अष्टास्र] अष्ट-कोण ; (सूअ २, १, १५)।
अट्ठदिट्ठि स्त्री [अष्टदृष्टि] योग की आठ दृष्टियाँ, वे ये हैं:—मित्रा, तारा, बला, दीप्रा, स्थिरा, कान्ता, प्रभा और परा ; (सिरि ६२३)।
अट्ठय न [अष्टक] आठ का समूह ; (वव १)।
अट्ठाणवइ देखो अट्ठाणउइ ; (कुप्र २१६)।
अट्ठारसग न [अष्टादशक] १ अठारह का समूह ; (पंचा १४, ३)। २ वि. जिसका मूल्य अठारह मुद्रा हो वह ; (पव १११)।
अट्ठावय न [अर्थपद] गृहस्थ ; (दस ३, ४)।
अट्ठि पुं [अस्थि] १ हड्डी, हाड़; "अयं अट्ठी" (सूअ २, १, १६)। २ फल का गुठी ; (दस ५, १, ७३)।
अट्ठिय पु [अस्थिक] १ वृत्त-विशेष ; २ न. फल-विशेष, अस्थिक वृक्ष का फल ; (दस ५, १, ७३)।
अट्ठिल्लय पुं [अस्थि] फल का गुठी ; (पिंड ६०२)।
अड्डिअ वि [दे] आरोपित ; (वव १ टी)।
अढारसग देखो अट्ठारसग ; (पिंड ४०२)।
अणइवुट्ठि स्त्री [अनतिवृष्टि] अवृष्टि, वर्षा का अभाव ; "दुब्भिक्खडमरदुम्मारिईइअइवुट्ठी अणाइवुट्ठी य" (संबोध २)।
अणंतय न [अनन्तक] वस्त्र, कपड़ा ; (पव २)।
अणंस वि [अनंश] अखण्ड ; (धर्मसं ७०६)।
अणग्घ देखो अनघ ; (कुप्र १)।
अणलं अ [अनलम्] असमर्थ ; (आचा २,५,१,७)।
अणवज्ज वि [अनवद्य] निष्पाप, निर्दोष, शुद्ध; (प्राकृ २१)।
अणहा स्त्री [अधुना] इस समय ; (प्राकृ ८०)।
अणहुल्लिय वि [दे] जिसका फल प्राप्त न हुआ हो वह (सम्मत्त १४३)।
अणादि देखो अणाइ ; (स ६८३)।
अणाभिग्गह न [अनाभिग्रह] मिथ्यात्व का एक भेद ; (पंच ४, २)।
अणाव सक [आ+नायय्] मंगवाना अणावेमि, (सिरि ६४६)।
अणाविअ वि [आनायित] मंगवाया हुआ ; (सिरि ६६ ; ७१८)।
अणासण देखो अणसण; (सूअ १, २, १, १४)।
अणाहार पुं [अनाहार] एक दिन का उपवास ; (संबोध ५८)।
अणिइण देखो अणगिण; (विचार २२)।
अणिमिस न [अनिमिष] फल-विशेष ; (दस ५, १, ७३)।
अणिया स्त्री [दे] धार, अग्र भाग, गुजराती में 'अणी' "संखाणियाइ पइया" (धर्मवि १७)।
अणिह वि [अस्निह] स्नेह-रहित ; (सूअ १, २, २, ३०)।
अणुअंप सक [अनु+कम्प्] दया करना। कृ—अणुअंपणिज्ज ; (हास्य १४४)।
अणुअर वि [अनुचर] अनुसरण-कर्ता; (हास्य १२१)।
अणुओग पुं [अनुयोग] सम्बन्ध; (गु १७)
अणुकूलि वि [अनुकूलिन्] अनुकूल-कारक; "इहथिर-जोगाणुकूलिणो भणिया" (संबोध ५)
अणुक्कम सक [अनु+क्रम्] क्रम से बढ़ना। भवि—अणुक्कमिस्सामि; (जीवस १)।
अणुक्कमण न [अनुक्रमण] गमन, गति; (सूअ १, ५, २, २१)।
अणुक्कुइअ वि [अनुकुचित] थोड़ा संकुचित; (पव ६२)।
अणुग वि [अनुग] अनुसरण-कर्ता; (गच्छ ३, ३१)
अणुगमिअ वि [अनुगत] अनुसृत; (कुप्र ४३)।
अणुगरण देखो अणुकरण ; (कुप्र १७६)।
अणुग्घाय न [अनुद्घात] गुरु प्रायश्चित्त ; (वव १)।
अणुचरग वि [अनुचरक] सेवा करने वाला ; (पव ६१)।
अणुजत्ता स्त्री [अनुयात्रा] निर्गम, निःसरण ; (पिंड ८८)।

अणुजाइ स्त्री [अनुयाति] अनुसरण; (धर्मवि ४६)।

अणुजीव सक [अनु+जीव्] आश्रय करना। अणु-जीवंति ; (उत्त १८, १४)।

अणुजुंज सक [अनु+युज्] प्रश्न करना। कर्म—अणु-जुज्जते ; (धर्मसं २६३)।

अणुज्जा देखो अणोज्जा ; (आचा २, १५, ३)।

अणुज्झिज्जिर त्रि [अनुक्षयिन्] क्षीण होने वाला; (वज्जा १२)।

अणुण्णा स्त्री [अनुज्ञा] १ पठन-विषयक गुर्वाज्ञा-विशेष ; (अणु ३)। २ सूत्र के अर्थ का अध्ययन ; (वव १)।

अणुताव सक [अनु+तापय्] तपाना। संकृ—अणुता-वित्ता ; (सूअ २, ४, १०)।

अणुतावय वि [अनुतापक] पश्चात्ताप कराने वाला ; (सूअ २, ९, ८)।

अणुपन्न वि [अनुपन्न] प्राप्त ; (कुप्र ४०१)।

अणुपयाण न [अनुप्रदान] दान का बदला, प्रति-ग्रहण ; (संबोध ३४)।

अणुपवन्न वि [अनुप्रपन्न] प्राप्त ; (सूअ २, ३, ११)।

अणुपिहा देखो अणुपेहा ; (द्रव्य ३५)।

अणुपुंख न [अनुपुङ्ख] मूल तक, अन्त-पर्यन्त ; "अणुपुंखमावडतावि आवया तस्य ऊसवा हुंति" (कुप्र ३३)।

अणुपेहि वि [अनुप्रेक्षिन्] चिन्तन-कर्ता ; (सूअ १, १०, ७)।

अणुप्पवाद पुं [अनुप्रवाद] कथन ; (सूअ २,७,१३)।

अणुबंधण न [अनुबन्धन] अनुकूल बन्धन ; (उत्त २६, ४५ : सुख २६, ४५)।

अणुबंधणा स्त्री [अनुबन्धना] अनुसन्धान, विस्मृत अर्थ का सन्धान ; (पंचा १२, ४५)।

अणुबद्ध वि [अनुबद्ध] १ अनुगत ; (पंचा ६, २७)। २ पीछे बँधा हुआ ; (सिरि ४४४)।

अणुभव्व वि [अनुभव्य] आसन्न भव्य ; (संबोध ५४)।

अणुमज्ज सक [अनु+मस्ज्] विचार करना। संकृ—अणुमज्जित्ता ; (जीवस १६६)।

अणुमर अक [अनु+मृ] क्रम से मरना, पीछे पीछे मरना। "इय पारंपरमरणे अणुमरइ सहस्ससो जाव" (पिंड २७४)।

अणुमाण न [अनुमान] १ अभिप्राय-ज्ञान ; (सूअ १, १३, २०)। २ अनुसार ; (तंदु २९)।

अणुमिण सक [अनु+मा] अटकल से जानना। कर्म—अणुमिणिज्जइ ; (धर्मसं १२१६), अणुमीयए; (दसनि ४, ३०)।

अणुय पु [अणुक] धान्य-विशेष ; (पव १५६)।

अणुरंगि वि [अनुरङ्गिन्] अनुकरण-कर्ता ; (कुम्ब १०, ८)।

अणुलग देखो अणुलग्ग ; (सुख २६, १३०)।

अणुवडिअ वि [अनुपतित] पीछे गिरा हुआ; (हम्मीर ५०)।

अणुवत्त व [अनुद्वृत्त] अनुत्पन्न; (पिंड १८)।

अणुवत्तग वि [अनुवर्तक] अनुसरण-कर्ता ; (सूअ १, २, २, ३२)।

अणुवत्ति वि [अनुवर्तिन्] ऊपर देखो; (धर्मवि ५२ ; मोह १०२)।

अणुवहण न [अनुवहन] वहन ; "तवोवहाणंसुयाणं-मणुवहणं" (श्रु १३५)।

अणुवादि देखो अणुवाइ=अनुपातिन ; (उत्त १६, ६)।

अणुविस सक [अनु+विश्] प्रवेश करना। अणुविसति; (सिक्खा ७७)।

अणुवीइत्तु } देखो अणुवीइ ; (सूअ १, १२, ७; अणुवीय } १, १०, १)।

अणुवेध } पुं [अनुवेध] १ अनुगम, अन्वय, अणुवेह } सम्बन्ध ; (धर्मसं ७१२ ; ७१५)। २ संमिश्रण ; (पिंड ५६)।

अणुव्वइय वि [अनुव्रजित] अनुसृत ; (स ६८७)।

अणुव्वय पुं [अणुव्रत] श्रावक-धर्म ; (पंचा १०, ८)।

अणुव्वयण न [अनुव्रजन] अनुगमन ; (धर्मवि ५४)।

अणुसंकम सक [अनुसं+क्रम्] अनुसरण करना। अणुसंकमति ; (उत्त १३, २५)।

अणुसंगिअ वि [आनुषङ्गिक] प्रासङ्गिक ; (प्रवि १५)।

अणुसंज देखो अणुसज्ज। अणुसंजंति ; (पव ९८)।

अणुसंधण } न [अनुसंधान] १ गवेषणा, खोज ; अणुसंधाण } (संबोध ४४)। २ पूर्वापर की संगति ; (धर्मसं ३०३)।

अणुसंभर सक [अनु + स्मृ] याद करना। अणुसंभरइ; (दव नि ४, ५५)।
अणुसरि देखो अणुसारि ; "आसायणपरिहारो भत्ती सत्तीइ पवयणाणुसरी" (संबोध ४)।
अणुसुमर सक [अनु + स्मृ] याद करना। अणुसुमरइ; (धर्मवि ५६)। प्रयो— अणुसुमरावेइ ; (धर्मवि ६५)।
अणुसुय अक [अनु + स्वप्] सोने का अनुकरण करना। अणुसुयइ ; (तदु १३)।
अणोवदग्ग वि [अनवदग्र] अनन्त ; (सूअ १, १२, ६)।
अण्णय देखो अन्नय ; (धर्मसं ३९२)।
अण्णेसय वि [अन्वेषक] गवेषक ; (पव ७१)।
अत्तअ देखो अच्चय = अत्यय ; (प्राकृ २१)।
अत्तकम्म वि [आत्मकर्मन्] १ जिससे कर्म-बन्धन हो वह ; २ पुं. आधाकर्म दोष ; (पिंड ६५)।
अत्थकिरिआ स्त्री [अर्थक्रिया] वस्तु का व्यापार, पदार्थ से होने वाली क्रिया ; (धर्मसं ४६६)।
अत्थणिऊर पुन [अर्थनिपूर] देखो अच्छणिउर; (अणु ६६)।
अत्थणिऊरंग पुंन [अर्थनिपूराङ्ग] देखो अच्छणि-उरंग; (अणु ६६)।
अत्थमाविय वि [अस्तमापित] अस्त करवाया हुआ ; (सम्मत्त १६१)।
अत्थसिद्ध पुं [अर्थसिद्ध] पक्ष का दशवाँ दिवस, दशमी तिथि; (सुज्ज १०, १४)।
अत्थाणीअ वि [आस्थानीय] सभा-संबन्धी; (कुप्र ७८)।
अदन्न देखो अद्दण्ण ; (सिरि ३१०)।
अदु अ [दे] १ अथवा, या ; (सूअ १, ४, २, १५ ; उत्त ८, १२ ; दसचू २, १४)। २ अधिकारान्तर का सूचक ; (सूअ १, ४, २, ७)
अद्द पुंन [दे] १ परिहास ; २ वर्णन ; (संक्षि ४७)।
अद्दन्न देखो अद्दण्ण ; (सुख १, १४)।
अद्धपेडा स्त्री [अर्धपेटा] सन्दूक के अर्ध भाग के आकार वाली गृह-पङ्क्ति में भिक्षाटन ; (उत्त ३०, १९)।
अद्धर वि [दे] प्रच्छन्न, गुप्त ; "तम्हा एयस्स चिट्ठिय-मद्धरट्ठिओ चेव पिच्छामि, तओ राया तप्पिट्ठिलग्गो" (सम्मत्त १६१)।
अद्धाण पुं [अध्वन्] मार्ग, रास्ता ; 'हवइ सलाभं नरस्स अद्धाणं" (सुख ८, १३)। °सीसय न [°शीर्षक] जहाँ पर संपूर्ण सार्थ के लोग आगे जाने के लिए एकत्र हो वह मार्ग-स्थान; (वव ४)।
अधमण्ण, अधमन्न वि [अधमर्ण] करजदार, देनदार ; [धर्मवि १४३ ; १३५)।
अधिगार देखो अहिगार ; (सूअनि ५८)।
अधिरोविअ वि [अधिरोपित] आरोपित ; "सूत्ताधि-रोविओ सो" (धर्मवि १३७)।
अधीगार देखो अहिगार ; (सूअनि १८०)।
अधीय देखो अहीय ; (उत्त २०, २२)।
अन्ना स्त्री [दे] माता, जननी ; (दस ७, १६ ; १९)।
अन्नाहुत्त वि [दे] पराङ्मुख ; (सुख २, १७)।
अन्नि वि [अन्यदीय] परकीय ; "अन्नं वा अन्निं वा" (सूअ २, २, ६)।
अन्नुत्ति स्त्री [अन्योक्ति] साहित्य-प्रसिद्ध एक अल-ङ्कार ; (मोह ३७ ; सम्मत्त १४५)।
अन्नूण वि [अन्यून] अ-हीन ; (धर्मवि १२६)।
अपइट्ठिअ पुं [अप्रतिष्ठित] १ नरक-स्थान विशेष ; (देवेन्द्र २९)। देखो अप्पइट्ठिअ।
अपकरिस पुं [अपकर्ष] ह्रास ; (धर्मसं ८३७)।
अपभासिय देखो अवभासिय = अपभाषित; (वव १)।
अपराजिया स्त्री [अपराजिता] १ भगवान मल्लिनाथ की दीक्षा-शिबिका ; (विचार १२९)। २ पक्ष की दशवीं रात ; (सुज्ज १०, १४)।
अपायावगम पुं [अपायापगम] जिनदेव का एक अति-शय ; (संबोध २)।
अप्पइट्ठिअ वि [अप्रतिष्ठित] १ अ-प्रतिबद्ध , २ अशरीरी, शरीर-रहित ; (आचा २, १६, १२)। देखो अपइट्ठिअ।
अप्पओजग वि [अप्रयोजक] अ-गमक, अ-निश्चायक (हेतु) ; (धर्मसं १२२३)।
अप्पजाणुअ वि [आत्मज्ञ] आत्मा का जानकार; (प्राकृ १८)।
अप्पजाणुअ वि [अल्पज्ञ] अज्ञ, मूर्ख ; (प्राकृ १८)।
अप्पण्ण देखो अक्कम = आ+क्रम्। अप्पणइ ; (प्राकृ ७३)।

अप्पणुअ देखो अप्पज्ञाणुअ=आत्मज्ञ, अल्पज्ञ ; (प्राकृ १८)।

अप्पाह सक [आ+भाष्] संभाषण करना। अप्पाहइ ; (प्राकृ ७०)।

अप्पाहणी स्त्री [दे] संदेश, समाचार ; (पिंड ४३०)।

अप्फोया स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष ; (राय ८० टी)।

अब्बीय देखो अबीय ; (चेइय ७३८)।

अब्बुय न [अर्बुद] जमा हुआ शुक्र और शोणित ; (तंदु ७)।

अब्भ सक [आ+भिद्] भेदन करना। अब्भे ; (आचा १, १, २, ३)।

अब्भट्ठ देखो अब्भत्थिय ; "उ(? अ)ब्भट्ठपरिन्नायं" (पिंड २८१)।

अब्भपडल न [दे] उपधातु-विशेष, भोडल, अभ्रक ; (उत्त ३६, ७५)।

अब्भवहरिय वि [अभ्यवहृत] भुक्त; (सुख २, १७)।

अब्भवालुया स्त्री [दे] अभ्रक का चूर्ण ; (उत्त ३६, ७५)।

अब्भहर पुं [दे] अभ्रक ; (पंच ३, ३६)।

अब्भास पुं [अभ्यास] गुणाकार ; (अणु ७४ ; पिंड ५५५)।

अब्भिंतरुद्धि पुं [अभ्यन्तरोर्ध्विन्] कायोत्सर्ग का एक दोष, दोनों पैर के अंगुठों को मिलाकर और पृष्णियों को बाहर फैलाकर किया जाता ध्यान-विशेष; (चेइय ४८७)।

अब्भुवे सक [अभ्युप+इ] स्वीकार करना। अब्भुवेजामि ; (णाया १, १६ टी— पत्र २०५)।

अब्भोज्ज वि [अभोज्य] भोजन के अयोग्य ; (पिंड १६०)।

अभयकरा स्त्री [अभयकरा] भगवान् अभिनन्दन की दीक्षा-शिबिका ; (विचार १२६)।

अभिओग पुं [अभियोग] उद्यम, उद्योग ; (सिरि ५८)।

अभिगच्छ सक [अभि+गम्] प्राप्त करना। अभिगच्छइ ; (दस ४, २१ ; २२ ; ६, २, २)।

अभिगच्छणा देखो अभिगच्छणया ; (वव १)।

अभिगम देखो अभिगच्छ। कृ—अभिगमणीय ; (स ६७६)।

अभिग्गहणी स्त्री [अभिग्रहणी] भाषा का एक भेद, असत्य-मृषा वचन ; (संबोध २१)।

अभिजात पुं [अभिजात] पक्ष का ग्यारहवाँ दिन ; (सुज्ज १०, १४)।

अभिट्ठिअ वि [अभीष्ट] अभिलषित ; (वज्जा १६४)।

अभिणिवेसि वि [अभिनिवेशिन्] कदाग्रही ; (धर्मसं १५७)।

अभिणिसट्ठ देखो अभिणिसिट्ठ ; (सुज्ज ६)।

अभिणिस्सव अक [अभिनिर्+स्रु] निकलना। अभिणिस्सवंति ; (राय ७४)।

अभिधार सक [अभि+धारय्] १ चिन्तन करना। २ खुला करना। अभिधारए ; (दस ५, २, २५ ; उत्त २, २१), अभिधारयामो ; (सूत्र २, ६, १६)। वकृ—अभिधारयंत; (उत्तनि ३)।

अभिनिवेस सक [अभिनि+वेशय्] १ स्थापन करना। २ करना। अभिनिवेसए ; (दस ८, ५६)।

अभिनिव्वट्ट अक [अभिनि+वृत्] पृथक् होना। वकृ—अभिनिव्वट्टमाण; (सूत्र २, ३, २१)।

अभिनिव्वट्ट सक [अभिनिर्+वृत्] खींचना। संकृ— "कोसाओ असिं अभिनिव्वट्टित्ता; (सूत्र २, १, १६)।

अभिनिव्वागड वि [अभिनिर्व्याकृत] विभिन्न द्वार वाला (मकान) ; (वव १ टी)।

अभिनिसढ वि [अभिनिःसृष्ट] जिसका स्कन्ध-प्रदेश बाहर निकल आया हो वह ; (भग १५—पत्र ६६६)।

अभिनिस्सव देखो [अभिणिस्सव] अभिनिस्सवंति ; (राय ७५)।

अभिपवुट्ठ वि [अभिप्रवृष्ट] बरसा हुआ ; (आचा २, ३, १, १)।

अभिमुहिय वि [अभिमुखित] संमुख किया हुआ; (गच्छनि १४६)।

अभियागम पुं [अभ्यागम] संमुख आगमन ; (सूत्र १, १, ३, २)।

अभियावन्न वि [अभ्यापन्न] संमुख प्राप्त ; (सूत्र १, ४, २, १८)।

अभिरमिय वि [अभिरमित] सभुक्त; "जेणाभिरमियं परकलत्तं" [illegible] ८)।

अभि[illegible] [illegible]+रामय्] [illegible] ; (दस [illegible])।

[illegible]] [illegible]

हर ; (आचा २, ४, २, १)।
अभिवंदणा स्त्री [अभिवन्दना] प्रणाम, नमस्कार ; (चेइय ६३६)।
अभिवड्ढि देखो अहिवड्ढि ; (सुज्ज १०, १२ टी)।
अभिवड्ढे सक [अभि+वर्धय्] बढाना। अभिवड्ढेति; (सुज्ज ६)। वकृ—अभिवड्ढेमाण ; (सुज्ज ६)। संकृ—अभिवड्ढेत्ता ; (सुज्ज ६)।
अभिवत्त वि [अभिव्यक्त] आविर्भूत ; (धर्मसं ८८)।
अभिवुट्ठि स्त्री [अभिवृष्टि] वृष्टि, वर्षा ; (पव ४०)।
अभिवुड्ढे देखो अभिवड्ढे। संकृ—अभिवुड्ढेत्ता ; (सुज्ज ६)।
अभिवेदणा स्त्री [अभिवेदना] अत्यन्त पीड़ा ; (सूअ १, ५, १, १६)।
अभिसंकण न [अभिशङ्कन] शंका, वहम ; (संबोध ४६)।
अभिसर सक [अभि + सृ] प्रिय के पास जाना। वकृ— अभिसरंत ; (मोह ६१)।
अभिसेवि वि [अभिषेविन्] सेवा-कर्ता ; (सूअ २, ६, ४४)।
अभिहाण न [अभिधान] १ उच्चारण, (सूअनि १३८)। २ कथन, उक्ति ; (धर्मसं ११११)। ३ कोश-ग्रन्थ ; (चेइय ७४)।
अमयघडिअ पुं [दे· अमृतघटित] चन्द्रमा, चाँद ; (कुप्र २१)।
अमरीस पुं [अमरेश] इन्द्र ; (चेइय ३१०)।
अमवस्सा देखो अमावस्सा ; (पंचा १६, २०)।
अमिल वि [दे· आमिल] अमिल देश में बना हुआ ; (आचा २, ५, १, ५)।
अमुस त्रि [अमृष] सच्चा, सत्य ; "अमुसे वरे" (सूअ १, १०, १२)।
अमोह पुं [अमोघ] १ सूर्य-बिम्ब के नीचे कभी २ दीखती श्याम आदि वर्ण वाली रेखा ; (अणु १२१)। २ पुंन· एक देव-विमान ; (देवेन्द्र १४४)।
अम्मोगइया स्त्री [दे] संमुख-गमन, स्वागत कर के लिए सामने जाना ; "रायो सयमेव अम्मोगइयाए निग्गओ" (सुख २, १३)।
अयंतिय वि [अयन्त्रित] अनादरणीय ; (उत्त २०, ४२)।
अयकरय पुं [अयकरक] एक महाग्रह ; (सुज २०)।
अरइ स्त्री [अरति] अर्श, मसा ; (आचा २,१३, १)।
अरण्ण वि [आरण्य] जंगल में रहने वाला ; (सूअ १, १, १, १६)।
अरवाग पुं [दे] एक अनार्य देश, अरब देश ; (पव २७४)।
अरय पुंन [अरजस्] एक देव-विमान ; (देवेन्द्र १४१)।
अरस न [अरस] तप-विशेष, निर्विकृतिता ; (संबोध ५८)।
अरह देखो अरिह = अर्ह्। अरहइ ; (प्राकृ २८)।
अरहट्टिय वि [अरघट्टिक] अरहट चलाने वाला ; (कुप्र ४५४)।
अरहणा स्त्री [अर्हणा] १ पूजा ; २ योग्यता ; (प्राकृ २८)।
अरहन्न पुं [अर्हन्न] एक जैन मुनि का नाम ; (सुख २, ६)।
अरि देखो अरे ; (तंदु ५० ; ५२ टी)।
अरिअल्लि पुंस्त्री [दे] व्याघ्र, शेर ; (दे १, २४)।
अरिंजय पुं [अरिञ्जय] १ भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र ; २ न. नगर-विशेष ; (पउम ५, १०६ ; इक ; सुर ५, १०३)।
अरिट्ठ पुं [अरिष्ट] १ वृक्ष-विशेष ; (पण्ण १)। २ पनरहवें तीर्थंकर का एक गणधर ; (सम १५२)। ३ पुंन· एक देव-विमान; (देवेन्द्र १३३)। ४ न. गोत्र-विशेष, जो माण्डव्य गोत्र की शाखा है ; (ठा ७)। ५ रत्न की एक जाति ; (उत्त ३४, ४ ; सुपा ६)। ६ फल-विशेष, रीठा ; (पण्ण १७ ; उत्त ३४, ४)। ७ अनिष्ट-सूचक उत्पात ; (आचू)। °णेमि, °नेमि पुं [°नेमि] वर्तमान काल के बाईसवें जिन-देव ; (सम १७ ; अंत ५ ; कप्प ; पडि)।
अरिट्ठा स्त्री [अरिष्टा] कच्छ-नामक विजय की राजधानी; (ठा २, ३)।
अरित्त न [अरित्र] पतवार, कन्हर, नाव की पंछे का डांड, जिससे नाव दाहिने-बाँये घुमायी जाती है; (धर्मवि १३२)।
अरिरिहो अ [अरिरिहो] पाद-पूरक अव्यय; (हे २, २१७)।

अरिहणा देखो अरहणा ; (प्राकृ २८)।
अरु वि [अरुज्] रोग-रहित ; (तंदु ४६)।
अरु देखो अरूव ; (तंदु ४६)।
अरुंतुद वि [अरुन्तुद] १ मर्म-वेधक ; २ मर्म-स्पर्शी ; "इय तदरुंतुदवायाबाणेहिं विधियस्साबि" (सम्मत्त १५८)।
अरुण पुंन [अरुण] १ एक देव-विमान ; (देवेन्द्र १३१)। °प्पभ पु [°प्रभ] १ अनुवेलन्धर-नामक नागराज का एक आवास-पर्वत; २ उस पर्वत का निवासी देव ; (ठा ४, २—पत्न २२६)। °भ पुं [°भ] कृष्ण पुद्गल-विशेष ; (सुज्ज २०)।
अरुणिम पुंस्त्री [अरुणिमन्] लाली, रक्तता ; "पाणि-पल्लवारुणिमरमणीयं" (सुपा ५८)।
अरे अ [अरे] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ आक्षेप; २ विस्मय, आश्चर्य ; ३ परिहास, ठट्ठा ; (संक्षि ३८ ; ४७)।
अरोग्ग } देखो आरोग्ग = आरोग्य ; (आचा २, १५,
अरोय } २)।
अलं अ [अलम्] अलङ्कार, भूषा ; (सूअनि २०२)।
अलंकार पुं [अलङ्कार] १ शास्त्र-विशेष, साहित्य-शास्त्र ; (सिरि ५५ ; सिक्खा २)। २ पुंन. एक देव-विमान ; (देवेन्द्र १३५)।
अलावणी स्त्री [अलाबुवीणा] वीणा-विशेष ; (प्राकृ ३७)।
अलि पुंस्त्री [अलि] वृश्चिक राशि ; (विचार १०६)।
अलिंदय पुन [आलिन्दक] धान्य रखने का पात्र-विशेष; (अणु १५१)।
अलोग देखो अलोग ; (द्रव्य १६)।
अवउज्झ देखो अववह।
अवंगुण सक [दे] खोलना। अवंगुणेज्जा ; (आचा २, २, २, ४)।
अवंति पुं [अवन्ति] भगवान् आदिनाथ का एक पुत्र ; (ती १४)।
अवकप्प सक [अव + कल्पय्] कल्पना करना, मान लेना। अवकप्पंति; (सूअ १, ३, ३, ३)।
अवकिदि स्त्री [अपकृति] अपकार, अ-हित ; (प्राकृ १२)।
अवक्कंत पुं [अवक्रान्त] प्रथम नरक-भूमि का ग्यारहवाँ नरकेन्द्रक—नरक-स्थान विशेष ; (देवेन्द्र ५)।
अवक्कमण न [अपक्रमण] अवतरण ; "उत्तरावक्कमणं" (भग ६, ३३)।
अवक्कय वि [अपकृत] जिसका अहित किया गया हो वह ; (चंड)।
अवक्खर पुं [अवस्कर] पुरीष, विष्ठा ; (प्राकृ २१)।
अवग पुंन [दे. अवक] जल में होने वाली वनस्पति-विशेष ; (सूअ २, ३, १८)।
अवगहण न [अवग्रहण] निश्चय, अवधारण ; (पव २७३)।
अवगारय वि [अपकारक] अपकार-कारक ; (स ६६०)।
अवगारि वि [अपकारिन्] ऊपर देखो ; (स ६६०)।
अवगूहाविय वि [अवगूहित] आश्लेषित ; (स ६६६)।
अवच्च वि [अवाच्य] १ बोलने को अयोग्य ; २ बोलने को अशक्य ; (धर्मसं ६६८)।
अवच्चिज्ज देखो अवच्चीय ; (सूअनि २०५)।
अवजिब्भ पुं [अपजिह्व] दूसरी नरक-पृथिवी का आठवाँ नरकेन्द्रक—नरक-स्थान विशेष ; (देवेन्द्र ६)।
अवज्झ सक [दृश्] देखना ; (संक्षि ३६)।
अवज्झाण } पुंन [अपध्यान] दुर्ध्यान; "चउव्विहो
अवझाण } अवज्झाणो" (श्रावक २८६ ; पंचा १, २३ ; संबोध ४५)।
अवट्ट अक [अप + वृत्] पीछे हटना। अवट्टइ ; (प्राकृ ७२)।
अवट्टंभ पुं [अवष्टम्भ] दृढ़ता, हिम्मत ; (धर्मवि १४०)।
अवट्ठंभ देखो अवटंभ। कर्म—अवट्ठब्भति ; (स ७४६)।
अवट्ठद्ध वि [अवष्टब्ध] रोका हुआ ; (द्रव्य २७)।
अवट्ठंभण } न [अवष्टम्भन] अवलम्बन, सहारा ;
अवट्ठहण } (स ७४६ टि ; ७४६)।
अवट्ठिअ वि [अवस्थित] १ अवगाहन करके स्थित ; (सूअ १, ६, ११)। २ कर्म-बन्ध विशेष, प्रथम समय में जितनी कर्म-प्रकृतियों का बन्ध हो द्वितीय आदि समयों में भी उतनी ही प्रकृतियों का जो बन्ध हो वह ; (पंच ५, १२)।
अवड्डा स्त्री [दे] कृकाटिका, घट्टी, गर्दन का ऊँचा हिस्सा ; (भग १५—पत्न ६७६)।

अवणण देखो **अवणयण** ; (पिंड ४७३)।
अवणाम पुं [**अवनाम**] ऊर्ध्व-गमन, ऊँचा जाना ; "तुलाए णामावणामव्व" (धर्मस २४२)।
अवणीयवयण न [**अपनीतवचन**] निन्दा-वचन; (आ १२, ४, १, १)।
अवतंस पुं [**अवतंस**] मेरु पर्वत; (सुज्ज ५)।
अवतासण न [**अवत्रासन**] डराना; (वव ७३ टी)।
अवथंभ देखो **अवठंभ**। संकृ—**अवथंभिय** ; (चेइय ४८१)।
अवदाण न [**अवदान**] शुद्ध कर्म ; (ती १५)।
अवधंसि वि [**अपध्वंसिन्**] विनाश-कारक; (उत्त ४, ७)।
अवधारणा स्त्री [**अवधारणा**] दीर्घ काल तक याद रखने की शक्ति; (सम्मत्त ११८)।
अवपंगुण } सक [**दे**] खोलना। अवपंगुणे; (सूअ १, २, २, १३), अवपंगुरे; (दस ५, १, १८)।
अवपंगुर }
अवपूर सक [**अव+पूरय्**] पूर्ण करना। अवपूरंति; (स ७१२)।
अवपेक्ख सक [**अवप्र+ईक्ष्**] अवलोकन करना। अवपेक्खइ; (उत्त ६, १३)।
अवभास पुं [**अवभास**] ज्ञान; (धर्मसं १३३३)।
अवभासण वि [**अवभासन**] प्रकाश-कर्त्ता; (सुख १, ४०)।
अवयाय वि [**अवदात**] निर्मल, (सिरि १०२७)।
अवयार पुं [**अवतार**] समावेश; (पव ८६)।
अवयारण न [**अवतारण**] उतारना; (सिरि १००४)।
अवयारय देखो **अवगारय** ; (स ६६०)।
अवरदक्खिणा देखो **अवर-दाहिणा**; (पव १०६)।
अवरद्धिग वि [**अपराधिक**] १ अपराधी, दोषी; २ पुं. लूता-स्फोट; ३ सर्पादि-दंश; (पिंड १४)।
अवरा स्त्री [**अपरा**] पश्चिम दिशा; (पव १०६)।
अवराहिल्ल वि [**अपराधिन्**] अपराधी; (प्राकृ ५०)।
अवरुव देखो **अपुरुव**; (प्राकृ ८५)।
अवलंबणया स्त्री [**अवलम्बनता**] अवग्रह-ज्ञान; (णंदि १७५)।
अवलित्त वि [**अवलिप्त**] व्याप्त; (सूअ १, १३, १४)।
अवलुअ देखो **अवलुय** ; (आचा २, ३, १, ६)।
अवलेह पुं [**अवलेह**] चाटन; (वज्जा १०४)।
अवलोयणी स्त्री [**अवलोकनी**] देवी-विशेष; (सम्मत्त १६०)।
अवव्वह सक [**अप+व्यह्**] बाहर फेंकना, दूर हटाना। कर्म—अवउज्झइ ; (पंचा १६, ६)।
अववाइअ वि [**आपवादिक**] अपवाद-संबन्धी; (अज्झ १०८)।
अवस वि [**अवश**] अकाम, अनिच्छु ; (धर्मसं ७००)।
अवसंकि वि [**अपशङ्किन्**] अपसरण-कर्ता ; (सूअ १, १२, ४)।
अवसण्ण वि [**अवसन्न**] निमग्न ; "नागो जहा पंक-जलावसण्णो" (उत्त १३, ३०)।
अवसव्व न [**अपसव्य**] वाम पार्श्व ; (णंदि १५६)।
अवसावणिया स्त्री [**अवस्वापनिका**] सोलाने वाली विद्या ; (धर्मवि १२४)।
अवसित्त वि [**अवसिक्त**] सींचा हुआ ; (रंभा ३१)।
अवस्सप्पिणी देखो **अवसप्पिणी** ; (संबोध ४८)।
अवस्साअ देखो **अवसाय** ; (विक्र)।
अवह वि [**अवह**] नहीं बहता, अ-चालू, बंध ; "ओस-प्पिणीइ अवहो इमाइ जाओ तओ य सिद्धिपहो" (धर्मवि १५१)।
अवहर सक [**अप+हृ**] परित्याग करना। संकृ—अव-हट्टु ; (सूअ १, ४, १, १७)।
अवहाड सक [**दे**] आक्रोश करना। अवहाडेमि ; (दे १, ४७ टी)।
अवहाडिअ वि [**दे**] उत्क्रुष्ट, जिस पर आक्रोश किया गया हो वह ; (दे १, ४७)।
अवहार पुं [**अवधार्य**] ध्रुव राशि, गणित-प्रसिद्ध राशि-विशेष ; (सुज्ज १०, ६ टी)।
अवहाविअ वि [**अवधावित**] गमन के लिये प्रेरित ; (सिरि ४३४)।
अवहिट्ठ न [**दे**] मैथुन, संभोग ; (सूअ १, ९, १०)।
अवहिय वि [**अपहित**] अ-हित ; (चंड)।
अवहिय न [**अवधृत**] अवधारण ; (वव १)।
अवहेला स्त्री [**अवहेला**] अनादर ; (सिरि १७६)।
अवहूय वि [**अवधूत**] मार भगाया हुआ; (संबोध ५२)।
अवहेडग } पुंन [**अवहेटक**] आधे सिर का दर्द, आधासीसी रोग ; (उत्तनि ३)।
अवहेडय }

अवहेलण वि [अवहेलन] उपेक्षा करने वाला ; (सूत्र २, ६, ५३)।

अवहोडय देखो अवओडग ; "ओ बद्धो अवहोडएणा" (सुख २, २५)।

अवहोमुह वि [उभयमुख] दोनों तर्फ मुँह वाला ; (प्राकृ ३०)।

अवाय पुं [अवाय] पानी का आगमन ; (श्रा २३)।

अवाय वि [अपाय] भाग्य-रहित ; (श्रा २३)।

अवाय वि [अपाग] वृक्ष-रहित ; (श्रा २३)।

अवाय वि [अपाक] पाप-रहित ; (श्रा २३)।

अवाय पुं [अवाय] प्राप्ति ; (श्रा २३)।

अविअ अ [अपिच] विशेषता-सूचक अव्यय ; (पंचा ७, २१)।

अविकंप वि [अविकम्प] निश्चल ; (पंचा १८, ३५)।

अविगप्पग वि [अविकल्पक] १ विकल्प-रहित ; २ न. कल्पना-रहित प्रत्यक्ष ज्ञान ; (धर्मसं ७४०)।

अविणयवई स्त्री [दे] असती, कुलटा ; (दे १, १८)।

अवी देखो अवि ; (उत्त २०, ३८)।

अवेह देखो अवेक्ख = अव+ईक्ष्। अवेहइ ; (सूत्र १, २, ३, १)।

अव्वंग न [अव्यङ्ग] १ पूर्ण अंग, पूरा शरीर ; २ वि. अविकल, अन्यून, संपूर्ण ; "पाराहयअव्वंगधोयसियवसणा" (धर्मवि १७; १५)।

अव्वत्तव्व वि [अवक्तव्य] १ अ-वचनीय ; २ पुं. कर्म-बन्ध-विशेष, जब जीव सर्वथा कर्म-बन्ध-रहित होकर फिर जो कर्म-बन्ध करे वह ; (पंच ५, १२)।

अव्वभिचारि वि [अव्यभिचारिन्] ऐकान्तिक ; (पंचा २, ३७)।

अव्वय न [अव्यय] 'च' आदि निपात; (चेइय ६८३)।

अव्वा स्त्री [अर्वाक्] पर से भिन्न ; "णो हव्वाए णो पाराए" (सूत्र २, १, ६)।

अव्वावाह पुंन [अव्याबाध] एक देव-विमान ; (देवेन्द्र १४५)।

असंखड स्त्रीन [दे] कलह, झगड़ा ; "जत्थ य समणीणामसंखडाइं गच्छम्मि नेव जायंति" (गच्छ ३, ११), स्त्री—°डी ; (पव १०६)।

असंभंत पुं [असंभ्रान्त] प्रथम नरक का छठवाँ नर-केन्द्रक—नरक-स्थान विशेष; (देवेन्द्र ४)।

असज्झाय पुं [अस्वाध्याय] अनध्याय, वह काल जिसमें पठन-पाठन का निषेध किया गया है ; (गच्छ ३, ३०)।

असणि पुंस्त्री [अशनि] १ एक प्रकार की बिजली ; (सुज्ज २०)। २ पु. एक नरक-स्थान; (देवेन्द्र २६)।

असणी स्त्री [अशनी] जिह्वा, जीभ ; "अवरासणी कम्माणा मोहणी तह वयाणा बंभं च" (सुख २, ४२)।

असलील वि [अश्लील] असभ्य भाषा ; (मोह ८७)।

असवार पुं [अश्ववार] घुडसवार ; (धर्मवि ४१)।

असाढभूइ पुं [अषाढभूति] एक जैन मुनि ; (पिंड ४७४)।

असालिय पुंस्त्री [दे] सर्प की एक जाति; (सूत्र २, ३, २४)।

असित्थ न [असिक्थ] आटा लगे हुए हाथ या बर्तन का कपड़े से छना हुआ धोवन ; (पिंड)।

असिसुई स्त्री [अशिश्वी] शिशु-रहित स्त्री ; (प्राकृ २८)।

असीइग वि [अशीतिक] अस्सी वर्ष की उम्र वाला ; (तंदु १७)।

असोअ } पुं [अशोक] १ देव-विशेष ; (राय ८१)।
असोग } २ पुंन. एक देव-विमान ; (देवेन्द्र १४२)। ३ शक्र आदि इन्द्रों का एक आभाव्य विमान ; (देवेन्द्र २६३)। °वडिंसय पुंन [°ावतंसक] सौधर्म देवलोक का एक विमान ; (राय ५६)।

अस्स न [अस्र] १ अश्रु, आँसू ; २ रुधिर, खून ; (प्राकृ २६)।

अस्सवार देखो असवार ; (सम्मत्त १४२)।

अस्सादण देखो अस्सायण ; (सुज १०, १६)।

अस्सासण पुं [आश्वासन] एक महाग्रह ; (सुज २०)।

अस्सु पुंन [अश्रु] आँसू; "अस्सू" (संक्षि १७)।

अस्सोई स्त्री [आश्वयुजी] आश्विन मास की अमावस; (सुज १०, ६ टी)। देखो आसोया।

अहकम्म देखो अहेकम्म ; (पिंड १३५)।

अहलंद न [यथालन्द] पाँच रात का समय; (पव ७०)।

अहलंदि देखो अहालंदि ; (पव ७०)।

अहालंद वि [यथालन्द] यथानुज्ञात (काल), इच्छानुसार (समय) ; (आचा २, ७, १, २)।

अहालंदि पुं [यथालन्दिन्] 'यथालन्द' अनुष्ठान करने वाला मनि; (पव ७०)।

अहिकंखि देखो अहिकंखिर ; (सूअ १, १२, २२)।
अहिकार देखो अहिगार ; (उत्त १४, १७)।
अहिछत्ता स्त्री [अहिच्छत्रा] नगरी-विशेष, कुरुजंगल देश की प्राचीन राजधानी ; (सिरि ७८)।
अहिज्ञाण (शौ) देखो अहिण्णाण ; (प्राकृ ८७)।
अहिट्ठ सक [अधि+ष्ठा] करना। अहिट्ठए; (दस ६, ४, २)।
अहिट्ठण देखो अहिट्ठाण ; (पंचा ७, ३३)।
अहिट्ठायग वि [अधिष्ठायक] अध्यक्ष, अधिपति; (कुप्र २१६)।
अहिठाण न [अधिष्ठान] अपान-प्रदेश; (पव १३५)।
अहिणंदि वि [अभिनन्दिन्] आनन्द मानने वाला ; (स ६७७)।
अहिणी स्त्री [अहि] नागिन; (वज्जा ११४)।
अहिपड सक [अभि + पत्] सामने आना। अहिपडंति; (पव १०६)।
अहिपास सक [अधि + दृश्] १ अधिक देखना। २ समान रूप से देखना। अहिपासए; (सूअ १,२,३,१२)।
अहिमार पुं [अभिमार] वृक्ष-विशेष; "एगं अहिमार-दारुअं अग्गी" (उत्तनि ३)।
अहिरम देखो अभिरम। वकृ—अहिरमंत; (समु १५४)।
अहिरिअ देखो अहिरीअ ; (पिंड ६३१)।
अहिवड अक [अधि + पत्] क्षीण होना। वकृ— "एवं निस्सारे माणुसत्तणे जीविए अहिवडंते" (तंदु ३३)।
अहिवड्ढि } अहिवद्धि } स्त्री [अभिवृद्धि] उत्तर प्रोष्ठपदा नक्षत्र का अधिष्ठाता देवता ; (सुज्ज १०, १२; जं ७—पत्र ४६८)।
अहिवल्ली स्त्री [अहिवल्ली] नाग-वल्ली; (सिरि ८७)।
अहिवासि वि [अधिवासिन्] निवासी ; (चेइय ६८७)।
अहिवासिअ वि [अधिवासित] सजाया हुआ, तय्यार किया हुआ ; (दस ३, १ टी)।
अहिसंका स्त्री [अभिशङ्का] भय, डर; (सूअ १, १२, १७)।
अहिसंधारण न [अभिसंधारण] अभिप्राय ; (पंचा ६, ३६)।
अहिसक्कण पुंन [अभिष्वष्कण] संमुख गमन; (पंव २)।
अहिसाअ देखो अक्कम=आ + क्रम्। अहिसाअइ ; (प्राकृ ७३)।
अहीय देखो अहिय=अधिक ; (पव १६४)।
अहीलास देखो अहिलास ; "देहम्मि अहिलासो" (तंदु ४१)।
अहुणि (पै) देखो अहुणा ; (प्राकृ १२७)।
अहेकम्म पुंन [अधःकर्मन्] १ अधो-गति में ले जाने वाला कर्म ; २ भिक्षा का आधाकर्म दोष ; (पिंड ६५)।
अहो अ [अहो] दीनता-सूचक अव्यय ; (भग १६)।

आ

आ अ [आ] नीचे, अधः ; (राय ३५, ३६)।
आअइ देखो आगय ; (प्राकृ १२ ; संक्षि ६)।
आइ वि [आदिन्] खाने वाला ; (पंचा १८, ३६)।
आइंखणा } आइंखणिया } आइंखिणिया } स्त्री [दे] १ देवता-विशेष, कर्ण-पिशाचिका देवी ; (पव २ ; ७३ टी—पत्र १८२ ; बृह १)। २ डोम्बी, चांडाली ; (बृह १)।
आइंच देखो अक्कम=आ+क्रम्। आइंचइ ; (प्राकृ ७३)।
आइंचवार पुं [आदित्यवार] रविवार; (कुप्र ४११)।
आइंचिय वि [आदित्यिक] आदित्य-सम्बन्धी ; (सूअनि ८ टी)।
आइड्ढिय वि [आकृष्ट] खींचा हुआ ; (हम्मीर १७)।
आइण्ण देखो आइन्न=(दे) ; (तंदु २०)।
आइत्थ न [आतिथ्य] अतिथि-सत्कार; (प्राकृ २१)।
आईसर पुं [आदीश्वर] भगवान् ऋषभदेव ; (सिरि ५५१)।
आउंट अक [आ + कुञ्च्] सकोचना ; प्रयो – संकृ— आउंटावित्तु ; (पव ५)।
आउंटण न [आकुण्टन] आवर्जन ; (पंचा १७, १६)।
आउच्छणा स्त्री [आप्रच्छना] प्रश्न ; (पंचा १२, २६)।
आउच्छा स्त्री [आपृच्छा] आज्ञा ; (कुप्र १२४)।
आउट्ट } आउट्टिअ } वि [आवृत] आदर-युक्त; (पिंड ३१६; पव ११२)।
आउट्टिम वि [आकुट्ट्य] कूट कर बैठाने योग्य, (जैसे सिक्के में अक्षर) ; (दसनि २, १७)।

आउट्टिया स्त्री [आकुट्टिका] पास में आकर करना ; (पंचा १५, १८) ।
आउत्थ वि [आत्मोत्थ] आत्म-कृत ; (वव ४) ।
आउल्लय न [दे] जहाज चलाने का काष्ठमय उपकरण ; (सिरि ४२४) ।
आउस्स पुं [आक्रोश] दुर्वचन, असभ्य वचन ; (सूअ १, ३, ३, १८) ।
आएस वि [ऐष्यत्] आगामी, भविष्य में होने वाला : (सूअ १, २, ३, २०) ।
आएस पुं [आदेश] १ अपेक्षा ; २ प्रकार, रीति : (चेइय १८४) । ३ वि. नीचे देखो ; (पिंड २३०) ।
आएसिय वि [आदेशिक] १ आदेश-सम्बन्धी; २ विवाह आदि के जिमन में बचे हुए वे खाद्य-पदार्थ जिनको श्रमणों में बाँट देने का संकल्प किया गया हो ; (पिंड २२९) ।
आओग पुं [आयोग] अर्थोपाय, अर्थोपार्जन का साधन : (सूअ २, ७, २) ।
आंत वि [अन्त्य] अन्त का ; (पंचा १८, ३९) ।
आकंपिय वि [आकम्पित] आवर्जित, प्रसन्न किया हुआ ; (पिंड ४३६) ।
आकड्ढिय वि [दे] बाहर निकाला हुआ ;
"पुव्वं व वच्छ तीए निग्गच्छिया ना धरित्तु गलयम्मि ।
पच्छिमअसोगवणियादारेणाकड्ढिया झत्ति ॥"
(धर्मवि १३३) ।
आकंदि देखो आकिंदि ; (संक्षि ९) ।
आकिट्ठि स्त्री [आकृष्टि] आकर्षण ; (धर्मवि १५) ।
आकोस देखो अक्कोस = आक्रोशः (पंच ४, २३) ।
आगम पुं [आगम] १ समागम ; (पंच ५, १४५) । २ ज्ञान, जानकारी ; "चोद्दसविज्जाठाणाणं आगमे कए" (सुख २, १३) ।
आगम सक [आ + गम्] प्राप्त करना । संकृ—आगमित्ता ; (सूअ २, ७, ३६) ।
आगमिअ वि [आगमित] विदित, ज्ञात ; "तत्थ गच्छंतो आगमिओ" (सुख १, ३) ।
आगरिस सक [आ+कृष्] खींचना । वकृ—आगरिसंत ; (धर्मसं ३७२) ।
आगरिसण न [आकर्षण] खींचाव ; (सम्मत्त २१५) ।
आगह देखो आगाह । संकृ—आगहइत्ता; (दस ५, १, ३१) ।

आगासिया स्त्री [आकाशिकी] आकाश में [illegible] की लब्धि—शक्ति ; (सूअनि १६३) ।
आगाह सक [अव+गाह्] अवगाहन [illegible] करना । आगाहइत्ता ; (दस ५, १, ३१) ।
आघंस सक [आ + घृष्] घिसना, थोड़ा [illegible] सिज्ज ; (आचा २, २, १, ४) ।
आघंस वि [आघर्ष] जल के साथ घिस [illegible] सके वह ; (पिंड ५०२) ।
आघविय वि [दे] गृहीत, स्वीकृत ; ([illegible]) ।
आघाय वि [आख्यात] १ उक्त, कथित ; [illegible] १३, २) । २ न. उक्ति, कथन; (सूअ [illegible]) ।
आघाय पुं [आघात] १ एक नरक-स्थान ; [illegible] २६) । २ विनाश ; (उत्त ५, ३२ ; [illegible]) ।
आचाम सक [आ+चामय्] चाटना, [illegible] आचामंत ; (कुप्र ३६) ।
आजत्थ देखो आगम + आ = गम् । [illegible] ७४) ।
आडंबर पुं [आडम्बर] वाद्य-विशेष, [illegible] १२८) ।
आढत्तिअ } वि [आरब्ध] [illegible]
आढविअ } (मंगल २३ ; [illegible]
आढा स्त्री [आदर] संमान ; ([illegible] संबोध ५५) ।
आणंद पुं [आनन्द] १ अर्हत् [illegible] (सुज्ज १०, १३) । २ [illegible] १३१) । [illegible] आ ;
आणट्ठ वि [आनष्ट] सर्वथा [illegible] सुख १८, ५०) । [illegible] (वज्जा
आणत्थ न [आनर्थ्य] [illegible]
आणय पुंन [आनत] [illegible] १९, ४) ।
आणवणिय वि [आ[illegible] रना । आव- (राय २५) ।
आणाव (अप) [illegible] गंसि समणा (प्राकृ [illegible] ५, २, १ ;
आ[illegible]
आवज्जई ;
१, २, १९;

आणुओगिअ वि [आनुयोगिक] व्याख्या-कर्ता ; (णंदि ५१)।

आणुगुण्ण } न [आनुगुण्य] १ औचित्य, अनुरूपता ; (पंचा ६, २६)। २ अनुकूलता ; (धर्मसं ११८६)।
आणुगुन्न }

आणुपाणु देखो **आणापाणु** ; (कम्म ५, ४०)।

आणुलोमिअ वि [आनुलोमिक] अनुलोम, अनुकूल, मनोहर ; (दस ७, ५६)।

आणुव पुंन [अनूप] सजल प्रदेश ; (धर्मसं ६२६)।

आतित्थ देखो **आइत्थ** ; (कुप्र १०० ; २८६)।

आत्त देखो **अत्त**=आत्त ; (अणु २१)।

आत्त वि [आत्मीय] स्वकीय ; (अणु २१)।

आद [शौ] देखो **अत्त**=आत्मन् ; (द्रव्य ६)।

आद देखो **आइ**=आ+दा। आदए ; (सूअ १, ८, १६)।

आदयाण वि [आददान] ग्रहण करता; (श्रु १३८)।

आदाणिय न [आदानीय] लाभ, नफा ; (सुख ४, ६)।

आदित्त देखो **आइच्च** ; (वज्जा १६०)।

आदु [शौ] देखो **अदु** ; (ति ६०)।

आदेस पुं [आदेश] व्यपदेश, व्यवहार ; (सूअ १, ८, ३)। देखो **आएस**=आदेश ; (सूअ २, १, ५६)।

आधोरण पु [आधोरण] हस्तिपक ; (धर्मवि १३६)।

आपत्ति स्त्री [आपत्ति] प्राप्ति ; (संबोध ३५ ; पव १४६)।

आपायण न [आपादन] संपादन ; (श्रावक ८२ ; पंचा ६, १६)।

आफुण्ण वि [दे] आक्रान्त ; (अणु १६२)।

आभिओग्गा स्त्री [आभियोग्या] आभियोगिक भावना ; (उत्त ३६, २५५)।

आभिग्गहिअ वि [आभिग्रहिक] १ अभिग्रह-संबन्धी ; (पंचा ४, ८)। २ न. मिथ्यात्व-विशेष ; (पंच ४, २)।

आभिणिबोहिग देखो **आभिणिबोहिय** ; (धर्मसं ८२३)।

आभिप्पाइअ वि [आभिप्रायिक] अभिप्राय वाला ; (अणु १४५)।

आम अ [भवत्] आप , (प्राकृ ८१)।

आमं अ [आम] १ स्वीकार-सूचक अव्यय, हाँ ; (सुख २, १३)। २ अतिशय, अत्यन्त ; (धर्मसं ६४६)।

आमघाय पुं [अमाघात] अमारि-प्रदान, हिंसा-निवारण; (पंचा ६, १५ ; २० ; २१)।

आमराय पुं [आमराज] एक प्रसिद्ध राजा; (ती ७)।

आमल पुंन [आमलक] आमला का फल ; (सम्मत्त १५६)।

आमिस न [आमिष] नैवेद्य ; (पंचा ६, २६ ; कुप्र ४२३ ; ती १३)।

आमेल्ल देखो **आमेल**=आपीड ; (उवा २०६)।

आमोअ पुं [आमोद] वाद्य-विशेष ; (राय ४६)।

आमोक्ख पुं [आमोक्ष] मोक्ष, मुक्ति, पूर्ण छूटकारा ; (सूअ १, १, ४, १३)।

आमोस पुं [आमोष] चोर ; (उत्त ६, २८)।

आय पुं [आय] अध्ययन, शास्त्रांश-विशेष ; (अणु २५०)।

आयइजणग न [आयतिजनक] तपश्चर्या-विशेष ; (पव २७१)।

आयंकि वि [आतङ्किन्] रोगी, रोग-युक्त ; (ठा ५, ३, टी—पत्र ३४२)।

आयय सक [आ+दद्] ग्रहण करना। आयए, आययंति ; (दस ५, २, ३१ ; उत्त ३, ७)। वकृ— **आययमाण** ; (पिंड १०७)।

आययण न [आयतन] १ प्रकटीकरण ; (सूअ १, ६, १६)। २ उपादान कारण ; (सूअ १, १२, ५)।

आयरणा स्त्री [आचरणा] परंपरा का रिवाज ; (चेइय २५)।

आयव पुं [आतपवत्] अहोरात्र का २४ वाँ मुहूर्त ; (सुज्ज १०, १३)।

आयाण न [आदान] १ संयम, चारित्र ; (सूअ १, १२, २२)। २ वि. आदेय, उपादेय ; (सूअ १, १४, १७ ; तंदु २०)। °**पय** न [°पद] ग्रन्थ का प्रथम शब्द ; (अणु १४०)।

आयाम सक [आ+यम्] शौच करना, शुद्धि करना। आयामइ ; (पव १०६ टी)।

आयार पुं [आकार] 'आ' अक्षर ; (कुप्र ३२)।

आयाव पुं [आताप] आतप-नामकर्म ; (पंच ५, १३७)।

आयासतल न [आकाशतल] चन्द्रशाला, घर के ऊपर की खुली छत ; (कुप्र ४५२)।

आयाहम्म वि [**आत्मघ्न**] १ आत्म-विनाशक ; २ न. आधाकर्म दोष ; (पिंड ९५)।

आर पुं [**आर**] १ इह-लोक, यह जन्म ; (सूअ १, २, १, ८ ; १, ६, २८ ; १, ८, ६)। २ मनुष्य-लोक ; (सूअ १, ६, २८)। ३ नुकीली लोहे की कील ; (कुप्र ४३४)। ४ न. गृहस्थपन ; (सूअ १, २, १, ८)।

आरओ अ [**आरतस्**] पीछे से ; (णंदि २४९ टी)।

आरक्ख न [**आरक्ष्य**] कोटवाल का होद्दा, कोटवाली, आरक्षकता ; (सुख ३, १)।

आरज्झ सक [**आ+राध्**] आराधन करना। आरज्झइ ; (प्राकृ ६८)।

आरण पुंन [**आरण**] एक देव-विमान ; (देवेन्द्र १३५)।

आरन्निय देखो **आरण्णिय** ; (सूअ २, २, २१)।

आरभड न [**आरभट**] एक तरह का नाट्य-विधि ; (राय ५४)। °**भसोल** न [°**भसोल**] नाट्य-विधि-विशेष ; (राय ५४)।

आरय वि [**आऽरत**] उपरत, सर्वथा निवृत्त ; (सूअ १, ४, १, १ ; १, १०, १३)।

आरहंत } वि [**आर्हत**] अर्हन् का, जिनदेव-
आरहंतिय } संबन्धी ; "आरहंतेहिं" (दस ६, ४, ४ ; पव २—गाथा १७०)।

आराडि स्त्री [**आराटि**] चीत्कार, चिल्लाहट ; (सुख २, १५)।

आराम पुंन [**आराम**] बगीचा, उपवन ; "आरामाणि" (आचा २, १०, २)।

आराहणा स्त्री [**आराधना**] आवश्यक, सामायिक आदि षट्-कर्म ; (अणु ३१)।

आरिय न [**आकृत**] आगमन ; (राय १०१)।

आरिहय देखो **आरहंत** ; (दस १, १ टी)।

आरुण्ण (अप) सक [**आ+श्लिष्**] आलिङ्गन करना। आरुण्णइ ; (प्राकृ ११९)।

आरुहण न [**आरोहण**] आरोपण, ऊपर चढ़ाना ; (पव १५५ ; राय १०६)।

आरोग्ग न [**आरोग्य**] एकाशन तप ; (संबोध ५८)।

आरोय न [**आरोग्य**] १ क्षेम, कुशल ; २ नीरोगता ; "आरोयारोयं पसूया" (आचा २, १५, ६)।

आल न [**दे**] अनर्थक, मुधा ; (सिरि ८६४)।

आलइय वि [**आलगित**] पहना हुआ ; (आचा २, १५, ५)।

आलभण न [**आलभन**] विनाशन ; (धर्मसं ८८२)।

आलय पुन [**आलय**] बौद्ध दर्शन-प्रसिद्ध विज्ञान-विशेष ; (धर्मसं ६६५ ; ६६६ ; ६६७)।

आलसुय देखो **आलसिय** ; "सावि सायसीला आलसुया वुड्डिला" (सम्मत्त ५३)।

आलस्स पुन [**आलस्य**] सुस्ती ; "आलस्सो रणा-रण्णाओ" (वज्जा १६२)।

आलस्सि वि [**आलस्यिन्**] आलसी, सुस्त ; (गच्छ २, १)।

आलावक देखो **आलावग** ; (सुज्ज ८)।

आलावण न [**आलापन**] आलाप, सभाषण ; (वज्जा १२४)।

आलिंगिणी स्त्र [**आलिङ्गिनी**] जानु आदि के नीचे रखने की क्रिया ; (पव ८४)।

आलिगा देखो **आवलिआ** ; (पंच ५, १४५)।

आलित्त न [**आलित्र**] जहाज चलाने का काष्ठ-विशेष, (आचा २, ३, १, ९)।

आलित्त वि [**आलिप्त**] खरपिटन, खरड़ा हुआ, लिपा हुआ ; (पिंड २३४)।

आलीढ पुंन [**आलीढ**] योद्धा का युद्ध समय का आसन-विशेष ; (वव १)।

आलुंघ सक [**स्पृश्**] छूना। आलुंघइ ; (प्राकृ ७४)।

आलेक्ख न [**आलेख्य**] चित्र ; (रुक्मि ५७)।

आलेसिय वि [**आश्लेषित**] आलिंगन कराया हुआ ; (चेइय ३७६)।

आलोइल्ल वि [**आलोकवत्**] प्रकाश-युक्त ; (वज्जा १६०)।

आलोयण न [**आलोकन**] गवाक्ष ; (उत्त १९, ४)।

आवआस सक [**उप+गूह्**] आलिंगन करना। आवआसइ ; (प्राकृ ७४)।

आवंत देखो **जावंत** ; "आवंती के यावंती लोगंसि समणा य माहणा य" (आचा १, ४, २, ३ ; १, ५, २, १ ; ४ ; पि ३५७)।

आवज्ज सक [**आ+पद्**] प्राप्त करना। आवज्जई ; (उत्त ३२, १०३)। आवज्जे ; (सूअ १, १, २, १९ ; २०), आवज्जसु ; (सुख २, ९)!

आवज्ज } वि [आवर्ज, °क] प्रीत्युत्पादक;
आवज्जग } (पिंड ४३८)।
आवट्टणा स्त्री [आवर्तना] आवर्तन; (प्राकृ ३१)।
आवड देखो आवत्त = आवर्त; (राय ३०)।
आवणवीहि स्त्री [आपणवीथि] १ हट्ट-मार्ग, बाजार; २ रथ्या-विशेष, एक तरह का मुहल्ला; (राय १००)।
आवण्ण वि [आपन्न] आश्रित; (सूत्र १, १, १, १६)।
आवत्त सक [आ + वृत्] आना। "नावत्तइ नागच्छइ पुणो भवे तेण अपुणरावित्ति" (चेइय ३५६)।
आवत्त पुंन [आवर्त] १ एक तरह का जहाज; (सिरि ३८३)। २ न. लगातार २५ दिनों का उपवास; (संबोध ५८)।
आवत्ति स्त्री [आपत्ति] प्राप्ति; (धर्मसं ४७३)।
आवदि स्त्री [आवृति] आवरण; (संक्षि ६)।
आवरिसण न [आवर्षण] सुगंधी जल की वृष्टि; (अणु २५)।
आवलिय वि [आवलित] वेष्टित; (सूअनि २००)।
आवाइया स्त्री [आवापिका] प्रधान होम; "पत्थुयाए पक्खावाइयाए" (स ७५७)।
आवाय पुंन [आपात] अभ्यागम, आगमन; (पव ६१; ६१ टी)।
आवाय देखो आवाग; (श्रा २३)।
आवायण न [आपादन] संपादन; (धर्मसं १०६८)।
आवाल देखो आलवाल; (धर्मवि १६; ११२)।
आविकम्म पुंन [आविष्कर्मन्] प्रकट-कर्म, प्रकट रूप से किया हुआ काम; (आचा २, १५, ५)।
आविट्ठ वि [आविष्ट] भूत आदि के उपद्रव से युक्त: (सम्मत्त १७३)।
आविस सक [आ + विश्] प्रवेश करना, घुसना। आविसेइ; (सम्मत्त १७३)।
आविहूअ देखो आविब्भूय; (स ७१८)।
आवी देखो आवि = आविस्; "आवी वा जइ वा रहस्से" (उत्त १, १७; सुख १, १७)। °कम्म देखो आवि-कम्म; (आचा २, १५, ५)।
आवील देखो आवीड। संकृ—आवीलियाण; (आचा २, १, ८, १)।
आवुद वि [आवृत] ढका हुआ; (प्राकृ ८; १२)।
आवुदि स्त्री [आवृति] आवरण; (प्राकृ ८; १२)।

आस देखो अस्स = अस्र; (प्राकृ २६)।
आसइ वि [आश्रयिन्] आश्रय-स्थित; "थंभासइणी जाया सा देवी सालभंजिव्व" (धर्मवि १४७)।
आसंदय पुंन [आसन्दक] आसन-विशेष, मंच; (सुख ६, १)।
आसंसइय वि [असंशयित] संशय-रहित; (सूत्र २, ७, १३)।
आसगलिअ वि [दे] प्राप्त; "एवं विसयविसुद्धचिंतणेण खविओ कम्मसंघाओ, आसगलियं बोधिबीयं" (स ६७६)।
आसत्त वि [आसक्त] १ नीचे लगा हुआ; (राय ३५)। २ पुं. नपुंसक का एक भेद, वीर्य-पात होने पर भी स्त्री का आलिङ्गन कर उसके कक्षादि अंगों में जुड़कर सोने वाला नपुंसक; (पव १०६)।
आसमपय न [आश्रमपद] तापसों के आश्रम से उपलक्षित स्थान; (उत्त ३०, १७)।
आसव सक [आ + स्रु] आना। "आसवदि जेण कम्मं परिणामेणप्पणो स विण्णेओ। भावासवो" (द्रव्य २६)।
आसव पुं [आश्रव] सूक्ष्म छिद्र; देखो 'सयासव'; (भग १, ६)।
आसवाहिया स्त्री [अश्ववाहिका] अश्व-क्रीड़ा; (धर्मवि ४)।
आसाअ सक [आ + सादय्] स्पर्श करना, छूना। आसाएज्जा; वकृ—आसायमाण; (आचा २, ३, २, ३)।
आसाअ पुं [आऽस्वाद] स्वाद का बिलकुल अभाव; (तंदु ४५)।
आसाअ देखो आसय = आश्रय; (तंदु ४५)।
आसाढी स्त्री [आषाढी] १ आषाढ़ मास की पूर्णिमा; २ आषाढ़ मास की अमावस; (सुज्ज १०, ६)।
आसार सक [आ + सारय्] तंदुरस्त करना, वीणा को ठीक करना। संकृ—आसारेऊण; (सिरि ७६४)।
आसार पुं [आसार] समोकरण, वीणा को ठीक करना; (कुप्र १३६)।
आसारिय वि [आसारित] ठीक किया हुआ; "आसारिया कुमारेण वीणा" (कुप्र १३६)।
आसावल्ली स्त्री [आशापल्ली] एक नगरी; (ती १५)।
आसासण पुं [आश्वासन] १ एक महाग्रह; (सुज्ज २०)। २ वि. आश्वासन-दाता; (कुप्र ११०)।

आसिच सक [आ+सिच्] सींचना। कर्म—आसिच्चंत ; (चेइय १५१)।
आसित्तिया स्त्री [दे] खाद्य-विशेष ; "विसाहाहिं आसित्तियाओ भोच्चा कज्जं साधेंति" (सुज्ज १०, १७)।
आसियावाय देखो आसी-वाय ; (सूअ १, १४, १९)।
आसिल पुं [आसिल्ल] एक महर्षि; (सूअ १, ३, ४, ३)।
आसु पुंन [अश्रु] आंसू ; (सत्त १७)।
आसुरत्त न [आसुरत्व] क्रोधिपन, गुस्सा ; (दस ८, २५)।
आसुरीय वि [असुरीय] असुर-संबन्धी ; "आसुरीयं दिसं बाला गच्छंति अवसा तमं" (उत्त ७, १०)।
आसूणी स्त्री [आशूनी] श्लाघा, प्रशंसा ; (सूअ १, ९, १५)।
आसूय न [दे] औपयाचितक, मनौती ; (पिंड ४०५)।
आसोई } स्त्री [आश्वयुजी] १ आश्विन मास की
आसोया } पूर्णिमा ; २ आश्विन मास की अमावस ; (सुज्ज १०, ७ ; ६)।
आहंडल देखो आखंडल ; (हम्मीर १५)।
आहच्च अ [दे] १ अन्यथा ; २ निष्कारण ; (यव १)। °भाव पुं [°भाव] कादाचित्कता; (पव १०७ टी)।
आहण सक [आ+हन्] उठाना। संकृ—आहु[? ह]णिय ; (राय १८; २१)।
आहट्ट न [दे] देखो आहट्टु = दे ; (पव ७३ टी)।
आहम्मिअ वि [आधर्मिक] अधर्म-संबन्धी; (दस ८, ३१)।
आहर सक [आ+हृ] लाना। आहराहि ; (सूअ १, ४, २, ४), आहरेमो; (सूअ २, २, ५५)।
आहव सक [आ+ह्वे] बुलाना। आहवसु; (धर्मवि ८)। संकृ—आहविउं, आहविऊण; (धर्मवि ६८; सम्मत्त २१७)।
आहविअ देखो आहूअ—आहूत; (ती ४)।
आहव्व वि [आभाव्य] शास्त्रोक्त क्षेत्रादि; (पंचा ११, ३०; पव १०५)।
आहातहिय वि [याथातथ्य] सत्य, वास्तविक; (सूअ २, १, २७)। देखो आहत्तहीय।
आहारि वि [आहारिन्] आहार-कर्त्ता; (अज्झ १११)।
आहारिम वि [आहार्य] १ खाने योग्य; २ जल के साथ खाया जा सके ऐसा योग—चूर्ण-विशेष; (पिंड ५०२)।

आहावणा स्त्री [आभावना] उद्देश; (पिंड ३९१)।
आहाविअ वि [आधावित] दौड़ा हुआ; (सिरि ७५२)।
आहिय वि [आहित] १ व्याप्त ; "अचिरेणाहिओ एस जलोयरवाहिणा" (कुम्म ४३)। २ जनित, उत्पादित ; ३ प्रथित, प्रसिद्धि-प्राप्त ; (सूअ १, २, २, २९)। ४ सर्वथा हितकारी; (सूअ १, २, २, २७)।
आहेडिय वि [आखेटिक] मृगया-संबन्धी; "आहेडिय-भसणोण" (सम्मत्त २२९)।

इ

इअहरा देखो इयरहा ; (प्राकृ ३७)।
इंगारडाह पुंन [अङ्गारदाह] आवा, मिट्टी के पात्र पकाने का स्थान; (आचा २, १०, २)।
इंगालय देखो इंगालग ; (सुज्ज २०)।
इंगिअजाणुअ देखो इंगिअ-ज्ञ ; (प्राकृ १८)।
इंद पुंन [इन्द्र] एक देव-विमान ; (देवेन्द्र १४१)।
इंदासणि पुं [इन्द्राशनि] एक नरक-स्थान ; (देवेन्द्र २६)।
इंदिय न [इन्द्रिय] लिंग, पुरुष-चिह्न ; (धर्मसं ९८१)।
इंदिरा स्त्री [इन्दिरा] लक्ष्मी ; (सम्मत्त २२६)।
इक्कड वि [ऐक्कड] इक्कड तृण का बना हुआ ; (आचा २, २, ३, १४)।
इक्कार देखो एक्कारह ; (कम्म ६, ६९)।
इक्किल्ल वि [एकाकिन्] एकिला ; (सिरि ३४९)।
इगयाल स्त्रीन [एकचत्वारिंशत्] एकचालीस, ४१ ; (कम्म ६, ५६)।
इगवीसइम वि [एकविंश] एक्कीसवाँ ; (पव ४६)।
इगुणवीस वि [एकोनविंश] उन्नीसवाँ ; (पव ४६)।
इगुणीस } स्त्री [एकोनविंशति] उन्नीस ; (पव
इगुवीस } १८ ; कम्म ६, ५९)।
इगुसट्ठि स्त्री [एकोनषष्टि] उनसठ ; (कम्म ६, ६१)।
इच्छक्कार पुं [इच्छाकार] 'इच्छा' शब्द ; (पंचा १२, ४)।
इच्छा स्त्री [इच्छा] पक्ष की ग्यारहवीं रात्रि ; "जयंति-अपराजिया य ग(इ)च्छा य" (सुज्ज १०, १४)।
इज्ज पुंन [इज्या] यज्ञ, याग ; "भिक्खट्ठा बंभइज्जम्मि" (उत्त १२, ३)।

इट्टगा स्त्री [दे] खाद्य-विशेष, सेव ; (पिंड ४६१ ; ४६६ ; ४७२)।
इट्टवाय देखो इट्टा-वाय ; (सम्मत्त १३७)।
इट्ठ न [इष्ट] १ स्वाभ्युपगत, स्व-सिद्धान्त ; (धर्मसं ५१६)। २ न. तपो-विशेष, निर्विकृति तप ; (संबोध ५८)। ३ याग-क्रिया ; (स ७१३)।
इड्डरग } न [दे] रसोई ढकने का वड़ा पात्र ;
इड्डरय } (राय १४०)।
इतरेतरासय पुं [इतरेतराश्रय] तर्कशास्त्र-प्रसिद्ध एक दोष, परस्पर एक दूसरे की अपेक्षा ; (धर्मसं ११५८)।
इत्थंथ वि [इत्थंस्थ] इस तरह रहा हुआ ; (दस ६, ४, ७)।
इत्थि स्त्रीन [स्त्री] महिला, नारी ; "इत्थीणि वा पुरिसाणि वा" (आचा २, ११, ३)।
इद्दाणि [शौ] देखो इयाणिं ; (प्राकृ ८७)।
इदाणी } देखो इदाणिं ; (संक्षि १६)।
इदाणीं }
इदिविस (शौ) न [इतिवृत्त] इतिहास ; (मोह १२८)।
इद्दुर न [दे] धान्य रखने का एक तरह का पात्र; (अणु १५१)।
इभपाल पुं [इभपाल] हाथी का महावत ; (सम्मत्त १५७)।
इरिय सक [ईर्] जाना, गति करना। इरियामि ; (उत्त १८, २६ ; सुख १८, २६)।
इल्लपुलिंद पुं [दे] व्याघ्र, शेर ; (चंड)।
इस्सा स्त्री [ईर्ष्या] द्रोह, असूया ; (उत्त ३४, २३)।
इह्य अ. इस समय, अधुना ; (प्राकृ ८०)।

ई

ईजिह अक [घ्रा] तृप्त होना। ईजिहइ ; (प्राकृ ६५)।
ईडा स्त्री [ईडा] स्तुति ; (चेइय ८६८)।
ईण वि [ईन] प्रार्थी, अभिलाषी ; "आहाकडं चेव निकाममीणे" (सूअ १, १०, ८)।
ईसर पुं [ईश्वर] अणिमा आदि आठ प्रकार के ऐश्वर्य से संपन्न ; (अणु २२)।
ईसाण पुं [ईशान] अहोरात्र का ग्यारहवाँ मुहूर्त ; (सुज्ज १०, १३)।

उ

उ अ [तु] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ विशेषण ; २ कारण ; (वव १)।
उअणिअ } देखो उवणीय ; (प्राकृ ६)।
उअणीअ }
उअविट्ठअ न [औपविष्टक] आसन ; (प्राकृ १०)।
उअसप्प देखो उवसप्प। उअसप्प ; (रुक्मि ५१)।
उअसम } देखो उवसम=उप+शम्। उअसमइ,
उअसम्म } उअसम्मइ ; (प्राकृ ६६)।
उअहस देखो उवहस। उअहसइ ; (प्राकृ ३४)।
उआलभ देखो उआलंभ=उपा+लभ्। उआलभेमि ; (लि ८२)।
उआस देखो उवास=उपा+आस्। कवकृ—उआसिज्जमाण ; (हास्य १४०)।
उआहरण देखो उदाहरण ; (मन ३)।
उइन्न देखो ओइण्ण ; (सम्मत्त ७७)।
उउबद्धिय न [ऋतुवद्ध] मास-कल्प, एक मास तक एक स्थान में साधु का निवासानुष्ठान ; (आचा २, २, २, ७)।
उएट्ट पुं [दे] शिल्पि-विशेष ; (अणु १४६)।
उं अ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ दोष, निन्दा ; २ विस्मय ; ३ खेद ; ४ वितर्क ; ५ सूचन ; (प्राकृ ७६)।
उंछ पुंन [उञ्छ] भिक्षा ; (सूअ १, २, ३, १४)।
उंडग } न [दे] स्थंडिल, स्थान, जगह ; (दस ४,
उंडुअ } १; ५, १, ८७)।
उंडु न [दे] मुख, मुँह ; (अणु २१)। °रुक न [दे] मुँह से वृषभ आदि की तरह आवाज करना ; (अणु २६)।
उंदुरु पुंस्त्री [उन्दुरु] मूषक, चूहा ; (दस २, ७)।
उंवरय पुं [दे] कुष्ठ-रोग का एक भेद ; (सिरि ११४)।
उक्कंड वि [उत्कण्डित] खूब छटा हुआ, विशेष कण्डित ; (पिंड १७१)।
उक्कट्ठि स्त्री [अपकृष्टि] अपकर्ष, हानि ; (वव १)।
उक्कड्ढ सक [उत्+कर्षय्] उत्कृष्ट करना, बढ़ाना। उक्कड्ढए ; (कम्म ५, ६८ टी)।

उक्कनाह पुं [दे] उत्तम अश्व की एक जाति ; (सम्मत्त २१६)।

उक्कमण न [उत्क्रमण] ऊर्ध्व गमन ; २ बाहर जाना; (समु १७२)।

उक्करड देखो **उक्कर**=उत्कर ; "कस्सावि उत्तरीयं गहिऊण कओ अ उक्करडो" (सिरि ७६५)।

उक्कल अक [उत्+कल्] उत्कट रूप से बरतना। उक्कलइ ; (सुख २, ३७)।

उक्कला देखो **उक्कलिया** ; (उत्त ३६, १३८)।

उक्कलिय वि [दे] उबला हुआ; गुजराती में "उकलेलुं" "उसिणोदगं तिदंडुक्कलियं" (विचार २५७)।

उक्किट्ठ वि [उत्कृष्ट] १ ज्यादः ; (पव—गा १५)। २ पुंन. इमली आदि के पत्तों का समूह ; (दस ५, १, ३४)। ३ लगातार दो दिन का उपवास; (संबोध ५८)।

उक्किन्न वि [उत्कीर्ण] १ चर्चित, उपलिप्त; "चंदणो-क्किन्नगायसरीरे" (तंदु २९)। २ खोदा हुआ ; (दसनि २, १७)।

उक्किरणग न [उत्करणक] अक्षत आदि से बढ़ाना, बधावा, वर्धापन ; "पुप्फारुहणगाइं उक्किरणगाइं। पूयं च चेइयाणं तेवि सरज्जेसु कारिंति" (धर्मवि ४९)।

उक्कुंचण न [उत्कुञ्चन] ऊँचे चढ़ाना ; (सूअ २, २, ६२)।

उक्कुरुआ देखो **उक्कुरुडिया** ; (ती ११)।

उक्कुरुड पुं. देखो **उक्कुरुडी** ; (कुप्र ५५)।

उक्कोस वि [उत्कर्ष] उत्कृष्ट, प्रधान, मुख्य ; (पचा १, २)।

उक्कोसा स्त्री [उत्कोशा] कोशा-नामक एक प्रसिद्ध वेश्या ; (धर्मवि ९७)।

उक्खिल्ल सक [दे] उखेड़ना। प्रयो—हेकृ—"उक्खि-ल्लाविउमाढत्तो थूभो" (ती ७)।

उक्खुब्भ अक [उत्+क्षुभ्] क्षुब्ध होना। उक्खुब्भइ ; (प्राकृ ७५)।

उक्खुलंप सक [दे] खजवाना। संकृ—**उक्खुलंपिय** ; (आचा २, १, ६, २)।

उगुणपन्न स्त्रीन [एकोनपञ्चाशत्] उनपचास, ४९ ; (सुज्ज १०, ६ टी)।

उगुणवीसा स्त्री [एकोनविंशति] उन्नीस; (सुज्ज १०, ६ टी)।

उगुणुत्तर न [एकोनसप्तति] उनहत्तर, ६९ ; "उगु-णुत्तराइं" (सुज्ज १०, ६ टी)।

उगुनउइ स्त्री [एकोननवति] नवासी, ८९ ; (कम्म ६, ३०)।

उगुसीइ स्त्री [एकोनाशीति] उनासी, ७९ ; (कम्म ६, ३०)।

उग्गंठ सक [उद्+ग्रन्थ्] खोलना, गाँठ खोलना। संकृ—**उग्गंठिऊण** ; (हम्मीर १७)।

उग्गमण न [उद्गमन] उदय ; (सिरि ४२८; सुज्ज ९)।

उग्गह पुं [अवग्रह] परोसने के लिए उठाया हुआ भोजन ; (सूअ २, २, ७३)।

उग्गामिय वि [उद्गमित] ऊपर उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ ; (सुख १, १४)।

उग्गाल पुं [दे. उद्गाल] पान की पीचकारी ; (पव ३८)।

उग्गाल पुं [उद्गार] विनिर्गम, बाहर निकलना; (वव१)।

उग्गाह सक [उद्+ग्राहय्] १ तगादा करना। २ ऊँचे से चलाना। उग्गाहइ ; (प्राकृ ७२)।

उग्घड अक [उद्+घट्] खुलना। उग्घडइ ; (सिरि ५०४)। उग्घडति ; (धर्मवि ७६)।

उग्घडिअ वि [उद्घटित] खुला हुआ ; (धर्मवि ७७)।

उग्घसिय न [अवघर्षित] घर्षण ; (राय ६७)।

उग्घाइय वि [उद्घातित] लघु प्रायश्चित्त वाला ; (वव १)।

उग्घाड पुं [उद्घाट] प्रकटन, प्रकाश ; "किंतु कओ बहुएहिं उग्घाडो निययकम्माणं" (सिरि ५२८)।

उग्घाअ सक [उद्+घातय्] विनाश करना। उग्घा-एइ ; (उत्त २९, ६)।

उघाड देखो **उग्घाड**=उद्+घाटय्। हेकृ—"तं जिण-हरस्स दारं केणावि नो सक्कियं उघाडेउं" (सिरि ५२८)।

उच्चंडिय वि [दे] ऊँचा चढ़ाया हुआ; (हम्मीर २८)।

उच्चाविय वि [उच्चित] ऊँचा किया हुआ ; (वज्जा १३२)।

उच्चोदय पुं [उच्चोदय] चक्रवर्ती का एक देव-कृत प्रासाद ; (उत्त १३, १३)।

उच्छलिर वि [उच्छलितृ] उछलने वाला ; (धर्मवि १४; कुप्र ३७३)।

उच्छह सक [उत् + सह्] उद्यम करना। वकृ—उच्छहं ; (दस ६, ३, ६)।

उच्छाय सक [अव + छादय्] आच्छादन करना, ढकना। संकृ—उच्छाइऊण ; (चेइय ४८५)।

उच्छिंदण न [दे] धार लेना, करजा लेना, सूद पर लेना ; (पिंड ३१७)।

उच्छिट्ठ वि [उच्छिष्ट] अशिष्ट, असभ्य; (दस ३, १ टी)।

उच्छुभण न [उत्क्षेपण] ऊँचा फेंकना; (पव ७३ टी)।

उच्छेव पुं [उत्क्षेप] प्रक्षेप ; (वव ४)।

उच्छोलित्तु वि [उत्क्षालयितृ] डूबोने वाला, निमग्न करने वाला ; (सूअ २, २, १८)।

उज्जमि वि [उद्यमिन्] उद्योगी ; (कुम ४१६)।

उज्जम्ह अक [उत्+जृम्भ्] जोर से जँभाई लेना। उजम्हइ ; (प्राकृ ६४)।

उज्जर वि [दे] १ मध्य-गत, भीतर का; २ पुं. निर्जरण, क्षय ; (तंदु ४१)।

उज्जलिअ पुं [उज्ज्वलित] तीसरी नरक-भूमि का सातवाँ नरकेन्द्रक—नरक-स्थान विशेष ; (देवेन्द्र ८)।

उज्जह सक [उद्+हा] प्रेरणा करना। संकृ—उज्जहित्ता ; (उत्त २७, ७)।

उज्जायण न [उद्यायन] गोत्र-विशेष; (सुज्ज १०, १ टी)।

उज्जाल सक [उत् + ज्वालय्] उज्ज्वल करना, विशेष निर्मल करना। संकृ—**उज्जालियं** ; (श्रावक ३७६)।

उज्जालण न [उज्ज्वालन] उज्ज्वल करना ; (सिरि ६८०)।

उज्जालय वि [उज्ज्वालक] आग सुलगाने वाला ; (सूअ १, ७, ५)।

उज्जु पुं [ऋजु] संयम ; (सूअ १, १३, ७)।

उज्जढ वि [उद्व्यूढ] धारण किया हुआ; (संबोध ५३)।

उट्टिगा देखो **उट्टिया** ; (धर्मसं ७८)।

उट्ठ पुं [उण्ड्र] जलचर जंतु-विशेष ; (सूअ १, ७, १५)।

उट्ठण देखो उट्ठाण ; (धर्मवि १३०)।

उडु पुं [उडु] एक देव-विमान ; (देवेन्द्र १३१)। **°प्पभ** पुन [°प्रभ] उडु-नामक विमान की पूर्व तरफ स्थित एक देव-विमान ; (देवेन्द्र १३८)। **°मज्झ** पुंन [°मध्य] उडु विमान की दक्षिण तरफ का एक देव-विमान ; (देवेन्द्र १३८)। **°यावत्त** पुंन [°कावर्त] उडुविमान की पश्चिम तरफ का एक देव-विमान ; (देवेन्द्र १३८)। **°सिट्ठ** पुंन [°सृष्ट] उडुविमान की उत्तर तरफ का एक देव-विमान ; (देवेन्द्र १३८)।

उडूखल, **उडूहल** } पुंन [उडूखल] उलूखल, उदूखल; (पिंड ३६१; प्राकृ ७)।

उड्डंस देखो उद्दंस ; (उत्त ३६, १३८)।

उड्डामर वि [उड्डामर] उद्भट, प्रबल ; (कुम्म १४५)।

उड्डाव वि [उड्डायक] उड़ाने वाला ; (पिंड ४३१)।

उड्डिय वि [उड्डीन] उड़ा हुआ; "तरुउड्डियपक्खिगणुव्व पगे" (धर्मवि १३६)।

उड्डुइय, **उड्डोअ** } [दे] देखो **उड्डुअ** ; (चेइय ४३४; ४३७)।

उड्ढविय वि [ऊर्ध्वित] ऊँचा किया हुआ ; (वज्जा १४६)।

उड्ढि [दे] देखो उड्ढि ; (सुज्ज १०, ८)।

उणं देखो **पुण** = पुनर् ; (पिंड ८२)।

उणपन्न स्त्रीन [एकोनपञ्चाशत्] उनचास, ४६ ; (देवेन्द्र ६६)।

उणाइ पु [दे] प्रिय, पति, नायक ; "उणाइसाइटोला: प्रियार्थे" (संक्षि ४७)।

उण्णअ सक [उद् + नद्] पुकारना, आह्वान करना। उण्णअइ; (प्राकृ ७४)।

उण्णाल सक [उद् + नमय्] ऊँचा करना। उण्णालइ ; (प्राकृ ७५)।

उण्हवण न [उष्णन] गरम करना ; (पिंड २४०)।

°उत्त वि [गुप्त] रक्षित ; (सूअ १, १, ३, ५)।

उत्तइय वि [दे] उत्तेजित, अधिक दीपित; (दसनि ३, ३५)।

उत्तंघ देखो **उत्तंभ**। उत्तंघइ ; (प्राकृ ७०)।

उत्तण वि [दे] गर्वित; (सट्ठि ५६ टी)। देखो **उत्तुण**।

उत्तम पु [उत्तम] एक दिन का उपवास; (संबोध ५८)।

उत्तमा स्त्री [उत्तमा] पक्ष की प्रथम रात्रि ; (सुज्ज १०, १४)।

उत्तरकुरु पुंन. [उत्तरकुरु] १ देव-भूमि, स्वर्ग; (स्वप्न ६०)। २ स्त्री. भगवान् नमिनाथ की दीक्षा-शिविका ; (विचार १२६)।

उत्तरविउव्विय वि [उत्तरवैक्रियिक] उत्तरवैक्रिय-नामक लब्धि से संपन्न; (पंच २, २०)।

उत्तरसंग देखो **उत्तरा-संग**; (पव ३८)।

उत्तार पुं [दे] आवास-स्थान ; गुजराती में 'उतारो' (सिरि ७००)।

उत्तिंगपणग पुंन [उत्तिङ्गपनक] कीटिका-नगर, चींटिओं का बिल ; (दस ५, १, ५६)।

उत्तिट्ठ अक [उत्+स्था] १ उठाना। २ उदित होना। वकृ—"उत्तिट्ठंते दिवायरे" (उत्त ११, २४)।

उत्थ (शौ) देखो **उट्ठ**=उत्+स्था। उत्थेदि ; (प्राकृ ९४)।

उत्थंभिर देखो **उत्तंभि** ; (वज्जा १५२)।

उत्थप्पण देखो **उट्ठयण** ; (कुप्र ११७)।

उत्थर } सक [उत्+स्तृ] आच्छादन करना (?)।
उत्थल्ल } उत्थरइ, उत्थल्लइ ; (प्राकृ ७५)।

उदड्ढ पुं [उद्दग्ध] एक नरक-स्थान ; (देवेन्द्र २७)।

उदत्त वि [उदात्त] उदार, अ-कृपण ; (संबोध ३८)।

उदय पुं [उदय] लाभ ; (सूअ २, ६, २४)।

उदयण पुं [उदयन] १ राजा सिद्धराज का प्रसिद्ध मंत्री; (कुप्र १४३)।

उदाइण देखो **उदायण** ; (कुलक २३)।

उदात्त देखो **उदत्त** ; (णंदि १७४ टी)।

उदीरग देखो **उदीरय** ; (पंच ५, ५)।

उदीरिद देखो **उदीरिय** ; (राय ७४)।

उदूग पुंन [दे] पृथिवी-शिला ; (पंचा ८, १० टी)।

उद्दअ वि [उद्यत] उद्यम-युक्त ; (प्राकृ २१)।

उद्दम पुंन. देखो **उज्जम**=उद्यम ; (प्राकृ २१)।

उद्दवण न [अपद्रावण] मृत्यु को छोड़ कर सब प्रकार का दुःख ; "उद्दवणं पुण जाणसु अइवायविवज्जियं पीडं" (पिंडभा २५ ; पिंड ९७)।

उद्दाण वि [अवद्रात] मृत ; "उद्दाणो भोइयम्मि चेइ-याइं वंदामि" (सुख १, ३)।

उद्दार देखो **उराल**=उदार ; "देमि न कस्सवि जंपइ उद्दारजणस्स विविहरयणाइं" (वज्जा १२०)।

उद्दिस सक [उद्+दिश्] आज्ञा करना। कर्म—उद्दि-स्सिज्जंति; (अणु ३)।

उद्दीरणा देखो **उदीरणा** ; "उद्दीरणउदयाणं जं नाणत्तं तयं वोच्छं" (पंच ५, ९८)।

उद्देस पुं [उद्देश] १ पठन-विषयक गुर्वाज्ञा ; (अणु ३)। २ नाम का उच्चारण ; (सिरि १०९०)। ३ वाचना, सूत्र-प्रदान, सूत्रों के मूल पाठ का अध्यापन ; (वव १)।

उद्देस वि [औद्देश] देखो **उद्देसिय**=औद्देशिक ; (पिंड २३०)।

उद्देसणकाल पुं [उद्देशनकाल] मूल-सूत्र के अध्यापन का समय ; (णंदि २०९)।

उद्देसिय वि [औद्देशिक] १ उद्देश-संबन्धी, उद्देश से किया हुआ; २ विवाह आदि के उपलक्ष्य में किये गये जिमन में निमन्त्रितों के भोजन की समाप्ति के अनन्तर बचे हुए वे खाद्य द्रव्य जिनको सर्वजातीय भिक्षुओं को देने का संकल्प किया गया हो ; (पिंड २२९)।

उद्धव पुं [उद्धव] ऊधो, श्रीकृष्ण का चाचा, मित्र और भक्त ; (रुक्मि ४६)।

उद्धारय वि [उद्धारक] उद्धार-कारक ; (कुप्र २)।

उद्धि स्त्री [दे] गाड़ी का एक अवयव, गुजराती में 'उंध' ; (सुज्ज १०, ८ टी ; ठा ३, २ टी—पत्र १३३)।

उन्निक्ख सक [उन्नि+खन्] उखेड़ना, उन्मूलन करना। भवि—उन्निक्खिस्सामि ; (सूअ २, १, ६)। कृ—उन्निक्खेयव्व ; (सूअ २, १, ७)।

उपक्खर न [उपस्कर] घर का उपकरण; (उत्त ६, ६)।

उप्पयणी स्त्री [उत्पतनी] विद्या-विशेष ; (सूअ २, २, २७)।

उप्पाइय न [औत्पातिक] भू-कंप आदि उत्पातों का सूचक शास्त्र ; (सूअ १, १२, ९)।

उप्पायय वि [उत्पादक] उत्पन्न-कर्ता; (सुख २, २५)।

उप्पास सक [उत्प्र+अस्] हँसी करना। उप्पासिति; (सुख १, १६)।

उप्पित्थ वि [दे] श्वास-युक्त, (गीत) ; (राय ७७ टी)।

उप्पिलण न [उत्प्लावन] डूबोना; (पिंड ४२२)।

उप्पेल्ल पुं [उन्नमन] ऊँचा करना; (पउम ८, २७२)।

उप्फण सक [उत्+फण्] छटना, पवन में धान्य आदि का छिलका दूर करना। उप्फणंति ; भूका—उप्फणिंसु ; भवि—उप्फणिस्संति ; (आचा २, १, ६, ४)।

उप्फिड अक [उत्+स्फिट्] मंडूक की तरह कूदना, उड़ना। उप्फिडइ; (उत्त २७, ५)। वकृ—उप्फिडंत ; (पव २)।

उप्फिडण न [उत्स्फेटन] कुण्ठित होना; (स ६९८)।

उप्फुन्न वि [दे] स्पृष्ट, छुआ हुआ ; (पव १५८ टी)।

उप्फेसण न [दे] डराना, भयोत्पादन; (सुख ३, १)।

उब्बिंबल वि [दे] कलुष जल वाला ; (दे १, १११ टी)।

उब्बुह अक [उत्+क्षुभ्] संक्षुब्ध होना। उब्बुहइ ; (प्राकृ ७५)।

उब्भंत पुं [उद्भ्रान्त] प्रथम नरक-पृथिवी का चौथा नरकेन्द्रक—एक नरक-स्थान ; (देवेन्द्र ३)।

उब्भाम सक [उद् + भ्रामय्] घुमाना। उब्भामेइ ; (राय १२९)।

उब्भामय पुं [उद्भ्रामक] जार, उपपति; (पिंड ४२०)।

उब्भिज्जा स्त्री [उद्भेद्या] भाजी, एक तरह का शाक; (पिंड ६२४)।

उब्भिय न [उद्भिद्] १ लवण-विशेष, समुद्र के किनारे पर क्षार जल के संसर्ग से होने वाला नोन ; (आचा २, १, ६, ५)। २ पुंन. खंजरीट, शलभ आदि प्राणी; (संबोध २० ; धर्मसं ७२ ; सूअ १, ९, ८)।

उभ स [उभ] उभय, दोनों; (पंच ६, ५८)।

उमज्जायण देखो ओमज्जायण ; (सुज्ज १०, १६)।

उमाण न [दे] प्रवेश ; (आचा २, १, १, ९)।

उमुय सक [उद्+मुच्] छोड़ना। वकृ—उमुयंत ; (उत्त ३०, २३)।

उम्मत्तय न [दे] धतूरे का फल ; "उम्मत्तयरससित्तो पिच्छइ नन्नं विणा कणयं" (मोह २२)।

उम्माडिय न [दे] उल्मुक, जलता काष्ठ ; गुजराती में 'उंबाडुं' ; (सिरि ९८०)।

उम्मिण सक [उद्+मी] तौलना, नाप करना। कर्म—उम्मिणिज्जइ ; (अणु १५३)।

उम्मुअ देखो उमुय। वकृ—"जयम्मि पीऊसमिवुम्मुअंतं चक्खुं पसयणं सइ निविखवेजा" (उपपं २०)।

उयत्त अक [अप+वृत्] हटना। उयत्तति; (दस ३, १ टी)।

उयरियां स्त्री [अपवरिका] छोटा कमरा; (सम्मत्त ११९)।

उयचिय देखो उविअ=(दे); (राय ९३ टी)।

उयारण न [अवतारण] निछावर, उतारा, हर्ष-दान, गुजराती में 'उवारणु' (कुप्र ६५)।

उरत्थ वि [उरःस्थ] १ छाती में स्थित; २ छाती में पहनने का आभूषण; (आचा २, १३, १)।

उरब्भिअ वि [औरभ्रिक] भेड़ चराने वाला ; (सूअ २, २, २८)।

उरसिज पुं [उरसिज] स्तन, थन; (धर्मवि ६६)।

उराल वि [उदार] स्थूल, मोटा ; (सूअ १, १, ४, ९)।

उरोरुह पुं [उरोरुह] स्तन, थन ; (पव ६२)।

उलुग पुं [उलुक] उल्लु, घूक, पेचक ; (धर्मसं ६७१; १२६५)।

उल्लंघ पुं [उल्लङ्घ] उल्लंघन, अतिक्रमण ; (संबोध ६)।

उल्लट्ट देखो उव्वट्ट=उद्-वृत्। उल्लट्टइ ; (प्राकृ ७२)।

उल्लट्टिय देखो उल्लट्ट—(दे);

"सो पुण नरो पविट्ठो भट्ठो सत्थाउ तं महाअडविं।
उल्लट्टियकूवोदगमिव कंठगएहिं पाणेहिं" (धर्मवि १२४)।

उल्लण न [दे] खाद्य वस्तु-विशेष, ओसामन ; (पिंड ६२४)।

उल्लव सक [उद्+लू] उन्मूलन करना। संकृ—उल्लविऊण ; हेकृ—उल्लविउं ; कृ—उल्लविअव्व ; (प्राकृ ६९)।

उल्लासण न [उल्लासन] विकास ; (सिरि ५३९)।

उल्लिअ वि [दे] १ चीरा हुआ, फाड़ा हुआ ; (उत्त १९, ६४)। २ उपालब्ध, उलहना दिया हुआ ; (सम्मत्त ५२)।

उल्लिंगण वि [उल्लिङ्गन] उपदर्शक ; (पव १)।

उल्लिपण न [उपलेपन] उपलेप ; (पिंड ३५०)।

उल्लिर वि [आर्द्र] गीला ; (वज्जा ११२)।

उल्लीण वि [उपलीन] प्रच्छन्न, गुप्त ; (आचा २, २, ३, ११)।

उल्लुअ वि [दे. उद्गत] उदय-प्राप्त ; (प्राकृ ७७)।

उल्लुअ वि [उल्लून] १ उन्मूलित ; २ न. उन्मूलन ; (प्राकृ ७०)।

उल्लुव देखो उल्लव=उद + लू। उल्लुवइ ; संकृ—उल्लुविऊण ; (प्राकृ ६९)।

उल्लढ सक [आ + रुह्] चढ़ना। उल्लूढइ ; (प्राकृ ७३)।

उल्लोढ सक [उल्लोध्रय्] लोध्र आदि से घिसना। उल्लोढिज्ज ; (आचा २, १३, १)।

उल्लोल सक [उद् + लोलय्] पोंछना। उल्लोलेइ; संकृ—उल्लोलेत्ता; (आचा २, १५, ५)।

उव न [उद] पानी, जल ; "पाउवदाइं च पहाणुवदाइं च" (गाथा १, ७—पत्र ११७)।

उवऊह सक [उप + गूह्] आलिङ्गन करना। उवऊहइ ; (प्राकृ ७४)।

उवकंठ न [उपकण्ठ] समीप ; (सिरि ११२१)।

उवकडुअ (शौ) अ [उपकृत्य] उपकार करके ; (प्राकृ ८८)।

उवकार देखो **उवगार** ; (धर्मसं ६२० टी)।

उवकारिया देखो **उवगारिया** ; (राय ८२)।

उवकुल पुंन [उपकुल] कुल नक्षत्र के पास का नक्षत्र ; (सुज्ज १०, ५)।

उवकोसा स्त्री [उपकोशा] एक गणिका, कोशा-वेश्या की छोटी बहिन ; (कुप्र ४५३)।

उवक्कम पुं [उपक्रम] अनुदित कर्मों को उदय में लाना ; (सूअनि ४७)।

उवक्काम सक [उप + क्रम्] दीर्घ काल में भोगने योग्य कर्मों को अल्प समय में ही भोगना। कर्म—उवक्कामिज्जइ ; (धर्मसं ६४८)।

उवक्कामण न [उपक्रामण] उपक्रम कराना; (श्रावक १६७)।

उवक्खर पुं [उपस्कर] घर का उपकरण, साधन ; (सूअनि ५)।

उवक्खा सक [उपा + ख्या] कहना। कर्म—उवक्खाइज्जंति; (सूअ २, ४, १०; भग १६, ३—पत्र ७६२)।

उवक्खा स्त्री [उपाख्या] उपनाम ; (धर्मसं ७२७)।

उवक्खाइत्तु वि [उपख्यापयितृ] प्रसिद्धि कराने वाला ; "अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवइ" (सूअ २, २, २६)।

उवक्खीण वि [उपक्षीण] क्षय-प्राप्त ; (धर्मवि ४२)।

उवक्खेव पुं [दे. उपक्षेप] बालोत्पाटन, मुंडन ; (तंदु १७)।

उवगप्पिय वि [उपकल्पित] विरचित ; (स ७२१)।

उवगरिअ न [उपकृत] उपकार ; (कुप्र ४५)।

उवगारिया स्त्री [उपकारिका] प्रासाद आदि की पीठिका; (राय ८१)।

उवगूहिय न [उपगूहित] गाढ आलिंगन; (पव १६६)।

उवग्गह पुं [उपग्रह] सामीप्य-संबन्ध ; (धर्मसं ३६३)।

उवग्गहग वि [उपग्राहक] उपकार-कारक; (कुलक २३)।

उवग्गहिअ न [उपगृहीत] उपकार ; (तदु ५०)।

उवघायग वि [उपघातक] विनाशक ; (धर्मसं ५१२)।

उवचर सक [उप + चर्] व्यवहार करना। उवचरंति ; (पिंडभा ६)।

उवचरय वि [उपचरक] १ सेवा के मिष से दूसरे के अहित करने का मौका देखने वाला ; (सूअ २, २, २८)। २ पुं. जासूस, चर ; (आचा २, ३, १, ५)।

उपचरिय वि [उपचरित] कल्पित ; (धर्मसं २४५)।

उवचिणिय देखो **उवचिय** ; (धर्मवि १०६)।

उवच्चया स्त्री [उपत्यका] पर्वत के पास की नीची जमीन ; (ती ११)।

उवज्ज अक [उत् + पद्] उत्पन्न होना। उवज्जंति ; (सूअ १, १, ३, १६)।

उवज्झाय देखो **उवज्झाय** ; (सिरि ७७)।

उवट्ठव सक [उप + स्थापय्] युक्ति से संस्थापित करना। उवट्ठवयंति ; (सूअ २, १, २७)।

उवट्ठाण न [उपस्थान] अनुष्ठान, आचार ; (सूअ १, १, ३, १४)।

उवठावणा देखो **उवट्ठवणा** ; (पंचा १७, ३०)।

उवणय पुं [उपनय] उपहार, भेंट ; (राय १२७)।

उवणयण न [उपनयन] १ उपसंहार ; (वव १)। २ उपस्थापन ; (पिंड ४४१)।

उवणिवाय पुं [उपनिपात] संबन्ध ; (धर्मसं ४५८)।

उवणिहि पुंस्त्री [उपनिधि] उपस्थापन ; (अणु ५२)।

उवणिहिअ वि [औपनिधिक] १ उपनिधि-संबन्धी ; २ °आ स्त्री [°की] क्रम-विशेष ; (अणु ५२)।

उवणीअ न [उपनीत] उपनय; (अणु २१७)। °**वयण** न [°वचन] प्रशंसा-वचन ; (आचा २, ४, १, १)।

उवत्थाण देखो **उवट्ठाण** ; (दसनि ४, ५५)।

उवधाउ पुं [उपधातु] निकृष्ट धातु ; (संबोध ५३)।

उवधारणया स्त्री [उपधारणा] अवग्रह-ज्ञान ; (णंदि १७४)।
उवनगर देखो उवनयर ; (सुख २, १३)।
उवनिविट्ठ वि [उपनिविष्ट] समीप-स्थित; (राय २७)।
उवन्नास पुं [उपन्यास] निवेदन ; (दसनि १, ८२)।
उवभोग पुं [उपभोग] १ एक वार भोग—आसेवन ; २ अन्तरंग भोग ; (श्रावक २८४)। ३ धारण करना; (ठा ५, ३ टी—पत्र ३३८)।
उवरितण देखो उवरि-म; (धर्मवि १५१)।
उवरोह सक [उप+रोधय्] अड़चन डालना। कृ— उवरोहणीय ; (सुख १, ४०)।
उवरोहिअ वि [उपरोधित] जिसको उपरोध—निर्बन्ध किया गया हो वह ; (कुप्र १३५ ; ४०६)।
उवलंभ देखो उवालंभ=उपालम्भ ; "उवलंभम्मि मिगाई नाहियवाई वि वत्तव्वे" (दसनि १, ७५)।
उवलंभण न [उपलम्भन] प्राप्ति ; (णंदि २१०)।
उवलक्ख पुं [उपलक्ष] ज्ञान, खबर, मालूम ; "खित्ताइं अणुवलक्खरयणाइं रुक्खगहणम्मि" (कुप्र ३२६)।
उवलद्धिय देखो उवलद्ध ; "सत्तरत्तछुहियस्स मे भक्ख-मुवलद्धियं, ता तुमं भक्खिस्सं" (कुप्र ५६)।
उवलिंप सक [उप+लिप्] चुम्बन करना। "बालाणं जो उ सीसाणं जीहाए उवलिंपए" (गच्छ १, १६)।
उववइ पुं [उपपति] जार ; (धर्मवि १२८)।
उववज्झ वि [उपवाह्य] राज आदि का वल्लभ— प्रधान, सेनापति आदि; (दस ६, २, ५)।
उववज्झ वि [औपवाह्य] प्रधान आदि का, प्रधान आदि को बैठने योग्य ; (दस ६, २, ५)।
उववाय सक [उप+पादय्] संपादन करना, सिद्ध करना। उववायए ; (उत्त १, ४३ ; दस ८, ३३)।
उवविअ देखो उववीअ : "सव्वंगं जुव्वणो च (?व)- विओ" (धर्मवि ८)।
उवविसण न [उपवेशन] बैठना ; (कुलक ७)।
उवसंकम सक [उपसं+क्रम्] समीप आना। वकृ— उवसंकमंत; (दस ५, २, १०)।
उवसंखड सक [उपसं+कृ] राँधना, पकाना। कवकृ— उवसंखडिज्जमाण ; (आचा २, १, ४, २)।
उवसंहर सक [उपसं+हृ] १ हटाना, दूर करना। २ सकेलना, समेटना। "ता उवसंहर इमं कोवं" (कुप्र २८४)। संकृ—उवसंहरिउ नीसेसदेवमायं गओ जाव" (धर्मवि १८)।
उवसंहार पुं [उपसंहार] संकोचन, समेट; (द्रव्य १०)।
उवसग्गिअ वि [उपसर्गित] हैरान किया हुआ ; (सिरि १११७)।
उवसज्ज अक [उप+सृज्]आश्रय करना। उवसज्जिज्जा; (आचा २, ८, १)।
उवसद्द पुंन [उपशब्द] १ प्रच्छन्न शब्द; २ समीप का शब्द ; (तंदु ५०)।
उवसमिअ पुं [औपशमिक] कर्मों का उपशम ; (अणु ११३)।
उवसाम पुं [उपशम] उपशान्ति ; (सिरि २३५)।
उवसेवण न [उपसेवन] सेवा, परिचय; (पव ६)।
उवस्सुदि स्त्री [उपश्रुति] प्रश्न-फल को जानने के लिए ज्योतिषी को कहा जाता प्रथम वाक्य; (हास्य १३०)।
उवहारुल्ल वि [उपहारवत्] उपहार वाला ; (संक्षि २०)।
उवहिंड सक [उप+हिण्ड्] पर्यटन करना, घुमना। "भिक्खत्थं उवहिंडे" (संबोध ४१)।
उवाइक्कम सक [उपाति+क्रम्] उल्लंघन करना। संकृ—उवाइकम्म ; (आचा २, ८, १)।
उवाइण सक [उपाति+नी] गुजारना। संकृ—उवा-इणित्ता ; (आचा २, २, २, ७)।
उवावत्त पुं [उपावृत्त] वह अश्व जो लेटने से श्रम-मुक्त हुआ हो ; (चारु ७०)।
उवावत्तिद (शौ) वि [उपावृत्तित] उपर्युक्त अश्व से युक्त ; (चारु ७०)।
उवासग वि [उपासक] १ सेवा करने वाला ; २ पुं जैन या बुद्ध दर्शनका अनुयायी गृहस्थ; (धर्मसं १०१३)।
उविंद पुंन [उपेन्द्र] एक देव-विमान; (देवेन्द्र १४१)।
उवेस अक [उप+विश्] बैठना। वकृ—उवेसमाण; (पिंड ५८६)।
उवेहण न [उपेक्षण] उपेक्षा, उदासीनता; (संबोध १०; हित २३)।
उव्वट्टण न [उद्वर्तन] तुले से उसके बीज को अलग करना ; (पिंड ६०३)।
उव्वट्टिअ वि [उद्वर्तित] साफ किया हुआ, प्रमार्जित; "करीसेण वावि उव्वट्टिए" (पिंड २७६)।

उव्वत्त सक [**उद्+वर्तय्**] १ खड़ा करना। २ उलटा करना। उव्वत्तंति ; (पव ७१)। संकृ—**उव्वत्तिया** ; (दस ५, १, ६३)।

उव्वत्त वि [**उद्वर्त**] खड़ा करने वाला ; (पव ७१)।

उव्वल सक [**उद्+वलय्**] उन्मूलन करना। **उव्वलए** ; वकृ—**उव्वलमाण** ; (पंच ५, १६६)।

उव्वलणा स्त्री [**उद्वलना**] १ उन्मूलन ; २ उद्वलन-योग्य कर्म-प्रकृति ; (पंच ३, ३४)।

उव्वाण देखो **उव्वाअ**=उद्वात ; (कुप्र १६६)।

उव्वाय देखो **उवाय**=उपाय ; (सूत्र १, ४, १, २)।

उव्विज्ज देखो **उव्विय**। उव्विज्जइ ; (प्राकृ ६८), उव्विज्जति ; (वे ८६)। संकृ **उव्विज्जिऊण** ; (धर्मवि ११६)।

उव्विद्ध वि [**उद्विद्ध**] जिसकी ऊँचाई वा माप किया गया हो वह ; (पव १५८)।

उव्विल्ल अक [**उद्+वेल्**] तड़फड़ना, इधर-उधर चलना। "उव्विल्लइ सयणीए देखो आसन्नचवणुव्व" (धर्मवि ११२)।

उव्विव्व } देखो **उव्विव**। उव्विव्वइ, उव्वेअइ ;
उव्वेअ } (प्राकृ ६८)।

उव्वेयणय पुंन [**उद्वेजनक**] एक नरक-स्थान ; (देवेन्द्र २८)।

उसढ देखो **ऊसढ**=दे ; (पव २)।

उसभ पुंन [**वृषभ**] एक देव-विमान ; (देवेन्द्र १४०)।

उसहसेण पु [**वृषभसेन**] १ तीर्थंकर-विशेष ; २ जिन-देव की एक शाश्वती प्रतिमा ; (पव ५६)।

उसिर देखो **उसीर**=उशीर ; (सूत्र १, ४, २, ८)।

उसुअ न [**इषुक**] १ वाण के आकार का एक आभूषण ; २ तिलक ; (पिंड ४२४)।

उस्सक्क सक [**उत्+ष्वष्क्**] प्रदीप्त करना, उत्तेजित करना। संकृ—**उस्सक्किय** ; (आचा २, १, ७, २)।

उस्सक्कण न [**उत्ष्वष्कण**] उत्सर्पण ; (पंचा १३, १०)।

उस्सक्किय वि [**उत्ष्वष्कित**] नियत काल के बाद किया हुआ ; (पिंड २६०)।

उस्सग्गि वि [**उत्सर्गिन्**] उत्सर्ग —सामान्य नियम— का जानकार ; (पव ६४)।

उस्सन्न देखो **उस्सण्ण**=दे ; (सूत्र २, २, ६५ ; तंदु २७)। °**भाव** पुं [°**भाव**] बाहुल्य-भाव ; (धर्मसं ७५६)।

उस्सप्पणा स्त्री [**उत्सर्पणा**] विख्यात करना, प्रसिद्ध करना ; (सम्मत्त १६६)।

उस्साह देखो **उच्छाह** ; (सुअनि ६२)।

उस्सिंचणा स्त्री [**उत्सेचना**] देखो **उस्सिंचण** ; (उत्त ३०, ५)।

उस्सिक्क देखो **उस्सक्क**। संकृ—**उस्सिक्किया** ; (दस ५, १, ६३)।

उस्सिन्न वि [**उत्स्विन्न**] विकारान्तर को प्राप्त, अचित्त किया हुआ ; (दस ५, २, २१)।

उस्सिय वि [**उत्सृत**] अहंकारी ; (उत्त २६, ४६)।

उस्सुक्क } न [**औत्सुक्य**] उत्सुकता ; (श्रावक
उस्सुग } ३६८ ; धर्मसं ६५६ ; ६५७)।

उहट्ट अक [**अप+घट्ट्**] नष्ट होना। उहट्टइ ; सम्मत्त १६२)।

उहस सक [**उप+हस्**] उपहास करना। **उहसइ** ; (प्राकृ ३४)।

उहिंजल पुं [**दे**] चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष ; (सुख ३६, १४६)।

उहिंजलिआ स्त्री [**दे**] ऊपर देखो ; (उत्त ३६, १४६)।

ऊ

ऊढ वि [**ऊढ**] परिणीत, विवाहित ; (धर्म ः १३६०)।

ऊतालीस } स्त्रीन [**एकोनचत्वारिंशत्**] उनचालीस,
ऊयाल } ३६ ; (सुज्ज २, ३—पत्र ५२ ; देवेन्द्र २६४)।

ऊरणीअ वि [**औरणिक**] भेड़ी चराने वाला ; (अणु १४४)।

ऊसय पुं [**उच्छ्रय**] १ उत्सेध, ऊँचाई ; २ उत्सेधांगुल ; (जीवस १०४)।

ऊसि सक [**उत्+श्रि**] ऊँचा करना, उन्नत करना। संकृ—**ऊसिया** ; (उत्त १०, ३५)।

ऊसुग न [**दे**] मध्य भाग ; (आचा २, १, ८, ६)।

ऊहापोह पुं [**ऊहापोह**] सोच-विचार ; (कुप्र ६१)।

ए

एअ वि [**एत**] आया हुआ, आगत ; (सम्मत्त ११६)।

एइय वि [**एजित**] कम्पित ; (राय ७४)।

एइस देखो एईस ; (सुख २, १७) ।
एक्कगसित्थ न [एकसिक्थ] तपो-विशेष ; (पव २७१) ।
एक्कग्ग देखो एग-ग्ग=एक-क ; (कुप्र ७९) ।
एक्कसिरिआ अ [दे] शीघ्र, जलदी; (प्राकृ ८१) ।
एक्कसेस देखो एग-सेस ; (अणु १४७) ।
एक्कह देखो एग ; (प्राकृ ३५) ।
एक्कार देखो एक्कारह ; (कम्म ६, १९) ।
एक्केल्ल } देखो एग ; (प्राकृ ३५) ।
एक्कील्ल
एगंतिय न [ऐकान्तिक] मिथ्यात्व का एक भेद—वस्तु को सर्वथा क्षणिक आदि एक ही दृष्टि से देखना ; (संबोध ५२) ।
एगट्ठि देखो एग-सट्ठि ; (देवेन्द्र १३९ ; सुज्ज १२) ।
एगठाण न [एकस्थान] एक प्रकार का तप ; (पव २७१) ।
एजणया स्त्री [एजना] कम्प, काँपना ; (सूअनि १६६) ।
एज्ज देखो एय=एज् । वकृ—एज्जमाण ; (राय ३८) ।
एड सक [एडय्] हटाना, दूर करना । एडेह ; संकृ—एडेत्ता ; (राय १८) ।
एताव देखो एत्तिअ=एतावत् ; "एतावं नरलोओ" (जीवस १८१) ।
एत्तिक (शौ) देखो एत्तिअ=एतावत् ; (प्राकृ ९५) ।
एत्तूण अ [दे] अधुना, इस समय ; (प्राकृ ८०) ।
एरवय वि [ऐरवत] ऐरवत देश का ; (सुज्ज १, ३) ।
एलावच्च वि [ऐलापत्य] एलापत्य-गोत्र का ; (यांदि ४९) ।
एलिक्ख वि [ईदृक्ष] ऐसा ; (उत्त ७, २२) ।
एलिस देखो एरिस ; (सूअ १, ६, १) ।
एवंहास पुं [एवंहास] इतिहास ; (गउड ८०२) ।
एस सक [इष्] १ इच्छा करना । २ खोजना । ३ प्रकाशित करना । एसइ ; (पिंड ७५) ।
एस सक [आ+इष्] करना । "तम्हा विणयमेसिज्जा" (उत्त १, ७ ; सुख १, ७) ।
एसिय वि [एषित] भिक्षा-चर्या की विधि से प्राप्त ; (सूअ २, १, ५६) ।
एहा स्त्री [एधस्] समिध, इन्धन ; (उत्त १२, ४३; ४४) ।

ओ

ओ अ [ओ] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ वितर्क ; २ प्रकोप; ३ विस्मय; (प्राकृ ७८) ।
ओअल्ल देखो ओवट्ट=अप+वृत् । ओअल्लइ ; (प्राकृ ७०) ।
ओंकार पुं [ओङ्कार] 'ओं' अक्षर ; (उत्त २५, ३१) ।
ओंगण अक [क्वण्] अव्यक्त आवाज करना । ओंगणइ ; (प्राकृ ७३) ।
ओकंवण देखो उक्कंवण ; (आचा २, २, ३, १ टी) ।
ओकच्छिया देखो उक्कच्छिआ ; (पव ६२) ।
ओकरग पुं [अवकरक] विष्ठा ; (मन ३०) ।
ओक्खमाण वि [भविष्यत्] भविष्य में होने वाला, भावी ; (प्राकृ ६६) ।
ओगय वि [उपगत] प्राप्त ; (सूअ १, ५, २, १०) ।
ओगास पुं [अवकाश] मार्ग, रास्ता ; (सुख २, २१) ।
ओगाह सक [अव+गाह्] पाँव से चलाना । वकृ—ओगाहंत ; (पिंड ५७५) ।
ओग्गह सक [प्रति+इष्] ग्रहण करना । ओग्गहइ ; (प्राकृ ७३) ।
ओग्गाह देखो उग्गाह=उद्+ग्राहय् । ओग्गाहइ ; (प्राकृ ७२) ।
ओग्घ देखो उग्घड । ओग्घइ ; (प्राकृ ७१) ।
१ओघाययण न [ओघायतन] १ परंपरा से पूजा जाता स्थान ; २ तलाव में पानी जाने का साधारण रास्ता ; (आचा २, १०, २) ।
ओच्चार पुं [दे. अपचार] धान्य रखने की बड़ी कोठी—मिट्टी का पात्र-विशेष ; (अणु १५१) ।
ओजिम्ह अक [घ्रा] तृप्त होना । ओजिम्हइ ; (प्राकृ ६५) ।
ओढण न [दे] अवगुण्ठन ; (प्राकृ ३८) ।
ओणेज्ज वि [उपनेय] साँचे में ढाल कर बनाया हुआ फूल आदि, साँचे से बनता मोम का पूतला ; "आउट्टिमउक्किन्न ओणेज्ज (?णे) ज्जं पीलिमं च रंगं च" (दसनि २, १७) ।
ओत्थ सक [स्थग्] ढकना । ओत्थइ ; (प्राकृ ६५) ।
ओत्थल्ल देखो उत्थल्ल=उत्+स्तृ । ओत्थल्लइ ; (प्राकृ ७५) ।

ओदइग देखो **ओदइय** ; (अज्झ १३६) ।
ओद्द वि [**आर्द्र**] गीला ; (प्राकृ २०) ।
ओनडिय वि [**अवनटित**] अवगणित, तिरस्कृत ; "चंचुओनडियअरुणपहं" (सम्मत्त २१४) ।
ओम वि [**अवम**] असार, निस्सार; (आचा २, ५, २, १) ।
ओमंथिय वि [**अवमस्तिक**] शीर्षासन से स्थित, नीचे मस्तक और ऊँचे पैर रखकर स्थित; (णंदि १२८ टी) ।
ओमाणण न [**अवमानन, अप°**] अपमान, तिरस्कार ; (स ६६७) ।
ओमाय त्रि [**अवमित**] परिमित, मापा हुआ ; (सुज्ज ६) ।
ओमालिअ देखो **ओमल्ल**=निर्माल्य ; (प्राकृ ३४) ।
ओमिणण न [**दे**] प्रोंखनक, विवाह की एक रीति, वर के लिये सासू की ओर से किया हुआ न्योछावर ; (पंचा ८, २५) ।
ओमुक्क वि [**अवमुक्त**] परित्यक्त ; (सम्मत्त १५६) ।
ओम्माय पुं [**उन्माद**] उन्मत्तता; (संबोध २१) ।
ओय न [**ओजस्**] १ विषम संख्या, जैसे एक, तीन, पाँच आदि ; (पिंड ६२६) । २ आहार-विशेष, अपनी उत्पत्ति के समय जीव प्रथम जो आहार लेता है वह ; (सूअनि १७१) ।
ओयड्ढिया } स्त्री [**दे**] ओढ़नी, ओढ़ने का वस्त्र,
ओयड्ढी } चादर, दुपट्टा ; (सुख २, ३०) ।
ओयत्त सक [**अप+वर्तय्**] उलटाना, खाली करने के लिए नमाना । संकृ—**ओयत्तियाणं** ; (आचा २, १, ७, ५) ।
ओयत्तण न [**अपवर्तन**] खिसकाना, हटाना ; (पिंड ५९३) ।
ओया स्त्री [**ओजस्**] १ प्रकाश ; (सुज्ज ६) । २ माता का शुक्र-शोणित ; (तंदु १०) ।
ओयार सक [**अव+तारय्**] नीचे उतारना । संकृ—**ओयारिया** ; (दस ५, १, ६३) ।
ओयार पुं [**अवतार**] घाट, तीर्थ ; (चेइय ५१८) ।
ओयारण देखो **उयारण** ; (कुप्र ७१) ।
ओरद्ध देखो **अवरद्ध**=अपराद्ध ; (प्राकृ ५०) ।
ओरम अक [**उप+रम्**] निवृत्त होना । ओरम; (सूअ १, २, १, १०) ।
ओरालिय वि [**दे**] १ व्याप्त ; २ उपलिप्त ; "दिट्ठो रुहिरोरालियसिरो" (सुख १, १३) ।
ओरुहण न [**अवरोहण**] नीचे उतारना, अवतारण ; (पव १५५) ।
ओलगि (अप) देखो **ओलग्गि** ; (सिरि ५२४) ।
ओलट्टण पु [**अवलटन**] एक नरक-स्थान ; (देवेन्द्र २८) ।
ओलिंप सक [**दे**] खोलना । कवकृ—"**ओलिंप-** [? **लिप्प**] **माणे** वि तहा तहेव काया कवाडम्मिवि भासियव्वा" (पिंड ३५४) ।
ओलोयण न [**अवलोकन**] गवाक्ष ; "दिट्ठा अन्नया तेण ओलोयणगएण" (सुख २, ६) ।
ओली स्त्री [**दे**] पनक, काई; गुजराती में 'ऊल' (चेइय ३७३) ।
ओवगारिय वि [**औपकारिक**] उपकार के निमित्त का, उपकारार्थक ; (देवेन्द्र ३०६) ।
ओवग्ग सक [**अव+क्रम्**] १ व्याप्त करना, २ ढकना, आच्छादन करना । ओवग्गइ, ओवग्गउ ; (से ४, २५; ३, ११) ।
ओवट्टण न [**अपवर्तन**] ह्रास, कमी ; (श्रावक २१६) ।
ओवम देखो **ओवम्म** ; "इंदियपच्चक्खं पिय अणुमाणं ओवमं च मइनाणं" (जीवस १४२) ।
ओवयण न [**अवपतन**] अवतरण, नीचे उतरना ; (भग ३, २—पत्र १७७) ।
ओववाइय वि [**औपपातिक**] एक जन्म से दूसरे जन्म में जाने वाला ; (सूअ १, १, १, ११) ।
ओवस्सय देखो **उवस्सय** ; "घट्टिज्जइ ओवस्सयतणयं तेणाइरक्खट्ठा" (पव ८१) ।
ओवास अक [**अव+काश्**] अवकाश पाना, जगह मिलना । ओवासइ, (प्राप्र ; कुमा ७, २३ ; प्राकृ ६६) ।
ओवासंतर पुंन [**अवकाशान्तर**] आकाश, गगन; (भग २०, २—पत्र ७७६) ।
ओव्वेव्व देखो **उव्वेव** ; (संक्षि ३५) ।
ओस देखो **ऊस**=ऊष ; (दस ५, १, ३३) ।
ओसक्क सक [**अव+ष्वष्क्**] कम करना, घटाना ; संकृ—**ओसक्किया** ; (दस ५, १, ६३) ।
ओसक्किय वि [**अवष्वष्कित**] नियत काल से पहले किया हुआ ; (पिंड २९०) ।

ओसट्ट अक [वि+सृप्] फैलना, पसरना। ओसट्टइ; (गा ८५६)।
ओसन्न वि [अवसन्न] निमग्न ; (दसचू १, ८)।
ओसम सक [उप+शमय्] उपशान्त करना। भवि— ओसमेहिंति ; (पिंड ३२६)।
ओसविय देखो ओसमिअ ; (पिंड ३२६)।
ओसाण न [अवसान] गुरु के समीप स्थान, गुरु के पास निवास ; (सूत्र १, १४, ४)।
ओसाय पुं [अवश्याय] ओस, निशा-जल ; (जीवस ३१)।
ओसिअ वि [उषित] १ वसा हुआ, रहा हुआ; (सूत्र १, १४, ४)। २ व्यवस्थित ; (सूत्र १, ४, १, २०)।
ओसित्त वि [अवसिक्त] भीजाया हुआ, सिक्त ; (आचा २, १, १, १)।
ओस्सक्क पुं [अवष्वष्क] अपसर्पण, पीछे हटना ; (पव २)।
ओस्सक्कण देखो ओसक्कण ; (पिंड २८५)।
ओह पुंन [ओघ] १ उत्सर्ग, सामान्य नियम ; (णंदि ५२)। २ सामान्य, साधारण; (वव १)। ३ प्रवाह ; (राय ४७ टी)। ४ सलिल-प्रवेश ; ५ आस्रव-द्वार ; (आचा २, १६, १०)। ६ संसार ; (सूत्र १, ६, ६)। °सुय न [°श्रुत] शास्त्र-विशेष ; (णंदि ५२)।
ओहड वि [अपहृत] नीचे लाया हुआ ; (दस ५, १, ६६)।
ओहल सक [अव+खल्] घिसना। भवि—ओह-लिही ; (सुपा १३६)।
ओहाइअ वि [अवधावित] चारित्र से भ्रष्ट ; (दसचू १, १)।
ओहाडण न [अवघाटन] प्रायश्चित्त-विशेष ; (वव १)
ओहाण न [उपधान] स्थगन, ढकना ; (वव ४)।
ओहावण न [अवभावन] अपमान, अपकीर्ति ; (पिंड ४८६)।
ओहावणा स्त्री [अपहापना] लाघव, लघुता ; (जय २६)।
ओहासिय वि [अवभाषित] याचित ; (पंचा १३, १०)।
ओहिय वि [औधिक] औत्सर्गिक, सामान्य रूप से उक्त ; (अणु १९९ : २००)।
ओहीर अक [सद्] खिन्न होना। वकृ—ओहीरंत "च सीअंतं" (पाअ)।

क

कअवंत देखो कय-व = कृतवत् ; (प्राकृ ३५)।
कइ वि [कृतिन्] १ विद्वान्, पण्डित; २ पुण्यवान् ; (सूत्र २, १, ६०)।
कइ अ [क्वचित्] कहीं, किसी जगह में ; (दसचू २, १४)।
कइयत्थ देखो कइअव ; (तंदु ५३)।
कइयाइ अ [कदाचित्] किसी समय में ; (कुप्र ४१३)।
कइर देखो कयर = कतर ; (पिंड ४६६)।
कइरव पुंन [कैरव] कुमुद ; "कइरवो" (संक्षि ५)।
कउसल पुंन [कौशल] चतुराई ; "कउसलो" (संक्षि ६ ; प्राकृ १०)।
कउहि वि [ककुदिन्] वृषभ, बैल ; (अणु १४२)।
कएल्लु वि [कृत] किया हुआ ; (सुख २, १५)।
कओण्ह वि [कदुष्ण] थोड़ा गरम ; (धर्मवि ११२)।
कं अ [कम्] उदक, जल ; (तंदु ५३)।
कंकण पुं [दे] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति ; (उत्त ३६, १४७)।
कंकणी स्त्री [कङ्कण] हाथ का आभरण-विशेष; "सय-मेव मंकणीए घणीए तं कंकणी बद्धा" (कुप्र १८५)।
कंकसी स्त्री [दे] कंघी, केश सँवारने का उपकरण ; (ती १५)।
कंकुण देखो कंकण = दे ; (सुख ३६, १४७)।
कंचण पुंन [काञ्चन] १ एक देव-विमान ; (देवेन्द्र १३१)। २ वि. सोने का, सुवर्ण का ; "कंचणं खंड" (वजा १५८)। °पह न [°प्रभ] १ रत्न-विशेष ; २ वि. रत्न-विशेष का बना हुआ ; (देवेन्द्र २६९)। °पायव पुं [°पादप] वृक्ष-विशेष ; (स ६७३)।
कंचीरय न [दे] पुष्प-विशेष ; (वज्जा १०८)।
कंचीरय न [काञ्चीरत] सुरत-विशेष; (वज्जा १०८)।
कंट देखो कंटग ; (पिंड २००)।
कंठमाल पुंस्त्री [कण्ठमाल] रोग-विशेष ; (कुप्र ४७१)।

कंठाल वि [**कण्ठवत्**] बड़ा गला वाला; (धर्मवि १०१)।
कंठीरअ देखो **कंठीरव**; (किरात १७)।
कंड न [**काण्ड**] १ अंगुल का असंख्यातवाँ भाग; "कंडं ति एत्थ भन्नइ अंगुलभागो असंखेज्जो" (पव २६० टी)।
कंडग न [**कण्डक**] १ संख्यातीत संयम-स्थान-समुदाय; (पिंड ९९; १००)। २ विभाग, पर्वत आदि का एक भाग; (सूत्र १, ६, १०)।
कंडरीय वि [**कण्डरीक**] १ अ-शोभन, अ-सुन्दर; २ अ-प्रधान; (सूअनि १४७; १५३)।
कंत सक [**कृत्**] १ काटना, छेदना। २ कातना, चरखे से सूता बनाना। "सल्लं कंतंति अप्पणो" (सूत्र १, ८, १०), कंतामि; (पिंडभा ३५)।
कंतार पुंन [**कान्तार**] जल-फलादि-रहित अरण्य; "कंतारो" (सम्मत्त १९९)।
कंदली स्त्री [**कन्दली**] कन्द-विशेष; (उत्त ३६, ९८; ९९)।
कंदुक देखो **कंदुअ**; (सूत्र २, ३, १६)।
कदुय देखो **कंदुइअ**; (कुप्र ९८)।
कंदुव्वय पुंन [**दे**] कन्द-विशेष; (सुख ३६, ९८)।
कंबिया स्त्री [**कम्बिका**] पुस्तक का पुट्ठा, किताब का आवरण-पृष्ठ; (राय ६६)।
ककाणि पुंस्त्री [**दे**] मर्म-स्थान; "आरुस्स विज्झंति ककाणओ से" (सूत्र १, ५, २, १५)।
कक्क पुंन [**कल्क**] १ चन्दन आदि उद्वर्तन-द्रव्य; (दस ६, ६४)। २ प्रसूति-रोग आदि में किया जाता क्षार-पातन; ३ लोध्र आदि से उद्वर्तन; (पव २—गाथा ११५)। °**कुरुया** स्त्री [°**कुरुका**] माया, कपट; (पव २)।
कक्क पुं [**कर्क**] १ चक्रवर्त्तीका एक देव-कृत प्रासाद; (उत्त १३, १३)। २ राशि-विशेष, कर्क राशि; (धर्मवि ६६)।
कक्कड पुं [**कर्कट**] कर्क राशि; (विचार १०६)।
कक्कव पुं [**दे**] गुड़ बनाते समय की इक्षु-रस की एक अवस्था, इक्षु-रस का विकार-विशेष; (पिंड २८३)।
कक्किड पुं [**दे**] कृकलास, गिरगिट; गुजराती में 'काकेडो' (दे २, ५)।
कक्कोली स्त्री [**कक्कोली**] वृक्ष-विशेष; (कुप्र २४६)।
कक्खग वि [**कक्षाग**] १ कक्षा-प्राप्त; २ पुं. कक्षा का केश; (तंदु ३६)।
कच्छ पुंन [**कच्छ**] १ नदी के पास की नीची जमीन; २ मूला आदि की बाड़ी; (आचा २, ३, ३, १)।
कच्छभाणिया स्त्री [**दे**] जल में होने वाली वनस्पति-विशेष; (सूत्र २, ३, १८)।
कच्छादब्भ पुं [**दे· कक्षादर्भ**] रोग-विशेष; (सिरि ११७)।
कज्जआ (शौ) स्त्री [**कन्यका**] कन्या, कुमारी; (प्राकृ ८७)।
कट्टर पुंन [**दे**] कढी में डाला हुआ घी का वड़ा, खाद्य-विशेष; (पिंड ६३७)।
कट्ठहार पुं [**काष्ठहार**] कठहरा; लकड़हारा, काष्ठ-वाहक; (कुप्र १०४)।
कट्ठेअ वि [**काष्ठेय**] देखो **कट्ठिअ**—काष्ठित; (आचा २, २, १, ६)।
कट्ठोल देखो कट्ठ=कुष्ट; (पिंड १२)।
कडंबा पुंस्त्री [**कडम्बा**] वाद्य-विशेष; (राय ४६)।
कडक्किय न [**कडक्कित**] कड़कड़ आवाज; (सिरि ६६२)।
कडण न [**कटन**] चटाई आदि से घर का संस्कार; चटाई आदि से घर के पार्श्व भागों का किया जाता आच्छादन, (आचा २, २, ३, १ टी; पव १३३)।
कडमड पुन [**दे**] उद्वेग; (संक्षि ४७)।
कँडय न [**कटक**] ऊख आदि की यष्टि; (आचा २, १०, २)।
कडसार न [**कटसार**] मुनि का एक उपकरण, आसन; "न वि लेइ जिणा पिंछी (? छि) नवि कुंडीं (?डि) वक्कलं च कडसारं" (विचार १२८)।
कडि वि [**कटिन्**] चटाई वाला; (अणु १४४)।
कडिण पुंन [**दे**] तृण-विशेष; (सूत्र २, २, ७)।
कड्ढिअ वि [**दे**] बाहर निकाला हुआ, गुजराती में 'काढेलुं', "तो दासीहिं सुणाउ व्व कड्ढिओ कुट्टिऊणं बहिं" (सिरि ६८९)।
कढण न [**क्वथन**] क्वाथ करना; "रागगुणेणं पावइ खंडणकढणाइं मंजिट्ठा" (कुप्र २२३)।
कढिअ न [**दे**] कढ़ी; (पिंड ६२४)।

कणखल न [दे] उद्यान-विशेष ; (सट्टि ६ टी)।
कणग वि [कानक] सुवर्ण-रस पाया हुआ (कपड़ा) ; (आचा २, ५, १, ५)। °**पट्ट** वि [°पट्ट] सोने का पट्टा वाला ; (आचा २, ५, १, ५)।
कणगसत्तरि स्त्री [कनकसप्तति] एक प्राचीन जैनेतर शास्त्र ; (अणु ३६)।
कणय पुंन [कनक] एक देव-विमान ; (देवेन्द्र १४४)।
कणविआणय पुं [कणवितानक] देखो **कणग-वियाणग** ; (सुज्ज २०)।
कणवी स्त्री [दे] कन्या ; (वज्जा १०८)।
कणीर देखो **कणेर** ; (चंड)।
कण्ण पुं [कर्ण] १ कोटि-भाग, अग्रांश ; (सुज्ज १, १)। २ एक म्लेच्छ-जाति ; (मृच्छ १५२)।
कण्णआर देखो **कण्णिआर** ; (प्राकृ ३०)।
कण्णलोयण पुंन [कणलोचन] देखो **कण्णिलायण** ; (सुज्ज १०, १६)।
कण्णल्ल पुंन [कर्णल] ऊपर देखो ; (सुज्ज १०, १६ टी)।
कण्णि पुं [कर्णि] एक नरक-स्थान; (देवेन्द्र २६)।
कण्ह पुं [कृष्ण] कन्द-विशेष ; (उत्त ३६, ९९)।
कण्हई अ [कुतश्चित्] किसीसे ; (सूअ १, २, ३, ६)। देखो **कण्हुइ**।
कण्हुई देखो **कण्हुइ** ; (सूअ २, २, २१)।
कत्त सक [कृत्] कातना, चरखे से सूता बनाना। वकृ—**कत्तंत** ; (पिंड ५७४)।
कत्त वि [क्लृप्त] निर्मित ; (सत्ति ४०)।
कत्तण न [कर्तन] कातना ; (पिंड ६०२)।
कत्ति° वि [कर्तृ] करने वाला ; "किरिया य कत्ति-रहिया" (धर्मसं १४५)।
कद (मा) देखो **कड**=कृत; (प्राकृ १०३)।
कदग देखो **कयग** ; (हम्मीर ३४)।
कदु देखो **कउ**=क्रतु ; (प्राकृ १२)।
कदुअ (शौ) अ [कृत्वा] करके ; (प्राकृ ८८)।
कदुशण (मा) वि [कदुष्ण] थोड़ा गरम ; (प्राकृ १०२)।
कद्दम पुंन [कर्दम] कीचड़, कादा; (कुप्र ६६)। °**ल** वि [°ल] कीचड़ वाला; (सूअनि १६१)।
कन्न देखो **कण्ण** ; (कुलक २८)। °**एव** देखो **कण्णदेव** ; (कुप्र ४)। °**वट्टि**, °**वट्टि** स्त्री [°वृत्ति] किनारा, अग्र भाग ; (कुप्र ३३१ ; ३३४ ; विचार ३२७ ; पव १२५)।
कन्नस वि [कनीयस्] कनिष्ठ, जघन्य ; "कन्नसमज्झिम-मजेट्ठा" (पव १५७)।
कपंध देखो **कमंध** ; (प्राकृ १३)।
कप्प पुं [कल्प] १ प्रक्षालन ; (पिंड २६६ ; २७१ ; ३०५ ; गच्छ २, ३२)। २ आचार, व्यवहार ; (वव १ ; पव ६९)। ३ दशाश्रुतस्कन्ध सूत्र ; ४ कल्प-सूत्र, ५ व्यवहार-सूत्र ; (वव १)। ६ वि. उचित ; (पंचा १८, ३०)। °**काल** पुं [°काल] प्रभूत काल ; (सूअ १, १, ३, १६)। °**धर** वि [°धर] कल्प तथा व्यवहार सूत्र का जानकार; (वव १)।
कप्पासिअ वि [कार्पासिक] १ कपास बेचने वाला ; (अणु १४९)। २ न. जैनेतर शास्त्र-विशेष ; (अणु ३६ ; णंदि)।
कप्पिआकप्पिअ न [कल्पाकल्प] एक जैन शास्त्र ; (णंदि २०२)।
कबंध (शौ) देखो **कमंध** ; (प्राकृ ८५)।
कब्बट्टी स्त्री [दे] छोटी लड़की ; (पिंड २८५)।
कब्बर देखो **कब्बुर** ; (प्राकृ ७)।
कम अक [क्रम्] १ संगत होना, युक्त होना, घटना। २ अधिक रहना। **कमइ** ; (पिंड २३१ ; पव ६१)।
कमल पुंन [कमल] एक देव-बिमान ; (देवेन्द्र १४२)। °**णअण** पुं [°नयन] विष्णु, नारायण; (समु १५२)।
कमलंग न [कमलाङ्ग] संख्या-विशेष, चौरासी लाख महापद्म की संख्या ; (जो २)।
कमलुब्भव पुं [कमलोद्भव] ब्रह्मा ; (लि ८२)।
कमिय वि [क्रान्त] उल्लंघित ; (दस २, ५)।
कम्मक्कर देखो **कम्म-कर** ; (प्राकृ २६)।
कयंब पुं [कदम्ब] समूह ; "अप्पाणं पिव सव्वं जीव-कयंबं च रक्खइ सयावि" (संबोध २०)।
कयग वि [कृतक] प्रयत्न-जन्य ; (धर्मसं २६६ ; ४१४)।
कयग वि [क्रायक] खरीदने वाला ; (वव १ टी)।
कयन्न वि [कदन्न] खराब अन्न ; (धर्मवि १३६)।
कयल्लुअ देखो **कय**=कृत ; (सुख २, ३)।

कयाणग पुंन. देखो **कयाण** ; "देव निअवाहणाय कयाणगे किं न विक्केह" (सिरि ४७८) ।
कर पुं [**कर**] एक महाग्रह ; (सुज्ज २०) ।
करंड पुंन [**करण्ड**] वंशाकार हड्डी ; (तंदु ३५) ।
करकचिय वि [**क्रकचित**] करवत आदि से फाड़ा हुआ ; (अणु १५४) ।
करग देखो **कारग**=कारक ; (यादि ५०) ।
करगय देखो **करकय** ; (स ६९९) ।
करग्गह देखो **कर-गह** ; (सम्मत्त १६३) ।
करच्छोडिया स्त्री [**दे**] ताली, ताल ; (सुख २, १५) ।
करणसाला स्त्री [**करणशाला**] न्याय-मन्दिर ; (दस ३, १ टी) ।
करणि स्त्री [**दे**] क्रिया, कर्म ; (अणु १३७) ।
करिअ पुं [**करिक**] एक महाग्रह ; (सुज्ज २०) ।
करे सक [**कारय्**] कराना । करेइ ; (प्राकृ ६०) ।
करोडि स्त्री [**करोटि**] सिर की हड्डी ; (सुख २, २९) ।
करोडी स्त्री [**दे**] मुड़दा, शव ; (कुप्र १०२) ।
कलंकलीभागि वि [**कलङ्कलीभागिन्**] दु:ख-व्याकुल ; (सूत्र २, २, ८१ ; ८३) ।
कलंकलीभाव पुं [**कलङ्कलीभाव**] १ दुःख से व्याकुलता ; २ संसार-परिभ्रमण ; (आचा २, १६, १२) ।
कलंतर न [**कलान्तर**] व्याज, सूद ; (कुप्र ३५५) ।
कलंबुगा स्त्री [**कलम्बुका**] जल में होनेवाली वनस्पति की एक जाति ; (सूत्र २, ३, १८ ।
कलंबुय पु [**कदम्बक**] कदम्ब-वृक्ष ; (सुज्ज १९) ।
कलकलिअ वि [**कलकलित**] कलकल शब्द से युक्त ; (सिरि ६६४) ।
कलमल पुंन [**दे**] १ मदन-वेदन ; (स क्त ४७) । २ कंपन, थरथराहट, घृणा ;

"असुईए अट्ठीणं धोयियकिमिजालपूइमंसाणं ।
नामंपि चिंतियं खलु कलमलयं जणइ हिययम्मि"
(मन ३३) ।

कलस पुन [**कलश**] १ एक देव-विमान ; (देवेन्द्र १४०) । २ वाद्य-विशेष ; (राय ५० टी) ।
कलावय न [**कलापक**] चार पद्यों की एकवाक्यता ; (सम्मत्त १८७) ।
कलि पुं [**कलि**] एक नरकावास ; (देवेन्द्र २६) ।
कलिंग पुं [**कलिङ्ग**] भगवान् आदिनाथ का एक पुत्र ; (ती १४) ।
कलिमल देखो **कलमल**=कलमल ; (तंदु ४१) ।
कलोवाइ स्त्री [**दे**] पात्र-विशेष ; (आचा २, १, २, १) ।
कल्लवाल पु [**कल्यपाल**] कलवार, शराब बेचने वाला ; (मोह ९२) ।
कल्लाण न [**कल्याण**] सुवर्ण ; (सिरि ३७३) ।
कल्लुय पुं [**कल्लुक**] द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति है (पण्ण १—पत्र ४४) ।
कवग्ग पु [**कवर्ग**] 'क' से 'ङ' तक के पाच अक्षर ; (धर्मवि १४) ।
कवचिअ देखो **कवइय** ; (सिरि १३१९) ।
कवल्ल पुंन [**दे**] लोहे का कडाह ; (सूत्र १, ५, १, १५) ।
कविहसिय पुंन [**कपिहसित**] आकाश में अकस्मात् होने वाली भयकर आवाज करती ज्वाला ; (अणु १२०) ।
कवोड देखो **कवोय** ; (पिंड २१७) ।
कवोशण (मा) वि [**कदुष्ण**] थोड़ा गरम ; (प्राकृ १) ।
कव्वड्ड पुं [**दे**] बालक, बच्चा ; (गच्छ ३, १६) ।
कव्वाडिअ वि [**दे**] कावर उठाने वाला, बहँगी से माल ढोने वाला ; (कुप्र १२१) ।
कसि वि [**कषिन्**] मारने वाला, विनाशक ; "चत्तारि एए कसिणो कसाया सिंचंति मूलाइं पुणब्भवस्स" (सुख १, १) ।
कसुमीरा स्त्री [**कश्मीर**] एक उत्तर भारतीय देश ; (प्राकृ २८ ; ३३) ।
कसेरुग पुन [**कशेरुक**] जल मे होती वनस्पति की एक जाति ; (सूत्र २, ३, १८ ; आचा २, १, ८, ५) ।
कसोति स्त्री [**दे**] खाद्य-विशेष ; "महाहिं कसोतिं भोच्चा कज्जं साविंति" (सुज्ज १०, १७) ।
कहक्कह पुं [**कथंकथा**] बातचीत ; (आचा २, १५, २) ।
काअंची } **काइंची** } स्त्री [**काकचिञ्चा**] गुञ्जा, घुंगची ; (प्राकृ ३०) ।
कागणी स्त्री [**काकिणी**] सवा गुंजा का एक बाँट ; (अणु १५५) ।

काठिण्ण न [**काठिन्य**] कठिनता ; (धर्मसं ५१ ; ५४)।

काढ पुं [**क्वाथ**] काढ़ा ; (कुलक ११)।

काणिआर देखो **कण्णिआर** ; (संक्षि १७)।

कादूसण वि [**कदूषण**] आत्मा को दूषित करने वाला; स्त्री—°**णिया** ; (भग ६, ५—पत्र २६८)।

काम पुं [**काम**] रोग, बिमारी; दसनि २, १५)। °**एव** देखो **काम-देव** ; (कुप्र ४११)। °**ग्घ** न [°**घ्न**] आयंबिल तप ; (संबोध ५८)। °**डहण** पुं [°**दहन**] महादेव, शिव; (वज्जा ९८)। °**रुय** देखो **कामरूअ** ; (धर्मवि ५९)।

कामि वि [**कामिन्**] अभिलाषी ; (कुप्र १५४)।

कामिय वि [**कामित**] यथेष्ट, जितना चाहे उतना ; (पिंड २७२)।

काय पुं [**काय**] १ वनस्पति को एक जाति ; (सूत्र २, ३, १६)। २ एक महाग्रह ; (सुज्ज २०)। ३ पुंन. जीव-निकाय, जीव-समूह ; "एयाइं कायाइं पवेदिताइं" (सूत्र १, ७, २) °**मंत** वि [°**वत्**] बड़ा शरीर वाला ; (सूत्र २, १. १३)। °**वह** पुं [°**वध**] जीव-हिंसा ; (श्रावक ३४९)

कायंबरी स्त्री [**कादम्बरी**] एक गुहा का नाम ; (कुप्र ९३)।

कायह वि [**कायह**] देश-विदेश में बना हुआ (वस्त्र) ; (आचा २, ५, १, ७)।

कारिका देखो **कारिया** ; (तंदु ४६)।

कारिय देखो **कज्ज**=कार्य ; (सूत्र १, २, ३, १० ; (दस ६, ६५)।

कारिल्ल देखो **कारि** ; (संबोध ३८)।

कालाइक्कमय न [**कालातिक्रमक**] तप-विशेष, दिन के पूर्वार्ध तक आहार-त्याग ; (संबोध ५८)।

कालालोण पुंन [**काललवण**] काला नोन ; (दस ३, ८)।

कालिअसूरि पुं [**कालिकसूरि**] एक प्रसिद्ध प्राचीन जैन आचार्य ; (विचार ५२९)।

कालिंगी स्त्री [**कालिङ्गी**] विद्या-विशेष ; (सूत्र २, २, २७)।

कालुणीय देखो **कारुणिय** ; (सूत्र १, ३, २, ९)।

कालुय पुं [**दे**] अश्व की एक उत्तम जाति ; (सम्मत्त २१६)।

कालुस्स न [**कालुष्य**] कलुषपन ; (सा २)।

कावडि } स्त्री [**दे**] कावर ; (कुप्र १२१ ; २४४ ;
कावोडि } दस ४, १ टी)।

कावोय वि [**दे**] कावर वहन करने वाला ; (अणु ४६)।

कासवनालिया स्त्री [**काश्यपनालिका**] श्रीपर्णी-फल ; (आचा २, १, ८, ६; दस ५, २, २१)।

काह सक [**कथय्**] कहना। **काहयंते** ; (सूत्र १, १३, ३)।

काहर देखो **काहार** ; (दस ४, १ टी)।

काहलिया स्त्री [**काहलिका**] आभूषण-विशेष ; (पव २७१)।

काहार पुंन [**दे**] कावर, बहंगी ; (सुज्ज १०, ९)।

काहीअ देखो **काहिय** ; (गच्छ ३, ९)।

किंकाइअ देखो **केकाइय** ; (अणु २१२)।

किंकार पुंन [**क्रेङ्कार**] अव्यक्त शब्द-विशेष ; (सिरि ५४१)।

किंकिल्लि देखो **कंकिल्लि** ; (विचार ४६१)।

किंचण न [**किञ्चन**] द्रव्य, वस्तु ; (उत्त ३२, ८ ; सुख ३२, ८)।

किंनु अ [**किंनु**] पूर्वपक्ष, आक्षेप, आशंका का सूचक अव्यय ; (वत्र १)।

किंवयंती स्त्री [**किंवदन्ती**] जन-श्रुति, जन-रव ; (हम्मीर ३६)।

किट्टिस न [**किट्टिस**] १ ऊन आदि का बाकी बचा हुआ अंश ; २ उससे बना हुआ सूता ; ३ ऊन, ऊँट के बाल आदि की मिलावट का सूता ; (अणु ३४)।

किडग वि [**क्रीडक**] क्रीड़ा करने वाला ; (सूत्र १, ४ १ २ टी)।

किणि वि [**क्रयिन्**] खरीदने वाला ; (संबोध १६)।

किण्हग पु [**दे**] वर्षाकाल में घड़ा आदि में होती एक तरह की काई ; (जीवस ३६)।

कित्त देखो **किच्च** ; (संक्षि ५)।

कित्तणा स्त्री [**कीर्तना**] कीर्तन, वर्णन, प्रशंसा, (चेइय ७४८)।

कित्तय वि [**कीर्तक**] कीर्तन-कर्ता ; (पव २१६ टी)।

कित्ता देखो **किच्चा**=कृत्या ; (प्राकृ ८)।

किय देखो कीय; (पिंड ३०६)।
कियंत वि [कियत्] कितना; (सम्मत्त २२८)।
कियाडिया स्त्री [दे] कानबुट्टी, कान का उपरि-भाग; (वव १)।
किरात (शौ) देखो किराय; (प्राकृ ८६)।
किरि देखो किर=किल; (सिरि ८३२; ८३४)।
किरिआण देखो कयाण; "जम्मंतरगहिअपुन्नकिरिआणो" (कुलक २१)।
किरिकिरिया स्त्री [दे] वाद्य-विशेष, बाँस आदि की कम्बा—लकड़ी से बनता एक प्रकार का वाद्य; (आचा २, ११, १)।
किलंज न [किलिञ्ज] तृण-विशेष; (धर्मवि १३५; १३६)।
किलामणा स्त्री [क्लमना] क्लम, क्लेश; (महानि ४)।
किलामिअ देखो किलंत; (अणु १३९)।
किलेस अक [क्लिश्] क्लेश पाना, हैरान होना। किलेसइ; (प्राकृ २७)।
किवीडजोणि पुं [कृपीटयोनि] अग्नि; (सम्मत्त २२६)।
किस सक [कृशय्] हसित करना, अपचित करना। किसए; (सूअ १, २, १, १४)।
कीरिस (शौ) देखो कीरिस; (प्राकृ ८३)।
कील पुंन [दे. कील] कंठ, गला; (सूअ १, ५, १, ९)।
कीलण न [कीलन] कील से बन्धन, खीले में नियन्त्रण; "फणिमणिकीलणाडुक्खं विम्हरियं पुहविदेवीए" (मोह २०)।
कीस देखो किलिस्स। कीसंति; (उत्त १९, १५, वै ३३)। वकृ—कीसंत; (वै ८३)।
कुइअ वि [कुचित] सकुचा हुआ; (पव ६२)।
कुउव देखो कुउअ; (पिंड ५५७)।
कुंकुण देखो कुंकण (सिरि २८६)।
कुंचिया स्त्री [कुञ्चिका] कुञ्जी, ताली; (पिंड ३५६)।
कुंठी स्त्री [दे] सँड़सी, चीमटा; (वज्जा ११४)।
कुंडग पुंन [कुण्डक] १ अन्न का छिलका; (उत्त १, ५; आचा २, १, ८, ६)। २ चावल से मिश्रित भूँसा; (उत्त १, ५)।
कुंडमोअ पुंन [कुण्डमोद] हाथी के पैर की आकृति वाला मिट्टी का एक तरह का पात्र; (दस ६, ५१)।
कुंडल पुंन [कुण्डल] १ एक देव-विमान; (देवेन्द्र १४५)। २ तप-विशेष, 'पुरिमड्ढ' तप; (संबोध ५७)।
कुंडिण न [कुण्डिन] विदर्भ देश का एक नगर; (कुप्र ४८)।
कुंताकुंति न [कुन्ताकुन्ति] बर्छे की लड़ाई; (सिरि १०३२)।
कुंभ पुं [कुम्भ] १-३ साठ, अस्सी और एक सौ आढ़क का नाप; (अणु १५१; तंदु २९)। ४ ज्योतिष-प्रसिद्ध एक राशि; (विचार १०६)। ५ एक वाद्य; (राय ४६)।
कुंभिक्क देखो कुंभिय; (राय ३७)।
कुकम्मि वि [कुकर्मिन्] खराब कर्म करने वाला; (सूअ १, ७, १८)।
कुक्कुड पुं [कुर्कुट] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति; (उत्त ३६, १४८)।
कुक्कुडी स्त्री [कुक्कुटी] माया, कपट; (पिंड २९७)।
कुक्कुहाइअ न [दे] चलते समय का अश्व का शब्द-विशेष; (तंदु ५३)।
कुक्खिंभरि देखो कुच्छिंभरि; (धर्मवि १४९)।
कुक्खेअअ देखो कुच्छेअय; (संक्षि ९)।
कुचोज्ज न [कुचोद्य] कुतर्क; (धर्मसं १३७५)।
कुच्च पु [कूर्च] कँघी, बाल सँवारने का उपकरण; (उत्त २२, ३०)।
कुच्चग वि [कौर्चक] शर-नामक गाछ का बना हुआ; (आचा २, २, ३, १४)।
कुच्छिमद्दिका (मा) देखो कुच्छिमई; (प्राकृ १०२)।
कुट्टयरी स्त्री [दे] चंडी, पार्वती; (दे २, ३५)।
कुट्ठग पुन [कोष्ठक] शून्य घर; (दस ५,१,२०; ८२)।
कुढिय वि [दे] जिसके माल की चोरी हो गई हो वह; (सुख २, २१)।
कुतुंब पुं [कुस्तुम्ब] वाद्य-विशेष; (राय ४६)।
कुतुंबर पुं [कुस्तुम्बर] वाद्य-विशेष; (राय ४६)।
कुत्तार वि [कुतार] अयोग्य तारक; (गच्छ १, ३०)।
कुत्थ सक [क्वथय्] सड़ाना। "नो वाऊ हरेज्जा, नो सलिलं कुत्थिज्जा" (पव १५८ टी), कुच्छे (?त्थे) ज्जा; (अणु १६१)। भवि—कुच्छि (? त्थि) हिई; (पिंड २३८)। कृ—कुत्थ; (दसनि १०, २४)।
कुत्थल देखो कोत्थल; "कुच्छ (?त्थ) लसमाणउयरो" (धर्मवि २७)।
कुपचि (पै) अ [क्वचित्] किसी जगह में; (प्राकृ १२३)।

प्राचीन 'खंभया' गाँव; (कुप्र २१)।

खग्गाखग्गि न [**खड्गाखड्गि**] तलवार की लड़ाई; (सिरि १०३२)।

खड पुं [**दे**] एक म्लेच्छ-जाति; (मृच्छ १५२)।

खडक्किय देखो **खडक्कय**; (धर्मवि ५६)।

खडखड पुं [**खटत्खट**] खट खट आवाज; (मोह ८६)।

खडक्खर देखो **छडक्खर**; (सम्मत्त १४३)।

खडट्टोविल पुं [**दे**] एक म्लेच्छ-जाति; (मृच्छ १५२)।

खडिअ पुं [**दे**] दवात, स्याही का पात्र; (धर्मवि ५७)।

खडुक्क } **खडुग** } पुंस्त्री [**दे**] मुड सिर पर उँगली का आघात ; (वव १)।

खणिक्क } **खणिग** } देखो **खणिय** = क्षणिक; "सद्दाइया कामगुणा खणिक्का" (श्रु १५२; धर्मसं २२८)।

खत्ति पुं [**दे**] एक म्लेच्छ-जाति; (मृच्छ १५२)।

खद्ध न [**दे**] प्रभूत लाभ; (पंचा १७, २१)।

खमण न [**क्षपण**] तपश्चर्या, बेला, तेला आदि तप ; (पिंड ३१२)।

खमिय वि [**क्षमित**] माफ किया हुआ; (कुप्र १६)।

खम्म देखो **खण** = खन्। खम्मइ; (प्राकृ ६८)।

खयरिक्क वि [**खादिरक**] खदिर-संबन्धी; स्त्री—°क्का; (सुख २, ३)।

खरंटिअ वि [**खरण्टित**] निर्भर्त्सित; (कुप्र ३१८)।

खरंसूया स्त्री [**दे**] वनस्पति-विशेष; (संबोध ४४)।

खरड पुं [**दे**] हाथी की पीठ पर बिछाया जाता आस्त-रण; (पव ८४)।

खरफरुस पुं [**खरपरुष**] एक नरक-स्थान; (देवेन्द्र २७)।

खरय पुं [**खरक**] भगवान् महावीर के कान में से खीला निकालने वाला एक वैद्य; (चेइय ६६)।

खल अक [**स्खल्**] अपसरण करना, हटना। खलाहि; (उत्त १२, ७)।

खल अ. पाद-पूर्ति में प्रयुक्त होता अव्यय; (प्राकृ ८१)।

खलु अ [**खलु**] विशेष-सूचक अव्यय; (दसनि ४, १६)।

खलुग देखो **खलुय**; (पव ६२)।

खल्ल वि [**दे**] निम्न-मध्य, जिसका मध्य भाग नीचा हो वह; (दे १, ३८)।

खल्लग } **खल्लय** } पुंन [**दे**] १ पत्र, पत्ता; २ पत्र-पुट, पत्तों का बना हुआ पुडवा; (सूअ १, २, २, १६ टी; पिंड २१०; बृह १)।

खवण देखो **खमण**; "विहियपक्खक्खवणो सो" (धर्मवि २३)

खवणा स्त्री [**क्षपणा**] अध्ययन, शास्त्र-प्रकरण; (अणु २५०)।

खव्व वि [**खर्व**] लघु, थोड़ा; "अक्खव्वगव्वो कओ आसि" (सिरि ६७५)।

खह पुंन [**ख**] आकाश, गगन; (भग २०, २—पत्र ७७५)।

खाओवसमिग देखो **खाओवसमिअ**; (अज्झ ६८; सम्म-त्तो ५)।

खाण पुं [**दे**] एक म्लेच्छ-जाति; (मृच्छ १५२)।

खाति देखो **खाइ** = ख्याति; (संक्षि ६)।

खामण न [**क्षमण**] खमाना; (आवक ३६५)।

खाय पुं [**खात**] पाँचवीं नरक भूमि का एक नरक-स्थान; (देवेन्द्र ११)।

खायर देखो **खाइर**; (कर्म ६)।

खार पुं [**क्षार**] १ एक नरक-स्थान; (देवेन्द्र ३०)। २ भुजपरिसर्प की एक जाति; (सूअ २, ३, २५)। ३ वैर, दुश्मनाई; (सुर १, ३)। °**डाह** पुंन [°**दाह**] क्षार पकाने की भट्ठी; (आचा २, १०, २)। °**तंत** पुन [°**तन्त्र**] आयुर्वेद का एक भेद, वाजीकरण; (ठा ८—पत्र ४२८)।

खारिक्क न [**दे**] फल-विशेष, छोआरा; (सिरि ११९६)।

खावण न [**ख्यापन**] प्रतिपादन; (पंचा १०, ७)।

खास अक [**कास्**] खासना, खाँसी खाना। खासइ; (तंदु १६)।

खि अक [**क्षि**] क्षीण होना। कर्म—"खिज्जइ भवसंतती" (स ६८४), खीयंति, खीयंत; (कम्म ६, ६६; टी)।

खिख अक [**खिङ्ख्**] खिं खिं आवाज करना। खिंखेइ; वकृ—**खिखियंत**; (सुख २, ३३)।

खित्तज पुं [**क्षेत्रज**] गोद लिया हुआ लड़का; "खित्तज-सुएणावि कुलं वट्टउ" (कुप्र २०८)।

खिप्प अक [**क्लृप्**] १ समर्थ होना। २ दुर्बल होना। खिप्पइ; (संक्षि ३५)।

खिमा स्त्री [**क्ष्मा**] पृथिवी; (चंड)।

खिल्ल पुं [**दे**] फोड़ा, फुनसी; गुजराती में 'खील' (तंदु ३८)।

खिल्लुहडा स्त्री [दे] कन्द-विशेष; (संबोध ४४)।
खीर न [क्षीर] बेला, दो दिन का उपवास; (संबोध ५८)। °**डिंडिर** पुं [°डिण्डीर] देव-विशेष; (कुप्र ७६)। °**डिंडिरा** स्त्री [°डिण्डीरा] देवी-विशेष; (कुप्र ७६)। °**वर** पुं [°वर] १ समुद्र-विशेष; २ द्वीप-विशेष; (सुज्ज १६)।
खीलिया देखो **कीलिआ**; (जीवस ४८)।
खुइय वि [दे] १ विच्छिन्न; २ विध्यात, शान्त; "खुइया चिया" (कुप्र १४०)।
खुंगाह पुं [दे] अश्व की एक उत्तम जाति; (सम्मत्त २१६)।
खुंद (शौ) सक [क्षुद्] १ जाना। २ पीसना, कूटना। खुंददि; (प्राकृ ६३)।
खुंद अक [क्षुध्] भूख लगना। खुंदइ; (प्राकृ ६६)।
खुज्ज सक [परि+अस्] १ फेंकना। २ निरास करना। खुज्जइ; (प्राकृ ७२)।
खुडक्क देखो **खुडुक्क**=(दे)। खुडक्कए; (धर्मवि ७१)।
खुडुक्क सक [अप+क्रमय्] हटाना, दूर करना। खुडुक्कइ; (प्राकृ ७०)।
खुधा स्त्री [क्षुध्] भूख; (धर्मसं १०६२)।
खुप्प सक [प्लुष्] जलाना। खुप्पइ; (प्राकृ ६५)।
खुम्म अक [क्षुध्] भूख लगना। खुम्मइ; (प्राकृ ६६)।
खुय न [क्षुत] छींक; (चेइय ४३३)।
खुरप्प पुंन [क्षुरप्र] एक तरह का जहाज; (सिरि ३८३)।
खुल न [दे] वह गाँव जहाँ साधुओं को भिक्षा कम मिलती हो या भिक्षा में घृत आदि न मिलता हो; (वव १)।
खुल देखो **खुम्म**। खुलइ; (प्राकृ ६६)।
खुल्लग देखो **खुड्डग**; (कुप्र २७६)।
खुल्लासय पुं [दे] खलासी, जहाज का कर्मचारी विशेष; (सिरि ३८५)।
खेड सक [खेटय्] हाँकना। खेडए; (चेइय ३३७, कुप्र ७१)।
खेत्तय पुं [क्षेत्रक] राहु; (सुज्ज २०)।
खेमराय पु [क्षेमराज] राजा कुमारपाल का एक पूर्व-पुरुष; (कुप्र ५)।
खेर पुं [दे] एक म्लेच्छ-जाति; (मृच्छ १५२)।
खेल पु [दे] जहाज का कर्मचारी विशेष; (सिरि ३८५)।
खेल वि [खेल] खेल करने वाला, नाटक का पात्र; (धर्मवि ६)। स्त्री—°**लिया**; (धर्मवि ६)।
खेव पुं [क्षेप] विलम्ब, देरी; (स ७५५)।
खोअ पु [क्षोद] १ इक्षु, ऊख; २ द्वीप-विशेष, इक्षुवर द्वीप; ३ समुद्र-विशेष, इक्षुरस समुद्र; (अणु ६०)।
खोइय वि [दे] विच्छेदित; "सव्वे संधी खोइया" (सुख २, १५)।
खोउदय पुं [क्षोदोदक] समुद्र-विशेष; (सूअ १, ६, २०)।
खोओद देखो **खोदोद**; (सुज्ज १६)।
खोज्ज पुंन [दे] मार्ग-चिन्ह; (संक्षि ४७)।
खोड पुं [स्फोट] फोड़ा; (प्राकृ १८)।
खोद पु [क्षोद] चूर्ण, बुकनी; (हम्मीर ३४)।
खोमिय वि [क्षौमिक] १ रेशम-सबन्धी; २ सन-संबन्धी; (पव १२७)।
खोल पुं [दे] गुप्त चर, जासूस; (पिंड १२७)।
खोसिय वि [दे] जीर्ण-प्राय किया हुआ; (पिंड ३२१)।

———०००———

ग

गअवंत वि [गतवत्] गया हुआ; (प्राकृ ३५)।
गइल्लय देखो **गय**=गत; (सुख २, २२)।
गंज सक [गञ्ज्] १ तिरस्कार करना। २ उल्लंघन करना। ३ मर्दन करना। ४ पराभव करना। गंजइ; (जय ५)। कृ—**गंजणीय**; (सिरि ३८)।
गंजण वि [गञ्जन] मर्दन-कर्ता; (सिरि ५४६)।
गंजुल्लिय वि [दे] रोमाञ्चित, पुलकित; (जय १२)।
गंठि स्त्री [गृष्टि] एक बार व्यायी हुई गौ; (प्राकृ ३२)।
गंड न [गण्ड] दोष, दाग; (सूअ १, ६, १६)। °**माणिया** स्त्री [°मानिका] पात्र-विशेष; (राय १४०)। °**विवाय** पुं [°व्यतिपात] ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक योग; (संबोध ५४)।
गंडा देखो **गंठि**=ग्रन्थि; (प्राकृ १८)।
गंडाग पुं [गण्डक] नाई, हजाम; (आचा २, १, २, २)।
गंडुवहाण न [गण्डोपधान] गाल का तकिया; (पव ८४)।
गंडूस पुं [गण्डूष] पानी का कुल्ला; (सूअनि ५४)।

गंथि वि [ग्रन्थिन्] रचना-कर्ता; (सम्मत्त १३६)।

गंधण पुं [गन्धन] एक सर्प-जाति; (दस २, ८)।

गंधवाह पु [गन्धवाह] पवन; (समु १८०)।

गंधव्वि वि [गन्धर्विन्] गाने वाला; (ती ३)।

गंधारी स्त्री [गान्धारी] विद्या-विशेष; (सूत्र २, २, २७)।

गंभीर न [गाम्भीर्य] १ गम्भीरता, २ अनौद्धत्य; (सूअनि ६६)।

गग्ग पुं [गर्ग] १ एक जैन महर्षि; (उत्त २७, १)। २ विक्रम की बारहवीं शताब्दी का एक श्रेष्ठी; (कुप्र १४३)।

गज्झफल } वि [दे] देश-विशेष में उत्पन्न (वस्त्र); (आचा **गज्जल** } २, ५, १, ५; ७)।

गड्ड न [दे] शकट, गाड़ी; (ती १५)।

गणि पुंस्त्री [गणि] अध्ययन, परिच्छेद, प्रकरण; (णंदि १४३)।

गणिम न [गणिम] १ गणना, गिनती, संख्या; २ वि. संख्येय, जिसका गिनती की जा सके वह, संख्येय; (अणु १५४)।

गण्ण वि [गण्य] गणनीय, संख्येय; (संबोध १०)।

गण्णा (मा) स्त्री [गणना] गिनती; (प्राकृ १०२)।

°**गत्तण** वि [कर्तन] काटने वाला, छेदक; (सूत्र १, १५, २४)।

गदि देखो **गइ**=गति; (देवेन्द्र ३५१)।

गदुअ (शौ) अ [गत्वा] जा कर; (प्राकृ ८८)।

गद्द देखो **गज्ज**=गद्य; (प्राकृ २१)।

गब्भर देखो **गहर**; "गब्भरो" (प्राकृ २४; संक्षि १६)।

गब्भाहाण न [गर्भाधान] संस्कार-विशेष; (राय १४६)।

गम पुं [गम] १ प्रकार; (वव १)। २ वि. जंगम; (महानि ४)।

गमार वि [दे. ग्राम्य] अविदग्ध, मूर्ख, (संक्षि ४७)।

गमिअ वि [गमिक] प्रकार वाला; (वव १)।

गमेर देखो **गमार**, (संक्षि ४७)।

गम्म न [गम्य] गमन, "अगम्मगम्मं सुविणेसु धन्नं" (सुख ८, १३)।

गयकंठ पुं [गजकण्ठ] रत्न-विशेष; (राय ६७)।

गयकन्न पुं [गजकर्ण] अनार्य देश-विशेष; (पव २७४)।

गयग्गपय न [गजाग्रपद] दशार्णकूट का एक तीर्थ; (आचानि ३३२)।

गयण न [गगन] 'ह' अक्षर; (सिरि १९६)। °**मणि** पुं [°मणि] सूर्य; (कुप्र ५१)।

गयनिमीलिया स्त्री [गजनिमीलिका] उपेक्षा, उदासीनता; (स ७५१)।

गयमुह पु [गजमुख] अनार्य देश-विशेष; (पव २७४)।

गया स्त्री [गदा] एक देव-विमान; (देवेन्द्र १३३)।

गरिहणया देखो **गरहणया**; (उत्त २९, १)।

गरुल पुं [गरुड] एक देव-विमान; (देवेन्द्र १३४)।

गलहत्थिअ वि [गलहस्तित] गला पकड़ कर बाहर निकाला हुआ; (वज्जा १३८)।

गलि देखो **गल**=गल; "मच्छु व्व गलिं गिलित्ता" (दसचू १, ६)।

गलिच्च वि [गलीय, गल्य] गले का; (पिंड ४२४)।

गल्लूरण न [दे] माँस खाते हुए कुपित शेर की गर्जना; (माल ९०)।

गवादणी देखो **गवायणी**; (आचा २, १०, २)।

गवेसणया स्त्री [गवेषणा] ईहा-ज्ञान, संभावना-ज्ञान; (णंदि १७४)।

गह सक [ग्रथ्] गूँथना, गठना। गहेति; (सूअनि १४०)।

गह पुं [ग्रह] १ संबन्ध; (धर्मसं ३६३)। २ पकड, धरना; (सूत्र १, ३, २, ११; धर्मवि ७२)। ३ ग्रहण, ज्ञान; (धर्मसं १३६४)। °**भिन्न** न [°भिन्न] जिसके बीच से ग्रह का गमन हो वह नक्षत्र; (वव १)। °**सम** न [°सम] गेय काव्य का एक भेद; (दसनि २, २३)।

गहण न [ग्रहण] १ आदान का कारण; २ आक्षेपक; "चक्खुस्स रूवं गहणं वयंति" (उत्त ३२, २२)।

गहण न [गहन] अरण्य-क्षेत्र; (आचा २, ३, ३, १)। °**विदुग्ग** न [°विदुर्ग] पर्वत के एक प्रदेश में स्थित वृक्ष-वल्ली-समुदाय; (सूत्र २, २, ८)।

गहणी स्त्री [ग्रहणी] कुक्षि, पेट; (पव १०६)।

गहर पुंन [गह्वर] १ निकुञ्ज; २ वन, जंगल; ३ दंभ, कपट; ४ विषम स्थान; ५ रोदन; ६ गुफा; ७ अनेक अनर्थो का संकट; "गहरो" (प्राकृ २४)।

गहवइ पुं [गृहपति] कृषक, खेती करने वाला; (पाअ)।

गामेय देखो **गामेयग**; (धर्मवि १३७)।

गायण वि [गायन] गवैया; (सिरि ७०१)।

गारहत्थ वि [गार्हस्थ] गृहस्थ-संबन्धी; (पव २३५)।

गास पुं [**ग्रास**] भोजन; (पव ६५)।
गाहग वि [**ग्राहक**] प्राप्ति कराने वाला; "गाहगं सयल-गुणाणं" (स ६८२)।
गाहा स्त्री [**गाथा**] अध्ययन, ग्रन्थ-प्रकरण; (उत्त ३१, १३)।
गिण्हण देखो **गहण**=ग्रहण; (सिरि ३४७; पिंड ४५९; तंदु ५०)।
गिण्हाविअ वि [**ग्राहित**] ग्रहण कराया हुआ; (धर्मवि ११६)।
गिद्धपिट्ठ न [**गृध्रस्पृष्ट, गृध्रपृष्ठ**] मरण-विशेष, आत्म-हत्या के अभिप्राय से गीध आदि को अपना शरीर खिला देना; (पव १५७)।
गिद्धि स्त्री [**गृद्धि**] एक देव-विमान; (देवेन्द्र १३४)।
गिन्हणा देखो **गिण्हणा**; (उत्त १९, २७)।
गिम्हा स्त्री. देखो **गिम्ह**; "गिम्हासु" (सुख २, ३७)।
गिरिकन्नी देखो **गिरि-कण्णी**; (पव ४)।
गिरिनयर न [**गिरिनगर**] गिरनार पर्वत के नीचे का नगर, जो आजकल 'जूनागढ' के नाम से प्रसिद्ध है; (कुप्र १७६)।
गिरिफुल्लिय न [**गिरिपुष्पित**] नगर-विशेष; (पिंड ४६१)।
गिलाण देखो **गिलाअ**। "गिलाणाइ कज्जे" (स ७१७)।
गिहकोइला स्त्री [**गृहकोकिला**] गृहगोधा, छिपकली; (स ७५८)।
गिहमेहि पुं [**गृहमेधिन्**] गृहस्थ; (धर्मवि २६)।
गिहवइ पुं [**गृहपति**] देश का अधिपति, सूबा; "तह गिहवईवि देसस्स नायगो" (पव ८५)।
गिहेलुग देखो **गिहेलुय**; (आचा २, ५ १, ८)।
गुंजालिआ स्त्री [**गुञ्जालिका**] गभीर तथा कुटिल वापी; (आचा २, ३, ३, १)।
गुंजोल्ल सक [**वि+लुल्**] विखेरना। गुंजोल्लइ; (प्राकृ ७३)।
गुंध सक [**ग्रन्थ्**] गठना। गुंधइ; (प्राकृ ६३)।
गुज्झ पुं [**गुह्य**] एक देव-जाति; (दस ७, ५३)।
गुड सक [**गुड्**] नियन्त्रण करना। गुडेइ; (संबोध ५४)।
गुडुर पुंन [**दे**] खीमा, डेरा, वस्त्र-गृह; (सिरि ४८२; ९४४)।
गुण पुं [**गुण**] १ उच्चारण; (सूत्रनि २०)। २ रसना, मेखला; (आचा २, २, १, ७)।
गुणण न [**गुणन**] १ गुणाकार; (पव २३६)। २ ग्रन्थ-परावर्तन, आवृत्ति; "गुणणु(?गुणणणु)प्पेहासु अ असत्तो" (पिंड ६६४)।
गुणणा स्त्री [**गुणना**] ऊपर देखो; (सम्यक्त्वो १५)।
गुणयालीस स्त्रीन [**एकोनचत्वारिंशत्**] उनचालीस, ३९; (राय ५९)।
गुणवुड्ढि स्त्री [**गुणवृद्धि**] लगा तार आठ दिनों का उपवास; (संबोध ५८)।
गुणसेण पु [**गुणसेन**] एक जैन आचार्य जो सुप्रसिद्ध हेमाचार्य के प्रगुरु थे; (कुप्र १९)।
गुण्ण देखो **गोण्ण**; (अणु १४०)।
गुण्ह (अप) देखो **गिण्ह**। गुण्हइ; (प्राकृ ११९)।
गुत्त न [**गोत्र**] साधुत्व, साधुपन, (सूत्र २, ७, १०)।
गुत्ति स्त्री [**गुप्ति**] गोपन, रक्षण; (गु १२)।
गुत्तिय वि [**गौत्रिक**] गोती, समान गोत वाला, (कुप्र ३४४)।
गुत्तिवाल देखो **गुत्ति-पाल**, (धर्मवि २६)।
गुद्दह न [**गोद्रह**] नगर-विशेप; (मोह ८८)।
गुम्म पुं [**गुल्म**] परिवार, परिकर; "इत्थीगुम्मसंपरिवुडे" (सूत्र २, २, ५५)।
गुम्मी स्त्री [**गुल्मी**] शतपदी, यूका, (उत्त ३६, १३९; सुख ३६, १३९)।
गुललावणिया स्त्री [**गुडलावणिका**] १ एक तरह की मीठाई, गोलपापड़ी; २ गुडधाना; (पव २५९; सुज्ज २०टी)।
गुलहाणिया स्त्री [**गुडधानिका**] खाद्य-विशेष, (पव ४)।
गेवेय देखो **गेवेज्ज**, (आचा २, १३, १)।
गेह पुंन [**गेह**] घर; "न नई न वर्ण न उज्जडो गेहो" (वज्जा ९८)।
गो पुं [**गो**] भूप, राजा; "तइओ गो भूपपसुरस्सिसणो त्ति" (वव १)। °**माहिसक्क** न [°**माहिषक**] गो और भैंस का यूथ, "निव्वुय गोमाहिसक्कं" (स ६८६)।
गोअर पु [**गोचर**] छात्रालय; (दस ५, २, २)।
गोअलिणी स्त्री [**गोपालिनी**] ग्वालिन;
"जो गयणभूमिभंडोयरम्मि जुन्हादहीय महणेण।
पुन्निमगोअलिणीए मक्खणपिंडुव्व निम्मविओ॥"
(धर्मवि ५५)।

गोउलिय वि [**गोकुलिक**] गो-धन पर नियुक्त पुरुष, गोकुल-रक्षक; (कुप्र ३१)।

गोकिलिंज देखो **गो-कलिंजय**; (राय १४०)।

गोण (शौ) पुंन [**गो**] बैल; "गोणो, गोणं" (प्राकृ ८८)।

गोतिहाणी स्त्री [**दे. गोत्रिहायणी**] गोवत्सा, गौ की बछड़ी; (तंदु ३२)।

गोत्त पुन [**गोत्र**] १ पूर्वज पुरुष के नाम से प्रसिद्ध अपत्य-संतति; (णादि ४६; सुज्ज १०, १६)। २ वि. वाणी का रक्षक; (सूअ १, १३, ६)।

गोप्पहेलिया स्त्री [**गोप्रहेलिका**] गौओं को चरने की जगह; (आचा २, १०, २)।

गोमिअ [**दे**] देखो **गोमी**; (अणु २१२)।

गोमिक (मा) [**गौरवित**] संमानित; (प्राकृ १०१)।

गोमुही स्त्री [**गोमुखी**] वाद्य-विशेष; (राय ४६; अणु १२८)।

गोय न [**गोत्र**] मौन, वाक्-संयम; (सूअ १, १४, २०)। °**वाय** पु [°**वाद**] गोत्र-सूचक वचन; (सूअ १, ६, २७)।

गोरव्व वि [**गौरव्य**] गौरव-योग्य; (धर्मवि ६४; कुप्र ३७७)।

गोरस पुं [**गोरस**] वाणी का आनन्द; (सिरि ४०)।

गोरह पुं [**दे**] हल मे जोतने योग्य बैल; (आचा २, ४, २, ३)।

गोरी स्त्री [**गौरी**] विद्या-विशेष; (सूअ २, २, २७)।

गोरूव न [**गोरूप**] प्रशस्त गौ; (धर्मवि ११२)।

गोल पुंस्त्री [**दे**] गोला, जार से उत्पन्न; (दस ७,१४)। स्त्री—°**ली**; (दस ७, १६)।

गोलव्वायण न [**गौलव्यायन**] गोत्र-विशेष; (सुज्ज १०, १६)।

गोवय वि [**गोपक**] छिपाने वाला, ढाँकने वाला; (संबोध ३४)।

गोवल्ल पुंन [**गोवल**] गोत्र-विशेष; (सुज्ज १०,१६ टी)।

गोह पुं [**दे**] १ कोटवाल आदि क्रूर मनुष्य; (सुख ३, ६)। २ वि. ग्रामीण, ग्राम्य; (सुख २, १३)।

——०००——

घ

घंघलिअ वि [**दे**] घबड़ाया हुआ; (संवे ६; धर्मवि १३४)।

घंटिय पुं [**घण्टिक**] चाण्डाल का कुल-देवता, यक्ष-विशेष; (बृह १)।

घट्ट सक [**घट्टय्**] हिलाना। संकृ—**घट्टियाण**; (दस ५, १, ३०)।

घट्टण वि [**घट्टन**] चालक, हिला देने वाला; (पिंड ६३३)।

घडगार देखो **घड-कार**; (वव १)।

घडचडग पुं [**घटचटक**] एक हिंसा-प्रधान संप्रदाय; (मोह १००)।

घडण स्त्रीन [**घटन**] १ घटना, प्रसंग; (वि १३)। २ अन्वय, संबन्ध; (चेइय ४६७)।

घडि वि [**घटिन्**] घट वाला; (अणु १४४)।

घडिगा देखो **घडिआ**; (सूअ १, ४, २, १४)।

घणंगुल पुंन [**घनाङ्गुल**] परिमाण-विशेष, सूची से गुना हुआ प्रतराङ्गुल; (अणु १५८)।

घणसंमद्द पुं [**घनसंमर्द**] ज्योतिष-प्रसिद्ध योग-विशेष, जिसमें चन्द्र या सूर्य ग्रह अथवा नक्षत्र के बीच में होकर जाता है वह योग; (सुज्ज १२—पत्र २३३)।

घत्त अक [**यत्**] यत्न करना। घत्तह; (तंदु ५६)।

घत्ति अ [**दे**] शीघ्र, जल्दी; (प्राकृ ८१)।

घत्तु वि [**घातुक**] मारने वाला, घातक; (उत्त १८, ७)।

घत्थ वि [**ग्रस्त**] गृहीत, पकड़ा हुआ; (पिंड ११६)।

घयपूस पुं [**घृतपुष्य**] एक जैन महर्षि; (कुलक २२)।

घरकुडी स्त्री [**गृहकुटी**] स्त्री-शरीर; (तंदु ४०)।

घरिंत वि [**गृहवत्**] घर वाला, गृहस्थ; (प्राकृ ३५)।

घल्लय / **घल्लोय** पुं [**दे**] द्वीन्द्रिय जीव की एक जाति; (सुख ३६, १३०; उत्त ३६, १३०)।

घस स्त्रीन [**दे**] १ फटी हुई जमीन, फाट वाली भूमि; (आचा २, १०, २)। २ शुषिर भूमि, पोली जमीन; ३ क्षा-रभूमि; (दस ६, ६२)।

घसी स्त्री [**दे**] जमीन का उतार, ढाल; (आचा २, १, ५, ३)।

घसुमर वि [**घस्मर**] खाने की आदत वाला; (प्राकृ २८)।

घाय पुं [**घात**] गमन, गति; (सुज्ज १, १)।

घायय पुं [**घातक**] नरक-स्थान विशेष; (देवेन्द्र २६; ३०)।

घास सक [**घृष्**] १ घिसना। २ पीड़ा करना। कर्म—घासइ; (सूअ १, १३, ५)।

घिणिल्ल वि [**घृणावत्**] घृणा वाला; (पिंड १७६)।

घुट्टग पुं [**घृष्टक**] लिपे हुए पात्र को घिसने का पत्थर; (पिंड १५)।

घुम्माविअ वि [**घूर्णित**] घुमाया हुआ; (वज्जा १२२)।

घुरुक्कार पुं [**घुरुत्कार**] सूअर आदि का आवाज; (किरात ६)।

घुसुल देखो **घुसल**। वकृ—**घुसुलंत; घुसुलिंत;** (पिंड ५८७; ५७३)।

घुसुलण न [**मथन**] विलोड़न; (पिंड ६०२)।

घोलिअ वि [**घूर्णित**] अत्यन्त लीन; "अजरक्खिओ जविएसु अईव घोलिओ" (सुख २, १३)।

घोलिअ वि [**घोलित**] आम की तरह घोला हुआ; (सूअ २, २, ६३)।

घोस न [**घोष**] लगातार ग्यारह दिनों का उपवास; (संबोध ५८)।

घोसाडिया देखो **घोसाडई**; (राय ३१)।

——०००——

च

च अ [**च**] अथवा, या; "चसद्दो विगप्पेणं" (पंच ३, ४४)।

चउड पुं [**चोड**] देश-विशेष; (सम्मत्त ६०)।

चउद देखो **चउ-द्दस**; (संबोध २३)।

चउद्दह वि [**चतुर्दश**] चौदहवाँ; (प्राकृ ५), स्त्री—°**ही**; (प्राकृ ५)।

चउपंचम वि [**चतुष्पञ्च**] चार या पाँच; (सूअ २, २ २१)।

चउपाडिवय न [**चतुष्प्रतिपत्**] चार पड़वा तिथियाँ; (पव १०४)।

चतुप्फल वि [**चतुष्फल**] चौगुना; 'महलवायचउप्फल-लोदं" (सिरि १५७)।

चउप्पाय पुं [**चतुष्पाद**] एक दिन का उपवास; (संबोध ५८)।

चउम्मुह पुं [**चतुर्मुख**] दो दिन का उपवास, बेला; (संबोध ५८)।

चउरंगय न [**चतुरङ्गक**] एक तरह का जुआ; (मोह ८६)।

चउरंत न [**चतुरन्त**] चक्र, पहिया; (चेइय ३४३)।

चउवीस वि [**चतुर्विंश**] चौवीसवाँ; (पव ४६)।

चउवीसिगा स्त्री [**चतुर्विंशिका**] समय-मान-विशेष, चौवीस तीर्थंकर जितने समय में होते हैं उतना काल—एक उत्सर्पिणी या एक अवसर्पिणी-काल; (महानि ४)।

चउवेद, **चउवेय**, **चउव्वेद** वि [**चातुर्वेद**] चारों वेदों का ज्ञाता, चतुर्वेदी, चौबे; (धर्मसं १२३८; मोह १०)।

चउसट्ठिआ स्त्री [**चतुःषष्टिका**] रस वाली चीज तौलने का एक नाप, चार पल का एक माप; (अणु १५१)।

चउहत्थ पुं [**चतुर्हस्त**] श्रीकृष्ण; (सुख ६, १)।

चंग क्रिवि [**दे**] अच्छा, ठीक; (जय २५)।

चंगदेव पु [**चङ्गदेव**] हेमाचार्य का गृहस्थावस्था का नाम; (कुप्र २०)।

चंगवेर पुंन [**दे**] काठ का तख्ता; (आचा २, ४, २, ३)।

चंच देखो **चंछ**। चचइ; (प्राकृ ६५)।

चंडण देखो **चंदण**; "चंडणं, चडणो" (प्राकृ १६)।

चंद पु [**चन्द्र**] संवत्सर-विशेष, जिसमें अधिक मास न हो वह वर्ष; (सुज्ज ११)। °**उडु** पुं [°**ऋतु**] कुछ अधिक उनसठ दिनों की एक ऋतु; (सुज्ज १२)। °**परिवेस** पुं [°**परिवेष**] चन्द्र-परिधि; (अणु १२०)। °**प्पहा** स्त्री [°**प्रभा**] देखो **चंद-प्पभा**; (विचार १२६; कुप्र ४५३)। °**वद्दी** स्त्री [°**वती**] एक नगरी; (मोह ८८)।

चंदण पुन [**चन्दन**] १ एक देव-विमान; (देवेन्द्र १४३)। २ रत्न की एक जाति; (उत्त ३६, ७७)। ३ पु. द्वीन्द्रिय जीव-विशेष, अक्ष का जीव; (उत्त ३६, १३०)।

चंदणि स्त्री [**दे**] आचमन, कुल्ला। °**उयय** न [°**उदक**] कुल्ला फेंकने की जगह; (आचा २, १, ६, २)।

चंदरुद्द देखो **चंड-रुद्द**; (पचा ११, ३५)।

चंदिअ वि [**चान्द्रिक**] चन्द्र का, चन्द्र-संबन्धी; (पव १४१)।

चंद्रिकोज्जलीय वि [**दे. चन्द्रिकोज्ज्वलित**] चन्द्र-कान्ति से उज्ज्वल बना हुआ; (चंड)।

चंप सक [आ+रुह्] चढ़ना। चंपइ; (प्राकृ ७३)।
चंप देखो चंपय; (राय ३०)।
चंपग पुंन [चम्पक] एक देव-विमान; (देवेन्द्र १४२)।
चंपयवडिंसय पु [चम्पकावतंसक] सौधर्म देवलोक में स्थित एक विमान; (राय ५९)।
चंपिअ न [दे] आक्रमण, दबाव; (तंदु ४४)।
चक्क न [चक्र] एक देव-विमान; (देवेन्द्र १३३)।
चक्काथाय पुन. देखो चक्कवाय; "मिलियाइं चक्कागयाइ" (स ७६९)।
चक्ख (अप) सक [आ+चक्ष्] कहना। चक्खइ; (प्राकृ ११९)।
चक्खुहर वि [चक्षुर्हर] दर्शनीय; (राय १०२)।
चच्च सक [चर्च्] चन्दन आदि का विलेपन करना। चच्चेई; (धर्मवि १५)।
चच्च पुं [चर्च] हेमाचार्य के पिता का नाम; (कुप्र २०)।
चच्चिय वि [चर्चित] विलिप्त; (चेइय ८४५)।
चडपड अक [दे] चटपटाना, क्लेश पाना। वकृ—चडपडंत; (मुद्रा ७२)।
चडुकारि वि [चटुकारिन्] खुशामदी, (पिंड ४१४)।
चडुत्तरिया स्त्री [दे] १ उतरचढ; २ वाद-विवाद; (मोह ७)।
चडुयारि देखो चडुकारि; (पिंड ४८९)।
चडुलग वि [दे. चटुलक] खंड २ किया हुआ; "विदुलग-चडुलगछिन्ने" (सूअनि ७१)।
चढ देखो चड=आ+रुह्। संकृ—चढिऊण; (सम्मत्त १५९)।
चढण देखो चडण; (संबोध २८)।
चणयग्गाम देखो चणग-गाम; (धर्मवि ३८)।
चत्ता स्त्री [चर्चा] १ शरीर पर सुगन्धि वस्तु का विलेपन; २ विचार, चर्चा; (प्राकृ ३८)।
चप्प सक [चर्च्] १ अध्ययन करना। २ कहना। ३ भर्त्सना करना। ४ चन्दन आदि से विलेपन करना। चप्पइ; (प्राकृ ७५; संक्षि ३५)।
चप्परण न [दे] तिरस्कार, निरास; (गु ६)।
चम्मेट्ठग पुंस्त्री [चर्मेष्टक] शस्त्र-विशेष; (राय २१); स्त्री—°गा; (अणु १७५)।
चय पु [चय] ईंटों की रचना-विशेष; (पिंड २)।
चयण न [च्यवन] च्युति, भ्रंश, नाश; (तंदु ४१)।

चर पुं [चर] जंगम प्राणी; (कुप्र २४)।
चरण पुंन [चरण] १ संयम, चारित्र; "पत्तेयं अट्ठअट्ठभेइल्ला" (संबोध २२)। २ आचरण, (सूअनि १२४)।
चरि पुंस्त्री [चरि] १ पशुओं को चरने की जगह; २ चारा, पशुओं का खाने की चीज, घास; (कुप्र १७)।
चरित्त न [चरित्र] जीवन-कथा, जीवनी; (सम्मत्त १२०)।
चरीया देखो चरिया=चर्या; "तयाफासो चरीया य दसेका रस जोगिसु" (पंच ४, २०)।
चलणिया } स्त्री [चलनिका, °नी] जैन साध्वी को
चलणी } पहनने का कटि-वस्त्र; (पव ६२)।
चल्लि स्त्री [दे] मदन-वेदना; (संक्षि ४७)।
चवलय पुं [दे] धान्य-विशेष, गुजराती में 'चोळा' (पव १५४)।
चव्व सक [चर्व्] चबाना; (संक्षि ३४)।
चव्व (शौ) देखो चव्व=चर्व्। चव्वदि; (प्राकृ ९३)।
चव्वण न [चर्वण] चबाना; (दे ७, ८२ टी)।
चहुट्ट अक [दे] चिपकना, चिपटना, लगना; गुजराती में 'चोंटवु'। "रे मूढ तुह अकज्जे लोलाइ चहुट्टए जहा चित्तं" (संवेग १९)। चहुट्टइ; (कुप्र २४९)।
चहुट्ट } वि [दे] चिपका हुआ, लगा हुआ; (धर्मवि
चहुट्टिय } १४१; उप ७२८ टी; कुप्र २७; धर्मवि १४१)।
चाउअंगी स्त्री [चार्वङ्गी] सुन्दर अंग वाली स्त्री; (प्राकृ २९)।
चाइय वि [त्याजित] छोड़वाया हुआ; (धर्मवि ८)।
चाउत्थिग देखो चाउत्थिय; (उत्तनि ३)।
चाउप्पाय न [चतुष्पाद] चतुर्विध, चार प्रकार का; (उत्त २०, २३; सुख २०, २३)।
चाउरंत न [चातुरन्त] भरत-क्षेत्र, भारतवर्ष; (न्य ३४०; ३४१)।
चाउरंत न [चतुरन्त] चक्र, पहिया; (चेइय २४४)।
चाउल वि [दे] चावल का; "तहेव चाउलं पिट्ठं" (दस ५, २, २२)।
चाउवण्ण देखो चाउवन्न; (सम्मत्त १६२)।
चाउव्विज्ज देखो चाउव्वेज्ज; (ती ७)।
चाउस्साला स्त्री [चतुःशाला] चारों तरफ के कमराओं से युक्त घर; (पव १३३ टी)।

चामरच्छ न [**चामरथ्य**] गोत्र-विशेष; (सुज्ज १०, १६)।

चामुंडराय पुं [**चामुण्डराज**] गुजरात का एक चौलुक्य वंश का राजा; (कुप्र ४)।

चार सक [**चारय्**] चराना, खिलाना। चारेइ; (धर्मवि १४३)।

चारभड पुं [**चारभट**] लुटेरा; (पिंड ५७६)।

चारिया स्त्री [**चर्या**] १ चरण, इधर-उधर गमन; २ चेष्टा; (उत्त १६, ८१; ८२; ८४; ८५)।

चालण न [**चालन**] शंका, प्रश्न, पूर्वपक्ष; (चेइय २७१)।

चाविय वि [**चर्वित**] चबाया हुआ; (धर्मवि ४६; १४६)।

चाहिणी स्त्री [**चाहिनी**] हेमाचार्य की माता का नाम; (कुप्र २०)।

चिअ न [**चित**] ईंट आदि का ढग; (अणु १५४)।

चिअ देखो **चित्त**=चित्त; (प्राकृ २६)।

चिट्ठं अ [**दे**] अत्यन्त, अतिशय; (आचा १, ४, २, २)।

चिट्ठण न [**स्थान**] खड़ा रहना; (पव २)।

चिट्ठण न [**चेष्टन**] चेष्टा, प्रयत्न; (हि २२)।

चिण देखो **चित्त**=चित्त; (प्राकृ २६)।

चित्तजाणुअ देखो **चित्त-ण्णु**; (प्राकृ १८)।

चित्तण न [**चित्रण**] चित्र-कर्म; (धर्मवि ३४)।

चित्तपत्तय पुं [**चित्रपत्रक**] चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति; (उत्त ३६, १४६)।

चित्तयलया स्त्री [**चित्रकलता**] वल्ली-विशेष; (हम्मीर २८)।

चित्तवीणा स्त्री [**चित्रवीणा**] वाद्य-विशेष; (राय ४६)।

चित्ताचिल्लडय } **चित्ताचेल्लरय** } पु [**दे**] जंगली पशु विशेष; (आचा २, १, ५, ३; ४)।

चित्तावडी स्त्री [**चित्रपटी**] वस्त्र-विशेष, छींट आदि कपड़ा; "उवविट्ठा...चित्तावडिमसूरयम्मि विब्भमवई कामलया य" (स ७३८)।

चित्ती देखो **चेत्ती**; (सुज्ज १०, ७)।

चिप्प सक [**दे**] १ कूटना। २ दबाना। कर्म—"वि ('चि)-प्पिज्जसि जं तस्सिं केणावि गोमह-वसहेण" (दे २, ६६ टी)। संकृ—**चिप्पित्ता**; (बृह २)।

चिप्पग पुंन [**दे**] कुटी हुई छाल; गुजराती में 'चेपो' (कस २, ३० टि)।

चिप्पड देखो **चिविड**; (धर्मवि २७)।

चिप्पय देखो **चिप्पग**; (कस २, ३० टि)।

चिप्पिअ पुं [**दे**] नपुंसक-विशेष, जन्म-समय में अंगूठे से मर्दन कर जिसका अंडकोश दबा दिया गया हो वह; (पव १०६ टी)।

चिय देखो **चेइअ**=चैत्य; "सो अन्नया कयाइ चियपरिवाडि कुणंतओ नयरे" (सम्मत्त १५६)।

चिरच्चिय वि [**चिरचित**] चिर काल से उपचित; (पंच ५, १६७)।

चिरमाल सक [**प्रति+पालय्**] परिपालन करना। चिर-मालइ; (प्राकृ ७५)।

चिराउ अ [**चिरात्**] चिर काल से; (कुप्र ३६७)।

चिलाद देखो **चिलाअ**; (प्राकृ १२)।

चिलिच्चिलिय वि [**दे**] भोजा हुआ, आर्द्रित; (तंदु ३८)।

चिल्ल न [**दे**] सूर्प, सूप, छाज; (प्राकृ ३८)।

चिल्लय न [**दे**] अपचक्षु, खराब आँख; (पराह १, १ टी—पत्र २५)।

चीड वि [**दे**] काला काच का मणि वाला; (सिरि ६८०)।

चुअ सक [**त्यज्**] त्याग करना, परिहार करना। "एयमट्ठं मिगे चुए" (सूअ १, १, २, १२)।

चुंकारपुर न [**चुङ्कारपुर**] एक नगर; (सम्मत्त १४५)।

चुंटिर वि [**दे**] चुनने वाला; (दे ६, ११६ टी)।

चुचूय पुंन [**चुचूक**] स्तन का अग्र भाग; (राय ६४)।

चुडिली देखो **चुडुली**; (तंदु ४६)।

चुण्णग पु [**चूर्णक**] वृक्ष-विशेष; (आचा २, १०, २३)।

चुण्णिय वि [**चूर्णिक**] गणित-प्रसिद्ध सर्वावशिष्ट अंश; (सुज्ज १०, २२—पत्र १८५; १२—पत्र २१६)।

चुन्नण न [**चूर्णन**] चूर चूर करना; (सा ३)।

चुन्नि देखो **चुण्णि**; (विचार ३५२; चंड)।

चुलुक्क देखो **चालुक्क**; (दे १, ८४ टी)।

चुल्लग न [**दे**] सदूक; (कुप्र २२७; २२८)।

चुल्लुच्छल अक [**दे**] छलकना, उछलना;

"चुल्लुच्छलेइ जं होइ ऊणयं, रित्तयं कणकणेइ।
भरियाइं ण खुब्भंती सुपुरिसविन्नाणभंडाइं ॥"
(सूअनि ६६ टी)।

चूचुअ पुंन [चूचुक] स्तन का अग्र भाग; (प्राकृ ११)।
चूरण देखो चुण्ण; (कुप्र २७३)।
चूरिम पुंन [दे] मिठाई विशेष, चूर्मा लड्डू; (पव ४ टी)।
चेट्ठण देखो चिट्ठण = चेष्टन; (उप्पं ११)।
चेत्ती स्त्री [चैत्री] १ चैत मास की पूर्णिमा; २ चैत मास की अमावस; (सुज्ज १०, ६)।
चोए सक [चोदय्] १ प्रश्न करना। २ सीखाना, शिक्षण देना। चोएइ; चाएह; (वव १)।
चोक्खलि वि [दे] चोखाई करने वाला, शुद्धता वाला; (पिंड ६०३)।
चोदणा स्त्री [चोदना] प्रेरणा; (धर्मसं १२४०)।
चोप्पडिय वि [दे] चुपड़ा हुआ; (पव ४)।
चोप्पाल पुं [चतुष्पाल] सूर्याभ देव की आयुध-शाला; (राय ९३)।
चोयय पुं [दे] फल-विशेष. (अणु १५४)।
चोयालीस स्त्रीन [चतुश्चत्वारिंशत्] चुम्मालीस, ४४; (चेइय ३९२)।
चोराव सक [चोरय्] चोरी कराना। चोरावेइ; (प्राकृ ६०)।
चोवत्तरि स्त्री [चतुःसप्तति] सतर और चार, ७४; (पंच ५, १८)।
चोवालय पुंन [चतुर्द्वार] चोवारा, ऊपर का शयन-गृह; "इओ य एगा देवी हत्थिमिठे आसत्ता। सावरं हत्थी चों-(?चो)वालयाओ हत्थेण अवतारेइ" (दस २, १० टी)।

——०००——

छ

छउम न [छद्मन्] ज्ञानावरणीय आदि चार घाती कर्म; (चेइय ३४६)।
छंदण पुन [छादन] ढकना, ढक्कन; (राय ९६)।
छंदण न [छन्दन] निमन्त्रण (पिंड ३१०)।
छग देखो छक्क; (पव २७१)।
छगण न [स्थगन] पिधान, ढकना; (वव ४)।
छडिय वि [छटित] सूप आदि से छटा हुआ; (तंदु २९; राय ९७)।
छड्डय वि [छर्दक] १ छोड़ने वाला; (कुप्र ३१७)। २ पुं. एक शेठ का नाम; (कुप्र ३२९)।
छण सक [क्षण्] छेदन करना। छणाइ; (सूअ २, १, १७)।
छत्त न [छत्र] १ लगा तार तेतीस दिनों का उपवास; (संबोध ५८)। २ पुंन. एक देव-विमान; (देवेन्द्र १४०)। ३ पुं. ज्योतिष-प्रसिद्ध एक योग जिसमें चन्द्र आदि ग्रह छत्र के आकार में रहते हैं; (सुज्ज १२—पत्र २३३)। °इल्ल वि [°वत्] छाता वाला; (सुख २, १३)। °कार वि [°कार] छाता बनाने वाला शिल्पी; (अणु १४९)। °ग पुंन [°क] वनस्पति-विशेष; (सूअ २, ३, १६)।
छदमत्थ देखो छउमत्थ; (कम्म ४४)।
छद्दस वि [षड्दश] छह या दश; (सूअ २, २, २१)।
छण्ण वि [क्षण] हिंसा-प्रधान, हिंसा-जनक; (सूअ १, ९. २९)।
छव्व) पुंन [दे] पात्र-विशेष; (आचा २, १, ८, १;
छव्वग) पिंड ५६१; ७७८)।
छल देखो छ=षष्; (कम्म ६, ६)।
छलंसिअ वि [षडस्रिक] छह कोण वाला; (सूअ २, १, १५)।
छलण न [छलन] प्रक्षेपण, फेंकना; (आचानि ३११)।
छविपव्व न [छविपर्वन्] औदारिक शरीर; (उत्त ५, २४)।
छवीइय वि [छविमत्] १ कान्ति वाला; २ बद्ध, निबिड; (आचा २, ४, २, ३)।
छहत्तरि स्त्री [षट्सप्तति] छहत्तर, ७६; (पव १९)।
छाअ देखो छाव; (प्राकृ १५)।
छाउमत्थ न [छाद्मस्थ्य] छद्मस्थ अवस्था; (सट्ठि ९ टी)।
छाणी स्त्री [दे] कंडा, गोबर का इन्धन; (पव ३८)।
छाय वि [छात] व्रणाङ्कित, घाव वाला; (दस ६,२,७)।
छायण न [छादन] १ घर की छत; (पिंड ३०३)। २ ढक्कन; (पव १३३)। ३ वस्त्र, कपड़ा; (सुख ७,१५)।
छारिय वि [क्षारिक] क्षार-सम्बन्धी; (दस ५, १, ७)।
छाहत्तरि देखो छावत्तरि; (पव २३६)।
छिग्ग (शौ) सक [छुप्] छूना। छिग्गदि; (प्राकृ ९३)।
छिच्छिकार पुं [छिच्छिकार] निवारण-सूचक शब्द, छी छी; (पिंड ४५१)।
छिज्ज देखो छिद=छिद्। हेकृ—छिज्जिउं; (तंदु ५०)।

छिड्डु पुंन [**छिद्र**] आकाश, गगन; (भग २०, २—पत्र ७७५)।
छित्तु वि [**छेत्तृ**] छेदने वाला; (पव २)।
छिन्नाल वि [**दे**] हलकी जात का बैल आदि; (उत्त २७, ७)
छिब्भ सक [**क्षिप्**] फेंकना। छिब्भंति; (सूअ १, ५, २, १२)।
छीयंत वि [**क्षुवत्**] छींक करता; (ती ८)।
छुअ देखो **छुघ**। छुअइ; (प्राकृ ७६)।
छुध वि [**क्षुध**] भूखा; (प्राकृ २२)।
छुन्न पुंन [**क्षुण्ण**] क्लीब, नपुसक; (पिंड ४२५)।
छुल्लुच्छुल देखा **चुल्लुच्छल**। छुल्लुच्छुलेइ; (सूअनि ६६ टी)।
छेअ वि [**दे. छेक**] १ विशुद्ध, निर्मल; (पंचा ३, ३५; ३८)। २ न. कालोचित हित; (धर्मसं ५४३)।
छेज्जा स्त्री [**छेद्या**] छेदन-क्रिया; (सूअ १, ४, २, ९)।
छेदण वि [**छेदन**] छेदन-कर्ता; स्त्री—°णी; (स ७६६)।
छोअ पुं [**दे**] छिलका; (सूअ २, १, १६)।
छोक्करी स्त्री [**दे**] लड़की; (कुप्र ३५३)।
छोट्टि स्त्री [**दे**] उच्छिष्टता, जूठाई; (पिंड ५८७)।
छोडय वि [**दे**] छोटा, लघु; (वज्जा १६४)।
छोढूण वि [**दे**] छाड़ कर; (कुप्र ३१)।
छोप्प वि [**स्पृश्य**] स्पर्श-योग्य; (आचा २, १५, ५)।

——ooo——

ज

जअक्कार पु [**जयकार**] जीत, अभ्युदय; (प्राकृ ३०)।
जइ वि [**यति**] जितना; (वव १)।
जइअव्व वि [**जेतव्य**] जीतने योग्य; (प्रवि १२)।
जउणा देखो **जॅउणा**; (वज्जा १२२; प्राकृ ११)।
जंघाल वि [**जङ्घाल**] द्रुत-गामी; (दे ८, ७५)।
जंतुय वि [**जान्तुक** [जन्तुक-नामक तृण का; (आचा २, २, ३, १४)।
जंववंत पुं [**जाम्बवत्**] एक विद्याधर राजा; (कुप्र २५९)।
जंबु पुंन [**जम्बु**] जम्बू-वृक्ष का फल, जामून; "ते विति जंबू भक्खेमो" (संबोध ४७)।
जंभा स्त्री [**जृम्भा**] एक देवी का नाम; (सिरि २०३)।

जक्खिणी स्त्री [**यक्षिणी**] देखो **जक्खा**; (मंगल २३)।
जग पुंन [**जगत्**] प्राणी, जीव; "पुढविजीवे हिंसिज्जा जे अ तन्निस्सिया जगे" (दस ५, १, ६८; सूअ १, ७, २०; १, ११, ३३)।
जगईपव्वय पुं [**जगतोपर्वत**] पर्वत-विशेष; (राय ७५)।
जगडण वि [**दे**] १ झगड़ा कराने वाला; २ कदर्थना करने वाला; (धर्मवि ८९; कुप्र ४२९)।
जगडिअ वि [**दे**] लड़ाया हुआ; (धर्मवि ३१)।
जच्छ पुं [**यक्ष्मन्**] रोग-विशेष, क्षय-रोग; (प्राकृ २२)।
जज्जिग पुं [**जय्यिक**] एक जैन आचार्य का नाम; (ती १५)।
जज्जिय } न [**यावज्जीव**] जीवन-पर्यन्त; "जज्जीव
जज्जीव } अहिगरणं" (पिंड ५०६; ५१२)।
जट्ठ न [**इष्ट**] यजन, याग, यज्ञ; (उत्त १२, ४०; २५, ३०)।
जडहारि देखो **जड-धारि**; (कुप्र २६३)।
जडिअ [**जटिक**] देखो **जडि**; (ती ८)।
जडिअ वि [**जटित**] पिहित, ढका हुआ; (सिरि ५१९)।
जडिहल वि [**जटिन्**] जटा वाला; (चंड)।
जडुल देखो **जडिल**; (भग १५—पत्र ६७०)।
जड्डु वि [**दे**] अशक्त, असमर्थ; (पव १०७)।
जणप्पवाद पुं [**जनप्रवाद**] जैन-रव, लोकोक्ति; (मोह ४३)।
जणमेजय देखो **जणमेअअ**; (धर्मवि ८१)।
जणस्सुइ स्त्री [**जनश्रुति**] किंवदन्ती, कहावत; (धर्मवि ११२)।
जण्ण देखो **जन्न**=जन्य; (धर्मसं १००)।
जण्हुकन्ना स्त्री [**जह्नुकन्या**] गंगा नदी; (कुप्र ६६)।
जत्ता स्त्री [**यात्रा**] संयम-निर्वाह; (उत्त १६, ८)।
जत्तिअ देखो **यत्तिअ**; (उवा २० टि)।
जद्दर पुंन [**दे**] वस्त्र-विशेष; (सम्मत्त २१८; २१९)।
जन्न वि [**जन्य**] १ जन-हित, लोक-हितकर; (सूअ २, ६, २)। २ उत्पन्न होने योग्य; (धर्मसं २८०)।
जन्नसेणी देखो **जण्णसेणी**; (पार्थ ४)।
जन्नोवइय देखो **जण्णोवईय**; (सुख २, १३)।
जमदग्गिजडा स्त्री [**यमदग्निजटा**] गन्ध-द्रव्य-विशेष, सुगन्धवाला; (उत्तनि ३)।

जम्हाअ, जम्हाह, जम्हाहा देखो जंभाअ। जम्हाअइ, जम्हाहइ; जम्हाहाइ; (प्राकृ ६४)।
जय पुं [यत] प्रयत्न; (दस ५, १, ६६)।
जयंती स्त्री [जयन्ती] १ पक्ष की नववीं रात; (सुज्ज १०, १४)। २ भगवान् अरनाथ की दीक्षा-शिबिका; (विचार १२९)।
जयार पुं [जकार] १ 'ज' अक्षर; २ जकारादि अश्लील शब्द; "जत्थ जयारमयारं समणी जपइ गिहत्थपच्चक्खं" (गच्छ ३, ४)।
जरण न [जरण] जीर्णता, आहार का हजम होना, हाजमा; (धर्मसं ११३५)।
जरा स्त्री [जरा] वसुदेव की एक पत्नी; (कुप्र ९९)।
जल न [जल] वीर्य; (वज्जा १०२)। °कंत पुंन [°कान्त] एक देव-विमान; (देवेन्द्र १४४)। °कारि पुंस्त्री [°कारिन्] चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष; (उत्त ३६, १४९)। °य वि [°ज] पानी में उत्पन्न; (श्रु ६८)। °वारिअ पुं [°वारिक] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति; (सुख ३६, १४९)।
जलजलिअ वि [जलजलित] जल जल शब्द से युक्त; (सिरि ६६४)।
जलिर वि [ज्वलितृ] जलता, सुलगता; (धर्मवि ३५; कुप्र ३७६)।
जव सक [यापय्] काल-यापन करना, पसार करना। जवेंति; (पिंड ६१९)।
जव पुंन [यव] एक देव-विमान; (देवेन्द्र १४०)। °नालय पुं [°नालक] कन्या का कंचुक; (सांदि ८८ टी)। °न्न न [°ान्न] यव-निष्पन्न परमान्न, भोज्य-विशेष; (पव २५९)।
जविअ वि [जवित] १ जिसका जाप किया गया हो वह (मन्त्र आदि), (सिरि ३९६)। २ न. अध्ययन, प्रकरण आदि ग्रन्थांश; (सुख २, १३)।
जसंसि पुं [यशस्विन्] भगवान् महावीर के पिता का एक नाम; (आचा २, १५, ३; कप्प)।
जसदेव पुं [यशोदेव] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य; (पव २७६)।
जसभद्द पुं [यशोभद्र] १ पक्ष का चतुर्थ दिवस; (सुज्ज १०, १४)। २ एक राजर्षि जो वागड देश के रत्नपुर नगर के राजा थे और जिसने जैनी दीक्षा ली, आचार्य हेमचन्द्र के प्रगुरु के प्रगुरु थे; (कुप्र ३ न. उड्डुवाटिक गण का एक कुल; (कप्प)।
जसवई स्त्री [यशोमती] भगवान् महावीर की का नाम; (आचा २, १५, ३)।
जसस्सि वि [यशस्विन्] यशस्वी, कीर्तिमान्; (१, ६, ३; श्रु १४३)।
जसहर पुंन [यशोधर] एक देव-विमान; (देवेन्द्र १४१)।
जसोधर देखो जस-हर; (सुज्ज १०, १४)।
जसोधरा देखो जसो-हरा; (सुज्ज १०, १४)।
जसोया स्त्री [यशोदा] भगवान् महावीर की पत्नी का नाम; (आचा २, १५, ३)।
जहणा स्त्री [हान] परित्याग; (संबोध ५९)।
जहियं देखो जहिं; (पिंड ५८)।
जा सक [या] सकना, समर्थ होना। "किंतु मम एत्थ न जाइ पव्वइउं", "वहिट्ठियाणा किं जायइ अज्झाइउं" (सुख २, १३)।
जाअ देखो जाव=जाप; (हास्य १३२)।
जाअ देखो जा=या। जाअइ; (प्राकृ ६६)।
जाआ स्त्री [यातृ] देवर-भार्या; (प्राकृ ४३)।
जाइ स्त्री [जाति] १ न्यायशास्त्र-प्रसिद्ध दूषणाभास—असत्य दूषण; (धर्मसं २६०; स ७११)। २ माता का वंश; (पिंड ४३८)।
जाइ वि [याजिन्] यज्ञ-कर्ता; (दसनि १, १४६)।
जाइअ देखो जाय=जात; (वज्जा १४४)।
जाइच्छि°, जाइच्छिय वि [यादृच्छिक] १ इच्छानुसार, (धर्मसं १२)। २ इच्छानुसारी; (धर्मसं ६०२)।
जाइयव्व न [यातव्य] गमन, गति; (सुख २,
जाईअ वि [जातीय] जाति-संबन्धी; (श्रावक ४०)।
जाउ न [जायु] क्षीरपेया, यवागू, खाद्य-विशेष; (६२५)।
जाउ अ [जातु] कदाचित्, कभी; (उवकु ११)।
जाउ स्त्री [यातृ] १ देवर-पत्नी; २ वि. जाने वाला; (संक्षि ४)।
जागरुअ वि [जागरूक] जागता; (धर्मवि १३५)।
जाजावर वि [यायावर] गमन-शील, विनश्वर; (सम्मत्त १७४)।

जामग्गहण न [**यामग्रहण**] प्राहरिकत्व, पहरेदारी; (सुख २, ३१)।

जामाइ देखो **जामाउ**; (पिंड ४२४)।

जामिअ देखो **जामिग**; (धर्मवि १३५)।

जामेअ पुं [**यामेय**] भानजा, भागिनेय; (धर्मवि २२)।

जाय पुं [**जात**] गीतार्थ, विद्वान् जैन मुनि; (पव— गाथा २४)।

जाया स्त्री [**यात्रा**] निर्वाह । °**माय** वि [°**मात्र**] जितने से निर्वाह हो सके उतना; "साहुस्स विंति धीरा जायामायं च ओमं च" (पिंड ६४३)।

जालग पुं [**जालक**] द्वीन्द्रिय जीव की एक जाति; (उत्त ३६, १३०)।

जालवणी स्त्री [**दे**] सम्हाल, खबर; गुजराती में 'जाळवणा'; (सिरि ३८५)।

जाव देखो **जावइअ**; (आचा २, २, ३, ३)।

जावई स्त्री [**जातिपत्री**] १ कन्द-विशेष; (उत्त ३६, ६८; सुख ३६, ६८)। २ गुच्छ वनस्पति की एक जाति; (पराण १—पत्र ३४)।

जावईय पुं [**जातिपत्रीक**] कन्द-विशेष; (उत्त ३६, ६८)।

जिअ न [**जित**] जीत, जय; (प्राकृ ७०)। °**गासि** वि [°**काशिन्**] जीत से शोभने वाला, विजेता; (सम्मत्त २१७)। °**सत्तु** पुं [°**शत्रु**] अंग-विद्या का जानकार दूसरा रुद्र पुरुष; (विचार ४७३)।

जिंडुह पुं [**दे**] कन्दुक, गेन्द; (पव ३८)।

जिगीसा स्त्री [**जिगीषा**] जय की इच्छा; (कुप्र २७८)।

जिट्ठिणी स्त्री [**ज्यैष्ठी**] जेठ मास की अमावस; (सट्ठि ७८ टी)।

जिणकप्पि पुं [**जिनकल्पिन्**] जैन मुनि का एक भेद; (पंचा १८, ६)।

जिणपह पुं [**जिनप्रभ**] एक जैन आचार्य; (ती ५)।

जिणिसर देखो **जिणेसर**; (सम्मत्त ७६; ७७)।

जिणेंद देखो **जिणिंद**; (चेइय ६०)।

जिब्भ पुं [**जिह्व**] एक नरक-स्थान; (देवेन्द्र ६; २६)।

जिमण न [**जेमन**] जिमाना, भोज; (धर्मवि ७०)।

जिव देखो **जीव**; "मायाइ अहं भणिओ कायव्वा वच्छ जिवदया तुमए" (धर्मवि ५)।

जीण न [**दे. अजिन**] जीन, अश्व की पीठ पर बिछाया जाता चर्ममय आसन; (पव ८४)।

जीरण न [**जीर्ण**] १ अन्न-पाक; २ वि. पचा हुआ; 'अजीरणं' (पिंड २७)।

जीरव सक [**जोरय्**] पचाना । जीरवइ; (कुप्र २६६)।

जीव न [**जीव**] सात दिन का लगातार उपवास; (संबोध ५८)। °**विसिट्ठ** न [°**विशिष्ट**] वही अर्थ; (संबोध ५८)।

जु अ [**दे**] निश्चय-सूचक अव्यय; (सा ४)।

जुअणद्ध पुं [**युगनद्ध**] ज्योतिष-प्रसिद्ध एक योग, बैल के कन्धे पर रखे हुए युग की तरह जिसमें चन्द्र, सूर्य तथा नक्षत्र अवस्थित होते हैं वह योग; (सुज्ज १२—पत्र २३३)।

जुअली स्त्री [**युगली**] युग्म, जोडा; (प्राकृ ३८)।

जुईम वि [**द्युतिमत्**] तेजस्वी; (सूअ १, ६, ८)।

जुंगिय वि [**दे**] १ काटा हुआ; (पिंड ४४६)। २ दूषित; (सिरि २२३)।

जुट्ठ न [**दे**] झूठ, असत्य; "आ दुट्ठ तुमं जुट्ठं जंपसि" (धर्मवि १३३)।

जुण्णदुग्ग न [**जीर्णदुर्ग**] नगर-विशेष, जो आजकल भी 'जूनागढ' नाम से प्रसिद्ध है; (ती २)।

जुण्ह देखो **जोण्ह**=ज्यौत्स्न; (सुज्ज १६)।

जुत्त सक [**युक्तय्**] जोतना । संकृ—**जुत्तित्ता**; (ती १५)।

जुत्ताणंतय पुंन [**युक्तानन्तक**] गणना-विशेष; (अणु २३४)।

जुत्तासंखेज्जय देखो **जुत्तासंखिज्ज**; (अणु २३४)।

जुम्म न [**युग्म**] परस्पर सापेक्ष दो पद्य; (सिरि ३६१)।

जूझ देखो **जुज्झ**=युध् । कृ—**जूझियव्व**; (सिरि १०२५)।

जूय न [**यूप**] लगातार छह दिनों का उपवास; (संबोध ५८)।

जूयय } पुं [**यूपक**] शुक्ल पक्ष के द्वितीया आदि तीन
जूवय } दिनों में होता चन्द्र की कला और सन्ध्या के प्रकाश का मिश्रण; (अणु १२०; पव २६८)।

जूर सक [**गर्ह्**] निन्दा करना । जूरंति; (सूअ २, २, ५५)।

जूह न [**यूथ**] युग्म, युगल, जोड़ा; (आचा २, ११, २)। °**काम** न [°**काम**] लगातार चार दिनों का उपवास; (संबोध ५८)।

जूहियठाण न [**यूथिकस्थान**] विवाह-मण्डप वाली जगह; (आचा २, ११, २)।

जेअ वि [**जेय**] जीतने योग्य; (रुक्मि ५०)।

जेअ वि [**जेतृ**] जीतने वाला; (सूअ १, ३, १, १; १, ३, ६, २)।

जेट्ठामूली स्त्री [**ज्येष्ठामूली**] १ जेठ मास की पूर्णिमा; २ जेठ मास की अमावस्या; (सुज्ज १०, ६)।

जेण देखो **जइण**=जैन; (सम्मत्त ११७)।

जेत्त वि [**यावत्**] जितना; स्त्री—°त्ती; (हास्य १३०)।

जेत्तिक (शौ) ऊपर देखो; (प्राकृ ९५)।

जेमणी स्त्री [**जेमनी**] जीमन; (संबोध १७)।

जोअ सक [**योजय्**] १ समाप्त करना, खतम करना। २ करना। जोएइ; (सुज्ज १०, १२—पत्र १८०; १८१; सुज्ज १२—पत्र २३३)।

जोउकण्ण न [**यौगकर्ण**] गोत्र-विशेष; (सुज्ज १०, १६ टी)।

जोउकण्णिय न [**यौगकर्णिक**] गोत्र-विशेष; (सुज्ज १०, १६)।

जोग देखो **जुग्ग**=युग्म; "सपाउयाजोगसमाजुत्त" (राय ४०)।

जोग पुं [**योग**] नक्षत्र-समूह का क्रम से चन्द्र और सूर्य के साथ संबन्ध; (सुज्ज १०, १)।

जोज देखो **जोअ**=योजय्। भवि—जोजइस्सामि; (कुप्र १३०)। कृ—जोज्ज; (उत्त २७, ८)।

जोड (अप) स्त्री [**दे**] जोड़ी, युगल; "एरिस जोड न जुत्त" (कुप्र ४५३)।

जोत्त देखो **जुत्त**=युक्त; (कुप्र ३८१)।

जोस पुं [**झोष**] अवसान, अंत; (सूअ १, २, ३, २ टि)।

जोहा स्त्री [**योधा**] भुज-परिसर्प की एक जाति; (सूअ २, ३, २५)।

जोहार सक [**दे**] जुहारना, जोहार करना, प्रणाम करना। कर्म—जोहारिज्जइ; (आक २५, १३)।

जोहार पुं [**दे**] जोहार, प्रणाम; (पव ३८)।

जोहि वि [**योधिन्**] लड़ने वाला, सुभट; (पव ७१)।

ज्जिअ } (शौ) अ [**दे**] अवधारण—निश्चय—का सूचक
ज्जेअ } अव्यय; (प्राकृ ९८)।

——०००——

झ

झंख सक [**दे**] स्वीकार करना। झंखहु (अप); (सिरि ८६४)।

झंझा स्त्री [**झञ्झा**] वाद्य-विशेष; (राय ५० टी)।

झंप सक [**आ + क्रामय्**] आक्रमण करवाना। झंपइ; (प्राकृ ७०)।

झंपण वि [**भ्रमण**] भ्रमण-कर्ता; (कुप्र ४)।

झलहलिय वि [**दे**] क्षुब्ध, विचलित; "थरहरियधरं झलहलियसायरं चलियसयलकुलसेलं" (कुलक ३३)।

झल्लरी स्त्री [**दे**] अजा, बकरी; (चंड)।

झस पुं [**झष**] १ एक देव-विमान; (देवेन्द्र १४०)। २ एक नरक-स्थान; (देवेन्द्र ११)।

झाइअ वि [**ध्यात**] चिन्तित; (सिरि १२५५)।

झाण वि [**ध्यान**] ध्यान-कर्ता; (श्रु १२८)।

झामल वि [**ध्यामल**] श्याम, काला; (धर्मसं ८०७)।

झामलिय वि [**ध्यामलित**] काला किया हुआ; (कुप्र ५८)।

झावणा देखो **अझावणा**; (संबोध २४)।

झिज्झ अक [**क्षि**] क्षीण होना। झिज्झइ; (प्राकृ ६३)।

झिझिरी स्त्री [**दे**] वल्ली-विशेष; (आचा २, १, ८, ३)।

झुलुक्क पुं [**दे**] अकस्मात् प्रकाश; (आत्मानु ६)।

झूझ देखो **जूझ**। झूझंति; (संबोध १८)।

झोटिंग पुं [**दे**] देव-विशेष; (कुप्र ४७२)।

झोस सक [**झोषय्**] डालना, प्रक्षेप करना। कृ—**झोसेयव्व**; (वव १)।

झोस पुं [**झोष**] राशि-विशेष, जिसके डालने से समान भागकार हो वह राशि; (वव १)।

झोसणा स्त्री [**जोषणा**] अन्त समय की आराधना, संलेखना; (श्रावक ३७८)।

——०००——

ट

टउया स्त्री [**दे**] आह्वान-शब्द, पुकारने की आवाज; गुजराती में 'टौको' (कुप्र ३०६)।

टंक पुं [**टङ्क**] चिह्न-विशेष, सिक्का पर का चिह्न; (पंचा ३, ३५)।

टंकिया स्त्री [**टङ्किका**] पत्थर काटने का अस्त्र, टाँकी; (सम्मत्त २२७)।

टक्क वि [**टक्क**] १ टक्क-देशीय; २ पुं. भाट की एक जाति; (कुप्र १२)।

टक्करा स्त्री [**दे**] टकोर, मुंड सिर में उंगली का आघात; (वव १ टी)।

टच्चक पुं [**दे**] लकडी आदि के आघात का आवाज; (कुप्र ३०६)।

टलवल अक [**दे**] १ तड़फडना। २ घबराना, हैरान होना। टलवलंति; (धर्मवि ३८)। वकृ—**टलवलंत**; (सिरि ६०८)।

टलिअ वि [**दे**] टला हुआ, हटा हुआ; (सिरि ६८३)।

टहरिय वि [**दे**] ऊँचा किया हुआ; "टहरियकन्नो जाओ मिगुव्व गीइं कहं सोउं" (धर्मवि १४७; सम्मत्त १५८)।

टिल्लिक्किय वि [**दे**] विभूषित; (धर्मवि ५१)।

टुप्परग न [**दे**] जैन साधु का एक छोटा पात्र; (कुलक ११)।

टेंट पुं [**दे**] १ मध्य-स्थित मणि-विशेष; २ वि. भीषण; (कप्पू)।

टेंटा स्त्री [**दे**] १ अक्षि-गोलक; २ छाती का शुष्क व्रण; (कप्पू)।

टेंबरुय न [**दे**] फल-विशेष, (आचा २, १, ८, ६)।

टोल पुं [**दे**] १ टिड्डी, टीड़ी; (पव २)। २ यूथ; (कुप्र ५८)।

——०००——

ठ

ठक्कार पुं [**ठःकार**] 'ठ' अक्षर;

"तम्मि चलंतें करिमयसित्ताइ महीइ तुरगखुरसेणी।
लिहिया रिऊण विजए मंती ठक्कारपंति व्व"
(धर्मवि २०)।

ठग } सक [**स्थग्**] बंद करना, ढकना। ठगेइ, ठएइ;
ठय } (सट्ठि २३ टी; सुख २, १७)।

ठयण न [**स्थगन**] बंद करना; "अच्छिठयणं च" (पंचा २, २५)।

ठवणा स्त्री [**स्थापना**] वासना, (णंदि १७६)।

ठाण न [**स्थान**] १ कुंकण देश का एक नगर, (सिरि ६३९)। २ तेरह दिन का लगातार उपवास; (संबोध ५८)।

ठाणग न [**स्थानक**] शरीर की चेष्टा-विशेष; (पंचा १८, १५)।

ठाय पुं [**स्थाय**] स्थान, आश्रय; (सुख २, १७)।

ठुक्क सक [**हा**] त्याग करना। ठुक्कइ; (प्राकृ ६३)।

——०००——

ड

डंकिय देखो **डक्क**=दष्ट; (वै ८९)।

डंडगा स्त्री [**दण्डका**] दक्षिण देश का एक प्रसिद्ध अरण्य; (सुख २, २७)।

डंभण न [**दम्भन**] वंचना, ठगाई; (पव २)।

डंस पुं [**दंश**] १ दन्त-क्षत; २ सर्प आदि का काटा हुआ घाव; ३ दोष; ४ खण्डन; ५ दाँत; ६ वर्म, कवच; ७ मर्म-स्थान; (प्राकृ १५)।

डंसण पुंन [**दंशन**] वर्म, कवच; "डंसणो" (प्राकृ १५)।

डल्ला स्त्री [**दे**] डाला, डाली; (कुप्र २०६)।

डवडव अ [**दे**] ऊँचा मुह रख कर वेगसे इधर उधर गमन; (चंड)।

डसण वि [**दशन**] काटने वाला; (सिरि ६२०)।

डहरक पुं [**दे**] १ वृक्ष-विशेष; २ पुष्प-विशेष; "डहरक-फुल्लगुरत्ता भुंजंती तप्फलं मुणासि" (धर्मवि ६७)।

डाग न [**दे**] डाल, शाखा; (आचा २, १०, २)।

डिंडिम न [**डिण्डिम**] काँसे का पात्र; (आचा २, १, ११, ३)।

डिंडुयाण न [**डिण्डुयाण**] नगर-विशेष; (कुप्र १८)।

डिंब पुं [**डिम्ब**] शत्रु-सैन्य का डर, पर-चक्र का भय; (सूअ २, १, १३)।

डिव सक [**डिप्**] उल्लंघन करना। डिवइ; (वव १)।

डोंगर देखो **डुंगर**; (ओघभा २० टी)।

डोक्करी स्त्री [**दे**] बूढ़ी स्त्री; (कुप्र ३५३)।

डोड पुं [**दे**] ब्राह्मण, विप्र; (सुख ३, १)।

डोडिणी स्त्री [**दे**] ब्राह्मणी; (अणु ४९)।

डोल पुं [**दे**] चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति; (उत्त ३६, १४८; सुख ३६, १४८)।

——०००——

ढ

ढंक्किअ देखो ढक्किअअ; (सिरि ५२६)।
ढंकुण पुं [ढङ्कुण] वाद्य-विशेष; (आचा २, ११, १)।
ढंढ पुं [ढण्ढण] एक जैन महर्षि, ढण्ढण ऋषि; (सुख २, ३१)।
ढंढ वि [दे] दाम्भिक, कपटी; (सम्मत्त ३१)।
ढक्कवत्थुल देखो ढंक-वत्थुल; (पव ४)।
ढक्किअ न [दे] बैल की गर्जना; (अणु २१२; सुख ६ १)।
ढड्डर पुं [दे] राहु; (सुज २०)।
ढलहलय वि [दे] मृदु, कोमल; (वज्जा ११४)।
ढलिय वि [दे] गिरा हुआ, स्खलित; (वज्जा १००)।
ढिंकलीआ स्त्री [दे] पात्र विशेष; (सिरि ४२६)।
ढुक्क सक [प्र+विश्] ढुकना, प्रवेश करना। ढुक्कइ; (प्राकृ ७४)।
ढुक्कलुक्क न [दे] चमडे से मढा हुआ वाद्य विशेष; (सिरि ४२६)।
ढुरुढुल्ल देखो ढुंढुल्ल=भ्रम्। वकृ—ढुरुढुल्लंत; (वज्जा १२८)।
ढोयण देखो ढोवण; (चेइय ५२; कुप्र १६८)।
ढोयणिया स्त्री [ढौकनिका] उपहार; (धर्मवि ७१)।
ढोल्ल पुं [दे] प्रिय, पति; (सरि ४७; हे ४, ३३०)।

——०००——

ण

णअंचर देखो णत्तंचर; (चंड)।
णइ स्त्री [नति] १ नमन; २ अवसान, अन्त; (राय ४६)।
णइराय न [नैरात्म्य] आत्मा का अभाव। °वाद पुं [°वाद] आत्मा के अस्तित्व को नही मानने वाला दर्शन, बौद्ध तथा चार्वाक मत; (धर्मसं ११८५)।
णउल पुं [नकुल] वाद्य-विशेष; (राय ४६)।
णउली स्त्री [नकुली] एक महौषधि; (ती ५)।
णं अ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय; १ प्रश्न; २ उपमा; (प्राकृ ७६)।
णंगल पुंन [लाङ्गल] एक देव-विमान; (देवेन्द्र १३३)।
णंगूलि देखो णंगोलि; (पव २६२)।
णंद पुं [नन्द] गोप-विशेष, श्रीकृष्ण का पालक गोपाल; (वज्जा १२२)।
णंद पुंस्त्री [नन्दा] पक्षकी पहली, षष्ठी और ग्यारहवीं तिथि; (सुज १०, १५)।
णंदण पुंन [नन्दन] १ एक देव-विमान; (देवेन्द्र १४३)। २ न. संतोष; (णंदि ४५)।
णंदणी स्त्री [नन्दनी] पुत्री, लड़की; (सिरि १४०)।
णंदतणय पुं [नन्दतनय] श्रीकृष्ण; (प्राकृ २७)।
णंदयावत्त, णंदावत्त पुंन [नन्दावर्त] १ एक देव-विमान; (देवेन्द्र १३३)। २ पुं. चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति; (उत्त ३६, १४८)। ३ न. लगातार एक्कीस दिन का उपवास; (संबोध ५८)।
णंदिघोस पुं [नन्दिघोष] वाद्य-विशेष; (राय ४६)।
णंदिल पुं [नन्दिल] आर्यमंगु के शिष्य एक जैन मुनि; (णंदि ५०)।
णंदिस्सर, णंदीसर पुं [नन्दीश्वर] १ एक द्वीप; २ एक समुद्र; (सुज १६)। ३ एक देव-विमान; (देवेन्द्र १४४)।
णक्खत्त वि [नक्षत्र] १ क्षत्रिय-जाति के अयोग्य कार्य करने वाला; (धर्मवि ३)। २ पुंन. एक देव-विमान; (देवेन्द्र १४३)।
णख देखो णक्ख; (कुप्र ५८)।
णग्ग देखो णग; (तंदु ४५)।
णज्ज वि [न्याय्य] न्याय-संगत; (प्राकृ १६)।
णट्ठ पु [नष्ट] १ एक नरक-स्थान; (देवेन्द्र २८)। २ न. पलायन; (कुप्र ३७)।
णड देखो णट्ट=नट्। णडइ; (प्राकृ ६६)।
णड्डूल न [नड्डुल] १ नगर-विशेष; (मोह ८८)। २ पुं. देश-विशेष; (ती १५)।
णत्ति स्त्री [ज्ञप्ति] ज्ञान; (धर्मसं ८२८; णंदि ६७ टी)।
णत्तुणिअ पुं [नप्तृ] १ पौत्र; २ प्रपौत्र; (दस ७, १८)।
णत्थियवाइ वि [नास्तिकवादिन्] आत्मा आदि के अस्तित्व को नहीं मानने वाला; (धर्मवि ४)।
णद्ध वि [नद्ध] कवचित, वर्मित; (धर्मवि २७)।
णभसूरय पुं [नभःशूरक] कृष्ण पुद्गल-विशेष, राहु; (सुज २०)।
णमोयार देखो णमोक्कार; (चंड)।

णयचक्क न [**नयचक्र**] एक प्राचीन जैन प्रमाण-ग्रन्थ; (सम्मत्त ११७)।

णरइंदय पुं [**नरकेन्द्रक**] नरक-स्थान विशेष; (देवेन्द्र १)।

णरकंठ पुं [**नरकण्ठ**] रत्न की एक जाति; (राय ६७)।

णरसिंह पुं [**नरसिंह**] १ बलदेव; "तत्तो लोयम्मि बलदेवो नरसिंहो त्ति पसिद्धो" (कुप्र १०३)। २ एक राज-कुमार; (कुप्र १०६)।

णरुत्तम पुं [**नरोत्तम**] श्रीकृष्ण; (सिरि ४२)।

णलिण न [**नलिन**] १ लगातार तेईस दिन का उपवास; (संबोध ५८)। २ पुंन. एक देव-विमान; (देवेन्द्र १३२; १४२)।

णवकारसी स्त्री [**नमस्कारसहित**] प्रत्याख्यान-विशेष, व्रत-विशेष; (संबोध ५७)।

णवपय न [**नवपद**] नमस्कार-मन्त्र; (सिरि ५७९)।

णवय देखो **णव-ग**; (पंचा १७, ३०)।

णवर सक [**कथ्**] कहना। कर्म—णवरिज्जइ; (प्राकृ ७७)।

णवरत्ति स्त्री [**नवरात्रि**] नव दिनों का आश्विन मास का एक पर्व; (सट्ठि ७८ टी)।

णवरि अ [**दे**] शीघ्र, जल्दी; (प्राकृ ८१)।

णवरु देखो **णवर**; (चंड)।

णवीण वि [**नवीन**] नूतन, नया; (मोह ८३; धर्मवि १३२)।

णहंसि वि [**नखवत्**] नख वाला; (दस ६, ६५)।

णहि वि [**नखिन्**] ऊपर देखो; (अणु १४२)।

णाअअ / **णाअक्क** } देखो **णायग**; (प्राकृ २६)।

णाइल्ल देखो **णाइल**; (विचार ५३४)।

णागदत्ता स्त्री [**नागदत्ता**] चौदहवें जिनदेव की दीक्षा-शिबिका; (विचार १२९)।

णागपरियावणिया स्त्री [**नागपरियापनिका**] एक जैन शास्त्र; (णंदि २०२)।

णागिणी स्त्री [**नागी**] १ नागिन; २ एक वणिक्-पुत्री; (कुप्र ४०८)।

णागोद पुं [**नागोद**] एक समुद्र; (सुज्ज १९)।

णाम अ [**नाम**] संभावना-सूचक अव्यय; (सूअ १, १२, ३)।

णामागोत्त न [**नामगोत्र**] १ यथार्थ नाम; २ नाम तथा गोत्र; (सुज्ज १९)।

णाय पुं [**न्याय**] १ अक्षपाद-प्रणीत न्याय-शास्त्र; (सुख ३, १; धर्मवि ३८)। २ सामायिक आदि षट्-कर्म; (अणु ३१)।

णाय पुं [**नाद**] अनुनासिक वर्ण, अर्धचन्द्राकार अक्षर-विशेष; (सिरि १९६)।

णाय वि [**न्याय्य**] न्याय-युक्त; (सूअ १, १३, ६)।

णाय पुं [**ज्ञात**] १ भगवान महावीर; (सूअ १, २, २, ३१)। २ वि. प्रसिद्ध; (सूअ १, ६, २१)।

णायग पुं [**नायक**] हार का मध्य मणि; (स ६८६)।

णाराय पुं [**नाराच**] तोलने की छोटी तराजू, काँटा; "नाराय निरक्खर लोहवंत दोमुह य तुज्झ किं भणिमो। गुंजाए समं कणयं तोलंतो कह न लज्जेसि ?" (वज्जा १५८; १५९)।

णारायण पुं [**नारायण**] एक ऋषि; (सूअ १, ३, ४, २)।

णालय न [**नालक**] द्यूत-विशेष; (मोह ८६)।

णालि स्त्री [**नालि**] परिमाण-विशेष, अंजली; (श्रावक ३५)।

णालिआ / **णालिगा** } स्त्री [**नालिका**] १ नाल, डण्डी; (दस ५, २, १८)। २ परिमाण-विशेष, दंड, धनुप; (अणु १५७)। ३ अर्ध मुहूर्त का समय; "दो नालिया मुहुत्तो" (तदु ३२)। ४ नली; "जह उ किर नालिगाए धणिअं मिदुरूयपोम्हभरियाए" (धर्मसं ९८०)। °**खेड्ड** न [°**खेल**] द्यूत-विशेष; (जं २ टी—पत्र १३९)।

णाली स्त्री [**नाली**] १ द्यूत-विशेष; (दस ३, ४)। २ तीन हाथ और सोलह अंगुल लंबी लट्ठी; (पव ८१)।

णालीया देखो **णालिआ**; (सूअ १, ९, १८)।

णावा स्त्री [**दे**] प्रसृति, अंजली, परिमाण-विशेष; (पव १०६ टी)।

णासिक देखो **णासिक्क**; (णंदि १६५)।

णाहड पु [**नाहट**] एक राजा का नाम; (ती १५)।

णिअ देखो **णिव**; (सूअ २, ६, ४५)।

णिअंटिअ वि [**नियन्त्रित**] १ नियमित; २ न प्रत्या-ख्यान-विशेष, हृष्ट ने या रोगीने अमुक दिन में अमुक तप करने का किया हुआ नियम; (पव ४)।

णिअंठ पु [**निग्रन्थ**] भगवान बुद्ध; (कुप्र ४४२)।

णिअंत वि [**नियत**] स्थिर; (सूअ १, ८, १२)।

णिअंत वि [निर्यत्] बाहर निकलता; (सम्मत्त १५६)।
णिअंसणी स्त्री [निवसनी] वस्त्र, कपड़ा; (पव ६२)।
णिअच्छ सक [नि+गम्] १ संगत होना, युक्त होना। २ सक. जानना, प्राप्त करना। निअच्छइ; (सूअ १, २, १, १०; १, ६, २. १५; १, १, २, १८)।
णिअट्टि वि [निवर्तिन्] निवृत्त होने वाला; (धर्मसं ८२४)।
णिअडि वि [निकृतिन्] मायावी, कपटी; (दस ६, २, २)।
णिअडि स्त्री [निकृति] की हुई ठगाई को ढकना; (राय ११४)।
णिअड्ढ सक [नि+कृष्] खींचना। संकृ—नियड्ढिऊणं; (सम्मत्त २२८)।
णिअण वि [नग्न] नंगा, वस्त्र-रहित; (पव २७१)।
णिअत्त वि [निकृत्त] काटा हुआ, छिन्न; (भग ६, ३३)।
णितिय वि [नित्य] शाश्वत, अ-विनश्वर; "सुक्खं नमंसणाए" (तंदु ३३; सूअ १, १, १, १६)।
णिआम सक [नि+यमय्] १ रोकना। २ वचन से कराना। ३ शरीर से कराना। निआमे, (आचा २, १३, १)।
णिआ स्त्री [निदा] प्राणि-हिंसा, (पिंड १०३)।
णिआण न [निदान] १ आरम्भ, सावद्य व्यापार; (सूअ १, १०, १)। २ रोग-कारण; (पिंड ४५९)।
णिआम देखो णिकाम; (सूअ १, १०, ८)।
णिआय पुं [नियाग] प्रशस्त धर्म; (सूअ १, १, २, २०)।
णिइअ वि [नैत्यिक] नित्य का, "निइए पिंडे दिज्जइ" (आचा २, १, १, ६)।
णिउप्प वि [निष्कृप] निर्दय; (प्राकृ २६)।
णिउज्ज न [न्युब्ज] आसन-विशेष; (णादि १२८ टी)।
णिउत्त वि [निवृत्त] विरत, उपरत; (प्राकृ ८)।
णिउत्ति स्त्री [निवृत्ति] विराम, (प्राकृ ८)।
णिएअ वि [नियत] नियम-युक्त; "अणिएअचारी" (सूअ १, ६, ६; दसनू २, ५)।
णिओइअ वि [नैयोगिक] नियोग-सम्बन्धी; (प्राकृ ६)।
णिओग पुं [नियाग] मोक्ष, मुक्ति; (सूअ १, १६, ५)।
णिदूणया देखो णिदूणा; (उत्त २६, १)।
णिकस देखो णिहस; (अणु २१२)।
णिकाम सक [नि+कामय्] अभिलाष करना। णिकामएज्जा; (सूअ १, १०, ११)। वकृ—णिकामयंत; (सूअ १, १०, ११)।
णिकाम न [निकाम] हमेशा परिमाण से ज्यादः खाया जाता भोजन; (पिंड ६४५)।
णिकाममीण वि [निकाममीण] अत्यन्त प्रार्थी; (सूअ १, १०, ८)।
णिकाय देखो णिकाइय; "जेण खमासहिएणं कएण कम्माणवि निकायाणं" (सिरि १२९२)।
णिकायण न [निकाचन] निमन्त्रण; (पिंड ४७५)।
णिक्क देखो णिक्ख=निष्क; (प्राकृ २१)।
णिक्कंखि वि [निष्काङ्क्षिन्] अभिलाषा-रहित; (उत्त १९, ३४)।
णिक्कंति स्त्री [निष्क्रान्ति] निष्क्रमण, बाहर निकलना; (प्राकृ २१)।
णिक्कंद सक [नि+कन्द्] उन्मूलन करना। निक्कंदइ; (सम्मत्त १७४)।
णिक्कम्म वि [निष्कर्मन्] कर्म-रहित, मुक्ति-प्राप्त; (द्रव्य १४)।
णिक्करण न [निकरण] १ तिरस्कार; २ परिभव; ३ विनाश; (संबोध १६)।
णिक्कस अक [निर्+कस्] बाहर निकलना। णिक्कसे; (सूअ १, १४, ४)।
णिक्कारण वि [निष्कारण] निरुपद्रव; "नेस निक्कारणो दहो" (पिंड ५१९)।
णिक्कालिअ देखो णिक्कासिय; (ती १५)।
णिक्कास पुं [निष्कास] नीकास, बाहर निकालना; (धर्मवि १४९)।
णिक्खणण न [निखनन] गाड़ना; (कुप्र १९१)।
णिक्खय वि [निखात] गाड़ा हुआ; (कुप्र २५)।
णिक्खिव सक [नि+क्षिप्] नाम आदि भेदों से वस्तु का निरूपण करना। निक्खिवे; (अणु १०)। भवि—निक्खिविस्सामि; (अणु १०)।
णिक्खुड पुंन [निष्कुट] १ कोटर, विवर; (तंदु ३९)। २ पृथिवी-खण्ड; (विसे १५३८; पंच २, ३२)। ३ गृहाराम, उपवन, घर के पास का बगीचा; (राय २५)।
णिखय देखो णिक्खय; (कुप्र २२३)।

णिगड सक [**निगडय्**] नियन्त्रित करना, बाँधना। संकृ—**निगडिऊण**; (कुप्र १८७)।
णिगडिय वि [**निगडित**] नियन्त्रित; (हम्मीर ३०)।
णिगण वि [**नग्न**] नंगा, वस्त्र-रहित; (सूत्र १, २, १, ९)।
णिगाम देखो **णिकाम**=निकाम; (पिंड ६४५)।
णिगिणिण न [**नाग्न्य**] नंगापन, नग्नता; (उत्त ५, २१; सुख ५, २१)।
णिग्गमिय वि [**निर्गमित**] गमाया हुआ, पसार किया हुआ; (सम्मत्त १२३)।
णिग्गहीय देखो **णिग्गहिय**; (सुख १, १)।
णिग्गाल पुंन [**निर्गाल**] निचोड, रस; "सीसघडीनिग्गालं" (तंदु ४१)।
णिग्घाय पुं [**निर्घात**] राक्षस-वंश का एक राजा; (पउम ६, २२४)।
णिचय पुं [**निचय**] संग्रह, चय; (सूत्र १, १०, ९)।
णिच्चुज्जोअ पुं [**नित्योद्द्योत**] नन्दीश्वर द्वीप के मध्य का दक्षिण दिशा में स्थित एक अञ्जनगिरि; (पव २६९ टी)।
णिच्चोय सक [**दे**] निचोड़ना। निच्चोयइ; (कुप्र २१५)।
णिच्छुभ पुं [**निक्षेप**] निष्कासन; (पिंड ३७५)।
णिच्छुह सक [**नि+क्षिप्**] डालना। निच्छुहइ; (सुख ७, ११)।
णिच्छोडिअ वि [**निच्छोटित**] सफा किया हुआ; (पिंड २७६)।
णिजुंज देखो **णिउंज**=नि+युज्। निजुंजइ; (कुप्र ३४८)।
णिज्जव वि [**निर्याप**] निर्वाह कराने वाला; (पंचा १५, १४)।
णिज्जविउ वि [**निर्यापयितृ**] ऊपर देखो; (पव ६४)।
णिज्जामण न [**निर्यापन**] बदला चुकाना; "वेरनिज्जामणा" (वव १)।
णिज्जामय पुं [**निर्यामक**] १ बीमार की सेवा-शुश्रूषा करने वाला मुनि; (पव ७१)। २ वि. आराधना-कारक; (पव—गाथा १७)।
णिज्जुंज सक [**निर्+युज्**] उपकार करना; (पिंड २६ टी)।
णिज्जूढ वि [**निर्यूढ**] रहित; "निट्ठाणं रसनिज्जूढं" (दस ८, २२)।
णिज्जूहग वि [**निर्यूहक**] ग्रन्थान्तर से उद्धृत करने वाला; (दसनि १, १४)।
णिज्जूहण न [**निर्यूहण**] देखो **णिज्जूहणा**; (उत्त ३६, २५१; पव २)।
णिज्जूहिअ देखो **णिव्वूढ**; (दसनि १, १५)।
णिज्जूहिअ वि [**निर्यूहित**] रहित; (पव १३४)।
णिज्जोअ / **णिज्जोग** पुं [**निर्योग**] १ उपकरण, साधन; (राय ४५; ४६; पिंड २६)। २ उपकार; (पिंड २६)।
णिज्झ अक [**स्निह्**] स्नेह करना। णिज्झइ; (प्राकृ २८)।
णिट्ठाण न [**निष्ठान**] सर्व-गुण-युक्त भोजन; (दस ८, २२)।
णिट्ठीवण स्त्रीन [**निष्ठीवन**] १ थूक, खखार; २ थूकना; (सट्ठि ७८ टी); स्त्री—°णा; (वव १)।
णिट्ठुअ न [**निष्ठ्यूत**] थूक; (कुलक ३०)।
णिट्ठुयण देखो **निट्ठीवण**; (चेइय ६३)।
णिट्ठुह अक [**नि+ष्ठीव्**] थूकना। निट्ठुहसी; (तंदु ४१)।
णिण्णी सक [**निर्+णी**] निश्चय करना। संकृ—**निण्णइउं**; (धर्मवि १३६)।
णिण्हवण वि [**निह्नवन**] अपलाप-कर्ता; (संबोध ५)।
णिद्दरिसिम वि [**निदर्शित**] उपदर्शित, बतलाया हुआ; (धर्मसं १०००)।
णिदाह पुं [**निदाघ**] तीसरी नरक का एक नरक-स्थान; (देवेन्द्र ८)।
णिदेस पु [**निदेश**] आज्ञा, हुकुम; (कुप्र ४२९)।
णिदोच्च न [**दे**] १ भय का अभाव; २ स्वास्थ्य, तंदुरस्ती; (पव २६८)।
णिद्दूसण वि [**निर्दूषण**] निर्दोष; (धर्मवि २०)।
णिद्धाड सक [**निर्+धाटय्**] बाहर निकाल देना। कर्म—निद्धाडिज्जइ; (संबोध १६)।
णिधत्त वि [**निधत्त**] निकाचित, निश्चित; (ठा ८—पत्र ४३४)।
णिन्नाम सक [**निर्+नमय्**] नमाना। णिन्नामए; (सूत्र १, १३, १५)।
णिन्नीय देखो **णिण्णीअ**; (धर्मवि ५)।
णिपट्ट न [**दे**] गाढ; (प्राकृ ३८)।
णिपा सक [**नि+पा**] पीना। संकृ—**निपीय**; (सम्मत्त

२८)।

णिरवन्नाणिअ देखो णिरवन्न; (प्राकृ १६)।

णिरंगिण वि [निरिङ्गित] इङ्गित-रहित; (देवेन्द्र २६०)।

णिरंहु वि [निरंहस्] निष्पाप, पवित्र; "भद्दं व वाहिओ सो निरंहसेणा धवलहोसा" (धर्मवि १४६)।

णिरागार वि [निराकार] आकार-रहित; "निरागार-पयाइ भणोहि पुव्वसाहिणिज्जिसहत्था" (संबोध ३८)।

णिरन्नय पुं [निरन्वय] अन्वय-रहित; (धर्मसं ४६६)।

णिरप्पणिअ वि [निरात्मीय] अ-स्वकीय, परकीय; (कुप्र ८६)।

णिरवह सक [निर्+वह्] निर्वाह करना। निरवहेज्जा; (संबोध ३६)।

णिरसण न [निरसन] निराकरण; (चेइय ७२४)।

णिरस्साय वि [निरास्वाद] स्वाद-रहित; (उत्त १६, २८)।

णिरस्साविं वि [निरास्राविन्] नहीं टपकने वाला, छिद्र-रहित; स्त्री—°णी; (उत्त २३, ७१; सुख २३, ७१)।

णिरहेउ
णिरहेउग } वि [निर्हेतु, °क] निष्कारण, कारण-रहित; (धर्मसं ४४३; ४१७; ४००)।
णिरहेउग

णिराउस वि [निरायुष्] आयु-रहित; (प्राकृ ३१)।

णिराकरिअ वि [निराकृत] निषिद्ध; (धर्मवि १४६)।

णिरागरण न [निराकरण] निरास, निवारण, निषेध; (पंचा १७, १६)।

णिराय वि [दे] अत्यन्त, प्रचुर; (सुख २, ७)।

णिरालंबण वि [निरालम्बन] आशंसा-रहित; (आचा २, १६, १२)।

णिरालम्ब देखो णिरालंब; (आचा २, १६, ६)।

णिरिंद देखो णरिंद; (सुज्ज १०, १२)।

णिरुत्त वि [निरुक्त] १ प्रयुक्त; "पति निरुक्ता भार्या भवत्य नवाद फलिनीयो" (सिरि ८४६)। २ व्युत्पत्ति-युक्त; (सिरि ३१)।

णिरुत्तिय न [नैरुक्तिक] निरुक्ति, व्युत्पत्ति; "नो हरणा नागीर्णा निरुत्तियं नेरइयाण" (संबोध १८)।

णिरुद्ध वि [निरुद्ध] थोड़ा, संक्षिप्त; (सूअ १, १४, २३)।

णिरुवक्कम वि [निरुपक्रम] जिसमें न कुछ भी उपक्रम न लगे, अनिवारणीय; (धर्मसं ७४१; १२००)।

णिरूवग वि [निरूपक] प्रतिपादक; (सम्मत्त १९०)।
णिल्लिह सक [निर्+लिख्] घिसना। णिल्लिहिज्जा; (आचा २, ३, २, ३)।
णिवज्ज अक [नि+सद्] सोना। णिवज्जइ: (उत्त २७, ५)।
णिवट्ट सक [नि+वर्तय्] निवृत्त करना। निवट्टएज्जा; (सूअ १, १०, २१)।
णिवट्टिम वि [निर्वर्तित] पका हुआ, फलित, सिद्ध; (आचा २, ४, २, ३)।
णिवय अक [नि+पत्] समाना, अन्तर्भूत होना। निवयंति; (पव ८४ टी)।
णिविन्न वि [निर्विज्ञ] विशिष्ट ज्ञान से रहित, (तंदु ५५)।
णिवुज्झमाण वि [न्युह्यमान] नीयमान, जो ले जाया जाता हो वह; (आचा २. ११, ३)।
णिवुट्ठ वि [निवृष्ट] बरसा हुआ; (आचा २, ४, १, ४)।
णिवुदि स्त्री [निवृति] परिवेष्टन; (प्राकृ १२)।
णिवूढ देखो णिव्वूढ; (सूअ २, ७, ३८)।
णिवेसण न [निवेशन] गृह, घर; (उत्त १३, १८)।
णिव्व न [नीव्र] छप्पर के ऊपर का खपरैल; (णंदि १५९)।
णिव्वट्टिम देखो णिवट्टिम; (दस ७, ३३)।
णिव्वत्त वि [निर्वर्त्य] बनाने योग्य, साध्य; (प्राकृ २०)।
णिव्वाण न [निर्वाण] तृप्ति; (दस ५, २, ३८)।
णिव्वावय वि [निर्वापक] आग बुझाने वाला; (सूअ १, ७, ५)।
णिव्विंद सक [निर्+विन्द्] अच्छी तरह विचारना। निव्विंदए; (दस ४. १६; १७)।
णिव्विंद सक [निर्+विद्] घृणा करना। णिव्विंदेज; (सूअ १, २, ३, १२)।
णिव्विगइय देखो णिव्विइय; (संबोध ५८)।
णिव्विगप्पग न [निर्विकल्पक] बौद्ध-प्रसिद्ध प्रत्यक्ष ज्ञान-विशेष; (धर्मसं ३१३)।
णिव्विज्ज वि [निर्विद्य] मूर्ख; (उत्त ११, २)।
णिव्विट्ठ वि [निर्दृष्ट] उपार्जित; "नानिव्विट्ठं लब्भइ" (पिंड ३७०)।
णिव्विद देखो णिव्विंद=निर्+विद्; (सूअ १, २, ३, १२)।
णिव्विय देखो णिव्विइअ; (संबोध ५७, कुलक १२)।
णिव्विस सक [निर्+विश्] उपभोग करना; (पिंड ११९ टी)।
णिव्विसय वि [निर्वेशक] उपभोग-कर्ता, (पिंड ११९)।
णिव्वी स्त्री [निर्विकृति] तप-विशेष; (संबोध ५७)।
णिव्वीय देखो णिव्विइअ; (संबोध ५७)।
णिव्वीरा स्त्री [निर्वीरा] पुत्र-रहित विधवा स्त्री; (मोह ४९)।
णिव्वुइकरा स्त्री [निर्वृतिकरा] भगवान सुमतिनाथ की दीक्षा-शिविका; (विचार १२९)।
णिव्वुड वि [निर्वृत] अचित्त किया हुआ; (दस ३, ६; ७)।
णिव्वुड्ड देखो णिवुड्ड। वकृ—**णिव्वुड्ढेमाण**, (सुज्ज ६—पत्र ८०)। संकृ—**णिव्वुड्ढेत्ता**; (सुज्ज ६)।
णिव्वुदि देखो णिव्वुइ; (प्राकृ ८)।
णिव्वूढ वि [निर्व्यूढ] उसी ग्रन्थ से उद्धृत कर बनाया हुआ ग्रन्थ; (दसनि १, १२)।
णिव्वेढ सक [निर्+वेष्ट्य्] त्याग करना। णिव्वेढइ; (सुज्ज २, १)।
णिव्वेअ पुं [निर्वेद] मुक्ति की इच्छा; (सम्मत्त १९९)।
णिव्वेद देखो णिव्वेअ; (उत्त २९, २)।
णिव्वेहणिया स्त्री [निर्वेधनिका] वनस्पति-विशेष; (सूअ २, ३, १६)।
णिसग्ग न [नैसर्ग] जात्यन्ध की तरह स्वभाव से अज्ञता; (संबोध ५२)।
णिसज्ज पुं. देखो णिसज्जा; "निसज्जे वियडणाए" (वव १)।
णिसम्म अक [नि+सद्] १ बैठना। २ सोना, शयन करना। णिसम्मउ, (से ६, १७)। हेकृ—**णिसम्मिउं**; (से ५, ४२)।
णिसह सक [नि+सह्] सहन करना। णिसहइ: (प्राकृ ७२)।
णिसा स्त्री [निशा] अन्धकार वाली नरक-भूमि; (सूअ १, ५, १, ५)।
णिसिय वि [न्यस्त] स्थापित; (धर्मवि ७३)।

णिसियण न [निषदन] उपवेशन; (पव २)।
णिसीहिअ वि [नैशीथिक] निज के लिए लाया गया है ऐसा मुनि उसका अपना भोजनादि पदार्थ; (पिंड ३३६)।
णिसीहिया स्त्री [नैषेधिकी] १ शव-परिष्ठापन-भूमि, श्मशान भूमि; (अणु २०)। २ बैठने की जगह; (राय ६[illegible])।
णिसुढ देखो णिसढ=नि+सद्। णिसुढइ; (प्राकृ ७२)
णिसेय देखो णिसेय; (पंच ५, ४६)।
णिसेज्जा स्त्री [निषद्या] वस्त्र, कपड़ा; (पव १२७ टी)।
णिसेहव्व वि [निषेद्धव्य] निषेध-योग्य; (धर्मसं ६६३)।
णिसेव सक [नि + सेव्] आचरना। णिसेवए; (अज्झ १९३)।
णिसेवग देखो णिसेवय; (सूअ २, ६, ५)।
णिसेवणा स्त्री [निषेवणा] सेवा, भजना; (उत्त ३२, [illegible])।
णिसेवा स्त्री [निषेवा] ऊपर देखो; (सम्मत्त १५५; संबोध ३४)।
णिस्सक्क सक [निर्+ष्वष्क्] कम करना, घटाना। कृ—निस्सक्कियव्व; (आचा २, १, ७, २)।
णिस्सय पुं [निश्रय] देखो णिस्सा; (संबोध १६)।
णिस्साण पुन [दे] वाद्य-विशेष, निशान; "वज्जिरनिस्साण-[illegible]" (धर्मवि ५६)।
णिस्सिन्न वि [निश्रित] १ निश्रय से बद्ध; (सूअ २, ६, २२)। २ पक्षपाती, रागी; (वव १)।
णिस्सेज्जा देखो णिसेज्जा; (पव १२७)।
णिहाय पुं [निहाद] अव्यक्त शब्द; (सुख ४, ६)।
णिहि पुंस्त्री [निधि] लगातार नव दिन का उपवास; (संबोध ५८)।
णिहिन्नय देखो णिहिन; (सुपा २, ४३)।
णिहीण वि [निहीन] न्यून; (कुप्र ४५४)।
णिहे अ [न्यग्] नीचे; (सुज्ज १, ५, १, ५)।
णीखय वि [निःक्षत] निश्चित, सघर्ण; "नव नीलव-[illegible]" (विचार ८)।
णीव पुं [नीप] १ वृक्ष-विशेष; २ न. फल-विशेष; (दस ५, २, २१)।
णीमम वि [निर्मम] ममत्व-रहित; (अज्झ १०६)।
णीरसजल न [नीरसजल] आचाम्ल तप; (संबोध ५८)।
णील वि [नील] कच्चा, आर्द्र; (आचा २, ४, २, ३)। °केसी स्त्री [°केशी] तरुणी, युवति; (वव ४)।
णीलुय पुं [दे] अश्व की एक उत्तम जाति; (सम्मत्त २१६)।
णीवार पुं [नीवार] व्रीहि-विशेष; (सूअ १, ३, २, १६)।
णीसरण न [निःसरण] फिसलन, रपटन; (वव ४)।
णीसाइ वि [निःस्वादिन्] स्वाद-रहित; (प्रवि १०)।
णीसाण देखो णिस्साण=(दे); (धर्मवि ८०)।
णीहट्टु अ [निःसृत्य] बाहर निकल कर; (आचा २, १, १०, ४)।
णोहास वि [निर्हास] हास-रहित; (उत्त २२, २८)।
णु अ [नु] १ निन्दा-सूचक अव्यय; (दस २, १)। २ विशेष; (सिरि ६५१)।
णुमज्ज अक [शी] सोना। णुमज्जइ; (प्राकृ ७४)।
णूतण वि [नूतन] नया, नवीन; (मन ३०)।
णूम न [दे] १ कर्म; (सूअ १, २, १, ७)। २ गर्त, गढहा; (आचा २, ३, ३, २)। °गिह न [°गृह] भूमि-गृह; (आचा २, ३, ३, १)।
णेआउय } वि [नेतृ] १ ले जाने वाला; (सूअ १, ८,
णेउ } ११)। २ प्रणेता, रचयिता; (सूअ १, ६, ७)।
णेउणिअ देखो णेउण्ण; (दस ६, २, १३)।
णेत्त पुं [नेत्र] वृक्ष-विशेष; (सूअ २, २, १८)।
णेम पुंन [दे] कार्य, काम, काज; (पिंड ७०)।
णेरइअ वि [नैर्ऋतिक] नैर्ऋत कोण, दक्षिण-पश्चिम विदिशा; (अणु २१५)।
णेलय पुं [दे. नेलक] रूपया; (पव १११)।
णेहल वि [स्नेहल] स्नेही, स्नेह-युक्त; "पियराइं नेहलाइं, अणुरत्ताओ गिहिणीओ" (धर्मवि १२५)।
णो अ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ खेद; २ आमन्त्रण; ३ विचित्तता; ४ वितर्क; ५ प्रकोप; (प्राकृ ८०)।
णो° पुं [नृ] पुरुष, नर; "णोवावाराभावम्मि अपणाहा सम्मि चेव उवलद्धी" (धर्मसं १२५३; १२५६)।
णोगोण्ण वि [नोगौण] अयथार्थ (नाम); (अणु १४०)।
णोजुग न [नोयुग] न्यून युग; (सुज्ज ११)।

ण्हाणमल्लिया स्त्री [**स्नानमल्लिका**] स्नान-योग्य पुष्प-विशेष, मालती-पुष्प; (राय ३४)।

ण्हाणिय वि [**स्नानित**] जिसने स्नान क्रिया हो वह; (पव ३८)।

ण्हु अ [**दे**] निश्चय-सूचक अव्यय; (जीवस १८०)।

ण्हुहा देखो **ण्हुसा**; (सिरि २५१)।

——०००——

त

त° देखो **तया**=त्वच्। °**द्दोसि** वि [°**दोषिन्**] १ चर्म-रोगी; २ कुष्ठी; (पिड ४७५)।

तअ देखो **तव**=तपस्; (हास्य १३५)।

तइ वि [**तति**] उतना; (वव १)।

तइया स्त्री [**तृतीया**] तीसरी विभक्ति; (चेइय ६८३)।

तउस न [**त्रपुष**] खीरा, ककड़ी; (दे ८, ३५)।

तंतवग } पु [**तान्तवक**] चतुरिन्द्रिय जतु की एक **तंतवय** } जाति; (सुख ३६, १४६; उत्त ३६, १४६)।

तंतिसम न [**तन्त्रीसम**] तन्त्री-शब्द के तुल्य या उससे मिला हुआ गीत, गेय काव्य का एक भेद, (दसनि २, २३)।

तंस पुं [**त्र्यंश**] तीसरा हिस्सा; (पंच ५, ३७, ३६; कम्म ५, ३४)।

तक्कलि स्त्री [**दे**] कदली-वृक्ष, केले का गाछ; (आचा २, १, ८, ६)।

तगरा स्त्री [**तगरा**] एक नगरी का नाम; (सुख २, ८)।

तच्छ } वि [**तष्ट**] छिला हुआ, तनूकृत; "ते भिन्न-**तच्छिअ** } देहा फलगं व तच्छा" (सूअ १, ५, २, १४; १, ४, १, २१; उत्त १६, ६६)।

तज्ज वि [**तज्ज**] उससे उत्पन्न; (धर्मवि १२७)।

तट्टिगा स्त्री [**दे. तट्टिका**] दिगंबर जैन साधु का एक उपकरण; (धर्मस १०४६; १०४८)।

तट्टि वि [**तष्टिन्**] तनूकृत, कृशता वाला; (सूअ १, ७, ३०)।

तट्ठु पुं [**त्वष्टृ**] अहोरात्र का बारहवाँ मुहूर्त; (सुज्ज १०, १३)।

तड्डु स्त्री [**तर्दु**] काठ की करछी; (प्राकृ २०)।

तणग वि [**तृणक**] तृण का बना हुआ; (आचा २, २, ३, १४)।

तणहार } पुं [**तृणहार**] १ त्रीन्द्रिय जन्तु की एक **तणहारय** } जाति; (उत्त ३६, १३८)। २ वि. घास काट कर बेचने वाला; (अणु १४६)।

तणुज देखो **तणु-य**; (धर्मवि १२८)।

तणुजम्म पुं [**तनुजन्मन्**] पुत्र; (धर्मवि १४८)।

तणुभव देखो **तणु-ब्भव**; (धर्मवि १४२)।

तण्हाइअ वि [**तृष्णित**] तृषातुर; (धर्मवि १४१)।

तत्त पुं [**तप्त**] १ तीसरी नरक-भूमि का एक नरक-स्थान; (देवेन्द्र ८)। २ प्रथम नरक-भूमि का एक नरक-स्थान ; (देवेन्द्र ४)।

तत्तट्ठसुत्त न [**तत्त्वार्थसूत्र**] एक प्रसिद्ध जैन दर्शन-ग्रन्थ; (अज्झ ७७)।

तत्तडिअ न [**दे**] रँगा हुआ कपड़ा; (गच्छ २, ४६)।

तत्थ देखो **तच्च**=तथ्य; (धर्मस ३०४; णंदि ५३)।

तद्दोसि देखो **त-द्दोसि**=त्वग्दोषिन्।

तप देखो **तव**=तपस् ; (चंड)।

तप्प पुंन [**तप्र**] नदी में दूर से बह कर आता हुआ काष्ठ-समूह; (णंदि ८८ टी)।

तप्पणग न [**दे**] जैन साधु का पात्र विशेष, तरपणी; (कुलक १०)।

तब्भत्ति अ [**दे**] शीघ्र, जल्दी; (प्राकृ ८१)।

तम अक [**तम्**] १ खेद करना। २ सक. इच्छा करना। तमइ; (प्राकृ ६६)।

तमय पुं [**तमक**] १ चौथी नरक का एक नरक-स्थान; (देवेन्द्र १०)। २ पाँचवीं नरक-भूमि का एक नरक-स्थान; (देवेन्द्र ११)।

तमस वि [**तामस**] अन्धकार वाला; (दस ५,१,२०)।

तमस देखो **तम**=तमस्; "अंतरिओ वा तमसे वा न वदई, वदई उ दीसतो" (पव २)।

तमिस पुं [**तमिस्र**] पाँचवीं नरक का एक नरक-स्थान; (देवेन्द्र ११)।

तमुकाय देखो **तमुक्काय**; (भग ६, ५—पत्र २६८)।

तम्म देखो **तम**=तम। तम्मइ; (प्राकृ ६६)।

तर अक [**तॄ**] कुशल रहना, नीरोग रहना। तरई; (पिंड ४१७)।

तरंगलोला स्त्री [**तरङ्गलोला**] बप्पभट्टिसूरि-कृत एक अद्भुत प्राकृत जैन कथा-ग्रन्थ; (सम्मत्त १३८)।

तरंगिणीनाह पुं [**तरङ्गिणीनाथ**] समुद्र, सागर; (वज्जा

१६) ; २ सूक्ष्म अंश; ३ प्रधान, श्रेष्ठ; ४ माया-बीज, [illegible]; ५ रस्सा, डोरा; (हे १, १७७)।

नारिल वि [तारिन्] तारने वाला; (सम्मत्त २३०)।

नारी स्त्री [तारी] तारक-जातीय देवी; (पत्र १६४)।

नारुग वि [तारक] तारने वाला; (चेइय ५३१)।

नालस्सम न [तारतम] गेय काव्य का एक भेद; (दसनि २, २६)।

नालिस्स देखो नारिस; (उत्त ५, ३१)।

नावण पुं [तापन] चौथी नरक-भूमि का एक नरक-स्थान; (देवेन्द्र ८)। २ वि. तपाने वाला; (वि ९७)।

तिम (अप) सक [तिम्, स्तिम्] १ आर्द्र होना। २ सक. आर्द्र करना। तिमइ; (प्राकृ १२०)।

तिअसमूरि पुं [त्रिदशसूरि] बृहस्पति; (सम्मत्त १३०)।

तिअसिंद देखो तिअसिंद; (चेइय ६१०)।

तिउक्कार न [त्रिपुष्कर] वाद्य-विशेष; (आजि ३१)।

तिउट्ट सक [त्रोटय] १ तोड़ना। २ परित्याग करना। तिउट्टिज्जा; (सूअ १, १, १, १)।

तिउडग पुंन [त्रिपुटक] धान्य-विशेष; (दसनि ६, ८; पव १५६)।

तिउर पुं [त्रिपुर] असुर-विशेष; (वि ९४)। °णाह पुं [°नाथ] वही; (वि ८७)।

तिंदुग } पुं [तिन्दुक] त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति;
तिंदुय } (उत्त ३६, १३९; सुख ३६, १३९)।

तिकम्मसंपुण्ण न [त्रिकर्मसंपूर्ण] लगातार तीन दिन का उपवास; (संबोध ५८)।

तिगिच्छायण न [तिगिच्छायन] गोत्र-विशेष; (सुज्ज १०, १६ टी)।

तिगिच्छ न [चैकित्स्य] चिकित्सा-शास्त्र; (सिरि ५६)।

तिगिच्छण न [चिकित्सन] चिकित्सा; (सिरि १८८)।

तिगिच्छायण न [तिगिच्छायन] गोत्र-विशेष; (सुज्ज १०, १६)।

तिडुव सक [ताडय्] ताड़न करना। तिडुवइ; (प्राकृ ७६)।

तिणिम वि [तैनिश] तिनिश-वृक्ष-संबन्धी, उस का; (राय ३८)।

तिप्प } सक [तिम्] १ आर्द्र होना। २ सक. आर्द्र करना। तिप्पइ; तिप्पाअइ; (प्राकृ
तिप्पाअइ }
७८)।

तितय देखो **तिअय**; (वव-१)।
तितिक्खया देखो **तितिक्खा**; (पिंड ६६६)।
तित्ति देखो **तत्ति**=दे; (सिरि २७; संबोध ६)।
तित्थ न [**तीर्थ**] प्रथम गणधर; (गांदि १३० टी)।
तित्थंकर पु [**तीर्थङ्कर**] देखो **तित्थ-यर**; (चेइय ६५१)।
तिपन्न देखो **ते-वण्ण**; (पव ५, १८)।
तिप्प सक [**तिप्**] देना। तिप्पइ; (पिंड २६७)।
तिप्प अक [**तृप्**] तृप्त होना। वकृ—**तिप्पंत**; (पिंड ६४७)।
तिप्प पुंन [**त्रेप**] अपान आदि धोने की क्रिया, शौच; (गच्छ २, ३२)।
तिप्पण न [**तेपन**] पीड़न, हैरानी; (सूअ २, २, ५५)।
तिप्पाय न [**त्रिपाद**] तप-विशेष, नीवी; (संबोध ५८)।
तिम्म सक [**तिम्**] १ आर्द्र करना। २ अक. गिला होना। तिम्मइ; (प्राकृ ७४)। संकृ—**तिम्मेउं**; (पिंड ३५०)।
तिया स्त्री [**स्त्रिका**] स्त्री, महिला; "होही तुह तियवज्झा फुडं जओ गत्थि मे जीयं" (सुख ४, ६)।
तियाल देखो **ते-आलीस**; (कम्म ६, ६०)।
तिरच्छ देखो **तिरिच्छ**; (प्राकृ १९; ३८)।
तिरि / **तिरिअं** } अ [**तिर्यक्**] तिरछा, टेढ़ा; (प्राकृ ८०; १९)।
तिरिअ वि [**तैरश्च**] तिर्यंच का; "तिरिया मणुया य दिव्वगा उवसग्गा तिविहाहियासिया" (सूअ १, २, २, १५)।
तिरिच्छिय देखो **तेरिच्छिय**; (आचा २, १५, ५)।
तिरोहा सक [**तिरस्+धा**] अन्तर्हित करना, अदृश्य करना। तिरोहंति; (धर्मवि २४)।
तिलगकरणी स्त्री [**तिलककरणी**] १ तिलक करने की सलाई; २ गोरोचना; (सूअ १, ४, २, १०)।
तिलवट्टी स्त्री [**तिलपर्पटी**] तिल की बनी हुई एक खाद्य वस्तु; (पव ४ टी)।
तिलुत्तमा देखो **तिलोत्तमा**; (सम्मत्त १८८)।
तिवाय सक [**त्रि+पातय्**] मन, वचन और काय से नष्ट करना, जान से मार डालना। तिवायए; (सूअ १, १, १, ३)।
तिविक्कम पुं [**त्रिविक्रम**] विष्णुकुमार-नामक एक प्रसिद्ध जैन मुनि; "गहिया नियएहि (? तिपएहि) मही, तिविक्कमो तेण विक्खाओ" (धर्मवि ८६)।
तिसंथ वि [**त्रिसंस्थ**] तीन बार सुनने से अच्छी तरह याद कर लेने की शक्ति वाला; (धर्मसं १२०७)।
तीय न [**त्रेत**] तीन; (सूअ १, २, २, २३)।
तीरट्ठ पुं [**तीरस्थ, तीरार्थ**] साधु, मुनि, श्रमण; (दसनि २, ६)।
तीसग वि [**त्रिंशक**] तीस वर्ष की उम्र वाला, (तंदु १७)।
तुंब न [**तुम्ब**] पहिए के बीच का गोल अवयव; (गांदि ४३)। °**वीणा** स्त्री [°**वीणा**] वाद्य-विशेष; (राय ४६)।
तुंबाग पुंन [**तुम्बक**] कद्दू; (दस ५, १, ७०)।
तुच्छ पुंस्त्री [**तुच्छा**] रिक्ता तिथि, चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी तिथि; (सुज्ज १०, १५)।
तुडिअ न [**तुटिक**] अन्तःपुर, जनानखाना; (सुज्ज १८—पत्र २६५)।
तुन्नाय देखो **तुण्णाय**; (गांदि १६४)।
तुण्हि देखो **तुण्हि**; (प्राकृ ३२)।
तुद पु [**तोद**] प्रतोद, आरदार डंडा; (सूअ १, ५, २, ३)।
तुन्नण न [**तुन्नन**] रफू करना; (गच्छ ३, ७)।
तुन्नार पु [**तुन्नकार**] रफू करने वाला शिल्पी; (धर्मवि ७३)।
तुप्प वि [**दे**] वेष्टित; (अणु २६)।
तुमंतुम पुं [**दे**] १ तूकार वाला वचन, तिरस्कार-वचन; (सूअ १, ९, २७)। २ वाक्-कलह; 'अप्पतुमंतुमे" (उत्त २६, ३९)। ३ वि. तूकारे से बात कहने वाला; (संबोध १७)।
तुरमणी देखो **तुरुमणी**; (सट्ठि ५७ टी)।
तुरयमुह देखो **तुरग-मुह**; (पव २७४)।
तुरुक्क पुं [**तुरुष्क**] १ देश-विशेष, तुर्किस्तान; २ वि. तुर्किस्तान का; (स १३)।
तुलणा स्त्री [**तुलना**] तौल, वजन; (धर्मवि ६)।
तुला स्त्री [**तुला**] १०५ या ५०० पल का एक नाप; (अणु १५४)।
तुवट्ट देखो **तुयट्ट**। तुवट्टे; (वव ४)।
तुवट्ट पुं [**त्वग्वर्त**] शयन, लेटना; (वव ४)।

(उत्त २, ३२)।

थिंदिणी स्त्री [दे] छन्द-विशेष; "थिंदिणिच्छंदरासेणा" (सम्मत्त १४१)।

थिग्गल पुंन [दे] १ छिद्र; २ गिरने के बाद दुरुस्त किया हुआ गृह-भाग; (आचा २, १, ६, २)।

थिज्ज देखो **थेज्ज**=स्थैर्य; (संबोध ४६)।

थिवुग पुं [स्तिवुक] कन्द-विशेष; (सुख ३६, ९६)।

थिम्म सक [स्तिम्] १ आर्द्र करना। २ अक. आर्द्र होना। थिम्मइ; (प्राकृ १२०)।

थीहु पुंस्त्री [दे] कन्द-विशेष; (उत्त ३६, ९६)।

थुअ देखो **थुण**। थुअइ; (प्राकृ ६७)।

थुइवाय पुं [स्तुतिवाद] प्रशंसा-वचन; (चेइय ७४४)।

थुल्ल वि [स्थूल] मोटा, तगडा। स्त्री—°ल्ली; (पिंड ४२६)।

थुव देखो **थुण**। थुवइ; (प्राकृ ६७)।

थूथू अ [दे] घृणा-सूचक अव्यय; (चंड)।

थोक देखो **थोक्क**; (प्राकृ ३८)।

——०००——

द

दइअ पुंस्त्री [दृतिका] मसक, चर्म-निर्मित जल-पात्र; "दइएण वत्थिणा वा" (पिंड ४२); स्त्री—°आ; (अणु १५२; पिंडभा १४)।

दउत्ति (शौ) अ [द्राग्] शीघ्र, जल्दी; (प्राकृ ९५)।

दंड पुं [दण्ड] १ दण्ड-नायक, सेनापति; (वव १)। २ उबाला; "उसिणोदग तिदंडुक्कलियं फासुयजलंति जइकप्पं" (पव १३६; पिंड १८; विचार २५७)।

दंडण न [दण्डन] दण्ड-करण, शिक्षा; (सूअ २, २, ८२; ८३)।

दंडपासिग पुं [दाण्डपाशिक] कोतवाल; (मोह १२७)।

दंडलइअ वि [दण्डलातिक] दण्ड लेने वाला; (वव १)।

दंडिअ पु [दण्डिक] १ सामन्त राजा; (पव २६८)। २ राजकुलानुगत पुरुष; (पव ६१)। ३ दाण्डपाशिक, कोतवाल; (धर्मसं ५६६)।

दंडिणी स्त्री [दे. दण्डिनी] रानी, राज-पत्नी; (पिंड ५००)।

दंत वि [ददत्] दान करता, देता; (पिंड ५६४)।

दंत पुं [दान्त] दो उपवास, वेला; (संबोध ५८)।

दंतकार पुं [दन्तकार] दाँत बनाने वाला शिल्पी; (अणु १४६)।

दंतकुंडी स्त्री [दन्तकुण्डी] दाढ, दंष्ट्रा; (तंदु ४१)।

दंतवक्क पुं [दान्तवाक्य] चक्रवर्ती राजा; (सूअ १, ६, २२)।

दंतवण्ण पुंन [दे. दन्तपवन] दतवन, (दस ३, ९)।

दंतसोहण न [दन्तशोधन] दतवन; (उत्त १६, २७)।

दंतिक्कग न [दे] माँस; (धर्मसं ९९१)।

दंपइ पुंब. [दम्पति] स्त्री-पुरुष का युगल, पति-पत्नी: "ते दंपईउ तह तह धम्ममम्मि समुज्जमा निच्चं" (सिरि २४८)।

दंभग वि [दम्भक] दम्भी, ठग; "दंभगो त्ति निब्भच्छिओ" (सुख २, १७)।

दंसाव सक [दर्शय्] दिखलाना। दंसावेइ, (प्राकृ ७१)।

दक्खिणापुव्वा देखो **दक्खिण-पुव्वा**: (पव १०६)।

दग न [दक] स्फटिक रत्न; (राय ७५)। °सोयरिअ वि [°शौकरिक] साख्य मत का अनुयायी; (पिंड ३१४)।

दढगालि स्त्री [दे] वस्त्र-विशेष, धोया हुआ स-दश वस्त्र; (पव ८४; दसनि १, ४६ टी) देखो **दाढगालि**।

दद्दर पुं [दे. दर्दर] कुतुप आदि के मुँह पर बाँधा जाता कपडा; (पिंड ३४७; ३५६; राय ६८; १००)।

दद्दरिगा देखो **दद्दरिया**; (राय ४६)।

दद्दुर पुं [दर्दुर] प्रहार, आघात; (धर्मवि ८५)।

दद्दुल वि [दद्रुमत्] दाद-रोग वाला; (सिरि ११६)।

दब्भिय न [दार्भिक] गोत्र-विशेष; (सुज्ज १०, १६ टी)।

दमण देखो **दमणक**; (राय ३४; प्राकृ १२१)।

दर पुंन [दर] १ गुफा, कन्दरा; २ गर्त, गढ़ा; "ते य दरा मिंढया ते य" (धर्मवि १४०)।

दरस (शौ) देखो **दरिस**। दरसेदि; (प्राकृ ९९)।

दरि न [दरी] कन्दरा, गुफा; "दरीणि वा" (आचा २, १०, २)।

दरिसणिज्ज न [दर्शनीय] १ आकृति, रूप; २ अवलोकन; (तदु ३६)।

दरिसाव पु [दर्शन] दिखावा; (वव १)।

दवदव, **दवदवस्स** } अ [द्रवद्रवम्] शीघ्र, जल्दी; "दवदवचरा पमत्तजणा" (संबोध १४; उत्त १७, ८),

"दवदवस्स न गच्छेज्जा" (दस ५, १, १४); "जह वणदवो वणं दवदवस्स जलिओ खणेण निद्दहइ" (धर्मवि ८६)।

दविय न [**द्रव्य**] १ घास का जंगल, वन में घास के लिए सरकार से अवरुद्ध भूमि; (आचा २, ३, ३, १)। २ तृण आदि द्रव्य-समुदाय; (सूअ २, २, ८)।

दव्व न [**द्रव्य**] योग्यता; "समयम्मि दव्वसद्दो पायं जं जोग्गयाए रूढो त्ति, णिरुवचरितो" (पंचा ६, १०)।

दसग वि [**दशक**] दश वर्ष की उम्र का; (तंदु १७)।

दसुय पुं [**दस्यु**] चोर, तस्कर; (उत्त १०, १६)।

दहि वि [**दधि**] १ दही; "कुन्दादहीय सहणेण" (धर्मवि ५२); "अयं तु दही" (सूअ २, १, १६)। २ तेला, लगातार तीन दिन का उपवास; (संबोध ५८)।

दा° देखो **दग**। °**थालग** न [°**स्थालक**] जल से गिला थाल; (भग १५—पत्र ६८०)। °**कलस** पुं [°**कलश**] पानी का छोटा घड़ा; °**कुंभ** पुं [°**कुम्भ**] जल का घड़ा; °**वारग** पुं [°**वारक**] जल का पात्र-विशेष; (भग १५—पत्र ६८०)।

दाइज्जय न [**देयक**] पाणि-ग्रहण के समय वधू-वर को दिया जाता द्रव्य; (सिरि ४६६)।

दाक्खव (अप) देखो **दक्खव**। दाक्खवइ; (प्राकृ ११६)।

दाढगालि देखो **दढगालि**; (दसनि १, ४६ टी)।

दाणपारमिया स्त्री [**दानपारमिता**] दान, उत्सर्ग, समर्पण;

"दंतस्स हिरन्नादी अब्भासा देहमादियं चेव।
अग्गहविणिवित्ती जा सेट्ठा सा दाणपारमिया"
(धर्मसं ७३७)।

दामण स्त्रीन [**दामनी**] पशु को बाँधने की डोरी; (धर्मवि १४४); स्त्री—°णी; (सुज १०, ८)।

दारुइज्ज वि [**दारुकीय**] काष्ठ-निर्मित; °**पव्वय** पुं [°**पर्वत**] काष्ठ का बना हुआ मालूम पड़ता पर्वत; (राय ७५)।

दाहविय वि. [**दाहित**] जलवाया हुआ, आग लगवाया हुआ; (हम्मीर २७)।

दिअ वि [**दित**] छिन्न; (धम्मो १)।

दिग्गु देखो **दिगु**; (अणु १४७)।

दिट्ठ न [**दृष्ट**] प्रत्यक्ष या अनुमान प्रमाण से जानने योग्य वस्तु; (धर्मसं ५१८; ५१६)। °**साहम्मव** न [°**साधर्म्यवत्**] अनुमान का एक भेद; (अणु २१२)।

दिट्ठि स्त्री [**दृष्टि**] तारा, मित्रा आदि योग-दृष्टि; (सिरि ६२३)।

दित्ति स्त्री [**दीप्ति**] उद्दीपन; (उत्त ३२, १०)। °**ल्ल** वि [°**मत्**] प्रकाश वाला; (सम्मत्त १५६)।

दियाव सक [**दा**] देना। दियावेइ; (पंचा १३, १२)।

दिवायर पुं [**दिवाकर**] १ सिद्धसेन-नामक विख्यात जैन कवि और तार्किक; २ पूर्वधर मुनि; (सम्मत्त १४१)।

दिव्व न [**दिव्य**] १ तेला, तीन दिन का लगातार उपवास; (संबोध ५८)। २ वि. देव-संबन्धी; "तिरिया मणुया य दिव्वगा, उवसग्गा तिविहाहियासिया" (सूअ १, २, २, १५)।

दिस पुं [**दिश**] एक देव-विमान; (देवेन्द्र १३१)।

दिसाइ देखो **दिसा-दि**; (सुज ५ टी—पत्र ७८)।

दिस्स वि [**दृश्य**] देखने योग्य, प्रत्यक्ष ज्ञान का विषय; (धर्मसं ४२८)।

दीव पुं [**द्वीप**] सौराष्ट्र का एक नगर, दीव; (पव १११)।

दीहपिट्ठ देखो **दीह-पट्ठ**; (सिरि ६०५)।

दु देखो **तु**; (दे २, ६४)।

दुअ न [**द्रुत**] अभिनय-विशेष; (राय ५३)।

दुअर वि [**दुष्कर**] मुश्किल, कठिनाई से जो किया जा सके वह; (प्राकृ २६)।

दुइल्ल (अप) वि [**द्विचतुर**] दो-चार, दो या चार; (प्राकृ १२०)।

दुकाल पुं [**दुष्काल**] अकाल; (सिरि ४१)।

दुक्करकरण न [**दुष्करकरण**] पाँच दिन का लगातार उपवास; (संबोध ५८)।

दुगसंपुण्ण न [**द्विकसंपूर्ण**] लगातार बीस दिन का उपवास; (संबोध ५८)।

दुगुंछि वि [**जुगुप्सिन्**] घृणा करने वाला; (उत्त २, ४; ६, ८)।

दुग्गम्म वि [**दुर्गम**] जो कठिनाई से जाना जा सके वह; (धर्मवि ४)।

दुग्गय न [**दुर्गत**] १ दरिद्रता; २ दुःख; "दोहंतो जिण-दव्वं दोहिच्चं दुग्गयं लहइ" (संबोध ४)।

दुग्गास न [**दुर्ग्रास**] दुर्भिक्ष, अकाल; (पिंडभा ३३)।

दुग्घड वि [**दुर्घट**] अ-संगत; (धर्मवि २७०)।
दुच्छड्ड वि [**दुश्छर्द**] दुस्त्यज, दुःख से छोड़ने योग्य; ' दुच्छड्डा जीवियासा जं'' (धर्मवि १२४)।
दुन्निक्कम देखो **दोनिक्कम**; (भग ७, ६ टी—पत्र ३०७)।
दुप्पह वि [**दुष्प्रभ**] जो दुःख से सूझ सके वह, दुर्गम; (मोह ७२)।
दुप्पाय न [**दुष्प्राप**] तप-विशेष, आयंबिल तप; (संबोध ५८)।
दुप्फड वि [**दुष्फट**] मुश्किली से फटने योग्य; (ति ८३)।
दुव्वलिय न [**दौर्बल्य**] श्रम, थाक; (आचा २, ३, २, ३)।
दुब्भ वि [**दुग्ध**] १ दोहा हुआ; २ न. दोहन; (प्राकृ ७७)।
दुब्भग्ग न [**दौर्भाग्य**] दुर्भगता, लोक में अप्रियता; (पिंड ५०२)।
दुब्भाव पुं [**द्विर्भाव**] द्वित्व, दुगुनापन; (चेइय ६९०)।
दुब्भूय वि [**दुर्भूत**] दुराचारी; (उत्त १७, १७)।
दुम्मणिअ न [**दौर्मनस्य**] दुष्ट मनो-भाव, मन का दुष्ट विकार; (दस ६, ३, ८)।
दुम्मय पुं [**द्रमक**] भिखारी, भीखमंगा; (दस ७, १४)।
दुम्मारि स्त्री [**दुर्मारि**] उत्कट मारी-रोग; (संबोध २)।
दुयणु देखो **दुअणुअ**; (धर्मसं ६४०)।
दुरवगम्म देखो **दुरवगम**; (चेइय २५६)।
दुरिट्ठ न [**दुरिष्ट**] खराब नक्षत्र; (दसनि १, १०५)।
दुरिट्ठ न [**दुरिष्ट**] खराब यजन—याग; (दसनि १, १०५)।
दुरूव वि [**दूरूप**] अशुचि आदि खराब वस्तु; (सूअ १, ५, १, २०)।
दुरोदर देखो **दुरोअर**; (कर्पूर २५)।
दुव्विहिअ न [**दुर्विहित**] दुष्ट अनुष्ठान; (दसचू १, १२)।
दुसंथ वि [**द्विसंस्थ**] दो वार सुनने से ही उसे अच्छी तरह याद करलेने की शक्ति वाला; (धर्मसं १२०७)।
दुह सक [**द्रुह्**] द्रोह करना। दुहइ; (विचार ६४७)।
दुहदुहग पुं [**दुहदुहक**] 'दुह दुह' आवाज; (राय १०१)।
दुहित्ती स्त्री [**दौहित्री**] लड़की की लड़की; ' पुत्ती तह दुहित्ती होइ य भज्जा सवक्की य'' (श्रु ११७)।
दुहिदिआ (शौ) स्त्री [**दुहितृ**] लड़की; (प्राकृ ९५)।
दूमण वि [**दावक**] उपताप करने वाला; (सूअ १, २, २, २७)।
दूरचर वि [**दूरचर**] दूर रहने वाला; (धम्मो १०)।
दूसग वि [**दूषक**] दूषण निकालने वाला, दोष देखने वाला; (धर्मवि ८५)।
दूसण न [**दूषण**] दूषित करना; (अज्झ ७३)।
दूसाहिअ वि [**दौःसाधिक**] दुसाध जाति में उत्पन्न, अस्पृश्य जाति का; (प्राकृ १०)।
दूहय देखो **दोधअ**; (सिरि ६६१)।
दूहव सक [**दुःखय्**] दूभाना, दुःखी करना। दूहवेइ; (सिरि १६७)।
दे अ [**दे**] पाद-पूरक अव्यय; (प्राकृ ८१)।
देव पुंन [**देव**] एक देव-विमान; (देवेन्द्र १३३)। **°कुरु** स्त्री [**°कुरु**] भगवान मुनिसुव्रत स्वामी की दीक्षा-शिबिका का नाम; (विचार १२६)। **°च्छंदय** पुन [**°च्छन्दक**] कमानदार घूमट वाला दिव्य आसन-स्थान; (आचा २, १५, ५)। **°तमिस्स** पुन [**°तमिस्र**] अन्धकार-राशि, तमस्काय; (भग ६, ५—पत्र २६८)। **°दिन्ना** स्त्री [**°दत्ता**] भगवान् वासुपूज्य की दीक्षा-शिबिका; (विचार १२६)। **°पलिक्खोभ** पु [**°परिक्षोभ**] कृष्णराजि, कृष्णवर्ण पुद्गलों की रेखा; (भग ६, ५—पत्र २७०)। **°रमण** पुं [**°रमण**] नन्दीश्वर द्वीप के मध्य में पूर्व-दिशा-स्थित एक अंजनगिरि; (पव २६९ टी)। **°वूह** पुं [**°व्यूह**] तमस्काय; (भग ६, ५—पत्र २६८)।
देवंगण न [**देवाङ्गण**] स्वर्ग; ''दिक्खं गहिउं च देवंगणे रमइ'' (सम्मत्त १६०)।
देवंधकार देखो **देवधगार**; (भग ६, ५—पत्र २६८)।
देवय वि [**दैव्य**] देव-संबन्धी; (पव १२५)।
देविंदय पु [**देवेन्द्रक**] देव-विमान-विशेष; (देवेन्द्र १२८)।
देविल पुं [**देविल**] एक प्राचीन ऋषि; (सूअ १, ३, ४, ३)।
देव्वजाणुअ / **देव्वण्णुअ** } देखो **देव्व-ज्ञ**; (प्राकृ १८)।
देस पुं [**देश**] एक सौ हाथ परिमित जमीन; ''हत्थसयं खलु देसो'' (पिंड ३४४)। **°देस** पुं [**°देश**] सौ हाथ

से कम जमीन; (पिंड ३४४)। °राग पुं [°राग] देश-विशेष; (आचा २, ५, १, ७)।

देस देखो **वेस**=द्वेष; (रयण ३६)।

देसराग वि [**दैशराग**] देशराग-देश में बना हुआ; "देसरागाणि वा" (आचा २, ५, १, ७)।

देसिअ वि [**देशिक**] बृहत्क्षेत्र-व्यापि, विस्तीर्ण; (आचा २, १, ३, ७)।

देसिअव वि [**देशितवत्**] जिसने उपदेश दिया हो वह; (सूअ १, ६, २४)।

दोगुंदुग पुन [**दोगुन्दक**] एक देव-विमान; (देवेन्द्र १४५)।

दोद्धु वि [**दोग्धृ**] दोहन-कर्ता; (दस १, १ टी)।

दोण्णिक्कम वि [**दुर्निष्क्रम**] अत्यन्त कष्ट से चलने योग्य, (भग ७, ६—पत्र ३०५)।

दोब्बलिय देखो **दुब्बलिय**; (आचा २, ३, २, ३)।

दोमणस्स न [**दौर्मनस्य**] वैमनस्य, मन की दुष्टता; (सूअ २, २, ८२; ८३)।

दोरिया देखो **दोरी**; (सिरि ६३)।

दोसील वि [**दुःशील**] दुष्ट स्वभाव वाला; (पव ७३)।

दोह सक [**द्रुह्**] द्रोह करना। वकृ—**दोहंत**; (संबोध ४)।

दोहिण्ण वि [**द्विभिन्न**] द्वि-खंड, जिसका दो टूकड़ा किया गया हो वह; (प्राकृ ५१)।

——०००——

ध

धंत न [**ध्वान्त**] अज्ञान, (देवेन्द्र १)।

धणिअ पुं [**धनिक**] यवन-मत का प्रवर्तक पुरुष-विशेष; (मोह १०१; १०२)।

धणु पुंन [**धनुस्**] ज्योतिष-प्रसिद्ध एक राशि; (विचार १०६; संबोध ५४)। °ल्ल वि [°त्] धनुष वाला; (प्राकृ ३५)।

धमिय वि [**ध्मात**] आग में तपाया हुआ; "धमियकणयं फुंकाए हारविदं हुज" (मोह ४७)।

धम्म पुं [**धर्म**] १ एक देव-विमान; (देवेन्द्र १४३)। २ एक दिन का उपवास; (संबोध ५८)।

धम्मि वि [**धर्मिन्**] तर्कशास्त्र-प्रसिद्ध पक्ष; (धर्मसं ६६)।

धरणिसिंग पुं [**धरणिशृङ्ग**] मेरु पर्वत; (सुज्ज ५)।

धराधीस पुं [**धराधीश**] राजा; (मोह ४३)।

धरित्ती स्त्री [**धरित्री**] पृथिवी, भूमि; (श्रु १२७; सम्मत्त २२६)।

धरिस सक [**धर्षय्**] क्षुब्ध करना, विचलित करना। धरिसेइ; (उत्त ३२, १२)।

धवल न [**धवल**] लगातार सोलह दिन का उपवास; (संबोध ५८)।

धसिअ वि [**धसित**] धसा हुआ; (हम्मीर १३)।

धाउसोसण न [**धातुशोषण**] आयंबिल तप; (संबोध ५८)।

धाडण न [**ध्राटन**] बाहर निकालना; (वव ४)।

धाडय वि [दे. **ध्राटक**] डाका डालने वाला; "धाडयपुरिसा हया तत्थ" (सिरि ११४६)।

धाम पुंन [**धामन्**] १ अहंकार, गर्व; २ रस आदि में लम्पटता; ३ वि. गर्व-युक्त; ४ रस आदि में लम्पट, (संबोध १६)।

धारणा स्त्री [**धारणा**] मकान का एक खंभा; (आचा २, २, ३, १ टी, पव १३३)।

धारा स्त्री [**धारा**] मालव देश की एक नगरी; (मोह ८८)।

धिइ स्त्री [**धृति**] तेला, लगातार तीन दिन का उपवास; (संबोध ५८)।

धी देखो **धीआ**; "जं मंगलं कुंभनिवस्स धीए मल्लीइ राईसरवदिआए" (मंगल १२; २०)।

धीइ देखो **धिइ**; "तुच्छा गारवकलिया चलिंदिया दुब्बला य धीईए" (पव ६२ टी)।

धीमल न [**धिङ्मल**] निन्दनीय मैल; (तंदु ३८)।

धुअ वि [**धूत**] १ कम्पित; २ न. कम्प; (प्राकृ ७०)।

धुअण देखो **धुवण**; (पव १०१)।

धुक्क अक [**क्षुध्**] भूख लगना। धुक्कइ; (प्राकृ ६३)।

धुणा देखो **धुणणा**; (उत्त २६, २७)।

धुप्प देखो **धिप्प**। धुप्पइ; (प्राकृ ७०)।

धुरीण वि [**धुरीण**] धुरन्धर, मुखिया, अगुआ; (धर्मवि १३६; सम्मत्त ११८)।

धुवण पुन [**धूपन**] १ धूप देना; २ धूम-पान; (दस ३, ६)।

धुविया स्त्री [**ध्रुविता**] कर्म-विशेष, ध्रुव-बन्धिनी कर्म-

प्रकृति; (पंच ५, ६६)।

धूअ न [**धूत**] पहले बँधा हुआ कर्म, पूर्व-कर्म; (सूअ २, २, ६५)।

धूम पुं [**धूम**] १ हींग आदि का बघार; (पिंड २५०)। २ क्रोध, गुस्सा; ३ वि॰ क्रोधी; (संबोध १६)।

धूमा देखो **धूमाअ**। धूमाइ; (प्राकृ ७१)।

धूयरा देखो **धूआ**; (सूअ १, ४, १, १३)।

धूलिहडो स्त्री [**दे**] पर्व-विशेष, होली; "धूलिहडीरायत्तणा-सरिसा सव्वेसि हसणिज्जा" (कुलक ५)।

धेउल्लिया देखो **धीउल्लिया**; (सुख ३, १)।

धोवण देखो **धोअण**; (पिंड २३)।

——०००——

प

पअब्भ देखो **पगब्भ**=प्रगल्भ; (प्राकृ ७८)।

पइ अ [**प्रति**] १ अपेक्षा-सूचक अव्यय; (दसनि ३, १)। २ लक्ष्य, तर्फ; "भरुयच्छं पइ चलियं" (सम्मत्त १४१; धर्मवि ५६)।

पइट्ठ देखो **पगिट्ठ**; (सट्ठि ५ टी)।

पइट्ठ वि [**दे**] प्रेषित, भेजा हुआ; "जह अद्दकुमरमिच्छो अभयपइट्ठं जिणस्स पडिबिंबं" (संबोध ३)।

पइट्ठव सक [**प्रति+स्थापय्**] मूर्ति आदि की विधि-पूर्वक स्थापना करना। पइट्ठवेज्जा; (पंचा ७, ४३)।

पइट्ठा स्त्री [**प्रतिष्ठा**] १ धारणा, वासना; (णंदि १७६)। २ समाधान, शंका-निरास-पूर्वक स्वपक्ष-स्थापन; (चेइय ५३५)।

पइट्ठाण पुं [**प्रतिष्ठान**] मूल प्रदेश; (राय २७)।

पइट्ठिअ वि [**प्रतिष्ठित**] प्रतिबद्ध, रुका हुआ; (आचा २, १६, १२)।

पइणियय वि [**प्रतिनियत**] नियम-संगत, नियमित; (धर्मसं २६६)।

पइण्णि वि [**प्रतिज्ञावत्**] प्रतिज्ञा वाला; "बंधमोक्ख-पइण्णिणो" (उत्त ६, १०; सुख ६, १०)।

पइन्न देखो **पइण्ण**=प्रतीर्ण; (पण्ह २, १ टी—पत्त १०५)।

पइन्नय देखो **पइन्नग**; (चेइय १६)।

पइभाणाण न [**प्रतिभाज्ञान**] प्रतिभा से उत्पन्न होता ज्ञान, प्रातिभ प्रत्यक्ष; (धर्मसं १२०६)।

पइर सक [**वप्**] बोना, वपन करना। पइरिति; (आचा २, १०, २)। भूका—पइरिंसु; (आचा २, १०, २)। भवि—पइरिस्संति; (आचा २, १०, २)। कर्म—पइरि-ज्जंति; (स ७१३)।

पउअ देखो **पागय**=प्राकृत; (प्राकृ ५)।

पउण अक [**प्रगुणय्**] तंदुरस्त होना, नीरोग होना। "अन्नस्स चिगिच्छाए पउणाइ अन्नो न लोगम्मि" (धर्मसं ११८४)।

पउत्त पुं [**पौत्र**] लडके का लड़का; (प्राकृ १०; श्रु ११७)।

पउत्तु [**प्रयोक्तृ**] १ प्रयोग-कर्ता; २ प्रेरणा-कर्ता; ३ कर्ता, निर्माता; स्त्री—°त्ती; (तंदु ४५)।

पउमग पुंन [**पद्मक**] केसर; (दस ६, ६४)।

पउमप्पह पुं [**पद्मप्रभ**] विक्रम की तेरहवीं शताब्दी का एक जैन आचार्य; (विचार ३)।

पउमा स्त्री [**पद्मा**] १ लक्ष्मी; २ देवी-विशेष; ३ लौंग, लवंग; ४ पुष्प-विशेष, कुसुम्भ-पुष्प; (प्राकृ २८)।

पउरिस वि [**पौरुषेय**] पुरुष-कृत; "वेदस्स तह यापउ-रिसभावा" (धर्मसं ८६२)।

पओअ पुं [**पयोद**] मेघ; (दस ७, ५२)।

पओग पुं [**प्रयोग**] प्रयोजन; (सूअ २, ७, २)।

पओज देखो **पउंज**=प्र+युज्। पओजए; (पव ६४)।

पओजग वि [**प्रयोजक**] विनिश्चायक, निर्णायक, गमक; (धर्मसं १२२३)।

पओरासि पुं [**पयोराशि**] समुद्र; (सम्मत्त १७४)।

पओस सक [**प्र+द्विष्**] द्वेष करना। पओसइ; (सुख १, १४)।

पंकज देखो **पंक-य**; (सम्मत्त ११८)।

पंकाभा स्त्री [**पङ्काभा**] चौथी नरक-पृथिवी; (उत्त ३६, १५८)।

पंचग वि [**पञ्चक**] पाँच (रूपया आदि) की कीमत का; (दसनि ३, १३)।

पंचपुंड वि [**पञ्चपुण्ड्र**] पाँच स्थानों में पुण्ड्र-चिह्न (सफेदी) वाला; (पिंडभा ४३)।

पंचमहब्भूइअ वि [**पाञ्चमहाभूतिक**] पाँच महाभूतों को मानने वाला, सांख्य मत का अनुयायी; (सूअ २, १, २०)।

पंचवयण पुं [**पञ्चवदन**] सिंह, मृगराज; (सम्मत्त १३८)।

पंचामय न [पञ्चामृत] ये पाँच वस्तु—दही, दूध, घी, जल तथा सक्कर; (सिरि २१८)।

पंचाल पुं [पाञ्चाल] कामशास्त्र-प्रणेता एक ऋषि; (सम्मत्त १३७)।

पंचिआ स्त्री [पञ्चिका] १ पाँच की संख्या वाला; २ पाँच दिन का; (वव १)।

पंजर पुंन [पञ्जर] १ आचार्य, उपाध्याय, प्रवर्तक आदि मुनि-गण; २ उन्मार्ग-गमन-निषेध, सन्मार्ग-प्रवर्तन; ३ स्वच्छन्दता-प्रतिषेध; (वव १)।

पंजरिअ पुं [दे] जहाज का कर्मचारि-विशेष; (सिरि ४२७)।

पंजिअ न [दे] यथेच्छ दान, मुँह-माँगा दान; "राय-कुलेसु भमंतो पंजिअदाणं णिग्गहेइ" (सिरि ११८)।

पंडव पुं [दे] अश्व-रक्षक (?); "सिट्ठिसुहडेहिं तासिय-पंडववयणेहिं नरवरो रुट्ठो" (सम्मत्त २१६)।

पंडिच्चमाणि वि [पाण्डित्यमानिन्] पंडिताई का अभिमान रखने वाला; (चेइय १६)।

पंडुरंग पुं [पाण्डुराङ्ग] संन्यासी की एक जाति, भस्म लगाने वाला सन्यासी; (अणु २४)।

पंताव सक [दे] ताड़न करना, मारना। पंतावे; (पिंड ३२५)।

पंसुखार पुं [पांसुक्षार] एक तरह का नोन, ऊपर लवण. (दस ३, ८)।

पकड वि [प्रकृत] १ प्रस्तुत, प्रक्रान्त; (भग ७, १०—पत्र ३२४; १८, ७—पत्र ३५०)। २ कृत, निर्मित; (भग १८, ७)।

पकड देखो **पगड**=शकट; (भग ७, १०)।

पकप्पणा स्त्री [प्रकल्पना] कल्पना; (चेइय १४१; अज्झ १४२)।

पकप्पधारि वि [प्रकल्पधारिन्] निशीथ-सूत्र का जान-कार; (वव १)।

पकप्पि वि [प्रकल्पिन्] ऊपर देखो; (वव १)।

पकप्पिअ वि [प्रकल्पित] काटा हुआ; "एसा परजुत्ति-लया एएण पकंपि (? कप्पि) आ सोआ" (अज्झ १०२)।

पकित्तिअ वि [प्रकीर्तित] वर्णित; (श्रु १०८)।

पकिदि देखो **पगइ**=प्रकृति; (प्राकृ १२)।

पकिरण न [प्रकिरण] देने के लिए फेंकना; (वव १)।

पक्कम सक [प्र+क्रम्] १ प्रकर्ष से जाना, चला जाना, गमन करना। २ अक. प्रयत्न करना। ३ प्रवृत्ति करना। पक्कमई; (उत्त ३, १३)। पक्कमंति; (उत्त २७, १४; दस ३, १३)। 'अणुसासणमेव पक्कमे" (सूअ १, २, १, ११)।

पक्कमणी स्त्री [प्रक्रमणी] विद्या-विशेष; (सूअ २, २, २७)।

पक्ख पुं [पक्ष] वेदिका का एक भाग; (राय ८२)। °**बाहा** स्त्री [°बाहु] वेदिका का एक भाग; (राय ८२)।

पक्खंदोलग पुं [पक्ष्यन्दोलक] पक्षी का हिंडोला; (राय ७५)।

पक्खर पुं [प्रक्षर] क्षरण, टपकना; (कर्पूर २६)।

पक्खर पुं [दे] जहाज की रक्षा का एक उपकरण; (सिरि ३८७)।

पक्खिनाह पुं [पक्षिनाथ] गरुड पक्षी; (धर्मवि ८४)।

पक्खिअ वि [पाक्षिक] स्वजन, ज्ञाति का; (पव २६८)।

पक्खेव पुं [प्रक्षेप] शास्त्र में पीछे से किसीने डाला हुआ वाक्य; (धर्मसं १०११)। °**हार** पु [°हार] कवला-हार; (सूअनि १७१)।

पक्खोड सक [प्र+स्फोटय्] १ खूब झाड़ना। २ वारंवार झाड़ना। पक्खोडिज्जा; वकृ—**पक्खोडंत**; (दस ४, १)। प्रयो—पक्खोडाविज्जा; (दस ४, १)।

पक्खोड पुं [प्रस्फोट] प्रमार्जन, प्रतिलेखन की क्रिया-विशेष; (पव २)।

पखम (पै) देखो **पम्ह**=पक्ष्मन्; "पखमलणअणा" (प्राकृ १२४)।

पखोड देखो **पक्खोड**=प्रस्फोट; (पव २)।

पगड पुं [प्रगर्त] बड़ा गढ़हा; (आचा २, १०, २)।

पगब्भणा स्त्री [प्रगल्भना] प्रगल्भता, धृष्टता; (सूअ १, १०, १७)।

पगब्भित्तु वि [प्रगल्भित] काटने वाला; "हंता छेत्ता पगब्भित्ता" (सूअ १, ८, ५)।

पगय न [प्रकृत] १ प्रस्ताव, प्रसंग; (सूअनि ४७)। २ पुं. गाँव का अधिकारी; (पव २६८)।

पगय वि [प्रगत] संगत; (श्रावक १८६)।

पगरिअ वि [प्रगलित] गलत्कुष्ठ, कुष्ठ-विशेष की बिमारी वाला; (पिंड ५७२)।

पगामसो अ [**प्रकामम्**] अत्यन्त, अतिशय; "पगामसो भुच्चा" (उत्त १७, ३)।
पगासणा स्त्री [**प्रकाशना**] प्रकटीकरण; (उत्त ३२, २)।
पगिइ देखो **पगइ**; (संबोध ३६)।
पगिज्झ अक [**प्र+गृध्**] आसक्ति का प्रारंभ करना। पगिज्झिज्जा; (उत्त ८, १६; सुख ८, १६)।
पगीय वि [**प्रगीत**] जिसने गाने का प्रारंभ किया हो वह; (राय ४६)।
पग्गल वि [**दे**] पागल, उन्मत्त; (प्राकृ १०६)।
पग्गह पुं [**प्रग्रह**] खाने के लिए उठाया हुआ भोजन-पान; (सूअ २, २, ७३)।
पचार सक [**प्र+चारय्**] चलाना। पचारेइ; (सिरि ४३५)।
पचार पुं [**प्रचार**] विस्तार, फैलाव; (मोह २०)। देखो **पयार**=प्रचार।
पच्चइग देखो **पच्चइय**=प्रत्ययिक; (सुख २, १७)।
पच्चंतिग देखो **पच्चंतिय**=प्रत्यन्तिक; (आचा २, ३, १, ५)।
पच्चणुहो देखो **पच्चणुभव**। पच्चणुहोइ; (उत्त १३, २३)।
पच्चवाय पुं [**प्रत्यवाय**] १ उपघात-हेतु, नाश का कारण; (उत्त १०, ३)। २ अनर्थ; (पंचा ७, ३६)।
पच्चाउट्टणया स्त्री [**प्रत्यावर्तनता**] अवाय, निश्चयात्मक मति-ज्ञान; (णंदि १७६)।
पच्चारिअ वि [**प्रचारित**] चलाया हुआ; (सिरि ४३६)।
पच्चावड पुं [**प्रत्यावर्त**] आवर्त के सामने का आवर्त; (राय ३०)।
पच्चाह सक [**प्रति+ब्रू**] उत्तर देना। पच्चाह; (पिंड ३७८)।
पच्चाहर सक [**प्रत्या+हृ**] उपदेश देना। वकृ— "**पच्चाहरओ** वि णं हिययगमणीओ जोयणनीहारी सरो" (सम ६०)।
पच्चाहुत्त क्रिवि [**पश्चान्मुख**] पीछे, पीछे की तरफ; "जाव न सत्तट्ठ पए पच्चाहुत्तं नियत्तो सि" (धर्मवि ५४)।
पच्चुप्पन्न पुं [**प्रत्युत्पन्न**] वर्तमान काल; (सूअ १, २, ३, १०)।
पच्चुब्भड वि [**प्रत्युद्भट**] अतिशय प्रबल; (संबोध ५३)।
पच्चुल्लं अ [**दे. प्रत्युत**] प्रत्युत, उलटा; "न तुमं रुट्ठो, पच्चुल्लं ममं पूएसि" (वव १)।
पच्छयण देखो **पत्थयण**; (मोह ८०)।
पच्छाणुताविअ वि [**पश्चादनुतापिक**] पश्चात्ताप-युक्त; (राय १४१)।
पच्छियापिडय देखो **पच्छि-पिडय**; (राय १४०)।
पच्छुत्ताव पुं [**पश्चादुत्ताप**] पछतावा, पश्चात्ताप; (सम्मत्त १६०; धर्मवि ३५; १२२; १३०)।
पजणण वि [**प्रजनन**] उत्पादक; (राय ११४)।
पजीवण न [**प्रजीवन**] आजीविका; (पिंड ४७८)।
पजूहिअ वि [**प्रयूथिक**] यूथ को दिया हुआ, याचक-गण को अर्पित; (आचा २, १, ४, २)।
पजेमण न [**प्रजेमन**] भोजन-ग्रहण; (राय १४६)।
पज्जणण देखो **पजणण**; (सूअनि ५७)।
पज्जणुओग } **पज्जणुजोग** } पुं [**पर्यनुयोग**] प्रश्न; (धर्मसं १७६; २९२)।
पज्जत्त न [**पर्याप्त**] लगातार चौंतीस दिन का उपवास; (संबोध ५८)।
पज्जत्ति स्त्री [**पर्याप्ति**] १ पूर्त्ति, पूर्णता; (धर्मवि ३८)। २ अन्त, अवसान, (सुख २, ८)।
पज्जलिअ पुं [**प्रज्वलित**] तीसरी नरक-भूमि का एक नरक-स्थान; (देवेन्द्र ८)।
पज्जवलीढ वि [**पर्यवलीढ**] भक्षित; (विचार ३२६)।
पज्जाय पुं [**पर्याय**] तात्पर्य, भावार्थ, रहस्य; (सूअनि १३९)।
पज्जुसण } **पज्जुसवण** } **पज्जुस्सवण** } **पज्जूसण** } न. देखो **पज्जुसणा**; (धर्मवि २१; विचार ५३१; धर्मवि २१)।
पज्जोय सक [**प्र+द्योतय्**] प्रकाशित करना। वकृ— **पज्जोयंत**; (चेइय ३२४)।
पज्जोसवण न. देखो **पज्जोसवणा**; (पंचा १७, ६)।
पज्झाय न [**प्रध्यात**] अतिशय चिन्तन; (अणु १३९)।
पभुंभ देखो **पज्झुंझ**। वकृ—**पभुंभमाण**; (राय ८३ टी)।

पटोला स्त्री [**पटोला**] वल्ली-विशेष, कोशातकी, क्षार-वल्ली; (सिरि ६६६)।

पट्टदेवी स्त्री [**पट्टदेवी**] पटरानी; (सिरि १२१२)।

पट्टसुत्त न [**पट्टसूत्र**] रेशमी वस्त्र; (धर्मवि ७२)।

पट्टुअ पुंन. देखो **पट्टुया**; "पट्टुएहि" (सुख ६, १)।

पट्टयग देखो **पट्टत्रय**; (कम्म ६, ६६ टी)।

पट्ठीवंस पुं [**पृष्ठवंश**] घर के मूल दो खंभों पर तिरछा रखा जाता बड़ा खंभा; (पव १३३)।

पडंसुद देखो **पडिसुद**; (प्राकृ ३२)।

पडपुत्तिया स्त्री [**पटपुत्रिका**] छोटा वस्त्र, रुमाल; (संबोध ५)।

पडि वि [**पटिन्**] वस्त्र वाला; (अणु १४४)।

पडि अ [**प्रति**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ प्रकर्ष; (वव १)। २ संपूर्णता; (चेइय ७८२)।

पडिआइय सक [**प्रत्या+पा**] फिर से पान करना। पडिआइयइ; (दस १०, १)।

पडिआइय सक [**प्रत्या +दा**] फिर से ग्रहण करना। पडिआइयइ; (दस १०, १)।

पडिआयण न [**प्रत्यापान**] फिर से पान; "वंतस्स य पडिआयणं" (दसचू १, १)।

पडिआयण न [**प्रत्यादान**] फिर से ग्रहण; (दसचू १, १)।

पडिउज्जम अक [**प्रत्युद्+यम्**] संपूर्ण प्रयत्न करना। पडिउज्जमति; (चेइय ७८२)।

पडिओसह न [**प्रत्यौषध**] एक औषध का प्रतिपक्षी औषध; (सम्मत्त १४२)।

पडिकाय पुं [**प्रतिकाय**] प्रतिबिम्ब, प्रतिमा; (चेइय ७५)।

पडिकिय न [**प्रतिकृत**] ऊपर देखो; (चेइय ७५)।

पडिकुट्ठेल्लग देखो **पडिकुट्ठिल्लग**; (वव १)।

पडिकूलणा स्त्री [**प्रतिकूलना**] १ प्रतिकूल आचरण; २ प्रतिकूलता, विरोध; (धर्मवि ५८)।

पडिकोस सक [**प्रति+क्रुश्**] आक्रोश करना। पडिकोसइ; (सूअ २, ७, ६)।

पडिकोह पुं [**प्रतिक्रोध**] गुस्सा; (दस ६, ५८)।

पडिकम पु [**प्रतिक्रम**] देखो **पडिक्कमण**; "गिहिपडिकमाइयाराणं" (पंव—गाथा २)।

पडिखलण देखो **पडिक्खलण**; (धर्मवि ५६)।

पडिग्घाय पुं [**प्रतिघात**] १ निरोध, अटकाव; (दस ६, ५८)। २ विनाश; (धर्मवि ५४)।

पडिचर सक [**प्रति+चर्**] परिभ्रमण करना। पडिचरइ; (सुज्ज १, ३)।

पडिचोयणा स्त्री [**प्रतिचोदना**] निर्भर्त्सन, निष्ठुरता से प्रेरणा; (विचार २३८)।

पडिच्छायण न [**प्रतिच्छादन**] आच्छादन, आवरण; (सुज्ज २०)।

पडिच्छिय वि [**प्रातीच्छिक**] अपने दीक्षा-गुरु की आज्ञा लेकर दूसरे गच्छ के आचार्य के पास उनकी अनुमति से शास्त्र पढ़ने वाला मुनि; (णंदि ५४)।

पडिछाया देखो **पडिच्छाया**; (चेइय ७५)।

पडिजायणा स्त्री [**प्रतियातना**] प्रतिबिम्ब, प्रतिमा; (चेइय ७५)।

पडिठाण न [**प्रतिस्थान**] हर जगह; (धर्मवि ४)।

पडिणिकास वि [**प्रतिनिकाश**] समान, तुल्य; (राय ६७)।

पडिणिज्जाय सक [**प्रतिनिर्+यापय्**] अर्पण करना। पडिणिज्जाएमि; (णाया १, ७—पत्र ११८)।

पडितणु स्त्री [**प्रतितनु**] प्रतिमा, प्रतिबिम्ब; (चेइय ७५)।

पडितप्प अक [**प्रति+तप्**] १ चिन्ता करना। २ खबर रखना। पडितप्पई; (उत्त १७, ५)।

पडिथद्ध वि [**प्रतिस्तब्ध**] गर्वित; (उत्त १२, ५)।

पडिदासिया स्त्री [**प्रतिदासिका**] दासी; (दस ३, १ टी)।

पडिधि देखो **परिहि**; "सूरियपडिधीतो बहित्ता" (सुज्ज ६)।

पडिनियत्ति स्त्री [**प्रतिनिवृत्ति**] वापिस लौटना, प्रत्यावतन; (मोह ६३)।

पडिन्नव सक [**प्रति+ज्ञापय्**] १ प्रतिज्ञा कराना। २ नियम दिलाना। पडिन्नविज्जा, पडिन्नवेज्जा; (दसचू २, ८)।

पडिपूयय वि [**प्रतिपूजक**] प्रत्युपकार-कर्ता; (उत्त १७, ५)।

पडिबंध सक [**प्रति+बन्ध्**] १ वेष्टन करना। २ रोकना। पडिबंधइ, पडिबंधंति; (सूअ १, ३, २, १०)।

पडिबंध पुं [**प्रतिबन्ध**] व्याप्ति, नियम; (धर्मसं

°प्पय वि [°प्रद] देने वाला; "पीइप्पयं" (रंभा)।
पयइ स्त्री [प्रकृति] संधि का अभाव; (अणु ११२)।
पयर अक [प्र+चर्] १ फैलना। २ व्यापृत होना, काम में लगना। पयरइ; (यांदि ५१)।
पयर देखो पइर=वप्। "कोडुंबिओ य खित्ते धन्नं पयरेइ" (सुपा ३६०)।
पयर न [प्रतर] गणित-विशेष, श्रेणी से गुनी हुई श्रेणी; (अणु १७३)।
पयले सक [प्र+चालय्] चलायमान करना, अस्थिर करना। पयलेंति; (दसचू १, १७)।
पयार पुं [प्रचार] १ प्रकर्ष-प्राप्ति; (दसनि १, ४१)। २ आचरण, आचार; (दसनि १, १३५)।
परक्कम सक [परा+क्रम्] १ जाना। २ आसेवन करना। ३ अक. प्रवृत्ति करना। परक्कमे; (दस ५, १, ६)। परक्कमिज्जा; (दस ८, ४१)। संकृ—परक्कम्म; (दस ८, ३२)।
परक्कम पुं [पराक्रम] गर्त आदि से भिन्न मार्ग; (दस ५, १, ४)।
परग वि [पारग] परग तृण का बना हुआ; (आचा २, १, ११, ३; २, २, ३, १४)।
परग्घ वि [परार्घ] महर्घ, महँगा, बहु-मूल्य; (दस ७, ४३)।
परमाहम्मिय वि [परमधर्मिक] सुख का अभिलाषी; (दस ४, १)।
परिआव देखो परिताव; (दस ६, २, १४)।
परिकम्म पुंन [परिकर्मन्] योग्यता-संपादन; (यांदि २३५)।
परिगुव्व अक [परि+गुप्] १ व्याकुल होना। २ सक. सतत भ्रमण करना। वकृ—परिगुव्वंत; (ठा १०—पत्र ५००)।
परिगू सक [परि+गू] शब्द करना। कवकृ—परिगुव्वंत; (ठा १०—पत्र ५००)।
परिग्गय देखो परिगय; (दस ६, २, ८)।
परिज्जुन्न देखो परिजूरिय; (दस ६, २, ८)।
परित्ताणंतय पुंन [परीतानन्तक] संख्या-विशेष; (अणु २३४)।
परित्तासंखेज्जय पुंन [परीतासंख्येयक] संख्या-विशेष; (अणु २३४)।
परिपिट्टण न [परिपिट्टन] पीटना, ताडन; (वव १)।
परिपूणग पुं [दे. परिपूर्णक] घी-दूध गालने का कपड़ा, छानना; (यांदि ५४)।
परिभवंत पुं [परिभवत्] पार्श्वस्थ साधु, शिथिलाचारी मुनि; (वव १)।
परिभुत्त } वि [परिवृत] वेष्टित, परिकरित; (आचा
परिभुय } २, ११, ३; २, ११, १६)।
परियाल देखो परिवार; (राय ५४)।
परियावन्न वि [पर्यापन्न] लब्ध, प्राप्त; (आचा २, १, ६, ६)।
परिल्ली देखो परिली=दे; (राय ४६)।
परिवय अक [परि+पत्] तिर्यग् गिरना। परिवयंति; (राय १०१)।
परिवायणी स्त्री [परिवादनी] सात ताँत वाली वीणा; (राय ४६)।
परिवील सक [परि+पीडय्] दबाना। सकृ—परिवीलियाण; (आचा २, १, ८, १)।
परिवुसिअ वि [पर्युषित] गत, गुजरा हुआ; (आचा २, ३, १, ३)।
परिवूढ वि [परिवृद्ध] १ बलवान्, बलिष्ठ; (दस ७, २३)। २ माँसल, पुष्ट; (आचा २, ४, २, ३)।
परिव्वय पुं [परिव्यय] खर्चा, खर्च करने का धन; (दस ३, १ टी)।
परिसड अक [परि+शद्] उपयुक्त होना। परिसडइ; (आचा २, १, ६, ६)।
परिसाड सक [परि+शाटय्] १ इधर-उधर फेंकना। २ भरना। ३ रखना। "परिसाडिज्ज भोअणं" (दस ५, १, २८)। परिसाडिंति; भूका—परिसाडिंसु; भवि—परिसाडिस्सति; (आचा २, १०, २)।
परिसाडणा स्त्री [परिशाटना] वपन, बोना; (वव १)।
परिसाडिय वि [परिशातित] गिराया हुआ; (दस ५, १, ९६)।
परिहरण न [परिधरण] धारण करना; (वव १)।
परिहार पुं [परिहार] करण, कृति; (वव १)।
परिहारिअ वि [पारिहारिक] आचारवान मुनि, उद्युक्त-विहारी जैन साधु; (आचा २, १, १, ४)।
पलग न [पलक] फल-विशेष; (आचा २, १, ८, ६)।

पलाल वि [प्रलाल] प्रकृत लाला वाला; (अणु १४१)।

पलालग वि [पलालक] पलाल—पुआल—का बना हुआ; (आचा २, २, ३, १४)।

पलिविद्धंस सक [परिवि+ध्वंस्] नष्ट होना। पलिविद्धंसिज्जा; (अणु १८०)।

पव सक [पा] पीना। कृ—"अरसमेहा .....अ-प्पवणिज्जोदगा ....वासं वासिहिंति" (भग ७, ६—पत्र ३०५)।

पवा स्त्री [प्रपा] पानीय-शाला, प्याऊ; "सहाणि वा पवाणि वा" (आचा २, २, २, १०)।

पवरपुंडरीय पुंन [प्रवरपुण्डरीक] एक देव-विमान; (आचा २, १५, २)।

पविद्धंस अक [प्रवि+ध्वंस्] १ विनाशाभिमुख होना। २ विनष्ट होना। "तेण पर जोणी पविद्धंसइ, तेण परं जोणी विद्धंसइ" (ठा ३, १—पत्र १२३)।

पवेस पुं [प्रवेश] भींत की स्थूलता; (ठा ४, २—पत्र २२५)।

पव्वग वि [पार्वक] पर्व—ग्रन्थि—का बना हुआ; (आचा २, २, ३, २०)।

पव्वयगिह न [पर्वतगृह] पर्वत की गुफा; (आचा २, ३, ३, १)।

पसज्झचेय न [प्रसह्यचेतस्] धर्म-निरपेक्ष चित्त, कदाग्रही मन; (दसचू १, १४)।

पसढ वि [प्रसह्य] अनेक दिन रख कर खुला किया हुआ; (दस ५, १, ७२)।

पहास पुं [प्रहास] अट्टहास आदि विशेष हास्य; (दस १०, ११)।

पहेण न [दे] वधू को ले जाने पर पिता के घर दिया जाता जीमन; (आचा २, १, ४, १)।

पहोइ वि [प्रधाविन्] धोने वाला; (दस ४, २६)।

पहोयण स्त्रीन [प्रधावन] प्रक्षालन; "दंतपहोयणा य" (दस ३, ३)।

पाइडि स्त्री [प्रावृति] प्रावरण, वस्त्र; (गा २३८)।

पाइन्न देखो पाईण; (णंदि ४९)।

पाउग्गह पुं [पतद्ग्रह] पात्र; (आचानि २८८)।

पाडितिय न [प्रात्यन्तिक] अभिनय-विशेष; (राय ५४)।

पाडोस पुं [दे] पड़ोस, प्रातिवेश्मिकता; (श्रा २७)।

पाढोआमास पुं [पृथगामर्श] बारहवें अंग-ग्रन्थ का एक भाग; (णंदि २३५)।

पामिच्च सक [दे] धार लेना। पामिच्चेज; (आचा २, २, २, ३)।

पामिच्चिय वि [दे] धार लिया हुआ; (आचा २, १०, १)।

पाय वि [पाक्य] पाक-योग्य; (दस ७, २२)।

पायंजलि पुं [पातञ्जल] पतञ्जलि-कृत शास्त्र, पातञ्जल योग-सूत्र; (णंदि १९४)।

पायंत न [पादान्त] गीत का एक भेद, पाद-वृद्ध गीत; (राय ५४)।

पायक देखो पायय=पातक; (वव १)।

पायपुंछण न [पादपुञ्छन] पात्र-विशेष, शराव; (आचा २, १०, १)।

पारक्किअ देखो पारक्क; (माल १९२)।

पारय वि [पारग] समर्थ; (आचा २, ३, २, ३)।

पारियल्ल न [दे. परिवर्त] पहिए के पृष्ठ भाग की बाह्य परिधि; (णंदि ४३)।

पालियाय देखो पारिय=पारिजात; (राय ३०)

पावरण पुं [प्रावरण] एक म्लेच्छ जाति; (मृच्छ १५२)।

पासायवडेंसग पुं [प्रासादावतंसक] प्रासाद-विशेष; (राय ९९)।

पाहुड न [प्राभृत] १ क्लेश, कलह; (कस; बृह १)। २ दृष्टिवाद के पूर्वों का अध्याय-विशेष; (अणु २३४)। ३ सावद्य कर्म, पाप-क्रिया; (आचा २, २, ३, १; वव १)। °छेय पुं [°च्छेद] बारहवें अंग-ग्रन्थ के पूर्वों का प्रकरण-विशेष; (वव १)। °पाहुडिआ स्त्री [°प्राभृतिका] दृष्टिवाद का प्रकरण-विशेष; (अणु २३४)।

पाहुडिआ स्त्री [प्राभृतिका] १ दृष्टिवाद का छोटा अध्याय; (अणु २३४)। २ अर्चनिका, विलेपन आदि; (वव ४)।

पिआसा देखो पिवासा; (गा ८१४)।

पिण्णिया स्त्री [दे. पिण्यिका] गन्ध-द्रव्य-विशेष, ध्यामक, गन्ध-तृण; (उत्तनि ३)।

पिप्पलग वि [पैप्पलक] पीपल के पान का बना हुआ; (आचा २, २, ३, १४)।

१११)।
पडिवद्ध वि [**प्रतिबद्ध**] नियत, व्याप्त; (पंचा ७, २)।
पडिभणिय वि [**प्रतिभणित**] १ निराकृत; (धर्मस ६५०)। २ न. प्रत्युत्तर, निराकरण; (धर्मसं ६१)।
पडिभिन्न वि [**प्रतिभिन्न**] भेद-प्राप्त; (पव—गाथा १६; चेइय ६४२)।
पडिभुअंग पुं [**प्रतिभुजङ्ग**] प्रतिपक्षी भुजंग—वेश्या-लंपट; (कर्पूर २७)।
पडिम वि [**प्रतिम**] समान, तुल्य; (मोह ३५)।
पडिमंत सक [**प्रति+मन्त्रय्**] उत्तर देना। पडिमंतेइ; (उत्त १८, ६)।
पडिमाण न [**प्रतिमान**] प्रतिमा, प्रतिबिम्ब; (चेइय ७५)।
पडियग्गण न [**प्रतिजागरण**] सम्हाल, खबर; (धर्मसं १०१३)।
पडियरण न [**प्रतिकरण**] प्रतीकार, इलाज; (पिंड ३६६)।
पडियरिअ वि [**प्रतिचरित**] सेवित; (मोह १०५)।
पडियारणा स्त्री [**प्रतिवारणा**] निषेध; (पंचा १७, ३४)।
पडियासूर अक [**दे**] चिढ़ना, गुस्सा करना। कृ—**पडियासूरेयव्वं** न कयाइवि पाणाचाएवि" (आक २५, १४)।
पडिरूवंसि वि [**प्रतिरूपिन्**] रमणीय, सुन्दर; (आचा २. ४, २, १)।
पडिरूवग पुंन [**प्रतिरूपक**] प्रतिबिम्ब, प्रतिमा; "तिदिसि पडिरूवगा य देवकया" (आव; बृह)।
पडिरूवणया स्त्री [**प्रतिरूपणता**] १ समानता, सदृशता; २ समान-वेष-धारण; (उत्त २६, १)।
पडिलभ सक [**प्रति+लभ्**] प्राप्त करना। पडिलभेज; (उत्त १, ७)। संकृ—**पडिलब्भ**; (सूत्र १, १३, २)।
पडिलीण वि [**प्रतिलीन**] अत्यन्त लीन; (धर्मवि ५३)।
पडिलेह पुं [**प्रतिलेख**] देखो **पडिलेहा**; (चेइय २६६)।
पडिलेहणया देखो **पडिलेहणा**; (उत्त २६, १)।
पडिलेहणी स्त्री [**प्रतिलेखनी**] साधु का एक उपकरण, 'पुंजणी'; (पव ६१)।
पडिलेहि वि [**प्रतिलेखिन्**] निरीक्षक; (सूत्र १, ३, ३, ५)।
पडिवई देखो **पडिवया**; (पव २७१)।
पडिवज्जणया स्त्री [**प्रतिपदना**] स्वीकार; (यांदि २३२)।
पडिवज्जणया स्त्री [**प्रतिपादना**] प्रतिपादन; (यांदि २३२)।
पडिवय सक [**प्रति+वच्**] उत्तर देना। भवि—पडिवक्खामि; (सूत्र १, ११, ६)।
पडिवसभ पुं [**प्रतिवृषभ**] मूल स्थान से दो कोस की दूरी पर स्थित गाँव; (पव ७०)।
पडिवा देखो **पडिवया**; (सुज्ज १०, १४)।
पडिवाइय देखो **पडिवाइ**=प्रतिपातिन्; (यांदि ८१)।
पडिवाय सक [**प्रति+पादय्**] प्रतिपादन करना, निरूपण करना। पडिवाययंति; (सूत्र १, १४, २६)।
पडिविज्जा स्त्री [**प्रतिविद्या**] प्रतिपक्षी विद्या, विरोधी विद्या; (पिंड ४९७)।
पडिसंखेव सक [**प्रतिसं+क्षेपय्**] सकेलना, समेटना। वकृ—**पडिसंखेवेमाण**; (राय ४२)।
पडिसंध } सक [**प्रतिसं+धा**] १ फिर से साँधना। २
पडिसंधया } उत्तर देना। ३ अनुकूल करना। पडिसंधए; (उत्त २७, १)। पडिसंधयाइ; (सूत्र २, ६, ३)। संकृ—**पडिसंधाय**; (सूत्र २, २, २६)।
पडिसंविक्ख सक [**प्रतिसंवि+ईक्ष्**] विचार करना। पडिसंविक्खे; (उत्त २, ३१)।
पडिसडिय वि [**परिशटित**] जो सड़ गया हो, जो विशेष जीर्ण हुआ हो वह; (पिंड ५१७)।
पडिसद्दिय वि [**प्रतिशब्दित**] प्रतिध्वनि-युक्त; (सम्मत्त २१८)।
पडिसमाहर सक [**प्रतिसमा+हृ**] पीछे खींच लेना। "दिट्ठिं पडिसमाहरे" (दस ८, ५५)।
पडिसय पुं [**प्रतिश्रय**] उपाश्रय, साधु-निवास-स्थान; (दस २, १ टी)।
पडिसरण न [**प्रतिसरण**] कंकण; (पंचा ८, १५)।
पडिसरीर न [**प्रतिशरीर**] प्रतिमूर्ति; "पट्ठविओ पडिसरीरं व" (धर्मवि ३)।
पडिसवत्त वि [**प्रतिसपत्न**] विरोधी; (दसनि ६, १८)।
पडिसार सक [**प्रति+सारय्**] खिसकाना, हटाना, अन्य स्थान में ले जाना। पडिसारेइ; (से १०, ७०)।
पडिसार पुं [**प्रतिसार**] अपसारण; (हे १, २०६)।
पडिसारण न [**प्रतिस्मारण**] याद दिलाना; (वव १)।

पडिसाहर सक [**प्रतिसं+हृ**] निवृत्त करना। पडिसाहरेज्जा; (सूत्र २, २, ८५)।

पडिसिलोग पुं [**प्रतिश्लोक**] श्लोक के उत्तर में कहा गया श्लोक; (सम्मत्त १४६)।

पडिसुणण स्त्रीन [**प्रतिश्रवण**] १ सुनाना, सुन कर उसका जवाब देना, प्रत्युत्तर; (पव २)। स्त्री—°णा; (पव २)। २ श्रवण; (पंचा १२, १५)।

पडिसुद्ध वि [**परिशुद्ध**] अत्यन्त शुद्ध; (चेइय ८०७)।

पडिसूर पुं [**प्रतिसूर्य**] सूर्य के सामने देखा जाता उत्पातादि-सूचक द्वितीय सूर्य; (अणु १२०)।

पडिसेग पु [**प्रतिसेक**] नख के नीचे का भाग; (राय ६४)।

पडिसेहग वि [**प्रतिषेधक**] निषेध-कर्ता; (धर्मसं ४०; ६१२)।

पडिस्सर देखो **पडिसर**; (पंचा ८, ४९)।

पडिस्सुण सक [**प्रति+श्रु**] १ सुनना। २ अंगीकार करना। पडिस्सुणंति; (सूत्र २, ६, ३०)। पडिस्सुणेज्जा; (सूत्र १, १४, ६)। पडिस्सुणे; (उत्त १, २१)।

पडिहणिय देखो **पडिभणिय**; (धर्मसं ७०८)।

पडिहार पुं [**प्रतिहार**] इन्द्र-नियुक्त देव; (पव ३९)।

पडुक्खेव पुं [**प्रत्युत्क्षेप**] १ वाद्य-ध्वनि; २ उत्थापन, उठान; (अणु १३१)।

पडोयार पुं [**दे**] उपकरण; (पिंड २८)।

पढाव सक [**पाठय्**] पढ़ाना। पढावेइ; (प्राकृ ६०)। संकृ—**पढाविऊण, पढावेऊण**; (प्राकृ ६१)। हेकृ—**पढाविउं, पढावेउं**; (प्राकृ ६१)। कृ—**पढावणिज्ज, पढाविअव्व**; (प्राकृ ६१)।

पढावअ वि [**पाठक**] अध्यापक; (प्राकृ ६०)।

पढाविअवंत वि [**पाठितवत्**] जिसने पढ़ाया हो वह; (प्राकृ ६१)।

पढाविउ, **पढाविर** वि [**पाठयितृ**] अध्यापक; (प्राकृ ६०)।

पढे देखो **पढाव**। पढेइ; (प्राकृ ६०)।

पण, **पणग** न [**पञ्चक**] १ पाँच का समूह; (पंच ३, १९)। २ तप-विशेष, नीवी तप; (संबोध ५७)।

पणपन्निय पुं [**पञ्चप्रज्ञप्तिक**] व्यन्तर देवों की एक जाति; (पव १९४)।

पणव पुं [**प्रणव**] ओंकार, 'ओं' अक्षर; (सिरि १९६)।

पणवीसी स्त्री [**पञ्चविंशतिका**] पचीस का समूह; (संबोध २५)।

पणसुंदरी स्त्री [**पणसुन्दरी**] वेश्या; (धर्मवि १२७)।

पणाम सक [**उप+नी**] उपस्थित करना। पणामेइ; (प्राकृ ७१)।

पणामय वि [**प्रणामक**] १ नमाने वाला; २ पुं. शब्द आदि विषय; (सूत्र १, २, २, २७)।

पणिअ वि [**प्रणीत**] रचित; (सूत्रनि ११२)।

पणिअट्ठ वि [**पणितार्थ**] चोर; (दस ७, ३७)।

पणिअसाला स्त्री [**पण्यशाला**] बखार, गुदाम; (आचा २, २, २, १०)।

पणिद्ध वि [**प्रस्निग्ध**] विशेष स्निग्ध; (अणु २१५)।

पणिवइअ वि [**प्रणिपतित**] जिसको नमस्कार किया गया हो वह; "नरपहूहिं पणिवइओ ..... वीरो" (धर्मवि ३७)।

पणिहि पुस्त्री [**प्रणिधि**] बड़ा निधि; (दस ८, १)।

पणीहाण देखो **पणिहाण**; (आत्म ८; हित २५)।

पण्णवण वि [**प्रज्ञापन**] ज्ञापक, निरूपक; (संबोध ५)।

पण्णा स्त्री [**प्रज्ञा**] मनुष्य की दश अवस्थाओं में पाँचवीं अवस्था; (तंदु १६)।

पण्णाग वि [**प्रज्ञ**] विद्वान; (पंचा १७, २७)।

पण्णासग वि [**पञ्चाशक**] पचास वर्ष की उम्र का; (तंदु १७)।

पत्तच्छेज्ज न [**पत्रच्छेद्य**] १ बाण से पत्ती बेधने की कला; (जं २ टी—पत्र १३७)। २ नक्काशी का काम, खोदने का काम; (आचा २, १२, १)।

पत्तहारय वि [**पत्रहारक**] पत्तों को बेचने का काम करने वाला; (अणु १४९)।

पत्तेय वि [**प्रत्येक**] बाह्य कारण; (णंदि १३०; १३१ टी)।

पदुग्ग पुंन [**प्रदुर्ग**] कोट, किला; (आचा २, १०, २)।

पप्फुसिय न [**प्रस्पृष्ट**] उत्तम स्पर्श; (राय १८)।

पबंध सक [**प्र+बन्ध्**] प्रबन्ध-रूप से कहना, विस्तार से कहना। पबंधिज्जा; (दस ५, २, ८)।

पमद्दय वि [**प्रमर्दक**] प्रमर्दन-कर्ता; (दसनि १०, ३०)।

पम्माण वि [**प्रम्लान**] १ निस्तेज, मुरझाया हुआ; २ न. फीकापन, मुरझाना; "पम्हा(?म्मा)णरुयणलिंगो" (अणु १३९)।

पियाल पुं [**प्रियाल**] १ वृक्ष-विशेष, खिरनी का पेड़; २ न. फल-विशेष; खिरनी, खिन्नी; (दस ५, २, २४)।
पिलुंखु देखो **पिलंखु**; (आचा २, १, ८, ३)।
पिल्ल सक [**प्र+ईरय्**] १ प्रेरणा करना। २ प्रवृत्त करना। पिल्लेइ; (वव १)।
पीण सक [**पीनय्**] पुष्ट करना। पीणांति; (राय १०१)।
पीरिपीरिया स्त्री [**दे**] वाद्य-विशेष; (राय ४५)।
पीलिम वि [**पीडावत्**] दाव वाला, दावने से बना हुआ (वस्त्र आदि की आकृति); (दसनि २, १७)।
पुग्गल पुं [**पुद्गल**] १ वृक्ष-विशेष; २ न. फल-विशेष; ३ माँस; (दस ५, १, ७३)।
पुड पुं [**पुट**] १ परिमाण-विशेष; २ पुट-परिमित वस्तु; (राय ३४)।
पुयली स्त्री [**दे**] पुत-प्रदेश, कमर के नीचे का भाग; "पुयलिं पप्फोडेमाणो" (भग १५—पत्र ६७९)।
पुरिसकारिआ स्त्री [**पुरुषकारिका, °ता**] पुरुषार्थ, प्रयत्न; (दस ५, २, ६)।
पुल अक [**पुल्**] उन्नत होना; (दस १०, १६)।
पुलय पुंन [**पुलक**] कीट-विशेष; (आचा २, १३, १)।
पुस्सदेवय न [**पुष्यदैवत**] जैनेतर शास्त्र-विशेष; (णंदि १५४)।
पूआहिज्ज वि [**पूजाहार्य**] पूजित-पूजक; (ठा ५, ३ टी—पत्र ३४२)।
पूइ वि [**पूति**] कुथित, सड़ा हुआ; (आचा २, १, ८, ४)। **°पिन्नाग** पुंन [**°पिण्याक**] सर्षप-खल, सरसों की खली; (दस ५, २, २२)।
पूइअ वि [**पूयित**] ऊपर देखो; (राय १८)।
पूइम वि [**पूज्य**] पूजा-योग्य, समाननीय; "जया य पूइमो होइ पच्छा होइ अपूइमो" (दसचू १, ४)।
पूयइ पुं [**पूपकिन्**] हलवाई; (णंदि १६४)।
पूयली स्त्री [**दे**] रोटी; (आचा २, १, ८, ६)।
पेगा स्त्री [**पेया**] वाद्य विशेष, बड़ी काहला; (राय ४५)।
पेह सक [**प्र+ईह्**] १ इच्छा करना, चाहना। २ प्रार्थना करना। पेहेइ; (दस ६, ४, २)।
पोंड न [**दे**] फूल, पुष्प; "एगं सालियपोंडं बद्धो आमेलगो होइ" (उत्तनि ३)।
पोट्ट पुं [**पुत्र**] लड़का; "एक्केका चारभडपोट्टेणा" (वव १ टी)।
पोरिसिमंडल न [**पौरुषीमण्डल**] एक जैन शास्त्र; (णंदि २०२)।

———०००———

फ

फलिह पुंन [**स्फटिक**] आकाश; (भग २०, २)।
फलिह न [**दे**] कपास का टेंटा; (अणु ३५ टी)।
फलिही देखो **फलही=दे**; (अणु ३५ टी)।
फेल्हसण देखो **फेल्लुसण**; (वव ४ टी)।

———०००———

ब

बंधय देखो **बंधग**; (णंदि ४२ टी)।
बंभद्दीविग वि [**ब्रह्मद्वीपिक**] ब्रह्मद्वीपिका-शाखा में उत्पन्न; (णंदि ५१)।
बंभद्दीविगा स्त्री [**ब्रह्मद्वीपिका**] एक जैन मुनि-शाखा; (णंदि ५१)।
बद्धग पुं [**बद्धक**] तूण-वाद्य विशेष; (राय ४६)।
बरुड पुं [**दे**] शिल्पी विशेष, चटाई बनाने वाला शिल्पी; (अणु १४९)।
बल अक [**ज्वल्**] जलना, गुजराती में 'बळवु'। बलंति; (हे ४, ४१६)।
बहिद्धा अ [**बहिर्धा**] बाहर की तरफ; (दस २, ४)।
बहुआरिआ, **बहुआरी** स्त्री [**दे**] बुहारी, झाड़ू; (दे ८, १७ टी)।
बहुखज्ज वि [**बहुखाद्य**] १ बहु-भक्ष्य, खूब खाने योग्य; २ पृथुक—चिउड़ा बनाने योग्य; (आचा २, ४, २, ३)।
बहुल पुं [**बहुल**] आचार्य महागिरि के शिष्य एक प्राचीन जैन मुनि; (णंदि ४९)।
बहुव्वीहि पुं [**बहुव्रीहि**] व्याकरण-प्रसिद्ध एक समास; (अणु १४७)।
बाहुलेर पुं [**बाहुलेय**] काली गौ का बछडा; (अणु २१७)।
बिज्ज देखो **बीज**; "बिज्जं पिव वड्ढिया बहवे" (पउम ११, ९६)।
बिव्वोअ पुं [**बिब्वोक**] काम-विकार; (अणु १३६)।
बिरालिया स्त्री [**बिरालिका**] स्थल-कन्द-विशेष; (आचा

२. १. ८, ३)।

बीअवावय पुं [बीजवापक] विकलेन्द्रिय जन्तु की एक जाति; (अणु १४१)।

बीभच्छ पुं [बीभत्स] साहित्य-प्रसिद्ध एक रस; (अणु १३५)।

बुआव सक [व्याच्] बुलवाना। संकृ—बुआवइत्ता; (ठा ३, ३—पत्र १२८)।

बुक्क वि [दे] विस्मृत; (वव १)।

बुक्कास पुं [दे] तंतुवाय, जुलाहा; (आचा २,१,२,२)।

बेभेल पुं [बेभेल] विन्ध्याचल के नीचे का एक संनिवेश; (भग ३, २—पत्र १७१)।

बोल्लअ पुं [कथन] बोल, वचन; (गा ६०३)।

———०००———

भ

भइअ न [भक्त] भागाकार; (वव १)।

भइअ }
भइग } वि [भृतिक] कर्मकर, नौकर, चाकर; (राय २१)।

भंगुरावत्त पुन [भङ्गुरावर्त] पलायन; (भवि)।

भंडवेआलिअ वि [भाण्डवैचारिक] करियाना बेचने वाला; (अणु १४९)।

भंसग वि [भ्रंशक] विनाशक; (वव १)।

भद्ददारु न [भद्रदारु] देवदारु, देवदार की लकड़ी; (उत्तनि ३)।

भायण न [भाजन] आकाश, गगन; (भग २०, २—पत्र ७७६)।

भाव पुं [भाव] महान् वादी, समर्थ विद्वान्; (दस १, १ टी)।

भिक्खोंड देखो भिच्छुंड; (अणु २४)।

भिलगा देखो भिलुगा; (दस ६, ६२)।

भिलुंग पुं [दे. भिलुङ्ग] हिंसक पक्षी; (राय १२४)।

भीमासुरुक्क न [भीमासुरोक्त॰ °रीय] एक जैनेतर प्राचीन शास्त्र; (अणु ३६)।

भूय देखो भू-य; (वव १)।

भूमिपिसाय पुं [दे. भूमिपिशाच] ताल वृक्ष, ताड़ का पेड़; (दे ६, १०७)।

भेसण देखो भीसण; (भग ७, ६—पत्र ३०७)।

———०००———

म

मंडल पुंन [मण्डल] योद्धा का युद्ध-समय का एक आसन; (वव १)। °पवेस पुं [°प्रवेश] एक प्राचीन जैन शास्त्र; (णंदि २०२)।

मंडलय पुं [मण्डलक] एक माप, बारह कर्म-माषकों का एक बाँट; (अणु १५५)।

मंत वि [मान्त्र] मन्त्र-संबन्धी, मान्त्रिक; स्त्री—"मंती ठक्कारपंतिव्व" (धर्मवि २०)।

मंस न [मांस] फल का गर्भ, फल का गुदा; (आचा २, १, १०, ५; ६)।

मगदंतिआ स्त्री [दे. मगदन्तिका] १ मेंदी का गाछ; २ मेंदी की पत्ती; (दस ५, २, १४; १६)।

मगरिया स्त्री [मकरिका] वाद्य-विशेष; (राय ४६)।

मगुंद देखो मउंद = मुकुन्द; (उत्तनि ३)।

मग्ग पुं [मार्ग] १ आकाश; (भग २०, २—पत्र ७७५)। २ आवश्यक-कर्म, सामायिक आदि षट्-कर्म; (अणु ३१)।

मग्गणया स्त्री [मार्गणा] ईहा-ज्ञान, ऊहापोह; (णंदि १७५)।

मच्छ पुंन [मत्स्य] मत्स्य के आकार की एक वनस्पति; (आचा २, १, १०, ५; ६)।

मच्छंडी स्त्री [मत्स्यण्डी] शक्कर; (अणु ४७)।

मज्जार पुं [मार्जार] वायु-विशेष; (भग १५—पत्र ६८६)।

मज्झअ पुं [दे] नापित, नाई; (दे ६, ११५)।

मड्डुय पुं [दे. मड्डुक] वाद्य-विशेष; (राय ४६)।

मणुई स्त्री [मनुजी] मनुष्य-स्त्री, नारी, महिला; (णंदि १२६ टी)।

मत्थय पुंन [मस्तक] गर्भ, फल आदि का मध्य भाग—अन्तःसार; (आचा २, १, ८, ६)।

मधुघाद पुं [मधुघात] एक म्लेच्छ-जाति; (मृच्छ १५२)।

ममाय वि [दे] ग्रहण करना। ममायंति; (दस ६,४९)।

मल सक [मल्] धारण करना; (भग ९, ३३ टी—पत्र ४८०)।

मल्ल सक [मल्ल्] ऊपर देखो; (भग ९, ३३ टी)।

मल्लि वि [मल्लिन्] धारण-कर्ता; (भग ९, ३३ टी)।

मल्लि स्त्री [मल्लि] पुष्प-विशेष; (भग ९, ३३ टी)।

मल्लिहाण न [माल्याधान] १ पुष्प-बन्धन-स्थान; २ केश-कलाप; (भग ९, ३३ टी—पत्र ४८०)।
महती स्त्री [महती] वीणा-विशेष, सौ ताँत वाली वीणा; (राय ४६)।
महामंति पुं [महामन्त्रिन्] महावत, हस्तिपक; (राय १२१ टी)।
महाविजय पुं [महाविजय] एक देव-विमान; (आचा २, १५, २)।
महिंद वि [माहेन्द्र] १ महेन्द्र-संबन्धी; २ उत्पात-विशेष; (अणु २१५)।
महिसिअ वि [महिषिक] भैंस वाला, भैंस चराने वाला; (अणु १४४)।
महोरगकंठ पुं [महोरगकण्ठ] रत्न-विशेष; (राय ६७)।
माउआपय न [मातृकापद] मूलाक्षर, 'अ' से 'ह' तक के अक्षर; (दसनि १, ८)।
माडंबिय वि [माडम्बिक] चित्र-मंडप का अध्यक्ष; (राय १४१ टी)।
माढर पुंस्त्री [माठर] माठर-गोत्र में उत्पन्न; (णंदि ४९)।
माणी स्त्री [मानिका] २५६ पलों का एक माप; (अणु १५२)।
मार पुं [मार] मणि का एक लक्षण; (राय ३०)।
मालव पुं [मालव] म्लेच्छ-विशेष; आदमी को उठा ले जाने वाली एक चोर-जाति; (वव ४)।
माहिंदफल न [माहेन्द्रफल] इन्द्रयव; (उत्तनि ३)।
मिअ पुं [मृग] हरिण के आकार का पशु-विशेष जो हरिण से छोटा और जिसका पुच्छ लम्बा होता है। °लोमिअ वि [°लोमिक] उसके बालों से बना हुआ; (अणु ३५)।
मिउ वि [मृदु] मनोज्ञ, सुन्दर; "मिउमद्दवसंपन्ने" (णंदि ५२)।
मुंजकार पुं [मुञ्जकार] मूँज की रस्सी बनाने वाला शिल्पी; (अणु १४९)।
मुकुर पुं [मुकुर] दर्पण; (दे १, १४)।
मुक्कलिअ वि [दे] बन्धन-मुक्त किया हुआ, अ-नियन्त्रित; (दे १, १५६ टी)।
मुक्केल्लय देखो मुक्क=मुक्त; (अणु १९८)।
मुख पुं [मुख] १ एक म्लेच्छ-जाति; (मृच्छ १५२)। २ गाड़ी के ऊपर का ढक्कन; (अणु १५१)।
मुद्दिक्का स्त्री [दे] हिक्का, हिचकी; (दे ६, १३४)।
मुणिअ वि [दे. मुणिक] ग्रह-गृहीत, भूताविष्ट, पागल; (भग १५—पत्र ६६५)।
मूलगत्तिआ स्त्री [मूलकर्तिका] मूले की पतली फाँक; (दस ५, २, २३)।
मूलवेलि स्त्री [दे. मूलवेलि] घर के छप्पर का आधार-भूत स्तम्भ-विशेष; (आचा २, २, ३, १ टी; पव १३३)।
मेज्ज न [मेय] मान, बाँट, जिससे मापा जाय वह; (अणु १५४)।
मेरु पुं [मेरु] पर्वत, कोई भी पहाड़; (आचा २, १०, २)।
मेहा स्त्री [मेधा] अवग्रह-ज्ञान; (णंदि १७४)।
मेरेअ न [मैरेय] मद्य विशेष; (माल १७७)।

——०००——

य

°यावदट्ठ वि [यावदर्थ] यथेष्ट, जितने की आवश्यकता हो उतना; (दस ५, २, २)।

——०००——

र

र अ [दे] निश्चय-सूचक अव्यय; (दसनि १, १५२)।
रइअ वि [रचित] महल आदि की पीठ-भित्ति; (अणु १५४)।
रउस्सल वि [रजस्वल] रजो-युक्त, धूलि-युक्त; (भग ७, ७—पत्र ३०५)।
रंग वि [राङ्ग] रँगा हुआ, रँग कर बनाया हुआ; (दसनि २, १७)।
रंधण न [रन्धन] पाक-गृह, रसोई-घर; (आचा २, १०, १४)।
रक्खोवग वि [रक्षोपग] रक्षण में तत्पर; (राय ११३)।
रयणी स्त्री [रजनी] ओषधि-विशेष—१ पिंडदारु; २ हरिद्रा, हलदी; (उत्तनि ३)।
रहिल पुंस्त्री [दे] लम्बा मधुर शब्द; (माल ९०)।
रविगय न [रविगत] जिस पर सूर्य हो वह नक्षत्र; (वव १)।
रस पुंन [रस] निष्यन्द, निचोड़, सार; (दसनि ३, १९)।

१३४)।

विण्णाण न [**विज्ञान**] अवाय-ज्ञान, निश्चयात्मक ज्ञान; (णंदि १७६)।

विहार देखो **विहार**; (वव १)।

विनिज्झा सक [**विनि+ध्यै**] देखना। विनिज्झाए; (दस ५, १, १५)।

विपरिकम्म न [**विपरिकर्मन्**] शरीर की आकुञ्चन-प्रसारण आदि किया; (आचा २, ८, १)।

विप्फाल पुं [**दे**] पृच्छा, प्रश्न; (वव १ टी)।

विप्फालणा स्त्री [**दे**] ऊपर देखो; (वव १ टी)।

वियट्ट अक [**वि+वृत्**] बरतना, होना। हेकृ—**वियट्टित्तए**; (आचा २, २, २, ३)।

विरल्ल पुं [**तान**] विस्तार, फैलाव; (वव ४)।

विलंबणा स्त्री [**विडम्बना**] निर्वर्तना, बनावट, कृति; (अणु १३९)।

विलंबि न [**विलम्बिन्**] १ सूर्य ने भोग कर छोड़ा हुआ नक्षत्र; २ सूर्य जिस पर हो उसके पीछे का तीसरा नक्षत्र; (वव १)।

विवित्त वि [**विवित्त**] १ विवेक-युक्त; २ संविग्न, भव-भीरु; (वव ४)।

इय **गुज्जरदेसंतग्गयराधणपुरणिवासिणा** सेट्ठिसिरि**तिक्कमचंदतणुजम्मेण** णायव्वायरणतित्थोववएण **कलिकाया-विस्सविज्जालयम्मि** सक्कयपाइअसत्थज्झावएण पंडिअ**हरगोविन्ददासेण** विरइअम्मि **पाइअसद्द-महण्णव**णाहिहाणम्मि अहिहाणगंथम्मि परिसिट्ठसद्दसकलणं समत्तं।

——०००——

अग्रिम ग्राहकों के मुबारक नाम।



कॉपी।	नाम।
	कलकत्ता।
१००	बाबू डालचंदजी बहादुरसिंहजी सिंघी।
२५	,, बीजराजजी कोठारी।
२०	,, घनश्यामदासजी विड़ला।
११	,, रावतमलजी भैरूदानजी हाकिम।
७	,, अगरचंदजी भैरोंदानजी सेठिया।
५	,, रायकुमारसिंहजी।
५	,, हस्तमलजी लखमीचंदजी।
५	,, लखमीचंदजी साहेला।
५	शेठ करमचंद डोसाभाई।
५	,, सुमेरमलजी सुराना।
५	,, सरवसुखजी पूनमचंदजी।
५	बाबू जगत्पतिसिंहजी दूगड़।
५	,, पूरणचंदजी नाहार।
४	,, रिखवचंदजी दूगड़।
४	शेठ मणिलाल सूरजमल की कम्पनी।
२	,, देवकरणभाई गोकलदास।
२	,, मगनमलजी कोठारी।
२	बाबू बुद्धिसिंहजी बोथरा।
२	,, अमरचंदजी बोथरा।
२	,, रावतमलजी हरिचंदजी बोथरा।
२	,, सुगनचंदजी रूपचंदजी रामपुरिया।
२	,, लखमीचंदजी नेमचंदजी।
१	,, धनराजजी सिपानी।
१	,, गुलाबचंदजी भूरा।
१	,, जसकरणजी डागा।
१	,, ऋद्धिकरणजी कन्हैयालालजी।
१	बाबू बहादूरचंदजी खजानची।
१	शेठ सिवदानमलजी कोठारी।
१	,, केशवजीभाई नेमचंद।
१	,, धारशीभाई अमूलख।
१	,, इंदरजीभाई सुन्दरजी।

कॉपी।	नाम।
१	शेठ दलपतभाई प्रेमचंद कोरडीया।
१	,, हरजीवनदास डाह्याभाई।
१	,, फूलचंदभाई वनमाळीदास।
१	बाबू सोहनलालजी दूगड।
१	,, पन्नालालजी करनावट।
१	,, रिखवचंदजी करनावट।
१	शेठ लीलाधरभाई हीराचंद।
१	,, हुकमीचंदजी धारशी लाठिया।
१	,, हीरालाल गिरधरलाल।

	बम्बई
२५	शेठ गिरधरलाल त्रिकमलाल कोठारी।
२५	,, जीवतलाल परतापशी।
२५	,, अमथालाल चुनीलाल।
२०	,, हीरालाल अमृतलाल।
१०	मंत्री, गोडीजी का उपाश्रय।
८	शेठ प्रेमचंदभाई।
७	,, फूलचंद मूलचंद।
७	,, पनेचंद नेमाजी।
५	,, ककलभाई भूरदास वकील।
५	,, माणेकलाल जेठाभाई।
५	,, भोलाभाई जेसिंगभाइ
५	,, प्रेमजीभाई नागरदास।
५	,, गांडमलजी गुमानमलजी।
५	,, प्रेमचंदभाई झवेरचंद।
५	,, सोमचंदभाई ओतमचंद।
५	मंत्री, श्रीशान्तिनाथजी ज्ञान-भण्डार।
५	शेठ कल्याणजी खुशालचंद।
५	मंत्री, वेरावल जैन ज्ञान-वर्धक शाला।
५	शेठ लीलाधरभाई नेमचंद।

कॉपी । नाम ।

५ शेठ वृन्दावनदास दयालजी ।
५ ,, देवीदास लखमीचंद ।
५ ,, तुलसीदास मोनजी कराणी ।
५ ,, रणछोडदास शेषकरण ।
५ ,, मोतीलालभाई मूलजी ।
४ ,, ओतमचंद होरजी ।
३ ,, जमनादास खुशालचंद ।
३ ,, मंगलदास मोतीचंद ।
२ ,, सवचंदभाई कचराभाई ।
२ ,, रामाजी पन्नाजी ।
२ ,, चुनीलाल वीरचंद ।
२ ,, अमृतलाल मोहनलाल ।
२ ,, वरजीवनदास मूलचंद ।
२ ,, त्रिकमलाल वीरचंद ।
१ ,, सोमचंद धारशी ।
१ ,, रतनचंद नेमचंद ।
१ ,, लालभाई हीराचंद ।
१ ,, नरपतलाल उत्तमचंद ।
१ ,, चत्रभुज वीरचंद ।
१ ,, शांतिदास खेतसी ।
१ जीवराज मोतीचंद ।
१ ,, मोहनदास ओतमचंद
१ ,, माणेकचंद परसोतमदास
१ ,, हरखचंद मकनजी ।
१ ,, पानाचंद वालजी ।
१ ,, चीमलाल डाह्याभाई ।
१ ,, जेसंगभाई वालाभाई ।
१ ,, झवेरचंद परमाणंद भणस
१ ,, मोरारजी मूळजी प्रागजी ।
१ ,, देवीदास कानजी ।
१ ,, लालजी रामजी ।
१ ,, धरमशी त्रिकमजी ।
१ ,, नरोत्तमदास मगनलाल ।

कॉपी । नाम ।

१ शेठ लल्लुभाई मगनचंद ।
१ मंत्री, मोहनलालजी जैन सेंट्रल लाइब्रेरी ।
१ शेठ नाथाजी गुलाबचंद ।
१ ,, हीरालाल लल्लुभाई ।
१ ,, भायचंद अमूलख ।

बिकानेर ।

११ शेठ चांदमलजी ढढ्ढा, सी. आई. ई. ।
१० ,, फूलचंदजी झाबक ।
६ ,, हीरालालजी हजारीमलजी ।
५ ,, मंगलचंदजी झाबक ।
५ ,, श्रीपूज्य भट्टारक जिनचारित्रसूरीश्वरजी ।
३ शेठ जतनमलजी कोठारी ।
२ ,, राजमलजी ढढ्ढा ।

अहमदावाद ।

४० शेठ आणंदजी कल्याणजी की पेढ़ी ।
२० ,, शिवलाल हरिलाल सत्यवादी ।

प्रकीर्ण ।

१ शेठ जीतमलजी हमीरमलजी, ब्यावर ।
१ ,, जुहारमजी शेषमलजी, ब्यावर ।
१ मंत्री, जैन श्रेयस्कर मंडल, म्हेसाणा ।
१ ,, श्रीजिनदत्तसूरिज्ञान-भंडार, सुरत ।
१ ,, श्रीजिनकृपाचंदसूरि-ज्ञान-भंडार, इंदोर ।
१ ,, शेठ दामोदरदास जगजीवन, दामनगर ।
१ ,, शेठ वेलजी डुंगरशी, नाना आसंबीया ।
३ ,, पंन्यास श्रीमेरुविजयजी ।
२ ,, मुनिराज श्रीकर्पूरविजयजी ।